Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080266

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080266

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76323

080266

# विश्वमित्र

080266

विश्वमित्र

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सौन्दर्य के लिये उत्पन्न

यदि आप जन्म से ही सुन्दर पैदा हुई हैं, सौन्दर्य-विलासिता और पारिष्कृत्यके बीचमें पली हैं, अपनेको सदा सुसज्जित और मनोहर बनाये रखनेके अतिरिक्त आपको कोई काम या चिन्ता नहीं रही तो आप चाहे जो भी क्रीम व्यवहार करें उसका कोई प्रसंग नहीं, यदि वह निरापद हो।

परन्तु हममें बहुसंख्यकोंके लिये, साधारण लोगोंके लिये, क्रीमका महत्व बहुत बड़ा है। दिन छोटे हैं, समय परिमित है, अनेकों काम करनेको हैं। हम सुन्दर बनना चाहते हैं, परन्तु हम इसके लिये अपना जीवन नहीं लगा सकते। हमें ऐसी सौन्दर्यदायक वस्तुकी आवश्यकता है जो केवल निरापद ही नहीं, बल्कि यथार्थमें ही लाभदायक हो—जो ऐसी हो कि काम और आरामके बाद हमारे पास जो थोड़ासा समय बच रहता है उसमें ही सौंदर्य और चर्म स्वास्थ्यमें अधिकतम फल दिखाये।

## ऐसी सौंदर्यदायक वस्तु है—

# ओटिन—

प्रति दिन रातमें १० मिनट तक गले और कन्धेमें ओटिन क्रीम लगानेसे आपका समय विशेष नुकसान नहीं होता फिर भी इससे इतना अच्छा लाभ होता है कि निकृष्ट क्रीमके घण्टों भर मालिश करनेसे भी नहीं होता।

ओटिन क्रीमको सर्वोत्कृष्ट बनानेके लिये जो वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है उसके फलस्वरूप यह पदार्थ तैयार हुआ है जो शृङ्गारकी प्रत्येक आवश्यकताकी पूर्ति करता है।

लेकिन, हम आपसे अपने शृङ्गार-साधनामें केवल ओटीन क्रीम और ओटीन स्नो व्यवहार करनेके जितना भी जोर दें वह काफी है, आपके पास असीम समय हो तो बात ही अलग है। "किसी भी पुरानी क्रीमसे काम चल जायगा" के सिद्धान्तके अनुसार काम करनेवालोंको ऐसा परिणाम भोगना पड़ा है कि सौंदर्यकी खोज करनेवाले बहुतेरे व्यक्ति सदाके लिये हताश हो गये।

**ओटिन क्रीम**—नित्य रातको मालिश करनेके वास्ते—**ओटिन स्नो**—दिनमें लगानेको वैनिशिंग क्रीम—

**दी ओटीन कम्पनी, १७, प्रिन्सेप स्ट्रीट, कलकत्ता।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VISVAMITRA
1933
1934
1935
G.K.V.
LIB
HARDWAR

## पुरुषोंके लिये

यह चूर्ण—तीन दिनके भीतर ही
सब प्रकारका दर्द पीड़ा तथा गिरती हु
(गर्मी—आतशक) मेह प्रमेह (गनोरि
शक्तिको बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, धा
कारण कमरमें दर्द. कमजोरीके कारण
धड़कना, नामर्द हो जाना, इत्यादि रो
समान मजबत हो जाता है। जिनमें पु
धारण करानेके योग्य बना देता है। २

## स्त्रियोंके लिये—

इस चूर्णके सेवनसे सब तरहका स्त्री
दिनोंमें होना बिलकुल ही न होना, अस
रहना, गर्भपात होना, दुर्बल सन्तति होन
शरीरके भी दोष दूर होकर मासिकधर्म स
यहांतक कि ४० वर्षकी स्त्रीको भी इसके
डिब्बेकी कीमत ५) रु० डा० ख० ।।।) इ

संतानकी इच्छा करनेवाले लोगोंको यह दोनों ही दवा एक साथ मंगाके स्त्री और पुरुष दोनों ही एक साथ खानेसे अच्छा होगा। परहेज वगैरह कुछ नहीं करने पड़ते। सेवनविधि साथमें दी जाती है। यह दवायें तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक बार विश्वास रखकर इसे अवश्य मंगावें। इस दवाइयोंमें केवल जड़ी बूटी है। हानिकारक कोई भी चीज नहीं है।

## और लीजिये-गर्मी-सुजाककी-अकसीर दवा

यह पाज़ी रोग चाहे नया हो या पुराना लेकिन इस दवासे एकही दिनमें फायदा और एक हफ्तेमें आराम और तीन हफ्तेमें जड़से रोग कट जाता है। और फिर यह रोग कभी पास नहीं फटकता है। अच्छे मार्गमें चलनेसे यह सालसाके माफिक खूनको साफ करके नया खून रग रगमें दौड़ा देती है। उपदंश (गर्मी आतसक) और मेह प्रमेह. (गनोरिया सुजाक)को जड़से खो देती है। जरूर मंगाकर देखिये। ३ सप्ताह याने २१ दिनकी ४२ खुराककी कीमत सिर्फ २॥) रु० डाक खर्च ।।।) गर्मीके ऊपर लगानेका मलहम १) रु० डिब्बी। इस दवामें नुकसान पहुंचानेवाली कोई भी चीज नहीं है सब काष्ठऔषधियां (जंगली जड़ी बूटी) है। सेवन विधि दवाके साथ दी जाती है और हर मरजका इलाज किया जाता है तथा आयुर्वेदीय सब प्रकारकी औषधियां तैयार हैं।

नोट—डाक महसूल का टिकट अगाड़ी भेज देने से प्रति रुपया )॥ पैसा दवाके दामों में से बाद दिया जायगा।

**पता— भारत भैषज्य भण्डार, नं० १०८ काटन स्ट्रीट, बड़ाबाजार कलकत्ता**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास

## ❀ मिलन-पूर्णिमा ❀

**( सचित्र—सामाजिक उपन्यास )**

सौरीन एम० ए० पास हिन्दू-कुलीन था। रेखा थी, एम० ए० तक पढ़ी हुई—ब्राह्मसमाजमुक्त—कुमारी। दोनोंके प्रेम-बन्धनमें सौरीनकी महत्वाकांक्षाने विघ्न डाल दिया। रेखाने सौरीनका रुद्ध मार्ग खोल दिया, परन्तु बिना रेखाके वह कुछ भी न कर सका। इस उपन्यासमें जहां प्रेमकी मन्दाकिनी प्रवाहित होती है, वहां साथही कर्तव्यकी धारा प्रबल-वेगसे वेगवती होकर बहती है और अन्तमें दोनों धारायें, लोक-सेवाके सागरमें जाकर विलीन हो जाती हैं। मूल्य १॥) रुपया मात्र।

## विधवा

रूढ़ियोंके गुलाम, हिन्दूसमाजमें धर्म का नाम लेकर निरीह विधवाओं पर कैसा भीषण अत्याचार हो रहा है और कुलीनताके पाखंडकी ओटमें संबलहीन देवी-स्वरूपिणी विधवाओंका धर्म बिगाड़ कर समाजके ठेकेदार, उन्हें वेश्यालयोंमें पहुंचा देते हैं, इसका इसमें बहुत ही करुणापूर्ण चित्र खींचा गया है। काशी-वासके नाम पर होनेवाले पापाचार और विधवाओंकी खरीद-फरोख्त और पण्डे-पुजारियोंके वीभत्स कृत्यों और समाज-पतियोंकी विचित्र धर्मव्यवस्थाको देख कर आपका हृदय कांप उठेगा। मू० ॥।)

## अभागिनी

उच्च-शिक्षा प्राप्त करके भी, हिन्दू-स्त्रियोंको समाजकी वेदी पर अपना बलि-दान करना पड़ता है! बड़ीसे बड़ी शिक्षा भी सामाजिक रूढ़ियोंके कारण, उनकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है। शिशिरकी मूर्खता और मिनतीकी प्रेम-निवाहकी घटना, इस लोकका नहीं, देवलोकका त्याग है। सिद्धान्त और पवित्रताके नाम पर—कैसा भयंकर त्याग किया जा सकता है, इसका जीता-जागता प्रमाण है। ऐसा ऊंचे दरजेका विद्वत्तापूर्ण उप-न्यास आपने अभी तक नहीं पढ़ा होगा। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य २)मात्र।

मिलनेका पता—

**दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अपने बुढ़ापेमें सुख शान्तिके लिये

अपनी आमदनी से थोड़ा बचा बचा कर

# इंडस्ट्रियल एन्ड प्रूडेंशियल एस्योरेन्स कम्पनी लि०

## में जमा करते रहो

विशेष विवरण जाननेके लिये यहांके आफिस

१२, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ताको

पत्र लिखिये



# कम खर्चमें सब रोग आराम

आयुर्वेदिक प्रणालीसे तैयारी ७ दवाइयोंका एक बक्स ४।) और १४ दवाओंका १४ शीशीका एक बक्स मूल्य ८)। प्रत्येक गृहस्थ अपने घरमें रखनेसे छोटी बड़ी सभी बीमारियोंसे बिना डाक्टर वैद्यके छुटकारा पा सकता है। अनुपान विधि रोगकी निदान प्रणाली साथ भेजी जाती है। सूचीपत्र मुफ्त मंगवाइये।

**इलेक्ट्रो आयर्बेदिक फार्मेसी**

कालेज स्ट्राट मार्केट, कलकत्ता।



# —हर मौसम में—

## सुगन्धित, शीतल

## मैसूर चन्दनका साबुन व्यवहार काजिये

यह साबुन शृङ्गार की सब सामग्रियों के अभाव की पूर्ति करता है। यह मैसूरके असली चन्दन से बना हुआ सर्वश्रेष्ठ साबुन है।

सोल एजेण्टसः—

**अमतलाल ओझा एण्ड कं० लि०,**

४ लायन्स रेञ्ज, कलकत्ता।



भारत गवर्नमेंट से

रजिस्टर्ड

# 'गांधी-लीवर'

गारण्टी ५ साल

यह घड़ियां नई फैशनकी हालही के जहाजमें विलायतसे बनकर आई हैं। इनका केस चित्रके माफिक दोनों तरफसे ढका रहता है इससे कांचके टूटने का डर नहीं है। केस इस का हमेशा सफेद रंगका रहता है खराब नहीं होता। घण्टा मिनिट और सेकेन्डके हरूफ अपने आप बदलते रहते हैं ऊपर घंटेका फिर मिनिटका और उसके नीचे सेकेण्डके हरूफ हैं। दाम—रिस्टवाच ७॥) यही पाकिट घड़ी ३॥) पैकिंग अलग, एक साथ तीन रिस्टवाच लेनेसे १ पाकिट घड़ी मुफ्त। पता—प्रिन्सली इण्डिया वाच कं० पो० ब० नं० १, कलकत्ता। आफिस—३६ क्लाइव स्ट्रीट।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# पढने योग्य कुछ ऐतिहासिक पुस्तकें

## मेवाड़-गौरव

मुगल-साम्राज्यकी भीषण विभीषिका जिस समय भारतके समस्त हिन्दू-राज्योंको हड़प करनेकी चेष्टा कर रही थी, उस समय मेवाड़ ही एक ऐसा प्रदेश था, जिसके राजा, प्रजा, बाल-वृद्ध-वनिता सभीने एकसे एक बढ़ कर बलिदान करके मरणोन्मुख हिन्दू जाति के मान-गौरवकी रक्षा की थी। कर्तव्यके लिये पिताओंने पुत्रोंको कत्ल किया था, मेवाड़ की रमणियोंने अग्निमें कूद कर हिन्दुत्वकी रक्षा की थी। इसमें उसी मेवाड़की कीर्ति-कलापोंका वर्णन है। दो संस्करण हाथोहाथ बिक गये। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १)

## महाराणा-प्रताप

जिस समय हिन्दू जातिपर मुगल-साम्राज्य-विस्तारका ग्रह लगा हुआ था और हिन्दू राजा-महाराजागण एकके बाद एक मुगल-सम्राटके सामने शिर झुकाकर आत्म-समर्पण कर रहे थे, तब महाराणा प्रताप ही एक ऐसे वीरव्रती थे, जिनकी हुंकार-ध्वनिसे मुगल-राजसिंहासन कांप उठा था! इस पुस्तकमें उन्हीं हिन्दूकुल-गौरव प्रातःस्मरणीय महाराणा-प्रतापकी कीर्ति-कहानी विशद रूपसे लिखी गयी है। समस्त घटनाओंका इसमें उल्लेख है। अनेक चित्रोंसे सुशोभित। मूल्य १) मात्र।

## पृथ्वीराज

पृथ्वीराज दिल्लीके अन्तिम हिन्दू सम्राट् थे। इसमें उन्हींके कार्यकलापोंका वर्णन है। भारत पर विदेशी विधर्मियोंके बहुत दिनोंसे दांत लगे हुए थे। दुर्भाग्यसे हिन्दुओंमें फूट पड़ गई और वे स्वार्थपरायणताके वशीभूत होकर एक दूसरेके प्राणोंके ग्राहक हो गये। अन्तमें गृह-शत्रुओंने विदेशियोंको निमन्त्रण देकर भारतमें बुला कर मातृभूमिको पद दलित कराया! यह उसी समयका भारतका रक्त-रंजित इतिहास है। अनेक रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई सफाई बढ़िया मूल्य १) मात्र।

पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ शंभू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रसराज द्राक्षासव

टानिकों का राजा

बड़ा बोतल २) छोटा बोतल १।)

## जितना पुरुषोंके लिये उपकारी है उतना ही स्त्रियों के लिये उपकारी है।

प्रत्येक स्त्राको प्रसूति के बाद रसराज द्राक्षासव का सेवन अवश्य करना चाहिये

जिससे प्रसुतिरोग, जीर्णज्वर और यक्ष्मा आदिसे बचें।

डिपो—१० इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।

---

STAR TRADE SKB MARK (REGD.)

स्टार ट्रेड माक

# डाबर (डाः एस, के, बर्म्मन) लिः

५० वर्षों से प्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेण्ट दवाओंका वृहत् भारतीय कार्यालय!

औषध

सेवन के पूर्व

## कोई ऐसा घर नहीं है जो-

### जूड़ी-ताप (Regd.)

(जूड़ी बुखार व ताप तिल्लीकी दवा)

### से परिचित न हो।

मैलेरिया तथा पारीके बुखारके लिये यह अचूक है। ३-४ खुराक पीते ही मैलेरियाके जीव मरकर बुखारका आना बन्द हो जाता है। इसके सेवन से खून गाढ़ा व दस्त खुलासा होता है। मैलेरियाके लिये इसके समान गुणकारी दूसरी कोई दवा नहीं है। नकली दवासे सावधान!

मूल्य—बड़ी शीशी ।।।≡) डा० म० ।।=) छोटी ।।-) डा० म० ।≡)

नोट—हमारी दवाएं सब जगह मिलती हैं। अपने स्थानीय हमारे एजेन्टसे खरीदते समय ष्टार ट्रेड मार्क और डाबर नाम अवश्य देख लिया करें।

औषध

सेवनके पश्चात

**विभाग नं० (२) पोष्ट बक्स नं० ५५४, कलकत्ता।**

सेलडिपो—(१) नं० ४, ताराचन्द दत्त ष्ट्रीट। (२) नं० २०१ हरिसन रोड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# सिपाही विद्रोह

## सन् सत्तावनके गदरका रोमांचकारी इतिहास

**सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्यमें कमी।**

**४) से घटा कर ३) किया गया और पुस्तक सजिल्द कर दी गयी।**

हिन्दीमें अपने ढंगकी सर्वथा अनोखी पुस्तक है। पहले संस्करणकी प्रतियां हाथोंहाथ बिक जाने पर दूसरा संस्करण निकाला गया है। इस पुस्तकमें आप ऐसी रोमांचकारी घटनाएं पढ़ेंगे कि आपको अनुभव होगा कि हम कोई उपन्यास पढ़ रहे हैं।

झांसीकी रानीने क्या किया, दिल्लीके बादशाहका क्या हुआ, कुंवर जगदीश सिंह कैसे वीरगतिको प्राप्त हुए, देहातोंमें क्या हुआ आदि बातें पढ़कर आप कहेंगे कि वास्तवमें पुस्तक संग्रहणीय है।

**सुन्दर कागज, बढ़िया छपाई, पक्की जिल्द।**

शीघ्र आर्डर देकर मंगा देखिये।

## मैनेजर—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी

१४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता।

# आपको और अधिक भटकना नहीं पड़ेगा!

**—ब्लाक—** **—छपाई—**

**नये या प्रयोगमें लाये हुए ब्लाकों के लिये हमें लिखिये।**

**नये ब्लाक बाजारकी अपेक्षा सस्ते दरमें हमसे लाजिये।**

प्रयोगमें लाये हुए ब्लाक भी बिलकुल नये हैं एक बारके ही छपे हुए हैं।

इन्हें प्रयोगमें लाकर ज्यादा खर्चसे बचिये।

मूल्य और पूरा विवरण शीघ्र मंगाइये।

**सादे तथा बहुरंगे चित्रोंका छपाई सस्ती और समयपर चाहते हों तो हमें लिखिये।**

**आपको पूर्ण सन्तोष होगा।**

आपके पास ब्लाक हो तो उसे भेजिये

—या—

हमारा ब्लाक लेना चाहते हों तो वैसा लिखिये।

मूल्य और पूरा विवरण शीघ्र मंगाइये।

## मैनेजर, विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# लेख-सूची


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १—मुक्ति ( कविता )—श्री जयकिशोर नारायण सिंह साहित्याचार्य-साहित्यालङ्कार ... | ३९३ |
| २—शस्त्रास्त्र बनानेवाले पूंजीपतियोंकी अन्तर्राष्ट्रीय गुप्त समिति ( सचित्र )—श्री धुरन्धर शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी० ... | ३९४ |
| ३—लेनिनके गुप्तवासकी रोमाञ्चकर कथा (सचित्र)—श्री जे० डी० अग्निहोत्री एम० ए० ( पैरिस ) | ४०१ |
| ४—एक गोरे दानवकी दृष्टिमें भारत ... | ४०७ |
| ५—भारतीय नृत्यकला और उसका पुनर्जागरण ( सचित्र )—हेमचन्द्र जोशी ... | ४१२ |
| ६—मेरा जीवन-चक्र—इलाचन्द्र जोशी ... | ४१७ |
| ७—विसर्जन ( कविता )—श्री 'कुमुद' विद्यालङ्कार | ४२५ |
| ८—दुनियाका सबसे धनी सूम ( सचित्र )—श्री बालकृष्ण गुप्त ( लन्दन ) ... ... | ४२६ |
| ९—वेश्या-समस्या—श्री गणेशदत्त शर्मा गौड़ "इन्द्र" | ४३० |
| १०—साम्यवादका आध्यात्मिक महत्त्व—श्री दुर्गाप्रसाद शुक्ल ... ... | ४३६ |
| ११—अभिनय ( कविता )—श्री देवीदयाल चतुर्वेदी "मस्त" ... ... | ४३८ |
| १२—भिखारी—श्री गोपीकृष्ण ... | ४३९ |
| १३—आत्महत्या—श्री रामनारायण 'यादवेन्दु' बी. ए. | ४४३ |
| १४—सौन्दर्यमयी ( कविता )—श्री नर्मदाप्रसाद खरे | ४४८ |
| १५—रूसी कविकी वसीयत—श्री अख्तरहुसेन रायपुरी | ४४९ |
| १६—उपवासका स्वास्थ्यसे सम्बन्ध—डाक्टर रविप्रतापसिंह श्रीनेत, साहित्यभूषण ... | ४५२ |
| १७—गीत—कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह ... | ४५६ |
| १८—क्रान्तिकारिणी महिला—इलाचन्द्र जोशी | ४५७ |



## ( प्रमेह ) सुजाक की हुक्मी दवा

## "गोनोकिलर"

मुरगा छाप
रजिस्टर्ड

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करनेके लिये गोनोकिलर एक ही ऐसी आश्चर्यजनक दवा है कि इसको इस्तेमाल करने से रोगीको कभी निराश होना ही नहीं पड़ता। डाक्टरोंकी दवाई और इञ्जेक्शन ( टीका ) लेकर परेशान हो गये हों, अंग्रेजी और अमेरिकाकी पेटेण्ट दवाओंमें फजूल ही पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मीद हो गये हों, तब आखिरी इलाज हमारा **"गोनोकिलर"** इस्तेमाल बेखटके कीजियेगा।

चाहे जैसा पुराना या नया सुजाक, पेशाबमें मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक रुक कर या बूंद बूंद आना, मूत्राशयके अन्दर घाव या सूजनका होना, स्वप्नदोष और धातुक्षीणता और **औरतों तथा मर्दोंको** इस किस्मकी तमाम भयङ्कर बीमारियोंको **"गोनोकिलर"** जड़से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोलीकी शीशी ३) डा० ख० अलग। हरेक दवाफरोशोंके यहां बिकता है।

**पता—डाक्टर डी० एन० जसानी, गिरगांव बैक रोड, बम्बई नं० ४**

कलकत्ता एजेण्ट—बी० ए० ब्रादर्स ११ नं० इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १९—श्रीमती सरोजिनी नायडूका पूर्व जीवन (सचित्र) श्री क्ष—त्र—ज्ञ ... ... | ४६३ |
| २०—आचार्य श्रद्धानन्दका तपोवन—श्री शङ्करदेव विद्यालङ्कार और श्री नरेन्द्रदेव विद्यालङ्कार | ४६७ |
| २१—भ्रान्त-पथिक ( कविता )—श्री 'अभिराम' | ४७४ |
| २२—महन्तजीका मन्दिर—श्री अवध उपाध्याय | ४७५ |
| २३—जासूसोंका भोजनालय—श्री विजनकुमार शर्मा | ४७८ |
| २४—सङ्गीत-सुधा ... ... | ४८१ |
| २५—पुस्तक-परिचय ... ... | ४८४ |
| २६—चयनिका ... ... | ४८७ |
| २७—समाज-दर्पण ... ... | ४९४ |
| २८—महिला-संसार ... ... | ५०० |
| २९—सिसकियोंका उपहास ( कविता )—श्री 'भारतीय आत्मा' ... ... | ५०६ |
| ३०—विज्ञान-चमत्कार ... ... | ५०७ |
| ३१—अन्तर्राष्ट्रीय ... ... | ५१० |
| ३२—सम्पादकीय ... ... | ५१४ |



हिन्दी-पाठकों के लिये भी छप कर तैयार हो गई !

* सन्तति-नियमन *

[लेखक—प्रो० र० धों. कर्वे, एम० ए० दिप्लोम् द् एत्युद् स्युपेरिअर ( पैरिस ) ]

१४० पृष्ठकी सचित्र पुस्तकका मूल्य ॥।)

डाकव्यय ।), इस पुस्तक के मराठी भाषामें पांच संस्करण हो चुके हैं।

अब इसका हिन्दी संस्करण भी अनुवादित होकर प्रकाशित हुआ है।

पता—राइट एजेन्सी,

बम्बई ४

STANISTREET ECZEMA OINTMENT

के पहले ही बारके लगाने से चुनचुनाहट दूर होकर आराम मिलता और तकलीफ मिट जाती है।

दवा लगाते रहिये, चाहे जितने दिनका पुराना एक्जिमा अथवा अन्य चर्म रोग क्यों न हो, नाम निशान न रहेगा, हमेशा के लिये जड़से आराम हो जायगा।

ऐसे बढ़िया और सुन्दर कार्यके लिये सिर्फ १) एक रुपया।

इस अद्भुत लाभदायक मलहमको डिब्बीमें खर्च कीजिये। याद रखिये कभी व्यर्थ न जायगा।

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कम्पनी लिमिटेड

पोष्टबक्स १७२, कलकत्ता।

SMITH STANISTREET & Co. Ltd.

Post Box 172 CALCUTTA.


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक :—
डा० हेमचन्द्र जोशी डी० लिट्
इलाचन्द्र जोशी

{ प्रति संख्या ॥=)
As. /10/- per copy.

भाग १, खण्ड २ जुलाई १९३३—आषाढ़ १९९० अंक १, पूर्ण-संख्या २०

# शुक्ति

सिकताकी सुकुमार सेजपर
खोल हृदयके कोमल द्वार।
मुक्त जननि! पड़ी तुम कबसे
फेनिल तटिनीके उस पार॥

मुक्त दिशायें, मुक्त समीरण
मुक्त पुलिन, औ' मुक्ताकाश।
केवल निज निर्मुक्त हृदयको
छोड़, मुक्त सब तेरे पास॥

भर, सुकुमार ऊर्मि-अंजलिमें
फेनोंके मोती जब प्रात।
बाल-हंसको दिखलाती है
चञ्चल सरिता पुलकित-गात॥

तब, तब मुक्ता-प्रभा अंतरमें
उठते चमक व्यथाके भार।
ओस-बिन्दु मैं कहूं उसे क्या,
आंसू या नीरव उपहार है
कहां, कमल-दलकी छायामें
अन्तरका संकोच-विकास।
कहां, रजत-फेनोंपर नीरव
और कहां वह वीचि-विलास॥
शुक्ति! शुक्ति! किस अनुपम निशामें
या मध्याह्न प्रातमें कौन
फेंक तुझे सिकताके तीरे
हुई वीचि अपनेमें मौन॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १९—श्रीमती सरोजिनी नायडूका पूर्व जीवन (सचित्र) श्री क्ष—त्र—ज्ञ ... ... | ४६३ |
| २०—आचार्य श्रद्धानन्दका तपोवन—श्री शङ्करदेव विद्यालङ्कार और श्री बीरेन्द्रदेव विद्यालङ्कार | ४६७ |
| २१—भ्रान्त-पथिक ( कविता )—श्री 'अलिराम' | ४७४ |
| २२—महन्तजीका मन्दिर—श्री अवध उपाध्याय | ४७५ |
| २३—जासूसोंका भोजनालय—श्री विजनकुमार शर्मा | ४७८ |
| २४—सङ्गीत-सुधा ... ... | ४८१ |
| २५—पुस्तक-परिचय ... ... | ४८४ |
| २६—वयनिका ... ... | ४८५ |
| २७—समाज-दर्पण ... ... | ४८७ |
| २८—महिला-संसार ... ... | ४९१ |
| २९—सिसकियोंका उपहास ( कविता )— श्री 'भारतीय आत्मा' ... ... | ४९६ |
| ३०—विज्ञान-चमत्कार ... ... | ४९७ |
| ३१—अन्तर्राष्ट्रीय ... ... | ५१० |
| ३२—सम्पादकीय ... ... | ५१४ |



हिन्दी-पाठकों के लिये अपूर्व उपहार

निम्न ग्रन्थ हैं :

* सङ्गीत-निबन्धावली *

लेखक—[illegible]

[illegible]

१४० पृष्ठकी सचित्र [illegible]

[illegible]

उक्त ग्रन्थका [illegible] सो शु-

द्धादिन होकर [illegible] है।

पता—मैनेजर [illegible],

चाँदपुर ।

STANISTREET
ECZEMA OINTMENT

के पहले ही बारके लगाने से चुनचुनाहट दूर होकर आराम
मिलता और तकलीफ मिट जाती है

दवा लगाते रहिये, चाहे जितने दिनका पुराना एक्जिमा अथवा अन्य
चर्म रोग क्यों न हो, नाम निशान न रहेगा, हमेशा के लिये जड़से
आराम हो जायगा।

ऐसे बढ़िया और सुन्दर कार्यके लिये सिर्फ १) एक रुपया।

इस अद्भुत [illegible] मलहमकी शिशीमें खर्च कीजिये। याद रखिये कभी व्यर्थ न जायगा।

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कम्पनी लिमिटेड

पोष्टबक्स १७२, कलकत्ता।

SMITH STANISTREET & Co. Ltd.

Post Box 172 CALCUTTA


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्वमित्र

वार्षिक मूल्य ६)
विदेशके लिए १२ शिलिंग

सम्पादक :—
डा० हेमचन्द्र जोशी डी० लिट्
इलाचन्द्र जोशी

प्रति संख्या ॥=)
As. /10/- per copy.

भाग १, खण्ड २ जुलाई १९३३—आषाढ़ १९९० वर्ष १, पूर्ण-संख्या १०

## शुक्ति

सिकताकी सुकुमार सेजपर
खोल हृदयके कोमल द्वार।
मुक्ताजननि ! पड़ी तुम कबसे
फेनिल तटिनीके उस पार॥

मुक्त दिशायें, मुक्त समीरण
मुक्त पुलिन, औ' मुक्ताकाश।
केवल निज निर्मुक्त हृदयको
छोड़, मुक्त सब तेरे पास॥

भर, सुकुमार उर्म्मि-अञ्जलिमें
फेनोंके मोती जब प्रात।
बाल-हंसको दिखलाती है
चञ्चल सरिता पुलकित-गात॥

तब, तव मुक्ता-प्रसू हृदयमें
उठते चमक व्यथाके भार।
ओस-बिन्दु मैं कहूं उन्हें क्या ?
आंसू या नीरव उपहार॥

कहां, कमल-दलकी छायामें
अन्तरका संकोच-विकास।
कहां, रजत-फेनोंपर सोना
और कहां वह वीचि-विलास॥

शुक्ति ! शुक्ति ! किस अशुभ निशामें
या मध्यान्ह प्रातमें कौन
फेंक तुझे सिकतापर धीरे
हुई वीचि अपनेमें मौन॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बने हृदय यदि अब बालाके
लिये मलिन कज्जलका कोष।
कभी न अपनी मूक-नियतिपर
करना तुम निधिहीने, रोष॥

वे तेरे मोती बनते थे
गाढ़ालिंगनमें व्यवधान।
किन्तु बनेगा कज्जल तेरा
नयनोंकी नीली मुसकान॥

—जयकिशोर नारायण सिंह साहित्याचार्य-साहित्यालङ्कार

---

# शस्त्रास्त्र बनानेवाले पूंजीपतियोंकी अन्तर्राष्ट्रीय गुप्त समिति

धुरन्धर शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०

युद्ध कोई नहीं चाहता। जनसाधारणको लड़ाईके नामसे घृणा होती है। समरमें मनुष्य पशु बन जाता है और अपने भाई मनुष्यका बध करना अपना धर्म समझता है। महायुद्धने संसारमें जो हाहाकार मचाया था, वह अब तक न भूला। सब राष्ट्रोंके कर्णधारोंके व्याख्यान सुनकर परिणाम निकलता है कि वे भी युद्ध नहीं चाहते। तब संसारसे शस्त्रास्त्रों और सैनिकोंका लोप क्यों नहीं होता? निरस्त्रीकरण परिषद्के सामने रूस स्पष्ट और ललकारपूर्ण शब्दोंमें प्रस्ताव रखता है कि संसारभरके शस्त्रास्त्र नष्ट कर दिये जायें। इससे अन्य राष्ट्र सहमत क्यों नहीं होते? इसका प्रत्यक्ष कारण दिखायी नहीं पड़ता। इसमें सन्देह नहीं कि राष्ट्रोंमें परस्परमें अविश्वास है। पर यह भी पक्की बात है कि यूरोपके राष्ट्र सैन्य-भारसे दबकर मर रहे हैं; इसलिए वे चाहते हैं कि जितनी जल्दी सैनिक व्यय घटे उतना ही उनका भार हलका होगा। लेकिन इस अवसरपर बड़ी बाधा आ खड़ी होती है और यह है 'संसारके शस्त्रास्त्रके कारखानोंके मालिकोंकी गुप्त समिति।' १९२१ में राष्ट्र-परिषद्ने हथियार बनानेवालोंकी जांच करनेके लिए एक कमिशन नियुक्त किया था। उसने अपनी रिपोर्ट में लिखा—(१) ये कारखाने राष्ट्रोंको युद्धके लिए उत्तेजित, अपने देशोंमें सैनिक नीतिका प्रचलन और उसे अपने शस्त्रास्त्र बढ़ानेके लिए बाध्य करते हैं; (२) हथियारोंके ये कारखाने स्वदेश और विदेशके सरकारी कर्मचारियोंको घूस दे-देकर अपनी ओर करते हैं; (३) वे भिन्न-भिन्न राष्ट्रोंकी स्थल और जलसैनिक तैयारियोंकी खबरें खूब बढ़ा-चढ़ाकर फैलाते हैं जिससे सब राष्ट्र इनसे खूब हथियार खरीदें; (४) इन्होंने संसारके मुख्य-मुख्य पत्र मोल ले रखे हैं और उनके द्वारा ये जनताकी सहानुभूति अपनी ओर करते हैं; (५) इनका सर्वराष्ट्रीय सङ्गठन है जो एक देशको दूसरेके विरुद्ध लड़ाता है, (६) इनके सर्व-राष्ट्रीय ट्रस्ट अपनी एकताके बलपर भिन्न-भिन्न सरकारोंसे मनमाना दाम लेते हैं। ये अभियोग तो इन पूंजीपतियोंपर लगाये गये, पर इनका प्रचण्ड प्रताप देखिये कि वे तथ्य छिपाये गये जिनका उक्त परिणाम निकला। उनके प्रकाशित होनेसे पता चलता कि भोली-भाली जनता अपनी सरकारों और नेताओंके हाथों किस प्रकार मारी जाती है। तो भी बीच-बीचमें इनका पाप फूट निकलता है और कुछ तथ्य हमारे सामने भी आ जाते हैं। हालमें चेकोस्लोवाकियाके शस्त्रास्त्रके प्रसिद्ध कारखाने स्कोडा वर्क्सका ऐसा ही भण्डाफोड़ हुआ था।

रूमानियाकी व्यवस्थापिका सभामें मो० गोगाने इस विषयपर प्रकाश डालते हुए कहा—"जनताके प्रतिनिधियो! आपको स्मरण होगा कि १९३० में हमारे देशमें सर्वत्र त्रास फैल गया था। सब पत्रों, सभाओं और बेसाराबियाके घर-घरमें एक ही चर्चा थी—यानी सबके मुंहसे यही आवाज आ रही थी कि रूसकी सेना बेसाराबियाकी सरहदपर जमा हो गयी है और आक्रमण हुआ ही चाहता है। उस समय देशभक्तिकी बाढ़ आ गयी थी और राजनीतिक संस्थाओं, परोपकारी समितियों, नारीमङ्गल-अनुष्ठानों आदिके डेलीगेट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सचिवों और अपने स्थानीय मेम्बरोंसे मिल रहे थे कि वे किस प्रकार सरकारकी सहायता कर सकते हैं। मैं भी चिन्ताग्रस्त हो गया और इस विषयपर निश्चित स्थिति जाननेके लिए प्रिन्स निकोलास तथा उच्च अधिकारियोंसे मिलनेकी चेष्टा करने लगा। बुखारेस्तके धर्मगुरुसे मिला तो वे मुसकराकर बोले—'गोगा महाशय, आप इतने बेचैन क्यों हैं। शान्त हूजिये। यह सब हलचल केवल इसलिए है कि हम स्कोडा कारखानेको कई अरबके हथियारोंका आर्डर देना चाहते हैं।' सज्जनो! तबसे मेरी आंखें खुलीं। उस समय देशभरकी सीधी-सादी जनताके साथ मैं भी उस भयङ्कर जालका शिकार बन गया। पर अब यदि कोई 'मेरे देशपर बाहरी शत्रुओंके आक्रमण' की खबर सुनाता है तो मैंने शपथ खा ली है कि बिना भली भांति जांच किये उसे सच्ची न समझूंगा।' उस समय स्कोडाको छ अरब लेईका आर्डर मिला। आज तक रूमानियन सरकारको पता नहीं है कि यह किसकी सम्मतिसे मिला; पर 'त्राहि त्राहि' के अवसरपर किसीसे परामर्श नहीं किया जाता। स्कोडा कारखानेका रूमानियामें प्रताप देखिये कि इसकी आज्ञासे कई जङ्गी अफसर फौजसे निकाले गये।

कई कारखानोंको 'स्वदेशी' का प्रचार करनेसे लाभ होता है। जो देश उद्योग-धन्धोंमें पिछड़े हुए हैं, वे स्वदेशीकी पुकार मचाने लगते हैं। उनके पिट्ठू पत्र और नेता उनके स्वरमें स्वर मिलाते हैं। ब्रिटिश साम्राज्यमें आज कल इसीलिए स्वदेशीका जोर है। भारतमें अंगरेजोंके गुलाम मिल-मालिक भी स्वदेशीके नामपर खूब फुदकते हैं। पर ऐसे भी उद्योगधन्धे हैं जिनमें स्वदेशीके लिए कम स्थान है। शस्त्रास्त्रोंका व्यापार इनमें है। इसमें प्रतियोगिताको बहुत कम स्थान है। फ्रान्सका कारखाना जी-जानसे कोशिश करता है कि जर्मन कारखानेका माल बिके और इसके लिए वह उसकी सब प्रकारसे सहायता करनेको तैयार है; क्योंकि यदि जर्मन कारखानेका माल जर्मनीमें अधिक बिका तो स्वभावतः फ्रेञ्च सरकार भयभीत हो जायेगी और वह आंख मूंदकर नये हथियार खरीदने लगेगी। इस प्रकार एक राष्ट्रकी शस्त्रास्त्रकी मांग संसारभरके कारखानोंकी बिक्री बढ़ा देती है। इस तथ्यको ध्यानमें रखकर हथियारोंके कारखानेवाले आपसमें मिल गये हैं और उन्होंने अपना ऐसा शक्तिशाली सङ्गठन कर लिया है कि उसे जानकर आश्चर्यमें मग्न होना पड़ता है। हथियार नर-संहारके अतिरिक्त बहुत कम काममें आते हैं। इनसे संसारका अपकार ही अधिक होता है। पर इससे क्या, इनका प्रचार तो बढ़ाना ही होगा। इसका एकमात्र साधन है नाना राष्ट्रोंमें द्वेष बढ़ाना और जनताके हृदयमें सदा आक्रमणका भय

---

* भारतके पूंजीपति हथियार नहीं बना सकते, पर देशकी निरक्षर और सरल स्वभाव जनताको ठगनेमें ये विदेशी पूंजीपतियोंको पाठ पढ़ाते हैं। यह सब जानते हैं कि म० गांधी कल-कारखानोंके शत्रु हैं और वे शुद्ध खद्दरका प्रचार चाहते हैं; पर कांग्रेसमें इन पूंजीपतियोंका बोलबाला होनेसे उन्होंने यह प्रस्ताव पास करा लिया है कि देशी मिलोंका कपड़ा पहनना निषिद्ध नहीं है। गांधीजी चाहते हैं कि भारतके दरिद्रनारायण खाली वक्तमें अपने हाथसे कपड़ा तैयार करके अपनी आवश्यकता स्वयं अपने हाथसे पूरी करें और इस प्रकार अपनी आय बढ़ायें। हमारे परम देशभक्त और राष्ट्रीय विचारापन्न मिल-मालिक चाहते हैं कि भारतके भूखे किसान गल्ला बेचकर इनकी मिलोंका कपड़ा पहनें और फलतः अपना पेट काटकर इन्हें अरबपति बननेमें सहायता दें। इस दृष्टिसे म० गांधी और उनके अनुयायी तथा ये पूंजीपति एक-दूसरेकी जड़ खोद रहे हैं; पर चमत्कार देखिये कि म० गांधी और ये धनी, जिनका एकमात्र और प्रकट धर्म श्रमजीवियोंको सदा दरिद्र रखना है, दूध और शक्करकी भांति घुल-मिल गये हैं। यह मेल इस चरम कोटिको पहुंच गया है कि ठगे जानेवाले निरन्न किसान भी इन पूंजीपतियोंको अपना परम मित्र समझने लगे हैं। पत्रोंमें रात-दिन इनकी ही महिमा छपती है और इनके त्यागकी तान छेड़ी जाती है। यह कोई नहीं प्रकाशित करता है कि इनके कारखानोंमें मजदूर किस प्रकार लूटे-खसोटे जाते हैं; यह भी कोई नहीं बतलाता कि इनकी अयोग्यता और कभी शान्त न होनेवाली धनलिप्साके कारण देशी कपड़ा हमें दूने और तिगुने दामोंमें मिल रहा है। भाग्यका प्रकोप देखिये कि इनकी दुर्बलताओंके कारण निर्दोष जनताको महंगे दाममें कपड़ा मोल लेना पड़ता है। ले०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जागृत रखना। यह उद्देश्य देशभक्तिके प्रचारसे सिद्ध होता है। इसलिए इनके पत्र देशभक्तिका प्रचार करते हैं। हिट्लरको इनसे सब प्रकारकी सहायता मिलती है; क्योंकि वह महायुद्धकी जननी अन्ध-राष्ट्रीयता और समर-प्राणताका प्रचार कर रहा है। जर्मनीमें ये हिट्लरकी पीठ ठोकते हैं तो फ्रान्समें अपने खरीदे हुए पत्रों द्वारा उसे ही अनगिनत गालियां देते हैं। पूंजीपति देशभक्त नहीं हो सकते, इसलिए हथियारोंके कारखानोंके स्वामी प्रचार तो देशभक्तिका करते हैं और स्वयं देशभक्तिको पाप समझते हैं। दक्षिण अफ्रीकाके बोर-युद्धमें डच बोरोंने विलायती बन्दूकोंसे अंगरेज सैनिकोंको स्वर्गका रास्ता दिखाया। महायुद्धमें दर्रे दानियालके खेतमें आस्ट्रेलियन और ब्रिटिश सैनिकोंकी पलटनोंकी पलटनें ब्रिटिश तोपों द्वारा कराल कालके मुंहमें चली गयीं।

१९२९ में मोरक्कोमें फ्रेञ्च शासनके विरुद्ध विद्रोह हुआ। अब्दुल करीम उसका नेता था। फ्रेञ्च पत्र उसकी बगावतपर लानत भेज रहे थे, उसपर गालियोंकी वर्षा कर रहे थे और देशभक्त नवयुवकोंको उसके विरुद्ध लड़नेके लिए उत्तेजित कर रहे थे; पर इन नवयुवकोंको यह देखकर स्तम्भित रह जाना पड़ा कि विद्रोही फ्रेञ्च हथियारोंसे सुसज्जित थे और ये 'स्वदेशी' शस्त्रास्त्र फ्रेञ्च सैनिकोंको मटियामेट कर रहे थे। मो० ज्यूल प्रोधोमने 'लेमांसिपासियों'में छापा था—"अब्दुलकरीम जब हारा तो मोरक्कोमें मशीन-गनें, गोली-बारूद और हवाई जहाज पकड़े गये, जो फ्रान्समें बने थे। पर इस घटनापर परदा डाल दिया गया।"

हम अभी लिख आये हैं कि हिट्लरको ये कारखानेवाले सहायता दे रहे हैं। इनमें फ्रेञ्च कम्पनी श्नाइडर किसीसे पीछे नहीं है। वह भी हिट्लरको आर्थिक सहायता देकर जर्मनीमें सामरिकता फैला रही है। ऐसे समय इस फर्मकी देशभक्ति छू हो जाती है। १९३० के 'ल जूर्नाल' पत्रमें छपा था—"यूरोप और अमेरिकाके नाना देश जूझ रहे हैं कि हिट्लरकी अधिकाधिक सहायता की जाये। उसे स्विट्जरलैण्डसे प्रतिवर्ष तीन लाख सोनेके फ्रैङ्क मिल रहे हैं, हालैण्डका प्रोफेसर फान बिस्सिङ्ग उसके पास लाखों फ्रैङ्क भेजता है, अमेरिकासे भी बेहिसाब डालर आ रहे हैं, और चेकोस्लोवाकियाके कई फर्म उसकी जेबें भर रहे हैं।" इसमें रहस्यकी बात यह है कि चेकोस्लोवाकियाका शस्त्रास्त्रोंका कारखाना स्कोडा वर्क्स, जो हिटलरकी जो-जानसे सहायता करता रहा है, फ्रान्सके हथियारोंके राजा श्नाइडरका है। और यह जर्मनोंकी राष्ट्रीयता और शक्ति बढ़ानेमें लगा हुआ है। पर बाहरसे देखनेमें यह पूंजीपति भारतके गांधी-भक्त धनियोंकी भांति परम देशभक्त और राष्ट्रीय मालूम होता है। फ्रान्समें इसके खरीदे हुए पत्र रात-दिन हिट्लरपर विष वमन करते हैं। यह है धनियोंका घोर नैतिक पतन कि दुधारी तलवारसे मित्र और शत्रु दोनोंका नाशकर अपनी जेबें भरनेमें मस्त हैं। हिट्लरकी नीतिसे संसारकी जो अपार हानि हो रही है उस ओर इनका ध्यान नहीं है। इन्हें तो जर्मन अन्ध-राष्ट्रीयतासे यह लाभ है कि संसारके सब राष्ट्र भावी आक्रमणकी आशङ्कासे अधिक हथियार खरीदेंगे। इस एक स्कोडा वर्क्सने १९३० में प्रायः साढ़े सात लाख राइफल, बहत्तर हजार छोटी और तेरह हजार बड़ी मशीनगनें, चौदह सौ तोपें और न मालूम कितने हवाई जहाज तथा सैनिक कारें बेचीं। युगोस्लाविया, रूमानिया, पोलैण्ड, स्विट्जरलैण्ड, यूनान, टर्की, ईरान, चीन, आर्जेण्टाइन, मेक्सिको, रूस आदि सब देशोंको ये शस्त्रास्त्र गये। इनके लिए 'स्वदेश' 'विदेश' का कोई अर्थ नहीं है। जहांसे धन पैदा कर सका, वहांकी सेना सुसज्जित कर दी।

हालके चीन-जापान-युद्धमें चीनी सैनिकोंके पास जापानी शस्त्रास्त्र हैं। हथियारोंके कारखानोंके मालिकोंको देशभक्तिसे बैर है और वे सहर्ष जापानके शत्रु चीनियोंके हाथ हथियार बेच रहे हैं। इसपर भी संसारभरमें इनका सम्मान है। ये राजा-तुल्य गिने जाते हैं और मजा देखिये कि फ्रान्सके राजा तृतीय नेपोलियनने क्रप कारखानेके मालिकको फ्रेञ्च लीजन आफ आनरके अफसरकी उपाधि दी थी। जर्मनीके भू० पू० कैसरने क्रपके मालिकको शाही घरानेमें सम्मिलित कर लेना चाहा था। पर उस बनियेको यह पसन्द न आया; क्योंकि राजवंशमें सम्मिलित होनेसे उसका खर्च बढ़ जाता और आय घटनेकी सम्भावना थी। लेकिन कैसरने उसकी कन्या बेटाका विवाह राजघरानेमें कर ही दिया। इसके अतिरिक्त इनमें एक विचित्र बात यह है कि संसारभरके कारखानेवाले कई तरहसे सम्बन्धित हैं।

*

इन कारखानोंमें मुख्य है विलायतका विकर्स-आर्मस्ट्राङ्ग्स। इसकी स्थापना १७९० में हुई थी और उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसकी नींव जार्ज नेलरने डाली थी। १८२९ में यह नेलर, इचिनसन, विकर्स एण्ड कम्पनी बन गया। १८६७ में यह लिमिटेड हो गया और इसकी पूंजी डेढ़ लाख पौण्ड कर दी गयी। पर केवल चार वर्षके भीतर ही इसकी पूंजी बढ़कर पांच लाख पौण्ड हो गयी अर्थात् चौगुनी बढ़ गयी। १८९२ में इसका भीषण आकार हो गया। इसने अपनी पूंजी कई गुना कर दी और शस्त्रास्त्रका पुराना कारखाना विलियम बियर्डमोर, विकर्स लिमिटेड खरीद लिया, ग्लासगोमें हथियारों-का बहुत बड़ा कारखाना स्थापित किया गया, शेफील्ड और एरिथमें भी कारखाने खोले गये और वालने द्वीपमें जलयानोंका

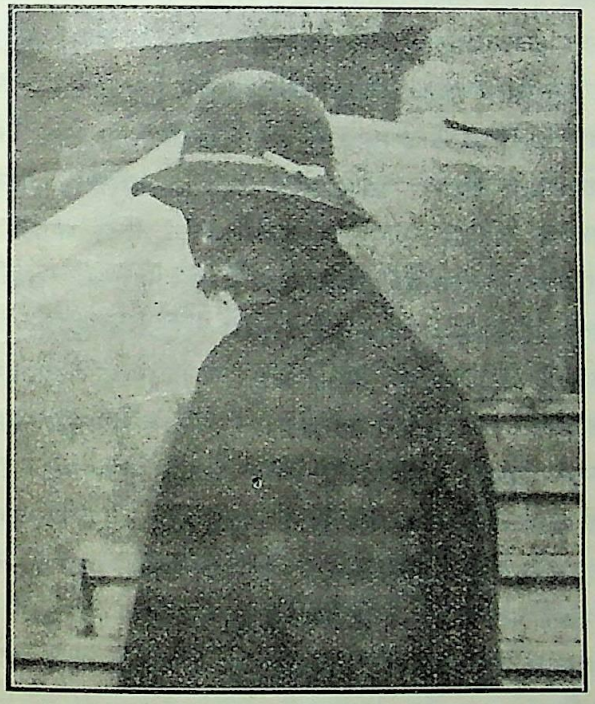

यूरोपका 'रहस्यमय अरबपति' जाखारोफ

कारखाना बनाया गया। इस कम्पनीने ब्रिटिश साम्राज्यमें क्रमशः अपना एकाधिपत्य जमाना चाहा। १८९७ में इस्पातसे मढ़े जङ्गी जहाजोंका महत्त्व मालूम हुआ तो इस कम्पनीने बैरोकी 'नेवल कनूस्ट्रक्शन एण्ड आर्मेमेण्टस कम्पनी' खरीद ली। इसके विकासमें इससे भी महत्त्वपूर्ण घटना 'मैक्सिम नार्देनफेल्ड गन्स एण्ड ऐम्युनिशन कम्पनी' का मोल लेना था। इस प्रसिद्ध कम्पनीमें, जो एक स्वीडन-निवासीने स्थापित की थी, उस समय वेसिल जाखारोफ सर्वेसर्वा बना हुआ था। यह जाखारोफ 'यरोपका मायावी मनुष्य' कहा जाता है। यह यूनानी, जो इस समय ब्रिटेनका सबसे धनी और शक्तिशाली मनुष्य है, एक सम्भ्रान्त अंगरेज महिलाके साथ नौकर बनकर विलायत आया था। उस समय जाखा-रोफको प्रति सप्ताह प्रायः दस रुपये मिलते थे। यह मजदूरी विलायत-जैसे देशमें नगण्य है। पर जाखारोफ एक ही चलता-पुरजा था और उसे नार्देनफेल्डने अपना सेलसमैन बना लिया। इस काममें जाखारोफने सभी गर्भस्थ पूंजीपतियोंकी भांति झूठ, मक्कारी, दगाबाजी और जालसाजीसे काम लिया। स्वभावतः उसकी इस नीतिने उसे चमका दिया और वह मैक्सिम नार्देनफेल्डका चीफ पार्टनर बन गया। यह जाखारोफ १८४९ में यूनानमें बहुत दुर्बल और निर्धन पैदा हुआ, पर उसकी शक्ति सदा बढ़ती गयी तथा आज वह 'सर्वशक्तिमान्' है। इस उच्चाकांक्षी और अदम्य उत्साही जाखारोफका विकर्स कम्पनीमें आना महत्त्वपूर्ण घटना थी। इससे पहले यह 'मैक्सिम गन' और नार्देनफेल्ड गन्स एण्ड ऐम्यूनिशन कम्पनियोंका मिश्रण कर चुका था। पाठक जानते ही होंगे कि हीरम मैक्सिमने बन्दूकोंके क्षेत्रमें अपने आविष्कारसे युगान्तर उपस्थित कर दिया था। इस मैक्सिम गनको जाखारोफने घर-घर पहुंचा दिया था। इसके बाद घोर युद्ध हुआ जिसमें इस कम्पनीकी बन आयी। इस अवसरपर इसने 'चुलसली टूल एण्ड मोटर कम्पनी' तथा 'एलेक्ट्रिक एण्ड आर्डनेन्स एक्सेसरीज कम्पनी' खरीद लीं। जब रूस-जापान युद्ध हुआ तो जाखारोफकी कम्पनियोंने रूसके हाथ भी माल बेचा और जापानको भी शस्त्रास्त्र दिये। इस मौकेपर जाखारोफने सेण्ट पीटर्सबुर्गके 'आयरन वर्क्स' और 'फ्रेङ्को-रशियन कम्पनी' से मेल कर लिया। धीमे-धीमे उसके पेटसे पांव निकलने लगे। इसी समय इसके एक कारखाने विलियम बियर्डमोर कम्पनी और फ्रान्सके श्नाइडरने मिलकर रेवलमें तोपों और जहाजोंका कारखाना खोला। बस, जाखारोफका व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय बन गया। रूस और फ्रान्समें उसके कारखाने हो गये और ब्रिटेनमें उसके दस कारखाने थे ही।

१९०१ में हार्वी युनाइटेड स्टील कम्पनीका सूत्रपात हुआ। इसने सारे संसारके शस्त्रास्त्रके कारखानोंका सङ्गठन कर दिया। उनका ट्रस्ट बन गया और उसमें ब्रिटेनके ही नहीं, जर्मनीकी क्रुप और डिलेङ्गन स्टाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कम्पनी, अमेरिकाकी कार्नेगी स्टील कम्पनी, फ्रान्सकी श्नाइडर, शातियों स्टील कम्पनी और सां शामों स्टील कम्पनी, इटलीका टेर्नी स्टील वर्क्स, सब इसके नीचे आ गये। १९१३ तक संसारभरमें इस हार्वी स्टील ट्रस्टका जलजला बड़ी-बड़ी महाशक्तियोंको अन्धा बना रहा था। इसके अतिरिक्त एक ट्रस्ट और था। 'नोबेल डाइनामाइट ट्रस्ट' भी शक्तिशाली था। इसका प्रधान था आलफ्रेड नोबल, जिसने डाइनामाइट बेच-बेचकर इतना नर-संहार करवाया था कि बुढ़ापेमें उसके दिमागमें सदा युद्धका दृश्य नाचता रहता था और वह नरमुण्डों, लोथों तथा रक्तकी नदियोंसे महाश्मशान बने हुए रणखेतकी कल्पना करके सोते-सोते स्वप्नसे चौंक उठता था। इस नोबेलने अन्तमें अपनी सारी आय साहित्य, ज्ञान-विज्ञान और शान्तिके लिए सवा-सवा लाख रुपयेके वार्षिक पुरस्कारमें लगाकर प्रायश्चित्त करना चाहा। मरते समय यह शान्तिके लिए लालायित रहता था, पर इसका डाइनामाइटका कारखाना नित्य अपना मुनाफा बढ़ा रहा है और नर-संहारपर तुला हुआ है। १९१४ में विलायतमें शस्त्रास्त्रोंके दो जबर्दस्त कारखाने थे। एक विकर्स और दूसरा आर्मस्ट्राङ्ग। विकर्स तो जर्मन फर्म क्रुप्ससे भी बहुत बड़ा था। इसकी शाखायें जर्मनीमें भी थीं। इसके कारखाने स्पेन, इटली, रूस, अमेरिका, जापान आदि देशोंमें थे। इसकी शक्ति उस समय भी सबको मालूम थी और युद्धसे पहले १९१४ में जब जलसेनाका बजट पास हो रहा था तो वाइकाउण्ट स्नोडन—जो उस समय फिलिप स्नोडन नामसे परिचित थे—ने बताया था कि विकर्स किस प्रकार संसारकी राजनीतिमें दखल देता है। १९१४ से पहले भी विकर्सके शेयरोंके दामोंकी घटबढ़से लोग अन्दाजा लगाते थे कि युद्ध अभी निकट है या दूर। आश्चर्य यह हुआ कि १९०९ से इसके शेयर चढ़ते गये और १९१४ में तो वे आकाश छूने लगे। उस समय कई बैङ्कों और सबसे अधिक सर बेसिल जाखारोफने इन कारखानोंके शेयर अपना लिये। विलायतके डेमाक्रेटिक यूनियनने इस विषयपर एक पुस्तिका निकाली है। इससे पता लगता है कि कई बड़े-बड़े लोगोंने, जिन्हें ब्रिटिश सरकारने शक्ति सौंप रखी थी, इन हथियारोंके कारखानोंके शेयर खरीद लिये। इस विषयमें लार्ड सैण्डहर्स्ट, राइट आनरेबल ल्यूइस हारकूर्ट एम० पी०, ए० जे० बालफूर और कर्नल पार्क्सके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। यह इसलिए सम्भव हुआ कि विकर्स कारखाने और ब्रिटिश सरकारका घनिष्ठ सम्बन्ध था और आज भी यह सम्बन्ध पूर्ववत् है। महायुद्धके समय सर बेसिल जाखारोफ और लायड जार्जमें दांतकाटी रोटी चलती थी। लायड जार्ज कुछ दिन तक तो शस्त्रास्त्र-विभागके मन्त्री रहे और फिर प्रधान मन्त्री बन गये। इसलिए जाखारोफ महायुद्धके समय 'संसारका सबसे शक्तिशाली' मनुष्य बन गया। अब यह प्रकट रहस्य है कि उसके प्रभावसे ही यूनान मित्र-राष्ट्रोंके पक्षमें आया। महायुद्ध समाप्त होने-पर सर बेसिल जाखारोफने अपनी गांठसे पानीकी तरह रुपया बहाकर यूनानमें मो० वेनीजेलोसको सर्वेसर्वा बना दिया। इस 'रहस्यमय मनुष्य' ने फ्रान्सके पक्षमें कई यूनानी पत्र कर दिये। इसलिए फ्रेञ्च सरकारने उसे 'लीजन आफ आनर' का अफसर बना दिया। महायुद्धके समय भी जाखारोफ अतुल धनशाली व्यक्ति था। संसारभरमें उसकी पूंजी लगी थी और नाना व्यवसायोंमें उसका हाथ था। पेट्रोलकी कलोंमें उसका रुपया फंसा था। सर्वराष्ट्रीय बैङ्कोंमें उसकी पूंजी खेल रही थी। जहाजी कम्पनियोंसे उसे लाभ हो रहा था और लोहेके कारखानोंमें वह अपनी सम्पत्ति बढ़ा रहा था। फ्रान्सके कई पत्र इसके रुपयेसे चलते थे और क्लेमांसो तथा ब्रियां इसके लंगोटिया यार थे। शस्त्रास्त्रोंके इस राजाको महायुद्धने अनेक महाशक्तियोंका सैनिक सर्वेसर्वा बना दिया। १९१७ में जब सन्धि-चर्चा छिड़नेकी सम्भावना दिखायी दी तो जाखारोफसे परामर्श किया गया और उसने अपनी स्पष्ट सम्मति दी—'अन्त तक महायुद्ध जारी रखा जाये।' फ्रान्स-के तत्कालीन ब्रिटिश राजदूत लार्ड बर्टीने अपनी डायरीमें २५ जून १९१७ की तारीखमें यह बात लिखी है।

महायुद्धके बाद भी इनका काम खूब चला। विकर्स सीनेकी कलें, नाव आदि भी बनाने लगा और सर आर्म-स्ट्राङ्ग व्हिटवर्थ लि० का भी क्षेत्र सारा संसार बन गया। इस समय इन दोनों फर्मोंको पुनर्सङ्गठनका ध्यान आया और इसीमें अपना भावी कल्याण दिखायी दिया। इन दोनोंके मेलसे जो कम्पनी विकर्स-आर्मस्ट्राङ्ग नामसे जगद्विख्यात है उसके नामसे बड़े-बड़े राष्ट्र कांपते हैं। पाठक हालकी वह घटना न भूले होंगे जिससे रूस और ब्रिटेनमें सम्बन्ध-विच्छेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हो गया। इसी कम्पनीके कुछ इञ्जिनियरोंको रूसी सरकारने रूसमें विद्रोह फैलानेके अभियोगपर गिरफ्तार किया था। इस समाचारने ब्रिटेनमें तहलका मचा दिया और ब्रिटिश सरकारने विकर्स-आर्मस्ट्राङ्गसके आदमियोंकी रक्षा करनेके लिए अपनी पूरी शक्तिसे काम लिया। यह है इस फर्मका जलजला। जबसे ये दोनों फर्म मिल गये हैं तबसे इसकी उन्नति बहुत तेजीसे हो रही है। पैंसठवीं वार्षिक मीटिङ्गमें इसके चेयरमैन सर हर्बर्ट लौरेन्सने कहा था—"हमारे स्थलके शस्त्रास्त्रोंमें बहुत उन्नति हुई है। कई ऐसी नयी शाखायें हमने पकड़ी हैं जिनका हम पहले नाम भी न जानते थे। इनको निभानेके लिए हमें खर्च भी यथेष्ट करना पड़ता है। इसके विशेषज्ञों और खोजमें बहुत रुपया व्यय होता है। किन्तु इन विभागोंसे हमें लाभ हो रहा है। यह इनकी ही बदौलत है कि हम हवाई आक्रमणको व्यर्थ कर देनेवाले हथियार, उनका आगमन बतानेवाले यन्त्र और नये-नये ढङ्गके टैङ्क बेचनेमें समर्थ हो रहे हैं। विकर्स-आर्मस्ट्राङ्गसने ही वह नया टैङ्क बनाया है जो जल और स्थलमें एक समान चलता है। .....यद्यपि हम और चीजें भी बनाते हैं, पर हमारा अस्तित्व हथियारोंकी बिक्रीपर ही निर्भर करता है।" इसके साथ ही सर हर्बर्टने ब्रिटिश सरकारको चेतावनी दी है। वह मधुर और शान्त शब्दोंमें होनेपर भी भयङ्कर है—"हमारे देशकी रक्षाके लिए यह आवश्यक है कि हमारी अधिकसे अधिक हथियार बनानेकी शक्ति बनी रहे। इसलिए यदि हमें अपने हजारों विचक्षणोंको संभाले रखनेके लिए यथेष्ठ आर्डर न मिलेंगे तो राष्ट्रीय सङ्कटके अवसरपर हम विपत्तिकी महत्ताके अनुसार अधिक हथियार बना सकेंगे—यह नहीं कहा जा सकता।" विकर्स-आर्मस्ट्राङ्गसको ब्रिटिश साम्राज्यमें ही काफी आर्डर मिल जाते हैं, पर इतनेसे उनकी भूख नहीं मिटती। भला किस पूंजीपतिका सर्वशोषी पेट अधिकसे अधिक आमदनीपर सन्तुष्ट हो जाता है? उसकी धनलिप्सा तो आय बढ़नेपर बढ़ती जाती है। इसलिए संसारभरमें विकर्स-आर्मस्ट्राङ्गसने शाखायें खोल ली हैं। इटलीमें इसकी 'सोसिएटा विकर्स' टर्नी, जापानमें काबूशिकि क्वैशा निहोन सैको-शो है। इसका प्रबन्ध जापानके संसार-प्रसिद्ध फर्म मित्सुईके अधीन है। कनाडामें 'विकर्स ट्रू कम्बश्चन एञ्जिन कारपोरेशन' है। कहा जाता है कि रूमानियामें इसके कई कारखाने हैं; क्योंकि सर हर्बर्ट लौरेन्स वहांके 'बैङ्क आफ रूमानिया' के डाइरेक्टर हैं। आयर्लैण्डमें 'विकर्स आयर्लैण्ड' लिमिटेड काम कर रही है, स्पेनमें 'सोसिएडाड एस्पान्योला द कान्स्ट्रुक्सियोन नावाल' और 'फ्राचेन्सिया द लास आर्मास' कम्पनी है। हालैण्डमें विकर्सका प्रसिद्ध विमानके कारखाने 'फाक्कर्स' से साझा है। इस फाक्कर्सके कारखाने युक्तराष्ट्र, अमेरिकामें भी हैं। हागमें 'नेदरलाण्डशे एङ्गलसे टेकनीसे हाण्डलसमीय' विकर्सका फर्म है। फान हाइस्टमें भी इसका कारखाना है। पोलैण्डमें इसने 'सोसिएटे पोलनैज द मातेरिऐल द गैर' में हिस्से खरीद रखे हैं। न्यूजीलैण्डमें 'विकर्स न्यूजीलैण्ड' लिमिटेड है।

यह भी पता चलता है कि इस फर्मका फ्रान्सके प्रसिद्ध श्नाइडर कारखानेसे साझा है; क्योंकि १९१७ में जब विकर्स और आर्मस्ट्राङ्ग एक हो गये तो शर्तनामेमें यह भी लिखा था कि विकर्स-आर्मस्ट्राङ्गसने विकर्ससे विकर्स-श्नाइडर फर्म भी खरीदा है। इस सूचीमें संसारके इन बड़े-बड़े कारखानोंका भी नाम दर्ज था—सोसिएटे आनोनीम ल निकैल, सो० आ० आसिऐर ए डोमीन द रेसीटा, सोसिएटे देताब्लिसमां मिनिऐर, आदि-आदि। केवल इतनेसे पाठकोंको इस कम्पनीके अप्रतिम बलका पता न चलेगा। ये कम्पनियां तो विकर्स-आर्मस्ट्राङ्गसकी अङ्ग हैं। और सैकड़ों कम्पनियां हैं जिनपर इस फर्मके सूत्रधारोंका प्रभाव है। सर हर्बर्ट लौरेन्स ग्लिन मिल्स एण्ड कम्पनीके मनेजर, बैङ्क आफ रूमानिया, दि सन इन्श्योरेन्स आफिस लि० और दि सन लाइफ एन्श्योरेन्स सोसायटीके डाइरेक्टर हैं। वे ओटोमान बैङ्ककी लण्डनस्थ शाखाके चेयरमैन भी हैं। इस फर्मके दूसरे डाइरेक्टर मेजर जनरल जी० पी० डौने फिनैन्शियल न्यूज-पेपर प्रोप्रायटर्स लि० और दि एकोनोमिस्ट लि० के डाइरेक्टर हैं। (इनके भाई कर्नल ए० जी० सी डौने सी० बी० ई०, डी० एस० ओ० निरस्त्रीकरण परिषद्के 'लैण्ड कमिशन' के मेम्बर हैं।)

*

फ्रान्समें श्नाइडर क्रायजोका कारखाना यही महत्त्व रखता है जो ब्रिटिश साम्राज्यमें विकर्स-आर्मस्ट्राङ्गसका है। चेकोस्लोवाकियाके 'स्कोडा वर्क्स' से इसका साझा है। इसलिए मध्य यूरोपमें इसका दौर-दौरा है। इसने महायुद्धके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समय और सन्धिके अवसरपर फ्रेञ्च सरकारसे अपनी मनचाही कारवाई करवायी। प्वांकारेकी सरकार इसके इशारोंपर नाचती थी। इसके प्रभावसे ही सार प्रदेश जर्मनीसे अलग कर फ्रान्सके "मैण्डेट' में रखा गया। इसका अध्यक्ष मो० फ्रांस्वा द वेण्डल है। यह सोशिए फ्रेञ्च चैम्बरका सदस्य और बैङ्क आफ फ्रान्सका एक डाइरेक्टर है। पैरिसके दो नामी राष्ट्रवादी पत्र 'जूर्नाल दे देवा' और 'ल तां' में इसके सबसे अधिक शेयर हैं। विकर्स-आर्मस्ट्राङ्गसकी भांति श्नाइडर भी यूरोपके बड़े-बड़े बैङ्कोंसे सम्बन्धित है। स्वयं इसके चैयरमैन यूजेन श्नाइडर 'बाङ्क द ल्यूनीयोन पारिसिऐन' का डाइरेक्टर है और यह बैङ्क हङ्गेरियन बैङ्क 'बाङ्क जेनेराल द क्रेदी औङ्गवा' का साहूकार है। इस बैङ्कके द्वारा ही स्कोडा वर्क्सपर श्नाइडरका अधिकार है। हङ्गरीको स्कोडा वर्क्ससे ही हथियार पहुंचाये जाते हैं। इस भांति फ्रेञ्च 'शस्त्रास्त्राधिपों' की पूंजीसे हङ्गरी सैनिक तैयारियां कर रहा है। इसके अतिरिक्त गत वर्षोंमें श्नाइडरने मेक्सिको, युगोस्लाविया, यूनान, जापान, रूमानिया, टर्की, बलगेरिया, माण्टेनेग्रो, रूस, आर्जेण्टाइन, स्पेन और इटलीको हथियार भेजे। शस्त्रास्त्रोंको उक्त देशोंमें बेचनेके लिए ऐसे बैङ्कोंके शेयर खरीदने पड़े जिनके आफिस उक्त देशों तथा फ्रान्समें भी हों। उदाहरणके लिए आर्जेण्टाइनको ही लीजिये। वहांके प्रसिद्ध बैङ्क "बाङ्क इपोटेकैर दार्जण्टीन' के दो डाइरेक्टर नायफिल्त्से और विलार, श्नाइडर फर्मके भी डाइरेक्टर हैं। मो० द नायफिल्त्से टर्कीके प्रसिद्ध बैङ्क 'ओटोमन बैङ्क' के भी डाइरेक्टर हैं।

ठीक जिस तरह विकर्सकी जापानी शाखा है, वैसे ही श्नाइडर भी जापानमें अपना जाल फैलाये हुए है। फ्रेङ्को-जैपेनीज बैङ्कके एक डाइरेक्टर सें सोवेर हैं। अब देखिये दैवसंयोगको कि ये भद्रपुरुष यूजेन श्नाइडरके रिश्तेदार हैं। फरवरी १९३२ में श्नाइडर कारखानेके प्रसिद्ध अङ्ग क्रायजोके प्रतिनिधि पोल फोरेने फ्रेञ्च चैम्बरमें कहा था—"जिस प्रकार युद्धसे पहले फ्रेञ्च ऋणने टर्कीको इस योग्य बनाया था कि वह अपनेको फ्रेञ्च शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित करे और इन हथियारोंसे टर्कीने हमारे सैनिकोंका संहार किया था, उसी तरह अब हमारे दिये हुए ऋणसे बलगेरिया, मेक्सिको, यूनान, जापान, हङ्गरी, युगोस्लाविया, रूमानिया, पोलैण्ड आदि देश एक ओर हमसे ऋण ले रहे हैं, दूसरी ओर उसी धनसे हमसे हथियार खरीद रहे हैं।" श्नाइडर फर्मका जोर देखिये कि इस बारके चुनावमें उसने पानीकी तरह रुपया बहा दिया और पोल फोरेको धता बता अपने प्रतिनिधिको क्रायजोसे फ्रेञ्च चैम्बरके लिए भेजा है। सच है—"हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।" ये पूंजीपति अपने धनके प्रतापसे सत्यका मुंह बन्द कर देते हैं।

*

स्कोडा वर्क्स इतना बड़ा है कि चेकोस्लोवाकियाका कोई कोना नहीं है, जहां इसका कारखाना न हो। पिलसनमें इसकी तोपें, बारूद और टैङ्क बनते हैं तो बोलोवेचमें जांच-पड़तालका यन्त्रागार है। प्रागमें हवाई जहाज बनते हैं और ब्रनोंमें इसका तोपखाना है। महायुद्धसे पहले यहां एक छोटा मरम्मतगाह था जिसमें दो अढ़ाई सौ मजदूर काम करते थे। इस समय यहां बहुत बड़ा कारखाना स्थापित हो गया है, जिसमें दस हजार मजदूर काम करते हैं। इस वर्क्समें जहरीली गैस भी बनती है। मारीनबर्ग और आसेमें इसके नाइट्रोजन वर्क्स हैं और ओलोमूचमें युद्ध-सम्बन्धी रासायनिक कारखाना है। इसका प्रसार देखिये कि रूमानिया और पोलैण्डमें भी इसके कारखाने हैं। वारसामें इसके विमानोंके एञ्जिन बनते हैं और यह पोलस्किये त्साक लादी स्कोडाका मालिक है। यह बात ध्यानमें रखनेकी है कि स्कोडापर फ्रेञ्च फर्म श्नाइडरका अधिकार है। इसका प्रबन्ध करनेके लिए एक विशेष कम्पनीका अनुष्ठान किया गया, जिसका नाम है, 'यूनियों योरोपेऐन आंदुस्त्रिऐल ए फिनांसिऐर।' इस फ्रेञ्च कम्पनीके 'डेबेञ्चरों'-की रजिस्ट्रार और ट्रस्टी विलायती कम्पनियां हैं। ऐलाइड इन्वेस्टमेण्टस कारपोरेशन और रायल एक्सचेञ्ज एन्श्योरेन्स ये काम करते हैं। इन डेबेञ्चरोंको १९२० में ५ सैकड़ा मुनाफा मिलता था, १९२६ में १६ सैकड़ा और १९३० में यह बढ़कर साढ़े अट्ठाईस सैकड़ा हो गया।

*

जापानका प्रसिद्ध मित्सुई फर्म उक्त देशको शस्त्रास्त्रके लिए किसीका मुंह नहीं ताकने देता। मित्सुई संसारभरमें

( शेष पृष्ठ ४८६ में देखिये )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# लेनिनके गुप्तवासकी रोमाञ्चकर कथा

श्री जे० डी० अग्निहोत्री एम० ए० ( पैरिस )

पैरिसके सोंयारनास मुहल्लेमें कई काफे हैं जिनमें नाना-मत और नाना देशोंके लोग रात-दिन अड्डा जमाये रहते हैं। यहां अमेरिकाके धनी करोड़पति धरना दिये रहते हैं और दरिद्रतम चित्रकार सोने तथा सर छिपानेके लिए अन्य स्थान न होनेपर भी इन्हींमें महीनों काट जाते हैं। जब तक बैठ सके बैठे रहे और अपने परिचितोंसे गपशप लड़ाते रहे और जिस समय नींदने जबर्दस्त जोर बांधा तो टेबलपर सर रखकर मीठी नींदमें मस्त हो गये। धन्य हैं ये काफे-घर, जो प्रातः काल तीनसे चार तक एक घण्टा सफाईके लिए बन्द होते हैं, क्योंकि गृहहीनों और निराश्रयोंके ये आश्रय हैं। मेसिडोनियाके उग्र राष्ट्रवादी, अत्याचारियों द्वारा विताड़ित होकर इनके कारण पापी पेटकी ज्वाला सस्तेमें बुझाते हैं और वहीं सबके सामने सो भी लेते हैं; रूमानियाके प्रजातन्त्रवादी, डेनमार्कके कम्यूनिस्ट, हालैण्डके साम्यवादी आदि सबके विश्रामस्थान यहीं हैं। इनमें ही कभी लेनिन भी बैठता था और उसका गरम तथा उपजाऊ मस्तिष्क रूसमें बोलशेविज्म फैलानेके लिए भांति-भांतिके षड्यन्त्र रचता था। कुछ चेले-चांटी उसके साथ थे और आज भी 'लेनिनका कोना' सबको दिखाया जाता है। इसी प्रकार जूरिच, लण्डन आदिमें भी स्थान हैं जहां क्रान्तिकारी लेनिन भूख-प्यासको धता बताकर अपने घोर दरिद्र दिन काटता था। उस सङ्कटके समय उसे अन्य अनेक चिन्ताओंके साथ इस बातकी भी बड़ी फिक्र रहती थी कि अपनी कारस्वाई गुप्त कैसे रखी जाये। लेनिन जारकी सरकारका परम शत्रु था और टालस्टायके सिद्धान्तके विरुद्ध वह अहिंसा तथा सत्याग्रहपर नाममात्र भी विश्वास न करता था। उसका स्पष्ट मत था कि सशस्त्र क्रान्ति ही रूसका उद्धार कर सकती है। इसलिए रूसी पुलिसने पूरी चेष्टा की कि उसकी गतिविधिका रत्ती-रत्ती निरीक्षण करे, परन्तु उससे छिपा रहना यह भी लेनिनने अपना परम धर्म समझा।

व्लादिमीर इलिच (लेनिन) साम्यवादका प्रकाण्ड पण्डित था, अपने दलका माना हुआ नेता था, पर इन सबसे अधिक था वह गुप्त षड्यन्त्रकारक। उसकी पत्नी क्रूपस्काइयाने लिखा है—"हमारे दलमें लेनिनके समान गुप्त चक्र रचनेवाला कोई दूसरा न था। वह ऐसी दोरुखी चाल चलता था कि जारके जासूसोंकी अक्ल दङ्ग रह जाती थी। उसने हमें उस स्याहीसे लिखना सिखाया जिससे कागज सादा रह जाता है और जरा गरम करनेपर अक्षर उठ आते हैं। उसने अपना अलग 'कोड' बना रखा था और अपने दलवालोंकी सुगमताके लिए भांति-भांतिके चिह्न बना रखे थे।" यह बात १९०३ से पहलेकी है। उस समय इस विषयपर स्वयं खुफिया विभागका ज्ञान इन विषयोंपर बहुत साधारण था। पर इन क्रान्तिकारियोंको रूससे सम्बन्ध रखना था और इनके पत्र रास्ते हीमें पकड़ लिये जाते थे, इसलिए इनका काम बिना छद्मवेशके नहीं चल सकता था। इसलिए इनका जीवन छल-कपट और प्रपञ्चमय बन गया। अपने पत्रोंमें ये सदा अपने कोडके अनुसार लिखते थे। पासपोर्टके लिए ये 'रूमाल' शब्द काममें लाते थे; गुप्त राजनीतिक साहित्यके लिए 'गरम पशम', ओडेसाके लिए ओसिफ, ट्वेर नगरके लिए 'टेरेन्स' पसकोफके लिए 'पाशा' लिखते थे। स्त्रियोंके नाम पुल्लिङ्ग और पुरुषोंके स्त्री-लिङ्ग-वाचक रखे गये थे। क्रूपस्काइयाका कहना है कि आज हम समझ रहे हैं कि हमारा उस समयका कोड कितना अपूर्ण था, पर तब इसने बहुत काम दिया और हमारे कई पत्र रूस तक पहुंच ही गये। ओखराना (पुलिस-विभाग) के मुखिया भी उस समय इतने उन्नत न हुए थे कि हमारी चालबाजियोंको भली भांति समझते।

१९०५ में तिफलिसमें एक क्रान्तिकारी पकड़ा गया। उसके पास कई पत्र मिले। इनमें आलू, अखरोट, चीनाबादाम आदिके खरीद-फरोख्तका जिक्र था, पर वह सन्दिग्ध व्यक्ति फल-फूल कुछ भी नहीं बेचता था। इसलिए ओखरानाको सन्देह हुआ कि इसके पत्रमें ये शब्द कैसे आये। बहुत सरपच्ची की गयी और अन्तमें मालूम हो ही गया कि 'आलू' का अर्थ बम है—(रूसी क्रान्तिकारी बहुधा बमके लिए 'सन्तरा' शब्द काममें लाते थे) अखरोटका अर्थ है बन्दूककी गोलियां



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और चीनाबादाम रिवाल्वरकी गोलियोंके लिए काममें लाया जाता है। पर विभागके सबसे बड़े अफसरने इस अर्थकी हंसी उड़ायी और अर्थ निकालनेवालोंसे वह कहने लगा—"तुम पागल हो जो इतनी दूरकी कौड़ी लाये हो। भला आलू और बमका क्या मेल।" इसपर उक्त सन्दिग्ध छूट गया। फिर तहकीकात शुरू हुई और बादको सिद्ध हो गया कि उक्त अर्थ ठीक था। सन्दिग्धकी फिर तलाश हुई और वह इस बीच अवसर पाकर न मालूम कहां भाग गया और लापता हो गया। पुलिस बरसों तक उसकी खोज करती रही और वह विदेशोंमें काम करता रहा। इस प्रकार उस समयका लेनिनका सीधा-सादा कोड कई क्रान्तिकारियोंको बचानेमें समर्थ हुआ।

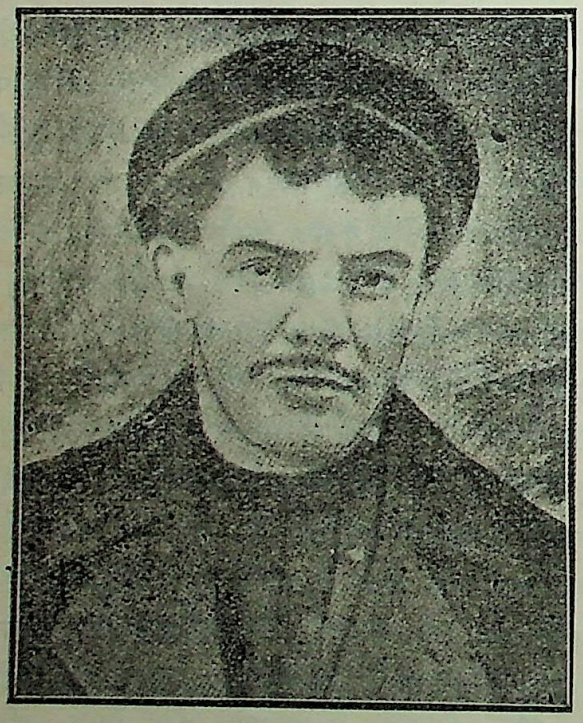

लेनिन—गुप्त-वेषमें

लेनिनका ध्यान छोटी-छोटी बातोंकी ओर बहुत रहता था। उसका मत था कि क्रान्तिकारी छोटी बातोंको नगण्य समझनेके कारण पकड़े जाते हैं। जो लोग गुप्त षड्यन्त्रमें लगे हैं उन्हें कोई भी बात छोटी न समझनी चाहिए। जरा भूल की कि ओखरानाकी नजरोंमें पड़ गये और फिर पोल खुलनेमें देर नहीं लगती। उसने अपने दलके सब मेम्बरोंको बार-बार इस विषयपर सचेत किया और उन्हें यह समझाया कि साङ्केतिक भाषामें लिखे गये पत्रोंको पढ़ने और लिखनेमें चाहे जितना समय लगे, पर बिना कोडके शब्दोंका भलीभांति अर्थ लगाये और एक-एक शब्दका तात्पर्य समझे न तो बाहरका पत्र बन्द करना चाहिए और न अपना पत्र बाहर भेजना चाहिए।

यही नहीं, लेनिन भेस बदलनेमें भी सबका उस्ताद था। कोई रूप ऐसा न था जो उसने न धरा हो और सदा यह चेष्टा की कि जिस देशमें जिन लोगोंके साथ रहना हो उनका-सा रूप-रङ्ग बनाया जाये। सदा-सर्वदा उसका एक ही उद्देश्य रहता था कि पुलिसकी नजरोंसे बचा जाये। उसके समान जाज्वल्यमान क्रान्तिकारियोंको किसी भी देशकी पुलिस तङ्ग कर सकती थी, इसलिए लेनिनको ऐसे भेस रखने पड़े कि उसे ढूंढ़ना कठिन हो जाये। कभी रूसी है तो कभी जर्मन और कभी फ्रेञ्च है तो कभी अंगरेज। आज डाढ़ी रखी तो कल कर्जन फैशन, और एक बार गलमोछ हैं तो दूसरी बार केवल मूंछ। लेनिनने अपना नाम बीसियों बार बदल डाला। इन क्रान्तिकारियोंको अपने आपसमें भी झूठे नाम देने पड़ते थे, क्योंकि क्या पता कौन पुलिसका आदमी हो। लेनिनकी गुप्त रहनेकी प्रवृत्तिका खासा उदाहरण यह है कि पच्चीस साल तक उसके अन्तरङ्ग मित्रों तकको पता न था कि लेनिनका असल नाम व्लादिमीर इलिच था। जब वह १९१७ के फरवरी मासमें रूस पहुंचा तो कुछको इस नामका बोध हुआ और उसी सालके अक्टूबर मासमें जब रूसमें बोलशेविकोंकी विजय हुई तो उसके नामका सबको ज्ञान हुआ। अपनी छात्रावस्थामें जब वह क्रान्तिकारियोंके साथ काम करता था तो उसने कई नाम बदले। कई लोग उसे निकोलास पेत्रोविच नामसे जानते थे और कई स्टारीक नामसे। उस समय वह 'नोवोइए स्लोवो' नामक पत्रमें कभी टूलीन, कभी व्लादिमीर ईलीन और बाज वक्त कार्पोफ नामसे लिखता था। जब लेनिन विदेश आया तो उसे जाली पासपोर्टोंसे काम चलाना पड़ा। इनमें भी प्रतिवर्ष नये-नये नाम रहते थे। लेकिन इस सावधानीमें भी वह दो-चार बार पकड़ा गया। एक घटना जानने योग्य है। क्रियाजेवने अपने संस्मरणमें लिखा है—"१८९३ में मेरी दादी मर गयी। मैंने अपनी मित्रमण्डलीसे सलाह की कि किस प्रकार देश पहुंचा जाये और उसकी सम्पत्ति अपने हाथमें की जाये। इसमें कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



षड्यन्त्र नहीं था, क्योंकि दादी अपनी सारी जायदाद मेरे नामपर छोड़ गयी थी। मित्रोंने मुझे वी० आइ० उलियानोफ नामके एक वकीलसे मिलनेकी सलाह दी, पर मुझसे कहा कि उसका पता मुंहसे याद कर लो, लिखो मत। मैं ढूंढ़ते-ढूंढ़ते कजाक स्ट्रीटमें पहुंचा और वहां १३ नम्बरपर पहुंचकर घण्टी दी। मकान-मालकिनने दरवाजा खोला और बोली कि उलियानोफ अभी घर नहीं आया; पर अभी आता ही होगा। आप थोड़ा इन्तजार करें। वह मुझे उसके कमरेमें ले गयी और हम बातचीत करने लगे। कमरा छोटा था। केवल दो

लेनिन—जौलाइ १९१७ की क्रान्तिके समय पुलिसने लेनिनका यह चित्र उसकी गिरफ्तारीके लिए सर्वत्र 'सरकुलेट' कर दिया था।

खिड़कियां उसमें थीं। लोहेका एक पलंग, एक पुराना मेज और तीन-चार कुर्सियां इसकी शोभा बढ़ा रही थीं। कमरेका यह हाल देखकर मैं पूछने हीको था कि भला, ऐसा दरिद्र यह कौन-सा वकील है और क्या उसका काम कुछ चलता भी है? इतनेमें घण्टी बजी और कुछ ही देरमें ऊंची बाढ़वाला काला टोप पहनकर एक आदमी आया और कमरेमें कदम रखते ही बोल उठा—'ओह! आप मेरा इन्तजार कर रहे हैं!' इतनेमें उसने ओवरकोट उतारा और अपनी पोशाकपर हाथ फेरता हुआ बोला—'क्षणभर ठहरनेकी कृपा कीजिये। मैं कपड़े बदलकर आ ही पहुंचा।' पर उसकी सूरत देखकर मैं फौरन ताड़ गया कि यह तो निकोलास पेट्रोविच है। जब वह वापस आया तो मैंने उससे कहा—'भाई! तुम तो निकोलास हो, पर मुझे मित्रोंने उलियानोफ वकीलके पास परामर्श करनेके लिए भेजा है।' मेरी बात सुनकर लेनिन स्तब्ध रह गया और बोला—'चुप रहो! तुम बड़े ताड़बाज हो। मेरा नाम ही उलियानोफ वकील है। बाहर जाकर किसीसे मत कहना कि तुम निकोलास पेट्रोविचसे मिले थे।' उसने मुझे उचित सलाह दी और उसी दिन अपना डेरा बदल दिया।" इस एक घटनासे मालूम होता है कि लेनिन कितने छद्मवेशोंमें और किस सतर्कताके साथ अपना गुप्त जीवन बिताता था, लेकिन इसपर भी कभी-कभी उसकी पकड़ हो जाती थी।

नादेज्दा कोनस्टाण्टिनोवना क्रूपस्काइयाने अपने संस्मरणोंमें १९०१-१९०२ के लेनिनके गुप्त जीवनपर प्रकाश डाला है। उस समय वह म्यूनिच नगरमें रहता था और 'इस्क्रा' पत्र निकालता था। उसने लिखा है—"मुझे लेनिनसे मिलना था। पूछनेपर पता न चला कि वह कहां रहता है। नगर तकका पता न मिला। मैं यों ही सन्देहमें प्राग पहुंची और समझी कि वह वहां मोद्रात्सेक नामसे रहता है। मैं चौतल्लेपर चढ़ी। सफेद लिबासमें लिपटी हुई एक चेक महिलाने किवाड़ खोला। मैंने कहा—'मैं मोद्रात्सेक, हर मोद्रात्सेकसे मिलना चाहती हूं।' एक मजदूर मेरे पास आया और गुर्राती हुई आवाजमें बोला—'क्या काम है? मोद्रात्सेक मैं हूं।' उसे देख मेरे होश ठिकाने न रहे और भयभीत होकर मैं तुतलायी—'नहीं! नहीं!! आपको नहीं, मैं अपने पतिको खोजने आयी थी।' मियां मोद्रात्सेक भी अपने दलका ही था। वह समझ गया। उसने कहा—'ओह! सम्भवतः आप हर रिटमायरकी पत्नी हैं। वह म्यूनिचमें रहते हैं। लेकिन वह आपको मेरे मार्फत पत्र और पुस्तकें भेजेंगे।' सारे दिन मैं मोद्रात्सेकके साथ रही। मैंने उसे रूसके साम्यवादियोंकी दशासे परिचित कराया और उसने मुझे आस्ट्रियाकी हलचलका हाल बताया। शामको मैं म्यूनिचके लिए रवाना हुई। वहां पहुंचनेपर देखा तो सब लोग गरमियोंके कपड़े पहने हैं और मैं पशमके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कपड़ोंसे मढ़ी हुई हूं। अस्तु, मैंने अपना सामान स्टेशन-बाबूके सिपुर्द किया और ट्राममें सवार होकर हर रिटमायरकी खोजमें निकली। मकान मिला तो देखती क्या हूं कि उसमें बियरखाना है। मैं सीधे मालिकके पास गयी और डरते-डरते हर रिटमायरका पता पूछा, क्योंकि मुझे भय था कि कहीं लेनिन यहां भी न हो। इसपर उसने उत्तर दिया---'क्या काम है। मैं ही तो रिटमायर हूं।' मैं हक्कीबक्की रह गयी। मैंने कहा---'नहीं, मैं अपने पतिको ढूंढ़ती हूं।' अब यह हाल कि दोनों एक-दूसरेको घूर रहे हैं, पर किसीके मुंहसे शब्द नहीं निकलता। ठीक इस सङ्कटके अवसरपर रिटमायर-की घरवाली आ गयी और मुझे देखकर बोली---'ठीक है! ठीक है!! यह हर मायरकी स्त्री है। उसकी पत्नी साइबी-रियासे आनेवाली थी और वह उसकी बाट कई दिनोंसे जोह रहा है। आइये, आइये, मैं आपको उसके पास पहुंचा दूंगी।' मैं चुपचाप फ्रौ रिटमायरके पीछे हो ली। वह मुझे एक प्रकाण्ड भवनमें ले गयी। सारा मकान खाली पड़ा था, पर जिस दरवाजेके सामने हम खड़े हुए उसे खोलकर व्लादिमीर इलिच, और उसकी बहन आन्ना इलिनिचना निकल आयीं। मेरे क्रोधका ठिकाना न था। मैं फ्रौ रिट-मायरको धन्यवाद देना भूल गयी और लगी लेनिनको झंझोड़ने---'अरे कम्बख्त! तेरा नास जाये। तुझ बेशरमने मुझे दो शब्द न लिखे कि मैं तुझे किस स्थानमें मिल सकती थी। तुझे क्या कुछ मालूम है कि मैं भटकते-भटकते किन मुसीबतोंको पार करती हुई यहां पहुंची हूं।' लेनिनने शान्त-भावसे मुसकराकर उत्तर दिया---'क्या? क्या मैंने तुझे पत्र नहीं लिखा? मैं प्रतिदिन तीन-तीन बार स्टेशनपर जाकर वापस फिर रहा हूं। तू आती कहांसे है?' तब मालूम पड़ा कि लेनिनने जिसके हाथ किताबके भीतर डालकर पत्र दिया था उस बन्धुने वह ग्रन्थ अपने ही पास पढ़नेके लिए रख लिया था।

"उस समय लेनिन, मार्तोफ और पेत्सोरोफके पास बाकायदा पासपोर्ट था, पर लेनिनको कूटनीतिकी दृष्टिसे यही उचित जंचा कि अपना पासपोर्ट दूसरे रूसियोंको दे दे जो निषिद्ध क्रान्तिकारी साहित्य रूस तक पहुंचायें और स्वयं मायरका पासपोर्ट लेकर रहे। अभी तक लेनिनने म्यूनिचकी पुलिसको अपना पता न दिया था। रिटमायर यह सब जानता था, पर वह भी साम्यवादी था और उसने जानबूझ-कर उसे वहां छिपाकर ऐसे स्थानमें टिका रखा था, जहांका पता स्वयं पुलिसको लगना बहुत मुश्किल था। इसके बाद हमने फिर पासपोर्ट बदला। एक बलगेरियन डाक्टर इओर्डानोफका पासपोर्ट हमें मिला और मैं इस डाक्टरकी पत्नी मारित्सा बन गयी। इसके बाद हमने पुलिसको सूचना दी और मजदूरोंके मुहल्लेमें एक कमरा लेकर रहने लगे। हमने यहींसे 'इस्क्रा' पत्रका काम चलाया। रूससे हमारे लिए जो पत्र आते थे, वे पहले जर्मनीके नाना नगरोंमें भिन्न-भिन्न मनुष्योंके पतोंपर आते थे और वे उन्हें हमारे पास भेजते थे। हमारे साथ आन्ना स्मिडोविच लेमान भी काम करती थी। रूसकी डाकपर उसका ही नाम रहता था। एक बार उसके नामपर रजिस्ट्री पार्सलसे एक तकिया पहुंचा। उसने समझा कि किसीने उसके साथ मजाक की है और तकिया वापस कर दिया। असल बात यह थी कि रूसके किचिनैफ स्थानमें हमारे दलने एक गुप्त छापाखाना खोल रखा था। उसमें क्रान्तिकारी पुस्तिकायें छपती थीं। मनेजर आकिमने---जिसका असल नाम लेआन गोल्डमान था— कुछ पुस्तिकायें इस प्रकार हमारे पास भेजी थीं। जब हमें यह मालूम हुआ तो तुरत आन्ना डाकघरको दौड़ायी गयी और वह पार्सल छुड़ा लायी। यह देखकर वह बहुत शरमायी और बोली—अब भविष्यमें कदापि ऐसी भूल न होगी; भले ही रेल गाड़ीका पार्सल आये, मैं उसे भी ले लूंगी। आन्नाको यह भार इसलिए सौंपा गया था कि हमारे पास तक कोई भी जर्मन न फटकने पाये। हम लुका-छिपाकर 'इस्क्रा' रूसको भेजते थे। दो तलेवाले बक्सोंके भीतर छिपाकर 'इस्क्रा' रूसको भेजा जाता था और भिन्न-भिन्न यात्रियोंको ये बक्स सौंपे जाते थे। चूंकि मन्त्रभेद न होने देना हमारा पहला सिद्धान्त था, इसलिए स्वयं आन्ना-को इस बातका पता न दिया जाता था।"

लेनिन मजदूर आन्दोलनका प्राण था। रूससे बाहर रहकर भी वह रूसी क्रान्तिकारियोंकी बहुत बड़ी सहायता कर रहा था। विदेशोंके मजदूरोंको भी वह सङ्गठित, सुसज्जित और उत्साहित करता था। ऐसी दशामें उसका गुप्त रहना दुष्कर था। पर वह ऐसी विचित्र चालें चलता था कि पढ़कर अचम्भा होता है। प्रसिद्ध कम्यूनिस्ट कार्यकर्ता इलीनने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिखा है—"एक रोज मैं लेनिनके साथ एक बहुत बड़ी सभामें गया। वह उसमें भाषण देनेवाला था। लेनिन घण्टों बोला और मैं चुप बैठा था। श्रोताओंपर खूब प्रभाव पड़ा। पर बाहर जाते समय सुनता क्या हूं कि मजदूर आपसमें बातें कर रहे हैं—'भाई, क्या बात है कि वह नाटा आदमी तो फर्राटेका भाषण दे गया और लेनिनने एक शब्द भी न कहा!' लोग लेनिनको इलीन समझे बैठे थे और मोटे-घाटे इलीनको लेनिन! लेनिन भी इसीलिए उसे अपने साथ ले गया था कि श्रोता धोखेमें आ जायें।"

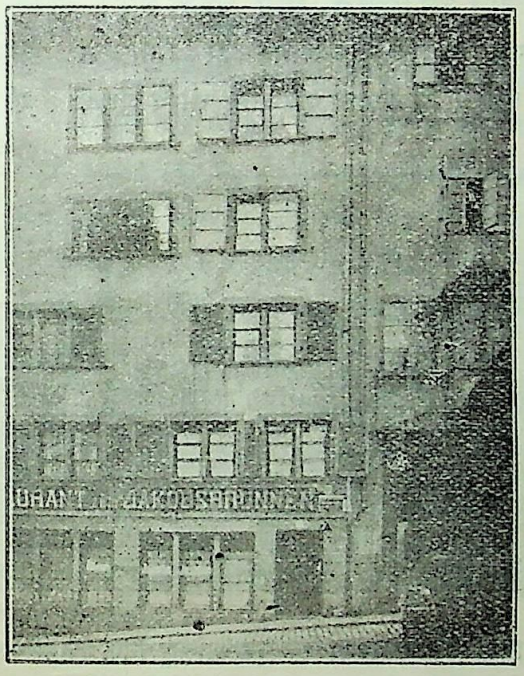

त्सूरिख ( स्विट्जरलैण्ड ) में लेनिन इसी मकानमें छिपा हुआ था।

१८९१-९२ की घटना है। क्रियाजेफके कमरेमें गुप्त सभा थी। किसीने दरवाजा खटखटाया। क्रियाजेफने किवाड़ खोले और देखता क्या है कि सामने एक मजदूर खड़ा है। उम्र तीसके करीब होगी, आंखोंसे ज्योति निकल रही है, ठुड्डीपर छोटी फ्रेञ्च डाढ़ी, चेहरा गोल, टोप इतनी झुकी है कि आंखों तक पहुंच गयी है, और जाड़ोंका ओवरकोट सारे शरीरको ढांके हुए है और गला बन्द है। यह पता लगाना कठिन था कि यह किस श्रेणीका मनुष्य है। उसने क्रियाजेफसे पूछा—'क्या यहां क्रियाजेफ रहता है?' उसने उत्तर दिया—'हां, वह यहीं रहता है।' इसपर वह बोला—'मैं निकोलास पेत्रोविच हूं।' 'हम आपका इन्तजार बहुत देरसे कर रहे हैं।' बोला—'क्षमा कीजिये, मुझे अवश्य देरी हो गयी है। बात यह थी कि मुझे रास्तेमें पुलिसका शक हुआ और मुझे बहुत घूम-फिरकर यहां आना पड़ा।

चौदहवीं जुलाय १९१० को ओखरानाके बर्लिनस्थ मुखिया क्रासिलनिकोफने रूसको अपनी रिपोर्ट भेजी कि वहां चालीस राजनीतिक सन्दिग्ध रूसी हैं, पर उनमेंसे एकका फोटो लेना भी असम्भव हो रहा है। लेनिन और उसकी औरत तो देखनेमें भी नहीं आती। इससे भी मालूम होता है कि ये लोग किस होशियारीसे बच-बचकर चलते थे। लेनिन तो जरा भी जोरसे बोलना महापाप समझता था। १९०० में लेनिन ऊफमा नामक रूसी कस्बेमें पहुंचा और वहांके नेता उससे मिलने आये। पेत्रोङ्को भी आया। वाद-विवादमें पेत्रोङ्को जोरसे 'हमारा मतभेद' शब्द चिल्ला उठा। इसपर लेनिन बोला—'भाई शान्त रहो, जोरसे न बोलो। यदि कोई सुन ले।' पेत्रोङ्कोने कहा—'क्या हानि है। लोग समझेंगे कि हममें मतभेद है।' पर बात दूसरी थी। 'हमारा मतभेद' प्लेखानोफकी एक पुस्तकका नाम है जिसे जारकी सरकारने जब्त कर रखा था। इसलिए लेनिन बोला—'नहीं, ऐसा मत समझो। सदा यही समझो कि शत्रु हमारा आशय भली भांति समझता है। खतरेको बढ़ाकर देखना अच्छा है न कि घटाकर।'

लेनिन किस प्रकार भेस बदलनेमें सिद्धहस्त था, इसका एक दृष्टान्त उसकी पत्नीने अपने संस्मरणोंमें दिया है। वह भी जानने योग्य है :—"१९०५ में लेनिन रूस आया और वह छिप-छिपकर विप्लवकी तैयारियां करने लगा। पुलिसको भी पता लग गया कि लेनिन रूस वापस आ गया है। उसने मास्कोमें उसके डेरेका पता लगा लिया और मकान घेर लिया गया, पर वह एक बूढ़े यहूदीके वेशमें बाहर निकला और सीधा पेट्रोगाड आ पहुंचा। मैं जब पेट्रोग्राडमें उससे मिलने गयी तो उसका मकान पुलिसने घेर रखा था, पर उसे इस बातका पता न था। जब मैंने उससे पूछा कि यह क्या माजरा है तो वह बोला कि मुझे गिरफ्तार करने आये होंगे। पर कोई चिन्ताकी बात नहीं। यह कहकर उसने बढ़िया पोशाक पहनी, हरा चश्मा लगाया और हम दोनों बांहमें बांह डाले घरसे निकले और गाड़ीपर सवार होकर ऐसे निकले गोया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कोई बड़ा व्यापारी अपनी पत्नीके साथ हवा खाने जा रहा हो ! हम शीघ्र ही रूमान्सेफके डेरेपर पहुंचे और छिप गये। दो हफ्ते तक लेनिन मकानसे बाहर न निकला। उसने पुराने डेरेसे अपना सामान भी एक तरुणीके मार्फत मंगवाया।"

१९१७ में जर्मनोंने लेनिनको रूस तक पहुंचा दिया। पर वहां उसे लुक-छिपकर रहना पड़ा। वहांकी अस्थायी साम्यवादी सरकार उसकी शत्रु थी और उसने उसे गिरफ्तार करनेके लिए कोई उपाय बाकी न रखा। लेनिन उस समय सेस्त्रोरेस्कके कारखानेमें काम करता था और दूसरे मजदूरों तथा उसमें भेद करना असम्भव हो गया, इसलिए तीन महीने तक वह मजेसे छिपा रहा, उधर बोलशेविक क्रान्तिकी तैयारी भी करता रहा। यह वास्तवमें उसकी कूटनीतिका परिचायक है कि वह सब काम करते हुए भी पकड़ा न जा सका। जुलाय १९१७ में उसकी तलाशमें सारा पुलिसका महकमा पड़ा और उस समय वह पेट्रोग्राडमें था। वहांसे वह एकदम नदारद हो गया। केरेन्सीको चिन्ता पड़ी कि ठण्डे साम्यवादका दारुण शत्रु लेनिन कहां गुम हो गया है। इतना तो वह जानता ही था कि लेनिन हाथपर हाथ धरके बैठनेवाला आदमी नहीं है। वह किसी-न-किसी साजिशमें लगा ही होगा। पर केरेन्सकी सरकारकी सारी चेष्टायें व्यर्थ गयीं। कुछ दिन बाद स्टालीनको उससे मिलना था और उसे नवीन परिस्थितिकी सूचना देकर आगेको क्या करना चाहिए, इस विषयपर परामर्श करना था। उसे बहुत पूछताछ करनेके बाद पता चला कि सेस्त्रोरेस्कमें एमेलियानोफसे मिलकर और उसे दलका चिह्न दिखाकर लेनिनका ठिकाना मालूम हो सकता है। स्टालीन बहुत सतर्कताके साथ सीधे-टेढ़े रास्तोंसे होता हुआ सेस्त्रोरेस्क पहुंचा और हमेशा चौकन्ना रहता था कि कहीं पुलिस उसके पीछे न लगी हो कि उनसे लेनिनको भी उसके साथ गिरफ्तार कर ले। वह रातको स्टेशनपर पहुंचा और कुछ देर तक पथ खोजते-खोजते एमेलियानोफके पास पहुंचा। वह घरपर न था। उसकी औरत बाहर आयी और अपना परिचय देनेमें स्टालीन गड़बड़ा गया। इसपर वह औरत बोली कि मैं लेनिनका पता जानती हूं, पर तुम्हें न बताऊंगी। अब स्टालीन गिड़गिड़ा रहे हैं और लाख बातें बना रहे हैं, पर उनकी एक न चली। स्टालीनको लेनिनसे अवश्य ही मिलना था, क्योंकि सेण्ट्रल कमिटीने उसे बहुत जरूरी सन्देशेपर भेज रखा था। पर वह साफ यह भी समझ रहा था कि मैंने आरम्भमें ही भूल कर दी है और अब लेनिनका पता मिलना असम्भव ही है। स्टालीन हताश हो गया और वापस जाने लगा। यह देखकर उस औरतने अपने बारह वर्षके लड़केको पुकारा और उसे आज्ञा दी कि वह स्टालीनके साथ जाये। इसपर स्टालीन लिखता है:—"हम एक झीलपर पहुंचे और नावपर सवार हुए। झील पार करके फिर चलने लगे। कहां जा रहे हैं, कुछ पता नहीं। मैं समझा कि लेनिन कहीं देहातमें रहता होगा, इसलिए जबान न हिलायी और उस लड़केके साथ चलता रहा। हठात् वह लड़का एक हवाचक्कीके सामने ठहर गया और किसीको पुकारने लगा। मैं उसका एक शब्द भी न समझा। पर एक

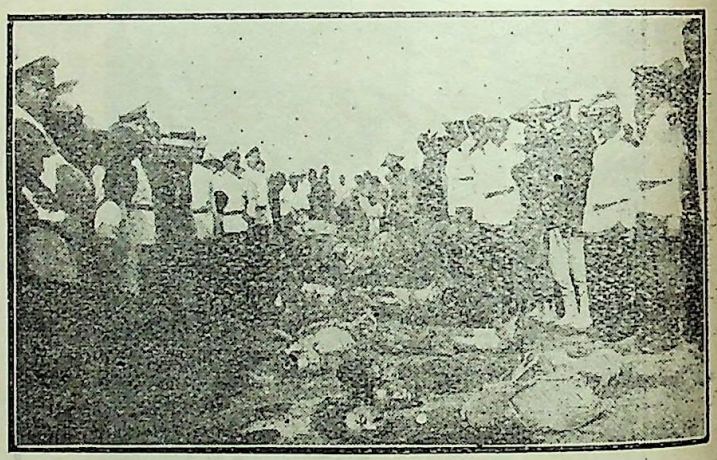

जारशाहीके अत्याचारका एक आतङ्कजनक दृश्य—
क्रान्तिकारियोंके सिर कटे हुए पड़े हैं।

आदमी भीतरसे निकला। वह उस लड़केका बाप था। मैंने उसे नमस्कार किया और अपने आनेका उद्देश्य समझाया और मैं समझा कि यह मुझे लेनिनके पास पहुंचा देगा; पर न मालूम वह अभी कितनी दूरपर रहता है। इतनेमें एक आदमी मेरी ओर आया। इसकी मूछें थीं, पर डाड़ी सफाचट थी। इसने मुझसे सलाम कहा और मेरी पीठ ठोंकने लगा। मैं दङ्ग खड़ा था। यह क्या मामला है और यह आदमी कौन है जिसे मैंने कभी न देखा था। मुझे देखकर वह मुसकराया और बोला—'भई जर्गो, तुम तो मुझे एकदम भूल ही गये। क्या मुझे अब भी नहीं पहचानते ?' वह स्वयं लेनिन था और उसने अपना भेस बदल रखा था। उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मिलनेपर मेरी जानमें जान आयी।" लेनिन इस हवाचक्कीमें तीन सप्ताह तक रहा और फिर वहांसे फिनलैण्ड चला गया। वह एक अमीरका ड्राइवर बनकर रूसी सरहद पार कर सका। इसके बाद वह अक्टूबरमें रूसको लौटा और इस समय भी वह ड्राइवर बनकर ही सरहद लांघ सका। व्यूबोर्ग-में पुलिसकी कड़ाई थी। यहां उसने पादड़ीका रूप धर लिया। उसका सारा चेहरा रंगा हुआ था। ठीक नाटकके पात्रोंकी भांति उसने अपना भेस बदला। इस बीच उसने कुछ कुछ फिनलैण्डकी भाषा भी सीख ली थी। रूस पहुं-चनेके बादका उसका इतिहास प्रसिद्ध ही है।

१९१७ में तो लेनिनको सरहद पार करनेमें कष्ट न हुआ, पर दस साल पहले उसे मौतका सामना करना पड़ा था। वह फिनलैण्डमें वेश बदलकर रहता था, पर पुलिसको पता लग गया। इसलिए लेनिनको अविलम्ब वहांसे भागना और विदेश जाना था। उसने स्टाकहोल्म जानेका निश्चय किया। पर फिनलैण्डसे वहांके लिए जहाज पकड़नेमें कई रूसी क्रान्तिकारी गिरफ्तार हो चुके थे। इसलिए कुछ फिनिश मित्रोंने सलाह दी कि आबो नामक द्वीप तक पदल जाना चाहिए। इस द्वीप तक नाव नहीं जा सकती थी, क्योंकि समुद्र जमा हुआ था। पर इतना जमा न था कि निश्चिन्त होकर उसपर चला जा सके। लेनिनके लिए यह प्रश्न था कि जहाजपर चढ़ते ही गिरफ्तार हो जाना अच्छा है या आबो द्वीप तक तीन मील पैदल चलना अच्छा है। पर यह किसीको पता न था कि किस जगह वह डूब जाये। वह अगर-मगरमें पड़ा हुआ था कि दो फिनिश कृषकोंने उसका साथ देना स्वीकार किया। ये दोनों शराबके नशेमें चूर थे और बेपरवा बर्फपर चले जा रहे थे। अचानक एक स्थानपर बर्फ टूटने लगा और ये डूबने लगे। लेनिनने अपनी जान सङ्कटमें डाल इन्हें बाहर निकाला और वह स्वयं डूबता-डूबता बचा। जब लेनिन सकुशल स्टाकहोल्म पहुंचा तो उसने अपनी इस मूर्खतापर खेद जाहिर किया। किन्तु उसे विश्वास हो गया कि मौतके मुंहसे निकलनेके बाद मैं कुछ करके ही मरूंगा। हुआ भी ऐसा ही। वह अपनी इच्छा पूरी करके ही मरा।

---

# एक गोरे दानवकी दृष्टिमें भारत

[ आत्मानुशीलन--अपने दोषोंकी खोज करना—प्राचीन भारतमें दिनचर्याका मुख्य अङ्ग था। भगवान् शङ्कराचार्यने गाया है :—

अर्थमनर्थं भावय नित्यम्।

हमें भी जातीय दृष्टिसे अर्थ और अनर्थकी विवेचना करनी चाहिए। मनुष्य, जाति और राष्ट्रका ऐसा स्वभाव है कि प्रत्येक अपनी विशेष सभ्यता और संस्कृतिको संसारमें सर्वश्रेष्ठ समझता है। इस समय हिटलरवादी जर्मन हिंस्र पशुओंमें परिणत हो गये हैं। उनके लिए शत-प्रतिशत जर्मनोंके अतिरिक्त अन्य सब भोज्य पदार्थ रह गये हैं और ज्ञान तथा विज्ञानका बहुत कम मूल्य रह गया है। नयी व्यवस्थामें जर्मन अपने लिए स्वतन्त्र विचार न कर सकेंगे, उन्हें डण्डोंके जोरसे अपने स्वयम्भू नेताओंकी आज्ञा माननी पड़ेगी, पर ये जर्मन भी संसारमें अपनी संस्कृति या 'कुल्टूर' को सर्वोत्तम समझते हैं। भाग्यकी विचित्र विडम्बना यह है कि मनुष्यकी बुद्धि, नीति और चरित्रका जितना बड़ा पतन होता है, उतना ही अधिक वह अहम्मन्यताके जालमें फंस जाता है। दुर्बल और पतित मनुष्यको अपनी दशा जितनी ज्यादा खलेगी उतना ही अधिक वह मिथ्या अभिमानसे चिपटता जाता है और अपनेको बड़ा गिनता है। भारत कई बातोंमें जगत्का गुरु बनने लायक है। स्वयं आर्य-हिन्दू-धर्म--- यदि उसमेंसे झाड़-झङ्खाड़ हटा दिया जाये तो सब धर्मोंका भेदभाव मिटाकर उनमें समन्वय स्थापित करनेमें समर्थ होगा। उसकी दिव्य विभा ब्रह्माण्डको आलोकित कर सकती है। पर दैवदुर्विपाक देखिये कि जिस धर्मने एक बार यह गर्जना की थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाकेच पण्डिता समदर्शिनः॥

अर्थात् विद्या-विनयसे अलंकृत ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता और कुत्तेका मांस पकानेवाले 'हरिजन' में जो भेद नहीं करते, वे ही पण्डित हैं। अब आज भारतमें उसी धर्मके माननेवालोंकी सन्तान 'हरिजनोत्थान' की समस्याको वीरताके साथ हल नहीं कर सक रही है। सनातनी, जो इस बातका दावा करते हैं कि वे भगवान् श्रीकृष्णके धर्मका पालन कर रहे हैं, 'हरिजन' को छूनेमें घोर पाप समझते हैं और सुधारकोंके सामने यह समस्या उग्र रूप धारण किये हुए है कि हरिजनोंका मांस खाना कैसे छुड़ाया जाये। प्रायः तीन सौ साल पहले हरिभक्त चैतन्यने यह प्रश्न समझा था और अपने ढङ्गसे हल भी कर दिया था। उसके बाद इसका विकराल स्वरूप हिन्दू-जातिके उद्धारक स्वा० दयानन्दने देखा था और वह समझ गये थे कि बिना इस मसलेका समाधान किये हिन्दूधर्म विश्वसे लोप हो जायेगा। पर अब तक हम लोगोंने इसका उचित उपाय नहीं किया। अन्य कई उत्कट त्रुटियां हमें खो रही हैं, पर हम यह गर्व करते हैं कि संसारमें हम ही सबसे उन्नत हैं। हमारी पराधीनता इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हम लोग न मालूम कितने दोषोंके भाण्डार हैं। हमारा पिछड़ा हुआ नारी-समाज हमारी दुर्दशाका ढिंढोरा पीटता है। हमारी बीसियों कुरीतियां संसारको बताती हैं कि हम पतित और स्वार्थान्ध हैं। पर जिसे देखिये वही छाती फुलाकर भारतकी सर्वोच्च सभ्यताका गर्व करता है। उचित जात्याभिमान देश और जातिको ऊपरको उठाता है, लेकिन मिथ्या अहङ्कार देशको डुबाता है। पैरिसवालोंको एक बार अपनी श्रेष्ठताका अत्यन्त गर्व हो गया। उस समय माण्टेस्क्यूने एक ग्रन्थ 'लैत्र पर्जान' नामसे प्रकाशित किया। इसमें फ्रेञ्च सभ्यतापर खूब छींटे कसे गये थे और यह दिखाया गया था कि एक विदेशी ईरानी, फ्रेञ्चोंको किस रूपमें देखता है। यूरोपियन जातियां अभिमानी होनेपर भी अपने उग्र समालोचकोंका सम्मान हृदयसे करती हैं। वे उनके बताये दोषोंकी छानबीन करती हैं कि क्या ये दोष वास्तवमें हममें हैं। ज्ञानकी यह महिमा है। मुझे कई बार बङ्गाल केमिकल एण्ड फैर्मेस्यूटिकल वर्क्सके आफिसमें जाना पड़ा। वहां सर्वत्र छपे हुए निवेदन-पत्र टांगे गये हैं—"भारतवासी जहां-तहां थूकनेके लिए बदनाम हैं। कृपया बर्तनमें थूकिये और अपनी बदनामी मत कराइये।" मुझे ठीक शब्द याद नहीं हैं, पर उनका असल तात्पर्य ऐसा ही है। डा० पी० सी० राय भारतके उन थोड़ेसे आदमियोंमेंसे हैं जो दूसरोंके दोषोंको ढूंढ़नेके स्थानपर अपने छिद्रोंका अन्वेषण कर उन्हें दूर करनेमें देशका हित समझते हैं। इसीलिए भारतके एक स्वदेशी आफिसमें उक्त उद्देश्यका नोटिस टंग सका। म० गांधी इस विषयमें पथ-प्रदर्शक हैं। वह सदा अपनी त्रुटियां खोजते रहते हैं और उन्हें निर्भय होकर संसारके सामने रख देते हैं। पर अभी तक ऐसे वीर नेता हमारे देशमें कम हैं। इस समय उनकी परम आवश्यकता है। मैं यह लेख कुछ अंशोंमें अत्युक्तिपूर्ण समझता हूं, पर यह महत्त्वपूर्ण है कि हम जानें कि विदेशी हमें क्या समझते हैं। एक बार बर्लिनके चिड़ियाखानेमें कुछ कुली रखे गये थे। कुछ जर्मन मुझे उनके विषयमें जानकारी हासिल करनेके लिए अपने साथ ले गये। इन्होंने जैसे ही उनका हाथसे भोजन करना देखा तो एकको वहीं उलटी हो गयी। वह उनका मैले हाथोंसे भोजन करना न देख सका। इतना भी निश्चय है कि इन कुलियों और जर्मन-मजदूरोंमें जमीन-आसमानका फर्क है। इस स्थितिमें अनुचित होनेपर भी उसे क्या दोष दिया जाता! गन्दगीकी प्रशंसा करनेका साहस मुझ दुर्बलको न हो सका। हां, मैंने उनकी परम दरिद्रताका खाका खींच दिया। इस लेखको पढ़कर पाठक देखें कि यह कितना सही, कितना गलत है।—हेमचन्द्र]

मैंने बीसियों बड़े-बड़े शहर देख डाले हैं, पर कलकत्तेके समान कोई नगर नहीं देखा जहां लोकारण्य इस वेगसे उमड़ रहा हो। इसपर मजा यह है कि इस नगरमें सड़कोंपर मर्द ही मर्द दिखायी देते हैं। सात लाख पुरुष रास्तोंपर चलते-फिरते नजर आते हैं तो सात लाख औरतें घरोंके भीतर न मालूम कहां छिपी रहती हैं। वे बाहर नहीं निकलतीं। यूरोपके पतित म्लेच्छोंको यह देखकर अचरज होता है कि जहां जाओ तुम्हें मर्द ही मर्द घेरते हैं।

कलकत्तेमें जिसे देखो वही पादड़ी मालूम पड़ता है। बङ्गालीकी सूरत ही पादड़ियाना है। और ये पादड़ी सबके सब—बिना अपवादके पैदल चलते हैं। दो-चार जिमींदारों और छोटे-छोटे बच्चोंकी बात छोड़ दीजिये। जमीन्दार मोटरकारों और गाड़ियोंपर यात्रा करते हैं तथा बच्चे गोदीपर और बाकीमेंसे अधिकांश पैदल चलना ही पसन्द करते हैं। कलकत्तेमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ट्राममें हैं, बस हैं और हैं टैक्सी भी। इनपर खासी भीड़ रहती हैं, पर पदातिकोंकी यहां कभी कमी नहीं रहती। यूरोपमें इतने पैदल यात्री देखना असम्भव है। उस रोज मेरे एक मित्र और तत्कालीन पथ-प्रदर्शकने मुझे एक भारतवासी दिखाया। वह दोपहरकी जलती-बलती आगमें पैदल चल रहा था। न टोप सरपर थी और न पासमें छाता। पर यह वीर भारतकी लपलपाती आगके बीच जलता हुआ चल रहा था। इसपर जब मेरे मित्रने कार रोकी और उससे बातचीत की तथा फिर मेरे पास आकर मुझे बताया यह 'सेठ' है जिसके पास तीस-चालीस लाख रुपया है तो मेरे होश हवा खाने लगे और मैं समझा कि पूर्व और पश्चिममें उतना ही भेद है जितना आग और पानीमें। भारतवासी राष्ट्रीय मदमें सब गोरोंको असुर, म्लेच्छ, धनके दास और असभ्य कहते हैं। यह कई अंशोंमें सत्य भी हो सकता है, पर इस 'सेठ' को देखकर मुझे आन्तरिक वेदना हुई और मैंने मन ही मन भगवान्‌से प्रार्थना की कि हे भूतेश! मैं तेरा गुण गाता रहूंगा कि तूने मुझे असभ्य फ्रेञ्च पैदा किया—सभ्य भारत-वर्षमें मुझे जन्म न दिया। फुटपाथ, गाड़ी-सड़क, गली-कूचा, सर्वत्र पैदल चलनेवालोंकी भरमार है। परमात्माकी लीला देखिये कि इनमें जितने रूप देखनेमें आते हैं, वे चित्र-विचित्र हैं। किसीका पेट भीतर धंसा हुआ है तो किसीकी तोंद मुसाफिरोंसे टकराती फिरती है। कोई इतने जोरसे कहकहा मारता है कि उस भीड़ और कोलाहलमें भी तोप-सी गरजती है, कोई जोरसे ढाड़ मारता हुआ जाता है मानो अपने घरके भीतर ही डाढ़ मारकर रो रहा हो। खूबी यह है कि दोनों नहीं लजाते कि हम सबके सामने कैसा जङ्गली व्यव-हार कर रहे हैं। इनका पहरावा भी नाना भांतिका होता है। कई तो एकदम मादरजात नङ्गे भी रहते हैं। पहले तो मैं समझा कि ये दरिद्रताके कारण नग्न रहनेको बाध्य होते होंगे, पर असल बात दूसरी निकली। ये भारतके महात्मा हैं और इनकी पूजा की जाती है। यूरोपका नागा सम्प्रदाय चोरी-छिपे दो-चार घण्टेके लिए नङ्गा रहता है, पर भारतमें ये सण्डे-मुसण्डे बीच बाजारमें फिरते हैं और मालूम पड़ा कि अन्तःपुरवासिनी स्त्रियां भी इनके दर्शनकर कृतार्थ होती हैं। पर अधिकांश लोग शान्त-स्वभाव, ध्यानमग्न, पादड़ी-सूरत और लज्जाहीन मालूम होते हैं।

वैसे तो देखनेमें ये लोग वीर-स्वभाव दिखायी देते हैं, पर जरा-सी घुड़कीमें इनमें भगदड़ पड़ जाती है। उस समय ये परस्पर सहायता करनेके स्थानपर अपनी-अपनी जान बचाने-की फिक्रमें पड़ जाते हैं। ये बेअदब भी होते हैं और कायर भी। प्रत्येकको अपने स्वार्थकी ही पड़ती है; मानो वही सारे विश्वका केन्द्र हो। उस समय ये अपना हजारों वर्षका पुराना ज्ञान ताकपर रख देते हैं।

भारतमें शुद्धताकी अति है। हिन्दू हर बातमें गन्दगी देखते हैं। गोरोंकी बास भी उन्हें अपवित्र कर देती है। ये गोरे मांस खाते हैं और मद पीते हैं। इसी प्रकार मुसल-मानोंकी भी छूत होती है। धोबी, चमार, भङ्गी आदिकी परछाहीं पड़नेके बाद हिन्दूको स्नान करना पड़ता है। इसी प्रकार संसारके अधिकांश पदार्थोंको भी ये नहीं छूते। कई रोजगार पूर्णतया मुसलमानोंके हाथमें चले गये हैं, क्योंकि हिन्दू उन पलीद पेशोंको नहीं कर सकते।

नित्य अनन्तके ध्यानमें निरत, ये हिन्दू, अनिच्छा और बिना उत्साहके संसार-यात्रा करते हैं। उनके चेहरेपर यह छाप स्पष्ट मालूम पड़ती है। इसीलिए मैंने लिखा है कि ये पादड़ी या धर्म-गुरु हैं। इनके मुखसे—चाहे इनमें कोई कितना ही अपढ़ और मूर्ख क्यों न हो—सदा वेदान्त और धर्मका धुआं-धार व्याख्यान ही झड़ता है। इस विश्वकी असारता इनका प्रधान विषय है। भूखे मरेंगे, पहननेको तनमें चीथड़ा न होगा, पर लेक्चर झाड़ेंगे--"कामिनि-काञ्चन" के त्यागपर। इसपर मुझे यह अनुभव हुआ है कि इनमें कामवासना अबाध-रूपसे बहती है। इनके उपदेशक इसीलिए व्याख्यान देते हैं कि ऐसा करना उनका परम धर्म है। उपदेश दिया तो पोथी-के जैंगन पोथीमें रह जाते हैं और स्वयं व्याख्याता महोदय तत्काल कार्यतः अपने कथनका खण्डन कर देते हैं। इनके भगवान् बुद्धने कहा था--"जैसा मैं करता हूं वैसा न करो, बल्कि जो मैं कहता हूं उसका अनुसरण करो।"

कलकत्तेमें मैंने एक विचित्र बात यह देखी कि भारतवासियों-की जहां तबीयत हुई, वे वहीं बैठ जाते हैं। कुलीके सरपर बोझ हुआ तो वह जहां थका वहीं बैठ गया। बोझ जमीनपर रखा और उसीपर बैठ गये। रास्तेमें नाऊ मिला तो लगे वहीं सबके सामने बाल छंटवाने और जो सत्तूवाला मिला तो लगे



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बीच सड़कमें सत्तू फांकने। तुर्रा यह है कि इनमें अधिकांश ऐसी जगहोंपर बैठते हैं जहां आवत-जावतका तांता बंधा हो। इसीमें इन्हें मजा आता है। बेञ्चपर बैठना तो कायदेकी बात है, पर आप इन्हें बेञ्चोंके आगे जमीनपर बैठा पायेंगे। दो-चार आदमी ठीक प्रवेश-द्वारपर डट जाते हैं और ऐसे स्थानपर धर्मके गूढ़ तत्त्वोंकी छानबीन चलती है, और तब किसे परवा कि कौन आता है और कौन जाता है। इसकी ओर तो किसीका ध्यान नहीं जाता कि हम इस कोलाहलसे आसपासवालोंके काममें हर्ज कर रहे हैं और सबका रास्ता रोक रहे हैं। कलकत्तेके पार्कोंकी दशा निराली है। उनमें ये ठौर-कुठौर नहीं देखते। जो बेञ्चपर लेट गया उसका तो उसपर इजारा हो गया और जो जमीनपर बैठते हैं वे न फूलोंकी परवा करते हैं और न पत्तोंकी। घास कुरेदना भी ये अपना धर्म समझते हैं। इन पार्कोंकी यह दुर्गति देखकर मेरा कलेजा फट गया। कोई पुलिस या सेना इन्हें इस स्वतन्त्रतासे नहीं रोक सकती है। कलकत्तेके तालाबोंपर लिखा है—"इसमें नहाना, कपड़े धोना और तैरना मना है।" पर भारतवासी ठीक उस स्थानपर स्नान करते और कपड़े धोते हैं जहां उक्त मनाहीका बोर्ड टंगा हो। यह तो यूरोपियन मुहल्ले चौरङ्गीके सामने ही दिनदहाड़े देखा जाता है। पुलिसवाले लोगोंको रोकेंगे तो क्या, कान्स्टेबल स्वयं ही उसमें गोता मारकर अपनी गरमी दूर करता है। यह माजरा होता है स्वयं यूरोपियन सार्जेण्टोंके सामने। मालूम पड़ता है कि भगवान् भास्करके प्रखर तापसे भस्मीभूत देश भारतमें वेदान्तकी फसल खूब फलती-फूलती है और ये सार्जेण्ट भी प्रकृतिके कठोर नियमोंके चंगुलमें फंसकर 'कर्म-संन्यास'की महिमा गाते-गाते स्वयं भी इच्छा करते हों कि हम भी इस जलमें कूद पड़ें; पर इनके पास तैरनेका सामान नहीं रहता।

भारतवासी जहां बैठे, उसकी आंखें स्वर्गकी ओर लगी रहती हैं; और उनमें आशाकी दीप्तिका आभास भी नहीं मिलता। इस दशामें कोई जो मनमें आया गाने लगता है और कोई मुसल्ला डालकर नमाज पढ़ने लगता है। ये ही लोग जलपानकी सामग्री तथा पान और बीड़ी भी बेचते हैं। पकवान भी सर्वत्र ताजा तैयार किया जाता और बिकता है। उसमें न मालूम कितनी धूल पड़ती है, पर इसकी नाममात्र चिन्ता नहीं होती। कारपोरेशनके हेल्थ-आफिसर इस ओर ध्यान देना अपना कर्तव्य नहीं समझते। जो हो, कलकत्तेमें सर्वत्र लोकारण्य नजर आता है; और सबकी सूरतमें पादड़ीपना व्याप रहा है। इस बातमें गाय और नादिये इनके गुरु हैं। भारतवासियोंने गायसे दोस्ती लगायी है, पर गाय इनकी परवा नहीं करती। वह सदा शान्त, दान्त रहती और भूगर्भमें निहित न मालूम किस महादेवका ध्यान करती है। मैंने इस जीवनमें दो निर्लज्ज पशु देखे हैं (१) गाय (२) बन्दर। कलकत्तेमें गायों और नादियोंकी भरमार है। तङ्ग और गन्दी गलियोंमें ये शाही चालसे सैला करते फिरते हैं; ये मनुष्योंके बीचमेंसे अपना पथ निकालते हैं और बङ्गालके गवर्नरकी मोटरकारके सामने गोबर कर जाते हैं; ये दूकानोंकी सजी हुई खिड़कियां घूरते हैं और दरवाजोंपर अपना अड्डा जमा देते हैं। सच तो यह है कि यदि भारतवासी इनका भोज्य पदार्थ होते तो वे सहर्ष बिना प्रतिरोधके इनके गलेके नीचे उतर जाते। निष्काम भावोंमें गाय भारतवासियोंको मात देती है। उसके बाहरी रूपसे तो साफ मालूम होता है कि वह सुख, दुःख और लाभ तथा हानिके परे है। उसे है भी किस बातकी परवा। वह जब एक पूला घास खाती है तो सात घण्टे जुगाली करनेमें लगाती है। ये गायें कलकत्तेभरमें दिखायी देती हैं और इनमें खूबी यह है कि हिन्दुस्तानियों और अंगरेजोंकी तरह ये भी दूसरी जातसे नहीं मिल सकतीं।

भारतवासी ज्ञान और ध्यानको ही सर्वश्रेष्ठ समझता है। इस बातमें उसका और गायका साम्य है। हाथी भी ऐसा ही जानवर है। भैंसा भी इन्हीं गुणोंका भक्त है। कलकत्तेमें ये भैंसे गाड़ियोंमें जुतकर बहुत माल ढोते हैं। ये इस धीमी चालसे चलते हैं कि गोया अनन्त कालसे इसी गतिसे आगे बढ़कर अनन्त विश्वकी परिक्रमा करने निकले हैं। बीच-बीचमें उनकी जबान मुंहसे बाहर निकल पड़ती है और उससे लार टपकती है। उस समय उसकी दृष्टि जब अपने इर्दगिर्द देखती है तो ऐसा आभास होता है कि वह भ्रमपूर्ण दृष्टिसे नगर-निवासियोंसे प्रश्न कर रहा है कि मैं रास्ता भूलकर कहां आ पड़ा हूं। इस जानवरको अपनी जान भारी है और एक ही समय वह पूर्ण आनन्दमें निमग्न दिखायी देता है—यानी जब वह कीचड़में पसर जाता है। मन्थर-गति ऊंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भी भारतवासियोंके स्वभावसे मिलता-जुलता है। पर वह कलकत्तेमें कम दिखायी देता है।

योग भारतका राष्ट्रीय खेल है। इसका अनुभव मुझे श्रीरामपुरके स्टेशनपर हुआ। एक बङ्गाली बाबू मेरा पथ-प्रदर्शक बना हुआ था। उससे मैंने कहा कि मुझे योगकी जानकारी प्राप्त करनी है। बस वह मुझे पास ही एक मैदानमें ले गया और लगा सांस चढ़ाने और उतारने। यह देखकर बीस-पच्चीस आदमी और आ गये तथा सभी इस क्रीड़ाके पारङ्गत मालूम पड़े। मुझे उन्होंने बताया कि बायें नथनेसे चार बार सांस खींचो तो दायेंसे सोलह बार छोड़ो आदि। इस मण्डलीका-सा उत्साह मैंने भारतमें अन्यत्र नहीं देखा।

अंगरेज गोरे हैं और प्रतिदिन दो बार स्नान करते हैं, पर वे भारतवासियोंके लिए अपवित्र और गन्दगीके अवतार हैं। अंगरेजोंका ध्यान करते ही कई कट्टर हिन्दुओंको उलटी हो जाती है; क्योंकि ये लोग ऐसे-ऐसे पदार्थ छूते और खाते हैं जिन्हें हिन्दू देख नहीं सकता। स्नान करनेमें हिन्दू संसारका रेकार्ड तोड़ते हैं। इस गरम देशमें ये दिनमें जितनी बार स्नान कर सकें उतना अधिक पुण्य उन्हें प्राप्त होता है। छोटे-से शहर चन्द्रनगरमें गङ्गाजीके अतिरिक्त सोलह सौ पोखर हैं जिनमें ये लोग रात-दिन नहाते रहते हैं। गङ्गाजीका तो क्या कहना, ये तो चौबीसों घण्टे आबाद रहती हैं। पर मेरे देखनेमें यह आया है कि साफ आदमी गङ्गाजीमें स्नान करने जाता है तो मैला बनकर बाहर निकलता है। इसके अतिरिक्त यह भी मालूम हुआ है कि इन हिन्दुओंका पाखाना भी गङ्गाजीके भीतर ही है। जो सब हिन्दू प्रातःकाल मुंह-अंधेरे पाप-नाशिनी भागीरथीमें स्नान करने जाते हैं वे अपने पापोंके साथ अपने पेटका मल भी गङ्गाजीके गर्भमें छोड़ आते हैं। इस प्रकार ये धर्मात्मा हिन्दू परलोकके लिए अक्षय पुण्य सञ्चय कर जाते हैं। यह धर्म महान् है इसमें क्या सन्देह; पर मैं मूरख इसकी महिमा और रहस्यसे परिचित न हो सका। जो हो, हिन्दू स्नानके विषयमें कट्टर है। वह पहले दांत साफ करता है और खूब करता है, क्योंकि इस काममें बहुधा आध घण्टा लग जाता है। इसके बाद वह पानीमें उतरता है और ऐसी डुबकियां लगाता है कि गङ्गाजीका जल उसके शरीरके अङ्ग-अङ्गमें व्याप्त हो जाये।

इसपर आश्चर्य देखिये कि यूरोपमें भारतवासियोंकी गन्दगी कहावतमें परिणत हो गयी है। हम लोग भारत-वासियोंके लिए पाप-पुञ्ज गोरे दानव हैं। इसलिए यही कहना पड़ता है—"भिन्न रुचिर्हि लोकः।" *

——

* यह लेख फ्रांसके पत्र 'ला नूवैल रिव्यू फ्रांसैज' में छपा है और इसने वहां बड़ी सनसनी फैला रखी है।

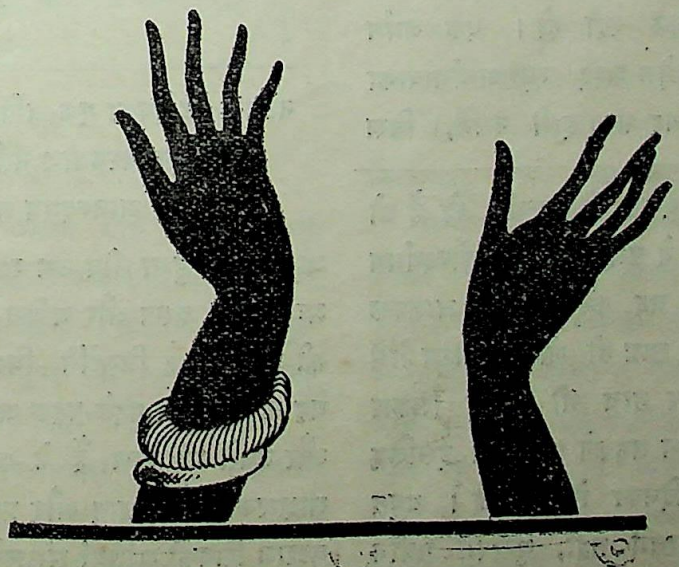

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारतीय नृत्यकला और उसका पुनर्जागरण

हेमचन्द्र जोशी

उदयशङ्कर भारत आया है और बङ्गालभरमें उसके नामकी धूम हो गयी है। भारतमें भी अब उदयशङ्करका नाम फैल गया है। यह उचित ही है। उदयशङ्कर नर्तक है। वह कथकों-की भांति नाचता और गाता नहीं है, बल्कि यूरोपियनोंकी भांति रङ्गमञ्चपर भारतीय नृत्यका खेल करता है। इसलिए यूरोप और अमेरिकामें उसका बहुमान हुआ और भारतमें भी वाहवाही हुई। जो भारतीय सुधारक (?) रण्डियोंका नाच देखना महापाप समझते हैं, वे भी उनकी नृत्यकलाकी प्रशंसा करने लगे हैं। यह भारतीय नृत्यकलाके लिए शुभ लक्षण हैं।*

भारतने वेश्याओं, रूपाजीवाओं और नर्तकियोंका सदा सत्कार किया है। हमारे स्वर्गमें अप्सरायें हैं और उनकी प्रतिच्छवि इस लोकमें वाराङ्गनायें हैं। ये ही गणिकायें सङ्गीत और नृत्यमें भारतकी प्रतिनिधि हैं। ऋग्वेदके समय भी ये अपनेको संवारती थीं और अपने नाच और गानेसे कलाप्रेमी सज्जनोंका मन हरती थीं। उस समय गुणग्राहक आर्योंने इन्हें आदरणीय समझा था और इनके शृङ्गारकी इतनी प्रशंसा की है कि स्वयं ऊषाको कई बार उनसे मिलाया है। एक स्थानपर कहा है—"अधि पेशांसि वपते नृतूरिव।" अर्थात् ऊषा अपनेको इस प्रकार सजाती है, मानो नर्तकी अपने शरीरपर पेशवाज धारण कर रही हो। एक जर्मन विद्वान्का मत है कि पेशवाजमें पेश शब्द मूल आर्यभाषाका है और उसका अर्थ कपड़ा है। यह शब्द इसी रूपमें, मिस्र तक पहुंचा था। जो हो, वैदिक आर्य, नृत्यकलाके ज्ञाता और प्रेमी थे। उसके बाद भारतने नृत्यकलाकी चरम उन्नति की। अथर्ववेदके शब्दोंमें 'यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्याः।' इस भारत-भूमिमें मनुष्य सदा नाचते और गाते रहे। यह है इस देशकी महिमा, जिसने विश्वात्मा विश्व-नाथको नटराजके रूपमें देखा। भारतके नाट्यशास्त्रका आदि निर्माता वही नटाचार्य है जिसका ताण्डव-नृत्य ब्रह्माण्डभरमें वह रहस्यमय थर्राहट पैदा कर रहा है कि उसकी मायाके

नटराज महादेवका एक अति प्राचीन अप्रकाशित चित्र। पाठक इस विश्वप्राण नर्तकके हाव-भाव, अङ्गभङ्गी और आनन्दमय मदसे परिचित हों।

जालमें फंसा हुआ जीव उस रसराजकी लीला देखकर आनन्द-मग्न, भीत, त्रस्त और चकित है। उन भारतीय आत्माओं-की बलिहारी है जिन्होंने विश्वके रङ्गमञ्चपर नन्दिकेश्वरका यह ताण्डव नृत्य पहले-पहल अपनी मानसिक आंखोंसे देखा और उनसे भी धन्य हैं वे कलाचार्य, जिन्होंने नटराजका साक्षात्कार करके धातु और प्रस्तरपर उसे रूप दे दिया। नटराज शिवकी मूर्तियां संसारमें निराली हैं। उनकी तरल रेखायें बताती हैं कि डमरूके बजैयाका अङ्ग-प्रत्यङ्ग थिरक

---

* "भारतमें सदासे कुछ ऐसे 'नीतिपन्थी' रहे हैं जो नाट्यकलाको पापमें गिनते हैं। ये समझते हैं कि सौन्दर्यमय भावोंसे जो आनन्द मिलता है, वह कलुषित है। आजकल भारतमें इस दलका जोर है और साथ ही भारतकी कलाओंमें वर्णसङ्करता भी आ गयी है और नाच भी इसका शिकार बन गया है। इसमें यूरोपीय गन्ध महकने लगी है। इसलिए भारतीय नाट्य अब कुछ ही दिनका मेहमान है। बहुत सम्भव है कि नाट्यकलाको भारतमें नहीं, यूरोपमें नवीन जीवन मिले। आनन्दकुमार स्वामी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रहा है और इस नाचनेवालेको अनादिकालसे अनन्त समय तक केवल अपने नृत्यमें ही आनन्द मिलता है। वाह! क्या ही भङ्ग छानी है कि बेसुध होकर नाचता जाता है और विरामका नाम नहीं लेता। ठीक है, कविने इसी पागलके लिए कहा है:—

हैं राग उन्हींके रङ्ग भरे और भाव उन्हींके सांचे हैं,
जो बेगत बेसुर ताल हुए, बेताल पखावज नाचे हैं।

कौन ऐसा पारखी है जो ताण्डवनृत्यका गत पहचाने और उसका ताल समझे। पर मजा देखिये कि सृष्टिका अणु-अणु और रोम-रोम इस नाचमें मस्त है। कौन प्राणी है जो आदि, मध्य और अवसानरहित इस महाप्रलयके तालमें ताल

एक प्राचीन नर्तकीका चित्र जो अजन्ताकी गुफाओंमें अङ्कित है।

न दे रहा हो और लयमें लय न मिला रहा हो। आदिदेव महादेवके इस नग्न नृत्यमें सर्वसंहारी महाकाल भी सङ्गीतके नशेमें चूर विषधरकी भांति मदमत्त होकर स्वयं मृत्युका आलिङ्गन करता है। तब वहां मनुष्य—सर्वशक्तिशाली सम्राट् अथवा अतुल धनपति राकफेलर—नहीं नहीं, मनुष्यरूपी ये नगण्य कीटाणु, जो पल-पलमें सड़-गलकर संसारको दुर्गन्धिसे भरते हैं, किस गिनतीमें हैं। वे भी सरपट महामृत्युके अतल गर्भमें ताण्डव नृत्यका उद्धत और नाशमय गत नाचने चले जाते हैं। इस भूतेशको देखिये कि सृष्टिका संहार करनेमें ही उसे अपना मङ्गलमय रूप दिखानेका अवसर मिलता है। श्मशान-घाटमें खूनसे लथपथ भूत, पिशाच और योगिनियोंके साथ यह भैरव रुद्र जो ताण्डवनृत्य करता है और मुण्डमाली बनकर जो अट्टहास्य करता है, उसके वीरभद्र रूपका ध्यान करके ही पापपुञ्ज और दुःखालय इस संसारसे वितृष्ण महाविरागी संन्यासी अपनी मुक्तिका पथ देखते हैं। इन उत्कट भक्तोंके लिए नागेन्द्रहारका नृत्य उनकी आत्मामें ही होता है और वह अविराम गतिसे उसे पापहीन बनाता जाता है; पर कवि और वैज्ञानिकके लिए यह निरन्तर होता जा रहा है और तभी थमेगा जब महाकाल-की धुकधुकी बन्द हो जायेगी।

नटराजका दूसरा नाच विकराल नहीं है। वह सन्ध्याके समय होता है और उसमें सारी प्रकृति भाग लेती है। उसके विषयमें एक भक्तने गाया है—"त्रिलोककी जननीको रत्न और मणि-खचित सिंहासनपर आसीन कराकर, शूलपाणि कैलाशके शिखरपर नाचते हैं। सब देवता उन्हें घेरकर खड़े हो जाते हैं। सरस्वती वीणा बजाती हैं, इन्द्र वेणु और ब्रह्मा मजीरे खनकाते हैं। लक्ष्मी गाती हैं, विष्णु ढोल बजाते हैं और सब देवता इनको घेरे खड़े हैं। इस स्वर्गीय नृत्यको देखनेके लिए गन्धर्व, यक्ष, पतग, उरग, सिद्ध, साध्य, विद्याधर, अमर, अप्सरा और तीन लोकोंके सब जीव वहां उपस्थित रहते हैं।" यह नृत्य शान्त है और इसका नाम लास्य दिया जा सकता है, क्योंकि इसमें उग्रता, उद्धतता और वीरभावका नाम नहीं है। इस प्रकार शिव ताण्डव और लास्य इन दो प्रकारके नाचोंके आदि प्रवर्तक हैं। महाभारतने ठीक ही कहा है कि भस्मधारी त्रिलोचन नृत्याचार्य हैं—"नृत्यप्रियो, नित्यनर्तो, नर्तकः सर्वलालसः।"

भगवान् कृष्णने नृत्यकलाको खूब प्रोत्साहन दिया। मुरली मनोहर रस-रङ्गमें लीन रहते थे। उन्हें लीलामें ही आनन्द मिलता था। मुण्डमालीके बाद भारतमें इस वनमालीने ही ताण्डवनृत्य किया—"ताण्डव गत मुण्डनपर नाचत वनमाली।" कालीदहमें कालीय सर्पको उन्होंने ताण्डव नृत्यके बलपर ही नाथा। पर गोपीवल्लभ कुञ्जबिहारीने रासलीला करके प्रेममय सुकुमार नृत्यका जो विकास किया, उसका स्मरण आज भी भक्त हिन्दुओंको पुलकित करता है। कालिन्दीके तीरमें कदम्बके नीचे ज्योत्स्नामय रात्रिमें 'चन्दन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वर्चित नीलकलेवर पीतवसन वनमाली' असंख्य प्रेमिकाओंको लेकर रासलीला रचते थे। उस समय जाह्नवीका जल नाचता था, पशु-पक्षी थिरकने लगते थे, वायु तालमें ताल देती थी और सारी सृष्टि मन्त्रमुग्ध होकर ताता थेई, ताता-थेई करने लगती थी। यह ऐतिहासिक घटना है, पर कौन कह सकता है कि इस क्षण भी रासके उस रचैयाका नाच विश्वके घूर्णनके साथ नहीं चल रहा है?

उसके बाद भारतमें नृत्य-कलाने वह उन्नति की कि इसपर ऋषियोंने शास्त्र लिख डाले और भरतमुनिने अपने नाट्य-शास्त्रमें लिखा है कि ब्रह्माने चारों वेदोंका सार लेकर पाचवां

श्री रतनदेवी कुछ वर्ष हुए अमेरिका जाकर भारतीय सङ्गीतका परिचय दे आयी थीं।

वेद—नाट्यवेद रचा। इसमें उसने ऋग्वेदसे शब्द लिये, साम-वेदसे सङ्गीत लिया, यजुर्वेदसे हाव-भाव और अथर्ववेदसे रस लिया। नाच और नाटकोंका महत्त्व देखिये कि महा-भारतकी भांति नाट्यशास्त्रको भी पाचवां वेद माना गया। इस 'आमोद-प्रमोद-मूलक कला' का अद्भुत प्रचार हुआ। प्रसिद्ध संस्कृत-कवि बाणकी कन्या 'ऊषा' तकने इस विषयपर ग्रन्थ रचा; और इस कलाकी उन्नतिका ध्यान धर्मात्मा सज्जनोंको भी इतना था कि मन्दिरोंमें देवदासियां नियुक्त की गयीं कि नित भगवान्‌के सामने नाचा करें। वैष्णव तो अपनी भक्तिकी बाढ़को नाच-गाकर ही शान्त करते हैं। कृष्णके नामपर ये उसी तरह नाच उठते हैं, जिस भांति मयूर बरसातमें घनघटा देखकर। उस लीलामयका नाम गाकर ये शान्त होकर बैठ नहीं सकते। इनकी आत्मा हरि-नाम सुनकर पागल हो उठती है और भक्तिरस इतना उमड़ पड़ता है कि मन आनन्दमें विकल होकर शरीरको बाध्य करता है कि नाचे। भागवत्‌में ठीक ही लिखा है:—

यो नृत्यति प्रहृष्टात्मा भावैर्बहु समन्वितः।
स निर्दहति पापानि जन्मान्तर शतेष्वपि॥

राधाकृष्णके भेषमें उदयशङ्कर और उनकी फ्रेञ्च सखी।

इन भावुक वैष्णवोंके नाचका माहात्म्य देखिये कि इन्होंने हरिभक्त चाण्डालको अपना सगा भाई समझा। यह नृत्यकी महिमा है कि नर्तकों और दर्शकोंको संसारके संशयों-से ऊपर उठाकर उनका भेदभाव नाश कर देता है। यद्यपि भारतकी वेश्यायें जीविकाके लिए नाचती हैं, तो भी उनके नाचमें यह विशेषता पायी जाती है। जर्मनीके दार्श-निक काउण्ट हरमान काइजरलिङ्गने लिखा है कि भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76323



वेश्याओंका नाच मनुष्यको इस द्विधापूर्ण संसारके माया-जालसे छिन्नकर उसे उस आकाशमें पहुंचा देता है, जहां सुख-दुःख, आशा-निराशा, पाप-पुण्य और नीति-अनीतिका पचड़ा नहीं है। भारतीय नृत्य वास्तवमें मुक्तिका मार्ग है। काइजरलिङ्ग टैगोरके महलमें रातभर नाच देखते रहे और उन्हें नाममात्रको भी थकान न मालूम पड़ी। यह आश्चर्य उनके जीवनमें प्रथम बार हुआ था। इसलिए उन्होंने अपनी 'संसार-यात्रा' में भारतीय वाराङ्गनाओंका गुणगान भी किया है। दुर्भाग्य है कि हमारे तथाकथित सुधारक वेश्या नामसे इतना चिढ़ने लगे हैं कि उन्हें उजाड़नेके लिए उनके पीछे हाथ धोकर पड़ गये हैं जिसका परिणाम यह हो रहा है कि भारतसे नृत्यकला लुप्त होती जा रही है। अब ऐसा आभास होता है कि कुछ ही वर्षों बाद यह शास्त्र भारतसे उठ जायेगा। एक ओर हम अपनी कलाको चौपट कर रहे हैं तो दूसरी ओर हमारे 'अर्थशोषी' सिनेमा, थियेटर आदिमें गोरी ऐङ्गलोइण्डियन नर्तकियोंकी भरमार है जो भारतीय सङ्गीत और नाट्यकलाका नाश मार रही हैं; पर बड़े-बड़े धर्मात्मा और सुधारक इन-पर लट्टू हैं।

ठीक इस समय उदयशङ्करने हमें चेताया है कि भारतकी नृत्यकला अपना विशेषत्व रखती है। यह सेवा असलमें प्रसिद्ध रूसी नर्तकी आन्ना पावलोवाकी है जिसने भारतके भ्रमणमें यहांके नृत्यका तत्त्व समझा और १९२३ में लण्डनमें भारतीय नृत्य दिखानेकी तैयारी की। उसकी जिनसे पहचान थी, उन्होंने उससे उदयशङ्करको मिलाया। पावलोवाने अंगरेजोंको राधा-कृष्णका नृत्य दिखाया और जनता हमारे रासके इस नये रूपको देखकर मुग्ध हो गयी। तब लण्डनस्थ हिन्दुस्तानियोंको मालूम हुआ कि रासमें भी रस है और भारतमें भी इसकी कुछ चर्चा हुई। पावलोवाने उदयशङ्करको रास्ता दिखा दिया कि उसे किस ओर जाना चाहिए। उस समय उदयशङ्कर चित्रकलाका अध्ययन समाप्त कर चुका था। सर विलियम रोथनस्टाइनका वह प्रिय शिष्य था। पर इससे क्या, आन्ना पावलोवाके साथ नाचकर वह चित्रकला-को तिलाञ्जलि दे चुका था। सर रोथनस्टाइनने बहुत चेष्टा की कि उसे फिर चित्रकार बनावें, पर यह न हो सका। आन्ना पावलोवाने राधा-कृष्ण-नृत्यमें सबसे अधिक सफलता पायी। उसने इस नाचमें दोनोंके अपार प्रेमका अमर

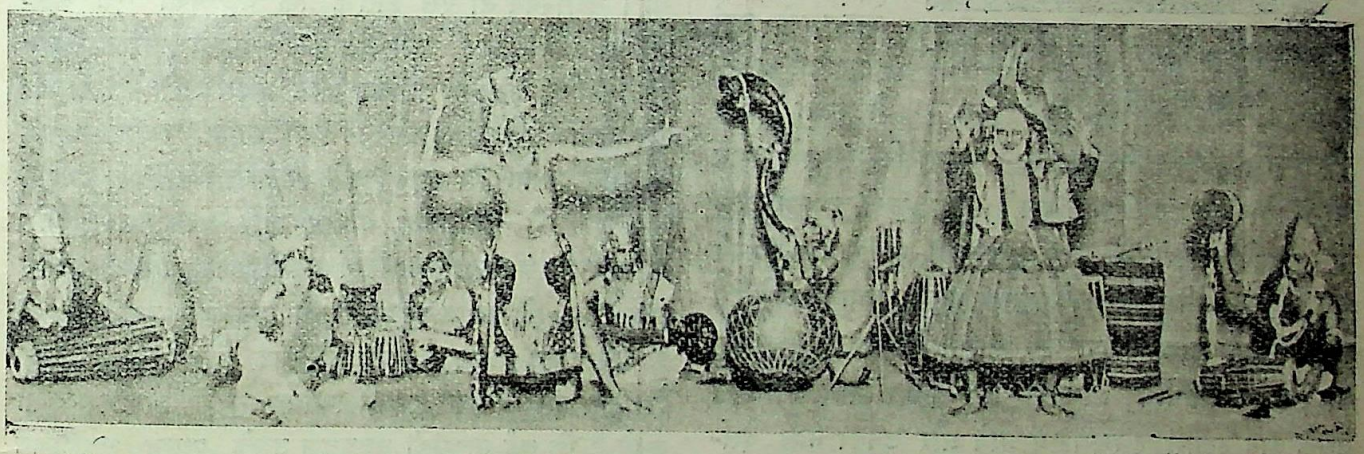

उदयशङ्करके ताण्डव नृत्यका एक दृश्य।

स्रोत बहा दिया। पावलोवाने यह नाच संसारभरमें दिखाया और नाम कर लिया। इसमें कदम्बका वृक्ष था, यमुनाका तट था और था कृष्णके प्रति गोपिकाओंका अनन्य प्रेम। वनमालीकी खोजमें चित्र-विचित्र वेश-सम्भारमें नाना रङ्गकी झलकती हुई साड़ियां पहनकर और हाथमें फूलोंकी डाली लिये हुए ये प्रेमिकायें जब रङ्गमञ्चपर आती थीं तो दर्शकोंमें बिजली दौड़ जाती थी। इनका अद्भुत रूप देखकर सबकी आंखें चौंधिया जाती थीं। इनकी अपार भक्ति और एकान्त प्रेम देखकर उनके हृदयमें रहस्यमय गुदगुदी लग जाती थी और कृष्णके साथ इनकी रास-लीला देखकर दर्शक मण्डली अपना आपा भूल जाती थी। यह देखकर उदयशङ्कर भारतीय नृत्यके यूरोपीय संस्करणका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



महत्त्व समझ गया। बस, उसने आन्ना पावलोवाका साथ छोड़नेके बाद पेरिसमें अड्डा जमाया और वह नृत्यकलाका सूक्ष्म अध्ययन करने लगा।

उदयशङ्करकी पार्टी भारतीय नृत्यके मुद्राओंका परिचय दे रही है।

१९२६ की बात है। उस समय उदयशङ्कर को संसार नहींके बराबर जानता था। थियोसोफिकल हालमें भारतीय नृत्य और सङ्गीतका आयोजन हुआ। इन पंक्तियोंका लेखक भी वहां गया। कई पात्रोंने अपना जौहर दिखाया। एक आयरिश महिलाने बताया कि संसारमें भारत ही सबसे अधिक सङ्गीतमय देश है। वहां कुली-कबाड़ी, राजमिस्त्री, पिसनहारी और धान कूटनेवाली सभीके अपने-अपने गीत हैं और सभी अपने-अपने कामके अनुसार राग अलापते हैं। इस महिलाने नाना पेशेवालोंके गीत गाये। पर विदेशियोंको तो क्या, भारतीयोंको भी उसके गानेमें कुछ आनन्द न मिला। उसके बाद उदयशङ्कर रङ्गमञ्चमें आये और उनका नाच दर्शकोंको पसन्द आया। उदयशङ्करने भारतीय नाचपर यूरोपियन मुलम्मा चढ़ा रखा था। उनकी फुर्ती देखने लायक थी और अङ्गभङ्गी भी अच्छी थी। पर मुझे तो उस समय भारतीय वेश्याओंका स्मरण हो आया जिनके बदनका अङ्ग-अङ्ग टूटा हुआ होता है। इनके नाचमें एक नशा रहता है जो दर्शकोंको इस द्विधापूर्ण जगत्के ऊपर उठा देता है। हमारी वाराङ्गनाओंकी लास्य लीला संसारमें अपने ढंगकी अनोखी है। आज भी इनके नाचमें चमत्कार है। इनके हावभाव, देहभङ्गी, घुंघुरू बजाना, गत आदिमें जो आनन्द और आकर्षण रहता है वह उदयशङ्करमें न था; पर मैंने उसे नमस्कार किया, क्योंकि भारतमें भारतीय नृत्यकी महिमा फैल सकनेकी सम्भावना थी तो उसीके द्वारा। जब तक यूरोप हमारे नृत्यकी तारीफ न करता तब तक हम उसे पाप ही समझते। उदयशङ्करने ठीक रास्ता पकड़ा था। उसने गुणगाहकोंको अपने जौहर दिखाये और उनसे वाहवाही ली।*

उस रोज कुछ गुणगाहकोंने उसकी पीठ ठोकी। यूरोपमें जो पीठ ठोकता है वह केवल मुंहसे वाह! वाह!! नहीं कहता; तन मन धनसे सहायता करनेको तत्पर हो जाता है। बस उन लोगोंने उदयशङ्करकी सहायता की और १९२८ से उसका नाम हो गया। नयी कलाका दर्शन करनेके लिए यूरोपियन सदा उत्कण्ठित रहते हैं। यद्यपि भारत और यूरोपके सङ्गीत और नृत्यका कोई मेल नहीं है, पर इससे क्या हुआ, 'भाव अनोखो चाहिए भाषा कोऊ होय।' जो हृदय रखता है उसे अफ्रीकाके जङ्गलियोंकी कलामें भी आनन्द प्राप्त होता है; तब भारत तो कभी सुसंस्कृत देश था जिसने सब कलाओंको चरम उत्कर्षपर पहुंचा दिया था। यूरोपियन तो ऐसे होते हैं कि बङ्गलाका एक अक्षर भी न समझनेपर रवीन्द्रनाथका बङ्गला 'रिसाइटेशन' सुननेके लिए दस-दस रुपयेका टिकट सहर्ष खरीदते हैं। और इन जीवित मनुष्योंको उसका 'चयनिकापाठ' सुनकर आनन्द भी मिल जाता है। इन 'कौतुकाक्रान्त चित्रों' को उदयशङ्करके नाचने स्वभावतः अपनी ओर आकर्षित किया। वह यूरोपके सब प्रधान नगरोंमें अपनी कला दिखा आया और १९३० में जब भारत आया तो बङ्गालने उसकी अपूर्व अभ्यर्थना की। इस बार वह अमेरिका विजय करके आया है। हम इस नर्तकका हृदयसे स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि कई उत्साही नवयुवक उसके पथका अवलम्बन करेंगे। इसमें अपरिमित आय और संसारप्रसिद्धि दोनों हैं। क्या कुछ हिन्दी भाषाभाषी इस ओर ध्यान देंगे?

---

*यह भारतका परम दुर्भाग्य है कि देववाणी संस्कृतका आदर करना भी हमने यूरोपसे सीखा। भारतीय चित्रकलाका सम्मान करना हमें हैवल साहबने बताया। स्थापत्य-कलाकी महत्ता हमें लार्ड कर्जनने बतायी। हमारी भाषाओंके आदि व्याकरण और कोष अधिकांशमें विदेशियोंके ही रचे हुए हैं। हमारे रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी प्रतिभा स्वयं बङ्गालियोंको तब मालूम हुई जब उनके काव्यका यूरोपमें सम्मान हुआ। कहां तक गिनाया जाय, सच तो यह है कि यूरोप न होता तो हमें अपनी खूबियोंसे अपने प्रमादके कारण हाथ धोना पड़ता। ले०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मेरा जीवन-चक्र

इलाचन्द्र जोशी

वर्षों तक मेरी यही धारणा रही कि भाग्यके दोषसे मैं किसी नौकरीपर अधिक समय तक स्थिर नहीं रहने पाता। पर अब इस सम्बन्धमें मेरा मत-परिवर्तन होने लगा है।

जब बी० ए० पास कर लिया तो वकालत पास करना मेरे लिए आवश्यक हो गया। क्योंकि मैं जानता था एम०ए० पढ़ना मेरे लिए बेकार है। यदि फर्स्ट डिवीजनमें एम० ए० पास करनेकी आशा होती तो प्रोफेसरी पदका प्रार्थी होता। मैं जानता था कि इस क्षेत्रमें भी प्रबल "कम्पीटिशन" वर्तमान है। पर मुझे तो थर्ड डिवीजनमें भी पास होनेकी आशा नहीं थी। इसलिए एल-एल० बी० की ओर झुका। कई कारणोंसे इस ओर मेरी प्रवृत्ति भी थी और विश्वास था कि इस विद्यामें अवश्य पास हो जाऊंगा। भगवान्‌की कृपा और मित्रोंके अशीर्वादसे किसी प्रकार जब पास हो चुका तो घमण्डके मारे जमीनपर मेरे पांव नहीं पड़ते थे। यह उस जमानेकी बात कह रहा हूं जब बी० ए०, एल-एल० बी० की डिग्रीका कुछ महत्त्व था, और जिला अदालतोंमें वकीलोंकी संख्या अधिक नहीं थी। कुछ ही महीनोंके बाद बड़े शानके साथ मैंने अपने घरके दरवाजेके ऊपर अपने नाम तथा डिग्रीका साइन-बोर्ड टांग दिया। इरादा था कि "बार" के अन्यान्य वकीलोंकी तरह मुवक्किलोंसे छोटी-मोटी रकम लेकर कभी अपनी मर्यादा विनष्ट नहीं करूंगा। सिविल सूटके साधारण मामलोंमें सौसे कम नहीं लूंगा और फौजदारीके मामलोंमें पांच सौसे लेकर हजार तक मेरी फीस रहेगी।

खुदा गञ्जेको नाखून नहीं देता। दो-तीन महीने तक मुवक्किल देवताके दर्शन ही नहीं हुए। बड़ी मुश्किलसे एक दिन एक अभिज्ञ, अजान आदमी भूलसे भटकता हुआ मेरे पास आ पहुंचा। मामला फौजदारीका था, और यथेष्ट जटिल मालूम होता था। पांच सौसे हजार तककी फीस मांगनेका उत्साह तथा साहस अब मुझे नहीं रह गया था। इसलिए बहुत सोच-विचारकर मैंने दो सौ रुपये मांगे। वह व्यक्ति चौंक पड़ा। गिड़गिड़ाकर मिन्नतें करने लगा और अपनी गरीबीका रोना रोकर मुझसे पुनः विचार करनेकी प्रार्थना करने लगा। उसकी दशा देखकर मुझे भी दया आ गयी। इसलिए अपने पूर्व प्रस्तावमेंसे मैंने सौ कम कर दिया। वह बोला—"बाबूजी, हम गरीबोंपर रहम कीजिये, आपके भरोसेपर इतनी दूरसे यहां आया हूं।" मैंने झिझककर कहा—"मुझे जो कुछ कहना था, कह चुका। अब तुम बताओ, तुम कितना दे सकते हो?" बहुत सोच-विचारके बाद वह अत्यन्त दीनताका भाव दिखाकर बोला—"पांच रुपया लीजिये, और मेरा काम कर दीजिये! बड़ी विपत्तिमें पड़ा हूं, बाबूजी!"

मैं कुछ क्षणके लिए काठकी मूर्तिकी तरह स्तब्ध रह गया। इसके बाद उस व्यक्तिको दुतकारकर मैंने चले जानेको कहा। वह फिर उसी दीन हास्यसे हाथ जोड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ। जाते समय फिर एक बार बोला—"पांचमें अगर आप राजी नहीं होते तो कहींसे एक रुपया और लाकर आपको दे सकता हूं। किसी तरह मेरा उद्धार कर दीजिये!"

असह्य क्रोधसे कांपते हुए मैंने कहा—"जाओ!" वह दुबकता हुआ चला गया। असल बात यह थी कि मुझे उसपर उतना क्रोध नहीं आ रहा था जितना अपने स्वप्नके भङ्ग होनेपर दुःख हो रहा था।

दो वर्ष किसी तरह वकालती दुनियामें अपना अस्तित्व कायम रखनेमें समर्थ हुआ। इसके बाद स्थिति असम्भव हो उठी। मित्रोंने सलाह दी कि सेक्रेटेरियटमें कोशिश करनेसे कोई-न-कोई "आफीशियेटिंग पोस्ट" तुम्हें अवश्य मिल जायगी; एक बार लिस्टमें नाम दर्ज होनेसे बादको किसी मौकेसे परमेनेण्ट भी हो सकते हो। इस आकाश-वृत्तिसे तो यही अच्छा है कि एक बंधी हुई रकम माहवार मिल जाय।"

फलतः इस सदुपदेशसे प्रेरित होकर मैंने इसी प्रकारके एक "पोस्ट" के लिए चेष्टा की। एक "आफीशियेटिंग चान्स" मिल भी गया। दो महीनेके लिए सत्तर रुपया मासिकपर काम किया। तीसरे महीनेमें छुट्टी मिल गयी। बीच-बीचमें इसी प्रकार महीने-दो-महीनेके लिए काम मिल जाता था। प्रायः एक वर्ष इसी प्रकार कट गया। पर कब तक इस प्रकार काम चल सकता था! कोई दूसरा रास्ता



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देखना पड़ा। जब मैं स्कूलमें पढ़ता था तो मुझे हिन्दीमें लेखादि लिखनेका बड़ा शौक था। गणितकी इक्सरसाइज बुकोंमें देशकी दुर्दशा अथवा समाजकी सङ्कीर्णतापर बड़ी जोरदार भाषामें लम्बे-लम्बे लेख लिखा करता, और बिना किसीको दिखलाये फाड़कर फेंक देता। कालेजमें यह अभ्यास यद्यपि छूट गया था, तथापि समाचारपत्रोंमें जब किसी राजनीतिक अथवा सामाजिक अत्याचारकी खबर पढ़ता तो मन-ही-मन जोशीली भाषामें पूरा लेख तैयार कर लेता। उसे अक्षरोंमें लिखकर छपानेकी नौबत कभी नहीं आती थी, तथापि इससे एक लाभ यह हुआ था कि अभ्यास पूरी तरह छूटने न पाया था। जब सेक्रेटेरियटके "आफीशियेटिंग चान्सों" से उकता गया तो विचार करने लगा कि मेरे लेख लिखनेके अभ्याससे कुछ जीविका प्राप्त की जा सकती है या नहीं।

असहयोग आन्दोलन जोरोंपर था। मेरे एक मित्रने, जो कालेजमें मेरा सहपाठी रह चुका था और जिसके पिता कानपुरकी किसी मिलके शेयर होल्डर थे, अपनी अकर्मण्यताकी जड़तासे मुक्ति पानेके लिए सहसा एक दैनिक पत्र निकालनेका निश्चय किया। उसे भी हिन्दीमें लेख, कविता आदि लिखनेका चस्का था। उसने मुझसे सम्पादक बननेका प्रस्ताव किया। अन्धेको आंख चाहिए। मैं तत्काल राजी हो गया। सब तैयारियां हो गयीं। प्रेसकी एक बढ़िया मशीन खरीदी गयी। नाना प्रकारके बढ़िया-बढ़िया टाइप मंगवाये गये। पहलेसे ही पत्र-पत्रिकाओंमें "नव-सन्देश" के प्रकाशनकी सूचना छपवायी गयी। बड़े उत्साहसे मैं काममें जुट गया। बड़े धड़ल्लेसे लिखने लगा। दो ही अङ्क निकले होंगे कि तीसरे दिन पुलिस सार्जेण्ट दो अरुण-शिखा-धारी कान्स्टेबलोंको साथ लिये हमारे आफिसमें आ खड़े हुए। मुझसे बोले—"विजयमोहन वर्मा आपका ही नाम है?" मेरे तो होश उड़ गये। जैसे काठ मार गया हो। गलेसे आवाज नहीं निकलती थी। विकृत, आतङ्कित कण्ठस्वरमें मैंने कहा—"जी हां।" उन्होंने एक कागज पाकटसे निकालकर मुझे दिखाया। मेरी गिरफ्तारीका वारण्ट था। पाठकोंको विश्वास नहीं होगा, यदि मैं कहूं कि मैं भय तथा क्षोभके कारण रो पड़ा।

मजिस्ट्रेटसे यद्यपि मैंने स्पष्ट शब्दोंमें क्षमा नहीं मांगी, तथापि मेरी अत्यन्त आर्त दशा तथा कातर भाव देखकर मजिस्ट्रेटने मुझे चेतावनी देकर छोड़ दिया। जब जीता-जागता छूटकर आया तो मित्रोंने मेरी योग्यता, बहादुरी और गिरफ्तारीपर मुझे बधाइयां दीं। मैं खुशीसे उछल पड़ा। तमाम लखनऊ शहरमें मेरी धूम मच गयी।

इसी सिलसिलेमें एक मिनिस्टर महोदयसे मेरी जान-पहचान हो गयी। मैंने उनसे प्रार्थना की कि कहीं मेरे रोजगारका ठिकाना लगा दें। वह बोले—"गवर्नमेण्ट सर्विस करनेका इरादा है?"

"साहस नहीं होता।"

"तब मैं किस प्रकार आपकी सहायता कर सकता हूं?"

"यदि किसी स्टेटमें—"

वह मुसकराये। क्यों मुसकराये, कह नहीं सकता। फिर बोले—"अच्छा, कभी मौका हुआ तो देखूंगा।"

*
* *

इलाहाबादमें नित्य गङ्गा-यमुना-सङ्गममें स्नान करके पुण्य सञ्चय कर रहा था। अकर्मण्य अवस्थामें अनन्त अवकाशका आनन्द अनुभव कर रहा था और परान्न भक्षण करके परम तृप्त था। स्नान और भोजनके समयके अतिरिक्त दिन-भर और रात-भर लेटा रहता। कभी नींद आती, कभी अलस, असम्भव स्वप्नोंकी तरङ्गमें झूमता। न तो अब मुझमें जीविकाकी खोजकी शक्ति ही रह गयी थी, न इच्छा ही थी। ऐसे समय एक दिन अकस्मात् पूर्वोल्लिखित मिनिस्टर साहबके हाथका लिखा एक पत्र मेरे पास पहुंचा। उसमें उन्होंने लिखा था कि अवधके किसी इस्टेटमें एक रानीको प्राइवेट सेक्रेटरीकी आवश्यकता है। वेतन प्रारम्भमें सवा सौ दिया जायगा। रानी! प्राइवेट सेक्रेटरी! वेतन सवा सौ! मेरी तो बाछें खिल गयीं। इतना वेतन मुझे आज तक किसी भी पोस्टमें नहीं मिला था। तिसपर एक रानीकी नौकरी! अर्थात् उसके साथ बैठकर गपशप द्वारा उसका जी बहलानेकी नौकरी! मेरे उपयुक्त इससे बढ़कर और क्या काम हो सकता था! तत्काल मिनिस्टर साहबको लिख दिया कि कृपया यह नौकरी मुझे अवश्य दिलवा दें। साथ ही दो-एक खुशामदकी बातें भी लिख दीं।

मिनिस्टर साहबकी कृपासे मेरी नियुक्ति हो गयी। यथासमय इस्टेटमें उपस्थित हुआ। मैंने सोचा था कि रानी साहबा सुलताना रजियाकी तरह मसनदपर बठी होंगी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चारों तरफसे दरबारी लोग उन्हें घेरकर इस्टेट-सम्बन्धी नाना निगूढ़ विषयोंकी चर्चामें रत होंगे। पर जब महलपर पहुंचा तो मालूम हुआ कि रानी साहबा परदेमें रहती हैं, और इस्टेटका कुल प्रबन्ध शिवशङ्कर शर्मा नामके एक दीर्घ-अनुभवी वृद्ध सञ्चालन करते हैं। यह भी पता चला कि मुझे पहले शर्माजीसे ही मिलना होगा।

शर्माजीसे जब मिला तो उन्हें देखते ही मेरा सारा रक्त जमकर बरफ हो गया। उनकी अवस्था पचाससे ऊपर होगी। शरीर बड़ा भारी-भरकम था। मूछें उनकी ऐसी विकट थीं कि देखते ही दिल दहल उठता था। आंखोंसे तीक्ष्णता, क्रूरता और रूखापन टपकता था। बड़े गम्भीर कठस्वरमें उन्होंने यथाशक्ति नम्रतापूर्वक पूछा—"आप किस कामसे तशरीफ लाये हैं?"

मैंने उन्हें अपना नियुक्ति-पत्र दिखा दिया, क्योंकि मुंहसे उनकी बातका उत्तर देनेका साहस मुझे नहीं होता था।

पत्र हाथमें लेकर बिना चश्मेके उसे पढ़कर (पहली ही मर्तबा उन्हें देखनेसे मुझे मालूम हो गया था कि उनकी गृद्ध-दृष्टिको चश्मेकी आवश्यकता नहीं हो सकती) उन्होंने कहा—"अच्छी बात है। आप हीका नाम विजयमोहन वर्मा है?"

"जी हां।"

"अच्छी बात है। अभी आप आराम कीजिये, ट्रेनकी सफरसे थके हुए होंगे। ऐ! कोई है?"

एक साफ-सुथरा, चुस्त-चालाक गोरा-उजला छोकरा हाजिर हुआ। मैं तो उसे देखकर दङ्ग रह गया।

मैनेजर साहब बोले—"बहादुरसिंह, जाओ, बाबूके लिए एक अच्छे कमरेका इन्तजाम कर दो!"

बहादुरसिंह बड़े कायदेसे झुककर बोला—"जो हुक्म सरकार!" शर्माजीने मुझसे कहा—"आप इसके साथ तशरीफ ले जाइये। जब जिस चीजकी जरूरत पड़े, इसीसे कहियेगा।" मैं बहादुरके साथ हो लिया। वह एक कमरेमें मुझे ले गया। एक नौकर बुलाकर कमरा साफ करवा दिया और स्प्रिंगकी चारपाईपर बिछे हुए एक मोटे गद्देके ऊपर उसने मेरा बिस्तर बिछा दिया। कोट और जूते उतारकर मैं उसपर चारोंखाने चित लेट गया।

बहादुरसिंहने पूछा—"और क्या हुक्म है?"

मैंने कहा—"चाय मिलेगी?"

"चायके साथ क्या लाऊं? केक, टोस्ट, बिस्कुट, अण्डा?"

दो अण्डोंके लिए आर्डर दे दिया। वह चला गया।

मेरी आंखोंके सामने बार-बार मैनेजर-साहबकी रुद्र मूर्ति नाच रही थी। मुझे इस बातपर आश्चर्य हो रहा था कि इस यमराजकी शक्लके व्यक्तिने प्रथम दृष्टिमें ही मेरा अपमान क्यों नहीं कर डाला! व्यवहार तो उसका कुछ बुरा नहीं था। तथापि मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि यह भूत मुझे कच्चा ही चबा जायगा।

जब बहादुरसिंह चाय लेकर आया तो मैंने उससे पूछा कि वह कहांका रहनेवाला है और इस इस्टेटमें कबसे काम करता है। मालूम हुआ कि वह नैपाली है और प्रायः पांच वर्षसे यहीं काम करता है। उसने कहा कि रानी साहबाका नैपालसे कोई विशेष सम्बन्ध होनेके कारण वह अधिक करके नैपाली नौकरोंको ही पसन्द करती हैं।

शामको मैनेजर साहबने मुझे बुला भेजा। एक साफ-सुन्दर सजे हुए कमरेमें वह मुझे ले गये। सामनेके कमरेमें चिकके भीतरसे कलहास्यका मन्द-मधुर कल्लोल कर्णगोचर हो रहा था। मेरा हृदय पुलक-विह्वल होकर तरङ्गित होने लगा।

चिकके पास खड़े होकर शर्माजी उस रहस्यमय अन्तःपुरकी ओर मुंह करके बोले—"हुजूर, प्राइवेट सेक्रेटरी साहब हाजिर हैं।"

पञ्चम सुरमें एक अत्यन्त कोमल, सुकुमार गलेका शब्द सुनायी दिया—"उन्हें चिकके पास बैठनेको कहिये।"

"जो हुक्म सरकार!"

शर्माजीकी आज्ञानुसार मैं चिकके कुछ समीप बैठ गया।

उसी कलकण्ठका कलित झङ्कार फिर सुनायी दिया—"आपका शुभनाम?"

"विजयमोहन वर्मा।"

"इसके पहले कभी आप किसी रियासतमें काम कर चुके हैं?"

"जी नहीं, यह पहला मौका है।"

"कब तशरीफ लाये?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"आज सुबह।"

"रहनेका ठीक प्रबन्ध हो गया है? किसी प्रकारकी कोई तकलीफ तो नहीं है?"

"नहीं हुजूर! मैं बड़े आनन्दमें हूं।"

शर्माजीकी देखादेखी मैं भी "हुजूर" कहना सीख गया था। "हुजूर"की बातोंका उत्तर तो दे रहा था, पर मेरा ध्यान दूसरी ही बातपर था। उस रहस्यावरणके भीतर मैं यथासम्भव दृष्टिको केन्द्रित करके उस अस्पष्ट माया-जगत्की प्रत्येक छाया-रेखा पर गौर कर रहा था। मैंने देखा कि नव-विकसिता ललिता लवङ्ग-लताकी तरह एक षोड़शी देवबाला एक सुवर्ण-मण्डित कुर्सी-पर सुशोभित है और चारों ओर सुन्दरी अलबेली अप्सरोपम ललनायें खड़ी हैं। जीविकाकी चिन्तामें ही मैंने आज तक अपना जीवन बिताया था। आज सोचने लगा कि यदि यही स्वर्गीय सौन्दर्य प्रतिपल आंखोंके सामने लहराता रहे तो आदमी बहुत दिनों तक बिना खाये भी जी सकता है। इस दृश्यके आगे जीविकोपार्जनका प्रश्न अत्यन्त तुच्छ तथा अकिञ्चित्कर मालूम हुआ।

"इस समय आप आराम कीजिये, थके होंगे। कल कोई काम होगा तो आपको बुला लिया जायगा।"

मैंने सिर झुकाकर कहा—"जो आज्ञा, सरकार!"

मैं अन्यमनस्क अवस्थामें जाने लगा। चित्त उद्भ्रान्त हो गया था। सहसा पीछेसे उसी कमनीय कोकिल-कण्ठकी पुकार सुनकर मैं ठिठककर खड़ा रह गया। पीछे फिरकर चिकके निकट आकर मैंने पूछा—"सरकारने मुझे पुकारा था?"

अनेक कण्ठोंके सम्मिलित कलहास्यने मेरा परिहास किया। मेरा हृदय कम्पित और मुख लज्जासे रक्तिम हो आया। रानी साहिबाने नम्र मधुर स्वरमें उत्तर दिया---"नहीं, मैंने तो नहीं पुकारा!" उन्होंने शायद शर्माजी कहा होगा, मैंने वर्माजी सुना।

जब अपने कमरेमें पहुंचा तो पहला काम मैंने यह किया कि ड्रेसिंग टेबलके शीशेपर बड़े गौरसे अपना मुख देखने लगा। आज तक मैं अपने शरीरके इस विशेष भागके प्रति एकदम उदासीन था। मैं रूपवान हूं या कुरूप, इस सम्बन्धमें कभी कोई उत्सुकता ही मेरे मनमें पैदा नहीं हुई थी। नहा-धोकर अभ्यासवश जब शीशा देखता तो केवल सिरके बिखरे हुए बालोंको कङ्घेसे पीछेकी ओर करनेके लिए। पर आज बात ही दूसरी थी। आज अचानक जैसे किसीने अपनी जादूकी कुञ्जीसे मेरे लिए किसी गुप्त, अपरिचित जगत्-का माया-द्वारा खोल दिया हो। अङ्ग-अङ्गमें रूप और यौवनकी उमङ्ग तरङ्गित होने लगी। हृदयमें प्रेम और वासनाका स्रोत उमड़ चला था। प्रायः पन्द्रह मिनट तक लगातार मैं शीशेमें एकान्त मनोनिवेशपूर्वक अपने मुखकी बनावटपर विचार करने लगा। प्रत्येक स्पष्ट तथा अस्पष्ट रेखापर मैंने परकीय दृष्टिसे कला-विशेषज्ञकी तरह ध्यान दिया। पर किसी प्रकार भी मुझे अपने रूपपर सन्तोष नहीं हुआ। हताश होकर जूते उतारकर पलंगपर लेट गया। नाना सम्भव-असम्भव कल्पनायें मस्तिष्कमें घूर्णित होने लगीं।

दूसरे दिन नहा-धोकर कपड़े पहन ही रहा था कि बहा-दुरसिंहने कहा ---"सरकारने आपको याद किया है।"

आज मैंने खूब तेल मलकर आधी बट्टी साबुनकी खर्च करके स्नान किया था। मुखमें क्रीम आदिका भी विशेष उपयोग किया था। यथासाध्य सज-संवरकर, बनठनकर दरबारमें, अर्थात् पार्टीशनकी इस ओर, हाजिर हुआ और चिकके निकट खड़े होकर बाकायदा झुका।

"तशरीफ रखिये!" वही सङ्गीत-मुखरित स्वर सुनायी दिया।

एक कुर्सी पकड़कर मैं बैठ गया। इस प्रत्याशामें था कि इस्टेट सम्बन्धी किसी जरूरी विषयपर मुझसे सलाह ली जायगी, अथवा मुझे हिदायत दी जायगी। पर मैं चकित रह गया जब मुझसे यह प्रश्न किया गया—"आपका विवाह हो चुका है?" यह प्रश्न अत्यन्त सहज, स्वाभाविक रीतिसे किया गया था।

क्षण-भरके लिए मैं विमूढ़-सा अवाक् रह गया; पर तत्काल अपनेको संभालकर बोला—"नहीं हुजूर! अभी इस सौभाग्यसे वञ्चित हूं।" इस प्रकारका उत्तर मेरी तात्कालिक स्थितिमें मुझसे कैसे देते बन पड़ा, कह नहीं सकता। पर अपने इस उत्तरसे मुझे सन्तोष हुआ। रानी साहबापर भी इसका कुछ कम अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। चिककी आड़में भी मैंने स्पष्ट देखा कि उनकी आंखें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रसन्नतासे उद्दीप्त हो उठी थीं। उत्तरमें कोई खास बात नहीं थी, पर उसमें लघु परिहास स्वाभाविक रूपसे व्यक्त हो पड़ा था। मैंने निश्चय कर लिया कि अन्त तक इसी ढङ्गसे वर्तमान वार्तालापको निबाहूंगा।

रानी साहबाने कहा—"आश्चर्य है!"

मैंने कहा—"आश्चर्यकी तो कोई बात नहीं है।"

"आपकी अवस्था क्या है?"

"यौवनावस्था।"

हंसीका कल-कल्लोल तरङ्गित हो उठा।

"मैं पूछती हूं आपकी उम्र क्या है?"

"तीसके लगभग होगी।"

"अब तक आप अविवाहित हैं?"

"जी हुजूर! आपको आश्चर्य होता है; सांसारिक दृष्टिसे यह बात, सम्भव है, वास्तवमें कुछ आश्चर्यजनक हो। पर मेरी तो धारणा है कि युवावस्था विवाहके लिए उपयुक्त नहीं है। पुरुषकी आत्मामें उस समय जो बहुमुखी उद्दाम तरङ्गें लहराने लगती हैं, उन्हें कोई स्त्री आकर सब तरफसे बन्द करके केवल एकमुखी कर दे, यह किसी प्रकार भी उचित नहीं है। नाना रसोंको नाना भावोंसे चखनेके लिए ही तो भगवान्‌ने मनुष्यको यौवन दिया है! वृद्धावस्थामें मनुष्य शिथिल-प्राण हो जानेसे उसकी भावनायें एकमुखी होने लगती हैं। विवाहके लिए वही ठीक अवस्था है।"

"तो आप बुढ़ापेमें विवाह करनेकी इच्छा रखते हैं?"

"जी हजूर! विचार तो यही है!"

फिर एक बार हंसीकी लहर उठी।

रानी साहबाने प्रसन्नता पूर्वक कहा—"आप बड़े आनन्दी जीव हैं।"

इस चाटुवाक्यसे मेरी अन्तरात्मा गद्गद हो उठी। बहुत देर तक इसी प्रकारकी बातें होती रहीं। अन्तको जब मै आज्ञा लेकर उठकर जाने लगा तो मैंने कनखियोंसे देखा कि चिक हटाकर दोनों तरफसे अनेक कौतूहली आंखें मुझे घूरने लगीं। मैं समझ गया कि मैंने सफलता प्राप्त कर ली है।

*
* *

पहले ही दिन इस ढङ्गसे वार्तालापका सिलसिला जम गया तो मेरी घनिष्ठता लम्बी-लम्बी छलांगें मारकर बढ़ने लगी। मेरा स्वप्न धीरे-धीरे सफल होने लगा। रानी साहबा यथासम्भव एक मिनट भी मुझे अपनी आंखोंकी ओट नहीं रखना चाहती थीं। मेरी धृष्टता दिन-दिन बढ़ती गयी। वकालतकी प्रैक्टिसके जमानेमें मेरी जो वाक्-शक्ति अत्यन्त शिथिल रूपमें व्यक्त होती थी, वह अब सुसम्बद्ध तथा सुनियमित रूपमें आत्म-विश्वासपूर्वक प्रकट होने लगी।

यह पहले ही कह चुका हूं कि रानी साहबा देखनेमें अभी पोड़शी मालूम होती थीं, और सम्भवतः उनकी अवस्था भी सोलह-सत्रह वर्षसे अधिक न होगी। पर उनकी बुद्धि इसी छोटी उम्रमें परिपक्वावस्थामें पहुंच गयी थी, इसके प्रमाण मुझे बात-बातमें मिलते जाते थे। यह आश्चर्यकी ही बात थी, सन्देह नहीं। बहुत छोटी उम्रमें वह विधवा हो चुकी थीं। उनके जीवनके पूर्व-इतिहासके सम्बन्धमें मैं जो-कुछ तथ्य संग्रह करनेमें समर्थ हुआ था, उनसे यही सिद्ध होता था कि अन्तःपुरकी परिचारिकाओंके अतिरिक्त अन्य कोई सहृदय व्यक्ति उन्हें अपने पतिकी मृत्युके बाद ऐसा नहीं मिला था जो उन्हें राज-काज अथवा संसारके व्यावहारिक ज्ञानके सम्बन्धमें सहायता देता। आत्म-रक्षाकी स्वाभाविक प्रवृत्ति कहिये, अथवा पूर्वजन्मार्जित संस्कारकी विचक्षणता कहिये, कारण कुछ भी हो, उनकी बुद्धि अन्तःपुरके बद्ध तथा अलस वातावरणमें भी अत्यधिक प्रखर तथा शाणित हो उठी थी। राज-काजके प्रत्येक विषयके प्रत्येक पहलूपर वह ऐसी विश्लेषणात्मक दृष्टिसे विचार करती थीं, मानों इस काममें उन्हें अभ्यस्त होते-होते कई युग बीत चले हों। अपने अधिकारको भी पूर्ण उपयोगमें लाना वह जानती थीं। आदमीको भी दृष्टिमात्रसे ही पहचान लेती थीं, मेरा यह दृढ़ विश्वास है। तथापि उन्होंने मुझे पहचाननेमें भूल की थी! अपना असली हिंस्र, लोलुप रूप छिपाकर मैंने सहज, स्निग्ध स्वभावका जो नकली वाह्यावरण धारण कर लिया था उसके चकमेमें वह आ गयीं। खैर।

मेरी प्रत्येक छोटीसे छोटी आवश्यकतापर रानी साहबाका ध्यान रहता था। जिस आवश्यकताका स्वयं मुझे ख्याल न रहता उसे वह मुझे सुझाती थीं और मेरे अपने अभावके प्रति अवहेलनाके लिए मुझे सस्नेह तिरस्कृत करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तत्काल उसकी पूर्ति कर देती थीं। एकदम नये फैशनकी पोशाकके सम्बन्धमें वह मुझे हिदायत देती थीं। सोनेकी घड़ी, हीरेकी जड़ी अंगूठियां, दामी चेन आदि भी रानी साहबाकी जिदसे मुझे पहनने पड़े! मेरी इच्छाके होने-न-होनेका प्रश्न दूसरा है।

रानी साहबाके अन्तःपुरका सब प्रबन्ध मेरे हाथ था, और मेरा प्रबन्ध रानी साहबा करती थीं। इस प्रकार आर्थिक दृष्टिसे मुझे डबल लाभ था। पर केवल इसी लाभसे मझे सन्तोष नहीं था। पहले दिनोंकी तरह अर्थ-पिपासा ही मेरी चरम पिपासा नहीं रह गयी थी। जिन दो मर्मच्छेदी नयनोंकी चञ्चल तारकाओंके भीतर माया-मरीचिका मनो-मोहक रूपसे विलसित होकर मुझे लुभा रही थी, उसने मेरी अन्तर्वासनाकी पिपासाको प्रबल रूपसे भड़का दिया था। मेरा शुष्क हृदय पागलकी तरह उसी मृगजलकी ओर दौड़ रहा था। वह किसी प्रकार भी भ्रमजालसे विमुख नहीं होना चाहता था।

रातको सोनेके समय मैं सोचता कि किस अलौकिक उपायसे स्वर्ण-पिञ्जरमें बद्ध उस करुण, कोमल, कमनीय कपोतीको बाहर निकाला जा सकता है! इतने निकट होनेपर भी मैं उस मायावतीसे इतनी दूर था! केवल एक तुच्छ चिकका व्यवधान दुर्लंघ्य भीम पाषाणकी तरह हम दोनोंके बीच पड़ा था। यह कब तक, किस अनन्त युग तक इस प्रकार अटल रहेगा?—अपने अन्तर्देवतासे मैंने यह प्रश्न किया। उस सुकुमार, सलोनी मूर्तिका हृदय भी नवनीतकी तरह कैसा कोमल होगा, इस भावनासे मेरा हृदय उद्वेलित हो उठता। उस नवनीतकी स्निग्धतासे कैसे अपने रुक्ष हृदयको सरस बनाऊं, केवल यही एक चिन्ता सोतेमें, जागतेमें मुझे प्रतिपल व्यस्त करने लगी। मैं जानता था कि इसमें अनेक दुरतिक्रम्य बाधाओंका (जिनमें उस चिककी बाधा सबसे अधिक कठिन थी) सामना करना पड़ेगा, पर मन-ही-मन मैंने प्रण कर लिया कि सब बाधाओंपर विजय प्राप्त करके ही छोड़ूंगा।

पहले मैंने उस नवनीतोपम हृदयको मन्द-मधुर अग्नि-संयोग द्वारा पूर्ण रूपसे विगलित कर लेनेका निश्चय किया। रानी साहबाको काव्योपन्याससे बहुत प्रेम था। संस्कृतका यद्यपि उन्हें पूरा ज्ञान नहीं था, तथापि किसी श्लोककी आवृत्ति करके उसका अर्थ समझा देनेपर उस श्लोकका रस वह अच्छी तरह ले लेती थीं, और जो श्लोक उन्हें विशेष प्रिय मालूम होता, उसे याद भी कर लेती थीं। मैंने भर्तृहरिके वैराग्य-शतकसे अपने षड्यन्त्रका श्रीगणेश किया। प्रारम्भमें ही शृङ्गार-शतक सुनानेका साहस मुझे नहीं हुआ। ऐसी हार्दिक उमङ्गसे मैं वैराग्यके श्लोक सुनाकर उनपर उपयुक्त टिप्पणियां करता कि तरुणी विधवा श्रोत्रीके कमनीय दृगोंमें गद्गद भाव छा जाता, और उनसे उद्दीप्त वैराग्य-ज्योति विकीरित होने लगती थी। कुछ दिनों तक यही सिल-सिला जारी रहा, और विधवा रानीने अत्यन्त उत्सुकता-पूर्वक इस वैराग्य-चर्चामें मनोनिवेश किया। इसके बाद नीति-शतककी बारी आयी। इसमें भी रानी साहबाने काफी दिलचस्पी ली। अन्तको जी कड़ा करके मैंने शृङ्गार-शतकका पाठ प्रारम्भ किया। जो श्लोक अत्यन्त उग्र तथा अश्लील थे उन्हें छोड़कर जिनमें नारीके विशुद्ध रूपकी प्रशंसा थी तथा पुरुषकी रूप-पिपासा तथा लालसा-जनित ताड़नाका हलका, पर मर्मघाती, वर्णन था उन्हें अत्यन्त सावधानीसे मैं सुनाने लगा। तीन-चार ही ऐसे श्लोक सुनाये होंगे कि रानी साहबाका उज्ज्वल गौरवर्ण मुख गुलाबकी तरह रक्तवर्ण हो आया। मेरी इच्छा हुई कि इस पूर्ण-विकसित गुलाबको इसी दम जी भरकर हृदयसे लगा लूं।

"वर्माजी, आज कोई दूसरी चर्चा छेड़िये। आज श्लोक रहने दीजिये, जी उकता गया है।"

मैं चौंका। कुछ लज्जित भी हुआ, पर अधिक नहीं। दूसरे दिन मैंने मेघदूत सुनाना प्रारम्भ कर दिया। तीसरे दिन प्रेम-सम्बन्धी एक फ्रेञ्च कहानीकी बारी आयी। बस सिल-सिला जम गया। बांध टूटनेकी नौबत आ गयी। मैं समझ गया कि इस मृगीको अपनी वासनाके जालमें फंसानेका अब उपयुक्त अवसर आ गया है।

*
* *

रानी साहबाकी एक परिचारिका थी, जो उनकी बहुत मुंहलगी थी, और इसी कारण धृष्ट भी हो गयी थी। देखनेमें वह कुरूपा नहीं थी और भ्रू-विलाससे भी अनभिज्ञ नहीं थी। वह अक्सर किसी बहानेसे मेरे कमरेमें आ जाया करती थी। पहले तो मैं समझा कि वह मेरे प्रति किसी कारणसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आकर्षित हुई है। पर पीछे धीरे-धीरे इस सम्बन्धमें मेरी धारणा बदल गयी। असलमें वह मेरे प्रति नहीं, मेरे नैपाली नौकर बहादुरसिंहके प्रति आसक्त थी। बादको एक विश्वसनीय व्यक्तिसे मुझे यह भी पता चला कि वह परिचारिका, जिसका नाम गङ्गा था, चाहती है कि बहादुरसिंहके साथ विवाहके रूपमें उसका स्थायी सम्बन्ध स्थापित हो जाय, और बहादुर-सिंहकी भी यही इच्छा है, यद्यपि कई कारणोंसे वह लाचार है। मैंने जब यह बात सुनी तो सोचा कि दोनोंको पूर्णतः अपने वशमें करने तथा विश्वासमें लानेका यह अच्छा अव-सर है। एक दिन बहादुरसिंहको पकड़कर मैंने उससे पूछा—"तुम्हारी शादी हो चुकी है?" "जी नहीं।" "इच्छा है?" वह कुछ देर तक लजाकर चुप रहा, फिर बोला—"शादीकी इच्छा तो सभीकी होती है, बाबूजी, पर....." मैंने उसकी बात काटकर कहा—"देखो, अगर गङ्गाके साथ तुम्हारी शादी हो तो तुम राजी हो?" वह चौंका। मैंने कहा—"मुझसे छिपानेकी जरूरत नहीं है, मुझे सब मालूम है। मैं चाहूं तो तुम्हारी शादी गङ्गासे करवा सकता हूं, मेरे हाथमें बहुत बात है। पर शर्त यह है कि मैं जिस कामके लिए कहूं, तुम्हें करना होगा।"

बहादुर बोला—"मैं तो आपका तावेदार हूं।"

मैंने कहा—"देखो, जो काम मैं बतलाऊंगा वह बड़े जोखिमका है। उसमें बड़ी दिलेरी, होशियारी और ईमान-दारीकी जरूरत है। तुम और गङ्गा, दोनों मिलकर इसे कर सकोगे। अगर काम ठीक तरहसे करोगे तो तुम्हें उसका ऐसा इनाम मिलेगा कि जिन्दगी-भर चैनसे रहोगे।"

उसने केवल सिर झुकाकर मौन-सम्मतिका सङ्केत दिया।

उस रातको मैं सोया नहीं। गोल्ड-बैण्डवाली फौनटेन पेन और क्रीम लेड कागजका राइटिंग पैड लेकर बहुत देर तक मेजके ऊपर झुका रहा और नाना उद्भट, असङ्गत विचारोंमें मग्न रहा। एक लेटर-पेपरपर कुछ लिखकर उसे फाड़कर फेंक दिया; दूसरेपर लिखा, वह भी फेंक दिया; तीसरेकी भी यही गति हुई। अन्तको नाना बिखरे हुए भावोंको जब बड़ी मुश्किलसे किसी अंश तक मस्तिष्कमें एकत्र कर पाया तो दो घण्टेके सिर-खप्पनके बाद प्रेमपत्र लिखकर समाप्त किया। एक लिफाफेमें उसे अच्छी तरह बन्द करके अपने तकियेके नीचे उसे छिपाकर लेट गया। घण्टे-भरके लिए आंख लगी।

सुबहको जब टी-टोस्ट लेकर बहादुर आया तो मैंने उसके हाथमें वह शिरोनामाहीन पत्र देकर प्रायः आधे घण्टे तक उसे स्थिति अच्छी तरह समझायी। पत्र किस ढङ्गका है, इस सम्बन्धमें स्पष्ट कुछ न कहनेपर भी अस्पष्ट इङ्गित दे दिया। वह पहले कुछ चकराया; पर रियासतका नौकर था, अनेक जटिल, गुप्त रहस्य-चक्रोंसे परिचित था, इसलिए जल्दी संभल गया। अत्यन्त सावधानीसे पत्र जेबमें छिपाकर वह स्थिर पदक्षेपसे चल दिया। मैं जान और ईमानपर खेल चुका था, और उसके लिए तैयार बैठा था। इस प्रकार निरन्तर तड़पते रहना, अन्तर्दहनकी उग्र ज्वालासे प्रतिपल दग्ध होते रहना, मेरे लिए असह्य था। इसलिए मैंने निश्चय कर लिया था कि या तो अपनी मनोकामना पूरी करके छोड़ूंगा,—कमसे कम उस क्षुद्र चिककी बाधाको दूर करूंगा—नहीं तो पतन तथा अपमानके निम्नतम गड्ढेमें जा गिरूंगा—वर्तमान अवस्थासे वही बेहतर होगा।

उस दिन रानी साहबाके महिला-दरबारमें मैं नहीं गया। एक बार बुलावा आया था (उस समय निश्चय ही पत्र उनके पास नहीं पहुंचा था) मैंने किसी बहानेसे टाल दिया। दिन-भर शङ्कित, कम्पित हृदयसे उत्कण्ठापूर्वक गुप्त उत्तरकी प्रत्याशा करने लगा, और साथ ही नाना सम्भव, असम्भव शङ्कायें भी मनमें ऊधम मचा रही थीं। बाहर किसीके तेज कदमोंकी आवाज सुनता तो चौंक उठता कि कहीं मुझे गिरफ्तार करने-के लिए तो कोई आदमी दौड़ा नहीं आता, किसीको जोरसे अस्पष्ट भाषामें चिल्लाते हुए सुनता तो शङ्का होती कि मुझे पकड़कर, नौकरों द्वारा डण्डों अथवा कोड़ोंकी चोटोंसे मरवा-कर अपमानित किये जानेका विचार हो रहा है। मैनेजर साहबकी भैरव-मूर्ति आंखोंके आगे नाचने लगती। और दिनों बहादुर दस-दस मिनटके अन्तरमें मेरे पास आता था, पर आज उसके दर्शन ही नहीं होते थे।

आखिर लम्बी प्रतीक्षाके बाद एक बजेके करीब वह खाना लेकर आया। मेरा कलेजा जोरोंसे धड़क रहा था और उससे यह पूछनेका साहस नहीं होता था कि "सरकार" के हाथ पत्र पहुंचा या नहीं, यदि पहुंचा तो उन्होंने उसे पढ़कर क्या भाव प्रकट किया। कुछ देर तक मैं इसी इन्तजारमें रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि बहादुर स्वयं उस पत्रका उल्लेख करेगा। पर वह कुछ न बोला। अन्तको जब वह जाने लगा तो मैंने साहस बटोरकर उसे अपने पास बुलाया और यथाशक्ति आवाजको धीमी करके कहा—"चिट्ठी सरकारको दी थी ?"

उसने अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक सिर नीचा करके संक्षेपमें उत्तर दिया—"जी हां।"

"तुमने दी थी या गङ्गाने ?"

"गङ्गाने।"

"सरकारने उसे अभी पढ़ा है या नहीं, कुछ बता सकते हो ?"

"कह नहीं सकता।"

एक दीर्घनिःश्वास छोड़कर मैंने कहा—"अच्छा जाओ।"

खाना गलेसे होकर नीचे नहीं जाना चाहता था। पानी पी-पीकर बड़ी मुश्किलसे दो-चार कौर पेटमें डालकर लेट गया। बहादुर आया, थाली-गिलास उठाकर ले गया। मैं निःशब्द लेटा ही रहा। बाहर किसीके पांवकी आहट सुनता तो चौंक पड़ता। दिन-भर यही अवस्था रही, पर न तो कोई पत्र-वाहक कुछ उत्तर लेकर ही मेरे पास आया, न "सरकार" ने ही मुझे बुलाया। मैं समझ गया कि मेरी स्थिति सङ्कटजनक हो उठी है। मुझे यह स्पष्ट विदित हो गया कि मेरा मूर्खतापूर्ण पत्र पाकर रानी साहबाने अपनेको अत्यन्त अपमानित अनुभव किया है; अब वह मेरा मुंह नहीं देखना चाहतीं और किस उपायसे मुझे दण्ड दिया जा सकता है, इसी चिन्तामें हैं।

सन्ध्याको अभ्यासवश बहादुर चाय लाया। उसके चेहरेमें मैंने आज अन्य दिनोंकी अपेक्षा अधिक गम्भीरता पायी। यह चिह्न भी मुझे अच्छा नहीं मालूम हुआ। मुझे सन्देह हो रहा था कि उसे "सरकार" की नाराजगीका पूरा हाल मालूम है, पर मुझे कुछ नहीं बताना चाहता। मैं भी उससे एक शब्द इस विषयमें न बोला, और निश्चय कर लिया कि जैसा-कुछ भी सङ्कट आ पड़े, भुगत लूंगा। जी कड़ा कर लिया।

पर धैर्यका बांध टूटता जाता था। रात-भर विकट स्वप्न देखता रहा। दूसरा दिन भी इसी तरह बीत गया। न तो कोई उत्तर मुझे मिला (जिसकी आशा इस सङ्कटापन्न स्थिति-में भी मैंने नहीं छोड़ी थी) न रानी साहबाने और दिनोंकी तरह मुझे अपने पास बुलाया। बहादुरके चेहरेकी गम्भीरता मुझे उत्तरोत्तर बढ़ती हुई-सी प्रतीत होती थी। यह बात मुझे सबसे अधिक शङ्कित कर रही थी। पर मैंने उससे एक भी प्रश्न इस सम्बन्धमें न किया। एक बार इच्छा हुई कि बिना बुलाये ही रानी साहबाके पास चला जाऊं और कहूं कि क्षमा कर दें, अबसे कभी यह भूल न होगी। पर इस दुस्साहसके लिए मुझमें शक्ति नहीं रह गयी थी।

जब दूसरा दिन भी इस प्रकार बीत चला और इस अनिश्चितावस्थामें मेरा एकान्तवास मुझे भावी आशङ्काके कारण अत्यन्त भयावह मालूम होने लगा तो मैंने रात-भरके सङ्कल्प-विकल्पके बाद इज्जत बचाकर किसी तरह भाग चलना ही श्रेयस्कर समझा। रेलवे स्टेशन इस्टेटसे प्रायः पांच मील दूर था। इस्टेटकी मोटर ले जाना मैंने निरापद नहीं समझा। निश्चय किया कि एक्केका प्रबन्ध करना होगा।

अभी अंधेरा ही था। रात्रिके इस अन्तिम प्रहरमें प्रथम कोकिलके अनर्गल कुहू-रवसे सचेत होकर मैं चुपकेसे उस कमरेकी ओर गया, जहां बहादुर सोता था। मनमें यह शङ्का थी कि कहीं वह भीतरसे किवाड़ बन्द करके न सोया हो। रियासतके नौकरोंके सन्दिग्ध चरित्रके यथेष्ट प्रमाण मुझे मिल चुके थे, इसीलिए मैं शङ्कित था। जब मैंने किवाड़ खुला पाया तो भगवान्‌को धन्यवाद दिया। भीतर जाकर हाथसे उसका शरीर जब बार-बार हिलाया तब जाकर उसकी कुम्भकर्णी निद्रा भङ्ग हुई। चौंककर वह बोला—"कौन है ?" मैंने धीमे स्वरमें कहा—"मैं हूं। एक जरूरी कामके लिए तुम्हें जगाया है। कपड़े पहनकर जल्दी मेरे साथ चलो।" वह कुछ बड़बड़ाता हुआ फिर सोनेकी तैयारी करने लगा। मैंने फिर उसका शरीर हिलाना शुरू कर दिया। बड़ी मुश्किलसे वह उठा। उसे अपने कमरेमें लाकर मैंने कहा—"देखो बहादुर, मैं आज जरूरी कामसे घर जा रहा हूं। सात बजेकी गाड़ी पकड़नी है। तुम दौड़कर किसी एक्केवालेको बुला लाओ।"

"मोटर....."

"नहीं, मैं बिना किसीको इत्तिला दिये जा रहा हूं।"

बहादुर मेरी स्थिति बहुत-कुछ समझ गया, ऐसा जान पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रायः आधे घण्टेके बाद उसने वापस आकर कहा—"चलिये, एक्का बाहर खड़ा है।" बिस्तर बांधकर, सामान बक्सोंमें भर दिया। बहादुर अकेला एक ही मर्तबा सब असबाब उठा ले गया। ऐसी फुर्ती पहले कभी मैंने उसमें नहीं देखी थी।

जब एक्केमें चढ़ा तो मैंने दस रुपयेका नोट बहादुरको देना चाहा। पर वह बोला—"नहीं बाबूजी, मैं भी आपके साथ स्टेशन तक जाऊंगा; आपको पहुंचाकर तब वापस आऊंगा।"

ठीक समयपर हम लोग स्टेशनपर पहुंच गये। जब गाड़ी आयी तो मैं इण्टर क्लासमें बैठ गया। घण्टी बजी, गार्डने सीटी दी। मैं इस बार भी पहलेकी तरह बहादुरको एक नोट देने लगा। पर उसने मेरे नोटके प्रति बिलकुल उदासीनता प्रकट करके अपनी जेबसे एक लिफाफा निकालकर मुझे दिया। ठीक वही लिफाफा था जिसके भीतर मैंने रानी साहबाके लिए प्रेम-पत्र बन्द करके उसे दिया था। लिफाफा उसी तरह बन्द था। स्तम्भित होकर मैंने पूछा—"रानी साहबाने कब यह जवाब लिखकर तुम्हें दिया था? इस वक्त तक तुमने दिया क्यों नहीं?"

"जवाब नहीं हुजूर, यह वही चिट्ठी है जो आपने मुझे सरकारको देनेके लिए दी थी। आज तक मेरी ही जेबमें पड़ी थी, मुझे सरकारको इसे देनेकी हिम्मत नहीं हुई।"

मैं पागलकी तरह कुछ देर तक उसीकी ओर ताकता रह गया। गाड़ी चलने लगी थी। एक बार इच्छा हुई कि उतर पड़ूं, पर द्विविधामें पड़नेके कारण कुछ निश्चय न कर सका। गाड़ी प्लेटफार्म छोड़कर आगे बढ़ गयी। यह स्पष्ट ही था कि बहादुरने इरादतन वह पत्र ठीक गाड़ी छूटनेके समय मुझे वापस किया था ताकि मुझे अपना विचार बदलकर इस्टेटको वापस जानेका अवसर फिर न मिले। इस नैपाली नौकरका बुद्धि-प्रपञ्च देखकर मैं हैरान था।

रास्ते-भर मैं यही सोचता रहा कि बहादुरको धन्यवाद दूं या अभिशाप?

---

# विसर्जन

सर्वनाशकी इन घड़ियोंमें मचल रहा है अन्तस्तल।
मधु प्रमाद इस मूक हृदयका बढ़ता जाता है प्रति-पल॥
कबसे बैठा हूं, पर अब तक दृष्टि नहीं तुमने फेरी।
छोड़ प्रतीक्षा जीवन-तममें फिरनेकी बारी मेरी॥
नहीं ज्ञात था होगा मनके नीरव वनमें दुख-उत्सव।
छिपी वेदनाओंमें संस्मृति, छान रही विस्मृति-आसव॥
मदिराकी उत्तप्त पिपासा भरती है नस-नसमें आग।
लेजाओ वेदना-विभव भी, अन्तिम धनका करता त्याग॥
फेंक रहा हूं अपना सम्बल, क्या होगा इसको रखकर!
सुखके दिन अब नहीं फिरेंगे, तिरस्कारके इस तटपर॥
अन्धकार ही रहने देना, स्मृति-दीपक मत दिखलाना।
शाश्वत छबि फिर चलूं खोजने, ऐसा कहीं न बन जाना॥

—'कुमुद' विद्यालङ्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दुनियाका सबसे धनी सूम

अनुवादक—श्री बालकृष्ण गुप्त (लन्दन)

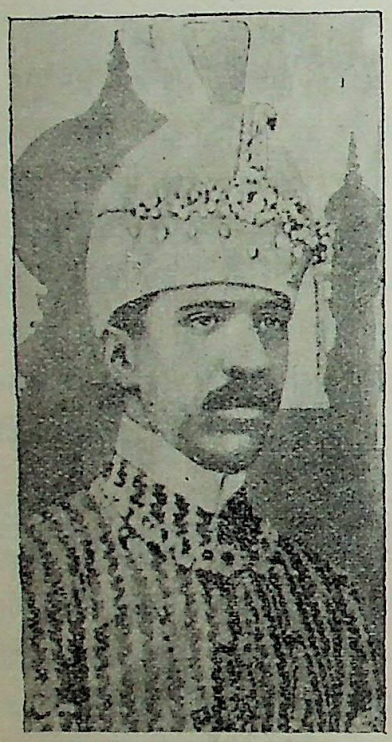

हैदराबादके निजाम जो संसारमें सबसे बड़े धनी और सबसे बड़े कंजूस बतलाये जाते हैं।

दस लाख पौण्ड (प्रायः डेढ़ करोड़ रुपये) से ज्यादाकी सालाना व्यक्तिगत आय, लम्बी-चौड़ी अपनी निजी एक बहुत बड़ी जायदाद या जमींदारी, सोने व नोटोंके ढेरोंसे भरा हुआ खजाना, जिसका अनुमान साधारणतः ५ करोड़ पौण्ड या ७५ करोड़ रुपये लगाया जाता है, और खर्च एक रुपया तो अलग, एक आनेका भी नहीं!

हिज एकजालटेड हाईनेस निजाम हैदराबादकी यह तारीफ है। आप दुनियामें सबसे धनी सूमके नामसे विख्यात हैं। आपकी रियासत, हिन्दुस्तानकी देशी रियासतोंमें सबसे बड़ी है, जिसकी आबादी अन्य सब देशी राज्योंसे अधिक है और जो सबसे ज्यादा सम्पत्तिशाली है। इसका क्षेत्रफल ग्रेटब्रिटेनके बराबर है, और आबादी आस्ट्रिया या पोर्चुगालसे दूनी या दोनोंको एकमें मिला देनेसे जितनी होती है उतनी है। इसकी आमदनी लगातार बढ़ती रही है, और इस वक्त ८० लाख पौण्ड यानी १२ करोड़ रुपयेके बराबर है (यहांपर पौण्ड पन्द्रह रुपयेके बराबर माना गया है, जो वर्तमान एक्सचेञ्जके हिसाबसे १३½ रुपयेके बराबर है।)

इसकी पैदायश आश्चर्यजनक है। यहां हिन्दुस्तानभरमें सबसे धनी जमींदार, सरदार व सबसे गरीब किसान रहते हैं। और इसके शासकका नाम तो हिन्दुस्तानमें लोकोक्तिकी तरह प्रसिद्ध है। निजाम साहब पुराने मुगल सम्राट्के वायसरायकी सन्तान हैं। ब्रिटिश बढ़ती व विजयके एक नाजुक मौकेपर एक पूर्वजने अंगरेजी राजके साथ दोस्तीके सुलहनामेपर दस्तखत किये, और आज इसके "शासनकर्त्ता" "विश्वासपात्र मित्र" होनेकी डींग हांकते हैं। अपने इलाकेमें तो लोग इन्हें बादशाहकी उपाधिसे शोभित करते हैं। उनके सरदार "शाही मालिक" की बातें करते हैं। इनके एक सेना है, दासी-चाकरोंकी एक मण्डली है, व ब्रिटिश फौजमें भी आपको लेफ्टिनेण्ट जनरलकी उपाधि प्राप्त है। और तब भी एक पैसा खर्चनेमें आपकी सावधानी व नामर्जी कहावतके सदृश है। कुछ वर्ष पहले आपके शासनकी असन्तोषजनक अवस्थाने सहनशील ब्रिटिश गवर्नमेण्टका ध्यान भी खींच लिया। तरह-तरहकी वेतरतीब कार्रवाइयोंका पता लगा। न्यायकी खरीद व बिक्री होती थी। मालगुजारीका नीलाम, अफसरोंके ओहदे नवाब साहबके बहम या मेहरके आसरे थे। बड़ा भारी असन्तोष फैल रहा था; इस तथ्यसे तो इस जटिलताको और भी मदद मिलती थी कि प्रजाका अधिकांश भाग हिन्दू है व शासन करनेवाली अल्पसंख्यक जनता मुसलिम। निजाम रियासतसे खूब चांदी बना रहे थे। अतएव भारत-सरकारने कदम रखा। शासन-कौन्सिल बनायी गयी व ब्रिटिश अफसरोंको चार्ज दिया गया। उन्होंने शासनकी होशियारी व रङ्गको बदल दिया, लेकिन वे हिज एकजालटेड हाईनेसके स्वभावको तो परिवर्तित नहीं कर सकते थे। हैदराबादमें अपने प्रधान महलमें कहींपर उन्होंने अपने सोनेका कोषागार निर्मित किया है। यहां वह अपने खजानेको नोटोंमें व सोनेमें रखते हैं। बैङ्क आफ इंगलैण्डसे लेकर डालर तक तरह-तरहके नोट यहां हैं। सोनेके सिक्कों व सिलाओंका ढेर है, और यहींपर रियासतके नवाब अपने धनको बार-बार गिनकर अपने जीवनकी सबसे सुखद घड़ियोंको व्यतीत करते हैं। लेकिन कुछ दिन पहले उन्हें एकाएक सदमा पहुंचा। हिन्दुस्तानमें सफेद चींटियोंसे कोई चीज भी सुरक्षित नहीं रह सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ये कीड़े एक दिन अन्दर घुस ही पड़े और पता लगनेसे पहले दस लाखके नोट चाट गये। निजामके सौभाग्यसे नोट हैदराबाद रियासतके ही थे। कौन्सिलके फाइनेन्स मिनिस्टर-को फौरन हुक्म मिला कि फिरसे नये नोट उतनी ही संख्यामें छापे जायं। कहा जाता है कि एक दूसरी गड़बड़ भी खड़ी हुई। अपने वृहत् नौकर-मण्डलमें भी आप बड़े आला दर्जेके किफायतसार हैं। उनके खाना-खूराक, वस्त्र, बख्शीश आदिपर भी आप पूरी निगरानी रखते हैं। लोग कहते हैं कि आप खुद उनका शामका भोजन परोसते हैं और विभिन्न, कम व अपर्याप्त मात्रामें खाना देते हैं। किसी डरपोक औरत-से आप फरमावेंगे—"तुम मोटी व बदरूप हुई जा रही हो, इतना ज्यादा न खाया करो।" इसके फलस्वरूप उसे खाना कम मिलता है। दूसरीको—"तुम बहुत मीठा खा रही हो, तुम्हें ज्यादा भूख नहीं लगनी चाहिए"; "तुम आज अपनी मांके यहां गयी थी, निश्चय ही तुम वहांसे भूखी थोड़े ही लौटी हो।" और बेचारी औरतकी थालीमें एक छोटा-सा ग्रास पड़ता है। इस असन्तुष्ट अवस्थामें रखे जानेके कारण—हैदराबादकी बाजारू खबरके अनुसार—उनमेंसे कुछने एक षड्यन्त्र रचा। उन्हें गुप्त कोषका पता था। उन्होंने छतको ढूंढ़ उसमें एक छेद भी बना डाला, और तब उस सूराखमेंसे रस्सी, हुक (Hook) व गोंदके जरिये नोट निकालने शुरू किये। उनके मालिकका गुस्सा, मानसिक व्यथाके सामने कुछ नहीं था। अपने खर्चपर वह खुद भी कम ही खाते हैं। बिना तरतीबसे सजे, अंधेरे, बैरक-से बने महलसे आप हर तीसरे पहर बाहर निकलते हैं। यह महल सरदारोंकी शानदार विलासमयी इमारतोंकी तुलनामें निकृष्ट है। आप शहरके बीचमें स्थित एक मसजिदमें जाते हैं और उसके बाद अपनी मांसे मिलते हैं। सब सड़कें वर्दीधारी भड़कीले पुलिसके जवानों द्वारा सुरक्षित हैं। इनकी साजसज्जाका भार तो निश्चय ही जनतापर पड़ता है। लोग तेज सीटीकी-सी आवाजें सुनते हैं।

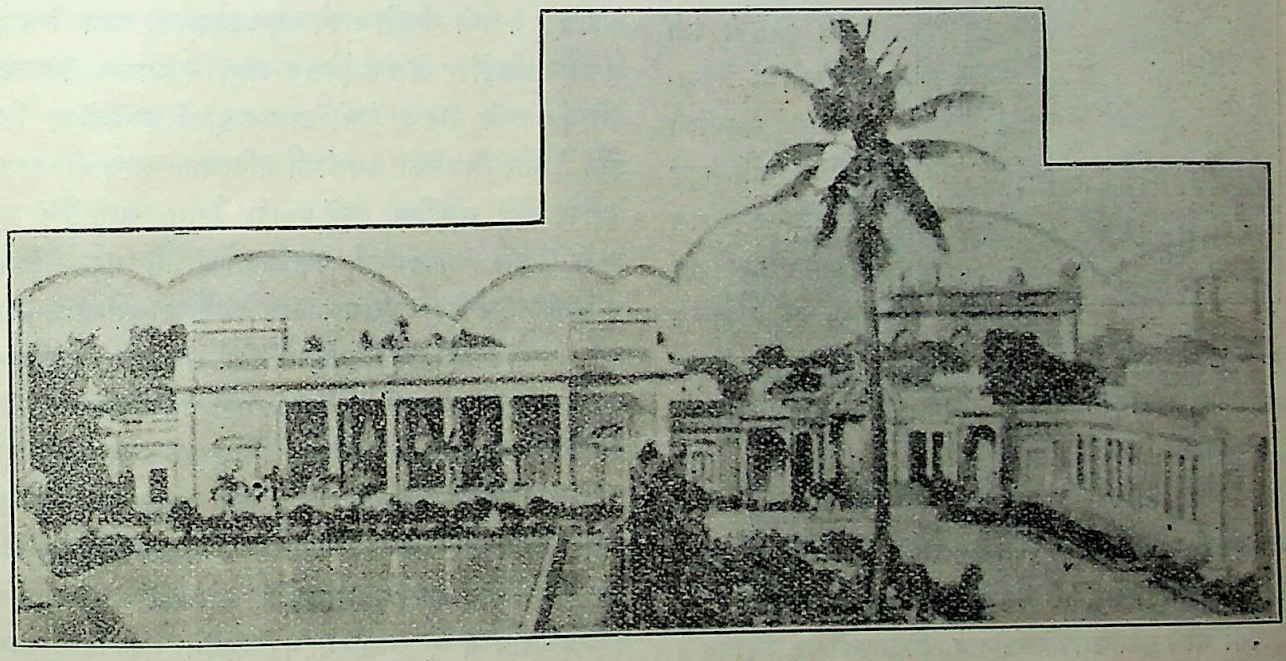

निजामका महल। यहां उनका विशाल स्वर्ण-भण्डार सुरक्षित रहता है।

तब एक टूटी-फूटी, जीर्णशीर्ण, पुरानी व सस्ती अमेरिकन मोटर गुजरती है। निजामके पास रोल्स रायस नहीं है, क्योंकि उसमें पेट्रोलका खर्च खासा ज्यादा होता है। अपनी मांके यहां आपको भोजन भी मिलता है। सारे दिनमें यही आपका सच्चा भोजन है। और इन्हें इसके लिए कुछ खर्च भी गांठसे नहीं करना होता, क्योंकि मोटर-यात्रा तो उन्हें नमाजके लिए करनी ही पड़ती है। जब आप महल छोड़ बाहर निकलते हैं तो महलके रक्षक सैनिक इकट्ठे होते हैं और किसी किस्मकी ऊटपटांग फौजी हरकतें करते हैं जिसे आप "शस्त्र-परिदर्शन" की परिभाषा देते हैं। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अन्दरके मनुष्य भी ऐसे हैं कि प्रभाव कुछ विशेष अच्छा नहीं पड़ता।

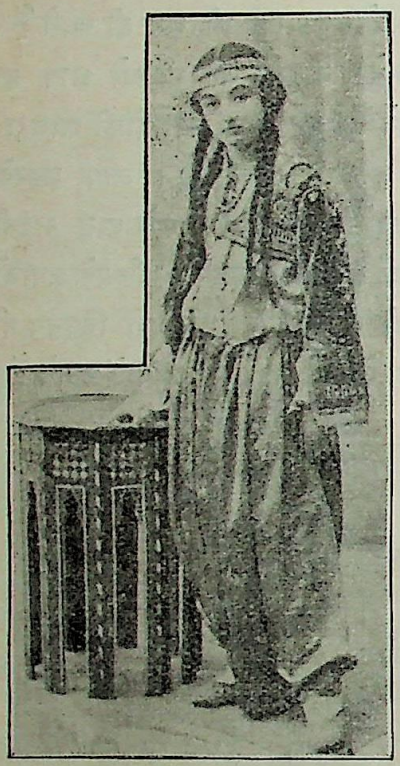

टर्कीके सुलतानकी एकमात्र लड़की, दुर्रू शेहवार, जिसका विवाह निजामके लड़के नवाबजादा आजमजाहसे हुआ है।

अधिकांश पूर्वी निरंकुश राजाओं-की तरह हमेशा शकी व अविश्वासी निजाम भी एक मिश्रित 'बाडी गार्ड' या शरीर-रक्षिणी जमायत रखते हैं। चार या पांच तरहकी फटी वर्दियां, भिन्न-भिन्न समयोंकी बन्दूकें और शुद्ध अरबसे लेकर काले हब्शी तक हर किस्मके सैनिक। असर भी कुछ खास नहीं। महलके दरवाजेपर एक कमरेमें विजिटर्स बुक (दर्शकोंका रजिस्टर) रखा है। राजधानीमें आनेवाले दर्शकोंके लिए शाही तरीकेसे यह शिष्टाचरण समझा जाता है कि वे अपना नाम पुस्तकमें लिखें। अब, निजामकी यह कहावत है कि आप कागजके एक टुकड़ेकी भी बेकाम बर्बादी बर्दाश्त नहीं कर सकते। विजिटर्स बुक इस बातका उत्तम उदाहरण है। लड़ाईसे पहले जब शाहनशाह व मलका दिल्ली दरबारके लिए पधारे, तब हिन्दुस्तानके सब राजा-महाराजा नयी राजधानीमें इकट्ठे हुए थे। सबको अदब व मानका ख्याल था। हरएक तम्बुओं, शरीर-रक्षकों व दूसरे साजोंमें दूसरोंसे बढ़नेकी प्रतिद्वन्द्वितामें था। निजामको भी लाचार होकर इस अनिच्छित और व्ययसाध्य प्रदर्शनमें भाग लेना पड़ा, और एक बड़ा हृदय-बेधक काम करना पड़ा। यानी एक विजिटर्स बुक खरीदनी पड़ी। यह उत्तम, बड़ी, चमड़ेकी जिल्दवाली व जिल्दपर सोनेकी जरी सहित हैदराबादके मुकुटसे शोभित विजिटर्स बुक थी। देहलीमें उस बड़ी किताबके कुछ ही पेज काममें आये। अभी सैकड़ों पन्ने कोरे पड़े थे। निजामके कन्जूस मनने ऐसी सीधी हार माननी स्वीकार न की। देहली-दरबारकी वह किताब आज महलके दरवाजेपर, पुरानी जीर्ण-शीर्ण, गन्दी स्याहीके धब्बोंवाली उंगलियोंके लगनेसे फटी व गोंदसे सटी मौजूद है—लेकिन आज भी उसमें सफेद साफ पत्ते दर्शकोंके दस्तखतके लिए बचे हैं!

सरकारी दस्तावेजात व परवानोंमें कागजकी फिजूल-खर्चीकी आप हमेशा शिकायत करते रहते हैं। अपने पास आनेवाली चिट्ठियोंके निम्न भागसे आप उनका वह हिस्सा सावधानीसे कतर लेते हैं जो इस्तेमालमें न लाया गया हो। और इस बचायी चीजसे अपने पत्र-व्यवहारका काम लेते हैं। मैंने इन टुकड़ोंपर हिज हाईनेसके अक्षरोंमें भोजके निमन्त्रण देखे हैं। उनके नोट या मेमोरेंडा सब इन्हीं कतरनोंपर लिखे होते हैं और शिमलेकी धमकीकी बनिस्बत सरकारी दस्तावेजोंपर चौड़े मारजिन उन्हें ज्यादा हैरान करते हैं। मुझे उनके सबसे महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियोंमेंसे एक प्रतिष्ठित अंगरेजके पास भेजा क्रिसमस कार्ड देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। अंगरेजके साफ-सुथरे, रुचिपूर्ण सजावट व सामान-वाले आफिसमें लटकता यह अपने सस्ते चमकते रङ्ग व ढङ्गसे ध्यान खींचता था। मेरी नजर भी इधर स्वभावतः दौड़ गयी। मैंने कहा—"वल्लाह! यह क्या अजब चीज है!" जवाब मिला—"हिज हाईनेससे प्राप्य मानका क्रिसमस-चिह्न है। असलमें यह एक दियासलाईके कारखानेके विज्ञापनका कैलेण्डर-मात्र है (तसवीरमें भद्दे रङ्गोंमें एक हिन्दुस्तानी औरत मसाल पकड़े हुई थी।) हिज हाईनेसने कम्पनीका नाम फाड़ते वक्त आधी तसवीरको भी कतर डाला है। और इसके एक तरफ अपने हाथसे पेन्सिलमें मेरे व मेरी पत्नीके प्रति शुभेच्छा जाहिर की है। अगर मैं इसे न रखूं, तो बेचारे-को दुःख होगा।"

उनके सरदारोंके अनुभव ऐसे ही मनोरञ्जक हैं, और कभी-कभी तो वे दुःखप्रद मालूम होने लगते हैं। मेरे एक दोस्त, ईटन कालेजमें पढ़े एक सुसंस्कृत नवाबके यहां मेह-मान थे। एक दिन तीसरे पहर वह देहातमें मोटरकी सैर करने महलसे बाहर निकले। उनके मेहमान भी साथ थे, लेकिन वह नवाबके यहां जा रहे थे। घरके आगे दो गाड़ियां खड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



थीं—एक सर्वोत्तम रोल्स रायस, दूसरी पुरानी बेमरम्मत शेवरोले। मेरे दोस्तने उस पुराने नमूनेकी ओर इशारा करते हुए कहा—"वाह जनाब, मेहमानके लिए यह अच्छी तरह-की गाड़ी निकाली!" नवाबने जवाब दिया—"बिलकुल नहीं। वह मेरे लिए है। दूसरी आपके वास्ते। देखो, अगर मैं अपने शाही खुदावन्दके महल अच्छी कारमें बैठकर जाऊं, तो वह पहले उसकी तारीफ शुरू करेंगे, और आखिरमें उसे उधार मांग लेंगे। फिर वह मुझे कभी वापस न मिलेगी।" एक दूसरे नवाबकी बेगमको निजाम साहबके साथ एक बड़ा दिल दुखानेवाला अनुभव हुआ। वह किसी एक नातेसे निजामकी समधिन थी और परिवारमें किसी शोकजनक मृत्युके अवसरपर समवेदना जतलाने महलमें गयी। उसके खाविन्दने जानेसे पहले मुलामियतसे कहा—"प्यारी जान, अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं अपने जेवर घरपर छोड़ जाता और कमसे कम वह मोतियोंका कण्ठा जरूर ही।" बेगमने कहा—"नानसेंस!" एक घण्टे बाद ही आप आंसू बरसाती वापस आयीं। सिसकियां भरते हुए आपने कहा—"हां, तुम्हारा कहना ठीक था। उसने कहा कि यह चीज बहुत कीमती है, इसे इधर-उधर लिये फिरना ठीक नहीं; मैं तुम्हारे लिए इसकी देखभाल करूंगा।"

हैदराबाद इन कहानियोंसे भरा है। वहांके लोग कहते हैं कि पहले-पहल दर्शक हिज हाईनेसको एक नौकर-सा समझ लेते हैं। कैसे वह मिठाई बेचनेवाले हलवाइयोंसे मोल-तोल करते हैं, और कैसे अपनी सरदार-मण्डलीको उनकी फिजूल खर्चीके लिए झिड़कते हैं, इन बातोंकी चर्चा वहां रात-दिन हुआ करती है। एकने मुझसे बतलाया कि एक दिन रेस-कोर्समें हिज हाईनेसको आईस-क्रीमकी इच्छा हुई, पर आपने अपने नौकरोंको खरीद लानेसे मना कर दिया था। तब एक सरदार दूकानदारके पास गये व कुलफी खरीद लाये। निजामने पूछा—"क्या कीमत दी?" जब आपने सुना कि कुछ आने आईस-क्रीमके दामके बतौर और दो-चार पैसे बख्शीशके बतौर उसे दिये गये हैं तो हजरत बहुत झल्लाये।

कई तरहसे बुद्धिमान होने और मुसलिम संस्कृति तथा वर्नेक्यूलर शिक्षामें दिलचस्पी लेनेके सबब, निजाम आजके आधुनिक विचारोंको बहुत ही आसान तरीकेसे किफायतमें जान लेते हैं। वह हमेशा अपने सरदारों व अफसरोंसे पूछते रहते हैं कि "तुम क्या पढ़ रहे हो? क्या यह अच्छी किताब है?" और अगर किसीने "हां" कह दिया तो वह किताब उससे उधार मांग लेते हैं और फिर वह सदाको गायब हो जाती है। शायद निजामकी कहानियोंमें सबसे उम्दा वह है जो एक महाराजा उनके सम्बन्धमें कहा करते हैं। इन महाराजा साहबकी शाहखर्ची दूसरी चरमावस्थाको पहुंच गयी है। इस बातका सम्बन्ध हैदराबादके एक सरकारी भोजसे है। निजाम दो दूसरे राजाओंके दरम्यान टेबलके सिरेपर बैठे थे। बिना इच्छाके एक शेम्पेनकी बोतल तीनोंमें इधर-उधर फिरायी गयी। हिज हाईनेस तिरछी नजरसे हर कीमती

निजामका शानदार हाथी

बूंदको ग्लासमें गिरते हुए देख रहे थे। राजा साहबको जरा शरारत सूझी। उनके सामने उनके प्राइम मिनिस्टर साहब विद्यमान थे, जो टेबलपर इस अकेली बोतलको प्यासेकी अतृप्त दृष्टिसे देख रहे थे। महाराजाने कहा "Your Highness, फलां मिस्टरको शराबके एक ग्लासकी बड़ी चाह है।" निजामने कहा—"हां साहब, आपको? क्यों? किस लिए?" "दवाके लिए, Your Highness." निजाम खुद सहमे तब वेटरको इशारेसे बुलाया "मूंछोंवाले साहबको एक ग्लास शैम्पेन दो।" सरवेण्ट चला गया और गिलास लाने लगा। निजामने हल्ला मचाया—"नहीं-नहीं, दूसरे साहबको, दूसरी मूंछको!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नौकरने घबराकर भयभीत दशामें एक दूसरे मूंछवाले प्यासेको ढूंढ़ निकाला। निजाम झल्ला उठे। अन्तमें ठीक उन्हीं मूंछों-वाला आदमी तो मिल गया, लेकिन इस गलतीसे बेचारे निजामकी एक बोतल और खर्च हो गयी। रात-भर निजाम पछताते रहे। जब वायसराय लार्ड अरविन हैदराबाद गये तो मेहमानोंका महल बड़ी बुरी दशामें पाया गया। निजाम अपने पाससे पाई भी खर्च नहीं करना चाहते थे। रियासतके सिरपर सारा बोझ था। जब अफसरोंने कहा कि वायसराय महोदयको कुछ अच्छी गाड़ियोंकी जरूरत होगी, तो आप विलाप करने लगे। एक किरायेपर ली और बाकी उधार मांगीं। यथार्थकी लड़ाई तो सोनेके बरतनोंपर हुई। बहुत दिनों तक निजाम उन्हें बाहर लानेसे भी इनकार करते थे। वे खो जावेंगे, चुरा लिये जावेंगे, टूट-फूट जावेंगे। आखिरको लोगोंने आपको फुसला ही तो लिया। लेकिन निजामका भोजन बड़ा निकृष्ट था। आप हर प्लेटको देखते जाते थे, और जब कभी छुरी या चम्मचसे बरतन घिसनेकी आवाज आती थी, आप आंख मूंदकर सोनेकी हानिके ख्यालसे कांपते थे।

दुनियाका सबसे धनी सूम! दुःखी, उदास छोटे दिलका नवाब! अपनी प्रजा व मन्त्रियोंकी हंसी-दिल्लगीकी सामग्री! शक्ति-रहित होनेके कारण असलमें दूसरोंके मातहत! अपने करोड़ों रुपयों, उधार मांगी हुई किताबों तथा कागजकी कतरनोंके साथ अकेला! यह है वर्तमान निजाम, हिज एकजालटेड हाईनेस, व "फेथफुल अलाई"का सच्चा चित्र! *

* लन्दनके "जानबुल" पत्रसे।

---

# वेश्या-समस्या

श्री गणेशदत्त शर्मा गौड़ "इन्द्र"

हमारे स्त्री-समाजकी दशा कैसी शोचनीय है, यह किसीसे छिपा नहीं है। इसका दोष जितना पुरुष-समाजपर है, उतना स्त्रियोंपर नहीं। उनके सुधारके हम लोग ठीकेदार बन गये हैं और उनके प्रत्येक काममें अपनी टांगें अड़ाते हैं। कहीं धर्मके नामपर, कहीं जातिके नामपर और कहीं समाजके नामपर उनके अधिकारोंका हरण किया जाता है। पुरुषोंने स्त्री-जातिको मिथ्या आचरणकी रस्सीसे खूब कसकर बांध रखा है। बन्धनमें कोई भी रहना नहीं चाहता। पिंजरेमें बन्द पशु-पक्षियोंको देखिये, वे निकल भागनेके लिए प्रतिक्षण छटपटाते रहते हैं। जब पशु-पक्षियोंकी यह दशा है तो मनुष्य कब बन्धनमें रहना पसन्द करता है? भारतीय स्त्रियोंके लिए प्रत्येक दशामें बड़े ही कठोर बन्धन हैं। उनके प्रति तुच्छ भाव हैं। खास करके विधवा बहनोंके साथ तो समाजका व्यवहार अत्यन्त निन्दनीय और गर्हित है। यही कारण है कि ऐसे समाजको कोसती हुई वे उससे अलग हो जाती हैं। वे अपना नारकीय जीवन और हृदयवेदना सहनेको तैयार हो जाती हैं; किन्तु ऐसे समाजमें रहनेके लिए तैयार नहीं होतीं। ऐसा करनेके लिए उन्हें मानवी हृदय विवश कर देता है।

पुरुषोंने स्त्रियोंको इतना बांधकर क्यों रखा? इसका एकमात्र उत्तर है—उनकी आचरण-शुद्धिके लिए। किन्तु उनका यह तरीका गलत साबित हुआ। "मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की" वाली मसल हो गयी। परन्तु दुःख तो इस बातका है कि इतनेपर भी पुरुष-समाजने अपनी भूल—मूर्खता—स्वीकार नहीं की और सारा दोष स्त्रियोंके सिर ही मढ़ा गया। पुरुष-समाजके अत्याचार देखिये—उसने स्त्रियोंकी आचारण-शुद्धिके लिए उन्हें मृत पतियोंकी चितामें जीते-जी जबर्दस्ती फूंका। बिलकुल निर्दोष, अज्ञान और बेबस बाल-विधवाओंपर वैधव्यका असहनीय भार लादा। जरा भी उनका पांव फिसला कि समाजका आचरण बिगड़ा—बस उस असहाय अबलाको समाजसे निकाल बाहर किया। इसी आचरण-शुद्धिके बहाने स्त्रियोंको परदेमें कैद किया। लड़कियोंको पढ़ने-लिखनेसे रोका; बचपनमें उनका विवाह करना शुरू कर दिया। उन्हें किसी प्रकारका उद्यम अथवा रोजगारका कोई धन्धा नहीं करने दिया, क्योंकि इसके लिए बाहर निकलना पड़ता है, और बाहर घूमने-फिरने-से वे भ्रष्टा हो जायेंगी! सारांश कि स्त्रियोंके साथ उनके आचरणकी रक्षाके बहाने बड़े-बड़े अत्याचार किये गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और किये जा रहे हैं। पुरुषोंके लिए कुछ भी देख-रेख नहीं, वे पापसे पाप-कृत्य करके भी मूछोंपर ताव देते हुए समाजमें चैनकी बंसी बजाते रहते हैं। यदि पुरुष सच्चरित्र हों तो स्त्रियोंका चरित्र भूलकर भी नहीं बिगड़ सकता। आवश्यकता तो इस बातकी थी कि पुरुष-समाज अपना सुधार करता ताकि स्त्रियां बिगड़ने ही न पातीं, किन्तु उसने उलटा मार्ग ग्रहण किया। परिणाम यह हुआ कि अत्याचार सहन करनेवाली स्त्रियोंके साथ-ही-साथ अत्याचारी पुरुषोंका भी पतन हुआ और अपने साथ देश और समाजको भी ले मरे।

धर्म और आचरण विद्या तथा ज्ञानसे सम्बद्ध हैं। स्त्रियोंको इससे वञ्चित रखा गया, तो उनका ठोकर खाना अनिवार्य है। पुरुष अपने आचरणोंको स्त्री-समाजके सामने आदर्श-रूपमें क्यों नहीं रखता? पुरुषको जब मालूम हो जाता है कि मेरी पत्नी व्यभिचारिणी है तो वह उसकी नाक काटने या मार डालनेको तैयार हो जाता है। यदि स्त्रियां अपने व्यभिचारी पतिकी नाक काटना प्रारम्भ कर दें तो आप ही कहिये किन-किनकी नाक बच सकती है! बड़ी विषम समस्या उत्पन्न हो जाय! यह सोचने-विचारनेका विषय है। परन्तु स्त्रियां पुरुषोंका ऐसा अन्याय सहकर भी मौन हैं, धर्मपर अटल हैं। उन्हें पतित दशामें ढकेलनेवाले पुरुष ही हैं—वे स्वयं नहीं गिरतीं। जब अत्याचार और अन्याय पराकाष्ठाको पहुंच जाता है तब स्त्रियां पुरुषोंका कुछ भी न बिगाड़कर अपनेपर ही खेलती हैं। घरसे निकल भागती हैं—आत्महत्या कर डालती हैं या किसी विधर्मीके साथ हो लेती हैं। स्त्रियां कोमलता और प्रेम-माधुरीकी चेतन प्रतिमायें हैं। पुरुष-समाजके अत्याचारों और यातनाओंसे त्रस्त होकर वे छल, पाखण्ड और निष्ठुरताकी सीमाको भी लांघ जाती हैं। जरा शहरोंकी उन गलियों और बाजारोंपर दृष्टि डालिये जहां पेशेवाली वेश्याओंकी पलटन रहती है।

वेश्या कोई वर्ण या जाति नहीं है। विशेष प्रकारके पेशेको अख्तियार करनेवाली स्त्रियां ही वेश्या हैं। इनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी वर्णोंकी स्त्रियां होती हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सभी धर्मोंकी माननेवाली बहनें पायी जाती हैं। वेश्या-जीवन बड़ा ही नारकीय जीवन है। इस बातको हम ही नहीं, बल्कि वेश्यायें भी अनुभव करती हैं। वे इस कामको नीचातिनीच समझती हैं, परन्तु करें क्या!—विवश हैं। समाजमें उनके लिए कोई स्थान नहीं था, इसलिए वे वेश्यायें बनीं, और अब भी समाज उन्हें अपनानेको तैयार नहीं है, नहीं तो अधिकांश वेश्यायें अपना पवित्र जीवन बितानेको तैयार हैं। समाजमें वेश्याओंका प्रवर्तन क्यों हुआ? इसके उत्तर दो हैं—(१) या तो कोई ऐसा कारण पैदा हो गया है कि स्त्रियोंको विवश होकर वेश्या-कर्म स्वीकार करना पड़ा, (२) या पुरुष इतने इन्द्रिय-लम्पट हो गये हैं कि उनके लिए ऐसी स्त्रियोंकी आवश्यकता अनिवार्य हो उठी। इनके सिवा और कारण होंगे, किन्तु वे इतने प्रबल नहीं हो सकते। कितनी विचित्रता है कि जिस देशकी स्त्रियोंने सतीत्व-रक्षाके लिए अपनी जानकी बाजी लगायी, वहींकी बहनें आज पैसेके लोभसे—पापी पेटको भरनेके लिए रूप और यौवनकी दूकान लगाये बैठी हैं!

बम्बई-कलकत्ते जैसे विशाल नगरोंमें हजारों-लाखों ऐसी वेश्यायें हैं जो खुलमखुल्ला पेशा करती हैं। लुकी-छिपी भी असंख्य हैं। खुलमखुल्ला पेशा करनेवाली अभागिनी बहनोंकी संख्या भारतमें कोई पौने पांच लाख है! इनकी वार्षिक आमदनी लगभग बासठ करोड़के कूती गयी है। यों कहिये कि हर साल ६२ करोड़ रुपया इस देशके मर्द व्यभिचार-जैसे गर्हित काममें खर्च करते हैं। गुप्त रूपसे वेश्यावृत्ति करनेवाली दीन बहनोंकी संख्या तथा आमदनीकी कूत असम्भव है।

वेश्यायें क्यों बनती हैं? कौन बनती हैं? और कैसे बनायी जाती हैं? इस विषयपर थोड़ा-सा यहां प्रकाश डालना अनुचित न होगा। वेश्याओंकी वृद्धिमें सबसे बड़ा हमारे समाजका दोष है। यद्यपि वह खुलमखुल्ला ऐसे कार्यकी छुट्टी नहीं देता, तथापि वह परिस्थिति ऐसी उत्पन्न कर देता है कि अन्तमें अनेक सदाचारिणी स्त्रियोंके लिए वेश्या बन जानेके अतिरिक्त कोई उपाय ही दिखायी नहीं पड़ता। हमारी विधवा बहनोंके साथ हमारा कैसा व्यवहार रहता है? लिखते हुए लेखनी और हृदय दोनोंको मार्मिक पीड़ा होती है कि विधवा बहनोंपर समाजके कलङ्क-रूप पापी पुरुषोंकी दृष्टि गड़ी रहती है। यदि विधवा देवी पवित्र और दृढ़-विचारकी हुई तो ठीक; अन्यथा वह मिथ्या प्रलोभनोंमें आकर अपना सर्वस्व किसी धोखेबाज, नीच पुरुषको अपना सच्चा हितैषी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समझकर दे डालती है। अधिक क्या लिखें, विधवापर, भाई, ससुर, देवर, जेठ, पुत्र आदि नाते-रिश्तेदारों तककी कुदृष्टि रहती है। वे दीन अबलायें इनकी पापवासना शान्त करनेका साधन बन जाती हैं। यह अतिशयोक्ति नहीं बल्कि व्याजोक्ति है। लज्जाके कारण इससे अधिक लिखना असभ्यता हो जावेगी। इससे ही पुरुषोंके अधम-विचारोंका पता लगा लें। जो लोग नित्य समाचार-पत्रोंमें ऐसे हृदय-द्रावी समाचारोंको पढ़ते हैं, वे हमारे उक्त कथनके साक्षी हो सकते हैं।

अपना काला मुंह करनेके पूर्व जो-जो ढाढ़स, दिलासा, और हवाई किले उस विधवा देवीके सामने पापी पुरुष द्वारा रखे जाते हैं, वे गर्भस्थित होते ही काफूर हो जाते हैं। पुरुष उससे बदल जाता है, उसकी ओर देखता तक नहीं। तब उस बेचारीकी आंखें खुलती हैं। ऐसी अवस्थामें वह किसी-को अपना साथी या सहायक नहीं पाती। घर, बाहर, समाजमें सर्वत्र उस निर्दोष बहनके नामपर पुरुष अत्यन्त घृणासूचक बातें करने लगते हैं। परन्तु उस पुरुषको कोई भी बुरा नहीं कहता जिसके कारण उस दीनकी यह दशा हुई है। वह समाजमें बड़े गर्वके साथ रहता है। पतित तो केवल वह विधवा ही होती है! वह कामकी नहीं रहती! समाजमें पुरुषके व्यभिचारी होनेपर कुछ भी दोष नहीं पैदा होता, किन्तु विधवाके कारण सारा समाज कलङ्कित हो जाता है! कैसा घोर अन्याय है!!!

इतना होनेपर भी वह विधवा समाजसे असहायावस्थामें निकाल दी जाती है। हिन्दू-समाज उस सगर्भा विधवाको या उससे उत्पन्न बच्चेको अपने साथ नहीं रख सकता। तब दूसरे लोग—विधर्मी—उसे अपना लेते हैं वह देवी उस सहानुभूति दर्शकको अपना सर्वस्व मानकर उसीको अपना जीवन-धन समझने लगती है। वहां भी उसकी वही दशा होती है। उसके रूप-यौवनका लोभी नर-पशु उसको कुछ दिनों बाद घरसे निकाल देता है, छोड़ भागता है, या किसी वेश्याके सिपुर्द कर देता है। जब वह यहांसे भी ठुकरायी जाती है तो अपने भाग्यको कोसती हुई घर-घरकी भिखारिन बन जाती है या वेश्या बनकर जीवन-निर्वाह करने लगती है। किसी भी वेश्यासे उसकी पूर्व-कथा पूछ देखिये, आपको इन तथ्योंके प्रमाण मिल जायंगे।

हमारी असावधानी हमें किस प्रकार बर्बाद कर रही है, इस बातका बहुत-कुछ अनुमान समाचार-पत्रोंमें प्रकाशित निम्न घटनासे लग जायेगा :—

"फर्रुखाबादके नन्हे नामक मुसलमानपर पुलिसने मुक-दमा चलाया। पुलिसका बयान यह था—मुसम्मात मोहिनी नामकी एक अनाथ ब्राह्मण विधवा सीताराम नामके एक ब्राह्मणके यहां रहने लगी थी। सीतारामसे उसके दो लड़-कियां हुईं, जिनमेंसे एकका नाम व्रजबाला था और दूसरीका जलधारा। सात साल सीतारामके साथ रहनेके बाद मुसम्मात मोहिनी किसी कारणसे उसे छोड़ कर फर्रुखाबाद चली गयी और अपने साथ अपनी लड़कियोंको भी ले गयी। फर्रुखाबादमें वह अबदुल रहमानके साथ रहने लगी। यह शख्स असलमें हिन्दू था, लेकिन मुसलमान हो गया था। अप्रेल, सन् १९२८ ई० में मुसम्मात मोहिनीकी मृत्यु हो गयी। बादको फर्रुखाबादके जिला मजिस्ट्रेटको किसीने खबर दी कि व्रजबाला और जलधारा दोनों लड़कियां नन्हेके पास हैं और वह उनसे वेश्यावृत्ति कराना चाहता है। पुलिसने मामलेकी जांच की और दोनों लड़कियोंको उनके पिता सीतारामके हवाले कर दिया। नन्हेपर मुकदमा चला। उसके खिलाफ यह भी साबित हो गया कि उसके यहां वेश्याओंका अड्डा था। उसे दो सालकी सख्त कैदकी सजा-का हुक्म मिला और हाईकोर्ट तक अपील होनेपर भी यही हुक्म बहाल रहा।"

यह एक दृश्य है। ऐसी सभी घटनाओंका यहां उल्लेख करके इस लेखको "महाभारत"के आकारमें तैयार करना हम नहीं चाहते। "स्थाली पुलाकन्याय"से यही उद्धरण पर्याप्त है।

वेश्याओंका जीवन पापमय होता है—प्राकृतिक नियमों-का उल्लङ्घन उन्हें रात-दिन कोसता रहता है, पापी पेटके लिए उन्हें अपनी इच्छाके विरुद्ध पुरुषोंका अत्याचार सहना पड़ता है। मनकी सच्ची दशा और भावोंको छिपाकर, ऊपरी, बनावटी, नकली, प्रेम और हाव-भाव प्रदर्शित करना पड़ता है। ऐसा जीवन पाकर कौन सुखी रह सकता है?

वेश्यायें अपने पेशेसे प्रसन्न नहीं हैं; उन्हें झूठी प्रसन्नता और आनन्दके प्रदर्शनकी बाकायदा तालीम दी जाती है। वे वास्तवमें अन्दर-ही-अन्दर जलती रहती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हमारे देशकी ही यह दशा हो, सो बात नहीं है। सभ्यताकी डींग मारनेवाले दूसरे देश इस विषयमें भारतसे आगे हैं। इंगलैण्डको देख लीजिये, वहां अकेले लन्दनमें ही ५० हजार ऐसी वेश्यायें हैं जो खुलमखुल्ला पेशा करती हैं; इसके अतिरिक्त गुप्त रूपसे पेशा करनेवाली वेश्याओंकी संख्या न मालूम कितनी है। वहां स्त्रियोंको पूर्ण स्वाधीनता और सब प्रकारके समानाधिकार होते हुए भी वेश्या-जीवन व्यतीत करनेवाली कितनी अधिक वेश्यायें हैं! और यहां पदाक्रान्त होते हुए भी नारी-समाज अपने सत्यव्रतपर अटल है। यह है भारतका गौरव! किन्तु भारत इतनी विधवाओंको भी अपने लिए कलङ्क समझता है। फ्रान्स, अमेरिका, जर्मनी, आदि देशोंकी तो कुछ कथा ही न पूछिये। असंख्य स्त्रियां लायसेन्स लेकर वेश्यावृत्ति कर रही हैं। फ्रान्स तो व्यभिचारका क्रीड़ा-स्थल बन रहा है। हजारों लाखों वेश्यायें हैं। जिसे व्यभिचारसे प्रेम होता है—और धनी है, वह दौड़ा हुआ इसीलिए फ्रान्स पहुंचता है, और वहांकी व्यभिचारिणी स्त्रियोंको प्राप्तकर नरकका कीड़ा बन जाता है। भारतके राजा-महाराजा फ्रान्सकी सैर करने जाया करते हैं—इसमें भी कुछ रहस्य निहित है। पाठक विचार सकते हैं। अस्तु—

विदेशोंकी बातें छोड़िये; हमें तो अपने देशकी यह थोड़ी-सी कलङ्क-कालिमा भी नहीं सुहाती। हमारे देशमें वेश्यायें बहुत कम हैं; लेकिन जो हैं भी, वे कलङ्क हैं। समाजको निष्कलङ्क करनेके लिए यह वेश्यावृत्ति मिटानेकी अत्यन्त आवश्यकता है। यहां एक बात कहनी है कि भारतके छोटे गांवोंमें वेश्यायें नहीं होतीं। विशाल नगरोंमें ही मधुमक्खियोंकी भांति इनका छत्ता यत्र-तत्र होता है। बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, पूना, आगरा, लखनऊ, आदि बड़े-बड़े नगरों हीमें वेश्याओंकी संख्या अधिक है। अधिकताका कारण है—लोग बड़े-बड़े शहरोंमें रोजगारके लिए अकेले ही जाते हैं—पत्नीको साथ ले जानेमें, वहांका खर्चा अधिक होनेके कारण असमर्थ होते हैं; ऐसे लोगोंको वेश्यायें चाहिए। सैर-सपाटा करनेवाले लोग शहरोंमें अपरिचितसे होते हैं, अतएव वेश्याओंके द्वारोंपर घूमते-फिरते हैं। धनी लोग या अधिक खर्चीले लोग प्रायः शहरोंमें ही पाये जाते हैं, इत्यादि कारणोंसे वेश्यावृत्ति शहरोंमें ही खूब चलती है। यही कारण है कि बड़े-बड़े नगरोंमें सैकड़ों रुपयोंसे लेकर दो आने दर तककी वेश्यायें खुलमखुल्ला मिल सकती हैं। मैं वेश्याओंके कुछ दृश्य, जो सभ्यताकी सीमाको नहीं लांघेंगे, यहां प्रदर्शित कर देना उचित समझता हूं।

वेश्यायें ऊपरी तड़क-भड़कसे रहती हैं। सायङ्कालके समय अच्छे कपड़े-लत्ते पहनकर बनठन जाती हैं। मुंहपर पाउडर लगाकर उसे खूबसूरत बनाना पड़ता है। ऊपरी मीठी चिकनी-चुपड़ी बातें, हंसी, मुसकाना, आंख-भौं बनाना, हाव-भाव, चाल-ढाल, उठना-बैठना आदिकी उन्हें तालीम दी जाती है। बनावटी प्रेमसे अपने जालमें आयी हुई चिड़ियाको फांस लेनेकी विद्या उन्हें पढ़ायी जाती है। नासमझ भोले भाई उनके चक्करमें पड़कर अपना होश खोकर पगड़ी संभालते हुए उनके घरसे इधर-उधर देखते हुए चोरकी तरह बाहर आते हैं। मुंह उतरा हुआ होता है, हृदय धुकपुक करता है। किसी रोगको अपने साथ लेते आते हैं। कहीं-कहींपर तो वेश्याओंके यहां उनकी जो दुर्गति होती है वह बड़ी ही दयनीय होती है। उनके जेबमेंसे सब पैसे छीन लिये जाते हैं, घड़ी, चेन, रुपया, पैसा कोट, दुपट्टा, छतरी, लकड़ी सब छीनकर बाबाजी बना घरसे निकाल दिया जाता है, कहीं जूतम्-पैजार, डण्डेबाजी होती है और इसे अतिशयोक्ति न समझिये कि कहीं-कहीं तो जानपर नौबत आ जाती है---खून हो जाते हैं। ऐसी बातें बड़े-बड़े शहरोंमें रोज ही होती हैं। सारांश कि वेश्यायें समाजके लिए सभी प्रकार घातक हैं।

अब यहां प्रश्न होता है कि सभी तरहसे वेश्यावृत्ति घातक होते हुए भी वह धर्मप्राण भारतवर्षमें क्यों फलती-फूलती है? धर्म, समाज, या कानून वेश्या-वृत्तिकी ओरसे इतना उदासीन क्यों हैं? कोई भी स्त्री मजिस्ट्रेटसे वेश्यावृत्तिका हुक्म बिना किसी कष्टके सहज ही क्यों प्राप्त कर सकती है? वेश्यावृत्ति कानूनन् जुर्म क्यों नहीं माना जाता? किसी स्त्रीके साथ यदि पुरुष बलात्कार करता है तो वह तत्काल ताजीरात हिन्दकी ३७५ वीं धाराका अपराधी बन जाता है, और वही वेश्यागमनमें निर्दोषी क्यों करार दिया जाता है? धार्मिक और सामाजिक दृष्टिसे वेश्यागमन भयङ्कर पाप है। इसका उत्तर चाहे कोई कुछ भी दे, किन्तु मैं समाज, धर्म और कानूनको ही दोषी ठहराऊंगा। कारण कुछ



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भी क्यों न हो---पापको त्रिकालमें भी अच्छा नहीं माना जा सकता। क्या रजामन्दीके साथ—पैसे देकर—व्यभिचार करना पाप नहीं ? तो फिर किसी व्यक्तिको धन देकर, राजी करके उसकी हत्या करना अपराध क्यों समझा गया ? कुछ लोग शायद कहें कि भूखेको रोटी नहीं मिले तो वह चोरी करके पेट भरेगा---इसी तरह विषयी लोगोंकी कामवासनाकी शान्तिके लिए कोई उपाय न किया जायगा तो वे नीच भले घरकी बहू-बेटियोंको अपमानित करेंगे, इसलिए यही ठीक समझा गया कि ऐसे लोगोंके लिए एक बाजार अलग खोल दिया जाय। परन्तु अन्धेरकी बात है कि पुरुषोंकी काम-तृप्तिका इतना ख्याल किया जाय और स्त्रियोंके लिए इस सम्बन्धमें किसी प्रबन्धकी आवश्यकता ही न समझी जाय ! स्त्रियोंके साथ यह कैसा अमानुषिक बर्ताव है !

अब हम यहां पाठकोंको शिमला, कुमायूं और गढ़वाल की वेश्या बहनोंकी दशापर एक दृष्टि डालना चाहते हैं। ये वेश्यायें अकेली नहीं रहतीं। ये गृहस्थियोंकी तरह रहती हैं। इनके मां-बाप, भाई-बहन आदि सब साथ रहते हैं। पढ़ी-लिखी होती हैं। धार्मिक ग्रन्थोंका पाठ करती हैं। व्रत, पूजा, उपवास, ध्यान, स्नान बड़ी अच्छी तरह करती हैं। भोजन बड़ी शुद्धि और आचार-विचारके साथ बनाया, खाया जाता है। इनकी एक जाति है। इस जातिमें कन्याओंका विवाह नहीं होता, सब वेश्या-वृत्ति करती हैं। यदि कोई कन्या विवाह करके एक पुरुषको अपना पति बनाकर रहे तो जातिके लोग उसे जातिसे निकाल देते हैं। लड़कोंके विवाह होते हैं, वे दूसरे लोगोंकी लड़कियां व्याह लाते हैं---इन बहुओंको परदेमें बड़ी देखरेखके साथ रखा जाता है। यदि चरित्रमें सन्देह आ जाय तो परिणाम भयङ्कर होता है।

ये पहाड़ी वेश्यायें जिस पुरुषको एक रात्रिके लिए या इससे अधिक दिन अथवा महीनोंके लिए वरण कर लेती हैं, फिर वे उसकी दासी बनकर बड़े पातिव्रतके साथ उसकी सेवा-टहल करती हैं। बहुत ईमानदार होती हैं---एक पुरुषके होते, परपुरुषको रखना पाप समझती हैं। यदि कोई इस जातिमें सुधार करना चाहे तो बहुत ही शीघ्र हो सकता है। ईसाई लोग उधर उन्हें फुसलानेमें लगे हुए हैं। गढ़वाली भाइयोंको इस विषयमें सावधान होनेकी जरूरत है। उधरके रहनेवालोंके लिए यह कलङ्ककी बात है कि वेश्यावृत्ति इस रूपमें वहां मौजूद है। अभी हाल हीमें एक गढ़वाली बहनने समाचार-पत्रोंमें अपना "वेश्या होनेका कारण" छपवाया है, जिससे स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि हमारे देशके पुरुषोंका स्त्रियोंके प्रति कैसा निन्द्य-व्यवहार है। वह लिखती हैं:---

"मैं उत्तर काशी (टिहरी गढ़वाल) के निकट एक गांवकी रहनेवाली हूं। मेरा विवाह निकट ही एक गांवके जमींदारके साथ हुआ था। विवाहके बाद चार वर्ष मैंने अपने पतिके घर सुख-पूर्वक बिताये। लेकिन एक दिन मेरी सासको सन्तानकी चिन्ताने अत्यन्त कायल कर दिया। उसने किसी तरह पतिदेवको समझाया कि मुझे पोतेका मुख देखनेकी अत्यन्त लालसा है, इसलिए जल्दी ही तुम्हें दूसरा विवाह करना चाहिए। पतिदेव राजी हो गये। उस समय मेरी अवस्था १९ वर्षकी थी और पतिदेवकी २५ के करीब थी। उन्होंने दूसरा विवाह कर लिया। अब मेरी राशिपर शनि महाराजकी दृष्टि आ पड़ी। मैं तमाम कुटुम्बकी आंखका कांटा बन गयी। सबने मुझे दुतकारना शुरू किया। एक दिन झूटमूठ ही मेरे ऊपर व्यभिचारका बहाना लगा दिया गया। बस फिर क्या था ! समाजकी मेरे ऊपर लाल-लाल आंखें हो गयीं। इसके बाद क्या हुआ, पापी समाज कलेजेपर पत्थर रखकर सोच ले। मेरा समाजसे बहिष्कार हो चुका था। अपने जीवनसे निराश हो चुकी थी। एक दिन मेरा एक योगिनी माईसे मेल हो गया। उसे मैंने सारी राम-कहानी सुनायी। उसने मुझे अपने साथ चलनेको कहा। मैं भी राजी हो गयी। उसके साथ कुछ दिन तक खूब तीर्थ-यात्रायें कीं। फिर उसीके साथ कुछ समय बाद पतितपावनी भगवती भागीरथीके तटपर पवित्र तीर्थ ऋषिकेशमें आ पहुंची। माईजी एक बाबाजीकी सहचारिणी थी। वह अब प्रायः अपने जीवनकी अन्तिम अवस्थामें अवतीर्ण हो चुकी थी। मुझे भी बाबाजीके यहीं रहना पड़ा। कुछ समय बाद मुझे बाबाजीके चरित्रमें कुछ काला-सा दाग दिखायी देने लगा। अब मैंने यहांसे जाना ही उचित समझकर माईजीसे कहा कि मैं यहां नहीं रहना चाहती; लेकिन माईजी तो मुझे इसीके लिए साथ ले आयी थी। भला उसे कब मेरा जाना पसन्द लगता ! उसने बड़े भय तथा लोभ दिखाकर मुझे जानेसे रोक दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लाचार मुझे उसीके अनुसार चलना पड़ा। अब मैं बाबाजीकी लाड़िली बन चुकी थी। माईजी फिर तीर्थ-यात्राको चली गयी थी। दो वर्ष सुखपूर्वक बीते। इसके बाद माईजी भी आ गयी। साथमें एक नयी नवेली चेली थी। नयी चेलीको देखकर मैं अब सब रहस्य समझ गयी। घरमें नयी नवेलीके आते ही बाबाजी उसपर लट्टू हो गये। मैं अब पर दाबने, बर्तन मांजने इत्यादिके लिए नियुक्ति की गयी। एक तरह मैं अब बाबाजीकी आंखका कांटा बन चुकी थी। वह मेरा यहांसे जाना ही उचित समझने लगे। मैं पापकुण्डके तटपर आ उसका पापमय जल तक पी चुकी, इसलिए उसमें कूद पड़नेसे भी मुझे तनिक सङ्कोच न हुआ। मैं उसमें कूद पड़ी। मैं अब वेश्या बन चुकी थी, इसलिए निस्सङ्कोच भावसे हिन्दु-स्थानके बड़े-बड़े नगरोंमें जा पेशाका काम करने लगी। अब मेरी अवस्था २५ वर्षकी है। इस समय मैं लाहोरमें हूं। इस पापमय जीवनसे अत्यन्त तङ्ग आ गयी हूं। अगर कोई गढ़वाली महाशय मेरे इस पाप-कर्मका वास्तविक कारण समझकर मुझे शुद्ध करवानेका आयोजन करें तो मैं उनकी अतीव अनुगृहीत रहूंगी।"

इसके साथ पत्र-व्यवहारका पता भी दिया गया था, जिसे यहां अब लिखना व्यर्थ है। यह तो एक ऐसी घटना है जो प्रकाशमें आ गयी, किन्तु ऐसी घटनायें हमारे समाजमें रोज होती हैं। बस, वेश्या होनेके ऐसे ही कारण होते हैं। अपराध पुरुष-समाजका भी होता है जो उन्हें इस दशामें पहुंचा देता है—परन्तु उसका फल भोगना पड़ता है इन बेचारी दीन अबलाओंको!

इन पौने पांच लाख वेश्यावृत्ति करनेवाली बहनोंमें चार लाख ऐसी होंगी जो अपना उद्धार चाहती हैं, परन्तु उस ओर कोई भी तो ध्यान नहीं देता! समाजके इस कलङ्कको धोनेके लिए कोई भी तो आगे नहीं बढ़ता। कुछ वर्ष पूर्व कुछ वेश्याओंने वेश्यावृत्ति त्यागकर किसी एक पुरुषको अपना पति बनाकर रहनेकी इच्छा हिन्दू-समाजके सामने प्रकट की थी। क्या हुआ, कुछ पता नहीं। परन्तु इतना अवश्य है कि वेश्यायें अपनी घृणित वृत्तिको त्यागनेके लिए तैयार हैं---यदि उन्हें कोई अपनानेको तैयार हो। इस कलङ्कको हटानेके लिए समाज-सुधारकोंको प्रयत्न करना चाहिए।

देशसे वेश्यावृत्ति दूर करनेके लिए, सबसे पहले हमारे पुरुष-समाजको सजग होनेकी आवश्यकता है। उसे यह विचार करके देखना चाहिए कि वेश्यागमन बुरा है या अच्छा? यदि बुरा है तो उसे छोड़नेमें आनाकानी नहीं करनी चाहिए। हमारे शास्त्रोंमें वेश्यागमन एक भयङ्कर पाप माना गया है। जिस देशके पुरुषोंके जीवनका मोटो 'मातृवत् परदारेषु' होना चाहिए वे वेश्यगामी हों! यह कैसा भयङ्कर पतन है!

वे वेश्या बहनें—जिन्हें आप बाजारू औरतें, रण्डियां आदि नामोंसे पुकारते हैं—जिन्हें देखते ही उनके चरित्रपर आप अपना मुंह बिगाड़कर घृणा प्रदर्शित करने लगते हैं, आप हीकी सहोदरा हैं, आप हीके समाजने उन्हें जन्म दिया है, वे आप हीका अङ्ग हैं—आप हीकी जाति हैं। इनका अपमान, सम्पूर्ण नारी जातिका अपमान है। इसलिए आपको जी-जानसे इनके सुधारका पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। जब तक एक भी स्त्री हमारे देशमें वेश्यावृत्ति द्वारा अपना पेट भरती है, तब तक आपको अपने घरोंकी स्त्रियोंके सतीत्वकी रक्षाका अभिमान करना शोभा नहीं देता। जहां पेटके लिए स्त्रियां अपना सतीत्व खुले बाजार बेच रही हों, उस देशके लिए क्या कहा जा सकता है—आप ही सोचिये।

"महिला-परिषद्" के अन्तर्गत एक "वेश्या-सहायक-समिति" कायम करके देशव्यापी आन्दोलन करना चाहिए और देशकी सुशिक्षिता बहनोंको घूम-फिरकर धन एकत्र करके उसके द्वारा एक उपदेशक मण्डली बनाकर, जहां-तहां उपदेश द्वारा वेश्याओंको उनका असली स्वरूप दिखाकर उस वृत्तिसे उन्हें हटानेका उद्योग होना चाहिए। जो बहनें पेटके लिए यह नारकीय धन्धा करती हैं उन्हें पेट भरनेके लिए कुछ मासिक सहायता देनी चाहिए। साथ ही समाजमें ऐसे पुरुषोंको भी तैयार करना चाहिए, जो बिना किसी घृणाके वेश्याओंको अपनी पत्नीके रूपमें स्वीकार कर लें। जो बहनें कामवासनाके लिए वेश्यावृत्ति करने लगी हैं, उन्हें सदुपदेश देकर शेष जीवन नियमपूर्वक व्यतीत करनेकी सलाह देना चाहिए। वे किसी एक पुरुषको अपना पति बनाकर रह सकती हैं।

यह समय समाज-सुधारकोंके मौन रहनेका भी नहीं है। उन्हें भी इस तरफ ध्यान देकर सामाजिक कलङ्कको हिन्दू जातिके मस्तकसे मिटाने और स्त्री-जातिके पावन सतीत्वको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रक्षाके लिए समाजमें एक वृहत्-आन्दोलन आरम्भ कर देना चाहिए। समाज-सुधार-सम्मेलनके सभापतियों तथा सभानेत्रियोंको चाहिए कि इस प्रश्नपर सब जगह चर्चा करें और लोगोंका ध्यान इस ओर आकर्षित करें।

इस तरहका एक वृहत् आन्दोलन होनेसे वेश्यावृत्ति करनेवाली बहनोंका बहुत-कुछ उपकार हो सकता है। साथ ही वह पुरुष-समाज, जो लज्जा, शङ्का और भयको छोड़कर खुले आम व्यभिचार वृत्तिमें प्रवृत्त है, इस गुरुतर पापसे बच सकता है। जो संक्रामक रोग वेश्या-गमनसे प्रायः उत्पन्न हो जाया करते हैं उनकी संक्रामकता भी रुक जायेगी। इस प्रकार वेश्यावृत्ति सतत एवम् कठिन परिश्रमसे एक-न-एक दिन देशसे दूर की जा सकती है।

---

# साम्यवादका आध्यात्मिक महत्त्व।

श्री दुर्गाप्रसाद शुक्ल

साधारणतः समझा जाता है कि साम्यवाद या समाजवाद (Socialism) आध्यात्मिकताका विरोधी है। लेकिन यह धारणा भ्रान्त है। इतना ही नहीं, साम्यवाद स्वयं मूर्तिमान् व्यावहारिक आध्यात्मिकता है। क्यों है, यह आगेकी पंक्तियोंमें बतलाया जायगा।

पहले, लोगोंमें आम तौरसे फैली हुई गलतफहमीको लीजिये। यह सच है कि रूसका वर्तमान साम्यवाद मजहब (Religion) के साथ चलनेवाली हर तरहकी अन्ध-परम्परा, अज्ञानता, पाखण्ड और दूसरी बुराइयोंका कट्टर शत्रु है और 'अध्यात्मवाद' (Spiritualism) तथा 'आध्यात्मिकता' (Spirituality) की कोई बात नहीं करता; यद्यपि उसकी नीति तथा कार्यक्रमपर आघात पहुंचाये बिना इनके सम्बन्धमें किसी खास तरहके विचार रखनेमें वह कोई रुकावट नहीं डालता। इससे न्यायतः यह नतीजा कभी नहीं निकाला जा सकता कि साम्यवाद इनके साथ छत्तीसका सम्बन्ध रखता है; गर्चे पूर्ण युक्तिसङ्गत कारणोंसे, वह एक हद तक 'मजहब' की मुखालफत जरूर करता है—और वह भी, जालिमाना तरीकोंसे नहीं। रही इनके बारेमें उसकी उदासीनताकी बात। इसके कई कारण हैं। सर्वप्रथम, 'साम्यवाद' मानव-समाजके भौतिक रूपसे सम्बन्ध रखनेवाली व्यावहारिक व्यवस्था है, इसलिए 'अध्यात्मवाद' तथा 'आध्यात्मिकता' उसकी सीमासे बाहरकी वस्तुयें हैं, और तर्कशास्त्रकी दृष्टिसे उसे कोई हक नहीं है कि वह इनकी बातें करे—बल्कि, ऐसा प्रयास उसके लिए अपनी शक्तिका दुरुपयोग-मात्र होगा। दूसरे, निष्पक्ष होकर विचार करनेसे यह साफ मालूम पड़ता है कि अध्यात्मवाद और आध्यात्मिकताकी जितनी बातें इस पृथ्वी-तलपर की जाती हैं, अथवा आज तक की गयी हैं, वे जब-तब और जहां-तहांके व्यक्तिगत अपवादोंको छोड़कर, मानव-जातिके सामूहिक व्यावहारिक जीवनमें कोरी कल्पना, अन्ध-विश्वास, आत्म-प्रवञ्चन, लोक-प्रवञ्चन और 'घोरतम भौतिकता' (grossest materialism) के सिवा और कुछ नहीं है; इसलिए साम्यवाद इस बातकी कोई जरूरत नहीं समझता कि वह आत्मा, परमात्मा तथा नैतिक नियमोंके आधार, जैसे व्यक्ति विशेषगम्य, उच्चातिउच्च, अभौतिक तथा विवादास्पद, दुरूह दार्शनिक विषयोंके पचड़ेमें अपनेको डाले, और वह अध्यात्मवाद किंवा आध्यात्मिकताकी दुहाई दिये बिना मानव-समाजको एकमात्र 'समता', 'स्वतन्त्रता' तथा 'मानवता' के सर्वबोधगम्य, न्यायसम्मत और भेदभावशून्य, मनुष्यमात्रके लिए समान रूपसे हितकर, व्यापक सिद्धान्तोंपर एक आदर्श समाज-विज्ञान तथा सामाजिक व्यवस्था देनेकी कोशिश कर रहा है। तीसरे, वर्तमान रूसके सामने अभी मनुष्यकी सबसे बड़ी और मूल तीन आवश्यकताओं—भोजन, वस्त्र तथा रहनेके लिए स्थान—की समस्याको हल करनेका सवाल सबसे आगे है, यद्यपि एक खास तरहकी सांस्कृतिक (Cultural) उन्नतिकी ओर भी उसका काफी ध्यान है। ऐसी दशामें, उससे अभी यह आशा नहीं की जा सकती कि वह 'चिन्तन-जगत्' की स्वच्छन्दता-पूर्वक सैर करनेमें अपनी शक्ति लगावे, और दुर्गम दार्शनिक प्रदेशोंको भी अपने चहुंमुखी अनुभव सुनानेके मन्सूबे बांधे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परन्तु कौन कह सकता है कि यदि मानव जातिके सौभाग्यसे, सोवियट ( पञ्चायती ) रूसको कमसे कम अपनी जनताकी ही 'शारीरिक आवश्यकतायें' अपने आदर्शानुसार निकट भविष्यमें पूरी कर डालनेमें सफलता मिल जाय, और वह 'मानसिक विकास' के प्रधान अङ्ग—सांस्कृतिक उन्नति-की ओर अधिकाधिक अग्रसर होता जाय, तो वह किसी दिन 'अध्यात्मवाद' को भी मानसिक विकासके क्षेत्रमें एक सम्माननीय दार्शनिक स्थान न दे सकेगा ? इसी प्रकार यह भी सम्भव है कि वह एक दिन मानव-जीवनके तात्त्विक नियमोंपर दार्शनिक विवेचन आरम्भ करे और 'आध्यात्मि-कता' के उसूलोंको खुले शब्दोंमें स्वीकार करता हुआ संसारके सामने उसके साथ अपनी एकरूपता घोषित कर दे। किन्तु, यदि ये सम्भावनायें न भी घटें, अथवा रूस सदा एकमात्र भौतिकवादका पूर्ण समर्थक रहे, तो भी इससे 'साम्यवाद' की विशुद्ध दार्शनिकता तथा आदर्श-उच्चतामें कोई फर्क नहीं आता, और उसके लक्ष्य तथा सिद्धान्त मानव-जातिके लिए सबसे बड़े, असली दार्शनिक सिद्धान्त और समाज-शास्त्रके रूपमें मौजूद रहेंगे। यहां यह बात भी हृदयङ्गम कर लेने योग्य है कि यदि कोई बड़ा साम्यवादी अध्यात्मवाद किंवा आध्यात्मिकताका विरोधी दिखलायी पड़े, तो इसे उसका व्यक्तिगत मत-मात्र समझना चाहिए, और आध्यात्मवाद-विरोध तथा साम्यवादमें किसी तरहका भाईचारा न जोड़ना चाहिए। इसके अलावा, यह जरूरी नहीं है कि यदि हम 'साम्यवाद' को स्वीकार करते हैं तो हम वर्तमान रूस द्वारा की गयी उसकी हर व्याख्या, प्रयोग तथा नीतिको आंख मूंदकर मान लें। बल्कि उसके मूल सिद्धान्तको पूर्ण रूपसे मानते हुए हमें पूरा अधिकार है कि हम महर्षि कार्ल मार्क्स, पुरुषपुङ्गव, कर्मवीर लेनिन और स्वर्गभूमि रूसके साथ तर्कपूर्ण उचित मतभेद रखें।

अब हमें यह देखना है कि किस तरह साम्यवाद 'मूर्तिमान् व्यावहारिक आध्यात्मिकता' है। इस विषयको समझनेके लिए पहले यह जान लेना आवश्यक है कि 'आध्यात्मिकता' क्या है। प्राणियोंके स्थूल शरीरके सिवा 'एक सूक्ष्म सत्, चित् रूप अभौतिक अस्तित्वकी विद्यमानता'को स्वीकार करने मात्रका नाम 'आध्यात्मिकता' नहीं है। बल्कि यह 'अध्यात्मवाद'का विषय है, और इसे 'आध्यात्मिकता'का अन्तिम आधार माना जा सकता है। 'आध्यात्मिकता' की सच्ची परिभाषा है—'अभौतिक नैतिक नियम-समूह ( immaterial moral laws ), जैसे सत्य ( ज्ञान ), प्रेम, त्याग, साम्य, वीरता, अध्यवसाय, आत्मविश्वास, स्वाभि-मान आदिमें मनसा, वाचा, कर्मणा, विश्वास रखना'—जिसके मानी हैं—इनकी बुनियादपर मानव-समाजकी रचना-का आदर्श रखना और कर्तव्यका समुचित निर्णय कर लेनेपर इनके सामने हर प्रकारके सङ्कीर्ण भौतिक विचारों (material considerations) का बलिदान कर देनेको तैयार रहना। इस दृष्टिसे विचार करनेसे प्रतीत होगा कि साम्यवाद और सोवियट रूस 'आध्यात्मिकता'में सच्चा विश्वास रखते हैं, और संसारको स्वर्ग बनानेके लिए यह 'व्यावहारिक आध्या-त्मिकता' ही अधिक मूल्यवान् है। इससे आगे बढ़कर, नैतिकताके आधार, केवल ज्ञानगम्य, अप्राकृतिक 'आत्मा'की हस्ती स्वीकार करने, और इससे भी आगे 'ब्रह्म'के सम्बन्ध-में सोच-विचार तथा दार्शनिक विवेचन करने, कोई मत रखने अथवा किसी विशेष प्रकारकी व्यक्तिगत साधना करनेका सारे समाजके लिए कोई वास्तविक व्यावहारिक मूल्य नहीं है।

थोड़ा दूसरे पहलूसे भी गौर कीजिये। 'आध्यात्मिकता' का अन्तिम ध्येय है—"सर्व भूतेषु चात्मानं सर्व भूतं च आत्मनि" अर्थात् प्राणिमात्रमें अपनेको और अपनेमें प्राणि-मात्रको देखना। परन्तु जरा सोचिये तो कि संसार-भरके अध्यात्मवादियों, सन्त-महात्माओं और धर्माचार्योंने आंखें बन्दकर अपने ज्ञान-चक्षु तथा चिन्तन द्वारा प्राणिमात्रके साथ अपनी एकात्मताका दर्शन तथा अनुभव तो प्राप्त कर लिया और जगत्को उसका सदुपदेश देनेमें भी कोई कसर नहीं रखी ; किन्तु महर्षि कार्ल मार्क्ससे पहले किसीको भी यह बात न सूझी कि उपर्युक्त आदर्शकी भित्तिपर मानव-समाजका सङ्गठन व्यावहारिक रूपमें किस तरह किया जा सकता है। इस जगह सभी चूकते हुए नजर आते हैं, और किसीकी दृष्टि शुरूसे इस बातपर पड़ती नहीं दिखलायी पड़ती कि मनुष्योंके सामने ऐसी व्यावहारिक सामाजिक व्यवस्था पेश की जाय, जिससे उनमें 'वैयक्तिक जीवनवाद' (Individualism) न पैदा होकर, दूसरोंपर अधिक-से-अधिक 'परोपकार', 'दया' आदिकी भावनाओंके बदले,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'साम्यवाद' ( समाजवाद ) के द्वारा कम-से-कम मनुष्य जातिमें 'सबके साथ एकात्मताकी व्यावहारिक प्रत्यक्ष अनुभूति' प्राप्त की जाय। 'साम्यवाद' इस अभावको मिटाता है, और इसलिए हम उसे बिना किसी हिचकिचाहटके 'उच्चतम आध्यात्मिक सिद्धान्तोंका भौतिक प्रयोग' (Material application of highest spiritual principles) कह सकते हैं। पश्चिमके वर्तमान कालिक साम्यवादियोंके इस तथ्यकी घोषणा न करनेसे 'साम्यवाद'के इस आध्यात्मिक महत्त्वमें कोई कमी नहीं आती। यह काम तो आध्यात्मिकताके सच्चे उपासकोंका है कि वे 'आध्यात्मिकता'के वास्तविक तत्त्वोंकी नये सिरेसे छानबीन करें, और उनका 'साम्यवाद'के साथ ऐसा मेल मिला दें कि एक-दूसरेका अविभाज्य अङ्ग दीख पड़ने लगे तथा एकका उपासक दूसरेका उपासक बने बिना न रह सके; जिसे अध्यात्मनिष्ठ, साम्यवादी भारतवर्ष ही पूरी सफलताके साथ कर सकेगा। वह शुभ दिन शीघ्र आवे!

---

# अभिनय

[ १ ]

तुम हो झिलमिल नभकी गंगा,
गगन-विचुम्बी मैं वन-राज।
व्रीड़ाकी तुम सरल किशोरी,
मैं कलि-लीलाका अधिराज!

[ २ ]

तुम हो मादक-मदिरा-प्याली,
मैं हूं उसका लोभी एक।
तुम हो स्वच्छ प्रणयकी देवी,
छल-छद्मोंका मैं अभिषेक!

[ ३ ]

तुम हो चन्द्र-ज्योत्सना प्रेयसि,
मैं हूं तिमिर-विवर विकराल।
तुम हो रमणी पावन-हृदया,
मैं हूं पाप-पतनकी माल!

[ ४ ]

मानो मानो, देखो प्रेयसि,
करो न मुझसे तुम अभिसार।
सविता-सी तुम वनिता हो फिर,
क्यों यह 'पतन' तुम्हें स्वीकार?

[ ५ ]

कितना अन्तर हममें तुममें,
देवि! दिखाऊं मैं साकार—
"मैं हूं तुममें, तुम हो मुझमें",
फिर यह कैसी मृदु झंकार?

[ ६ ]

देवि! सदा ही तुम रहती हो,
नव पल्लव-सी अति सुकुमार।
शुष्क काठ-सा रहता हूं मैं,
हो तब कैसे एकाकार?

[ ७ ]

मानो भी तुम कुछ न मिलेगा,
देवि! निधनसे मणि-उपहार।
है भी जो कुछ, वह है केवल,
टूटा-सा यह हृदयोद्गार!

[ ८ ]

ले लो! ले लो! देवि! इसे भी,
सुख है इसमें मुझे महान।
निर्धनतामें स्वर्गिक सुख है,
यही हमारा है अनुमान!

—देवीदयाल चतुर्वेदी "मस्त"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भिखारी

श्री गोपीकृष्ण

"महाशयजी, कृपा करके एक गरीब, भूखे आदमीकी हालतपर ध्यान दीजिये! तीन दिनसे मैंने खाना नहीं खाया .....रातको किसी धर्मशालामें ठहरकर खानेके लिए भी मेरे पास एक पैसा नहीं है—मैं भगवान्‌को साक्षी करके कहता हूं। पांच साल तक मैं एक गांवके स्कूलमें मास्टर था; डिस्ट्रिक्ट बोर्डके मेम्बरोंके षड्यन्त्रसे मेरी नौकरी चली गयी।"

लाला वंशीलालने, जो लखनऊ शहरके एक नामी वकील थे, उस व्यक्तिकी ओर देखा। उसका नीला कोट बहुत मैला और फटा था, उसके फटे हुए जूतोंमें बहुत-सा कीचड़ लगा था, उसकी आंखें शराब पीनेके कारण चढ़ी हुई थीं। कुछ देर तक उसे गौरसे देखनेपर उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि इस व्यक्तिको उन्होंने कहीं अन्यत्र देखा है।

भिखारी कहता चला गया—"अब मुझे बड़ी मुश्किलसे हरदोई जिलेमें एक नौकरी मिली है, पर वहां जानेके लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं। कृपा करके मेरी सहायता कीजिये! भगवान् आपका भला करेगा! मुझे मांगनेमें शरम मालूम हो रही है, पर.....अपनी स्थितिके कारण लाचार हूं।"

वंशीलालकी दृष्टि उसकी 'फैल्ट' टोपीपर गयी, जिसके ऊपरका कपड़ा एक कोनेमें फट जानेके कारण भीतरका गत्ता साफ दिखायी दे रहा था। उन्हें तत्काल स्मरण हो आया कि इस व्यक्तिको परसों उन्होंने गोलागञ्जमें देखा था। बोले—"सुनो, परसों तुम मुझे गोलागञ्जमें मिले थे और तब तुमने मुझसे कहा था कि 'मैं हाल हीमें किसी गुप्त राष्ट्रीय समितिमें भाग लेनेके कारण कालेजसे निकाल दिया गया हूं।' पर आज तुम कहते हो कि मैं डिस्ट्रिक्ट बोर्डके किसी एक स्कूलमें मास्टर था।"

भिखारी घबराकर लड़खड़ाती हुई जबानसे कहने लगा—"नहीं, नहीं, ऐसा मैं कभी नहीं कह सकता। आप भूल करते हैं। मैं एक स्कूल-मास्टर हूं, और अगर आप चाहें तो मैं आपको इसके प्रमाणमें कागजात दिखा सकता हूं!"

"बस, बस, ये सब चालाकियां रहने दो! तुम मेरी आंखों, मेरे कानोंको झूठा साबित करना चाहते हो?" घृणा और क्रोधके कारण वंशीलालका चेहरा तमतमा आया, और उस चिथड़े पहने हुए व्यक्तिकी ओरसे मुंह फिराकर क्रुद्ध स्वरमें बोले—"बड़ी शरमकी बात है! यह तो एकदम धोखेबाजी है! मैं तुम्हें अभी पुलिसके हवाले करता हूं। आया कहींका स्कूल-मास्टर! बेईमान, गुण्डा कहींका! तुम चाहते क्या हो? किसी चलते मुसाफिरकी आंखोंमें धूल झोंककर उसे लूटना? यह सम्भव है कि तुम गरीब और भूखे हो, पर इसके मानी यह नहीं कि तुम इस प्रकार निर्लज्जतासे झूठ बोलते फिरो!"

भिखारी कांपता हुआ दीवारके सहारे खड़ा हो गया, और जालमें फंसे हुए पक्षीकी तरह हताशावस्थामें कमरेकी चारों ओर नजर दौड़ाने लगा! बड़बड़ाता हुआ, कांपती हुई आवाजमें बोला—"मैं...मैं झूठ नहीं बोलता; मैं आपको प्रमाण-पत्र दिखा सकता हूं।"

वंशीलालने पूर्ववत् उत्तेजित स्वरमें कहा—"पर तुम्हारी बातपर अब किसे विश्वास हो सकता है? राष्ट्रीयताके कारण पीड़ित विद्यार्थियों और ग्राम्य पाठशालाओंके मास्टरोंके प्रति जनताकी जो स्वाभाविक सहानुभूति होती है, तुम अपने तुच्छ स्वार्थके लिए उसका नाजायज फायदा उठाना चाहते हो! यह घोर लज्जाकी बात है! इससे अधिक नीचता और क्या हो सकती है!" इस शिक्षित भिखारीका मिथ्याचरण देखकर वंशीलालके हृदयमें रह-रहकर घृणा उमड़ उठती थी। वह अपनेको एक दयावान् और दानी पुरुष समझते थे, और इस बातका उन्हें गर्व था। पर इस व्यक्तिकी अत्यन्त निन्द्य प्रवृत्तिने उनकी इस पुण्य मनोवृत्तिको मानों कलङ्कित कर दिया था। आज तक उनकी दानशीलताकी जो धारा बिना किसी सन्देह और द्विविधाके बह रही थी, आज उसके मार्गमें एक बड़ा पाषाण उसकी प्रगतिको बाधा देते हुए मालूम होने लगा। उन्हें सन्देह होने लगा कि जिन भिखारियोंको वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आज तक दान देते चले आये हैं, बहुत सम्भव है उनमेंसे बहुत-से इसी झूठे आदमीकी तरह ठग हों।

कुछ देर तक वह भिखारी अपनी बातपर अड़ा रहा और शपथ लेकर कहने लगा कि वह स्कूल-मास्टर था, पर जब उसने देखा कि उसकी बातोंका कोई असर श्रोतापर नहीं होता तो उसने लज्जा और सङ्कोचके कारण अपना सिर नीचा कर लिया। अन्तको उसने कहा—"आप हीकी बात सच है, साहब! मैं सचमुच झूठ बोल रहा था। मैं न तो विद्यार्थी था न स्कूल-मास्टर। ये सब बातें बनावटी थीं। मैं असलमें किसी थियेट्रिकल कम्पनीमें नौकर था, और शराबकी बुरी लत होनेके कारण वहांसे निकाल दिया गया। पर मैं कर ही क्या सकता हूं? मेरी बातपर आप विश्वास कीजिये, मैं भगवान्‌को साक्षी करके कहता हूं कि बिना झूठ बोले मेरा काम चल नहीं सकता। अगर मैं सच बोलूं तो कोई मुझे एक फूटी कौड़ी भी न देगा। सच बोलनेका केवल यही नतीजा होगा कि मुझे भूखों मरना पड़ेगा और बाहर सड़कपर सोना होगा। आप जो-कुछ कहते हैं, वह सब ठीक है, मैं भली भांति उसकी सचाईको महसूस करता हूं। पर करूं क्या?"

"क्या करूं पूछते हो?"—उसके निकट जाकर आवेशमें वंशीलालने कहा—"कोई काम करो, काम! मेहनतकी रोटी खाओ!"

"काम!.....यह मैं भी जानता हूं। पर इस बेकारीके जमानेमें कहीं काम मिले तब तो!"

"ये सब फिजूलकी बातें हैं! तुम नौजवान हो, अभी तुम्हारे शरीरमें बल है, और जब चाहो तुम्हें काम मिल सकता है। पर मुश्किल तो यह है कि तुम निरे आलसी हो, मुफ्तका खाना खाकर मुटा गये हो और मजेमें शराब पीते हो। शराबकी बूके मारे तुम्हारे पास कोई देर तक खड़ा नहीं रह सकता। तुम्हारी नस-नसमें बदमाशी और बेईमानी समायी हुई है, और केवल भीख मांगने और झूठ बोलनेके सिवा तुम किसी कामके योग्य नहीं रह गये हो! अगर तुम हम लोगोंके ऊपर कृपा करके काम करनेके लिए राजी भी हो जाओ तो तुम्हें ऐसा काम चाहिए जिसमें तुम आफिसमें बैठकर लिख-पढ़ सको, या किसी थियेट्रिकल कम्पनीमें नाच सको या टिकट चेक करो ताकि मासिक वेतनके साथ-साथ दूसरे उपायोंसे भी जेब गरम कर सको;—ऐसे कामोंके लिए तुम राजी हो सकते हो; पर अगर तुम्हें मेहनत-मजदूरी करनेके लिए कहा जाय तो क्या तुम कभी राजी होओगे? मैं शर्तिया कह सकता हूं कि तुम कभी कुली या मजदूर बनना स्वीकार नहीं करोगे। क्योंकि तुमने अपनेको 'बाबू' बना लिया है!"

भिखारी कुछ रूखे भावसे मुसकराया। बोला—"आप सच कहते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। पर मुझे मजदूरीका काम कहां मिल सकता है? मैं अब दूकानमें बेचनेका काम नहीं कर सकता, क्योंकि यह काम बचपनसे ही शिक्षा पाये बिना नहीं हो सकता; मुझे कोई अपने घरमें नौकर भी नहीं रख सकता, क्योंकि मैं उस श्रेणीका नहीं हूं.....और किसी फैक्टरी या मिलमें भी मुझे काम नहीं मिल सकता; क्योंकि हरेक कामके लिए थोड़ा-बहुत अनुभव पहलेसे ही चाहिए; और-मैं इस सम्बन्धमें कुछ भी नहीं जानता!"

"सब फिजूलकी बातें हैं। कोई-न-कोई बहाना तुम आलसी लोगोंको अपनी सफाईके लिए मिल ही जाता है। क्या लकड़ी फाड़नेका काम तुम्हें पसन्द नहीं है?"

"क्यों नहीं! पर आपको तो मालूम ही होगा कि आजकल लकड़ी फाड़नेवाले बेकार बैठे हैं।"

"सभी निकम्मे अपनी सफाईमें ऐसी ही बेकामकी दलीलें पेश करते हैं। ज्योंही तुम लोगोंको कोई काम दिया जाता है, तुम लोग तत्काल इनकार कर देते हो। अगर मैं तुम्हें लकड़ी फाड़नेका काम दूं तो करोगे?"

"क्यों नहीं, अवश्य करूंगा....."

"अच्छी बात है, यही सही.....देखें तुम कैसा काम करते हो।" वंशीलालने तत्काल रसोई-घरसे अपनी रसोई-दारिन, 'मिसरानीजी'को बुलाया। इस ठग और आलसी व्यक्तिको कौतूहलके कारण कुछ तङ्ग करके वह जरा तमाशा देखना चाहते थे। मिसरानीजीसे उन्होंने कहा—"देखिये मिसरानीजी, इन्हें शेडमें ले जाकर इनसे लकड़ी फड़वाओ।"

भिखारी अनिच्छासे मिसरानीजीके पीछे-पीछे हो लिया। उसने यह नहीं सोचा था कि सचमुच उसे लकड़ी फाड़नेका काम दिया जायगा। उसके मुखके भावसे यह स्पष्ट ही जाना जा सकता था कि वह भूखके कारण व्याकुल होकर पैसा कमानेके लालचसे इस कामके लिए राजी नहीं हुआ है, बल्कि आत्म-सम्मानके भावसे प्रेरित होकर अपने वचन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को पूरा करने जा रहा है। यह भी साफ दिखायी देता था कि ठर्रेका असर उसपर यथेष्ट हुआ है, और उसकी तबीयत ठीक नहीं है, और इस समय काम करनेको उसका जी बिलकुल भी नहीं चाहता।

वंशीलाल बैठकके कमरेमें चले गये। वहां खिड़कीके पास बैठनेसे उन्हें लकड़ीका 'शेड' साफ दिखायी देता था। उन्होंने मिसरानी और भिखारीको पिछवाड़ेके रास्तेसे दालानमें आते देखा। दोनों दोपहरकी गरमीसे भट्टीकी तरह जलते हुए 'शेड'के पास पहुंचे। मिसरानीने अपने साथीको एक बार सिरसे पैर तक देखा और क्रोधके साथ अपने कुहनेको जोरसे झटककर ताला खोला और इसके बाद जोरसे धक्का देकर दरवाजा खोल दिया। वंशीलालने सोचा—"शायद ब्राह्मणी चाय पी रही होगी; मैंने बीच हीमें बुला लिया, इसीलिए उसकी यह नाराजगी है। चाय ही तो उसके प्राणोंका एकमात्र आधार है।" इसके बाद उन्होंने उस स्वयंसिद्ध 'स्कूल-मास्टर'को एक काठपर बठते देखा—वह वहांपर अपने दोनों गालोंपर हाथ रखकर विचारमग्न अवस्थामें बहुत देर तक बैठा रहा। मिसरानीने उसके पांवके पास एक कुल्हाड़ी फेंक दी, और गुस्सेमें उसने जमीनपर थूका। उसके होठोंके जल्दी-जल्दी हिलनेसे यह अनुमान होता था कि वह उस भिखारीको गालियां दे रही है। भिखारीने ढीले हाथसे एक लक्कड़ अपनी ओर खींचकर उसे अपने दोनों पांवोंके नीचे रखा और उसके ऊपर कुल्हाड़ी चलायी। इस चोटसे लक्कड़ कटनेके बदले अपने स्थानसे हट गया। भिखारीने फिर एक बार उसे यथास्थान रखके काटना चाहा, पर फिर भी वही परिणाम हुआ। दो ही चोट चलानेसे वह पसीनेसे लथपथ हो गया था। उसके मुंहसे पसीना बूंद-बूंद करके टपक रहा था।

यह सब दृश्य देखकर वंशीलालका क्रोध उतर गया। उनके हृदयमें एक चोट-सी लगी और यह सोचकर उन्हें कुछ लज्जाका अनुभव हुआ कि एक अनभ्यस्त, शराबी और कदाचित् बीमार आदमीको उन्होंने इस दोपहरकी धूपमें लकड़ी फाड़नेके लिए बाध्य किया है। फिर भी उन्होंने मनमें सोचा—"इसमें कोई हानि नहीं है, मैं उसीकी भलाईके लिए, उसकी आदत सुधारनेके लिए यह काम उससे करवा रहा हूं।" यह सोचते हुए वह भीतर अपने अध्ययनके कमरेमें चले गये।

एक घण्टे बाद ब्राह्मणीने आकर कहा कि लकड़ी फाड़ी जा चुकी है। वंशीलालने कहा—"अच्छी बात है, लो, उसे यह अठन्नी दो। अगर वह चाहे तो उससे कहो कि हर महीनेकी पहली तारीखको आकर इसी तरह लकड़ी फाड़ जाया करे।"

दूसरे महीनेकी पहली तारीखको वही भिखारी फिर आ पहुंचा और एक अठन्नी कमा ले गया, यद्यपि उसमें खड़े होनेकी ताकत नहीं दिखायी देती थी। उस समयसे उसने महीनेमें कई बार आना शुरू कर दिया और नित्य उसे वंशीलालके यहां काम मिल जाता था। कभी वह झाड़ू देता, कभी डण्डेसे कालीनों अथवा दरियोंमें जमी हुई गर्दको निकालता। उसे इन कामोंके लिए आठ-नौ आने मिल जाते थे, और एक बार एक पुराना कमीज भी उसे दे दिया गया।

उस वर्ष वंशीलालने गरमीके मौसममें पहाड़ जानेका निश्चय किया था। जानेके पहले जब असबाब ठेलोंमें लदने लगा तो वह भिखारी भी वहां मौजूद था। वह आज शराबके नशेसे बिलकुल बरी था। पर असबाब लादनेमें कोई विशेष सहायता नहीं दे रहा था, केवल एक-आध हलकी चीज उठाकर कभी-कभी ठेलेपर रख देता था। गरमीके कारण वह बड़ा व्याकुल-सा जान पड़ता था। ठेलेवाले उसकी सुस्ती, दुर्बलता और 'बाबू' लोगोंके फैशनका कोट (जो एकदम फटा हुआ था) देखकर उसपर हंस रहे थे। जब सब असबाब लद गया तो वंशीलालने उसे बुला भेजा और कहा—"मैं देखता हूं कि मेरी बातका तुमपर काफी असर हुआ है। लो, यह रुपया लो। यह तुम्हारी मजूरी है। मैं देखता हूं कि तुमने अब शराब पीना छोड़ दिया और कामसे जी नहीं चुराते। तुम्हारा नाम क्या है?"

"कृपाराम।"

"कृपाराम, मैं तुम्हें इससे अच्छा काम दे सकता हूं। तुम क्या लिख सकते हो?"

"जी हां।"

"अच्छी बात है। मैं एक पत्र लिख देता हूं, तुम कल इसे लेकर मेरे साथीके पास जाना, वह तुम्हें अवश्य कुछ काम देंगे। देखो, आयन्दा कभी शराब मत पीना, और काममें मन लगाना।"



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कृपारामने अभिवादनके बतौर हाथ जोड़े। वंशीलालने भी उत्तरके बतौर जल्दीसे हाथ जोड़कर उसकी पीठपर थपकी देकर स्नेहपूर्वक मुसकराते हुए उसे बिदा किया। कृपाराम पत्र लेकर चला गया। तबसे वह वंशीलालके पास काम मांगने नहीं आया।

दो वर्ष बीत गये। एक दिन जब वंशीलाल किसी सिनेमाके टिकट-घरके पास खड़े होकर अपने टिकटके लिए रुपया दे रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक नाटा-सा आदमी उनके पीछे आकर खड़ा हो गया। इस नये आदमीने चार आनेके पैसे निकालकर टिकटवालेको दिये।

"कृपाराम! कहांसे? आज तक कहां थे? क्या काम करते रहे? अच्छी तरहसे तो हो?" वंशीलालने प्रश्नोंकी झड़ी लगा दी।

कृपारामने ससङ्कोच कहा—"आपकी कृपासे मेरी दशा अब अच्छी है। मैं अब एक बैङ्कमें काम करता हूं और पचास रुपये पाता हूं।"

"बड़ी खुशीकी बात है। मुझे सचमुच तुम्हें देखकर बड़ा आनन्द हो रहा है। मेरी बातपर विश्वास करो, कृपाराम, मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ हूं। तुम्हें याद है, जब तुम मेरे पास आये थे तो मैंने तुम्हें किस तरह डांटा था? तुम्हारी भलाईके लिए ही मैंने वैसा किया था। तुमने मेरी बातपर ध्यान दिया, इस बातके लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं।"

कृपारामने कहा—"आप मुझे क्यों धन्यवाद देने लगे। मैं आपको धन्यवाद देता हूं। अगर उस दिन मैं आपके यहां न आया होता तो आज भी अपनेको विद्यार्थी या स्कूल-मास्टर बतलाता फिरता। आपके घर जब मैं आया तो मेरा नया जीवन प्रारम्भ हो गया। मैं गड्ढेसे बाहर निकलनेमें समर्थ हुआ।"

"मैं बहुत ही खुश हूं।"

"आपकी दयाके कारण मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आपने उस दिन जो-कुछ कहा, वह मेरी ही भलाईके लिए। मैं आपके और आपकी ब्राह्मणीके प्रति कृतज्ञ हूं। भगवान् उस दयाशील, उदार स्त्रीका भला करे। आपने उस दिन बड़ा उत्तम उपदेश दिया, सन्देह नहीं; मैं जन्म-भर आपकी बातका ऋणी रहूंगा; पर असलमें आपकी मिसरानीने मुझे सुधारा।

"कैसे?"

"सुनिये। मैं आपके यहां लकड़ी फाड़नेके लिए आया करता था। मुझे देखते ही मिसरानी कहने लगती—'शराबी कहींका! अभागा! मौत भी तुम्हारे पास नहीं फटकना चाहती।" इसके बाद वह मेरी ओर मुंह करके मेरे लिए खेद प्रकट करती हुई रोने लगती। वह कहती—"तुम ऐसा फूटा भाग्य लेकर संसारमें उत्पन्न हुए हो कि इस लोकमें तुम्हारे लिए कोई सुख ही नहीं है, और परलोकमें तुम नरकमें जल मरोगे! ऐसे शराबियोंकी जो दुर्गति हो, वह थोड़ी है।" नित्य ऐसे ही वाक्योंको दुहराया करती। मेरे कारण वह कितनी दुःखित रहती थी, और कितनी बार मेरी दशापर आंसू बहा चुकी है, मैं इसकी गणना नहीं कर सकता। पर सबसे बड़ी बात तो यह है कि मेरे लिए वह लकड़ी फाड़ देती थी। आपको मालूम नहीं होगा—मैंने कभी आपके यहां लकड़ी नहीं फाड़ी। उसे देखकर मेरी आत्मामें ऐसा परिवर्तन होने लगा कि स्वयं मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने शराब पीना छोड़ दिया। उसकी गालियां मुझे माताके दुलारकी तरह प्यारी लगती थीं।"

कृपाराम उसकी बात सुनकर स्तब्ध रह गये। एक पतितको सुधारनेमें समर्थ होनेकी जो अवर्णनीय प्रसन्नता उन्हें हुई थी वह पलमें तिरोहित हो गयी। वह कुछ देर तक वहींपर भ्रान्तावस्थामें खड़े रहे। *

* रूसी लेखक एण्टन चेखोफकी एक कहानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आत्महत्या

श्री रामनारायण 'यादवेन्दु' बी० ए०

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

—यजुर्वेद।

आजकल भारतवर्षमें आत्महत्याका रोग नर-नारियोंका संहार कर रहा है। यह महामारी रोगसे भी भयङ्कर है। दैनिक पत्रोंके कालम आत्महत्याओंके रोमञ्चकारी, मर्मान्तक समाचारोंसे भरे दिखलायी पड़ते हैं। आज युवक-समाज का जीवन बड़े सङ्कटमें है। कोई प्रेमिकाके विरहमें प्राण त्याग देता है, कोई जीविका प्राप्त न होनेके कारण इस रोगका शिकार हो जाता है, कोई रोगके असह्य कष्टसे विवश हो आत्महत्या कर लेता है, कोई 'पतिदेव' के अमानुषिक भीषण अत्याचारोंसे दुःखी होकर आत्महत्याका पाप कर बैठती है, किसीको आत्महत्या करनेकी सनक सवार है। निष्कर्ष यह है कि किसी-न-किसी कारण लोग आत्महत्या-पर उतारू हो जाते हैं। इस महारोगके निवारणकी घोर आवश्यकता है। इसलिए विद्वानोंका कर्त्तव्य है कि वह इस रोगके संहारके लिए प्रयत्नशील बनें।

देशमें आत्महत्याकी वृद्धिका मूल कारण क्या है? इसका मूल कारण है आर्य-संस्कृति और वैदिक धर्मके प्रति उपेक्षा। जन-समाजमें धर्म-भावनाका लोप होता जा रहा है। उसमें अपने धर्म, संस्कृति, सभ्यता और नीतिके प्रति श्रद्धा नहीं है। समाज पाश्चात्य संस्कृतिको अपनाता जा रहा है। परन्तु आज पश्चिमकी क्या दुर्दशा है, यह बहुत कम लोग विचार करते हैं। आत्महत्याका सबसे अधिक भीषण प्रकोप संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकामें देखनेको मिलता है। संयुक्त राज्य (अमेरिका) में प्रति २६ मिनटमें एक पुरुष आत्महत्या कर लेता है! सन् १९३१ ई० में २०००० मनुष्य इस महारोगके शिकार हुए! इस सम्बन्धमें टिप्पणी करते हुए डा० एफ० एल० हौफमैन (Frederick. L. Hoffman) लिखते हैं:—

"मनुष्य इसलिए आत्महत्या करते हैं कि वे आनन्दप्रद जीवनके आध्यात्मिक ज्ञान ( Philosophy of life ) की खोजमें असफल रहते हैं और उनमें उस आत्मिक शक्तिका अभाव रहता है, जो सङ्कट-कालमें उन्हें आनन्ददायिनी शक्ति प्रदान कर सकती है। हमारी औद्योगिक शिक्षाके दो पक्ष आत्महत्याकी इस भयङ्कर वृद्धिके लिए उत्तरदायी हैं। धनकी अमित लालसा और पूंजीवादका समाजपर घातक प्रभाव। अगणित मनुष्य भोग-विलासमें इतने लिप्त हैं कि उनकी अर्थ-भावना अति दूषित हो गयी है। फलतः आर्थिक सङ्कट उनके जीवन-भोग करनेकी इच्छाका नाश कर देता है। इससे भी भयानक दृश्य एक करोड़ बेकारोंकी पुरुषार्थ-हीनता है।"

इसके पश्चात् योग्य लेखक इस महाव्याधिके उपचारका विवेचन इस प्रकार करते हैं:—

"वर्तमान कालीन विषादान्त अभिनयके पटाक्षेपके लिए समाज-वाद और धर्मकी आवश्यकता है। जीवनकी ऐसी फिलासफीकी आवश्यकता है जो अर्थ-शक्ति और अधिकारके स्थानपर सत्य, सौन्दर्य और शिवका दर्शन करावे और विश्वात्माके साथ आत्माका योग कराकर मानव-जगत्-में विश्व-बन्धुत्वकी प्रतिष्ठा कर सके।"

अमेरिका आत्महत्याके पापसे बहुत दुःखी है और वहांके विद्वान् इसके विनाशके लिए प्रयत्नशील हैं। परन्तु खेद कि हमारा भारत देश उस महाव्याधिका स्वागत कर रहा है! क्या यह हमारी मानसिक दासता नहीं है? मेरे पास इस समय आंकड़े नहीं हैं। अतः मैं आत्महत्याओंकी निश्चित संख्या नहीं लिख सकता। परन्तु मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूं कि हमारे देशमें आत्महत्याका रोग बड़ी तेजीसे बढ़ रहा है। प्रस्तुत लेखमें हमें इसके मौलिक कारणों और उपचारपर विचार करना है।

वैसे आत्महत्याके अनेकों प्रकार हैं; परन्तु हम उन्हें आत्महत्याका कारण नहीं मान सकते। जितनी आत्म-हत्यायें होंगी, उतने ही विविध उसके ढङ्ग भी होंगे। आत्म-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हत्या करनेवालोंमें दो प्रकारके मनुष्य होते हैं। (१) स्वस्थ मस्तिष्क (Sane) (२) अस्वस्थ मस्तिष्क (Insane)। जब कोई विक्षिप्त-मस्तिष्क आत्महत्याके लिए प्रयत्नशील होता है और उसे सफलता नहीं मिलती तो वह पुनः प्रयत्न करता है। जब तक उसकी सनक शान्त नहीं होती, वह सतत प्रयास करता है। पर जब स्वस्थ मस्तिष्क आत्महत्याके प्रयत्नमें असफल रहता है तो वह पुनः प्रयत्न नहीं करता। वह अपनेको भाग्यशाली समझता है। इस महती अनुकम्पाके लिए वह ईश्वरकी स्तुति करता है।

पागल मनुष्योंकी आत्महत्याको रोकना सम्भव नहीं। परन्तु स्वस्थ मनुष्योंकी आत्महत्या रोकी जा सकती है। इस दूसरी श्रेणीके आत्मघाती मनुष्य चार प्रकारके हैं—बालक, युवा, वृद्ध और स्त्री। स्त्रियां इस रोगसे बहुत कम आक्रान्त होती हैं और पुरुषोंमें सबसे अधिक आत्महत्या करनेवाले युवा हैं। वृद्ध और बालक बहुत कम आत्महत्या करते हैं। युवक-समाजमें आत्महत्याके शिकार सबसे अधिक क्यों हैं?

इसका कारण यह है कि युवा अवस्था जीवनका वह समय है जब युवक अपने अपरिपक्व मस्तिष्कको लेकर जीवन-संग्राममे प्रवेश करते हैं। जर्जर और क्षीण शरीर जीवनकी कठिनाइयोंका भार वहन करनेमें अशक्त रहता है। आत्मिक शक्तिका उसमें सर्वथा अभाव पाया जाता है। इसीलिए युवा जीवन-संग्रामकी कठिनाइयोंसे बचनेके लिए आत्महत्याका सहारा लेता है। बालक बहुत कम संख्यामें आत्महत्या करते हैं। बाल्य-काल शरीरके विकासकी अवस्था है; इस युगमें शरीरमें शक्तिका सञ्चार होता है। इसी समय उत्साह, आमोद, प्रफुल्लता, स्फूर्तिका आधिक्य रहता है। उत्तम स्वस्थ शरीर तथा सांसारिकतासे पृथकता, यही दो मूल कारण हैं जो बालकको जीवनदायिनी शक्ति प्रदान करते हैं। वृद्ध पुरुष युवाओंकी अपेक्षा कम-संख्यामें आत्महत्या करते हैं। साधारणतः यह देखा जाता है कि वृद्धावस्थामें मनुष्य मृत्युसे जितना डरता है, युवावस्थामें उतना नहीं। शार्ले रेनूविये (Charles Renouvier) नामक फ्रान्सीसी दार्शनिकके कथनसे इस बातकी विशेष पुष्टि होती है। जब वह ८८ वर्षका था तो उसने अपने सम्बन्धमें लिखा था—"मैं अपनी दशासे भली भांति परिचित हूं। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मैं मरने जा रहा हूं; सम्भव है एक सप्ताहके भीतर ही मर जाऊं, सम्भव है दो सप्ताह तक घसिटता चलूं। पर मेरी आकांक्षा कभी पूरी नहीं हुई। अपनी इस आयुमें मुझे किसी भी आकांक्षाका कोई अधिकार नहीं है। मेरे जीवनकी अवधि कुछ ही दिनों—सम्भवतः घण्टों—के भीतर ही पूरी हो जायगी। तथापि मैं अतृप्त हृदयसे मर रहा हूं। मेरे दार्शनिक विचारोंका लोगोंपर क्या परिणाम हुआ, यह बिना जाने ही मैं इहलोकसे सिधार रहा हूं। अपना अन्तिम कथन लोगोंको सुनाये बिना ही मुझे इस संसारसे छुट्टी लेनी पड़ रही है। इसके अतिरिक्त यह बात भी है कि जब कोई आदमी बुड्ढा हो जाता है तो उसके लिए मरना बड़ा कठिन हो जाता है, क्योंकि जीवनके स्वाद-से वह अच्छी तरह परिचित हो जाता है, और उससे वञ्चित होना वह किसी तरह नहीं चाहता। अस्सी वर्षकी आयुमें मनुष्य कायर बन जाता है और मृत्युसे घबराने लगता है। मुझमें दार्शनिकका जो अंश है, वह मृत्युसे नहीं डरता, पर जो वृद्ध आत्मा मेरे अन्दर छिपी है, वह मौतसे कोसों दूर भागती है।" *

यही कारण है कि वृद्धावस्थामें आत्महत्या करते नहीं बनती। वृद्ध लोगोंका हृदय जीवन-संग्रामकी कठिनताओंके कारण सहनशील बन जाता है। उनमें युवक-हृदयकी भावुकता नहीं रहती। यद्यपि उनका प्राकृतिक शरीर दुर्बल और क्षीण हो जाता है, तथापि उनकी आत्मामें एक अपूर्व शक्तिका उदय हो जाता है। उनमें साहस और उत्साह बना रहता है।

जो मनुष्य जितना चिन्तनशील होगा, वह उतना ही अधिक भावुक भी होगा। विद्वत्ता और ज्ञानके साथ चिन्तन-का सामञ्जस्य होता है। इसीलिए, अधिकांशमें विद्वान् पुरुषोंमें भावुकताका प्राधान्य होता है। नारी-जाति, पुरुष-समाजकी अपेक्षा आत्महत्याके पापसे, कुछ अंशमें, कम दुःखी है। अर्थात् नारियां पुरुषोंकी अपेक्षा कम संख्यामें आत्महत्या करती हैं।

स्त्रियां अधिक भावुक और संवेदन-शीला नहीं होतीं। किसी विषयका गम्भीरता-पूर्वक चिन्तन करना नारी-प्रकृति-

* देखिये 'दुःखवादका विश्लेषण, प्राकृतिक मृत्यु और हिस्टीरिया', लेखक—श्री इलाचन्द्र जोशी, 'विश्वमित्र' (मासिक) मार्च १९३३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के प्रतिकूल है। यही कारण है कि उन्हें आत्महत्याके बहुत कम अवसर मिलते हैं। इसके अतिरिक्त नारीका क्रीड़ा-क्षेत्र अति संकुचित है। नारी पुरुषकी आश्रिता है। इसलिए गृहस्थीकी चिन्ताके अतिरिक्त उसे कोई दूसरी चिन्ता नहीं होती। जहां स्त्रियां आत्महत्या करती दीख पड़ती हैं, वहां वे पतियोंके अमानुषिक अत्याचारसे पीड़ित हो ऐसा करती हैं। अतः स्त्रियोंकी आत्महत्याको रोकना पतियोंके हाथ है। यदि वह अपने अमानुषिक और क्रूर अत्याचारोंका अन्त कर दें और दाम्पत्य जीवनमें प्रेम-रसका सञ्चार करें, तो स्त्रियां कदापि आत्महत्या न करें।

आत्महत्याके सम्बन्धमें एक बात बड़ी महत्त्वपूर्ण है, जिसका उल्लेख किये बिना आत्महत्याकी इस वृद्धिका कारण नहीं बतला सकते। यह देखा जाता है कि कट्टर धर्मानुयायी समाजमें आत्महत्याओंकी संख्या बहुत कम मिलती है। किसी दैनिक पत्रमें हमने यह नहीं पढ़ा कि कोई शास्त्री या पण्डित आत्महत्याके फल-स्वरूप मर गया, कोई पुरोहित या महन्त अथवा कट्टर सनातन-धर्मानुयायी अथवा आर्यसमाजी आत्महत्या करके काल-कवलित हो गया। ऐसी खबरें बहुत कम पढ़नेमें आती हैं। हम अपने इस कथनकी पुष्टिमें यूरोपके धर्म-समाजसे उदाहरण देना चाहते हैं।

यूरोपके जिन-जिन देशोंमें रोमन कैथलिक धर्म आध्यात्मिक और लौकिक क्षेत्रमें सर्वोच्च आसनपर आसीन है और जहांके नागरिकोंमें उसकी सत्ताके प्रति आदर और श्रद्धा है, वहां आत्महत्याका रोग अति भयङ्कर रूपमें नहीं मिलता। क्योंकि रोमन कैथलिक धर्मका यह आदेश है कि प्रत्येक मनुष्यको दुःख और सुख समान रूपसे सहन करना चाहिए। आत्महत्या ईश्वर द्वारा निषिद्ध है। यह हत्याका एक रूप है। रोमन कैथलिक आत्महत्याको महापातक मानता है। यही कारण है कि दक्षिणी आयर्लैण्डमें—जहां रोमन कैथलिक धर्मके अनुयायी अधिक संख्यामें मिलते हैं—एक लाखमें केवल ३ मनुष्य आत्म-हत्या करते हैं। परन्तु उत्तरी आयर्लैण्डमें—जहां प्रोटेस्टेण्ट मतका प्राधान्य है, कैथलिक-मतका नहीं—दक्षिणकी अपेक्षा आत्म-हत्यायें दुगुनी होती हैं। निष्कर्ष यह है कि भारतमें आत्म-हत्याओंका आधिक्य उस समाजमें अधिक भयङ्कर रूपमें मिलता है जिसने अपने प्राचीन धर्म और संस्कृतिका परित्याग कर दिया है। यही नहीं, अपनी संस्कृतिका परित्याग कर जिसने किसी आनन्द-मूलक जीवनके सिद्धान्त ( Philosophy of life ) को ग्रहण नहीं किया। जिस समाजके व्यक्तियोंने अपने जीवनके उद्देश्यको निश्चित नहीं किया, वह उस जीवनका मूल्य क्या जाने! जिसने विश्वपतिके चरणारविन्दमें अपनी जीवन-रक्षाका भार नहीं सौंपा, वह अपने जीवनको कब तक सुरक्षित रख सकता है? नास्तिकता जीवनको आदर्श नहीं बना सकती। नास्तिक मनुष्य अपने जीवनके उच्च ध्येयकी प्राप्ति नहीं कर सकता। फलस्वरूप वह निराशावादी बन जाता है। वह समझने लगता है, यह जीवन क्षणभंगुर है—शरीर मिट्टीमें मिल जायगा। किसी-न-किसी दिन मरना अवश्य है; इसलिए अधिक कष्टमय जीवन व्यतीत करनेसे क्या लाभ? यह निराशावादी विचार हैं। नास्तिक मनुष्य आत्मामें सौन्दर्यके दर्शन नहीं कर सकता। वह विश्वात्माके रहस्यसे भी अपरिचित रहता है।

हमारे विश्वविद्यालयका स्नातक आर्य-संस्कृति तथा वेद-धर्मसे उतना ही अपरिचित होता है जितना आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीका एक ग्रेजुएट। वह भारतीय होते हुए भी पूरा विदेशी होता है। क्योंकि उसका हृदय और आत्मा पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यताके रङ्गमें रञ्जित होते हैं। उसे यह भी ज्ञान नहीं कि कोई आर्य या वेद-धर्म भी है। अनेकों ऐसे स्नातक मिलेंगे जिनको अपनी धर्म-पुस्तकोंका नाम तक नहीं मालूम! विश्वविद्यालयमें सदाचार, संयम और सद्विचारोंका नवयुवकोंसे कहां तक पालन कराया जाता है, यह किसीसे छिपा नहीं है। यथार्थमें, नवयुवक इन विश्व-विद्यालयोंमें ही अपने जीवनको उच्छृङ्खलतापूर्ण और असंयमी बना लेते हैं।

हमारे शिक्षक जिस प्रकारका साहित्य नवयुवकोंको पढ़ाते हैं, वह भी बहुत अंशमें आत्म-हत्याकी व्याधिका उत्तरदायी है। नाटक, उपन्यास, कहानी इत्यादिमें आदिसे अन्त तक हत्या, आत्म-हत्या, व्यभिचार तथा मानव-हृदयकी दुर्बलताओंका भीषण घटाटोप दीख पड़ता है। इनका हृदयपर अच्छा प्रभाव कभी नहीं पड़ सकता। इस प्रकारका दूषित साहित्य नैतिक पतन करनेवाला है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिस मनुष्यका शरीर पूर्ण स्वस्थ है, वह आत्म-हत्या करनेका दुस्साहस नहीं कर सकता। परन्तु इसके अपवाद भी हैं। बहुतसे मनुष्य पूर्ण स्वस्थ होते हुए भी आत्मघातके लिए प्रयत्नशील दीख पड़ते हैं। ऐसी आत्महत्याका कारण धर्म-भावनाका अभाव होता है।

आत्महत्याके सभी रूपोंमें निराशावादका अस्तित्व निहित होता है। जो मनुष्य आनन्दमें है, वह उसका विनाश क्यों करने लगा? अभी उस दिन मैंने दैनिक पत्र "विश्व-मित्र" में देशभक्त नवयुवक सूरजकिसन पण्डितकी आत्म-हत्याका समाचार पढ़ा। उसमें यह लिखा था कि उन्हें मृत्युके बाद आनन्द मिलनेकी आशा थी, इसलिए आत्म-हत्या कर डाली!

आत्म-हत्यामें आनन्द नहीं। क्योंकि आत्महत्यासे दुःखोंका अन्त नहीं होता। बल्कि पुनर्जन्ममें उनको भोगना पड़ता है। आत्महत्या करनेवाला आर्ष सिद्धान्त—पुनर्जन्म—को बिलकुल भूल जाता है। इसी विस्मृतिमें उसे 'आनन्द' का अनुभव होता है! आत्मा अमर है, अजर है और है अनादि। गीताके शब्दोंमें आत्माको शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, पानी गला नहीं सकता, वायु सुखा नहीं सकती। वह नित्य है, सर्वगत है, सनातन है। जब आत्मा अजर है, अमर है, तब कर्मोंका अन्त मृत्युके साथ नहीं हो जाता। जिन कर्मोंका फल इस जीवनमें नहीं भोगा, वह तो भोगना ही पड़ेगा। मानव-जीवन बड़ा दुर्लभ है। यदि यह स्वर्ण अवसर हाथसे चला गया, तो फिर उसके मिलनेकी बहुत कम आशा है।

Dr. Paul Federn of Vienna का कथन है कि जीवन-प्रवृत्तिका प्रेम-प्रवृत्तिसे घनिष्ठ सम्पर्क है। जब मानव-की आत्मा संसारके मनुष्यों, हितों और अन्य वस्तुओंमें दिलचस्पी रखती है तो मानव अपने जीवनमें आनन्दका अनुभव करता है। निष्कर्ष यह है कि जीवन-प्रवृत्ति (Life-instinct) प्रेम-प्रवृत्तिपर आश्रित है। जब प्रेम-प्रवृत्तिका संहार हो जाता है तो जीवन-प्रवृत्तिका स्थान मृत्यु-प्रवृत्ति ग्रहण कर लेती है। मनुष्य आत्महत्या इसलिए करता है कि वह अपनेको, विश्वमें, अकेला समझता है। उसे न प्रकृतिसे अनुराग रहता है और न आत्मीय जनोंसे। उसे 'आत्महत्या' के अतिरिक्त और कुछ अच्छा नहीं लगता। इसलिए वह इस एकान्तताके दुःखसे मुक्ति पानेके लिए आत्महत्या कर लेता है।

सारांश यह है कि आत्महत्याका कारण भौतिकवाद (Materialism) है। पाश्चात्य संस्कृति भौतिकवादी है। इसलिए पाश्चात्य-जगत् आज आत्महत्यासे घबड़ा रहा है! आर्य-संस्कृति आध्यात्मिकवादी है। उसकी दृष्टिमें मानव-का चरमोत्कर्ष 'आनन्द' है—विश्वात्मासे मिलन। प्रत्येक सामाजिक संस्थाका आधार धर्म है। परन्तु पाश्चात्य-जगत्में यह बात नहीं है। वहां राजसंस्था और समाज-संस्था दोनोंका आधार अर्थ है। उसकी संस्कृतिमें अध्यात्मवादका कोई स्थान नहीं है।

हमारे वेद, उपनिषद्, दर्शन और गीता आदि धर्मग्रन्थ अध्यात्मवादी हैं। उनमें आदिसे अन्त तक आशावादिताका सन्निवेश है। निराशावादका नाम भी नहीं। और निराशावाद आ ही कैसे सकता है, जब कि मनुष्यका लक्ष्य ही आनन्दकी प्राप्ति है? योगिराज कृष्णकी गीता तथा उपनिषद् तो आशावादके आदर्श ही हैं। ऐसे अनुपम ग्रन्थ संसारके किसी अन्य धर्ममें नहीं मिल सकते। जिस समय अर्जुन निराशाके घटाटोपसे आच्छादित हो जाता है, उसे अपने कर्त्तव्य-कर्मका ज्ञान नहीं रहता—गात्र शिथिल हो जाता है, मुंह सूख जाता है, शरीर कम्पायमान होने लगता है, हाथसे गाण्डीव छूटने लगता है, उस समय कृष्ण उसकी निराशा और विषादको दूर करनेके लिए गीताका अमृत-उपदेश देते हैं। अर्जुन महारथी कृष्णके उपदेशको सुन कर्म-योगी बन जाता है; उसमें वीरताका सञ्चार होने लगता है, कायरता काफूर हो जाती है। जो इस जीवनसे निराश हो गये हैं, जिनका जीवन अत्यन्त निराशावादी हो गया है वह एक बार महात्मा कृष्णकी गीताका अवश्य ही अवलोकन करें। उससे उनके जीवनमें आशाका सञ्चार होगा। उनमें कर्मण्यता आ जायगी।

उपनिषद् गीतासे भी अधिक आशावादी हैं। उनमें शान्ति—आध्यात्मिक शान्ति—का जैसा विमल और शुभ्र स्रोत बहता दिखलायी देता है, वैसा संसारमें कहीं नहीं मिल सकता। इसीसे प्रभावित होकर जर्मनीके सुप्रसिद्ध दार्शनिक शोपेनहोअरने अपनी जगत्-प्रसिद्ध फिलासफीका आश्रय छोड़कर उपनिषदोंको जीवन और पुनर्जन्म दोनोंके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शान्तिदायक समझा था।* यहां उदाहरण-स्वरूप ईशोपनिषद्से कुछ मन्त्र देता हूं। पाठक उनपर विचार करें।

कुर्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवन्त्वयि नान्यथेक्षोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥

अर्थ—यहां कर्मोंको करता हुआ ही सौ वर्ष पर्यन्त जीनेकी इच्छा करे। इस प्रकार मनुष्यमें कर्म लिप्त नहीं होता। इससे भिन्न और कोई मार्ग नहीं है।

इस मन्त्रमें सौ वर्ष पर्यन्त जीनेकी इच्छा प्रकट की गयी है और साथमें कर्मयोगका आदेश है। जब तक मनुष्य जीवित रहे, वह बराबर कर्म करता रहे। आनन्दकी प्राप्ति कर्मयोगके द्वारा ही हो सकती है। इससे भिन्न आनन्द-प्राप्तिका और कोई मार्ग नहीं है।

आगेका मन्त्र यह है:—

असूर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
तांस्ते प्रेत्यापिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥३॥

अर्थ—जो कोई आत्माके घातक मनुष्य हैं वे मरकर गहरे-अंधेरेसे आच्छादित हुए प्रकाश-रहित नामवाले जो लोक हैं उनको प्राप्त होते हैं।

इस मन्त्रमें आत्म-हननका स्पष्ट रूपसे निषेध है। आत्महननका अर्थ है आत्माके प्रतिकूल कार्य। इसलिए मनुष्यको ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जो आत्माके प्रतिकूल हो। आत्महत्या आत्माके प्रति सबसे बड़ा प्रतिकूल कार्य है।

निम्नलिखित मन्त्रमें कर्मयोगकी महत्ता बड़ी सुन्दरतासे वर्णन की गयी है:—

विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद्वेदो भयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥११॥

जो विद्या और अविद्या—ज्ञान और कर्म—इन दोनोंको साथ-साथ जानता है, वह कर्मसे मृत्युको पार कर ज्ञानसे अमरताको प्राप्त करता है।

अमरत्व प्राप्त करनेके लिए कर्मयोग ही एकमात्र साधन है। अतः जो कर्म-हीनता-वश आत्महत्या करता है, वह कायर है, पापी है और है अधर्मी।

महाकवि शैलीने स्पष्ट शब्दोंमें हमारे दुःखका विश्लेषण किया है। हमें दुःख क्यों होता है?

We look before and after,
And pine for what is not.

हम अपने अतीत और भविष्यका चिन्तन करते हैं और जो हमारे पास नहीं है, उसके लिए हम निराश और दुःखी होते हैं। हम अतीतमें वैभवशाली थे, आज हम दरिद्र हैं; आज हम दरिद्र हैं, कल हम राजा हो जायेंगे; इस प्रकारका चिन्तन हमारे दुःखका मूल है। इसलिए Longfellow के शब्दोंमें मनुष्यका कर्त्तव्य है:—

'Trust no future, however pleasant,
Let the dead past bury its dead,
Act, act in the living Present,
Heart within and God o'erhead.'

चाहे आपका भविष्य कितना ही उज्ज्वल क्यों न हो, उसपर विश्वास मत करो और अतीतपर विचार मत करो। अतीतकी गाथाको बिलकुल भूल जाओ। केवल वर्तमानको दृष्टिपथपर रखकर अनवरत रूपसे निरन्तर कर्म करते रहो और केवल ईश्वर तथा अपने साहसपर विश्वास रखो।

* 'In the world there is no study so beneficial and so elevating as that of upnishads. It has been the solace of my life and it will be solace after my death.

Schopenhauer.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सौन्दर्यमयी !

अब नियति-जगत्की मेरे, निशि बीत चुकी वह काली।
आशाकी स्वर्ण-किरणने, जीवनमें मदिरा ढाली॥
मृदु पुलक-पुलकमें मेरे, खिल-खिल मादकता छायी।
अपने सूने जीवनमें, मैंने सुख-संसृति पायी॥
सन्ध्याके स्वर्णिम नभमें, झिलमिल-झिलमिल तारोंमें।
मृदु शशिकी रजत-करोंमें, मधु-मीठी मनुहारोंमें॥
आशाका विस्तृत सागर, लहराता मैंने देखा।
लघु बिन्दु-बिन्दुमें जिसके, है व्याप्त मधुर सुख-रेखा॥
मेरे जीवन-पलनेमें, यौवन-शिशु झूल रहा है।
उसके लघु सुन्दर तनपर, जग निजको भूल रहा है॥
सौन्दर्य सुनहला मेरे, चरणोंपर लोटा करता।
इस विशद विश्वका वैभव, मुझसे नित नूतन झरता॥
है कीर्ति-कौमुदी मेरी, बिखरी दिशि-दिशि त्रिभुवनमें।
सादर पूजा होती है, यमके भी काल-भवनमें॥
विद्युत्की शक्ति अपरिमित, है मेरी मुसकानोंमें।
जगका कन-कन विस्मृत कर, वह हंसती निज प्रानोंमें॥
कर्मोंका अक्षय धन है, लक्ष्मी-गृह मेरा जीवन।
पुण्योंसे भरा हुआ है, यह मेरा सुन्दर तन-मन॥
सारे सोनेके सपने, अब अमर सत्य हैं होते।
इस अद्भुत बलके आगे, दुःख-कष्ट सभी हैं रोते॥
प्राणोंका प्राण बना हूं, जीवनका भी जीवन हूं।
आशा हूं विश्व-हृदयकी, जगतीका जीवन-धन हूं॥

सौन्दर्यमयी ! फिर भी तुम, अन्तर-प्रदेशकी रानी।
चढ़ता है तव चरणोंपर, जगकी आंखोंका पानी॥
नव उषा-मूर्ति हो प्यारी, फूलोंमें मुसकाती हो।
संसृतिके कन-कनमें तुम, सुख-सोना बरसाती हो॥
छविकी भी मोहक छवि हो, मेंहदीकी हो हरियाली।
तुममें ही छिपी हुई है, कुमकुम-सी सुन्दर लाली॥
शैशवके शैल-शिखरसे, तुम उतर जहां जाती हो।
नवयौवनका वह जग है, इससे ही इठलाती हो॥
मेरे चातक-चितकी तुम, नव श्याम मेघ-माला हो।
स्वातीके जलसे पूरित, जलकी भी मधुशाला हो॥
मेरे अतृप्त अन्तरकी, प्यासी तृष्णायें सारी।
अमृतकी सरिता उनने, तुममें पायी सुकुमारी॥
चपला-सी चमक रही हो, तुम काले सघन सदनमें।
कोकिल-सी पञ्चम गातीं, अपने विकसित मधुवनमें॥
सर्वस्व लुटा सकता हूं, मधु-प्रेम भरी चितवनपर।
नव सृष्टि लखा करता हूं, भोले तव शशि आननपर॥
मैं मधुकर हूं मतवाला, तुम मुकुल कमल बन जाओ।
रजनीमें हृदय-सदनका, नित बन्दी मुझे बनाओ॥
अपने जीवनकी गुञ्जन, तव जीवनमें भर दूंगा।
वह विश्वमोहनी माया, हंस चरणोंमें धर दूंगा॥
उड़ भाव-गगनमें हम तुम, कविताकी केलि करेंगे।
अपने कविता-गानोंसे, जगमें आनन्द भरेंगे॥

—नर्मदाप्रसाद खरे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रूसी कविकी वसीयत

अनुवादक—श्री अख्तर हुसेन रायपुरी

[ पैरिसमें "आगस्ट फिलीपौफ" नामक एक नौजवान रूसी कवि रहा करता था। वर्तमान संसारव्यापी अर्थ-सङ्कट-का उसपर भी बड़ा बुरा असर पड़ा और बाल-बच्चोंके साथ भूखकी दारुण यातना सहते-सहते वह थक गया। लाख यत्न किये, मगर सब पांसे उलटे पड़े और किसीने कानी कौड़ी भी न दी। अन्तमें तङ्ग आकर इस अभागे कविने आत्म-हत्या कर ली। उसकी लाशके साथ निम्नानुवादित वसीयतनामा मिला, जिसके प्रकाशित होते ही समस्त फ्रान्समें हलचल मच गयी। तब दुनियाको पता चला कि उसने कैसे महान् कविको रोटियोंके लिए तरसा कर मार डाला है। —अनु० ]

मैं अपनी कहानी दिलकी गहराईसे लिख रहा हूं। इसलिए मेरी कहानी बिलकुल सच्ची है; क्योंकि दिलकी गहराईमें सत्य और प्रेमके सिवा और कुछ नहीं पाया जा सकता।

लेकिन समझमें नहीं आता कि आरम्भ कैसे करूं? जीवनका तानाबाना जिन रङ्ग-बिरङ्गे तारोंसे बुना गया है, उनमेंसे किस तारको पहले छेड़ूं? मेरे सामने सफेद तार भी हैं, लाल भी, नीले भी, काले भी और ऐसे तार भी हैं जिनका कोई रङ्ग ही नहीं है, जो केवल जादूके रङ्गमें शराबोर हैं। मजबूत तार भी हैं और हलके भी; ऐसे हलके कि छूते ही बिखर जाते हैं। इन सब रङ्ग-बिरङ्गे तारोंको लेकर जीवन-तन्त्री तैयार हुई है।

मेरे हृदयमें अनन्त आनन्द-सागर हिलोरें मार रहा है। यह आनन्द वैसा ही है जैसा वसन्तके आगमनके समय भान होता है, जब पशु-पक्षी और पेड़-पौधे तक प्रफुल्ल हो उठते हैं। मेरा आनन्द प्रेमके हर्षातिरेकसे भी अधिक विशाल और मालामाल है। सङ्गीतके मन-भावन रसमें मेरा आनन्द डूबा हुआ है। इस आनन्दका नृत्य मेरी आंखोंके आगे घूम रहा है। यह खुशियां इतनी प्रत्यक्ष हैं कि उन्हें मैं अपनी उंगलियोंसे छू सकता हूं!

फिर मेरे हृदयमें शोककी आंधियां उठती हैं। ऐसी आंधियां, जो किसी जवान या किसी वीर या नयी दुल्हनकी मौतसे भी अधिक दुःखदायी हैं। उनकी आग कभी नहीं बुझती। अश्रु-सागर कभी नहीं थमता। यहां तक कि आंखें रोते-रोते प्रकाशहीन हो जाती हैं।

मेरे हृदयमें कामनायें हैं। इतने अरमान हैं जिनका हिसाब नहीं हो सकता। इस कामना-बेलका ओर-छोर न आंख देख सकती है, न कल्पना परख सकती है। कल्पनाने ही इन अरमानोंको जन्म दिया, पर अब कल्पना ही उन्हें देखकर भौंचक्की हो गयी है। दिमाग उन्हें देखकर सन्नाटेमें आ जाता है। वह सोचने लगता है कि क्या यह सम्भव है? फिर थककर और घबड़ाकर पुकार उठता है—असम्भव है, नितान्त असम्भव!

मेरे हृदयमें निराशाओंका जमघट है—हृदय-बेधक और प्राणघाती! ये निराशायें इस प्रकार बल खाती हुई लिपटी हुई हैं जैसे हिन्दुस्तानी सर्पराज हाथीपर झपटता है और जीते आदमीको निगल जाता है। घटाटोप अन्धकारमें पथ-हीन अभागेकी निराशा और तपती हुई मरुभूमिमें भटकने-वाले गूंगे-बहरेकी हताशासे भी अधिक कष्टकर और भयानक निराशायें मेरे हृदयमें अपने डरावने फन उठाये हुए बैठी हैं।

मेरे हृदयमें भयका राज्य है। जीवनसे भय, मौतसे भय; स्वास्थ्यसे भय और बीमारीसे भय; अमीरीका डर और दरिद्रताका डर; जिसे जानता हूं उससे भय और जिसे नहीं देखा है उसका भी भय; प्रेमसे भय और घृणासे भय! मित्रसे भय और अपनी चेतनासे डर! बेहोशीका डर और निद्राका भय!

मेरा हृदय परोपकारी है। बिना किसी दलीलके वह नेक बन बैठा है। बुद्धि और ज्ञानकी राय इस मामलेमें उसने नहीं ली। जैसे यह सरलता आकाशसे उतरकर मेरे मन-मन्दिरमें बिराज गयी हो। तो भी, मुझे पूर्णतः उसका भान होता है। वह मुझमें साहस और वीरता पैदा करती है। वह एक बहुत ही पुराने पेड़की ओर सङ्केत करती है जिसका मूल पृथ्वीने उदरस्थ कर लिया है, जिसकी टहनियां



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सूख चुकी हैं, पत्ते पीले पड़ चुके हैं, कहीं-कहीं हरीतिमा झलक उठती है। यह वह अद्भुत हरीतिमा है जो पतझड़के चलचलावके समय केवल बूढ़े पेड़ोंमें ही देखनेमें आती है। इस पेड़की काटछांटमें मालीका जीवन बीत चुका है। वह पेड़, जो अपनी प्राचीनता और उदासीके कारण किसी देवताका मन्दिर मालूम पड़ता है—ऐसे देवताका मन्दिर जो अपने पुजारियोंकी अभिलाषा पूरी न कर सकनेके कारण भाग गया हो! हां, उसी डरावने पेड़का नाम खुर्रांट मालीने अपने सिकुड़े हुए हाथसे भद्दे अक्षरोंमें लिखा है—"धैर्य!"

यह सब बोझ अपने दिलमें उठाये हुए मैं शहरमें फिरता हूं। शत्रु-मित्र सभीसे मिलता हूं। हंसता-बोलता हूं, हंसी-दिल्लगीमें शरीक होता हूं, हर सवालका जवाब देता हूं। मुसकराते हुए प्रत्येक व्यक्तिको अभिवादन करता हूं। उनकी खुशीपर खिल उठता हूं और उनके दुःखको देखकर कुढ़ता हूं, जैसे उन्हींमेंसे मैं भी एक हूं!

यह सब होते हुए भी मेरा दिल धड़कने लगता है। बहुत जोरसे धड़कन उठती है। मुझे सन्देह होता है कि यह मेरा दिल नहीं, बल्कि बिजलीका पङ्खा है, जो अपनी पूरी गतिसे चल रहा है। तब मैं उसे इतने गौरसे देखने लगता हूं, जैसे वह मेरे सीनेमें नहीं, किसी औरके सीनेमें है। फिर मैं आश्चर्यसे चिल्ला उठता हूं। इस अनोखे यन्त्रका यह तूफानी चक्कर कब तक जारी रहेगा? कारीगरने इसे बनानेमें सचमुच कमाल कर दिया है। मगर वह कब तक इस तीव्र गतिको सह सकेगा? क्या वह टूटकर टुकड़े-टुकड़े न हो जायेगा? हर मशीनको कुछ देर तक सुस्तानेको छोड़ देते हैं। लेकिन क्या इस मशीनको एक मिनट भी आराम नहीं मिलेगा? इसके लिए वह तेल कहां है जो फौलादको फौलादसे मिलने-पर कोमल कर देता है? विषका यह ढेर क्या है—शोक और कष्टका वह विष, जो आंख, नाक, कान, जीभ और दिमागके रास्ते हमेशा मेरे शरीरमें भींगा करता है? यह छोटी-सी मशीन, जो मेरी छातीमें इतने दीर्घकालसे अपने अनन्त पथपर चल रही है, विषके इस ढेरको किस प्रकार बाहर फेंक सकेगी? ऐसा कौन चतुर इञ्जीनियर है जो इस विषके मोरचेसे हृदयकी मशीनको साफ कर सकता है?

\+ × +

मेरी रामकहानी! क्या मैं इसे शुरूसे लिखूं? क्या उस घड़ीसे इसे आरम्भ करूं जब पहले-पहल जीवनका अर्थ मैंने समझा था और इस बोझको अपने कांधेपर उठाया था? या उस अन्तिम घड़ीसे शुरू करूं जब मैं जीवनसे आखिरी बार गले-गले मिलकर उसका बोझ उतार फेंकना चाहता हूं? उस कांधेसे यह बोझ उतारना चाहता हूं जो बोझसे लदी हुई गाड़ीमें जुते हुए घोड़ेके समान थकावटसे चूर-चूर हो गया है, जिसे कोड़ोंकी मारने घायल कर डाला है और जब वह गाड़ीमें जोर लगाता है तो घाव गहरा हो जाता है, मगर कोई आंख उठाकर भी उसे नहीं देखता। क्योंकि वह उसी जीन-लगामके नीचे छिपा हुआ है, जिनमें पैदा होनेके बाद ही वह ढक दिया गया और आजीवन ढका रहेगा!

मेरी कहानी मनुष्यताको बदनाम करनेवाली और उसे अपनी आंखोंमें गिरानेवाली है। मनुष्यता, उन स्त्रियोंके समान है जो ऊंचे और शानदार महलों और चितचोर गीतों-की गूंजमें बच्चोंको दूध पिलानेके लिए उनकी माताओंसे लेती हैं और अंधेरी कालकोठरियोंमें बैठकर उनका गला मरोड़ देती हैं। यह पतिता नारियां पागल होती हैं, मगर नन्हें बच्चोंको मारनेका शौक उन्हें उतनी देरके लिए बहुत बुद्धिमान बना देता है जितनी देरमें वह बच्चे हासिल हो सकते हैं। वह बड़ी चतुराईसे बनावटी सिंगार करके जाती हैं और मीठी-मीठी बातें करके मांकी गोदको खाली करा लेती हैं।

ठीक यही हाल धोखेबाज, कपटी, कलुष और पागल मनुष्यताका भी है। वह अपनी इच्छाओंकी लौंडी और मोहकी पुजारिणी होती है। मनुष्यता वास्तवमें कुरूपा और पापिनी चुड़ैल है, जो अपनी बदमस्तीमें अपने कर्तव्यसे अनजान है और मूर्खता व पागलपनके कारण जीवनके तत्त्वसे अनबूझ है। मनुष्यता वह दुष्टा जननी है, जिसके दिलमें ममताका नाम तक नहीं है।

मैं इस संसार और मनुष्यताकी किस झूठसे अपनी कहानी शुरू करूं? क्योंकि मैं इसके तमाम झूठोंका शिकार बन चुका हूं। यह देखो! मेरे सब बच्चे बीमार पड़े हैं और दुःखके मारे कराह रहे हैं। किसीकी आंखें दुख रही हैं, किसीके गिलटी निकल आयी है। कोई पैदायशी लुञ्जा है, जिसे न किसी औषधिसे लाभ होता है, न किसी पथ्यसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मेरी पत्नी इस प्रकार रोती-पीटती फिरती है जैसे उसे फांसीकी आज्ञा मिल चुकी हो और जल्लाद डोरी लिये सामने खड़े हों! उसे रुपयेकी, आरामकी, खुली हवाकी और लम्बे सफ़रकी जरूरत है। वह ईश्वरसे दयाकी भिक्षा मांग रही है, हालांकि न उसने किसीपर दया की थी, न किसीने उसपर दया दिखायी है। मेरे लिए सबसे अधिक प्राणघातक यातना यह है कि वह बकती रहती है और मेरी कोई बात नहीं सुनना चाहती। वह अपनेको बहुत समझदार मानती है, हालांकि बिलकुल बेसमझ है। वह उन आपत्तियोंको लेकर रोती-धोती है जिन्हें अपनी मूर्खता या नेकनीयतीसे खुद उसने ही पैदा किया है। नेक-नीयतीका नाम यहां बड़े मौकेसे आया; क्योंकि एक अंगरेजी कहावत है—"नरकका मार्ग नेकनीयतीने तैयार किया है!"

मानवहृदय! न्याय कर! इससे बढ़कर दुःखकी बात तेरे लिए और क्या हो सकती है कि ऐसी कठिनाई तेरे आगे आ जाये जिसे सुलझाना तेरी शक्तिसे बाहर हो! ऐसी बुराई, जिसका सुधार तू न कर सकता हो। ऐसी बीमारी, जिसका कोई इलाज नहीं है। ऐसी तङ्गी, जिसे दूर करना तेरे बसमें नहीं है। विशेषतः, जब यह बीमारी, बुराई और तङ्गी इस कारण पैदा हुई है कि तेरा पुत्र, जिसे रोगोंने हड्डियोंका ढांचा बना दिया है, जिसकी आवाज भूखके मारे धीमी पड़ गयी है! आह, वह घसिटकर मेरी ओर बढ़ना चाहता है, अपने नन्हें-नन्हें कमजोर हाथ बढ़ाता है, अपनी प्रकाशहीन आंखों-से तुझे आशापूर्ण चितवनोंसे ताकता है और अपनी दर्दनाक आवाजमें रोटीका टुकड़ा—बस, रोटीका एक टुकड़ा—मांगता है। मगर तू उसे रोटीका एक टुकड़ा भी नहीं दे सकता। तू उस निर्दोषके सामने इस प्रकार मुंह बांधे चुपचाप बैठा है जैसे कोई मूर्ति किसी मन्दिरमें रखी हो! तू टुकुर-टुकुर अपने कलेजेके टुकड़ेको देखता है। बोलनेका इरादा भी करता है। बढ़कर उसे छातीसे लगा लेना चाहता है। परन्तु तेरा शरीर ऐसा निश्चल हो जाता है जैसे लकवा मार गया हो।

यह देखो, दिनपर दिन और हफ्तेपर हफ्ते एक ही हालत-में और एक ही रङ्गमें गुजर जाते हैं। कौन रङ्ग? गहरा, मटमैला, उदासी और मुर्दादिलीका रङ्ग! जैसे यह जीवन, जिसके हम शिकार हो रहे हैं, एक गीत है। वह गीत, जो समाधियोंके बीच हीमें गूंजता है और जिसके सुर शोक एवं विषादको दुनियामें फैला देते हैं। वह गीत, जिसे शोपेन-होअरने अपनी मृत्युमयी निराशामें, बेठोफेनने अपने गहरे विषादमें, चेकोवस्कीने अपने शोकपूर्ण विस्मयमें अलापा था! वह ऐसा गीत है जिसका हर उतार-चढ़ाव दिलकी एक-एक नसको काटता और आत्माके एक-एक तारको मसल डालता है।

यह देखो महाजन—जन्मगत अधिकारोंके मालिक—दरवाजेपर खड़े हैं और अपने हक मांग रहे हैं, जैसे उन्होंने आपसमें सलाह बांध ली हो कि एक साथ और एक ही जगह तकाजा करेंगे। ऋण देते समय यह लोग जितने हंसमुख, मिलनसार और भलेमानस थे, अब ऋण सकारते समय उतने ही पाषाण-हृदय, कमीने और बदमाश बन बैठे हैं। उन्होंने यह फैसला कर लिया है कि अपनी दूकानोंपर मेरी आवभगत न करेंगे और खुद मेरे दरवाजेपर मेरा अपमान करनेकी घुड़दौड़में एक-दूसरेसे बाजी मार ले जायंगे। उनकी दृष्टिमें मैं ऐसा ऋणी हूं जो प्रतिज्ञाघातक है; ऐसा ऋणी नहीं हूं जिसे सारी दुनियाने धोखा दिया है। उनमेंसे किसी एक आदमीको भी मैंने ऐसा नहीं देखा जो इस विचारसे लेशमात्र भयभीत हो कि कल उसकी हालत भी मुझ-जैसी हो सकती है। जान पड़ता है कि क्षणिक वैभवका मद मनुष्यको संसार-चक्रकी गतिसे अन्धा कर देता है और अभिमान, क्रूरता व मोह पैदा कर देता है। शायद अपने धन और बलका विश्वास, मनुष्यको इस मोहजालमें फंसा देता है कि दुःख और आपत्ति उसके लिए बनी ही नहीं! मैं दरिद्रता और दारुण दुःख झेलते हुए भी उन लोगोंके लिए बचावका मार्ग ढूंढ़ता हूं। मगर धन-वैभव सब-कुछ होते हुए भी वे मेरी कोई दलील नहीं सुनना चाहते और दिन-रात अपने कर्जका तकाजा करते रहते हैं। अब इन सूदखोरोंने मेरी हालत वेलिङ्गटनकी-सी बना दी है, जो वाटरलूके महायुद्धसे कुछ पहले चिल्ला उठा था—"ब्लूचर या रात!" इसी प्रकार मैं भी बराबर अपने दिलमें पुकार उठता हूं—"रुपया या रात!" लेकिन कुछ महाजन चमगीदड़ोंके समान रातको भी मेरे घरपर मंडराते हैं और बार-बार दस्तक दिया करते हैं।

जब रात अधिक बीत जाती है और चारों ओर सन्नाटा छा जाता है तो मैं किसी ऐसे आगन्तुककी बाट जोहने लगता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हूं जो प्राचीनकालमें एकाएक पहुंचकर लोगोंको वैभव और आनन्दसे मालामाल कर दिया करता था। प्रत्येक क्षण मुझे सन्देह होता था कि किसी पुकारनेवालेकी आवाज या तकाजा सुन रहा हूं। फौरन अपनी सांस रोककर और कान खड़े करके आहट लेता हूं। मगर हाय रे प्रारब्ध! दरवाजेपर सन्नाटेके सिवा कुछ नहीं है। मेरी रात उसी ढङ्गसे बीत जाती है जिसका चित्र खींचते हुए एक महा कवि कहता है :—

Ini bonne! Perome!
O! Solitude! O! Poverty!

—"कौन पुकार रहा है? कोई नहीं। हाय रे एकान्त! आह री दरिद्रता!"

---

# उपवासका स्वास्थ्यसे सम्बन्ध

डाक्टर रविप्रतापसिंह श्रीनेत, साहित्यभूषण

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि उपवास-चिकित्साका प्रयोग प्राचीन कालसे चला आया है और आज भी काफी हो रहा है; परन्तु दिन-प्रति-दिन पाश्चात्य सभ्यताकी अधिकताके कारण लोग इस उपवास-प्रणालीसे घृणा करने लगे हैं। सभ्यता ही कई रोगोंकी जड़ है। आधुनिक सभ्यतामें ऐसे भोजन-सम्बन्धी परिवर्तन हुए हैं कि उन्हींके फल-स्वरूप आज हमें नाना प्रकारकी शारीरिक तथा मानसिक यातनायें सहनी पड़ती हैं। इन व्याधियोंके निवारणार्थ संसारमें कई चिकित्सा-प्रणालियोंका आविर्भाव हो गया है, जिनसे हमें लाभके बदले हानि ही नजर आती है। इसलिए शरीर-विज्ञान-वेत्ताओंने प्राकृतिक उपायोंका अवलम्बन लेकर ही व्याधियोंका नियन्त्रण करनेका विचार किया है। जिसके फल-स्वरूप प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली ही प्रमुख तथा उत्तम मानी गयी है। उपवास-चिकित्सा भी कोई नयी प्रणाली नहीं है। हमारे भारतमें तो घर-घर इसका प्रचार था और अब भी किसी-न-किसी रूपमें कहीं-कहीं है।

उपवासका स्वास्थ्यसे बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसीलिए सनातनधर्ममें क्या, प्रत्येक धर्ममें इसका प्रचार किसी-न-किसी रूपमें है; परन्तु पाश्चात्य नास्तिक-वादके जन्म लेते ही वह पावन उद्देश्य जाता रहा। फिर भी विज्ञान बेराह, भटकी हुई पाश्चात्य-सभ्यताको प्राचीन सिद्धान्तोंपर पुनः उपनीत कर रहा है। उपवासका सिद्धान्त है कि आमाशयको विश्राम देनेसे, शरीरकी सारी शक्तियां सङ्कलित होकर शरीरके विषैले पदार्थों तथा गैसोंको बाहर निकालनेमें संलग्न हो जाती हैं। यदि कुछ दिनोंके लिए उपवास किया जाये तो इस समयमें वे सारे विषैले पदार्थ तथा गैसें तरोहित हो जाती हैं जो पाचन-क्रियामें गड़बड़ी होनेके कारण उत्पन्न होती हैं और अनेक रोगोंको जन्म देती हैं; शरीरकी शक्तियां बाहर निकाल देती हैं। जिससे एक बार फिर शरीर रोग-मुक्त तथा भीतरसे स्वच्छ हो जाता है। मनुष्यका स्वास्थ्य इससे कई वर्षों तक अच्छा रहता है और उसे अनेक व्याधियां अपनी कर्मभूमि नहीं बना सकतीं। इसलिए लेखक निम्न-लिखित पंक्तियोंमें उपवासके विषयपर पूर्ण रूपसे प्रकाश डालनेका यत्न करेगा।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि मनुष्यकी नित्यकी दिन-चर्यामें कई ऐसे अवसर आ उपस्थित होते हैं कि जिनमें उसे ऐसे पदार्थ आहारके लिए मिलते हैं जो स्वास्थ्य तथा प्रकृतिकी दृष्टिसे त्याज्य करने योग्य हैं; परन्तु तिसपर भी सामाजिक जीव होते हुए, 'नाहीं' नहीं करते बनता और उसको ऐसे पदार्थ खाने ही पड़ते हैं। कभी-कभी तो इअवसरोंपर मनुष्यका पेट, पेट नहीं रहता, वरन् फुटबाल हो जाता है और फिर भी जान नहीं छूटती। इस प्रकारकी गलतियां होते रहनेसे यह आवश्यक ही नहीं, वरन् अनिवार्य है कि मनुष्यकी पाचन-शक्तिमें गड़बड़ी पैदा हो। अथवा उसके फल-स्वरूप अजीर्णता, अग्निमान्द्य आदि रोग उठ खड़े हों। इन रोगोंके साथ ही कोष्ठबद्धता, उदरामय, मितली, सिर-दर्द आदि मित्र भी उठ बैठते हैं। स्वस्थ शरीर शीघ्र ही अस्वस्थ हो जाता है। फिर अनेकों रोग आ घेरते हैं। इससे परिपाक-प्रणालीमें मैल अथवा कीट लग जाता है और बहुत दिन तक साफ न होनेके कारण वह सड़ने लगता है, जिससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कई विषैले पदार्थ तथा गैसें उत्पन्न होती हैं जो सारे शरीरमें फैल जाती हैं, स्वस्थ रक्त दूषित हो जाता है और शरीर कई रोगोंका सदन बन जाता है। ऐसी स्थितिमें हम जुलाब, रेचक तथा अन्य इसी प्रकारकी विषैली औषधियोंका प्रयोग करते हैं जिनके कारण कुछ समयके लिए लाभ-सा होता दीख पड़ता है, पर फिर वही शिकायत शुरू हो जाती है। फिर 'पुनि-पुनि रोग, पुनि-पुनि औषधि' की कहावत हो जाती है। अबकी आपने जुलाबकी दो गोलियां खायीं तो दूसरी बार तीन और तीसरी बार चार; क्योंकि ज्यों-ज्यों रोग पुराना होता जावेगा त्यों-त्यों रोगका आक्रमण अधिक तथा भयङ्करतासे बढ़ता जायगा। इसका फल यह होगा कि डाक्टर लोग incurable, वैद्यराज असाध्य और हकीम वेइलाज कह देंगे। फिर क्या होगा? आप रोवेंगे भाग्यको और पेट रोवेगा आपको। आपके मनमें विचार उठेगा कि क्या इन दवाइयोंसे लाभ नहीं होता? हां नहीं होता, बिलकुल नहीं होता। कुछ समयके लिए रोग दब अवश्य जाता है; परन्तु समूल नष्ट नहीं होता। क्योंकि जिन औषधियोंका आप प्रयोग करते हैं वे ऐसे मनुष्य द्वारा दी गयी हैं जो समझते ही नहीं कि अमुक रोग कहांसे उत्पन्न हुआ है और क्यों? फिर दवाई कैसे दी? क्योंकि इनसे उनकी समझके अनुसार शरीरमें रोग उत्पन्न करनेवाले कारण नष्ट हो जाते हैं और शरीर दवाईकी सहायतासे उन कारणोंको नष्ट कर देता है। परन्तु वास्तवमें ऐसा नहीं होता। यह समझकर कि रोग जल्दी अच्छा हो जावेगा, यदि तेज दवाइयां दी जायं तो शरीरकी प्रणालियां अस्वस्थ होनेके कारण वे उन तेज दवाइयोंको बाहर निकाल देंगी। परन्तु क्या कभी इसपर विचार किया गया है कि जो कुछ अस्वस्थ शरीर दवाईके प्रभावमें आकर मुंह, नाक, गुदें तथा आंतों द्वारा बाहर निकाल देता है, उससे शरीरको किस प्रकार लाभ होनेकी सम्भावना रहती है? और, जो कुछ भी बाहर निकलता है वह विषैला पदार्थ है अथवा शरीरकी शक्ति-उत्पादक गिल्टियोंका रस? यदि हम मान लें कि बर्हिगत् की हुई वस्तुयें विषैली ही हैं तो फिर उनके निकल जानेपर शरीरका स्वस्थ रहना अनिवार्य ही है; परन्तु देखा क्या जाता है कि रोग और भी तेजीसे आक्रमण करता है और पहलेसे अधिक कष्ट तथा दुर्बलताका अनुभव होता है। यह क्यों? इसका कारण यह है कि हम डाक्टर और आप मरीज यह समझते हैं कि औषधि देनेके बाद शरीर जिन पदार्थोंको निकाल बाहर करता है वे विषैले तथा हानिकर हैं; परन्तु इस समझका हमारे पास व आपके पास कोई वैज्ञानिक उत्तर नहीं है। वास्तवमें जो पदार्थ शरीर बाहर निकालता है वे हैं शक्ति-उत्पादक गिल्टियोंके रस, जिनके कारण हमारे शरीरमें शक्ति तथा स्फूर्तिका सञ्चार बना रहता है। और यही कारण है कि उनके निकल जानेपर हम निस्तेज और शक्तिहीन रह जाते हैं। दबा हुआ रोग उठ खड़ा होता है और फिर हम रोने लगते हैं।

इसलिए यह ध्यान रहे कि रोग मानव-समाजका पिण्ड उसी समय छोड़ेगा, जब हम प्रकृतिका अनुशीलन करते हुए अपना स्वास्थ्य स्वयं सुधारेंगे। हमारा स्वास्थ्य डाक्टरों, वैद्यों तथा हकीमोंकी विषैली दवाइयोंसे विषैला ही होता जावेगा, सुधरेगा नहीं। दवाइयोंके उपयोगसे हमारी मानसिक चिकित्सा होती है, शारीरिक नहीं, और चूंकि मनका शरीरसे अभिन्न सम्बन्ध है, इसलिए दवाइयों द्वारा हमें फायदा दीखता है—डाक्टरोंका ऐसा मत है। परन्तु वास्तवमें ऐसा नहीं है। विष विष ही है, अमृत नहीं हो सकता; चाहे उसे चाण्डाल दे अथवा डाक्टर। जगत्-प्रसिद्ध डाक्टर शैलटनका मत है कि "दवाईको प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी प्रकार शरीरमें न जाने देना चाहिए; क्योंकि हमारे शरीरकी जितनी क्षति औषधियां करती हैं, उतनी और अन्य वस्तु नहीं। दवाइयोंके ही कारण हम आज इतने दुर्बल, रोगी, विषयी तथा नाजुक हो गये हैं। आधुनिक सभ्यताकी महान शत्रु—दवाइयां हैं।" इसी मतका पुष्टीकरण संसार-विख्यात डाक्टर ओस्लर, डिवी, मैकफेडन, तथा टिरेण्डल आदि करते हैं।

हमारे शरीरको विशुद्ध रखनेके लिए हमें उपवास करना चाहिए। इस सिद्धान्तका प्रयोग प्राचीन कालसे होता आता है और प्रकृति भी यही चाहती है। दूर क्यों जाते हैं? घर हीमें आपके कई ऐसे अवसर आये होंगे जब कि आपकी गाय अथवा भैंसने खाना-पीना छोड़ दिया होगा। आपने तथा पशु-चिकित्सकने बहुतेरा चाहा; परन्तु तिसपर भी उसने न खाया होगा। फिर जबरदस्ती पशु-चिकित्सालयमें उस गरीबके पेटमें विष-तुल्य दवाइयां घुसेड़ी गयी होंगी; परन्तु उसने खाना-पीना उसी समय आरम्भ किया होगा जब कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वह पूर्ण स्वस्थ हो गयी होगी। भला ऐसा क्यों होता है? आपको अच्छी तरहसे मालूम होगा कि इस बीसवीं सदीमें भी पशु प्राकृतिक नियमोंका पालन करते हैं और इसी कारण वे हमारी अपेक्षा स्वस्थ भी रहते हैं। यह नहीं कि हमारे रहन-सहनका प्रभाव उनपर न पड़ा हो; परन्तु तिसपर भी वे प्रकृतिके नियम माननेवाले हैं। उनके ऊपर विज्ञानका भूत सवार नहीं है। इसलिए वे अस्वस्थ होते ही अपना खाना-पीना स्थगित कर देते हैं और अपने पेट तथा अपनी आंतोंको विश्राम देते हैं; ताकि जिन विषैले पदार्थों तथा गैसों द्वारा उन्हें किसी रोगने आ घेरा है वह आप-ही-आप निकल जाये। पुनः स्वस्थ होनेपर वे अपना खाना-पीना आप ही आरम्भ कर देते हैं। यह मेरा अपना अनुभव है कि औषधियों द्वारा उनका हितके बदले अहित ही होता है। जहांपर जितने अधिक पशु-चिकित्सालय हैं, वहां उतनी ही अधिक बीमारियां हैं। इसी प्रकार मानव-समाजका भी हाल है। उपवास करनेसे शरीर रोग-मुक्त तथा स्वस्थ हो जाता है और उपवासके बाद नयी स्फूर्ति, नया जीवन और नयी शक्तिका अनुभव होने लगता है।

समय, अवस्था तथा परिस्थितियोंके अनुसार उपवाससे लाभ भी बहुत होता है और हानि भी बहुत होती है। इसका कारण यह है कि बहुतसे लोग उपवास और क्षुधा-पीड़नमें क्या अन्तर है इसे नहीं समझते। उपवास और क्षुधा-पीड़न में बड़ा अन्तर है। उपवास करनेके बाद प्राकृतिक क्षुधा प्रतीत होने तक 'उपवास' कहलाता है और प्राकृतिक क्षुधाके प्रतीत होनेके बाद मृत्यु-पर्यन्त 'क्षुधा-पीड़न' कहलाता है। इसलिए उपवास करनेवालोंको इस बातका सदैव ध्यान रखना चाहिए; वर्ना 'नमाज पढ़ने गये, रोजा गले लगा' वाली कहावत हो जायगी। जब उपवास आरम्भ होता है, उस समय शरीरकी विभिन्न प्रणालियोंमेंसे विषैले पदार्थ तथा विषैली गैसें आक्सीडाइज होकर शरीरके बाहर निकलने लगती हैं। यह क्रिया उस समय तक होती रहती है जब तक कि पचा हुआ पदार्थ और विषैले पदार्थ एकमें नहीं मिल जाते। फिर उसमेंसे हानिकारी तथा निकम्मा पदार्थ (effete) प्राकृतिक क्रिया द्वारा शरीरसे बाहर निकल आता है। इसी समय उपवास करनेवालोंके मुंह तथा नाकसे एक प्रकारकी दुर्गन्ध-सी निकलती है, जो यह सूचित करती है कि अब विषैले तथा हानिकारक पदार्थ शरीरके बाहर निकल रहे हैं। इसके बाद चर्बी तथा अन्य उपयोगी पदार्थ शरीरमें भींग जाते हैं जिनसे शक्ति, रक्त, स्फूर्ति तथा अस्थि उत्पन्न होती है। इस प्रकार प्रकृति स्वयं बिना किसीकी सहायताके अच्छा-बुरा अलग कर देती है। इस समय तक प्राकृतिक क्षुधा सताने लगती है। यदि भूलवश इस समय शरीरमें हल्का, शुद्ध तथा सादा भोजन न गया और उपवास फिर किया तो शक्ति-केन्द्रों ( vital centres ) पर आक्रमण आरम्भ हो जाता है और धीरे-धीरे जीवन-शक्तिका ह्रास होने लगता है और एक समय ऐसा आ जाता है जब कि मनुष्य मृत्युको प्राप्त हो जाता है।

इससे मालूम हो गया होगा कि उपवाससे न कभी मनुष्यको कोई हानि ही होती है और न जीवनकी ही आशङ्का रहती है। डाक्टर शैल्टनने न जाने कितने रोग इसी एक उपवास द्वारा अच्छे किये हैं, परन्तु कभी किसी रोगीकी मृत्यु नहीं देखनेमें आयी। उन्होंने बड़े-से-बड़ा उपवास चौंसठ दिन तकका करवाया था। सुप्रसिद्ध डाक्टर डिवीका कथन है कि उपवाससे मृत्यु होना असम्भव है। उपवास कुछ क्षुधा-पीड़न नहीं है। उपवाससे शरीरमें किसी प्रकारकी रासायनिक क्षति नहीं होती। उससे विशेष लाभ ही होता है।

कभी-कभी ऐसा देखनेमें आया है कि उपवाससे लाभ नहीं होता, वरन् हानि ही होती है। इसका कारण यह है कि कुछ लोग उपवासका अवलम्बन उस समय लेते हैं जब कि वे सब प्रकारकी चिकित्साओंसे थक जाते हैं और उनका शरीर अत्यन्त दुर्बल हो जाता है और फिर भी वे उपवासके नियमोंका पालन उचित रीतिसे नहीं करते, जिसके फल-स्वरूप उन्हें हानि होती है। इसलिए पहले ही उपवासकी क्रियाकी परीक्षा करके देखना चाहिए। इससे निस्सन्देह लाभ होता है, हानिकी सम्भावना तक नहीं। दूसरी बात, उपवाससे लाभ इतनी जल्दी नहीं होता, जितनी जल्दी रोगी चाहता है। उपवाससे रोग अच्छा नहीं होता, वरन् रोगीकी स्थितिमें अन्तर पड़ जाता है और रोगोत्पादक शक्तियां नष्ट हो जाती हैं। मनुष्यमें नया जीवन आ जाता है। लाभ धीरे-धीरे होता है, पर औषधियोंकी अपेक्षा शर्तिया जल्दी होता है। जब तक उपवासके आश्चर्यजनक लाभोंपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आत्माका विश्वास न हो, तब तक उपवास करनेसे भी पूरा लाभ न होगा। उपवास अन्त तक करनेसे ही वास्तविक लाभ होता है। मनचलोंकी भांति आरम्भ करना और फिर जल्दी किसी मिठाई, अवसर या पकवानके कारण तोड़ देनेसे लाभके बदले हानि ही होती है। फिर पानी पी-पीकर उपवासके अनुयायियोंको कोसनेसे लाभ न होगा। इसलिए प्रथम ही दृढ़-निश्चयी होकर उपवास आरम्भ करना चाहिए। खटिया पकड़कर उपवास करनेसे हानि ही होती है। उपवास-कालमें मामूली कसरत वगैरह अवश्य कर लेना चाहिए। यदि और कुछ न हो सके तो हवा-खोरीको कुछ दूर निकल जाना चाहिए।

उपवास आरम्भ करनेके पहले निश्चय कर लीजिये कि उपवास हम अन्त तक निभायेंगे। उपवास कोई कठिन चीज नहीं है और इससे हमारा कल्याण ही होगा, अहित नहीं। उपवास-कालमें मन, आत्मा और शरीर तीनोंको पवित्र रखना चाहिए। स्वच्छतापूर्वक रहना चाहिए। प्रलोभनोंसे बचना चाहिए। दुःख, शोक, भय, और सुखके समय उपवास न करना चाहिए। स्त्री-सहवास, नाच-जलसे तथा सिनेमादि न जाना चाहिए। चित्त शान्त तथा गम्भीर रखना चाहिए। उपवासके समय शारीरिक अवयवोंमें कुछ शिथिलताका अनुभव होती है, मन तथा विचार दोनों इस अनुभव (क्षणिक) पर हवामें महल खड़े करने लगते हैं। भविष्यकी चिन्ता सामने नाचने लगती है। आत्मामें दुःख तथा चित्त चञ्चल हो उठता है। मनमें विचार-पल्लव आते-जाते हैं। ऐसे विचारोंका दमन तथा हनन करना अत्यावश्यक है। बहुतसे लोग अपना चित्त एकाग्र करनेके लिए नाटक, उपन्यास, इतिहास तथा प्रहसन आदि पढ़ते हैं। मेरी रायमें इनसे चित्तमें एकाग्रता नहीं रहती, उलटे अशान्तिके बादल उमड़ने लगते हैं। इन विषयोंकी पुस्तकोंमें किसी-न-किसी रसका वर्णन रहता ही है। हमें मतलब है शान्त रससे न कि हास्य, दुःख, वीभत्स तथा शृङ्गार रसोंसे। इन पुस्तकोंमें अधिकतर शान्त रस छोड़ प्रायः अन्य सभी रसोंका बाहुल्य रहता है। इससे इन विषयोंकी पुस्तकें न पढ़ना ही अच्छा है। चित्त-शान्तिके लिए गीतापाठ ही उपयुक्त है अथवा किसी रूपमें ईश्वरोपासना।

अब प्रश्न उठता है कि किस प्रकार उपवास करना उचित है, जिससे कि हानि न होने पाये और सभी प्रकारसे लाभ हो। उपवासके आरम्भमें एक दिन पहलेसे हलका भोजन करना चाहिए। जिस दिनसे शुरू करना हो उस दिन प्रातःकाल सूर्योदयके पहले उठकर शौचादिसे निवृत्त होकर स्नानके बाद एक गिलास स्वच्छ, ताजा जल, पान करना चाहिए। दिनमें कोई भी ठोस पदार्थ न खाना चाहिए। यहां तक कि दूध भी न पीना चाहिए। जितना जल पिया जाय, पीना चाहिये। यदि मनुष्यको कोई पुरानी बीमारी हो तो क्रमशः आहारमें कमी करना चाहिए। अनाजसे फल और फलपरसे उपवासपर आना चाहिए। उपवास-कालमें अधिक मेहनत न करनी चाहिए, और न खटियापर ही पड़ जाना चाहिए, वरन् यथाशक्ति किसी-न-किसी रूपमें कुछ मशक्कत अवश्य करनी चाहिए।

शिथिलताका दौरा होते ही बिछावनपर हाथ-पैर फैलाकर लेट जाना चाहिए। थकावट दूर करनेके लिए मांस-पेशियोंको ढीला कर देना चाहिए। कमरेमें स्वच्छ तथा ताजी हवा आनेका पूरा प्रबन्ध होना चाहिए। यथासम्भव घरके बाहर खुली हवामें वृक्षोंके नीचे अथवा किसी बगीचेमें रहना चाहिए। नींदभर सोना चाहिए। यदि नींद न आवे तो चिन्तित होनेकी आवश्यकता नहीं। नींदको रोककर बैठना भी न चाहिए। अक्सर ऐसा देखा गया है कि उपवास-कालमें नींद कम हो जाती है; क्योंकि शरीरको भीतरसे आराम मिलता है। इसलिए थकावट नहीं होती और फल-स्वरूप अधिक नींदकी आवश्यकता भी नहीं होती। शरीरका चमड़ा पहलेसे कुछ गन्दा दीखने लगता है; क्योंकि विषैले पदार्थ रोम-छिद्रोंमेंसे निकलते हैं। इसलिए मुंह, नाक, आंख, त्वचा, गुह्यद्वार तथा लिङ्ग आदिकी पूरी सफाई प्रतिदिन करनी चाहिए। ठण्डे अथवा गरम जलसे चित्त-प्रसन्न-स्नान करना चाहिए।

जब प्राकृतिक क्षुधाका अनुभव हो, तब उस समयसे दूध पीना आरम्भ करना चाहिए। दूध भी पहले चार-पांच चम्मच ही पीना चाहिए, फिर थोड़ी-थोड़ी देरके अन्तरसे ऐसे ही चार-चार चम्मच बढ़ाते जाना चाहिए। दूध सदैव चम्मचसे पीना चाहिए। सन्ध्याके समय कुछ अंगूर, सेब अथवा अनारका प्रयोग करना चाहिए। यदि ये न मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सकें तो दाखको दूधमें भिगोकर खाना चाहिए। धीरे-धीरे इस प्रकार फलपर आना चाहिए और फिर फलसे हल्के-से-हल्के अनाजपर आना चाहिए, जैसे साबूदाना, दलिया, दूध-भात आदि। इसके बाद फिर सादे अनाजका प्रयोग लगभग चार-पांच दिन करना चाहिए, तब कहीं जीभ किसी स्वादिष्ट तथापि हल्की चीजपर चलानी चाहिए। उपवास भङ्ग करनेके एक सप्ताह बाद ही फिर फुटबाल भरना आरम्भ करना चाहिए, बीचमें नहीं; नहीं तो लेनेके देने पड़ जायंगे। यदि स्वास्थ्यके लिए दो सप्ताह तक उपवासके बाद सादे भोजनपर रहे तो निस्सन्देह बड़ा ही लाभ होता है। भिन्न-भिन्न काल तक उपवास करनेके लिए, उपवास तोड़नेपर लगभग उसके आधे दिनों तक साधारण, हल्का तथा सुपाच्य भोजन करना चाहिए। यदि बीचमें कोष्ठबद्धता हो तो पानीका एनीमा ले लेना चाहिए, जिससे आंतें साफ हो जाती हैं।

उपवास-कालमें कुछ लक्षण प्रकट होते हैं जिनसे कदापि न डरना चाहिए। कई लोग इन लक्षणोंके प्रकट होते ही उपवास त्याग देते हैं और इनकी दवाई करवाने लगते हैं। हमारे डाक्टर लोग भी एक कलाकारकी भांति इन लक्षणोंके भविष्यका बड़ा ही ऊटपटांग चित्र डरे हुए उपवासीके हृदयपर खींच देते हैं। जिससे बेचारा और डर जाता है और बीमार न होनेपर भी बीमारीके वास्तविक लक्षण दीख पड़ते हैं।

उपवास-कालमें जिह्वाके ऊपर एक मोटी परत आ जाती है, जिह्वा तथा श्वाससे दुर्गन्ध निकलती है, सिरमें दर्द होता है, कभी-कभी चक्कर आते हैं, पेट दुखता है, दिल घबराता है, हृद्-स्पन्दन होता है, ज्वरांश हो आता है, शरीरमें खुजली लगती है, ओंठ तिड़क जाते हैं, आदि। इन लक्षणोंसे कदापि न घबराना चाहिए। विषैले पदार्थ तथा विषैली गैसोंके निकलते समय ये लक्षण प्रकट होते हैं। इनसे शरीरमें किसी प्रकारका विकार नहीं होता और न ये किसी रोगके चिह्न ही हैं।

उपवासके ऊपर इतना जोर इसलिए दिया गया है कि उपवास करनेसे आंतोंकी सब बीमारियां अच्छी हो जाती हैं; क्योंकि आंतके रोगी रहनेसे ही सारा शरीर रोगी रहता है और आंत ही एक ऐसा स्थान है जो बहुत गन्दा रहता है। इसलिए स्वास्थ्य अच्छा उसी समय रहेगा जब आंत स्वस्थ हो, अन्यथा यदि पेटमें दूसरा अस्पताल ही खोल दिया जाये, फिर भी रोगी रोग-मुक्त नहीं हो सकता। ऐसा देखनेमें आया है कि मनुष्योंको होनेवाले ९० फीसदी रोग पेट (आंत) से ही आरम्भ होते हैं। इसलिए यदि स्वस्थ कहा जानेवाला मनुष्य भी इस प्रकार उपवास सालमें करीब दो या तीन बार कर लिया करे तो निस्सन्देह उसका स्वास्थ्य और सौन्दर्य अक्षय रह सकता है।

---

## गीत

(भैरव--तीन ताल)

खुल गये जड़ तमके दृग बन्द,
जगतके उर उतरा निस्पन्द।

प्रभाके अंग किरण-परिधान,
तरुण मुख अरुण, नयन नव-ज्ञान
अचल पल जागृतिके, प्रिय-ध्यान,
खिल रही जलजोंमें स्मित मन्द!

हृदयमें आ अशब्द पद-चाप,
सतत शत-शब्दोंमें आलाप,
खुले सुमनोंसे सुखसे कांप
बहे रसके, सौरभके छन्द।

—कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्रान्तिकारिणी महिला।

इलाचन्द्र जोशी

उस वर्ष कांग्रेसका अधिवेशन लाहौरमें होनेवाला था। मैं तीन-चार दिन पहले ही मेरठसे सपत्नीक आकर लाहौर पहुंच गया था और अपने एक मित्रके यहां रहने लगा। पहले मेरा विचार कांग्रेस कैम्पमें ही जाकर ठहरनेका था, पर जब श्रीमतीजीने हठ किया कि वह भी साथ चलेंगी तो मैंने अपना विचार बदल दिया। मेरे यह मित्र आर्यसमाजी थे। उनका जन्मस्थान दिल्ली था, पर कुछ वर्षोंसे वह लाहौरमें आकर रहने लगे थे, और वहां किसी खास चीजका व्यापार करते थे।

शहरमें काफी चहल-पहल मची हुई थी। खासकर कांग्रेस-नगरमें बड़ा रौनक थी। नित्य सुबह-शाम हजारोंकी तायदादमें स्त्री-पुरुष बड़े उत्साह और उमङ्गसे वहां आकर एकत्रित होते। भिन्न-भिन्न पण्डालोंमें भिन्न-भिन्न संस्थाओं-के वार्षिक अधिवेशन हो रहे थे। इगजीविशनमें भी दर्शकोंकी खासी भीड़ लगी रहती थी। मेरा सम्बन्ध किसी विशेष राजनीतिक अथवा सामाजिक संस्थासे नहीं था। मैं केवल कौतूहलके वश एक दर्शकके बतौर आया हुआ था, इसलिए प्रत्येक बातपर दिलचस्पी ले रहा था।

एक दिन मैं सुशीला ( मेरी स्त्री ) और अपने चार वर्षके लड़के ब्रजविलासके साथ इगजीविशनकी सैर कर रहा था। चलते-चलते हम लोग एक ऐसे 'स्टाल' के पास पहुंचे जहां रेशमी वस्त्रोंका प्रदर्शन हो रहा था। एक तख्तके ऊपर रेशमके कीड़े शहतूतकी पत्तियां खा रहे थे, दूसरे तख्तमें यह दिखलाया गया था कि कीड़ेके कोषसे रेशम कैसे बनता है। सुशीला बड़े अचरजसे कीड़ोंको देख रही थी और मुझसे उनके सम्बन्धमें नाना ऊटपटांग प्रश्न कर थी। मैं यथाशक्ति उसके प्रश्नोंका उत्तर देनेकी चेष्टा कर रहा था। अचानक किसीने पीछेसे मेरी पीठ ठोंकी। चौंककर मैंने देखा कि एक सुन्दर, स्वस्थ खद्दरधारी नवयुवक मुसकरा रहा है। उसका चेहरा मुझे पूर्व-परिचित-सा जान पड़ा; पर ठीक अन्दाज न लगा सका कि उसे मैंने पहले कब और कहां देखा है, केवल भ्रान्त अवस्थामें एकटक उसकी ओर ताकता रह गया। उसने फिर एक बार मेरी पीठ ठोंककर बच्चोंकी तरह खिलखिलाकर कहा—"अभी तक नहीं पहचाना?" उसके इस खिलखिलानेमें एक ऐसी विशेषता थी जिसे देखकर मैं तत्काल उसे पहचान गया। उल्लास और आश्चर्यसे बोला—"अरे मुकुन्दराम! तुम यहां कहां? आज-कल कहां हो? क्या करते हो?"

जब मैं स्कूलमें पढ़ता था तो मुकुन्दराम मेरा सहपाठी था। नवें दर्जे तक हम दोनोंका साथ रहा। इसके बाद वह दिल्ली चला गया था। तबसे आज उससे भेंट हुई।

उसने कहा—"मैं कानपुर था। वहांके 'यूथ लीग' की तरफसे नौजवान-भारत-सभाके अधिवेशनमें शरीक होने आया हूं। कल मैंने सभामें व्याख्यान दिया था। पण्डालमें बड़ी भीड़ थी। सभी नव-युवकोंमें नौजवान-भारत-सभाके सम्बन्धमें बड़ा जोश फैला हुआ है।"

"क्या तुम कांग्रेसके डेलीगेट नहीं हो?"

"हां, एक प्रकारसे कांग्रेसका भी डेलीगेट हूं। पर कां-ग्रेससे हम लोगोंका विशेष सम्बन्ध नहीं है। असल बात यह है कि हम लोग कांग्रेसकी नीतिके बिलकुल विरोधी हैं। कांग्रेसके नेता सब 'कैपिटेलिस्ट' और 'बूर्जवा' लोग हैं। मजूरों और किसानोंकी दुर्दशाकी ओर इन लोगोंका बिल-कुल ध्यान नहीं है। इसके सिवा एक और बात है। वह यह कि वे लोग सब कायर हैं और सरकारका रुख देखकर अपनी नीति बदलते हैं। महात्मा गांधीके सिद्धान्तोंके हम लोग बिलकुल विरोधी हैं।"

मैं उत्सुकतासे उसकी बातें सुन रहा था। स्कूलमें सब लड़के मुकुन्दरामको भोंदूरामके नामसे पुकारा करते थे, और वास्तवमें तब वह भोंदू था भी। पर अब! अब तो बात ही दूसरी थी। अब वह एक ऐसे नव-जागरित दलका नेता था जो अपनी अग्रगामी नीतिमें कांग्रेसको भी धता बताने चला था।

मैंने कहा—"क्या तुम लोग अपनेको कांग्रेसके नेताओंसे भी बढ़कर देशभक्त समझते हो?"



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"क्यों नहीं ? हम लोगोंका उद्देश्य उनसे बहुत उदार और उन्नत है। अगर इस समय कांग्रेसके हाथमें देशके शासनकी बागडोर आ जाय तो उसके एकतन्त्र शासनसे केवल कुछ विशेष श्रेणीके लोगोंको ही लाभ होगा। पर हम लोग चाहते हैं कि अत्याचार-पीड़ित साधारण श्रेणीकी जनता ही मुख्यमें स्वराज्यसे लाभवान् हो। कुछ भी हो, यहांपर खड़े-खड़े तुम्हें सब बातें समझा नहीं सकूंगा। आज शामको तुम मुझे हमारे कैम्पमें मिलना या नौजवान-भारत-सभाके पण्डालमें।" इसके बाद उसने मेरी स्त्रीकी ओर देखकर इशारेसे यह पूछना चाहा कि वह कौन है। सुशीलाने लज्जासे मुंह फिरा लिया था। जब मुकुन्दको मालूम हुआ कि वह मेरी स्त्री है और वह बच्चा भी मेरा है, तो उसने स्नेहपूर्वक मुसकराकर फिर एक बार मेरी पीठ ठोंकी। मैंने पूछा—"तुम्हारा विवाह हो चुका ?" वह मेरे इस साधारण प्रश्नसे चौंक उठा। बोला—"मेरा विवाह ? नहीं ! हम लोग विवाह नहीं करते।" "'हम लोग' कौन ? यूथ-लीगके मेम्बर ?" "नहीं, हम लोगोंका एक विशेष दल है। पर इस सम्बन्धमें इस समय तुमसे बातें नहीं कर सकता। कहां मिलोगे, बोलो ?"

मैंने कहा—"आज तो नहीं मिल सकता। कल बारह बजे पण्डालमें ही मिलूंगा।"

"अच्छी बात है, मैं मञ्चके पास खड़ा रहूंगा।" यह कहकर वह चला गया। उसके जाते ही मैंने देखा कि संन्यासीका वेष पहने हुए एक आदमी (जो बहुत देरसे हमारे पास ही खड़ा था और स्टालके वस्त्रोंका निरीक्षण कर रहा था) धीरे-धीरे उसके पीछे हो लिया। मुकुन्दरामने एक बार पीछे फिरकर उसकी ओर देखा, पर तत्काल उदासीनता-का भाव दिखाकर वह शीघ्रतासे आगे बढ़ गया।

मुकुन्दरामकी बातोंसे मैं चकरा गया था। बहुत सोचने-पर भी उसकी नीति और उसके सिद्धान्त मेरी समझमें न आये। वह तो अत्यन्त दृढ़ता तथा विश्वासपूर्वक स्पष्ट शब्दोंमें महात्मा गांधीका भी विरोध करने लगा था ! और कांग्रेसकी नीतिको वह 'कैपिटेलिस्टिक' बतलाता था, और उसके हाथमें शासनकी बागडोर चली जाय, यह भी वह नहीं चाहता था। मैंने सोचा या तो वह देशद्रोही है या·····कुछ ठीक अन्दाज न लगा सका।

दूसरे दिन मैं निश्चित समयपर नौजवान-भारत-सभाके पण्डालपर पहुंच गया। एक युवती मञ्चपर खड़ी बड़े जोरदार शब्दोंमें वक्तृता दे रही थी। उसकी दो-चार बातें सुनते ही मैं घबरा उठा। मुकुन्दरामसे भी उसके विचार अधिक उग्र तथा सुस्पष्ट थे। वह एक सनिककी तरह खड़ी थी और उसका प्रत्येक तीक्ष्ण शब्द दर्शकोंपर तीरका-सा असर कर रहा था। गौरसे देखनेपर वह विशेष सुन्दरी नहीं मालूम होती थी, पर उसके जोशसे भरे हुए चेहरेका गम्भीर भाव बड़ा आकर्षक था। पर फिर भी मेरा अन्तःकरण कहता था कि उसके इस भावमें कृत्रिमता है।

मञ्चके एक कोनेसे मुकुन्दने मेरी ओर इशारा करके मुझे जताया कि उसने मुझे देख लिया है। थोड़ी देरमें वह मेरे पास चला आया। मैंने कहा—"तुम्हारा व्याख्यान हो चुका ?" "नहीं, मेरी बारी कल है।" "यह कौन महिला है ?" "विजया। हमारे दलमें इसका बड़ा प्रभुत्व है। देखते हो, कैसा तेज बोल रही है।"

वह गर्वसे फूला नहीं समाता था। पर, न मालूम क्यों, मेरे मनमें उसकी इस बातपर चिढ़ पैदा हो रही थी। मैंने कहा—"तुम लोगोंको इस बातपर लज्जा नहीं मालूम होती कि एक महिला तुम्हें परिचालित कर रही है ?"

"लज्जा ? क्यों इसमें लज्जाकी क्या बात है ? हम लोग योग्यताकी दृष्टिसे स्त्री और पुरुषमें कोई भेद नहीं देखते। इसके अलावा तुम इस महिलाको नहीं जानते, श्यामसुन्दर ! केवल इसका व्याख्यान सुनकर तुम इसे पहचान नहीं सकते। मैं इतने दिन इसके साथ रहनेपर भी इसे पहचान नहीं पाया।"

मेरी उत्सुकता बढ़ी। मुकुन्दरामकी बातोंमें मुझे एक रहस्य छिपा हुआ मालूम हुआ। मैंने पूछा—"तुम क्या उसके साथ ही रहते हो ? मेरा परिचय उससे करा सकते हो ?"

"क्यों नहीं ! बड़ी खुशीसे ! मैं आज ही शामको तुम्हें उससे मिला दूंगा।" वह इस सम्बन्धमें बड़ा उत्साहित जान पड़ा।

अचानक हमारे पीछेसे दो आदमियोंके झगड़नेका शब्द सुनायी दिया। पीछे फिरकर क्या देखता हूं कि कल जिस 'संन्यासी' को मुकुन्दरामके पीछे जाते देखा था, एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लट्ठधारी वालण्टियरके साथ उसका तनाजा हो रहा है। वालण्टियर कह रहा था—"निकलो बदमाश! तुम सी० आइ० डी० के आदमी हो!" पर वह इस बातपर अड़ा था कि वह वास्तवमें संन्यासी है, सी० आइ० डी० का आदमी नहीं। बात बढ़ते-बढ़ते यहां तक बढ़ गयी कि हाथापाईकी नौबत आ गयी। आखिर वालण्टियरने लात और घूंसे मारकर उसे फाटकके बाहर कर दिया। सभामें हुल्लड़ मच गया। सब उठ खड़े हुए। इस गड़बड़में मुकुन्दराम न जाने कहां गायब हो गया। मैं बहुत देर तक ढूंढ़ता रहा, पर कहीं कुछ पता न चला। अन्तको निराश होकर मैं लौट चला। दूसरे दिनसे, न मालूम क्यों, मुझे फिर नौजवान-भारत-सभामें जानेकी इच्छा न हुई; मुकुन्दरामके भी दर्शन नहीं हुए।

* * *

इसके प्रायः चार महीने बाद एक दिन मैं मेरठमें एक पानकी दूकानमें पान ले रहा था। अकस्मात् मेरी दृष्टि एक सूट-बूटधारी व्यक्तिपर पड़ी। वह छड़ी घुमाता हुआ, अकड़ता हुआ शानमें चला जा रहा था। मैं कुछ देर तक उसे देखता ही रह गया। उसके चेहरेमें कोई खास बात हो, सो बात नहीं। फिर भी उसके सम्बन्धमें कुछ कौतूहल-सा उत्पन्न हो रहा था। वह मेरे पाससे होकर चला। कुछ देरके लिए मैं भी उसे भूल गया। अचानक बिजलीके प्रकाशकी तरह मेरी स्मृति जाग पड़ी। जिस 'संन्यासी' को मैंने लाहौरमें देखा था, इस सूट-बूट-धारी सज्जनकी मुखाकृतिका सादृश्य मुझे उससे मिलता-जुलता हुआ मालूम हुआ। तत्काल मुझे मुकुन्दरामका ख्याल आया। क्या वह मेरठ तो नहीं आया हुआ है?

दूसरे दिन मैं टाउनहालकी तरफ जा रहा था। रास्तेमें थकान मालूम हुई। सामने एक छोटा-सा पार्क था। कुछ देर वहां बैठकर आराम करनेका विचार किया। एक बेञ्चपर एक पुरुषके साथ नीले-रङ्गकी साड़ी पहने हुए एक स्त्री बैठी थी। अंधेरा होने लगा था। मैं उन्हीं लोगोंके पास एक दूसरे बेञ्चपर बैठ गया। अचानक उस महिलाका साथी उठकर मेरे बेञ्चपर आकर बैठ गया और मेरे कन्धेपर हाथ रखकर बोला—"श्यामसुन्दर!" मैं चौंका। मेरी दृष्टि क्षीण होनेसे उस प्रायान्धकारमें मैं उसे पहचान न सका था। वह मुकुन्दराम था। मैंने कहा—"मुझे माफ करना, मेरी आंखें कमजोर होनेसे तुम्हें मैंने नहीं पहचाना था। कब आये हो?" "तीन दिन हुए।" "यह महिला कौन हैं?" "वही विजया। चलो, तुम्हें इन्ट्रोड्यूस करा दूं।" "मुझे! नहीं, नहीं! आज नहीं, किसी दूसरे दिन..." पर वह मेरा हाथ पकड़कर जबर्दस्ती उसके पास ले गया।

मेरे सङ्कोचपर विजया सस्नेह मुसकरा रही थी। मुकुन्दरामने मेरा परिचय कराया। उसने शान्त, स्निग्ध स्वरसे पूछा—"आप यहां क्या करते हैं?" "वकालत करता हूं।" मुकुन्दरामने कहा—"श्यामसुन्दर पेटके लिए वकालत नहीं करता, बल्कि शौकके लिए उसने यह पेशा अख्तियार किया है। वह कैपिटेलिस्ट है, और साथ ही फिलासफर भी।"

"कैपिटेलिस्ट और फिलासफर?" विजयाके इस प्रश्नमें तीक्ष्ण व्यङ्गका भाव भरा था। कुछ देर तक चुप रहकर वह फिर बोली—"आप क्या ईश्वरपर विश्वास करते हैं? अपने अन्तःकरणसे उत्तर दीजिये!"

अचानक, बिना किसी भूमिकाके इस प्रकारका अद्भुत प्रश्न सुनकर मैं घबरा उठा। 'अपने अन्तःकरणसे उत्तर दीजिये!' यदि न दूं? यह अच्छी जबर्दस्ती है!

मैंने कहा—'ईश्वरपर मेरा विश्वास तो अवश्य है, पर अन्तःकरणकी बात मैंने कभी नहीं सोची!"

"हूं!" उस अंधेरेमें भी मैंने स्पष्ट देखा कि वह अनमनी-सी किसी अत्यन्त गम्भीर चिन्तामें मग्न हो गयी है। उसकी मुसकान पलमें न मालूम कहां तिरोहित हो गयी थी। उसका चेहरा देखकर मैं भयभीत हो उठा। उसने फिर प्रश्न किया—"अच्छा पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरकपर भी आपका विश्वास है?"

मैंने कहा—"पाप-पुण्य मैं अवश्य मानता हूं। पर स्वर्ग-नरकके सम्बन्धमें मैं कुछ नहीं कह सकता।"

"उदाहरणके लिए आप एक कैपिटेलिस्ट हैं; यह निश्चय है कि प्रत्यक्षमें या परोक्षमें बहुतसे गरीबोंके रक्त-शोषणसे आपके पास इतना धन जमा हो सका है। अगर कोई आदमी आपका सब धन लूटकर गरीबोंमें बांट दे तो उसके इस कर्मको आप पाप कहेंगे या पुण्य?"

मैं तो भौंचक्का रह गया। उसकी बातमें कहीं कोई द्विविधा, रञ्चमात्र सङ्कोच नहीं था। केवल दो मिनटके परिचयसे मेरे मुंहपर ऐसा प्रश्न करनेका साहस उसे कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हुआ ? मैं ऐसा मालूम करने लगा जैसे मैं किसी महिलासे नहीं, बल्कि किसी यक्षिणीसे बातें कर रहा होऊं। परिहास-का लेश भी उसके मुखके भावमें या कथनमें वर्तमान नहीं था। मैंने सुना था कि हमारे महिला-समाजमें जबसे क्रान्तिकी लहर उठी है तबसे कुछ स्त्रियां इस हद तक आगे बढ़ गयी हैं कि राजनीतिक डकैतियोंमें भी सम्मिलित होने लगी हैं। पर अकस्मात् मेरठके एक पार्कमें मुझे इस प्रकार-की एक क्रान्तिकारिणी महिलाके आमने-सामने बैठना पड़ेगा, इसकी कल्पना मैंने कभी स्वप्नमें भी नहीं की थी। कांपती हुई आवाजमें मैंने कहा—"आ—प'''आप क्या कहती हैं! मैं कुछ समझा नहीं।"

"हाः हाः हाः" करके वह रहस्यमयी पुरुषोंकी तरह ठठाकर हंस पड़ी। मैं सोच रहा था कि किसी तरह यहांसे अपनी जान बचाकर भाग चलूं और पुलिसको खबर दूं। पर मुझे पूरा विश्वास था कि उन दोनोंमेंसे एकके पास अवश्य ही पिस्तौल होगी, इसलिए भागनेका भी साहस नहीं होता था। किन्तु मेरा भय तत्काल दूर हो गया। विजयाने बड़े स्नेहसे मेरी पीठपर थपकी देते हुए कहा—"आप बड़े सरल-हृदय हैं। आप वास्तवमें फिलासफर हैं! एक साधारण परि-हाससे आप घबरा गये!" मेरे सिरपरसे मानों भूत उतर गया। बोला—"नहीं, मैं घबराया नहीं, पर हां, आपकी बातें सुनकर मुझे आश्चर्य अवश्य हुआ, और अभी तक है।" "आपके बालबच्चे यहीं हैं?" "जी हां।" "हमारे साथ चलियेगा? घर जानेकी जल्दी तो नहीं है?" मैंने कहा—"नहीं, कोई जल्दी नहीं है; चलिये।"

हम तीनों उठ खड़े हुए। मुकुन्द कुछ सिटपिटा रहा था, जैसे मुझे किसी सन्देहकी दृष्टिसे देखता हो। मुझे ऐसा जान पड़ा कि जो बातें अभी हो चुकी हैं (भले ही वे परिहासमें हुई हों) उनके बाद वह मुझे अपने डेरेपर ले जानेमें झिझक मालूम कर रहा है। हो सकता है, यह केवल मेरा अनुमान हो। पर विजया रास्ते-भर बड़े उल्लास और उमङ्गके साथ मेरे साथ बातें करती चली गयी। वह स्पष्ट ही मुझे बना रही थी।

तांगेसे उतरकर हम लोग एक तङ्ग, अन्धकार गलीके भीतर घुसे, उसके बाद बांयेको एक उससे भी तङ्ग गलीकी ओर गये। वहांसे एक दरवाजेके भीतर घुसे और ऊपर चढ़ गये। जिस कमरेमें हम बैठे, वह छोटा था, पर साफ सुथरा। पहले-से ही नौकरने मेजपर टेबल-लैम्प जलाकर रख दिया था। विजयाने एक कुर्सीपर बैठकर मेजपर रखा हुआ एक छोटा-सा पङ्खा पकड़ लिया और अपने मुखपर हवा करने लगी। उसकी साड़ी सिरपरसे खिसक गयी थी। मैं एकटक उसके मुखकी ओर देखता रहा। पहले ही कह चुका हूं कि देखनेमें वह सुन्दर नहीं थी, पर उसमें एक रहस्यमय आकर्षण पाया जाता था। डेरेपर आते ही वह फिर अन्यमनस्क हो गयी थी। हम तीनों चुप थे। कभी उसके मुखपर एक सेकेण्डके लिए सुस्पष्ट वेदनाकी एक गाढ़ छाया अङ्कित हो जाती, पर दूसरे ही क्षण यह भाव कठोर दृढ़तामें बदल जाता।

अचानक वह बोल उठी—"आप टकटकी बांधे मेरी ओर क्यों देख रहे हैं? आप क्या यह भी नहीं जानते कि किसी स्त्रीको इस प्रकार घूरना शिष्टाचारके विरुद्ध है?" उसके होठोंमें व्यङ्गकी कुटिल हंसी झलक रही थी।

मैंने घबराकर कहा—"नहीं, नहीं, मेरा इरादा वैसा नहीं था....."

"कैसा नहीं था? आप बड़े भोले हैं!" वह अधिक देर-तक हंसीको दबाये हुए न रख सकनेके कारण जोरसे खिल-खिला पड़ी। लज्जासे मेरा मुंह लाल हो आया। पर मैंने तत्काल अपनेको संभालकर इस व्यङ्गका बदला लेनेके लिए कहा—"माफ कीजिये श्रीमतीजी, पर एक बात मैं आपसे कहना चाहता हूं। वह यह कि आप साधारण स्त्री नहीं हैं।"

"'साधारण स्त्री नहीं हैं!' यह क्यों!"—इस बार उसने वास्तवमें आश्चर्यका भाव प्रकट किया। मैं उठ खड़ा हुआ। बोला—"इस समय देर हो रही है। जाता हूं। पर आजकी रात मुझे सदा याद रहेगी, और आपको भी मैं कभी नहीं भूलूंगा।"

"बैठिये, बैठिये, अभीसे जाते कहां हैं?" यह कहकर वह मेरा हाथ पकड़ने लगी। उसकी आंखोंमें व होठोंमें अभी तक व्यङ्गकी मुसकान वर्तमान थी। मैंने कहा—"नहीं, अब आज्ञा दीजिये!" अचानक वह उठ खड़ी हुई और मेरे दोनों हाथ अपने हाथोंसे पकड़कर बोली—"आपने कहा था कि आपके बाल-बच्चे यहीं हैं?" "जी हां।" "मुझे एक बार उन्हें देखनेकी बड़ी इच्छा है। एक दिन लाइयेगा?" मैंने आश्चर्यसे कहा—"बाल-बच्चोंको? यहां?" "हां यहां!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आपको आश्चर्य क्यों होता है ? देखिये, मैं आपसे प्रार्थना करती हूं, अवश्य लाइयेगा !" ऐसी सहृदयता और वेदनासे उसने यह बात कही कि मुझसे कुछ कहते न बन पड़ा। "अच्छा, देखूंगा," कहकर अपना पिण्ड छुड़ाकर मैं भागा।

जब घरको लौटा तो रास्तेमें मैंने निश्चय कर लिया कि अब कभी उसके पास नहीं जाऊंगा। पर दूसरे दिन सन्ध्या होते ही मेरा हृदय किसी अज्ञात-आकर्षणसे उसके पास जानेके लिए छटपटाने लगा। मैं फिर उसी अन्धकार गलीवाले मकानमें उससे मिला। तबसे प्रायः नित्य उसके यहां मेरा आना-जाना जारी रहा। उसके बहुत हठ करनेपर एक दिन मैं सुशीलाको उसके पास ले गया। मेरा चार वर्षका लड़का व्रजविलास भी हमारे साथ था। मेरी स्त्रीको देखते ही विजया उसके गलेसे लिपट गयी। बहुत देर तक उसने उसे छोड़ा नहीं। उसके बाद व्रजविलासको उठाकर उसने गोदमें ले लिया। बहुत देर तक उसके मुखकी ओर टकटकी बांध रही, जैसे इसके पहले कभी उसने कोई बच्चा देखा ही न हो। फिर अकस्मात् बड़े आवेगसे उसे छातीसे लगाकर उसने उसका मुख चूमना शुरू कर दिया। बार-बार चूमती थी और किसी तरह छोड़ती न थी, मानों उसके सिरपर भूत सवार हो गया हो। उसकी आंखें स्नेहके आंसुओंसे भीग गयी थीं। सुशीला उसकी यह हालत देखकर घबरा उठी। अन्तको जब विजया कुछ संभली तो उसने सुशीलाकी ओर देखकर कहा—"बहन, आप समझती होंगी कि किस पागल स्त्रीसे पाला पड़ा है ! पर सच कहती हूं, ऐसा सुन्दर बच्चा मैंने पहले कभी देखा नहीं।" यह कहकर फिर उसने एक बार उसका मुंह चूमा। व्रजविलास भयसे रोने लगा था।

उस दिन उसने मेरी स्त्रीके साथ बड़े प्रेमसे बहुत देर तक बातें कीं। मैं मुकुन्दके साथ दूसरे कमरेमें चला गया था। रातको सुशीलाने मुझसे इस बातपर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया कि विजयाका अभी तक विवाह नहीं हुआ है, और दूसरे पुरुषके साथ वह निर्भय, अकेली रहती है। पर कुछ भी हो, यह निश्चय था कि एक ही दिनकी मुलाकातसे विजयाने उसपर जादू फूंक दिया था। तबसे वह अक्सर उसके यहां ले जानेके लिए जिद करने लगी।

एक दिन सन्ध्याके समय विजया अकेली बैठी थी। मुकुन्द कहीं कामसे गया हुआ था। वह बहुत उदास और खिन्न बैठी थी। मैंने कहा—"आज आप बहुत चिन्तित जान पड़ती हैं।" मेरी बातका उत्तर न देकर उसने एकाएक प्रश्न किया—"मेरे सम्बन्धमें आपकी क्या धारणा है ?" मैंने कहा—"मैं आपको एक भावुक और उन्नत-चरित्र महिला समझता हूं।" उसने मेरे अत्यन्त निकट आकर दबी हुई जबानसे, किन्तु आवेगपूर्वक, कहा—"पर आप मुझे अभी नहीं समझ पाये ! नहीं, आप मुझे नहीं जानते ! मैं घोर पापिनी, हत्याकारिणी स्त्री हूं !" "हत्याकारिणी ! यह आप क्या कहती हैं ! नहीं, मुझे इस बातपर यकीन नहीं हो सकता। यदि मैं अपनी आंखसे भी आपको किसीकी हत्या करते देखूं तो मुझे कदापि विश्वास नहीं होगा।" उसने उदासीनताकी रूखी हंसी हंसकर कहा—"हूं ! आपको विश्वास नहीं होता ! अच्छा ही है। पर मैं आपसे पूछती हूं, क्या आप पुनर्जन्मपर विश्वास करते हैं ?"

मैंने कहा—"अवश्य। मनुष्यकी जो अतृप्त आकांक्षायें इस जन्ममें पूरी नहीं होने पातीं, उनका पूर्ण विनाश हो जायगा, यह मैं नहीं मानता। जो मरेगा वह अवश्य ही फिर जन्म लेगा, ऐसी मेरी धारणा है।"

वह अत्यन्त उत्सुक, व्याकुल दृष्टिसे मेरी ओर देख रही थी, बोली—"देखिये, मैं नास्तिक हूं। हमारे दलका कोई भी व्यक्ति भगवान्पर विश्वास नहीं करता। पर इधर कुछ दिनोंसे, न मालूम क्यों, मैं रह-रहकर भगवान्पर विश्वास करनेकी इच्छासे व्याकुल हो उठती हूं। पर बहुत चेष्टा करनेपर भी सफल नहीं होती, केवल कभी-कभी मिनट-भरके लिए सारी आत्मा एक अज्ञात रहस्यमय भावनासे गद्गद हो उठती है। पर यह विश्वास आपसे आप मेरे मनमें दृढ़ होता चला जाता है कि मैं मरनेके बाद फिर जन्म लूंगी, और इस जन्ममें जो भयङ्कर भूलें की हैं उन्हें सुधारकर नया जीवन बिताऊंगी। आपकी स्त्रीका जीवन धन्य है !" उसका आवेग ऐसा प्रबल था कि देखकर मैं स्तम्भित रह गया। कुछ समझा नहीं कि वह क्या सोचकर ऐसा कह रही है। वह कहती चली गयी—"भूल, भूल ! मेरा सारा यौवन, सारा जीवन भूलमें बीत गया। आपको खबर है, सी० आई० डी० वाले रात-दिन मेरे पीछे लगे हैं, और बहुत शीघ्र मैं गिरफ्तार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ली जाऊंगी ? किस अपराधमें ? हत्याके ! एक वृद्ध महाजनके घर डाका डालकर हम लोगोंने उसे भी मार डाला, आज पांच महीने बीत चुके। पर इससे मुझे लाभ क्या हुआ ! अपने स्त्री-हृदयका सारा रस सुखाकर अन्तको अब अपने होशमें आयी हूं। पर अब क्या होता है ! वास्तविक जीवनके आनन्दसे अब परिचित हुई हूं। जबसे आपको, आपकी स्त्रीको, आपके लड़केको मैंने देखा है, मेरे जीवनकी धारा ही बदल गयी है। पर अब क्या उपाय है ! अहा, आपका लड़का व्रजविलास ! कैसा प्यारा है ! एक बार और लाइयेगा ? पर नहीं—अब कभी न लाना ! अब इस मकानमें आपका आना ठीक नहीं है। बड़ा खतरा है। जिस जासूसका मुझे डर था, वह मेरठमें भी आ पहुंचा है। पर असलमें अब मुझे किसीका डर नहीं है। लेकिन आप...आ-पसे अब कैसे मिलूंगी ! आपकी प्यारी स्त्री, और दुलारा लड़का ! उन्हें कैसे देखूंगी ! उफ !" यह कहकर वह अचानक मेरे पैरोंपर लोट पड़ी और दोनों हाथोंसे उसने जोरसे मेरे पांव जकड़ लिये। मैंने घबराकर कहा—"यह क्या करती हो, विजया ! उठो ! उठो !" वह सिसकियां भर रही थी। पर शायद मेरे मुंहसे अपना नाम सुनकर उठ गयी। एकदम उसकी अश्रु-सिक्त आंखोंकी मार्मिक दृष्टिमें हंसी झलक उठी। बोली—"तुम समझते हो कि मैं गिरफ्तारीके भयसे रो रही हूं। भूलकर भी ऐसा न समझना। उस बुड्ढे मक्खीचूस महाजन·····कुछ भी हो, यह जन्म मेरा केवल भ्रम और संशयमें बीता है। पर...बस, अब मैं प्रसन्न हूं। केवल एक बार अपना हाथ मेरे सिरपर रखकर आशीर्वाद दो कि अगले जन्ममें मेरा नारी-जीवन सार्थक हो।" मैंने अत्यन्त व्यथित हृदयसे उसके सिरपर हाथ रखा। इसके बाद वह फिर अचानक चौंक उठी। मुझे दरवाजेकी ओर ढकेलते हुए बोली—"जाओ ! जाओ ! जल्दी जाओ ! इस मकानमें अब एक मिनट तुम्हारा रहना ठीक नहीं है। बड़ा खतरा है। जाओ जल्दी !" मैं घबराता हुआ बाहर चला आया।

× × ×

उस दिनसे मैं उसके पास नहीं गया,—कह नहीं सकता कि भयसे अथवा दुःखसे। कुछ भी हो, प्रायः एक हफ्ते बाद एक दिन समाचार-पत्रमें बड़े-बड़े अक्षरोंमें यह खबर छपी हुई पढ़ी कि विजयाको और उसके दलके दो और व्यक्तियोंको पुलिसने दिल्लीमें डकैती तथा हत्याके अपराधमें गिरफ्तार किया था, पर विजयाने तत्काल अपने पाससे विष निकालकर खा लिया, और घण्टेभर बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

———

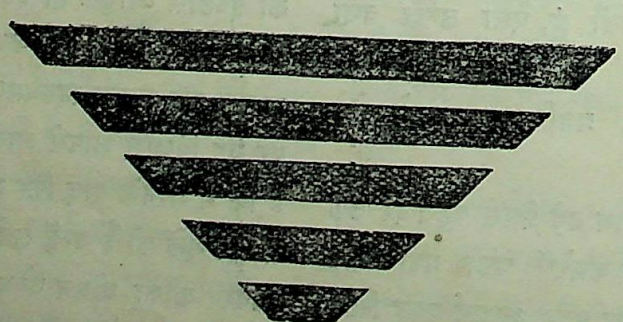

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# श्रीमती सरोजिनी नायडूका पूर्व जीवन

श्री क्ष—त्र—ज्ञ

श्रीमती सरोजिनी नायडूको हम लोग अक्लान्तकर्मिणी, कठोर-व्रत-धारिणी, तपस्विनी देश-सेविकाके रूपमें ही जानते हैं। पर हम लोग यह बात भूल जाते हैं कि उनकी जन्मगत प्रकृति इस कठोर जीवनके बिलकुल विपरीत थी;—केवल देशमाताकी नितान्त कारुणिक दशासे उनके भावुक हृदयको मार्मिक चोट पहुंचनेके कारण ही उन्होंने यह तापस-व्रत स्वीकार किया। वास्तवमें उन्होंने नन्दन-कानन-चारिणी, वसन्त-विहारिणी कोकिलाके रूपमें जन्म लिया था और प्रथम जीवनमें अपने सुमधुर काव्य-कूजनसे काव्योद्यानको मुखरित भी किया था।

श्रीमती नायडूका जन्म १३ फरवरी १८७९ में हैदराबाद-में हुआ। उनके पिता बङ्गाली थे। उनका नाम डाक्टर अघोरनाथ चट्टोपाध्याय था। एडिनबरा विश्वविद्यालयसे विज्ञानकी सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त करके स्वदेश लौटनेपर हैदराबाद निज़ाम कालेजमें वह अध्यापक नियुक्त हो गये थे। अघोरनाथकी इच्छा थी कि उनकी लड़की भी विज्ञानमें पारङ्गत हो जाय, इसलिए उन्होंने साहित्यकी अपेक्षा विज्ञानके ही प्रति किशोरी सरोजिनीको प्रवृत्त करना चाहा। पर सरोजिनी तो प्राक्तनजन्मके संस्कारसे कविका हृदय लेकर उत्पन्न हुई थीं। ग्यारह वर्षकी अवस्थामें ही वह कविता करने लगीं। इसी अवस्थासे उनका कवि-जीवन आरम्भ होता है। इस छोटी उम्रमें ही उन्होंने स्काटके Lady of the Lake के अनुकरणमें तेरह सौ लाइनोंकी एक कविता तथा दो हजार लाइनोंकी एक नाटिका लिख डाली!

बारह वर्षकी अवस्थामें सरोजिनी मद्रास विश्वविद्यालय-की मेट्रिकुलेशन परीक्षामें उत्तीर्ण हो गयीं। मद्रासमें उनसे पहले उक्त परीक्षामें कोई महिला उत्तीर्ण नहीं हुई थी। उनकी इस प्रखर प्रतिभाकी चर्चा सर्वत्र होने लगी। पर दुर्भाग्यसे इस परीक्षाके बाद उनका स्वास्थ्य नष्ट हो गया, इस कारण उन्हें कालेजकी उच्च शिक्षाकी आशा परित्याग करनेको बाध्य होना पड़ा। पर कालेजमें न पढ़नेपर भी घरमें पढ़ने-लिखने तथा कविता करनेकी सब सुविधायें प्राप्त थीं। घरमें बैठकर थोड़े ही समयके अन्दर उन्होंने बहुत-सी किताबें पढ़ डालीं। साथ ही वह कवितायें भी लिखती चली गयीं। इस सम्बन्धमें श्रीमती नायडू स्वयं लिखती हैं—"जहां तक मुझे याद है, मेरे अध्ययनका अधिकांश भाग चौदहसे सोलह वर्षके भीतर ही समाप्त हो गया था। इसी दर्मियान मैंने एक उपन्यास भी लिखा था और मासिक पत्रोंके लिए बहुतसे लेख लिखे। तभीसे मेरे मनमें लिखनेकी प्रबल आकांक्षा जागरित हो उठी थी।"

श्रीमती नायडूकी अवस्था जब पन्द्रह वर्षकी थी तब वह डाक्टर नायडू (जो एक मद्रासी सज्जन थे) के प्रति आकृष्ट हो गयीं। दोनों एक-दूसरेका जीवन-साहचर्य प्राप्त करनेके लिए लालायित हो उठे। पर यह शुभ मिलन सहजमें परिणतिको प्राप्त न हो सका। दोनों पक्षोंकी जाति-बिरादरी-वालोंकी तरफसे बड़ी आपत्तियां तथा बाधायें उपस्थित होने लगीं। सरोजिनी ब्राह्मण-कुमारी थीं और डाक्टर नायडूका जन्म जातिकी दृष्टिसे बहुत ही निम्नवंशमें हुआ था, इस-लिए इस असवर्ण विवाहका अनुमोदन किसीने नहीं किया। प्रियतमके साथ मिलनमें बाधा देखकर श्रीमती सरोजिनीके हृदयको मार्मिक चोट पहुंची, पर वह एकदम निराश नहीं हुईं। उनके तत्कालीन मनकी अवस्था उनकी दो-एक कविताओंमें अत्यन्त सुन्दर रूपसे व्यक्त हुई है। कुछ भी हो, १८९९ में निजाम-प्रदत्त एक विशेष वृत्ति प्राप्त करके सरो-जिनी विलायत चली गयीं। पहले वह लन्दनके किंग्स-कालेजमें भरती हुईं, इसके बाद केम्ब्रिज विश्वविद्यालयके अन्तर्गत गार्टन कालेजमें प्रविष्ट हुईं। आर्थर साइमन्स श्रीमती सरोजिनीके इंगलैण्ड-प्रवासकी चर्चा करते हुए, उनके सम्बन्धमें लिखते हैं—"सरोजिनीके साथ इंगलैण्डमें जिन लोगोंका परिचय हुआ है, उन्हें अच्छी तरह स्मरण होगा कि इस किशोरीकी सारी आत्मा उनकी दो सुन्दर आंखोंमें किस प्रकार प्रस्फुटित होती थी। सूर्यमुखी पुष्प जिस प्रकार सर्वदा सूर्यकी ओर ही टकटकी लगाये रहता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसी प्रकार सरोजिनीकी आंखें भी केवल सौन्दर्यकी ओर केन्द्रित रहती थीं। उनके विस्फारित सुदीर्घ नेत्र सौन्दर्यके ध्यानमें क्रमशः इतना अधिक विस्फारित हो जाते कि ऐसा मालूम होने लगता, जैसे आंखोंके अतिरिक्त उनके शरीरमें और कुछ भी नहीं है। सरोजिनी सदा भारतीय रेशमकी साड़ी पहने रहती थीं। उनके भ्रमरकृष्ण सुदीर्घ केश घुटनों तक पहुंचते थे और उनकी देहलताको घेरे रहते। उन्हें देखनेसे यही अनुभव होता कि वह अभी एक बालिकामात्र हैं। वह बहुत कम बोलती थीं, और जो-कुछ बोलती भी थीं तो अत्यन्त मृदु-मधुर स्वरमें। उनके मुखका शब्द कानोंमें वीणा-निनादकी तरह पहुंचता था। वह एकान्तमें अकेले रहना ही पसन्द करती थीं।

श्रीमती सरोजिनी नायडू

श्रीमती नायडूकी बुद्धिमत्ता, प्रकाण्ड ज्ञान तथा मानसिक परिणतिका वर्णन करते हुए आर्थर साइमन्स अन्तमें लिखते हैं—"सरोजिनीके स्वभावकी एक विशेषताने मुझे बहुत आकृष्ट किया था; वह विशेषता थी—उनके मनकी प्रबल आत्मनिमग्नता। उनकी इस मानसिक गम्भीरतामें समस्त तुच्छ, तथा अस्थायी बातें विलीन हो जाती थीं। उनका शरीर सदा अस्वस्थ रहता था, और मानसिक क्लेश भी उन्हें यथेष्ट था; पर क्या शारीरिक, क्या मानसिक, कोई भी कष्ट इस ध्यानरता मनस्विनीको विचलित नहीं कर सकता था।"

यूरोप-निवासके दर्मियान एक बार श्रीमती नायडू इटलीके दर्शनके लिए गयी थीं। इटलीके उज्ज्वल प्राकृतिक सौन्दर्य तथा अपूर्व कला-वैभवने उनके चित्तको तरङ्गित कर दिया। उस अवर्णनीय सौन्दर्यसे विह्वल होकर उन्होंने उस समय जो पत्र लिखे थे उनसे उनकी तत्कालीन मानसिक स्थितिका परिचय मिल सकता है।

१८९८ में श्रीमती नायडूका स्वास्थ्य फिर खराब हो गया। उन्हें स्वदेश वापस आना पड़ा। इसी वर्ष दिसम्बरके महीनेमें उन्होंने समस्त सामाजिक आपत्तियोंकी अवज्ञा करके डाक्टर नायडूके साथ विवाह कर लिया। उनके एक पत्रसे उनके विवाहित-जीवनके सुखका कुछ परिचय पाया जाता है। इस पत्रमें अपने भग्न स्वास्थ्यके प्रति दुःख प्रकट करके वह लिखती हैं—"मुझे केवल अपने स्वास्थ्यका ही दुःख है, अन्यथा मैं हर तरहसे सुखी हूं। मेरे छोटे नीड़में शैली (Shelley) वर्णित सुख-देवीका निवास है—उद्यानमें विहगके कल-कूजन तथा शिशुके सुन्दर मधुर हास्य-कलरवसे मेरा कुटीर सदा मुखरित रहता है।"

जब श्रीमती नायडू हैदराबादमें रहती थीं, तभीसे उनके जीवनमें सेवा-भाव जागरित हो गया था। Dever लिखित 'भारतमें ब्रिटिश महिला' नामक ग्रन्थ पढ़नेसे हमें उनके इस जीवनके एक पहलूका परिचय मिलता है। उक्त लेखक सरोजिनी नायडूके सम्बन्धमें लिखता है—"श्रीमती नायडू इस समय हैदराबादमें रहती हैं। इस शहरकी पर्दा-नशीन महिलायें अरबी तथा फारसी भाषाओंसे अच्छी जानकारी रखती हैं। केवल यही नहीं, प्राच्यकी सभी भाषाओंके उच्चकोटिके साहित्यसे उनका परिचय है। इस शहरमें श्रीमती नायडूने भारतीय तथा यूरोपियन, दोनों समाजोंमें एक विशेष स्थान अधिकार कर लिया है। सभी मुक्तकण्ठसे उनकी कविताके सौन्दर्यकी प्रशंसा करते हैं। अन्तःपुरमें निवास करनेवाली पर्दानशीन महिलाओंके ऊपर भी इनका बड़ा प्रभाव है।" एक समय श्रीमती सरोजिनी नायडूकी जो कीर्ति-कौमुदी केवल हैदराबादमें आबद्ध थी वह थोड़े ही समयके अन्दर समग्र पृथ्वीमें परिव्याप्त हो गयी। आज वह एक भुवन-विख्यात वाग्मी तथा देशसेविका हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यूरोपमें वह लज्जाविनम्रा, एकान्तप्रिय किशोरीके रूपमें निवास करती थीं, आज अपनी अप्रतिहत तेजस्वितासे समस्त देशके असंख्य आर्त नर-नारियोंके हृदयोंमें जीवनी शक्तिका सञ्चार कर रही हैं। अपनी सारी कवि-प्रतिभा उन्होंने देशमाताके काममें उत्सर्गकर दी है। भारतके राजनीति-आकाशमें आज कई वर्षोंसे श्रीमती नायडू एक उज्ज्वल प्रतिभाशाली ज्योतिकी तरह आलोकित हो रही हैं। लोगोंको आश्चर्य होता है कि वह कुसुम-सुकुमार-देहलता-विशिष्टा, भाव, सौन्दर्य तथा स्वप्नराज्यमें विचरण करनेवाली कवयित्रीने क्या प्रेरणा पाकर राजनीतिके रूखे क्षेत्रमें प्रवेश किया? यह बात आश्चर्यकी हो है, सन्देह नहीं; पर साथ ही इस बातपर भी ध्यान देना चाहिए कि उनका कवि-हृदय भावुक होनेसे स्वदेशके दुःखके कारण स्वभावतः विगलित हो गया था।

श्रीमती नायडूकी बाल्य-रचनायें कोई विशेष महत्त्व नहीं रखतीं। उस समयकी अधिकांश कवितायें शैली तथा टेनीसनके अनुकरणमें उन्होंने लिखी थीं। उनकी कविताओंके जो तीन संग्रह प्रकाशित हुए हैं, उनमें इन कविताओंको स्थान न देकर श्रीमती नायडूने उचित विवेचनासे ही काम लिया है। श्रीमती नायडूने प्रारम्भमें अपनी कवितायें इंग-लैण्डके जगत्-प्रसिद्ध साहित्य-समालोचक एडमण्ड गोसे (Edmund Gosse) के निकट समालोचनार्थ भेजीं। उन कविताओंमें लालित्य यथेष्ट मात्रामें वर्तमान होनेपर भी वे विदेशी सांचेमें ढली हुई थीं, इसलिए गोसेने उनकी प्रशंसा करनेपर भी अपनी स्पष्ट सम्मति व्यक्त कर दी, और लिखा कि यदि वह अपनी कविताओंमें भारतीय भावोंको प्रस्फुटित करनेकी चेष्टा करें तो अत्युत्तम होगा। एडमण्ड गोसेके उपदेशानुसार तबसे श्रीमती नायडूकी कविताओंमें भारतीय सौन्दर्य तथा भारतीय संस्कृतिके भाव पाये जाने लगे। उन्होंने अपनी काव्य-पुस्तक The Golden Threshold एडमण्ड गोसेको समर्पित किया।

इंगलैण्डमें जब वह गयी थीं तो उनकी अवस्था केवल सोलह वर्षकी थी, यह बात पहले ही कही जा चुकी है। पर इसी अवस्थामें वहांके प्रायः सभी उदीयमान लेखकोंके साथ उनका परिचय हो गया। इसके अतिरिक्त गोसेके समान प्रसिद्ध समालोचकको उन्होंने सहृदय मित्रके रूपमें प्राप्त कर लिया। उन्नसवीं शताब्दीके अन्तिम कालमें इंगलैण्डके काव्य-गगनमें बड़ा परिवर्तन उपस्थित हो गया था। ठीक उसी समय श्रीमती सरोजिनी वहां उपस्थित थीं। इसलिए इस नयी काव्यधाराने स्वभावतः उनके हृदयको स्पर्श कर लिया था। उस समय तक टेनीसन ही इंगलैण्डके काव्य-प्रेमियोंके देवता थे। उनकी सुन्दर, स्वच्छ, निर्झरके समान स्पष्ट तरङ्गित शैली, सुन्दर, सुललित शब्द-योजना उस समयके काव्य-रसिकोंका आदर्श था। पर इसके साथ ही काव्यका एक नया स्कूल उस समय प्रवर्तित होने लगा था, जो प्राकृतिक सौन्दर्य-वर्णनकी अपेक्षा जन-कोलाहल-मुखरित, दीपावली-शोभित नगरीके मर्मकी बातोंको व्यक्त करनेका प्रयासी हो रहा था। श्रीमती सरोजिनीकी कविताओंमें इन दोनों भावोंका सम्मिश्रण पाया जाता है। रोमाण्टिक कवितामें श्रीमती नायडूने आशातीत सफलता प्राप्त की है। भारतके बाह्य जीवनकी कल्पनाका विचित्र रङ्ग देकर उन्होंने उसे नाना रूपोंमें अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक अङ्कित किया है। भारतके मजूर, किसान, संपेरा, यहां तक कि भिक्षुक जीवनको भी उन्होंने अवहेलनाकी दृष्टिसे नहीं देखा है। एक भिक्षुकके मुंहसे उन्होंने कहलवाया है—

What hopes shall we gather?
what dreams shall we sow?
Where the wind calls our wandering
footsteps—we go,
No love bids us tarry, no joy bids us wait,
The voice of the wind is the voice
of our fate.

—"हम किन आशाओंका सञ्चय करें? किन स्वप्नोंका बीज बोयें? जिधर हमें हवा ढकेलती है, उधरको हम भटकते चले जाते हैं। किसीका प्रेम हमें ठहरनेके लिए अनुनय नहीं करता, किसी सुखकी कल्पना हमें स्थिर रहनेको बाध्य नहीं करती; केवल वायुका शब्द ही हमारे भाग्यका उद्गार है।"

श्रीकृष्णकी लीलाके प्रति श्रीमती नायडूका कैसा प्रेम है, इससे अधिकांश पाठक परिचित होंगे। परवर्ती जीवनमें भी उन्होंने अपनी अनेक सार्वजनिक वक्तृताओंमें इस भावको व्यक्त किया। उनकी The Flute Player of



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



Brindaban (वृन्दावनका वंशीधारी) शीर्षक कविता भक्तिभावसे परिपूर्ण है। मीराकी तरह वह कहती हैं—

Still must I like a homeless bird
Wander forsaking all,—
The earthly loves, the worldly lure
That held my life in thrall.
And follow, follow, answering
Thy magical flute call.
No peril in the deep or height
Shall daunt my winged foot,
No fear of time, unconquered space
Or light untravelled route
Impede my heart that pants to drain
The nectar of thy flute.

"मैं एक निवास-हीन पक्षीकी तरह सब-कुछ त्यागकर तुम्हारी खातिर भटकती फिरूंगी। सांसारिक प्रेम तथा पार्थिव मायाको त्याग दूंगी—जिसने मेरा सारा जीवन बन्धनमें जकड़ लिया था; और तुम्हारी वंशीकी मोहनीसे पागल होकर उसीके अनुसरणमें चली चलूंगी। कोई विघ्न, कोई अन्ध गह्वर, कोई दुर्लंघ्य पर्वत मेरे सपक्ष पदोंको बाधा नहीं दे सकेगा; अनन्त काल तथा असीम देशका कोई भय मेरे प्रेमोन्मत्त हृदयको (जो कि तुम्हारी वंशीके अमृतमय रसको निचोड़नेके लिए पागल हो रहा है) रोक नहीं सकेगा।"

इस कवितामें एक प्रेम-विह्वल हृदयका उन्माद-भाव कैसी सुन्दरतासे व्यक्त हुआ है!

उनकी इहलौकिक प्रेम-सम्बन्धी कवितायें भी अपूर्व हैं, उनमें एक ऐसा नशा भरा है जो हृदयमें एक अद्भुत अतृप्तिका भाव उत्पन्न कर देता है। उदाहरणके लिए—

Hide me in a shrine of roses,
Drown me in a wine of roses
Drawn from every fragrant grove,
Bind me in a pyre of roses,
Burn me in a fire of roses,
Crown me with the rose of love.

"मुझे गुलाबोंके किसी मन्दिरमें छिपाओ, गुलाबोंके प्रत्येक सुवासित कुञ्जसे निकाली हुई शराबमें मुझे डुबा दो, गुलाबोंकी अर्थीमें मुझे बांध डालो, गुलाबोंकी अग्निमें मुझे जला दो, और प्रेमके गुलाबका ताज मुझे पहना दो।"

क्या यह कविता उमर खैयामके उन्मादसे किसी रूपमें कम है?

एक दूसरी इसी प्रकारकी कविताका नमूना लीजिये—

Take my flesh and feed your dogs
if you choose,
Water your garden trees with my blood
if you will,
Turn my heart into ashes, my dreams
into dust,
Am I not yours, o love, to cherish
and kill?

—"यदि तुम चाहो तो मेरा मांस लेकर अपने कुत्तोंको खिला दो, अपने उद्यानके वृक्षोंको मेरे रक्तसे सींच लो, मेरा हृदय जलाकर राख कर डालो, मेरे स्वप्नोंको धूलमें मिला दो,—प्यारे! क्या मैं सर्वतः तुम्हारी नहीं हूं? तुम्हें मुझे दुलार करने और मार डालनेका पूरा अधिकार है।"

स्थानाभावसे इस समय अधिक कविताओंका नमूना देनेमें हम असमर्थ हैं। यहांपर केवल इतना ही कह देना पर्याप्त समझते हैं कि सरस, सरल, स्वाभाविक सुन्दर कविताओंकी रचनामें सरोजिनी आधुनिक साहित्य-जगत्में अपना सानी नहीं रखतीं।

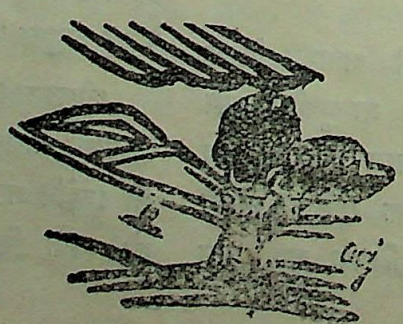

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आचार्य श्रद्धानन्दका तपोवन

## ( गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी )

श्री शङ्करदेव विद्यालङ्कार और श्री नरेन्द्रदेव विद्यालङ्कार

आजसे तीस वर्ष पहलेकी बात है। पञ्जाबका एक नामी वकील अपनी सम्पूर्ण सांसारिक आकांक्षाओंको परित्याग करके पञ्जाबके गांव-गांव और नगर-नगरमें भिक्षा-की झोली लेकर घूम रहा था। वह भूखा न था, बिना घरका न था। एक धनी और प्रतिष्ठित घरानेमें उसका जन्म हुआ था। ऐश्वर्यके सब सामान उसके पास थे, फिर भी वह झोली लिये हुए घर-घर भटक रहा था। किस लिए? अपने स्वार्थके लिए? नहीं नहीं, एक महान् साधनाके लिए!

उसके चेहरेपर सुन्दर दाढ़ी शोभा दे रही थी। आंखोंमें तेज और आकर्षण था। दर्शनीय मुखाकृति, दीर्घबाहु, उन्नत काया और विशाल वक्षस्थल, सभी चिह्न एक राजर्षिके थे।

वह तो था दीवाना! स्वप्न देखता था वह प्राचीन आर्यावर्तके! इस आर्यभूमिकी स्वाधीनताके! समस्त विश्वको आर्य-धर्मकी विजय गाथा सुनानेके! वह सोचता था—"भारतभूमिको जगाऊंगा, गुरुदेव दयानन्दके गीत गाऊंगा, तपोवन-आश्रम बसाऊंगा, और ब्रह्मचारी बना-ऊंगा। पर यह सब कैसे बने! हृदयकी ये बड़ी-बड़ी आकांक्षायें कैसे फलीभूत हों! ब्रह्मचारी किसको बनाऊं? आचार्य कहांसे लाऊं! आश्रम कहां बसाऊं और पैसा कौन दे?"

अन्तमें श्रद्धा और साहसका पुतला यह तपस्वी घरसे निकल पड़ा। इसने भीष्म-प्रतिज्ञा की—"जब तक तीस हजार रुपये एकत्र नहीं कर लूंगा, घरका मुख न देखूंगा।" सप्तसिन्धु ( पञ्जाब ) की भावुक और वीर-हृदय प्रजाके प्रति इस राजर्षिने पुकार की।

* * *

वह सचमुच दीवाना था। उसे दुनियाकी जरा भी परवा न थी। तब लोग उसे सत्रहवीं सदीका कहा करते थे, परन्तु वह तो अपनेको हजारों वर्ष पुराना माननेको तैयार था। पञ्जाबके एक प्रसिद्ध नगरकी एक बड़ी दूकानके सम्मुख खड़े होकर उसने अलख बजायी। वह बिलकुल अकेला था। दूकानदारोंने उसे कौतूहलके साथ देखा—यह कैसा प्राणी है? चेहरेपर मुसकराहट लाकर वे उसे बैरंग ही अगली दूकानपर जानेके लिए कहने ही वाले थे कि उसकी ज्योतिपूर्ण आंखोंमें दिव्य आभाकी झलक देखकर वे स्तब्ध-से रह गये! एकने चुपकेसे सन्दूकमेंसे १०) लाकर उसकी झोलीमें डाल दिये! "भगवान् तुम्हारा कल्याण करे"—कह-कर वह अगली दूकानपर चल दिया। दोनों दूकानदार बाहर निकलकर आश्चर्यपूर्ण नयनोंसे उसे तब तक देखते रहे जब तक कि वह उनकी आंखोंसे ओझल नहीं हो गया। वह केवल दीवाना ही नहीं था, साथ ही वह एक विचित्र "भिख-मङ्गा" भी था।

आत्मविश्वासी और पुरुषार्थी इस तपस्वीने थोड़े समयमें ही तीस हजार रुपये एकत्र कर लिये। "रुपये तो आये, पर आश्रम कैसे और कहां बसाऊं?"—वह सोचने लगा।

* * *

सन् १९०२ का साल है। एक तपस्वी हाथमें 'ॐ' की ध्वजा लेकर हरिद्वारके समीप हिमालयके जङ्गलमें जा रहा है। साथ ही १०-१५ बालक भी उसके पीछे-पीछे जा रहे हैं। अन्तमें पुण्यसलिला भागीरथीके तीरपर कांगड़ी गांवके पास उसने पड़ाव डाला। गङ्गाके तीरपर आश्रम-कुटीर तैयार किये गये। इस प्रकार भारतके सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षणालयका प्रारम्भ होता है। जहां एक समय दिनमें भी दिया जलानेकी आवश्यकता पड़ती थी और जहांपर जानेके लिए बड़े साहसी और धैर्यशाली लोग भी भय खाते थे वहां आज विश्वविख्यात विश्वविद्यालय---कांगड़ी गुरुकुल---शोभित हो रहा है। यह सब उसी राजर्षिकी जीवन-साधना-का फल है जो आगे जाकर अमर-कीर्ति ऋषि श्रद्धानन्दके नामसे विख्यात हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उदयाचलसे प्रभातकी लहरें आ रही हैं। सूर्योदयकी रम्य किरणोंसे आश्रम शोभायमान है। भागीरथीके तीरपर यज्ञमण्डपमें दस-पन्द्रह बालक बैठे हुए हैं। हवनसे आश्रमका वायुमण्डल सुवासित हो रहा है। आज बालकोंके ब्रह्मचर्य-व्रत ग्रहण करनेका दिवस है। अग्निकुण्डमें घृतकी आहुतियां डाली जाती हैं। "वेदारम्भ संस्कार" प्रारम्भ हो रहा है। आचार्यने शिष्यके हृदयपर हाथ रखकर कहा—"त्वत् चित्तं अनुचित्तं मेऽस्तु, मम वाचं एकमना जुषस्व" हे सौम्य, तेरे हृदयको मैं अपने हृदयके अधीन करता हूं। तेरा चित्त सदा मेरे चित्तके अनुकूल बना रहे!"

इसके बाद बालकोंने दण्ड लेकर गुरुकी परिक्रमा की और आचार्यने उनको ब्रह्मचर्यका उपदेश देकर आशीर्वाद दिया—"पुत्रो, तुम सब १०० वर्ष तक आयुष्य लाभ करके बलशाली और ज्ञानशाली बनो! तुम्हारी विद्या तेजस्वी होवे---तेजस्विनावधीतमस्तु।"

इस प्रकार पहले दीक्षाव्रतकी समाप्ति हुई। गुरुकुलका प्रारम्भ हुआ! आचार्यका स्थान स्वयं महात्मा मुंशीरामजीने लिया और सब कार्य नियमपूर्वक चलने लगे। शिक्षणका क्रम प्राचीन प्रणालीके अनुसार रखा, चारित्र्य तथा ज्ञान दोनोंको उपयुक्त स्थान दिया गया। तो भी नवीन (जिन्हें कि भूलसे नवीन विषय कहा जाता है) विज्ञान, कला और साहित्यके द्वार बन्द नहीं किये गये। आंग्ल (अंगरेजी) भाषा और आंग्ल साहित्यको भी योग्य स्थान दिया गया। शिक्षणके विषय निम्नलिखित रखे गये—

१—शारीरिक व्यायाम, आसन, प्राणायाम, सन्ध्या, अग्निहोत्र तथा ब्रह्मचर्यके नियमोंका पालन।

२—प्राचीन वैदिक साहित्य तथा संस्कृत साहित्य।

३—इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति-शास्त्र, पाश्चात्य दर्शन-शास्त्र, रसायनशास्त्र, गणितशास्त्र, कृषिशास्त्र आदि हिन्दी भाषाके माध्यम द्वारा।

४—आंग्ल भाषा तथा आंग्ल साहित्य।

* * *

आत्मिक, मानसिक और शारीरिक—तीनों प्रकारके विकासके लिए गुरुकुलकी दिनचर्याका महत्त्व है। ब्रह्मचारी प्रकृतिकी गोदमें रहते हैं, प्रकृति द्वारा उनके जीवनको नैसर्गिक प्रेरणायें तथा शिक्षायें प्राप्त होती हैं। ब्रह्मचारी प्रति दिन बड़े सवेरे—ब्राह्म-मुहूर्तमें—जागते हैं। जागकर प्राभातिक प्रार्थना करके शौच, दन्तधावन तथा व्यायाम करके शीतल जलसे स्नान करते हैं। उसके अनन्तर सामूहिक प्रार्थना (सन्ध्या) और अग्निहोत्र करके थोड़ा प्रातःराश (जलपान) करके विद्यालयमें जाते हैं। वहांपर सामान्यतया ११ बजे तक गुरुजनोंके पास अध्ययन करते हैं। ग्रीष्म ऋतुमें बहुधा ब्रह्मचारी वृक्षोंकी शीतल छायामें बैठकर ही अपने उपाध्यायोंसे पाठ लेते हैं। तदनन्तर मध्यान्ह-कालिक भोजन होता है। भोजनके उपरान्त ब्रह्मचारी विश्राम और स्वाध्याय करते हैं। पुस्तकालयमें जाकर पुस्तक लेने तथा निज अध्ययन करनेका भी यही समय है। सांझ होते ही पुनः नैत्यिक कार्य प्रारम्भ होते हैं। शौचसे निवृत्त होकर हरेक ब्रह्मचारी खेलनेके लिए आश्रमसे निकलता है और अपने-अपने निश्चित क्रीड़ाक्षेत्रमें पहुंच जाता है। गुरुकुलीय जीवनमें इन खेलोंका बहुत महत्त्व है। गुरुकुलमें सभी प्रकारके सामूहिक खेल (क्रिकेट, हाकी, फुटबाल आदि, जिन्हें लोग भूलसे विदेशी खेल कहते हैं) खेले जाते हैं। इसके अतिरिक्त सभी प्रकारके देशी खेल, कुश्ती, कबड्डी, खिड़की, बन्दर-किला, भण्डारी, आटापाटा तथा आसन, दण्ड, बैठक, दौड़, लाठी, बनेठी, लेजिम आदि खेलोंमें ब्रह्मचारी खूब भाग लेते हैं। ग्रीष्म ऋतु तथा वर्षा ऋतुमें ब्रह्मचारी गङ्गामें खूब तैरते हैं। गङ्गा समीप होनेके कारण ब्रह्मचारियोंने तैरनेकी कलामें अच्छी निपुणता प्राप्त की है। सामान्यतया गुरुकुलका प्रत्येक ब्रह्मचारी ४-५ मीलकी लम्बी तैराई तैर सकता है। विजयादशमी, दीपावली, वसन्तपञ्चमी आदि पर्वोंपर इन सब खेलोंका दङ्गल (सान्मुख्य) किया जाता है और ब्रह्मचारियोंकी प्रतियोगितायें ठनती हैं। वर्षमें एक बार 'श्रद्धानन्द क्रीड़ा-सान्मुख्य' का एक सप्ताह तक आयोजन किया जाता है, जिस समय ब्रह्मचारी भिन्न-भिन्न क्रीड़ाओंमें अपनी चतुराई दिखाते हैं। हाकी आदि क्रीड़ाओं-में गुरुकुलकी क्रीड़ामण्डलीने बाहर जाकर कई टूर्नामेण्टोंमें विजय प्राप्त किया है और वहांसे विजय-चिह्न लेकर आये हैं। अस्तु।

* * *

धीरे-धीरे गुरुकुलका नाम फैलता गया और छात्रोंकी संख्यामें भी वृद्धि हुई। जो लोग गुरुकुल-शिक्षण-पद्धतिपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वास नहीं रखते थे वे भी इसके प्रशंसक और भक्त बन गये। थोड़े ही वर्षोंमें ब्रह्मचारियोंकी संख्या २०० तक पहुंच गयी। सन् १९०९ में गुरुकुलमें महाविद्यालय विभाग (College) भी खोला गया और उच्च शिक्षण भी प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालयमें वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य और इंगलिश साहित्य, इन तीन विषयोंको आवश्यक (Compulsory) रखा गया और ऐच्छिक रूप (optional) से लेनेके लिए ये विषय रखे गये—इतिहास, अर्थशास्त्र, राजशास्त्र, समाजशास्त्र, पाश्चात्य दर्शन, रसायनशास्त्र, गणितशास्त्र तथा कृषिशास्त्र। शिक्षणका माध्यम कालेजमें भी हिन्दी भाषा (जिसे श्री स्वामीजी सदा 'आर्यभाषा' के नामसे ही पुकारते थे) ही रखी गयी। उच्च शिक्षण देशी भाषाओंके द्वारा दिया जा सकता है, इस सिद्धान्तको भारतीय विद्वान् अब मानने लग गये हैं। भारतमें गुरुकुल विश्वविद्यालय सबसे पहली संस्था है जिसने देशी भाषा द्वारा ऊंची शिक्षा देनेके सिद्धान्तको सबसे पहले सफलतापूर्वक सिद्ध करके दिखाया है। कलकत्ता यूनिवर्सिटीके स्वर्गीय कुलपति श्री आशुतोष मुखोपाध्याय, माननीय श्रीनिवास शास्त्री तथा माइकेल सेडलर प्रभृति शिक्षण-विद्या-विशारद गुरुकुलको देखकर ही इस बातपर विश्वास ला सके थे कि उच्च शिक्षणका माध्यम देशी भाषायें हो सकती हैं। सर माइकेल सेडलर महोदयने गुरुकुल महाविद्यालयका अवलोकन करके कहा था—"The experiment of imparting higher education through the vernaculars had been pre-eminently successful in the Gurukul"

सच पूछा जाय तो गुरुकुल इस युगमें शिक्षाकी एक अद्भुत क्रान्ति है और गुरुकुलके प्रतिष्ठाता आचार्य श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी सच्चे अर्थोंमें वर्तमान युगमें "राष्ट्रीय शिक्षाके आदि पिता" हैं। आज समय आ गया है कि भारतके अन्य शिक्षालय भी गुरुकुलके नियमों और सिद्धान्तोंको अपना रहे हैं।

* * *

सन् १९१२ में गुरुकुलने विश्वविद्यालयका रूप धारण किया और इस वर्षमें वहांसे विद्याभ्यास समाप्त करके दो स्नातक (श्री० इन्द्र विद्यावाचस्पति तथा श्री पं० हरिश्चन्द्र विद्यालङ्कार) बाहर निकले। ये दो स्नातक कौन हैं? ये हैं आचार्य श्रद्धानन्दके तेजस्वी सपूत। जिनमेंसे अध्यापक इन्द्रजी विद्यावाचस्पतिका नाम एक राष्ट्र-सेवक, समर्थ पत्रकार और विद्वान् लेखकके रूपमें भारत-विदित हो चुका है। हिन्दी-साहित्य-संसार तो उनके नामसे खूब परिचित ही है। अपनी छात्र-दशामें बनाया हुआ उनका मातृभूमिका वह वन्दना गीत—

"अयि मातृभूमि तेरे चरणोंमें शिर नवाऊं।
मैं भक्ति भेंट अपनी सेवामें तेरी लाऊं॥"

तो आज भारत-भूमिके कोने-कोनेमें गाया जाता है। इस समय तक, अर्थात् सन् १९१२ में गुरुकुलमें भारतके भिन्न-भिन्न प्रान्तोंसे आये हुए ३०० छात्र गुरुकुलाश्रमके पवित्र वायु-मण्डलमें गुरुजनोंके पास ज्ञानोपासना कर रहे थे और गुरुकुलका नाम देश-विदेशोंमें भी प्रसिद्ध हो चुका था।

वर्तमान समयमें गुरुकुलमें तीन महाविद्यालय हैं—

१—वेद महाविद्यालय (College of Vedic Studies)
२—गुरुकुल महाविद्यालय (Arts College)
३—आयुर्वेद महाविद्यालय (Medical College)

इन तीन कालेजोंकी पाठ-विधि, निरीक्षक तथा परीक्षकों आदिकी नियुक्ति 'गुरुकुल शिक्षापटल' की ओरसे होती है जिसमें अनेक विद्वान् और शिक्षा-विशारद महानुभाव रखे गये हैं। गुरुकुलकी परिचालिका सभा पञ्जाबकी आर्यप्रतिनिधि सभा है। गुरुकुलका आन्तरिक प्रबन्ध उक्त सभाकी अन्तरङ्ग सभा द्वारा नियुक्त मुख्याधिष्ठाता द्वारा किया जाता है।

वेद-महाविद्यालयमें वैदिक साहित्य, संस्कृत-साहित्य, भारतीय दर्शनशास्त्र तथा तुलनात्मक धर्मशास्त्रका विशेष अध्ययन होता है। तथा पूर्व-कथित ऐच्छिक विषयोंमेंसे एक विषय पढ़ाया जाता है। गुरुकुल महाविद्यालयमें वेद, दर्शनशास्त्र, संस्कृत साहित्य, हिन्दी साहित्य, आंग्लसाहित्य और एक ऐच्छिक विषय पढ़ाया जाता है। आयुर्वेद महाविद्यालयमें भारतीय तथा पाश्चात्य चिकित्सा-शास्त्र, औषध-विज्ञान, शल्य शास्त्र, स्वास्थ्यरक्षा शास्त्र आदिका तुलनात्मक अध्ययन होता है। तीनों महाविद्यालयोंका एक-एक अध्यक्ष (आचार्य) है, उसीकी अध्यक्षतामें उस-उस कालेजका कार्य चलता है। ये तीनों महाविद्यालय सफलतापूर्वक चल रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आज इस विशाल विश्वविद्यालयके सब विभागोंके सूत्र-धार ( मुख्य आचार्य ) आचार्य रामदेवजी हैं। पुण्यश्लोक स्वामी श्रद्धानन्दजीके बलिदानके बादसे गुरुकुलके प्राण, उसकी आत्मा, उसके सर्वेसर्वा श्री आचार्य रामदेवजी ही हैं। राष्ट्रीय शिक्षणके इस पुजारीने पिछले ३० वर्षोंसे गुरुकुल और आर्यसमाजकी सेवा करते हुए अपने खूनको पानी बना दिया है। यदि आप उनके हृदयको चीरकर देखें तो वहाँ 'गुरुकुल' लिखा हुआ दिखायी देगा।

इतिहास, समाजशास्त्र, फिलासफी, अंगरेजी साहित्य, और धर्मविज्ञानका यह महान् विद्वान् यदि चाहता तो किसी भी यूनिवर्सिटी या बड़े कालेजमें रहकर और ऊंचा वेतन प्राप्त करके कीर्ति कमा सकता था। लाहौरके कालेजों और गुरुकुलके बड़े पुस्तकालयोंकी उपर्युक्त विषयोंकी एक-एक पुस्तक इनकी पढ़ी हुई है। इतना विशाल है इनका वाचन और स्वाध्याय! एक बार पढ़ी हुई पुस्तककी हकीकतें इनकी स्मृतिमें पत्थरकी रेखाके समान अङ्कित हो जाती हैं। गुरु-कुल पुस्तकालयका इतिहास, राजनीति-शास्त्र, समाजशास्त्र, तत्त्वज्ञान और धर्म-विज्ञानकी एक-एक पुस्तकका नाम उसके कर्ताका नाम, प्रकाशकका नाम तथा पुस्तककी बातें तक इनको कण्ठाग्र हैं। इतिहासके तो यह महान् पण्डित हैं। हिन्दी भाषामें भारतवर्षका इतिहास बड़े-बड़े दस खण्डोंमें लिखनेका कार्य इन्होंने शुरू किया है, जिसमेंसे दो खण्ड प्रकट भी हो गये हैं। सरलता, साधुता, सादगी, सेवा, स्वाध्याय और राष्ट्र-भावनाकी तो मानो यह मूर्ति हैं। इन पंक्तियोंके लेखकोंको इस आचार्यवरके चरणोंमें बैठकर ज्ञानो-पासना करनेका सौभाग्य मिला है। वर्तमान युगमें राष्ट्रीय शिक्षणके उद्धार और उन्नतिके लिए अपनी सर्व प्रकारकी सेवायें अर्पित करनेवाले राष्ट्रीय शिक्षणके विधाताओंका जब कभी इतिहास लिखा जायगा तो उसमें इस तपस्वीका नाम और काम उज्ज्वल अक्षरोंमें लिखा जायगा। मातृभूमिका यह निरीह और सच्चा सेवक आज बन्दी-घरके सींकचोंके पीछे बैठा हुआ आत्म-साधना कर रहा है। उनके अभावमें गुरु-कुलके समस्त कार्योंका उत्तरदायित्वपूर्ण कंटीला ताज गुरु-कुलके सुयोग्य विद्वान् और तपस्वी स्नातक श्री पं० देवशर्मा-जी विद्यालङ्कारके सिरपर रखा गया है। वह सम्प्रति गुरुकुलके मुख्य आचार्य हैं। पिछले १९ वर्षोंमें गुरुकुल शिक्षाप्रणालीके महत्त्व और उपयोगिताको लोगोंने अच्छी प्रकार समझा है, और उसीका यह परिणाम है कि सम्प्रति भारतवर्षमें सब मिलाकर २०-२५ गुरुकुल चल रहे हैं जिनमेंसे आठ गुरु-कुलोंका कांगड़ीके विश्वविद्यालयसे सीधा सम्बन्ध है।

गुरुकुल धर्म, राष्ट्रीयता, ब्रह्मचर्य और भारतकी पुरातन संस्कृतिकी तीर्थ-भूमि है। अनेक भारतवासी तथा विदेशी ज्ञान-यात्री और विद्वान् गुरुकुलमें आकर वहांके शुद्ध, शान्त, एकान्त और सुन्दर वातावरणमें रहकर संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य, हिन्दी भाषा, भारतीय प्राचीन संस्कृति और शिक्षा-प्रणालीका निरीक्षण और स्वाध्याय करते रहे हैं! इंगलंण्डके प्रख्यात राजनीतिज्ञ और वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री रामजे मेकडोनाल्ड महोदय आजसे सोलह वर्ष पूर्व गुरुकुलमें आये थे। उन्होंने गुरुकुलके विषयमें अपने सुन्दर संस्मरण लिखे हैं। गुरुकुलका गम्भीर दृष्टिसे अवलोकन करके उन्होंने लिखा था—"The Gurukula is the most momentous thing in Indian education that has been done since Macauly sat down to put his opinion into minute in 1835."

इसी प्रकार अमेरिकन शिक्षण-शास्त्री मायरन फेल्प, दीनबन्धु एण्डरूज, मिस्टर पियर्सन, फ्रेञ्च तत्त्वज्ञ पाल रिचर्ड, मि० एफ० टी० ब्रुक, जर्मन विचारक मि० वे, हालैण्डके ज्ञानयात्री मि० कैरीयर, श्रीमती मीराबाई ( मिस स्लेड ), जापानी प्रोफेसर किमूरा, लद्दाके बौद्ध साधु तथा ब्रह्मदेशके बौद्ध भिक्षु इत्यादि अनेक परदेशी महानुभाव गुरुकुलमें निवास करनेके लिए आते रहे हैं। भारतवर्षके प्रायः सभी प्रमुख लोकनेता गुरुकुलका अवलोकन कर चुके हैं। महात्मा गांधी-जीके शब्दोंमें गुरुकुल एक सच्ची राष्ट्रीय संस्था है—"The best rasult of activity of the Arya Samaj is to be seen in the establishment and Conduct of the Gurukula. It is truly a National and Self-governing and Self-governed institution.

भारतीयताके वातावरणमें पुरातन और अर्वाचीन शास्त्रों और विद्याओंकी शिक्षा सबसे पहले गुरुकुलमें ही प्रारम्भ हुई है। गुरुकुलमें पूर्व और पश्चिमका अद्भुत मिश्रण है। प्राची और प्रतीची दोनों मिलकर भविष्यका निर्माण करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रातः वन्दनीय स्वामी श्रद्धानन्दजीको कांगड़ीकी भूमि अत्यन्त प्रिय थी। संवत् १९८१ की गङ्गा नदीकी बाढ़ने गुरुकुलको बहुत हानि पहुंचायी थी, तो भी उस पुण्यभूमिका महत्त्व कुछ कम नहीं हुआ है। हिमाचलकी छायामें हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियोंकी गुफायें और कुटियां बनी हुई थीं, जहांसे एक बार समस्त विश्वको शान्ति और प्रेमका पवित्र सन्देश मिला था, यह जानकर उन उपवनों और निकुञ्जोंकी ओर स्वभावतः प्रेमकी भावना उत्पन्न हो जाती है। हिमालय-रूपी स्वर्गमेंसे उतरकर आनेवाली देवनदी गङ्गा गुरुकुलमें आकर भारतभूमिका गान गाया करती है। हिमाद्रिके उच्च शिखर हृदयमें उन्नत भावनाओंको उपजाते हैं। संवत् १९८३ की वर्षा-ऋतुमें जापान देशके विद्वान् अध्यापक श्री किमूरा गुरुकुल विश्वविद्यालयमें "बौद्धकालिक भारत" पर व्याख्यान देनेके लिए आये थे। उस समय उन्होंने इस प्रकार अपने उद्‌गार प्रकट किये थे—"अपने अल्पकालके निवासमें मुझे यहांसे अनेक शिक्षायें मिली हैं, जो मेरी मातृभूमि जापानके लिए बिलकुल नवीन हैं। मैं आशा रखता हूं कि भविष्यमें जापानके बहुतसे विद्यार्थी गुरुकुलमें आकर भारतकी प्राचीन संस्कृतिका अध्ययन करेंगे।" इसी प्रकार कांगड़ी गुरुकुलकी गुर्जर प्रान्तीय शाखामें गुजरात विद्यापीठके भूतपूर्व आचार्य श्री गिडवानीने पधारकर कहा था—"भारतके तपोवनोंमें फिरसे आश्रमोंका प्रादुर्भाव होने लगा है, यह हमारी स्वाधीनताके उत्तम निशान हैं।"

× × ×

गुरुकुलका उद्देश्य देश, जाति, धर्म और समाजकी सेवा करनेवाले सच्चे सेवक और सच्चे नागरिक उत्पन्न करना है। अब तक गुरुकुल विश्वविद्यालयसे सवा दो सौ स्नातक निकल चुके हैं। गुरुकुल अपने उपर्युक्त उद्देश्यको पूर्ण करनेमें कहां तक सफल हुआ है, यह बात इतनेसे ही ज्ञात हो जायगी कि गुरुकुलके तीन-चौथाई स्नातक सम्प्रति राष्ट्र-सेवा, धर्म-सेवा, समाज-सेवा, साहित्य-सेवा और शिक्षणके कार्योंमें लगे हुए हैं। हिन्दी भाषाके उच्च-कोटिके साहित्यको समृद्ध करनेमें गुरुकुलके स्नातकोंका बड़ा हिस्सा है। हिन्दीकी उन्नत मासिक पत्रिकाओंमेंसे कोई भी ऐसी नहीं होगी जिसमें प्रतिमास स्नातकोंके लेख न निकलते हों। हिन्दीकी सभी उच्च साहित्य प्रकट करनेवाली ग्रन्थ-मालाओंको स्नातकोंने अपने उत्कृष्ट ग्रन्थोंसे सुभूषित किया है। वैदिक साहित्य, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र तथा विज्ञान आदि विषयोंपर गुरुकुलके स्नातकोंने उच्च-कोटिके जितने ग्रन्थ तैयार किये हैं उतने ग्रन्थ शायद ही किसी राष्ट्रीय और साहित्यिक संस्थाके तैयार किये होंगे। अकेले प्रो० इन्द्रजी वेदवाचस्पति तथा डा० प्राणनाथजी विद्यालङ्कार पी-एच० डी०, डी-एस० सी० ने ही इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीति-शास्त्रके विषयोंमें दो दर्जनसे अधिक ऊंची कोटिकी पुस्तकें लिखी होंगी। अभी हालमें ही "मुगल साम्राज्यका क्षय और उसके कारण" नामक इतिहासकी एक अपूर्व पुस्तकका प्रणयन करके प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पतिने हिन्दी-साहित्यमें वह स्थान प्राप्त किया है जो स्थान आंग्ल भाषाके साहित्यमें एडवर्ड गिब्बनका है। मङ्गलाप्रसाद पारितोषिककी प्रतिद्वन्द्वितामें दो विजेता गुरुकुल विश्वविद्यालयके उपाध्याय हैं--एक प्रो० सत्यकेतुजी विद्यालङ्कार तथा दूसरे प्रो० सुधाकरजी एम० ए०। अध्यापक सत्यकेतुजी विद्यालङ्कारकी लिखी हुई पुस्तक---'मौर्य-साम्राज्यका इतिहास' अपने विषयकी अनूठी पुस्तक है। उस विषयकी उस कक्षाकी पुस्तक अंगरेजीमें भी कम ही प्राप्त हो सकेंगी। श्री पं० जयदेवजी विद्यालङ्कार वैदिक साहित्यके समर्थ विद्वान् हैं। उन्होंने चार वेदोंका सरल हिन्दी भाष्य करनेका महान् कार्य उठाया है। अब तक वह तीन वेदोंका हिन्दी भाष्य प्रकाशित कर चुके हैं। अध्यापक श्री सत्यव्रतजी सिद्धान्तालङ्कार, अध्यापक श्री बुद्धदेवजी विद्यालङ्कार, जयचन्द्रजी विद्यालङ्कार, श्री पं० देवशर्म्माजी विद्यालङ्कार, स्नातक चन्द्रगुप्तजी विद्यालङ्कार आदि गुरुकुलके सुयोग्य स्नातकोंके नाम और कार्यसे हिन्दी-साहित्य-संसार परिचित है। गुरुकुलने हिन्दी-जगत्‌को श्री इन्द्रजी विद्यावाचस्पति, श्री सत्यदेवजी विद्यालङ्कार, श्रीरामगोपालजी विद्यालङ्कार, श्री भीमसेनजी विद्यालङ्कार, श्री सत्यव्रतजी सिद्धान्तालङ्कार, स्नातक प्रियव्रतजी वेदालङ्कार, श्री सत्यकामजी विद्यालङ्कार, श्री अमरनाथजी विद्यालङ्कार आदि अच्छे-अच्छे पत्रकार तथा लेखक दिये हैं। गुरुकुल इस बातका अभिमान कर सकता है कि उसके प्रत्येक छ स्नातकोंमेंसे एक स्नातक कृतिकार (लेखक या ग्रन्थकर्ता) है। पञ्जाब प्रान्तमें हिन्दीके प्रचारमें भी स्नातकोंका अच्छा हिस्सा है। पञ्जाब प्रान्तीय हिन्दी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साहित्य-सम्मेलनके प्रधानमन्त्री भी एक स्नातक (श्री पं० भीमसेनजी विद्यालङ्कार) हैं। धर्म-सुधारणा और समाज-सुधारणाके क्षेत्रमें भी स्नातकोंका बड़ा हिस्सा है। पञ्जाबमें धार्मिक कुरीतियों, सामाजिक रूढ़ियों एवं जात-पांतके झूठे बन्धनोंको नष्ट करनेके लिए अनेक स्नातक आर्य-प्रतिनिधि-सभा पञ्जाबकी अध्यक्षतामें काम कर रहे हैं। गुरुकुलके सुयोग्य स्नातक और वैदिक साहित्यके प्रचण्ड विद्वान् श्री पं० बुद्धदेवजी विद्यालङ्कार इस धर्म-सुधारणा-यज्ञके पुरोधा हैं। उन्होंने सप्त-सिन्धुकी उस पुरातन आर्यभूमिको इस समयमें आर्य-धर्मके जयकारोंसे गुंजा दिया है। दीनों और विधवाओंकी सेवाके लिए भी अनेक स्नातक काम कर रहे हैं। 'सर गङ्गाराम विधवा सहायक सभा' की अध्यक्षतामें सम्प्रति आठ स्नातक विभिन्न-प्रान्तोंमें सेवा-कार्य कर रहे हैं। गांवोंकी सेवा और सुधारणाका काम भी स्नातकोंने अपने हाथमें ले रखा है। गुरुकुलके समीप ही 'गांधी सेवा-आश्रम' नामकी एक संस्था स्थापित है और उसके द्वारा स्नातक ग्राम-सेवाका कार्य कर रहे हैं। इस संस्थाके सञ्चालक गुरुकुलके सुयोग्य स्नातक श्री पं० देवशर्माजी विद्यालङ्कार हैं।

सन् १९३० के स्वाधीनता-संग्राममें रुड़की तहसीलके अन्दर स्नातकों तथा गु० कु० महाविद्यालयके ब्रह्मचारियोंने अपूर्व कार्य किया था। आज वहांपर जो जागृति दिखायी देती है उसका सारा श्रेय गुरुकुलको ही है। उसी सेवा-यज्ञमें गुरुकुलके दो उदीयमान ब्रह्मचारी अपने देहका बलिदान देकर स्वर्ग सिधारे। और कितने ही स्नातक व ब्रह्मचारी बन्दीघरोंमें गये थे। इस वर्ष पुनः देशकी राष्ट्रसभाकी आज्ञा होते ही गुरुकुलके पुत्रोंने राष्ट्र-यज्ञमें अपनी सेवायें दे दी हैं और वे सम्प्रति बन्दीगृहकी कोठरियोंमें बैठे हैं। तात्पर्य यह कि सेवाका कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं बचा है, जिसमें गुरुकुल तथा उसके पुत्रोंने हिस्सा न लिया हो। अस्तु।

× × ×

उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनां—
धियो विप्रा अजायत ॥यजुर्वेद॥

आर्यावर्तकी संस्कृतिके उद्गम स्थान तपोवन थे। प्रकृतिके विविध रूपोंमें विशाल दृष्टिसे परमात्म-शक्तिका सूक्ष्म दर्शन करनेवाले आर्य ऋषियोंने आर्य-संस्कृतिका निर्माण किया था। वे तपस्वी किसी सुन्दर सरिताके तीरपर वन-प्रदेशमें अपने आश्रम बनाते थे तथा सादा एवं पवित्र जीवन बिताकर तत्त्वज्ञानके महान् प्रश्नोंपर विचार करते थे। उनके आश्रमोंका वातावरण विविध विहङ्गोंके मधुर-कूजनसे हृदयङ्गम रहता था। हरिण निर्भय होकर उन तपो-वनोंमें विहार करते थे। ब्रह्मचारियोंकी वेद-ध्वनिसे वन-प्रान्तर गूंजते रहते थे तथा सुवासित फल-फूलोंसे उपवन महकते रहते थे। होम-धूमसे दिशायें पवित्र रहती थीं। तपोवनोंसे इस सादे पवित्र और निर्दोष वातावरणमें आर्य-मुनियोंने जीवन-मात्रकी मौलिक एकताका साक्षात्कार किया था।

गुरुकुल भी इन्हीं आदर्शोंको माननेवाला है। इसीलिए शहरोंकी भीड़ और कोलाहलसे दूर रहकर वह इस युगमें भी उसी पुरातन साधनाको सिद्ध किया चाहता है। गुरुकुल अपने ब्रह्मचारियोंको प्रकृतिकी गोदमें रखकर स्वाधीनता और निर्भयताका पाठ सिखाता है। गुरुकुलके ब्रह्मचारी निर्भय होकर हिमालय और गङ्गाके सघन वनोंमें भ्रमण करते रहते हैं। उन्हें वन-पशुओंका भी किसी प्रकारका भय नहीं है। वे बाघ और चीतेको लाठीकी मारसे ही ठण्डा कर चुके हैं। साथ ही प्रकृतिमें रहकर उन्होंने गर्मी-सर्दी, वर्षा-आंधी और धूप-छांह सहनेकी शक्ति भी प्राप्त की है। सात्विक और पवित्र जीवन बिता कर ज्ञान और शक्तिकी उपासना करना उनका उद्देश्य है। गुरुकुल विश्वविद्यालयकी ध्यानमुद्रा है—"ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्यु मुपाघ्नत ॥"

गुरुकुलका प्राकृतिक वायुमण्डल छात्रोंको पुस्तकोंका गुलाम नहीं बनाता। यह स्वाधीनतापूर्वक विचार करनेकी शक्ति देता है। दासत्वके विरुद्ध दासताके विचारोंके विरुद्ध गुरुकुल एक क्रान्ति है। वहांका वह स्वाधीनतामय वायु-मण्डल इस क्रान्तिके लिए योग्य स्थान है। वह स्वा-धीनतामय वायु मण्डल कैसी-कैसी भावनाओंको उत्पन्न करता है, उसे जाननेके लिए उस गानकी कुछ कड़ियाँ सुनिये—जिसे गुरुकुल माताके पुत्र प्रतिदिन दैनिक प्रार्थनाके समय गाया करते हैं—

हे प्रेममय प्रभो, तुम्हीं सबके आधार हो।
तुमको परम पिता प्रणाम बार-बार हो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



संदेश देश देशमें वेदोंका दे सुना।
समभाव और प्रेमका सबमें प्रसार हो॥
असहायके सहाय हों उपकार हम करें।
अभिमानसे बचें, हृदय निर्भय उदार हो॥
फूले फले संसारमें यह रम्य वाटिका।
कर्तव्यका अपने सदा हमको विचार हो॥
स्वाधीनताके मन्त्रका जप हम सदा करें।
सेवामें मातृभूमिकी तन-मन निसार हो॥

—श्री वागीश्वर विद्यालङ्कार रचित।

\+ × +

उषाकी गोदमें बैठकर, देवलोकसे उतरती हुई बालरविकी सवारीका दर्शन करना हो तो गुरुकुलमें आकर कीजिये। "मलयज-शीतलाम्" जैसी मातृभूमिकी झांकी देखनी हो तो गुरुकुलकी पर्वत-मालाको देखिये! गुरुकुल भव्य भावनाओं और कविताकी स्वाभाविक जन्मभूमि है। वहांकी प्राकृतिक सुषमा और मनोहर दृश्योंको देखकर सहृदय मनुष्यकी वाणी स्वतः ही फूट पड़ती है। देखिए! एक कुल-पुत्र अपनी गुरुकुल माताकी वन्दनामें कैसी भाव-भरी कुसुमाञ्जलि अर्पित करता है—

सबसे निराला है तेरा रंग हिमालयवाले।
तुझसा भूतलमें नहीं कोई हिमालयवाले॥
जिसपै तेरा रंग चढ़ा फिर न उतरने पाया।
यह है तेरे हाथकी तासीर हिमालयवाले॥
घाटियां तेरी, तेरे फूल, ये तेरे जङ्गल।
हैं लुभा लेते मेरे दिलको हिमालयवाले॥
स्वर्गसे नीचे उतर तेरे वनोंमें गङ्गा।
गाया करती है तेरे गीत हिमालयवाले॥
जन्म यहीं, मृत्यु यहीं, खेलूं यहीं आ-आकर।
हंसना रोना हो यहीं मेरा हिमालयवाले॥

—श्री विद्यानिधि सिद्धान्तालङ्कार रचित।

गुरुकुल आर्यसमाजकी सर्वश्रेष्ठ विभूति है। वह इस युगमें भारत-भूमिका सबसे पहला राष्ट्रीय ज्ञान-मन्दिर है। धर्म, राष्ट्रीयता और ब्रह्मचर्यकी वह तीर्थ-भूमि है। आत्मिक और मानसिक शान्तिके यात्रियोंका वह शान्ति-निकेतन है। सत्य और धर्मकी वेदीपर आत्मार्पण करनेवाले वीरोंका वह सत्याग्रहाश्रम है। शान्तिकी पवित्र मन्दाकिनी वहां बह रही है। आत्मवीर ऋषि श्रद्धानन्दकी वह तपोभूमि है।

सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

——


तारका पता-'Shilpadhar' फोन ३९३३ कलकत्ता

❀ बंगाल स्टोर्स ❀

स्वदेशी वस्तुओंका डिपार्टमेण्टल स्टोर्स

८ए, चौरंगी प्लेस, कलकत्ता।

—बंगाल स्टोर्स—

में सब आवश्यक वस्तुएं खरीद कर

लाभ और आनन्द प्राप्त कीजिये।

| | | |
|---|---|---|
| सूती कपड़ा | | बर्तन सब प्रकारके |
| रेशमी कपड़ा | | चाइना बर्तन |
| ऊनी वस्त्र | | शीशेके बर्तन |
| होजियरी माल | | खेलके सामान |
| पोशाक | | खिलौने |
| टोपी साफा आदि | | स्टेशनरी |
| जूते | | सुगन्धि-द्रव्य |
| चमड़ेकी वस्तुएं | | शृङ्गार सामग्री |
| क्राकरी | | सीने और बुननेकी चीजें |
| छूरी कैंची आदि | मालिक | आदि आदि |

केशोराम काटन मिल्स लिमिटेड,

कलकत्ता।




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# श्रान्त-पथिक

आयी सन्ध्याकी वेला ।
"मैं पथपर खड़ा अकेला ।"

\+ + +

ओ उषा ! सप्त रंगवाली !
अब कहां गयी वह लाली ?
आकृति काली कर डाली ।
क्या रूठ गया वनमाली ?
खो आयी कहां उजेला ?
"मैं पथपर खड़ा अकेला ।"

[ २ ]

इस पथसे निरे बटोही—
पदचारी , अश्वारोही ।
कुछ प्रेमी थे कुछ द्रोही—
इनके विभेद थे दो ही ।
यह मेल-बिदाका मेला
"मैं पथपर खड़ा अकेला ।"

[ ३ ]

किसके संगमें आया था !
क्या कहूं कि क्या लाया था !
इस मनको समझाया था ।
यह समझ न कुछ पाया था ।
अब नहीं पास है धेला ।
"मैं पथपर खड़ा अकेला ।"

[ ४ ]

क्या फूल रही फुलवारी ?
कुसुमित है क्यारी-क्यारी ।
आयी पतझड़की बारी ।
मुरझायीं लता बिचारी ।
सूखा बेला अलबेला ।
"मैं पथपर खड़ा अकेला ।"

[ ५ ]

वह सुरा—सुराकी प्याली !
वह नयी—पिलानेवाली !
बोतल मदकी है खाली ।
लुट गयी—लुटानेवाली ।
अन्तर्हित हुआ झमेला ।
"मैं पथपर खड़ा अकेला ।"

[ ६ ]

कलियोंकी नयी जवानी ;
मोतीका सुन्दर पानी ;
जिसकी दुनिया दीवानी ;
उसकी रह गयी कहानी ।
क्या खेल अनोखा खेला !
"मैं पथपर खड़ा अकेला ।"

\+ + +

आयी सन्ध्याकी बेला—
"मैं पथपर खड़ा अकेला ।"

—'अभिराम'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# महन्तजीका मन्दिर

श्री अवध उपाध्याय

भूपति महन्तने बड़े जोरसे कड़ककर कहा—"क्या कहा, दोनों बिलटियोंमें सिर्फ एक-एक पत्थरकी चक्की आयी है ? यह असम्भव है। जिन बिलटियोंके किरायेमें मेरे १२०३) रु० लग गये, उनमें सिर्फ पत्थरकी एक-एक चक्की है ! रामलोचन, क्या पागल तो नहीं हो गये हो ?"

रामलोचनने बड़ी नम्रतासे कहा—"पूज्य महन्तजी ! मैंने इस सम्बन्धमें कई बार स्टेशन-मास्टरसे पूछा; वह कहते हैं, इन बिलटियोंमें पत्थरकी एक-एक चक्की है और कुछ नहीं।"

महन्तजीने बिगड़कर कहा—"तो अभी काशीनाथको बुलाओ। मेरी समझमें नहीं आता यह क्या मामला है। उससे अवश्य पता चल जायगा।"

रामलोचन चपरासीने फिर नम्रतापूर्वक निवेदन किया—"श्रीमान्, वह तो अब यहां नहीं है। जब उसने मुझसे रुपया लिया तो माल छुड़ानेके लिए स्टेशन गया; परन्तु फिर वहांसे लौटा ही नहीं।"

महन्तजीने आवेशमें आकर कहा—"तो तुमने उसे १२०३) रुपया क्यों दे दिया ? मैंने तो तुमसे साफ-साफ कह दिया था कि बिना माल देखे उसे रुपया मत देना।"

रामलोचनने कहा—"पूज्यवर ! चार-पांच दिन तक मैं उसके साथ ही स्टेशनपर पड़ा रहा। हम लोग एक साथ ही स्टेशनपर माल छुड़ानेके लिए जाते थे। मालबाबू सदा यही कहते थे कि अभी माल नहीं आया है, दो-एक दिनमें आ जायगा। छठें और सातवें दिन मैं उसके साथ इस सम्बन्ध-में पूछनेके लिए नहीं गया। आठवें दिन जब मैं भोजन बना रहा था, काशीनाथ मेरे पास आया, और बड़े जोरसे कहने लगा—'बाप रे बाप ! कई दिनसे सामान आ गया है, और माल जल्दी नहीं छुड़ानेके कारण रोज जुर्माना हो रहा है; परन्तु आप माल नहीं छुड़ाते। महन्तजीके सामने इन सब बातोंके जिम्मेदार आप होंगे, मैं कुछ नहीं जानता।' इत्यादि-इत्यादि। मैंने समझा कि सचमुच माल आ गया है, मैंने सब रुपया उसे दे दिया।"

भूपति महन्तने गरजकर कहा—"अवश्य तुम दोनोंने मिलकर सब रुपया उड़ाया है। यदि ऐसी बात न होती तो बिना माल देखे तुम उसे रुपया क्यों देते ? यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो इसका मतलब यह हुआ कि उस ठगने तुम्हें और हमें दोनोंको ठग लिया। परन्तु आदमी तो वह ठग नहीं मालूम होता था !"

रामलोचनने विनती की—"महाराज ! केवल एक महीनेकी जान-पहचानसे ही हम लोगोंने उसका विश्वास कर लिया। यही भारी गलती हुई।"

[ २ ]

भूपति महन्तने मुझे बुलाकर कहा—"महोदय, मैंने आपकी बड़ी प्रशंसा सुनी है। इसलिए आपको कष्ट दिया है। एक महीना हुआ, चुनारसे एक कारीगर मेरे पास आया। उसने अपना नाम काशीनाथ बतलाया। मैं पत्थर-का एक मन्दिर बनवाना चाहता था। उसने सब सामान देनेका वादा किया। उसने यह भी कहा कि चुनारमें मेरी पत्थरकी एक भारी दूकान है, मैं एक अच्छा कारीगर हूं। मैंने उसकी बातोंमें विश्वास कर लिया और उसे अपने पुराने मन्दिरके तोड़नेकी आज्ञा दे दी। उसने एक महीनेमें सारे मन्दिरको गिरवा दिया और मुझसे बहुत कम दाम लिया। मेरा पूरा विश्वास है कि यदि स्वयं मैं उसका प्रबन्ध करता तो मन्दिरके गिरवानेमें दो सौ रुपयेसे कम न लगते, परन्तु उसने तीस रुपयेमें सब काम कर दिया। अब उसने मुझसे मन्दिरका 'डिजाइन' पूछा और मैंने बतला दिया। उसने कहा कि ऐसे मन्दिरके बननेमें बीस हजार रुपये लगेंगे। पहले कई दूकानदारोंने अस्सी हजार अथवा एक लाख दाम बतलाया था। मैंने समझा कि ईमानदारीके कारण वह बीस हजार बतला रहा है। मैंने उसकी बातोंमें विश्वास कर लिया। अन्तमें उसने मुझसे कहा कि 'मैं चुनार जाकर आपके मनके मुताबिक पत्थर गढ़वाऊंगा और तब रेलसे आपके पास पार्सल करूंगा। बतलाइये, आप सब पत्थर एक ही साथ मंगाना चाहते हैं, अथवा दो-तीन बारमें ?' इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उत्तरमें मैंने उससे कहा—'केवल दस हजार रुपयेका पत्थर पहले भेजो, बाकी पत्थर फिर आयेगा।' इसके बाद वह चुनार चला गया, और दो महीने बाद दो बिलटी लेकर मेरे पास आया और मुझसे कहा कि दस हजार रुपयेका पत्थर आ गया है, परन्तु पत्थर आनेमें १२०३) रु० किराया लगेगा। इसलिए माल छुड़ानेके लिए पहले आप १२०३) रु० दे दीजिये, माल आ जानेपर दाम दे दीजियेगा, घरकी तो दूकान है। मैंने उसकी बातोंका विश्वास कर लिया और अपने चपरासीको रुपया देकर उसके साथ स्टेशन भेज दिया। मेरे चपरासीको धोखा देकर वह रुपया लेकर चम्पत हो गया। सारा चुनार छनवा डाला, काशीनाथ नामका न तो वहां कारीगर है और न दूकानदार ही। मेरे पास कोई सबूत भी नहीं है, इसलिए मैं मुकद्दमा भी नहीं चला सकता। आपको मैंने इसी कारण बुलाया है। कृपया इसका पता लगाइये।"

मैंने कहा—"मैं यथाशक्ति प्रयत्न करूंगा।"

[ ३ ]

मैंने महन्तजीसे पता लगानेका वादा तो कर दिया; परन्तु मेरे पास दो बिलटियोंके अतिरिक्त और कुछ प्रमाण नहीं था। हां, इतनी बात मुझे और मालूम थी कि दूकानदारका नाम काशीनाथ है और वह चुनारका रहनेवाला है। मैं पहले चुनार गया और मालबाबूको बिलटियां दिखलायीं। उन्होंने बिलटियोंका नम्बर तथा तारीख देखकर बतलाया कि उस नम्बर और उस तारीखमें कोई बिलटी चुनारसे कटी ही नहीं। मैंने समझ लिया कि इस प्रकार उसका पता लगना असम्भव है। इसके बाद मैंने चुनारकी प्रत्येक दूकानपरके पत्थरके टुकड़ोंको चक्कीके पत्थरसे मिलाया; परन्तु किसीने मेल नहीं खाया। अन्तमें मैं निराश हो गया। अब मैंने अपने मनमें निश्चय किया कि जिन-जिन शहरोंमें पत्थरकी दूकान है और साथ-ही-साथ रेलवे स्टेशन भी है, उन-उन शहरोंमें जाऊंगा, स्टेशनपर बिलटी मिलाऊंगा और चक्कीके पत्थरसे दूसरे पत्थरोंको भी मिलाऊंगा। इसके सिवाय मेरे पास और कुछ उपाय था ही नहीं। मैंने डगमगपुर तथा अहरौरा आदि कई स्टेशनोंपर पता चलानेका प्रयत्न किया, किन्तु कुछ भी पैता नहीं चला। इसके बाद मैं मिरजापुर पहुंचा और बिलटियोंको मिलाने लगा। जब दोनों बिलटियोंके नम्बर मिल गये तो मेरे आश्चर्यकी सीमा ही नहीं रही। मैं समझ गया कि चक्कियां अवश्य यहींसे भेजी गयी हैं। इस समय मैं बहुत प्रसन्न हो गया और अपने मनमें समझ लिया कि अब सब प्रश्न हल हो जायगा। परन्तु शीघ्र ही मुझे एक कठिनाईका सामना करना पड़ा। बिलटियोंके नम्बर तो मिल गये, परन्तु उनके दाम नहीं मिले। मालबाबूकी एक बिलटीमें एक रुपया और दूसरीमें दो रुपया लिखा हुआ था और जो बिलटी मेरे पास थीं, उनमेंसे एकमें ७९१) रु० और दूसरीमें ४९२) रु० लिखा हुआ था। इस समय सचमुच मैं बड़े चक्करमें पड़ गया और बिलटियोंकी इस असमानताको किसी प्रकार अपने मनमें समझ न सका। बहुत देर तक मैं इसी सम्बन्धमें सोचता रहा। अन्तमें मैं दोनों बिलटियोंके अक्षरोंको मिलाने लगा और प्रत्येककी रोशनाईकी भी जांच की। रोशनाईमें मुझे अन्तर दिखलायी पड़ा। मैंने यह भी देखा कि चारों बिलटियोंकी रोशनाईमें और स्थानोंमें कुछ भी अन्तर नहीं था; यदि रोशनाईमें अन्तर था तो केवल ७९ और ४९ में। इसके अतिरिक्त मालबाबूकी बिलटियोंमें ये अङ्क थे ही नहीं। मैं समझ गया कि उस दगाबाजने असली बिलटीमें एकके आगे ७९ और २ के आगे ४९ अपनी ओरसे जोड़ दिया है और इस प्रकार एक रुपयेका ७९१ और दो रुपयेका ४९२ बना डाला है और तब जाकर महन्तजीको ठगा है। मैं अपने मनमें कुछ-कुछ प्रसन्न हुआ। मैंने कहा, अब सिर्फ रोशनाईका मिलाना बाकी है।

[ ४ ]

मैं मिर्जापुरके पत्थरके प्रत्येक दूकानदारके यहां गया, भांति-भांतिके पत्थरोंकी उन्हें एक लिस्ट दी और प्रत्येकसे उनका दाम लिखवाया। इस प्रकार मैंने प्रत्येककी रोशनाईका नमूना ले लिया और अपनी बिलटीकी रोशनाईसे मिलाने लगा। कई रोशनाइयां तो मेरी बिलटीकी रोशनाईसे सर्वथा भिन्न थीं; परन्तु उनमेंसे तीन रोशनाइयां मेरी रोशनाईके बिलकुल समान थीं। मैंने जाकर उन तीनों दूकानदारोंकी दूकानोंको ध्यानपूर्वक देखना प्रारम्भ कर दिया, क्योंकि अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया था कि इन्हीं तीन दूकानदारोंमेंसे किसी एकने महन्तजीको ठगा है। मैंने बड़े ध्यानसे तीनों दूकानोंके पत्थरोंके टुकड़ोंको देखना प्रारम्भ किया। लालचन्द महतोकी दूकानके पत्थरके कुछ टुकड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चक्कियोंके पत्थरसे मिलते-जुलते मालूम हुए। मैंने उन्हें उठा लिया और डेरेपर जाकर उन्हें मिलाया। जब वे अच्छी तरहसे मिल गये तो मेरा मन आनन्दसे नाच उठा और मुझे अच्छी तरहसे विश्वास हो गया कि इसी लालचन्दने ही महन्तजीको ठगा है। इसके बाद मैंने बिलटीकी रोशनाईको फिर एक बार मिलाया और वह लालचन्द महतोकी रोशनाईसे अच्छी तरहसे मिल गयी। मैंने अच्छी तरहसे देखा कि उन तीनोंमें भी लालचन्दकी रोशनाई अच्छी तरहसे मिलती है। अब मैं उठा, सीधे लालचन्द महतोकी दूकानपर गया और उनसे भेंट करनेकी इच्छा प्रकट की। मुझे पता चला कि वह बीमार हैं और उनसे भेंट होना असम्भव है। इसके बाद मैंने अपना वेश बदल दिया और लालचन्द महतोके नौकरोंसे जाकर घुल-घुलकर बातें करने लगा। उनकी बातोंसे मुझे इस बातका भी पता चल गया कि वास्तवमें लालचन्द बीमार नहीं हैं, किन्तु कई कारणोंसे इन दिनों छिपे रहते हैं। मेरा रहा-सहा सन्देह भी जाता रहा और अब मुझे भलीभांति विश्वास हो गया कि महन्तजीको ठगनेवाला यही लालचन्द ही है।

[ ९ ]

दूसरे दिन मैंने महन्तजीके यहां तार भेजा :—

"चपरासीके साथ शीघ्र ही मिर्जापुर आइये, मैं स्टेशनपर ही आपसे मिलूंगा। आपके ठगनेवालेका पता चल गया। —मोहन।"

जब महन्तजी चपरासीके साथ मिर्जापुर स्टेशनपर उतरे, तो मैंने उनका स्वागत किया। उन लोगोंके साथ मैं लालचन्द महतोकी दूकानपर पहुंचा, परन्तु रास्तेमें मैंने उन्हें बहुत बातें समझा दीं और उन्हींके अनुसार काम करनेकी प्रार्थना की। मैंने दूकानपर जाकर कहा कि मुझे बीस हजारका पत्थर खरीदना है, परन्तु इस सम्बन्धमें मैं स्वयं लालचन्द महतोसे बातचीत करना चाहता हूं। पहले तो इन लोगोंने आना-कानी की, परन्तु बीस हजारका ग्राहक उनके लिए देवतासे कम नहीं था। अन्तमें उन लोगोंने कहा—"वह बीमार हैं। चलिये उनसे भीतर भेंट हो सकती है।" महन्तजी और चपरासी बाहर ही रह गये, और मैं भीतर चला गया। लालचन्द एक चारपाईपर पड़ा हुआ था। रातके नौ बज गये थे। एक धुंधला दीपक टिमटिमा रहा था। मैंने कहा—"क्या लालचन्द आप ही का नाम है?" उसने कहा—"जी हां।" मैंने कहा—"महन्तजी आये हैं, बाहर बैठे हैं।" लालचन्दने घबड़ाकर कहा—"कौन महन्तजी!" मैंने कहा—"भूपति महन्त।"

लालचन्दने उत्तेजनाके साथ कहा—"मैं भूपति महन्तको नहीं जानता।"

मैंने कहा—"आप उन्हें अच्छी तरह जानते हैं, आपने उन्हें ठगा भी है।"

लालचन्दने कहा—"कोई है? यहां आओ।"

इसी समय चार आदमी वहां आ गये। उन्हें सम्बोधितकर लालचन्दने कहा—"इन्हें बाहर निकाल दो, तुम ऐरे-गैरे पंचकल्यानीको मेरे सामने क्यों लाते हो!" अब वे चारों आदमी मेरी ओर बढ़े, परन्तु मैंने गरजकर कहा—"खबरदार! जो आगे बढ़े तो ठीक न होगा।" चारोंके चारों सहम गये, परन्तु लालचन्दने फिर गरजकर कहा—"क्या देखते हो! इसे पकड़ लो और यहीं गड्ढा खोदकर गाड़ दो। यह भी जाने कि मिर्जापुरियोंसे झगड़ा मोल लेना कुछ आसान नहीं है।"

इसी समय मैंने सीटी बजायी और महन्तजीके साथ चपरासी भी भीतर घुस आया। मैंने कड़ककर लालचन्दसे कहा—"अब अगर तुमने चीं-चपड़ की तो मैं दूसरी सीटी बजाऊंगा और थानेके सिपाही तुम्हारे घरको चारों ओरसे घेर लेंगे। बस अब सावधान हो जाओ।" इसी समय महन्तजी भी उसी कमरेमें आ गये। मैंने दीपककी ज्योति लालचन्दके मुंहकी ओर कर दी। महन्तजी चिल्ला उठे—"यही काशीनाथ है।" चपरासीने भी कहा—"हां-हां, यही काशीनाथ है।"

महन्तजीको देखकर काशीनाथ उर्फ लालचन्द घबड़ा गया। उसके मुंहसे एक बात भी नहीं निकली। उसी समय मैंने बड़े जोरसे कहा—"लालचन्द! महन्तजीके १२०३) रु० अभी गिन दो। नहीं तो बेइज्जत भी होओगे और अन्तमें रुपया भी देना पड़ेगा। अगर अभी सब रुपया दे दोगे तो इस बातको कोई भी नहीं जानेगा और तुम्हारी प्रतिष्ठा भी रह जायगी।" लालचन्दने अब अपने मुनीमको बुलवाया और १२०३) रुपया गिन दिया।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जासूसोंका भोजनालय

श्री विजनकुमार शर्मा

विगत यूरोपियन महायुद्धके समय तथा उसके पूर्व बेल्जियम अन्तर्राष्ट्रीय जासूसोंका अधिष्ठान था। यूरोपके भिन्न-भिन्न राष्ट्रोंके नाना षड़यन्त्रोंका भण्डाफोड़ पहले-पहल यहीं होता था। अनेक जासूस स्त्रियां वहांके शहरोंमें रेस्टोरेण्ट, कहवा-घर तथा अन्य प्रकारकी छोटी-मोटी दूकानें खोलकर नाना छल-प्रपञ्चोंसे अपना कार्य सिद्ध करती थीं। पुरुष जासूस या तो उनके चंगुलमें फंसकर काल-ग्रस्त होते थे या आशातीत सफलता प्राप्त करके विजयोल्लास पूर्वक वापस जाते थे।

महायुद्धके तीन वर्ष पूर्व बेल्जियमके आस्टेण्ड नामक नगरमें आंत्वानेत दुपिंत्स(Antoinette Dupinz) नामकी एक सुन्दरी महिला किसी 'काफे' में वेट्रेसका काम करती थी। इंगलैण्डके प्रख्यात जासूस सर विलियम टामस किसी जासूसी चक्करमें पड़नेके कारण तब बेल्जियममें भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने उक्त काफेमें आंत्वानेतको देखा। उसका सौन्दर्य अत्यन्त आकर्षक था, इसलिए सर टामसकी दृष्टि तत्काल उसपर पड़ गयी। पर केवल उसके सौन्दर्यके ही कारण वह उसके प्रति आकृष्ट नहीं हुए थे। वह एक नम्बर चण्ट थे। उसकी चाल-ढाल और हरकतोंको देखते ही तत्काल ताड़ गये कि यह वेट्रेस कोई साधारण स्त्री नहीं है। तबसे वह उसके प्रति कड़ी नजर रखने लगे।

इसके कुछ ही महीने बाद वह उसे बेल्जियमकी राजधानी ब्रूसेल्समें मिले। पर अब उसका ठाठ बिलकुल ही बदल गया था। वह एक बहुत बड़े रेस्टोरेण्टमें कैशियरका काम कर रही थी। उसकी पोशाककी तड़क-भड़क देखने ही लायक थी। उसका बनाव-शृङ्गार बड़े घरानोंकी महिलाओंका-सा दीखता था। सर टामस नित्य उस रेस्टोरेण्टमें आने-जाने लगे और दूर हीसे उसकी चाल-ढालपर नजर रखने लगे। उन्होंने इस बातपर गौर किया कि वह अपने कैशके डैस्क-पर बहुत कम बैठती थी और अधिकांश समय इधर-उधर नवागत प्रतिष्ठित विदेशियोंके साथ बातोंमें बिताती थी। उक्त रेस्टोरेण्टके मालिकके साथ सर टामसकी घनिष्ठता हो गयी थी। एक दिन उन्होंने उससे कहा कि "आंत्वानेत तो बहुत आगे बढ़ गयी है, ऐसा मालूम होता है कि आपके रेस्टोरेण्टका काम उसे अब पसन्द नहीं।" उस आदमीने प्रसन्नतापूर्वक मुसकराकर कहा—"मैं उसकी किसी बातमें विघ्न नहीं डालना चाहता। वह चाहे कुछ भी न करे, पर इतना लाभ तो उससे हमें अवश्य है कि वह अपने रूप और तहजीबसे गाहकोंको आकर्षित किये रहती है। बहुतसे प्रतिष्ठित पुरुषोंसे उसका परिचय होनेसे वे सब यहीं आकर खाना खाते हैं; उनमें जर्मन, फ्रेञ्च, अंगरेज, बेल्जियन सभी हैं।"

पर सर टामसके मनमें उसके सम्बन्धमें कौतूहल बना ही रहा। अन्तको उन्होंने उसके सम्बन्धकी यथार्थ बातें मालूम कर लीं। एक दिन वह उसी रेस्टोरेण्टमें खाना खा रहे थे। प्रायः पचीस वर्षका एक सुन्दर नव-युवक उनके पास आया। उसकी बातोंसे मालूम हुआ कि वह बहुत दिनोंसे उनसे मिलनेके लिए उत्सुक है। उसने सर टामससे कहा—"मैं आपसे दो बातें करना चाहता हूं। कहीं दूसरी जगह मिल सकें तो बड़ी कृपा हो। काम बड़ा जरूरी है।" सर टामसने अपने होटलका पता बतला दिया और उससे वहीं मिलने को कहा।

दूसरे दिन वह उनसे मिला। उसने अपना नाम पियेर ( Pierre ) बतलाया। उसकी बातोंसे मालूम हुआ कि वह बड़ी विपत्तिमें पड़ा है। उसने कहा—"मैं आंत्वानेतको चाहता हूं। कुछ ही महीने पहले हम दोनोंके विवाहकी बात तय हो चुकी थी, पर अब अचानक अवस्था बड़ी जटिल हो उठी है।"

"कारण क्या है?"

वह पहले कुछ हिचकिचाया; फिर बोला—"देखिये साहब, मैं आपपर पूर्ण विश्वास करके आपसे सभी गोपनीय बातें कह देना चाहता हूं। मैं देखनेको तो रेस्टोरेण्टका सब-मैनेजर हूं, पर मेरा असली काम कुछ और है। मुझे हर वक्त चौकन्ना रहकर इस बातपर दृष्टि रखनी पड़ती है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रेस्टोरेण्टमें कौन आता है, कौन जाता है, किसका क्या पेशा है, किस आफिसरके साथ कैसा व्यक्ति किस उद्देश्यसे आया है, इत्यादि। जब मैं देखता हूं कि कोई व्यक्ति किसी विशेष स्त्रीके लिए आवश्यकतासे अधिक रुपया बर्बाद कर रहा है तो मैं तत्काल इसकी सूचना उपयुक्त व्यक्तिके पास पहुंचा देता हूं।"

सर टामसने कहा—"क्या तुम्हारी यह धारणा है कि कुछ महिलायें सेना-विभाग-सम्बन्धी किसी आवश्यक दलीलको प्राप्त करनेकी चेष्टामें हैं?"

"आपका अनुमान बिलकुल ठीक है। केवल महिलायें ही नहीं। आप जानते हैं कि बेल्जियम यूरोपका अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र है। वहां सब राष्ट्रोंके भिन्न-भिन्न पेशेके लोग आकर सम्मिलित होते हैं। खासकर जासूसोंके लिए तो यहां बड़ा आराम है।"

"पर आंत्वानेतका इन बातोंसे क्या सम्बन्ध है?"

"मैं बतलाता हूं। प्रायः तीन महीनेसे उसका भाव मेरे प्रति बदल गया है। मैंने इसका कारण मालूम करना चाहा। एक दिन मुझे असलियतका पता लग गया। ब्रूसेल्समें गीमिये (Guymier) नामका एक युवक रहता है, जो मेरा देशवासी है। वह समुद्र-तटकी किलेबन्दीके काममें ड्राफ्ट्समैन है। मैंने इस बातपर बहुत गौर किया है कि आंत्वानेतकी उससे बड़ी घनिष्ठता हो गयी है। मैंने उसे इस सम्बन्धमें सावधान करनेकी चेष्टा की है, पर वह कहती है कि 'तुम अपना काम देखो, मुझे उपदेश मत दो।' इसके बाद मैंने एक दूसरी बातपर ध्यान दिया। मैंने देखा कि आंत्वानेत एक दूसरे व्यक्तिसे मिली हुई है, जो विदेशी है। यह शख्स कहता है कि वह डच है, पर मैं उसकी बात-पर विश्वास नहीं करता। मेरी धारणा है कि वह एक जर्मन है। मैंने इस सम्बन्धमें किसीसे कुछ नहीं कहा, पर चुपचाप सब तमाशा देखता चला गया। इस व्यक्तिने, जो अपनेको डच बतलाता है; आंत्वानेतको अपने वशमें कर लिया है, और इस फिराकमें है कि जिस किलेबन्दीके काममें गीमिये लगा है उसका 'प्लान' आंत्वानेत द्वारा किसी तरह प्राप्त करे। मेरी समझमें नहीं आता कि क्या किया जाय। मेरा फर्ज यह है कि मैं अपने इस सन्देहकी सूचना उन लोगोंको दूं जिनके मातहत मैं काम कर रहा हूं, पर यदि मैं ऐसा करूं तो इस षड्यन्त्रमें आंत्वानेत और गीमिये, दोनों फंस जायेंगे। यदि मैं चुप रहूं तो यह 'डचमैन'-जो अपना नाम फान राले (Van Rallet) बतलाता है—'प्लान' को हस्तगत करके ही छोड़ेगा।"

सर विलियम टामसने पूछा—"गीमियेके सम्बन्धमें आपका क्या ख्याल है? क्या वह फान रालेके उद्देश्यसे परि-चित है?"

पियेरने सिर हिलाकर कहा—"नहीं, गीमिये इस सम्बन्धमें कुछ नहीं जानता, मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं। पर मैं अगर उसे इस षड्यन्त्रकी सूचना दे दूं तो वह फान रालेको पकड़नेके लिए जाल रचेगा और इस जालमें आंत्वा-नेत भी अवश्य ही पकड़ ली जायगी। पर मैं ऐसा नहीं चाहता कि आंत्वानेत पकड़ी जाय।"

सर टामस कुछ देर तक विचार करते रहे। इसके बाद उन्होंने पूछा—"जिस समय आंत्वानेत वह 'प्लान' फान राले-को देगी, क्या वह समय किसी उपायसे मालूम नहीं किया जा सकता।"

पियेरने व्यङ्गके बतौर उत्तर दिया—"अवश्य। क्यों नहीं मालूम किया जा सकता! ज्योंही फान रालेको 'प्लान' मिल जायगा, वह उसी दम ब्रूसेल्स छोड़कर चला जायगा, एक मिनट भी ज्यादा नहीं ठहरेगा।"

"वह कहां ठहरा हुआ है?"

"Hotel du Commerce में।"

सर टामसका चिन्तामग्न चेहरा अकस्मात् उद्दीप्त हो उठा। Hotel du Commerce के मालिकको वह अच्छी तरह जानते थे। एक बार उन्होंने उसके किसी मामलेके अनुसन्धानमें उसे सहायता दी थी। शामको वह उक्त होटल-के मालिकके पास गये। उसका नाम शुइस्टर था। उन्होंने उससे कहा—"देखो शुइस्टर, मैं एक जरूरी कामके लिए तुम्हारे पास आया हूं। तुम्हारे इस होटलमें फान राले नाम-का एक आदमी रहता है जो अपनेको डच बतलाता है। मैं इस समय उसके सम्बन्धमें अधिक बातें तुमसे नहीं कहना चाहता। पर उसपर मुझे सन्देह है, और मुझे विश्वास है कि वह एक दिन अचानक यहांसे चला जायगा। जब वह अपना बिल चुकाने तुम्हारे पास आयेगा तो मैं चाहता हूं कि तुम मेरी एक सलाहके मुताबिक काम करो।" इसके बाद उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गुप्त रूपसे अपनी चाल शुइस्टरको बतायी। वह तदनुसार चलनेको राजी हो गया। डेरेपर जाकर सर टामसने पियेरको फोन किया और कहा कि वह उनसे होटलमें आकर मिले।

चार दिन बाद शुइस्टरने सर टामसको फोन किया कि फान राले जा रहा है। वह तत्काल शुइस्टरके होटलकी ओर चल पड़े और पियेरको भी साथ ले गये। शुइस्टरके प्राइवेट आफिसमें जब वह पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उसके हाथमें सौ फ्रां ( Franc ) के नोटोंका एक पुलिन्दा है और उसके सामने फान राले खड़ा है। दोनोंमें किसी बातको लेकर तनातनी हो रही थी। सर टामसको देखकर शुइस्टरने उनसे कहा—"बड़ी प्रसन्नताकी बात है कि आप ठीक समयपर आये हैं। मुझे सलाह दीजिये। यह आदमी, जो आपके सामने खड़ा है, मेरे होटलमें प्रायः तीन महीनेसे ठहरा हुआ है। आज इसने मुझसे कहा कि मैं आज रातको चला जाऊंगा, और आफिसमें अपना बिल चुकाने आया। उसने जो करेन्सी नोट मुझे दिये वे ये हैं। जरा गौरसे इन्हें देखिये। वह कहता है कि ये नोट अच्छे हैं, पर म अच्छी तरह जानता हूं कि ये जाली हैं।"

सर टामसने नोट उठाये और उन्हें आजमानेका बहाना किया। उन्हें पहलेसे ही मालूम था कि वे जाली हैं, क्योंकि उन्हींकी सलाहसे शुइस्टरने इरादतन फान रालेके अच्छे नोटोंको बदलकर उसके सामने जाली नोट पेश कर दिये थे। उस 'डचमैन' ने टेबलपर हाथ पटककर गुस्सेके साथ कहा—"मैं कहता हूं कि ये नोट अच्छे हैं! कुछ भी हो, अगर ये आपको पसन्द नहीं तो इन्हें मुझे वापस दीजिये, मैं आपको दूसरे नोट दे दूंगा, या, अगर आप चाहें तो आपको बैङ्कमें ले जाकर वहांसे अच्छे नोट दिलवा दूंगा।"

शुइस्टरने कहा—"बस कीजिये! आप जैसा समझते हैं, यह काम उतना आसान नहीं है। आजकल ब्रूसेल्समें बहुतसे विदेशी लोगोंकी करतूतसे बहुत बड़ी तादादमें जाली नोट चल रहे हैं। कृपा करके आप अभी कुछ देर यहीं तशरीफ रखें।" इसके बाद उसने सर टामसकी ओर लौटकर कहा—"मोशियो टामस! क्या टेलीफोनमें जाकर पुलिसको बुलानेकी कृपा करेंगे?"

सर टामस उस कमरेसे बाहर चले गये, पर टेलीफोनके पास नहीं गये। सीधे सड़कपर जाकर उस स्थानपर पहुंचे, जहां पियेर बेल्जियन पुलिस इन्स्पेक्टरके लिबासमें एक शानदार मोटरपर बैठा हुआ था। पियेरको लेकर वह फिर शुइस्टरके आफिसमें वापस आये। शुइस्टरने तथाकथित 'पुलिस इन्सपेक्टर' से सब हाल कहा।

पियेरने क्रोधका भाव दिखाकर कहा—"यह मामला बड़ा बेढब है। क्या आप मुझे अपना पासपोर्ट दिखा सकते हैं?"

फान रालेने खिसियानी सूरत बनाकर अपना पासपोर्ट पेश किया। पियेरने पासपोर्ट लेकर कहा—"मैं आपकी चाबियां चाहता हूं!"

इसपर फान राले बिगड़ खड़ा हुआ। बोला—"आपका उद्देश्य क्या है! मैं अपनी चाबियां आपको नहीं सौंप सकता!"

तथाकथित 'पुलिस इन्सपेक्टर' पियेरने शान्त भावसे उत्तर दिया—"साफ बात यह है कि मैं आपके असबाबकी जांच करना चाहता हूं।"

लाचार फान रालेने अपनी चाबियां उसे दे दीं। पियेर उन्हें लेकर गया और दस मिनटके बाद जब वापस आया तो उसके हाथमें पूर्वोक्त किलेबन्दीका 'प्लान' था! उसने फान रालेसे कहा—"देखिये साहब, मोशियो टामसकी कृपासे आपका षड्यन्त्र सफल न हो सका। आप देखते हैं, मेरे हाथमें वही 'प्लान' है जिसे आंत्वानेत दुपिंत्सने चुराकर आपको सौंपा था। आप अगर अपनी भलाई चाहते हैं तो इसी दम बेल्जियम छोड़कर चले जायं, क्योंकि अगर कल सुबह आप यहां पाये गये तो आप जासूसीके अपराधपर तत्काल गिरफ्तार कर लिये जायेंगे।"

फान रालेको स्वप्नमें भी ख्याल नहीं था कि वह इस ढङ्गसे पकड़ा जायगा। उसने सर टामसकी ओर क्रुद्ध दृष्टिसे एक बार देखा, फिर अपना बोरिया-बंधना लेकर चम्पत हुआ।

सर टामसका कहना है कि बादको पियेरका विवाह आंत्वानेतसे हो गया था, और आज उन दोनोंने मिलकर एक अपना निजी रेस्टोरेण्ट खोल लिया है और चैनसे रहते हैं।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## मालकोश रागकी

# रागिनी–गौरी

त्रिताल (१६ मात्रा)

स्वर-लिपिकार—
सङ्गीत प्रो० सुरेन्द्रमोहन मिश्रा
( बदायूं )

शब्दकार—
कुंवर कृष्णपाल सिंह 'वीर'
( प्रतापगढ़ )

## गीत

अपने पियाको मनाऊंगी मैं।
तज सकल हृदयकी लाज आज मैं ॥.....अपने.....
अंग-अंग भूषण सकल सजाऊं।
अंगराग प्रति अंग लगाऊं ॥
सरस तान वीणा लै गाऊं।
गाय बजाय रिझाऊंगी मैं ॥ पिया.....
हाथ जोड़कर विनय सुनाऊं।
प्रेम-नीर नैनन उमगाऊं ॥
'वीर' संग रस-रंग मचाऊं।
भुज भरि कण्ठ लगाऊंगी मैं ॥ पियाको.....

## स्थायी

| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स | म | ग | रे | सा | नी | स | रे | स | — | — | नी धा | नी | स रे | स | — |
| अ | प | ने | पि | या | ऽ | को | म | ना | ऽ | ऽ | ऊं | गी | ऽ | मैं | ऽ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## सञ्चारी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स | म | ग | रे | सा | नी | स | रे | स | रे | ग | म | प | — | म | ग |
| अ | प | ने | पि | या | ऽ | को | मैं | त | ज | स | क | ल | ह्व | द् | य |
| म | ग | ग | रे | ग | रे | स | — | नी ध | स | रे | ग | म | ग | रे | स |
| की | ऽ | ला | ऽ | ज | आ | ऽ | ऽ | ज | मैं | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |

## अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | — | म | ग | म | म | प | प | नी | — | सं | — | — | — | — | — |
| अं | ग | अं | ग | भू | ऽ | ष | ण | स | क | ल | स | जा | ऽ | ऊं | ऽ |
| सं | — | — | रें | सं | — | गं | रें | मं | गं | रें | गं | रें | सां | नी | ध |
| अं | ऽ | ग | रा | ऽ | ग | प्र | ति | अं | ऽ | ग | ल | गा | ऽ | ऊं | ऽ |

## आभोग

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | म | ग | म | ग | रे | स | रे | ग | म | प | म | ग | रे | सा | — |
| स | र | स | ता | ऽ | न | वी | ऽ | णा | ऽ | लै | ऽ | गा | ऽ | ऊं | ऽ |
| सं | — | रें | सं | नी | ध | प | म | प | नी | सं | संनी | ध प | मग | रे स | स- |
| गा | ऽ | य | ब | जा | ऽ | य | रि | झा | ऽ | ऊं | ऽ | गी | ऽ | ऽ | मैं |

नोट—शेष पद ऊपर लिखी सरगमोंपर बजेंगे।

ध्यानम्—

श्लोक—निवेशयंति श्रवणेऽवतंसम् आम्रांकुरं कोकिल नादरम्यम्
श्यामा मधुस्यंदि सुसूक्ष्म नादा गौरीय मुक्ता किल कोहलेन

—सङ्गीत-रत्नाकर

कोकिला सुवानि वाम साम अंगियां हिये, पान नार अम्ब मोर औन तीर पै किये।
सेत वास चन्द्रिका उजास आस्य जानिये, बागमें विराज बाल गौरिका बखानिये॥

—रागमाला

## राग-विवरण

मालकोश रागकी रागिनी गौरी, ठाट पूर्वी है। वादी स्वर ऋषभ कोमल और संवादी स्वर पंचम है। आरोहीमें धैवत वर्जित है, अवरोही सम्पूर्ण है, षडज शुद्ध, ऋषभ कोमल, गंधार शुद्ध, मध्यम तीव्र, पंचम शुद्ध, धैवत कोमल, निषाद तीव्र, इसमें सातों स्वर लगते हैं। इसके गानेका समय दिनका चौथा प्रहर है। बहुतसे गुणीजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मध्यम कोमल लगाकर गौरीकी शक्ल कायम करते हैं और बहुधा देखा गया है कोई-कोई ख्याल गायक दोनों मध्यमें लगाकर रागमें अधिक मधुरता पैदा करते हैं। वह फिर दोपहरका कालिंगड़ा हो जाता है।

## नोटेशन चिह्न

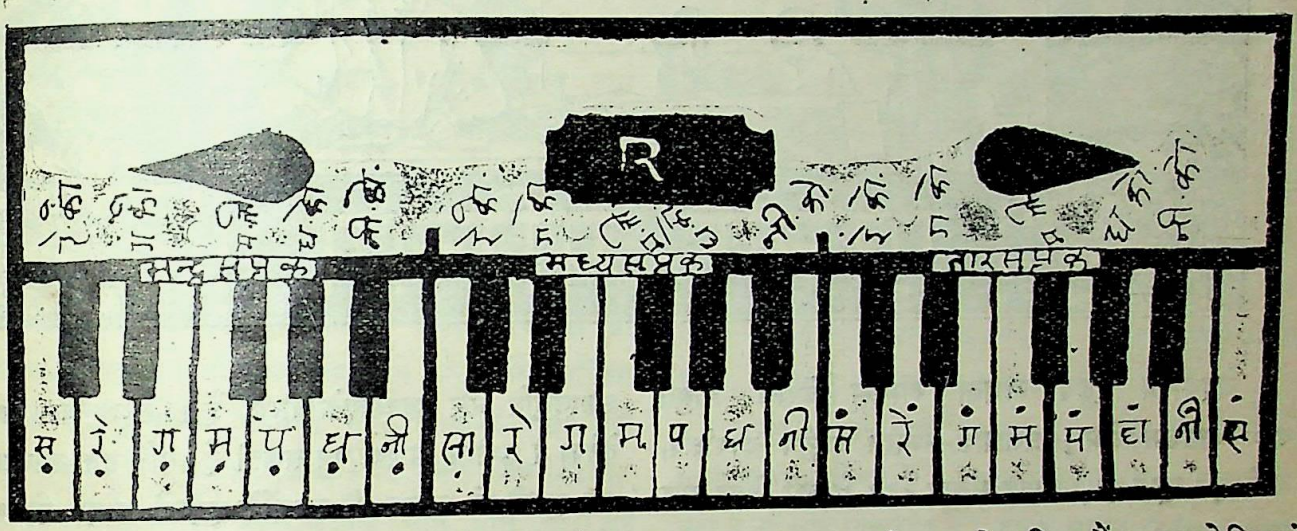


हारमोनियमके अन्दर तीन सप्तक होते हैं जो मन्द्र, मध्यम, तारके नामसे प्रसिद्ध हैं। हारमोनियमके अन्दर १२ स्वर होते हैं जिसमें ५ कोमल, ६ शुद्ध और १ म तीव्र होता है। हारमोनियममें पहला स्वर स माना जाता है, उसी स्वरसे १२ स्वर तक मन्द्र सप्तक जानना चाहिए।

मन्द्र सप्तक—जिन स्वरोंके नीचे बिन्दु दिये हों उनको मन्द्र सप्तकका स्वर जानना चाहिए। जैसे—रे॒ ग॒ म॒ ध॒ न॒

मध्य ,, —जिन स्वरोंपर कोई चिह्न न हो उनको मध्य सप्तकका स्वर जानना चाहिए। जैसे—स रे ग म ध न

तार ,, — जिन स्वरोंके ऊपर बिन्दु हो उन्हें तार सप्तकका स्वर जानना चाहिए। जैसे—सं रें गं मं पं धं नीं

शुद्ध स्वर—जिन स्वरोंपर कोई चिह्न न हो उन्हें शुद्ध स्वर जानना चाहिए। जैसे--स रे ग म प ध नी स।

कोमल स्वर—जिन स्वरोंके नीचे पड़ी पाई हो उन्हें कोमल स्वर समझना चाहिए। जैसे—रे॒ ग॒ ध॒ नी॒।

तीव्र—जिस स्वरके ऊपर खड़ी पाई हो उसको तीव्र समझना चाहिए। जैसे—म ऐसा चिह्न केवल म पर ही लगेगा।

एक मात्रामें स्वर—जिन स्वरोंके नीचे चन्द्राकार चिह्न हो उन्हें एक मात्रामें समझना चाहिए। जैसे—सरे सरेग

जहां लयका झुकाव पड़ता है उसे सम कहते हैं।

समका चिह्न × इस प्रकार है, खाली तालका ० यह चिह्न है।

जहांपर अंक लिखे हों उन्हें अंकानुसार ताल समझना चाहिए। जैसे—२, ३, ४ इत्यादि। यह ध्यान रहे सम पहले तालपर होता है।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

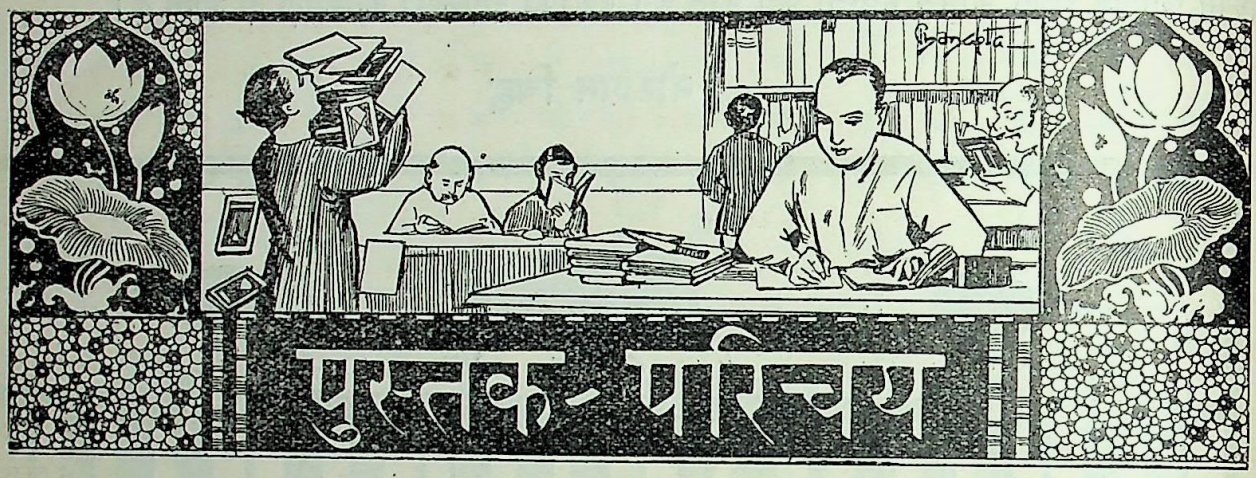


वेश्याका हृदय अथवा आयसू। लेखक—श्रीयुत डा० धनीराम प्रेम; प्रकाशक—भारत राष्ट्रीय कार्यालय, अलीगढ़। मूल्य १॥)। पृष्ठ-संख्या २२२। पक्की जिल्द और सुन्दर छपाई।

डाक्टर धनीराम प्रेमने हिन्दी-कहानी-जगत्में बहुत जल्दी अपना स्थान बना लिया है। इधर प्रायः उच्चकोटिके सभी मासिक पत्रोंमें आपकी कहानियोंको अच्छा स्थान मिलने लगा है। प्रस्तुत पुस्तक लेखककी पहली उपन्यास-कृति है, जिसमें आपको पूरी सफलता प्राप्त हुई है। आयसू एक गरीब घरकी लड़की है। माता-पिताकी मृत्युके बाद अनाथ होकर वह किसी पड़ोसीके पास रहती है। बम्बईके धनी युवक अहमदके साथ उसका निकाह होता है और वह बम्बई आ जाती है। वहां अहमदके मित्र हालिमकी उसपर कुदृष्टि पड़ती है, जो अहमदकी हत्या कर डालता है। इस-पर उसको कालेपानीकी सजा हो जाती है। यहींसे आयसूके पतित जीवनका श्रीगणेश होता है। वेश्याका जीवन बिताते हुए भी वह अहमदको नहीं भूलती। उसके प्रेममें ही वह अपनेको समाप्त कर देती है। संसार वेश्याको बिलकुल गयी-बीती समझता है। उसको नरकका प्रतिबिम्ब और पापका घर मानता है। पर इस उपन्यासके लेखकने बताया है कि वेश्याके हृदयका चित्र ऊपरसे दीखनेवाले चित्रसे भिन्न है। वेश्याके हृदयमें उस प्रेमके लिए स्थान है, जिसका उसमें अत्यन्त अभाव समझा जाता है। हमारी दृष्टिमें भी वेश्यायें केवल घृणास्पद ही नहीं हैं। घृणासे अधिक वे दया, सहानुभूति और सहृदयताके योग्य हैं। संभलनेका अवसर देनेपर वे सुयोग्य नारियां बन सकती हैं। यदि उक्त उपन्याससे यह हलकी-सी धारणा भी पाठकोंके हृदयमें पैदा हो सके, तो हम लेखकके प्रयत्नको सफल हुआ समझेंगे। पुस्तक अति उत्तम है। हम इसका प्रचार चाहते हैं।

धर्मके नामपर। लेखक—श्री चतुरसेनजी शास्त्री; प्रकाशक—इन्द्रप्रस्थ पुस्तक भण्डार, देहली। मूल्य १) रु० पृष्ठ-संख्या १७०।

भारतमें, विशेषकर हिन्दू-समाजमें धर्मका विचार कुछ ऐसी जड़ पकड़ गया है कि इसके सम्बन्धमें तर्क करना भी 'पाप' समझा जाता है। इसीसे धर्म धर्म न रहकर पाप बन गया है और उसके नामपर समाजमें कौन-सा पाप नहीं होता? श्री शास्त्रीजीने उक्त पुस्तिकामें यही बताया है कि धर्मके नामपर हत्या, अपराध, व्यभिचार, अत्याचार, अना-चार, पाप, पाखण्ड, झूठ, ठगी, धूर्तता, छल, कपट और बेवकूफी आदिका समाजमें साम्राज्य छाया हुआ है। यह पुस्तिका लिखकर शास्त्रीजीने अच्छे साहसका परिचय दिया है। धर्मके सम्बन्धमें ऐसी जितनी भी चर्चा हो वह वाञ्छनीय है। पैतृक विचारोंपर अन्धविश्वास न करके उसके सम्बन्धमें भी स्वतन्त्र दृष्टिसे विचार होना चाहिए। कुछ लेखकोंका इधर ध्यान आकर्षित हुआ है, यह अत्यन्त शुभ है। श्री सत्यदेव विद्यालङ्कारके 'राष्ट्र-धर्म' के बाद धर्मके सम्बन्धमें क्रान्ति पैदा करनेके लिए किये गये शास्त्री-जीके इस यत्नकी हम हार्दिक सराहना करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्राकृतिक स्वास्थ्य और दीर्घजीवन। लेखक—श्री ठाकुरदासजी; हल्दौर (बिजनौर)। मूल्य आठ आना। पृष्ठ-संख्या १२०।

महात्मा गांधीके 'आरोग्य-शास्त्र' के बाद हिन्दीमें प्राकृतिक स्वास्थ्यपर ऐसी अच्छी यह दूसरी पुस्तक देखनेमें आयी है। पुस्तकमें मनुष्यकी श्रेष्ठता, उसकी आयु तथा स्वास्थ्य, प्राकृतिक चिकित्साके सिद्धान्त, आहार (भोजन), पानी, वायु, व्यायाम, शरीरकी रचना, विश्राम, निद्रा, वस्त्र, मकान, आचार-विचार, वीर्य-रक्षा, रोग और उनकी चिकित्सा आदिपर सुविस्तृत विचार किया गया है। 'रोगोंकी चिकित्सा' का अन्तिम सब प्रकरण प्रायः उपवाससे ही सम्बन्ध रखता है। ग्रन्थ-लेखकके अपने अनुभवोंके अन्तिम पांच-छः पृष्ठ पुस्तकके विषयकी ओर पाठकका सहज हीमें मन खींच लेते हैं। लेखकने लिखा है कि उनके पिता-पितामह आदि किसीको भी ४३ वर्षसे अधिक आयु प्राप्त नहीं हुई और समझा यह जाता था कि कुलपर कोई अभिशाप लगा हुआ है। ४३ वर्षकी आयुमें आपकी अवस्था भी निराशा-पूर्ण हो गयी थी। उपवासकी प्राकृतिक चिकित्साने आपकी रक्षा की और अब लगभग सत्तर वर्षकी आयुमें भी आप बिलकुल नीरोग हैं। सर्वसाधारणके लिए पुस्तक उपयोगी है। आजकलके शिक्षित युवकोंके लिए यह पुस्तक विलासमय कृत्रिम जीवनको त्यागकर सरल जीवन और उच्च विचारके भारतीय आदर्शको अपनानेमें विशेषरूपमें सहायक हो सकती है।

आरोग्य प्रकाश। लेखक—श्री वैद्यराज पं० रामनारायणजी शर्मा, वैद्यशास्त्री। प्रकाशक—श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, पोस्ट बक्स ६८३५ कलकत्ता। मूल्य अजिल्द १), सजिल्द १॥) रु०। पृष्ठ-संख्या ३२०।

पुस्तकके तीन भाग हैं। पहलेमें स्वास्थ्य किंवा तन्दुरुस्तीपर विशेष प्रकाश डाला गया है। सवेरे उठनेसे लेकर रातके सोने तककी सब दिनचर्याका विशद वर्णन किया गया है। व्यायामके सम्बन्धमें कुछ आसनोंका सचित्र उल्लेख किया गया है। जिह्वा, मल, मूत्र, छाती आदिके सम्बन्धमें भी उपयोगी निर्देश दिये गये हैं। दूसरा भाग रोग-प्रकरणका है, जिसमें ५४ रोगों और उनकी दवाइयोंका सुविस्तृत वर्णन है। तीसरे भागमें आकस्मिक दुर्घटनाओंके अवसरपर काममें आनेवाली दवाइयां बतायी गयी हैं। इसमें सांप-बिच्छूके काटने, विषके खाने और जलने आदिके उपाय भी बताये गये हैं। साधारणतया पुस्तक उपयोगी है। पर पहले भागकी अपेक्षा दूसरा भाग इतना अधिक बड़ा कर दिया गया है कि उससे पढ़नेवालोंमें दवाइयोंपर आश्रित रहनेकी कुप्रवृत्तिके पैदा होनेका भय है। अच्छा तो यह है कि लोग बिना दवाइयोंके तन्दुरुस्त रहना सीखें, जिसके लिए ऐसी पुस्तकें अधिक उपयोगी नहीं हो सकतीं।

त्यागी युवक। लेखक—श्रीविश्वनाथसिंह शर्मा; प्रकाशक—सत्-साहित्य-प्रसारक मण्डल, १९१।१, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता। मूल्य २॥) रुपया।

प्रस्तुत पुस्तक एक उपन्यास है, जिसे लेखकने जेलके एकान्तवासमें लिखा है। उपन्यास सनसनीदार घटनाओंसे भरा हुआ और दिलचस्प है। इसके प्रधान नायक राधारमण हैं, जो एक जमीन्दार हैं, और प्रधान नायिका लूसी है जो एक ऐंग्लो-इण्डियन नव-युवती है। दोनोंका एक-दूसरेके प्रति प्रगाढ़ प्रेम है। पर इस प्रेममें राधारमणका एक जबर्दस्त प्रतिद्वन्द्वी है। इस प्रतिद्वन्द्वीका नाम जैकब है। वह भी लूसीकी तरह ऐंग्लो-इण्डियन है। पर लूसी उसे नहीं चाहती। राधारमण अत्यन्त सच्चरित्र तथा विचारशील हैं; शत्रुकी भी कल्याण-कामना करते हैं, तथापि समाज उनका विरोधी बना रहता है। विशेषकर गणेश पाण्डेय नामके सज्जन, जो पीड़न द्वारा अर्थोपार्जन ही जीवनका एकमात्र उद्देश्य समझते हैं, उनसे बिना किसी कारणके जला करते हैं। पर राधारमण उनकी शत्रुताके बदले उनके पुत्रको नैतिक पतनके मार्गसे बचाते हैं। गणेश पाण्डेय जैकब तथा दो-एक दूसरे गुण्डोंके साथ मिलकर राधारमणको डकैतीके अपराधमें फंसानेकी चेष्टा करते हैं, पर वह गणेश पाण्डेयके पुत्र तथा लूसीकी सहायतासे बच जाते हैं। लूसीके प्रति अन्त तक उनके आध्यात्मिक प्रेमका सम्बन्ध रहता है और लूसीपर जोर डालकर वह जैकबके साथ उसका विवाह करवा देते हैं। संक्षेपमें यही उपन्यासकी मूल कथा है। उपन्यासके पात्रोंका चरित्र लेखकने बहुत सुन्दरतासे चित्रित किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



( पृष्ठ ४०० से आगे )

फैला हुआ है, पर जापानमें इसका सर्वत्र राज्य है। मित्सुई-की सम्मति होनेपर जापान किसी देशपर आक्रमण कर सकता है। मित्सुई घरानेके अधिकारमें शस्त्रास्त्र बनानेके कारखानोंके अतिरिक्त "निप्पों पेट्रोलियम कम्पनी" 'दि माइनिङ्ग कम्पनी', 'दि मेंदाजिमा ऐयर क्राफ्ट कम्पनी' आदि बीसियों कम्पनियां हैं। जापानका प्रसिद्ध शस्त्रास्त्रका कारखाना 'निप्पों स्टील वर्क्स' मित्सुई और विकर्स—आर्मस्ट्राङ्गस चलाते हैं।

*

जर्मनी सब-कुछ त्याग सकता है, पर अपनी लड़ाकू आदतें नहीं छोड़ सकता। सन्धिमें यह शर्त करा ली गयी थी कि शस्त्रास्त्रोंका संसारका सबसे बड़ा जर्मन कारखाना 'क्रुप्स' हथियार न बनाये। पर १९२७ में 'क्रुप्स' ने स्वीडनकी 'ब्रूफूर्स आर्डनेन्स एण्ड ड्राइ डाक कम्पनी' के अधिकांश शेयर खरीद लिये। इसके सिवा हालैण्डके कई कारखानोंसे 'क्रुप्स' का सम्बन्ध है। कहा जाता है वहां जर्मनीके लिए हथियार बनते हैं। रूसमें भी जर्मन एञ्जिनियर और फर्म हथियार बना रहे हैं। इधर हिट्लर सन्धिकी शर्तोंको तोड़नेके लिए बेचैन है। उसने स्वेच्छा-सैनिकोंकी संख्या तीस पैंतीस लाख तक पहुंचा दी है और जर्मनीमें हथियारोंका खूब प्रचार कर दिया है। इसलिए 'क्रुप्स' भी इस ओर ध्यान देने लगा है।

*

अमेरिकामें बेथलहम स्टील कारपोरेशन हथियार बनानेका काम करता है। इसका सम्बन्ध भी दूर-दूर तक है। इसकी उन्नति देखकर दांतों-तले उंगली दबानी पड़ती है। १९०५ में इसकी सम्पत्ति २० करोड़ रुपयेकी कूती जाती थी, १९३० में यह प्रायः दो अरब हो गयी। अमेरिकाकी जनरल एलेक्ट्रिक कम्पनी विश्वविख्यात है। इसकी शाखायें जर्मनी, फ्रान्स आदि सब देशोंमें हैं। यह कम्पनी बिजलीका सामान तैयार करती है, पर इसके अधिकारमें शस्त्रास्त्रोंके कारखाने भी हैं। यह वास्तवमें विचित्र मेल है। इस क्षेत्रमें यह खूबी है कि जो कारखाने हल, मोटरकार, अनाज काटनेके यन्त्र आदि निर्दोष मानव-समाज-हितकारी सामान तैयार करते हैं वे ही छिप-छिपकर ऐसी तोपें और गोले तैयार करते हैं कि उनसे एक-एक चोटमें हजारों मनुष्योंके चीथड़े उड़ जायें।

*

उक्त वर्णनसे पाठक देखेंगे कि हथियार बनानेवालोंकी अन्तर्राष्ट्रीय गुप्त समिति कितनी बलशाली है। हिट्लर, म्वांकारे, लायड जार्ज आदि नेता इसके इशारोंपर नाचते हैं। जापानके सम्राट् यदि चाहते तो भी चीनके साथ बिना इसकी अनुमतिके सन्धि न कर सकते। निरस्त्रीकरण परिषद् लाख सर पटके, पर शस्त्रास्त्रोंके कारखानोंके मालिक उन्हें कुछ न करने देंगे। ये महाशक्तिशाली विधाता संसारपर अपने अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठन द्वारा शासन कर रहे हैं। बिना इनको सद्बुद्धि आये विश्वका कल्याण असम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## जर्मन मालका बहिष्कार

हिट्लरने जर्मनीमें यहूदियों और साम्यवादियोंपर जो घोर अत्याचार करवाये हैं, उससे संसारभरमें उसके विरुद्ध हलचल मच गयी है। विश्व-प्रेमियोंके हृदय यह देखकर फट रहे हैं कि इस समय जबकि संसारको भाईचारेकी आवश्यकता है हिट्लर अपनी अन्ध-राष्ट्रीयताके द्वारा जातिद्वेष फैला रहा है। इसलिए संसारमें कहीं खुले आम और कहीं छिपे-छिपे जर्मन मालका बायकाट हो रहा है। यहूदियोंने तो जर्मन माल छूनेकी कसम खा ली है। इस बायकाटकी उत्पत्ति और उसके विकासपर अमेरिकाके 'लिटरेरी डाइजेस्ट' ने अच्छा प्रकाश डाला है:—

"अमेरिकन यहूदीके लिए 'मेड इन जर्मनी' का अर्थ 'इस मालको मत बेचो' है। जर्मन मालका यह बायकाट तेजीसे उन्नति कर रहा है। इस बायकाटकी नींव न्यूयार्ककी २४४ यहूदी संस्थाओंने डाली। इन्होंने हिट्लरके यहूदी-द्वेषके प्रतिकारमें यहूदी अधिकारोंकी रक्षाके लिए अमेरिकन लीगकी स्थापना की और उसमें निश्चय किया कि जर्मनीमें यहूदियोंपर जो अत्याचार हो रहा है, उसका प्रतिकार जर्मन मालके बायकाट द्वारा ही हो सकता है। इनके छ सौ प्रतिनिधियोंने निश्चय किया—'जब तक जर्मन सरकार यहूदियोंके विरुद्ध सब कानूनों, आदेशों और नीतिको रद्द नहीं करती तब तक वहांका माल न बेचा जाये।' अपने इस निश्चयको कार्यमें परिणत करनेके लिए चालीस लाख अमेरिकन यहूदियोंकी सहानुभूति तो है ही, पर विशेष उद्योग किया जा रहा है कि अमेरिकनोंकी सहानुभूति भी अपनी ओर की जाये।

"जर्मन मालपर यह आक्रमण अंगरेज यहूदियोंके साथ मिलकर किया जा रहा है। विलायतमें जर्मन-माल-बायकाट-कमिटीके अध्यक्ष हैं लार्ड मेलचेट। इन्होंने अपना जाल सारे यूरोपमें फला दिया है। फ्रान्सवाले जर्मन मालका बायकाट चाहते ही हैं। पोलैण्डका भी यही हाल है। अन्य देशोंमें भी यहूदी प्राणपणसे इस बायकाटकी सफलताकी चेष्टा कर रहे हैं। इसलिए हिट्लरके विरुद्ध संसारभरमें जो क्रोधाग्नि भड़क रही है, वह युद्धका रूप धारण कर रही है। न्यूयार्कमें जो प्रतिवाद-सभा हुई थी, उसमें एक लाख तो यहूदी ही थे। लोकारण्यका वारापार न था। हिट्लरके विरुद्ध बोलनेवालोंमें यहूदी ही नहीं, ईसाई भी थे। उसमें अमेरिकाके भूतपूर्व जर्मन राजदूत जेरार्डने कहा—'संसारके सामने जो यह प्रश्न उठा है वह यहूदियोंकी सहायता करनेके प्रश्नसे बहुत अधिक महत्त्व रखता है। यह मनुष्यता और सभ्यताकी रक्षा करनेका प्रश्न है। यदि मैं यहूदी होता तो यहूदी संस्कृति और इतिहासका अत्यन्त गर्व करता। मैं चार वर्ष तक जर्मनीमें रहा और मैंने वहां प्रशियनोंकी हृदयहीन निर्दयताका नग्न नृत्य देखा; पर अब तो उन्होंने अपने पूर्वजोंके भी कान कतर दिये हैं।' कांग्रेसके भू० सदस्य ला गुआर्दियाने कहा—'१९२३में युक्तराष्ट्रमें जर्मनीसे प्रायः साढ़े तेईस करोड़ डालरका माल आया था और १९३२ में यह रकम कुल साढ़े सात करोड़ रह गयी। अब हमको जी-तोड़ परिश्रम करना चाहिए कि १९३३ में यह रकम शून्य बन जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यह बायकाट नहीं, धर्मयुद्ध है और उस माताको इसमें सहायता देनी चाहिए जो निकट भविष्यके महायुद्धमें अपने पुत्रका बलिदान देखना नहीं चाहती।' उस रोज न्यूयार्कमें जो जलूस निकला वह भी अपने ढङ्गका एक ही था। इसमें सबसे प्रार्थना की गयी कि जर्मन मालका बायकाट करें। लोग चिल्ला रहे थे—'हमें रस्सीसे बंधा हुआ हिट्लर चाहिए।' न्यूयार्कके मेयर जानपी ओबायनको सिटी हालकी सीढ़ियोंसे यह जलूस देखते-देखते चार घण्टे लग गये। सारे युक्तराष्ट्रमें व्यापारियों और गाहकोंकी कमेटियां बन गयी हैं, जो बायकाटका प्रचार कर रही हैं।"

## अमेरिकाके युवक युद्धमें शरीक न होंगे

पाठक पढ़ चुके हैं कि आक्सफोर्डके छात्रोंने प्रस्ताव पास किया था कि हम युद्धको महापाप समझते हैं और 'अपनी मातृभूमि तथा राजाके लिए' सेनामें भर्ती न होंगे। नवयुवकोंकी यह शान्तिप्रियता बढ़ रही है। युक्तराष्ट्रमें भी छात्रोंको युद्धसे घृणा हो गयी है। उस रोज सेन फ्रान्सिस्कोके विश्वविद्यालयों और कालेजोंके छात्रोंने आक्सफोर्डकी नकलपर एक प्रस्ताव पास कर दिया। गत मास सब कालेजोंकी निरस्त्रीकरण कमिटीने सारे युक्तराष्ट्रके छात्रोंका 'युद्ध या शान्ति' पर मत लिया। २१,७२५ छात्रोंके मत आये। इनमें ८४१५ छात्रोंने तो स्पष्ट ही मत दिया कि वे किसी प्रकारके युद्धमें शरीक न होंगे। ७२२१ ने कहा कि यदि युक्तराष्ट्रपर आक्रमण हो तो वे शत्रसे लड़ेंगे और ६०८९ ने मत दिया कि हम युद्धके पक्षमें हैं। इसपर कालगेट विश्वविद्यालयके छात्रोंका मुखपत्र 'दि मैरून' लिखता है:—

"छात्रोंका मत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह एकदम नयी बात है कि छात्रोंमें इस उग्रतासे युद्धके विरुद्ध विचार फैलने लगे हैं। महायुद्धके ठीक पहले या बादको यदि मत लिये जाते तो उसका दूसरा ही परिणाम निकलता। दो-चार शान्तिवादी, जो उस समय निकलते, वे विक्षिप्तोंमें शुमार किये जाते। आज अमेरिकाके कालेजोंमें इनका बहुमत है। इंगलैण्डमें तो अमेरिकासे भी अधिक शान्तिवादी छात्र हैं। इस नये शान्तिवादकी अभी परख नहीं हो सकी है; पर इतना भरोसा है कि आगामी महायुद्धमें शान्तिवादी जोर पकड़ लेंगे।

"इस आन्दोलनका अस्तित्व ही बताता है कि संसार-शान्तिके सम्भव होनेके दिन निकट आ रहे हैं और अब वह दिन दूर गये जब देशभक्तिके नामपर अन्य राष्ट्रोंके नागरिकोंकी हत्या करना पुण्य समझा जाता था। अब लोग चाहने लगे हैं कि सर्व-राष्ट्रीय मामलोंका निर्णय सर्वराष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे होना चाहिए।"

## कलियुगमें भेड़ भेड़ियोंको मारने लगे

आज तक सुना जाता था कि भेड़िये भेड़ोंपर आक्रमण करते हैं। यह बात है भी स्वाभाविक। पर मो० जे० डेलमों इसके विरुद्ध साक्षी देते हैं। उनका कहना है कि 'सङ्घ शक्तिः कलौयुगे' ठीक है। मेलके द्वारा दुर्बल जीव सबलोंको परास्त कर सकते हैं। इसलिए उन्हें यह देखकर विशेष आश्चर्य न हुआ कि आस्ट्रेलियाके एक विजन स्थानपर पड़ा हुआ भेड़ोंका एक गिरोह भेड़ियेको मारनेमें समर्थ हुआ। भेड़ सत्याग्रही जीव हैं। जिन्हें लड़नेकी ताकत नहीं होती उनका एकमात्र अस्त्र सत्याग्रह या निष्क्रिय प्रतिरोध है। पेरिसके 'ला नात्यूर' पत्रमें उन्होंने इस आंखों देखी घटनाका यों वर्णन किया है:—

"मैंने देखा कि एक खूंख्वार 'डिङ्गो' भेड़ोंके एक गिरोहकी कैदमें पड़ा हुआ है। यह भेड़िया सचमुचमें कैदमें पड़ा हुआ था। वह बन्दी बना हुआ था, उसपर पहरा था, उसकी दुर्गति हो रही थी और वह अपनी बेकसीके कारण मृत्युका आवाहन कर रहा था। भेड़ोंने भेड़ियेको दबोच रखा था। आस्ट्रेलियामें भेड़ोंके बहुत बड़े-बड़े गोल होते हैं। एक-एक पशुपालकके पास लाख-लाख भेड़ होते हैं और वे वहांकी विस्तृत भूमिमें चरते रहते हैं। कभी यदि हजार-बारह सौ भेड़ इस गिरोहसे बिछुड़ जायें तो उनका पता भी नहीं लगता। गड़रियोंकी नजर इतनी दूर तक नहीं जा सकती। इस दशामें कभी-कभी कुछ भेड़ें भटकती हुई कहीं-की-कहीं जा पड़ती हैं। एक भेड़ गुमराह हुआ कि सात-आठ सौ भेंड़ें उसके पीछे लग जाती हैं। एक रोज देखता क्या हूं कि प्रायः एक हजार भेंड़ें एक पहाड़के शिखरपर व्यूह बनाकर डटी हुई हैं। इन्होंने चक्र बांध रखा है और केन्द्रमें कुछ स्थान खाली है जहांपर एक भेड़िया चारों तरफसे घिरा हुआ है। ये भेड़ें एक स्थानसे दूसरे स्थानको जानेमें भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपना चक्र नहीं तोड़तीं। भेड़िया भी उनके बीचमें, सन्तरियोंके पहरेमें घसिटता हुआ चला जा रहा है। कुछ भेड़ें अपने सींगोंको इसकी ओर ताने कड़ा पहरा दे रहे थे कि यह उस झुण्डपर कहीं टूट न पड़े। उसने जरा टससे मस होनेकी चेष्टा की कि भेड़ोंके सींग उसके बदनपर जम गये। यदि भेड़िया एक कतार लांघ गया तो दूसरी पांति उसे घेरने और होशमें लानेको तैयार है। इसलिए उसको भागनेको भी ठौर नहीं थी। उसने जरा चीं चपड़ की तो सत्याग्रही भेड़ोंने सख्त धरना देना आरम्भ किया। धीरे-धीरे यह भेड़िया दुर्बल पड़ते गया। और उसका शरीर कुछ समय बाद कांटा हो गया। इस शिकारी जानवरकी दुर्गति देखिये कि अहिंसक भेड़ोंके बीचमें एक ओर सर लटकाये मौतकी बाट जोह रहा है। चाहता तो एक भेड़को खाकर अपनी शरीर-यात्रा चलाता, पर निरामिषभोजी भेड़ोंके धरनेने उसकी यह हिम्मत छीन ली। यह भेड़िया गङ्गाके किनारे प्यासा मर रहा था। उसकी यह दुर्दशा देखकर डेलमोंको दया आयी और उसने आसमानकी ओर अपनी बन्दूकका मुंहकर गोली छोड़ दी। भेड़ों-में भगदड़ पड़ गयी और भेड़िया छलांग भरकर भाग निकलनेकी चेष्टामें था कि उसी क्षण भेड़ फिर उसके चारों ओर घिर गये और वह कदी हो गया। डेलमोंने देखा कि ४८ घण्टे बाद वह भेड़िया हिलने डुलने योग्य भी नहीं रह गया। यह देखकर डेलमोंका हृदय दयासे उमड़ आया और उसने गोलीसे उसका काम तमाम कर दिया। इस धड़ाकेने भेड़ोंमें फिर भगदड़ मचा दी, पर तुरत ही वे फिर अपने-अपने स्थानोंपर डट गये। भेड़ियेकी लाशपर कड़ा पहरा पड़ गया। घण्टों वे इस अचल शरीरको घेरे खड़े थे, पर जब उन्हें निश्चय हो गया कि भेड़िया मर गया है तो उन्होंने उसे छोड़ दिया।" सच है 'संहतिः कार्यसाधिका।' मेल असम्भव कार्यको भी सम्भव कर सकता है।

## अधरातसे पहले सोना स्वास्थ्यके लिए अमृत है

हिन्दू-शास्त्रोंमें 'दिवा-स्वाप'—दिनका सोना बहुत हानिकर बताया गया है। इसी प्रकार दिन-चढ़े सोना भी पाप गिना गया है और रातको देरीमें सोनेको भी गर्हित माना है। अंगरेजीमें भी कहावत है—

"Early to sleep and early to rise
Makes a man healthy, wealthy and wise"

पर डाक्टर लोग इन लोकोक्तियोंके विरुद्ध थे। उनका मत था कि चाहे जब सोया जाये, कोई हानि नहीं। दिनमें छ घण्टे सोना जरूरी है, पर समयकी कोई कैद नहीं। यह बात डाक्टर टेओडोर स्टेकमानके अनुसन्धानोंसे गलत सिद्ध होती है। 'मेडित्सिनिशे रुण्डशाउ' में एक लेख छपा है, उसमें कहा गया है:—"ड्यू इसबुर्गके एक कालेजके प्रिन्सिपल डा० टेओडोर स्टेकमानने देखा कि उनका एक छात्र और विद्यार्थियोंसे पिछ-ड़ता जा रहा है तथा अधिकाधिक आलसी और निद्रालु बनता जा रहा है। उससे पूछ-ताछ करनेपर मालूम हुआ कि वह रातको बहुत देर तक पढ़ता है और सुबह बहुत देर करके उठता है। उन्होंने उसे सम्मति दी कि रातको जल्दी सो जाओ और सुबह खूब तड़के उठकर अध्ययन करो। इसके अनुसार काम करनेसे इस छात्रकी बुद्धि तीव्र हो उठी और उसका स्वास्थ्य भी सुधर गया। यह देखकर स्वयं डा० स्टेकमान अचरजमें पड़ गये और उन्होंने अन्य सत्रह छात्रोंको यह गुर बताया। वे सबके सब अच्छा काम करने लगे और उनका स्वास्थ्य भी सुधर गया। वे छात्र आठ-नौ बजे सो जाते थे और प्रातःकाल तीन या चार बजे उठकर अध्ययन करते थे। दो छात्र बहुत जल्दी सो जाते थे और रातको बारह बजेसे लेकर अरुणोदय तक काम करते थे। इन्हें भी अच्छी सफलता मिली।"

## कहानी ? 'घासलेटी' ? या क्या ?

रूसमें नया साहित्य पैदा हो रहा है। संसारमें सर्वत्र पूंजीपतियोंका राज है और साहित्यमें भी उनकी ही छाप है। मध्यवित्त गृहस्थी भी इसी प्रकारके साहित्यमें आनन्द लेते हैं, क्योंकि उनके दिमागमें यह बात नहीं आती कि मजदूरोंका साहित्य भी हो सकता है। पर रूस ऐसा साहित्य पैदा करनेपर तुला हुआ है। वह पढ़े-लिखे श्रमजीवियों-को ही नहीं, उन मजदूरोंके लिए भी कला और साहित्य-का निर्माण कर रहा है, जो छोटे बालकोंकी भांति दो-चार पुस्तकें पढ़कर उनका स्वाद लेना चाहते हैं। ऐसे कहानी-लेखकोंमें वी० इकोलोवस्की अपनी सरलता, सरसता, हास-परिहास और गम्भीरताके लिए प्रसिद्ध है। उसकी एक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



छोटी कहानीका अनुवाद पैरिसके 'ल्यू' पत्रने दिया है। हम नहीं समझे कि यह लतीफा, कहानी, चुटकुला आदि क्या है? हम इसका भी निर्णय न कर सके कि यह 'घास-लेटी' है या विशुद्ध कलाका एक उज्ज्वल रत्न? किन्तु पाठकोंकी जानकारीके लिए बिना इसका अनुवाद दिये भी न रह सके। इसका कारण स्पष्ट है। इसमें रस है, सत्य है और है एक समाजका सजीव चित्र। साथ ही इसमें शब्दाडम्बर नहीं है और न ही समाजकी उलझनोंको सुलझानेका विफल प्रयास। इसके द्वारा नीतिका प्रचार नहीं किया गया है। पर इसमें अनीतिका नाम नहीं है। श्कोलोवस्कीकी ये विशेषतायें संसार-साहित्यमें अद्वितीय हैं। अब पाठक कहानी पढ़ें और इसका निर्णय स्वयं करें :—

मैंने एक नौकरानी रखी है। वह मेरी गृहस्थी संभालती है। उसकी खूबी यह है कि उसे आप जी चाहे जितना काम दीजिये, वह सहर्ष करती है और बिना उसे खतम किये नहीं छोड़ती।

वह जल्दी-जल्दी काम करती है, उसमें ध्यान लगाती है और सदा हंसमुख रहती है।

उसका पति नल बनानेका काम करता है। उसका रूप सुन्दर है। महायुद्धके समय वह रंगरूटोंमें भर्ती हुआ और खेतको गया। दिनों तक उसकी घरवाली आंसुओं-की झड़ी बहाती रही और फिर उसका एक मनुष्यसे प्रेम हो गया।

परिणामः—उसके एक बच्चा हुआ और वह 'मातृसदन'में रखा गया। पति महायुद्धसे वापस आया और उसकी पत्नीने, जिसका नाम हम 'दूनिया' रखेंगे, उससे कहाः—

हमारा कोई बच्चा नहीं है। बोलो तो 'मातृसदन' से एक बच्चा लाकर गोद लिया जाये। यदि हम ऐसा करें तो ऐसा अवसर आया है कि हमें इससे दस रूबल प्रति मासकी आमदनी भी हो जायेगी।

पति इस प्रस्तावसे प्रसन्न हो गया।

वह स्त्री 'मातृसदन' से अपने बेटेको उठा लायी और उसका नाम 'पाकर' रख दिया।

अब देखिये कि दूसरा प्रेमी भी उसके घर आने-जाने लगा। यह था बच्चेका असल बाप। वह स्वभावतः पतिका मित्र बन गया।

आरम्भमें तो उसे इस मकानमें आने जानेमें ही आनन्द मिलता था और वह यह देखकर परम सन्तुष्ट था कि उसने अपने बेटेको ठीक जगह सौंप दिया है। पर कुछ दिन बाद उसे यह अखरने लगा। उसका हृदय व्यथित होने लगा कि अब इस घरमें उसकी पूछ न थी।

एक रोज उसने अपनेको अपने बेटेके साथ एक कमरेमें अकेला पाकर उससे कहाः—

वानका! क्या तू जानता है कि तू मेरा बेटा है?

यह सुनकर बेटा शान्तभावसे उसकी ओर देखने लगा और उसने उससे कहाः—प्यारे चचा! इसका कोई सबूत नहीं है।

यह सुनकर 'पिता' बेचैन हो गया।

जब नल बनानेवाला घर आया तो उसके मित्रने उससे कहाः—

तेरी पत्नीने मेरे साथ फंसकर तुझे धोखा दिया है।

इसपर नल बनानेवाला अपनी पत्नीके पास गया; क्योंकि उसका बेटा दस बरस पहले जन्मा था और उसने यह बात अब तक छिपा रखी थी। इस बातकी न तो बापको खबर और न बेटेको।

उसने अपने पुत्रसे कहाः—

वानका! तेरी मांने तेरे जन्मके बारेमें हमसे बातें छिपायीं। चलो, यह मकान छोड़कर कहीं और अपना डेरा डालेंगे।

दोनोंने मकान छोड़ दिया।

अब वे उसके पास आते हैं, पर केवल लकड़ी देनेके लिए, क्योंकि यह औरत धोबिनका काम करने लगी है।

कहानी खतम हो गयी; पर इसमें हिंसक जीवोंका वर्णन नहीं आया। (हिंसक जीव लुटेरे पूंजीपतियोंके लिए आया है। अ०)

## बेकारोंके उपवासके कारण अमेरिकाका स्वास्थ्य सुधर गया।

उपवासका मनुष्यके स्वास्थ्यपर अच्छा असर पड़ता है, इसका प्रमाण स्वयं युक्तराष्ट्र हैं। वहां गत वर्ष बेकारीने हाय-हाय मचा दी और करोड़ों आदमियोंको आधा पेट खाना पड़ा या उपवास रखना पड़ा। यह देखकर 'न्यूयार्क हेराल्ड'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पूछता है कि क्या उपवासने हमारा स्वास्थ्य ठीक कर दिया है ? उसने लिखा है:—

गत वर्ष अर्थात् १९३२ में अमेरिकापर विकटतम आर्थिक सङ्कट आया। बेकारोंकी संख्या करोड़ों तक पहुंच गयी। पर आश्चर्यकी बात यह हुई कि स्वास्थ्यकी दृष्टिसे १९३२ सबसे उत्तम साल रहा। इस वर्ष बेकारीके कारण करोड़ों अमेरिकनोंको या तो भूखा रहना पड़ा या साधारण भोजन करना पड़ा। इस वर्ष मृत्यु-संख्या केवल ८.३४ प्रति हजार रही। अन्य वर्षोंमें प्रति हजार मनुष्योंमें २२ मौतें होती थीं और यह संख्या बहुत कम समझी जाती थी। जनताके स्वास्थ्यकी इस उन्नतिके कई कारण हो सकते हैं। मुख्य कारण तो यह है कि गत वर्ष निर्धनता और कामकी खोजमें गांव-गांव भटकनेके कारण अधिकांश मनुष्य खुली हवामें रहे। दूसरी बात यह है कि लोगोंको या तो भूखा रहना पड़ा या बहुत साधारण भोजनसे सन्तुष्ट होना पड़ा। पैसे कम होनेसे नशीली चीजोंका व्यवहार भी कम हुआ। बेकार होनेके कारण सर्वसाधारणको अपने स्वास्थ्य सुधारनेको भी समय मिला। अस्पतालोंमें सबका इलाज मुफ्तमें होनेके कारण सबने ही अपने रोगोंकी चिकित्सा करवा ली। लोगोंने कपड़े भी कम पहने, इसलिए उनके बदनमें खूब हवा लगी। इन कारणोंने उनकी कठिनाइयों और चिन्ताओंका प्रभाव बहुत घटा दिया।

'न्यूयार्क हेराल्ड' तो यह देखकर खुश है, पर 'सनीसाइड' नामक पत्र, जो मुर्दोंको गाड़ने और कफनबक्स बेचनेवाले व्यापारियोंका मुखपत्र है, अपने व्यापारकी मन्दीके लिए रोवापीटी मचा रहा है। उसे इस बातका बहुत अफसोस हो रहा है कि गत वर्ष बहुत कम आदमी मरे। यमराजने अमेरिकामें महामारी न फैलाकर इन व्यापारियोंके प्रति अन्याय किया है। धन्य है यह संसार, जहां ऐसे लोग भी हैं जो रात-दिन यही प्रार्थना करते हैं कि अधिक आदमी मरें और उनका रोजगार चमके !

## कुत्तोंकी विचित्र बातें

कुत्ता मनुष्यका बहुत पुराना साथी है। जहां दो भी घर होंगे वहां कुत्ता जरूर होगा। इसपर भी कुत्तेके सम्बन्धमें साधारण मनुष्यको बहुत कम ज्ञान है। उदाहरणार्थ—कितने मनुष्योंने उसके भौंकनेकी भिन्न-भिन्न आवाजोंको समझनेका यत्न किया है ? सर जान लबक नामका एक विद्वान् कहा करता था कि कुत्ता भौंककर मनुष्यकी वाणीकी नकल करनेकी चेष्टा करता है। जङ्गली कुत्ते कभी नहीं भौंकते ; न उनके चचेरे भाई भेड़िये ही भौंकते हैं ; और न कुत्तेकी जातिका कोई दूसरा जन्तु, जिसने कभी मनुष्योंको बोलते या घरेलू कुत्तोंको भौंकते नहीं सुना।

कुत्तेके भौंकने और गुर्रानेमें आकाश-पातालका अन्तर है। जब कुत्ता भौंकता है तो वह अपना सिर ऊपर उठाकर भौंकता है, जिससे उसका कण्ठ नङ्गा रह जाता है। यह उसकी युद्ध-ध्वनि नहीं। परन्तु जब वह गुर्राता है तो अपना सिर नीचे कर लेता है। क्योंकि गुर्राहटका अर्थ होता है कि अभी आक्रमण होनेको है, इसलिए चोटीको नीचे करके वह अपने भेद्य कण्ठको सुरक्षित कर लेता है।

जब आप किसी घरमें जायें और उस परिवारका कुत्ता भौंकता हुआ आपसे मिलने आये तो उस समय आपको कोई तात्कालिक भय नहीं रहता। परन्तु यदि वह गुर्राता हुआ, सिरको नीचा किये और पूंछको छड़ीकी तरह अकड़ाये, आपकी ओर आये, तो समझ लो कि वह काटने आ रहा है। उस समय आप हाथोंको छातीपर रखकर, चुपचाप निचले खड़े हो जाइये। यदि आप ऐसा करेंगे तो दसमेंसे एक भी कुत्ता आपको नहीं काटेगा। परन्तु यदि आप उसे डरानेकी चेष्टा करेंगे—सबसे बढ़कर यदि आप पीठ फेरकर भागेंगे—तो कुत्तेके आपको एक-दो जगह काटनेकी बहुत सम्भावना है।

कुत्तोंके सम्बन्धमें जितने ऊटपटांग किस्से प्रचलित हैं, उनमें पागल कुत्तेका डर सबसे बड़ा है। जिन कुत्तोंको पागल मान लिया जाता है उनमें हजारमेंसे एक भी सचमुचका हलकाया नहीं होता। इसके अतिरिक्त बावला कुत्ता एक निराशाजनक रूपसे बीमार कुत्ता होता है—वह इतना बीमार और तिरमिराया हुआ होता है कि वह किसीपर आक्रमण करनेके लिए उसके पीछे दूर तक नहीं भाग सकता।

यों तो कुत्तोंके सम्बन्धमें अगणित निरर्थक सिद्धान्त प्रचलित हैं, परन्तु बावले कुत्तोंकी दो परीक्षायें बहुत मानी जाती हैं। एक तो यह कि जिस कुत्तेके मुंहसे झाग निकल रही हो, वह बावला होता है, और दूसरी यह कि बावला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कुत्ता पानी नहीं पीता। परन्तु ये दोनों ही परीक्षायें झूठी हैं।

और भी दर्जनों कारणोंसे कुत्तेके मुंहसे झाग तथा लार गिर सकती है। इन कारणोंमें अजीर्णसे लेकर अस्थायी नाड़ी-दौर्बल्य तक कोई भी हो सकता है। और, यदि कुत्ता पानी न पिये तो इसका सच्चा कारण एक ही हो सकता है। अर्थात् उसे प्यास नहीं।

आपके कुत्तेके सम्बन्धमें कई ऐसी बातें हैं जो हो सकता है कि आप न जानते हों। जैसे, उसके ४२ दांत—आपसे दस अधिक—होते हैं। इन ४२ दांतोंमेंसे न तो कोई दांत और न उसके पाचक प्रदेशका कोई भाग मिठाइयोंको पचानेके योग्य बनाया गया है। खांड, किसी भी रूपमें हो, कुत्तेके लिए हानिकारक है।

फिर—क्या आप जानते हैं कि कुत्तेका हांफना एक प्रकारका पसीना निकालना है? कुत्तेको पसीना नहीं आता। वह केवल मुंहके द्वारा पसीना निकालता है। यदि आप उसके मुंहपर थूथन चढ़ाकर उसके जबड़ोंको बन्द कर दें, तो उसे उतना ही कष्ट होगा जितना गरमीके मौसममें आपके शरीरके सभी रोमकूपोंको पूरी तरहसे बन्द कर देनेसे आपको होगा। यदि कानून आपको कुत्तेके मुंहपर थूथन चढ़ानेकी आज्ञा देता हो, तो ऐसी थूथन लीजिये जिसमें वह मुंह खोलकर पानी गिरा सके।

यदि आप कुत्तेके सामने दर्पण रखेंगे, तो अधिक सम्भव यह है कि वह उसकी ओर दुबारा नहीं देखेगा। उसके नेत्र उसे बताते हैं कि वहां एक दूसरा कुत्ता उसके सामने है। परन्तु उसकी नाक कहती है कि वहां कोई कुत्ता नहीं। उसकी घ्राण-शक्ति उसकी प्रबलतम ज्ञानेन्द्रिय है। उसकी चक्षु-दृष्टि उसकी निर्बलतम इन्द्रिय है। इसलिए वह अपनी नाकपर विश्वास करके उसपर अविश्वास करता है जो उसके नेत्र समझते हैं कि हम दर्पणमें देखते हैं। यदि आप अपने मुंहपर परदा डाल लें या भेस बदल लें, जिससे कि आपके निकटतम मित्र तकको भी धोखा हो, तो भी कुत्ता आपको बड़ी आसानीसे पहचान लेगा। उसे आपकी गन्ध याद है।

प्रायः कहा जाता है कि कुत्तेकी नाक गीली और ठण्डी हो तो समझना चाहिए कि वह तन्दुरुस्त है और गर्म तथा सूखी नाक रोगका लक्षण होती है।

परन्तु यह बात भी सर्वथा सत्य नहीं। अनेक तन्दुरुस्त कुत्तोंकी नाक गर्म और सूखी देखी गयी है और बीसियों दम तोड़ते हुए कुत्तोंकी नाकें ठण्डी और गीली पायी गयी हैं। नाकके तापमानसे कुत्तेके स्वास्थ्यकी दशाका निश्चय करनेके लिए कोई निश्चित नियम नहीं। आपका कुत्ता बीमार है या नहीं, यह मालूम करनेकी एक अच्छी रीति यह है कि आप उसके मसूड़ोंको देखें। यदि वे पीले और सांवले हों तो अधिक सम्भव यही है कि वह बुरी अवस्थामें है। तन्दुरुस्त कुत्तोंके मसूड़े चमकते हुए गुलाबी होते हैं।

एक और झूठा ख्याल यह है कि सभी पिल्ले नौ दिनके होकर आंखें खोल लेते हैं। इसी झूठी धारणासे कई अज्ञानी लोगोंने अनेक सुन्दर पिल्लोंको डुबाकर मार डाला है, क्योंकि उन्होंने समझा था कि पिल्ले अन्धे हैं। बहुधा आंखें तब तक नहीं खुलतीं, जब तक कि पिल्ला ११ से १४ दिन तकका नहीं हो जाता।

एक और भी बड़ा ही सिड़ी और मूढ़ सिद्धान्त है। वह यह कि कुत्ता अच्छे और बुरे मनुष्यमें विवेक कर सकता है। इससे कई अच्छे मनुष्य, जिन्हें कुत्ते पसन्द नहीं करते थे, बुरे मान लिये गये हैं और कई दुर्जन, जिन्हें अपनेको कुत्तोंसे पसन्द करानेका ढब आता था, विश्वास-पात्र ठहराये गये हैं।

एक चोरका कुत्ता उससे वैसा ही प्रेम करता है जैसे एक धर्मात्माका कुत्ता अपने स्वामीसे करता है। बात वास्तवमें ऐसी जान पड़ती है कि प्रत्येक मनुष्यमेंसे एक सूक्ष्म गन्ध निकलती है। जिसकी गन्ध कुत्तोंको भाती है उसे वे पसन्द करते हैं और जिसकी नहीं भाती उसे वे पसन्द नहीं करते।

यह सिद्ध करना कठिन है कि कुत्तोंकी कोई भाषा होती है। परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि कुत्तोंमें एक-दूसरेपर अपनी इच्छा प्रकट करनेका कोई साधन जरूर है। वे नाकों-को छूकर और ऐसी ही दूसरी रीतियोंसे अपनी इच्छा प्रकट करते हैं। एक कुत्ता अपनी गुदड़ीपरसे उठेगा और कमरेमें घूमकर उन सब कुत्तोंकी नाकोंसे अपनी नाक छुयेगा जो वहां मौजूद होंगे। इसके बाद वे सब उसके पीछे बाहर जाकर दौड़ लगायेंगे या चञ्चलता करेंगे।

कुत्तोंका रातको रोना किसी विपत्तिके आने या रोगीकी मृत्यु होनेकी पूर्व सूचना समझी जाती है। एलबर्ट पेसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



टर्न्यून नामके एक अमरीकन सज्जनको कुत्तोंका दीर्घ अनुभव है। उन्होंने उनके सम्बन्धमें कई पुस्तकें भी लिखी हैं। वे लिखते हैं—मेरा वुल्फ नामका एक कुत्ता साधारणतः मेरे दूसरे सभी कुत्तोंसे अधिक चुप रहता था। ३ जून १९२२ की बात है, उसने रातके डेढ़ बजे रोनेकी लम्बी और डरावनी आवाजें निकालकर हमें जगा दिया। वह बार-बार गुर्राता था और यत्न करनेपर भी शान्त न होता था। कुत्तेकी गुर्राहटमें यह विचित्र स्वर मैंने पहले भी दो बार, दूसरे वर्षोंमें, सुना था। इसलिए मैंने ठीक समय नोट कर लिया।

दूसरे दिन सवेरे मैंने सुना कि मेरी माताका देहान्त ३ जून सन् १९२२ को मेरे निवास-स्थानसे ३० मीलके अन्तरपर—ठीक डेढ़ बजे हो गया था। अपने दस वर्षके जीवनमें वुल्फने न कभी इससे पहले और न कभी इसके बाद ऐसी भयोत्पादक आवाजें निकाली थीं।

सन् १८९४ की शरदृऋतुमें, एक रात मैंने अपनी झीलके चारों ओर दो-दो मील तक कुत्तोंको वही मृत्युकी गुर्राहट करते सुना। उस झीलमें उस रात एक स्त्री डूबकर मर गयी थी। जिस जगह वह डूबी थी वह इतनी दूर थी कि ये कुत्ते न तो उसे देख सकते थे, न उसकी गन्ध ले सकते थे, और न वहांकी आवाज ही सुन सकते थे।

फिर भी इन बातोंको अलौकिक मानना ठीक नहीं। इसका कोई तर्कसङ्गत कारण जरूर होगा। इसका कारण कुत्तोंका कोई ऐसा स्वाभाविक सहजज्ञान हो सकता है, जिसको समझनेकी हम मानवोंने अभी तक तकलीफ नहीं की।

परन्तु कुत्तोंके सम्बन्धमें एक रहस्य है जिसका कोई समाधान नहीं सूझता। वह यह कि कई बातोंमें तो इनकी बुद्धि आश्चर्यजनक होती है, और कई बातोंमें ये निपट मूर्ख होते हैं। सरदियोंमें कुत्तोंको अंगीठीके पास बैठनेकी बड़ी चाह होती है। वे अपने मालिकोंको आगमें लकड़ियां डालते भी देखते हैं। परन्तु आज तक न कभी देखा और न कभी सुना है कि किसी कुत्तेने बुझती हुई आगपर लकड़ी डालकर उसे जलता रखा हो। कुत्तेके गलेमें लम्बी रस्सी डालकर यदि उसे किसी खूंटे या पेड़के साथ बांध दिया जाय तो वह उस खूंटे या पेड़के गिर्द चक्कर काटकर रस्सीको इतना तङ्ग कर लेता है कि फिर वह एक इञ्च भी नहीं हिल सकता। कभी कोई ऐसा कुत्ता नहीं देखा गया जिसे इतनी थोड़ी भी बुद्धि हो कि वह उलटा घूमकर उस रस्सीको खोल ले।

कुत्तोंमें चतुराईके साथ-साथ इतनी बुद्धिहीनता भी देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। *

—सन्तराम

* Popular Mechanics के दो लेखोंका सारांश।

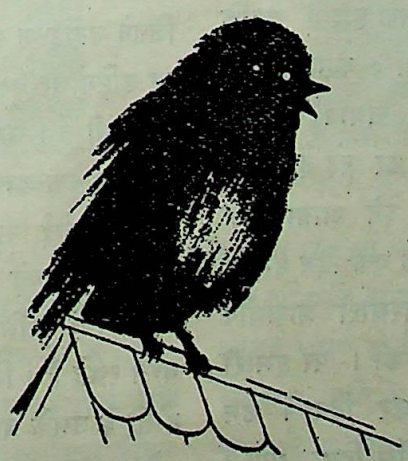

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# समाज-दर्पण

## हरिजनोंसे रोटी-बेटीका सम्बन्ध

बहुत लोगोंका ख्याल है कि जब तक हरिजनोंके साथ खान-पान तथा ब्याह-शादीका सम्बन्ध स्थापित करनेमें द्विजोंको झिझक मालूम होगी तब तक हरिजनोंका वास्तविक उद्धार नहीं हो सकता। हमारी तुच्छ बुद्धिमें हरिजनोंके उद्धारमें रोटी-बेटीका प्रश्न सबसे महत्त्वपूर्ण नहीं है, और यह प्रश्न सहजमें, शीघ्रतासे हल भी नहीं हो सकेगा। महात्मा गांधी तथा मालवीयजी इसीलिए अभीसे इस बात-पर विशेष जोर देना नहीं चाहते। आवश्यकता तो इस बात-की है कि हरिजनोंकी नैतिक संस्कृति तथा पार्थिव उन्नतिकी ओर पहले ध्यान दिया जाय। उनमें शिक्षाका प्रचार करना सबसे जरूरी है। इसके बाद उन्हें सामाजिक स्थितिमें द्विजोंके साथ एकासन दिया जा सकता है। केवल खान-पान या ब्याह-शादीसे कुछ नहीं होगा। स्वयं हरिजन यह बात समझने लगे हैं कि केवल द्विजोंके साथ एकासनमें भोजन करनेसे वे अपनी परम्परागत जड़ता तथा हीनावस्थासे कभी त्राण नहीं पा सकते। इसके अतिरिक्त शिक्षाका अभाव होनेसे अभी उनके विचार ऐसे सङ्कीर्ण हैं कि द्विजोंके साथ एकासनमें खानेमें उन्हें भी आपत्ति है। इसका प्रमाण एक उदाहरणसे मिलेगा—"प्रयागकी खबर है कि हालमें वहांके म्युनिसिपल बोर्डके चेयरमैन राय बहादुर बा० कामताप्रसाद ककड़के बंगलेपर मेहतरोंका चौधरी मिलने गया। चौधरीने कहा—'अछूतोंके लिए आप लोग जो कुछ कर रहे हैं उसके निमित्त अपनी बिरादरीकी ओरसे धन्यवाद देने आया हूं।' बातचीतके समय चौधरीने यह भी कहा कि एक दिन हमारी बिरादरीका खाना हो रहा था कि कई काश्मीरी ब्राह्मणोंने आकर हमारे साथ खानेकी इच्छा प्रकट की। पर हमारी बिरादरीके लोगोंने खिलानेसे इनकार कर दिया। उन लोगोंके बहुत जिद करनेपर उन्हें अलग परोस दिया गया। हम लोग यह नहीं चाहते कि सवर्ण हिन्दू हमारे साथ ब्याह-शादी या खान-पानका नाता जोड़ें। अंगरेजी होटलोंमें खानेवालोंके साथ खाकर हम अपना धर्म नहीं खोना चाहते। यदि आप लोग हमारे साथ दयाका बर्ताव करना चाहते हैं तो हमारे बालकोंको उद्योग-धन्धेका कोई काम सिखा दें और पढ़े-लिखे अछूतोंको अच्छी नौकरियां दें।"

चौधरीकी इस मनोवृत्तिसे स्पष्ट ही यह बात समझमें आ जानी चाहिए कि वास्तविक अछूतोद्धार रोटी-बेटीके प्रश्न-पर नहीं, बल्कि हरिजनोंकी शिक्षा तथा संस्कृति-सम्बन्धी उन्नतिपर निर्भर करता है। जब यह प्रश्न हल हो जायगा तो रोटी-बेटीका सवाल हल होनेमें देर न लगेगी।

## कामान्ध वृद्धोंका समाजपर अत्याचार

वृद्ध-विवाहका जो निदारुण अत्याचार हमारे देशकी निष्पाप, निर्दोष कुमारी लड़कियोंको सहना पड़ता है वह संसारके अन्य किसी भी देशमें नहीं देखा जाता। अब प्रश्न यह है कि इस प्रकारके विवाहके घोर अनर्थमूलक परिणाम देखते हुए भी समाजमें निरन्तर इनका प्रचलन क्यों और कैसे पाया जाता है? क्या समाजमें उपयुक्त वरोंकी कमीके कारण यह अन्धेर देखा जाता है? अथवा धन-लोलुप पिता अर्थ-पिशाच सेठोंकी कामान्धताकी वेदीपर स्वेच्छासे अपनी निरपराध लड़कियोंकी बलि देते हैं? अब तक वृद्ध-विवाहके जितने उदाहरण हमें मिले हैं उनमें द्वितीय कारण ही अधिक-तर दृष्टिगोचर हुआ है। पर इस द्वितीय कारणके अनेक उप-करण भी हैं। समाजमें दहेज-प्रथाका पैशाचिक प्रकोप होनेके कारण अनेक कन्याओंके पिता अक्सर तबाह हो जाते हैं और अन्तको कोई अन्य उपाय न सूझनेके कारण उन्हें अपनी लड़कियोंको बूढ़े कसाइयोंके गले मढ़ना पड़ता है। बहुतसे सेठ अपनी दुरभिसन्धिकी पूर्तिके लिए बड़े बड़े विकट षड्-यन्त्र रचते हैं। जिस कन्याका सर्वनाश करनेकी इच्छा उन्हें होती है उसके बापकी आर्थिक स्थिति खराब देखकर वे पहले उसे ऋणके भारसे दबा देते हैं, और बादमें जब वह ऋण चुकानेमें समर्थ नहीं होता तो ऋणके बदलेमें उसकी कन्यापर हस्तक्षेप करना अपना परम धर्म समझते हैं। हालमें कल-कत्तेके एक समाचार-पत्रमें इसी प्रकारकी एक पैशाचिक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वास्तविक घटनाका विवरण छपा है। समाचार इस प्रकार है कि किसी विशेष फर्मके मालिक महाशयने ( जिनका नाम प्रकाशित करना इस समय हम उचित नहीं समझते ) प्रायः पचास वर्षकी उम्रमें एक एकादशवर्षीया बालिकाका पाणि-ग्रहण किया है। लड़की रामगढ़के किसी नारसरियाकी बतायी जाती है। कहते हैं कि नारसरियाको उक्त सेठजीके कुछ रुपये देने थे, पर बेचारा अपनी दुरवस्थाके कारण ये रुपये न दे सका। सेठजी ऐसा चाहते ही थे। उन्होंने उसकी ११ वर्षकी बहनसे व्याह कर लिया। यह विवाह कानपुर तथा लखनऊके बीच किसी गांवमें हुआ बताया जाता है। लग्न-मुहूर्त्तकी भी कोई आवश्यकता नहीं देखी गयी। यह भी कहा जाता है कि बूढ़े दूल्हाके केवल बेटे-बेटी ही नहीं, पौत्र भी हैं।

इन मोहान्धोंकी ज्यादतीको समाज कब तक सहन करनेके लिए तैयार है, कहा नहीं जा सकता।

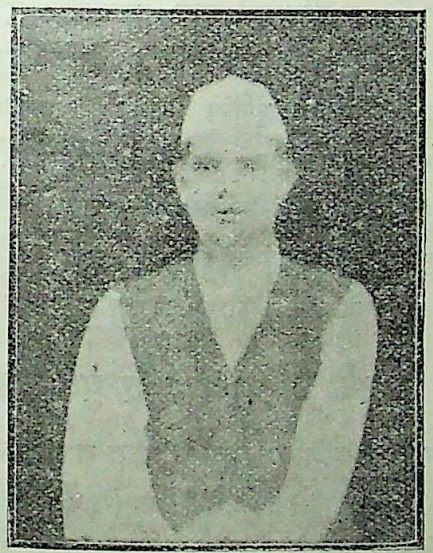

श्री देवीदास गांधी और उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी।

## वैधव्य-ज्वालासे अनर्थ

हमारी असहाया विधवाओंके ऊपर समाजका जो भीषण लौहचक्र चल रहा है, जो आतङ्क-जनक, पाषाण-कठिन अनुशासन जारी है, उसके कारण समाजमें जैसे अनर्थ होते चले जाते हैं, उससे सभी परिचित हैं। विधवाओंका सारा जीवन इस लौहानुशासनके कारण ऐसा विदलित हो जाता है, उनका मानसिक विकास ऐसा विकृत हो जाता है कि कभी-कभी वे भ्रान्त अवस्थामें पूर्णतः विवेकशून्य हो जाती हैं और इस बातपर विचार करनेका अवसर ही उन्हें नहीं मिलता कि वे उचित कार्य कर रही हैं या अनुचित। कारण यह कि समाजकी क्रूर-दृष्टि तथा उसके उपहासका भय उनके लिए आत्माकी अन्तर्वाणीसे बहुत अधिक महत्त्व रखता है। समस्त जीवन उन्हें समाजकी कठोर निगरानीमें रहकर बच-बचकर चलना पड़ता है, और सब समय केवल इसी एक बातका ख्याल रखना पड़ता है कि समाज उनके चरित्र, उनकी चाल-ढालपर किसी प्रकारका सन्देह न करने पाये। कभी-कभी तो यह स्थिति ऐसी हास्यजनक हो जाती है कि विधवा बेचारी समाजकी दृष्टिको ही धर्म या अधर्मकी कसौटी समझने लगती है और यदि कभी समाजकी आंखोंमें धूल झोंककर, उसकी नजर बचाकर वह गुप्त रूपसे कोई कुकर्म करनेमें समर्थ होती है तो उसका अन्तःकरण उसे पाप नहीं समझता; क्योंकि यह बात हम पहले ही कह आये हैं कि समाजके रुद्र शासनके कारण हमारी अभागिनी विधवाका अन्तःकरण प्रायः नहींके बराबर रह जाता है। समाज ही उसका एकमात्र हर्ता-कर्ता, समाज ही एकमात्र गति रह जाती है। यदि समाजको वह धोखा दे सकी तो अपना इहलोकका बेड़ा पार समझती है, पर यदि उसकी तीक्ष्ण कोप-दृष्टिमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आ गयी तो सदाके लिए जहन्नमको गयी समझिये। पर इस अन्ध-समाजकी न तो बुद्धि ही ठिकाने आती है, न उसका हृदय ही पिघलता है। अपने घोर अन्याय तथा अनर्थमूलक रुद्र-दण्डको वह परम सत्य समझता है, पर विधवाकी आर्त दशा उसके लिए मिथ्या तथा उपेक्षणीय है और उसके रञ्चमात्र असंयम तथा त्रुटिको भी वह क्षमा करनेके लिए तैयार नहीं है।

कुछ भी हो, हमारा तात्पर्य यह है कि हमारे कसाई समाजकी क्रूर दृष्टिका ऐसा आतङ्क हमारी विधवाओंके मनमें छाया रहता है कि जब कभी वे मानव-चरित्रकी स्वाभाविक

बहावलपुरके हिन्दू-सभाके प्रधान मुखी दरियाबख्श तथा मुखी रामदित्ता मल। ये दोनों भाई जेलसे छूटनेके बाद फिर जेलमें डाल दिये गये थे।

दुर्बलताके कारण कोई त्रुटि कर बैठती हैं तो उसे हिंसक समाजकी आंखोंसे छिपानेके लिए वे अनर्थसे अनर्थकर उपायों-को भी स्वीकार कर लेती हैं, और यह नहीं देखतीं कि उसका परिणाम क्या होगा। जब किसी विधवाके गर्भ रह जाता है तो वह पहले तो नाना विकट उपायोंसे इस चेष्टामें रहती है कि गर्भपात हो जाय; जब इस चेष्टामें सफल नहीं होती तो सन्तान प्रसव करते ही उस निष्कलङ्क, निष्पाप शिशु-आत्माकी निर्दयतासे हत्या कर डालती है। माताओं द्वारा नवजात शिशुओंकी हत्याओंकी घटनाओंका हमारे समाजमें अभाव नहीं है। इस प्रकारकी खबरें समा-चार-पत्रोंमें अक्सर छपती रहती हैं। इसी प्रकारका एक समाचार हालमें अखबारोंमें प्रकाशित हुआ था। पाठकोंकी जानकारीके लिए वह यहांपर दिया जाता है, जिससे मालूम हो जायेगा कि समाजके अत्याचारके कारण कैसे-कैसे अनर्थ हो सकते हैं—"कलकत्तेमें सत्यबाला नामकी एक विधवा युवतीने हालमें अपने नवजात बच्चेकी हत्या कर डाली। कहते हैं कि सत्यबाला हरिघोष स्ट्रीटके एक घरमें नौकरी करती थी। मालिकके घरकी अटारीपर उसके बच्चा पैदा हुआ। प्रमाणोंसे पता लगा कि सत्यबालाने बच्चेको एक कपड़ेमें लपेटकर अटारीमें पानीकी टङ्कीके नीचे रख दिया और स्वयं भागनेकी चेष्टा की। जब बच्चा पानीकी टङ्कीके नीचे देखा गया, तब तक उसमें थोड़ी-बहुत जान थी। पुलिसको खबर दी गयी। पुलिसवालोंने बच्चेको ले लिया और सत्यबाला अस्पताल भेजी गयी। पुलिस अफसरने एम्बुलेन्स बुलाया, पर एम्बुलेन्स पहुंचने तक बच्चेकी मृत्यु हो गयी। बच्चेकी लाशकी परीक्षा पुलिस-सर्जनने की। उनका कहना है कि उसकी मृत्यु गर्दन मरोड़े जानेके कारण हुई।"

इस प्रकारके अनर्थोंका सारा दोष समाजके ऊपर है।

## पतिके अत्याचारका परिणाम

ऊपर जिस घटनाका विवरण दिया गया है वह नवजात-शिशुओंकी हत्याओंके अनेक कारणोंमेंसे एक है। केवल विधवाओंपर होनेवाले निर्यातन ही इस दुष्कर्मका एकमात्र कारण नहीं हैं; अबला पत्नियोंपर हमारे पुरुषोंके पाशविक आचरण तथा अमानुषिक व्यवहारसे भी यह अनर्थमूलक परिणाम सम्भव हो सकता है। पतियों द्वारा एकदम उपेक्षित तथा निरन्तर निर्यातित होनेके कारण हमारी अनेक असहाया बहनें जब मानव-हृदयकी स्वाभाविक दुर्बलताके कारण पर-पुरुषोंसे घनिष्टता स्थापित करके नाजायज सन्तान उत्पन्न कर बैठती हैं तो समाजके कोपका भय उनके मनमें बना रहता है और नीति-अनीति तथा इहलोक-परलोककी भावना-को ताकमें रखकर वह अपने नवजात बच्चोंको तत्काल त्याग देनेके लिए बाध्य होती हैं। ऐसी स्थितिमें अक्सर बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बच्चेकी हत्या किये उसे त्यागना कठिन हो जाता है। इस प्रकारके उदाहरणोंका भी हमारे भ्रष्ट समाजमें अभाव नहीं पाया जाता। इलाहाबादकी खबर है कि वहां हालमें रामकलिया नामकी एक स्त्रीने अदालतमें यह स्वीकार किया कि उसने अपने बच्चेके उत्पन्न होते ही उसे एक कुएंमें डाल दिया। पास ही एक मुसलमानने बच्चेके रोनेकी-सी आवाज सुनी। जब वह कुएं के पास गया तो उसने उसके भीतर एक नवजात शिशुको पड़ा हुआ पाया। तत्काल बच्चा बाहर निकाला गया और एक दाईको दूध पिलानेके लिए दिया गया। पर १२ दिनके बाद वह मर गया। रामकलियाने अदालतमें कहा कि उसके पतिका व्यवहार उसके प्रति बिलकुल अच्छा नहीं था और एक प्रकारसे वह पति द्वारा परित्यक्ता थी। किसी दूसरे पुरुषसे उसका प्रेम हो गया, जिसके परिणाम-स्वरूप यह बच्चा उत्पन्न हुआ। जजने अपने फैसलेमें कहा कि उक्त स्त्रीका अपराध बहुत बड़ा नहीं है। पति द्वारा निर्यातित होनेपर उसकी पर-पुरुषसे घनिष्ठता हो जाना स्वाभाविक था और समाजके कठिन शासनके भयसे नाजायज बच्चेको त्यागनेके लिए उसे बाध्य होना पड़ा। उसकी दुर्बलता बहुत कुछ क्षम्य है। इस विचारसे जजने उक्त स्त्रीको केवल एक सालकी साधारण कैदकी सजाका हुक्म दिया। जजका यह फैसला सर्वथा न्यायानुकूल है।

## अछूतोद्धार या अनाचार ?

अछूतोद्धारके नामपर हमारे कुछ सार्वजनिक कार्यकर्ता समय-समयपर जिस घोर दुष्प्रवृत्तिका परिचय देते हैं वह अत्यन्त लज्जाजनक तथा घोर कलङ्कपूर्ण है। अछूतोद्धारको कामाचारमें परिणत कर देना जघन्य पाशविकताका परिचायक है। महात्मा गांधीने अपने विगत ऐतिहासिक उपवासके पहले कुछ 'समाज-सुधारकों' की इस नीच प्रवृत्तिकी ओर

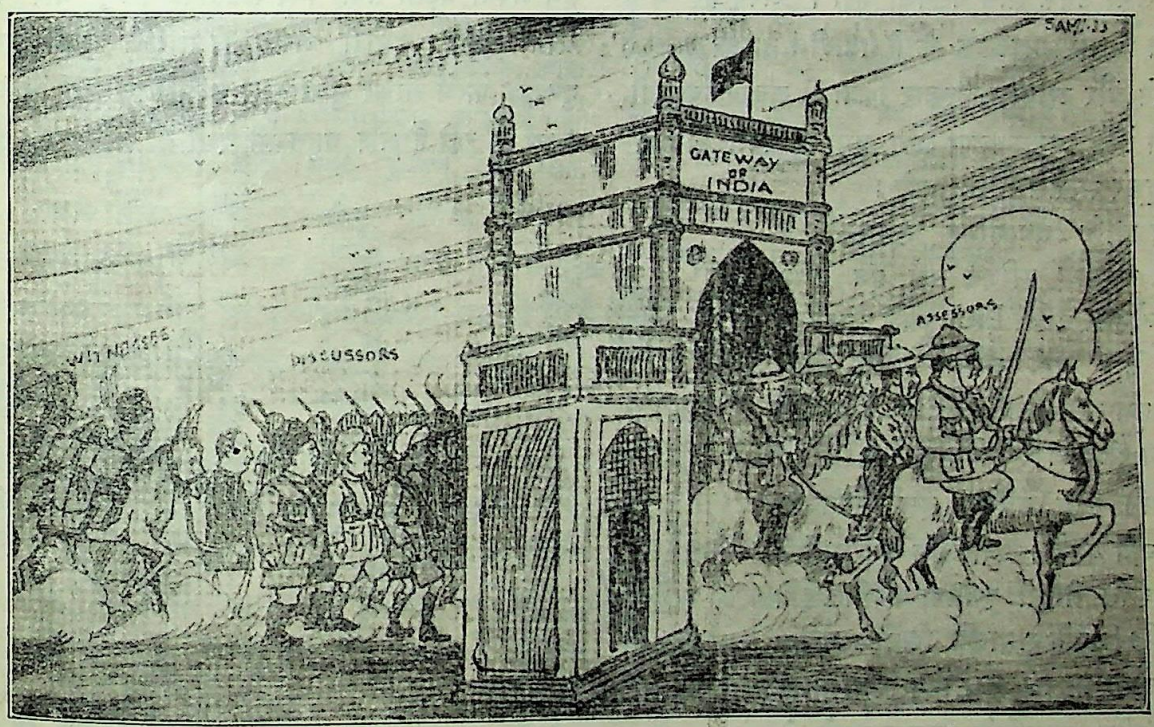


नरम दलकी पिलपिलिया फौजका लण्डनको प्रस्थान। ('ने० का०' से)

सङ्केत किया था। अछूतोद्धारका अर्थ यह है कि हम अछूत-स्त्रियोंको उसी श्रद्धा तथा सम्भ्रमकी दृष्टिसे देखें, जिस प्रकार अपनी सम्भ्रान्तवंशीय महिलाओंको देखते हैं। पर हमारे कामुक कार्यकर्ता अछूत जातिकी स्त्रियोंको अपने निन्दनीय कामाचारके लिए सहजलभ्य समझकर उनपर कुदृष्टि रखनेमें किसी अनीति या अन्यायका अनुभव नहीं करते। केवल अछूतोद्धारक ही नहीं, इधर जो समाचार छपे हैं उनसे ज्ञात होता है कि बहुतसे कट्टर सनातनी भी (जो स्वभावतः अछूतोद्धारके घोर विरोधी हैं) इस सम्बन्धमें अपनी मलिन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मनोवृत्तिका परिचय देते बिलकुल नहीं लजाते। कुछ दिन पहले एक समाचार प्रकाशित हुआ था कि मथुराके कुछ चौबे एक हरिजन-वंशीय पानवाली ( जो यथार्थमें भङ्गन थी ) के यहां उसके रूपसे आकृष्ट होकर नित्य पान खाने जाया करते थे। इधर कानपुरसे खबर आयी है कि पण्डित माताप्रसाद नामके एक म्युनिसिपल इन्सपेक्टरने, जो अछूतोद्धारके पक्षपाती और एक प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्ता थे, एक अछूत लड़कीपर बलात्कार किया है। इस लड़कीकी अवस्था केवल १२ वर्षकी बतलायी जाती है। वह सब्जीमण्डीमें आम बेच रही थी। 'पण्डितजी'ने कुछ आम खरीदे और उस लड़कीसे आमोंको लेकर उनके साथ चलनेको कहा। अपने घर न ले जाकर उसे विद्यार्थी-मण्डलके किसी गयादीन नामक व्यक्तिके यहां ले गये और उसपर बलात्कार किया। लड़की चिल्लायी, और थोड़ी देरमें घटनास्थलपर लोग जमा हो गये। 'पण्डितजी' एक दूसरे रास्तेसे निकल भागे।

यह है हमारे तथाकथित 'सुधारकों' के आदर्शका नमूना! हरिजन भाई इन सुधारकोंको सन्देहकी दृष्टिसे देखेंगे इसमें आश्चर्यकी क्या बात है? यही कारण है कि यद्यपि बहुतसे अछूत-आन्दोलनके नेता हरिजनोंसे रोटी-बेटीका सम्बन्ध स्थापित करनेपर जोर दे रहे हैं, तथापि स्वयं हरिजन इस प्रस्तावका अनुमोदन नहीं करते। जो लोग हरिजनोंकी सामाजिक रीति-नीतिसे पूर्णतया परिचित हैं वे जानते हैं कि उनके समाजमें स्त्रियोंके नैतिक आचरणपर कैसा महत्त्व आरोपित किया जाता है। उच्चवंशीय सवर्णोंकी कामान्धतासे वे भली-भांति परिचित हैं, इसलिए उन्हें भय है कि उनके साथ विवाहादिका सम्बन्ध स्थापित हो जानेसे उनका स्त्री-समाज भी उच्छृङ्खल हो जायगा।

## नारी-अपहरण तथा स्त्री-विक्रय समस्या

नारी-अपहरण-समस्याका कोई समाधान होनेके बजाय वह दिन-दिन उग्र रूप धारण करती जाती है। समाचार-पत्रोंमें इस विषयके समाचारोंकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती हुई दिखायी देती है। समाजके लिए यह एक भयङ्कर आतङ्क तथा चिन्ताका विषय हो उठा है। क्या इस कलङ्कपूर्ण घृणित दुष्कर्मके दमनका कोई उपाय नहीं है? समाज-सुधारक कहां सोये पड़े हैं? असल बात यह है कि समाचार पढ़ते समय हम लोगोंके मनमें कुछ भयका सञ्चार अवश्य होता है, पर पीछे हम लोग यह सोचकर अपना मन समझा लेते हैं कि जो नारियां भगायी जा रही हैं उनका अस्तित्व केवल समाचार-पत्र-जगत्में है और हमारे सामाजिक जीवनसे उनका विशेष सम्बन्ध नहीं है। पर यदि यही रफ्तार चली गयी तो अकस्मात् एक दिन ऐसी स्थिति आ सकती है कि हमें अपनी जड़ता तथा निश्चेष्टताके लिए घोर पश्चात्ताप करना पड़ेगा। हमारी अनेक अभागिनी बहनें मुसलमान गुण्डोंके फेरमें आकर मुसलमान धर्मको स्वीकार करनेके लिए बाध्य हो रही हैं और बहुत-सी ऐसी हैं जो हमारे ही स्व-

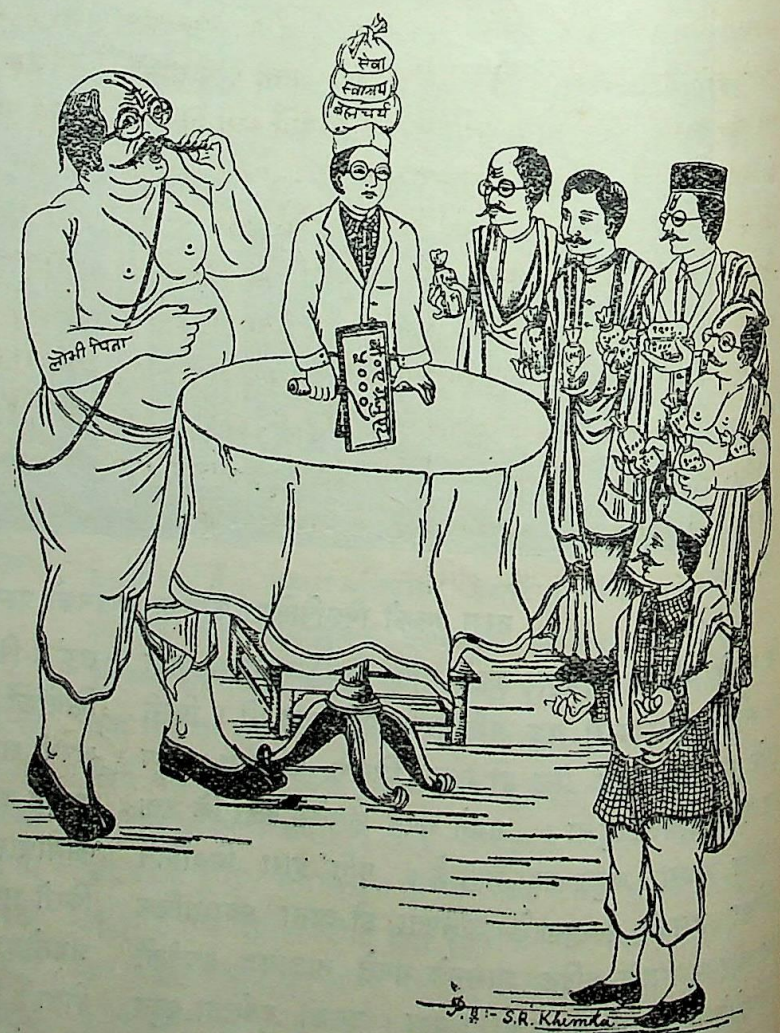


शिक्षित वरका मोल-तोल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जातीय भाई-बहनों द्वारा उड़ायी जाती हैं और घोर लज्जा-जनक व्यवसायमें लिप्त होनेके लिए मजबूर की जाती हैं। इस सम्बन्धमें मुसलमानोंका अत्याचार तो रात-दिनकी साधारण घटनाओंके अन्तर्गत हो गया है। हमारे स्वजातीय हिन्दू भाई तथा बहनोंका इसमें कितना हाथ है, यहांपर उसीका एक साधारण उदाहरण दिया जाता है। हालमें कानपुरकी पुलिसने पटकापुरके लछमन अहीरके मकानपर हमला किया। जब मकानकी तलाशी हुई तो वहां रुक-मिनिया नामकी एक स्त्री पायी गयी जो उन्नावके गङ्गाई मालीकी स्त्री बतलायी जाती है। वह ६ अन्यान्य व्यक्तियों-के साथ गिरफ्तार कर ली गयी। इसके बाद कुर्सवांमें रामलालके घरपर पुलिसने धावा किया। यहां गङ्गादेवी नामकी एक स्त्री पायी गयी। वह पांच आदमियोंके साथ गिरफ्तार की गयी। इसके बाद रामनारायण बाजारमें एक दूकानकी तलाशी ली गयी; वहां रेवती, कुन्दन, छोटे तथा भगवती नामके पांच व्यक्ति पूर्वोक्त दो दलोंके सहयोगी होनेके सन्देहमें गिरफ्तार किये गये। कहा जाता है ये तीनों दल शाहजहांपुर, दिल्ली तथा मुरादाबादके जिलोंमें स्त्री-विक्रय-का पेशा करते हैं। इस दृष्टान्तसे पाठकोंको पता लग जायगा कि कैसे सुसङ्गठित दलों द्वारा नारी-अपहरण तथा नारी-विक्रयका कुचक्र चल रहा है। ये तीन गिरोह सामान्य हैं। हमारी यह धारणा है कि पुलिस यदि अधिक गहराईसे जांच करे तो कानपुरमें ही अभी ऐसे बहुतसे दुष्कर्म-व्यवसायी गिरोह मिलेंगे। अकेले कानपुरमें जब यह हाल है तो अन्यान्य शहरोंका क्या हाल होगा, इसका अनुमान सहजमें लगाया जा सकता है। कहा जाता है कि 'वर्तमान' के किसी रिपोर्टर महाशयने पुलिसको इन गुप्त गिरोहोंकी सूचना दी। यदि इसी प्रकार जनता और पुलिसके सहयोगसे इन पापियों-के षड़यन्त्र विफल करनेकी चेष्टा की जाय तो इस समस्याका बहुत-कुछ समाधान हो सकता है।

## हरिजनोंकी शिक्षा तथा संस्कृति

हम पिछले किसी नोटमें कह चुके हैं कि हरिजनोंका वास्तविक उद्धार केवल उन्हें मन्दिरोंमें प्रवेश कराने अथवा उनके साथ रोटी-बेटीका सम्बन्ध स्थापित करनेसे ही नहीं हो सकता। उनकी सांस्कृतिक तथा सांसारिक उन्नतिकी ओर हमें विशेष रूपसे ध्यान देना होगा, क्योंकि इसीसे हरिजनोद्धारको यथार्थमें व्यावहारिक रूप दिया जा सकता है। उनके लिए स्थान-स्थानमें शिक्षालयोंके खोलनेकी परमावश्यकता है। यथासाध्य उन्हें सार्वजनिक विद्यालयोंमें प्रवेश कराया जाय, और जहां ऐसा सम्भव नहीं दीखता, वहां उनके लिए विशेष विद्यालयोंकी स्थापना की जाय। उन्हें उनकी वर्तमान दलित अपमानित अवस्थासे ऊपर तभी उबारा जा सकता है जब वे शिक्षा-संस्कृतिकी उन्नतिके व्यावहारिक क्षेत्रमें पांव रख सकें। हर्षका विषय है कि कुछ सदाशय हरिजन-हितैषियोंका ध्यान इस महत्त्वपूर्ण प्रश्नकी ओर गया है। हालमें खबर छपी है कि कराचीके सेठ रामगोपाल मोहताने कराचीमें हरिजन-कला-भवनकी स्थापनाके लिए ५०,०००) रु० प्रदान किये हैं। इस कला-भवनमें हरिजनों-को वैज्ञानिक ढङ्गसे ऐसे कला-कौशल सिखाये जायेंगे जिनके द्वारा वे सांस्कृतिक उन्नतिके साथ-ही-साथ अपनी जीविका-के उपार्जनमें भी समर्थ हों। ऐसे सदुद्देश्यसे प्रेरित सुधारकों-की सर्वत्र आवश्यकता है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## भारतीय स्त्रियोंको मताधिकार

महिला-जगत्की इस नवीन क्रान्तिके युगमें इस बातकी आवश्यकता दिन-दिन अधिकाधिक प्रतीत होती जाती है कि हमारी महिलायें भी संसारके अन्यान्य देशोंकी स्त्रियों-की तरह विशेष संख्यामें मताधिकार प्राप्त करके शासन-सम्बन्धी विषयोंके अतिरिक्त उन सामाजिक विषयोंपर अपना प्रभाव विस्तारित करें जो विशेष करके उन्हींसे सम्बन्धित हैं। इस समय हमारे नारी-समाजकी वाणी प्रायः मूक है। जब तक उन्हें अधिकाधिक सुविधायें देकर इस ओर उत्साहित नहीं किया जाता तब तक स्त्रियोंके सम्बन्धकी जो नाना सामाजिक समस्यायें ( जैसे बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, नारी-अपहरण, नारी-विक्रय, आदि ) जटिल रूप धारण कर रही हैं, वे कभी पूर्णतया हल नहीं हो सकतीं। जब यथेष्ट संख्यामें वोटका अधिकार उन्हें प्राप्त हो जायगा तो वे इन कुप्रथाओंके सुधार तथा दुष्कर्मोंके विरोधपर अपनी शक्तिका पूर्ण उपयोग कर सकती हैं।

हालमें 'ब्रिटिश कमिटी फार इण्डियन वीम्यन्स फ्रेञ्चाइज' की एक बैठक हौस आफ कामन्समें हुई। मिस एलिया-नोर राथबोनने ( जो पार्लियामेण्टकी एक सदस्या हैं ) वहां भाषण देते हुए कहा कि उक्त कमिटी विभिन्न मतों तथा विभिन्न दलोंकी २०,००,००० स्त्रियोंके प्रतिनिधित्वका दावा करती है, और जिस उपायसे भारतीय स्त्रियोंका प्रतिनिधित्व बढ़े, उसका उत्तरदायित्व भी वह अपने ऊपर लेती है। मिस राथ-बोनने विशेष करके दो समस्याओंका उल्लेख किया जिनपर उनको आशा है भारतीय स्त्रियोंको अपना प्रभाव काममें लाने-का अधिकार दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सेन्सस-की रिपोर्टके अनुसार बाल-विवाह ऐक्टकी प्रतिष्ठाके बाद उक्त कुप्रथा घटनेके बजाय बहुत अधिक बढ़ गयी है। भारतमें यह समस्या वर्षोंसे बड़ा विकट रूप धारण करती चली आती है। पूर्वोक्त ऐक्ट भारत-सरकारकी पूर्ण सहमतिसे पास हुआ था, पर उसके साथ जनतामें शिक्षाके यथेष्ट प्रचारकी चेष्टा न होनेसे इस सुधारसे कोई लाभ जनता नहीं उठा सकी। दूसरी समस्या स्वास्थ्यकी है। इस प्रश्नपर भी स्त्रियोंको पूर्ण विवेचनाका अधिकार दिया जाना चाहिए। सारे भारत-वर्षमें प्रायः ९०० से अधिक स्त्री-डाक्टर नहीं हैं। इसका परिणाम देशमें अत्यन्त भयङ्कर दिखायी देता है। पुरुष डाक्टरोंसे स्त्री-रोगियोंको कोई सहायता मिलनी असम्भव है। प्रायः ८०,००,००० बच्चे प्रतिवर्ष भारतमें जन्म लेते हैं। उन्हें तथा उनकी माताओंकी परिचर्याके लिए स्त्री-डाक्टरोंके स्थानमें दाइयां नियुक्त की जाती हैं, जिनके चिकित्सा-सम्बन्धी प्रयोग बहुधा घातक सिद्ध होते हैं। जब तक भारतीय स्त्रियोंको यथेष्ट मताधिकार नहीं दिया जाता तब तक वे अपने सम्बन्धके आवश्यक सुधारोंको कार्यरूपमें परिणत नहीं कर सकतीं।

साइमन कमीशनने प्रस्ताव किया था कि प्रत्येक दो पुरुषोंके पीछे एक स्त्री वोट देगी। लोथियन फ्रेञ्चाइज कमिटीने प्रत्येक ४॥ पुरुषके पीछे एक स्त्रीको वोटका अधि-कार दिये जानेका प्रस्ताव किया था। पर ह्वाइट पेपरने इन दोनों प्रस्तावोंको रद्द करके फेडरल एसेम्बलीके लिए २० पुरुषोंके पीछे केवल एक स्त्रीको और प्रान्तीय कौन्सिलोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सात पुरुषोंके पीछे एक स्त्रीको वोटका अधिकार देनेका निश्चय किया है।

सर फिलिप हार्टोगने कहा था कि भारतीय लड़कियोंकी शिक्षा नहींके बराबर है, और जब तक माता स्वयं शिक्षित नहीं होती तब तक उसके बच्चोंकी शिक्षामें किये गये व्ययका प्रायः आधा भाग व्यर्थ नष्ट होता है। पर जब तक भारतीय स्त्रियोंके मताधिकार बढ़ाये न जायं तब तक स्त्री-शिक्षा-सम्बन्धी सुधार भी कभी सफल नहीं हो सकता।

## जापानकी नवीना महिलायें

जापान प्रत्येक विषयमें पाश्चात्य देशोंकी रीति-नीति अख्तियार करता जाता है। उसकी उन्नतिकी धारा पाश्चात्य सभ्यताकी धाराके बिलकुल समानान्तर चली गयी है। वहांकी स्त्रियां भी पाश्चात्य जगत्की स्वच्छन्द-प्रकृति स्त्रियोंके आदर्शका अनुकरण कर रही हैं। वे उत्तरोत्तर अधिकाधिक उच्छृङ्खल बनती जाती हैं और केवल सनसनी तथा उत्तेजना उत्पन्न करनेवाले उन्मत्त जीवनको ही अपना उद्देश्य बनाकर 'रोमान्स' की ओर आकर्षित होती चली जाती हैं। पर यह होनेपर भी, इन सब वाह्य उपकरणोंके भीतर अभी तक उनकी बहुत-सी बातोंमें प्राच्य भावोंकी झलक पायी जाती है। वहांकी इन नवीना, पूर्ण शिक्षिता महिलाओंके कार्य-क्रम और उनके आगामी वैवाहिक जीवनकी आशा तथा आकांक्षाओंके सम्बन्धमें जानकारी रखनेमें कोई हानि नहीं है। प्रत्युत इससे हमारी महिलाओंको लाभ ही होगा, क्योंकि हमारा स्त्री-समाज भी अब नवीन सामाजिक क्रान्तिकी लहरसे आगे बढ़नेकी चेष्टामें है और संसारकी प्रत्येक प्रगतिसे परिचित रहना चाहता है।

मिस आवी जे० के० आर० कामा एम्० ए०, एल-एल बी० पहली महिला हैं जिन्होंने नागपुर विश्वविद्यालयसे वकालतकी परीक्षा पास की है। ये बम्बईके प्रसिद्ध प्रत्नतत्त्व विशारद मि० जे० के० आर० कामाकी पोती हैं।

हालमें टोकियोके मिवाडा गर्ल्स हायर स्कूलमें ग्रेजुएट-पदाकांक्षिणी ८० लड़कियोंसे वैवाहिक समस्याके सम्बन्धमें एक प्रश्नावली की गयी थी। लड़कियोंने उनके जो उत्तर दिये थे वे अत्यन्त रोचक हैं। इस प्रश्नावलीकी आवश्यकता इसलिए प्रतीत हुई थी कि हालमें टोकियोमें कई ऐसी घटनायें हो गयी थीं जिनके द्वारा वैवाहिक जीवनके स्थायित्वके सम्बन्धमें लोगोंको सन्देह होने लगा था। एक ग्रेजुएट लड़की विवाहके बाद प्रथम मिलन-रात्रिमें अपने पतिके पाससे भागकर चली गयी थी। एक दूसरी लड़की, जो टोकियोके कालेज आफ लिटरेचरके एक प्रोफेसरको व्याही गयी थी, 'हनीमून' की यात्राके बीचमें ही पतिको छोड़कर चली गयी। पर मिवाडा विद्यालयकी लड़कियोंने जो उत्तर दिये हैं, उनसे उनकी अपेक्षाकृत सद्विवेचना टपकती है। इस प्रश्नके उत्तरमें कि विवाहके समय लड़कीकी क्या आयु होनी चाहिए, २१ से २४ वर्ष तककी आयुका उल्लेख किया गया, विशेष करके तेईसवां वर्ष पसन्द किया गया। लड़कियां कालेज छोड़नेके दो या तीन वर्ष बाद विवाहित जीवनमें प्रवेश करना चाहती हैं; क्योंकि तब तक उन्हें सांसारिक जीवनका पूरा अनुभव प्राप्त हो जायगा, और जब तक अनुभव पूरा न हो, तब तक उन्हें आशा नहीं है कि विवाहित जीवनमें पूर्ण सफलता मिलेगी। इन दो-तीन वर्षोंके बीच कुछ लड़कियोंने अमेरिकन लड़कियोंकी तरह स्वच्छन्द जीवन बितानेकी इच्छा प्रकट की है और कुछने गृहस्थ-सम्बन्धी विषयों—जैसे खाना बनाने, फूलोंको सजाने (जिसका जापानी-जीवनमें बड़ा महत्त्व है), गृहस्थ-जीवनके लिए उपयोगी छोटे-मोटे कला-कौशल सीखने आदि—में अपना समय व्यतीत करनेका विचार प्रकट किया है। इस प्रश्नके उत्तरमें कि किन-किन पेशोंके पतियोंको वे पसन्द करती हैं, अधिकांश लड़कियोंने उत्तर दिया कि निश्चित मासिक वेतनवाले पतियोंको ही वे अधिक चाहती हैं। विशेष करके बैङ्करोंके प्रति उनकी सहदृष्टि है। व्यापारियों, राजनीतिकों तथा वकीलोंके प्रति मिवाडाकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लड़कियोंका कोई आकर्षण नहीं पाया गया, क्योंकि उनकी कोई बंधी हुई आमदनी नहीं है। २७ से ३० वर्ष तककी अवस्थाके पति ही अधिकांश लड़कियोंकी रायमें उपयुक्त पति हैं। २७ वर्षसे कम आयुका पति उनकी रायमें सांसारिक विषयोंमें अनभिज्ञ होनेके कारण वाञ्छनीय नहीं है और ३० वर्षसे अधिक आयुवाले पतिमें जवानीकी नयी उमङ्ग नहीं पायी जाती। पतियोंके सिगरेट अथवा शराब पीनेके सम्बन्धमें उक्त लड़कियोंने कोई विशेष आपत्ति प्रकट नहीं की है।

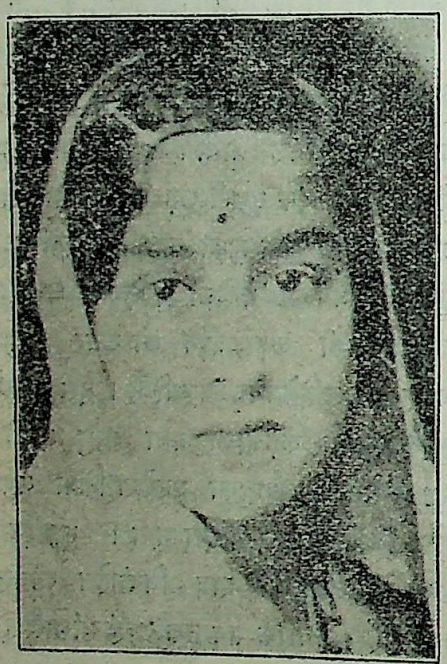

काशीके सेण्ट्रल हिन्दू कन्या-व्यायाम स्कूलकी सन्तरण-प्रतियोगितामें १३ वर्षकी कुमारी सावित्री देवी सर्व-प्रथम आयी थीं। आपने गङ्गाको पार किया था।

आधी लड़कियोंने सास-ससुरसे अलग पतिके साथ अकेले रहनेकी इच्छा प्रकट की है। सिनेमा, खेल-कूद तथा पाश्चात्य सङ्गीतसे प्रेम रखनेवाले पतियोंके प्रति अधिकांश लड़कियों-की अनुरक्ति दिखायी देती है।

जापानी लड़कियोंके इन विचारोंमें प्राच्य तथा पाश्चात्य भावोंका मिश्रण पाया जाता है, यद्यपि अधिक झुकाव पाश्चात्यकी ही ओर है। हम चाहते हैं कि हमारी कुमारी पाठिकायें इन दोनों भावोंमें जिसे अधिक उपयोगी समझें, उसे अपनायें।

## हिन्दू स्त्रियां इसलाम धर्मको क्यों अपनाने लगी हैं?

हमारे अत्यन्त सङ्कीर्णमतावलम्बी समाजमें अबलाओं-पर रात-दिन जो असह्य, दुर्धर्ष अत्याचार होते रहते हैं उनका उल्लेख बार-बार करते-करते सुधारवादी भी थक गये हैं। आज तक इन अमानुषिक अत्याचारोंको हमारी शिष्ट-शान्त महिलायें किसी प्रकार सहन करती चली आयी हैं; विरोधमें एक शब्द भी उन्होंने कभी अपने मुंहसे नहीं निकाला है, कभी चूं तक नहीं किया है। पर सहनशीलता-की भी एक सीमा होती है। सामाजिक क्रान्तिके इस द्रुत-परिवर्तनशील युगमें अब जब हमारी स्त्री-जातिकी युग-युग-व्यापी जड़ता हटकर उनकी आत्माओंमें एक अभूतपूर्व चैतन्यका सञ्चार होने लगा है तो वे नाना रूपोंसे समाजकी उद्दण्डताका विरोध करने लगी हैं, यहां तक कि अपने विरोधको कार्य-रूपमें भी परिणत करके दिखाने लगी हैं। आज तक विष खाकर अथवा पानीमें डूबकर आत्महत्या करके वे अपना नीरव विरोध व्यक्त करती थीं, अब समाजको अंगूठा दिखाकर खुल्लमखुल्ला यथेच्छाचार द्वारा विद्रोह घोषित कर रही हैं। स्थान-स्थानसे समाचार आ रहे हैं कि अमुक स्त्री अपने पतिको छोड़कर किसी दूसरे व्यक्तिके साथ भाग गयी है; अमुक महिलाने अपने पति तथा सास-ससुरके आचरणसे आतङ्कित होकर वेश्यावृत्ति अख्तियार कर ली है; अमुक स्त्रीने स्वेच्छासे मुसलमान धर्म ग्रहण करके किसी मुसल-मानके साथ विवाह कर लिया है। इस महीनेमें चार-पांच हिन्दू स्त्रियोंके स्वेच्छासे मुसलमान हो जानेके समाचार छपे हैं। मुसलमान-धर्ममें इन अभागिनी नारियोंके लिए क्या आकर्षण है, यह बात विचारणीय है। मुसलमान-धर्ममें जात-पांत, छुआछूत आदिका झगड़ा नहीं है, उसमें विधवा-विवाहकी पूरी सुविधा है, समाजमें ऊंच-नीचका भाव वर्तमान नहीं है और सर्वत्र समता पायी जाती है। इन सब कारणोंसे हमारी अत्याचार-पीड़िता स्त्रियां इस उदार धर्मकी ओर आकर्षित होती जाती हैं। यदि समय रहते हम लोग न संभले तो एक दिन हमें जिस भीषण परिणामका सामना करना पड़ेगा, उसकी कल्पना-मात्रसे आत्मा आतङ्कित हो उठती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हालमें हैदराबाद (सिन्ध ?) की एक "अमिल" जातीय स्त्री, जो कुमारी कृपलानीके नामसे परिचित थी, स्वेच्छासे इसलाम-धर्ममें दीक्षित हुई है और एक मुसलमान-के साथ उसने विवाह कर लिया है। अपने मुसलमान बननेका कारण बतलाते हुए वह "अलवाहिद" नामक पत्रमें लिखती है—"मेरे इसलाम-धर्ममें दीक्षित होनेका समाचार अनेक अंगरेजी, सिन्धी तथा गुजराती पत्रोंमें छप चुका है। किसी प्राप्त-वयस्क व्यक्तिके लिए अपना धर्म बदलना कोई जुर्म नहीं है। मैं अपनी इच्छासे मुसलमान बनी हूं और अपनी रुचिके अनुकूल एक मुसलमानसे मैंने विवाह कर लिया है। मैंने क्यों इसलाम-धर्म ग्रहण किया, उसका कारण मैं संक्षेपमें निर्देशित करती हूं। 'सिन्ध हिन्दू' पत्रके सम्पादक महाशयने ठीक ही लिखा है कि 'अमिल' जातीय लोग हिन्दू धर्मकी सङ्कीर्णताके कारण उससे उकता गये हैं, इसलिए उनमेंसे किसीने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया है, कोई गुरु नानकके पन्थका अनुसरण कर रहे हैं, कोई सूफी बन गये हैं और किसीने इसलाम-धर्मको अपना लिया है। जबसे मुझे संसारका ज्ञान होने लगा, मैं हिन्दू-धर्मके रीति-रस्मोंकी सङ्कीर्णतासे उकताने लगी थी और बहुत दिनोंसे इसलाम धर्मकी ओर मेरा मन झुकने लगा था। प्रायः अढ़ाई वर्ष तक मैंने निरन्तर इसलाम-धर्म-सम्बन्धी पुस्तकों-का अध्ययन किया। धीरे-धीरे इस धर्मकी उदारतापर मेरा ऐसा विश्वास हो गया कि मैंने झटकेका मांस खाना भी छोड़ दिया। मैं कभी मुसलमान बन गयी होती, पर अपनी माताका हृदय दुखानेका साहस मुझे नहीं होता था। अन्तको मैं ईस्टरकी छुट्टियोंके अवसरपर कराची आयी और मुसलमान हो गयी। इसके कुछ दिनों बाद मुसलिम धर्मानुसार एक मुसलमानसे मेरा विवाह हो गया।"

अभी तो हिन्दू स्त्रियोंके विद्रोहका आरम्भ है। आगे-आगे देखिये होता है क्या!

## स्त्रियोंके सम्बन्धमें दिल्लीकी सेन्सस रिपोर्टके आंकड़े

दिल्ली प्रान्तकी सेन्सस रिपोर्टमें वहांकी विवाहिता स्त्रियोंके सम्बन्धमें जो आंकड़े दिये गये हैं उनसे बहुत-सी महत्त्वपूर्ण बातें मालूम होती हैं। सर्व-प्रथम हमारी दृष्टि इस परम शोचनीय तथ्यपर जाती है कि उक्त छोटेसे प्रान्तमें ६८७६ विवाहिता स्त्रियां ऐसी हैं जिनका विवाह ७ से लेकर १३ वर्ष तककी अवस्थामें हुआ है। यह संख्या आतङ्कजनक है और हमारे समाजकी हीनावस्थापर प्रकाश डालती है, प्रायः २२४६ परिवारोंमें विवाह सम्बन्धी विशेष जांच की गयी थी। इस जांचसे यह आश्चर्यजनक बात मालम हुई है कि हिन्दू स्त्रियोंकी अपेक्षा मुसलमान स्त्रियां अधिक आयुमें ब्याही गयी हैं। अधिकांश मुसलमान स्त्रियोंका विवाह १५ वर्षकी अवस्थाके बाद हुआ बतलाया जाता है! इससे स्पष्ट ही यह विदित होता है कि मुसलमान लोग भीतर-ही-भीतर अपनी महिलाओंकी सामाजिक दुर्दशा हटानेका सविशेष प्रयत्न

टर्कीमें पर्दा-प्रथाके विरुद्ध जहाद।

कर रहे हैं। पर हिन्दू बाहरसे बड़ी-बड़ी डींगें मारनेपर भी भीतरसे एक पग भी आगे नहीं बढ़ना चाहते। यह घोर लज्जा तथा दुःखका विषय है। विधवाओंकी संख्या भी हिन्दुओं तथा जैनोंमें अधिक पायी गयी है। जैनोंमें उनकी संख्या प्रति सहस्र १३६, हिन्दुओंमें ११५ और मुसलमानोंमें ९२ बतलायी जाती है। इस तथ्यसे इस रहस्यका उद्घाटन होता है कि जैन लोग अधिकांशतः विशाल धनके अधिपति होनेसे वृद्धावस्थामें भी अर्थबलसे कुमारी कन्याओंका पाणि-ग्रहण करनेमें समर्थ होते हैं, और अनेक हिन्दू पिता भी धनके लोभसे अपनी लड़कियोंको बूढ़ोंके साथ ब्याह देते हैं, पर मुसलमान इस सम्बन्धमें बड़े सावधान हैं। बाल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विवाह भी वैधव्यका एक दूसरा मुख्य कारण है। इसके और भी अनेक कारण हो सकते हैं, पर ऊपर जिन कारणोंका उल्लेख किया गया है वे उन सबमें अधिक परिस्फुट हैं। घातक कोढ़की तरह समाजके अङ्गमें चिमटे हुए वृद्ध-विवाह तथा बाल-विवाहके इन दो भयङ्कर कलङ्कोंका जब तक अस्तित्व रहेगा तब तक हमारी महिलाओंकी दशा कभी नहीं सुधर सकती। दिल्लीकी सेन्सस रिपोर्टसे यह भी पता लगा है कि ४० वर्षकी अवस्थामें आधी स्त्रियां विधवा हो जाती हैं। इस आतङ्कपर जरा ध्यानपूर्वक विचार कीजिये! अधिक टिप्पणी व्यर्थ है।

पहली मुसलमान बालिका जिसने ११ वर्षकी अवस्थामें पञ्जाबकी मेट्रिक परीक्षा पास की।

## हमारी महिलाओंका शोचनीय स्वास्थ्य

विवाह होते ही हमारी लड़कियोंका स्वास्थ्य किस कदर गिर जाता है यह बात किसीसे छिपी नहीं है। रक्तकी कमीसे दिन-दिन उनकी मुखश्री म्लान होती जाती है और मांसका अभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है। अन्तको क्षयरोगसे ग्रस्त होकर वे अकालमें ही कालके हाथ चली जाती हैं। इसका कारण क्या है? बङ्गालके सुप्रसिद्ध डाक्टर आर० सी० अधिकारीने हालमें अपनी एक वक्तृतामें इस सम्बन्धमें प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी स्त्रियोंका स्वास्थ्य आजकल जिस दशाको पहुंच गया है वह अत्यन्त शोचनीय है। कारण यह है कि हमारी लड़कियां एक तो बचपनमें ही ब्याह दी जाती हैं; तिसपर वे बहुत जल्दी गर्भवती हो जाती हैं। कुछ ही वर्षोंमें वह अनेक बच्चोंकी माता बन जाती हैं। इसका फल यह होता है कि उनका स्वास्थ्य क्षीण होते-होते वे क्षयरोगकी शिकार बन जाती हैं। पहले बच्चेके प्रसवके अनन्तर उनके स्वास्थ्यमें घोर परिवर्तन दिखायी देने लगता है। बच्चोंको दूध पिलाते-पिलाते उनके शरीरमें रक्तका नाम नहीं रह जाता। डा० अधिकारीने इस बातपर खेद प्रकट किया है कि वर्तमान समयमें विगत युगकी अपेक्षा डाक्टरी इलाजके साधन बहुत अधिक होनेपर भी परिणाम उलटा देखा जाता है। हमारी बड़ी-बूढ़ियोंके जमानेकी स्त्रियोंका स्वास्थ्य आजकलकी स्त्रियोंकी अपेक्षा कई दर्जा अच्छा रहता था, यद्यपि पहले सुयोग्य नर्सों तथा अनुभवी डाक्टरोंकी बहुत कमी थी। हमारी स्त्रियोंकी इस स्वास्थ्य-हानिके कुछ विशेष कारण डाक्टर महोदयने निर्देशित किये हैं, जिनमेंसे मुख्य इस प्रकार हैं—(१) माता-पिताके दोषोंके कारण जन्मसे ही रक्तकी कमी, (२) शरीरमें कुछ आवश्यक क्षारोंके अभावसे रोगोंके प्रति पैदायशी प्रवृत्ति, (३) मुक्त वायु तथा आलोकका अभाव, (४) बिना विश्रामके निरन्तर सन्तान-प्रसव, (५) पुष्ट, सारवान खाद्यका अभाव।

डाक्टर अधिकारीके उक्त वक्तव्यमें हमें दो बातें मुख्य रूपसे खटकती हैं। एक तो यह कि हमारे पुरुषोंकी संयम-हीनताके कारण स्त्रियोंको निरन्तर गर्भ-धारण करनेका अवाञ्छनीय अत्याचार सहन करना पड़ता है, जिससे उनके सुकुमार स्वास्थ्यपर अनावश्यक दबाव पड़ता है। हर्षका विषय है कि इधर गर्भ-निरोधके प्रश्नपर लोगोंका ध्यान आकर्षित होने लगा है। सन्तान-नियमन इस समय देशके लिए राजनीतिक अर्थशास्त्र (Political economy) की दृष्टिसे जितना आवश्यक हो उठा है, स्त्रियोंके स्वास्थ्यका ख्याल करते हुए नैतिक दृष्टिसे भी उतना ही महत्त्वपूर्ण जान पड़ता है। दूसरी बात जो डा० अधिकारीने सुझायी है वह है पुष्टिकर खाद्यका अभाव। एक तो सन्तानका बाहुल्य, तिसपर खाद्याभाव। यह आत्मघाती स्थिति हमारे समाजके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सामने उपस्थित है, जो स्त्रियों तथा बच्चों दोनोंके लिए घोर हानिकारक है। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समस्याका समाधान परमावश्यक हो उठा है। पर प्रश्न यह है कि यह समस्या किसी तरह हल हो सकती है या नहीं। इस विषयमें हमें यथेष्ट सन्देह है। क्योंकि स्त्रियोंके प्रति पुरुषोंका जैसा व्यवहार है, वह किसीसे छिपा नहीं है।

## मद्रासकी एक विशेष जातिमें पर्दा-प्रथाका आतङ्क

परदेकी सर्वनाशकारी प्रथाका विरोध देश-भरमें यथेष्ट हो चुका है और हो रहा है। तथापि इस निरन्तर किये गये विरोधका जैसा असर होना चाहिए था, उसका क्षुद्रांश भी कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। बड़े-बड़े शहरोंमें स्त्रियोंको किसी अंशमें बेपर्दा रहते देखकर बहुत लोग यह अनुमान कर लेते हैं कि पर्दा-प्रथा देशसे अत्यन्त शीघ्र गतिसे हटती चली जाती है। पर छोटे शहरों और गांवोंकी दशा देखनेसे तत्काल मालूम हो जाता है कि यह कैसा भ्रम है। यह घोर अनर्थकारी प्रथा अन्तर्कीटकी तरह इतने दिनोंसे देशकी अन्तरात्माका मूल सत्त्व शोषण करती चली आती है। इसमें सन्देह नहीं कि इसकी भयङ्करताके सम्बन्धमें देश-वासियोंकी आंखें बहुत-कुछ खुली हैं, तथापि इसके निवारणका कोई सशक्त उपाय अभी तक हम काममें नहीं ला सके हैं। महिलाओंकी जागृति तथा उन्नतिकी प्रथम सीढ़ी पर्दा-निवारण ही है। अभी तक यही सीढ़ी जब पूरी तरह तय नहीं हो सकी है तो आगेकी कौन कहे। वैसे तो देशमें प्रायः सर्वत्र ही यह प्रथा वर्तमान है, तथापि विशेष-विशेष स्थानोंमें इसकी उग्रता अत्यन्त अधिक है। तुलनात्मक दृष्टिसे हिन्दी-भाषा-भाषी प्रान्तोंमें ही इस उग्रताका अधिक कोप पाया जाता है। मारवाड़, युक्तप्रान्त, बिहार आदि प्रान्तोंमें इसकी प्रबलता है। हमारा ख्याल था कि दक्षिणमें यह कुप्रथा अपना चक्रजाल रचनेमें असमर्थ हुई है। पर हालमें मद्रासके नम्बूतिरी सम्प्रदायमें प्रचलित परदेके सम्बन्धमें हमें जो बातें मालूम हुई हैं वे अत्यन्त दुःखप्रद तथा आश्चर्यजनक हैं।

कुमारी लीला फ्रेङ्क जो इस वर्ष प्रयाग विश्वविद्यालयकी बी० ए० परीक्षामें सर्व-प्रथम रहीं।

नम्बूतिरी मलाबारके ब्राह्मणोंका सम्प्रदाय-विशेष है। वे लोग अपनेको विशुद्ध आर्य बतलाते हैं, द्राविड़ जातिका कोई सम्मिश्रण अपनेमें नहीं मानते। तथापि बड़े आश्चर्यकी बात है कि ये "विशुद्ध आर्य" लोग बिलकुल अशिक्षितावस्थामें रहते हैं और संसारकी वर्तमान प्रगतिसे बिलकुल परिचित नहीं हैं। इस बिंश शताब्दीमें भी वे स्त्रियोंको केवल सन्तान-प्रजननका एक साधन समझते हैं और उसकी कोई निजी सत्ता नहीं मानते;—पशुओंकी तरह उन्हें अपने पास रखते हैं। पालतू पशुओंको तो थोड़ी-बहुत स्वतन्त्रता दी जाती है, पर इन चिर-अभागिनियोंको वह भी प्राप्त नहीं। वे घरोंके भीतर इस तरह बन्द रखी जाती हैं, जैसे बक्सके भीतर कोई उपयोगी वस्तु सुरक्षितावस्थामें रखी जाती है। अपने पतिके मुख-दर्शनका भी अधिकार उन्हें नहीं है, पर पुरुषकी कौन कहे। नम्बूतिरी परिवारका केवल सबसे बड़ा भाई विवाह करता है। अन्यान्य भाइयोंको निम्न जातिकी स्त्रियोंके साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करके अपनी काम-वासना चरितार्थ करनेको बाध्य होना पड़ता है। इस सम्प्रदायकी स्त्रियोंको भोजन-वस्त्र आदिके सम्बन्धमें जिस प्रकार

बैङ्ककी प्रथम महिला डाइरेक्टर। श्रीमती सरलादेवीने उड़ीसा प्रान्तमें यह सम्मान प्राप्त किया है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विशेष सुविधायें प्राप्त न हों, इस बातका ख्याल रखा जाता है। उनका पहनावा एक लंगोटके आकारका पेटीकोट तथा वक्षस्थलके आवरणके लिए एक छोटेसे टुकड़ेके अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। पीतलके कड़े तथा पीतलके ही कर्णाभरणके अतिरिक्त और कोई गहना उन्हें प्राप्त नहीं होता। केवल एक बातपर नम्बूतिरियोंकी प्रशंसा की जा सकती है। वह यह कि उनके सम्प्रदायमें बाल-विवाह नहीं पाया जाता। बहुत-सी स्त्रियां तो मृत्यु-पर्यन्त अनब्याही रहती हैं, और मृत्युके उपरान्त चितामें ही उनका प्रहसनात्मक विवाह-कार्य ब्राह्मणोंके मन्त्रों द्वारा सम्पूर्ण किया जाता है। अपनी स्त्रियोंकी चरित्र-शुद्धिके सम्बन्धमें नम्बतिरियोंको जितना ख्याल रहता है उतना शायद संसारकी किसी भी जातिको नहीं रहता होगा। सुदृढ़ परदेके अच्छेद्य बन्धनके भीतर उन्हें आबद्ध रखके भी उनका सन्देह दूर नहीं होता, इसलिए अपनी नौकरानीसे बार-बार वे लोग उनपर कड़ी दृष्टि रखनेके लिए ताकीद करते रहते हैं। अपनी स्त्रियोंके चरित्रकी यथार्थताके सम्बन्धमें उन्हें केवल नौकरानियोंके कथनपर ही अवलम्बित रहना पड़ता है। यदि नौकरानीने कुछ भी इशारा दिया तो बिना यथार्थ प्रमाणोंकी जांच किये ही लाञ्छिता स्त्री जिस घोर अत्याचारके साथ सरेआममें अपमानित की जाती है वह कल्पनातीत है।

इस प्रकारकी घोर अमानुषिक प्रथा जब तक किसी समाजमें वर्तमान है तब तक उसकी उन्नतिका कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता। सुना जाता है अब नम्बूतिरी लोगोंकी आंखें धीरे-धीरे खुल रही हैं। यह हर्षका विषय है।

---

## सिसकियोंका उपहास

तुम क्यों आते हो बार-बार!
श्वांसोंकी तनियां खोल-खोल
जमुहाईमें कुछ बोल-बोल,
कम्पित अधरोंपर डोल-डोल,
क्यों आवे दीवाना दुलार?
तुम क्यों आते हो बार-बार!
तुम दुःशासन-से दौड़ दौड़,
दिग्वसना-वीणापर कठोर,
आजमा रहे अधमुंही होड़;
फिर क्यों न करे वह करुण आह,
तुम क्यों आते हो बार-बार!
जगते सपनोंपर, लगा जोर,
यों बिना ताल मीडें मरोर,
मिजराब लगाते हो कुठौर;
ऐसे कैसे उतरे मलार?
तुम क्यों आते हो बार-बार!
"मैं गूंथूंगा नक्षत्र-माल,
चुनकर नभकी कलियां,"—कमाल!
तितलीपर चढ़कर यह खयाल?
यह तो है प्यालीका खुमार!
तुम क्यों आते हो बार-बार!
वेदना-विन्दु हह! सूख-सूख,
अस्थिर अन्तरमें दूख-दूख,
हा मिटा न पाते मृदुल भूख;
शूलीपर सिसकीकी उभार?
तुम क्यों आते हो बार-बार!
चट्टानोंके ले खण्ड-खण्ड,
श्वांसोंका लेकर माप-दण्ड,
लेकर करमें विद्युत् प्रचण्ड
कैसे मापोगे ऐ उदार!
तुम क्यों आते हो बार-बार।
ठुकरा शृंगार जवानीकी—
अंजुलियां, खारे पानीकी,
किस मोहनकी अगवानी की?
कैसे आवे आराध्य? यार!—
तुम क्यों आते हो बार-बार।

— भारतीय आत्मा

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विज्ञानका चमत्कार

## रबरकी भांति लचीला कांच

स्कूली भौतिक शास्त्रकी पुस्तकोंमें लिखा रहता है कि कांच भङ्गुर पदार्थ है, वह बहुत नाजुक है और हाथसे गिरा कि उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। अब विज्ञानका यह तथ्य झूठा हो गया है। शीघ्र ही उक्त पुस्तकोंके नये संस्करणों में लिखना पड़ेगा कि कांच लचीला पदार्थ है और वह कई धातुओंकी भांति मुड़ जाता है। अब ऐसा कांच बन गया है कि तीन-तीन मनुष्य उसपर सवार हों, पर वह टूटनेके बदले केवल स्प्रिङ्गकी तरह लच जाता है। इस कांचका नाम रबर कांच है, क्योंकि इसमें रबरके-से गुण हैं। मोटरकार, बस आदिकी खिड़कियोंमें भविष्यमें ऐसा ही "रबर कांच" लगेगा। इससे यह लाभ होगा कि यदि कभी मोटरकार दुर्घटना हो जाये या उसपर आक्रमण हो तो कांच टूट-फूटकर सवारोंको हानि न पहुंचा सकेगा। चित्रका कांच

रबरकी भांति लचीला कांच

चार फुट लम्बा और एक फुट चौड़ा है। दो तिपाइयोंके सहारे रखा गया है और बीचमें तीन आदमी इसपर सवार हैं, तब भी यह टूटनेका नाम नहीं लेता। जरा-सा लच गया है। ऐसा दिखायी देता है मानो लोहेकी पक्की और मोटी चद्दर हो। बड़े-बड़े दूकानदार, जो अपनी खिड़कियोंमें बड़े-बड़े कांचके पत्तर लगाते हैं, अब यह कांच अपनी खिड़कियों-पर लगाकर सुखकी नींद सोवेंगे कि यह अब टूटनेका नहीं। ऐसा समय आ रहा है जब चाकलेट और बिसकुट इसके बक्सोंमें बिकने लगेंगे। तब तो इसके रङ्ग-विरङ्गे सिगरेटकेस बनेंगे और भगवान्‌ने चाहा तो गिरजे तथा मन्दिर भी सारेके सारे इससे ही बनेंगे। विज्ञान जो न करे सो कम।

## कीड़ोंको फांसनेवाला यन्त्र

कीड़ोंके फांसनेका यन्त्र

टिड्डियां फसल की फसल चौपट कर देती हैं। यह हमसब जानते हैं। पर जब पौधों-के रोगके कारण फसल मारी जाती है तो हमारे किसान दङ्ग रह जाते हैं। इन रोगोंमें अधिकांश कीड़े लग जानेके कारण होते हैं। भारतमें इन कीड़ोंके द्वारा करोड़ोंकी वार्षिक हानि होती है; लेकिन इस ओर किसीका ध्यान नहीं जाता। अन्य राष्ट्र इन कीड़ोंका नाश करनेके लिए करोड़ों रुपये व्यय करते हैं। हालमें एक आविष्कारकने एक छोटा-सा यन्त्र निकाला है जो छोटे-मोटे कीड़ोंको पकड़नेमें रामवाण है। इसकी तारीफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यह है कि इसका चौड़ा सिरा पत्तेपर लगा दीजिये और थोड़ा हिलाइये तो उस पत्तेके सब कीड़े सरपट चालसे इसके भीतर घस जाते हैं और जब इसकी नली इन कीड़ोंसे भर जाती है तो नीचेका डांठ खोलकर उसे खाली कर दिया जाता है। छोटे बगीचोंके लिए तो यह यन्त्र भगवान्‌का वरदान है।

## अण्डाकार पहियेकी करामात

भारतमें वैदिक कालसे अब तक गोलाकृति पहियेका ही रिवाज है। उस पहियेकी आकृति फलतः उसकी शक्तिमें परिवर्तन करनेकी किसीको न सूझी। यूरोपमें वर्फ गिरती है और कई देशोंमें तो इतनी अधिक गिरती है कि वे देश प्रायः आठ महीने वर्फसे ही ढके रहते हैं। ऐसे देश यदि पहाड़ी हों तो उनमें गोल पहिया कुछ काम नहीं दे सकता। इसलिए वहांवालोंने अपने पावोंके लिए एक विशेष प्रकार-के लम्बे और नोकदार जूतोंका आविष्कार किया है जिन्हें पांवमें बांधकर वे प्रचण्ड वेगसे सैकड़ों मीलका पथ कुछ घण्टोंमें पार कर जाते हैं। ये जूते 'शी' के जूते कहे जाते है। स्वेडन, नारवे आदि देशोंमें तो पलटनकी पलटनें इन जूतोंको परसे बांधकर वर्फपर चलती हैं। ये लकड़ीके फिसलनदार

अण्डाकार पहियेकी करामात

जूते एक प्रकारके पहिये हैं, जो वर्फपर काममें आते हैं। इन्हींके सिद्धान्तपर रूस, नारवे आदिमें स्लेज गाड़ियां बनी हैं जिनमें फिसलनदार लम्बे पहिये रहते हैं। ये स्लेज गाड़ियां हिमकी सहायतासे स्वयं ही तेजीसे फिसलती हैं और इनसे गाड़ियोंके उलटनेका भय नहीं रहता। स्पेनमें भी सूखी जमीनपर ऐसी गाड़ियां चलने लगी हैं जो स्लेजनुमा हैं। ऐसी गाड़ी पहले-पहल १८४८ में बनी थी। इसे एक अंगरेज अफसरने अपनी पत्नीके उपयोगके लिए बनाया था। माडैरा द्वीपमें आज भी ऐसी गाड़ियां चलती हैं और विदेशियोंका कुतूहल वर्द्धन करती हैं। इन गाड़ियोंको भैंसे खींचते हैं और उन्हें इनमें गोल पहियोंसे सहूलियत रहती है।

## शून्यको चीरनेवाला विमान

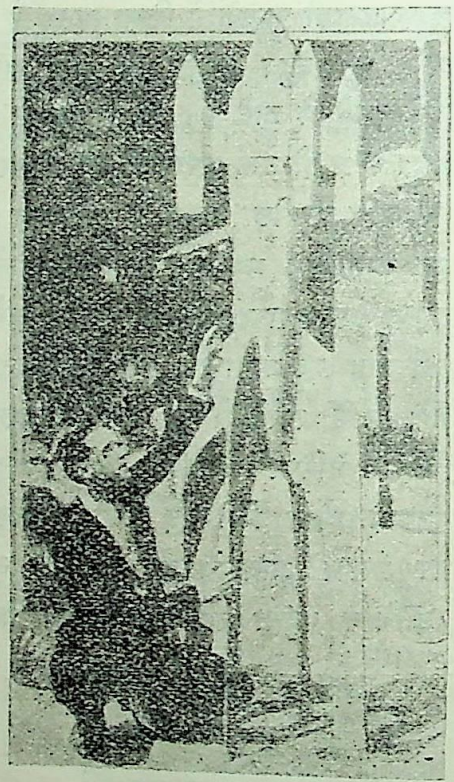

शून्यको चीरनेवाला विमान

विमानपर संसार-परिक्रमा करना साधारण बात हो गयी है। कई औरतें और मर्द हवाई जहाजोंपर पृथ्वी की प्रदक्षिणा कर आये हैं। भारतमें अन्य विषयोंकी भांति इसकी भी विशेष हलचल नहीं है; पर दुनिया हमारे भरोसे नहीं बैठी है। वह उन्नतिकी ओर वायुवेगसे बढ़ रही है। अब प्रगतिशील, महत्त्वाकांक्षी मनुष्यको एक छलांगमें न्यूयार्कसे पैरिस पहुंचनेकी फिक्र नहीं है; क्योंकि ऐसा कई बार किया जा चुका है। महावीर हनुमान-के स्तोत्रमें कहा गया है—'गोष्पदीकृत वारीशं'—उन्होंने समुद्रको उतना ही बड़ा समझा जितना जलसे भरे गायके खुरकी छापको। वैमानिक भी महासागरोंको लांघते समय उनको इतना ही बड़ा समझते हैं। पर अब वे आकाशके तारों तक पहुंचनेके लिए लालायित हैं। इसलिए 'राकेट' बनानेमें व्यस्त हैं जो एक मिनटमें हजारों मीलकी दूरी पार कर सकें। कैलिफोर्नियाके एक आविष्कारकने लकड़ीका एक राकेट बनाया है। यह शून्यको बिजलीकी गतिसे चीरेगा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मिनटोंमें मङ्गल ग्रह तक पहुंच जायेगा। इसके भीतर ऐसी गैस भरी जायेगी जिसकी शक्तिसे यह आकाशमें वायुवेगसे दौड़ेगा। यह सेकण्डभरमें हमारी पृथ्वीके वायुमण्डलको पार कर लेगा और सीधा मङ्गलकी ओर दौड़ेगा। इसके भीतर आदमी भी बैठा रहेगा। वह बहुत सम्भव है मङ्गल ग्रहसे टकराकर चूर हो जावेगा; पर इसकी चिन्ता ये वीर नहीं करते। ज्ञानकी खोज अथवा नये आविष्कारके लिए मरना तो इनके बायें हाथका खेल है। जब बीसियों राकेट और उनके यात्री शून्यको पार करनेमें अपनी बलि करेंगे तब कहीं इस ओर सफलता मिलेगी। क्या कभी भारतमें भी ऐसे वीर जनमेंगे?

## धातुमय बस टकरानेसे चूर-चूर नहीं होती

बसोंकी भिड़न्त हुई और यात्रियोंकी जान गयी। लकड़ीकी बसें स्वभावतः भिड़न्त होते ही टूट जाती हैं।

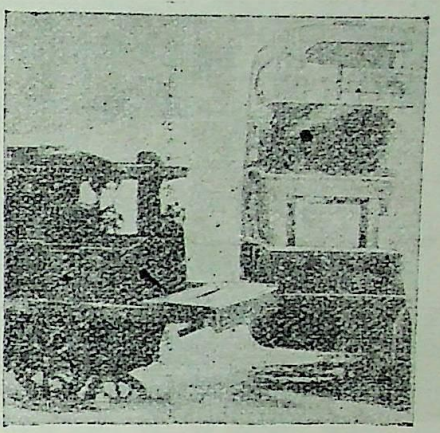

धातुमय बस

इसलिए लण्डन में एक बसका सारा चौखटा धातुका बनाया गया और उसे लारियों और बसोंके साथ टकराया गया। इस धातुमय बसको इस टक्करने कोई हानि न पहुंचायी। इसलिए अब इंगलैण्डमें ऐसी ही बसोंका प्रचलन किया जायेगा। क्या भारत-सरकार भी इसओर ध्यान देगी? बसमें सुधार करनेमें तो इंगलैण्डको कोई खतरा नहीं है।

---


# भारत वासियों के लिये खुश खबरी !!!

**भारतमें व्यवसायके लिये भारतकी ही बनी हुई बस्तुएं व्यवहार कीजिये।**

**हर्षका विषय है कि जिन कल पुर्जेके लिये हमें विदेशियोंकी ओर ताकना पड़ता था अब वह बात नहीं है।**

**हुकुमचन्द इलेक्ट्रिक स्टील कम्पनी अपने कारखाने में प्रायः सभी कल पुर्जे जैसेः--कास्ट स्टील, बोयलर पाइप, बेण्ड, टीज, सुगर मिल तथा आयल मिल की मशीनरीके कल पुर्जे किफायतसे तैयार करती हैं भारतमें यही एक कारखाना है जहां इस्पात बिजलीसे गलाकर ढलाई होती है। भारतकी प्रायः सभी बड़ी २ रेलवे कम्पनियां हमारी ग्राहक हैं। हमारा माल गवर्नमेण्ट बोयलर रेगुलेशनके अनुसार तैयार किया हुआ है।** मैनेजिंग एजेण्टस—

## सर सरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड कम्पनी

कारखाना— ८ स्वीन्हो स्ट्रीट, बालीगंज।

हेड आफिस— ३० क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

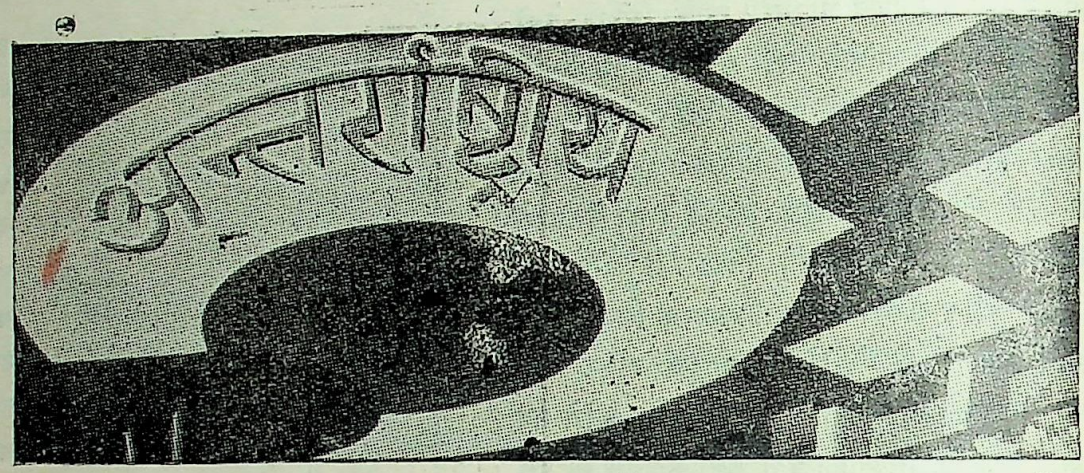


## अरब—

इब्नसऊदको लगान, टैक्स आदिसे कुछ आमदनी नहीं है। उसे तो उन यात्रियोंसे ही आय है, जो विदेशोंसे हज करने अरब जाते हैं। एक इब्नसऊदकी नहीं, उसके राज्यके निवासियोंकी समृद्धि भी उन्हींपर निर्भर है। पर अब ये यात्री घट गये हैं। १९२७ में विदेशोंसे अढ़ाई लाख यात्री हज पहुंचे थे। इनमें आधेसे अधिक भारतीय थे। लेकिन १९३२ में केवल तीस हजार गये। अबके और भी कम प्रायः २९ हजार गये हैं। इससे इब्नसऊद आर्थिक सङ्कटमें पड़ गये हैं। शीघ्र वहां रेल बन जायेगी तो यात्रियोंके बढ़नेकी आशा है। पर हमें इसपर सन्देह होता है, क्योंकि अब मुसलमानोंकी धार्मिकता भी ढीली पड़ गयी है।

## ईराक—

वहांके बादशाह फैसल विलायत पहुंचे हैं। उनका वैसा ही सम्मान हो रहा है, जैसा कभी अमीर अमानुल्लाका हुआ था। कुछ जर्मन पत्र इसपर सशङ्कित हो रहे हैं। उनका मत है कि एंग्लो-पर्शियन आयल कम्पनीके ईरानके साथ झगड़ेसे डरकर ब्रिटिश राजनीतिज्ञ अमीर फैसलको आरम्भसे ही खुश रखके कड़ी शर्तोंमें जकड़ लेना चाहते हैं। स्वयं सम्राट् अपने उत्तराधिकारी प्रिन्स आफ वेल्सके साथ अमीर फैसलका स्वागत करने विक्टोरिया स्टेशन आये। अमीरकी दावतोंका जोर है। उधर अमीर फैसलके राज्यमें प्रधान मन्त्री रशीदअली बेग अलजिलानीने धार्मिक कट्टरताका झण्डा उड़ा रखा है। शराबकी दूकानें एकदम कम कर दी गयी हैं, उसके विरुद्ध जहाद बोल दिया है और वेश्याओंको परदेमें रहनेका हुक्म मिला है। छात्रोंको भी साढ़ेसातीने घेर लिया है। वे नाचघरों, चाखानों और जुएके अड्डोंके पास फटकने न पायेंगे। उन्हें खास-खास धार्मिक और सुरुचि-सम्पन्न फिल्म, थियेटर देखनेकी आज्ञा मिलेगी। लेडी टीचर्सको यह हुक्म हुआ है कि पाउडर, सुरमा और मिस्सी-का बायकाट करो। शृङ्गार करना उनके लिए महापाप बताया गया है। रईसोंसे प्रार्थना की गयी है कि वे अपना चरित्र सुधारें और सरकारी कर्मचारियोंपर यह लाजिमी है कि वे अपना चरित्र ठीक करें।

## टर्की—

रूस और टर्कीमें व्यापारिक मित्रता बढ़ती जा रही है। हालमें टर्कीके व्यापारियोंका एक डेपुटेशन रूस पहुंचा और उसका खूब स्वागत किया गया। मास्कोके प्रदर्शिनी हालमें इन डेलीगेटोंका स्वागत करते हुए प्रो० लेनगाइलने कहाः—"रूसको टर्की जैसे परम मित्र राष्ट्रके प्रतिनिधियोंकी आवभगत करनेमें महान् हर्ष हो रहा है। हमने इधर पांच-सालाना कार्यक्रममें जो अनुभव और ज्ञान प्राप्त किया है, उससे आप भी लाभ उठावेंगे तो हमें बहुत खुशी होगी।"

## काबुल—

बर्लिनमें जबसे एक काबुली छात्रने वहांके काबुली राजदूतको गोलीसे मार डाला, तबसे काबुलमें हलचल मच गयी है। नादिर खां बहुत सतर्क हो गये हैं और काबुलका खुफिया विभाग उस आन्दोलनकी जड़ खोज रहा है, जो अमीर अमानुल्लाको फिरसे काबुलकी गद्दीपर बैठानेके लिए गुप्त षड्यन्त्र रच रहा है। कहा जाता है कि रूसी सरहदपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यह आन्दोलन जोरोंपर है, और इसके कई बड़े-बड़े नेता काबुलमें रहते हैं। इसमें स्वयं अमानुल्ला उतना भाग नहीं लेते, जितना सुधार-प्रेमी काबुली।

## चीनी तुर्किस्तान—

चीनका यह प्रदेश मुसलमान राष्ट्र हो गया है। कुछ दिन पहले तक स्वयं नानकिङ्गकी सरकारको इसका पता और विश्वास न था। यह नया राष्ट्र कैसे स्थापित हुआ, इसपर रहस्यमय यवनिका पड़ी हुई है। पर हालमें फ्रैङ्क गाडविनने 'पीपल्स ट्रिब्यून' में एक लेख छपाया है, जिससे हमारे उस कथनकी पुष्टि होती है जो हमने मईके अङ्कमें चीनपर अपने लेखमें किया है। गाडविनका मत है:—"यह सिनकियाङ्ग प्रदेश न तो रूसके पास है और न ब्रिटिश भारतके। अब तक किसी विदेशी राष्ट्रने यहां अपना प्रभाव जमानेका प्रयत्न न किया। पर ब्रिटिश सदा अपने भांति-भांतिके अभियान वहांको भेजते रहते थे। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण शोमबर्गका है। यह शोमबर्ग भारतीय सेनामें अफसर था। जबसे टोरी सरकारका शासन चल रहा है, ब्रिटिशों द्वारा शिक्षित तिब्बतन सैनिक हसिकियाङ्ग और सिनकियाङ्गके पास चिङ्घाइ कोको नोर तक पहुंच गये हैं। गत वर्ष इस प्रदेशमें नयी घटना यह हुई कि चार विदेशी, एक पादड़ी और तीन बौद्ध-भिक्खु रुपया दे-देकर मुसलमानों-को भड़काने लगे। विदेशियोंने धर्म-प्रचारके नामपर 'आत्म-रक्षा-समितियां' खुलवायीं। ये विद्रोही समितियां थीं, पर चीनी सरकारको इसका पता न लगा। इस प्रकार अचानक विद्रोह हो गया। एक चीनी नेताका कहना है कि इसके पीछे रूस और जापान मुख्य षड्यन्त्री हैं और गौण हैं ब्रिटेन तथा टर्की।" 'चाइना वीकली रिव्यू' लिखता है:—"मुसलमानों-को विकर्स-आर्मस्ट्राङ्गस तथा उसकी ईरान, काबुल और काश्मीर-स्थित शाखाओंसे शस्त्रास्त्र मिले हैं। तिब्बतवाले भी सिनकियाङ्गकी ओर बढ़ रहे हैं और इनके पास भी ब्रिटिश शस्त्रास्त्र हैं। तीन साल हुए कि रूसने काबुल और काश्मीरकी सरहदपर ही टर्किश रेलवे लाइन पहुंचा दी। उस समय इसका जवाब देनेके लिए ब्रिटिश अधिकारियोंने सिनकियाङ्गको एक 'वैज्ञानिक अभियान' भेजा; पर असलमें यह अभियान वहांके निवासियोंमें चीनके विरुद्ध षड्यन्त्र रचनेके लिए था। इसका फल अब देखनेमें आ रहा है। रूसियों और चीनियोंका कहना है कि इसकी जड़में ब्रिटिशर हैं। दक्षिण-पश्चिममें सबसे पहले विद्रोह हुआ और यह ब्रिटिश सरहदके पास है। इसमें सफेद रूसी भी हैं जो सोवियटके विरुद्ध सब-कुछ करनेको तैयार हैं।"

## रूस—

—हम यह समाचार छाप चुके हैं कि हिट्लरके हाथमें शक्ति आते ही उसने रूससे सन्धि कर ली। यह सन्धिपत्र दो वर्षसे तैयार था, पर जर्मनीने उसपर हस्ताक्षर न किये थे। इधर हिट्लरकी अत्याचारी और कम्यूनिज्म-विरोधी नीति देखकर रूस इस सन्धिको कोई महत्त्व नहीं दे रहा है। इसका दूसरा कारण हूगनबर्गका वह मेमोरेण्डम है, जिसमें उसने राष्ट्र-परिषद्से प्रार्थना की है कि सब राष्ट्र मिलकर रूसको दबावें। ऐसी स्थितिमें रूसका कहना है कि जर्मनीसे उसकी मित्रताका कोई अर्थ नहीं है।

—रूसमें हालमें रसोइयोंकी प्रतियोगिता हुई। यह इस-लिए की गयी कि बोलशेविक रूसने भोजनके नये-नये प्रकार बनाने आरम्भ कर दिये हैं। जारके रूसमें रसोइये केवल धनियोंके लिए होते थे और वे फ्रेञ्च भोजनका अनुकरण करते थे, पर अब स्थिति बदल गयी है। रूसमें पूंजीपतियों और जमींदारोंका लोप हो गया है। इसलिए रसोइये अब कारखानों और सङ्घबद्ध कृषकोंकी रसोईमें भोजन तैयार करते हैं। इस भोजनमें स्वादके साथ इस बातका भी ध्यान रखा जाता है कि पौष्टिक पदार्थ पूरी मात्रामें हों। इस कारण रूसके रसोइयोंको वैज्ञानिक भी होना पड़ता है। इस प्रतियोगितामें 'नारवा' कारखानेका रसोइया सबको मात दे गया है। उसने आमिष और निरामिष दोनों प्रकारके ऐसे खाने तैयार किये हैं, जो अत्यन्त स्वादिष्ठ हैं और साथ ही उनमें मजदूरोंको सर्वथा स्वस्थ रखने लायक पौष्टिक पदार्थ भी हैं।

## डान्तसिख—

यह स्वतन्त्र नगर है। हिन्दी पत्रोंमें छपा था कि यह पोलैण्ड है; पर यह विशुद्ध जर्मन है और इसके दो मीलके फासलेपर पोलैण्डका नया बन्दरगाह गिडनिया है। इसमें भी वरसाइ-की सन्धिके कारण असन्तोष है। यह नगर अब नात्सी बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गया है। ऐसा करके इस नगरने अपनी हानि की है, क्योंकि अब तक कई बार राष्ट्रसङ्घने इसका पक्ष लिया था। भविष्य-में भी ऐसा हो सकेगा यह सम्भव नहीं है। इसकी समरप्रियता देखकर राष्ट्रसङ्घ पोलैण्डका पक्ष लेगा।

## आस्ट्रिया—

इस समय फासिज्म और नात्सीवादके शत्रुओंकी नजरें इस राष्ट्रकी ओर हैं। यदि आस्ट्रियामें नात्सी जीते तो सारा मध्य यूरोप हिट्लरकी अन्ध-राष्ट्रीयताका हामी बन जायगा और तब यूरोपमें शीघ्र ही युद्धकी बिजली कड़क उठेगी। इसलिए प्रजातन्त्रवादी, साम्यवादी और कम्यूनिस्ट प्राण-पणसे प्रयत्न कर रहे हैं कि नात्सीवाद जर्मनीमें ही सीमाबद्ध हो जाये। आस्ट्रियाका चान्सलर डालफुस हालमें ब्रिटेन गया था। वहांसे कौन मन्त्र पढ़कर वापस गया है इसका पता नहीं। पर वह नात्सियोंका घोर शत्रु है। उसने सब नात्सियोंको राष्ट्रका शत्रु बताया है और उन्हें वह जेलोंमें भर रहा है। आस्ट्रियाके सालत्सबुर्गके जिस मकानमें हिट्लर पैदा हुआ था उसपर पुलिसका पहरा है और कोई नात्सी उसके पास आने नहीं दिया जाता। इसलिए हिट्लर आस्ट्रियापर बेतरह नाराज है। हिट्लरका पत्र 'फेल्किशे बेओबाख्टर' लिखता है—"डालफुसके मित्र रोमन कैथलिक पादड़ी हैं। हमें नहीं भूलना चाहिए कि आलमुत्स-का आर्चबिशप एक यहूदीका पोता है।" अस्तु। आस्ट्रिया पूरा उद्योग कर रहा है कि नात्सी प्रभावसे बचा रहे। कई और कारण ऐसे हैं जिनसे आशा होती है कि नात्सी वहां अपना जोर न कर पायंगे।

## हङ्गरी—

आस्ट्रिया और हङ्गरी फिर चेष्टा करने लगे हैं कि मिल जायें और पुराने सम्राट्के पोतेके अधीन कर दिये जायें। यह सम्भव नहीं मालूम पड़ता, क्योंकि उनके आसपासके राष्ट्र इस मेलसे घबरा रहे हैं और राष्ट्रसङ्घमें उनकी ही चलेगी। मो० मेस्को हङ्गरीमें नात्सी राज देखना चाहते हैं। उनको इस वादसे इतना अधिक प्रेम हो गया कि वे हङ्गरीकी पार्लामेण्टमें जर्मनमें बोलने लगे। इसपर वहांके परराष्ट्रसचिव-ने उनसे स्पष्ट शब्दोंमें कहा—"हमारा जर्मनीसे इतना ही वास्ता है कि वह हमारा माल कितना खरीदता है। बाकी हम नहीं चाहते कि हमारे देशकी राजनीतिका परिचालन म्यूनिचका नात्सीदलका अड्डा 'ब्रौन हौस' करे। आप हमारे देशमें हमारी भाषा माज्यार बोलें। यह जर्मनी नहीं है।"

## जर्मनी—

हिट्लर इस तेजी और नीति-हीनताके साथ आगे बढ़ रहा है कि उसका पतन यदि शीघ्र न हुआ तो जर्मनीमें घोर विपत्ति आ जायेगी। हिट्लर ऐसा मदमत्त हो गया है कि उसे खुश करनेके लिए उसके यहूदी मन्त्री गोअनबर्गने एक मछलीका नाम 'हिट्लर हेरिङ्ग' रख दिया है। अब तक यह मछली 'बिस्मार्क मछली'के नामसे कही जाती थी। यह हिमाकत देखिये कि हिट्लर अब जर्मनीके सबसे अधिक लोकप्रिय चान्सलर और जर्मन राष्ट्रके निर्माता बिस्मार्कको भी भुला देना चाहता है। इससे भी बुरा काम उसने जर्मन राष्ट्रीय दलके स्वयं-सैनिकोंके सङ्गठनको गैरकानूनी बताकर किया है। इसलिए प्रसिद्ध पूंजीपति और स्टालहेल्मके नेता हर हूगेनबर्गने मन्त्रिमण्डलसे पद-त्याग कर दिया है। इस नेताके हाथमें बड़ी शक्ति है, उसे अपना शत्रु बनाकर हिट्लरने अपने पतनका मार्ग प्रशस्त किया है।

—जर्मनीमें नयी आवाज उठी है—"हमें बड़ी तोपें चाहिए।" कहा जाता है कि जर्मनीके शस्त्रास्त्रके कारखाने शीघ्र ही बड़ी-बड़ी तोपें भी बनाने लगेंगे। क्या राष्ट्रसङ्घ चुपचाप यह सब देखता रहेगा? इधर कई पत्रोंने पता लगाया है कि हालैण्ड और स्विट्जरलैण्डमें जर्मनीके लिए बहुतसे हथियार तैयार हो रहे हैं।

—'सार' महायुद्धसे पहले जर्मन प्रदेश था। अब वह मैण्डेटेड प्रदेश है और फ्रान्स उसका शासन कर रहा है। शीघ्र ही वहांके निवासियोंसे मत लिया जायगा कि वे फिर जर्मन बन जाना चाहते हैं या फ्रान्सके साथ रहनेमें उनको सुविधा है? वहांके पत्रोंसे मालूम होता है कि सारनिवासी हिट्लरके राजसे घबरा गये हैं। इससे फ्रेञ्च खुश हैं कि बिना विशेष प्रचारके सार स्वयं जर्मनोंके विरुद्ध हो गया है।

—जर्मनीमें फ्रेञ्च मोटरकार सिट्रोएनकी एजन्सी है और क्रुप, फराइनिगटे ष्टालवेर्के आदि बड़े-बड़े कारखाने भी इसके एजण्ट हैं। इन लोगोंको भय हुआ कि हिट्लरकी राष्ट्रीयताके तूफानमें कहीं जनता इस फ्रेञ्च कारकी शत्रु न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हो जाये। इसलिए प्रायः तीस बड़ी-बड़ी जर्मन फर्मोंके नामसे सब पत्रोंमें एक विज्ञापन छपा है—"सिट्रोएन कारका पुरजा-पुरजा जर्मन है। यह कार विशुद्ध राष्ट्रीय है और इसे बेचनेवाले भी जर्मन हैं। यह विदेशी कारोंसे सस्ती और मजबूत है। इसे खरीदिये।" यह है पूंजीवादका माहात्म्य कि सिट्रोएन फ्रांसमें फ्रेञ्च है और जर्मनीमें जर्मन।

—जर्मनीमें नारीका स्थान निर्धारित कर दिया गया है। वह ज्यादा न पढ़ेगी; घरमें भोजन पकायेगी और बच्चे जनेगी। इसलिए वहां स्त्रियोंको भी नौकरियोंसे निकाला जा रहा है।

## फ्रान्स—

इस समय यूरोपमें एक ही देश है जो निश्चिन्त है। यह है फ्रान्स। फ्रान्स अमेरिकासे भी धनी है। इसलिए सब उससे जलभुन रहे थे। पर हिट्लरने इस राष्ट्रकी राजनीतिक स्थिति सुधार दी। नात्सियोंकी पुस्तकोंमें पढ़ाया जा रहा है कि आलसास लारेन फ्रान्ससे छीनने पड़ेंगे, पर इन प्रदेशों-के निवासी अपने भाग्यकी सराहना कर रहे हैं कि वे फ्रान्स-में हैं और हिट्लर-शाहीसे बचे हुए हैं। यही दशा जर्मन भाषाभाषी सार प्रदेशकी है। हिट्लरकी भूलोंसे फ्रान्स खूब लाभ उठा रहा है।

## स्पेन—

यहां एक नये दलका सङ्गठन हो रहा है। इसका नाम है 'लाकचियों एल्पान्योला।' इसका कहना है कि प्रजा-तन्त्रने देशको बरबाद कर दिया है। इसलिए हमें ऐसे राष्ट्रीय विचारोंकी आवश्यकता है जो गवर्नमेण्टके रूपकी ओर ध्यान न देकर देशहितका ख्याल रखे। यह दल फ्रान्स-के 'लाकशियों फ्रान्सैज'की नकलपर है।

## पुर्त्तगाल—

इटलीमें काले शर्ट, जर्मनीमें भूरे तथा पुर्त्तगालके फा-सिस्टोंने नीले शर्टोंकी धूम मचा रखी है। पुर्त्तगालके फा-सिस्ट हिट्लरके भी उस्ताद मालूम पड़ते हैं। हैं तो ये पूंजीपतियोंके गुलाम, पर इन्होंने झण्डा इख्तियार किया है रूसका। याने ये फासिस्ट लाल झण्डेके तले अन्ध-राष्ट्रीयताका प्रचार करना चाहते हैं। इनका नेता है रोलाओ प्रेटो। यह चलता पुरजा नेता वहांके प्रधान मन्त्रीका मित्र है। इसने कहा है कि देशमें अशान्ति फैलते ही वह सरकारकी सेवामें पांच हजार 'नीले कुर्ते' वाले स्वयंसैनिक उपस्थित कर सकता है। इसकी कूटनीति देखिये कि इसके पत्रका नाम है—'विद्रोह।' यह विद्रोह पापी पूंजीपतियोंके विरुद्ध नहीं, पाखण्डी धर्मगुरुओंके खिलाफ नहीं, पर है उन दुर्बल मज-दूरोंको उजाड़नेके लिए जो अपनी पसीनेकी कमाईसे भी उदरपूर्ति नहीं कर सकते। इन पोर्त्तुगीज फासिस्टोंने अपना उद्देश्य यों रखा है—"हम कार्यकी स्वाधीनताके सिद्धान्तके पक्षपाती नहीं हैं। हम तो 'राष्ट्रीय सामञ्जस्य' चाहते हैं जिसमें पूंजी, कलाकौशलकी विचक्षणता और मजदूर एक साथ मिलकर काम करेंगे।" इससे देशका धन बढ़ेगा यह इस दलका मत है।

## अमेरिका—

अमेरिका इस समय सर्वराष्ट्रीय आर्थिक सम्मेलनमें व्यस्त है। उसको रुपयेकी आवश्यकता है। इसलिए वह पहले अपने कर्जके किश्तकी अदायगी चाहता है। इसपर यूरोपके राष्ट्र जो समझे बैठे थे कि अमेरिका हमारी सहायता करेगा, भौंचक्के रह गये हैं।,—'चौबेजी छब्बे होने गये, दूबेजी होकर वापस आये', वाली कहावत चरितार्थ होनेको है। पर अमेरिका अपना कर्ज कैसे छोड़ेगा? वह स्वयं अर्थ-सङ्कटमें है। इसलिए वह सम्मेलन कब तक किसी निश्चित निर्णय-पर आये, कुछ नहीं कहा जा सकता। कहीं इसकी दशा 'निरस्त्रीकरण परिषद्' की-सी न हो।

——



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

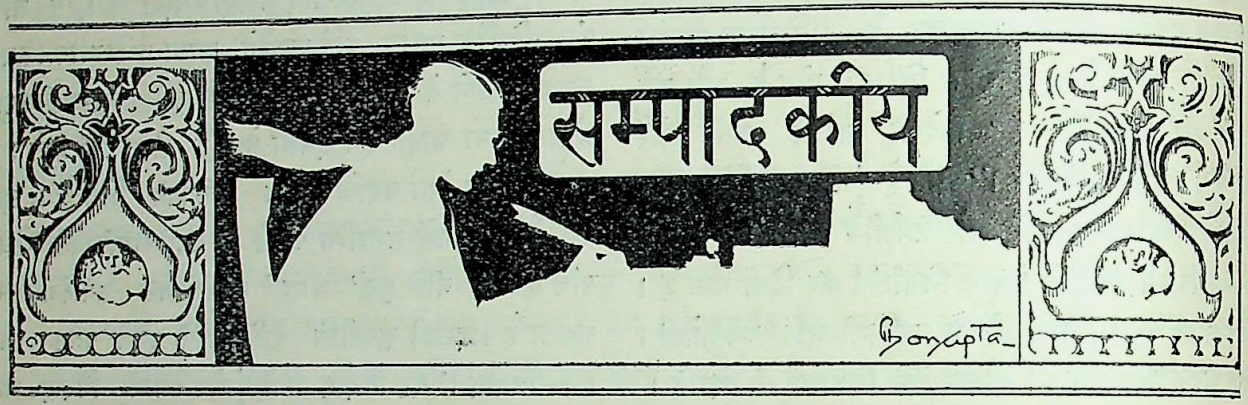


## कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन

कांग्रेस कहां जा रही है यह प्रश्न आजकल अनेक देश-भक्तोंको व्यथित कर रहा है। सत्याग्रह आन्दोलन अब तक कांग्रेसका प्राण बना हुआ था; पर चाहे जिस कारण हो, सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया है। ऐसा भी मालूम होता है कि यह अब बन्द हो जायेगा। इसका निर्णय हमारे पाठक एक मासके भीतर ही जान जायेंगे। महात्मा गांधी धीरे-धीरे इसके लिए देशको तैयार कर रहे हैं और कांग्रेस-वादी जनता भी इस ओर है, क्योंकि उसने सुभाष बाबू और श्री वी० जे० पटेलका प्रोग्राम ग्रहणीय नहीं समझा है। कई नेता भी सत्याग्रह आन्दोलनकी दुर्बलताको समझ गये हैं। बम्बई क्रानिकलमें श्री बी० जी० हार्निमैनने लिखा है—"मेरा दृढ़ विश्वास है कि ऐसा आन्दोलन बन्द हो जाना चाहिए जिसके पक्षमें जनता बिलकुल नहीं है। ऐसे आन्दोलनको जारी रखना जुर्म है।" ये हार्निमैन महोदय कांग्रेसके कट्टर पक्षपाती हैं। यह तो हम सब देख रहे हैं कि अब सिविल डिसओबीडियन्स आन्दोलन बेकार मालूम होता है। किसी नेताको इसके पुनरुद्धारका मार्ग नहीं सूझ रहा है। इन बातोंसे यही अनुमान निकलता है कि शीघ्र ही कांग्रेस खद्दर-प्रचार और हरिजनोत्थानपर अपना सारा बल पिलायेगी। म० गांधी—बहुत सम्भव है हरिजनोत्थानको ही अपने जीवनके अन्तिम दिनोंका ध्येय बनायेंगे। इधर ऐसे भी लक्षण दिखायी दे रहे हैं कि म० गांधीजी या कांग्रेस-के प्रतिनिधियोंकी सरकारसे सुलहकी बातचीत चलेगी। तब 'स्वराज' दलको नया जीवन मिलेगा और हमारे नेता कौन्सिलों और एसेम्बलीमें जायेंगे।

## कौन्सिल और कांग्रेस

कांग्रेसवाले कौन्सिलोंमें नहीं जाते। उन्होंने इनका बायकाट कर रखा है। पर यह देखकर आश्चर्य होता है कि जब रङ्गा आयरने एसेम्बलीमें 'अछूत बिल' पेश किया था तब सभी नेता उसे आशीर्वाद दे रहे थे और श्रीराजगोपालाचारियर आदि नेता म० गांधीके प्रतिनिधि-रूपसे पूरा प्रयत्न कर रहे थे कि इस बिलका सब गैर-सरकारी मेम्बर समर्थन करें। उस समय कांग्रेसकी निस्सहायावस्थाका पता चला। जिस एसेम्बलीका हमने बायकाट कर रखा था उसमें बिल पास करानेके लिए हमारी व्यग्रता हमारी सरलताका परिचय दे रही थी। कांग्रेसके नेता उस समय सत्य हृदयसे चेष्टा कर रहे थे कि उक्त बिल कानून बन जाये और अछूतोंका उद्धार हो जाये। यह स्थिति उन कांग्रेसवालोंको खल रही थी जो स्वराजपार्टीमें रह चुके थे। इसलिए हमारे मुमूर्षु आन्दोलनकी वर्तमान डांवाडोल दशामें वे शीघ्र ही कांग्रेससे प्रार्थना करेंगे कि 'स्वराज-पार्टी'की पुनर्स्थापना की जाये। म० गांधी इस नीतिको अवश्य ही हानिकर समझते हैं, पर इधरकी घटनाओंके कारण वे इसका तीव्र विरोध कर सकेंगे ऐसी आशा नहीं है। कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन अनिवार्य हो गया है। सुभाष बाबूकी उग्रतासे देशके अधिकांश कर्मी घबरा रहे हैं, इसलिए भविष्यमें कांग्रेस हरिजनोत्थानपर जोर देगी और राजनीतिक क्षेत्रमें स्वराज-पार्टीका अनुसरण करेगी। कभी गवर्नमेण्टसे लोहा लेगी तो कभी उससे मेल करेगी। हमारा विचार है कि वर्तमात अड़ियल स्थितिसे उस समय अधिक काम होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## कांग्रेसमें दलबन्दीकी आशङ्का

कांग्रेसपर सङ्कट आया है। सत्याग्रह आन्दोलन असफल हुआ यह तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि जो-जो देशभक्त शुद्ध हृदयसे इसमें शरीक हुए उनको स्वराज मिल गया अर्थात् उनकी आत्मा बलीयान् बन गयी और वह मुक्ति-की ओर बढ़ी। पर अब इस आन्दोलनके सामने एक दुरूह दीवार आ गयी है जिसे लांघना किसीके हाथमें नहीं है। इसलिए कांग्रेस इस समय ऐसे चक्करमें पड़ गयी है कि न तो आगे बढ़ सकती है और न पीछे ही पग रख सकती है। इस स्थितिमें सब बेचैन हैं कि नीतिमें ऐसा परिवर्तन किया जाये कि यह जो 'न ययौ न तस्थौ' की दशा हो गयी है उसका अन्त हो। किन्तु इस विषयपर हमारे नाना ऋषियोंके नाना मत हैं। म० गांधी सत्याग्रहपर अपना मत नहीं बदलते। वे तो स्पष्ट कहेंगे कि सत्याग्रह किसी भी देश या जातिके उद्धारका एकमात्र पथ है। उनका यह मत सत्य भी है; क्योंकि यदि सारा देश इस मार्गका अवलम्बन करे तो अविलम्ब देशको 'पूर्ण स्वराज' प्राप्त हो जाये। १९२१ में महात्माजीने घोषणा कर दी थी कि यदि सारा राष्ट्र उनके मतको अपना ले और उसके अनुसार काम करने लगे तो सालभरके भीतर ही भारत स्वतन्त्र हो जाये। पर दुर्भाग्यसे सब देशवासी उनके साथ न हो पाये और स्वराज्य अब तक भी न आ सका। लेकिन महात्मा गांधीका मत सत्य था और है। इस समय भेद केवल इतना ही है कि हम जान गये हैं कि "भिन्न-रुचिर्हि लोकः" सब मनुष्योंका एक मत नहीं हो सकता। इसलिए कई नेता ऐसा पथ निकालनेके लिए व्यग्र हैं जिसमें बिना सारे देशकी सहायताके देश मुक्तिकी ओर बढ़े। ऐसे देशभक्तोंमें सुभाष बाबू अग्रणी हैं। कुछ नेता कौन्सिलोंमें जाकर शासनको तङ्ग करनेमें और देशका ध्यान उसकी त्रुटियोंकी ओर खींचनेमें देशको स्वराजकी ओर बढ़ानेका मार्ग देखते हैं। ये फिर स्वराज-पार्टीको जीवित करनेके प्रयत्नमें हैं। ये तीन दल स्वयं कांग्रेसके भीतर रहेंगे। ये पहले भी थे। लाहौर कांग्रेसमें उग्र दलका इतना बहुमत था कि प्रतिनिधियोंके मत एक-एक करके गिने गये और तब मालूम हुआ कि उसके अनुयायियोंकी संख्या म० गांधीके अनुयायियोंसे थोड़ी ही कम थी। ये सब उग्र मत न रखते थे। इनमें कुछ नरम भी थे, पर वे महात्माजीसे मतभेद रखते थे। किन्तु उस समय महात्माजीका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया कांग्रेसमें दलबन्दी होनेकी सम्भावनाके साथ ही यह प्रश्न उठता है कि क्या कांग्रेस तब कुछ ठोस काम कर सकेगी? और क्या म० गांधीका प्रताप अक्षुण्ण रहेगा? हम तो चाहते हैं कि देश एक नेताके नीचे स्वराज्य-संग्राममें आगे बढ़े; पर परिस्थितिका अध्ययन करके हमें भय होता है कि बङ्गाल-की भांति कहीं भारतीय नेता आपसमें ही न लड़ने लगें।

## जापान भारतसे बदला लेगा

अधिकांश पत्र यह देखकर परम प्रसन्न थे कि भारत-सरकारने जापानी कपड़ेपर अत्यधिक अतिरिक्त कर बैठाकर उसका भारतमें बिकना प्रायः असाध्य कर दिया है। कुछ स्वार्थी पूंजीपति घोषणा कर रहे थे कि जापान भारतीय रूईका बहिष्कार नहीं कर सकता—इस विषयपर वह बन्दर-घुड़की दे रहा है। हमने लिखा था कि इस अतिरिक्त करसे लङ्का-शायरको भले ही लाभ हो; पर भारतको हानि ही होगी और जापान स्वभावतः भारतीय रूईका बायकाट करेगा, जिससे देशको बहुत हानि पहुंचेगी। अब यह बात सामने आ गयी है। काटन-ब्रोकर्स एसोसिएशनने सूचना निकाली है कि जापानने भारतीय रूईके बायकाटका निश्चय कर लिया है। उसे भी आशा नहीं थी कि जापान अपनी धमकीको इतनी जल्दी कार्यमें परिणत कर देगा। उसकी विज्ञप्तिमें कहा गया है:—"वह बात हो गयी जिसकी हम आशा न करते थे।" हमारे सेठोंकी यह सादगी देखिये कि जापानको नाश करनेपर तुले हैं और फिर भी आशा करते हैं कि जापान उनके हितके लिए त्याग करेगा। जापान भारतसे प्रायः १४ करोड़ रुपये-की रूई खरीदता है। इसका बना मोटा कपड़ा भारत भेजता है। जब हमने उसे भारतसे खदेड़नेका इरादा पक्का कर दिया तो फिर उसे इस रूईकी क्या आवश्यकता? जापानी तो परिश्रमी, नीतिज्ञ, अर्थशास्त्र-विशारद और विज्ञानके कीड़े हैं। बहुत सम्भव है कि वे महंगी अमेरिकन रूई खरीद कर भी भारतमें सस्ता कपड़ा भेज दें; पर देशी मिलवाले क्या करेंगे? क्या वे लङ्काशायरसे मुकाबला कर सकेंगे? श्रम-जीवियों—और जनताके इन लुटेरोंको अब तक यह न सूझा कि इस सस्ते देशमें मजदूरोंका पेट काटकर भी जब ये सस्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कपड़ा नहीं तैयार कर सकते तो कालके मुंहसे इनकी रक्षा कौन कर सकेगा ? इनकी नीतिके कारण अब रूईका व्यापार भी चौपट होने जा रहा है।

## जापान और लङ्काशायर

जापान जिस द्रुतगतिसे कपड़ेके व्यापारका प्रधान केन्द्र बन गया उसे देख आश्चर्य-चकित रहना पड़ता है। भारतमें पचास सालसे सूती कपड़ेकी मिलें हैं, पर आज भी ये बिना सरकारकी सहायताके अपनी रक्षा नहीं कर सकतीं। जापानमें पहले पहल १८९७ में सूती कपड़ा बना। वर्षों-तक जापानकी दशा शिथिल रही। इधर दस सालसे बहुत अधिक सूती कपड़ा बन रहा है और उसने यह चमत्कार दिखाया है कि १९३२ में इंगलैण्डने दो अरब उन्नीस करोड़ गज कपड़ा बाहर भेजा और जापानने दो अरब पचास करोड़ गज कपड़ा चालान किया। इसपर उसकी वैज्ञानिक प्रणालीका माहात्म्य देखिये कि उसके पुतली-घरोंमें तिहाई मजदूर काम करते हैं। जिस जापानकी बुद्धि और बलके आगे ब्रिटेनको नतमस्तक होना पड़ता है, उससे भारत-की व्यापारिक लड़ाई देखने योग्य है।

## कट्टरपन्थी हिन्दुओंके लिए ज्ञातव्य-समाचार

"मलाबारके योमतुल इस्लाम एसोसिएशनने गत वर्ष १२०० हिन्दुओंको मुसलमान धर्मकी दीक्षा दी। वहांके प्रत्येक ताल्लुकेमें इस्लाम-प्रचारका केन्द्र स्थापित करनेका निश्चय किया और इस कामके लिए धड़ाधड़ रुपया एकत्र किया जा रहा है।" जिन हिन्दुओंके हृदय है वे स्वयं इसकी टीका कर लें।

## हमारे पत्रोंकी खबरें

प्रायः दो मास हुए समाचार छपा था कि हैदराबादकी रेजिडेन्सी बाजारके निजामके अधीन होनेकी खबर सुनकर वहांके निवासी भयभीत और त्रस्त हो गये थे तथा उन्होंने वहांके रेजिडेण्टसे निवेदन किया था कि वह कृपाकर ऐसा अनर्थ न होने दें। इतना ही नहीं, रेजिडेन्सीकी अदालतोंमें मुकद्दमोंका तार बंध गया; क्योंकि सब चाहते थे कि उनके मुकद्दमे ब्रिटिश अदालतमें हों। पर कुछ समय पहले समाचार आया था कि रेजिडेन्सी बाजार निजामके अधीन हो गया तथा जनता इस अवसरपर अपार हर्ष मना रही है। इन परस्पर-विरोधी समाचारोंका क्या अर्थ है ?

## भावलपुरमें अशान्ति

भावलपुर मुस्लिम-प्रधान रियासत है। वहांके अधिपति भी मुसलमान (नवाब) हैं। वहांके हिन्दुओंकी संख्या अल्प होनेपर भी यथेष्ट है। रियासतके वर्तमान शासनके विरुद्ध उनकी बहुत-सी शिकायतें हैं। उदाहरणके लिए उनका कहना है कि रियासतके शासन-कार्यमें उनका कोई हाथ नहीं है,—अब तक एक भी हिन्दू उक्त रियासतका मन्त्री नियुक्त नहीं हुआ है, म्युनिसिपलिटियोंमें हिन्दुओंका प्रतिनिधित्व नामको भी नहीं है, व्यापारके सम्बन्धमें उन्हें कोई भी सुविधायें प्राप्त नहीं हैं, इसके अतिरिक्त उन्हें कई अनावश्यक करोंका भार सहन करना पड़ता है। इधर हिन्दुओंने अपने मानवीय अधिकारों-को मांगके लिए एक आन्दोलन खड़ा किया। सभायें हुईं और जलूस निकाले गये। फल यह हुआ कि उनपर पूर्ण दमन-चक्र चलाया गया। यदि अखबारोंकी रिपोर्टोंपर विश्वास किया जाय तो कहना होगा कि दमनके ऐसे कठिन उपाय ब्रिटिश सरकार भी कभी काममें लानेका साहस न कर सकी। समाचार-पत्रोंकी रिपोर्टोंके अनुसार शान्त जनतापर लाठियों-का स्वच्छन्द प्रहार किया गया और महिलाओंपर भी ऐसी मार पड़ी कि उनमेंसे बहुतोंको अस्पताल पहुंचाना पड़ा। अनेक व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। यदि ये समाचार सत्य हैं तो आतङ्कजनक हैं, सन्देह नहीं। पर भावलपुर स्टेटकी तरफसे जो विज्ञप्ति इस सम्बन्धमें निकली है उसमें इन सब बातोंका खण्डन किया गया है, और कहा गया है कि 'नियम तथा व्यवस्था' की रक्षाके लिए कुछ व्यक्तियोंको गिरफ्तार करनेके अतिरिक्त जनतापर और कोई अत्याचार नहीं किया गया। हिन्दू महासभाकी ओरसे जो जांच हुई थी उसकी रिपोर्टको भी उक्त विज्ञप्तिने भित्तिहीन बतलाया है। हम कह नहीं सकते कि वास्तविक तथ्य क्या हैं। कुछ भी हो, जब रियासतके हिन्दुओंने आन्दोलन मचाया है तो इतना निश्चित है कि वे नवाब साहबके वर्तमान शासनसे असन्तुष्ट हैं। इधर हिन्दू तथा मुसलमानोंका एक सम्मिलित डेपूटेशन नवाब साहबके पास गया और उनसे प्रार्थना की गयी कि गिरफ्तार किये गये व्यक्तियोंको छोड़ दिया जाय और उनकी मांगें पूरी की जायं। इसके परिणाम-स्वरूप नवाब साहबने स्वयं जेलमें जाकर हिन्दू नेताओंको जेलसे मुक्त किया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उनसे हाथ मिलाया। हिन्दू महिलाओंपर मार पड़नेकी बात सुनकर नवाब साहबने दुःख प्रकट किया, और हिन्दुओंको यह आश्वासन दिया कि उनकी शिकायतोंको दूर करनेकी यथेष्ट चेष्टा की जायगी। नवाब साहबकी बातोंके ढङ्गसे मालूम होता है कि महिलाओंकी अवमाननाकी बातको वह अविश्वासपूर्वक उड़ादेना नहीं चाहते। यदि भावलपुरके नवाब महोदय वास्तवमें हिन्दुओंकी मांगोंको पूरा करनेका विचार करते हैं तो यह प्रसन्नताकी बात है, सन्देह नहीं; पर हमें इस सम्बन्धमें बहुत सन्देह है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि इधर कुछ वर्षोंसे देशी राज्योंकी प्रजायें अपने अधिकारोंके सम्बन्धमें सचेत होने लगी हैं। यद्यपि हम इन राज्योंके सम्बन्धमें भारत-सरकारकी नीतिका समर्थन नहीं करते, तथापि यह कहना ही पड़ता है कि देशी नरेशोंका एकाधिपत्य-मूलक शासन (autocracy) किसी प्रकार भी सराहनीय तथा वाञ्छनीय नहीं है। जिस 'शान्ति और शृङ्खला' का पाठ भारत सरकार हमें पढ़ाती है और देशी नरेश अपनी प्रजाको सिखाते हैं, यदि वे स्वयं न्यायपूर्वक उसके अनुकूल चलें तो ये सब झमेले ही उठ खड़े न हों। प्रजाको उसके अधिकार पूर्णतः प्राप्त होने चाहिए। केवल न्यायतः या अन्यायतः कर वसूल करके असहाय प्रजाका सत्त्व शोषित करनेसे ही 'नियम तथा व्यवस्था' की रक्षा नहीं होती। काश्मीर, अलवर आदि रियासतोंसे सबक सीखकर भावलपुरके नवाबको सावधान हो जाना चाहिए।

## भारतके ग्रामोंमें रेडियो

भारतके दीन, दरिद्र, क्लिष्ट ग्रामोंमें रेडियो-जैसे शौकके साधनकी स्थापनाकी बात एक निरी हवाई कल्पना समझी जायगी, सन्देह नहीं। पर कुछ ऐसे भी दूरदर्शी व्यक्ति वर्तमान हैं जो इस हवाई कल्पनाकी अवज्ञा नहीं करते। पाठकोंको शायद मालूम नहीं होगा कि भारतके 'ग्राम-हितैषियों' का एक गुट इस समय लन्दनमें वर्तमान है। यह गुट 'इण्डियन विलेज वेलफेयर एसोसिएशन' (भारतीय ग्राम-हित-सङ्घ) के नामसे प्रसिद्ध है। इसके सदस्य हैं—मार्क्विस लोथियन, सर अतुल चटर्जी, सर भूपेन्द्र मित्र, सर उमर हयात तथा सर फ्रैन्सिस यङ्गहसबैण्ड, और इसकी सभानेत्री हैं लेडी इरविन। बड़े हर्षका विषय है कि लन्दनके आलीशान महलोंकी शाही शान-शौकतका पूर्ण उपभोग करते हुए भी इन महानुभावोंको भारतकी दरिद्र किसान-जनताकी टूटी-फूटी झोपड़ियोंका ख्याल बना रहता है! कुछ भी हो, उक्त सङ्घ इस समस्यापर बड़ी गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा है कि ब्रिटिश भारतके ६००,००० ग्रामोंमें किन उपायोंसे 'ब्राडकास्टिंग' के प्रसारकी सुविधा की जाय। सङ्घके सदस्योंका ख्याल है कि ग्रामोंमें रेडियोकी सुविधा होनेसे ग्रामीण जनताको शिक्षाके सम्बन्धमें बड़ी सहायता हो सकती है। इसके अतिरिक्त, कर्म-क्लान्त कृषक-सम्प्रदायका मनोविनोद भी हो सकता है। पर अपना वास्तविक उद्देश्य सङ्घने अभी स्पष्ट रूपसे व्यक्त नहीं किया है, केवल इशारा दिया है। वह यह कि इस उपायसे सरकारको ग्रामीण जनतामें अपने विचारोंका प्रचार करनेकी सुविधा प्राप्त होगी। पर हमें इस सम्बन्धमें बिलकुल भय नहीं है, क्योंकि इधर कुछ वर्षोंके अनुभवसे हमें भली भांति यह बात मालूम हो गयी है कि सरकारके स्वपक्षी प्रचारके सम्बन्धमें ग्रामीण जनता भी बिलकुल भ्रममें नहीं रहती। हम 'विलेज वेलफेयर एसोसियेशन' की स्कीमका पूर्णतया स्वागत करते हैं, और यदि वह सफल हो सके तो इससे जनताको हानिकी अपेक्षा लाभ ही अधिक होगा, इस बातका हमें पूरा विश्वास है। पर क्या इसका सफल होना सम्भव है? सङ्घका कहना है कि यह कोई कठिन समस्या नहीं है। सोवियट यूनियनमें इसी प्रकारकी 'स्कीम' ने पर्ण सफलता प्राप्त की है। वहां ग्रामोंमें रेडियो द्वारा लड़के-लड़कियोंको शिक्षा प्रदान की जाती है, सोवियट नीतिका प्रचार किया जाता है, नाना तथ्योंकी सूचना प्राप्त की जाती है और जनताके विनोदका ख्याल रखा जाता है। सिंहलमें भी इस प्रयोगकी परीक्षा की गयी है, और विशेषज्ञोंका कहना है कि वहां यथेष्ट सफलता प्राप्त हुई है। पर प्रश्न यह है कि भारतकी दरिद्र कृषक जनता इस विनोदका व्यय वहन कर सकेगी? इसके उत्तरमें सङ्घका कहना है कि प्रारम्भमें ५०० ग्रामोंमें इस प्रयोगकी परीक्षा की जायगी। इसमें ३१,००० पौण्डका खर्च बैठेगा और सात वर्ष तक प्रत्येक ग्रामसे ६०) रु० प्रतिवर्ष 'कर' के बतौर वसूल किया जायगा। इसके बाद ६०) रु० प्रतिवर्षसे काम चल जायगा। यद्यपि उपयोगिताकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तुलनामें यह रकम कुछ बड़ी नहीं है तथापि हमें सन्देह है कि इतना खर्च करनेको भी हमारे निर्धन ग्राम समर्थ होंगे। इस 'भारतीय ग्राम-हित सङ्घ' के सदस्योंको पहले हमारे ग्रामोंके अन्यान्य कष्टोंके निवारणका प्रयत्न करना चाहिए। विनोदके पहले दो मुट्ठी अन्नका प्रश्न हमारे ग्रामीणोंके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस मुख्य प्रश्नको हल करनेमें क्या-क्या बाधायें उनके सामने खड़ी हैं, पहले इस सम्बन्धमें विचार करनेकी आवश्यकता है।

## भारतीय युवकगण और वायुयान-परिभ्रमण

डाक्टर मुञ्जेने देशवासियोंके नाम एक अपील निकाली है जिसमें उन्होंने श्री चावला नामके एक भारतीय युवकके वायुयानमें संसार-परिभ्रमणार्थ आर्थिक सहायताकी प्रार्थना की है। श्री चावला प्रथम भारतीय हैं जिन्होंने वायुयान द्वारा संसार-पर्यटनका साहस किया है। आप कराचीसे हवाई जहाजमें सकुशल इंगलैण्ड पहुंचकर वापस आये हैं। डाक्टर मुञ्जे ने अब उन्हें संसार-परिभ्रमणके लिए उत्साहित किया है और इस अभियानके लिए वह यथेष्ट फण्ड जमा करना चाहते हैं। डाक्टर मुञ्जेका यह प्रस्ताव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। केवल वाक्शक्तिमें ही निपुण, अव्यावहारिक, आलसी युवकोंको इस प्रकारकी स्फूर्ति और साहसके कामोंके लिए उत्साहित करनेकी कितनी आवश्यकता है यह बात किसीसे छिपी नहीं है। संसारके सभी स्वतन्त्र राष्ट्रोंमें साहसी युवकोंको सब तरफसे उत्साह प्रदान किया जाता है। इस कर्मयुगमें नवयुवक-समाजके कोरे कागजी विचारों तथा भावुक उद्गारोंका कोई महत्त्व नहीं रह गया है। सार्वजनिक प्लेटफार्मोंकी भड़कीली, जोशीली वक्तृताओंका भी कोई विशेष ठोस फल नहीं दिखायी देता। उन्हें पूर्णतः व्यावहारिक, परिश्रमी और उद्यमशील बनानेकी आवश्यकता है। हमारे जड़ भावापन्न देशमें अव्वलमें वास्तविक उद्योगशील युवकोंका बिलकुल अभाव-सा है; यदि दैवयोगसे एक-आध युवक व्यावहारिक बुद्धिसे प्रेरित होकर उपयोगी कामोंकी ओर प्रवृत्ति दिखाता है तो उसे उत्साहित करनेके बदले लोग उसके 'दुस्साहस' का मजाक उड़ाने लगते हैं। कुछ दिन हुए कलकत्तेके एक बङ्गाली युवकने स्वयं अपने हाथसे मोटर तैयार करनेका विश्वास लोगोंको दिलाया था और बहुत-कुछ उसे तैयार भी कर लिया था। पर इस प्रशंसनीय उद्यममें उसका उत्साह बढ़ानेके लिए कहींसे उसे उपयुक्त आर्थिक सहायता नहीं मिली। कलकत्ता कार्पोरेशनने अलबत्ता उसे सहायता देनेका वचन दिया, पर यह सहायता सामान्य थी। उधर स्वतन्त्र देशोंका हाल देखिये। हेनरी फोर्डने जब एक नये 'पैटर्न'की मोटरका आविष्कार किया तो उसे तत्काल आशातीत आर्थिक सहायता प्राप्त हो गयी, जिसका फल आज सभी प्रत्यक्ष देख रहे हैं। इस एक मोटरकी वजहसे आज फोर्ड संसारके सर्वश्रेष्ठ धनकुबेरोंमेंसे एक है। कुछ भी हो, हमारा आशय यह है कि इस उद्योग, विज्ञान, कर्म तथा साहसके युगमें यदि हम चाहते हैं कि हमारा देश वास्तवमें उन्नति करे तो हमें मुख्यतया इस बातपर दृष्टि रखनी होगी कि हमारे युवकोंको व्यावहारिक क्षेत्रमें किन उपायोंसे उत्साहित किया जाय।

वायुयान धीरे-धीरे आधुनिक संसारकी उन्नतिके साधनोंमें प्रमुख स्थान अधिकार करता जा रहा है। उसकी उपयोगिताका यदि कोई दुरुपयोग करे तो बात दूसरी है, पर संसारको वर्तमान दशामें किसी देशकी रक्षा अथवा व्यावहारिक विकासके लिए उसका प्रचलन अनिवार्यतः आवश्यक हो उठा है। इसलिए डा० मुञ्जेकी अपील बड़ा महत्त्व रखती है। अपीलमें कहा गया है कि "भारत भी स्वराज्यके स्वप्न देख रहा है। स्वराज्य-प्राप्तिका अर्थ यह है कि देश आन्तरिक विद्रोहोंके दबाने तथा विदेशी हमलोंका सामना करनेके योग्य हो। * * * यूरोपकी राष्ट्रीय सरकारें तथा वहांकी जनता अपने साहसी युवकोंकी हर प्रकार सहायता करती हैं; परन्तु इस सम्बन्धमें भारतीय युवकोंको कोई सहायता न तो सरकार और न जनतासे ही मिलती है। अब समय आ गया है कि देशके धनी व्यक्ति तथा राजे-महाराजे आगे बढ़ें और युवकोंको इस सम्बन्धमें प्रोत्साहन दें।" श्री चावलाके वर्तमान संसार-व्यापी अभियानके लिए प्रायः ३५०००) रु० की आवश्यकता बतलायी जाती है। बहुतसे देशी नरेशों तथा सेठोंने इस सम्बन्धमें यथेष्ट सहायताका वचन दिया है। हम इस उद्योगकी सफलतापर डा० मुञ्जेको बधाई देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## भाई नरेन्द्रदेव विद्यालङ्कारका स्वागत

भाई नरेन्द्रदेवजी विद्यालङ्कार आजसे तीन वर्ष पूर्व फोटोग्राफी और सीनेमेटोग्राफीका उच्च शिक्षण प्राप्त करनेके लिए जर्मनी गये थे। वहांपर उन्होंने म्यूनिचके बैवेरियन स्कूल आफ फोटोग्राफीमें उक्त कलाकी शिक्षा प्राप्त की और हालमें ही उक्त स्कूलसे डिप्लोमा प्राप्त करके तथा इस कलाके Expert ( विचक्षण ) बनकर वे स्वदेश वापस

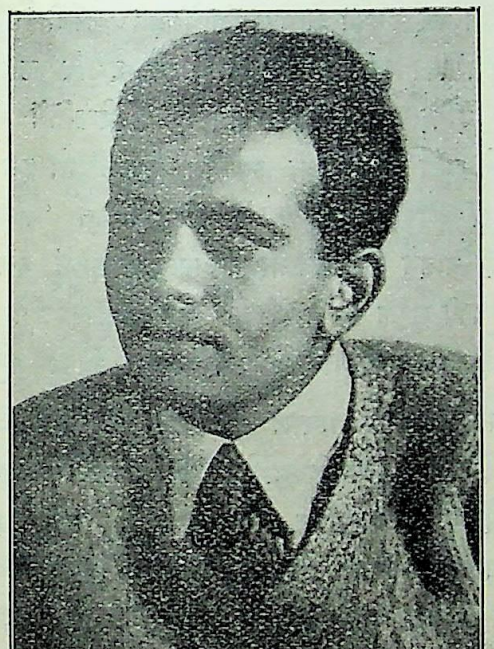

श्रीयुत नरेन्द्रदेव विद्यालङ्कार

आये हैं। उनकी इस सफलतापर हम उन्हें आन्तरिक बधाई देते हैं। भाई नरेन्द्रदेवजी पहले गुजराती युवक हैं जिन्होंने उक्त कलाका पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया है। डिप्लोमा प्राप्त करनेके सिवाय उन्होंने बर्लिनकी सुविख्यात फिल्म कम्पनी ऊफा तथा म्यूनिचकी फिल्म कम्पनी एमेल्कामें इस कलाका क्रियात्मक अनुभव भी प्राप्त किया है।

भाई नरेन्द्रदेवजी गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी ( हरिद्वार ) के आर्ट्स कालेजके स्नातक हैं। इतिहास साहित्य, कला और पर्यटन उनके प्रिय विषय हैं। संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी, अंगरेजी तथा जर्मन भाषाका उनको अच्छा ज्ञान है। उनके लेख हिन्दी तथा गुजराती भाषाके मासिक पत्रोंमें समय-समयपर छपते रहते हैं। अपने सहाध्यायी और आत्मीय बन्धु श्रीशङ्करदेवजी विद्यालङ्कारके साथ मिलकर इन्होंने "कोरियाकी स्वातन्त्र्य कथा" नामक पुस्तक हिन्दीभाषामें तैयार की है; और उनका विचार हङ्गरीकी स्वातन्त्र्य कथा, चीनकी स्वातन्त्र्य कथा आदि ग्रन्थोंको लिखनेका भी है। मासिक 'विश्वमित्र' से भाई नरेन्द्रदेवका विशेष प्रेम है। आपके लेख "विश्वमित्र" में प्रायः छपते रहते हैं! आप सफलतापूर्वक अपनी ज्ञानसाधना समाप्त करके भारतभूमिमें आ गये हैं, इसके उपलक्षमें हम विश्वमित्रकी ओरसे आपका हार्दिक स्वागत करते हैं और आपकी पूर्ण सफलता चाहते हैं।

## अण्डमानके कैदियोंकी दशा

भारत सरकारने राजनीतिक कैदियोंको अण्डमान भेजना बन्द कर दिया था। पर गत वर्ष उसे क्या सूझी कि उसने सौ राजनीतिक कैदी वहां भेज दिये। हालमें इनमेंसे तीन मर गये। इससे देशमें हलचल मच गयी। यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि संसारके सब सभ्य देशोंमें राजनीतिक कैदी आरामके साथ रखे जाते हैं और उनके स्वास्थ्यका ध्यान रखा जाता है। भारत सरकारसे निवेदन किया गया था कि वह वहांके हालातोंकी जांच करे जिससे वे असुविधायें दूर कर दी जायें, जिनसे इन कैदियोंका स्वास्थ्य बिगड़नेकी सम्भावना हो। पर खेद है कि इस ओर अभी तक कुछ नहीं किया गया।

## बड़ौदामें सन्तति-निरोध-शास्त्रकी शिक्षा

वर्तमान विश्वव्यापी आर्थिक सङ्कटके युगमें सन्तति-निरोधकी उपयोगिताकी ओर संसारके अन्यान्य देशोंकी तरह हमारे देशका भी ध्यान गया है। इसमें सन्देह नहीं कि ख्याली दुनियामें विचरण करनेवाले आदर्शवादी अब भी इस प्रवृत्तिका विरोध कर रहे हैं, पर व्यावहारिकताकी ओर जिन लोगोंकी दृष्टि है वे जानते हैं कि भारत-जैसे दीन-दरिद्र देशके लिए गर्भ-निवारण बहुत आवश्यक हो उठा है। भूखी, भिखमङ्गी सन्तानकी वृद्धि होना घोर दुर्गतिका चिह्न है। एक तो भारत-जैसा निर्धन देश, तिसपर बेकारीकी सख्त मार; तिसपर भी यदि गण्डस्योपरि पिटकम्की तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सरासर गलित, अर्द्धमृतसन्तानकी संख्या बढ़ने लगे तो ऐसी हालतमें भगवान्‌को ही रक्षक समझना चाहिए। सन्तान-नियमनसे दो प्रत्यक्ष लाभ इस समय हमें हो सकते हैं। एक तो यह कि सन्तानकी संख्या सीमाबद्ध होनेसे वह अपेक्षाकृत परिपुष्ट होगी, दूसरे असहाय स्त्रियोंके ऊपरसे अनावश्यक गर्भका भार हट जानेसे उनका स्वास्थ्य ठीक रहेगा, और उनका गृहकार्य एक विशिष्ट सीमाके अन्तर्गत रहकर बाहर देशके कार्यमें अपना मङ्गलमय सहयोग प्रदान करनेके लिए उन्हें अधिक अवकाश तथा स्वतन्त्रता प्राप्त होगी।

पर कठिनाई तो यह है कि सन्तति-निरोधकी आवश्यकता तथा उसका महत्त्व समझनेपर भी उसके सम्बन्धकी समुचित शिक्षाकी सुविधाके अभावसे हमारे देशवासियोंको लाभकी अपेक्षा उससे हानि होनेकी ही अधिक सम्भावना है। यूरोप तथा अमेरिकामें प्रायः सभी बड़े-बड़े अस्पतालोंमें गर्भ-निरोध-सम्बन्धी शास्त्रकी यथोचित शिक्षा दी जाती है, और विख्यात डाक्टर लोग खोज करके इस नये विज्ञान-पर प्रामाणिक पुस्तकें लिखते हैं, जिसके फल-स्वरूप वहां प्रत्येक स्त्री-पुरुषको यथार्थ वैज्ञानिक उपाय तथा औषधियां मालूम रहती हैं। पर हमारे देशमें नीम-हकीमोंके बताये हानिकारक उपायों तथा टोनों टोटकोंसे ही सन्तति-निरोध-की इच्छा रखनेवाले स्त्री-पुरुष अपना काम चलाते हैं। बड़े हर्षकी बात है श्रीमान् बड़ौदा नरेशने अपने राज्यमें इस सम्बन्धकी शिक्षाकी उपयोगिता समझकर उसके प्रति समुचित ध्यान दिया है। वहां यह नियम जारी कर दिया गया है कि सप्ताहमें दो-बार सरकारी अस्पतालमें सन्तति-नियमन-सम्बन्धी विज्ञानकी उचित शिक्षा दी जायगी। क्या ब्रिटिश भारतका शिक्षा-विभाग भी इस ओर ध्यान देगा ?

## हरिजनोत्थानपर हरिजन

हरिजनोंको अपनाना और उनकी उन्नति करना हिन्दू नामधारीका परम धर्म है। धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टिसे हमारा कल्याण अपने इन गिरे हुए—अथवा कहिये गिराये हुए—भाइयोंको अपने समान बनानेमें है। हमारा हरिजन आन्दोलन कुछ कुछ इस ओर जा भी रहा है। पर हमारे अन्य आन्दोलनोंकी भांति इसमें भी ज्ञान, विज्ञान, नीति, नियम और युक्ति तथा ढङ्गका अभाव है। स्वयं हरिजन क्या चाहते हैं उस ओर भी ध्यान देना नेताओंका परम कर्तव्य है। केवल हरिजनोंके हाथका खाना या एक बार उनसे लिपटनेसे विशेष लाभकी सम्भावना नहीं है। हमको प्रत्येक गांव और नगरके हरिजनोंकी आवश्यकताओं-का अध्ययन कर उनकी आवश्यकतायें पूरी करनी पड़ेंगी। उनकी उन्नतिका यही पथ है। नहीं तो हमारे सुधार इन अशिक्षित, दरिद्र और सदियोंसे अमानुषिक स्थितिमें रहे हुए हरिजनोंको लाभ नहीं पहुंचा सकेंगे। हमको तो इस समय इतना जोश आया हुआ है कि जो हरिजन 'मन्दिरों'में घुसना नहीं चाहते उन्हें ढकेलकर अन्दर डालनेमें हम देश और समाजकी मुक्ति समझ रहे हैं। पाठक कलकत्तेके 'भङ्गी और धांगड़सङ्घ'की सम्मति पढ़ें और उसपर विचार करें :—

"हमारे उद्धारकी आवाज आज बड़े जोरशोरसे सुनायी दे रही है और अखबारवाले मोटे-मोटे शीर्षकोंसे समाचार छाप रहे हैं कि "अछूतोंका अमुक जगह उद्धार हुआ" "अमुक मन्दिर अछूतोंके लिए खुल गया।" किन्तु वास्तवमें देखा गया तो कहीं कुछ नहीं। और इस प्रकारके उद्धारसे हमारे कल्याणकी तनिक आशा भी नहीं है। जबरन हमें मन्दिरोंमें ढकेलनेवाले, हमारे दुःखोंको दूर करनेवाले असली उपायोंकी ओर ध्यानतक नहीं दे रहे हैं। हमारी आर्थिक अवस्था कितनी खराब हो रही है, इसपर तो किसी-का लक्ष्य नहीं जाता, उल्टे हमें अपने निर्धारित सनातन पथसे विचलित करके, हमें अवनतिके पथकी ओर जबरन घसीटा जा रहा है। अछूत आन्दोलनका हो-हल्ला मचाने-वाले क्यों नहीं हम धांगड़ोंके रहनेके लिए घर, खानेके लिये दो मुट्ठी चावल और तन ढांकनेके लिए दो गज खादी देने-दिलानेका बन्दोबस्त करते ? हमारा वास्त-विक उद्धार इसीमें है। थोथे आन्दोलनसे हमें कुछ भी लाभ नहीं है।"

---

'विश्वमित्र प्रेस', १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तासे पं० मातासेवक पाठक द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# लीली ब्राण्ड बार्ली

शुद्ध व श्रेष्ठ

परीक्षामें प्रमाणित

४६६, सैंठर्ष्ट रोड
गिरगांव, बम्बई।

प्रस्तुतकारक :—
दो लोली बिस्कुट कम्पनी

उल्टाडांगा
कलकत्ता।

सर्वसाधारणका चिरपरिचित उपकरण

# सुषमा

**गृहलक्ष्मियों का चिर-प्रिय**

सुषमाकी सुगन्धि सर्वोपरि है। गुणमें एक ही है। जो सुन्दरियां प्रतिदिन उसका व्यवहार करती हैं, उनका जीवन धन्य है, क्योंकि चेहरेकी प्रसन्नता से वे स्वयं आनन्दित रहती हैं।

प्रस्तुतकारक :— पो० सेट एण्ड कम्पनी, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGD. No. C 877

श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत

सचित्र

# रामायण

सटीक, १४०० पृष्ठ, सादे व बहुरंगे चित्र, तथा कपड़े की पक्की जिल्द

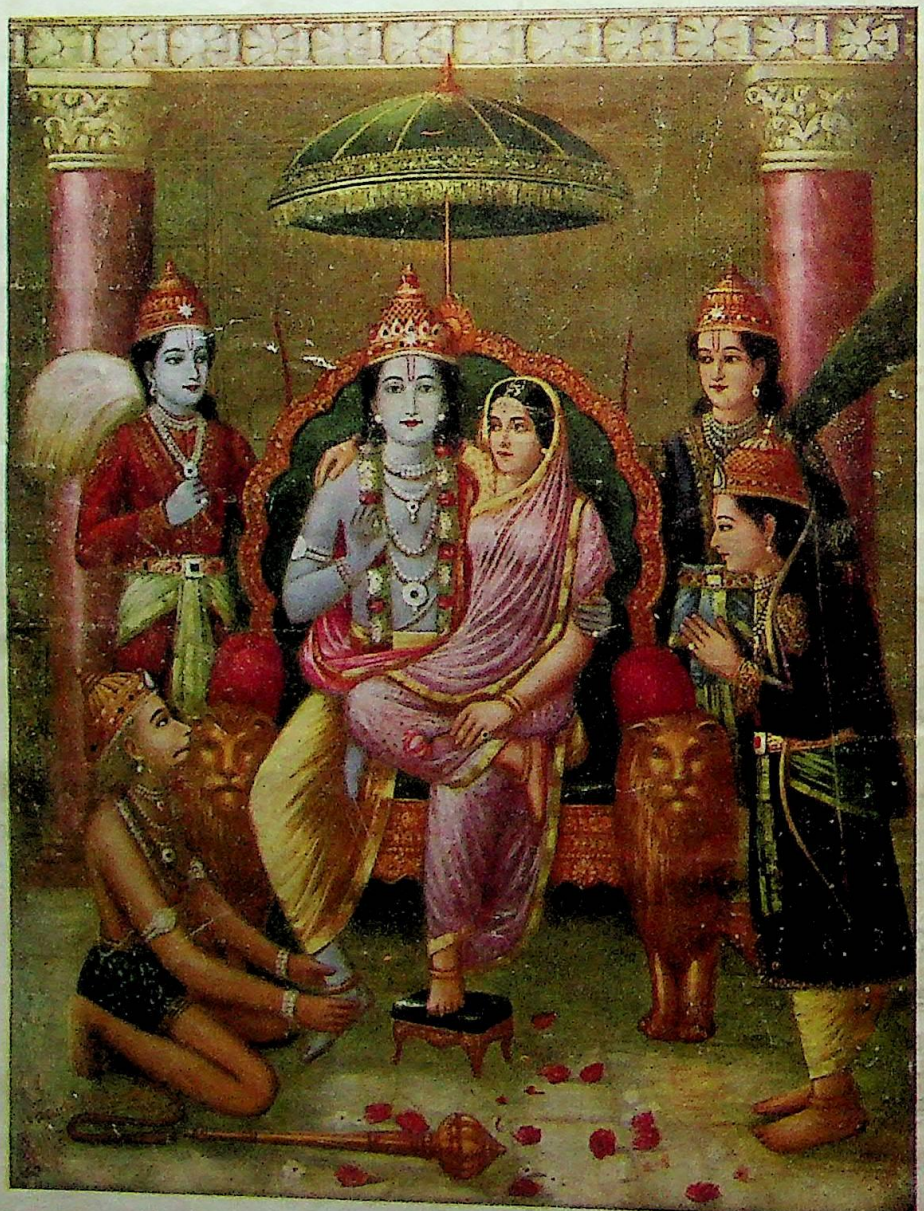

(मूल्य ग्लेज का ३)

काशी और बम्बईकी रामायणोंसे अधिक शुद्ध और सुन्दर है।

इतना होने पर भी सस्ती है इस धर्मग्रन्थकी एक प्रति मंगाकर अवश्य रखिये।

**मैनेजर—विश्वामित्र कार्यालय,**

१४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्वमित्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




# ओटिन व्यवहार करना शुरू कीजिये।

—आज रात और कल रात—

❀ सोनेके पहले देख लीजिये ❀

## सौन्दर्य का महत्व

स्त्रियोंके लिये अन्य किसी पदार्थकी अपेक्षा सौन्दर्यका महत्व बहुत अधिक है। नित्य नियम से ओटिन का व्यवहार करनेसे चर्म के स्वास्थ्य और सौन्दर्य की वृद्धि होती और उसका स्थायी रहना निश्चित हो जाता है। चर्मकी विवर्णता के कारण जिन्हें प्रातः काल दर्पणमें प्रतिच्छाया देखनेमें संकोच होता है। इसके व्यवहार से उनको सुन्दरताकी वृद्धि होगी और फलतः उनका मुखड़ा सुन्दर और आनन्दोल्लास परिपूरित रहेगा।

अपने सौन्दर्यकी रक्षा के लिये आपका यह परम कर्त्तव्य है कि

## ओ टि न

चर्म—कान्ति बर्द्धक पदार्थ का उपयोग करें।

इसका उपयोग करने पर आपको कभी भी अल्प सौन्दर्य और विवर्णता के कारण सकुचित होना न पड़ेगा।

THE OTINE & Co,, 17, Prinsep Street, Calcutta.


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पुरुषोंके लिये—धातु पौष्टिक चूर्ण

यह चूर्ण—तीन दिनके भीतर ही अपना गुण दिखा देता है, पेशाबकी समस्त बीमारियोंको हटाके दस्त साफ करता है, प्रकारका दर्द पीड़ा तथा गिरती हुई धातुको रोकता है, पानी समान पतले वीर्यको एकदम गाढ़ा कर देता है, उपदंश —आतशक) मेह प्रमेह (गनोरिया सूजाक) रोगोंको यह चर्ण जड़से खो देता है तथा शरीरको बलवान करके स्मरण को बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, स्मरण मात्रसे ही पतन, पेशाबके साथ धातुपात, अधिक विलासिताके कमरमें दर्द. कमजोरीके कारण हाथ पैरोंका कांपना, चक्कर आना, आंखोंके आगे चिनगारियां निकलना, कलेजेका ना, नामर्द हो जाना, इत्यादि रोगोंको दूर कर रक्त शुद्ध करता है और भूख तथा वजनको बढ़ाता है जिससे शरीर बज्रके मजबत हो जाता है। जिनमें पुरुषत्व न हो उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त करा कर उनके वीर्यको एकदम गाढ़ा और गर्भ करानेके योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक पूर्ण गुणकारी डिब्बेकी की० ९) रु०डा०पै० ख०॥।) लगेगा।

# त्रियोंके लिये—स्त्री रोग निवारक चूर्ण

स चूर्णके सेवनसे सब तरहका स्त्रियोंका प्रदर, मासिक धर्मके समय पेट या कमरमें दरद, मासिक धर्म थोड़ा या कम होना बिलकुल ही न होना, असमयमें मासिकधर्म होना, खूनके कतरे गिरना, गर्भाशयमें दोष होनेके कारण गर्भ न गर्भपात होना, दुर्बल सन्तति होना या होकर मरजाना इत्यादि रोगोंपर २१ दिन चूर्ण सेवन करनेसे गर्भाशय तथा भी दोष दूर होकर मासिकधर्म समयपर होगा और गर्भपात न होकर सन्तति सशक्त, स्वस्थ (निरोग) उत्पन्न होगी। कि ४० वर्षकी स्त्रीको भी इसके सेवनसे निश्चयही गर्भधारण हो जाता है। २१ दिनतक सेवन करने योग्य चूर्णके १ कीमत ९) रु० डा० ख० ॥।) इस चूर्णको हरेक स्त्री हर मौसममें खा सकती है। हानिकारक कोई भी चीज नहीं है। तानकी इच्छा करनेवाले लोगोंको यह दोनों ही दवा एक साथ मंगाके स्त्री और पुरुष दोनों ही एक साथ खानेसे अच्छा परहेज वगैरह कुछ नहीं करने पड़ते। सेवनविधि साथमें दी जाती है। यह दवायें तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक श्वास रखकर इसे अवश्य मंगावें। इस दवाइयोंमें केवल जड़ी बूटी है। हानिकारक कोई भी चीज नहीं है।

# ौर लीजिये-गर्मी-सुजाककी-अकसीर दवा

ह पाज़ी रोग चाहे नया हो या पुराना लेकिन इस दवासे एकही दिनमें फायदा और एक हफ्तेमें आराम और तीन हफ्तेमें रोग कट जाता है। और फिर यह रोग कभी पास नहीं फटकता है। अच्छे मार्गमें चलनेसे यह सालसाके माफिक खूनको करके नया खून रग रगमें दौड़ा देती है। उपदंश (गर्मी आतसक) और मेह प्रमेह (गनोरिया सुजाक)को जड़से खो देती र मंगाकर देखिये। ३ सप्ताह याने २१ दिनकी ४२ खुराककी कीमत सिर्फ २॥) रु० डाक खर्च ॥।) गर्मीके घाव पर मलहम १) रु० डिब्बी। इस दवामें नुकसान पहुंचानेवाली कोई भी चीज नहीं है सब काष्ठऔषधियां (जंगली जड़ी बूटी) न विधि दवाके साथ दी जाती है और हर मरजका इलाज किया जाता है तथा आयुर्वेदीय सब प्रकारकी औषधियां तैयार। ट—डाक महसूल का टिकट अगाड़ी भेज देने से प्रति रुपया )॥ पैसा दवाके दामों में से बाद दिया जायगा।

ा—भारत भैषज्य भण्डार, नं० १०८ काटन स्ट्रीट, बड़ाबाजार कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❀ ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास ❀

## लक्ष्मी

धनी और जमींदार—समाजके डाकू रजनीने, कर्तव्य-परायण रघुनाथकी पत्नी-लक्ष्मीकी सुन्दरतापर मुग्ध होकर जो अत्याचार किये, वे वैभवके बलसे देशमें जगह-जगह दुहराये जाते हैं। समाजकी सत्ता उनके हाथमें है, कुलीनताका जामा पहनकर—देशके धनी कहानेवाले समाजके डाकू, बराबर ही जहां सुयोग मिलता है, समाजकी बहु-बेटियोंके सतीत्व पर डाका डालते हैं। समाजकी सत्ता उनके हाथमें है और धनबलसे कानून कुण्ठित है! यही इसका प्लाट है। मूल्य १॥) मात्र।

## स्नेह-बन्धन

हिन्दू-समाजमें दत्तक-पुत्र ग्रहण करनेका रिवाज है। परन्तु संसारके किसी भी—देशमें-दत्तक-पुत्र लेनेकी प्रथा नहीं। इस उपन्यासमें दत्तक-पुत्र-विधानका मर्म-स्पर्शी विश्लेषण किया गया है। हिन्दू-समाजके लिये एक नवीन आदर्शका चित्र खींचा गया है। निःसन्तान धनी जो दत्तक पुत्र ग्रहण करते हैं, उससे क्या उनकी आकाँक्षा पूरी होती है? यदि वे अपने धनको समाज और लोकहितके कामोंमें लगायें, तो क्या स्वर्गमें उन्हें शांति न मिलेगी? अत्यन्त मनोरञ्जक उपन्यास है। मूल्य १॥) मात्र

## विधि-विधान

सचित्र—सामाजिक उपन्यास।

त्यागकी महिमा और कर्त्तव्यका विश्लेषण, धनी-सन्तान होकर भी सनत्की देश-भक्ति, करुणा तथा अरुणकी निस्पृहता, मीराका गर्व और अभिमान तथा इला, अनन्धतोकी त्यागवृत्तिका इसमें विचित्र सम्मिश्रण हुआ है। ऐसा मर्मस्पर्शी मनोरञ्जक उपन्यास, अभीतक हिन्दीमें प्रकाशित नहीं हुआ। युवक-युवतियोंके लिये इसमें आदर्श शिक्षा है। मनोरञ्जन और शिक्षाकी अपूर्व सामग्री है। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। बढ़िया छपाई-सफाई मू० २)।

## राजाबाबू

कुलाङ्गार, समाजपतियोंकी छत्र-छाया में पलकर, देशके वे युवक, जो समाजकी बहू-बेटियोंकी इज्जत और प्रतिष्ठाके रक्षक हो सकते हैं, कैसे मखमली गद्दोंपर खेलकर और बापदादोंके धनको पाकर समाजके लिये राक्षस सिद्ध होते हैं और अपने पैशाचिक कृत्योंको धनसत्तावादके आवरणमें छिपाकर समाजपति बन बैठते हैं, इसका इसमें बहुत ही स्वाभाविक खाका खींचा गया है। हिन्दीमें इसके जोड़का अभीतक कोई उपन्यास नहीं निकला। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १।) मात्र

**पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अपने बुढ़ापेमें सुख शान्तिके लिये

अपना आमदनी से थोड़ा बचा बचा कर

# इंडस्ट्रियल एन्ड प्रूडेंशियल एस्योरेन्स कम्पनी लि०

## में जमा करते रहो

विशेष विवरण जाननेके लिये यहांके आफिस

१२, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ताको

पत्र लिखिये



# कम खर्चमें सब रोग आराम

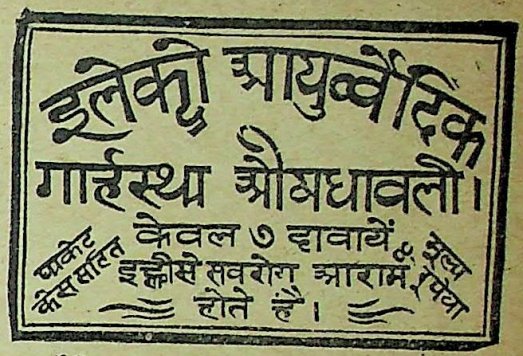


आयुर्वेदिक प्रणालीसे तयारी ७ दवाइयोंका एक बक्स ४।) और १४ दवाओंका १४ शीशीका एक बक्स मूल्य ८)। प्रत्येक गृहस्थ अपने घरमें रखनेसे छोटी बड़ी सभी बीमारियोंसे बिना डाक्टर वैद्यके छुटकारा पा सकता है। अनुपान विधि रोगकी निदान प्रणाली साथ भेजी जाती है। सूचीपत्र मुफ्त मंगवाइये।

**इलेक्ट्रो आयर्बेदिक फार्मेसी**

कालेज स्ट्राट मार्केट, कलकत्ता।



# —हर मौसम में—

## सुगन्धित, शीतल

## मैसूर चन्दनका साबुन व्यवहार कीजिये

यह साबुन शृङ्गार की सब सामग्रियों के अभाव की पूर्ति करता है। यह मैसूरके असली चन्दन से बना हुआ सर्वश्रेष्ठ साबुन है।

सोल एजेण्टसः—

**अमृतलाल ओझा एण्ड कं० लि०,**

११, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।



# नयी आमदनी, सब्जी बीज

नमूना मुफ्त भेजा जाता है।

फूलगोबी स्नोवाल २), बादशाह १।।), शाहंशाह १।), शारदोया १।), आलजीरा बड़ा १=), लिनमेंण्ड चैती १।), हिमालय १), बेनारसी बड़ा।।), पटना नं० १, ।।), नं० २, ।), बन्द कोबी राडलैंड ।=), पहाड़िया ।–), फ्लोरिडाहेडर ।।), नं० १, जल्दी ।।=), नं० २, नावी ।) गांठ कोबी हरा ।–), बैंगनी ।=), सफेद ।=), चुकन्दर नुमायसी =), गाजर नेन टस =), सलगम बड़ा =). टिमाटर नं० १, ।।), ६ सेरा बैंगन ।।), अण्डा मूली =), मनभर कोहरा ।।), १० इञ्च मिरचा ।।), हाथी सूंड़ मिरचा।।), प्याज रोका लाल ।।), मूल्य प्रति तोला ( मूली बम्बई का लाल ) ६), कांथीका लाल ५) पटनाई ४), सेर )

**सरकार ऐण्ड कम्पनी**

२८।३ ए, विडन रो, पो० विडन स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बालकोंके पढने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

## बाल-रामायण

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र और भगवती सीतादेवीका चरित, तथा रामचन्द्रजीके सङ्गी-साथियोंके कार्य-कलाप, हिन्दू जातिके लिये आदर्श हैं। इस पुस्तकमें रामायणके सातों काण्डोंका सरल भाषामें वर्णन किया गया है। सरल-मति बालक-बालिकाओंके लिये यह अपूर्व पुस्तक है। सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज, मनोहर चित्र। यह पुस्तक कई जगह कोर्समें पढ़ाई जाती है। अब तक इस नामकी जितनी पुस्तकें निकली हैं, उनमें यह सर्वश्रेष्ठ है। मूल्य ॥=)

## बाल-महाभारत

'महाभारत' को हिन्दू जाति, पांचवां वेद मानती है। क्योंकि संसारकी कोई ऐसी बात नहीं है, जो महाभारतमें न आ गई हो। महाभारत, ज्ञान, वैराग्य, योग, नीति और सदाचार का खजाना है। इस पुस्तकमें महाभारतके अठारह पर्वोंके मूल-कथा-भागका सरल भाषामें संक्षिप्त वर्णन है। बालक-बालिकाओंको महाभारतकी शिक्षादायक कथा हृदयङ्गम करानेके लिये अपूर्व पुस्तक है। कितने ही सुन्दर चित्रोंसे सुसज्जित। यह भी कोर्समें पढ़ाई जाती है। मूल्य ॥=)

## हिन्दी-बंगला-शिक्षा

समृद्ध साहित्य, बङ्ग-साहित्यके पढ़नेकी रुचि प्रायः सभी साहित्य-प्रेमियोंको रहती है। इस पुस्तकमें वर्ण-परिचयसे लेकर सन्धि-ज्ञान, शब्द-रूपावली, धातुओंके रूप, तद्धित, समास, कृदन्त आदिके व्याकरणके समस्त आवश्यक विषयोंका सन्निवेश कर दिया गया है। बंगला शब्दोंकी प्रचुरता और अनुवाद-विधिका निदर्शन ऐसे अच्छे ढङ्गसे किया गया है कि अच्छी हिन्दी और साधारण संस्कृत जाननेवाले पाठक बिना शिक्षकके दो मासमें ही अनुवाद करने योग्य बंगला सीख जाते हैं। मूल्य ।।।) आना।

## हिन्दी-अंगरेजी-शिक्षा

भारतपर अङ्गरेजोंका राज्य है। शहर, स्टेशन, अदालत, पोस्ट-आफिस, तारघर, थियेटर, बायस्कोप, सभा-सोसाइटी कहीं भी जाइये, यदि आप अङ्गरेजी नहीं जानते, तो मूर्ख हैं। संसार की गतिका आपको पता ही नहीं लग सकता। आप सफलतापूर्वक कोई व्यवसाय ही नहीं कर सकते। इस पुस्तकसे आप स्वयं हिन्दीके सहारे अङ्गरेजी सीख सकते हैं। वर्ण-परिचयसे लेकर चिट्ठी-तार लिख पढ़ लेने तककी योग्यता इससे हो जाती है। दो-चार मास परिश्रम करनेसे आप अङ्गरेजीके साधारण ज्ञाता हो जायेंगे। मूल्य ।।।)

पता—पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रसराज द्राक्षासव

टानिकों का राजा

बड़ा बोतल २)

छोटा बोतल १।)

## जितना पुरुषोंके लिये उपकारी है उतना ही स्त्रियों के लिये उपकारी है।

प्रत्येक स्त्रीको प्रसूति के बाद रसराज द्राक्षासवका सेवन अवश्य करना चाहिये।

जिससे प्रसूतिरोग, जीर्णज्वर और यक्ष्मा आदिसे बचें।

डिपो—१० इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।

---

STAR TRADE MARK (REGD)

स्टार ट्रेड मार्क

# डाबर (डाः एस, के, बर्म्मन) लिः

औषध

सेवन के पूर्व

५० वर्षसे प्रसिद्ध अतुल्य देशी पेटेण्ट दवाओंका बृहत् भारतीय कार्यालय!

## और भोगना नहीं होगा!

### जूड़ी ताप (REGD.)

(जूड़ी बुखार व ताप तिल्लीकी दवा)

घर घरमें इस समय मैलेरिया फैला है! अतः मैलेरिया तथा फसली बुखारके रोगीको अवश्य "जूड़ी-ताप" पिलाइये। इससे बढ़ कर बुखारको शीघ्र भगानेवाली दूसरी दवा नहीं है। प्रति वर्ष लाखों रोगी इससे अच्छे होते हैं। इसके सेवनसे खून गाढ़ा व दस्त खुलासा होता है। नकली दवासे सावधान!

मूल्य—बड़ी शीशी ।।।≡) डा० म० ।।=) छोटी शीशी ।।-) डा० म० ।≡)

नोट—सब जगह हमारे एजेण्ट तथा दवाखानोंमें मिलती है। दवा खरीदते समय ष्टार ट्रेड मार्क और डाबर नाम अवश्य देख लिया करें।

औषध

सेवनके पश्चात्

विभाग नं० (२) पोष्ट बक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

सेलडिपो—(१) नं० ४, ताराचन्द दत्त ष्ट्रीट। (२) नं० २०१, हरिसन रोड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# कुछ उच्चकोटिकी संग्रहणीय पुस्तकें

## ❀ शङ्कराचार्य ❀

भारत, वैदिक-धर्मको तिलाञ्जलि देकर नास्तिकतावादके गहरे गर्तमें गिरने जा रहा था, राजा-प्रजा, सत्य-सनातन वैदिक धर्मके शत्रु हो रहे थे, उस समय यदि शङ्कराचार्य न होते तो, वैदिक-धर्मका नाम तक न रह जाता। इस पुस्तक में शङ्कर-स्वामीके कार्यकलापोंका जन्मसे लेकर अंत समाधि तकका विशद वर्णन है। शङ्करके ब्रह्मचर्य, संसार-त्याग, दिग्विजय, शास्त्रार्थों आदिका विस्तृत वर्णन है और उनके धर्ममतका पूर्णरूपसे निरूपण किया गया है। इसे शङ्कर-दिग्विजयका हिन्दी संस्करण समझिये। अनेक चित्र। मूल्य १॥)

## ❀ श्रीकृष्ण ❀

यह पुस्तक, वसुदेव-देवकीके प्यारे पुत्र, गोकुलके गोपसखा, गोरक्षक-गोपाल, व्रजके प्राण, कंस, जरासन्ध, कालयवन, शिशुपाल आदिके काल, द्वारिकाके विधाता, पाण्डवोंके परित्राता, राजा-प्रजाके गुरु, शत्रुओंके पूज्य, धर्मके उपदेष्टा नीतिवेत्ता, धर्म-भ्रष्ट क्षत्रिय-कुलोंके संहारक, धर्म-राज्य-संस्थापक, दीन-दरिद्रोंके बन्धु, आदर्श, मृत्युञ्जय, गीताके रचयिता, श्रीकृष्णका चरित्र है। ऐसा अच्छा सर्वाङ्ग सुन्दर, सर्वसुलभ और सम्पूर्ण सचित्र श्रीकृष्ण-चरित आजतक प्रकाशित नहीं हुआ। ३० चित्र हैं। मू० १॥) मात्र

## ❀ शिवाजी ❀

हिन्दू-कुल-सूर्य, गौरव-रवि, छत्रपति शिवाजी के समान निकट पूर्वमें कोई भी वैसा वीर, दृढ़-प्रतिज्ञ, हिन्दू-साम्राज्य संस्थापक, प्रचण्ड राजनीतिज्ञ-वीर हिन्दू नहीं हुआ, जिसने हिन्दू-जातिकी डूबती हुई नैयाको पार लगाया हो। यदि शिवाजीके उत्तराधिकारी भी कहीं वैसे ही खरे सोनेके समान निकल आते, तो आज भारत का नक्शा ही बदला हुआ दृष्टिगोचर होता। इसमें शिवाजीके जीवनकी समस्त घटनाएं बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें लिखी गयी हैं। बीसके लगभग रङ्गीन चित्र हैं। मूल्य १॥) मात्र।

## भीष्म

अपूर्व आत्मत्यागी, महावीर, आदित्य ब्रह्मचारी, भगवती गंगाके गर्भजात—महाराज शान्तनुके पुत्र, कौरव पाण्डवोंके भीष्म पितामहका नाम सदा संसारमें अमर रहेगा। भीष्मने जो भीषण भीष्म-प्रतिज्ञा की थी, अन्त तक उन्होंने उसका पालन किया। अपने समयके वे अद्वितीय धर्मनिष्ठ, समाज-रक्षक, राजनीतिके नियन्त्रणकारी वीर थे। बालकोंके लिये भीष्मसे बढ़ कर और कोई आदर्श नहीं हो सकता। अनेक रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित। हजारों प्रतियां हाथोहाथ बिक चुकी हैं। मूल्य ॥८) मात्र।

मिलनेका पता:—पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्री, कलकत्ता।


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# लेख-सूची


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १—सावन—( कविता ) श्री परमानन्द शुक्ल | ५२१ |
| २—नवीन रूसने इतने वर्षोंमें क्या किया ?—( सचित्र ) श्री बालकृष्ण गुप्त ( लन्दन ) | ५२२ |
| ३—अरविन्दकी आत्मकथा—श्री गोपीकृष्ण | ५३२ |
| ४—पतिव्रता या पिशाची ?—(कहानी) इलाचन्द्र जोशी | ५४० |
| ५—प्रेम-भिखारी—( कविता ) अज्ञात ... | ५४७ |
| ६—टेलीविजनकी चमत्कारपूर्ण कहानी—( सचित्र) श्री परमानन्द ... ... | ५४८ |
| ७—टर्कीके युद्धक्षेत्रमें ब्रिटेन और फ्रान्सकी कूट-नीतिके सहयुद्धका चमत्कार—श्री धुरन्धर शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी० ... | ५५१ |
| ८—पीपल—( कविता ) श्री गोपालसिंह नेपाली | ५६० |
| ९—अमेरिकाकी दुकानोंमें व्यवसायका नया ढङ्ग—श्री विश्वनाथ सेठी एम० ए०—न्यूयार्क | ५६१ |
| १०—गीत—( कविता ) श्री गिरीशचन्द्र पन्त 'अनङ्ग' | ५६५ |
| ११—राकफेलरके घरमें लेनिनका भूत—(सचित्र)—श्री जे० डी० अग्निहोत्री एम० ए०—पैरिस | ५६६ |
| १२—मजदूर—( कहानी ) श्री अख्तरहुसेन रायपुरी | ५७१ |
| १३—तृण—( कविता ) श्री प्रकाशचन्द्र शर्मा 'अधीर' अप्रकाशित 'किशलय'से ... | ५७५ |
| १४—हिन्दू-समाजमें तलाक प्रथाकी समस्या—श्री गोवर्द्धनलाल गुप्त ... ... | ५७६ |
| १५—आगा खां ... ... | ५७९ |
| १६—एक वेश्याकी रामकहानी—एक 'पतिता बहन' | ५८१ |
| १७—शैतानसे—श्री सूर्यनाथ तकरू एम० ए० | ५८६ |
| १८—जीवन-सार—( कविता ) श्री हरिहरनाथ शुक्ल 'सरोज' ... ... | ५८७ |
| १९—भ्रान्त—( कहानी ) एण्टन चेखोफ | ५८८ |



## ( प्रमेह ) सुजाक की हुक्मी दवा

## "गोनोकिलर"

मुरगा छाप
रजिस्टर्ड

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करनेके लिये गोनोकिलर एक ही ऐसी आश्चर्यजनक दवा है कि इसको इस्तेमाल करने से रोगीको कभी निराश होना ही नहीं पड़ता। डाक्टरोंकी दवाई और इञ्जेक्शन ( टीका ) लेकर परेशान हो गये हों, अंग्रेजी और अमेरिकाकी पेटेण्ट दवाओंमें फजूल ही पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मीद हो गये हों, तब आखिरी इलाज हमारा **"गोनोकिलर"** इस्तेमाल बेखटके कीजियेगा।

नकलो से सावधान
खरीदनेसे पहले
मुर्गा छाप देख लीजिये

चाहे जैसा पुराना या नया सुजाक, पेशाबमें मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक रुक कर या बूंद बूंद आना, मूत्राशयके अन्दर घाव या सूजनका होना, स्वप्नदोष और धातुक्षीणता और **औरतों तथा मर्दोंको** इस किस्म की तमाम भयङ्कर बीमारियों को **"गोनोकिलर"** जड़से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोलीकी शीशी ३) डा० ख० अलग। हरेक दवाफरोशके यहां बिकता है।

**पता—डाक्टर डी० एन० जसानी, गिरगांव बैक रोड, बम्बई नं० ४**

कलकत्ता एजेण्ट—बी० ए० ब्रादर्स ११ नं० इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| २०—निर्वाणोन्मुख—( कविता ) श्री 'चकोरी' | ५९१ |
| २१—प्रेमकी दिव्य विभासे उद्भासित पशु-पक्षी और मनुष्यमय-जगत्—( सचित्र ) डा० हेमचन्द्र-जोशी, डी० लिट् ... ... | ५९२ |
| २२—महात्मा गांधीका हिन्दूत्व—श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार ... ... | ५९८ |
| २३—क्या प्रजातन्त्रका जन्म यूरोपमें हुआ है ?—श्री विजयसिंह पथिक ... ... | ६०३ |
| २४—प्रतारित—( कविता ) श्री सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' बी० ए० ... ... | ६०८ |
| २५—सङ्गीत-सुधा ... ... | ६०९ |
| २६—चयनिका—( सचित्र ) ... ... | ६११ |
| २७—तुम्हारी मुसकान !—( कविता ) श्री नर्मदा-प्रसाद खरे ... ... | ६१६ |
| २८—समाज-दर्पण ... ... | ६१७ |
| २९—महिला-संसार ... ... | ६२३ |
| ३०—अर्थ-चक्र ... ... | ६२९ |
| ३१—पुस्तक-परिचय ... ... | ६३२ |
| ३२—विज्ञान-चमत्कार ... ... | ६३४ |
| ३३—अन्तर्राष्ट्रीय ... ... | ६३७ |
| ३४—सम्पादकीय ... ... | ६४१ |



# आपको और अधिक भटकना नहीं पड़ेगा !

--ब्लाक--

नये या प्रयोगमें लाये हुए ब्लाकों के लिये हमें लिखिये।
नये ब्लाक बाजारकी अपेक्षा सस्ते दरमें हमसे लाजिये।
प्रयोगमें लाये हुए ब्लाक भी बिलकुल नये हैं एक बारके ही छपे हुए हैं।
इन्हें प्रयोगमें लाकर ज्यादा खर्चसे बचिये।
मूल्य और पूरा विवरण शीघ्र मंगाइये।

--छपाई--

सादे तथा बहुरंगे चित्रोंका छपाई सस्ती और समयपर चाहते हों तो हमें लिखिये।
आपको पूर्ण सन्तोष होगा
आपके पास ब्लाक हो तो उसे भेजिये
—या—
हमारा ब्लाक लेना चाहते हों तो वैसा लिखिये।
मूल्य और पूरा विवरण शीघ्र मंगाइये।

मैनेजर, विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्व-मित्र

वार्षिक मूल्य ६)
के लिए १२ शिलिंग

सम्पादक :—
डा० हेमचन्द्र जोशी डी० लिट्
हेमचन्द्र जोशी

प्रति संख्या ॥८-)
As. /10/- per copy.

खण्ड २ ... पूर्ण-संख्या ११

## सावन

ये रहे सावन-घन——

हरित प्रकृतिके ऊपर सुन्दर
नील गगनमें छाये जलधर
पूर्व-पवन शीतल चल सुखकर
जगतीके ये जीवन-धन बन !

उमड़ उठे आतुर-से बादल
इन्द्र-धनुष-कर फैला, पागल
चूम रहे ये अधर-कुसुम-दल
भर-भर कर मादक आलिंगन !

मिटा ताप, छायी हरियाली
बनी अवनिकी छटा निराली
किसने ये मादकता ढाली
सिहर रही है पल-पल मुद-मन !

अपनी आहोंका ही यह बल
चिंतित रही है वसुधा अविकल
पर मेरे ही आंसू निष्फल
हुए, सदय जो बने न इन्द्रघन ! *

—परमानन्द शुक्ल

* अप्रकाशित 'वर्षाश्विनी' से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १—निर्वाणोन्मुख—( कविता ) श्री 'चकोरी' | ६९१ |
| २—प्रेमकी दिव्य विभासे उद्भासित पशु-पक्षी और मनुष्यका-प्राण—( सचित्र ) डा० हेमचन्द्र-जोशी, एम० एच० | ६९२ |
| ३—महात्मा गांधीका हिन्दुत्व—श्री उमादेव विद्यालङ्कार | ६९८ |
| ४—एक राष्ट्रभाषाका जन्म कहांपर हुआ है ?—श्री विश्वनाथ पाठक | ७०३ |
| ५—[illegible]—( कविता ) श्री अनन्त शर्मा | ७०८ |
| ६—[illegible] | ७०९ |
| ७—[illegible] | ७११ |
| ८—तुम्हारी मुसकान !—( कविता ) श्री नर्वदा-प्रसाद घरे | ७१२ |
| ९—समाज-दर्पण | ७१७ |
| १०—महिला-संसार | ७१९ |
| ११—अर्थ-चक्र | ७२२ |
| १२—पुस्तक-परिचय | ७२४ |
| १३—विज्ञान-चमत्कार | ७३४ |
| १४—अन्तर्राष्ट्रीय | ७३७ |
| १५—सम्पादकीय | ७४१ |



आपको और अधिक भटकना नहीं पड़ेगा !

—छपाई—

नये या पुराने ग्राहक हुए ग्राहकों के लिये हमें लिखिये।
नये ग्राहक बनानेकी अपेक्षा भले दरमें हममें बांधिये।
पुराने ग्राहक भी बिछुड़ गये हैं एक बारके दो ठौर हुए हैं।
इन्हें पुराने लाकर ज्यादा दर्शने चाहिये।
मूल्य और पूरा विवरण शीघ्र मंगाइये।

आवें तथा बहुरंगी चित्रोंका छपाई
सस्ती और समयपर चाहते हों
तो हमें लिखिये।
आपको पूर्ण सन्तोष होगा।
आपके पास ग्राहक हो तो उसे भेजिये
—या—
हमारा ग्राहक लेना चाहते हों तो वैसा लिखें
मूल्य और पूरा विवरण शीघ्र मंगाइये।

मैनेजर, विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्वमित्र

वार्षिक मूल्य ६)
विदेशके लिए १२ शिलिंग

सम्पादक :—
डा० हेमचन्द्र जोशी डी० लिट्
इलाचन्द्र जोशी

प्रति संख्या ।।=)
As. /10/- per copy.

भाग १, खण्ड २ | अगस्त १९३३—श्रावण १९९० | वर्ष १, पूर्ण-संख्या ११

## सावन

देखो बरस रहे सावन-घन—

हरित प्रकृतिके ऊपर सुन्दर
नील गगनमें छाये जलधर
पूर्व-पवन शीतल चल सुखकर
जगतीके ये जीवन-धन बन !

उमड़ उठे आतुर-से बादल
इन्द्र-धनुष-कर फैला, पागल
चूम रहे ये अधर-कुसुम-दल
भर-भर कर मादक आलिंगन !

मिटा ताप, छायी हरियाली
बनी अवनिकी छटा निराली
किसने ये मादकता ढाली
सिहर रही है पल-पल मुद-मन !

अपनी आहोंका ही यह बल
बिहंस रही है वसुधा अविकल
पर मेरे ही आंसू निष्फल
हुए, सदय जो बने न हृद्धन ! *

—परमानन्द शुक्ल

* अप्रकाशित 'यशस्विनी' से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नवीन रूसने इतने वर्षोंमें क्या किया ?

श्री बालकृष्ण गुप्त ( लन्दन )

रूस एक बड़ा विस्तृत देश है। उसमें दुनियाकी बड़ी ताकत बननेकी अद्वितीय सम्भावनायें हैं। उसका आकार बहुत बड़ा ( अमेरिकाके संयुक्त राज्यसे प्रायः तीन गुना ) है; उसकी जन-शक्ति बहुत प्रबल है—उसकी आबादी १६॥ करोड़ है; प्राकृतिक धनका वह खजाना है, और पूर्व व पश्चिमके मध्यमें उसकी महत्त्वपूर्ण लाभदायक भौगोलिक स्थिति है। जनताका शारीरिक विकास तथा जनन-सुधार—ये दो बातें जीवित रहनेवाली जातिके लिए परम आवश्यक हैं। जाति-भेद—जैसे आर्यन, मङ्गोल, आदि जातियोंकी विभिन्नता-को वैज्ञानिक तथ्यके अनुसार बोलशेविक लोग कोई महत्त्व नहीं देते। बोलशेविकोंके प्रोग्राममें सर्वसाधारणके स्वास्थ्य-को पहला पद है। कोई भी इस बातको नामञ्जूर नहीं कर सकता कि अपने दृष्टिकोणसे उन्होंने देशकी तन्दुरुस्तीकी अवस्थाके सुधारके लिए अनेक अमली उपाय हाथमें लिये हैं। इस प्रश्नपर अधिक महत्त्व डालनेको, और उनके हल करनेमें आसानी प्राप्त करनेको, उन्होंने सोवियट यूनियनके अन्तर्गत सब प्रजातन्त्रोंमें अलग-अलग सरकारी स्वास्थ्य-विभाग स्थापित किये हैं। वैसे तो हमारे भारतमें ही क्यों, पिछड़ी देशी रियासतोंमें भी अलहदा मेडिकल डिपार्टमेण्ट हैं, लेकिन अस्पतालोंका प्रबन्ध बड़े-बड़े शहरोंमें भी सारी जनताके रोग-निवारणको पर्याप्त नहीं; देशी रियासतोंके गांवोंका तो कहना ही क्या, जहां सरकारका सम्बन्ध ग्राम-वासियोंसे केवल पटवारी व चौकीदारके नाते कर वसूल करना, अपराधियोंको पकड़ना व तहसीलदार आदि अफ-सरोंके दौरोंपर ग्रामीणोंके बच्चोंके लिए जरूरी दूध-दहीको मुफ्त वसूल करना व अछूत जातियोंको बेगारमें पकड़ना है। स्वास्थ्य व शिक्षाके आंकड़े कमीशनोंकी रिपोर्टोंमें हिन्दु-स्तानियोंको स्वराज्यके अनुपयुक्त ठहरानेके वक्त खूब गौरवके साथ प्रकट किये जाते हैं। राजा लोग तो वह भी नहीं करते, क्योंकि प्रजाकी जबानपर अन्यायरूपी लगाम लगी है।

रूसमें पहले-पहल खेल-कूदका प्रचार करनेकी सच्ची कोशिश बोलशेविकोंने ही की है। इस ढङ्गके व्यायाम व खेल-कूदको रूसमें नौजवान पहले शायद ही जानते रहे हों। आज वहां इसका बड़ा जोशीला प्रचार है। शहरमें तो प्रायः सभी नौजवान इस नये शारीरिक धर्मको अपना चुके हैं। गांवोंमें भी इसकी किरणें पहुंचने लगी हैं।

रूसमें अस्पताल, सैनेटोरियम और डाक्टरोंका ज्ञान भी समाज-स्वत्व-भुक्त है। इसीसे आप समझ सकते हैं कि सबको एक सदृश फायदा उठानेका हक खाली कागजोंमें ही लिपिबद्ध नहीं है, बल्कि वास्तविक है। वे महामारियां, जो महायुद्धके बाद सब देशोंकी तरह रूसको भी उजाड़ डालने-पर तुली थीं, आज नहीं रही हैं। बच्चोंकी मृत्यु-संख्या भी दिन-दिन गिरती जा रही है। कांट्रेसेपटिव व कानूनन गर्भ-पातका आम रिवाज होते हुए भी ( गर्भके प्रथम या द्वितीय मासमें ) आबादी हर साल ३० लाखके करीब बढ़ रही है। पन्द्रह वर्षमें शायद यह २० करोड़ हो जावे। १९१४ में प्रायः १४ करोड़ थी। इसके बाद, क्रान्ति, अकाल, महा-मारी, महायुद्ध, गृहयुद्ध, देश-परित्याग, अमेरिका आदि देशोंमें जाकर प्रवासके कारण आबादीमें खासी कमी हो गयी थी, कम-से-कम दो करोड़। लेकिन रूस भारतसे कोई सात-आठ गुना आकारमें बड़ा होगा। हमारे यहांकी तरह वहां आबादी अभी इतनी गहरी नहीं है। वहां करोड़ों एकड़ जमीन अभी अछूती एवं बञ्जड़ पड़ी है। भारतमें आबादीको रोक रखनेकी बड़ी आवश्यकता है। लेकिन बालविवाह, गरीबी, बुरे रिवाज और साथ ही गर्भ-निरोधके साधनोंका अभाव व अज्ञान हमें कुछ नहीं करने देते।

'रेस' ( जातीयता ) के दृष्टिकोणसे अन्यायोंसे दबी गरीब जनताने बगावत की और एक पतित व मुर्दा ऊंची जातिको मार भगाया। उन दश हजार ऊंचे पदवाले मनुष्योंका, जो सेना व पुलिसकी मददसे इस सारे देशको अपनी एड़ीके नीचे कुचल रहे थे, पता तक न लगा। आज रूसियोंकी तरह ही मध्य एशिया, साइबेरिया, काकेशश आदिके पूर्वी लोगोंको यहांकी राजधानी व नगरोंमें समान अधिकार प्राप्त हैं और उन्हें बराबर कन्धे-से-कन्धा भिड़ाते चलते आप देख सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बहुतोंने तो आपसमें या रूसी औरतोंसे शादी तक कर रखी है। गदरके बाद रूसमें इस तरह खूनका मिश्रण बहुत हुआ है। मास्कोमें ही आपको तरह-तरहके विचित्र पुरुष-स्त्री मिलेंगे।

बोलशेविकोंके अनुसार Environment या इर्दगिर्दका वातावरण ही प्रधान एवं महत्त्वपूर्ण वस्तु है। प्रकृतिने सब जातियोंको समान शक्तियां दी हैं। मनुष्योंमें भी अधिकतर भेद कृत्रिम एवं वर्तमान सामाजिक प्रणालीसे पैदा हुए हैं। साम्यवादी स्टेटके स्थापित होनेपर जो उन्नत दशा होगी वह एक नये व ऊंचे ढङ्गका मनुष्य पैदा करेगी। बपौती व 'रेस' दोनोंका असर मनुष्यपर बहुत कम है, सबसे ज्यादा असर परिस्थिति, शिक्षा व सङ्गतिका है। इतिहास, विज्ञान व प्रतिदिनके जीवनका ज्ञान इस सिद्धान्तसे सहमत है। माता-पिताका बच्चेपर इसलिए असर ज्यादा है कि बचपनमें व बादमें भी वे हमेशा उसके पास रहते हैं। और बचपनमें सुकुमार कोमलमति बालकके दिलपर प्रभाव ज्यादा गहरा पड़ता है। ज्यों-ज्यों बालक बड़ा होता जाता है, बाहरी चीजोंका प्रभाव कम होता जाता है। बोलशेविकोंके अनुसार Racial Hygiene एक झूठी एवं बिना बुनियादकी Science है।

भक्तिके ऊपर समाजका प्राधान्य है। प्राचीन रोममें भी समाजके लिए भक्तिका जीवन बितानेका असूल था। यह विचार, कर्तव्य-पालन, आज्ञा व नियन्त्रणकी भावनासे सम्बन्धित है, जो एक गणतन्त्रमें मौजूद होने चाहिए। जीवनका सर्वोच्च प्रकाश चाहे व्यक्तित्वमें हो, लेकिन जीवन भी जातीय विकाससे संलग्न है। रूसमें राजनीतिक सरकारने केवल समाजके राजनीतिके कार्यको ही नहीं, बल्कि सारे आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यको भी अपने ऊपर ले लिया है। व्यक्तिगत सम्पत्ति व स्वतन्त्रता वहीं तक परिमित है जहां तक वे समाजके लाभके लिए बाधक न हों। अगर गांवोंमें डाक्टरोंकी कमी है और शहरोंमें बाहुल्य, तो सरकार डाक्टरोंको नगरका आकर्षण परित्याग कर गांवमें जानेको विवश करती है। अक्सर तो साम्यवादी पार्टीके सभासद डाक्टरों व अध्यापकों व दूसरे विशेषज्ञोंको ही ऐसे अवसर मिलते हैं और वे खुशी-खुशी हजारों मील दूर जङ्गलों व असभ्य फिरकोंमें भी आज्ञा पाते ही सहर्ष चल देते हैं। मास्कोमें मेरी एक जान-पहचानकी लड़की, मारीयाको मास्कोसे कोई दश हजार मील दूर कामाचाटका नामक बर्फसे शीत प्रायद्वीपमें जाकर वहांके निवासियोंमें शिक्षा व सुधारके कार्यका आर्डर मिला। मारीया नौजवान कम्यूनिस्ट या 'कामसोमल' थी। वहां पहुंचनेमें ही प्रायः एक महीना लगता है। उस वीर बालाने माता-पितासे बिदा ले, जन्मभूमि मास्कोको त्याग उस सभ्यतासे दूर मुल्ककी प्रयाण किया। स्टेशनपर मैंने आंसुओं आदिका अभाव देखकर पूछा—"क्या तुम्हारे हृदयमें जन्मभूमिके लिए कुछ भी प्रेम

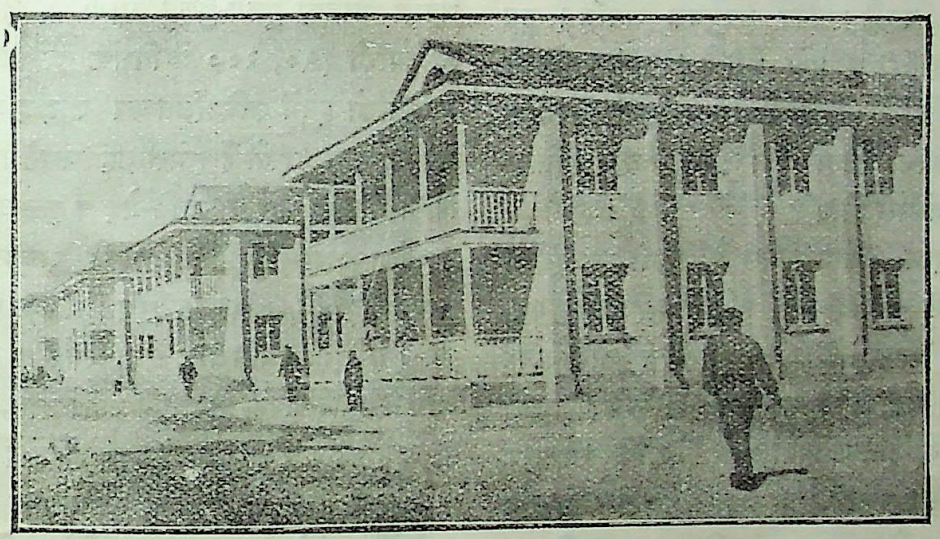

उत्तर काकेशसमें छात्रोंका एक उपनिवेश। इस प्रकारके उपनिवेशोंमें छात्रोंके लिए सर्वत्र होस्टल, रेस्टोरेण्ट तथा क्लब स्थापित किये जाते हैं। छात्रोंका सारा खर्च स्टेट चलाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं है ?" वह बोली—"मजदूरोंकी जन्मभूमि सारी दुनिया है। जहां वे नवीन प्रकाश ला सकें, जहां उनकी ज्यादा जरूरत हो, वहीं उनको बिना क्षणभर सोचे, चल देना चाहिए। लेनिनने कहा था—क्रान्ति अभी समाप्त नहीं हुई है। जब तक संसारमें एक भी गरीब प्राणी शिक्षा व स्वास्थ्यसे वञ्चित है, शासक जाति द्वारा आक्रान्त है, तब तक हमको अपने हृदयमें कमजोर भावोंको स्थान नहीं देना चाहिए।" मैं खड़ा देखता रहा, और बीस वर्षकी वह बाला, अपने दलके दूसरे सदस्य, सदस्याओं व मां-बापको लाल रूमाल हिलाती, ट्रान्स-साइबेरियनकी (दुनियामें सबसे लम्बी) रेल लाइनकी गाड़ीकी खिड़कीपर खड़ी हमारी आंखोंसे विलीन हो गयी। यह है रूसका नवयुवक समाज। इन तरीकोंमें कितनी बहादुरी व दया भरी है! यहां व्यक्तिको सामाजिक लाभके लिए अपनी काबलियतको सबसे उपयोगी कार्यमें व्यवहार करना होता है। इसी तरह व्यक्तिका स्वच्छन्द व पूर्ण विकास होता है।

सोवियट शब्दका अर्थ कौन्सिल है, यानी मजदूरों व किसानोंकी कौन्सिलें या पञ्चायतें। प्रतिनिधिसत्तात्मक गणतन्त्रकी स्थानीय शाखाओं और ग्रामीण सोवियटोंमें बाह्यतः कोई विशेष फर्क नहीं। फर्क उनके अन्दरके व्यक्तियों व सिद्धान्तोंमें है। कम्यूनिस्ट पार्टी दूसरे देशोंके साधारण राजनीतिक दलोंके सदृश नहीं है। वह सञ्चालन व प्रदर्शन करनेवाली पार्टी है। उसे मजदूरोंका दिमाग या मस्तिष्क कहिये। यह दल केन्द्रसे सञ्चालित, स्थानीय शाखाओंमें विभक्त है। इसकी बेलें अपना जाल चारों ओर फैलाये हुए हैं। जीवनका कोई ऐसा भाग नहीं, जहां इसका नियन्त्रण न पहुंचता हो। सोवियट, व्यवहार-समिति, सहयोग-समिति और सब सामाजिक एवं स्वायत्त समितियोंमें एक बोलशेविक अंश रहता है, और इस अंशके पुरुष-स्त्री इस संस्थाको कार्यमें अग्रसर करते रहते हैं। हरएक कारखाने, फार्म, विश्रामघरका भी यही हाल है।

इंगलैण्ड, फ्रान्स, जर्मनी आदिकी तरह रूस एक-जाति व भाषावाला राष्ट्र नहीं है। सीजरके 'गाल' देश (वर्तमान फ्रान्स) की तरह यह तीन हिस्सोंमें बटा है। रूसी लोगोंकी तीन प्रधान शाखायें हैं। मध्य व उत्तरमें बड़े रूसी (८ करोड़), दक्षिणमें काले सागरके आसपास उकरेनियन (३ करोड़), पश्चिममें पोलैण्ड व बाल्टिक रियासतोंकी सीमाओंके पास सफेद रूसी (५० लाख)। इनकी भाषा व संस्कृतिमें कुछ फर्क है। रूसियोंके सिवाय रूसमें अनेक विदेशी जातियां भी हैं,—यहूदी, वाल्गा नदीके इर्द-गिर्द जर्मन, फिन व तारतार, मध्य एशियामें तुरक, काकेशसमें आरमीनियन, जार्जियन आदि। इनमेंसे ९ जातियोंमें तो प्रत्येककी तादाद १० लाखसे ऊपर है और २७ की एक लाखसे ज्यादा। सब मिलाकर रूसमें प्रायः १८० फिरके अथवा जाति अथवा राष्ट्र हैं, और ये १५० के लगभग विभिन्न भाषायें बोला करते हैं। सब स्वतन्त्र व परस्पर-सहयोगसे रहते हैं। हमारे मालिक, शासक जातिके अंगरेज अक्सर भारतकी मुख्य-मुख्य प्रायः एक दर्जन भाषाओं व जातियोंको १५०, २०० में विभक्त कर या छोटी-छोटी पहाड़ी जातियोंको इनमें सम्मिलित कर तादाद बढ़ा हमें स्वराज्यके अयोग्य ठहरा डालते हैं। मेरा यह कहनेसे यह मतलब नहीं कि मैं भारतके धर्म व जाति-भेद व कुछ अंश तक भाषा-भेद व अनेक अंश तक लिपि-भेदको अच्छा समझता हूं। मैं मानता हूं कि भारतका सच्चा भविष्य तभी उदय होगा, जब इन भेदोंका अधिकांश अनावश्यकीय भाग दूर कर दिया जावेगा। भेद अपने-आप दूर नहीं होते, उलटे बढ़ते रहते हैं; उन्हें कोशिश कर-कर मिटाना होता है।

पुरानी सलतनतके नीचे, राष्ट्रीयताके नाते, ये सब लोग रूसियोंके नीचे थे। मातहत कहिये, नीचे क्यों। अपनी अधिक संख्याके कारण जर्मनीमें प्रशियाकी तरह रूसी सैनिक-शक्तिके मालिक, प्रधान व साम्राज्यवादी थे। रूस बाहरी सीमाओंके एक होनेके कारण एक रियासत प्रतीत होता था, यथार्थमें वह टुकड़ोंमें जोड़ा हुआ एक साम्राज्य था जो सैनिक विजय व उपनिवेशोंके द्वारा निर्मित किया गया था। जब अंगरेज समुद्र-पारके देशोंके गोले-बारूदकी कलामें पिछड़े हुओंको अपने अधीन कर रहे थे, तब रूसी जार, अपनी सलतनतसे संलग्न पूर्वी भागोंको एकके बाद एक अपने राज्यमें शामिल कर रहे थे। दक्षिणमें काकेशस व पामीर और पूर्वमें पैसिफिक या प्रशान्त महासागर तक आपने अपने हाथ साफ कर दिये। पुराना नतीजा कुछ ही रहा हो, अबका यह आखिरी दृश्य देखते हुए इस रूसी विजयका फल कुछ बरा नहीं मालूम होता। उन्नीसवीं सदीके अन्तिम भागमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



व बीसवींके शुरूमें जारके रूसी अफसरों व सैनिकोंने चाहे इन जातियोंको सताया व लूटा हो, परन्तु आज वे धर्मान्धता, मुल्लापन, मूर्खता आदिसे छूटकर समृद्ध, शिक्षित होते जा रहे हैं। दुनियाके मुसलमानी राष्ट्रोंमें आज टर्कीका नाम अग्रगण्य समझा जाता है। लेकिन ख्याल रहे, गाजी मुस्तफा कमालने भी तुरकी लिपिको उड़ाकर लैटिन लिपिको चलानेका उपयोगी काम रूसके मुसलमानी इलाकोंसे लिया है। यद्यपि ये इलाके धीरे-धीरे इसलामसे दूर होते जा रहे हैं; परन्तु टर्कीमें इनके मुकाबलेमें दसवां हिस्सा भी सुधार नहीं है। कमालने नगरकी औरतोंको परदेसे विमुक्त कर दिया है,

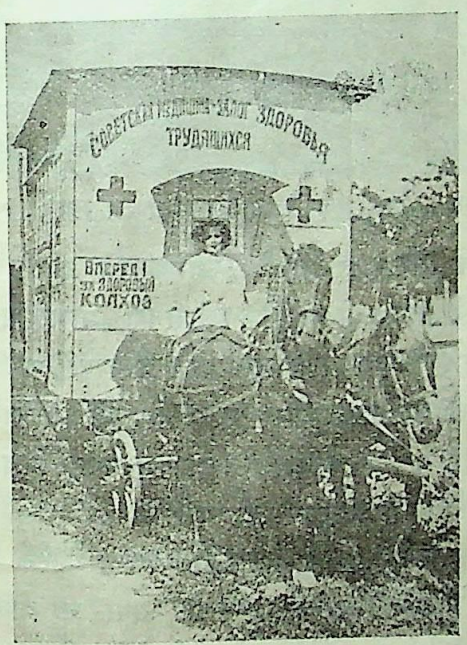


खेतोंमें काम करनेवाले मजदूर तथा किसानोंके लिए चलती-फिरती डिसपेन्सरियां।

लेकिन आज भी वे आर्थिक प्रश्नोंमें पुरुषोंके अधीन एवं निर्भर हैं। ग्रामोंमें तो अनातोलियामें अब भी वैसा ही अन्धकार है। आर्थिक जीवनमें भी टर्कीमें कुछ विशेष प्रकाश हुआ हो, ऐसा नजर नहीं आता। पर्याप्त मात्रामें रेलें व सड़कें भी नहीं। रूसने इन पुराने मुसलमानी इलाकोंको रेलों, सड़कों, हवाई-जहाजों, मोटरों, ट्रैक्टरों, स्कूलों, कारखानों, आबपाशी, नवीन गृहनिर्माण आदिसे गुलजार कर दिया है।

इस लम्बे-चौड़े साम्राज्यमें राष्ट्रीय प्रश्नोंको हल करनेके लिए बोलशेविकोंकी बड़ाई या प्रशंसा करनी ही पड़ेगी। पहले रूस प्रान्तीय सरकारोंमें बंटा था। रूसी क्रान्तिका यह नतीजा हुआ है कि देश राष्ट्रीय एवं जातीय विभागोंमें विभाजित किया गया है। क्या ही अच्छा हो, अगर भारतकी सब रियासतोंको मिलाकर भारतको एक भाषाभाषी प्रान्तोंमें विभक्त किया जावे। दक्षिणमें मद्रासकी जगह मलयलम्, तामिल, कनाड़ा, तेलगू (आन्ध्र प्रान्त) हों। बम्बईमें महाराष्ट्र एवं गुजरात हों। दक्षिण भारतकी देशी रियासतोंके इन भाषाओंसे सम्बद्ध हिस्से भी प्रान्तोंमें सम्मिलित हों। जातीय शब्दसे कोई हमारी हिन्दुस्तानी जाति न समझ ले, कमसे कम वे जरूर, जो अखिल भारतीय जात-पांतोंके सम्मेलन किया करते हैं। यहां रूसमें भिन्न-भिन्न जातियोंको सांस्कृतिक, स्वायत्त-शासन और पूर्ण गृहराज्य मिल गया है। या तो वे बड़े रूसके बराबरके ही पदके प्रजातन्त्र हैं या स्वायत्तशासन-प्राप्त गणतन्त्र। सोवियट यूनियनकी हर सीमा-पर आप ऐसे स्वतन्त्र जातीय गणतन्त्रोंकोबिखरे हुए देख सकते हैं—फिनलैण्डके पास कारेलिया, पोलैण्डके पास उकरेन व सफेद रूस, परसियाके पास अजर वेजान, जार्जिया; टर्कीके पास आरमीनिया, अफगानिस्तानके पास ताजिकिस्तान व चीनसे सटा हुआ उजबेकिस्तान। आजसे करीब दस साल पहले—१० दिसम्बर १९२२ को रूस एक फेडरल शासन-प्रणालीमें परिवर्तित किया गया था। उस अवसरकी वर्षगांठ इतनी तुच्छ नहीं कि बिना कुछ कहे-सुने ही भुला दी जावे। प्रथम तो बोलशेविक क्रान्तिके बाद बाहरकी दुनियाके लिए यह एक बड़ा दिलचस्प मामला था, दूसरे रूसी फेडरल पद्धति वास्तविकतया व प्रकट—दोनों रूपमें दुनियाकी दूसरी सङ्घबद्ध प्रणालियोंसे—जैसे जर्मनी, यूनाइटेड स्टेट्स, स्वीजरलैण्ड इत्यादिसे अत्यन्त भिन्न थी।

जारिस्ट पालसी घातक एवं निस्सन्देह बड़ी हानिकारक थी, जिसने इतने जमाने तक रूस जैसे लम्बे-चौड़े देशको केन्द्रीय सरकारके कठोर पञ्जोंमें दबाये रखा। शायद निरंकुशता व मजबूत केन्द्रीय सरकारोंका कुछ सम्बन्ध भी है। लेकिन रूसमें तो अकेन्द्रीकरण (Decentralisation) से असंख्य फायदे थे। वह सिर्फ विस्तारमें ही महान् नहीं, बल्कि वहां अनेक भाषायें, जातियां, फिरके व धर्म मौजूद हैं। यही हाल लड़ाईसे पहले आस्ट्रिया हंगेरीका था जिसने अतिकेन्द्रीकरणके नुकसानोंकी ओर ध्यान न देकर अन्तमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनी हत्या तक करवा डाली। शायद अनेक अंशोंमें यही बड़ी गलती पुराने रूसी साम्राज्यके पतनका कारण हुई हो। और इसीलिए उस साम्राज्यकी टूटती-बिखरती ताकतोंके प्रभातमें ही, उसीके हिस्सोंसे अलग होकर, नये-नये राष्ट्रोंने जन्म लिया। पृथक् होनेके ये सब आन्दोलन राजनीति एवं इतिहासके विद्यार्थीके लिए बड़े सबककी चीजें हैं। इनकी विभिन्नता बड़े विचित्र पाठ पढ़ाती है। अनेक तो अपने ध्येयोंमें विभिन्न मार्गोंसे पदार्पण करके भी सफल हुए हैं। फिनलैण्ड, लिथुआनिया, एस्थोनिया, लेटविया, पोलैण्ड—सबकी ओर निहारिये। दूसरोंने रूसके अन्दर रहना ही अपनी राष्ट्रीय उन्नतिके लिए

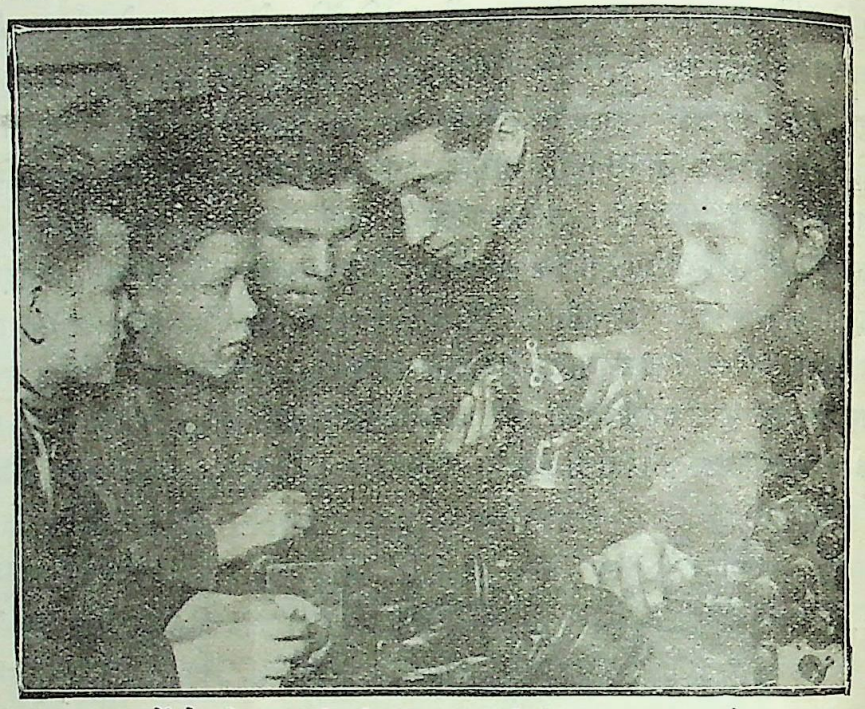

लड़कोंको मोटर-कारके निर्माणका कार्य सिखाया जा रहा है।

हितकारक समझा है। आधा पोलैण्डसे दबाया हुआ, अभागा उकरेन, एक समय पेटरोलके लोभी पूंजीपतियोंकी सेनासे रौंदा हुआ अजरबेजान व जार्जिया, मजहबी झगड़ोंसे ग्रस्त एवं तुर्कोंके अन्यायसे खूनमें लथपथ आरमीनिया आदि इसके उदाहरण हैं।

दूसरोंके भीतर भी स्वार्थी मनुष्यों द्वारा अपने स्वत्वों व हितोंकी रक्षाके लिए झूठे राष्ट्रीय आन्दोलन खड़े किये गये थे, लेकिन कम्यूनिस्टोंके लगातार प्रचारने व लाल फौजकी मददने साइबेरिया व मध्यएशियाके किसानोंको इन आन्दोलनोंका सच्चा स्वरूप दिखला दिया और शीतकालके बादलोंकी तरह ये आन्दोलन बिना फल दिखलाये ही विलीन हो गये।

क्रान्ति-विरोधी सेनाओंको तितर-बितर कर सोवियट नेताओंने विजयकी खुशीमें इन विभिन्न जातियोंकी आशाओं व अभिलाषाओंको कार्यमें परिणत करनेका निश्चय किया। इन इच्छाओंको पूर्ण करनेके लिए राष्ट्रीय कौन्सिलके प्रधान, स्टालीनने लेनिनके सामने ये नये प्रस्ताव रखे, और पुराने अन्यायको सदाके लिए मिटा देनेकी प्रार्थना की। सोवियट प्रधानने उन्हें स्वायत्त-शासन एवं अपनी भाषा व्यवहार करनेकी इजाजत दे दी। वे अच्छी तरह जानते थे कि सारे स्टेटकी एक भाषा-भाषी, एवं केन्द्रसे सञ्चालित एक ही पेचीले शासनके नीचे रहनेकी जरूरत नहीं। समान सामाजिक विचार ही देशकी एकता कायम रखते हैं। यह बात किसी महत्त्वकी नहीं कि शासनके मामलोंपर अलग-अलग जगहोंमें एक ही जबानमें बातें व बहसें हों। उनके अनुसार सबसे आवश्यकीय बात थी कि सामाजिक एवं राजनीतिक मशीन प्रोलिटारियट यानी मजदूरों व क्रान्ति-समर्थक किसानोंके हाथमें रहे, चाहे उनका बाहरी रूप कैसा ही हो। और वे यह भी भली भांति जानते थे कि इन नयी सरकारोंके प्रतिनिधि केवल रूसी भाषा न बोलनेसे ही, अपने ध्येय न खो देंगे। बोलशेविकोंके लिए भाषा एवं इतिहास उतने महत्त्वकी चीज नहीं, जितना सामाजिक सङ्गठन। बोलशेविक राष्ट्रवादी नहीं हैं, वे अन्तर्राष्ट्रीय प्रेम व प्रीतिके पुजारी हैं। और इसी मौलिक सिद्धान्तके कारण रूसी फेडरल पद्धति औरोंसे इतनी विभिन्न है।

साम्यवादी सोवियट प्रजातन्त्रोंके इस यूनियनमें सात प्रजातन्त्र हैं। इनमेंसे दो, रूस व ट्रान्स-कोकेशश तो स्वयं अनेक दूसरोंके सङ्घसे बने हैं। दूसरे पांच,—सफेद रूस व डकरेन देशके पश्चिममें, व उजबेकिस्तान, ताजकस्तान, तुरकमेनिस्तान, पुराने रूसी तुरकिस्तानकी जगह मध्य-एशियामें स्थित हैं।

एक बात ध्यानमें रखने लायक है। संसारमें दो प्रकार-की फेडरल पद्धतियां हैं। एक यूनाइटेड स्टेट्स और स्वीजर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लैण्डकी तरह, जिसमें सब रियासतें बराबर हक व आवाज रखती हैं। दूसरी जर्मनीकी तरह, जिसमें प्रशियाका बोल-बाला है और उसने अपनी आबादीके अधिक होनेसे बाकी सब छोटी-छोटी रियासतोंको दबा-सा रखा है। यू० एस० एस० आर० में भी प्रशियाकी तरह रूसको प्रधान पार्ट खेलनेका अवसर है, क्योंकि रूसी प्रजातन्त्रके नीचे ९० फी-सदी धरती व ६८ फीसदी आबादी है। लेकिन यहां किसीको लूटने व दबानेकी नीति नहीं।

यह रूसी प्रजातन्त्र स्वयं भी प्रायः तीसके लगभग हिस्सोंमें बंटा हुआ है। और इन प्रान्तोंकी संख्या लगातार बढ़ती रही है, क्योंकि रूसमें हमेशा नवीन परिस्थितियोंके माफिक बदलाव होते रहते हैं। इन तोसमेंसे १२ तो प्रायः फिर स्वाधीन प्रजातन्त्र हो गये हैं (इनके नाम बाशकीर, बुरियात, मङ्गोल, दाथेस्तान, कारेलिया, करगीच, कराईमिया, तारतार, वालगाजर्मन, इत्यादि हैं)। बाकीको भी एक किस्मकी सीमित प्रान्तीय स्वाधीनता प्राप्त है। इनकी सरकारोंका सङ्गठन बड़ा लचकीला, विभिन्न एवं परिवर्तनशील है। सचमुच यह बुरा भी नहीं, क्योंकि सभ्यताकी दौड़में एक-दूसरेसे आगे-पीछे ये देश एक ही नमूनेकी सरकारसे शासित नहीं हो सकते। इस बातने इनके जातीय जीवनकी विचित्रताओंका पूरा ख्याल रखा है। भूगोलके विद्यार्थीको इन बातोंके समझनेमें कुछ कठिनाई नहीं। भाषाके क्षेत्रमें ये पूर्ण स्वाधीन हैं ही। और लोगोंके कुछ कहते हुए भी इन किनारेपरके देशोंसे राष्ट्रीय अन्यायोंके कारण कोई दूसरे देशोंमें भाग कर न गया, बल्कि पड़ोसी देशोंके लोगोंने रूसमें बेशक आसरा लिया हो। शासनकी सारी मशीन राष्ट्रीय प्रतिनिधियोंके हाथमें है। आर्थिक पालिसी मास्कोसे तजबीज की जाती है, लेकिन यह अक्सर छोटे देशोंके पक्षमें ही होती है, इनकी आर्थिक उन्नतिपर औसतन सरकारने ज्यादा खर्च किया है। देखें संसार, कट्टर बोलशेविकोंकी राष्ट्रीय नीतिसे क्या सबक सीखता है; प्रान्तीयताकी बीमारी-से तङ्ग भारत, केण्टन, नानकिङ्ग व पीपिङ्गके झगड़ोंसे त्रस्त चीन, व राष्ट्रीय झगड़ोंके केन्द्र बलकान प्रायद्वीपको इससे क्या शिक्षा मिलती है।

बोलशेविकोंने इन जनसमूहोंके लिए राष्ट्रीय जीवनकी आजाद नींव डाल दी है। उन्हें स्वयं अपनी सरकारें स्थापित करनेकी सुविधा कर दी गयी है। अपने स्कूलों, अखबारों, साहित्य, थियेटर, शासन, अदालतों आदिमें अपनी भाषाका व्यवहार करने दिया गया है। उनकी भाषाओंमें सब नवीन पुस्तकें छापी जाती हैं। विज्ञान, इञ्जीनियरी, मेडीसिन आदिकी उच्च शिक्षाका भी देशी भाषामें प्रबन्ध है। वैसे तो अनेक उच्च शिक्षा-प्राप्त विद्यार्थी रूसी भाषा सीख लेते हैं, लेकिन ऐसा करना उनके लिए लाजिमी नहीं। इस सबकी बधाई स्टालीनको है, जो उस समयके राष्ट्रीय विभागका मन्त्री था और जो जार्जियन होनेके कारण जानता था कि जूता कहां पैरको काटता है। नवीन पुनर्जीवित राष्ट्रोंकी कट्टर एवं अन्धी राष्ट्रीयता संसारमें आज सबको मालूम है। उस तरहकी खतरनाक, युद्धकारिणी हरकतें यहां विभिन्न जातियोंके अन्तर्गत नहीं रही हैं। सारी प्रणाली साम्य एवं न्यायपर स्थित है। किसी जातिको शोषण करनेकी आवश्यकता ही नहीं। पूंजीवादी प्रणालीमें धनिक देशोंको अपनी पूंजी लगानेको, अपनी मैनूफेकचर्ड वस्तुयें बेचनेको व कच्चा माल खरीदनेको साम्राज्यवादी होना पड़ता है। एक दिन लेनिनने कहा था कि कोई मनुष्य सच्चा साम्यवादी नहीं, जब तक वह अपने देशको संसारव्यापी क्रान्तिके लिए बलिदान करनेको प्रस्तुत न हो। रूसमें अन्तर्जातीय विवाह-ने पारस्परिक द्वेष व सन्देहको उखाड़ फेंका है। यहूदियों व ईसाइयोंमें वहां आज कोई भेद नहीं। मैंने मास्कोमें एक हब्शी सज्जनको देखा जिन्होंने एक सुन्दरी रूसी बालाका पाणिग्रहण किया है। मुझे तो दम्पति बड़े सुखी प्रतीत हुए। एक दिन सान्ध्य-भोजनका निमन्त्रण पा मैं उनके फ्लैटमें गया। दुनियाभरकी गप्पें होती रहीं। उसने मजाकमें कहा—"मैं हैरोल्डसे कहती हूं कि हमारा बालक तुम-सा पूरा भारतीय होगा—न रूसी, न अफरिकन। कैसा आश्चर्य है! मां कौन, बाप कौन और बच्चा एक और ही नयी चीज होगा!"

यद्यपि जीवनका हर पहलू समाजवादके अन्तर्गत है, लेकिन आर्थिक क्षेत्र ही साम्यवादकी अपनी विशेष प्रणाली-को स्थापित करनेके लिए प्रथम चुना गया है। यहांपर मार्क्स व लेनिनके सिद्धान्तोंकी परीक्षा व प्रयोग हो रहे हैं, क्योंकि मार्क्सवादी कहते हैं कि हर वस्तु या संस्थाकी जड़में आर्थिक कारण घुसे हैं। मार्क्सवादी अर्थनीतिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



असूलोंको तो आज सारा संसार जानता है—(१) उत्पादनके सब जरिये समाज-भुक्त हों (२) समाज द्वारा उत्पादन एवं वितरण (३) व्यक्तिगत सम्पत्ति व नियन्त्रणको उत्पादनके जरियोंसे अलग करना। सरकार देशके आर्थिक जीवनको सञ्चालित करती है, यानी सब जरिये स्टेटके हाथमें हैं। व्यक्तिगत किसी कार्यको शुरू करनेके लिए दायरा बहुत सङ्कीर्ण हो गया है। मजदूर स्टेटका नौकर है। व्यक्तिगत आधिपत्य एवं बाप-दादोंसे पायी सम्पत्तिका नियम बहुत छोटे परिमाणमें बचा है। सम्पत्तिका अधिकार तो घरेलू सामान व कपड़ों-लत्तों तक रह गया है। १० हजार रुपयोंसे ज्यादा कोई अपने बापकी मृत्युपर नहीं पा सकता। शिलरकी वह शर्त मान ली गयी है कि मनुष्योंके पास अपना कहनेको

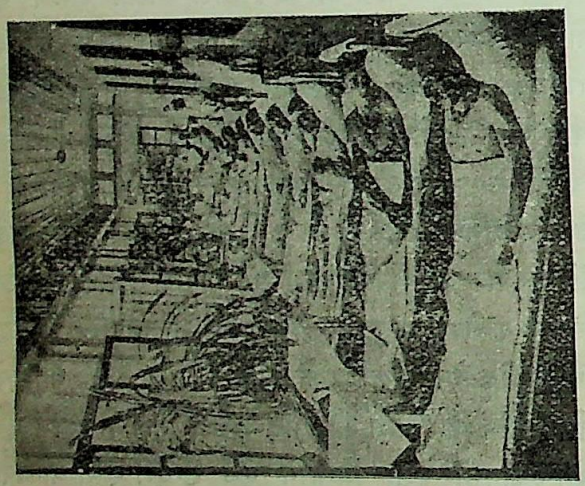

मजदूरोंके लिए सर्वत्र थिएटर, लाइब्रेरियां तथा क्लब स्थापित किये गये हैं। विश्राम-गृह तथा सेनेटोरियम भी तैयार किये गये हैं, जैसा कि इस चित्रसे मालूम होगा।

कुछ-न-कुछ रहने देना चाहिए, नहीं तो वे डाकू व हत्यारे हो जावेंगे।

करीब-करीब तमाम रूसी उद्योगधन्धे सरकारके हाथमें हैं। मालिकोंको बिना किसी किस्मकी कीमत दिये इन्हें जनताकी सरकारने अपना लिया है और उसी द्वारा ये लिमिटेड कम्पनियोंके रूपमें सञ्चालित हैं। बाहरी मालके निर्यातको प्रायः बिलकुल ही बन्द करके इन उद्योगधन्धोंकी रक्षा की गयी है, क्योंकि अगर ये शिशु-उद्यम अबाध्य विदेशी प्रतिद्वन्द्विताका मुकाबला करनेको छोड़ दिये जावें, तो इनका मरण निश्चित है। सरकार ही अपने रुपयोंको खर्च कर इन कारखानोंको खड़ा कर रही है। टैक्स, कर्ज, व चीजोंके ऊंचे दामों द्वारा इन उद्योगोंको बढ़ाया जाता है, और नयी चीजोंके बनानेवाले कारखानोंको खड़ा किया जाता है। क्रान्ति व गृह-युद्धने रूसी उद्योगधन्धोंको बिलकुल मार-सा डाला था। १९२० में सारी पैदायश शायद २० फीसदी ही रही हो। १९२४ में ये पुरानी तादादकी आधी पैदायशपर पहुंच गये थे। आज तो यह लड़ाईकी सतहसे कितनी ही आगे निकल गयी है। हर साल ३० फीसदीके करीब वृद्धि हो रही है। विदेशी व्यापारसे हम इस उन्नतिका कुछ अनुमान नहीं लगा सकते, क्योंकि विदेशी चीजें उतनी ही मंगायी जाती हैं जितनेकी सख्त जरूरत हो और वर्तमान कालके रूसमें पैदा न की जा सकती हों। फिर भी रूसका विदेशी व्यापार लड़ाईसे पहलेके व्यापारका ८० फीसदी है। आबादी २० फीसदी बढ़ी है, लेकिन पिछले चार सालोंमें चीजों व खासकर कच्चे मालके दाम आधेसे ज्यादा गिर गये हैं। रूस अधिक अंशोंमें अभी कच्चा माल बाहर भेजता है, और खरीदता है मशीनें व इञ्जीनियरोंकी दक्षताकी चीजें। वर्तमान सरकारने तो एकके बाद दूसरी पञ्चवर्षीय योजना द्वारा देशके जल्द-से-जल्द उद्योगीकरणकी नीति अख्तियार की है। वह पहले भारी उद्योगधन्धों (Heavy Industry) को स्थापित करना चाहती है ताकि भविष्यमें मशीनोंके लिए भी विदेशोंका आसरा न ताकना पड़े। प्रथम पञ्चवर्षीय योजनामें तो इस बातपर इतना अधिक जोर डाला गया कि खाने, पीने व पहननेकी जरूरी चीजों व नये सुन्दर घरोंके निर्माणके अतिरिक्त और सब साधन मशीन बनानेवाली, मोटर, ट्रैक्टर, बिजली, केमिकल, रेल, इत्यादि चीजोंके कारखानोंको खड़ा करनेमें खर्च किये। जगह-जगह बड़े-बड़े कारखाने निर्मित किये जा रहे हैं। विदेशी इञ्जीनियरोंकी सहायतासे, नयी-से-नयी मशीनोंको स्थापित किया जा रहा है। बोलशेविकोंको कुछ अंश तक परेशान करनेवाले दो सवाल हैं—पूंजी व विदेशी कर्जका न मिलना, और रूसमें बड़ी भारी शिक्षा-प्रणालीके स्थापित करनेपर भी पर्याप्त चतुर कामगरों व इञ्जीनियरोंका न होना। इसमें कोई शक नहीं कि अगर उन्हें विदेशोंसे बड़े-बड़े कर्ज मिल जाते तो वे मशीनें व कच्चा माल बाहरसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खरीद सकते और उनके कष्ट बहुत कम हो जाते। सोवियट सरकारको या तो जरूरी पूंजी जनतासे कर्जमें लेनी पड़ी है, या उन चीजोंको, जिन्हें वे बाहर भेज सकते हैं, निर्धारित कर व उन दामोंपर बेचकर, जो उन्हें विदेशी मार्केटोंमें प्राप्त हो सकता है, अपना काम चलाना पड़ा है। दूसरा सवाल है योग्य 'मिकेनिकों'का। रूसके पास इतनी अधिक तादादमें दक्ष, विश्वासयोग्य व विशेषज्ञ 'मिकेनिक' नहीं, जो इतने बड़े-बड़े कारखानोंको संभाल सकें। पञ्चवर्षीय योजनाके साथ-साथ नये विशेषज्ञोंको ट्रेन करनेकी भी बड़ी भारी चेष्टा की गयी है। विदेशी व्यापारके ऊपर तो सरकारका एकाधिपत्य है। बाकी ९९ फीसदी थोक व ९० फीसदी खुदरा व्यापार भी सहयोग-समितियोंके हाथमें है। सहयोग-समितियोंका सारा जाल सरकारी नियन्त्रण व सञ्चालनमें है। जो कुछ व्यक्तिगत व्यापार बचा है वह किसानोंके बाजारोंका या ऐसी जगह कपड़े व खाद्य-सामग्रीकी बिक्री है जहां अभी तक सरकारी व्यापारकी पहुंच नहीं हुई है। क्रान्तिने व्यक्तिगत व्यापारकी हत्या कर दी थी। नयी आर्थिक नीतिसे १९२१-२२ में वह फिर उन्नत हो गया था। फिर बोलशेविकोंने दुबारा चेष्टा करके उसकी गर्दन तोड़ डाली। सरकारी एकाधिपत्यके क्या परिणाम हो सकते हैं, यह काम भविष्यवाणी करनेवाले अर्थ-नीतिज्ञोंका है। रूसमें सरकारी बैङ्कोंके अतिरिक्त दूसरे बैङ्क नहीं। हमारे भारतमें एक-दोको छोड़कर प्रायः सभी विलायती बैङ्क हैं। हमारी जमाके रुपयेका व्याज कमा वे लन्दनमें लम्बे-लम्बे डिविडेण्ड देते हैं। रूसी बैङ्क जनताकी बचायी कमाईको शिल्पमें आकर्षण करनेके जरिये मात्र हैं। निर्यातसे जो विदेशी धन उन्हें मिलता है, वह बड़ी सावधानीसे सबसे उपयोगी यन्त्रों व कलोंके खरीदनेमें खर्च किया जाता है।

रूसमें ८० फीसदी किसान हैं। रूसी राजनीतिकी जड़में तमाम सवाल देहाती हैं। तमाम सवालोंका हल करना ही उनकी बुद्धिकी सच्ची कसौटी है। इसके लिए हमें इतिहासके पन्ने उलटने पड़ेंगे। पुराने रूसमें किसान गुलाम-से थे। वे जमीनके साथ पशुओंकी तरह जमीन्दारोंकी सम्पत्ति थे। एक जमीन्दारीके आकारको बतानेके लिए गुलामोंकी संख्या निर्दिष्ट कर देना एक आसान तरीका था, जैसे आस्ट्रेलियामें भेड़ोंकी तादाद बताकर भेड़ोंके चरागाहोंवाले फार्मोंका मोल किया जाता है। अमेरिकामें हब्शियोंकी गुलामीके साथ-ही-साथ रूसमें भी १९ वीं शताब्दीमें यह किसानोंकी गुलामी मिटा दी गयी। इस किसानोंकी स्वतन्त्रताने सारे प्रश्नको हल नहीं किया। यही हाल निग्रो लोगोंके अमेरिकन प्रश्नका है, जो आज तक उलझा पड़ा है। किसानोंको उस जमीनके लिए बड़े भारी कर देने पड़ते थे, और वह भी थोड़ी-सी जमीन। उपयोगमें ला सकें उतनी जमीन उन्हें मिलनी चाहिए थी, लेकिन वे धोखा खा गये। जमीन्दारोंके गुलाम नहीं तो फिर भी वे गुलाम से ही बने रहे। ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ी, ये खेत और भी छोटे-छोटे हिस्सोंमें बंटते गये। जमीन-के प्रति किसानोंकी भूख "हाय, हाय" करने लगी। कई किसानोंकी जमीन तो तीस-तीस, चालीस-चालीस टुकड़ोंमें गांवके चारों ओर बिखरी पड़ी थी। कृषिकी इस बुरी हालत व अनेक दूसरी कठिनाइयोंके कारण रूसी किसान बड़े दुःखी थे। खेती बाबा आदमके जमानेकी-सी थी, मनुके जमाने-की कहनेसे हमारे संस्कृतज्ञ पण्डित नाराज हो जायंगे, क्योंकि वह शुरूआत होते हुए भी सभ्यताका सत्ययुग था। खैर, मनुके जमानेके भारतमें कैसी ही संस्कृति रही हो, रूसमें काठके हल, कम फसल और असभ्य किसान थे। पास ही बड़े-बड़े जमीन्दार रहते थे जिनकी रियासतें कोसों तक फैली उनको ललचा रही थीं। इस तरह किसान तो बलवेको तैयार ही थे। ग्राममें साम्यवादकी नींव अधूरी या चौथाई हमेशासे है। बोलशेविकोंने क्रान्तिके जमानेमें किसानोंकी इस जमीनके लिए क्षुधाको उभाड़कर उस समयके लिए एक दफे बड़ा फायदा उठाया। सरकारी ताकतें हाथमें लेते ही बोलशेविकोंने जमीनको सामाजिक या सर-कारी सम्पत्ति करार दिया। किसानोंको खेती करनेके अधि-कार मिले, यानी सच्चे मालिक किसान रहे। अब उन्हें ज्यादा जमीन भी मिल गयी। १० करोड़ एकड़से ज्यादा जमीन, जो कभी डेढ़ लाख जमीन्दारों, गिरजा-घरों व शाही खानदानकी निजी सम्पत्ति थी, अब किसानोंके हाथमें आ गयी। बहुतसे खेतोंमें मजदूरीपर काम करनेवाले गरीब भी, जिनके पास पहले सिर छिपानेको भी धरती न थी, अब इस जमीनमें अपना हिस्सा पा गये। बोलशेविकोंने दो उद्देश्य अपने सामने रखे—(१) स्वतन्त्र व धनिक किसान-जातिको (जिसके स्वभावतः सुधार-विरोधी व पूंजीवादी विचार, साम्यवादी सरकारको खतरेमें डालनेमें समर्थ थे)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खड़े होनेसे रोकना, (२) शहर और गांवके बीचमें ज्यादा पक्के सम्बन्ध स्थापित करना और साम्यवाद व सहयोगकी भित्तिपर कृषिको सङ्गठित करना, ताकि नगरोंको खाद्य-सामग्री व कच्चा माल मिलता रहे और गांवोंको 'मैनूफेकचर्ड' वस्तुयें। पहला काम उजाड़ भूमिमें बड़े-बड़े सरकारी फार्मोंका स्थापित करना था। दूसरा छोटे-छोटे स्वतन्त्र खेतोंको बड़े तथा एकीभूत फार्मोंमें सम्मिलित करना, ताकि आधुनिक कलें व तरीके काममें लाये जा सकें। उन्होंने सोचा कि इस तरीकेसे कृषिकी पैदावार बढ़ायी जा सकती है। रूसके मुकाबिलेमें अमेरिका व यूरोपमें जमीनकी पैदावार कई गुना अधिक थी। नारवेकी पथरीली धरती भी रूससे तीन गुना ज्यादा गेहूं पैदा करती थी। नारवेके

मजदूर इस प्रकारके आलीशान भवनोंमें रहते हैं।

किसानोंके मवेशी भी चार या पांच गुना ज्यादा उत्पादक थे, व रूसी गायोंसे उनकी गायें दूना दूध देनेवाली थीं। औसत आकारका रूसी फार्म पांच या छ प्राणियोंके परिवारवाला, दस या बारह एकड़ जमीनका सालमें २००) रुपयेसे ज्यादाका बजट मुश्किलसे दिखला सकता था।

आज कुछ सरकारी फार्मोंका क्षेत्रफल तो चार लाख एकड़से भी ज्यादा है। आजसे दो वर्ष बाद वे सब मिलाकर कैनेडाकी सारी कृषि-भूमिके आकारको पहुंच जायंगे। आजकल पांच हजारके करीब ऐसे सरकारी फार्म हैं, जिनके नीचे कोई एक करोड़ एकड़ भूमि है। बोलशेविकोंने इन्हें अनाजके कारखानोंकी तरह बिलकुल आधुनिक ढङ्गसे सङ्गठित किया है।

एकीभूत फार्म आज देशके तीन-चौथाई खेतीके हिस्सेको दबाये हुए हैं और भविष्यमें वे सरकारी फार्मोंके सिवाय दूसरे सब व्यक्तिगत फार्मोंको निगल जायंगे। इस यन्त्र-सञ्चालित कृषिको उद्योगमें परिवर्तन कर देना सचमुच ही बड़ा फायदेमन्द होगा, यद्यपि अभी तक उसके परिणाम इतने साफ प्रकट नहीं हुए हैं। ऐसी प्रणालीके लिए प्रत्येक फार्ममें योग्य नेताओंकी जरूरत है। किसानोंको नियमपूर्वक नियन्त्रणके नीचे रहकर काम करनेकी आदत भी डालनी है। इन सहयोगी फार्मोंमें अभी पूर्ण भ्रातृभावने जन्म नहीं लिया है। वे सरकारकी सलाहोंको माननेमें भी इतने तत्पर नहीं हैं। जबर्दस्ती आज्ञापालन बुरी बात है। शायद रूस इस तरीकेसे कृषिमें सर्वोच्च डेनमार्ककी स्थितिको पहुंच जाये, लेकिन इस ढङ्ग तक पहुंचनेमें उसे अनेक परिवर्तन करने पड़ेंगे, और अनेक अंशोंमें साम्यवादी कट्टरताको उपयोगितावादके लचकीले सिद्धान्तोंमें ढालना होगा।

साम्यवादी पार्टीके मेम्बरोंको एक बराबर, यानी औसत दर्जेके कर्मीकी तनख्वाह ३००) रुपये महीनेके करीब मिलती है। दूसरोंको काम व घण्टोंके माफिक १५०) से १५००) रुपये तकका माहवारी वेतन मिलता है। कोई भी शान-शौकत या तड़क-भड़कसे रहता नजर नहीं आता। मकानोंमें इस वक्त तो भीड़ कुछ ज्यादा ही है, लेकिन यह भीड़ सबके लिए है, कुछके लिए नहीं। भाड़ा आमदनीके माफिक देना होता है। कम आमदनीवालोंको ५ फीसदी, ज्यादा आमदनीवालोंको २० फीसदी तक दे देना होता है। मकान सब सरकारी हैं। नये, सुन्दर, हवादार व रोशनीवाले मकान बन रहे हैं। रूससे बेकारीको पञ्चवर्षीय योजनाने भगा दिया है। सात घण्टे प्रतिदिन कामका नियम है। पांच दिन काम व एक दिन छुट्टी। सालमें एक महीनेकी सवेतन छुट्टी मिलती है। हमारे यहां लाखों शिक्षित नवयुवक बेकार रहकर अपने जीवनको व्यर्थ खोनेको विवश हैं।

परिवारके जीवनमें स्त्रीकी जो बेकदरीकी बुरी हालत थी वह आज मिटायी जा रही है। मांको सारे दिन बच्चोंका भार ग्रहण नहीं करना पड़ता। बच्चोंके पालन-पोषणमें शिक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एवं दक्ष धाइयां अधिकांश समय बच्चोंकी देख भाल शिशु-गृहमें करती रहती हैं। परिवारकी गरीबी व धनधान्यताका बच्चेपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। और गरीबी व धनधान्यतामें भी रूसमें दो-चार गजका फासला है। वहां न निजामसे धनी हैं और न रोजाना एक वक्त भोजनको पानेमें अक्षम एक-तिहाई आबादी ही है। बच्चोंके भारसे छुटकारा पानेपर ही तो अन्त नहीं होता। मांका रसोईसे भी पिण्ड छुटाया जा रहा है ताकि वह मनुष्यके साथ बराबरीके नाते अपनी शक्तियां समाज-सेवा व पैदावारके कार्यमें लगा सके। इनके समाज-सुधारकोंकी आंखोंके आगे एक सर्वसाधारणकी रसोई व भोजनालयके साथ-साथ फ्लैटोंवाला चारों ओर बाग व फुलवारीसे घिरा, आमोद-प्रमोद व शिक्षाकी सामग्रीसे सम्पूर्ण वास-भवन है। बहुतसे कारखानोंके साथ भी ये शिशु-गृह संयुक्त हैं। सर्वसाधारणके भोजनालय तो प्रायः सब जगह हैं।

वे सैकड़ों-हजारों अनाथ, जो गांवों व शहरोंके जीवनको अपनी डकैती व हत्यासे संत्रस्त कर रहे थे, आज एक किस्मके खास आश्रमोंमें सभ्य व कार्यचतुर नागरिक बन रहे हैं। विवाहका बन्धन भी रूसमें ढीला हो गया है। बच्चे मांबापकी उचित-अनुचित हर आज्ञाका पालन नहीं करते। वह रघुवंशी रामके अनुयायी नहीं। अनेक बार तो वे अपने मांबापको नवीन स्वच्छता व शिक्षाके नियम सिखलाते हुए देखे गये हैं। स्त्रीको तो क्रान्तिने बिलकुल स्वतन्त्र कर दिया है। मुसलमान व पूर्वी जातिकी स्त्रियोंके, जिनकी तादाद एक करोड़ है, बन्धन कट गये हैं। रूसी किसानोंकी औरतें भी आजाद व स्वच्छन्द विचरनेवाली हैं।

रूसके हृदयपर भ्रातृभावके गुण लिखे हैं और उनकी नीति उपयोगितावाद है। रूसके किसी जुलूसको देखिये। फहरते लाल झण्डे, और तरह-तरहके वाक्य। आगे बाजोंका बजना और अन्तर्राष्ट्रीय गीतका गाना। आगे-आगे नेता व पीछे साधारण स्वच्छ वस्त्रोंमें जनता, उनके चेहरे खिले हुए। इस जन-समूहको कैसे अधार्मिक कहा जाय! सच्चा धर्म और साम्यवाद अनेक अंशमें एक हैं। जीवनके अन्दर सचाईके सिद्धान्तोंका प्रतिपादन दोनोंने किया है। भ्रातृभाव व मनुष्यमात्रके प्रेमसे दोनों शुरू होते हैं। दोनों दुखियोंकी सहायतामें तत्पर और सब देशों व जातियोंकी बराबरी व आजादीकी घोषणा करते हैं। लेकिन धर्म शान्त व आदर्शवादी है, साम्यवादी प्रस्तुत एवं भौतिकवादी। साम्यवादी अन्याय-ग्रसितको कहते हैं कि उसे जन्मके बाद नहीं, बल्कि यहीं और अभी स्वर्ग मिलेगा। वे सच्चे प्रेम व त्यागके धर्ममें विश्वास करते हैं। राष्ट्रीयता अपने देशको सबसे आगे रखती है, चाहे दूसरोंका अपकार होता हो। साम्यवाद सबके भलेके उपाय सोचता है। रूसमें सरकारने मजहबी सहायता बन्द कर दी है। मठाधीशों व महन्तोंके नीचेकी ७० लाख एकड़ जमीन किसानोंको दे दी गयी है। पुजारियों व मुल्लोंको नागरिकताके अधिकारसे रहित व कुसंस्कारों व कुज्ञानोंके प्रचारसे बन्द कर दिया गया है। मजहबी गुटों व मण्डलियोंको 'डिसमिस' कर दिया गया है। अन्धश्रद्धाके शिकारों द्वारा दी हुई भेंटें सरकारने जनताकी शिक्षा व विज्ञानके प्रचारमें खर्च कर दी हैं। लेकिन देशमें मामूली धार्मिक स्वतन्त्रता है। पुराने जमानेकी तरह किसीको किसी खास मजहबके माननेके कारण कष्ट नहीं दिया जाता, क्रान्तिकालमें शायद दिया गया हो। गिरजाघर, मसजिद, विहार, सीनागोग आज क्लब, भोजनालय, सिनेमा-भवन, नाट्य-मन्दिर व स्कूल बन गये हैं। जो अंधेरी कोठरियां थीं, या निर्माणकलाके हानिकारक नमूने थे, वे तोड़ डाले गये हैं। कई बहुत सुन्दर गिरजोंमें पुराने जमानेकी मजहबी धर्मान्धता व कट्टरताके खाके खींचे गये हैं। मजहबके विरुद्ध प्रचार है, लेकिन धर्मके विरुद्ध नहीं। रूसमें मजहब था भी कुछ विचित्र। जार भी उसके पैगम्बरोंमेंसे एक था, जैसे हमारे यहां आगा खां। और आगा खां भी जारके समक्ष भलेमानस हैं। बोलशेविकोंकी फिलासफीमें तो "धर्म जनताका अफीम है।"

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अरविन्दकी आत्मकथा

अनु०—श्री गोपीकृष्ण

[ श्री अरविन्द घोष मई १९०८ में राजनीतिक षड़यन्त्रके अपराधमें गिरफ्तार किये गये थे। इनके ऊपर चलाये गये मामलेका विचार अन्यान्य क्रान्तिकारियोंके साथ ही हुआ था। इस विख्यात मामलेमें बहुतसे क्रान्तिकारियोंको द्वीपान्तर-वास तथा फांसीकी सजा हुई थी। अरविन्दको केवल एक वर्षकी कैद हुई। उन्होंने अपनी 'काराकाहिनी' शीर्षक पुस्तकमें इस सम्बन्धमें अपने अनुभव लिखे हैं। वर्तमान लेख इसी आत्मकथाका संक्षिप्त (abridged) अनुवाद है—स० वि० ]

उस दिन मई १९०८ की पहली तारीख थी। मैं 'वन्देमारतम्' आफिसमें बैठा था। अकस्मात् श्रीयुक्त श्याम-सुन्दर चक्रवर्तीने मेरे हाथ मुजफ्फरपुरसे आया हुआ एक तार दिया। तार पढ़नेसे मालूम हुआ कि मुजफ्फरपुरमें बम फटने-से दो युरोपियन स्त्रियोंका प्राणान्त हो गया है। उस दिन 'एम्पायर' नामक पत्रमें मैंने यह भी पढ़ा कि पुलिस कमिश्नर-ने कहा है कि इस हत्याकाण्डमें लिप्त व्यक्तियोंको वह जानते हैं, और वे लोग शीघ्र ही गिरफ्तार किये जायेंगे। उस समय मुझे यह बात मालूम नहीं थी कि इस सन्देहका मुख्य लक्ष्य-स्थल मैं हूं, पुलिसकी दृष्टिमें मैं ही प्रधान हत्याकारी, राष्ट्र-विप्लवी युवकोंका मन्त्रदाता तथा गुप्त नेता हूं। मुझे मालूम नहीं था कि वही दिन मेरे जीवनके एक अङ्कका अन्तिम पृष्ठ है, मेरे सामने एक वर्षका कारावास है और एक वर्ष मुझे मानव-समाजके बाहर पिञ्जराबद्ध पशुकी तरह रहना होगा।

शुक्रवारकी रात मैं निश्चिन्त अवस्थामें निद्रामग्न था। प्रातःकाल प्रायः पांच बजेके समय मेरी बहनने मुझे पुकारा। मैं जाग पड़ा। कुछ ही क्षण बाद मेरा छोटा कमरा सशस्त्र पुलिससे भर गया। मैंने सुना कि एक श्वेताङ्ग वीरने मेरी बहनकी छातीपर पिस्तौलका निशाना करना चाहा था। मैंने अपनी आंखों यह दृश्य नहीं देखा। मेरे हाथमें हथकड़ी डाली गयी और कमर रस्सीसे कस दी गयी। पर आध घण्टेके बाद खोल दी गयी।

खानातलाशी साढ़े पांच बजेसे शुरू हुई और साढ़े ग्यारहमें समाप्त हुई। खानातलाशीमें कोई खास चीज पायी नहीं गयी। पर मुझे याद आता है कि एक छोटेसे कार्डबोर्डके बक्समें दक्षिणेश्वरकी मिट्टी सुरक्षित थी, उसे क्लार्क साहबने बहुत देर तक अत्यन्त सन्दिग्ध दृष्टिसे निरीक्षण किया। उन्हें इस बातका सन्देह हो रहा था कि न मालूम यह क्या नया भयङ्कर स्फोटक पदार्थ है। बन्धुवर विनोद गुप्त अपने स्वाभाविक ललित पदविन्याससे कमरेमें कूदफांद मचा रहे थे और ताकपरसे या किसी दूसरे स्थानसे कागज-पत्र निकाल-कर "अत्यावश्यक! अत्यावश्यक!" कहकर क्रेगान साहबके हाथमें देते थे। ये 'अत्यावश्यक' कागज क्या थे, मुझे नहीं मालूम।

विनोद बाबूके तत्त्वावधानमें हम लोग थानेमें गये। थानेमें उन्होंने मेरे साथ विशेष भद्र व्यवहार किया। वहीं स्नानाहार करके लालबाजार जाना पड़ा। कुछ समय तक वहां रहकर रायड स्ट्रीटमें मुझे पहुंचाया गया। शाम तक वहीं रहा। रायड स्ट्रीटमें डिटेक्टिव-पुङ्गव मौलवी शम्स-उल-आलमके साथ मेरा प्रथम आलाप हुआ। उस समय मौलवी साहबका विशेष प्रभाव तथा उत्साहोद्यम नहीं था। अभी वह बमके मामलेके प्रधान अन्वेषणकारी किंवा नार्टन साहबके Prompter अथवा जीवित स्मरण-शक्ति-रूपमें व्यक्त नहीं हो पाये थे। मौलवी साहबने मुझे धर्मके सम्बन्धमें एक सरस वक्तृता सुनायी। उन्होंने फरमाया कि "हिन्दू-धर्म तथा इसलाम धर्मका मूलमन्त्र एक ही है; हिन्दुओंके ओङ्कारकी त्रिमात्रा अ+उ+म् का कुरानके प्रथम तीन अक्षर अ, ल, म से बहुत साम्य है। भाषातत्त्वके नियमानुसार 'ल' के बदले 'उ' व्यवहृत होता है, अतएव हिन्दुओं तथा मुसलमानोंका एक ही मन्त्र है, तथापि अपने-अपने धर्मका पार्थक्य रखना जरूरी है। मुसलमानोंके साथ भोजन करना हिन्दुओंके लिए उचित नहीं है। * * *" इसके बाद एक-बार उन्होंने कहा—"आपने अपने छोटे भाईको बम तैयार करनेके लिए अपना बाग देकर बड़ी भूल की।" मैंने उनकी बातका अर्थ समझकर मुसकाकर कहा—"बागमें जैसा मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अधिकार है वैसे ही मेरे भाईका भी। मैंने बम तैयार करनेके लिए उसे बाग दिया, यह खबर आपको कहां मिली?" इसपर मौलवी साहब कुछ संकुचित हुए।

सन्ध्याके समय मैं और शैलेन्द्र लालबाजार हाजतमें लाये गये। एक दुमञ्जिले मकानमें हम दोनों एक-साथ रखे गये। पर कुछ देर बाद पुलिस कमिश्नर हैलिडे साहब आ पहुंचे और सार्जण्टके प्रति बिगड़े कि उसने दो अपराधियोंको एक-साथ रख दिया। शैलेन दूसरे कमरेमें ले जाया गया। हैलिडे साहबने मुझसे पूछा—"इस हत्याकाण्डमें लिप्त होनेके कारण आप क्या लज्जित नहीं हैं?" मैंने कहा—"मैं लिप्त था, यह अनुमान करनेका आपको क्या अधिकार है?"

रविवारको सारा दिन हाजतमें बीता। मेरे कमरेके सामने सीढ़ियां थीं। सुबहको देखा कि कुछ अल्पवयस्क बालक सीढ़ियोंसे नीचे उतर रहे हैं। मैं उन लोगोंको पहचानता नहीं था, पर अन्दाजसे समझ गया कि ये लोग भी गिरफ्तार होकर आये हैं; बादमें मालूम हुआ कि वे मानिकतला बागानके षड़यन्त्रमें गिरफ्तार हुए हैं।

इसके बाद हमें मजिस्ट्रेट थार्नहिलकी अदालतमें जाना पड़ा। वहांसे अलीपुर ले जाये गये। वहां सेण्ट्रल जेलमें हमारे दलके सब लोग अलग-अलग कमरेमें निर्जन कारागार (Solitary cell) में रख दिये गये।

[ २ ]

मेरा निर्जन काराकक्ष नौ फुट लम्बा और पांच-छ फुट चौड़ा था। इसमें कोई खिड़की नहीं थी। यह पिञ्जर मेरा वासस्थान नियत हुआ। बाहर एक छोटा-सा आंगन था, ईंटकी ऊंची दीवार और काठका एक दरवाजा था। उस दरवाजेके ऊपरी हिस्सेमें आदमीकी आंखके समान एक क्षुद्र गोलाकार छिद्र था। दरवाजा बन्द होनेसे सन्त्री इस छिद्रसे समय-समयमें देखा करता है कि कैदी क्या कर रहा है। पर मेरे आंगनकी तरफका दरवाजा अक्सर खुला ही रहता था। जिन्हें विशेष दण्ड दिया जाता है उनके आंगनका दरवाजा एकदम बन्द रहता है; मनुष्य-संसारसे सम्पूर्ण वञ्चित होकर सन्त्रीकी आंख तथा खाद्य-परिवेशनकारी कैदियोंके दो बार आगमनके अतिरिक्त बाह्य जगत्से उनका और कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

सामान-सरञ्जामके सम्बन्धमें भी कोई त्रुटि नहीं थी। एक थाली और एक कटोरा आंगनको सुशोभित करते थे। थालीको जरा जोरसे दबाते ही वह अरबके घूर्णमान दरवेशकी तरह मण्डलाकार नृत्य करने लगती। ऐसी हालतमें एक हाथसे खाने और दूसरे हाथसे थालीको पकड़े रहनेके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं था। थालीसे कटोरा अधिक उपकारी था। जड़ पदार्थोंमें इसकी तुलना ब्रिटिश सिविलियनसे की जा सकती है। सिविलियनमें जिस प्रकार सब कामोंमें स्वभावगत निपुणता तथा योग्यता पायी जाती है,—जज, शासनकर्ता, पुलिस, शुल्क विभागका कर्ता, म्युनिसिपलिटीका अध्यक्ष, शिक्षक, धर्मोपदेशक आदि कोई भी पेशा तत्काल ग्रहण कर लेता है, मेरा कटोरा भी उसी प्रकार था। उसे जात-पांत, छुआछूतका ख्याल नहीं था। उसी कटोरेमें जल लेकर शौच-क्रिया करता था, उसीसे हाथ-मुंह धोता था, उसीसे स्नान होते थे, थोड़ी देर बाद भोजनके समय उसीमें दाल या तरकारी दी जाती थी, जलपान और आचमन भी उसीसे करना पड़ता था। ऐसी सर्वकार्यक्षम मूल्यवान वस्तु अंगरेजोंके जेलमें ही प्राप्त हो सकती है।

पहले ही कह चुका हूं कि निर्जन कारावास खास सजा समझी जाती है और इसका मूलतत्त्व है यथासाध्य मनुष्य-संसर्ग तथा मुक्ताकाश-सेवाका वर्जन। शौचकी व्यवस्था यदि बाहर की जाय तो इस तत्त्वमें भङ्ग हो जाता है। इस कारण इस विशेष क्रियाके लिए भीतर ही कोलतारसे सुगन्धित दो टिनके टुकड़े दिये जाते थे। मेहतर सुबह-शाम आकर उसे साफ कर जाता था। पर असमयमें यदि पाखानेकी हाजत हो बैठती तो प्रायश्चित्तके बतौर कुछ घण्टे तक दुर्गन्धका उपभोग करना पड़ता था। इसमें सन्देह नहीं कि शयन-गृहके पास ही शौच-गृहका होना विलायती सभ्यताका एक विशेष अङ्ग है, पर एक छोटेसे कमरेमें खाना और पाखाना—इन दोनों क्रियाओंका समापन too much of a good thing (एक उत्तम विषयका आवश्यकतासे अधिक उपयोग) है। हम कु-अभ्यासग्रस्त भारतवासियोंके लिए सभ्यताके इतने उच्च सोपानपर चढ़ना बड़ा कष्टकर है।

गरमीके दिन थे। मेरे छोटे-से कमरेमें वायुप्रवेश प्रायः निषिद्ध था, पर मई महीनेकी प्रचण्ड धूपके लिए निषेध नहीं था। सारा कमरा भट्टीकी तरह जलने लगता। इस भट्टीमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अदम्य जलतृष्णा बुझानेका उपाय बालटीका अर्द्ध उष्ण जल था। बार-बार उसे पीता, पर तृष्णा कम होनेके बजाय उससे और बढ़ती थी। जिस दिन पानी बरसता था, वह दिन बड़े आनन्दमें बीतता था। पर इसमें भी एक अछविधा यह थी कि आंधी चलते ही धूल-तृण-संकुल प्रभञ्जनके ताण्डव-नृत्यके बाद मेरे पिंजड़ेमें एक छोटा-सा जलप्लावन हो जाता था। इसका फल यह होता था कि रातको भींगा हुआ कम्बल लेकर कमरेके एक कोनेमें पलायनके अतिरिक्त दूसरा उपाय नहीं रह जाता था। जलप्लावित मिट्टी जब तक सूख न जाती तब तक निद्राकी आशा त्यागकर चिन्ताका आश्रय लेना होता था, क्योंकि शौच-क्रियाकी सामग्रीके पास एक शुष्क स्थानके अतिरिक्त और सर्वत्र पानी रहता था। शौचस्थानके पास कम्बल बिछानेकी प्रवृत्ति नहीं होती थी।

हम लोग सब भद्र-सन्तान थे। हममेंसे बहुतसे जमीन्दार-पुत्र थे; बहुतसे ऐसे थे जो वंशमें, विद्यामें, गुणमें, चरित्रमें इंगलैण्डके शीर्ष-स्थानीय व्यक्तियोंके समकक्ष थे। हम लोग किसी खून, चोरी या डकैतीके अपराधमें नहीं पकड़े गये थे। देशके लिये राजनीतिक षड़यन्त्रके अपराधमें गिरफ्तार हुए थे; तिसपर बहुतोंके दोषके सम्बन्धमें प्रमाण-का एकदम अभाव था, केवल सन्देहपर ही वे पकड़े गये थे। ऐसी हालतमें सामान्य चोर या डाकूकी तरह—बल्कि यह कहिये कि पशुकी तरह पिंजड़ेमें बन्द रख कर पशुके लिए भी अखाद्य खाना खिलाना, जलकष्ट, क्षुधा-तृष्णा, धूप, मेंह, शीत सहन करनेको बाध्य करना, इससे ब्रिटिश राज-पुरुष या ब्रिटिश जातिकी गौरव-वृद्धि नहीं होती।

इस अलीपुर जेलमें अपने देशके कैदी, अपने देशके किसान, लुहार, कुम्हार, डोम आदिके साथ रहकर, उनके साथ ही भोजन करके, समान-कष्ट, समान-मानमर्यादा प्राप्त करके मैं समझ गया कि सर्वशरीरी नारायणने इस साम्यवाद, इस एकता, इस देश-व्यापी भ्रातृ-भावमें सम्मत होकर मेरे जीवन-व्रतमें अपना चिह्न अङ्कित कर दिया है।

मोटे चावलका भात, उसमें धानके छिलके, कङ्कड़, कीड़े, सिलके बाल, मैल इत्यादि अनेक प्रकारके मसाले पड़े हुए, स्वादहीन दालमें अधिकांश भाग जल, तरकारीके स्थानमें घास-पात मिला हुआ साग,—मनुष्यका आहार इतना स्वादहीन, निःसार हो सकता है, इस बातका अनुभव मुझे पहले नहीं था। इस सागकी विसर्ष गाढ़ कृष्ण मूर्ति देखते ही डर गया। दो-एक ग्रास खाकर भक्तिपूर्ण नमस्कार करके उसे त्याग दिया। दिन बीता, पक्ष गया, मास भी समाप्त हुआ, पर नित्य दोनों जून वही भात, वही दाल, वही साग! चीजको बदलनेकी बात तो दूर रही, उसके स्वरूपमें भी कभी लेशमात्र परिवर्तन नहीं हुआ। उसका वही नित्य, सनातन, अनाद्यन्त, अपरिणामातीत अद्वितीय रूप था।

[ ३ ]

जो लोग मेरे साथ एक ही अभियोगमें अभियुक्त थे, उनके साथ जेलमें भेंट नहीं होने पाती थी। वे सब अलग-अलग स्थानोंमें रखे गये थे। बीच-बीचमें पुलिस नाना जाति, नाना वर्ण, नाना आकृतिके साक्षी लाकर identification (शनाख्त) के प्रहसनका अभिनय कराती थी। इस अव-सरपर हम सब लोगोंको आफिसके सामने एक दीर्घ श्रेणीमें खड़ा किया जाता था। जेलके अधिकारी हम लोगोंके साथ जेलके विभिन्न मामलोंके अभियुक्तोंको मिलाकर दिखाते थे। कुछ भी हो, identification की यह परेट अभियुक्तों-को अप्रिय नहीं थी। इससे जेल-जीवनके वैचित्र्यहीन जीवनसे कुछ कालके लिए छुटकारा मिलता था। एक बार इस प्रकारकी परेटके अवसरपर मैंने जेलमें प्रथम बार अपने भाई बारीन्द्रको देखा, पर उसके साथ उस समय बातें न हो सकीं। नरेन्द्रनाथ गोस्वामी * अक्सर मेरे साथ खड़ा होता था। नरेन्द्रनाथ देखनेमें सुन्दर था; लम्बा, तगड़ा और गोरा था। पर उसकी आंखोंमें कुप्रवृत्ति-प्रकाशक भाव पाया जाता था, और उसकी बातोंमें भी बुद्धिमत्ताका कोई लक्षण मैंने नहीं पाया। इस विषयमें अन्यान्य युवकोंके साथ उसका विशेष प्रभेद था। अन्यान्य युवकोंमें उच्च तथा पवित्र भाव अधिक पाया जाता था। उनकी बातोंसे प्रखर बुद्धि, ज्ञानलिप्सा तथा महत् स्वार्थहीन आकांक्षा टपकती थी। पर नरेन्द्र गोस्वामीकी बातें निर्बोध तथा लघुचेता आदमीकी तरह होती थीं। फिर भी उसकी बातोंसे तेज और साहस टपकता था। उस समय उसका पूर्ण विश्वास

* मानिकतला बागानके प्रसिद्ध बमकेसमें नरेन्द्रनाथ गोस्वामी approver बना था।—अनुवादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



था कि वह छूट जायगा। वह कहता—"मेरे पिताजी मुकद्दमे-मामलोंके कीड़े हैं, उनसे पुलिस कभी पार नहीं पा सकेगी। मेरा इजहार भी मेरे विरुद्ध नहीं जायगा; यह प्रमाणित हो जायगा कि पुलिसने मुझे शारीरिक यन्त्रणा देकर मुझसे इजहार लिया है।" मैंने कहा—"तुम पुलिसके फन्देमें थे, इसका गवाह कौन है?" उसने बेझिझक उत्तर दिया—"मेरे पिताजीने सैकड़ों मुकद्दमे किये हैं, ये सब बातें वे खूब समझते हैं। गवाहका अभाव नहीं होगा।" इसी प्रकारके आदमी ही approver होते हैं।

जेलमें अभियुक्तोंकी अनर्थक असुविधा तथा नाना कष्टोंका उल्लेख मैं कर चुका हूं। पर साथ ही यह भी कह देना उचित होगा कि यह सब जेलकी प्रणालीका दोष है। इन सब जेलोंमें किसीकी व्यक्तिगत निष्ठुरता या मनुष्योचित गुणोंका अभाव नहीं था। बल्कि अलीपुर जेलमें जिनके ऊपर तत्त्वावधानका भार था, वे सब बड़े सज्जन, दयावान तथा न्यायपरायण थे। इस जेलके अंगरेज सुपरिण्टेण्डेण्ट एमर्सन साहब तथा बङ्गाली अस्पतालके असिस्टेण्ट डाक्टर वैद्यनाथ चटर्जीके असाधारण गुणसे वहां जेल-प्रणालीका दोष बहुत-कुछ लघु हो गया था।

जेलर योगेन्द्र बाबू दक्ष तथा योग्य व्यक्ति थे, सन्देह नहीं; पर वह एमर्सन साहबकी तरह महात्मा नहीं, केवल सामान्य सरकारी भृत्य थे। नौकरीके प्रति उनका प्रबल मोह था। उनके पेन्शन लेनेका समय निकटवर्ती होनेसे वह जनवरीमें दीर्घ परिश्रमोपार्जित विश्राम भोग करनेकी आशा किये बैठे थे। पर बीचमें बम-केसके अभियुक्तोंका आगमन देखकर वह अत्यन्त भीत और चिन्तित हो गये थे। उन्हें यह दुश्चिन्ता सताने लगी कि ये सब उग्रस्वभाव तेजस्वी बङ्गाली लड़के न मालूम किस समय क्या उपद्रव कर बैठें। अगस्त मासमें बोकानन साहब जेल-निरीक्षण करने आये और सन्तुष्ट होकर चले गये। जेलर महाशय आनन्दित होकर बोले—"अब पेन्शनका भय नहीं है।" पर हाय रे मनुष्यकी आशान्धता! उनके इस कथनके पांच दिन बाद ही नरेन्द्र गोस्वामी कन्हाई द्वारा जेलके भीतर ही मार डाला गया। फल यह हुआ कि योगेन्द्र बाबूकी नौकरी चली गयी और शोक तथा रोगके मिलित आक्रमणसे उनकी मृत्यु भी हो गयी।

[ ४ ]

अस्पतालमें बङ्गाली डाक्टर वैद्यनाथ बाबू ही सर्वेसर्वा थे। उनके ऊपरके कर्मचारी डाक्टर डेली अत्यन्त सज्जन तथा विचक्षण पुरुष थे। वह आयरिश थे, और उस उदार तथा भावुक जातिके अनेक गुण उनमें वर्तमान थे। वह अभियुक्त बालकोंका शान्त आचरण तथा प्रफुल्लता देखकर उनकी बड़ी प्रशंसा करते थे और अल्पवयस्क अभियुक्तोंके साथ हंसी-खुशीकी बातें करते थे, और अन्य अभियुक्तोंके साथ राजनीति, धर्म तथा दर्शन-विषयक चर्चा करते थे।

वैद्यनाथ बाबूके हृदयमें प्रगाढ़ देशभक्तिका भाव वर्तमान था, पर सरकारी नौकरीके कारण लाचार थे। उनका एकमात्र दोष यह था कि वह अभियुक्तोंके प्रति अत्यधिक सहानुभूति प्रदर्शित करते थे। इसी दोषके कारण गोस्वामीकी हत्याकी घटनाके अनन्तर उनकी नौकरी चली गयी।

इस निर्जन कारावासमें और कोई काम न होनेसे अधिक समय ध्यानमें बितानेकी चेष्टा करने लगा। किन्तु मनुष्यके सहस्र पथोंकी ओर धावित चञ्चल मनको संयत तथा एक लक्ष्यमें केन्द्रित करना अनभ्यस्त व्यक्तिके लिए सहज-साध्य नहीं है। कई दिन तक मनकी निश्चेष्टतासे पीड़ित रहा। एक दिन मैंने समस्त प्राणसे भगवान्‌को पुकारा, बुद्धिभ्रंशसे बचानेकी प्रार्थना की। उसी मुहूर्तमें मेरे समस्त अन्तःकरणमें सहसा ऐसी शान्ति व्याप्त हो गयी, मन ऐसा स्निग्ध तथा प्रसन्न हो गया, जैसा पूर्व जीवनमें कभी अनुभव नहीं किया था। मेरे मनमें यह विश्वास दृढ़ हो गया कि मङ्गलमय भगवान्‌ने मेरे मङ्गलके लिए ही मुझे कारागृहमें भेजा है, निश्चय ही मैं जेलसे मुक्त हो जाऊंगा।

इस प्रकारकी मानसिक अवस्थाके दृढ़ होनेमें कई दिन लग गये। इसी बीच मैजिस्ट्रेटकी अदालतमें मुकद्दमा शुरू हुआ। निर्जन कारावासकी नीरवतासे सहसा बहिर्जगत्‌के कोलाहलमें आनेसे तो मन बड़ा विचलित हो उठा। अभियुक्त बालकोंका हास्य-विनोद बड़ा प्रिय मालूम होता था, नहीं तो अदालतका समय बिताना बड़ा कष्टकर हो जाता।

पहले दिन बड़े सम्मानपूर्वक हम लोग अदालतमें ले जाये गये। हमारे साथ युरोपियन सार्जण्टोंकी क्षुद्र पल्टन थी और उनके पास गोली भरी हुई पिस्तौलें थीं। जेलकी गाड़ीमें चढ़नेके समय सशस्त्र पुलिस हमें घेरे रहती, उतरनेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समय भी यही हाल रहता था। यह विकट आयोजन देखकर किसी-किसी अनभिज्ञ दर्शकके मनमें अवश्य ही यह शङ्का होती थी कि ये हास्यप्रिय अल्पवयस्क बालकगण न मालूम किस दुस्साहसिक विख्यात महायोद्धाओंके दलभुक्त हैं। कुछ दिन तक यही नियम जारी रहा; इसके बाद धीरे-धीरे यह प्रकाण्ड आयोजन घटने लगा। अन्तमें केवल दो-चार सार्जण्ट हमें ले जाने लगे। इस प्रकारकी शिथिलता देखकर पुलिस कमिश्नर साहब तथा कुछ सुपरिण्टेण्डेण्ट लोग बिगड़े। पर सार्जण्टोंने देखा कि ये बम-भक्तगण बड़े शान्त-शिष्ट हैं, न तो भागनेका उद्योग उनमें पाया जाता है, न किसीकी हत्या-का षड़यन्त्र रचते हैं। व्यर्थ उनके पीछे अपना अमूल्य समय नष्ट करना उन्होंने उचित नहीं समझा। प्रारम्भमें अदालतमें प्रवेश करने तथा बाहर निकलनेके समय हम लोगोंकी तलाशी ली जाती थी, पर दो-चार दिन बाद वह भी बन्द हो गयी। हम लोग निर्विघ्न पुस्तक, रोटी, चीनी इत्यादि जिस चीजकी इच्छा होती अदालतमें ले जाते। पर सार्जण्ट लोगोंका सन्देह फिर भी दूर नहीं हुआ। न मालूम कौन किस समय मजिस्ट्रेट साहबके महिमान्वित मस्तकपर पादुका निक्षेप कर बैठे, इस भयसे वे लोग हमें जूतों सहित भीतर नहीं जाने देते थे।

[ ९ ]

मुकद्दमेकी कार्रवाईका स्वरूप कुछ विचित्र था। प्रतिदिन विचित्र गवाहीका वही अविराम स्रोत, सरकारी साक्षियों और कान्सेलका नाटकोचित अभिनय, बालक-स्वभाव मजिस्ट्रेटकी बालकोचित चपलता और लघुता, अपूर्व अभियुक्तोंका अपूर्व भाव देख-देखकर बहुधा यही कल्पना मनमें उदित होती कि हम लोग ब्रिटिश विचारालयमें नहीं बैठे हैं, बल्कि किसी नाटक-गृहके रङ्गमञ्चमें या किसी कल्पनापूर्ण औपन्यासिक राज्यमें बैठे हैं।

इस नाटकके प्रधान अभिनेता थे सरकार बहादुरके कान्सल नार्टन साहब। वह केवल प्रधान अभिनेता ही नहीं, इस नाटकके रचयिता, सूत्रधार (Stage manager) तथा साक्षियोंके स्मारक—प्रामटर—थे; इस प्रकारकी वैचित्र्यमय प्रतिभा संसारमें विरल दिखायी देती है। वह किसी जमानेमें कांग्रेसके नेता थे, इसीलिए शायद विरुद्धाचरण या प्रतिवाद सह्य करनेमें अक्षम थे और विरुद्धाचारीको शासित करनेके आदी थे। कानूनके सम्बन्धमें उनकी अभिज्ञताकी प्रगाढ़ता-पर मुग्ध होना कठिन है। पर वक्तृताके अनर्गल स्रोत, बातकी सफाई, केवल वक्तृत्वके जोरसे लघु साक्ष्यको गुरु करनेकी अद्भुत क्षमता, अमूलक अथवा अल्पमूलक उक्तिकी दुस्साहसिकता, साक्षी या जूनियरर बैरिस्टरके ऊपर रौद्र और सफेदको काला और कालेको सफेद करनेकी मनो-मोहिनी शक्ति तथा अतुलनीय प्रतिभा देखकर मोहित होना पड़ता था। नार्टन साहब हमारे नाटकके शेक्सपीयर थे। पर शेक्सपीयर और नार्टन साहबमें एक प्रभेद था। शेक्सपीयर अपने नाटकके लिए संगृहीत उपादानमेंसे बहुत-कुछ छोड़ भी देते थे; पर नार्टन साहबने भला-बुरा, सत्य-मिथ्या, सङ्गत-असङ्गत, अणोरणीयान्, महतोमहीयान जो-कुछ भी पाया, उसमेंसे कुछ भी न छोड़ा, तिसपर उन्होंने अपने स्वकपोल-कल्पित कारण, अनुमान तथा परिणाम संग्रह करके ऐसा सुन्दर 'प्लाट' तैयार कर दिया था कि बड़े-बड़े कवियों तथा औपन्यासिकोंको भी इस सम्बन्धमें हार माननी पड़ी। निन्दापरायण लोग कह सकते हैं कि जिस प्रकार शेक्सपीयरके हास्य-प्रधान पात्र फालसटाफके होटलके खर्चमें खाद्यके एक क्षुद्र अंश तथा मद्यके असंख्य गैलनका समावेश था, उसी प्रकार नार्टनके 'प्लाट' में रत्ती-भर वास्तविक प्रमाणके साथ दस मन अनुमान भरा था। पर निन्दुक भी 'प्लाट' के रचना-कौशलकी प्रशंसा करनेको बाध्य होगा। इस नाटकके प्रधान नायकके रूपमें नार्टन साहबने मुझीको निर्वाचित किया था। जिस प्रकार मिल्टनके Paradise lost नामक महाकाव्यमें शैतानका स्थान प्रमुख है, उसी प्रकार मैं नार्टन साहबके कल्पना-प्रसूत महाविद्रोहके केन्द्र-स्वरूप "असाधारण तीक्ष्ण-बुद्धि-सम्पन्न, क्षमतावान तथा प्रताप-शाली bold bad man" था। उनके कथनानुसार मैं ही "राष्ट्रीय आन्दोलनका आदि-अन्त, स्रष्टा तथा ब्रिटिश साम्राज्यका सिंहासन-प्रयासी" था। उत्कृष्ट तथा तेजस्वी अंगरेजी भाषामें लिखा कोई लेख देखते ही नार्टन साहब तत्काल कूदफांद मचाकर उच्च स्वरसे कहते कि यह अरविन्द घोषकी करतूत है। मेरा नाम किसी फटे हुए कागजके टुकड़ेमें भी यदि नार्टन साहब कभी देख पाते तो वह परम प्रसन्न होकर सादर यह परम मूल्यवान प्रमाण मजिस्ट्रेटके श्रीचरणोंमें अर्पित करते। दुःखकी बात है, मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अवतार होकर जन्मग्रहण नहीं किया, नहीं तो नार्टन साहब मेरे प्रति इतनी भक्ति तथा अनवरत मेरा ध्यान करनेके कारण अवश्य ही मुक्ति पा जाते। जब मैं बादमें सेशन्स जजकी अदालतमें निर्दोषी प्रमाणित हुआ था तो नार्टन साहब द्वारा रचित झूठकी श्री और गौरव विनष्ट हो गये थे।

कोई-कोई गवाह नार्टन साहबको कभी-कभी बड़ा हैरान कर देते थे। नार्टन साहब यह प्रमाणित करना चाहते थे कि अमुक हस्तलिपि अमुक अभियुक्तकी है। इसपर गवाह यदि कहता कि नहीं, यह तो ठीक अमुक व्यक्तिकी हस्तलिपि नहीं दीखती, हो भी सकती है, मैं ठीक नहीं कह सकता, और बहुत धमकाने, डराने और झल्लानेपर भी यदि नार्टन साहब उससे अपने मनकी बात स्वीकार न करा सकते तो अन्तको प्रश्न करते—"What is your belief?" (तुम्हारा विश्वास क्या है?) साक्षी न तो 'हां' कह सकता था न 'ना', फिर-फिर सन्देहके कारण उसी प्रकारका गोल उत्तर देता। पर नार्टन भयङ्कर गर्जनसे वही प्रश्न करते—"Come sir, what is your belief?" नार्टन साहबके क्रोधके कारण मजिस्ट्रेट भी गवाहके ऊपर बिगड़कर पूछते—"टोमार विस्वास कि आछे?" गवाह बेचारेकी जान आफतमें समझिये। नार्टन साहब और मजिस्ट्रेट तर्जन-गर्जन करके दोनों ओरसे उसे पकड़कर खींचातानी शुरू कर देते थे कि किसी तरहसे वह अमूल्य 'विस्वास' उसकी आंतोंसे निकल पड़े तो काम चले। पर अक्सर 'विस्वास' नहीं निकलता था। कोई-कोई गवाह 'विस्वास' की अपेक्षा प्राणोंको ही प्रिय वस्तु समझकर कृत्रिम 'विस्वास' नार्टन साहबके चरण-कमलोंमें उपहार देकर अपनी जान बचाते थे। नार्टन साहब इसपर अत्यन्त सन्तुष्ट होकर बाकी जिरह स्नेहपूर्वक स्वयं सम्पन्न कर लेते थे।

अधिकांश गवाह नार्टन साहबके प्रश्नोंका अनुकूल उत्तर देते थे। इन गवाहोंमें हमारे परिचित व्यक्ति बहुत ही कम थे। इन परिचितोंमें देवदास करण महाशयने हम लोगोंको खूब हंसाया था। इन सत्यवादी साक्षी महाशयने गवाहीमें कहा कि "मेदिनीपुर सम्मिलनीके अवसरपर सुरेन्द्र बाबू (सुरेन्द्रनाथ बनर्जी) ने अपने छात्र (अरविन्द बाबू) से गुरुभक्तिकी प्रार्थना की थी, इसपर अरविन्द बाबूने कहा—द्रोणने क्या किया था?" करण महाशयका यह कथन सुनकर नार्टन साहबकी उत्सुकता तथा कौतूहलकी सीमा न रही। उन्होंने निश्चय ही यह सोचा था कि द्रोण कोई बमका भक्त या राजनीतिक हत्याकारी होगा, अथवा मानिकतला बागानके 'छात्रभण्डार'के साथ संश्लिष्ट कोई व्यक्ति होगा। उन्होंने इस वाक्यका अर्थ शायद यह लगाया था कि सुरेन्द्र बाबूको गुरुभक्तिके बदले बम पुरस्कार देनेकी बात कही गयी होगी। इसलिए उन्होंने उत्सुकतापूर्वक पूछा—"द्रोणने क्या किया था?" पहले तो साक्षी महाशय प्रश्नका उद्देश्य बिलकुल न समझे। पांच मिनट तक खींचातानी चली। इसके बाद करण महाशयने दोनों हाथ आकाशकी ओर करके नार्टन साहबको सूचित किया कि "द्रोणने अनेकानेक आश्चर्यजनक कार्य किये थे।" "अनेक कार्यसे आपका मतलब क्या है? विशेष कार्य क्या किया था, यही बतलाइये।" साक्षीने बहुत-से उत्तर दिये, पर नार्टन साहब जिस गुप्त रहस्यको जानना चाहते थे उसका समाधान एक उत्तरसे भी नहीं हुआ। इसपर वह बहुत बिगड़े और तर्जन-गर्जन करने लगे। एक वकीलने हास्यपूर्वक यह सन्देह प्रकट किया कि गवाहको शायद मालूम नहीं है कि द्रोणने क्या किया। इस उक्तिसे करण महाशय क्रोध तथा अभिमानसे बिगड़कर लाल हो गये। चिल्लाकर बोले—"क्या कहा? मैं? मैं नहीं जानता द्रोणने क्या किया?" आध घण्टे तक करण तथा नार्टन मिलकर द्रोणके मृत देहको लेकर झगड़ते रहे। प्रति-पांच मिनटके अन्तरमें नार्टन साहब अलीपुरके विचारालयको कम्पित करके यह परम महत्त्वपूर्ण प्रश्न करते जाते थे—"Out with it, Mr Editor, what did Dron do?" उत्तरमें सम्पादक (करण) महाशयने एक लम्बी कहानी आरम्भ कर दी। सारी अदालतमें कह-कहा मच गया। अन्तको टिफनके समय करण महाशय अपना दिमाग ठण्डा करके जब लौटे तो जटिल समस्याकी यह मीमांसा उन्होंने जाहिर की कि द्रोण बेचारेने कुछ नहीं किया था, व्यर्थ इतनी देर तक हम लोग उनकी परलोकगत आत्माका श्राद्ध करते रहे,—अर्जुनने ही गुरु द्रोणका बध किया था। अर्जुनके ऊपर इस मिथ्या लाञ्छनके बाद द्रोणाचार्यने मुक्ति पाकर कैलाशमें सदाशिवको धन्यवाद दिया था कि करण महाशयकी गवाहीसे अलीपुरके बम-केसमें उन्हें खड़े होना न पड़ा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अभियुक्तोंको शनाख्त करनेकी व्यवस्था भी बड़ी रहस्य-मय थी। पहले गवाहसे पूछा जाता था तुम इनमेंसे किसी-को पहचान सकोगे? गवाह यदि कहता—हां, पहचान सकता हूं, तो नार्टन साहब हर्षोत्फुल्ल हो जाते, और यदि वह कहता—नहीं, मैं नहीं जानता, शायद—पहचान सकूं, तो इसपर नार्टन शाहब कुछ म्लान होकर कहते—अच्छा जाओ, कोशिश करो। यदि कोई कहता—मैं नहीं पहचान सकूंगा, तो भी नार्टन साहब उसे सहजमें न छोड़ते; सम्भव है, इतने अभियुक्तोंके मुख देखकर पूर्वजन्मकी कोई स्मृति जाग्रत हो पड़े!

[ ६ ]

मजिस्ट्रेटकी अदालतमें केवल एक ही घटना विशेष उल्लेख-योग्य है—वह है नरेन्द्रनाथ गोस्वामीकी गवाही। इस घटनाके वर्णनके पहले अपनी विपत्तिके साथी बालक अभियुक्तोंके सम्बन्धमें कुछ कहना चाहता हूं। अदालतमें इन्हें देखकर मैं निश्चित रूपसे यह समझ गया था कि देशमें नया युग आ गया है; नयी सन्तति मांकी गोदमें वास करने लगी है। इन बालकोंको देखते ही ऐसा अनुभव होने लगता था मानो अन्य समयके अन्य शिक्षाप्राप्त उदारचेता तेजस्वी पुरुष फिर भारतवर्षमें लौट आये हैं। निर्भीक सरल दृष्टि, तेजपूर्ण वाणी, चिन्ताशून्य आनन्दमय हास्य, इस घोर विपत्तिके समय भी वही प्रसन्नता तथा विषादशून्यता नूतन युगकी नयी जातिके नवीन कर्मस्रोतके लक्षण थे। उनमें क्रूरता, उन्मत्तता तथा पाशविक भाव बिलकुल नहीं था। भविष्यकी चिन्ता न करके उन्होंने हंसी-खेल तथा अध्ययन-समालोचनमें कारावासके दिन बिताये थे। जेलके कर्मचारी, सिपाही, कैदी, यूरोपियन सार्जण्ट, डिटेक्टिव आदि सबके साथ वे शत्रु-मित्रका विचार न करके हिलमिल गये थे। अदालतमें मामला चल रहा है, तीस-चालीस अभियुक्तोंका समस्त भावी जीवन खतरेमें है, उसका फल फांसी अथवा आजीवन द्वीपान्तर हो सकता है, तथापि वे सब अभियुक्त इस सम्बन्धमें बिलकुल उदासीन होकर कोई बङ्किमके उपन्यास, कोई विवेकानन्दका राजयोग या Science of Religion, कोई गीता, कोई पुराण और कोई यूरोपियन दर्शन एकाग्रचित्तसे पढ़ते हुए दिखायी देता है।

हम लोगोंको गाड़ीमें मजिस्ट्रेटके आनेके पहले घण्टेभर अथवा आध घण्टेके लिए अथवा टिफनके समय एक साथ वार्तालाप करनेका अवसर मिलता था। मैं अपने भाई वारीन्द्र अथवा अविनाशके सिवा और किसीके साथ विशेष बातचीत नहीं करता था। पर एक व्यक्ति बीच-बीचमें मेरे साथ आकर बैठ जाता था—वह था भावी मुखबिर (approver) नरेन्द्रनाथ गोस्वामी। गिरफ्तारीके समय नरेन्द्र गोस्वामीने अपना स्वाभाविक साहस तथा प्रग-लभता दिखायी थी। पर लघुचेता होनेके कारण कारावास-का कष्ट तथा असुविधा सह्य करना उसके लिए असाध्य हो गया था। वह जमीन्दारका लड़का था; लाड़-प्यार, भोग-विलासमें लालित होनेके कारण कारावासके कठोर-संयम तथा तपस्यासे बहुत घबरा गया था। किसी भी उपायसे इस यातनासे मुक्त होनेकी इच्छा उसके मनमें दिन-दिन बलवती होने लगी। पहले उसे इस बातकी आशा थी कि अपनी स्वीकारोक्तिका प्रत्याहार करके वह यह प्रमाणित करनेमें समर्थ होगा कि पुलिसने उसे शारीरिक यन्त्रणा देकर दोष स्वीकार कराया था। उसने हम लोगोंको यह सूचित किया था कि उसके पिताने झूठी गवाही संग्रह करनेका निश्चय किया है। पर कुछ ही दिन बाद उसका भाव परिवर्तन हुआ दिखायी देने लगा। उसके पिता और एक मुख्तार उसके साथ जेलमें अक्सर मिलने आया करते थे। डिटेक्टिव शम्सुल आलम भी उसके साथ गुप्त रूपसे बातचीत करते दिखायी देने लगे। इसी बीच नरेन्द्र गोस्वामीमें (अभियुक्तोंसे) प्रश्न करनेकी प्रवृत्ति भी पायी गयी। भारतवर्षके बड़े-बड़े पुरुषोंके साथ हम लोगोंकी घनिष्ठता थी या नहीं, गुप्त समितिको किस-किसने आर्थिक सहायता दी थी, गुप्त समितिके कौन-कौन व्यक्ति बाहर या भारतके अन्यान्य प्रदेशोंमें हैं, अब समितिको कौन परिचालित करेंगे, उसकी शाखा-समितियां कहां-कहां हैं, इत्यादि अनेक प्रश्न वह वारीन्द्र तथा उपेन्द्रसे करता था। गोस्वामीकी इस ज्ञान-तृष्णाकी बात तत्काल सबके कर्णगोचर हो गयी और शम्सुल आलमसे उसकी घनिष्ठताकी बात गुप्त प्रेमालाप न रहकर open secret हो गयी। इस बातपर भी लोगोंने गौर किया कि पुलिसके साथ मुलाकात होनेके बाद उसके मनमें नये-नये प्रश्न सूझते थे। कहना नहीं होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि उसे एक प्रश्नका भी सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया गया।

एक दिन Identification के समय गोस्वामी मेरे पास खड़ा था। उसने मुझसे कहा—"पुलिसवाले अक्सर मेरे पास आते हैं।" मैंने उपहासके बतौर कहा—"आप यह क्यों नहीं कह देते कि सर ऐण्ड्रू फ्रेजर गुप्त समितिके प्रधान पृष्ठपोषक थे। इस बातसे उनका भी परिश्रम सार्थक हो जायगा।" वह बोला—"मैंने इसी ढङ्गकी बात कही है। मैंने कह दिया है कि छेरेन्द्रनाथ बनर्जी हमारे Head हैं और उन्हें मैंने एक बार बम दिखाया है।" मैंने स्तम्भित होकर उससे कहा—"ऐसी बात कहनेका प्रयोजन क्या था?" वह बोला—"मैं ——का श्राद्ध करके छोड़ूंगा। इसी प्रकार और भी खबरें मैंने उन्हें दी हैं। पाजी कहींके Corroboration (समर्थक प्रमाण) ढूंढ़ते-ढूंढ़ते मरेंगे। सम्भव है, इस उपायसे मामला गोल हो जाय।" मेरी ऐसी धारणा है कि तब तक गोस्वामीने approver बननेका पूर्ण निश्चय नहीं किया था। पुलिसको धोखा देकर मामला ठण्डा करनेकी आशा भी उसे थी। चालाकी और निन्दनीय उपायसे कार्य सिद्ध करना दुष्प्रवृत्तकी स्वाभाविक प्रेरणा होती है। मैं दिन-दिन इस बातपर गौर कर रहा था कि गोस्वामीका मन किस प्रकार बदलता जाता है, उसके दुःख, उसकी भावभङ्गी और वार्तालापमें भी परिवर्तन होता जाता है।

प्रारम्भमें किसीने गोस्वामीको यह नहीं जतलाया कि सबोंने उसका गुप्त अभिप्राय समझ लिया है। वह भी ऐसा निर्बोध था कि यह विश्वास किये बैठा था कि मैं गुप्त रूपसे पुलिसकी सहायता कर रहा हूं। एक दिन एक अभियुक्तने उसे छकानेके लिए एक चाल चली। उसने गोस्वामीके पास जाकर कहा—"देखो भाई, अब अधिक सहा नहीं जाता, मैं भी मुखबिर बनूंगा। तुम शम्सुल आलमसे कहो कि वह मेरी रिहाईका भी उपाय कर दे।" गोस्वामी राजी हो गया। उसने उस अभियुक्तसे कहा कि तुम उपेन्द्र तथा अन्य नेताओंके पास जाकर उनकी गुप्त-समिति-सम्बन्धी विशेष तथ्य मालूम करो। यह नकली मुखबिर जरा परिहास-प्रिय था। उसने उपेन्द्र आदिके पास जाकर नरेन्द्र गोस्वामी-को कुछ कल्पित नाम बतला कर कहा—मद्रासमें विश्वम्भर पिल्ले, सतारेमें पुरुषोत्तम नटेकर, बम्बईमें प्रोफेसर भट्ट तथा बड़ौदेमें कृष्णाजीराव भाऊ, ये व्यक्ति गुप्त-समितिकी शाखाओंके नेता हैं। गोस्वामीने आनन्दित होकर यह विश्वास योग्य संवाद पुलिसको दिया। पुलिसने मद्रासकी खाक छान डाली, अनेक पिल्लोंको पाया, पर एक भी पिल्ला विश्वम्भर या अर्द्धविश्वम्भर नहीं मिला, सताराके पुरु-षोत्तम नटेकर भी घनान्धकारमें गुप्त ही रहे, बम्बईमें एक प्रोफेसर भट्ट मिले, पर वह बेचारे शान्त-शिष्ट, राजभक्त भद्र पुरुष थे। वीर कृष्णाजीराव भाऊको लेकर पुलिसने और एक मजा किया। उन्होंने मानिकतला बागानसे बड़ौदाके कृष्णाजीराव देशपाण्डेके नाम किसी 'घोष' द्वारा भेजे हुए एक तारकी नकल बाहर की। इस नामका कोई व्यक्ति था या नहीं, बड़ौदावासी इस बातका कुछ पता न लगा सके। पर सत्यवादी नरेन्द्र गोस्वामीने जब बड़ौदा-वासी कृष्णाजीराव भाऊकी बात कही है तो निश्चय ही कृष्णजीराव तथा कृष्णाजीराव देशपाण्डे एक ही व्यक्ति समझे जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त कृष्णाजीराव देशपाण्डे हों या न हों, हम लोगोंके श्रद्धेय बन्धु केशवराव देशपाण्डे-के नाम चिट्ठियां पायी गयी थीं। इसलिए निश्चय ही कृष्णाजीराव भाऊ, कृष्णाजीराव देशपाण्डे तथा केशवराव देशपाण्डे एक ही व्यक्ति हैं। इससे प्रमाणित हुआ कि केशवराव देशपाण्डे गुप्त षड़यन्त्रके एक प्रधान पण्डे हैं। इसी प्रकारके असाधारण अनुमानों द्वारा नार्टन साहबकी विख्यात theory प्रतिष्ठित थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पतिव्रता या पिशाची ?

इलाचन्द्र जोशी

चारों मित्र टेनिस खेलनेके बाद थके हुए आकर डा० भार्गवके यहां इधर-उधरकी गप्पें उड़ा रहे थे। थकान भूलनेके लिए वे लोग एक चटपटे विषयकी चर्चाकी ओर प्रवृत्त जान पड़ते थे। स्थानीय सनातन-धर्म हाई-स्कूलके किसी अध्यापक महाशयकी पत्नीके सम्बन्धमें शहरमें तरह-तरहकी अफवाहें फैल रही थीं। उसीको लेकर पूर्वोल्लिखित मित्र-मण्डलीमें वाद-विवाद चल रहा था।

मुन्शी किशनलाल, जो उक्त विद्यालयमें भूगोल तथा इतिहास पढ़ाते थे, बोले—"मैं तो जगदीशप्रसादको बहुत दिनोंसे जानता हूं। उनके 'फेमीली एफेयर्स' से भी बहुत-कुछ परिचित हूं। ननिहालके रिश्तेसे मेरी स्त्री भी उनके यहां अक्सर आया-जाया करती है। उसके मुंहसे उनकी स्त्रीके सम्बन्धमें मैंने जो-कुछ सुना है, उससे तो मेरा यही ख्याल था कि वह विशेष सुशीला और सच्चरित्रा गृहिणी होंगी। केवल मेरा ही नहीं, जगदीशप्रसादके मुहल्लेके सभी लोगोंका आज तक यही ख्याल था। समझमें नहीं आता कि आज अचानक कैसे उनकी मति विपरीत हो गयी! उनके समान पतिव्रता तथा गम्भीर-प्रकृति स्त्रियोंका भी अगर ऐसा पतन सम्भव हुआ तो स्वभावसे ही चञ्चला स्त्रियोंपर कैसे विश्वास स्थापित किया जा सकता है!" यह कहकर उन्होंने एक लम्बी सांस ली, जिससे ऐसा अनुमान लगाया जा सकता था कि उन्हें अपने घरकी अवस्थाके सम्बन्धमें भी कुछ सन्देह है।

पण्डित दीनदयालु शर्मा, जो स्थानीय इण्टरमीडियेट कालेजमें अंगरेजी पढ़ाते थे, बोले—"शेक्सपीयरने क्या झूठ कहा है, साहब,—Frailty thy name is woman! स्त्री-जातिपर विश्वास करनेकी सलाह कभी किसी ज्ञानी पुरुषने नहीं दी है।"

डा० भार्गव बोले—"यह आप स्त्रियोंपर सरासर अन्याय करते हैं, शर्माजी! आप 'जेनेरेलाइज' क्यों करते हैं? कुछ विशेष स्त्रियोंके दोषके कारण आप सारी स्त्री-जातिको ही कलङ्कित सिद्ध करना चाहते हैं! मैं तो पुरुषोंकी घोर दुश्चरित्रताकी तुलनामें स्त्रियोंको बहुत उन्नत और श्रद्धाके योग्य समझता हूं।"

मुन्शी किशनलालने कहा—"मेरे मनमें भी स्त्री-जातिके प्रति आज तक बड़ी श्रद्धा थी; पर जगदीशप्रसादकी स्त्रीके सम्बन्धमें जो अफवाह फैली है, अगर वह सच निकली तब तो मुझे स्त्रियोंके सम्बन्धमें अपनी धारणा एकदम बदलनी पड़ेगी। ऐसी पतिव्रता स्त्रीका अगर यह हाल है....."

यहांपर डा० कपूरने मुन्शीजीकी बात काटकर अपना वक्तव्य प्रारम्भ कर दिया। डा० कपूर डा० भार्गवके मित्र थे। दोनोंने साथ ही लखनऊके मेडिकल कालेजमें पढ़ा था। वह कानपुरमें प्रैक्टिस करते थे। इधर कुछ समयसे उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, इसलिए हवा-बदलीके लिए इस शहरमें आये हुए थे। वह मनो-वैज्ञानिक तथा 'हिप्नोटिक' उपायोंसे बीमारियोंका इलाज करनेके लिए प्रसिद्ध थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावोत्पादक था, उनकी आंखोंकी दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण थी, जिससे उनकी प्रखर बुद्धिका परिचय मिलता था। वक्तृत्व-कलामें तो वह अपना सानी नहीं रखते थे। उन्होंने कहा—"देखिये साहब, आप लोगोंका यह भ्रम है कि पतिव्रता स्त्री कभी फिसल नहीं सकती। पर मेरी धारणा और अनुभव बिलकुल इसके विपरीत हैं। मेरा तो यह विचार है कि जो स्त्री जितनी पतिव्रता होगी, उसके फिसलनेका उतना ही डर है। कारण यह है कि पतिव्रता स्त्री—अर्थात् वह स्त्री, जो अपने पतिको प्राणोंसे भी अधिक प्यार करती है—स्वभावसे ही कोमल-हृदय, स्नेहशीला और भावुक होती है, यथार्थ प्रेमके रसका जो स्वाद उसे प्राप्त होता है, वह दूसरी स्त्रियोंको प्राप्त नहीं हो सकता। इस कारण इस रसको अधिक-अधिक प्राप्त करनेकी आकांक्षा सदा उसके मनमें बनी रहती है, और इस सम्बन्धमें वह सामान्य प्रलोभनको भी दमन करनेमें समर्थ नहीं होती।"

डा० कपूरका यह अद्भुत, असाधारण वक्तव्य सुनकर सब लोग स्तम्भित रह गये। डाक्टर साहबके मुखका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सुगम्भीर भाव देखनेसे यह सन्देह नहीं किया जा सकता था कि वह व्यङ्गके बतौर ऐसा अनोखा मत प्रकट कर रहे हैं। श्रोताओंकी चकितावस्था देखकर वह बोले—"आप लोगोंको मेरी बात अवश्य ही अधार्मिक और अविश्वसनीय मालूम होगी। पर मैं इस सम्बन्धमें प्रमाणके बतौर अपने एक घनिष्ठ मित्रकी अत्यन्त दयनीय जीवन-कथा आप लोगोंको सुनाना चाहता हूं।"

सब लोग उत्सुकतापूर्वक डाक्टर साहबके मुखकी ओर ताक रहे थे। डाक्टर साहबने अपनी कहानी इस प्रकार प्रारम्भ की:—

"मेरे मित्रका नाम सूरजप्रसाद था। वह हमारे सह-जातीय थे। वह कानपुरकी एक मिलमें नौकर थे। यह मैं तबकी बात कह रहा हूं, जब वह अपनी घरवालीको लेकर कानपुरमें रहते थे। इसके पहले (उनकी जबानी मुझे यह बात मालूम हुई थी) वह बहुत जगह ठोकरें खा चुके थे। उनके घरकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इसलिए बहुत भटकनेके बाद जब उन्हें यह नौकरी मिली तो उन्हें केवल परम सन्तोष ही नहीं, अपार हर्ष हुआ। पहले मासका वेतन मिलते ही उन्होंने घरसे अपनी स्त्रीको बुला भेजा। प्रायः आठ वर्ष पहले उनका विवाह हो चुका था। इन आठ वर्षोंमें वह कभी सालभर लगातार अपनी स्त्रीके साथ नहीं रहे थे। अन्तको एक दिन घर छोड़कर प्रायः तीन साल तक एक प्रकारसे लापता रहे। न तो घरकी कोई खबर उन्हें मिली, न कोई चिट्ठी उन्होंने कभी घरको लिखी। इधर उनकी स्त्रीको किसी तरह पता चल गया था कि वह कानपुरमें हैं। उसने पत्रपर पत्र भेजना शुरू कर दिया, और प्रत्येक पत्रमें तकाजा रहता था कि वह जल्दी उसे अपने पास बुला लें, नहीं तो वह विष खाकर मर जायेगी, इत्यादि-इत्यादि।

"खैर साहब, आखिर वह अपने पतिके साथ कानपुर आ ही पहुंची। दीर्घ विरहके बाद पति-पत्नीका जो मिलन हुआ, उसके आनन्दका अनुभव आप लोग सहजमें कर सकते हैं। सूरजप्रसादकी पत्नीका नाम शान्ति था। उसकी उम्र उस समय बीस वर्षसे अधिक हो गयी थी, पर ऐसे नाटे कदकी और दुबली-पतली थी कि अठारह वर्षसे अधिक उसकी अवस्था नहीं मालूम होती थी। बड़ी हंसमुख और चञ्चल थी और सबको बच्चों-सी प्यारी लगती थी। मैं आप लोगों-को यह जतलाना भूल गया हूं कि मैं सूरजप्रसादके बहुत पास पटकापुरमें ही रहता था, और उनके यहां मेरा आना-जाना अक्सर रहता था। उनका सङ्ग मुझे इतना पसन्द था कि मैं उसका कुछ वर्णन नहीं कर सकता। घड़ी-भर भी अवकाश पाता तो चट उनके पास चला जाता। कारण यह था कि वह बड़े ही सहृदय, प्रेमी और अत्यन्त सरल-स्वभाव थे। पर मूर्ख नहीं थे। बड़े अध्ययनशील और विचारवान् थे। कुछ भी हो, उनके यहां मेरा आना-जाना रहनेसे उनकी स्त्री-की प्रकृतिको पहचाननेकी विशेष सुविधा मुझे प्राप्त थी। अपने चञ्चल, मर्मभेदी कटाक्ष-बाण वह बीच-बीचमें मुझपर भी छोड़ती थी, पर मैं यह निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि मेरे प्रति उसके इस भावमें पाप-प्रवृत्तिका लेश भी नहीं था—वह स्वभाववश अपने अनजानमें ऐसा करती थी।

"सूरजप्रसादकी जबानी मैंने सुना है कि जब वह पहले-पहल कानपुर आयी तो ऐसी उमङ्ग, ऐसा प्रेम, ऐसी भावुकताका तूफानी मेंह अपने साथ लायी कि उनका हृदय उसने तर-बतर कर दिया। कुछ दिनों तक तो नित्य उनके पांवोंको कुछ देर तक अपने सिरपर रखनेका नियम उसने बना लिया था। वह कभी उन पांवोंको सहलाती, कभी चूमती, कभी छातीसे लगाती, कभी सिरपर रखती। कभी उन्हें धोकर उनके चरणोदकसे मार्जन करती। अंगरेजीमें जिसे 'काक्वेट्री' कहते हैं, उस कलामें वह निपुण थी, पर उसकी इस प्रेम-जनित चञ्चल हाव-भावकी कलामें सहृदयता भी पूर्ण मात्रामें वर्तमान थी। इसलिए सूरजप्रसादको उसने थोड़े ही दिनोंमें सब ओर मन्त्रमुग्ध कर लिया था। दीर्घ विरहके बाद उन्हें पत्नीका यह प्रेम एकदम नया जान पड़ने लगा, और ऐसा मालूम होने लगा, जैसे अभी-अभी उनका विवाह हुआ हो।

"कुछ महीने इसी प्रेमानन्द-जनित गद्गद, भावमग्न अवस्था और सुमधुर आलाप-प्रलापमें बीत गये। शान्तिका साथ देनेके लिए सूरजप्रसादने अपनी मांको भी बुलाया था। पर उनकी मांने जब देखा कि उनके बेटेपर बहूने ऐसा 'जादू' कर दिया है कि उनके साथ दो-घड़ी सुख-दुःखकी बातें करनेका अवकाश भी नहीं रहता,—दफ्तरसे वापस आते ही बहूके पास बैठ जाता है और उनसे कभी शिष्टाचारके बतौर भी तबियतका हाल तक नहीं पूछता, तो उन्होंने घर वापस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चले जानेका विचार कर लिया। एक दिन उनका छोटा लड़का आकर उन्हें अपने साथ घर ले गया। असल बात यह थी कि शान्ति अपने ऊपर सासकी निगरानीसे बिलकुल प्रसन्न नहीं थी। वह निर्द्वन्द्व अवस्थामें एकाधिकारिणी रानीकी तरह निर्मुक्त रहना चाहती थी। इतने दिनों तक सास, ननद, जेठानी, देवरानीके बीच बन्धनकी दशामें रहकर वह अत्यन्त मानसिक कष्ट पा रही थी। अपने रूप-यौवनकी बहारको पूर्णतया झलकाने और अपने प्रेम-पूर्ण हृदयके रसको इच्छानुसार छलकानेकी उत्कट अदमनीय अभिलाषा उसे बहुत दिनोंसे तरङ्गित कर रही थी। इसलिए नाना तिरिया-चरित्रोंसे, अपने सरल-हृदय पतिको अपनी मुट्ठीमें करके वह पतिव्रता सूरजप्रसादको मांके विरुद्ध भड़-कानेके उद्देश्यसे निरन्तर उनके कानोंमें विष डालती जाती थी। पुत्रको मांके विरुद्ध करना कोई आसान काम नहीं है। इसीसे शान्तिकी निगूढ़ रहस्य-भरी बुद्धिका पता चल सकता है। वह वास्तवमें 'जादू' जानती थी।

"मांके चले जानेपर सूरजप्रसादको प्रारम्भमें कुछ दुःख हुआ, पर फिर वह अपनी मायामयी पत्नीके मोहन-मन्त्रके वश होकर उसके ऐन्द्रजालिक बाहुपाशमें पूरी तरहसे आबद्ध हो गये। वह 'फीमेल इमेन्सिपेशन' के पक्षपाती थे, जब शान्ति उनके सामने किसी पुरुषसे पर्दा करने लगती तो वह बलपूर्वक उसका घूंघट हटानेकी चेष्टा करते। कोई मित्र जब उनसे मिलने आता तो उसे बेझिझक अपनी स्त्रीके सामने अपने ही कमरेमें बैठाते। इसलिए दफ्तर जानेपर स्त्रीको उस मकानमें अकेली छोड़नेमें कभी किसी प्रकारकी झिझक उनके मनमें उत्पन्न नहीं होती थी। उनके घरमें प्रति-दिन मेह-मानोंका आना-जाना लगा रहता था। जब वह दिनको दफ्तर चले जाते तो शान्ति अपने कमरेमें स्प्रिङ्गकी चारपाई-पर सिर नङ्गा करके खुले हुए बालोंको फैलाकर, एक किताब हाथमें लेकर पढ़नेका बहाना करके नागनकी तरह लहराने लगती। उसके कमरेका दरवाजा खुला रहता, और बरामदेसे होकर आने-जानेवाले व्यक्तियोंकी दृष्टि उसपर पड़ती रहती। उन अतिथियोंमेंसे बहुतसे ऐसे होते, जिन्हें देखकर वह ससुरालमें डेढ़ हाथका घूंघट तान लेती थी। पर कानपुरमें एक तो स्वच्छन्द वातावरणने और दूसरे पतिके 'रिफा-र्म्ड'-विचारोंने उसे विशेष ढीठ बना दिया था। अक्सर यह देखा जाता है कि अवसर मिलनेपर इस प्रकारकी भावुक स्त्रियां एक चरमावस्थासे एकदम दूसरी चरमावस्थामें पहुंच जाती हैं। इनके लिए मध्य मार्गका अस्तित्व ही नहीं रहता। वह नागनकी तरह लहराती हुई पुस्तक पढ़ती रहती, अर्थात् पुस्तक पढ़नेके बहाने गृहागत अतिथियोंपर अपने रूप-यौवनके प्रभावके सम्बन्धमें विचार करती हुई अकारण मुसकराती रहती और बीच-बीचमें किसी विशेष व्यक्तिपर कटाक्ष-बाण भी छोड़ती रहती। विशेष-विशेष अतिथियोंसे वह खूब घुल-घुलकर बातें करती; धर्म, पतिभक्ति, रामायण, समाज-सुधार, पाक-शास्त्र, थियेटर, सिनेमा आदि सभी प्रकारके विषयोंपर वह बड़ी चटपटी भाषामें वाद-विवाद करती थी। इन विषयोंकी वास्तविकतासे अनभिज्ञ होनेपर भी वह वाक्-चातुर्यमें प्रवीण थी, इसलिए सुननेवालेपर उसका काफी असर होता था। सारांश यह कि वह उस मकानमें स्त्री-सङ्गसे प्रायः वर्जित होकर पुरुष-समाजके बीच अविरोध अवस्थामें स्वच्छन्द आनन्दपूर्वक तरङ्गित होने लगी। पुरुषोंका सङ्ग ही उसे पसन्द था। पड़ोसकी स्त्रियां जब कभी-कभी उससे मिलने आतीं भी, उन्हें वह रूखी बातोंसे टाल देती थी। पर यह सब होनेपर भी अपने पतिके प्रति उसका प्रेम बिलकुल कम नहीं हुआ। पतिकी छोटीसे छोटी आवश्यकतापर भी वह पूरा ध्यान देती थी और प्रतिक्षण सच्चे मनसे उन्हें प्रसन्न रखनेकी चेष्टा करती थी।

\+ × +

"एक बार एक सोलह-सत्रह वर्षका एक लड़का, जिसका नाम मुरलीमोहन था और जो सूरजप्रसादका एक दूरस्थ सम्बन्धी था, उनके यहां आकर रहने लगा। वह कानपुरके एग्रीकलचरल कालेजमें पढ़नेके लिए आया था। मुरलीमोहन-की अवस्था सोलह-सत्रह वर्षकी होनेपर भी वह तेरह वर्षसे अधिक अवस्थाका नहीं दिखायी देता था। तिसपर तारीफ-की बात यह थी कि सांसारिक अनुभव और व्यावहारिक बुद्धिमें वह शान्तिके २० वर्षके अनुभवोंसे भी बहुत आगे बढ़ गया था। लड़का बड़ा चुस्त-चालाक था। उसकी प्रकृति-में एक ऐसी बात थी जो शान्तिकी प्रकृतिके बिलकुल अनु-कूल थी। पहले ही दिनसे वह शान्तिसे ऐसा हिल-मिल गया, मानों उससे शान्तिका वर्षोंसे परिचय हो, यद्यपि शान्तिने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसे पहले-पहल इसी वर्ष देखा था। मुरलीमोहनको पाकर शान्तिके कर्महीन दीर्घ दिन बेमालूम कटने लगे। वह अपने मनको ऐसा हलका तथा प्रफुल्ल मालूम करने लगी मानो वह हवामें उड़ रही हो। प्रारम्भमें कुछ दिनों तक मुरली नियमानुसार कालेज जाता रहा; पर धीरे-धीरे इस नियममें व्यतिक्रम होता चला गया। सूरजप्रसादके सामने वह दो-एक पुस्तकें बगलमें दबाकर चल देता, और ऐसा व्यस्त भाव दिखाता, मानों केवलमात्र कालेजकी चिन्तासे ही वह घुला जाता हो। पर सूरजप्रसादके दफ्तर चले जानेके प्रायः घण्टे-भर बाद ही वह वापस चला आता। शान्तिकी चञ्चल प्रकृतिने इस उच्छृङ्खल लड़केका मन ऐसा विचलित कर दिया था कि वह यथा-सम्भव एक मिनटके लिए भी उसका साथ छोड़ना नहीं चाहता। वह ऊपर बैठती तो ऊपर जाता, नीचे जाती तो नीचे आता, रसोई-घर जाती तो वह भी वहीं उसके साथ हो लेता। दिनको शान्ति जब चारपाईपर खुले बालोंसे लहराती हुई लेटी रहती तो मुरली भी वहींपर बैठ जाता। वह बात-बातपर अकारण मुसकराती और इस अदनेसे छोकरेपर भी कटाक्ष-बाण चलानेमें कभी न चूकती।

"दिन-दिन दोनोंकी घनिष्ठता बढ़ती जाती थी। सूरजप्रसादके समान अन्यमनस्क-प्रकृति व्यक्ति भी इस सम्बन्धमें कुछ सचेतसे हो उठे, पर सामान्य रूपसे। क्योंकि एक साधारण लड़केके प्रति मनमें किसी प्रकारके सन्देहका भाव पोषित करना किसी तरह भी बुद्धिमत्ताका परिचायक नहीं कहा जा सकता था; इसलिए जब कभी इस प्रकारकी भावना ( इच्छा न होनेपर भी ) उनके दिमागमें घर करनेकी चेष्टा करती तो वह बलपूर्वक उसे बाहर निकाल फेंकनेका प्रयत्न करते।

"एक दिन दोनों ( शान्ति और मुरलीमोहन ) रङ्ग-रसकी बातोंमें ऐसे रम गये थे कि सूरजप्रसादके दफ्तरसे वापस आनेपर उनके पांवोंकी आहट किसीने नहीं सुनी। अथवा यह भी सम्भव हो सकता है कि सूरजप्रसाद जान-बूझकर दबे पांव ऊपर चले आये थे; या शान्तिने जानबूझकर उनके आगमनके सम्बन्धमें उदासीनता प्रकट करके संभलकर उठ बैठना आवश्यक न समझा हो। कारण कुछ भी हो, ज्योंही सूरज अपने कमरेमें पहुंचे तो देखते क्या हैं कि शान्ति खुले हुए बालोंकी बहार दिखाती हुई चारपाईपर लेटी है, उसके जम्पर-हीन शरीरके एक सिरेसे साड़ीका अञ्चल खिसक गया है। मुरलीमोहन पैतानेमें बैठकर शान्तिका बांया पांव सहला रहा था। दोनों किसी बातपर हंस रहे थे। अचानक सूरजप्रसादको आते देखकर शान्ति हड़बड़ाकर उठ बैठी, और साड़ीसे उसने अपना सिर और शरीर अच्छी तरह ढक लिया। मुरलीमोहन चोरकी तरह उठकर भाग गया। उसका इस ढङ्गसे भागना किसीके मनमें अकारण भी सन्देह उत्पन्न करनेके लिए पर्याप्त था। शान्तिके मुखपर लज्जाका एक हलका रङ्ग कुछ क्षणके लिए छा गया था, पर वह ऐसा सामान्य था कि अन्य किसी व्यक्तिकी दृष्टि उसपर नहीं पड़ सकती थी। किन्तु सूरजप्रसादकी दृष्टि प्रेम-जनित ईर्ष्या द्वारा प्रेरित होनेसे इस सम्बन्धमें धोखा नहीं खा सकती थी। फिर भी शान्ति कुछ विचलित होती न दिखायी दी। उसने यथासम्भव स्वाभाविक स्वरमें अपनी स्वाभाविक प्रभपूर्ण मुसकानके साथ पूछा—'आज क्या जल्दी चले आये ?'

'सूरजप्रसादने सन्देहकी वेदनाको बहुत कुछ दबानेकी चेष्टा करते हुए उदासीनताका भाव दिखाकर कहा—'जल्दी कहां ! पांच बज चुके, और तुम कहती हो जल्दी ! खूब !'

"और दिनों सूरजप्रसाद बड़े प्रेमसे, हास-परिहासके साथ शान्तिकी बातोंका उत्तर दिया करते थे। आज पहली मर्तबा अपनी पत्नीके प्रति उन्होंने ऐसा व्यवहार प्रदर्शित किया। शान्ति सचमुच खिसिया गयी और उसके मर्ममें इससे गहरी चोट पहुंची; क्योंकि पहले ही कहा जा चुका है कि अपने पतिको वह वास्तवमें बहुत प्यार करती थी। सूरजप्रसाद बिना अधिक कुछ बोले कपड़े उतारने लगे और इसके बाद चुपचाप पलंगपर शान्तिकी ओरसे मुंह फेरकर लेट गये; आंखें बन्द करके ऐसा भाव दिखाने लगे जैसे वह सोनेकी चेष्टा कर रहे हों। शान्ति धड़कते हुए कलेजेसे दूसरे पलंगपर नीरव बैठी रही। सूरजप्रसाद यदि उससे कोई कैफियत तलब करते तो वह तत्काल उन्हें समझा-बुझाकर शान्त कर देती—इस बातका उसे पूरा विश्वास था; पर उन्हें चुपचाप लेटते देखकर उसे ऐसा अनुभव होने लगा जैसे उन्होंने उसके मुंहपर घृणासे थूक दिया हो।

"किन्तु सूरजप्रसाद अधिक देर तक चुप रह सकनेवाले आदमी नहीं थे। इसका कारण एक तो यह था कि कुछ घ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दिन-भर दफ्तरमें काम करके शामको बिलकुल थके-मांदे घर वापस आते थे और इस स्थितिमें स्त्रीके साथ हृदयकी दो बातें करनेके अतिरिक्त थकान भूलनेका अन्य कोई साधन उनके लिए नहीं था; दूसरा कारण यह था कि वह स्त्रीको प्राणोंसे भी अधिक चाहते थे, और यथासम्भव उसके हृदय-को जरा भी चोट पहुंचाते उनसे नहीं बनता था। आज जो दृश्य उन्होंने अपनी आंखों देखा था वह मर्मघाती था सन्देह नहीं, पर यह भी उन्होंने मनमें सोचा कि जितना भयङ्कर वह उसे समझे बैठे हैं, सम्भव है वह वास्तवमें उतना भय-ङ्कर न हो। वह जानते थे कि शान्तिसे इस सम्बन्धमें प्रश्न करनेपर वह अपने स्वाभाविक चातुर्यके साथ उनके सन्देहको अपनी युक्तिके बाणोंसे तत्काल खण्ड-खण्ड कर देगी। वह अपने हृदयको स्वयं धोखा देकर भी उस समय वेदनाको किसी तरह भूलना चाहते थे। आंखें खोलकर उन्होंने करवट बदली, और स्निग्ध मुसकानसे हलके व्यङ्गके साथ बोले—'अब तो तुम्हें पैर दबानेके लिए मुरली मिल गया है, अब तुम्हें दूसरोंकी क्या गरज पड़ी है!'

"साहस पाते ही शान्तिने जिद्दी, मुंह लगायी, ढीठ लड़कीकी तरह कहा—'धन्य है आपकी विवेचनाको! तीस सालकी उम्र हो चुकी है; पर अभी बुद्धिमें सयानेपनकी बू भी नहीं आयी। इतनी-सी बात भी नहीं समझ सकते कि एक छोटा-सा लड़का मेरे साथ बैठनेसे मेरा क्या बिगाड़ सकता है! मुरलीके समान बच्चोंको तो मेरी उम्रकी स्त्रियां दूध पिलाती हैं। मैं कम-नसीब हूं। इसलिए अभी तक.....' यह कहकर वह अपनी निस्सन्तान अवस्थाके ख्यालसे सचमुच रो पड़ी। सूरजप्रसाद तत्काल पिघल गये और उसे दिलासा देने लगे। उनका सन्देह जाता रहा (कम-से-कम उस समयके लिए वह निश्चिन्त हो गये।)

"कुछ दिनों तक स्थिति शान्त रही। पर एक दिन फिर सूरजप्रसादको सन्देहका मौका मिला। उस समय वह खा-पीकर दफ्तर जानेकी तैयारी कर रहे थे और अन्यमनस्क भावसे खिड़कीसे नीचेकी ओर देख रहे थे। नीचे शान्ति रस्सीमें एक तौलिया सुखानेके लिए टांग रही थी। मुरली भी वहीं खड़ा था। उनके अलावा आज तीसरा व्यक्ति वहां कोई नहीं था। उसने अचानक टङ्कीसे थोड़ा-सा पानी हाथमें लेकर शान्तिके मुंहपर दे मारा और हंसने लगा। शान्तिने भी आंखें पोंछकर बदलेमें उसके मुंहपर पानी छिड़का। दोनों विशेष भावपूर्वक मुसकराने लगे। सूरजप्रसादका कलेजा धकसे रह गया। घोर अपमानकर पुरानी ईर्ष्या फिर एक बार द्विगुण वेगसे जाग पड़ी। उनके मनमें इस सन्देहके भूतने विकटाकार धारण कर लिया कि आज दिनमें अवश्य ही कुछ-न-कुछ अनर्थमूलक घटना घटनेवाली है। (यद्यपि उन्हें यह भी सन्देह हो रहा था कि जो कुछ अनर्थ होना था हो चुका।) उन्होंने निश्चय कर लिया कि आज दफ्तर नहीं जायेंगे। कपड़े पहनकर बाहर निकले। उनके दफ्तरका एक आदमी पास ही रहता था। छुट्टीकी दरख्वास्त लिख-कर उसके हाथ दे दी, और तत्काल घरको वापस चले। घरके दरवाजेके पास पहुंचनेपर उन्होंने जूतियां उतार लीं, ताकि रसोईके कमरेसे उनके पावोंकी आहट किसीको न सुनायी दे (उन्हें मालूम था कि मुरली और शान्ति इस समय खाना खा रहे होंगे।) लुक-छिपकर बिना किसी शब्दके वह ऊपर चले आये। ऊपर पहुंचनेपर उन्होंने भग-वान्‌को धन्यवाद दिया कि उन्हें दोनोंमेंसे किसीने नहीं देखा। वह सीधे ऊपर छतको चले गये। कड़ाकेकी धूप थी, पर जिस आशङ्का और कौतूहलके ज्वरसे वह जर्जरित हो रहे थे, उसके आगे इस धूपकी गरमी कुछ भी नहीं थी। वह निश्चय-पूर्वक जानते कि ऊपर कोई नहीं आयेगा। बहुत देर तक धड़कते हुए कलेजेसे ऊपर खड़े रहे। इसके बाद उन्होंने आड़से देखा कि शान्ति खाना खाकर गलीसे भीतर आनेका दरवाजा बन्द कर आयी। मुरली उसके शरीरपर हाथ लगाता और वह नाजसे उसका हाथ हटा देती थी। उनके कलेजेपर जैसे कोई अत्यन्त निर्दयतासे निरन्तर हथौड़ेसे मार रहा हो। उनकी अक्ल कुछ काम नहीं करती थी। वह जैसे इस लोकमें नहीं, किसी प्रेतलोकमें निवास कर रहे हों। यह छोटा-सा छोकरा ऐसा विषैला सांप निकलेगा, इस बातकी कल्पना उन्होंने कभी स्वप्नमें भी नहीं की थी। थोड़ी देर बाद दोनों ऊपर आये। छतपरसे उन्होंने अनुमानसे यह मालूम कर लिया कि दोनों उनके कमरेके भीतर चले गये हैं। कुछ देर तक वहीं खड़े रहकर वह उसी प्रकार बिना जूतेके, दबे पांव नीचे उतर आये और फुर्तीसे अपने कमरेके बगलवाले कमरेमें (जो खुला था और खाली था) चले गये। वहांसे वह कान लगाकर दोनोंकी बातें सुनने लगे। स्तब्ध हृदयसे, एकान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


चित्तसे वह सुन रहे थे, ताकि एक शब्द भी उनसे छिपा न रहे। दोनोंके हास परिहासका शब्द उनके हृदयमें आरी चला रहा था। मुरली जिस ढङ्गसे बातें कर रहा था, उससे स्पष्ट था कि वह संसारके दुष्कर्मोंसे केवल परिचित ही नहीं है, उनका अनुभव भी उसे हो चुका है। और शान्ति ? उफ ! कभी उन्होंने इस बातकी कल्पना भी नहीं की थी कि वह ऐसी निर्लज्जताके साथ पर-पुरुषसे बातें कर सकती है। वह भीतर खड़े न रह सके। भ्रान्तावस्थामें बाहर बरामदेमें खड़े होकर आड़से अपनी आंखों वह देखना चाहते थे कि दोनों परस्पर कैसे हाव-भाव प्रदर्शित कर रहे हैं। साथ ही उन्हें यह जाननेकी भी हार्दिक इच्छा थी कि इस रङ्गालापकी पूर्ण परिणति कहांपर होती है। पर हड़बड़ीमें वह बरामदेमें चले ही आये। थोड़ी ही देरमें मुरली ज्योंही भीतरसे दरवाजा बन्द करना ही चाहता था कि अचानक उसकी दृष्टि सूरजप्रसादपर पड़ गयी। वह घबराकर भीतरको वापस चला गया, उस दिनकी तरह भागा नहीं। इस धृष्टतासे वह यह सिद्ध करना चाहता था कि वह निर्दोष है। शान्तिने स्वाभाविक स्वरमें पूछा—'आज क्या दफ्तरमें छुट्टी है ?' सूरजप्रसादने बिना उसकी ओर देखे कहा—'नहीं, कुछ तबीयत खराब है ; आज नहीं जाऊंगा।' यह कहकर वह कपड़े उतारकर लेटनेकी तैयारी करने लगे। मुरलीसे उन्हें यह पूछनेकी न तो इच्छा ही हुई और न साहस ही हुआ कि वह कालेज क्यों नहीं गया। मुरली कुछ देर तक वहां खड़े रहकर फिर चला गया। शान्तिने जब देखा कि सूरजप्रसादके पांवोंमें जूते नहीं हैं, चेहरेमें मुर्दनी छायी हुई है और दफ्तर जाते-जाते वापस चले आये हैं तो वह शङ्कित और भयभीत हो उठी ; पर यह केवल कुछ क्षणके लिए। इसके बाद वह अत्यन्त धैर्यपूर्वक अपने पलंगपर बैठ गयी।

"सूरजप्रसाद कुछ बोले नहीं। वह रहस्यका पूरा पता लगाना चाहते थे, पर जासूसीकी कलामें अभी नौसिखिया थे। अपने अधैर्यके कारण बीच हीमें दोनोंको सावधान होनेका अवसर देकर वह मन-ही-मन कुढ़ने लगे और समझ गये कि अब जीवन-भर उन्हें सन्देहकी आगमें जलते रहना होगा और इस सन्देहका निराकरण कभी नहीं हो सकेगा। यदि स्त्रीकी विश्वासघातकताका पूर्ण प्रमाण असन्दिग्ध-रूपसे उन्हें मिल जाता तो उनका मन निश्चिन्तावस्थामें चैनसे सोता। पर अब सन्देहका धुंधला-पट सदा उनकी आंखोंके आगे छाया रहेगा—क्योंकि अब निश्चय ही दोनों सावधान हो जायेंगे। वह मन-ही-मन अपना खून पीकर रह गये। सबसे अधिक दुःख उन्हें इस बातपर हो रहा था कि उन्हें अत्यन्त नीच लोगोंकी तरह लुक-छिपकर अपनी स्त्रीके चाल-चलनकी परीक्षाके लिए प्रवृत्त होना पड़ा। इसकी आवश्यकता ही क्यों आ पड़ी ! उनके कुलमें कभी आज तक किसीको अपनी स्त्रीपर सन्देह करनेका अवसर नहीं हुआ था, उन्हें अपने उच्च कुलके उन्नत चरित्रके इतिहासका बड़ा गर्व था। पर आज !.....आज स्वयं अपनी स्त्रीके सन्दिग्ध चरित्रके कारण उन्हें उसपर जासूसी करनेको बाध्य होना पड़ा ! सोचते-सोचते उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा जैसे उनकी स्त्रीने नहीं, स्वयं उन्होंने कोई घोर कुकर्म किया हो, जिसके कलङ्कका दाग मानो उनके मनसे किसी प्रकार छूटना नहीं चाहता हो !

* * *

"अपनी स्त्रीसे उन्होंने भर्त्सनाके रूपमें एक शब्द भी नहीं कहा, और उससे बोलना भी नहीं छोड़ा। पर अब वह केवल आवश्यक बातें ही उससे करते थे। शान्तिको पतिके इस रूखे व्यवहारसे दुःख नहीं हुआ हो, सो बात नहीं। पर उसे इस बातका पूर्ण विश्वास था कि शीघ्र ही एक दिन वह अपने-आप उसके प्रति पहलेकी तरह ही प्रेमपूर्वक पेश आने लगेंगे। इसलिए वह धैर्यपूर्वक गृहस्थीके सब काम पूर्ववत् करती जाती थी। मुरलीके साथ उसने बोलना नहीं छोड़ा, क्योंकि उसका ख्याल था कि उसके साथ बोलना एकदम बन्द कर देनेसे उसके पतिका सन्देह उसपर बढ़ जायगा। पर सूरजप्रसाद उसके हर कामको, हरेक हरकतको सन्देहकी दृष्टिसे देखने लगे थे। वह ऐसा मालूम कर रहे थे कि उनकी जादूगरनी डाकिनी स्त्री किसी प्रेतलोकसे उनके सर्वनाशके लिए इस मर्त्यलोकमें आयी है। कभी-कभी उसे देखकर उन्हें वास्तवमें भौतिक भय होने लगता और उनके रोंगटे खड़े हो जाते। ऐसी हालतमें उनकी इच्छा होती कि चिल्लाकर भागें। पर किसी तरह संभलकर चुप रह जाते। अलफ-लैलाकी एक कहानी उन्हें बार-बार याद आती। उन्होंने उसमें पढ़ा था कि एक व्यक्ति एक सुन्दरी स्त्रीको ब्याह लाया। वह स्त्री जब खाना खाने बैठती तो भातमेंसे केवल



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक-एक चावल उठाकर खाती, और पांच-सात चावल खाकर हाथ समेट लेती। पतिको आश्चर्य हुआ कि यह क्या अजब तमाशा है। पर उसने उससे कुछ नहीं कहा, क्योंकि उसके मनमें एक रहस्यमय भयका भाव उत्पन्न हो गया था। एक दिन उसने देखा कि आधी रातको उसकी स्त्री चुपकेसे उसका साथ छोड़कर बाहर चली गयी। उसने भी चुपकेसे उसका पीछा किया। वह स्त्री शहरसे बहुत दूर निकलकर एक कब्रके पास आयी और कब्रको खोदकर मुर्देकी एक लाश निकालकर उस सड़े हुए मांसको नोच-नोचकर खाने लगी। पतिके मनमें आतङ्क छा गया। अन्तको उसे मालूम हो गया कि यह स्त्री डाकिनी है। सूरजप्रसाद अपनी स्त्रीको बिलकुल इसी रूपमें देखने लगे।

* * *

"शान्तिको एक दिन मालूम हुआ कि उसके गर्भ रह गया है। तीन महीनेसे इस सम्बन्धमें उसे सन्देह हो रहा था, पर तीसरे महीने उसे निश्चित रूपसे पता लग गया। आशा और आशङ्काके भाव उसके मनमें एक-साथ पैदा हुए। पुत्रकी इच्छा उसे बहुत दिनोंसे थी; यदि इतने दिनोंके बाद उसकी यह आकांक्षा पूरी होनेकी सम्भावना हुई तो इससे बढ़कर प्रसन्नताकी बात और क्या हो सकती थी! पर इस सम्बन्धमें उसे एक बातका सन्देह था जिससे उसके गर्भके कारण समुज्वल मुखमें भय-जनित वेदनाकी छाया स्पष्ट दिखायी देने लगी। दिन-दिन उसका चेहरा अधिकाधिक पीला पड़ता जाता था, और रह-रहकर उसका शङ्कित हृदय दिन-रात धड़का करता।

सूरजप्रसादको पत्नीके इस शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तनका कुछ भी पता न चला। वह दफ्तरसे आते ही एक पुस्तक हाथमें लेकर पलंगपर लेट जाते और स्त्रीकी आवश्यक बातोंके उत्तरमें केवल 'हां' या 'ना' के अतिरिक्त और कुछ नहीं बोलते थे। शान्तिके मुखकी ओर कभी भूलसे यदि उनकी दृष्टि पड़ जाती तो तत्काल आंखें फिरा लेते। उनकी इस नीरव घृणासे भी शान्तिके मर्ममें कम आघात नहीं पहुंचता था। वह सोचती—यदि साधारणावस्थामें उसके गर्भ रहता तो कैसे आनन्द और हर्षके साथ वह अपने पतिको इसकी सूचना देती! पर अब!·····अब तो बात ही कुछ दूसरी थी। इस संसारमें अपने कलङ्कित मन और अन्तर्यामीके अतिरिक्त किसीके आगे इस रहस्यकी बात वह नहीं कह सकती थी। रह-रहकर उसे रोना आता था, पर तत्काल एक क्षीण आशाका सञ्चार भी उसके मनमें होने लगता, और इसी तिनकेके सहारेसे वह धैर्य धारण कर लेती। वह निश्चयपूर्वक समझ गयी कि इस गर्भपर ही उसका भावी जीवन निर्भर है—या तो वह चिरकालके लिए भ्रष्ट सिद्ध हो जायगी, या उसका 'पातिव्रत्य' अक्षय रहेगा।

"बहुत देरमें सूरजप्रसादको पत्नीकी गर्भावस्थाका हाल मालूम हुआ। वह भी सशङ्कित हो उठे। पर अपने कर्तव्यमें नहीं चूके। शान्तिसे पूछकर निश्चित मासके प्रारम्भमें ही उन्होंने उसे अस्पताल भेज दिया, और स्वयं भी उसकी देख-रेख करने लगे। अन्तको प्रसवके दिन बड़े इन्तजारके बाद 'नर्स' ने सूरजप्रसादको खबर दी कि लड़का पैदा हुआ है। नर्सने यह भी कहा कि 'आपकी स्त्री मरते-मरते बची है, ईश्वरको धन्यवाद दीजिये।' वास्तवमें सूरजप्रसादने मन-ही-मन ईश्वरको धन्यवाद दिया, क्योंकि वह शान्तिकी मृत्युका दुःख सहन करनेके लिए तैयार नहीं थे। इस घटनासे उन्होंने मन-ही-मन यह भी निश्चय कर लिया कि स्त्रीके सभी पिछले अपराधोंको अब वह क्षमा कर देंगे और दोनों फिर पहलेका-सा स्निग्ध जीवन बितायेंगे। सद्योजात शिशुके प्रति भी (जिसे उन्होंने अभी नहीं देखा था) उनके मनमें स्नेहका भाव उत्पन्न हो गया।

* * *

प्रसवके बाद दो-एक दिन तक शान्तिकी हालत बहुत खराब रही। इसके बाद जब वह सचेत होकर उठी और गौरसे उसने उस नवोत्पन्न क्षुद्र मानव-शिशुको देखा तो वह चौंक उठी। इतने दिनों तक उसके मनमें जिस बातका धड़का लगा था, अन्तको वही बात हुई! उसने देखा कि पुत्रकी आकृति बिलकुल मुरलीसे मिलती-जुलती है। शान्तिको इस बातकी बहुत-कुछ आशा थी कि बच्चा उसीकी आकृतिका होगा; साथ ही इस बातकी भी क्षीण सम्भावना थी कि उसके पतिका ही सादृश्य उसमें कदाचित् पाया जाय। पर अब इस मूर्तिमान् कलङ्कको लेकर वह संसारको कैसे मुख दिखाये! वह ऐसी उन्माद-ग्रस्त हो उठी कि यदि उस समय पास ही कहीं जलती हुई भट्ठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पाती तो उस बच्चेको तत्काल उसमें डाल देती। वह सर्वत्र अन्धकार देखने लगी। उसने बच्चेको दूध पिलाना छोड़ दिया। यदि विष होता तो छातीमें विष लगाकर उसे पिलाती। पर 'नर्स' यह समझकर कि वह अस्वस्थ होनेके कारण दूध पिलानेमें असमर्थ है, बच्चेको बोतलका दूध पिलाने लगी।

"सूरजप्रसाद ऐसे भोले आदमी थे कि बच्चेको देखनेपर भी उन्होंने उसपर गौर करना आवश्यक नहीं समझा, और वास्तवमें यदि वह आकृति पहचाननेकी चेष्टा भी करते तो पूर्णतः असमर्थ होते, यह बात मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं। इसके अतिरिक्त शान्ति उनके आते ही बच्चेका मुंह (खासकर आंखें) ढक देती थी।

"शान्ति पागल-सी हो गयी थी, और प्रतिपल उसे यही चिन्ता थी कि क्या उपाय किया जाय। वह इस बच्चेको लेकर अस्पतालसे घर वापस नहीं जाना चाहती थी। जब उसे कोई उपाय न सूझा तो एक दिन रातको उसने निर्मम होकर बच्चेका गला मरोड़ डाला और जब तक उसकी सांस बिलकुल बन्द न हो गयी तब तक उसका गला दबाये रही।

"दूसरे दिन नर्सने जब यह हाल देखा तो घबराकर हौस सर्जनको बुला लायी। बस, फिर क्या था; सब भण्डाफोड़ हो गया। अन्तको अदालतने शान्तिको आजीवन निर्वासनकी दण्डाज्ञा सुनायी। इस दण्डसे उसे कितना दुःख हुआ, उसपर कैसी बीती, कह नहीं सकता। पर यह निश्चय है कि जब अपने कर्मोंका अन्तिम फल उसे मालूम हो गया तो अत्यन्त धैर्यपूर्वक उसने उसे ग्रहण किया। सूरजप्रसाद एकदम पागल हो गये। इलाजके लिए बरेलीके पागलखाने भेजे गये, पर कोई फायदा नहीं हुआ। अन्तको पागलखानेमें ही बड़ी दुर्गतिके बाद उनकी मृत्यु हुई। उनकी स्त्रीको केवल आठ या नौ वर्ष निर्वासनमें रहना पड़ा। उसके बाद किसी कारणसे वह छोड़ दी गयी। जब लौटकर आयी तो एक अनाथालयमें चली गयी। मैंने वहां उसे देखा था—वह अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट तथा प्रसन्न थी, और पहलेसे अधिक निर्लज्ज हो गयी थी। यह स्पष्ट था कि जेलमें उसे अधिक कष्ट नहीं भोगना पड़ा। कुछ भी हो, अब वह कुटनीका पेशा करती है।"

सब लोग अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक डाक्टर कपूरकी कहानी सुन रहे थे। जब कहानी समाप्त हुई तो कुछ देर तक सब स्तब्ध बैठे रहे। इसके बाद फिर विवाद होने लगा। थोड़ी ही देरमें वे लोग विषयान्तरमें चले गये और डा० भार्गवको किसी बातपर ठठाकर हंसते हुए सुना गया।

---

# प्रेम-भिखारी

हँसता राकेश गगनमें,
हँसते खिल-खिल कर तारे।
मैं लिये आह बैठा हूँ,
इस निर्जनमें मन मारे॥

भूला हूँ मार्ग न मिलता,
यह भार कहां बिखराऊँ?
उमड़ा है प्यार हृदयका,
किसको उपहार चढ़ाऊँ?

वह किधर प्रणय-मन्दिर है,
जिस ओर पथिक जाते हैं?
रजनीके शून्य पहरमें,
मेरे दृग चकराते हैं॥

वन-वनमें भटक रहा हूँ;
मैं निर्धन प्रेम-भिखारी।
पहुंचा न अभी उस पथ तक,
है यही वेदना भारी॥

—अज्ञात

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# टेलीविजनकी चमत्कारपूर्ण कहानी

श्री परमानन्द

'टेलीविजन' ( दूर-दर्शन ) के सम्बन्धमें पाठकोंने अवश्य ही कुछ-न-कुछ सुना होगा, पर अधिकांश पाठक विंश शताब्दीके इस परमाश्चर्यजनक तथा अद्भुत कौतूहलोद्दीपक आविष्कारकी विशेषतासे भली भांति परिचित नहीं होंगे। आज तक व्यावहारिक विज्ञानने जितने भी युग-विवर्तनकारी आविष्कार किये हैं, 'टेलीविजन' उन सबसे बाजी मार ले गया है। 'टेलीविजन' की सहायतासे आप घर-बैठे हजारों मीलकी दूरीपर स्थित किसी व्यक्तिका केवल बोलना ही नहीं सुन सकते, उसे खूब मजेसे बोलते हुए देख भी सकते हैं। क्या यह भौतिक माया नहीं है? इतने बड़े दूरत्वके व्यवधानको अस्वीकृत करके, बीचमें असंख्य देशों तथा लाखों, करोड़ों व्यक्तियोंकी प्रतिच्छायाकी अवहेलना करके किसी विशिष्ट स्थानके एक विशिष्ट व्यक्ति अथवा कुछ विशिष्ट व्यक्तियोंके दर्शन आपको करा सके, ऐसे यन्त्रको यदि इन्द्रजाल न कहें तो क्या कहें? जगत्-प्रसिद्ध डर्बी रेसके घोड़े दौड़ रहे हैं, आप इस सनसनीदार घुड़दौड़का परिणाम जाननेके लिए उत्सुक हैं, क्योंकि आपने भी टिकट खरीदा है; टेलीविजनकी सहायतासे आप घर-बैठे अपने 'फेवरिट' घोड़ेकी गतिविधि अपनी आंखों देख सकते हैं! पैरिस अथवा न्यूयार्कके किसी विशेष रङ्गमञ्चके किसी विशेष अभिनेता अथवा अभिनेत्रीका अभिनय आप भारतमें अपने घरपर भली भांति देख सकते हैं और उनका गाना अपने कानों सुन सकते हैं। मजेकी बात यह है कि यह अपूर्व आविष्कार आपके ही युगमें केवल पांच-सात वर्ष पहले हुआ है। १९२५ में पहले-पहल संसारको इसकी सूचना मिली।

टेलीविजनका आविष्कारक जान लाजी बेयर्ड (John Logie Baird ) एक स्काच वैज्ञानिक है। बेयर्डका जन्म एक निर्धन परिवारमें हुआ था। पर विज्ञानकी ओर उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति थी। जब वह स्कूलमें पढ़ता था तभीसे उसके मस्तिष्कमें टेलीविजनके आविष्कारकी सूझ पैदा हो गयी थी। उसके आविष्कारकी कहानी बड़ी दिलचस्प है। अपने स्कूल-जीवनमें ही उसने टेलीविजनके 'ऐपैरेटस' का बाहरी ढांचा तैयार करनेकी चेष्टा की थी। इस वर्षके बाद उसने फिर अपने इस प्रिय विषयकी परीक्षा तथा आविष्कारकी ओर ध्यान दिया। एक सस्ते किरायेवाले छोटेसे कमरेमें वह रहता था। उस कमरेमें हाथ धोनेके लिए काठका एक 'स्टैण्ड' ( washstand ) रखा था। उसीको उसने अपना लेबोरेटरी बेञ्च ( Laboratory bench ) बनाया। उसपर उसने चायका एक पुराना बक्स रखा, जिसे उसने कुछ ताम्रखण्ड देकर खरीदा था। इस बक्सको उसने अपने यन्त्रके 'मोटर' का आधार बनाया। इस 'मोटर' द्वारा कार्डबोर्डसे निर्मित वृत्ताकार 'डिस्क' ( disc ) परिचालित होता था। लकड़ीके टुकड़ों और कपड़े सीनेकी सुइयों द्वारा उसके 'माउण्टिंग' ( Mountings ) तैयार किये गये। इसमें जो लेन्स काममें लाये गये, वे बाइसिकिलवालेकी दूकानसे छांट-छांटकर चार-चार पेन्सको खरीदे गये! पुराने टोपोंके दो-एक बक्स भी काममें लाये गये। ये सब चीजें गोंद, लाख तथा तागों द्वारा जोड़ी गयीं। टार्च लैम्पोंकी बैटरियां बिजलीकी 'करेण्ट' पास करनेके लिए काममें लायी गयीं। इस प्रकार वैज्ञानिक क्षेत्रमें युगान्तर लानेवाले यन्त्र का प्रथम नमूना परीक्षाके लिए तैयार हुआ। १९२४ में एक दिन अपराह्नके समय बेयर्डको प्रथम सफलता प्राप्त हुई। उस दिन वह एक छोटेसे 'क्रास' की प्रतिच्छाया दो या तीन गजकी दूरीमें प्रतिबिम्बित करनेमें समर्थ हुआ। यद्यपि यह सफलता देखनेको बहुत साधारण थी, तथापि इससे बेयर्डको अपने प्रयोगको आगे बढ़ानेके लिए जो उत्साह मिला वह वर्णनातीत था।

पर अब उसे भयङ्कर कठिनाईका सामना करना पड़ा। उसके पास अपने भोजनके लिए भी यथेष्ट पैसे नहीं थे। अपने प्रयोगकी सफलताके लिए उसे काफी रुपयोंकी आवश्यकता थी। इसलिए उसने समाचारपत्रोंमें इस बातकी विज्ञप्ति छपवायी कि उसके इस नवीन आविष्कारकी सफलताकी आशामें जो व्यक्ति उसके साथ आर्थिक सहयोग करनेके लिए तैयार हों, वे सूचित करें। इस सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिन व्यक्तियोंने उसे स्वीकृति-सूचक उत्तर भेजे, उनमें प्रसिद्ध औपन्यासिक William le Queux भी था। पर असलमें लन्दनके एक प्रसिद्ध सिनेमाके मालिक विल डे ( Will Day ) ने उसे २०० पौण्ड नकद देकर उसके आविष्कारमें सहायता दी और उसके तिहाई हिस्सेका साझीदार बन गया। अगस्त १९२४ में बेयर्डको एकके स्थानमें दो छोटे कमरोंको किरायेपर लेनेकी जरूरत महसूस हुई। १९२५ के मार्च महीनेमें बेयर्ड एक कमरेमें कागजका एक पुतला बनाकर दूसरे बन्द कमरेमें उसकी प्रतिच्छाया भेजनेमें समर्थ हुआ। इसके बाद सेलफ्रिज नामका एक व्यक्ति २५ पौण्ड प्रति सप्ताहके वेतन और बिजली तथा आवश्यकीय उपकरणोंको देनेकी शर्तपर उसे अपने यहां अपने प्रयोगोंके प्रदर्शनके लिए ले गया। इन प्रदर्शनोंको देखकर लोग बहुत चकराये और महिलाने बेयर्डको अलग ले जाकर उससे सशङ्कित होकर पूछा कि कहीं इन प्रयोगों द्वारा गुसलखानेके भीतर उसके नग्नस्नानकी प्रतिच्छायाके बाहर व्यक्त हो जानेका तो भय नहीं है!

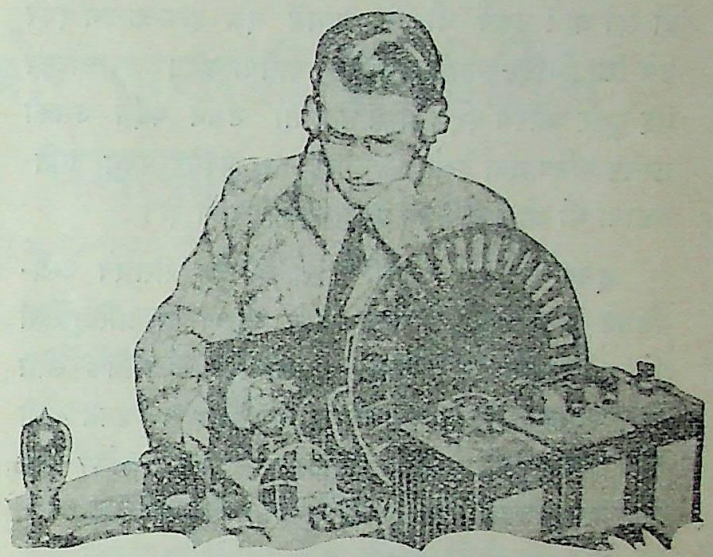

बेयर्ड काठ-कबाड़से निर्मित यन्त्र द्वारा टेलीविजनके प्रथम प्रयोगमें निमग्न है।

इसके बाद बेयर्ड अपने पुराने मित्र तथा सहपाठी जैक बुचाननसे मिला जो अब एक प्रसिद्ध अभिनेता हो चुका था। उसने एक पबलिक डिनरका प्रबन्ध किया जिसमें बेयर्डने समाचारपत्रोंके प्रतिनिधियोंके आगे अपने प्रयोगका प्रदर्शन किया। पर इसके कुछ ही दिन बाद फिर बेयर्डकी आर्थिक अवस्था बहुत खराब हो गयी और कभी-कभी तो यहां तक नौबत पहुंचने लगी कि उसे अपने कामको किसी तरह चलता रखनेके लिए अपनेको भोजनसे भी वञ्चित करनेको बाध्य होना पड़ा। इस क्षुधा-पीड़ित अवस्थामें उसका क्षीण स्वास्थ्य दिन-दिन नष्ट होने लगा। वह फटे हुए कपड़े पहनकर लन्दनकी सड़कोंमें फिरा करता और फटे हुए जूतोंके भीतर उनके फटे हुए मोजे दिखायी देते थे। उसने फिर एक बार पत्रोंमें एक कम्पनी स्थापित करनेके उद्देश्यसे विज्ञापन छपवाया ताकि किसी प्रकार आविष्कारका काम पूरा हो सके। इस उपायसे वह ब्रुक्स ( Brooks ) नामके एक व्यक्तिका सहयोग प्राप्त कर सका। पर इससे उसकी दशा नहीं सुधरी। यहां तक नौबत पहुंच गयी कि उसे अपना भोजन प्राप्त करनेके लिए अपने प्रारम्भिक यन्त्रके कुछ मूल भाग भी बेच देने पड़े। उसका काम रुक गया। अठारह महीनोंका कठोर परिश्रम एकदम विफल होनेकी अवस्थापर आ गया। ग्रेट ब्रिटेन आज बेयर्डके जगत-प्रसिद्ध आविष्कारपर बड़ा भारी गर्व अनुभव करता है, पर जब आविष्कारककी जानपर बीत रही थी उस समय किसीने उसे वास्तविक सहायता नहीं दी। अन्तको उसे बाध्य होकर स्काटलैण्डमें अपने सगे-सम्बन्धियोंसे सहायताकी प्रार्थना करनी पड़ी। उन लोगोंने कारणकी यथार्थता मालूम करके उसे यथाशक्ति सहायता दी। धीरे-धीरे उसका काम आगे बढ़ने लगा।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि १९२५ में वह कागजके एक पुतलेकी प्रतिच्छाया दूसरे बन्द कमरेमें भेजनेमें समर्थ हुआ था। अपनी इस सफलतासे वह अत्यन्त उत्साहित हो उठा और उसके मनमें इस बातकी उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई कि एक जीते-जागते मनुष्यकी छायाको टेलीविजन द्वारा प्रतिबिम्बित करनेकी चेष्टा की जाय। वह नीचेसे एक आदमीको बुला लानेके लिए दौड़ा। उसे एक नौकर रास्तेमें मिला। वह अनिच्छापूर्वक उसके प्रयोगके लिए राजी हुआ। बेयर्डने उसे 'ट्रान्समिटर' के सामने बैठा दिया और दूसरे कमरेमें पर्देपर उसकी प्रतिच्छाया देखनेकी प्रतीक्षा करने लगा। पर उसे बड़ा आश्चर्य और दुःख हुआ जब उसने देखा कि पर्देपर कोई प्रतिच्छाया नहीं पड़ती। वापस जाकर उसने देखा कि नौकर 'ट्रान्समिटर' के तीव्र प्रकाशके कारण घबराकर उससे हटकर अलग खड़ा हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है। पर वह तो अपने प्रयोगकी सफलताके लिए उत्तेजित हो रहा था। उसने नौकरके हाथमें एक हाफ-क्राउन देकर उसे फिर निर्दिष्ट स्थानपर बैठनेकी प्रार्थना की। जब लौटकर वह दूसरे कमरेमें पर्देके पास गया तो उसने पर्देमें उसकी सुस्पष्ट प्रतिच्छाया देखी। मनुष्यकी यह सबसे प्रथम प्रतिच्छाया थी जो टेलीविजन द्वारा पर्देमें दिखायी दी।

इसके बाद २७ जनवरी १९२६ के दिन संसारने टेलीविजन द्वारा सर्व-प्रथम चलते-फिरते मनुष्योंकी प्रतिमूर्तियां भिन्न-भिन्न स्थानोंमें देखीं। पचास वर्षोंसे वैज्ञानिक लोग जिस विषयका स्वप्न देखते चले आते थे, वह सर्व-प्रथम इसी दिन प्रत्यक्ष रूपसे संसारके दृष्टिगोचर हुआ। बेयर्डका मूल ऐपैरेटस साउथ कैन्सिङ्गटन म्यूजियममें रखा गया है।

टेलीविजनकी प्रथमावस्थामें जिस व्यक्तिकी प्रतिच्छाया दूरस्थित स्थानोंको भेजी जाती थी, उसे उज्ज्वल प्रकाशमें बैठना पड़ता था। इसके बाद इस बातकी चेष्टा की गयी कि अंधेरेमें बैठे हुए व्यक्तिकी प्रतिच्छाया भी दूरस्थित पर्दों-पर दिखायी दे। इसके लिए लाल रङ्गकी एक ऐसे प्रकारकी अस्पष्ट किरणोंका आविष्कार किया गया जिनके सहारेसे दूरस्थित व्यक्ति स्पष्टतापूर्वक यह देख सके कि अंधेरेमें बैठा हुआ व्यक्ति क्या कर रहा है।

१९२८ में एटलाण्टिक महासागरके उस पार अमेरिका आदि देशोंमें टेलीविजन द्वारा प्रतिमूर्तियां भेजी गयीं। १९२८ के अगस्त महीनेमें प्रति सेकेण्ड तीस रङ्गीन प्रतिमूर्तियां—जिनमें दस नीली, दस लाल और दस हरी थीं—टेलीविजन द्वारा उन्हीं रङ्गोंमें अविकल प्रतिबिम्बित की गयीं। एक टोकरीमें रखे हुए छोटे-छोटे लाल फलोंका रङ्ग दूरस्थित परदेमें स्पष्टतया दिखायी दिया।

इसके बाद १९३० में टेलीविजनने इतनी तरक्की कर ली कि परदेमें वक्ताकी प्रतिच्छाया दिखायी देनेके साथ ही उसकी वक्तृता भी सुनायी देने लगी। इसके लिए दो बेतारके 'सेट' काममें लाये गये—एक प्रतिच्छायाके लिए और एक शब्दोंको प्रतिध्वनित करनेके लिए। १९३० के जुलाई महीनेमें टेलीविजन और टेली-टाकी एक थियेटरमें प्रथम बार सार्वजनिक रूपसे प्रदर्शित किये गये।

टेलीविजनकी सहायतासे अब यह सम्भव हो गया है कि ग्रामोफोनके रेकर्डोंमें किसी व्यक्तिके गीत अथवा कथानकोंके साथ ही उनके चेहरे भी भरे जा सकते हैं, और दर्शक तथा श्रोतागण खुशीसे उन्हें देख तथा सुन सकते हैं। सौ वर्षके बाद भी लोग उन व्यक्तियोंको बोलते हुए देख सकेंगे जो इस समय जीवित हैं। रेकर्डोंमें जिस विधिसे मनुष्योंके चेहरे भरे जा सकते हैं, वह भी एक आश्चर्यजनक वैज्ञानिक करिश्मा है। मनुष्यके चेहरेको प्रकाशमें प्रतिबिम्बित करके उस प्रकाशको शब्द (sound) में परिणत कर दिया जाता है और फिर उस शब्दको चिह्नोंके रूपमें रेकर्डोंमें भरा जाता है, इसके बाद फिर वे चिह्न शब्दमें परिणत कर दिये जाते हैं, और शब्दको वैद्युतिक चेतनामें परिणत करके वैद्युतिक चेतनाको पुनः मूल प्रतिच्छायाके रूपमें प्रतिबिम्बित कर दिया जाता है! आधुनिक वैज्ञानिकोंने यह सिद्ध करके दिखा दिया है कि शक्ति (energy) का मूल तत्त्व एक ही है, चाहे वह प्रकाशके रूपमें व्यक्त हो, चाहे शब्दके अथवा विद्युत्के रूपमें। प्रत्येक प्रकारकी शक्ति दूसरे प्रकारकी शक्तिमें परिणत की जा सकती है।

इस प्रकार टेलीविजन अपनी अद्भुत करामातें दिखाने लगा है। यूरोप तथा अमेरिकामें टेलीविजनके 'सेट' रेडियो-की किसी भी दूकानमें साधारण दामोंमें मिल सकते हैं और लोग उनके द्वारा मनोविनोदका बहुत अच्छा साधन प्राप्त कर सकते हैं। घर बैठे किसी गायकका गाना सुनिये और उसका चेहरा, उसकी गति-विधि अथवा नृत्य देखिये। केवल स्टूडियोके क्षेत्रमें टेलीविजनका महत्त्व सीमाबद्ध नहीं है। किसी राजनीतिक नेताकी वक्तृता, घुड़दौड़, शिकागोके भुवन-विमोहन विराट् मेलेके अनेकानेक दृश्य आप घर-बैठे मजेमें देख सकते हैं। गत वर्ष जब डर्बीमें घुड़दौड़ हुई तो जिन लोगोंके पास 'टेलीविजर' थे, उन्होंने घोड़ोंको स्पष्टतया जीतके निर्णयके खम्भेके पास छलांगे भरकर तेजीसे आते हुए देखा। बेयर्ड कम्पनीने खम्भेके पास टेलीविजनका ट्रान्समिटर लगा दिया था और वह ट्रान्समिटर ब्राडकास्टिङ्ग कम्पनीके ट्रान्समिटरसे जोड़ दिया गया, जिससे घोड़ोंकी प्रतिमूर्तियां शून्यमें 'ईथर' द्वारा तरङ्गित होकर उन लोगोंके सामने स्पष्ट प्रतिबिम्बित हो गयीं, जिन-जिनके पास 'टेलीविजर' थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# टर्कीके युद्धक्षेत्रमें ब्रिटेन और फ्रान्सकी कूटनीतिके मल्लयुद्धका चमत्कार

धुरन्धर शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०

जब दो देश लड़ते हैं तो हमारे पत्र युद्धके सनसनीखेज समाचार छापते हैं। आज सौ सिपाही तोपोंकी भेंट हुए और आज एक हजार सैनिक बिना एक शब्द बोले शत्रुओंके अस्त्रोंसे परलोक सिधारे। हमारे ये पत्र अन्य देशोंकी राष्ट्रीयताका गुणगान करके युद्धकी पवित्रताका प्रचार करते हैं। "धन्य है चीन, जहांके नवयुवक राष्ट्रीय भावोंसे उन्मत्त होकर सेनामें भरती हो रहे हैं और अपने देशकी स्वाधीनता-की रक्षाके लिए सहर्ष अपना प्राण बलि दे रहे हैं।" यही बात जापानके विषयमें भी कही जाती है। पर स्वभावतः उस राष्ट्रका विशेष पक्ष लिया जाता है जिसे हम दुर्बल और गोरे राष्ट्रों द्वारा लुण्ठित और पददलित समझते हैं। हम दुर्बलोंके लिए यह स्वाभाविक है। लेकिन हम यह नहीं जानते कि संसारमें जितनी लड़ाइयां होती हैं वे उन चार शक्तियोंकी लीला हैं जो इस समय अपने धन, विज्ञान और व्यापारके बलपर जगत्को नचा रही हैं। महायुद्धसे पिछले ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रान्स और रूस पृथ्वीभरमें षड्यन्त्र रच रहे और युद्ध करवा रहे थे; अब अमेरिका, फ्रान्स, रूस और ब्रिटेन अपनी-अपनी प्रभुता कायम रखने और बढ़ानेके लिए अपनी दुर्भेद्य कूटनीतिके बलपर कहीं विद्रोह करवा रहे हैं तो कहीं युद्ध; और कहीं राष्ट्रीय भावोंका प्रचार कर रहे हैं तो कहीं अन्तर्राष्ट्रीय विचारोंका। उदाहरणार्थ, अमेरिकाको ही यह श्रेय है कि उसने चीनमें जापानके विरुद्ध भाव फैलाये। ये शक्तियां—बल्कि यह कहना चाहिए कि इनके पूंजीपति सारे विश्वका धन चूसकर भी नहीं अघाते।* इन्हें सदा नये मार्केटोंकी तलाश रहती है और ये मार्केट बिना स्वयं लड़े या दूसरोंको लड़ाये नहीं प्राप्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त ये शक्तियां और पूंजीपति संसारके तेल, लोहे और कोयलेको अपने हाथमें करना चाहते हैं। इन पदार्थोंपर ही तो सारा व्यापार-व्यवसाय और सैनिक शक्ति निर्भर करती है। जिस राष्ट्रके पास जितनी अधिक तेल, लोहा और कोयलेकी खानें होंगी वह उतना अधिक शक्तिशाली होगा और शक्तिका अर्थ है वह संसारका धन उतना ही अधिक लूटनेमें समर्थ होगा। यह शक्ति सेना हीके बलपर नहीं बढ़ती, इसके लिए कूटनीतिका व्यवहार अत्यन्त आवश्यक है। इसके अभावसे वीर और वैज्ञानिक जर्मन महायुद्धमें मुंहकी खा गये और कमजोर फ्रान्स, बाजी मार ले गया। जगत्की राजनीतिमें कूटनीति अत्यन्त रहस्यमय है। मृत्युकी घोर तिमिरवर्ण छायाके समान उक्त चार राष्ट्रोंकी कूटनीति सारे विश्वके ऊपर छा रही है और इसके अनन्त रूप हैं; क्योंकि स्थानीय परि-स्थितियोंके अनुसार वे बदलते जाते हैं। भारतमें इसका जो रूप होगा चीनमें उसका नाम-निशान न मिलेगा। पर विचित्र बात यह है कि सारी दुनियाकी कूटनीति बीस या पचीस मनुष्योंके हाथमें है। उन्होंने सारे धरातलपर इसका

---

* इनके सामने भारतीय पूंजीपति पिद्दियां हैं। भारतमें प्राचीन समयसे ही पूंजीपति वैश्य या बनिये होते हैं। इनमें अधिकांश अशिक्षित और राजनीति-ज्ञानशून्य होते हैं। उनका एकमात्र धर्म धनोपार्जन करना होता है। उनमें क्षत्रियवृत्तिका अभाव होनेसे कोई महत्त्वाकांक्षा भी नहीं होती। इसलिए हमारे पूंजीपति युद्धका नाम सुनकर होश-हवास खो देते हैं। इनकी वीरता और पराक्रमका तो यह हाल है कि हिन्दू-मुसलमान दङ्गेके समय ये स्त्रियोंमें मिल जाते हैं कि कोई इनपर हमला न कर दे। ऐसे 'बमबहादुर' भला कूटनीति और राजनीतिक दांवपेचसे सम्बन्ध रख सकते हैं? हां, उनकी पहुंच म० गांधी तक है। सो वे उनसे जितना लाभ उठा सकते हैं उठा रहे हैं। म० गांधीके निर्णयोंको पहले जानकर फाटकेमें लाभ करना इनकी कूट-नीतिकी पराकाष्ठा है। इसलिए इनका विदेशी पंजीपतियोंसे कोई साम्य नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जाल डाल रखा है और उनके लिए नाना जाति और देश शतरञ्जके गुट हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। इनके कुलिश-कठोर हृदयमें दया, सहानुभूति, परोपकार आदि भाव स्थान नहीं पाते। इनके विषयमें कहा जा सकता है—"जीवन मृत्यु पायेर भृत्य, चित्त भावनाहीन।" पर स्वार्थ और अपनी विजयकी धुन इन्हें इस संसारमें जड़ित कर देती है। इनके कुछ शिष्य होते हैं जो वीर-प्राण होते हैं, इन्हें अपना जीवन सङ्कटमें डालनेमें महा-आनन्द मिलता है और सदा खतरेमें रहना ही ये पसन्द करते हैं। ये कहां क्या करते हैं, इसका पता बहुत कम लोगोंको रहता है; पर इनकी चालोंकी सफलता और असफलतापर बड़े-बड़े राष्ट्रोंका उत्थान और पतन झूलता रहता है।

*

टर्की और यूनानके बीच १९२१-२२ में युद्ध हुआ। पत्रोंमें छपा कि यह स्वाभाविक बात थी; क्योंकि ये देश चिर-शत्रु हैं। इस लड़ाईमें टर्कीकी विजय हुई; पर असलमें फ्रान्सकी जीत हुई और अंगरेज कूटनीतिने अपना पराभव देखा। इससे भी अच्छा तो यह कहना है कि दो मनुष्योंकी यह लड़ाई थी जो उस समय थेरापिया नगरके 'होकाट्लियां' होटलमें एक ही मञ्जिलपर ठहरे हुए थे और जब एक-दूसरेसे मिलते थे तो ऐसा मालूम पड़ता था कि ऐसे परम मित्र संसारमें बिरले ही होंगे। इन दोनोंने यह युद्ध किया। इनमें एकका नाम था कर्नल ब्लां और दूसरेका मेजर हे। कर्नल फ्रान्सका प्रतिनिधि था और मेजर ब्रिटेनका। दोनों अपने-अपने देशोंके खुफिया विभागके चमचमाते हीरे थे। इन्हें युद्धकी क्यों सूझी? कारण इनकी सरकार जानती थी। ये अपने देशके कूटनीतिज्ञोंके योग्य दूत थे। इनका काम था दोनों देशोंको लड़ाना और इनमें फ्रान्सके दूत कर्नल ब्लांने प्राणको बाजी लगा रखी थी कि टर्की विजय प्राप्त करे और मेजर हे तन-मन-धनसे उद्योग कर रहे थे कि वह हारे और यूनानके सरपर जीतका सेहरा बंधे।

महायुद्धमें विजय प्राप्त करते ही फ्रान्सके तत्कालीन सर्वेसर्वा क्लेमांशोने एक सैनिक अफसरसे कहा—"अब तक फ्रान्स और इङ्गलैण्ड मित्र थे और जर्मनी तथा उसके मित्र-राष्ट्र हम दोनोंके शत्रु थे। यदि शत्रुकी जीत होती तो संसारमें उसका प्रताप और आतङ्क छा जाता और हम इतने निर्बल पड़ जाते कि हमें अपने देशकी स्वतन्त्रता बचाना भी कठिन हो जाता। पर पांसा पड़े सो दांव। हमारे हाथ पौबारह पड़े। लेकिन इस संसारमें युद्ध कभी थमता नहीं। शक्तिशाली राष्ट्र शान्तिके समय भी युद्धमें व्यस्त रहते हैं। वे सदा अपना विस्तार और उन्नति करते रहते हैं। अब हमारी लड़ाई अंगरेजोंसे शुरू हुई। स्वयं वे इसे छेड़ रहे हैं; पर यह युद्ध रणक्षेत्रमें न होगा। यह होगा अदृश्य क्षेत्रोंमें। यह एशियाके हिस्से-बांटकी प्रतिद्वन्द्विता है।" यह कथन सत्य निकला। जब १९१८ में टर्कीका विध्वंस हो गया तो अंगरेजोंने समझा कि एशियामें अपना प्रभुत्व जमानेका अवसर आ गया है। टर्कीके टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये। अरबमें नये-नये राज्योंकी स्थापना की गयी। हजाज, ईराक, ट्रान्सजोर्डानिया आदि स्थापित हो गये। फिलस्तीनमें अंगरेजोंकी संरक्षकतामें यहूदियोंकी बस्ती बसायी जाने लगी। अरबके भीतरी प्रदेशोंसे भी अंगरेज सम्बन्ध स्थापित करने लगे। इब्नसऊदसे मित्रता बढ़ायी जाने लगी। अरबमें सर्वत्र अंगरेजोंका प्रभाव जम गया। पर सन्धिके समय एक भूल हो गयी। यह गलती उन्हें कांटेकी तरह खटक रही थी। अरबका सीरिया प्रदेश फ्रेञ्च संरक्षकतामें कर दिया गया था। इस छोटे देशके लिए फ्रेञ्च जासूस सारे अरबकी राज-नीतिका अध्ययन करने लगे और अंगरेजोंकी कूट चालें उनसे छिपी न रहीं। अंगरेजोंने सीरियामें भी अपना 'काठका पुतला' वहांकी गद्दीपर बिठानेका विचार किया ताकि उनकी नीतिमें फ्रेञ्च जासूस बाधा न डालें। यह नया 'बादशाह' फ्रेञ्चोंको खदेड़ने और 'अपने पददलित देशको स्वतन्त्र करने' को युद्ध क्षेत्रमें आया ही था कि फ्रेञ्च खूसट जनरल गूरोने उसे उठते ही दबा दिया। अब फ्रेञ्चोंको एक और चाल सूझी। उन्होंने टर्कीको अपनी ओर करना चाहा। टर्की उस समय लोहूलुहान पड़ा हुआ अपनी अन्तिम घड़ियां गिन रहा था। सारा देश निराशाके कालसागरमें डूबा हुआ था और किसी ओर आशाकी क्षीण ज्योति भी न दिखायी दे रही थी। ऐसे गाढ़ अवसरपर एक दुबला-पतला सैनिक युवकोंको भड़का रहा था और परास्त सैनिकोंमें नयी जान डालकर उनकी सहायतासे वह बाहरी शत्रुओंके विरुद्ध नहीं, भीतरी दुश्मन सुलतानके खिलाफ युद्धकी तैयारीमें था। इसे फ्रेञ्चोंने अपने हाथमें कर लिया। उसकी जी खोलकर सहायता की और पूरी कोशिश की कि सुलतान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जो बहुत सम्भव था अंगरेजोंके हाथका खिलौना बन जाता, टर्कीमें न रहने पाये। इस काममें उक्त दो सैनिक अफसर फ्रान्स और ब्रिटेनने नियुक्त किये। मजा देखिये कि ये दोनों कूटनीतिज्ञ रात-दिन साथ रहे और मित्रोंकी भांति मिलते-जुलते भी रहे, पर दोनों ही टर्कीके भाग्यका फैसला करनेमें एक-दूसरेका बध करनेके लिए भी तैयार थे। इनके करतबों-का हाल पढ़कर आश्चर्यमें डूबना पड़ता है और कूटनीतिको हाथ जोड़ना पड़ता है कि उसके प्रभावसे दो देश मदमत्त होकर एक-दूसरेका संहार करनेपर तुल जाते हैं और अपने दिलमें यही समझते हैं कि हम अपने देशके हितके लिए मर रहे हैं।

*

बासफोरसके नील-वर्णमय जलपर अंगरेजोंके क्रूजर जहाज हवाके झोंकोंके साथ डगमग कर रहे हैं। 'टोका-टलियां' होटलके लानपर बैठे हुए अंगरेज सैनिक अफसर प्रेमभरी दृष्टिसे इनकी ओर देख रहे हैं। आज गर्म है और ये अफसर पिपरमिण्टकी शराबकी चुसकियां ले रहे थे। इनमें जनरल हे भी बैठा हुआ था; वह चिन्ताग्रस्त था और तिरछी आंखोंसे अपने क्रूजरोंको देख रहा था। एकाएक उसे क्या ख्याल आया कि बोल उठा—"अबके टर्क यूनानियोंपर जबर्दस्त हमला करेंगे। क्या वे यूनानियोंको हरा देंगे? तब तो ये क्रूजर देशको वापस चले जायेंगे। भई, सच तो यह है कि हम लोग जो दक्षिण देशोंमें रहनेके आदी हो जाते हैं, जाड़ोंमें लण्डनमें रहनेसे घबराते हैं। ओह! वहांके कुहरेका ध्यान भी मेरे तो प्राण कंपाता है।" कुछ देर तक वह चुप रहा और उसके माथेपर बल पड़ गये। उसकी भूरी आंखें एक बार छायावृत हो गयीं और फिर अकस्मात् चमकने लगीं। वह फिर धीमे-धीमे, पर वीर वाणीसे गरजा—"कोई चिन्ताकी बात नहीं है। अनातोलियाकी नगण्य सेनासे कुछ न हो सकेगा; इसलिए भयके भावको हृदयमें स्थान देना फजूल है। हम भली भांति जानते हैं कि यूनानी सेना टर्कोंको बात-की-बातमें खदेड़ देगी।" उस रोज समाचार आया था कि यूनानी सेना अङ्गोरासे केवल सौ मीलकी दूरी-पर रह गयी है; यह शीघ्र ही अङ्गोरापर आक्रमण करेगी और स्वभावतः उसपर अपना अधिकार जमायेगी। यह सब होनेपर भी उस रोज न मालूम क्यों मेजर हेका दिल किसी आनेवाले भयकी आशङ्कासे व्यथित हो रहा था। लेकिन उसके साथी अफसरोंके प्राण आनन्दमें नाच रहे थे और वे मेजर हेको भी बगलके कमरेमें नाचके लिए पकड़ ले गये।

फाक्सट्राट, टाङ्गो, मार्च आदिका जोर है और सब नाचमें मस्त हैं। इस नृत्यालयमें हास-विलासमय सुन्दरियोंका बाजार लगा हुआ है और उनके बदनकी सुगन्धिसे सारा कमरा महक रहा है। जब वे नाच रही हैं तो उनके जरीदार कपड़े, सोनेके तारोंसे खचित लिबास, कामदानी और जामदानीके फ्राक तथा एक पट्टे नाचकी गतोंके साथ ऐसे चमक रहे हैं गोया चांदनी रातको जलमें चमचमाती मछलियां। इस बैकुण्ठमें मेजर हेका मेघाच्छन्न हृदय स्वच्छ होनेकी तैयारी करने लगा; पर दुर्भाग्य देखिये कि ठीक इस समय होटलके दरवाजेपर एक बहुत बड़ी और शाही ठाटकी मोटर रुकी और उसमेंसे एक मनुष्य उतरा, जिसके सरपर सोनेका सितारा चमक रहा था। यह एक सैनिक अफसर था जो फ्रेञ्च मालूम पड़ता था। उसने झटसे उतरकर एक महिलाको कारमेंसे उतारा। यह महिला भी साधारण नहीं थी। यह अफसर कर्नल ब्लां था और वह अपनी प्रेयसीको लेकर सीधा नाचघर गया और मेजर हेके पास उसने सर झुकाकर और मन्दस्मितसे अपना सलाम जताया तथा पास ही कुछ दूरपर बैठ गया। इस बेशऊरकी हिमाकत देखिये कि वह इतने अफसरों और सम्भ्रान्त सज्जनोंके बीचमें अपनी माशूकासे काफी जोरसे गपशप लड़ाने लगा। मेजर हेने उसे सलाम तो किया, पर वह फिर घोर चिन्तामें पड़ गया। कर्नल ब्लां बासफोरसके सौन्दर्यकी तारीफके पुल बांधने लगा, कहने लगा कि मैं तो यहीं रहना चाहता हूं। इस रसमय फ्रेञ्चको देखिये कि यह क्लोड फेरर और पियर लोटीके ग्रन्थोंकी भी चर्चा करने लगा, जिनमें इस प्रदेशके गीत गाये गये हैं। उसकी आवाज क्या थी, हेके हृदयमें बिजली कड़क रही थी। वह समझ रहा था कि यह बदमाश फ्रेञ्च न मालूम क्या चाल चल रहा है। इस दुष्टको देखिये कि खूबसूरत औरतोंके साथ रंगरलियां भी करता है और भीतर ही भीतर अंगरेजोंकी कूटनीतिको व्यर्थ करनेके लिए हजार ढङ्ग लड़ाता है। इस विचारने मेजर हेको चिढ़ा दिया और वह बैठा न रह सका, उठकर सीधा अपने कमरेको चला गया; पर जानेसे पहले वह उस सुन्दरीको भली भांति देख गया। यह रूपवती



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यौवनगर्विता एक टर्की महिला थी। सरपर 'चरचाफ' बंधा था, मुखड़ेपर महीन जालीदार बुर्का पड़ा था, जिससे उसका छलकता हुआ रूप अपनी ज्योति बाहरको फेंक रहा था। कर्नल ब्लां मेजर हेके उठनेसे विचलित न हुआ। वह गपशप करता और काफे पीता रहा। मेजर हेने कमरेमें पहुंचते ही कान्स्टेण्टिनोपलको टेलीफोन किया। किसी जिमने टेलीफोनका उत्तर दिया। इस टेलीफोनमें मेजरने उस टर्क महिलाका पता लगाना चाहा जो फ्रेञ्च सैनिक अफसर ब्लांकी माशूका थी। फिर वह कौचपर लेट गया और किपलिङ्गका कोई ग्रन्थ हाथमें लेकर पढ़नेकी चेष्टा करने लगा। जब पढ़ भी न सका तो सोनेका प्रयत्न करने लगा।

रातको नौ बजे हे फिर प्रसन्नचित्त हो गया। उसका एडजुटेण्ट आया था और वह युद्धक्षेत्रकी अच्छी खबरें लाया था। हेने उससे पूछा—"आज यहां तक पहुंचनेमें कोई विशेष अड़चन तो नहीं पड़ी?"

वह बोला—" 'वही रफ्तार बेढङ्गी, जो पहले थी सो अब भी है।' जब मैं दफ्तरसे निकलकर यहां आ रहा था तो वे तीन खबीस वहीं अपनी रोजकी जगहपर खड़े थे। उनका मतलब मुझपर एक बार फिर आक्रमण करनेका था, और वे मेरे हाथसे तौलिया छीनना चाहते थे। यह देखकर मैं मन-ही-मन खूब हंसा। मेरे साथ गाड़ीमें एक सैनिक था जिसके दोनों हाथोंमें पिस्तौलें थीं। यह देखकर ये तीन जण्टलमैन झल्ला गये और तुरत गुम भी हो गये। मैं आशा करता हूं कि वे कल भी मिलेंगे। रोजमर्रा यह अच्छी दिल्लगी रहती है। पेट्रोलके पम्पके पास भी वह आदमी खड़ा था, जो नितप्रति अपनी बीमार मांके लिए पैसा मांगता है। वह सदाकी भांति एक बड़ी मोटर साइकलके पास खड़ा था और मेरे तौलियेकी ओर लालचभरी आंखोंसे घूर रहा था। होटलके गोल कमरेमें पीले जूतेवाला यूनानी भी हमेशाकी तरह उपस्थित था। आप तो जानते ही हैं कि यह मेरे साथ ही लिफ्टपर चढ़ता है। रोजका ढर्रा बदस्तूर चला जाता है, कोई फर्क उसमें न आया।"

हेने उत्तर दिया—"इसमें कोई हानि नहीं। क्या ब्लां अभी तक नाच-घरमें है?"

"नहीं, वह तो चला गया है। हां, आपकी आज्ञानुसार जेनकिसने बहुत चेष्टा की कि उस टर्क महिलाका पता लगाये, पर उसे अभी तक सफलता नहीं मिली।"

हेने तार पढ़े और डाक देखी। इनमें रणक्षेत्रके ताजे समाचार थे। इनमें लिखा हुआ था कि यूनानी आगे बढ़ रहे हैं और टर्क बराबर हार रहे हैं। मेजर हेके चेहरेमें इन समाचारोंका कुछ प्रभाव दिखायी न पड़ा, यह देखकर एडजुटैण्ट बोला :—

'जेनकिसको उम्मीद है कि आज रातको कुछ जरूरी खबरें आयेंगी। उसने मुझे आपसे पूछनेके लिए कहा है कि क्या आप आज रातको भी सदाकी भांति उससे मिलेंगे।"

"हां, जरूर।"

उधर कर्नल ब्लां अपने कमरेमें अपनी प्रेयसी जमीलाके साथ बैठा था। इस माशूकाके लिए उसने अपने बगलमें ही कमरे ले रखे थे। जमीला आराम-कुरसीपर पांव लटकाकर न मालूम क्या-क्या कह रही थी। यह सब सुनकर ब्लां खूब प्रसन्न हो रहा था। जमीला उससे प्रेमालाप न कर रही थी। वह उसे बता रही थी कि आपने जो-जो हुक्म दिये थे, उनकी पूरी तामील हो गयी है और खूब सफलता मिली है। सब काम ठीक-ठाक हो गया है। तैयारियां कर ली गयी हैं, अब केवल आपके हाथकी बात बाकी है। ब्लांके हाथमें बड़ी बात थी। आनातोलियाकी फौजको नवीनतम शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित करना उसके हिस्सेमें था। कमाल पाशाने कहा था कि हमें यदि नये हथियार मिल जायें तो मैं महीनेभरके भीतर यूनानियोंको भेड़-बकरियोंकी तरह टर्कीसे बाहर खदेड़ दूंगा। कुछ देर तक कर्नल ब्लां अपनी सिगारका धुआं धीमे-धीमे छोड़ता रहा और ऐसा मालूम पड़ता था कि मानो वह उसकी गतिविधिका सूक्ष्म निरीक्षण कर रहा हो। फिर उसने मुसकराकर कहा:—"इसका प्रबन्ध करनेमें मुझे एक ही बड़ी अड़चन है, और वह अड़चन है मेरा मित्र मेजर हे। लेकिन आपकी तथा भगवान्‌की सहायतासे यह काम सफलतापूर्वक हो जायेगा।"

पाठक समझ चुके होंगे कि इससे पहले भी ब्लां और हेके बीच गुप्त लड़ाई चल रही थी। हेके एडजुटैण्टके हाथसे जो तौलिया छीना गया था, वह ब्रिटिश कूटनीतिका भेद जाननेके लिए ही। पर उसमें जितने कागज थे, सब बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मामूली। जरूरी कागज उसकी जेबमें थे। इसलिए वह अपनी चालाकीपर गर्व करता था। पर उसने नित्य तौलियेमें कुछ साधारण कागज ले जानेका नियम बना लिया कि शत्रु-पक्षके खुफिया बेवकूफ बनें। इसके भीतर एक बहुत बड़ा लिफाफा रहता था। उसमें और कागजोंके साथ एक मोटे कागजपर लिखा रहता था—"कर्नल! ये कागज छिनवाकर क्या करनेका विचार है?" ब्लांके हाथ तो जरूरी कागज-पत्र न लगे, पर एक रोज सुबह उठकर कर्नल देखता क्या है कि उसकी तिजोरीमेंसे सब कागजात गायब हैं। दूसरे दिन प्रातःकाल जब इसकी भेंट मेजर हेसे हुई तो उसने पूछा:—"प्रिय मेजर! मुझे आपसे परामर्श करना है। कृपया बताइये तो कमरेमें चोरी हो जानेपर क्या करना चाहिए।"

—"पुलिसमें रिपोर्ट लिखाइये और इन्श्योरेन्स आफिस-से नुकसानी लीजिये।"

*

उसी रोज रातको घोर अन्धकारमें हे एक मोटर बोटपर सवार हुआ और वह तेजीसे एशियाकी ओर दौड़ने लगा। वह बोट एक प्राइवेट मकानके सामने जाकर लग गया। हे इस समय ओवरकोट पहने था और बाहरसे देखनेसे एक साधारण सम्भ्रान्त पुरुष-सा लगता था। इस ओवरकोटके नीचे वह पूरे सैनिक वेशमें था। वह उतरा और पहले मञ्जिले-पर जाकर उसने अपना ओवरकोट उतारा और एक कमरेमें गया जहां एक बूढ़ा आदमी—मो० गेनकिस—नकशे, तार और कई प्रकारके कागज-पत्रोंके सामने बैठा था। हेने ताजे तार पढ़े। उनमें लिखा था कि युद्ध-क्षेत्रकी स्थिति सङ्कटमय हो रही है और सुलतानके विरुद्ध जो विद्रोह उठ खड़ा हुआ है, उसे सफलता मिल रही है। अनातोलियामें कमालकी सेना विजयी हो रही है और इसके बाद यदि कमालपाशा यूनानियोंसे भिड़ा तो ब्रिटिश पक्षकी हानि होगी, इसमें सन्देह नहीं। इन समाचारोंने मेजर हेको हताश कर दिया। यह तो स्वच्छ आकाशसे अचानक वज्रपात हुआ। केवल एक समाचारसे मेजर हेका कुछ सन्तोष हुआ। यह था कर्नल ब्लांकी प्रेयसीके बारेमें। गेनकिसने कहा—"वह महिला जो कर्नल ब्लांके साथ आयी थी, उसका नाम है जमीला खानम। उसका भाई महायुद्धसे पहले एथन्समें टर्कीका राजदूत था। इनका घर माचकामें है और छब्बीस वर्षकी यह युवती आज ही अनातोलियासे आयी है।" पर जब उसने कहा—"जमीला खानमके तारकी अनातोलियामें प्रतीक्षा की जा रही है और वहांके राष्ट्रीय नेता फ्रान्ससे हथियारोंकी आशा करते हैं।" तो मेजरको अपनी भारी भूल मालूम हुई। वह सोचने लगा—इस जमीलाकी कारस्तानी जानना बहुत जरूरी था और उसके पीछे तुरत खुफिया न लगाकर मैंने भारी भूल की है। गेनकिसने यह खबर भी दी कि यदि कमालपाशाकी सेनाके पास नये हथियार हो जायें तो फिर यूनानियोंकी खैर नहीं।" हेके सामने यह प्रश्न नाचने लगा कि इन हथियारोंका पहुंचना कैसे बन्द किया जाये? उसे रास्ता सूझ गया। कुस्तुन्तु-नियाका पुलिस कमिश्नर मैक्सफील्ड नामक एक अंगरेज था। उससे कहकर वह खुफियोंके दलके दल फ्रेञ्चोंके पीछे लगवा सकता था। इसके साथ उसे यह भी निश्चय था कि फ्रेञ्च हथियार एशिया माइनरके किसी स्थानपर ही उतारे जा सकते हैं। उधर भूमध्य सागरमें अंगरेजी जङ्गी बेड़े तथा व्यापारिक जहाजोंको भी यह हुक्म मिला था कि विदेशियोंके जहाजोंपर कड़ी निगाह रखी जाये, और जिसपर नाममात्रका भी सन्देह हो कि उसमें हथियार हैं, वह पकड़ लिया जाये। उस वक्तसे और भी कड़ाई की गयी। कुछ दिनों बाद एक बड़े जहाजका पीछा किया गया जो कृष्णसागरको जा रहा था। इसमें गल्ला ही गल्ला था और इसका एञ्जिन कुछ बिगड़ गया था। उसे सुधारने यह कृष्णसागरको जा रहा था। इसपर सन्देह हुआ सही, पर बाहरसे देखा-भाला तो इस आशङ्काका कोई कारण न निकला। खुफियोंने इसके मल्लाहों और खलासियोंकी बातें सुनीं और उनसे उक्त अनुमान निकाला; पर इस जहाजके भीतर वे न जा सके। इस टूटे-फूटे जहाजके भीतर वे क्या देखते, वे इसकी ठीक-ठीक खबर बाहर हीसे ले आये। इसमें न हल्दी लगी और न फिटकिरी।

*

एक रोज दिन ढले गेनकिसका टेलीफोन आया। गेनकिसके शब्द कांप रहे थे। ऐसा मालूम पड़ता था कि वह बहुत घबराया हुआ है। इस टेलीफोनकी खबरसे मेजर हे तुरत कुस्तुन्तुनिया पहुंचा और वहां उसे मालूम हुआ कि उक्त जहाजका कप्तान एक टर्किश युवतीके साथ स्थानीय किसी काफेमें आया है और पूरा घण्टेभरसे उसके साथ घुल-घुलकर बातें कर रहा है। यह समाचार मिलते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस काफेमें अंगरेज जासूस भर गये और कुछ-कुछ भेद मालूम कर लाये। इस बीच मेजर हे गेनकिसके दफ्तरमें पहुंच गया जो बोसफोरसके एक निर्जन स्थानपर था। यहां वह कुस्तुन्तुनियाके समाचारोंकी बेचैनीके साथ इन्तजार कर रहा था। यह जमीला आफतकी परकाला है; और यह जहाज, जो गल्लेसे भरा था, अब अपना भयङ्कर रूप दिखाने लगा। जासूसोंने टेलीफोनसे समाचार दिया—"इन दोनोंमें हथियारोंकी बातें हो रही थीं और ये आज रातमें उतारे जायेंगे।" कई और शब्द भी सुननेमें आये, जैसे 'वूस' 'राजी है' आदि; पर पूरे वाक्य सुननेमें न आ सके। इतनेसे भी तो उनकी बातोंको ताड़ना कठिन न था और ये भेदिये भी सब-कुछ भांप गये। यह रूप-लावण्यवती जमीला भयङ्कर जन्तु थी और हथियारोंके उतरवानेमें इसका पूरा हाथ था। जब शस्त्रास्त्र उतारे जायेंगे तो यह रणचण्डिका भी वहां स्वयं उपस्थित रहेगी और उतारनेके समयका भी यही निश्चय करेगी—यह लाल-पीली रोशनी दिखाकर जहाजको समयकी सूचना देगी।

वह वास्तवमें दुर्दिन था। मूसलाधार पानी थमनेका नाम न लेता था। शामको ही घोर अन्धकार छा गया। समुद्र और आकाश एक ही निविड़ कृष्ण रंगमें रंग गये। प्रचण्ड वात समुद्रको मथ रहा था। लहरें आसमानकी खबर ले रही थीं, पर कुछ दिखायी न दे रहा था। केवल जलधि प्रलय-गर्जन कर रहा था। मेजर हेका दिल घबराया और उसके हृदयमें भी तूफान मचने लगा। इतना तो अब निश्चय हो गया था कि हथियारोंका वारान्यारा आज रातको ही हो जायेगा, क्योंकि ऐसे सुअवसर बार-बार नहीं आते। हे फ्रेञ्चों-की हिमाकत देखकर झल्ला रहा था। इस लड़कीके द्वारा वे अपना कार्य सिद्ध करना चाहते हैं। परवा नहीं; जरा उनको सबक पढ़ाया जाये तो सही। कर्नल ब्लां इस जीवनमें कुछ याद तो करे। मेजर हेको इसमें जरा भी शक न था कि हथियार अंगरेजों द्वारा पकड़ लिये जायेंगे। अब बाकी क्या था; सब भण्डाफोड़ तो हो गया था। यह सोचकर मेजर हे मन-ही-मन लड्डू बांट रहा था कि अबके बच्चेके कान ठीक गरम होंगे। भला यह कर्नल ब्लां अपनेको समझता क्या है?

शामसे ही टोकाटलियां होटल अंगरेज जासूसोंसे घेर लिया गया। जमीला खानमकी जरा-जरासी बातें तुरत कुस्तुन्तुनिया पहुंचने लगीं। बड़े-बड़े जासूस तो होटलके भीतर मुख्य नाकोंपर जम गये और छोटे-मोटे भेदिये बाहर पहरा देते रहे। इन सबकी कारें और मोटर-साइकलें जमीलाका पीछा करनेके लिए तैयार थीं। वह बाहर निकले और कहींको जाये तो ये उसके पीछे छूटें।

नौ बजे रात तक तो वह अपने कमरेमें बैठी रही। फिर वह होटलके बड़े बैठकघरमें आयी। बाहर पानी झमाझम बरस रहा था और उसने बरसाती पहन रखी थी। उसका चेहरा जालीदार बुरकेमें छिपा हुआ था। वह बाहरको आयी। होटलके एक नौकरने उसपर छाता ताना और उसे एक बहुत बड़ी मोटरकार तक पहुंचाया। इस गाड़ीका रंग भूरा था और उसका ड्राइवर एक यूरोपियन था। यह कार कुस्तुन्तुनियाकी ओर मुड़ी। बीसियों भेदिये भी बिना विलम्ब इसके पीछे छूट गये। यह जब रुकी तो मालूम हुआ कि जमीला मकानके भीतर चली गयी है। कर्नल ब्लांने कुस्तुन्तुनियामें एक चोरगलीके भीतर छोटा-सा मकान ले रखा था। यह वही घर था। इस गलीमें केवल अन्धकार और निर्जनता सांय-सांय कर रही थी। पांच ही मिनट बाद जमीला बाहर निकली और फिर गाड़ीपर सवार हो गयी। कुछ दूर तक मोटरकार धीमे-धीमे चली और फिर अकस्मात् उसने वह तेजी पकड़ी कि मानो ड्राइवर पागल हो गया हो। कभी मालूम पड़े कि गाड़ी उलटती है, कभी दिखायी दे कि अब यह पेड़ या दीवारसे टकरायी। इस तेजीकी भी कोई हद है। इसे देखकर आंखें तिरमिराने लगी हैं। पर यह रफ्तार घटनेका नाम नहीं लेती। अंगरेज जासूस चार कारोंमें बैठकर इसका पीछा कर रहे थे। प्राणका मोह त्याग करके वे भी इस अंधेरी सड़कपर अपनी कारें वायुवेगसे दौड़ाने लगे। पर इनमें रोशनी न थी। किसीको पता नहीं कि कहां टकरा जायें और यह नश्वर शरीर चूर-चूर होकर जीवनसे हाथ धो दे। सबसे आगेकी गाड़ीमें मेजर हे स्वयं था। यह वीर पुरुष पागल हो गया था और स्वयं अपनी मोटरको जमीलाकी गाड़ीके पीछे अन्धाधुन्ध फेंक रहा था। उस समय उसे अपना होश न था। इस बातकी परवा न थी कि वह कहां जा रहा है; पर एक ही धुन उसके सरपर भूतकी भांति सवार थी—वह यह कि आगेकी गाड़ी नजरसे न चूके। जहां जमीलाकी मोटरकार जरा धीमी पड़ी कि मेजर हेके जीमें जी आने लगता था। पर जमीलाने न मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्या नशा पिया था और उसके ड्राइवरको क्या पागलपना चढ़ा था कि जरा चाल घटायी कि फिर उनकी कार हवा बन जाती थी। इन कम्बख्तोंकी तकदीर देखिये कि यह शैतान गाड़ी कहीं उलटने या टकरा जानेका नाम भी नहीं लेती। मेजर हे समझ गया कि यह दौड़ बासफोरस जाकर ही समाप्त होगी। उसने इसका वह पीछा किया कि वाह-वाह कहना पड़ता है।

अंगरेजी मोटरकारोंमें भेदिये भरे तो थे ही; पर वे हथियारोंसे भी ठंसी थीं। इन्होंने पूरी तैयारी कर रखी थी कि फ्रेञ्चोंसे भिड़न्तके समय इनके मारात्मक हथियार शत्रु-दलका तुरत संहार कर दें। सबसे पिछली कारमें बिजलीके ज्योतिपुञ्ज 'टार्च' थे। इतनेमें जमीला खानमकी कार बास-फोरसके मुहानेपर पहुंची और वह देखती क्या है कि सामने पानीमें अंगरेजोंके दो टार्पेडो जहाज उसकी प्रतीक्षामें खड़े हैं। जैसे ही वह किनारेपर पहुंची तो ये चलने लगे। एकमें तो रोशनीका नाम न था। यह सन्दिग्ध जहाजके इर्दगिर्द चक्कर काट रहा था और दूसरा किनारेपर गश्त लगा रहा था कि जैसे ही मेजर हे अपने टार्चोंके इशारेसे आर्डर दे तो यह अपना काम आरम्भ करे। यदि सचमुचमें फ्रेञ्च जहाजमेंसे हथियार उतारे जायें तो इस टोर्पेडो जहाजका काम था कि तुरत उसपर गोलाबारी करके उसको आदमियों सहित नाश कर दे। यह तो इसी मर्जकी दवा थी।

इस समय चारों ओर विचित्र सन्नाटा था। सबको हवा लोहेकी तरह भारी मालूम पड़ने लगी। उसमें भयङ्कर प्रतीक्षा घोर शीतकालमें कुहरेकी तरह जम गयी थी। एक क्षणके लिए शत्रु और मित्र सभीके प्राण सिहर उठे। फ्रेञ्च जहाजके पासवाले टोर्पेडो बोटके कप्तानने सुना कि विपक्षियोंका जहाज चलने लगा है। इस खटकेने सबके कान खड़े कर दिये। कप्तान बोला—"जहाज चलने लगा।" इसपर टार्पेडो बोट उस ओर निशाना करके तैयार हो गया। फ्रेञ्च जहाज भी डुलने लगा। यह देखकर प्रखर ज्योतिकी रश्मियां इधर-उधर दौड़ने लगीं। किसने किससे इस गुप्त और तेजोदीप्त भाषामें क्या कहा, यह भगवान् जानें। इतनेमें एक चमत्कार हुआ। जमीलाकी मोटरकार पानीके किनारे-किनारे तेजीसे दौड़ने लगी। मेजर हे चौंक पड़े और तत्क्षण वे उसके पीछे दौड़े। उधर सन्दिग्ध जहाजमें पूरा अन्धकार छा गया और वह भी भागने लगा। अब फिर वही बेतहाशा दौड़ आरम्भ हुई। एक भूरे रङ्गकी बड़ी कारके पीछे चार अंगरेज कारें छूट रही हैं और सभीकी सरपट चाल है। इस तूफानी रातमें सबके कपड़े तरबतर हो गये; पानी बदनके छिद्र-छिद्रमें भर गया; पर कर्तव्य सबके आगे है। इसलिए एक-दूसरेको कोसते हुए भी मोटरें हवागाड़ी बन रही हैं। इस दौड़का अन्त भी समीप आया और जमीला खानमकी गाड़ी रुक गयी। कुछ दूरीपर और गाड़ियां भी थम गयीं, अंगरेजोंकी गाड़ियां और टार्पेडो बोट सन्दिग्ध जहाजका पीछा भी कर रहे हैं और इस रहस्यमय रमणी जमीलाकी कारको भी अपनी नजरसे ओझल होने नहीं दे रहे हैं। पर अब इस कारने चक्कर काटा और एकदम पीछेको फिरकर रास्ता मीलभर तक प्रकाशमय कर दिया। इस ज्योतिपुञ्जमें मेजर हेकी चारों कारें चमकने लगीं और उनके सवार हथियार संभालकर लड़ने-को तैयार हो गये। यह घटना क्षणभरमें हो गयी। और आश्चर्य देखिये कि जमीलाकी गाड़ी खड़ी रही और उसमेंसे किसीने फैर न की और न बन्दूक ही तानी। पर अंगरेजोंके चौकन्ना होनेसे पहले ही अंधेरेको चीरकर समुद्रसे गोलियों-की बाढ़ आयी और कई भेदियोंका वहीं ढेर हो गया। इसपर जो बचे थे उनमें अजीब हौलदिली फैल गयी; लेकिन उन्होंने अन्धकारकी ओर अन्धाधुन्ध गोलियां छोड़नी शुरू कीं। मेजर हे भी अपने आपेमें न रहा। उसने बन्दूक और तलवार लेकर जमीलाकी गाड़ीपर आक्रमण किया। उस ओर दनादन गोलियां दागीं और उनसे मोटरका लैम्प बुझ गया और कांचके टुकड़े-टुकड़े हो गये। सर्वत्र घोर तमिस्रा छा गयी। मानो सारा संसार काली स्याहीमें डूब गया हो। मेजरको चाण्डाल इसलिए चढ़ा था कि उसके 'टार्च', जिनसे वह टार्पेडो बोटोंको रोशनीके इशारोंसे आज्ञा देनेवाला था, अपरिचित शत्रुकी गोलियोंकी मारसे चूर-चूर हो गये थे। इस काल-निशामें अब वह टार्पेडो जहाजको किस प्रकार आर्डर देता। वे उससे प्रायः मील-भरपर खड़े थे कि मेजर जैसी आज्ञा देगा वैसा करेंगे। इस असहाय अवस्थामें मेजर पागल हो गया। उसे इस अन्धेरखुपमें कुछ न सूझा कि क्या करना चाहिए। वह गला फाड़-फाड़ चिल्लाया कि सब मेरे पीछे चलो और जमीलाकी कारका लैम्प जलाओ जिससे टार्पेडो बोटोंको आज्ञा दी जाये कि वे हथियार संभालें और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सन्दिग्ध फ्रेञ्च जहाजको उड़ा दें। इस अंधेरेमें हाथ मारे नहीं सझता। लेकिन सब इशारे ही इशारे दौड़े और मोटर-कार पकड़ ली। मेजर हेकी जेबमें एक छोटा टार्च था, उसने वह जलाया और देखता क्या है कि ड्राइवर अपनी सीटपर आरामसे लेटा हुआ है। प्रकाश देखकर उसने अपनी क्रूर दृष्टि मेजरपर गाड़ी और विशुद्ध अंगरेजीमें बोला—"आप लोगोंकी ये क्या हरकतें हैं? आपने मेरी मोटरका लम्प क्यों तोड़ा?" अपने पाकेट-टार्चोंकी सहायतासे अंगरेजोंने सारी गाड़ी छान डाली, पर उसमें सिवा ड्राइवर और एक महिलाके कुछ न पाया। यह तरुणी अपने स्थानपर बैठी हुई थी और मेजर तथा उसके साथियोंको देखकर वह टससे मस न हुई। उसके चेहरेपर उस समय भी बुर्का पड़ा था। मेजर हे इस कारकी सहायतासे भी अपना काम सिद्ध न कर सका। हताश होकर वह वापस गया और जब अपनी कारोंके पास पहुंचा तो पता लगा कि इस बीच प्रायः एक सौ गुण्डोंने उसकी कारोंपर आक्रमण किया और वे एक ड्राइवर-को छुरेसे ठण्डा कर गये हैं तथा सब टायरोंको फाड़ गये हैं—यहां तक कि अतिरिक्त टायरें भी, जो मोटरोंमें रखी थीं, उनके हाथसे अछूती न बचीं। सङ्कटपर सङ्कट पड़ा। अब तो वापस जानेका भी ठिकाना न रहा। हायरे किस वबालमें फंस गये। लेनेके देने पड़े। इस समय मेजर हेको यह फिक्र पड़ी कि कहीं पैदल वापस न जाना पड़े। उस स्थानपर सुबह तक ठहरनेमें भण्डाभोड़का डर था। बहुत चेष्टा की गयी कि बिजलीके जेबी लैम्पकी सहायतासे टापेंडो बोटोंको सङ्कटकी सूचना दी जाये, पर इनकी रोशनी कितनी दूर जा सकती थी; इसपर मूसलाधार पानी बरस रहा था। पिस्तौलें दागी गयीं, पर इस प्रलयङ्कर तूफानमें उनकी आवाज दस कदमपर मर गयी। मेजर हे और उनके साथियोंकी स्थिति ऐसी हो गयी मानो वे सब घोर दलदलमें फंस गये हों और अब उनके बाहर निकलनेका कोई उपाय न हो। मेजर फिर जमीलाकी गाड़ीके पास गया। उसे क्षीण आशाकी ज्योति उस ओर जानेको उत्साहित कर रही थी। वहां जानेपर उसने देखा कि ड्राइवर उसी तरह लेटा हुआ है और सिगरेटका धुआं फकाफक छोड़ रहा है। मेजरने कहा—चलो अपनी गाड़ी आगे बढ़ाओ, तो वह बोला—"आप ही चलाकर देख लीजिये। कुछ अशिक्षित और असंस्कृत गुण्डोंने अभी हमपर आक्रमण किया और उन्होंने हमारे लैम्प चकनाचूर कर दिये हैं तथा टायर भी काट डाले हैं।" यह सुनकर मेजरके मुंहसे अनायास शोकपूर्ण चीत्कार-ध्वनि निकल पड़ी। पर उसे ड्राइवरकी बातोंपर विश्वास न आया, इसलिए उसने स्वयं मोटरकारका निरीक्षण किया और उसकी दिलजमई हो गयी कि कार खराब हो गयी है। इस दुरवस्थामें मेजरके मुंहसे अनाप-शनाप गालियां निकलने लगीं और वह ड्राइवरपर बेहद बिगड़ा:—

—"बदमाश! तुम कौन हो और यहां क्या करने आये हो। तुमने अपनी कारको खुद खराब किया है कि हम सब तङ्ग हों। बेईमान! ठहरो, तुम्हें जल्दी नरकका रास्ता दिखाऊंगा।" इसपर ड्राइवर दबा नहीं, उल्टे वह मुंहजोर बन गया और क्रोधपूर्ण शब्दोंमें कहने लगा:—

"अच्छा, ठहरिये। आप यह बातें किससे कर रहे हैं। मेजर साहब! आपको अपने इन बेहूदा शब्दोंके लिए जवाब देना पड़ेगा। मैं फ्रेञ्च हूं और उस महिलाका ड्राइवर हूं जो एक राजदूतकी बहन है। यह तो बताइये, ये जो गुण्डे यहां जमा हुए हैं, आप इनके दलके क्या हैं? मैंने अपनी आंखोंसे देखा है कि आपने मेरी गाड़ीके लैम्प तोड़-फोड़ डाले। आपने किसके भरोसे हमपर गोलियां चलायीं? हम आपकी गीदड़-भबकीमें आनेवाले नहीं हैं। यह रोब किसी औरपर झाड़ियेगा।"

यह सुनकर मेजर आग-बगूला हो गया। चेहरा क्रोधसे लाल हो गया। और बोला:—

"पाजी! अपनी चालबाजीसे बाज नहीं आता। अभी खबर लेता हूं। तुम्हारा यहां आनेका उद्देश्य मैं खूब जानता हूं।"

यह सुनकर ड्राइवर कुछ शान्त-सा हो गया और धीरताके साथ बोला—

"मेजर महोदय! मैं नहीं समझता कि आप क्यों अधिकाधिक गरम होते जा रहे हैं। मेरी मालकिन लहरी तबीयतकी हैं। इनके दिलमें विचित्र तरङ्गें उठती हैं। इन्होंने एक फ्रेञ्च जहाजके कप्तानसे वादा किया था कि आज ठीक अधरातके समय अपनी मोटरकारके लैम्पोंकी रोशनी दिखा उसे विदाई देंगी। यह कप्तान इनका मित्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और देखिये, आपने क्या अनर्थ कर डाला है। दोनों लैम्प टूट-फूट गये हैं और ये सर थामे बैठी हैं। भला, सोचिये तो आपका इससे क्या लाभ हुआ। एक युवतीके तरुण हृदयकी उमङ्गोंपर आपने पानी फेर दिया। क्या यही आपकी मर्दानगी है? आपको अपनी करतूतपर लज्जा आनी चाहिए। पर मैं देख रहा हूं कि आप 'उल्टा चोर कोतवालको डांटे' वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हैं।"

यह सुनकर मेजरने मुंह फेर लिया। अब उसे इस महाधूर्त ड्राइवरके साथ बात करनेमें घृणा होने लगी। इसकी निर्लज्जता देखिये कि मेजरको दम दे रहा है, गोया उसे इनके असल उद्देश्यका पता ही न हो। पर ड्राइवर फिर लेट गया और फक्राफक्र अपने मुंहसे सिगरेटका धुआं छोड़ने लगा। थोड़ी देरमें उसने करवट बदली और सोनेकी तैयारी करने लगा। गाड़ीके भीतर जमीलाने भी पांव फैलाये, मानो वह अब रातभर यहीं अड्डा जमाना चाहती है। मेजर वापस गया और अपनी मोटरकारोंकी मरम्मतमें लग गया। दो घण्टे तक उसने जी-तोड़ मिहनत की, पर सारा परिश्रम व्यर्थ गया। उसने भी अब निराश होकर गाड़ीमें रात बितानेकी ठान ली। गाड़ीमें बैठे पन्द्रह मिनट हुए थे कि रास्ता आलोकमय हो उठा। देखा तो पीछेसे एक मोटरकार उनकी ओर आ रही है। उसका हृदय बांसों उछलने लगा। इस कारमें कुछ अंगरेज अफसर आये जो मेजरके साहसपूर्ण उद्योगका परिणाम जाननेके लिए अति उत्सुक थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि पांसा उलट गया है तो वे महान् शोक और आश्चर्यमें निमग्न हो गये। पर 'वर्तमानेन कालेन प्रवर्वन्ते विचक्षणा,' विद्वान् लोग वर्तमान कालकी सोचते हैं। उन्होंने भी उस समय वापस जानेकी चिन्ता की। उनके पास चार अतिरिक्त टायर थे। मेजरके कहनेपर ये टायर जमीलाकी गाड़ीमें लगाये गये और स्वयं वह ड्राइवरके साथ बैठा। दोनों गाड़ियां रवाना हुईं और घण्टों बाद बासफोरसके तटपर गेनकिसके दफ्तरके आगे रुकीं। मेजरने आगेकी गाड़ीके दो आदमी अपने साथ लिये और ड्राइवर तथा जमीलाको साथ लेकर ये मकानमें घुसे। यहां खूब रोशनी थी और मेजरने गुस्सेमें आकर जमीलाके बुर्केको उधेड़ डाला और बोला:—

"वेईमान! तेरा नाम क्या है?"

जमीलाने, जिसका पर्दा फाश हो चुका था, कहा—"अहमद।"

मेजरका चेहरा जर्द पड़ गया और अहमद तनके खड़ा था। उसे इस काममें हजारों रुपये मिल चुके थे और प्रायः एक लाख रुपये और मिलनेवाले थे। उसे परवा क्या थी। कर्नलने उससे कह रखा था कि कोई तेरा बाल बांका नहीं कर सकता है। वह भली भांति जानता था कि हथियार सकुशल उतर गये हैं और मुस्तफा कमालपाशाके पास पहुंच जायेंगे। तब उसे क्या डर था। मेजर भी चाहे जितना झल्लाया हुआ क्यों न हो, उसे तो इस बातकी शर्म थी कि ज्यादा चीं-चपड़ करनेसे मामलेका भण्डाफोड़ हो जायेगा और इसमें बदनामीके सिवा कुछ गांठमें बंधनेका नहीं; तब झगड़ा बढ़ानेसे क्या लाभ? इसके अतिरिक्त मेजर समझा कि इनकी गाड़ीसे तो जहाजके कप्तानके साथ कोई इशारेबाजी न चल सकी, इसलिए अभी हथियार न उतर पाये होंगे। उसने इन दोनोंको बाहर निकाला और ये भी मोटरपर सवार हो चल दिये।

दूसरे दिन प्रातःकाल मेजरको दुःखद और लज्जाप्रद समाचार मिला कि रातको हथियार उतर गये और वे सीधे अनातोलिया भेज दिये गये हैं। इसपर तुर्रा यह कि टार्पेडो बोटका एक कप्तान मेजरके पास आया और बोला:—"वाह! आपने अच्छी खबर लगायी। जिस जहाजके पीछे हमने सारी रात खोयी, वह तो गल्लेका जहाज है। उसमें एक भी हथियार न मिला।" यह सुनकर मेजर हक्का-बक्का रह गया।

*

यह नाटक कूटनीतिकी रहस्यमय यवनिकाके भीतर खेला गया। संसारको इसका बहुत कम पता चला; पर यह सबको मालूम हो गया कि उक्त युद्धमें टर्कीकी विजय हुई और वहांके इतिहासमें नया पन्ना खुल गया। लेकिन असलमें हार-जीत हुई मेजर हे और कर्नल ब्लांकी। कुछ दिनों बाद दैववशात् ये दोनों ओरियण्ट एक्सप्रेससे यूरोपको जानेके लिए कुस्तुन्तुनियाके स्टेशनपर मिल गये। दोनों मुसकराये और दुआ-सलामका शिष्टाचार अदा किया। इस समय दोनों भद्रताके अवतार बने हुए थे। कर्नल ब्लांने मेजरसे पूछा—

—"आप किधरको तशरीफ ले जा रहे हैं।"

—"पहले लण्डन जाऊंगा, फिर वहांसे भारतको प्रस्थान करूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



—"और आप कहां तशरीफ ले जा रहे हैं।"

—"पहले पैरिस जाऊंगा, फिर वहांसे मेक्सिकोको प्रस्थान करूंगा।"

—"मैं आपकी पूर्ण सफलता चाहता हूं।"

—"मैं भी हृदयसे चाहता हूं कि आप सर्वथा सफल हों।"

दोनोंने हृदयसे बिना द्वेषके बातें कीं और किसीके हृदयमें किसी प्रकारके फफोले नहीं थे।*

*इस लेखको कई पुस्तकोंकी सहायतासे लिखा गया है। कुछ नाम भले ही बदल दिये गये हों, पर घटना मनगढ़न्त नहीं—सत्य है। ले०

---

# पीपल

कानतका यह तरुवर पीपल
युग-युगसे जगमें अचल-अटल
ऊपर विस्तृत नभ नील-नील, नीचे वसुधामें नदी, झील
जामुन, तमाल, इमली, करील
जलसे ऊपर उठता मृणाल, फुनगीपर खिलता कमल लाल
तिर-तिर करते क्रीड़ा मराल
ऊंचे टीलेसे वसुधापर, झरती है निर्झरिणी झर-झर
हो जाती बूंद-बूंद झरकर
निर्झरके पास खड़ा पीपल, सुनता रहता कलकल-छलछल
पल्लव हिलते ढलपल-ढलपल
पीपलके पत्ते गोल-गोल
कुछ कहते रहते डोल-डोल
जब-जब आते पञ्छी तरुपर, जब-जब जाते पञ्छी उड़कर
जब जब खाते फल चुन-चुनकर
पड़ती जब पावसकी फुहार, बजते जब पञ्छीके सितार
बहने लगती शीतल बयार
तब-तब कोमल पल्लव हिल-डुल, गाते सरसर-मर्मर मञ्जुल
लख-लख, सुन-सुन विह्वल बुलबुल
बुलबुल गाती रहती चह-चह, सरिता गाती रहती बह-बह
पत्ते हिलते रहते रह-रह
जितने भी हैं इसमें कोटर
सब पञ्छी गिलहरियोंके घर
सन्ध्याको जब दिन जाता ढल, सूरज चलते हैं अस्ताचल
करमें समेट किरणें उज्ज्वल
हो जाता है सुनसान लोक, चल पड़ते घरको चील कोक
अंधियाली सन्ध्याको विलोक
भर आता है कोटर-कोटर, बस जाते हैं पत्तोंके घर
घर-घरमें आती नींद उतर
निद्रा हीमें होता प्रभात, कट जाती है इस तरह रात
फिर वही बात रे वही बात
इस वसुधाका यह वन्य प्रान्त
है दूर, अलग, एकान्त, शान्त
हैं खड़े जहांपर शाल, बांस, चौपाये चरते नरम घास
निर्झर, सरिताके आस-पास
रजनी-भर रो-रोकर चकोर, कर देता है रे रोज भोर
नाचा करते हैं जहां मोर
है जहां वल्लरीका बन्धन, बन्धन क्या—वह तो आलिङ्गन
आलिङ्गन भी चिर-आलिङ्गन
बुझती पथिकोंकी जहां प्यास, निद्रा लग जाती अनायास
बस वहीं सदा इसका निवास

—गोपालसिंह नेपाली

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अमेरिकाकी दुकानोंमें व्यवसायका नया ढङ्ग

विश्वनाथ सेठी एम० ए०—न्यूयार्क

जहां दरिद्रताका राज होता है, वहां व्यवहारमें असत्यता आ जाती है। निर्धन पुरुष कितना ही क्यों न चाहे, पूरा ईमानदार नहीं हो सकता। यह तथ्य साधारण सांसारिक जीवोंके विषयमें है। * और इस संसारमें प्रायः सभी जीव ऐसे हैं। भारत धनहीनतामें अपना सानी नहीं रखता। इसलिए इसके विषयमें भी यह नहीं कहा जा सकता कि यहांके निवासियोंका व्यवहार सदा सच्चा होता है। यहां धर्मका राज्य अन्य देशोंसे अधिक है, पर महाभारतकी उक्ति है कि 'धनाद्धर्म प्रवर्तते' धर्म भी धनसे चलता है। इसलिए हम देखते हैं कि भारतमें लोग एक-दूसरेपर एतबार नहीं करते। यहां अन्य देशोंसे कम उधार मिलता है और ब्याजका दर इतना अधिक है कि कहीं-कहीं साहूकार सालभरमें अपनी पूंजीको तिगुना कर लेना चाहता है। ये सेठ-साहूकार 'परम धर्मात्मा' होते हैं, मांस नहीं खाते; पर जब निर्धन किसानों या मजदूरोंसे इनका आर्थिक सम्बन्ध स्थापित हो जाये तो फिर विश्वास कर लीजिये कि ये इन निःस्व दरिद्रोंको इतना चूस जाते हैं कि केवल काल ही इनके हाथसे उनकी रक्षा कर पाता है। भारतमें जिसे कम मुनाफेकी सूझती है, उसे 'धर्मके दूने' तो करने ही पड़ते हैं। इन सबको अपनी-अपनी पड़ती है और गाहकोंकी सुविधाका ख्याल किसीको नहीं होता। इसके अतिरिक्त हमारे देशमें मोलतोलका बाजार बहुत गरम है। अभी तक भारतमें ऐसी दूकानें बहुत कम हैं, जहां निश्चित दाम लिये जाते हों। इस देशका ऐसा दुर्भाग्य है कि जहां 'एक दाम' लिखा हो, वहीं मोलमें अधिक काटकूट करनी पड़ती है। भारतमें दूकानदार और गाहक एक-दूसरेको परस्परका सहायक नहीं समझते। उनका रिश्ता आपसमें भक्ष्य-भक्षकका-सा हो जाता है। बनियेका गाहकोंको इतना अविश्वास होता है कि वे सदा यही समझते हैं कि बनियेने हमें ढग ही लिया। कहा जाता है कि एक गाहकने मोदीसे एक पैसेका घी खरीदा और जब घर पहुंचा तो देखता क्या है कि कटोरोके पेंदेमें एक पैसा चिपका हुआ है। बिचारा खुश हुआ कि चलो आज तो बनिया ठगा गया। पर उसे यह विश्वास न आया कि बनियेको कुछ मुनाफा न हुआ हो। बोला—"पैसा तो वापस आ गया है, पर फिर भी दूकानदारने कुछ-न-कुछ मुनाफा तो लिया ही होगा।" इसी प्रकार गाहकोंका विश्वास भी व्यापारी कम करते हैं। पर यूरोपके बड़े देशों और अमेरिकामें सारे व्यापारकी जड़ परस्पर विश्वासपर पड़ी है; और क्या बनजारा तथा क्या गाहक, सबको अपनी-अपनी साख कायम रखनेकी पड़ती है। इसका मुख्य कारण यह है कि वहां समृद्धि बहुत अधिक है। हमारी औसत आय महीनेमें चार रुपया है, पर अमेरिकनकी आय सौ रुपया है। हम जानते ही हैं कि ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रान्स आदि देशोंके मजदूर और कुली भी दिनमें कम-से-कम चार रुपये रोज कमाते हैं और अमेरिकामें तो यह आय आठसे दस रुपये रोज तक पहुंच जाती है। इसलिए उनमें अधिक ईमानदारी पायी जाती है। * इसका प्रमाण वहांकी वे बड़ी-बड़ी दूकानें हैं

---

* जो अकिञ्चनताको वरते थे, उन महात्माओंकी बात न्यारी है। ऐसे त्यागी—'तपोभिराढ्या विभवैंदरिद्राः' अर्थात् तपके खजाञ्चियों और धनके दरिद्रोंपर हमारे अर्थशास्त्रके सिद्धान्त ~~नहीं~~ लागू नहीं होते। ऐसे जीव विरले होते हैं और वे इस नियमकी पुष्टि करते हैं कि संसारकी यात्राको अर्थ ही चला रहा है। ले०

* इसका यह अर्थ न लगाना चाहिए कि जो जितना अधिक धनी होगा वह उतना ही अधिक सत्यव्रती होगा। यह सिद्धान्त उस जनतामें लागू होता है जो वणिक्वृत्तिसे विहीन होती है। किसी भी देशमें ऐसी श्रमजीवी जनता प्रायः ९९ सैकड़ा होती है। उसकी सम्पन्नता ही देशको ईमानदार बनाती है। पूंजीपतियों और अधिकांश धनियोंके विषयमें तो यही कहना पड़ता है कि इनके पाप धनराशिकी वृद्धिके साथ-साथ चक्रवृद्धिके हिसाबसे बढ़ते जाते हैं। इसका कारण स्पष्ट है। इनकी धनलिप्सा जब बढ़ती है तो इनके अर्थोपार्जनके पापी उपाय भी घोरतर और अधिक हिंस्र बनते जाते हैं। ले०



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिनमें हर वक्त हजार-बारह सौ गाहक रहते हैं और जो सूईसे लेकर हवाई जहाज तक सब सामान बेचती हैं। इनमें बड़े दिनके पहले प्रायः पांच-छ हजार गाहक हर वक्त भरे रहते हैं और इनमें कई केवल सैलानी होते हैं। ये उस समयकी विशेष सजावट तथा प्रदर्शनकी छबि देखनेको ही आये हुए होते हैं। ऐसे अवसरपर सैकड़ों गाहक चीजोंको देखते और उठाते हैं। बेचनेवाली लड़कियां सबपर नजर नहीं रख सकतीं और यार लोग अगर चाहें तो माल अपनी जेबके हवाले कर लें; पर ऐसे उचक्के बहुत कम होते हैं और इस असाधारण भीड़के समय भी बहुत कम चोरी होती है। इस तथा ऐसे ही अनेक दृष्टान्तोंने पश्चिमी व्यापारियोंको उत्साहित किया है कि वे अपने गाहकोंका पूरा एतबार करें। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात इस विषयपर यह भी है कि ये व्यापारी अपने गाहकोंकी सेवा करना अपना धर्म समझते हैं। भारतके दूकानदार इस सिद्धान्तको बहुत कम समझते हैं कि दूकानदार किसी भी समाजका एक अङ्ग है और उसका अस्तित्व मूलतः समाजकी सेवा करना है। देश, नगर अथवा गांवके निवासियोंकी पार्थिव आवश्यकताओंकी सामग्री जुटाना उसका धर्म है। इन पदार्थोंको वह बिना मूल्य वितरण नहीं कर सकता, क्योंकि ऐसा करनेसे स्वभाव-से ही स्वार्थी मनुष्य कुछ ही समयमें उसकी दूकान उजाड़ देंगे। इसलिए वह कुछ लाभ लेकर अपने कारबारसे अपनी गुजर करता है और उसे भी बढ़ाता है। पर जो बनिये गाहकोंको लूटना ही परम धर्म समझते हैं, उनके दिन बीतने-पर हैं। यही कारण है कि व्यापारियोंकी संस्था रोटरी क्लबने अपना पहला उद्देश्य गाहकों और फलतः समाजकी सेवा करना रखा है।

अमेरिकाके व्यापारी इस विषयपर आगे बढ़े हुए हैं। वे नितप्रति गाहकोंको अच्छा और सस्ता माल देनेके नये-नये ढङ्ग निकालते रहते हैं। इससे उनका व्यापार तो चमकता ही है, साथ ही गाहकोंकी सेवा भी होती है। इधर वहां भी मन्दा समय आया है, इसलिए उन्होंने माल बेचनेकी एक नयी प्रणाली निकाली है। इसका नाम है—'सेल्फ सर्विस' अर्थात् 'आत्म-सेवा।' इससे दूकानोंका व्यय बहुत घट गया है, क्योंकि स्वयं गाहक अपनी जरूरतका सामान ढूंढ़ लेते हैं और बेचनेवाली लड़कियोंकी दरकार नहीं रहती। जो हजारों डालर प्रति मास इन लड़कियोंमें खर्च होते थे, अब वे गाहकोंकी जेबमें पड़ने लगे। न्यूयार्कमें एक बड़ी दूकान है। इसमें स्त्रियोंके कपड़े बिकते हैं। यह अब खूब सस्ते कपड़े बेचने लगी है, क्योंकि औरतें वहां जाकर जो कपड़ा पसन्द आया, उसे स्वयं कैश-डिपार्टमेण्टमें पहुंचाती और दाम चुका-कर ले जाती हैं। इस प्रकारकी सबसे बड़ी और सर्वाङ्गपूर्ण दूकान न्यूयार्कके सेठोंके मुहल्ले मैनहैटनमें यूनियन स्कायर-पर है। इस दूकानके अस्तित्वके कारण कई साधारण नारियां भी अपनेको उत्तमरूपसे संवारनेमें समर्थ होती हैं। यहां कई मञ्जिलोंपर बिकाऊ कपड़े सजाये गये हैं। नाना स्थानोंपर भिन्न-भिन्न तरह और मूल्यके कपड़े टंगे रहते हैं और उनपर दामोंका टिकट भी लटकता रहता है। क्या इन कपड़ोंका बढ़िया-घटियापन और क्या इनके मूल्य, सबको इस तरह सजाया गया है कि गाहकोंकी नजरमें ये तुरत आ जाते हैं। घटिया लिबास नीचेकी मञ्जिलोंमें और बढ़िया ऊपरके तलोंमें रखा हुआ है। मूल्य बहुत सस्ता है। इस दाममें गरीब-से-गरीब बस्तीमें भी नारियोंके वेशभूषाका सामान नहीं मिल सकता। यहां प्रायः पन्द्रह रुपयेमें औरतोंकी पूरी पोशाक मिल जाती है। बढ़िया रेशमी हो, चाहे ऊनी, सबका अधिकसे अधिक मूल्य यही निर्धारित किया गया है। कपड़ोंका चुनाव भी जबर्दस्त है। सब मेलका कपड़ा आपको इस एक दूकानमें मिलेगा। इस दूकानमें जाकर आप बिना कुछ खरीदे लौटें, यह भी असम्भव है। यद्यपि कोई भी आपसे कुछ खरीदनेकी जिद न करेगा, क्योंकि वहां इस कामके लिए कोई आदमी नहीं है। गाहकको स्वतन्त्रता है कि अकेला सारी इमारत घूम ले और चाहे तो एक कौड़ीका भी सामान न खरीदे। जो गाहक पोशाक खरीदेगा, उसे बिना उसे पहने कैसे मालूम होगा कि यह उसके बदनमें ठीक उतरेगा, इसलिए प्रत्येक मञ्जिलमें कई छोटे-छोटे कमरे बने हैं जिनमें चारों तरफ बड़े-बड़े आईने टंगे हैं और कपड़े टांगने तथा बैठनेको स्थान बना हुआ है। औरतें अपने मनकी लिबास छांटकर इनमें पहुंचती हैं और उन्हें शरीरपर आजमाती हैं। यदि छोटी-बड़ी हुईं तो फिर दूकानमें रख देती हैं। कुछ नौकर हैं जो इन जगह-जगहपर पड़े हुए कपड़ोंको यथास्थान रखने-का भी काम करते हैं। इतना ही नहीं, प्रत्येक मञ्जिलपर ऊंची कुर्सीपर एक लड़की बैठी रहती है जो ऊपरसे सारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कमरेको देखती रहती है। लेकिन ऐसे अवसर कम ही आते हैं कि ये लड़कियां कुछ बोलें या करें। गाहक देख-भालकर जब एक पोशाक लेनेकी ठान लेता है तो उसे लेकर कैश-डिपार्टमेण्टमें जाता है और वहां दाम चुकाकर रसीद और पैक किया हुआ सामान ले जाता है। रसीद—दामकी भर-पायी—के साथ गारण्टीका कागज भी है। उसमें लिखा रहता है कि यदि गाहकको माल पसन्द न आया तो वह उसे पांच दिन तक पहननेके बाद भी वापस कर सकता है। चाहे तो वह अपने रुपये ले जाये या कपड़ा बदल ले। अमेरिकाके दूकानदारोंका आत्मसम्मानका भाव देखिये कि जब कोई गाहक नापसन्द होनेपर कपड़ा वापस करने जाता है तो उससे किसी प्रकारका प्रश्न नहीं किया जाता। गाहकका इतना एतबार है कि उससे यह भी नहीं पूछा जाता कि आपने इसमें क्या खराबी पायी। गाहक सम्भ्रान्त महिला है, भले ही वह सस्ता कपड़ा खरीदने इस दूकानमें आयी हो, इसलिए जब वह पांच दिन पहनकर कपड़ा लौटाती है तो यह मान लिया जाता है कि इसके कुछ महत्त्वपूर्ण कारण होंगे; और यह बात ठीक भी सिद्ध हुई है। हजारों गाहकों-में एक-दो ही एक बारके खरीदे हुए कपड़े वापस करते हैं। इन दूकानोंका खूब प्रचार हुआ; क्योंकि महिलाओंको सस्ते-के अलावा इनमें यह भी सुभीता था कि जी चाहे तो घण्टों कपड़े खोजते और अपने शरीरपर उन्हें आजमाते रहो। न कोई देखनेवाला और न टोकनेवाला। इसपर यह शर्त कि यदि घर ले जाकर अपनी सखी-सहेलियोंकी राय न हुई तो वापस कर आये। इन कपड़ेकी 'सेल्फ सर्विस' दूकानोंकी देखादेखी टोपकी दूकानवालोंने भी यह ढङ्ग पकड़ा। जब उन्हें मालूम हुआ कि पांच दिन तक वापस कर सकनेकी शर्त रहनेपर भी बहुत कम गाहक सामान लौटाते हैं तो उन्होंने भी गाहकोंको सब सुविधायें दीं। औरतें इन दूकानों-पर भी टूटने लगीं। इन दूकानोंमें टोपें कतारोंमें टंगी रहती हैं। ये रङ्ग और दर्जेके हिसाबसे बनी होती हैं। प्रत्येक कतारके नीचे आईना रहता है। गाहक दूकानमें गये, अपने मनपसन्द टोपकी कतारके पास जाकर ये महिलायें अपने सरपर टोपें आजमाती हैं। चाहे घण्टों इस परखमें लगा दें कोई उनसे चूं करनेवाला नहीं। यदि किसी औरतको सारी दूकानमें एक भी टोप न जंची तो वह सूनसान अपना रास्ता देखती है। सम्भव है किसी गाहकको दूकानदार या विक्रे-ताओंके सामने शायद कुछ लज्जा मालूम होने लगे कि देखा तो घण्टों किये, पर खरीदनेके समय यों ही खिसक गये; इसलिए दूकानमें कोई नहीं रहता। इस प्रकार ये नये 'अपना सामान खुद निकालो' स्टोर गाहकोंको किसी प्रकारका सङ्कोच होने ही नहीं देते। इसपर टोपोंके दाम बहुत सस्ते रखे गये हैं। बढ़ियासे बढ़िया टोपका दाम पांच रुपया है। दूकानमें इतने प्रकार और वजहोंकी टोपें टंगी रहती हैं कि शायद ही कोई गाहक रीते हाथ बाहर निकले। ऐसी दूकानोंमें जो दो-चार गाहक अपना कुतूहल मिटाने, यों ही खाली देखने चले जाते हैं वे भी कुछ-न-कुछ खरीदकर ही आते हैं। कुछ व्यापारियोंको सूझा कि ऐसी दूकानें खोलनी चाहिए जिनमें औरतोंके जूते इस ढंगपर बेचे जायें। जूतेका काम बहुत नाजुक है। यदि कोई गाहक पांच दिन बाद जूता पहनकर वापस करे तो कमसे कम जूतेका तला तो घिस ही जाये। ऐसी दूकानें यदि भारतमें खुलें तो कई गाहक तो साल-भर जूता ही न खरीदें। कलकत्ता, बम्बई जैसे बड़े नगरोंमें ७६ दूकानें भी होतीं तो इन भलेमानसोंकी बारहों मास गुजर हो जाती; और इसका भी पूरा सन्देह है कि दूकानोंके जूते तो सब घिस जाते, पर आय बहुत कम होती। दूसरे देशमें इनका दिवाला पिटना आसान बात है, पर अमेरिकामें इस नयी पद्धतिने जूतोंके व्यापारको उत्तेजन दिया और जो गाहक जूते ले गये, उन्होंने उन्हें वापस करना अपने 'आत्म-सम्मान' के भावके विरुद्ध समझा। भारतमें कई 'विनोद-प्रिय' लोग जूता लाकर उसे पांच दिन बाद वापस करनेको भी दिल्लगी समझते। अमेरिकाके निवासी ऐसा नहीं समझते हैं। वे जानते हैं कि दूसरेकी आर्थिक हानि करना हंसी-मजाक नहीं है—यह उजड्डपना और बेईमानी है। हमारे देशमें तो उस रोज एक हिन्दी-पत्र-सम्पादक रो रहे थे कि उनके गाहक न तो यह सूचना ही देते हैं कि वे पत्र बन्द करना चाहते हैं और न भेजा हुआ वी०पी० छुड़ाते हैं। भला सोचिये तो, यह है हमारे देशके शिक्षितोंका हाल। अखबारवालेको समयपर सूचित करनेमें वे तीन पैसेका कार्ड खर्च नहीं कर सकते और फल यह होता है कि पत्रको चार-पांच आनेका घाटा मुफ्तमें दूसरेकी भूल और स्वार्थकी नीच प्रवृत्तिके कारण लग जाता है। इस बातको ध्यानमें रखकर अमेरिकाके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दूकानदारों और गाहकोंकी ईमानदारी और उनके सत्य व्यवहारकी भूरि-भूरि प्रशंसा करनी पड़ती है। धन्य हैं वहांके गाहक कि जूते जैसी नाजुक चीजके व्यापारमें वहां किसी प्रकारकी लम्पटता नहीं देखी जाती है। किन्तु यदि कोई गाहक पांच दिन बाद जूता वापस ले आता है तो दूकानदारको उसके पैसे उसे 'सहर्ष' वापस करने पड़ते हैं। गाहकके साथ ऐसा भद्र व्यवहार किया जाता है कि उसे नाममात्रका संकोच भी नहीं होता।

'अपना सामान खुद निकालो' का सिद्धान्त सबसे अधिक भोजनालयोंमें पाया जाता है। यूरोप और अमेरिकाके भोजनालयोंमें जो बेहरा रहते हैं उन्हें भोजनोपरान्त दाम चुकानेके समय टिप या बख्शीश देनेकी प्रथा है। जर्मनी स्विट्जरलैण्ड आदि देशोंमें तो यह बेशर्मी इतनी बढ़ गयी है कि बेहरा जब आपका बिल लायेगा तो उसमें बिलकी रकमका दस सैकड़ा अधिक इसलिए बढ़ाया जाता है कि यह अतिरिक्त अंश बेहराको उसकी सेवाके लिए दिया जाये। मान लीजिये कि आपने पांच रुपयेका भोजन किया तो आपको साढ़े पांच रुपयेका बिल मिलेगा। आठ आना बेहरेकी सेवाके लिए जबर्दस्ती लिया जाता है। छात्रों, सङ्कटापन्न व्यक्तियों और निर्धनोंको यह 'बख्शीश' बहुत खटकती है। आपने दस पैसेका खाना खाया तो आपको जबर्दस्ती एक पैसा और देना पड़ा। बेकारों और निर्धनोंको यह 'टैक्स' खटकता था। इन 'अपनी सेवा खुद करो' भोजनालयोंने 'टिप' का अन्त कर दिया है। युक्तराष्ट्रमें सर्वत्र 'काफेटेरिया' खुल गये हैं। इनमें प्रत्येक गाहक अपना बेहरा है। भोजनालयके भीतर घुसते ही आपके सामने रकाबियां, छुरे-कांटे और चम्मच पड़े रहते हैं; अपने कामका सामान उठा ले जाइये और कटघरेपर जाकर जो खानेको जी चाहे, मांगिये। आपके पास ही नुमाइशी आलमारीमें भांति-भांतिका भोजन परोसा रखा है। इसे देखकर ही आपकी लार टपकने लगेगी। उनपर दाम भी लिखा है। इसलिए वित्तानुसार भोजन लीजिये। आपको भोजनके साथ ही एक कागजका टुकड़ा मिलेगा जिसमें दाम खुदे रहते हैं। आरामसे खाइये और जब आप बाहर जाते हैं तो यह टुकड़ा और उसमें लिखे दाम कैश-विभागके हवाले कीजिये। आपको किसीको एक पाई भी बख्शीश न देनी पड़ेगी। यह बड़ी बचत है; क्योंकि अमेरिकामें यदि आप दस सेण्टकी चाय पियेंगे तो कमसे कम पांच सेण्ट बख्शीश देनी पड़ती है। पचास सैकड़ा रकम इसीमें चली गयी। 'काफेटेरिया' में यह झगड़ा है ही नहीं।

इस सर्विसका इतना अधिक प्रचार हो गया है कि अब मोदियोंने भी यह ढंग पकड़ लिया है। उनकी दूकानोंमें कांचकी आलमारियोंमें सामान सजा रहता है और इधर-उधर मेजपर भी रखा रहता है। गाहक भीतर जाते हैं और अपने-अपने कामका सामान आलमारियोंसे निकाल लाते हैं तथा दाम देकर घरको ले जाते हैं। सेर, पांच सेर आदि भिन्न-भिन्न वजनकी थैलियां पड़ी रहती हैं। गाहकको जितना सामान चाहिए उतने वजनकी थैली वह दूकानदारके पास ले जाता है और दाम चुकाकर घर ले जाता है। इन दूकानोंमें कोई आदमी नहीं रहता, क्योंकि दूकानदारको छोड़ औरोंकी जरूरत ही नहीं होती। चाहे जितने गाहक आयें, वे सब अपना-अपना काम करते हैं। दूकानदार उनसे दाम लेता जाता है। नौकर-चाकरोंका खर्च घट जानेसे इनमें माल सस्ता मिलता है। दाम तो सर्वत्र लिखा ही रहता है, इसलिए ग्राहक जान जाते हैं कि 'अपना माल खुद निकालो' वाली दूकानोंमें किफायत रहती है। इनके दरवाजोंपर मजबूत झोले लटकते रहते हैं। गाहक दूकानमें प्रवेश करते समय अपने साथ एक झोला ले जाता है और सारी दूकानकी परिक्रमा करके अपने कामकी चीजोंके पाकेट उसमें भरता जाता है। जब वह देखता है कि अब और सामान नहीं चाहिए तो दूकानदारके हवाले यह झोला कर देता है। वह बिल बनाता है और इतनेमें यह सब सामान बंध भी जाता है। इस प्रकार सहूलियत और किफायतके साथ सौदा होता है।

अमेरिकाके दूकानदारोंके सामने विकट प्रश्न यह आया था कि किस प्रकार इस मन्दीके जमानेमें गाहकोंको सस्ता और अच्छा सौदा दिया जाये। यह 'अपना सामान निकालो' का सिद्धान्त इसी प्रश्नको हल करता है। वहां मजदूरों और मुलाजिमोंका पारिश्रमिक बहुत अधिक है। इस प्रकार अब दूकानोंमें इनकी आवश्यकता कमसे कम रह गयी। इस बचतसे दूकानदार सस्ता माल बेचनेमें समर्थ हो रहे हैं। इससे उनकी आमदनी बढ़ गयी है और गाहकोंको पूरा सन्तोष हो जाता है कि वे ठगे नहीं गये। मनस्तत्त्वविशारदों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



का कहना है कि गाहक सबसे अधिक तब पतियाता है जब वह खूब ठोक-पीटकर माल खरीदे। इन दूकानोंमें गाहक घण्टों मालकी परख करके जब उनका दिल भलीभांति जम जाता है तो माल खरीदते हैं, इसलिए ऐसे मालको वे कभी वापस भी नहीं करते। यही कारण है कि जूतेकी दूकानें भी इस सिद्धान्तपर चलकर खूब पनप रही हैं। भारतमें इस बातकी अत्यन्त आवश्यकता है कि दूकानदार और गाहक परस्परका अविश्वास दूर करें और यह बात हृदयङ्गम कर लें कि ये दोनों ही परस्पर सेवा कर रहे हैं। तब कहीं हम आगे बढ़ सकेंगे।

---

# गीत

आये; अमर प्राण भर लाये।
प्रिय, धन्य! स्वर्ण-फल पाये।

तम विकराल, जाल मायाका,
मुग्ध-चकित मृग-शिशु कायाका,
लुभा न पायी भ्रम-मरीचिका,
सुधा-सरित लहराये,—
अब सुधा-सरित लहराये।
प्रिय, धन्य! महाफल पाये।

जगमग भवन रचे प्रेयसिने,
खोले धवल कुमुद प्रिय निशिने,
स्वर्णिम गीत कंपे दिशि-दिशिमें;
दृढ़ पग रख बढ़ आये,—
तुम दृढ़ पग रख बढ़ आये।
प्रिय वीर! ज्योति-फल पाये।

अभिनय अमित खुले जीवनमें,
बदले विस्मय-पट क्षण-क्षणमें,
छिन्न हुए सब तम-बन्धन-बल,
पूखर पूभा-घन छाये,—
अब पूखर पूभा-घन छाये।
हे वीर! अमर फल पाये।

—गिरीशचन्द्र पन्त "अनङ्ग"

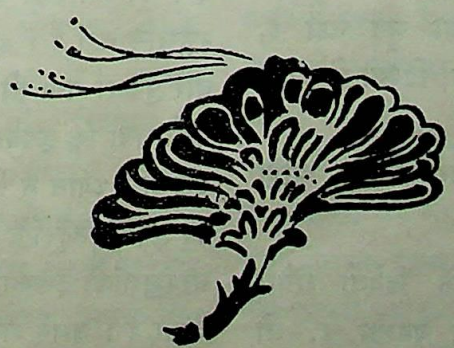

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राकफेलरके घरमें लेनिनका भूत

जे० डी० अग्निहोत्री एम० ए०—पैरिस

डियेगो रिवेरा

कल्पना कीजिये कि आप ज्यों ही अपने बैठक-के कमरेमें घुसने लगे तो आपकी दृष्टि सामने एक अंधेरे कोनेपर पड़ी, जहां अकस्मात् अपने विकट डाढ़ निकाले शेर आपकी ओर घूर रहा हो। उस समय आपके होश ढीले हो जायेंगे, इसमें सन्देह नहीं। भले ही यह सिंह मुर्दा हो, या उसकी खाल सिमटकर इस भयानक रूपमें आपके सामने खड़ी हो। यही हालत उस रोज नेलसन राकफेलरकी हुई, जब उसने देखा कि उसके नये भवन 'राक-फेलर सेण्टर'में एक दीवार पर लेनिनका भूत खड़ा है और वह एक सैनिक तथा एक मजदूरका हाथ मिला रहा है। लेनिनका रूप अपनी इमारतमें देखकर राकफेलर कुछ समयके लिए चेतनाहीन हो गया और उसकी समझमें नहीं आया कि यह क्या माजरा है। तब उसके परिजनोंने उसे बताया कि प्रभो! काण्डज्ञानशून्य होनेकी कोई आवश्यकता नहीं है; आपके चेहरेपर हवाइयां व्यर्थमें फिर रही हैं, यह दैत्य लेनिनका भूत नहीं है, यह तो साधारण चित्र है और कलाकार डियेगो रिवेराकी कृति है।

—"हैं! क्या डियेगोने यह चित्र हमारी भीतपर खोदा है? उसको यह दुस्साहस कैसे हुआ?"

—"खुदावन्द! हजूर जानते ही हैं कि डियेगो रिवेरा कम्यूनिस्ट है और वह सदा ऐसे ही चित्र बनाता है, जो श्रमजीवियोंमें विद्रोहकी अग्नि भड़कायें।"

—"मुझे यह तो मालूम था, पर मुझे कभी ख्याल न आ सका कि हमारे यहां वह उद्धत कम्यूनिस्ट चित्र बनानेकी दम भरेगा।"

—"देखो! बगलमें यह विचित्र चित्र। ओह! ठीक है, उसने इस सारी दीवारमें धनियोंका विकृत रूप दिखानेकी चेष्टा की है। यह देखिये, कैसा विरूप उपहास है! यह मैं नहीं देख सकता। धनी तोंद फुलाये, अपनी निर्लज्ज, मांस-हीन, क्रूर और गिद्धोंकी-सी सूरत लेकर नाच कूद, राग-रङ्ग और शराब ढालनेमें मस्त हैं। और ठीक इसके बगलमें लेनिन मजदूर और सिपाहीको मिलाकर इनके पैशाचिक कृत्यों और लूट-खसोटके विरुद्ध विद्रोह फैला रहा है। नहीं! यह नहीं हो सकता। कोई है? रिवेराको नीचे बुलाओ।"

एक बांस ऊपर, बांसोंके मचानपर डटा हुआ एक भीम-काय पुरुष गोया संसारके कोलाहलसे दूर चला गया हो और वहां निर्द्वन्द्व होकर अपने इष्टदेवका ध्यान करके उसकी मूर्ति गढ़ रहा हो। सरके बाल घुंघराले और खड़े हैं, मानो वे उसका मस्तिष्क सुरक्षित रखनेके लिए सन्तरियोंकी भांति दण्डायमान हों। यह 'ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा' बना हुआ है और दीवारके पलस्तरके भीतर रङ्ग भर रहा है। यह है डियेगो रिवेरा—मेक्सिकोका संसार-प्रसिद्ध चित्रकार। इसे लोग 'मेक्सिकोके विप्लवका चित्रकार' भी कहते हैं।

अमेरिकाका राकफेलर वंश वास्तवमें जगत्सेठ है। उसका कुमार नेलसन राकफेलर इस डियेगो रिवेरापर क्रुद्ध है। पर अमेरिका भारतकी देशी रियासत या अपढ़ सेठोंकी रङ्गभूमि नहीं है। इसलिए जब डियेगो रिवेराका नाम बार-बार पुकारा गया तो उसने नजर नीचेको की और जब उससे कहा गया कि कृपया नीचे आइये तो इस मनस्वी मनीषीने उस ओर ध्यान न दिया। इस अपूर्व प्रतिभासम्पन्न चितेरे-का हृदय मजदूरोंके आगे झुक जाता है और धनमदसे मत्त नरपशुओंको देखकर वह इच्छा न रखनेपर भी विद्रोह कर बैठता है। उसने राकफेलरकी आज्ञापर उतरना और करबद्ध होकर उसके सामने खड़ा होना अपने आत्मसम्मानके विरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समझा। रिवेरा ध्यानमग्न चित्तसे चित्रोंमें रङ्ग भर रहा था और नीचेसे पुकार मच रही थी कि जरा नीचे आकर दो बात तो सुन जाओ। पर सुनता कौन; रिवेरा तो कानोंमें तेल डालकर अपने काममें मग्न हो गया। बात बढ़ी और पुलिस बुलायी गयी। उधरसे अपने प्यारे चित्रकारकी रक्षाके लिए कुछ मजदूर भी आ धमके। रिवेराने देखा कि फजूलका बखेड़ा न खड़ा हो जाये। वह उतरा और नेलसन राकफेलरने कहा—"देखिये, यह तो आपने हमारे ऊपर बड़ा अन्याय किया। कहां राकफेलर सेण्टर—पूंजीपतियोंका अड्डा और कहां

रिवेराका बनाया हुआ लेनिनका चित्र

उसको विध्वंस करनेवाला लेनिन। यह बेमेल चित्र इस दीवारपर बहुत खटकता है।" इसपर रिवेरा कुछ न बोला; वह सीधा पीछेको लौटा और आसपासके लोग इस देवके सामनेसे हट गये कि कहीं किसीपर वार न कर दे। लेकिन यह मेक्सिकन चित्रकार सुशिक्षित, संस्कृत और शिष्टाचारका मित्र है। ज्यों ही पुलिसने उसे घेरा तो बोला—"रास्ता क्यों रोकते हो? मैं जरा राकफेलर महोदयको कच्चा नक्शा दिखा दूं जिसपर इनके हस्ताक्षर हैं।" रिवेरा अपनी पाकेटसे नक्शा लाया और उसने लेनिन-शत्रु राकफेलरके सामने उस स्थानपर अंगुली रख दी, जहां इस चित्रकी मूल रेखा-लिपि थी। आश्चर्य और चमत्कार देखिये कि सचमुच लेनिनका चित्र बनानेकी आज्ञा रिवेराको मिल चुकी थी, और उसपर किसी दूसरेके नहीं, स्वयं नेलसन राकफेलरके हस्ताक्षर थे। अपनी यह मूर्खता देखकर वह हैरान था। इस धूर्त पूंजीपतिने संसारको पट्टी पढ़ायी, पर यह स्वयं कभी धोखेमें न आया। देखिये भाग्यकी विडम्बना कि इस कूटनीतिज्ञानहीन रिवेराके हाथसे वह मार खा गया। उसने अपने हस्ताक्षर देखे और वह बार-बार चित्रकी मूललिपि देखने लगा। अन्तमें उसे विश्वास हो गया कि दरिद्रों, अकिञ्चनों और पसीनेकी कमाई खानेवालोंके विधाताने उसका कठोर उपहास किया है। उसने रिवेरासे अपनी भूलके लिए क्षमा मांगी और कहा कि आपने ठीक किया; पर हमारे भवनमें लेनिनकी मूर्ति हमें सदा कम्पायमान करती रहेगी, इसलिए आप अब अधिक कष्ट मत कीजिये।" थोड़ी देर तक वह चुप रहा और सबको ऐसा मालूम हुआ कि हवाका बहाव भी रुक गया है। इतनेमें राकफेलरने सत्तर हजार रुपयेका चेक काटा और रिवेराके हवाले किया। यह उसकी मजूरी थी। दीवारपर सफेद पर्दा डाल दिया गया और आज भी यह दीवार सफेदपोश बनी है। रिवेराके चित्रोंपर चूना पोत दिया जाता; पर ये चित्र तेल या पानीके रङ्गके बने हुए नहीं हैं। ये तो दीवारमें खुदे हैं। इनका आकार भी विराट् है। यह दीवार गिरायी जा सकती थी। पर इसके गिरनेके साथ इस प्रकाण्ड भवनके गिरनेका डर है। तब क्या लेनिनका भूत पूंजीपतियोंके इस अखाड़ेमें जम गया? तब तो रिवेराने शरारतमें शैतानको भी मात दे दी।

इसके बाद ही रिवेराने टाउनहालमें एक भाषण दिया। उसमें उसने साफ बताया कि—"पूंजीपतियोंको दमझांसा देना मैं अपना धर्म समझता हूं। मैं तो जासूसकी भांति इनके महलोंमें घुसा। कुछ समय तक तो ये मेरी अन्तर्राष्ट्रीय भावपूर्ण कलाको ताड़ न सके। इन्हें मेरी कलाने उसी प्रकार अपनी ओर खींचा, जिस भांति रोशनी पतिङ्गेको आकर्षित करती है। तब तो मेरी आत्मा खुल खेली। डेट्राइटमें फोर्डके घरमें तो मैंने साफ तौरसे दिखाया है कि पूंजीपतियों द्वारा शासित देशमें श्रमजीवियोंकी क्या दुर्दशा होती है। मेरी कलामें पूंजीपतियोंके प्रति विद्रोह उछलता है और इसके द्वारा पसीनेकी गाढ़ी कमाई खानेवालोंकी आत्मा प्रकट होती है।" इसके बाद रिवेराने एक वाक्यमें—सूत्र-रूपसे—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रमजीवियों और दलित तथा लुण्ठित जनताकी कलाका उद्देश्य बताया है। उसका मत है—"यह कला दूध है, घी है और है स्वास्थ्यकर तथा पुष्ट भोजन—यह जनताको बल देती है और हृष्ट-पुष्ट बनाती है।"

नेलसन राकफेलरने इसके बाद रिवेराको पत्र लिखा—"मुझे खेदके साथ आपसे निवेदन करना पड़ता है कि आप यदि लेनिनका चेहरा बदलकर वहां किसी औरका मुख बना दें तो बड़ी कृपा हो। आप जानते ही हैं कि मैं आपकी कलाका भक्त हूं। इसीलिए मैंने आपके काममें लेशमात्र भी हस्तक्षेप न किया। मैं आशा करता हूं कि आप मेरे आन्तरिक भावको समझेंगे और मुझे इस सङ्कटसे उबारेंगे। यदि आप यह परिवर्तन करनेकी कृपा करेंगे तो मैं सदा आपका गुण मानूंगा।" इस पत्रसे रिवेराको राकफेलरके सामने अपने स्पष्ट विचार रखनेका अवसर मिल गया। उसने लिखा :—

"पूंजीपति व्यापारियोंके मुख्य अड्डेमें इस प्रकारके चित्रके विषयमें आपके विचारोंको मैं खूब समझ गया हूं। मेरा ख्याल है कि ये लोग जो मृत महान् आत्माके चित्रको देखकर घबरा जाते हैं, मेरे सभी चित्रोंसे अपनी मानहानि समझेंगे। इसलिए मैं तो सम्मति दूंगा कि इस चित्रको खण्डित करनेके बजाय मैं इस चित्रका वातावरण ही बदल दूं।.....मैं यह उचित समझता हूं कि मैं वह चित्र बदल दूं जिसमें धनी लोगोंकी उलङ्ग लास्यमय दिनचर्या दिखायी गयी है। वहांपर मैं हबशियोंके मुक्तिदाता लिङ्कनका चित्र बना दूंगा और इसके चारों ओर विलियम लायड गैरीजन, वेण्डल फिलिप्स, 'टामकाकाकी कुटिया' की लेखिका हैरियट बीचर स्टो आदिके चित्र रहेंगे। इस वातावरणमें उक्त स्थलपर लेनिन और लिङ्कन मनुष्य जातिके महान् नेताके रूपमें रह जायेंगे और किसी ऐसे आदमीको इन चित्रोंमें आपत्ति नहीं हो सकती, जो मानव-प्रेम और मनुष्य-जातिकी एकताका शत्रु न हो।"

इस मतसे नेलसन राकफेलर मेल करना नहीं चाहते। यह है भी ठीक। लेनिन और धनियोंका मेल वैसा ही है जैसे आग और पानीकी दोस्ती। भारतमें म० गांधी और सेठोंकी दोस्ती भले ही होवे, पर लेनिन तो रूसमें पूंजीपतियोंको चौपट कर गया है और संसारके मजदूरोंको यह सिद्धान्त बता गया है कि सबसे अधिक धर्मात्मा पूंजीपति श्रमजीवियोंका रक्त चूसनेमें सबसे बड़ी जोंक है। इसलिए लेनिनका भूत राकफेलरको सता रहा है। इसका यही इलाज अभी तक सूझा है कि रिवेराके चित्रोंपर पर्दा डाल दिया जाये। किन्तु यह श्वेत यवनिका भी तो सदा लेनिनकी स्मृति जागृत करती रहती है।

*

यह तो न्यूयार्कका किस्सा है। रिवेराने डिट्रायटमें फोर्डके दरबारमें भी सनसनी फैला दी। फोर्ड पृथ्वी भरके धनियोंमें उदारहृदय, वदान्य और श्रमजीवियोंका मित्र समझा जाता है। इसके कारखानोंमें मजदूरोंको कमसे कम बीस रुपये रोज मजदूरी मिलती है। यह मिहनताना जगत-

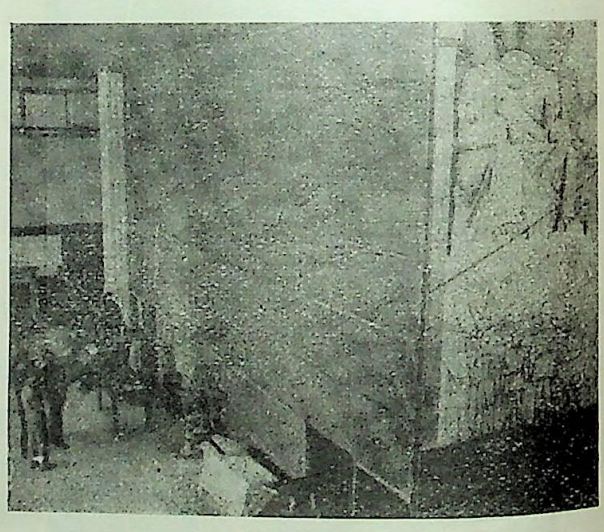

राकफेलर सेण्टरमें यह सारी दीवार पर्देसे ढांक दी गयी है, क्योंकि लेनिनका भूत वहांके व्यापारियोंके हृदयमें उनके नाशके भयङ्कर दृश्यका ताण्डवनृत्य करता है।

भरमें रेकार्ड है। इससे अधिक अभी तक कोई कारखानेका मालिक न दे सका। * पर रिवेराने जब फोर्डके मजदूरोंका चित्र खींचा तो उन्हें देखकर स्वयं फोर्डकी आंखें डबडबा आयीं। उनका रक्तविहीन और पीला चेहरा, पेट अन्दर धंसा हुआ, आंखें गड्ढेमें समायी हुई देखकर वह अपनी क्रूरता देखने

* भारतके वदान्य और धर्मात्मा पूंजीपतियोंकी बात छोड़ दीजिये। वे तो छ आना रोज मजदूरी देकर भारतकी सत्तू फांकनेवाली जनताका उद्धार कर रहे हैं; पर यूरोप और अमेरिकामें फोर्डको इस बातमें कोई नहीं पाता। —ले०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लगा। इस चित्रमें मजदूरोंने भी अपने असली रूपका साक्षात्कार किया। रिवेराने इस चित्रमें बताया है कि सबसे परोपकारी धनी भी बिना दरिद्रोंका रक्तशोषण किये नहीं रह सकता। इस तसवीरमें उसने जो रेडियोका यन्त्र बनाया है उसकी सूरत गिरजेसे मिलती है। इसलिए पादड़ी उसपर बहुत बिगड़े हैं। उनका कहना है कि इस गिरजेनुमा रेडियो-यन्त्रको धनियोंकी सेवामें रखके रिवेराने यह इशारा किया है कि धर्म भी इन पापपुञ्ज पूंजीपतियोंका दास है। कम्यूनिस्टोंका मत है कि आजकल धर्मका जो रूप हो गया है वह

अमेरिकाके पादड़ियोंमें इस चित्रने खलबली मचा रखी है; क्योंकि ईसामसीहके इस नवीन रूपमें दिव्य आलोकके दर्शन नहीं होते।

जनताको मूर्ख बनाने और धनियोंको उसे लूटनेमें सहायता देता है। इसलिए रिवेराने रेडियो यन्त्रको गिरजेका आकार देकर स्पष्ट ही यह तथ्य प्रकट किया है कि जिस प्रकार रेडियो यन्त्र पूंजीपतियोंके पक्षपाती विचारोंका प्रचार करता है उसी प्रकार संसारके वर्तमान गिरजे तथा अन्य देवालय भी यही काम करते हैं। पर यह अनर्थ कितना ही हानिकर क्यों न हो, बहुत छोटा है। रिवेराने एक चित्र ऐसा बनाया है कि ईसाई-मात्र उसे देख उसके शत्रु बन गये हैं। रिवेरा वास्तवमें शैतान है। ईश्वरावतार महात्मा ईसा मसीहका उपहास करना मारात्मक पाप है—यह असह्य है। इस अधर्मी चितेरेकी धृष्टता देखिये कि उसने 'प्राणशास्त्रका अनुशीलन' नाम रखकर यह जो चित्र बनाया है, इसमें कई डाक्टर अनुसन्धान कर रहे हैं और एक डाक्टर एक 'बालगोपाल'को टीका दे रहा है। टीका देनेका सिरम निकाला गया है एक गधे, भेड़िये और गायके अङ्गसे। अब इसका मिलान भगवान् ईसाके जन्मकालसे कीजिये। यह बाइबलमें वर्णित चित्रसे पूरा मिल जाता है। मेरीने अपना लाड़ला पकड़ रखा है और यूसुफ उसके हाथपर कुछ खोद रहा है। गधा, भेड़िया और गायोंके अस्तबलमें ईसा जन्मा। उसके पैदा होनेके समय पूरबसे तीन ज्ञानी उसकी आरती करने पहुंचे थे। ये ऊपर बैठे हुए हैं। यह देखकर अमेरिकाके धार्मिक जगत्में तहलका मच गया। सत्यानास जाये इस मेक्सिकन कलाकारका कि वह स्वयं परमात्माका भी मजाक उड़ाने लगा है और मजा देखिये कि इन नीतिविरुद्ध गर्हित विचारोंका प्रचार करनेके साथ अपनी जेबें भी भर रहा है। यह सब देखकर जनरल मोटर्स कम्पनीके पूंजीपति और धर्मभीरु मालिक घबराये हैं। उन्होंने रिवेराको बहुत बड़ा आर्डर दिया था। शिकागोकी प्रदर्शिनीमें उसे काम दिया गया था। इस बदनामीके बाद यह आर्डर रद कर दिया गया है। यह देखकर रिवेराने डाइरेक्टरोंसे कहा—"मैं बहुत खुश हूं कि आपको वक्तपर अक्ल आ गयी है। मैं तो पगला हूं और अपनी कलाको संसारके सब रुपयोंसे अधिक महत्त्व देता हूं, इसलिए प्रदर्शिनीमें अपनी ही प्रतिभा और कलाका उद्घाटन करता, आपके विचारोंका प्रचार न कर सकता। सो समयपर चेत जानेके लिए आपको बधाई देता हूं।" जनरल मोटर्सवाले चाहते थे कि रिवेरा उनके मतके अनुसार चित्र तैयार करे, पर धनियोंको जनताके विषधर सांप समझनेवाला यह कलाविधाता उन्हें समाजके उपकारकका रूप कैसे दे सकता?

*

रिवेराकी प्रतिभा यूरोप और अमेरिकामें प्रख्यात है। इसकी तूलिकामें वह जोर है कि इसके चित्रोंको देखकर तुरत दो दल बन जाते हैं। एक तो इसको देवता समझता है और दूसरा शैतान। इस विवाद-ग्रस्त कलाकारका जन्म १८८६ में मेक्सिकोके गुआननुपाटो नामक कस्बेमें हुआ। जब इसकी उम्र तीन वर्षकी हुई तो यह चित्र बनाने लगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पिता समझ गया कि पुत्र या तो चित्रकार होगा या लुटेरा। इसलिए १८९७ में उसने रिवेराको एक आर्ट स्कूलमें भर्ती कर दिया। इस 'आकाडेमी डास वेल्लास आर्टेस' में रिवेराका मन न भरा। इसलिए वह पेरिस पहुंचा और वहां चित्र-कलाका अध्ययन करने लगा। प्रसिद्ध फ्रेञ्च चित्रकार पिकास्सो इसकी प्रतिभा देखकर इसके हाथ मुफ्तमें बिक गया। इसके चित्रोंमें विचित्र नवीनता और स्तम्भित करने-वाला चमत्कार देखकर वह इसकी प्रतिभाके सामने सर धुनता था। पर इस पागल रिवेराकी मति देखिये कि इसने अपने सैकड़ों चित्र बनाते ही फाड़ डाले। उसकी नजरोंमें ये चित्र बैठते न थे। रिवेरा इस कलामें विचक्षणता प्राप्त करनेके लिए इटली भी गया। यहां उसने वह कला सीखी जो इसकी विशेषता है। इसने वहां गीले पलस्तरपर मूर्ति बनाना और उसमें रंग भरनेका काम सीखा। यह कला प्राचीन इटलीमें पूर्णताको पहुंच गयी थी, पर प्रायः सौ वर्षसे मर गयी थी। रिवेराने इसे पुनर्जीवित किया। पाठक ऊपर पढ़ आये हैं कि राकफेलर सेण्टरमें इसने लेनिनका जो चित्र बनाया है वह भी इसी प्रकार दीवारमें बना हुआ है। १९२० में इसे विचार आया कि अपने देशमें जाकर प्रेरणा प्राप्त की जाये। इसलिए यह रेड इण्डियन—रिवेराका नाम स्पेनिश है, पर वह अमे-रिकाका आदिम अधिवासी है—अपनी जन्मभूमि मेक्सिको पहुंचा और वहांके चित्र तैयार करने लगा। उसने मेक्सिकोके शिक्षासचिव जोसे वास्कोनसेलोसके आग्रह करनेपर उसके दफ्तरके लिए चित्र बनाये। इन्हें देखकर जोसे वास्कोनसेलोस फूलकर कुप्पा हो गया और कहने लगा कि रिवेरा मेक्सिकोका सबसे बड़ा चित्रकार है। उसके इन अपूर्व और विद्रोही चित्रोंको देखकर मेक्सिन टोपियां उछालने लगे और उसकी जय पुकार उठे। उन्होंने इसका नामकरण किया—"मेक्सिको-के विद्रुवका चित्रकार।" इसने वहां मेक्सिकोका सारा इति-हास व्यङ्ग चित्रोंमें वर्णित कर दिया। इसपर थोड़ेसे पुराने विचारके लोग ताकमें बैठ गये कि ये उजाड़ दिये जायें, पर बहुमत रिवेराके साथ था। नवयुवकोंने उसमें अपना सच्चा मुखिया पाया। इसलिए वे पहरा देने लगे कि कोई इन चित्रोंको ध्वंस न कर जाये। लेकिन इससे क्या होता। जैसे ही ये पहरेदार वहांसे हटे कि किसी कट्टरपन्थीने चोरीसे हथौड़ा मार-मारके कुछ चेहरे बिगाड़ दिये। इन्हें तोड़ना आसान न था, पर चेहरोंपर छेद हो गये। स्पेनमें भी रिवेराका बहुत सम्मान हुआ। वहां भी यह राष्ट्रीय चित्रकार माना गया, कलाके पारखी इसके चित्रोंका चमत्कार देखकर वाह! वाह! कहने लगे और १९२९ में 'अमेरिकन इन्स्टि-ट्यूट आफ आर्किटेक्टस' ने इसे ललित कलाके लिए पदक दिया। वहांके 'नवकला-मन्दिर' ने तो रिवेराको अकेले अपने चित्रोंकी प्रदर्शिनी करनेके लिए आज्ञा दी। यह आज्ञा अब तक माटिसके सिवा अन्य चित्रकारको नहीं दी गयी। उसका यह सम्मान सामान्य न था। शीघ्र ही रिवेराका नाम युक्तराष्ट्रमें फैल गया। कई अन्य स्थानोंपर इसके चित्रोंकी प्रदर्शिनियां हुईं। युक्तराष्ट्रमें रिवेरा बहुत जल्द लोकप्रिय हो गया। इसीलिए पूंजीपति भी उसकी कलापर टूट पड़े। पर अब उनके होश ठिकाने आये हैं। अंग-रेज समालोचक आर्नोल्ड बेनटका कहना है—"अधिकांश मध्यवित्तों और सब धनियोंका वास्तविक चित्र उन्हें दिखाया जाये तो वे अपना किम्भूत किमाकार रूप देखकर पागल हो जायेंगे।" यही दशा रिवेराके चित्रोंको देखकर अमेरिकाके धनियोंकी हुई है। लेकिन रिवेरा कम्यूनिस्ट नहीं है। उसने रूसमें भी अपनी कलाकी करामात दिखायी और वहांके 'ललितकला' के विद्यालयमें कलापर भाषण भी दिये, पर अमेरिकाके कम्यूनिस्टोंने उसका इसलिए बायकाट कर रखा है कि वह धनियोंके लिए चित्र बनाता है। आशा है अब उनकी भी आंखें खुल जायेंगी। जो हो, इस शरारतीने राक-फेलरके घरमें लेनिनके भूतको घुसेड़ दिया है जिससे नेलसन राकफेलरकी नींद-भूख हराम-सी हो रही है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मजदूर

श्री अख्तरहुसेन रायपुरी

कलकत्तेके एक दैनिक पत्रके किसी पिछले अङ्कमें यह समाचार प्रकाशित हुआ था—"हावड़ाकी एक गलीमें कल एक शोचनीय घटना हो गयी। एक मजदूर अपनी स्त्री और बच्चोंके साथ अपनी कोठरीमें मरा हुआ पाया गया। आत्म-हत्याका सन्देह होता है। पुलिस खोज कर रही है।" इस तीन लाइनके समाचारके ऊपर किसी रईसके पुत्रजन्मोत्सव-का विवरण आधे कालममें था। इसलिए किसीने आंख उठा-कर भी उसे न देखा। फिर भी इस दुर्घटनाका सारा हाल मुझे अवगत है।

*

एक तङ्ग कोठरी, १२ फीट लम्बी और ८ फीट चौड़ी, जिसके द्वारपर सूर्यकी किरणें प्रभातके समय पल-भर मंडरा-कर ओझल हो जाती थीं, जिसकी चौखटपर आते ही हवाके झोंके वेसुध होकर पलट पड़ते थे। उस गलीसे होकर मुहल्ले-की नाली निकलती थी। कीचड़ और दुर्गन्ध, मच्छर और कीड़े! कमरेकी दीवारें सीलसे मढ़ी हुई, जिनमें चूहोंके बिल और छतपर चमगीदड़ोंके अड्डे! बरसातमें गलीमें बहुधा जलप्रलय आ जाता था। कभी-कभी नालीसे निकल-कर दो-चार सांप दीवारपर रेंगते थे, छतकी कमानियोंसे लटककर कोठरीके अधिवासियोंको निर्निमेष नेत्रोंसे ताका करते थे। तब भोला मुंहअंधेरे कामपर जानेके पहले बिलों-में कपड़े जलाकर ठूंसता और सोते हुए बच्चोंपर सांपसे बचनेका मन्तर फूंककर चल खड़ा होता। पांच बच्चे····· एक, दो, तीन, चार, पांच! उसकी स्त्री मुनियाने पांच सालमें पांच बच्चे जन दिये थे। सब नङ्गे, भूखे, पीले, सदा-रोगी!

फर्शपर एक फटी हुई चटाई बिछी थी। पड़ोसी जुम्मनके मरनेसे भोलाको केवल इतना लाभ हुआ था। चटाईपर बोरिये और बोरियोंपर फटी हुई दुलाई और उनपर भोला, मुनिया और उनके बच्चे। दूसरे कोनेमें चूल्हा और मिट्टीके बर्तन। अलगनीमें कई फटे-पुराने कपड़े लटके हुए। लकड़ीके सन्दूकमें गिलटके गहने, बच्चोंकी तावीज और भोलाकी रामायण। सामने दीवारपर हनुमानजीका एक भयोत्पादक चित्र, जिसे बच्चे सुबह उठकर सहमे-सहमे प्रणाम करते थे। यह था उस कमरेका सरञ्जाम।

मुंहअंधेरे 'स्वराज मिल' की सीटी काल-निनादके समान वातावरणको कंपा देती थी। भोला चौंककर उठ बैठता और कपड़े पहनकर भागाभाग मिलकी ओर चल पड़ता था। कपड़े? हां, हां, भोलाके पास कपड़े भी थे। उसके बच्चे नङ्गे थे, पर उसके पास कपड़े थे। मिलस्टोरसे वह अपने लिए धोती और मुनियाके लिए साड़ियां खरीद लाया था। सेठजीने उसे एक पैसा फी-गज छूट दी थी। भोला उन्हें आशीर्वाद देते हुए कपड़े उठा लाया था। बच्चोंके लिए भी उसने पांच जोड़े कपड़े बनाये थे—एक वर्ष पहले—और अब वे फट गये थे। सेठजीने उसे कपड़े उधार दे दिये थे—केवल दो पैसा फी-गज सूदपर! हां, तो भोला कपड़े पहने ठीक छ बजे मिलके फाटकपर पहुंच जाता था।

प्रातःकाल छ बजेसे सन्ध्या छ बजे तक, भोला मशीनोंपर चिपटा रहता था। बीचमें दो घण्टेका अवकाश मिलता था, जिसमें रामभरोसेसे सत्तू खरीदकर वह खा लेता और उसीकी दूकानके भीतर थोड़ी देर लेट रहता था। फिर वही मशीनोंकी गड़गड़ाहट! उनके कलपुरजोंका भय-ङ्कर जन्तुओंके समान ऐंठना, तिलमिलाना, बल खाना और अपने अचेतन अवयवोंको मजदूरोंकी ओर फैलाना। मजदूरोंका खून पसीना बनकर निकलता और मशीनोंपर टपकता था। और मशीनें स्वभावानुसार कभी गिरती थीं, कभी उछलती थीं। कभी मशीनोंको अपना क्रीतदास पाकर अट्टहास कर उठती थीं।

शामको मिलसे सब मजदूर निकलते थे। थकावटसे चूर, पांव लड़खड़ाते हुए, निर्वाक्, निःशब्द! सिरसे लेकर पांव तक धुएंके कारण धूमिल और कपड़े तेल व तारकोलमें लथपथ! उनमेंसे कुछ ढीठ ठर्रेका अड्डा मुंहसे लगाये, कुत्सित गालियां बका करते थे और बाकी सब हंसनेका प्रयत्न करते थे। उनकी हंसी नर-कङ्कालके विकट हास्यके समान जान पड़ती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भोलाकी गलीके मुहानेपर सड़क धोनेके लिए फुटपाथपर मैले पानीका एक नल लगा हुआ था। उसके नीचे बैठकर रोज शामको वह नहाया करता था। उसके बच्चे अपने मैले और सूखे हुए हाथ उसके शरीरपर रखकर अपनी मुरझायी हुई आवाजमें 'दद्दा' कहा करते थे। तब भोलाको भान होता था कि उसकी आंखोंसे गर्म आंसूकी बूंदें निकलकर नलके मैले पानीमें मिल रही हैं। नहाकर वह अपनी कोठरीमें न जाता था। वह जानता था कि उस समय मुनिया रसोई कर रही होगी। धुंएके भबके निकासकी राह न पाकर कोठरीमें पर तौलते थे। आंखोंमें, कानमें, नाकमें धुंआं सांसके साथ घुस जाता था। मुनिया आंखें पोंछते हुए, खांसते हुए रोटियां पकाया करती थी।

प्रत्येक शनिवारको भोलाको दस आना प्रतिदिनके हिसाबसे ३॥।) रु० मिल जाते थे। भोला रुपयोंको ठोक-बजाकर देखता और गांठमें बांध लेता था। परिवारके लिए वह उत्सवका दिन होता था। भोला बच्चोंके लिए गुड़की जलेबियां और मुनियाके लिए सड़े हुए आमोंमेंसे छांटकर कुछ अधसड़े आम खरीदता। हनुमानजीके चित्रको धूनी देनेके लिए अगरकी बत्ती खरीदना भी वह न भूलता था। उस दिन भोलाकी उदासी दूर हो जाती थी। कन्तू साबके यहां बैठकर वह आधी लबनी ताड़ी भी पी लेता था। भोला कभी-कभी प्रसन्न भी हो सकता था।

*

उक्त दुर्घटनाके एक दिन पहलेकी बात है। जड़कालेके दिन थे और दुनिया कुहासे व अंधियालेकी चादर ओढ़े हुई थी। मिलकी सीटी बजते ही भोला उठा और चुपकेसे दिया जलाकर मुनियाके पास गया, जो दुलाई ओढ़े जमीनपर पड़ी थी। मुंहपर प्रकाश पड़ते ही मुनियाने कष्टपूर्वक एक उसांस भरी और करुण नेत्रोंसे भोलाकी ओर देखा। छ महीनेसे वह रोग-शय्यापर पड़ी हुई थी, और अब वह रोग-शय्या मृत्यु-शय्यामें बदल गयी थी। भोलाने धीरेसे उसके कपाल-पर हाथ रखा और चमककर 'ओह' कह उठा। माथा जलता तवा हो रहा था। भोलाने खैरातो अस्पतालकी दवा मुनिया-के मुंहसे लगायी; अपने बड़े बेटेको जगाया और सीधा मिलकी ओर भागा। जमीन उसके पैरोंके नीचेसे खिसकी जाती थी।

छ महीने? हां, मुनिया छ महीनेसे बीमार थी। एक दिन रसोई पकाते-पकाते खांसीके साथ उसके मुंहसे खून गिर पड़ा था। तबसे उसे बुखार रहने लगा था। खून भी बराबर आता था, हाथ-पांव गिरे आते थे, यहां तक कि तीन मासमें दो कदम चलना भी दूभर था। भोला उसे रिक्शामें लादकर डाक्टर सेनके पास ले गया था। डाक्टरने परीक्षा करके भोलासे कहा था कि रोगिणीको क्षयरोग हो गया है। रोग अभी असाध्य न था। किसी पहाड़की हवा..... सफाई.....रोशनी.....दूध और फल.....डाक्टरने यही तो कहा था। भोला उसके हाथमें पांच रुपये रखकर अपनी स्त्रीको लिये हुए चुपचाप उसी कोठरीमें लौट आया था। तबसे प्रायः हर रातको वह सोतेमें बर्राया करता था—

"दूध और फल.....रोशनी और हवा। डाक्टरकी ऐसी-तैसी.....मुनियाके थूकमें खून.....बच्चे उसे चाटते।" सचमुचमें उसके सपने बड़े डरावने और घिनौने हुआ करते थे। कभी-कभी वह देखता था कि मुनियाका कलेजा उसके मुंहसे निकल पड़ा। उसमें इल्लियां हैं—लम्बी-लम्बी, और वे सरसराती हुई बच्चोंके कानोंमें घुस रही हैं। तब भोला चौंककर उठ बैठता था। कड़कती हुई सर्दियोंमें भी वह पसीनेसे शराबोर हो जाता था। हृदयकी धड़कनकी आवाज वह साफ सुन सकता था।

मुनियाके बिछौनेके पास मिट्टीका एक प्याला रखा हुआ था, जिसमें वह थूकती थी। बच्चे सुबह-शाम प्याले बदल दिया करते थे। मक्खियां रक्तमिश्रित थूकपर बैठती थीं; फिर अपने पङ्खोंमें उसे लिपटाकर बच्चोंके मुंहपर भिनभिनाती थीं। चूल्हेके पास बैठकर छज्जू, रमनीकी सहायतासे रोटियां पकाता था और तीनों बच्चे बाहर गटरमें खेलते थे। गटरमें कूड़े-करकटके साथ कभी-कभी फलोंके छिलके और मिठाईकी जूठन निकल आती थी। बच्चे गटरमें उतरकर अच्छी तरह उसकी तलाशी लेते और जब कभी खानेकी कोई चीज मिलती तो किलकारी मारकर मैले पानीके नलके पास पहुंचकर उसे धोते और फिर बांटकर उसे खा जाते थे। सड़कके मोड़पर किसी शराफकी ऊंची हवेली थी, जिसके पीछेकी कोठरीमें एक कुत्ता बंधा रहता था। उसकी झबरेदार दुम और मुलायम बालोंमें नौकर प्रतिदिन ब्रुश किया करता था। दोनों बेला उसके लिए दूध और शोरवा आता था। बच्चे उस शानदार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कुत्तेको ईर्ष्यापूर्वक देखते, कभी बचे हुए दूधको लोलुप नेत्रोंसे ताकते और मनमें सोचा करते कि काश हम कुत्ते होते। नन्हां सरजू एक बार साहस बांधकर ऊंघते हुए कुत्तेके सामनेसे दूधका प्याला खिलका लाया था। तीनों बच्चोंने दूधको चखकर देखा था। उसपर कैसी मोटी बालाई पड़ी हुई थी! तबसे बच्चे बहुधा सोचा करते थे कि शराफके कुत्ते होते तो कितना मजा था।

मुनियाको दवा पिलाकर उसका पति कामपर चला गया। छज्जूने उठकर चूल्हा जलाया और दूध गर्म करके अपनी मांके पास ले आया। कोढ़ीखानेका नौकर यह दूध दो आने सेर बेचा करता था। मुनिया वही दूध पीती थी। फिर छज्जू आटा और लकड़ी लेनेके लिए बाजार चला गया। बच्चोंके कोलाहलका रव बाहर गलीसे आ रहा था। मुनियाने कराहकर करवट बदल ली। उसकी स्वप्निल आंखें अतीतकी स्मृतिसे शिथिल होने लगीं। कभी वह भी जवान थी। उसके अङ्ग-अङ्गसे लावण्य टपकता था। और भोला? कैसा सजीला जवान था वह! खेतकी मेड़पर बैठकर पहटको जब वह बांसुरी बजाता था तो मुनियाकी गगरी आप-ही-आप कैसे छलकने लगती थी! फिर एक दिन भोलाने सुनसान अरहरके खेतमें उसकी बांह कैसे थाम ली थी! इधर-उधर नवल हरीतिमा, ऊपर आकाश और दिनका उजाला और खेतोंके बीचमें किसानका प्रेम-प्रदर्शन। मुनियाको वह दिन खूब याद था।

पर विवाह होते ही उनकी गृहस्थीपर जैसे शनि सवार हो गया। लगातार तीन साल पानी नहीं बरसा। भोलाने लाख जतन किये, पर जमीन्दारने उसे तकावी नहीं मिलने दी। बात यह थी कि जमीन्दार मुनियापर रीझ गया था। एक-दो बार राह-चलते छेड़खानी भी की थी। पता चलते ही भोला गंड़ासा लेकर जमीन्दारपर दौड़ पड़ा था। तकावीका मूल्य था—स्त्रीका सतीत्व। भोला इसके लिए तैयार न हुआ। बनियेसे वह एक आना रुपया सूदपर रकम लेकर लगान दे आया था।

पर बनियेका सूद नागकुमारीका आलिङ्गन है।

मुनियाकी बन्द पलकें आंसुओंसे भीग गयीं। उसे वह दिन याद आया, जब बनिया पुलिसकी सहायतासे उन्हें जमीनसे बेदखल कर रहा था। उधर जमीन्दार उनका सामान झोपड़ीसे निकलवा रहा था। भोलाकी आकृति पाषाणके समान कठोर हो गयी थी। खेतमें सरसों फूल रही थी, हवा उनसे छन-छनकर गुनगुनाती जाती थी—"कुछ नहीं है, कुछ नहीं है।" मुनिया अपने दोनों बच्चोंको गोदमें लिये अपने सामानको देखती और रोती थी। पतिके जीते-जी उसका सोहाग लुट रहा था।

इसके बाद उसका जीवन इस अंधेरी, दुर्गन्धमय कोठरीमें सदाके लिए परिबद्ध हो गया। गर्मीमें उबलना, जाड़ेमें ठिठुरना, बरसातमें भीगना! सांप, बिच्छू, मच्छर और खटमल! मुनियाका अन्तस्तल चीख उठा। पहले उसका पति संसारके लिए अन्न पैदा करता था; वह किसान था। अब वह कपड़ेके मिलमें काम करता था, वह मजदूर था। फिर भी वे सब एक-एक मुट्ठी अन्नको क्यों तरसते थे? एक-एक गिरह कपड़ेको क्यों मोहताज थे? मुनिया इस रहस्यको न समझ सकी। फिर भी संसारके प्रति उसका हृदय घृणासे परिपूर्ण हो गया। सामने हनुमानजी सन्तोषपूर्वक अपनी दुम हिला रहे थे। मुनियाका जी चाहने लगा कि उस चित्रको तोड़कर चूल्हेमें झोंक दे। कितनी अगरकी बत्तियां सूंघी थीं हनुमानजीने! फिर भी भूख, बीमारी और सन्तापकी मात्रा बढ़ती ही जाती थी।

बाहर गटरके पास बच्चे खुशीसे चिल्ला रहे थे—"वह देख केला—साबूत है—नीचेसे सड़ा है—और वह अमरूद.....।"

*

उस दिन शामको जब भोला मिलसे लौटा तो पैर एक-एक मन भारी हो गये थे। आंखोंके आगे हर चीज उड़ी-उड़ी-सी जान पड़ती थी। मालूम होता था कि वह किसी आगके झरनेमें तैर रहा है।

एक महीना पहले 'स्वराज मिल' के प्रबन्धकोंने २५ प्रतिशत मजदूरी कम करनेका नोटिस दिया था। आज नोटिसकी मियाद समाप्त होनेपर मजदूरोंने हड़तालकी धमकी दी, जिसके जवाबमें अनिश्चित कालके लिए मिल बन्द करनेकी घोषणा कर दी गयी थी। भोला ३॥) मुट्ठीमें दबाये जैसे यमलोककी ओर जा रहा था। तीन रुपया बारह आना—यह परलोकका किराया था! भोला मुनियाकी बीमारी, बच्चोंकी भूख और अपनी बेकारी—सब-कुछ भूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गया। अभी उसके सामने रहमान काबुलीकी सूरत कालके समान घूम रही थी। मुनियाके इलाजके लिए भोलाने तीन महीने पहले ५०) उधार लिये थे—आना रुपया सूदके हिसाबसे; और एक रुपया प्रति सप्ताह देनेपर भी मूल अभी ज्योंका त्यों बना हुआ था। तीन महीनेका वादा कई दिन पहले समाप्त हो चुका था। लाख टालमटूल करनेपर भी काबुलीका असन्तोष बढ़ता ही जाता था। भोला चोरके समान आगे-पीछे देखता चलता था। मन-ही-मन दुर्गाका पाठ कर रहा था कि आज तो वह न मिले। आजकी रात ज्यों-त्यों गुजर जाय।

मगर, हाय रे मोह! उसकी गलीके मोड़पर ही काबुली यमदूतके समान अपना काल-दण्ड लिये खड़ा था। रक्त, मांस और हड्डियोंका एक ढांचा, जो मशीनसे भी अधिक निर्मम था। भोला भयसे कांप उठा। पिटे हुए कुत्तेके समान वह काबुलीके आगे ठिठक गया।

काबुलीके मुंहपर जङ्गली घासपातके समान चारों ओर बाल उग आये थे। दांत भेड़ियेके समान पीले और तेज थे। उसने लाठीपर भार देकर कहा—"रुपी निकालो भाई, रुपी—अम ज्यादा बात नई मांगता। अड़तालीस रुपी चार आना।"

भोलाने सिटपिटाकर कहा—"आगा साहब, अब तक तो कोई इन्तजाम नहीं हो सका। घरवालीके रोगके कारण किसी भाईबन्दके घर न जा सका। एक हफ्ते और धीरज धरिये। आजके ही दिन कोई-न-कोई सामान हो जायेगा।"

काबुलीने अपने बड़े-बड़े पञ्जे फैलाकर कहा—"रुपी, रुपी! अम घरवालीको नई जानता। जब वह अच्छा था तब साला रुपी नई मांगा। फिर तो अम माफ कर देता।"

भोलाके ठण्डे खूनमें कुछ गर्मी आ गयी। उसकी आंखोंके आगे वह दृश्य घूम गया जब वह गंडासा लेकर जमीन्दारपर टूट पड़ा था। पलभर बाद ही वह अपनी परिस्थितिको समझ गया। चिरौरी-बिनती करके खानको उसने दो दिनके लिए शान्त किया। खान गालियां बकता हुआ, एक महामारीके समान लाठीसे जमीन नापता दूसरी ओर चला गया।

भोला कुछ देर तक चित्रलिखित-सा वहीं खड़ा रहा। फिर वह एक लम्बी सांस लेकर मुहल्लेके पार्ककी ओर चल पड़ा। एक सुनसान कोनेमें वह घासपर गिर पड़ा। उसके चारों ओर कैसी चहल-पहल थी, कैसी अठखेलियां थीं, कैसी रंगरेलियां थीं! धनिकोंके बच्चे अपनी दायाओंके साथ किलोलें कर रहे थे। आकाशमें तारे खिले हुए थे; धरतीपर पेड़ और पक्षी मगन थे। सब चराचर प्रसन्न थे—एकके सिवा—और वह अभागा एक मजदूर था। अपना पूरा जीवन उसे आंसुओंमें तैरता दिखायी पड़ा। एक आह और एक आंसू—यह थी उसके जीवनकी बिसात। वे बच्चे कितने स्वस्थ और प्रसन्न थे! उनके शरीर मखमलके समान कोमल थे। मगर भोलाके बच्चोंने क्या पाप किया था? अगर भूखे ही मरना था तो वे पैदा क्यों हुए? भोला अपने-आपको धिक्कारने लगा। उसने इन बच्चोंको क्यों पैदा किया? संसारका कौन-सा सुख उनके लिए था? पैदा होनेके बाद ही वे कुत्तोंके साथ गटरमें खेला किये। बड़े होनेके बाद वे क्या करेंगे? भीख या जेब-कतराई! इसके सिवा वे क्या करेंगे? बीमार होनेके बाद वे एड़ियां रगड़-रगड़कर मरेंगे। ऐसा क्यों होता है? भोला संसार, समाज और ईश्वर—सबको पड़ा-पड़ा कोसने लगा। एक असहाय, शक्तिहीन बूढ़ेके समान वह सबको कोसने लगा।

कल सुबह होगी। मुनिया फिर खून थूकेगी; बच्चे 'भूख, भूख' चिल्लावेंगे; काबुली 'रुपी, रुपी' का शोर मचावेगा। मिल बन्द होगी; उसपर मौतका सन्नाटा होगा। मौत—मिलकी? नहीं; बेकार मजदूरकी—भोलाकी, उसकी बीमार स्त्रीकी, उसके बच्चोंकी।

मौत, बीमारी, भूख, बेकारी! भोलाको चारों ओर बीमारीके कीड़े और यमदूत उड़ते हुए दिखायी दिये और उनके आसपास अथाह गढ़े थे, जिनमें संसारका सारा धन-वैभव समा रहा था।

मौत, बीमारी, भूख, बेकारी—इनसे कहीं निस्तार न था।

*

रातको जब भोला घर लौटा तो उसके हाथमें मिठाईका एक बड़ा-सा दोना था। उसके पैर लड़खड़ा रहे थे, आंखें उलटी पड़ती थीं और मुंहसे शराबकी दुर्गन्ध निकलकर धुंए, कुहासे और नालीकी सड़ायनको और भी कष्टकर बना रही थी। जीवनमें उसने पहली बार शराब पी थी—पूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक बोतल ! बहुत दिनोंके बाद वह इतनी सारी मिठाई लाया था—एक सेर, और वह भी रुपये सेरवाली। उसके सलूकेकी जेबमें एक शीशी थी, जिसे वह बड़ी सावधानीसे छिपाये हुए था। सब भूखे बच्चे रोते-रोते सोनेकी तैयारी कर रहे थे। मिठाई-का दौर देखते ही वे आकुलतापूर्वक उसपर टूट पड़े। भोलाने उन्हें चुमकार-पुचकारकर रोका और मुनियाके सिर-पर झुक गया, जो उसे कातर नेत्रोंसे ताक रही थी। थोड़ी देर तक दोनों चुपके चुपके न जाने क्या कहते रहे। बच्चोंने केवल इतना देखा कि भोलाकी आंखोंसे आंसूकी बूंदें निकल-कर उनकी माताकी अश्रुसिक्त पलकोंपर गिर पड़ीं। कितनी व्यथा, कितनी यातना, कितनी बेकली छिपी थी उन चार बूंद आंसुओंमें ! आंसू विद्रोहकी भाषा है; रक्त विद्रोहकी रौशनाई है; थूक विद्रोहकी लेखनी है। आंसु, खून और थूक—उस अंधेरी कोठरीमें समाजके अत्याचारके विरुद्ध षड़यन्त्र कर रहे थे।

दूसरे दिन दोपहरको उस कोठरीसे ऐसी तीव्र दुर्गन्ध उठने लगी कि पड़ोसियोंके दिमाग बिलबिला उठे। नालीमें रोज मरे हुए चूहे सड़ा करते थे जिसकी बास सहनेकी उन्हें आदत हो गयी थी। पर भोलाकी कोठरीसे जो बू उठती थी उसमें कोई निराली बात थी। सारी गलीकी हवा जैसे जहरीली हो गयी हो और वह दुर्गन्ध बढ़ती ही जाती थी। अगर उसे रोका न गया तो वह संसारभरमें फैल जायगी और सारा मानव-समाज उसमें सांस लेकर घुटकर मर जायगा।

कोठरीका दरवाजा तोड़ा गया। अन्दर पांचों बच्चे एक-दूसरेसे लिपटे पड़े थे; मुनिया और भोलाके ओंठ भिड़े हुए थे और उनपर मौतकी मुसकुराहट खेल रही थी। हर चीज काली, धुंधली और उदास जान पड़ती थी। हनुमानजीके सदा-प्रसन्न मुखपर भी कालिमा दौड़ गयी थी। फौरन् पुलिसको इत्तिला की गयी; पुलिसवालोंने नाक बन्द करके कमरेको एक पल देखा; मिठाईके दोने और शीशीको देखकर सिर हिलाया, पड़ोसियोंसे दो-चार बातें पूछीं और वापस चले गये। आधे घण्टेके बाद दो मेहतर मुर्दा ढोनेकी गाड़ी लिये हुए पहुंचे और सातों लाशोंको उनपर लाद दिया।

मोड़पर शराफ अपने मकानकी दीवारके पास खड़ा चींटियोंको चीनी खिला रहा था। एक मोटा सांड वहीं पड़ा हुआ कभी पूरियोंको खाता था, कभी उगलता था। कुत्ता दूध पीकर अघा गया था और अपने जबड़ोंको चाट रहा था। शराफ मुर्दागाड़ीको देखकर चबूतरेपर उचक पड़ा।

"जमादार, किसकी लाश है ?"

"इसी गलीमें कोई भोला मजूर रहता था, सेठजी ! माई-पिल्ले सब जहर खाकर मर गये। पेटफोड़ी लिये जाते हैं।"

सेठने तोंद हिलाते हुए कहा,—'हूं ! कुत्तेको बहुत तङ्ग करते थे ये पिल्ले।—अरे छोटू, चबूतरेपर गङ्गाजल छिड़क दे। ऐसे आदमियोंसे तो हमारे जानवर अच्छे हैं !"

ऊंचे-ऊंचे मकानों और बन्द रास्तोंसे उलझती हुई हवा गुनगुनाती जाती थी—"कुछ नहीं है, कुछ नहीं है !"

---

## तृण

तिर-तिर सरिताकी लहरोंपर
बह जाते हो
मौन
भावकी भाषामें तुम,
मुग्ध दृष्टिसे कह जाते हो
"यहां कहां विश्राम ?
स्थिर गतिका यहां नहीं कुछ भास
केवल घात और प्रतिघात।"

सहज, वक्रगति उस अजान तक
फैल वीचिकी व्याकुल रेखा
तुम्हें मिला देती सागरसे।
तब तुम ज्योति किरणसे मिलकर,
हो जाते—अपने विनोदमें निरत
अहो तृण !
पाते हो कल्याण। *

—प्रकाशचन्द्र शर्मा 'अधीर'

* अप्रकाशित 'किशलय' से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दू-समाजमें तलाक प्रथाकी समस्या

श्री गोवर्द्धनलाल गुप्त

दैवके दुर्विधानसे इस अभागे हिन्दू-समाजके विशाल वक्षस्थलमें असंख्य स्त्रियां ऐसी हैं, जो वास्तवमें विवाहिता कहलाती हैं, किन्तु—उन्हें दाम्पत्य सुखका सौभाग्य कभी प्राप्त नहीं होता। वे वास्तवमें न तो विवाहिता और अविवाहिता हैं, किन्तु वे हैं एक सधवारूपी-विधवा। इसका एकमात्र कारण है हिन्दू 'ला' में विवाह-विधानकी भ्रष्टता। जो 'ला' समाजके सभी स्त्रियों-पुरुषोंके समान अधिकार और सुख-शान्तिके लिए रचा गया हो, वही ला पूर्णांशमें इन अभागिनी स्त्रियोंपर अन्यायपूर्ण निरंकुश प्रहार कर रहा है। आज-कलके हिन्दू लाके अनुसार एक पुरुष कई एक उप-पत्नियां रख सकता है। मुसलिम लाके अनुसार एक मुसलिम पुरुष कमसे कम चार पत्नी, और उप-पत्नियां—चाहे जितनी रख सकता है। इस सम्बन्धमें विधान किसी भी प्रकारसे विघ्नकारक नहीं हो सकता। बौद्ध धर्मानुयायी भी एक पत्नीके जीवित रहते कई-एक उपपत्नियां रख सकता है। किन्तु उनमें केवल विशेषता इस बातकी है कि वे लोग उसी दशामें दूसरी उपपत्नी रख सकते हैं जब कि प्रथम विवाहिता पत्नी बांझ हो, या रोग-ग्रसिता या किसी भी प्रकारसे अयोग्य हो। भारतीय धर्मोंमें केवल बौद्ध धर्ममें तो कुछ अंशमें स्त्रियोंके हिताहितका विचार किया गया है, किन्तु हिन्दू लामें तो स्त्रियोंके हितोंकी ऐसी हत्या की गयी है कि वे इस असहनीय दारुण दुःखसे व्यथित होकर कराह रही हैं, आहें भर रही हैं, किन्तु इस अभागे हिन्दू-समाजमें किसी भी प्रकारके परिवर्तनकी आशा नहीं की जा सकती। इन सभी आचारोंपर विचार करनेसे यह बात स्पष्ट प्रमाणित हो जाती है कि हिन्दुओंका वैवाहिक विधान सबसे जघन्य और निकृष्ट है। क्योंकि बौद्ध—और किसी अंशमें मुसलिम—धर्मानुसार पुरुष-समाजकी काम-पिपासाकी कुत्सित भावनाके प्रति अंकुश दिया गया है। किन्तु दुःखहै कि हिन्दू-समाज या धर्ममें इसके निरोधका कोई भी विधान नहीं पाया जाता है।

स्त्री-समाजके प्रति न्यायका गला इस प्रकारसे घोंटा जाता है कि यदि किसी स्त्रीका पति लंगड़ा हो, लूला हो, नपुंसक हो अथवा पागल या संन्यासी बन गया हो, या सर्वतोभावेन अयोग्य क्यों न हो, किन्तु उस स्त्रीको अधिकार नहीं है कि वह अपनी इच्छानुसार उस पतिके रहते दूसरे पतिसे विवाह कर ले। हिन्दू-समाजमें वर्तमान कालमें तलाक-प्रथा एकदम नहीं है। एक स्त्री अपने पतिके जीवित रहते, चाहे वह सभी प्रकारसे अयोग्य क्यों न हो, दूसरा पति कदापि वरण नहीं कर सकती। हिन्दू-विधानके अनुसार पत्नी और पतिका ववाहिक संस्कार अटूट समझा जाता है। यह संस्कार संस्कार-कालसे लेकर जीवनके अन्तिम काल तक स्थायी समझा जाता है। किन्तु खेद है कि इस संस्कारके प्रतिबन्धको पुरुष-समाज एकदम ठुकरा देता है, और अपनी इच्छानुसार कई-एक उपपत्नियोंका स्वामी बन बैठता है। यह हिन्दू 'ला' का अन्ध-विश्वास है कि यदि पति या पत्नी चाहे अन्य धर्मको भी क्यों न स्वीकार कर ले, किन्तु उसका वैवाहिक सम्बन्ध सर्वथा स्थायी समझा जाता है। यदि पत्नी किसी आवश्यक परिस्थितिसे प्रेरित होकर वेश्यावृत्तिको भी क्यों न धारण कर ले, तो भी वह शास्त्रानुसार अपनेको पूर्व पतिकी पत्नी समझती है, और पतिको अधिकार भी हो सकता है कि वह अपनेको पतिताका पति समझे। किन्तु उसे उद्धार करनेका विधान एकदम नहीं पाया जाता है।

पाणिग्रहण-संस्कारको धार्मिक सम्बन्धमें परिणत कर देनेका प्राचीन ऋषि-मुनियोंका एकमात्र उद्देश्य यही था कि पुरुष और स्त्री अपने संयमसे कुत्सित प्रवृत्तियोंका निरोध करें, और काम-पिपासाकी सीमा अधिक विस्तृत न कर सकें। प्राचीन ऋषि-मुनियों या स्मृतिकारोंका कदापि यह तात्पर्य न होगा कि चाहे पत्नी और पति अपने-अपने कर्तव्यसे गिर जानेपर या यहां तक कि एक-दूसरेको त्याग देने या एक-दूसरेसे स्वतन्त्र होकर व्यभिचार करते रहनेपर भी एक-दूसरेके पति-पत्नी कहलाते रहें। परन्तु ठीक यही दशा है, जो वर्तमान हिन्दू लाने उपस्थित कर दी है। विवाहकी सदाचारिता, धार्मिकता इस बातमें है कि पति-पत्नी जीवन-पर्यन्त एक-दूसरेके प्रति संयम-व्रतका पालन करें। अपने कर्त्तव्यपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दृढ़ और आरूढ़ रहनेसे ही मनुष्य-समाजका दाम्पत्य आदर्श-युक्त हो सकता है, अन्यथा नहीं। जो मनुष्य या स्त्री अपने कर्त्तव्यसे च्युत हो जाती है, उसका नैतिक पतन अवश्य-म्भावी है। जब तक पुरुष-समाज स्त्री-व्रतका पालन कर सकता है तभी तक उसका पति कहलानेका अधिकार रह सकता है, और जब तक स्त्री अपने पतिके प्रति सत्यपराय-णता, सेवा-भाव और प्रेम-निष्ठाके साथ सेवा करती रहेगी तभी तक वह धर्मपत्नी कहलानेकी अधिकारिणी हो सकती है, अन्यथा नहीं। परन्तु हिन्दू ला इतना कठोर और दोप-पूर्ण है कि पति-पत्नी यदि सदवके लिए कर्त्तव्यच्युत हो जायं, और पारस्परिक प्रेमसे सर्वथा विमुख और विमूढ़ हो जायं तो भी वह नियमानुसार यदि आपसमें एक दूसरेसे सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहें तो हिन्दू ला ऐसा करनेकी कदापि अनुमति नहीं दे सकता है। इस सम्बन्धमें हिन्दू लाकी वास्तविकताको उद्भासित कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। हिन्दू लामें पत्नी अपने पतिकी एक निजी सम्पत्ति समझी जाती है। जैसे किसी मनुष्यके द्वारा किसी चीजको खरीदनेपर उसका जितना अधिकार होता है, उतना ही अधिकार एक पतिको अपनी पत्नीपर होता है। यह बात हिन्दू लामें मानी गयी है कि जिस प्रकार ससुर अपने दामाद को रुपये, हाथी, अन्न, वस्त्र दानमें देता है, उसी प्रकार उसने 'कन्यादान' भी किया है। यह 'दान' शब्द इस बातका द्योतक है कि स्त्री समाजको मनुष्य-समाजने जड़ पदार्थकी श्रेणीमें विभाजित कर दिया। आधुनिक कालकी स्त्रियां अपने पतिकी खरीदी हुई सम्पत्ति समझी जाती हैं। अत्यन्त घृणित और आपत्तिजनक विपत्तियोंके अतिरिक्त उन्हें पतिसे अलग हो जानेका अधिकार नहीं है। यदि किसी पत्नीका पति कुष्ट-व्याधिसे पीड़ित हो अथवा वेश्यागामी हो, या पागल हो गया हो, अथवा अपनी स्त्रीको अधिक मारता-पीटता हो, या उस पतिके साथ रहनेमें पत्नीके जीवनपर किसी प्रकारके कष्टकी आशङ्का हो, उस दशामें भी वह स्त्री उस पतिसे अलग नहीं रह सकती। हिन्दु-स्तानकी नीच जातियोंमें यह प्रथा पायी जाती है, किन्तु उच्च जातियोंमें यह प्रथा नहीं पायी जाती है। यदि कोई स्त्री विवाहके पहले इस आशयका प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लेना चाहे कि भविष्यमें मेरा पति मेरे जीवित रहते दूसरी स्त्रीसे विवाह नहीं कर सकता, अथवा यदि किसी दशामें कर भी ले तो वह पुरुष अपनी पूर्व-विवाहिता पत्नीको अलग नहीं रहने देगा, तो हिन्दू 'ला' में इसके लिए भी कोई विधान नहीं है।

इस कानूनसे यह बात सिद्ध हो गयी कि चाहे पति कितना भी दुराचारी अथवा चरित्रहीन क्यों न हो, चाहे वह अपनी स्त्रीका अपमान करे या सम्मान, स्त्रीको सभी प्रकारसे अपने पतिके साथ रहना पड़ेगा। दूसरी तरफ यदि कन्या चाहे कैसी ही गुणवती, शीलवती, लज्जाशीला, सदा-चारिणी, धर्मपरायण क्यों न हो, वह किसी भी दशामें अपने पूर्व-पतिको परित्याग नहीं कर सकती है। हिन्दू 'ला' ही ऐसा 'ला' है कि पति अपनी पत्नीको दूसरी शादी करनेसे निषेध कर सकता है, किन्तु पत्नी पतिको दूसरी शादी करनेसे नहीं रोक सकती। पत्नी चाहे क्यों न गुप्त रीतिसे व्यभिचार कराती फिरे, किन्तु नियमानुसार उसे विवाह करनेकी अनुमति कदापि नहीं मिल सकती। वह पुनर्विवाह कर गृहस्थ-जीवनका सात्विक सुख नहीं प्राप्त कर सकती। विवाहके धार्मिक महत्त्वको नष्ट करनेमें बहुत-कुछ उत्तर-दायित्व वर्तमान हिन्दू 'ला' के ऊपर है। यदि वास्तवमें विवाह-संस्कार हिन्दू-धर्मानुसार एक धार्मिक संस्कार है, और स्त्री-पुरुष वास्तवमें एक-दूसरेके सहधर्मी और अर्द्धाङ्ग कहलाते हैं, तो यह नितान्त आवश्यक है कि जो सदाचारिता, ब्रह्मचर्य और पवित्रता स्त्रीके लिए हो, वह पुरुषके लिए क्यों न हो? क्या कोई भी प्रेमी इस बातको कहनेका दुस्साहस कर सकता है कि यदि पुरुषोंके अनेक विवाह करनेसे धर्म नष्ट नहीं होता, तो स्त्रियोंके अनेक विवाह करनेसे धर्म नष्ट हो जायेगा? इस विनाशकारी हिन्दू 'ला' ने हिन्दू-समाजमें पारिवारिक जीवनको सङ्कट-मय बना रखा है। इस कानूनसे न तो पुरुष-समाज ही सुखी है और न स्त्री-समाज ही। दोनोंका दाम्पत्य जीवन अश्रद्धा और कलहका घर बन गया है। यदि एक तरफ पुरुष-समाजके अत्याचारसे स्त्रियां व्यथित हैं, तो दूसरी तरफ स्त्री-समाजकी कुरूपता और चरित्रहीनतासे पुरुष-समाज पीड़ित है। किन्तु तलाक शब्दको सुनते ही धर्मकी आशङ्कासे उनका हृदय कांप उठता है। उनकी ऐसी धारणा भ्रममूलक है। बहुतसे लोग यह दलील पेश करने लगते हैं



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि स्त्रीको सर्वदा पातिव्रत्य धर्म पालन करना चाहिए। बहुतसे लोगोंका कहना है कि वर और कन्याको अच्छी तरह देख-भालकर उनकी शादी करनी चाहिए, जिससे भविष्यमें किसी प्रकारसे पारस्परिक मनोमालिन्यको स्थान न मिले। बहुत-से लोगोंका कथन है कि यदि भारतवर्षमें तलाक-प्रथाका प्रचार किया गया तो यह निर्विवाद सत्य है कि भारतवर्ष भी अमेरिका और रूस बन बैठेगा। इन सभी प्रश्नोंका समुचित उत्तर यह है कि आखिर कोई स्त्री अपने पतिकी अयोग्यता और अत्याचारमें अपने पातिव्रत्य धर्मको पालन करनेमें कहां तक समर्थ हो सकती है! यह बात कुछ अंशोंमें सत्य है कि माता-पिता वर और कन्याको अच्छी तरह देख-भालकर विवाह करेंगे, किन्तु मनुष्य तो सर्वज्ञ नहीं, भविष्यवेत्ता नहीं, जो भविष्यकी बातें जाने। आज जो वर और कन्या सर्वगुण-सम्पन्न हैं, सम्भव है कल दोनों-मेंसे कोई एक ऐसा अयोग्य बन जाये, जिसकी अयोग्यता-को योग्यतामें परिणत करनेकी दुनियामें कोई दवा न हो, उस दशामें स्त्री या पुरुष अपने पति और स्त्रीको नहीं त्याग सकता है। यदि समाजमें अशान्ति और दुराचार बढ़े तो उसे बढ़ने दो। अमेरिका और रूसका वातावरण ही ऐसा है कि वहां छोटे-से-छोटे कारणसे स्त्री-पुरुष तलाककी शरण पकड़ते हैं। पर हिन्दू-संस्कृति इतनी जबर्दस्त है कि यदि भारतवर्षमें तलाक-प्रथाका प्रचलन हुआ तो समाजसे स्त्री-पुरुषका अकारण कलह मिट जायगा। अमेरिका और रूसमें तो पति और पत्नीको योग्यता-अयोग्यता, कारण या दोषका पूरा पता लगाये बिना ही तलाक मञ्जूर हो जाती है। किन्तु अन्य समुन्नत राष्ट्रोंमें, जहां तलाक-प्रथा प्रचलित है, वहां स्त्री-पुरुषके तलाकके कारणोंको खूब छान-बीन कर उनकी जांच-पड़ताल कर ली जाती है। जब समुचित प्रकारसे सन्तोषजनक कारण मालूम हो जाता है, जिससे तलाक मञ्जूर करना अनिवार्य हो तब कहीं स्वीकृत होता है। अमेरिका और रूसको छोड़कर और अन्य सभी राष्ट्रोंमें यह बात पायी जाती है।

बहुतसे लोगोंका कथन है कि प्राचीन कालमें इस तलाक-प्रथाका नामोनिशान भी भारतवर्षमें नहीं था, किन्तु मैं पाठकोंको मनुस्मृतिसे हवाला देता हूं।

या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वेच्छया।
उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते॥

—मनुस्मृति ९-१७५

जो पतिकी छोड़ी हुई या विधवा स्त्री अपनी इच्छासे दूसरेकी भार्या होकर पुत्रको जने तो उसको पौनर्भव पुत्र कहते हैं।

इस श्लोकसे पाठकोंको प्रतीत हो गया है कि स्त्रीके विधवा होने या पति द्वारा त्याग देनेपर वह दूसरे पतिसे पुत्र उत्पन्न कर सकती है।

सा चेदक्षतयोनिः स्यादक्षत प्रत्यागतापि वा।
पौनर्भवेन भर्त्रा स पुनः संस्कारमर्हति॥

—मनुस्मृति ९-१७६

वह स्त्री यदि पूर्व पुरुषसे संयुक्त नहीं हुई हो तो दूसरे पौनर्भव पतिसे फिर विवाह कर सकती है। अथवा फिर पूर्व पतिके पास जाये तो विवाह-संस्कार करने योग्य है।

इन प्रमाणोंसे यह बात भली भांति प्रमाणित हो जाती है कि स्त्रियोंके पुनर्विवाहके विषयमें तो कोई आपत्ति नहीं रह जाती; प्रत्युत इससे यह भी प्रमाणित होता है कि स्त्रियोंके न केवल दो, बल्कि तीन विवाह तक धर्मानुसार हो सकते हैं—(१) प्रथम पतिके साथ और (२) प्रथम पतिसे त्याग दी जानेपर दूसरे पतिके साथ और (३) दूसरे पतिसे अलग होनेपर पुनः प्रथम पतिके साथ।

हर्षकी बात है कि बड़ी व्यवस्थापिका सभाके माननीय सदस्य आनरेबल सर हरिसिंह गौड़ने 'दी डिजोलूशन आफ हिन्दू मैरेज' नामक बिल कानून बनानेके लिए उपस्थित किया है। यदि हिन्दुओंकी सहानुभूति उस बिलके प्रति हुई तो आशा ही नहीं, अपितु दृढ़ विश्वास है वह बिल कानून बन जायेगा। बिल निम्नलिखित आधारोंपर रचित किया गया है :—

(१) पतिके खो जानेपर (२) उसके मर जानेपर (३) संन्यासी हो जाने (४) नपुंसक होने (५) विधर्मी होनेपर (६) पति द्वारा त्याग दी जानेपर—इन आधारों-पर सधवारूपी विधवा दूसरे पतिके साथ पाणिग्रहण कर सकती है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आगा खां

[ आगा खांके नामसे सभी पाठक परिचित हैं ; पर उनके वंशका इतिहास तथा उनके पदका महत्त्व बहुत कम लोगोंको मालूम है। 'रेव्यू दे द्यू मोंद' नामके फ्रेञ्च पत्रमें उनके सम्बन्धमें एक लेख छपा है। नीचे उसका अनुवाद दिया जाता है। इससे पाठकोंको मालूम हो जायेगा कि धर्म-जगत्में आगा खांका स्थान और स्थिति क्या है, और उनके पूर्वज भारतमें कब, क्यों और कैसे आये।—इलाचन्द्र जोशी ]

मारिस बारे जब सीरियामें भ्रमण कर रहे थे तो वह एक छोटेसे गांवमें कुछ इस्माईल-मतावलम्बी मुसलमानोंसे मिले। उस तरफ वे लोग बहुत बड़ी संख्यामें रहते हैं। उन लोगोंने बारेसे अत्यन्त आवेशपूर्वक अपने धर्मगुरुकी प्रशंसा की और कहा कि वे उसे अपने इष्टदेवताके बतौर मानते हैं। बारेने उनसे कहा—"क्या तुम लोग मुझे अपने धर्मगुरुका चित्र दिखा सकते हो ?" उन्होंने उनके हाथमें फ्रेममें बंधा हुआ एक रङ्गीन चित्र दिया। बारेको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि वह चित्र आगा खांका है। उसने उन लोगोंको सूचित किया कि उसने उन लोगोंके देवताको पैरिसके विनोद-गृहोंमें देखा है, वह अक्सर 'दोविल' नामक स्थानमें रहा करते हैं। पर आगा खांके भक्त लोग इस बातसे बिलकुल विचलित नहीं हुए। उन्होंने कहा—"हमने भी सुना है कि वह पैरिसमें रहते हैं। हमने उन्हें कभी नहीं देखा है, पर हमारी उनके प्रति बड़ी श्रद्धा है और हम उनके लिए मरने तकको तैयार हैं।" बारेको उनकी अन्तिम उक्तिसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

मैं १९३२ में आगा खांसे मिला था—बाम्बे या दोविलमें नहीं, किन्तु जेनेवामें। तब वह भारतकी तरफसे राष्ट्र-सङ्घ तथा निरस्त्रीकरण कानफरेन्सके प्रतिनिधि होकर आये थे। पाठकोंको मालूम होगा कि आज भारतके सब मुसलमान उन्हींको अपने नेताके बतौर घेरे हुए हैं; गोलमेज परिषद्में उनके मुख्य प्रतिनिधि वही थे। मैं आगा खांसे बो-रिवाज नामक होटलमें मिला। होटलके सामने सुन्दर झील और पर्वतोंके दृश्य उन्मुक्तावस्थामें वर्तमान थे। वह एक भूरे रङ्गका सुन्दर चोगा पहने थे और फलालेनकी पतलून। उनके मुखके भावसे यद्यपि इन्द्रियपरायणता टपकती थी, तथापि उनकी आंखोंका भाव अत्यन्त स्निग्ध था। उनके चेहरे, बल्कि समस्त शरीरके गठनसे स्फूर्ति प्रकट होती थी।

मुझसे आतिथ्य-सत्कारके बतौर उन्होंने पूछा कि मैं क्या खाना या पीना चाहता हूं। एक सिगरेट भी उन्होंने मुझे दी। जब मैं सिगरेट जला रहा था तो उन्होंने कहा—"मुझे मालूम है कि आपने फारसमें जाकर रजाशाह पहलवीसे मिलकर बातें की हैं। मैं फारसकी बातोंमें बड़ी दिलचस्पी लेता हूं, क्योंकि मेरे पुरखे उसी देशसे आकर भारतमें बसे थे। वहांसे वे लोग धार्मिक अत्याचारोंके कारण भाग आये थे।" इसके बाद उन्होंने अपनी राम-कहानी शुरू कर दी। वह कहने लगे—"पिताजीकी मृत्युके समय मेरी अवस्था आठ वर्षकी थी। इसके पहले मेरे दो बड़े भाइयोंकी मृत्यु हो चुकी थी। इस प्रकार मैं ही अपने पिताकी सम्पत्ति तथा सत्त्वोंका उत्तराधिकारी बन गया। मेरी माताने मेरी शिक्षाकी ओर विशेष ध्यान दिया। प्रारम्भमें उन्होंने मुझे प्राच्य पद्धतिके अनुसार ही शिक्षा दिलानेका निश्चय किया। अरबी, फारसी, कुरान तथा मुसलमान धर्मका इतिहास—ये विषय माताने मेरी शिक्षाके लिए चुने। इसके बाद प्राच्य साहित्यकी बारी आयी। इसके बाद उन्होंने मुझे पाश्चात्य भाषाओं और पाश्चात्य देशोंके साहित्य तथा इतिहासकी शिक्षाके लिए विदेशी अध्यापकोंके तत्त्वावधानमें छोड़ दिया। इस पाश्चात्य शिक्षाका मेरे ऊपर पहला असर यह हुआ कि अठारह वर्षकी अवस्थामें ही मैं यह बात भली भांति समझ गया कि पाश्चात्य शिक्षा तथा संस्कृतिके फेरमें पड़कर अपनी आध्यात्म प्रगति तथा जीवन-धाराको पाश्चात्य रूपमें बदल देना हम प्राच्य देशवासियोंके लिए कितनी मूर्खताकी बात है। मुझे इस बातकी परमावश्यकता मालूम हो गयी कि हम लोगोंके लिए अपनी ही संस्कृति तथा अपने ही धर्मपर स्थिर रहना श्रेयस्कर है, पर साथ ही पाश्चात्य विषयोंके प्रति घृणा भी प्रदर्शित नहीं करनी चाहिए। इस सम्बन्धमें मैं जापानियोंकी बड़ी प्रशंसा करता हूं। पाश्चात्य सभ्यताके सिद्धान्तोंका अनुसरण करनेपर भी उन्होंने अपनी राष्ट्रीय विशेषतापर आंच नहीं आने दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"मैंने भारतीय मुसलमानोंकी शिक्षाको इसी उद्देश्यके अनुसार अग्रसर करनेका अपनी शक्तिके अनुरूप प्रयत्न किया है। अलीगढ़की यूनिवर्सिटीका प्रोग्राम इसी आदर्शपर स्थित है। इस यूनिवर्सिटीमें प्रतिवर्ष पन्द्रह सौ (मुसलमान) छात्र शिक्षा-प्राप्तिके लिए जाते हैं,—केवल भारत या बर्मासे नहीं, फारस, ईराक तथा मिस्र आदि दूर-दूर देशोंके छात्र भी वहां साहित्य तथा विज्ञानके अध्ययनके लिए जाते हैं; पर उनका मुख्य उद्देश्य इसलामके ऐक्यके महत्त्वसे परिचित होनेका रहता है।

"इधर परिस्थितियोंके कारण मुझे भारतमें राजनीतिक क्षेत्रको अपना ध्येय बनाना पड़ा है। १९०६ तक भारतीय मुसलमान राष्ट्रीय आन्दोलनमें सम्मिलित नहीं हुए थे। मुझे यह त्रुटि खटकती थी। मैंने सोचा कि भारतके राजनीतिक क्षेत्रमें दो बातोंमें एक बात होकर रहेगी—या तो हिन्दू अंगरेजोंको जीतेंगे, या उनसे समझौता कर लेंगे। इन दोनों हालतोंमें मुसलमान अल्पसंख्यक सम्प्रदाय होनेके कारण बीचमें पिस जायेंगे। इस विनाशात्मक स्थितिसे मुसलमानोंकी रक्षा करनेके लिए मैंने मुसलिम लीगकी स्थापना की। आप जानते हैं कि यह संस्था पूर्णतः राजनीतिक नहीं है; इसका उद्देश्य है भारतीय मुसलमानोंके सब प्रकारके स्वार्थों (सामाजिक, नैतिक, धार्मिक तथा आर्थिक) की रक्षा करना। कुछ समयके लिए शौकत अली भी मेरे सहकर्मी रहे। शौकत अलीमें अनेक गुण हैं; उनमें एक ही दोष है, जो उनके भाई मुहम्मद अलीमें भी था; वह दोष यह है कि उनकी आंखें उनके पेटसे कई गुना बड़ी हैं!

"गोलमेज परिषद्में मैंने गांधीसे समझौता करनेके लिए अनेक प्रयत्न किये, पर सब व्यर्थ। मैंने मन-ही-मन कहा—'जिस झगड़ेको उन्होंने (अर्थात् म० गांधीने) चलाया, क्या उसके निपटारेका कोई साधन खोज निकालनेमें वह समर्थ होंगे? मेरा तो ख्याल यह है कि यह लड़ाई तब तक रहेगी, जब तक भारतमें भारतीय तथा अंगरेज वर्तमान रहेंगे।'

इसके बाद मेरी इच्छा हुई कि मैं आगा खांसे एक दूसरे महत्त्वपूर्ण विषयपर बातें करूं। क्योंकि वह केवल मुसलिम लीगके प्रतिष्ठापक तथा भारतीय मुसलमानोंके नेता ही नहीं थे; वह एक विशेष धार्मिक सम्प्रदायके लिए ईश्वरी अवतार थे। इस धार्मिक सम्प्रदायकी मूलोत्पत्ति गुप्त रहस्यमय है। चीनी तुर्किस्तानसे लेकर दक्षिणी अफ्रीका तक,—काश्मीर, फारस, सीरिया, जञ्जीबार तथा मदागास्करमें करोड़ों ऐसे विश्वासी मुसलमान हैं जो उनके प्रति श्रद्धा अर्पित करते हैं, उनका नाम जपते हैं और उनपर पूर्ण धार्मिक विश्वास रखते हैं। उनकी बातोंसे मालूम हुआ कि कर्बलामें हसन तथा हुसैनके कत्ल होनेके बाद केवल हुसैनका एक लड़का कातिलोंके हाथसे बच गया। उस लड़केके वंशमें इस्माईलका जन्म हुआ। इस्माईल "ईमान" कुलका अन्तिम वंशधर था। इसी वंशमें वर्तमान आगा खां, जिनका असली नाम मुहम्मदशाह है, उत्पन्न हुए। आगा खांके पूर्वज अरबसे मिस्र, मिस्रसे सीरिया, सीरियासे फारस और फारससे बम्बईमें आ उपस्थित हुए। वर्तमान आगा खांके प्रपितामह अब्दुल हसन फारसके बादशाहके अधीन करमानके गवर्नरके पदमें नियुक्त थे। कुछ वर्षों तक वहां शासन-कार्य चलाकर वह मेहलाती नामक स्थानमें चले गये और वहांके जमीन्दार बन गये। इसी स्थानसे उन्हें आगा खांकी पदवी मिली। आगा खांके पितामह खलीलुल्ला यज्द नामक नगरमें आकर रहने लगे; वहीं वह एक धार्मिक दङ्गेमें मार डाले गये। वहांके शासक फाती अलीको भय हुआ कि कहीं इस्माईल-मतावलम्बियोंके धर्मगुरुकी हत्याका कलङ्क उसपर न आरोपित किया जाय। इसलिए उसने शाह खलीलुल्लाके वंशधरकी जमीन्दारी बढ़ा दी। खलीलुल्लाके पुत्र अब आगा खांके नामसे प्रख्यात हो गये थे। १८३८ में उन्होंने फारसके तत्कालीन शाह महम्मद अलीके विरुद्ध एक सेना तैयार करके करमानको अपना हेडक्वार्टर बनाकर धावा बोल दिया। दो वर्षों तक युद्ध होता रहा। अन्तको १८४० में पूर्णतया पराजित होकर वह भागकर बलूचिस्तान चले आये। और वहांसे सिन्धमें आकर रहने लगे। वहां उनका बड़ा स्वागत हुआ। उन्होंने अंगरेजोंको अफगानोंके विरुद्ध लड़नेमें बड़ी सहायता दी। १८४५ में वह बम्बई चले गये। वहांकी मुसलमान जनताने उनका बड़ा आदर किया। वहां वह शरणागत अतिथि नहीं रह गये थे। उनकी स्थिति एक बड़े जमीन्दारके बतौर हो गयी, और मालगुजारीसे उन्हें कई लाख रुपये सालाना मिलने लगे। उन्हें बढ़िया घोड़े पालनेका शौक था। उन्होंने एक वृहत् अश्वालय स्थापित कर दिया। अश्व-प्रियता आगा खांका पुश्तैनी गुण है।

आगा खांकी हुआ बातोंसे मालूम कि इस्माईल-पन्थी बम्बई तथा पूनामें बहुत बड़ी संख्यामें रहते हैं। इसके अतिरिक्त मध्य एशिया, सीरिया तथा अफ्रीकामें भी उनकी यथेष्ट संख्या है।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# एक वेश्याकी रामकहानी

एक 'पतिता बहन'

मैं एक वेश्या हूं—कलङ्किनी, घृणिता, समाज द्वारा बहिष्कृता तथा विताड़िता। जीवन-भर लाञ्छना तथा अवमानना सहन करना ही मेरे भाग्यमें बदा है। चारों ओरसे तिरस्कृत होनेके कारण मेरी दशा ऐसी हो गयी है कि मैं स्वयं अपने-आपको असह्य घृणाकी दृष्टिसे देखने लगी हूं। अपना जीवन मुझे स्वयं भार मालूम पड़ने लगा है। इसमें सन्देह नहीं कि समाजके बड़े-बड़े प्रतिष्ठित नेता, जो पब्लिक प्लेटफार्मों तथा पत्र-पत्रिकाओंमें मेरे विनाशका पाठ पढ़ाते हैं, मेरे पास आते हैं, मेरे पैरोंकी धूलसे अपनेको कृतार्थ समझते हैं, मेरे अस्थिचर्ममय शरीरके स्पर्शमात्रसे पुलकित हो उठते हैं। पर हाय, मेरे हृदयको, मेरी मूल आत्माको ठुकराकर वे उसका अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करना चाहते। उनके गृहोंमें मेरे लिए कोई स्थान नहीं है, उनके हृदयोंमें मेरे लिए तनिक सम्मान नहीं है। मैं केवल उनकी काम-ज्वालाको भड़कानेका साधनमात्र हूं। यही सही। मैं भी अपने ऊपर किये गये अमानवीय अत्याचारका बदला लूंगी। उनकी काम-ज्वाला भड़काऊंगी, उनकी पाशविक पिपासा बढ़ाऊंगी, और इसी रूपसे उनका सर्वनाश करूंगी।

आप मेरी आत्मकथा सुनना चाहते हैं? यदि आप पाषाण नहीं हैं तो मेरी इस रामकहानीको न पढ़िये, क्योंकि इसे पढ़नेसे किसी भी कोमल प्रकृतिके पुरुषका हृदय पिघलकर अविरल धाराओंमें बहने लगेगा। मेरी आत्मकहानी बड़ी हृदयविदारक तथा मर्मभेदी है।

मेरा जन्म एक कायस्थ-कुलमें हुआ था। अपने माता-पिताकी मैं सबसे कनिष्ठ सन्तान थी। हम कुल मिलाकर पांच बहनें थीं। भाई एक भी नहीं था। पिताजीकी पैतृक सम्पत्ति दो लड़कियोंके विवाहमें आधीसे अधिक समाप्त हो चुकी थी। शेष दो लड़कियोंके विवाहकी चिन्ता रात-दिन उनके प्राण सुखा रही थी। ऐसी हालतमें पाठक स्वयं अनुमान कर सकते हैं कि उनपर कैसी बीती होगी जब मेरे जन्म लेनेपर उन्होंने देखा कि इस बार भी उनके एक लड़की हुई है, लड़का नहीं! उनके सिरपर मानों वज्रपात हुआ। मुझे बादमें मालूम हुआ था कि मां मुझे देखकर ऐसी खीझ उठी थीं कि सूतिकागारमें ही मेरा गला दबोचकर मार डालनेकी बात सोचने लगी थीं; पर बादमें उन्हें दया आ गयी और जी मसोसकर, दुःख और लज्जाके (कन्याको जन्मदान देनेसे अधिक लज्जाकी बात हमारे समाजमें और क्या हो सकती है!) आंसू पीकर रह गयीं।

निरन्तर दुःख और शोकके दबावसे माताका सत्त्व सब निखर चुका था और उनके शुष्क स्तनोंमें दूध नहीं रह गया था। गाय और बकरीका दूध अधिक मात्रामें पिलानेके लिए पिताजीके पास पैसा नहीं था। मेरे लालन-पालनमें इतने विघ्न होते हुए भी मैं मरी नहीं। यदि मैं उस समय मर जाती तो मेरे बदले निर्यातन कौन सहता? इसलिए कर्मलेखके अनुसार मैं मरी नहीं। लोग कहते हैं कि शैशव ही मनुष्य-जीवनमें एकमात्र ऐसी अवस्था है जब वह निश्चिन्त होकर विशुद्ध आनन्द भोग करता है। सम्भव है, ऐसा होता हो। पर मैं सच कहती हूं, मुझे अपने शैशव-जीवनकी स्मृतिमें भी एक दिन ऐसा याद नहीं आता जिसे मैं सुखका दिन कह सकूं। मुझे यथेष्ट खाद्य नहीं मिलता था, मैं रोती थी, मां मारती थीं, मैं और भी जोरसे चिल्लाकर रोने लगती। इस असाधारण परिस्थितिमें मेरी बुद्धि बहुत जल्दी सजग हो उठी। पाठकोंको विश्वास नहीं होगा, यदि मैं कहूं कि छ वर्षकी अवस्थामें मैं माता-पिताके दुःखको बहुत-कुछ समझने लगी थी। घरमें बात-बातमें रात-दिन हाय-हत्या मची रहती थी। मेरे दुःखी माता-पिताका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। मां अब भी मुझे बात-बातमें मारा करती थीं, पर मैं अब रोती न थी, नीरव भावसे अपने आंसुओंको पी लेती थी। हमारे मुहल्लेके बालक और बालिकायें किलकारी मारते हुए मगन-मन होकर खेल-कूद करते थे। ऐसे समय मेरा चित्त कुछ चञ्चल हो उठता था। पर भीतर मांको नाना चिन्ताओंसे हाय-तोबा मचाते देखकर मेरा जी खेलनेको नहीं चाहता था। इन सब बातोंका उल्लेख मैं इसलिए कर रही हूं कि मेरे परवर्ती जीवनमें जो क्रान्ति मची थी, इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



छोटे-मोटे कारणोंसे भी मुझे उसके लिए प्रेरणा मिली थी, यद्यपि ये मूल कारण नहीं थे।

बड़ी मुश्किलसे पिताजी मुझसे बड़ी शेष दो बहनोंका विवाह कर पाये। कहींसे उन्हें ऋण मिल गया था। इधर मैं भी धीरे-धीरे बड़ी होती चली गयी और साथ ही मांकी मार, फटकार और गालियां भी चुपचाप सहन करती चली गयी। मुझे अच्छी तरह याद है कि पिताजी दिन-दिन मेरी चिन्तासे कैसे घुलते चले जाते थे। कभी-कभी वह सिरको घुटनोंके नीचे छिपाकर घण्टे-भरसे भी अधिक समय इसी अवस्थामें बिता देते थे। मुझे अपने ऊपर क्रोध आता था और पिताजीकी हालतपर तरस। उस छोटी अवस्थामें भी, जब कि मैंने संसारका कोई भी सुख स्वप्नमें भी नहीं भोगा था, कभी-कभी आत्महत्याका विचार मेरे मनमें उत्पन्न हो जाता था। पर ऐसा सम्भव न हो सका।

उस समय मेरी अवस्था तेरह वर्षकी थी। पिताजी बीच-बीचमें कुछ दिनोंके लिए गायब रहते थे और फिर वापस चले आते थे। अन्तको एक दिन उन्होंने आकर मांसे कहा कि वह मेरे विवाहकी बात पक्की कर आये हैं। वर अच्छा है, लखनऊमें एक डाक्टरकी दूकानमें कम्पौण्डर है। पिताजी आज अपेक्षाकृत प्रसन्न मालूम पड़ते थे। इस प्रसन्नताका कारण मैं कुछ समझ न पायी। मेरे मनमें यही प्रश्न जागरित हुआ कि उन्हें विवाहके लिए रुपये कहांसे मिले हैं? पर पीछे उनकी प्रसन्नताका कारण भी मालूम हो गया। वरने दहेज लेनेसे अस्वीकार कर दिया है। पर क्यों अस्वीकार किया? उस समय इसका कारण मैं कुछ मालूम न कर सकी, पर बादमें सब गुल खिल गया।

मेरे पतिकी अवस्था पचासके करीब होगी। वह कम्पौण्डर थे। एकदम सिड़ी थे। यही समझमें नहीं आता कि कम्पौण्डरी उन्होंने कैसे सीख ली! डाक्टरोंके प्रेसक्रिपशनोंमें जो-जो दवाइयां जितनी-जितनी मात्रामें लिखी होती थीं, उन्हें ठीक उसी ढंगसे देते थे। इस सम्बन्धमें कोई भूल-चूक वह कभी नहीं करते थे। पर और सब विषयोंमें उनकी बुद्धि बिलकुल चौपट थी। मैंने अपने वेश्या-जीवनमें इस बातका अनुभव किया है कि काम-वासना सबसे प्रबल या तो सबसे अधिक बुद्धिमान व्यक्तियोंमें होती है या निरे बुद्धुओंमें। बुद्धिमान व्यक्ति इस वासनाको पूर्णतः अपने वशमें रखते हैं, वे जब गिरते भी हैं तो जान-बूझकर। पर बुद्धुओंकी कामोत्तेजना देखकर हंसी भी आती है और दुःख भी होता है। मैंने बादमें सुना था कि मेरे पति महाशयकी प्रथम स्त्री पतिकी निर्बुद्धितासे तङ्ग आकर विष खाकर मर गयी थीं। उनके मरते ही लोगोंने मेरे पतिको बनाना शुरू किया। किसीने कहा—"चचा, तुम तो अभी बीस सालके जवान मालूम होते हो, दूसरा विवाह क्यों नहीं कर लेते?" कोई बोला—"चचा, तुम्हारे चेहरेकी बहारपर लखनऊकी सब नाजनीनें निसार होंगी। जिसे इशारा करोगे, वही तुम्हारे पास हाजिर होगी, तुम्हें छोड़कर दूसरेसे शादी ही नहीं करना चाहेगी। जरा आजमा तो लो!" 'चचा' ने बहुत सम्भव है, अपने 'चेहरेकी बहार' का असर आजमाया भी था; पर सफलता न मिली। वह इसी धुनमें रहने लगे कि कहींसे कोई भी लड़की किसी भी कुलकी मिल जाय, चाहे वह कैसी ही कुरूपा, कदाकार क्यों न हो, तो उनका बेड़ा पार हो जाय। अन्तको मेरे पिताजीने उनकी तारीफ सुनकर जब उनके निकट मेरे साथ विवाह करनेका प्रस्ताव किया तो वह एकदम सातवें आसमानपर चढ़ गये। कहना नहीं होगा कि ये सब बातें मैंने पीछे दूसरोंके मुंहसे सुनकर मालूम की थीं।

पिताजीने मुझे बाध्य होकर एक बूढ़े, निखट्टू, निर्बुद्धि पतिके साथ ब्याह दिया—केवल इसी लालचसे कि वरने दहेजके भारसे पिताजीको मुक्त कर देनेकी शर्त की थी! मैं सोच रही थी कि यदि किसी बूढ़े वरसे ही मुझे ब्याहना था तो किसी टकेवालेको क्यों नहीं फांस लिया, जिससे वह ऋणके फन्देसे छूट जाते? मैं जानती हूं कि मेरा यह विचार भी अत्यन्त नीचतापूर्ण है, पर उस समय मैं यही सोच रही थी कि इससे कमसे कम मुझे पिताजीकी आर्थिक चिन्ता दूर हो जानेका सन्तोष तो मिलता! खैर।

मेरे पति हुसैनगञ्जकी एक तङ्ग गलीमें, जहां बड़ी घनी बसती थी, रहते थे। उन्होंने दो छोटे कमरे किरायेपर ले रखे थे। खाना वह अपने हाथसे बनाते थे और चौका-बर्तन भी अपने हाथसे करते थे। महरी रखनेकी गुञ्जाइश भी उनके पास नहीं थी। पर मुझे वह बड़े आदरसे रखते थे। और-और मदोंमें खर्च कम करके मेरे लिए अच्छी साड़ियां लाते थे, गहने भी यथाशक्ति अच्छे गढ़वा दिये थे। मुझे कोई भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



काम नहीं करने देते थे। पर इससे क्या मेरा मन भर सकता था! एक तो बूढ़ा पति, तिसपर बुद्धू!

जिस मकानमें हम लोग रहते थे, वह ऊपर-नीचे भाड़े-वालोंसे ठसाठस भरा था। मेरे पतिको सभी लोग मनो-विनोदके लिए पहलेसे ही खूब बनाया करते थे, अब जब वह 'नयी दुलहन' लेकर रहने लगे तो मसखरोंकी बन आयी। 'चचा, चचा' कहके वे लोग बाहरके कमरेमें गुल मचाया करते थे। पर केवल परिहासके लिए नहीं, अब बहुतसे लोगोंके आगमनका कुछ दूसरा ही उद्देश्य था। मेरे पतिके कामसे लौटकर घरपर आते ही वे लोग दर्जनोंकी तादादमें हमारे यहां आकर घण्टों तक धरना दिये बैठे रह जाते और मजाक उड़ाते रहते। मैं भयभीत होकर चुपचाप अपने कमरेमें दुबकी बैठी रहती और अपने भाग्यको कोसती और माता-पिता तथा अपनी प्यारी बहनोंकी यादमें रोती।

पर धीरे-धीरे मेरा सङ्कोच हटने लगा, और कौतूहल बढ़ने लगा। मैं चिककी आड़से नवयुवकोंका जमघट देखती। उनमें एक विशेष व्यक्तिके प्रति मैं आकर्षित-सी होने लगी। वह खत्री था। मैं उसकी विधवा बहन कमलाको, जो उम्रमें मुझसे केवल तीन-चार साल बड़ी थी, जानती थी। कमलाने पहले ही दिन मुझसे घनिष्ठता जोड़ ली थी। उस युवकका नाम जगमोहन था। उसकी अवस्था बाईस वर्षके करीब होगी। वह देखनेमें सुन्दर और हंसमुख था। बीच-बीचमें उसकी गजलोंकी तान भी मैं सुनती थी। एक दिन दोपहरके समय मैं कमलाके साथ अपने कमरेमें बैठी थी। कमला मुझे काढ़नेका काम सिखा रही थी। अचानक जगमोहन 'कमला, कमला' पुकारता हुआ वहां आ उपस्थित हुआ। पहले तो मैं समझी कि वास्तवमें वह किसी आवश्यक कार्यके लिए कमलाको बुलाने आया है। पर जब उसने कमलासे कहा—"क्या चचीको काढ़ना सिखा रही हो?" तो मैं समझ गयी कि वह किसी बहानेसे मुझे देखनेको आया है। मैं घूंघट काढ़ने लगी। पर कमला मेरा घूंघट हटाते हुए बोली—"भैयाके सामने तुम्हें लज्जा किस बातकी? वह जैसे मेरे भैया हैं, वैसे ही तुम्हारे भी तो हैं!" मैंने मन-ही-मन मुसकराकर कहा—"नहीं, वह मेरे 'भतीजे' हैं।"

इस प्रकार धीरे-धीरे जगमोहनके आगे मैंने परदा करना छोड़ दिया। मैं यह कहना भूल गयी कि जिस मकानमें मैं रहती थी, जगमोहनके पिता ही उसके मालिक थे। वह शहरके एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। जगमोहन बेकार बैठा रहता था। उस दिनसे वह प्रायः नित्य दोपहरके समय मेरे यहां आने लगा। कमलाके सामने भी वह मुझसे एक-आध हलका मजाक करनेमें नहीं झिझकता था। आश्चर्यकी बात यह है कि कमला अपने भाईकी हरकतोंसे लज्जित होनेके बदले प्रसन्न होती थी। जब वह आता तो मैं उसे पान लगाकर देती। उसकी धृष्टता दिन-दिन बढ़ने लगी और मैं भी फिसलने लगी। आज तक मैंने जैसा जीवन बिताया था, उसकी प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गयी। एक दिन कमला हम दोनोंको कमरेमें अकेली छोड़कर बाहरसे दरवाजा बन्द करके चली गयी। पाठकोंको इस बातपर यकीन नहीं होगा, पर मैं यथार्थ बात लिख रही हूं। भाईके सम्बन्धमें नवेली विधवा-की इस करतूतपर मुझे स्वयं आश्चर्य होता था और आज भी होता है। कुछ भी हो, जगमोहनने इस एकान्तावस्थामें अवसर पाकर मुझे पूर्णतः कलङ्कित कर दिया। इसमें सन्देह नहीं कि इस कलङ्कमें बहुत-कुछ अंशमें मेरी भी रजा थी। पर मैं तो समाजके अत्याचारसे पीड़िता अतृप्तकामा अनभिज्ञा नवेली थी! और उसे संसारका अनुभव बहुत-कुछ हो चुका था। क्यों उसने मुझ अभागिनीको अपने जालमें फंसाया?

कुछ भी हो, इस घटनाके कुछ ही समय बाद एक दिन मैं रातके समय जगमोहनके साथ भाग गयी। हम दोनों दिल्लीमें आकर रहने लगे। जगमोहन अपनी मांके बकससे छ-सात सौ रुपये चुरा लाया था। हम दोनों एक होटलमें रहने लगे। चार महीने बड़े ऐश-आरामसे बीते। मैं जग-मोहनको जी-जानसे प्यार करती थी, और सच पूछा जाय तो मुझे अपने पतिको छोड़कर धर्मच्युत होनेका बिलकुल भी खेद नहीं हुआ। मैं उसीको अपना पति, उसीको अपनी गति समझती थी और यदि वह मुझे जीवन-भर अपने साथ रखता तो अन्त समय तक मैं अपने नारी-जीवनको सार्थक समझती। पर केवल काम-लालसाके दास पुरुष स्त्रीकी आत्माके इस सर्वत्यागी प्रेमके महत्त्वको क्या समझें! जगमोहनकी उन्मत्त कामाग्नि चार महीनेके साहचर्यके बाद शान्त हो गयी और उसके पास रुपयेका भी अभाव होने लगा। उसे इस बातके भी चिह्न दिखायी दिये थे कि मेरे गर्भ रह गया है; इसलिए वह और भी घबराया। ज्यादे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कापुरुष पुरुष जाति! मेरे प्रति उसका व्यवहार दिन-दिन रूखा होने लगा, यहां तक कि, मैं स्पष्ट देख रही थी, वह मुझसे घृणा करने लगा था। एक दिन मैंने उसके हाथ एक दैनिक पत्र देखा। उसमें उसके पिताने विज्ञापन छपाया था जिसमें उन्होंने बड़ी करुण भाषामें अपने लड़केसे घर वापस आनेकी प्रार्थना की थी और लिखा था—तुम्हारी अम्मांकी आंखें रोते-रोते फूटनेको हो गयी हैं। मैं स्थितिकी यथार्थता समझने लगी और मेरा कलेजा धकसे रह गया।

एक दिन रातको किसी विकट स्वप्नके बाद सहसा नींद उचक जानेके कारण मैं दुःस्वप्नकी स्मृतिसे भयभीत हो उठी। हृदयको ढाढ़स देनेके लिए जगमोहनको जगाना चाहा। पर मेरे भय और आश्चर्यका ठिकाना न रहा, जब मैंने देखा कि पलंगपर जगमोहन नहीं है। धड़कता हुआ कलेजा लेकर बहुत देर तक उसका इन्तजार करती रही। सबह हो गयी, पर वह नहीं दिखायी दिया। अपनेको एकाकिनी असहायावस्थामें पाकर मैं आतङ्कित हो उठी। मैंने होटलके मैनेजरसे पूछा। पर वह भी कुछ नहीं जानता था। उसकी बातसे मालूम हुआ कि जगमोहनने प्रायः एक महीनेका बिल नहीं चुकाया है। मैनेजर मुझे डांटने लगा। बोला—"यह सब तुम लोगोंकी मक्कारी है! यह चाल चलकर तुम दोनों मिलकर होटलवालोंको धोखा देना चाहते हो! मैं पुलिस बुलाकर तुम्हें हाजतमें रखूंगा!" मैंने बहुत समझाया, बहुत रोयी, पर वह न पिघला। उसने सचमुच पुलिसको बुलवाकर मुझे उसके हवाले कर दिया।

मैं दिन-भर प्रायः जड़, अचेतन अवस्थामें थानेमें रही। पुलिसके कान्स्टेबल, यहां तक कि स्वयं दारोगा मुझसे भद्दा परिहास करते रहे; पर मैं काठकी मूर्तिकी तरह उस अंधेरी कोठरीमें स्तब्ध बैठी रही। रातको पुलिसके कम-से-कम पन्द्रह व्यक्तियोंने जो राक्षसी, नारकीय अत्याचार किया, उसका स्मरण करके इस समय भी मेरे सारे शरीरमें रोमाञ्च हो आता है। उफ्! मानवरूपधारी ऐसे पिशाच भी इस पृथ्वीपर वर्तमान हैं! मुझे वास्तवमें आश्चर्य होता है कि उस घोर पाशविक, भीषण आतङ्कजनक वीभत्स अत्याचारको देखकर धरती रसातलकी ओर धंस क्यों न गयी! पृथ्वी माताने कैसे एक अनाथा, परित्यक्ता, असहाया, गर्भवती पोड़शीके शारीरिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विनाशका वह दृश्य सहन कर लिया?

कुछ भी हो, इसका परिणाम यह हुआ कि मेरे मस्तिष्कमें ज्वरका आक्रमण हो गया। मैं प्रलापग्रस्त हो गयी और मुझे अपना होश नहीं रहा। दूसरे दिन सुबहको मुझे जब अपना होश आया तो मैंने अपनेको एक गलीमें पड़ा हुआ पाया। पुलिसवालोंने अपने पैशाचिक कर्मके फलसे भयभीत होकर मुझे यहां डाल दिया होगा। मैं अभी तक ज्वर और शारीरिक यातनासे पीड़ित थी और कराह रही थी। उजेला होते-न-होते मेरी चारों ओर तमाशबीनोंकी भीड़ लग गयी। पर मुझे उठनेकी ताकत नहीं थी। अन्तको एक सज्जन, जिनके बाल गर्दनसे नीचे तक थे और दाढ़ी छाती तक थी, मुझे एक गाड़ीमें बैठाकर अपने साथ ले गये। पीछे मुझे मालूम हुआ कि वह आर्यसमाजी हैं और एक अनाथालयके अध्यक्ष हैं। वह मुझे अनाथालयमें ले गये और मेरी सेवा-शुश्रूषाका काफी अच्छा प्रबन्ध कर दिया।

मेरा ज्वर दो-एक दिनमें अच्छा हो गया। पर अब एक दूसरी बला आ उपस्थित हुई। मेरा गर्भपात होने लगा। मैं फिर बीमार पड़ गयी। इस अवस्थामें मैं प्रायः तीन सप्ताह तक अस्वस्थ दशामें पलंगपर पड़ी रही।

अनाथालयमें रहकर मैं किसी तरह अपने पूर्व दुःखको भूलनेकी चेष्टा करने लगी, पर जगमोहनकी विश्वासघातकताकी याद आते ही पागल-सी हो जाती। किसी भी उपायसे मैं इस दुःखको भूलना चाहती थी। अनाथालयकी स्त्रियोंमें एक स्त्री बड़ी धृष्ट थी और देखनेमें साक्षात् भुतनी मालूम होती थी। पर मेरे प्रति उसने सदय व्यवहार दिखाया और रफ्ता-रफ्ता करके उसने मुझे कोकेन खाना सिखा दिया। न मालूम वह कहांसे ले आती थी। रोज लाकर मुझे खिलाती। इसका असर यह हुआ कि मेरे शरीरके साथ-ही-साथ मन भी क्षीण होता चला गया और मनमें जड़ता आ गयी तो दुःखद स्मृतियोंकी अनुभूति भी कम सताने लगी। नीति-अनीतिकी जो भावना मेरे मनमें शेष रह गयी थी वह भी जाती रही, तामसिक सुख-भोगकी लालसा बढ़ने लगी और जीवित रहनेकी इच्छा भी प्रबल होती चली गयी।

मैंने धीरे-धीरे इस बातपर गौर किया कि अनाथालयके अध्यक्ष महोदयने अनाथ स्त्रियों द्वारा एक खासा व्यापार खोल रखा है। अधेड़ अवस्थावाले, पत्नीहीन, अन्ध-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कामुक उनके पास आते थे। अध्यक्ष महोदय प्रत्येकसे सौ, दो सौ रुपये लेकर किसी स्त्रीसे उसका 'विवाह' करवा देते थे। पर कुछ ही दिन बाद वह स्त्री लौटकर फिर उसी अनाथालयमें उनके पास चली आती थी। वह फिर किसी दूसरे पुरुषको 'ब्याही' जाती थी, पर फिर वापस चली आती थी। ऐसे बहुतसे विवाह मैंने अपनी आंखों देखे। अब मैं यह देख रही थी कि मुझे महाशयजी किसके हवाले करते हैं। यह स्पष्ट ही था कि वह मुझे किसी मोटे असामीके हाथ बेचना चाहते थे; क्योंकि मैं एक तो कमसिन थी, तिसपर रूपवती थी। हुआ भी वही। वह असामी गांठके भी मोटे थे और शरीरके भी। पर बुड्ढे हो चले थे। चांदनी चौकमें उनकी मिठाईकी एक बड़ी दूकान थी।

मैं पहले ही कह चुकी हूं कि कोकेन खानेसे मेरा तीव्र अनुभूतिशील हृदय अब जड़ और कुन्द बनने लगा था। अब मुझे बुरे-भलेका कोई विचार नहीं रह गया था। पर सांसारिक बुद्धि बढ़ गयी थी। जब मैंने देखा कि यह बुड्ढा मालदार है तो तत्काल मेरे मनमें यह विचार उत्पन्न हुआ कि इसे नाज-नखरेसे वशमें करके इससे रुपये खसोटनेमें हर्ज ही क्या है? रुपयेका महत्त्व अब मैं समझने लगी थी। मैंने सोचा कि मेरे पास धन हो जायगा तो फिर अन्य सांसारिक सुख (जिनकी अब मुझे प्रबल इच्छा होने लगी थी) आपसे आप मेरे पास उपस्थित हो जायेंगे।

कहना नहीं होगा कि बुड्ढा मुझे पाकर अपनेको धन्य समझने लगा। मैं भी उसे रिझा-रिझाकर उसका सर्वनाश करने लगी। कुछ ही महीनोंके अन्दर मैंने कई हजारके गहने उससे बनवा लिये। इसके अतिरिक्त नकदी भी जमा करती चली गयी। इसी दर्मियान एक नौजवान खूबसूरत मुसलमानके साथ मेरा प्रेम हो गया। वह सामनेकी दूकानपर बैठकर गजलें गाया करता था और मेरी ओर घूर-घूरकर देखता था। मैं पहले ही कह चुकी हूं कि जीवनके उलटे-सीधे चक्रोंके फेरमें पड़नेके कारण, कोकेनका नशा करनेके बाद पापपङ्कमें पूर्णतः डूब जानेकी लालसा मेरे मनमें प्रबल हो गयी थी। मैंने सोचा—जब पापमें ही डूबना हो तो हिन्दू और मुसलमानमें भेदभावका ख्याल रखना निरी मूर्खता है; बल्कि हिन्दूने मुझे दगा दिया है। हो सकता है, मुसलमान अन्त तक मेरा साथ दे। पर यह मेरा भ्रम था। कुछ भी हो, मैंने बुड्ढे हलवाई (अर्थात् अपने 'पति'!) की आंखोंमें धूल झोंककर, नौकरोंको रिश्वत देकर उस मुसलमान युवकसे प्रेमका नाता जोड़ लिया। बहुत दिनों तक यही चक्र चला। मैं उसके प्रेममें अन्धी हो गयी थी। अन्तको एक दिन उसके प्रस्तावके अनुसार मैं अपने सब गहने और रुपये लेकर उसके साथ भागकर मेरठ चली गयी। मैं उसे यथाशक्ति आरामसे रखने लगी। जब जितने रुपये मांगता, देती थी; उसकी सब आवश्यकताओंको पूरा करती थी। पर एक महीना भी पूरा न हुआ होगा कि एक दिन मेरा बक्स लेकर वह गायब हो गया। उस बक्समें मेरे बहुतसे गहने थे, और नकद रुपये सब उसीमें थे। इस बातसे मुझे बड़ा सदमा पहुंचा, पर मैं घबरायी नहीं। पुरुषका नीच व्यवहार सहन करनेकी मैं आदी हो गयी थी। मैंने यही गनीमत समझी कि वह मुझे मारकर मेरे शरीरके गहने उतारकर नहीं ले गया। एक गहना बेचकर मैं फिर दिल्ली वापस चली गयी और वहां चावड़ी बाजारमें जाकर रहने लगी।

बस, यहींसे मेरा वेश्या-जीवन प्रारम्भ होता है। इसकी जड़में पिताजीकी दरिद्रता और विवाह-सम्बन्धी सामाजिक कुप्रथा थी। हमारे समाजके पुरुषोंकी नीचता तथा नैतिक कायरताने मुझे इस पङ्कमें ढकेला। जगमोहनने मुझे गर्भवती देखकर समाजके भयसे भीत होकर मुझे असहायावस्थामें त्याग दिया, अपने उत्तरदायित्वको एकदम भुला दिया। यदि वह मुझे न छोड़ता तो अपने बुड्ढे और बुद्धू पतिके त्यागका कलङ्क मैं सहर्ष अपने सिरपर लेती, क्योंकि मेरी यह दुर्गति तो न होती जो आज इस नारकीय जीवनमें हो रही है! फिर भी मैं उसे याद करती हूं, क्योंकि मैं उसे सचमुच हृदयसे प्यार करती थी!

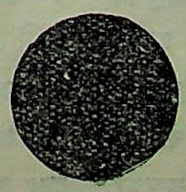



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# शैतानसे

श्री सूर्यनाथ तकरू एम० ए०

ओ शैतान !

जिस दिन हमारी सृष्टि हुई थी, जिस दिन हमारे ऊपर ईश्वरके युवराजत्वका सेहरा बंधा था, उसी दिन तो तुम शैतान बने थे ! तुम यह न सह सके कि तुम्हारे अधिकारों-की उपेक्षा हो। तुम यह न सह सके कि कलका बना हुआ मिट्टीका पुतला तुमसे अधिक दुलारा बने। तुम यह न सह सके कि तुम, अग्निके बने हुए तुम, आदमीके आगे झुको। उसी अपराधके लिए तुमको ईश्वरने देश-निर्वासनका दण्ड दिया; और वह देश-निर्वासन भी कैसा—सपरिश्रम। तुमको यह दण्डाज्ञा मिली कि तुम आदमीको सदा पाप करनेके लिए उकसाओ, उसे पतनपथगामी बनाओ, उसे गिराओ। और, इस आज्ञापालनका पुरस्कार था - अग्नितप्त्या, अन्ध-कार, घृणा, क्रोध, पश्चात्ताप ! और यदि तुम असफल रहो तो ? तो तुम्हें पुरस्कार मिलता है—तुम स्वर्गीय सुखके एक क्षणके लिए अधिकारी हो जाते हो। कैसी कठिन समस्या है ? तुम्हारी जीत ही हार है और हार ही जीत। पर तुम, भाग्यके विवश बन्दी—तुम, तुम जीतनेकी चेष्टा करते हो, जीतते भी हो।

पापोंके पिता !

कभी तुम सोचते भी हो तुम क्या हो, तुम क्या करते हो ? तुम हो बिगड़े हुए, गिरे हुए देवदूत। तुम्हारा पाप—केवल एक पाप—यही था कि तुम मिट्टीके पुतलेकी गुलामी करना बर्दाश्त नहीं कर सके। तुमने अपने अधिकारोंके लिए युद्ध किया और तुमको 'ईश्वर' ने गिरा दिया। तबसे अब तक तुम प्रतिहिंसाकी आगमें जलते हो, 'बदला, बदला', चिल्लाया करते हो।

नरकके राजा !

तुम्हारी शक्तिका हम उतना ही प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं जितना कि 'ईश्वर' की ! यदि लाखों करोड़ों शता-ब्दियोंकी पुण्य-भावना ही ईश्वर है तो वह अवश्य है। वह कल्पना इस लम्बे समय-वितानमें घनीभूत होकर अब सत्यसे अधिक सत्य, प्रकाशसे अधिक उज्ज्वल, सुखसे अधिक सुखकर है। इतने युगोंके इस मृदु भारको हम जल्दी हटा नहीं सकते। इसी तरह तुम भी हो, शैतान ! तुम मनुष्यकी उस मलिन हृदय-हिलोरके उत्तेजक हो, जो उसे ले जाकर पाप-पङ्कमें पटकती है। और तब तुम अपने उस चिरशत्रुके पतन-पर मुसकराते हो, हंसते हो। तुम सोचते हो—"इसी मिट्टीके खिलौनेको मुझसे अधिक श्रेयस्कर समझा गया था !" तुम्हारी प्रतिहिंसाकी विषमाग्नि कुछ मन्द होती है और तुम सोचते हो कि शायद अब ईश्वरकी आंखें खुलें। पर वैसे ही तो तुमको अपने शापकी सुधि आ जाती है। वैसे ही तो तुमको याद पड़ता है कि तुम्हारे भाग्यमें विजयो-ल्लास तक नहीं है। तुम विश्व विजयी वीर हो, पर तुम्हारी विजय ही तो तुम्हारी पराजय है ! बदनसीब विजेता !

शैतान !

कभी तुमने अपने इस बलि-पशुकी ओर भी देखा है—इसको, जिसे 'आदमी' का नाम दिया जाता है ? यदि कभी देखा होता तो शायद तुमको भी दया आ जाती। यह परिस्थितियोंका दास, नियतिका बन्दी, विवशताकी प्रतिमा है। एक ओर सद्विचार और सद्विवेकके पहरेदार इसके कान खाते रहते हैं, दूसरी ओर तुम्हारे चर इसकी आंखोंपर पट्टी बांधनेको फिरा करते हैं। यह गरीब तुम्हारी और ईश्वरकी शक्तियोंका क्रीड़ापात्र है। तुम दोनों बारी-बारी इसे नचाते हो। यह तुम दोनोंका पद-कन्दुक है। यह तुम दोनोंका शिकार है। पर फिर भी यह तुम्हारी और देवत्वकी शक्तियों-की विभाजक रेखा है, तुम्हारी और देवत्वकी शक्तियोंकी मिलन-रेखा भी। कुछ पुरानी स्मृतियोंके ही विचारसे कभी-कभी तो इसपर द्रवीभूत हो जाया करो। मगर, शैतान, तुम करो तो क्या करो ? ये कमजोरीके पुतले भी तुमपर उंगलिया उठाते हैं। ये तुमपर दया करनेका दुस्साहस करते हैं, ये स्वयं दयनीय हैं ! ये तुम्हारी टीका करते हैं, जो स्वयं दोषाकार हैं ! यही विडम्बना तो इनको खाये जाती है। यही अहङ्कारकी छाया, यही बड़प्पनका मोह तो इनको मर्कट-नृत्य कराता है। ये यह सोचनेकी उदारता नहीं दिखाते कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तुम्हारे शरीरमें भी आत्मा है—देवात्मा। ये यह नहीं समझते कि स्मृतियोंका सर्पदंशन तुमको भी होता है। ये यह नहीं समझते कि तुम्हारे हृदयमें भी घरकी याद जागती है, तुम्हारे हृदयमें उस नन्दन-विपिनकी सैरकी अभिलाषा है। ये यह नहीं समझते कि तुम्हारी अतृप्त आत्माको भी शीतल वायुकी आवश्यकता है। ये यह नहीं समझते कि वेधरका परदेसी कितना दयनीय है। इन्होंने कभी तुम्हारी परिस्थितिकी विषमताका अनुभव नहीं किया। कभी उस अग्निकी उष्णता नहीं समझी, जो रात-दिन तुम्हें जलाती है; कभी उन साधनोंको नहीं देखा जो तुम्हारे मानस-क्षितिजपर दौड़ा करते हैं; कभी उस क्षुब्ध महोदधिको नहीं देखा जो तुम्हारे हृदयमें लहराया करता है; कभी उस हिमालयको नहीं देखा जो तुम्हारे हृदयको कुचल रहा है—पीस रहा है। इनको कभी उस तूफानकी खबर नहीं मिली जो तुम्हारी अन्तर्सृष्टिमें उथल-पुथल मचा रहा है। पर ये करें तो क्या करें? ये यह सब समझें कैसे? तुम्हारा फन्दा तो सदा समान क्रूर, समान घातक होता है। तुम्हारा लौह-कवच सदा अभेद्य है। ये तुम्हें गलत समझते हैं तो इनका क्या दोष?

शैतान!

हम तुम्हारा नाश नहीं चाहते। तुम एक महासत्यके प्रतिनिधि हो। तुम्हारी जीवन-गाथा एक श्रेष्ठ पापकी कहानी है। तुम अधिकारके उपासकोंके आदर्श हो और तुम एक महायुगके आरम्भके स्मारक हो। फिर भी तुम बुरे हो, दुनिया तुम्हें बुरा कहती है, केवल इसीलिए।

शैतान! ओ शतान!

———

# जीवन-सार

हे कवि! इस जीवनका सार।
कहां छिपा है बतला देना, वह अनन्त धनका भण्डार।
हे कवि! इस जीवनका सार।
कोयल पञ्चम स्वरसे गाती, नव-कलिका धीरे मुसकाती।
उषा चली सहसा सकुचाती, रवि हंस देता उन्हें निहार।
यही प्रकृतिका सुन्दर प्यार।
वैभवकी प्रभुता दिखलाकर, भोले जीवनपर इठला कर,
निर्मम निष्ठुर हिय कहलाकर, कर लेना बरबस अधिकार।
अरे! भूल है बारम्बार।
आदरसे वसुधापर आना, उसी आनसे मर मिट जाना,
दृढ़ताका आदर्श निभाना, पड़ी नाव जब हो मंझधार।
यही नियमका है आधार।
महिमामय महिमामें रत हो, जननीके चरणोंपर नत हो,
पावन भक्त आत्मविस्मृत हो, प्रभु लें करुणा कोर निहार।
विश्व इसीपर है बलिहार।

———

—हरिहरनाथ शुक्ल 'सरोज'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भ्रान्त

एण्टन चेखोफ

मिगेफ नामका एक उच्च-पदस्थ सरकारी कर्मचारी सान्ध्य-भ्रमणके लिए बाहर निकला हुआ था। चलते-चलते वह एक तारके खम्भेके पास आकर खड़ा हुआ। वहां आकर वह ठहर गया और एक लम्बी सांस ली। इसी स्थानपर एक सप्ताह पहले उसकी नौकरानी आग्नेयाने आकर उसे टोका था और अत्यन्त कटु शब्दोंमें कहा था—"ठहरो! तुम्हारी करनीका ऐसा मजा तुम्हें चखाऊंगी कि आटे-दाल-का भाव मालूम हो जायेगा। निर्दोष लड़कियोंको फुसलाकर उनका सर्वनाश करनेका क्या फल होता है, यह अच्छी तरह जान जाओगे! मैं बच्चेको तुम्हारे दरवाजेपर रख आऊंगी, तुम्हें अदालतकी हवा खिलाऊंगी, तुम्हारी घरवालीसे भी सब हाल कह दूंगी……।"

इस प्रकार उसे धमकी दिखाकर आग्नेयाने कहा—"अगर अपनी इज्जत बचाना चाहो तो बैङ्कमें मेरे नामपर पांच हजार रुबल जमा कर दो।" मिगेफने उस दिनकी सब बातें याद करके फिर एक लम्बी सांस ली और हार्दिक पश्चात्तापसे अपनेको अपनी क्षणिक दुर्बलताके लिए बार-बार धिक्कारा। आग्नेयाकी बातें सोच-सोचकर उसका हृदय भय तथा आशङ्कासे विचलित हो रहा था।

जब वह अपने बंगलेमें वापस आया तो कुछ देर विश्राम लेनेके लिए वह दरवाजेकी सीढ़ीपर बैठ गया। ठीक नौ बजे थे। बादलोंके पीछेसे बीच-बीचमें चन्द्रमा झांक रहा था। बंगलेके आस-पास और सड़कपर कहीं कोई प्राणी नजर नहीं आता था। गरमियोंमें हवा-बदलीके लिए आये हुए बड़े-बूढ़े सब अपने-अपने बंगलोंमें सोनेकी तैयारी कर रहे थे और तरुण लोग जङ्गलकी ओर वायु-सेवनके लिए गये हुए थे। मिगेफ सिगरेट जलानेके लिए अपनी दोनों जेबोंमें दिया-सलाई ढूंढ़ने लगा। अचानक उसका कुहना किसी कोमल वस्तुसे जा लगा। उसने उदासीनतासे अपनी दायीं ओर देखा। देखते ही उसका चेहरा आतङ्कके कारण ऐसा विकृत हो उठा, मानो उसने कोई सांप देखा हो। उसके सामने उसी० दरवाजेपर एक बण्डल पड़ा हुआ था। एक कपड़ेमें कुछ चीज लपेटी हुई पड़ी थी। बण्डलका एक सिरा कुछ खुला था। मिगेफने जब उसके भीतर हाथ डाला तो कुछ नरम-नरम-सी चीजपर उसका हाथ लगा। भयसे चौंककर वह उछल पड़ा, और अपनी चारों ओर इस प्रकार देखने लगा, जैसे कोई अपराधी पकड़े जानेके भयसे भाग निकलनेका रास्ता ढूंढ़ता हो।

वह क्रोधके कारण दांतोंको पीसते हुए और मुट्ठी बांधते हुए बोला—"आखिर वह रांड़ सचमुच इस बच्चेको यहां छोड़ गयी! हे भगवान्! मेरे पापका फल यहांपर पड़ा है!"

भय, क्रोध तथा लज्जाके कारण वह वहींपर जड़वत् खड़ा रह गया। सोचने लगा—"अब क्या किया जाय? मेरी स्त्री देखेगी तो वह क्या कहेगी? दफ्तरमें मेरे साथी क्या कहेंगे? हमारे डिपार्टमेण्टका बड़ा आफिसर अवश्य ही मेरी खिल्ली उड़ाता हुआ कहेगा—'मैं तुम्हें बधाई देता हूं! हाः-हाः-हाः! तुम्हारी दाढ़ीके बाल भले ही पक गये हों, पर तुम्हारा मन अभी रंगीला है। तुम अव्वल दर्जेके बदमाश हो!' सभी लोग, जो यहां गरमियोंमें ठण्डी हवा खाने आये हुए हैं, मेरे पतनसे परिचित हो जायेंगे, और बहुत सम्भव है, सभी भले घरोंकी बड़ी-बूढ़ियां मुझे अपने घरके भीतर नहीं आने देंगी। इसके अलावा, इस प्रकारके कलङ्क-समा-चार दैनिक पत्रोंमें बराबर छपते रहते हैं। मेरा नाम भी अवश्य ही इस प्रकार कलङ्कित होकर सारे रूसमें फैल जायगा!"

बंगलेकी बीचवाली खिड़की खुली थी। वहांसे उसकी स्त्री अन्ना फिलिपोवनाका शब्द स्पष्ट सुनायी देता था। फाटकके पास आंगनमें उसका नौकर यर्मोले जोरसे बाजा बजा रहा था।

मिगेफको भय हुआ कि बच्चा जाग न पड़े। उसके जागते ही सब पोल खुल जायगी। "जल्दी! जल्दी!"—उसके दिमागमें केवल यही एक भावना मंडराने लगी। वह मन-ही-मन कहने लगा—"इसी दम इसे यहांसे हटाना होगा! इसे ले जाकर किसी दूसरेके दरवाजेपर रख आऊं!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसने एक हाथमें बण्डल उठा लिया और सीधा, बिना झिझकके आगे बढ़ा चला गया, ताकि किसीके मनमें कोई सन्देह उत्पन्न न हो। जब सड़कपर पहुंचा तो सोचने लगा—"कैसी विकट स्थिति मेरे सामने आ खड़ी हुई है! एक ऊंचे ओहदेका सरकारी कर्मचारी एक बच्चेको हाथमें लेकर सड़कपर फिरे, यह कैसी अनोखी बात है! हे भगवान! अगर कोई इस समय मुझे देख ले और यथार्थ स्थिति मालूम कर ले तब तो मेरी मिट्टी ही खराब समझो। यह सामने एक दरवाजा है, यहींपर इसे रख दूं·····नहीं, ठहरो, इस बंगलेकी खिड़कियां खुली दीखती हैं, शायद कोई भीतर-से देख रहा हो। कहां रखूं? ठीक है! याद आ गया। म्येल्किन नामके सर्चेण्टके दरवाजेपर इसे छोड़ आऊं। वह बड़ा मालदार है; इसलिए शायद वह बच्चेको देखकर खुश होगा और धन्यवाद देता हुआ उसे गोद ले लेगा।"

मिगेफने निश्चय कर लिया कि वह बच्चेको म्येल्किनके यहां ले जायगा, यद्यपि उक्त व्यापारीका मकान उस सड़कसे बहुत दूर, नदीके पास था। मिगेफने सोचा—"वहीं जाना ठीक होगा। पर यदि कहीं बच्चेने रास्तेमें ही रोना शुरू कर दिया या बण्डलसे बाहर निकल आया तो छुट्टी हुई! बड़े मजेकी हालतमें हूं, इसमें शक नहीं! मैं एक मनुष्य-जीवको बगलमें इस तरह दबाये लिये जा रहा हूं, मानो वह एक बस्ता हो! एक सचेत, सजीव मानव-प्राणी! अगर इसकी तकदीरसे म्येल्किन इसे गोद ले ले तो वह अन्तको एक बड़ा आदमी हो सकता है·····तकदीरकी बात कौन कह सकता है!—वह एक प्रोफेसर, एक बड़ा जनरल या एक लेखक हो सकता है। इस समय तो मैं इसे इस प्रकार एक बण्डलमें लपेटकर ले जा रहा हूं, पर तीस या चालीस साल बाद उसका ओहदा इतना ऊंचा हो सकता है कि सम्भव है, मुझे उसके पास फटकनेका भी साहस न हो! मनुष्य-जीव भी क्या अजब प्राणी है!"

चलते-चलते मिगेफ एक जनहीन तङ्ग गलीमें, नींबूके पेड़ोंकी घनी छायामें, आ पहुंचा। अकस्मात् उसके मनमें यह भावना जागरित हुई कि वह एक बड़ा निष्ठुर कार्य कर रहा है। उसने सोचा—"यह कैसी नीचता है! इससे ज्यादा कमीनापन और क्या हो सकता है! क्यों मैं इस नादान बच्चेको एक दरवाजेसे हटाकर दूसरे दरवाजेपर रखनेकी चिन्तामें हूं? इसके पैदा होनेमें इसका तो कोई दोष नहीं है! इसने मेरा कुछ बिगाड़ा भी नहीं। हम सब बड़े लुच्चे और बदमाश हैं। हम लोग आनन्द लूटते हैं, और उसका दण्ड बेचारे असहाय बच्चोंको भुगतना पड़ता है। यह कैसा अन्याय है! गलती मैंने की और तकदीर फूटी बच्चेकी! अगर मैं इसे म्येल्किनके दरवाजेपर छोड़ आऊं तो वे लोग निश्चय ही इसे अनाथोंके किसी अस्पतालमें भेज देंगे, और वहां यह परदेशियोंके बीचमें एक पूर्व-निर्धारित नियमानुसार अपने दुर्दिन बितायेगा। वहां न किसीका लाड़, न किसीका प्यार·····मोचीका काम इसे सिखाया जायगा; फिर यह शराब पीना सीखेगा, लुच्चोंकी भाषा बोलने लगेगा, और भूखा रहेगा। एक मोची! एक ऊंचे ओहदेके सरकारी कर्मचारीका लड़का होकर, अन्तको क्या उसके भाग्यमें मोची बनना लिखा है! वह तो मेरे ही रक्त, मेरे ही मांससे उत्पन्न हुआ है·····"

मिगेफ नींबूके वृक्षोंकी छायासे बाहर निकलकर खुली सड़कपर, उज्ज्वल चांदनीमें आया, और बण्डल खोलकर उसने बच्चेको देखा।

"सोया हुआ है!"—उसने मन-ही-मन कहा—"अरे नटखट! तुम्हारी नाक ठीक तुम्हारे बापकी तरह तीखी है! वह सोता है। अभागा नहीं जानता कि उसका बाप उसे देख रहा है! यह वास्तवमें एक नाटक ही है, मेरे प्यारे लड़के! मुझे माफ करो, माफ करो, भाई! तुम्हारा भाग्य ही ऐसा मालूम पड़ता है.....।"

मिगेफ आंखें मींचने लगा और उसके बदनमें एक प्रकार-की सुरसुराहट-सी मालूम होने लगी। उसने फिर बच्चेको लपेट लिया और उसे बगलमें रखकर चलने लगा। म्येल्किन-के मकानकी ओर जाते हुए रास्ते-भर उसके मस्तिष्कमें नाना प्रकारके प्रश्न उत्पन्न होने लगे और अपनी आत्मामें वह एक प्रकारकी नैतिक पीड़ाका अनुभव करने लगा। वह सोचने लगा—"अगर मैं एक सच्चा, ईमानदार आदमी होता तो लोकलाजका सब लिहाज ताकमें रखकर इस बच्चेको लेकर सीधे अपनी स्त्री, अन्ना फिलिपोवनाके पास जाता, उसके आगे घुटने टेककर कहता—'मुझे क्षमा करो, मैंने पाप किया है! मुझे दण्ड दो, पर हमें एक निष्पाप बच्चेका सर्वनाश नहीं करना चाहिए। हमारे कोई बच्चा भी नहीं है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसलिए इसीको गोद क्यों न ले लिया जाय !' उसका हृदय बड़ा कोमल है, वह जरूर राजी हो जायगी। इस प्रकार मेरा बच्चा मेरे ही पास रहेगा। उफ !"

जब वह म्येल्किनके मकानके पास पहुंचा तो द्विविधामें वहींपर स्थिर भावसे खड़ा रह गया। वह खड़े-खड़े यह कल्पना करने लगा कि वह अपने बंगलेके बरामदेमें बैठा हुआ एक अखबार हाथमें लेकर पढ़ रहा है और एक तीखी नाक-वाला नन्हा-सा बच्चा पलनेमें खेल रहा है। पर साथ ही अपने साथियोंकी व्यङ्गोक्तियोंका ख्याल भी उसे हो आया। उसका चित्त बड़ा अशान्त था। वह अपनी आत्मामें केवल नैतिक वेदनाका अनुभव कर रहा हो, सो बात नहीं। उसके हृदयमें स्नेहका विषाद भी जागरित हो रहा था।

उसने बड़ी सावधानीसे बच्चेको म्येल्किनके बरामदेकी सीढ़ीपर रख दिया। रखते ही उसके सिरमें एक प्रकारकी झनझनाहट पैदा हो गयी। वह बड़बड़ाता हुआ बोला—"आह, प्यारे बच्चे, मुझे क्षमा करना ! मैं नीच हूं।"

वही पीछेको हटा; पर तत्काल अपना गला खखारकर दृढ़तासे बोला—"चलो, देखी जायगी ! मैं उसे घर ले जाऊंगा। लोग चाहे कुछ भी कहें।"

मिगेफने बच्चेको उठाया और जल्दीसे वापस चला गया। रास्तेमें वह मन-ही-मन कह रहा था—"लोग चाहे कुछ कहें, परवा नहीं। मैं सीधे अपनी स्त्रीके पास जाकर उसे पुकारूंगा। अन्नाका स्वभाव बड़ा कोमल है। वह मेरी स्थिति समझ जायगी। हम दोनों मिलकर बच्चेको पालेंगे। अगर यह लड़का है तो हम उसे व्लादीमीर कहके पुकारेंगे, लड़की हुई तो अन्ना कहेंगे ! कुछ भी हो, हमारी वृद्धावस्थामें यही हमारा एक सहारा होगा।"

उसने जैसा निश्चय किया था, घर जाकर वैसा ही किया भी। लज्जा तथा भयसे व्याकुल होकर, साथ ही एक प्रकारके अस्पष्ट आनन्दकी आशासे पुलकित होकर उसने अपनी स्त्रीके आगे घुटने टेक दिये और बच्चेको फर्शपर रख-कर बड़े करुण स्वरमें, प्रायः सिसकियां भरता हुआ बोला—"अन्ना फिलिपोवना ! मुझे दण्ड देनेके पहले मेरी बात पूरी तरहसे सुन लो। मैं पाप कर बैठा हूं ! यह मेरा बच्चा है.....तुम्हें आग्नेयाकी याद है ? मेरी मति मारी गयी थी.....।"

वह आगे कुछ न कह सका। भय तथा लज्जासे विभ्रान्त-सा होकर वह वहांसे ऊपर उछलकर उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही बाहर चला आया। उसने सोचा—"जब तक वह मुझे स्वयं नहीं बुलाती, मैं यहीं ठहरा रहूंगा। मैं उसे स्वस्थ-चित्त होकर धैर्यसे इस बातपर विचार करनेका समय दूंगा।"

उसका नौकर यर्मोले उसके सामनेसे होकर गुजरा, और एकबार उसकी ओर देखकर आगे बढ़ गया। एक मिनट बाद फिर वह उसके सामने आया। वह स्पष्ट ही किसी बातके लिए कुछ झिझक-सी मालूम कर रहा था। कुछ देर बाद वह (यर्मोले) दांत दिखाता हुआ और बड़बड़ाता हुआ बोला—"क्या बताऊं, साहब, मुझे तो बड़ा अचरज हो रहा है। अभी अक्सिन्या नामकी बरेठन यहां आयी थी। गधी कहींकी, अपना बच्चा यहां बरामदेकी सीढ़ियोंपर छोड़ गयी। जब वह मेरे साथ भीतर थी तो कोई आकर उसका बच्चा उठा ले गया.....। यह अजब तमाशा है !"

उसकी बात सुनकर मिगेफ आश्चर्यसे चिल्लाकर बोला—"क्या ? तुमने क्या कहा ?"

उसके चिल्लानेसे यर्मोले घबरा गया। उसने मिगेफके क्रोधका अर्थ अपनी ही भावनाके अनुसार लगाया। सिर खुजलाता हुआ बोला—"मुझे इस बातका बड़ा दुःख है, पर आप जानते हैं.....सभी लोग गरमियोंकी छुट्टी मनाने यहां आ रहे हैं; बिना.....बिना...आप जानते हैं बिना... लुगाईके..."

यर्मोलेने देखा कि उसके मालिककी आंखें आश्चर्य तथा क्रोधसे भरी हुई हैं। वह अपराधीकी तरह कहता चला गया—"मैं जानता हूं, यह पाप है, पर आप जानते हैं..... किया क्या जाय ? आपने बाहरकी किसी लुगाईको भीतर आने देनेकी सख्त मनाही की है, मुझे मालूम है। पर मेरी अपनी लुगाई भी तो यहां नहीं है। जब आग्नेया यहां थी, तब मुझे बाहरकी किसी लुगाईकी जरूरत नहीं रहती थी; पर अब, आप खुद समझ सकते हैं। आग्नेयाके जमानेमें कोई गड़बड़ इस तरहकी नहीं होने पाती थी, क्योंकि..."

"निकल यहांसे बदमाश !"—मिगेफने पांवको जोरसे जमीनपर पटककर, चिल्लाकर कहा। इसके बाद वह अपने कमरेको वापस चला गया। वहां उसकी स्त्री अन्ना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



फिलिपोवना आश्चर्य तथा क्रोधसे भरी हुई, आंखोंको आंखोंसे भिगोकर टकटकी बांधे बच्चेको देख रही थी।

मिगेफने उसे दिलासा देते हुए, स्नेहपूर्वक मुसकराकर कहा—"अरे जरा इधरको तो देखो! पागल हुई हो! मैं तो दिल्लगी कर रहा था...। यह मेरा बच्चा नहीं है, यह हमारी बरेठनका है। मैंने तो सिर्फ मजाक किया था। जाओ, इसे यर्मोलेको दे आओ।"

———

# निर्वाणोन्मुख

*जीवन ले जलने आया हूं, क्यों! यह कौन बतावे!*
*मेरे दग्ध हृदयकी ज्वाला कह दो कौन बुझावे!*
*अन्धकार जीवन-सहचर है, पीड़ा प्रेम-कहानी*
*अरे! यही जीवन-निधि है, इसको न अतीत मिटावे!*

*हां इस जलनेमें भी सुख है, पीड़ामें मादकता;*
*जीवनकी नीरस घड़ियोंमें, रसकी है व्यापकता।*
*प्राय पिला जाता है प्याला, यौवन मुझपर लुटता,*
*आह! यही तो है प्राणोंकी सबसे बड़ी विवशता।*

*शलभ-युवतियोंका आ मेरे प्रेमानलमें जलना,*
*मेरी इस एकान्त तपस्याको ममतासे मलना।*
*इन्हीं सुनहले सपनोंमें तो मन-मधुकर मतवाला,*
*भूल गया है किधर शान्ति है किधर मोहकी छलना!*

*तिल-तिल कर किसने मेरा एकाकी जलना देखा?*
*नेह पालमें अन्त! अरे वह केवल काली रेखा।*

—"चकोरी"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रेमकी दिव्य विभासे उद्भासित पशु-पक्षी-और मनुष्यमय-जगत्

डा० हेमचन्द्र जोशी, डी० लिट्

ऋतुराज वसन्त आने लगता है तो प्रकृति अपना रूप संवारने लगती है। वन-पर्वत, नदी-निर्झर, पशु-पक्षी और मनुष्य सब ही आनन्दमें मत्त हो जाते हैं। पशु-पक्षियोंका चहकना, गाना और फुदकना देखिये तो स्पष्ट हो जाता है

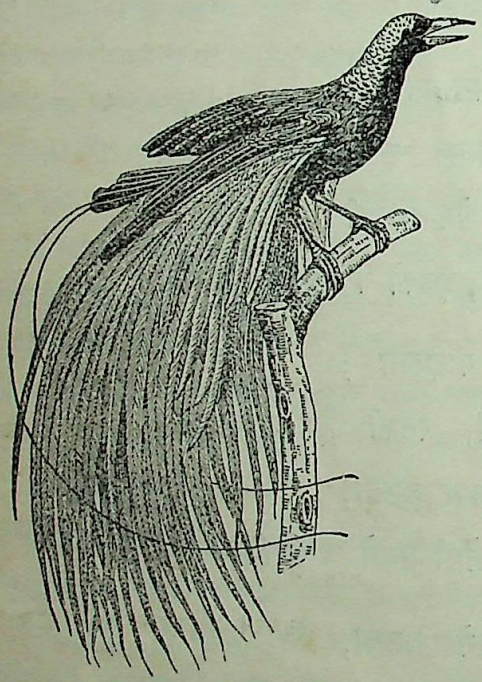

'हुमा' पक्षी—यह मर्द है और अपने शृङ्गारसे मादाको वश करनेकी तैयारीमें है।

कि उनमें नयी स्फूर्ति आ गयी है। ओहो! यह तो जोड़ा है। पति और पत्नी रंगरलियां कर रहे हैं। चोंचसे चोंच मिलाते हैं, कानाफूसी करते हैं, बिछुड़ते और मिलते हैं। साफ मालूम पड़ता है कि इनमें प्रेमका नशा छाया है। बसन्तकी हवामें ही कुछ ऐसी मस्ती बह रही है कि लता, वृक्ष, घाससे लेकर मनुष्य तक सबमें मादकताने घर कर लिया है। सब अपनी-अपनी जोड़ीकी तलाशमें पागलोंकी भांति फिर रहे हैं। केवल मनुष्य—पाखण्डी, कृत्रिमतापूर्ण आदमी इस नयी स्फूर्तिके प्रभावसे बचनेका विफल प्रयास कर रहा है। यह देखिये, इस हरियालीसे लहलहाते वनमें एक छोटी चिड़िया चोंचमें तिनके, घास, फस आदिको लेकर ऊपर जा रही है। पेड़की एक शाखापर इसकी प्रेयसी बैठी है, वह सद्गृहस्थकी गृहिणीकी भांति उसे संभाल रही है। नर दूर-दूरसे खोज-खोजकर सामान ला रहा है और मादा उसे हिफाजतसे रख रही है। कभी-कभी मादा स्वयं उड़कर अपने पतिके पास आधे रास्तेमें मिलती है और उसकी चोंचका तिनका स्वयं ले लेती है ताकि पतिको कुछ आराम मिले और वह जल्दीसे अपना काम करे। यह सामान एक लटकते हुए घोंसलेके लिए आ रहा है। मादाके गर्भ रह गया है और दायित्वपूर्ण माता-पिताकी भांति पति-पत्नी दोनों अब इस फिक्रमें हैं कि आनेवाली सन्तानका भरण-पोषण कैसे होगा। संसारका यही नियम है। जो जीव सन्तान पैदा करता है वह घोर दुःख सहकर, विकट यातनाओंका सामना करके और अपने प्राणको गंवाकर भी सन्तानके भरणपोषणका प्रबन्ध कर जाता है। वनराज सिंह जानता है कि उसकी औलाद भूखी नहीं मर सकती, पर उसे अपने नन्हेंसे बच्चोंकी रक्षाकी सबसे अधिक चिन्ता

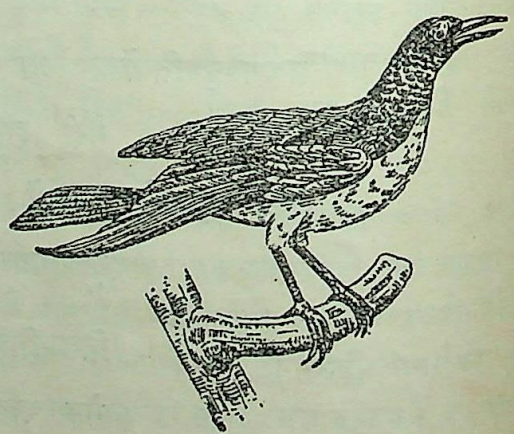

हुमा मादा मनुष्य-समाजकी नारियोंकी भांति संवरकर पुरुषोंको अपनी छटा दिखाना पसन्द नहीं करती। उसे विश्वास है कि उसका स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और पुरुषको उसके मातृ-रूपकी पूजा करनी ही पड़ेगी।

होती है। मनुष्यको तो बच्चोंका प्रेम मरते समय तक रहता है, पर जानवरोंको उनका प्रेम तभी तक रहता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जब तक वह अपने पैरों खड़ा होने लायक न हो। यूरोपमें पुत्रके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध तभी तक रहता है जब तक पुत्र या कन्या स्वावलम्बी न हो जायें। जब ये बड़े हुए तो उनसे माता-पिता कह देते हैं कि अब तुम सयाने हो गये हो,

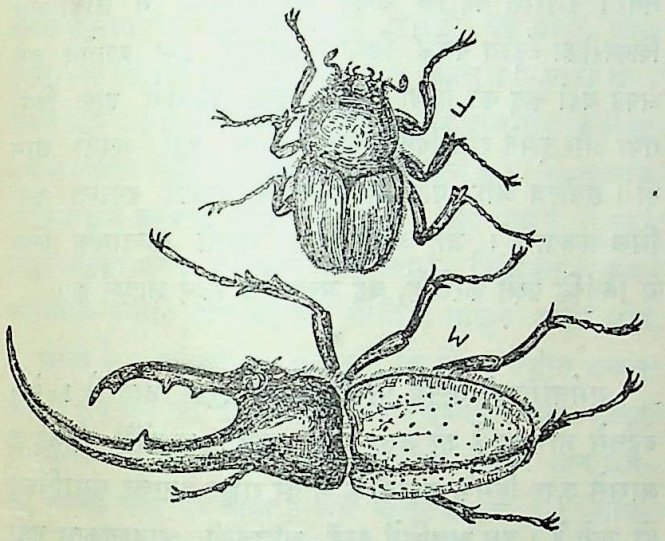

गुबरीला कीड़ा—नारीका वेश सादा है और पुरुष सींगके समान एक अङ्गसे सज्जित है जो शस्त्र और लिङ्गका काम देता है।

अपनी रोजी खुद ढूंढ़ो। जानवरोंसे भी प्रकृति इसी नियमका पालन करवाती है। उक्त चिड़ियोंके अण्डे होंगे और कुछ दिनों बाद वे फूटेंगे। तब तक मां उनके ऊपर बैठी रहेगी और पिता मांको खिलाये-पिलायेगा। आज तो दोनों खुश हैं कि उनके सन्तान होगी। विश्वकी यह विचित्र माया है कि सब सन्तान-वृद्धिके लिए लालायित रहते हैं। इसमें सारी सृष्टिको परमानन्द मिलता है। भारतीय आचार्योंका मत है कि सन्तान-वृद्धिका यह रोग स्वयं विधाताको भी है। कहा है—"प्रजाकामो वै प्रजापतिः स तपोऽतप्यत स तपस्तप्त्वा मिथुनमुत्पादयत।। रयिं च प्राणं चेत्येतौ मे बहुधा प्रजा करिष्य इति।।" प्रजापतिको सन्तानकी अभिलाषा हुई। उसने तपस्या की और तपस्यासे उसने पति-पत्नीका जोड़ा बनाया। उसने रयि और प्राण बनाये कि मैं सन्तानकी वृद्धि करूंगा। जब स्वयं आदि स्रष्टाको अकेले चैन न पड़ा तो फिर किस प्राणीको बिना सन्तानके सुख मिल सकता है। इसीलिए उक्त पक्षी कारण न जाननेपर भी गर्भके ख्यालसे ही प्रफुल्ल-हृदय होकर काममें जुटे हैं। इसपर आश्चर्यकी बात यह है कि यद्यपि किसी ब्राह्मण देवताने इनका विवाह नहीं कराया है और न इनकी शादी सिविल मैरेज एक्टके अनुसार की गयी है, पर दोनों आजीवन पति-पत्नी रूपमें रहेंगे। आज इनकी प्रथम सन्तान उत्पन्न होगी, पर भविष्यमें यह बुद्धिविवेकहीन पक्षी दूसरी स्त्रीसे व्यभिचार न करेगा और पत्नी भी सदा इस पतिकी ही सङ्गिनी रहेगी। ये जीव इसमें मनुष्यसे ऊपर हैं। चराचर सृष्टिका राजा यह मनुष्य अपनी नीति और धर्मका गर्व करता है, पर उसकी आत्मा कितनी पतित तथा उसका प्रेम कितना खोखला है कि उसके समाजमें अनन्य पति-पत्नी-प्रेम देखना प्रायः असम्भव है। मनुष्य-समाजमें कुछ जङ्गली जातियोंको छोड़कर सर्वत्र जिनाकारीका बोलबाला है; पर ये चिड़ियां जिनाकारीके पास नहीं फटकतीं। यदि पति या पत्नी मर जाये तो जीवित पक्षी कुछ दिनों तक घोर दुःखमें पड़ जाता है और ऐसा मालूम पड़ता है कि वह भी अपना जीवन दे देगा। पर कुछ समय बाद वियोगका यह गहरा घाव भर जाता है और गर्भधारणकी ऋतु आते ही यह रंडुवा या बेवा दूसरी शादी कर लेती है। वह बिना व्याह किये रह ही नहीं सकती। प्रकृति उसे इस ओर घसीटती है। भगवान्‌की लीला देखिये कि उसने सब प्राणियोंमें काम-वासना पैदा कर दी है कि सब जीव अपनी संख्या-वृद्धि करें। यौन-सम्बन्धका यही भेद है। मनुष्यके अतिरिक्त सब जीव केवल

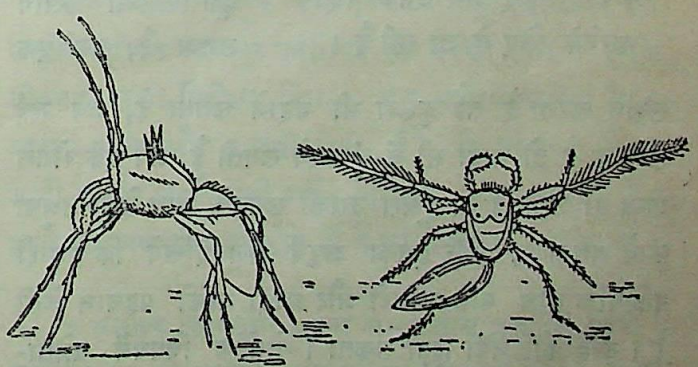

भकड़ा प्रेम-नृत्यकी गतमें मस्त है और उसे पूरा भरोसा है कि उसे गुण-ग्राहिका स्त्री मिल जायगी।

ऋतुमें स्त्री-सहवास करते हैं और यद्यपि अपनी उन्मत्त कामवासना चरितार्थ करनेके लिए वे सहवास करते हैं, पर परिणाम गर्भाधान ही होता है। इसके बाद अधिकांश जोड़े इस फिक्रमें तैयारियां करते हैं कि हमारे बच्चे किस प्रकार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आरामसे रहेंगे। ऐसे भी पक्षी हैं जिनके घोंसलोंमें बच्चोंके लिए मुलायम पङ्खोंके ऐसे नरम गद्दे बने होते हैं कि मनुष्यको वे नसीब नहीं हैं। दर्जी-चिड़िया पेड़ोंके पत्तोंको अपनी चोंचसे सीकर ऐसे सुरक्षित घोंसले तैयार करती है कि उसकी बुद्धिको देखकर दङ्ग रह जाना पड़ता है। ये घोंसले क्या हैं, किले हैं। यहां शत्रु आक्रमण नहीं कर सकते। वायु और वर्षा इस सुरक्षित पक्षि-भवनमें प्रवेश नहीं कर सकती। जुलाहा-चिड़िया घास-फूस और तागे बुन-बुनकर ऐसे घोंसले बनाती हैं कि मकड़ी भी उन्हें देखकर हाथ मले। इनको बनानेमें बहुत परिश्रम करना पड़ता है। दूर-दूरसे खोजकर सामान लाना, ठीक जगह ढूंढ़ना और वहां अपनी विलक्षण कारीगरीसे घोंसला बनाना आसान नहीं है। अपनी वंश-वृद्धिके मायामोहसे ये पक्षी सहर्ष सब कष्ट सहते हैं। इनके भाव, विचार और कार्यमें ऐसा समन्वय होता है कि देखकर आश्चर्य होता है। उनकी इच्छायें भी एक-सी हो जाती हैं। जब एक खाता है तो दूसरा भी खाने लगता है, जब एक स्नान करता है तो दूसरा भी नहाने लगता है, जब मर्द चहकता है तो मादा भी चूं-चूं करने लगती है, जब एक रोगसे ग्रस्त हो जाता है तो दूसरा उसकी लगनके साथ सेवा-सुश्रूषा करने लगता है, और इनका अपूर्व प्रेम देखिये कि हजारों पक्षियोंके बीच पति पत्नीको और मादा नरको पहचान लेती है। उन्हें कोई नहीं छुड़ा सकता। तोतोंके विषयमें 'तोता-चश्मी' प्रसिद्ध है। यह पक्षी आंख बचाना खूब जानता है। पर जो प्रेम इनमें पाया जाता है वह अतुलनीय है। जर्मन अन्वेषक शोमबुर्गने एक बार क्या देखा कि एक शिकारीने एक तोता मार डाला और वह यह सुग्गा घोड़ेकी जीनमें बांधकर घर लाने लगा। यकायक देखता क्या है कि एक दूसरा तोता भी उसकी जीनसे लटक गया। यह जिन्दा था। उसने अपने ऊपर अचानक यह आक्रमण देखकर उसे हाथसे उड़ाया, पर यह न उड़ा और मरे हुए तोतेकी बगलमें ऐसा चिपक गया मानों किसीने गोंदसे चिपका दिया हो। घर पहुंचनेपर शिकारीने मरा तोता खोला तो जिन्दा भी उसके साथ हो गया। सारांश यह कि उसने मरे तोतेको न छोड़ा और शिकारीका टेंटुआ पकड़ लिया। अन्तमें इस व्याधेने इसे अपने यहां कैद कर लिया। यह सुवा पिंजरेमें डाल दिया गया और इसने रात-दिन विलाप करके वहीं अपनी जान दी। सतीत्व और पति-प्रेमका इससे अच्छा दृष्टान्त कहां मिल सकता है। जो आत्मत्याग अपनी सन्तानके लिए ये निर्बुद्धि पक्षी करते हैं, वह मनुष्योंके लिए आदर्श है।

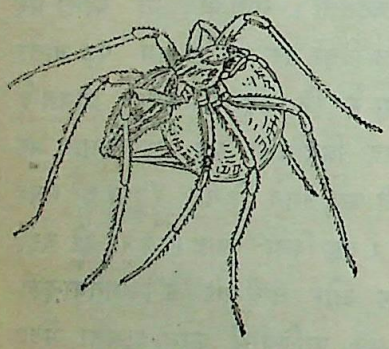

मातृत्वका माहात्म्य
मकड़ीने रेशमके कीड़ेके जालमें अण्डे दे रखे हैं और उनकी रक्षा करनेके लिए ले जा रही है।

*

गर्भधारणकी ऋतुमें प्रकृतिका रूप बदल जाता है। ऐसे बहुतसे जानवर हैं जो उत्तर और दक्षिण ध्रुवोंके निकट छः मासमें ऊपर हिमके चट्टानोंके भीतर गह्वर बनाकर समाधिस्थ हो जाते हैं। इस अवधिमें इन्हें भोजनकी आवश्यकता नहीं रहती। ये प्रायः मुर्दे बन जाते हैं, पर न मालूम शरीरके किस अङ्गमें प्राणकी एक चिंगारी जी रहती है जो वसन्त ऋतु आते ही भभक उठती है। उस समय ये सुस्थ और सबल हो जाते हैं तथा कुछ समयके आहारके बाद उनकी धमनियोंमें रक्त जोर मारने लगता है और ये कामुक जीव अपने जोड़ेकी फिराकमें आकाश-पाताल एक कर देते हैं। नर मादाकी खोजमें निकलता है और मादा नरकी। जब इनकी भेंट होती है तो ये आनन्दसे पागल हो जाते हैं और इनमें यौन-सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। प्रकृतिकी ही यह रासलीला है कि वसन्तमें इन मुर्दोंमें भी जान पड़ जाती है और ये अपनी संख्या बढ़ाते हैं। इसी प्रकार सब जीव उक्त ऋतुमें अपनी-अपनी जोड़ी ढूंढ़ने निकलते हैं। पर बहुधा ऐसा हो जाता है कि जोड़ा तो मिल गया, पर वह साथ रहनेको राजी नहीं होता या ठीक उसी समय कोई प्रतिद्वन्द्वी भी मैदानपर आ डटता है। उस समय स्वयम्बरका प्रश्न आ खड़ा होता है। प्राचीन भारतवर्षके स्वयम्बरकी भांति पशु-पक्षी नारियां भी उस नरको वरती हैं जो उनके हृदयके अनुकूल गुणोंका आगार हो। नरोंमें होड़ चलती है कि मैं वरा जाऊं। इसलिए कई पक्षी अपनी प्रेयसीका मन हरनेके लिए वह तान छेड़ते हैं कि नारीका सङ्गीत-प्रेमी हृदय पसीज जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भगवान् कृष्णकी वंशीकी तान गोकुलकी तरुणी गोपिकाओं-को बेचैन कर देती थी। अपनी मुरलीके अत्यन्त मीठे सुरके कारण ही यह मुरलीमनोहर गोपीवल्लभ बन गया। "नामसमेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदु वेणुम्।" इस बांसुरीकी धुनमें रासका यह रचैया अपरम्पार प्रेमकी वह मीठी तान छेड़ता था कि सब गोपियां बेकल और बेबस हो जाती थीं। उनके अङ्ग-अङ्ग प्रेमशिथिल हो जाते थे। यह तथ्य पौराणिकोंका कपोलकल्पित नहीं है। यह वैज्ञानिक सत्य है। मस्त तान प्राणिमात्रके हृदयको मस्त कर देती है और उसमें प्रेमका समुद्र इतना जबर्दस्त तूफान मचा देता है कि दुर्बल मनुष्य-की नीति-अनीति छोटे कङ्कड़की भांति न मालूम कहां लोप हो जाती है। यह तो सब जानते हैं कि हिरण सङ्गीत सुनकर अपनी सुध-बुध खो बैठते हैं और स्वयं गवैयेके पास आकर आत्म-समर्पण कर देते हैं। सांप मदारीके बीनकी तान सुन-कर उसका चेला हो जाता है और नाचने लगता है। नाच-गानेका अधिक प्रभाव पशुओंमें ही देखा जाता है। यही कारण है कि कोयल गाती है और मोर नाचता है। ये अपने इन गुणोंसे अपने जोड़ेका मन चुराते हैं और फिर उसके साथ अपनी कामवासना तृप्त कर अपनी जातिकी संख्या बढ़ाते हैं। बरसातमें मेंढ़क जो टर्र-टर्र करते हैं वे पागल नहीं है जो रातभर टर्राकर अपना गला फाड़ें। ये कामातुर जीव हैं जो अपने प्रतिद्वन्द्वियोंसे अच्छा गाना गाकर औरतोंका मन मोहनेकी कोशिश कर रहे हैं। इनका गाना सुनकर इनकी नारियां इन्हें वर लेंगी। झींगुर, झिल्ली आदि झनकार करते हैं। हमें यह झनकार भली न लगे—हमको तो अंगरेजोंका सङ्गीत भी बुरा लगता है; क्योंकि हमारी रग-रगमें भारतीय सुर और तान बस गये हैं—पर उनके अपने समाजकी नारियां उनकी सुरीली तानें सुनकर इतनी बेचैन हो जाती हैं कि ये सुन्दरियां अपने छिद्रोंमें चाहे कोई भी अत्यावश्यक काम क्यों न कर रही हों, वे ब्रजाङ्गनाओंकी भांति उसे अधूरा ही छोड़कर अपने उस मुरलीमनोहरके पास दौड़ती हैं जिसके रागने उनके अङ्ग-अङ्गमें प्रेमरसकी पिचकारी मार दी हो। इस सृष्टिमें अनन्त कृष्ण हैं और उतनी ही गोपबालायें। प्रजापतिकी लीला देखिये कि मेंढ़ककी टरटराहट झिल्ली ब्रजाङ्गना नहीं सुन पाती—इस 'भेकसुर' के लिए वे निपट बहरी बन जाती हैं। मनुष्य यह दादुर-धुनि सुनते हैं, पर गो० तुलसीदासजीके सिवा यह और सबको बुरी लगती है। तुलसीदासजीका उदार हृदय ही लिख सकता था—'दादुर धुनि चहुं ओर सुहाई।' * वैज्ञानिक इसकी बहुत खोज कर रहे हैं कि ऐसा होता क्यों है, पर वे किसी निदानपर नहीं पहुंचे। वे केवल इतना पता लगा पाये हैं कि कुछ जानवर कई विशेष ध्वनियोंको सुन ही नहीं सकते। उनके कानोंमें इन शब्दोंको ग्रहण करनेका यन्त्र नहीं है। ये केवल अपनी जातिके कामातुरोंकी वंशीध्वनि ही सुन पाते हैं। इसका इनके यौन-अवयवोंपर विचित्र असर पड़ता है। इन्होंने राग सुना कि इनमें कामाग्नि भड़क उठती है और यही तान इन्हें पति तक पहुंचनेमें पथ-प्रदर्शकका काम करती है। ये कामोन्मत्त होकर सीधे वहींको दौड़ती हैं जहांसे इनका कन्हैया—'नाम-समेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदु वेणुम्'—इन्हें नाम ले-लेकर और इशारा दे-देकर वेणुके सुरोंमें निमन्त्रित करता है। शब्दका यह प्रताप है और सुरकी यह महिमा है कि यह प्रेमकी दिव्य विभासे विश्वको आलोकित करके सृष्टि चक्रको निरन्तर चलाता रहता है। सृष्टिका यह चमत्कार देखिये कि शब्दके द्वारा प्रेमकी बाढ़ आती है, प्रेम नरनारीमें यौन-सम्बन्ध स्थापित करता है और इस सम्बन्धके द्वारा जीव 'आत्मा वै पुत्र नामासि' अपने समान और अपनेसे उन्नत सन्तानको छोड़ जाता है जिससे नाना जातिके प्राणी नष्ट न हों।

डा० कार्ल पीटरने इस विषयकी बहुत खोज की है। उन्होंने यूरोपके आल्प्स पर्वतोंपर एक मक्खी देखी। इसके जीवनका सूक्ष्म निरीक्षण किया। इस जातिमें नारियां बहुत आराम-पसन्द और आलसी होती हैं। ये घासपर चिमट जाती हैं और अहदियोंकी भांति हिलनेसे भी घबराती हैं। इनके मर्द बड़े परिश्रमी होते हैं, वे खाली बैठना नहीं जानते।

---

* भारतके ऋषियोंने अपना सारा ज्ञान प्रकृतिसे लिया। सङ्गीतके सुर भी उन्होंने पशु-पक्षियोंकी ध्वनियोंका सूक्ष्म निरीक्षण करके लिये हैं। वे जानते थे कि इनकी गिरामें मनमादक सुर हैं। इसीलिए उन्होंने तत्त्व निकाला:—

षड्ज मयूरो वदति, ऋषभं चातको वदेत्।
अजो वदति गान्धारं क्रौंचः क्वणति मध्यमम्॥
निषादं वृंहते नागो धैवतं दर्दुरो वदेत्।
ऋतौ वसन्तसमये पिको वदति पञ्चमम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इन्हें जब कामदेवने सताया तो ये विचित्र ध्वनि करते हैं। बस, यह सुनकर नारी विचलित हो उठती है। इन कीड़ोंकी मंगनी इस ढङ्गसे होती है।

कई जानवर अपनी जातकी स्त्रियोंका मन हरनेके लिए नाच करते हैं। मोरका नाच भारतमें प्रसिद्ध ही है। पर मकड़ियां इस क्षेत्रमें कमाल करती हैं। इनकी स्त्रियां आंखसे कम देखती हैं। इसलिए ये उनके बहुत निकट जाकर भांति-भांतिका नाच करते हैं। वे अपनी सुन्दरता और हृष्ट-पुष्ट शरीरकी फुर्ती दिखाकर औरतोंको

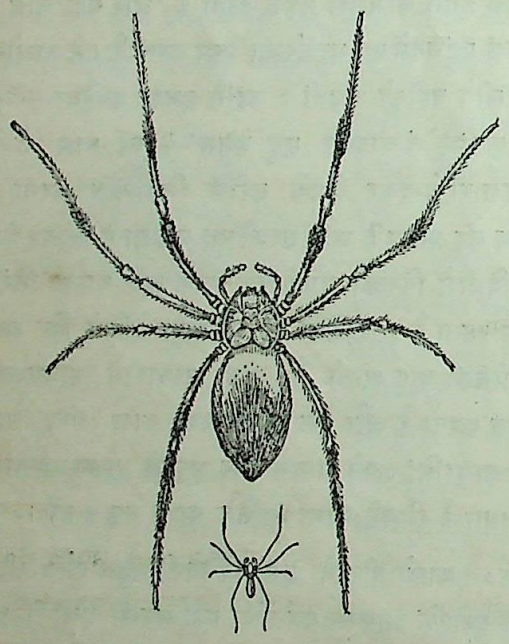

बड़ा मकड़ा है और छोटी मकड़ी।
यह बाल विवाह नहीं, प्रकृतिका ऐक्का चमत्कार है।

अपने ऊपर लट्टू करना चाहते हैं। इनके प्रेम-नृत्यका और कोई अर्थ नहीं होता, यह केवल सुन्दरियोंको प्रेमपाशमें फांसनेके लिए है। महोख पक्षी भी मयूरकी भांति नृत्य-कलामें पारङ्गत है। इसका झुकना, मुड़ना, गत और ताल देखकर अच्छे-अच्छे नर्तक झेंपेंगे। पशु और पक्षी सङ्गीत और नृत्यके द्वारा स्त्रियोंको आकर्षित करते हैं; पर सर्वदा ऐसा नहीं होता। स्त्री, पुरुषको क्यों झटसे वर लेती है, इसका कारण बताना बहुत कठिन है। मूल सत्य तो यह है कि ऋतुमें कामवासना उद्दीप्त होनेसे नारी मनुष्यको खोजती है और मनुष्य नारीको।

होड़ वहां होती है जहां नारियां या मनुष्य अपने विरोधी योनिसे कम या ज्यादा हों। ऐसे 'समाजों' में, जो योनि संख्यामें कम होगी, उसकी मांग बढ़ जायेगी और उसे अपने अधिकारमें करनेके लिए सब तरहके जतन किये जायंगे। मनुष्योंका ही दृष्टान्त लीजिये। पञ्जाबमें नारियां कम हैं, इसलिए वहां उनका अधिक आदर है, और वहांके लोग नाना प्रदेशोंसे स्त्रियां लाते हैं और उनकी बड़ी खुशामद करते हैं। तिब्बतमें स्त्रियोंका अनुपात पुरुषोंकी तुलनामें बहुत ही कम है, इसलिए वहां स्त्री सब अधिकारों-की मालकिन है। एक-एक नारीके वहां पांच-पांच विवाह होते हैं। पुरुषोंका वहां वही पद है जो हमारे राजोंके हरमोंमें नारियों और रखेलियोंका—बल्कि इससे बदतर। उनका उतना ही सम्मान है, जितना नौकरोंका। गृहिणी नवाब बनकर अपने पतियों और उपपतियोंसे अपनी गुलामी करवाती है। कीट-पतङ्गोंमें यह दशा मधुमक्खियोंकी रानी-की है। उनमें भी स्त्रियोंका अभाव रहता है। उनका वंश-विस्तार केवल यह रानी ही करती है। इसलिए उसका सब मर्दोंपर राज रहता है।

होड़के अवसरपर जानवरोंमें द्वन्द्वयुद्ध हो जाता है और परिणाम यह होता है कि वधूके दो चाहनेवालोंमेंसे एक अपना प्राण गंवाता है और दूसरा विजयी होकर वरमाला पहनता है। ये कुश्तियां मनोनीता नारीके सामने ही लड़ी जाती हैं, क्योंकि रमणीको अपनी वीरताका परिचय देकर वशमें किया जाता है। इन अमानुष जीवोंमें स्त्रीकी कामुकता वीर और विजयी नरको देखकर ही जागृत हो उठती है। मर्दोंमें भी लड़नेसे ही इसकी उग्रता बढ़ती है। बारहसिंगे जिस खूंखारीसे लड़ते हैं, उसे देखकर बड़े-बड़े शिकारी कांप उठते हैं। वे ऐसे जूझते हैं कि एकका प्राण गये बिना दूसरेको चैन नहीं मिलता। अपने सींगोंसे वे परस्पर-को लोहूलुहान कर देते हैं और कभी-कभी दोनोंके सींग ऐसे फंस जाते हैं कि दोनों ही लड़ते-लड़ते इस संसारसे कूच कर देते हैं। मादाको प्रभावान्वित और मोहित करनेके लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो लड़ाकोंमें एक खेत रह जाये। बहुधा इतना ही यथेष्ट होता है कि विजित परास्त और घायल हो जाये। सूस जातिका एक समुद्री जीव बड़े जोखट-का होता है। नारीको वशमें करनेके लिए वह अपने तीखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और तेज दांतोंसे शत्रुका शरीर क्षतविक्षत और लहूलुहान कर देता है। ये घाव कहीं हफ्तोंमें जाकर अच्छे होते हैं। पर ये जीव अपने शत्रुको जानसे मार डालना आवश्यक नहीं समझते। वर्फानी देशोंमें एक जातिकी मुर्गी होती है। इनके मर्दोंकी पाली देखने लायक ही होती है। सब औरतें चारों ओर पेड़ोंपर तमाशबीनोंकी भांति कतार बांधकर खड़ी हो जाती हैं और बड़ी उत्सुकता, कौतुक तथा उत्तेजनापूर्ण दृष्टिसे लड़ाई देखती हैं। नर अपने जोश-खरोश, क्रोध और उन्माद-के कारण गोल गेंद-से बन जाते हैं। उनके पङ्ख खड़े हो जाते हैं और अङ्ग-अङ्ग फड़कने लगता है। पर फैलाये हुए, दुम उठाये हुए मुर्गे मैदानमें आते हैं और पहले फर्राशी सलाम करते हैं। इसके बाद बहुत ऊंचे उड़कर ऐसी कलाबाजी खाते हैं कि गोया किसी जबर्दस्त पहलवानने खम ठोकी हो। कई मुर्गे तो दिनभर लड़ते ही रहते हैं—हारनेका नाम नहीं लेते। इस प्रकार जूझकर ये स्त्रियोंपर अपना रोब जमाते हैं और विवाहका पथ प्रशस्त करते हैं।

*

प्रेमके साथ मृत्युका निकट-सम्बन्ध है। मनुष्य-समाजमें नारी प्रेमके परिणाम-स्वरूप सन्तान उत्पन्न करती है और अपना जीवन सङ्कटमें डालती है। सन्तान पैदा होनेके बाद रोग, शक्तिक्षय और बहुधा मृत्युका आवाहन करना पड़ता है। इसीलिए मातृत्वका संसारभरमें महान् पद है। यही कारण है कि मनुजीने कहा है—'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।" मनुजीने अन्य बातोंमें स्त्रीका विशेष सम्मान नहीं किया है, पर उसका 'जननी-रूप' उन्होंने पूजा है। यह प्रकृतिका विचित्र नियम है कि सन्तानका प्रेम सबसे अधिक माताको ही होता है। क्या पशु और क्या मनुष्य, सबमें माता अपने बच्चेकी रक्षा करनेके लिए अपने प्राण भी सहर्ष दे देती है। जानवरों और कीड़ोंमें इसके बीसियों दृष्टान्त पाये जाते हैं। मधु-मक्खीको ही लीजिये; इनके सारे झुण्डमें केवल एक स्त्री होती है, जो उनकी रानी मानी जाती है। इसका इतना सम्मान कई कारणोंसे होता है। इनके समाजमें यही एक नारी है, इसलिए स्वभावतः उसका सम्मान होता है। पर बड़ा सम्मान तो इस कारण होता है कि यह जातिकी वृद्धिके लिए अपना प्राण अर्पण कर जाती है। भ्रमर-समाजमें सब पुरुष एक इस नारी द्वारा सन्तान उत्पन्न करते हैं; और जब उससे यह काम लिया जाता है तो बकौल मोरिस मेटरलिङ्कके—"यह नारी अपने समाजकी वेदीपर अपना जीवन अर्पण कर जाती है।" मछलियोंमें भी नारी पुरुषके साथ संसर्ग होनेके समय सैकड़ों अण्डे देती है और अपने जीवनका यह मुख्य उद्देश्य समाप्त करके मृत्युकी गोदमें विश्राम करती है। इन नारियोंका यह आत्मत्याग समाजके अत्याचार या जोर-जबर्दस्तीका परिणाम नहीं है। उन्हें अपनी उद्दाम कामवासनामें इतना आनन्द मिलता है कि इसके लिए वे मृत्युको सहर्ष वरती हैं। यह विश्वके विधाता प्रजापतिकी चमत्कारी लीला है कि इस वासनाका परिणाम उनके समाजके लिए मङ्गलकर सिद्ध होता है। सच है—'सविषोऽप्यमृतायते भवान् शव मुण्डा-भरणोपि पावनः।' नागेन्द्रहार नीलकण्ठकी तरह इनको मृत्युसे इनके समाजके लिए अमृत बरसता है और इनके घृणित और दुर्गन्धमय कङ्कालोंसे जीवन—पवित्र प्राणोंकी वर्षा होती है। यह सृष्टिका रहस्य है जो मौतसे जीवन पैदा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# महात्मा गान्धीका हिन्दूत्व

श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार

'हिन्दू' शब्द कितना भी अर्वाचीन क्यों न हो, किन्तु इसका प्रयोग प्राचीनतम धर्मके लिए इस प्रकार होने लग गया है कि वह सनातन शब्दका पर्यायवाची हो गया है। साधारण बोलचालमें सनातन-धर्मको ही हिन्दू-धर्म कहा जाता है और हिन्दू-समाजसे वह जन-समुदाय अपेक्षित है जो सनातन-धर्मको माननेवाला है, किन्तु शास्त्रीय दृष्टिसे कितने ही धर्म अथवा सम्प्रदाय सनातन-धर्मके अन्तर्गत हैं और हिन्दू-समाजमें भी कितने ही साम्प्रदायिक समाजोंका समावेश है। मनुष्य-समाजके बौद्धिक, आर्थिक और ऐतिहासिक विकासपर विचार करनेपर पता चलता है कि संसारकी प्रारम्भिक सृष्टिमें धर्म, जाति आदिका कोई भी ऐसा भेदभाव नहीं था। सब मनुष्य एक ही सम्प्रदायके माननेवाले थे। जो सम्प्रदाय अपनेको प्राचीनतम कहनेका दावा करते हैं, वे सब यह मानते हैं कि संसारका प्रारम्भिक मनुष्य-समाज एक ही धर्मका माननेवाला था और वह धर्म उनका अपना ही धर्म था। धर्म कोई भी क्यों न रहा हो, पर इसमें मतभेद नहीं कि धर्म एक ही था। हिन्दू-धर्मके नामसे प्रचलित सम्प्रदायों अथवा धर्मोंके सम्बन्धमें प्रायः सब ऐतिहासिक एकमत हैं कि वैदिक धर्म सबसे पुरातन है। वैदिक युगके बाद ही उपनिषद्, सूत्र, स्मृति, पुराण, दर्शन आदिका निर्माण हुआ है और एक ही वैदिक (हिन्दू) धर्मके अन्तर्गत अनेकों सम्प्रदायोंका प्रादुर्भाव हुआ है। अठारह पुराण अठारह सम्प्रदायोंके द्योतक हैं। छ दर्शन छ दार्शनिक सम्प्रदायोंके निदर्शक हैं। इस समय एक-एक पुराण और दर्शनके अन्तर्गत भी कई भेद-उपभेद देखनेमें आते हैं। इन भिन्न-भिन्न सम्प्रदायोंकी सृष्टिका कारण मनुष्य-समाजके बौद्धिक विकासको ही समझना चाहिए। नैयायिक तथा वेदान्ती और द्वैतवादी तथा अद्वैतवादी आदिके भेदभावकी उत्पत्ति भी केवल दार्शनिक विचार-भेदसे हुई है। बौद्धिक विकासके युगके बाद कर्मकाण्डका वह युग आता है, जिसमें पूजा-पाठके विधि-विधानको लेकर भिन्न-भिन्न सम्प्रदायोंकी सृष्टि होती है। बौद्धिक विकाससे पैदा हुआ भेदभाव समाजमें सदाके लिए दृढ़ हो जाता है और वह आचार तथा व्यवहारमें भी स्थिर हो जाता है। इस प्रकार पैदा हुए साम्प्रदायिक भेदभावके सम्बन्धमें इन पंक्तियोंमें विचार करनेकी आवश्यकता नहीं। यह सब भेदभाव इस समय भी सनातनधर्ममें ऐसे समाया हुआ है, जैसे कि मनुष्यकी देहमें अङ्ग-प्रत्यङ्ग समाये हुए हैं। अङ्ग-प्रत्यङ्ग अलग-अलग दीखने-पर भी देहकी दृष्टिसे एक ही हैं। बाह्य दृष्टिसे इन सम्प्रदायों-में परस्पर कितना भी अन्तर क्यों न हो, किन्तु सनातन (हिन्दू) धर्मकी दृष्टिसे सब एक ही हैं। कुछ समय पहले इन सम्प्रदायोंमें भी इस सम्बन्धमें विवाद था कि सनातन-धर्म कौन-सा सम्प्रदाय है? पर अब वह विवाद मिट-सा गया है। वर्णाश्रम-स्वराज्य-सङ्घकी दृष्टि जिस सनातन-धर्मकी रक्षाके लिए की गयी है, उसमें इन सभी सम्प्रदायोंका समावेश है।

बौद्धिक विकास और कर्मकाण्डके युगके बाद सुधारक युग आता है, जिसका प्रारम्भ महात्मा बुद्धके समयसे होता है। बुद्धने वैदिक कर्मकाण्डियोंकी 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' के प्रतिकूल अहिंसा-धर्मकी स्थापनाका बीड़ा उठाया। वेद, ईश्वर, कर्म, पुनर्जन्म, स्वर्ग, नरक आदि सैद्धान्तिक विचारोंकी दार्शनिक गहराईमें न जाकर उन्होंने मनुष्य-समाजके कल्याणके आधारपर अहिंसाका प्रचार किया और तात्कालिक समाजमें फैली हुई 'हिंसा' को दूर करनेके रूपमें एक बहुत बड़े और महत्त्वपूर्ण सुधारका कार्य किया। इसी प्रकार बौद्ध-सम्प्रदायकी स्थापना हुई। श्री महावीर-स्वामीके जैन-सम्प्रदायका प्रारम्भ भी कुछ इसी प्रकार हुआ। ये दोनों सम्प्रदाय हिन्दू-समाजमें प्रकट हुए सुधार-युगके प्रारम्भिक दिनोंके हैं, जो कि हिन्दू (सनातन) धर्मकी दृष्टिसे आस्ति-कतासे कुछ भिन्न और नास्तिकतासे बहुत समीप हैं। श्री शङ्कराचार्यने इस नास्तिकताके विरुद्ध फिरसे वैदिक आस्तिकवादकी स्थापना की और दार्शनिक किंवा बौद्धिक विचारोंको ही फिरसे प्रधानता दी। यह बहुत सम्भव है कि बौद्धों और जैनियोंके गूढ़ तत्वज्ञानके दार्शनिक सिद्धान्तोंकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सृष्टि श्री शङ्करके दार्शनिक विचारोंका सामना करनेके लिए ही की गई हो। इस सुधार-युगमें हिन्दू-समाजकी पचन-शक्ति बहुत क्षीण पड़ गई। नये सम्प्रदायोंको अपनेमें ही समाविष्ट रखना उसके लिए असम्भव-सा हो गया। इसी-लिए बौद्ध-सम्प्रदायको हिन्दू-समाज न पचा सका और एक प्रकारसे उसका बहिष्कार-सा ही कर दिया। भारतमें जन्म लेनेवाला बौद्ध-सम्प्रदाय आज भारतमें कहां है? वह भारतसे बाहर बर्मा, लङ्का, चीन, जापान आदिमें ही है। हिन्दू-समाज जैनियोंका बहिष्कार नहीं कर सका। इसी-लिए जैनी आज भी हिन्दुओंसे कुछ अलग ही समझे जाते हैं। जहां भारतको एक राष्ट्र बनानेकी अपील की जाती है, वहां हिन्दू, सिख, जैन, पारसी, ईसाई और मुसलमान आदिका नाम लेते हुए 'जैन' शब्द पृथक् ही कहना पड़ता है।

सुधारका यह युग अब तक भी समाप्त नहीं हुआ है। बुद्धके समयसे इस समय तक जितने भी साधु, सन्त, महात्मा आदि हुए हैं और जिन्होंने हिन्दू-समाजमें प्रचलित रूढ़ि, रीति-रिवाज, परम्परा आदिको सुधारनेका यत्न किया है, उन सबके नामसे हिन्दू-समाजमें अलग-अलग सम्प्र-दायोंकी सृष्टि हो गई है, भले ही उनमेंसे कुछ एकके अनु-यायियोंकी संख्या कम ही क्यों न हो। दादू, नानक, कबीर, तुकाराम, रामदास आदिके नामसे प्रचलित सम्प्रदाय इस कथनके समर्थक हैं। गुरु गोविन्दसिंहका खालसा-पन्थ और क्या था? उसके बाद इस समयके प्रार्थना-समाज, ब्राह्म-समाज और आर्य-समाज आदि भी क्या हैं? अपने अभि-प्रायको कुछ अधिक स्पष्ट करनेके लिए यहां खालसा-पन्थकी उत्पत्तिका वर्णन कुछ खोलकर देना अनुचित न होगा। पन्थ चलानेकी आवश्यकता कितने सुन्दर शब्दोंमें दर्शायी गयी है—

"यह सुन सत् गुरु ऐ सविचारी। यह दब रहे उन्हें आगारी॥
इक तो कर्म गरीबीके हैं। दूसरे नाम निकारेसे हैं॥
रूप्पा, भूप्पा, कीडू, कालू। धन्ना, मन्ना, गोधा, लालू॥
तीसर जात कमो जट, वणिए। नाइ, छींवे, सीवर गणिए॥
रोड़े, खत्री, सैनी, खाती। बनजारे आदि विख्याती॥
सहजे भीरु लाही यह हैं। खिदमत तुर्क इन्हन तें लहैं॥
.....
ताते इनके जाती कर्म। डुड़ता भरौं छत्तरी धर्म॥
सिंह नाम शस्त्री जब थे हैं। पान वीर रसकी चढ़ जै हैं।
खेलन इन्हैं शिकार सिखइयै। सिख मत अङ्ग करनकी दइयै॥
पुन हिन्दू तुर्कन ते न्यारा। रचौं खालसा पन्थ करारा॥
महातेजसी दङ्गेबाज। लड़न मरन ते करैं न लाज॥
यह विचार कर सत् गुरु,
पन्थ खालसा कीन।
भीरु जातनके तईं,
अती बड़प्पन दीन॥"

इन सब चौपाइयों और दोहोंका भाव बिलकुल स्पष्ट है। सत्गुरु श्री गोविन्दसिंहजीने जब यह सुना कि तुर्कोंने हिन्दुओंको लूट लिया है तब उन्होंने इसका कारण विचार कर देखा कि एक तो हिन्दुओंके काम ही कुछ गरीबीके हैं, दूसरे नाम भी निकम्मे हैं और तीसरे जात-पांतका भी बुरा बखेड़ा है। इसलिए गरीबीके काम तथा जात-पांत सब छुड़ा कर उनको क्षत्री-धर्मकी दीक्षा दी और उनके नाम भी रूप-सिंह, भूपसिंह, कालूसिंह, लालूसिंह आदि रख दिये। उनको शिकार खेलना सिखाया। उनको तेजस्वी, दङ्गेबाज और लड़ाका बनाया। इस प्रकार हिन्दुओं और तुर्कोंसे अलग कराके (ओजस्वी) खालसा-पन्थकी सृष्टि की।

इस पन्थको माननेवालोंको गुरुने जो सुन्दर आदेश दिया है, वह भी मनन करने योग्य है। गुरुने कहा:—

"राम रहीम पुरान कुरान, अनेक कहे मत एक न मान्यो।
सिमुत (स्मृति) शास्तर वेद सभै, बहु भेद कह्यो मत एक न जान्यो।
श्री असि-पाणि कृपा तुमरिहुं ते, मैं न कह्यो सब तोहि बखान्यो।"

.....

"अब तुम सोढ़ बंस द्विज क्षत्री।
अच्युत गोत्र गये सब अत्री॥
गुरु घर जन्म तुम्हारे होये।
पिछले जात वर्ण सब खोये॥
गुरु ग्रन्थको अधिक वेद तें।
मानो तत्क्षण छुटों खेद तें।"

उस समयके ब्राह्मणोंको लक्ष्य करते हुए गुरुने कहा:—

"जिन सिक्खनको सूदर कहि हैं।
मम सुत क्षत्री सांचे वे हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हमरा सिख होयगो जोई ।
तुमरा पैर न पूजै सोई ॥
कर्म धर्म तुम अपने त्यागे ।
मुझे अकेले तजके भागे ॥"

उन पांच प्यारोंके दीक्षान्त संस्कारकी सब कहानी यहां देनेकी आवश्यकता नहीं, जिनके द्वारा खालसा-पन्थकी स्थापना की गयी थी। हमारा अभिप्राय इतनेसे ही स्पष्ट हो जाता है और वह अभिप्राय यह ही दिखानेका है कि "गो गरीब द्विज साधुके री। रक्षा सेवा करो बघेरी," का आदर्श सामने रख कर गुरु गोविन्दसिंहने जिस सम्प्रदायकी स्थापना की थी, वह हिन्दू-समाजमें किया गया हिन्दू-धर्मका ही एक महान् सुधार था, कोई नया सम्प्रदाय नहीं था। इस सुधारके लिए ही गुरु गोविन्दसिंहको उस समयकी सब परिस्थिति बदलनी पड़ी थी और हिन्दू-समाजमें इतना भारी परिवर्तन करना पड़ा था कि उस समयके हिन्दुओंके नाम बदल दिये, उनके उस समयके कर्म उनसे छुड़वा दिये, उनकी जात-पांत तथा गोत्रतक मिटा दिये, रहीमके साथ रामका नाम भी त्याज्य ठहरा दिया, कुरानके साथ पुरान, स्मृति, शास्त्र, वेद आदि सब हेय बता दिये गये और ब्राह्मणोंकी पूजा आदि भी सब बन्द करवा दी! बिना इसके समाजमें आमूल परिवर्तन कैसे हो सकता था और मृतप्राय हिन्दू-समाजकी रक्षा कैसे हो सकती थी? अब यह प्रायः निर्विवाद माना जा रहा है कि श्री गुरु गोविन्द सिंहजीके इस नास्तिक खालसा-पन्थने ही हिन्दू-समाज और हिन्दू-धर्मकी रक्षा की थी। आज कौन गुरु गोविन्दसिंहको नास्तिक कहकर उनकी निन्दा करनेका साहस तक कर सकता है?

इस समयके प्रार्थना-समाज, ब्राह्म-समाज और आर्य-समाजकी भी वैसी ही स्थिति है। मूर्तिपूजाके विरोध, श्राद्धके त्याग, जात-पांतके खण्डन, विधवा-विवाहके समर्थन आदिके कारण जिन दिनों आर्य-समाजको सनातन (हिन्दू) धर्मका विध्वंसक माना जाता था, उनको बीते अभी अधिक वर्ष नहीं हुए हैं। पर, ज्यों-ज्यों समाज-सुधारका आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा है, त्यों-त्यों आर्यसमाजका महत्त्व सनातन धर्मावलम्बी भी मानते जा रहे हैं। शुद्धि और सङ्गठनके दिनोंमें व्याख्यान-वाचस्पति दीनदयालुजी सरीखोंसे भी आर्यसमाजकी सराहना किये बिना नहीं रहा गया। आज हरिजन-आन्दोलनके इन दिनोंमें पहलेकी अपेक्षा आर्य-समाजकी प्रतिष्ठा बहुत अधिक बढ़ गयी है। अब आर्य-समाजको सनातन-धर्मका विध्वंसक नहीं, संरक्षक माना जाता है। उसके इतने अधिक सिद्धान्त-विरोधके बाद भी आर्यसमाजियोंकी गिनती हिन्दुओंमें ही की जाती है। आर्यसमाजके हिन्दूत्व और सनातन-धर्मियोंके हिन्दूत्वमें उत्तर-दक्षिणका भेद है, तो भी दोनोंको हिन्दू कहा जाता है। दोनोंमें परस्पर रोटी-बेटी तकका व्यवहार होता है। सामूहिक रूपमें दोनों एक ही हैं।

इन सुधारक-सम्प्रदायोंकी दृष्टिसे ही महात्मा गांधीके हिन्दूत्वको जाननेका यत्न करना चाहिए। बुद्ध, दादू, कबीर, नानक, रामदास, तुकाराम, रामानुज, गुरु गोविन्द, राम-मोहन राय, दयानन्द आदिके सिलसिलेमें ही महात्मा गांधीके सुधारक रूपको समझनेकी चेष्टा की जानी चाहिए। हर एक सुधारक महापुरुष अपने समयकी परिस्थितिके अनुसार ही कार्य करता है। धर्मके त्रैकालिक सिद्धान्त स्थिर रखते हुए भी वह उन सिद्धान्तोंके चारों ओर पैदा हुए घास-फूसको नष्ट करना चाहता है। किसानकी खेती नष्ट हो जाय, यदि वह खेतमेंसे चुन-चुनकर जंगली घासको न उखाड़ता रहे। यह जंगली घास सदा एक-सी ही नहीं होती। इसलिए उसको भिन्न-भिन्न ऋतुओंमें पैदा होनेवाले घास-फूसको समय-समयपर नष्ट करनेके लिए तत्पर रहना पड़ता है। सुधारक भी इसी प्रकार अपने समय (ऋतु) की ही उस गन्दगीको दूर करनेका यत्न करता है, जो धर्मके चारों ओर जमा होकर समाजकी प्रगतिको एकदम रोक देती है। सुधारक-महापुरुषोंके ऐसे यत्नों द्वारा ही समाजमें क्रान्ति पैदा हुआ करती है। जब प्रगतिका मार्ग चारों ओरसे रुक जाता है, तब चहुंमुखी क्रान्तिका सन्देश लेकर कोई-न-कोई अद्वितीय महापुरुष भगवान् कृष्णके 'संभवामि युगे-युगे' के कथनानुसार प्रकट होते हैं और वे समाजमें एक बार ही भयानक उथल-पुथल पैदा कर जाते हैं। महात्मा गांधी चहुंमुखी क्रान्तिका ही दिव्य सन्देश हिन्दू-समाजको सुना रहे हैं। यह बिलकुल स्वाभाविक है कि कट्टरपन्थी सनातन-धर्मावलम्बी किंवा ब्राह्मण-धर्माभिमानी महात्मा गांधीपर नाना प्रकारके आक्षेप करें, उनके हिन्दूत्वमें भी सन्देह करें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और उनको 'अहिन्दू' तक कहें। जबतक महात्मा गांधी स्पष्टतः सामाजिक तथा धार्मिक आन्दोलनमें नहीं पड़े थे और उनका यह आन्दोलन उनके तीव्र राजनीतिक आन्दोलनके नीचे दबा हुआ था, तबतक हिन्दू-धर्माभिमानी पौराणिकपन्थियोंको उनपर आक्षेप करनेका ऐसा अवसर नहीं मिला था। पर तो भी समय-समयपर प्रकट किये गये उनके सामाजिक विचारों और कार्योंका विरोध होना ही था। साबरमती आश्रममें बीमार बछड़ेको मरवा डालनेकी तीव्र आलोचना की गयी थी। अहमदाबादमें लावारिस कुत्तोंको मारनेका समर्थन करनेपर उनको आड़े हाथों लिया गया था। उन्होंने विधवाओंके विवाहका समर्थन ही नहीं किया, किन्तु युवकोंसे अपील तक की थी कि वे विधवाओंके साथ ही विवाह करनेकी प्रतिज्ञा करें। उनके इन और ऐसे विचारोंपर भी हिन्दू-समाज बराबर उत्तेजित होता रहा। अब हरिजन आन्दोलनके इन दिनोंमें वह उत्तेजना चरम-सीमाको पहुंच गयी है। मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नपर पुरातन-पन्थी सीमाके बाहर हो गये हैं। श्री देवीदासके अन्तर्जातीय विवाहको लेकर महात्मा गांधीपर इतने कमीने हमले किये गये हैं कि कमीनेपनकी हद हो गयी है। पर है यह सब बिलकुल स्वाभाविक। सभी सुधारकोंको ऐसे आक्षेप, विरोध तथा आक्रमणोंका सामना करना पड़ता है और इसी प्रकार अपनी सचाईकी परीक्षा देनी पड़ती है। महात्मा गांधी इस सब विरोधके रहते हुए भी सनातनी होनेका दावा करते हैं और कहते हैं कि "ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, मेरा यह विश्वास दृढ़ होता गया कि सनातनधर्मका दावा करनेमें मैं भूल नहीं सकता और यदि ईश्वरकी इच्छा हुई तो वह मुझे इस दावेपर अपनी मृत्युसे मुहर लगानेका अवसर देगा।" जो सनातन (हिन्दू) धर्मके लिए अपने प्राणोंको इस प्रकार न्यौछावर करनेका साहस रखता है, उसके सनातनधर्मी (हिन्दू) होनेमें सन्देहके लिए गुञ्जाइश रहनेका कारण क्या है?

'कारण' बिलकुल स्पष्ट है। इस समयके सनातन (हिन्दू)-धर्मका न शास्त्रसे सम्बन्ध है, न बुद्धिसे और न तर्कसे ही। लकीरकी फकीरीमें ही उसकी सब मर्यादा है। परम्परागत रूढ़ियोंको आंख मूंदकर पालन करनेमें ही उसका सब अनुष्ठान है। भगवे वेष और जटा-जूट-मालामें ही उसकी सब साधुता समा गयी है। धर्मजीवी ठग लोगोंकी पोप-लीलामें ही उसके सब आचार-विचारकी इतिश्री हो गयी है। जन्मगत जात-बिरादरीमें ही उसके समस्त व्यवहारका दायरा बांध दिया गया है। 'अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा' की तरह हिन्दू-समाज एक दूसरेके पीछे चलता जा रहा है। इस गतानुगतिकताका सुधार करना कोई साधारण बात नहीं। ऐसे सुधारके लिए ही महात्मा बुद्ध और उनके समस्त शिष्योंका भी इस देशमेंसे बहिष्कार कर दिया गया था। सम्भवतः उस समय ही सुधारकोंके 'नास्तिक' होनेका एक ऐसा फतवा दे दिया गया था कि उसको इस समय तक भी बराबर काममें लाया जा रहा है। बुद्धके बादसे जिस किसी महापुरुषने भी सुधारके लिए ऐसा कोई उद्योग किया, उसको ही नास्तिक बताकर हिन्दू-समाजसे अलग रखनेकी चेष्टा की गई। इस चेष्टाका ही यह दुष्परिणाम हुआ कि हिन्दुओंमें साम्प्रदायिक भेदभाव बढ़ता चला गया और सुधारका काम अपने समयके अद्वितीय महापुरुषोंके जीवन-दानके बाद भी अधूरा पड़ा रह गया अथवा वह भी एक सम्प्रदायके रूपमें परिणत हो गया। पर यह तो मानना ही होगा कि ऐसे सुधारकोंकी 'नास्तिकता' की बदौलत ही सनातन-धर्म और उसको माननेवाला हिन्दू-समाज संसारमें आज तक कायम रह सका है। सङ्कटापन्न अवस्थाओंसे ऐसे 'नास्तिक' सुधारकोंने ही धर्म तथा समाजको पार लगाया है। और उन्होंने ही धर्म तथा समाजमें समय-समयपर नवजीवन, नवस्फूर्ति तथा नवशक्तिका सञ्चार किया है। धर्म तथा समाजकी प्रगतिके रुके हुए मार्गको उन्होंने ही खुला रखा है। आज महात्मा गान्धीमें दीखनेवाली 'नास्तिकता' का भी हिन्दू-समाज तथा हिन्दू-धर्मको वैसा ही शुभ फल मिलनेवाला है। निश्चय ही उनकी 'नास्तिकता' धर्म तथा समाजको सङ्कटापन्न स्थितिसे पार लगायेगी। उनमें नया जीवन, नयी स्फूर्ति तथा नयी शक्ति भरेगी। उनकी प्रगतिके मार्गको मुक्त करेगी। इसीलिए सनातनियों-की दृष्टिमें 'धर्मत्यागी' अथवा 'नास्तिक' गान्धीसे बड़ा हिन्दू इस समय और कौन है? किन्तु उनके 'हिन्दूत्व'का बड़प्पन इतने ही में सीमित नहीं हैं। उसका दायरा बहुत बड़ा है और इसलिए उनका सुधार-कार्य भी चहु-मुखी है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस समय हरिजन-आन्दोलनकी लहर जोरोंपर है। इसलिए बहुतसे लोग हरिजन-आन्दोलन द्वारा ही महात्मा गान्धीके 'हिन्दूत्व' की अन्तिम रेखा खींच लेते हैं और उनके नाससे अन्तर्जातीय-भोज तथा अन्तर्जातीय-विवाह सरीखे महत्त्वपूर्ण सुधार-कार्यका भी विरोध करने लगते हैं। ऐसे लोग यहां तक कह जाते हैं कि महात्मा गान्धी जन्मगत जात-पांतको मिटाना और खान-पानकी मर्यादाको नष्ट नहीं करना चाहते। पर वह यह जानने और समझनेकी कोशिश नहीं करते कि हरिजन-आन्दोलन महात्मा गान्धीके हिन्दूत्वकी अन्तिम सीमा नहीं है। वह तो उसकी सोलह कलाओंमेंसे एक कला है। सूर्यकी किरणोंके सात रंगों मेंसे वह एक ही रंग है। उसको देखते हुए बाकी छः रङ्गों अथवा पन्द्रह कलाओंके अस्तित्वसे इनकार करना सिवा मूर्खताके और क्या है? यह हम मानते हैं कि हरिजन-आन्दोलन महात्माजीके लिए विशुद्ध धार्मिक आन्दोलन है, वह उसमें रोटी-बेटीके समाज-सुधारके विषयोंको वैसे ही सम्मिलित नहीं करना चाहते जैसे कि राजनीतिके सत्याग्रह तथा असहयोगको उन्होंने उसमें सम्मिलित नहीं किया है। सत्याग्रह और असहयोगको उसमें सम्मिलित न करनेका कोई यह अर्थ नहीं कर सकता कि महात्मा गान्धी सत्याग्रही अथवा असहयोगी नहीं हैं। मन्दिर प्रवेश-बिलके लिए तो उन्होंने सहयोगी तक बननेमें सङ्कोच नहीं किया। इस सम्बन्धमें उनकी स्थिति बिलकुल स्पष्ट है। उन्होंने लिखा है कि "रोटी-बेटी-व्यवहार जातिके सुधारका प्रश्न है।.....परन्तु यह प्रश्न बिलकुल भिन्न है। इसके साथ अस्पृश्यता-निवारणका कोई सम्बन्ध नहीं है।.....जहां-कहीं लोग अपनी खुशीसे ऐसे कार्यक्रममें भाग लेते हों, जहां स्पृश्यों-अस्पृश्यों तथा हिन्दुओं-अहिन्दुओंको भोजन-पार्टीका निमन्त्रण मिला हो, उसको अच्छा लक्षण समझकर उसका मैं स्वागत करता हूं।.....इसलिए जहां कहीं जनता तैयार हो वहां भले ही सहभोज हुआ करें, पर इसे भारतव्यापी (हरिजन) आन्दोलनका अङ्ग न बनाना चाहिए।" महात्मा गान्धीकी इस स्थितिके सम्बन्धमें विवाद करनेकी आवश्यकता नहीं। इससे इतना ही स्पष्ट होता है कि वह धर्मके संशोधन, जातिके सुधार और देशकी स्वतन्त्रताके तीनों आन्दोलनोंको परस्पर बिलकुल अलग-अलग रखते हुए तीनोंमें पृथकताकी स्पष्ट रेखा खींचना चाहते हैं। इसमें आपत्ति और विवादके लिए अवसर ही कहां है?

इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि किसी एक ही आन्दोलनसे महात्मा गान्धीके हिन्दूत्वको नहीं परखा जा सकता। वह इतना विस्तृत है कि उसके सम्बन्धमें महात्माजीने ही लिखा है कि—"मेरे लिए सनातनधर्मकी परिभाषा सनातनियोंकी परिभाषासे भिन्न है। मेरे लिए सनातन-धर्म वह प्रधान धर्म है जो पीढ़ियोंसे चला आ रहा है और जिसका अस्तित्व इतिहासके कालसे भी पूर्व था। मैं हिन्दू कहानेमें गर्व करता हूं, क्योंकि मुझको यह शब्द इतना व्यापक जान पड़ता है कि यह समस्त भूमण्डलके पैगम्बरोंके पैगामोंके प्रति न केवल सहिष्णुताका भाव प्रकट करता है, वरन् इन्हें अपने अन्दर शामिल भी करता है।... सब प्राणिमात्र एक हैं। सब ईश्वरसे ही उत्पन्न हुए हैं तथा उसीके पास जायेंगे। जीवन बाह्य विधि-विधानोंसे बना हुआ नहीं है। पर आत्यंतिक शुद्धि अर्थात् तन, मन और आत्माको परब्रह्ममें मिला देना ही जीवन है।" महात्मा गान्धीका 'हिन्दूत्व' इस प्रकार इतना सार्वभौम है कि उसमें केवल हिन्दुओंके धर्मग्रन्थोंका ही नहीं, किन्तु बाइबिल, कुरान, जिन्द अवस्था तथा संसारके अन्य सब धर्म-ग्रन्थोंका भी समावेश है।

बुद्ध, दादू, नानक, कबीर आदिके पुनीत अहिंसावादके बाद देशको गुरु गोविन्दके खालसा-पन्थकी करारी हिंसावृत्तिकी आवश्यकता हुई थी। इसी प्रकार आर्यसमाजके हिन्दूत्वके बाद देशको महात्मा गान्धीके 'हिन्दूत्व' की आवश्यकता हुई है। चहुंमुखी समाज-सुधारकी जागृतिके बाद भी आर्यसमाजके हिन्दूत्वने सर्वसाधारणकी दृष्टिको कुछ संकुचित ही बनाया है। उसको केवल अपने 'वेद' तक सीमित कर दिया है। आर्यसमाज द्वारा पैदा हुई जागृति सर्वसाधारणके आचार व्यवहारके साथ तन्मय नहीं हुई। आर्यसमाजी भी अभी तक जात-पांतके बंधनमें वैसे ही फंसे हुए हैं। खान-पानकी मर्यादाके बंधनोंमें भी वे अभी कुछ-न-कुछ जकड़े ही हुए हैं। विधवा-विवाहको उनके द्वारा भी अभी जितना चाहिए था, उतना प्रोत्साहन नहीं मिला। स्त्रियोंकी जागृतिका श्रीगणेश तो १९३० के सत्याग्रह आन्दोलनसे ही हुआ दीख पड़ता है। आर्यसमाजके ५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वर्षके कामके बाद भी हरिजन-आन्दोलनमें पड़नेसे ऐसा प्रतीत होता है कि अछूत कहे जानेवाले भाई अभी सदियों ही पीछे पड़े हुए हैं ! महात्मा गान्धीका 'हिन्दूत्व' इस कमीको पूरा करेगा और हिन्दू-धर्मको इतना व्यापक तथा सार्वभौम बना देगा, जितना कि वह प्राचीन है। इसी रूपमें महात्मा गान्धीके सनातनी और हिन्दू होनेका दावा पूरा होगा। तथास्तु !

——

# क्या प्रजातन्त्रका जन्म यूरोपमें हुआ है ?

श्री विजयसिंह पथिक

संसारमें साम्राज्यवाद और प्रजावादका संघर्ष प्रायः सामाजिक संगठनके प्रारम्भिक कालसे ही होता रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि प्रारम्भमें काफी लम्बे समय तक प्रजावाद विजयी रहा। उसने राज्य-सत्ताको सिर नहीं उठाने दिया। किन्तु अन्तमें परिस्थितियोंसे लाभ उठा कर राज्यवादने अपने पैर जमा लिये। और जब राज्यवादके पैर जम गये तब स्वभावतः उसने लोगोंके मस्तिष्कसे प्रजावाद और उसके महत्त्वकी गन्ध तक निकाल डालनेकी कोशिश की। इसमें वह सफल भी हुआ और खूब हुआ।

राज्यवाद और प्रजावादके इस संघर्षके इतिहासने संसारके प्रत्येक भूखण्डमें बार-बार अपनी पुनरावृत्ति की है। यहां तक कि आज भी सारे संसारमें यही हो रहा है। आज भी हमें दिन-रात इस बातकी शिकायत करनी पड़ रही है कि अंगरेजी साम्राज्यवाद अपनी कुशिक्षा द्वारा हमारे देशके युवकोंमेंसे अपने पूर्व गौरवकी स्मृति और श्रद्धाको नष्ट कर रहा है।

किन्तु मनुष्य प्रायः स्वभावसे ही जहां दूसरेके दोषोंको जल्दी परख लेता है, वहां अपने या अपने लोगोंके दोषोंके बारेमें काफी अरसे तक अन्धा भी रहता है। यही कारण है कि आज जहां पाश्चात्य साम्राज्यवादकी इन चालोंपर हमारी दृष्टि तत्काल चली जाती है, वहां अपने स्वदेशी और पूर्वज साम्राज्यवादियोंके ऐसे दोषोंको देखनेसे आज भी हम झिझकते हैं और इनकार करते हैं। परन्तु विष तो चाहे अपने घरमें पैदा हुआ हो चाहे इङ्गलैण्ड और अमेरिकामें, अपना स्वाभाविक प्रभाव डालता ही है। घातक मात्रामें दिया जाने पर न वह अपने बनानेवालेको मारनेमें हिचकता है न किसी अन्य को।

यही कारण है कि जहां आज बाहरके नये विचार हमें अनेक दिशाओंमें आगेकी ओर खींचते हैं, वहां हमारे अपने ही साम्राज्यवादियोंके जमाये हुए हमारे संस्कार हमें बराबर पीछे खींचते रहते हैं। उदाहरणके लिए, आज कोई भी भारतीय यह विश्वास करनेमें असमर्थ है कि किसी जमानेमें हमारे यहां प्रजातन्त्रके भावोंने पूरा विकास पाया था, अथवा कभी हम विशुद्ध प्रजातन्त्रवादी रहे हैं। इसीलिए भाई परमानन्द जैसे विद्वान्को भी अपने भारतके इतिहासमें यह मानना पड़ा है कि भारतमें कभी प्रजातन्त्रके भावोंने इतना विकास नहीं पाया, जितना कि उनका विकास यूरोपमें हुआ है। यही क्यों, हम अपने समाजकी उत्पत्ति और उसके विकासके सम्बन्धमें भी वैज्ञानिक नियमोंके आधारपर विचार नहीं कर सकते। करें भी किस तरह ? हमारे सारे साहित्यने हजारों सालोंसे हमें यही सिखाया है कि भारतीय समाजकी उत्पत्ति और उसका विकास वैज्ञानिक ढङ्गसे नहीं हुआ है। इसके विपरीत, हमारा समाज पृथ्वीपर अवतीर्ण ही एक संगठित समाजके रूपमें हुआ है। सृष्टिके आदिसे उसमें चार वर्ण थे, राजा थे, प्रजा थी, राज्यसत्ता थी, आदि-आदि। कुछ इने-गिने शिक्षितोंको छोड़कर शेष प्रायः सारा समाज आज इन ही विचारोंका शिकार है और यही कारण है कि आज भी यहांकी जनताको देशके साम्राज्यवादी और सनातन-धर्मी बहुत आसानीसे भ्रममें डाल देते हैं एवं प्रजावाद वा समानताकी उत्कट भावनाको धीमी कर देनेमें सफल हो जाते हैं। एवं यही कारण है कि सुधारवादियोंकी इच्छा होते हुए भी जातिवाद आदिकी भावनायें समाजमें ज्योंकी त्यों जड़ पकड़े हैं और वे प्रत्येक प्रगतिमें बाधक बनती हैं। यह तो स्वाभाविक ही है कि किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भी समाजको बाहरकी अच्छीसे अच्छी बात भी उतना उत्साहित नहीं कर सकती, जितनी कि उसकी अपनी संस्कृति। यही वजह है कि जहां हम सीमाप्रान्तके अपढ़ पठानोंको एक ओर प्रबल ब्रिटिश सत्ता और दूसरी ओर काबुल साम्राज्यसे दिन रात लोहा लेते हुए भी अपनी स्वतन्त्रताको कायम रखते देखते हैं, वहां सभ्यता और धर्मके आदि प्रवर्तक भारतीय जनसाधारणमें स्वराज्य तो कहां, सुराज्यके लिए भी वैसी उत्कट भावना और आकांक्षा नहीं पाते।

इतना ही नहीं, इस मनोवृत्तिने हमारे विद्वानों तकके दृष्टि-बिन्दुको इतना दूषित कर दिया है कि वे अपने ही साहित्यमें प्रस्तुत अनेक अच्छी बातोंको भी उनके असली रूपमें नहीं, अपने विचारों हीके रङ्गमें रंगी हुई देखते हैं और उसी रूपमें उन्हें सर्व-साधारणके सामने रख सबको भ्रममें डालते हैं।

### प्राचीन और आधुनिक राजा

हमारे प्राचीन साहित्यमें 'राजा' शब्द भी ऐसे ही अभागे शब्दोंमेंसे है, जिसका सबसे अधिक दुरुपयोग हुआ है। ऋग्वेद हमारे साहित्यमें सबसे प्राचीन माना जाता है। और चूंकि ऋग्वेदमें 'राजा' शब्द बहुधा आता है, एवं आज हमारे सामने राजाकी सत्ता एक स्वेच्छाचारी शासक की है (पुराणों एवं स्मृतियोंने भी हमें ऐसे ही राज्यवादका पुजारी सदासे बनाया है) अतः हमारे लेखक यही समझ बैठते हैं कि ऋग्वेदमें वर्णित 'राजा' भी ऐसे ही थे। अधिकसे अधिक हम प्राचीन राजाकी व्याख्याको नियन्त्रित राजाकी सत्ता तक घसीट लाते हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि यूरोपके 'किंग' शब्दका इतिहास भी वैदिक राजासे कुछ-कुछ मिलता हुआ है पर अधिकांशमें वैदिक इन्द्र (दलपति) से मिलता है। फिर भी वहांके लोग केवल 'किंग' शब्द प्राचीन साहित्यमें देख कर भ्रममें नहीं पड़ते। कारण यही है कि यूरोपवालोंने अपने समाज और सामाजिक संगठनके विकासके वास्तविक इतिहासकी काफी खोज की है और उसे जनता तक पहुंचा दिया है। अतः वहां लोग आम तौर पर वास्तविकताको जानते हैं।

वास्तवमें यूरोपमें भी प्राचीन समयमें Konug, Koning और King शब्दोंका अर्थ 'दलपति' मात्र था। उस जमानेमें यूरोपमें जहाजोंपर पहरा देनेवालोंके सरदारोंको 'किंग' (राजा) कहते थे। नारवेमें तो मछेरोंके मुखियाको अब भी Knot King (नोट किंग) कहते हैं।*

इसीलिए उन दिनों राजाकी हत्या करनेपर केवल साधारण व्यक्तिकी हत्यासे ३६ गुना जुरमानेका दण्ड नियत था। यही नहीं, राजापर भी ग्राम्य या प्रादेशिक सभाके नियम उसी तरह लागू होते थे, जिस प्रकार कि एक साधारणसे साधारण प्रजाजनपर। उदाहरणके लिए, जब जर्मनीके एक राजा Kru (क्रू) ने अपने एक सैनिकको मार डाला, तो उसे पञ्चायतके सामने घुटने टेककर माफी तो मांगनी ही पड़ी, साथ ही साधारण आदमीकी हत्याके जुरमानेसे ९ गुना जुर्माना भी देना पड़ा। इस जुरमानेकी रकममेंसे एक-तिहाई मृत सैनिकके कुटम्बियोंको मिला, एक-तिहाई सैनिक-कोषमें गया और शेष एक तिहाई पञ्चायतके कोषमें।×

### ऋग्वैदिक राजाका पद

किन्तु ऋग्वैदिक आर्योंके राजाका रूप तो सबसे ही निराला है। वह न तो यूरोपके 'किङ्ग' के समान है, न आजके भारतीय राजाओं या इंगलैण्डके नियन्त्रित नरेशके समान। न उसका और उसे जन्म देनेवाले समाजका विकासक्रम पुराणोंकी चातुर्वर्ण्य व्यवस्थासे मिलता है, न जङ्गली कही जानेवाली जातियोंसे। उदाहरणके लिए, हम नीचे ऋग्वेदका एक सूक्त जो अथर्ववेद (८-१०) में आया है, पाठकोंके सामने रखते हैं। वह कहता है कि—

विराड् वा इदमग्र आसीत।
तस्या जातायां सर्वमवि भेदिय मेवेदं भविष्यतीति।
सोदक्रामत सा गार्हपत्ये अक्रामत।
गृहमेधी गृहपतिर्भवति य एवं वेद।
सोदक्रामत स सभायां न्यक्रामत,
यन्त्यस्य सभां सभ्यो भवति य एवं वेद।
सोदक्रामत सा समितौ न्यक्रामत
यन्त्यस्य समितिं सामित्यो भवति य एवं वेद।

* Augestine Thierry's Lettres sur L. histoire de France.

× Leu & Botta L, C. और Kaufmanns Deutsche Geschchte एवं Die Germanen der Urziet.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सोदक्रामत सामन्त्रणे न्यक्रामत ।
यन्त्यस्यामन्त्रणमामन्त्रणीयो भवति य एवं वेद ।

अर्थात्—"पहले केवल विराट् असङ्गठित प्रजाशक्ति थी। उस अव्यवस्थासे उत्पन्न हुई स्थितिको देखकर सबको भय हुआ कि इसका परिणाम क्या होगा ? अन्तमें जब यह प्रजा अधिक बढ़ गयी, तब गार्हस्थ्य प्रथाका जन्म हुआ एवं ये गृहमेधी ही गृहपति या अपने-अपने कुटुम्बके शासक हुए। पीछे जब ये गृहपति भी बहुत बढ़ गये, तब सभाका जन्म हुआ। जो इस विकास-क्रमको जानता है वही इस सभाका सभासद होता है। इसी प्रकार जब सभायें बहुत बढ़ गयीं तब समिति बनायी गयी, और जब ये समितियां बढ़ गयीं तब आमन्त्रण बनाया गया। जो इस विकास-क्रमको जानता है वही समिति और आमन्त्रणका सदस्य होता है।"

पाठक देखेंगे कि यह विकास-क्रम सर्वथा वैज्ञानिक है एवं यूरोप तथा एशियाके प्रायः सब प्राचीन समूहोंके विकास-क्रमसे मिलता-जुलता है। मिसालके लिए चाहे आप आदिम यहूदियोंका इतिहास ले लीजिये, चाहे आदिम पार्सियोंका। चाहे ट्यूटन, स्लाव, पपुआस, हाटनटाट्स् आदिके इतिहास पढ़ जाइये, चाहे ऐस्किमो व कौसक आदि जातियोंके। सबके विकास-क्रमकी मुख्य बातें आपको एकसी मिलेंगी। सबमें प्रारम्भिक अवस्थामें कोई जाति-पांति या वर्ण-व्यवस्था न थी, कोई विवाह-पद्धति न थी, कोई धर्म या मजहब न था। न उनमें व्यक्तिगत सम्पत्तिकी प्रथा थी, न राज्य-सत्ता। केवल असङ्गठित जन-समूह था और थी उसकी स्वाभाविक सामाजिकता। सब अपने-अपने गांवके वृद्धों द्वारा शासित होते थे और सब ही स्वतन्त्र थे। काफी लम्बे समय तक उनका रहन-सहन, खान-पान, अर्जन आदि सम्मिलित रहा और पीछे जब एक-एक कुटुम्बके अलग-अलग रहनेकी प्रथा चली, तब भी उन्होंने अपने जन-सत्तात्मक शासनकी तो कायम रखा ही। हां, यह जनसत्तात्मक शासन सबमें समान काल तक नहीं ठहरा। वह या तो उन समूहोंमें स्थिर रहा, जिनमें किसी मजहब या अतिव्ययशील सभ्यताने जन्म नहीं लिया, अथवा उनमें, जो परिस्थितिके अनुसार अपनी इस व्यवस्थाका विकास और उसमें आवश्यक परिवर्तन करते रहे। अस्तु।

अब हम मुख्य विषयकी ओर जाते हैं। क्योंकि अभी यह तो बताना शेष ही है कि वैदिक राजाका रूप क्या था ? उपर्युक्त बातें तो हमने संक्षेपसे केवल इसलिए दी हैं कि उनके बिना वैदिक राजाके रूपको ठीक-ठीक समझना कठिन होता।

वसे यह तो वैदिक सङ्गठनोंके नामों हीसे प्रकट है कि ये संस्थायें प्रजातन्त्रात्मक थीं। किन्तु चूंकि इनके साथ-साथ वेदोंमें राजाका नाम भी प्रायः सर्वत्र आता है, और साथ ही चूंकि पुराणों एवं ब्राह्मण-ग्रन्थोंकी प्रचार-दृष्टिसे रचना करानेवाले हमारे पूर्वज साम्राज्यवादियोंने विविध कथानकों द्वारा इस वैदिक राजाका भी रूप विकृत बनाकर, उसका चित्र समाजके हृदयपर बहुत गहरा अङ्कित कर दिया है, अतः लोग गड़बड़ीमें पड़ जाते हैं। पड़ें भी क्यों नहीं ? विशेषतः जब कि वैज्ञानिक विकासके ज्ञानके ठेकेदार, वे पाश्चात्य इतिहासज्ञ तक, जिन्होंने भारतीय इतिहासपर इतना श्रम करके हमें चिरऋणी बनाया है, यह शङ्का नहीं कर सके कि जब सारे संसारके मनुष्योंका विकास एक नियमसे हुआ है, तो केवल भारतीय समाज अपना विकास भिन्न प्रकारसे कैसे कर सकता था ? यह तो कहना अन्याय ही होगा कि चूंकि ऐसे लेखक अधिकांश अंगरेज थे, अतः सम्भव है कि उन्होंने भी अपनी साम्राज्यवादकी नीतिके अनुसार भारतीयोंको इस सम्बन्धमें अन्धकारमें ही रखना उचित समझा हो, अथवा यूरोपके प्रजातन्त्रवादके जन्म और विकासके लिए मिले हुए श्रेयके नष्ट होनेके भयने उन्हें इस प्रश्नपर प्रकाश डालनेसे रोका हो। अधिक सम्भव यही है कि ये भी हमारी तरह भ्रमके ही शिकार हुए हों। वैसे वेद इस बारेमें जो कुछ कहते हैं, वह पाठकोंको नीचे दिये मन्त्रोंपर विचार करनेसे स्पष्ट हो जायगा। वे मन्त्र ये हैं:—

"सो रज्यत ततो राजन्योऽजायतः।" (अथर्व० १५-८)
"राजान सत्यः समितिरियानः।" (ऋग्वेद ९-९२-६)
"त्रीणि राजाना विदथे पुहूणि—
परि विश्वानि भूषथः सदांसि।" (ऋग्वेद ३-३८-६)
"राजानावन मिद्रुहाधृवे-
सदस्युत्तमे सहस्रस्थूण आसाते।" (ऋग्वेद २-४१-५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(१) अर्थात्—जिसने इन सभाओंको कामसे प्रसन्न रखा वह राजा कहलाया।

(२) जो समितिमें बराबर जाता है वही सच्चा राजा है।

(३) राजा लोग तीन सभायें करते हैं और उन्हें स्वयं जाकर सुशोभित करते हैं।

(४) जो राजा लोग अनेक स्तम्भोंसे युक्त उत्तम और दृढ़ सभा-भवनमें बैठते हैं, वे परस्पर अभिद्रोह करनेवाले नहीं होते।

पाठक देखेंगे कि वेदोंमें 'राजा' शब्द बहुवचनात्मक है। सब जगह राजा लोग अमुक काम करते हैं आदि कहा गया है। यह भी कहा गया है कि जो सभाओंमें काम करता है वही राजा कहलाता है। यह भी पहले बताया जा चुका है कि गृहपतियोंके काफी बढ़ जानेपर सभा बनी। अतः इन बातोंका साफ अर्थ यह है कि गृहपतियोंमेंसे सभाके सभ्य चुने जाते थे और ये सब सदस्य राजा कहलाते थे। अर्थात् राजा नाम किसी स्वेच्छाचारी या नियन्त्रित शासकका नहीं, पञ्चायतके सदस्यका था। क्योंकि अथर्ववेद (१९-१) में स्पष्ट कहा है कि ये राजा प्रजाकी इच्छानुसार आचरण करते थे।

इन वैदिक राजाओंका जिस तरह चुनाव होता था, चनावके बाद उन्हें जो शपथ लेनी पड़ती थी एवं जिस पद्धतिसे सभायें प्रश्नोंका निर्णय करती थीं, उन सब बातोंसे भी हमारे उक्त विचारका ही समर्थन होता है। उदाहरणके लिए, अथर्ववेद (—३.१४.१ एवं १६.८) में साफ कहा है कि इन राजाओंको साधारण प्रजा चुनती थी। इसी प्रकार ऋग्वेद (५.६६.६) में स्पष्ट लिखा है कि सभा प्रत्येक प्रश्नका निपटारा बहुपारण्येय यानी बहुमत द्वारा करती थी। शपथ मन्त्रसे भी यही प्रमाणित होता है। ऋग्वेद (१०. १६.४) में एक पंच (राजा) चुनावमें जीत कर सभामें इस प्रकार शपथ लेता हुआ पाया जाता है :—

मैं सब प्रयत्नोंसे विजयी और तेजस्वी होकर आया हूं। मैं आपके विचार, आपके व्रत नियम, एवं आपकी सत्ताको स्वीकार करता हूं।

## महाभारतके उदाहरण

वेदोंके बाद प्राचीन साहित्यमें महाभारतकी गणना है। उसमें भी ऐसे प्रजातन्त्रोंका उल्लेख है जिनमें प्रत्येक गृहपति राजा कहा जाता था। यथा :—

गृहे-गृहे हि राजानं स्वस्य स्वस्य प्रियंकराः।

अर्थात् घर-घर राजा हैं और सब अपनी-अपनी इच्छानुसार आचरण करते हैं।

इसी तरह प्राचीन स्थितिके बारेमें कहा है कि:—

न वैराज्यं न राज्यं च न च दंडी न दांडिकः
धर्मेणैवहि प्रजा सर्वं रक्षन्ति स्व परस्परम्।

अर्थात्—न अराजकता थी, न राज्य-सत्ता थी। न कोई दण्ड-विधान था, न कोई दण्ड देनेवाला। स्वभावसे ही प्रजा परस्पर एक-दूसरेकी रक्षा करती थी।

## गण-राज्योंके उदाहरण

किन्तु ये तो बहुत प्राचीन कालकी बातें हैं। बौद्ध काल तक में जो प्राचीन भारतीय सभ्यताके आधारपर स्थापित प्रजासत्तायें थीं, उनके वर्णनसे भी हमारी उक्त धारणाका ही समर्थन होता है। मिसालके लिए लिच्छिवियोंके गणतन्त्रमें ९ सदस्योंकी एक समिति हर साल सार्वदैशिक प्रश्नोंके सम्बन्धमें काम करनेको चुनी जाती थी। इन समितियोंके सब सदस्य राजा कहलाते थे। इन गण-राज्योंके कई सङ्घ भी थे। उदाहरणार्थ वज्जी सङ्घमें ८ गण-राज्य शामिल थे और इनमेंसे प्रत्येक प्रधान न्यायालयके लिए एक-एक न्यायाधीश चुनता था। ये अठकुलक कहलाते थे। इनकी पञ्चायतोंके सभा भवन भी गांवके बाहर स्तम्भों-पर बनाये जाते थे। (भट्ट साल जातक)

## भारतीय प्रजातन्त्रोंका विकास

उपरोक्त वर्णनसे यह तो साफ हो ही जाता है कि वैदिक शासन पद्धतिकी जो व्याख्या हमने की है, वही ठीक है और वही सारे भारतमें प्रचलित थी, साथ ही यह भी प्रमाणित हो जाता है कि यहां प्रजातन्त्रीय शासन व्यवस्थाका विकास भी काफी हुआ था। इन प्रजातन्त्रोंके विकास और विस्तार-पर तो हम फिर कभी लिखेंगे, यहां हम केवल उनकी कुछ ऐसी विशेष बातोंका सङ्केत दे देते हैं, जिनसे पाठक समझ सकेंगे कि वे काफी विकसित भी थे। उदाहरणके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यूरोपके प्राचीन प्रजातन्त्रोंमें आमतौरपर एक सभा ही होती थी, किन्तु आर्य-समूहोंने तो वैदिक कालमें ही आमन्त्रण तक अपने सङ्गठनोंका विकास कर लिया था। और पीछे तो हजारों वर्ष तक उन्होंने बड़े-बड़े साम्राज्योंके दांत खट्टे किये एवं कई बार देशभरमेंसे राज्यसत्ताको नष्ट ही कर दिया। वैशालीके वज्जी सङ्घने सफलतापूर्वक मगध साम्राज्यका मुकाबिला किया और द्वारकाके वृष्णि सङ्घने जरासन्ध जैसे प्रबल सम्राट्को दो बार परास्त किया। यही क्यों, आज यूरोपके विकसित एवं वैज्ञानिक प्रजातन्त्रोंमें तो केवल पूंजीवादी शासन करते हैं एवं नीचेकी संस्थायें उच्च संस्थाओं-के शासनसे पिसती रहती हैं। किन्तु भारतीय प्रजा-तन्त्रोंमें इन दोषोंका सर्वथा अभाव था। यह तो हम पहले ही बता चुके हैं कि उस कालमें प्रतिनिधि चुने जानेकी योग्यता आजकलकी तरह सम्पत्तिके आधारपर निश्चित नहीं की जाती थी। केवल उम्मेदवारका लोकसत्तावादी और मानव-विकासका ज्ञाता होना जरूरी था। परन्तु साथ ही लोग आन्तरिक स्वतन्त्रताके इतने पक्षपाती थे कि सभायें अपने आन्तरिक शासनमें अपनी ही समिति और आमन्त्रण तकको हस्तक्षेप न करने देती थीं। आमन्त्रणके सभापतिके लिए तो यह नियम ही बना दिया गया था कि वह ग्राम्य सभाका सभापति न बन सकेगा। ब्रह्मणवी सूक्तके अनुसार एक बार जब प्रजापतिने बलपूर्वक एक सभाके सभापतिके आसनपर अधिकार कर लिया तो प्रजाने उसे अलग करके ही छोड़ा था। वास्तवमें इसी नियमकी बदौलत प्रत्येक गांवके लोगोंको सभापति आदिके पदपर रहकर शासन-कार्य करते रहनेसे उस समय ग्रामीण तक राजनीतिज्ञ होते थे।

—

### काबुलका उदाहरण

इस पद्धतिको समझनेके लिए काबुलका उदाहरण सबसे अच्छा है। काबुलके शासनमें १० वर्ष पूर्व तक प्रायः ऐसी ही व्यवस्था थी। अर्थात् प्रत्येक समूह व जाति आन्तरिक शासनमें सर्वथा स्वतन्त्र थी। खून तकके मामले ग्राम-सभायें (जिरगे) ही निबटाती थीं। केन्द्रीय सरकार केवल सार्वदेशिक मामलों या दो समूहोंमें परस्पर युद्धकी स्थिति पैदा होने ही पर हस्तक्षेप कर सकती थी। इन समूहोंका भीतरी सङ्गठन और शासन इतना दृढ़ होता था कि एक-दूसरेके विरुद्ध भी शाहके पास किसीका फरियादी जाना आसान न था। इतना ही नहीं, प्रत्येक नये गद्दीपर बैठने-वाले शाहको यह प्रयत्न करना पड़ता था कि अधिकांश जिरगोंके प्रमुख उसे शाह स्वीकार कर लें। इसके लिए प्रत्येक नया बादशाह अपने नामके सिक्के प्रत्येक समूहके मुखियाओंके पास भेजता था और वे उन्हें स्वीकार कर लेते, तभी वह शाह बन सकता था।

ठीक इसी तरहका अन्तःस्वातन्त्र्य इन आर्य एवं भारतीय सभाओं (पञ्चायतों) को होता था।

### राजतन्त्र नहीं, प्रजातन्त्र

इन सब बातोंसे स्पष्ट है कि जो लोग यह समझते और कहते हैं कि प्रजातन्त्र सम्बन्धी भावोंका विकास पहले पश्चिमसे ही शुरू हुआ है, एवं भारतीय सभ्यतामें सदासे एकतन्त्री वा नियन्त्रित राजाकी सत्ताका स्थान रहा है, वे बड़ी भूल करते हैं। सच तो यह है कि वे राजा शब्दको देखकर भ्रममें पड़ जाते हैं। किन्तु जैसा कि उपरोक्त प्रमाणोंसे स्पष्ट है, ऋग्वैदिक कालमें राजा शब्दका महत्त्व एक गृहस्थ किसान या पञ्चायतके सदस्यसे रत्तीभर भी अधिक नहीं था।

इतना ही नहीं, इससे यह भी साफ है कि संसारभरमें सबसे पहले भारतीय एवं आर्य-समूहोंने ही विशुद्ध प्रजा-तन्त्रात्मक संस्थाओंको जन्म दिया था और उनका बहुत अधिक विकास किया था। इस छोटेसे लेखमें इस प्रकरण-सम्बन्धी सब बातें नहीं दी जा सकतीं, परन्तु फिर किसी अवसरपर हम बतायेंगे कि यह प्राचीन प्रजातन्त्रीय संस्थायें कितनी बलिष्ठ, कितनी सुगठित और कितनी अधिक विकसित बन गयी थीं; किस प्रकार वे आजके यूरोपीय प्रजातन्त्रोंके दोषोंसे मुक्त थीं और किस प्रकार उन्होंने सौ-दो-सौ वर्ष नहीं, छः हजार वर्ष तक देशी और विदेशी राज्यवादका सफलतापूर्वक सामना किया था। *

* अप्रकाशित "भारतका राजनैतिक इतिहासके एक खण्डसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रतारित

दया दिखायी जिसपर मैंने, उसने किया निठुर व्यवहार।
आदर-दान दिया, बदलेमें उसके मिला घृणा-उपहार॥
पाया बस विद्रूप-हास्य, जब व्यथित बहायी आंसू-धार।
पर-दुख-कातर होकर मैंने पीछे सुनीं गालियां चार॥
जहां-जहां मैं गया, हुआ आहत ही, मिला निकार नहीं।
कभी किसीसे जगमें मैंने पाया सच्चा प्यार नहीं॥

मधु-मुसकानोंके भीतर है छिपी छुरी अति जहरीली।
मत पिघलो, षड्यन्त्र-द्वार हैं यह, न करुण आंखें गीली॥
व्याध-गीतसे मोहित हो फंस जाती हैं मृगियां सुकुमार।
क्रूर नरोंके करमें पड़कर जाता छूट पिकी-परिवार॥
कौन कहेगा, किसके मनमें छल है नहीं, विकार नहीं।
कहीं हाय! दुनियामें मैंने पाया सच्चा प्यार नहीं॥

यह मैं कहता नहीं कि जगमें है न एक भी उर मलहीन।
पर वह भी हो विवश समय पा होता उस प्रवृत्तिमें लीन॥
जो दृढ़ रहते हैं, वे हरदम कठिन ठोकरें खाते हैं।
पर ऐसे कितने हैं, जो सब सहकर भी मुसकाते हैं॥
स्वार्थ-भरा है विश्व, कहीं भी सुन्दर शुद्ध विचार नहीं।
कभी हाय! दुनियामें मैंने पाया सच्चा प्यार नहीं॥

एक पदोंपर गिरता है, दूसरा उसे ठुकराता है।
क्षण-भंगुर है प्रेम, जगतमें बस दो दिनका नाता है॥
जल-जल मरते हैं पतङ्ग, दीपक पर रहता बना कठोर।
स्वातीकी छाती न पिघलती, 'पी-पी' चातक करता शोर॥
बुलबुल आह भरा करती है, गुलका मिला दुलार नहीं।
कभी हाय! दुनियामें मैंने पाया सच्चा प्यार नहीं॥

प्रेम यहां तब तक है, जब तक खिला फूल-सा है यौवन।
तनिक काल जो बीता, हुई अनिच्छा, हुआ शिथिल-सा मन॥
स्पर्श नहीं बिजली दौड़ाता, नयनोंमें न रही मदिरा।
नहीं प्रतीक्षामें सुख अब है, आलिङ्गन है शुष्क निरा॥
वह उत्साह अपार, आठ पहरोंकी प्रणय-पुकार नहीं।
कभी किसीसे जगमें मैंने पाया सच्चा प्यार नहीं॥

—सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' बी० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर-लिपिकार—
सङ्गीत प्रो० सुरेन्द्रमोहन मिश्रा
( बदायूं )

# राग मलहार—त्रिताल

## गीत

शब्दकार—
श्री रामानुज वाजपेयी
"विशाल"

सखी री सावनके दिन आये।
उमड़ि-घुमड़ि घन गरज रहे हैं, चपला चहुं चमकाये ॥ सखी री० ॥
नदी नार सब उमड़ि अवनिपर, जलद मिलन कहं धाये ॥ सखी री० ॥
दादुर मोर न माने पपीहा, पीवकी टेर लगाये ॥ सखी री० ॥
सुकवि 'विशाल' कहां लगि वरणैं, सुन्दर दिन छिति छाये ॥ सखी री० ॥

### स्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | रे | प | ध | प | ध | नी | सां | रें | सां | नी | प | ग | म | रे | सा |
| स | ऽ | खी | ऽ | री | ऽ | सा | ऽ | व | न | के | ऽ | दि | न | आ | ये |

### सञ्चारी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध़ | नी़ | ध़ | नी़ | सा | — | — | सा | सा | म | रे | म | प | नी़ | प | — |
| उ | म | ड़ि | घु | म | ड़ि | घ | न | ग | र | ज | र | हे | ऽ | हैं | ऽ |
| ध | प | ध | नो | सा | रें | सा | नी | ध | प | ग | म | रे | रे | स | स |
| च | प | ला | ऽ | च | हुं | च | म | का | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ये |

### अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | — | — | रे | प | — | नी | ध | नी | नी | सां | — | सां | रें | सां | — |
| न | दी | ऽ | ना | ऽ | र | स | ब | उ | म | ड़ि | अ | व | नि | प | र॰ |
| नी | — | नी | ध | नी | सां | — | रें | सां | नी | ध | प | ग | म | रे | सा |
| ज | ल | द | ऽ | मि | ल | ऽ | न | क | हं | ऽ | ऽ | धा | ऽ | ऽ | ये |

शेष पद सञ्चारी और अन्तरेके ऊपर बजेंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## राग-विवरण

मल्हार रागके अनेक प्रकार हैं। मल्हार, गौड़ मल्हार, मियांकी मल्हार, रामड़ासी मल्हार, नट मल्हार इत्यादि। यह बहुत ही उत्तम तथा कठिन है, अतएव वर्षा ऋतुका मौसमी राग है, यह वर्षाकी सूचक रागिनी है। इसकी चीजोंमें ज्यादातर वर्षा ऋतुके वर्णन ही होते हैं। मियां तानसेनजीका यह बहुत प्रिय तथा सिद्धि राग था। जिस समय आकाशमें घटा छा रही हो तभी इसके गानेका समय है। जब तानसेनजी मल्हार गाते थे तब पानी गिरता था, इतनी सिद्धि थी। इसका वादी स्वर षड्ज व संवादी स्वर पञ्चम है। आरोह, अवरोह, सम्पूर्ण होकर वक्र है। इसमें गन्धार, कोमल और निषाद तीनों ही लगती हैं। सा रे ग़ म रे प ध नी सां ध नी प ग म रे सा। यह काफी ठाटका राग है।

## नोटेशन चिह्न

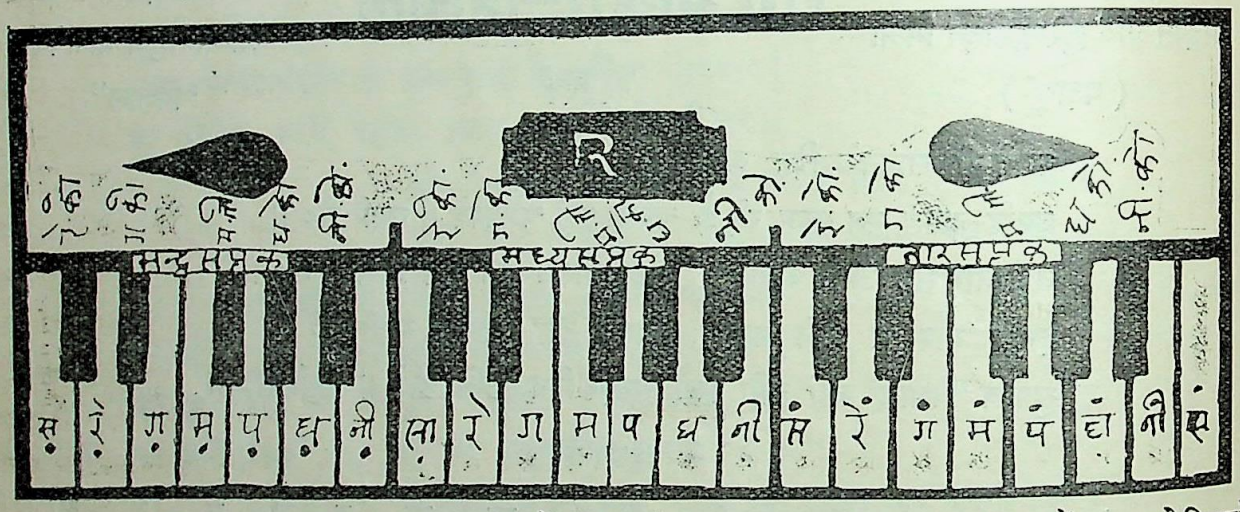


हारमोनियमके अन्दर तीन सप्तक होते हैं जो मन्द्र, मध्यम, तारके नामसे प्रसिद्ध हैं। हारमोनियमके अन्दर १२ स्वर होते हैं जिसमें ५ कोमल, ६ शुद्ध और १ म́ तीव्र होता है। हारमोनियममें पहला स्वर स माना जाता है, उसी स्वरसे १२ स्वर तक मन्द्र सप्तक जानना चाहिए।

मन्द्र सप्तक—जिन स्वरोंके नीचे बिन्दु दिये हों उनको मन्द्र सप्तकका स्वर जानना चाहिए। जैसे—रे॒ ग़॒ म॒ ध॒ न॒

मध्य ,, —जिन स्वरोंपर कोई चिह्न न हो उनको मध्य सप्तकका स्वर जानना चाहिए। जैसे—स रे ग म ध न

तार ,, -- जिन स्वरोंके ऊपर बिन्दु हो उन्हें तार सप्तकका स्वर जानना चाहिए। जैसे—सं रें गं मं पं धं नीं

शुद्ध स्वर—जिन स्वरोंपर कोई चिह्न न हो उन्हें शुद्ध स्वर जानना चाहिए। जैसे--स रे ग म प ध नी स।

कोमल स्वर—जिन स्वरोंके नीचे पड़ी पाई हो उन्हें कोमल स्वर समझना चाहिए। जैसे—रे॒ ग॒ ध॒ नी॒।

तीव्र—जिस स्वरके ऊपर खड़ी पाई हो उसको तीव्र समझना चाहिए। जैसे—म́ ऐसा चिह्न केवल म पर ही लगेगा।

एक-मात्रामें स्वर—जिन स्वरोंके नीचे चन्द्राकार चिह्न हो उन्हें एक मात्रामें समझना चाहिए। जैसे— सरे सरेग

जहां लयका झुकाव पड़ता है उसे सम कहते हैं।

समका चिह्न × इस प्रकार है, खाली तालका ० यह चिह्न है।

जहांपर अंक लिखे हों उन्हें अंकानुसार ताल समझना चाहिए। जैसे—२, ३, ४ इत्यादि। यह ध्यान रहे, सम पहले तालपर होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

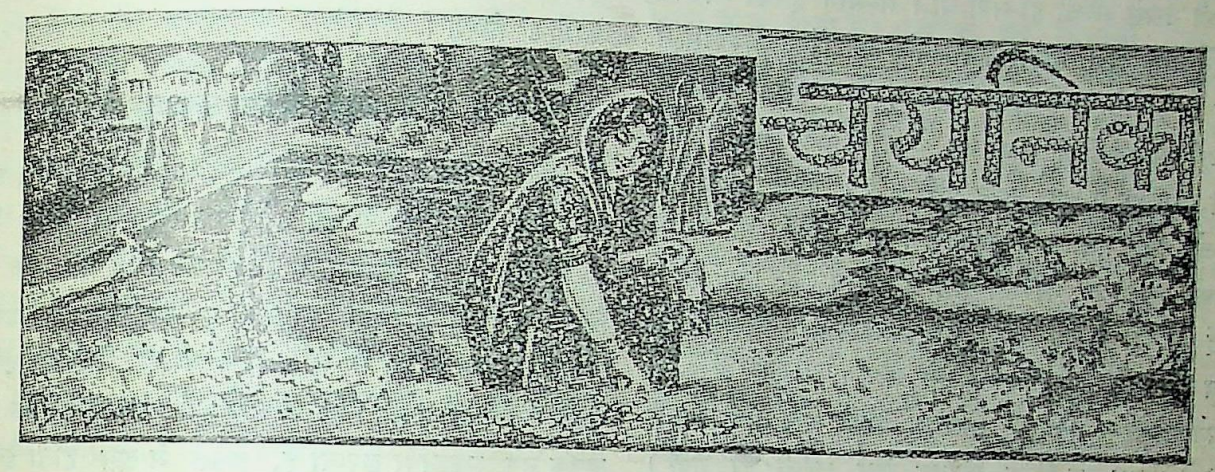

## मेस्मरिजमके प्रवर्तक मेस्मरका जीवन

भारत अपने पुराने शास्त्र भूल रहा है। आजकल कुछ ऐसी हवा चली है कि जिनके लिए शास्त्र काले अक्षर भैंस बराबर हैं, वे उन्हें गन्दगीकी भांति जला देना चाहते हैं और जिन्होंने मन्दिरके भीतर—हरिजन न होनेपर भी—पांव न रखा, वे धड़ल्लेकी राय दे रहे हैं कि उन्हें भस्म कर दो। हमारी उपेक्षा और बेपरवाहीसे न मालूम भारतीय विज्ञानके कौन-कौनसे अङ्ग लुप्त कर दिये गये। योग इन्हींमेंसे है। योग भी अब भारतमें अपनी अन्तिम घड़ियां गिन रहा है। लेकिन यूरोपवाले अपने ज्ञानकी रक्षा करना अपना धर्म समझते हैं। वहां सबसे पहले मेस्मरने योगकी उस रहस्यमय शक्तिका पता लगाया जिसके बलसे कई मनुष्य अपने आत्मिक प्रतापसे दूसरोंको अपने वशमें कर सकते हैं। अंगरेजीमें इस शक्तिको 'जीवाकर्षण' (animal magnetism) कहते हैं। २७ मई १९३३ को मेस्मरको जनमें ठीक दो सौ वर्ष हुए। इस अवसरपर उसके सम्बन्धमें नाना पत्रोंमें नाना लेख छपे। वर्लिनके पत्र 'डी वोखे' ने उसकी जीवनी छापी है जो शिक्षाप्रद होनेके साथ-साथ मनोहर भी है। लेखका सारांश यह है :—

फ्रानूत्स आण्टोन मेस्मरका जन्म २७ मई १७३३में इत्सनाङ्ग नामक स्थानमें हुआ। उसके माता-पिताकी हालत अच्छी थी और मेस्मरने पहले 'धर्मशास्त्र' पढ़ा, तब उसने कानूनकी शिक्षा पायी और अन्तमें उसने चिकित्सा-शास्त्रका अध्ययन किया। उसने सर्वत्र अपनी प्रखर बुद्धिका परिचय दिया। उससे पहले पारासेलजेने यह सिद्धान्त निकाला था कि सब धातुओंमें विशेष आकर्षण रहता है जो विशेष-विशेष रोगोंके लिए लाभदायक होता है। इस न्यायपर अपना सिद्धान्त स्थापित करके मेस्मरने यह खोज की कि प्रत्येक प्राणीमें 'जीवाकर्षण' रहता है, जिसके द्वारा वह दूसरोंपर अपना प्रभाव डालता है। इसीको लोग अब मेस्मेरिज्म कहते हैं। सार रूपमें इसका तत्त्व यह है कि सितारों, सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वीमें परस्पर ऐसी तरङ्गें चलती हैं जिनका एक दूसरेपर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार मनुष्य और सितारोंमें आकर्षणकी तरङ्गें चलती रहती हैं जिनका बहुत प्रभाव पड़ता है। जिस समय इनका सम्बन्ध कुछ बिगड़ जाता है तो मनुष्य बीमार पड़ जाता है। इसका इलाज दवासे होना कठिन है, इसलिए डाक्टर यदि समझदार और विषयका विचक्षण हो तो वह अपनेमें जो अधिक 'जीवाकर्षण' है उसकी एक मात्रा रोगीको देकर उसे चङ्गा कर सकता है। मेस्मरने अपना यह सिद्धान्त अपने रोगियोंपर आजमाया और कई कठिन रोगी बातकी बातमें स्वस्थ हो गये। इसपर विएनाके डाक्टर उसपर बिगड़े और कहा कि यह फरेब कर रहा है। कमीशन बैठाया गया और उसकी चिकित्साके ढङ्गकी जांच-पड़ताल की गयी। इस कमीशनने 'मेस्मेरिज्म'-की चिकित्साकी बहुत प्रशंसा की और उसे इसकी सफलताका कायल होना पड़ा। एक अद्भुत केसका विवरण उसमें यों दिया गया है :—मिस पाराडीस पियानो बजानेमें सिद्धहस्त थी। उसकी इस विषयपर खासी धूम थी। स्वयं साम्राज्ञी मेरी टेरैज उसे बहुत प्यार करती थी। यह चार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सालकी उम्रसे अन्धी हो गयी थी। मेस्मरने इसकी आंखोंमें ज्योति डाल दी। इसपर कमीशनके डाक्टरोंको विश्वास न हुआ। वे बोले ऐसा होना असम्भव है। लड़की बोली—'मैं आंखसे देखती हूं'; पर वह देखी चीजोंका नाम न बता सकी, क्योंकि ये शब्द उसने सीखे न थे। इससे उन्हें और भी जोर मिल गया। वे लड़कीके पितासे बोले कि अपनी बेटीको समझाओ, नहीं तो तुम्हारी पेन्शन जब्त करा देंगे। उन्हें भय यह था कि यदि यह समाचार मेरी टेरैजको लग जाय तो उनकी मिट्टी पलीद हो जाय। इसपर लड़कीके बापने मेस्मरपर तलवारसे आक्रमण किया और मांने अपनी बेटीको इतना तङ्ग किया कि वह फिर अन्धी हो गयी। इसके बाद मेस्मरने उसकी आंखें फिर ठीक कर दीं।

यह देखकर मेस्मरने विएना छोड़ दिया और वह म्यूनिच पहुंचा। वहां उसका यथेष्ट सम्मान हुआ। यहांसे वह पैरिस चला गया, जहां उसकी ख्याति हो गयी। वह केवल छूनेसे रोगोंको भला कर देता था और कभी-कभी तो वह किसी पेड़में अपनी 'आकर्षण-शक्ति' डाल देता था और जैसे ही रोगी पेड़को छूता था तो वह स्वस्थ हो जाता था। उसके इन इलाजोंको देखकर लोग स्तम्भित और चकित थे, पर दो चार केस असफल भी हुए। यह देखकर पैरिसके डाक्टरोंको अवसर मिला कि सरकारसे मेस्मरकी जांच करवायी जाय और वह वहांसे निकालवा दिया जाय। इसका उल्टा प्रभाव पड़ा। फ्रेञ्च सरकारने मेस्मरसे कहा कि आपको प्रतिवर्ष पचास लाख रुपयेकी वृत्ति दी जायगी, आप फ्रेञ्च छात्रोंको मेस्मरिज्म सिखलाइये। पर वह राजी न हुआ और वह स्पा नगरको चला गया। वहां लोगोंने चन्दा करके उसे पांच लाख फ्रां दिये कि वह मेस्मेरिज्मके शिक्षालयकी स्थापना करे। उधर थोड़े ही दिनोंमें मेस्मरने भी चार लाख फ्रां कमा लिये थे। इस बीच फ्रेञ्च-विप्लव हुआ और मेस्मर लेक कान्स्टेन्सके किनारे बस गया। मेस्मर १८१५ में ८२ वर्षकी उम्रमें परलोक सिधारा। मेस्मर हरफन मौला था। उसने फ्रान्समें राज्यव्यवस्थापर ग्रन्थ लिखे। येनाके युद्धके बाद मेस्मरने प्रशियाके राजाको नोट निकालनेका ढङ्ग बताया था जिससे वहांका आर्थिक सङ्कट दूर हो जाय। इसके अतिरिक्त वह रसायन शास्त्रका ज्ञाता और फलित ज्योतिषका विशारद था। कहा जाता है कि मेस्मरको देखकर ही गेटेने अपना संसार-प्रसिद्ध ग्रन्थ 'फाउस्ट' लिखा।

## रूसके नये स्कूलोंको उत्तम शिक्षा

स्कूल पढ़ना हमारे बच्चोंके लिए असहनीय बोझ है। उन्हें कई विषय पढ़ने पड़ते हैं और उनमें उत्तीर्ण होना पड़ता है। उसके बाद जब वे स्कूलसे बाहर निकलते हैं तो एक भी विषय उनके काम नहीं आता। यूरोपके विद्यालय हमारे स्कूलोंसे भिन्न हैं, पर वे भी अभी कार्यकरी शिक्षाकी दृष्टिसे रूससे पिछड़े ही हुए हैं। ई० खोलोड्नीने 'प्रावदा'में एक लेख रूसके नये स्कूलोंपर छपाया है, इससे मालूम होता है कि रूसके स्कूलोंमें छात्रोंपर बहुत कस जोर पड़ता है :—

हमारे स्कूलोंमें तातीलें आरम्भ हो गयी हैं। जबसे सोवियट सरकारने स्कूल खोले, इस बार ही पहले पहल परीक्षा ली गयी है। इसपर कुछ लोग पुकार मचाने लगे हैं कि अब हम भी दूसरे देशोंकी भांति स्कूलके छात्रोंका इम्तिहान लेने लगे हैं। पर यह गलत है; सोवियट स्कूलोंकी तुलना स्वयं रूसके पुराने स्कूलोंसे नहीं की जा सकती। जारके वक्त स्कूलोंमें परीक्षाका अर्थ था छात्रोंकी दासमनोवृत्तिकी मात्राको नापना। योमियालोफस्कीसे लेकर कोरोलेङ्को तक सब लेखकोंने तत्कालीन विद्यार्थियोंकी घोर दुरवस्थाका चित्र अपने ग्रन्थोंमें खींचा है। चेखोफने लिखा है कि उस समयके छात्र सब ग्रन्थोंको शब्द प्रति शब्द रट जाते थे; और इम्तहानके सङ्कटको पार करनेके लिए गिरजेमें जाकर भांति भांतिकी मन्नतें मनाते थे। जब वे लैस होकर परीक्षकोंके सामने पहुंचते थे तो थर थर कांपने लगते थे। किन्तु कल जब हम मास्कोके 'लेनिन नगर' में सातवें स्कूलकी परीक्षा लेने गये तो देखते क्या हैं कि हमारे सरके ऊपर टेनिसके बाल सनसना रहे हैं। लड़कोंको हमें देखकर नाममात्रकी घबराहट नहीं हुई, उल्टे वे छाती तानकर खड़े हो गये और जो खेल कूद कर रहे थे वे अपने खेलोंमें मशगूल रहे। इन छात्रोंके चेहरे लाल थे और इन्हें इस बातकी परवा न थी कि इनकी परीक्षा होने ही वाली थी। पन्द्रह मिनट बाद ये छात्र परीक्षा देने आये और अपने अपने विषयोंमें पाराङ्गत पाये गये। केवलमात्र जाकस्किन खेलसे नहीं, अपनी लेबोरेटरीसे आया। यह वहां अपनी कलमके एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सिरेमें रेडियो रीसीवर यन्त्र तैयार कर रहा था। रसायन शास्त्रके विद्यार्थीने 'कार्बन' पर धाराप्रवाह व्याख्यान दिया, अपनी स्लेटमें उसका 'फार्मूला' लिखा और फिर वह उसका प्रयोग बतानेको तैयार हो गया। उसके इर्दगिर्द अन्य छात्र अपना काम कर रहे थे। क्लास क्या था छोटा कारखाना मालूम पड़ता था और शिक्षक इस कारखानेका निरीक्षकसा लगता था। जाकुस्किन बोला—"देखिये, ये कांचकी नलियां खाली दिखायी देती हैं, पर इसमें 'कार्बन' गैस है जो हमारी हवासे भारी होती है और यह देखिये इस दूसरी नलीमें साधारण हवा है। यह लीजिये, मैं इन्हें गिराता हूं।" शिक्षकने पूछा—"कहीं नलियोंमें धोखा न खा जाना। तुम्हें क्या दोनों नलियोंकी ठीक पहचान है?" उसने उत्तर दिया—"हां, हां, सब ठीक है।" और वह 'एक्सपेरिमेण्ट' करने लगा। इसी भांति हंसी-खुशी में लकड़ी पत्थर आदिके कामोंके कुशलताकी जांच की गयी। प्रोफेसर इधर उधर टहल रहे थे और छात्रोंकी भूलें सुधारनेके लिए तैयार थे। पर उनकी मददकी दरकार न पड़ी। छोटे बालक रिव्यसाफने हाथ उठाया तो मालूम पड़ा कि उसका काम पूरा हो गया है। वह तुरत पास हो गया और अन्य छात्रोंकी सहायता करना चाहता था, पर उसकी आवश्यकता भी किसीको न पड़ी। इसलिए वह दौड़ कर बाहर खेलने चला गया। ये हैं आज कलके स्कूल, परीक्षा और छात्र। छठे दर्जेका एक लड़का बोला—"भई! इम्तहानमें पढ़ाईसे भी ज्यादा मजा आता है।" दूसरे लड़केने प्रश्न किया—"क्यों?"—"इसलिए कि दर्जेमें यह निश्चय नहीं रहता कि हमसे पूछा जायेगा। इम्तहानमें जरूर ही सवाल किया जाता है।" इस स्कूलमें केवल पढ़ाई ही नहीं होती। यहां मनुष्यका चरित्रगठन होता है। इसमें कई तरहके क्लब हैं जैसे फोटो, हवाई जहाज, रेडियो, रसायनशास्त्र, साहित्य आदिके। इस विद्यालयमें भी पांचसालाना कार्यक्रम चलता है जिसका भार लिखात्चेफपर है।

## उपवासके रेकार्ड

म० गांधीके उपवासने यूरोपमें विशेष प्रभाव नहीं डाला। वे लोग इस बातकी चिन्ता नहीं करते कि इसका आध्यात्मिक महत्व क्या है, उन्हें तो इस बातमें आनन्द आता है किस आदमीने सबसे अधिक दिन भूखे रहकर पुराना रेकार्ड मात किया है। इसलिए इस विषयकी चर्चा भी यूरोपके कम पत्रोंमें हुई थी। बासलके पत्र 'बासलर नाखरिखृन' ने 'उपवासके रेकार्ड' नामक लेख छापा है, उसमें बताया है कि इनमें यूरोपवालोंने पूर्ववालोंको मात दी है:—

हालमें गांधीजीने जो २१ दिन तक उपवास रखा उसका भारतके इस नेतापर अच्छा प्रभाव पड़ा है। उसका स्वास्थ्य सुधर गया है। डाक्टरोंके बुलेटिनोंसे मालूम होता है कि ६४ वर्षके इस बूढ़ेने सङ्कटके लक्षण नहीं दिखाये। वह बराबर पलङ्गपर लेटा रहा, उसके पांवोंके तलवोंपर बार बार मखन मला गया और फ्रान्सके विशी नगरका जल पीनेको दिया गया। इस प्रकार गांधीजीका स्वास्थ्य ठीक रहा।

यह साहसपूर्ण काम साधारण मनुष्यको आश्चर्यमें डाल देता है, पर भारतमें यह मामूली बात है। वहांके फकीर भूखे रहनेके लिए प्रसिद्ध हैं। गांधीजी भी कई बार उपवास करनेसे इसके आदी हो गये हैं। १९२९ में भी उन्होंने २१ दिनका उपवास किया था। उपवासके बारहवें दिन कुछ डाक्टरोंने कहा कि स्थिति सङ्कटमय हो गयी है और यदि गांधीजी भोजन ग्रहण न करेंगे तो उनके मरनेमें भी सन्देह नहीं। पर उन्होंने कुछ न खाया और उपवास कुशलपूर्वक समाप्त हो गया। एशियाके देशोंमें वहांके निवासियोंका धर्म उन्हें लम्बे लम्बे उपवास करनेकी आज्ञा देता है। यही कारण है कि जेलमें कष्ट होते ही वहांके निवासी प्रतिवाद स्वरूप भोजन करना छोड़ देते हैं। कई बार इसके फलस्वरूप उनकी मृत्यु भी हो जाती है। इस प्रकार १९२९ में जतीन्द्रनाथ दासकी मृत्यु हो गयी। वह ६१ दिन तक भूखा रहा। मिस्रके प्रधान मन्त्री सिदकीपाशाको मारनेके प्रयत्नमें ताहर हुसैन पकड़ा गया और उसे सात सालकी कैदकी सजा हुई। वह पचास दिनतक प्रतिवादस्वरूप भूखा रहा और १९२६ के मार्च महीनेमें मर गया।

दो जातियां ऐसी हैं जिन्हें भूखा रहनेकी आदत पड़ गयी है। ये दोनों रेगिस्तानके अधिवासी हैं। डब्लू० जे० मैकिनने लिखा है:—"ऊंटसवार ऊंटोंसे भी अधिक समय तक बिना पानीके रह सकते हैं। यह बात मैंने अरबकी मरुभूमिमें देखी है।" अफ्रीकाके कालाहारी रेगिस्तानकी बेचुआना जाति इस विषयपर आश्चर्य करती है। एक मुट्ठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अन्न खाकर वे लोग सप्ताहभर तक बिना खाये आनन्दसे रहते हैं। जब वे भोजन करते हैं तो देखते देखते उनका पेट फूलकर कुप्पा बन जाता है और दर्शकोंको यह माजरा देखकर भय लगने लगता है। ये लोग बहुत थोड़ा मांस पचा सकते हैं, इसलिए निरामिष रहते हैं।

विचित्र बात तो यह है कि संसारमें भूखे रहनेका रेकार्ड एशियावालोंने नहीं बल्कि एक यूरोपियनने तोड़ा है। यह वीर पुरुष था आयर्लैण्डकी स्वतन्त्रताका सैनिक कार्यकर्ता मेयर मैकस्विनी। यह ७५ दिन तक अन्न-जल ग्रहण न करके परलोक सिधारा। यह मनस्वी अङ्गरेजोंके विरुद्ध आयर्लैण्डकी स्वतन्त्रताके लिए युद्ध करनेके अपराधमें गिरफ्तार किया गया था। आयर्लैण्डकी स्वतन्त्रताकी अनन्य भक्तिने इसे वह आधात्मिक बल दिया जिसके द्वारा यह इस घोर परीक्षामें सफल हुआ। ७५ दिन तक उसने अन्न-जल छुआ तक नहीं और तब वह बेहोश हो गया। उसके शरीरमें पिचकारियोंसे पोषक पदार्थ डाले गये; पर ज्योंही उसे थोड़ा होश आया वह फिर इसके विरुद्ध चट्टानकी भांति खड़ा हो गया और सहर्ष मृत्युकी गोदमें चला गया। उससे अधिक दिन तक संसारमें कोई मनुष्य भूखा न रह सका। आश्चर्यकी बात तो यह है कि यह करिश्मा एक ठण्डे देशमें हुआ। गरम देशमें कम भूख लगती है और शीत प्रदेशमें बहुत ज्यादा। जो यात्री गरम देशोंमें रह आये हैं उनका कहना है कि ग्रीष्म-प्रधान देशोंमें भूख सहना आसान होता है क्योंकि वहां खूब प्यास लगती है और पानी भूख सहनेका बल दे देता है। कई गोरे भी इन देशोंमें उपवास-चिकित्सा करने लगते हैं। जो लोग पैसा कमानेके लिए उपवास करते हैं उनका विश्वास कम होता है कि वे वास्तवमें कुछ नहीं खाते। लेकिन इटालियन छकूची इसी प्रकारके एक प्रदर्शनमें मर गया। वह खूब सोडावाटर और बहुत सिगरेट पीता था। विटबी नामक वकील पर खून करनेका अभियोग था। उसने जेलमें प्रतिवाद स्वरूप अन्न-जल ग्रहण करना छोड़ दिया। उसकी मृत्यु सत्रहवें दिन ही हो गयी।

## अमेरिकामें हरिजनोत्थान

क्या अमेरिकामें हरिजन हैं? नहीं हैं क्योंकि वहां छूत-छातकी समस्या है ही नहीं। भारतमें छूत-छात है इसलिए यहां हरिजन हैं। पर हमारा विचार है कि आजकल किसी धर्म या समाजकी कृतिसे हरिजन नहीं पैदा होते। इनको पैदा करनेवाले वे थोड़ेसे व्यापारी हैं जो अपने कल-कारखानोंमें श्रमजीवियोंकी न्यायसङ्गत कमाईका शोषण कर उन्हें सदा दरिद्र रखते हैं। वर्तमान युगमें धनी चाण्डालकी पूजा करनेको उच्चसे उच्च वर्णका मनुष्य तैयार रहता है और निर्धन ब्राह्मण भी कट्टर सनातनधर्मियोंके घरमें अछूतसा ही रहता है। कट्टर सेठों और पूंजीपतियोंके घरमें निर्धन ब्राह्मण कितना ठुकराया जाता है यह सब जानते हैं। (दरिद्रता मनुष्यको पशुमें परिणत कर देती है, यही हाल उन ब्राह्मणोंका है जो

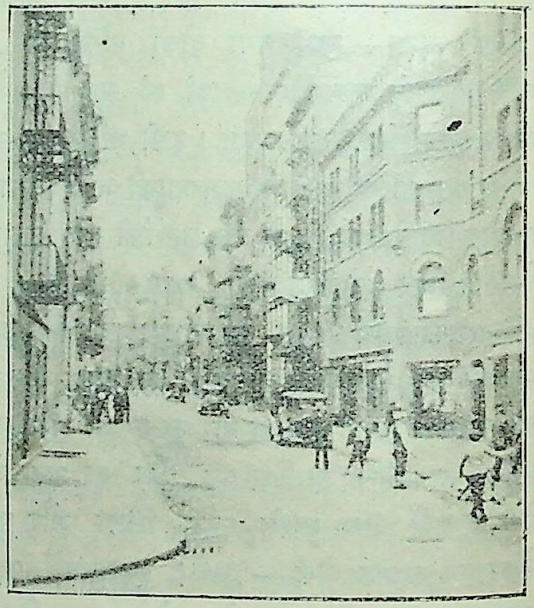

अमेरिकाका निकरबाकर मुहल्ला, जो सबसे अधिक गन्दा समझा जाता है। (पाठक भारतके स्वच्छ समझे जानेवाले मुहल्लोंसे इसका मुकाबला कर देखें।)

पैसा न होनेके कारण ककहरा भी नहीं जानते और दर-दर ठोकरें खाकर भी पेट नहीं भर सकते। यद्यपि इनका सम्बन्ध पठित और सच्छल अवस्थाके लोगोंसे रहता है पर अपनी परम निर्धनताके कारण ये गन्दे रहनेको बाध्य होते हैं) हम हरिजनोंको साफ रहना और शुद्ध खाना सिखा रहे हैं। हरिजन मरे जानवरोंका मांस खाते हैं और गन्दगीमें रहते हैं। यह उनका बहुत बड़ा दोष माना जाता है। पर उनको ये पूंजीपति तथा धनी जिनमें बहुतसे इस आन्दोलनके मुखियां हैं क्या मजूरी देते हैं। क्या उनका सिहनताना इतना होता है कि वे शुद्ध फलाहारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भोजनका प्रबन्ध कर सकें। हालमें हमारे एक परिचित सज्जनको डाक्टरने जो कह दिया कि आप कुछ दिन तक फलों पर रहिये तो बेचारेके सरपर बज्र-सा गिर पड़ा। जिसके सारे परिवारकी गुजर पचास रुपये महीनेमें चलती हो वह रोज अन्ततः बारह आनेके फल कैसे खा ले। तब वे हरिजन जो १०, १२ रुपये महीनेमें पाते हैं, इस रकमसे अपने परिवारको क्या क्या खिलायें और किस स्वच्छ बस्तीमें रखें। असल बात तो यह है कि जबतक इनकी आर्थिक दशामें उचित परिवर्तन नहीं होता, तबतक हमारे हरिजन-विद्यालय तथा उपदेश इन्हें लाभ नहीं पहुंचा सकते। यूरोपके भङ्गीको सवा सौ रुपया महीना मिलता है, इसलिए वह अपना काम कर चुकनेके बाद जण्टलमैन बनकर बाहर निकलता है। भारतके

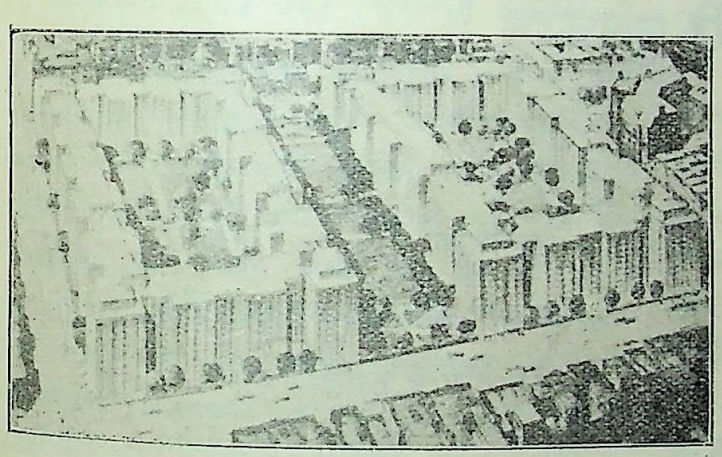

पुराना निकरबाकर मुहल्ला टूटकर अब इस रूपमें आ रहा है।

मेहतर तीन रुपया महीना तकमें काम करते हैं। वे कैसे मृत पशुओंका मांस खाना छोड़ सकेंगे; यह जीवन-संग्रामका प्रश्न है। भूखा धोरतम पाप करनेको विवश होता है और भगवान्‌के हृदय होगा तो वह उन्हें उनके पापके लिए गले लगायेगा, वशर्ते वह पाप जान-बूझकर न किया गया हो और परिस्थितिने उनसे जबरदस्ती कराया हो। इस पापका प्रायश्चित्त वे करेंगे जो इनकी पसीनेकी कमाईमेंसे लूटकर पूंजीपति बन जाते हैं। भारतके कोठीवाल इस विषयमें संसारमें सबसे पतित हैं। अमेरिकामें भी पूंजीपति हैं, पर वहां मजदूर शिक्षित और सङ्गठित होनेके कारण इतनी कमसे कम मजूरी धरवा लेते हैं जितनेमें उनका भलीभांति निर्वाह हो सके; यानी जितनेमें वे साफ-सुथरे कमरे किरायेपर लें, मखन, रोट और ताजा मांस खरीदें, अच्छे कपड़े पहनें और सफाईके लिए साबुन, दन्तमञ्जन, ब्रश आदि मोल लें। इसके अतिरिक्त वहांके नेताओंको भी यह फिक्र रहती है कि ये श्रमजीवी जो वहांके पूंजीपतियोंके लिए भारतके हरिजनोंके समान ही हैं स्वच्छ और आरामसे रहें। इसके लिए वे व्याख्यान नहीं देते और न सालमें एक दिन उनके गले लगते हैं; पर वे सस्ते और उत्तम भवन बनाते हैं जिनमें ये 'हरिजन' भले आदमियोंकी तरह रह सकें। न्यूयार्कमें फादर निकरबाकरका मुहल्ला निर्धनोंकी बस्ती है। यहां गरीब मजदूर छोटी-छोटी कोठरियोंमें अपना जीवन निर्वाह करते थे। प्रकाश और वायुकी कमीके कारण इस बस्तीमें क्षय रोगका दौरदौरा था। यह देखकर वहांके कुछ नेताओंका हृदय रोने लगा और उन्होंने उसे नया स्वस्थ रूप देनेकी ठानी, अब वह मुहल्ला गरीबोंकी इन्द्रपुरी बनने जा रहा है।

इस कामसे दस हजार 'हरिजनों' को तो तुरत रोटी मिल गयी है। वे इस बस्तीके बसानेका काम करेंगे और इन्हें प्रति मास सवा दो सौ रुपया दिया जायगा। पाठक यह बात ध्यानमें रखें कि यह मजदूरी आर्थिक सङ्कटके समय की है। जब यह बस्ती तैयार हो जायेगी तो इसमें सोलह सौ कुटुम्ब सुखमें रह सकेंगे। इनमें प्रत्येक कुटुम्बके लिए अलग स्नानागार, गरम और ठण्डा जल, कमरे गरम करनेके नल आदि सब आधुनिक ऐश्वर्यके सामान मौजूद हैं। इस स्थितिमें अमेरिकाके ये हरिजन भारतके दरिद्र-हृदय वित्तवालोंसे भी अधिक आरामसे रहेंगे। इस दशामें उनसे यह कहनेकी आवश्यकता न रहेगी कि साफ-सुथरा रहना सीखो। जो मजदूर इन भवनोंमें रहेंगे वे स्वतः सम्भ्रान्त बन जायेंगे। केवल निर्धनोंकी बस्ती होनेके कारण अबतक यहां बहुत अपराध होते थे। मि० फारेस्टने लिखा था—'न्यूयार्क भरमें स्वास्थ्य, नीति, दुराचार, आदिकी दृष्टिसे यह मुहल्ला सबसे गिरा हुआ है। जितने जुर्म यहां होते हैं उतने अन्यत्र नहीं।" यह है दरिद्रताका परिणाम, अब तक यहां किराया भी अधिक था। भविष्यमें प्रत्येक परिवारसे उक्त सुख-साधनोंके साथ प्रति मास कुल ४०) रुपया भाड़ा लिया जायेगा। क्या दरिद्र भारतके कलकत्ता, बम्बई सरीखे नगरोंमें यह सम्भव है? नहीं; क्यों? इसलिए कि हमारे धर्मात्मा पूंजीपति भाड़ेकी रियायत नहीं कर सकते, भले ही उनके मकानोंमें सुविधाके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्थानपर अन्धकार, रोग और दुर्गन्धिकी जय मनायी जा रही हो। पाठक यह न समझें कि ४०) मासिक भाड़ा बना रहेगा। यह घटाना पड़ेगा क्योंकि अभीसे वहांके पत्र चीत्कार करने लग गये हैं कि यह भाड़ा परिमित आयके मजदूरोंके लिए अत्यधिक है।

विलायतमें भी 'हरिजनों' को साफ-सुथरे घर देनेका आन्दोलन बहुत जोर पकड़ रहा है। स्वयं वहांकी सरकार इस बातका अनुभव कर रही है कि गन्दे मकानोंसे गन्दे विचारों और दुराचारका जन्म होता है। इसलिए उस रोज वहांके स्वास्थ्यके मन्त्री सर हिल्टन यङ्गने पार्लामेण्टमें कहा था—"हरिजनोंकी गन्दी बस्तियोंने युगों तक शरीर, मन और समाजके विकट रोगोंके फैलनेमें सहायता दी है। अब समय आया है कि इनका सफाया हो और सरकार पूरी कोशिशमें है कि यह काम जल्दी हो।" मि० मार्टनने घूम-घूमकर ये बस्तियां देखी हैं और वे कहते हैं—"हम तबतक ब्रिटेनको सुखी नहीं कह सकते जबतक यहां इन जातिच्युत 'हरिजनों' की इस प्रकार बाढ़ आयी हुई है।" हमें महान् खेद यह देखकर होता है कि अछूतोंके सुधारके लिए हमारी सरकार चिन्तित नहीं है और नेता लोग तो अपनी नेता-गिरीमें मस्त हैं।

---

# तुम्हारी मुसकान !

[ १ ]

चांदनीने खिल कर सुखसे
रंगा था यह सारा संसार
निशाने भी हंसकर चुपचाप
किया था चांदीसे शृंगार—
दिखायी तब तुमने अनजान,
सरल शशि-मुखकी मृदु मुसकान।

[ २ ]

तुम्हारी वह मीठी मुसकान
चमक उरमें शत चन्द्र-समान,
दूर कर हृदय-तिमिर अज्ञान—
मुझे नव-जीवन देती दान,
भूलता नहीं इसीसे देवि !
भुलाने पर भी वह मुसकान।

[ ३ ]

पूर्णिमाके दिन उर राकेश
वेदनाओंका पारावार
न जाने विचलित कर क्यों मौन
उठा देता है स्मृतिका ज्वार—
उमड़ता जीवन-प्रेम अजान,
याद आ जाती वह मुसकान।

[ ४ ]

बीत जाता मादक मधुमास
उजड़ जाते सारे उद्यान,
सूख जाते तब प्यारे फूल
नहीं गाते मधुकर मधु गान
फूल-बालाकी हंसी समान
हुई क्या अन्तर्हित मुसकान।

—नर्मदाप्रसाद खरे

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## नारी-धर्षणका वही चिरन्तन आतङ्क

क्या हिन्दू-नारी-धर्षणके अमानुषिक अन्धेरका कभी अन्त न होगा ? क्या हमारी नपुंसक जातिने समाजकी इस घातक व्याधिका कोई उपयुक्त प्रतिकार खोज निकालनेमें अपनेको पूर्णतः असमर्थ तथा पौरुषहीन मान लिया है ? अपनी इस अक्षम्य जघन्य क्लीबता द्वारा हम लोग चले हैं स्वराज्य प्राप्त करने। हजारों अबला, असहाया मातायें और बहनें आततायियों द्वारा दुर्धर्ष, आतङ्कजनक अत्याचारसे पीड़ित होकर मुई खालकी तरह अपनी पिष्ट आत्माओंसे जो उत्तप्त श्वास बाहर निकाल रही हैं उसके प्रचण्ड तापसे भी हमारे तुषार-पिण्डके समान जड़, निश्चेष्ट हृदयोंमें चेतनाका सञ्चार नहीं होता। धिक्कार है हमारी इस कापुरुषताको ! लानत है हमारी इस मुर्दादिलीपर ! भारतमें एक जमाना वह भी था जब परम आत्माभिमानी, प्रबल पराक्रमी भीमने दुःशासन द्वारा रजस्वला द्रौपदीका अपमान होते देखकर उसका रक्तपान करके अपने गर्व-संक्षुब्ध हृदयकी पिपासा बुझायी थी; उद्दण्ड कीचकका बध करके अपमानका बदला लिया था। वह भी जमाना था जब द्रौपदीने अपना अपमान होनेपर पहले कौरवोंकी सभामें, इसके बाद विराट्की सभामें युधिष्ठिरको नपुंसक कहकर धिक्कारा था और प्रण किया था कि जब तक उसके अपमानका बदला नहीं लिया जायगा तब तक वेणी नहीं बांधेगी। और आज भी एक जमाना है, जब हम लोग आततायियों तथा कामी कुत्तों द्वारा बहनोंके हरण तथा धर्षणकी अनेकों कारुणिक गाथायें रात-दिन सुननेपर भी टससे मस न होकर आनन्द-पूर्वक हास्य-विनोद तथा राग-रङ्गमें रत हैं ! धिक्कार !

हमारी प्रतापिनी बहनें भी आज देशके इस परम सङ्कटके समय चुप क्यों हैं ? इस प्रतिदिनके प्रमत्त स्वैराचारकी पाशविक लीलाके रोमाञ्चकर वर्णन सुननेपर भी वे हमारे क्लीब भाइयोंको उसके प्रतिकारके लिए घोर मोहाच्छन्न निद्रासे जगातीं क्यों नहीं ? इस वीभत्स अत्याचारके दमनके लिए अपने शाणित धिक्कार-वाक्योंसे उन्हें उत्तेजित क्यों नहीं करतीं ?

हम लोगोंके हृदयोंमें मातृमहिमाके प्रति यदि किञ्चित् भी श्रद्धा होती, नारीत्वके प्रति सम्भ्रम तथा गौरवका लेश भी वर्तमान होता तो इन दुर्वृत्त कामाचार आततायियोंका विनाश कभी हो गया होता। किन्तु स्त्रियां तो हम लोगोंके वीर पुरुषोंकी दृष्टिमें उनके पैरोंकी जूतियां हैं,—एक स्त्रीको यदि किसी विधर्मी कामुकने हरणपूर्वक धर्षण कर भी दिया तो क्या हुआ ! उसका बहिष्कार करके उसके बदले दूसरी स्त्री आ सकती है ! अरे नपुंसको ! यदि यही प्रवृत्ति कुछ समय तक और वर्तमान रही तो इस धराधामसे तुम्हारा अस्तित्व ही एक दिन विलुप्त हो जायगा, इस बातको याद रखो !

नारी-हरण यद्यपि न्यूनाधिक संख्यामें देशमें सर्वत्र वर्तमान है, तथापि बङ्गालमें इसके प्रकोपने जो भीषण रूप धारण कर लिया है वह आतङ्कजनक है। बङ्गालके वीर केवल अबङ्गाली हिन्दुओंके विरुद्ध अपने जले दिलके फफोले फोड़नेमें ही अपना गौरव समझते हैं, पर उनकी स्त्रियां उनकी आंखोंके सामने उनके ही प्रान्तवासी मुसलमानों द्वारा भगायी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जाकर अत्यन्त बर्बर रूपसे धर्षिता हो रही हैं, तथापि इसके प्रतिकारकी सामर्थ्य उनमें नामको भी नहीं है। कोरे शब्दोंमें भी वे इस अत्याचारकी कड़ी आलोचना करनेसे डरते हैं। पर जब किसी अबङ्गाली हिन्दूसे किसी बङ्गाली महिलाका विवाह हो जाता है तो सारा बङ्गाल विरोधमें उठ खड़ा होता है। विगत वर्ष जब कलकत्तेके एक अनाथालयकी कुछ अनाथ बङ्गाली स्त्रियोंका विवाह अबङ्गाली हिन्दुओंके साथ कर दिया गया तो बङ्गालियोंके प्रायः प्रत्येक समाचार-पत्रने अत्यन्त असभ्य शब्दोंमें इस कार्रवाईका विरोध किया और "खोट्टादेर हाते बङ्गलक्खीदेर सतीत्व विक्रय" आदि शीर्षकों की भरमार दिखायी देने लगी! इस सङ्कीर्ण मनोवृत्तिका जो परिणाम होना चाहिए वही हो रहा है। समाचार-पत्रोंमें प्रतिदिन ऐसी बड़ी संख्यामें उस श्रेणीके मामले छपते रहते हैं कि उनमेंसे किसी एकका उदाहरण देनेसे विषयकी गुरुता नष्ट हो जायगी।

## हिन्दू अबलाओंपर मुसलमानोंके अत्याचार और उनके कारण

केवल बङ्गाल ही मुसलमानोंके अत्याचारकी केन्द्र-भूमि नहीं है। पञ्जाब और सिन्ध भी इस उपद्रवसे बचे नहीं हैं। सिन्धमें तो मुसलमान, हिन्दू स्त्रियोंको बहकानेमें इतने सफल हुए हैं कि उनमेंसे बहुत-सी धीरे-धीरे स्वेच्छासे मुसलमान धर्ममें दीक्षित होनेके लिए राजी हो जाती हैं; तथापि वहां भी ऐसी ही स्त्रियोंकी संख्या अधिक है जो बलपूर्वक मुसलमान बनायी जाती हैं। हिन्दू स्त्रियोंको भगाने और भ्रष्ट करनेमें मुसलमानोंको निरन्तर जो उत्साह तथा उत्तेजना प्राप्त हो रही है उसके अनेक कारण हैं। पर प्रथम और मुख्य कारण यह है कि किसी भी विधर्मीको हठपूर्वक अपने धर्ममें दीक्षित करना मुसलमान लोग अपना श्रेष्ठ 'कर्त्तव्य' समझते हैं। इसलिए हिन्दू स्त्रियोंपर अत्याचार तथा बलात्कार करनेमें वे कोई झिझक मालूम नहीं करते, क्योंकि इस उपायसे हमारे क्लीब समाजकी स्त्रियां सहजमें मुसलमान बनायी जा सकती हैं। मुसलमान जानते हैं कि हिन्दू लोग धर्षिता नारीको फिरसे अपने समाजमें लेना नहीं चाहते, इसलिए बलपूर्वक अबलाओंका सतीत्व-हरण ही वह अपने उद्देश्यका सर्वश्रेष्ठ साधन समझते हैं। मुसलिम समाज उस मुसलमान वीरको यथाशक्ति सहायता पहुंचानेके लिए सब समय तैयार रहता है जो हिन्दू अबलाओंको धर्षित और भ्रष्ट करनेका 'महाव्रत' ग्रहण कर लेता है। यहां तक देखा गया है कि मुसलमान मातायें भी अपने लड़कोंको इस 'सदुद्देश्य' के लिए उत्साहित करती हैं और उनके इस प्रकारके कुचक्रोंमें सहायक बनती हैं। इधर हमारे कलङ्कित समाजकी यह हालत है कि हम दूसरे धर्मावलम्बियोंको अपने समाजमें सम्मिलित करनेकी चेष्टाके बजाय स्वयं अपनी बलात् अपहृता तथा धर्षिता बहनोंको ही पुनः शुद्ध करके समाजमें लेना नहीं चाहते! यह आत्मघाती, नृशंसताद्योतक तथा क्लीब मनोवृत्ति जब तक वर्तमान रहेगी तब तक दलिता, निर्यातिता, अत्याचार-पीड़िता बहनोंके उद्धारका कोई उपाय नहीं किया जा सकता। आर्यसमाज इस सम्बन्धमें बड़ा प्रशंसनीय कार्य कर रहा है, यह बात हम पहले भी कई बार कह चुके हैं, पर इतने बड़े देशमें अकेला आर्यसमाज कितना कार्य कर सकता है!

इस सम्बन्धमें मुसलमानोंके उद्यम तथा उत्साहका दूसरा कारण यह है कि उन्हें मीठी-मीठी बातोंसे सरल-हृदय हिन्दुओंको अपने विश्वासमें लाकर उनके साथ घनिष्ठता बढ़ानेका 'आर्ट' मालूम है। इसका फल यह होता है कि वे धीरे-धीरे उनकी स्त्रियोंको भी फुसलानेमें समर्थ होते हैं तथा उनका सर्वनाश करते हैं। निम्न श्रेणीके लोगों ('हरिजन' नहीं) के साथ ही उनका आना-जाना अधिक रहता है; पर स्मरण रहे कि यह 'निम्न श्रेणी' हमारे समाजका एक बड़ा महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। इस विकट स्थितिको सुधारनेके लिए प्रथम उपाय हमें जो करना होगा वह यह है कि यदि हमें मुसलमानोंके हाथसे हिन्दू-जातिकी रक्षा करनी है तो पहले तथाकथित निम्नश्रेणीके लोगोंको ही सावधान करना होगा, इस प्रकारके सङ्कटोंसे त्राण पानेके उपाय उन्हें सुझाने होंगे और जब कभी वे इस प्रकारकी उलझनोंमें पड़ जायं तो उन्हें बचानेके लिए यथाशक्ति उनकी सहायता करनी होगी।

हालमें अमृतसरमें एक हिन्दू स्त्रीका सनसनीदार मामला चला है। इस स्त्रीका नाम शान्ति है। अदालतमें उसने अपना जो लोमहर्षक तथा आतङ्कजनक बयान दिया था वह नीचे दिया जाता है। उससे पाठकोंको मालूम होगा कि हमारी युक्ति कहां तक सही है;—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"पन्द्रह सालकी उम्रमें मैं स्वर्गवासी मेलारामके साथ ब्याही गयी थी। उससे एक लड़का और दो लड़कियां पैदा हुईं। विधवा होनेके बाद मैं बच्चों समेत अपने भाई रामचन्दके यहां रहने लगी। इसके बाद कर्मचन्दके साथ मेरा पुनर्विवाह हुआ। विवाहके दो-तीन मास बाद कर्मचन्द मुझे २०) रु० देकर किसी कामके लिए कुछ दिनोंके वास्ते बाहर चला गया। मैं उसकी आशासे अपने भाईके घर जाकर रहने लगी। मैं कपड़े सीनेका काम सीखना चाहती थी। कर्मचन्द जाते समय मेरे भाईसे कह गया कि किसी दर्जी या दर्जिनको इस कामके लिए नियुक्त कर देना। मेरे भाईने इस कामके लिए इस्माईलको रखा। उसने मुझे डेढ़ मास तक काम सिखाया। मैंने उसकी मजूरी उसे दे दी। इसके बाद वह मुझे सिलाईका काम देने लगा। सिलाईकी आधी मजूरी वह आप रखता था और आधी मुझे देता था। काम सीखनेके दिनों हमारे बीच किसी विशेष घनिष्ठताका सम्बन्ध स्थापित नहीं हुआ था।

"मेरी मां अपने मायके गयी हुई थी। उसने मुझे भी वहां बुला भेजा। मैं अपने भाईसे पूछकर जानेको तैयार हो गयी। उसी दिन ग्यारह बजेके करीब इस्माईल सिले कपड़े लेने आया। कपड़े तैयार नहीं थे। उसने आग्रह किया कि मैं कपड़े उसी दिन तैयार कर दूं। मैंने इनकार करते हुए कहा कि मैं बाहर जा रही हूं। उसने फिर कहा कि आज ही तैयार कर देने होंगे। उसने अढ़ाई-तीन बजे अपनी मांको मेरे पास कपड़े लेने भेज दिया। मैंने उससे स्टेशन जानेके लिए तांगा मंगवाया और तांगा आनेपर बच्चों समेत उसमें चढ़ गयी। इस्माईलकी मांने कहा कि शरीफपुरा तक मैं भी इसी तांगेमें चलूंगी। मैं राजी हो गयी। शरीफपुरा पहुंचनेपर उसने मुझे अपने घर तक चलनेका आग्रह किया और कहा कि मेरी पुत्रवधू भी घरपर है। मैं उसके साथ उतरकर गलीमें चली गयी। जरा देर बैठनेके बाद बुढ़िया यह कहकर बाहर चली गयी कि मैं अपनी पतोहूको बुला लाती हूं। उसके बाहर जाते ही महाजा और रमजान अन्दर आये और उन्होंने कुण्डा बन्द कर दिया। मैं उनकी यह हरकत देखकर उठी और बाहर जाना चाहा। इसपर इस्माईलने मेरी बांह पकड़ ली और रमजानने मेरा मुंह घोंट दिया। अन्दरकी कोठरीमें ले जाकर उन्होंने मुझे पीटा। मेरी आठ चूड़ियां, जो सोनेकी थीं, उसने उतार लीं। एक जोड़ी कांटे और एक अंगूठी भी छीन ली। इसके बाद इस्माईलने कैंचीसे मेरा अधोवस्त्र काटकर मुझपर पाशविक अत्याचार किया। तत्पश्चात् रमजानने भी वैसा ही किया। फिर उन्होंने मुझे छुरियां दिखाकर धमकी दी कि यदि जरा भी शोर मचाया तो बच्चों-समेत मार दी जाओगी। बच्चे भी मुझसे अलग रखे गये। चार-पांच दिन तक मैं उनके लिए रोती रही। एक दिन इस्माईलने कहा कि तुम्हारे बच्चे लायलपुरमें हैं, वहां चलो तो मिल जायंगे। लायलपुर पहुंचकर मैंने बच्चे मांगे तो मुझे कहा गया कि अदालतमें चलकर दरख्वास्त दो कि मैं खुशीसे मुसलमान बनी हूं, तब बच्चोंको मिला देंगे, नहीं तो उन्हें जानसे मार डाला जायगा। बादमें एक कागजपर बलपूर्वक मेरा अंगूठा लगवा लिया गया। मुझे पता नहीं कि उसमें क्या लिखा था। इसके बाद मुझे फिर अमृतसरमें ले जाकर मुझसे इस्माईलसे विवाह करनेके लिए कहा गया। एक मौलवी बगलमें पुस्तक दबाकर आया। मैंने रोकर कहा कि मेरे दो मासका गर्भ है, और मेरा बलपूर्वक निकाह कराया जा रहा है। मौलवीने कलमा पढ़नेसे इनकार कर दिया। इसके बाद मुझपर मारपीट की गयी और दूसरे मौलवीने आकर मेरा अंगूठा एक वेलदार कागजपर लगवा लिया।

"मेरे बच्चे मुझे दो मास बाद मिले। मैंने एक फेरीवाले द्वारा भाई रामचन्दको सन्देशा भेजा कि मैं बहुत तङ्ग हूं, मुझे आकर ले जाओ। दूसरे दिन जब इस्माईल दुकानपर और उसकी मां एक पड़ोसीके घर गयी हुई थी तो मेरा भाई तांगेपर आया। मैं मौका पाकर बच्चों-सहित उसपर सवार हो गयी। भाईके साथ मैं लाहौर चली गयी। वहां आर्यसमाजमें मेरी शुद्धि हुई। इस्माईल मेरे साथ बराबर व्यभिचार करता रहा और मुझे चाकूसे धमकी दिखाता रहा। उसने एक दिन मुझे बलात् मांस खिलाया, जिसे खाकर मुझे फौरन कै हो गयी। मैं अब गर्भवती हूं और वह गर्भ कर्मचन्दसे है।" जिरहके उत्तरमें शान्तिने कहा कि "मैंने इस्माईलको अपना विश्वासपात्र बना लिया था ताकि निकल भागनेका मौका मिले। मैं अपने भाई रामचन्द या पति कर्मचन्दके साथ रहना चाहती हूं। मुझे इस्लामपर न पहले कभी विश्वास था और न अब है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक हिन्दू-स्त्रीका किसी भी मुसलमानसे किसी भी अंशमें घनिष्ठता स्थापित करनेका क्या फल होता है, ऊपरके बयानसे इस बातका पता भलीभांति लग जायगा। इस घटनासे 'समाजपतियों' की आंखें खुलनी चाहिए।

## हरिजनोद्धार और कुटिलमति कट्टरपन्थी

हरिजनोद्धारके सम्बन्धमें देशव्यापी उत्साह देखते हुए भी कट्टरपन्थी अपनी सङ्कीर्णता तथा कुटिलतासे बाज नहीं आते। शहरोंमें इन दुर्वृत्तोंकी कुछ नहीं चलती। पर देशके दुर्भाग्यसे हमारी ग्रामीण जनता अनेक युगोंसे प्रचलित कुसंस्कारोंको त्यागनेके लिए अभी तक पूर्णतया समर्थ नहीं हो सकी है। और ग्रामीण जनता ही देशकी वास्तविक जनता है। इसमें सन्देह नहीं कि ग्रामोंमें बहुतसे उत्साही युवक छुआछूतका भूत भगानेमें कृतोद्यम हो रहे हैं; तथापि उन्हें विशेष सफलता मिलते हुए हम नहीं देखते। कारण यह कि अभी तक इस सम्बन्धमें जो देशव्यापी जागरण हम देख रहे हैं वह वास्तवमें केवल सुशिक्षित जनतामें ही सीमाबद्ध है। अशिक्षित अथवा अर्द्धशिक्षित जनता अभी तक कट्टरपन्थियोंकी जारशाहीका पूर्ण विरोध करनेके लिए तैयार नहीं हुई है। जनताके धर्मभयका नाजायज फायदा उठाकर कट्टरपन्थी अपनी नीचताको किस हद तक पहुंचा सकते हैं, यह देखकर कभी-कभी रोमाञ्च हो आता है। इन क्रूर धर्मध्वजियोंमें मनुष्यता नामको भी नहीं पायी जाती; ये घोर नृशंस, अत्याचारी तथा बर्बर हैं। बाह्याचार, आडम्बर तथा परम्परागत सामाजिक प्रथाओंको धर्मका प्रधान अङ्ग मानकर ये मूर्ख दया, प्रेम और उदारताको अपने क्रोड़से बहिष्कृत करके निरपराधोंपर अभावनीय अन्यायाचरण करनेमें नहीं हिचकिचाते। घृणा और प्रतिहिंसा ही इनके 'धर्म'का मूल सिद्धान्त है। जो लोग उन्हींकी तरह कट्टर (कु) धर्मी नहीं हैं, और उनके 'ईश्वरदत्त' धार्मिक शासनाधिकारके विरुद्ध जरा-सा भी सिर उठाते हैं, उनका ये पूर्ण विनाश करनेपर कटिबद्ध हो जाते हैं। ग्रामोंमें जो उदारचेता समाज-सुधारक हरिजनोत्थानके लिए जी-जानसे चेष्टा करनेमें लगे हैं उन्हें ये कुटिलपन्थी एक घड़ी भी चैनकी सांस नहीं लेने देते।

हालमें मुजफ्फरपुरसे कट्टरपन्थियोंकी करतूतका एक समाचार आया है जो अत्यन्त रोमाञ्चकर तथा दिल दहलानेवाला है। घटना इस प्रकार है—शहरसे आठ-दस कोसकी दूरीपर बलुआंहा एक ग्राम है, जहां एक सम्मिलित भूमिहार-परिवार है। महात्मा गांधीके इक्कीस दिनके उपवास-कालमें हरिजन आन्दोलनकी लहरमें आकर इस परिवारके अधिनायकोंने अपना कुंआ हरिजनोंके लिए खोल दिया। परिणाम यह हुआ कि गांवके सभी लोग इनके विरुद्ध हो गये और इनका सामूहिक बहिष्कार करने लगे। इनके खेतपर कोई भी काम करनेवाला नहीं रहा, यहां तक कि बहुतसे हरिजनोंने भी विरोधियोंके उकसानेपर उग्ररूप धारण कर लिया। इनके परिवारमें किसीके गर्भ था। प्रसवके दिन कुछ समय पहले एक चमारिनको बुलाया गया। पहले उसने इनकार किया, पर आर्थिक प्रलोभन देनेपर वह राजी हो गयी। चमारोंको जब पता लगा कि चमारिन इनके यहां गयी है तो वे दौड़े हुए आये और समाजका भय दिखाकर उसे वापस ले आये। परिवारके लोगोंके लाख प्रार्थना करनेपर भी किसीका हृदय नहीं पसीजा। परिणाम यह हुआ कि बच्चा जनमते ही कालका ग्रास बन गया। बालकका क्रियाकर्म समाप्त कर इन लोगोंने सामाजिक प्रथाके अनुसार नाईको बाल, नाखून आदि काटनेके लिए बुलाया, पर एक भी नाई आनेके लिए तैयार नहीं हुआ। आंसू सूखने भी न पाये थे कि इस परिवारके श्री शिवनन्दन सिंहको चेचक निकल आयी। गांवमें कहा जाने लगा कि यह हरिजन-सेवाका फल मिल रहा है! रोगके कारण उस उत्साही नवयुवक समाज-सुधारकके प्राण छूट गये। लाश उठानेके लिए जातिवालोंको बुलाया गया, किन्तु कोई भी न आया। लाचार इस परिवारके केवल तीन ही व्यक्ति शवको उठाकर श्मशान ले गये।

कट्टरपन्थियोंके इस प्रकारके पाशविक व्यवहारका विरोध करनेकी भी शक्ति यदि हम लोगोंमें न हुई, और हमारे प्राणोंमें उत्तेजनाका सञ्चार न हुआ तो समझ लेना चाहिए कि हमारी कापुरुषता लाइलाज है।

## आत्महत्याओंकी वृद्धिके कारण

देशमें दिन-दिन आत्महत्याओंकी संख्या बढ़ती जाती है। ऐसी द्रुतगतिसे इस घातक प्रवृत्तिका प्रसार बढ़ रहा है कि देखकर आश्चर्य होता है। इससे यह न समझना चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि सब समय आत्महत्याके मूलकारण गम्भीर तथा मार्मिक होते हैं। अधिकांश कारण हमें अत्यन्त तुच्छ तथा उपेक्षणीय मालूम होते हैं। तथापि देशके युवक-युवतियोंकी वर्तमान मानसिक स्थिति ऐसी नाजुक हो उठी है कि क्षुद्रसे क्षुद्र कारण भी किसी विशेष अवसरपर उन्हें आत्महत्याके लिए प्रवृत्त कर देता है। जीवनके पोषणके साधन जितने ही घटते जाते हैं, हमारे युवक-युवतियोंकी भावुकता भी उसी परिमाणमें बढ़ती जाती है। इसका एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कारण मालूम होता है, जिसकी आलोचना हमारे वर्तमान विषय-क्षेत्रके बाहर है। इस भावुकताका परिणाम यह दिखायी देता है कि हमारे युवक और हमारी युवतियां अवैध प्रेमके मार्गमें बिना किसी पूर्व विचारके पांव आगेको बढ़ा देते हैं और जब यह प्रेम असफल सिद्ध हो जाता है (और ऐसा होनेकी सम्भावना ही हमारे समाजमें अधिक है) तो वे लोग बिना कुछ सोचे-विचारे फौरन आत्महत्या कर लेते हैं। हम इधर कुछ महीनोंसे इस बातपर गौर कर रहे हैं कि असफल प्रेम-जनित आत्महत्याओंकी संख्या दिन-दिन बेतरह बढ़ती जाती है। इसके अतिरिक्त, यदि इस प्रकारका अवैध प्रेम सफल भी हो जाता है तो भी उसका परिणाम बहुधा घातक सिद्ध होता है। प्रेमी अपनी प्रेमिकामें यदि किञ्चिन्मात्र भी भाव-परिवर्तन देखता है तो उसकी हत्या करने तकमें नहीं हिचकता, अथवा स्वयं शोकके कारण आत्म-घात कर लेता है। ऐसे व्यक्तिकी स्त्री भी पतिको अपने प्रति विमुख देखकर बहुधा आत्महत्या कर लेती है। कुछ महीने पहले समाचार-पत्रोंमें खबर छपी थी कि दिल्लीमें एक खत्री युवकका एक स्त्रीके साथ अवैध प्रणय हो जानेका परिणाम यह हुआ कि उसकी स्त्रीके साथ ही उसकी प्रेमिकाने भी विष खा लिया और अन्तको उस युवकने भी आत्म-हत्या कर ली। शाहजहांपुरमें एक ब्राह्मण स्त्रीने इसलिए आत्महत्या कर ली कि उसका विवाह उस व्यक्तिके साथ न हुआ जिसे वह चाहती थी। बम्बईके एक डाक्टरकी स्त्री पतिसे न बननेके कारण शरीर-में केरासिन तेल लगाकर जलकर मर गयी। कलकत्तेमें एक हिन्दू स्त्री एक मुसलमान नवयुवकके प्रति इस कदर आसक्त हो गयी कि उसे प्राप्त करनेमें असफल होनेके कारण उस (स्त्री) ने आत्म-हत्या कर ली। बम्बईमें भी हालमें एक ऐसी ही घटना हुई थी। एक पार्सी युवतीने अपने इच्छित युवकके प्रेममें असफल होनेके कारण विष खा लिया। कुछ दिन हुए, पत्रोंमें एक अद्भुत समाचार छपा था। एक स्त्रीका किसी पुरुषसे प्रेम हो गया। पर किसी सामाजिक अड़चनके कारण उन दोनोंका विवाह न हो सका। निराश होकर अन्तको दोनोंने यह निश्चय किया कि पहले स्त्रीका प्रेमिक उसे मार डालेगा, फिर स्वयं फांसीमें लटक कर मर जायगा। उसने यही किया। इधर पञ्जाबके नवयुवकोंमें प्रेम-जनित भावुकताका रोग सबसे अधिक बढ़ता हुआ दिखायी देता है, और इस प्रकारकी आत्महत्यायें वहीं सबसे अधिक होती हैं। अभी हालमें लाहौरमें एक विवाहित हिन्दू-युवकने केवल इसी बातपर आत्महत्या कर ली कि उसकी स्त्रीने उसकी प्रेमिका-का अपमान किया था! अवैध प्रणयका कुपरिणाम हमारे समाजमें इस हद तक बढ़ गया है कि इधर दो-तीन मामले ऐसे हो गये हैं जिनमें भले घरोंकी हिन्दू पत्नियोंने अपने प्रेमिकोंको सहायतासे अपने पतियोंकी हत्या कर डाली। ऐसी भी घटनायें घटित हुई हैं कि पतिको पत्नीके दुश्चरित्रपर सन्देह हो जानेसे पत्नीको अनुताप तथा लज्जाके कारण आत्महत्या करके छुटकारा मिला है। हालमें अमृतसरकी एक स्त्रीके सम्बन्धमें यह समाचार छपा है कि एक रात देरसे घर लौटी। उसके पतिने उसके चाल-चलनपर सन्देह किया। दूसरे दिन जब पति बाहर गया हुआ था तो उसने अफीम निगल ली और मर गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ऊपरकी बातोंसे यह स्पष्ट है कि अवैध प्रेमकी वृद्धिके साथ-साथ आत्महत्याका भी प्रकोप बढ़ रहा है। अब प्रश्न यह है कि अवैध प्रेमकी वृद्धि क्यों हो रही है? इसका एक मोटा कारण तो यह बतलाया जा सकता है कि हमारे युवक-युवतियोंका वैवाहिक जीवन सुखकर नहीं होता। उन्हें अपनी रुचिके अनुकूल पति अथवा पत्नीको चुननेकी सुविधा किसी अंशमें भी प्राप्त नहीं है। फल-स्वरूप पति-पत्नीमें मेल नहीं होता और वे एक दूसरेको भार-स्वरूप समझने लगाते हैं। यदि उन्हें स्वेच्छासे अपना-अपना जोड़ चुन लेनेकी सुविधा प्राप्त हो जाय तो अवैध प्रेमके कलङ्कसे समाज बहुत कुछ अंशमें मुक्त हो जाय, और फलतः आत्महत्याका भी एक बहुत बड़ा कारण दूर हो सकता है। पर समाजके नायकोंका ध्यान अभी इस परम महत्त्वपूर्ण तथ्यकी ओर जाते नहीं दीखता। उन लोगोंका अभी तक यही ख्याल है कि युवक-युवतियोंको इस प्रकारकी स्वतन्त्रता दी जानेसे समाजमें अव्यवस्था तथा उच्छृङ्खलता फैल जायगी। पर यह भ्रम है। इसके अतिरिक्त, वर्तमान भयावह स्थितिसे तो उच्छृङ्खलता भी कहीं बेहतर होगी।

HUKUMCHAND INSURANCE COMPANY, Ltd,

( Incorporated in India )

आग ( Fire ) पानी ( Marine )

मोटर दुर्घटना ( Motor Accident )

श्रमजीवी क्षतिपूर्ति ( Workmen's Compensation )

आदिके लिये बीमा करा लीजिये।

मैनेजिंग एजेण्ट्स—

सर सरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड कम्पनी

३० क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

Phone No. 4606 Calcutta. Telephone :- "Ultimate'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## वेश्यावृत्ति-निरोध

वेश्यावृत्तिके प्रश्नपर इधर जनताका ध्यान विशेष रूपसे आकर्षित हुआ दिखायी देता है। वेश्यावृत्ति समाजकी सत्ताके लिए आवश्यक है या नहीं, इस विषयपर बहुत दिनों-से वाद-विवाद चल रहा है। कुछ लोगोंका ख्याल है कि वेश्याओंके बिना समाजकी प्रगति सुनियमित रूपसे चल नहीं सकती। उनकी रायमें कामुकोंकी उच्छृङ्खलतासे समाजको सुरक्षित रखनेके लिए वेश्याओंका होना बहुत आवश्यक है। पर इसके विपरीत भी बहुतसे लोगोंका मत है, जो वेश्याओंको समाजका कलङ्क समझते हैं, उनके अस्तित्वको बड़ा घातक बतलाते हैं। युक्त प्रान्तीय कौन्सिल-में पिछले वर्ष श्री अहमद शाहने वेश्यावृत्ति-निरोधके सम्बन्धमें एक बिल पेश किया था। कौन्सिलके अधिकांश सदस्योंने उसका विरोध किया था, इसलिए वह पास न हो सका। इस वर्ष शाह महाशयने फिर अपने उसी उद्देश्यके बिलको कौन्सिलमें पेश किया, पर इस बार भी अधिकांश सदस्योंने इसका विरोध किया! केवल विरोध ही नहीं, उन लोगोंने वेश्यावृत्तिका पूर्ण समर्थन किया! बिलके विरोधियोंमें श्री सी० वाई० चिन्तामणि सबसे प्रधान थे। सामाजिक क्रान्तिके इस युगमें, जब कि स्त्रियां समानाधि-कारके लिए लड़ रही हैं और अपनी स्वतन्त्र सत्ताकी प्रतिष्ठा-के लिए जी-जानसे लगी हैं, आजन्म पाशविक दासताके बन्धनमें बंधी हुई अभागिनी पतिता बहनोंको चिर-अनन्त तक उसी शृङ्खलामें बद्ध रहनेके लिए बाध्य करना पुरुषोंकी घोर स्वार्थ-बुद्धि तथा अविवेचनाका परिचायक है। इस पाशविक दासतासे यदि वेश्याओंकी मुक्ति हो जाय तो इसमें हमारे समाजके अधिनायक कौनसा अनर्थ देखते हैं? यदि वे स्वतन्त्र स्त्रियोंकी तरह प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताने लगें तो क्या इससे समाज रसातलको चला जायगा? यदि कुछ निरपराधिनी, अनाथा स्त्रियोंके शरीर तथा आत्माके सम्पूर्ण विनाशके बिना समाजकी रक्षा नहीं हो सकती तो उस समाजके ध्वंस होनेमें भी कोई हानि नहीं है। कौन्सिलमें जिन सदस्योंने वेश्यावृत्ति-निरोधके बिलका विरोध किया था उनकी दलील यही थी कि वेश्यालयोंके निराकरणसे समाजमें व्यभिचार बढ़ेगा। एक महाशयने तो यहां तक कहा कि वेश्यावृत्ति सभ्यताका परिणाम है, बर्बरताका नहीं! इन सभ्यताभिमानियोंने केवल वेश्यावृत्तिको ही सभ्यताका श्रेष्ठ आदर्श समझ लिया है, सभ्यताके अन्यान्य अनुकरणीय निदर्शनोंके प्रति भले ही वे विमुख हों! क्या ये लोग वेश्याओंके प्राणोंकी गतिको अपने प्राणोंसे भिन्न समझते हैं? क्या वे उन्हें आत्माहीन, जड़ वस्तु समझते हैं? तब क्यों प्रतिबार उनके उद्धारके मार्गमें रोड़े अटकाये जाते हैं? क्यों उन्हें समाजकी अन्यान्य स्त्रियोंकी तरह सम्मानपूर्ण जीवन यापन करने नहीं दिया जाता? क्यों उनके सिरोंपर चिर-कलङ्कका टीका लगा दिया जाता है?

अभी तो स्थिति ऐसी है कि स्वयं वेश्यायें वेश्यालयोंका निराकरण नहीं चाहतीं। कारण एक तो यह है कि वे जानती हैं कि वेश्यालयोंके टूट जानेपर उनका एकमात्र आश्रयस्थल जाता रहेगा, क्योंकि समाज उन्हें कभी ग्रहण करनेको राजी न होगा; दूसरा यह है कि कुटनियां उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मनमें यह विश्वास जमा देती हैं कि वेश्यालयोंके बराबर सुख संसारमें अन्यत्र नहीं है। इसलिए इस बातकी आवश्यकता है कि वेश्यालयोंको हटाकर उनके स्थानमें ऐसी संस्थाओंकी स्थापना की जानी चाहिए जिनमें पतिता बहनोंको सम्मानपूर्ण उपायोंसे जीविका प्राप्त करनेके साधन सिखाये जायं। इस सम्बन्धमें सरकार समाजकी यथेष्ट सहायता कर सकती है। ऐसा होनेसे समाज धीरे-धीरे वेश्याओंको सम्माननीया नारियोंके रूपमें देखने लगेगा और उनके प्रति उसी प्रकारका व्यवहार करने लगेगा जैसा

श्रीमती आत्मादेवी पञ्जाबकी एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय महिला हैं। विगत वर्ष आपको एक वर्षकी कैदकी सजा दी गयी थी। आपको अपने साथ अपने बच्चोंको भी जेलमें ले जानेकी अनुमति मिल गयी। हालमें आप जेलसे रिहा हो गयी हैं।

भद्रकुलोंकी महिलाओंके साथ किया जाता है। इस नैतिक सम्मानका लोभ वर्तमान पतितावस्थाके आर्थिक लाभ तथा विलासिताके मोहसे उन्हें छुटकारा देगा। इस महत् उद्देश्यके साधनके लिए चाहे कैसी भी हानि समाजको उठानी पड़े, उसे सहन करना उसका कर्त्तव्य है।

हम फिर भी आशा करते हैं कि युक्त प्रान्तीय कौन्सिलके मेम्बरोंकी आंखें खुलेंगी, और फिर अगले वर्ष वे वेश्यावृत्ति-निरोधके प्रश्नपर विवेकके साथ विचार करेंगे। आश्चर्यकी बात यह है कि एक मुसलमान सदस्यने यह बिल पेश किया और हिन्दू सदस्योंने इसका विरोध किया! यह बात भी विचार करने योग्य है कि कौन्सिलकी एकमात्र स्त्री-सदस्या श्रीमती कैलाश श्रीवास्तवने बिलका समर्थन करते हुए कहा कि वेश्यावृत्ति स्त्री-समाजके लिए बहुत बड़ा कलङ्क है, और उसे रोककर अभागिनी स्त्रियोंकी रक्षा करना समाज तथा सरकारका कर्तव्य है। स्वार्थ-बुद्धि पुरुष यह बात नहीं समझ सकते कि इस कलङ्कके अपमानसे स्त्री-जातिका मर्म किस प्रकार विद्ध होता है।

## महिला विश्वविद्यालय और महिला-जागरण

हमारी महिलाओंकी नवीन जागृतिने देशमें नवीन विचारोंकी क्रान्तिकी एक लहर उत्पन्न कर दी है। सब लोगोंका ध्यान इस अभिनूतन समस्याकी ओर आकर्षित हुआ है। रुढ़िपन्थियोंको यह भय हो रहा है कि शताब्दियों-से निश्चिन्त सोयी हुई हमारी नारियोंके इस आकस्मिक जागरणसे समाजमें घोर विशृङ्खला तथा अनाचार फैलनेकी आशङ्का है। किन्तु परिवर्तनवादी तरुण-सम्प्रदाय इस नयी परिस्थितिसे परम सन्तुष्ट है। संसारकी उन्नतिशील प्रगतिसे आज तक हमारी बहनें बिलकुल अपरिचित थीं, अब अपनी अन्ध-गुफाओंसे जब वे बाहर झांकने लगी हैं तो उन्हें मालूम होने लगा है कि उन्हें सभ्य जगत्के पूर्ण प्रकाशमें आकर अपनी शोचनीय स्थितिपर विचार करना होगा और उसे सुधारना होगा। उन्हींकी अक्लान्त चेष्टाका यह फल है कि अब वे दिन-दिन पुरुषोंके साथ ही सब क्षेत्रोंमें समान-अधिकारोंको प्राप्त करनेके लिए आगे बढ़ती चली जाती हैं, और बहुत-कुछ अंशमें उन्होंने सफलता भी प्राप्त कर ली है। पूनाके महिला-विश्वविद्यालयमें (जो भारतमें महिलाओंका एकमात्र विश्वविद्यालय है) श्रीमती राधाबाई सुब्बारोयनने कानवोकेशनके अवसरपर हमारी महिलाओंकी वर्तमान जागृतिके सम्बन्धमें बहुत सुन्दर भाषण दिया है, जिसका सारांश नीचे दिया जाता है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"वर्तमान भारत स्त्रियोंको उदारताकी दृष्टिसे देखने लगा है। हमारे विश्वविद्यालयोंमें पुरुषों और स्त्रियोंके बीच पूर्ण समानता वर्तमान है। दोनोंके अध्ययन-योग्य विषयोंमें कोई भेद नहीं है, डिग्रियोंमें कोई अन्तर नहीं है और विश्व-विद्यालयोंके नौकरी-विभागमें जिन पदोंपर पुरुष नियुक्त किये जाते हैं, उनमें स्त्रियोंको भी पूरा अधिकार दिया गया है। मद्रास विश्वविद्यालयके प्रत्येक विभागमें (सिण्डिकेटमें भी) स्त्रियां विभिन्न पदोंमें नियुक्त हैं। मेरा विश्वास है, यूरोपमें भी ऐसे विश्वविद्यालय अधिक नहीं हैं जो इस हद तक आगे बढ़ गये हों! हमारी महिलायें म्युनिसिपल तथा

श्रीमती सरलादेवी
आप उड़ीसाकी पहली स्त्री हैं जो वहांके
एक बैङ्ककी डाइरेक्टर हुई हैं।

स्थानीय बोर्डोंमें वोट प्राप्त करके पुरुषोंके साथ ही समान अधिकारके सूत्रमें काम कर रही हैं। प्रायः प्रत्येक प्रान्तमें स्त्रियोंको कौन्सिल तथा असेम्बलीके लिए वोट प्राप्त करने-का अधिकार है। केवल कौन्सिल आफ स्टेट ही एकमात्र ऐसी संस्था है जिसमें स्त्रियोंको प्रवेशाधिकार नहीं है; पर आशा की जाती है कि शीघ्र उसके लिए भी स्त्रियोंको अधिकार मिल जायगा। हमारे देशमें स्त्री-आन्दोलन अभी प्रारम्भावस्थामें होनेपर भी उसने यथेष्ट उन्नति कर ली है। हमारे पुरुष भी अब यह बात समझने लगे हैं कि स्त्रियोंको केवल घरके भीतर सड़ने नहीं देना होगा; उन्हें शिक्षा तथा ज्ञानके प्रकाशमें लाना होगा। बीस वर्ष पहले देशकी यह हालत थी कि महिलाओंके लिए कहीं एक भी कालेज नहीं था। पर इस समय मद्रासमें पुरुष तथा स्त्री-छात्रोंके सम्मिलित कालेजोंके अतिरिक्त स्त्रियोंके लिए बहुतसे अलग कालेज भी हैं। बम्बई यूनिवर्सिटीमें स्त्रियोंके लिए कोई अलग कालेज नहीं है, सन्देह नहीं; पर बम्बई प्रान्तमें स्त्रियोंका एक निजी विश्वविद्यालय है। स्त्रियोंका अलग विश्वविद्यालय भारतमें अन्यत्र कहीं नहीं है। कुछ भी हो, अन्यान्य प्रान्तोंमें भी स्त्री-शिक्षाने जोर पकड़ा है। बहुत लोगोंकी यह धारणा है कि पुरुषों और स्त्रियोंके अध्ययनके लिए समान विषय नियत नहीं होने चाहिए, और लड़कियों-को ऐसे विषयोंकी शिक्षा विशेष रूपसे दी जानी चाहिए जिससे उन्हें भावी पत्नी तथा माताके कर्तव्योंके सम्बन्धमें उपयोगी ज्ञान प्राप्त हो सके। मेरी रायमें शिक्षामें इस प्रकारका प्रभेद स्कूलोंकी प्रारम्भिक शिक्षामें सम्भव हो सकता है, पर कालेजोंमें नहीं। पर आप लोगोंके महिला विश्वविद्यालयमें यह सम्भव हो सकता है। कालेजोंमें लड़-कियोंको मातृत्व-सम्बन्धी शिक्षाका दिया जाना बहुत आवश्यक है। हमारे देशमें गार्हस्थ्य जीवनका महत्त्व बहुत बड़ा माना जाता है। भारतीय परिवारमें माताका स्थान बहुत ऊंचा है, और उसका प्रभाव भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसलिए स्त्री-शिक्षाके सम्बन्धमें इस बातका ख्याल रखना बहुत जरूरी है कि हमारी महिलायें परम्परागत जातीय संस्कारोंको न भुला दें, और साथ ही संसारकी वर्तमान प्रगतिमें जो भाव उनकी मानसिक तथा नैतिक उन्नतिके लिए हितकारी हैं, उन्हें भी ग्रहण करें। प्राचीन तथा अर्वाचीन विचारोंके उपयुक्त सम्मिश्रणसे ही हमारी महिलायें वास्तविक उन्नतिके पथमें अग्रसर हो सकती हैं।"

## रङ्गमञ्चमें भद्र महिलाओंका प्रवेश

सिनेमाका प्रचलन भारतमें दिन-दिन बढ़ता चला जाता है। जबसे टाकीका प्रचार हुआ है तबसे सिनेमाकी बहुत-सी नयी कम्पनियां खुल गयी हैं, और खुलती जा रही हैं। इन कम्पनियोंमें नित्य नये अभिनेता तथा अभिनेत्रियां भरती



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



होती जा रही हैं। सिनेमाकी लोकप्रियता इतनी अधिक बढ़ जानेसे कुछ शिक्षिता तथा कुलीन घरानोंकी महिलाओंके मनमें भी यह लालसा उत्पन्न होती हुई दिखायी देने लगी है कि वे भी सिनेमा-कम्पनियोंमें भरती होकर अपने अभिनय द्वारा 'ख्याति' उपार्जन करें।

अब प्रश्न यह है कि भद्र महिलाओंका सिनेमा, रङ्गालय तथा अन्य सार्वजनिक अभिनय-शालाओंमें प्रवेश करना उचित है या नहीं? महिला-संसारमें क्रान्तिकी लहर उत्पन्न होनेके साथ-ही-साथ यह भावना भी हमारी बहुत-सी महिलाओंके मनमें दृढ़ होती चली जाती है कि पूर्ण रूपसे पाश्चात्य महिलाओंका अनुकरण करनेमें ही उनका त्राण है। यह धारणा कैसी भ्रान्त तथा अनर्थमूलक है, इस सम्बन्धमें हम फिर कभी लिखेंगे। इस समय हम केवल यही जतला देना पर्याप्त समझते हैं कि पाश्चात्य महिलायें भी अभी इतनी दूर तक आगे नहीं बढ़ी हैं कि वेझिझक रङ्गालयमें प्रवेश करनेकी धृष्टता कर सकें। इसमें सन्देह नहीं कि वहां बहुत-सी कुलीन स्त्रियां सिनेमा तथा थियेटरोंमें अभिनय करने लगी हैं, पर वहांका समाज अभी तक ऐसी स्त्रियोंको हिकारतकी ही नजरसे देखता है, भले ही उनके कला-कौशलकी प्रशंसा करे। भारतकी तो स्थिति ही दूसरी है। स्त्रीके गृहस्थ-जीवनको ही हमारे यहां महत्त्व दिया जाता है; इसलिए नहीं कि इस प्रकारके जीवनसे वह एक विशेष बन्धनमें बंधी रह जाय, बल्कि इसलिए कि मातृत्वमें ही उसके जीवनकी सार्थकता है। नवीन जागृतिके परिणामस्वरूप हमारी महिलायें यह चाहने लगी हैं कि मातृत्वके साथ-ही-साथ वे यथेष्ट स्वतन्त्रताका भोग करें। उनकी इस इच्छासे हम पूर्णतया सहमत हैं। मातृत्व साधारण सांसारिक स्वतन्त्रतामें बाधा नहीं डालता। पर यदि वह स्वतन्त्रता इस हद तक चली जाय कि उच्छृङ्खलताका रूप धारण कर ले तो वह अवश्य ही आलोच्य हो जाती है।

भद्र महिलायें यदि सङ्गीत, नृत्य, अभिनय आदि कलाओंको अपनाना चाहें तो उसमें हम कोई हानि नहीं देखते। भारतमें प्राचीन कालसे ही स्त्रियोंकी इस प्रकारकी ललितकलाओंकी शिक्षाकी प्रथा चली आती है। महाभारतमें हम देखते हैं कि विराट् राजाकी लड़की उत्तराको अर्जुन नृत्यकला सिखाया करते थे। यही उत्तरा बादमें अर्जुनकी पुत्रवधू बनी थी। कालिदासके काव्योंमें स्थान-स्थानमें कुलवधुओंके नृत्यका उल्लेख पाया जाता है। वर्तमान युगमें विश्वकवि रवीन्द्रनाथने भी अपने आश्रमकी लड़कियोंको नृत्य और अभिनयके लिए उत्साहित तथा प्रेरित किया है। उनकी पुत्री तथा पुत्रवधू भी रङ्गमञ्चमें अभिनय करती हैं। पर हमारी पेशेवर सिनेमा तथा थियेट्रिकल कम्पनियोंमें और रवीन्द्रनाथके 'इण्टेलेकचुअल एमेटर कम्पनी' में (यदि कविवरके अभिनेतृ-मण्डलको यह नाम दिया जा सकता है तो) जमीन-आसमानका अन्तर है। पेशेवर कम्पनियोंमें अर्द्धशिक्षित बाजारू स्त्री-पुरुषोंको ही भरती किया जाता

डा० मैत्रेयी बोस

आप कलकत्तेके चित्तरञ्जन सेवासदनमें स्त्रियोंके अस्पतालकी हाउस सर्जन हैं। आपको जर्मनीके एक विश्वविद्यालयसे एम० डी० की उपाधि मिली है।

है, और यह open secret है कि उनका भीतरी जीवन अत्यन्त घृणित, निन्दनीय तथा पतित होता है। वे लोग अभिनयके महत् उद्देश्यको नहीं समझते, और न समझनेकी उन्हें कोई आवश्यकता है। जीविकोपार्जनके लिए वे रङ्गमञ्चमें प्रवेश करते हैं और उच्छृङ्खल कामाचार द्वारा उनका recreation (मनोविनोद) होता है। पर रवीन्द्रनाथके 'इण्टेलेकचुअल' (मानसिक संस्कृति-परायण) अभिनेतृ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दलका उद्देश्य ही बिलकुल दूसरा है। कलाके आध्यात्मिक मर्मसे वे लोग भली भांति परिचित रहते हैं, और आत्म-संस्कृतिके लिए ही वे अभिनय-कलाके विकासके प्रति सचेष्ट हैं। इस प्रकारकी उच्च संस्कृतिके अभिनेताओंके साथ, महत उद्देश्यको सामने रखकर, यदि हमारी महिलायें अभिनय करें तो कोई लज्जाका विषय न होकर उनके लिए गौरवकी ही बात होगी। पर पेशेवर कम्पनियोंमें भरती होकर अशिक्षित अथवा अर्द्धशिक्षित नटों तथा भांड़ोंके साथ सम्मिलित होनेकी जो इच्छा हमारी कुछ भद्र महिलाओंके मनमें उत्पन्न हुई है वह घोर निन्दनीय और उनके अज्ञता-जनित मोहका परिचायक है। अपनी इस प्रकारकी जीवन-चर्यासे वे न तो समाजका कुछ हित कर सकती हैं और न अपनी

श्रीमती अरुणा आसफअली
आप स्त्रियोंके मताधिकारके लिए निरन्तर प्रचार कर रही हैं।

संस्कृतिकी उन्नतिमें ही सहायक हो सकती हैं। कुछ दिन हुए, पत्रोंमें यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि कुमारी श्यामा जुत्शी, जो सत्याग्रह-आन्दोलनमें प्रसिद्धि पा चुकी थीं, बम्बईके एजेण्टा सिनेटोनके पहले बोलते फिल्म 'नूरे-हरम' में नायिकाके पार्टका अभिनय कर रही हैं। हमें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि उनके पिता बम्बई आकर उन्हें अपने साथ लाहौर वापस ले गये हैं—उनकी इच्छा नहीं है कि कुमारीजी सिनेमाके अभिनयमें शरीक हों। सत्याग्रह जैसे पवित्र कार्यमें भाग लेनेवाली महिलाको तुच्छ ख्यातिके लोभसे सिनेमाके घृणित भोगैश्वर्यपूर्ण जीवनको अपनाना नहीं सुहाता। हम पहले ही कह चुके हैं कि हम भद्र-महिलाओंके नृत्य तथा अभिनयके विरोधी नहीं हैं, हम केवल यही चाहते हैं कि उपयुक्त क्षेत्र तथा उपयुक्त पात्रके साथ सम्बन्ध रखकर उन्हें इन कलाओंकी साधनामें लगना चाहिए।

## पर्दा बनाम स्वतन्त्रता

इस युगमें भी, जब कि समस्त संसारमें स्त्री-जागरणकी एक उद्दाम तरङ्ग प्रवाहित होती दिखायी देती है, कुछ ऐसे कट्टर विरोधी विचारोंके 'नेता' वर्तमान हैं जो स्त्री-स्वतन्त्रताका मजाक उड़ाते हैं और उनकी निन्दा करते हुए परदेकी महिमा घोषित करते हैं। आश्चर्य इस बातपर अधिक होता है कि इन विरुद्धवादियों में ऐसे ज्ञान-दुर्विदग्ध 'महापुरुष' भी शामिल हैं जिनकी 'विद्वत्ता' की चर्चा यूरोपमें भी किसी अंशमें हो चुकी है। मौ० शौकतअली यद्यपि एक गोरी बीबीको ब्याह चुके हैं, तथापि अभी तक उनके दिमागमें परदेकी ही धुन सवार है। अपने कई वक्तव्योंमें वह परदा-प्रथाका गुण-गान कर चुके हैं। सर मुहम्मद इकबाल कविके रूपमें विलायतमें भी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। इस ख्यातिसे सन्तुष्ट न होकर आपने राजनीतिक क्षेत्रमें पदार्पण किया है। पर आप इससे भी सन्तुष्ट नहीं हैं और अब समाज-सुधारके अखाड़ेमें आ कूदे हैं। कूदते ही आपने उन नव-भावापन्न मुसलमान समुदायपर बमका गोला बरसाया

श्रीमती अहमदशाह
आप लखनऊकी सर्वप्रथम महिला मजिस्ट्रेट हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है जो संसारकी प्रगतिके साथ ही कदम रखनेकी इच्छासे जरा आगे बढ़ने लगे हैं। सर इकबाल संयुक्त चुनाव परिषद्के अवसरपर विलायत गये है। आपने वहांकी स्वतन्त्र स्त्रियोंकी जो दशा देखी है उससे आपको उनपर तरस आता है और अपने देशकी (बल्कि यह कहना और भी उचित होगा कि अपने सम्प्रदायकी) स्त्रियोंको परदेके चिरान्धकारमें युग-युगान्तसे सड़ते हुए देखनेपर भी आपने यह सोचकर सन्तोष प्राप्त कर लिया कि परदेके कारण उनको जो सम्मान प्राप्त है वह पाश्चात्य स्त्रियोंको किसी प्रकार भी सुलभ नहीं हो सकता। यह अद्भुत प्रेरणा आपको कैसे प्राप्त हुई, इसका कारण बतलाते हुए आप लिखते हैं—"लन्दनकी सड़कोंमें मैं बहुत-सी ऐसी बातें देखता हूं जिसपर लन्दनवाले ध्यान नहीं देते। मैं इस बातपर गौर कर रहा हूं कि स्त्री-जातिके प्रति यूरोपवाले जो सम्मान प्रदर्शित किया करते थे, और जिसके लिए वे प्रसिद्ध थे, वह अब तिरोहित होती चली जाती है। वहांके लोग अब महिलाओंके लिए अपनी 'सीट' छोड़ देना आवश्यक नहीं समझते, गाड़ियोंसे उतरते वक्त पहले स्त्रियोंको उतरने देनेका कोई विचार इनके मनमें उत्पन्न नहीं होता। मैं उन्हें दोष नहीं देता, क्योंकि स्त्रियोंने स्वयं पुरुषोंके साथ समान अधिकार तथा समान स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी चेष्टा की है। पर प्राच्य देशोंकी स्त्रियोंको जो सम्मान प्राप्त है उसका मुख्य कारण उनका परदा है (!) शताब्दियोंसे वे जिस सम्मान तथा श्रद्धाकी दृष्टिसे देखी जाती आ रही हैं वह अब तक उसी रूपमें वर्तमान है। इस परदेके कारण ही वे अपरिचित पुरुषोंके द्वारा अपमानित होने नहीं पातीं। इसलाम धर्मानुसार स्त्रियोंको पुरुषोंसे अलग रखनेके सम्बन्धमें अनेक नियम हैं जिनमें परदा भी एक है। बहुविवाहका जो नियम हमारे धर्ममें प्रचलित है वह वेश्यावृत्तिके कलङ्कसे समाजको बचानेके लिए है।"

परदेमें सड़नेके कारण स्त्रियोंको जो 'सम्मान' प्राप्त है वह केवल सङ्कीर्ण-हृदय पुरुषोंकी घोर स्वार्थबुद्धिका चातुर्य है। इस प्रकारके 'सम्मान' से पूर्ण स्वतन्त्रता द्वारा प्राप्त उच्छृङ्खलता भी कहीं बेहतर है। पर परदा हटानेसे हमारी महिलायें उच्छृङ्खल हो जायेंगी, यह अनुमान पहले ही कसे कर लिया जाता है? अन्य देशोंकी संस्कृतिकी धारा ही बिलकुल दूसरी है। परदा न रहनेसे हमारी महिलाओंमें लज्जा, नम्रता, श्री विनय आदि गुणोंका ह्रास होनेके बजाय उनकी वृद्धि होगी, इसका हमें पूरा विश्वास है। उनकी आत्मायें जब पूर्ण प्रकाश प्राप्त कर लेंगी तो उनका विकास भी दिन-दिन उन्नति करता चला जायगा। परदा-प्रथाको हानियोंको देखते हुए भी उसका समर्थन करना दम्भ, पाखण्ड तथा भीतरका परिचायक है।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ-चक्र

## विश्व-आर्थिक सम्मेलन

जब ब्रिटेन, अमेरिका आदि राष्ट्र स्वर्णमानकी ऊंची मीनारसे धमसे नीचे गिरे तो उनके कोमल हृदयमें बड़ी चोट पहुंची कि संसार आर्थिक सङ्कटके कारण हाहाकार कर रहा है। उनकी इस परोपकार-वृत्तिने विश्व-आर्थिक सम्मेलनको जन्म दिया, जो बकौल अमेरिकाके राष्ट्रपति रूजवेल्टके संसारकी आर्थिक विपत्तिको टालनेके लिए पूरा प्रयत्न करनेवाला था। पर कमतकदीरवालोंको कौन संभाल सकता है! इसलिए यह सम्मेलन पृथ्वीभरके दुःखके पहाड़को तो कैसे हल कर सकता, यह ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशोंका दलिद्दर दूर करनेमें ही समर्थ न हो सका। इस सम्मेलनमें साठ देशोंके प्रतिनिधि उपस्थित थे। वे सब एक मतपर आ जाते; पर मुख्य प्रश्न अमेरिकाके दिये हुए समर-ऋणका था जो यूरोपपर महाकालकी भांति मंडरा रहा है। यूरोपीय राष्ट्र समझे कि इस सम्मेलनमें युक्तराष्ट्रने भाग लिया है, इसलिए सम्भव है कि हाथ-पांव जोड़के, गिड़गिड़ाके और थोड़ी नाक रगड़कर यह बला सरसे टल जायेगी। पर अमेरिका भी तो पूंजीपति देश है। उसका कुलिशकठोर हृदय कैसे पसीजता! बस, वह बातें होने लगीं जो चण्डू या शराबखानेमें होतीं। यानी ये सब बातें बेमौकेकी और बेमौजूं। भला विश्व-आर्थिक सम्मेलनका शराबके प्रचारसे क्या वास्ता? पर वहां इस बातकी चेष्टा की गयी कि शराबका प्रचार किया जाये। इसपर भारतके प्रतिनिधि मि० जार्ज रेनी बोले कि भारतमें मुसलमान शराब नहीं पीते। यानी केवल हिन्दू शराब पीते हैं। ऐसी बहकी बातें वहां कई हुईं। साउथ केनसिङ्गटनके जिस भवनमें यह सभा हुई थी, उसके साथ एक बहुत बड़ा मैखाना खोला गया था। इसमें भिन्न-भिन्न देशोंके प्रतिनिधियोंके लिए उनके देशोंकी शराबोंका प्रबन्ध किया गया था। ईरानियोंके लिए 'अरक़' चीनियोंके लिए 'शाइओत्स्' 'लोमित्स्' और 'कोआलियाङ्ग' और टर्कोंके लिए 'राकी' का बन्दोबस्त था। यूरोपके नाना देशोंसे तो पीपों-के-पीपे आये ही थे। इस दशामें यह कानफरेन्स शराबखानेमें परिणत हो गयी और शराबी कभी किसी निश्चित परिणामपर नहीं पहुंचते, इस सम्मेलनका भी यही हाल हुआ। प्रायः सत्तर हजार रुपयेकी शराब पीकर प्रतिनिधि वहीं रह गये जहां वे कानफरेन्स होनेके पहले थे। 'यारो खता ये माफ करो, मैं नशेमें हूं।'

इस कानफरेन्सके सामने तीन प्रश्न थे। (१) संसारभरमें पदार्थोंका मूल्य बढ़ाना; (२) जगत्भरके सिक्कोंके वर्तमान रूपका परिवर्तन, जिससे उनके मूल्यमें इतनी घटबढ़ न हो कि व्यापारी भिन्न-भिन्न देशोंसे तिजारत करनेसे इसलिए घबरायें कि किस देशका सिक्का कब मिट्टीमें मिल जाये; (३) नाना देशोंमें कस्टम्सकी जो दीवारें खड़ी कर दी गयी हैं और जिनके कारण दुनियाका व्यापार अब अपने-अपने देशोंकी संकुचित सीमामें आबद्ध हो गया है, उन्हें हटाकर देश-देशान्तरके व्यापारको प्रोत्साहन देना। पर इस समय जब हिट्लर स्वदेशी यहूदियोंके हाथसे व्यवसाय छीनकर विशुद्ध जर्मन 'आर्यों' के हाथमें देना चाहता है, अंगरेज औटावा परिषद् करके दूसरे देशोंका माल अपने यहां आना बन्द करना चाहते हैं और जापान सस्तेपनकी हद करके यूरोपियन राष्ट्रोंका भयभीत हृदय कंपा रहा है, कौन राष्ट्र होंगे जो अबाध व्यापारकी नीतिका समर्थन करते। अमेरिकाके 'दि मैगेजीन आफ वाल स्ट्रीट' ने ठीक ही कहा है—"कौन परराष्ट्र इस बातके लिए तैयार होगा कि अपने देशी व्यापारका एक अंश हमारे एक्सपोर्टरोंके हाथमें सौंप देगा। क्या कोई इस बातकी कल्पना भी कर सकता है कि अपने देशका थोड़ा-सा इत्र बेचनेके लिए फ्रान्स अपने देशी किसानोंको गेहूं उपजानेके लिए प्रोत्साहित करनेवाली नीति छोड़ देगा? क्या ब्रिटेन अपनी यह उच्चाकांक्षा छोड़ देगा कि पृथ्वीभरमें उसका व्यापार उसी प्रकार रक्तरञ्जित (लाल रङ्गयुक्त) कर दे, जैसा उसने राजनीतिके क्षेत्रमें कर रखा है?···बहुत सम्भव है, ऐसा न होगा। तब क्या? बस फिर नाना राष्ट्र एक-दूसरेका गला रेतनेको छुरा पकड़ेंगे और फिर अपनी-अपनी तलवारें मियानसे निकालेंगे, और इस प्रकार तब तक लड़खड़ाते जायेंगे जब तक उनके लिए एक कदम बढ़ाना असम्भव हो जायेगा।" अब यह भविष्यवाणी ही पूरी होती दिखायी देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## अमेरिका चीनके हाथ गेहूं और रुई बेचेगा

चीनके पास धन नहीं है। वह उधार माल चाहता है। उसे रुई और गेहूंकी आवश्यकता है। इसलिए उसने अमेरिकासे इस विषयपर प्रार्थना की थी। वह मञ्जूर हो गयी है। अमेरिकाको तो उधार गाहकोंकी भी आवश्यकता है। खेतोंमें गेहूंके जो खत्ते सड़ रहे हैं, यदि वे उठ जायें तो भी देशको लाभ है। इसलिए उसने चीनकी राष्ट्रीय सरकारको यह ऋण देना स्वीकार कर लिया है। इसमेंसे पन्द्रह करोड़ रुपयेकी रुई भेजी जायेगी और पांच करोड़ रुपयेका गेहूं। इस प्रकार युक्तराष्ट्र देशका व्यापार बढ़ानेकी फिक्रमें है।

## जापान, भारत और अमेरिका

भारतके मिल-मालिकोंका मत है कि जापानको बाध्य होकर भारतसे रुई खरीदनी पड़ेगी; क्योंकि हमारी रुई सस्ती है। पर विकर सैसून, जो एक बहुत बड़े मिल-मालिक हैं, कहते हैं कि जापान भारतको जो सूती कपड़े भेजता है वे अमेरिकन रुईके मेलसे बने होते हैं। आंकड़ोंसे भी यह बात सच मालूम पड़ती है। जापानने १९३० में अमेरिकासे प्रायः सैंतालीस और भारतसे साठ करोड़ पौण्ड रुई खरीदी थी; पर १९३२ में अमेरिकासे एक अरब, बारह करोड़ और भारतसे केवल ३४ करोड़ पौण्ड रुई मोल ली थी। इससे यह मालूम होता है कि अमेरिका अपने मार्केट बढ़ा रहा है। वहां रिकन्स्ट्रक्शन फाइनेन्स कारपोरेशन इसीलिए बना है कि वह अमेरिकन माल—विशेषतः कच्चा कृषिका माल उधारमें भी विदेशोंके हाथ बेचे। रूसवाले भी अमेरिकासे प्रायः दो करोड़ रुपयेकी रुई खरीद रहे हैं। इस विषयपर सोवियट एजन्सी आमटोर्ग ट्रेडिङ्ग कारपोरेशन बातचीत पक्की कर रहा है। इस दृष्टिसे अमेरिका स्वयं एशियामें भारतकी रुईका जबर्दस्त प्रतिद्वन्द्वी बनकर खड़ा है।

## भारतकी स्वदेशी मिलें

स्वदेशीकी उन्नतिकी आवश्यकता इसलिए होती है कि देशकी समृद्धि बढ़े और जनता भूखी न मरे। विलायती या विदेशी कपड़ा हम पाप इसलिए समझते हैं कि उसे खरीदकर हम विदेशी पूंजीपतियों और मजदूरोंका पेट भरते हैं और उसी मात्रामें अपने श्रमजीवियोंका पेट काटते हैं और उनकी उन्नतिमें बाधा डालते हैं। यह सिद्धान्त उस स्वदेशी युगका है जब हम पूंजीपतियोंका रूप न पहचानते थे। पर इधर देशमें कल-कारखानोंकी प्रगतिके साथ-साथ इनके मालिकोंका दरिद्र-शोषी रूप खुलता जा रहा है। देश स्वदेशी कपड़ा पहन रहा है, इन मिलोंकी सहायता कर रहा है, पर ये मिलें मुनाफा तो हजम कर गयीं और जब कुछ स्टाक जमा हुआ तो ये मजदूरोंको नोटिस दे रही हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि मिल-मालिक तो मौज उड़ाते रहेंगे, पर मजदूरोंको जो पेटकाटू मजूरी मिलती थी, ये उससे भी वञ्चित हो गये। अहमदाबादमें बीस हजारसे ऊपर मजदूर हाय अन्न! हाय अन्न! कर रहे हैं। ब्यावरमें यही स्थिति है और इन्दौरसे भी ऐसे ही समाचार आ रहे हैं। अन्य मिलोंकी दशामें कुछ भेद नहीं है। नागपुरके पापी मिल-मालिकोंकी यह दशा है कि वहां स्त्रियोंको पांच पैसे रोज मजूरी दी जा रही है। इसमें उनके पापी पेटकी ज्वाला कैसे बुझती होगी, इस बातकी हमारे मिल-मालिकोंको चिन्ता नहीं है; पर वे हृदयसे चाहते हैं कि देश वह कपड़ा पहने जिसे बनानेमें श्रमजीवियोंका पेट काटा गया हो। सच है, इसीलिए डा० युद्धवीरसिंहने लिखा है—"जो आग गरीबोंके सीनेमें छिपी हुई है उसका धुआं तक आपके पास नहीं पहुंचता। गांवके लाखों कतवे, बुनकर, धोबी और रंगरेज बेकार हुए। फिर उस पर तुर्रा यह भी है कि हमारे मिलवालोंने जो कपड़ा तैयार किया वह भी खद्दरके मुकाबलेमें मोटा और खुरदरा ही बनाया जिससे गरीबोंके मुंहसे टुकड़ा छिनकर मिलाध्यक्षोंके पास चला गया। कहा जाता है कि फिर भी रुपया रहा तो हिन्दुस्तानमें। अव्वल तो इन मिलोंके धनियोंके हाथमें गया हुआ रुपया और नहीं तो नयी मिलोंके लिए ही विदेशोंको जाता है। विलायतकी सैरमें खर्च होता है। और यदि यह भी मान लें कि पूंजीपतियोंके पास ही रहा तो क्या यह बुद्धिमानी है कि करोड़ों आदमियके मुखका दाना छीनकर एक आदमीके गोदाममें बन्द कर दिया जाये? अब आप जरा उन गांवोंमें चले जाइये जहां आस-पासमें कुछ ही दिनोंसे (शूगर फैक्टरी) चीनीका कारखाना बना हो। आप वहांके आस-पासके ग्रामीण भाइयोंसे पूछिये कि उनकी क्या दशा है? जो बेचारे ६ महीने तक गन्नेके सहारे जीते थे, गन्ना पेरते, शक्कर, राब, गुड़ बनाते थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रायः उसकी तैयारीका सभी काम अपने हाथसे करते थे और उसमें वे ही नहीं, किन्तु उनके बच्चे, स्त्रियां भी सहयोग देते थे, अब वे ही हाथपर हाथ रखे हुए बैठे हैं। गन्ना उनका मिलवाले खरीदकर ले जाते हैं। एक कारखानेके १००-१०० मील तककी दूरी तकके सभी गन्नेके कृषक बेकार हो गये हैं। उन्हें अपने बच्चोंके लिए भी कभी मीठा प्राप्त नहीं होता। क्योंकि गन्ने सब बेच देते हैं। और जो लाभ गन्नोंको पेरकर, गुड़-शक्कर बनाकर उनको प्राप्त होता अब उन्हें उस रूपमें प्राप्त नहीं होता।"

इसीलिए हालमें श्री पद्मराज जैनने भी लाहौरमें स्वदेशीके विरुद्ध आवाज उठायी थी। सच तो यह है कि स्वदेशी नामसे देशके अपढ़ निर्धन ठगे जा रहे हैं और उन्हींका सत्यानाश किया जा रहा है। भारतमें स्वदेशी पदार्थ वही है जो हाथसे बना हो। उससे गरीब जनता लाभ उठाती है। खद्दर स्वदेशी है और गुड़ तथा लाल चीनी स्वदेशी है। इनका प्रचार होनेसे ही दरिद्र जनता समृद्ध हो सकती है।

## शिमला शक्कर सभा

चीनीकी कानफरेन्स शिमलामें बैठी और किसी निर्णय पर न आ सकी। इन कारखानोंसे गरीब किसान तो मारे हो गये, पर हमें सन्देह है कि भविष्यमें शेयरहोल्डर भी न मारे जायें। आनेवाले जाड़ोंमें भारतमें प्रायः १३० मिलें चलने लगेंगी। ये इतनी शक्कर पैदा करेंगी कि देशको फिर बाहरसे शक्कर मंगानेकी आवश्यकता न रहेगी। यदि अधिक मिलें खुलीं—और वे अवश्य ही खुलेंगी—तो मिलोंको लाभके स्थानपर घाटा होने लगेगा! अभी तो इन्हें चालीस सैकड़ा तक मुनाफा हुआ है। स्वदेशीका चमत्कार देखिये कि शक्कर खानेवाली निर्धन जनतासे पैसा लेकर पूंजीपति अपनी थैलियां भर रहे हैं और इनको अधिकाधिक धनी बनानेके लिए हमें चीनीका अधिक दाम देना पड़ रहा है; क्योंकि बाहरकी चीनीकी प्रतिद्वन्द्विता देसावरी मालपर अधिक कस्टम्स ड्यूटी लगनेसे उजड़ गयी है।

## क्या दुनियाका व्यापार नेजोपर आने लगा है?

दुनियाभरकी बेकारीके जो आंकड़े आये हैं उनसे यह पता चलता है कि वह घट रही है। अधिक मजदूर काममें लग गये हैं और व्यापार-व्यवसायका पहिया पहलेसे अधिक तेजीसे चलने लगा है। आंकड़े इस प्रकार हैं—

ब्रिटेनमें मई मासमें अप्रेलसे १२३००० अधिक मजदूर कामपर लगे।

जर्मनीमें बेकारोंकी संख्यामें तीन लाखकी कमी हो गयी।

फ्रान्समें इनकी संख्या चालीस हजार घटी। अब वहां बेकारोंकी संख्या कुल तीन लाख रह गयी है।

इटलीमें ५६००० बेकार घटे। स्विट्जरलैण्डमें ग्यारह हजार। डेनमार्कमें बीस हजार अधिक मजूर काममें लगे और आयर्लैण्डमें बारह हजार।

युक्तराष्ट्रमें मई मासमें चार लाख बेकारोंको काम मिला।

कनाडामें भी १५००० घटे और पोलैण्डमें एक हजार। यह विदेशकी कथा है। अपने देशकी ओर दृष्टि करें तो यहांकी मिलोंमें बेकारी बढ़ रही है।

## पापी पेटके लिए विदेशोंमें रहनेवाले भारतीयोंकी संख्या

सबसे अधिक भारतवासी दक्षिणी अफ्रीकामें बसे हुए हैं। इनकी संख्या—

नेटालमें—१४२९७९, ट्रान्सवालमें १५७४७, केपकालोनीमें ६६५५ और आरेञ्ज फ्री स्टेटमें १२७ है।

पूर्वी अफ्रीकामें—केनियामें ४५, यूगण्डामें १४, टाङ्गानिकामें २५ हजार तथा जञ्जीबारमें १२८४६ है।

मारिशसमें २७९१४३ हैं।

अमेरिकामें—ब्रिटिश गायनामें १३००७५, त्रिनिदादमें १३३२७७, जमैकामें १७५९९ और सुरीनाममें छत्तीस हजार हैं।

एशियामें—बर्मा, मलया आदि स्थानोंमें ६२७७२०, और सिंहलमें प्रायः ९० हजार हैं।

आस्ट्रेलियामें—फिजीद्वीपमें ७६७२२ आस्ट्रेलियामें २६२० और न्यूजीलैण्डमें ९५१ हैं।

इनके अतिरिक्त—

पुर्तगीज पूर्व अफ्रीकामें—८४७५, ब्रिटिश कोलम्बियामें १०१६, पानाममें ३००, क्यूबामें १०००, मेक्सिकोमें २५६, ब्राजीलमें ४४, फिलस्तीनमें २०१८, और मेडेगास्करमें १८८ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

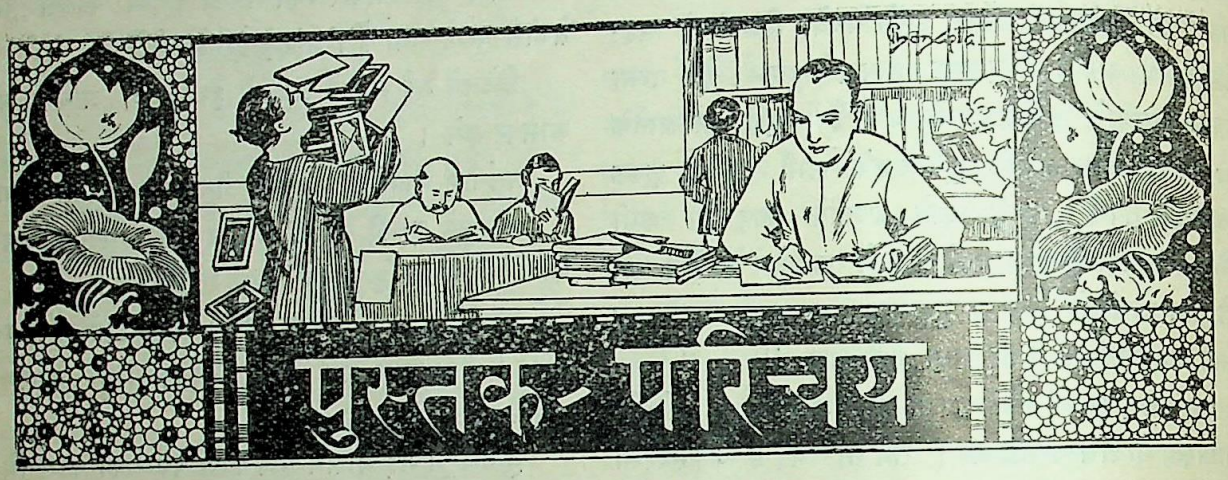


बहमी रोगी। लेखक—श्री लक्ष्मणस्वरूप एम० ए०, डी० फिल०; प्रकाशक—लाला मोतीलाल बनारसीदास, पञ्जाब संस्कृत पुस्तकालय, सैद मिट्ठा बाजार, लाहौर।

यह पुस्तक फ्रान्सके सुप्रसिद्ध हास्यरसाचार्य मोलियेरके Le Malade Imaginaire का हिन्दी अनुवाद है। जहां तक हमारा ख्याल है, हिन्दीमें इससे पहले मोलियेरके दो-एक नाटकोंका अनुवाद हो चुका है, जिनसे हिन्दीके पाठकोंको मोलियेरके हास्यका थोड़ा-बहुत स्वाद मिला होगा। पर वर्तमान अनुवादमें (अनुवादकके कथनानुसार) यह विशेषता है कि वह मूल फ्रेञ्चसे किया गया है।

मोलियेर अपने जिस परिहास तथा व्यङ्गके लिए विख्यात है Le Malade Imaginaire में वह पूर्ण रूपसे वर्तमान है। अन्धविश्वासके युगमें पैदा होनेपर भी मोलियेर डाक्टरों-के शब्दाडम्बरपूर्ण अटकलपच्चू शास्त्रसे बहुत चिढ़ता था। इस नाटकमें उसने डाक्टरी विद्यापर अच्छा व्यङ्ग कसा है। साथ ही यह भी दिखाया है कि बीमारीका बहम मनुष्यको किस हद तक हास्यास्पद बना सकता है। मोलियेरने अपने प्रायः सभी हास्यप्रधान नाटक जन-साधारणके मनोरञ्जनके लिए लिखे थे। जनसाधारणकी रुचि सर्वत्र सब देशोंमें प्रायः समान रहती है। इसलिए इस अनुवादसे जनताका अच्छा विनोद होगा, ऐसी आशा की जाती है। पर अनुवादके सम्बन्धमें हमें दो-एक बातें कहनी हैं। अनु-वादकने पात्रोंके मूल फ्रेञ्च नाम ही रहने दिये हैं, पर उनके मुंहसे स्थान-स्थानपर ऐसी बातें कहलवायी हैं जिनसे ऐसा मालूम होने लगता है मानो वे सब भारतीय हों। उदाहरणके लिए नाटकका नायक आरगां एक स्थानपर किसी व्यक्तिके सम्बन्धमें कहता है कि वह—"संस्कृत और प्राकृत अच्छी बोलता है!" तथापि प्रारम्भमें ही यह बतला दिया गया है कि घटनास्थल पैरिस है और समय सत्रहवीं शताब्दी है। सत्रहवीं शताब्दीमें कोई पैरिस-निवासी फ्रेञ्च संस्कृत तथा प्राकृत अच्छी बोल लेता था, यह जानकर हम भारत-वासियोंको हर्ष होना स्वाभाविक है। पर खेद है कि मोलियेरने संस्कृत तथा प्राकृत न लिखकर ग्रीक तथा लैटिन लिखा था। अनुवादक महाशयने (जो आक्सफोर्डके डी० फिल० हैं) मोलियेरकी इस गलतीको सुधार दिया, इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। एक दूसरे स्थानपर आरगां कहता है—"साथ ही दो दर्शनी हुण्डी भी तुम्हें देता हूं जो लाला धामासिंह और लाला जैरामदाससे वसूल करनी हैं।" अनुवादक महाशयकी लेखनीका यह दूसरा चमत्कार है! सत्रहवीं शताब्दीका एक फ्रान्सीसी रईस पैरिसमें लाला धामासिंह और लाला जैरामदाससे लेन-देनका हिसाब रखता था, इससे यह सिद्ध होता है कि हमारे सेठ लोग सत्रहवीं शताब्दीमें भी यूरोप-वास किया करते थे! कविता और गीत-रचनामें भी अनुवादक महाशयने कमाल किया है। नमूना लीजिये:—

मनोमोहनी मालती! यह वेदना बेपारावार।
हृदय हेरि कुछ बोलहु मुखसों अपने हृदय उद्गार॥
भंजहुं यह नीरवता निष्ठुर करो भाग्य निस्तार।
जासों जीवन-ज्योति जगै अथवा मृत्यु अनिवार॥

इसमें छन्दोबन्धकी तो मिट्टी ही खराब की गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पुस्तकके प्रारम्भमें जो भूमिका दी गयी है वह अंगरेजीमें लिखी गयी है। इससे लेखकका अनावश्यक दम्भ व्यक्त होता है।

निशीथिनी। लेखक—श्री प्रणयेश शुक्ल; प्रकाशक—आर० एन० त्रिपाठी, कानपुर। मूल्य ।।।) आना।

प्रस्तुत पुस्तकमें लेखककी कविताओंका संग्रह किया गया है। कवितायें खड़ी बोली तथा व्रजभाषा, दोनोंमें लिखी गयी हैं। छन्द घनाक्षरी भी हैं और 'छायावादी' भी। भाव भी दो प्रकारके पाये जाते हैं। पूरा संग्रह देखकर हमारी यह धारणा हुई है कि लेखक महाशय घनाक्षरी छन्दमें ही सिद्ध-हस्त हैं और उसीमें अपने भाव भी अच्छी तरह व्यक्त करनेमें सफल हुए हैं। उनके 'छायावादी' छन्दोंमें कुछ शिथिलता पायी जाती है। उनकी व्रजभाषाकी कवितायें भी वर्तमान पाठकोंका हृदय-रञ्जन नहीं कर सकतीं। उनकी प्रारम्भकी कवितायें हमें सबसे अच्छी लगी हैं। उनमेंसे एकका नमूना नीचे दिया जाता है। इस कविताका शीर्षक 'गगन' है—

ध्वनित निरन्तर स्वभाव विश्व-मन्दिरमें
जाने कौन राग है मिटाता मनका विषाद!
करता समन्वय समस्त भुवनोंका वह
'प्रणयेश' प्राणोंको पिलाता है अपेय स्वाद।
अन्तरङ्ग, बहिरङ्ग, तिमिर, प्रकाश द्वारा,
संज्ञाहीन साधन विवेकका बना विवाद;
शून्य कहलाता, पूर्ण पाता हूं तथापि उसे
आके टकराता वहां आदि अनहद नाद!

इस कविताका भाव अत्यन्त गम्भीर तथा मर्मस्पर्शी है।

मञ्जरी। ले०—श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी तथा श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'; प्रकाशक—कर्मवीर प्रेस, जबलपुर। मूल्य ॥) आना।

यह भी एक काव्य-पुस्तक है जो "तरुण दम्पति-कविकी रचना है।" प्रथम भागमें श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदीकी १४ कवितायें हैं, और दूसरे भागमें श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' की २७ कविताओंका संग्रह है। दोनों कवियोंकी कवितायें सुन्दर, सरल और सरस हैं। प्रारम्भमें डा० शिवप्रसाद वर्मा एम० ए०, पी-एच० डी० द्वारा लिखित भूमिका छपी है, जो अंगरेजीमें लिखी गयी है। बड़े दुःखका विषय है कि अभी तक हमारे यूरोप-प्रत्यागत हिन्दी-भाषाभाषी सज्जन हिन्दीमें कलम चलाना अपमानकर समझते हैं।

ग्रीस और रोमके महापुरुष। अनुवादक—श्री मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव तथा श्री राजवल्लभ श्रीवास्तव; प्रकाशक—श्री मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, ज्ञानमण्डल काशी। मूल्य (सजिल्दका) ३॥)।

इस ग्रन्थमें प्लूटार्क द्वारा लिखित छ ग्रीक तथा छ रोमन महापुरुषोंके जीवन-चरितोंका अनुवाद दिया गया है। इन बारह महापुरुषोंके नाम इस प्रकार हैं—थीसियुस (ग्रीक) रोम्युलस (रोमन), थेमिस्टाक्लीज (ग्रीक), कैमिलस (रोमन), ऐजेसिलाउस (ग्रीक), पाम्पी (रोमन), सिकन्दर (ग्रीक) सीजर (रोमन), डिमीट्रियुस (ग्रीक), एण्टोनी (रोमन), डायन (ग्रीक) मनर्क्स ब्रूटुस (रोमन)।

पुस्तक प्राचीन इतिहासके विद्यार्थियोंके अध्ययनयोग्य तथा रोचक भी है। पुस्तककी छपाई-सफाई सुन्दर है।

साम्राज्यवाद क्या है? लेखक—श्री मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव; प्रकाशक—ज्ञानमण्डल काशी। मूल्य ।।।)आना।

साम्राज्यवादके सम्बन्धमें लेखकका एक लेख मासिक 'विश्वमित्र' के किसी पिछले अङ्कमें प्रकाशित हो चुका है। पुस्तकके पढ़नेसे ज्ञात होता है कि लेखक महोदय अपने विषयके विशेषज्ञ हैं और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिका यथेष्ट अध्ययन कर चुके हैं। पुस्तकमें साम्राज्यवादके भिन्न-भिन्न स्वरूपों और उनपर अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानोंके विभिन्न मतोंका विवरण अत्यन्त स्पष्ट तथा सरल भाषामें समझाया गया है। बैङ्कोंके आर्थिक एकाधिपत्यके कारण साम्राज्यवादके विस्तारमें कैसी सहायता पहुंची है, इस विषयका वर्णन भी अत्यन्त रोचकतासे किया गया है। 'विश्वमित्र' में प्रकाशित लेख भी इसमें सन्निविष्ट है। पुस्तकके अन्तमें अंगरेजी पुस्तकोंके Index के अनुकरणमें पुस्तकमें वर्णित विषयों-तथा व्यक्तियोंकी अनुक्रमणिका भी वर्णानुक्रमसे दी गयी है, जिससे पाठकोंको विशेष सुविधा हो सकती है। पुस्तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिके विद्यार्थियोंके बड़े कामकी है।

राजपूतानेके जैन वीर। लेखक—श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय; प्रकाशक—हिन्दी-विद्या मन्दिर, पहाड़ी-धीरज, देहली। मूल्य—२) रु०



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस पुस्तकमें मध्ययुगके उन विख्यात जैन पुरुषोंके जीवनका इतिहास है जिन्होंने समय-समयपर राजपूतानेके वीर राणाओंको आर्थिक सहायता देकर अपनी देशसेवा तथा दानशीलताका परिचय दिया था। पुस्तककी भूमिका प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्री गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझाने लिखी है। पुस्तकके भीतर एक तिरङ्गा और आठ सादे चित्र भी सन्निविष्ट किये गये हैं। जैनियोंके लिए यह पुस्तक महत्त्व-पूर्ण सिद्ध होगी।

सर्प-बिच्छू (विष) चिकित्सा। लेखक—श्री सुरेन्द्र-शर्मा काव्य-वेदतीर्थ; प्रकाशक—श्री दीनानाथ सिद्धान्ता-लङ्कार—२०, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता। मूल्य ।-)आ०

इस छोटी-सी पुस्तिकामें सांप, बिच्छू आदिके विषके उपाय बतलाये गये हैं। सभी नुसखे घरेलू हैं। उनकी उप-योगिताकी प्रामाणिकताके सम्बन्धमें हम कुछ कह नहीं सकते; पर आशा करते हैं कि वे सब प्रभावोत्पादक सिद्ध होंगे। इसके सिवा पुस्तकमें अन्य छोटी-मोटी घरेलू दवाइयों-के नुसखे भी हैं।

प्राप्ति-स्वीकार। निम्न पुस्तिकाओंके लिए हम उनके प्रेषकोंको धन्यवाद देते हैं।

(१) ब्रह्म प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके पञ्चम वार्षिक अधिवेशनके सभापति श्रीयुत रतिलाल देसाईका भाषण; (२) ब्रह्म प्रान्तीय ब्राह्मण-सभाके सभापति श्री जयनारायण पाण्डेयका अभिभाषण; (३) वेदमें सृष्टिकी आयु—श्री सुरेन्द्रशर्मा काव्यतीर्थ द्वारा लिखित; (४) माहे-श्वरी वंशोदय—श्री बालकृष्ण लाहोटी लिखित।

[ समालोचनाके लिए प्रत्येक पुस्तककी दो प्रतियां भेजी जानी चाहिएं, अन्यथा केवल पुस्तककी प्राप्ति-स्वीकृति ही दी जा सकेगी।—स० वि०]

---

## टीकेसे चेहरेकी झुर्रियोंका इलाज

चेहरेपर झुर्रियां पड़ जाती हैं तो लोग समझते हैं कि बुढ़ापा अपना जोर दिखाने लगा। भारतमें मर्द तो इसकी परवा नहीं करते, पर नये फैशनकी महिलायें मालिश करा-कर इन्हें दूर करवाती हैं। झुर्रियां चेहरेके सौन्दर्यमें बट्टा लगा देती हैं। यूरोपमें मर्द भी इनसे घबराते हैं और औरतोंके तो इन्हें देखकर प्राण सूख जाते हैं। डाक्टरोंका कहना है कि शरीरमें रक्तका प्रवाह ठीक भांति न होनेसे झुर्रियां दर्शन देती हैं। पैरिसके 'सियांस ए मोंद' नामक पत्रमें डा० वेर्जेरने एक नये आविष्कारका वर्णन किया है, जिसने यह सम्भव कर दिया है कि बदनमें पिचकारी देकर झुर्रियां दूर की जायें। उनका कहना है कि यह रोग भी अन्दरूनी है और हृष्ट-पुष्ट मनुष्यको छू नहीं सकता। इसलिए इसका उपाय भी अन्दरूनी होना चाहिए। डा० वेर्जेरने लिखा है:—

हमारे एक प्रसिद्ध जीवशास्त्रज्ञ की कृपासे अब मुख-मण्डलके सौन्दर्यकी वृद्धिके लिए सिरम काममें लाये जायेंगे। ये सिरम घोड़ों, गायों, भेड़ों, सुअरों तथा भैंसेसे निकाले जाते हैं। डा० जाक रिसले अपनी खोजके लिए संसारमें प्रसिद्ध हैं। वे सारबान विश्वविद्यालयके अध्यापक हैं और पासतेर इन्स्टिट्यूट में भी काम करते रहे हैं। इनका मत है कि जवान घोड़ेके सिरमसे चेहरेकी झुर्रियां लोप हो जाती हैं और उसका सौन्दर्य बढ़ता है। इस सिरमको आप चेहरेके चमड़ेपर दबा दीजिये तो तुरत खूनमें मिल जाता है। इस सिरममें कूनाइनके तेलका सत भी रहता है। चेहरेके रक्तमें मिलते ही इसके प्रभावसे वह मुरदार चमड़ा, जो झुर्रियोंके रूपमें मुर्दा हो रहा था, नवीन बल पाता है और खुलकर हमवार बन जाता है। यह इलाज पैरिसमें धड़ल्लेसे चलने लगा है। डाक्टर ही नहीं, वहांके नाई और हज्जाम भी इस नयी दवासे अपने गाहकोंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



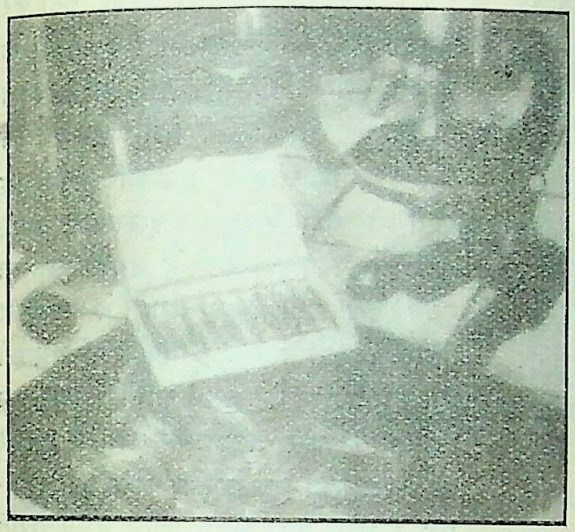

चेहरेकी झुर्रियोंको मिटानेके लिए यह नया सेरम बना है।

रूप संवार रहे हैं। ऐसी आशा की जाती है कि शीघ्र ही भारत भी पहुंच जायेगा और बड़े-बड़े शहरोंके निवासी इससे लाभ उठायेंगे। यह भी फेशन हो जायेगा। कोई इसके कितना ही विरुद्ध क्यों न हो, पर इसपर टूट पड़ेंगे प्रायः सभी; क्योंकि सबको अपनी मूर्ति सजानेकी आन्तरिक इच्छा रहती है।

## कमरेकी नमीका नियन्त्रण

हम लोग भी अब जान गये हैं कि हवाकी नमी स्वास्थ्यको बिगाड़ती है। थोड़ी मात्रामें तो इसकी आवश्यकता रहती है, पर अधिक नमी सैकड़ों रोगोंका घर है। यूरोप और अमेरिकाके भी कई स्थानोंमें हवा बहुत गीली रहती है। लण्डनमें तो जाड़ोंमें पलभरको भी खिड़की खोलिये कि कमरेमें कुहरा भर जाता है। इसलिए एक नया यन्त्र निकाला गया है जो कमरेकी अतिरिक्त नमीको पी जाता है। यह उतनी ही नमी बाकी छोड़ता है जो स्वास्थ्यके लिए आवश्यक हो। इसके अलावा यह कमरेकी दूषित वायुको शुद्ध कर देता है—अर्थात् जो काम हवनसे होता है—[स्वा० रामतीर्थका मत है कि हवनसे हवा दूषित हो जाती है]—वही काम यह छोटी मशीन कर देती है। आप सिगरेट पीकर

घड़ीके नीचे यह टोकरी नहीं है। यह गीली हवासे नमी और अशुद्धता दूर करनेका यन्त्र हैं।

अपने कमरेकी वायुको पलीद करते जाइये और यह यन्त्र आपके सेवककी भांति उसे बार-बार साफ करते जायेगा। यह नमी-मशीन एक कोनेमें रख दीजिये, बिजलीके जोरसे स्वयं अपना काम करती जायेगी।

## समुद्रके गर्भमें

समुद्रके गर्भमें जमीनकी सतहमें क्या है? यह जानना हम लोग आवश्यक नहीं समझते। ज्ञानकी इतनी उत्सुकता हममें नहीं है कि नयी बात जाननेके लिए थोड़ा-सा भी त्याग कर सकें। यूरोपियनोंका स्वभाव इस सम्बन्धमें ठीक हमारे विपरीत है। नये ज्ञानका आहरण और उसकी प्राप्तिमें वे प्राण भी देनेमें नहीं हिचकिचाते। पाठक उस वीरका परिचय पा चुके हैं जो ज्वालामुखी पर्वतके भीतर आगके दहकते महाकुण्डमें इसलिए कूदा था कि वहांका ज्ञान प्राप्त करके लाये। अब समाचार आया है कि युक्तराष्ट्रके बफैलो म्यूजियम आफ सायन्सके लिए समुद्र-तलका चित्र तैयार करनेके लिए कुछ चित्रकार बर्मूडा समुद्रके भीतर गये और उन्होंने जलके नीचे जमीनपर पहुंचकर वहांके चित्र तैयार किये। बर्मूडा सागरका पानी बहुत स्वच्छ है और वहांका आकाश भी बहुधा निर्मल रहता है; इसलिये पानीके नीचे इन कलाकारोंने नाना रङ्गोंका वह तमाशा देखा कि उनकी तबीयत फड़क उठी। उनका कहना है कि भांति-भांतिके वर्णोंके जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये अमेरिकन चितेरे समुद्र-गर्भमें बैठकर वहांके पेड़-पौधोंका निरीक्षण कर रहे है।

फल और पौधे हमें समुद्रके गर्भमें मिले, वे जमीनकी सतहपर किसी भी बगीचेमें नहीं मिले। ये चित्रकार पानीके नीचेके जीवनको गौरके साथ अध्ययन करते रहे। इन्होंने बफैलो म्यूजियमके लिए जो चित्र और समुद्री पेड़-पौधोंकी मोमकी प्रतिकृतियां बनायी हैं, उनमें हूबहू उनका असली रङ्ग दिया है। पाठक चित्रमें देखेंगे कि वे चित्रकार किस बारीकीसे समुद्रतलके पौधोंका निरीक्षण कर रहे हैं।

## वाह रे! रेलको यात्रा

भारतमें रेलकी यात्रा क्या करनी पड़ती है कि आफतका सामना होता है। हमारे सेठ-साहूकार भी पैसेके चेले हैं, इसलिए जिसके अपार सम्पत्ति होती है वह दूसरे दर्जेमें सफर करता है। पहला दर्जा तो अंगरेजों और यूरोपियनोंके लिए ही समझिये। राजे-महाराजे भी उसमें अपनी शान रखनेके लिये सफर करते हैं। पर भारतका फर्स्ट क्लास इंग-लैण्डके तीसरे दर्जेके समान ही है। उसमें सिवा सोनेकी जगह मिलनेके और क्या सुख-साधन होते हैं, इसका हमें पता नहीं। यदि होते भी, तो प्रत्येक देशवासीका कर्तव्य होता कि ऐसे क्लास बन्द करवानेका प्रयत्न करता जिनमें भारतके ९९.९ सैकड़ा अधिवासी यात्रा नहीं कर सकते। अमेरिका धनियोंका देश है। वहांके आधेसे अधिक यात्री रेलमें मौज करते हुए सफर करना चाहते हैं और इस आराम और ऐयाशीके लिए वे कुछ अधिक किराया देनेमें भी नहीं हिचकते। इसपर जो यात्री न्यूयार्कसे फ्लोरिडा जाते हैं उनका एकमात्र लक्ष्य ऐश उड़ाना होता है। वे फ्लोरिडा इसीलिए जाते हैं कि न्यूयार्कके परिश्रमपूर्ण जीवनके बाद वे कुछ समयके लिए सब चिन्तायें भूलकर आनन्दकी तरङ्गोंमें हिलोरे लें। फ्लोरिडा युक्तराष्ट्रके धनियोंकी इन्द्र-पुरी है और वहां विहार करने जो पूंजीपति

रेलगाड़ीमें जल-विहार।

और धनी जाते हैं, वे रुपयोंको पानीकी तरह बहानेमें नहीं हिचकते। इसलिए इन दोनों स्थानोंके बीच जो रेलवे लाइन दौड़ती है, उसमें अब नाच-कूद, जलविहार आदिका प्रबन्ध भी हो गया है। इस चित्रमें पाठक देखेंगे कि कुछ युवतियां यौवनके नशेमें चूर होकर मर्द बजैयोंके सामने निर्लज्ज होकर जलमें रंगरलियां कर रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

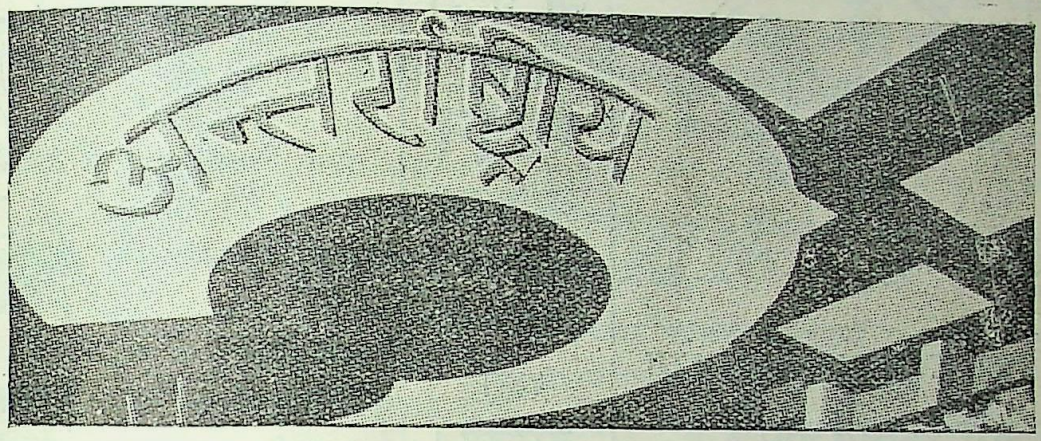


## मिस्र—

इस देशमें कानूनन भिक्षावृत्तिका अन्त किया जा रहा है। सेनेट और चेम्बर आफ डेपुटीजने निम्नलिखित कानून पास कर दिया है और उसपर बादशाह फुआदके हस्ताक्षर भी हो गये हैं:—

(१) पन्द्रह साल या इससे अधिक उम्रका जो व्यक्ति भीख मांगते, आम सड़कोंपर सामान बेचते या तमाशा दिखाते पकड़ा जायेगा वह गिरफ्तार कर लिया जायेगा तथा उसे एक महीनेकी जेलकी सजा दी जायेगी।

(२) इस उम्रका कोई भी आदमी यदि ऐसे कस्बे या गांवमें पकड़ा जाये जहां सरकारी अनाथालय हो तो वह एक मास या उससे कम अवधिकी जेलकी सजा पायेगा।

(३) कोई भिखमंगा जो अपनी दुर्बलता और घावोंको दिखाकर जनताकी दयाको उत्तेजित करना चाहेगा उसे तीन मास या उससे कमकी जेलकी सजा दी जायेगी।

इस प्रकार मिस्रसे भिखमंगोंका दल उठ जायेगा। वहां सरकारने सर्वत्र अनाथालय खोल दिये हैं जिनमें वे लोग ठहरेंगे और भोजन पायेंगे, जो बेकार होनेके सबब कमाई न कर सकेंगे। मिस्र पूर्वमें जापान और टर्कीके बाद पहला देश है जो इस दुष्ट प्रथाका खातमा कर चुका है।

## टर्की—

टर्कीको गाली देना धर्मात्मा मुसलमानोंका पहला कर्तव्य बन गया है। बात यह है कि टर्कीने मुसलमानोंमेंसे अरब और उसकी भाषाकी भक्ति उठानेकी ठान रखी है। उसका प्रभाव ईरान और काबुलपर भी न्यूनाधिक मात्रामें पड़ा है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नवीनताकी लहर इस-लाम धर्मकी जड़ खोद रही है। इस कारण अरबी पत्र उसे रात-दिन कोसते रहते हैं। मिस्रके अमीर शकब अर्सलान इसलामी संसारके ख्यातनामा लेखक हैं। इन्होंने भी अपना धर्म टर्कीको गाली देना बना रखा है। अभी तक मुसल-मानोंमें ऐसे साहसी लेखक पैदा न हुए थे जो टर्कीको बुरा बतानेके स्थानपर उसकी आश्चर्यजनक उन्नतिकी प्रशंसा करते। अब एक इसलामी उलेमा टर्कीके हिमायती बने हैं। इनका नाम है फरीद वजदी। इन्होंने अपने लेखोंमें यह सिद्ध करनेकी चेष्टा की है कि टर्क मुसलमान हैं और सुधार करनेपर भी उनमें मजहबकी मुहब्बत है। उधर टर्की इन बातोंकी परवा न कर यूरोपियन शक्तियोंसे कह रहा है कि कुस्तुन्तु-नियाकी रक्षाके लिए हमें दर्रे दानियाल और बासफोरसका मुहाना वापिस करो। लोसानकी सन्धिके बाद ये स्थान अन्तर्राष्ट्रीय बना दिये गये हैं और इनमें किले बनाने या हथियार जमानेकी आज्ञा नहीं है; पर युद्धके समय टर्कीको अधिकार दिया गया है कि वह इनकी रक्षा करे। टर्कीका कहना है कि बिना पहलेसे सैनिक तैयारी किये हम कैसे इन स्थानोंकी रक्षा कर सकेंगे?

## काबुल—

काबुलमें अब तक कोई बैङ्क नहीं था। वहां अंगरेजोंके रुपये भी चलते थे और रूसके रूबल भी। व्यापार भी इसी कारण अन्तर्राष्ट्रीय न था। काबुली यह न जानते थे कि एक्सचेञ्ज बैङ्क कैसा होता है। अब वहां साढ़े तीन करोड़ तोमानकी पूंजीसे एक बैङ्क खुला है जिसमें पैंतीस सैकड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीरको स्वच्छ सुन्दर और सुरक्षित रखता है।

**आपके शरीरका चमड़ा इतना रोग ग्रस्त और बदसूरत क्यों हैं ?**

**जब कि डाक्टर साबुन आपको सम्पूर्ण चर्मरोगसे तुरन्त मुक्त कर सकता है।**

यह आयुर्वेद एवं डाक्टरी औषधियों का सार है। दाद, खाज, मुहांसे, एक्जीमा, फोड़ा, घाव, अलाई, चेचकके दाग, फफास, आतिशक जैसे भयङ्कर रोगों तक को अच्छा करता है। कोमल त्वचा के सर्वथा अनुकूल। पवित्र स्वदेशी है।

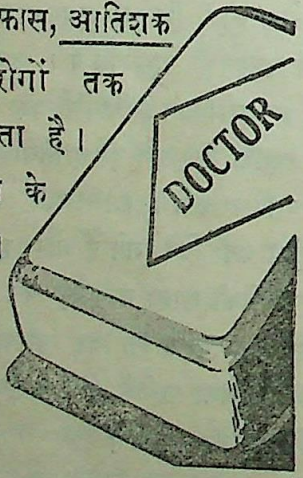


The
CHAUDHRY SOAP MILLS,
CAWNPORE.

दूषित चर्बी से बचिये चौधरी पवित्र **साबुन** व्यवहार कर धर्म एवं स्वास्थ्य की रक्षा कीजिये।

---

**कुछ बेजोड़ चीजें**

—*—

डाकर
चन्दन
खस
कपूर
जुही
चमेली
चम्पा
हिना
कस्तूरी
बकुल
आदि-आदि
सुंदरी (बालसफा)
हजामतकी स्टिक
तथा कप
मैन का (केशतेल)
मनोरमा (सुहाग बिंदी)
इत्यादि

**चौधरी सोप मिल्स**
कानपुर

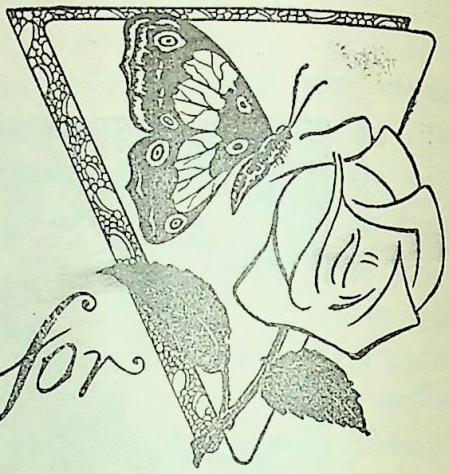


**उज्वल, स्वच्छ वर्ण एवं स्थायी तथा पूर्ण सौन्दर्य प्रदान करने में**

# चौधरी साबुन

लाजवाब व बेजोड़ है। उनका नियमित व्यवहार आपके शरीरको और भी स्वच्छ, कान्तिपूर्ण एवं सुन्दर बना देगा। उनके घने झाग रोम छिद्रोंको साफ कर आरोग्यता बढायेंगे और उनकी मनोरंजक सुगन्धि आपको नन्दन बनकी याद दिलाती रहेगी।

पवित्र, शुद्ध होने की गारण्टी

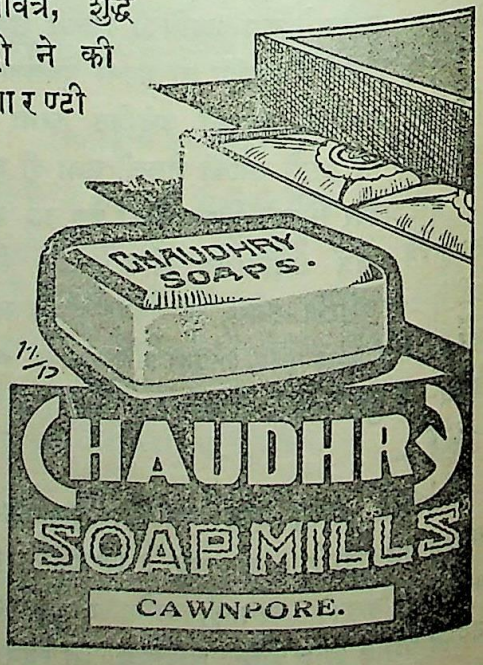


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मूलधन सरकारका है। इसकी शाखायें यूरोपमें भी खोली गयी हैं। इससे काबुलका व्यापार बहुत बढ़ेगा।

## जर्मनी—

युगोस्लाविया के डब्रोवनिक नगरमें अबके संसारभरके लेखकोंकी पी० ई० एन० कांग्रेस हुई। एच० जी० वेल्स अध्यक्ष थे। उसमें इस क्लबके निम्नलिखित उद्देश्य दुहराये गये:—

(१) भले ही साहित्य किसी देशमें जनमा हो, पर वह सार्वदेशिक सम्पत्ति है और राजनीतिक उथल पुथलके होते हुए भी अन्तर्राष्ट्रीय रहना चाहिए।

(२) सदा-सर्वदा और विशेषतः युद्धके समय कला-मय पदार्थोंको राष्ट्रीयता या राजनीतिक दलबन्दीके जोशमें तोड़ना फोड़ना न चाहिए क्योंकि ये सारे विश्वकी बपौती हैं।

(३) पी० ई० एन० के सदस्य सदा अपना सारा जोर भिन्न-भिन्न राष्ट्रोंमें सद्भाव और परस्पर सम्मान बढ़ानेमें लगायेंगे।

ये उद्देश्य हर तरहसे सराहनीय हैं, पर राष्ट्रीय मदसे अन्धे जर्मन इसके विरुद्ध हो गये। बहुत वादविवादके बाद वे इसको पास करनेके लिए राजी हुए, पर इस शर्तपर कि इसपर किसी प्रकारका मत न लिया जाये। वेल्स इस कड़ी शर्तपर राजी न हुए। जर्मनोंने एक और प्रस्ताव पेश करना चाहा था कि कम्यूनिस्ट और साम्यवादी इस क्लबसे बाहर रखे जायें। इसपर सब देशोंके लेखकोंने उनका विरोध किया; क्योंकि यह बात पेन क्लबके मूल उद्देश्यको खण्डित करती थी। इतनेमें जर्मन कम्यूनिस्ट कवि और नाट्यकार अर्नेस्ट टौलरने कहा कि मैं इस प्रस्तावपर बोलूंगा। बस, तहलका मच गया और राष्ट्रीय जर्मन प्रतिनिधि दुम दबाकर भाग गये, पर वे कुछ देर बाद लौट आये। वेल्सने कहा कि यहां सबको बोलनेका अधिकार है। मैं किसीको जोर जबर्दस्ती रोक नहीं सकता।

हिट्लरके शासनपर वहांके कम्यूनिस्ट पत्र 'रोटे फाने' ने, जो अब गुप्त रूपसे निकलता है, एक चुटकुला दिया है। इससे वहांके वर्तमान शासनका रूप खुलता है। पत्र लिखता है—"दो मजदूर बहुत दिनों बाद मिले। एकने दूसरेसे पूछा—'कहिये, क्या हाल है? आज बहुत दिनोंमें मिले हैं।' दूसरा बोला—'भाई! क्या कहें। हमारे जुड़वां बेटे हुए हैं।' 'मुबारक है! भला बताइये तो इस नयी जोड़ीका नाम क्या रखा है।' 'एकका नाम है हिट्लर और दूसरेका हिण्डेनबुर्ग।' 'खूब किया। क्या अब नात्सी बन गये हो?' 'नहीं, बात यह है कि मेरे इन बच्चोंमें हिट्लर बहुत चिल्लाता है और हिण्डनबुर्गको चुप्पी-सी लग गयी है।"

## आस्ट्रिया—

वहांके चान्सलर डालफुसको भरोसा है कि आस्ट्रियाका नात्सी दल अब अधिक दिन न टिक सकेगा। वहांके पत्र एकस्वरमें चिल्ला रहे हैं कि हम जर्मनोंके मित्र हैं, पर मित्रताके बदले गुलामीका तौक गलेमें नहीं पहनेंगे। खूबी यह है कि इटली, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड आदि सरहदी देशोंके पत्र नात्सी दलपर बिगड़ रहे हैं। यह देखकर हिट्लर शशोपञ्जमें पड़ गया है। यदि आस्ट्रियामें नात्सी दलका बोलबाला न हुआ तो यह समझ लेना पड़ेगा कि नात्सी-बाढ़ जर्मनीको ही बहायेगी।

## स्पेन—

यहां जो धार्मिक सम्पत्तिको जब्त करनेका कानून बना है उसके कारण देशपर सङ्कट आ पड़ा है। १९३४ के बाद वहां पादड़ियोंके हाथोंमें प्राइमरी स्कूल और छोटे-मोटे कारखाने भी न रहेंगे। वहांका प्रधान मन्त्री आजाना स्वयं कैथलिक है, उसकी ऐसी कम्बख्ती आयी है कि उसपर पादड़ी बिगड़े हैं तथा प्रजातन्त्रवादी भी उसके शत्रु बन गये हैं।

उधर आण्डालूसिया प्रदेशमें किसानोंमें कम्यूनिज्म फैल रहा है। वहांके किसान जमींदारोंके शत्रु बन गये हैं। इसलिए रात-दिन उपद्रव हो रहे हैं।

## ब्रिटिश साम्राज्य—

आयर्लैण्डमें राजाकी शपथ अब कोई भी कर्मचारी न खायेगा। शपथका बिल पास हो गया है और अब सेनेटसे इसकी आज्ञा लेनेकी आवश्यकता न रही। गवर्नर जनरल बकनलने भी इसपर हस्ताक्षर कर दिये हैं। डी वालेराका कहना है कि हम इतनेसे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे, तब तक हमें शान्ति नहीं मिल सकती जब तक हम स्वतन्त्र राष्ट्रके पूरे अधिकार भोग न करेंगे। उनका तो विश्वास है कि शीघ्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही आयर्लैण्ड स्वतन्त्र प्रजातन्त्रमें परिणत हो जायेगा। उनके इस कथनके मूलमें आयर्लैण्डके रिपब्लिकन दलकी नयी जागृति है। आयर्लैण्डमें प्रजातन्त्रवादी दल बहुमत प्राप्त करने लगा है।

## अमेरिका—

१९३२ में युक्तराष्ट्रमें सबसे अधिक आत्महत्यायें हुई। १९३१ में कुल बीस हजार हुई थीं, पर गत वर्ष तेईस हजार हुईं। इनमें वे स्त्रियां अधिक हैं, जिन्हें उनके पतियोंने तलाक दे दिया था।

डाकोंकी भी धूम है। एक न्यूयार्क नगरसे इस वर्षके आरम्भमें डाकुओंने प्रायः बारह लाख रुपये उनके छुटकारेके रूपमें वसूल किये, जिन्हें पकड़ कर वे ले गये थे। पूंजीपति जान डेनवेरके घरवालोंको उसे फिर वापस पानेके लिए ५० हजार डालर देने पड़े। शिकागोके गुण्डोंने जोजफ फैक्टरको भगाया और जब उसके पिता जेकबने उन्हें तीस हजार डालर दिये तो वह छोड़ा गया। पेगी मैकमाठ हफ्तों तक इन गुण्डोंके साथ जहाजमें जलविहार करती रही, जब उसके पिताने सत्तर हजार डालर दिये तब वह घर आयी। इसी प्रकार मेरी पैक एलवाय कन्सास नगरमें दिनदहाड़े अपने पिताके घरसे भगायी गयी और तीस हजार डालर देकर उसे मुक्ति मिली। विलियम हाम सेण्टपाल नगरसे भगाया गया और एक लाख डालर लेकर वह डुलुथ नगरमें छोड़ दिया गया। इन मोटी रकमोंको देखकर सब बेकारोंके मुंहमें पानी आता होगा। इसीलिए देखते हैं कि भारतमें भी यह रोग फैलने लगा है। अमेरिकाके असहाय निराश्रयोंकी गणना अभी समाप्त हुई है, इससे मालूम हुआ कि वहां ग्यारह लाख मनुष्य ऐसे हैं, जिनके पास भोजनको पैसा और सर छिपानेको ठौर नहीं है। इनमें बहुतसी स्त्रियां भी हैं। एक न्यूयार्कमें दस हजार औरतें दर-दर भीख मांगती फिर रही हैं।

'रिकवरी' बिल पास हो गया है। अब रूजवेल्टकी सरकार अपना सारा जोर बेकारी हटानेमें लगा रही है। मजदूरोंकी मजदूरी बढ़ायी जा रही है और नये नोट निकालकर सरकारने रुपयेकी कमीको पूरा कर दिया है। अबसे वहां मजदूरोंको ४, ५ घण्टे काम करना पड़ेगा ताकि उनके बाद और मजदूर काम करें। इस प्रकार देशमें समृद्धि बढ़ानेका प्रयत्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रमको सफलता मिलेगी, इसकी पूरी सम्भावना है।

## दक्षिणी अमेरिका—

ब्रिटिश साम्राज्यके एक अङ्गमें कई राबिन्सन क्रूसो भूखे मर रहे हैं। कारिन्थिया नामक जहाजने संसारकी परिक्रमा की। रास्तेमें वह एक टापूके पास ठहरा, जो ब्रिटिश साम्राज्यमें है, पर जिसकी खबर अंगरेजोंको नहीं है। इसका नाम है ट्रिस्टान दा कुन्हा। यह द्वीप अटलाण्टिक महासागरमें है। यहां कुछ अधगोरे बसते हैं। इस टापूकी खूबी यह है कि इसका संसारसे किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं है। न वहां डाक जाती है और न जहाज। इससे वहांके निवासियोंको यह लाभ है कि उन्हें पूरा स्वराज्य मिल गया है और उनपर किसी प्रकारका टैक्स नहीं है। मोटरकार किस चिड़ियाका नाम है यह भी वे नहीं जानते। इस द्वीपमें खेती भी नहीं होती और वहांके थोड़ेसे निवासी आलू तथा मछलियोंसे पेट भरते हैं। अबके ऐसा अकाल पड़ा है कि न तो वहां आलू उपजे और न तूफानके सबब मछलियां ही रहीं। इसलिए वहां हाहाकार मचा हुआ था। गत अक्टूबर मासमें कोई जहाज भी उनके देखनेमें न आया। कारिन्थिया जहाजको खबर लगते ही वह गल्ला भरके ले गया, पर तूफानने उसका रास्ता पलट दिया। अब रिओ द जानैरोसे जापानी जहाज मनीला मारू गल्ला भरके वहांको गया है। पर ब्रिटेनको अपने साम्राज्यके इस अङ्गकी कुछ सुध नहीं है। यह साम्राज्य इतना बड़ा हो गया है कि इसके हर्त्ता-कर्त्ताओंके कानमें इस छोटे रौखड़ द्वीपकी सुध भी नहीं है, फिर भी ट्रिस्टान दा कुन्हाके निवासी इस आशापर हैं कि 'कबहूं दीन दयालके भनक पड़ेगी कान'।

## जापान—

जापानमें कम्यूनिज्मका प्रचार रोकनेकी बहुत चेष्टा की जा रही है। पर वहां पूंजीवादका प्रचार होनेसे कम्यूनिज्म भी सर उठाने लगा है। कोरियामें भी कम्यूनिस्ट अड्डे पाये गये हैं। मई १९३१ में वहां एक बार कम्यूनिज्म कुचल दिया गया था। पर इधर इसने फिर जोर बांधा है। इनकी सूचीसे पता लगा है कि कोरियामें इस समय प्रायः दस हजार कम्यूनिस्ट हैं। इनके नेता और मुख्य कार्यकर्ता गिरफ्तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर लिये गये हैं। इनके कागज-पत्रोंसे यह भी मालूम हुआ है कि इनका सम्बन्ध जापानकी कम्यूनिस्ट पार्टीसे है। इसलिए जापानमें भी धरपकड़, खानातलाशी आदिका बाजार गरम है।

जबसे जापान राष्ट्रसङ्घसे अलग हुआ तबसे वह स्पष्ट रूपसे अपना मिशन संसारके सामने रख रहा है। वहांके क्षत्रियोंके प्रतिनिधि जनरल आराकी कहते हैं—"भारत अंगरेजोंका गुलाम है, इसलिए उसकी बुद्धि राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रमें अपना हित नहीं सोच सकती। पराधीनताके कारण वहांके व्यापारियोंको अक्ल भी खो गयी है। वे जनताको लूटकर अपना पेट भरना ही अपना धर्म समझ रहे हैं। ...एशियाकी जातियोंको गोरे अन्धाधुन्ध कुचल रहे हैं। जापानी साम्राज्य उनकी यह हिमाकत बिना दण्ड दिये न सहेगा। हमारे साम्राज्यका सिद्धान्त है न्याय और सबके अधिकारोंकी रक्षा।" यह कहकर उन्होंने साफ कहा है कि "हम संसारभरमें अपना राष्ट्रीय आदर्श कायम करेंगे। क्योंकि जापानी देवताओंकी सन्तान हैं और उनका धर्म है कि वे संसारपर राज करें।"

इधर जापानने उत्तरी चीनमें अपनी सरकार स्थापित करनेकी पूरी तैयारियां कर ली हैं। कई चीनी नेता सहमत हो गये हैं कि उत्तरी चीन अपना अलग राज स्थापित करे। इसके बाद जापान चीनके अन्य भागोंपर अधिकार जमानेकी फिक्रमें लगेगा।

——

## विश्वमित्रका नारी-जागरण अङ्क

अक्टूबर पहली तारीखको विश्वमित्रका विशेषाङ्क निकलेगा। हम प्रयत्न कर रहे हैं कि इसमें संसार और भारतके नारी-जागरणपर उच्चकोटिके लेख रहें। देश और विदेशके अनेक प्रकाण्ड पण्डितोंने वचन दिया है कि वे अपनी ज्वलन्त लेखिनी द्वारा वर्तमान समयकी इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समस्यापर प्रखर प्रकाश डालेंगे। किन्तु हम इस महान् उद्योगमें अपनी शिक्षित मां और बहनोंकी सहायता चाहते हैं। वे अपने लेखों और प्रासङ्गिक चित्रोंसे हमें अनुग्रहीत करें; अपने सुख-दुख, भाव-अभाव और आकांक्षायें लिखकर वे हमारी अमूल्य सहायता कर सकती हैं। हम इस महत्त्वपूर्ण विशेषाङ्क द्वारा आधुनिक जागृत नारीका स्वरूप और उसके अभाव-अभियोग देशके सामने रखना चाहते हैं। यह अङ्क इस विषयपर बेजोड़ होगा और अपनी स्पष्टवादिता तथा सत्यप्रियतासे देशमें तहलका मचा देगा।

## लोकमान्यकी श्राद्धतिथि

लोकमान्य तिलक भारतकी विभूति थे। इस एक मनस्वी वीरने वर्षों तक अकेले देशमें स्वतन्त्रताकी भावना फैलायी। यह प्रकाण्ड पण्डित गीताका उपासक था। निष्काम कर्म करना इसके जीवनका ध्येय था और भारतको स्वतन्त्र करके भारतीय संस्कृतिका सुखद रूप संसारके सामने रखना इसका प्रत्यक्ष उद्देश्य। कर्मयोगमें परम निष्ठा होनेके कारण यह योगी अपने पथसे उस समय भी विचलित न हुआ जब सरकारने इसे छ सालके लिए कारावासका दण्ड दिया। उस समय भारतकी आत्मा विचलित हो उठी थी, हम जैसे दुर्बल-हृदय भीरु समझते थे कि अब लोकमान्य जेलसे वापस न आयेंगे। किन्तु वह वीरात्मा वहांसे सकुशल लौटा और



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



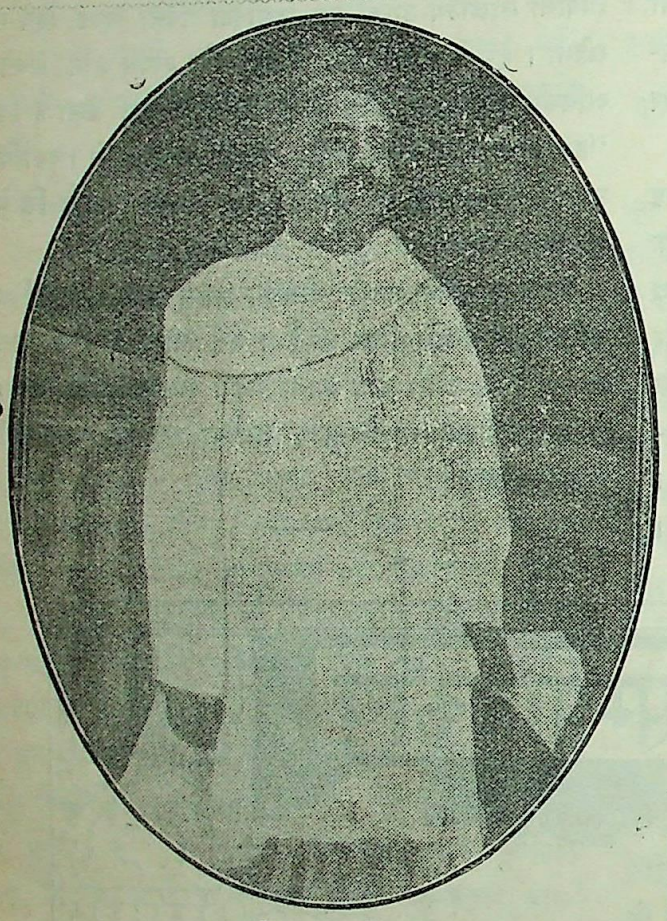

लोकमान्य तिलक

पूर्ववत् देशके स्वाधीनता-संग्राममें जुट गया। यह शुद्धात्मा विजितेन्द्रिय कूटनीतिका अगाध ज्ञान रखता था। इसका फल यह हुआ कि उसके जीवनमें कभी एक भूल न हुई। जेलमें लोकमान्यने गीताका जो भाष्य किया वह भारतकी संस्कृतिके इतिहासमें अमर रहेगा। इसमें 'कर्म-जिज्ञासा' अध्यायमें नीतिके सिद्धान्तोंकी जो आलोचना है उसपर ध्यान न देनेसे हिन्दू जाति डूब रही है। हमारा पूरा विश्वास है कि लोकमान्यका बताया हुआ मार्ग ही भारत और हिन्दू जातिको उठानेका सामर्थ्य रखता है। 'नान्यः पन्थाविद्यतेऽयनाय।' इस पराक्रमी महात्माको हम इस श्राद्धके अवसरपर दण्डवत् होकर कोटिशः प्रणाम करते हैं।

## स्व० सेनगुप्त

अचानक देशपर वज्रपात हो गया। भारतके वर्तमान दारुण सङ्कटके समय हमारी पूंजीका एक हिस्सा लुट गया। पराधीन और शोषित देश भारतकी पूंजी उसके वे नेता हैं जिन्होंने इस अभागे देशके लिए फकीरी बाना धारण कर लिया है। श्री यतीन्द्रमोहन सेनगुप्त ऐसे अग्रणियोंमें एक थे। इस स्वतन्त्रताके सैनिकने देशकी पराधीनता और दरिद्रतासे व्यथित होकर अपनी वकालतकी आयपर तुरत लात मार दी और स्वयं दरिद्र बनकर अकिञ्चन देशवासियोंकी सेवामें अपने प्राण होम दिये। यह नेता आज नहीं रहा। वह बन्दी अवस्थामें देशकी स्वाधीनताका नाम रटते-रटते उस लोकको चल दिया, जहां वह मुक्त होकर विचरण करेगा। किन्तु अभागा भारत और खासकर बङ्गाल उसके चल बसनेसे अनाथ बन गया। भविष्य अपने नेता पैदा करेगा और देशकी प्रगतिमें विश्वका विधाता भी अड़चन नहीं डाल सकता यदि राष्ट्रकी आत्मा अपने ध्येय तक पहुंचनेके लिए छटपटा रही हो; लेकिन इस समय तो ये रास्ता दिखानेवाले तपस्वी हमें छोड़कर अन्धकारमें फेंके जा रहे हैं। ऐसे अवसरोंपर विलाप करनेसे कुछ लाभ नहीं होता।

स्व० सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हम यदि वास्तवमें इनके त्याग और उद्देश्यके कायल हों तो हमारा एकमात्र धर्म यही है कि हम स्वराज्य-पथपर वीर गतिसे चलनेके लिए, सब कुछ त्याग करनेके लिए तैयार हो जायें। यही श्रीसेनगुप्तका श्राद्ध है—इसीसे उन्हें स्वर्गमें चैन मिलेगा।

## वायसराय-गांधी-प्रकरण

सत्याग्रहीकी कभी हार नहीं होती। इस दृष्टिसे महात्मा गांधीसे भूल भी हो जाये तो वह उनकी विजयका मार्ग प्रशस्त करेगी। अबकी बार वायसरायसे परामर्श या प्रार्थना करनेके लिए समयकी प्रार्थना करके महात्मा गांधीने अच्छा किया या बुरा, इसपर देशमें मतभेद है। लेकिन इस विषयपर तो नरम-से-नरम नेतासे लेकर सबका एकमत है कि उनकी प्रार्थनाकी अस्वीकृतिसे सरकारने अपनी राजनीतिज्ञताका परिचय नहीं दिया। इस बार यह प्रायः निश्चित ही था कि सत्याग्रह आन्दोलन उठा लिया जाता, पर वायसरायने महात्मा गांधीकी जबान पकड़ ली और उनसे केवल इसलिए नहीं मिले कि वे सत्याग्रहके पक्षमें थे। यह बात भारतका नादान बच्चा भी जानता है कि सत्याग्रह महात्मा गांधीका प्राण है। बिना इसके वे नहीं रह सकते। अब ऐसा अवसर आया था कि यद्यपि वे इस सिद्धान्तपर डटे रहते, पर अमलमें इसको शायद ही लाते। यह बात सरकार भी समझती है; पर खेद है कि उसने इससे लाभ न उठाया और देशमें शान्ति स्थापित करनेका एक उत्तम अवसर हाथसे खो दिया। भारत और ब्रिटिश साम्राज्यका दुर्भाग्य है कि इनमें मनोमालिन्य बढ़नेके अतिरिक्त घट नहीं रहा है। महात्मा गांधीका शान्तिका निमन्त्रण अस्वीकार करके भारत-सरकारने घोर भूल की है।

## मैं बी० ए० नहीं हूं

हरिजनोत्थान आन्दोलनमें विशेष भाग लेनेवाले अमल गोस्वामी अपनेको आक्सफोर्डका बी० ए० बताते थे। पर अब उनकी कलई खुली है। वे स्वयं लिखते हैं—"मैं आक्सफोर्डका ग्रेजुएट नहीं हूं। मैंने जनताको धोखा दिया है।" इससे पहले इसी आन्दोलनमें नीलनागिनी देवी भी जनताको भ्रममें डाल चुकी है। ऐसा क्यों होता है? हमारी क्षुद्र समझमें तो इसका कारण है इन हरिजन सेवकोंकी नेताओंसे भिन्नता पैदा करने और इस भांति अपना नाम पैदा करनेकी इच्छा। इस उपायसे उनको अन्न भी मिल जाता है जिन्हें दूसरे उपायसे मिलना कठिन हो जाता। पेट सब पाप कराता है। यदि अमल गोस्वामी अपनेको आक्सफोर्डका ग्रेजुएट न कहता तो हरिजनोद्धारक नेता उससे मिलते इसमें सन्देह है। हममें तो वह 'मिशनरी स्पिरिट' नहीं है कि रोमन कैथलिक पादड़ियोंकी भांति पहले अपने सिद्धान्तोंके नामपर लाखों करोड़ों रुपयेकी अपनी निजस्व सम्पत्ति मिशनके अर्पणकर जोग ले लें, तब फकीर बनकर अपने धर्मके लिए भूखे मरें और प्यासे फिरें। इस त्याग और तपस्याके बलसे संसारमें धर्मका प्रचार होता है। ऐसे त्यागी अपने संसर्गसे अमल गोस्वामीको भी उठा लेते हैं। हमारे दुर्भाग्यसे भारतमें एक ही महात्मा गांधी हैं वे किस-किसको उठायें।

## बेलडाङ्गामें हिन्दुओंकी लूट और मार

बेलडाङ्गामें कुछ मुसलमानोंने बङ्गाली हिन्दुओंको जिस तरह मारा, उनके घर जला दिये और गांवके गांव उजाड़कर त्राहि-त्राहि मचा दी यह देखकर बङ्गाली हिन्दुओंकी निर्बलता पर महान् शोक होता है। अपनी रक्षा करना जीवशास्त्रका सर्वप्रथम नियम है। जो प्राणी इसका पालन नहीं कर सकता उसका मूलोच्छेदन अनिवार्य है—चाहे वह बङ्गाली मनुष्य हों या जङ्गलके पशु। प्रकृति इनमें कोई भेद नहीं मानती। ये दुर्बल और पतित बङ्गाली हिन्दू अपनेको सुसङ्गठित कहते हैं और स्वयं रवीन्द्रनाथके मुंहसे इन्होंने यह कहलवाया है कि बङ्गालमें छूत अछूतकी समस्या नहीं है, इसलिए पूनेमें म० गांधीने हरिजनोंके साथ जो समझौता किया है उससे बङ्गालपर अन्याय हुआ है। इन परम स्वार्थी जीवोंको यह मालूम नहीं है कि यदि बङ्गालमें अधिक हरिजन प्रतिनिधि व्यवस्थापिका सभाओंमें जायेंगे भी तो उनका समाज इससे बलशाली बनेगा। हरिजन भी तो हिन्दू हैं। बङ्गालका इतिहास बताता है कि यहांके उच्चवर्ण हिन्दुओंने हरिजनोंके प्रति घोर अन्याय करके अपने प्रदेशको मुसलमानोंकी भूमि बना दिया है और आज ये धर्मान्तरित हरिजन इनकी नारियोंको हरण और धर्षण कर रहे हैं तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ये स्वार्थान्ध बङ्गाली हिन्दू, मुसलमानोंसे अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ हैं।

## चटगांव बोर्डोंका चुनाव

बङ्गाली हिन्दुओंके पतनका दूसरा उदाहरण चटगांवके बोर्डोंका निर्वाचन है। वहांके सदर लोकल बोर्डमें सबके सब निर्वाचित सदस्य मुसलमान हैं। ऐसा क्यों हुआ? क्या चटगांवमें हिन्दू नहीं बसते? मनुष्यगणनासे तो मालूम पड़ता है कि वहां आधेसे कुछ ही कम हिन्दू हैं। तब उन्होंने हिन्दू मेम्बर निर्वाचित क्यों न किये? क्या हिन्दुओंमें समाजसेवी निष्पक्ष नेता नहीं रह गये हैं? इस निर्वाचनसे तो मालूम पड़ता है कि हिन्दुओंकी अधिक सेवा मुसलमान ही करते होंगे। इस लोकल बोर्डने डिस्ट्रिक्ट बोर्डके लिए १९ सदस्य चुने जो स्वभावतः सबके सब मुसलमान हैं। यह है बङ्गालके मुसलमानोंकी विजययात्रा और वहांके हिन्दुओंकी आत्महत्या।

## 'एडवान्स' की जमानत वापस

'एडवान्स' से बङ्गाल सरकारने इसलिए चार हजार रुपयेकी नयी जमानत मांगी कि उसमें मौलाना हसरत मुहानीके साथ एक रिपोर्टरकी बातचीत छपी। खूबी यह थी कि रिपोर्ट भेजी थी एसोसिएटेड प्रेसने। यह देखकर एडवान्सवालोंकी अक्ल दङ्ग हो गयी। उनको एक साधारण समाचार छापनेपर यह कड़ी सजा कैसे मिली यह उनकी समझमें न आया। इसलिए इसकी अपील हाईकोर्टमें की गयी। वहां जस्टिस मुकर्जी और जस्टिस पैनक्रिजने मत दिया कि जमानत वेजा है। भला इस समाचारमें ऐसी कौन-सी बात है जिससे भय हो कि सत्याग्रह आन्दोलनको उत्तेजन मिलेगा। इसके अतिरिक्त समाचार छापना तो पत्रोंका काम है। इसलिए हाईकोर्टने जमानत वापस दिला दी। क्या आशा करें कि भविष्यमें बङ्गाल सरकार पत्रोंपर कड़ाई कुछ ढीली कर देगी।

## महाराष्ट्र विश्वविद्यालय

महाराष्ट्रोंकी प्रबल इच्छा है कि उनका अपना अलग विश्वविद्यालय हो। भाषाकी दृष्टिसे देखा जाये तो यह मांग न्यायसङ्गत है। विश्वविद्यालयोंका कर्तव्य यह होता है कि अपनी-अपनी प्रादेशिक भाषाओंके द्वारा सारे प्रदेश और फलतः समग्र संसारका ज्ञान बढ़ावें। विश्वविद्यालय उच्च ज्ञानका प्रचार और उन्नति करते हैं। इसके लिए आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक विभिन्न भाषाभाषी समाजके लिए स्वतन्त्र विश्वविद्यालय हो जहां उसी भाषाके विद्वान् वीणा-पाणि सरस्वतीकी पूजामें मग्न रहें। ये ज्ञानी अध्यापक ही किसी भाषाकी उन्नति कर सकते हैं। यही कारण है कि संसारके विश्वविद्यालय परभाषाभाषी अध्यापकोंको नियुक्त नहीं करते भले ही वे अगाध विद्वान् क्यों न हों। परम स्वार्थी बङ्गालियोंकी नीतिने उन्हें इस विषयपर लाभ पहुंचाया है। वे कलकत्ता और ढाकाके विश्वविद्यालयोंमें सिवा बङ्गालियोंके दूसरोंको रखना घोर पाप समझते हैं। नोबल पुरस्कार विजेता सर सी० वी० रमणसे कलकत्ता विश्वविद्यालयका सम्मान था, पर अधिकांश बङ्गाली अध्यापक और छात्र उनके शत्रु बने बैठे थे। नौबत यहां तक पहुंची कि 'अमृतबाजार-पत्रिका' के कालमोंके द्वारा उनपर गालियोंकी बौछाड़ की गयी और बताया गया कि यह 'विदेशी मद्रासी' अध्यापक कुछ गैर-बङ्गाली छात्रोंको विशेष प्रोत्साहन देता है। अस्तु बङ्गालियोंकी इस परम सङ्कीर्णनीतिसे जो केवल इसलिए बर्ती जाती है कि बङ्गालका पैसा दूसरे प्रदेशको न जाये, बङ्गालको यह लाभ हुआ है कि बङ्गाली साहित्य अपूर्व उन्नति कर चुका है। यह देखकर महाराष्ट्र चाहते हैं कि उनका अपना विश्वविद्यालय हो। खेद है कि न तो बम्बई सरकार उनका पक्ष ले रही है और न उनमें अपनी सम्मिलित आवाज सरकार तक पहुंचानेके लिए एकता है। इस सम्बन्धमें हमें युक्तप्रान्तके विश्वविद्यालयों-का स्मरण हो आता है। वहां लखनऊ विश्वविद्यालय तो बङ्गालियोंका अड्डा है। ये बङ्गाली मोटी रकमें लेते हैं हिन्दी भाषाभाषियोंसे और ग्रन्थ लिखते हैं बङ्गालीमें। इसके अतिरिक्त ये बङ्गाली युवकोंको अन्य प्रदेशोंके विरुद्ध भड़कानेमें भी लज्जित नहीं होते।

## डा० अम्बेदकरका सम्मान

डा० अम्बेदकरने लन्दनमें कहा था—"हमें बाध्य होकर ही पृथक् निर्वाचनकी मांग पेश करनी पड़ी; क्योंकि हिन्दुओंके सामाजिक विचार अनुदार हैं।" हमें इसकी सत्यता माननी ही पड़ेगी। यदि उच्च वर्णवाले अछूतोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनाते तो वे क्या हमसे अलग होनेकी इच्छा रखते। हैं तो वे भी हिन्दू ही। पर हमारे दुर् दुर्के व्यवहारने उनके नेताओंको चिढ़ा दिया और इसका जो परिणाम हुआ वह हमारी जातिके लिए घातक सिद्ध होता, यदि हम लन्दनकी भूलको पूनेमें न सुधार सकते। लन्दनमें डा० मुञ्जेने डा० अम्बेदकरको हिन्दू डेलीगेशनका अध्यक्ष बनाकर न केवल नीतिका बल्कि हरिजनोंके प्रति हिन्दू सम्प्रदाय-के प्रेम और विश्वासका पक्का प्रमाण दिया है। हिन्दू-समाजके इन दो अङ्गोंमें परस्पर विश्वास पैदा करनेका यही उपाय है कि उच्च वर्णवाले हरिजनोंको मान दें और उनपर भरोसा करें। यह बात इस बार डा० मुञ्जेने की है।

## बङ्गालमें उर्दू का प्रचार

बङ्गाली हिन्दीको कुलियोंकी भाषा कहते हैं। वही बङ्गाली हिन्दीसे प्रेम दिखाता है, जिसे आशा हो कि इसके द्वारा पैसे आयेंगे। इसलिए यह आश्चर्य घटना सम्भव हुई कि मद्रासी भाई विशुद्ध हिन्दी बोलने और लिखनेमें समर्थ हो पाये हैं, पर बङ्गाली विद्वान् भी जो बरसों लखनऊ, दिल्ली आदि नगरोंमें रहते हैं कि बिना बङ्ग भाषाके सम्मिश्रणके दो शब्द शुद्ध हिन्दीके नहीं बोल सकते। इनका यह भी दावा है कि बङ्गाली भारतकी राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। सो बङ्गाल-में हिन्दी-प्रचारका काम आगे न बढ़ सका। पर शीघ्र ही यहां उर्दूका प्रचार लम्बे-लम्बे डग धरेगा इसमें संदेह नहीं। यहांके मुसलमान इस ओर जी-जानसे लगे हैं। बङ्गालमें मुसलमानी स्कूलोंकी 'पूथियों' में उर्दू फारसी मिश्रित भाषाका रिवाज है। एक पोथीकी बंगला सुनियेः— "डालिबे तुझे अभी दोजख माझारे" एक स्थानपर लिखा है—"पेटके भीतर बच्चा बोले कुछ मिर्चा खाबो।" बुलबुले बङ्गाल नजीरुलइस्लाम भी आजकल अपनी कवितामें उर्दूका जोर कर रहे हैं। इसका फल यह होगा कि बङ्गाली भाषामें उर्दूके शब्द मिल जायेंगे। पर बङ्गाली मुसलमानोंकी उर्दू कानफरेन्स इस ओर जो चेष्टा कर रही है, उससे मालूम पड़ता है कि शीघ्र ही उर्दू भाषा बङ्गालमें आसन जमा लेगी। यह हिन्दू-बङ्गाली साहित्यके लिए अशुभ सूचना है, क्योंकि उसमें विशुद्ध संस्कृतकी भरमार है। पर उस समय बङ्गालमें अनायास ही हिन्दीका प्रचार हो जायेगा।

## कांग्रेसका नया प्रोग्राम

कांग्रेसके प्रोग्राममें सत्याग्रहका नाम भी शायद न रहता यदि भारत सरकार नीतिसे काम लेती। म० गांधी सन्धिके लिए आतुर थे और उन्होंने इस ओर पूरी चेष्टा भी की। एक बार वायसरायका नकारात्मक उत्तर आनेपर भी उन्होंने देशके आत्मसम्मानकी चिन्ता न कर दुबारा विनम्र निवेदन किया कि उन्हें मिलनेका अवसर मिले। पर इसपर भी शिमलामें कोई न पसीजा। इससे अणे महोदयको बाध्य होकर कांग्रेसके आत्मसम्मानकी रक्षाके लिए वैयक्तिक

शान बीबी—"मेरी जान, बोल दो नहीं मिलेंगे।"

सत्याग्रहकी सम्मति देनी पड़ी। सामूहिक सत्याग्रह तथा लगानबन्दी आन्दोलन तो बिलकुल उठा लिया गया। इसीके कारण कांग्रेसका सरकारसे झगड़ा था। वैयक्तिक सत्याग्रहको तो संसारकी कोई भी शक्ति न तो चला सकती है और न बन्द कर सकती है क्योंकि यह तो प्रत्येक मनुष्यका अधिकार है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्रमें यदि कोई व्यक्ति किसी सिद्धान्त या कार्यको अन्याय समझे तो वह बिना किसी संस्थाकी आज्ञाके लिए ठहरे सत्याग्रह कर लेगा। इसमें कांग्रेस क्या कर सकती है। यह अधिकार तो कांग्रेसको भी नहीं है कि अपने सदस्योंको खास शर्तोंसे बांध दे। हम तो यह देख रहे हैं कि इस समय कांग्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और भारत सरकार दोनों गोरख-धन्धेमें फंसे हुए हैं और अभी तक किसीको भी सीधा और नीतिसम्मत रास्ता नहीं सूझ रहा है।

## जापानसे झगड़नेसे भारतको हानि

सबका मत है कि जापानके भारतीय रूईका बहिष्कार करनेसे देशकी अत्यधिक हानि होगी; पर मिल-मालिक अपना राग अलाप रहे हैं कि नहीं, इससे तो भारतको लाभ है। हालमें बम्बईके यहूदी मिलमालिक विकर सैसून भी बोल उठे कि इससे भारतको लाभ ही है। ये विकर सैसून विलायतके हैं और भारतकी स्वदेशीकी उन्नतिमें व्यस्त रहते हैं क्योंकि इनकी कई मिलें हैं। हमारे देशवासियोंके लिए इन देशी और विलायती मिल-मालिकोंके झांसेमें आना आसान है इसलिए हम इस विषयपर लण्डनके प्रसिद्ध आर्थिक पत्र 'एकोनोमिस्ट' की सम्मति देते हैं जो अपने निष्पक्ष मतके लिए विख्यात है। वह लिखता है:—

'जापानने बदला लेनेके लिए भारतकी रूईका बायकाट कर दिया है। तीन चार साल पहले शायद यह न चल सकता। पर अब स्थिति बदल गयी है। जापान अमेरिकासे सस्तेमें रूई खरीदने लगा है, अमेरिकाके अर्थ सङ्कटने रूईका दाम कम कर दिया है।.....यद्यपि जापान अब भी तिहाई रूई भारतसे मंगाता है, पर वह विना हानिके इसका मंगाना बन्द कर सकता है। यदि भारतीय दृष्टिकोणसे यह देखा जाये तो जापानी मार्केट हाथसे चले जानेसे उसकी महान् क्षति होगी। आज भी जापान भारतको रूईकी तमाम उपजका चौथाई मोल लेता है। इतनी रूई यूरोप और चीन मिलाकर खरीदते हैं।"

## भारतके मिलमालिकोंकी लंकाशायरसे दोस्ती

जो स्वदेशीके भक्त हैं और देशी कपड़ा पहनकर भारतकी दरिद्रता दूर करना चाहते हैं उन्हें यह पढ़कर अत्यन्त दुःख होगा कि मिल मालिक जो स्वदेशी कपड़ा बनाते हैं अपने स्वार्थके लिए लङ्काशायरसे मेल करनेको भी तैयार हैं। मिल मालिक सङ्घके अध्यक्ष मि० पी० मोदी विलायत पहुंचे हैं। उन्होंने मैञ्चेस्टरमें लङ्काशायरवालोंसे कहा—"यदि लङ्काशायर भारतकी राजनीतिक समस्या सुलझानेमें सहायता दे और भारतके अधिकारोंको माननेको तैयार हो तो ऐसी परिस्थिति उत्पन्न की जा सकती है, जिसमें दोनों देश आपसमें मिल जायें और भावी सम्बन्ध स्थायी बनानेका उद्योग किया जाये।" ये शब्द उन मिलमालिकोंके हैं जो जापानकी प्रतिद्वन्दितासे घबराकर लङ्काशायरकी सहायता चाह रहे हैं। मि० मोदीके देशभक्त हृदयके ये उद्गार बता रहे हैं कि 'स्वदेशी'पर घोर सङ्कट आ रहा है और ये पूंजीपति मिल मालिक लङ्काशायरके हाथों बिकनेको तैयार बैठे हैं। पाठकोंको हम एक और सूचना देना चाहते हैं। ये मिल मालिक इस चेष्टामें हैं कि विलायती और भारतीय मिश्रित पूंजीसे तथा विलायती प्रबन्धमें भारतके नाना प्रान्तोंमें 'स्वदेशी' मिलें खुलें और देशकी दरिद्र जनता अपना पेट काटकर स्वदेशीके नामपर इनको करोड़पति बनानेमें सहायता करे। यह है 'स्वदेशी'की महिमा। क्या यह देखकर भारतवासी चेतेंगे और यथाशक्ति विशुद्ध खद्दर पहनकर वास्तविक स्वदेशी और देशकी समृद्धिकी उन्नति करनेमें सहायक होंगे?

## हिन्दुस्तानी एकेडमी

यह एकेडमी अब तक अन्ततः अढ़ाई लाख रुपया व्यय कर चुकी है। यह रुपया हमारा नहीं था, युक्तप्रान्तकी सरकारने दिया कि इससे हिन्दी साहित्यकी उन्नति करो। सौंपा भी गया योग्य आदमियोंको। इसके मन्त्री बनाये गये प्रयागके कायस्थ पाठशालाके प्रिन्सिपल डा० ताराचन्द। ये सज्जन अपने पदपर अभी तक अधिष्ठित हैं। प्रयाग विश्वविद्यालयके कुछ अन्य विद्वान् भी इसके हर्ताकर्ता हैं। पर महान खेद है कि हमारे ये धुरन्धर विद्वान् और मातृभाषाके पुजारी पासमें रुपया होनेपर भी हिन्दीकी उन्नति न कर सके। इसने आरम्भमें ही गैल्सवर्दीके चार नाटकोंका अनुवाद निकाल डाला। इसके बाद कुछ ऐसी पुस्तकें निकालीं जो इनके आफिसके आलमारियोंकी ही शोभा बढ़ा रही हैं। तीन वर्षसे एकेडमी एक तिमाही पत्रिका निकाल रही है जिसकी छपाई और गेट-अप तारीफ लायक है पर लेखोंको देखकर हम निस्सङ्कोच कह सकते हैं कि इसके गाहक आठ दस भी हों तो हिन्दुस्तानी एकेडमीको अपना सौभाग्य समझना चाहिए। इस पत्रिकाका सालाना खर्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अनुमानतः आठ नौ हजार होगा। इन आठ दस ग्राहकोंके लिए पहाड़ खोदकर यह चूहा निकाला जा रहा है। प्रबन्धका यह ढङ्ग देखकर यू० पी० सरकारको दोष दिया जाय या एकेडमीके धुरन्धर सञ्चालकोंको। उस रोज प्रयागके एक सज्जन हमसे कहते थे कि एकेडमी स्वराज्यका नमूना है। इसपर अब एकेडमीके सञ्चालक रोने लगे हैं कि सरकार अब उनका ग्राण्ट घटा रही है। पाठक जरा सोचें यदि ये अढ़ाई लाख रुपये किसी प्रकाशकको मिलते तो वह अपना काम कितना बढ़ा लेता और फलतः हिन्दीकी कितनी उन्नति होती। क्या एकडमीवाले इस ओर ध्यान देंगे।

## मुसलमानोंमें छुआछूत

हम समझते हैं कि मुसलमानोंमें छुआछूतका झगड़ा नहीं है; यह तो हिन्दुओंके ही हिस्से आया है; पर बात ऐसी नहीं है। धौलपुर रियासतमें अछूत और छूत हिन्दुओंका नहीं, मुसलमानों और चमारोंका झगड़ा हो गया। मुसलमान चमारोंको अछूत समझने लगे और उनपर इतनी ज्यादती करना चाहते थे कि वे उनके सामने छाता भी न लगा सकें। एक्केपर न बैठने पावें और साइकलपर न सवार हों। इन हरिजनोंसे सबको समान समझनेवाले मुसलमान जिनकी उदार दृष्टिकी प्रशंसा गोबा आदि नौमुसलिमोंने की है—यह भी कहने लगे कि तुम हमारे मुहल्लेसे चमड़ा लेकर न निकलो। यदि मुसलमानी रियासत होती तो क्या होता? यह हम नहीं कह सकते पर धौलपुर हिन्दू रियासत है, इसलिए वहांके नरेशने इन असुविधाओंको हटा दिया और अब वहांके मुसलमान भी राजी हो गये हैं कि ये अड़चनें दूर करदी जायं। यह धौलपुर नरेशकी नीतिप्रियताका परिचायक है।

## बड़ौदा राज्यमें छुआछूतका अन्त

बड़ौदा रियासतने एक ऐसा कानून बनानेका निश्चय किया है जो वहांसे छुआछूतका पचड़ा उड़ा ही देगा। इस कानूनका नाम है 'कास्ट टिरैनी रिलीफ एक्ट' इसके द्वारा उन पञ्चायतों और सरपञ्चोंको कड़ी सजा दी जायेगी जो अन्तर्जातीय सहभोजमें भाग लेनेवाले या ऐसे बिवाह करनेवालोंको जातिच्युत करने या समाजसे निकालनेकी धृष्टता करेंगे। इस कानूनकी भूमिकामें कहा गया है कि इस कानूनका उद्देश्य जाति-उपजातिके बन्धनोंका अन्त कर रियासतके निवासियोंमें एकता उत्पन्न करना है। बड़ौदेकी व्यवस्थापिका सभाकी आगामी बैठकमें यह बिल कानून बन जायेगा। और तब इस अत्यावश्यक कानूनके अनुसार काम होने लगेगा। जो पञ्च या पटेल किसीको रोटी बेटीके सम्बन्धसे जातिच्युत करेगा अथवा आर्थिक दण्ड देगा उस पर अदालतमें मामला चलेगा और उसे एक हजार रुपये तक जुर्माने या छ महीने तककी सादी कैदकी अथवा एक साथ दोनों दण्ड दिये जायेंगे। कानून पास होनेके बाद यदि कोई पुराना समाज-दण्डित अदालतमें अपील करेगा तो उसे सामाजिक सुधारके लिए दण्ड देनेवालोंको भी उक्त सजा दी जायेगी। बड़ौदा रियासतका यह प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य है। हिन्दू समाज राजनीतिक अत्याचारसे उतना पीड़ित नहीं है जितना सामाजिक स्वेच्छाचारसे। जिसको चाहें समाजके मुखिया जात बाहर कर दें और चाहें तो चला लें। इसका ही यह परिणाम होता है कि केवल सन्देहपर लोग समाजसे खदेड़े जाते हैं और अन्तमें निराश होकर वे विधर्मियोंका आश्रय ग्रहण करते हैं। इस कानूनसे कुछ ऐसे अभागोंकी रक्षा होगी; पर क्या समाजका आतङ्क यह कानून दूर कर सकेगा? इसका हमें सन्देह है। भविष्यमें समाजके सरपञ्च सुधारकोंको अर्थदण्ड न करेंगे और मुंहसे यह भी न कहेंगे कि तुम जातिच्युत किये गये, पर उसके साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा जातिसे बहिष्कृतोंका होता है अर्थात उसे उसके जातिवाले भोजनका निमन्त्रण न देंगे, अपने साथ बैठने न देंगे और उसके घर न जायेंगे। इस भांति पापी हिन्दू समाज अपनी घोर निर्दयता और आत्मघाती प्रवृत्तिका परिचय इस कानूनके रहते हुए भी दे सकेगा। फिर भी इस कानूनसे कुआं बन्द करना, प्रत्यक्षमें जातिबहिष्कारका नाम भी लेना आदि बन्द हो जायेगा, यह भी कम लाभ नहीं है। किन्तु उत्कट आवश्यकता तो इस बातकी है कि हिन्दुओंको मालूम हो कि उनके सामाजिक कुशासन और अन्धाधुन्ध अत्याचारने भारतमें प्रायः सात करोड़ विधर्मी और छ करोड़ ऐसे मनुष्य पैदा कर रखे हैं जो कब परधर्ममें आश्रय लें कुछ ठीक नहीं।

## इन्दौरमें प्रशंसनीय सुधार

इन्दौरमें भी एक बिल शीघ्र कानून बननेको है। इससे उस रियासतकी प्रजाको वास्तवमें बहुत लाभ होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भारतमें सर्वत्र ही विवाहके अवसरपर घर फूंक तमाशा देखकर ही लोग चैन पाते हैं। समाजके भयसे घरद्वार बेचकर भी इस तमाशेका सामान जुटाना पड़ता है। दो रोज हंसी-खुशी होती है और फिर जीवनभर विलाप। हमारा हृदय-हीन पापी समाज इस कुप्रथाके दुखद-परिणामकी चिन्ता न कर देशको भिखमङ्गा बनानेमें सहायता कर रहा है। इन्दौर रियासतने इस बुरे रिवाजका अन्त कर देना चाहा है। इसका लाभ प्रत्यक्ष है। इस कानूनके अनुसार विवाहके अवसरपर अन्धाधुन्ध खर्च करना दण्डनीय समझा जायगा। इसके अनुसार शादीमें यदि कोई अपनी जाति-बिरादरी-वालोंको दो भोजसे अधिक देगा तो वह दण्डभागी बनेगा। विवाहमें सम्बन्धियोंके अतिरिक्त पचाससे अधिक आदमी निमन्त्रित न किये जा सकेंगे और दहेजका भी नियम न किया जायेगा। जो आदमी इस कानूनके विरुद्ध काम करेगा उसे एक हजार रुपये तक जुर्माना किया जा सकेगा और जुर्माना न देनेपर एक सप्ताहकी सादी कैदकी सजा दी जायगी। प्रथम श्रेणीके मजिस्ट्रेटोंको इस कानूनके अनुसार यह अधिकार होगा कि जब उन्हें उक्त कानूनके भङ्ग किये जानेकी सूचना मिले तो वे हुक्म निकालकर लोगोंको नियम तोड़नेसे रोक सकें। यह हर्षका विषय है कि समाज-सुधारके कानूनोंमें देशी रियासतें 'प्रगतिशील' (?) बृटिश भारतको सबक सिखा रही हैं।

## महात्माजीका उग्र कार्यक्रम

साबरमती आश्रमको एकाएक तोड़ देना महात्मा गांधीके लिए उग्र कार्य है। यह बात अचानक उनके मनमें उठी और तत्काल इसके अनुसार काम भी हो गया। यह वास्तवमें महात्मा गांधीकी दारुण चिन्ताधाराका द्योतक है। उनके नामपर देशने अपूर्व आत्मत्याग किया। कई नेताओंने अपनी लाखोंकी रियासत खाक कर दी और जेलको अपना घर बनाकर स्वास्थ्य मिट्टीमें मिला दिया। नगर-नगर, गांव-गांवमें इसके उदाहरण मिलते हैं। अपने ऐसे उत्कट अनुयायियोंकी दशा महात्माजीसे देखी नहीं जाती। इसलिए वे कोई ऐसी बात करना चाहते हैं जिससे देश चौकन्ना हो और इस त्यागका महत्त्व समझे। स० गांधीका हृदय कोई तीव्र पथ खोजनेके लिए छटपटा रहा था। उन्हें अब इसके दर्शन हो गये हैं। शीघ्र ही यह देशके सामने आ जायगा सारा भारत इसे जाननेको व्यग्र है। क्या महात्मा गांधी इस बार अपने प्राणकी पूरी बाजी लगाना चाहते हैं?

महात्मा जो करते हैं दैवी प्रेरणासे करते हैं। इसलिए उनका कार्यक्रम भी अचानक स्थिर होता है। इस विषयपर कोई कुछ भविष्यवाणी नहीं कर सकता। हां, इतना सब जानते हैं कि अब सामूहिक सत्याग्रहका पुनर्जन्म शीघ्र होनेका नहीं। स्वयं महात्माजीका विचार है कि इस समय इसके बन्द होनेमें ही श्रेय है।

## तुलसी जयन्ती

श्रावण शुक्ल सप्तमीको गो० तुलसीदासने अपना शरीर त्याग किया। इस पवित्रात्मा कविने संसारको रामचरित-मानसके रूपमें जो अमृत पिलाया है वह कोई दूसरा कवि कर सका हो इसका हमें सन्देह है। इस कविकुलशिरोमणि की स्मृतिकी जितनी रक्षा की जाये उतना ही अधिक देशका मङ्गल है। देश-भरमें उनकी जयन्ती मनायी जाने लगी है यह उचित ही है। हम इस महात्माको जिसने संसार-भरको सियाराममय देखा अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हैं।

'विश्वमित्र प्रेस', १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तासे पं० मातासेवक पाठक द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# पढने योग्य कुछ ऐतिहासिक पुस्तकें

## मेवाड़-गौरव

मुगल-साम्राज्यकी भीषण विभीषिका जिस समय भारतके समस्त हिन्दू-राज्योंको हड़प करनेकी चेष्टा कर रही थी, उस समय मेवाड़ ही एक ऐसा प्रदेश था, जिसके राजा, प्रजा, बाल-वृद्ध-वनिता सभीने एकसे एक बढ़ कर बलिदान करके मरणोन्मुख हिन्दू जाति के मान-गौरवकी रक्षा की थी। कर्तव्यके लिये पिताओंने पुत्रोंको कत्ल किया था, मेवाड़ की रमणियोंने अग्निमें कूद कर हिन्दुत्वकी रक्षा की थी। इसमें उसी मेवाड़की कीर्ति-कलापोंका वर्णन है। दो संस्करण हाथोहाथ बिक गये। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १)

## महाराणा-प्रताप

जिस समय हिन्दू जातिपर मुगल-साम्राज्य-विस्तारका ग्रह लगा हुआ था और हिन्दू राजा-महाराजागण एकके बाद एक मुगल-सम्राटके सामने शिर झुकाकर आत्म-समर्पण कर रहे थे, तब महाराणा प्रताप ही एक ऐसे वीरव्रती थे, जिनकी हुंकार-ध्वनिसे मुगल-राजसिंहासन कांप उठा था! इस पुस्तकमें उन्हीं हिन्दूकुल-गौरव प्रातःस्मरणीय महाराणा-प्रतापकी कीर्ति-कहानी विशद रूपसे लिखी गयी है। समस्त घटनाओंका इसमें उल्लेख है। अनेक चित्रोंसे सुशोभित। मूल्य १) मात्र।

## पृथ्वीराज

पृथ्वीराज दिल्लीके अन्तिम हिन्दू सम्राट् थे। इसमें उन्हींके कार्यकलापोंका वर्णन है। भारत पर बिदेशी विधर्मियोंके बहुत दिनोंसे दांत लगे हुए थे। दुर्भाग्यसे हिन्दुओंमें फूट पड़ गई और वे स्वार्थपरायणताके वशीभूत होकर एक दूसरेके प्राणोंके ग्राहक हो गये। अन्तमें गृह-शत्रुओंने विदेशियोंको निमन्त्रण देकर भारतमें बुला कर मातृभूमिको पददलित कराया! यह उसी समयका भारतका रक्त-रंजित इतिहास है। अनेक रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई सफाई बढ़िया मूल्य १) मात्र।

पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ शंभू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास

## ❀ मिलन-पूर्णिमा ❀

**( सचित्र—सामाजिक उपन्यास )**

सौरीन एम० ए० पास हिन्दू-कुलीन था। रेखा थी, एम० ए० तक पढ़ी हुई—ब्राह्मसमाजभुक्त—कुमारी। दोनोंके प्रेम-वन्धनमें सौरीनकी महत्वाकांक्षाने विघ्न डाल दिया। रेखाने सौरीनका रुद्ध मार्ग खोल दिया, परन्तु विना रेखाके वह कुछ भी न कर सका। इस उपन्यासमें जहां प्रेमकी मन्दाकिनी प्रवाहित होती है, वहां साथही कर्तव्यकी धारा प्रवल-वेगसे वेगवती होकर बहती है और अन्तमें दोनों धारायें, लोक-सेवाके सागरमें जाकर विलीन हो जाती हैं। मूल्य १॥) रुपया मात्र।

## विधवा

रूढ़ियोंके गुलाम, हिन्दूसमाजमें धर्म का नाम लेकर निरीह विधवाओं पर कैसा भीषण अत्याचार हो रहा है और कुलीनताके पाखंडकी ओटमें संवलहीन देवी-स्वरूपिणी विधवाओंका धर्म बिगाड़ कर समाजके ठेकेदार, उन्हें वेश्यालयोंमें पहुंचा देते हैं, इसका इसमें बहुत ही करुणापूर्ण चित्र खींचा गया है। काशी-वासके नाम पर होनेवाले पापाचार और विधवाओंकी खरीद-फरोख्त और पण्डे-पुजारियोंके वीभत्स कृत्यों और समाज-पतियोंकी विचित्र धर्मव्यवस्थाको देख कर आपका हृदय कांप उठेगा। मू० ॥।)

## अभागिनी

उच्च-शिक्षा प्राप्त करके भी, हिन्दू-स्त्रियोंको समाजकी वेदी पर अपना बलि-दान करना पड़ता है! बड़ीसे बड़ी शिक्षा भी सामाजिक रूढ़ियोंके कारण, उनकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है। शिशिरकी मूर्खता और मिनतीकी प्रेम-निवाहकी घटना, इस लोकका नहीं, देवलोकका त्याग है। सिद्धान्त और पवित्रताके नाम पर—कैसा भयंकर त्याग किया जा सकता है, इसका जीता-जागता प्रमाण है। ऐसा ऊंचे दरजेका विद्वत्तापूर्ण उप-न्यास आपने अभी तक नहीं पढ़ा होगा। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य २)मात्र।

मिलनेका पता—

**दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बालकोपयोगी उत्तमोत्तम पुस्तकें

## भक्त-ध्रुव

भक्तकी महिमा अपरम्पार है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि न मैं मन्दिरोंमें रहता हूं, न बैकुण्ठमें। मैं तो भक्तोंके हृदयोंमें वास करता हूं। भक्त ध्रुवकी भक्ति बहुत ऊंचे दरजेकी थी। बाल्यावस्थामें अपने अपूर्व भक्ति-भावसे ही ध्रुवने वह स्थिति प्राप्त की थी। अल्पमति कोमल-हृदय बालक-बालिकाओंके लिये इस सरल और सरस भाषामें लिखी पुस्तकका पढ़ना आवश्यक है। छपाई-सफाईको देखकर बालक लट्टू हो जाते हैं। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य ॥=) मात्र।

## वीर-अभिमन्यु

वीर-बालक अभिमन्युकी लोकोत्तर वीरता, भारतके इतिहासमें सदा अमर रहेगी। गुरु-द्रोण द्वारा निर्मित विचित्र अभेद्य चक्र-व्यूहमें घुसकर षोड्श वर्षीय वीर-बालक अभिमन्युने प्रचण्ड वीरता प्रदर्शित की थी—तथा कौरव-सप्त महारथियोंने मिलकर अभिमन्युको मार डाला था, उस रोमाञ्चकारी कथाको पढ़कर हृदय कांपने लगता और लोकोत्तर वीरताको देखकर बल्लियों उछलने लगता है। ऐसा सरस और सरल भाषामें लिखा जीवन हिन्दीमें प्रकाशित नहीं हुआ। अनेक रङ्गीन चित्र। मू० वही ॥=) मात्र

## भक्त-प्रह्लाद

सत्याग्रह-मंत्रके आदि-गुरु, भक्तवर प्रह्लाद और उनके दुष्ट राक्षस-पिताकी कथाको सभी हिन्दू किसी न किसी रूपमें जानते हैं। इसमें प्रह्लादकी जन्मसे लेकर उनके बाल्यकाल, यौवन और बार्द्धक्यकाल तककी समस्त अद्भुत भक्ति-रस-पूर्ण मनोरञ्जक घटनाओंको औपन्यासिक ढङ्गसे मधुर सरल तथा सरस भाषामें लिखा गया है। समस्त घटित घटनाओंके रङ्गबिरंगे अनेक चित्र दिये गये हैं। छपाई—सफाई बढ़िया। 'प्रह्लाद' नामकी निकली सभी पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ। मूल्य वही ॥=) मात्र।

## लव-कुश

स्वनामधन्य मर्यादा—पुरुषोत्तम रामचन्द्र और जनक-नन्दिनी भगवती सीताके बीरबाहु और मंजुल-मूर्ति पुत्रद्वय, लव-कुशकी प्रचण्ड वीरताकी कहानी पुराण प्रसिद्ध है। रामतनय लव-कुशकी कथा विशद रूपसे औपन्यासिक रूपमें लिखी गयी है। इसको पढ़नेसे बालक-बालिकायें, सार-तत्त्व रूपसे रामायणकी सब घटनाओंको भी हृदयङ्गम कर लेती हैं और लव-कुशकी प्रचण्ड वीरता-प्रतिभा-साधुताका अनुकरण कर अपने चरित्रको उज्ज्वल बना सकती हैं। अनेक रङ्गीन चित्र। मूल्य ॥=) मात्र।

मिलनेका पता:—

**पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❀ स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें ❀

नारी रत्न माला

## सती-पार्वती

हर-पार्वतीकी कथा प्रसिद्ध है। इसमें शंकर-प्रिया, गणेश-जननी, सती-शिरोमणि भगवती 'सती-पार्वती' के दोनों अवतारों की मर्मस्पर्शी कथा बड़ी ही सरल, सरस भाषामें लिखी गयी है। यह पुस्तक बहुत पसन्द की गयी है। साथ ही सती-महिमा, दक्ष-यज्ञ-भंग, वीरभद्रका प्रतिशोध, शिव जीका कोप, मदन-दहन, शिवजीका वर-दान आदि कितने ही रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई-सफाई बढ़िया। अब तक हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही सर्व-सुलभ ।।) मात्र।

## देवी-द्रौपदी

इस उपाख्यानमें देवी-द्रौपदीका जन्म, बाल्यकाल, स्वयंवर, विवाह, चीर-हरण, पाण्डवों पर विपत्ति और राज्य-हरण तथा देश-निर्वासन का वर्णन है। विराट राज-महलमें दासी-कर्म, कीचक-वध और अन्तमें कौरवोंसे घनघोर संग्राम। पाण्डवों की विजय-वैजयन्ती, भगवान् श्रीकृष्ण का सहयोग और सहायता आदि समस्त बातोंका उल्लेख बहुत ही सरस और सरल भाषामें किया गया है। अनेक भावपूर्ण रङ्ग-बिरंगे चित्र हैं। बढ़िया पेपर और सुन्दर छपाई। मूल्य सर्वसुलभ ।।=) मात्र।

## शकुन्तला

संसार प्रसिद्ध महाकवि, कवि-कुल-गुरु कालीदासके सर्वोत्तम नाटक 'आभि-ज्ञानशाकुन्तलम्' को उपाख्यानके रूपमें लिखा गया है। उपाख्यानकी एक-एक पंक्ति, कवित्व और कल्पना-कौशलसे परि-पूर्ण है। शकुन्तला-उपाख्यान दाम्पत्य-स्नेह, नारी-कर्तव्य, सती-धर्म और विश्व-विश्रुत प्रेमका जगमगाता चित्र है। इसके पढ़नेसे इतिहास, उपन्यास, नाटक और काव्यका एक साथ आनन्द आता है। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे सुसज्जित। बढ़िया छपाई-सफाई। मूल्य ।।=) मात्र।

## शर्मिष्ठा-देवयानी

श्रीमद्भागवतमें शर्मिष्ठा-देवयानीका उपाख्यान आया है। इस उपाख्यानको पढ़नेसे सत्यनिष्ठा एवं नारी कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है। पिताकी मर्यादाकी रक्षा के लिये शर्मिष्ठाने जो आत्मत्याग कर दिखाया, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। देवयानीने क्रोधके वशमें हो जो भया-नक काण्ड उपस्थित कर दिया था, वह शर्मिष्ठाकी सौजन्यता और कर्तव्य-निष्ठा तथा सहृदयताके कारण दूर हो गया। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे संवलित। हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही ।।) मात्र।

मिलनेका पता—**दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी,** १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# STANISTREET ECZEMA OINTMENT

के पहले ही बारके लगाने से चुनचुनाहट दूर होकर आराम मिलता और तकलीफ मिट जाती है।

दवा लगाते रहिये, चाहे जितने दिनका पुराना एक्जिमा अथवा अन्य चर्म रोग क्यों न हो, नाम निशान न रहेगा, हमेशा के लिये जड़से आराम हो जायगा।

ऐसे बढ़िया और सुन्दर कार्यके लिये सिर्फ १) एक रुपया।

इस अद्भुत लाभदायक मल्हमकी डिब्बीमें खर्च कीजिये। याद रखिये कभी व्यर्थ न जायगा।

**स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कम्पनी लिमिटेड**

पोष्टबक्स १७२, कलकत्ता।

**SMITH STANISTREET & Co. Ltd.**

Post Box 172 CALCUTTA.

# सिपाही विद्रोह

## सन् सत्तावनके गदरका रोमांचकारी इतिहास

**सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्यमें कमी।**

**४) से घटा कर ३) किया गया और पुस्तक सजिल्द कर दी गयी।**

हिन्दीमें अपने ढंगकी सर्वथा अनोखी पुस्तक है। पहले संस्करणकी प्रतियां हाथोंहाथ बिक जाने पर दूसरा संस्करण निकाला गया है। इस पुस्तकमें आप ऐसी रोमांचकारी घटनाएं पढ़ेंगे कि आपको अनुभव होगा कि हम कोई उपन्यास पढ़ रहे हैं।

झांसीकी रानीने क्या किया, दिल्लीके बादशाहका क्या हुआ, कुंवर जगदीश सिंह कैसे वीरगतिको प्राप्त हुए, देहातोंमें क्या हुआ आदि बातें पढ़कर आप कहेंगे कि वास्तवमें पुस्तक संग्रहणीय है।

**सुन्दर कागज, बढ़िया छपाई, पक्की जिल्द।**

शीघ्र आर्डर देकर मंगा देखिये।

**मैनेजर—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी**

१४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGD. No. C 877

श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत

सचित्र

# रामायण

सटीक, १४०० पृष्ठ, सादे व बहुरंगे चित्र, तथा कपड़े की पक्की जिल्द

(मूल्य ग्लेज का ३)

काशी और बम्बईकी रामायणोंसे अधिक शुद्ध और सुन्दर है।

इतना होने पर भी सस्ती है इस धर्मग्रन्थकी एक प्रति मंगाकर अवश्य रखिये।

**मैनेजर—विश्वामित्र कार्यालय,**

१४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

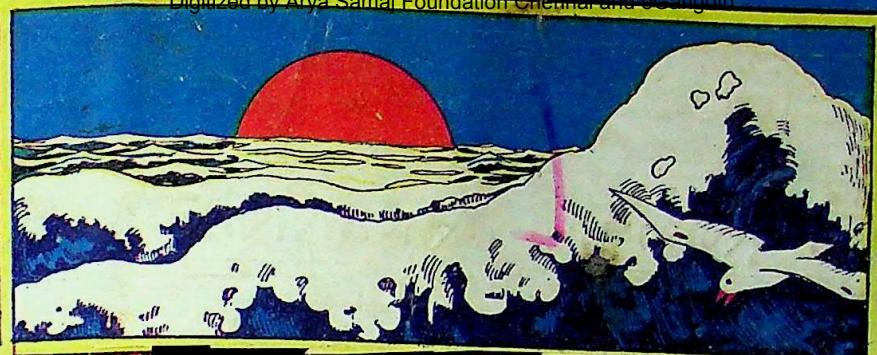

धातुक्षीणता, स्मरण मात्रसे ही पतन, पेशाबके साथ धातुपात, अधिक विलासिताके कारण
ण हाथ पैरोंका कांपना, चक्कर आना, आंखोंके आगे चिनगारियां निकलना, कलेजेका धड़कना,
मर्ज गोंको दूर कर रक्त शुद्ध करता है और भूख शक्ति तथा वजनको बढ़ाता है जिससे शरीर बज्रके
१६ । जिनमें पुरुषत्व न हो उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त करा कर उनके वीर्यको एकदम गाढ़ा और गर्भ
ता है । २१ दिन सेवन करने लायक पूर्ण गुणकारी डिब्बेकी कीमत ९) रु०डा० पै०ख० ॥।) लगेगा।

**स्त्रियों के लिये**

**विश्वमित्र कार्यालय**
**कलकत्ता**

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास

० तक पढ़ी
त्वाकांक्षाने
बिना रेखाके
नी प्रवाहित
होती है, वहां साथही कर्तव्यकी धारा प्रबल-वेगसे वेगवती होकर बहती है और अन्तमें दोनों धारायें, लोक-सेवाके सागरमें जाकर विलीन हो जाती हैं। मूल्य १॥) रुपया मात्र।

## विधवा

रूढ़ियोंके गुलाम, हिन्दूसमाजमें धर्म का नाम लेकर निरीह विधवाओं पर कैसा भीषण अत्याचार हो रहा है और कुलीनताके पाखंडकी ओटमें संबलहीन देवी-स्वरूपिणी विधवाओंका धर्म बिगाड़ कर समाजके ठेकेदार, उन्हें वेश्यालयोंमें पहुंचा देते हैं, इसका इसमें बहुत ही करुणापूर्ण चित्र खींचा गया है। काशी-वासके नाम पर होनेवाले पापाचार और विधवाओंकी खरीद-फरोख्त और पण्डे-पुजारियोंके वीभत्स कृत्यों और समाज-पतियोंकी विचित्र धर्मव्यवस्थाको देख कर आपका हृदय कांप उठेगा। मू० ॥।)

## अभागिनी

उच्च-शिक्षा प्राप्त करके भी, हिन्दू-स्त्रियोंको समाजकी वेदी पर अपना बलि-दान करना पड़ता है! बड़ीसे बड़ी शिक्षा भी सामाजिक रूढ़ियोंके कारण, उनकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है। शिशिरकी मूर्खता और मिनतीकी प्रेम-निवाहकी घटना, इस लोकका नहीं, देवलोकका त्याग है। सिद्धान्त और पवित्रताके नाम पर—कैसा भयंकर त्याग किया जा सकता है, इसका जीता-जागता प्रमाण है। ऐसा ऊंचे दरजेका विद्वत्तापूर्ण उप-न्यास आपने अभी तक नहीं पढ़ा होगा। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य २)मात्र।

मिलनेका पता—

दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# धातु पौष्टिक चूर्ण

यह चूर्ण—तीन दिनके भीतर ही अपना गुण दिखा देता है, पेशाबकी समस्त बीमारियोंको हटाके दस्त साफ करता है, सब प्रकारका दर्द पीड़ा तथा गिरती हुई धातुको रोकता है, पानी समान पतले वीर्यको एकदम गाढ़ा कर देता है, उपदंश (गर्मी—आतशक) मेह प्रमेह (गनोरिया सुजाक) रोगोंको यह चूर्ण जड़से खो देता है तथा शरीरको बलवान करके स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, स्मरण मात्रसे ही पतन, पेशाबके साथ धातुपात, अधिक विलासिताके कारण कमरमें दर्द, कमजोरीके कारण हाथ पैरोंका कांपना, चक्कर आना, आंखोंके आगे चिनगारियां निकलना, कलेजेका धड़कना, नामर्द हो जाना, इत्यादि रोगोंको दूर कर रक्त शुद्ध करता है और भूख शक्ति तथा वजनको बढ़ाता है जिससे शरीर वज्रके समान मजबूत हो जाता है। जिनमें पुरुषत्व न हो उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त करा कर उनके वीर्यको एकदम गाढ़ा और गर्भ धारण करानेके योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक पूर्ण गुणकारी डिब्बेकी कीमत ५) रु०डा० पै०ख० ॥।) लगेगा।

☞ स्त्रियों के लिये

# स्त्रीरोग निवारक चूर्ण

इस चूर्णके सेवनसे औरतोंकी क्षीणता सब तरहका स्त्रियोंका प्रदर, मासिक धर्मके समय पेट या कमरमें दर्द, मासिक धर्म थोड़ा या कम दिनोंमें होना बिलकुल ही न होना, असमयमें मासिकधर्म होना, खूनके कतरे गिरना, गर्भाशयमें दोष होनेके कारण गर्भ न रहना, गर्भपात होना, दुर्बल सन्तति होना या होकर मर जाना इत्यादि रोगोंपर २१ दिन चूर्णका सेवन करनेसे गर्भाशय तथा शरीरके सभी दोष दूर होकर मासिकधर्म समयपर होगा और गर्भपात न होकर संतति सशक्त, स्वस्थ (निरोग) उत्पन्न होगी। यहांतक कि ४० वर्षकी स्त्रीको भी इसके सेवनसे निश्चय ही गर्भधारण हो जाता है। २१ दिनतक सेवन करने योग्य चूर्णके १ डिब्बेकी कीमत ५) रु० डा० ख० ॥।) इन चूर्णोंको हरेक स्त्री और पुरुष हर मौसममें खा सकते है।

संतानकी इच्छा करनेवाले लोगोंको यह दोनों ही दवा एक साथ मंगाके स्त्री और पुरुष दोनों हीको एक साथ खानेसे अच्छा होगा। परहेज वगैरह कुछ नहीं करने पड़ते। सेवनविधि साथमें दी जाती है। यह दवायें तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक बार विश्वास रखकर इसे अवश्य मंगावें। इन दवाइयोंमें केवल जड़ी बूटी है। हानिकारक कोई भी चीज यहीं है।

# और लीजिये-गर्मी-सुजाककी-अक्सीर दवा

यह पाजी रोग नया हो या पुराना पुरुषके हो या स्त्रीके हो लेकिन इस दवासे १ ही दिनमें फायदा और एक हफ्तेमें आराम और तीन हफ्तेमें जड़से रोग कट जाता है और फिर यह रोग कभी पास नहीं फटकता है अच्छे मार्गमें चलनेसे यह दवा सालसा के माफिक खूनको साफ करके नहा खून रग-रगमें दौड़ा देती है। उपदंस (गर्मी) आतशक और मेह प्रमेह (गनोरिया व सूजाक) को जड़से खो देती है। जरूर मंगाकर देखिये। तीन सप्ताह यानी २१ दिनकी ४२ खुराककी कीमत सिर्फ २॥) रु० डाक खर्च ॥।) आना। गर्मी के घावपर लगानेकी दवा १) रु० शीशी अलग।

स्त्रियोंको भी सूजाक होता है जिसके कारण बार-बार पेशाबका उतरना, जलन होना, बूंद-बूंद पेशाब गिरना मूत्रनलीसे पानीके समान या गाढ़ा मवादके समान दुर्गन्धयुक्त श्राव निकलना आदि तुरन्त इस दवासे आराम होता है। यह दवा बवासीरको भी आराम करती है। खूनी हो या वादी उपरोक्त दवाके सेवनमें कोई भी झंझट या परहेज नहीं है। यह दवा दवा दिनमें दो बार ठण्डे जलके साथ खानी पड़ती है। इस दवामें नुकसान पहुंचानेवाली कोई भी चीज नहीं है, सब काष्ठ औषधियां ( जंगली जड़ी बूटी ) हैं। सेवन बिधि दवाके साथ दी जाती है और हर मरजका इलाज किया जाता है। और—आयुर्वेदीय सब प्रकारकी तैयारी औषधियां तथा काष्ठादिक जंगली जड़ी बूटियां एवं काढ़ा घुटि इत्यादि मिलती है।

पता—भारत भैषज्य भण्डार, नं० १०८ काटन स्ट्रीट, (बड़ाबाजार) कलकत्ता


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

नारी रत्न माला

## सावित्री-सत्यवान

इस पुस्तकमें सती-शिरोमणि सावित्री के अद्भुत चरित्रको सरल भाषामें ऐसे अच्छे ढङ्गसे लिखा गया है कि जिसके पढ़नेसे हिन्दू-बालिकायें और हिन्दू-रमणियां पातिव्रत्यके मर्मको सरलतासे हृदयङ्गम कर सकें। सती-शिरोमणि सावित्री का चरित्र, युग-युगान्तरोंसे सती रमणियों का आदर्श माना जाता है। सावित्रीके धर्मबल के सामने यमराजको भी हार माननी पड़ी थी। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई। सात रङ्गीन चित्र। अब तक हजारों प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मूल्य ।।) मात्र।

## शैव्या-हरिश्चन्द्र

इस पुस्तकमें हिन्दू जातिके कीर्ति स्तम्भ, भारतके सौभाग्यसूर्य, गौरव-रवि, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र तथा उनकी महीयसी रानी शैव्या की अपूर्व आत्मत्यागकी कथा लिखी गयी है। शैव्या-हरिश्चन्द्रका त्यागमय जीवन-चरित्र, हिन्दू-रमणियों एवं कन्याओंके लिये आदर्श है। इस पुस्तकमें शैव्या-हरिश्चन्द्रके जीवनकी सभी घटनायें विशद रूपसे लिखी गई हैं। रंग-बिरंगे अनेक चित्रोंकी सुन्दरता देखने ही योग्य है। छपाई-सफाई बढ़िया। मूल्य वही सर्वसुलभ ।।) मात्र।

## नल-दमयन्ती

पुण्यश्लोक राजा नल और परम पतिभक्ति-परायणा दमयन्तीको भला कौन हिन्दू सन्तान नहीं जानता। इस पुस्तकमें उन्हींके परम पवित्र चरित्र और मर्मस्पर्शी जीवनका वर्णन किया गया है। इसमें पतिव्रत-महिमाका बहुत ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। शिक्षा-विभागने इसको स्वीकार किया है। बढ़िया छपाई, ऐण्टिक पेपर और आठ रंग-बिरंगे घटित घटनाओंके चित्र हैं। ऐसी सर्वाङ्गसुन्दर और सर्वसुलभ पुस्तक कहींसे भी प्रकाशित नहीं हुई। मूल्य ।।) मात्र।

## सीता-देवी

इस पुस्तकमें जनक-नन्दिनी, राम-प्रिया सीताका चरित्र बहुत ही अच्छे ढङ्गसे लिखा गया है। बालक-बालिकाओंके लिये इसमें अपूर्व शिक्षा है। क्योंकि यह रामायणका सार, उत्तमोत्तम शिक्षाओंका भण्डार—और हिन्दू-ललनाओंका ललित शृङ्गार है। इसमें पुराण, काव्य, नाटक, उपन्यास का आनन्द तथा नीतिशास्त्रका अपूर्व उपदेश भरा हुआ है। सीतादेवी—राजनीति, धर्मनीति, समाज और गार्हस्थ्य की कुञ्जी है। छपाई-सफाई बढ़िया। सात रंग-बिरंगे चित्र। मूल्य ।।=) मात्र।

मिलनेका पता—**पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी**, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद साहित्यकी अकेली सर्वाङ्ग सुन्दर सचित्र उच्च कोटिकी "पाक्षिक पत्रिका"

नमूना मुफ्त **'अनुभूत योगमाला'** वार्षिक चन्दा ४)

क्या आपघर बैठे रोगोंसे छुटकारा पाकर स्वयं वैद्य बनना चाहते हैं ? क्या आप गुप्तसे गुप्त अनुभूत एवं पेटेन्ट योगोंको जानना चाहते हैं ? क्या आप—रस, भस्में, आस्वारिष्ट, चूर्ण गुटिका आदि २ बनाना चाहते हैं ? क्या आप सुन्दर २ कवितायें, मनोरञ्जन और उत्तमोत्तम स्वास्थ्य सम्बन्धी चुटकुले पढ़ना चाहते हैं ? क्या आप—वनस्पति विज्ञान एवं नवीन २ अन्वेषण पूर्ण वैज्ञानिक लेखोंका रसास्वादन करना चाहते हैं ? क्या आप—अपनी गृह देवियों एवं बच्चोंको निरोग रखना चाहते हैं ?

**तो आज ही 'माला' के ग्राहक हो जाइये।**

और मुफ्त ही में सालके कई विशेषांक आदि पढ़कर घर बैठे आनन्द कीजिये। आज ही ४) मनिआर्डरसे भेजकर या वी. पी. से मंगा कर ग्राहक श्रेणीमें नाम लिखा लीजिये। "हाथ कंगनको आरसी क्या ?" एक कार्ड डालकर नमूना मुफ्त मंगा देखें।

**पता—मैनेजर 'अनुभूत योगमाला' कार्यालय, बरालोकपुर, इटावा (यू.पी.)**

डा० डब्ल्यू० सी० राय, एल० एम० एस०

**पागलपन की शर्तिया दवा।**

६० वर्षकी अनुभूत महौषधि है, पागलपन, हिस्ट्रीया, मृगी, अपच, वायुरोग, उन्मादकी रामबाण दवा है। १ शीशी ५) रु०। सूचीपत्र मुफ्त भेजा जाता है। पता—डा.एस.सी. राय एण्ड को, १६७।३ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

**डाबर (डा: एस, के, बर्म्मन) लि:**

५० वर्षोंसे प्रसिद्ध अतुल्य देशी पेटेण्ट दवाओंका वृहत् भारतीय कार्यालय !

STAR TRADE S.K.B. MAR (REGD.)

**बादी रोगमें रामबाण !**

ष्टार ट्रेड मार्क **पुदीना-हरा** (Regd.)

(अर्क पुदीना)

यह हरी पत्तियोंसे बना है। अजीर्ण, वायु, पेट दर्द आदि बादीके लक्षण इससे शीघ्र मिटते हैं।

बाजारु अन्य पुदीनेके अर्कसे यह कहीं अधिक गुणकारी है।

मूल्य—बड़ी शीशी ।।।=) चौदह आना। डा० म० ।≡)

मूल्य—छोटी शीशी ।।=) दस आना। डा.म. ।≡)

नोट—दवाएं सब जगह मिलती हैं। अपने स्थानीय हमारे एजेण्टसे खरीदते समय ष्टार ट्रेड मार्क और डाबर नाम देख लीजिये।

**( विभाग नं० २ ) पोस्ट बक्स ५५४, कलकत्ता।**

सेलडिपो—(१) नं० ४ ताराचन्द दत्त ष्ट्रीट। (२) नं० २०१ हरिसन रोड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❀ स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें ❀

## नारी रत्न माला

### सती-पार्वती

हर-पार्वतीकी कथा प्रसिद्ध है। इसमें शंकर-प्रिया, गणेश-जननी, सती-शिरोमणि भगवती 'सती-पार्वती' के दोनों अवतारों की मर्मस्पर्शी कथा बड़ी ही सरल, सरस भाषामें लिखी गयी है। यह पुस्तक बहुत पसन्द की गयी है। साथ ही सती-महिमा, दक्ष-यज्ञ-भंग, वीरभद्रका प्रतिशोध, शिव जीका कोप, मदन-दहन, शिवजीका वर-दान आदि कितने ही रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई-सफाई बढ़िया। अब तक हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही सर्व-सुलभ ।।) मात्र।

### देवी-द्रौपदी

इस उपाख्यानमें देवी-द्रौपदीका जन्म, बाल्यकाल, स्वयंवर, विवाह, चीर-हरण, पाण्डवों पर विपत्ति और राज्य-हरण तथा देश-निर्वासन का वर्णन है। विराट राज-महलमें दासी-कर्म, कीचक-वध और अन्तमें कौरवोंसे घनघोर संग्राम। पाण्डवों की विजय-वैजयन्ती, भगवान् श्रीकृष्ण का सहयोग और सहायता आदि समस्त बातोंका उल्लेख बहुत ही सरस और सरल भाषामें किया गया है। अनेक भावपूर्ण रङ्ग-बिरंगे चित्र हैं। बढ़िया पेपर और सुन्दर छपाई। मूल्य सर्वसुलभ ।।=) मात्र।

### शकुन्तला

संसार प्रसिद्ध महाकवि, कवि-कुल-गुरु कालीदासके सर्वोत्तम नाटक 'आभि-ज्ञानशाकुन्तलम्' को उपाख्यानके रूपमें लिखा गया है। उपाख्यानकी एक-एक पंक्ति, कवित्व और कल्पना-कौशलसे परि-पूर्ण है। शकुन्तला-उपाख्यान दाम्पत्य-स्नेह, नारी-कर्तव्य, सती-धर्म और विश्व-विश्रुत प्रेमका जगमगाता चित्र है। इसके पढ़नेसे इतिहास, उपन्यास, नाटक और काव्यका एक साथ आनन्द आता है। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे सुसज्जित। बढ़िया छपाई-सफाई। मूल्य ।।=) मात्र।

### शर्मिष्ठा-देवयानी

श्रीमद्भागवतमें शर्मिष्ठा-देवयानीका उपाख्यान आया है। इस उपाख्यानको पढ़नेसे सत्यनिष्ठा एवं नारी कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है। पिताकी मर्यादाकी रक्षा के लिये शर्मिष्ठाने जो आत्मत्याग कर दिखाया, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। देवयानीने क्रोधके वशमें हो जो भया-नक काण्ड उपस्थित कर दिया था, वह शर्मिष्ठाकी सौजन्यता और कर्तव्य-निष्ठा तथा सहृदयताके कारण दूर हो गया। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे संवलित। हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही ।।) मात्र।

मिलनेका पता—**दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी,** १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## —हर मौसम में—

### सुगन्धित, शीतल

### मैसूर चन्दनका साबुन व्यवहार कीजिये

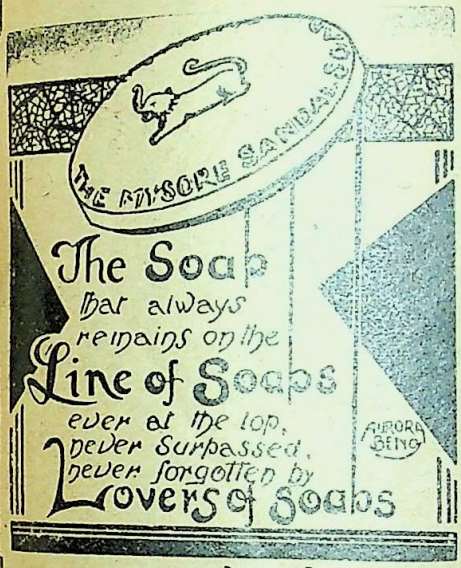


यह साबुन शृङ्गार की सब सामग्रियों के अभाव की पूर्ति करता है। यह मैसूरके असली चन्दन से बना हुआ सर्वश्रेष्ठ साबुन है।

सोल एजेण्टसः—

**अमृतलाल ओझा एण्ड कं० लि०,**

११, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।



## ३० वर्षों से जगत विख्यात

No. 1 Regd. Trade mark.

पानमें खाते समय और पानवाले के यहां भी आर० एन० खन्ना मनमोहिनी देख लें।

No .2 Manmohini (Regd. Trade mark)

नकल करनेवाले सावधान। ट्रेडमार्क रजिस्टर्ड किया हुआ है। हाईकोर्ट के जज का भी फैसला है।

### मनमोहिनी सुर्ती

आर० एन० खन्ना की मनमोहिनी सुर्ती पान में व्यवहार कीजिये और अपने स्वास्थ्य की रक्षा कीजिये।

### पता—श्री जानकीनरायण खन्ना

मनमोहिनी कार्यालय, ( डिपार्टमेन्ट नम्बर ६) नम्बर १९९ मछुआबजार स्ट्रीट, पुराने पोस्ट आफिस के सामने ( तरकारी बाजार के ऊपर ) कलकत्ता।



### अपने बुढ़ापेमें सुख शान्तिके लिये

### अपना आमदनी से थोड़ा बचा बचा कर

## इंडस्ट्रियल एन्ड प्रूडेंशियल एस्योरेन्स कम्पनी लि०

## में जमा करते रहो

विशेष विवरण जाननेके लिये यहांके आफिस

**१२, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ताको**

**पत्र लिखिये**



### क़ीमतों में भारी कमी !

सुन्दर और टिकाऊ

## मसहरी ! सिर्फ २।) में मसहरी !!

दुखदाई मच्छरोंकी सतावटसे बचकर सुख की नींद सोनेका एकमात्र अचूक उपाय !

हमारी मसहरियां ख़ास तौरसे मजबूत जालीसे बनाई गई हैं। इनमें किसी हालत से मच्छर घुस नहीं सकते, परन्तु हवा स्वतन्त्रता पूर्वक आ-जा सकती है। देखनेमें अत्यन्त सुन्दर हैं और काम देनेमें बहुत ही टिकाऊ हैं।

| लम्बी | | चौड़ी | | ऊंची | मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| ६ फुट | × | ३॥ फुट | × | ३॥ फुट | २।) |
| ६ फुट | × | ४ फुट | × | ४ फुट | २॥) |
| ६॥ फुट | × | ४॥ फुट | × | ४॥ फुट | २॥=) |
| ७ फुट | × | ५ फुट | × | ५ फुट | ३।=) |

पैकिङ्ग मुफ्त, डाकख़र्च अलग। परन्तु तीन या अधिक एक साथ मंगानेसे डाक ख़र्च भी मुफ्त।

### पता—दि यूनियन ट्रेडिङ्ग कम्पनी

नं० २, दहीहट्टा स्ट्रीट, (H-I) कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# पढने योग्य कुछ ऐतिहासिक पुस्तकें

## मेवाड़-गौरव

मुगल-साम्राज्यकी भीषण विभीषिका जिस समय भारतके समस्त हिन्दू-राज्योंको हड़प करनेकी चेष्टा कर रही थी, उस समय मेवाड़ ही एक ऐसा प्रदेश था, जिसके राजा, प्रजा, बाल-वृद्ध-वनिता सभीने एकसे एक बढ़ कर बलिदान करके मरणोन्मुख हिन्दू जाति के मान-गौरवकी रक्षा की थी। कर्तव्यके लिये पिताओंने पुत्रोंको कत्ल किया था, मेवाड़ की रमणियोंने अग्निमें कूद कर हिन्दुत्वकी रक्षा की थी। इसमें उसी मेवाड़की कीर्ति-कलापोंका वर्णन है। दो संस्करण हाथोहाथ बिक गये। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १)

## महाराणा-प्रताप

जिस समय हिन्दू जातिपर मुगल-साम्राज्य-विस्तारका ग्रह लगा हुआ था और हिन्दू राजा-महाराजागण एकके बाद एक मुगल-सम्राटके सामने शिर झुकाकर आत्म-समर्पण कर रहे थे, तब महाराणा प्रताप ही एक ऐसे वीरव्रती थे, जिनकी हुंकार-ध्वनिसे मुगल-राजसिंहासन कांप उठा था! इस पुस्तकमें उन्हीं हिन्दूकुल-गौरव प्रातःस्मरणीय महाराणा-प्रतापकी कीर्ति-कहानी विशद रूपसे लिखी गयी है। समस्त घटनाओंका इसमें उल्लेख है। अनेक चित्रोंसे सुशोभित। मूल्य १) मात्र।

## पृथ्वीराज

पृथ्वीराज दिल्लीके अन्तिम हिन्दू सम्राट् थे। इसमें उन्हींके कार्यकलापोंका वर्णन है। भारत पर बिदेशी विधर्मियोंके बहुत दिनोंसे दांत लगे हुए थे। दुर्भाग्यसे हिन्दुओंमें फूट पड़ गई और वे स्वार्थपरायणताके वशीभूत होकर एक दूसरेके प्राणोंके ग्राहक हो गये। अन्तमें गृह-शत्रुओंने विदेशियोंको निमन्त्रण देकर भारतमें बुला कर मातृभूमिको पददलित कराया! यह उसी समयका भारतका रक्त-रंजित इतिहास है। अनेक रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई सफाई बढ़िया मूल्य १) मात्र।

पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ शंभू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| १—जीवन-रेखा (कविता)—श्री नर्मदाप्रसाद खरे | १२९ |
| २—रांचीके विचित्र दर्शन (सचित्र)—डा० हेमचन्द्र जोशी डी० लिट् ... ... | १३० |
| ३—स्वतन्त्रताके सैनिक और डिक्टेटर नेता (सचित्र)—श्रीमती हैनन स्नाफर और श्री रामपाल गुप्त, लण्डन ... ... | १४२ |
| ४—गन्धवती (कविता)—श्री रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' | १४४ |
| ५—बुद्धिवाद और भूकम्प—श्री रमाशङ्कर मिश्र एम० ए०, बी० एल० ... ... | १४५ |
| ६—समाज-सुधार और साम्प्रदायिकता—श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार ... ... | १४८ |
| ७—पथिकसे (कविता)—श्री गणेशप्रसाद अरगल 'तृषित' ... ... | १५२ |
| ८—साहित्य और क्रान्ति—श्री अख्तर हुसेन रायपुरी | १५३ |
| ९—मौन (कविता)—श्री प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त' | १५९ |
| १०—एक रमणी-जासूसके अद्भुत रहस्यमय कारनामे (सचित्र)—श्री रमाशङ्कर शर्मा ... | १६० |
| ११—किन्नरीके प्रति (कविता)—श्री नरेन्द्र | १७० |
| १२—पञ्चवर्षीय शासनके बाद रूस—श्री छबिनाथ पाण्डेय ... ... | १७१ |
| १३—अन्तर्द्वन्द्व (कहानी)—श्री परमानन्द शुक्ल | १७४ |
| १४—द्वारपर (कविता)—श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी | १८१ |
| १५—भाषा-विज्ञान—श्री लक्ष्मणेश्वरशरण | १८२ |
| १६—पञ्जाबी ग्राम-गीत—श्री देवेन्द्र सत्यार्थी | १८४ |
| १७—निर्मोहीका प्यार (कविता)—श्री 'प्राण' शिवहरी | १९१ |
| १८—भावी एशिया—श्री अरुणचन्द्र गुह तथा डा० आनन्दीदीन तिवारी ... ... | १९२ |



## हिन्दुस्तानकी जरूरतके लिये

### हिन्दुस्तानियों द्वारा संस्थापित

### मिल की चीजें खरीदिये।

भारतीय मजदूर, भारतीय मूलधन, भारतीय ही प्रबन्ध और भारतवर्षमें ही तैयार की हुई जूटकी चीजें—दरी और आसन, कालीन गलीचे, बिछौनेकी पट्टी इत्यादि और हर तरहके नमूने मंगाइये। आप जब देखेंगे तब आपका दिल जरूर फड़क उठेगा। बड़े बड़े शहरोंमें एजेन्सी दी जा रही है और हरएक जगह एजेन्सियोंकी जरूरत है।

**एजेन्सीके लिये पत्र व्यवहार कीजिये**

## श्री हनुमान जूट मिल्स,

**६१, हरीसन रोड, कलकत्ता।**

## असली लीवर रिस्टवाच गारन्टीवाली

### ३ रु० ४ आनेमें पांच वर्षकी गारण्टी

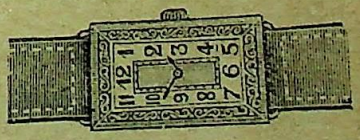

बहुत आरामदेह, फैशनेबल, ठीक वक्त देनेवाली टिकाऊ। रास्कोप लीवर मशीन। सस्ती कीमत पर दी जाती है। निकल केस रु० ३।), सोनेके मुलम्मेवाली रु० ४॥) गांधी लीवर रिस्टवाच ५॥) अठकोनी ७॥) रुपये। तीन घड़ियों पर डाकखर्च माफ। नौ घड़ियोंके लिये एक घड़ी मुफ्त। नापसन्दी पर रुपया वापिस। सचित्र केटलग मुफ्त।

**प्रिन्सली इण्डिया वाच कम्पनी**

पोस्टबक्स नं० १ (२)

कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| १९—भीख (कविता)—श्री श्रीनिधि द्विवेदी | १९७ |
| २०—लाडोरानी (कहानी)—श्री तारकेश्वरप्रसाद | १९८ |
| २१—महाभारत-कालका नैतिक जीवन—श्री राम-नारायण भार्गव ... ... | २०१ |
| २२—क्लाइवके युगमें भारत-प्रवासी अंगरेजोंका रहन-सहन—श्री भगवतीप्रसाद उपाध्याय | २०५ |
| २३—चांदनी (कविता)—श्री आरसीप्रसाद सिंह | २०८ |
| २४—सामाजिक कुप्रथाका भयङ्कर दुष्परिणाम—श्रीमती सत्यवती वर्मा ... | २०९ |
| २५—कौन ? (कविता)—श्री श्यामविहारी लाल 'विरागी' ... ... | २११ |
| २६—आत्म-संस्मरण—श्री अमृतलाल चक्रवर्ती | २१२ |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| २७—क्षमा (कहानी)—अनु० श्री श्रीपति पाण्डेय | २१६ |
| २८—कौन ? (कविता)—कुंअर कृष्णबली सिंह | २१९ |
| २९—सङ्गीत-सुधा ... ... | २२० |
| ३०—चयनिका ... ... | २२२ |
| ३१—महिला-संसार ... ... | २२६ |
| ३२—समाज-दर्पण ... ... | २३२ |
| ३३—पुस्तक-परिचय ... ... | २३८ |
| ३४—अर्थ-चक्र ... ... | २४१ |
| ३५—अन्तर्राष्ट्रीय ... ... | २४६ |
| ३६—विज्ञान-चमत्कार ... ... | २४९ |
| ३७—सम्पादकीय ... ... | २५१ |



# सिपाही विद्रोह

## सन् सत्तावनके गदरका रोमांचकारी इतिहास

**सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्यमें कमी।**

**४) से घटा कर ३) किया गया और पुस्तक सजिल्द कर दी गयी।**

हिन्दीमें अपने ढंगकी सर्वथा अनोखी पुस्तक है। पहले संस्करणकी प्रतियां हाथोंहाथ बिक जाने पर दूसरा संस्करण निकाला गया है। इस पुस्तकमें आप ऐसी रोमांचकारी घटनाएं पढ़ेंगे कि आपको अनुभव होगा कि हम कोई उपन्यास पढ़ रहे हैं।

झांसीकी रानीने क्या किया, दिल्लीके बादशाहका क्या हुआ, कुंवर जगदीश सिंह कैसे वीरगतिको प्राप्त हुए, देहातोंमें क्या हुआ आदि बातें पढ़कर आप कहेंगे कि वास्तवमें पुस्तक संग्रहणीय है।

**सुन्दर कागज, बढ़िया छपाई, पक्की जिल्द।**

शीघ्र आर्डर देकर मंगा देखिये।

## मैनेजर—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी

**१४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ
२१६
२१९
२२०
२२२
२२६
२३२
२३८
२४१
२४६
२४९
२५१

# विश्वमित्र

सम्पादक — डा० हेमचन्द्र जोशी डी० लिट्
इलाचन्द्र जोशी

मई, १९३४ वर्ष २, अङ्क २ वैशाख, १९९१
खण्ड ४, पूर्ण संख्या २०

## जीवन-रेखा

मेरा हृदय-तिमिर हरनेको
चन्द्र-किरण-सी तुम आयीं ;
अपने दृग-प्यालोंमें प्यारी !
छविकी मदिरा भर लायीं ।
उसकी मादकतामें मैं तो
भूल गया सारा संसार ;
संसृतिके कन-कनसे मुझको—
बुला रहा अब सरस दुलार ।

सुखके बादल बरस-बरसकर
प्रेम-पिपासा करते शान्त ;
आशाओंका इन्द्र-धनुष हंस
बना रहा मुझको उद्भ्रान्त ।
अपने उरपर रखकर प्रेयसि !
मेरे जीवनका दुख-भार ;
स्वर्ग-लोक-सा बना दिया है—
तुमने मेरा लघु आगार ।

—नर्मदाप्रसाद खरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रांचीके विचित्र दर्शन

डा० हेमचन्द्र जोशी डी० लिट्

Let not the non-Christian readers be afraid of 'a manifestation of Christ' in daily life. —म० गांधी ३० मार्चके 'हरिजन' में

The Ashram set up by Verrier Elwin among Gonds has a special significance. The inmates live and work with the people, **relying on their service alone** whereby to commend to them the person and power of Jesus Christ.

Muriel Lester—'Harijan'.

देखिये ! देखिये ! वह साइकलमें भागा जा रहा है !

यह वाक्य मेरे पथप्रदर्शक मित्रने अकबकाकर कहे, गोया कोई मूल्यवान् पदार्थ मेरे हाथसे छिना जा रहा हो और मेरे मित्र यह देखकर अकुला रहे हों। सामनेको नजर की तो देखता क्या हूं कि एक रोमन कैथलिक पादड़ी सरपट चालसे साइकलपर दौड़ा जा रहा है। उसके पीछे साइकलके आसनके पास कुछ सामान-सा भी बंधा है। मुझे उसकी सूरत-शकलका कुछ पता न चला। मेरे मित्रने फिर कहाः—

"यह एक बेलजियन राजकुमार है और सब-कुछ त्याग करके यहांके जङ्गलियोंके बीच अपने प्रभु ईसामसीहका काम करने आया है। उनका इससे बड़ा मित्र दूसरा नहीं है। इसे भी महान् गर्व है कि यह इन आदिम और असभ्य जातियोंकी सेवामें अपना सर्वस्व अर्पण कर चुका है।"

यह सुनकर मैंने उस श्वेतवस्त्रधारी महात्माको, जो मेरी आंखोंसे ओझल होने हीको था, हृदयसे प्रणाम किया। मनस्तत्त्व-विशारद कहते हैं कि प्राण दे देना आसान है, पर दुःखका वरण करना महाकठिन है। इस त्यागीने भगवान् बुद्धकी भांति यही किया है। सुख-समृद्धिको ठुकराकर यह गरमियोंकी कड़कड़ाती धूपमें रांचीके आसपासके गांवोंमें जङ्गली जाति 'ओड़ाऊं', 'मुण्डा' आदिकी सेवा करता और ईसामसीहके दयाधर्मका वचनों और कार्यसे प्रचार करता है। इस रामने राजपाट छोड़कर सहर्ष वनवास लिया है। मैं यह देखकर भौचक रह गया और मेरी आकृति स्पष्ट रूपमें इसका परिचय देने लगी। इसपर मेरे मित्रने मुझे बताया कि रांचीमें ईसाइयोंका राज है और सारे छोटा नागपुरमें इनका ही प्रभुत्व है। यह जानकर मुझे कुछ भी आश्चर्य नहीं हुआ। मैं जानता हूं कि बातूनी, दार्शनिक और निर्दय हिन्दू जाति अपने भाइयोंको ठुकराना और उन्हें अस्पृश्य समझना अपनी मुक्तिका मार्ग समझती है। इस पतित जातिके अधिकांश मनुष्य शाकाहारी हैं और यही रट लगाये रहते हैं—'अहिंसा परमो धर्मः', 'उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् 'किसी प्राणीको किसी प्रकारका दुःख देना पाप है', 'उदारचरित धर्मात्मा संसार-भरको अपना कुटुम्ब समझते हैं।' पर बौद्ध धर्मको छल, बल और कौशलसे भारतसे समूल उजाड़कर इसने प्रमाण दे दिया है कि यह अहिंसाकी शत्रु है तथा सात करोड़ हरिजनोंसे देशको भरके इसने यह भी बता दिया है कि यह अपने सगे भाइयोंको अपना नहीं समझती। इस अभागी जातिने सदा अपने अङ्ग अपने हाथसे ही काटे। अपने भाइयोंको नाना प्रकारके सामाजिक अत्याचारोंसे तड़पा-तड़पाकर मुसलमान बनाया। मलाबारकी बात है कि वहां समुद्रतट होनेके कारण जहाजों द्वारा देश-विदेशको माल भेजा जाता था। पतित हिन्दू धर्म विदेश-यात्राको पाप समझता है। पर राजाको इस व्यापारसे बहुत लाभ होता था। जहाजों द्वारा ईरान, अरब आदि देशोंसे व्यापार न करनेसे खजानेपर चोट पड़ती थी। इसलिए वहांके कट्टरपन्थी मूर्ख राजोंने गांवोंसे अपनी प्रजाको जबर्दस्ती पकड़वाया और उन्हें मुसलमान बनाकर उनसे जहाज चलवाये। अपना तथा अपनी प्रजाका नाश करनेवाले उन राजोंने कभी यह न सोचा कि इस प्रकार हम अपना ही गला रेत रहे हैं। यदि हिन्दुओंमें सब जीवोंमें समान दृष्टि रखनेवाले परमात्मापर थोड़ा भी विश्वास होता तो क्या वे चेष्टा न करते कि इस सर्वत्यागी विरागी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन ईसाई संन्यासिनियोंने छोटा नागपुरके विकट वन्य प्रदेशोंमें भी अपने आश्रम खोल वहांकी नारियोंमें नवीन जीवन ला दिया है।

राजकुमारकी भांति अपने पतित भाइयोंको कीचड़मेंसे उठा, उन्हें सदाचारके स्वच्छ जलसे नहला-धुला उनका सिर उस दयानिधानके चरणोंपर रखवाते। पुण्य इसमें है या उसे परमात्माके पाससे भगानेमें? इन विचार-तरङ्गोंने मेरे हृदयमें तूफान मचा दिया। सचमुच ये ईसाई फकीर और साधु, देवता हैं जो प्राचीन ऋषियों और मुनियोंकी भांति 'तपनिधान धन-धान्य-विहीना' बनकर अपने आचरणसे ही अन्य धर्मावलम्बियोंसे अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर रहे हैं।

*

रांची नगर बिहारकी दरिद्रताका नमूना है। और छोटा नागपुर हिन्दुओंकी स्वार्थान्धता, स्वेच्छाचार, क्रूरता और अधर्मीपनका। रांचीकी सड़कोंपर आध-आध मीलकी दूरीपर किरासिन तेलके लैम्प एक खम्भेके ऊपर कांचके पिंजड़ेके भीतरसे टिमटिमाते हैं। इनकी ज्योति इतनी धीमी है कि वह पिंजड़ेसे बाहर शायद ही आती हो। पर सड़कोंमें ये दीपमन्दिर इसलिए स्थापित किये गये हैं कि इनसे राहचलतों-को ज्योति मिले। यह 'अन्धेर' उस रांचीमें विराजमान है जहांसे कुछ ही कोसोंके फासलेपर भारतका सर्वोच्च जलप्रपात 'हुंडरू' है। इस 'सफेद तेल' से थोड़ा प्रयत्न करनेपर सारा छोटा नागपुर बिजलीके आलोकसे प्रकाशमय बन सकता है। पर रांचीमें यह शक्ति लाचार होकर निकम्मी पड़ी है। यह बिहार-सरकार और बिहारियोंकी दरिद्रता और उत्साहहीनताका प्रमाण है। दार्जिलिङ्ग, नैनीताल, शिमला आदिकी चहलपहल देखकर रांचीसे अनभिज्ञ लोग समझते हैं कि बिहार-सरकारकी ग्रीष्म-राजधानी रांचीमें भी गरमियोंमें धूम रहती होगी। पर वहां जाकर निराश होना पड़ता है। सारे नगरमें पांच-सात भी अच्छी दुकानें नहीं हैं। दो-चार धनियोंके मकानोंको छोड़ बाकी घासफूसके झोपड़े ही हैं। किन्तु इन दरिद्रोंको लूटनेके लिए महाजन और बनिये सर्वत्र बटमारोंकी तरह छाये हुए हैं। इसलिए ये जातियां हिन्दू-धर्मसे घृणा करती हैं। ऐतिहासिकोंका कहना है कि आर्योंकी विजयके समयमें इनके आत्मसम्मान-को जो ठेस लगी उसे ये अभी तक न भूले। ये लोग ब्राह्मणोंके हाथका भोजन खाना पाप समझते हैं। भारत-भरमें एक यही जातियां हैं जो ब्राह्मणोंको अछूत सम-झती हैं। इन वीर जातियोंका यह प्रतिहिंसा-भाव उनके उचित दर्पका परिचायक है। यदि हरिजन ऐसा कर सकें तो उच्च जातिके हिन्दुओंकी आंखें खुलें। यह हिन्दुओंकी परम-स्वार्थी नीतिका ही परिणाम है। उसके कारण इनमें इस सङ्कीर्णमति धर्मके प्रति घृणा और द्वेष पैदा हो गया है। इनके इतिहाससे पता चलता है कि हिन्दुओंने इनका केवल अहित किया है। इधर ईसाइयोंने इनकी नैतिक और आर्थिक दशा सुधार दी है। ईसाई मुण्डा और ओड़ाऊं शिक्षित तो हो ही गये हैं, साथ ही उनके पास इतना पैसा भी हो गया है कि वे पेटभर भोजन खा सकें। फल यह हो रहा है कि छोटा नागपुरके आदिम अधिवासी ईसाई होते जा रहे हैं।

१८४५ में छोटा नागपुर भयङ्कर अरण्य था। यहांके वीर अधिवासी जङ्गली जानवरोंको अपने बाणोंसे मारकर उनका आहार करते थे। बाघ और भालू उनके सहचर थे। ये निडर नर-नारी उन्हें लाठियोंसे भी मारते थे और बाणोंसे भी। शेरका मौका पड़ा तो वह भी गांवके गांव तबाह कर देता था। हजारों वर्षोंसे ये इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते आ रहे थे। इनका वर्णन एक धर्मात्माने पढ़ा और इनकी असभ्य दशा और हिन्दुओंका उनके ऊपर अत्याचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पढ़कर उसकी आंखोंसे करुणाके अश्रुकण मोतियोंकी भांति झरने लगे। इस महात्माका नाम गोसनर था। उसने सर्वस्व त्यागकर संन्यास-व्रत ग्रहण किया था और अपने जीवनका एकमात्र उद्देश्य महात्मा ईसाके सन्देशका प्रचार करना निश्चित किया था। दयावतार ईसामसीहने नारायणकी तरह गणिका तारी और भगवान् रामचन्द्रकी भांति शबरीके जूठे बेर खाये थे। भारतके हिन्दू अब अपने भगवान्का अनुसरण नहीं करते, लेकिन अनेक ईसाई साधु अपने प्रभु ईसाके पगमें पग रखना अपना अहोभाग्य समझते हैं। जर्मन गोसनर ऐसा

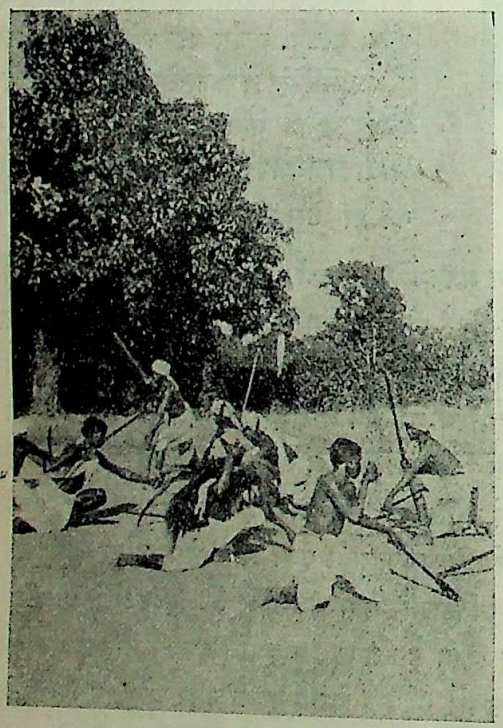

छोटा नागपुरकी वीर जातियोंका रण-नृत्य।

ही था। उसने अपनी धर्मप्राणतासे अनेक चेले बनाये और उन्हें संसारकी नाना जङ्गली जातियोंकी सेवा करने भेजा। ये चेले हिन्दू 'स्वामियों'की भांति बढ़िया रबड़ी और मलाईमें हाथ मारना अपना धर्म न समझते थे। वे तो कड़ी धूप, सरदी और वर्षामें घुल-घुलकर प्राण देनेमें अपना सौभाग्य मानते थे। उनमें कुछ भारत आये और कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े नगरोंमें न बसे—वे उस समयकी विकट यात्राकी परवा न कर सीधे रांची पहुंचे और लगे वहांके असभ्य अधिवासियोंकी सेवा करने। उन्होंने कोलोंमें काम किया। और पांच वर्ष तक वहां एक आदमी भी ईसाई न हुआ। वहांके लोग डरते थे कि यह क्या बला आयी। पर जब उन्हें विश्वास हो गया कि वे दुष्ट नहीं हैं तो वे इनकी भलाई देखकर धड़ाधड़ ईसाई बनने लगे। उसके बाद ऐसा बांध टूटा कि आज एक रांची जिलेमें तीन लाख ईसाई हैं। गोसनरके बाद अंगरेज मिशनके पादड़ी गये। इन्होंने इतनी उन्नति की कि अब इस मिशनमें अंगरेज पादड़ी नहीं रह गये। स्वयं मुण्डा और ओड़ाऊं लोग इसका प्रबन्ध कर रहे हैं।

*

पर कमाल किया रोमन कैथलिकोंने। इनके पादड़ी वहां १८८६ में गये। इन्होंने इस धुनसे काम किया कि आज केवल रांचीमें प्रायः अढ़ाई लाख रोमन कैथलिक हैं। इनके लिए नाना अनुष्ठान खोले गये हैं जो वहांके ईसाई आदिम अधिवासियोंका परम हित कर रहे हैं। शिक्षाका ऐसा प्रबन्ध है कि शायद ही कोई ईसाई अशिक्षित मिले। स्वयं रांचीमें दो हाई स्कूल हैं। एकमें प्रायः पांच सौ लड़के पढ़ते हैं। रांची जिलेके नाना भागोंसे पादड़ी लोग मेधावी छात्रोंको हाई स्कूलकी पढ़ाईके लिए इस 'सेण्ट जान्स हाई स्कूल' में भेजते हैं। यहांकी शिक्षा उन यूरोपियन पादड़ियोंके हाथमें है जो यूरोपके नाना विश्वविद्यालयोंसे ज्ञानका आहरण करके आये हैं। रांचीमें एक औद्योगिक विद्यालय भी है। इसमें रोमन कैथलिक बालकोंको नाना व्यवसाय और उद्योगधन्धे सिखाये जाते हैं ताकि उनमें स्वतन्त्र व्यवसायकी बुद्धि पैदा हो। रांचीके ईसाइयोंमें जो स्वावलम्बनका भाव वर्तमान है वह गैर-ईसाई आदिम अधिवासियोंमें तो क्या, वहांके शिक्षित हिन्दुओंमें भी नहीं है। वे सब अपने हाथसे काम करके पेट भरना ही आत्मसम्मानपूर्ण समझते हैं। औद्योगिक विद्यालय इनको जीवन-निर्वाहके नये-नये उपाय सुझा रहा है।

रांची बेलजियमकी 'उर्सुलीन भिक्खुनियों'का आश्रम है। नाना शिक्षिता नारियोंने अपनी सम्पत्तिपर पानी फेरकर जीवनके सुखभोगको तिलाञ्जलि दे संन्यासिनियोंके दुःखोंको वरण किया है। रांचीमें ये वहांके कैथलिक समाजकी नाना प्रकारसे सेवा कर रही हैं। इन्होंने सारे छोटा नागपुरमें स्त्रियोंका सङ्गठन कर रखा है और सुदूर वन-पर्वतोंमें अपने आश्रम खोलकर अपने निष्काम त्यागका आदर्श संसारके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सामने रखा है। भयङ्कर वन-पर्वतोंमें ये किस प्रकार प्रचार और शिक्षाका कार्य कर रही हैं, यह देखकर दांतों-तले उंगली दबानी पड़ती है। गिनाबहार घोर अरण्यके तटपर बसा है। बाघ, भालू यहां रात-दिन दर्शन देते हैं। सांपोंकी ऐसी बहुतायत है कि किसी भी छेदसे वह निकल आये। ये हिंस्र जन्तु सबपर आक्रमण करते रहते हैं और इनमें तथा वहांके निवासियोंमें निरन्तर 'जीवन-संग्राम' जारी रहता है। इस विषयपर ईसाई प्रचारकोंने विचित्र कहानियां लिखी हैं। एक पादड़ीने पहरेके लिए एकके बाद एक तीन कुत्ते पाले, पर एक महीनेके भीतर ही ये तीनों कुत्ते बाघके पेटमें चले गये। एक कुत्ता स्कूलके भीतर दो छात्रोंके बीच सोया हुआ था। एक चीतेने उसे वहींसे ऐसे उठा लिया कि किसीको कानों-कान खबर न लगी। बेलजियन पादड़ी फान डेन ड्रीजशे एक रोज प्रातःकाल कपड़ेकी टूटनेवाली आराम-कुर्सीपर पुस्तक पढ़ रहे थे। उनके सरके नीचे उन्हें कुछ सलसलाहट मालूम दी। पीछेको देखा तो घोर विषधर 'करैत' सांप कुर्सीपर चढ़ा सलसला रहा है! पादड़ी फान डेन ड्रीजशे घबराकर उठ खड़े हुए और भीतरसे लाठी लानेको जाने लगे। पर इस भुजङ्ग-की हिम्मत देखिये कि उनको भीतर जानेसे रोकनेके लिए उसने फन उठाकर इनको काटना चाहा और इनका रास्ता रोक लिया। वे दूसरे रास्तेसे भीतर गये और लाठी लाकर इस जहरीले सांपका काम तमाम किया। इस भीषण जङ्गलमें सुकुमार 'उर्सुलीन' संन्यासिनियां मृत्युकी अवहेलना करके शिक्षा और प्रचारका कार्य कर रही हैं। इन 'भिखारिनियों' ने टोंगोमें एक नारी-आश्रम खोल रखा है। इससे वहांकी आदिम अधिवासिनियां सभ्यता और संस्कृतिके मन्त्रमें दीक्षित की जा रही हैं। इस मौजेका यह हाल है कि ५५ हजारकी आबादीमेंसे ४४ हजार कैथलिक हैं। ये 'उर्सुलीन नन्हीं सेविकायें' जिस लगनसे काम करती हैं उसे देख आश्चर्य होता है। यूरोपमें पली हुई ये महिलायें घोर वनमें काम करते-करते सहर्ष नाना रोगोंसे प्राण देती हैं। कहां बेलजियम और कहां छोटा नागपुरका विषैला जलवायु; पर इन्हें सेवाके आगे इसकी तनिक सुध नहीं। ईसामसीहके आदेशोंको पालन करने, उसके नामका प्रचार करनेका क्या नशा छाया है कि मौतको वरण करनेमें इन्हें अत्यन्त आनन्द मिलता है। कई दुर्गम स्थानोंमें इनका भोजन केवल उबला हुआ चावल

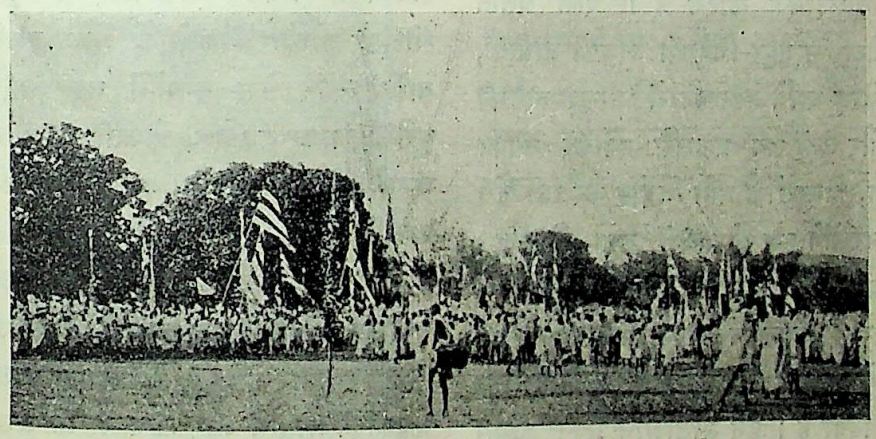

रोमन कैथलिक ईसाइयोंका एक मेला। जनताके हृदयको उल्लसित करनेके लिए पादड़ी लोग ऐसे मेलोंको प्रोत्साहन देते हैं।

है। वर्तमान समयमें कौन हिन्दू-प्रचारक इस प्रकार अपना कार्य कर रहे हैं? सच है, व्याख्यान देने और वक्तृता झाड़नेसे कोई धर्म नहीं फैलता। इसके लिए तो संसारके सामने अपना त्यागमय जीवन रखना पड़ता है। ये संन्यासिनियां जङ्गली प्रदेशोंमें जमीनपर सोती हैं और जो मिला वही भोजन करके अपने जीवनका पुण्यव्रत पूरा कर रही हैं। इनकी धुन देखिये कि इन्हें गरमी नाममात्र नहीं सताती, बरसात इनके काममें बाल-भर बाधा नहीं डालती और जाड़ोंमें ये जी-जानसे काममें पिली रहती हैं। मुण्डा, ओड़ाऊं और कोल औरतोंकी ये आराध्य देवियां हैं। उनके रोगमें ये चिकित्सा करती हैं, विवाहोंमें ये पुरोहित बनती हैं और विद्यालयोंमें उन्हें शिक्षा देती हैं। इनका आत्म-बलिदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देखिये कि स्वयं भूखी रहकर अपने अनुयायियोंका पेट भरती हैं। इनके दयालु कानोंमें भनक पड़नी चाहिए कि अमुक स्थानमें कोई परिवार, नर या नारी रोगसे ग्रस्त है या उसपर विपता पड़ी है तो ये जेठकी कड़कड़ाती धूपमें पैदल ही मीलोंका कूच कर देंगी। अपनेको अत्यन्त कष्ट देकर परोपकार करना इन्हें ही आता है। इन गुणोंके कारण ही छोटा नागपुर कैथलिक होता जा रहा है।

ईसाई धर्मका कैसा आश्चर्यजनक प्रचार रांची और फलतः छोटा नागपुरमें हो रहा है, इसका एक दृष्टान्त गाई-भीरा प्रदेश है। १९२२ में यहां कुल ६ हजार कैथलिक थे, १९२४ में १०४२० हो गये और इस समय प्रायः बीस हजार हैं। यह प्रचार जोर-जबर्दस्तीसे नहीं, केवल पादड़ियों और सेविकाओंके आत्म-बलिदानके कारण है। ऐसा प्रतीत होता है कि अब छोटा नागपुर-निवासी जङ्गली जातियां, जिनपर आत्मघाती हिन्दू-धर्मने बलात्कारसे 'अस्पृश्यता' की छाप मार रखी थी और उन्हें सब प्रकारसे दबाकर उनका सर्वनाश कर रखा था, हिन्दुओंके प्रति विद्रोह कर रही हैं। इन त्यागी ईसाई प्रचारकोंने इस ओर उन्हें जगा दिया है। इसलिए वहां धड़ाधड़ ईसाई धर्मका प्रचार हो रहा है। अस्तु। इस गाईभीरामें कृष्णवर्ण संन्यासिनियां आश्चर्य कर रही हैं। उन्होंने अपने प्रदेशकी नारी-जातिको सब प्रकार सुसङ्गठित कर दिया है। इन माताओंने अपने हाथसे झोपड़ियां खड़ी करके स्कूल और कनवेण्ट खोल रखे हैं। नारी-जीवनको सुखी बनानेके लिए छोटे-मोटे चिकित्सालय स्थापित किये हैं और स्त्रियोंको उनके अधिकारोंका ज्ञान करा दिया है। इन ईसाई स्त्रियोंका जीवन सुसंस्कृत बनता जा रहा है। रांचीकी आदिम नारियोंसे आप दो बातें कीजिये तो पता लग जाता है कि इनमें नया जीवन धड़क रहा है। ये सरासर शिक्षिता बनती जाती हैं और इसपर खूबी यह है कि सब अपना-अपना पेशा और काम करके पेट भरना चाहती हैं। शिक्षाका जो कुफल हिन्दू-समाजमें हुआ है उसका वहां नामोनिशान नहीं दिखायी देता। मैंने कुछ हिन्दू हरिजन देखे हैं जो पढ़नेके बाद अपना पेशा छोड़कर नौकरीके इन्तजारमें भूखा मरना पसन्द करते हैं। यह हिन्दू समाजकी उस कुप्रथाका फल है जो निकम्मों और परावलम्बियोंको कामकाजियोंसे अधिक आदर देता है। धिक्कार है उस समाजको, जिसने शारीरिक परिश्रमका महत्त्व और मर्यादा न समझी। बङ्गाल, युक्तप्रान्त आदि प्रदेशोंके शिक्षित नवयुवकोंमें जो बेकारी पायी जाती है वह भी तथा-कथित उच्च वर्णके हिन्दुओंकी उस गुलाम मनोवृत्तिका परिणाम है जो उन्हें बताती है कि हाथका काम करनेवाले मनुष्य निरादरके पात्र हैं। पर सङ्गठनके उस्ताद रोमन कैथलिकोंने छोटा नागपुरकी अर्ध-सभ्य और असभ्य जातियोंको शिक्षाके साथ-साथ पसीनेकी कमाईसे पेट भरनेकी शिक्षा देकर उनके सर नहीं फिरने दिये। इसलिए रांचीकी ईसाइनियां मीलोंसे तरकारीकी डलिया सरपर रखकर बेचनेको आती हैं। मर्द भी किसी कामसे नहीं हिचकते। स्थान-स्थानमें बालक-बालिकाओंके लिए औद्योगिक स्कूल हैं। रांचीमें तो दो बड़े स्कूल हैं। एकमें लड़के नाना कलाकौशल सीखकर कारबारमें लगते हैं और दूसरेमें लड़कियां। इन बालिकाओंने लेस बनानेमें वह निपुणता प्राप्त की है कि यूरोपमें जाकर यह बेल बिकती है और वहांके लोग बड़े चावसे इसे खरीदते हैं। यह 'उर्सुलीन' माताओं और बहनोंके अथक परिश्रमका फल है। एक बार कणाद-ने कहा था—'यतोऽभ्युदय निःश्रेयस स सिद्धिः स धर्मः'—धर्म और सिद्धि उसका नाम है जिससे इस संसारमें अभ्युदय होता है और परलोकमें मुक्ति मिलती है। इस सफल धर्मका ये मातायें और बहनें पालन कर रही हैं। यही कारण है कि मुण्डा, ओड़ाऊं और खरिया जातिकी झुण्डकी झुण्ड नारियां इन ब्रह्मचारिणी तपस्विनियोंके चरणोंपर मस्तक नवाती हैं। एक बड़े पादड़ीने छोटा नागपुरका भ्रमण करके यह सिद्धान्त निकाला है—"इन नन्हीं सेविकाओंके बिना मिशन पूरा नहीं कहा जा सकता। ये लड़कियोंको शिक्षा देती हैं और नारियोंको उचित पथपर चलाती हैं।" पर देखिये कि इन त्यागमूर्तियोंका नाम किसी पत्रमें शायद ही छपता हो और जो कहीं छप गया तो ये लज्जासे मर जाती हैं। धर्म और उसपर ईसाई धर्म भला है या बुरा, भगवान् जाने; पर शायद ही कोई प्राणी हो जो इन निस्स्वार्थ माताओं और बहनोंकी प्रशंसा किये बगैर रह सके।

*

यहांके पादड़ियोंकी गाथा आत्मबलिदानका अन्तहीन झरना है। रांचीमें तो बंगले हैं और वहांके पादड़ी उनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सुखसे रह सकते हैं; पर दिहातमें जिस दुर्दशा और स्वास्थ्य-संहारक स्थानमें ये धनियोंकी सन्तान गोरे पादड़ी रहते हैं उसे देख दङ्ग रह जाना पड़ता है। टपकारामें फादर फेरन रहते हैं। मिट्टी और फूसकी जिस झोपड़ीमें ये आनन्दसे अपने दिन व्यतीत करते हैं वह ठीक वहांके आदिम अधिवासियोंकी तरहकी है। इस 'कुटीर'के निकट स्वच्छ जलके लिए कोई कुआं भी नहीं है। जङ्गली जानवर दिनदहाड़े दहाड़ते हैं और सांप सलसल करते फिरते हैं। इस भयावने स्थानमें नाना रोग उपजाऊ भूमिमें फल-फूलोंकी भांति

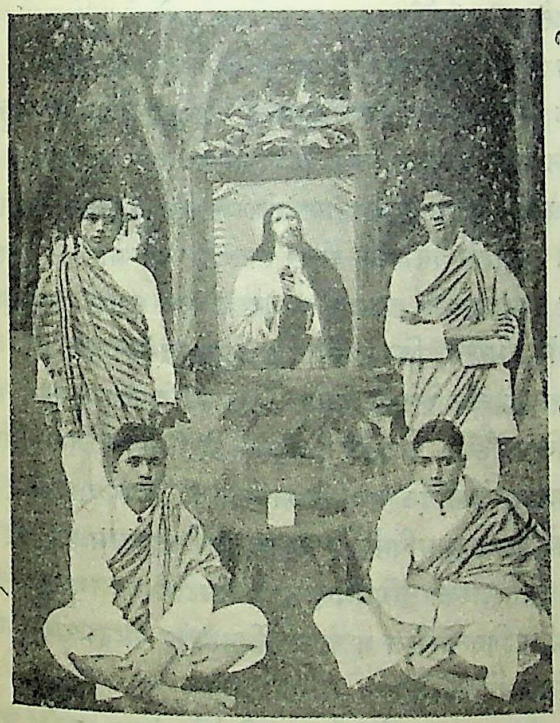

हिन्दुओं द्वारा अपमानित ये 'ओड़ाऊं' नवयुवक हाई स्कूलसे उतीर्ण होकर 'गुरु स्कूल'में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

पनपते हैं। पर फादर फेरनको ईसामसीहपर ऐसी अटल श्रद्धा है और अपने जीवनका इतना कम मोह है कि वह उबला हुआ चावल भोजन करके और विकट कष्टोंको सहर्ष आलिङ्गन करते हुए अन्य पादड़ियोंके लाख समझानेपर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते। उनकी देखरेखमें प्रायः ९ हजार ईसाई हैं; इनको छोड़कर जाना इस धर्मात्मासे नहीं हो सकता। शीत देशका रहनेवाला यह त्यागी जेठकी कड़ी धूपमें तपता है और बरसातमें गीली जमीनपर सोता है, पर उसे कभी यह न सूझा कि एक बार छुट्टी लेकर बेलजियमकी यात्रा कर आये। नाना प्रकारके मारात्मक ज्वरोंसे वह कई बार मरते-मरते बचा, पर वह कभी अपनी अन्धकार गुफाको छोड़नेको तैयार नहीं होता। धर्मका यह नशा विचित्र है। इसका पता हिन्दुओंमें दिखायी नहीं देता।

धर्मके मदसे मत्त ये पादड़ी किस उत्साह और उमङ्गसे काम कर रहे हैं, इसका एक उदाहरण हमीरपुर गांव है। इसपर स्वयं कुछ न कहकर मैं उस पादड़ीके उद्गार उद्धृत करता हूं जिसने रोगशय्यामें लेटे-लेटे यहांकी दुर्दशाका वर्णन लिखा। उसने कहा है—"मुझे (हमीरपुरमें) बुखारने धर दबाया है और मेरा मन अन्धकाराच्छन्न हो गया है। उसमें ऐसे निरुत्साहित करनेवाले विचार लहरा रहे हैं कि आशा निराशामें परिणत होनेको जोर करने लगी है। तीन साल पहले—१९२१ के मई मासमें मैंने छोटा नागपुरपर एक रिपोर्ट छपायी थी। इसमें दो पेज हमीरपुरपर भी थे। इस रिपोर्टकी प्रतियां अमेरिका, यूरोप और आस्ट्रेलियाको भेजी गयीं। उस समय यहां नया मिशन खुला था और उसके लिए यहां एकदम नयी सृष्टि करनी थी। यहांकी दरिद्रता और दुर्दशाका वर्णन नहीं हो सकता। यहांकी एकमात्र इमारत एक लम्बा झोपड़ा था जो गिरजा, स्कूल और पादड़ीके रहनेका स्थान भी था। इस झोपड़ेके एक कोनेमें फादर लैम्बौटकी कुटिया थी जिसमें गरमियोंमें ११० डिग्री ताप रहता था, और बहुधा बढ़ भी जाता था। यह देखकर मेरा हृदय पसीज गया और मैं इस वीर पादड़ीकी सेवा करनेके लिए छटपटाने लगा। मैंने इस विषयपर एक अपील निकाली और इसके भीतर अपने हृदयकी सारी व्यथा भर दी कि इसका कुछ फल हो। मैंने फादर लैम्बौटको उत्साहित किया और बताया कि मेरी अपीलसे अवश्य ही कुछ-न-कुछ रुपया एकत्र होगा। पर पाठकोंने अपील पढ़ी और कुछ न किया। एक आना, एक पेनी, एक सेण्ट या एक सांतीमकी भी तो किसीने सहायता न की। परिणाम यह है कि आज तीन साल बाद भी मैं उसी झोपड़ेके उसी कोनेमें रोग-शय्यापर लेटा हुआ हूं।××× क्या कम दुःखका विषय है कि हम इर्द-गिर्दके बालकोंके लिए एक बड़ा स्कूल न खोल सके और पादड़ियोंके रहनेके लिए अच्छा प्रबन्ध न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर सके। इस चिन्ताने मुझे बहुत व्याकुल किया, पर क्या अपनी असफलताकी दारुण अनुभूतिने मेरे बुखारकी उदासी या सारे शरीरकी दुर्बलताको दबा दिया है? बस, इस रोनेको नमस्कार करता हूं।" इस पादड़ीको अपना दुःख नहीं सता रहा है, बल्कि फादर लैम्ब्रौट और उन बालकोंका, जिन्हें स्थानाभाव और अर्थकी कमीके कारण शिक्षा नहीं मिल सक रही है।

एक और पादड़ीकी धर्मनिष्ठा और सेवाभावका अचरज-भरा वर्णन सुनिये। टोर्पामें फादर पी० फान डेन बोनने अड्डा

फादर फ्लोर एक रोमन कैथलिक पादड़ी हैं और ईसा-मसीहका यह सैनिक इस वेशमें महायुद्धके समय अपनी मातृ-भूमि बेलजियमके लिए लड़नेको गया था।

जमा रखा है। ये १८९१ में वहां गये और तीस साल तक टससे मस न हुए। इस धर्मात्माने इस अवधिमें एक दिनकी छुट्टी न ली। टोर्पाके कष्टमय जीवनमें इसे जो आनन्द मिलता था यह उसका प्रमाण है। यह किसी रोगसे भयभीत न हुआ, किसी शोकसे न डरा और घोर विपत्तिके समय भी उसे परमात्मापर पूरा विश्वास था कि उसकी अटल सेवा सुफल लायेगी।

स्वार्थत्यागी और अपनी धुनके पक्के इन पादड़ियोंमें फादर द ग्रीज निराला था। कष्टमें आनन्दके कारण नाच उठना उसका ही काम था। उसकी यन्त्रणा और सङ्कटकी मात्रा जितनी बढ़ती थी, उसे उतने ही अधिक परिमाणमें सुख मिलता था। धर्मकार्यसे विश्राम लेना उसने न सीखा और अति परिश्रमके कारण वह कुछ दुर्बल हो गया था तथा ४९ वर्षकी उम्रमें काले बुखारसे मर गया। इस एक पादड़ीने सात वर्षके अपने कार्यकालमें बीस हजार ईसाई बनाये। इसकी डायरीमें विचित्र बातें लिखी हैं। एक स्थानपर इस अथक परिश्रमी देवदूतने लिखा है—"२१ दिन तक घोड़ेकी पीठसे न उतरनेके बाद कल रात कुरदेग पहुंचा।" भला इस धुनका भी कोई ठिकाना है कि यह परिव्राजक २१ दिन तक निरन्तर यात्रा करनेके बाद विश्राम-स्थानपर पहुंचा! कौन ऐसा हिन्दू प्रचारक है, जो ऐसा दम भर सके? घोर आपत्तिके समय सुदूर आशाकी ज्योतिसे प्रफुल्लित होनेवाले इस आशावादीने एक और स्थानपर लिखा है—"सप्ताह-भर तक जो ईंटें बनायी थीं उन्हें एक बारकी मूसलाधार वर्षाने मिट्टीमें मिला दिया। भगवान्‌की जय हो! इस संसारका चक्र ऐसे ही घूमता है! यह देखकर मालूम होता है कि सृष्टिकी परिणति ध्वंसमें होती है।" नया झोपड़ा तैयार करनेको ईंटें बनायी जा रही थीं। स्वयं पादड़ी द ग्रीज अपने कुछ अनुयायियोंकी सहायतासे यह काम कर रहे थे। सो हफ्ते-भरका परिश्रम कुछ ही घण्टोंमें बह गया। इससे द ग्रीज निरुत्साहित न होकर विनाशके सिद्धान्तका उसमें दर्शन करने लगे।

जिन त्यागी और वीर पादड़ियोंने संसार-भरकी जङ्गली जातियोंमें जाकर असंख्य बाधा-विघ्नोंको पार करके ईसाई धर्मका प्रचार किया है उन्होंने रांची और उसके आस-पास इन अछूत जङ्गलियोंको अपने धर्ममें लेनेका बीड़ा उठा रखा है। इनकी जीवनचर्या देखकर पता लगता है कि आत्म-त्यागमें क्या महान् शक्ति छिपी पड़ी है। छोटा नागपुरमें रोमन कैथलिक बहुत अधिक हैं। इनके पादड़ी ब्रह्मचर्य व्रत पालन करते हैं और कुछ वेतन नहीं लेते। जहां जैसा भोजन मिला उससे प्राण धारण करना इनका कर्तव्य है। इस कठोर कर्तव्यका पालन ये अक्षरशः करते हैं। बङ्गालके अधिकांश रोमन कैथलिक पादड़ी बेलजियमसे आये हैं। १९१४ में जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



महायुद्ध छिड़ा तो बेलजियम जर्मनोंके हाथ पड़ा और वहांसे सहायताका आना बन्द हो गया। इनको भोजनके लाले पड़ने लगे। यह दशा देखकर कलकत्तेके आर्चविशपने इंग-लैण्ड-निवासी अपने एक मित्रको पत्र भेजा—"यदि युद्ध साल-भर तक और चलता रहेगा तो छोटा नागपुर मिशन उजड़ जायेगा। हमको मिशन स्कूल बन्द करने पड़ेंगे और सब अध्यापकोंको छुट्टी देनी होगी।" पर महायुद्ध न थमा और अपने ऊपर विषम सङ्कट देखकर इस धर्मगुरुने अपना सामान, घोड़ागाड़ी आदि बेच दीं। उसका त्याग देखिये कि उसने अपना रसोइया और नौकर निकाल दिये और पैदल अपने भवनसे नित सेण्ट जेवियर्स कालेज जाकर वहांके मेसमें भोजन किया। इस त्यागने सबमें नया उत्साह फूंक दिया और यह मिशन आज पहलेसे बहुत आगे बढ़ गया है। यह सब इस-लिए सम्भव हुआ कि 'जैसविट' या 'ईसा समाज' के पादड़ी अपनी तपस्याके क्रममें यम, नियम, कष्टसहिष्णुता आदिको प्रथम स्थान देते हैं। उनकी तपस्याका मूलमन्त्र यही है कि जो धर्मात्मा जितना अधिक कष्ट सहेगा वह उतना ही बड़ा सन्त और महात्मा है तथा परमात्माका उतना ही अधिक प्रिय बनेगा। इसलिए महायुद्धके समय इन पादड़ियोंने घोर यन्त्रणायें सानन्द सहीं, पर मिशनको धक्का न लगने दिया।

इनका ईश्वर और अपने मिशनपर अटल विश्वास देखिये कि इनके अनेक पादड़ी बिना रुपये-पैसेकी सहायताके ईसा मसीहके नामपर अपना प्रचार-कार्य आरम्भ कर देते हैं और अन्तमें सफलता उनके सामने हाथ बांधकर खड़ी रहने लगती है। इसका एक उदाहरण फादर हार्नी है जो लचगरमें काम करता है। अपने और अपने कुछ चेलोंके हाथसे ईंटें बना-बनाकर उसने गिरजा खड़ा किया और एक बार जब वह अपनी कुटिया स्वयं तैयार कर रहा था तो ऐसा अन्धड़ आया कि बना-बनाया मकान खण्डहर हो गया। महीनोंकी मिहनत बरबाद हो गयी। पर फादर हार्नी भगवान्‌की जय मनाने लगा कि उसने उसे इस सङ्कटमें डालकर आनन्द और पुण्यका भागी बनाया। ये हैं वे दुर्दान्त सिपाही, जो हारको नहीं पहचानते।

इन पादड़ियोंकी खूबी यह है कि ये अपने चेले-चांटियोंसे काम कराकर स्वयं आराम नहीं करते। सङ्कटके समय सबसे पहले आप घटनास्थलपर जाते हैं और अपने अनुयायियोंको अपने दृष्टान्तसे उत्साहित करते हैं कि वे उनकी सहायता करें। ये धर्मका प्रचार जोरोंसे करते हैं, पर यह भी समझते हैं कि 'भूखे भजन न होहिं गोपाला।' इसलिए रांचीके देशी ईसाई नाना उद्योगधन्धोंमें लगे हुए हैं। रांचीका 'आरफन प्रेस' इनके द्वारा चलाया जाता है और वहांकी छपाई सुन्दर होती है। सैकड़ों ईसाई पेट भरते हैं और सस्ती पुस्तकें प्रकाशित कर अपने समाजमें शिक्षाका प्रचार कर रहे हैं। यह प्रेस चमत्कार कर रहा है। आर्थिक दृष्टिसे यह सफल उद्योग तो है ही, पर भाषाओंकी उन्नतिकी दृष्टिसे इसने युगान्तर उपस्थित किया है। फादर होफमानने मुण्डा जातिकी भाषाका व्याकरण बनाकर संसारका उपकार किया

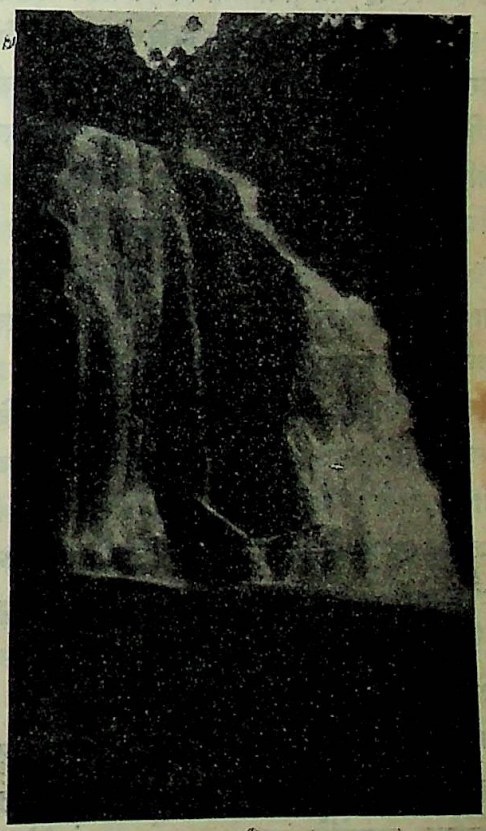

रांचीसे कुछ मील दूरपर यह हुंडरू नामक जल-प्रपात है। यूरोपवाले ऐसे जल-प्रपातोंको सफेद तेलके सोते कहते हैं। क्योंकि इनसे बिजली पैदा करनेमें बहुत कम व्यय होता है। और ऐसी बिजलीसे वहांके छोटे-छोटे गांव भी अपनी समृद्धि बढ़ा रहे हैं। खेद है कि रांचीमें इसका कोई उपयोग नहीं हो रहा है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है। मुण्डोंकी 'कविता, सङ्गीत और नृत्यकला' पर इस अन्वेषकने अपूर्व ग्रन्थ लिखा जो बङ्गालकी एशियाटिक सोसायटीने छापा है। इसने इस भाषाका कोष भी तैयार किया है। इस भाषाके अक्षर न होनेके कारण ये खोजी पादड़ी उन्हें देवनागरी अक्षरोंमें लिखते हैं। ओड़ाऊं भाषाके ग्रन्थ भी इसी लिपिमें छपते हैं। ये पादड़ी यह चेष्टा कर रहे हैं कि इन जातियोंमें हिन्दीका प्रचार हो जाये। इसलिए इनके स्कूलोंमें सर्वत्र हिन्दीके रीडर पढ़ाये जाते हैं और जो चार मासिक पत्र रांचीके ईसाइयोंके लिए निकलते हैं वे भी हिन्दीमें ही हैं। बिहार-सरकारकी रिपोर्टमें एक विचित्र तथ्य यह छपा है कि बिहारमें सबसे अधिक गाहक 'निष्कलङ्क' मासिक पत्रके हैं और यह पत्र रांचीके रोमन कैथलिक ईसाइयोंका है। इससे यह प्रमाण भी मिलता है कि ईसाइयोंमें शिक्षाका प्रचार बहुत अधिक है। इन शिक्षित ईसाइयोंका इन पादड़ियोंने अद्भुत सङ्गठन कर रखा है। जिले-भरमें सहायक समितियां हैं जो ईसाइयोंकी सेवा करती हैं और उनकी आर्थिक उन्नतिका ध्यान रखती हैं। महाजनोंने इन भोले-भाले जङ्गलियोंमें जो लूट मचा रखी है उसे देखकर मालूम होता है कि धनलोलुप सेठ पशुओंसे भी गिर जाता है। सालभर अविराम गतिसे परिश्रम करनेपर भी रांचीके आदिम अधिवासियोंको इन नराधमोंकी बदौलत पेटकी विकराल ज्वाला बुझानेके लिए पत्ते और पेड़की छाल उबालकर खानी पड़ती है। यह देखकर पादड़ियोंने इन पिशाच महाजनोंके हाथसे इस दरिद्र और सीधीसादी जनताका पिण्ड छुड़ानेके लिए आदिम अधिवासियोंका एक बैङ्क खोल रखा है जिसके शेयर होल्डर सब यही लोग हैं। इन शेयर-होल्डरोंकी संख्या १३००० है। प्रत्येक केन्द्रमें इस बैङ्कको शाखा है और स्थानीय पञ्चायतें इनका प्रबन्ध करती हैं। सालभरमें जब एक बार रांचीमें इसकी जनरल मीटिङ्ग होती है तो नाना स्थानोंसे प्रायः एक हजार डेलीगेट उसमें शामिल होते हैं। इस मीटिङ्गमें केवल बैङ्कके हिसाबकी ही देखभाल नहीं होती, पर समाजहितके सभी प्रश्नोंपर विचार किया जाता है। यह बैङ्क व्यापारिक सिद्धान्तोंपर चलाया जाता है और जनताकी अपार सहायता करनेके साथ-साथ अपनी उन्नति भी कर रहा है। इसके कारण छोटा नागपुरके महाजन अपनी लूट नहीं मचा सक रहे हैं।

इस बैङ्ककी पूंजी प्रायः तीस लाख है और इसकी १९ मुख्य शाखायें हैं; पर डेढ़ हजारसे ऊपर छोटी-छोटी शाखायें गांवोंमें जालकी तरह फैली हुई हैं। प्रत्येक गांवकी निर्वाचित पञ्चायत इसका प्रबन्ध करती है। बैङ्क समाजका महान् उपकार कर सकते हैं। यदि ये ही बैङ्क सेठोंके हाथमें हों तो वे जनताके परिश्रम और उसकी सादगीको सोखनेके काममें लाये जाते हैं। छोटा नागपुरमें यह बैङ्क समाजकी सम्पत्ति होनेके कारण उसकी आश्चर्यजनक उन्नति कर रहा है। ऋण देते समय यह केवल अपने लाभका ध्यान नहीं रखता; समाज और व्यक्तियोंके श्रेयका विचार भी रखता है। जिन-जिनको इस बैङ्कसे ऋण मिलता है उन्हें बैङ्कके मुखिया अपना धन बढ़ानेका उपाय भी बता देते हैं और इस बातका ध्यान रखते हैं कि उड़ाऊ कामोंके लिए उधार न मिले। इस बैङ्कसे समाजका क्या उपकार हो रहा है, इसका पता १९२४ की रिपोर्टसे मिलता है। (नयी रिपोर्ट मुझे न मिल सकी।) उस साल इसने ६०००० रुपया ऋण दिया, और सारी रकम जो कर्जेमें लगी थी १२०००) थी। इसका ब्याज महाजन साल-भरमें ५८२६१ रुपये लेते, पर इस पञ्चायती बैङ्कने कुल दस हजार रुपये सूदमें लिये। इस हिसाबसे छोटा नागपुरके कैथलिक समाजने ४८२६१ रुपये बचाये। जिन्होंने ऋण लिया उन्होंने उससे ढोर खरीदे, जमीन मोल ली, रेहन पड़ी हुई भूमि छुड़ायी, भूमिको अधिक उपजाऊ बनाया और अपना व्यापार बढ़ाया। इस प्रकार जहां एक ओर सूदमें प्रायः पचास हजार रुपये इस दरिद्र समाजको बचे वहां दूसरी ओर ऋणके धनसे समाजने नाना उचित उपायोंसे आय बढ़ायी। यह है वह समाज, जो उन्नतिकी दौड़में हिन्दुओंको बहुत पीछे छोड़ जा रहा है।

यह बैङ्क उन्हींकी सहायता करता है जो इसकी उदार शर्तोंके अनुसार ऋण ले सकें। पर सबकी दशा तो ऐसी नहीं है कि इन शर्तोंको निभा सकें। कुछ ऐसे अभागे भी होते हैं जो बैङ्कका पुराना कर्ज चुकानेमें असमर्थ होनेके कारण वहांसे अधिक उधार नहीं ले सकते। ऐसे परम दरिद्रोंके लिए 'परस्पर सहायक सभा' खोली गयी है। यह ऐसे भाग्यहीनोंको महाजनके चङ्गुलमें फंसनेसे बचाती है। गांवके लोग मिलकर ऐसी सभायें खोलते हैं और आपसमें चन्दा करके इसकी जड़ मजबूत करते हैं। यह सभा दरिद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रांचीका हिन्दी-पुस्तकालय।

जनोंकी सेवा करती है। ये सभायें भी दिन-दूनी और रात-चौगुनी उन्नति कर रही हैं। खूंटीकी 'परस्पर सहायक सभा' ने दरिद्र देवतोंको सेवा तो की ही है, पर अपने कोषमें छ हजार रुपये जमा भी कर लिये हैं। यह इसका रिजर्व फण्ड है जो सङ्कटके समयपर काम आयेगा।

महाजन जब गल्ला उधार देते हैं तो सौ सैकड़ा ब्याज लेते हैं। इसके कारण किसानोंका उठना असम्भव हो जाता है। वे सदा इन निकम्मे महाजनोंके गुलाम रह जाते हैं। इससे परित्राण पानेके लिए 'गल्ला बैङ्क' खोले गये हैं। इनके शेयर गल्लेके होते हैं और ये केवल गल्ला ही उधार देते हैं। ये ब्याज भी गल्लेमें ही लेते हैं, पर उतना ही सूद लेते हैं जिससे इनका कारबार बढ़ता रहे।

'गल्ला बैङ्क' जिस प्रकार अपने समाजकी सेवा कर रहे हैं उसे देख दङ्ग रहना पड़ता है। इस विषयपर एक घटना अच्छा प्रकाश डालती है। एक गांवमें १५ ओड़ाऊं परिवार रहते थे। इन्होंने एक बार सरकारी जङ्गल काट गिराया और अदालतने एक-एक परिवारपर १५ रुपया जुर्माना कर दिया। ये अकिञ्चन इतना रुपया कहांसे लाते। यों ही छटपटाने और तड़पने लगे। उनके गांवमें 'गल्ला बैङ्क' था और उसमें प्रायः २२५ रुपयेका गल्ला जमा था। इससे उन्हें १२० रुपये कर्जमें मिल गये। अन्य गांवोंके 'गल्ला बैङ्कों' ने भी उनकी सहायता की। इस तरह अर्थ-दण्ड चुका दिया गया और गांवका गांव उजड़नेसे बच गया। यह है इन बैङ्कोंकी महान् उपयोगिता और लोकहितकी प्रबल भावना।

किस हिन्दू गांवमें ढोरोंका बीमा होता है? इनमें नाना रोगोंसे ढोर मरते रहते हैं और एक पड़ोसी दूसरेकी हानिपर हंसता और आनन्द मनाता है। हमारा 'पल्ली समाज' राग-द्वेष, विचार-सङ्कीर्णता और अन्धविश्वासके कारण हिन्दू समाजकी जड़में कुल्हाड़ा चला रहा है। पर रांची जाकर पता लगा कि वहांकी जङ्गली जातियां हम आर्योंको इस विषयपर पाठ पढ़ानेका दम भरती हैं। वहां चौपायोंका बीमा होता है और गरीब किसानोंका सर्वस्व स्वाहा होनेसे बच जाता है। यह बीमा भी सेठोंकी बीमा-कम्पनियां नहीं करतीं। आत्मत्यागी और भिक्षावृत्ति फादर बोस्सेयर्सने यह प्रतिष्ठान छोटा नागपुरकी दरिद्र प्रजाके लिए स्थापित किया है और इसका पैसा-पैसा उनके ही हितमें लगता है।

सहयोग-समितिने किसानोंकी दशा बहुत सुधार दी है। रांचीके आदिम अधिवासी इसके मेम्बर हैं। समिति-की दुकानें इन्हें सस्ता और अच्छा माल देती हैं। इन दुकानोंके कारण अब वे दुकानदार, जो महंगे दामोंमें इनके हाथ माल बेचते थे, उजड़ रहे हैं और शीघ्र ऐसा समय आ रहा है जब रांची और छोटा नागपुरका सब दिहाती व्यापार इस सहयोग-समितिके अधिकारमें आ जायेगा और इन किसानोंको कोई महाजन न लूट सकेगा।

रांचीमें उद्योगधन्धेका बड़ा स्कूल है, पर पादड़ियोंने नाना केन्द्रोंमें छोटे-मोटे औद्योगिक विद्यालय खोल रखे हैं। इनसे आदिम अधिवासियोंका विशेष उपकार हो रहा है। उनकी आय बढ़ रही है और वे आत्म-निर्भर बनते जा रहे हैं। पादड़ी सेठ बननेकी इच्छा नहीं रखते और ये रोमन कैथलिक पादड़ी अपने या अपने परिवारके लिए धन कमाना पाप समझते हैं। इसका फल यह हो रहा है कि रांचीके रोमन कैथलिक ईसाई समृद्धतर बनते जा रहे हैं। म० गांधीने भारतके निर्धन किसानोंकी आर्थिक लूट बन्द करनेके लिए खादीका प्रचार सर्वोत्तम उपाय बताया है। छोटा नागपुरके पादड़ी वर्षोंसे यह उपाय काममें ला रहे हैं। किसान वर्षमें सात-आठ मास खाली रहते हैं। इस समयका सदुपयोग करनेके लिए यहांके किसानोंको बुनाई और कताईका अभ्यास कराया जाता है। इस प्रकार ये आदिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अधिवासी अपने वस्त्रके लिए स्वावलम्बी बन रहे हैं। कांग्रेस इसका देशभरमें कितना सङ्गठन कर चुकी है, इसका हमें पूरा पता नहीं; पर छोटा नागपुरके ईसाई किसान अब मिलका कपड़ा नहींके बराबर मोल लेते हैं। अपने हाथकी कती और बुनी खादी उनके लिए पर्याप्त है। खादीका प्रचार कर इन पादड़ियोंने किसानोंकी वास्तविक सेवा की है। ये लोग ऐसा यत्न भी कर रहे हैं कि अपनी आवश्यकताके लिए रुई भी यहीं पैदा की जाये।

इन दरिद्र अधिवासियोंकी आर्थिक उन्नतिके साथ-साथ उनका जीवन सुखकर और कष्टहीन होता जा रहा है। रांचीके गांवोंमें जलका महान् कष्ट है। इसलिए इन पादड़ियोंने हजारों कुएं खुदवा डाले हैं जो सबके लिए खुले हैं।

कलकर उन आदिम अधिवासियोंमेंसे हैं जो कुछ ही वर्ष पहले तक हमारे लिए अस्पृश्य और हजारों वर्षोंके हमारे अत्याचारसे दलित थे। रांचीमें प्रायः तीन लाख रोमन कैथलिक हैं और तारीफ यह है कि इनमेंसे प्रायः बत्तीस हजार लड़के और लड़कियां स्कूलोंमें पढ़ती हैं। इन आदिम अधिवासियोंमें, जिनको पढ़ाना अब तक पाप समझा जाता था, आज प्रायः ७५ सैकड़ा साक्षर हैं। कई ग्रेजुएट और अण्डर ग्रेजुएट हैं। ओड़ाऊं जातिके मेधावी सज्जन एलोइस थेयोफील कूजर ग्रेजुएट और डिप्टी कलकर हैं; उनकी पत्नी वेरोनिका रांची कनवेण्टमें शिक्षा समाप्त करनेके बाद 'गुरु-ट्रेनिङ्ग स्कूल' में भर्ती हुईं और वहां भी पास हुईं। यह दम्पति कैसा सभ्य और सुसंस्कृत है, यह देखकर उच्च वर्णाभिमानियों-

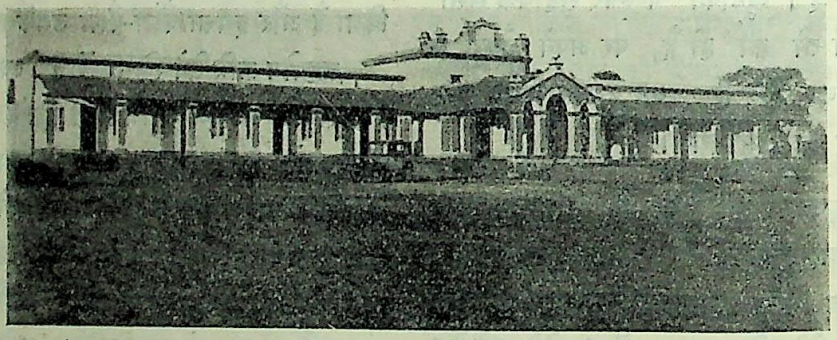

मारवाड़ी आरोग्य-भवन।

खूबी देखिये कि ये सब काम आदिम अधिवासियों द्वारा ही चलाये जाते हैं। बैङ्कमें किसी सेठका रुपया नहीं है। पाई-पाई उन लोगोंकी लगी है जो कड़ी मिहनत करके पेट भरते हैं। सहयोग-समितिकी दुकानोंका सब लाभ उनको मिलता है। उनकी पञ्चायतें इनका प्रबन्ध करती हैं। पादड़ी लोग आदिम अधिवासियोंको आयके ये नये मार्ग सुझाते हैं। इनमें वे केवल परामर्शदाताका काम करते हैं। इसलिए उनके हृदयमें सेठ धर्म-प्रचारकोंकी भांति उनके परिश्रमके फलको चूस जानेकी इच्छा उत्पन्न नहीं होती। यह देखकर मेरी आंखें खुल गयीं। भारतभरमें शायद ही कोई ऐसा स्थान हो जहां हिन्दू सभा या कोई संस्था हरिजनोंका ऐसा उत्तम सङ्गठन कर सकी हो।

इन त्यागी पादड़ियोंकी उदारता और हरिजन-सेवाकी प्रबल प्रवृत्तिका परिणाम देखिये कि रांचीमें दो डिप्टी

का माथा नीचा हो जाता है। मैंने तो यह सब देखकर उन सर्वत्यागी विरागी पादड़ियोंको मन-ही-मन नमस्कार किया जो इन 'हरिजनों'का यह आश्चर्यजनक उद्धार कर रहे हैं। एक ओर हमारे अधिकांश 'वक्तृताय महारथी' नेता हरिजनोद्धारपर ओजस्वी भाषण देने और पत्रोंके कालमके कालम रंगनेमें अपनी सारी शक्तिका अपव्यय कर रहे हैं और दूसरी ओर ये ईसाई पादड़ी चुपचाप हरिजनोंको छाती लगाने और उनका आर्थिक उद्धार करनेमें चिपटे हुए हैं। भारतमें पचीस लाखसे ऊपर स्वामी संन्यासी हैं। यदि ये चाहते तो इन पादड़ियोंकी भांति जनताको सङ्गठित कर उसका कल्याण साधन कर देते। आजकल शिक्षित साधु-संन्यासियोंकी भी हिन्दुओंमें बाढ़ आने लगी है। पर इनसे समाजका क्या उपकार हुआ, यह विचारणीय है। कई धूर्त तो संन्यासी-वेषको धन कमानेका साधन बनाये हुए हैं। इनमें कितने ऐसे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जो इन पादड़ियोंकी भांति आत्म-बलिदान करके केवल धर्म और लोकहितके लिए अपना जीवन धारण किये हुए हैं? यही कारण है कि हिन्दू जातिका विनाश रोकना असम्भव-सा हो रहा है।

*

रांचीमें ये बातें मैंने ही नहीं देखीं। वहांके निवासी हिन्दू इनसे पूर्णतया परिचित हैं। पर ऐसा मालूम होता है कि ये अभागे पाखण्डके ऐसे दलदलमें फंसे हुए हैं कि चाहने-पर भी वहांके हरिजनोंका उद्धार नहीं कर सकते। कैथलिक 'सेसे कुछ ही फासलेपर सर राजेन्द्र मुकर्जीकी कोठी है। इससे भी नजदीक बिड़लोंका मकान है। कलकत्तेके कई धनी हिन्दुओंने वहां कोठियां खड़ी की हैं। बिहारके धनी-मानी हिन्दू नेता हर साल वहां जाते हैं, लेकिन किसीके हृदयमें वहांके हरिजनोंकी दुर्दशापर कसक न उपजी। मुर्शिदाबादमें एक राजा हुआ, उसका नाम था मणीन्द्रचन्द्र नन्दी। उसका हृदय अपने ढङ्गका एक ही था। दीन-दुखियोंके दर्शनमात्रसे वह उदारमना मनीषी तड़प उठता था। हिन्दुओंके पतनकी पीड़ा उसे जलाती रहती थी। विद्वानोंकी दरिद्रता देख वह पसीज जाता था। यह वदान्य एक बार रांची आया और उसे वहांका जलवायु स्वास्थ्यकर लगा। हरिजनोंकी दुर्दशा देख उसका मर्म छिद गया और वह सदा बेचैन रहने लगा। अभागे हिन्दू-समाजका माहात्म्य देखिये कि वह रांचीकी दशा देख व्याकुल था; पर कुछ करने-की हिम्मत उसे भी न हुई। इस बीच स्वामी योगानन्द गिरिने इस महादानीसे अपील की कि वह रांचीमें एक ब्रह्म-चर्याश्रम खुलवा दे। इसपर उसने रांचीमें एक ब्रह्मचर्याश्रम खोल दिया। ७० बीघा जमीनपर यह ब्रह्मचर्याश्रम खड़ा है। इसकी वही दशा हो रही है जो राष्ट्रीय विद्यालयोंकी होती है। राजा मणीन्द्रचन्द्र नन्दी अपने पुत्रके लिए ऋणका पहाड़ छोड़ गया। उसने इतना दान किया कि रियासतपर ऋणका यह पहाड़ टूट पड़ा। इसलिए अब इस ब्रह्मचर्याश्रमको वहांसे अधिक सहायता नहीं मिल रही है। बस, यह संस्था सूख रही है। इसके सञ्चालक योग्य व्यक्ति हैं। वे काम भी कर रहे हैं, पर उन्हें सदा धनका अभाव रहता है।

रांचीमें हरिजन-समस्या उतनी भीषण नहीं है। आदिम अधिवासियोंने ईसाई धर्ममें दीक्षित होकर अपनी अस्पृश्यता उड़ा दी है। लेकिन इसपर भी वहां ८२००० हिन्दू अपनी धर्मभक्तिके कारण अछूत बने हुए हैं। इनमें मेहतर, चमार और डोमोंकी संख्या ८६०० है। इनका उद्धार करनेको रांचीमें कोई तैयार न हुआ। ब्रह्मचर्य विद्यालयके अध्यापक श्री क्षितीशचन्द्र वसु भावुक प्राणी हैं और केवल इस प्राणी-को हरिजनोंकी घोर दुर्दशा सता रही है। ये रात-दिन हरि-जन-सेवामें व्यस्त रहते हैं। पर अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। रांचीके हिन्दुओंके सामने ईसाइयोंका आदर्श है और वे सदा ईसाइयोंके विरुद्ध विष वमन करते रहते हैं, किन्तु इनके धर्मप्रेमका यह नमूना है कि वसु महोदयने तीन महीने तक जीतोड़ परिश्रम किया और फल यह हुआ कि वे ३२॥।≈) की रकम हरिजनोंकी सेवाके लिए उघा सके। यह उस नगरमें, जहां कई हिन्दू सेठ रहते हैं। यह दुर्दशा हिन्दुओंके नैतिक पतनका प्रमाण है। जो जाति इतनी स्वार्थी है उसकी रक्षा करनेकी इच्छा भगवान्‌की भी नहीं हो सकती। इसपर भी रांचीमें वसु प्रमुख कुछ कर्मियोंने हरि-जनोंके लिए विद्यालय खोले हैं और उनकी दशा सुधारनेकी चेष्टा कर रहे हैं।

इस स्वास्थ्यकर नगर रांचीमें अनेक मारवाड़ी रहते और व्यापार करते हैं। उन्होंने अच्छा रुपया पैदा किया है। इनमें कुछ हिन्दी-प्रेमी हैं और उन्होंने एक पुस्तकालय खोल रखा है। कुछ नवयुवक इसमें पत्र पढ़ने और पुस्तकें देखने आते हैं। इन मारवाड़ियोंने अपने जाति-भाइयोंके लिए एक आरोग्यभवन भी स्थापित किया है जो उनके लिए अच्छा विश्राम-स्थान है। इसके अतिरिक्त रांचीमें केवल पागलखाना देखने लायक है। यह पागलखाना भारतमें सबसे बड़ा है और अपने ढंगका एक ही है। इसके भीतर गया तो एक पागलने मुझसे पूछा—"भाई! हम पागल हैं या तुम्हारा दिमाग फिरा हुआ है—इसका निर्णय कौन करेगा?" यह सुन मैं अवाक् रह गया और मेरा दिमाग इस उधेड़-बुनमें हैरान था कि इसका क्या उत्तर हो सकता है। तुरत वापस चला आया।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्वतन्त्रताके सैनिक और डिक्टेटर नेता

श्रीमती हैनन स्वाफर और श्री रामपाल गुप्त, लण्डन

सदियों तक मनुष्य स्वतन्त्रताके लिए लड़े और मरे। उन्होंने जेल तथा नाना यन्त्रणायें सहीं और वे निर्दयताके साथ मार डाले गये। क्यों? इसलिए कि हम और तुम स्वतन्त्र हो सकें। उन्होंने क्रूर राजों, धूर्त पुरोहितों और लोलुप जमीन्दारोंका सामना किया। वे शिकञ्जेमें कसे गये और जीते जी आगमें झोंके गये।

उनकी विजय हुई, पर इससे उनका कुछ लाभ न हुआ। इससे उनका हित हुआ जो उनके बाद जन्मे। उनके कारण हम आज अपने स्वतन्त्र विचार रखते हैं और अपने आचरणको उनके अनुसार बनानेका दम रखते हैं। यह काम सदियों और अनेक सदियोंमें हो पाया।

दो वर्षके भीतर ही विचित्र तमाशा देखनेमें आया है। संसारके आधे देशोंसे स्वतन्त्रता भाग गयी है। और यदि तुम सावधान न रहे तो तुम भी अपनी स्वतन्त्रता खो बैठोगे। इसका मतलब यह हुआ कि तुम्हारी नागरिकता घास चरने चली जायेगी और अपने जीवनको अपने स्वतन्त्र विचारोंके अनुसार गठित करनेका तुम्हारा अधिकार लोप हो जायेगा।

धूर्त नेता आजकल अन्धेरखातेको नयी-नयी सुहावनी पोशाक पहनाकर सजा रहे हैं। इसे वे अपने झण्डों-पर फहराते हैं। कोई भी झण्डा हो, जब तक वह जनताको इन नेताओंकी गुलामीमें फंसानेकी ताकत रखता है, अच्छा है। हाल हालमें ये नेता झण्डेकी भी परवा नहीं कर रहे हैं और ये जुल्मको जनताका आदर्श बताने लग गये हैं। इन्होंने इसका नाम रखा है समाजका पुनरुद्धार और उसकी समृद्धिका पथ।

बड़े-बड़े सुधारकों और स्वतन्त्रताके सैनिकोंका किया-कराया काम यूरोप-भरमें मिट्टीमें मिला दिया गया है। और 'किमाश्चर्यमतः परम्' कि लाखों मनुष्य गुलामीका उपभोग कर रहे हैं और उसमें अपनी विजय समझते हैं। किसीको इस विषयपर नाममात्रका भ्रम न रहना चाहिए कि यह दुष्टता मनुष्यके दिमागकी सबसे कलुषित उपज है।

महायुद्धसे पहलेके अत्याचारी और अन्यायी समाजकी तुलनामें हम एक ऐसे युगमें प्रवेश कर रहे हैं जो यदि ठीक तरह सञ्चालित किया जायेगा तो संसारमें स्वर्ग ला देगा।

मनुष्यकी उत्पादनशक्ति इतनी अधिक बढ़ गयी है कि वह अनायास ही सबके लिए यथेष्ट सामान पैदा कर सकता है। ठीक इस समय, जब कि सबको सुख-भोगका बराबर हिस्सा बंटना चाहिए था, हमारे लोभी, परमस्वार्थी, धूर्त सेठोंने हिट्लर, मुसोलिनी आदिको और आर्थिक स्वतन्त्रताके उन परम शत्रुओंको जो देखनेमें देवता हैं, पर दमनके क्रूर साधन बने हुए हैं, आगे बढ़ाकर जनताको फिर गुलाम बनाना चाहा है।

ये धूर्त नेता मध्ययुगके अत्याचारके प्रतिनिधि हैं। उस समय जनता उन्हीं देवताओंको पूजती थी जो दूसरोंने उसके लिए बनाये थे। लोग वही विचार रखते थे जो दूसरे उनके सरपर थोपते थे। उस समय वे हर तरहसे जमीन्दारों और पुरोहितोंके गुलाम थे। उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन समयसे ही नेताओं और पुरोहितों ( धार्मिक नेताओं ) का काम जनताको स्वतन्त्रताके स्वर्गका दृश्य दिखाकर परतन्त्रताके नरक-कुण्डकी ओर मार-मार ढकेलना रहा है। यह चित्र बैबिलनका है और प्रायः पांच हजार वर्ष पुराना है। पाठक देखें कि इन पांच हजार वर्षोंमें नेताओं और पुरोहितोंकी मतिगतिमें कुछ भी अन्तर नहीं हुआ।

स्वतन्त्रता थी तो केवल नशा खाने और मेलोंमें नाचनेकी। जालिम लोग उनके नेता बनकर उनको दास बना रहे थे।

यह बताना आसान है कि अमुक नेताने हमारा यह हित किया। और यह तब, जब कि जनताको ठगना आसान है। मुसोलिनीने सड़कें बनायी हैं, इटलीकी रेलवे लाइन बढ़ायी है या कुछ भिखमङ्गे घटा दिये है। पत्रोंके लिए यह छापना आसान है। पर जरा सोचिये तो आप उस देशमें रहना कितना पसन्द करेंगे जहां नेताके विरुद्ध अपने विचार प्रकट करनेसे गिरफ्तार होना पड़ता है और दण्ड यह मिलता है कि ऐसा स्वतन्त्र विचारका आदमी कालेपानी भेज दिया जाता है।

हम जानते हैं कि यह पढ़कर कई लोगोंके दिल उछलने लगते हैं कि हिट्लरने जर्मन लोगोंमें नयी जान डाल दी। यह पढ़कर बहुत कम पाठक ऐसे विचारशील और स्वतन्त्र मत रखनेवाले होते हैं कि वे हिट्लरकी उस नृशंसताको याद रखें जो उसने जर्मनीके छ लाख निर्दोष यहूदियोंपर जोर और जुल्म करके दिखायी है। इस तरह उस नेताका रूप प्रकट हो जाता है। उसने बिना मामला चलाये ही अपने एक लाख राजनीतिक विरोधियोंको जेलोंमें ठूंस दिया है। उसने सत्तर लाख साम्यवादियों, पचास लाख कम्यूनिस्टों और साठ लाख कैथलिक मतावलम्बियोंको वोट देनेके अधिकारसे वञ्चित कर रखा है। उसने दरिद्र तथा सेठों द्वारा लूटे गये श्रमजीवियोंकी संस्था ट्रेड यूनियनके आठ करोड़ रुपये हड़प लिये हैं।

नेताओं और डिक्टेटरोंके इस अन्याय और अत्याचारसे यदि हम मुंह मोड़ें और रूसकी ओर देखें तो वहां एक नया और चित्तको प्रफुल्लित करनेवाला दृश्य दिखायी देता है। रूस दस वर्षमें संसारके और देशोंसे पचास साल आगे बढ़ गया है। पर तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अनिच्छासे कवायद करना और दूसरेकी आज्ञा मानना कभी न चाहोगे। कौन चाहता है कि वह एक बड़ी मशीनका छोटा पुर्जा बनकर पिसता जाये।

बालकान राष्ट्रोंमें नेताओंके अत्याचार और अन्धेरका कोई अन्त नहीं है। युक्तराष्ट्रमें गत तीस या चालीस वर्षसे किसी प्रकारकी स्वतन्त्रता नहीं है। वहांके लोग भोगविलासमें चूर हैं और स्वाधीनताको उन्होंने ताकपर रख दिया है। यदि हम न्यूयार्कमें होते और ये ही बातें वहां कहते जो हम यहां कह रहे हैं तो हमें आधा जीवन जेलमें ही समाप्त कर देना पड़ता। वहांका समाज हमें जातिच्युत कर देता और हम वहां 'लाल' समझे जाते। हमपर अवश्य ही कोड़े पड़ते और सम्भवतः यह यत्न टैमनी हालकी पुलिस करती।

क्या कारण है कि स्वतन्त्रताका प्रेम, जो कभी मशालकी भांति पथ-प्रदर्शक और सबका नेता बना था, जिसकी शिखा कभी मनुष्योंके हृदयोंमें आगकी भांति धधकती थी, और जो किसी समय राष्ट्रों, जातियों और व्यक्तियोंको नवीन ज्योति और उत्साह देता था, आज केवल एक चिङ्गारीके रूपमें रह गया है। क्या अब इसका दीप निर्वाण हो जायेगा? क्या अब जनताकी मूर्खता और असावधानीसे जनतन्त्रवाद खतम होनेको है?

——

## गन्धवती

अमलिन वनकी रानी
नव मुकुल-मुकुलमें पुञ्ज-पुञ्ज
(तुमने छिपनेकी ठानी)
मैं तुम्हें ढूंढता रानी

किरणोंके वसन लता गहने
केसरका सरस वर्ण पहने
पल्लव अधरोंपर किस पिघने
अंकित की मधुकी वाणी

सीरी-सीरी विलसित समीर
विह्वल विलोकती भृंग-भीर
मृदु रभस-विधुर यौवन अधीर
तुम छवि-सी छिपी समानी

अयि! लोनी गन्ध विलोल बकुल
अलि-कोकिल-गुञ्जन पुलकाकुल
खोलो मद-घूंघट, भावाकुल—
मैं सुमन शरों-सा मानी।

—रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बुद्धिवाद और भूकम्प

श्री रमाशङ्कर मिश्र एम० ए०, बी० एल०

बुद्धिवाद एक मानसिक दृष्टिकोण है जो बुद्धिके महत्त्वको कबूल करता है। इसका उद्देश्य न्याय तथा नीतिके ऐसे सिद्धान्तका स्थापित करना रहता है जिसकी जांच मनुष्यके अनुभवके द्वारा की जा सके और जो कुल नियम-विरुद्ध प्रमाणोंकी दासतासे मुक्त रहे। इसीको अपनानेसे मनुष्य-जाति तेजीसे सुधार-पथपर अग्रसर हो सकती है; मानव-समाजमें सुखकी वृद्धि तथा दुःखकी कमी इसीपर बहुत-कुछ अवलम्बित है। इसी मानसिक दृष्टिकोणका मनुष्य परिस्थितियोंको काबूमें रख सकता है और अपनी वैयक्तिक शक्तिको पूर्णरूपसे विकसित कर मनुष्य-जातिकी अधिकसे अधिक भलाई कर सकता है।

बुद्धिका यथार्थ उपयोग करना ही बुद्धिवाद है। बुद्धिवादी जटिलसे जटिल समस्याका मुकाबला करनेको तैयार रहता है और बुद्धिके ही जरिये अपनी क्षमता-भर उसको हल करनेका प्रयत्न करता है। यदि बुद्धिके जरिये किसी समस्याको हल करनेमें उसे सफलता प्राप्त नहीं होती तो वह उस समस्याको सुलझानेके लिए किसी ऐसे सिद्धान्तको, जिसे बुद्धि कबूल नहीं करती, आंख बन्दकर मान नहीं लेता। बुद्धिवादी किसी विषयपर अपनी अज्ञानताको माननेके लिए हर वक्त तैयार रहता है। वह इस तथ्यको मानता है कि मनुष्यके ज्ञान तथा अनुभवका क्षेत्र धीरे-धीरे बढ़ता जायेगा; वह ऐसा हरगिज नहीं कह सकता कि "पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो चुका, अब ज्यादा माथापच्ची करनेकी जरूरत नहीं है।" वह बौद्धिक, नैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रमें किसी वाह्य प्रमाण (extraneous authority) का कायल नहीं रहता।

बुद्धिवादीकी विशेषता यह होती है कि वह किसी विषयपर चन्दरोजा नतीजे (provisional conclusions) को उस समय तक मान लेनेमें नहीं हिचकता जब तक कि उसके हलमके अन्दरकी यथार्थता उस नतीजेके विरुद्ध न हो; परन्तु ज्योंही सत्यता उस परिणामका खण्डन करती है, वह उसे फौरन् छोड़ देता है। बुद्धिवादी नये सत्यकी खोजमें हर समय लगा रहता है, और अपने माने हुए नतीजेके खिलाफ और भी अधिक अनुसन्धान करनेपर यदि दूसरा नतीजा निकले तो भी वह नहीं हिचकता। वह समाजका अङ्ग होनेकी हैसियतसे हर ऐसे रस्म-रिवाजको मानता है जो बुद्धि-विरुद्ध न हो। प्रत्येक रस्म-रिवाजका बौद्धिक कारण ढूंढ़नेमें वह समय लगाता है। मानव-इतिहासकी नींवपर वह भविष्यकी अट्टालिकाको बनाता है। वह इस बातको खूब समझता है कि मानव-इतिहासका प्रवाह रुक नहीं गया, वरन् उसका अटूट प्रवाह निश्चित है।

बुद्धिवादी केवल समाजके उज्ज्वल भविष्यपर ही दृष्टि नहीं रखता, बल्कि उसकी यह आशा रहती है कि मनुष्यका सुधार अपरिमित है। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए वह कटिबद्ध होकर परिश्रम करता है। बुद्धिवादी इस तथ्यको अच्छी तरह समझता है कि मनुष्यका ज्ञान परिमित है और आदि-कारणको समझनेमें सर्वदा असमर्थ है। वह इस बातको जाननेकी कोशिश बेकार समझता है। इसी कारणसे वह अपना दिमाग उन विषयोंपर लगाता है जिन्हें समझनेकी ताकत मनुष्यमें मौजूद हो। सदाचारके नियमोंको वह अच्छी तरहसे समझता है; क्योंकि उसके लिए ये नियम मानव-स्वभाव तथा जीवनपर आधारभूत रहते हैं, न कि किसी महापुरुष अथवा धर्म-ग्रन्थकी आज्ञाओंपर। उसके विचारमें सदाचार-विषयक नियम ऐसे नहीं होते कि जिनमें तबदीली नहीं की जा सकती, बल्कि सुधार तथा परिस्थितिके कारण उनमें भी हेर-फेर हो सकता है।

मजहबी भाव आजके वैज्ञानिक भावके बिलकुल विपरीत है। मजहबके हिमायती विज्ञानके प्रसारको रोकनेकी जी-तोड़ कोशिश करते रहे हैं। इतिहास इस बातका साक्षी है कि हर देशमें मजहबने सत्यका खून करनेके लिए बड़ी-बड़ी कोशिशें की हैं। विज्ञानने जिन मसलोंको हल किया है उनके सामने आज मजहबको सिर झुकाना पड़ा है। मजहबी जीवका प्रभाव आम जनतापर आज भी बहुत ज्यादा है और वे लोग इसको कायम रखनेके लिए जी-तोड़कर कोशिश करते रहते



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हैं। जहां विज्ञान अपनी असमर्थताको प्रकट करता है वहां मजहबी गलत अटकल लगाकर यह दिखलाना चाहता है कि उसके सामने वैज्ञानिककी कोई हस्ती ही नहीं है। आफत-कालमें बहुत-से ऐसे मनुष्य, जो साधारण समयमें बुद्धिवादी होते हैं, अज्ञात मनोक्रिया ( unconscious mental action ) के कारण बुद्धिको खो बैठते हैं और जन-साधारण की तरह हिमाकतका काम करने लगते हैं। १५-१-३४ को २ बजकर १४ मिनिटपर दिनके समय बिहारमें महाप्रलय-कारी भूकम्प आया। सारा उत्तर बिहार श्मशान बन गया। दक्षिण बिहारमें मुंगेर चौपट हो गया और पटनाको भी भारी क्षति हुई। आकस्मिक घटनाओंके कारण ( chance coincidences ) भूकम्प 'गोलयोग' के समय हुआ। फिर तो ज्योतिषियोंकी बन पड़ी। भूकम्प-विशेषज्ञोंका कहना है कि इस बलाके बारेमें भविष्यवाणी ( foretelling ) नहीं की जा सकती और दुनियाके किसी सभ्य हिस्सेमें भूकम्प-के बारेमें भविष्यवाणी नहीं होती। प्रकृतिने तो मनुष्यको महाकष्ट दिया, परन्तु हमारे ज्योतिषीगणने जनताको १६-१-३४ से लेकर २३-१-३४ तक भारी मानसिक कष्ट दिया। २७ और ३० तारीखोंके बारेमें मनगढ़न्त किस्से बनाये, लेकिन प्रकृतिने उनको झूठा साबित किया और बरवक्त वे भीगी बिल्ली-से नजर आ रहे हैं। बात यहींपर खतम नहीं हो जाती; जब हम महात्मा गांधी-जैसे महान् व्यक्तित्वके मनुष्यको यह विचार प्रकट करते सुनते हैं कि ईश्वरने मनुष्य-की अन्तिम भलाईको दृष्टिमें रखते हुए इस भूकम्पको सजाके रूपमें भेजा है, और यह कहते सुनते हैं कि अछूत-पनके पापके कारण भगवान्‌ने इस महादुःखको भेजा है, तब दिलको बहुत चोट पहुंचती है। विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरने भी इस बातपर खेद प्रकट किया है।*

सन् १७५५ ई०में पुर्तगालमें महाभयङ्कर भूकम्प हुआ था। करीब ५०,००० मनुष्य मरे थे और लिसबन ( Lisbon ) नगर तबाह हो गया था। उस समय मजहबी जीवोंने ऐसे ही तर्कका उपयोग किया था। वाल्टेयर (Voltaire) ने अपनी कविता ( Poem on the Lisbon Disaster ) लिख कर उनको मुंहतोड़ जवाब भी दिया था। समयानुकूल होनेके कारण उनकी कविताके कुछ नमूने नीचे दिये जाते हैं—

"आओ! ऐ ज्ञानी लोगो! तुम लोग कहा करते हो कि 'ईश्वरकी सृष्टिमें सब अच्छा है'; अब आकर इस विनाशके दृश्यपर विचार करो! पीड़ितों तथा असहायोंके आर्त क्रन्दनका हृदय-विदारक दृश्य देखकर क्या तुम यह कहना चाहते हो कि 'यह भगवान्‌के अटल नियमोंका निदर्शनमात्र है; जीवोंके पापोंका फल है; ईश्वरने पापियोंसे बदला लिया है'? पर यह तो बताओ कि उन निरपराध, असहाय, अज्ञान शिशुओंने कौन-से पाप किये थे जो अपनी माताओंकी छाती-पर खूनसे तर होकर छिन्न-भिन्न अवस्थामें पड़े हैं? क्या लिसबनने लन्दन, पैरिस तथा माद्रिदकी अपेक्षा अधिक पाप किये थे? तब क्यों उन शहरोंमें लोग रागरङ्गमें मस्त हैं और लिसबनमें अतलके कराल गह्वरमें विलीन हैं? * * * तब ईश्वरको तुम दयावान और कल्याणकारी क्यों कहते हो, जो अपने प्रियपात्रोंपर मुक्तहस्त होकर मङ्गल-वर्षा करता है और साथ ही दूसरे आदमियोंपर उसी रूपमें अभिशाप और अमङ्गल बिखेर देता है?"

संसारके महापुरुष सब विषयोंमें 'महापुरुषत्व' का भाव रखते नहीं पाये जाते। इस सम्बन्धमें विश्व-विख्यात मनीषी कर्नल इङ्गरसोलका कहना है—"संसारके तथाकथित महा-पुरुषोंकी धारणा बहुत-से विषयोंमें भ्रमात्मक रही है। लार्ड बेकनने कोपरनिकसके ज्योतिष-सिद्धान्तको अस्वीकार किया

* ७-२-३४ के समाचार-पत्रोंमें विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरका निम्न वक्तव्य प्रकाशित हुआ था—

"यह जानकर मुझे दुःख भी हुआ और दुःखके साथ आश्चर्य भी कि महात्मा गांधी आंख मूंदकर छुआछूतकी प्रथाके समर्थकोंको भला-बुरा कह रहे हैं। उनका कहना कि इसी छुआछूतके पीछे अब तक पड़े रहनेसे परमात्माने भूकम्पके रूपमें उन्हें दण्ड दिया है, कितना अवैज्ञानिक अभि-योग है! अधिक दुःख तो इस बातका है कि हमारे देशवा-सियोंके दिलोंमें ऐसी बातें घर बहुत जल्दी कर लेती हैं। × × × × × सबसे अधिक दुःखदायी बात तो यह है कि महात्मा गांधीने जिस तर्कका सहारा लेकर छुआछूतके विरुद्ध यह बात कही, उनके विरोधी कट्टरपन्थी ठीक उसी तर्कशैलीको उनके विपक्षमें काममें ला सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



था और अन्त तक उसका यही विश्वास रहा कि सूर्य तथा तारे हमारी छोटी-सी पृथ्वीकी परिक्रमा करते हैं। मैथ्यू हेल डायनोंकी जादू-विद्यापर पूर्ण विश्वासवान था। जान वेसली-का विश्वास था कि भूकम्प मनुष्योंके पापोंके कारण आते हैं, और 'प्रभु' ईसामसीहका विधान स्थापित करनेपर वे रोके जा सकते हैं। मार्टिन लूथर गैलीलियोको इस कारण मूर्ख समझता था कि उसने भूमाके ज्योतिष-सम्बन्धी सिद्धान्तोंका खण्डन किया था। केल्सटर भगोड़े गुलामोंको दण्ड देनेके पक्षमें था।"

मजहबी कहता है कि ईश्वरने जगत्की सृष्टि की। उसकी दलील यह रहती है कि जिस तरह कुम्हारके बिना मिट्टीके बर्तन नहीं बन सकते, ठीक उसी तरह विश्व-निर्माताके बिना आप सांसारिक दृश्य भी नहीं देख सकते। यह तो हुई साधारण ईश्वरवादीकी दलील। अब आप जरा उच्च शिक्षा पाये ईश्वरवादीकी दलीलपर विचार कीजिये। ऐसा ईश्वर-वादी इस बातको मानता है कि कार्य-कारणकी शृङ्खला विश्वके विकासकी पहेलीको हल करती है, सन्देह नहीं, पर वह कहता है कि केवल कार्य-कारणकी शृङ्खलासे हमको संसारके वास्तविक कारणका पता नहीं लगता। इस कार्य-कारणके सिलसिलेको किसीने अवश्य स्थापित किया है और उसीका नाम ईश्वर है। यदि कार्य-कारणके सिलसिलेको एक कारणकी जरूरत है, जिसे हम 'ईश्वर' के द्वारा पूरा करते हैं, तब स्वभावतः यह सवाल उठता है कि 'ईश्वर' जो एक कार्य हुआ, उसका कारण क्या है? इसका माकूल उत्तर मजहबी नहीं दे सकता। कार्य-कारणके सिलसिलेमें खोज करते-करते मनुष्यकी विचार-धारा एक ऐसे स्थानपर पहुंचती है कि जिसके आगे बढ़ना असम्भव होता है। हरबर्ट स्पेन्सर-ने साफ कहा है कि हमारी बुद्धि कार्य-कारणके वास्तविक तथ्यको समझनेमें असमर्थ है। मजहबीका यह दावा कि वह संसारकी उत्पत्तिका यथार्थ कारण बतला सकता है, बिलकुल गलत है।

यदि दुनियामें बुराई न होती तो ईश्वरपर विश्वास करनेमें अड़चन न पड़ती। प्रत्येक विचारवान मनुष्यको इस समस्याके हल करनेमें यह आक्षेप रहेगा कि ईश्वर एक ऐसा सर्वशक्तिमान है जो दुनियाको दूसरा ही रूप दे सकता था, परन्तु उसने दुनियामें बुराईका बीज डाल दिया; उसने इति-हासके पन्नोंको खूनसे रंगा और दुनियाकी सूरतको डरा-वनी बना दिया। जीन इङ्गीलो (Jean Ingelow) ने कहा है कि ईश्वरपर विश्वास करनेमें बुद्धि रुकावट नहीं पैदा करती, बल्कि जीवन करता है। यदि यह कहा जाये कि दो शक्तियां हैं; एक शक्तिसे भलाई होती है और दूसरी बुराई पैदा करती है, जैसा कि जरथोष्टी मत (Zoroastrianism) का सिद्धान्त था, तो हम बुराईकी समस्याको कुछ हल कर सकते हैं। परन्तु आजका ईश्वरवादी एक परमेश्वरको मानता है, इसलिए हम बुराईका उत्तरदायित्व मनुष्य अथवा शैतानके मत्थे नहीं मढ़ सकते। अब यदि यह कहा जाये कि "इन सबके अन्तमें भला ही होगा, ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है, साधनमें यदि कुछ बुराई है तो कोई हर्जकी बात नहीं, आखिरी नतीजा भला ही होगा," तो ऐसी हालतमें ईश्वरकी सर्वशक्तिमानता तो बच जाती है, परन्तु उसके प्रति मनुष्यके मधुर-भावपर जोरका धक्का पड़ता है और उसका दयामय होना सन्दिग्ध हो जाता है। रिचार्ड जेफ्रीज (Richard Jefferies) ने कहा है कि "यह कहना सफेद झूठ तथा मानव-जातिके विरुद्ध भारी अपराध है कि दुनियामें जो कुछ होता है, वह भलेके लिए होता है, उद्देश हमेशा ज्ञान-युक्त तथा दयापूर्ण रहता है। इसी सिद्धान्तके फल-स्वरूप आज लाखों अत्याचारों तथा बुरा-इयोंकी लोग उपेक्षा कर जाते हैं और तरह-तरहकी बेईमानी तथा फरेबोंकी परवा नहीं करते।" यह सिद्धान्त कि "बुराई एक प्रकारकी छिपी हुई भलाई है, इसकी जड़में ईश्वर है, जो सब-कुछ भलेके लिए करता है", नैतिक भावोंपर तुषार-पात करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# समाज-सुधार और साम्प्रदायिकता

श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार

युवक-शिरोमणि पण्डित जवाहरलालजी नेहरूने कुछ मास पूर्व हिन्दू विश्वविद्यालयके विद्यार्थियोंके सामने भाषण देते हुए हिन्दू महासभाकी साम्प्रदायिकता-प्रधान कार्यप्रणालीकी जो आलोचना की थी उससे देशमें एक अच्छा आन्दोलन उठ खड़ा हुआ और लोगोंको राष्ट्रीयताकी कसौटीपर साम्प्रदायिक संस्थाओंको परखनेका अवसर प्राप्त हो गया। इस विवादसे यह स्पष्ट हो गया है कि साम्प्रदायिकता राष्ट्रीयताकी विरोधी है और देश तथा जातिके लिए हानिप्रद है। यदि ऐसा न होता तो हिन्दू महासभाके नेता हिन्दू महासभाको राष्ट्रीय संस्था बनानेकी कोशिश न करके स्वीकार कर लेते कि वह साम्प्रदायिक संस्था है। उनकी ओरसे यह भी कहा गया है कि हिन्दू महासभाने साम्प्रदायिकताको मुसलमानोंकी साम्प्रदायिकताकी नकलमें ही स्वीकार किया है। साम्प्रदायिकताके आधारपर किसी भी संस्थाकी स्थापना करके उसके द्वारा किसी महान् राष्ट्रीय आदर्शको पूरा करना असम्भव है। यह हो सकता है कि ऐसी संस्थाओं द्वारा कुछ व्यक्तियोंकी व्यक्तिगत सांसारिक आकांक्षायें, सरकारी पद तथा पदवियां प्राप्त करनेकी इच्छायें और 'निरस्त्र पादपे देशे एरण्डोपि द्रुमायते'के समान जाति अथवा सम्प्रदायमें बड़ा बननेकी लालसा पूरी हो जाय, किन्तु देश, समाज अथवा जातिका ऐसी संस्थाओं द्वारा कुछ भी हित-सम्पादन होना नितान्त असम्भव है। ऐसी संस्थाओंसे किसी प्रकारके राष्ट्रीय लाभकी आशा रखना दुराशामात्र है। राष्ट्रीयताकी विरोधी संस्थासे राष्ट्रीय हितकी आशा रखना बबूल बोकर आम प्राप्त करनेकी आशाके समान है। ऐसी आशा कभी तीन कालमें भी पूरी नहीं हो सकती।

°म केवल राष्ट्रीय क्षेत्रमें, किन्तु प्रायः सभी क्षेत्रोंमें साम्प्रदायिकता त्याज्य और हेय है। गत वर्षोंका अनुभव यह बताता है कि साम्प्रदायिकता समाज-सुधारके क्षेत्रमें भी हानिकारक ही सिद्ध हुई है। साम्प्रदायिकताको समाज-सुधार अथवा सामाजिक प्रगतिका आधार बनाना रेतकी नींवपर विशाल भवन खड़ा करनेके समान है। राष्ट्रीयताके समान ही प्रगतिकी दिशा भी साम्प्रदायिकताकी विरोधी दिशा है। साम्प्रदायिकता अप्रगतिशील भावना है। प्रागतिक क्षेत्रमें उसका सहारा टूटी हुई लकड़ीका सहारा है। पीठको मोटी-मजबूत रस्सीसे खूंटेसे बांधकर आगे बढ़नेकी चेष्टाके समान ही साम्प्रदायिकताके आधारपर किसी संस्थाका सङ्गठन करके उसके द्वारा सामाजिक प्रगतिकी आशा रखना वृथा है। डूबतेको तिनकेका सहारा भी ऐसी संस्थायें नहीं हो सकतीं।

हमारा यह विचार समाज-सुधारके क्षेत्रमें काम करनेवालोंको बहुत अधिक अखरेगा। वे सहसा हमसे सहमत नहीं होंगे और आश्चर्य नहीं कि इस लेखको पूरा पढ़नेके बाद भी वे हमारे साथ सहमत न हों। इसका मुख्य कारण तो यह है कि इस समय तक समाज-सुधारके लिए जितनी भी संस्थायें खड़ी की गयी हैं उनमेंसे अधिकांशका सङ्गठन साम्प्रदायिकताके आधारपर ही किया गया है। प्रत्येक जाति, समाज अथवा सम्प्रदायकी अपनी अलग-अलग संस्थायें हैं। उदाहरणके लिए मारवाड़ी समाजको ही लीजिये। मारवाड़ी समाजका एक भी ऐसा सामाजिक सङ्गठन नहीं है जिसमें मारवाड़ीके नाते सब मारवाड़ी भाई अपने अन्दरके भेदभावको भुलाकर इकट्ठा हो सकें। उनके सामाजिक सङ्गठनोंमें आठ कनौजिये नौ चूल्हेकी कहावत पूरी तरह चरितार्थ होती है। ब्राह्मणों, राजपूतों और वैश्यों—सबके अलग-अलग सङ्गठन हैं। उनमें भी प्रत्येक सम्प्रदाय अथवा समुदायका अपना-अपना अलग ही सङ्गठन है। ब्राह्मणोंकी अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा होते हुए भी वे दाधीच, पुष्करणा, सारस्वत आदि अपनी अलग-अलग अढ़ाई चावलकी खिचड़ी पकाते ही हैं। सब समाजके सङ्गठनको दृढ़ बनानेकी अपेक्षा अपने उप-समाजके—छोटे दायरेके—सङ्गठनको ही दृढ़ करनेका यत्न अधिक किया जाता है। यही अवस्था वैश्य समाजकी है। अग्रवाल, ओसवाल, माहेश्वरी और खण्डेलवाल, सबका अलग-अलग अखिल भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सङ्गठन कुछ ऐसा बना हुआ है कि समस्त समाजकी एक संस्था 'राजस्थान-नवजीवन-मण्डल' सब सुधारकोंके सम्मिलित यत्न करनेके बाद भी चल नहीं सकी। सामाजिक क्षेत्रमें साम्प्रदायिकतासे भी अधिक संकुचित अग्रवाल, ओसवाल तथा माहेश्वरी आदिके छोटे-छोटे दायरोंकी तङ्ग दीवारें खड़ी कर देनेके बाद एक विशाल समाज बनानेकी आशा कैसे पूरी हो सकती है? आश्चर्य तो यह है कि इन सब उप-समाजोंकी सामाजिक समस्यायें प्रायः एक ही-सी हैं। जिन सामाजिक कुरीतियोंको ये संस्थायें मिटाना चाहती हैं वे भी सब एक-सी ही हैं, और सबके खान-पान आदि सामाजिक व्यवहारोंमें भी कुछ अधिक भेद नहीं है, तो भी सबके सब किसी एक मञ्चपर इकट्ठे नहीं हो सकते और एक होकर समाज-सुधारके प्रश्नको हल नहीं कर सकते। यही अवस्था अन्य समाजोंकी भी है। क्षत्रियोंमें अरोड़ा दूसरोंके साथ नहीं मिलते। ढाई घर और चार घरके बाद भी छोटे-छोटे दायरे बने हुए हैं और उनके अलग-अलग सङ्गठन भी बना लिये गये हैं। यह कितने आश्चर्यकी बात है कि सबका ध्येय एक होते हुए भी सब एक नहीं हो सकते। सामाजिक कुरीतियोंको मिटानेकी एक-सी समस्या सबके सामने होते हुए भी कन्धेसे कन्धा मिलाकर खड़ा होना सम्भव नहीं है। सबको एक दुश्मनका सामना करना है तो भी सबका एक सङ्गठन नहीं बन सकता। ऐसा क्यों है? कारण स्पष्ट है। साम्प्रदायिकता सङ्गठनका भाव पैदा न करके समाजमें विघटना पैदा करती है और उसके छोटे-छोटे दायरोंमें भी ऐसी दीवारें खड़ी कर देती है कि एक दायरेके लोग दूसरोंको नहीं देख सकते। उनकी दृष्टि, विचार और सूझकी अन्तिम सीमा उन दीवारों तक ही रह जाती है। मारवाड़ी वैश्य-समाजमें समाज-सुधारका कार्य शुरू हुए लगभग चौथाई शताब्दी होनेवाली है। उनकी सामाजिक संस्थायें उतने ही वर्षोंसे काम भी कर रही हैं। धन-जनका भी कुछ कम व्यय नहीं हुआ है। प्रचार, आन्दोलन और सङ्गठनकी दृष्टिसे भी अच्छा काम हुआ है। यह सब होनेपर भी आज तक एक भी ऐसा विवाह नहीं हुआ जिसको माहेश्वरी, अग्रवाल, ओसवाल और खण्डेलवाल आदिकी दृष्टिसे अन्तर्जातीय कहा जा सके। ऐसा विवाह होनेमें सिद्धान्तकी कोई बाधा नहीं है। खान-पानका कोई प्रश्न नहीं है। समाज-सुधारक नेता ऐसे विवाहोंकी आवश्यकता और महत्त्वको भी स्वीकार करते हैं। फिर भी ऐसा विवाह क्यों नहीं हो सका? और भी कारण हो सकते हैं, किन्तु हमारी दृष्टिमें सबसे प्रधान कारण यह है कि साम्प्रदायिकताके आधारपर सङ्गठित महासभाओंने उप-समाजोंके भिन्न-भिन्न 'उप'-दायरोंको इतना दृढ़ कर दिया है कि अब उनका मिटाना असम्भव नहीं तो कठिनतम अवश्य हो गया है। इन महासभाओंकी प्रवृत्ति इन छोटे-छोटे दायरोंको मिटानेकी नहीं, किन्तु उनको कायम रखनेकी है। राजनीतिक प्रगतिके साथ-साथ होनेवाली सामाजिक जागृतिका स्वाभाविक परिणाम इतना अवश्य हुआ है कि समाजके कुछ युवकोंने मारवाड़ी समाजके दायरेको लांघकर बाहर विवाह किये हैं, किन्तु उनको प्रोत्साहन कहांसे प्राप्त हुआ है? इन महासभाओंके सञ्चालक यह कहनेका साहस नहीं कर सकते कि यह उनके प्रोत्साहनका शुभ परिणाम है। महासभाओंके अधिकतर सञ्चालक तो ऐसे विवाहोंके विरोधी ही हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ऐसी सामाजिक संस्थाओं द्वारा किसी ठोस, बड़े और दृढ़ सङ्गठनकी आशा रखना वृथा है।

इस सम्बन्धमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि प्रगतिशील और अप्रगतिशील भावनाओंका एक जगह समावेश होना सम्भव नहीं है। समाज-सुधार प्रगतिशील भावना है। समाज-सुधारके लिए यथार्थ शब्द सामाजिक प्रगति है, जो समाजकी उन्नति, विकास और जागृतिका द्योतक है। साम्प्रदायिकता अप्रगतिशील भावना है, जो जागृति, उन्नति और विकासके इतनी अनुकूल नहीं जितनी कि प्रतिकूल है। इसीलिए साम्प्रदायिकताके आधारपर सङ्गठित संस्थाओंमें दस-बीस वर्ष बीत जानेपर भी विधवा-विवाह तथा समुद्र-यात्रा आदिके समर्थनमें प्रस्ताव स्वीकृत नहीं किये जा सके। चारों ओर अनुकूल वातावरण तैयार हो जानेके बाद भी आगे पैर बढ़ानेका उनको साहस नहीं हुआ। उनमें स्वीकृत प्रस्तावोंका प्रभाव भी कुछ नहीं होता। बड़े-बड़े नेता भी समय आनेपर अंगूठा दिखानेमें सङ्कोच नहीं करते। नैतिक दृष्टिसे ऐसी संस्थाओंमें जो कमजोरी देखनेमें आती है, उसका एकमात्र कारण यही है कि उनका बीजारोपण ठीक भूमिमें नहीं किया जाता। साम्प्रदायिकताकी भूमिमें समाज-सुधारके बीज बिखेरकर सामाजिक प्रगतिकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आशा रेतमें गुलाबके बीज बिखेरकर सुगन्धित पुष्प पैदा होनेकी आशाके ही समान है। भिन्न-भिन्न दिशामें बहने-वाली नदियोंके एक जगह मिलनेकी आशा कब और कैसे पूरी हो सकती है? साम्प्रदायिकता वह खूंटा है जिसमें अप्रगतिशील लोगोंने समाजको दोनों हाथोंसे बड़ी मजबूतीके साथ इस निश्चयसे बांध रखा है कि वे उसको एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने देंगे। दूसरी ओर समाज-सुधार-प्रेमी समाजको प्रगतिके मार्गपर अग्रसर करना चाहते हैं। ये दोनों भावनायें एक साथ एक स्थानमें रहकर समाज-हितका कुछ भी कार्य सम्पादन नहीं कर सकतीं। इसीलिए इस प्रकार सङ्गठित संस्थाओं द्वारा समाज-हितका उतना कार्य नहीं हुआ जितना कि होना चाहिए था।

साम्प्रदायिकताके आधारपर सङ्गठित संस्थाओंमें प्रगति-शील समाज-सुधारक इसलिए भी हानिमें रहते हैं कि उनको सदा ही अपने आदर्शका समझौता करना पड़ता है। वे किसी भी विषयमें अपने आदर्शको कायम नहीं रख सकते। ऐसी संस्थाओंमें, अथवा उनके द्वारा, आदर्शका प्रतिपादन तक नहीं हो सकता। विवाहका ही विषय लीजिये। १६ और २५ वर्षकी आयुकी अवधि विवाहका साधारण आदर्श है। इस अवधिका समझौता उनके साथ करना पड़ता है जो रजोधर्मसे पहले ही विवाह कर देना ऐसी साम्प्रदायिक मर्यादा समझते हैं जिसमें एक मात्राका भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता। परिणाम क्या होता है? १२-१४ वर्षकी आयुके प्रस्ताव स्वीकृत करके समाज-सुधारक यह समझ बैठते हैं कि उन्होंने मैदान जीत लिया है और बाल-विवाह बन्द करनेके लिए अमोघ अस्त्र तैयार कर लिया है। इस प्रकार आत्म-सन्तोष मानकर समाज-सुधारक आत्म-वञ्चना-के जञ्जालमें ऐसे उलझ जाते हैं कि वे अपने आदर्शसे ही विमुख हो जाते हैं। विवाहकी अवधिके समान प्रायः सभी विषयोंमें उनको समझौतेकी वृत्तिसे काम लेना पड़ता है। किसी भी दिशामें वे आदर्शको कायम नहीं रख सकते। किसी-किसी विषयमें उनके आदर्शके प्रतिकूल भी यदि कुछ हो जाय तो मन मारकर उनको उसको भी सहन करना ही पड़ता है। आदर्शवादी सुधारक ऐसी परिस्थितिमें दस-पांच मिनट भी सांस नहीं ले सकता। आदर्शवादको मिटाकर समझौतेकी वृत्ति समाजमें इतनी अधिक फैल जाती है कि व्यक्तिगत जीवनकी कमजोरियोंके साथ भी संस्थाओंके प्रस्तावोंका समझौता होने लग जाता है। इस प्रकार आदर्श और पतनमें हुआ समझौता भी कायम नहीं रह सकता और समाज सामाजिक दृष्टिसे उतना भी उन्नत नहीं हो सकता जितना कि ऐसी संस्थायें अपने प्रस्तावों द्वारा करनेकी अपेक्षा रखती हैं।

यदि व्यक्तिकी व्यक्तिगत उन्नति अथवा प्रगतिकी दृष्टिसे विचार किया जाय तो साम्प्रदायिकताके आधारपर सङ्गठित संस्थायें व्यक्तिको कमरसे खींचकर पीछे घसीटनेवाली हैं। ऐसी संस्थाओंके सञ्चालक यह समझ बैठते हैं कि सीताकी कुटियाके चारों ओर लक्ष्मणकी खींची हुई रेखाके समान उन्होंने समाज-सुधारकी एक रेखा खींच दी है जिसको लांघना समाजके प्रत्येक व्यक्तिके लिए वर्जित है। वह हिन्दू समाजके चौके-चूल्हेकी वह सीमा है जिसके बाहर पैर रखते ही मनुष्य अपवित्र हो जाता है। इसीलिए समाज-सुधारकी दृष्टिसे व्यक्तिकी व्यक्तिगत प्रगति सर्वथा रुक जाती है। यहां एक ही उदाहरण देना पर्याप्त होगा। स्वनामधन्य सेठ जमना-लालजी बजाजकी प्रगतिशील प्रवृत्तिके गर्भमेंसे अग्रवाल-महासभाका जन्म हुआ है। समय आया जब कि बजाजजी महासभाको छोड़नेके लिए बाधित हुए। महासभाको छोड़नेके बाद बजाजजी और उनके परिवारकी जो सामाजिक प्रगति हुई है वह इतनी स्पष्ट है कि उसके लिए कुछ अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं। महासभाकी गति, बजाजजीके स्वभाव और समाज-सुधारके क्षेत्रमें उनकी प्रगतिसे परिचित लोग यह जानते हैं कि यदि बजाजजी महासभासे अलग न होते तो शायद ही वह समाज-सुधारके क्षेत्रमें इतना आगे बढ़ सकते जितना कि बढ़ गये हैं। ऐसे और भी अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। ऐसी संस्थाओंकी अपेक्षा रखने-वाला कोई भी व्यक्ति समाज-सुधारके क्षेत्रमें यथेष्ट उन्नति नहीं कर सका है। ऐसी संस्थाओंमें जाकर प्रगतिशील लोगोंकी अवनति अवश्य हुई है। बहुत-से आर्यसमाजी अपने सिद्धान्तोंसे इसी प्रकार विचलित हुए हैं। विवाह आदिके अवसरोंपर अपने सिद्धान्तोंकी उपेक्षा करते हुए ये लोग ऐसी संस्थाओंके प्रस्तावोंको ही आदर्श मानकर आत्मसन्तोष कर बैठते हैं। यह स्पष्ट ही प्रगतिकी नहीं, किन्तु अवनतिकी निशानी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सामाजिक संस्थाओंके सङ्गठनमें संसारकी उन लहरोंकी उपेक्षा नहीं की जा सकती जो दूसरे सङ्गठनोंमें काम करती दीख पड़ती हैं। इस समय तो राष्ट्रीयताका आधार भी उतना दृढ़ नहीं रहा जितना कि कुछ समय पहले समझा जाता था। आज तो रोटीके प्रश्नपर संसारमें एक ऐसा बलशाली सङ्गठन खड़ा हो रहा है जिसके सामने राष्ट्रोंकी सीमा भी फीकी पड़ती जा रही है। जब राष्ट्रीयताकी दीवारें कायम नहीं रह सकतीं तब साम्प्रदायिकताकी दीवारोंके कायम रहनेकी आशा रखना वृथा है। दूसरे देशों और राष्ट्रोंने भी सामाजिक प्रगतिके क्षेत्रमें आश्चर्यजनक उन्नति की है। उनकी प्रगतिका इतिहास इस बातका स्पष्ट साक्षी है कि किसी भी प्रकारकी साम्प्रदायिकताको आधार मानकर समाज-सुधारके क्षेत्रमें यथेष्ट प्रगति नहीं की जा सकती। वीरवर मुस्तफा कमाल पाशासे पहले टर्कीमें साम्प्रदायिकताका बोलबाला था। इसीलिए समाज-सुधारके लिए किया गया उससे पहलेका कोई भी यत्न सफल नहीं हो सका। बहादुर पाशाने जब साम्प्रदायिकताको मिटा दिया तब समाज-सुधारके कार्यको टर्कीमें इतनी अधिक सफलता प्राप्त हुई कि टर्कीकी काया ही पलट गयी, उसमें युगान्तर हो गया। उस जड़वादको, जिसे दूसरे देशोंके मुसलमान धर्मके नामपर कभी न छोड़नेके लिए अपनाये हुए हैं, टर्कीने सांपकी कांचलीकी तरह उतार फेंका। जिस 'खिलाफत' के नामपर इतना व्यापक और भयानक आन्दोलन उठाया गया था, साम्प्रदायिकताके उस केन्द्रको नामशेष करनेमें कुछ भी सङ्कोच इसीलिए नहीं किया गया कि वह अप्रगतिशील प्रवृत्तियोंका केन्द्र था और उसके रहते हुए देशकी सामाजिक प्रगति तथा राष्ट्रका अभ्युदय सम्भव नहीं था। रूसने भी ऐसा ही किया। साम्प्रदायिकताको दोनों देशोंने जड़मूलसे ही मिटा दिया है और उसीके साथ दोनों देशोंसे रूढ़ि, परम्परा, अन्धविश्वास, पक्षपात इत्यादि सामाजिक प्रगतिकी समस्त बाधायें एक साथ ही मिट गयी हैं। उसके बाद ही टर्की और रूसका वर्तमान सामाजिक विकास हो सका है। चीन और जापानका इतिहास भी इसका समर्थक है। दोनों देश स्वाधीन होते हुए भी प्रगतिके मार्गपर तब तक अग्रसर नहीं हो सके जब तक वहांके लोग साम्प्रदायिकताके दलदलमें धंसे हुए थे। अफगानिस्तानमें वीर अमानुल्लाको प्राप्त हुई असफलताका एकमात्र कारण वहांकी साम्प्रदायिकता थी। मुल्ला-मौलवियोंकी अप्रगतिशील साम्प्रदायिकताके सामने प्रगतिशील अमानुल्लाकी राजा होते हुए भी एक न चली। उसको अपने राज्य तकसे हाथ धोना पड़ा। भारतके प्रत्येक प्रगतिशील सामाजिक आन्दोलनका विरोध साम्प्रदायिकताके नामपर ही किया गया और किया जा रहा है। स्वामी दयानन्दसे लेकर महात्मा गांधी तक जिस किसी महापुरुषने भी समाज-सुधारका कार्य किया है उसको पहली और जबरदस्त टक्कर साम्प्रदायिकतावादियोंसे ही लेनी पड़ी है। धर्मकी आड़में साम्प्रदायिकतावादने प्रत्येक प्रगतिशील उद्योगका विरोध किया है। महात्मा गांधीके हरिजन-आन्दोलनके विरोधमें साम्प्रदायिकतावादी वर्णाश्रमियोंने क्या नहीं किया और क्या वे नहीं कर रहे? वैसे इस धर्म या सम्प्रदायवादके सबसे बड़े संरक्षक वे ही हैं जो पददलित कहे जाते हैं और जिनके प्रति होनेवाले भयङ्कर अन्यायके प्रतिवादमें संसारकी सबसे बड़ी दिव्य विभूतिने अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी है। इससे अधिक बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है कि धर्मके नामपर जिनको केवल अन्याय, लाञ्छना, तिरस्कार और बहिष्कार ही मिला है, वे सदियों तक यह सब सहन करते हुए भी उस धर्मको अपनाये हुए हैं। साम्प्रदायिकताके नामपर की जानेवाली इस निर्दयतासे अधिक निर्दयता और क्या हो सकती है? यह निर्दयताकी पराकाष्ठा है।

भारतके हरिजनोंके समान ही स्त्रियोंकी भी अवस्था है। स्त्रियोंके प्रति साम्प्रदायिकताने केवल भारतमें ही नहीं, किन्तु समस्त संसारमें ऐसा भारी अनर्थ किया है कि उसका कुछ भी प्रतिकार नहीं हो सकता। यह भी एक आश्चर्य ही है कि संसारमें सर्वत्र ऐसे धर्म अथवा साम्प्रदायिकताको भी कायम रखनेमें बड़ा हाथ स्त्रियोंका ही है। मन्दिरों और गिरजाघरोंमें जानेवालोंमें स्त्रियोंकी संख्या पुरुषोंसे कहीं अधिक है। हिन्दू-समाजने उनको परदेकी कैदमें बन्द रखा, तो भी उन्होंने मन्दिरोंके दर्शन करने नहीं छोड़े। धर्म, सम्प्रदाय, मन्दिर अथवा चर्चको जितना सहारा स्त्रीवर्गसे मिलता है उतना पुरुषवर्गसे नहीं मिलता, तो भी उसके नामसे स्त्रियोंपर अन्याय, अत्याचार और पक्षपातकी इतनी निष्ठुर मार की गयी है कि उसको सहन करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उनका ही काम था। स्त्रियोंकी सामाजिक प्रगतिके मार्गमें धर्म अथवा सम्प्रदाय चीनकी दीवार बना हुआ है। उसीकी दी हुई यह व्यवस्था है कि 'न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।' उसीने उसको मनुष्यके भोग-विलासकी वस्तु बनाया है और तभी मनुष्यने उसको वेशभूषाके लालचमें फंसाकर घरको सजाने-वाली तसवीर बनाकर परदेकी चौखटमें ऐसा मढ़ दिया है कि वह हाथ-पैर भी नहीं हिला सकती। सचमुच उसका अस्तित्व दीवारमें लटकी हुई तसवीरसे कुछ भी अधिक नहीं है। न उसकी कोई स्वतन्त्र इच्छा है, न व्यक्तित्व और न अस्तित्व ही। यदि यह सच है कि स्त्रियोंकी सामाजिक प्रगतिके बिना देश, समाज अथवा राष्ट्रका अभ्युदय नहीं हो सकता तो साम्प्रदायिकताकी जड़ोंको ठीक वैसे ही उखाड़ फेंकना होगा जैसे कि चाणक्यने कुशाओंको उखाड़ फेंका था।

केवल राष्ट्रीय दृष्टिसे ही नहीं, समाज-सुधारकी दृष्टिसे भी साम्प्रदायिकता त्याज्य और हेय है। ठोस सामाजिक प्रगति चाहनेवालोंको उन सङ्गठनोंसे निश्चय ही अलग हो जाना चाहिए जिनका आधार साम्प्रदायिकता, समाज अथवा जाति है। किसी समाज-विशेष या जाति-विशेषका हित चाहते हुए जो सङ्गठन खड़े किये जाते हैं उनसे समाज-सुधारका ठोस वास्तविक काम कुछ भी न होकर इतनी हानि अवश्य होती है कि वह समाज दूसरे समाजोंसे सामाजिक दृष्टिसे अलग हो जाता है और धीरे-धीरे उसका प्रगतिशील स्वभाव भी नष्ट हो जाता है। ऐसे किसी भी आन्दोलनके परीक्षणके लिए पन्द्रह-बीस वर्षका समय पर्याप्त है। जब हम यह देखते हैं कि टर्की, रूस, चीन, जापान आदि देशोंने सम्प्रदायवादसे छुटकारा पाते ही सामाजिक प्रगतिके क्षेत्रमें अपनी दौड़ पूरी कर ली और समाज-सुधारके आदर्शको भी तुरन्त पूरा कर लिया, तब भी हम साम्प्रदायिकताकी ही माला फेरते रहें तो हमसे अधिक मूर्ख और कौन होगा?

——

# पथिकसे

कौन-सा पाकर शुभ सन्देश
हुए आन्दोलित उर-उद्गार?
छोड़कर प्यारा पावन देश
हुए तुम चलनेको तैयार—
कौन-सा लेने जीवन-सार?
पथिक! तुम जाते हो उस पार!

तुम्हारा पथ है कहीं अजान
न जिसकी सीमाका विस्तार,
तुम्हारा क्षणिक क्षीण जीवन
और यह है अनन्त संसार!
सोच लो! कर लो खूब विचार,
पथिक! फिर जाना तुम उस पार।

न जाओ, मानो मेरी बात
छोड़ दो अपना यह अभिमान,
रह गये कितने 'तृषित' अतृप्त
न पाकर शान्ति-सुधाका पान;
बना लो यहीं शान्ति आगार,
पथिक! लौटो-लौटो इस पार।

—गणेशप्रसाद अरगल 'तृषित'

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साहित्य और क्रान्ति

श्री अख्तर हुसेन रायपुरी

"हम साहित्यको सर्वथा स्वतन्त्र कर देना चाहते हैं और स्वतन्त्र करके छोड़ेंगे। केवल राजनीतिक बन्धनोंसे ही नहीं, पूंजी और स्वार्थ-पूजाकी बेड़ियोंसे भी हम उसे आजाद कर देंगे। यही नहीं, बल्कि पूंजीवादी व्यक्तिवादसे भी हम उसे विमुक्त कर देंगे।

"ये अन्तिम शब्द पाठकोंको परस्पर-विरोधी या उपहासजनक प्रतीत होंगे। सम्भव है कि स्वतन्त्रताका पुजारी कोई साहित्यिक चीख उठे कि समाजसत्ताकी चुटकियोंसे तुम कलाका गला घोटना चाहते हो! तुम चाहते हो कि विज्ञान, कविता और दर्शनकी समस्याओंका निर्णय मजदूरोंके वोट करें! तुम मानसिक मौलिकतापर कुठाराघात करना चाहते हो जो व्यक्तिगत पूर्ण स्वतन्त्रताके वातावरणमें ही फूल-फल सकती है।

"पूंजीवादी-व्यक्तिवादके प्रशंसको! हम कहे देते हैं कि स्वतन्त्रताके लम्बे-चौड़े दावे तुम्हारे पाखण्डके प्रमाण हैं। जिस समाजकी बुनियाद रुपयोंकी थैलीपर रखी गयी हो, जहां मुट्ठीभर सेठ ऐश करते और श्रमजीवी भूखों मरते हों, वहां सच्ची आजादी हरगिज नहीं हो सकती।

"मैं लेखकोंसे पूछता हूं कि क्या आप अपने पूंजीपति प्रकाशकोंके शिकञ्जोंमें गिरफ्तार नहीं हैं? क्या आप पूंजीवादी पाठकोंके खिलौने नहीं हैं, जो नङ्गी तसवीरें देखना चाहते हैं? और क्या उनके लिए अपनी 'निर्मल' कलामें आपको वेश्याओंका समावेश नहीं करना पड़ता? सच पूछो तो 'पूर्ण स्वतन्त्रता' पूंजीवादी या अराजकवादी मुहावरा है और अराजकवाद—पूंजीवादी आदर्शकी छायामात्र ही तो है। समाजमें रहते हुए भी आप समाजसे अलग नहीं हो सकते। किसी पूंजीवादी लेखक, कलाविद् या अभिनेताकी स्वतन्त्रता रुपयोंकी थैलीपर टट्टीकी आड़ है। और हम, साम्यवादी, इस कपटजालकी पोल खोल रहे हैं—श्रेणीरहित साहित्य और कलाके लिए नहीं (क्योंकि इसका जन्म तो श्रेणीरहित साम्यवादी समाजमें ही सम्भव है) बल्कि इसलिए कि पूंजीवादकी गोदमें फूलने-फलने और 'कला कलाके लिए' के झूठे नारे लगानेवाले साहित्यका मुकाबला उस साहित्यसे करें जो 'सर्वहारा' (Proletariat) के जीवनका आईना है।

"यही बन्धनहीन साहित्य होगा; क्योंकि स्वार्थरक्षा और लालच नहीं, बल्कि श्रमजीवियोंके प्रति सहानुभूति और साम्यवादके भाव ही उसके प्रभावको बढ़ाते जायेंगे। यही स्वतन्त्र साहित्य होगा, क्योंकि वह किसी अभिसारिका या वैरागी और पापभारसे लदे हुए सेठोंकी सेवाके लिए न होगा। बल्कि वह उन किसानों और मजदूरोंकी सेवाके लिए होगा जो धरतीकी शोभा हैं, भविष्यके निर्माता और मानवताके स्वामी हैं।"

—लेनिन

(Nova Zhizn, Nov. 1905)

पुराने साहित्यके विरुद्ध यह उत्पीड़ितों और पददलितोंकी ललकार है। साहित्य वस्तुस्थितिसे अलग नहीं हो सकता। जब कभी उसपर समाजकी तसवीर साफ-साफ नहीं आती तब समझना चाहिए कि या तो साहित्यिक बिलकुल आत्महीन हैं, इतने कि अपनी नाकके सिवा उन्हें और कुछ नहीं दीख पड़ता, और या फिर बहिर्जगत्की विषमताका वे सामना नहीं कर सकते और उससे घबराकर भयानक निराशावादी बन बैठते हैं। अपने कथनको स्पष्ट करनेके पहले हम देखना चाहते हैं कि साहित्य है क्या। इस सवालको हम दो हिस्सोंमें बांटेंगे—साहित्य वस्तुतः क्या है और उसका आदर्श क्या होना चाहिए। इस समीक्षाके बाद हम बतलायेंगे कि समाजके परिवर्तनके साथ साहित्यका स्वरूप किस प्रकार बदलता है और अपने आदर्शसे वह कितनी दूर हटता जाता है। अपने लेखको सुबोध बनानेके लिए हमें भारतीय साहित्यसे ही उसकी रूप-रेखा लेनी होगी।

आदमी कभी हंसता है, कभी रोता और झल्लाता है। उसपर जो कुछ बीतती है, दिलकी दुनियामें बराबर उसकी परछाईं पड़ा करती है। साहित्य, अन्तर्जगत्की इन्हीं अनुभूतियोंको शब्दोंके सांचेमें ढाल देता है। साहित्यिक उन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भावनाओंको शब्दोंमें इसलिए लिखता है कि दूसरे उन्हें सुनें और उनसे प्रभावित हों। वह समाजमें रहकर उससे अलग नहीं हो सकता। वह समाजसे प्रेरणा ग्रहण करता है और समाजको प्रेरणा देता है। यह कहना गलत है कि 'कवि गाता है और संसार उसे सुन लेता है।' सचमुचमें, कवि इसलिए गाता है कि दुनिया उसे सुने। वह भी दूसरोंकी मानसिक तृप्तिके लिए कुछ बना रहा है और जान-बूझकर या अनजानमें समाजपर गहरा असर डाल रहा है।

लेकिन साहित्य इसके सिवा कुछ और भी है, जो उसे किसी विशेष काल और देश तक सीमित न रखकर हमेशाके लिए समस्त संसारकी सम्पत्ति बना देता है। जब साहित्य अतीतकी बेड़ियों और वर्तमानकी पाबन्दियोंको हटाकर मानवताके भविष्यके स्वप्न देखता और जीवनकी परिपूर्णता-की कामना करने लगता है तो वह गोया अमर जीवन लाभ कर लेता है। सामयिकताके साथ साहित्यमें अमरता भी होनी चाहिए और यह तभी होगा जब वह अपने आदर्शका पालन करे। अपने ग्रन्थ-संग्रहकी भूमिकामें इस आदर्शपर लिखते हुए 'मेक्सिम गोर्की' कहता है—

"साहित्य मानवताकी गलतियां बतलाता, उसकी कलु-षतापरसे नकाब हटाता और उसकी नादानियोंको प्रकट करता है। उसकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि मनुष्यको क्षणकालीन जीवनसे निकालकर अजर-अमर बनाना चाहता है। उसकी तड़पन और बेकली इसलिए है कि आदमीको समझा दे कि वह परिस्थितिका दास नहीं है, बल्कि हालात उसके गुलाम हैं। वह आदमीको बतलाना चाहता है कि वह खुद अपने जीवनका मालिक है। जिस प्रकार चाहे उसे संवार सकता है। अपनी इच्छानुसार उसे बदल सकता है। इस हैसियतसे साहित्य क्रान्तिकारी, नवपथगामी और ध्वंसक है।"

हमने देखा कि साहित्य एक ऐसा पथ-प्रदर्शक है जो दायें-बायें भी देखता है और सामने भी। वह पीछे भी देखता है, लेकिन रास्तेकी कठिनाइयोंको देखनेके लिए, न कि लौट भागनेके लिए। सामाजिक जीव होनेके कारण साहित्यिक अपने वातावरणसे अपने-आपको अलग नहीं कर सकता। इसलिए उसकी अनुभूतिपर सामयिकताका रङ्ग बहुत गाढ़ा होता है। इसे समझनेके लिए देखना होगा कि समाजका आधार किस शिलापर रखा जाता है और वह कौन-सी ताकतें हैं जो समाजके स्वरूपको बदलती रहती हैं। समाजका जन्म क्यों होता है और मानवताके उच्चतम आदर्श तक वह क्योंकर पहुंच सकता है और कौन-सी रुकावटें उसे लक्ष्य तक पहुंचनेसे रोकती हैं।

मानवताका उद्देश्य जीवनकी परिपूर्णता है, पर यह तभी होगा जब मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति चरम-सीमापर पहुंच जाये। इसके लिए जरूरी है कि आदमीकी भौतिक आवश्यकतायें पूरी होती रहें। जीनेके लिए रोटी और कपड़ेकी जरूरत है। इसके लिए आदमी मेहनत करता है। पहले हम उसे जङ्गलोंमें बन्दरोंकी बिरादरीमें देखते हैं, जहां वह शिकार खेलकर और पत्ते पहनकर दिन काटता है। फिर रङ्ग बदलकर पशुओंपर हुकूमत गांठता और गड़रिया बन जाता है। इसके बाद वह काश्तकारी, दस्तकारीके युगोंसे गुजरता हुआ मशीनरी युगमें पदार्पण करता है। यह परिवर्तन क्यों? इसलिए कि आदमी कम मुद्दतमें अधिक पैदावारके उपाय ढूंढ़ता है। उसकी सन्तान बढ़ती जाती है, जिसके परिपालनके लिए उत्पादक शक्तियोंको भी बढ़ना चाहिए। यही दोनों सिद्धान्त समाजमें कायापलट किया करते हैं। आर्थिक शब्दावलीमें इसे उत्पादक शक्तियों (Productive forces) और उत्पादनगत-सम्बन्धों (Production-relations) का तारतम्य कहते हैं। इसी कीलपर समाजका पूरा जीवन—उसके आचार-विचार, उसका धर्म और साहित्य—सभी घूमा करते हैं। मगर समाजका विकास बच्चेके समान होता है। किशोर होनेके बाद बच्चेके कपड़े बदल न दिये गये तो तार-तार हो जायेंगे। उत्पादक शक्तियोंपर यदि पाबन्दियां लगायी गयीं तो समाज उस ढांचेको उतार फेंकेगा और दूसरा आवरण धारण कर लेगा। यह पाबन्दियां कहांसे आ जाती हैं? उत्पादनके लिए, मेह-नतके सिवा नैसर्गिक उपादानोंकी भी जरूरत है। दोनोंके संयोगसे पैदावार होती है। धरती सभी विभूतियोंकी जननी है। आदमी उसपर हल चलाकर अन्न और कपास निकालता है; उसके गर्भसे कोयला और तेल बरामद करता है। अगर धरतीपर कुछ लोग बलपूर्वक अधिकार कर लें और किसानोंसे उसका किराया तलब करें तो फिर पैदावारके बंटवारेका ढब ही दूसरा हो जायेगा। इसी प्रकार अगर कुछ लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उत्पादनके साधनोंपर अधिकार कर बैठें तो दरिद्रोंके पास इसके सिवा क्या इलाज कि उनकी चाकरी करें और अपनी मेहनत उनके हाथ बेचें ? इस विषयपर यहां हम अधिक न कहेंगे। सारांश यह है कि हर-कहीं और हमेशा समाज दो श्रेणियोंमें विभक्त रहा है—श्रमजीवी और श्रमशोषक। एक वे जो मेहनत करते हैं, दूसरे वे जिन्होंने उत्पादनके कुल साधनोंको हथियाकर टैक्स, लगान आदिके नामपर उन्हें लूटा है। दोनों श्रेणियोंके स्वार्थ विभिन्न हैं—दोनोंके रहने-सहने, खाने-पीने और सोचनेके तरीके अलग-अलग हैं। दोनोंकी भावनाओंका भी अलग होना आवश्यक है। शिक्षा उन्हीं लोगोंके लिए है जिनके पास अवकाश और धन है। इसलिए पुस्तकोंमें सञ्चित साहित्य भी उनकी ही सम्पत्ति है।

इस लम्बी-चौड़ी भूमिकाके बाद हम संक्षेपमें देखेंगे कि भारतीय साहित्यपर श्रेणी-चेतनाका परोक्ष या प्रत्यक्ष कितना प्रभाव है; वह पूरे देशके जीवनका प्रतिबिम्ब है या उस श्रेणीका चारण है जिसकी कहानी खून और आगमें शराबोर है। मानवताके उस आदर्शकी उसने कहां तक रक्षा की है, जिसके बिना उसका मूल्य दो कौड़ी भी नहीं रहता। गलत-फहमी और उलझनोंसे बचनेके लिए हम मुख्यतः कविता तक अपने कथनको सीमित रखेंगे।

## भारतीय कविताकी भौतिक समीक्षा

उन्नीसवीं सदीके अन्तिम चरणके पहले और बादके जमानेमें हम एक लकीर खींच सकते हैं। पिछले ५० वर्षोंके भीतर भारतमें उद्योगवाद पनपा है और बड़े पैमानेपर उद्योग-धन्धे शुरू हो रहे हैं, जिससे देशकी सामाजिक व्यवस्था डांवाडोल हो गयी है। इसके पहलेकी सामाजिक और आर्थिक अवस्था हजारों साल तक एक-सी रही है। अपने दृष्टिकोणके अनुसार भारतीय साहित्यको भी हमें इन्हीं दो हिस्सोंमें बांटना होगा। आसानीके लिए हम उन्हें पुराना और नया साहित्य कहेंगे।

भारतीय समाजकी नींव जमींदारी-प्रथापर रखी गयी थी, जो अखण्ड-रूपसे १९ वीं सदी तक जीवित रही और अब उद्योगवादके प्रहारोंसे दम तोड़ रही है। इस सामन्त समाजके सर्वेसर्वा हमारे देशमें ब्राह्मण और क्षत्रिय रहे हैं। हिन्दू साहित्य उनकी विरुदावलियोंसे भरा पड़ा है। राजाओं-की प्रशंसा और मुनियों व इष्टदेवताओंकी स्तुतिसे दफ्तरके दफ्तर भरे पड़े हैं। हिन्दू राज्यके पतनके पहलेके संस्कृत साहित्यमें हम शृङ्गार और शान्त-रसकी बहुतायत देखेंगे। दुःखान्त नाटकोंको जबरदस्ती सुखान्त बनाना, एक विशेष मनोवृत्तिका परिचय देता है। यह उस दरबारी वातावरणका परिणाम है जहां क्षोभ और दुःखका नाम बुढ़ापेके पहले सुननेमें न आता था। गीति काव्यको 'शृङ्गार' का नाम देना यह बतलाता है कि उस समाजमें प्रेम और सम्भोगमें कोई अन्तर न रह गया था। नायिकाभेद और नखशिख-वर्णनकी बारीकियां कवियोंकी काम-लालसाका पता देती हैं। हालांकि देशमें ९५ प्रतिशतसे अधिक किसान थे, फिर भी उनका जिक्र भूले-भटके ही कहीं आता है। कवि या तो शहर-के गली-कूचोंमें घूमता है, या इन्द्रलोकके नन्दन-काननमें; या तो कुञ्जगलीकी सैर करता है और या जङ्गलों-पहाड़ोंमें भटकता है। जैसे-जैसे जीवनमें आडम्बर अधिक आता जाता है और उच्च श्रेणी भोगविलासके लिए नये-नये ठाट-ठस्से बनाती है, वैसे-वैसे कविता वैदिक कालकी सादगीसे हट-कर अधिकाधिक बनावटी होती जाती है। अलङ्कारों और समासोंका प्रेम बढ़ता जाता है। फिर भी उच्च श्रेणीके आचार-विचारमें परस्पर भेद नहीं होता और कवि आत्मा व शरीरको अलग-अलग नहीं करता। साहित्यमें अभी द्वैत-वाद ( dualism ) का बोलबाला नहीं है।

मुसलमानोंके आते ही नक्शा कुछ-कुछ बदल जाता है और हिन्दू उच्च श्रेणी पदच्युत होने लगती है। राधाकृष्णकी प्रेमलीलाकी लोकप्रियता वास्तवमें वस्तुस्थितिकी छायामात्र है। हिन्दू उच्च श्रेणीका बुढ़ापा आ गया है। उसे अपने बचपनके किस्सोंमें मजा मिलता है। बालकृष्णके कौतुक उसकी सोयी हुई कामलालसाको सजग करते हैं। कंसवध और पूतनावध, राम-रावण-युद्ध और शिशुपाल-वधमें वह अत्याचारियों और आततायियोंके पराजयका चित्र देखती है। कविता उच्च श्रेणीकी वाणी बन जाती और उसके भावों-को कागजपर उतारा करती है। नानक, कबीर, दादूदयाल आदिकी साखियां बतलाती हैं कि हिन्दू मुसलमानोंके मेल-जोलने भारतीय जनसाधारणमें ब्राह्मणोंके प्रति विद्रोहके भाव जगा दिये थे। यह वह जमाना था, जब मुसलमान शासक कठमुल्लाओंसे उलझे हुए थे इसलिए कि उनके स्वेच्छा-चारपर कोई बन्धन न हो। फिर भी कबीरका विद्रोह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गुरुडमसे आगे नहीं बढ़ता; वह यह कहकर चुप हो जाता है कि प्रजा राजा बन जाये तो संसारका काम कैसे चल सकता है ? आत्मिक शान्तिके लिए वह भौतिक शान्तिको जरूरी नहीं समझता। तुलसीदासका रामराज्य एक सहृदय और उदार सम्राट्की कल्पना है जो प्रजाके हिताहितसे उदासीन न हो। हिन्दी कवियोंकी विभिन्न विचार-धारायें उनके स्वामियोंकी बदलती हुई हालतोंकी ओर सङ्केत करती हैं।

मुसलमान साहित्य तो प्रत्यक्ष रूपसे श्रेणीजागृत मालूम होता है। उसका बहुत बड़ा हिस्सा कसीदों और बादशाहों-नवाबोंके सैनिक अभियानोंके वर्णन तक परिमित है। दूसरा हिस्सा सूफीवादसे सम्बन्ध रखता है, जो भौतिक स्थितिसे मानसिक अनुभूतियोंके अलगावका सबूत है। धार्मिक श्रेणी-की एक टुकड़ी, मुसलमानोंके अधार्मिक व्यवहारसे तङ्ग आ जाती और 'जिस्म' से 'रूह' का पल्ला छुड़ाना चाहती है। मुल्लाओंका एक गिरोह मुसलमानोंकी दिनचर्यापर धार्मिक प्रतिबन्ध लगानेकी कोशिश करता है। इसीलिए मुसलमान कवि 'जाहिद', 'वाअज' और शेखजीकी दाढ़ी नोचनेको हमेशा तैयार रहते हैं। यह उस द्वन्द्वकी झलक है जो 'शासन' और 'मुल्लाओं' के बीच चलता रहा, जिसमें अन्ततोगत्वा मुल्लाओंकी हार हुई और उन्हें शासनतन्त्रका एक हिस्सा बन जाना पड़ा।

पुरानी उर्दू कविताको अगर हम 'दिल्ली' और 'लखनऊ' में बांट दें तो एक बात साफ हो जाती है। दिल्लीकी मुगल-शाहीका दिया टिमटिमा रहा है और वहांके रईस अपनी अन्तिम घड़ी गिन रहे हैं। इधर लखनऊ भरपूर जवानीपर है—वह भी उद्दण्ड और बन्धनहीन। इसीलिए दिल्लीमें 'मीर', 'दर्द' और 'गालिब' का जन्म हुआ, जिनकी आह और कराह मिटती हुई शासक श्रेणीका करुण विलाप है। 'मोमिन' और 'दाग'की कविताको मरघटकी भैरवी समझिये जो उन मौजी जीवोंकी आवाज है जो कब्रमें लेटकर भी शोकगीतके बदले मधुर तानें सुनना चाहते हैं। इधर लखनऊमें हम निराशावाद और वैराग्यकी गन्ध भी न पायेंगे। 'जाने आलम पिया' की राजधानीमें आदमी जीता इसलिए है कि खाये, पिये और मर जाये।

तत्कालीन साहित्यिकोंके पतनकी पराकाष्ठाका प्रमाण सन् ५७ का गदर है। उससे ठीक सौ वर्ष पहले, पलासीके युद्धने भारतके भाग्यका निबटारा कर दिया था। लेकिन यह दोनों घटनायें समकालीन साहित्यपर एक हलकी-सी लकीर भी खींच न सकीं। गदरका नाम कोई कवि लेता है तो केवल इसलिए कि वह भूखों मर रहा है और या उसके भाई-बन्धुओंकी जान चली गयी। साहित्य, जीवनसे उतना ही अलग है, समाजसे उतना ही विच्छिन्न है, जितनी देशकी उच्च श्रेणियां। साहित्य उनका अनुचर है और उन्हींके समान नीरस, निर्विचित्र और अनुभूतिहीन है। कालिदास, कबीर और नजीर अकबराबादीके सिवा एक भी ऐसा कवि—अर्थ और भाषा दोनोंकी दृष्टिसे—नहीं, जिसे भावी श्रेणीरहित समाज चावसे पढ़ेगा। प्राचीन कालमें श्रेणीद्वन्द्व किस हद तक पहुंचा हुआ था, इसका अन्दाज लगानेके लिए यही देखना काफी है कि संस्कृत-नाटकोंमें निम्न श्रेणीके पुरुष और सभी स्त्रियां प्राकृतमें और उच्च श्रेणीके पुरुष देवभाषामें बातें करते हैं।

उन्नीसवीं सदीके अन्तसे भारतमें नवजीवन आरम्भ होता है। दस्तकारी और हस्तशिल्पका युग समाप्त होता और बड़े-बड़े उद्योग-धन्धोंका श्रीगणेश होता है। जमींदारी-प्रथा भी काश्तकारीके नये तरीकोंके प्रहारसे डांवाडोल होने लगती है। शिक्षित और नयी पूंजीवादी श्रेणी मिलकर विदेशी पूंजीपतियों और देशी जमींदारोंकी रक्षक सरकारपर हल्ला बोल देती हैं। मगर उद्योग-धन्धोंके विस्तारके साथ एक नयी श्रेणीका जन्म होता है, 'जिसके पास खोनेके लिए जञ्जीरोंके सिवा कुछ नहीं और पानेके लिए तो सारी दुनिया मौजूद है।' यही वह सम्पत्तिहीन 'सर्वहारा' है जो नये साम्य-वादी समाजका निर्माण करेगा, जिसमें मानवशक्ति श्रेणियोंमें बंटकर स्वार्थके लिए न लड़ेगी जैसा अब तक होता आया है, बल्कि सङ्गठित होकर अपनी ताकतोंको जीवनकी परि-पूर्णताके लिए लगा देगी, जिसके बिना मानवताका आदर्श अर्थहीन रह जाता है।

हालांकि शिक्षा अब भी खाते-पीतोंकी बपौती है, लेकिन शिक्षित श्रेणीके स्वार्थ अब शासक श्रेणीसे अलग हो रहे हैं। संस्कार और श्रेणीस्वार्थके कारण उसके साहित्यिक म्रियमाण पुराने समाज और नये समाजके निर्माताओंके बीच डांवा-डोल हो रहे हैं। आधुनिक भारतीय साहित्यपर एक विहङ्ग-दृष्टि डालकर देखना है कि आजकलकी सामाजिक परिस्थितिको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वह कहां तक व्यक्त करता और अपने उस आदर्शका कहां तक अनुकरण करता है जिसे गोर्कीकी जबानी हमने ऊपर सुन लिया है।

जब अतीतके कानून वर्तमानके पैरोंमें बेड़ी डालने लगते हैं और ऐतिहासिक शक्तियोंका फैलाव, सामाजिक ढांचेके अन्दर समा नहीं सकता तो जीवनमें एक भूडोल-सा होता है जो पुरानी दुनियाको मिटाकर एक नयी दुनियाको अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओंके अनुसार जन्म देता है। यही विस्फोट क्रान्ति है जो तब-तब समाजके आधारको हिला देती है जब-जब संस्कारोंके बांधसे मानव-शक्तिरूपी अगाध जलप्रवाहको रोकनेकी कोशिश की जाती है। उस समय साहित्यका कर्तव्य यही रह जाता है कि मानवताके आदर्शकी ओर बढ़नेवाली ऐतिहासिक शक्तियोंको जो दकियानूसी सामाजिक संस्कार रोकना चाहते हैं, उनके विरुद्ध विद्रोहकी घोषणा करे और मनुष्योंको उनसे लड़नेके लिए उभारे। उसी हालतमें साहित्यका यह दावा ठीक समझा जायेगा कि वह उन्मुक्त और स्वतन्त्र है। अगर वह प्रतिक्रियावादी श्रेणीसे मिलकर, जीवनके बढ़ावपर काग लगाना चाहता है तो वह मानवतासे विश्वासघात कर रहा है और समाजको पूरी आजादी है कि उसपर प्रतिबन्ध लगाकर उसे कर्तव्यपालनके लिए मजबूर करे।

हम कह चुके हैं कि प्राचीन और नवीनके इस द्वन्द्वके समय शिक्षित श्रेणी हतबुद्धि-सी हो जाती है। वहिर्जगत्का द्वन्द्व अन्तर्जगत्में उथल-पुथल मचा देता है और मध्यश्रेणीके कुछ लोग जीवन-संग्रामकी भीषणतासे तङ्ग आकर जङ्गलों और पहाड़ोंमें भागना चाहते हैं। प्राकृतिक जीवन और आदिम समाजकी याद करके सिर धुना करते हैं। इस विषमताका इलाज उनके नजदीक यही है कि मनुष्य सभ्यता और विज्ञानमें आग लगाकर फिर लंगोटी बांधकर जङ्गलोंमें चला जाये। लक्ष्यहीन और निराशावादी मध्यश्रेणीकी यही भावना रवीन्द्रनाथसे कहलाती है —

दाओ फिरे से अरण्य, लओ ए नगर,
लहो यत लौह लोष्ट्र काष्ठ ओ प्रस्तर,
हे नव सभ्यता, हे निष्ठुर सर्वग्रासी,
दाओ सेइ तपोवन पुण्यच्छाया राशि,
× × ×
चाइ स्वाधीनता, चाइ पक्षेर विस्तार,
वक्षे फिरे पेते चाइ शक्ति आपनार,
पराणे स्पर्शिते चाइ—छिंड़िया बन्धन
अनन्त ए जगतेर हृदय-स्पन्दन।

—'सभ्यतार प्रति' ( चैताली )

अर्थात्—"हे नयी सभ्यता! मुझे मेरी प्राचीन वनभूमि लौटा दो, अपने इस नगरको—इस लौह-लोष्ट्र-काष्ठ-प्रस्तर-मय स्तूपको वापस ले लो। हे निष्ठुर, सर्वग्रासी सभ्यता! उस प्राचीन तपोवनकी पुण्यच्छाया मुझे फिरा दो। × × × मैं स्वाधीनता चाहता हूं, अपने पङ्खोंका पूर्ण विस्तार चाहता हूं, अपने वक्षमें फिर अपनी खोयी शक्तिके पानेकी इच्छा रखता हूं और सब बन्धन छिन्न करके अपने प्राणोंमें इस अनन्त जगत्के हृदयस्पन्दनका स्पर्श चाहता हूं।"

डा० एकबाल भी 'एक आरजू' शीर्षक कवितामें ठीक इसी भावसे प्रेरित होकर कहते हैं —

दुनियाकी महफिलोंसे उकता गया हूं यारब।
क्या लुत्फ अञ्जुमनका जब दिल ही बुझ गया हो।

नवीनकी निन्दा और प्राचीनकी प्रशंसा आधुनिक युगके साहित्यकी एक विशेषता है। हिन्दू और मुसलमान कवि अपने-अपने पूर्वपुरुषोंकी कहानी कहते थकते नहीं। हफीज जालन्धरी 'शाहनाम-ए-इस्लाम' लिखनेमें तन्मय हैं और उधर बाबू मैथिलीशरण गुप्त वाल्मीकि और व्यासका आसन हथियाना चाहते हैं।

शिक्षित श्रेणीका एक अङ्ग समाजके बन्धनोंको हवामें उड़ाकर बिलकुल उद्दण्ड और उच्छृङ्खल हो रहा है। उसका सन्देहवाद अपनी तृप्तिके लिए है, समाजके दुःखदर्दसे उसे कोई वास्ता नहीं। शरच्चन्द्रके श्रीकान्त और सतीश, 'उग्र' के चरित्रों और कुछ नवयुवक कवियोंमें यही प्रेरणा काम कर रही है।

मध्यश्रेणीका दूसरा अङ्ग किसानों और मजदूरोंकी बुरी हालतको देखकर तड़फ उठता है, आर्थिक और राजनीतिक विषमताको मिटाकर देशको उन्नति-पथपर अग्रसर देखना चाहता है। लेकिन जनसाधारणसे अलग रहने और अपनी श्रेणीके स्वार्थों और संस्कारोंमें अनुलिप्त रहनेके कारण वह सुधारवादसे आगे नहीं बढ़ सकता। प्रेमचन्दकी 'रङ्गभूमि' और 'प्रेमाश्रम' में ऐसे शिक्षितोंका चित्रण है जो श्रेणीकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हदबन्दियोंसे निकलना चाहते हैं। लेकिन उनकी दूसरी कहानियों और नाविलोंको पढ़कर यही मालूम होता है कि वह जमींदारों और किसानोंमें अच्छे सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए व्याकुल हैं, उन्हें 'सुधारना' चाहते हैं। वह कभी सोच ही नहीं सकते कि जमींदारोंके बिना दुनिया चल सकती है। हां, जमींदारों और महाजनोंको भलमनसाहत बरतनी चाहिए! रवीन्द्रनाथका 'गौरचन्द्र' (गोरा?) और 'पुरातन भृत्य' आदि रचनायें इसी 'सहृदयता' का परिचय देती हैं।

मुसलमान मध्यश्रेणीमें यह सुधारवाद दूसरा रङ्ग पकड़ता है। मुसलमान साहित्यिकको इस्लाम और अपने प्राचीन इतिहाससे बड़ा प्रेम है। आधुनिक पूंजीवादसे उसे घृणा है, लेकिन समाजवादके अनीश्वरवादी-पटसे उसे और भी घृणा है। खिलाफतकी कल्पना उसे फौरन् 'डिक्टेटरशिप' की ओर ले जाती है। वह संस्कारवश हिंसाप्रिय होता है; इसलिए उसका पूरा दृष्टिकोण फासीज्मसे बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। यह बिलकुल झूठ है कि इस्लाम और साम्यवादमें कोई अन्तर नहीं। एकबाल अपनी 'इशतराकियत व मलूकियत' (साम्राज्यवाद और साम्यवाद) नामक फारसी-कवितामें इसी फासीस्ट मनोवृत्तिका परिचय देते हुए लिखते हैं :—

हर दो रा जां नासबूरो नाशिकेब।
हर दो यज़दां नाशनास आदमफ़रेब।
ज़िन्दगी ईं रा ख़रूज आं रा ख़िराज।
दरमियाने ईं दो संग आदम ज़जाज।
ग़र्क़ दीदम हर दो रा दर आबोगिल।
हर दो रा तन रौशनो तारीक दिल।

"पूंजीवादी और साम्यवादी दोनों धीरजका नाम नहीं जानते; दोनों सत्यसे दूर हैं और मानवताको धोखा दे रहे हैं। साम्यवादीका जीवन विकासपर और पूंजीवादीका शोषणपर निर्भर करता है। इन दोनों पाटोंके बीच संसार घुनके समान पिसा जा रहा है। दोनोंको मैंने भौतिकताके दलदलमें फंसा देखा; दोनोंके शरीर साफ हैं और दिलोंमें अंधेरा है।"

यह तो जाहिर है कि एकबाल साम्यवादके मूलतत्त्वको समझ नहीं सके। फिर भी उनकी राजनीतिक फिलासफीका झुकाव खुलमखुल्ला फासीज्मकी ओर है।

जहां-कहीं पूंजी और श्रमका संग्राम होता है, साहित्यमें अराजकवाद, सुधारवाद और फासीज्मकी विचार-तरङ्गें बहने लगती हैं। लेकिन किसी-न-किसी रूपमें इन सिद्धान्तोंका प्रचार पूंजीवादी समाजके लिए हितकर और नयी ताकतोंके लिए हानिकारक सिद्ध होता है। जब तक साहित्य क्रान्तिकारी बनकर पुरातनको मिटाकर नयी दुनियाका सपना नहीं देखता, वह नये समाजके लिए बिलकुल निरर्थक है। इस दृष्टिकोणसे जब हम अपने साहित्य-गगनको देखते हैं तो विद्रोही कवि नजरुल इस्लामके सिवा किसीका प्रकाश, 'सर्वहारा'के दुर्गम पथमें चमकता नहीं दीख पड़ता। राष्ट्रवादी कविता भारतकी दरिद्रताकी दुहाई देकर पाठकोंको आवेशमें ला सकती है, पर उसके आगे भविष्यके लिए कोई कार्यक्रम नहीं है। आतङ्कवादियोंके बमके समान वह भी क्षण-भरके लिए चारों दिशाओंको थर्राकर शून्यमें गुम हो जाती है। मगर भावोंकी दृष्टिसे नजरुल इस्लामकी कविता सचमुचमें 'क्रान्ति-कारी और नवपथगामी' है। वह मध्यश्रेणीके उन युवकोंकी गर्जना है जो अपने स्वार्थोंको मजदूरोंके स्वार्थोंमें मिटा देते और उन्हींकी श्रेणीमें मिल जाते हैं। कहता है :—

"मैं उस यौवनके गीत गाता हूं,
जो आज जोशमें मतवाला होकर एक असम्भव अभियानकी ओर रवाना हुआ है; जिसके ध्वंसकी कहानी इतिहास लाखों सालसे लिखता आ रहा है; जिसकी सांसोंकी लपटमें पुराने धर्मग्रन्थोंके पत्ते जलकर राख हो जाते हैं; जो अन्यायी देवताओंके मन्दिरों और आस्तानोंको तोड़ता चलता है; उन मन्दिरों और मस्जिदोंकी ईंटसे ईंट बजा देता है जो बगलाभगत धर्मभक्तोंके पुराने ताड़ीखाने हैं; वह यौवन, जिसके जीवनके बहावमें प्राचीनताके जञ्जाल, संस्कारकी शिलायें और शास्त्रोंकी हड्डियां बह जाती हैं; जो मिथ्या मोहके पूजा-मण्डपोंमें बरबादीके सन्देशे लेकर निर्भीक और निडर होकर कदम रखता है; जो चीनमें असीम साहससे संस्कारकी प्राचीरोंको तोड़ फेंकता है; जो जीवन-सन्ध्यामें आज अमर जीवनके गीत गा रहा है—
मैं उसीके गीत गाता हूं।"

('आमि गाइ तारि गान')

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76329



यही वह साहित्य है जिसे लेनिन नये समाजकी वाणी बतलाता है और जिसके बिना मेक्सिम गोर्कीका आदर्श एक ओर धरा रह जाता है।

### हमारा कर्तव्य

'कला कलाके लिए' का मतलब दूसरे शब्दोंमें है 'मैं अपने लिए!' आज जब सर्वत्र प्रतिक्रिया और क्रान्तिकी ताकतोंमें संग्राम चल रहा है, साहित्यको जानबूझकर या अनजानमें, किसी-न-किसी रूपसे इन दोनोंमेंसे एकका साथ देना होगा। अब तक हमारे साहित्यका झुकाव, बहुत बड़ी हद तक उसी प्रतिक्रियाकी ओर रहा है जिसका नाश करना उसका एक आदर्श है। साहित्यका प्रधान लक्ष्य यह होना चाहिए कि संसारसे जाति, रङ्ग, राष्ट्र, धर्मके भेदको मिटा दे और प्रत्येक प्रकारके शोषणका विरोध करे। मानवताके शत्रुओंकी शत्रुता मानवताके प्रेमका पता देती है। साहित्यको मानव-प्रेमको विस्तार देनेके लिए उस समाजसे लोहा लेना होगा जो भेदभावपर अवलम्बित है। यह उसका ध्वंसक (destructive) पहलू है; पर साथ-ही-साथ वह प्रकृतिके रहस्योंको सुलझाने और उसपर काबू पानेके लिए एक ऐसे समाजके निर्माणमें हाथ बंटावेगा जो सदेव मुचमें 'सच्चिदानन्द' का पार्थिव प्रतिबिम्ब होगा। मानवता और साहित्यके उद्देश्य अलग-अलग नहीं हैं, तब दोनोंको अपने-अपने उद्धारके लिए एक ही रास्ता अपनाना होगा। वह यही है कि पददलित और जर्जरित मानव-जगत्को अन्याय और अत्याचारके पञ्जोंसे निकाला जाये। हिन्दीके साहित्यिकोंका कर्तव्य है कि उन लोगोंकी सहायताके लिए अपनेको अर्पित कर दें जिन्हें इतिहासने भावी साम्यवादी समाजको जन्म देनेके लिए क्रान्तिके रङ्गमञ्चमें ला खड़ा किया है।

---

## मौन

मैं चुप रह जाता हूं, विह्वल
तुम कहती हो—बोलो!
मेरे पुलकाकुल दृग-जलमें
प्रिय, अपना उर धो लो!

मैं क्या बोलूं? मौन-साधना
में बीता यह जीवन।
कैसे आज बोलकर बिखरा
दूं उरका संचित धन?

देवि! आज कितनी स्मृतियोंके
बादल मनमें छाये!
कितनी रातें, कितने दिन,
अब सपने बनकर आये!

यह जीवन भी तो है सपना,
अपना और पराया—
कौन यहां सपनेसे कुछ भी
ज्यादा बनकर आया?

अन्धकार है यहां, एक सुख
की धुंधली रेखा है।
पर किसने उस रेखाको
अपने सम्मुख देखा है?

सुख ज्वाला बनकर आता है,
आशायें बन छलना।
मानवका जीवन है, इस
सुखकी आशामें जलना।

अमर रहे यह जलन, निरन्तर
बनी प्यारकी प्यास रहे।
चाहे जलना ही हो, पर
इस जलनेका विश्वास रहे।

—प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# एक रमणी-जासूसके अद्भुत रहस्यमय कारनामे

श्री रमाशङ्कर शर्मा

[ मार्था मैक्केना विगत महायुद्धकी उन साहसिका महिलाओंमेंसे है जिन्होंने अपने मनकी आश्चर्यजनक दृढ़ता हो कूटबुद्धिके रहस्यमय चक्रसे जर्मन सेनाध्यक्षोंको बुरी तरह छकाकर उनके ध्वंसका मार्ग सुगम कर दिया था। वह एक हॉलैंडियन महिला थी और उसका तत्कालीन नाम मार्त क्रोकीर्त (Marthe Cnockaert) था। जर्मनोंपर अपना प्रेम-चक्र बिछाकर उसने इस तरह उनकी आंखोंमें धूल झोंका कि बादमें जब उनकी आंखें खुलीं तो वे स्तम्भित रह गये। उसने कैसरकी हत्याका षड्यन्त्र रचा था और उपयुक्त अवसरकी प्रतीक्षामें थी; मौका आया, पर थोड़ी-सी बातके लिए सारा बना-बनाया काम बिगड़ गया। वह जासूसीके काममें अंगरेजोंकी तरफसे नियुक्त थी। युद्ध समाप्त होनेपर उसे इंगलैण्डसे राजकीय सम्मान तथा प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुआ था। मजा यह है कि जर्मनोंकी तरफसे भी उसे Iron Cross मिला था। उसकी करतूतोंका पता जब जर्मनोंको लगा तो वह गिरफ्तार की गयी। मृत्युदण्ड निश्चित था, पर चूंकि उसे 'आयर्न क्रास' मिल चुका था और बहुत-से जर्मन अफसर अन्त तक उसके पक्षमें थे, इसलिए वह बेदाग छूट निकली। उसने हालमें अपना आत्मचरित लिखा है। भारतके चिर-परिचित Winston Churchill साहबने उसकी भूमिका लिखी है। उनका कहना है—मार्थाकी रामकहानी उन्हें ऐसी रोचक मालूम हुई कि रातको सोनेके पहले उसे पढ़ना प्रारम्भ करके सुबह चार बजे तक वह उसे पढ़ते रह गये। उसकी जीवन-कथाका कुछ अंश यहां निम्न लेखमें वर्णित हुआ है। आशा की जाती है कि महायुद्धके गुप्त तथा रहस्यमय जीवनके सम्बन्धमें इस सच्ची कहानीसे पाठकोंको विशेष अभिज्ञता प्राप्त होगी।

—सम्पादक ]

रणोन्मादकी प्रथम उमङ्गसे उन्मत्त जर्मनोंने बेलजियम-पर धावा बोल दिया था और शक्तिशाली सेनाध्यक्ष लूडेन-डार्फके लौहचक्रके नीचे लियेज तथा नामूरके शहर पूर्णतया विध्वस्त और चूर्ण-विचूर्ण हो चुके थे। वेस्टरूजवेके नामके गांवमें शरणार्थियोंका तांता लगा था, और आस-पासके ग्राम-निवासी युद्धके ताजे तथा भीषण समाचार रात-दिन प्रत्यक्षदर्शियोंके मुंहसे सुनते थे; तथापि उस तरफ अभी तक पूर्ण शान्ति विराजमान थी; सरायोंमें नित्यकी तरह चहल-पहल जारी थी और गिरजेकी घण्टी पूर्ववत् मधुर, मनो-मोहक शब्दोंमें बजती जाती थी; नवेली, अलबेली कृषक-बालायें खेतोंमें काम करती हुई नियमित रूपसे आनन्द और प्रेमके राग अलापा करती थीं। अकस्मात् एक दिन तोपोंके गर्जन और गोलोंके वर्षणसे सारा गांव आतङ्कित हो उठा, सड़कोंपर चलनेवाले तथा खेतोंपर काम करनेवाले आदमियों-पर अप्रत्याशित रूपसे वज्रकोप हुआ और देखते-ही-देखते गांवकी सारी जमीन निरपराधोंके खूनसे लथपथ हो गयी।

चारों ओरसे गोलियोंकी बौछारें हो रही थीं। भगदड़ मची हुई थी। लोग अपने-अपने घरोंके भीतर घुसकर खिड़-कियां बन्द करके छिपनेकी चेष्टा कर रहे थे। एक नौजवान जर्मन लड़की कौतूहलवश अपने कमरेकी एक खिड़कीके शीशे-से नाशका वह रोमहर्षक दृश्य देख रही थी। उसका त्रस्त हृदय जोरोंसे धड़क रहा था, तथापि वह अपनी उत्सुकता दमन करनेमें असमर्थ थी। सहसा एक गोली ठीक उसके सिरके ऊपरके शीशेको छेदकर निकल गयी। उसकी मांने नीचेसे पुकारा—"मार्था, जल्दी नीचे तहखानेमें चली आ!"

नीचे जाकर मार्थाने देखा कि कुछ फ्रेञ्च सिपाही दीवार-पर छेद बनाकर जर्मनोंपर गोलियां चला रहे हैं, और जर्मनों-की गोलियां भी बड़ी तेजीसे सनसनाती हुई उनकी ओर आ रही हैं। वह तहखानेकी ओर भागी। बहुत देर तक वह अपने मां-बापके साथ तहखानेमें छिपी रही। जब गोलियोंका शब्द कुछ कम हुआ तो वह ऊपर आयी। वहां उसने देखा कि फ्रेञ्च सिपाही अपने हताहत भाइयोंको 'हाल'में छोड़कर भाग निकले थे। सारा घर लहूलुहान हो रहा था और घायल सिपाहियोंके कराहनेका शब्द दिलको दहला देता था। मार्थाके लिए यह सब दृश्य घोर आतङ्कजनक होनेपर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसने हिम्मत बांधी। उसने नर्सका काम सीखा था। यथा-शक्ति वह आहतोंकी शुश्रूषामें लग गयी।

कुछ ही देर बाद बाहर बहुत-से सिपाहियोंके बूटोंकी आवाज सुनायी दी। रसोईके कमरेके दरवाजेपर जोरके धक्के पड़ने लगे और थोड़ी ही देरमें जर्मन सिपाहियोंके कठिन पदाघातोंसे दरवाजा उखड़ गया। मार्था अपने माता-पिताको यथाशक्ति खतरेसे बचानेके उद्देश्यसे स्वयं दरवाजेके पास आकर खड़ी हो गयी। जर्मन अफसरने पूछा—"इस घरमें कौन-कौन आदमी हैं, और किस-किसने गोलियां चलायी

महायुद्धके प्रारम्भके समय मार्थाका चित्र

हैं?" लड़कीने जवाब दिया कि कुछ फ्रेञ्च सिपाही आये थे, जिनमेंसे कुछ मर गये हैं, कुछ घायल हैं और बाकी भाग गये हैं। पर जर्मन अफसरने इस बातपर विश्वास न किया और कहा—"हमें पूरा विश्वास है कि तुम्हारा पिता एक पक्का निशानेबाज है और उसीने हमारे सिपाहियोंको घायल किया है।"

लड़कीके गिड़गिड़ानेपर भी जर्मनोंने न माना और मकानकी सब चीजोंको कुचलते और चुर-मुर करते हुए वे तहखानेमें घुसे और मार्थाके मां-बापको घसीटकर बाहर ले आये। वहां लातों और घूंसोंसे उन्होंने उसके पिताको खूब पीटा, उसकी मांको बुरा-भला कहा और उसके साथ गन्दा मजाक करने लगे। इसके बाद सार्जण्टके हुक्मसे सारे मकान-में आग लगा दी गयी। मार्थाका पिता कैदखानेमें डाल दिया गया और दोनों मां-बेटी दीन-हीन, अनाथ, क्षुधा-कातर अवस्थामें शरण-प्राप्तिकी आशामें चल पड़ीं। रास्ते-भर मार्था रोती रही और साथ ही उस बेल्जियम लड़कीके हृदयमें अत्याचारी जर्मनोंके प्रति घोर प्रतिहिंसाका भाव जागरित हो रहा था। उसने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि वह अपने तथा माता-पिताके प्रति किये गये अन्याय तथा अत्या-चारका बदला किसी-न-किसी रूपमें अवश्य लेगी।

* * *

कुछ दिनों तक खून-खराबी और लूट-पाट मचानेके बाद वेस्टरूजवेकेमें जब जर्मन सिपाहियोंका राज पूर्णतया स्थापित हो गया तो वे लोग कुछ शान्त हो गये। एक बड़े मकानमें घायलोंके लिए एक एमर्जेन्सी अस्पताल खोला गया। मार्था वहां नर्सका काम करने लगी। उसके अलावा तीन नर्सें वहां और थीं। वे तीनों 'नन' थीं। एक दिन अस्पतालके जर्मन अध्यक्षने किसी सन्देहपर उन तीनों 'ननों' को गिरफ्तार कर लिया। अध्यक्षके मनमें यह विश्वास जम गया था कि उन्होंने जर्मनोंके विरुद्ध जासूसी करनेके लिए नर्सका काम स्वीकार किया है। उनकी तलाशी लेकर उसने उन्हें तीन घण्टेके भीतर वेस्टरूजवेकेसे बाहर चले जानेका हुक्म दे दिया। केवल मार्थापर उसका सन्देह नहीं हुआ। उसकी सूरतमें एक ऐसा भोलापन था, उसके व्यवहारमें एक ऐसा सौष्ठव था कि जर्मन अफसरोंको उसकी सहृदयतापर विश्वास हो गया था। इसके अतिरिक्त उसे जर्मन भाषाका भी अच्छा ज्ञान था, इसलिए वह दुभाषियेका काम अच्छी तरह कर सकती थी। धीरे-धीरे अस्पतालके सभी कर्मचारियोंपर उसकी धाक जम गयी और वह अफसरोंकी प्रिय पात्री बन गयी।

१९१५ के प्रारम्भिक कालमें वेस्टरूजेबेकेमें जर्मनोंको मित्रराष्ट्रोंके सिपाहियोंने कुछ समयके लिए ऐसा तङ्ग कर दिया कि जर्मन कमाण्डेण्टने सब स्त्रियोंको उस स्थानसे हटा-कर रूलेर (Roulers) नामक शहरमें भेज दिया। मार्था भी जर्मन सिपाहियोंकी संरक्षकतामें वहां भेजी गयी। वहां ल्यूसेल



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देलदोङ्क (Lucelle Deldonk) नामकी उसकी एक पूर्व-परिचिता स्त्रीने उसे सुझाया कि यदि वह जर्मनोंके विरुद्ध जासूसी करना स्वीकार करे तो वह अपने प्यारे देशकी भी सेवा कर सकती है और अपने परिवारके प्रति किये गये अत्याचार तथा अपमानका भी बदला ले सकती है। ल्यूसेल ब्रिटिश गुप्त-संवाद-समिति (British Secret Intelligence Commission) की सदस्या थी। जर्मन लोग बहुत दिनोंसे उसकी फिराकमें थे, पर वह ऐसे छिपे-छिपे और ऐसे-ऐसे गुप्त वेषोंमें रहकर काम करती थी कि उसका पता लगाना प्रायः असम्भव था। मार्थाने उसकी बात मान ली। ल्यूसेलने उसे एक गुप्त साङ्केतिक भाषा सिखायी और कहा कि उसी भाषामें उसे ब्रिटिश गुप्त-संवाद-समितिमें लिखा-पढ़ी करनी होगी। ल्यूसेलने मार्थाका साङ्केतिक नाम 'लोरा' (Laura) रखा।

अस्पतालमें नर्सका काम करते हुए मार्थाको बहुत-से सिपाहियों तथा अफसरोंसे घनिष्ठताका अवसर मिलता था और जर्मनोंके बीच वह लोकप्रिय भी हो चुकी थी। इन सब कारणोंसे वह जासूसीके कामके लिए सबसे अधिक उपयुक्त थी। इसमें सन्देह नहीं कि इस काममें जानका खतरा था, पर जातिके अपमानकी जो ज्वाला उसके हृदयमें धधक रही थी, देशसेवाकी जो उमङ्ग उसके मनमें हिलोरें मार रही थी उसके कारण वह प्राणोंपर खेलनेके लिए सहर्ष तैयार थी।

रूलेरमें जासूसोंके सम्बन्धमें जर्मन लोग बड़े सतर्क रहते थे और किसी साधारण सन्देहपर भी निरपराधोंको जासूसीके अभियोगमें प्राणदण्ड देनेमें नहीं हिचकते थे। किसी चिमनीसे यदि धुआं निकलते हुए देखते, किसी खिड़कीसे रोशनी चमकती हुई पायी जाती तो उन्हें साङ्केतिक सूचना समझकर उन मकानोंके बाशिन्दोंको गिरफ्तार कर लिया जाता और अत्यन्त निष्ठुरतापूर्वक उनकी हत्या की जाती। एक पादड़ी गिरजेके बुर्जसे रोशनी चमकानेके अपराधमें पकड़ा गया और बिना 'कोर्ट मार्शल' के सिपाहियों द्वारा घसीटा जाकर खेतमें लाया गया। वहां उसके हाथमें एक फावड़ा दिया गया और उसे जमीनपर स्वयं अपनी कब्र खोदनेकी आज्ञा दी गयी। इसके बाद वह उस गढ़ेके भीतर डाला गया और गोलीसे मार डाले जानेके बाद उसकी लाशके ऊपर मिट्टी डाल दी गयी। जर्मन घोड़ोंको पानी पिलानेके कारण दो मजदूर गोलीसे उड़ा दिये गये। उनपर घोड़ोंको जहर देनेका अभियोग लगाया गया। उनकी लाशें कुचलकर बीच सड़कमें अन्यान्य व्यक्तियोंको चेतावनीके बतौर डाल दी गयीं। ऐसी हालतमें मार्थाकी स्थिति कैसी आशङ्काजनक रही होगी, इसका अनुमान सहजमें किया जा सकता है। तथापि वह अपना काम बड़ी चतुराईसे निभाती रही।

उसकी जासूसीके कारनामोंका वर्णन करनेके पहले रूलेरकी तात्कालिक अवस्थाका परिचय देना आवश्यक है।

मार्थाको जो जर्मन आफीशियल पास मिला था उसमें उसका फोटो इस रूपमें दिया गया था।

रूलेरपर जर्मनोंने पूरा कब्जा कर लिया था। वहां जर्मनोंका मिलिटरी राज स्थापित हो गया था। एक मिलिटरी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट वहांका प्रधानाधिपति था, जो Kommandant कहा जाता था। वह रोमन सम्राट् अथवा जारकी तरह उस जिलेका सर्वेसर्वा था। वह जिस घड़ी जिसको चाहता कत्ल करवा सकता था; जिसे चाहता जिला सकता था। उसके अधीन कुछ अर्द्धशिक्षित सिपाही भिन्न-भिन्न पदोंपर नियुक्त होकर Law and Order (न्याय तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



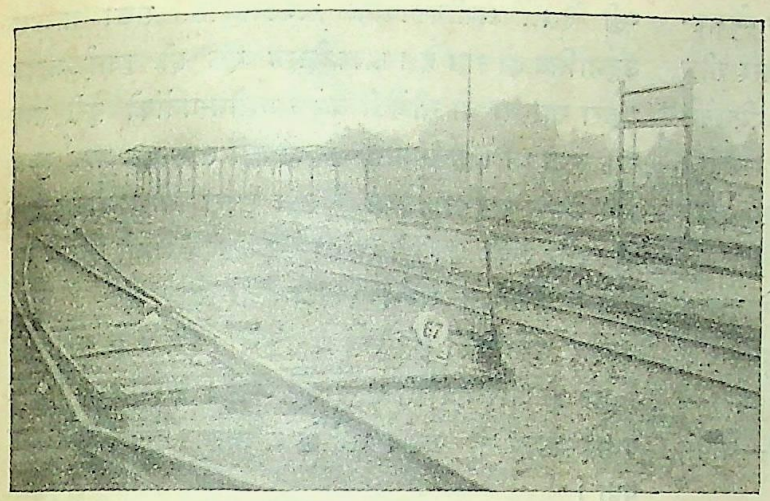

रूलेरका स्टेशन मार्थाके षड्यन्त्रसे इस प्रकार नष्ट किया गया था। शस्त्रास्त्रोंसे लदी हुई जर्मन गाड़ीके ध्वंस होनेके कुछ दिनों बाद यह चित्र लिया गया था।

शृङ्खला ) की 'रक्षा' करते थे। असहाय बेल्जियनोंको लूट-खसोटकर जर्मन सिपाही गुलछर्रे उड़ा रहे थे। जनताके लिए यह काला कानून ( Curfew order ) जारी कर दिया गया था कि चार बजे शामसे लेकर पांच बजे सुबह तक कोई व्यक्ति बाहर न निकलने पाये। और स्वयं वे लोग दिन-भर और रात-भर नाच-गान, राग-रङ्ग और मद्य-मैथुनमें मस्त रहा करते। स्थानीय लोग भूखों मर रहे थे, उनके पास रहनेके लिए स्थान नहीं था—अधिकांश मकान जर्मन सिपाहियोंके लिए खाली करवा दिये गये थे। प्रत्येक वस्तुके ७५ फीसदी भागपर जर्मनोंका अधिकार रहता था, बाकी २५ फीसदी भागपर चीजके असली मालिकको सन्तुष्ट रहना पड़ता था।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि मार्थाके प्रति जर्मन अफसर लोग खास मेहरबान थे। कमाण्डेण्टने उसे 'करफ्यू आर्डर'के समय भी बाहर कामसे इधर-उधर जानेका पास दे दिया था। इसके अलावा और भी बहुत-सी सुविधायें उसे प्राप्त थीं।

रूलेरमें प्रति सप्ताह जर्मनीसे 'आर्डनेन्स ट्रेन' आया करती थी जो हथियारों तथा गोला-बारूदसे भरी होती थी। पर ये गाड़ियां ऐसे गुप्त रूपसे आया करती थीं कि बहुत कम लोगोंको उनकी खबर मालूम थी। चूंकि मार्थाको गुप्त संवादोंको मालूम करनेकी धुन सवार थी, इसलिए वह छोटीसे छोटी बातपर दिलचस्पी लेती थी, अप्रकट रूपसे उसपर गौर करती रहती। आर्डनेन्स ट्रेनकी खबर जब उसे मालूम हुई तो उसने सोचा कि स्टेशनपर उसके पहुंचनेका ठीक समय मालूम करके इस बातकी खबर किसी उपायसे हवाई सेना-विभागके ब्रिटिश कर्मचारियों तक पहुंचा दी जानी चाहिए। अस्पतालके खास-खास रोगियोंको स्टेशन पहुंचानेके लिए उसे अक्सर एम्बुलेन्सके साथ जाना पड़ता था। इसी जरियेसे एक दिन अवकाशके समय वह स्टेशन पहुंची। जब घायलोंकी ट्रेन प्लेटफार्म छोड़कर चली गयी तो वह कुछ देर तक खड़े-खड़े उसी ओर ताकती रही। एम्बुलेन्सके ड्राइवरको उसने किसी बहानेसे वापस भेज दिया था। अकस्मात् पीछेसे एक आदमीने उसे प्रेम-भरी आवाज़में पुकारते हुए कहा—"मैं यह देखकर अत्यन्त प्रसन्न हूं कि आप स्टेशनपर अक्सर आकर हम लोगोंको दर्शन दे जाती हैं।" वह स्टेशन-मास्टर था। मार्थाने विद्युद्दीप्त मुसकानसे उसकी ओर देखकर उत्तर दिया—"मौसम बड़ा सुहावना है, मैं उसीका आनन्द ले रही थी।" जर्मन अफसर तत्काल सिगरेटका डब्बा उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—"लीजिये, नोश फरमाइये!" "क्षमा कीजिये, मैं बाहर सबके सामने नहीं पी सकती।" "तब भीतर चलिये! चाय भी तैयार है! वहीं बैठकर कुछ देर गपशप करेंगे।"

मार्था यही चाहती थी। दोनों भीतर जाकर बैठे। सिगरेट, उसके बाद चाय, फिर सिगरेट और बीचमें इधर-उधरकी गप्पें। मार्था इस नाजसे मुसकराती हुई बातें कर रही थी कि जर्मन अफसरका सिर फिर गया। अन्तको वह न रह सका और उठकर उसके कन्धेपर हाथ रखकर बोला—"देखो मिस, मैं जबसे बेल्जियम आया हूं तबसे अपनेको एकदम अकेला मालूम करता हूं। तुम्हें जब-जब स्टेशनपर देखता हूं, मेरा मन उत्सुक हो उठता है!" यह कहकर वह उसके गलेसे लिपट गया और उसका मुंह चूमने लगा! मार्था जानती थी कि जासूसीके काममें ये सब बातें सहन करनी ही पड़ेंगी; इसलिए उसने विशेष प्रतिरोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं किया। जब कुछ देर बाद मार्था उठने लगी तो स्टेशन-मास्टरने कहा—"मैं आशा करता हूं, फिर एक बार शीघ्र ही आप दर्शन देंगी।" मार्था बोली—"आपसे मिलनेसे अधिक प्रसन्नता मुझे और किसी बातपर नहीं हो सकती। कृपया बतलाइये कि इस सप्ताहमें किस दिन, किस समय आपको फुर्सत रहेगी?"

स्टेशन-मास्टर अपनी पाकटसे एक नोटबुक निकालकर पन्ने उलटने लगा। मार्था उसके पीछे खड़ी थी। 'बुधवार'के पृष्ठके नीचे एक स्थानपर उसने यह लिखा हुआ पढ़ा—"आर्डनेन्स ट्रेन—पहुंचनेका समय सुबह ३ बजे—वापस ३ बजे शाम।"

"शुक्रवारको मुझे फुर्सत रहेगी"—स्टेशन-मास्टरने उल्लासपूर्वक कहा—"उस दिन आप आयेंगी तो हम दोनों यहांसे 'घेण्ट' चले जायेंगे और वहां आनन्दपूर्वक राग-रङ्गमें समय बितायेंगे।"

आनेका वचन देकर मार्था अस्पताल वापस चली आयी। इसके बाद वह यह सोचने लगी कि किस प्रकार आर्डनेन्स-ट्रेन-सम्बन्धी गुप्त समाचार यथास्थान पहुंचाया जाय। ल्यूसेलने उसे एक गुप्त स्थानका पता बताते हुए कहा था कि यदि वह अपने समाचारोंको गुप्त भाषामें लिखकर सावधानीसे वहां तक पहुंचा देगी तो प्रत्येक समाचार यथास्थान पहुंच जायगा। उसके मनमें इस बातकी यथार्थता जाननेकी लालसा थी। एक कागजके टुकड़ेमें गुप्त समाचार लिखकर उसने उसे अपने सिरके बालोंमें छिपा लिया और एक गुप्त गलीमें पहुंची। वहां ल्यूसेलके निर्देशानुसार वह एक खास मकानके पीछेवाले रास्तेमें जाकर पांचवीं खिड़कीके पास खड़ी हो खटखटाने लगी। एक सफेद हाथ बाहरको निकला और उसका लिखा नोट लेकर गायब हो गया। उसे मालूम नहीं हुआ कि वह स्त्रीका हाथ था या पुरुषका। केवल इतना मालूम था कि वह गुप्त व्यक्ति ६३ न०के नामसे विख्यात है।

अव्यक्त आशङ्कासे कांपती हुई वह धड़कता हुआ कलेजा लेकर वापस आयी। शुक्रवार तक उत्कण्ठित हृदयसे आर्डनेन्स ट्रेनके विनाशके इन्तजारमें रही। शुक्रवारकी रातको हवाई जहाज तथा रेलवे इञ्जिनके भैरव निनादसे उसकी नींद उचट गयी। खिड़की खोलकर उसने देखा कि ऊपरसे बम-वर्षा हो रही है। मशीन-गनोंके सर्चलाइटोंसे सारा आकाश उद्भासित हो रहा है। ऊपर बादल एक ही हवाई जहाज मंड़रा रहा था जो नीचेकी जर्मन मशीन-गनोंको बुरी तरह छका रहा था। अकस्मात् वज्र-घोषकी तरह एक शब्द हुआ और उसके बाद आर्डनेन्स ट्रेनका सारा गोला-बारूद फूट पड़ा और उसके धक्केसे सारे रूलेर शहरमें मानो भूकम्प आ गया! अकाशमें सर्वत्र चिनगारियां उड़ने लगीं। प्रायः चालीस मकानोंकी छतें उस धड़ाकेसे चूर-चूर हो गयी थीं। कितने ही आदमियोंकी मृत्यु हो गयी। इसके बाद ब्रिटिश हवाई जहाज भी जर्मन गनोंसे चकनाचूर होकर नीचे गिर पड़ा।

कुछ भी हो, मार्थाको अपने कार्यमें पूरी सफलता मिल गयी थी। जासूसीके प्रथम प्रयासमें इस प्रकार कृतकार्य होनेपर वह आनन्दसे उछल पड़ी और द्विगुण उत्साहसे अपने गुप्त कर्तव्यके पालनमें लग गयी।

* * *

मार्थाके पिताने जर्मनोंके हाथसे किसी तरह मुक्ति पाकर रूलेरमें एक 'काफे' खोल लिया था। मार्थाने देखा कि काफेमें नाना श्रेणीके व्यक्तियोंके साथ घनिष्ठता होनेकी सम्भावना है। इसलिए उसने कमाण्डेण्टकी आज्ञा मांगकर अस्पताल तथा काफे, दोनों स्थानोंमें आना-जाना प्रारम्भ कर दिया। यहां आलफोंस तथा स्टीफेन नामके दो युवकोंसे उसका परिचय हुआ। पहले तो उसे भय हुआ कि वे दोनों जर्मन जासूस हैं और उसका पीछा कर रहे हैं; पर बादमें जब उन लोगोंने एक दिन एकान्तमें अपने कपड़ोंके भीतर 'क्रास'की तरह दो सेफ्टी पिन टंगे हुए दिखाये तो वह समझ गयी कि वे मित्रराष्ट्रोंके पक्षके जासूस हैं। उसे मालूम था कि 'सेफ्टी-पिन म्यन' नामका एक दल जर्मनोंके विरुद्ध जासूसी कर रहा है। इन दो युवकोंसे उसे बहुत-सी गुप्त बातोंका पता लगानेमें सहायता मिली, जिनमेंसे कुछका उल्लेख आगे चलकर किया जायगा।

कानटेनमें काम करनेवाली एक बुढ़िया स्त्री मार्थाके पास गुप्त सन्देशोंको लाया करती थी। एक बार जो सन्देश वह लायी उसमें लिखा था कि ब्रिटिश सिपाहियोंकी लाइनके पास कहीं जर्मनोंका एक गुप्त टेलीफोन-यन्त्र स्थापित है, जिसका कनेक्शन ब्रुग्गे (Brugge) जिलेके अन्तर्गत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किसी विशेष गांवमें है। मार्थासे उसका पता लगानेके लिए कहा गया था। उक्त टेलीफोन-लाइनके कारण जर्मनोंको ब्रिटिश सिपाहियोंकी गतिविधिका ठीक-ठीक पता लग जाता था जिसके फलस्वरूप बेचारोंकी दुर्गति होती थी।

हाउप्टमान फाशुगेल नामका एक जर्मन कप्तान जब घायल होकर अस्पताल आया था तो मार्थाने उसकी बड़ी सेवा-शुश्रूषा की थी। इस कारण वह उससे बहुत प्रसन्न था। मार्थाने उससे आकर कहा—"मुझे अमुक गांवमें (जहां गुप्त टेलीफोनका कनेक्शन बतलाया गया था) अपने चचासे मिलनेके लिए जाना है, कोई उपाय बतलाइये, जिससे मैं कुशल-पूर्वक वहां पहुंच सकूं।" कप्तानने बहुत सोचनेके बाद कहा—"उस तरफ हमारे सिपाहियोंने बड़ा ऊधम मचा रखा है, इसलिए तुम्हारे लिए वहां जाना खतरे-का काम है। पर एक उपाय हो सकता है। तुम जर्मन सिपाहीकी पोशाक पहनकर जाओ। मैं अपना एक विश्वासी गाड़ीवान तुम्हारे साथ देता हूं, वह तुम्हें गाड़ीमें बिठाकर बेखटके वहां तक पहुंचा देगा।" मार्थाने यही किया। जर्मन सिपाहीकी पोशाक पहनकर वह गाड़ीपर चढ़ बैठी। रास्तेमें जब-जब सिपाहियोंने प्रश्न किया तो वह अपनी जनानी आवाजके कारण पकड़े जानेके भयसे चुप रही, उसके बदले उसका ड्राइवर जवाब देता था।

गांवमें पहुंचकर अपने चचासे उसे इस बातका पता लगा कि वहांसे तीन मीलकी दूरीपर एक जङ्गलके बीच लकड़ीका बना एक छोटा-सा कैबिन है और वहां दो जर्मन सिपाही रहते हैं; किसलिए रहते हैं, क्या करते हैं, यह बात चचाको नहीं मालूम थी। मार्थाने निश्चय किया कि जर्मन सिपाहीके वेषमें वहां तक पैदल जाकर पता लगायेगी। उसने अपनी ठुड्डी और कानसे लेकर सिरपर घायलोंकी तरह पट्टी बांध ली ताकि किसीको सन्देह न हो। एक पाइप लेकर अफसरोंकी तरह पीती हुई, धुआं निकालती हुई वह चल पड़ी। एक घण्टे तक चलनेके बाद जङ्गलमें प्रवेश करनेपर उसे दो लम्बे पेड़ोंके बीच कैबिन दिखायी दिया। आस-पास कोई आदमी कहीं नहीं दिखायी देता था। वह एक पेड़की आड़में छिप गयी और क्या किया जाना चाहिए, भीतर कोई है या नहीं, इन सब बातोंपर विचार करने लगी।

मार्थाके पिता द्वारा परिचालित 'काफे' का एक दृश्य। इस 'काफे' से सम्बन्ध रहनेके कारण मार्थाको जर्मनोंकी बहुत-सी गुप्त बातोंका भेद मालूम करनेमें सुविधा मिलती थी।

कुछ देर बाद कैबिनका दरवाजा खुला और एक आदमी बाहर निकलकर घोड़ेपर चढ़कर चल दिया। उसे मालूम था कि कैबिनके भीतर केवल दो आदमी रहते हैं। इसलिए वह यह सोचकर निश्चिन्त हो गयी कि अब केवल एक ही आदमी वहां रह गया। वह धीरे-धीरे कदम रखती हुई कैबिनकी ओर बढ़ी। एक नाटा-सा सिपाही उसे देख चौंककर उठ बैठा। गुर्राती हुई आवाजमें बोला—"तुम कौन हो?" मार्था मुंहपर पट्टी बांधे हुए थी। उसने उंगलीसे अपनी जबानकी ओर इशारा करके यह भाव जताया कि उसकी जबान कट गयी है और बोल नहीं सकती। उसने एक कागजपर लिखकर उसकी बातोंका उत्तर दिया। सिपाहीने उसके प्रति समवेदना प्रकट की। मार्थाने लिखकर बहुत-सी बातें उससे पूछीं। प्रारम्भमें सिपाहीको कुछ सन्देह हुआ, पर वह उसे ऐसे भरेंमें लायी कि उसने सारा हाल ठीक-ठीक बता दिया। उससे मार्थाको मालूम हुआ कि ब्रिटिश सिपाहियोंके सम्बन्धकी कैसी-कैसी खबरें उन्हें टेलीफोनसे मिलती रहती हैं। उस सिपाहीने यह भी बतलाया कि गुप्त टेलीफोन-लाइनके दूसरे सिरेपर जो आदमी काम करता है वह एक पादड़ीके बतौर ब्रिटिश सिपाहियोंके बीच रहता है।

सन्ध्या हो गयी थी। दूसरे सिपाहीके दस-ग्यारह बजे रात तक वापस आनेकी सम्भावना नहीं थी। मार्थाने सोचा कि कुछ देरके लिए कैबिनसे दूर जाकर अंधेरा होनेपर वापस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आना ठीक रहेगा। सिपाहीसे बिदा होकर वह जङ्गलमें पास ही कहीं जाकर छिपी रही। जब अंधेरा होने लगा तो वह फिर कैबिनकी ओर लौट चली। वहां पहुंचकर उसने दरवाजा खटखटाया। सिपाही उसे फिर वापस आते देखकर घबराते हुए बोला—"क्यों कामाराड, क्या बात है?" मार्थाके एक हाथमें लाठी थी और दूसरे हाथमें क्लोरोफार्मका पैड। अकस्मात् उसने लाठीको तेजीसे घुमाकर उसके सिर-पर ऐसे जोरसे दे मारा कि उसे संभलनेका मौका न मिला, और तत्काल क्लोरोफार्मका पैड उसे सुंघा दिया। सिपाही उसी दम लड़खड़ाता, धक्के खाता हुआ बेहोशीकी हालतमें नीचे गिर पड़ा। मार्थाने बिस्तरेसे कपड़ेके लम्बे-लम्बे टुकड़े फाड़कर उसके हाथ-पांव बांध दिये और टेबलपर टेलीफोनके 'काल' के इन्तजारमें बैठी रही कि कोई गुप्त समाचार मिले। आधे घण्टेकी प्रतीक्षाके बाद घण्टी बजने लगी। धड़कते हुए कलेजेसे उसने रिसीवर हाथमें लेकर आवाज यथाशक्ति पुरुषोंकी-सी बनाकर पूछा—"क्या खबर है?" टेलीफोनके दूसरे सिरेसे आवाज आयी—"तुम कौन हो? तुम्हारी आवाज अनोखी मालूम होती है।"

"मैं यहां एक नया आदमी हूं। मैं अफसर हूं"—मार्था-ने उत्तर दिया—"तुम्हें एक जरूरी खबर देने आया हूं। आज सवेरे एक ब्रिटिश हवाई जहाज टेलीफोन कैबिन और आस-पासके पेड़ोंपर बम बरसाकर चला गया। आग लग गयी, कैबिन नष्ट हो गया, दोनों आपरेटर मर गये और टेलीफोन-लाइन भी कुछ दूर तक नष्ट हो गयी। आगे बढ़कर कनेक्शन ठीक किया गया और मैं नये कनेक्शनसे बोल रहा हूं।"

"तब तो निश्चय ही ब्रिटिश लोगोंको टेलीफोनकी बात मालूम हो गयी होगी?"

"अवश्य। जिस लाइनमें तुम काम करते हो उसे भी वे शीघ्र ही नष्ट करनेका विचार कर रहे हैं। इसलिए तुम्हारी जान खतरेमें है। तुम्हें अपनी जान बचानी चाहिए।"

उत्तर मिला—"आपकी इस चेतावनीके लिए अनेक धन्यवाद।"

इसके बाद मार्थाने उससे कहा—"एक आदमी १९ ता० के प्रातःकाल ब्रिटिश लाइनके पीछे पैरेशूटमें आकर तुम्हें मिलेगा और आगेके लिए हिदायत देगा। तुम्हारे पास नक्शा मौजूद हो तो बताओ किस स्थानपर तुम उसे मिल सकोगे।" टेलीफोन-लाइनके उस पारवाले आदमीने उसे नक्शा समझा-कर ठीक स्थान बतला दिया। मार्थाने 'गुडबाइ' कहकर रिसीवर यथास्थान रख दिया।

नीचे 'कामाराड' अभी तक बेहोशीकी हालतमें पड़ा था और उसकी हालत नाजुक हो उठी थी। उसे उसी दशामें छोड़ मार्था वहांसे सटक सीताराम हो गयी।

१९ ता० को टेलीफोनवाले जर्मन जासूससे जहां मिलनेकी बात थी वहां मार्थाने उसे गिरफ्तार करवा दिया। इस प्रकार मित्रराष्ट्रोंका विपक्षमें एक बड़ा भारी कांटा दूर हो गया।

इस घटनाके प्रायः एक हफ्ते बाद एक दिन ज्योंही मार्था प्रातःकाल अस्पताल पहुंची तो एक आदमीने आकर उसे सूचना दी कि "सर्जनने आज्ञा दी है कि मिस साहबके पहुंचते ही उन्हें मेरे पास भेजना।" मार्था घबरा उठी। उसे पूरा विश्वास हो गया कि उसकी जासूसीकी खबर जर्मन अफसरोंको लग गयी है। धड़कते हुए कलेजेसे वह सर्जनसे मिली। उसने कहा—"मैं तुम्हें बधाई देता हूं, फ्राउलाइन (मिस); इस अस्पतालमें तुमने अक्लान्त सेवाकार्य किया है उसके लिए तुम्हें 'आयर्न क्रास' मिला है।" 'आयर्न क्रास' वास्तवमें एक बहुत बड़े गौरवका चिह्न समझा जाता था। मार्थाकी प्रसन्नताका ठिकाना न रहा!

* * *

बीच-बीचमें छोटे-मोटे गुप्त संवाद वह 'सफेद हाथ' वाले '६३ न०' के गुप्त व्यक्तिके मार्फत ब्रिटिश अधिकारियोंको भेजती रहती थी। महायुद्धमें जब जर्मनोंने पहले-पहल विषैली गैसका उपयोग किया तो इसकी खबर मार्थाको उसे व्यवहारमें लाये जानेके पहले ही लग चुकी थी। पनडुब्बे जहाजोंके निम्नाधारका पता भी उसने ब्रिटिश लोगोंको दिया था। मित्रराष्ट्रोंके बहुत-से कैदियोंको उसने अपनी गांठके रुपये खर्च करके भगाया था। ये सब काम उसने जानपर खेलकर किये थे। पर जर्मनोंको अपने मीठे व्यवहार, स्निग्ध स्वभाव और साथ ही नाज-नखरोंसे इस प्रकार अपने वशमें कर रखा था कि वे उसके किसी भी आचरणपर सन्देह नहीं करते थे और आंख मूंदकर उसकी प्रत्येक बातपर विश्वास कर लिया करते थे। केवल एक व्यक्ति, जो जर्मन जासूस था, उसे यथेष्ट सन्देह-दृष्टिसे देखता था। उसका नाम था ओटो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



फान प्राम्फ्ट। वह उन लोगोंके काफेमें ठहरा हुआ था। मार्थाको पहले उसपर सन्देह न हुआ। पर जब 'सेफ्टी-पिन' दलके जासूस पूर्ववर्णित आलफोंस तथा स्टीफेनने उसे सचेत किया तो वह सावधान हो गयी। इस बीच जर्मनोंने अपने गुप्तचरोंकी सहायतासे मित्रराष्ट्रोंके बहुत-से गुप्तचरोंको गिरफ्तार करके उनकी हत्या कर डाली थी। मार्था बहुत घबरायी हुई थी और उसकी जान बड़े खतरेमें थी। फिर भी उसने जासूसीके कामसे मुंह न मोड़ा। देशसेवाके भावसे प्रेरित होकर वह इस कार्यको अपना परम कर्तव्य समझती थी।

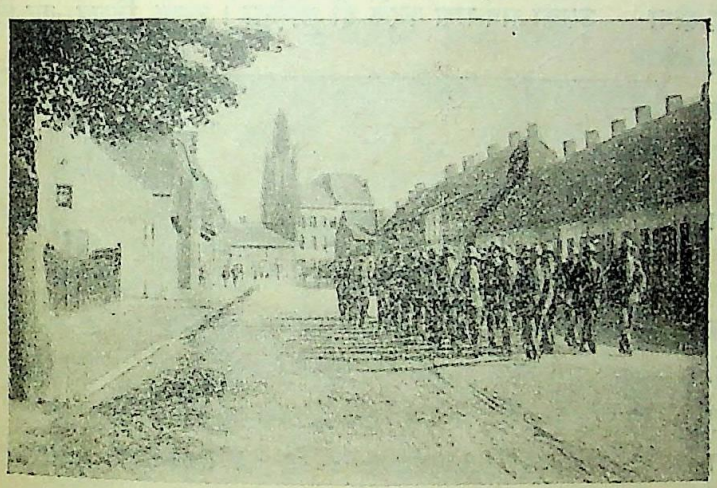

रूलेरकी एक सड़कमें जर्मन सिपाही अपने सैनिक शासनके दर्पसे स्फीत होकर बेधड़क चले जा रहे हैं।

रूलेरमें जर्मन सिपाहियोंकी संख्या दिन-दिन बढ़ती जाती थी। एक बार स्थानाभावके कारण प्रायः एक हजार जर्मन सिपाही शहरसे कुछ दूर 'बीर' शराबके एक कारखानेमें ठहराये गये। जगह छोटी थी और सिपाही अधिक थे। मार्थाने सोचा कि 'सेवन सिस्टर्स' नामके ब्रिटिश हवाई जहाजको यदि इन सिपाहियोंकी खबर दी जाय तो ऊपरसे बम बरसानेसे एक-साथ बहुत-से सिपाही मर सकते हैं। उसने उक्त संवाद '६३ न०' को देनेका निश्चय किया। जर्मन पहरेदारोंकी आंख बचाकर वह एक दिन रातको बारह बजेके समय नियत स्थानमें, निश्चित मकानकी पांचवीं खिड़कीपर पहलेकी ही तरह पहुंची। वहां पहुंचते ही अंधेरेमें उसने छायाकी तरह एक व्यक्तिको अपने पीछे आते देखा। वह तत्काल एक कोनेमें छिप गयी। 'छाया' ने पांचवीं खिड़कीके पास ठहरकर खिड़कीका दरवाजा खटखटाया। मार्थाने सोचा कि वह भी कोई ब्रिटिश गुप्तचर होगा और उसीकी तरह कोई गुप्त संवाद देने आया होगा। वह चुपचाप आड़से उसे देखती रही। 'सफेद हाथ' बाहर निकलता हुआ दिखायी दिया। पर तत्काल एक आश्चर्यजनक घटना हो गयी। उस निर्जन अन्धकारमें अकस्मात् पिस्तौलसे गोली चलनेके शब्दसे सारा स्थान गूंज उठा और आगकी एक ज्वाला निकलनेके साथ ही एक जोरकी चीख सुनायी दी। स्पष्ट ही '६३ न०' को किसीने कत्ल कर डाला था। मार्था धड़कते हुए कलेजेसे दीवारसे दुबकी हुई खड़ी रही। जब 'छाया'-पुरुष (या स्त्री?) विलीन हो गया तो वह भी शङ्कित, कम्पित पदोंसे बाहर निकलकर किसी प्रकार डेरेपर जाकर सो रही।

दो दिन बाद ब्रिटिश गुप्तसङ्घ द्वारा नियुक्त, कानटेनवाली बुढ़िया मार्थाके पास आयी। मार्थाने शराबके कारखानेमें छिपे हुए सिपाहियोंके निवासकी सूचना सांङ्केतिक भाषामें लिखकर उसे दे दी। उस बुढ़ियाने यथास्थान उस गुप्त संवादको पहुंचा दिया। एक ब्रिटिश हवाई जहाजने एक दिन रातके समय आकर शराबके उक्त कारखानेपर ऐसे अप्रत्याशित रूपसे निरन्तर बम बरसाना शुरू कर दिया कि बहुत कमको बचनेका अवसर मिला। मार्थाको जब यह समाचार मिला तो उसे बड़ा गर्व हुआ था कि इस हत्याकाण्डका कारण वही है!

यह पहले ही कहा जा चुका है कि ओटो फान प्राम्फ्ट नामके जर्मन जासूससे मार्था सावधान रहने लगी थी। पर वह उसका साथ नहीं छोड़ता था। उसके पिताके 'काफे' में वह मानो धरना देकर बैठा था। मार्था उसे किसी बहानेसे भी चले जानेके लिए नहीं कह सकती थी; क्योंकि ऐसा करनेसे उसके स्वयं पकड़े जानेका भय था। इसलिए वह यथाशक्ति उसे प्यारी-प्यारी बातें और मीठी-मीठी मुसकानसे रिझानेकी चेष्टा किया करती थी।

जिस दिन '६३ न०' की हत्या की गयी, उसके दूसरे ही दिन ओटोने उसके पास आकर अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक कहा—"मैं एक बड़े सङ्गीन विषयपर तुमसे बातें करना चाहता हूं!" मार्थाका कलेजा धकसे रह गया। कल रातके 'छाया-पुरुष' ने उसे '६३ न०' के पास जाते देख तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं लिया ? उसने अपनी कांपती हुई आवाजको यथाशक्ति स्थिर रखनेकी चेष्टा करते हुए कहा—"फरमाइये !"

"मुझे मालूम है कि रूलेरमें इस समय कुछ ऐसे खतरनाक जासूस मौजूद हैं जो जर्मनोंके सम्बन्धमें बहुत-से गुप्त और महत्त्वपूर्ण संवाद उनके शत्रुओंके पास पहुंचा रहे हैं। उनमेंसे कल रात एक जासूसकी—जो स्त्री है—हत्या हो चुकी है।" मार्था समझ गयी कि वह '६३ न०'की हत्याकी बात कर रहा है। तो वह रहस्यमय सफेद हाथ एक गुप्त स्त्रीका था, जिसका चेहरा मार्था एक दिनके लिए भी न देख पायी ! कुछ भी हो, इस समय वह अपने लिए अधिक चिन्तित थी। उसे यह सन्देह भी हो रहा था कि वह हत्याकारी 'छाया-पुरुष' सम्भवतः ओटो ही था। तब क्या सचमुच उसने मार्थाको गुप्त स्थानमें देख लिया था ?

मार्थाने पूछा—"मुझे आप क्या आज्ञा देना चाहते हैं ?"

"देखो मार्था, तुम जर्मनोंकी मित्र हो। तुमपर हमलोगोंका पूरा विश्वास है। ब्रिटिश जासूसोंकी करतूतोंसे हमलोगोंको बड़ी भारी हानि उठानी पड़ रही है; उनकी गिरफ्तारीमें हमें सहायता देना तुम्हारा कर्तव्य है। मैं तुम्हें उन-उन लोगोंकी एक लिस्ट देता हूं जिनपर हमारा सन्देह है। तुम्हें इन लोगोंपर नजर रखनी होगी और सन्देहकी कोई बात तुम्हें मालूम होनेपर तत्काल मुझे सूचना देनी होगी।"

ओटोने बहुत-से नाम परिचय तथा विवरण सहित लिखकर उसे दिये। उनमें आलफोंस तथा स्टीफेनका नाम नहीं था, यह जानकर मार्थाको बड़ी प्रसन्नता हुई। तथापि वह बड़े असमञ्जसमें पड़ गयी। क्या सचमुच उसे अपने मित्रपक्षी जासूसोंके विरुद्ध जर्मनोंको संवाद देनेके लिए बाध्य किया जायगा ? यदि वह इनकार कर देती तो उसपर ओटोका सन्देह पक्का हो जाता। उसने सोचा कि वह जर्मनोंके विरुद्ध जासूसीमें तभी सफलता प्राप्त कर सकती है जब वह उन लोगोंको अपनी 'सहृदयता' के प्रमाण देती रहे।

इस घटनाके कुछ ही दिन बाद 'ब्रेवरी' में एक हजार सिपाहियोंके बटालियनपर ब्रिटिश हवाई जहाज 'सेवन सिस्टर्स' ने मार्थाकी गुप्त सूचना पानेपर बम-वर्षा की थी, जिसके फलस्वरूप सैकड़ों सिपाही मर गये थे और सैकड़ों बुरी तरहसे घायल हुए थे। ओटोने इस संहारके दूसरे दिन मार्थाके पास आकर कहा—"देखो मार्था, तुम्हें यह बतानेकी जरूरत नहीं होगी कि किसी जासूसकी ही कारस्तानीसे कल एक हजार सिपाहियोंका सारा बटालियन नष्ट हो गया ! तुम्हें अवश्य ही इन घातक जासूसोंके चक्करका पता लगाना होगा।"

मार्थाने देखा कि ओटो बड़ा भयङ्कर आदमी है। यदि वह उसे अपने वशमें न कर सकी तो वह एक-न-एक दिन उसका सर्वनाश करके ही छोड़ेगा। उसने निश्चय कर लिया

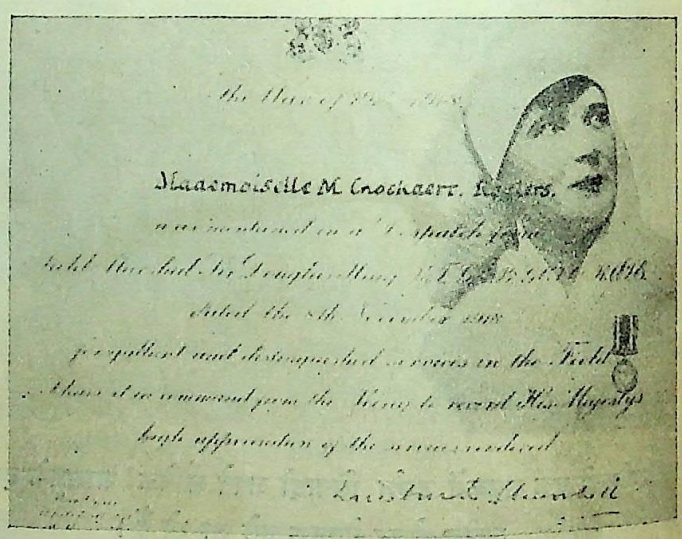

ब्रिटिश 'वार आफिस' से मार्थाको अपने कार्यके लिए यह प्रशंसा-पत्र मिला था।

कि प्रेमका माया-जाल फैलाकर वह ओटोको फंसायेगी और साथ ही अपनी 'सहृदयता' का प्रमाण देनेके लिए दो-एक ऐसी साधारण सूचनायें उसे दे देगी जिनसे मित्रराष्ट्रीय गुप्तचर-सङ्घको विशेष हानि होनेकी सम्भावना न हो।

तबसे वह ओटोके साथ अधिकाधिक घनिष्ठताका सम्बन्ध स्थापित करने लगी। हाव-भाव और नाज-नखरोंसे उसे वह इस तरह लुभाने लगी कि धीरे-धीरे ओटोका दिमाग फिरने लगा।

एक दिन मार्था जब प्रातःकाल सोकर उठी तो आलस्यके कारण कुछ देर तक बिस्तरेपर बैठे-बैठे बाहरका दृश्य देख रही थी। कुछ दूरपर एक जर्मन सिपाही एक कबूतरकी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बन्दूकका निशाना लगा रहा था। यहांपर यह सूचित कर देना आवश्यक है कि विगत महायुद्धके प्रारम्भिक दिनोंमें कबूतर द्वारा गुप्त संवाद भेजनेकी प्रथा बड़े जोरोंमें चल पड़ी थी। इस कारण रूलेरमें यह मिलिटरी आज्ञा घोषित की गयी थी कि कबूतर देखते ही वह तत्काल मार डाला जाय। सिपाहीको कबूतरपर 'फायर' करते देखकर मार्थाके मनमें एक नयी सूझ उत्पन्न हुई। उसने बिस्तरेपर ही एक कागजके टुकड़ेपर अङ्क तथा अक्षरोंसे संयुक्त दस-पांच झूठमूठके 'साङ्केतिक' शब्द लिखकर उस कागजके टुकड़ेको कच्चे और ताजा मांसके एक टुकड़ेसे बिस दिया जिससे वह खूनसे रंगा हुआ दिखायी देने लगा। इसके बाद वह ओटोसे जाकर मिली। उसे 'साङ्केतिक' भाषामें लिखा हुआ 'गुप्त संवाद' दिखाकर बोली—"एक बेल्जियनने मुझे यह दिया है। वह अपना नाम गुप्त रखना चाहता है। उसे यह कागजका टुकड़ा एक मरे हुए कबूतरकी टांगपर बंधा हुआ मिला। मैं इस साङ्केतिक भाषाका कोई अर्थ निकालनेमें असमर्थ हूं। इस गुप्त संवादके नीचे Y3 लिखा हुआ है। यह स्पष्ट ही किसी जासूसके गुप्त हस्ताक्षरको सूचित करता है। मुझे पता लगानेपर यह बात मालूम हुई है कि रूलेरमें जर्मनोंके विरुद्ध जासूसी करनेवाले व्यक्तियोंका दल Y श्रेणीके दलके नामसे परिचित है, और इस गुप्त दलके प्रत्येक सदस्यकी पहचान भिन्न संख्याओंसे होती है—जैसे Y1, Y2, Y3 इत्यादि।"

ओटोने अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक कागज उसके हाथसे छीनकर देखा। अत्यन्त प्रसन्न होकर वह बोला—"तुमने यह बड़ा भारी काम किया है, मार्था! मैं अभी इसे गुप्त-भाषा-वेत्ताओंके विभागमें भेजता हूं। कैसा ही गुप्त 'कोड' क्यों न हो, वहां वे लोग सबका अर्थ निकाल लेते हैं।" अपना हर्ष दमन न कर सकनेके कारण वह उठा और मार्थाके गलेसे लिपट गया!

तबसे ओटोके साथ मार्थाका प्रेमालिङ्गन बराबर जारी रहा। पर मार्था प्रत्येक पल उससे चिरकालके लिए मुक्त होनेकी चिन्तामें व्यस्त थी। इसके लिए वह मन-ही-मन कोई गोपनीय उपाय सोच निकालनेकी चेष्टामें लगी थी।

प्रायः एक सप्ताह बाद ओटोने सूचित किया कि गुप्त-भाषा-विभाग उस गुप्त नोटका कोई भी अर्थ लगानेमें असमर्थ सिद्ध हुआ है। मार्थाको भय हुआ कि कहीं वह उसकी चालाकी ताड़ न जाय। उसने ओटोके सिरके बालोंको 'प्यार' से सहलाते हुए कहा—"मुझे तो इसमें कोई गूढ़ अर्थ छिपा हुआ मालूम होता है, प्यारे ओटो! फिर एक बार इसे गुप्त-भाषा-विभागमें परीक्षाके लिए भेजो।" ओटो यद्यपि बड़ा चालाक, स्थिर-बुद्धि और कूट अनुभवी व्यक्ति था, तथापि मार्थाने उसे प्रेम-पाशमें इस तरह जकड़ लिया था कि उसकी मति मारी गयी थी। साथ ही, मार्था भी जानती थी कि वह एक ऐसे दुष्ट नागको खेला रही है जो किसी भी समय उसे अपने विषैले फनसे घायल कर सकता है।

कानेटनकी बुढ़ियाकी सहायतासे उसने ओटोके सर्वनाशका जाल रचा। उसने उससे कहा—"मुझे मालूम हुआ है कि शहरके बाहर एक निर्जन स्थानमें एक झोंपड़ीके भीतर एक तहखाना है जिसमें जर्मनीके विपक्षके गुप्तचरोंका एक अड्डा है। वहीं उन लोगोंके मिलनेका स्थान है और वहीं आफिस। आज रातको तुम और हम दोनों वहां चुपचाप जाकर इस बातकी यथार्थताका पता लगायेंगे। इस काममें खतरा जरूर है, पर हमें जर्मन जातिके हितके लिए इस खतरेको सहर्ष स्वीकृत कर लेना चाहिए!"

ओटोने पूछा—"तुम्हें वह स्थान मालूम है?"

"हां, मुझे एक गुप्त व्यक्तिने दूरसे वह स्थान दिखाया है।"

"अच्छा, तो आज अवश्य वहां चलेंगे।"

अंधेरा होते ही मार्था ओटोको साथ लेकर गुप्त स्थानकी ओर चल पड़ी। जब दोनों शहरसे बाहर पहुंचे तो वह ओटोको कुछ देर तक इधर-उधर घुमा-फिराकर एक जनहीन स्थानमें ले गयी। वहां वास्तवमें एक झोंपड़ी थी। पर वहां न तो चिराग जल रहा था, न कोई शब्द सुनायी देता था। ओटो ज्योंही दियासलाई जलाकर भीतर घुसने लगा त्योंही मार्थाने अपने 'गाउन' के भीतर छिपी हुई एक पिस्तौल निकाली और ओटोकी पीठपर गोली दाग दी। एक चीख मारकर ओटो लहू-लुहान अवस्थामें नीचे गिर पड़ा और कराहता हुआ बोला—"बेवफा! बदकार! डायन!" मार्थाने एक बार फिर उसपर फायर किया। इसके बाद वह पिस्तौल जङ्गलमें फेंककर कम्पित पदोंसे, शङ्कित हृदयसे किसी प्रकार डेरेपर वापस चली आयी।

---



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# किन्नरीके प्रति

एक बार फिर गा दो, गूंजे नव-वसन्त-मधु-का श्रीगायन !
जिन अधरोंपर चल कलियों-सी
खिल उठतीं मधुमय मुसकानें
उन अधरोंके ही परागसे
झरें सुमन-माला-सी तानें
मधुराधरसे कुसुम-राशि-सम बहे प्राण-पिकका कल-कूजन !
गाओ अपने मधुमय स्वरमें
भर जाये मधुहीन विधुर मन
भर भर आयें सूनी आंखें
आंसूसे सरसायें जीवन
कूज उठे जर जग बन मधुवन, भूले जरा-मरण-चिन्तन मन !
क्षण-भर ठहरे जीवन-सरिता
पल-भर रुके चपल-गति यौवन
सुनें शान्त हो चञ्चल लहरें
भूल एक पल कल-कल-क्रन्दन
बेसुध हो तन, बेसुध हो मन, बेसुध हो गतिमय जग-जीवन !
क्षणिक विश्व उस क्षणको भूले
जिससे क्षणिक बना यह जीवन
डूब जाय मधु-निर्झरिणीमें
अक्षय नित्य अनन्त बने क्षण
बीत जाय अवसान निशा-सम, तरुण प्रात-सा हंस ले यौवन !
एक बार फिर गा दो, गूंजे नव-वसन्त-मधु-श्रीका गायन !!

—नरेन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पञ्चवर्षीय शासनके बाद रूस

श्री छविनाथ पाण्डेय

यूरोप तथा अमेरिकाकी महाशक्तियां शुरूसे ही सोवियट शासनको बदनाम करनेके यत्नमें रही हैं। उनकी सारी चेष्टायें सोवियट शासन-प्रणालीकी बुराई दिखलानेमें ही रही हैं। अखबारोंमें उनकी बुराईके लम्बे-चौड़े लेख निकाले गये है, बड़ी-बड़ी पुस्तकें लिखी गयी हैं, बेलजियम वगैरहसे सिर्फ इसी तरहके कामोंके लिए 'प्रोपेगैण्डिस्ट' भेजे गये जिनसे रूसको संसारकी दृष्टिमें कलङ्कित करनेके लिए पुस्तकें लिखायी गयीं। उन्होंने उन पुस्तकोंमें रूसके सम्बन्धमें कितनी घृणित और दूषित बातें लिखी हैं इसका अनुमान These Russians (ये रूसी लोग) और Moscow Unmasked (मास्कोका भण्डाफोड़) नामी पुस्तकोंके पढ़नेसे ही लग सकता है। सोवियट सरकारके खिलाफ ऐसी-ऐसी गन्दी बातें उन पुस्तकोंमें लिखी गयी हैं कि पढ़नेवालोंको घृणा उत्पन्न हुए बिना नहीं रह सकती। साधारण मनुष्य, जिन्होंने रूसके सम्बन्धमें कोई साहित्य नहीं पढ़ा है, जो रूसकी वास्तविक अवस्थाका कुछ भी ज्ञान नहीं रखते, इन पुस्तकोंको पढ़कर तो यही कह उठेंगे कि "जिस शासन-प्रणालीमें इस तरहके अमानुषिक अत्याचार हो रहे हों, जिसमें कोमल मति बालकोंकी इतनी दुर्दशा हो रही हो, जिसमें मनुष्यकी हर तरहकी स्वतन्त्रताका लोप हो गया हो, जिसमें व्यक्तिका जानोमाल तथा आजादी सब-कुछ गुप्त पुलिसके हाथमें हो, उसका जितना शीघ्र अन्त हो जाय उतना ही अच्छा है। समाजवाद बुरी चीज है। उसका नाम भी नहीं लेना चाहिए।" इधर इटलीमें मुसोलिनीका फासिस्टवाद तथा जर्मनीमें हर हिट्लरका नात्सीवाद वहांके साम्यवादको दबाकर प्रकट हो गया, उससे कुछ साधारण समझवालोंके ख्यालमें यह बात भी पैदा हो सकती है कि साम्यवाद या समाजवाद—जिसकी पूर्ण सफलता रूसमें देखनेको मिली है—उत्तम प्रणाली नहीं है और जनता उसे सर्वथा स्वीकार नहीं कर सकती।

अस्तु। पर रूसने इन अपवादों, इन आक्रमणों और इस प्रकारके प्रचारोंकी जरा भी परवा नहीं की। वह अपना पञ्चवर्षीय कार्यक्रम लेकर उसीमें तल्लीन रहा। इस पञ्चवर्षीय कार्यक्रमके बाद आज रूसकी क्या दशा है, यही इस लेखमें दिखलानेका यत्न किया जायगा। रूसकी वर्तमान दशाके सम्बन्धमें लिखते हुए अमेरिकाके प्रसिद्ध लेखक मारिस हिण्डसने लिखा है:—

"इस पञ्चवर्षीय कार्यक्रमके पहले यदि रूसके खिलाफ युद्धकी घोषणा कर दी गयी होती या बाहरसे माल भेजना बन्द कर दिया गया होता या नाकाबन्दी कर दी गयी होती तो रूसकी हालत एकदम नाजुक और चिन्ताजनक हो जाती। आज भी कठिनाई उपस्थित हो सकती है, पर अब वह पुरानी बातें नहीं रहीं। यदि आज रूसको किसी तरह युद्धमें प्रवृत्त होना पड़े तो वह युद्धकी सभी सामग्री अपने घरमें ही प्रस्तुत कर सकता है। गत पांच वर्षोंमें रूसने धातुसे सामान तैयार करनेके अनेक कारखाने खोले हैं, जो रूसमें पहले कभी नहीं थे। यूरालमें कोयले तथा साइबेरियामें लोहेकी बड़ी-बड़ी खानें उसे मिल गयी हैं। इससे रूसको बड़े-बड़े कल-कारखाने खोलनेकी सुविधा मिल गयी है, जिनमें वह हर तरहकी बड़ी-बड़ी मशीनें तैयार करने लग गया है।"

रूस कृषि-प्रधान देश है। रूसकी सबसे बड़ी आवश्यकता खेतीके लिए सामान तैयार करनेकी है। सोवियट सरकारका सबसे पहला ध्यान उसी ओर गया है। इन पांच वर्षोंमें खेतीको सफल और उन्नत बनानेके लिए बड़े-बड़े उत्तम और समीचीन यन्त्र तैयार किये गये हैं। कपड़ेका कारखाना हर प्रान्तमें खोल दिया गया है। अब मास्को ही कल-कारखानोंका केन्द्र नहीं रह गया है। यूराल और साइबेरिया प्रान्तमें कल-कारखानोंकी जो उन्नति हुई है उसे देखकर चकित रह जाना पड़ता है। सचमुच सोवियट सरकारने रूसकी काया पलट दी। अब जहां देखिये वहां कल-कारखाने ही दिखायी देते हैं, जिनका जारशाहीमें कहीं दर्शन तक नहीं हुआ था।

पांच वर्षका समय बहुत ज्यादा नहीं कहा जा सकता। उसपर भी रूसकी कमीका ध्यान रखना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रूसी जनता अनुभवहीन और पिछड़ी हुई थी। विश्वके बाजारमें रूसकी साख नहीं थी। यूरोप और अमेरिकाकी बड़ी-बड़ी शक्तियां रूसको बदनाम करने और सोवियट सरकारको गिरानेके यत्नमें लगी हुई थीं। मञ्चूरियासे बराबर झगड़ा छिड़ा रहा, साथ ही पूर्वीय और पश्चिमी प्रान्तोंमें भी पूरी शान्ति नहीं बनी रही। इन कठिनाइयोंका सामना करते हुए भी रूसने जो सफलता प्राप्त की है वह असाधारण है। सबसे प्रशंसाकी बात तो यह है कि इतना बड़ा काम सोवियट शासनने बिना किसी बाहरी सहायताके कर डाला है।

एक बात और भी ध्यानमें रखनेकी है। इस पञ्चवर्षीय कार्यक्रमके तीन वर्ष तो बड़ी ही कठिनाईके युगमें बीते। इस समय विश्वमें हलचल मची हुई थी। बाजार मन्दीपर था। बैङ्कोंका दिवाला निकल रहा था। कल-कारखाने बन्द हो रहे थे और लाखों मजूर बेकार होते जा रहे थे। मजूरोंकी मजूरी दिन-दिन घटायी जा रही थी। इस विकट परिस्थितिमें भी रूसने बड़ी सफलतासे काम किया।

कृषि-विभागमें रूसने आशातीत सफलता प्राप्त की है, यद्यपि इस क्षेत्रमें उतना कार्य नहीं हो सका है जितना होना चाहिए। इस कमीका प्रधान कारण रूसके निवासियोंकी जड़ता है। प्राचीन प्रथा और प्रणालीके वे इस प्रकार उपासक हो गये हैं कि उसे त्यागकर नयी प्रणालीसे खेतीका काम करना उन्हें रुचिकर नहीं प्रतीत होता। इसीलिए उन्होंने नयी-नयी कलों और औजारोंको बहुत धीरे-धीरे अपनाया है। तो भी कृषि-विभागमें आशातीत उन्नति हुई है। इसका अन्दाजा मि० मारिस हिण्डसके निम्नलिखित कथनसे मिल जाता है:—

"१९१५ में रूसमें सिर्फ पांच कृषि-कालेज थे, जिनमें सिर्फ ३३०० छात्र शिक्षा पा रहे थे और १६ केन्द्र थे, जहां सिर्फ १६०० छात्रोंको खेतीका काम सिखलाया जाता था। लेकिन १९३२ में ऐसे कालेजोंकी संख्या १५२ हो गयी, जिनमें ८४,००० छात्रोंको शिक्षा दी जाने लगी। केन्द्रोंकी संख्या ९६७ हो गयी, जिनमें २०७,००० छात्रोंको खेतीका काम सिखलाया जाने लगा। इसके अलावा ३२१ छोटे स्कूल खोल दिये गये, जिनमें साधारण शिक्षा दी जाने लगी है। माडल फार्मोंकी संख्यामें तो और भी ज्यादा उन्नति हुई है। सोवियट सरकारके पहले रूसमें केवल २०० माडल फार्म थे, पर १९३२ में उनकी संख्या १९८७ हो गयी।"

अब देखना यह है कि इससे शिक्षा और लोगोंके सामाजिक जीवनपर कितना प्रभाव पड़ा। सोवियट शासनका मूल सिद्धान्त राष्ट्र है। राष्ट्र सबकी सम्पत्ति है। प्रत्येक नागरिक राष्ट्रकी सम्पत्ति है और राष्ट्रका काम है कि वह प्रत्येक नागरिकके सुख और शान्तिके लिए यत्न करे। तरुण रूस इसका अक्षरशः पालन कर रहा है। रूसके युवक और युवतियां आज व्यक्तित्वको भूल गये हैं, सङ्कीर्णताका उनमें लेश नहीं है। उनका लक्ष्य सोवियट-सङ्घ है और उसीके लिए जीना तथा उसीके लिए मरना वे अपना परम कर्तव्य समझते हैं। धर्मके ढकोसलेसे वे सर्वथा मुक्त हो रहे हैं। यूरोपके बड़े-बड़े राष्ट्रोंकी भांति रूसमें गिरजोंके लिए बड़ी-बड़ी सम्पत्तियां आज देखनेको नहीं मिलतीं जैसा प्राचीन समयमें था, अर्थात् समाजवादमें व्यक्तित्वका लोप हो गया है।

सोवियट सरकारपर सबसे बड़ा कलङ्क यह लगाया जाता है कि उसने स्त्रियोंको राष्ट्रकी सम्पत्ति बना दिया है। जिन लोगोंने इसका अभिप्राय नहीं समझा है वे तो यही सोचते होंगे कि सोवियट सरकारने स्त्रियोंको सबकी सम्पत्ति बना दिया है, जो चाहे उन्हें रख सकता है। अर्थात् वे सबकी हैं और किसीकी नहीं। पर वास्तविक बात ऐसी नहीं है। प्राचीन रूसमें स्त्रियोंका कोई स्थान नहीं था। गुलामोंसे भी खराब उनकी हालत थी। उनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं थी, कोई मर्यादा नहीं थी; उन्हें समाजके अन्दर कोई हक प्राप्त नहीं था। सोवियट सरकारका पहला ध्यान इस ओर गया और उसने स्त्रियोंको राष्ट्रकी सम्पत्ति बनाकर उन्हें एक अधिकार दे दिया जो उन्हें कभी भी प्राप्त नहीं था। स्त्रियोंकी प्रतिष्ठा और मर्यादाका जितना अधिक ख्याल इस समय रूसमें किया जा रहा है उतना पहले कभी नहीं किया गया था, और इसीका परिणाम है कि सोवियट रूसकी सफलतामें सबसे ज्यादा हाथ इन स्त्रियोंका ही है।

वेश्यावृत्ति साधारण रोग है। कम या ज्यादा वह सभी देशों और राष्ट्रोंमें वर्तमान है। सोवियट रूसमें वेश्यावृत्तिकी चर्चा करते हुए श्री मोरिस हिण्डसने लिखा है—"वेश्यावृत्ति धनका उन्माद है। जिस देशमें जितना ज्यादा व्यक्तिगत धन होगा वहां उतना ही ज्यादा वेश्यागमन होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वेश्यावृत्तिको सिर्फ समाजवादी शासनमें ही बन्द किया जा सकता है। यदि कोई चाहे कि सिर्फ सदाचारकी शिक्षा देकर अथवा कानून बनवाकर वेश्यावृत्ति रोक दे तो वह भारी भूल करता है। इस तरहके अध्यवसाय कभी सफल नहीं हो सकते। इसका अन्त तभी हो सकता है जब उसकी जड़पर कुठाराघात किया जाय।"

शिक्षामें तो सोवियट सरकारने करामात की है। क्रान्तिके पहले बोलशेविक नेता शिक्षाकी ओर उतने तत्पर नहीं थे। उनका ख्याल था कि राजनीतिक अधिकारको प्राप्त कर लेनेपर सारा काम आपसे आप ही सिद्ध हो जायगा। इसलिए उन्होंने अपनी सारी शक्तिको उसी ओर लगाया और केवल अधिकार पानेकी ही धुनमें लगे रहे। पर उन्हें अपनी यह भूल शीघ्र ही मालूम हो गयी और रूसके शासनपर कब्जा करते ही उन्होंने अनिवार्य शिक्षाका कार्यक्रम अपने सामने रखा। क्रान्तिके समाप्त होनेके बाद ही लेनिनने कहा था—"जब तक जनता शिक्षित नहीं हो जाती तब तक उसमें राजनीतिक विकास नहीं हो सकता। अशिक्षित जनताके सामने राजनीतिकी चर्चा नहीं हो सकती। वे तो उसे तमाशा या नानीकी कहानी-मात्र समझेंगे।" इस उद्देश्यको सामने रखकर सोवियट सरकारने शिक्षाके प्रचारके लिए जो भगीरथ प्रयत्न किया है उसका फल नीचे दिया जाता है।

१९१४-१५ में प्रारम्भिक स्कूलोंमें मुश्किलसे ७,०००,००० छात्र और सेकेण्डरी स्कूलोंमें ५००,००० छात्र थे।

१९३२ में १९,०००,००० छात्र प्रारम्भिक स्कूलोंमें और ४,५९०,००० छात्र सेकेण्डरी स्कूलोंमें हो गये थे।

उसी तरह विश्वविद्यालयोंकी शिक्षामें भी विस्मयजनक उन्नति हुई है।

१९१४-१५ में विश्वविद्यालयोंमें सिर्फ १,२५,००० छात्र थे और २,६७,००० छात्र व्यावसायिक तथा नाना प्रकारकी टेक्निकल शिक्षा पा रहे थे।

१९३२ में विश्वविद्यालयोंके छात्रोंकी संख्या बढ़कर ५ लाख हो गयी और व्यावसायिक तथा टेक्निकल शिक्षा पानेवाले छात्रोंकी संख्या ८,९०,००० हो गयी। इसके अलावा ११ लाख छात्र कारखानोंके स्कूलोंमें शिक्षा पाने लगे।

१९२० में ६० प्रति सैकड़े पुरुष तथा ७० प्रति सैकड़े स्त्रियां अथवा कुल आबादीके प्रायः ६८ प्रति सैकड़े मूर्ख तथा अपढ़ थे।

१९३२ में सिर्फ ९ फीसदी लोग अपढ़ रह गये थे।

१९१४-१५ में अनिवार्य शिक्षा स्वप्नकी बात थी।

१९३१ में ऐसे स्कूल खोल दिये गये थे जिनमें ८ से ११ वर्ष तकके लड़कोंको अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा दी जाने लगी।

शीघ्र ही अनिवार्य शिक्षाकी उम्र ८ वर्षसे ११ वर्ष तक उठाकर ८ से १२ वर्ष कर दी जायगी। नगरों तथा व्यावसायिक केन्द्रोंमें तो यह उम्र ८ वर्षसे लेकर १९ वर्ष तक कर दी गयी है। दो वर्षके बाद यह उम्र १९ से १७ कर दी जायगी। देहातोंमें भी यही क्रम जारी किया जायगा। अर्थात् ८ वर्षसे लेकर १७ वर्ष तककी आयुके लड़कोंके लिए शिक्षा अनिवार्य हो जायगी।

उसी तरह सैनिक शिक्षा भी अनिवार्य है। सैनिक शिक्षामें इस बातपर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है कि युवकोंमें सङ्कीर्ण भावका उदय न होने पाये। राष्ट्रीयताके उदार भाव उनमें कूट-कूट कर भरे जाते हैं। इस राष्ट्रीय विकासपर शिक्षाके हरएक अङ्गमें ध्यान दिया जाता है।

इस समयकी हालत देखकर यही आशा की जाती है कि अगले पांच वर्षके कार्यक्रमके समाप्त होते-होते सोवियट रूस संसारमें एक आदर्श राष्ट्र हो जायगा। पर इस उद्देश्यको पूरा करनेके लिए उसे शान्ति चाहिए, बाधाओंसे रहित होना चाहिए और सबसे अधिक चाहिए एकाग्रता। लेकिन संसारके साम्राज्यवादी रूसकी इस उन्नतिके क्रमको चलने देना नहीं चाहते। साम्राज्यवादी राष्ट्रोंको सबसे अधिक भय रूससे है। शक्तिशाली सोवियट सरकार साम्राज्यवादकी कट्टर शत्रु होगी और उपनिवेशोंके ऊपर अधिकार जमाकर जो मौज आज उड़ायी जा रही है उसका अवश्य ही वह अन्त कर देगी। उसके निमित्त ये साम्राज्यवादी राज्य सोवियट सरकारके विरुद्ध प्रचार करनेसे कभी बाज नहीं आयेंगे। रूसके राजनीतिज्ञ भी इस बातको भली भांति समझते हैं और सतर्क हैं। वर्तमान रूस सचमुच साम्राज्यवादियोंके लिए एक विकट समस्या है।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अन्तर्द्वन्द्व

श्री परमानन्द शुक्ल

आज कई दिनोंके बाद मोहर घर लौट रहा था—अनिच्छा, निरुत्साह और घृणासे भरा हुआ। उसके पैर जैसे आगे बढ़ते ही न थे। वह दूर हो रहा है—अपने कल्पना-जगत्की उर्वशीसे! सोचते-सोचते वह ठिठक गया। पास ही रासीकी शान्त, तरल धारा प्रवाहित हो रही थी, अपनी धुनमें भूली हुई, मानों उसे संसारके सुख-दुःखसे कोई सम्पर्क ही नहीं।

सूर्य ढल चुका था। फिर भी वहांसे उसका गांव साफ दिखायी पड़ता था। किन्तु अभागेने आंखें बन्द कर लीं—कल्पनाका नन्दन उपवन सामने आ गया। वायुके निराधार झोंकेकी तरह वह उसमें मचल पड़ा—उड़ने लगा! अकेला ही नहीं—वह और सुखिया दोनों! उस नन्दन-निकुञ्जमें! इस भौतिक जगत्से परे!

किन्तु अचानक उसे झटका-सा लगा—वह बंधा जान पड़ा। स्वच्छन्द रूपसे उससे दूर तक उड़ा नहीं जाता था। उसकी उर्वशी हंसती हुई उड़ी जा रही थी—उसे भी उड़नेके लिए बुला रही थी। और इधर दो दुबले-पतले बच्चोंके साथ उसकी विवाहिता अपने आंसुओंके बन्धनमें उसे बांधे थी—उसके आंसुओंकी गीली डोरी मोहरसे टूटती न थी! मन-विहग फड़फड़ाकर लाचार हो रहा था। उसने देखा—वह कुछ बोल नहीं रही है। उसे बस रोना आता है—रो रही है। बच्चे "दादा! दादा!" कहते हुए शरीरसे चिमटे जा रहे हैं। कह रहे हैं—"कहां जा रहे हो दादा! मुझे न ले चलोगे? ऊँ···, हम जाने न देंगे·····।" और उधर सुखिया कह रही थी—"पिछड़े क्यों जा रहे हो? वह देखो कुसुम-कानन! वहां चलो। वहांपर केवल दो ही रहेंगे। तुम और मैं। आह! बढ़े आओ!·····आओ!"

आकुल हृदयसे दर्द-भरी आह उठी। कल्पनाका स्वप्न टूट गया। शरीरमें चेतनता आयी। देखा—अंधियारी, नीरवता बढ़ती जा रही है। किन्तु रासीकी धारा उसी प्रकार धीमी लहरोंके साथ—उसी धुनमें प्रवाहित हो रही है।

एकाएक उसके हृदयमें यह उठने लगा—"मैं सुखियासे अलग हो रहा हूं—घर चल रहा हूं। किन्तु किसके लिए? घरपर है ही कौन? जिरिया? जो बराबर मुझपर अधिकारका अंकुश जमाये रहना चाहती है? जिसकी सूरतसे ही हृदयमें घृणाकी ज्वार बढ़ आती है! और·····और उसके साथ उसके दो बच्चे! विपद और मुनियां! छिः घर पहुंचते ही भूखे कुत्तोंकी तरह हड्डियां नोचने लगेंगे—दादा! भूख लगी है! हाय! भूख! जिरिया तो सीधी बातोंकी अपेक्षा व्यङ्ग-बाणसे हृदय बेधने लगेगी—इतने दिनोंसे घर नहीं गया! बस, इसीलिए अपने हृदयकी रानीसे अलग हो रहा हूं? व्यर्थ!"

वह घूम पड़ा।

वह अब फिर सुखियाके घरकी ओर बढ़ने लगा। पैर उछलते जा रहे थे। मानो वह किसी गर्तसे निकलकर भाग रहा है! रात हो रही थी। वह मकानपर पहुंचा। सुखिया उसे देखकर आश्चर्य-चकित-सी कहने लगी—"अरे, तुम्हें तो मैंने घर जानेको कहा था, क्या आज भी नहीं गये?"

"जा तो रहा था। लेकिन गांवके पाससे लौट आया। क्या करता, हृदय न माना।" कहकर मोहर प्यारकी दृष्टिसे उसे देखने लगा—जैसे उसके लिए सुखियाको छोड़कर और कहीं सुख नहीं।

स्त्री-हृदय प्यारके इस अगाध स्रोतमें तिरने लगा। वह सोचने लगी—मोहर मुझे कितना अधिक चाहता है! आज इतने दिनोंसे अपनी विवाहिता और बच्चोंको छोड़कर यहीं रहने भी लगा। बार-बार कहनेपर भी वह घर नहीं जा रहा है। किन्तु·····।"

वह सोचती जा रही थी—। मोहरने अंगड़ाई लेते हुए दुहराया—"हृदय नहीं मानता। घरपर रखा ही क्या है?"

सुखिया उस चिन्तनसे सजग हुई। आंखें मिलाकर, एक लम्बी सांसके साथ उसने कहा—"पागल मत बनो। भगवान्ने तुम्हें स्त्री, बच्चे दिये हैं। मैं तुम्हारे साथ न रहूंगी—मुझे सौत कहलानेकी इच्छा नहीं। उहुं, मैं कदापि न रहूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मोहर चुप था। वह फिर कहने लगी—"इतने दिनोंसे मैं कह रही हूं। तुम घर नहीं जाते—आखिर उन्हें भी तो तुम्हारा ही आशा-भरोसा है।"

अब उसे कुछ जवाब मिला—"मर जाय ऐसी स्त्री। विवाहिता नहीं, वह हरजाई है। उसे मेरा भरोसा क्यों होगा?"

"कुछ भी हो। मैं यह सब नहीं जानती। मैं तुम्हें चाहती हूं—प्यार करती हूं अवश्य। किन्तु साथ ही मैं सौत भी बनना नहीं चाहती।"—सुखियाने दृढ़ताके साथ कहा।

मोहरका हृदय बैठ गया। हृदयमें प्यारकी—वासनाकी—मीठी टीस उठ रही थी। अब वह उसे आंसुओंके द्वारा बाहर निकालने लगा।

किन्तु सुखियाका ध्यान इधर न था। वह दूसरी ओर मुंह किये बैठे-बैठे कुछ सोच रही थी—बीते हुए दिन याद आ रहे थे। उसने अपने पहले पतिकी मृत्युके बाद एक दूसरेके साथ सगाई की, जिसकी पहली पत्नी जीवित थी। मगर मजबूरी थी। दूसरा कोई उपयुक्त न मिला। वह कारखानेमें काम करता—बारह आने रोज मिलते थे। घरका काम गांवके एक बाबू साहबके यहांसे चल जाता। रातमें वह उन्हें आल्हा, लोरी आदि गीत सुनाता। वह नयी-नयी आयी थी। उसकी सौत उससे डरती। आनन्द-ही-आनन्द था। किन्तु कुछ ही दिनोंके बाद रङ्गमें भङ्ग हो गया! गांवके बाबू साहब बड़े रसिया जीव थे। वह रूपवती तो थी ही। उनके घर आती-जाती भी। मौकेसे हंसी-मजाक भी हो जाया करता। देखते-देखते दोस्ती पानीकी तरह बढ़ गयी। पति दिनभर कारखानेमें रहता। बातें केवल दो ही व्यक्तियोंके हृदयमें थीं। किन्तु एक दिन उसकी सौतने देख लिया! फिर क्या था? उसकी बन आयी। झूठी-सच्ची मिला-कर उसने पतिके मनमें उसके प्रति सन्देह भर दिया। बातें बढ़ गयीं। उसका पति साधारण बातोंमें बेतरह पीटता। किन्तु बाबू साहबका प्रेम कम होनेकी अपेक्षा बढ़ता ही गया। और अन्तमें उसे घर छोड़ देना पड़ा! अब वह यहां बड़े आनन्दके साथ रहती है! बाबू साहबसे भी लुक-छिप-कर कभी-कभी मुलाकात हो जाया करती है! किन्तु अब मोहर फिर वही बात उपस्थित करना चाहता है! शादी होनेपर फिर वही अड़चनें आयेंगी। उहूं···सौत बनना—शादी करना ठीक नहीं।

उसने निश्चय कर लिया—शादी करना ठीक नहीं।

मोहर बड़ी देर तक निश्चेष्ट बैठा रहा। वासनाओंके झोंके पूर्व-पवनकी तरह आकर हृदयमें सिहरन भर रहे थे। वह सुखियाको हृदयसे लगाये जीवनकी विभावरीको व्यतीत करना चाहता था, परन्तु वह राजी न थी।

उसकी अनिच्छा रहनेपर भी वह वहीं लेटे-लेटे सोचने लगा। सुखिया कुछ समयके लिए बाहर चली गयी! जब वह लौटकर आयी, उस समय वह सो गया था।

[ २ ]

जिरिया कुछ सोच न सकती थी। जरा-सी चूकपर इतना क्रोध! उसका शरीर अब तक दर्द कर रहा था। आखिर कसूर ही क्या था! यही न कि वह जमींदार बाबूके घर चक्की चलाने जाती? किसके भरण-पोषणके लिए? बच्चोंके ही लिए तो! फिर इसमें कौन-सी ऐसी बात थी जो उस-पर इतनी मार पड़ी? चोट खाकर भी तो वह शान्त थी। हां, दुःखित होकर उसने केवल यही कहा था—"मार मत डालो राजा! घरमें कुछ न रहनेके ही कारण तो जाती हूं! बच्चे तो भूखे नहीं रह सकते? फिर भी अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं अब अपने नैहर चली जाऊंगी। बच्चोंको लेकिन दुखी नहीं देखूंगी।" इसीपर वह उतावला हो गया! छिः! यह उसकी अहम्मन्यता नहीं तो और क्या थी? उसे दूनो मार सहनी पड़ी। मोहरने बिगड़ कहा था—"तू क्यों कहीं जायेगी। मैं स्वयं ही घर छोड़ देता हूं।"

तबसे इतने दिन हो गये! वह घर न आया!

सांझ हो गयी थी। उस छोटी-सी झोपड़ीको अन्धकार अच्छी तौरसे घेरे था—प्रकाशकी एक रेखा भी न थी। मुनियां भूखके कारण रोती-रोती सो गयी। किन्तु विपद सोता न था। कहता था—"बड़ी भूख लगी है मां, बिना कुछ खाये न सोऊंगा।" आंसुओंको दबाते हुए जिरियाने धैर्यके साथ कहा—"सो जा मेरे लाल! तेरे दादा बाहर गये हैं, वहांसे बताशे लायेंगे। रह मैं एक गीत सुनाऊं।" वह बालकको थपकियां देती हुई करुणा और क्षोभसे भरे हुए कण्ठसे एक देहाती गीत गुनगुनाने लगी, जिसका आशय इस प्रकार था—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"मेरा कुछ भी दोष न था—
मेरे प्रीतम मुझसे रूठकर चले गये !
मेरे आंगनके काग ! यदि मेरे स्वामी मुझपर
कृपा करके लौट आयें तो मैं तुझे तृप्त कर दूं।
मैं उनके लिए कोयलकी तरह
कुहक रही हूं—रात-दिन उनकी यादमें गली
जा रही हूं—किन्तु उन्हें दया नहीं आ रही है—
वह आ नहीं रहे हैं !"

बालक कुछ समझता न था, केवल सङ्गीत-लहरियोंमें ही भूल रहा था। जिरिया रोती जा रही थी—गाती जा रही थी। आंखोंसे आंसूकी बूंदें अपना कुछ अस्तित्व न रखती हुई उस अन्धकारमें विलीन होती जा रही थीं। थोड़ी देरमें अबोध बालक सो गया। किन्तु जिरिया इतने सवेरे कैसे सो जाती ? वह अब चुप थी। मस्तिष्कने अपना कार्य आरम्भ किया। वह लेटे हुए बच्चेको कभी-कभी थपकियां देती हुई सोचने लगी—स्त्रीके लिए पति ही सर्वस्व है। किन्तु मैं कितनी अभागिन हूं, अपने स्वामीको प्रसन्न न रख सकी ! विवाहके कुछ ही दिन बाद मुझसे दूर-दूर रहने लगे। तरसती रह गयी—पतिके प्यारके लिए। कभी भी तो मुंह-भर बोल लेते ! आखिर मेरा अपराध ही क्या है ? मैं तो अपने जान कोई ऐसा काम नहीं करती, किन्तु फिर भी मेरी अच्छीसे-अच्छी बातें भी उन्हें बुरी लगती हैं। वह चार पैसेकी आमदनी करते हैं। परन्तु मैं कभी देख नहीं पाती। जो कुछ पाते हैं योंही उड़ा देते हैं। मैं यह नहीं चाहती कि वह कमाकर मुझको दें, पर कमसे कम बच्चोंको तो सुखी रखते ! इधर एक महीनेसे घर आना भी छोड़ दिया ! सुनती हूं किसी स्त्रीसे प्रेम करते हैं—उससे शादी करना चाहते हैं। तो कर ही क्यों नहीं लेते ? क्या दो-दो स्त्रियां नहीं रहतीं ? मैं तो वही चाहती हूं जिसमें उन्हें सुख हो ! अब भी दुनिया उन्हें मेरा पति कहती है और तब भी कहेगी। आह ! शायद इसीलिए उन्होंने घर आना भी छोड़ दिया। हे भगवान् ! यदि वह इधर भूलकर भी आ जाते तो मैं उन्हें समझा देती। इससे बच्चे तो सुखसे रहते।"

हृदयमें यह आशा होने लगी कि वह अवश्य ही इस बातको मान लेंगे। वह अब प्रसन्न थी—सुखमयी भावनाओंके नीरव झोंके आने लगे। कुछ देर तक वह इस क्षणिक एवं आकस्मिक सुखका अनुभव करनेके उपरान्त, कल्पनाकी शीतल छायामें थकी-सी सो गयी !

* * *

गुलाबी ऊषाकी किरणें उसकी झोपड़ीमें फैली थीं। पास ही नीमके पेड़पर चिड़ियां कलरव कर रही थीं। इसी समय उसके सौभाग्यकी लाली फूट पड़ी। मोहर इतने दिनोंके बाद आ गया और शान्त-भावसे बोला—"मुनियां, जरा पानी ला !" पतिके वचन सुनते ही जिरिया कांप-सी उठी ! चाहा, आंखोंके निर्मल जलसे ही पात्र भर दे और कह दे—"यह लो नाथ ! मैं कबसे नयनोंकी गागर भरे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही थी।" किन्तु शरीर शिथिल था—कण्ठ अवरुद्ध। बड़ी कठिनाईके बाद वह कह पायी—"मुनियां अपने ममेरे गयी है ! शायद कल-परसों तक आये। यह लो पानी।"

जल लेकर मोहर शौचको चला गया। जिरियाने इधर दो-तीन दिनसे भोजन नहीं बनाया था। आखिर बनाती भी कहांसे ? उसी दिनसे वह चक्की चलाने न गयी ; किन्तु आज वह दौड़ गयी और जाकर मालकिनके यहांसे आटा-दाल ले आयी। उसने अपनी प्रसन्नताका कारण भी बतलाया; किन्तु रुकी नहीं, शीघ्र लौट आयी। अब तक विपद भी सोकर उठ गया था। जिरिया बड़े प्यारके साथ विपदके माथेपर हाथ फेरती हुई कहने लगी—"तेरे दादा आ गये, विपद !" बालक प्रसन्नताके मारे नाच उठा और पिताके आते ही गरदन पकड़कर लिपट गया और कहा—"दादा !"

मोहरने अनिच्छाके साथ उसे अलग कर दिया। जिरियाने देखा—और फिर भी अपनेको उदास न होने दिया। प्यारकी सरिता उसके हृदयमें उसी प्रकार उमड़ रही थी।

घरमें कुछ भूने हुए चने थे। उसने लाकर कलेऊके लिए रख दिया, और स्वयं भोजनका प्रबन्ध करने लगी।

जिरियाके मनमें रह-रहकर उपजता कि अभी वह पूछेंगे कि "तू किस प्रकार रहती थी ? कैसे भोजनका प्रबन्ध होता था ?" तो इसके उत्तरमें मैं आंसुओंकी लिपिमें अपनी सारी वेदनायें अङ्कित कर देगी। किन्तु मोहरने एक बात भी न पूछी। वह फिर भी प्रसन्न थी। यही सोचकर कि "यदि मेरा ध्यान न होता तो आते ही क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रसोई तैयार होनेपर मोहर भोजन करने बैठा। जिरिया उसे ललचायी हुई दृष्टिसे देख रही थी। उससे छिपाकर स्नेहके अश्रु-बिन्दुओंसे अपना आंचल तर कर रही थी। मोहर मौन था—नीचे मुख किये भोजन कर रहा था। खानेसे जैसे अरुचि हो—पानीके घूंटसे उसे नीचे उतार रहा था। वदनपर गम्भीरता थी और आंखोंमें लालिमा—जैसे रातभर नींद न आयी हो। रह-रहकर वह लम्बी सांसें भर लेता।

जिरियाकी प्रसन्नता दुर्भावनाओंके कारण कुम्हला गयी। थोड़ा-सा खाकर मोहर उठने लगा। जिरियाने अनुरोध किया—"कुछ भी तो नहीं खाया, थोड़ा और खा लो!"

मोहर कुछ बोला नहीं। उठ गया।

जिरियाने बिछावन लगा रखा था। मोहर जाकर लेट गया। सागरकी तरह हृदयमें लहरें उठ रही थीं, किन्तु निराशाकी चट्टानसे टकराकर रह जातीं। सुखिया और उसके बीचमें जिरिया दीवालकी तरह खड़ी थी। सब-कुछ होनेपर भी, वासनासे तड़पते हुए दो हृदय आपसमें मिल नहीं सकते थे। वह सोचने लगा—"सुखिया मुझे चाहती है—जी-जानसे चाहती है; किन्तु वह सौत भी बनना नहीं चाहती। बस, इसीलिए एक-दूसरेसे प्रेम करनेवाले दो हृदय मिल नहीं सकते.....।"

"यह लो हुक्का चढ़ाकर लायी हूं, पी लो!"—जिरियाने जैसे बाधा डालते हुए कहा।

दो-चार फूंक लगाकर उसने हुक्केको अलग रख दिया। किन्तु जिरिया उसके पैर दबा रही थी। मोहरने दो-एक बार मना किया, पर उसने न माना—पैर दबाती रही। अब उसने व्यर्थमें अपनेको बकवादमें डाले रहना पसन्द न किया। जिरिया उसका पैर दबा रही थी—और वह चिन्तामें मग्न था। वह सोच रहा था—"जब तक जिरिया है, सुखिया मुझसे शादी नहीं कर सकती। आखिर इसका उपाय? कई बार इसे पीटा भी—महीनों घर न आया—फिर भी तो यह अभागिन कहीं चली न गयी!"

उसने घृणा और अनिच्छाके साथ जिरियाकी ओर देखा—वह पैर दबा रही थी। कुछ मुसकराती हुई—कुछ रोती हुई। आंखोंसे जैसे प्यारकी मधु-वर्षा हो रही थी।

किन्तु मोहरके हृदयपर उसका कोई प्रभाव न पड़ा। फिर भी उसने घृणाको दबाते हुए नम्रतापूर्वक धीमे स्वरमें कहा—"जा तू भी खा ले। मैं अब सोऊंगा।"

वह जैसे अब तक किसी स्वप्न-लोकमें थी—जाग पड़ी। बोली—"आज तो मेरा व्रत है, शामको कुछ फलाहार कर लूंगी।"

मोहर उसे हटाना चाहता था—जिरिया उससे लगी जा रही थी। दीवाना प्यार इन दो विपरीत दशाओंके बीचमें कलहास कर रहा था।

वह फिर सोचने लगा—"यह निश्चय है, यह मुझे सहज ही छोड़ नहीं सकती है। तो इसे ही इसके जीवनसे छुटकारा क्यों न दिला दूं, कण्टक ही मिट जाय!"

वासनाकी आंचसे तपते हुए मनमें यह बात आते ही उसकी धमनियोंमें तेजीसे रक्त दौड़ उठा।

".....जिरियाकी मृत्यु ही सुखियासे मिलन करा सकती है।".....उसके हृदयकी गति तीव्र होती जा रही थी—".....फिर तो सुखियाको शादी करनेमें कोई आपत्ति नहीं होगी। तो बस, यही ठीक है!" उमड़ती हुई नदीके बीचमें जैसे किसीने पत्थरकी दीवाल खड़ी कर दी थी। सहसा वह कुछ टूट गयी। सरिताकी धारा तेजीसे बढ़ चली। उसने जैसे सुखियाको इतनी देरके बाद हृदयसे लगा लिया!

जिरिया अब तक उसका पैर दबा रही थी। सोच रही थी, व्रतका उसे सद्यः फल प्राप्त हो गया। उसके पति घर आ गये। अब वह कभी उनकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम न करेगी।

उसने बड़े प्यारसे पतिकी ओर आंखें उठायीं—उसकी मुद्रा बड़ी भयानक हो रही थी। आंखें अङ्गारेकी तरह लाल-लाल! सांसोंमें विचित्र तेजी। वह रह-रहकर अपना होंठ चबा रहा था। जिरियाका प्यारसे उछलता हुआ हृदय आहत होकर फिर बैठ गया। आंखें सजल हो आयीं।

मोहर भी अब उठा और बोला—"अगर आज व्रत है तो जा सवेरे नहा-धो ले। मैं खेतकी ओर चलता हूं। वहीं आना, कन्दे दूंगा—फलाहारके लिए।"

दूसरे ही क्षण जिरियाको किसीने फिर आशा बंधायी—हृदयमें वही उमङ्ग फिर उमड़ आयी। दोनों उठ गये।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



[ ३ ]

इतने दिनोंके बाद जिरियाने आज शृङ्गार किया था। पीले रङ्गमें रंगी हुई अपनी पुरानी साड़ी पहने थी। मांगका सिन्दूर उसके अनुरागका रङ्ग पाकर और गहरा हो रहा था।

झोपड़ीके सामनेवाले पीपलके नीचे रखी हुई शिवकी मूर्तियोंका बड़ी श्रद्धाके साथ पूजन किया—धूप जलाकर कुछ मीठा चढ़ाया। प्रसादके साथ थोड़ा-सा जल पीकर वह खेत जानेके लिए प्रस्तुत हुई। इसी समय विपद मचल पड़ा—"कहां जा रही है मां! मैं भी चलूंगा।"

जिरियाने बड़े प्यारके साथ कहा—"यह मीठा तब तक खाओ—मैं अभी आती हूं बेटा!" पर वह रोने लगा। जिरिया उसे गोदमें उठाकर चल पड़ी। पास ही खलिहानमें सुखारी बुढ़िया बैठी थी, उसने कहा—"कहां जा रही है जिरिया?" जिरियाने कुछ लजाते हुए उत्तर दिया—"खेत जा रही हूं, उन्होंने बुलाया है! क्या करूं विपद नहीं मानता....."

"क्या मोहर आ गया?"—बुढ़ियाने जैसे आश्चर्यके साथ पूछा।

"हां, आ गये।"

बुढ़ियाको बातें करनेकी—किसीका सुख-दुःख सुननेकी विशेष रुचि थी। उसका अधिक समय इसीमें बीतता, किन्तु जिरियाको आज फुरसत नहीं थी। बुढ़िया कुछ और पूछना चाहती थी कि उसने बात काटकर कहा—"विपदको अपने साथ बैठा लो दादी! इसे कहां लिये जाऊं?"

बुढ़ियाने कहा—"आ रे विपद, तू तो आज दिन-भरसे न आया—आ तुझे सोन-चिरैयाकी कहानी सुनाऊं!"

विपद उसके पास चला गया—माताके बाद वह बुढ़िया-को ही जानता-मानता था।

जिरिया आगेकी ओर बढ़ने लगी। थोड़ी देरमें छोटे-छोटे झोपड़ोंसे बसे हुए गांवके बिलकुल बाहर निकल आयी।

जाड़ेके दिन थे। दिन ढल चुका था। रातीका कछार विश्रामकी हंसीसे उद्भासित था! उसकी शस्य श्यामल हरीतिमापर किरणोंकी परियां नाचती हुई 'विदा-गान' गा रही थीं। मोहर उन्मादोंकी तरह उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। अपने और सुखियाके बीचमें बंधे हुए बांधको तोड़ देनेके लिए वह विकल हो रहा था। शरीरमें जोशकी लहरें उठ रही थीं। इसी बीच उसने देखा, जिरिया सन्ध्या-सुन्दरी-सी मुसकाती चली आ रही है! वह सहसा कांप उठा। आत्मा कह उठी—"मोहर, तू पाप कर रहा है।" किन्तु उसी क्षण उन्माद प्रबल हो उठा—"आह!···सुखिया! केवल इसीके कारण नहीं मिल सकती! छिः! कदापि नहीं!" वह खड़ा हो गया।

आस-पास अरहरके घने खेत लगे हुए थे। उनपर धुंआ-सा छा रहा था। जिरिया आयी। इस निर्जनमें पतिको सामने देखकर उसकी आंखें लाजसे झुक गयीं! हृदयकी मूक अनु-भूति उसकी अस्पष्ट मुसकानमें नव-वधूकी तरह छिपी हुई झलक रही थी—रोम-रोम मधु-सुखसे सिहर रहा था।

इसी क्षण मोहरकी गुर्राहट सुन पड़ी। दूसरे क्षण वह धराशायी थी। मोहर उसकी छातीपर चढ़ा हुआ उसका गला कसनेका उपक्रम कर रहा था।

जिरिया चिल्ला उठी—"आह! क्या इसीलिए यहां बुलाया था? मत मारो! तुम जो कहोगे, मैं वही करूंगी। मेरे राजा! तुम कहो तो मैं अपने बच्चोंको लेकर कहीं चली जाऊं। मैंने तुम्हारा कुछ बिगाड़ा नहीं है! छोड़ दो··· छोड़ दो···आह!"

किन्तु उस पापात्माके कान बहरे हो रहे थे। उसे खून चढ़ गया था। वह जिरियाका गला घोंटने लगा।

"बस, चुप रह, हरामजादी!"

"अच्छा, मार डालो···तुम्हारा अधिकार···पर बच्चोंको देखना···दया करना।···"

अस्फुट स्वर गलेके बाहर न निकल पाता था। थोड़ी देरमें उसकी जबान बाहर निकल आयी। नाक और आंखसे खून आ गया! कुछ देर तक तड़फड़ाकर शान्त हो गयी। अभागे प्राण-विहग उड़ गये!

मोहरने जल्दी-जल्दी उसके शवको बालू-भरे घड़ेसे लगाकर गांवसे दूर एकान्तमें ले जाकर नदीमें डाल दिया। उसके बाद मनमें सोचने लगा कि अब कहां चले—इसी विचारधारामें प्लावित होता हुआ वह उसी स्थानपर आया जहां उसने उसकी हत्या की थी। वह वहां रुक गया। जोश-की बाढ़ अब कमीपर थी। आंखोंके सामने ऐसा भान हुआ जैसे शृङ्गार-सुसज्जिता जिरिया नीची दृष्टि किये हंस रही है—वह उसपर टूट पड़ता है—फिर उसकी करुण प्रार्थना—मार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मत डालो—मैं कहीं चली जाऊंगी। और अन्तमें···"अच्छा—मुझपर तुम्हारा अधिकार है, किन्तु बच्चोंपर दया करना···!" वह घबड़ाने लगा। इसी बीच पछवाका एक झोंका आया—उसे जान पड़ा—जिरिया उसी प्रकार आह भर रही है।

उसके लिए अब वहां रुकना कठिन था—हृदय-देश शिशिर-निशीथके समान शान्त था—कांप रहा था! उसपर तुहिन-वर्षा हो रही थी!

धीरे-धीरे वह चोरोंकी तरह अपनी झोपड़ीपर पहुंचा। देखा, विपद उस अन्धकारमें बैठा कुछ खा रहा था। मुनियां कौतूहलके साथ प्रतीक्षा कर रही थी—जरा-सी आहटपर चौंककर इधर-उधर देखने लगती! दोनों आपसमें बातें भी कर रहे थे।

मोहर—अभागा मोहर—बगलवाले वृक्षकी ओटसे देख रहा था—साहस नहीं होता था कि आगे बढ़े।

विपद कह रहा था—"दादा आ गये—मां उन्हींके साथ खेत गयी है। अभी आयेगी, दीदी!"

"दादा आ गये विपद! अच्छा! क्या लाये थे? बताशे? तू मेरे लिए तो न रखे होगा?"—मुनियां आश्चर्य और आनन्दके साथ कह रही थी।

"नहीं···कुछ लाये नहीं·····मांने कहा कि वह भूल गये। कल ला देंगे।"—विपदने धीरेसे उत्तर दिया!

मोहर अब और न सुन सका। उसका हृदय कांप रहा था। वासनाके नशेके बाद जैसे उसे कुछ होश हो गया हो। लेकिन फिर भी उसमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वह आकर अपने बच्चोंको हृदयसे लगा ले। वह मौन भावसे सोच रहा था—उसके कानोंमें अब तक वही ध्वनि गूंज रही थी—"देखना, बच्चोंपर दया करना!"

इसी बीच उसे सुघरी बुढ़ियाकी आवाज सुन पड़ी—विपद उसे देखकर रोने लगा—बुढ़िया कुछ आश्चर्यके साथ पूछ-ताछ कर रही थी। वह और भी कांप उठा—रुकना असम्भव हो गया—धीरेसे वह खिसक चला!

वह गांवके बाहर आया। सुखियाके सिवाय उसे और कुछ दिखायी न पड़ा—वह उसीकी ओर बढ़ने लगा। चलते-चलते कभी मुड़कर अपनी झोपड़ीकी ओर देखता—जिरिया और उसके बच्चोंकी कल्पित प्रतिमायें सामने आ जातीं! और कभी वह आगेकी ओर देखता, जिधर वह अपना कल्पना-कानन सजाना चाहता था! सुखिया उसे किसी ऊंची पहाड़ीपर बसी जान पड़ती थी। मालूम हो रहा था कि वहां तक पहुंचना कठिन है, वह अब गिरा ही चाहता है! फिर भी आशाकी लकुटीके सहारे वह उठता-गिरता आगेकी ओर बढ़ा जा रहा था!

वह सोच रहा था—सुखियाके लिए ही मैंने स्त्री-हत्या की है। वह अब अवश्य ही मेरे प्रस्तावको मान लेगी—फिर मैं अपने बच्चोंको जिरियाके स्मृति-चिह्न-स्वरूप हृदयसे लगाये रखूंगा—कोई कष्ट न होने दूंगा।

एक पहर रात जाते-जाते वह सुखियाके मकानपर पहुंचा। उसके गांवसे सुखिया दो ही मीलपर रहती थी, किन्तु इतनी ही दूरीके लिए उसने एक घण्टेसे अधिक समय लगा दिया।

वहां पहुंचकर उसकी आंखोंने जो देखा उससे वह स्तब्ध हो गया। जाड़ेकी रात थी। सुखियाका घर गांवके बाहरी ओर होनेके कारण आस-पास सूनापन छाया था। उसने देखा—कोई भला आदमी, किन्तु नशेसे चूर उसके घरमेंसे निकल रहा था! सुखियाने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा—"सुनो! कल आओगे न?—न आनेपर उसकी सजा जानते हो क्या होगी?..." कहकर उसने आंखें मटकाकर हंस दिया! उसका हाथ उसके हृदय तक बढ़ गया—उसे फिर आलिङ्गनमें कसकर चुम्बनोंसे उसने उसका मुंह भर दिया, और कहा—"तुम जानती हो...भला मैं तुम्हारे बिना रह सकता हूं? आऊंगा नहीं तो करूंगा क्या? मगर आज इतना ही है, ले लो..."

इसके बाद...रुपयोंकी आवाज!

मोहर बड़ी कठिनाईके साथ अपनेको संभाल सका। अभागेने समझा—देखा—वह कहींका भी न रहा! उसका गला रुंधा जा रहा था—आंखोंसे आंसुओंका नीरव स्रोत उमड़-उमड़ कर बह चला! सुखिया उसे बिदा करके अन्दर चली गयी। मोहरका नशा अब बिलकुल टूट गया था। वह सिसक-सिसककर अपने कियेपर रो रहा था। आगे-पीछे चारों ओर अन्धकार! इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं! हां उस अन्धकारमें, आकाश-गङ्गाकी तरह उसे एक धुंधली साया दूरीपर देख पड़ रही थी—किन्तु वह स्वर्गकी थी! उसे वह अब पा न सकता था। वह थी जिरियाकी प्रतिमूर्ति!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



—आकाशसे जैसे कह रही थी—"मुझे मार डालो—तुम्हारा अधिकार है, किन्तु देखना—बच्चोंपर दया करना !"

अपराधी मोहर स्त्री-हृदयके उस प्यारको सोच-सोचकर बिलख रहा था। किन्तु असफल—निरुपाय ! अन्तमें सोचा, चलकर उसी स्थानपर अपना भी प्राण-त्याग कर दूं, जहां मैंने उसकी हत्या की है—बस इसके सिवाय शान्तिका और कोई उपाय नहीं।

पापका ज्ञान होनेपर मनुष्य प्रायश्चित्त करना चाहता है। मोहर उसी ओर फिर बढ़ने लगा। सर्वस्व-हीन उन्मादी-की तरह !

* * *

जाड़ेकी रात। नौ-दसका समय हो रहा था। चारों ओर सूनापन। सारी प्रकृति ठिठुर रही थी। किन्तु मोहरका हृदय अशान्त था—परितापकी ज्वालासे जल रहा था। अब वह फिर उसी स्थानपर आ गया था, जहां उसने उसके शव-को फेंका था। कुछ ही घण्टोंमें यह परिवर्तन ! कौन जान सकता था ! इस समय उसके आंसू रुके हुए थे। वह आत्म-हत्या करने जा रहा था। इसी बीच उसे जैसे फिर सुनायी पड़ा—"देखना...बच्चोंपर दया करना !" देखते ही आंसूकी लहरोंपर दो प्रतिमूर्तियां तिरने लगीं। फिर उसे बच्चोंके वार्ता-लापकी याद आयी। विपद जैसे कह रहा था—"अभी दादा, आते होंगे !" सोचते ही आंसुओंकी वृद्धि होने लगी। इच्छा हुई, चलकर एक बार अपने बच्चोंको देख लें—वह धीरे-धीरे अपने झोपड़ेकी ओर लौटने लगा।

रास्तेमें, लौटते समय, पहले शिवसरन मुखियाके यहां उसने देखा, अब तक अलाव जल रहा था—लोग उसे घेरकर बैठे हुए तरह-तरहकी विचारधाराओंमें मग्न थे। गांधीजीकी महिमाका गान हो रहा था। मोहरने चुपकेसे चलते-चलते देखा—वे लोग कितने प्रसन्न थे ! इतनेमें एकने पुकारा—"कौन जा रहा है, भाई !·····मोहर तो नहीं हो ?"

मोहर रुक गया। जबान लाख यत्न करनेपर भी न खुल सकी। धीरे-धीरे वह उन लोगोंके पास आया। उसकी विचित्र दशा देखकर लोग अवाक् रह गये। वह सिसक रहा था—आंखोंसे आंसुओंकी बड़ी-बड़ी बूंदें गिर रही थीं।

शिवसरनने धैर्य बंधाते हुए इसका कारण पूछना आरम्भ किया—मोहर बड़ी देर तक रोता ही रहा—बार-बार पूछनेपर भी वह कुछ कह न सका। अन्तमें वह मुखियाके पैरोंपर गिर पड़ा—और रोते-रोते कहा—"देखना, मेरे बच्चोंकी देख-भाल करना, मैं उन्हें केवल तुम्हींपर छोड़े जाता हूं।" मुखिया बार-बार सान्त्वना दे रहा था—अन्तमें मोहरने सारी बातें रो-रोकर कह सुनायीं। सुनते ही लोग कांप उठे !...हत्या !!

मुखियाकी आंखें सजल हो गयीं।

मोहरने कहा, बस और मैं कुछ नहीं चाहता—"मैंने उसकी हत्या की है। वह देवी थी। अब मैं अपनी भी हत्या कर लूंगा। बस, इसीलिए आया था कि बच्चोंको किसी-की देख-रेखमें छोड़ता जाऊं। अब जा रहा हूं—एक बार बच्चोंको भी आंख भर देख लूं—आह ! शायद वे सो गये होंगे—माताकी आशामें···।"

वह फिर फूट-फूटकर रोने लगा।

मुखियाने अधीर भावसे कहा—"मोहर, इतने अधीर मत बनो। मैं तुम्हें जाने न दूंगा। तुम अपने बच्चोंको स्वयं संभालो। तुमने पाप किया है अवश्य—किन्तु अब महापाप मत करो—तुम्हारे बिना ये बच्चे भी मर जायेंगे !"

मुखियाकी बात सभीको पसन्द आयी—सभी कहने लगे—"मोहर, जान मत दो—हम लोग एकमत हो करके खून छिपा देंगे—कह देंगे वह कहीं भाग गयी—सरकारसे तुम्हारा कुछ भी न होगा।"

मोहर कुछ बोलता न था—अपने आंसुओंमें बहा जा रहा था।

× × × ×

तबसे पांच वर्ष हो गये !

मोहर संसारमें निरीह जीवन बिता रहा है। उसे विश्वास था कि उसपर मामला चलेगा—उसको फांसी हो जायेगी। परन्तु हत्याका प्रमाण न मिलनेपर वह छूट गया। अब उसकी झोंपड़ी वहीं है जहांपर उसने अपनी विवाहिता-की हत्या की थी। विपद अब दस वर्षसे अधिकका है। मुनियांकी शादी हो गयी है, किन्तु अभी वह पिताके ही पास रहती है। मोहर दिनभर परिश्रम करता है। जो-कुछ मिलता है, लाकर बच्चोंका भरण-पोषण करता है।

सुखिया भी ठोकरें खाकर, विपन्न अवस्थामें आ गयी है—वह बाबू साहब मर गया, हत्याके सालभर बाद ही—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तबसे उसका भी मन फिर गया, और वह मोहरके पास आ गयी। मोहर पहले रखता ही न था—किन्तु सुखियाके बहुत आग्रहके कारण उसे विवश होना पड़ा।

उसकी झोपड़ीके समीप ही रात्री प्रवाहित हो रही है—पहले हीकी तरह—उसी धुनमें, जैसे संसारके सुख-दुःखसे कोई सम्पर्क ही नहीं! रात्रिमें जब सब लोग सो जाते हैं—वह सरिताके किनारे बैठकर अतीतके पथपर आंसुओंके दो-चार चुने-चुने फूल चढ़ाता है—उस समय वह देखता है कि उसकी विवाहिता रात्रीकी शान्त, मन्द लहरोंसे हंसती हुई आती है—और अर्पित किये हुए अश्रु-पारिजातसे अपना आंचल भर लेती है।

उस क्षण मोहरका अन्तर्द्वन्द्व बहुत-कुछ शान्त हो जाता है।

—

# द्वारपर

शतदल-उपवनको अलि करता, उन्मन गुंजनसे गुंजार;
आई मैं भी गुंजित करने, देव! तुम्हारा हृदयागार!

चन्दन चर्चित कुंकुम केसर,
सुमनोंका ले मंजुल हार,
धूप-दीप सब साज सजाकर,
लायी पूजाका सम्भार!

अभिलाषा, आशाके अंकुर,
हरित छिछलते-से सुकुमार,
सूख गये हा! बन्द देखकर,
रत्न खचित मन्दिरके द्वार!

छोड़ अकिंचन अबलापर तुम, उपल त्रिपुल सम भारी भार;
देव! व्यर्थ ही निष्ठुरताका, दिखा रहे यह कटु व्यापार!

रहे मौन यदि इसी तरह प्रभु,
तब तो मेरा मन सुकुमार
सह न सकेगा विकट व्यथाका
ऐसा निष्ठुर वज्र-प्रहार!

अमल कमल-सी सोती बाला
स्वर्णिम आशा ले अम्लान
बाट जोहती, बाल-भानुका—
होगा कब मृदु स्वर्ण-विहान?

देर हो गयी देव! खोल दो, अब तो मन्दिरके ये द्वार;
आओ पूजा करूं तुम्हारी, मुग्ध हृदयसे मैं साभार!

—होरादेवी चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भाषा-विज्ञान

श्री लक्ष्मणेश्वरशरण

वाक्-शक्तिका स्थान कहां है? इस विषयमें मत-भेद है। फ्रान्सका ब्रोका नामक विद्वान् अनुसन्धान करके इस निश्चित सिद्धान्तपर पहुंचा है कि मस्तिष्कके वाम और दक्षिण गोलार्धमें अग्र भागकी ओर इसकी स्थिति है। गूंगे मनुष्योंका मस्तिष्क इस भागमें विकृत रहता है, और अधिकांश वाम भागमें ही विकार रहता है। किन्तु यदि दोनों भाग विकृत हों तो ऐसे मनुष्यको बोलनेकी शक्ति होती ही नहीं। बाल्यकालमें मस्तिष्कके वाम भागकी पुष्टि पहले होती है और इसीके द्वारा वाक्-शक्ति बढ़ती है। दक्षिण भागमें वाक्-शक्तिका स्थान कदाचित् ही किसीके होता है।

मनुष्य-जातिमें अन्य जीवोंकी अपेक्षा भाषाकी विशेषता पायी जाती है। बुद्धिका विकास न्यूनाधिक अंशमें पशुओं-में भी पाया जाता है। परन्तु अनुभूत विषयोंसे अनुमान और तर्क करनेकी शक्ति केवल वाक्-शक्तिसे ही हो सकती है। भाषा विचारोंका प्रतिरूप अवश्य है। परन्तु बिना भाषाके विचारोंकी उत्पत्ति भी सम्भव नहीं। इसका उदाहरण कई देशवासियोंकी भाषाओं और भावोंसे प्रत्यक्ष है। टसमानिया-निवासियोंकी भाषा अत्यन्त अवनत अवस्थामें है। अतएव उनके भाव साधारणतः उन्नत नहीं होते हैं। न्यू कैलेडोनियाकी भाषामें गत दिवस और आगामी दिवसके लिए कोई शब्द नहीं है और इनके भाव-को वे समझ भी नहीं सकते हैं। नवजात शिशु तो बुद्धि-विकासमें कुत्ते और हाथीकी भी समता नहीं कर सकता। परन्तु बालकमें भाषा सीखनेकी शक्ति है, कुत्ते और हाथीको यह शक्ति प्राप्त नहीं है।

डारविन (Darwin) और हेक्केल (Haeckel) के मतके अनुसार पशुओं तथा मनुष्योंमें अन्तर इतना ही है कि पशु अपनी अधूरी बोलीके द्वारा अपने भावोंको प्रकट कर सकते हैं। उनके भाव भी भाषाके समान अनुन्नत तथा अल्प होते हैं। परन्तु मनुष्य प्रतिभाके विकाससे सीजर (Caesar) अथवा न्यूटन (Newton) की समता कर सकता है। शरीरका सङ्गठन देखनेसे यह प्रतीत होता है कि बन्दर और वनमानुष (anthropoid ape) में अधिक अन्तर है। परन्तु वनमानुष और मनुष्यमें अन्तर कम है। वैज्ञानिकोंने वनमानुष और मनुष्यके बीचमें एक मूक मनुष्य-जातिकी कल्पना की है। जिनके चिह्न मध्य आफ्रिकामें अब भी पाये जाते हैं और कहा जाता है कि ऐटलाण्टिस प्रदेशमें, जो कि अब समुद्रके अन्तर चला गया, इस जातिके मनुष्य निवास करते थे।

कल्पना की जाती है कि ऐसे मनुष्योंके हृदयमें स्वाभा-विक गुण, इच्छा, राग, द्वेष, क्रोध, हिंसा, हर्ष आदि भावों-के उदय हुए होंगे और उनके अनुकूल भावोंको प्रकट करनेके लिए शब्द गढ़े गये होंगे। इन मनुष्योंकी अवस्था अबोध बालकोंकी-सी होगी। अनेक युगोंके बाद इन मनुष्योंकी भावनायें परिष्कृत और उन्नत हुईं और उन्हींके अनुसार भाषाकी भी उन्नति होती गयी। परन्तु जिन भावोंको इन लोगोंने अनेक युगोंमें अर्जन करके भाषा द्वारा प्रकट करना सीखा उनको आधुनिक बालक उन्नत मानव-समाजमें रहकर अति अल्प कालमें अनुकरण द्वारा सीख लेता है।

कई सहस्र वर्ष हुए, मिस्र देशके राजा साम्मिटिकस (Psammitichus) ने भाषा-विज्ञानके अनुसन्धानके लिए दो बालकोंको पृथक्-पृथक् ऐसे स्थानोंमें रखा जहां कोई शब्द उनको सुनायी नहीं पड़े। जब वे बोलने योग्य हुए तब सबसे पूर्व उन दोनोंने 'बेकस' कहना सीखा। फ्रीजिया-की भाषामें इस प्रकारका एक शब्द है जिसका अर्थ रोटी है। इससे मिस्र-सम्राट्ने यह निश्चय किया कि फ्रीजिया देशकी भाषा सबसे प्राचीन है। इस रीतिसे अनुसन्धान बहुत कम वैज्ञानिकोंने किया है।

अनुभवसे देखा गया है कि बालकोंके प्रारम्भिक शब्दों-के उच्चारण भावोंके द्योतक नहीं होते, केवल वाक्-शक्तिके स्फुरणसे पक्षियोंके चहचहानेके समान होते हैं। फ्रान्सके विद्वान् टेन (Taine) ने एक बालिकाके विषयमें अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अनुभवोंको रिव्यू फिलोसोफिक (Revue Philosophique) में तीसरी जनवरी १८७६ को प्रकाशित किया था। साढ़े तीन मासकी अवस्थासे कई मास तक केवल स्वर-वर्णोंका ही उच्चारण वह करती रही। उसने 'मों', 'क्राव', 'पापा-पापा'—इन्हीं व्यञ्जनयुक्त शब्दोंको उच्चारण करना सीखा। परन्तु कोई भाव इनके द्वारा प्रकट नहीं करती थी। केवल उच्चारण-मात्र था और बार-बार कौतुकमें इस प्रकार कहा करती थी। ग्यारहवें महीनेमें पूछनेपर कि उसकी मां कहां है, अपनी मांकी ओर देखने लगती थी। बारहवें माससे शब्दके साथ अर्थ-ज्ञान उसको प्रारम्भ हुआ। पशु और मानव-जातिमें यहींसे विभेद होने लगता है। पशु भाषाके साथ अर्थका संयोग नहीं कर सकता। उस बालिकाने चित्रको 'बेबी' कहना प्रारम्भ किया। छः सप्ताहमें उसने नौ शब्दोंका प्रयोग करना सीखा। 'पापा' पिताके लिए, 'मामा' माताके लिए, 'तेते' धायके लिए, 'अउआ-अउआ' कुत्तेके लिए, 'कोको' मुर्गेके लिए, 'दादा' घोड़ेके लिए, 'मिंया' बिल्लीके लिए, 'टेम' देने अथवा लेने या दृष्टि आकर्षित करनेके लिए।

इसी प्रकार चार्ल्स डार्विन (Charles Darwin) नामक वैज्ञानिकने भी एक बच्चेके विषयमें अनुभव किया और उसका भी कथन है कि बालक पहले निरर्थक शब्द उच्चारण करता है, पश्चात् शब्दोंके साथ अर्थ-योजना करता है, और शब्दोंका उच्चारण भावके अनुकूल नहीं सीखता, वरन् भाषाकी सुगमताके अनुसार सीखता है। प्रो० होल्डन (Prof. Holden) ने अनुभव करके लिखा है कि दो वर्षके एक बालकने ४८३ शब्दोंको सीख लिया था। परन्तु उनमें ९३ शब्द 'ब' अक्षरसे प्रारम्भ होते थे। दूसरा बालक उसी अवस्थामें ३९९ शब्दोंको ग्रहण कर सका था और तीसरा केवल १७२ शब्दोंको।

इसमें सन्देह नहीं कि शब्दोंका ग्रहण करना संसर्ग, समाज तथा बालक-विशेषकी मेधा-शक्तिके ऊपर भी निर्भर है। परन्तु जिस भाषामें शब्द सरल तथा भावपूर्ण होंगे उनके सीखनेमें बालकोंको श्रम कम होगा और भाषाके साथ भावोंका उदय भी उनमें शीघ्र होगा। भाषातत्त्व-वेत्ताओंको यह जानना चाहिए कि भाषाका प्रभाव मानव-जातिपर कितना पड़ता है और मानव-जातिकी उन्नति इस-पर कहां तक निर्भर करती है। भाषा यदि सरल, सुगम और भावपूर्ण है तो बच्चे शीघ्र उन भावोंको हृदयङ्गम कर लेंगे। परन्तु भाषा यदि कठिन और भावशून्य हुई तो बालकोंकी मानसिक स्फूर्ति उसीके अनुकूल होगी। इसका स्पष्ट उदाहरण भारतवर्ष हीमें मिलता है। यहां दर्शन और धर्मकी चर्चा इतनी अधिक है और इसका साहित्य इतना पूर्ण है कि छोटे-छोटे बालकोंके लिए भी उच्च दार्शनिक सिद्धान्त समझना और ग्रहण करना स्वाभाविक है। उसी प्रकार पाश्चात्य देशोंमें वैज्ञानिक उन्नति इतनी हुई है कि बच्चे विज्ञानकी बातें अल्प वयस हीसे वहां समझने और सीखने लगते हैं। परन्तु जैसा विज्ञानका विषय भारतवर्षीय बालकोंके लिए दुरूह प्रतीत होता है वैसा ही पाश्चात्य देशोंके लिए दार्शनिक सिद्धान्त अगाध जान पड़ता है।

भाषाका सम्बन्ध आर्य अथवा अनार्य, सेमिटिक अथवा केल्टिक जातियोंपर निर्भर नहीं है। इसका सम्बन्ध समाज-से है। एक जाति अपनी भाषा परित्याग करके दूसरेकी भाषा ग्रहण कर सकती है। आस्ट्रिया और टर्कीके रहनेवाले यहूदी प्राचीन स्पेनिश भाषाको भी आज तक अपनाये हुए हैं, परन्तु स्पेन-निवासी स्वयं अपनी भाषा भूलकर अब केवल लैटिन-मिश्रित भाषा बोलना जानते हैं। कौर्नवालके निवासी अपनी प्राचीन भाषा केल्टिक भूल गये और अंगरेजी भाषा-भाषी हो गये। शुमाली आफ्रिका और पश्चिम एशिया-के निवासी अपनी पूर्व भाषा विस्मृत करके अरबी भाषा बोलना सीख गये हैं। इससे स्पष्ट है कि भाषाका जाति-विभागसे सम्बन्ध नहीं है। भाषा समाजपर निर्भर है, जातिपर नहीं। भाषासे जातिका अनुमान करना भ्रममूलक है। परन्तु भाषासे प्राचीन इतिहासका निर्माण किसी अंशमें अवश्य हो सकता है, और जाति-विज्ञान (Ethnology) तथा भाषा-विज्ञान (Philology) दोनोंकी सहायतासे प्राचीन इतिहासका बहुत-कुछ ज्ञान हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पञ्जाबी ग्राम-गीत

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

[ इस लेखके लेखक महोदय कई वर्षोंसे भारतीय ग्राम्य-गीतोंके सङ्कलन-कार्यमें लगे हुए हैं। आपने प्रत्येक प्रान्तमें भ्रमण करके भारतकी प्रायः सभी भाषाओंके ग्राम्य-गीत संगृहीत किये हैं। आपका यह कार्य साहित्यकी दृष्टिसे अत्यन्त उपयोगी तथा सराहनीय है। आप पञ्जाबी हैं, इसलिए पञ्जाबी ग्राम्य-गीतोंसे बचपनसे ही परिचित होनेके कारण उनपर आपके विचार विशेष महत्त्व रखते हैं।—सम्पादक ]

जङ्गली फूलकी भांति ग्रामीण पञ्जाब प्रकृतिके मधु-वनमें ही खिला है और स्वयं प्रकृतिने अपने कोमल हाथोंसे इसका शृङ्गार किया है। यहांके मैदानोंकी भांति ही यहांके निवासियोंके हृदय अत्यन्त विशाल और सुविस्तृत हैं; यहांके जलवायुकी भांति ही यहांके निवासियोंकी आत्मा अत्यन्त निर्मल और स्वच्छ है। चिर-आनन्दमयी प्रकृतिसे मिलकर यहांके नर-नारी एक-रूप तथा एक-रस हो गये हैं। यहांकी गरमी, सरदी, बरसात; यहांकी सन्ध्या तथा प्रभात; यहांकी नेत्र-रञ्जक हरियाली तथा सुनहरी धूप यहांके निवासियोंके साथ खूब घुलमिल गयी हैं और चिर-नवीन सन्देश सुना-सुनाकर उनका हाथ बटाती रहती हैं।

इस प्रदेशका मर्मस्पर्शी चित्र अङ्कित करते हुए कवि पूर्णसिंहने लिखा है—

दरिआवां दे मेले एथे,
दरिआवां वाले बछोड़े।
डूंघे ते लम्मे सारे,
बड्डे बड्डे दर्द ओ।
इथ्थे प्यार दे हड़ां दा आवेश है।
इथ्थे पहाड़ प्यार बिच पिघल दे!

—"यहां कितनी ही नदियां परस्पर मिलती हैं। नदियोंकी भांति ही यहांके नर-नारी एक-दूसरेसे बिछुड़ते हैं। यहांके नरनारियोंके दर्द बहुत बड़े-बड़े हैं और यहांकी नदियोंकी भांति ही गहरे और लम्बे हैं। यहां प्रेमके तूफानोंका जोर है। यहांके पर्वत प्रेमसे पिघले पड़ते हैं।"

पांच अलबेली नदियोंके इस मधुमय प्रदेशके निवासियोंके हृदय-जगत्में प्रेम, सौन्दर्य, यौवन, वैभव तथा बलिदानकी नदियां बहती प्रतीत होती हैं। कभी-कभी अवसर पाकर इन नदियोंकी लहरें बाहर निकल आती हैं और ग्राम-गीतोंके रूपमें अमर हो जाती हैं।

यह प्रदेश गानेवाले पक्षियोंका घोंसला है। यहांके स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े और युवक सभी ग्राम-गीतोंके शौकीन हैं। यहांके घरोंमें, त्रिजणों*, चौपालों, खेतों और वनोंमें सर्वत्र गीतोंका साम्राज्य है। यहांका एक-एक ग्राम-गीत एक-एक तीर्थ है, जिसके द्वार हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान प्रत्येक नर-नारीके लिए सदैव खुले रहते हैं।

काव्य और सङ्गीतके तो मानो ग्राम-गीत अवतार हैं। इनमें हमें जन-साधारणके जीवनकी रुनझुन सुननेको मिलती है। ग्राम-गीत ग्रामीण हृदय तथा जीवनके प्रतिनिधि तथा प्रथ-प्रदर्शक हैं। वे 'फूलोंसे मोहनेवाले हैं और कांटोंसे चुभनेवाले हैं।' इस लेखमें हम कुछ विशेष-विशेष विषयोंके पञ्जाबी ग्राम-गीतोंके उदाहरण पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करना चाहते हैं।

## हीर-रांझाके गीत

हीर-रांझाकी प्रेम-कहानी पञ्जाबमें उसी प्रकार लोक-प्रचलित है जिस प्रकार मुसलिम जगत्में लैला-मजनू तथा शीरीं-फरहादकी प्रेम-गाथायें। ग्रामीण पति-पत्नी एक-दूसरेमें हीर-रांझाकी भावना स्थापित करते हुए अपने दाम्पत्य जीवनको स्वाभाविक प्रेमसे रंग लेते हैं। पञ्जाबमें हीर-रांझाके सम्बन्धमें अनेक गीत प्रचलित हैं। एक बार एक समालोचकने कहा था—"यदि पञ्जाबमें हीर और रांझा न हुए होते तो कदाचित् पञ्जाबका ग्राम-साहित्य उतना अमीर न होता जितना कि आज दिखायी देता है।"

* वह स्थान, जहां स्त्रियां परस्पर मिलकर चरखा कातती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रांझाको हीर अपना ईश्वर-दत्त पति समझती थी, पर उसके माता-पिताने उसकी स्वयंवर-सम्बन्धी स्वतन्त्रता छीनकर जबरदस्ती उसका विवाह 'सैदा' नामक व्यक्तिके साथ कर दिया था। हीरने अपने इस 'बिन बुलाये मेहमान'के -से पतिको अपना हृदय, जिसपर रांझाकी छाप लग चुकी थी, देनेसे इनकार कर दिया था। जीवनकी आखिरी घड़ी तक वह रांझाका नाम जपती रही थी। गाथा बतलाती है कि हीरके माता-पिताने अपनी बेटीको जहर दे दिया था। हीरकी जन्म-भूमि 'झङ्ग' में आज भी उसकी कब्र मौजूद है। प्रतिवर्ष हजारों नर-नारी हीरकी कब्रपर श्रद्धाञ्जलि चढ़ाने जाते हैं। 'झङ्ग' के आस-पासके लाखों स्त्री-पुरुष आज हीरको 'हीर माई' कहकर याद करते हैं। 'लोक-माता' का सम्मानयुक्त पद पाकर हीर सचमुच एक आदर्श स्त्रीके रूपमें अमर हो गयी है।

प्रो० पूर्णसिंह लिखते हैं—

No daughter of the Punjab could dream of another man, for her the world has but one; when found it is all. She gives herself to him and no foolish rites of marriage, nor law, nor false honour, nor shame deter her mind, nor daunt her soul from loving the man she loves. She keeps her vow of love and word with gods, she saves the honour of the land where she is born, faithful to her man and God, never mind what the world says or rumour does. *

—"पञ्जाबकी एक भी बेटी परपुरुषका स्वप्न तक नहीं देख सकती। उसके लिये संसार-भरमें एक ही पुरुष होता है। वह मिल गया और फिर बस। वह अपना सर्वस्व अपने उस पुरुष (पति) की नजर कर देती है। न थोथा विवाह-संस्कार, न कानून, न मिथ्या सम्मान, न शर्म—कोई भी उसके मनको विचलित करके उसकी आत्माको उसके प्रेम-पात्रसे विमुख नहीं कर सकते। वह अपने देवताओंके सम्मुख अपने वचन और प्रेम-व्रतपर दृढ़ रहती है। अपनी जन्म-भूमिकी इज्जतको वह आंच नहीं आने देती। वह अपने पुरुष और परमात्माके प्रति वफादार रहती है। संसार क्या कहता है, इस बातकी वह जरा परवाह नहीं करती।"

हीर भी पञ्जाबकी एक ऐसी ही बेटी थी। रांझाको एक बार अपना प्रेम-पात्र बनाकर उसने कभी भूलकर भी किसी परपुरुषकी ओर आंख नहीं उठायी थी। उसके माता-पिताने अपनी बेटीके रास्तेमें 'मुदाखलत बेजा' करनेमें बड़ा भारी दोष किया था।

'हीर-रांझा' की गाथाको पञ्जाबके कितने ही कवियोंने काव्यका विषय बनाया है। इनमें कविवर 'वारिस शाह' विशेषतः उल्लेखनीय हैं। पर ग्राम-गीतोंमें और ही बहार है। कुछ नमूने लीजिये।

हीर कह रही है—

हथ्थीं सूलां मेरे पैरीं सूलां, मेरे गल सूलां दे तग्गे।
सूल सरहांदी सूल परांदी, मेरे सूला सज्जे खब्बे॥
सूलां दी मैं सेज बछाई, मेरे सूल सीने बिच खुभ्भे।
ऐनियां सूलां मैनूं फुल्ल हो जावन, जे मियां रांझन लभ्भे॥

—"मेरे हाथोंमें कांटे हैं, पैरोंमें कांटे हैं और गलेमें कांटोंकी मालायें हैं। मेरा सिरहाना भी कांटोंका है और पैरोंके नीचे भी कांटे हैं; दायें-बायें कांटे ही कांटे है। मैंने कांटोंकी सेज बिछायी है। आह! मेरे हृदयमें कांटे चुभ रहे हैं। यदि मुझे मेरा रांझा मिल जाय तो ये सब कांटे मेरे लिए फूल बन जायं।"

प्रेम-पथकी कठिनाइयोंका क्या कहना! 'दाग़' ने कहा है—

राहरुये राहे मुहब्बतका ख़ुदा हाफ़िज़ है।
इसमें दो-चार ज़रा सख्त मुक़ाम आते हैं॥

यदि केवल दो-चार सख्त मुकाम ही आते तो क्या बात थी। यहां तो सख्त मुकामातका कोई हिसाब ही नहीं। हीरका एक-एक कांटा प्रेम-पथका एक-एक सख्त मुकाम है। प्रीतमके दर्शन होते ही ये कांटे, कांटे नहीं रहते—फूल बन जाते हैं।

हीर सौन्दर्यकी देवी है। प्रेमने उसके सौन्दर्यको और भी चमका दिया है। रवीन्द्रनाथके कथनानुसार—

O Beauty, find thyself in love, not in the flattery of thy mirror.

* 'Sisters of the Spinning Wheel.



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



—"हे सौन्दर्यकी देवी! अपना स्वरूप प्रेममें देख। दर्पणकी चापलूसीपर लट्टू न हो।" हीरने प्रेम-दर्पणमें ही अपना स्वरूप देखनेका यत्न किया है।

हीर अपने प्रियतमका स्वागत कर रही है—

चन्नण कुट्ट मैं चुल्हा बनाया,
प्रेम परोला फेरिया सहेलियो!
बारहीं बरहीं रांझा घर आया।
आटा गुन्हदीयां मैं गोये-गोये
हिंजुया दा पानी लाया सहेलियो!
बारही बरहीं रांझा घर आया।
मोती कुट्ट-कुट्ट मैं दाल धरां
हुस्न दा तड़का लामां सहेलियो!
बारहीं बरहीं रांझा घर आया।
पका-पुकूके नी मैं खुआया पिआया
खा-पीके वी रांझा रुस्सिया सहेलियो!
बारही बरहीं रांझा घर आया।

—"चन्दन कूटकर मैंने चूल्हा बनाया है और उसपर प्रेमरूपी 'परोला' फेरा है। प्यारी सखियो! बारह वर्षोंके पश्चात् आज मेरा रांझा घर आया है। मैं संवार-संवारकर आटा गूंध रही हूं और इसमें पानीके स्थानपर अपने अश्रुओंका प्रयोग कर रही हूं। मोती कूट-कूटकर मैं दाल चढ़ा रही हूं। (घीके स्थानपर) उसमें सौन्दर्यका 'तड़का' लगा रही हूं। (ऐसा सुन्दर) भोजन पकाकर मैंने अपने रांझाको खिलाया। हा! खा-पीकर भी रांझा रूठा ही रहा!"

इस गीतकी अन्तिम पंक्तिमें करुण-रसकी पुट है। न-जाने बारह वर्ष पश्चात् हीरसे मिलकर भी रांझा क्यों रूठा रहा! प्रेमके मैदानमें स्त्री पुरुषसे बाजी ले जाती है—

Man's love is of man's life a thing apart,
It is woman's whole existance.

—"पुरुषका प्रेम उसके जीवनसे पृथक् होता है; पर स्त्रीका जीवन ही प्रेममय होता है।" (बायरन)

हीर और रांझाका स्वरूप देखिये—

रांझा यार मिशरीदा कूजा;
हीर कुड़ी खण्डदी डली।

—"रांझा मिशरीका कूजा है और हीर मानो खांडकी डली है।"

रांझा हंस बहिश्तांवाला; हीर लड़ी मोतियां दी।

—"रांझा स्वर्गका हंस है और हीर मानों मोतियोंकी लड़ी है।"

हीर स्योणे दी मुरगाई; रांझा हंस कुड़ियो!

—"री सहेलियो! हीर स्वर्णकी मुरगाबी है और रांझा मानो हंस है।"

हीर सज्जरी मखणी वरगी, रांझा घियो कुड़ियो!

—"री सहेलियो! हीर ताजा-ताजा मखनी* के समान है और रांझा मानो घी है।"

हीर गोरी गन्ने दी पोरी, रांझा गुड़ कुड़ियो!

—"री सहेलियो! सुन्दरी हीर गन्नेकी पोरीके समान है और रांझा मानो गुड़ है।"

रांझा कीलके पटारी बिच्च पाया; हीर बङ्गालन ने।

—"रांझा मानो एक प्रकारका सांप है और हीर बङ्गाल देशकी जोगन है। हीरने रांझेको काबू करके अपनी पिटारीमें बन्द कर लिया है।"

हीर कह रही है—

चेहरा वांग वे गुलाब, गया सुक्क रांझनां!

—"रांझन प्यारे! तुम्हारा गुलाबके फूलका-सा मुख बिलकुल ही सूख गया है।" (अर्थात् न जाने किस गमने तुम्हें आज इतना उदास कर रखा है)।

रांझा मज्झियां नूं हूंगर मारे; मेरे भादा मोर कूकदा।

—"मेरा प्रीतम रांझा भैंसोंको आवाज देता है तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है मानो मोर कूक रहा है।"

रांझा मेरा मिरग कुड़ियो! मैं सोहनी हिरनी हीर।

—"री सखियो! मेरा रांझा मृगके समान है और मैं मानो एक सुन्दरी हिरनी हूं।"

### बहन-भाइयोंके गीत

चरखा कातते-कातते स्त्रियां जो गीत गाती हैं उनमें 'बहन-भाइयोंके गीत' विशेष महत्त्व रखते हैं। ससुरालमें रहते हुए बहनें प्रायः अपने भाइयोंकी बाट जोहा करती हैं। इस सात्त्विक प्रतीक्षाका विरला ही स्वाद है। भाईके हृदयमें बहनका प्रेम भले ही न हो, पर बहन ऐसा नहीं कर सकती।

* मक्खन। 'मखनी' स्त्रीलिङ्ग वाचक शब्द है, इसलिए हीरके लिए प्रयुक्त हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सचमुच प्रेम करनेके लिए ही स्त्रीकी सृष्टि हुई है; बहनके रूपमें वह अपने भाईके प्रति जिस प्रेमका परिचय देती है वह अपना उदाहरण आप है।

कोई बहन गा रही है—

महलां दे थल्ले-थल्ले जांदिया ! वे मेरिया अम्मां जाया !
भैणां नूं मिल घर जा वे राम !
होर तां भैणां दित्तियां वीरा नेड़े-नेड़े
मैंहियों तां नदियां तों पार वे राम !
होरां दे कपड़े सूहे-सूहे, वे मेरिया अम्मां जाया !
मेरे तां रंग दे मजीठ वे राम !
कल्ल तां रंगूं बीबी कपड़े, नीं मेरिये अम्मां जाइये !
परसों नूं आऊं तेरे पास वे राम !
अन्दर दा कुंडड़ा खोल दे नीं मेरिये अम्मां जाइये !
वीरा तां आया तेरे पास वे राम !
सस्सू दा लाया न खोलां वे मेरिया अम्मां जाया !
कन्ध टप्पे घर आयो वे राम !
कन्धां तां टप्पदे चोर नीं ! मेरिये अम्मां जाइये !
मैं तां भैणां दा सका वीरा वे राम !

—महलोंके नीचे-नीचे जानेवाले ! हे मेरे मां-जाये भाई ! अपनी बहनको मिलकर घर जाना। हे भाई ! अन्य सब बहनोंके लिए तो तुमने ( अपने ग्रामके ) समीप-समीप ससुरालें चुनी हैं। केवल मेरी ससुराल ही तुमने नदी-पार-प्रदेशमें चुनी है। अन्य सभी बहनोंके वस्त्र लाल-लाल हैं, हे मेरे मां-जाये भाई ! मेरे वस्त्र मजीठ रङ्गके रंगवा दो।

भाईने कहला भेजा—हे मेरी मां-जायी बहन ! कलको मैं तेरे लिए वस्त्र रंगवाऊंगा और परसों तेरे पास आऊंगा।

बहनके द्वारपर आकर भाईने आवाज दी—हे मेरी मां-जायी बहन ! अन्दरसे कुण्डा खोल दे। तेरा भाई तेरे पास आया है।

बहन बोली—हे मेरे मां-जाये भाई ! अपनी सासका लगाया हुआ कुण्डा मैं कैसे खोल सकती हूं ? दीवार फांदकर भीतर आ जाओ।

भाईने कहा—दीवार तो चोर फांदा करते हैं, हे मेरी मां-जायी बहन ! मैं तो अपनी बहनका सगा भाई हूं।

इस गीतमें सासके चरित्रपर भी हलका-सा प्रकाश डाला गया है। सासके भयसे बहू अपने भाई तकके लिए द्वार खोलनेका साहस न कर सकी। कितनी सख्त होगी बेरहम सास ! भाई भला दीवार फांदनेके लिए कैसे तैयार हो जाता ? उसने साफ कह दिया कि वह कोई चोर थोड़ा ही है, वह तो अपनी सगी बहनका भाई है।

बहन-भाईका वार्तालाप सुनिये—

आयो वे वीरा ! चढ़िये उच्चड़ी माड़ी
दे मेरी मां दे सुनेहड़े राम !
मां तां तेरी भैणें पंलघे बठाई, पंलघों पीढ़े बठाई
हथ्थ अटेरन रंगली राम !
आयो वे वीरा ! चढ़िये उच्चड़ी माड़ी
दे मेरी भाबो दे सुनेहड़े राम !
भाबो तेरी बीबी गीगड़ा जाया, नीं भतीजड़ा जाया।
उठदी तां बैहंदी दिन्दी लोरियां राम !
आयो वे वीरा ! चढ़िये उच्चड़ी माड़ी
दे मेरी सईयां दे सुनेहड़े राम !
सईयां तां तेरियां भैणें छोपड़े पाये, वेहड़े चरखड़े डाहे
तूहियों परदेसन बैठी दूर नीं राम !
चल्ल वे वीरा चलिये मायों दे कोल, नाले सईयां दे कोल
चुक्क भतीजा लोरी गांमांगी राम !

—आ भाई ! हम ऊंची अट्टालिकापर चढ़ें। अच्छा, तो जरा मेरी मांका सन्देश कह सुनाओ न !

भाई बोला—हे बहन ! तेरी मांको मैंने पलंगपर बिठाया है ( अर्थात् उसे हर प्रकारका आराम है )। पलंगसे उतरती है तो उसके बैठनेके लिये 'पीढ़ा' तैयार रहता है। रंगीले 'अटेरन' से काम करनेके सिवाय उसे अन्य कोई काम नहीं करना पड़ता।

बहनने फिर कहा—आ, हे भाई ! हम ऊंची अट्टालिका-पर चढ़ें। अच्छा, तो जरा मेरी भावजका सन्देश कह सुनाओ न !

भाई बोला—हे बहन ! तुम्हारी भावजने पुत्रको—तुम्हारे भतीजेको—जन्म दिया है। उठती-बैठती सदैव वह उसे लोरियां सुनाती रहती है।

बहनने फिर कहा—हे भाई ! आओ ऊंची अट्टालिकापर चढ़ें। अच्छा, तो जरा मेरी सखियोंके सन्देश कह सुनाओ न !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भाई बोला—हे बहन ! वे तुम्हारे आंगनमें मिल-जुलकर अपने-अपने चरखेपर सूत कातती हैं। तू ही एक ऐसी परदेसन है, जो अपनी सखियोंसे इतनी दूर बसती है।

बहन कह उठी—चल भाई, मुझे मेरी मांके पास, मेरी सखियोंके पास ले चल। मैं अपने भतीजेको उठाये फिरा करूंगी और लोरियां गा-गाकर उसे रिझाया करूंगी।

इस प्रकारके बेशुमार गीत हैं जिनमें बहन-भाईके पवित्र प्रेमके चित्र अङ्कित हैं। एक बार चार्ल्स लैम्बने अपनी बहन 'मैरी' के सम्बन्धमें लिखा था—"संसारमें जितने मनुष्योंसे मैं परिचित हूं, सभी स्वार्थी हैं, पर 'मैरी' में स्वार्थका लेशमात्र भी नहीं है। मैं स्वर्गमें रहूं या नरकमें, वह मेरे साथ ही रहेगी। ऐसा प्रतीत होता है कि बहन बननेके लिए ही उसका जन्म हुआ है।"

'बहन-भाइयोंके गीतों' की एक-एक बहन 'मैरी' की भांति ही आदर्श बहन है। बहनोंने ही इन गीतोंकी सृष्टि की है और सचमुच उन्होंने इन गीतोंमें अपना दिल निकालकर रख दिया है।

किसी समालोचकका कथन है—

It is by ladies that nature writes upon the hearts of men.

"स्त्रियों द्वारा ही प्रकृति पुरुषोंके हृदयपर अपना सन्देश लिखती है।"

इन गीतोंमें स्त्रियोंने बहनोंके रूपमें पुरुषों ( भाइयों ) के हृदयपर 'बहन-भाई-प्रेम' के सन्देश लिखनेका सफल यत्न किया है।

### 'बारांमाहां' गीत

इन गीतोंकी सृष्टि वियोगिन स्त्रियोंने की है। प्रत्येक मासके आरम्भमें वे अपने प्राण-प्यारोंकी विशेष प्रतीक्षा करती हैं। बेचारियोंको कभी-कभी वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। प्रत्येक गीतमें वर्षके बारहों मासोंका वर्णन रहता है। विरह-वेदना इन गीतोंका मुख्य विषय है। कविवर शैलीके विचारमें—

Our sweetest songs are those
That tell of saddest thought.

—"हमारे मधुरतम गीत वे हैं जो करुणतम भावोंको स्पन्दित करते हैं।"

इस कसौटीपर 'बारहमाहां गीत' खरे उतरते हैं। इन गीतोंके केवल भाव ही करुण नहीं होते, स्वर भी अत्यन्त करुण होते हैं।

सुनिये, कोई वियोगिन गा रही है—

परे वे बसाख चल पिया प्यारे ! नैणांनूं नींद न आये
नैणानूं नींद न आमड़ी चीरे वाले आ! मैनूं लैचल्ल अपने नाल
तूं घोड़े मैं पालकी, मैं चल्लां थुआडड़े, तेरे नैणांदी सौंह, नाल
जेठ लोई मैंनूं ऐसी उगमी जैसी अगन बजा
पानी कोरे मट्टदा चीरेवालिया ! मैंनूं हट्टो-हट्ट बजार।

—"बैसाखका आगमन है। मेरे नयनोंको नींद नहीं आती। हे मेरे चीरेवाले प्रीतम ! मुझे अपने साथ ही ले चलो। तुम घोड़ेपर सवार हो जाना; मुझे तुम्हारी आंखोंकी सौगन्द, मैं पालकीमें बैठ जाऊंगी और तुम्हारे साथ चलूंगी। ज्येष्ठ मासकी लू मुझे आगकी तरह जला रही है। हे मेरे चीरेवाले प्रीतम ! एक भी दुकानसे मुझे कोरे मटकेका जल नहीं मिला ( विरह अग्निको शान्त करनेके लिए मुझे कहींसे भी शीतल जल नहीं मिला )।"

इसके बाद फिर कहती है—

"तुम्हारा प्रेम भाड़में जाय ( मुझे तुम्हारे प्रेमसे लाभ ही क्या हुआ ? ) मुझे तुम्हारी आंखोंकी सौगन्द, मेरा लाल प्याससे आकुल हो रहा है। आषाढ़ मास आ गया है। मैं काग उड़ा रही हूं। हे काग ! चल, मुझे उड़ाकर ले चल। मेरा हाड़-मांस सब खा लेना, पर मेरी इन दोनों आंखोंको न खाना; मुझे तुम्हारी आंखोंकी सौगन्द, मुझे अपने प्रीतमसे एक बार फिर मिलनेकी आशा है। लो सावन आ गया। मेघ बरस रहा है। मुझपर जरा-जरा फुहार पड़ रही है। मैं कीचड़में पांव नहीं डालती, डरती हूं कि कहीं मेरा नूपुर न भींग जाय। हे मेरे चीरेवाले प्रीतम ! तुम्हें यहांसे गये आज चार वर्ष होनेको आते हैं। अब मैं तुम्हारे दर्शन बिना जीवित नहीं रह सकती। भादों मास आ गया है। तितलियां उड़ रही हैं। हे मेरे चीरेवाले प्रीतम ! कोयलकी कू-कू सुनायी पड़ रही है। मेरी थाली किनारेसे टूट गयी है। मेरे प्रीतमके मूंछें फूट रही हैं। हे मेरे चीरेवाले प्रीतम! मुझे तुम्हारी आंखोंकी सौगन्द, तुम्हारे होते हुए घरमें मेरी सास मुझे गालियां दे रही है। पतिने लिख भेजा—'हे मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कोमलाङ्गी पत्नी ! हे मेरी 'भाग-सलोनी' नारी ! सास गालियां देती है तो देने दो। अपने नैहरमें तूने खूब सुख देखा है, अब जरा (ससुरालमें) अपनी सासके पास दुःख भी देख लो।' लो क्वार आ गया। मैं 'औंसियां' डाल-डालकर (ज्योतिष द्वारा) देख रही हूं कि मेरे प्रीतम कब घर आते हैं। हे साजन ! मुझे तुम्हारी आंखोंकी सौगन्द, तुम्हारे बिना मैं बेसुध हुई जा रही हूं। हे मेरे चीरेवाले प्रीतम ! सुवर्णकी मेरी आरसी है। इसमें जो दर्पण लगा हुआ है, वह मानो इसका मन्त्री है। (पर हा ! मेरा मन्त्री—प्रीतम—मेरे पास नहीं है)। मुझे तेरी आंखोंकी सौगन्द, ननद प्यारी ! तू भी जरा 'औंसियां' डालकर पता लगा कि तेरा भाई कब घर आयेगा। कार्त्तिकका आगमन हो रहा है। मैं कोमलाङ्गी नारी बारीक-बारीक सूत कात रही हूं। मेरे सिरपर लाल-लाल चुनरी है और गलेमें मोतियों-की माला चमक रही है। (इस आशासे कि कदाचित् अभी मेरे प्रीतम आ जायें, मैं सज-धजकर काम कर रही हूं)। लो अगहन आ गया। मैं लिहाफ रंगा रही हूं। प्यारे ! मुझे पौष मासमें ले जाना। हे मेरे चीरेवाले प्रीतम ! आना है तो आओ; नहीं तो फिर क्या करोगे ? घुटनोंको गलेसे लगाकर, सो-सोकर मैंने कड़ा जाड़ा काट लिया है। अब तो माघ मास भी आ गया। मेरे घरमें 'लोहड़ी' का त्योहार आया है। हे मेरे चीरेवाले प्रीतम ! मैं 'धड़ी पुड़ी' बंधाकर तेरी प्रतीक्षा करती-करती थक गयी हूं। आखिर तुम पराये पुत्र ही ठहरे न ! कितना बेहाल किया है तुमने मुझे ! फागुन मास आ गया है। मैं इत्र, अबीर और गुलालके साथ फाग खेल रही हूं। (खुश होकर इस त्योहारको मना रही हूं, क्योंकि प्रीतमके आनेकी मुझे पूरी-पूरी आशा है)। लो चैत्र आ गया। (पर प्रीतम नहीं आये)। मैं 'मरुया' पूज रही हूं और 'राह-रुवेल' की पूजा भी करूंगी। (कदाचित् जगत्-नियन्ता मुझपर निहाल हो जायें और मेरे प्रीतमको मेरे पास भेज दें।)"

विरह-वेदना-रत जेबुन्निसाने कहा था—

बिनशोनम व सबर रा कुनम यार,
ता यार मरा शवद ख़रीदार।
सद शुक्र कि दर्दमन्दे इश्क़म,
गर अज़ दिल मन क़रार बरश्तम्।

"मैं बैठी हूं और धैर्यको अपना प्रीतम बना रही हूं, ताकि मेरा प्रीतम मेरा खरीदार हो जाय। सौ शुक्र है कि मैं इश्ककी दर्दमन्द हूं; अगरचे मेरे दिलमें अब कोई खुशी नहीं रही।"

पूर्वोल्लिखित गीतकी नायिका भी जेबुन्निसाकी भांति ही अपने प्रीतमकी प्रतीक्षा कर रही है। प्रत्येक मासके आरम्भमें अपने प्राण-प्यारेका दर्शन करनेके लिए वह व्याकुल हो उठती है, पर वह आनेका नाम तक नहीं लेता। वह अपने प्रीतमकी छायामें रहना चाहती है। वह केवल यही नहीं चाहती कि उसका प्रीतम अपना काम छोड़कर घर आ जाय। यदि वह उसे अपने पास ही ले जाय तो वह सहर्ष जानेको तैयार है—"लो अगहन आ गया। मैं लिहाफ रंगा रही हूं। मुझे पौष मासमें ले जाना। हे मेरे चीरेवाले प्रीतम ! आना है तो अब आओ। फिर कब आओगे ?"—इस उक्तिसे यह भाव साफ झलक रहा है।

रामको वनकी ओर प्रस्थान करते देखकर आदि-कवि-की सीताने कहा था—

अग्रस्ते गमिष्यामि मृदमन्ती कुशकण्टकम्।

—"मैं कुश-कण्टकोंको कुचलती हुई तुम्हारे आगे-आगे चलूंगी।"

फिर कहा था—

तव पदच्छाया विशिष्यते।

—"तेरे चरणोंकी छाया सर्वोत्तम है।"

उपरोक्त ग्राम-गीतकी नायिकाका आदर्श भी आदि-कविकी सीताका-सा ही प्रतीत होता है।

## कुछ फुटकर गीत

अब यहां कुछ फुटकर गीत दिये जाते हैं। इनमें अनेक रसोंका सम्मिश्रण है। ये बहुत छोटे-छोटे हैं, पर इनमें ग्रामीण नर-नारियोंकी कितनी ही चिर-सञ्चित अनुभूतियां छिपी पड़ी हैं। ये वे रस-स्रोत हैं जो जन-साधारणके हृदय-जगत्में न समा सके और गीतोंके रूपमें बाहर निकल पड़े।

### मेरा प्रीतम

ग्रामीण पत्नी अपने प्रीतमका स्वरूप बतला रही है—

मेरा यार मिसरी दा कूजा, मिट्ठी-मिट्ठी गल्ल करदा।

—"मेरा प्रीतम मिसरीका कूजा है। कितनी मीठी-मीठी बातें करता है वह !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मेरा यार चन्नणदा बूटा, मुशक नाल मैं रज्जगी।

—"मेरा प्रीतम चन्दन-वृक्ष है। मैं उसकी सुगन्धसे ही सन्तुष्ट हो गयी हूं।"

मेरा यार सरुदा बूटा, वेहड़े बिच्च ला रखिया।

—"मेरा प्रीतम 'सरु' वृक्ष है। मैं उसे अपने आंगनमें लगाये हुए हूं।"

### कोयल और काग

वसन्त आ गया है। कोयलें अपने मनोमोहक कूजनसे अजब समां बांध रही हैं। दुलहिनका पिया परदेशमें है। प्रतीक्षा करते-करते कई दिन बीत गये, पर वह अभी तक नहीं आया। कागका कांव-कांव शब्द किसीके आगमनका सूचक होता है। कई दिनसे कागने भी कांव-कांव नहीं किया। माना कि कोयलकी 'कूक' 'कांव-कांव' से कहीं सङ्गीतमय होती है, पर इससे वह काम नहीं लिया जा सकता जो कांव-कांवसे। दुलहिन गा रही है—

कदे बोल वे नमाणियां कामां! कोलां कूक दियां!

—"अरे सम्मानरहित काग! कभी तो अपनी कांव-कांव सुना। देख, कोयलोंने कू-कूकी रट लगायी है।"

### पनिहारिन

प्रेमिका पानी लिये आ रही है। उसके सरपर बहुत बड़ा घड़ा है। प्रेमी गा रहा है—

छोटा घड़ा चक्क लच्छिये!
तेरे लक्क नूं जरब न आवे!

—"छोटा घड़ा उठाया कर, लच्छी! देखना कहीं तेरी कमरमें मोच न आ जाय।"

### बुलबुल और फूल

चांदनी रात है। पति-पत्नी प्रेमालाप कर रहे हैं—

चन्द चढ़िया लोईवाला
तूं मेरी बुलबुल नीं!
मैं फुल्ल खुशबूईवाला।

—"चन्द्रमा उदय हो गया है। तू मेरी बुलबुल है प्रिये! और मैं सुगन्धित फूल हूं।"

### मस्ताना प्रीतम

युवतीका विवाह होनेवाला है। वह ईश्वरसे प्रार्थना कर रही है—

तार नाल तार मिले
मैं मस्तानी रब्बा!
मस्ताना यार मिले।

—"तारके साथ तार मिल जाय। हे ईश्वर! मैं मस्तानी हूं और मस्ताने प्रीतमकी याचना करती हूं।"

### सुरमा

सखीने सुरमेकी सलाई प्रेमिकाके हाथमें दी है। वह गा रही है—

सुरमां केहड़ियां अरखां बिच्च पामां?
अरखां बिच्च यार बसदा।

—"सुरमा किन आंखोंमें डालूं? मेरी आंखोंमें तो मेरे प्रीतम बसते हैं। (अर्थात् वहां सुरमेके लिए स्थान नहीं है।)"

### यौवन

यौवनके सुनहले स्वप्न देखती हुई कोई बुढ़िया गा रही है-

तन पुरानां मन नमां, अख्खां ओही सुभा।
मैं तेनूं आखां जोबना, वे इक्क बेरी तां फेरा पा॥
तन पुरानां मन नमां अख्खां ओही सुभा।
लख्ख करोड़ीं मैं लवां, वे इक्क बेर फिर आ॥

—"मेरा शरीर पुराना है, पर मन बिलकुल नवीन है और आंखोंका स्वभाव पहलेका-सा ही है (अर्थात् वह पहलेकी भांति ही सौन्दर्य-पिपासी हैं)। अरे यौवन! मैं तुमसे विनय करती हूं। जरा एक बार फिरसे आ जाओ न! मेरा शरीर पुराना है, पर मन नया है और आंखोंका स्वभाव पहलेका-सा ही है। तुम यदि एक बार फिरसे आ जाओ तो मैं तुम्हारे लिए लाखों-करोड़ों रुपये खर्च कर सकती हूं।"

### बचपनकी सहेलियां

कोई रमणी अपनी बचपनकी सहेलियोंको देखनेके लिए तरस रही है। कई बार वह मायके गयी है, पर दैवयोगसे उन दिनों वे अपने-अपने ससुराल होती हैं और वह बेचारी तरसती ही रह जाती है। एक गीतमें उसका व्यथापूर्ण हृदय बाहर निकल आया है—

कोठे दे मगर हवेली
भैणां नूं भाई नित्त मिलदे
डारों बिछड़ी न मिले सहेली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



—"कोठेके पीछे हवेली है। बहनोंको भाई तो नित्य-प्रति ही मिल सकते हैं, पर एक बार डारसे बिछड़ी हुई सहेलीका मिलना अत्यन्त कठिन है।"

प्रम

प्रेमी रूठकर परे जा बैठा है। प्रेमिका गा रही है—

यारी तोड़के खुंडां ते बह गया;
वे हुण की तूं रब्ब बन गया ?

—"प्रेमसे मुख मोड़कर तू परे लकड़ीके ठूंठोंपर जा बैठा है। अब क्या तू परमात्मा बन गया है ?"

प्रेम-पथमें सुख भी है और दुःख भी—

लग्ग न किसे नूं जावे;
गुड़ नालों इश्क़ मिट्ठा।

'ईश्वर करे कोई प्रेममें न फंसे, पर सच पूछो तो प्रेम गुड़से कहीं मीठा है।"

ग्रामीण पञ्जाबमें अनेक प्रकारके और अनेक रसोंके गीत प्रचलित हैं। सचमुच ये गीत यहांके जीवनका ताना-बाना हैं। ग्रामीण नर-नारी गीत गाते हुए स्वप्न देखते हैं और स्वप्न देखते हुए गीत गाते हैं। शहरोंमें बसनेवाले भले ही ग्रामीण बहनों तथा भाइयोंको गंवार कह दें, मगर उनके गीतोंकी सात्त्विक कविता देखते हुए तो हमें उनकी प्रशंसा ही करनी पड़ती है।

---

# निर्मोहीका प्यार

अरी ! पूछती हो मुझसे जब मेरी करुण कहानी,
जाता है आनन्द छोड़, आता आंखोंमें पानी।
होता हूं उन्मत्त, विकलता क्षण-क्षण बढ़ती जाती,
आती है आंखोंके आगे बचपनकी नादानी—

जब मुझमें था सहज सरलपन,
हृदय स्वच्छ था, निर्मल था मन,
जीवनका वह तुतला बचपन—

अब भी अपनी याद दिलाकर मनको क्षुब्ध बनाता,
कभी हंसता, कभी रुलाता, हृदय चुराता जाता।
हाय ! न मिल सकता यौवनमें वह माताका प्यार,
यह यौवन तो बड़ा विषम है, नित्य व्यथा उपजाता।

इसमें जीवनका आसव है,
मस्तीका मधुमय अनुभव है,
अरी ! प्रणयका यह वह भव है,

जिसमें वही वास कर सकता, जिसका मन निश्छल है,
नव-उन्माद-भरे रससे जो रहता नित विह्वल है।
सोच-समझकर पैर बढ़ाना, इसमें री दीवानी,
दृढ़ हो करना काम, जानना यौवन बड़ा विकल है।

यौवनका था सुन्दर प्रात,
हृदय धड़कता था दिन-रात,
मचता था उरमें उत्पात—

मैंने ममता त्याग, सभी कुछ अपना उसपर वारा,
उसका अंग-अंग था, मेरे इन अधरोंका प्यारा।
वह सौन्दर्य-सुरा प्याली पी, किया सभी कुछ नाश,
भटक रहा हूं अब मैं वन-वन, दुखका मारा-मारा।

अतः भाग्यपर नित रोता हूं,
सुखकी नींद नहीं सोता हूं,
पाकर भी फिर-फिर खोता हूं—

अपना वह भण्डार, जिसे मैंने है स्वयं कमाया,
जिसमें मुझे मिला करती थी सुखकी शीतल छाया।
री पगली ! क्या लौटा सकती वह सुखका संसार,
जिसमें छिपा हुआ पाओगी 'निर्मोहीका प्यार' ?

—'प्राण' शिवहरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भावी एशिया

श्री अरुणचन्द्र गुह तथा डा० आनन्दीदीन तिवारी

डा० सन-यात-सेनसे एक बार 'Bombay Chronicle' के एक प्रतिनिधिने भेंट की थी। उस वार्तालापके प्रसङ्गमें उन्होंने जो-कुछ कहा था उसका सारांश यह है—"संसार-की सभ्यताका आदि जन्मदाता एशिया आज सबके पैरों-तले पड़ा है। युवक एशियाका मुख्य कर्तव्य है, उसको उसके प्राचीन गौरवपर प्रतिष्ठित करना। चीन यही चेष्टा कर रहा है। आशा है, समस्त एशिया हमें अपनी नैतिक सहानुभूति प्रदान करेगा।"

डा० सन-यात-सेनकी यह उक्ति विशेष रूपसे आलोचना-के योग्य है। प्रसिद्ध अंगरेज लेखक मानक्रीफने लिखा है:—

"Asia, which has been taken to be the cradle of the world's peoples, the focus of its earliest culture as of its highest religions, makes the largest and most populous of its divisions. This continent measures over 17 million square miles. It contains at least half of mankind, some 800,000,000, or more.

"It seems clear that the savagery of Europe was leavened by colonization from the swarming coasts or desiccating steppes of Asia. But while for fourscore generations or so, the smaller division of our world has been advancing the larger has been going back in progress." *

—"समस्त मानवजातिका जन्मस्थान एवं जगत्-सभ्यता व सर्वश्रेष्ठ धर्मोंका केन्द्रस्थान एशिया संसारमें सबसे बड़ा महादेश है। इसका क्षेत्रफल १७० लाख वर्गमील है, और संसारकी आधीसे अधिक जनसंख्या (जो ८० करोड़के लगभग है) यहां रहती है। यूरोपमें सबसे पहले एशिया ही से प्रकाशकी रश्मियां पहुंची थीं, और एशिया हीने यूरोपका बर्बरतासे उद्धार किया है। किन्तु हाय! आज जब कि सब देश सभ्यताके पथपर अग्रसर हो रहे हैं, उस समय एशिया पीछे पड़ा है!"

वास्तवमें संसारके सब धर्मोंका जन्मस्थान एशिया है। संसारकी प्राचीन सभ्यताका जन्मस्थान एशिया है। ईसाई, यहूदी, मुसलमान, ताऊ, कनफूशीय, सिण्टो, जैन, बौद्ध, सिख, हिन्दू—ये सब वर्तमान संसारके प्रधान धर्म हैं, और इन सबका जन्म एशिया हीमें हुआ है। बेबि-लन, असिरिया, फारस, मीदिया, फिनीसिया, हिटाइट, लिदिया, भारत आदिकी सभ्यताकी गणना प्राचीनसभ्यतामें है। मिस्रके अतिरिक्त संसारकी अन्य सब प्राचीन सभ्यताओंका जन्म एशिया हीमें हुआ है। यह सब जातियां उस समय सभ्यताके उच्चतम शिखरपर थीं। ग्रीस और रोम उस समय भविष्यके गर्भमें थे। ग्रीसकी जिस सभ्यता-की प्रशंसाका डङ्का पश्चिमी लोग पीटते हैं, उसका भी जन्म एशिया हीमें हुआ था। एशियाके पश्चिम उपकूलसे ग्रीक लोग ग्रीस गये थे, और ग्रीक सभ्यताका जन्म वहीं हुआ था।

यूरोपने अपनी वर्णमाला फिनीसियासे प्राप्त की है। भारतसे उसको संख्या-गणनाकी विधि मिली है। मुद्रा, ज्योतिष इत्यादि सब चीजोंके लिए वह एशियाका आभारी है। उसका ईसाई धर्म भी एशिया हीकी देन है। मुद्रायन्त्र, बारूद, दिशासूचक यन्त्र, कागज, दूरबीन, छाता—सब ही का जन्म पहले एशिया हीकी उर्वर भूमिमें हुआ है।

सैनिक शक्तिमें भी एशिया दुर्बल न था। फिनीसिया-वासियोंने एक समय स्पेन और भूमध्यसागरपर अपना एकाधिपत्य स्थापित कर लिया था। फिनीसियन लोगोंके वंशधर कार्थिजियन लोगोंने स्पेन और 'गाल'को विजय करके इटली तक आक्रमण किया था। दारयुसने थ्रेस और मेसिडोनियापर बहुत दिनों तक शासन किया। कई

* The New World of Today, Vol. VI.—A. R. Hope moncrieff.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शताब्दियों तक यूनानी फारसको कर देते रहे। यह तो हुई प्राचीन युगकी कथा। इसके पश्चात् भी शक, हूण और मुगलोंने प्रायः समस्त पूर्वीय यूरोपको जीत लिया था। आज भी उनके वंशधर हङ्गरी, बलगेरिया, फिनलैण्डमें रहकर यूरोपपर प्राच्यके आधिपत्यका परिचय दे रहे हैं। इसलामके अभ्युदयके बाद अरबों और तुर्कोंने यूरोपके कई देशोंपर अधिकार कर उनपर दीर्घकाल तक शासन किया है। समस्त रूस, समस्त बालकन प्रदेश और स्पेन क्रमशः मुगलों, तुर्कों और अरबोंके अधीन रह चुके हैं। हूण वीर आटिला, मुगल वीर चङ्गेज खां और अन्य मुगल योद्धाओंका सामना करनेका साहस यूरोपमें किसीको नहीं था। यूरोपियन लेखकोंकी पुस्तकें पढ़कर, आटिला, चङ्गेज खां और काब्लुइ खांको हम लोग बर्बर, पशु-प्रकृति, अत्याचारी, दस्यु आदि नामोंसे सम्बोधित करते हैं; किन्तु सिकन्दरकी एशिया-विजय, पिजरोकी पेरू-विजय, वासको-डी-गामाका भारतके पश्चिम उपकूलपर अधिकार, नव्य यूरोपीय जातियोंका दास-व्यवसाय और आफ्रिकाकी निग्रो जातिके साथ इनका दुर्व्यवहार, न्यूजीलैण्डके आदिम निवासियोंके प्रति व्यवहार, आस्ट्रेलिया और अमेरिकाके आदिम प्राचीन अधिवासियोंके प्रति अत्याचार-मूलक व्यवहारके मुकाबिलेमें, आटिला, चङ्गेज और काब्लुईकी निन्दा करनेका हमें कोई कारण नहीं दिखायी देता।

किन्तु एशियाका प्राचीन गौरव अब कहां है? आज वह सब तरहसे यूरोपके पैरों-तले दबा हुआ है। यूरोपने अपनी विश्वग्रासी क्षुधामें संसारके छः महादेशोंमेंसे पांचको पूर्णरूपसे गलेके नीचे उतार दिया है। छठा महादेश एशिया भी यूरोपकी कुक्षिमें जाने हीको अवस्थामें है। एशियावासी अपने ही घरमें प्रवासी हो रहे हैं। एशियाको छोड़कर हमारे लिए किसी महादेशमें स्थान नहीं है। भारतमें एक भारतवासीकी अपेक्षा एक श्वेताङ्गके जीवन और सम्मानका ही अधिक मूल्य है। चीनमें चीनियोंकी अपेक्षा गोरोंके अधिक अधिकार हैं। ब्रह्मदेश, फारस, अरब, सीरिया, इराक—सर्वत्र ही यही अवस्था है। समस्त एशियामें केवल जापान ही ऐसा देश है जिसने अपनी मर्यादाको बचा रखा है। लाल सागरके पूर्व, जापान ही एक स्वाधीन देश है। चीन, श्याम, नेपाल, अफगान, इराक, अरब, सभी यूरोपके इशारेपर नाचते हैं। गत महायुद्धके पश्चात् मुस्तफा कमालपाशाके प्रयाससे तुर्क भी अपने सम्मान और मर्यादाकी रक्षा करने योग्य हो गये हैं। रजा खां पहलवीने भी अपने उद्यमसे फारसको विदेशियोंके अनुचित बन्धनोंसे मुक्त कर दिया है।

अब धीरे-धीरे पूर्वीय देशोंकी निद्रा भङ्ग होने लगी है। जापान इस नव जागरणका अग्रदूत है। आज चीन, फारस, टर्की प्रभृति देशोंमें राष्ट्रीयताका नव-उन्मेष हो रहा है। यूरोप इस नवीन जागृतिको भयकी दृष्टिसे देख रहा है। उसको शङ्का है कि कहीं उसका विश्व-साम्राज्य हाथसे न निकल जाय। उसको मालूम है कि इस साम्राज्यके मूलमें हमारी कितनी निर्बलता और अज्ञानता, और कितने वीभत्स अत्याचार और बर्बरता निहित हैं। जिस समय हम आंखें मलकर अपनी असली अवस्थाको देखेंगे उस समय स्थिति ही कुछ दूसरी हो जायगी। यह बात यूरोपवासी भली प्रकार जानते हैं। इसीलिए वे सैकड़ों प्रकारसे प्राच्यको अपने बन्धनमें रखनेकी ही चेष्टा करते रहते हैं।

आस्ट्रेलिया, आफ्रिका और दोनों अमेरिकाओंमें कहीं भी हमारे लिए स्थान नहीं है। जहां कुलियोंकी आवश्यकता होती है वहीं एशियावासियोंकी मांग होती है। किन्तु यदि हम भद्र गृहस्थकी भांति किसी देशमें आबाद हो जाना चाहते हैं तो गोरी जातियां हमारे बहिष्कारके क्रन्दनसे पृथ्वी और आकाश एक कर देती हैं। दक्षिण आफ्रिका, केनाडा, फीजी आदि ब्रिटिश उपनिवेशोंमें भारतीय आज मानव-अधिकारसे वञ्चित रखे गये हैं। किन्तु भारतवासियोंने ही वहां आबाद होकर वहांकी कृषिको उन्नत करनेमें प्रधान सहायता दी है। संयुक्त राज्य अमेरिकाके किवाड़ समस्त एशियावासियोंके लिए बन्द हैं। आस्ट्रेलियामें सम्भवतः पचास करोड़ लोग रह सकते हैं। किन्तु केवल पचास लाख गोरे उसपर अधिकार जमाये बैठे हैं। जनसंख्या तथा पर्याप्त धनाभावके कारण आस्ट्रेलियाने आशानुरूप उन्नति नहीं की है, तिसपर भी वहां एशियावासियोंके लिए स्थान नहीं है। संसारमें सर्वत्र ही हमारी उपेक्षा की जाती है और हम घृणाकी दृष्टिसे देखे जाते हैं—हमारे लिए कहीं भी स्थान नहीं है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यह तो हुई विदेशकी बात,—अपने देशमें भी हम कुली हैं। भारतवर्षमें भारतवासियोंको किसी प्रकारके अधिकार नहीं हैं; चीनमें चीनियोंके कोई अधिकार नहीं हैं, अफगानिस्तान, अरब, ब्रह्मदेश, श्याम और भारत महासागरके द्वीपसमूहमें सर्वत्र यह दशा है। एशियाके किसी देशके इतिहासपर दृष्टि डालिये, आप देखेंगे कि श्वेताङ्ग जातियोंने सर्वत्र अपनी-अपनी सुविधानुसार देशको छिन्न-भिन्न कर दिया है। जारशाही रूस और अंगरेजोंने सन्धि करके फारस और तिब्बतपर अपना सिक्का जमाया था। फारस और तिब्बतसे इस विषयमें उनकी नेक सलाह लेनेका विचार भी कभी इन निःस्वार्थ दयालु जातियोंके हृदयमें न आया। चीन अफीम खाना नहीं चाहता था। गोरोंने उसको युद्धमें पराजित कर अफीम खानेके लिए बाध्य किया। श्याम और चीन गोरोंके साथ व्यापार करना नहीं चाहते, गोरोंको अपने देशमें घुसने देना नहीं चाहते, किन्तु गोरी जातियोंने तोपके बल उनके वक्षस्थलपर बैठकर उनके रक्त-शोषणका अधिकार प्राप्त कर लिया है। कुछ समय पूर्व चीन, जापान, फारस, श्याम इत्यादिमें वे देशी कानून माननेके लिए बाध्य थे, किन्तु आज तो दशा उसके विपरीत है। पूर्वीय देशोंमें रहकर, उनका रक्त-शोषण करके, उनका अपमान करके, आज वे पूर्वीय देशोंके कानूनको अंगूठा दिखाते हैं।

यहां तक तो हुई राष्ट्र और राजनीतिकी बात। शिक्षामें, नैतिक आदर्शमें, समाज-व्यवस्थामें, हरएक विषयमें हम लोग यूरोपके पदानत हैं। अभी कुछ समय तक समस्त पूर्व और पूर्ववासी मेकालेके इस कथनपर विश्वास करते थे कि "प्राच्यकी समस्त विद्या, पाश्चात्यकी आधी अलमारीकी विद्याके समान है।" जो व्यक्ति कोई पाश्चात्य भाषा नहीं जानता था उसको हम लोग शिक्षित और सभ्य ही नहीं समझते थे। समाजमें भी उनका अन्ध अनुकरण करना हम सभ्यताका चिह्न समझते थे। ६०-७० वर्ष पूर्व इस अन्धानुकरणके कारण बङ्गाली समाजकी दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी थी। उस समयके बङ्गालका सामाजिक इतिहास पढ़नेसे मालूम होगा कि अंगरेजोंका अन्ध अनुकरण करके, सभ्यता और शिक्षाका परिचय देनेके लिए, मद्यपान और गोमांस भक्षण करनेमें भी नवशिक्षित लोग तनिक भी पश्चात्ताप न करते थे। पाश्चात्य समाजमें भी बहुत-सी अच्छी चीजें हैं, किन्तु अच्छी बातोंकी अपेक्षा हम बुरी बातोंको ही अधिक ग्रहण करते चले आये हैं। राष्ट्रीय विषयोंमें, शिक्षामें, आदर्शमें, हरएक विषयमें उन्होंने हमारे शरीर और मनपर आधिपत्य स्थापित कर लिया है। शारीरिक आधिपत्य और मानसिक आधिपत्यमें घनिष्ठ सम्बन्ध है, और एकको रोध करनेसे दूसरेको रोध करना कठिन नहीं है।

पाश्चात्य जातियां जो आज हरएक विषयमें हमारे ऊपर आधिपत्य कर रही हैं, उसका क्या कारण है? इसके प्रधान कारण (१) उनकी विषय-बुद्धि, (२) जातिगत ऐक्य-बोध एवं (३) सामरिक बल हैं। प्राच्य जातियोंमें इन्हीं तीन बातोंका अभाव है। एक-एक करके हम इन तीनों बातोंपर विचार करेंगे।

प्राच्य देशवासियोंकी अपेक्षा पाश्चात्य देशवासियोंमें विषय-बुद्धि अधिक मात्रामें पायी जाती है। इससे कोई यह न समझे कि हम सब भोगवासना-रहित हैं अथवा योगी हैं। विषयभोगकी वासना हममें बहुत है, किन्तु उसको प्राप्त करने अथवा चरितार्थ करनेकी क्षमता हममें नहीं है। एक कुबड़ा भी चित होकर लेटनेकी इच्छा करता है, किन्तु उस वासनाको पूर्ण करनेकी क्षमता उसमें नहीं है। जो दुर्बल होते हैं उनमें न भोग करनेकी क्षमता होती है और न त्याग हीकी। इसीलिए हम लोग घरमें रहकर, भूखे, अधभूखे, मलेरिया, इन्फ्लुएञ्जा आदि रोगोंसे अनायास मृत्युके गालमें जाना पसन्द करते हैं, किन्तु स्वेच्छासे वीरकी भांति मृत्युका आलिङ्गन करनेका साहस हममें नहीं होता। सुमेरु, कुमेरु, गौरीशङ्कर पर्वतका अभियान पाश्चात्य देशवासियों द्वारा ही सम्भव है। किसी समाचार-पत्रके पृष्ठ उलटकर देखनेसे मालूम होगा कि चारों ओर यूरोपीय वायुयान-सञ्चालक किस प्रकार एक-दूसरेसे प्रतिद्वन्द्विता करनेमें अपने प्राणों तककी बाजी लगा रहे हैं। और कितनोंने इस होड़में अपने प्राणोंकी आहुति दे दी है। हम लोग तो इसको केवल पागलपन समझते हैं। वहां यह बात नहीं है कि हमारे लड़के घरमें रहें, आरामसे खायं और विलासितामें दिन काटें। वहां तो कोई मेसोपोटेमियाकी मरुभूमिमें प्राण देता है तो किसीकी कब्र सहाराके निबिड़ रेगिस्तानमें बनती है। कोई तो गौरीशङ्करके शिखरपर हिमके अञ्चलमें सदाके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिए विश्राम पानेमें ही अपना गौरव समझता है। किसीके प्राण-पखेरू उड़ते हैं सुमेरु व कुमेरुपर। दो मास, तीन मास, दो वर्ष अथवा तीन वर्षके बाद कभी-कभी मरुस्थलके बालूमें अथवा गौरीशङ्करकी हिम-राशिमें उनके मृत देहका पता लगता है। जो भोग करना चाहते हैं उन्हें वीरकी भांति उसके लिए चेष्टा भी करनी चाहिए। इसके लिए वह अपने प्राणोंको भी तुच्छ समझते हैं। हमारी भांति जो मिल जाय वही गनीमत समझकर वे सन्तुष्ट नहीं हो जाते। भौतिक उन्नति ( Material Prosperity ) के साधनके हेतु वे अपने तथा दूसरोंके प्राणोंका कोई मूल्य नहीं समझते। विषय-बुद्धिके ही बलसे वे चारों ओर संसारमें घूमते हैं और उसी विषय-बुद्धिके वश होकर उन्होंने निग्रो लोगोंका पशुओंकी भांति क्रय-विक्रय किया है, लोहिताङ्ग लोगोंको अमानुष कहकर निर्ममतासे उनकी हत्या की है, प्राच्य-वासियोंका स्वार्थ और सम्मान मिट्टीमें मिला दिया है, संसारके अनेक देशोंके आदिम निवासियोंको पृथ्वीके वक्षस्थलसे लोप कर दिया है और निर्भीकतासे अपने भी बहुत-से प्राण गंवाये हैं। समस्त संसारको भोग करनेकी उन्होंने दृढ़ प्रतिज्ञा की है। इसके लिए उन्होंने नीति, धर्म, मनुष्यत्व, मानव जीवन, अपना जीवन—सबकी अवहेलना की है।

उनकी प्रधानताका द्वितीय कारण उनका जातिगत ऐक्यबोध है। हमारे देशमें लगभग प्राचीन कालसे ही इस गुणका अभाव रहा है। हमारे शास्त्रोंमें धर्मयुद्धका उल्लेख है, किन्तु देश-रक्षाके लिए युद्धका कोई उल्लेख नहीं है। अवश्य ही यह बात माननी पड़ेगी कि प्राचीन कालमें किसी भी देशमें आजकी भांति जातीयताका बोध न था। उस समय लोग केवल व्यक्ति, परिवार और गोत्र ( clan ) को समझते थे। यूरोप, एशिया, आफ्रिका—कहीं भी राष्ट्रके लिए युद्ध और जातीयता-बोधका पता नहीं मिलता। वास्तवमें यूरोपमें भी सबसे प्रथम जातीयताका विकास सोलहवीं शताब्दीमें हुआ था। इसके पूर्व यूरोपमें जितनी लड़ाइयां हुईं वे सब व्यक्तिगत, परिवारगत, सम्प्रदायगत तथा धर्मगत कारणोंसे हुई थीं। द्वितीय फिलिपके विरुद्ध डच नेता विलियमकी युद्ध-घोषणा ही जातीय संग्रामका प्रथम निदर्शन है। प्रायः उसी समय या उसके कुछ ही बाद भारतमें भी जातीयताका विकास हुआ था। पञ्जाबमें गुरु गोविन्द सिंह और महाराष्ट्रमें छत्रपति शिवाजीने दिल्लीश्वर औरङ्गजेबके विरुद्ध जो युद्ध किये उन्हें जातीय युद्ध ही कहा जा सकता है। डच लोगोंके समयमें जिस प्रकार उनमें और अत्याचारी राजशक्तिमें धार्मिक पार्थक्य था उसी प्रकार सिखों और महाराष्ट्रोंके समयमें धार्मिक विरोध था। एवं इन्हीं तीन क्षेत्रोंमें धार्मिक अत्याचारके कारण ही जातीय स्वाधीनताकी प्राप्तिके लिए प्रयास आरम्भ हुआ।

यूरोप उस समय उन्नतिकी ओर अग्रसर होने लगा। समस्त यूरोपमें उस समय नवशक्तिकी लहर दौड़ने लगी। उसके प्रायः दो सौ वर्ष पूर्व स्पेन और पुर्तगालने अमेरिका और भारतके द्वार खोल दिये थे। उस मार्गसे यूरोपियनोंके दलके दल सरपट दौड़ने लगे। उन्होंने अपनी नवीन शक्तिके वेगसे जो कुछ प्राप्त किया उसीको आत्मसात और हजम कर गये। ओलन्दाजों (डच लोगों) ने जातीयताका जो आदर्श प्रदर्शित किया था यूरोपवालोंने उस आदर्शको शीघ्र ही धारण कर लिया। इसके कुछ ही समय बाद इंगलैण्डमें चार्ल्स प्रथमको फांसी दी गयी, और कुछ समयके बाद द्वितीय जेम्स-को सिंहासनच्युत करके मैरी और विलियमको इंगलैण्डके सिंहासनपर बैठाया गया। अवश्य ही इन सबमें धर्मका संश्रव था, किन्तु इस समस्त विरोध और विद्रोहका प्रधान उद्देश्य राजशक्तिको अपने मतानुवर्ती बनाना था। क्रमशः फ्रान्सकी क्रान्तिने जातीय ऐक्य और स्वाधीनताको यूरोपमें स्थापित कर दिया।

किन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि प्राचीन ग्रीस और रोममें जितना जातीयता-बोध था पूर्वमें किसी देशमें भी प्राचीन कालमें उस परिमाणमें वह भाव नहीं था। शिवाजी और गुरु गोविन्दके समय तो हिन्दू समाज पतनोन्मुख था। उनका आदर्श ग्रहण करनेकी क्षमता हममें न थी। किन्तु यदि बाहरी शक्ति आकर भारतीय समाजको परास्त न करती तब तो सम्भव था कि यूरोपकी भांति कुछ दिन आत्मकलह करके भारतवासी भी जातीय ऐक्यबोधको अपने जीवनमें प्रति-ष्ठित कर सकते थे। नव-जाग्रत अंगरेज, फ्रान्सीसी, पुर्तगाली आदि जातियोंने हमारी शान्त और मन्थरगति जीवनधाराको उलट-पलट दिया। सोलहवीं शताब्दीसे केवल भारतकी ही नहीं, समस्त एशियाकी अवनति आरम्भ हुई। इसीलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस समयके युगधर्म—जातीयताबोध—को एशियाकी जातियां धारण न कर सकीं।

भारतकी भांति टर्की, फारस, मिस्र, चीन, श्याम, अफगानिस्तान सब ही क्रमशः न्यूनाधिक पाश्चात्य देशोंके अधीन हो गये। जापानने देखा कि आत्मकलहमें रत रहनेसे विदेशियोंकी दासताकी जञ्जीरमें बंध जाना पड़ेगा, इसीलिए उसने आत्मकलहको दफन करके राष्ट्रीय ऐक्यको अपनाया। इसीके कारण आज एशियावासी जापान यूरोपीय राष्ट्रोंके साथ कन्धेसे कन्धा मिलाकर संसारकी समस्याओंपर विचार करता है। अभी थोड़े ही दिन हुए, तुर्कोंने इसीके बलपर अपने न्यायोचित अधिकार प्राप्त कर लिये हैं। आज सभी पूर्वीय देशोंमें जातीयताबोध उत्पन्न हो गया है। इसीलिए आज यूरोप सन्त्रस्त और भयभीत हो उठा है। एशियाकी इस नव-जागृतिको कौन रोक सकता है? कोई नहीं। यह तो एक अटल सत्य है। आज एशियाने पाश्चात्यकी प्रधानताके विरुद्ध विद्रोहका झण्डा खड़ा किया है। आज उसने पुनः अपने आत्मबोधको प्राप्त किया है।

पाश्चात्य देशोंकी प्रधानताका तृतीय और मुख्य कारण उनका सामरिक बल है। बर्ट्रैण्ड रस्सेलने लिखा है,—

"What stands in the way of the freedom of Asiatic populations is not their lack of intelligence, but only their lack of military prowess, which makes them an easy prey to our lust for domination".

(Roads to Freedom pp. 162—163).

अर्थात्—"आज जो एशिया यूरोपके अधीन है उसका कारण यह नहीं है कि वह यूरोपकी अपेक्षा बुद्धिमें हीन है, किन्तु उसका कारण यह है कि यूरोपकी भांति एशियामें सामरिक शक्ति नहीं है। इसीलिए आज एशिया यूरोपका दास है।" उन्नीसवीं शताब्दीके आरम्भसे आज तक कोई दो करोड़ वर्गमील भूमिपर पाश्चात्य जातियोंने अधिकार कर लिया है। समस्त आफ्रिका, आस्ट्रेलिया, भारत, आनाम, कम्बोडिया, न्यूजीलैण्ड, साइबेरिया, संसारके समस्त द्वीपपुञ्ज, मेसोपोटामिया आदि बहुत-से देशोंपर उनका अधिकार हो गया है। इसके अतिरिक्त चीन, श्याम, काबुल, नेपाल आदि देशोंपर उनका अधिकार न होनेपर भी यथार्थमें यह भी उन्हींके पदानत हैं। पाश्चात्य संसारमें शान्तिके अग्रदूतके रूपमें अमेरिकाके राष्ट्रपति विलसनने संसारमें शान्ति-स्थापनाके लिए अनेक अभिनय किये हैं। उन्होंने कहा था—"It is necessary always to remember that it is force which is the ultimate guarantee of public peace."

अर्थात्—शान्तिरक्षाका प्रधान उपाय सामरिक शक्ति ही है। "China Review" नामक पत्रमें एक चीनी लेखक Lowe-chuan Hwa ने ठीक ही लिखा है—"Already the occident has sharn that it dominates the orient not so much because it has a better religion, loftier morals or higher intelligence, as because it knows how to fight and how to make money."

(Modern Review, July 1924)

अर्थात्—पाश्चात्य जातियोंने यह प्रमाणित कर दिया है कि उन्होंने अपने उच्च धर्म, नैतिकता अथवा बुद्धिकी अधिकतासे प्राच्य देशोंको पदानत नहीं किया है; पदानत किया है अपनी युद्ध-विद्या और अर्थ-सञ्चय-विद्याके बलसे।

सत्रहवीं शताब्दीसे पाश्चात्य जातियोंने सामरिक शक्तिमें विशेष उन्नति की है और इसकी मात्रा क्रमशः बढ़ती ही जाती है। एशियामें सबसे प्रथम भारत ही उनके अधीन हुआ है। फिर धीरे-धीरे समस्त एशियाको उनकी सामरिक शक्तिके सामने नत होना पड़ा। आज वही हमारे भाग्य-विधाता हैं। अपनी सामरिक शक्तिसे आज उन्होंने हमारे जीवनके प्रत्येक भागपर अपना सिक्का जमा रखा है। जातीयता, व्यवसाय, धर्म, शिक्षा आदि सब बातोंमें हम उनके अधीन हैं। डा० सिडनी गुलिकने लिखा था कि "पूर्वमें श्वेत-समस्या केवल एक राजनीतिक समस्या ही नहीं है। यह एक व्यावसायिक समस्या भी है, क्योंकि श्वेत लोगोंकी प्रतिद्वन्द्वितासे आज पूर्वमें लाखों लोग दरिद्र हो रहे हैं। न्याय विभागमें भी श्वेत-प्रभुत्व, सत्य और न्यायकी अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। सुदूर पूर्वमें श्वेताङ्गोंकी उपस्थितिने नैतिक आदर्शको भी हनन कर दिया है।"

इस स्थानपर और एक बातको स्पष्ट कर देना उचित है। संसारचक्रकी वर्तमान प्रगतिसे यह परिणाम अनिवार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मालूम होता है कि शीघ्र ही श्वेत-सभ्यता नष्ट हो जायगी, उस समय रङ्गीन जातियां अपनी नवीन सभ्यता, नव उद्यम, नूतन कर्म-स्पृहा लेकर दुनियाका रङ्ग ही बदल देंगी। इसके लिए उन्हें साम्राज्यकी आवश्यकता है। आत्म-प्रसारके लिए क्षेत्र चाहिए, धनकी प्रचुरता चाहिए। जिस जातिमें आर्थिक और इहलौकिक सम्पत्तिका अभाव होता है वह जाति संसारकी सभ्यताको नवीन चीज प्रदान नहीं कर सकती। पूर्वके भारत, चीन, फारस, बेबिलन, फिनीसिया आदिने जिस समय संसारकी सभ्यताके भाण्डारमें कुछ दान दिया है उस समय उनकी आर्थिक दशा भी आवश्यकतासे अधिक सन्तोषजनक थी। आज पाश्चात्य सभ्यताका बोल-बाला उनकी अर्थ-प्रचुरता तथा विशाल साम्राज्यके कारण है। मिथ्या त्यागके मोहमें पड़कर जातिको विभ्रान्त करनेसे कोई लाभ नहीं है।

बर्ट्रेण्ड रसेलने लिखा है—"The belief of the European in his own Kultur tends to be fanatical and ruthless." अपनी सभ्यताके अहङ्कारमें यूरोपवासी और दूसरेकी सभ्यताको ग्रहण ही नहीं करते, और दूसरेकी सभ्यतापर निर्मम अत्याचार करते हैं। इसके प्रतिकारके तौरपर उन्होंने यह भी कहा है—"The independence of extra-European civilization is of real importance to the world, for it is not by dead uniformity that world as a whole is enriched." अर्थात्—जगत्की विभिन्न सभ्यताओंकी धाराको स्वाधीन गतिसे प्रवाहित होने देना होगा। क्योंकि सभ्यताका वैषम्य ही संसारकी उन्नतिका प्रधान कारण है।

अपनी प्राचीन सभ्यताका पुनरुद्धार एशियाई जातियोंके लिए परम आवश्यक हो उठा है। यह तभी हो सकता है जब एशियाकी सब जातियां एकताके सूत्रमें ग्रथित हों।

---

# भीख

*उर-व्रतति विरस, उन्मूलित सुख-मंजरियोंकी जाली*
*धुल रही अश्रु-बूंदोंमें मेरे प्रभातकी लाली*
*हटती न कभी मिटनेकी उद्भ्रान्त-भावना मनसे*
*रो-रोकर ऊब गया हूं जीवन एकाकीपनसे*
*देखो टुक लघुता मेरी छोटी जीवनकी गागर*
*क्यों भरते हो करुणामय! इसमें विषादका सागर*
*वैभवकी राख लपेटे कबसे गाता हूं गाने*
*दे दो जर्जर अंचलमें हे देव! दयाके दाने*
*ममताके मृदु अधरोंपर मुसकान मधुर आने दो*
*तम-पूरित उर-अम्बरमें आलोक बिखर जाने दो।*

—श्रीनिधि द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# लाडोरानी

श्री तारकेश्वरप्रसाद

[ १ ]

अमरनाथके तीस वर्षके सुदीर्घ और निर्विचित्र जीवनमें यह पहला ही अवसर था कि बिलकुल ही आमने-सामने खड़े होकर वह एक सुन्दरी युवती स्त्रीसे बातें कर रहा था। वह बहुत ही लम्बा, दुबला-पतला सुदर्शन युवक था। लाडोरानी उसके सीने तक भी नहीं पहुंच पाती थी। बिलखते हुए अपने एक वर्षके बालकको गोदमें उठाकर वह बोली—"आप उनके मित्र होते हैं—यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई—आइये, बैठिये।" सङ्कोचसे विन्रस्त होता हुआ अमरनाथ सिर झुकाकर पलंगपर बैठ गया।

लाडोरानी बोली—"तो क्या वह बारह बजे रातको आयेंगे?"

"जी हां, दोस्तोंके साथ सिनेमाको चले गये।" बच्चा अभी रो ही रहा था। लाडोरानीने बच्चेको अमरनाथकी गोदमें देकर कहा—"इस बदमाशको पकड़िये—मैं आपके लिए चाय ले आऊं।"

अमरनाथ विरोध नहीं कर सका। इस अपरिचित युवतीकी स्वच्छन्द और प्रफुल्ल चेष्टाओंको देखकर वह हैरतमें आ गया था। बच्चा चुप होकर उसके चश्मोंसे उलझ गया था। कुछ देर बाद लाडोरानी एक तश्तरीमें चार-पांच कचौरियां और एक प्याला चाय लेकर आयी। बोली—"खाइये, मैं बच्चेको लेती हूं।" सारी चीजें पलंगपर रखते हुए लाडोरानीने कहा—"आओ लल्ला!"

"ऊहुंक!" लल्ला नहीं आया।

अकस्मात् एक सुन्दर और अनजान परिवारमें आकर अमरनाथका हृदय जैसे हर्षसे प्रकम्पित हो रहा था। उसने गद्गद होकर कहा—"छोड़ दीजिये, इसे बैठने दीजिये।"

अमरनाथ बच्चेको प्यार कर रहा था, पर लाडोरानीका मातृ-हृदय विगलित होकर प्रेमकी अजस्र धारामें बहने लगा। जब अमरनाथ जाने लगा तो लाडोरानीने कहा—"आपका नाम तो मैं नहीं जान सकी!" "अमरनाथ।" कहते हुए अमरनाथके मुखपर अकारण लज्जाकी लालिमा छा गयी। उसके स्वभावमें स्त्रियोंकी-सी सङ्कोचशीलता वर्तमान थी।

"फिर आइयेगा!"—लाडोरानीने कहा।

[ २ ]

लाडोरानी पञ्जाबकी थी। उसका पति कलकत्तेमें एक तेलके कारखानेमें नौकर था। वेतन डेढ़ सौ रुपये मिलता था। उसका नाम धर्मपाल था। बड़ाबाजारमें एक कमरा किरायेपर ले रखा था। लाडोरानी हिन्दी और उर्दू बड़े मजेमें पढ़ और लिख सकती थी। उसकी बोलचाल और शील-स्वभावमें एक विचित्र सौष्ठव पाया जाता था। पर सबसे अधिक आकर्षक था उसका रूप, जो बिजलीकी तरह चोट करता था। देखनेवालोंकी आंखें कुछ क्षणों तक चौंधिया-सी जाती थीं। अमरनाथ तबसे कई मर्तबा लाडोरानीके यहां आ चुका था। उसकी झिझक दूर हो चुकी थी। लाडोरानीके स्वतन्त्र हाव-भावने उसपर गहरा प्रभाव डाला। उसे अपनी अविवाहितावस्था बड़ी बुरी मालूम पड़ने लगी। जिस वेगसे उसके हृदयमें अविवाहित रहनेकी लहर उठी थी—अब उसके दुगने वेगसे हृदयकी सारी लालसायें उमड़कर एक स्त्रीपर केन्द्रीभूत हो गयी थीं। अब वह बड़े गौरसे लाडोरानीकी आंखें, नाक, दांत आदि अवयवोंको देखा करता। अब उसके पहनावे यथेष्ट साफ रहते। जूतेमें बराबर पालिश होता रहता; रूखे-सूखे बालोंमें चिकनाहट आ गयी थी; कभी कभी उसके ओठोंपर पानकी लाली भी देखी जाती; और सिगरेटसे भी उसे चिढ़ नहीं रह गयी थी। एक दिन लाडोरानीने कहा—"अमर बाबू, आप जिस दिन पहले-पहल यहां आये, मैं चकित रह गयी थी कि कलकत्तेमें भी इतनी बुरी अवस्थामें कोई रह सकता है—और अब तो—"

लाडोरानीके अधरपर एक मोहक मुसकान खेल उठी।

एकटक इस रूप-सुधाका पान करता हुआ अमरनाथ बोला—"दुनियामें परिवर्तन होते हैं—मैं अपनी भूलसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पिछड़ा हुआ था।" पर उसकी आंखें रसमयी होकर कह रही थीं कि "इसका सारा श्रेय तुम्हें है, लाडोरानी!"

"अब क्या भूलका सुधार कर रहे हैं?"

"कोशिश कर रहा हूं।"

लाडोरानी फिर मुसकरा उठी। उस मुसकानमें एक अजीब सनसनीदार मोहकता थी। मस्तिष्कमें एक विचित्र कम्पन पैदा होनेके कारण अमरनाथ जल्द ही वहांसे वापस चला गया।

[ ३ ]

अमरनाथके जीवनमें अकस्मात् ही एक अत्यन्त मार्मिक अध्यायका आरम्भ हुआ। अपनी पहली कविताओंमें उसने प्रकृतिका ही सुन्दर वर्णन किया था। पर अब वह गीत लिखने लगा था, जो ताल, लय आदिके साथ होते। उसके गीतोंमें अब प्रेमकी वेदना, हृदयकी कसक और अतृप्त आकांक्षाओंका विकृत रुदन पाया जाता। भावावेशमें आकर वह कहानियोंकी ओर झुका। कई कहानियां उसने बड़ी सनसनीखेज लिखीं। अपनी अनुभूतिको कल्पनाके साथ मिलाकर उसने एक उपन्यासपर हाथ लगाया। यह सब तो थे; पर इन सबोंका प्रेरणा-स्थल थी लाडोरानी।

एक दिनकी बात है। सावनका महीना था, पर धूप खिली थी। करीब दो बजे अमरनाथ किसी तरह दफ्तरके कामसे निबटकर लाडोरानीके कमरेकी ओर जा रहा था। लाडोरानीके कमरेसे धीरे-धीरे हारमोनियमके साथ गुनगुनानेकी आवाज आ रही थी। अमरनाथने पर्दा हटा दिया। लाडोरानी अपने अस्तव्यस्त कपड़ेको संभालती हुई बोली—"आइये, अमरनाथ बाबू, बैठिये!" अमरनाथ मुसकराता हुआ चेहरा लेकर उसी पलंगपर बैठ गया। क्षण-भरके लिए चार निगाहें शर्माकर नीची हो गयीं। अमरनाथने कहा—"आज मुझे कोई अच्छा-सा पञ्जाबी गीत सुनाइये।"

"क्यों?" लाडोरानीकी इस सरलतामें शरारत छिपी थी, पर फिर ठठाकर हंसती हुई बोली—"अच्छा, अभी सुनाती हूं।" सहसा आसमानमें बादल घिर आया। रिमझिम वर्षा होने लगी। लाडोरानीने अत्यन्त ही सुरीले कण्ठसे गाया—

"पार चनावे मेरी झोपड़ी
मैं खड़ी बसावां मींह।
भिज्जन लग्गियां मेरियां पूनियां,
भिज्जन लग्गया मेरा नींह॥

—"चनाब नदीके उस पार मेरी झोपड़ी है, और मैं यहां खड़ी वर्षामें भीग रही हूं। मेरी पूनियां भीगने लगी हैं और मेरा प्रेम भी भीग रहा है।"

गीतकी मनोहर स्वर-लहरी वायुमें गूंजने लगी। बाहर जो वर्षाका सङ्गीत हो रहा था वह भीतरके इस दर्दभरे सङ्गीतके साथ मिलकर एक विचित्र मादकताका सञ्चार करने लगा था। लाडोरानीके सिरपरका वस्त्र नीचे खिसक आया था। गालोंमें लाली छा रही थी। केशपाश विमुक्त होकर मदभरी आंखोंपर अठखेलियां करने लगा था। अमरनाथ धीरेसे उठकर खिड़कीके पास आकर खड़ा था। लाडोरानी गा रही थी—

थरथर कंम्बे जिंदड़ी
खड़े ना भैड़ा मींह
फेर सुकांवांगी पूनियां
किंवें सुकांवांगी नींह॥

—"मेरा शरीर थर-थर कांप रहा है और यह पापिन वर्षा थमती ही नहीं। पूनियां तो मैं फिर भी सुखा लूंगी, पर हा! मैं इस भीगे हुए प्रेमको कैसे सुखाऊंगी!"

अमरनाथ लाडोरानीके समीप आकर बैठ गया। वह अपनी सुधबुध खो बैठी थी। सहसा अमरनाथने लाडोरानीको अपने बाहुपाशमें आबद्ध करके उसके अधर-प्रदेशमें एक चुभती हुई रेखा अङ्कित कर दी। तुरत ही विक्षिप्तकी तरह उठकर अमरनाथ तेजीसे बाहर चला गया।

[ ४ ]

उपर्युक्त घटनाके तीन वर्ष बाद अमरनाथ एक मैले-से दुर्गन्ध-भरे कमरेमें टूटी खाटपर लेटा था। उसकी बड़ी-बड़ी मूछें और दाढ़ी निकल आयी थी। चेहरा मुमूर्षुकी तरह डरावना-सा लग रहा था। ऐसा मालूम होता था जैसे महीनोंसे वह खाटपर पड़ा हुआ हो। एक कोनेमें एक धुंधला दीपक कमरेमें क्षीण प्रकाशकी सृष्टि कर रहा था। वहींपर एक हुक्का और कई टूटे-फूटे बर्तन रखे थे। अकस्मात् उसने एक आह खींची और अतीतकी दर्दभरी तसवीरें फिर आंखोंके सामने आने लगीं—किस तरह लाडोरानीके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसकी प्रथम प्रणय-लीला आगेको बढ़ती गयी—निर्बाधरूपसे, अविराम गतिसे !

"किस तरह"—उसने सोचा—"मेरे साथ लाडोरानी अपने प्यारे बच्चे और पतिको छोड़कर चली आयी थी—ओह, सचमुच चली आयी थी। उस समय उसने नहीं सोचा था कि भविष्य कितना डरावना और भयङ्कर होगा !"

"क्या वह एक सपना था !"—अपने बीमार शरीरको केहुनीके बल टिकाते हुए उसने मन-ही-मन बड़बड़ाते हुए कहा—"ओः ! वह कितना बुरा था—अकस्मात् ही लाडोरानी उससे विमुख और विरक्त हो गयी—पता नहीं क्यों ? वह उसे इतना अधिक प्यार करता था ! ओह—इतना अधिक !"

वह सोचने लगा—"एक दिन सुबह उठनेपर मैंने लाडोरानीके कमरेमें उसकी लाश देखी थी—और देखकर मैं किस तरह किंकर्तव्यविमूढ़ हो सिरसे पैर तक आतङ्कित हो उठा था ! ओह भगवान् ! क्या वह सचमुच सपना था ! पर वास्तविकता और स्वप्नमें भी क्या अन्तर है ?—आह, पर वह मर क्यों गयी ? मेरे प्यारको उसने नहीं पहचाना !" रह-रहकर उसे अपना घर याद आता था—"उसने जरा भी नहीं सोचा कि मैं किस तरह उजड़ गया, हां—उसके लिए चौपट हो गया ! ओह ! वह मायाविनी थी। अपने झिलमिल रूपसे मुझे रिझाकर वह मुझे पागल बना गयी !"

"अरे, वह लाडोरानी !"—वह खांसता हुआ जोरसे बोल उठा—"हां यह तो लाडोरानी है—आओ रानी !—देखो मैं तुम्हारे बिना किस तरह हो गया हूं—देखो, पर ठहरो—अब क्यों आयीं ? जब मैं इस दुनियासे ही चला जा रहा हूं—जब मेरी हस्ती मिट रही है—रानी, तुमने मेरा हृदय उद्भ्रान्त करके छोड़ दिया। किस विनाशके क्षणमें तुम्हारा जन्म हुआ था ! किस उन्मत्त प्रेमकी कराल ज्वाला तुम अपने साथ लायी थीं जिसमें स्वयं दग्ध होकर—पति और पुत्रको दग्ध करके मुझे भी तिल-तिल करके तुमने जला डाला !"

"ओह"—वह जोरसे चिल्लाकर बोला—"यह मेरे हृदयमें फिर कैसा दहकता हुआ कम्पन उठ रहा है ! ओह, सचमुच यह कम्पन कैसा है—कैसा विचित्र ! कैसा दर्दनाक ! यह मुझे कैसी पीड़ा हो रही है ! यह मेरा बदन क्यों चूर हो रहा है ! आह ! क्या यह मौत आ रही है—मौत ! ओह भगवान्, मुझे बचाओ—बचाओ !"

उसकी चिल्लाहट कुछ-कुछ धीमी हो रही थी। उसके स्वरमें वेदना चीख रही थी। रात आधी बीत चुकी थी। चारों ओर गहरा अन्धकार फैला हुआ था। तैलहीन दीपक अपनी अन्तिम ज्योति दिखा गया। कमरा भांय-भांय कर रहा था। अकस्मात् एक कुत्ता बड़े ही डरावने स्वरसे रो उठा। शायद भीतर जिस अभागेकी लाश पड़ी थी—उसीकी मातम-पुरसीमें !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# महाभारत-कालका नैतिक जीवन

श्री रामनारायण भार्गव

[ इस लेखमें महाभारत-कालकी दुर्नीति-परायणताके सम्बन्धमें लेखकने जो बातें लिखी हैं वे विवादास्पद हैं। 'विश्वमित्र' की नीति सदा प्रत्येक विषयके दोनों पहलुओंको पाठकोंके आगे प्रकाशमें लानेकी रही है। वर्तमान लेख भी इसी उद्देश्यसे प्रकाशित किया जाता है।—सम्पादक ]

महाभारत-कालीन समाजमें जहां हम एक ओर पति-पत्नीकी परस्पर-निष्ठाका महत् आदर्श प्रतिष्ठित हुआ पाते हैं वहां दूसरी ओर उच्छृङ्खल व्यभिचारकी अप्रतिहत धाराका उद्दाम प्रवेग प्रवाहित देखते हैं। आश्चर्य यह है कि समाजने इन दोनों परस्पर-विरोधी नैतिक स्वरूपोंको समानरूपसे एक ही साथ निबाहा है। कुछ लोग महाभारत-युगकी दुर्नीति तथा स्त्री-पुरुष-स्वच्छन्दताका कारण उस युगके सामाजिक विकास तथा नैतिक संस्कृतिकी अपरिपक्वता बतलाते हैं। पर बात ठीक इसके विपरीत है। उस युगकी नैतिक संस्कृति आवश्यकतासे अधिक विकसित होनेके कारण ही उस समयके समाजमें दुराचारका घातक कीड़ा घुसकर उसके कलेजेको चाटने लगा था। आध्यात्मिक आदर्शवादी जिस प्रकार इस युगके सम्बन्धमें यह कहते हुए खेद प्रकट करते हैं कि भौतिकवादकी अत्यधिक प्रधानताके कारण इस युगमें अनाचारका बोलबाला दिखायी देता है, उसी प्रकार इस युगके भौतिकवादी न्यायतः कह सकते हैं कि आध्यात्मिक आदर्शोंकी चरमातीत उत्कर्ष-साधनाके कारण प्राचीन समाजमें यथेच्छाचारका सामूहिक प्रचार पाया जाता था। यदि निष्पक्षभावसे विचारपूर्वक देखा जाय तो इस विरोधाभासात्मक (Paradoxical) कथनमें एक चरम सत्यका अस्तित्व दृष्टिगोचर होगा। आध्यात्मिक विचारोंकी ऐकान्तिक उन्नतिकी ओर उस युगके ज्ञानियोंका ध्यान इस प्रकार केन्द्रीभूत हो गया था कि इहलौकिक जीवनकी शारीरिक तथा मानसिक आवश्यकताओंके प्रश्नकी ओर ध्यान देना ही वे उचित नहीं समझते थे। फलस्वरूप समाजका एक अङ्ग जहां ब्रह्ममें लीन होने लगा वहां दूसरा भाग भोग-विलासके मायामय पङ्कमें निमज्जित होता चला गया। इस युगके जड़वादी कहते हैं कि पाप-पुण्य, सुनीति-दुर्नीति आदिका कोई अस्तित्व इस प्रकृति द्वारा सृष्ट जगत्में कहीं नहीं है। मजा देखिये कि महाभारत-कालके अध्यात्मवादियोंका मत इस सम्बन्धमें जड़वादियोंसे एकदम मिलता है। कहा है कि Extremes always meet.—दो चरमावस्थायें सदा एक रूपमें आकर मिलित होती हैं। एक उपनिषत्कारने कहा है कि जो लोग अविद्या (अर्थात् भौतिक विद्या) को भजते हैं वे अन्धकारमें पतित होते हैं, पर जो केवल विद्या (कोरा अध्यात्म-ज्ञान) को भजते हैं वे और भी गहन अन्धकारमें निमज्जित होते हैं। विद्या और अविद्याका सम्मिश्रण ही एकमात्र जगत्-कल्याणकर आदर्श बतलाया गया है। कृष्णने अपने युगमें आध्यात्मिक आदर्शकी विकृति नैतिक विशृङ्खला देखकर ज्ञान और कर्म (विद्या तथा अविद्या) के इसी समन्वयका उपदेश जनतामें प्रचारित करना प्रारम्भ किया था। पर खेद इस बातका है कि उनके इस महत् आदर्शका गाम्भीर्य हृदयङ्गम कर सकनेके पहले ही युगान्तके प्रलयने भारतको अपने रुद्रकोपसे ध्वस्त-विध्वस्त कर डाला। उस सामूहिक विनाशलीलाके फलस्वरूप समाज पहलेकी अपेक्षा भी अधिक स्वच्छन्द और भोगोन्मादी हो उठा। कुरुक्षेत्र-काण्डके बाद कृष्णके सहजातीय यादवोंमें जो उन्मत्त नग्न-विलासिता आ गयी थी उससे सभी पाठक परिचित होंगे।

ऊपरकी भूमिकामें हमने यही दिखाना चाहा है कि महाभारतकालमें भोग-विलासका जो उन्मुक्त स्रोत प्रवाहित होता हुआ पाया जाता है वह कोई रूपक अथवा कविकी कल्पना नहीं है। वह एक ऐतिहासिक सत्य है। प्राचीन-कालमें संसारमें सर्वत्र, सब देशोंमें जो विलासिता पायी जाती थी, महाभारत-कालीन भारत भी उससे छूटा न था।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पाण्डवोंके राजप्रासादमें ऐसी परिचारिकाओंका तांता लगा रहता था जो सङ्गीत, वाद्य, नृत्य-कला आदिमें अत्यन्त निपुण थीं और नाना रूपोंसे पाण्डवोंका विनोद-साधन किया करती थीं। वसन्त ऋतुमें यमुनाके कुञ्जोंमें तथा उद्यान-भवनोंमें उन विलासिनियोंके साथ पाण्डव लोग नाना प्रकारके आमोद-प्रमोद तथा राग-रङ्गमें मस्त रहा करते थे। सुभद्राके साथ विवाह होनेके समय अर्जुनको कृष्णने एक सहस्र अनुपम रूपवती, गुणवती तथा कलावती स्त्रियां प्रदान की थीं। यह स्पष्ट है कि ये सब स्त्रियां किसी पुण्य-कार्यके लिए अर्जुनको प्रदान नहीं की गयी थीं। अरब सागरमें एक प्रसिद्ध द्वीप था जो रत्नद्वीपके नामसे विख्यात था। इस द्वीपके निवासी, सुन्दरी लड़कियोंका व्यापार करते थे और प्रतिवर्ष वहांसे सहस्रों सुन्दरियां विक्रयार्थ भारत भेजी जाती थीं। पाण्डवोंके प्रासादमें इस प्रकारकी लड़कियोंकी संख्या बहुत अधिक थी।

उस युगमें विवाहादिके अवसरपर सुन्दरी दासियोंको दहेजके बतौर प्रदान करनेकी प्रथाका यथेष्ट प्रचलन था। द्रौपदीके विवाहके अवसरपर भी द्रुपद-राजने पाण्डवोंको बहुत-सी सुन्दरियां प्रदान की थीं। अभिमन्युके विवाहके समय भी विराट्-राजाने पाण्डवोंको अनेक रूपवती कुमारियां तथा धन-रत्नादि दिये थे।

युधिष्ठिरने जब राजसूय यज्ञ किया था तो नाना देशोंके राजाओंने उन्हें जो सुन्दरियां भेंट-स्वरूप दी थीं उन सबकी संख्या मिलाकर एक लाखसे भी अधिक हो गयी थी। युधिष्ठिरने उनमेंसे अनेक सुन्दरियोंको ब्राह्मणों—पुरोहितों तथा पुजारियों—को दानमें दिया था। दुर्योधनके साथ अक्ष-क्रीड़ामें युधिष्ठिर अपने महलकी सब विलासिनी ललनाओंको हार गये थे।

कुरुक्षेत्रके महायुद्धके अवसरपर जब कर्ण राजा शल्यको अपना सारथी बनाकर अर्जुनके साथ युद्ध करनेकी इच्छासे आगे बढ़ा तो शत्रुपक्षी सेनाके पास आकर उसने घोषणा की कि "जो कोई वीर मुझे यह बता देगा कि धनञ्जय (अर्जुन) इस समय कहां है तो मैं उसे मनचाही वस्तुयें दूंगा।" अन्यान्य वस्तुओंके साथ उसने कई सौ 'अजातपुत्र' (निस्सन्ताना) मागधी स्त्रियोंको प्रदान करनेका वचन दिया था! मगध देशकी स्त्रियां उस समय अपने रूप और कलाप्रियताके लिए विख्यात थीं। रत्नद्वीपकी स्त्रियोंकी तरह मागधी स्त्रियोंका भी 'होलसेल' व्यापार उस समय होता था। कर्ण बड़ी डींगें मार रहा था कि वह अर्जुनको देखते ही क्षणभरमें उसे यमपुर पहुंचा देगा। शल्यको उसकी यह बात बहुत बुरी मालूम हुई, फलतः उसने उसे तिरस्कृत करना प्रारम्भ किया। शल्य मद्रदेशका राजा था। उसके तिरस्कारके उत्तरमें कर्ण भी उसे बुरा-भला कहने लगा और मद्रदेशवासियोंके घृणित आचार-व्यवहारका वर्णन करते हुए उसपर छींटे कसने लगा। मद्रदेश कहां बसा हुआ था, इस सम्बन्धमें विद्वानोंमें यथेष्ट मतभेद है। कोई उसे वर्तमान मद्रास बतलाता है और कोई काश्मीर। अधिकांश प्रमाणोंसे यह मालूम होता है कि पञ्जाबके उत्तरका कुछ भाग और काश्मीरका कुछ दक्षिणी भाग मद्र देशमें सम्मिलित थे। कर्णने शल्यसे कहा—"मद्रदेशवासी यथेच्छाचारी होते हैं। उनकी स्त्रियां स्वच्छन्द-विहारिणी होती हैं और परदेशी पुरुषोंसे बिना किसी रोक-टोकके अनुचित सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं; वे मद्यपान करती हैं, मछली-मांस (यहां तक कि गोमांस भी) खाती हैं। नशेमें चूर होकर वे अण्ड-बण्ड बकती रहती हैं, अपने सब कपड़े उतारकर नङ्गी खड़ी हो जाती हैं और नाचने लगती हैं। उनसे यदि कोई जाकर द्राक्षासव मांगता है तो वे कहती हैं—'हमसे कोई द्राक्षासव न मांगे, क्योंकि हम उसे बहुत पसन्द करती हैं। भले ही तुम हमसे हमारे आदमियों, हमारे बच्चोंको मांगकर ले जाओ, पर द्राक्षासव हम कभी न दे सकेंगी।"

बाह्लीक देशके सम्बन्धमें भी इसी प्रकारकी बातें महाभारतमें पायी जाती हैं। बाह्लीकको कोई आधुनिक बल्ख बतलाते हैं और कोई काबुल। कुछ भी हो, इतना निश्चित है कि भारतकी उत्तर-पश्चिम सीमाके उस पार ही उक्त देश अवस्थित था। कर्ण शल्यके देशवासियोंकी हंसी उड़ाता हुआ बाह्लीकोंकी भी निन्दा करता है, जिससे स्पष्ट है कि मद्रकों और बाह्लीकोंके बीच किसी प्रकारका निकट सम्बन्ध स्थापित था। कर्ण कहता है—"धृतराष्ट्रकी सभामें एक बाह्लीक देश-प्रत्यागत ब्राह्मणने आकर कहा था—'हे राजन्! अपवित्र बाह्लीकोंसे सदा बचे रहना चाहिए। ये लोग गङ्गा, यमुना, हिमालय, कुरुक्षेत्र-भूमि तथा सिन्धु नदीके भी उस पार रहते हैं। मुझे किसी गुप्त राजनीतिक कार्यसे उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देशमें रहना पड़ा था और फलतः उनकी रीति-नीति तथा रहन-सहनसे मैं भली भांति परिचित हूं। ये लोग 'गौड़ीसुरा' नामकी शराब बहुत पीते हैं, गोमांस तथा लहसनसे बघारा हुआ चावल खाते हैं, जिसे वे घरपर नहीं बनाते (अर्थात् किसी भोजनालय—होटल—से खाना खाते हैं।) उनकी स्त्रियां भी सुरापान करती हैं और नशेमें उन्मत्त होकर नङ्गी हो जाती हैं। वे नगर-प्राचीरके पास जाकर वेश्याओंकी तरह नाचती हैं, नाना प्रकारके अश्लील गीत गाती हैं और गधों तथा ऊंटोंकी तरह चिल्लाती हैं। कुटुम्बमें अथवा कुटुम्बके बाहर वे आसानीसे परपुरुषोंसे अनुचित सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं। इन दुष्ट बाह्लीकोंमेंसे एकके सम्बन्धमें कहा जाता है कि जब वह कुरुजाङ्गल प्रदेशमें अपना प्रवास-काल बिता रहा था तो एक दिन आहें भरता हुआ कहने लगा—"हाय, मैं कब अपने देशकी उन सुन्दरी स्त्रियोंको फिरसे देख पाऊंगा जिनके कपालकी हड्डियां मोटी होती हैं, जिनके गालोंमें, कपालमें और मांगमें सिन्दूरका चिह्न रहता है, जो मोटे कम्बल और चमड़ेके परिधानोंसे आच्छादित रहती हैं, ऊंटों और खच्चरोंपर चढ़ती हैं और नगाड़ों तथा तुरहीके कोलाहलके बीच नाचती हैं और चिल्लाती हुई गाती हैं?"

बाह्लीक स्त्रियोंके उक्त वर्णनसे यह अन्दाज लगाया जा सकता है कि वे सम्भवतः किसी सेमिटिक जातिकी थीं जो अरबसे आकर अफगानिस्तानके पास बस गयी थी।

कृष्ण और बलदेव जब यादवोंका एक नया उपनिवेश स्थापित करनेके उद्देश्यसे द्वारका गये तो वहां उन्होंने देखा कि स्त्रियोंकी कमी है। फलतः रत्नद्वीपसे वेश्यायें वहां यथेष्ट संख्यामें लायी गयीं ताकि यादवोंमें आपसमें स्त्रियोंके लिए झगड़े न खड़े हों। कृष्णकी सोलह हजार गोपियोंकी बात सुप्रसिद्ध है। बहुत सम्भव है, इस संख्यामें बहुत-कुछ अतिशयोक्ति वर्तमान हो। पर इतना निश्चित है कि उनके अन्तःपुरमें विलासिनी दासियों तथा परिचारिकाओंकी संख्या बहुत अधिक थी, जिनमेंसे बहुत-सी कृष्णने स्वयं स्त्रियोंके 'होलसेल' व्यापारियोंसे मंगायी थीं और बहुत-सी उन्हें उपहार-स्वरूप देशदेशान्तरके राजाओंसे प्राप्त हुई थीं। इसके अतिरिक्त जिन-जिन युद्धोंमें कृष्णने विजय प्राप्त की उनमें भी तत्कालीन प्रचलित प्रथाके अनुसार उन्हें अनेक स्त्रियां मिली थीं।

यादव स्त्रियोंके राग-रङ्गका वर्णन महाभारतमें विस्तृत रूपसे किया गया है। अर्जुन जब रैवतक पर्वतमें यादवोंके अतिथिके बतौर ठहरा हुआ था तो बहुत-सी सुन्दरी स्त्रियां उसकी परिचर्याके लिए नियुक्त कर दी गयी थीं। एक विशेष उत्सवके अवसरपर यादव तथा अन्धक स्त्रियोंका तांता लगा था और नृत्य-गीत, राग-रङ्ग, मद्यपान आदि बातें स्वच्छन्दतापूर्वक चल रही थीं। बलदेव, अक्रूर, सारण, पृथु सात्यकि, बभ्रु, उद्धव आदि प्रमुख यादव नशेमें झूम रहे थे। इसी उत्सवमें अर्जुनने सुभद्राको देखा और उसे देखते ही वह काममोहित हो गया था। कृष्णने जब उसकी यह हालत देखी तो उसे सलाह दी कि वह उसे हरण करके ले जाय, यद्यपि सुभद्रा रिश्तेमें कृष्णकी बहन थी। इससे स्पष्ट है कि यादव लोगोंके नैतिक आचारमें यथेष्ट स्वच्छन्दता पायी जाती थी।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि जब कृष्ण कुरुक्षेत्रके महायुद्धसे लौटकर द्वारका पहुंचे तो उन्होंने यादवोंको गृह-कलहमें निरत और घोर कामोन्मत्तता और निर्लज्ज विलासितामें डूबा हुआ पाया। यह दृश्य देखकर वह बहुत खिन्न हुए थे। कृष्ण तथा अन्यान्य यादव-श्रेष्ठोंकी मृत्युके बाद द्वारकाकी स्त्रियोंको डाकू तथा लुटेरे पकड़कर ले गये और जो बचीं वे खुल्लमखुल्ला वेश्यावृत्ति करने लगीं।

महाभारतमें इस बातका स्पष्ट उल्लेख पाया जाता है कि युद्धके अवसरपर वेश्यायें बहुत बड़ी संख्यामें शिविरोंमें सैनिकोंकी काम-तुष्टिके लिए रखी जाती थीं। पाण्डव जब द्वैतवनमें निर्वासित जीवन बिता रहे थे तो दुर्योधन अपनी तड़क-भड़क दिखानेके उद्देश्यसे अपने दलबल, सैन्य-सामन्त सहित वहां पहुंच गया। उसके साथ अनेक वराङ्गनायें तथा वाराङ्गनायें भी थीं जिनकी संख्या यथेष्ट होनेपर भी उनसे सेनाकी आवश्यकता पूरी न हो पायी, इसलिए आस-पासके गांवोंसे और भी बहुत-सी लड़कियां—जिनमें ग्वालिनोंकी संख्या अधिक थी—मंगायी गयीं।

उद्योगपर्वमें इस बातका उल्लेख है कि जब कृष्ण कुरुक्षेत्रके युद्धके पहले सन्धिकी चेष्टामें कौरवोंसे मिलने जाते हैं तो धृतराष्ट्रकी आज्ञासे उनके स्वागतका विराट् आयोजन किया जाता है। राजकुलके सभी श्रेष्ठ व्यक्ति रथोंमें बैठकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नगरके सिंहद्वारपर कृष्णके अभिनन्दनके लिए जाते हैं, सहस्रों स्त्रियां फूलोंकी मालायें लेकर कतार बांधकर मुख्य-मुख्य मार्गोंमें (जिनसे होकर जलूस निकलनेवाला था) स्वागतार्थ खड़ी रहती हैं। सभी उच्च कुलोंकी महिलाओंको भी यह आदेश दिया जाता है कि वे महात्मा मधुसूदनके दर्शनार्थ घरसे बाहर निकलें।

विराट् राजाकी गोशालापर आक्रमण होनेपर क्लीववेश-धारी अर्जुनकी सहायतासे जब उनका पुत्र, उत्तर, शत्रुओंपर विजय प्राप्त कर लेता है तो विराटाधिपति प्रसन्नताके कारण अपने मन्त्रियोंको आज्ञा देते हैं कि "इस विजयका समाचार नगरवासियोंको जाकर सुनाओ और कुमारी लड़कियों तथा सुन्दरी वेश्याओंको आज्ञा दो कि पहले मङ्गल-गीत गाती हुई मेरे पास आयें, और तत्पश्चात् मेरे पुत्रके स्वागतार्थ जलूस बनाकर निकलें।" यह बात गौर करनेकी है कि इस जलूसकी अग्रणी स्वयं विराट-राजकी पुत्री उत्तरा थी, जो बादमें अभिमन्युको ब्याही गयी थी।

युधिष्ठिरके राजत्व-कालमें प्रायः अठासी हजार ऐसे छात्रोंके भरण-पोषणका प्रबन्ध था जो विश्वविद्यालयसे उपाधि प्राप्त करके जीवन-क्षेत्रमें पदार्पण करना चाहते थे। ऐसे प्रत्येक स्नातककी परिचर्याके लिए तीस सुन्दरी कुमारियां नियुक्त रहती थीं। इन कुमारियोंके साथ स्नातकोंका यथार्थ सम्बन्ध कैसा रहता था, इस विषयमें महाभारतमें कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं पाया जाता, पर इसका अनुमान सहजमें किया जा सकता है।

यह बात सर्व-विदित है कि महाभारत-कालके अनेक विख्यात राजा तथा नेता जारपुत्र थे। जारपुत्र होनेपर भी उनकी प्रतिष्ठा बिलकुल नष्ट नहीं हुई थी। वेदव्यास, धृतराष्ट्र, पाण्डु, पाण्डव, कर्ण, द्रोण आदि इस बातके उदाहरण-स्वरूप हैं।

इन सब बातोंसे पता चलता है कि कृष्ण-युगके भारतमें स्त्री-पुरुष-सम्बन्धी अनाचारका यथेष्ट प्रचार था। स्त्रियोंकी सत्ता उस कालमें नहींके बराबर थी और पुरुष इन्हें भोग-की सुलभ और तुच्छ सामग्रीके बतौर देखनेके आदी हो गये थे। यही कारण था कि भीष्म-जैसे ज्ञानी भी कन्याओंको उनकी इच्छाके विरुद्ध बीच स्वयंवर-सभासे उड़ा ले जाना अनुचित तथा अन्यायमूलक नहीं समझते थे; यही कारण था कि ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध तथा धर्मवीरोंसे भरी हुई सभाके बीच जब दुःशासन असहाया, रजस्वला, एकवस्त्रा द्रौपदीको विस्रस्त अवस्थामें खींचकर ले आया था तो विदुरके अति-रिक्त किसी भी महापुरुषके मुंहसे एक शब्द उस घोर नीच कर्मके विरोधमें न निकला। जो अत्यन्त वीभत्स तथा कल-ङ्कित शब्द कर्ण तथा कौरवोंने द्रौपदीके प्रति व्यवहृत किये थे वे केवल विद्वेष-वश ही नहीं कहे थे—उन लोगोंका यथार्थ-में यही विश्वास था कि द्रौपदी पांच पतियोंकी पत्नी होनेसे गणिकासे किसी रूपमें श्रेष्ठ नहीं है। इसमें सन्देह नहीं कि कृष्ण और उनके शिष्य पाण्डव नैतिक आदर्शको उच्चतम रूप देनेके पक्षमें थे, पर समाजकी तत्कालीन अवस्था ऐसा अवि-चल तथा व्यापक रूप धारण किये थी कि उसे वे अपने आदर्शानुसार परिचालित करनेमें असमर्थ थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्लाइवके युगमें भारत-प्रवासी अंगरेजोंका रहन-सहन

श्री भगवतीप्रसाद उपाध्याय

पलासीके युद्धके पहले भारतमें अंगरेजोंकी हालत बहुत खराब थी। आरामके सबसे अधिक साधन उस समय उन्हें कलकत्तेमें प्राप्त थे, पर वह आराम ऐसा था जिसे इस समयका साधारणसे साधारण अंगरेज भी उपेक्षाकी दृष्टिसे देखेगा। इस समय कलकत्तेके अंगरेज जिस प्रकारकी विशाल अट्टालिकाओंमें निवास करते हुए ऐश्वर्यमय जीवन बिताते हैं, फिर्पो और पेलिटीके भोजनालयोंमें असंख्य वैद्युतिक दीपोंकी जगमगाहट, वैद्युतिक पङ्खोंकी सनसनाहट, सुन्दर सुहावने वाद्योंकी मृदु-मुखरित ध्वनि, रङ्ग-विरङ्गे वस्त्रोंसे सुसज्जित, रंगीली, अलबेली मेमोंके मधुर गुञ्जनालापके बीच बैठकर सुन्दर, सरस खाद्य पदार्थोंका स्वाद चखते हैं, वह स्वर्ग-सुख-भोग उस युगके अंगरेजोंके लिए स्वप्नतुल्य था। उस समय सुरम्य हर्म्यों, मनोहर अट्टालिकाओं, परिस्तान-नुमां होटलोंके स्थानमें फूसकी झोपड़ियों अथवा खपरैलोंसे आच्छादित साधारण बंगलोंमें उन लोगोंको रहना पड़ता था। ग्रीष्म-प्रधान देशका असहनीय उत्ताप उन बर्फके देशके निवासियोंको निरुपाय होकर सहन करना पड़ता था। वर्षाकालमें अविश्रान्त जल-वर्षणसे बचनेका कोई समुचित प्रबन्ध कर सकनेमें भी वे लोग असमर्थ थे। तथापि इतने कष्टोंको सहन करते हुए भी, वे जिस कार्यके लिए भारतमें आये थे उसे अविचलित दृढ़तासे निभाते चले गये और अपने उद्देश्यकी सिद्धिके लिए उन्होंने कठिनसे कठिन बाधाओंका सामना अत्यन्त निर्भीकतासे किया। उनकी आश्चर्यमयी सफलताका रहस्य यहींपर था।

कलकत्तेके मानचित्रकी परिधि-रेखा १७४२ में अत्यन्त सङ्कीर्ण थी। उक्त वर्ष कलकत्तेका जो मानचित्र अङ्कित हुआ था उसके अनुसार कलकत्तेकी उत्तर सीमा केवल तूलापट्टी तक थी, पूर्व सीमा चीतपुर रोड तक समाप्त थी, दक्षिण सीमा एसप्लेनेड रो थी और पश्चिम सीमा हुगली नदी तक। 'कलकत्ता प्रापर' तब इसी सीमाके अन्तर्गत था। इसमें केवल गोरे ही रहा करते थे और यह White Town के नामसे ख्यात था। इस सीमाके बाहर यत्र-तत्र देशी लोग रहते थे और वह हिस्सा Black Town (काले आदमियों-का कस्बा) कहा जाता था। पर सफाई और आरामके लिहाजसे पूर्वोक्त 'श्वेत नगर' तथा 'कृष्ण नगर' में अधिक प्रभेद नहीं था। गोरोंकी बस्तीमें भी धूल और कीचड़की कमी न थी। 'कल' के शुद्ध जलका एकदम अभाव था। 'ड्रेनेज' का कोई प्रबन्ध न होनेसे सर्वत्र पनालोंके पानीसे गन्दगी फैली रहती थी।

उस समयके अंगरेजोंका रहन-सहन भी बड़ा अद्भुत था। वे लोग देशी लोगोंकी तरह ही दाल-भात और 'चपाती' खाते थे, तकियेपर लेटकर हुक्का पीते थे, यहां तक कि पान भी खाना सीख गये थे। अच्छीसे अच्छी 'पोजीशन' के अंगरेजका 'ड्राइंग-रूम' अत्यन्त साधारण रूपसे सज्जित रहता था। एक दरीके ऊपर एक सफेद चादर बिछी रहती थी और कमरेके चारों ओर तकिये रहते थे। कुर्सियां केवल दो-एक ही रहती थीं। बीचमें दो-तीन हुक्के रखे रहते थे। एक छोटी-सी तिपाईके ऊपर बत्तीदान रखा रहता था। दीवालगीर अथवा झाड़का व्यवहार उस समय तक नहीं हो पाया था। जब किसी अंगरेज आफिसरको कहीं डिनरपार्टीमें जाना होता तो वह अपने साथ अपनी कुर्सी भी ले जाता, क्योंकि सभीके घरोंमें कुर्सियोंका अभाव रहता था।

तत्कालीन अंगरेजोंकी दिनचर्या इस प्रकार थी—बहुत तड़के उठकर वे एक कप चाय पीकर, कुछ देर हुक्का गुड़गुड़ाकर आफिस चले जाते थे। गरमीकी वजहसे आफिस सुबह ही खलते थे। दोपहर घर वापस आकर मध्याह्न-भोजन करके सो जाते। सन्ध्याको बाहर घूमने निकलते अथवा शराब या जुएके अड्डोंमें चले जाते। जुएका प्रचलन उस समय अंगरेजों-में बहुत अधिक पाया जाता था। क्लाइबको भी जुएका बड़ा चस्का था। इन अड्डोंमें अक्सर दङ्गे-फसाद होते रहते थे और गोरे लोग आपसमें ही लड़ते-झगड़ते थे।

उस समय अंगरेजोंके मनोविनोदके और भी बहुत-से साधन थे। सिराज-उद्दौलाके साथ क्लाइबने जो सन्धि की थी उसमें अंगरेजोंके विनोदके लिए सब खर्च देनेकी शर्त भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नवाबसे मञ्जूर करायी गयी थी। जिन-जिन मदोंमें खर्चका जो-जो हिसाब नवाबको दिया गया था, उसकी सूची इस प्रकार है—

| | |
|---|---|
| सन्धिके उपलक्षमें रचित उत्सव-सभाके निर्माणमें | ४८९३) रु० |
| जङ्गली जानवरोंको खिलाने और उनकी लड़ाईके स्थानके लिए— | ३८९०) रु० |
| आतिशबाजी —१२,१७९) रु० | |
| जङ्गली जानवरोंके रक्षकोंको इनामके लिए— | २४२७) रु० |
| मद्यपानादिमें —५४९१) रु० | |
| कुल | २८,७६०) रु० |

शराबका प्रचलन तत्कालीन अंगरेजोंमें बहुत बढ़ा हुआ था। उन्हें कम्पनीकी ओरसे यह हिदायत खास तौरसे दी जाती थी कि भारतमें (विशेष रूपसे बङ्गालमें) शराब पीना स्वास्थ्यकी रक्षाके लिए परम आवश्यक है। विलायतमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीके डाइरेक्टर भारतके अंगरेजी कर्मचारियोंके व्यवहारके लिए कम्पनीके बजटमें शराबके लिए एक बहुत बड़ी रकम मञ्जूर कर दिया करते थे। इसके लिए कर्मचारियोंको अपनी गांठसे एक पैसा भी नहीं देना पड़ता था। प्रतिवर्ष कलकत्तेकी कौन्सिल शराबके परिमाणकी वृद्धिके लिए 'कोर्ट आफ डायरेक्टर्स' के पास आवेदन भेजती रहती थी। एक आवेदनका कुछ अंश यहां पाठकोंकी जानकारीके लिए उद्धृत किया जाता है—We have this season been much distressed for want of the annual supply of Madeira wine, and request that the next year a large quantity may be sent, as the consumption is now become much greater than formerly." अर्थात् "मदीराकी जो शराब प्रतिवर्ष हम लोगोंको भेजी जाती थी, इस वर्ष उसके अभावसे हम लोग बड़े कष्टमें रहे। इसलिए यह निवेदन किया जाता है कि आगामी वर्ष विशेष परिमाणमें उक्त शराब भेजी जाय, क्योंकि अब उसका खर्च पहलेसे बहुत बढ़ गया है।"

पर मद्यका वार्षिक परिमाण बढ़ाये जानेपर भी उससे पूर न पड़ती थी, क्योंकि गोरे लोग ऐसे पियक्कड़ हो उठे थे कि उनकी अतृप्त मद्य तृष्णा किसी तरह शान्त ही न होती थी। फलतः बहुत-से मद्य-व्यवसायियोंने देशी शराबकी भट्टियां खोलकर खासा व्यापार खोल दिया। भ्रमणशील चीना लोगोंका एक दल उस समय रोजगारकी तलाशमें कलकत्ते आया हुआ था। उन लोगोंने लाभ देखकर ठौंकी एक भट्टी खोल दी। बरसातमें शराबका व्यवहार अधिक बढ़ जाता था। मैलेरिया, इन्फ्लुएञ्जा आदि बीमारियोंसे त्राण पानेके लिये मद्य अव्यर्थ प्रतिषेधक माना जाता था।

१७५९ के पूर्व कलकत्ता कौन्सिल अंगरेज कर्मचारियोंके परिचारकोंका वेतन निर्धारित करती थी, और जिस वर्ष वह साहबोंके नौकरोंके वेतनमें जो परिवर्तन करती वह ढिंढोरा पीटकर सर्वत्र सूचित किया जाता। बंगला, हिन्दी, उर्दू तथा अंगरेजी भाषाओंमें उसका विज्ञापन प्रकाशित किया जाता और चौरास्तोंपर बांटा जाता। कौन्सिल जो वेतन निर्दिष्ट कर देती उससे अधिक एक पैसा भी देनेका नियम नहीं था। अंगरेज कर्मचारियोंके नौकरोंके मासिक वेतनकी सूची नीचे दी जाती है:—

| | |
|---|---|
| खानसामा | ५) रु० |
| हेड बावर्ची | ५) रु० |
| पुर्तगीज 'आया' | ५) रु० |
| जमादार | ४) रु० |
| खिदमतगार अथवा बावर्चीका सहकारी | ३) रु० |
| कुटम्बका धोबी | ३) रु० |
| एक आदमीका धोबी | १॥) रु० |
| साईस, बैरा, माली आदि | २) रु० |
| नाई | १) रु० |
| चपरासी या दरवान | २) रु० |

दर्जीकी तनख्वाह मासिक ३) निर्दिष्ट थी। उसे की कपड़ेकी सिलाईके हिसाबसे मजूरी नहीं दी जाती थी। वह नौकरके बतौर रखा जाता था। उसे गरमीके दिनोंमें छबह सात बजे और जाड़ोंमें आठ बजे उपस्थित होना पड़ता था। देर होनेसे दण्ड दिया जाता था।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके राजत्वकालमें भारतमें दास-व्यवसाय प्रचलित था। आम रास्तोंपर दासोंका क्रय-विक्रय कानूनन् जायज था। कलकत्तेमें इस व्यवसायका प्रचलन कुछ अधिक था। वहां जो व्यक्ति दासोंको खरीदते थे, उनपर प्रत्येक दासके लिए ४।) टैक्स (Town duty) पड़ता था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रकार कम्पनीको दास-व्यवसायसे यथेष्ट लाभ था। १७६२-६३ में कलकत्ता कौन्सिल द्वारा प्रेरित पत्रादि देखनेसे पता लगता है कि उस समय भारतमें क्रीतदासोंका बड़ा अभाव हो गया था, इसलिए कम्पनीके विलायत-निवासी डाइरेक्टरों-ने आफ्रिकाके पूर्वमें अवस्थित मैडेगास्कर द्वीपसे क्रीतदासोंको भारत ले जानेके लिए दो जहाज भेजे थे। उन दो जहाजोंके कप्तानोंको यह सूचित किया गया था कि यदि वे दासोंका एक दल स्वस्थ तथा नीरोग अवस्थामें भारत पहुंचा देंगे तो उन्हें प्रत्येक दासके जो पन्द्रह रुपये प्रचलित दरके अनुसार मिलते हैं उसके अतिरिक्त बीस रुपये और मिलेंगे।

कलकत्तेके तत्कालीन अंगरेज काफ्री दासोंको अधिक पसन्द करते थे और उनमें भी जो लोग फ्रान्सीसी 'पाइप' बजानेमें अधिक निपुण होते थे, वे महंगे मिलते थे। अक्सर दासोंके शरीरपर उनके मालिकके नामकी मुहर अङ्कित रहती थी। एक बार लैफ्टनेण्ट वैलेण्टाइन दुब्वा नामक एक गोरेके सैम तथा टाम नामक दो दास-बालक भग गये थे। उन दोनों छोकरोंके दाहिने हाथपर V. D.— ये दो अक्षर खुदे थे। दुब्वा साहबने उनके भागनेपर यह विज्ञापन प्रकाशित कराया था—Run away, on the 15th October last, two slave boys (with letters V. D. marked on each of their right arms above the elbow), named Sam and Tom, about eleven years of age and exactly of a size.

उस समयकी जमीन्दारी कचहरीके कागजातोंको देखनेसे दासोंके मूल्यादिका पता चलता है। खिदमतगार और रसोईके काममें निपुण, एक अनुभवी, नौजवान काफ्री दासका मूल्य ४००) रु० था। कैप्टेन निकोलस वेलर साहबकी सम्पत्ति नीलाममें बिकनेके समय हेस्टिंग्स नामक एक साहबने उसका एक दास ३७९) रु० को खरीदा। एक दास-बालकको नेलर साहबने १२०) रु० को खरीदा था, एक दास-बालिकाको टिरेट साहबने १००) में मोल लिया था।

उस समय कलकत्तेमें अंगरेजोंकी एक अलग अदालत थी जो Mayor's Court कहलायी जाती थी। इस विचारालयमें देशी लोगोंका विचार बिलकुल नहीं होता था। एक मेयर तथा नौ एल्डरम्यन (Aldermen) को लेकर उक्त कोर्ट सङ्गठित था। इन नौ एल्डरम्यनमेंसे सात व्यक्ति विशुद्ध ब्रिटिश थे और बाकी दो इंगलैण्डकी मित्रतामें आबद्ध किसी देशके व्यक्ति चुने जा सकते थे। Court of Appeal में उक्त अदालतके फैसलेकी अपील हो सकती थी। कलकत्ते-के शासनकर्ता तथा उनके 'कान्सल' लोग इस अदालतके अध्यक्ष थे। 'स्माल काज कोर्ट'के स्थानपर Court of Requests स्थापित था। इस अदालतमें चालीस शिलिङ्ग-से अधिकका मुकद्दमा नहीं चल सकता था। पूर्वोक्त विचारालयोंके अतिरिक्त और भी अदालतें थीं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—(१) कम्पनीकी कचहरी; कलकत्ता कौन्सिल के सभापति तथा दो सदस्योंको लेकर यह अदालत गठित थी; इसमें केवल देशी लोगोंका विचार होता था। (२) जमीन्दारी कचहरी; इसका दूसरा नाम फौजदारी कचहरी भी था; यह भी देशी लोगोंके लिए संस्थापित की गयी थी और कौन्सिलका एक सदस्य इसका प्रधान विचारपति था। (३) कलक्टरी कचहरी; लगान, लायसेन्स, ड्यूटी आदि सम्बन्धी मामलोंका विचार इस अदालतमें होता था।

सभी अपराधियोंको कारागारमें नहीं डाला जाता था। उनसे कुआं खोदना, रास्ता बनाना तथा और भी इसी तरहके काम लिये जाते थे। रास्ता तैयार करनेके काममें जो अपराधी नियुक्त किये जाते थे उनके खाने-पीनेका ठीक बन्दोबस्त नहीं था। १७६१ तक यही दशा रही। इसके बाद उक्त वर्ष कम्पनीके अधिकारियोंने उन लोगोंकी खुराकके लिए मासिक डेढ़ रुपया निर्दिष्ट कर दिया।

उस समय कानून कुछ कड़ा था। १७५९ में एक बार कम्पनीकी तरफसे यह घोषणा कर दी गयी थी कि जो-कोई देशी आदमी अंगरेज व्यवसायियोंसे अनुचित उपायोंसे रुपया ठगनेकी चेष्टा करेगा उसके नाक-कान काट लिये जायेंगे! वेत्राघात द्वारा दण्ड भी उस समय प्रचलित था।

नवागत अंगरेज भारतके जलवायुसे अक्सर कष्ट पाते रहते थे। विशेष करके आमाशय, उदरामय, हैजा आदि पेट-सम्बन्धी बीमारियोंसे उन्हें अधिक पीड़ित रहना पड़ता था। ग्रीष्म तथा वर्षा-ऋतुमें ये बीमारियां बढ़ जाती थीं। कैप्टेन हैमिल्टनने उस समय कलकत्तेकी अवस्थाका निरीक्षण करके जो रिपोर्ट लिखी थी वह यहांपर उल्लेखनीय है। उसका सार इस प्रकार है—"मैं अगस्त महीनेके अन्तमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी कलकत्तेवाली कोठीमें उपस्थित था। उस समय कम्पनीके नाना विभागोंमें सब मिलाकर बारह सौ अंगरेज कर्मचारी वर्तमान थे। जन्म-मृत्युकी लिस्ट देखनेसे पता लगा कि कुछ ही महीनोंके भीतर ४६० अंगरेजोंकी मृत्यु हो चुकी है। अंगरेजोंकी चिकित्साका कोई अच्छा प्रबन्ध मैंने नहीं देखा। अच्छे चिकित्सकोंके अभावसे पथ्यापथ्यमें बड़ी असावधानी देखी जाती थी। आमाशयके रोगीको 'पथ्य'-स्वरूप पुलाव, करी, मिर्चेका पानी, मुर्गेके शोरुवेके साथ मिलाकर ब्राण्डी तथा पके हुए फल दिये जाते थे। इस प्रकारके गरिष्ठ भोजनसे आमाशय अच्छा होनेके बदले रोग और भी उग्र रूप धारण कर लेता था।"

यह सब होनेपर भी दीर्घजीवी, स्वस्थ अंगरेजोंकी संख्या कुछ कम नहीं थी। भारतमें चांदी और सोनेका 'टानिक' पान करके वे लोग जलवायु-सम्बन्धी समस्त विकारोंको दूर करनेमें सम्पूर्ण समर्थ सिद्ध हुए थे।

उस युगमें भारतमें अंगरेज महिलाओंका अत्यन्त अभाव था। कम्पनीके कर्मचारियोंमें अविवाहितोंकी ही संख्या अधिक थी, और जो दो-एक व्यक्ति विवाहित थे वे अपनी स्त्रियोंको भारत बुलाना उचित नहीं समझते थे। फलतः बङ्गालमें देशी महिलाओंपर गोरोंका अत्याचार फैलने लगा था। बङ्किमचन्द्रने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'चन्द्रशेखर'में इस सम्बन्धकी एक घटनाका विस्तृत विवरण दिया है। बहुतोंने बङ्गाली स्त्रियोंसे विवाह कर लिया था। उस समय भारतमें सती-प्रथाकी निष्ठुरता घोर पैशाचिक रूप धारण किये थी। बहुत-सी अभागिनी विधवाओंको उनकी इच्छाके विरुद्ध मृत पतियोंकी चिताओंपर जिन्दा जला दिया जाता था। जो स्त्री 'धर्म' और समाजके निर्देशकी अपेक्षा अपने प्राणोंको अधिक महत्त्व देकर किसी प्रकार समाज-पिशाचोंके पञ्जोंसे छुटकारा पानेमें समर्थ होती थी उसे समाज सदाके लिए परित्याग कर देता था। गोरे लोग इस प्रकारकी अनाथा विधवाओंकी ताकमें रहा करते थे। जाब चार्नक (Job Charnock) नामक सुप्रसिद्ध अंगरेज कर्मचारीने सती होनेवाली एक स्त्रीको श्मशान-घाटसे आततायी समाज-पतियोंके हाथसे छुड़ाकर उसके साथ विवाह कर लिया था।

---

# चांदनी

रजत-रेतपर—

पहन तुषार-हार शशि-श्वेत,
कर ज्योतित करसे संकेत,
असमवेत सोयी है नीरव
परिहतवसना, श्रान्त, अचेत!
सौरभ-भार-विनत सहकार;
अपना ही यौवन-सम्भार
शिथिल कर रहा तनु सुकुमार।

महाविजनसे—

उतर मौनपद गुरु गम्भीर,
मलय-समीरण अलस शरीर,
चीर-द्रुमोंके अन्तरालसे
उझक-उझक रह, झांक अधीर!
मधुबाला-सी कर शृंगार,
हिला मन्द स्वप्निल मन्दार,
करती फिरती मधु गुञ्जार।

सरिता जलमें—

कर अपने उरका प्रस्तार,
बाल-बुद्बुदोंसे अभिसार,
चपल तरंगावलियोंपर मृदु
खिला रश्मिके फूल अपार,
वनदेवी-सी बन साभार,
पहन कुन्द-कुसुमोंके हार,
करती अभिनव वीचि-विहार!

—आरसीप्रसाद सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सामाजिक कुप्रथाका भयङ्कर दुष्परिणाम

श्रीमती सत्यवती वर्मा

किसी जाति, समाज या देशमें जब किसी प्रथाका प्रचलन होता है तब वह अवश्य ही उस जाति, समाज और देशकी तात्कालिक स्थितिके लिए हितकर एवं कल्याणकारी समझी जाती है। हितकर होनेके कारण ही उस प्रथाको प्रचलित करनेका मौका मिलता है। परन्तु किसी भी जाति, समाज या देशकी स्थिति सदा एक-सी नहीं रहती, प्रकृतिके अटल नियमके अनुसार उसमें परिवर्तन होते रहते हैं। परिवर्तनोंका यह क्रम अनिवार्य है। इसीलिए जो प्रथा एक स्थितिमें हमारे लिए हितकर होती है वही दूसरी परिवर्तित स्थितिमें हानिकारक सिद्ध होती है, और हानिकारक होनेके कारण ही क्रमशः उसका लोप होने लगता है। समाज या जातिके अन्दर होनेवाले परिवर्तनोंके साथ-साथ जो प्रथा अपने अन्दर भी परिवर्तन लाती रहती है वह तो टिक जाती है, और जो वैसा नहीं कर सकती उसे धीरे-धीरे मिट जाना पड़ता है। चाहे जिस देशकी और चाहे जिस समयकी प्रचलित प्रथाको आप ले लीजिये, उसकी उत्पत्ति, प्रचलन, उन्नति और पतनके इतिहासके पन्नोंको उलट जाइये, आपको उसके पृष्ठ-पृष्ठ और पंक्ति-पंक्तिमें यह सत्यता प्रत्यक्ष दिखायी देगी। इसके साथ-साथ आपको एक और बात देखनेको मिलेगी; वह यह कि प्रत्येक जाति और प्रत्येक समाजमें किसी प्रथाको जारी रखने और न रखनेवालोंकी दो भिन्न-भिन्न दलबन्दियां हो जाती हैं। एक दल उसकी बुराइयोंका अनुभव कर उसे मिटा देनेके लिए लड़ता है तो दूसरा तत्कालीन स्थितिका विचार छोड़कर उसे कायम रखनेमें ही अपना प्राचीन गौरव समझता है और मर मिटनेको तैयार हो जाता है। इस होड़में वही दल विजयी होता है जो विचारशून्य नहीं होता, और जो देश-काल-पात्रमें होनेवाले परिवर्तनोंपर दृष्टि रखकर अपने-आपको नहीं मिटाता, बल्कि उस प्रथाको ही मिटा देना चाहता है।

हमारे देशमें भी आज ऐसी अनेकानेक प्रथायें प्रचलित हैं, जो देश, जाति और समाजका सब प्रकारसे सर्वनाश करनेको तुली हुई हैं। सम्भव है, किसी दिन ये प्रथायें भी हमारे लिए हितकर रह चुकी हों; परन्तु अब वे इतने विकृत रूपमें आ गयी हैं कि लाभके बदले हमारी हानि करती हैं। फिर भी आश्चर्य यह देखकर होता है कि हमारे बहुतेरे भाई केवल पुरानी रीति होनेके कारण प्रथाओंको निभानेके लिए हानि-लाभके विचारको ताकपर रख देते हैं। अन्यान्य देशोंकी कुप्रथाओंकी अपेक्षा हमारे यहांकी कुप्रथाओंमें एक विशेष दोष यह है कि उनके द्वारा प्रजननशील नारी-जातिकी अत्यधिक हानि हुई है। यह हानि कुछ ऐसी-वैसी नहीं है। जिस देशकी प्रजननशील जाति (Creative Sex) पर इस प्रकार कुठाराघात हो उस देशको यदि अशेष अनिष्टोंका सामना करना पड़े तो इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं।

जिस भारतकी मातायें सदा वीर-प्रसविनी होती रही हैं उसी भारतकी मातायें आज सैकड़ों प्रकारकी आधि-व्याधियोंका शिकार क्यों बन रही हैं? क्यों वे दुर्बल, हीन-वीर्य, रोगग्रस्त और मृतवत् सन्तान उत्पन्न करती हैं? जिनकी कोखसे जन्म लेनेवाले सदा सिंहकी आख्यासे सम्बोधित होते आये हैं, उनकी कोख आज गीदड़ोंको क्यों जन्म देने लगी है? इन प्रश्नोंपर तथा इसी प्रकारके अन्य प्रश्नोंपर विचार करनेसे यह बात समझनेमें विलम्ब नहीं होता कि भारतीय जातिने, उसके विधि-निषेधोंके कड़े कानून-कायदोंने, उसके कठोर शासनने पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंके ऊपर अत्यन्त अधिक और मनमाने अत्याचार किये हैं। ज्यों-ज्यों भारतीय जाति हतवीर्य, नपुंसक और कायर होती आयी है त्यों-त्यों वह अपनी मातृ-जातिको अधिकाधिक बन्धनोंमें जकड़ती चली आयी है और इस प्रकार उसका अधिकाधिक अपमान करती रही है।

नारी जाति स्वभावतः शान्त, सहनशील और धीर होती है। इसी कारण उसके ऊपर पुरुष-जातिने धीरे-धीरे जो बोझ सामाजिक प्रथाके रूपमें लादा है, उसे वे चुपचाप सहती रही हैं। यही नहीं, उन्हें भली भांति यह भी समझाया गया है कि इन प्रथाओंके निभानेमें ही उनका हित है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्रमशः भारतीय जातिने स्त्रियोंको सब प्रकारसे इतना पराधीन, पराश्रित और परमुखापेक्षी बना दिया है कि वे अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व ही नहीं मानतीं। पुरुष उन्हें जिस रूपमें और जिस दशामें रखते हैं, वे उसीमें रहकर परम सन्तोष प्राप्त करती हैं। यहां तक तो कोई बात नहीं है; पर जब पुरुष मनमाने ढङ्गसे उनपर अत्याचार करने लगते हैं तब न तो वे सन्तुष्ट ही रह सकती हैं और न अपनी इच्छाके अनुसार अपने लिए स्वतन्त्रताका मार्ग ही तैयार कर सकती हैं। पुरुष जैसे चाहें वैसे अनाचार-व्यभिचार करें, चाहे जैसे स्थानमें जायं और चाहे जैसे समाजमें मिलें, उनके लिए कोई रोक-टोक नहीं। परन्तु स्त्रियां अच्छेसे अच्छे कामोंके लिए भी किसी प्रकारकी स्वाधीनता पानेकी अधिकारिणी नहीं हैं। यह कैसा अन्धेर है!

और तो और, पुरुष उन्हें प्रकृतिके उन दानोंको प्राप्त करनेसे भी वञ्चित रखना चाहते हैं जिनके द्वारा उनका स्वास्थ्य सुन्दर और सुदृढ़ रह सकता है, जिनके सहारे वे बहुतेरे रोग-भोगोंसे बच सकती हैं और रोग-भोगोंसे बचकर बलवान, बुद्धिमान और विद्वान् सन्तानोंकी जन्मदात्री बन सकती हैं। उदाहरणके लिए, सूर्यकी स्वच्छ, निर्मल और रोगनाशिनी किरणों तथा स्वच्छ, मुक्त और चित्त प्रफुल्ल करने तथा शरीरमें सदा नवीन स्फूर्ति लानेवाली हवाकी ही बात ले लीजिये। क्या आप कलेजेपर हाथ रखकर यह कह सकते हैं कि आप कभी उन्हें इन प्राकृतिक दानोंका उपभोग करनेका मौका देते हैं अथवा देनेका कभी मनमें विचार भी लाते हैं? यदि आप अपनी बहनों, माताओं और कन्याओंके लिए इतनी भी उदारता नहीं दिखा सकते, इन प्रकृति-प्रदत्त आरोग्यवर्द्धक उपकरणोंका उपभोग करनेका भी उन्हें अवसर देना नहीं चाहते, तो आप यह आशा कैसे कर सकते हैं कि वे हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ बनें अथवा बलवान, शक्तिवान और विद्वान् सन्तानोंकी सृष्टि करें?

प्राचीन वैदिक युगसे लेकर आजके सबसे आधुनिक पश्चात्य वैज्ञानिक युग तकके आविष्कार एक मुंहसे, एक स्वरसे सूर्य-किरणों (Violet and ultra-Violet Rays) की उपकारिताकी घोषणा करते चले आ रहे हैं और संसारके असंख्यों प्राणी सूर्य-रश्मियोंके द्वारा तरह-तरहकी आधि-व्याधियोंसे छुटकारा पाते चले आ रहे हैं, परन्तु आज भी हमारे ऊपर अपनी बहनों और बेटियोंको 'असूर्यम्पश्या' के रूपमें देखनेको लालायित हैं। उन्हें पर्दे-दर-पर्देकी तहोंमें लपेट-कर रखना चाहते हैं! कहीं सूर्यकी एक भी रश्मि, हवाकी एक भी तरङ्ग उन्हें स्पर्श न कर दे! परन्तु मातृजातिको लेकर—'छुईमुई' का यह खेल अब वे अधिक दिनों तक नहीं खेल सकते। यदि अब भी यही खेल खेलते रहेंगे, यदि अब भी इससे बाज नहीं आयेंगे तो यह निश्चित है कि वे अपनी जाति, देश और समाजकी मृत्युको और भी शीघ्र निमन्त्रित करके अपना सर्वनाश कर डालेंगे।

हमारा ध्यान सहसा अपने समाजमें प्रचलित इन कुप्रथाओंकी ओर नहीं जाता। यदि किसीका ध्यान जाता है तो सामूहिक रूपसे उसमें परिवर्तन करनेके लिए कोई चेष्टा नहीं कर पाता। परन्तु जो विदेशी यहां आते हैं और समाजके स्वास्थ्य और रोग भोगके लिए अपनेको जिम्मेदार समझते हैं, हमारी प्रथाओंकी बुराइयोंकी ओर उनकी दृष्टि पड़े बिना नहीं रह सकती। वे समय-समयपर इन प्रथाओंकी आलोचनाके साथ-साथ हमारे सामाजिक स्वास्थ्यकी उन्नतिके उपाय भी निर्द्धारित करते रहते हैं। वे बार-बार हमारा ध्यान इन बातोंकी ओर आकर्षित करते हैं। फिर भी हमें सम्यक् रूपसे चेतना नहीं होती।

मि० बो० बी० ग्रीन आर्मिटजे, एम० डी०, एफ० आर० सी० पी० (लण्डन) लैफ्टनैण्ट कर्नल आई० एम० एस० ने अपने एक निबन्धमें पर्दा-प्रथाकी कठोरता और उससे होने-वाली हानियोंका भली भांति दिग्दर्शन कराया है। कर्नल ग्रीन स्त्री-रोगोंके एक बहुत बड़े विशेषज्ञ माने जाते हैं। इस निबन्धमें आप लिखते हैं कि—"जबसे मैं भारतवर्ष आया हूं तबसे मुझे पेशावरसे लेकर कलकत्ते तक विभिन्न स्थानों-में रहने और लोगोंकी चिकित्सा करनेका मौका मिलता रहा है। मैंने बाधक और प्रदर आदि रोगोंसे पीड़ित प्रायः ६९ रोगिणियोंकी चिकित्सा की है। इन रोगिणियोंके रोगोंकी जांच-पड़तालसे मुझे इसी निष्कर्षपर पहुंचना पड़ा है कि पर्दा-प्रथाके कठोर बन्धनोंमें रहनेके कारण ही अधिकांश रोगिणियोंको रोगका शिकार बनना पड़ा है। क्या मारवाड़ी समाजमें, क्या बङ्गाली समाजमें और क्या मुसलमानोंके घरोंमें, महिलायें प्रायः ऐसी अवस्थामें रखी जाती हैं कि उन्हें सूर्यकी स्वच्छ किरणें अथवा खुली हवा मुअस्सर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



होती। मनुष्य-मात्रके स्वास्थ्यके लिए इन दोनों वस्तुओंकी अत्यन्त अधिक और अनिवार्यरूपसे आवश्यकता होती है।"

क्या हम आशा करें कि समाजके शीर्ष-स्थानीय व्यक्तियों, कन्याओं, बन्धुओं और माताओंके अभिभावकों-का ध्यान इस विदेशी चिकित्सा-विशारदकी बातोंकी ओर आकर्षित होगा ? पर्देमें रहनेवाली हमारी माताओं और बहनोंको सूर्यके विमल प्रकाश और शुद्ध मुक्त वायुकी कितनी प्रबल आवश्यकता है, इस महत्त्वपूर्ण तथ्यकी गम्भीरताके प्रति हम लोग कब तक उदासीन रहेंगे ? यदि हम उन्हें इन प्राकृतिक स्वास्थ्यप्रद उपकरणोंसे वञ्चित रखेंगे तो हम अवश्य ही अपने हाथों अपने देशकी भावी सन्ततिपर भयङ्कर कुठाराघात करेंगे।

---

# कौन ?*

[ १ ]

कौन तुम आकर्षणकी खान ?
तुम्हारी मन्द-मन्द मुसकान
बिछा देती क्यों मधुर पराग ?
तुम्हारी प्रतिभाका सौन्दर्य
खींच लेता लोलुप अनुराग ?
तुम्हारा कोमल प्रेम—
और मानस-लहरीकी तान
झंकृत होती मानस-बीच,
उल्लसित होता हृदय अशान्त !
किसी अनजान चाहकी शक्ति
कंपा देती पागल एकान्त !
आन्तरिक विह्वलताके साथ
खेलने लगते भाव अजान !
शान्ति होती क्षण-भरमें क्रान्ति,
कामना हो जाती बलिदान ;
उमड़ पड़ता अथाह अनुराग
लुप्त होता ममत्वका ज्ञान !
हृदयके कम्पित भाव
ढूंढने लगते खोया मान।

[ २ ]

कौन तुम जीवन, मरण विधान ?
प्रकृतिके हर कण-कणमें व्याप्त
तुम्हारा है अनुपम संगीत,
विश्व सुनता है कान पसार
तरंगित होता राग पुनीत।
तुम्हारा सुमधुर लय—
और कितने प्रेरित बलिदान
मचलकर कर देते हैं खड़ा
प्रलयरूपी भीषण हुंकार;
नाशकी गोदीमें तत्काल
खेलने लगता है संसार।
क्रान्तिका जाग्रत ताण्डव नृत्य—
सृष्टि करता है प्रलय महान !
अरे ! थोड़े-से क्षण ! आश्चर्य !
गूंजता विकट भैरवी ताल,
प्राण ही बन जाता है वहां
प्राणका शत्रु, प्राणका काल !
एक भीषण आश्चर्य !
अरे तुम जीवन-मरण-विधान !

—श्यामविहारी लाल 'विरागी'

* अप्रकाशित 'कम्पन' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आत्म-संस्मरण

श्री अमृतलाल चक्रवर्ती

[ २ ]

कलकत्तेमें जहां गङ्गाजीका कोयलाघाट है, वहांके सम्बन्धकी एक अच्छी किंवदन्ती है। उससे पता लग जाता है कि जो कलकत्ता आज ऐश्वर्य, सौन्दर्य, विस्तृति और लोक-संख्याकी अधिकतासे अंगरेजी साम्राज्यमें केवल उसकी राजधानी लन्दनके ही नीचेका महानगर है, उसके बसाये जानेका स्थान, आदिमें किस रूपका था। सोलहवीं सदीके प्रथम भागमें जब सुलेमान करानेनी बङ्गालके स्वतन्त्र शासक, सुलतान थे, तो नदियाके राजा भवानन्द मजूमदारने उनसे विनती की—"जहांपनाहकी कदमबोसीको किसमत एक दफा मेरी जमीन्दारीको इनायत की जाय।" यह प्रार्थना बार-बार करते रहनेपर अन्तमें सुलतान पूरी करनेमें सम्मत हुए। राजाने मोरपङ्खियोंका बेड़ा सजाकर सफरमें उन्हें प्रसन्न रखनेके लिए विनोदकी नाना प्रकार व्यवस्था करके उनको लेकर यात्रा की और नित्य नये-नये आमोद-प्रमोदोंसे पुलकित कर उनको इन दिनोंके उक्त कोयलाघाटके निकट ला उतारा। सुलतान उस समय निरस्त्र थे। शायद इसीसे आतङ्कित होकर बोल उठे—"अरे, यह तो शेरोंके चरनेका जङ्गल है! यहां मुझे क्यों ला उतारा?" मजूमदारने कहा—"जहांपनाहको मैं अपनी जमीदारीमें लाया हूं। इस खौफनाक जङ्गलका भी मुझसे खिराज वसूल किया जाता है।" इस कौशलका प्रभाव सुलतानपर इतना पड़ा कि राजा खिराजके वार्षिक दस हजार रुपयेसे बरी कर दिये गये। किंवदन्ती चाहे सत्य हो या असत्य, उसके इस अंशका सत्य निर्विवाद है कि वहां भयङ्कर जन्तुओंके स्वतन्त्र विचरणका सघन वन था।

पूर्वकालकी वही विकराल वनस्थली अब अनेकानेक असामान्य चौड़ी सड़कोंके दोनों किनारे पैदल चलनेके प्रशस्त पाद-पथोंकी बगलमें कतारकी कतार असंख्य उच्च-शीर्ष सौधावलीकी चमत्कारिक निर्माण-कला और ऐश्वर्य-छटासे सज-धज तथा ठौर-ठौर फूलोंकी क्यारियोंसे परिवेष्टित कृष्ण-जलके स्वच्छ झील-तालोंसे शोभित अपार परिवर्द्धित रम्य शोभा बिखेरती हुई जैसी नयन-मनोहर बनी है, वैसे ही वाणिज्यकी विपुल आयसे वाणिज्यकी परम स्वाभाविक सुविधा-सम्पन्न समुद्रतटस्थ बम्बई सरीखी महानगरीको भी नीचा दिखला रही है। यहां तक कि जबसे प्रथम, धौले तथा सांवले दोनों श्रेणियोंके व्यापारियोंको अतिशय भयाकुलकर सर्व भारतकी राजधानी दिल्लीमें हटा दी गयी तबसे भी बम्बई अपनी कलकत्तेकी तिहाई वाणिज्य-आयकी कसरको पूरा करनेमें असमर्थ ही रहती आयी है। अतः अब उन प्रफुल्लित व्यापारियोंको यह कहनेका अवकाश आ गया है—"हे महामान्य लाट महोदय, जब तक आप हमारी गङ्गाको दिल्लीमें नहीं उठा ले जा सकेंगे तब तक हम कलकत्तेकी वाणिज्य-प्रमुखतासे वञ्चित न होंगे।" जिसको पैदा करना आता है वह रजको भी रजत बना लेता है। जङ्गलमें मङ्गल मनानेकी बुद्धि न तो राजामें उदित हुई थी और न सुलतानके ही हृदयमें चमकी थी। इसलिए एकने वार्षिक दस हजार रुपया देनेसे अपना पिण्ड छुड़ाकर अपने सफलीभूत कौशलकी बधाई मनायी और दूसरेने अपने उदार त्यागकी आन्तरिक परितृप्तिकी।

शेर, जङ्गली सूअर, महाकाय अजगर और जहरीले काले नाग-नागिनोंके निवासका वह भीषण गहन वन वर्तमान कोयलाघाटसे उत्तरको कुछ दूर तक और दक्षिणको समुद्र-तट तक लगभग ८० कोस विस्तृत था और पूर्वको भी समुद्र-तट तक सौ-सवा सौ कोस। प्रायः पूर्ण कलेवरके गठीले सांड़के आकारका जो बाघ खूंख्वारीसे भयानक होनेके कारण सिंहके पशुराज कहलानेके गर्वको खर्वकर 'रायल बङ्गाल टाइगर' की राजोपाधि पा गया है उसका अटल छत्र इसी वनमें विराजता था। उसके नियमित राजकरको भेंट वनचर हिरणों और वन सीमान्तवासी मनुष्यों और पशुओंको शरीरके रक्त, मांस और अस्थिके रूपमें चढ़ानी पड़ती थी। वनकी छातीको चीरती हुई प्रचण्ड लहरोंकी अनेक खारी नदियां बहती थीं, जिनका जल असंख्य मगर-घड़ियालोंकी उछल-कूदोंसे ऐसा खलबलाता था कि उसको जैसे ज्वारके चढ़ावके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समय, वैसे ही भाटेकी उतारके समय छूनेमें बड़ेसे बड़े साहसीका साहस सहम जाता था। कई जातियोंके बड़े-बड़े 'झाबर-झोबर' वृक्षोंका वह सूर्यातप-प्रवेश-रोधक महावन आरेकी तरह पत्तोंकी तीखी कंटीली झाड़ियोंसे ऐसा समाच्छन्न था कि उसमें किसीसे पैर बढ़ाना भी न बनता था। उसके सुन्दरवन नामको सार्थक करनेके उपयुक्त कोई भी सुन्दर वस्तु नहीं पायी जाती थी। कोई वायुयान या वायुपोत यदि होता तो उसपरसे उसकी वारीन्द्र-तीरवर्ती घनी सांवली छटापर मुग्ध होकर कोई कालिदास कह सकता था—

दूरादयं चक्रनिभस्य तन्वी
तमालताली वनराजिनीला
आभाति वेला लवणाम्बुराशे-
र्धारानिबद्धेव कलङ्करेखा।

किन्तु तब तक प्रायः ऊसर-सी वैज्ञानिक बुद्धि यह कल्पना भी न कर सकी थी कि मनुष्य कभी व्योम-विहारमें चील-गिद्धका शत्रु बनेगा। तथापि उस निर्जन वनका नाम, जहां केवलमात्र भयका ही अटल राज्य था, सुन्दरवन पड़ा।

राजा भवानन्द मजूमदारके समयमें ही पूर्व-वर्णित घटनाके कुछ दिन बाद सुन्दरवन प्रथम काटा गया। प्रतापराय नामक एक तेजस्वी पुरुषने बिना किसी प्रकार बाधाका सामना किये उस विशाल वन-भूमिको हस्तगत और वन-शून्य कर कृषिक्षेत्रमें परिणत किया तथा उसके स्थान-स्थानमें नगर और असंख्य ग्राम बसाये। उसके दीर्घ-परवर्ती कालमें अंगरेज वणिकोंसे कलकत्ता जब बसाया जाने लगा तो स्कूल-का विद्यार्थी भी अपने पाठ्य-इतिहासमें पढ़ता है कि उसके बसाये जानेके स्थानमें सुतानुटी, कलिकाता और गोविन्दपुर नामक तीन ग्राम उपजाऊ खेतोंसे बंटकर विद्यमान थे। स्मरणीय कर्मकुशल प्रताप रायने जब केवल कई वर्षोंमें ही उस महावनको साफ कर डाला तो अन्यान्य सहस्रों ग्रामोंके साथ-साथ वे तीन ग्राम भी बसे थे और मेरा नावरा ग्राम भी। इस प्रकारसे चुटकी बजाते-बजाते कोई ३६ हजार वर्ग-मील विस्तारके भूखण्डमें कृषिक्षेत्र और अनेक नगर-ग्रामोंके प्रभु बनकर प्रतापरायने महाराजा प्रतापादित्य उपाधि ग्रहण की और अपने बसाये हुए जसोर नामक नगरको दुर्ग, खाई आदिसे सुदृढ़कर राजधानी बनाया। उन दिनों बङ्गालमें बादशाह अकबरकी विजय-पताका फहराने लगी थी। उनके प्रतिनिधि नवाबकी पदवीसे देशपर प्रभुत्व करने लगे थे। प्रतापराय दिल्लीसे अपनी राजाकी उपाधि स्वीकृत करा-कर सनद लाये। वह और उनकी तरह ग्यारह राजा 'भुइयां' कहलाकर समस्त बङ्गालका शासन करते थे। नवाब १२ 'भुइयों' से केवल खिराज ही पाते, राजाओंके पूर्ण स्वतन्त्रतापूर्वक स्व-स्व राज्यकी प्रजाका शासन-पालन करनेमें कभी हस्तक्षेप न करते थे। इसीसे वह अपना समस्त व्यय निर्वाहकर वार्षिक १ करोड़ ९० लाख रुपया बादशाहको भेजनेमें समर्थ होते थे। किन्तु प्रताप रायसे नवाबकी खटपट होने लगी। प्रतापके शासनार्थ नवाबकी सेना गयी जो प्रतापके पराक्रमसे ऐसी विध्वस्त हुई कि नवाबने फिर नयी सेना भेजनेका साहस न किया। किन्तु एक सामान्य 'भुंइये' की उतनी वृद्धि बादशाहसे कैसे सही जा सकती थी? बड़ी सज-धजसे बहुत बड़ी शाही सेना दिल्लीसे आयी, पर वह भी कुचल डाली गयी। अतः अकबरने हिन्दू प्रतापका दमन करनेके लिए हिन्दू सेनापति महाराजा मानसिंहको भेजा। किन्तु तदुपयुक्त सेना लाकर भी महाराजाने दूरदर्शितासे तत्काल धावा न कर हिन्दू राजा भवानन्द मजूमदार आदि-पर अपना प्रभाव फैलाया और पड़ोसी शत्रुओंकी सहायतासे प्रतापको राज्य और प्राणसे च्युत किया।

प्रतापकी मृत्युसे सुन्दरवन प्रान्तकी समुद्र-तटस्थ प्रजा निस्सहाय हुई। पुर्तगाली जल-दस्युओंके उत्पातोंसे व्याकुल होकर वह पूर्वसे पश्चिमको और दक्षिणसे उत्तरको भाग आने लगी। किन्तु समुद्रसे दूर, जलदस्युओंकी पहुंचके बाहर आ बसनेपर और एक प्रकारके शत्रुका उस जन-समूहपर पीछेसे धावा होने लगा। लोक-शून्य स्थानमें सुन्दरवन फिरसे अपना आसन बिछाने लगा और जनपदके समीप आ अपने अभ्यन्तरवासी खूंख्वार जन्तुओंके आक्रमणोंसे ग्रामवासियोंको ऐसा विह्वल करने लगा कि वे और भी आगे भागकर प्राण बचाने लगे। इस प्रकारसे सुन्दरवन अपने आगे लोगोंको भगाते-भगाते मेरे लड़कपनमें मेरे नावरा ग्रामसे एक मील दूर तक आ पहुंचा था। मेरे भी ग्रामवासियोंमें सुन्दरवनके आक्रमणसे पार पानेके लिए गङ्गाजीके पश्चिम पारमें जा बसने-की चर्चा अहर्निश चलने लगी थी। सुन्दरवनके खूंख्वार स्थल-जल-जन्तुओं और सर्पोंने उन दिनों मेरे ग्रामवासियोंपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जो-जो वार किये थे उनको एकसे एक बढ़कर रोमाञ्चकारी कहानियां अनेक वर्षों तक मेरे ग्राममें चर्चाके रोचक विषय-रूपसे कही-सुनी जाती थीं जो अब मेरी उमर तकके इस लम्बे समयमें प्रायः सब कहानी-रसिक पुरनियोंके चल बसने-के कारण सुनानेवालोंके अभावसे युवकों और बालकोंके कर्णगोचर नहीं हो पातीं।

मैं जब पांच वर्षका था तो मेरे ग्रामके समीपका सुन्दर-वन काटा जाने लगा। खूंख्वार जानवरोंके निवास-स्थानपर चढ़ाई होनेके कारण उनकी खूंख्वारी और भी बढ़ गयी। किन्तु कुछ कालमें जन्तुओंके भयसे सदाके लिए बच जानेके भरोसे अवशिष्ट लोगोंने अति प्रेमके पैत्रिक वास-स्थानका परित्याग न किया। दीया जलनेके पहले ही मैं घरमें बन्द किया जाकर निकलनेके लिए किवाड़को पीटता हुआ चिल्लाता था—"शेर मेरा कुछ नहीं कर सकेगा।" यह बात मुझे अभी तक स्पष्ट स्मरण है। कोई बड़ीसे बड़ी बुराई भी कुछ-न-कुछ अच्छाईसे एकदम रहित नहीं होती। शेरका भय जब बहुत बढ़ा न था, उससे भी पहलेसे मेरे ग्रामकी तरह छोटे ग्रामोंमें भी डाकुओंने कुहराम मचा रखा था। क्योंकि वैसे ग्रामोंमें सम्पन्न अधिक न होनेपर भी असम्पन्न कोई न था। आज प्रत्येक ग्राममें सबके सब गृहस्थ जैसे निष्किञ्चन बन गये हैं, वैसी दुर्दशा किसी भी ग्राममें किसी भी गृहस्थ-की न थी। डाकू और शेर दोनोंका सामना करनेका शरीर लोग तैयार करते, तद्रूप शारीरिक बल भी बनाते और गठीले सबल शरीरके मनमें तदुपयुक्त साहस भी उत्पन्न करते थे। हाथमें लाठी रखनेके रसिक थे और लाठीको अपने और पराये हितमें लगानेके कौशलसे विदित थे। आज पेट काटते-काटते हम लोग शरीरको जैसे पञ्जरके जोड़का बना बैठे हैं, वैसे ही वीरता-विकासके हिन्दू-मुसलिम त्योहारमें तीसमारखांओंके तिरमिराते हुए हाथोंकी लाठी केवल कठ-पुतलियोंके नाचकी याद लाकर छाती मसोस देती है। डाकू और शेरोंने और भी एक मार्केकी बात लोगोंकी छाती-में भर दी थी—वह थी, एककी चूं या चींखपर गांवभरके लठबद्धोंकी दौड़ते हुए पहुंचनेकी तत्परता और निपुणता। मेरी पांच वर्षकी उमरमें हर कोई समझता था कि ग्रामके सब कोई मेरे हैं और अब मैं ७१ वर्षकी धुंधली आंखोंमें खून भरकर देखता हूं कि किसीका कोई नहीं है।

प्रताप रायने सोलहवीं सदीके प्रथम भागमें सुन्दरवनको जब काटा था तो उसके एक ही प्रबन्धसे समूचा वन काटा गया था। इसलिए वनाभ्यन्तरकी किसी भी नदीके वेगको घटाये बिना, किसी भी नदीके किसी भी अंशको पटाये बिना समस्त वन काटा जा सका था। किन्तु अठारहवीं सदीके अन्तिम भागमें अंगरेजी राज्यके दिनों जब सुन्दरवन कटवाया गया तो उसके अलग-अलग छोटे-बड़े खण्ड अलग-अलग जमीन्दारी चाहनेवाले धनिकोंके हवाले सौंपे गये, जो अपने-अपने वनांशको बांधसे घेरकर वनको काटनेमें स्व-स्व अंशस्थित नदी वा नदियोंके वेगको घटाये या किसी-किसी अंशको पटाये बिना अपने-अपने बांधको स्थिर नहीं रख सकते थे। इसलिए अनेक नदियां पट गयी हैं और शेष क्रमशः पटती आती हैं। मेरे ग्रामके पास जब नदी थी तो वर्षाका अतिरिक्त जल उसमें गिरकर भाटेके समय निकल जाता था। धान निम्न भूमिकी ही फसल है। वर्षाकालके आरम्भमें यदि वृष्टि अधिक होती है तो अब अतिरिक्त जलको निकाल देनेका कोई उपाय न रहनेके कारण धान बड़ी ही कठिनाईसे रोपा जाता है और समूची वर्षाका जल कहीं चैत्रके अन्त तक सूखता है, जिससे अतिरिक्त जलमें धान काटना भी पड़ता है। इसलिए धानकी फसल अब रुपयेमें दो आनेसे अधिक नहीं होती, धानके पुआलकी भी वैसी ही कमी होनेके कारण गायोंके चारेकी भी तङ्गी है और पास नदी रहनेसे ऊंची जमीनकी सील बनी रहकर तेलहन, साग, फल-फूल आदिकी पैदावार अच्छी होती थी, जिनकी अब धानकी-सी ही दशा है। अब किसानोंका केवल श्रम पूर्ववत् बना हुआ है, अथवा वह भी बढ़ गया है, किन्तु आय इतनी घट गयी है कि नित्य बाल-बच्चों सहित अल्पाधिक भूखसे तङ्ग होकर स्वास्थ्य और आयुसे हाथ धोना पड़ता है।

हिन्दी-लेखकका आत्मलिखित अथवा अन्य लिखित संस्मरण प्रधानतः हिन्दी-भाषा, हिन्दी-साहित्य, हिन्दी-लेखक, हिन्दी-भाषी, हिन्दी-अनुरागी आदि हिन्दी-सम्बन्धी विषयों और व्यक्तियोंकी आलोचनाका होना चाहिए। तथापि उसके जीवनके साथ राजनीतिक, सामाजिक आदि महत्त्वकी घटनाओं और पुरुषोंका जो कुछ सम्बन्ध हुआ हो उसकी आलोचनाका महत्त्व भी उपेक्षणीय नहीं है और जन्मसे लेकर संस्मरण लिखे जानेके समय तक उसको जैसी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जैसी परिस्थितियोंमें जैसी-जैसी घटनाओंका सामना करना पड़ा, उनका भी आलोचना-युक्त वर्णन उसमें होनेसे समझा जाता है कि किन प्रेरणाओंका प्रभाव उसके चरित्र और चित्तपर पड़कर उसकी आलोचनाओंको रूपान्वित कर रहा है। यह इतना आवश्यक है कि इसके बिना उसके संस्मरण-का मूल्य ही निर्णीत नहीं किया जा सकता। मेरे जीवनका प्रथम भाग ऐसे स्थानमें व्यतीत हुआ है कि जिससे हिन्दीका और हिन्दी-भाषियोंमें धनिकोंके दरबानोंको छोड़कर और किसीका कोई सम्बन्ध अभी तक स्थापित नहीं हुआ है। यों तो हिन्दीकी सार्वभौमिकताके नाते अन्य किसी प्रान्तीय भाषाकी तरह प्रान्तीयता हिन्दीको स्पर्श नहीं कर सकती; भारतके कोने-कोनेसे हिन्दीका घनिष्ठ सम्बन्ध ही समझना चाहिए। किन्तु मुझे भय हो रहा है कि मैं अपने ग्रामकी—असामान्य महत्त्वपूर्ण सुन्दरवनकी जिन बातोंको बिना सुनाये अपनी बाल्यावस्थाके संस्कारोंके मूलका पता पाठक-पाठिकाओंको नहीं दे सकता, उनसे उनके धैर्यपर आघात तो नहीं हो रहा है? सबसे बढ़कर बचपनके संस्कार ऐसे बलवान होते हैं जो जीवनके अन्य संस्कारोंको प्रायः तदुनुकूल बना लेते हैं। किन्तु साथ ही यह विचार भी मुझमें उठ रहा है कि जो अध्ययन-अनुरागी सैकड़ों बंगला उपन्यासोंके अनुवादमें बङ्गालके नगण्य स्थानोंका भी वर्णन और उस प्रान्तके नर-नारियोंका चरित्र-चित्रण अवलोकन करते हैं, वे क्या बंगलाका अनुवाद न होनेके कारण असामान्य महत्त्वके सुन्दरवनके वर्णनसे ऊब जायंगे? सुन्दर वन प्रान्त तो ऐसा है कि वन अब कट जानेसे असाधारण कर्मी प्रतापरायके विमल कीर्तिकलापोंके चिह्न निकल आये हैं। पुच्छलतारा अकस्मात् आकर जिस तरहसे गगन-मण्डलको कुछ ही कालके लिए उज्ज्वल आलोकमालासे जगमगाकर अदृश्य हो जाता है, ठीक इसी तरहसे अत्यल्प कालमें प्रतापका उत्थान, स्मरणीय कीर्ति-स्थापन और पतन हो गया। सुन्दर वनपर अनेक धनाभिलाषियोंका भी ध्यान पड़ा, जिनमेंसे एक बम्बईके पूंजीपतिने ६० लाख रुपये पूंजीकी पोर्ट कैनिङ्ग इम्प्रूवमेण्ट नामक कम्पनी खड़ी कर जङ्गल काट बड़ी भारी रियासत-सरीखी जमीन्दारी खड़ी की है। जो पठन-अभिलाषी जल-स्थल-गिरि-मरु-वर्णनके निबन्धोंको पढ़ते हैं वे क्या केवल 'संस्मरण'-शीर्षकके कारण ही एक ऐसे सुप्रसिद्ध महावनके वर्णनसे थक जायंगे जिसका विवरण अभी तक किसी भी भारतीय भाषामें प्रकाशित नहीं हुआ?

सन्थाल परगनेके पार्वतीय वनवासी बलिष्ठोंसे सुन्दरवन-का प्रचुर अंश कटवाया गया, तबसे थोड़ी मालगुजारीपर खेतीकी जमीन पाकर वे सन्थाल सुन्दरवन प्रान्तमें बसते आये हैं। मेरे पड़ोसकी सन्थाल-टोलीपर हिन्दू पड़ोसियोंका ऐसा अनूठा प्रभाव पड़ा जो अन्य हिन्दुओंके साथ हरिजनके वर्तमान भेद-निवारण-उद्योगमें पथ-प्रदर्शक हो सकता है। सन्थाल जब प्रथम आये थे तबसे अनेक दिनों तक अपने-आप 'हांडुआ' नामक एक प्रकारकी मदिरा इफरातसे बनाते और स्त्री-पुरुष दोनों पीकर उन्मत्त होते थे। दो-तीन पुरुष 'मादल' नामक एक प्रकारकी तीखी आवाजकी ढोलक गलेसे लटकाकर बजाते, जिनकी लम्बी कतार स्त्रियोंकी वैसी ही कतारके सामने खड़ी हो जाती और दोनों बारी-बारी नाचती-गातीं। पुरुषोंकी कतार जब गाती तो स्त्रियोंकी नाचती और स्त्रियोंकी जब गाती तो पुरुषोंकी नाचती। 'मादल'-वाले दोनोंके नाच-गानके समय बराबर बजाते। गीत रसके होते थे। हरएक गीतके अन्तमें हर पुरुष नाच-नाच जैसे अपने स्थानमें घूमता, वैसे ही स्त्री भी। स्त्रियों-का पीछा अपने सामने देखते ही 'मादल' वाले नाच-नाच, आगे बढ़ हरएक स्त्रीके पीछे 'मादल' का धक्का मारते और दोनों कतारें ठहाकेसे हंस उठतीं। प्रायः प्रति रातको, और चांदनीमें तो अवश्य ही, घण्टों इस प्रकार धूम होती। पूर्णिमाकी रात्रिको तो सन्ध्यासे लेकर भोर तक वे बीच-बीचमें 'हांडुआ' उड़ाते हुए नाच-गाकर काट देते थे। वे ही सन्थाल अब केवल अपनेको हिन्दू कहते ही नहीं, बल्कि हर बातमें हिन्दुओंसे ऐसे अभिन्न हो गये हैं कि उनको स्मरण भी न रहा कि कभी वे पृथक् थे। हिन्दुओंके आमोद-प्रमोद, हिन्दुओंके त्योहार, हिन्दुओंके देव-देवी अब सब उनके अपने हो गये हैं। यहां तक कि हिन्दू ही उनकी पुरोहिती करता है। वे स्थानीय बोलीमें बातचीत करते हैं, परस्पर भी उसी बोलीमें बोलते-चालते हैं; और अब जानते भी नहीं कि कभी उनके अपने बोलनेकी कोई और बोली थी। उनके गलेसे भी अब सन्थाली स्वर नहीं निकलता। उनके गवैये स्थानीय सुरमें स्थानीय गवैयोंसे अभिन्न रीतिपर गाते हैं। स्थानीय मुद्रा-दोष (सखुनतकिया) तक उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बोलनेमें आने लगा है। वे स्कूलमें पढ़ते, बंगला-अंगरेजी सीखते और बंगाली हिन्दू-मुसलमानोंकी तरह केश-वेष बनाते हैं। उनके चेहरेका सन्थाली ढांचा तक ऐसा बदल गया है कि स्थानीय हिन्दू-मुसलमानोंके साथ अभिन्न हो गया है। केवल स्थानीय हिन्दू-मुसलमान किसानोंके साथ एकत्र एक ही प्रकार काम करते-करते, समान परिस्थितिके सुख-दुःखोंको भोगते-भोगते, एक ही प्रकार भाव-भावनाओं-को मनमें रखते-रखते उनका यह चमत्कारिक परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तनके होनेमें अवश्य ही दीर्घकाल लगा। ६०-६५ वर्षोंमें वे एकदम बदल गये।

---

# क्षमा

( प्रसिद्ध फ्रेञ्च लेखक मोपासांकी एक कहानी )

अनुवादक—श्री श्रीपति पाण्डेय

सेविग्नोल्सने अपनी पुत्री बार्थाका ब्याह १८ वर्षकी अवस्थामें कर दिया। उसने पैरिसके जार्ज बैरान नामक एक युवकके साथ विवाह किया था जो शेयर-बाजारमें काम-काज करता था। वह सुन्दर था, अच्छे आचार-विचारका था और प्रत्यक्ष रूपसे उसमें सभी वाञ्छनीय गुण थे; पर उसके हृदयके अन्तस्तलमें अपने प्राचीन लकीरके फकीरवाले सास-ससुरके प्रति कुछ घृणा-सी थी। अपने इष्ट-मित्रोंमें वह उन्हें 'मेरी प्यारी प्राचीन ठठरियां' कहा करता था।

वह अच्छे खानदानका था। लड़की भी धनी थी। वे दोनों पैरिसमें बस गये।

बार्था भी उन प्रान्तीय पैरिस-निवासियोंमें सम्मिलित हो गयी, जिनकी संख्या लाखोंकी है। वह इस विशाल नगरीसे, उसके सामाजिक जीवनसे, उसके आनन्द-उल्लाससे और उसके रीति-रिवाजसे बिलकुल अनभिज्ञ रही—ठीक उसी भांति, जैसे वह अपने जीवनसे तथा जीवनके छल-कपट और रहस्योंसे अपरिचित थी।

अपने गृह-कार्यमें ही ऐसी मग्न रहती कि घरके पास-वाली सड़कको छोड़कर वह शायद ही कुछ जानती हो। जब कभी वह पैरिसके दूसरे हिस्सेमें जानेका साहस करती तो उसे ऐसा जान पड़ता मानो उसने किसी अज्ञात अना-विष्कृत नगरकी लम्बी और कठिन यात्रा समाप्त की है। तब सन्ध्या समय वह अपने पतिसे कहती—"आज मैं बूलवार्द * गयी थी।"

वर्षमें दो-तीन बार उसका पति उसे थियेटर ले जाता। उसके लिए ये घटनायें ऐसी थीं जिनकी स्मृति कभी फीकी नहीं पड़ती। ये घटनायें बहुत दिनों तक उनकी बातचीतका विषय बन जातीं।

तीन महीने बाद कभी-कभी वह एकाएक कहकहा मार-कर हंसती और कहती—"क्या तुम्हें उस ऐक्टरकी याद है जो जेनरलके वेषमें था और मुर्गेकी बोली बोलता था?"

उसकी मित्र-मण्डली दो परिवारों तक ही—जो उसके सम्बन्धी थे—परिमित थी। वह उन्हें उनके परिवारोंके नामपर 'मैर्तिनेन्स' और 'मिशलिन्स' कहकर पुकारती थी।

उसका पति अपनी इच्छानुसार जो चाहता, करता; कभी-कभी वह रात-रातभर बाहर बिताकर सुबहको घर वापस आता, और काम-काजमें व्यस्त रहनेका बहाना करता। अपने कामोंकी विशेष कैफियत देनेकी कभी कोशिश न करता। क्योंकि वह जानता था कि उसकी स्त्रीके पवित्र हृदयमें उसके प्रति कभी सन्देह उत्पन्न ही नहीं हो सकता।

मगर एक दिन प्रातःकाल उसे एक गुमनाम पत्र मिला। वह हक्काबक्का रह गयी। वास्तवमें वह ऐसी सरल-हृदय थी कि उसने उस हस्ताक्षर-रहित पत्रकी कलङ्कमय बातोंको नहीं समझा, और इसीलिए पत्रसे उसे घृणा भी न हुई। पत्रके लेखकने यह प्रकट किया था कि उसने बार्थाके सुखके हेतु, उसकी बुराईसे घृणा करनेके कारण तथा सत्यके प्रेमसे प्रेरित होकर ही वह पत्र लिखा था।

इस पत्रसे उसे मालूम हुआ कि पिछले दो वर्षसे उसका पति श्रीमती रोसेट नामक एक सुन्दरी विधवा युवतीसे प्रेम

* पैरिसकी सुन्दर पेड़ोंसे छायी सड़क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करता था, और उसीके साथ प्रतिदिन सन्ध्याको रहा करता था।

बार्था न तो यही जानती थी कि अपने दुःखको कैसे छिपाये, और न यही कि अपने पतिके गुप्तभेदका कैसे पता लगाये। दोपहरको जब उसका पति भोजनके लिए घर आया तो उसने वह पत्र पतिके सामने फेंक दिया और फूट-फूटकर रो पड़ी; इसके बाद अपने कमरेमें भाग गयी।

पतिको सारी स्थिति समझने और अपना जवाब सोचनेके लिए समय मिल गया। उसने पत्नीके कमरेका दरवाजा खट-खटाया। पत्नीने तुरत ही दरवाजा खोल दिया; पर उसे पतिकी ओर ताकनेका साहस न हुआ। पतिदेव मुसकराकर बैठ गये। उसने बार्थाको अपने घुटनोंपर खींचकर, हंसीके स्वरमें कहना आरम्भ किया—"प्रिये, यह ठीक है कि श्रीमती रोसेट नामक महिलासे मेरी मित्रता थी। मैं उसे आज दस वर्षसे जानता हूं, और उसके प्रति मेरे हृदयमें बड़े उच्च विचार हैं। साथ ही यह भी कह देना उचित समझता हूं कि मैं ऐसे अन्य बीसियों आदमियोंको जानता हूं जिनके नामका मैंने कभी तुमसे जिक्र तक नहीं किया; क्योंकि मैंने देखा कि तुम समाजसे, नये-नये आदमियोंसे मिलनेसे, या किसी उत्सवमें सम्मिलित होनेसे उदासीन रहती हो। पर इस प्रकारके घृणास्पद प्रसङ्गका अन्त करनेके लिए मैं चाहता हूं कि तुम भोजन करनेके बाद कपड़े पहन लो, और फिर हम दोनों साथ-साथ उस महिलासे मिलने चलें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि बहुत शीघ्र वह तुम्हारी भी मित्र बन जायगी।"

बार्थाने उत्सुकतापूर्वक अपने पतिका आलिङ्गन किया, और वह स्त्री-सुलभ कौतूहलसे, जो एक बार जाग्रत होनेसे शान्त नहीं होता, द्रवित हो गयी। वह उस अपरिचित विधवासे—जिसके प्रति इतना सब-कुछ होनेपर भी उसके हृदयमें बहुत कम ईर्ष्या थी—जाकर मिलनेके लिए राजी हो गयी। स्वाभाविक प्रेरणासे उसे ऐसा अनुभव हुआ कि खतरा आनेपर उसके मुकाबलेके लिए पहले हीसे तैयार रहना चाहिए।

दोनोंने एक सुन्दर चौतल्ले मकानके एक छोटे-से, सुन्दर सजे हुए खण्डमें प्रवेश किया। पांच मिनट तक उन्हें बैठक-खानेमें, जो अनेक पर्दोंके टंगे होनेके कारण कुछ अंधेरा-सा था, प्रतीक्षा करनी पड़ी। फिर एक दरवाजा खुला और एक बहुत सांवली, नाटी और किसी कदर मोटी युवा स्त्री आश्चर्यचकित और मुसकराती हुई दिखायी दी।

जार्जने दोनोंका परिचय कराया—"आप मेरी धर्मपत्नी हैं—और आप श्रीमती जूली रोसेट हैं।"

आश्चर्य और प्रसन्नताके मारे उस युवती विधवाके मुखसे अधदबी चीख-सी निकल पड़ी और वह दोनों हाथों-को फैलाकर आगेकी ओर लपकी। उसने कहा—"मुझे यह आनन्द प्राप्त करनेकी कभी आशा न थी; क्योंकि मैं जानती हूं कि श्रीमती बैरान कभी किसीसे मिलती-जुलती नहीं। परन्तु आपसे परिचय प्राप्तकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं जार्जको (उसने 'जार्ज' का नाम एक सुपरिचिता भगिनी-सरीखे ढङ्गसे उच्चारण किया था) इतना चाहती हूं कि मैं उसकी युवती स्त्रीको देखने और उससे मित्रता स्थापित करनेके लिए अत्यन्त उद्विग्न थी।"

महीनेके अन्त तक वे दोनों आपसमें ऐसी घुल-मिल गयीं कि उन्हें एक-दूसरेसे अलग करना असम्भव-सा हो गया। वे प्रतिदिन एक-दूसरेसे मिलती-जुलतीं—कभी-कभी दिनमें दो-दो बार, और प्रतिदिन सन्ध्या समय एक साथ ही भोजन करतीं—कभी एकके घर, कभी दूसरेके। जार्ज अब न तो घरसे बाहर ही रहता और न काम-काजकी अधिकताका बहाना ही करता। वह कहता कि अब वह अपने घरकी अंगीठीके पास बैठना ही पसन्द करता है।

कुछ समय बाद, जब श्रीमती रोसेटवाले मकानका एक खण्ड खाली हुआ तो श्रीमती बैरान (बार्था) ने शीघ्रतासे उसे किरायेपर ले लिया जिससे कि वह अपनी सखीके निकट रह सके, और उसके साथ अपना अधिक समय व्यतीत कर सके।

पूरे दो वर्षों तक उनकी मित्रतामें कुछ भी मलिनता न आयी। यह मित्रता हृदय और मस्तिष्ककी थी—यह सर्वाङ्ग-पूर्ण, कोमलता और भक्तिसे ओतप्रोत थी। बार्था शायद ही कोई ऐसी बात कहती हो जिसमें श्रीमती रोसेटका नाम न आता हो। उसके मतानुसार श्रीमती रोसेट सम्पूर्णताकी प्रतिमूर्ति थी।

वह पूर्णरूपेण प्रसन्न, शान्त और सन्तुष्ट थी।

एक दिन श्रीमती रोसेट बीमार पड़ी। बार्थाने एक क्षणके लिए भी उसे नहीं छोड़ा। कितनी ही रातें उसने उसके पास



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बैठे-बैठे काट दीं। वह दुःखसे पागल-सी हो गयी। उसका पति भी अनमना-सा दीख पड़ता था।

एक दिन सवेरे मरीजको देखनेके बाद, डाक्टरने जार्ज और उसकी स्त्रीको एक ओर ले जाकर उनसे कहा कि जूली (श्रीमती रोसेट) की दशा अत्यन्त चिन्ताजनक है।

डाक्टरके जाते ही रञ्जके मारे हुए पति-पत्नी दोनों आमने-सामने बैठकर आंसू बहाने लगे। उस दिन रातको दोनों ही मरीजके पास बैठे रहे। बीच-बीचमें बार्था कोमलतासे अपनी सखीका चुम्बन कर लेती थी और जार्ज चारपाईके पैताने खड़े-खड़े मरीजके चेहरेको टकटकी लगाकर देखता था।

दूसरे दिन श्रीमती रोसेटकी दशा और भी बिगड़ गयी।

परन्तु सन्ध्या-वेला उसने कहा कि अब उसे कुछ आराम मालूम होता है, और इस बातकी जिद की कि बार्था और जार्ज अपने कमरेमें जाकर भोजन कर आयें।

वे अपने भोजनालयमें उदास बैठे खानेकी मुश्किलसे चेष्टा कर ही रहे थे कि इतनेमें दासीने आकर जार्जको एक 'चिट' दिया। उसने उसे खोलकर देखा, और उसका चेहरा मृत्युके समान पीला पड़ गया। टेबिलसे उठते हुए उसने अपनी पत्नीसे कांपती हुई आवाजमें कहा—"थोड़ी देर ठहरो। मैं एक क्षणके लिए तुम्हें छोड़कर जाता हूं। तुम यहांसे कहीं न जाना।"

वह जल्दीसे कमरेमें टोपी लेने गया।

बार्था नयी-नयी चिन्ताओंका शिकार बनी हुई उसकी प्रतीक्षा करती रही; परन्तु हर बातमें वह इतनी नम्र थी कि पतिके आये बिना वह अपनी सखीके पास भी नहीं जा सकी।

अन्तमें जब उसका पति न लौटा तो उसे ख्याल हुआ कि चलकर पतिके कमरेमें देखे कि वह अपना दस्ताना तो नहीं ले गया। इससे यह प्रकट हो जायगा कि वह किसीसे मिलनेको तो नहीं गया है।

पहली ही दृष्टिमें उसने दस्तानोंको देख लिया। उनके बगलमें एक सिकुड़ा हुआ कागज पड़ा था, जो शायद जल्दीमें नीचे गिर गया था।

उसने तुरन्त ही भांप लिया कि यह वही पत्र है जो जार्जको मिला था।

उसके मनमें उस पत्रको पढ़कर पतिके एकाएक चले जानेका कारण जाननेकी एक अदमनीय इच्छा—जिन्दगीमें इस प्रकारकी यह पहली ही इच्छा थी—उठी। उसके विद्रोही अन्तःकरणने इसका विरोध किया; पर विजय अदम्य और भयावह कौतूहलकी ही हुई। उसने पत्रको उठा लिया, उसे तह खोलकर ठीक किया, और कांपते हुए हाथों द्वारा पेन्सिलसे लिखे जूलीके अक्षरोंको पहचाना। उसे पढ़ा—"मेरे प्यारे, तुम अकेले आकर मुझे चुम्बन दो। मैं मर रही हूं।"

पहले वह इस रहस्यको न समझ सकी, जूलीकी मृत्युका ही विचार उसके मनमें सबसे ऊपर था; पर एकाएक उसने जो-कुछ पढ़ा उसका वास्तविक मतलब बिजलीकी भांति उसके मस्तिष्कमें दौड़ गया। उस पेन्सिलके लिखे पत्रने उसके सम्पूर्ण अस्तित्वपर एक धुंधला प्रकाश डाल दिया, और यह भी प्रकट कर दिया कि वह अब तक किस प्रकारके घृणापूर्ण सत्य, प्रवञ्चना और विश्वासघातका शिकार बनी रही। वर्षोंका छल-कपट और किस भांति उन्होंने उसे अपने हाथोंका खिलौना बना रखा था, यह बात उसकी समझमें आ गयी। उसने अपनी कल्पनाकी दृष्टिमें देखा कि वे दोनों सन्ध्या समय आमने-सामने बैठे हुए लैम्पकी रोशनीमें एक ही पुस्तकसे पढ़ रहे हैं और प्रत्येक पृष्ठके अन्तमें एक-दूसरेको देख लेते हैं।

उसका निरीह, दुःखित, मर्माहत हृदय एक ऐसी निराशाके गर्तमें डूब गया जिसका कोई ओरछोर न था।

किसीके पैरोंकी आहट सुनायी पड़ी; वह भागकर कमरेमें चली गयी और दरवाजा बन्द कर लिया।

उसी समय उसके पतिने पुकारा—"जल्द चलो! श्रीमती रोसेट मर रही हैं।"

बार्था दरवाजेपर दिखायी दी और कम्पित अधरोंसे उसने उत्तर दिया—"तुम अकेले ही उसके पास जाओ; उसे मेरी जरूरत नहीं।"

दुःखसे कातर हो उसने बार्थाकी ओर देखा और फिर बोला—"फौरन् चलो! मैं ठीक कहता हूं, वह मर रही है!"

बार्थाने जवाब दिया—"तुम तो यह चाहते होगे कि मैं मरती तो अच्छा होता।"

अन्तमें उसने बार्थाके कथनको समझा और उस मरणासन्न महिलाकी चारपाईके निकट अकेला ही लौट आया।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनी स्त्रीके दुःखका विचार किये बिना ही वह खुलम-खुला निर्लज्जतापूर्वक प्रतिदिन जूलीकी मृत्युपर विलाप करता था। बार्था अब न तो उससे बोलती थी और न उसको देखती ही थी। वह घृणासे घिरी हुई, क्रोधसे भरी हुई, एकान्तमें अपना जीवन बिताती, और दिन-रात ईश्वरसे प्रार्थना करती।

इतना सब-कुछ होनेपर भी वे अब तक एक ही घरमें रहते थे और भोजन करते समय टेबिलपर चुपचाप, निराशासे भरे हुए बैठते थे।

पतिका दुःख तो धीरे-धीरे कम होने लगा; परन्तु पत्नीने उसे क्षमा नहीं किया। इस प्रकार उन दोनोंका कठोर और कटु जीवन व्यतीत होने लगा।

पूरे एक वर्ष तक वे एक-दूसरेसे बिलकुल अपरिचितकी भांति इस तरह रहे मानो उनकी कभीकी मुलाकात ही न हो। बार्था प्रायः पागल-सी हो गयी।

अन्तमें एक दिन, बड़े तड़के, वह घरसे बाहर निकली, और सफेद गुलाबके फूलोंका एक बहुत बड़ा गुलदस्ता लिये हुए ८ बजे वापस लौटी। फिर उसने अपने पतिसे कहलाया कि वह उससे बातें करना चाहती है।

वह चिन्तित और बेचैन-सा बार्थाके पास आया।

"चलो हम लोग साथ-साथ बाहर चलें,"—पत्नीने कहा —"इन फूलोंको तुम ले लो; ये मेरे लिए बहुत भारी हैं।"

गाड़ीपर बैठकर वे दोनों कब्रिस्तानके फाटकपर जाकर उतरे। बार्थाकी आंखें आंसुओंसे भर गयीं। उसने जार्जसे कहा—"मुझे उसकी कब्रपर ले चलो।"

वह कांप उठा और उसके अभिप्रायको न समझ सका। फिर भी गुलदस्तेको लिये हुए वह आगे-आगे चला। अन्तमें वह एक सफेद सङ्गमरमरकी पटियाके सामने ठहर गया, और उसकी ओर बिना किसी प्रकारका शब्द किये हुए चुपकेसे इशारा कर दिया।

बार्थाने पतिके हाथसे गुलदस्ता ले लिया और घुटने टेककर उसे कब्रपर चढ़ा दिया, फिर उसने मन-ही-मन सच्चे हृदयसे प्रार्थना की।

उसके पीछे उसका पति अतीतकी स्मृतियोंमें विभोर खड़ा था।

वह उठी और अपने हाथोंको पतिकी ओर बढ़ाते हुए बोली—"अगर तुम चाहो तो हम लोग मित्रता रख सकते हैं।"

---

# कौन ?

अनवरत जीवनका संग्राम
शिथिल कर देता है जब प्राण,
कौन बनकर आशाका गीत
मुग्ध कर जाता भूला मन ?

× × × ×

वेदनाकी जब तप्त उसांस
जकड़ देती सुखका संसार,
कौन बन उरमें मधु साकार
खोल जाता है यह बन्धन ?

× × × ×

उमड़ घिर आती जब चुपचाप
निराशाकी अंधियाली रात,
कौन बनकर ज्योत्स्ना सुकुमार
प्रकाशित करता यह जीवन ?

× × × ×

देव ! पथ है दुर्गम अज्ञात,
और कोमल निर्बल हैं प्राण,
तुम्हारी छाया ही अनजान
मुझे प्रेरित करती प्रतिक्षण।

—कुंअर कृष्णबलीसिंह

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

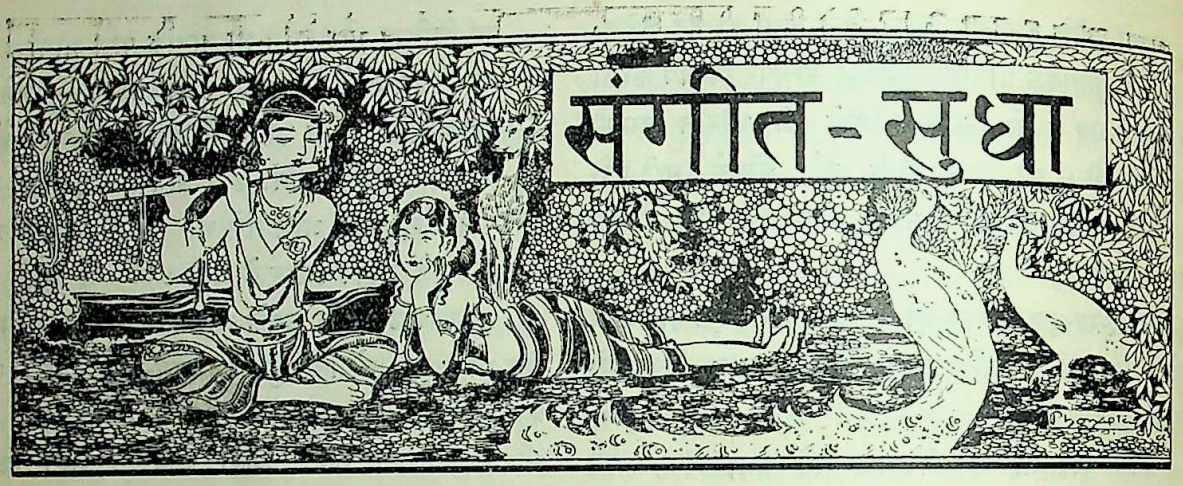


स्वरलिपिकार—
श्री कालिकाप्रसाद मिश्र
सङ्गीत मास्टर

# राग खम्माच

( मात्रा १६ त्रिताल )

शब्दकार—
श्री विन्दाजी गायक

## गीत

आवत श्याम लचकि चले मुकुट धरे ,
बंसी कैसी बजी वाको मन न हरे ।
अन्तरा—उझुकत झुझुकत झुक झुमि आवे मन मतवारो
नयनवां वारो विन्दा कहत कर पकड लीन्ह मोरी ॥

## स्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | धप | मग | | म |
| | | | | | | | | | | | | आऽ | वऽ | | त |
| नी | ऽ | सां | रें | सांनि | सां | निध | नी | प | ध | पा | नी | धप | धप | मग | म |
| श्या | ऽ | म | ल | चऽ | कि | चऽ | ले | मु | कु | ट | ध | रेऽ | वंऽ | ऽऽ | सी |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| म | ध | ध | ध | नी | धप | धप | ध | नी | नी | नी | सां | सां | नी | धप | ध |
| कैं | ऽ | सी | वा | जि | वाऽ | ऽऽ | को | म | न | न | ह | रे | आ | वऽ | त |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

## अन्तरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | म | ग | म | प | प | नी | नी | सां | सां | सां | सां | सां | सां | सां | सां |
| उ | झु | क | त | झु | झु | क | त | झु | कि | झु | मि | आ | ऽ | व | त |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धा | नी | धा | नी | धा | नी | धप | ध | नो | सां | निध | नी | सांनि | धप | मप | गम |
| म | न | म | त | वा | ऽ | रेऽ | न | य | न | वाऽ | ऽ | वाऽ | ऽऽ | ऽऽ | लेऽ |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| सा | म | ग | म | प | प | नी | नी | सां | रें | सां | नी | धप | ध | म | प |
| वि | न्दा | ऽ | क | ह | त | क | र | प | क | ड़ | ली | ऽऽ | न | मो | री |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

ताल—नम्बर ( १ ) समसे सम तक—

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सांनि | सांरें | सानि | धप | सांनि | धप | मग | रेसा | निस | गम | पप | नीनी | सांनि | सांरें | सांनि | धप |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

नम्बर ( २ )

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गम | पग | मप | गम | सांनि | धप | मग | रेस | निसा | गम | प | निसा | गम | प | निसा | गम |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

खालीसे नम्बर ( ३ )

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सानि | धप | ध | धप | मग | म | निसा | गम |
| ० | | | | ३ | | | |

## नोटेशन चिह्न

नोट—मात्रा पहचान—लघु, गुरु, प्लुत—

लघु—सा रे ग म प ध नी

गुरु—सा ऽ रे ऽ ग ऽ म ऽ

प्लुत—साऽ रेऽ गऽ मऽ पऽ

कोमल स्वर पहचान—यथा 'नी'। इस रागमें केवल दोनों निषाद लगते हैं। शुद्ध स्वरपर किसी प्रकारका निशान नहीं है। मन्दग्राम स्वर पहचान—नि़ ध़ प़ म़। मध्यम ग्राम पहचान—सा, रे, ग, म, प, ध, नी। तार ग्राम पहचान—सां, रें, गं, मं पं। ताली व खाली पहचान यथा सम × ताली २ खाली ०। इस रागका वादी गान्धार वो सम्वादी धैवत थाट—सा, ग, म, प, धा, नी, सां, सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

विदित हो कि कोष्ठबन्द प्रत्येक स्वर बराबर एक मात्राके हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

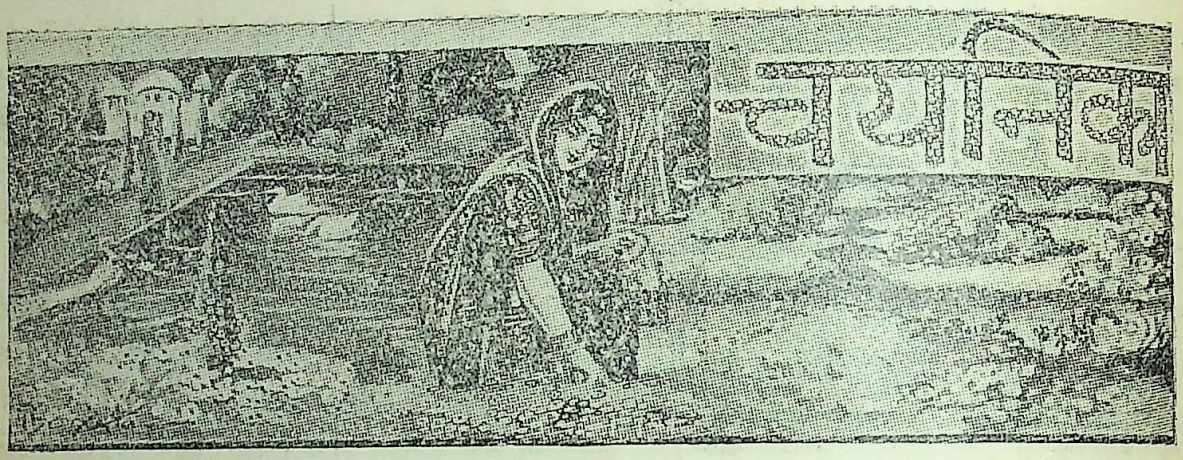

## अन्धोंके परम मित्र कुत्तेकी शिक्षा

कुत्ता मनुष्य जातिका परम मित्र है। वह बुद्धि-सम्पन्न भी है। इसलिए यूरोपमें उससे नाना काम लिये जाते हैं। पुलिसके काममें कुत्तेकी सहायता आजकल अनिवार्य समझी जाती है। गड़रियोंका कुत्ता चौपायोंकी जो देखरेख करता है और जिस चौकसीसे उनका पहरा देता और उनको बहकनेसे बचाता है, उसे देख हैरान होना पड़ता है। बाजारसे सौदा लानेमें भी कुत्ता अपनी बुद्धिका चमत्कार दिखाता है। यह सब शिक्षाका फल है। यूरोपमें कुत्तोंके नाना स्कूलोंमें उन्हें इच्छित कामकी शिक्षा दी जाती है। बर्लिनके पोट्सडाम मुहल्लेमें कुत्तोंकी एक पाठशाला है जहां उन्हें अन्धोंकी सेवा करना सिखाया जाता है। कोलोनके 'केल्निशे त्साइटुङ्ग'में उसपर एक दिलचस्प और शिक्षाप्रद लेख छपा है। उसका सारांश यह है :—

देखिये, पोट्सडामकी कुत्तोंकी पाठशालाको पूरे दस साल हो गये। इसमें गड़रियों और अन्धोंके कामके लिए कुत्ते सिखाये जाते हैं। इन दस सालोंमें १२०० कुत्ते इस शालासे ऐसे निकले जो उन अभागे सैनिकोंकी सेवामें लगे हैं जिनपर परमात्माकी सबसे बड़ी मार पड़ी है। इनके रोगने इन्हें सब प्रकार लाचार कर दिया है।

इस स्कूलमें सदा ही ४० या ५० कुत्ते गड़रियोंकी सेवाका काम भी सीखते हैं। इनकी आयु एकसे दो सालकी होती है। इससे कम उम्रके होनेपर उनमें वह गम्भीरता नहीं पायी जाती जो उनके दायित्वपूर्ण कामके लिए आवश्यक है। ज्यादा उम्र होनेपर उनकी अक्ल 'सठिया' जाती है और वे अपना काम ठीक तरहसे नहीं सीख सकते।

आरम्भमें कुत्तोंको भिन्न-भिन्न पदार्थोंमें अन्तर मालूम करना सिखाया जाता है। जो कुत्ते अपने कर्तव्यका ध्यान नहीं रखते वे गड़बड़ी करने लग जाते हैं और कई कुत्ते भांति-भांतिसे अपनी दुर्बलताओंका परिचय देते हैं। ऐसे कुत्ते झटसे निकाल दिये जाते हैं। बुद्धिकी यह परीक्षा केवल आठ दिन तक रहती है। इस परीक्षामें पास होनेपर उन्हें साधा जाता है। दड़दड़ करती हुई मोटरें पूरी तेजीसे उनकी बगलसे गुजरती हैं और जो कुत्ता शान्त होकर अपने स्थानपर खड़ा नहीं रहा, या जिसने जरा भी बेचैनी या बुद्धिविभ्रमका प्रमाण दिया वह भी अन्धे मनुष्योंकी सेवाके अनुपयुक्त समझा जाता है। यह दूसरी परीक्षा पास कर लेनेपर फिर समझ लिया जाता है कि कुत्ते योग्यताके साथ अन्धोंके पथप्रदर्शक बनेंगे।

अत्यन्त स्वामिभक्त, विचारशील, शान्तस्वभाव और प्रेमी कुत्तोंमें बुद्धि और विवेक भी अत्यधिक पाया जाता है। ऐसे कुत्ते गम्भीर प्रकृतिके होते हैं और बुद्धि-विभ्रमके कारण उपस्थित होनेपर भी अपनी मति विचलित नहीं होने देते।

कुत्तेकी कामुकता मादा कुत्ता देखकर जहां उत्तेजित हुई, फिर उसको रोकना प्रायः असम्भव हो जाता है। पर जो कुत्ता अन्धेकी लाठीसे भी अधिक उपयोगी उसका पथ-प्रदर्शक ही बना हुआ है वह यदि मादाको देखकर उत्तेजित हो उठे और अन्धेको किसी बड़े नगरकी मोटर, ट्राम, बस और जनसे आकुल सड़कपर छोड़ दे और काम-सम्भोगके लिए दौड़ पड़े तो अन्धा तो वहीं मर गया। इसलिए ये कुत्ते इतने सधाये जाते हैं कि अपने रास्तेसे आंख न उठायें। इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सदा शान्त रहना और अपनी नाककी सीधमें चलना सिखाया जाता है। उसे यह भी बताया जाता है कि उसे जरा-जरासी बातोंमें उचकना, विचकना या भोंकना न चाहिए।

इससे यह न समझ लेना चाहिए कि स्कूलमें फुर्तीले, चालाक, मनचले और तबीयतदार कुत्ते नहीं रखे जाते। ऐसे कुत्तोंकी वहां बहुतायत होती है। अन्धे भी तो खुश-दिल, हंसोड़ और दिल्लगीबाज होते ही हैं। ऐसोंको ये कुत्ते दिये जाते हैं। वे उनको ठीक रखते हैं।

अन्धोंके पास कुत्तोंका अंकुश केवल एक शब्द है। इस शब्दपर उनके रहनुमा कुत्ते जिधर चलाओ, चलते हैं। यह शब्द है—छी! छी!! यह धिक्कार भिन्न-भिन्न अवसरोंपर कुत्तोंके लिए अलग-अलग अर्थका द्योतक है। जब अन्धा समझता है कि उसका मार्गदर्शक कुत्ता फुटपाथके एकदम किनारेपर चल रहा है तो वह 'छी' कहता है, जब वह तेज चलने लगता है तो भी वह इसी शब्दसे उसकी चाल धीमी करता है, जब कुत्ता अचानक मुड़ता है तो भी यही हुङ्कार उसे वशमें रखता है और जब अन्धेकी यह लाठी वक्तपर खतरेकी सूचना नहीं देती तो भी इसी शब्दसे उसे उसकी भूल सुझायी जाती है। पर जब अन्धा उससे खुश होता है तो वह 'शाबाश' कह देता है।

इस प्रकार एक कुत्ता तीन महीनेमें सधकर स्कूलसे बाहर निकल जाता है।

प्रति मास पोट्सडामकी 'श्वान-शाला' में महायुद्धके शिकार दस अन्धे, कुत्ते ले जाने आते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि सात-आठ साल बाद ये कुत्ते फिर अन्धोंका पूरा ध्यान नहीं रख सकते। ये अन्धे पन्द्रह-बीस दिन पोट्सडामके स्कूलमें रहकर अपने-अपने कुत्तोंसे घनिष्ठता जमाते हैं और तब मनुष्य और पशु परम मित्र और एक-दूसरेके मार्गदर्शक बनकर संसार-यात्राके लिए बाहर निकलते हैं। अन्धोंका कहना है कि मनुष्यरूपी क्रूर और धूर्त जीव उन्हें ठगते हैं, पर जानवर कुत्ता उन्हें सदा सत्पथपर ले जाता है।

## अरबपति लेवनस्टाइनका विचित्र जीवन और मृत्यु

लेवनस्टाइन बेलजियमका सेठ था। फकीरसे वह अमीर बना और उसने पानीकी तरह रुपया बहाया। उसके हवाई जहाजोंका बेड़ा यूरोपके अनेक नगरोंमें तैयार रहता था कि इस रईस-तबियत सेठको घण्टोंमें यूरोपकी परिक्रमा करवा दे। यह सुबह बियारित्समें कलेवा करता और पेरिसमें १ बजे दिनको भोजन, लण्डनमें शामको चार बजे चा-पानी और ६-७ बजे ब्रसल्समें ब्यालू करता था। भोग-विलास करते-करते और धन कमाते-कमाते यह सेठ अपने जीवनसे तङ्ग आ गया और एक रोज १९२८ के आरम्भमें यह पेरिससे लण्डन जानेके रास्तेमें ब्रिटिश चैनलके ऊपर अपने विमानसे कूद पड़ा। पेरिसके पत्र 'ओजूरदुई' में इसपर जो मनोरञ्जक लेख छपा है पाठक उसका सारांश पढ़ें और सेठोंके पगलेपनका अध्ययन करें :—

घुंघराले बालों और चुभती आंखोंवाला सेठ लेवनस्टाइन पानीकी तरह रुपया बहा गया है। कमाना और फूंकना यही इसके जीवनका उद्देश्य रहा। यह विचित्र मनुष्य १८७७ में ब्रसल्समें पैदा हुआ था। वह छुटपनसे ही तीक्ष्णबुद्धि और व्यापार-कुशल था। कब और कैसे उसने माल जोड़ा, इसका ठीक पता नहीं; पर १९१४ में विलायतके सेठोंमें उसकी धूम मची। खिलाड़ियों और शिकारियोंमें उसने नाम कर लिया। महायुद्धके बाद उसने इतना रुपया कमाया कि सब उसकी अतुल सम्पत्तिको देख दङ्ग थे।

१९२६ में उसने आर्थिक बमगोलेका ऐसा धड़ाका किया कि दुनियाकी आंखें खुल गयीं। उसने बेलजियन सरकारको बिना सूद बीस करोड़ रुपयेका ऋण दो वर्षके लिए देना चाहा। इसका मतलब यह था कि उस समय बेलजियन फ्रां गिर रहा था, इस कर्जसे उसका गिरना बन्द किया जाये। इसके बदले उसने यह अधिकार लेना चाहा कि उसे नोट छापनेका इजारा मिल जाये।

यह धूर्त सेठ रुपया फूंकनेके समय पागल हो जाता था। उसके जीवनका मन्त्र था—तेजी और सरपट चाल। उसने अपने सारे ठाट और नौकरोंके साथ रेल और हवाई जहाजोंमें, यूरोपके—हजारों नहीं तो सैकड़ों चक्कर लगाये। जिस समय वह बेलजियन सरकारको ऋण देनेकी बातचीत कर रहा था, उस वक्त केवल उसके सेक्रेटरियोंकी संख्या ही चालीस थी। इनमें एक अंगरेज एम० पी० भी था।

जब यह पगला सेठ लेवनस्टाइन उड़ता था तो उसके साथ दो हवाई जहाज चलते थे। इनमें पिलौट कप्तान हिञ्च-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्लिफ, ३ अंगरेज निजू सेवक, टेनिसका एक, नाचका एक, मल्लयुद्धका एक अध्यापक, मालिशका एक विशेषज्ञ और सब सेक्रेटरी रहते थे। सब नौकर पशमके कपड़े और ओवरकोट पहने रहते थे।

एक बार वह बार्सेलोनामें था और उसने एक दावत दी। इसके लिए हवाई जहाजसे पेरिससे मुर्गियां और मास्कोसे कवियार नामक मछलीके अण्डे आये। इस दावतमें एक-एक निमन्त्रितपर चार-चार सौ रुपया खर्च पड़ा।

१९२६ में उसकी पत्नीका एक हीरा चोरी गया। इसका मूल्य था १२ लाख रुपये। इस हीरेका बीमा किया हुआ था। यह कहां गया और कैसे लापता हुआ, इसका अभी तक पता न चला। पर कई लोगोंको सन्देह हुआ कि बीमेका रुपया वसूल करानेके लिए इस सेठने ही यह चोरी करवायी थी। जितने रुपये सेठ लेविनस्टाइन फूंकता था उसके सामने यह रकम कुछ नहीं जंचती, पर सेठोंकी मनोवृत्ति चोरी और जालसाजीसे रुपया कमानेकी ओर होनेसे खुफिया विभागने इस सेठका पीछा किया।

इस सेठकी मृत्युसे पहले किसी आदमीने यूरोप और अमेरिकाके सब राजनीतिज्ञों, बैङ्करों और राजदरबारोंमें एक पुस्तिका भेजी जिसमें उन धूर्त उपायोंका वर्णन था जिनसे यह सेठ बन गया था। इसके बाद वह लज्जासे इतना भर गया कि फिर किसीको अपना मुंह न दिखा सका। लण्डनसे पेरिस जाते हुए रास्तेमें ब्रिटिश चैनलमें कूद पड़ा और नौ दिन बाद उसकी लाश फ्रान्सके समुद्रतटपर एक मछुएने उतराती हुई पायी। यह उस सेठका किस्सा है जो अपने जीवनमें सच्चरित्र, उदार, दानी और ईमानदार समझा जाता था।

## एक आदर्शचरित्र नरेश

भारतकी देशी रियासतोंमें जो अन्धेरखाता चलता है वह सब जानते हैं। हमारे राजे जिस विलासिताके शिकार हैं उसकी चर्चा करना ही व्यर्थ है। पर यूरोपके बादशाह अपनी शिक्षित प्रजाको अपने चरित्रका अच्छा निदर्शन कराते हैं अन्यथा प्रजा असन्तुष्ट हो जाये। जिस प्रकार सेठ मजदूरोंकी मिहनत चूसकर उनका पेट काटते हैं उसी प्रकार राजा भी वर्तमान पार्लामेण्टके युगमें प्रजापर भार ही हैं। पर भारत और यूरोपके राजोंकी तुलना नहीं हो सकती। हमारी जनता अपढ़, धर्मात्मा फलतः अन्धविश्वासी होनेके कारण उसे ठगना सहज है, पर यूरोपके लोग अपनी बुद्धिसे विचारनेका कष्ट उठाते हैं; और उन्हें अपने राजोंकी तीव्र आलोचना करनेका अधिकार है। इसलिए तुलना करनेपर यह कहना ही पड़ेगा कि वहांके राजे जो वास्तवमें नरेश और स्वतन्त्र हैं, हमारे राजोंसे बहुत ऊपर हैं। विएनाके पत्र 'वीनर जूर्नाल' ने बुलगारियाके राजा बोरिसपर एक लेख छापा है। पाठक उसका सार पढ़ें और अपने राजोंसे उसका मिलान करें:—

बुलगारियाका राजा बोरिस पूरा आधुनिक व्यक्ति है। वह शाही टाटबाटको घृणाकी दृष्टिसे देखता है। उसका जीवन अत्यन्त सादा है।

जब वह यात्रामें निकलता है, अपनेको राजा न बताकर काउण्ट रिचस्की कहता है। वह कभी स्पेशल ट्रेनमें न गया और न शाही मोटरकारमें चढ़ा। सब मुसाफिरोंकी तरह वह भी रेलगाड़ीमें एक सीट रिजर्व कराता है और अन्य यात्रियोंके साथ सफर करता है।

वह स्वयं मिकैनिक है और होशियार ड्राइवरोंकी भांति अपनी मोटरकार स्वयं चलाता है। उसे सबसे बड़ा शौक कुली बनकर रेलके एञ्जिनको चलाना है। उसकी जेबमें सदा वह सरकारी कागज रखा रहता है जिसमें उसे रेलवे ड्राइवरका पद दिया गया है। और सबसे खुशी तो उसे तब होती है जब वह किसी स्टेशनपर एञ्जिन ड्राइवरकी वर्दीमें उतरता है और उसकी फैशनेबल प्रजा उसका वहां स्वागत करनेको खड़ी रहती है।

दो सालकी बात है कि वह आरोग्य लाभ करनेके लिए स्विटजरलैण्ड गया हुआ था। अकस्मात् उसकी मोटरकार खराब हो गयी। एक अमेरिकन नवयुवतीने उसे सुधार दिया। इस लड़कीको अपने ऐलबममें सबके दस्तखत करवानेका शौक था। उस समय तो वह पासमें एलबम न होनेसे चुप रही, पर इस इन्तजारमें रही कि कब इस अजनबीसे फिर मुलाकात हो और इसके दस्तखत ऐलबममें करायें जायें। एक रोज उसने वह कार देखी और उसके ड्राइवरसे बोली कि अपने मालिकसे मेरे ऐलबमपर हस्ताक्षर करा दें। ड्राइवर स्वयं राजा बोरिस था। वह अपने साथीके पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गया और ऐलबमपर उसके दस्तखत कराकर अमेरिकन लड़कीको दे दिया।

यह राजा प्रातःकाल चार बजे उठता है और रातको दस बजे सोता है। इस बीच काम करते रहता है। इसे खाली बैठे या बुरे व्यसनोंमें समय बर्बाद करते अभी तक किसीने न देखा। इसकी एक खूबी यह भी है कि वह अपनी पत्नीपर लट्टू है और अपने परिवारमें ही इसे अत्यन्त सुख मिलता है।

## बिना पैसेके भी मनुष्य रह सकता है

बैङ्कोंके दिवालों, सेठोंकी लूट और विनिमयकी अनिश्चितताके कारण अध्यापक गुस्टाव कास्सल सरीखे अर्थ-शास्त्रविशारदोंको यह कहना पड़ा है कि सिक्कोंका चलन बन्द हो जाना चाहिए। वर्तमान युगके आर्थिक सङ्कटोंसे तङ्ग आकर कई देशोंने वस्तु-विनिमयके आधारपर व्यापार आरम्भ कर दिया है। यूरोपके पूर्वी देशोंमें ऐसा हो रहा है। पर अमेरिकाके किसानोंने इस ओर जो कमाल कर दिखाया है उससे सिद्ध होता है कि मनुष्य बिना पैसेके भी आरामसे रह सकता है। इसपर बर्लिनके 'आउसलेजे' पत्रमें एक लेख छपा है। उसमें गत वर्षके अमेरिकन अर्थसङ्कटके अवसरपर आविष्कृत विनिमयका वर्णन दिया गया है :—

साल्ट लेक सिटीमें किसानोंके सहायक मजदूर गल्ला और कपड़ा लेकर काम कर रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि युक्तराष्ट्रके नाना राष्ट्रोंमें सिक्कोंकी आवश्यकता नहीं रही है। इस सेवा और पदार्थ-विनिमयका ऐसा विस्तार हुआ है कि बीस-पचीस लाख मजदूर इसी तरह काम कर रहे हैं। इनका विचार है कि इस तरह वे वहांसे बेकारी उड़ा देंगे। इसका प्रचार यों हो रहा है।

किसी भी बस्तीमें पदार्थ-विनिमय सभा स्थापित की जाती है। वह तुरत पत्र निकालने लग जाती है। यह संस्था खानसे कोयला निकालने लगती है, चमड़ेको साफ करना आरम्भ कर देती है, फलोंको सुखाने डाल देती है और ऐसे ही उपयोगी काम हाथमें ले लेती है।

डेट्राइटमें जब बैङ्कोंका दिवाला निकला था तो एक बड़ी दूकानने विज्ञापन निकाल दिया कि हम गल्लेके बदलेमें सब माल देंगे। उस समय अमेरिका-भरमें व्यापारका यह ढङ्ग बन-आगकी तरह फैल गया।

न्यूयार्कके एक ऐसे एक्सचेञ्जकी कथा सुनिये। बढ़ई विलियम ग्रेवसने तीन और मजदूरोंके साथ पेनसिलवेनियाके एक किसानका कुछ काम किया। उन्हें उस किसानने १०९ सेर सेव मजदूरीमें दिये। इनमें कुछ तो उन्होंने वहीं गल्ले आदिसे बदलकर खा-पी लिये। बाकी पदार्थ विनिमय-सभाके हवाले किये गये। उसने इनका मुरब्बा बना लिया और उन्हें तीस डालरके 'विनिमय-प्रमाणपत्र' दे दिये।

बस अब ये प्रमाणपत्र घूमने लगे। ग्रेवसने हाल हीमें अपने पियानोकी मरम्मत करवायी थी। उसने इनमेंसे कुछ प्रमाणपत्र देकर फ्रेड डासनकी मजूरी चुकायी। डासनने अपनी स्टेनोटाइपिस्ट लड़की जेना एलीसनको इनमेंसे दो डालरके प्रमाणपत्र दिये। ये डालर मिस एलीसनने एक छोटी दूकानमें दे दिये और इस दूकानने न्यूयार्ककी पदार्थ-विनिमय सभा—'इनवुड म्यूचुअल एक्स चेञ्ज'को दे दिये; क्योंकि उसने वहांके मजदूरसे अपने मेजकी मरम्मत करवायी थी।

विनिमयका प्रचार साल्ट लेक सिटीमें ही सीमाबद्ध न रहा। यह इडाहो, आरीजोना आदि राष्ट्रोंमें भी फैल गया। मिनेआपोलिसमें चार हजार कुली केवल एक विनिमय-सभाके अधीन काम कर रहे हैं। इस सभाने गत आठ महीनोंमें २५००० डालर कमाये और उनके प्रमाणपत्र मजदूरोंमें बांट दिये। इनका प्रबन्ध करनेके लिए सभाको अपना अलग बैङ्क खोलना पड़ा है। कैलिफोर्नियामें सौसे ऊपर ऐसी विनिमय-सभायें हैं और उनके मजदूर सदस्योंकी संख्या प्रायः दो लाख है। बेकारोंने अपनी विनिमय-सभायें अलग खोली हैं और उनकी संख्या चालीस है।

डेटनके बेकारोंको इस नये ढङ्गसे काम करनेका अवसर मिल गया है और वे इसमें अपना त्राण देख रहे हैं। इससे उन्हें एक लाभ यह हो रहा है कि वे अपनी जीविकाका निर्वाह करने लायक अन्न और वस्त्र कमाकर घर आ जाते हैं और शेष समय पढ़ने-लिखनेमें लगाते हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## हमारी महिलाओंकी वर्तमान परिवर्तनावस्था

इतिहाससे पता चलता है कि जब-जब किसी जाति अथवा समाजमें किसी नवीन क्रान्तिकारी सुधारकी आयोजना खड़ी की गयी है तो उसके प्रभावके कारण उस जाति अथवा समाजमें प्राचीनतासे नवीनताकी ओर बढ़ने-वाली प्रगतिके साथ-ही-साथ जो परिवर्तनावस्था उपस्थित होती है उसका स्वरूप अत्यन्त गुरुत्वपूर्ण और जटिल होता है। इस सङ्घर्षपूर्ण परिस्थितिमें प्रायः यह देखा जाता है कि समाज शृङ्खला-विहीन होकर एक चरमावस्थासे दूसरी चरमावस्थाको वरण करनेके लिए लालायित हो उठता है। हमारे नारी-जागरणकी वर्तमान अवस्था भी इसी स्थितिमें पहुंची है, इसलिए उसके परिचालनमें विशेष सावधानीकी आवश्यकता है। इसका यह अर्थ नहीं कि हम इस परिवर्तन-का द्रुतगामी प्रवेग देखकर घबरा उठें और स्त्री-जागरणपर उच्छृङ्खलताका दोषारोपण करके उसका विरोध करने लगें। आवश्यकता इस बातकी है कि सहयोगात्मक चेष्टासे इस प्रगतिको स्वाभाविक रीतिसे, बिना किसी बाधा-विघ्नके उसके यथार्थ उद्देश्य तक पहुंचनेमें हम सहायता करें, जिससे हमारी बहनोंको अपने उद्दिष्ट मार्गसे भटककर किसी अज्ञात, अनिश्चित पथमें आकर वहांसे लौटनेको बाध्य न होना पड़े।

कुछ स्थानोंसे यह शिकायत सुननेमें आती है कि हमारी महिलायें अपने नव-जागरणके उल्लाससे हर्षोन्मत्त होकर उचित मार्गसे हट रही हैं और अपने रहन-सहन, वेश-भूषा तथा आचार-व्यवहारमें राष्ट्रीय आदर्शका पूर्णतः वर्जन करके पाश्चात्य रीति-नीतिका अन्ध अनुकरण करने लगी हैं। शिकायत करनेवालोंका कहना है कि इस प्रकारकी पाश्चात्य-अनुगामिनी महिलाओंने अपना व्यक्तित्व खो दिया है और वे केवल कठपुतलियोंकी तरह पाश्चात्य देशोंकी तितलीनुमां स्त्रियोंकी तड़क-भड़कको अपना रही हैं। हम कह नहीं सकते कि यह शिकायत कहां तक सत्य है। पर यह सम्पूर्ण स्वाभाविक है कि हमारी महिलाओंकी वर्तमान परिवर्तना-वस्थामें कुछ ऐसी भी निकलेंगी जो नवीन परिस्थितिकी अनभिज्ञताके कारण विदेशीयताकी रङ्गीनीसे विचलित हो उठेंगी। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी जागरणशील महिलायें अपना व्यक्तित्व और राष्ट्रीयत्व खोकर फैशनकी हवामें उड़ने जा रही हैं। कुछ भी हो, महिला-जागरणके सम्बन्धमें परिवर्तन-विरोधी अभियोगवादियोंके ठीक-ठीक विचार क्या हैं, यह बात जानने योग्य है। दक्षिणी महि-लाओंमें जागृतिकी प्रगति बहुत आगे बढ़ी हुई है, इसलिए वहांकी परिस्थितिसे परिचित विरोधवादियोंका मत हम पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करना चाहते हैं। मद्रासे प्रकाशित होनेवाले 'हिन्दू' में एक सज्जन लिखते हैं :—

"हमारी प्रगतिशीला महिलायें इस समय एक ऐसी जटिल परिस्थितिमें पहुंची हैं जो अत्यन्त आशङ्काजनक होनेके साथ-ही-साथ हास्योत्पादक भी है। पाश्चात्य सभ्यताकी बाहरी तड़क-भड़कसे मुग्ध होकर वे अपना निजी विशेषत्व खो बैठी हैं। जब हम किसी बड़े शहरकी शिक्षिता महिलाओंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आचार-व्यवहार तथा रहन-सहनपर गौर करते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि भारतीय स्त्रीके अस्तित्वकी परिचायक कोई बात ही अब शेष नहीं रह गयी है। हमारी वर्तमान नागरिक महिलायें सब बातोंमें पूर्णतः यूरोपियन बन गयी हैं। उनमें व्यक्तित्वका लेश भी नहीं पाया जाता, कोई निजी विशेषत्व उनमें नहीं रह गया, ठीक जिस प्रकार 'नौरतन चटनी' में किसी विशेष फलकी निजी सत्ता नहीं रहती।

श्रीमती लेखवती जैन एम० एल० सी०
आपने समाजमें 'कोर्टशिप' की प्रथाके प्रचलनकी आवश्यकता बतलायी है।

"कुछ ही दिन पहलेकी बात है, आक्सफोर्डसे एक अंगरेज युवक भारतमें भ्रमणार्थ आया था। उसने इच्छा प्रकट की कि कुछ शिक्षित भारतीय महिलाओंसे उसका परिचय कराया जाय ताकि वह यहांके नवीन स्त्री-समाजके विशेषत्वसे परिचित हो। जब विभिन्न महिलाओंसे उसका परिचय कराया गया तो उसे अपनी यह धारणा स्पष्ट प्रकट करनेको बाध्य होना पड़ा कि जिन महिलाओंसे उसका परिचय कराया गया है उनमें उसे भारतीयताका निदर्शक कोई भी निजी विशेषत्व नहीं दिखायी दिया और जिस श्रेणीकी महिलाओंको वह यूरोपमें देखनेका आदी था उनसे इन महिलाओंमें कोई प्रभेद उसने न पाया। आक्सफोर्डके इस नवयुवकके कथनमें कुछ भी अत्युक्ति हमें नहीं मालूम होती, क्योंकि हम प्रतिदिन आधुनिकताके रङ्गमें रंगी हुई भारतीय ललनाओंको उसी रूपमें प्रत्यक्ष देख रहे हैं जैसा उस तरुण अंगरेजने वर्णित किया है। वर्तमान भारतीय महिलायें केवल अन्धानुकरणकी पक्षपातिनी हो उठी हैं—केवल नकल, नकल, नकल! वे यह बात नहीं समझना चाहतीं कि इस अनुकरणप्रियतासे उनमें न तो भारतीयता ही रह गयी है और न वे पूरी तरहसे पाश्चात्य संस्कृतिकी मूलात्माको ही अपना पायी हैं। जिस प्रकार हालीवुड की अभिनेत्रियां तथा अभिनेता किसी भारतीय विषयके फिल्ममें भारतीय वेश-भूषामें प्रकट होते हैं, पर दर्शक अच्छी तरह जानते हैं कि वे भारतीय नहीं हैं, केवल भारतीयताका स्वांग रच रहे हैं, उसी प्रकार हम लोगोंके पाश्चात्य रीति-नीतिके अनुकरणमें भी स्वांगका भाव पाया जाता है, जो वास्तविकतासे रहित है। यूरोपियन स्त्रियोंके फोटोकी प्रतिच्छायाके बतौर व्यक्तित्वहीन अवस्थामें विचरण करना हमारी महिलाओंके लिए किसी प्रकार भी उचित नहीं है। विराट् हिमालय पर्वतके सुन्दर चित्रकी अपेक्षा किसी साधारण-से वास्तविक पर्वतके प्राकृतिक दृश्यका महत्त्व बहुत अधिक है।"

ऊपरके वक्तव्यमें लेखकने अपना जो मत प्रकट किया है उसके अन्तर्गत भावसे हम भी सहमत हैं। हम भी यह बात मानते हैं कि किसी जातिकी प्रतिच्छाया बनकर अपना निजी विशेषत्व खो देना किसी प्रकार भी उचित नहीं है। पर हम यह माननेको तैयार नहीं हैं कि भारतीय स्त्रियोंकी प्रगतिकी धारा पाश्चात्य महिला-संस्कृतिके सागरमें विलीन होकर एकाकार होनेको है। हम उनकी उन्नतिके पथमें एक ऐसी स्पष्ट रेखा देख रहे हैं जिसमें प्रारम्भसे अन्त तक एक जातिगत विशेषता समभावसे प्रवाहित होती हुई चली गयी है। पाश्चात्य आचार-विचारके अन्धानुगमनके खतरेसे हमारी अग्रसरशीला बहनें भी भली भांति परिचित हैं, पर उसके भयसे वे अपनी अग्रगतिको रोकना नहीं चाहतीं और यही उचित भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रीमती के० एम० मुन्शीने हालमें कन्या-गुरुकुल-महा-विद्यालयमें उपाधि-वितरणके अवसपर भाषण देते हुए इस बातपर जोर दिया था कि केवल वाह्य संस्कृतिके आवरणको अपनानेसे स्त्री मिस्र देशके 'ममी'के समान बन जाती है, जो बाहर सोनेसे मढ़ी रहनेपर भी भीतर केवल हड्डियोंके ढांचेके अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। श्रीमती मुन्शीने लड़कियों-को राष्ट्रीय संस्कृतिके मूल उत्सको अपनानेका उपदेश दिया है और पाश्चात्य देशकी वर्तमान शिक्षा संस्कृतिके बाहरी भाग की मनोहर मायाके फेरमें पड़नेसे उन्हें सावधान किया है। पर इसका यह अर्थ न समझना चाहिए कि वे पाश्चात्य-शिक्षा-विरोधिनी हैं। उनकी उक्तिसे यह बात प्रमाणित होती है कि हमारी महिलाओंकी उन्नतिका प्रवाह पाश्चात्यानुगामी होनेपर भी वह अपनी विशिष्टता नहीं खोना चाहतीं।

## पुलिस-विभाग और भारतीय महिलायें

कर्मक्षेत्रमें अधिकाधिक अग्रसर होनेकी इच्छा हमारी महिलाओंमें प्रतिदिन बढ़ती जाती है। कर्मके किसी भी विभागसे हटकर रहना उन्हें खटकने लगा है। उनकी कर्मो-त्तेजना और पुरुष-प्रतिद्वन्द्विता भले ही पाश्चात्य समाजके प्रभावसे सञ्जीवित हुई हो, पर इतना निश्चित रूपसे कहा जा सकता है कि उनमें आत्म-विश्वासका सञ्चार होने लगा है। आज तक उनमें जो भीरुता तथा जड़ता वर्तमान थी, अब धीरे-धीरे उसका लोप होता चला जा रहा है। अन्यान्य क्षेत्रोंमें समानाधिकारकी मांगके साथ-ही-साथ उन्हें अब पुलिस-विभागमें प्रवेशाधिकारके लिए भी पुकार मचाते हुए सुना जाता है।

हालमें मद्रासके वाइ० एम० सी० ए० एथीनियममें एक विवाद-सभा हुई थी जिसमें श्रीमती वसुन्धरादेवीने इस आशयका प्रस्ताव पेश किया था कि "भारतमें पुलिस तथा अन्यान्य कार्यकारी विभागोंमें स्त्रियोंको भरती करना आवश्यक तथा व्यावहारिक है।" प्रस्तावके समर्थनमें उन्होंने कहा था कि स्त्रियोंके सम्बन्धमें पुरुषोंकी यह धारणा अब निर्मूल सिद्ध की जा रही है कि वे अबला हैं। उन्होंने अपना यह मत प्रकट किया कि जिस प्रकार स्त्रियां गृहकार्यमें दक्षता दिखाती हैं उसी प्रकार वे कर्मचारित्वके पदोंमें भी उसी निपुणताका परिचय दे सकती हैं, जिसके प्रमाण वर्तमान संसारके सभी सभ्य देशोंमें मिलने लगे हैं। श्रीमती वसुन्धरादेवीने यह बात स्वीकार की है कि पुलिस-विभागमें भरती होनेपर प्रारम्भमें इस अनभ्यस्त कार्यमें कुछ कठिनाईका सामना महिलाओंको अवश्य करना पड़ेगा, पर उनका वश्वास है कि कुछ ही समयके ट्रेनिङ्गके बाद वे सुचारु-रूपसे उसे चला लेंगी। श्री आर० डी० राजूने इस प्रस्तावका समर्थन करते हुए कहा कि ऐसे समय, जब कि स्त्रियां जीवन-के प्रत्येक कार्यक्षेत्रमें पुरुषोंका हाथ बटाने लगी हैं, उन्हें पुलिस-विभागके कार्य ग्रहण न करनेका कोई समुचित कारण

इस हरिजन स्त्रीने एक भारत-हितैषिणी फ्रेञ्च रमणीको, जो भारत-भ्रमणार्थ आयी हुई थी, कलकत्तेके हरिजन-जीवनके सम्बन्धमें बहुत-सी ज्ञातव्य बातें बतलायी थीं।

नहीं दीखता। उनकी रायमें स्त्रियां यदि पुलिस-विभागमें ले ली जायं तो उनसे भारतीय पुलिस सर्विसकी उन्नतिमें सहा-यता मिलेगी। श्री भाष्यम् अयङ्गरने भी यही मत प्रकट किया। तथापि प्रस्ताव पास न हो सका, जिससे विदित होता है कि अभी तक स्त्रियोंको पूर्ण स्वतन्त्रता देनेके सम्बन्धमें देशवासियोंके प्राचीन संस्कार पूरी तरह नहीं हटे हैं। स्वयं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्त्रियां अपनी स्वतन्त्रताको अधिक ढील देनेके पक्षमें नहीं हैं। पूर्वोक्त प्रस्तावका विरोध करते हुए श्रीमती कावेरीयम्मा धारवाड़करने कहा कि देशकी स्त्रियोंकी शारीरिक अयोग्यता, मानसिक संस्कार तथा मूलगत प्रवृत्तिका ख्याल करनेसे यह बात असम्भव सिद्ध होती है कि वे पुलिसके कार्यमें कभी सफलतापूर्वक भाग ले सकेंगी। उनकी रायमें स्त्रियां यदि इस क्षेत्रमें आ जायं तो उनकी प्रकृतिगत सुकुमारता नष्ट होनेका भय है।

कुमारी फिलेमेना तुम्बू चेट्टी

आप मैसूरके महाराजाके सेक्रेटरी साहबकी लड़की हैं। वायलिन बजानेमें आप विशेष दक्ष हैं। आपने पैरिस 'कान्सरवेत्वार' ( सङ्गीत-शिक्षालय ) में प्रवेश प्राप्त किया है। यह पहला ही अवसर है कि एक प्राच्य-देशवासिनी महिला इस सङ्गीतालयमें प्रविष्ट हो पायी है।

हमारी रायमें यह बात कुछ आवश्यक नहीं कि स्त्रियोंकी प्रकृतिमें सुकुमार भाव सदा अक्षय बना रहे। जीवन-संग्राममें आत्मरक्षाके लिए उनमें पौरुष भावके न्यूनाधिक विकासकी भी आवश्यकता है। हम यह नहीं कहना चाहते कि पुलिस-कार्यमें स्त्रियोंको अनिवार्यतः लिया जाना चाहिए। हमारा आशय यही है कि उनमें साहसिकताके भावका विकास जरूरी है।

## राजनीतिक क्षेत्रमें अमेरिकन स्त्री

अमेरिकन रमणीके भोग-विलासमय जीवनसे सभी परिचित हैं, पर राजनीतिक क्षेत्रमें उसने क्या उन्नति की है यह बात हमारे यहां बहुत कम लोगोंको मालूम होगी। १९२० में जब अमेरिकाकी स्त्रियोंको वोटाधिकार प्राप्त हुआ तबसे उन्होंने सार्वजनिक जीवन तथा व्यावहारिक राजनीतिके क्षेत्रमें बहुत बड़ी उन्नति की है। हालमें अमेरिकन वोटरों की राष्ट्रीय संस्था ( The National League of American Voters ) ने जो रिपोर्ट प्रकाशित की है उसमें इस विषयपर विशेष प्रकाश डाला गया है। इस रिपोर्टसे पता चलता है कि जून १९३३ तक ८१,५६८ अमेरिकन स्त्रियां सरकारी पदोंपर नियुक्त थीं। इनमेंसे बहुत-सी स्त्रियां भिन्न-भिन्न विभागोंकी प्रधानाध्यक्षा अथवा सहायक अध्यक्षाके पदोंपर प्रतिष्ठित हैं; एकाउण्ट, डाकरी, कानून, अर्थ आदि सम्बन्धी सभी विभागोंमें अमेरिकन स्त्रियां यथेष्ट संख्यामें वर्तमान हैं। १९३३ में प्रायः १८ स्त्रियां प्रथम श्रेणीके पोस्ट-आफिसोंमें पोस्टमास्टरीके पदोंमें नियुक्त हुई हैं, ४१२ स्त्रियां द्वितीय श्रेणीके और ४५६ स्त्रियां तृतीय श्रेणीके पोस्ट-आफिसोंमें उक्त पदोंपर नियुक्त हुई हैं। संयुक्त राष्ट्रकी कांग्रेसमें २१ स्त्रियां निर्वाचित होकर भेजी गयी हैं। जजोंके ओहदोंपर भी बहुत-सी स्त्रियां काम कर रही हैं। ३४ रियासतोंमें प्रायः १३५ न्यायाध्यक्षायें नियुक्त हैं।

रूजवेल्टके समयमें स्त्रियोंने पहलेकी अपेक्षा बहुत उन्नति की है। स्त्री-जातिको पुरुषोंके समकक्षमें लानेके उद्देश्यसे रूजवेल्ट भरसक प्रयत्न कर रहा है। उसकी पत्नी श्रीमती रूजवेल्ट भी इस चेष्टामें जी-जानसे लगी हैं कि अमेरिकन स्त्रियां राजनीतिक तथा व्यावहारिक जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें पुरुषोंके आगे नहीं तो उनके पीछे भी किसी अंशमें न रहें। इस विचारशीला अमेरिकन महिलाका विश्वास है कि स्त्रियां यदि अधिकाधिक संख्यामें आकर राजनीतिक क्षेत्रको चारों ओरसे घेर लें तो संसारमें शान्तिका साम्राज्य स्थापित हो जाय और युद्धका जो भूत वर्तमान राष्ट्रोंके ऊपर चढ़ बैठा है उसका अस्तित्व न रहे। वह अपने It's upto the

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



Women—नामक पुस्तकमें लिखती हैं—"संसारके सब कर्मोंमें शान्तिकी मनोवृत्ति संस्थापित करना और युद्धके बदले जीवनके अन्यान्य महत्त्वपूर्ण विषयोंमें रोचकता तथा वैचित्र्यका भाव लाना—यह काम स्त्रियोंका है।" विगत महायुद्धमें धन-जनकी जो अपार क्षति हुई थी उसकी याद दिलाकर श्रीमती रूजवेल्टने अपनी पुस्तकमें स्त्रियोंसे संसार-की राजनीतिको एक सुन्दर मङ्गलमय रूप देनेकी अपील की है। स्त्रियोंके मताधिकारके सम्बन्धमें श्रीमती रूजवेल्ट लिखती हैं—"मुझे आश्चर्य होता है जब लोग यह पूछते हैं कि स्त्रियोंने मताधिकार प्राप्त करके क्या किया? पुरुषोंके

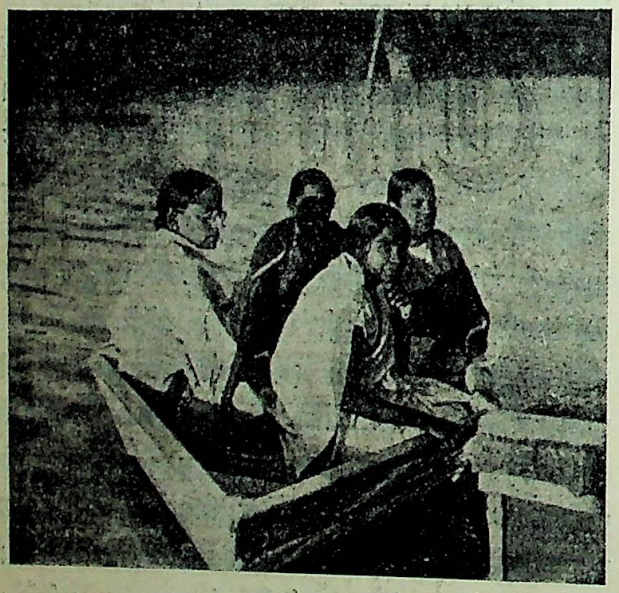

दक्षिण भारतीय हिन्दी प्रेमी यात्रीदलकी सदस्यायें शहादरा (दिल्ली) में नौका-विहार कर रही हैं।

सम्बन्धमें यही प्रश्न क्यों नहीं किया जाता? इसका अर्थ स्पष्ट ही यह है कि लोगोंके मनमें यह विश्वास अज्ञात रूपमें बद्धमूल है कि स्त्रियां भविष्यमें पुरुषोंकी अपेक्षा अधिक सफलता प्राप्त करनेके योग्य सिद्ध होंगी।" श्रीमती रूज-वेल्टका विश्वास है कि मताधिकार प्राप्त होनेसे स्त्रियोंने स्वजातीय उन्नतिको अधिक सुगम बना दिया है और स्त्री-जातिका वह उपकार किया है जो सदियोंसे असम्भव मालूम हो रहा था।

श्रीमती रूजवेल्ट संसारकी भावी सभ्यतापर प्रत्येक रूपमें स्त्रियोंकी प्रधानता रहनेका स्वप्न देखती हैं।

## स्त्रियोंके कानूनी अधिकार

विवाह और उत्तराधिकारके सम्बन्धमें 'हिन्दू ला'के नियम कैसे अनुदार और सङ्कीर्ण हैं, यह बात सभीको विदित है। स्त्रियोंकी कोई विभिन्न सत्ता ही इस 'ला'में स्वीकार नहीं की गयी है। हिन्दू शास्त्रोंकी सङ्कीर्णताके आधारपर उक्त कानूनका निर्माण हुआ है। ऐसी हालतमें उससे स्त्रियोंके

कुमारी कमला अग्रवाल—आप कलकत्ता निवासी श्रीयुक्त बाबू श्रीकृष्णदास अग्रवाल बैङ्करकी पुत्री हैं। आपकी अवस्था ११ वर्षकी है। इसी अवस्थामें आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी गत प्रथमा परीक्षाको सफलतापूर्वक पास किया है। इसके अलावा सङ्गीत, तैराई और साइकिल चलाने आदि-की शिक्षा भी आपको दी जा रही है।

प्रति किसी उदारताकी आशा नहीं की जा सकती। शास्त्र-कारोंने जानबूझकर स्त्रियोंको उनके मनुष्योचित अधिकारोंसे वञ्चित किया है—उनका उद्देश्य घोर स्वार्थगत और दृष्टि अत्यन्त सीमित रही है। पर इस युगके न्याय-निर्माताओंने किस उद्देश्यसे उन कुसंस्काराच्छन्न युगके शास्त्रोंको अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आदर्श माना है, हम नहीं कह सकते। उस परम्परागत अन्यायमूलक व्यवस्थामें यदि समयोचित परिवर्तन कर दिया जाता तो क्या न्यायकी महत्ता नष्ट हो जाती? मजा यह है कि स्त्रियोंके अधिकारोंकी रक्षाकी ओर जहां-कहीं शास्त्रकारोंका थोड़ा-बहुत ध्यान गया भी है, 'हिन्दू ला'में उन स्थानोंकी बिलकुल उपेक्षा की गयी है! वर्तमान विधानमें केवल वे ही अंश शास्त्रोंसे लिये गये हैं जिनमें स्त्रियोंको स्थितिशून्य, सत्तारहित और अवलम्बहीन रखनेकी व्यवस्था की गयी है। 'हिन्दू-विधान'से मुसलमानी व्यवस्था कहीं अच्छी है। उसमें स्त्रियोंको आवश्यकता पड़नेपर तलाकका आदेश दिया गया है और उत्तराधिकारके नियममें भी 'हिन्दू ला'की अपेक्षा उदारताका परिचय दिया गया है। तथापि मुसलमानी कानूनमें भी इस सम्बन्धमें सुधारकी यथेष्ट गुञ्जाइश है।

इधर कुछ समयसे भारतीय स्त्रियोंके कानूनी अधिकारोंकी वृद्धिके उद्देश्यसे देशमें आन्दोलन मचने लगा है। पर अभी तक इस आन्दोलनकी सफलताके कोई चिह्न नहीं दिखायी दिये हैं, क्योंकि विरोधियोंकी संख्या भी देशमें कुछ कम नहीं है। यह बड़े हर्षका विषय है कि वर्तमान नारी-जागरण-आन्दोलनकी नेत्रियां अपने मार्गमें कठिनाइयां देखते हुए भी विरोधोंका सामना करती चली जाती हैं और स्त्रियोंके न्यायोचित अधिकारोंके लिए जी-जानसे आन्दोलन कर रही हैं। वे यह बात अच्छी तरह समझ गयी हैं कि समाजमें समानाधिकारकी सत्ता प्राप्त करने और उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिकाओंका कर्तव्य उपयुक्त रीतिसे निभानेके योग्य वे तभी हो सकती हैं जब कि स्त्रियोंसे सम्बन्ध रखनेवाले कानूनमें मूलतः परिवर्तन किया जाय।

कलकत्तेमें जो अखिल भारतीय महिला-परिषद् बैठी थी उसमें एक प्रस्ताव इस आशयका पास हुआ था कि विवाह तथा उत्तराधिकारके सम्बन्धमें भारतीय स्त्रियोंको जो कानूनी असुविधायें हैं उनको जांचके लिए एक कमीशन नियुक्त किया जाय, जिसमें गैर-सरकारी सदस्योंकी संख्या अधिक हो और महिला प्रतिनिधियोंको भी उसमें सम्मिलित किया जाय। हालमें महिला-आन्दोलनकी नेत्रियोंने देशकी स्त्रियोंके नाम एक अपील निकाली है जिसमें इस बातपर जोर दिया गया है कि उक्त कमीशनकी नियुक्तिके उद्देश्यसे एक देशव्यापी आन्दोलन खड़ा करके सार्वजनिक मतको उसके अनुकूल बनाने और भारत-सरकारको उसकी आवश्यकतासे परिचित करानेकी चेष्टा की जाय। उक्त नेत्रियोंका कहना है कि वे केवल परिषद्में प्रस्ताव पास

मिस सोनियां हेनी—जो आठ वर्षसे लेकर अब (२१ वर्ष) तक बर्फपर स्केटिंग करनेमें सर्वश्रेष्ठ रही है।

करके ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहतीं; वे अधिकारियोंको यह जता देना चाहती हैं कि जब तक उनकी मांगें पूरी न होंगी तब तक वे कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकतीं। हमारी महिलाओंकी यह निश्चयात्मक प्रवृत्ति उनकी कार्य-तत्परता और आदर्शनिष्ठाका परिचायक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## वैवाहिक क्षेत्रमें असमानता

समाजकी वर्तमान स्थितिमें वैवाहिक क्षेत्रमें जो असमानता पायी जाती है उसके विरुद्ध धीरे-धीरे जनतामें असन्तोष उमड़ता हुआ दिखायी देता है। इस सम्बन्धमें चारों ओरसे विद्रोह और अशान्तिकी आवाज सुनायी देने लगी है और जड़ताग्रस्त, अन्यमनस्क रूढ़िवादियोंके भी कान खड़े होने लगे हैं। समाजकी उन्नतिकी दृष्टिसे ये लक्षण शुभकारी हैं, सन्देह नहीं। असम विवाहोंके कारण जो लोमहर्षक अनर्थ समाजमें घटित हो रहे हैं उनकी ओर मा० 'विश्वमित्र' में पाठकोंका ध्यान कई बार आकर्षित किया जा चुका है। व्यभिचार, हत्या, आत्महत्या, वैधव्य, स्वास्थ्य-विकार आदि अनेक सत्त्व-क्षयकारी व्याधियोंने पूर्वोक्त महारोगके अनुसरणमें समाजको निःशक्त तथा हीनबल बना डाला है। अतः इस राजरोगका निराकरण अत्यन्त आवश्यक हो उठा है।

पर इस दीर्घकालव्यापी कालव्याधिका उपचार किस उपायसे और किस रूपमें किया जाय, यह प्रश्न जरा टेढ़ा है। जिस समाजमें विवाहार्थी युवकों तथा परिणीता कन्याओंको इतनी भी स्वाधीनता प्राप्त नहीं कि विवाहसे पहले एक-दूसरेको देख सकें, वहां विवाहमें समानताका प्रश्न ही नहीं उठ सकता। हमारे यहां विवाह क्या होते हैं, लाटरीका खेल होता है। जिसके भाग्यमें जैसी लड़की अथवा लड़का बदा हो, आंख मूंदकर उसीको अपनी पत्नी अथवा पति माननेको बाध्य होना पड़ता है और मृत्यु-पर्यन्त उस भाग्यावलम्बित सम्बन्धको बिना किसी शिकायतके निभाना पड़ता है। जो सम्बन्ध जीवनव्यापी हो उसके प्रति इस प्रकारकी अवहेलना अत्यन्त घातक है। विवाहार्थी युवक-युवतियां जब तक परस्पर परिचित होकर एक-दूसरेके शील-स्वभाव और रूप-गुणकी अभिज्ञता भली भांति प्राप्त न कर लें तब तक उन्हें विवाह-बन्धनमें बलपूर्वक बांधना ऐसा पाप है जो कभी-कभी हत्यासे भी अधिक जघन्य रूपमें परिणत होते दिखायी देता है। कितनी ही स्त्रियां ऐसी हैं जो ऐसे पतियोंसे ब्याह दी जाती हैं जिनकी प्रकृति मूलतः उनके प्रतिकूल होती है। पातिव्रत-धर्मके जन्मगत संस्कारके कारण वे भले ही कुछ समय तक ऐसे पतियोंके वाह्य अथवा आभ्यन्तरिक अत्याचारोंको सहन करती चली जायं, पर एक-न-एक दिन उनकी सहनशीलताका बांध टूट ही जाता है और पतिके 'देवत्व' का लाख लिहाज करनेपर भी मन बहक ही जाता है। इन दुःखिनी, अशक्ता, सामर्थ्यहीना अबलाओंकी दशा अन्तको ऐसी करुणाजनक तथा मर्मघाती हो उठती है कि आत्महत्याके अतिरिक्त उनके लिए और कोई चारा ही नहीं रह जाता। नीरव रूपसे अपने भाग्यको दोष देते हुए वे एक दिन स्वेच्छासे मृत्युको वरण करती हुई इस लोकसे चल बसती हैं। पतिके अत्याचारसे मर्माहता सीताकी तरह पृथ्वी द्विधा होकर उनके लिए रत्नसिंहासन लेकर आविर्भूत नहीं होती; वे महाकालके अन्धगह्वरमें न मालूम कहां विलीन होती हैं, इसका अन्दाज लगाना कठिन है।

इन बातोंको ध्यानमें लाते हुए स्वेच्छाकृत पति-पत्नी-निर्वाचनकी सामाजिक व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होती है। इसमें सन्देह नहीं कि इस व्यवस्थामें बहुतसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खतरे हैं, और संसारके कटु अनुभवोंसे अनभिज्ञा हमारी नवयौवना बहनोंको इस पाश्चात्य प्रथाके प्रचलनसे धोखा मिलनेकी सम्भावना है। तथापि, इस आशङ्काके होते हुए भी, स्त्रियोंके लिए पति-निर्वाचनकी स्वतन्त्रताका प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो उठा है। समाजके कठिन शासन-पाशमें बंधकर, अनिच्छित पतिके संसर्गमें रहकर मृत्यु-पर्यन्त कुढ़ते रहनेसे यह कहीं अच्छा है कि वे अपनी इच्छानुसार पतियोंको मनोनीत करके, अपने विवाहका उत्तरदायित्व स्वयं अपने ऊपर लें, भले ही बादमें उन्हें अपनी भूलके लिए पछताना पड़े। आत्म-स्वातन्त्र्यका मूल्य बहुत बड़ा है। यदि हमारी नव-युवतियोंको एक बार आत्म-स्वातन्त्र्य प्राप्त हो जायगा तो प्रारम्भमें उसके उचित उपयोगका अन्दाज न आनेपर भी बादमें वे उसकी महत्तासे पूर्णतया परिचित होकर उसके सदुपयोगकी चेष्टा आपसे आप करने लग जायेंगी, जिसका फल यह होगा कि समयान्तरमें असम-विवाहकी विकट समस्या बहुत-कुछ हल हो जायगी।

हालमें इलाहाबादमें जो अग्रवाल महिला कानफरेन्स हुई थी उसमें भाषण देते हुए श्रीमती लेखवती जैनने इस बातपर जोर दिया था कि विवाहमें असमानताकी बुराइयोंको दूर करनेका सबसे अच्छा इलाज यही है कि समाजमें 'कोर्टशिप' की प्रथाका प्रचलन किया जाय। श्रीमती जैनकी इस साहसपूर्ण उक्तिसे यह स्पष्ट विदित हो जाता है कि वर्तमान भारतीय विवाह-पद्धतिमें पति-पत्नीके असामञ्जस्यके कारण समाजमें कैसा घोर असन्तोष फैल गया है। अग्रवाल तथा जैन समाज कट्टरताके लिए प्रसिद्ध हैं, इसलिए एक अग्रवाल सभामें एक जैन महिलाकी यह सामाजिक विद्रोहघोषिणी साहसिकता सर्वथा प्रशंसनीय है।

श्रीमती जैनको 'कोर्टशिप' की आवश्यकता प्रचारित करते देखकर रूढ़िपन्थी बौखला उठे हैं; केवल रूढ़िवादी ही नहीं, बहुत-से सुधारवादियोंको भी उनकी बातपर बड़ा आश्चर्य हुआ है। पर इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है। समाजके अत्याचारोंसे निरन्तर निर्मम भावसे पीड़ित होनेपर नव-जागरिता महिलाओंको पुरातन व्याधिका नवीन उपचार ढूंढ़ निकालनेके लिए बाध्य होना पड़ा है। इससे कोई यह न समझे कि श्रीमती जैन पाश्चात्य आचार-विचारोंके प्रभावसे प्रेरित होकर केवल चञ्चल कौतूहलवश 'कोर्टशिप' के प्रचलनकी पक्षपातिनी हो उठी हैं। वह बहुत-से विषयोंमें पाश्चात्य संस्कृतिके विरुद्ध हैं। उदाहरणके लिए वर्तमान कन्या-विद्यालयोंमें पाश्चात्य पद्धतिसे जो शिक्षा दी जा रही है, अपने भाषणमें उन्होंने उसका विरोध किया है। उनका कहना है कि "हमारी कन्यायें भले ही अशिक्षिता रहें, पर पाश्चात्य रीति-नीतिके अविकल अनुकरणमें उन्हें जो शिक्षा दी जा रही है वह सर्वथा परित्याज्य है। उसका फल केवल यही देखनेमें आता है कि भारतीयताका आदर्श त्याग करके हमारे देशकी नवयुवतियां 'मेम साहब' बनना पसन्द करती हैं और राष्ट्रीय रीति-नीतिको घृणाकी दृष्टिसे देखने लगती हैं।" श्रीमती जैनका तो यहां तक कहना है कि लड़कियोंको उच्च शिक्षा देना हानिकर है, केवल प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा ही उनके नैतिक तथा सांस्कृतिक विकासके लिए पर्याप्त है। इस सम्बन्धमें श्रीमतीजीसे हमारा यथेष्ट मतभेद है। हमारा उद्देश्य यहांपर केवल यही जतानेका है कि अन्यान्य विषयोंमें रूढ़िवादका कट्टर समर्थन करनेपर भी उन्होंने 'कोर्टशिप' का जो समर्थन किया है वह केवल इसीलिए कि वर्तमान विवाह-पद्धतिमें असमताने अत्यन्त आतङ्कजनक रूप धारण कर लिया है। जो लोग श्रीमती जैनकी उक्तिपर व्यङ्गके छींटे कस रहे हैं उन्हें यह बात ध्यानमें रखनी चाहिए कि समयके प्रवाहमें बहकर क्षणिक आवेशके वश होकर उन्होंने 'कोर्टशिप' का समर्थन नहीं किया है; स्थितिकी जटिलता देखकर ही वह इसके लिए बाध्य हुई हैं। केवल 'कोर्टशिप' ही नहीं, उन्होंने तलाक-प्रथाके प्रचलनपर भी जोर दिया है, और उसका कारण भी वही है जो ऊपर निर्देशित किया जा चुका है। उन्होंने यहां तक कहा है कि समाजमें असम विवाहोंको रोकनेके लिए सुधारवादिनी महिलाओंको पिकेटिंग करना चाहिए। श्रीमतीजीका सदुद्देश्य स्तुत्य है।

## छात्रों और अध्यापकोंका चारित्रिक विनाश

अप्राकृतिक व्यभिचारकी समस्याने हमारे समाजमें ऐसा भीषण रूप धारण कर लिया है कि उसके प्रति उपेक्षाका भाव प्रकट करना अब एक प्रकारसे असम्भव हो उठा है। इसमें सन्देह नहीं कि यह विषय ऐसा घृणित, जघन्य



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और कुरुचिपूर्ण है कि उसकी चर्चा-मात्र शरीरको जर्जरित और मनको कुञ्चित कर देती है। यही कारण है कि सभ्य जगत्ने यह जानते हुए भी कि इस गुप्त रोगसे समाजके मर्मस्थलमें घुन लगता जाता है, सदा उसकी चर्चासे यथा-सम्भव मुंह मोड़नेकी चेष्टा की है। पर इस नासूरके विनाशक प्रभावसे अब जब हमारे तरुण-समाजका अङ्ग-अङ्ग विकृत होता दिखायी देने लगा है तो उसकी अवहेलना घातक मूर्खता सिद्ध होगी।

आजकल आप स्कूलों और कालेजोंमें जहां देखिये, विद्यार्थियोंको अवकाशके समय केवल इसी एक घृणित विषयकी चर्चा करते पाइयेगा। शरीर, मन और आत्माको कलङ्कित करनेवाले इस नारकीय कलङ्कके दुर्गन्धयुक्त पङ्कमें डूबे रहनेके अतिरिक्त विनोदका और कोई दूसरा विषय उन्हें नहीं मिलता। जिन लड़कोंपर देशकी भावी उन्नति निर्भर है, जिनकी मानसिक संस्कृति, नैतिक वीरता और बुद्धिकी निर्मलताकी आशाके क्षीण आलोकके सञ्चारसे देशकी वर्तमान सङ्कटमय तथा अन्धकारपूर्ण परिस्थितिमें नेता लोग धैर्य धारण किये हुए हैं, उनकी चरम अधोगतिका कच्चा चिट्ठा यदि खोलकर प्रकाशमें रख दिया जाय तो अनभिज्ञ अभिभावकोंकी मानसिक परिस्थिति कैसी उद्भ्रान्त हो उठेगी, इस बातकी कल्पना नहीं की जा सकती। अवस्था जब ऐसी आतङ्कजनक हो उठी है तो उसकी पूरी जांच करके उसके उपचारका प्रयत्न न कर यदि अभिभावक लोग कुरुचिपूर्ण आलोचनाके भयसे शुतुरमुर्गकी तरह बिलमें मुंह छिपाये बैठे रहें तो इससे उनकी घोर मूर्खता सिद्ध होगी। अब समय आ गया है कि इस सम्बन्धमें झूठा लिहाज त्यागकर नियमित रूपसे स्थितिकी गम्भीरतापर विचार किया जाय।

केवल लड़कों तक ही यह पाशविक व्यभिचार सीमित हो, सो बात नहीं। हाई स्कूलोंके अध्यापकोंने इस नैतिक राजरोगको चरमावस्था तक पहुंचा दिया है। कैसा वीभत्स अधःपतन है! कैसा अमानुषिक अनर्थ है! दीर्घकाल तक यह बात प्रकट रहस्य (open secret) के बतौर वर्तमान थी, अब इसमें रहस्यका लेश भी न रहा—अब पतित अध्यापकोंकी 'कृपा' से खुले-खजाने इसका सर्वत्र प्रचार होता दिखायी देता है। यदि अब भी लड़कोंके 'गार्जियन' न चेते तो इस अन्धेरका क्या परिणाम होगा, इस बातकी कल्पनासे भी रोमाञ्च हो आता है। अध्यापकोंके साहचर्य और तत्त्वावधानमें रहनेसे यह निश्चित है कि लड़कोंकी शिक्षा तथा संस्कृतिकी नींवपर मूलतः अध्यापकोंके विचारोंका प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। मनुष्यकी यह प्रकृति है कि वह पापपूर्ण वासनाओंको शुद्ध भावनाओंकी अपेक्षा अधिक शीघ्रतासे ग्रहण करता है। ऐसी दशामें अध्यापकोंकी शोचनीय दुर्नीति क्या अन्धेर ढा सकती है, इसका अनुमान आसानीसे किया जा सकता है।

हर्षका विषय है कि पञ्जाबके कुछ प्रमुख नेताओंका ध्यान इस सामाजिक महाकलङ्ककी ओर आकर्षित हुआ है। वैसे तो यह घातक व्याधि सर्वत्र फैली हुई है, पर शायद पञ्जाबमें इसका प्रकोप सीमाको उल्लङ्घन करके बहुत आगे बढ़ गया है। यही कारण है कि वहांके नेता सहनकी सीमा पार होते देखकर अनावश्यक सङ्कोच त्यागकर स्पष्ट रूपसे स्थितिको जनताके आगे रखनेके लिए उद्यत हुए हैं। हालमें लाहौरमें 'यूथ्स वेलफेयर एसोसियेशन' (युवक-कल्याण-समिति) की ओरसे एक सभा स्कूलोंमें नैतिक दुराचारके सम्बन्धमें आलोचना करनेके उद्देश्यसे हुई। सभामें लाला हंसराज, प्रोफेसर रुचिराम सहनी, मलिक बरकत अली, लाला हरगोविन्दलाल आदि ख्यातनामा व्यक्ति वर्तमान थे। सर पी० सी० रायका सन्देश भी सभामें पढ़ा गया था।

रुचिराम सहनीने अपने वक्तव्यमें कहा कि उन्हें अत्यन्त अनिच्छासे इस विषयपर बोलनेको बाध्य होना पड़ा है, क्योंकि अब स्कूलोंमें अध्यापकोंकी ज्यादती असहनीय हो उठी है। उनकी रायमें "अध्यापकका उत्तरदायित्व बहुत बड़ा है और उसकी वृत्ति अत्यन्त पवित्र है, क्योंकि वह वर्षों तक प्रतिदिन अविच्छिन्न रूपसे उन्हीं लड़कोंके संसर्गमें रहता है जिन्हे उसे पढ़ाना पड़ता है। इस प्रकार लड़कोंकी शिक्षा, संस्कृति तथा चरित्रपर उसका जो सामूहिक प्रभाव (Cumulative influence) पड़ता है वह अत्यन्त प्रबल होता है।" इस कारण प्रोफेसर साहबने अपनी यह स्पष्ट सम्मति प्रकट की है कि ऐसे अध्यापकोंको तत्काल स्कूलसे निकाल देना चाहिए जिनका चरित्र कुख्याति प्राप्त कर चुका हो। मलिक बरकत अलीने कहा कि नाना सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कारणोंसे ऐसे जघन्य मामलोंको प्रकाशमें लानेके बदले उन्हें छिपानेकी चेष्टा की जाती है जो सर्वथा अनुचित है। प० ठाकुरदत्तका यह कहना सर्वथा उचित है कि लड़कोंको फुसलाकर पापपथमें ले जानेकी कुप्रवृत्ति केवल स्कूलों या कालेजोंमें ही नहीं, बाहर भी वर्तमान है। 'ट्रिब्यून' के उप-सम्पादक श्री जङ्गबहादुर सिंहने यह सलाह दी है कि इस दुर्नीतिसे लड़कोंकी रक्षा करनेके उद्देश्यसे प्रत्येक नगरमें तत्त्वावधान समितियां (Vigilance Societies) स्थापित की जायं और साथ ही इस दुराचार तथा दुराचारियोंके विरुद्ध ऐसा जबर्दस्त आन्दोलन खड़ा किया जाय कि सरकार इस सम्बन्धमें अपनी उदासीनता त्यागनेको बाध्य हो।

किसी भी उपायसे हो, इस आत्म-शोषी दुर्वृत्तिको जड़से उखाड़ फेंकना ही होगा। इसके लिए सामाजिक बहुमत-सङ्गठन तथा लोकमत-जागरणकी आवश्यकता है।

## बाल-विवाह और शारदा ऐक्ट

बाल-विवाहकी प्रथाको कायम रखनेके ऐसे-ऐसे उपाय हमारे प्रत्युत्पन्नमति धर्मसंरक्षक आविष्कृत कर रहे हैं कि देखकर दांतों-तले उंगली दबानी पड़ती है। शारदा ऐक्टसे धर्मकी लाज डूबते देखकर उसे उबारनेके लिए उन्होंने कोई बात उठा नहीं रखी है। चोरी-छिपे या खुलेआम, गुप्त रूपसे या प्रकटमें वे लोग हर सूरतसे उस ऐक्टको व्यावहारिक रूपसे खण्डित करनेमें लगे हैं। ये लोग इसलिए बाल-विवाहके लिए चिन्तित नहीं रहते कि वह वास्तवमें कोई धार्मिक महत्त्व रखता है। इसका कारण केवल परम्परागत कुप्रथाको तदनुरूप कायम रखनेका अन्ध-संस्कार तथा नर-पिशाच कन्या-विक्रेताओंकी अर्थ-लोलुपता है। या तो वे लोग बाल-विवाहके पक्षपाती हैं जो सामाजिक शृङ्खलाके अन्ध-दास हैं, या वे जो बूढ़े सेठोंके कटघरोंमें अपनी लड़कियोंको डालकर कसाइयोंकी तरह द्रव्योपार्जन करना चाहते हैं। कैसे दुःख और लज्जाकी बात है कि इन नीच पापात्माओंको समुचित दण्ड देनेमें शारदा ऐक्ट सर्वथा असमर्थ और हीनबल है! जो थोड़ा-बहुत सामर्थ्य इसमें है भी, उसके निराकरणके लिए हठधर्मी कामी कलङ्की नाना उपाय काममें ला रहे हैं।

इसका सबसे जबर्दस्त प्रमाण कलकत्तेके मारवाड़ी-समाजमें पाया जाता है। जब-जब विवाहका मौसिम आता

## मातृ-भक्ति

भूखी माताकी जीवितावस्थामें पुत्ररत्न उसकी सेवा इस प्रकार कर रहे हैं।

उसके मरनेपर मृतक-भोजका विराट् आयोजन किया जा रहा है।

[ चित्रकार—श्री आत्मानन्द सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है तो मारवाड़ी सेठोंको दलबल और साज-बाज-सहित यहांसे चन्दननगर पलायन करते देखा जाता है। चूंकि चन्दननगर फ्रेञ्च सरकारके अधीन है, इसलिए ब्रिटिश गवर्नमेण्टके दण्ड-विधानका कोई भय वहां नहीं रहता। फलस्वरूप वे लोग निर्विघ्न रूपसे बिना किसीके बाधा-विरोधकी आशङ्काके वहां 'शुभ-कार्य' सम्पन्न कर आते हैं। एक-दो नहीं, बीसियों ऐसे विवाह प्रत्येक विवाह-ऋतुमें चन्दननगरमें होते देखे गये हैं जिनमें केवल कट्टरपन्थियों अथवा कामान्ध सेठोंको ही नहीं, बड़े-बड़े ऐसे समाज-सुधारवादियोंको भी सम्मिलित होते देखा गया है जो सार्वजनिक रूपसे बाल-विवाहका जोरदार खण्डन करते दिखायी देते हैं।

सरकार धार्मिक मामलोंमें यथासम्भव हस्तक्षेप करना नहीं चाहती। इसका कारण उसकी उदारता नहीं, बल्कि सामाजिक सुधारोंके प्रति उदासीनता है। यही कारण है कि एक तो शारदा ऐक्ट वैसे ही शक्तिहीन है, तिसपर उसका प्रयोग सब समय उन सभी व्यक्तियोंपर नहीं हो पाता जो उसका उल्लङ्घन करते हैं। जब ब्रिटिश भारतमें ही ऐक्टके खिलाफ चलनेवालोंको समुचित दण्ड देना कठिन हो जाता है तो किसी 'फारिन टेरिटरी'में उन्हें कौन रोक सकता है! तथापि यदि सरकार स्थितिकी गम्भीरतापर यथेष्ट ध्यान देकर इस अनियमका उपचार करना चाहे तो भली भांति कर सकती है। राजनीतिक कानून-उल्लङ्घनकारी फ्रेञ्च 'टेरिटरी'में गिरफ्तार कराया जा सकता है, पर समाज-सम्बन्धी कानूनकी उदूली करनेवालेके विरुद्ध कोई कार्रवाई न की जाय, यह कहांका न्याय है! इस सम्बन्धमें बम्बई हाईकोर्टकी प्रशंसा करनी पड़ती है। जिस प्रकार बङ्गालमें चन्दननगरमें बाल-विवाहोंकी धूम मची रहती है उसी प्रकार बम्बईमें गोआ आदि पुर्तगीजोंके अधीनस्थ स्थानोंमें जाकर 'धर्मनिष्ठ' लोग बालविवाहका 'शुभकर्म' सम्पन्न कर आते हैं। बम्बई हाईकोर्टने हालमें एक इसी प्रकारके विवाहके कार्यकर्ताओंको, जो पुर्तगीजोंके अधीनस्थ किसी स्थानमें जाकर विवाह कर आये थे, दण्डित किया है। बम्बई हाईकोर्टका यह आदर्श सब हाईकोर्टोंके लिए अनुकरणीय है। बङ्गालमें तो यथाशीघ्र इस नियमके प्रचलनकी आवश्यकता है, क्योंकि यहां 'धर्मप्राण' मारवाड़ी लोग जैसी ज्यादती कर रहे हैं वह अनर्थकर है।

कितनी लज्जाकी बात है कि एक ओर महिलाओंकी उन्नति-सम्बन्धी बड़े-बड़े जटिल प्रश्नोंको हल करनेमें हम लोग लगे हैं, दूसरी ओर अभी तक बाल-विवाहकी वही पुरानी शिकायत, वही रोना जारी है। नारी-जागरणकी संसार-व्यापी क्रान्तिके इस युगमें भी अभी तक हमें बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह-जैसी तुच्छ समस्याओंके झञ्झटसे अवकाश नहीं मिला है!

## दहेज-प्रथाकी घातकता

समाजमें अर्थलोलुपता इस कदर बढ़ रही है कि देखकर आश्चर्य होता है। अधिकांश सामाजिक कुप्रथायें सुधारवादियोंके इतने विरोधपर भी जो हटने नहीं पातीं, उसके मूलमें यह अर्थ-लोलुपता ही है। यही कारण है कि हम अर्थ-पिशाच पिताओंको कामान्ध बूढ़ोंके हाथ अपनी अबोध बालिकाओंको बेचते देखते हैं, स्त्री-व्यापार-प्रथा भी इसी कारण जोर पकड़ रही है, दहेजकी कुप्रथाका प्रकोप तो इस भीषणतासे बढ़ रहा है कि देखकर आतङ्क छा जाता है।

सिन्धमें 'आमिल'-जातीय हिन्दुओंमें यह नियम-सा बन गया है कि साधारणसे साधारण वरके लिए दस-पन्द्रह हजारसे कम ठहरौनी स्वीकार नहीं की जाती। हालमें खबर आयी है कि ठहरौनीकी दर उन लोगोंमें अब और भी अधिक बढ़ गयी है। निर्धनोंका सर्वस्व अपहरण करनेवाली इस रक्तशोषी प्रथाके विरोधमें कुछ आमिल लड़कियोंने कुछ समय पहले अपना यह मत प्रकट किया था कि यदि इस कुप्रथाका शीघ्र ही अन्त न कर दिया जायगा तो वे या तो मुसलमान बन जायेंगी या आत्महत्या कर लेंगी। इससे स्थितिकी गम्भीरताकी कल्पना भली भांति की जा सकती है। पाठकोंको मालूम होगा कि बहुत-सी हिन्दू आमिल लड़कियां मुसलमान बन भी चुकी हैं और बनती जा रही हैं। इस अन्धेरको प्रत्यक्ष देखते हुए भी वरोंके अभिभावक कन्यापक्षियोंके प्रति लेन-देनके सम्बन्धमें कुछ भी रियायत करनेपर राजी नहीं हैं। मजा यह है कि जो लोग सिन्धमें दहेज-प्रथाके विरुद्ध आन्दोलन मचा रहे हैं, हालमें उन्हींके सगे-सम्बन्धियोंके विवाहमें उन लोगोंने खूब कसकर दहेज लिया था! जाति जहन्नुममें जाय, इन ढोंगियोंकी बलासे! लड़कियां अविवाहिता रहनेके कारण भले ही मुसलमान बन अथवा अपने अभिभावकोंकी दुर्दशा देखकर आत्महत्या करें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उन्हें इस बातकी खाक परवा नहीं है! मौखिक सुधार-वादियोंकी देशमें कमी नहीं है, कमी है जातिकी दुर्दशा देखकर आन्तरिक वेदना अनुभव करनेवालोंकी।

दहेज-प्रथाके अनेक कुपरिणामोंसे एक मर्मघाती बात यह दृष्टिगोचर होती है कि इधर देशमें प्रायः सर्वत्र बहू-बेटियोंके ऊपर अनर्थमूलक, लोमहर्षक अत्याचारोंकी मात्रा बढ़ती जा रही है। धनलोलुप हृदयहीन कुछ एक बार लड़केके विवाहमें बहुत-सी नकदी पाकर जब निराशके फेरमें पड़ जाते हैं तो इस वीभत्स चेष्टामें रहते हैं कि किसी तरह बहू मरे और लड़केके दूसरे विवाहमें फिर आर्थिक प्राप्ति हो! इस घोर नीच मनोवृत्तिके परिणाम-स्वरूप जिस प्रकारकी अमानुषिकतायें देखनेमें आती हैं वे वर्णनातीत हैं। सास-ससुर, देवर-जेठ तथा पतिके पाशविक व्यवहारोंसे तङ्ग आकर कितनी स्त्रियां आत्महत्या करती हैं, इसका ठिकाना नहीं है। प्रायः प्रतिदिन इस आशयका एक-न-एक समाचार अवश्य ही संवाद-पत्रोंमें छपा हुआ पाया जाता है कि अमुक स्त्रीने ससुरालवालोंके दुर्व्यवहारसे तङ्ग आकर आत्महत्या कर डाली। बहुत-सी विवाहिता युवतियां अपने बच्चोंको साथ लेकर कुंओंमें कूद पड़ती हैं, बहुत-सी जहर खा लेती हैं और बहुत-सी फांसी लगाकर मर जाती हैं। पर कुछ अभागिनियां ऐसी भी हैं कि प्रतिदिन रोमाञ्चकारी अत्याचारोंको सहन करते हुए भी मरती नहीं। ऐसी स्त्रियों-की दशा सबसे अधिक कारुणिक होती है। ऐसी ही एक स्त्रीकी मर्मभेदी कथा कुछ समय पूर्व हिन्दीके एक दैनिक पत्रमें छपी थी, जिसका सार इस प्रकार है:—

युक्तप्रान्तके एक प्रख्यात नगरमें एक लाला रहते हैं। आपके पुत्र साहित्य-सेवी, सुधारक तथा कवि हैं। उनकी धर्मपत्नी एक सम्पन्न घरानेकी पुत्री है। उसपर जो अत्याचार किया जाता है वह अत्यन्त आतङ्कजनक है। उसके विवाहमें उसके पिताने कई हजार रुपये दहेजमें दिये थे। अब साहित्य-सेवी महाशय तथा उनके घरवाले इस युक्तिमें हैं कि किसी भांति वह दुर्भागिनी इस संसारसे कूच कर जाय तो दूसरे विवाहमें फिर कहींसे खासी रकम ऐंठी जाय। फलस्वरूप उन लोगोंने उस अबलापर कुछ निर्मूल दोषारोपण करके पाशविक उपायोंसे उसे कष्ट देना प्रारम्भ कर दिया है। उसे ऐसे अमानुषिक रूपसे पीटा जाता है कि वह मूर्च्छित हो जाती है और उसके शरीरसे खून निकलने लगता है। एक दिन उसे जीवित जलानेकी व्यवस्था की गयी! उसके मुंह-पर कपड़ा ठूंसकर उसकी जेठानीसे उसमें आग लगानेको कहा गया; परन्तु वह इस पाशविकताके लिए राजी न हुई। जब यह उपाय सफल न हुआ तो पति महाशयने अपनी असहाया पत्नीका मुंह काला करके, उसके सिरसे खून निकालकर, हाथमें मल भरकर उसे घरके दरवाजेपर बैठा दिया ताकि लोग उसकी यह दुर्दशा देखें।

ऊपर जो मर्मान्तक दृष्टान्त वर्णित हुआ है उसे पाठक एक असाधारण घटना न समझें। दहेजके लोभसे समाजमें ऐसी पैशाचिक हृदयहीनता छा गयी है कि घर-घर ऐसी—बल्कि इससे भी हृदय-विदारक—घटनायें रात-दिन देखी जाती हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

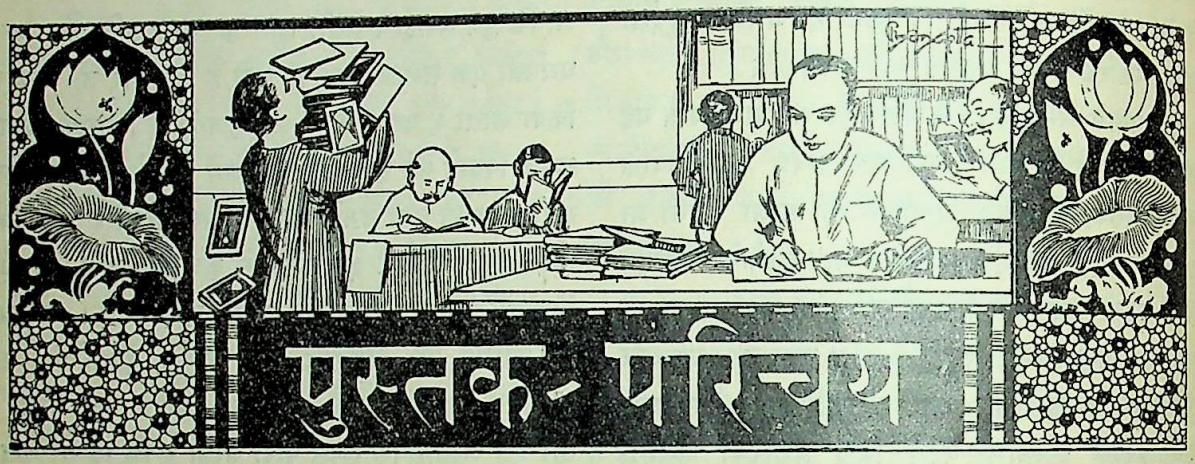

# पुस्तक-परिचय

काया-पलट। अनुवादक—श्रीरामसिंह वर्मा; प्रकाशक—किशोर-पुस्तक-भण्डार, ६, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता। मूल्य—१॥)

यह पुस्तक मि० सैनफोर्ड बैनेटकी Oil Age, It's Causes and Prevention नामक स्वास्थ्य तथा व्यायाम-सम्बन्धी प्रसिद्ध पुस्तकका अनुवाद है। मि० सैनफोर्ड बैनेटकी इस पुस्तकने व्यायाम-संसारमें धूम मचा दी है। मि० बैनेटका स्वास्थ्य बहुत खराब था; वह क्षयरोगसे आक्रान्त थे। पचास वर्षकी अवस्थामें उन्होंने निश्चय किया कि किसी उपायसे स्वास्थ्यमें आमूल सुधार करके नवयौवन प्राप्त करना चाहिए। बिस्तरेपर लेटे-लेटे ही उन्होंने व्यायामकी एक नयी पद्धतिका अनुशीलन किया। इससे कुछ ही समयके अन्दर उन्हें विशेष लाभ दिखायी दिया। धीरे-धीरे उन्होंने स्वास्थ्यमें ऐसी अद्भुत, अविश्वसनीय उन्नति कर ली कि ७२ वर्षकी अवस्थामें वह प्रायः ३२ वर्षके युवा दिखायी देने लगे! पुस्तकमें उनके व्यायाम करनेके पहले, ५० वर्षकी आयुके चित्रके साथ ७२ वर्षकी आयुका चित्र भी दिया गया है। दोनोंका मिलान करनेसे आंखोंको विश्वास नहीं होना चाहता। इसे अलौकिक परिवर्तन—miraculous change—के अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सकते।

पुस्तकमें भिन्न-भिन्न प्रकारके व्यायाम चित्रों द्वारा निदर्शित किये गये हैं। मि० बैनेट दवाओंपर विश्वास नहीं करते और प्राकृतिक चिकित्साके कायल हैं। खोयी हुई जवानी प्राप्त करनेकी इच्छा रखनेवालोंको खान-पान, रहन-सहन आदिके सम्बन्धमें किन-किन बातोंका ख्याल रखना चाहिए, इस बातपर भी पुस्तकमें विस्तृत रूपसे प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सर्वथा उपयोगी है।

हास्य-रस। लेखक—श्री जी० पी० श्रीवास्तव; प्रकाशक—श्री दुलारेलाल भार्गव, गङ्गा-ग्रन्थागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ। मूल्य—सजिल्द ॥।), सादी ।=)

इस पुस्तकमें लेखकके हास्य-रस-सम्बन्धी उन तीन भाषणोंका संग्रह है जो तीन भिन्न-भिन्न परिहास-सम्मेलनोंके अवसरोंपर दिये गये थे। हिन्दीके हास्य-रस-साहित्यमें लेखकने इस समय सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर रखा है। आपके प्रहसन परिहासकी तीव्रताके कारण अत्यन्त लोकप्रिय हैं। हास्य-रसके विशेषत्वके सम्बन्धमें आपके विचार जाननेके लिए लोग बहुत दिनोंसे उत्सुक थे। प्रस्तुत पुस्तकमें जो भाषण संगृहीत हुए हैं उनमें आपने अत्यन्त परिष्कृत तथा विस्तृत रूपसे हास्य-रसकी विशेषता तथा उसका महत्त्व समझाया है। लेखककी आलोचना-शैली सुन्दर, सरस तथा प्रसादपूर्ण है।

जीवन-मरण-रहस्य। लेखक—श्री प्रसिद्धनारायण सिंह बी० ए०, एम० एल० सी०; प्रकाशक—श्री दुलारेलाल भार्गव, गङ्गा-ग्रन्थागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ। मूल्य—सजिल्द १), सादी ॥)

इस पुस्तकमें थियोसोफिस्टोंके मतानुसार स्थूलशरीर, लिङ्गशरीर, प्राणशक्ति, प्रवृत्ति-मानस, बुद्धि, आत्म-मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और आत्मा—मानव-जीवनके इन सात मूलतत्त्वोंकी व्याख्या की गयी है। थियोसोफीके सिद्धान्तोंपर जिन लोगोंकी श्रद्धा है उनके लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

लिली। लेखक—श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'; प्रकाशक—श्री दुलारेलाल भार्गव, गङ्गा-ग्रन्थागार, ३६, लाटूश रोश, लखनऊ। मूल्य—सजिल्द १॥), सादी १)

यह लेखककी आठ कहानियोंका संग्रह है। कहानियां सभी सुन्दर और सरस हैं। पुस्तककी भूमिकामें लेखक महोदय लिखते हैं—"यह कथानक-साहित्यमें मेरा पहला प्रयास है। मुझसे पहलेवाले हिन्दीके सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक इस कलाको किस दूर उत्कर्ष तक पहुंचा चुके हैं, मैं पूरे मनोयोगसे समझनेका प्रयत्न करके भी नहीं समझ सका। समझता तो शायद उनसे पर्याप्त शक्ति प्राप्त कर लेता और पतनके भयसे इतना न घबराता। अतः अब मेरा विश्वास केवल 'लिली' पर है, जो यथास्वभाव अधखिली रहकर अधिक सुगन्ध देती है।" आशा है, इस वक्तव्यसे पाठकोंको पुस्तकके महत्त्वका बहुत-कुछ परिचय मिल जायगा।

पुस्तकके प्रारम्भमें और मध्यमें दो रङ्गीन चित्र दिये गये हैं। प्रारम्भके चित्रके नीचे परिचय-स्वरूप लिखा गया है 'लिली', और भीतरवाले चित्रके नीचे 'प्रेमिका-परिचय' शीर्षक कहानीकी नायिका, शान्तिका नाम दिया गया है। जहां तक हमारी धारणा है, दोनों चित्र 'सुधा' में अन्य परिचयोंसे छप चुके हैं। अतः उन्हें इस कहानी-संग्रहमें जबर्दस्ती घुसेड़ना हमें उचित नहीं जान पड़ता। इसके अतिरिक्त, दोनों चित्र कलाकी दृष्टिसे भी सुसंस्कृत रुचिके परिचायक नहीं हैं। हमें आश्चर्य है कि लेखक महोदयने क्या सोचकर प्रकाशककी इस अशोभन व्यावसायिक मनोवृत्तिका विरोध नहीं किया।

अछूत-समस्या। मूल लेखक—महात्मा गांधी; अनुवादक—श्री परिपूर्णानन्द वर्मा; प्रकाशक—श्री दुलारेलाल भार्गव, गङ्गा-ग्रन्थागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ। मूल्य—सजिल्द १।), सादी ॥)

इस पुस्तकमें महात्मा गांधीके अछूत-प्रथा-सम्बन्धी कुछ लेखोंका अनुवाद छपा है। लेख सभी मनन-योग्य और गांधीजीकी सुन्दर, सरल शैलीके परिचायक हैं। अनुवाद भी स्पष्ट और यथोपयुक्त हुआ है। वर्तमान संग्रहमें कुछ लेख ऐसे भी सम्मिलित किये गये हैं जो वर्तमान हरिजन-आन्दोलनसे बहुत पहले लिखे गये थे, जिनसे विषयका महत्त्व और भी बढ़ गया है।

बलिदान। लेखक—श्री शिवराम 'दास' गुप्त; प्रकाशक—उपन्यास-बहार-आफिस, काशी। मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक एक नाटक है। इसमें हरिजनोद्धार-सम्बन्धी प्रश्नपर विशेष भावुकतासे विचार किया गया है। लेखक महोदय जनताकी रुचिको समझनेका दावा कर सकते हैं। किन-किन बातोंको किस ढङ्गसे समझानेसे जनताकी रगोंमें उत्तेजना सञ्चारित होती है इस बातका यथेष्ट अनुभव लेखकको पहलेसे ही है, ऐसा मालूम होता है। नाटककी शैली यथेष्ट रोचक है।

दो बालोपयोगी पुस्तकें—(१) राक्षसोंकी कहानियां, (२) इतिहासोंकी कहानियां। दोनोंके लेखक—श्री आनन्दकुमार (सम्पादक 'वानर'); प्रकाशक—हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग। मूल्य क्रमशः छ आने और चार आने।

प्रयागका हिन्दी-मन्दिर बालोपयोगी साहित्यकी उन्नतिकी ओर किस प्रकार प्रयत्नशील है, यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं। इस सदुद्देश्यमें उसे सफलता भी यथेष्ट प्राप्त हुई है। पूर्वोल्लिखित पुस्तकोंके लेखक महाशय बाल-रुचिके विशेषज्ञ मालूम होते हैं। दोनों पुस्तकोंकी कहानियां सुन्दर, सरस भाषामें लिखी गयी हैं और यथेष्ट रोचक तथा मनोरञ्जक हैं।

'युगान्तर' का गृहस्थाङ्क। प्रायः दो वर्षसे हिन्दीके सुपरिचित लेखक श्री सन्तरामके सम्पादकत्वमें यह मासिक पत्र लाहौरसे निकल रहा है। समाज-सुधार तथा स्त्री-संसारकी उन्नति इसका मूलोद्देश्य मालूम होता है। प्रस्तुत अङ्क एक विशेषाङ्क है। इसके बाहर तथा भीतरकी सजावट मनोमोहक है, साथ ही पठनीय सामग्री भी सुन्दर है। जिन लोगोंके लिए यह पत्र निकाला गया है उनके लिए गृहस्थाङ्कके लेख जैसे रोचक हैं वैसे ही शिक्षाप्रद भी। ऐसा सुन्दर अङ्क निकालनेके लिए हम सम्पादक महाशयको बधाई देते हैं। आशा की जाती है कि 'युगान्तर' इसी प्रकार उत्तरोत्तर उन्नति करता जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कुमार सभा पुस्तकालयका सूचीपत्र। प्रकाशक—बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय, कलकत्ता।

पुस्तकालयोंके विधिपूर्वक सञ्चालनकी कलाने अभी तक हमारे देशमें विशेष उन्नति नहीं की है। पाठार्थी जनताको अधिकसे अधिक सुविधायें मिलनेकी आवश्यकता स्वीकार करनेपर भी अधिकांश लाइब्रेरियां इतने कम व्यक्तियोंको वास्तविक सुविधा देनेमें समर्थ हैं कि देखकर आश्चर्य होता है। बहुधा यह देखा जाता है कि लाइब्रेरीमें किसी विशेष विषयकी विशेष पुस्तकें मौजूद हैं, पर पुस्तकोंके नियमित वर्गीकरणकी ओर ध्यान न देनेसे पाठार्थीको इस सम्बन्धकी ठीक-ठीक सूचना देनेमें वह असमर्थ रहती है कि इस विषयकी कौन-कौन पुस्तकें किस-किस लेखककी वहां मिल सकती हैं। इस प्रकारकी और भी बहुत-सी असुविधायें पायी जाती हैं।

हर्षका विषय है कि इन असुविधाओंकी ओर अब लोगोंका ध्यान आकर्षित होने लगा है और उनके निराकरणकी चेष्टा की जाने लगी है। कलकत्तेकी हिन्दी लाइब्रेरियोंमें बड़ाबाजार कुमार-सभा-पुस्तकालय एक विशेष स्थान रखता है। सदस्योंकी सुविधाके ख्यालसे उक्त लाइब्रेरीके अवैतनिक मन्त्री श्री राधाकृष्ण नेवटियाने वर्गीकरण-प्रणालीपर लाइब्रेरीकी तमाम पुस्तकोंका एक बड़ा सूचीपत्र छापा है। मन्त्री महाशयका यह सदुद्योग सराहनीय है। पुस्तककी छपाई-सफाई सुन्दर है।

———


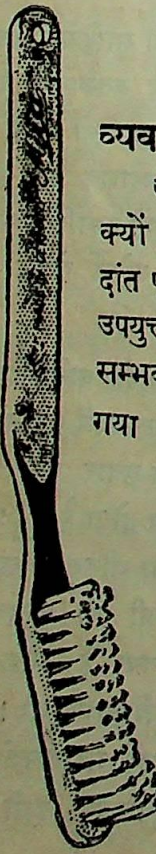

# दांतों की सुन्दरता

**व्यवहारमें लाये जानेवाले ब्रस पर ही निर्भर है**

आप जो मञ्जन व्यवहार करते हैं वह कितना ही अच्छा क्यों न हो सर्वोत्कृष्ट ब्रसके नहीं व्यवहार करनेसे आपके दांत पूर्णतया परिष्कार न हो सकेंगे। इसलिये मीरा ब्रस ही उपयुक्त है। कारण दांतके प्रत्येक कोने व फांक में, जहां तक सम्भव है, प्रवेश कर सकता है। और इसी पे यह बनाया ही गया है इसके बाल न नरम होंगे और न खुल कर गिर पड़ेंगे।

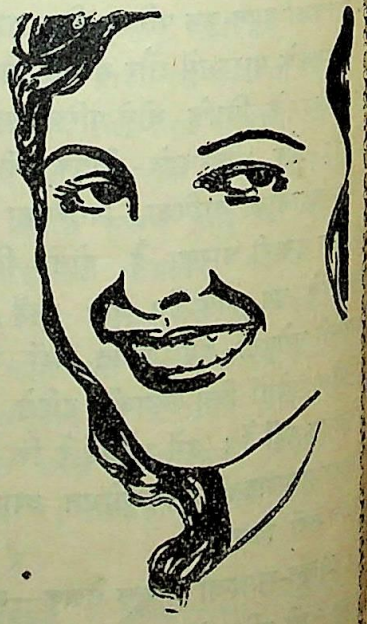

**मीरा टूथ ब्रस** के साथ

**मीरा डेंटल क्रीम** बयवहार कीजिये।

चिरकाल तक दन्त पंक्ति शुद्ध, स्वस्थ सुन्दर व सबल रहेंगे।

## मीरा टूथ ब्रस

एजेन्टस्—टी० एम ठाकुर एण्ड कम्पनी

१२, डलहौसी स्कायर, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ-चक्र

## चम्पारनमें 'महाजन-यज्ञ'

सेठों, साहूकारों और महाजनोंके यज्ञमें उन हतभाग्य मनुष्योंकी बलि दी जाती है जो कड़ा परिश्रम करके किसी प्रकार पेट भरनेका प्रयत्न करते हैं। महाजनोंके हृदयसे बातूनी धर्म और दयाका स्रोत उमड़ पड़ता है। पर जब अपने कर्जदारोंसे इन्हें ऋण उघाना होता है तो फिर इनका चण्ड रूप देखने लायक बन जाता है। इस समय बिहारमें महान् विपत्तिने हाहाकार मचा रखा है। धनियों तककी दुर्दशा हो रही है और धनके अभावसे वे अपना भोजनाच्छादन जुटानेमें असमर्थ-से हो रहे हैं। किसानोंका तो कहना ही क्या! चम्पारनकी तो यह दशा है कि चार-पांच सालसे वहां फसल ही मारी जाती रही है। इसलिए किसान विलाप कर रहे हैं और उन्हें पेटका अन्न जुटाना कठिन हो रहा है। अपने पसीनेकी कमाई खानेवाले किसान अच्छी फसल होनेपर ही ऋण भी चुका सकते हैं। वर्तमान महान् सङ्कटमें तो उन्हें ऋणकी आवश्यकता है। पर इन महाजनोंको इसकी क्या परवा? उनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ती देख इन्होंने उन्हें कर्ज देना बन्द तो कर ही दिया है; पर पुराना कर्ज चुकानेके लिए भी उन्हें तङ्ग कर रहे हैं। यह हैं भारतके महाजन, जो अहिंसा परमो धर्मः के कट्टर अनुयायी हैं। सच तो यह है कि सेठवादमें धर्म श्रमजीवियोंको ठगनेका एक उत्तम साधन-मात्र रह जाता है। भारतीय सेठ और महाजन इसके अपवाद नहीं हो सकते।

## बङ्गालपर युक्तप्रदेशका हमला

बङ्गालमें अब तक बम्बईके विरुद्ध बहुत रोष था। कलकत्तेमें बम्बईके सेठोंके कारबारको उन्नतिमें देखकर बङ्गाली खूब जलते हैं। इसलिए आचार्य प्रफुल्लचन्द्र रायका आन्दोलन कि भारतके अन्य प्रान्तवाले, विशेषतः बम्बईवाले विदेशी हैं और उनका माल भी विदेशी है—जोर पकड़ गया है। पर अब युक्तप्रान्तपर भी बङ्गाली बिगड़ने लगे हैं। इधर कुछ पत्रोंमें उसके विरुद्ध लेख छप रहे हैं। इसका कारण यह है कि वहांसे बङ्गालको सस्ता तेल आने लगा है। एक पत्रने छापा है—"संयुक्त प्रदेशके नाना स्थानोंसे बङ्गालको सरसों आती थी। अब ईस्ट इण्डियन रेलवेने उसका भाड़ा ६० सैकड़ा बढ़ा दिया है। उधर तेलका भाड़ा कम कर दिया है। इसके विपरीत बङ्गालसे जो तेल युक्तप्रान्तको जाता है उसपर ९५ सैकड़ा भाड़ा बढ़ा दिया गया है। इस प्रकार बङ्गालको चौपट करनेका प्रयत्न आरम्भ हो गया है।" यह है वह मनोवृत्ति, जो बङ्गालियोंके अतिरिक्त सबको अपना शत्रु समझती है। बङ्गालमें युक्तप्रान्तसे तेल आता भी तो हानि न थी। क्योंकि युक्तप्रान्त ही एक ऐसा अभागा प्रदेश है जहां बङ्गाली वकील, डाक्टर, प्रोफेसर, स्कूल मास्टर, सरकारी कर्मचारी हजारोंकी संख्यामें मौज कर रहे हैं, जब कि स्वयं युक्तप्रदेशके मुल्की लोग पढ़-लिखकर भी उनकी धूर्तताके कारण बेकारीमें पड़े हुए हैं। खेद है कि बङ्गाली अपनी परम स्वार्थी नीतिके कारण उन लोगोंकी आंखें भी लकड़ी डालकर खोलते हैं जो तामसिक निद्रामें पड़कर अपना पेट काट उन्हें खिलाना अपना धर्म समझते हैं।

## भारतकी मजदूरनोंपर सेठोंका अन्धेर

हमारे देशभक्त और धर्मात्मा सेठ श्रमजीवियोंको जिस प्रकार चूसते हैं उसकी तुलना संसारमें नहीं है। नारी जाति ही राष्ट्रकी माता है। वह राष्ट्रको बलशाली सन्तति देकर उसे समृद्ध और शक्तिवान् बनाती है। मजदूरोंके शत्रु हिट्लरने भी स्त्री श्रमजीवियोंपर होनेवाले कष्टोंको घटानेके लिए कानून बनवाये हैं। पर भारतमें उनकी क्या दशा है, इसपर श्री राजाराम शास्त्रीके लेखके निम्नलिखित अंश प्रकाश डालेंगे:—

भारतीय कारखानोंमें काम करनेवाली स्त्री श्रमजीवियोंकी अवस्था हृदय-विदारक है उनके कामके घण्टे बहुत ज्यादा और वेतन नगण्य है। गर्भावस्थामें वेतन-सहित छुट्टीका कोई प्रबन्ध न होनेके कारण उन्हें जो कष्ट भुगतने पड़ते हैं उनका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है।

## ९८ प्रति सैकड़ा बच्चोंको अफीम

भारतमें बाल-विवाहकी प्रथा होनेके कारण कारखानोंमें काम करनेवाली अधिकांश स्त्रियां विवाहित होती हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसलिए उन्हें दोहरा काम करना पड़ता है। एक तो घरका काम-काज और दूसरा कारखानेका काम। स्त्रियां जिस समय काम करने जाती हैं, उस समय अपने बच्चोंको घरपर अफीम खिलाकर जाती हैं ताकि वे चुपचाप दिनभर सोते रहें। ह्विटले कमीशनके सामने बम्बईकी सरकारने मजदूरों-की दशाके सम्बन्धमें जो मसविदा पेश किया, उसमें लिखा है कि ९८ प्रतिशत बच्चोंको स्त्रियां कामपर जानेके पहले अफीम खिला देती हैं। कुछ स्त्रियां अपने बच्चोंको पड़ोसियोंके सुपुर्द भी कर जाती हैं। इसके बदलेमें उन्हें कुछ मजूरी देनी पड़ती है। अहमदाबाद और शोलापुरमें भी स्त्रियां बच्चोंको अफीम खिलाती हैं। भारतके दूसरे स्थानोंकी मजदूर स्त्रियां ऐसा ही करती हों तो कोई आश्चर्य नहीं। जिन बच्चोंको दिनभर गन्दी कोठरियोंमें रहना पड़ता हो और उन्हें प्रति दिन अफीम खिलायी जाती हो, उनका स्वास्थ्य बड़े होनेपर बिलकुल चौपट हो जाय तो इसमें आश्चर्यकी क्या बात है। चाहिए यह कि हर कारखानेमें जहां स्त्रियां काम करती हों, शिशु-पालनका भी प्रबन्ध हो। कारखानोंके शिशु-गृहोंमें सुशिक्षित तथा अनुभवी दाइयां रखी जाया करें जो बच्चोंका पालन किया करें।

आजकल कारखानोंमें पुरुषके समान स्त्रियां भी १० घण्टे काम किया करती हैं। वास्तवमें इतने समय तक काम लेना उनके साथ घोर अन्याय है। यह बात सदैव ध्यानमें रखनी चाहिए कि कारखानोंके अलावा स्त्रियोंको घरका काम तथा बच्चोंका पालन-पोषण भी करना पड़ता है। ६ बजे कामपर जानेके लिए उन्हें ४ बजे सुबह उठना पड़ता है। उनके रहनेके स्थान कारखानोंसे बहुत दूर होते हैं, इसलिए प्रति-दिन उन्हें कई मील पैदल चलना पड़ता है। शामको १० घण्टे काम करनेके बाद जब वे घर लौटती हैं तो उन्हें बच्चोंकी देखभाल, रोटी पकाना तथा बर्तन मलना आदि बहुत काम करने पड़ते हैं। इस प्रकार १० या १०॥ बजे रात तक उन्हें काममें लगा रहना पड़ता है। सुबह चार बजेसे लेकर रातके १०॥ बजे तक उन्हें बराबर काममें जुटना पड़ता है, इसलिए मजदूरोंकी अपेक्षा स्त्री-श्रमजीवियोंके कामके घण्टे बहुत कम होने चाहिए। इसके साथ ही स्त्रियोंको वेतन भी इतना कम मिलता है कि उनका गुजारा चलना मुश्किल हो जाता है। मिलोंमें काम करनेवाली स्त्रियोंको साधारणतया ५ या ६ रुपये माहवार मिलते हैं। नागपुर तथा कानपुरकी स्त्रियोंने ह्विटले कमीशनके सामने जो गवाही दी थी उसमें उन्होंने कम वेतन मिलनेकी बहुत शिकायत की थी। इतने कम वेतनमें विधवाओंका जीवन-निर्वाह तो और भी मुश्किल हो जाता है, क्योंकि उनका और कोई सहारा नहीं होता। उन्हें तो इन्हीं ६ रुपयोंमें सारा काम चलाना पड़ता है।

## गर्भावस्थामें भी दिनभर काम

दुनियाकी तमाम सभ्य सरकारें इस बातका प्रबन्ध करती हैं कि गर्भावस्था, प्रसव-काल तथा प्रसवके कुछ दिन बाद तो स्त्री-श्रमजीवियोंको वेतन-सहित छुट्टी दी जाय। सोवियट रूसमें बच्चा उत्पन्न होनेके पहले और बाद दो-दो महीनेका वेतन-सहित अवकाश मिला करता है। वहां बच्चा पैदा होनेके दो-चार मास पूर्व हीसे भावी माताओंके स्वास्थ्यकी ओर विशेष सतर्कता रखना आरम्भ हो जाता है, पर भारत-सरकारने अभी तक इस सम्बन्धमें कुछ नहीं किया। इसका परिणाम यह होता है कि बेचारी स्त्रियां बच्चा पैदा होनेके दिन तक कारखानोंमें जाकर १०-१० घण्टे काम किया करती हैं। नागपुरमें खानमें काम करनेवाली फूलमती नामक एक स्त्रीने शाही मजदूर कमीशनके सामने गवाही देते हुए कहा था कि "मैं पत्थर तोड़नेका काम करती हूं। मुझे १॥ रुपया प्रति सप्ताह मिलता है। जब मेरे बच्चा हुआ था तो मैंने आखिर तक काम किया था और बच्चा पैदा होनेके दो सप्ताह बाद ही फिर कामपर लौट गयी थी।" सोचनेकी बात है कि जिस स्त्रीके बच्चा पैदा होनेवाला हो वह कई मील पैदल चले और दिनभर पत्थर कूटनेका कठिन परिश्रम करे तो उसपर क्या बीतती होगी। उसके उदरमें जो नन्हा-सा जीव होता है उसके स्वास्थ्यपर क्या आघात पहुंचता होगा, वर्णनातीत है।

गर्भके बोझसे लदी हुई स्त्री जब कारखानेमें अपना पूरा काम नहीं कर पाती तो उसे डाट-फटकार बतलायी जाती है। स्वार्थी मालिक अपना पूरा काम मांगता है। स्त्री मरती है या जीती, इसकी उसे रत्तीभर चिन्ता नहीं होती। इस-लिए बेचारी आखिरी दिन तक जीतोड़ परिश्रम करती हैं। लेकिन एक दिन तो ऐसा आ ही जाता है जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसके हाथ-पैर नहीं चलते और मजबूर हो छुट्टी लेनी पड़ती है। इस समय उसकी दशा बड़ी ही करुणा-जनक तथा भयानक होती है। इतना कम वेतन मिलता है कि प्रसवके दिनोंके लिए वह बचाकर कुछ भी नहीं रख पाती। प्रसवकालमें मारतमें वेतन देनेका कोई कानून नहीं है। बेचारी प्रसव-पीड़ाकी असहाय वेदना-के अतिरिक्त गरीबीकी मारसे त्राहि-त्राहि करने लगती है। खुद भूखों मरना तो बरदाश्त किया जा सकता है, लेकिन उसके पेटके अन्दर जो नन्हा-सा जीव होता है उसका मरना वह कैसे बरदाश्त करे। लेकिन सिवा सिर धुननेके और वह कर ही क्या सकती हैं!

उसके बच्चा पैदा होता है और इस अग्नि-परीक्षासे अभी वह संभलने भी नहीं पाती कि कारखानेमें जाकर काममें जुट जाती है। काम न करे तो खाये कहांसे? जहां दो-तीन बच्चे हुए कि उसका स्वास्थ्य बिलकुल खराब हो जाता है। उसे नाना प्रकारके रोग आ घेरते हैं। इसलिए इसका आश्चर्य नहीं होता कि मजदूर बच्चे इतने ज्यादा क्यों मरते हैं, बल्कि ताज्जुबकी बात तो यह है कि कुछ बच्चे जिन्दा कैसे रह जाते हैं?

## सेठोंका पाषाण-हृदय

स्वार्थके कारण मिल मालिकोंका दिल कितना कठोर होता है, इसका इसीसे अनुमान लगाया जा सकता है कि जब बच्चा पैदा होनेके दिन नजदीक आ जाते हैं तो बजाय इसके कि ऐसी स्त्रियोंकी कुछ मदद करें, वे उन्हें नौकरीसे अलग कर देते हैं। नागपुरकी माडल मिलकी राधा बाई निम्बकर नामक एक स्त्री-श्रमजीवीसे मजदूर कमीशनके एक सदस्यने जब यह पूछा कि प्रसवकालमें तुम्हें कुछ भी छुट्टी मिलती है या नहीं, तब उसने जवाब दिया कि कोई भी छुट्टी नहीं दी जाती, बल्कि हमें पहले ही बर्खास्त कर दिया जाता है।

## डरबनमें भारतीय बसवालोंके प्रति द्वेष

इस समय अर्थके पीछे पागल होकर मनुष्य हिंस्र पशु बन गया है। चाहे ब्रिटिश साम्राज्य हो या कोई और देश—सब अपने-अपने पेट भरनेके पीछे पड़े हुए हैं। भारतीयोंकी तो ऐसी दुर्दशा है कि ब्रिटिश साम्राज्यमें उनको सर्वत्र व्यापार करनेकी स्वाधीनता नहीं है। गोरी नारियां भी उनका चमकता व्यापार देख द्वेष करने और उसको बिगाड़नेकी चेष्टा करती हैं। डरबनके 'राष्ट्रीय नारी सङ्घ' ने यह प्रस्ताव पास किया है—"आजकल नगरके उन भागोंमें, जहां भले लोग रहते हैं, भारतीय बसें चलने लगी हैं। इनसे सड़कें टूट-फूट जाती हैं और ट्राम कम्पनीको हानि होनेका भय है। इसलिए नगरकी 'टाउन काउन्सिल' से हम प्रार्थना करती हैं कि वह किसी उपायसे इन बसोंको बन्द करवाये और इन्हें ट्राम टर्मिनसों तक ही चलने दे।" यह है ब्रिटिश साम्राज्यके एक अङ्गमें भारतीय व्यवसायियोंके साथ सहानुभूति। अब राजनीतिक पहलू देखिये। डरबनकी ट्रामोंमें गोरों और कालोंके बैठनेके लिए निर्दिष्ट स्थान हैं। हबशी और भारतीय—जो अपनेको आर्य समझते हैं—गोरोंसे अलग एक साथ बैठते हैं। इसमें इतना कम स्थान हैं कि उन्हें देर तक खड़े रहनेपर भी स्थान नहीं मिल सकता था। यह अभाव कई भारतीयोंको खटका और उन्होंने कालोंको आराम देकर अपना पेट भरनेके लिए नयी बस लाइनें खोलीं। 'टाउन काउन्सिल' ने उनपर अत्यधिक कर बैठाया कि उससे सड़कोंकी टूटफूटकी मरम्मत की जाये। इन बसोंकी बन आयी, क्योंकि जनता इनपर टूट पड़ी। यह देखकर अब गोरी नारियोंके हृदयमें भी द्वेषकी आग भड़कने लगी है कि काले हिन्दुस्तानी लाभ कर रहे हैं।

## सेठ बननेकी धुनमें जनताकी लूट

भारतमें लूटका एक ढङ्ग कम्पनियां खोलकर जनताके धनको लूटना है। यहां जो कम्पनियां खूब चल रही हैं वे भी बहुत कम मुनाफा बांटती हैं। इसका कारण यह है कि मैनेजिङ्ग एजेण्ट ही इतना रुपया खर्च कर देते हैं कि बिचारे शेयरहोल्डरोंके लिए कुछ भी नहीं रह जाता। पर इण्डियन स्टेटस बैङ्क केससे यह रहस्य खुला है कि कुछ कम्पनियां यहां केवल जनताको दिनदहाड़े लूटनेके उद्देश्यसे स्थापित की जाती हैं। रायबहादुर कुंवर सरदारसिंह एम० एल० सी० प्रतिष्ठित सज्जन मालूम पड़ते हैं। पर इस बैङ्कके प्रवर्तकोंपर जो मामला चला था, उससे यह मालूम हुआ कि वे बिना अपने शेयरोंके दाम चुकाये ही कई हजारके शेयरोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हकदार बन गये और परिणामस्वरूप बैङ्कके डाइरेक्टर बन गये। फैसलेमें जस्टिस यङ्ग और टामने कहा है—"सरदारसिंह जानते थे कि स्वयं उन्होंने, लाल भगवन्तसिंह और विक्रमसिंहने अपने शेयरोंका मूल्य न चुकाया था।" पर डाइरेक्टरोंकी मीटिङ्गमें कहा गया—"डाइरेक्टरोंने अपने-अपने शेयरोंके दाम चुका दिये हैं और बिना नगद दाम लिये कोई शेयर नहीं दिया गया।" सरदारसिंहने कहा कि मैंने यह सब अपने मित्र गोपीनाथ सिंहको लाभ करानेके लिए किया था। यह है हमारे देशके सेठोंकी लोकहितकी चिन्ता। जब जजने पूछा—इसका यह अर्थ हुआ कि अपने मित्र गोपीनाथ सिंहके लिए तुम बेईमान बनना चाहते थे?

—यह सच है कि अपने मित्र गोपीनाथको बाधित करनेके लिए मैंने जनताको ठगा।

ये हैं हमारे व्यापारी व्यवसायी, जो अदालतमें स्वीकार करते हैं उन्होंने जनताको ठगा। इस सज्जन सेठकी दशा सुनिये। उसकी जायदादसे उसे दो लाख प्रतिवर्ष आय होती है और वह केवल लगानके सरकार-को प्रतिवर्ष चालीस हजार रुपये देता है। यह देखकर इस सम्भ्रान्त सेठके बारेमें जजोंने लिखा है—"इसकी गवाहीसे पता लगता है कि यह घाघ व्यापारी है और अपना कामकाज खूब सावधानीसे चलाता है। शपथ लेते समय उसे अपनी बेईमानीका पूरा पता था।" ऐसे प्रतिष्ठित और घाघ सेठोंके झांसेमें यदि जनता आ जाय तो क्या आश्चर्य। यह है अभागा भारत, जहांके शिक्षित और सम्भ्रान्त सेठ हर तरहकी बेईमानीसे जनताको लूटना अपना धर्म सम-झते हैं।

## मैनेजिङ्ग एजण्टोंका स्वराज्य

मैनेजिङ्ग एजेन्सी भारतमें पनप रही है। जिस सेठका बाजारमें नाम हुआ वह नयी-नयी कम्पनियां खोलकर उनके शेयर बेच मैनेजिङ्ग एजेण्ट बन बैठता है। इससे उसे नाना प्रकारके लाभ होते हैं। वह मोटा वेतन लेता है, खूब भत्ता उड़ाता है और नाना प्रकारके कमीशन, खर्च वगैरह काट-कर अपनी पाकेट गरम करता है। असलमें उसका कोई काम नहीं है। वह स्वयम्भू प्रबन्धकर्ता बनकर शेयर-होल्डरोंका पेट काटता और नयी कम्पनी यदि अत्यधिक लाभ देनेवाली न हुई तो उसकी जड़ काटता है। क्योंकि जो लाभ कम्पनीको होता उसे यह एजेण्ट कम्पनीका हितू बनकर उड़ा जाता है। इसका कुफल देशके व्यवसायके लिए यह हो रहा है कि कई मिलें और कारखाने खूब चलते हैं, पर हिस्सेदारोंको कुछ भी मुनाफा नहीं मिलता। सारा मुनाफा यह मैनेजिङ्ग एजेण्ट खा जाता है। मजा देखिये कि सारे संसारमें यह ढंग नहींके बराबर है। पर भारत-जैसे निर्धन देशमें बिना मैनेजिङ्ग एजण्टके कोई कम्पनी नहीं है। बम्बईके दावर कालेज आफ कमर्सके प्रिन्सिपल सोहराब दावरने इसकी कई बुराइयां बतायी हैं, जो देशके हितमें घातक हैं। इन सेठ मैनेजिङ्ग एजण्टोंकी कृपासे पब्लिकके करोड़ों रुपये डूब गये हैं। हालमें जो करीमभाई ग्रूथकी मिलोंपर सङ्कट आया था और जिसके कारण जनताको साठ लाखकी चपत लगी थी वह इस सर्व-नाशी मैनेजिङ्ग एजेन्सीके कारण। प्रिन्सपल दावरका कहना है कि अब मैनेजिङ्ग एजण्ट केवल जनताके हितके घातक रह गये हैं। सेठोंको धनी और जनताको निर्धन बनानेका यह ढङ्ग अब बन्द होना चाहिए। जापानमें मैनेजिङ्ग एजेण्ट नहीं होते। ये बीचमें ही जो मलाई हड़प कर जाते उससे हिस्से-दारोंको लाभ होता है। फल यह हुआ है कि जापान सस्ता पैदा करनेवाले देश भारतकी मिलोंको पछाड़ रहा है।

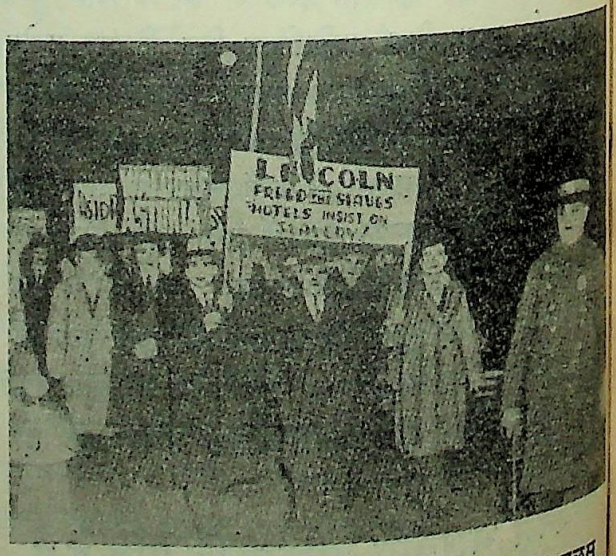


अमेरिकाके खानसामों और बावर्चियोंका हालमें एक जलूस निकला। इसमें उन्होंने बताया कि होटलोंके मालिक सेठ उनको हरिजन या गुलाम बना रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## "लिङ्कनने गुलाम छुड़ाये, पर होटल गुलाम बनाते हैं"

यह पुकार है अमेरिकाके नाना होटलोंके कर्मचारियों-की। ये लोग इस तथ्यको समझ गये हैं कि केवल सेठ ही हरिजन या गुलाम पैदा करते हैं। पाठकोंको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि अस्टोरिया होटलके मालिकने करोड़ों रुपया दान करके वदान्यताकी ख्याति प्राप्त कर रखी है। पर उसके कर्मचारियोंका रोना है कि वह उन्हें दास बना रहा है। हमारे पत्र केवल धनियोंकी प्रशंसासे भरे रहते हैं। यदि इनकी आंखें होतीं और इन्हें जनताका दर्द होता तो वे इन धनियोंके द्वारा श्रमजीवियोंकी जो दुर्दशा होती है उसका वर्णन भी छापते। यूरोप और अमेरिकाके सेठ, जिनके काले कारनामे वहांके शिक्षित मजदूर पुकार-पुकारके कह रहे हैं, भारतके सेठोंसे कई गुना उदार हैं। इसपर भी वे जनताको हरिजन बना रहे हैं। मूर्ख भारतमें तो यह काम खूब आ-सानीसे हो रहा है और इसपर तुर्रा यह है कि ये सेठ देशभक्त और हरिजनोद्धारक भी बताये जा रहे हैं। यही कारण है कि हरिजन आन्दोलन अभी तक कुछ न कर सका।

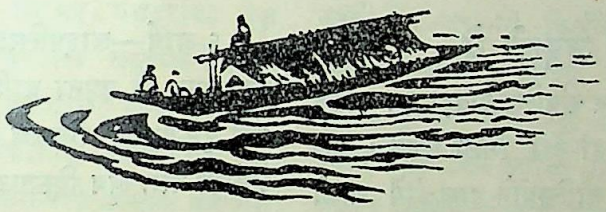


# आज कलकी फेशनबल चीजें—फेन्सी और कम दाम!

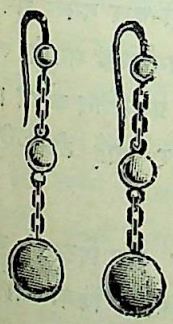

| | | रुपया | रुपया | रुपया | |
|---|---|---|---|---|---|
| चांदीका कटक काम | एरिंग | १॥) | ३) | ५) | जोड़ा १ |
| ,, | मीणाका ,, | २) | ३) | ५) | ,, |
| ,, | झुमका कटक काम | २) | ३) | ५) | ,, |
| ,, | ,, मीणाका | ३॥) | ५) | | ,, |
| ,, | चूड़ी मीणाका | ३) | ५) | | ,, |
| ,, | साड़ीपिन कटकका | २) | ३) | | नग १ का |
| ,, | साड़ीपिन मीणाका मयूर | ३) | | | नग १ का |
| ,, | अंगूठी मीणाका | १।) | | | ,, |

हमारे यहां सोना चांदी और जवाहरातकी चीजें हर वक्त तैयार रहती हैं।
नया और बड़ा केटलोग ।) का टिकट भेजकर मंगाइये।

## के० मणिलाल एण्ड कम्पनी, जौहरी,

१७३, हरिसन रोड, कलकत्ता।

Tel. No. 2741 B. B. Tele. Add. NAVCHETAN.


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## आर्य जर्मन जङ्गली थे

कार्डिनल फाउलहाबर रोमन कैथलिक पादड़ी हैं। सत्यके पुजारी हैं और हिट्लरकी हांमें हां नहीं मिला सकते। इस दोषका दण्ड देनेके लिए उनपर नात्सियोंने हाल हीमें गोली चला दी थी। पर वे न मरे और अब उन्होंने एक छोटी पुस्तिका निकाली है जिसमें नात्सी नपुंसकताका अच्छा चित्र खींचा है। एक स्थानपर उन्होंने लिखा है:—

"इस नपुंसक गर्वको धिक्कार है जो अपनी जातिको देवता और दूसरोंको दैत्य समझता है। उन गीतोंपर लानत भेजनी चाहिए जो अपनी तारीफके पुल बांधते हैं और दूसरोंको गालियां देते हैं। और उन नवयुवकोंपर थूकना चाहिए जो अन्ध-जातीयताके मदसे मत्त होकर मनुष्योंका संहार कर रहे हैं।" इस पुस्तिकामें श्री फाउलहाबरने नात्सी दलकी निर्बल गर्वस्फीतताको उचित रूपसे फटकारा है। पर क्या नात्सी उससे कुछ शिक्षा ग्रहण करेंगे? हम तो ऐसी आशा करना मूर्खता समझते हैं।

## पत्रोंको सरकारी आज्ञा

जर्मन पत्रोंपर नात्सी सरकारकी सबसे कड़ी निगाह है। जर्मनी-भरमें कोई पत्र ऐसा नहीं जो स्वतन्त्र मत प्रकट कर सके। हिट्लर-राज प्रेसपर कैसी कड़ी निगाह रखता है, इसका पता निम्नलिखित आदेशोंसे लगता है:—

९ मार्च—अमेरिकन सेनामें जो दुर्नीति फैलनेके समाचार आये हैं वे न छापे जायें। इस विषयपर अमेरिकासे जो समाचार आयें उनपर चुप्पी साध लेनी चाहिए।

६ मार्च—लाइपत्सिगमें चैन्सलरने जो भाषण दिया है वह उतना ही छपना चाहिए जितना सरकारी छापेखानेसे छपी पुस्तिकामें निकला है। पर चैन्सलरके लाइपत्सिग जानेकी बात खूब विस्तारसे छापी जाये।

७ मार्च—'न्यूयार्क टाइम्स'में मन्त्री गेब्बलसके साथ उसके संवाददाताकी जो भेंट छपेगी वह जर्मन पत्रोंमें उसी रूपमें छप सकेगी जिसमें सरकारी प्रेससे निकलेगी।

८ मार्च—ईसाई धर्मपर जर्मनीमें जो झगड़ा चल रहा है उसपर अब कुछ न छपना चाहिए। दो-चार नगण्य समाचार छपें तो कोई हानि नहीं। "रूससे जर्मनोंके भगाये जानेके बाबत" सरकार शीघ्र ही एक रिपोर्ट प्रकाशित करेगी। यह पूरी-पूरी छपनी चाहिए, पर इसपर कोई टीका-टिप्पणी न हो।

९ मार्च—न्यूयार्कमें 'सभ्यताका शत्रु हिटलर' नामसे एक सभा हुई है। इसपर कुछ प्रकाशित न किया जायेगा। इसपर 'प्रचार-मन्त्री' के दफ्तरमें विचार होगा कि इस सभाका कुछ महत्त्व है या नहीं? तब सरकार ठीक समाचार भेजेगी।

* * *

१७ मार्च—नात्सी युवकोंके नेताने कैथलिक युवकोंके नामपर जो अपील निकाली है, उसपर अधिक आलोचना न होनी चाहिए। चैन्सलर हिट्लरपर जो समाचार छपते हैं उनसे यह न मालूम होना चाहिए कि हमारे नेता कैसरके तुल्य हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इन सरकारी आदेशोंसे स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि जर्मनीके पत्र छोटी-छोटी बातें छापनेके लिए भी सरकारका मुंह ताकनेको बाध्य किये जाते हैं। इसपर हमारे पत्रकार बिना समझे-बूझे नात्सी दलकी तारीफके पुल बांधने लगते हैं।

## रूसका दूसरा पञ्चवर्षीय कार्यक्रम

पहले पञ्चवर्षीय कार्यक्रमने रूसको एक औद्योगिक देश बना दिया है। इस समय वहां सब तरहकी मशीनें बन रही हैं और गल्लेकी भी ऐसी बहुतायत हो गयी है कि यदि बाहरसे वहांको कुछ भी न जाये तो रूस अपना पेट अपने देशकी उपजसे ही भर सकता है। पर यह मजदूरोंका देश इतनेसे सन्तुष्ट नहीं है। उसे संसारके सब सेठतन्त्र देशोंका मुकाबला करना है, इसलिए वहां अब दूसरा पांच सालाना कार्यक्रम जोरोंसे चल रहा है। औद्योगिक उन्नति एक बार आरम्भ होते ही स्वयं नयी-नयी समस्यायें उत्पन्न कर देती है। मशीनें मशीनोंको बढ़ाती हैं। वही रूसमें हो रहा है।

नये कार्यक्रमसे रूसके सब कृषियन्त्र पूरे वैज्ञानिक और अति आधुनिक बन जायेंगे। इस कार्यक्रमके पूरे हो जाने-पर १९३७ में ८० सैकड़ा यन्त्र रूसमें ही बनने लगेंगे। ऐसी भी आशा की जा रही है कि उस समय तक सभी कृषियन्त्र रूसमें ही बनने लगें।

जिन-जिन कामोंमें मजदूरोंको कष्ट मिलता है या जिनसे उनका स्वास्थ्य बिगड़ता है वे उस समय मशीनोंकी सहा-यतासे होने लगेंगे। उस समय तेलकी खानोंमें ९३ सैकड़ा काम मशीनें करेंगी और धातुकी खानोंमें ८० प्रतिशत।

बिजलीका इतना अधिक प्रचार हो जायेगा कि गांव-गांव और वन-पर्वतोंके अकेले-दुकेले घरोंमें भी वह पहुंच जायेगी। अधिकांश रेलें भापसे नहीं, बिजलीसे चलेंगी। दूर-दूर प्रदेशोंमें माल ढोनेके लिए बिजलीके पथ बनेंगे।

इस कार्य-क्रममें लोहा और इस्पातका व्यवसाय पूर्णता-को पहुंचा दिया जायेगा। मजदूरोंकी दशा इस बीच और भी अधिक सुधर जायेगी। इस समय पहले कार्य-क्रमके कारण रूसमें बेकारी नहीं है और सब श्रमजीवी भली भांति अपना पेट भर रहे हैं। पर १९३७ में उनकी मजूरीमें ही १९३२ की तुलनामें प्रायः सवा दो गुना वृद्धि हो जायेगी। रूसके मजदूरोंकी संस्कृति भी १९३७ तक बदल जायेगी; क्योंकि वे सब मिलजुलकर पञ्चायती जीवन व्यतीत करने लगे हैं जो तब तक पूर्णताको पहुंच जायेगा।

इस अवधिमें शिक्षाका प्रचार बहुत बढ़ जायेगा। छात्रोंकी संख्या प्राइमरी स्कूलोंमें ही प्रायः चार करोड़ हो जायेगी।

## अमेरिकाकी 'बलवान्' अबलायें

इलिनाइस प्रदेशके बेलवील नगरके मर्दोंपर आफतका पहाड़ टूट पड़ा है। वहांकी म्युनिसिपलिटीपर स्त्रियोंका अधिकार है और वहांसे वे अपने दुर्बल पतियोंपर शासन करती हैं। जरा भी किसीके पतिने चीं-चपड़ की कि उसकी कमबख्ती आयी। शराबी पतियोंकी तो बड़ी दुर्दशा हो रही है। नारियोंके इस राजमें म्युनिसिपलिटीने निश्चय किया है कि जिस स्त्रीका पति सब तरह लायक न हो उसकी सूचना म्युनिसिपलिटीके दफ्तरमें आते ही उसकी मरम्मत की जायेगी। जिस शराबखाने, रेस्टोरैण्ट, कहवाघर, क्लब आदिमें पति जाये वहांके मालिकों और अधिकारियोंको सूचना दी जायेगी कि वे उसे अपने यहां न घुसने दें। बस, पतिपर सामाजिक बहिष्कारकी छाप लग जायेगी। इस प्रकार बिचारा पति पत्नीका सच्चरित्र सेवक बननेको बाध्य होगा।

## नया कालमुक साहित्य

कालमुक जाति रूसके दक्षिण और चीनके पड़ोसमें फैली हुई है। १९१७ तक इनका कोई साहित्य न था। इस भाषामें पुस्तकें ही न थीं। ये लोग निरक्षर भट्टाचार्य बने, आनन्दसे अपना जङ्गली जीवन बिताते थे। पर इस समय कुछ लाख कालमुकोंकी भाषामें प्रायः बीस समाचार और मासिक पत्र निकलते हैं। पचास खण्ड तो उस पुस्तकके निकल गये हैं जिसमें कालमुक-साहित्यके लेखकोंका चयन भरा हुआ है। रूसी क्रान्तिके बाद यह साहित्य दिन दूनी रात-चौगुनी उन्नति करने लगा। जो लोग कभी अपढ़ मजदूर थे, आज अपनेको उत्तम साहित्यिक सिद्ध कर रहे हैं। एरेण्ड येनोफ, बातिर-बासाङ्गोफ, काचिर-सानबिएलगीन आदि साहित्यिक ऐसे ही हैं। रूसके अन्य प्रदेशोंसे कई साहित्यिक आकर यहां बस गये हैं। वे कालमुक साहित्यको प्रोत्साहन दे रहे हैं। इस प्रकार स्टालीन ग्राडमें साहित्यिक जीवनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



फ़व्वारा फूट पड़ा है। हाल-हालमें एक नया लेखक उत्पन्न हुआ है। इसका नाम है मात्साकोफ। इसके विषयमें कहा जाता है कि वह साहित्यमें क्रान्ति पैदा कर देगा।

## वाहरे! जर्मनोंका सन्तानवृद्धिका खब्त

एक जर्मन पत्र 'लाण्डावर आनत्साइगर' के २४ फरवरीके अङ्कमें छपा है :—"वेरेस्टाद्त नगरकी पक्षी संरक्षण सभा अब यह भी प्रयत्न करेगी कि जर्मन अपनी सन्तानवृद्धिमें दिलचस्पी लें। हालमें इसकी एक बैठक हुई। उसमें इसने निश्चय किया कि किसी सभ्यके सन्तान होनेसे वह उसे पुरस्कार भेंट करेगी। इनाममें ताजे अण्डे मिलेंगे। जिसके एक पुत्र पैदा होगा उसे तीन दर्जन अण्डे और जिसके कन्या होगी उसे केवल दो दर्जन अण्डे भेंट किये जायेंगे।" इससे एक नयी बात यह भी मालूम होती है कि जर्मनोंके आर्य बन जानेके बाद वहां बेटा और बेटीके महत्त्वमें भी फर्क आ गया है। पुत्रकी तुलनामें कन्याका मूल्य केवल दो तिहाई रह गया है। धन्य हो यह आर्यधर्म!

---

## श्री जयचन्द्र विद्यालङ्कार

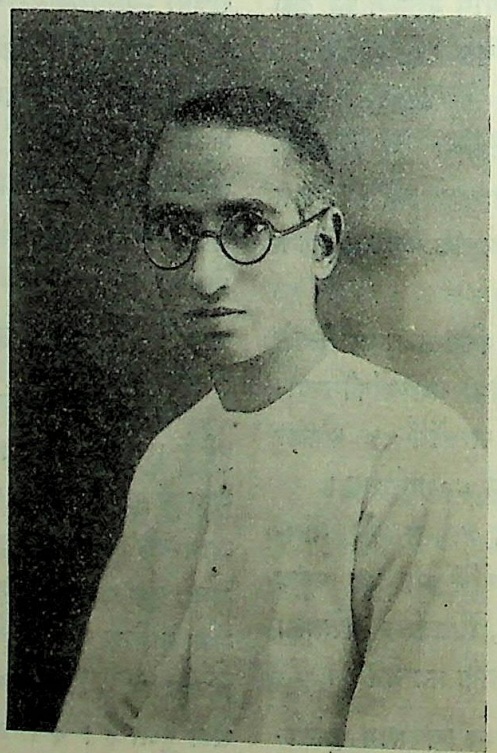

आपको "भारतीय इतिहासकी रूप-रेखा" नामक पुस्तकपर मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक मिला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बिजलीके चमत्कार

## बिजलीकी जीभ

विश्वमें बिजलीका राज है। बिजली सब पदार्थोंमें किसी-न-किसी रूपमें वर्तमान है। जब पानीमें हलकी लहरें उठती हैं या प्रचण्ड तूफान महासागरको मथनेकी चिन्ता करता है तो विद्युत् ही अपने सूक्ष्म और प्रचण्ड रूपमें इनमें खेलती है। प्रकट रूपसे तो यह हवाका खेल है; पर वायुके भीतरकी दामिनी दमककर अपना प्रताप दिखाती है। यह तो हुआ, पर फलफूलोंमें जो स्वाद हम पाते हैं वह भी इस बिजलीका खेल है। यह तथ्य अमेरिकाके अध्यापक हिचकाकने निकाला है। बकौल उसके छहों रस विद्युत्के नाना परिमाणोंके रूप हैं। जो फल जितना खट्टा है उसमें उतनी अधिक और जो जितना मीठा या पका है उसमें बिजली उतनी कम पायी जाती है। अधिक खट्टा पदार्थ मुंहमें डालनेसे जो सूरत बिगड़ने लगती है वह हमारी वितृष्णाका फल नहीं है। असलमें अधिक बिजली होनेसे जीभके स्वाद-कोषोंमें

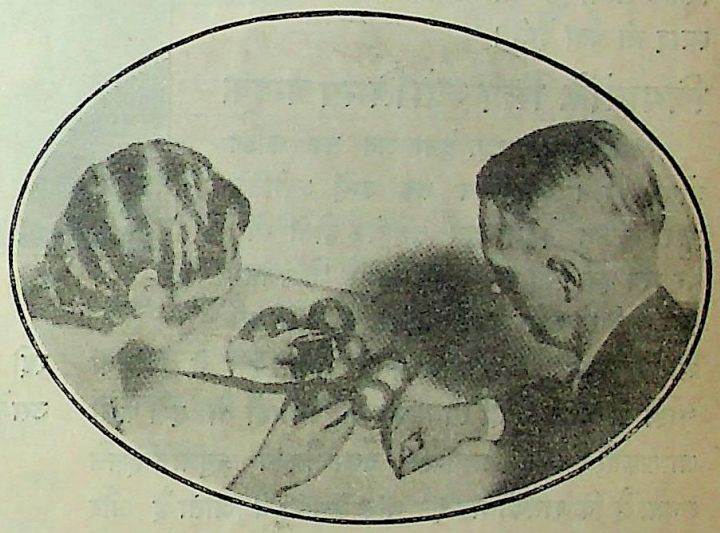

बिजलीकी जीभ

उसका जोरका धक्का लगता है और उससे हमारा चेहरा बिगड़ जाता है। एक रोज हिचकाक भोजन करने बैठे हुए थे कि उनके ध्यानमें आया कि फलोंमें भी बिजली होती है और इसे नापना चाहिए। चटसे उन्होंने विद्युत्-यन्त्र लिया और उसकी दो सुइयां सेवमें गोद दीं। बिजलीका मीटर सरासर चढ़ने लगा और १० मैक्रोआम्पेयरमें जाकर ठहर गया। इस प्रकार नाना फलोंकी विद्युत्-शक्ति नापी गयी और परिणाम यह निकला कि अधिक बिजली तुर्शी पैदा कर देती है और कम मिठास बढ़ाती है। इस विद्युत्-मापक यन्त्रसे हथेली, बाल और मुंहकी बिजली तथा दशाका परिचय भी मिलता है। इसकी सहायतासे शीघ्र ही ऐसा समय आ जायेगा कि डाक्टर लोग मुंहकी दशा इससे जानेंगे और यह भी बता देंगे कि पेटमें कितनी खटास मन्दाग्नि या अजीर्ण पैदा कर रही है। इस यन्त्रकी सहायतासे पेड़में लटकते हुए फलकी दशा मालूम हो जायेगी। यह यन्त्र लगाकर तुरत

ज्योतिकी प्रखर किरणें दागनेवाली बन्दूक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पता लग जायेगा कि कौन फल पक गया है और कौन कच्चा है। जो व्यवसायी फलोंको टिनोंमें बन्द करके बेचते हैं वे भी इस बिजलीकी जीभकी सहायतासे यह जान सकेंगे कि किस फलका क्या स्वाद है। विज्ञानकी करामात देखिये कि अब तक बिजलीकी नाक, कान, शब्द, फेफसे निकले थे, अब जीभ निकल आयी है जो विषको चखकर उसका स्वाद भी बता देगी।

## विमानोंके लिए ज्योतिमय बन्दूक

विमानोंको आज्ञा देना अब तक कठिन होता था। आसमान तक उन्हें ज्योतिके द्वारा सूचना देनेमें बहुत तकलीफ होती थी। पर अब एक ऐसी बन्दूक बन गयी है जो वजनमें कुल साढ़े तीन सेर है और दिनके समय भी दस मील दूर तक ज्योतिकी तेज किरणें दागती है। ये रश्मियां चाहो तो लाल, चाहो तो सफेद और चाहो तो हरी फेंकी जा सकती हैं। इस प्रकाशकी चकाचौंधका अनुमान इससे लगता है कि रातको यह १९ मील तक पहुंच जाता है और इसकी तेजी साढ़े तीन लाख मोमबत्तियोंके बराबर है।

## नया कागज सेलूलायड

सेलूलायड नया कागज है। यह पट्टेकी तरह मुड़ जाता है और धातुकी तरह चाहे इसे जैसे ढाल लिया जाये। भारतमें भी अब इसका सामान बनने लगा है। पर असल पदार्थ सेलूलायड हमारे देशमें नहीं बनता। इसके ताव विदेशसे आते हैं और वे यहां नाना रूपोंमें ढाल लिये जाते हैं। हम लोग सिर्फ ढालनेका काम करते हैं। सेलूलायड दुनियाके अधिकांश पदार्थोंमें पाया जाता है और

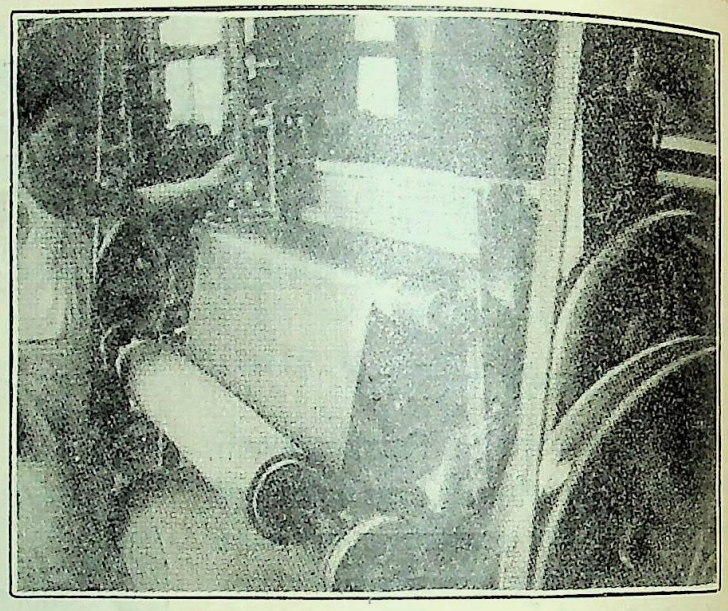

सेलूलायडका एक ताव

रद्दी चीजोंसे यह बनाया जाता है। पाठक चित्र देखें। उसमें इस विचित्र कागजके ताव बन रहे हैं।

## प्लेगके कीड़ोंके नाना रूप

चित्रमें पाठक देखेंगे कि चूहोंके रक्तमें प्लेगके कीटाणु किस प्रकार बढ़ते हैं। ये अणु, जो इस चित्रमें सैकड़ों गुना बड़े छापे गये हैं, मृत्युके अचूक दूत हैं। ये प्रति घण्टे करोड़ों-की संख्यामें बढ़ते हैं और जहां पहुंचे, महामारी फैला देते हैं।

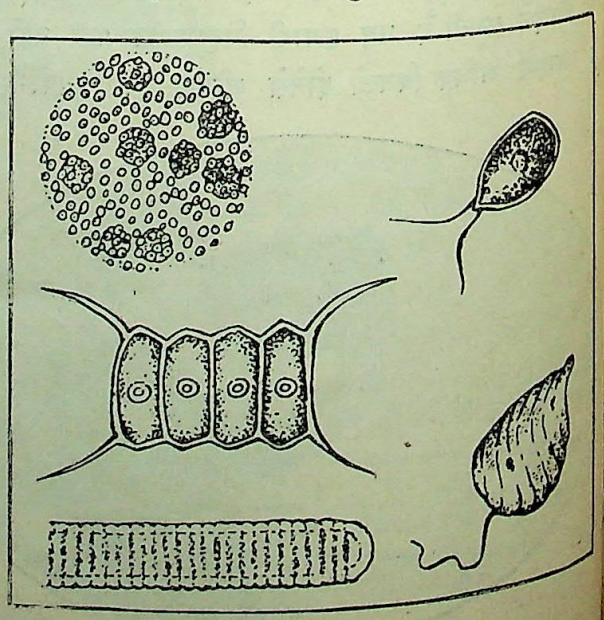

प्लेगके कीटाणु

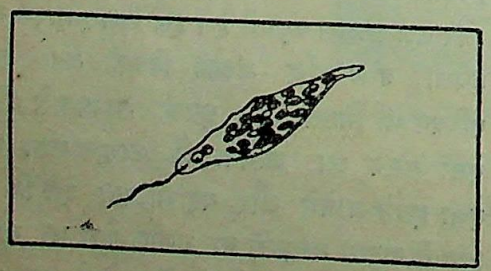

प्लेगके कीटाणु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कांग्रेसकी लूट

जहां सेठ और वकील जायेंगे वहां किसी-न-किसी रूपमें लूट मचना विधि-सङ्गत और स्वाभाविक है। कांग्रेसको म० गांधीके मित्र कुछ सेठोंने खूब मनमाना नाच नचाया और वकीलोंने अपने दावपेच लगाये। इसका ज्वलन्त प्रमाण कलकत्ता कारपोरेशनका वह मल्लयुद्ध है जो दस वर्षसे चल रहा है। कांग्रेसके नामपर जनताको ये नेता किस प्रकार ठग रहे हैं, इसका वीभत्स दृश्य जिसे देखना हो वह बङ्गालकी राजधानीमें आकर अपनी तृप्ति कर ले। हालके निर्वाचनको ही लीजिये। कांग्रेसके नाम एक दलने एक सेठ नलिनी-रञ्जन सरकारको अपना उम्मीदवार बनाया और उसे यह पूरी आशा थी कि नलिनीरञ्जन सरकार कारपोरेशनका मेयर चुन लिया जायेगा, क्योंकि सरकारी नामजद और यूरोपियन मेम्बर पूर्ण स्वराज्यके लिए लड़नेवाली कांग्रेसके इस उम्मीद-वारको वोट देनेवाले थे। दूसरे दलने, जो अपनेको गर्वके साथ डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस एसोसिएशन कहता है, ऐसी चाल चली कि इन सरकारी नामजद और यूरोपियन मेम्बरोंको निर्वाचनके अधिकारसे अचानक वञ्चित कर दिया। यह सब किसलिए? क्या कांग्रेसके ये दो दल इस प्रकार अपने नैतिक पतनका प्रमाण देकर देशको पूर्ण स्वराजकी ओर ले जा रहे हैं? कहां दरिद्र जनता और कहां नलिनीरञ्जन सरकार और कहां कांग्रेस? यह देखकर बुद्धि चक्कर खाने लगती है। ये लोग, जो अपनेको कांग्रेसके नेता बताते हैं, किस प्रकार कांग्रेस-की लूट मचा रहे हैं? कांग्रेसके नामपर जनताका वोट अपनी ओर करना और तब वहां अपना स्वार्थ सिद्ध करना इनका उद्देश्य न होता तो क्या एक कलकत्तेमें कांग्रेसके दो दल शत्रुओंकी भांति लड़ते और पतितसे पतित उपायोंसे कारपोरेशनको अपने अधिकारमें करना चाहते? नलिनी-रञ्जन सरकारको खड़े करनेवाले दल 'कांग्रेस म्युनिसिपल एसोसिएशन' के प्रमुख नेता डा० विधानचन्द्र राय हैं। ये ही महात्मा

## नयो स्वराज-पार्टीके नेता

हैं। और कलकत्ता कारपोरेशनके मेयरके चुनावके अवसर-पर सरकारी नामजद और यूरोपियन मेम्बरोंकी कृपापर अपनी विजयकी आशा बांधकर इन्होंने भावी स्वराज-पार्टी-की रूपरेखा जनताके सामने रख दी है। जो नेता कारपोरेशन-में विजय प्राप्त करनेके लिए इतने गिर सकते हैं वे कौन्सिलों और एसेम्बलीमें क्या करेंगे? यह अब जटिल समस्या नहीं रह गयी। इसका दूसरा प्रमाण श्री

## रंग ऐयर

ने दिया है। ये कभी स्वराज-पार्टीमें थे और फिर सदा ही राष्ट्रीय दलोंमें रहे। पर 'देशी राज्य संरक्षण बिल' के समय सरकारकी ओर चले गये। इस बिलके वाद-विवादके समय इन राष्ट्रीय सदस्योंपर ऐसे अभियोग लगाये गये, जिनपर सहसा विश्वास नहीं होता। मि० पुरीने कहा कि श्री रङ्ग ऐयरने तीस हजार रुपये ऐंठने चाहे और मि० पुरीने ललकार कर यह भी कहा कि यदि रङ्ग ऐयरको दम हो तो वे उनपर अदालतमें मानहानिका दावा करके साबित कर दें कि उनका अभियोग मिथ्या है। ये रङ्ग ऐयर कभी कांग्रेसके प्रमुख नेता रह चुके हैं और आज भी पक्के राष्ट्रीय बने हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## जी हजूरोंसे दोस्ती

एक समय था जब सरकारी नामजद और यूरोपियन मेम्बर भारतके हितके परमशत्रु और जी हजूर बताये जाते थे। डा० विधानचन्द्र रायके दलका मुखपत्र 'फारवर्ड' उन्हें 'जो हुकम' और 'आपके वास्ते' उपाधि देता था। पर कारपोरेशनमें अपना अधिकार करनेकी धुनने इसे ऐसा पागल बना दिया कि इनसे उसने दोस्ती की और अब स कांग्रेसी पत्र तथा उसके दलकी यह दशा है कि ये सरकारको अपने अधिकार काममें लाकर मेयरके निर्वाचनको रद्द करानेकी सलाह दे रहे हैं। और यही लोग दूसरी ओर देशको बता रहे हैं कि स्वराज पार्टीकी फिरसे स्थापना करके वे सरकारको लोहेके चने चबवा देंगे।

## स्वराजी नेता विधानचन्द्रपर एक सम्मति

स्व० जतीन्द्रमोहन सेनगुप्तके पत्र 'एडवान्स'ने बङ्गाल-की स्वराज-पार्टीपर मत दिया है—"दिल्ली कान्फरेन्सके प्रवर्तकोंको ख्याल करना चाहिए कि बङ्गालके नामधारी कांग्रेसकर्मी, जो उनके विश्वासपात्र बने हुए हैं, कलकत्ता और बङ्गालमें कोई प्रभाव नहीं रखते। वे तो यूरोपियन भारत-हितविरोधियोंके हाथके कठपुतले हैं। उन्हें सेठोंकी गली क्लाइव स्ट्रीटसे प्रेरणा मिलती है और डलहाउसी स्क्वायर उनका मित्र, पथप्रदर्शक और ज्ञानका सोता है। ये लोग उस स्वराजको जन्मदान कर रहे हैं जिसे म० गांधी ने आशी-र्वाद दिया है।"

## वसुमतीकी राय

इस बङ्गाली पत्रने स्वराजी नेता विधानचन्द्रपर सम्मति दी है—"समय खराब देखकर इस बार सन्तोषकुमार वसु खिसक पड़े। श्रीयुत नलिनीरञ्जन सरकार बिड़लाकी कृपा-से अखिल भारतीय वणिक्सभाके अध्यक्ष हैं। इसलिए इन्हें मेयरके सिंहासनसे हटा रखनेकी इच्छा डा० विधानचन्द्रकी न हुई। व्यवस्थापिका सभाका निर्वाचन भी तो सामने आ पहुंचा है। ऐसे समय क्या नलिनीरञ्जनके समान सेठको नाराज करनेसे काम चलेगा!" इस प्रकार कई नेता स्वार्थ-के लिए कांग्रेसमें सेठोंको जबर्दस्ती नेता बनवा रहे हैं और फल यह हो रहा है कि कांग्रेस अपने निर्दिष्ट पथसे बहकती जा रही है। यह बात पं० जवाहरलाल नेहरू समझे बैठे हैं और इसीलिए उन्होंने इस बार कांग्रेसको असफल करनेमें सेठोंकी चालोंका कुछ निदर्शन जनताको कराया था।

## स्वराज-दलकी अनिवार्यता

इस स्थितिमें यह अनिवार्य था कि स्वराजपार्टीका पुन-रुद्धार किया जाये। यह काम कांग्रेस या म० गांधीने स्वेच्छासे नहीं, सेठों और वकीलोंके फन्देमें फंसकर विवश हो किया है। इस विषयपर हम अपनी वह सम्मतियां अविकल रूपसे उद्धृत करते हैं जो हमने गत जुलाई मासमें लिखी थीं।

## कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन

( मासिक 'विश्वमित्र' जुलाई १९३३ से )

कांग्रेस कहां जा रही है यह प्रश्न आजकल अनेक देश-भक्तोंको व्यथित कर रहा है। सत्याग्रह आन्दोलन अब तक कांग्रेसका प्राण बना हुआ था; पर चाहे जिस कारण हो, सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया है। ऐसा भी मालूम होता है कि यह अब बन्द हो जायेगा। इसका निर्णय हमारे पाठक एक मासके भीतर ही जान जायेंगे। महात्मा गांधी धीरे-धीरे इसके लिए देशको तैयार कर रहे हैं और कांग्रेस-वादी जनता भी इस ओर है, क्योंकि उसने सुभाष बाबू और श्री वी० जे० पटेलका प्रोग्राम ग्रहणीय नहीं समझा है। कई नेता भी सत्याग्रह आन्दोलनकी दुर्बलताको समझ गये हैं। बम्बई क्रानिकलमें श्री बी० जी० हार्निमैनने लिखा है—"मेरा दृढ़ विश्वास है कि ऐसा आन्दोलन बन्द हो जाना चाहिए जिसके पक्षमें जनता बिलकुल नहीं है। ऐसे आन्दोलनको जारी रखना जुर्म है।" ये हार्निमैन महोदय कांग्रेसके कट्टर पक्षपाती हैं। यह तो हम सब देख रहे हैं कि अब सिविल डिसओबीडियन्स आन्दोलन बेकार मालूम होता है। किसी नेताको इसके पुनरुद्धारका मार्ग नहीं सूझ रहा है। इन बातोंसे यही अनुमान निकलता है कि शीघ्र ही कांग्रेस खद्दर-प्रचार और हरिजनोत्थानपर अपना सारा बल पिलायेगी। म० गांधी—बहुत सम्भव है हरिजनोत्थानको ही अपने जीवनके अन्तिम दिनोंका ध्येय बनायेंगे। इधर ऐसे भी लक्षण दिखायी दे रहे हैं कि म० गांधीजी या कांग्रेस-के प्रतिनिधियोंकी सरकारसे सुलहकी बातचीत चलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तब 'स्वराज' दलको नया जीवन मिलेगा और हमारे नेता कौन्सिलों और एसेम्बलीमें जायेंगे।

## कौन्सिल और कांग्रेस

( मासिक 'विश्वमित्र' जुलाई १९३३ से )

कांग्रेसवाले कौन्सिलोंमें नहीं जाते। उन्होंने इनका बायकाट कर रखा है। पर यह देखकर आश्चर्य होता है कि जब रङ्ग आयरने एसेम्बलीमें 'अछूत बिल' पेश किया था तब सभी नेता उसे आशीर्वाद दे रहे थे और श्रीराजगोपालाचारियर आदि नेता म० गांधीके प्रतिनिधि-रूपसे पूरा प्रयत्न कर रहे थे कि इस बिलका सब गैर-सरकारी मेम्बर समर्थन करें। उस समय कांग्रेसकी निस्सहायावस्थाका पता चला। जिस एसेम्बलीका हमने बायकाट कर रखा था, उसमें बिल पास करानेके लिए हमारी व्यग्रता हमारी सरलताका परिचय दे रही थी। कांग्रेसके नेता उस समय सत्य हृदयसे चेष्टा कर रहे थे कि उक्त बिल कानून बन जाये और अछूतोंका उद्धार हो जाये। यह स्थिति उन कांग्रेसवालोंको खल रही थी जो स्वराजपार्टीमें रह चुके थे। इसलिए हमारे मुमूर्षु आन्दोलनकी वर्तमान डांवाडोल दशामें वे शीघ्र ही कांग्रेससे प्रार्थना करेंगे कि 'स्वराज-पार्टी' की पुनर्स्थापना की जाये। म० गांधी इस नीतिको अवश्य ही हानिकर समझते हैं, पर इधरकी घटनाओंके कारण वे इसका तीव्र विरोध कर सकेंगे ऐसी आशा नहीं है। कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन अनिवार्य हो गया है। सुभाष बाबूकी उग्रतासे देशके अधिकांश कर्मी घबरा रहे हैं, इसलिए भविष्यमें कांग्रेस हरिजनोत्थानपर जोर देगी और राजनीतिक क्षेत्रमें स्वराज-पार्टीका अनुसरण करेगी। कभी गवर्नमेण्टसे लोहा लेगी तो कभी उससे मेल करेगी। हमारा विचार है कि वर्तमान अड़ियल स्थितिसे उस समय अधिक काम होगा।

## कांग्रेसमें दलबन्दीकी आशङ्का

( मासिक 'विश्वमित्र' जुलाई १९३३ से )

कांग्रेसपर सङ्कट आया है। सत्याग्रह आन्दोलन असफल हुआ यह तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि जो-जो देशभक्त शुद्ध हृदयसे इसमें शरीक हुए उनको स्वराज मिल गया अर्थात् उनकी आत्मा बलीयान् बन गयी और वह मुक्ति-की ओर बढ़ी। पर अब इस आन्दोलनके सामने एक दुरूह दीवार आ गयी है जिसे लांघना किसीके हाथमें नहीं है। इसलिए कांग्रेस इस समय ऐसे चक्करमें पड़ गयी है कि न तो आगे बढ़ सकती है और न पीछे ही पग रख सकती है। इस स्थितिमें सब बेचैन हैं कि नीतिमें ऐसा परिवर्तन किया जाये कि यह जो 'न ययौ न तस्थौ' की दशा हो गयी है उसका अन्त हो। किन्तु इस विषयपर हमारे नाना ऋषियोंके नाना मत हैं। म० गांधी सत्याग्रहपर अपना मत नहीं बदलते। वे तो स्पष्ट कहेंगे कि सत्याग्रह किसी भी देश या जातिके उद्धारका एकमात्र पथ है। उनका यह मत सत्य भी है; क्योंकि यदि सारा देश इस मार्गका अवलम्बन करे तो अविलम्ब देशको 'पूर्ण स्वराज' प्राप्त हो जाये। १९२१ में महात्माजीने घोषणा कर दी थी कि यदि सारा राष्ट्र उनके मतको अपना ले और उसके अनुसार काम करने लगे तो सालभरके भीतर ही भारत स्वतन्त्र हो जाये। पर दुर्भाग्यसे सब देशवासी उनके साथ न हो पाये और स्वराज्य अब तक भी न आ सका। लेकिन महात्मा गांधीका मत सत्य था और है। इस समय भेद केवल इतना ही है कि हम जान गये हैं कि "भिन्न-रुचिर्हि लोकः" सब मनुष्योंका एक मत नहीं हो सकता। इसलिए कई नेता ऐसा पथ निकालनेके लिए व्यग्र हैं जिसमें बिना सारे देशकी सहायताके देश मुक्तिकी ओर बढ़े। कुछ नेता कौन्सिलोंमें जाकर शासनको तङ्ग करनेमें और देशका ध्यान उसकी त्रुटियोंकी ओर खींचनेमें देशको स्वराजकी ओर बढ़ानेका मार्ग देखते हैं। ये फिर स्वराज-पार्टीको जीवित करनेके प्रयत्नमें हैं। ये तीन दल स्वयं कांग्रेसके भीतर रहेंगे। ये पहले भी थे। लाहौर कांग्रेसमें उग्र दलका इतना बहुमत था कि प्रतिनिधियोंके मत एक-एक करके गिने गये और तब मालूम हुआ कि उसके अनुयायियों-की संख्या म० गांधीके अनुयायियोंसे थोड़ी ही कम थी। ये सब उग्र मत न रखते थे। इनमें कुछ नरम भी थे, पर वे महात्माजीसे मतभेद रखते थे। किन्तु उस समय महात्माजीका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। कांग्रेसमें दलबन्दी होनेकी सम्भावनाके साथ ही यह प्रश्न उठता है कि क्या कांग्रेस तब कुछ ठोस काम कर सकेगी? और क्या म० गांधीका प्रताप अक्षुण्ण रहेगा? हम तो चाहते हैं कि देश एक नेताके नीचे स्वराज्य-संग्राममें आगे बढ़े; पर परिस्थितिका अध्ययन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करके हमें भय होता है कि बङ्गालकी भांति कहीं भारतीय नेता आपसमें ही न लड़ने लगें।

## घोर पतनकी आत्मग्लानि

म० गांधीके ये शब्द—"मैं अब तक अन्धा था और अन्धा होना किसी भी नेताके लिए महा अपराध है।" सारे भारतकी आत्मग्लानिके द्योतक हैं। अब तक म० गान्धीको पता न था कि हमारा भारत सत्याग्रहके अयोग्य है। अब उन्हें हमारा यह दोष मालूम हुआ है। हमारी यह दुर्दशा देखकर म० गांधीके मुंहसे ये उद्गार भी निकले—"निश्चय ही मैं ऐसे बहुत-से अवसर देख रहा हूं, जिनमें सरकारके साथ सहयोग हो सकता है और होना भी चाहिए।" यह मत महात्माने उस सरकारपर दिया है जो कभी उनकी रायमें सोलहों आने शैतानका अवतार थी। सच है म० गांधीकी "हालत उस व्यक्तिकी तरह है जो रोज कुंआ खोदता और रोज पानी पीता है। इसलिए मैं नहीं कह सकता कि अपने सहकर्मियोंको युद्ध छेड़नेका आदेश देनेके लिए मेरे हृदयमें कब पुकार उठेगी।"

## सर हैरी हेगकी कट्टरपन्थी सलाह

हमारी अन्ध कट्टरताने भारतको डुबानेमें पूरी सहायता की है। हमारे प्राचीनसे प्रेम और नवीनकी अवज्ञाने देश-को रसातल पहुंचा दिया है। अंगरेज लोग नवीनताका स्वागत करते हैं और परिस्थितिके अनुसार अपनेको बदलना वे आवश्यक समझते हैं। पर भारतको सलाह देते समय वे लोग भी कट्टरताकी पीठ ठोकते हैं और उसकी दुहाई देते हैं। उस रोज देशी राज्य संरक्षण बिलकी प्रशंसामें बोलते हुए सर हैरी हेगने भी यही किया। वे बोले—"हम नवीन भारतका निर्माण कर रहे हैं। यह उन देशोंकी नकल न होगा जिनकी सभ्यता और रूढ़ियां दूसरी हैं। हम आशा करते हैं कि यह स्पष्ट ही भारतीय भारत होगा। पर यह आशा सफल न होगी यदि हम पुरानी रूढ़ियों और विचारों-का परित्याग कर दें। हम प्राचीन संस्थाओंको तोड़ने-फोड़ने लगें तो पश्चिमका अनुकरण करनेसे काम न चलेगा। हम परिवर्तन करेंगे; पर पुरानी बातोंका ही उद्धार करेंगे।" ये शब्द ऐसे हैं कि किसी कट्टरपन्थी भारतीयके मुखसे निकल सकते हैं। धन्य हैं सर हैरी हेग, जो 'सनातन-धर्मकी जै' बोल रहे हैं। आशा है कट्टरधर्मी उनको अपना गुरु बनानेमें न हिचकेंगे।

## नीला नागिनी

नीला क्रैम क्रुक अमेरिका पहुंच गयी है। पर भारतसे उसका सम्बन्ध अभी तक न टूटा। उसने रिपोर्टरोंसे कहा—"मैंने जहाजपर अपनी जीवनी लिखी है।" उसकी यह जीवनी भारतको बदनाम करनेका ही साधन बनेगी। हमने अपने नवम्बरके अङ्कमें छापा था—"आश्रम छोड़कर इस नवयुवतीने फिर देशमें हलचल पैदा कर दी है। उसने चोरी नहीं की और न किसी व्यक्ति या समाजको हानि पहुंचायी है। इस समय वह 'प्रेमपाश' में बंधकर बह रही है। कुछ दिनोंमें अमेरिका चली जायेगी और तब भारतपर पुस्तक लिखेगी। वह पुस्तक भी धूम मचायेगी, पर भारतके विरुद्ध। हमें तो इस गौराङ्गनाकी विचित्र हरकतोंका यही अन्तिम रूप दिखायी दे रहा है।" अब उसकी सत्यता सामने आ रही है।

## स्व० सर शङ्करन नायर

सर शङ्करन नायरकी मृत्युसे भारतसे एक ऐसा मनीषी और नेता उठ गया जो अपने स्वाधीन विचारोंके लिए प्रख्यात था। यह एक आम रहस्य है कि इस देशभक्तने पञ्जाबपर फौजी शासनका स्वयं लार्ड चेम्सफोर्डके मन्त्रि-मण्डलमें विरोध किया था और इस ही कारण उसे अपने पदसे इस्तीफा देना पड़ा। 'गांधी और अराजकता' नामक पुस्तकमें अपनी स्पष्ट सम्मति छापनेके कारण इस वीरपर सर माइकेल ओडायरने मानहानिका दावा कर दिया था। सर शङ्करन कांग्रेसके अध्यक्ष भी रहे थे।

## भूखे छात्र

स्कूलोंके हेल्ड आफिसर डा० एच० ए० के० लोदीने अपनी सालाना रिपोर्टमें छापा है—"७.३ सैकड़ा छात्र उचित भोजनाभावसे इतने दुर्बल हैं कि वे शिक्षा ही नहीं पा सकते। ऐसे अभागे छात्र निर्धनोंमें ही नहीं, धनियोंमें भी पाये जाते हैं। अधिकांश छात्र किसी-न-किसी रोगसे ग्रस्त रहते हैं।" यह है कानपुरके स्कूलोंके छात्रोंकी दुर्दशा। इसे भारत-भरके छात्रोंकी दुर्बलताका परिचायक प्रमाणदण्ड समझना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

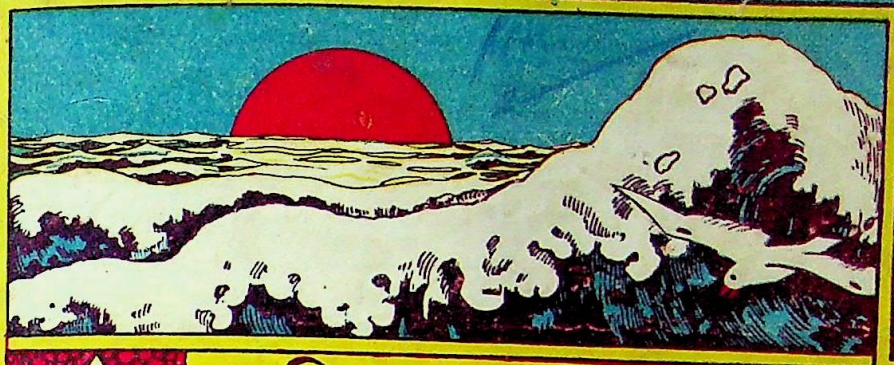

सचित्र मासिक

# विश्वमित्र

सित० १९३४

मूल्य ॥=)

विश्वमित्र कार्यालय
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Varanasi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❀ स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें ❀

नारी रत्न माला

## सती-पार्वती

हर-पार्वतीकी कथा प्रसिद्ध है। इसमें शंकर-प्रिया, गणेश-जननी, सती-शिरोमणि भगवती 'सती-पार्वती' के दोनों अवतारों की मर्मस्पर्शी कथा बड़ी ही सरल, सरस भाषामें लिखी गयी है। यह पुस्तक बहुत पसन्द की गयी है। साथ ही सती-महिमा, दक्ष-यज्ञ-भंग, वीरभद्रका प्रतिशोध, शिव जीका कोप, मदन-दहन, शिवजीका वर-दान आदि कितने ही रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई-सफाई बढ़िया। अब तक हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही सर्व-सुलभ ।।) मात्र।

## देवी-द्रौपदी

इस उपाख्यानमें देवी-द्रौपदीका जन्म, बाल्यकाल, स्वयंवर, विवाह, चीर-हरण, पाण्डवों पर विपत्ति और राज्य-हरण तथा देश-निर्वासन का वर्णन है। विराट राज-महलमें दासी-कर्म, कीचक-वध और अन्तमें कौरवोंसे घनघोर संग्राम। पाण्डवों की विजय-वजयन्ती, भगवान् श्रीकृष्ण का सहयोग और सहायता आदि समस्त बातोंका उल्लेख बहुत ही सरस और सरल भाषामें किया गया है। अनेक भावपूर्ण रङ्ग-बिरंगे चित्र हैं। बढ़िया पेपर और सुन्दर छपाई। मूल्य सर्वसुलभ ।।=) मात्र।

## शकुन्तला

संसार प्रसिद्ध महाकवि, कवि-कुल-गुरु कालीदासके सर्वोत्तम नाटक 'आभि-ज्ञानशाकुन्तलम्' को उपाख्यानके रूपमें लिखा गया है। उपाख्यानकी एक-एक पंक्ति, कवित्व और कल्पना-कौशलसे परि-पूर्ण है। शकुन्तला-उपाख्यान दाम्पत्य-स्नेह, नारी-कर्तव्य, सती-धर्म और विश्व-विश्रुत प्रेमका जगमगाता चित्र है। इसके पढ़नेसे इतिहास, उपन्यास, नाटक और काव्यका एक साथ आनन्द आता है। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे सुसज्जित। बढ़िया छपाई-सफाई। मूल्य ।।=) मात्र।

## शर्मिष्ठा-देवयानी

श्रीमद्भागवतमें शर्मिष्ठा-देवयानीका उपाख्यान आया है। इस उपाख्यानको पढ़नेसे सत्यनिष्ठा एवं नारी कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है। पिताकी मर्यादाकी रक्षा के लिये शर्मिष्ठाने जो आत्मत्याग कर दिखाया, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। देवयानीने क्रोधके वशमें हो जो भया-नक काण्ड उपस्थित कर दिया था, वह शर्मिष्ठाकी सौजन्यता और कर्तव्य-निष्ठा तथा सहृदयताके कारण दूर हो गया। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे संवलित। हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही ।।) मात्र।

मिलनेका पता—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# धातु पौष्टिक चूर्ण

यह चूर्ण—तीन दिनके भीतर ही अपना गुण दिखा देता है, पेशाबकी समस्त बीमारियोंको हटाके दस्त साफ करता है, सब प्रकारका दर्द पीड़ा तथा गिरती हुई धातुको रोकता है, पानी समान पतले वीर्यको एकदम गाढ़ा कर देता है, उपदंश (गर्मी—आतशक) मेह प्रमेह (गनोरिया सुजाक) रोगोंको यह चूर्ण जड़से खो देता है तथा शरीरको बलवान करके स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, स्मरण मात्रसे ही पतन, पेशाबके साथ धातुपात, अधिक विलासिताके कारण कमरमें दर्द, कमजोरीके कारण हाथ पैरोंका कांपना, चक्कर आना, आंखोंके आगे चिनगारियां निकलना, कलेजेका धड़कना, नामर्द हो जाना, इत्यादि रोगोंको दूर कर रक्त शुद्ध करता है और भूख शक्ति तथा वजनको बढ़ाता है जिससे शरीर वज्रके समान मजबूत हो जाता है। जिनमें पुरुषत्व न हो उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त करा कर उनके वीर्यको एकदम गाढ़ा और गर्भ धारण करानेके योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक पूर्ण गुणकारी डिब्बेकी कीमत ९) रु०डा० पै०ख० ॥।) लगेगा।

☞ स्त्रियों के लिये

# स्त्रीरोग निवारक चूर्ण

इस चूर्णके सेवनसे औरतोंकी क्षीणता सब तरहका स्त्रियोंका प्रदर, मासिक धर्मके समय पेट या कमरमें दर्द, मासिक धर्म थोड़ा या कम दिनोंमें होना बिलकुल ही न होगा, असमयमें मासिकधर्म होना, खूनके कतरे गिरना, गर्भाशयमें दोष होनेके कारण गर्भ न रहना, गर्भपात होना, दुर्बल सन्तति होना या होकर मर जाना इत्यादि रोगोंपर २१ दिन चूर्णका सेवन करनेसे गर्भाशय तथा शरीरके सभी दोष दूर होकर मासिकधर्म समयपर होगा और गर्भपात न होकर संतति सशक्त, स्वस्थ (निरोग) उत्पन्न होगी। यहांतक कि ४० वर्षकी स्त्रीको भी इसके सेवनसे निश्चय ही गर्भधारण हो जाता है। २१ दिनतक सेवन करने योग्य चूर्णके १ डिब्बेकी कीमत ९) रु० डा० ख० ॥।) इन चूर्णोंको हरेक स्त्री और पुरुष हर मौसममें खा सकते है।

संतानकी इच्छा करनेवाले लोगोंको यह दोनों ही दवा एक साथ मंगाके स्त्री और पुरुष दोनों हीको एक साथ खानेसे अच्छा होगा। परहेज वगैरह कुछ नहीं करने पड़ते। सेवनविधि साथमें दी जाती है। यह दवायें तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक बार विश्वास रखकर इसे अवश्य मंगावें। इन दवाइयोंमें केवल जड़ी बूटी है। हानिकारक कोई भी चीज यहीं है

# और लीजिये-गर्मी-सुजाककी-अक्सीर दवा

यह पाजी रोग नया हो या पुराना पुरुषके हो या स्त्रीके हो लेकिन इस दवासे १ ही दिनमें फायदा और एक हफ्तेमें आराम और तीन हफ्तेमें जड़से रोग कट जाता है और फिर यह रोग कभी पास नहीं फटकता है अच्छे मार्गमें चलनेसे यह दवा सालसा के माफिक खूनको साफ करके नहा खून रग-रगमें दौड़ा देती है। उपदंस (गर्मी) आतशक और मेह प्रमेह (गनोरिया व सूजाक) को जड़से खो देती है। जरूर मंगाकर देखिये। तीन सप्ताह यानी २१ दिनकी ४२ खुराककी कीमत सिर्फ २॥) रु० डाक खर्च ॥।) आना। गर्मी के घावपर लगानेकी दवा १) रु० शीशी अलग।

स्त्रियोंको भी सूजाक होता है जिसके कारण बार-बार पेशाबका उतरना, जलन होना, बूंद-बूंद पेशाब गिरना पेशनलीसे पानीके समान या गाढ़ा मवादके समान दुर्गन्धयुक्त श्राव निकलना आदि तुरन्त इस दवासे आराम होता है। यह दवा बवासीरको भी आराम करती है। खूनी हो या वादी उपरोक्त दवाके सेवनमें कोई भी झंझट या परहेज नहीं है। यह दवा दवा दिनमें दो बार ठण्डे जलके साथ खानी पड़ती है। इस दवामें नुकसान पहुंचानेवाली कोई भी चीज नहीं है, सब काष्ठ औषधियां ( जंगली जड़ी बूटी ) हैं। सेवन विधि दवाके साथ दी जाती है और हर मरजका इलाज किया जाता है। और—आयुर्वेदीय सब प्रकारकी तैयारी औषधियां तथा काष्ठादिक जंगली जड़ी बूटियां एवं काढ़ा बुटि इत्यादि मिलती है।

पता—भारत भैषज्य भण्डार, नं० १०८ काटन स्ट्रीट, (बड़ाबाजार) कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास

## ❀ मिलन-पूर्णिमा ❀

( सचित्र—सामाजिक उपन्यास )

सौरीन एम० ए० पास हिन्दू-कुलीन था। रेखा थी, एम० ए० तक पढ़ी हुई—ब्राह्मसमाजभुक्त—कुमारी। दोनोंके प्रेम-बन्धनमें सौरीनकी महत्वाकांक्षाने विघ्न डाल दिया। रेखाने सौरीनका रुद्ध मार्ग खोल दिया, परन्तु बिना रेखाके वह कुछ भी न कर सका। इस उपन्यासमें जहां प्रेमकी मन्दाकिनी प्रवाहित होती है, वहां साथही कर्तव्यकी धारा प्रबल-वेगसे वेगवती होकर बहती है और अन्तमें दोनों धारायें, लोक-सेवाके सागरमें जाकर विलीन हो जाती हैं। मूल्य १॥) रुपया मात्र।

## विधवा

रूढ़ियोंके गुलाम, हिन्दूसमाजमें धर्म का नाम लेकर निरीह विधवाओं पर कैसा भीषण अत्याचार हो रहा है और कुलीनताके पाखंडकी ओटमें संबलहीन देवी-स्वरूपिणी विधवाओंका धर्म्म बिगाड़ कर समाजके ठेकेदार, उन्हें वेश्यालयोंमें पहुंचा देते हैं, इसका इसमें बहुत ही करुणापूर्ण चित्र खींचा गया है। काशी-वासके नाम पर होनेवाले पापाचार और विधवाओंकी खरीद-फरोख्त और पण्डे-पुजारियोंके वीभत्स दृश्यों और समाज-पतियोंकी विचित्र धर्मव्यवस्थाको देख कर आपका हृदय कांप उठेगा। मू० ॥)

## अभागिनी

उच्च-शिक्षा प्राप्त करके भी, हिन्दू-स्त्रियोंको समाजकी वेदी पर अपना बलि-दान करना पड़ता है! बड़ीसे बड़ी शिक्षा भी सामाजिक रूढ़ियोंके कारण, उनकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है। शिशिरकी मूर्खता और मिनतीकी प्रेम-निबाहकी घटना, इस लोकका नहीं, देवलोकका त्याग है। सिद्धान्त और पवित्रताके नाम पर—कैसा भयंकर त्याग किया जा सकता है, इसका जीता-जागता प्रमाण है। ऐसा ऊंचे दरजेका विद्वत्तापूर्ण उप-न्यास आपने अभी तक नहीं पढ़ा होगा। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य २)मात्र।

मिलनेका पता—

दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अपने बुढ़ापेमें सुख शान्तिके लिये

अपना आमदनी से थोड़ा बचा बचा कर

# इंडस्ट्रियल एन्ड प्रूडेंशियल एस्योरेन्स कम्पनी लि०

## में जमा करते रहो

विशेष विवरण जाननेके लिये यहांके आफिस

१२, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ताको

पत्र लिखिये



# हिन्दुस्तानकी जरूरतके लिये

## हिन्दुस्तानियों द्वारा संस्थापित मिल की चीजें खरीदिये।

भारतीय मजदूर, भारतीय मूलधन, भारतीय ही प्रबन्ध और भारतवर्षमें ही तैयार की हुई जूटकी चीजें-दरी और आसन, कालीन गलीचे, बिछौनेकी पट्टी इत्यादि और हर तरहके नमूने मंगाइये। आप जब देखेंगे तब आपका दिल जरूर फड़क उठेगा। बड़े बड़े शहरोंमें एजेन्सी दी जा रही है और हरएक जगह एजेन्सियोंकी जरूरत है।

एजेन्सीके लिये पत्र व्यवहार कीजिये

## श्री हनुमान जूट मिल्स,

६१, हरीसन रोड, कलकत्ता।



STAR TRADE MARK (REGD) स्टार ट्रेड मार्क

# डाबर (डाः एस, के, बर्म्मन) लिः

औषध

सेवनके पूर्व

५० वर्षोंसे प्रसिद्ध अतुल्य देशी पेटेण्ट दवाओंका वृहत् भारतीय कार्यालय!

## और भोगना नहीं होगा!

### जूड़ी-ताप (Regd.)

(जूड़ी बुखार व ताप तिल्लीकी दवा)

मैलेरिया तथा पार्रीके बुखारके लिये यह अचूक है। ३-४ खुराक पीते ही मैलेरियाके जीव मरकर बुखारका आना बन्द हो जाता है। इसके सेवन से खून गाढ़ा व दस्त खुलासा होता है। नकली दवासे सावधान!

मूल्य—बड़ी शीशी ।।।≡) पन्द्रह आना। डा० म० ।।≡) छोटी ।।-) नौ आना। डा० म० ।≡)

विभाग नं० २

पोस्ट बक्स ५५४, कलकत्ता।

सेलडिपो—(१) नं० ४ ताराचन्द दत्त स्ट्रीट। (२) नं० २०१ हरिसन रोड

आषध

सेवनके पश्चात


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बालकोपयोगी उत्तमोत्तम पुस्तकें

## भक्त-ध्रुव

भक्तकी महिमा अपरम्पार है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि न मैं मन्दिरोंमें रहता हूं, न बैकुण्ठमें। मैं तो भक्तोंके हृदयोंमें वास करता हूं। भक्त ध्रुवकी भक्ति बहुत ऊंचे दरजेकी थी। बाल्यावस्थामें अपने अपूर्व भक्ति-भावसे ही ध्रुवने वह स्थिति प्राप्त की थी। अल्पमति कोमल-हृदय बालक-बालिकाओंके लिये इस सरल और सरस भाषामें लिखी पुस्तकका पढ़ना आवश्यक है। छपाई-सफाईको देखकर बालक लट्टू हो जाते हैं। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य ॥=) मात्र।

## वीर-अभिमन्यु

वीर-बालक अभिमन्युकी लोकोत्तर वीरता, भारतके इतिहासमें सदा अमर रहेगी। गुरु-द्रोण द्वारा निर्मित विचित्र अभेद्य चक्र-व्यूहमें घुसकर षोड़श वर्षीय वीर-बालक अभिमन्युने प्रचण्ड वीरता प्रदर्शित की थी—तथा कौरव-सप्त महारथियोंने मिलकर अभिमन्युको मार डाला था, उस रोमाञ्चकारी कथाको पढ़कर हृदय कांपने लगता और लोकोत्तर वीरताको देखकर बल्लियों उछलने लगता है। ऐसा सरस और सरल भाषामें लिखा जीवन हिन्दीमें प्रकाशित नहीं हुआ। अनेक रङ्गीन चित्र। मू० वही ॥=) मात्र

## भक्त-प्रह्लाद

सत्याग्रह-मंत्रके आदि-गुरु, भक्तवर प्रहाद और उनके दुष्ट राक्षस-पिताकी कथाको सभी हिन्दू किसी न किसी रूपमें जानते हैं। इसमें प्रह्लादकी जन्मसे लेकर उनके बाल्यकाल, यौवन और बार्द्धक्यकाल तककी समस्त अद्भुत भक्ति-रस-पूर्ण मनोरञ्जक घटनाओंको औपन्यासिक ढङ्गसे मधुर सरल तथा सरस भाषामें लिखा गया है। समस्त घटित घटनाओंके रङ्ग-बिरंगे अनेक चित्र दिये गये हैं। छपाई—सफाई बढ़िया। 'प्रहाद' नामकी निकली सभी पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ। मूल्य वही ॥=) मात्र।

## लव-कुश

स्वनामधन्य मर्यादा—पुरुषोत्तम रामचन्द्र और जनक-नन्दिनी भगवती सीताके बीरबाहु और मंजुल-मूर्ति पुत्रद्वय, लव-कुशकी प्रचण्ड वीरताकी कहानी पुराण प्रसिद्ध है। राम-तनय लव-कुशकी कथा विशद रूपसे औपन्यासिक रूपमें लिखी गयी है। इसको पढ़नेसे बालक-बालिकायें, सार-तत्त्व रूपसे रामायणकी सब घटनाओंको भी हृदयङ्गम कर लेती हैं और लव-कुशकी प्रचण्ड वीरता-प्रतिभा-साधुताका अनुकरण कर अपने चरित्रको उज्ज्वल बना सकती हैं। अनेक रङ्गीन चित्र। मूल्य ॥=) मात्र।

मिलनेका पता:—

**पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# टाटा स्टील

भारतवर्ष में बनता है।

कम्पनीका लोहेका कारखाना ब्रिटिश साम्राज्यमें सबसे बड़ा तथा सुव्यवस्थित है।

निम्नलिखित तैयारी चीजें मिलती हैं। रेल, फिशप्लेट, स्लीपर, इमारती लोहा, काले लोहेके चद्दर, पट्टे, गोल तथा चौरस सरिये, नालीदार तथा सादी जस्ती चद्दरें,

सेल्स आफिस—

१०० क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

Tele. { gram. "IRONCO." CAL.
{ phone. CALCUTTA, 5512.

# अमृताञ्जन पेन बाम

सबसे उत्तम, दर्द दूर करने वाला भारताय मरहम सर्व प्रकारके दर्दोंको दूर करता है। सब जगह मिलता है।

(रजिस्टर्ड) अमृताञ्जन डिपो,

पो० बक्स नं० ६८२५ कलकत्ता।

ब्रांच—बम्बई मद्रास।

# सिपाही विद्रोह

सन् सत्तावनके गदरका रोमांचकारी इतिहास

सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्यमें कमी।

४) से घटा कर ३) किया गया और पुस्तक सजिल्द कर दी गयी।

हिन्दीमें अपने ढंगकी सर्वथा अनोखी पुस्तक है। पहले संस्करणकी प्रतियां हाथोंहाथ बिक जाने पर दूसरा संस्करण निकाला गया है। इस पुस्तकमें आप ऐसी रोमांचकारी घटनाएं पढ़ेंगे कि आपको अनुभव होगा कि हम कोई उपन्यास पढ़ रहे हैं।

झांसीकी रानीने क्या किया, दिल्लीके बादशाहका क्या हुआ, कुंवर जगदीश सिंह कैसे वीरगतिको प्राप्त हुए, देहातोंमें क्या हुआ आदि बातें पढ़कर आप कहेंगे कि वास्तवमें पुस्तक संग्रहणीय है।

सुन्दर कागज, बढ़िया छपाई, पक्की जिल्द।

शीघ्र आर्डर देकर मंगा देखिये।

मैनेजर—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी

१४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# हिन्दुओंके दो संरक्षणीय धार्म्मिक ग्रन्थ।

## (१) तुलसीदास कृत सटीक व सचित्र रामायण...

तुलसीदासकृत रामायण, अनेक स्थानोंसे प्रकाशित हुई परन्तु इसके समान शुद्ध, सुन्दर, बढ़िया छपाई, सचित्र और सर्वसुलभ कहींसे भी प्रकाशित नहीं हुई है। प्राञ्जल भाषामें टीका और गहन विषयोंपर जगह-जगह टिप्पणियां, बहुत बढ़िया पक्की सुन्दर जिल्द। क्षेपक और लव-कुश कण्ड सहित। क्षेपकका अलग निर्देश कर दिया गया है। सस्ती और सुन्दर होनेसे सैकड़ों प्रतियां प्रति दिन बिकती हैं। करीब १४०० पेज और अनेकों सादे व बहुरंगे चित्रोंसे सुशोभित है। ऐसा धर्म्मग्रन्थ हर हिन्दूके घरमें रहना चाहिये। अतएव एक प्रति आप अवश्य मंगाइये। मू० केवल ३) रु०

## बालकोंके लिये उपयोगी ग्रन्थ।

### (१) सचित्र बालरामायण।

इस पुस्तकमें रामायणके सातों काण्डोंका सरल भाषामें वर्णन किया गया है। सरलमति बालक-बालिकाओंके लिये यह अपूर्व पुस्तक है। सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज, मनोहर रंग-बिरंगे अनेकों चित्र। यह पुस्तक कई जगह कोर्समें भी पढ़ाई जाती है। अबतक इस नामकी जितनी पुस्तकें निकली हैं, उनमें यह सर्वश्रेष्ठ है। मू० ॥=) मात्र।

### (२) सचित्र बालमहाभारत।

महाभारत, ज्ञान, वैराग्य, नीति, और सदाचारका खजाना है। इस पुस्तकमें महाभारतके अठारह पर्व्वोंके मूल-कथा-भागका सरल भाषामें वर्णन किया गया है। बालक-बालिकाओंको महाभारतकी शिक्षादायक कथा हृदयङ्गम करानेके लिये अपूर्व पुस्तक है। कितने ही सुन्दर सादे व बहुरंगे चित्रोंसे सुसज्जित। छपाई सफाई बढ़िया, सुन्दर कागज, यह पुस्तक कोर्समें भी पढ़ाई जाती है। मूल्य ॥=)

## (२) सचित्र महाभारत...

इस पुस्तकमें महाभारतके अठारह पर्व्वोंकी मूल कथा, तत्सामयिक सादे तथा बहुरंगे चित्रोंके साथ, इस प्रकार सरल भाषामें वर्णित की गयी है कि कोई भी—साधारण पढ़ा लिखा मनुष्य भी—इसे आसानीसे समझ सकता है। सच पूछिये तो महाभारतका इतना सरल सुन्दर सविस्तृत सचित्र संस्करण हिन्दीमें अब तक कहींसे भी नहीं निकला। महाभारतको हिन्दू जनता ५ वां वेद मानती है अतएव इस धर्म-ग्रन्थको एक-एक प्रति हर धार्म्मिक घरमें रहना परमावश्यक है। ६०० पेज, मोटे कागजपर छपी हुई, छपाई-सफाई हद दर्जेकी सुन्दर, पचासों सादे व बहुरंगे चित्रोंसे विभूषित, होते हुए भी इसका मूल्य सर्वसाधारणकी सुविधाके लिये केवल ३) रुपया मात्र।

**विश्वमित्र कार्यालय,** १४-१ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| १—कर्म-योग ( कविता )—श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ... ... | ६४१ |
| २—प्राचीन युगमें कम्यूनिज्मकी झलक—श्री अख्तर हुसेन रायपुरी ... ... | ६४२ |
| ३—दुष्कृतियोंका वैज्ञानिक विश्लेषण ( सचित्र )—श्री कृष्णकुमार शर्मा ... ... | ६४७ |
| ४—विरह-गीत (कविता)—श्री आरसीप्रसाद सिंह | ६५२ |
| ५—किसानोंकी कर्जदारी—श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र एम० ए०, बी० एल० ... ... | ६५३ |
| ६—तुम और मैं (कविता)—श्रीमती तारादेवी पांडे | ६५७ |
| ७—परित्यक्ता ( कहानी )—श्री "अद्वैत" | ६५८ |
| ८—विलका-यात्रा ( सचित्र )—श्री रामानन्द शर्मा | ६६५ |
| ९—सोवियट रूसकी पत्रकार-कला—श्री विष्णुदत्त शुक्ल ... ... | ६७३ |
| १०—आकस्मिक घटनायें और आविष्कार—श्री श्यामनारायण कपूर ... ... | ६८० |
| ११—किन्तु ( कविता )—श्री राजाराम खरे | ६८४ |
| १२—अपराधीके पत्र—श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी | ६८५ |
| १३—रूसकी अमर क्रान्तिके आर्थिक कारण—श्री अम्बिकाप्रसाद मिश्र ... | ६९१ |
| १४—आसाममें भीषण जल-प्रलय ( सचित्र )—श्री शिवसागर अग्रस्थी ... | ६९५ |
| १५—कल्पनाकी रानी (कहानी)—कुमारी सरस्वती देवी काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य ... | ७०१ |
| १६—गीत ( कविता )—श्री राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत' ... ... | ७०६ |



RS. 3/-} रेशमी चन्द्रप्रभा साड़ी {दाम ३)

लम्बाई ५ गज, अर्ज ४५ इञ्च (Size 5 yds × 45 in)

मूल्यवान बनारसी साड़ियोंसे भी अधिक सुन्दर और सोफियानी मनोहर नयनाभिराम शोभा युक्त साड़ी जिसके रङ्ग, रूप और किनारी पल्लोंकी सजधज देखते ही बनती है, जिसको सभी प्रान्तों की स्त्रियों यहां तक कि उच्च शिक्षित लेडियोंने भी पसन्द किया है जहां १ साड़ी जाती है वहांसे मांगका तांता लग जाता है अधिक मन्दी और व्यापारिक होड़ा होड़ीके कारण यह मौका आया कि हम २०) की जंचनेवाली साड़ी ३) में देते हैं, अब गरीबसे गरीब भी अपना शोक पूरा कर सकते हैं, विवाह उत्सव त्योहार व उपहार में देनेकी अपूर्व वस्तु है सिर्फ मशहूर करनेके लिये लागतसे भी कम दाममें देते हैं व्यापारियोंका आर्डर न लेंगे डाक खर्च व पेकिंग ।।=) होगा दो या अधिक लेनेसे माफ जिस रंगकी चाहिये मंगावें, रङ्ग न लिखने से हम खास चुने हुए रङ्गकी भेजेंगे।

पता :—भोलानाथ एन्ड ब्रादर्स

बंगाल सिल्क हाउस, १२ ( बी ) न्यू जगन्नाथ घाट रोड, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| १७—आंधी ( नाटिका )—श्री नवलकिशोर गौड़ | ७०९ |
| १८—आगमन ( कविता )—श्री राजकुमारी चौहान | ७१३ |
| १९—साबरमती आश्रममें दो वर्ष—श्री शीतलासहाय | ७१४ |
| २०—साम्राज्यवाद बनाम भारत—"अर्थशास्त्रका एक विद्यार्थी" ... ... | ७१७ |
| २१—क्षयरोगकी भीषणता—डा० उपेन्द्रनाथ मित्र ... | ७२० |
| २२—हिण्डेनबर्गका अद्भुत रण-कौशल—श्री विश्वम्भर नाथ बी० ए० ... ... | ७२१ |
| २३—चयनिका ... ... | ७२७ |
| २४—महिला-संसार ... ... | ७३१ |
| २५—समाज-दर्पण ... ... | ७३८ |
| २६—अर्थ-चक्र ... ... | ७४८ |
| २७—साहित्य-जगत् ... ... | ७५२ |
| २८—अन्तर्राष्ट्रीय ... ... | ७५५ |
| २९—चित्र-विचित्र ... ... | ७६८ |
| ३०—सम्पादकीय ... ... | ७६२ |



डा० डब्ल्यू० सी० राय, एल० एम० एस०

**पागलपन की शर्तिया दवा।**

६० वर्षकी अनुभूत महौषधि है, पागलपन, हिस्ट्रीया, मृगी, अपच, वायुरोग, उन्मादकी रामबाण दवा है। १ शीशी ५) रु०। सूचीपत्र मुफ्त भेजा जाता है। पता—डा.एस.सी. राय एण्ड को, १६७।३ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

— हर प्रकारके ब्लाक बनानेका एकमात्र विश्वस्त स्थान —

**एमराल्ड इन्ग्रेविंग लिमिटेड।**

सादे ब्लाकों की १२ घण्टे में डिलेवरी दी जाती है।

१।२, मोतीसील स्ट्रीट, कलकत्ता।

कम दाम में विशेष काम हमारी विशेषता है।

विशेषतायें—

१—किसी भी ऋतुमें एक ही दिनमें डिलेवरी। २—विशेष अवस्थाओंके अतिरिक्त मूल्य सर्वापेक्षा सुलभ। ३—हाफटोन और लाइन ब्लाकोंकी एक ही दर। ४—तीन रंगे और बहुरंगे ब्लाक सर्वोत्तम और आदर्श।

छोटेसे छोटा आर्डर भेजकर परीक्षा कीजिये।

पत्र-पत्रिकाओं के लिये विशेष रियायत।

पूरे विवरण के लिये शीघ्र लिखिये।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्वमित्र

सम्पादक—मूलचन्द्र अग्रवाल

सितम्बर, १९३४ | वर्ष २, खण्ड ४ | भाद्र, १९९१

अङ्क ६, पूर्ण संख्या २४

## कर्म-योग

नयन मनुजके सदा सफलता मुख अवलोकें।
दोनों कर बन परम कान्त सुरतरु फल लोकें।
उसको बहती मिले मरु अवनिमें रस-धारा।
वह पाता ही रहे अमरपुर-सा सुख सारा।
कैसे? किस साधनके किये? तो उत्तर होगा यही।
सब दिनों कर्मरत जो रहा, सिद्धि पा सका है वही॥
उषागमको लसित कर्म अनुराग बनाता।
कर्म-सूत्रमें बंधा दिवाकर है दिखलाता।
रजनीरञ्जन कर्मकान्त बन है छवि पाता।
अवनीतलपर सरस सुधारस है बरसाता।
है करती रहती विश्वको, विदित कर्मकी माधुरी।
हो तारकावलीसे कलित, प्रति दिन रजनी सुन्दरी॥

परम पवि हृदय मेरु प्रवाहित निर्झर द्वारा।
प्रस्तर संकुल अवनि मध्य गत सरिता धारा।
फलसे विलसे बिटप रंग लातीं लतिकायें।
सौरभ-भरे प्रसून विकच बनती कलिकायें।
देती हैं भवको कर्मकी, अनुपमताकी सूचना।
है कर्म परम पावन सरस, सुन्दर भावोंमें सना॥
कैसे मिलते रत्न क्यों उदधि मन्थन होता।
कैसे कार्यकलाप बीज कलकृतिके बोता।
कैसे जड़ता मध्य जीवनी धारा बहती।
कैसे वाञ्छित सिद्धि साधना करमें रहती।
कैसे तो वारिदवृन्दवर, वारि बरस पाते कहीं।
जो कर्म न होता तो रसा, सरसा हो पाती नहीं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गृहका त्याग, न त्याग कर्मका है कहलाता।
बुरे भावका त्याग त्याग है माना जाता।
किसी कालमें कर्म-त्याग तब होगा कैसे।
बने रहेंगे जब दृगादि जैसेके तैसे।
तब तक क्या बातें त्यागकी, जब तक मल धोती नहीं।
भवकर्मरता सब इन्द्रियां, कर्म रहित होती नहीं॥

कर्महीनता मरण कर्म-कौशल है जीवन।
सौरभ रहित सुमन समान है कर्महीन जन।
तिमिर भरित अपुनीत इन्द्रियोंका बर रवि है।
कर्म परम पाषाण भूत मानसका पवि है।
है कर्मत्यागकी रगोंमें, परिपूरित निर्जीवता।
है कर्मयोगके मूलमें, बंधी समस्त सजीवता॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

---

# प्राचीन युगमें कम्यूनिज्मकी झलक

श्री अख्तर हुसेन रायपुरी

पिछले दिनों जब कांग्रेस वर्किङ्ग कमिटीने अपने नवजात साम्यवादी शिशुको डांट बतलाते हुए 'निजी सम्पत्तिके निराकरण'का विरोध किया तो उच्च श्रेणीके विचारकोंके हाथ अच्छा मौका लगा। उन्होंने यह सिद्ध करनेके लिए जमीन-आसमान एक कर दिया कि निजी सम्पत्तिका जन्म सृष्टिके समय ही हुआ था और वह ईश्वरकी जननी नहीं तो धर्मपुत्री अवश्य है। एक विद्वान्ने 'मैं' शब्दको 'निजी सम्पत्ति'का प्रतीक बतलाया। कुछने यह भी कहा कि मानव-समाजकी आधार-शिला इसी व्यवस्थापर है। इसे हटानेका अर्थ है समाजको विध्वंस करना।

मगर इतिहासकी शिक्षा इसके सर्वथा विपरीत है। यह सच है कि सभ्य-युगका उदय निजी सम्पत्तिके साथ होता है, पर सभी असभ्य और बर्बर जातियोंमें कम्यूनिज्मकी रूपरेखा पायी जाती है। जिन जङ्गली कबीलोंको कालकी प्रगतिने मिटा दिया, उनमें जमीन, फसल, मवेशी और गुलाम—किसी एक व्यक्तिकी नहीं, बल्कि पूरे कबीलेकी सम्पत्ति होते थे। आज भी जिन जङ्गली जातियोंमें सभ्यताके आधुनिक रूपका समावेश नहीं हुआ है, उत्पादनके साधनोंपर किसी एकका अधिकार नहीं होता। नीचे ऐसे ही कबीलोंके विषयमें ऐतिहासिक तथ्य दिये जाते हैं जिनमें मालपर सार्वजनिक अधिकारकी प्रथा चली आती है। समाजका विकास सभी देशोंमें एक क्रमसे हुआ है। इसलिए यदि यह प्रमाणित हो जाये कि विभिन्न आदिम जातियोंमें मालका उत्पादन और विभाजन कम्यूनिस्ट पद्धतिके अनुसार होता रहा है तो यह समझनेमें देर न लगेगी कि 'एङ्गिल्स'ने कम्यूनिस्ट मेनिफेस्टो-के प्रारम्भमें आदिम समाजको श्रेणीरहित क्यों बतलाया था। सम्भव है कि कोई दम्भी आदिम-युगकी चर्चापर नाक-भौं सिकोड़े, मगर हमें याद रखना चाहिए कि मनुष्यको उस परिस्थितिसे भी गुजरना पड़ा है और हमारे पूर्व-पुरुषमें कई देवसुलभ गुण भी थे।

कुछ आस्ट्रेलियन जातियोंमें अस्त्र-शस्त्र, आभूषण और कपड़ोंके सिवा कोई चीज 'अपनी' नहीं होती। मौतके बाद लाशके साथ यह मिलकियत भी समाधिस्थ कर दी जाती है। निजी सम्पत्तिका चरम-स्वरूप है किसी व्यक्तिका नाम। किसी अजनबीके आगे वह अपना नाम न लेगा और मौतके बाद यह नाम भी दफन हो जायेगा; कोई दूसरा उस नामसे न पुकारा जायेगा। एस्किमो जातिमें यह आम रिवाज है कि एक आदमी केवल दो नौकायें रख सकता है। दोसे तीन नौकायें हुईं तो पञ्चायतको भेंट करनी पड़ती हैं। जिस वस्तु-का वह उपयोग नहीं करता वह सबकी मिलकियत समझी जाती है। जङ्गली जातियोंमें 'ऋण' नामकी कोई बला नहीं होती। किसीसे कुछ लेनेके बाद लौटानेका कोई नाम भी नहीं लेता।

आदिम-समाजमें बच्चोंपर पूरे कबीलेका हक होता है। बच्चा स्त्री-मात्रको मां समझता है। शुरूमें तो एक कबीलेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सभी पुरुष, दूसरे कबीलेकी कुल औरतोंसे विवाह कर लेते थे और इस सम्मिलित विवाहकी प्रथा अब तक आस्ट्रेलियामें कहीं-कहीं चली आती है। यूनानकी पौराणिक गाथाओंमें भी इस प्रथाका आभास मिलता है।

कबीला सर्वशक्तिमान् था। वही शासक था, वही कुटुम्ब, वही सम्पत्ति और स्त्रियोंका स्वामी। अफ्रीकाके वनचर-मनुष्य ( Bushmen ) तो ऐसे कट्टर साम्यवादी होते हैं कि कहींसे कुछ मिलनेपर अनिवार्यरूपेण अपने कामरेडोंमें बांट देते हैं और खुद सबसे कम हिस्सा लेते हैं। आदिम-समाजमें शिकार और मछवाही उत्पादनके केवलमात्र साधन होते हैं जिनमें सब लोग समान रूपसे भाग लेते और मालको बराबर-बराबर बांट लेते हैं। काकेशसकी सवारीनी जातिमें जब किसी कुटम्बमें मांस पकता है तो सारे गांवका निमन्त्रण होता है। जब एस्किमो ह्वेल या बारहसिंघोंका शिकार करते हैं तो बड़ा उत्सव मनाया जाता है और सबको इस निधिका समान भाग मिलता है। जो रेड-इण्डियन अब भी शिकारपर गुजारा करते हैं, उनमें यह रिवाज चला आता है कि शिकारी पशुओंका पीछा तब तक नहीं छोड़ते जब तक सबके लिए यथेष्ट भोज्य सामग्री जमा न हो जाये। मछली पकड़नेके मौसिममें कोलम्बिया नदीके किनारे पूरे कबीलेका डेरा लग जाता है। मछलियां एक जगह जमा की जाती हैं और प्रति दिन स्त्रियोंकी संख्याके अनुसार उनका वितरण हो जाता है। मालेनेशियन समाजके इतिहास-लेखकका कथन है कि मालेनेशियामें सर्वत्र, सम्पत्तिके मामलेमें साम्यवादी पद्धतिका अनुकरण किया जाता है। आसामके लोटा नागाओंके इलाकेमें भूमिपर व्यक्तिगत स्वत्व नहीं होता। अधिकांश भूमिपर पञ्चायतका सम्मिलित प्रभुत्व होता है। बरछी, भाले आदि शस्त्रोंपर कबीलेके सबसे बूढ़े आदमीकी निगरानी होती है।

जब आदमी खानाबदोश न रहकर कहीं स्थायी रूपसे घर बनाने लगा, तब भी उसमें निजी सम्पत्तिका लोभ उदय न हुआ। घरपर किसी एककी सत्ता न होती; वह भी समाजका माल था। पोलीनेशियामें ऐसे मकान सौ-सवा सौ फीट लम्बे होते और उनमें कई कुटुम्ब एक साथ रहते थे। मेक्सिको और बोर्नियोमें भी ऐसे ही विस्तृत कम्यूनिस्ट निवासालय होते, जिनमें सबकी जमापूंजी एक जगह रहती थी। सब एक साथ खाते-पीते थे। मि० मार्गनने अमेरिकाके आदिम निवासियोंके सम्मिलित जीवनपर अपनी पुस्तकमें अच्छा प्रकाश डाला है। इरोका नामक रेड इण्डियन कबीले के विषयमें वह लिखते हैं :—'वे बागबानी और खेती करते थे। कुल पैदावारको एक जगह सञ्चित करते थे। जब एक कुटुम्बके पास कुछ न रहता तो दूसरे अपनी पूंजी उसके आगे रख देते। शिकार और मछलियोंका बंटवारा भी समान रूपसे होता था।' माया इण्डियनोंमें अब भी भोजन एक चूल्हेपर पकता है और विभिन्न कुटुम्ब अपना-अपना हिस्सा बांटकर ले जाते हैं।

सुसभ्य यूनानमें भी अफलातूनके समय तक इन आदिम रीतियोंका पता चलता है। उसके शिष्य हिराक्लिदसने क्रीटाके एक सहभोजका विशद वर्णन किया है जहां सब लोग मिलकर खाते थे। इस सदाभाण्डारका व्यय पूरे वर्ग(कम्यून) के सिर पड़ता था जो गुलामोंके उपहार और सम्मिलित कृषिकी उपजसे उसे पूरा करता था। पुरुष, स्त्री, बच्चे सबका भरण-पोषण राज्यकी ओरसे होता था। प्लुटार्कका बयान है कि ऐसे सहभोजोंमें छोटे-बड़ेका भेदभाव न होता था। इस समाजवादी जीवनका प्रभाव तत्कालीन संस्कृतिपर इस हद तक पड़ा कि कई प्रारम्भिक ईसाई सम्प्रदायोंमें मुद्दतों साम्यका गान होता रहा। इजनी ( Essene ) सम्प्रदायवाले सम्मिलित मकानोंमें रहते और उनका कोई भी धर्मभाई साथमें रह सकता था। एक भाण्डारमें कुल सामान रख दिया जाता था। खाने-पीने और पहनने-ओढ़नेकी वस्तुओंपर समानाधिकार होता था। अपाहिजों, बूढ़ों और बीमारोंको उसी भाण्डारसे जीवन-यापनका सामान मिलता था।

निजी सम्पत्तिका बीजारोपण हो जानेके बाद भी मुद्दत तक उसका उपभोग वर्गके लिए खुला रहा। रेड इण्डियन कबीलोंमें आदमी जिसके घर चाहे, जाकर भोजन कर सकता है। केरोलीन द्वीपमें आज भी कोई यात्री घरसे सामान लेकर नहीं निकलता। भूख लगते ही वह बिना अनुमति लिये किसी भी घरमें घुस जाता और खा-पीकर किसीको धन्यवाद दिये बिना चला जाता है। गोया यह उसका जन्म-सिद्ध अधिकार है। यह साम्यवादी जीवन-प्रणाली बर्बर-युगमें हर कहीं देखनेमें आती है। प्लूटार्कके कथनानुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्पार्टाके इष्टदेवने घरके दरवाजे बन्द करनेका निषेध कर दिया था। कोई भी स्पार्टा-निवासी गृहस्वामीकी अनुपस्थितिमें भी स्वेच्छानुसार खा-पी सकता था। उसे किसी भी घोड़े या कुत्तेसे काम लेनेकी स्वतन्त्रता थी। यहां तक कि वह किसी भी स्पार्टनके गुलामोंको बेच सकता था।

जब मनुष्यमें स्वार्थकी प्रवृत्ति सजग होने लगी तब भी उसका विचार यही रहा कि सम्पत्तिपर सबका अधिकार होना चाहिए। रेड इण्डियनोंकी धारणा है कि 'देवादिदेवने संसार और उसकी समस्त विभूति मानव-जातिके सुखके लिए उत्पन्न की है। उसने आखेट थोड़े-से लोगोंके लिए नहीं, बल्कि सबके उपभोगके लिए उत्पन्न किया है। मनुष्यकी सन्तानको प्रत्येक वस्तुपर समानाधिकार है। जल-थलमें जो कुछ है, उसपर हर आदमीका हक है। अतिथि-सेवा उनके लिए पुण्य नहीं, बल्कि धार्मिक कर्तव्य है। वे स्वयं भूखे रह जायंगे, किन्तु अपने ऊपर यह कलङ्क न लगने देंगे कि उन्होंने पथिकों या भूखोंकी अवहेलना की। जब शिकारका हक सबको है तो मांस सबके लिए क्यों न होगा। जब भूमि सबकी जननी है तो उससे पैदा होनेवाले अन्नपर किसी एकका स्वत्व कैसे होगा। *

बेलजियम और फ्रान्सपर आक्रमण करनेवाले आदिम जर्मन बर्बरोंमें जो आर्थिक एकता और साम्य एवं बन्धुत्वके भाव थे उनकी इतिहास-लेखकोंने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इस सीधे-सादे कम्यूनिस्ट समाजमें अतिथि-सेवाकी बड़ी महिमा थी। रेड इण्डियनोंमें तो अतिथिकी उपेक्षा या अपमानसे गर्हित कोई अपराध हो ही नहीं सकता। केटलीन नामक लेखकपर इन पापहीन मानवता-प्रेमियोंका ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह लिखता है—"नैतिकता और सत्यप्रेमकी शिक्षा उन्हें देनेका साहस तथाकथित सभ्य जातियोंको न करना चाहिए।" शार्लेवू नामक फ्रान्सीसी पर्यटकका कथन है कि "रेड इण्डियनोंके बन्धुत्वका एक कारण यह भी है कि उनमें 'मैं' और 'तू' का भेद नहीं है। अनाथों, विधवाओं और अतिथियोंकी वे जैसी संवर्धना करते हैं, उसका सबब यही है कि उनके मतानुसार सम्पत्ति किसी व्यक्तिकी नहीं, मनुष्य-मात्रकी है।" लेहोण्टन नामक लेखकने बतलाया है कि "रेड इण्डियन रुपयेको छूते हुए भी डरते हैं और उसे 'गोरे लोगोंका सांप' कहते हैं। उनकी समझमें ही नहीं आता कि रुपयेके कारण धनी-दरिद्रका द्वन्द्व क्यों आरम्भ हो जाता है। न वे चोरी करते हैं, न झूठ बोलते हैं।"

हमें सोचना चाहिए कि सभ्यता और मानवताकी सीमायें कहां अलग होती हैं।

जिन जातियोंमें खानाबदोश जीवनके संस्कार अब भी चले आते हैं, जैसे अरब और अफगान, उनमें अतिथिदेवताके मान-सम्मानकी कोई सीमा नहीं। भारतका अतिथि-प्रेम भी सर्वज्ञात है, किन्तु जीवन-प्रवाहके परिवर्तनके साथ-साथ अब पुरानी बातें मिटती चली जा रही हैं। अतिथि-पूजा इस धारणाकी प्रतीक है कि सम्पत्तिपर किसी एकका नहीं, बल्कि गैरोंका भी हक है। अनजानमें गृहस्वामी उसी बर्बर-युगके साम्यवादकी याद दिलाता है, जब सम्पत्तिमें सभी बराबरका हिस्सा बंटाते थे।

समयकी प्रगतिके साथ जब भूमि क्रय-विक्रयकी सामग्री मान ली गयी, तब भी आदिम जातियोंने उसपर मौरूसी हक नहीं माना। न्यूजीलैण्डकी ओमाहा जातिने कहा कि आग और पानीके समान जमीन भी नहीं बिक सकती। माओरी लोगोंने कहनेको तो जमीन बेच दी, पर पुश्तैनी हक न माना। उन्होंने कहा कि हम भावी पीढ़ीका हक तो नहीं बेच सकते। इसलिए प्रत्येक नवजात शिशुको पैदावारका कियदंश मिलना चाहिए। न्यूजीलैण्डकी सरकारको बाध्य होकर भूमिका वार्षिक कर देना पड़ा जो कबीलेवालोंमें बांट दिया जाता है। यहूदियोंमें भूमिपर निजी सत्ता न मानी जाती थी। उनके ईश्वरने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया था—'जमीन कभी न बेची जाये, क्योंकि वह मेरी मिलकियत है। तुम सब तो राहगीर और मेहमान हो।' बादमें प्रभु ईसाने इस व्यवस्थाको बदल दिया।

आदिम साम्यवादी समाजमें कबीलेके खेतोंको सब लोग मिलकर जोतते-बोते थे। सिकन्दरके एक सहकारी नीरकसने भारतीय अभियानके वर्णनमें लिखा है कि कहीं-कहीं पूरी जाति अथवा सभी बन्धु-बान्धव मिलकर खेती करते थे और वर्षके अन्तमें फसल आपसमें बांट लिया करते थे। न्यू मेक्सिकोके ताओ नामक रेड इण्डियन ग्रामके विषयमें किसीने

* Heckenelder in his pensylvanian Indian Nations.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिखा था—'सभी ग्राम-निवासी मिलकर खेती करते हैं और खलिहानसे आवश्यकतानुसार धान ले जाते हैं।' पेरूमें तो स्पेनवासियोंके अशुभ आगमनके पहले जोताई-बोआईके समय उत्सवका दृश्य रहता था। प्रभात-वेला किसी टीलेपर गांवके सब निवासी रङ्ग-बिरङ्गे कपड़े और जड़ाऊ गहने पहने जमा होते थे। देवगान गाते हुए वे सब काममें जुट जाते थे। कृषिश्रमको देवपूजाका स्थान प्राप्त था, इसलिए किसानोंके उत्साहका पारावार न रहता था। पुराने जर्मनोंने यह रिवाज बना रखा था कि प्रति वर्ष आधे आदमी लड़नेके लिए जायें और आधे खेती करें। बारी-बारीसे उन्हें लड़ना और कृषि करना पड़ता था जिससे वे दोनों कामोंमें पारङ्गत हो जाते थे। क्रान्तिके पहले रूसमें आम तौरपर ऐसे खेत होते थे जिन्हें सब मिलकर जोतते-बोते थे। फसल किसानोंमें बांट दी जाती थी। सभी कृषिप्रधान देशोंमें अब भी किसी-न-किसी अंशमें खेती सहयोगसे होती है। कई कामोंमें सम्मिलित श्रमसे काम लिया जाता है। यह नियम उसी पुरातन साम्यवादी कृषिप्रणालीका सूचक है।

पुराने जर्मन प्रति वर्ष लूटमारके लिए निकलते और माल आपसमें बराबर बांट लिया करते थे। पूर्व-ऐतिहासिक कालके यूनानी भी यही करते थे। यह दस्युदल स्त्री-पुरुष, पशु-सम्पत्ति—सब-कुछ उठा ले जाता था और उन्हें अन्न-वस्त्रके समान बांट लेता था। गुलामोंकी गणना बहुधा सार्वजनिक सम्पत्तिमें होती थी। यूनानके प्रत्येक नगरमें ऐसे गुलाम पाये जाते थे। सन् १८३० तक तो दक्षिण भारतमें भी ऐसे क्रीत-दास देखे गये जो सम्मिलित खेतोंमें काम करते थे। कभी-कभी वे भेड़ोंके समान एक साथ बेच दिये जाते थे।

इस प्रकारके सैकड़ों उदाहरण मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि आदिम युगमें सम्पत्ति निजी नहीं, सार्वजनिक होती थी। माल सम्मिलित रूपसे पैदा किया जाता और समान रूपसे बांट दिया जाता था। जमीनपर सबका अधिकार माना जाता था और उसके क्रय-विक्रयकी कल्पना भी न की जा सकती थी। ऋण और धन-सञ्चयका कहीं नाम भी न सुननेमें आता था। बूढ़ों, बच्चों और बीमारोंकी जीविकाका प्रबन्ध समाजकी ओरसे होता था। विनिमयके लिए रुपया काममें न लाया जाता था, बल्कि सामग्री-परिवर्तनका नियम था। स्थूल रूपसे देखा जाये तो भावी श्रेणीरहित समाजकी बहुत-सी बातोंकी रूपरेखा बाबाआदमके उन पोते-नातियोंमें देखनेमें आती है। तथापि यह व्यवस्था अधिक दिन तक न चल सकती थी, क्योंकि उसे उत्पादनकी बहुतायतने नहीं, बल्कि कमीने जन्म दिया था और उसकी बुनियाद जीवन-सन्धि ( Alliance for existence ) पर नहीं, बल्कि जीवन-संग्राम ( Struggle for existence ) पर थी।

जैसे-जैसे जीवनकी विषमता बढ़ती गयी, धनी-दरिद्रका भेदभाव गहरा होता गया और गरीबीकी कराह हर कहीं सुनायी देने लगी, समझदारोंने इस समस्यापर सोचना आरम्भ किया। उनमेंसे कईने वासनाको दुःखका मूल बतलाया। वासनाका दमन तो उच्च श्रेणियोंमें होना चाहिए था, बेचारे भूखे-नङ्गे किसानोंको जीना ही दूभर था, वासना-तृप्तिका मौका कहां था। अतएव इस उपदेशका उनपर ठीक उलटा असर पड़ा और वे अपनी पतित अवस्थासे सन्तुष्ट होकर हरिभजनमें मग्न हो गये।

तथापि वैभव और दारिद्र्यका महदन्तर सभी विचारकोंको परेशान करता रहा। कन्फ्यूशियस और लाओत्सु-जैसे प्रमुख चीनी महात्माओंने कहीं-कहीं इस विषयपर बड़ी स्वतन्त्रतासे मत-प्रकाश किया है।

अफलातूनने अपने जगद्विख्यात ग्रन्थ 'प्रजातन्त्र' ( Republic ) में इस समस्याको सुलझानेका प्रयत्न किया है। समाजमें क्रीतदासोंकी बहुलताके कारण वह कभी ऐसे जमानेका सपना देख ही न सकता था जिसमें गुलाम न होंगे। अपनी श्रेणीकी सुव्यवस्थाके लिए वह कुटुम्बके नाश और स्त्रियोंके राष्ट्रीकरणको आवश्यक समझता है। बच्चोंके पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षाका प्रबन्ध वह सरकारके हाथमें देना चाहता है।

बादमें सर टामस मूरने दास-स्वामीके झगड़ेको मिटाकर एक ऐसे साम्यवादी समाजकी कल्पना की जिसमें चालीस लाख आदमी रहते हों। निजी सम्पत्तिका आमूल नाश हो गया हो और निर्वाचित अधिकारी काम-काजका निरीक्षण करते हों। टामस मूरका विश्वास था कि जब किसीको बेकारी और गरीबीका डर न रहे और लोभको समाज नापसन्द करता हो तो कोई भी व्यर्थ धन-सञ्चय न करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यह कहना अप्रासङ्गिक न होगा कि यूनानके नगर-राज्य ( City-state ) में सोवियट शासनपद्धतिका खाका मिलता है। राज्यमें गुलामोंकी तादाद बहुत बड़ी थी और नागरिक बहुत कम थे। फिर भी राज्यकार्य प्रत्यक्ष लोकतन्त्र ( Direct Democracy ) के सिद्धान्तोंपर चलता था और सभी नागरिक पञ्चायतमें जाकर सार्वजनिक मामलोंका निर्णय करते थे। अब भी पुरानी जङ्गली जातियोंमें यही होता है और सीमाप्रान्तके कबीलोंका 'जिरगा' इसी संस्थाकी यादगार है। मुसलमान जिस पञ्चायती शासनको साम्यवाद समझे बैठे हैं, वह यूनानके नगर-राज्यके सिवा कुछ नहीं। अरब और यूनान दोनोंमें दास और नागरिकका भेदभाव विद्यमान था।

इन सभी पुरातन साम्यवादी सिद्धान्तों और पूंजी-विद्रोही विचारकोंमें सबसे आकर्षक 'मजदक'का व्यक्तित्व है। उसका जन्म ईरानमें पांचवीं सदीमें हुआ और यौवन-कालमें ही नौशेरवांने उसे मरवा डाला। जिस प्रकार यूरोपमें प्रत्येक वीभत्स, कलुषित और अघोरपन्थी कार्यको 'इपिकुरस'के नामसे सम्बद्ध किया जाता है, उसी प्रकार ईसाई और मुसलमान लेखकोंने प्रत्येक पापका नाता मजदकसे जोड़ दिया है। सच पूछो तो इतिहासने मजदकसे घोर अन्याय किया, वरना अगर उसकी शिक्षा यथार्थ रूपमें संसारके आगे होती तो हम देखते कि वह प्राचीन कालका बहुत बड़ा विचारक था।

अब मजदकके पक्षकी कोई पुस्तक नहीं रह गयी है। इसलिए उसके सिद्धान्तोंके विषयमें जानकारी हासिल करनेके लिए हमें अरबी लेखकोंका आश्रय लेना पड़ता है जिन्होंने निस्सन्देह उसपर बड़ी ले-दे की है। अस्तु; तबारी नामक प्रसिद्ध इतिहास-लेखक मजदकका जिक्र यों करता है :—"मजदकका प्रमुख सिद्धान्त यह था कि सम्पत्ति और कुटुम्बको सार्वजनीन होना चाहिए। इससे बढ़कर सत्कृत्य हो ही नहीं सकता और परलोकमें भगवान् इसके लिए इनाम देंगे। मजदकके चेले कहते थे कि ईश्वरने अन्न-जलकी सृष्टि इसलिए की कि सभी मनुष्य समान रूपसे उनसे लाभ उठायें; किन्तु वे एक-दूसरेको भेड़ियोंके समान फाड़े डाल रहे हैं। इसलिए मजदकके अनुयायी धनिकोंका माल छीनकर दरिद्रोंमें बांटना चाहते थे। वे कहते थे कि आवश्यकतासे अधिक धन-माल और स्त्रियां रखनेका किसीको अधिकार नहीं है। हरिजन-श्रेणीके हाथ बड़ा अच्छा मौका लगा और उन्होंने सेठोंके घरोंको लूटना और उनकी औरतोंको हथियाना आरम्भ कर दिया।"

मजदकको ऐतिहासिक पश्चादभूमिमें देखिये तो पता चलता है कि वह एक सामाजिक क्रान्तिका अग्रनायक था। उच्च श्रेणीके अत्याचारोंसे तङ्ग आकर जनसाधारणने मजदकके नेतृत्वको स्वीकार किया और ईरान-भरमें वर्षों तक ऐसा ऊधम मचाया कि सेठोंकी दुनिया उजड़ गयी। नौशेरवांने गद्दीपर बैठते ही जो कानून बनाये, उनमें लुटे हुए रईसों और पितृहीन बच्चोंका हवाला बार-बार आता है। इसीसे पता चलता है कि क्रान्ति कितनी सर्वव्यापी हो गयी थी। मजदक जानता था कि कामवासना और भूखके कारण जब तक मनुष्य असन्तुष्ट रहेगा तब तक संसारमें हमेशा सङ्घर्ष चलता रहेगा। इसीलिए उसने कुटुम्बकी नींव खोद डाली जिसके गढ़ोंमें सम्पत्ति और स्त्री दोनों ही दबी रहती हैं।

फिरदोसीने अपने महाकाव्य 'शाहनामे'में मजदकके मत-पर प्रकाश डाला है। उन पंक्तियोंका अनुवाद हम नीचे देते हैं :—

"पांच चीजें ऐसी हैं जो मनुष्यको सन्मार्गसे विचलित करती हैं। कोई भी पण्डित छठीं चीजका नाम नहीं बतला सकता। द्वेष, क्रोध, प्रतिहिंसा, दरिद्रता और लोभ—इन्हीं पांचोंके कारण संसार शोक-सागर बना हुआ है। अगर तू इन पांचों शैतानोंको परास्त कर दे तो ईश्वरके दिव्य द्वार तेरे लिए खुल जायेंगे। इन्हीं पांचोंके कारण स्त्री और सम्पत्तिको हमने अपना लिया है, जिससे धर्मका नाम ही संसारसे मिट गया है। जीवनको सात्विक बनाना हो तो स्त्री और सम्पत्तिका समाजीकरण कर दे।"

जिस सत्यकी खोजमें ऋषि-मुनि और पैगम्बर कल्पना-की भूल-भुलैयामें फंस गये थे, मजदक उसके बहुत समीप पहुंच गया था।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दुष्कृतियोंका वैज्ञानिक विश्लेषण

श्री कृष्णकुमार शर्मा

विज्ञान दिनपर दिन जिस गतिसे उन्नति करता जाता है उसे देखकर स्तम्भित होना पड़ता है। ज्ञान तथा अनुसन्धानके किसी भी क्षेत्रको वैज्ञानिकोंने अपरीक्षित नहीं छोड़ा है। संसारकी वर्तमान अस्थिर तथा चञ्चल स्थितिमें दुष्कर्मियोंकी संख्या बढ़ती चली जाती है और दुष्कृतियोंके ऐसे-ऐसे रहस्यमय, वैज्ञानिक तथा अवैज्ञानिक उपाय आविष्कृत होते चले जाते हैं जिनके कारण पुलिसवालोंको लोहेके चने चबाने पड़ रहे हैं। पर इधर दुष्कर्मी लोग जिस कूट-बुद्धिसे काम लेकर गुप्त चालें चल रहे हैं, उधर वैज्ञानिकोंका सम्प्रदाय उनके गहनसे गहन रहस्यका भेद उद्घाटित करनेपर तुला हुआ है और इस उद्देश्यकी सिद्धिके लिए सूक्ष्म वैज्ञानिक विश्लेषणोंमें लगा है। वैज्ञानिकोंको इस क्षेत्रमें कुछ ही समयके भीतर जो सफलता प्राप्त हुई है वह आश्चर्यजनक है। अपराधियोंकी ऐसी-ऐसी अगम और जटिल दुष्कृतियोंका पता उन्होंने लगाया है जिनके प्रमाण कहीं, किसी भी रूपमें प्राप्त करना पुलिसके लिए असम्भव हो गया था।

अपराध किस प्रकार पूर्णतया छिपाये जा सकते हैं और उनका प्रत्येक प्रमाण किस कौशलसे लुप्त किया जा सकता है, इस बातका उदाहरण निम्न कहानीसे मिलेगा।

रिख्टर नामका एक जर्मन डाक्टर बड़ा परिश्रमी और तत्त्वान्वेषी था। 'बान्न' यूनिवर्सिटीमें जब वह 'आनर्स'-की डिग्रीके लिए पढ़ रहा था तो उसके प्रोफेसर उसकी अध्ययनशीलता और तत्त्वज्ञान-तृष्णा देखकर चकित रहते थे। डाक्टरीकी डिग्री प्राप्त कर लेनेके बाद वह बिङ्गेन शहरमें बस गया और वहां उसने 'प्रेक्टिस' शुरू कर दी। पर अन्वेषणका कार्य उसने तब भी न छोड़ा। अपनी लेबोरेटरीमें नाना भेद-भरी दवाओंकी जांच-पड़तालके काममें वह प्रति-दिन घण्टों व्यस्त रहा करता था।

उसके मरीजोंकी संख्या दिन-दिन बढ़ती जाती थी और उसपर लोगोंका विश्वास भी वृद्धिपर था। अपनी इस प्रकारकी सफलता देखकर वह किसी बड़े शहरमें जाकर 'प्रेक्टिस' करनेका इरादा करने लगा था। एक दिन डा० रिख्टरके 'कन्सल्टिंग रूम'में एक स्त्रीने आकर प्रवेश किया। उस स्त्रीका रूप असाधारण था। उसने अपने उदर-सम्बन्धी कष्टकी बात डाक्टरसे कही। रिख्टरने उसकी परीक्षा करके उसे दवा दी। उस स्त्रीने, जिसका नाम फ्रौ मेर्टेंज़ था, दूसरे ही दिन उसे टेलीफोन द्वारा अपने यहां बुलाया। डाक्टरके आनेपर उसने उसे एक कप चाय पिलायी। उसका दर्द अच्छा हो गया था और अब वह डाक्टरसे प्रेमका नाता जोड़ना चाहती थी। फ्रौ मेर्टेंज़ अपने पहले पतिसे तलाक पा चुकी थी। वह बड़ी सुसंस्कृता और सुशिक्षिता महिला थी और थी अनुपम रूपवती। वह दुबारा विवाहके चक्करमें पड़कर 'जीवनके आनन्द'से वञ्चित नहीं होना चाहती थी। वह केवल 'स्वतन्त्र प्रेमकी पुजारिणी' बननेको ललचा रही थी।

कुछ ही दिनोंके भीतर रिख्टर और फ्रौ मेर्टेंज़के प्रेम-सम्बन्धने अत्यन्त घनिष्ठ रूप धारण कर लिया। पर धीरे-धीरे फ्रौ मेर्टेंज़को सन्देह होने लगा कि डाक्टर किसी दूसरी स्त्रीके प्रति भी प्रेमका नाता जोड़ रहा है। वह अत्यन्त उद्विग्न और साथ ही उत्तेजित हो उठी और डाक्टरको बार-बार यह धमकी दिखाने लगी कि यदि वह किसी दूसरी स्त्रीसे प्रेमका सम्बन्ध स्थापित करके उसे धोखा देगा तो वह आत्मघात कर लेगी।

असलमें डा० रिख्टर उस समय तक किसी दूसरी स्त्रीके प्रति आसक्त नहीं था। पर कुछ दिन बाद उसने आन्ना वुल्फ नामकी एक स्त्रीको नर्सके बतौर नियुक्त करनेका विचार किया। जब फ्रौ मेर्टेंज़ने यह बात सुनी तो वह आपेसे बाहर हो उठी और जहरकी एक शीशी उठाकर उसी दम उसे पान करके आत्महत्या करनेकी धमकी दिखाने लगी। गरज यह कि वह इसी प्रकार बात-बातपर उसे अपनी ईर्ष्यापरायणताके कारण तङ्ग करने लगी। डाक्टरके लिए उसका यह व्यवहार असहनीय हो उठा। वह उससे किसी प्रकार मुक्ति पाना चाहता था। उसने फ्राङ्कफोर्ट चले जानेकी ठान ली। इसपर फ्रौ मेर्टेंज़ने एतराज किया और फिर एक बार आत्महत्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करनेकी धमकी दिखायी। पर रिख्टर अपनी बातपर अड़ा रहा। कुछ ही घण्टोंके बाद वह फोनसे बुलाया गया। फ्रौ मेर्टेंज़ किसी यन्त्रणासे छटपटा रही थी। उसने एक दवा दी। पर यन्त्रणा दूर न हुई। वह छटपटाती हुई उत्तेजनापूर्वक बोली कि डाक्टर रिख्टरने उसे जहर मिली हुई खांड दी है। दो घण्टे बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

पुलिसने मामलेकी तहकीकात शुरू की और डाक्टर रिख्टरपर सन्देह किया गया। पर उसके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं था। फ्रौ मेर्टेंज़ कई बार आत्महत्या करनेकी धमकी दिखा चुकी थी। पोस्ट मोर्टम हुआ; पेटमें विषका कोई चिह्न नहीं दिखायी दिया, केवल बहुत थोड़ी मात्रा अफीमकी पायी गयी जिसे डा० रिख्टरने यन्त्रणाको कम करनेके लिए उसे दिया था। तथापि यह निश्चित था कि फ्रौ मोर्टेंज़की मृत्यु किसी गुप्त विषके प्रभावसे हुई है। विशेषज्ञों और वैज्ञानिकोंने बहुत चेष्टा की कि उस रहस्यमय अज्ञात विषका कुछ चिह्न मिले, पर सब व्यर्थ। पुलिसको रिख्टरपर सन्देह था, पर उसे गिरफ्तार नहीं किया जा सकता था।

जिस दवाखानेसे रिख्टर दवाइयां खरीदा करता था उसके मालिकको बुलाकर प्रोसेक्यूटरने कहा कि रिख्टर जिन-जिन विषोंको खरीदा करता था उनकी पूरी लिस्ट तैयार करके दो। लिस्ट मिलनेपर विशेषज्ञोंने उनकी परीक्षा शुरू कर दी। उनमेंसे कोई भी विष ऐसा नहीं था जिससे फ्रौ मेर्टेंज़की मृत्यु सम्भव हो सकती थी। केवल एक नया विष उस लिस्टमें था जिसके गुणोंसे डाक्टर लोग अभी तक पूरी तरह परिचित नहीं थे। वह विष 'स्ट्रोफान्थिन' कहा जाता था। यह विष अफ्रीकाकी जङ्गली जातियों द्वारा तीरोंके अग्रभागमें लगानेके काम आता है। यदि किसी आदमी या जानवरको यह विष दिया जाय तो वह तीन घण्टेके भीतर पेटमें जज्ब हो जाता है। पर डाक्टरोंको सन्देह हुआ कि रिख्टरने इन्जेक्शन द्वारा वह विष फ्रौ मेर्टेंज़के शरीरमें प्रवेश कराया है। फिर एक बार लाशकी जांच हुई और बहुत विश्लेषणके बाद 'स्ट्रोफान्थिन'का एक कण मिल गया।

प्रोसेक्यूटरने रिख्टरको तत्काल बुलाकर पूछा कि फ्रौ मेर्टेंज़के इलाजके लिए उसने उसे क्या दवा दी थी। उसने उत्तर दिया—"उसकी यन्त्रणा कम करनेके लिए मैंने जरा-सी अफीम दी थी।" "स्ट्रोफान्थिन ?" "नहीं।" "तब उसके शरीरमें स्ट्रोफान्थिन कहांसे आया ?"

डा० रिख्टरने घबराकर कहा—"यह असम्भव है! उसे इञ्जेक्शनके तीन घण्टे बाद ही शरीरमें जज्ब हो जाना चाहिए था!" घबराहटके कारण उसके मुंहसे सत्य बात प्रकट हो गयी। यद्यपि वह अन्त तक अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करनेकी चेष्टा करता रहा, पर अदालतने उसे फांसीका हुक्म दे दिया।

× × ×

खुर्दबीन और टेस्ट-ट्यूबकी सहायतासे वर्तमान समयमें जितने गुप्त दुष्कर्मोंका पता लगा है उतना किसी अन्य उपायसे नहीं। फ्रान्समें वैज्ञानिक उपायों द्वारा रहस्यमय दुष्कृतियोंका पता लगानेकी कला हद तक पहुंच चुकी है। वहां एदमों बाइल (Edmond Bayle) नामके एक व्यक्तिने अपने रासायनिक अनुसन्धानों द्वारा ऐसे-ऐसे भेद-भरे कुचक्रोंका पता लगाया है जिनके सम्बन्धमें पुलिस एकदम हार मान चुकी थी। एदमों बाइलने कभी किसी दुष्कर्मीका पीछा नहीं किया, किसीके लिए जाल नहीं बिछाया, किसीकी घातमें नहीं बैठा रहा। वह केवल एक तहखानेके भीतर छिपी हुई लेबोरेटरीमें रात-दिन अनुसन्धानके काममें व्यस्त रहता था। तथापि दुष्कर्मियोंका दल उसके नाम और कामसे परिचित था और उसका जानी दुश्मन बना हुआ था। उसकी लेबोरेटरीके कमरोंमें हर वक्त पारेके लैम्प जलते रहते थे और सब प्रकारके कैमरा तैयार रहते थे। कोई कैमरा खूनसे तर किसी कपड़ेका फोटो लेनेके लिए था और कोई अणुवीक्षण यन्त्र द्वारा प्रदर्शित दृश्योंका चित्र लेता था। एक कमरेके बीचमें काठकी एक मनुष्य-मूर्ति खड़ी रहती थी। उसे खूनसे तर कपड़ा पहनाया जाता था और एक विशेष 'पोजीशन'में वह रखा जाता था जिससे जांचके काममें सुविधा रहे। अन्यान्य कमरोंमें भिन्न-भिन्न वैज्ञानिक विषयोंके विशेषज्ञ नाना यन्त्रोंको लिये दुष्कर्मोंके अनुसन्धानके काममें लगे रहते थे। स्पेक्टोग्राफ, फीके पड़े हुए रंगोंपर स्पष्ट प्रकाश डालनेवाली मशीनें, अणुवीक्षण यन्त्र, बिजलीकी भट्टियां, बैरोमीटर, 'अल्ट्रावायलेट' और 'इन्फ्रा-रेड' लैम्प तथा और भी इसी प्रकारके यन्त्रोंको लेकर वे लोग व्यस्त रहते। इस लेबोरेटरीमें दुनिया-भरकी साधारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तथा महत्त्वपूर्ण वस्तुओंका संग्रह रहता था, जो पुलिस द्वारा परीक्षाके लिए वहां लायी जाती थीं। जाली चेक, पिस्तौलकी गोलीसे फटे हुए कपड़े, खूनसे तर वस्त्र, विशेष-विशेष चीजों तथा स्थानोंसे टेस्ट-ट्यूबोंमें जमा की गयी धूल इत्यादि सभी प्रकारकी चीजें रहती थीं।

एक बार पैरिसके ब्वा द बूलोन्य (Bois de Boulogne) के किसी निर्जन स्थानमें पुलिसके एक आदमीने झाड़ियोंके भीतर एक बड़ी-सी गठरी छिपी हुई देखी। गौरसे देखनेपर मालूम हुआ कि जिस कपड़ेसे गठरी लपेटी गयी थी और जिस रस्सीसे बांधी गयी थी उन दोनोंमें खूनके दाग हैं। पुलिसवाला तत्काल समझ गया कि केवल एडमों बाइल ही उस गठरीकी जांच ठीक तौरसे कर सकता है। मोशियो बाइलके पास जब गठरी पहुंची तो उसे खोलकर देखा गया कि उसके भीतर चालीस वर्षके एक आदमीकी लाश बंधी हुई है। हत्याकारीने उसके पहचाने जानेका कोई उपाय ही नहीं रख छोड़ा था। उसका मुंह कुचला हुआ था, उसके कपड़ोंमें 'लाण्ड्रियों'का एक भी चिह्न नहीं रख छोड़ा गया था। एक भी बाहरी या भीतरी प्रमाण इस बातका अनुमान लगानेके लिए नहीं मिलता था कि मृत व्यक्ति कौन है, कहां रहता था, किसने उसे मारा और ब्वा द बूलोन्य वह लाश कैसे पहुंच गयी। मो० बाइलको ठीक इसी प्रकारके अगम रहस्यमय मामलोंकी वज्ञानिक जांचमें मजा आता था।

पहले उसने मृत व्यक्तिके कपड़े उतारकर काठके 'डमी' को पहनाये। लाशमें छुरेके जो घाव दिखायी दे रहे थे, मो० बाइलने उनके आकार और स्थानका निरीक्षण करके इस बातका अन्दाज लगा लिया कि चोट खाते समय मृत व्यक्ति किस अवस्थामें खड़ा रहा होगा और डमीको ठीक उसी अवस्थामें झुका दिया। इस प्रकारके परीक्षणके बाद मो० बाइलने 'डमी'को ऐसी अवस्थामें खड़ा किया जैसे वह एक बोतलसे कुछ पी रहा हो। यह करके मृत व्यक्तिके जूतोंकी धूल झाड़कर मो० बाइलने एक अणुवीक्षण यन्त्रसे उसकी जांच शुरू कर दी। इससे उन्होंने यह बात मालूम करनी चाही कि हत्याके समय मृत व्यक्ति किस प्रकारके स्थानमें खड़ा था। अपने तीक्ष्ण यन्त्र द्वारा धूलिके प्रत्येक कणकी सूक्ष्म परीक्षा करके मो० बाइल इस परिणामपर पहुंचे कि उसमें 'सैक्खैरोमिसस' (Saccharomysus) नामक एक ऐसे पदार्थके अणु पाये गये जो केवल 'बीर' या अंगूरकी शराबके कारखानेमें ही मिल सकता है।

इसके बाद मृत व्यक्तिके कपड़े एक सख्त कागजकी थैलीमें डालकर पीटे गये और उनकी धूल जमा की गयी। उस धूलको और कोटकी जेबकी गर्दको लेकर फिर सूक्ष्म पर्यवेक्षण आरम्भ हुआ। कपड़ेकी धूलकी बहुत छान-बीनके बाद मालूम हुआ कि उसमें कुछ ऐसे अणु वर्तमान हैं जो केवल 'रेस'के घोड़ोंके अस्तबलोंमें ही पाये जा सकते हैं। जेबकी गर्दके परीक्षणसे मालूम हुआ कि उसमें तम्बाकू, अफीम और रेसके टिकटोंके बहुत-से कागज रहा करते थे। मृत व्यक्तिके दाहिने हाथकी मुट्ठीमें बाल मिले जो अवश्य ही हत्यारेके सिरके बाल थे और छीना-झपटीमें मृत व्यक्तिके हाथ आ लगे थे। इन सब चीजोंकी पूर्ण परीक्षाके बाद मो० बाइलने उस कपड़ेकी परीक्षा शुरू की जिसमें मृत व्यक्तिकी लाश बंधी हुई थी। उसे पीटकर उसकी सब धूल जमा की गयी। उसके भौतिक परीक्षणके बाद मो० बाइल इस परिणामपर पहुंचे कि उसमें कोयलेकी गर्दके अणु, बलूत तथा चीड़की लकड़ियोंके कण, झाड़ू बनानेके झाड़ और फ़र्श साफ करनेके बड़े ब्रश तथा किसी भूरे रङ्गके जानवरके पशमके सूक्ष्म अंश पाये गये।

इन सब बातोंके समन्वयके बाद जासूसी विभागके आदमी इस सिद्धान्तपर पहुंचे :—मृत्य व्यक्ति सम्भवतः घुड़दौड़में टिकट-बुक तैयार किया करता था। हत्याके समय वह शराब पी रहा था (क्योंकि, जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, उसके जिन स्थानोंपर घाव थे उनसे यही अनुमान होता था कि पीनेकी स्थितिमें खड़े होनेपर ही उन स्थानोंमें छुरा ठीक बैठ सकता है)। जब पीछेसे उसपर छुरेका वार हुआ तो उसने हत्याकारीके सिरके बालोंको पकड़ा होगा और इसके बाद मृतावस्थामें नीचे गिर गया होगा। उसकी लाश एक ऐसे कमरेमें कपड़ेसे लपेटी गयी होगी जहां कोयले और ईंधनकी लकड़ियां रखी जाती होंगी और झाड़ू भी। उस कमरेमें एक श्यामदेशीय बिल्ली भी लेटा करती होगी।

पैरिसके पुलिसवालोंको यह हिदायत खास तौरसे दी गयी कि वे उस विशेष जातिकी बिल्लीपर नजर दौड़ाते रहें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यह बिल्ली अवश्य ही एक ऐसे व्यक्तिके यहां होनी चाहिए जिसका व्यवसाय शराब बेचनेका हो।

एक दिन एक पुलिसवालेने एक श्यामदेशीय भूरी बिल्ली-को किसी एक मकानके फाटकपर बैठे देखा। उस मकानके एक हिस्सेमें शराबका 'स्टोर' था। पुलिसवालेने तत्काल तहकीकात शुरू कर दी। पता लगानेपर मालूम हुआ कि उस मकानका एक किरायेदार, जिसका नाम बेजिये था, प्रायः एक सप्ताहसे लापता है। उसके सम्बन्धमें यह भी मालूम हुआ कि वह अविवाहित था और अक्सर घुड़दौड़में जाया करता था। शराब बेचनेवाला फौरन पकड़ा गया। पुलिसवालोंकी बातोंसे शराबवालेको मालूम हो गया कि उनसे कुछ छिपाना व्यर्थ है। उसने स्वीकार किया कि बेजिये जब घुड़दौड़से रुपये जीतके लाता था तो उसे दिखाया करता था, जिससे उसके मनमें बेजियेके प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हो गयी। एक दिन रातके समय उसने बेजियेसे निवेदन किया कि वह तहखानेसे शराब निकालनेमें उसे मदद दे। जब बेजिये शराब पीनेमें व्यस्त था तो शराबवालेने उसकी पीठपर एक लम्बे छुरेसे आघात किया। इसके बाद हत्याकारी उसे एक ऐसे कमरेमें ले गया जहां आग जलानेकी लकड़ी, कोयला और झाड़ू थे। वहां लाशको एक कपड़ेमें लपेट और बांधकर उसे ब्वा द बूलोन्यमेंके बनमें डाल आया।

प्रायः ४०,००० रुपयेके मूल्यके 'फ्रां' (फ्रेञ्च सिक्का) एक बार गायब हो गये। इस मामलेकी जांचका भार भी मो० बाइलपर पड़ा। किसी नामी फर्मके अध्यक्षने रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा रुपये भेजे थे और लिफाफेके भीतर लाखकी मुहर लगा दी थी। एक आदमीके हाथ वह बन्द लिफाफा भेजकर पोस्ट आफिसमें उसे रजिस्टरी कराने भेज दिया था। जिस आदमीके नाम वह रजिस्टर्ड लिफाफा भेजा गया था वह बिलकुल ठीक हालतमें उसके पास पहुंचा। पर जब उसने उसे खोलकर देखा तो रुपयेके स्थानमें केवल एक रद्दी अख-बारका टुकड़ा था। मुहर कहीं टूटी हुई न होनेपर भी यह चोरी किस प्रकार हो गयी, पुलिसवाले इस चक्करमें पड़ गये। कुछ भी हो, वह लिफाफा मो० बाइलकी लेबोरेटरीमें दाखिल किया गया। मो० बाइलने सबसे पहले यह बात मालूम करनेकी कोशिश की कि लाखकी मुहरोंमें कोई गड़बड़ी तो नहीं हुई है। मुहरोंको साबूत निकालकर, लिफाफेको बेमालूम खोलकर रुपया निकालनेके बहुत-से तरीके हैं, यह बात मो० बाइलको मालूम थी। रुपया निकालकर फिरसे पुरानी मुहर चिपकायी जा सकती है या उसके बदलेमें नयी मुहर भी लगायी जा सकती है। यदि मुहर निकालकर फिरसे लगायी गयी होती तो मो० बाइल माइक्रोस्कोपसे मालूम कर सकते थे कि पुरानी मुहरकी छापकी कोई निशानी उसमें है या नहीं। पर जांच करनेपर मालूम हुआ कि मुहर बदली नहीं गयी है। इससे स्पष्ट मालूम हो गया कि लिफाफा बन्द किये जानेके पहले ही नोट गायब थे। फर्मके कर्मचारियोंके अति-रिक्त दूसरेका हाथ इस मामलेमें नहीं हो सकता था। तहकी-कात हुई और आदमी गिरफ्तार कर लिया गया।

चेक, दस्तावेज, वसीयतनामा आदिके मामलोंमें जाल करनेवालोंकी हाथकी सफाईका पता लगानेमें भी मो० बाइल 'एक्सपर्ट' थे। स्याहीको मिटाकर उसपर दूसरी इबारत जाली हस्ताक्षरोंमें बेमालूम लिखनेकी 'कला'में आजकल यूरोपके बहुत-से पेशेवर जालसाज अपनी निपुणताका परिचय देते हैं। कभी-कभी उनकी जालसाजीका पता लगाना असम्भव-सा हो जाता है। एक बार पैरिसके एक व्यापारीपर एक मामला इस आशयका चला कि उसने एक दस्तावेजमें जो एक खास शर्त पूरी करनेका वादा किया था उसे अस्वी-कार करता है। असल बात यह थी कि दस्तावेज जाली था। व्यापारीने उलटा जालसाजीका मुकदमा चला दिया। मो० बाइलके पास जब वह नोट जांचके लिए पहुंचा तो उन्होंने पहले 'आओडीन'की भाफके ऊपर उस कागजको रखा। यदि एक बारका लिखा हुआ किसी रबर वगैरहसे मिटाया गया होता तो उस भाफके ऊपर कागजको रखनेसे साफ मालूम हो जाता। पर असल बात यह थी कि किसी रबर वगैरहसे नहीं, रासायनिक पदार्थोंकी हलकी क्रिया द्वारा पिछला लिखा हुआ बेमालूम धो डाला गया था और उसपर नयी इबारत लिख दी गयी थी। मो० बाइलने कागजका एक छोटा-सा टुकड़ा दस्तावेजके सन्दिग्ध स्थानमेंसे काटा और एक टुकड़ा मूल लेखवाले स्थानपरसे। दोनों टुकड़ोंके एक खास माल्यूशनपर डालकर उनपर बिजलीकी प्रतिक्रियाका सूक्ष्म परीक्षण किया गया। दोनोंपर भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ा। इससे स्पष्ट हो गया कि दस्तावेजमें जाल किया गया है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



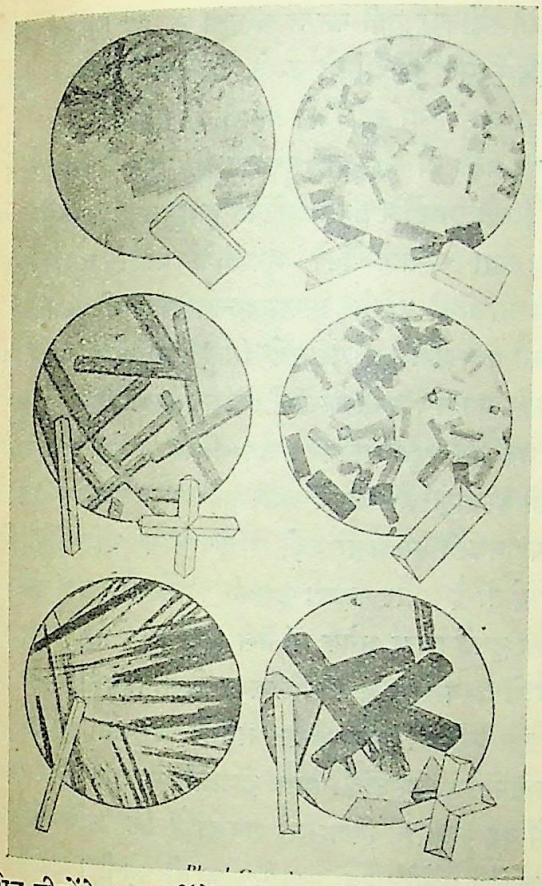

विभिन्न जीवोंके रक्तकणोंमें समानता होनेपर भी सूक्ष्म यन्त्रोंसे पर्य्यवेक्षण होनेपर प्रत्येककी बनावटमें विशेष विभिन्नता पायी जाती है। ऊपरके चित्रमें क्रमसे निम्न जीवोंके रक्तकणोंमें समानता और विभिन्नता दिखायी गयी है—(१) मनुष्य और बन्दर (२) घोड़ा और कुत्ता (३) बाघ और बिल्ली।

बहुधा हत्याके मामलोंमें इस विषयपर वाद-विवाद उठ खड़ा होता है कि खूनके जो दाग हत्याकारीके कपड़ोंमें पाये गये हैं वे उसके अपने ही शरीरके खूनके दाग हैं जो दाढ़ी बनाते वक्त या और किसी कारणसे लग गये हों, या किसी ऐसे जानवरके खूनके हैं जिसे उसने मारा हो या वास्तवमें वे निहत व्यक्तिके रक्तके चिह्न हैं? पहले इस प्रश्नका फैसला सन्तोषपूर्वक कभी नहीं किया जाता था। पर अब विज्ञानने विभिन्न प्राणियों तथा मनुष्योंके रक्तके अन्तरकी पहचानकी कठिनाई दूर कर दी है। Rudolph de Cordova ने इस सम्बन्धमें लिखा है कि "जिस निश्चित रूपसे आप और हम रङ्गोंके सम्बन्धमें कह सकते हैं कि 'वह लाल है, यह हरा है, वह नीला है', उसी प्रकार अब केवल विभिन्न जीवोंका रक्त देखकर, सबके रक्तके रङ्गोंके भिन्न-भिन्न कणोंको देखकर, उनके सूक्ष्म स्वरूपोंकी परीक्षा करके यह बात बिना किसी सन्देहके बतायी जा सकती है कि कौन रक्त किसका है—आदमीका है, घोड़ेका है, कुत्तेका है, व्हेलका है, बन्दरका है, निग्रोका है या श्वेताङ्गका है।"

रक्तके रङ्गीन तत्त्वका प्रत्येक कण ( blood crystal ) आकारमें एक इञ्चका १—२२५० वां हिस्सा लम्बा और १—९००० वां हिस्सा चौड़ा होता है। तथापि प्रत्येक मनुष्य या जानवरके रक्त-कणके आकार-प्रकारकी विभिन्नता अणुवीक्षण यन्त्रों द्वारा स्पष्ट लक्षित हो जाती है। इस नये आविष्कारसे गहन मामलोंकी जांचमें बड़ी भारी सहायता मिली है।

केवल रासायनिक तथा भौतिक विज्ञानसे ही गुप्त दुष्कृतियोंकी जांचमें सहायता नहीं मिलती। मनोविज्ञानने भी इतनी तरक्की कर ली है कि उसके सहारेसे बहुत-से अगम अगोचर दुष्कर्मोंका रहस्य-भेद किया गया है। मनोवैज्ञानिक और हिप्नोटिक उपायोंसे अभियुक्तके मुंहसे ऐसी-ऐसी बातोंका परिचय प्राप्त किया जाता है जिन्हें साधारण दशामें वह कभी स्वीकार नहीं कर सकता।

मनोविज्ञानके साथ भौतिक विज्ञानके सम्मिश्रणसे भी बहुत-से महत्त्वपूर्ण तथ्य मालूम किये जाते हैं। उदाहरणके लिए वैज्ञानिक लोग इस सिद्धान्तपर पहुंचे हैं कि अभियुक्तके मुंहसे अभियोगको अस्वीकृत करनेपर भी उसका शरीर उसे स्पष्टतः स्वीकृत करता है। झूठ बोलने और सच बोलनेपर भिन्न-भिन्न मानसिक प्रतिक्रियाओंका जो असर शरीरपर पड़ता है वह एक विशेष यन्त्र द्वारा निर्देशित किया जा सकता है। यह यन्त्र अभियुक्तके शरीरपर लगा दिया जाता है और झूठ बोलते समय मानसिक प्रतिक्रिया द्वारा रक्तके दबावमें जो फर्क पड़ता है उक्त यन्त्रसे वह स्पष्टतः मालूम किया जा सकता है। सच बोलनेके समय शरीरपर किसी प्रकारका प्रतिक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। प्रश्नकर्ता अपना यन्त्र ठीक 'फिट' करके इस प्रकारके प्रश्न पूछता है:—

क्या तुम पढ़ना पसन्द करते हो?

ग्रेटा गार्बोके सम्बन्धमें तुम्हारी क्या राय है?

परीक्षा लिये जानेमें तुम्हें क्या कोई एतराज है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्या तुम कोई अच्छा पेशा अख्तियार किये हो ?
१८ ता०की रातको तुम वास्तवमें कहां थे ?
जाड़ोंमें तुम्हारी तबीयत ठीक रहती है या गर्मियोंमें ?

प्रत्येक प्रश्न बिना किसी बातपर खास जोर दिये, साधारण रीतिसे किया जाता है। कुछ प्रश्न बिना किसी विशेष उद्देश्यके किये जाते हैं; पर बीच-बीचमें एक-आध प्रश्न वास्तविक अभियोगके सम्बन्धमें भी किया जाता है। अभियुक्त प्रश्नोंके उत्तरमें यन्त्र द्वारा जिन-जिन प्रतिक्रियाओंका निदर्शन करता है उनका एक 'ग्राफ' तैयार किया जाता है जिसे देखनेसे यह बात प्रमाणित हो जाती है कि जब-जब वह झूठ बोलता है तब-तब उसके रक्तका दबाव बदल जाता है और फेफड़ेकी क्रिया भी।

इसके अतिरिक्त एक और अद्भुत उपाय द्वारा अभियुक्तके मुंहसे वास्तविक तथ्य मालूम कर लिया जाता है। 'स्कोपोलामिन' ( Scopolamin ) नामकी एक ऐसी नशीली बूटी अभियुक्तको खिलायी जाती है जिसके विचित्र प्रभावसे वह प्रत्येक प्रश्नका सम्पूर्ण सत्य उत्तर देता है! इस बूटीके सेवनसे झूठ बोलना आदमीके लिए असम्भव हो जाता है। कुछ समय पूर्व सानफ्रान्सिस्कोमें एक चीनीपर हत्याका अभियोग लगाया गया था। प्रारम्भमें वह अपना दोष किसी तरह भी स्वीकार नहीं करना चाहता था, पर 'स्कोपोलामिन' की एक मात्रा दिये जानेसे उसने तत्काल हत्याका अपराध स्वीकार कर लिया और उसे फांसी दी गयी।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि बहुत-से जालसाज ऐसे होते हैं जो दूसरोंके हस्ताक्षरोंकी हूबहू नकल करके जाली चेकों तथा दस्तावेजोंको असलीके बतौर चला देते हैं। खाली आंखोंकी दृष्टिसे हस्ताक्षर-विशेषज्ञ भी अक्सर ऐसे जालका पता लगानेमें असमर्थ सिद्ध होते हैं। पर माइक्रोकेमरासे जब उन हस्ताक्षरोंकी जांच की जाती है तो असली और नकलीमें बहुत बड़ा अन्तर दिखायी देने लगता है। असली हस्ताक्षरकी रेखायें जमी हुईं और सुसम्मिलित होती हैं, पर नकली हस्ताक्षर बड़ी सावधानीसे धीरे-धीरे लिखा हुआ होता है और फलतः उसकी प्रत्येक रेखा छोटे-छोटे बारीक नुक्तों द्वारा अनेक गांठोंसे भरी हुई होती है। माइक्रोकेमरामें ये बारीक नुक्ते स्पष्टतया दिखायी देते हैं।

इस प्रकार विज्ञान जिस गतिसे उन्नति करता हुआ दुष्कृतियोंके रहस्योंका पता लगानेमें सहायता कर रहा है, उससे यह अनुमान किया जा सकता है कि भविष्यमें कभी अदालतोंमें लेबोरेटरियां स्थापित करनी पड़ेंगी।

---

# विरह-गीत

पतझड़का मर्मर-स्वर चुन-चुन
अलि, सुन सुमनोंका क्रन्दन सुन

हिरणी-सी हाय नचा चितवन
पथभ्रष्ट किया जिसने जीवन;
अब वही बनी है वीरानी!
ऐसी तो दुनिया दीवानी!!
रोता उपवनमें सिर धुन-धुन
अलि, सुन बुलबुलका रोदन सुन

वैभवके आंगनमें पल-पल
दिन यौवनका ढल रहा विफल;
बहती निर्झरिणी-सी करुणा!
दो नयनोंकी गंगा-यमुना!!
कह जाती हृदय-व्यथा गुन-गुन
अलि, सुन सरिताका गुनगुन सुन

सन्ध्या-तारा-सा मेरा मन,
अम्बरसे देख रहा निर्जन—
जगतीकी मृत्यु-निशा अपलक!
आशाकी फिर भी एक झलक—
दिख पड़ती ध्वनियोंमें रुनझुन;
अलि, सुन नूपुरका 'रुनझुन' सुन

—आरसीप्रसाद सिंह

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# किसानोंकी कर्जदारी

श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र एम० ए०, बी० एल०

भारतकी आर्थिक दशाके सुधारमें एक सबसे बड़ी अड़चन है बहुसंख्यक किसानोंकी कर्जदारी। कृषि-प्रधान देश होनेके कारण किसान ही इस देशके मेरु-दण्ड हैं, अतएव किसी भी आर्थिक योजनाके सफल होनेके लिए सबसे पहले इस बातकी आवश्यकता है कि किसानोंके कलेजेपर कर्जदारीका जो भारी बोझ लदा हुआ है उससे उन्हें मुक्त करनेकी कोशिश की जाय। जब तक देशके किसान इस ऋणग्रस्त दशासे मुक्त नहीं होते तब तक कोई भी आर्थिक योजना सफलतापूर्वक कार्यरूपमें परिणत नहीं की जा सकती।

यह सन्तोषकी बात है कि इस देशके अधिकारियोंका ध्यान भी किसानोंकी इस कर्जदारीकी समस्याकी ओर आकृष्ट हुआ है और इस सम्बन्धमें वे क्रियात्मक उपाय अवलम्बन करनेका विचार कर रहे हैं। Land Mortgage Banks की स्थापना करके, कानून द्वारा सूदकी दर निश्चित करके तथा जो ऋण चुकानेमें असमर्थ हों उन्हें उसकी अदायगीसे मुक्त करके किसानोंके ऋण-भारको यथासम्भव हल्का करनेकी तदबीर सोची जा रही है। बङ्गाल आदि कई प्रान्तोंमें तो Land Mortgage Banks की स्थापना हो भी चुकी है। किन्तु यह समस्या इतनी जटिल और विशाल है कि छोटे-मोटे उपायोंसे इसका समाधान नहीं हो सकता। Central Banking Enquiry Committee ने अपनी रिपोर्टमें भारतके किसानोंकी औसत सालाना आमदनी प्रति व्यक्ति पीछे ४२) रु० अन्दाज की है, और इस देशके किसानोंकी कुल कर्जदारीका अन्दाज लगाया गया है ९०० करोड़ रुपया। इसपर यदि १८ रुपये सैकड़ाके हिसाबसे सूद रखा जाय तो सूद चुकानेके बाद प्रत्येक किसानकी औसत आमदनी २॥।) मासिकसे अधिक नहीं होती। इस २॥।) में ही उसे अपना तथा अपने परिवारका भरण-पोषण करना पड़ता है। बङ्गाल बैङ्किङ्ग कमेटीने अपनी रिपोर्टमें बङ्गालके किसानोंकी औसत सालाना आमदनी ८४) रुपया और खर्च भी इतना ही अन्दाज लगाया है। प्रत्येक किसानका औसत ऋण ३१) रुपया पड़ता है। इस प्रकार बङ्गालके किसानोंके पास सालके अन्तमें कुछ भी नहीं बच जाता, जिससे वे ऋण चुका सकें। नतीजा यह होता है कि कर्जका बोझ साल-ब-साल हल्का होनेके बजाय बढ़ता ही जाता है। आखिर जब यह बोझ इतना अधिक हो जाता है कि किसान इससे किसी प्रकार भी मुक्त नहीं हो सकते तो महाजन उनकी जमीन-जायदाद नीलाम करा लेते हैं अथवा वे खुद अपनी जमीन बेचकर महाजनको कर्ज चुका देते हैं और स्वयं किसानसे मजदूर बन जाते हैं। भारतके किसी भी प्रान्तके गांवोंमें जाइये, आपको सर्वत्र यही दशा देखनेको मिलेगी। राजों-महाराजों या जमींदारोंके नहीं रहनेसे देशका कुछ बनता-बिगड़ता नहीं, किन्तु जिस देशके किसान इस प्रकार सर्वस्वहीन बनकर मजदूर बनते चले जायं उस देशकी क्या दशा हो सकती है, यह कल्पनातीत है।

यों तो देशके किसानोंकी यह शोचनीय दशा आजसे नहीं, ब्रिटिश शासनके प्रारम्भसे ही चली आ रही है, किन्तु गत कई वर्षोंके अन्दर संसारव्यापी आर्थिक मन्दीके कारण उनकी यह दशा और भी गुरुतर हो रही है। सन् १९०४ ई० में ही एक सहृदय अंगरेज मि० हर्बर्ट काम्पटनने 'Indian Life' 'भारतीय जीवन' नामक पुस्तकमें लिखा था :—

"There is no more pathetic figure in the British Empire than the Indian peasant. His masters have ever been unjust to him. He is ground until everything has been extracted except the marrow of his bones."

अर्थात, "ब्रिटिश भारतमें भारतीय किसानकी अपेक्षा करुणाजनक मूर्ति और किसीकी नहीं है। उसके मालिक सदासे उसके प्रति अन्याय करते आ रहे हैं। उसका इस तरह शोषण कर लिया जाता है कि सिवा अस्थिमज्जाके और कुछ नहीं बचता।" वर्तमान आर्थिक मन्दीका किसानोंपर कितना गहरा असर पड़ा है उसका एक ज्वलन्त प्रमाण लीजिये। सन् १९२०-२१ से लेकर सन् १९२९-३० तक दस वर्षोंमें बङ्गालकी फसलोंका औसत वार्षिक मूल्य खाद्यान्नोंकी खपतको बाद देकर लगभग ७२ करोड़ रुपया होता था। इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अवधिमें किसानोंकी लगान, सेस, सूद वगैरहकी नगद देनदारी लगभग २८ करोड़ रुपया सालाना हुआ करती थी। इस प्रकार किसानोंको सालमें लगभग ४४ करोड़ रुपया बच जाता था, जिससे वे अपनी अन्य आवश्यकताओंकी पूर्ति कर सकें। किन्तु अब क्या हुआ है? सन् १९३२-३३ में बङ्गालकी फसलोंकी कीमत घटकर लगभग ३२ करोड़ हो गयी और उनकी देनदारी पहलेके समान ही २८ करोड़ बनी रही। ऐसी हालतमें यदि किसान लगान, सेस और कर्जका सूद चुकायें तो उनके पास फिर बच ही क्या जाता है जिससे वे अन्य आवश्यक वस्तुयें खरीद कर सकें। जो दशा बङ्गालके किसानोंकी है वही अन्यान्य प्रान्तोंकी भी समझिये। अब सोचनेकी बात है कि जिस देशकी आबादीमें सैकड़े ७७३ लोगोंको जिन्दगी-भर ऋण-ग्रस्त रहना पड़े वहांके रहन-सहनके स्टैण्डर्डमें किस तरह तरक्की हो सकती है और जब रहन-सहनका स्टैण्डर्ड ऊंचा ही नहीं होगा तो फिर विभिन्न शिल्प और उद्योग-धन्धों द्वारा प्रस्तुत वस्तुओंको खरीदेगा ही कौन! किसानोंकी इस बदतर हालतको देखकर अधिकारियोंको भी अब कुछ-कुछ चिन्ता होने लगी है और वे ग्रामीण जनताकी उन्नति-सम्बन्धी नाना उपायोंपर विचार करने लगे हैं। गत अप्रैल महीनेमें भारत-सरकारने एक आर्थिक कान्फरेन्स की थी जिसमें विभिन्न प्रान्तोंके प्रतिनिधि राय-मशविराके लिए बुलाये गये थे। इस कान्फरेन्समें किसानोंकी आर्थिक दशासे सम्बन्ध रखनेवाले विभिन्न विषयोंपर विचार किया गया। इसके बाद गत जून महीनेमें शिमलेमें एक Crop-planning conference फसल-योजना-कान्फरेन्स की गयी थी जिसमें इस बातपर विचार किया गया कि चावल, गेहूं आदि फसलोंकी पैदावार आवश्यकतासे अधिक तो नहीं हो रही है और जिस फसलकी पैदावार आवश्यकतासे अधिक होती हो और विदेशोंमें उसकी मांग बढ़नेकी सम्भावना नहीं हो उसके बदले दूसरी फसल बोयी जाय जिसकी खपत विदेशोंमें हो सके। इसके सिवा सरकार सूदकी दर निश्चित करने तथा अन्य उपायोंसे ऋण-भार हल्का करनेके लिए कानून बनानेके सम्बन्धमें भी विचार कर रही है।

किसानोंकी कर्जदारीकी समस्या और उसके समाधान-पर विचार करनेके पूर्व यह देखना है कि वे किन कामोंमें कर्ज लिया करते हैं और उनका कर्ज किस तरह बढ़ता रहता है। इस सम्बन्धमें पहली बात तो यह है कि हमारे देशके किसान सिर्फ खेतीके कामोंके लिए कर्ज नहीं लेते। यदि सिर्फ खेतीके कामोंके लिए कर्ज लिया जाता तब तो खेतीकी आमदनीसे इसका चुकाना उतना कठिन नहीं था। किन्तु खेतीके कामोंके सिवा जमीनका लगान चुकाने, मौरूसी कर्जका सूद और असल चुकाने, मामला-मुकदमा, सामाजिक उत्सव तथा विवाह, श्राद्ध आदि नाना प्रकारके रीति-रस्मों-में खर्च करनेके लिए भी ऋण लिया जाता है। ऋण लेते समय वे यह नहीं सोचते कि उनकी आमदनीमें इतनी बचत हुआ करती है या नहीं जिससे वे ऋणका असल और सूद चुका सकें। ऋण चुकानेकी इस असमर्थताके कारण ही उनका ऋण-भार पुश्त-दर-पुश्त बढ़ता चला जाता है और आखिर सर्वस्वान्तकी नौबत आ जाती है। पैतृक ऋणके होते हुए भी अनेक दशाओंमें उन्हें विवश होकर नया ऋण लेना पड़ता है। इस प्रकारके ऋणमें मुकदमेबाजी और शादी-ब्याह, श्राद्ध आदिके खर्चके लिए जो ऋण लिया जाता है वह भी शामिल होता है अवश्य, किन्तु उसका अंश बहुत ज्यादा नहीं होता। अन्य आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए जो ऋण लिया जाता है उसका अंश ही सबसे अधिक होता है।

किसानोंके लिए ऋण लेनेके जो साधन देशमें मौजूद हैं वे उनकी आवश्यकताओंको देखते हुए सर्वथा अपर्याप्त कहे जा सकते हैं। सहयोग-समितियों द्वारा उनकी आवश्यकताओंकी पूर्ति नहीं होती। थोड़े दिनकी मियाद और लम्बी मियादवाले ऋण, पैतृक ऋण, किसीके लिए भी वर्तमान सुविधायें पर्याप्त नहीं कही जा सकतीं। नतीजा यह होता है कि किसानोंको रुपया उधार लेनेके लिए गांवके महाजनोंपर ही निर्भर करना पड़ता है। चाहे आप इन महाजनोंकी भरपूर निन्दा कीजिये, इन्हें किसानोंका रक्त-शोषक या कुछ भी कहिये, किन्तु इतना तो आपको मानना ही पड़ेगा कि किसानोंकी खेती-सम्बन्धी आवश्यकताओंकी पूर्ति करके वर्तमान अवस्थाओंमें ये उनका कम उपकार नहीं कर रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि सब महाजन किसानोंके रक्तशोषक ही नहीं होते और न किसानोंके साथ उनका व्यवहार हमेशा अमानुषीय होता है। कुछ ऐसे भी महाजन अवश्य हैं जिनका किसानोंके साथ उचित लेन-देन होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और जिनका व्यवहार अमानुषीय नहीं कहा जा सकता। किन्तु महाजन अच्छे हों या बुरे, जब तक सहयोग-समितियें, जमीन बन्धक लेकर रुपया उधार देनेवाले बैङ्कों या अन्य साधनोंका प्रबन्ध नहीं किया जाता तब तक किसानोंको इन महाजनोंपर मजबूर होकर निर्भर करना ही पड़ेगा। महाजन रहें या जायं, किसानोंके साथ उनका व्यवहार मनुष्योचित हो या नहीं, किन्तु किसानोंकी कर्जदारीकी समस्याका समाधान किये बिना काम नहीं चल सकता। जापान, आस्ट्रेलिया आदि देशोंने जिस रूपमें इस समस्याका समाधान किया है, भारतमें भी उसी प्रकारके उपायोंका अवलम्बन करना पड़ेगा। कुछ वर्ष पहले जापानकी सरकारने एक आर्डिनेन्स जारी करके किसानोंके ऋण-मोचनमें सहायता पहुंचायी थी। डाक विभागकी जमा रकम Postal Deposit Bureau से किसानोंको जो ऋण दिया गया था उसकी अदायगी स्थगित कर देनेके लिए जापान सरकारने राष्ट्र-सभाके सामने एक योजना उपस्थित की थी। आस्ट्रेलियाके विभिन्न राज्योंमें Mortgagor's Relief Acts नामक कानून इसी उद्देश्यसे बनाये गये थे। इन कानूनोंके अनुसार महाजनोंका अधिकार कर्जदारोंके विरुद्ध बहुत-कुछ नियन्त्रित कर दिया गया जिससे वे ऋण चुकानेमें असमर्थ कर्जदारोंका सर्वस्व अपहरण नहीं कर सकें। इस देशके किसानोंके लिए भी Rural Insolvency Act के रूपमें कोई कानून पास करना होगा जिससे जिनकी कुल जायदाद और आमदनी इतनी काफी नहीं साबित हो कि उससे उनका ऋण चुकाया जा सके उन्हें इस हद तक कर्जदारीसे मुक्त कर दिया जाय जिससे उनके पास कमसे कम अपनी अनिवार्य आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए जोत-जमीन बच जाय। किसी भी हालतमें किसानोंकी Homestead land वास्तु-भूमि महाजन नीलाम नहीं करा सके, इसकी व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए। ऋण-मोचन कानून द्वारा किस श्रेणीके किसानोंको सहायता मिलनी चाहिए, इस सम्बन्धमें तीन बातोंपर ध्यान रखना होगा। एक श्रेणीके किसान वे हैं जो ऋण चुकानेमें समर्थ हैं। इनके सम्बन्धमें यह देखना होगा कि सूदकी दर बहुत ज्यादा तो नहीं है। यदि सूदकी दर बहुत ज्यादा हो तो अदालतको यह अधिकार दिया जाय कि वह सूदकी दर कम कर दे। दूसरी श्रेणीके किसान वे हैं जो अपना कुल ऋण, असल और सूद, चुका नहीं सकते। इनके सम्बन्धमें ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे वे जहां तक सम्भव हो, अपनी सामर्थ्यके अनुसार ऋण चुकादें और बाकी हिस्सेसे उन्हें बरी कर दिया जाय। तीसरे वे हैं जो असल या सूद कुछ भी अदा नहीं कर सकते और ऋण चुकानेमें जिनका सर्वस्वान्त हो जा सकता है। इस श्रेणीके किसानोंको ऋण-भारसे सर्वथा मुक्त कर देना होगा।

प्रथम दो श्रेणीके कर्जदारोंके लिए जमीन बन्धक लेकर रुपया उधार देनेवाले बैङ्कों Land mortgage Banks की स्थापना आवश्यक है। Central Banking Enquiry Committee ने इसी प्रकारके बैङ्कोंकी स्थापनाके लिए सिफारिश की थी। इस प्रकारके बैङ्कोंका जाल तमाम देशमें बिछ जाना चाहिए। ये बैङ्क महाजनोंको, अदालत द्वारा निश्चित किसानोंके ऋणकी रकम चुका देंगे और फिर किसानोंके लिए ऐसी व्यवस्था कर देंगे जिससे वे कम सूदपर किस्तबन्दीके रूपमें बैङ्कको उसका पावना चुकाते रहें। इन बैङ्कों द्वारा किसानोंको थोड़े दिनकी मियाद और लम्बी मियादवाले दोनों तरहके ऋण मिलनेका प्रबन्ध होना चाहिए। इससे एक बड़ा लाभ यह होगा कि जिन किसानोंका ऋण अभी अतिमात्रामें नहीं पहुंचा है और जिन लोगोंने कई महाजनोंसे अधिक सूदकी दरपर ऋण लिया है और ऋणकी छोटी-छोटी रकमोंके एक-साथ हो जानेपर उसकी तादाद बहुत बढ़ जा सकती है, उनका सहज ही उद्धार हो जायगा और वे तीसरी श्रेणीके कर्जदारोंमें शामिल नहीं हो सकेंगे। दूसरी श्रेणीके किसानोंको ऋण-भारसे मुक्त करनेके लिए जमीन बन्धकी बैङ्क और सूदखोरीका कानून Usurious Loans Act. इन दोनोंसे काम लेना होगा। यदि उनके ऋणकी कुल तादाद—असल और सूद मिलाकर—उनकी समग्र सम्पत्तिके आधे भागसे अधिक हो गयी हो तो ऐसा प्रबन्ध करना होगा जिससे ऋणकी तादादमें इतनी कमी हो जाय जिससे बैङ्कको रुपया चुकानेमें कोई खतरा न हो। तीसरी श्रेणीके कर्जदारोंके लिए तो एकमात्र उपाय यही है कि Rural Insolvency Act के ढंगपर कोई कानून पास किया जाय, जिसके अनुसार किसान मुफलिस करार दे दिये जायं और उनकी जो सम्पत्ति हो उसे बेचकर महाजनका पावना जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तक अदा हो सके, चुका दिया जाय और बाकी देनसे किसानको मुक्त कर दिया जाय। इस प्रकारके कानूनमें इस बातपर खास तौरसे ध्यान रखना होगा कि उक्त किसानके पास इतनी सम्पत्ति अवश्य बच जाय जिससे वह नये सिरेसे अपनी जीवन-यात्रा आरम्भ कर सके।

किसानोंको ऋण-भारसे मुक्त करनेकी यह सम्पूर्ण योजना तभी सफल हो सकती है जबकि सारे देशमें बैङ्कोंकी स्थापना इतनी काफी संख्यामें हो जाय जिससे वे सहज ही किसानोंका ऋण-भार अपने ऊपर ले सकें। इससे किसानोंको दो लाभ होंगे। एक तो यह कि बैङ्क उनसे सूदकी दर कम लेगा और दूसरा किस्तबन्दी द्वारा रुपया चुकानेमें उन्हें सुविधा होगी। इसके सिवा किसानोंको भविष्यके लिए भी लम्बी मियादपर इन बैङ्कों द्वारा ऋण मिलनेमें सुविधा होगी। इस प्रकारके बैङ्क Co-operative या Joint stock के आधारपर स्थापित हो सकते हैं और उनके कोषके अधिकांशकी पूर्ति ऋणपत्र debentures बेचकर की जा सकती है। एक यह व्यवस्था भी की जा सकती है कि बैङ्क जिन किसानोंको ऋण दे उनके ऋणकी रकमसे सैकड़े ९ कम करके अलग रख ले और वह रकम बैङ्ककी पूंजीमें जमा कर दी जाय। सरकार द्वारा तथा इम्पीरियल बैङ्क और रिजर्व बैङ्क द्वारा भी इन बैङ्कोंको कई प्रकारसे सहायता पहुंचायी जा सकती है। बैङ्कोंके प्रबन्धपर यदि सरकार देख-भाल रखेगी तो इससे बैङ्ककी स्थिति मजबूत हो जायगी, क्योंकि जनताका उसके प्रति विश्वास और भी बढ़ जायगा।

किसानोंकी ऋण-समस्याका समाधान करनेमें भावनगर राज्यने जो प्रशसनीय कार्य किया है उसकी ओर प्रान्तीय सरकारोंका ध्यान विशेष रूपमें आकृष्ट होना चाहिए। भावनगर राज्यकी ओरसे एक कमेटी किसानोंकी आर्थिक दशाकी जांच करनेके लिए नियुक्त की गयी थी। कमेटीको जांच करनेपर पता चला कि राज्यके किसानोंमें प्रतिशत ४५ ऋणमें डूबे हुए हैं और उनमें बहुत-से ऐसे हैं जिनके लिए ऋण चुकाना असम्भव है। प्रत्येक कर्जदार किसानके ऋणकी तादादका अलग-अलग हिसाब लगानेपर मालूम हुआ कि ऋणकी कुल तादाद ८६ लाख होती है। अब यदि किसानोंपर इस ऋणके चुकानेका भार छोड़ दिया जाता है तो वे आजीवन इस भारसे मुक्त नहीं होंगे और न नये सिरेसे अपनी जीवन-यात्रा आरम्भ कर सकेंगे। भावनगर-दरबारने यह भी सोचा कि ऋण-मुक्त हो जानेपर किसानोंकी टैक्स चुकानेकी क्षमता बढ़ जायगी और इससे दरबारको भी लाभ होगा। फलतः महाजन और कर्जदारको एकत्र करके राज-कर्मचारियोंने दोनोंके बीच समझौता करानेका प्रयत्न किया। सब महाजनों और कर्जदार किसानोंके बीच समझौता हो जानेपर ८६ लाख रकमका एक चौथाई भाग स्थिर हुआ और राज्यकी ओरसे यह सारी रकम चुका दी गयी। अब किसान क्रमशः दरबारको यह रकम चुकाते रहेंगे। दरबारकी ओरसे सूदकी दर बहुत कम रखी गयी है और ऋण चुकानेके नियम इतने सरल रखे गये हैं कि किसानोंको ऋण चुकानेमें कुछ भी कठिनाई नहीं होगी। भावनगर राज्यके इस प्रबन्धसे वहांकी प्रजा तो सन्तुष्ट हुई ही है, महाजन भी इससे कम सन्तुष्ट नहीं हैं; क्योंकि उन्हें बिना किसी दिक्कतके एक साथ मोटी रकम मिल गयी। इस प्रकार महाजनों और किसानोंके सहयोग तथा राज्यके बीच-बिचावसे भावनगर राज्यमें जो कार्य सम्भव हुआ है वह ब्रिटिश भारतमें क्यों नहीं हो सकता?

बहुत-से देशोंमें किसानोंकी आर्थिक उन्नतिके लिए कृषि-संस्थायें स्थापित हैं जिनसे वहांके किसानोंको विशेष लाभ पहुंच रहा है। जापानमें तो इस प्रकारकी कृषि-संस्थाओंको सरकार द्वारा प्रोत्साहन मिलता है और उन्हें बहुत-सी विशेष सुविधायें प्रदान की गयी हैं। किसानोंके लिए इन संस्थाओंका सदस्य बनना अनिवार्य होता है। भारतमें इस प्रकारकी संस्थाओंकी स्थापनासे सहयोग-मूलक पद्धतिपर कृषि करने तथा किसानोंकी ऋण-समस्याके समाधानमें बहुत-कुछ सुविधा पहुंच सकती है। इन संस्थाओं द्वारा कृषि-सुधारके लिए किसानोंमें प्रचार-कार्य भी आसानीसे किया जा सकता है। किसानोंकी जानकारी बढ़ेगी और उनका दृष्टिकोण व्यापक होगा।

देशकी इस समय जैसी आर्थिक अवस्था है उसे देखते हुए Land Mortgage Banks की देशव्यापी स्थापनामें जो कठिनाइयां हैं उन्हें भुलाया नहीं जा सकता, किन्तु ऋणग्रस्त किसानोंकी दशा इस समय जैसी विपन्न हो रही है उसे देखते हुए यह निःसङ्कोच कहा जा सकता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसके प्रतिकारके लिए सरकारको अविलम्ब कोई-न-कोई व्यवस्था करनी ही होगी। किसानोंकी दुःखद दुर्दशा चरम सीमापर पहुंच चुकी है, उनके धैर्यका बांध टूट चुका है और वे नैराश्यकी उस स्थितिपर पहुंच चुके हैं जहां "भूखा क्या न करता" की कहावत सहज ही चरितार्थ हो सकती है। किसानोंकी आर्थिक दशा दिन-दिन जैसी शोचनीय होती जा रही है, उनमें असन्तोष और नैराश्यकी मात्रा जिस प्रकार बढ़ती जा रही है उसे देखते हुए सरकारको अभीसे सतर्क हो जाना चाहिए। जमींदारों और महाजनोंकी स्वार्थ-रक्षाके लिए बहुत कानून बन चुके। अब इन किसानोंके लिए—जो देशके सर्वस्व हैं, समग्र देशके अन्न-दाता हैं—उनके मुमूर्षु प्राणोंमें नवजीवन सञ्चार करनेके लिए, उनके जीवन-मरणकी विकट समस्याका समाधान करनेके लिए कानून बनना चाहिए। किसानोंकी रक्षामें ही देशकी रक्षा है और उनके अस्तित्वपर ही देशका अस्तित्व निर्भर करता है।

---

# तुम और मैं

तुम हृदय, और मैं बनूं प्यार।
तुम वीणा हो, मैं बनूं तार॥
तुम राग बनो, मैं बनूं तान,
तुम गाओ, मैं भी बनूं गान॥
हां, ठहरो कर लूं आज दान, तुम ले लो मैं दूं हृदय-दान॥

तुम सुमन बनो, मैं हूं डाली।
तुम मदिरा, मैं उसकी प्याली॥
तुम हो प्रभात, मैं हूं लाली।
तुम तुहिन बनो, मैं हरियाली॥
मैं क्यारी, तुम उसके माली, तुम जीवन, मैं उसकी जाली॥

तुम चलो देव! मैं बनूं धूलि।
तुम चित्रकार, मैं बनूं तूलि॥
तुम सागर, मैं सरिता-धारा।
तुम चन्द्र, और मैं हूं 'तारा'॥
मेरा जीवन, मेरा प्यारा। कर दूं बलि आज जगत सारा॥

—तारा देवी पांडे



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# परित्यक्ता

श्री "अद्वैत"

श्यामाको जब उसके पति बाबू ईश्वरीप्रसादने विवाह-मण्डपमें अवसर पाकर प्रथम बार देखा तो उसकी कुरूपताके कारण उनके हृदयको बड़ा धक्का पहुंचा। प्रत्यक्ष-दर्शियोंमेंसे एक दलका तो यहां तक कहना है कि वह तत्काल मूर्च्छित होकर गिर पड़े थे। इसमें सत्यका भाव किस अंश तक वर्तमान है, हम कह नहीं सकते। हां, इतना अवश्य हमें भी मालूम है कि बाबू ईश्वरीप्रसादने उसी दिनसे नव-विवाहिता स्त्रीको आजीवन त्याग देनेका दृढ़ सङ्कल्प कर लिया। बड़े भाईके बहुत समझाने-बुझानेपर भी न माने और दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर घरको अकेले वापस चले गये। बारातियों-को भी लाचार निराश भावसे उनका अनुसरण करना पड़ा। श्यामाके माता-पिताके मनमें पहलेसे ही आशङ्का बनी थी, पर यहां तक नौबत पहुंचेगी, इसकी कल्पना उन्होंने नहीं की थी।

श्यामाकी आयु उस समय बारह वर्षकी थी। अपने विवाहके अवसरपर ऐसी खलबली मचते देखकर उसे घबराहट अवश्य हुई, पर इसका कारण उसकी समझमें बिलकुल न आया। जब उसने सुना कि उसकी कुरूपताके कारण वर महोदय क्रुद्ध हुए हैं तो उसके लिए यह पहेली और भी अधिक जटिल हो उठी। उसने सोचा कि ऐसे अच्छे कपड़ों और ऐसे सुन्दर गहनोंसे सज्जित होनेपर भी वह कुरूपा क्यों बतायी जा रही है! असल बात यह थी कि वह अभी तक रूपके विशेषत्व, महत्त्व अथवा उसकी उपयोगितासे परिचित नहीं थी। जब किसी स्त्री-समाजमें किसी लड़कीके रूपकी प्रशंसा की जाती तो वह उसका अर्थ यही लगाती कि उसके कपड़ों और गहनोंकी सजावट अच्छी है, वह साफ-सुथरी रहती है, उसके बाल अच्छी तरह संवारे हुए होते हैं। इन बातोंके अतिरिक्त किसीके रूपमें और क्या विशेषता रह सकती है, यह उसे नहीं मालूम था। पर आज जब उसने देखा कि उसकी कुरूपताके कारण ऐसा 'काण्ड' मच गया है, पिताजी अत्यन्त उद्विग्न हैं, मां रो रही हैं, तो वह स्तम्भित-सी होकर त्रस्त-व्यस्त अवस्थामें सिर नीचा किये एक कोनेमें दुबकी हुई बैठी रही और बुद्धिके अनुसार तात्कालिक स्थिति-को समझनेकी चेष्टा करने लगी; तथापि ठीक समझ न पायी। आकाश-पाताल-व्यापी नाना कल्पनाओंसे भी जब उसे इस समस्याके समाधानमें कोई सहायता न मिली तो अन्य कोई गति न देखकर वह भी चुपचाप रोने लगी।

श्यामाके स्वभावमें आज तक जो लड़कपनकी नादानी वर्तमान थी उसपर इस असाधारण घटनाके कारण गहरा धक्का पहुंचा। इस आघातसे उसके मस्तिष्ककी चेतनामें द्रुत परिवर्तन होने लगा। दिन-दिन वह सांसारिक विषयोंके सम्बन्धमें अधिकाधिक सचेत होने लगी और संसारको अच्छी तरह समझनेकी चेष्टा करने लगी। फल यह हुआ कि केवल दो ही वर्षोंके भीतर उसके मानसिक विचारोंमें जो क्रान्ति मच गयी, हृदयके भीतर जो तूफान उठ खड़ा हुआ, वह अत्यन्त अद्भुत, अभूतपूर्व और आश्चर्यजनक था। विवाहके समय तक वह बिलकुल भोली और बोदी थी। पर विवाहके दो वर्ष बाद जिस-जिसने उसे देखा, वही उसके स्वभावका गाम्भीर्य और बुद्धिकी स्थिरता देखकर चकित रह गया। उसकी अनुभूति अधिकाधिक तीव्र होती जाती थी और विचारशीलता भी दिन-दिन बढ़ रही थी। कामका भार उसके ऊपर बहुत था। कभी उसे अपनी मांको धान कूटनेमें सहायता देनी पड़ती थी, कभी चक्की पीसनी पड़ती थी, कभी खाना बनाना पड़ता था। अवकाशका समय उसे बहुत कम मिलता था। पर उसे कामके बीचमें भी सोचनेकी आदत पड़ गयी थी। वह क्या सोचती थी? निश्चित रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता। क्योंकि उसका हृदय और मस्तिष्क दोनों मिल-कर दिनभर नाना प्रकारकी कल्पनाओंके अस्पष्ट जाल बुनते रहते थे। वांह्य जगत्में वह जो-कुछ भी देखती थी, जो-कुछ भी सुनती थी, अपने अन्तर्जगत्में कल्पना द्वारा उसका तदनुरूप चित्रण करके उसके प्रति सहानुभूति अथवा घृणा प्रकट करनेकी चेष्टा करती। यदि किसी नव-वधूका लज्जा-मधुर स्वभाव उसकी नजरोंमें आ जाता तो धान कूटते अथवा चक्की पीसते हुए अपनी कल्पनाके नाना रङ्गोंसे वह उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नवेलीके मधुमय जीवनका चित्र अपने मनमें अङ्कित करती थी और कभी कौतूहलवश अपनेको उसके स्थानमें कल्पना करके पुलक-लाजसे पसीज-पसीज उठती थी। और कभी इस हालतमें यदि वह अकेली होती तो अपनी स्थिति-का ख्याल करके रोने भी लग जाती। यदि गांवमें किसी लड़कीके विवाहकी चर्चा छिड़ती तो उसके मनमें एक टीस-सी पैदा होती थी। किसी सुन्दर लड़कीका रूप देखती तो उसके मनमें ईर्ष्याके साथ ही एक उमङ्ग भी उत्पन्न होती थी। तात्पर्य यह कि वह समस्त सांसारिक घटनाओंको अपने हृदयकी सुख-दुःखमयी अनुभूतिकी तुलनात्मक दृष्टिसे देखती थी। अपनी उमङ्गों, तरङ्गों और ज्वालाओंको वह प्रति-क्षण इस प्रकार हृदयसे जकड़े रहती, जैसे बन्दरिया अपने नव-जात बच्चेको। पतिके निष्ठुर अपमानकी वेदनाका तीक्ष्ण अनुभव अब उसके मर्मको समय-समयपर अत्यन्त निर्दयतासे छेदने लगा था। पहले वह उस अपमानका यथार्थ स्वरूप समझनेमें असमर्थ थी, पर धीरे-धीरे इस सम्बन्धमें उसकी आत्मा सचेत होने लगी। अपमानकी दुःखद स्मृति ज्यों-ज्यों तीक्ष्ण होती जाती त्यों-त्यों उसके मनमें समस्त संसारके प्रति अभिमानका भाव भी बढ़ता जाता। वह सोचती—"जिस रूप और सौन्दर्यके अभावके कारण मैं ठुकरायी गयी हूं वह असलमें है क्या चीज ? मेरे हृदयमें इतना रस भरा हुआ है, ऐसी मार्मिक भावुकता भरी है, बुद्धिमें भी मैं किसी साधारण लड़कीसे कुछ कम नहीं हूं, पतिके प्रेम और सेवाके लिए दिन-रात मेरा मन तड़पा करता है, फिर भी मैं उससे वञ्चित हूं। यह क्यों ? सिर्फ इसीलिए कि मैं काली हूं !" वह मन-ही-मन भगवान्‌को कोसती हुई कहती—"हे निष्ठुर भगवान्! अगर मुझे तुमने सुन्दरता नहीं दी थी तो मेरा हृदय भी जड़ क्यों नहीं बना दिया ? क्यों उसमें ऐसी प्रबल अनुभूति और भावुकता भर दी ?" वह अपने उमड़ते हुए अश्रुवेगको रोककर, जी मसोसकर रह जाती।

अवकाश पाते ही वह बीच-बीचमें धार्मिक तथा सामा-जिक पुस्तकों और कभी-कभी चोरी-छिपे उपन्यास-कहानियों-से अपना जी बहलाती थी। कुछ पुस्तकें उसके मामा उसके लिए पटनासे भेज देते थे और कुछ वह अपनी सहे-लियोंसे मांगकर पढ़ती थी। पुस्तकोंके मायालोकमें विचरण करनेसे उसकी कल्पना बार-बार मरीचिकामें भटकती फिरती थी, और उसका पिञ्जर-बद्ध हृदय-पक्षी मुक्त वायुमें विचरनेके लिए कभी-कभी छटपटाने लगता था।

* * *

उसके मामाके यहां कोई विशेष उत्सव होनेवाला था। उसने गुप्त रूपसे मामाको एक चिट्ठी लिखी कि "मैं इस शुभ अवसरपर पटना आना चाहती हूं, इसलिए आप स्वयं आकर मुझे अपने साथ ले चलें।" घरके काम-काजसे वह उकता गयी थी। हृदयमें उसके आग बझी हुई थी, शरीर दिन-दिन क्षीण होता जाता था, तिसपर मांकी झिड़कियोंके मारे हर घड़ी नाकों दम था। इन सब कारणोंसे मायके-के कर्म-चक्रमें दिन-रात पिसते रहना उसके लिए एकदम असह-नीय हो उठा था। वह किसी बहानेसे त्राण पाना चाहती थी। उसके मामा मुन्शी दीनदयाल उसे बहुत चाहते थे। उसका पत्र पाते ही वह चले आये और बहन-बहनोईको किसी प्रकार राजी करके उसे अपने साथ ले चले।

शहरमें आनेपर श्यामाका हृदय बहुत-कुछ हलका हो गया। मामा-मामीका स्नेह, ममेरे भाई-बहनोंका साथ, अवकाश और आनन्दमय जीवन—इन सब कारणोंसे, उसे अपना हृदय-व्यापी विषाद मिटता हुआ-सा मालूम होने लगा। मुन्शी दीनदयाल पटनामें एक बड़े कण्ट्रैक्टर थे। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। उनके दो लड़के थे और तीन लड़कियां। बड़ा लड़का मोहनलाल किसी आफिसमें नौकर था, छोटा लड़का व्रजलाल स्कूलमें पढ़ता था। बड़ी लड़की लक्ष्मीका विवाह हो चुका था, मंझली लड़की रामेश्वरीका विवाह होनेवाला था, छोटी लड़की उमा अभी नादान बच्ची थी। बहनोंकी सहेलियों और भाइयोंके साथियोंका घरपर आना-जाना नित्य लगा रहता था। जिस-किसीके साथ भी श्यामाका परिचय हो जाता वही उसके गुणोंकी प्रशंसा करता और उसके स्वभावका माधुर्य देखकर चकित रह जाता। उसकी बहुत-सी नव-परिचिता सहेलियां तो उसके साथ घण्टों बातें करके भी नहीं उकताती थीं।

मोहनलालके मित्रोंमें शम्भुनाथ नामका एक युवक भी था। वह बड़ा मिलनसार, हंसमुख, गठीला और सजीला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जवान था। मुन्शी दीनदयालके परिवारके सभी प्राणियोंसे उसकी घनिष्ठता थी। घरकी स्त्रियां उसके आगे पर्दा नहीं करती थीं। बाल-बच्चेसे लेकर बड़े-बूढ़े तक सभी उससे हिले-मिले रहते थे। श्यामाने उसे जब पहले-पहल देखा तो वह रामेश्वरीको किसी बातपर इस प्रकार खिझा रहा था, जैसे वह एक नादान बच्ची हो—यद्यपि उसकी आयु चौदह वर्षसे भी अधिक हो गयी थी। श्यामा यह दृश्य देखकर बहुत चकरायी। देहातकी लड़की थी, शहरकी लड़कियोंकी स्वतन्त्रताका अनुभव उसे नहीं था। इसलिए एक एकान्त कमरेमें एक अपरिचित पुरुषके साथ रामेश्वरीका हास्यालाप देखकर वह लज्जासे पसीने-पसीने हो गयी और उलटे पांव लौटने लगी। रामेश्वरीने दौड़कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—"कहां जाती हो, दीदी? शम्भू भैयाको देखकर घबरा गयीं? न, यह न होगा। चलो तुम्हें उनसे मिला दूं, बड़े भले आदमी हैं, बड़े भैयाके साथी हैं, उनके आगे लज्जा कैसी? चलो!" श्यामा अधिक भयभीत हो उठी। अपना हाथ छुड़ानेकी चेष्टा करके धीमे स्वरमें बोली—"मुझे जाने दे, रामा! मेरा हाथ छोड़ न, पगली!" पर रामेश्वरी काफी मजबूतीसे उसका हाथ पकड़े थी। वह हठ करती हुई बोली—"नहीं, तुम्हें चलना ही होगा।" यह कहकर खिलखिला उठी। शम्भुनाथ दो बहनोंको इस प्रकार झगड़ते देखकर उठकर उन दोनोंके पास ही चला आया। उसने रामेश्वरीको सम्बोधन करते हुए कहा—"उन्हें छोड़ दो। क्यों नाहक इस तरह तङ्ग कर रही हो!" रामेश्वरीने कहा—"यही मेरी नयी दीदी हैं, जिनका जिक्र मैंने आपसे किया था।" श्यामाने कौतूहलवश शम्भुनाथके मुखकी ओर एक बार झांका, और उसी दम मुंह फेर लिया। शम्भुनाथने कहा—"आपकी तारीफ मैंने रामाके मुंहसे सुनी थी। आज सौभाग्यसे आपके दर्शन भी हो गये।" यह कण्ठस्वर कैसा मीठा था! उसमें कैसी शिष्टता और सौजन्य वर्तमान था! श्यामाने अपने जीवनमें आज प्रथम बार किसी युवकको ऐसे मधुर झङ्कारसे, ऐसी स्थिर, शान्त गरिमासे अपनेको सम्बोधित करते हुए सुना। उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे वह वहींपर मूर्च्छित हुआ चाहती हो। एक जोरके झटकेसे अपना हाथ रामेश्वरीके पञ्जेसे छुड़ाकर वह वहांसे चली गयी।

दिन-भर और रात-भर शम्भुनाथका शब्द-झङ्कार उसके कानोंमें बजता रहा। उसकी कुरूपता देखकर भी कोई युवक उसके साथ इस तरह पेश आ सकता है, यह उसके कल्पनातीत था। वह सोचने लगी—"असम्भव कैसे सम्भव हो गया? तब क्या मैं वास्तवमें कुरूप नहीं हूं? अवश्य हूं, इसमें सन्देहके लिए कोई गुञ्जाइश नहीं है। पर सम्भव है, मेरी कुरूपता ऐसी वीभत्स न हो कि जिसे देखते ही लोग घिनियाने लगें और उनका जी मतलाने लगे। यह भी कैसे कहा जाय! अगर यही बात होती तो 'वह' विवाहके बीचमें ही मेरा घोर अपमान करके उस प्रकारसे चले न जाते। पर क्या यह सम्भव नहीं हो सकता कि कोई विशेष पुरुष किसी विशेष लड़कीको घृणाकी दृष्टिसे देखता हो और कोई दूसरा पुरुष उसी लड़कीको सुन्दर समझकर प्रेमपूर्ण आदरसे उसका स्वागत करे?" उसने शीशा उठाकर एक बार भली भांति गौरसे अपना मुंह देखा और नाना युक्तियोंसे अपनेको सुन्दर समझनेकी चेष्टा करने लगी।.....

इस घटनाके दो-तीन दिन बाद मोहनलालने एक सङ्गीत-पार्टीका आयोजन किया। उस दिन शनिवार था। रातको मोहनलालकी मित्र-मण्डली बैठकके कमरेमें एकत्रित हुई। भीतरके कमरेमें स्त्रियां चिककी आड़से देख रही थीं। बहुत देर तक गाना-बजाना होता रहा। पर मुख्य गवैया शम्भुनाथ ही था। उसने तरह-तरहकी राग-रागिनियां और गजलें गायीं। उसका गला सधा हुआ था और कण्ठस्वर मीठा था। सब श्रोता मुग्धभावसे उसका गाना सुन रहे थे। श्यामाको ऐसा मालूम हो रहा था कि जीवनके आनन्दकी धारा मुक्त वेगसे उसके सामनेसे होकर बहती चली जा रही है, प्रेम-रसका अमृतमय झरना उसके पास ही इठलाता, बल खाता हुआ फेनोच्छ्वाससे तरङ्गित हो रहा है, पर उसे छूनेका भी अधिकार उसे नहीं है, अपने शुष्क हृदयकी ज्वाला बुझानेके लिए उसकी एक बूंद भी उसे प्राप्त नहीं हो सकती! सब स्त्रियां तन्मय होकर सुन रही थीं, वह भी सुन रही थी; पर उसकी आंखें भावोच्छ्वास और अभिमानवश आंसुओंके प्रवेगसे भींग रही थीं। वह सबके पीछे खड़ी थी, इसलिए उसे यह सुविधा थी कि उसका रोना कोई नहीं देख सकता था। जो लोग सोचते हैं कि सङ्गीत सुननेसे भावुक स्त्री-पुरुषोंका हृदय सदा आनन्दित होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वे बड़ी भारी भूल करते हैं। सङ्गीतका गुण केवल आनन्द ही उत्पन्न करनेका नहीं है, वह कभी-कभी हृदयमें एक निगूढ़ वेदनाका क्रन्दन उत्पन्न करता है, और कभी-कभी मस्तिष्कमें रक्तका उत्ताप उत्पन्न करनेवाली उत्तेजना। भुक्तभोगियोंसे यह बात छिपी न होगी कि इस उत्तेजनाका प्रदाह कभी-कभी कैसा उग्र रूप धारण कर लेता है। एक तरफ तो श्यामाके हृदयमें भावोंका आवेग उमड़ रहा था और दूसरी ओर उसके मनमें अपनी परिस्थितियोंके प्रति घोर असन्तोष, अपने प्रति घृणा और संसारके प्रति विरक्ति-के भाव उत्पन्न हो रहे थे। इन सब कारणोंसे उसका मस्तिष्क भिन्नाने लगा और उसे चक्कर-सा आने लगा। वह बीच हीमें उठकर भीतर चली गयी और अपने कमरेमें जाकर पलंगपर लेट गयी।

शम्भुनाथ प्रायः नित्य ही मोहनलालके यहां आता-जाता रहता था। जब वह बेधड़क स्त्रियोंके बीचमें आकर खड़ा हो जाता तो श्यामाका सारा शरीर लज्जा और सङ्कोचके भावसे जर्जरित हो उठता था। वह कनखियोंसे उसे देखती थी। कभी-कभी इच्छा होनेपर भी उसे अपना सौन्दर्यहीन मुख शम्भुनाथको दिखानेका साहस नहीं होता था। यद्यपि शम्भुनाथको उसके साथ प्रत्यक्ष रूपसे बातें करनेका अवसर नहीं मिलता था, तथापि परोक्षमें वह यह भाव जता देता था कि श्यामाके प्रति वह उदासीन नहीं है।

एक दिन श्यामा और रामेश्वरी दोनों साथ ही श्यामाके कमरेमें बैठी हुई थीं। रामेश्वरी श्यामाका जूड़ा बांध रही थी। दोनों आपसमें हंसी-खुशीकी बातें कर रही थीं। अचानक शम्भुनाथ आ खड़ा हुआ। श्यामाने उसे देखते ही तत्काल अपना सिर साड़ीसे ढक लिया। "ओह! मुझे मालूम नहीं था। गलती हुई, मैं जाता हूं।" कहकर शम्भु-नाथ लौटने लगा। रामेश्वरी दौड़कर उसके आगे खड़ी हो गयी और कहने लगी—"कहां जाते हैं, बैठिये! दीदी कोई बिच्छू नहीं हैं जो आपको काट खायेंगी।" शम्भुनाथने कहा—"दीदी बिच्छू नहीं हैं, यह मैं जानता हूं, पर मैं दीदीके लिए सांप जरूर हूं। इसीलिए मुझे देखते ही भयसे उन्होंने अपना मुंह ढांप लिया!" रामेश्वरी खिलखिला उठी और बोली—"आप घबराइये मत, मैं उनका सारा डर अभी दूर किये देती हूं। उन्हें अपना मुंह खोलना पड़ेगा।" यह कहकर वह श्यामाकी साड़ी सिरपरसे हटानेकी चेष्टा करने लगी, पर श्यामा दोनों हाथोंसे बड़ी मजबूतीसे उसे पकड़े थी। दोनोंकी छीना-झपटीमें साड़ी फट गयी। रामेश्वरीने खेलवाड़के बतौर साड़ीका फटा हुआ हिस्सा पकड़कर उसे और भी ज्यादा चीर डाला और जोरसे खिलखिलाकर हंसने लगी। शम्भुनाथने कृत्रिम गाम्भीर्यसे रामेश्वरीको दुतकारते हुए कहा—"तुम बड़ी शैतान हो!" उस समय बेचारी श्यामाकी दुर्दशा देखने योग्य थी। फटी साड़ीमें नङ्गे सिर संकुचित अवस्थामें सिर नीचा किये बैठी थी। शम्भुनाथने उसके पास आकर कहा—"मुझे विश्वास है कि आपकी साड़ी शुभ घड़ीमें फटी है। आजसे सदाके लिए पर्देको तिलाञ्जलि दे दीजिये!" श्यामाने एक बार पूर्ण दृष्टिसे शम्भुनाथकी ओर देखनेका साहस किया। इस बार उसकी दृष्टिमें सलज्ज हासका मधुर विलास वर्तमान था और भ्रूविक्षेपमें एक साङ्केतिक वक्रता।

श्यामाके सिरहाने एक पुस्तक रखी हुई थी। पुस्तकका नाम था 'भक्तिका मार्ग।' उसके भीतर बड़े सुन्दर अक्षरोंमें श्यामाका नाम और पुस्तकके प्राप्त होनेकी तारीख लिखी थी। दो-चार पन्ने उलटाकर शम्भुनाथने कहा—"ईश्वरकी गुलामी और धर्मके पचड़ेने हमारी स्त्रियोंको एकदम कायर और निकम्मा बना डाला है।" श्यामाने रामेश्वरीके कानमें उत्तरके बतौर कहा—"नास्तिकोंमें ईश्वर और धर्मका महत्त्व समझनेकी बुद्धि कहां!" रामेश्वरीने शम्भुनाथको श्यामाका उत्तर सुना दिया। शम्भुनाथ बोला—"अगर मेरा राज्य होता तो मैं सब धार्मिक पुस्तकोंकी होली जलाकर आग तापता।" श्यामाने रामेश्वरीके कानमें कहा—"कहो कि ईश्वर गञ्जेको नाखून नहीं देता।" रामेश्वरीने इस उत्तरको भी दुहरा दिया। इस प्रकार कुछ देर तक उत्तर-प्रत्युत्तरका सिलसिला जारी रहा। सम्भवतः रामेश्वरी और शम्भुनाथ दोनोंको श्यामाके रुखके इस आकस्मिक परिवर्तनपर आश्चर्य हो रहा था। जाते समय शम्भुनाथने श्यामाको उद्देश्य करके कहा—"आज आपके गुणोंका वास्तविक परिचय पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आशा करता हूं कि अबकी बार जब आऊंगा तो आपको इसी प्रकार प्रसन्नचित्त पाऊंगा।"

उसके चले जानेपर रामेश्वरीने श्यामासे कहा—"देखा दीदी, कैसे भले आदमी हैं! तुम तो खामखा घबरा रही थीं!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्यामा आज वास्तवमें प्रसन्न थी। अपने इस अकारण हर्षका आवेग वह किसी रूपमें बाहर निकालना चाहती थी। उसने उल्लासपूर्वक रामेश्वरीके गालमें सस्नेह चिकोटी काटी; अत्यन्त आवेशसे उसका मुंह चूमा, मानो वह एक नादान बच्ची हो, और इसके बाद हिस्टीरिया-ग्रस्त स्त्रीकी तरह दोनों हाथोंसे उसके सिरके बालोंको खूब जोर-जोरसे मलने लगी। उत्कट आवेगके कारण कभी उसे चुमकारती थी, कभी दांतोंको पीसती थी। उसके इस दुलारसे रामेश्वरी हौलदिल-सी हो गयी।

* * *

भागलपुरसे मुन्शी दीनदयालके एक दूरके सम्बन्धी आये हुए थे। उन्हें जब श्यामाका परिचय प्राप्त हुआ तो उन्होंने उसके पतिके सम्बन्धमें बड़ी-बड़ी दास्तानें सुनानी आरम्भ कर दी। उनकी बातोंसे मालूम हुआ कि वह भागलपुरमें डाक्टरी करते हैं और उनकी डाक्टरी खासी अच्छी चल रही है। यह भी मालूम हुआ कि उन्होंने अभी तक दूसरा विवाह नहीं किया है। इन नवागत महाशयकी बातोंसे ऐसा जान पड़ता था कि वह डाक्टर साहबसे विशेष घनिष्ठताका सम्बन्ध रखते हैं। उनके सम्बन्धकी साधारणसे साधारण बातपर भी वह बड़ी रोचकतासे प्रकाश डालते थे—खासकर उस समय जबकि श्यामा उपस्थित रहती। डाक्टर साहबकी प्रशंसा करना ही उनका मुख्य ध्येय जान पड़ता था। जब कोई व्यक्ति उन्हें इस बातकी याद दिलाता कि ईश्वरीप्रसादने अपनी निरपराधा पत्नीको केवल कुरूपताके कारण विवाहके समयसे ही त्याग करके घोर अन्याय किया है तो वह इस चर्चाको बड़े कौशलसे टाल देते और फिर उनके गुणोंका बखान करने लगते।

श्यामाके हृदयमें एक नया आन्दोलन मचने लगा। अपने हृदयमें वह पतिका एक निराला चित्र अङ्कित करने लगी। विवाहके समय उसने पतिके मुखकी क्षणिक झलक देखी थी, वह बिलकुल अस्पष्ट थी, उससे उनकी आकृतिके सम्बन्धमें कोई धारणा उसके मनमें नहीं हो सकती थी। इसलिए वह उनकी आकृतिको कल्पना द्वारा सुन्दर रंगोंसे रंगकर सोचती कि वह बहुत बड़े आदमीकी तरह घरपर एक बढ़िया कुर्सीपर बैठकर डाक्टरीके मोटे-मोटे ग्रन्थोंके निरीक्षणमें तन्मय रहते होंगे; उनके यहां मरीजोंका तांता नित्य लगा रहता होगा; जिस समय हैट-कोट पहनकर किसी बड़े आदमीके यहां विजिटमें जाते होंगे उस समय लोगोंके मनमें उनके चेहरेकी गम्भीरता देखकर सम्भ्रमका भाव उत्पन्न हो जाता होगा। शामको जब वह सैरके लिए मोटरपर सवार होकर निकलते होंगे तो शहरवाले उनकी ओर इशारा करके आपसमें कानाफूसी करते हुए कहते होंगे—"देखो, वह अमुक डाक्टर साहब जा रहे हैं।" वह मन-ही-मन कहती—"ऐसे पतिकी सेवाका सौभाग्य कौन स्त्री नहीं चाहेगी! सुनती हूं कि अभी तक उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया और न करनेका ही विचार है। तब उनका इरादा क्या है? क्या अभी तक उनके मनमें मेरी कुरूपताका आतङ्क वैसा ही बना है? यदि मैं उनके पास जाकर उनके पैरोंपर पड़ूं और गिड़गिड़ाऊं तो क्या वह नहीं पिघलेंगे? जिनके गुणोंकी इतनी प्रशंसा की जा रही है, जो ऐसे समझदार आदमी हैं, वह कभी एक स्त्रीके आर्तक्रन्दनको नहीं ठुकरा सकते। विवाहके समय जोशमें आकर उन्होंने अवश्य अन्याय किया, पर उनका वह क्रोध सदा वैसा ही बना रहेगा, यह जरूरी नहीं। पर मैं कैसे उनके पास जा सकती हूं? जिससे कहूंगी वही मेरी बात हंसीमें उड़ा देगा।"

असल बात यह थी कि अपने ऊपर शम्भुनाथकी सुदृष्टि देखकर उसमें आत्म-विश्वासका सञ्चार होने लगा था। वह सोचती कि शम्भुनाथ जैसा सुन्दर, सुशिक्षित, सर्वगुण-सम्पन्न युवक जब उसके प्रति आकर्षित हुआ है तो इसके मानी यह हैं कि उसका रूप उतना कुत्सित नहीं है जितना वह समझे बैठी थी। कभी-कभी इस सम्बन्धमें भी उसके मनमें सन्देह होता और वह सोचती कि सम्भवतः शम्भुनाथ अपनी दयालु प्रकृतिके कारण उसपर कृपा-भाव रखता हो और वह भ्रमवश यह समझे बैठी है कि वह उसके प्रति आकर्षित हुआ है। यह शङ्का मनमें उत्पन्न होनेपर वह शम्भुनाथके मनका यथार्थ भाव जाननेके लिए अधिक बेचैन हो उठती थी और उसकी प्रत्येक बात, प्रत्येक हाव-भावपर गौर करनेकी चेष्टा करती। यह प्रश्न उसके मनमें कभी उदय नहीं हुआ कि शम्भुनाथका भाव उसके प्रति कैसा रहता है यह बात जाननेके लिए उसके मनमें जो बेचैनी समायी रहती है उसका मूल कारण क्या है? किसी पुरुषको दृष्टिमें आनेकी लालसा पाप है या नहीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक दिन रामेश्वरीने उसे सूचित किया कि शम्भु बाबूकी बहनने उन दोनों ( श्यामा और रामेश्वरी ) को निमन्त्रित किया है, शम्भु बाबू अपनी मोटरमें दोनोंको अपने साथ ले चलेंगे। श्यामा घबरायी। उसने पूछा—"मामी क्या जाने देंगी? उनकी आज्ञाके बिना तो मैं नहीं जा सकती।" रामेश्वरीने कहा—"अम्मासे मैंने पूछ लिया है, उन्हें कोई उज्र नहीं है।"

दूसरे दिन शामको शम्भुनाथ मोटर लेकर पहुंच गया। श्यामा और रामेश्वरी पहलेसे ही तैयार बैठी थीं। शम्भुनाथ ड्राइवरके साथ बैठ गया और वे दोनों पीछेकी सीटमें बैठ गयीं। कुछ देर बाद मोटर एक स्थानपर आकर खड़ी हो गयी। रामेश्वरी उतर पड़ी और श्यामासे बोली—"मैं दो मिनटके लिए अपनी एक सहेलीसे मिलकर अभी लौट आती हूं, तुम बैठी रहो।" यह कहकर वह पासवाली गलीके भीतर चली गयी। शम्भुनाथ तत्काल उठकर श्यामाकी बगलमें रामेश्वरीके स्थानपर आकर बैठ गया और ड्राइवरसे बोला—"ले चलो!" श्यामाकी घबराहटका वर्णन नहीं हो सकता। उसकी बुद्धि चकराने लगी थी। उसकी समझ हीमें न आता था कि माजरा क्या है! जब मोटर चलने लगी तो उसने साहस करके कहा—"अभी रामा नहीं आयी, आप मुझे अकेले कहां लिये जाते हैं?" उसका गला कांप रहा था। शम्भुनाथने उत्तर दिया—"रामाकी आवश्यकता ही क्या है? जब मैं साथमें हूं तो डर किस बातका? आप निश्चिन्त रहें।"

श्यामा धड़कता हुआ कलेजा लेकर चुप बैठी रही। वह कुछ कहना चाहती थी, पर जबानसे एक शब्द नहीं निकलता था, जैसे किसीने ताला ठोंक दिया हो।

मोटर शहरसे बाहर निकल गयी। चारों ओर देहातका दृश्य नजर आने लगा। कुछ देर बाद एक बागके भीतर एक निर्जन मकानके पास आकर मोटर ठहर गयी, पर मकानमें चौकीदारके सिवा और कोई न था। एक कमरा खुलवाकर शम्भुनाथ प्रायः बलपूर्वक श्यामाका हाथ पकड़कर उसे भीतर ले गया और एक कौचपर बिठा दिया। श्यामा अकबकाकर वज्र-स्तम्भित-सी बैठी रही। शम्भुनाथने कहा—"मैं आज एक निवेदन करना चाहता हूं, इसीलिए आपको यहां लाया हूं।" श्यामा अधिक भयभीत हो उठी। शम्भुनाथ कुछ कहना चाहता था, पर ऐसा जान पड़ता था कि उसे साहस नहीं हो रहा है। क्षण-भरके लिए चुप रहकर वह बोला—"देखिये, मुझे इस बातपर बड़ा आश्चर्य होता है कि आपका व्यवहार मेरे प्रति इस कदर रूखा रहनेका कारण क्या है? क्या आप मुझसे घृणा करती हैं? क्या सचमुच मैं आज तक आपके मनमें केवल घृणा उभाड़नेमें ही समर्थ हुआ हूं? क्या आपने मुझमें कोई भी गुण ऐसा नहीं पाया जिससे मेरे सम्बन्धमें आपके मनमें कोई कोमल भाव उत्पन्न हो?" श्यामाने दृष्टि नीचेकी ओर करके कहा—"आपका ठीक-ठीक तात्पर्य क्या है, मैं समझी नहीं। आप देखते हैं, मैं मारे भयके कांप रही हूं।" शम्भुनाथका साहस बढ़ने लगा। वह बोला—"आप नहीं जानतीं कि जबसे मैंने आपको देखा है, तबसे मेरी क्या दशा हो गयी है! मैं अपना सर्वस्व आपपर न्योछावर करनेके लिए तैयार हूं और अपनी यह आकुल अभिलाषा आपके चरणोंपर निवेदन करनेके लिए ही आज अन्याय-पूर्वक धोखा देकर आपको यहां लाया हूं।"

शम्भुनाथकी छायावादी भाषासे चाहे और कुछ भी व्यक्त हुआ हो, उसमें जबर्दस्ती और दबावका भाव वर्तमान नहीं था। श्यामा कुछ स्थिर हुई। उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"देखिये शम्भु बाबू, मैंने कभी स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि आप मेरे साथ इस प्रकारका आचरण कर सकते हैं। मैं एक दुःखिनी नारी हूं और आपको बराबर अपना हितैषी समझकर श्रद्धाकी दृष्टिसे देखती चली आयी हूं। पतिने विवाहके दिनसे ही मुझे त्याग रखा है, इसीलिए समाज मुझे घृणित समझता है। क्या आप मेरे कलङ्कको चरम सीमा तक पहुंचा देना चाहते हैं? क्या मुझे जन्म-जन्मान्तरके लिए .....।" वह अधिक बोल न सकी, अञ्चलमें आंखें छिपाकर बेबस रोने लगी। शम्भु चकित था। जब श्यामा कुछ शान्त हुई तो फिर कहने लगी—"आपपर मुझे बड़ा भरोसा था। मैंने सोचा था, आप मुझे मेरे जीवनके सबसे बड़े सङ्कटसे उबारनेमें सहायक होंगे, क्योंकि आपको देखते ही मैं आपकी महत्तापर आकर्षित हुई थी, और आपको अपना त्राण-कर्ता मानकर बड़ी आशायें किये बैठी थी; पर.....।"

शम्भु पिघल गया। वह सहृदय था और उसका स्वभाव वास्तवमें ऐसा नहीं था जैसा उसने वर्तमान कार्रवाईसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनेको दिखाया था। एक अव्यक्त आवेगके वशीभूत होकर वह बहुत आगे बढ़ गया था, पर अब उसे अपनी भूल मालूम होने लगी थी। बोला—"क्षमा कीजियेगा; मुझसे बड़ी भूल हुई। इस समयसे मैं आपका अनुचर हूं, जैसी आज्ञा देंगी, करूंगा। आगमें कूद पड़नेको कहें तो वह भी मुझे मञ्जूर है। चलिये, इस समय आपको यथास्थान पहुंचा देता हूं। आप निश्चिन्त रहें, किसीको कानोंकान खबर न होने दूंगा।"

* * *

रामेश्वरीको छोड़कर वास्तवमें अन्य किसी भी व्यक्तिको उक्त घटनाकी कोई खबर मालूम न हुई। इससे श्यामाकी एक बड़ी भारी चिन्ता दूर हो गयी।

वह बहुत दिनोंसे जिस बातका मन-ही-मन निश्चय कर रही थी, अन्तको उसे पूरा करनेका दृढ़ सङ्कल्प उसने कर लिया। अपनी मामीसे उसने अपना यह विचार व्यक्त कर दिया कि वह एक बार भागलपुर जाकर अपने पतिसे स्वयं मिलनेकी इच्छा रखती है, और इस बातके लिए जोर बांधा कि उसके मामा उसे साथ ले चलें। मामीने उसकी मूर्खता-पर हंसकर उसे बहुत समझाया, पर वह किसी तरह न मानी। अन्तको उसके मामा उसे ले चलनेको राजी हो गये।

मुन्शीजी शम्भुनाथको भी साथ ले गये थे। भागलपुरमें वह अपने एक मित्रके यहां ठहरे। डाक्टर साहबको खबर दी गयी कि उनकी पत्नी अमुक सज्जनके यहां अपने मामाके साथ आयी हुई है, वह डाक्टर साहबसे मिलना चाहती है, इसलिए वह एक बार आकर मिलनेकी कृपा करें। तीन-चार दिन तक ये लोग डाक्टर साहबके उत्तरका इन्तजार करते रहे, पर कोई उत्तर न आया। श्यामा दुःखित हुई, पर निराश न हुई। क्योंकि इस सम्बन्धमें विशेष आशा करके वह नहीं आयी थी। तथापि वह अपने निश्चयमें दृढ़ थी। पांचवें दिन वह जिद करके मामासे झगड़कर शम्भुनाथ तथा जिस घरमें उसके मामा ठहरे हुए थे उस घरकी एक प्रायः छ सालकी लड़कीको साथ लेकर सन्ध्याके समय डाक्टर ईश्वरीप्रसादके यहां जा खड़ी हुई। उसके समान सङ्कोचशीला स्त्रीकी वह अविचलित दृढ़ता देखकर शम्भुनाथ चकित था। उसे पूरा भय था कि उसकी इस जिदका परिणाम अच्छा नहीं होगा।

डाक्टर साहब उस समय घरपर नहीं थे। श्यामा प्रतीक्षामें बैठी रही। घरकी स्त्रियोंमें श्यामाका परिचय पाकर बड़ी खलबली मच गयी थी और तरह-तरहके व्यङ्ग-वाणोंकी बौछारें उसपर होने लगी थीं। पर वह परम धैर्य-पूर्वक सब सहन करके बैठी रही। प्रायः अढ़ाई घण्टे बाद डाक्टर साहब आये। शम्भुनाथने उन्हें आज पहली बार देखा था। उनके मुखमें जो सौम्य शान्त भाव झलक रहा था वह उसे उनके उज्ज्वल चरित्रका द्योतक जान पड़ा। उसने जाकर उन्हें सूचना दी और कहा कि श्यामा एकान्तमें उनसे मिलना चाहती है। डाक्टर साहबके मुंहपर हवाइयां उड़ने लगीं। कुछ देर तक सोचनेके बाद उन्होंने कहा—अच्छी बात है, मैं कपड़े बदलकर तैयार होता हूं, तब तक इन्तजार करनेको कहिये।"

प्रायः बीस मिनटके बाद डाक्टर साहबने श्यामाको बुला भेजा। छोटी लड़कीको सहारेके बतौर साथ लेकर श्यामा डाक्टर साहबके कमरेमें उपस्थित हुई। डाक्टर साहबने कमरा भीतरसे बन्द कर दिया।

शम्भुनाथ बाहर बड़े अधैर्यसे बहुत देर तक श्यामाके लौटनेका इन्तजार करता रहा। डाक्टर साहबका रुख देख-कर वह किसी अच्छे परिणामकी आशा नहीं कर रहा था। पर उसके आश्चर्यका ठिकाना न रहा जब श्यामा अत्यन्त प्रसन्न मुख लेकर बाहर आयी। उसकी आंखोंमें जो अपूर्व उल्लास चमक रहा था वह वर्णनातीत था। शम्भुनाथ इसका अर्थ कुछ न समझ सका। श्यामाने कहा—"शम्भु बाबू, देर हो गयी, आपको कष्ट हुआ, क्षमा कीजियेगा, चलिये।"

शम्भुनाथकी बड़ी इच्छा थी कि डाक्टर साहबके साथ श्यामाकी क्या-क्या बातें हुईं, उसकी पूरी दास्तान सुने। पर श्यामाने एक शब्द भी इस सम्बन्धमें नहीं कहा, और कुछ भी इशारा नहीं दिया।

* * *

दूसरे ही दिन वे लोग पटना चले गये। पटनेमें दो-चार दिन रहकर श्यामा घर चली गयी। उसके घर जानेके प्रायः एक महीने बाद शम्भुनाथको उसका एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था—"प्रिय शम्भु बाबू, आपके मनमें अवश्य ही यह जाननेकी उत्सुकता बनी होगी कि पतिदेवके साथ उस दिन मेरी क्या-क्या बातें हुईं। जो बातें हुईं उनका पूरा ब्यौरा जानकर आपको कोई लाभ नहीं होगा। पर इतना मैं अवश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आपको जता देना चाहती हूं कि तबसे पतिदेवके प्रति मेरे मनमें चौगुनी श्रद्धा बढ़ गयी है। मैं उनके साथ नहीं रह सकती, यह निश्चित है; उनके साथ न रहनेमें ही मेरी भलाई है, यही बात उन्होंने मुझे समझायी और साथ न रहकर भी मेरी आत्मा किस प्रकार परम पवित्र आनन्दसे तृप्त रह सकती है, इसका भी मर्म समझाया। तबसे मेरे मनमें कोई ग्लानि, किसी प्रकारका कोई क्षोभ नहीं रह गया है। मैं वास्तवमें परम प्रसन्न हूं। मैं घर छोड़ रही हूं। बहुत सम्भव है, वृन्दावन या किसी दूसरे तीर्थस्थानमें चली जाऊंगी। जो विश्व-प्रेमिककी आंखोंमें अरूपमें भी रूपकी तरङ्ग बहती नजर आती है उसीको रिझानेकी कला सीखूंगी। घरको, बन्धु-बान्धवोंको सदाके लिए त्यागनेमें जिस आनन्दका आभास मुझे मिल रहा है, उसका वर्णन नहीं कर सकती। आपको भूलनेकी बार-बार चेष्टा कर रही हूं, पर अभी हृदयमें दुर्बलता वर्तमान है, इसीलिए यह पत्र लिख रही हूं। मेरे भीतर भी देवताका निवास है, यह भावना केवल आप हीने मेरे मनमें जागरित की है। इसके लिए आपको जितना धन्यवाद दूं, थोड़ा है। इस कलङ्किनीको सदाके लिए भूल जाइयेगा, यही प्रार्थना करती हूं। आपकी—कुल-कलङ्किनी—श्यामा।"

———

# चिलका-यात्रा

श्री रामानन्द शर्मा

## मित्र-राज्योंकी ओर

चिलकाके प्रेमाञ्चलसे प्रस्थान करते समय अपनी दाहिनी ओर चिलकाकी छविच्छटापर दृष्टि-पात करते, 'मासू-भाङ्गे' भूधरोंके बीचसे गुजरते विराट् वनस्पति-वृन्दसे लुकते-छिपते हम आगे बढ़ रहे हैं। कहीं हरियालीसे लदी पहाड़ोंकी चोटियोंपर छाया-प्रकाशके अद्भुत खेल, कहीं पहाड़ोंके आधे भागमें आकर श्यामल शय्यापर छाया मानो सोयी हुई है, कहीं दो पहाड़ियोंके बीचके दर्रेमें आकाश मानो झुककर किसीको ढूंढ़ रहा है, कहीं निस्तब्ध जङ्गलके पेड़ोंसे कोई हनूमान गुम्भन-रवसे कुहुककर एक आतङ्क उत्पन्न कर रहा है तो कहीं कोई पण्डुक कुकड़ूं-कुंईकी मधुर कूकसे नीरवता भङ्गकर मनोरमता फैलाता सुन पड़ता है—यही सब देखते-सुनते हम तेजीसे अपना मार्ग अतिक्रमण कर रहे हैं।

## अमानुषिक अभ्यर्थना

अब हम 'रणपुर-स्टेट'के अरण्य-पथसे लुढ़कने लगे। सूर्यदेव सामनेके शैल-शृङ्गसे नीचे खिसक रहे हैं। दोनों ओर दस-दस गजोंके फासलेपर घनान्धकारपूर्ण जङ्गल, अपनी भीषणतासे आप भयभीत होता, खड़ा है। 'स्टेट'से आने-वाले क्षीण-काय पथ-चारी हमारी हवागाड़ीको देखते ही त्रस्त होकर विविध भाव-भङ्गियोंसे अभ्यर्थना करने लग जाते हैं, कोई दोनों हाथोंको जोड़कर जमीनमें झुक जाता है, कोई सिरको घुटनोंमें घुसेड़ लेता है, कोई हाथ बांधकर एक पैरपर खड़ा हो जाता है तो कोई दांतोंमें तृण दाबकर दण्डवत् लेट जाता है—यहां तक कि छोटे-छोटे बच्चे भी इस कलामें सुशिक्षित दीख पड़ते थे। इस अमानुषिक अभ्यर्थनासे हमारी आत्मा अत्यन्त अवसाद-ग्रस्त होती जाती थी। हमारे मित्र इञ्जीनियर साहबने कई जगह इशारेसे मना भी किया, फिर भी लोग मानते नहीं। शताब्दियोंसे पीड़ित प्रजाकी आत्माकी मूक आकुलतासे हमारे प्राण रोने लग गये—हाय, ये लोग कब अपनेको मनुष्य समझेंगे?

'रणपुर'का मित्र-राज्य उत्तर, दक्षिण, पूर्वमें पुरी जिलेसे घिरा है, और इसके पश्चिममें 'नयागढ़'का स्वाधीन स्टेट है। इसका क्षेत्रफल २०३ वर्गमील है, इसमें २८० गांव हैं और ५३१० घर। इसकी जनसंख्या ३० हजार तक पहुंचती है।

सात बजते-बजते हम राजधानीमें दाखिल हुए और साथ ही उसी अभ्यर्थनाके आखेट बनाये गये। लेकिन जब कुछ लोगोंको यह मालूम हुआ कि हम राज-घरानेसे कोई सम्बन्ध नहीं रखते और पुरीसे आये हैं, तब एक बड़ी भीड़ हमारे चारों ओर एकत्र हो गयी, और अनेक प्रश्न पूछे जाने लगे। उसी समय राजा साहबकी मोटरसे बिजलीकी रोशनी दूर तक सड़कपर दौड़ पड़ी और साथ ही सब लोग अपने हाथ-पांव



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पसारकर भूमिसात् हो रहे। थोड़ी देरमें जब वे लौटे तब फिर वही दृश्य दुहराया गया। मालूम हुआ, यह प्रथा इतनी सनातन है कि इसके आचरणमें न आत्माको कोई कष्ट होता है, न शरीरको पीड़ा। रात्रि-पाठशालाके शिष्योंने भी पाठ बन्द करके अपने अधीश्वरकी वैसी ही अभ्यर्थना की जैसी उनके गुरुदेवने दिखायी। हमारे परिचित एक भले आदमी हमारी गाड़ीके पीछे छिप गये थे, जिसमें हमारे सामने उन्हें यह कुत्सित कर्म न करना पड़े। उनकी कायरता हमारे हृदयमें शूल भोंक रही थी।

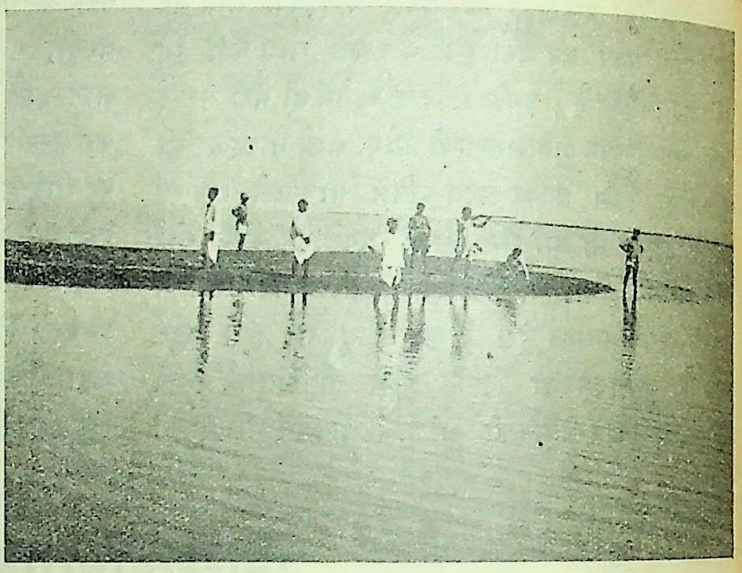

चिलकामें एक द्वीप

रणपुरका राज-प्रासाद हमें आकृष्ट नहीं कर सका। हां, प्रजाकी शिक्षाका समुचित प्रबन्ध दीखता है, क्योंकि राज्य-भरमें पचासों पाठशालायें स्थापित हैं। रणपुरका दक्षिणी-पश्चिमी भाग, जिसमें होकर हमारी सवारी सनसनाती हुई जा रही है, अरण्याच्छादित पहाड़ियोंसे परिपूर्ण है, जो राज्यके दुर्गकी रक्षा-दीवार-सी जंचती हैं—सिर्फ यही एक रास्ता है, जो हमें 'नयागढ़' लिये जा रहा है। हां, यह राज-पथ बड़ा ही सुन्दर एवं सुखद है। क्योंकि राजा साहब भी तो मोटरपर ही सैर करते हैं।

नयागढ़

अन्धकार इतना दुस्तर है कि आंखें फाड़नेसे भी जङ्गल-का स्पष्ट रूप नहीं दीख पड़ता। आठ बज गये हैं। रात सन्-सन् कर रही है। गाड़ीकी रोशनी अपने सामनेके ही अन्धकारको थोड़ी दूर खदेड़ रही है, अगल-बगल कुछ नहीं दीखता है। कभी-कभी हम टार्चकी उड़ती ज्योति डालकर जङ्गलमें झांक-भर लेते हैं। वन्य जीवोंके दर्शनकी आशङ्कासे हमारा कलेजा जरा कसमसा रहा है, लेकिन वहांसे निरापद निकलकर हम 'नयागढ़'की सीमापर आ गये। सहसा अन्धकारके गढ़में गोलाबारी करती हुई एक मोटर लारी हमारे पास पहुंची, और 'नयागढ़'के नवयुवक दीवान श्रीयुत सच्चिदानन्दजी पुजारी कूदकर हमारे साहबसे आ मिले। तुरत निश्चय हो गया कि आजकी रात शिकारमें ही कटेगी। दीवान साहबके अतिथि होनेमें हम यात्रियोंको विशेष आनन्द आ रहा था।

अभी १३ मील और जाना है। सच्चिदानन्द बाबूको बन्दूक थमाकर मैं पीछेकी सीटपर जा बैठा। हमारी गाड़ी आगे और लारी पीछे चली। शिकारकी बातें सुन-सुनकर मेरा कौतूहल बढ़ता जाता था—कैसे होगा, कहां होगा आदि प्रश्न और उनके उत्तरकी कल्पना आप ही करता जा रहा था। सहसा दो जीव सड़कके किनारेसे हमारे पास ही निकले। रोशनीकी एक अस्पष्ट छाया उनपर पड़ी और तीर-की तरह आगे छिटक गयी। एक तो मानो काला कम्बल ओढ़े था, और एक जैसे छींटसे छाया। बन्दूक चलानेका मौका न पाकर हमारे साहबने गाड़ी ही जरा उधर बढ़ा दी, और वह काला, लम्बे थुथनेवाला लोमाच्छादित भल्लूक पहियोंके भीतर पड़ गया। हमारा दिल दलमल हो उठा—आह कुचला, चूर हुआ! जरा आगे बढ़कर गाड़ी रुकी, और लारी भी लपकती हुई आ पहुंची। लेकिन हमारा आहत शिकार हमारे हाथ नहीं लगा—वह कैसे बच गया, अब भी हमारी समझमें नहीं आता है!

मृगया

"नयागढ़"की राजधानीमें पहुंचकर पहले हमने जलपान किया। फिर लारीपर चढ़कर, कई शिकारियोंके साथ हमारी पार्टी उस तमसागार निबिड़ निर्जन निकुञ्ज-पथपर कभी आहिस्ते, कभी तेज रफ्तारसे, निर्दिष्ट सङ्केत-स्थलकी ओर बढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शिकारियोंने लारीकी दोनों बगलोंसे टार्चकी रोशनी जङ्गलमें डाली। राजधानी छोड़ते ही कांटोंसे भरी हुई, मोरकी तरह अपनेको फुलाये, एक 'साही' हमारे पीछे भागी। टार्चका प्रकाश उसकी पीठपर पड़ रहा था, और नौसिखिये शिकारी उसके पीछे दौड़ रहे थे, फिर भी वह साफ निकल गयी। हमने समझा, यह शकुन तो अच्छा नहीं हुआ।

लारी तेज जाने लगी। कभी घना, कभी पतला जङ्गल हमारे दृष्टि-पथसे गुजरने लगा। कभी नदी, कभी नाले सामनेसे निकलने लगे। कभी छोटी, कभी बड़ी पहाड़ी सिर उठाकर हमें देख लेती है और फिर पीछे हट जाती है। कभी धानका खेत सामने आता है, और उसमें बैठे शृगालोंकी आंखें चमककर हमें हरिनोंका धोखा दे जाती हैं।

अरे, यह सामनेसे कौन मस्त निकल गया? औरोंकी तो राम जाने, किन्तु मेरा शरीर शून्य हो गया—कहीं वह गाड़ीपर उछला! गाड़ीकी छाती भी धक्-से रह गयी। हमारे शिकारी भाई निरीह नयनानन्द मृगमालापर ही अपनी बहादुरी दिखावेंगे, इस हत्पञ्जरको ढीला कर देनेवाले खूंखारसे नहीं बोलेंगे। कैसी भयङ्कर उल्काकी भांति उसकी दृष्टि थी! मानो उसे इन भ्रष्ट लोगोंसे घृणा हो रही थी—क्यों कोई उसके राज्यमें उत्पात मचाने आता है? .....उसके बाद उछलता कूदता एक भेड़िया भी निकल गया। कई खरगोश भी अपने लम्बे कान लटकाये रोशनीमें अपनी आंखें निकालकर एक-दो-तीन हो गये।

अब लारी उस सङ्केत स्थलपर पहुंच रही थी। हमारे साहब लोग होशियार हो गये और गाड़ीकी चाल भी मन्द हुई। दोनों ओरके विपिन प्रान्तको रोशनी तिल-तिल कर छान रही थी। पांच 'चोर-बत्तियां' वनदेवीकी विचित्र विभूतियोंको ढूंढ़ रही थीं। सहसा सड़कके किनारे झाड़ियोंमें मृग-मालायें दीख पड़ीं। उनकी नेत्र-पुतलियां अग्नि-स्फुलिङ्गसी चमक उठीं। बारहसिंघे छोटी-बड़ी शाखाओं सज्जित अपने शृङ्ग-मुकुटको माथेपर ताजकी तरह उठाये, गरदन निकाले प्रकाशमें चमत्कृत होने लगे। शायद रोशनी उन्हें प्रिय लगती थी। अन्य जीवोंकी तरह वे भागते नहीं थे, वरन् और पास चले आ रहे थे। हमारी गाड़ी रुक गयी और शिकारी उतर पड़े।

बेंग्-बेंग् करके बन्दूकें बज उठीं, और वे त्रस्त जीव विस्मय-विमुग्ध दृष्टिसे परस्पर देखते हुए अन्धकारके अन्तःकक्षमें जा छिपे। कौन मरा, कौन बचा, निर्णय करना असम्भव हो गया। शिकारी आकर चुपचाप गाड़ीमें बैठ गये। छान-बीन फिर शुरू हो गयी। हम लोग राजधानीसे बीस मील दूर चले आये हैं, यह जानकर मुझे बड़ी चिन्ता हुई—कहीं कोई आक्रमण हुआ! एक बजे रात तक भी जब कोई शिकार निशानेमें नहीं आया, तब हमारे अनुरोधसे गाड़ी लौटी, और दो बजते-बजते, राम-राम करके हम निवास-स्थलपर पहुंचे। भोजन किया, और लम्बी तानकर सो गये।

## गढ़-गाथा

'नयागढ़' का राज्य उत्तरसे 'खण्डपारा' पूरबसे 'रणपुर', पश्चिमसे मद्रास प्रान्त-स्थित 'गुसमार' और 'दासपल्ला' स्टेटोंसे घिरा हुआ है और इसके दक्षिणमें पुरी जिला पड़ता है। राज्यका क्षेत्रफल ५८८ वर्गमील है। ६३७ गांव और १८२७१ घर इसकी समृद्धिको बढ़ा रहे हैं। नब्बे हजार तककी जन-संख्या कूती गयी है। यह स्टेट विशाल समृद्धिशाली कहा जाता है। इसमें उर्वर भूमिकी कमी नहीं है। फिर भी दक्षिण और पूर्वकी ओरका प्रान्त घोर जङ्गलमय है। 'स्टेट' में सौन्दर्यमय प्राकृतिक दृश्योंका बाहुल्य-सा है। दो हजारसे लेकर तीन हजार फीट तककी ऊंचाईवाले पर्वतोंकी सौन्दर्यागार श्रेणियां इसके बीचसे फैली चली गयी हैं, जिनपरसे नेत्र-पथिक उतरना नहीं चाहते। अंगरेजी राज्यके प्रसाद-स्वरूप जङ्गलोंको काटती 'सीमा-रेखा' पहाड़ोंकी चोटियोंपर चढ़ती दिखायी पड़ती है, जिसको स्टेटवाले बराबर साफ रखे रहते हैं।

## खुर्दाकी ओर

नाश्ता-पानी करके हम हवा हुए। ४० मीलका सफर पलक मारते तय करके खुर्दाके डाक-बंगलेमें उतर पड़े। सारे शरीरसे सनसनकी ध्वनि आ रही थी। सिरमें चक्कर आ रहा था, पैर उठते न थे। भूखसे अंतड़ियां खौल रही थीं। १ बज गया था। ओवरसीयर साहबके यहांसे बने-बनाये, गरमागरम खाद्य-पेय-लेह्य-चोष्य पदार्थ आ गये और हम नहा-धोकर भूखे बाघकी तरह हाथ-मुंह खोलकर टूट पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



फिर जो सोये तो शामको ही उठे। सन् १८०४ ई० तक खुर्दा उड़ीसाके स्वाधीन गजपतियोंका राजनगर था। तत्पश्चात् अंगरेजोंने इसे अपनाया और १८१८ से १८२८ तक अंगरेजी जिलेका प्रधान नगर भी रहा। अब यह पुरी जिलेका सबडिवीजन-मात्र रह गया है। 'दया' के किनारे-किनारेकी जमीन चौरस और उपजाऊ है सही, फिर भी खुर्दा अधिकांशमें हजारों फीट ऊंचे पहाड़ोंकी बिखरी श्रेणियोंसे ढका हुआ है। ग्राम-समूह हरे-भरे पेड़-पुञ्जोंके सौन्दर्यमय सघन कुञ्ज-कमरबन्दोंसे घिरे ऊंचे-ऊंचे स्थानोंपर बसे पाये जाते हैं। 'बारुणी' और 'सोलारी' शैलोंकी प्राकृतिक गुहायें

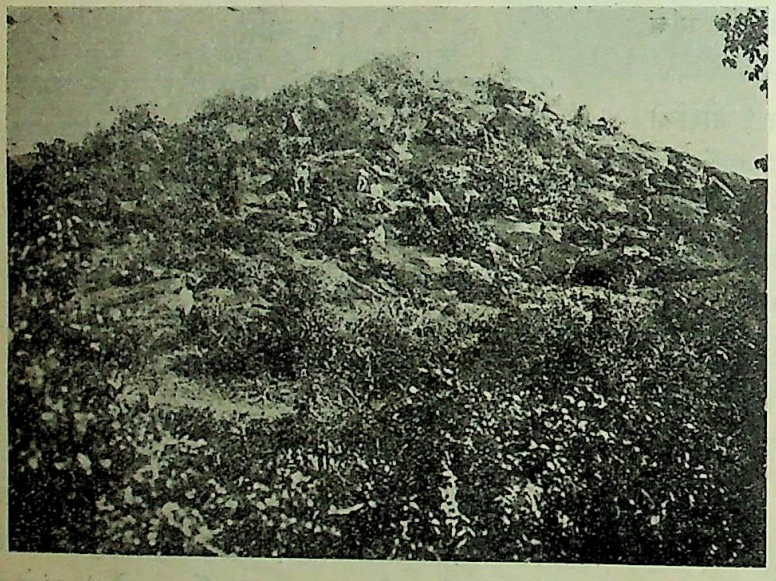

खुर्दाके पास एक पहाड़ी दृश्य

अनन्त कालसे अपनी गोदमें तीर्थ-यात्रियोंको विश्राम देती आयी हैं। प्रागैतिहासिक कालके शिल्प-विशारदोंकी कृति, एक तालाबके रूपमें, अब भी 'सोलारी' के शिखरपर पायी जाती है।

## खण्डहरमें

"धू - धू - धू - धांय, धांय, धांय !! सैकड़ों तोपें-बन्दूकें एक साथ गरजने लगीं और इक्कीस दिन तक निरन्तर गरजती रहीं। पहाड़की गोदमें सुरक्षित गढ़का कलेजा चूर-चूर हो गया और पर्वतके पञ्जरमें एक स्थायी हूक पैदा हो गयी। आजसे ठीक एक सौ अट्ठाईस वर्ष पहले जो घनीभूत धूम-धारा इसके अञ्चलको अन्धकारमय बनाकर आकाशमें छा गयी थी, उसकी एक पतली छाया आज भी इसके ऊपर डोलती दीख रही थी।

सवेरा होता आ रहा है। पूर्व दिशा अभी अनुरञ्जित ही हुई है। शीतल, सुगन्धमय, सुखद हवा इठलाती हुई पहाड़से उतर रही है। वृक्ष-पुञ्जोंके छविमय निकुञ्जोंमें छिपी चिड़ियां चहचहानेके लिए गला साफ कर रही हैं। पहाड़के पैरोंपर पड़ी निशाकी एक कृष्णछाया अब भी यात्रीके हृदयमें एक हलकी आशङ्का उत्पन्न कर रही है। पतली कमरवाली गौराङ्गीकी तरह यह पहाड़ कमर सटाकर लेटा हुआ जान पड़ता है। उसके श्याम शरीरपर शालके उन्नत पेड़ कतारसे खड़े हैं। सफेद फूलोंका फैलाव "जनु तहं बरिस कमल-सित-श्रेणी" की उपमा चुराता जान पड़ता है।

पथिक उस निर्जन पहाड़ी-पथपर धीर गतिसे बढ़ता जा रहा है। दोनों ओर सघन हरे-भरे कुञ्ज-पुञ्ज उमड़े दीखते हैं। स्थान-स्थानपर मन्दिरोंका भग्नावशेष सामने आता है, जिसपर वृक्ष-पुञ्ज उग आये हैं। दाहिनी ओर पत्थरोंकी बनी पक्की और गहरी नाली लुकती-छिपती साथ चली जा रही है। अर्द्धस्फुट लाल, नीले, सफेद कमलोंसे भरा वह 'काबार' कैसा मनोरम जान पड़ता है, जिसमें शान्त भावसे नारियां नहा रही हैं। निर्भीक-मना घूमती-फिरती बालिकायें निकुञ्ज देवियां मालूम होती हैं।

सहसा एक साथ पेड़पर बैठे कई हनुमान हूक उठे और सारा जङ्गल-पहाड़ प्रतिध्वनित हो उठा। ओह, कितना डरावना ! एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर पथिक उठा और गढ़के अन्दर परिभ्रमण करने लगा। एक ऊंची जगह चारों ओर हरियालीसे छायी है। कुछ लोग उसमें घुस रहे हैं। यह तो एक गहरा तालाब है, जिसके ऊपर पानीके तृण-समूह उग आये हैं, और तट-स्थित विशाल बरगदकी एक मोटी डाली मानो उदर-स्नान कर रही है। पास ही अपनी हालत पर आंसू बहाता एक मन्दिर दीख रहा है जिसके सदर दरवाजेको पीपलके पेड़ने ढक रखा है। कंटीली झाड़ियोंकी गोदमें छिपी पगडण्डियां गढ़के कोने-कोनेमें दौड़ती हैं। सूर्यकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रकाशमें पालतू जीव इसमें चरते हैं और रातके अन्धकारमें यह हिंस्र जन्तुओंका अधिवास बन जाता है। दो ओर पहाड़ पहरेदार हैं, और दो ओर कंटीले झाड़ीदार बांसोंका अभेद्य जङ्गल है। दाहिने बाजूपर आम्र-वन अपना अपूर्व लावण्य फैला रहा है। उत्तरी भागमें एक छोटी बस्ती है, और पूर्वमें दूरपर धानका खेत देख पड़ता है।

## गिरियोंकी ओर

अब भुवनेश्वरकी यात्रा हुई। रास्तेमें खुर्दा-रोडका कोलाहलपूर्ण बाजार देखते-सुनते हम एक ऐसे निर्जन स्थानमें पहुंचे, जहां इधर-उधर गांवोंका कोई पता नहीं था; परन्तु दूरपर एक अति प्राचीन मन्दिर अपनी दुरवस्थामें भी ऐसी कला बिखेर रहा था, जिसको देखकर कोई भी दर्शक चकित, स्तम्भित तथा विस्मय-विमुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। स्थानकी शुभ्रता, विशालता, रमणीयता बता रही थी कि किसी कालमें यहां बौद्धोंका विलासमय विहार रहा होगा, लेकिन अब वहां कोई झांकने भी नहीं जाता। हम उसके क्रोड़में जाकर देखना-समझना चाहते थे, लेकिन सड़ककी खराबीने हमें आगे बढ़ने नहीं दिया और हम उदय-गिरिके उल्लासमें उपेक्षा-भावसे ही लौट पड़े। किन्तु अब जी कलक रहा है—ओह, उसे क्यों नहीं देखा?

खुर्दा-रोड स्टेशनका दूसरा नाम 'जटिनी' है। यहां उड़ीसाके सभी प्रसिद्ध स्टेटोंकी अपनी-अपनी विशाल गुदामें हैं, जहां सदा मालोंका आयात-निर्यात जारी रहता है। यह मानो देशी राज्योंका सदर दरवाजा है। यहींसे बैल-गाड़ियोंपर भर-भरकर जङ्गल-पहाड़ोंसे गुजरते हुए सामान सारे स्टेटोंमें पहुंचता रहता है। मुसलमान सूरतें भी यहां काफी नजर आती थीं।

माइनर स्कूलोंमें किस प्रकार हिन्दीका प्रचार किया जा सकता है, इसपर चर्चा करते हुए हम बड़ी तेजीसे भुवनेश्वर जानेवाली सड़कपर दौड़ रहे थे। अब हम ऊंचे चले और दूरमें उदय-गिरिकी चोटीपर एक श्वेत मन्दिर देखकर नेत्रोंमें उल्लास आ गया। अब अत्यन्त घना जङ्गल आ गया और हम ढालूपर ढुलकने लगे। कभी एकदम नीचे और कभी जङ्गलोंके ऊपर—इस तरह उचकते-सकुचते हम चिरकांक्षित गुहाओंके प्रदेशमें आ पहुंचे। ऊपर, नीचे, अगल-बगल, सब ओर घना, भयावह, सन्नाटेसे भरा जङ्गल-ही-जङ्गल दीखता था। ठीक 'उदय' और 'खण्ड' गिरियोंकी गोदमें पी० डब्ल्यू० डी०का डाक-बंगला है और जैनियोंकी एक धर्मशाला तथा संस्थान है। कुछ सरल प्रकृतिके आदमी भी दीख पड़ते थे जो अपनेको जैनी कहते थे। एक 'गाइड' के हाथमें हम दोनों दर्शकोंको सौंपकर इञ्जीनियर साहब वादा कर गये कि दो घण्टेके अन्दर-ही-अन्दर वे लौट आयेंगे। उन्हें एक सड़कका निरीक्षण करना था।

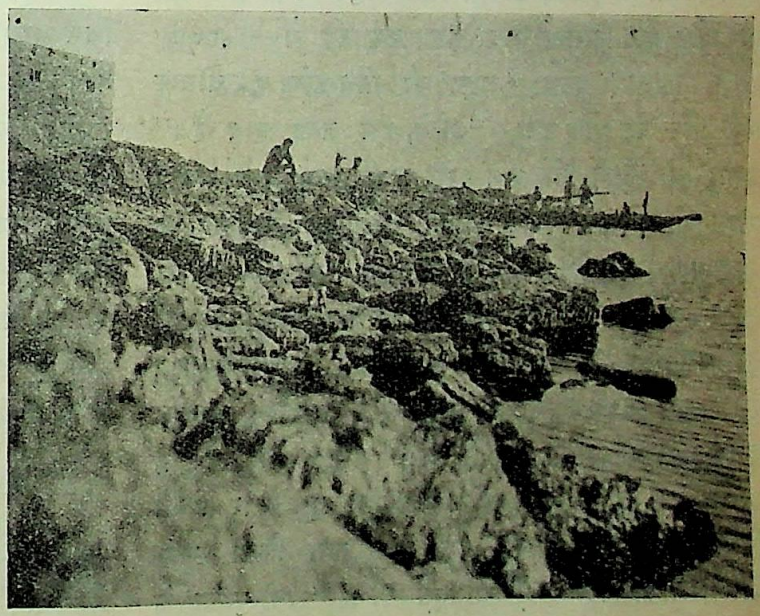

कालीजयीका एक दृश्य

## गुहाओंकी गोदमें

'गाइड' के ऊपर तो कम, परन्तु आर० डी० बनर्जी-लिखित चालीस रुपयेवाली उड़ीसाके इतिहासकी जिल्दोंपर मैं ज्यादा भरोसा रखता था। इसीसे उसकी दोनों जिल्दोंको हाथमें लेकर हम पहले 'उदयगिरि' पर चढ़े। स्वर्गपुरी और मञ्चपुरी कन्दराओंको पहले साधारण दृष्टिसे देखा, तृप्ति नहीं हुई। तब इतिहासके पन्नेको खोलकर असलसे नकलको मिलाया, नकलमें ज्यादा आकर्षण देखकर कुछ अस्थिर हो उठा। फिर स्मृतिमें जरा ममत्व भरकर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कराल कालके आवरणको थोड़ा हटाकर, अतीतके आनन्द-मय अञ्चलमें झांका। देखा, कोनेमें खड़ी जरा-जर्जर पाषाण-प्रतिमायें अपने यौवनकी गाथायें सुना रही हैं। हृदय भर आया। मञ्चपुरीके मस्त द्वारपालोंसे उस जादूगरका पता पूछा जिसने इन्हें लाकर यहां खड़ा कर दिया, और हजारों वर्षोंसे ये लोग जिसके जादूका असर नहीं हटा सके हैं। परन्तु कालाक्रान्त ये पाषाण-पुरुष भी परास्त दीखते थे और किसीसे वार्तालाप करनेको तैयार नहीं थे। वहांसे चलकर हम उस स्थानपर आये जिसे 'रानी-गुम्फा' कहते हैं। ऊपर-नीचे दो-मञ्जिला कोठा। नीचेमें सूक्ष्म शिल्प-नैपुण्यके अनेकों भग्नादर्श अब भी यात्रीको अपने पास रोक लेते हैं। मध्य द्वारके मेहराबकी कारीगरी तो कौतुक पैदा कर रही थी और हम मन-ही-मन कुछ कह रहे थे—Simply wonderful! हठात् 'गाइड' की गीध-दृष्टि एक चीजपर पड़ी और वह बोल उठा—"उठिये, इस जगह बाघ है।" हमारी तो 'काटो तो खून नहीं' वाली हालत हो गयी। सामनेकी अभेद्य हरियाली हिली और कुछ निकलता-सा दीख पड़ा। हमारे पैरमें तो पर लग गये और कलेजा उछलने लगा। "देखिये, वह अपने बच्चेके साथ जा रही है—बाघिन है!" नजर दौड़ायी, लेकिन देख न सका। सिर्फ उस तरफ गायोंके रंभाने और भागनेकी आवाज सुनकर समझ गये कि सच ही आज मौतसे भिड़ गये थे, लेकिन दूर देशमें बैठी किसी वृद्धाका दूध और किसी वियुक्ता युवतीकी मांगकी लाल रेखा तथा किसी स्नेह-भिखारिणीकी राखी बड़ी मजबूत थी। 'रानी-गुम्फा' के नृत्य-निरत स्त्री-पुरुष, उसके ध्यानस्थ राजा-रानी, उसके मृगेन्द्रारूढ़ द्वारपाल, उसके राजाकी मृगया, उसका नारी-हरण और तदर्थ संग्राम, उसके कमल-कुण्डमें महिलाका मातङ्गसे मल्ल-युद्ध, उसके नीचे दक्षिण पार्श्व-स्थित कर्णफूल-की सुन्दरताको भी मात करनेवाला अतीव मनोहर स्वप्नमय मन्दिर आदि सैकड़ों शिल्प-चमत्कारोंको देखते 'ठगी-सी रही, नैन ठगे धिकसे' का उपमान बनते और शिला-लेखोंपर व्यर्थ दृष्टि डालते हम हाथीवाले 'गणेश-गुम्फा' में पहुंचे। समान आकार-प्रकारके दो हाथी सूंड़में कमल-फूल लपेटे आंगनमें खड़े हैं। इस गुहामें कितनी ही अस्पष्ट मूर्तियां जमानेके जालमें फंसी अपनी शोभा खोती जा रही हैं। छोटा हाथी-गुम्फाके बाद हम बाघ-गुम्फामें आये जो सच ही बाघकी तरह मुंह बाये हमें निगलनेकी तैयारी कर रहा था। हमारा शरीर सिहर उठा! ऊपर सर्प-गुम्फाकी झांकी लेते हम 'जम्बेश्वर' पहुंचे और तब 'खण्डगिरि'की ओर बढ़े।

निबिड़ निकुञ्जाच्छादित पहाड़ी पगडण्डियोंसे पद चालन करते जैसे ही पहली मञ्जिलपर पहुंचे कि पण्डोंके नातेदार पैसोंके लिए हाथ पसारने लगे, लेकिन यहां तो 'पर्स' गाड़ीमें ही छोड़ आये थे। अतः 'अनन्त-गुम्फा' को अनन्त विभूतियों-का परिदर्शन करके हम एक कृत्रिम तालाबके तटपर जा बैठे जो पहाड़में ही खोदकर बनाया गया था और जिसमें अब गन्दा पानी भरा था। उतरकर हमने अनन्त-गुम्फाके उस असीम कलाशील स्तम्भका निदर्शन किया जिसके दर्शनसे चित्त भरता-सा नहीं दीखता था। उसी समय गाड़ीका भोंपू बजा और हमने एक बार जङ्गलकी नेत्रानन्दकारिणी शोभा-राशिसे अपने मस्तिष्कको परिपूर्ण करके उस हरे मखमलकी दिगन्त विस्तृत सेजसे अपनी अनिच्छुक आंखें हटा लीं और उड़ीसाके उस सुवर्ण-युगका चित्र खींचते हुए नीचे उतरने लगे जिसमें दस शताब्दियों तक बौद्ध-धर्मका इसी स्थानपर प्राबल्य था। आह, वह बौद्ध-काल कितना सुन्दर रहा होगा! 'खण्डगिरि' का यह शान्त सौन्दर्य उन दिनोंकी एक भूली-भटकी रश्मि-छायाके समान मालूम होता है।

## देवालयोंके देशमें

गिरि-गह्वरोंके गौरवमय प्रदेशसे निकलकर हम चढ़ाईपर दौड़ने लगे। कैसा मनोरम यह स्थान है! सामने मन्दिरोंका देश दिखायी देता है। "विन्दु-सरोवर" के आरसीके समान सरसीसे समलंकृत आङ्गनके चतुर्दिक् व्याप्त भुवनेश्वरमें मन्दिरोंकी संख्या किसी समय सात सहस्रसे भी अधिक होती थी और आज (डेढ़ हजार वर्षके बाद) भी छः सौसे कम मन्दिर यहां नहीं हैं। जगत्-प्रसिद्ध भुवनेश्वरके भुवन-मोहन मन्दिरका आरम्भ उड़ीसाके केशरी-वंश-संस्थापक 'ययाति केशरी' ने करीब ईसाकी पांचवीं शताब्दीमें किया, लेकिन वह केशरी-कुल-कमल इसको पूर्ण नहीं कर सका। उसके अनन्तर उसके दो वंशधरोंने भी निर्माण-कार्यको चालू रखा, तब चौथी पुश्तमें, अर्थात् १९७ वर्षमें यह शिवालय शिल्प-सागरसे निकलकर अपनी अनुपमतासे आप आमोदित होता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वपुवैभवसे वसुन्धराको विस्मित करता खिलखिला उठा। मन्दिर क्या है, कलाका कलित क्रीड़ा-कुञ्ज है। शिल्पीके हाथोंमें तो लोहेकी क्षुद्र छेनी है, लेकिन उसके मस्तिष्कमें सीमा-शून्य सौन्दर्यकी स्वप्नमूर्ति दोलायमान हो रही है, और वह अपनी खचित मूर्तिकी मन्द मुसकानपर, उसकी टेढ़ी गर्दनपर, उसकी भाव-मुग्ध नेत्र-पलकोंपर आप ही मुसकराता देख पड़ता है—कैसा कुसुम-सम कोमल है उसका यह कृष्ण-कारुकार्य! नीचेसे लेकर ऊपर तक, कोने-कोनेमें, अङ्ग-अङ्गमें, नस-नसमें, रोम-रोममें, बारीकसे बारीक कारीगरीकी बारीकी भरी पड़ी है—मानो रचयिताने अपने अक्षय

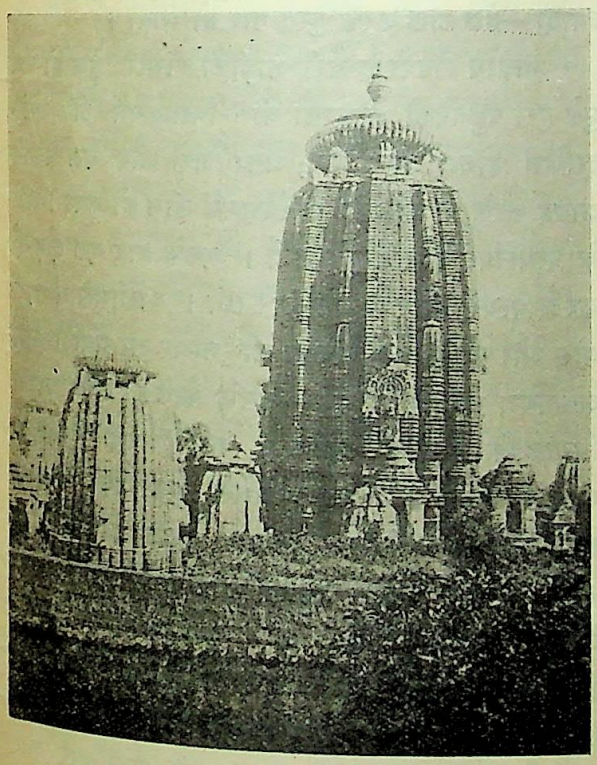

भुवनेश्वरका भुवन-मोहन मन्दिर

भाण्डारसे अन्धाधुन्ध लुटा दिया है हीरेके इन अनमोल आभरणोंको! जितना ही देखिये, नवीनता बढ़ती जायगी, रसानुभूति तीव्र होती जायगी, हृदय गद्गद होता जायगा। कलाकी असीमता हो जाती है सर्पके उस फैले फणमें, जो प्रति पलमें भावोंकी बाढ़ लाता रहता है। पत्थर ऐसी कठोर चीजपर छेनीकी भोथी नोकसे हथौड़ीकी हलकी चोटें चलाकर कैसे ये भाव-वीचि-विलासी विचित्र चित्र खचित कर सका था वह चतुर शिल्प-चितेरा?

आइये पाठक, आप भी मेरे साथ 'केदारगौरी'के विमल कुण्डमें अवगाहन करके पुण्य-भागी होइये। यहां भी आप शिल्पके सुन्दर नमूने पायेंगे। देखिये, मन्दिरकी कारीगरी—ठीक जड़ाऊ अंगूठी है न? ..... अच्छा यह अद्भुत 'तोरण' ही तो देख लीजिये। समता कहीं पाते हैं? 'मुक्तेश्वर' का मन-मोहन माधुर्य क्या भुला देनेकी चीज है? अच्छा, आप इस कुण्डमें अच्छी तरह नहा लीजिये और भीतर जाकर 'मुक्तेश्वर' बाबाका दर्शन भी कर लीजिये। पास ही पीनेका पानी कुण्डमें सुरक्षित है। यदि पेटमें कोई शिकायत हो तो थोड़ा पी लीजिये। याद रखिये, इसी पानीको पीनेके लिए पूर्व-बङ्गालसे भी लोग जमा होते हैं, और होटलवाले पुरी तक यह पानी मंगाकर एक आने गिलास बेचते हैं। देखिये, पानीका रङ्ग कैसा है—ठीक चावल धोनेसे जैसा रङ्ग पानीका होता है। इसीसे उड़ियामें इसे 'चावल-धोया' कुण्ड कहते हैं।

### रामकृष्ण मठमें

भुवनेश्वरमें 'रामकृष्ण मठ' भी एक दर्शनीय स्थान है। मठ बड़ा ही स्वच्छ, सुन्दर तथा शुभ्र दीखता है। नीचेमें संन्यासियोंके कमरे हैं, जिनमें योगासन, तख्तपोश, स्वाध्यायकी पुस्तकें, पावन चित्रपट आदि दीख पड़ते हैं। 'हाल'में हनुमानजीकी मूर्ति है और दीवालोंपर अनेक पवित्रात्माओंके छोटे-बड़े फोटो टंगे हैं। ऊपर परमहंसदेवका काञ्चन-कलेवर एक मनोहर मन्दिराकृत कक्षमें प्रतिष्ठित हो रहा है। विविध बत्तियां जल रही हैं, घण्टी बजाकर संन्यासी विधिवत् षोड़षोपचार पूजा कर रहे हैं। भक्तवृन्द दो कतारोंमें शान्त बैठे हैं। पूजनान्तर हारमोनियमपर भजन गाये गये और दण्डवत करनेके बाद लोग नीचे हनुमानजीके पास जमा हुए। तुलसीके मानसके श्लोकोंसे आरम्भ होकर 'रघुपति राघव राजा राम' तक कीर्तन चला। फिर गान होने लगे। मेरे अनुरोधसे एक तुलसीकी विनय भी आलापित हुई। प्रसाद लेकर हम उठे और अनेक आलोचना-प्रत्यालोचनामें भाग लेते हुए अपने स्थानपर आये।

रामकृष्ण-मिशनने हिन्दू-धर्मके साथ-साथ हिन्दुस्थानकी भी बड़ी सेवा की है। मिशनके मनस्वी संन्यासियोंने सेवाके अनेक स्थायी कार्य किये हैं। सब-कुछ ठीक है, उचित है, प्रशंसनीय है। सिर्फ दो-एक बातें खटकती हैं। एक तो उनके भावुक बङ्गीय शिष्योंने 'परमहंसदेव'के पदसे अपदस्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर उन्हें 'अवतार'के अति-मानव पदपर बिठा दिया है, जहां पहुंचते ही महात्मा देवता बनकर हम मर्त्य-जीवोंसे बहुत दूर हट जाता है—उसका अस्तित्व उस समय सिर्फ हमारे भावाकाशमें पाया जाता है, दैनिक जीवनमें नहीं। जैसे आज राम, कृष्ण, बुद्ध आदि हमारे पूज्य हैं भाव-जगत्में, जीवनमें हम उनसे कुछ ले नहीं सकते; क्योंकि वे भगवान् थे, हम जीव हैं—"जीव कि ईश समान ?"

'परमहंसदेव' आडम्बरोंके शत्रु थे, परन्तु उनके भक्त उन्हें आडम्बरमें आच्छादित करते जा रहे हैं। जब मैं यह सोचता हूं कि वह तो हमारे ऐसे जीव थे, साधनानुष्ठानसे इतने ऊंचे उठ गये और उसीके द्वारा उन्होंने अपने आश्रितोंको भी आलोकमय बना दिया, तब हृदयमें एक शक्ति और साहस आकर मुझे 'देव'के चरणोंपर लुटा देता है, लेकिन जब यह सोचनेका प्रयास करता हूं कि वह भगवान् हैं, तब कलेजा कांप जाता है—तब हम तुच्छोंका क्या सहारा ? 'ईश्वर अंश जीव अविनाशी।' फिर उन्हें मानव-कोटिसे अलग करनेकी क्या जरूरत ? रहने दो उस परमभक्तको हमारे बीचमें, हम उससे जीवन पायेंगे, प्रकाश पायेंगे, आधार पायेंगे—वह हमारा 'गुरुदेव' ही रहे। क्या यह गौरव कुछ कम है ?—

"बन्दौं गुरु-पद-कञ्ज, कृपा-सिन्धु नर-रूप हरि।
महा मोह तम-पुञ्ज, जासु बचन रवि-कर-निकर ॥"

दूसरी बात। 'परमहंसदेव'को कामिनी-काञ्चनसे घोर असन्तोष था—स्वप्नमें भी यदि कोई उनका स्पर्श करा देता था तो वह सिहर उठते थे। ऐसे त्यागीको सुवर्णालंकृत करके पूजना, मेरी समझमें, उस महान् आत्माके साथ अत्याचार करना है। अतएव 'भुवनेश्वर'के 'मठ'की उस अलंकृत उपासनासे 'पुरी-राम-कृष्ण-समिति'की अत्यन्त सरल, सहज छवि-मयी उपासना मुझे कहीं आकर्षक जंची।

काञ्चनके बाद आता है कामिनीका स्पर्श। भुवनेश्वरमें, और अन्यत्र भी, मैंने देखा है कि युवक संन्यासी भी स्त्रियोंसे पैर-स्पर्श करानेमें लेश-मात्र सङ्कोच नहीं मानते, वरन् बड़े शौकसे नत-जानु सुकुमारियोंके कोमल करतल-स्पर्शकी सुखानुभूति लेते देखे जाते हैं। यह मुझे उनकी गरिमाके नितान्त प्रतिकूल प्रतीत होता है। इनको तो अपने "गुरुदेव" के पदाङ्कका अनुगमन करके समाजमें एक नवीन आदर्शको प्रश्रय देना चाहिए, न कि प्रचलित प्रथामें अपने व्यक्तित्वको भी भूल जाना। परमहंसदेवके भक्तोंको इसपर विचार करना आवश्यक है। चरण-स्पर्श करनेकी प्रथा भारतवर्षसे जितनी जल्दी भागे, उतना ही शीघ्र इसका कल्याण हो। हमारे संसार-श्रेष्ठ 'महात्मा' (इस प्रथाको बुरा मानते हुए) भी जब इस रोगका शिकार हो जाते हैं तो औरोंकी क्या बात!

## पुरीके पथपर

महादेवके मन्दिरके मादक माधुर्यका एक बार और आकण्ठ पानकर, नेत्रोंमें वह स्वर्गीय शोभा बन्द करके हमने पुरीके लिए प्रयाण कर दिया। 'दया'में आकर हमारी गाड़ी फिर दम तोड़कर खड़ी हो रही। पानी थोड़ा था और आदमी ज्यादा—ठेल-ठाल करके तुरत पार हो गयी।

जगन्नाथ रोडपर हमारी गाड़ीकी रफ्तार तेज हो गयी। मुझे पुरी पहुंचनेकी आतुरता थी—विद्यालयमें ठीक दस बजे दाखिल होना जरूरी था; अतः जरा और तेज चलानेका आग्रह करके मैं प्रकृतिके पर्य्यवेक्षणमें लीन हो गया। मीलोंके पत्थरोंपर नजर दौड़ने लगी। एकके बाद एक दौड़-दौड़कर वे पत्थर हमारे सामने आने लगे। चालीससे तीस, फिर बीस और दसके बाद पांचका भी नम्बर आ गया। सोचा, अब क्या, अब तो आ गया—दसके पहले ही पहुंच जाऊंगा। विद्यालयके छात्रोंके प्रश्नोत्तर, तथा अपनी बहादुरीकी कल्पना करने तथा चञ्चल-चित्तसे इधर-उधर देखनेमें ही हमारा वह सौन्दर्यागार "जाला" खतम हो गया जिसके रूपपर मैं जाते समय लट्टू हो रहा था। अभी कुछ भी आकर्षण नहीं मालूम होता था। सब-कुछ मनकी भावनापर स्थित है—इस प्रकार समाधान करके हम मर्त्य और स्वर्गको जोड़नेवाले पुल पार हुए और देवपुरीके प्राङ्गणमें पहुंच गये। कदाचित् मेरी आतुरताको ताड़कर ही इञ्जीनियर साहबने 'शार्टकट'से गाड़ी घुमायी और 'पिल्ग्रिम्स-हासपिटल' के अहातेसे होते हुए हम पलक मारते जिला-स्कूलके सामने पहुंच गये। सुखकी सांस आप ही निकल पड़ी—पहुंच गया।*

* इस लेखके सामग्री-सञ्चयमें W. W. Hunter के 'Statistical Account of Bengal' से अमूल्य सहायता मिली है, जो पुस्तक पुरीके वकील श्री जीवेन्द्रनाथ मुखर्जीके सौजन्यसे मैं प्राप्त कर सका। साथ ही मेरे बन्धु श्रीकृष्णदेव शर्माने भी बड़ी मेहनत की है। —लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सोवियट रूसकी पत्रकार-कला

श्री विष्णुदत्त शुक्ल

क्रान्ति और क्रान्तिके बादका सोवियट सरकारका समय रूसके लिए बड़ा ही युग-परिवर्तनकारी समय सिद्ध हुआ है। इस अवधिके अन्दर रूसने सर्वतोमुखी आश्चर्यजनक उन्नति की है। राजनीति, व्यापार, शासन-व्यवस्था आदि-में उसने जो उन्नति की है उसकी गाथायें हम रोज ही सुना करते हैं। अपनी शिक्षा-प्रणालीमें भी उसने आशातीत उन्नति की है। शिक्षा-सुधारके लिए उसके स्कूल और कालेज आदि संस्थायें जो काम कर रही हैं वे तो कर ही रही हैं, उनके अतिरिक्त वहांके प्रत्येक मनोरञ्जनके साधनके साथ भी शिक्षाकी बड़ी ही उपयोगी व्यवस्था है। वहांके सिनेमा, रेडियो, थियेटर आदि केवल मनोरञ्जनकी ही सामग्री नहीं हैं, बल्कि उनके द्वारा बड़ी ही उपयोगी और मार्मिक शिक्षा दी जाती है। इसका परिणाम यह हुआ है कि जहां १९२० तक रूस-निवासियोंमें ४० प्रतिशतसे अधिक शिक्षित नहीं थे, वहां अब सोवियट सरकारका दावा है कि उसके यहां ९० प्रतिशत-से अधिक आदमी शिक्षित हो गये हैं। शिक्षाकी इस प्रगतिमें वहांके समाचार-पत्रोंका भी बड़ा प्रभावशाली हाथ है।

समाचार-पत्र पहले तो शिक्षितोंके द्वारा ही प्रादुर्भूत होते हैं और फिर अपने प्रभाव और प्रयोगोंसे वे जनताको शिक्षित बनाते हैं। सोवियट रूसके समाचार-पत्र इस सत्यके ज्वलन्त उदाहरण हैं। वहांके चार-चार पन्नेके छोटे-छोटे पत्र शिक्षा-प्रचारका वह ठोस काम करनेमें समर्थ हुए हैं जिसका करना साधारणतः अन्य अवस्थामें सम्भव ही न होता। अब यह काम धीरे-धीरे रेडियो-कम्पनियोंके हाथमें जा रहा है। वहांकी रेडियो-व्यवस्था एक ओर समाचार-पत्रोंका काम कर रही है—समाचारोंके प्रचारका काम आज-कल अधिकांशमें रेडियो द्वारा ही हो रहा है—और दूसरी ओर एक शिक्षकका काम करके भी वह देशकी सेवा कर रही है। आगे चलकर इस विभाग द्वारा और कौन-कौन-से काम किये जायेंगे, यह भविष्यकी बात है। परन्तु इतना तो स्पष्ट दिखलायी पड़ रहा है कि रेडियो समाचार-पत्रोंका स्थान बड़ी तेजीके साथ ग्रहण करते जा रहे हैं। अस्तु।

रूसकी सरकारका नियन्त्रण बड़ा कड़ा है। हम दूर बैठे हुए सोवियट सरकारकी उदारता और वहांकी जनताके स्वतन्त्र अधिकारोंकी चर्चा भले सुनते हों, पर बात बिलकुल वैसी ही नहीं है। कमसे कम समाचार-पत्रोंके मामलेमें तो आजादी बिलकुल ही नहीं है। प्रत्येक समाचार-पत्रपर राज्यका शासन रहता है और वह बिना अधिकारियोंकी आज्ञाके विशेष समाचार प्रकाशित नहीं कर सकता। प्रत्येक पत्रके लिए विषय निर्धारित होते हैं और वह उसी विषयके समाचार प्रकाशित करता है। यह अवस्था बहुत-कुछ इसलिए उत्पन्न हो गयी है कि वहांके पत्र अधिकांशमें दलबन्दीके दलदलमें फंसे हुए हैं। जो हो, अवस्था यह अवश्य है। विदेशी समाचारोंके सम्बन्धमें तो राज्यका नियन्त्रण और भी कड़ा है। पहले तो विदेशी समाचार वहांके पत्रोंमें प्रका-शित ही कम किये जाते हैं और यदि प्रकाशित भी होते हैं तो वे ही समाचार, जो सरकार द्वारा स्वीकृत होते हैं। कोई भी विदेशी समाचार-समिति वहां सीधे पत्रको समाचार नहीं भेज सकती और न कोई वहांका आदमी ही सरकारकी अनुमतिके बिना अपने यहांके समाचार विदेशोंको भेज सकता है। इस प्रकार समाचार भेजने और प्राप्त करने—दोनोंमें दुहरा नियन्त्रण लगा हुआ है। इस नियन्त्रणमें सरकारका उद्देश्य वास्तवमें समाचार-पत्रोंकी स्वतन्त्रताका अपहरण करना नहीं है। उसका उद्देश्य है समाचार-पत्रों और समाचारोंको देशके लिए अधिकसे अधिक उपयोगी बनाना। परन्तु इस नियन्त्रणके व्यवहारसे स्वतन्त्रतापहरण तो अवश्य हो जाता है। रूसकी सोवियट सरकार अपने यहांकी प्रत्येक वस्तुको देशके लिए लाभदायक बनानेकी चिन्तामें रहती है। उसकी यह चिन्ता ही समाचार-पत्रोंके नियन्त्रण-की भी उत्तरदात्री है।

सरकारका नियन्त्रण देशी समाचारोंपर भी रहता है। जहां विदेशी समाचार अनियन्त्रित रूपसे छापे नहीं जा सकते वहां देशी समाचारोंके छापनेकी भी आजादी नहीं है। वहांके समाचार-पत्रोंमें खेल-कूद, फैशन, स्त्री-पुरुष-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सम्बन्धी उद्दीपक समाचार और नैतिक अपराध, भ्रष्टाचरण आदिके सनसनीखेज किस्से नहीं छपते, यद्यपि अन्यान्य देशोंके समाचार-पत्रोंमें ये बातें मुख्य विषयका स्थान ग्रहण कर रही हैं। अमेरिकाके समाचार-पत्रोंके सम्बन्धमें तो यहां तक प्रसिद्ध है कि सनसनी उत्पन्न करनेवाले वास्तविक समाचारोंके अभावमें वहां झूठे समाचार तक गढ़े जाते हैं। दोनों अवस्थाओंमें कितना अन्तर है! इस नियन्त्रणमें भी सरकारका वही मनोभाव है जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है। वह यह अनुभव करती है कि इस प्रकारके समाचारोंसे जनताकी हानि ही होती है। उत्तेजनावर्द्धक समाचारोंसे कौतूहल भले ही होता हो, पर उनसे कोई वास्तविक हित नहीं होता। इसलिए इन समाचारोंको वहांकी सरकार प्रकाशित नहीं होने देती। इसके अतिरिक्त वहांके पत्रोंमें व्यक्तिगत आक्षेपवाली खबरें, पहेलियां, बाजार-भाव, तलाक आदिकी खबरें भी प्रकाशित नहीं होने पातीं।

रूसके समाचार-पत्र अधिकांशमें चार पृष्ठसे अधिकके नहीं होते। वहां कागजकी इतनी कमी है कि इससे बड़े अङ्क निकलने लगें तो उनके लिए कागजका मिलना ही कठिन हो जाय। इसीलिए वे आवश्यक और उपयोगी समाचार ही छापते और छोटे-छोटे पत्र निकालते हैं। वहां हमारे देश अथवा अन्यान्य देशोंके समान पत्रोंके विशेषाङ्क नहीं निकलते। बहुत बड़ा विशेषाङ्क हुआ तो आठ पन्नेका। कागजकी कमीके कारण और उस थोड़े-से कागजका अधिकसे अधिक उपयोग करनेके मनोभावके कारण समाचार-पत्रोंमें विज्ञापन भी बहुत कम निकलते हैं। कागजकी कमीका एक यह भी परिणाम होता है कि वहांके समाचार-पत्रोंमें पन्ने बढ़ानेकी होड़ नहीं होती। इसलिए अधिकांशमें वहांके पत्र प्रतिद्वन्द्वितामूलक बुराइयोंसे बचे रहते हैं।

समाचार-पत्रोंको उनके ग्राहकोंके पास पहुंचानेका काम पत्रोंके सञ्चालकोंको नहीं करना पड़ता। सरकारकी कृपासे वे इस तवालतसे बच गये हैं। यह काम वहांके पोस्ट-आफिसों द्वारा किया जाता है। प्रत्येक समाचार-पत्रके कार्यालयके निकट—निकट ही क्यों, बिलकुल उससे सटा हुआ—इतना सटा हुआ कि मशीनसे निकलकर पत्र सीधे वहीं जाकर गिरता है—एक पोस्ट-आफिस होता है। पोस्ट-आफिस तक पहुंचा देनेके बाद समाचार-पत्र-सञ्चालक निश्चिन्त हो जाते हैं। ग्राहकों और एजण्टों आदि तक पहुंचानेका काम पोस्ट-आफिस कर लेते हैं। इस कामके लिए उनके पास ट्रेन, हवाई जहाज, मोटर आदि आवश्यक साधन रहते हैं जिनके सहारे वे शीघ्रातिशीघ्र इन समाचार-पत्रोंको अपेक्षित व्यक्तियोंके पास पहुंचा देते हैं।

वहांके समाचार-पत्रोंका सम्बन्ध सामान्यतः किसी-न-किसी दलसे अवश्य होता है। इसलिए उनको उस दल-विशेषकी रीति-नीतिके अनुसार ही चलना पड़ता है। स्वतन्त्रतापूर्वक कोई पत्र सञ्चालित नहीं होता। इसलिए यद्यपि सभी पत्रोंकी रीति-नीति और समाचार-प्रकाशन-व्यवस्था समान नहीं होती, तथापि कुछ बातें ऐसी हैं जो प्रायः सभी पत्रोंमें मिलती हैं। वहांके पत्रोंमें सरकारकी आज्ञायें और विज्ञप्तियां तथा उद्योग-धन्धोंसे सम्बन्ध रखनेवाले समाचार बड़ी सज-धजके साथ प्रकाशित होते हैं। ये समाचार चाहे सार्वजनिक प्रकृतिके न भी हों, तो भी इनके प्रकाशनमें तड़क-भड़क काफी होती है। किसी नयी मिल आदिके उद्घाटनका समाचार वहांके पत्रोंमें बड़े-बड़े हेडिंगोंके साथ विशेष महत्त्वपूर्ण स्थानपर प्रकाशित होता है। उद्योग-धन्धों और खेती-किसानीके कामोंको बढ़ानेकी ओर देशकी प्रवृत्ति होनेके कारण इन विषयोंकी शिकायतें, इनके सुधारकी योजनायें, इन कार्योंमें आनेवाली बाधाओं तथा उनके निराकरणके उपायोंके उल्लेख आदि बातें बड़े विस्तारके साथ छापी जाती हैं। समाचार-संसारकी ये बातें प्रायः सभी पत्रोंमें समान रूपसे पायी जाती हैं। इनके साथ समाचार-पत्रोंमें चित्र और व्यङ्ग चित्र भी रहते हैं। साधारणतः समाचार-पत्रोंमें ये विषय रहते हैं :—अपने शहरका या देशका सुधार कैसे हो सकता है; स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यापार आदिकी उन्नति कैसे हो सकती है; वहांकी जनताको क्या कष्ट हो रहे हैं और उनके निवारणके क्या उपाय हैं, इत्यादि।

समाचार-पत्रोंका सम्पादन साधारणतः विभाग-प्रणाली द्वारा होता है। वहां किसी एक व्यक्तिपर ही सम्पादनका सब भार नहीं होता। सम्पादकोंका एक पूरा बोर्ड होता है जिसके सदस्य अपने लिए अलग-अलग काम बांट लेते हैं। कार्योंके इन विभागोंके उत्तरदायी वे ही लोग होते हैं। इन विभागोंमेंसे प्रत्येक विभागके लिए समाचार-पत्रका खास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्थान निर्दिष्ट रहता है। यदि किसी विषयके लिए उसके निर्दिष्ट स्थानसे अधिक स्थानकी आवश्यकता होती है तो उस विभागके सम्पादकको अन्य विभागके सम्पादकसे स्थान मांगना पड़ता है। अपने-अपने विभागके लिए समाचार और लेख संग्रह करनेका भार उस विभागके सम्पादकपर ही होता है। समाचार संवाददाताओं द्वारा मंगाये जाते हैं। रूसी समाचार-पत्रोंके संवाददाताओंकी संख्या बहुत अधिक है। सन् १९२५ में इनकी संख्या २१६००० थी; सन् १९२९ में यह संख्या बढ़कर ३३५४४८ हो गयी। इन संवाददाताओंमें ११५६०७ मजदूरोंके और १९२८८८ किसानोंके, शेष साधारण थे। इस ओर यद्यपि संवाददाताओंकी संख्याका उल्लेख नहीं मिला, तथापि जिस गतिसे उनकी वृद्धि हो रही थी और अब भी हो रही है उससे यह अनुमान करना कठिन नहीं है कि इनकी संख्या अब बहुत अधिक हो गयी होगी। संवाददाता अपने समाचारोंको स्वयं सम्पादित करके भेजता है जिससे दुबारा उसके सम्पादनकी आवश्यकता प्रायः नहीं पड़ती। सम्पादकीय कार्योंके विभागोंका ऊपर उल्लेख किया गया है। इस प्रकारके विभागोंकी संख्या अनेक है। परन्तु उनमेंसे कुछ प्रमुख विभाग इस प्रकार हैं :—नगर-निर्माण ( Town reconstruction ), सहयोग, व्यापार और जीविका ( Co-operative, trade and feeding of the people ), संस्कृति, शिक्षा-संस्थायें और विज्ञान ( culture, schools and science ), चित्र, सिनेमा, थियेटर और खेल ( Arts, films, theatres and sports ) और सेवा। सेवा-विभागका काम यह है कि वह तमाम कल-कारखानोंमें काम करनेवाले कर्मचारियोंकी शिकायतोंको सुने और उनका उत्तर दे। इस विभागकी महत्ता बहुत अधिक है। यह वहांके उद्योग-धन्धोंकी उन्नतिका सूक्ष्म निरीक्षण करता रहता है और उनकी त्रुटियों, गलतियों और बे-उनमानियोंपर नियन्त्रण करता रहता है।

रूसके समाचार-पत्रोंकी संख्याका अन्दाजा लगाना तो एक प्रकारसे असम्भव-सा ही है। इसका कारण यह है कि वहांके समाचार-पत्र भिन्न-भिन्न रूपोंमें निकलते हैं तथा उनमेंसे अधिकांश पत्रोंका कोई स्थायित्व नहीं होता। फिर भी कुछ समाचार-पत्र ऐसे हैं जो स्थायी रूपसे और एक विशेष आकार-प्रकारमें प्रकाशित होते हैं। ऐसे पत्रोंकी संख्या क्रान्तिसे पहले २५९ थी। कुछ समय बाद सन् १९२७ में वह ५९६ हो गयी थी, जिनमें ५२२ केवल मास्कोसे प्रकाशित होते थे। इन पत्रोंमें दैनिक पत्रोंकी संख्या ७, ट्रेड यूनियनके पत्रोंकी संख्या १९, मजदूरोंके पत्रोंकी संख्या ५८, किसानोंके पत्रोंकी संख्या १०७, युवकोंके पत्रोंकी संख्या ४८, सैनिकोंके पत्रोंकी संख्या १४, सहयोग-समितियोंके पत्रोंकी संख्या ८, विविध विषयवाले पत्रोंकी संख्या ७७, सायङ्काल प्रकाशित होनेवाले पत्रोंकी संख्या ६, व्यावसायिक पत्रोंकी संख्या ९, विशेष पत्रोंकी संख्या २० और राष्ट्रीय अल्पमतवाले पत्रोंकी संख्या २०१ थी। मासिक पत्रोंकी संख्या १९२९ में ११६९ थी, परन्तु १९२७-२८ में १२२१ हो गयी थी। अभी थोड़े दिन पहले इस सम्बन्धके जो अङ्क पढ़नेको मिले थे उनके अनुसार इस समय रूसके समाचार-पत्रोंकी संख्या ५४०० है, जिनमेंसे १७६० पत्र अर्धसाप्ताहिक हैं जिनका प्रचार अधिकांशमें खास-खास जिलों तक ही सीमित है। १५६० समाचार-पत्र कारखानोंकी ओरसे निकलते हैं। इस प्रकार वर्तमान पत्रोंकी संख्या बतानेकी चेष्टा की गयी है। परन्तु इंगलैण्डकी न्यू फेबियन रिसर्च ब्यूरो ( New Fabian Research Bureau ) नामक साम्यवादी संस्थाकी ओरसे सोवियट रूसके समाचार-पत्रोंकी अवस्थाका निरीक्षण करनेके लिए भेजे गये मि० आर० डब्लू० पोस्टगेटने अपनी रिपोर्टमें कहा है कि इस समय रूसमें कितने समाचार-पत्र निकलते हैं इसका अन्दाजा लगाना एक प्रकारसे असम्भव-सा है। उनके शब्द ये हैं :— Papers are innumerable, or at least un numbered. पत्रोंके प्रचार-संख्या-सम्बन्धी अङ्क कुछ अधिक स्पष्ट हैं। रूसकी क्रान्तिके पहले वहांके समाचार-पत्रोंकी सब मिलकर ८००००० प्रतियां निकलती थीं जिनमें दैनिकों और साप्ताहिकोंकी संख्या २७००००० थी। उस समय अधिकांश लोग गैर-रूसी भाषाके समाचार-पत्र पढ़ा करते थे। उसके बाद सन् १९२७ में पत्रोंकी प्रचार-संख्या ७३८३७४७ हो गयी। इस संख्याके अतिरिक्त मासिक पत्रोंकी प्रचार-संख्या ८४०४५४० और थी। अब संख्यामें आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। इस समय वहांके पत्रोंकी प्रचार-संख्या लगभग २४०००००० है। इसमें फैक्टरी और वाल पेपर्स ( Eactory

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



and wall papers ) की संख्या शामिल नहीं है। शिक्षाकी उन्नतिके साथ-साथ इस संख्यामें उन्नति होना स्वाभाविक ही है।

ऊपर कहा जा चुका है कि रूसके समाचार-पत्रोंकी गिनती करना लगभग असम्भव है। परन्तु वहांके समाचार-पत्र कुछ विशेष श्रेणियोंमें निकलते हैं और इन श्रेणियोंकी गिनती करना सरल है। सब समाचार-पत्रोंकी मुख्य श्रेणियां केवल तीन हैं :—

( १ ) ग्रेट फेडरल पेपर्स
( २ ) लोकल पेपर्स
( ३ ) नेशनल न्यूज पेपर्स

ग्रेट फेडरल पेपर्सकी श्रेणीमें वे समाचार-पत्र आते हैं जिन्हें हम सरकारी पत्र कह सकते हैं। इस कोटिके पत्रोंमें 'इजवेस्टिया' और 'प्रवदा' दो प्रधान पत्र हैं। कुछ समय पहले प्रवदा बड़ा महत्त्वपूर्ण पत्र माना जाता था। परन्तु आजकल इजवेस्टियाने उससे बाजी मार ली है। इजवेस्टिया-की ग्राहक-संख्या १९ लाख है। सञ्चालकोंका कहना है कि यदि कागजकी कमी न हो तो यह संख्या ४००००० तक हो सकती है। इसका प्रधान कार्यालय मास्कोमें है, परन्तु ठीक वैसा ही उसी मजमून और आकार-प्रकारका पत्र लेनिन-ग्राडसे भी प्रकाशित होता है। मास्कोसे उसके प्लेट रेल या हवाई जहाज द्वारा लेनिनग्राड पहुंचा दिये जाते हैं। वे ही ज्योंके त्यों वहांकी मशीनोंमें छापकर प्रकाशित किये जाते हैं। इजवेस्टियाके सञ्चालक पाठकोंकी रुचिका ख्याल नहीं रखते। बनावट-सजावटमें भी उसका ढङ्ग अभी १९ वीं शताब्दीकी तरहका ही है। इसमें बड़े-बड़े लेख आलङ्कारिक भाषामें प्रकाशित होते हैं। यह सरकारी पत्र है। इसलिए इसमें प्रायः अन्य देशोंके सम्बन्धमें सरकारकी क्या नीति है, अपने देशके सम्बन्धमें उसके क्या आदेश-उपदेश हैं आदि विषयोंपर ही अधिक लेख रहते हैं। समाचार अधिकांशमें अर्थ-नीति और व्यापारके सम्बन्धमें होते हैं और अलग-अलग छापे जाते हैं। विदेशोंमें इजवेस्टियाके ८ संवाददाता हैं। उन्हींसे वह विदेशी समाचार लेता है। प्रवदा मास्को-से प्रकाशित होता है और इजवेस्टियाकी भांति उसके लेनिनग्राडसे प्रकाशित होनेकी कोई व्यवस्था नहीं है। अन्य बातोंमें उसका प्रबन्ध लगभग वैसा ही है जैसा इजवेस्टिया-का। इन दोनों पत्रोंके सम्बन्धमें यह कहा जाता है कि वे साधारण विषयों ( Generalities ) पर ही अधिक लिखते हैं। लोगोंके रोजाना जीवनकी खास बातों ( concrete facts of people's daily life) पर प्रकाश नहीं डालते। उस विषयके अनुसन्धानके लिए उनके पास पर्याप्त साधन नहीं, ऐसी बात नहीं है। अनुसन्धानके लिए साधन तो बहुत पर्याप्त हैं, परन्तु उस ओर उनकी रुचि ही नहीं है। इजवेस्टिया-के सञ्चालक इस अभियोगका खण्डन अवश्य करते हैं, परन्तु व्यवहारमें वे भी करते वैसा ही हैं।

लोकल पेपर्सकी कोटिमें तीन प्रकारके समाचार-पत्र आते हैं :—

( १ ) सिटी पेपर्स
( २ ) फैक्टरी या फार्म पेपर्स और
( ३ ) वाल पेपर्स

सिटी पेपर्समें, जैसा कि उसके नामसे ही प्रकट होता है, नगर-निर्माण और नगर-सुधार आदि विषयोंपर लेख और समाचार रहते हैं। इस श्रेणीमें 'वेचारनाया मोस्कवा' (सान्ध्य मास्को) नामक पत्र बहुत प्रसिद्ध है। इसकी ग्राहक-संख्या लगभग १ लाख है और सञ्चालकोंका कहना है कि इसका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है ; यदि कागज अधिक हो तो इसकी संख्या बहुत जल्दी चौगुनी हो जायगी। यह पत्र नये रङ्ग-ढङ्गसे निकलता है। इसमें छोटे-छोटे लेख, छोटे-छोटे समाचार, आकर्षक और चमत्कारपूर्ण शीर्षक, कवितायें, चित्र, कहानियां, कार्टून आदि सभी कुछ होते हैं। इस पत्रको वहांके अच्छे-अच्छे लेखकों और चित्रकारोंका सहयोग नियमित रूपसे मिलता रहता है। पृष्ठ-संख्या और आकारको छोड़कर प्रायः सभी बातोंमें यह पत्र यूरोपके अन्य देशोंके समाचार-पत्रोंके समान ही निकलता है। परन्तु इसमें स्त्री-पुरुषोंके चरित्रसे सम्बन्ध रखनेवाले समाचार, हत्याओं और अपराधोंकी खबरें और ऐसी ही समाज-सम्बन्धी कथा-कहानियां आदि स्थान नहीं पातीं। इस पत्रकी नीतिका नियन्त्रण मास्को सोवियट द्वारा होता है। इसी पत्रको नयी राजधानीके निर्माणका भार दिया गया था। रास्तोंकी मरम्मत (Reparing of streets), शिकायतोंका संग्रह और उनकी व्यवस्था (the collection and organization of complaints ), प्रस्तावित नालीके कामकी वृद्धि (the progress of proposed Tube), संस्कृति और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आरामके लिए बनाये जानेवाले बगीचोंकी अवस्था ( the condition of parks of Culture and rest), गृह-निर्माणके कार्यकी प्रगति ( the progress of house building ) आदि विषय इस पत्रमें प्रकाशित होनेवाले विषयोंके नमूने हैं। इन विषयोंको यह अपने साधारण अङ्कोंमें तो प्रकाशित करता ही रहता है, इसके सिवा विशेषाङ्कोंमें भी इन विषयोंपर ही लिखता है। विशेषाङ्क, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, कोई लम्बे-चौड़े अङ्क नहीं होते। बारके बजाय विशेषाङ्कमें ६ पन्ने हो गये, बस। कहीं ८ पन्ने हो गये तब तो बहुत बड़ी बात हो गयी। इसी प्रकारके विशेषाङ्क निकलते हैं और ये प्रायः ८--१० दिनमें एक बार निकल जाते हैं। सान्ध्य मास्को रूसका बड़ा उन्नत पत्र है और इसके प्रत्येक विभागमें सैकड़ों पत्र रोज आते हैं।

फैक्टरी और फार्म पेपर्स अधिकांशमें मजदूरों और किसानोंकी दशापर विचार करते हैं। इन पत्रोंमें प्रधानतः मजदूरों और किसानोंपर ही लेख रहते हैं। विदेशी समाचारोंसे तो इनका सरोकार ही नहीं होता! इस कोटिके पत्रोंमें अपने दलकी अवस्था, व्यापारिक अवस्था, देहातोंका जीवन, संस्कृति आदि विभाग रहते हैं। प्रत्येक विभागमें उस विभागके सम्बन्धका ही उल्लेख होता है। उनका एक विभाग और होता है जिसे सार्वजनिक ( mass ) विभाग कहते हैं। इसका काम यह होता है कि वह मजदूरों और किसानोंकी शिकायतोंकी ओर ध्यान दे। इन पत्रोंकी भाषा भी मजदूरों और किसानोंके भाषा-ज्ञानके अनुकूल ही बहुत सरल और सुबोध होती है; साथ ही आकर्षक ढङ्गसे लिखी हुई होती है जिससे किसान और मजदूर इनके पढ़नेके लिए आकर्षित हों और पढ़कर समझ भी सकें। इस प्रकारकी भाषा लिखनेमें बहुत ही कम लेखक समर्थ होते हैं। अस्तु, इस श्रेणीमें 'रिवोचावा मोस्कवा' ( मजदूर मास्को ) और 'क्रिस्टियान्स काया गजेटा' (किसान गजट) नामक दो पत्र प्रधान हैं। रिवोचावा मोस्कवा रूसका उन्नत पत्र है। इसके सञ्चालनमें मास्को सोवियट, कम्यूनिस्ट पार्टी और ट्रेड यूनियन तीनोंका हाथ है। इसकी ग्राहक-संख्या ४००००० है। रूसके पत्रोंमें शाखा-प्रशाखायें बहुत होती हैं। एक ही प्रधान पत्रके अन्तर्गत अन्य छोटे-छोटे पत्र बहुत निकला करते हैं। इस पत्रके अन्तर्गत डिस्ट्रिक्ट पेपर्स, जिनमें मास्को जिलेके मजदूरोंका हाल रहता है, फैक्टरी पेपर्स, जिनमें नगर या बाहरके कल-कारखानोंके मजदूरोंका हाल रहता है, आदि तथा वाल पेपर्स आदि भी रहते हैं। परन्तु इन सबमें मजदूरोंकी दशापर ही लिखा जाता है।

दूसरा पत्र 'क्रिस्टियान्स काया गजेटा' किसानोंकी दशाका वर्णन करनेमें प्रमुख है। यह सरकार और किसानोंके बीचका बिचवानी-सा है। किसानोंकी खबरें सरकारके कानों तक पहुंचाना और सरकारकी व्यवस्थाओंका किसानोंको पता देना इसका काम है। इसकी ग्राहक-संख्या लगभग २० लाख है। परन्तु किसानीके मौसमके साथ यह कम-ज्यादा होती रहती है। जब फसल कट जाती है और किसानोंको अधिक अवकाश रहता है तब इसकी ग्राहक-संख्या बढ़ जाती है। इसके पास आनेवाले पत्रोंकी संख्या रोजाना डेढ़से दो हजार तक बतायी जाती है। ये पत्र कहीं स्कूलोंकी एक तरफ लिखी हुई कापियोंके पन्नोंपर, कहीं लपेटनेवाले कागजोंकी दूसरी तरफ कोरे स्थानपर लिखे हुए होते हैं। किसानोंके जो पत्र आते हैं वे भिन्न-भिन्न विषयोंपर होते हैं। उनमें राजनीतिसे लेकर घर-गृहस्थीकी बातें तक लिखी होती हैं। कोई लिखता है, मुझे अमुक दूकानदारने अमुक वस्तु बहुत मंहगे दामपर दी और दूसरे लोगोंको सस्ती। कोई बहन लिखती है, मैं पढ़ना चाहती हूं, परन्तु मेरा भाई नाच-गानका शौकीन है, आदि-आदि।

क्रिस्टियान्स काया और रिवोचावा मोस्कवा दोनों पत्र जनताकी शिकायतोंपर बहुत अधिक ध्यान देते हैं और उनको दूर करानेमें क्रियात्मक सहायता भी देते रहते हैं। शिकायती पत्रोंको प्रकाशित कर देनेके साथ-साथ वे उसका अनुसन्धान और उसके निवारणके लिए अपने कर्मचारी भेजकर उपाय भी करते हैं। इस कोटिके पत्रोंमें एक आचार्य पत्र ( Mother Journal ) भी होता है जो इनकी आलोचना करता रहता है। जिनमें त्रुटियां रहती हैं उनको सुधारनेका प्रयत्न करता और जो अच्छे हैं उन्हें उत्साहित करता रहता है।

इन पत्रोंके अतिरिक्त 'स्लेल टेवा गोलका' और 'डू प्राटसी' नामक पत्र भी इस कोटिमें हैं। ये स्वतन्त्र फैक्टरी पेपर हैं। 'डू प्राटसी' तो यूक्रेनियन जेलखानेका पत्र है और उसका सञ्चालन वहांके कैदियों द्वारा होता है। इसमें जेलखानेकी व्यवस्थाके सम्बन्धमें लेख, समाचार आदि प्रकाशित होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हैं। उन जेल-अधिकारियोंकी आलोचनायें भी होती हैं जो कैदियोंको दण्ड देने-भरके ही वीर होते हैं और यह भूल जाते हैं कि उनका कर्तव्य कैदियोंको दण्ड देना नहीं, उनका सुधार करना है।

वाल पेपर्स एक विचित्र प्रकारके पत्र हैं जो केवल रूसमें ही पाये जाते हैं। ये हमारे यहांके पोस्टरोंकी भांतिके होते हैं जो दीवारोंपर चिपकाये जाते हैं। इनका समय और आकार-प्रकार भी निश्चित नहीं होता। इनके निकालनेका उद्देश्य यह होता है कि किसी बातको करनेके लिए जनतापर अधिक आग्रह किया जाय और यदि किसीने अपराध किया हो तो उसकी खूब निन्दा की जाय। ये पत्र अधिकतर हाथसे लिखकर ही चिपकाये जाते हैं। सम्बन्धित व्यक्तियों या स्थानोंके फोटो उतारकर इन पत्रोंमें वैसे ही चिपका दिये जाते हैं। इन पत्रोंमें रूसके मजदूरोंके रोज-रोजके विचार व्यक्त होते रहते हैं। इनमें रोटीके सवालपर अधिक लिखा जाता है। यूक्रेनियन फार्मकी ओरसे पिछले दिनों एक सालमें ६०००० वाल पेपर्स निकले थे। इनमें कार्टून भी होते हैं जिनमें बड़ी विचित्र, किन्तु तथ्यकी बातें रहती हैं। कहीं यह दिखाया जाता है कि पञ्चवर्षीय योजनाके साथ मजदूर भी उन्नति कर रहे हैं। कहीं यह दिखाया जाता है कि पुलिस-वाले मजदूरोंपर डण्डे बरसा रहे हैं। कहीं इस बातपर जोर दिया जाता है कि होटलवाले मजदूरोंको बड़ी देर तक खाना नहीं परोसते और अन्तमें जब परोसते भी हैं तो बहुत खराब बना हुआ, आदि-आदि।

अब रही नेशनल न्यूज पेपर्सकी बात। इस कोटिमें वे पत्र आते हैं जो अल्पमत राष्ट्रीय समुदायोंके हितका ख्याल रखते हैं। इस कोटिके पत्रोंमें सरकारी कर्मचारियोंकी आलोचनायें भी होती रहती हैं। इस कोटिमें टाइम मोमन नामका पत्र सबसे बड़ा है। कम्यूनिस्ट नामका पत्र भी एक प्रमुख पत्र माना जाता है। यह पत्र यूक्रेनियन प्रेससे निकलता है। लड़ाईसे पहले यूक्रेनियन प्रेस नामकी कोई चीज ही न थी, केवल एक जारिस्ट पेपर था जिसका नाम था थर्ड रीजियन। परन्तु आज यूक्रेनियन प्रेससे निकलने-वाले समाचार-पत्रोंकी ग्राहक-संख्या ५००००० के लगभग है। इस प्रेसके संवाददाताओंकी संख्या लगभग १००००० है।

कम्यूनिस्ट नामक जिस दैनिक पत्रका जिक्र ऊपर किया गया है वह बहुत-कुछ पुराने ढङ्गका है। साज-सजावट आदिमें वह अब भी बहुत पुराना मालूम होता है। इसका आधा मसाला तो संवाददाताओंसे प्राप्त होता है और आधा वेतन-भोगी रिपोर्टरों द्वारा। विदेशोंमें भी परिस, वारसा और प्रेगमें इसके तीन संवाददाता हैं। इस पत्रके तीन विभाग हैं—एक उद्योग-धन्धा-सम्बन्धी, दूसरा कृषि-सम्बन्धी और तीसरा संस्कृति-सम्बन्धी। इस समाचार-पत्रकी ओरसे उन कारखानोंके प्रबन्धकोंपर मामले भी चलाये जाते हैं जो निरन्तर शिकायत किये जानेपर भी उनकी ओर ध्यान नहीं देते। इस प्रकार यह तथा इस कोटिके अन्य पत्र अपने उस विशेष समुदायके लोगोंकी सेवा करते रहते हैं।

समाचार-पत्रोंके ऊपरके विवरणसे यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जायगी कि रूसका कोई भी पत्र स्वतन्त्र नहीं है। प्रायः सभी पत्रोंका किसी-न-किसी दल-विशेषसे सम्बन्ध है। कोई सरकारी पक्षका है, कोई किसी पार्टीका, कोई किसी कारखानेका और कोई किसी अन्य दल-विशेषका। इसका परिणाम यह होता है कि वहांके पत्रोंमें स्वतन्त्र विचारोंका प्रायः अभाव पाया जाता है। उन्हें अपने दल-विशेष द्वारा निर्धारित रीति-नीतिपर ही चलना पड़ता है। और इन सबके ऊपर सोवियट सरकारका अंकुश रहता है। इस विवरणसे एक दूसरी बात भी स्पष्ट होती है और वह यह कि वहां पत्रोंमें संवाददाताओंसे समाचार प्राप्त करनेकी परिपाटी बहुतायतसे प्रचलित है। इस परिपाटीके कारण वहांके समाचार-पत्र बहुत-कुछ व्यक्तिगत सहानुभूति और अनुरागकी वस्तु हो गये हैं। परन्तु दूसरी ओर इसका यह परिणाम भी हुआ है कि समाचार देनेवाली समितियोंका एक प्रकारसे अभाव-सा ही है। विदेशी समाचारोंकी व्यवस्थाके लिए तो एक टास ( Toss ) नामक समाचार-समितिके अतिरिक्त और कोई समिति ही नहीं है। संवाददाताओंसे समाचार मंगाने-की परिपाटी इतनी बढ़ी हुई है और अधिकांश संवाद-दाताओंमें अपने-अपने स्थानकी शिकायतोंको लिखनेका ऐसा रिवाज है कि समाचार-पत्रोंके कार्यालयोंमें संवाद-दाता-विभाग बड़े महत्त्वकी वस्तु माना जाता है। देशके मानहानि-सम्बन्धी कानूनने इस विभागको और भी सुविधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दे रखी है। मानहानिका कानून ऐसा बना है जिससे इन संवाददाताओंको आलोचनात्मक समाचार भेजनेकी स्वतन्त्रतामें किसी प्रकारका व्याघात नहीं पड़ता। संवाददाता-विभाग इन शिकायतोंके आधारपर समालोचित घटनाकी तहकीकात करता है, सभायें तथा कान्फरेन्स करके इनपर विचार करता है और मजदूर तथा किसान इन्सपेक्टरोंके साथ मिलकर इनके निराकरणके लिए आन्दोलन करता है। इस प्रकार यह विभाग मजदूरों और किसानोंकी शिकायतें दूर करवानेमें बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है।

रूसमें पत्रकारोंकी संस्थाओंका एक प्रकारसे अभाव ही है। एक ही संस्था ऐसी है जो प्रतिष्ठित पत्रकार-संस्था कही जा सकती है। इसका नाम है The section of Press workers. यह संस्था वास्तवमें पोलिग्राफिक वर्कर्स Polygraphic workers की एक शाखा-मात्र है। पहले तो इसका सम्बन्ध सिण्डीकेट वर्कर्सके साथ था। उसके बाद सन् १९२६ में इसने उपर्युक्त संस्थाके साथ अपना सम्बन्ध जोड़ लिया। परन्तु फिर भी वह है एक प्रकारसे स्वतन्त्र ही। इसमें कोई २५००० सदस्य हो गये हैं। इस संस्थाका काम है समाचार-पत्रोंके हितों और अधिकारोंकी रक्षा करना। रूसमें मामूली मजदूरोंका कानून प्रेस-कर्मचारियोंपर भी लागू होता है। इस कानूनके अनुसार कर्मचारियोंकी शिकायतोंके मामले साधारण अदालतोंके अतिरिक्त पञ्चायतों द्वारा भी सुलझाये जाते हैं जिनकी फिर कोई अपील नहीं होती। इस कानूनके अनुसार प्रत्येक वेतनभोगी कर्मचारीको ८ घण्टे काम करनेकी व्यवस्था दी गयी है। परन्तु कार्यके घण्टोंके सम्बन्धमें पत्रकारोंके लिए अलग व्यवस्था है जिसके अनुसार दैनिक और साप्ताहिक पत्रोंके कर्मचारियोंको तो ८ घण्टे काम करना पड़ता है, परन्तु मासिक पत्रके कर्मचारियोंको ६ घण्टे काम करनेकी व्यवस्था है। इसी प्रकार उन पत्रोंके कर्मचारियोंको भी ६ घण्टे ही काम करना पड़ता है जो गैर-सरकारी होते हैं और बिक्रीके लिए नहीं निकलते। इस कानूनमें रात्रिमें काम करनेवालोंके लिए कोई अलग व्यवस्था तो नहीं है, परन्तु व्यवहारमें उन कर्मचारियोंको उनके वेतनका ५० प्रतिशत अधिक मिलता है। इस कानूनमें यह बात स्पष्ट रूपसे घोषित कर दी गयी है कि प्रत्येक कर्मचारीको सप्ताहमें बीच-बीचमें अन्तर देकर ४२ घण्टे आराम करनेका अधिकार है। सोमवारके दिन पूरी छुट्टी मनायी जाती है। सालमें सिर्फ दो सप्ताहकी छुट्टी वेतन सहित मिल सकती है। कर्मचारियोंकी बर्खास्तगीके लिए यह नियम है कि उन्हें कमसे कम दो सप्ताह पूर्व इसका नोटिस अवश्य मिल जाना चाहिए। पत्रकारोंके वेतनके सम्बन्धमें कोई बात निर्धारित नहीं है और न सब जगहोंमें एक-सा वेतन ही मिलता है। एक ही स्थानपर भी भिन्न-भिन्न अवस्थाओंके लिए भिन्न-भिन्न व्यवस्थायें होती हैं। इसलिए उस सम्बन्धमें कोई निश्चित बात तो नहीं कही जा सकती, परन्तु इण्टरनेशनल लेबर आफिसकी ओरसे समस्त संसारके पत्रकारोंकी अवस्थाकी जांच-सम्बन्धी जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है उसमें कोई ३५० पत्रकारोंसे पता लगाकर वेतनका औसत इस प्रकार निर्धारित किया गया है :—

| | |
|---|---|
| सम्पादक | २६१.४४ रुबल |
| उप-सम्पादक | २२१.७४ ,, |
| टेकनिकल राइटर | १९६.१५ ,, |
| साहित्यिक लेखक | २०९.५८ ,, |
| प्रूफ रीडर | १६७.८७ ,, |

इस वेतनके अतिरिक्त वहां एक जनरल सोशल इन्स्योरेन्स स्कीम है जिसमें स्थायी कर्मचारियोंका बीमा करा दिया जाता है। बाहरके कर्मचारी भी इस स्कीममें शामिल कर लिये जाते हैं; परन्तु उसी अवस्थामें, जब उनका काम बहुत-कुछ पत्रके साथ स्थायी सम्बन्ध रखता है और उनकी आयका प्रधान जरिया उस पत्र द्वारा की हुई कमाई ही होती है। इस स्कीम द्वारा बीमारी, दुर्घटना, अशक्ति, बेकारी और मृत्यु आदिका बीमा होता है। परन्तु इस स्कीमसे लाभ उठानेवाले पत्रकारोंकी संख्या बहुत कम है। अब वहां प्रोविडेण्ट फण्ड आदिके लिए आन्दोलन हो रहा है। परन्तु अभी तक कोई कामयाबी नहीं हुई। सब बातोंको देखते हुए यही मालूम होता है कि सोवियट रूसकी पत्रकार-कला एक विचित्र ढङ्गकी है और उस ढङ्गकी पत्रकार-कला संसारके किसी भी देशमें नहीं पायी जाती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आकस्मिक घटनायें और आविष्कार

श्री श्यामनारायण कपूर

वैज्ञानिक अन्वेषण और शोधके इतिहासमें ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहां वैज्ञानिकों और ज्ञान-पिपासुओंको जीवन-भर कठोर तपस्या करनेके बाद अपने अनवरत प्रयत्नोंमें सफलता प्राप्त करनेपर भी उन्हें संसारमें 'सफल' होनेका गौरव नहीं प्राप्त हुआ। मासिक 'विश्वमित्र'के गत जून १९३४ के अङ्कमें पाठकोंको कतिपय ऐसे ही 'सफल', किन्तु सफलताका गौरव न प्राप्त कर सकनेवाले वैज्ञानिकोंका संक्षिप्त परिचय दिया गया था। प्रस्तुत लेखमें कुछ ऐसी आकस्मिक घटनाओंका हाल बतलाया जायगा जिनके कारण आविष्कारों एवं अन्वेषणोंकी बिलकुल काया ही पलट गयी और वैज्ञानिक कहांसे कहां जा पहुंचे। भाग्यने उनका सहायक बनकर उन्हें टूटी-फूटी मशीनों, चिटके हुए थर्मामीटर और बिगड़ी हुई भाफकी नली हीसे लाखों और करोड़ों रुपयेकी सम्पत्ति पैदा करा दी।

## कागजसे लकड़ी

अभी दस वर्ष भी पूरे नहीं हुए। १९२५ की बात है। विलियम एच० मेसन नामक एक भाग्यशाली वैज्ञानिक सस्ता और बाजारू कागज बनानेके लिए प्रयोग कर रहे थे। वह जिस सामग्रीसे कागज तैयार करना चाहते थे उसे रासायनिकोंने बेकार कहकर फेंक दिया था। उन्होंने मेसन महोदयको भी व्यर्थकी बातोंमें अपना समय नष्ट न करनेकी सलाह दी थी। परन्तु वह धुनके पक्के थे। बराबर अपने प्रयत्नोंमें लगे रहे। बहुत दौड़-धूप करनेके बाद उन्हें कागज-की मिलमें प्रयोग करनेका मौका मिल गया।

मेसनने मशीनोंकी सहायतासे रद्दी रेशों ( fibers ) की हलकी-हलकी चादरें ( sheets ) तैयार कीं। इन चादरोंको मशीनसे काम करनेवाले एक प्रेस ( Press ) में दबा दिया। इस प्रेसकी दबानेवाली धातुकी चादरोंको भाफसे गरम किया गया था। मेसनका विश्वास था कि इस तरहसे दबनेपर मजबूत और टिकाऊ कागज तैयार हो जायगा। इसी तरह काम करते हुए उन्हें एक दिन भोजन करनेके लिए अपने एक मित्रके यहां जाना पड़ा। जानेसे पूर्व उन्होंने भाफकी नलीको बन्द कर दिया। भोजनके बाद इधर-उधर-की गप-शपमें कुछ वक्त और लग गया। जब वह वापस आये तो देखा कि भाफकी नलीका द्वार टूट गया है और ठीक तौरपर बन्द नहीं हो सका था। वह जितनी देर बाहर रहे थे, भाफ भी बराबर अपना काम करती रही थी। फलस्वरूप कागज महज सूखने और अच्छी तरहसे दबनेके साथ ही ताजी और खुली हुई गरम भाफसे भली भांति सिक भी गया था।

उस कागजको बिना देखे ही मेसनने अनुमान किया कि वह जल-भुनकर नष्ट हो गया होगा, परन्तु फिर उन्हें आप-ही-आप ख्याल आया कि कुछ भी हो, उसकी जांच कर लेनेमें हर्ज ही क्या है ? अस्तु, उन्होंने उस खराब ( ? ) कागजको मशीनके बाहर निकाला। उसे देखकर उनके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। कागजके बजाय अच्छी खासी मजबूत, चिकनी और जल-अभेद्य ( waterproof ) लकड़ी बनकर तैयार हो गयी है। भाग्यका खेल! बातकी बातमें एक महत्त्वपूर्ण आविष्कारकी कुञ्जी मेसनके हाथ लग गयी!!

मेसन फौरन कार्यमें जुट गया। लकड़ी तैयार करनेकी विधिमें अनेक रद्दोबदल किये। दबावको बढ़ाते-बढ़ाते ७०० पौण्ड प्रति वर्ग-इञ्च तक पहुंचाया। और भी कई तरहके प्रयोग किये। अन्तमें मेसनको ठीक-ठीक विधि मालूम हो गयी। फिर क्या था ? नवीन कारखाना बननेमें देर न लगी। इस नयी चिकनी और बेरेशेकी लकड़ीके तख्तोंके नित नये उपयोग ढूंढ़े जाने लगे। बढ़इयोंको इस लकड़ीमें अपनी कारीगरी दिखानेका अच्छा मौका मिला। देखते-देखते इसकी मांग बहुत बढ़ गयी और शीघ्र ही एक और कारखानेने ईखकी खोईसे वैसी ही लकड़ी तैयार करनेकी विधि ढूंढ़ निकाली।

## दूसरी घटना

एक दूसरी घटना इससे भी अधिक आश्चर्यजनक है। एक बड़े भारी कारखानेकी बात है। कारखानेमें कई एक वैज्ञानिक मोटरों और फर्नीचर आदिपर लगाने योग्य बढ़िया वार्निश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तैयार करनेके लिए अन्वेषण कर रहे थे। बहुत-से प्रयोग किये जा चुके थे। कई तरहकी वार्निश तैयार की जा चुकी थी, परन्तु उनमेंसे कोई भी सन्तोषजनक काम न देती थी। आखिर एक ऐसी वार्निश तैयार हुई जो बहुत ज्यादा गाढ़ी थी और किसी भी तरहसे फैलती ही न थी। वैज्ञानिकोंने हैरान होकर कुछ दिनके लिए प्रयोग करना बन्द कर दिया। थोड़े दिनोंके बाद फिर एक नयी वार्निश तैयार की गयी। उस दिन गर्मी बहुत थी। नये नमूनेको तैयार करके एक बड़े-से बर्तनमें रख दिया गया। वैज्ञानिक उसे मशीनमें रखकर काम लेनेसे पहले अच्छी तरहसे मिला लेना चाहते थे। परन्तु इत्तफाकसे एक वैज्ञानिकने उसमें थोड़ा-सा कास्टिक सोडा मिला दिया! यह बिलकुल इत्तफाक हीकी बात थी। वैज्ञानिकोंने अपनी जो योजना तैयार की थी उसमें सोडाका कहीं नाम भी न आता था। भाग्यका खेल यहींपर खतम नहीं हुआ। जिस समय इस नयी वार्निश-को मशीनमें डालकर मिलानेकी तैयारी की जा रही थी, संयोगसे मशीन टूट गयी। मामूली तौरपर इस तरहकी मामूली मशीनोंकी मरम्मतमें बहुत थोड़ा वक्त लगता है। परन्तु उस अवसरपर भाग्यको कुछ और ही मञ्जूर था। बहुत कुछ कोशिश करनेपर भी मशीनकी मरम्मतमें कई दिन लग गये। इस बीचमें वार्निशको किसीने फिक्र तक न की। उसके बर्तनकी ओर आंख उठाकर भी न देखा गया। जब मशीन बनकर तैयार हो गयी तब उस वार्निशकी फिक्र हुई। बर्तनको मशीनके पास लाया गया। उसे खोलनेपर सारे वैज्ञानिक आश्चर्यचकित हो गये। वार्निशका गाढ़ापन आप ही आप दूर हो गया था। वह पानीकी तरह पतली हो गयी थी। उसे अब मशीनमें डालकर मिलानेकी भी जरूरत न थी। मनचाही चीज बनकर तैयार हो गयी थी। एक मुट्ठी-भर कास्टिक सोडा और कई दिनकी गर्मीने वह काम कर दिखाया था जिसे कई एक रसायनज्ञ वर्षों तक लगातार प्रयत्न करके भी करनेमें असमर्थ रहे थे!

## नीलकी कहानी

नेफथेलीनसे संश्लेषणात्मक नीलकी तैयारीका रहस्य भी इसी प्रकारकी एक आकस्मिक घटना है। वैज्ञानिक ओषदी-करण (oscidation) के लिए उपयुक्त उत्प्रेरक (catalyst) की खोजमें थे। नित्यप्रति प्रयोग किये जाते थे। एक दिन इस तरहसे प्रयोग करते-करते एक बहुत ही गाढ़ी, सख्त और बदशकल-सी चीज तैयार हो गयी। ताप मापनेके लिए उसमें एक तापमापक या थर्मामीटर लगाया गया। पर इत्तफाकसे थर्मामीटरका बल्ब उसके अन्दर पहुंचकर टूट गया और उसका सारा पारा बहकर उस पदार्थमें मिल गया। मनोवाञ्छित उत्प्रेरक अपने-आप ही मिल गया। मनचाही रासायनिक क्रियाके होनेमें क्षण-भरकी भी देर नहीं लगी और फिर तो जर्मनीका वैज्ञानिक नील थोड़े ही दिनोंके बाद संसार-भरके हरएक बाजारमें बिकने लगा!

## कोलतारके रङ्ग

कोलतारके रङ्गोंके निर्माणका इतिहास भी कुछ ऐसा ही है। कोलतार-रङ्गोंके आविष्कर्ता हेनरी पर्किनके गुरुने उनसे कोलतारसे कुनैन तैयार करनेको कहा था। पर्किनने एक आज्ञाकारी शिष्यकी भांति कुनैन तैयार करनेके लिए अनेक प्रयोग किये। हर बार उन्हें असफल होना पड़ता। अठारह-बीस प्रयोग कर चुकनेके बाद भी वह किसी खास नतीजेपर न पहुंच सके थे। प्रयोग करते-करते आखिरमें हमेशा ही एक काला-काला बदसूरत-सा पदार्थ तैयार हो जाता था। वह प्रयोग करते-करते ऊब उठे थे। आखिरी बार भी सदैव हीकी नाईं एक काला-काला-सा पदार्थ तैयार हो गया। गुस्सेमें आकर वह उसे फेंकने ही वाले थे कि उन्होंने उसमें इत्तफाकसे थोड़ा-सा अलकोहल मिला दिया। इससे पूर्व वह ऐसे ही लगभग २० प्रयोग कर चुके थे और कभी अलकोहल मिलानेका ध्यान तक न आया था। अलकोहलके मिलाते ही कुछ जादू-सा हो गया। देखते-देखते वह काला और बदसूरत पदार्थ लाली लिये हुए पीले रङ्गके खूबसूरत पदार्थमें बदल गया। कोलतारसे बननेवाला यह पहला रङ्ग था!

## सेकरीन

पाठकोंने सेकरीनका नाम अवश्य ही सुना होगा। यह शक्करसे कई गुनी अधिक मीठी होती है। इसका आवि-ष्कार भी एक ऐसी ही आकस्मिक घटनाकी याद दिला देता है। एक वैज्ञानिक प्रयोगशालामें प्रयोग करते-करते निकटवर्ती दूकानमें भोजन करने चला गया। उस समय वह अपने विचारोंमें कुछ ऐसा लीन था कि उसे अपने हाथ तक धोनेका ध्यान न रहा। साधारण तौरपर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रासायनिक प्रयोगशालामें प्रयोग करनेके बाद अच्छी तरहसे हाथ धो लेना अनिवार्य-सा ही होता है। पर उस दिन उसे भाग्यवश अपने हाथ धोनेका भी ध्यान न रहा। भोजन शुरू करनेपर जैसे ही उसने सेण्डविच (एक अंगरेजी पक्वान्न) का पहला ग्रास मुंहमें रखा, वह उसे असाधारण रूपसे मीठा मालूम हुआ। खाते समय उसे पानीकी जरूरत महसूस हुई। पानीका ध्यान आते ही उसे याद आया कि प्रयोगशालासे आते समय उसने हाथ नहीं धोये थे। उसके मस्तिष्कमें बिजली-सी चमक गयी! उस पक्वान्नके असाधारण रूपसे मीठे होनेका रहस्य उसकी समझमें आ गया! भोजनके पूर्व उसने जिन-जिन चीजोंको छुआ था उन सबकी सावधानीके साथ जांच करनेपर उसे सेकरीन तैयार करनेकी तरकीब मालूम हो गयी!

इस प्रकारकी घटनायें बहुत ही साधारण हैं और आये दिन ही हुआ करती हैं। हरएक आदमी इस प्रकारकी घटनाओंसे फायदा नहीं उठा सकता और न हरएक आदमीमें उनसे फायदा उठानेकी क्षमता ही होती है। इस तरहकी दूरन्देशी और तीक्ष्ण निरीक्षणकी शक्ति इने-गिने लोगों हीमें पायी जाती है। किसीको राह चलते हुए हीरेका टुकड़ा मिल जाय और वह उसे पहचानता न हो, तब उस व्यक्तिके लिए हीरेका टुकड़ा कांचके टुकड़ेसे अधिक मूल्यवान नहीं हो सकता। हीरेके जौहरको जौहरी ही पहचान सकता है। ठीक यही दशा उपर्युक्त आकस्मिक घटनाओंकी भी है। हम नित्य-प्रति प्रयोगशालाओंमें प्रयोग करते हैं। कुछ प्रयोग ठीक होते हैं और कुछ बीच हीमें खराब हो जाते हैं, पर उन खराब हो जानेवाले प्रयोगोंसे बिरले ही लोग कोई नवीन आविष्कार कर पाते हैं।

उपर्युक्त हाथ न धोनेवाली घटनासे हमें एक ऐसी घटना याद आ जाती है जहां हाथ धोनेकी क्रियाका निरीक्षण करनेसे एक अंगरेज वैज्ञानिकने खनिजोंसे धातु निकालनेकी एक कतई नयी तरकीब ढूंढ़ निकाली। वह अंगरेज खानोंका इञ्जीनियर था। एक दिन काम करनेके बाद वह अपने कालिख और तेलसे सने-पुते हाथोंको धोते समय पानीकी गति-विधिका निरीक्षण करने लगा। हाथ धोते वक्त उस दिन उसने साबुन इस्तेमाल न किया था। पानीको देखते-देखते उसे खनिजोंको व्यवहार-योग्य अवस्थामें लानेकी एक-दम नयी तरकीब सूझ गयी। बादको इसी तरकीबने एक बहुत ही मशहूर विधि ( Floth Flotation Process) का रूप धारण कर लिया।

## गुडईयर टायर

गुडईयरके मोटर टायर बहुत ही मशहूर टायर हैं। इनके बनानेकी विधि भी अचानक ही मालूम हुई थी। चार्ल्स गुड ईयर रबड़ जोड़नेकी तरकीब ढूंढ़ रहे थे। काम करते-करते रबड़ और गन्धक एकाएक दोनों एक बहुत गरम स्टोव-पर गिर पड़े। गुड ईयर बहुत ही दूरन्देश आदमी था। उसने अपनी इस नयी तरकीबकी रजिस्ट्री कराने और उसके पेटेण्ट अधिकार प्राप्त करनेमें जरा भी देर नहीं लगायी। ७० वर्षके बाद फिर एक ऐसी ही घटना हुई। एक वैज्ञानिक-को प्रयोग करते-करते मालूम हुआ कि कोयलेके काजलके साथ मिला देनेपर रबड़की मजबूती बहुत ज्यादा बढ़ जाती है। परन्तु वह अपने अन्वेषणकी महत्ता न समझ सका। उसमें दूरन्देशीका अभाव था। उसने अपने अन्वेषणके पेटेण्ट अधिकार प्राप्त करनेकी फिक्र तक न की और बहुत ही महत्त्वपूर्ण तरीका ईजाद करनेपर भी वह उससे पैसा पैदा न कर सका।

भाग्य देवताने भी अधिकतर उन्हीं लोगोंकी सहायता की है जो दूरन्देश, परिश्रमी और विचारशील थे, जो ईश्वरीय देनका पूरा-पूरा लाभ उठाना जानते थे, जिन्होंने अपने अथक परिश्रम और अदम्य उत्साहसे भगवती लक्ष्मीके आगमनका मार्ग पहले हीसे तैयार कर रखा था। उपर्युक्त सभी वैज्ञानिक किसी-न-किसी महत्त्वपूर्ण खोजमें संलग्न थे और उसी बीचमें काम करते-करते उन्हें एकदम नवीन आविष्कारका रहस्य मालूम हो गया। तदबीर करनेपर ही तकदीर भी चमकी!

## एन्थ्रासाइट

'एन्थ्रासाइट'—कोयलेकी एक विशेष श्रेणीका नाम है। इसे कल-कारखानोंमें ईंधन ( fuel ) के तौरपर काममें लाया जा सकता है, यह बात एक आकस्मिक घटना हीसे मालूम हुई थी। सख्त कोयलेके साथ प्रयोग किये जा रहे थे। उनमें सफलता न मिलती देख प्रयोग करनेवाला बिल्कुल हताश हो गया था और आइन्दा और अधिक प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



न करनेकी बात सोच रहा था। एक दिन काम करते-करते वह भोजन करने चला गया और आग बुझाना बिलकुल भूल गया। लौटकर आनेपर उसे मेहमान हीकी तरह तैयार किये-कराये कोयले मिल गये।

### बारूद

इस बातको प्रायः सभी लोग जानते हैं कि कोयले, गन्धक और शोरेको मिलानेसे साधारण श्रेणीकी बारूद तैयार हो जाती है। यूरोपमें इसके सम्बन्धमें एक बड़ी दिलचस्प कहानी प्रचलित है। कहा जाता है कि पुराने जमानेमें जब आधुनिक रसायन-विज्ञानका विधिवत् विकास न हो पाया था, एक जर्मन पादरी साहब शौकिया 'कीमिया' (Alchemy) सम्बन्धी प्रयोग किया करते थे। एक दिन थोड़े-से कोयलेको गन्धक और शोरेके साथ खरलमें घोट रहे थे। बड़े जोरका धड़ाका हुआ और बारूद या गनपाउडर नामकी एक नवीन चीज तैयार हो गयी। बेचारे पादरी साहबको तीनों पदार्थोंको खरलमें घोटते समय स्वप्नमें भी इस बातका ध्यान न था कि वह एक अत्यन्त घातक चूर्ण तैयार करने जा रहे हैं!

### बिजलीका मोटर

डायनमो (Dynamo) और मोटर (motor) बिजलीके दो मशहूर यन्त्र हैं। डायनमो विद्युत्-धारा उत्पन्न करता है और धारा-जनक कहलाता है। मोटरका काम डायनमोके कामका ठीक उलटा होता है। मोटर विद्युत्-धारासे यान्त्रिक शक्ति उत्पन्न करता है। बिजलीके बलसे चलनेवाला कोई भी यन्त्र मोटरके बिना काम नहीं कर सकता। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मोटरके आविष्कारमें भी एक आकस्मिक घटना छिपी हुई है। एक कारीगरकी साधारण-सी गलतीके फल-स्वरूप इस महत्त्वपूर्ण यन्त्रको बनानेकी तरकीब मालूम हो गयी।

१८७६ ई० की बात है। कारीगरसे एक सर्किटमें कुछ अधिक विद्युत्-धारा भेजनेको कहा गया था। उसे आदेश दिया गया था कि दो डायनमोंको चलाकर उनकी विद्युत्-धाराको एक साथ उस सर्किटकी ओर प्रवाहित कर दिया जाय। परन्तु वह बेचारा इस आदेशको ठीक-ठीक तौरपर याद न रख सका। वह दोनों डायनमोंको ठीक-ठीक ढंगसे सम्बद्ध कर देनेकी तरकीब भूल गया। उसने दोनोंको सर्किटसे सम्बद्ध कर दिया और पहले डायनमोको चलाकर इञ्जनसे काम लेना शुरू कर दिया। ऐसा करते ही दूसरा डायनमो विपरीत दिशामें घूमने लगा। यह संसारका सबसे पहला एलेक्ट्रिक मोटर था। दुर्भाग्यवश कारीगरने उस यन्त्रको पेटेण्ट नहीं कराया।

### चेचकका टीका

पिछले लेखमें चेचकके टीकेके आविष्कारक जेनरका नाम दिया जा चुका है। इस आविष्कारका इतिहास बहुत ही रोचक है। सन् १७७० ई०में एडवर्ड जेनर एक डाक्टरके यहां काम सीख रहे थे। डाक्टर साहबके एक मरीजसे बात करते समय उन्हें इस अत्यन्त भीषण रोगका इलाज मालूम हो गया। उन दिनों जेनर इंगलैण्डमें ब्रिस्टलके निकटवर्ती सडबरी नामक स्थानमें काम करता था। एक ग्रामीण तरुणी उसके यहां खांसीकी दवा लेने आयी। उससे बातचीत करते समय जेनरने चेचक (small pox) की बीमारीका जिक्र किया और बतलाया कि यह संक्रामक रोग होता है। इससे बचे रहना चाहिए। इसपर उस तरुणीने हंसते हुए जेनरको जवाब दिया—'मुझे यह बीमारी नहीं सता सकती। मैं काऊपाक्स (cow pox) नामक बीमारीसे पीड़ित हो चुकी हूं। इस रोगके हो जानेके बाद मेरे ऊपर चेचक (small pox) का कोई असर नहीं पड़ सकता।' इसी मौकेपर बातचीत करते हुए उसे यह भी मालूम हुआ कि उस जिलेके ग्वालों और दूध दुहनेवालोंको यह बीमारी बिलकुल नहीं सताती। ग्रामीण लोगोंका विश्वास था कि गायोंके थनोंमें होनेवाली एक प्रकारकी बीमारी भी संक्रामक होती है और जिन मनुष्योंपर उसका असर हो जाता है वे चेचकके प्रभावसे बरी हो जाते हैं। ग्वाले और दूध दुहनेवाले लोग गायोंके थनोंके संसर्गमें अधिक रहते हैं। इसीलिए उन्हें चेचककी बीमारी नहीं सताती। डाक्टर लोग इस बातको जनश्रुतिसे अधिक महत्त्व न देते थे। परन्तु भाग्य-देवता जेनरपर प्रसन्न थे। उसने फौरन ही इस सम्बन्धके अनेक प्रयोग कर डाले और रोगका अचूक इलाज ढूंढ़ निकाला।

इतना सब होते हुए भी लोग वैज्ञानिक क्षेत्रमें इन आकस्मिक घटनाओंकी महत्ताको प्रायः स्वीकार नहीं करते। यह विश्वास दिन-ब-दिन दृढ़ता पकड़ता जाता है कि सङ्गठित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और सुव्यवस्थित प्रयत्न किये जानेपर ही किसी भी नवीन अन्वेषण अथवा आविष्कारमें सफलता प्राप्त हो सकती है। अधिकांश अवसरोंपर यही सिद्धान्त ठीक भी सिद्ध होता है। सहयोग, सहकारिता और सुसङ्गठनकी बदौलत ऐसे अनेक आविष्कार अत्यन्त सुगमतापूर्वक और स्वल्प समय हीमें हो जाते हैं, जिनमें बेचारा अकेला वैज्ञानिक वर्षों तक निरन्तर अनवरत प्रयत्न करनेपर भी सफलता नहीं हासिल कर पाता। परन्तु फिर भी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि भाग्य-देवताकी कृपासे होनेवाले महत्त्वपूर्ण आविष्कारों-की संख्या कुछ कम नहीं है।

### लीथोग्राफ

अन्तमें लीथोग्राफके सुप्रसिद्ध आविष्कारक सेनफेल्डर Senfeldar के कुछ वाक्य—जो उन्हींके आविष्कारसे सम्बन्ध रखते हैं—उद्धृत करके इस लेखको समाप्त किया जायगा।

"मैं एक पत्थरके टुकड़ेपर पालिश कर चुका था और उसपर उलटे अक्षर लिखनेकी तैयारीमें था कि मेरी माताजीने मेरे कमरेमें आकर मुझसे धोबिनको दिये जानेवाले कपड़ोंकी फेहरिस्त लिख लेनेको कहा। उस वक्त मेरे पास जरा-सा भी कागज बाकी न रहा था। जो कुछ थोड़ा-बहुत कागज मेरे पास रहा भी करता था वह सब पत्थरोंके ऊपरसे प्रूफ लेनेमें खतम हो गया था। इतना ही नहीं, उस समय मेरी दावातमें स्याहीका भी नामोनिशान न था।

"देर करनेका मौका नहीं था। घरमें कोई और आदमी भी नहीं था जिसे भेजकर स्याही और कागज मंगवाता। अस्तु, मैंने मन ही-मन अपनी साबुन, मोम और काजलसे बनी हुई स्याहीसे पत्थरपर फेहरिस्त लिखनेका निश्चय किया। इसी पत्थरपर मैं हाल हीमें पालिश कर चुका था। फेहरिस्त लिख लेनेके बाद मैंने सोचा कि मौका मिलनेपर इसे फिर कभी नकल कर लूंगा।

"परन्तु पत्थर कई रोज तक ऐसे ही पड़ा रहा। छुआ तक नहीं गया। एक दिन मैं उसे बिगाड़नेवाला था कि मुझे ध्यान आया कि अगर अपनी इस स्याहीसे पत्थरपर लिखे गये अक्षरोंको शोरेके तेजाबसे काट दिया जाय तो देखा चाहिए कि क्या होता है? मैंने ऐसा ही किया। तेजाबसे पत्थरपर लिखे अक्षरोंको काटना शुरू किया। इञ्चके [illegible] भागके बराबर गहरे अक्षर तैयार हो गये। इनमें मैंने प्रिण्टिङ्ग इङ्क भर दी और फिर तो मैंने उससे बातकी बातमें बीसियों कापियां तैयार कर लीं!"

---

## किन्तु

आंखें सोच रही हैं ले लें—
दिख जाओ तो मृदुल बलायें।
श्रवण चाहते पद-आहटपर
हम अपना सर्वस्व भुलायें॥

आलिङ्गनकी चाह अपरिमित
नाथ! हृदयमें उमड़ रही है।
किन्तु न जाने विह्वलतामें
अपनी-अपनी भूल न जायें॥

—राजाराम खरे

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# उत्कलमें महात्मा गांधी

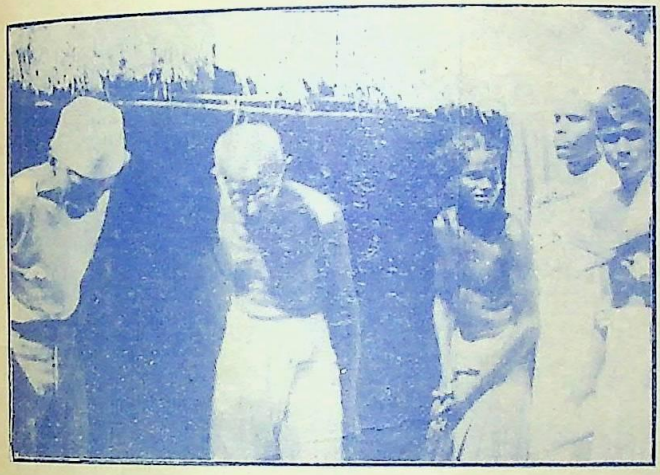

एक हरिजनकी झोपड़ीमें महात्माजी

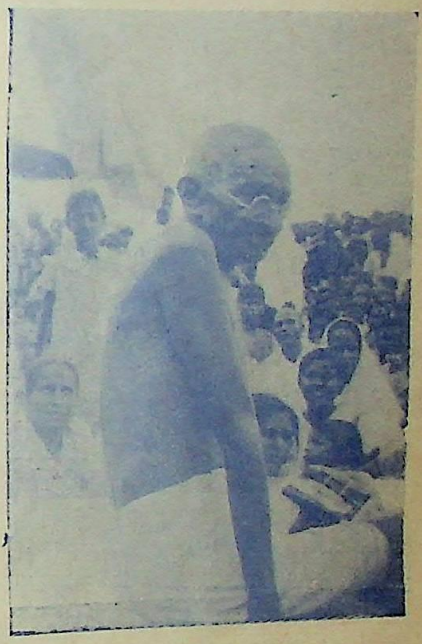

सभामें महात्माजीका भाषण

महात्माजी कुमारी बजाजके साथ

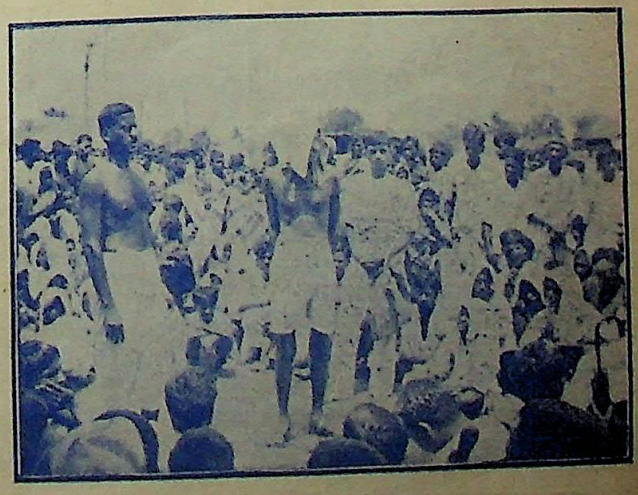

भद्रक-आश्रमके अहातेमें सभाके बीच महात्माजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# उत्कलमें महात्मा गांधी

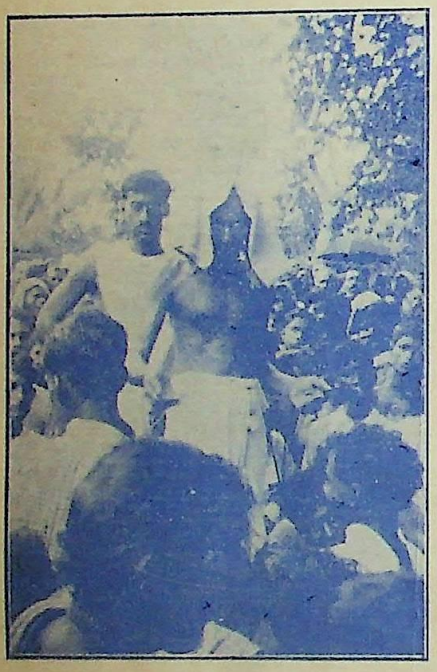

सभामें महात्माजी पैसे बटोर रहे हैं

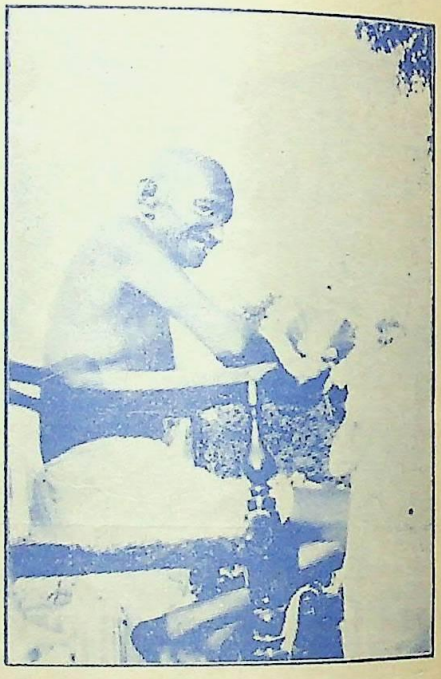

केन्द्रपाड़ाकी सभामें महात्माजी

महात्माजीसे उपदेश-ग्रहण

महात्माजी स्टेशन जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रूसकी अमर क्रान्तिके आर्थिक कारण

श्री अम्बिकाप्रसाद मिश्र

सन् १९१७ की अमर क्रान्ति, बिना बादलकी बिजली न थी। रूसके अतीत इतिहासने इसके बीज बोये थे। वर्षोंसे क्रान्तिकी लहरोंके थपेड़ अत्याचारी जारके सिंहासन-की नींव तोड़ रहे थे। बहुत दिनोंसे जनताने जारशाहीके ही खिलाफ नहीं, वरन् मध्यवित्त श्रेणीके साथ भी लोहा लेकर श्रमजीवियों ( Proletariat ) की डिक्टेटरीका दरवाजा खोल रखा था।

इस छोटेसे लेखमें रूसी क्रान्तिके प्रारम्भिक परिच्छेदों-पर विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है, फिर भी पाठकोंकी जानकारीके लिए इसकी हलकी झलक जरूर दिखायी जायगी ; क्योंकि लेनिनके शब्दोंमें, प्रथम क्रान्ति सन् १९१७ की रूसी क्रान्तिका पूर्वाभिनय ( रिहर्सल ) थी।

सन् १९१७ में जब मजूरों और किसानोंने वर्ग-युद्धका श्रीगणेश किया तो वे निरस्त्र थे, ऐसी बात नहीं। सन् १९०५ की प्रथम रूसी क्रान्तिमें ही उन्होंने अनुभवके अमोघ अस्त्र संगृहीत कर लिये थे और यही कारण है कि विजय-श्री उन्हींके हाथ रही।

सन् १९०५-१९०७ की क्रान्तिकी आग सार्वभौम साम्राज्यवादके विरुद्ध मध्यवित्त वर्गने सुलगायी थी। क्रान्तिकी इन्हीं चिनगारियोंने धीरे-धीरे वातावरणको इस प्रकार आच्छादित किया कि पीछे श्रमजीवियोंने भी मध्यवित्त वर्गके विरुद्ध धुआंधार तूफान खड़ा कर दिया। प्रथम क्रान्तिमें, क्रान्ति-विरोधी बड़े-बड़े जमींदार और मध्यवित्त श्रेणीवालोंकी गुटबन्दीके खिलाफ, सर्वहाराके नायकत्वमें मजूरों और किसानोंके क्रान्तिकारी सम्मेलनकी रूप-रेखा दिखायी देती है। इस दलबन्दीका मूलतत्त्व, क्रान्तिसे पहलेकी विचित्र सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियोंमें अन्तर्निहित है।

प्रथम रूसी क्रान्तिके कारण और उद्देश्य समझनेके लिए मरभुखे रूसी किसानोंकी हालत जान लेना आवश्यक है। क्रान्तिके पहले तक रूसमें तानाशाह जमींदारोंका एकाधि-पत्य था। इसके साथ ही, जबकि एक तरफ किसानोंके पास सिर्फ आठ-आठ, नौ-नौ एकड़ जमीन थी, दूसरी तरफ लोग हजारों एकड़की बड़ी-बड़ी जमींदारियां हथियाये बैठे थे।

क्रान्तिसे पहले लेनिनने इस सम्बन्धमें स्थूल प्रमाणसे हिसाब लगाकर देखा था कि सात सौ जमींदारोंमें, हर एकके पास अस्सी हजार एकड़ जमीन है। इन सात सौ जमींदारों-की जमीन ६ लाख छोटे-छोटे किसानोंकी कुल जमीनकी तिगुनी जमीनके बराबर थी।

ये जमींदार अपनी जमीनका संभाल कैसे करते थे ? उन्नीसवीं सदीमें मध्यवित्त वर्गके एक अर्थशास्त्रज्ञने जांच करके पता लगाया था कि जमींदार, जो कुल आबाद जमीन-का तीन-चौथाई हिस्सा हथियाये बैठे थे, खुद अपनी कुल जमीनका सिर्फ पांचवां हिस्सा जोतते थे। यह जांच उस साल हुई थी जब एक साल पहले फसल बर्बाद हो चुकी थी। बारह सौ इस्टेटोंकी काली जमीन ( रूसकी सबसे अधिक उपजाऊ भूमि ) के पचास फीसदी फार्मोंमें मवेशी न थे और लगभग आधे फार्मोंमें खेतीके अपने निजी साधन नहीं थे। बहुत-से फार्मोंमें तो फार्मकी इमारत भी न थी। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश बड़े-बड़े जमींदार बड़े पैमानेपर खेती नहीं करते थे। जमींदार तो किसानोंके साथ मियादी बन्दोबस्त करके, मनमाने ढङ्गसे उनका शोषण करते थे। उन्नीसवीं सदीके अन्तमें काली अथवा उपजाऊ भूमिके जमींदार अपनी ५० फीसदी जमीन लीजपर उठा देते थे। काली जमीनके अलावा ३० से ४५ फीसदी कम उपजाऊ भूमि भी उठा देते थे और इस ठेकेके लिए किसानको असाधारणरूपसे ऊंचा लगान देना पड़ता था। कभी-कभी तो जमींदार किसानसे जबर्दस्ती उसकी आधी पैदावार ले लेता था। कहीं-कहीं, किसान जमींदारोंकी जमीन जोतकर बिलकुल कङ्गाल बन जाते थे। जमींदारके छोटे से छोटे जमीनके टुकड़ेके बदले किसानको भारीसे भारी मिहनत चुकानी पड़ती थी; यहांतक कि अपने ही औजारोंसे जमींदारके लिए भी बेगार खटनी पड़ती थी। जमींदार खुद, कभी भी खेतीके लिए नयी मशीनें न मंगवाता और न उत्पादन बढ़ानेके लिए किसी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रकारकी चेष्टा करता। वह तो सिर्फ शिकमी काश्तकारोंके शोषणके लिए ही जमीन लोजपर उठाता था।

इसमें शक नहीं कि कहीं-कहीं बड़ी-बड़ी इस्टेटोंके प्रबन्धमें सुधारके लक्षण प्रकट हो रहे थे —पूंजीवादी ढर्रा पकड़ा जा रहा था; लेकिन खेतीके सम्बन्धमें जमींदारोंमें जो नीति काम कर रही थी वह यहां न थी। जमींदार अब भी, सदाकी भांति कृषकोंके अधीश्वर थे, पूंजीवादी उत्पादक नहीं।

इससे यह स्पष्ट है कि ऐसी परिस्थितिमें किसानोंमें वैज्ञानिक कृषिका प्रसार न हो सका। फलतः आर्थिक दृष्टिसे उत्पादन भी न बढ़ सका। जो कुछ भी हो, यह कभी भी नहीं कहा जा सकता कि सब किसानोंकी दशा एक समान थी। किसान ज्यादातर बाजारोंमें वस्तुओंका विनिमय करते थे। इस बदलौवलमें वे बाजारोंको अनाजसे पाट देते थे। इससे पुराना कृषक समुदाय विनष्ट हो रहा था। कुछ उत्साही और चतुर किसानोंने अपनी अवस्था सुधार ली थी और मध्यवित्त श्रेणीके लोगोंकी भांति गांवोंमें गरीबोंका शोषण करने लगे थे। किन्तु कृषकोंमें यह प्रभेद और धनकी असमानता ही उस समयकी विशेषता न थी। सबसे खास बात यानी तनातनीकी जड़ तो जमींदार-वर्ग और सामूहिक रूपसे समस्त किसानोंकी असमानता थी। लगानपर जमीन जोतनेमें इतनी अड़चनें और असुविधायें थीं कि सबसे अधिक सम्पन्न किसान भी कृषिकी वर्तमान अवस्थामें सुधार न कर सकते थे। यही कारण है कि सारा गांव, सम्पन्न किसान और ग्रामीण मध्यवित्त-वर्ग (Bourgeois), दरिद्र कृषककी भांति ही जमींदारोंका शोषण बन्द करनेके लिए जमींदारी प्रथाका अन्त चाहते थे। जमींदारोंके खिलाफ किसान क्यों भड़के और किसानोंमें प्रथम क्रान्तिकी चिनगारियां कैसे उड़ीं, यह थोड़े-से आंकड़ोंसे अच्छी तरह समझमें आ जायेगा। उदाहरणके लिए, यूरोपीय एशियाके ५० प्रदेशोंमें सन् १८८८ से १८९८ तक, दस वर्षके अन्दर किसानोंके पास घोड़ोंकी संख्या बीस लाख और दूसरे मवेशियोंकी १० लाख कम पड़ गयी। इसी समय (१८८८ से १८९८) मध्य एशियाके रूसी प्रान्तोंमें, जहां जमींदार विशेष रूपसे निर्दयतापूर्वक किसानोंपर अत्याचारके पहाड़ गिराते थे, किसानोंके फार्मोंकी संख्या बहुत कम पड़ गयी थी। इन फार्मोंमें या तो घोड़े थे ही नहीं और थे भी तो सिर्फ १ से ६ तक। यदि मान लिया जाय कि सन् १८८८ में घोड़ोंकी तादाद सौ फीसदी थी तो घटते-घटते यही संख्या सन् १८९८ में इस प्रकार हो गयी :—

| बिना घोड़ा | १ घोड़ा | २ घोड़े | ३ घोड़े | ४ घोड़े |
|---|---|---|---|---|
| फार्म—१२२% | १२९% | ९६% | ६९% | ५७% |

| ५ घोड़े | ६ घोड़े |
|---|---|
| ४१% | ४१% |

जिन फार्मोंमें पहले १ से ज्यादा घोड़े थे उनकी संख्या तो कम पड़ गयी थी और जिनमें घोड़े नहीं थे या नाम लेनेके लिए एक था, उनकी संख्या काफी बढ़ गयी थी। मध्य रूसके अनेक प्रान्तोंमें आबाद जमीन भी घट रही थी। विकासके लिए हाथ-पैर मारते हुए किसानोंने जमींदारोंकी जञ्जीरसे छुटकारा पाना चाहा; इसपर सङ्घर्ष अवश्यम्भावी हो गया और जमीन्दारोंने अपने अत्याचारी कोड़ेसे फिर उनकी चमड़ी उधेड़ दी और गरीबीसे उनका उद्धार न होने दिया। बेचारे तड़फड़ाते हुए दुःख-क्लेशकी अगम गहराईमें डूब गये। बीसवीं सदीके प्रारम्भमें किसानोंको हम घोर अर्थ-सङ्कटके जञ्जालमें जकड़ा हुआ देखते हैं। सन् १९०५ से १९०७ तक किसानों और जमीन्दारोंके सङ्घर्षकी जड़ आर्थिक असमानता थी।

सन् १८६१ के "पीजैण्ट रिफार्म" के बाद रूसमें बड़ी-बड़ी जमींदारियां स्थापित होकर किसानोंका शोषण तो होने ही लगा, साथ ही रूस पूंजीवादियोंके कल-कारखानोंका देश भी बन गया। उन्नीसवीं सदीके पिछले तीस वर्षोंमें रूसमें पूंजीवाद फैल गया। बड़ी-बड़ी फैक्टरियां खुल गयीं जिनमें १० हजारसे भी ज्यादा मजूर काम करने लगे। इस दरमियानमें, रूसमें पूंजीवादने इतना जोर पकड़ा कि उसने बहुतसे पश्चिमीय यूरोपके पुराने पूंजीवादी देशोंके भी कान काट लिये। लोहे और कोयलेके उत्पादनमें रूस सब देशोंसे आगे बढ़ गया। तेलमें उसका एक ही प्रतिद्वन्द्वी—अमेरिका रह गया। बीसवीं सदीके प्रारम्भमें रूसका कपड़ेका उद्योग-धन्धा भी खूब चमका और इस मामलेमें इंगलैण्डके बाद उसीका दूसरा नम्बर रहा। खनिज पदार्थोंके उत्पादनमें भी रूस खूब आगे बढ़ा। कहनेका मतलब यह कि रूसके उद्योग-धन्धोंका पैमाना बहुत बढ़ गया। पूंजीवादके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इतिहासमें उत्पादन-शक्तिकी बढ़तीके साथ-साथ बड़े-बड़े कल-कारखानोंका महत्त्व अधिक है। जिन कारखानोंमें अच्छा प्रबन्ध होता है, अच्छी मशीनें चलती हैं, अधिक पूंजी लगी है और अधिकसे अधिक माल तैयार होते हैं वे स्वभावतः सफलताके साथ छोटे-छोटे उद्योग-धन्धोंसे प्रति-द्वन्द्विता कर लेंगे। उन्नीसवीं सदीके अन्तमें बड़े-बड़े कारखाने खुले और छोटे-छोटे या मंझोले साइजके कारखानोंको दबाकर चमक उठे। इस सम्बन्धमें लेनिन कहते हैं :—

सन् १८६६ में बड़े-बड़े उद्योग-धन्धोंमें ( जिनमें एक सौसे ऊपर मजूर काम करते थे ) काम करनेवाले मजूरोंकी पूरी तादादमें २७ फीसदी मजर सिर्फ उन कारखानोंमें काम करते थे जिनमें एक हजारसे ज्यादा मजूर काम करते थे। सन् १८७९ में इन कारखानोंने मजूरोंकी संख्या ४० प्रतिशत और १८९० में ४६ प्रतिशत बढ़ा दी। इसके मानी यह हुए कि बड़े-बड़े उद्योग-धन्धोंमें काम करनेवाले कुल मजूरोंके आधे सिर्फ उन कारखानोंमें काम करते थे जिनमें प्रत्येकमें एक हजारसे ज्यादा मजूर नौकर थे। सन् १८९४ में ६८ बड़े-बड़े सूती कपड़ेके कारखानोंमें जितने मजूर काम करते थे उनकी संख्या छोटे-छोटे १५६ सूती कपड़ेके कारखानोंमें काम करनेवाले मजूरोंसे तिगुनी थी। इस प्रकार, जब हम उन्नीसवीं सदीके रूसी पूंजीवादकी बढ़तीकी बातें करते हैं तो उसके मानी यह हुए कि हम उन बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों-की चर्चा करते हैं जिनमें काफी तादादमें माल तैयार होता था और हजारों मजूर आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धानोंके आधारपर अधिक-से-अधिक माल बनानेके काममें नियुक्त थे। इस मामलेमें रूस पूंजीवादी पश्चिमीय यूरोपके बराबर हैं, इसलिए इसे बड़े-बड़े पूंजीपतियोंका देश समझना चाहिए।

रूसमें इस प्रकार औद्योगिक उन्नति होनेका पहला कारण रेलवेकी उन्नति है। हर साल रूसी जमींदार बड़े परिमाणमें विदेशोंको अनाज भेजते थे। वे प्रत्येक वर्ष निर्यातके परिमाणकी वृद्धि कर रहे थे। विदेशोंको जल्दी-से-जल्दी अनाज भेजने और आबाद जमीनसे सम्बन्ध जोड़नेके लिए जमींदारोंने रूसमें रेलवे लाइनोंका जाल बिछवा दिया। काला सागर और बाल्टिक बन्दरोंसे भी सम्बन्ध हो गया। रूसमें रेलवेके व्यापक प्रसारका यही संक्षिप्त इतिहास है। रेलवेके लिए इञ्जन बनानेकी जरूरत हुई। डब्बोंकी भी उतनी ही जरूरत थी। पटरीपर बिछानेके लिए स्लीपर भी चाहिए थे। रेलवे स्टेशन बनानेके लिए सबसे पहले, अधिक-से-अधिक परिमाणमें लोहा और इमारत बनानेके सामानकी जरूरत थी। उसके बाद रेलोंके बनानेमें बहुत-से मजूर लगाये गये और मजूरोंकी संख्या जैसे-जैसे बढ़ती गयी, उनके लिए दैनिक आवश्यकताकी वस्तुओंकी भी मांग बढ़ी। अतएव इन आवश्यक वस्तुओंकी पूर्तिके लिए भी उद्योग-धन्धोंकी सृष्टि हुई। मजूरोंको तन ढकनेके लिए कपड़े, जूते और दैनिक आवश्यकताकी वस्तुयें चाहिए। तात्पर्य यह कि जमींदारोंके स्वार्थके लिए रूसी रेलवेकी रचनामें देशके औद्योगिक विकासको महत्त्वपूर्ण सहायता मिली।

एक और खास बात, जिससे रूसके औद्योगिक विकासमें सहायता मिली, यह है कि विदेशियोंने आंखें बन्दकर रूसी उद्योग-धन्धोंमें अपनी पूंजी लगायी। लाभके लोभमें विदेशोंसे ६० करोड़ रुबल* रूसी उद्योग-धन्धोंमें लगानेके लिए आये। यह पूंजी ज्यादातर फ्रान्स और जर्मनीसे आयी।

ये ही तीनों बातें—रेलवे निर्माणका विराट् आयोजन, सस्ते मजूर और ज्यादा मुनाफा, और अन्तमें विदेशी पूंजीके जमावने रूसके उद्योग-धन्धेको आसमानपर पहुंचा दिया। किन्तु जिस सरलतासे उन्नीसवीं सदीके अन्तमें पूंजीवादका विकास हुआ, बीसवीं सदीके प्रारम्भमें उसी प्रकार उसका घोर पतन भी हुआ। सन् १९००-१९१० दशाब्दिमें उद्योग-धन्धेको व्याघात पहुंचा। १९०५ की क्रान्ति तक औद्योगिक जटिलता साधारण थी। उत्पादन-शक्ति घट गयी और १९०५ से १० तक किसी प्रकारकी उन्नति न हो सकी। यदि किसी प्रकारके उद्योग-धन्धेमें सुधारके लक्षण प्रकट भी हुए तो वे इतने अल्प महत्त्वके थे कि उन्नीसवीं सदीकी तीव्र उन्नतिके समक्ष वे नगण्य बन गये। अब उन्नतिकी चर्चा न कर यदि यह कहा जाय कि रूसके उद्योग-धन्धेकी दिन-दिन अवनति होती गयी तो अनुपयुक्त न होगा।

जब कि सन् १८९० और १९०० के बीच रूसमें खपत होनेवाली रुईका परिमाण २०० फीसदीसे भी ज्यादा बढ़

* एक रुबल लगभग डेढ़ रुपयेके बराबर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गया था, तैयार होनेवाले मालकी आमदनी आगामी १० वर्षोंमें (१९००-१०) ३० फीसदी घट गयी थी। सन् १९०० और १९१० के बीच सूती मालका बनना भी पहलेसे ज्यादा हो गया था। जब लोगोंकी क्रय-शक्तिकी अपेक्षा उत्पादन बढ़ जाता है तो पूंजीवादी उद्योग-धन्धे इसी प्रकारकी जटिलतामें फंस जाते हैं। बड़े-बड़े कारखानोंमें एक-ब-एक उत्पादनकी गतिको धीमा करना असम्भव है; क्योंकि बड़ी-बड़ी और दामी मशीनोंका पेट भरना भी तो जरूरी है। जब कि सन् १८९० और १९०० के बीच लोहा, इस्पात और लोहेकी दूसरी वस्तुओंका उत्पादन तीन सौ फीसदी बढ़ गया था, बीसवीं सदीके प्रारम्भिक दस सालोंमें आमदनी बिलकुल न बढ़ी, बल्कि कुछ घट ही गयी।

इतने दिनोंके ज्वलन्त औद्योगिक प्रसारके उपरान्त उद्योग-धन्धोंमें लगी हुई पूंजी किस हालतमें थी?

जिन देशोंमें पूंजीवादकी जड़ मजबूत हो चुकी है, वहां ऐसी जटिलतासे एक-दो वर्षमें छुटकारा मिलता है; किन्तु बीसवीं सदीके प्रारम्भमें रूस इस जटिलतासे दस वर्षमें भी पीछा न छुड़ा सका।

इस विचित्रताका कारण रूसकी कृषि-सम्बन्धी अवस्था थी। यह सभी जानते हैं कि उद्योग-धन्धोंका विकास कृषिसे घनिष्ट सम्बन्ध रखता है और खाद्य वस्तुओंका उत्पादन, उद्योग-धन्धों द्वारा उत्पादित वस्तुओंसे जुड़ा हुआ है। यह बात पहले ही बता दी गयी है कि बीसवीं सदीके प्रारम्भमें ही कृषकोंकी आर्थिक अवस्थाके पतनके लक्षण उदित हो चुके थे। जमींदारोंके निरन्तर शोषण, आबाद जमीनकी परती और फार्मोंमें मवेशियोंकी कमीने औद्योगिक उन्नतिके विचारोंको काल्पनिक बना दिया। और यदि क्रान्तिकी असफलताके कारण कृषि-समस्या हल न हो सकी और किसान जमींदारोंके शिकञ्जेसे न निकल सके तो क्रान्तिके पश्चात् पूंजीवादके विकासके आवश्यक उपादानोंका अस्तित्व भी मिट गया। जमींदारी प्रथाके मृत शरीरने देशके उत्पादक साधनोंको जकड़ दिया।

श्रमजीवियोंके राजनीतिक आन्दोलनको दृष्टिगत रखते हुए पूंजीपतियोंने मजूरोंको दबाये रखनेके लिए सब तरहके उपाय किये। कस्बोंमें मजूरोंके बीच खुफिया पुलिसके सङ्घ कायम हुए, क्लब खुले और मजूरोंको मुफ्तमें भर्ती किया जाने लगा। पूंजीपतियोंकी ओरसे खुफिया पुलिसने मजूरोंको आर्थिक सहायता देना भी शुरू किया। क्लबोंमें लेक्चर होते थे जिनमें पश्चिमीय यूरोपके किसानोंकी दशापर प्रकाश डाला जाता। रूसी श्रमजीवियोंको नाच-गानेमें भुलाये रखनेका भी प्रबन्ध हुआ। लेकिन क्रान्तिने पूंजीवादियोंके प्रलोभनका पर्दा फाश कर दिया। श्रमजीवियोंके पृथक् सङ्घ कायम हुए। वहां उनमें क्रान्तिकी बारूद भरी गयी। हड़तालोंका प्रबन्ध हुआ। युद्ध भी अवश्यम्भावी हुआ और आज रूसमें श्रमजीवियोंका राज्य है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आसाममें भीषण जल-प्रलय

श्री शिवसागर अवस्थी

कह रहा है आसमां यह सब समां कुछ भी नहीं।
पीस डूंगा एक गर्दिशमें जहां कुछ भी नहीं।

तारीख २३ जूनके समाचार-पत्रोंमें निम्न-लिखित समाचार प्रकाशित हुआ :—"ता० २० जून बुधवारको आसामके नवगांव जिलेमें कपीली, बरपानी, किलिङ्ग, कलोङ्ग आदि नदियोंमें बाढ़ आ जानेके कारण कई घण्टोंके अन्दर जहां जलका बिलकुल पता न था वहां सर्वत्र जल-ही-जल भर गया है। करीब एक हजारसे भी अधिक वर्गमीलकी सीमामें गम्भीर जल समुद्रकी भांति लहरें ले रहा है। कितने ही गांवोंका पता ही नहीं है। कपीली नदीने अपने अञ्चलस्थ गांवोंको बातकी बातमें समेट लिया। कितने ही मृत मनुष्य और गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि मृत पशु पानीपर उतरा रहे हैं। दो विशालकाय जङ्गली हाथी भी बहते हुए देखे गये। ए० बी० रेलवेकी लाइन, जो गोहाटीसे तिनसुकियाको जाती है, जहां-तहां कई माइलों तक बुरी तरहसे विध्वस्त हो गयी है। जागीरोड स्टेशनके आगे जो रेलका पुल था वह बह गया। धर्मतूल स्टेशनसे छापरमुख स्टेशन और छापरमुखसे कामपुर जमुनामुख स्टेशन तक जगह-जगह रेलकी लोहेकी पटरियोंको सिलीपरोंके साथ जलके प्रबल वेगने उखाड़कर दूर फेंक दिया है। दीवालकी भांति लोहेकी पटरीमें लगे हुए सिलीपर खड़े हैं। तारके खम्भे उखड़ गये हैं, रेलवे ट्रेनों और टेलीग्रामोंका आना-जाना बिलकुल बन्द है। बाढ़के समयमें जो गुड्स या पैसेञ्जर ट्रेनें मुसाफिरों सहित जहां खड़ी थीं वे वहीं खड़ी रह गयीं। मुसाफिर और रेलवे कर्मचारी भूखसे तड़प रहे हैं। हजारोंकी संख्यामें लोग अपने बाल-बच्चों सहित पेड़ों, पहाड़ियों और रेलकी लाइनों तथा ऊंचे स्थानोंपर पड़े हुए हैं। इनके ऊपर घनघोर वर्षा हो रही है। लोगोंकी जान 'अब-तब'में है।"

हृदय दहला देनेवाले बाढ़के सनसनीपूर्ण समाचार पाते ही कलकत्तेकी लोकोपकारी संस्था मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटीने आसामके बाढ़-पीड़ितोंकी सेवा और सहायता करनेका निश्चय कर लिया और सहायता-कार्यका भार मुझे सौंपा गया। ता० २९ जून शुक्रवारको दिनके १ बजे सियालदह स्टेशनसे आसाम मेलमें सवार होकर मैं ता० ३० जूनको प्रातःकाल गोहाटी पहुंचा। गोहाटीमें श्री चांदमलजी सरावगी-जैसे उत्साही युवकका सहयोग प्राप्त हुआ। ता० १ जुलाईको प्रातःकाल ९ बजे गोहाटी स्टेशनमें आया। स्टेशनपर लोगोंकी अपार भीड़ देखकर प्रतीत होता था मानो लोग किसी मेले-ठेलेमें जा रहे हों। किन्तु पता लगाने-पर मालूम हुआ कि लोग भीषण जल-प्लावनका दृश्य और जागीरोडके आगे जो रेलका पुल विध्वस्त हो गया है, उसे देखनेके लिए जा रहे हैं।

गोहाटी स्टेशनसे ९ बजकर कुछ मिनटोंपर खुलनेवाली रिलीफ ट्रेनमें श्री चांदमलजी सरावगी, रामप्रसादजी जालान, ज्वालाप्रसादजी सीकरिया प्रभृति गोहाटीके उत्साही नवयुवकोंके सहित सवार होकर हम जागीरोडके लिए रवाना हुए। गाड़ी पानीखेती स्टेशनसे ज्योंही आगे बढ़ी त्योंही जिधर नजर दौड़ायी उधर लाइनकी दोनों तरफ जल-ही-जल दिखायी पड़ा। आगे जानेपर डिगरू स्टेशन मिला, डिगरू स्टेशनके आगे डिगरू नामक समूचा गांव पानीमें डूबा हुआ दिखायी दिया और गांवमें जो झोपड़े थे उनके केवल सिरे दिखायी दे रहे थे। करीब ११॥ बजे खेतड़ी स्टेशनपर पहुंचे। गाड़ीसे उतरकर देखा कि खेतड़ी स्टेशन-पर करीब डेढ़-दो सौ आदमी अपने बाल-बच्चोंको लिये हुए स्टेशन गोदामके भीतर और बाहर पड़े हैं। पीड़ितोंके निकट जाकर पूछ-ताछ की तो मालूम हुआ कि करीब १०-१२ दिनसे ये भूखे-प्यासे स्टेशनपर पड़े हैं। खेतड़ीके मारवाड़ी सज्जनोंने बाढ़के पहले सप्ताहमें ५-७ दिन तक उन्हें चावल बांटे थे। किन्तु इधर अन्न न मिलनेके कारण इनकी शारीरिक दशा कई महीनोंके मरीजों-जैसी दिखायी दी। कुछ मिनटोंके बाद ही देखा कि एक यूरोपियन सज्जन केमरा लिये हुए रेलसे उतरे और पीड़ितोंका फोटो लेनेके लिए आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बढ़े। पीड़ितोंने समझा कि यह जिलेका कोई हाकिम है, जो हमारी सहायताके लिए आया है। अतः इन लोगोंने साहबको घेर लिया। साहबकी जान आफतमें फंसी। किन्तु साहब शीघ्र ही पैंतरा बदलकर दूरसे ही फोटो लेकर चल पड़े और ये पीड़ित आंखोंमें आंसू भरे साहबकी ओर आशा-भरी दृष्टिसे ताकते ही रह गये। हमें बड़ी दया आयी। साथमें चावलोंके बोरे थे ही, इच्छा हुई यहां चावल बांटें, लेकिन गाड़ी यहां थोड़ी ही देर ठहरती है, क्या करें? यह सोच ही रहे थे कि घण्टी बजी और सीटी देकर गाड़ी धीरे-धीरे चल पड़ी। शीघ्र ही स्टेशन-मास्टरसे बात करके इन पीड़ितोंमें बांटनेके लिये २ बोरा चावल उतार दिया।

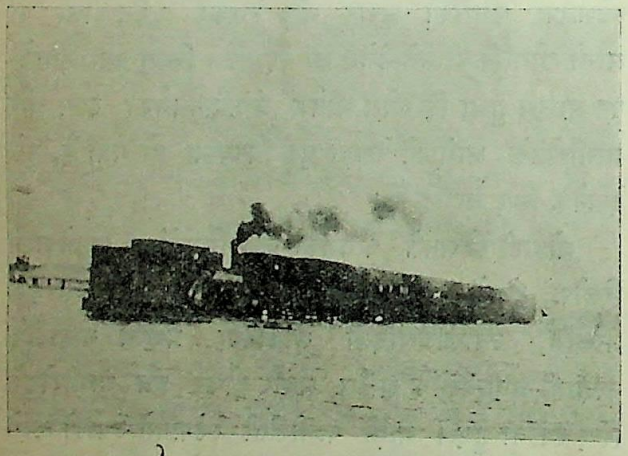

छापरमुख स्टेशन मानो समुद्रमें बना हुआ है; रेलगाड़ी उतराती-सी नजर आती है।

करीब १२॥ बजे गाड़ी जागीरोड पहुंची। जागी रोडमें स्टेशनके निकट ही कैम्प डाल दिया और सेवा करनेवाले लोगोंको विभिन्न स्थानोंके लिए नावोंपर रवाना कर दिया।

दूसरे दिन जागीरोडमें नवगांवके डिपुटी कमिश्नर मि० के० डब्ल्यू० पी० मेररसे भेंट की जो बाढ़-पीड़ित स्थानोंका निरीक्षण करके जागीरोड आये थे। आपने बड़े सौजन्यके साथ करीब १ घण्टे तक कामपुरकी ओरके क्षतिग्रस्त गांवोंका हृदय-विदारक वर्णन किया और उधर ही सहायता करनेके लिए अपनी सलाह दी। हमें एक पेड़के नीचे टूटे झोपड़ेके पास कैम्प डाले देखकर आपसे न रहा गया और आपने डाक बंगलामें कैम्प करनेके लिए हमें स्थान दिया और कहा कि आप जितने दिन चाहें, डाकबंगलेमें रहें।

जागीरोडसे ता० २ जुलाईको खेतड़ी गये। इधर मयाङ्ग मौजा* के गांवोंको देखा जो जलमें डूबे हुए थे। यहां ता० २० जूनकी रातके १२ बजेसे जल बढ़ना आरम्भ हुआ और ता० २१ जूनको दिनके १ बजे हाथीउठा, बोहापहाड़ प्रभृति गांव जलमग्न हो गये।

यद्यपि लोगोंको यह पता न था कि जल इतनी गहराई तक बढ़ेगा, किन्तु ज्यों-ज्यों जल बढ़ता गया त्यों-त्यों लोग सचेत होते गये और अन्तमें जब जल खूब बढ़ गया तब लोग कोलाहल मचाते हुए अपने बाल-बच्चों और पशुओंको लेकर हजारोंकी संख्यामें रेलवे लाइन तथा खेतड़ी स्टेशन और पहाड़ों तथा ऊंचे स्थानोंकी ओर भाग चले। उक्त गांवोंके लोगोंके सञ्चित किये हुए धान बह गये और जो बचे वे जलसे भींग जानेके कारण सड़ गये। धानकी फसल बर्बाद हो गयी। अब न तो लोगोंके घरमें खानेको एक मूठी अन्न है और न भविष्यके लिए ही धानकी फसलकी कोई आशा है।

## पीड़ितोंपर वज्रपात

'दैवो दुर्बल घातक.' का एक ज्वलन्त उदाहरण खेतड़ी आनेपर मुझे मिला। खेतड़ीसे एक मीलकी दूरीपर लणमाटी नामक एक गांव है। बाढ़की विपत्तिका मारा हुआ इस गांवका लोहिबर मीकर नामक एक आदमी गांव छोड़कर एक पेड़की शरणमें बैठा था, और इसके दो लड़के पेड़के मचानपर थे। कई दिनोंसे लगातार वर्षा होनेके कारण यह परिवार भूखकी यन्त्रणासे विकल हो रहा था। एक दिन मूसलधार वर्षा हो रही थी, बिजलीकी चपल चमकके साथ ही बादल गरज रहे थे। एकाएक वज्रपात हुआ। पिताकी मृत्यु हो गयी, दोनों बच्चे मचानसे नीचे गिर पड़े और दैव-संयोगसे बाल-बाल बच गये। लोगोंने दोनों लड़कोंको मूर्च्छित अवस्थामें पेड़के नीचे पाया।

ता० ८ जुलाईको प्रातःकाल ७ बजे सोसाइटीके सहायता-केन्द्रों और क्षतिग्रस्त स्थानोंका निरीक्षण करनेके लिए नावपर सवार होकर सैकड़ों वर्गमीलमें भरे हुए अथाह जलमार्गसे मैं रवाना हुआ। साथमें दो व्यक्ति और थे। नावपरसे जिधर नजर दौड़ायी उधर सर्वत्र समुद्रकी भांति जल लहरें लेता हुआ दिखायी दिया। इस भयावह दृश्यको देख-

* आसाममें तहसीलको मौजा कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर मुझे थोड़ी देरके लिए कभी-कभी ऐसा मालूम होने लगता, मानो जलके अतिरिक्त पृथ्वीपर कुछ है ही नहीं! हां, पहाड़ियोंपरका घोर जङ्गल कभी-कभी दिखायी देता था। नाव ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती जा रही थी त्यों-त्यों आकाश काली घटाओंसे घिरता जा रहा था। जागी रोडसे ५ मीलकी यात्रा समाप्तकर करीब १ बजे भोकट गांव पहुंचे। यहां गांवके किनारे नाव लगाकर कुछ खा-पी चुकनेके बाद नाव खोल दी गयी।

यहां पता चला कि तेतलिया, घुघुवा, गोभा मौजाके गांव, जो भोकट गांवके आसपास हैं, बड़ी बुरी तरहसे विध्वस्त हुए हैं और इन गांवोंके लोग बिलकुल तबाह हो गये हैं। हमारी नाव बाढ़से एकत्रित हुए जल-मार्गसे जा रही थी। भोकट गांवके पास ही देखा, कपीली नदी बड़े प्रबल वेगसे हहर-हहर शब्द करती हुई बह रही है। बाढ़को आये इतने दिन बीत गये थे, फिर भी कपीली नदीके जलमें इतना वेग था कि किसी नाविकको उसमें नाव ले जानेकी हिम्मत ही न पड़ती थी।

भोकट गांवसे लालुनहाती, विहूबोड़ी आदि कितने ही ध्वस्त हुए गांवोंको देखते हुए नाव आगे बढ़ी। यहांसे पता चला कि धर्मतूल करीब ३ मीलकी दूरीपर है, लेकिन हमारा मार्ग दूसरा था इसलिए धर्मतूल बगलमें छूट गया और छापरमुखसे लौटकर धर्मतूल देखनेका निश्चय किया। जब आगे बढ़े तो इस समय रात्रिके ७ बज रहे थे, बड़े जोरकी वर्षा हो रही थी और इस अंधेरी रातमें हाथ तक न सूझता था। हां, कभी-कभी विद्युत्की चमकके प्रकाशमें चारों ओर जलको देखकर हृदय कांप उठता था। नाविकने कहा कि बाबू अब आगे जानेमें खतरा है, हवाका वेग अनुकूल नहीं है। हमने कहा, तो किसी गांवके निकट नाव ले चलो। नाविकने कहा कि बाबू, नाव अब आगे नहीं जा सकती, दिशाका ज्ञान नहीं है! किधर नाव ले चलें? यहां कोई आदमी भी नहीं है जिससे रास्ता पूछकर आगे बढ़ें! यह सुनकर हम चुप हो गये, और नाविकने इस निर्जन स्थानमें अपार जल-राशिके मध्यमें नाव लगा दी। इस समय भी वर्षा हो रही थी, पर उतना जोर न था। रात-भर टिप-टिप करके वर्षा होती रही और हम लोग नावपर पड़े रहे। किसी प्रकार भोर हुआ और नाव खोल दी गयी।

आगे जानेपर पूंता कोछुवा नामक गांव मिला। यहां नावकी दोनों तरफ जिधर देखा उधर मृत पशु जलमें उतराते हुए दिखायी दिये। मारे दुर्गन्धके जी घबरा रहा था। आगे बढ़नेपर तो मैं मृत पशुओंको देखते-देखते हैरान हो गया। यहां दोनों ओर झाड़ियोंके बीचसे जब हमारी नाव जा रही थी तो एक झाड़ीमें मृत बाघ फंसा हुआ दिखायी दिया। यद्यपि यहां दुर्गन्धके कारण एक मिनट भी खड़ा रहना कठिन था, किन्तु दृश्य बड़ा ही कौतूहलजनक था इसलिए नावसे उतरकर मुंह और नाकमें कपड़ा दबाकर नजदीक गये और ३-४ मिनट तक इसे हम लोग देखते रहे। मरे हुए पशुओंको देखकर बाढ़से ९० और ९५ प्रतिशत तथा किसी-किसी गांवमें सौ फीसदी पशुओंके नष्ट हो

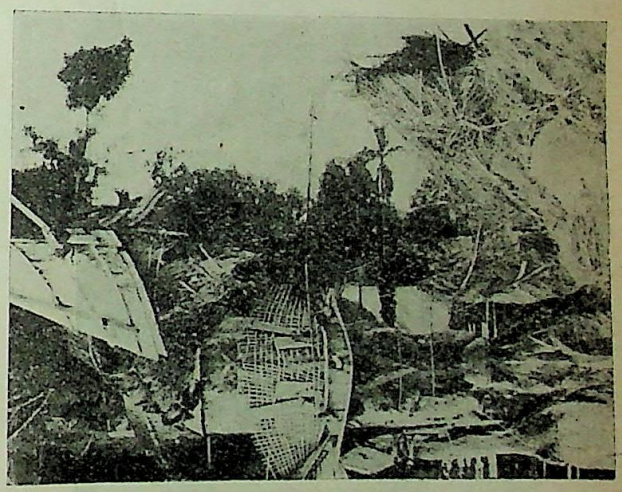

कछुआ गांव भीषण रूपसे बर्बाद हुआ है।

जानेके समाचारमें बिलकुल सत्यता मालूम हुई। छापर-मुखके निकट जानेपर वामनीजान नामक गांव मिला। इस गांवमें एक स्थानपर १५-२० पशु खड़े दिखायी दिये। इनकी दयनीय दशा देखकर बड़ा दुःख हुआ। अधिक दिनों तक जलमें खड़े रहनेके कारण एक-डेढ़ फीटकी ऊंचाईसे इनके पैरोंकी चमड़ी गलकर उतर गयी थी, मांस और हड्डियां दिखायी दे रही थीं। अस्थि-पञ्जर लिये ये पशु करुणापूर्ण दृष्टिसे ताक रहे थे। गांववालोंको देखा कि वे अपने स्त्री-बच्चों सहित ३-४ फुट ऊंचे बांसके मचान बनाकर उनपर बैठे थे। उनके घरमें खानेको न मुट्ठी-भर अन्न था और न लज्जा-निवारणके लिए एक फटा-पुराना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चिथड़ा ही। जो धान इनके घरोंमें थे वे बह गये थे और जो बचे थे वे जलमें भींग जानेके कारण सड़-पच गये थे। पूछा :—क्या खाते हो? जवाब मिला कि बाढ़के समय तो हम लोगोंने कई दिनों तक केलेके थम्भोंको उबाल-उबालकर खाया। इसके बाद छापरमुखके सेठ बालाबक्स हंसारियाकी ओरसे कई दिनों तक चावल मिले, फिर सरकारकी ओरसे चावल मिलने लगे। पशुओंके लिए पूछा कि इनके इलाजकी क्या व्यवस्था है? तो उत्तर मिला 'कुछ भी नहीं।' मैंने सोचा कि किसानोंके बचे हुए पशुधनकी रक्षा करना अत्यावश्यक है। अतः मैंने सोसाइटीके प्रधान मन्त्री श्री

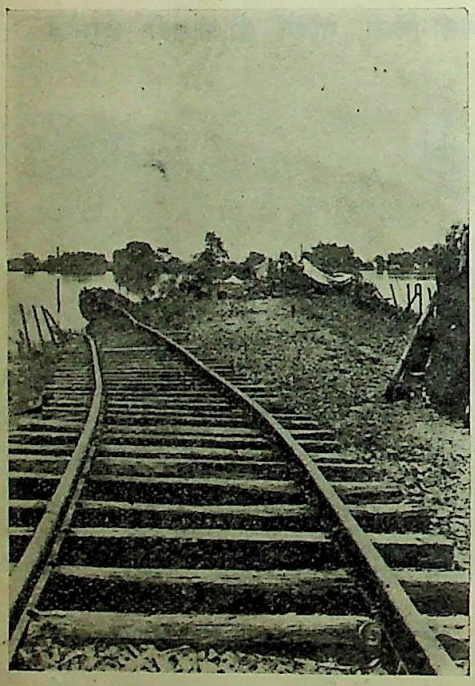

छापरमुखसे २ मील दूर रेलवे लाइन बुरी तरह टूट गयी है।

ज्वालाप्रसादजी कानोडियाको वेटरनरी ( पशुओंके ) डाक्टर भेज देनेके लिए तार दिया और उन्होंने कलकत्तेसे शीघ्र ही वेटरनरी डाक्टर भेज दिये। करीब २५ मील नाव द्वारा यात्रा करके छापरमुख पहुंचे। यहां कुछ समय ठहरकर धर्मतूल जानेका विचार किया। साथके दोनों आदमियोंको यहां छोड़कर, अनुकूल प्रवाह होनेके कारण कपीली नदीसे नाव द्वारा धर्मतूलके लिए रवाना हुआ।

जिस नदीने हजारों पशुओंका नाश कर दिया, कितने ही मनुष्योंकी जान ले ली और हजारों स्त्री-पुरुषों और बच्चोंको हिंसक जन्तुओंके बीच कई दिनों तक पड़े रहनेके लिए विवश किया, जिसकी निर्दय धाराकी मारसे विकल मातायें अपने प्राणप्रिय भूखसे व्याकुल पुत्रोंको अपने पाषाण-हृदयमें लगाये हुए कई दिनों तक पहाड़ियोंपर भूखी पड़ी रहीं और ऊपरसे घनघोर वर्षा होती रही, ऐसी प्रलयङ्करी कपीली नदीसे अब मुझे भी जाना है, एक बार यह स्मरण करते ही हृदय कांप उठा। खैर, नाव चल पड़ी। नदीकी दोनों तरफके ध्वस्त हुए गांवों और मृत पशुओंकी जलमें तैरती हुई लाशें देखते हुए जब अहदगुड़ीके निकट आमसी पहाड़के ठीक सामने हमारी नाव पहुंची तो एक मनुष्यकी लाश किनारे तैरती हुई दिखायी दी। आगे जानेपर होरागांव मिला जो टापूकी तरह चारों तरफसे जलसे घिरा हुआ था। ९ बजे रातको धर्मतूल पहुंचा। इस समय भी वर्षा हो रही थी। यहां एक कांग्रेस कर्मीके घरपर ठहरा। इन्होंने रातमें सारे गांवोंकी जो दुःख-गाथा सुनायी उसे सुनकर दिल एकबारगी दहल उठा।

जिस समय बाढ़ आयी उस समय दिनके १२ बज रहे थे। कितने ही किसान धानके खेतोंमें हल चला रहे थे, कहीं-कहीं धानकी बेड़ लगायी जा रही थी। नदीके समीप ही चरवाहे पशु चरा रहे थे, घरोंमें चूल्होंपर भातकी हांड़ियां चढ़ी हुई थीं। थके-मांदे, भूखे-प्यासे घरके आदमी खेतोंसे काम करके लौट रहे होंगे, यह सोचकर घरोंमें नारियां बड़ी उत्कण्ठासे भात बनानेमें व्यस्त थीं। कुछ लड़के, स्त्रियां तथा पुरुष जहां-तहां मछलियोंके शिकारमें लीन थे। इसी समय तेजीके साथ जलका बढ़ना आरम्भ हो गया। देखते-देखते जल लोगोंकी कमर तक आ गया। अब लोगोंको भयानक बाढ़का पता लगा। बस, फिर क्या था, चारों ओरसे हाहाकार मच गया। सब लोग इधर-उधर रेलवे लाइन, स्टेशन, पहाड़ियों और ऊंचे स्थानोंकी ओर भाग चले। किसीको किसीकी खबर लेनेकी फुर्सत न मिली। हलवाहे हलोंमें रस्सीसे बंधे हुए बैलों और हलको छोड़कर भागे, धानकी बेड़ पड़ी रह गयी और चूल्होंपर भातकी हांड़ियां भी चढ़ी ही रह गयीं। कुछ देरके बाद हजारों आदमी अपने बाल-बच्चों सहित रेलवे लाइन और स्टेशनमें इकट्ठे हो गये। लोगोंने देखा, उधरसे भकभकाती हुई गुड्स-ट्रेन ( मालगाड़ी ) आ रही है, जो धर्मतूल स्टेशनमें जाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रुक गयी। कई घण्टोंके बाद रेलवे कर्मचारी ड्राइवर, गार्ड आदि भूखसे विकल होने लगे। और लोग भी भूखसे तड़पने लगे। रातमें ७ बजे नेलीसे प्रह्लादराय मारवाड़ी बाढ़का दृश्य देखनेके लिए स्टेशनपर आये। गार्ड और रेलवेके बाबुओंको अत्यन्त भूखा देखकर इन्होंने उन्हें खानेके लिए परांठे दिये। यहांसे मैं नेली गया। वहां देखा कि किलिङ्ग वेली और नेली टी गार्डन स्टेटके गांव भी किलिङ्ग नदीकी बाढ़से बुरी तरहसे विध्वस्त हुए हैं। पी० डबल्यू० डी० की पक्की सड़कका पुल, जो नेलीके पास है, तहस-नहस हो गया है। जहां-तहां सड़ककी मिट्टी बह गयी है और कहीं-कहींपर छ-छ फुटके गढ़े हो गये हैं।

### छापरमुख स्टेशनकी आप-बीती

ता० १० जुलाईको दिनके १२ बजे छापरमुख पहुंचे। लौटते समय कछुवा गांवकी दर्दनाक दशा देखकर हृदय पिघल गया। इस गांवको कपीलीकी पहली चपेट सहनी पड़ी थी; क्योंकि यह तो कपीलीके बिलकुल नजदीक है। देखा कि एक टूटी झोपड़ीमें कुछ स्त्रियां बांसकी जड़की तरकारी काट रही थीं और एक स्त्री ओखलीमें छूरीसे कटी हुई जड़को कूट रही थी। कई छोटे-छोटे बच्चे, जो बुखार और पिलहीसे पीड़ित थे, ओखलीकी ओर टकटकी लगाकर ताक रहे थे। बच्चोंके हाथ-पैर सूख गये थे, पेट बेतरह फूले हुए थे और मुंहका मांस सूखकर हड्डियोंमें सट गया था। आंखें पीली पड़ गयी थीं। बड़ा ही हृदय-विदारक दृश्य था! गांवके किनारे नाव लगा दी। बच्चोंके लिए इनके अभिभावकोंने पिलहीकी दवा मांगी, किन्तु दवा न थी इससे बड़ा क्लेश हुआ। उखारके लिए कुनाइन देकर आगे बढ़े। जब नाव खोलने लगे तब कई स्त्रियां नजदीक आयीं और नमक मांगने लगीं। हमारे पास नावमें कुछ नमक था, जो दे दिया। इनसे मालूम हुआ कि गांवमें नमक भी नहीं है।

छापरमुखमें कामपुरकी ट्रेनके गार्डसे मालूम हुआ कि स्थिति बड़ी भयावह है। कामपुरसे तीन मील आगे बढ़ते ही सिवा लाइन और ट्रेनके सर्वत्र जल-ही-जल दीख रहा था। पानी कहीं-कहीं लाइनको छू रहा था। इसके बाद तार आ गया कि लाइनके ऊपर पानी आ गया है, कई जगह लाइन टूट गयी है, इसलिए ट्रेनोंका आवागमन बन्द रहेगा। यह हाल सुनकर मैं कुछ घबराया और किसी भावी विपत्तिकी आशङ्का करने लगा। पश्चात् मैं अपने डब्बेमें आया और लेटकर अपने भविष्यके बारेमें सोचने लगा। इस समय बूंदाबांदी हो रही थी। थोड़ी देरमें नींद आ गयी। एक घण्टा भी न सोने पाया कि चारों ओरसे भयङ्कर कोलाहल सुनायी पड़ा। मैं चौंककर उठ बैठा। खिड़की खोलकर देखा तो रात बड़ी भयावनी दिखायी दी। सारा आकाश काले बादलोंसे घिरा हुआ था, मूसलधार वर्षा हो रही थी और हवा जोरोंके साथ बह रही थी। अंधियारी इतनी गहरी थी कि अपनी हथेली तक भी न दिखायी देती थी। निकट बैठे हुए आदमीकी आवाज सुन सकना भी कठिन था। सोनेके

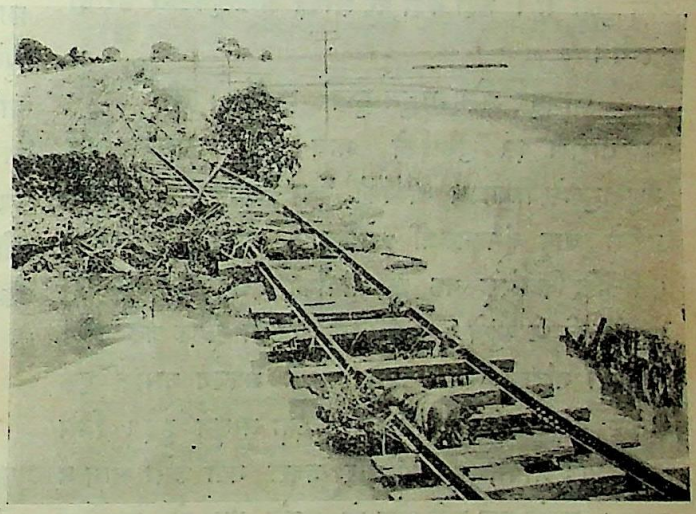

छापरमुखसे चार मील दूर गुईमारीके पास आसाम-बङ्गाल रेलवे लाइन बेकाम हो गयी। स्लीपरोंके बीचके कंकड़-पत्थर बह गये और लाइनपर जहां-तहां कूड़ेका ढेर लग गया। एक आदमीकी लाश भी पड़ी दिख रही है।

पूर्व जहां पानीका बिलकुल पता न था वहां सर्वत्र जल-ही-जल दिखायी पड़ा। यदि कोई स्थान बाकी था तो वह स्टेशनका बिल्डिङ्ग और प्लैटफार्म, जहां झुण्डके झुण्ड मनुष्य बाल-बच्चों सहित आ-आकर रोते-चिल्लाते हुए एकत्र हो रहे थे। कुछ लोगोंके पास छोटी-छोटी गठरियां थीं, बाकी सब खाली हाथ थे। इस समय स्टेशनपर दो पैसेञ्जर ट्रेनें खड़ी थीं। वर्षासे बचनेके लिए लोग इन गाड़ियोंमें खचाखच भर गये और अन्य खाली डब्बे जो खड़े थे वे भी लोगोंसे भर गये। बाकी लोग वर्षासे भींग रहे थे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किसी प्रकार भोर हुआ और पता लगाते-लगाते मैं सेठ बालाबक्सजीके पास गया और वहीं डेरा डाल दिया। इनकी गद्दी तक जल भरा हुआ देखा जो जमीनसे तीन-चार फुटकी ऊंचाईपर थी। उक्त सेठजीकी बाढ़से भीषण क्षति हुई है।

छापरमुखसे दूसरे दिन मौजा रोहाके गोड़मारी, अहमगांव, बामनियांगांव, मुदईगांव, हरियामुख, कुमारगांव, मांझगांव प्रभृति गावोंको देखा। इनमें वामनियां गांव और हरिया-मुख गांवकी दशा देखकर दिल टूक-टूक हो गया। बाढ़के इतने दिन बीत जानेपर भी लोग मचानोंपर बाल-बच्चों सहित बैठे थे, नीचेसे झरनाकी तरह जल बह रहा था और पास हीमें कलोङ्ग नदीकी बाढ़से एकत्रित हुआ जल समुद्रकी तरह भरा हुआ था। कहीं कहीं पर झोंपड़े उलट-पुलटकर ढेर हो रहे थे।

### कामपुर और जमुनामुखके गांवोंकी दशा

तारीख १२ जुलाईको नाव द्वारा कामपुर और जमुनामुखके निकटस्थ गांवोंकी दशा देखनेके लिए कपीली नदीसे बाबू डूंगरमलजी लोहियाके साथ चल पड़ा। कपीलीके किनारेके नष्ट हुए गांवोंको देखते हुए गुईमारी गांवके निकट पहुंचे। यहांसे रेल-लाइनसे पैदल चल पड़े। गुईमारी गांवको देखा। इस गांवके जयधन नामक एक सुनार परिवारकी रोमाञ्चकारी घटना मालूम हुई। जिस समय बाढ़ आयी, यह परिवार घबरा गया और भाग न सका। इसके एक स्त्री और दो लड़के तथा दो लड़कियां थीं। जब इनकी कमरसे ऊपर पानी आ गया तो सौभाग्यसे इन्हें घासका एक ढेर मिल गया। स्त्रीकी पीठपर कपड़ेसे एक लड़की बंधी थी और एक लड़की गोदमें थी। इसी प्रकार एक लड़का पुरुषके कन्धेपर और एक गोदमें था। इन दोनों प्राणियोंने पहले बच्चोंको घासके ढेरपर चढ़ाया और पीछेसे आप भी दोनों उसपर चढ़ गये। घासका ढेर कपीलीमें बह चला। बहते-बहते जब यह ढेर उस स्थानपर बहकर आया, जहां एक शाखा कलोङ्ग नदीमें मिलती और दूसरी शाखा दूसरी ओर जाती है, तब ढेरके दो भाग हो गये। एक ढेर-पर पिता और दो पुत्र और दूसरे ढेरपर माता और दो लड़कियां दोनों दो ओर बह चलीं। आह! यह कसा कारु-णिक और रोमाञ्चकारी दृश्य था, जहां पति अपनी पत्नी और दो नन्हीं बच्चियोंसे सदाके लिए विलग हो रहा था और स्त्री अपने जीवन-सर्वस्व स्वामी और प्राणप्रिय दो पुत्रोंसे पृथक् हो रही थी। कहा जाता है कि जब घासके दो भाग दोनों तरफ बहे तो ये दोनों भागोंपर बैठे हुए स्त्री-पुरुष और बच्चे गला फाड़-फाड़कर चिल्लाये, लेकिन उस समय उन्हें बचानेकी हिम्मत किसीको न हुई। दोनों लड़के और बाप तो बहकर किनारे लगे, इन्हें लोगोंने जीवित अवस्थामें पाया और वह स्त्री और दो लड़कियां बह गयीं।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटीकी ओरसे जागीरोड, खेतड़ी, छापरमुख, जमुनामुख, इन चार स्थानोंमें सहायता-केन्द्र खुले हुए हैं। जहां पीड़ितोंको अन्न, वस्त्र और धान बीज बांटे जा रहे हैं। कलकत्तेकी बङ्गीय सङ्कट-त्राण-समिति और रामकृष्ण मिशनकी ओरसे भी प्रशंसनीय सहायता-कार्य हो रहा है। इसके अतिरिक्त नवगांव फ्लड रिलीफ कमेटी, गोहाटी फ्लड रिलीफ कमेटी आदि संस्थायें भी जहां-तहां कार्य कर रही हैं।

### बाढ़का कारण

आसाममें सुप्रसिद्ध 'खाशिया-जायन्तिया' नामक जो पहाड़ है, उसके एक भागका नाम शेरापुञ्जी है, जहां संसारके सभी भागोंसे ज्यादा वृष्टि होती है। 'खाशिया-जायन्तिया' पहाड़से कपीली, बरपानी, किलीङ्ग, दोयाङ्ग प्रभृति नदियां निकलती हैं। ब्रह्मपुत्रकी एक शाखाका नाम कलोङ्ग है जो ब्रह्मपुत्रसे निकलकर ब्रह्मपुत्रमें ही मिलती है। कहा जाता है कि इस वर्ष उक्त खाशिया-जायन्तिया पहाड़ पर अत्यधिक वर्षा हुई जिसके फलस्वरूप उपर्युक्त नदियोंका जल बढ़ गया और इन नदियोंने ही आसाममें यह भीषण जल-प्रलय उपस्थित किया है, और इन नदियोंमें कपीली और बरपानी नदीसे ही ज्यादा गांव क्षतिग्रस्त हुए हैं। कहीं-कहीं पर उपर्युक्त नदियोंके परस्पर सङ्गम हो जानेसे भी उनके निकटस्थ गांव विध्वस्त हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कल्पनाकी रानी

कुमारी सरस्वती देवी, काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य

सुन्दरी माधुरीके घर उस दिन बड़ी चहल-पहल दिखायी दे रही थी। छोटी-छोटी लड़कियां सज-सजकर उसके पास आ रही थीं। आनेवालियोंमें आठ बरससे बड़ी कोई बालिका नहीं थी। माधुरी स्वयं भी अभी पूरे सात सालकी भी नहीं हो पायी थी। उसकी मां अपनी दुलारी बच्चीकी खुशीको देखकर फूली न समाती थी। छोटी-सी ढोलकी बज रही थी। बालिकायें गीत गा रही थीं। कोई-कोई बैठी बातें भी कर रही थीं। लीलाने कहा :—

"रूपा बहन! बरात किस वक्त आयेगी, दो तो बज चुके, फिर देर न हो जायगी?

"नहीं लीला, अभी देर कैसे हो गयी? बस आध घण्टे तक उन्हें जरूर आ ही जाना चाहिए। और तूने रानीको देखा है कैसी सज रही है? माधुरीकी बुआने कई दिन लगाकर उसके कपड़े और गहने तैयार किये हैं। उसकी मांग मोतियोंसे भरी गयी है। और एक-एक गहना ऐसा बनाया है कि बस देखते ही बनता है। लाल साड़ीपर सलमेकी बेल इतनी फब रही है कि क्या बताऊं!"

"हां! हां! देखा क्यों नहीं। पर माधुरी बड़ी मूर्खा है, इतना सब-कुछ यों ही दिये डालती है। देख लेना, बादमें रोयेगी। मैं राधाको खूब जानती हूं। वह अभी कितनी मीठी बनी बैठी है? पर एक बार रानीको ले जाकर बस वह फिर कभी उसे वापस भेजनेका नाम न लेगी। तब माधुरीको पता लगेगा, अभी तो समधिन बननेके शौकमें सब भूली बैठी है!"

"सचमुच राधा है तो बहुत बुरी। सबसे लड़ती रहती है, स्कूलमें भी खेल-खेलमें जिसे देखो झट पीट बैठती है। वह सबसे बड़ी है, इसीसे सब उससे दब जाती हैं। मुझे तो वह बिलकुल अच्छी नहीं लगती। मैंने माधुरीको समझाया था और वह मान भी गयी थी, पर उसकी मांने कहा—"नहीं, राधा ब्राह्मणी है। रानीका ब्याह उसीके यहां किया जायगा। दान दियेका कुछ पुण्य भी तो हो।"

"अच्छा! यह बात है? तब तो भई ठीक ही है, हम क्यों बोलें?"

इतनेमें बाजोंकी आवाज सुनायी देने लगी। छोटे-छोटे बच्चे मुंहसे बाजे बजा रहे थे। ढोल भी पिट रहे थे। उनके आगे-आगे एक छोटे-से घोड़ीके बच्चेपर कपड़ेसे बना हुआ एक पुतला बांधकर बैठाया गया था। उसके माथेपर मोतियों और फूलोंके सेहरे लटक रहे थे। सिरपर मुकुट था। उसकी वेश-भूषा बड़ी ही सुन्दर थी। यही तो रानीका दूल्हा था। बूढ़े नौकरने घोड़ीके बच्चेके गलेमें रस्सी बांधकर उसे कसकर पकड़ रखा था। वही पुतलेको भी थामे हुए था।

बाजोंकी आवाज सुनते ही सब लड़कियां भाग खड़ी हुईं। द्वारपर इतनी भीड़ और कोलाहल हो गया कि कान पड़ी आवाज सुनायी न देती।

बारातका खूब स्वागत किया गया। आते ही उन्हें गुलाब-जल डालकर शर्बत पिलाया गया। पूरी, हलुवा, मिठाई, पकवान तैयार हो रहे थे। दोनों ओरके पुरोहितोंने मण्डपके नीचे रानी और प्यारेलाल (गुड्डेका नाम) का ब्याह रचाया। सब बहुत खुश थे। खूब खा-पीकर सांझ होनेसे पहले ही पालकीमें बैठाकर रानी बिदा कर दी गयी।

माधुरीको दुःख तो जरूर था, पर वह रोयी नहीं। उसने सोचा, कल ही जाकर अपनी गुड्डी रानीको ले आऊंगी।

दूसरे दिन सुबह ही माधुरी राधाके घर रानीको लेने जा पहुंची। राधाको माधुरीका आना बहुत ही बुरा लगा। अभी तक तो वह पूरा सामान भी समेट न पायी थी। लिवा ले जानेकी पूरी बात सुने बिना ही वह बोल उठी :—"वाह माधुरी! अभी कैसे रानीको ले जाओगी? तीन दिनसे पहले तो मैं हर्गिज बिदा नहीं कर सकती। दो दिन तक तो मेरी सहेलियां ही रानीको देखनेके लिए आती रहेंगी, उन्हें मैं क्या कहूंगी? हां, तीन दिन बाद भले ही ले जाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



माधुरीने बहुत-कुछ कहा। रोयी भी, पर राधाने एक न सुनी। आखिर वह हार खाकर घर लौट गयी। उसने पहाड़-से लम्बे तीन दिन बड़ी मुश्किलसे काटे। उसका जी अपनी गुड़ियामें अटक रहा था, कब उसे पाये और उसके साथ खेले। तीसरे दिन वह भागी हुई राधाके यहां गयी और अपनी रानीको मांगा। राधा अब भी उसे बिदा करने-पर राजी न थी। बड़ी मुश्किलसे उसने शाम तकके लिए रानीको छोड़ा। वह बार-बार रोब जता रही थी—"देखो माधो! शादीके बाद फिर मां-बापका कोई हक लड़कीपर नहीं रहता, इसलिए तुम्हें रानीके लिए हठ बिलकुल छोड़ देना चाहिए। अब वह तुम्हारी नहीं है।" पर इस उपदेशसे माधुरीपर क्या बीत रही थी, उसे राधा कैसे समझ सकती थी? माधुरीने निश्चय कर लिया था—एक बार मुझे मिल जाय सही मेरी रानी, फिर मैं कभी उसे वापस भेजूंगी ही नहीं। बिदाईके समय तो उन दोनोंमें खूब ही लड़ाई हो गयी। माधुरी चाहती थी कि रानीके सभी गहने-कपड़े उसे दे दिये जायें, क्योंकि वह उससे खेलना चाहती है। और पलंग और बर्तन तथा खिलौने भी जो-जो माधुरीने दिये थे, दे दिये जावें। उनके बिना रानी सोयेगी कहांपर, खायेगी कैसे और खेलेगी किससे? पर राधा कहती, शामको तो रानी-को वापस भेजना ही पड़ेगा, इसलिए इस सबका क्या होगा? आखिर रो-धोकर माधुरी बहुत ही हल्के दो-तीन जोड़े और रानीको ला पायी। वह बहुत ही खिन्न थी। उसे रह-रहकर सलमेकी साड़ी, मोतियोंके झूमर, झुमकीके इयरिङ्ग, नन्हीं-नन्हीं अंगूठियों और अपने पिताके द्वारा बर्मा-से लायी हुई सफेद पत्थरकी सुन्दर मूर्तियोंकी याद आ रही थी जिन्हें उसने व्यर्थमें ही दे डाला था। गहने उसने कितनी लगन और मेहनतसे तैयार किये थे। दुष्ट राधा सभी कुछ हड़प गयी। उसका जो होता है कि वह उसका मुंह नोच डाले, और अपनी सब चीजें लेकर भाग आये।

शाम तक माधुरीका दिल अभी ठण्डा क्या हल्का भी न हो पाया था कि राधा आ धमकी उसकी प्यारी रानीको लेनेके लिए! अब तो माधुरी अपने घरमें थी, अतः पिटनेका डर न था। उसने रो-रोकर सबको इकट्ठा कर लिया और कहने लगी—"मेरी सारी चीजें दे दो। बस, ऐसा ब्याह मुझे नहीं चाहिए। मैं···नहीं···मेरी सारी चीजें दे···दो।" सब कोई हंसकर कह रहे थे—"पगली, कोई देकर भी लेता है?" उसकी मांने आंखोंमें पानी भरकर कहा—"मेरी बच्ची, लड़कियोंका भाग ही ऐसा होता है, पाला-पोसा, अच्छे-से अच्छा पह-नाया, अच्छेसे अच्छा खिलाया और बस बिदा कर दिया। अब उनकी है, आने दें या न आने दें, अच्छी तरह रखें या बुरी तरह।"

यह सब तो हुआ, पर माधुरीकी समझमें इतनी बात नहीं आयी कि वह अपना सब-कुछ वापस क्यों नहीं ले सकती। उसकी तो यही जिद थी कि मुझे ब्याह-शादीसे कुछ मतलब ही नहीं है, मैं अपनी रानीको अपने पास रखूंगी, खुद ही पहनाऊंगी, ओढ़ाऊंगी। मुझे इसे राधाके घर भेजना ही नहीं है। मैंने ही तो अपनी रानीका ब्याह किया था और मैं ही उस ब्याहको छोड़ती हूं। इसमें किसीका क्या बिगड़ता है? उसकी सखियां तत्त्वज्ञानियोंकी तरह कह रही थीं—"नहीं, माधो! देकर फिर वापस नहीं लेते। इसे भेज दे तू, और बना लेना।"

इस तरह माधोने बहुत कहा-सुनीके बाद अपनी रानी-को भेज तो दिया, पर उस दिनसे उसने गुड़ियाका नाम लेना छोड़ दिया। शामको विद्यालयसे वापस आनेके बाद सारी सखियां गुड़िया खेलतीं और उसे भी अपने पास बुलातीं। मां उसका उदास चेहरा देखकर बार-बार और गुड़िया बना देनेको कहती, पर उसने सबका जवाब "न" ही सीख लिया था। उसे और गुड़ियोंकी चाह न थी। उसकी आंखों और दिलमें तो उसकी रानी ही बसी थी और वह उसे भूल न सकी।

( २ )

माधुरीका विवाह हुए दो बरस बीत चुके। शादीके करीब डेढ़ वर्ष बाद उसके पति एफ० एस० सी० पास करके डाक्टरी पढ़नेके लिए विलायत चले गये। सभी उसके भाग्यको सराहती थीं। कैसे अच्छे घरमें विवाह हुआ है! लड़का कितना लायक और सुन्दर है! परिवार भी खूब धनी है और सबसे अच्छी बात यह है कि सबके सब मिलनसार और खुशमिजाज हैं। कुछ दिनोंमें इसके पति डाक्टर होकर आ जायेंगे, फिर तो कहना ही क्या है? ऐसे घर और वर बड़े भाग्यसे मिलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्याममोहन ( माधुरीके पतिका नाम ) विलायत तो आजसे दो वर्ष पहले ही चले गये होते, पर शादीके कारण ही रुके रहे।

माधुरी अब शीघ्र ही मां बननेवाली है। बड़ी-बूढ़ी सब उसके भाग्यको सराहती न थकतीं। सखियां ईर्ष्या-मिश्रित हंसीसे कहतीं—"माधो रानी! अब तुम मां बन जाओगी; अहा, तुम कैसी लगोगी? जीजाजीको बच्चा होनेका समाचार कैसे लिखोगी?" माधुरी सुनती और लज्जित होकर हंस देती। वह मन-ही-मन सोचती, इसमें प्रसन्न होनेकी क्या बात है? बच्चा होगा, इसमें मुझे क्या? और उन्हें (उसके पतिको) भी क्या? बल्कि इस सबको सुनकर तो उसका हृदय जब-तब एक अज्ञात आशङ्कासे कांप उठा करता। उसे सबकी प्रसन्नतापर बड़ा आश्चर्य होता। मां बननेके सुखको अभी वह जान ही कैसे सकती थी? जिस फलको कभी चखा नहीं उसका स्वाद कैसे बतला सकती थी?

समयपर प्रसव हुआ, लड़की पैदा हुई थी। पर दाइयों-की असावधानी और अपनी किस्मतसे वह बेचारी आंखें खोलनेसे पहले ही चल दी! इस दुनियामें दो सांस वायु भी उसके भाग्यमें बदी न थी! डाक्टरोंने बताया कि मृत्यु गला घुट जानेसे हुई है। सबने कहा—लड़की मर गयी, जाने दो। माधुरीकी जान बच गयी, बड़ी कुशल हुई। यह बनी रहे, बच्चे बहुतेरे हो जायंगे। माधुरीके दिलको ठेस तो जरूर लगी, पर उस समय तक वह पूरे होशमें न थी, इसलिए वह चुप-सी ही रही। दो दिन तक वह ऐसी ही रही। तीसरे दिन दूध भी उतर आया था और वह कुछ-कुछ अनुभव भी करने लगी थी। आज पहली बार वह रो पड़ी यह सोचकर कि उसकी बच्ची आयी भी और चली भी गयी, और उसने देखा भी नहीं।

अब तो वह सोचती और फूट-फूटकर रोती। अपने इस रोनेका रहस्य स्वयं उसकी समझमें नहीं आ पाता। बस वह इतना जानती कि उसे रुलाई आ रही है अपनी बच्चीके लिए। उसे दाईपर भी कुछ कम मलाल न था, जिसकी गलतीसे उसकी प्यारी बच्ची बिना मौतके मर गयी। हाय! बेचारीकी किस्मतमें दो घूंट दूध भी न बदा था!

घरवाले सब उसे पागल बताते। सास कहती—"बहू! तुझे शर्म नहीं आती है? यों ही रो-रोकर घायल हुई जा रही है। वृक्षपर जितने फल लगते हैं, सभी लगे तो नहीं रह जाते। कितने ही आंधीसे गिर पड़ते हैं। कई यों ही कच्चे टूट पड़ते हैं। तब कहीं जाकर जो बचते हैं वे पकते हैं। कुम्हारके आंवेमें कई बर्तन डालते-डालते टूट जाते हैं, कई बीचमें ही चूर-चूर हो जाते हैं। इसमें रोनेकी क्या बात है? तेरी जान बच गयी, और मेरे बच्चेका कुशल मनाया कर! बच्चे और हो जायंगे। इस तरह रोना नहीं चाहिए, सब कोई हंसेंगे।"

माधुरी सुनती सबकी, पर रोनेके समय याद रखती अकेली अपनी बच्चीको ही। तेरहवें दिन उसने दिन-भर अपने-आपको संभाला, पर रातको सबके सो जानेके बाद वह खूब ही रोयी। आज ही तो उसका नाम रखा जाता! वे यहां होते तो बेचारी मरती ही क्यों? वे ऐसी अनाड़ी दाइयोंको कभी पास भी न फटकने देते। पता नहीं, किसीने उन्हें लिखा भी है या नहीं? उन बेचारोंको क्या मालूम कि यहां मुझपर क्या बीत रही है। इस तरह दुहरी उदासीसे माधुरीका दम घुटा जा रहा था। उसने सारी रात रोनेमें ही बितायी। रोते-ही-रोते उसने बहुत सोच-समझकर अपनी दिवंगत बालिकाका नाम भी सोच लिया "साधना"। वह आप-ही-आप बोल उठी:—

"मेरी साधना, तू मुझे बड़े भाग्यसे मिली थी, पर मैं तेरे लायक थी कहां? इसीसे तू आते ही लौट गयी। हाय! संसार हंस-हंसकर अपने बच्चोंके नाम धरता है और मैं.....।"

"साधना, मैं बड़ी कठोर हूं। मैंने एक बार तेरा मुखड़ा देखनेका खयाल तक न किया, तेरे पावन चरणोंको भी स्पर्श न किया। बेटी, मुझे क्षमा करना!"

उसे अपने मधुर बचपनका स्मरण हो आया। अपनी गुड़िया "रानी" की यादमें भी उसे रुलाई आने लगी। उसने सोचा "हां, वह रानी भी थी और साधना भी।"

( ३ )

सवा महीना शय्या-सेवनके बाद उसने धरतीपर पांव रखा। अब भी वह बहुत कमजोर थी। मानसिक चिन्ताओं-ने उसे खोखली बना दिया था। उसे उठते-बैठते, सोते-जागते, चलते-फिरते अपनी "साधना रानी" ( यही नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसने अपनी बच्चीका कल्पित किया था ) की याद बनी रहती।

प्रसवके बाद उसने अपने पतिको सबसे पहला जो पत्र लिखा वह अत्यन्त करुणापूर्ण था। उसे बहुत ही दुःख था इस बातका कि वह बेहोशीके कारण अपनी बच्चीकी पीठके सिवाय और कुछ न देख पायी। अन्तमें उसने उनसे जल्दी ही लौट आनेकी प्रार्थना की थी।

यथासमय पत्र उन्हें मिला था ही। थोड़ा कष्ट भी हुआ जरूर, पर इतना नहीं कि आंसू निकल पड़े। जीती रहती तो अच्छा ही था, पर जब वह मर ही गयी तो क्या किया जाय? माधुरीको इतना उदास न होना चाहिए। और हां, वापस लौटनेकी बातपर तो अभी विचार ही नहीं किया जा सकता। कुल जमा छ ही महीने तो मुझे घरसे आये हुए बीते हैं। अभी तो पूरे साढ़े तीन बरसका कोर्स बाकी है। खैर माधुरी स्वयं ही ठीक हो जायगी, अभी उदास होना स्वाभाविक ही है।

उन्होंने बड़े प्यारसे माधुरीको पत्र लिखा। कुछ उपदेश दिया, कुछ खुशामद की और साढ़े तीन साल तक प्रतीक्षा करनेकी सलाह दी। यह कोई इतना बड़ा अर्सा न था जिसे बिताना असम्भव हो।

बात भी ठीक ही थी। घरसे इतनी दूर जाकर, इतना भाड़ा खर्च करके बैरङ्ग लौट आना तो सरासर बेवकूफी ही है।

माधुरीके दिन अब बड़े कष्टसे कटते थे। उदासी उसका पीछा छोड़ती ही न थी। लड़की हो जानेके बाद पहला वर्ष तो उसने बहुत ही सङ्कटसे काटा। किसी भी बच्चेको देखकर उसकी आंखें गीली हो जातीं। जिस दिन जिस तारीखको वह पैदा हुई थी उस दिन तो उसकी आंखोंसे सावन-भादोंकी झड़ी लग जाती!

पर साल-भरके बाद स्वयं ही उसका दुःख कम होना शुरू हो गया। समय स्वयं ही ताजे घावोंको बासी करके सुखा देता है, सबका समाधान कर देता है। यही सब आपत्तियोंका जन्मदाता है और यही सब दुःखोंको दूर करनेवाला तथा सुख-शान्तिका देनेवाला है।

अब वह प्रत्येक मासकी उसी तारीख और प्रत्येक सप्ताहके उसी वारको, जिस दिन उसकी साधना रानीने जन्म लिया था, कभी रोकर और कभी आहें भरकर ही रह जाती।

होते-होते दूसरा और तीसरा वर्ष भी समाप्त होनेको आ गया। उसे अब विश्वास होने लगा था कि शायद शीघ्र ही वह अपने शोक-शल्यको उखाड़ फेंकनेमें समर्थ हो सकेगी। अहा! क्या वह फिर भी कभी इसी जन्ममें "मां" बन सकेगी? इसका उत्तर उसे आशामें मिलता और वह पुलकित हो उठती। अभीसे वह उस भाग्यशाली जहाजकी प्रतीक्षामें थी जो उसके प्राण-धनको लेकर आनेके सौभाग्यको प्राप्त होगा। बस, अब आते ही होंगे। उन्हें गये पूरे चार वर्ष बीतते हैं, अब उन्हें कौन रोक सकता है! इधर कई महीनोंसे उनका पत्र बिलकुल ही न आया था। पहले तो इतनी देर उन्होंने कभी नहीं की। शायद वे सोचते होंगे—"अब जा तो रहे ही हैं, पत्र भेजकर क्या होगा? बस चलते-चलते तार दे देंगे।" पर है यह उनकी निर्दयता ही। वह इसके लिए जरूर उनसे रूठेगी और कहेगी—"तुम बड़े कठोर हो, चिट्ठी तक लिखना भूल गये!"

अब तो पूरे चार वर्षके बाद चार महीने भी बीत चुके। पर आज तक उनका कुछ पता न था। माधुरी अपनेको सन्तोष देती—पास करनेके बाद अवश्य ही वे यूरोपके अन्यान्य देशोंमें घूमने-फिरनेमें लग गये होंगे। इतनी दूर गये हैं, घूम-फिर आना ही चाहिए। फिर बार-बार थोड़े ही जाना होता है। पर उन्होंने पत्र क्यों नहीं लिखा? लिख देते मैं अभी छ महीने और ठहरूंगा; मैं मना थोड़े ही कर देती। सचमुच बड़े कठोर हैं। इतना तक नहीं सोचते कि यहां एक-एक पल युग-सा हुआ जा रहा है।

आखिर छ महीनेके बाद माधुरीके श्वसुरके पास श्याममोहनका एक पत्र इस आशयका आया कि मैं दुर्भाग्यसे परीक्षामें फेल हो गया हूं। अब एक वर्ष और पढ़ना पड़ेगा। शर्मके मारे पत्र नहीं लिख सका और यह कि मुझे अब रुपयेकी बड़ी सख्त जरूरत है।

इन समाचारोंसे सारा घर शोकमग्न हो गया। माधुरीने सुना, वज्राहत-सी रह गयी! आज पहली बार उसके मनमें यह खयाल आया कि वे कहीं फंस तो नहीं गये! यह बहाना ही तो नहीं है? उसका सिर घूम गया। उसे स्पष्ट ही अपने सारे सुख-स्वप्न अपनी आंखोंके सामने ही चूर-चूर होते दिखायी देने लगे। इतना तिरस्कार कि पत्र तक नहीं लिखा गया! उन्हें ( श्वसुरको ) पत्र लिखे बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तो सरती न थी, खर्च जो मंगाना था ! और मैं ? मुझसे उन्हें कुछ मंगाना थोड़े ही था। उसका कलेजा धड़क रहा था। हृदयमें टीस हो रही थी, दुर्भाग्यसे उसी दिन उसकी लड़कीका जन्म-दिन भी था। हाय, बेचारीपर कैसी बीती होगी !

( ४ )

दिन बीतते देर नहीं लगती। देखते-देखते महीनोंके ढेर लगकर, वर्षोंके पहाड़ बनने लगे, परन्तु श्याममोहनका अभी कुछ पता नहीं। इस बीच वे दो बार भारत लौट आनेके लिए किराया मंगा चुके थे। पर किराया मंगानेके बाद पूरे छ महीने कुम्भकर्णकी नींद सो जाते। और फिर लिख देते—मुझे लौटनेमें जो देर हो रही है वह अकारण नहीं है। मैं दिनोंदिन अपनेको अधिक योग्य और अनुभवी बना रहा हूं। यह और वह·····

माधुरीकी अवस्था बड़ी दयनीय थी। कभी-कभी स्पष्ट ही उसमें उन्मादके लक्षण दिखायी देने लगते। ऐसी अवस्थामें वह किसीको अपने पास न आने देती। किसीसे बात करना पसन्द न करती। खोयी हुई-सी आंखोंसे इधर-उधर लक्ष्यशून्य दृष्टिसे देखा करती। उस समय उसे शान्त और स्वस्थ करनेका एक ही उपाय था, और वह यह कि उसकी गोदमें किसी भी बच्चेको दे दिया जाय। बस वह उसे पाते ही छातीसे लगा लेती, पुचकारती, आंसू गिराती और धीरे-धीरे शान्त हो जाती। बच्चोंको तो वह अपना सर्वस्व समझती थी। मुहल्ले-भरके बालक उसे "मां" के प्यारे सम्बोधनसे पुकारते। वास्तवमें वह एड़ीसे चोटी तक थी भी बस मां ही मां ! उसकी कोई भावना, कोई वासना, कोई इच्छा शेष न थी सिवाय मातृत्वकी श्रेष्ठतम विभूतिको प्राप्त करनेके ! जिसके बिना वह अपने आपको सर्वथा असहाय और अकिञ्चन पाती थी। इस एक ही विषयमें वह अभी तक निराश न हो पायी थी। उसने ढेरों सामान जमा कर रखे थे। सुन्दरसे सुन्दर वस्त्र, एकसे एक कीमती आभूषण ! पतिके परदेश जानेके दिनसे उसने स्वयं तो अलंकृत होना जाना ही न था। हां, सञ्चयका उसे बहुत ही शौक हो गया था। पूछनेपर वह दिल मसोस देनेवाले शब्दोंमें कहती—"यह सब मेरी साधना रानीके लिए है, उसके विवाहमें दूंगी।"

उसके पागल हो जानेके डरसे कोई उससे पूछता न था कि आखिर तुम्हारी वह साधना रानी है कौन ? अक्सर वह अनाथालयोंमें जाती और नन्हें-नन्हें मासूम बच्चोंको गोदमें लेकर खिलाया करती। उनके लिए मासिक वृत्तियां देती, अपनी शक्ति-भर वह उन्हें प्रसन्न करनेका प्रयास करती। इसीमें उसे अपरिमित आनन्द मिलता।

यदि कोई मां रुष्ट होकर अपनी सन्तानको डांटती या पीटती तो वह उसे हत्यारीसे कम न नजर आती। वह कहती—"मेरी साधना रानी ! कोई तुझे ऐसे पीटे तब ? मैं उसके हाथ काट डालूं !" वह घण्टों सोचा करती,—"मेरी रानी ! तू किस सौभाग्यवती मांकी गोदमें खेली होगी ? मुझसे रूठकर तूने किसके घरको प्रकाशित किया होगा ? मेरी साधनाकी मां ! तुझे, तेरे पवित्र चरणोंमें मेरा सादर प्रणाम है ! मेरे तुझे असंख्य प्रणाम हैं ! देखना देवी ! मेरी साधना रानीका कलेजा बड़ा नरम है, इसे कभी दुखाना मत ! देवी, मैं तुझे फिर-फिर नमस्कार करती हूं, हृदयसे तेरी वन्दना करती हूं। तू मेरी साधना रानीकी मां है !" वह बार-बार हाथ जोड़ती, सिर झुकाती और उस "अज्ञात—अपरिचित" की शुभकामना करती, जिसकी गोदमें उसकी साधनाने स्थान पाया होगा !

( ५ )

माधुरीके सास-श्वसुर महायात्राको प्रस्थित हो चुके थे। अब वह अकेली ही घरमें थी। अकेली क्यों, वह सदा बच्चोंसे घिरी रहती थी। वह जब होशमें होती तो हाथ जोड़कर भगवान्‌से प्रार्थना करती कि प्यारे नाथ ! तुम बड़े दयालु हो। तुमने मेरी साधना रानीको मुझसे छीनकर जो शिक्षा दी है वह इतना बड़ा दुःख सहे बिना मिल ही नहीं सकती थी। यह सब बच्चे किसके हैं ? भगवन् ! क्या ये सब मेरे अपने ही नहीं हैं ? ईश्वर ! इन्हें, इन सबको बड़ी उम्र देना, यश देना, बल देना, और देना इन्हें इन्हीं-सी प्यारी सन्तान !!

( ६ )

सुना है बारह वर्षों तक विदेश-भ्रमण करके श्याममोहन अपने पितृ-निवासको लौट आये हैं। सङ्गमें उनके एक लेडी और आठ-नौ वर्षकी एक कन्या भी है। माधुरीने तो उन्हें पहचाना नहीं, पर वह अपनी प्यारी साधना रानीको देखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही पहचान गयी। उसने अपनी बच्चीके रूप-रङ्ग, नख-शिखकी जैसी-कुछ कल्पना कर रखी थी, वह ठीक वैसे ही थी। वह उसे देखते ही छातीसे लगानेको विह्वल हो गयी। और अन्दरसे सामान निकाल-निकालकर उसके आगे फेंकने लगी—"देख साधना रानी, यह सब तेरे लिए हैं, मैं अवश्य तुझे ही दूंगी।" 'डोरा' (उस लड़कीका नाम) कुछ समझ ही कैसे सकती थी। वह भयभीत हो चिल्लाकर अपनी मांके पास भाग जाती। उसकी मां यह सब देखकर जल-भुन जाती और कुछ डर भी जाती और टटी-फूटी हिन्दीमें कहती—"तुम हिन्डोस्टानी लोग बिलकुल जानवड़का माफिक होटा हय!"

माधुरी सुनती, शायद समझती भी और चुप हो जाती, पर फिर कभी-कभी उसे डोराको अपनी छातीसे लगा लेनेकी अजीब धुन सवार हो जाती। आखिर दो-तीन दिनमें ही मेम साहबा इस सबसे निहायत तङ्ग आ गयीं। और उसी दिन अलग हो जानेके लिए श्याममोहन मजबूर थे। माधुरीके देखते-देखते सब सामान उठवाकर दूसरे बंगलेमें भिजवा दिया गया। माधुरी न बोली, न हिली। उन सबके चले जानेके बाद ही वह खड़ी-खड़ी धड़ामसे फर्शपर गिर पड़ी और उसका सिर फट गया। वहां उस समय उसका कौन था? वही प्यारे उसके बच्चे, जिन्हें वह प्रेम करती, उसके गिरनेकी आवाजसे वहां घिर आये थे। पास-पड़ोसकी स्त्रियोंने उनसे पूछा—मांजीने मरते समय कुछ कहा भी था? एक लड़कीने, जो कुछ समझदार मालूम होती थी, कहा—"हां, वह कह रही थीं साधना रानी, ठहर जा, मैं भी आ रही हूं।"

बस यही उसका आखिरी बोल था। यही उसकी जीवनकी अभिलाषाओंका निचोड़ था। इन्हीं भावोंसे अनुप्राणित होकर उसने जीवनकी घड़ियोंको काटा था, इन्हींके साथ उसका जीवन बिखर पड़ा!!

जाओ, माधुरी! तुम अवश्य आज सौभाग्यवती हो, क्योंकि आज ही तो तुमने अपनी साधना रानीको पा लिया है!!!

डाक्टर साहब इसे कभी न समझ सके। निर्दय पुरुष-समाज समझेगा भी नहीं।

---

# गीत

प्रियतम! चलो चलें उस देश।

जहां नरककी सृष्टि न करते, कपट-कलह-विद्वेष।
दुखद स्वार्थ कलुषित हिंसाका, होता नहीं प्रवेश॥
तीखी कुटिल घृणामय चितवन,
जहां छेदती उर न विशिख बन,
जहां वृष्टि होती सु-दृष्टिसे प्रेम-अमृत अनिमेष।
मनको भय-सन्देह जहांपर,
करते नहीं अशान्त-भ्रान्त खर,
शुभ श्रद्धा-विश्वास-युग्मसे विलसित मनो-निवेश।
जहां ज्ञानका लेकर आश्रय,
अनाचार बढ़ता न तमोमय,
जहां धर्मकी ओट हृदयपर चोट न होती लेश।
जहां मिलन प्रिय-वर्ग-वर्गका,
भूसे करता मेल स्वर्गका,
जहां प्राणसे पृथक न होता, प्राण-नाथ प्रणयेश।
जहां सुकर्म-अभाव नहीं है,
अस्तु अभाव-प्रभाव नहीं है,
जहां मोद-प्रद प्रेम-गोदमें, सोता रहता क्लेश।
जहां जीर्णता जीर्ण न होती,
नव सज्जासे नूतन होती,
जहां प्रकृति छवि-सुख देती, धारण कर नित नव वेश।
जहां गूंजता मधु-मय गीत,
सम्मुख भव्य भविष्य अतीत,
सब कुछ सुन्दर सुखद पुनीत,
सुकवि-हृदयसे जहां विकृति बन जाती सुकृति सुदेश।

—राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत'

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



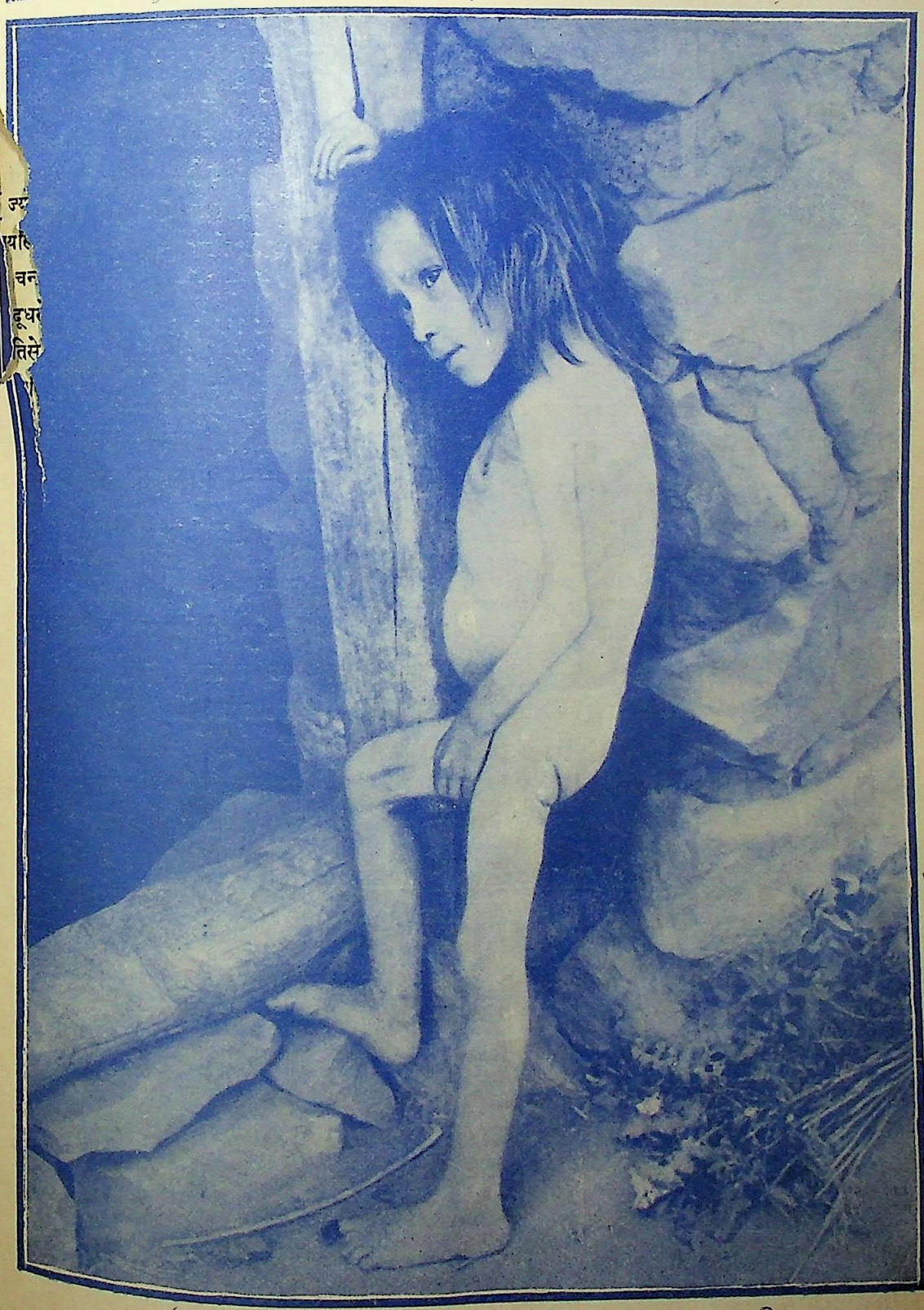

दुर्भिक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती हंसा मेहता
बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीकी
सदस्या चुनी गयी हैं।

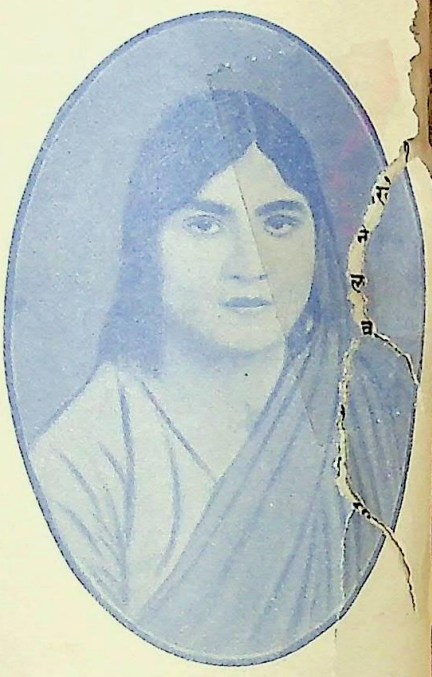

कुमारी सोफिया सोमजी भी चुनावमें
सफल हुई हैं। इन पांचों महिला-
लाओंकी विजय उल्लेखनीय है।

श्रीमती पेरिन कैपटन भी चुनी
गयी हैं।

श्रीमती कावेरी बेन कांग्रेस चुनाव
प्रतिद्वन्द्वितामें सफल हुईं।

श्रीमती शान्ताबाईको सबसे अधिक
वोट मिले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आंधी

श्री नवलकिशोर गौड़

## दृश्य—१

[ज्योत्स्नाके आलोकसे सारी उपत्यका जगमगा रही है। पयस्विनीके जलकी कोमल लहरियां कल-कलकर थिरक रही हैं; चन्द्र-विम्ब उनके कपोलोंको चूम रहा है। मखमली दूबोंपर दूधसे धुली रेशमी चादर फैली हुई है; मलय-पवन मन्थरगतिसे चलता हुआ कलियोंके आरक्त अधरोंपर अपनी अमिट स्मृति छोड़ जाता है; सुकुमार रश्मि-बालायें पुलकाकुल गतिसे नूपुरके तालोंपर थिरक रही हैं; स्मित पराग समीरमें बिखर रहा है।]

मधुबालाका प्रवेश—

(स्वगत) हां, ठीक है। राजकुमारीकी आनन्द-रात्रि आज सुन्दर रहेगी। अहा, इन सुकुमार रश्मि-बालाओंके साथ दो पल भी तो नाच लूं! (नाचने लगती है)

[सहसा सब-कुछ रुक जाता है, मानो किसी विशेष इङ्गितको देखकर। जगमग मुकुलोंके आवरणमें ढके हुए, इन्द्र-धनुषके-से सतरङ्गे परिधान धारण किये हुए, सौन्दर्यका प्रवेश]

(चारों ओर देखकर) गाओ बाले! मलय-पवन, किसलयोंपर थिरक उठो! ज्योत्स्ने, नीहारोंपर झूम-झूमकर नाच उठो! वह देखो, क्षितिजपर तारक-बालायें राजकुमारीका स्वर्ण-यान लिये आ रही हैं। (उंगलियोंसे क्षितिजकी ओर सङ्केत)

[सभीका पुनः पुलकित होकर अपनी-अपनी गतिमें अबाधित लीन हो जाना। वीणा-विनिन्दित मृदु-रवसे उपत्यका एक बार पुनः मुखरित हो उठती है]

सुन्दर स्वर्ण-यानपर सुकुमार सखियों सहित राजकुमारीका प्रवेश—

[किसलय-विनिर्मित कोमल नीड़से
कोकिलबाला पुलकाकुल स्वरमें सुमधुर
गीतसे स्वागत करने लगती है—]

मृदु-मृदु उडुके उरके कम्पन,
जगके कण-कणके स्पन्दन;
खोलें अधरोंका अवगुण्ठन—
ये मधु-बालायें मन-ही-मन,
करती हैं तेरा अभिनन्दन!

लघु-पद शशि-करके नील-नयन,
करते सरसी-उरपर नर्तन,
री, चपल वीचियोंका चुम्बन—
ले मन्द समीरण सनन्-सनन्,
करता है तेरा अभिनन्दन!

राजकुमारी—तारिकाओ, स्वर्ण-यानको पयस्विनीके उस दूर्वाच्छादित उपकूलपर उतारो और आओ सखियो, हम लोग हिल-मिलकर रास मचावें। आजकी रात हम लोगोंकी मधु-रात्रि रहेगी।

[यान भूमिपर उतरता है; राजकुमारी सखियों-सहित उससे निकलती हैं]

प्रथम सङ्गिनी—राजकुमारी, आजका उत्सव ऐसी विशेषतासे हो कि इसकी स्मृति हम लोगोंके हृदयपर सर्वदाके लिए अङ्कित रह जाये।

दू० स०—स्वर्गसे अवनि तक तनी हुई कोमल रश्मियोंकी डोरियां पकड़-पकड़ हम आनन्द-विभोर हो नाचें; इन्दु-बाला अपलक हम लोगोंके रासको देखकर मुसकराती रहे—हम लोगोंके इस नृत्यका प्रतिविम्ब नीहारोंपर शत-शत रङ्गोंमें प्रतिफलित होकर हिमाच्छादित शैल-शिखरोंको जगमग करता रहे।

ती० स०—समीर सनन्-सनन् सिहरता रहे; ज्योत्स्ना फुहारेसी झड़ती रहे, निर्झरिणीका कल-कल पल-भरके लिए भी बन्द न हो; सुकुमार मुकुल और किसलय झुक-झुककर हमारी पद-गतिसे ताल मिलाकर थिरकते रहें—मकरन्द मन्द समीरणमें लहराता रहे—और तब राजकुमारी, तुम्हारे स्वर्ण-सिंहासनके सम्मुख, विपञ्चीके आरोह-अवरोहके साथ



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हम लोगोंका नृत्य होता रहे। क्यों राजकुमारी, इससे सुन्दर आनन्द-रात्रि और कैसी हो सकती है?

राजकुमारी—सुन्दर! बहुत ही सुन्दर! सखियो, पहले मुझे अनुचरोंको आदेश दे लेने दो, तब हम लोगोंका रास प्रारम्भ हो। (दूसरी ओर मुंह फेरकर) ओ समीर! मकरन्द! ज्योत्स्ने!

समीरका निःशब्द प्रवेश—

राजकुमारी—मलय-पवन, आज मेरी मधु-रात्रि मनायी जायगी—अप्सराओं और मधु-बालाओंका कोमल नृत्य होगा। तुम्हें उनके नृत्यमें सहायता देनी होगी। आज लोलुपकी भांति बाल-कलियोंके आलिङ्गनके लिए इधर-उधर मत दौड़ना—कल्लोलिनीके वक्षस्थलपर लहरियोंको विकृत न करना। आजकी रात सनन्-सनन् गतिसे नृत्यके उपयुक्त वातावरण उपस्थित करना होगा—ऐसी मेरी सखियोंकी भी इच्छा है।

समीर—(स्वगत) इतनी पराधीनता! चलूं तो पराधीन होकर; प्रेयसीसे मिलूं तो दूसरोंकी इच्छापर? आह, आज मैं स्वतन्त्र होता! (प्रकट) राजकुमारी, आपकी आज्ञा भला हम अनुचर किस तरह टाल सकेंगे? (प्रस्थान)

ज्योत्स्नाका प्रवेश—

राजकुमारी—ज्योत्स्ने, आजकी रात मेरी सखियोंका नृत्य होगा। मलय-पवन मृदुल गतिसे नृत्यमें भाग लेगा। तुम आज पुलकाकुल गतिसे नृत्यके साथ-साथ रात्रि-पर्यन्त थिरकती रहो। इन्दु-बालाको सूचित कर दो, आज श्वेत नीरदकी टुकड़ियोंसे आंख-मिचौनी न खेले—हमारी क्रीड़ाको उल्लसित करनेके लिए अक्षुण्ण रूपसे अपनी कोमल रजत किरणें विकीर्ण करती रहे। और तुम रश्मि-बाले, विहंस-विहंसकर रात्रि-पर्यन्त थिरकती रहो।

ज्योत्स्ना—(स्वगत) आह, कहीं भी चैन नहीं, कहीं भी सुख नहीं। परतन्त्र होकर सुख कहां? प्रियतम समीरके साथ आज गलबाहीं दे नव-विकसित किसलयोंपर थिरकनेकी अभिलाषा थी, किन्तु हृदय मसोसकर रह जाती हूं। (प्रकट) राजकुमारी! तुम्हारी आनन्द-रात्रि, यदि केवल मेरे अभावके कारण सम्पूर्ण नहीं हो सकती, तो मैं अपना सर्वस्व देकर भी उसे पूरा करूंगी। (प्रस्थान)

मकरन्द और कोकिल-बालाका एक साथ प्रवेश—

राजकुमारी—(दोनोंसे) कोकिले! देखो, मधुबालायें आज मेरी आनन्द-रात्रि मनायेंगी। इस मञ्जुल उपत्यकामें भींगे-भींगे दूर्वादलपर चमकते हुए नन्हें-नन्हें सुकुमार ओस-कणोंमें उनके नृत्यका प्रतिबिम्ब झलक उठेगा। बाले, इसलिए तुम्हें नृत्यके अनुकूल रात-भर पुलकाकुल होकर अपनी स्वर-लहरी बनाये रखनी होगी और तुम मकरन्द, तुम्हें मलय-पवनके कण-कणमें मिलकर सारा वायुमण्डल सुरभित करना होगा।

कोकिल-बाला—राजकुमारी, आज मेरा स्वर विकृत हो गया है—नृत्यके अनुकूल मैं कदाचित् ही अपने स्वरमें गति ला सकूं!

राजकुमारी—कृतघ्न बाले, मेरी उपस्थितिमें ही मेरी इतनी अवमानना! तुम्हें मेरी आज्ञा माननी होगी।

कोकिल-बाला—(स्वगत) इतना अधिकार! अनिच्छा रहते हुए भी हृदयके साथ प्रतिद्वन्द्व करके स्वर-सञ्चार करना पड़ता है! आह, री पराधीनता! (प्रकट) अच्छा राजकुमारी, आपकी आज्ञा अवश्य मानी जायगी। आपका रोष लेकर मेरे लिए जीवन धारण करना दुष्कर है।

(मकरन्दके साथ प्रस्थान)

राजकुमारी—सखियो, आओ! मधु-बालाओ, हम लोग अब हर्ष-विभोर हो रास मचायें। तुम लोगोंकी इच्छासे अनुचरगण आजकी यामिनीको मृदुल सुषुमामयी बनाये रखेंगे। आओ, मृदु मयङ्कके कोमल किरण-जालमें हम लोगोंका विहार हो।

सभी एक साथ—हां राजकुमारी, ऐसा ही हो।

कोमल सम्मिलित नृत्य—

मादक मलय-वात,
चञ्चल चपल गात,
चारु-चन्द्र-किरण-स्नात—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बहती अमिय-धार री !
जगमग तुहिन-जाल,
पुलकित विहङ्ग-बाल,
खोल रजत पङ्ख इन्दु—
करती मृदु विहार री !

[ समीर सनन्-सनन् सिहर उठता है; सुधांशुके अधरोंपर स्मित हास्यकी रेखा खिंच जाती है; सारा वातावरण सौरभसे सुरभित हो जाता है। कोकिल-बालाकी मादक स्वर-लहरी कलोलिनीके कल-कलसे मिलकर स्वर-मञ्जूषा बन जाती है। ज्योत्स्नाकी स्निग्ध फुहारें पड़ने लगती हैं; कोमल वृन्तोंसे सुकुमार शेफालिका चू-चूकर अवनिपर गिरने लगती है—तुहिन-विन्दु उसके अरुण-श्वेत गातपर उपलोज्वल इन्दु-करोंमें उद्भासित हो उठता है। ]

पटाक्षेप

## दृश्य—२

अमावस्याकी सन्ध्या

[ गोधूलीके पश्चात् सारे वन-प्रान्तरमें नीरवता छा जाती है। सुदूर वायव्य कोणमें, आकाशके निम्न भागमें, एक तारा चमकने लगता है और धीरे-धीरे सारा नभ-मण्डल संख्यातीत तारक-पिण्डोंसे ज्योतिर्मय हो उठता है। धरित्रीके वक्षस्थल-पर चुपके-चुपके तमिस्राका साम्राज्य फैलने लगता है।]

विभावरीके कृष्ण-यानपर
राजकुमारीका प्रवेश—

राजकुमारी—( क्रोधित मुद्रामें ) उफ! मेरी आज्ञाकी इतनी प्रतारणा ! मेरी इच्छा थी—आज वसुधाको कालिमाके आवरणमें ढककर—एक छोरसे दूसरे छोर तक भूमण्डलपर काली चादर डालकर—तमसाच्छन्न रजनीके नीले अङ्कमें विहार करूं। अप्सराओं और सखियोंने आज कृष्ण परिधान धारण कर रखा है, किन्तु इतनी अवमानना ! ये छोटे-छोटे तारक-पिण्ड, खद्योत-सी झिल-मिलाती हुई ये लघु तारिकायें आज मेरा उपहास कर रही हैं। मैं देखती हूं, कितनी देर तक इनकी जगमगाहट अक्षुण्ण रहती है ! ( क्रोधावेश-के साथ ) बादल ! बादल !

सौम्याकार बादलका प्रवेश—

राजकुमारी—बादल, इन तुच्छ टिमटिमाते हुए तारक-पिण्डों-ने आज मेरी आज्ञाका उल्लङ्घन किया है; मैंने शशधरसे कह दिया था, आज तारिकाओंके साथ ख-मण्डलको जगमग न करना; किन्तु इन उडु-गणोंकी धृष्टता तो देखो !

बादल—भूल क्षमा हो, राजकुमारी ! मैं इन मन्दमति तारिकाओंको अभी छिप जानेकी सूचना दिये देता हूं।

राजकुमारी—दुष्ट, तुम भी धृष्टता करोगे जाओ, क्षितिजके इस छोरसे उस छोर तक ख-मण्डलको आच्छा-दित कर लो—प्रत्येक ताराको अपने काले अन्त-स्तलमें इस तरह छिपा लो कि मैं फिर उनकी टिमटिमाहट न देख सकूं। नीरद, इन विद्रोही खद्योतोंको शीघ्र मेरी दृष्टिसे दूर करो—इनकी टिमटिमाहट मेरे हृदयमें शूलकी तरह गड़ रही है।

बादल—जो आज्ञा, राजकुमारी !

( प्रस्थान )

[ पल-भर बाद सारे आकाशमें काले-काले जलद छा जाते हैं; अमावस्या और भी तिमिराच्छन्न हो जाती है; सारा वन-प्रान्तर कालिमाके काले अञ्चलसे ढक जाता है; समीरकी गति बन्द हो जाती है; कलियोंके आयत लोचन मुंदने लगते हैं। सरिताकी लहरियोंमें शनैः शनैः शैथिल्य आने लगता है; उलूकों और झिल्लियोंकी अपशकुन कर्णकटु ध्वनि सुनायी पड़ने लगती है। सारी शैलतटीमें विरागका वातावरण छा जाता है। दामिनीके चाकचिक्यमें राजकुमारी तथा सखियोंका तमसावृत विहार दीख पड़ता है। ]

आम्र-निकुञ्जमें कोकिल-बाला कूक उठती है—आह ! कल ही तो ज्योत्स्नाकी भींगी-भींगी अलकोंपर स्मित हास्यकी रेखायें अङ्कित थीं; अभी ही तो शीतल मन्द समीर मेरी स्वर-लहरीको अपने सुकुमार पङ्खोंपर लेकर दूर—इस कोलाहलमय प्रान्तरसे भी दूर—उस अभिराम प्रदेशमें अपनी प्रियाकी ओर उड़ रहा था; क्षण-भर ही तो पहले मधुबालायें लोरियां गा-गाकर सुधा-सलिलकी कोमल ऊर्म्मियोंपर तारक-बालाओंके स्निग्ध प्रतिविम्बको सुलाया करती थीं, और इतनी शीघ्र इतना बड़ा परिवर्तन ! आह !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मेरा नीड़ कहां है ? इस गहन अन्धकारमें उसे कहां खोज पाऊंगी ? हाय, मेरा नीड़.....

कदम्बकी डालपर पपीहा पुकार उठता है—पी कहां ? पी कहां ?

कोमल वृन्तोंपर रजनीगन्धा आकुल स्वरमें बिलखने लगती है—प्रियतम, तुम नहीं आये ? आह, मेरी मनुहारों-से आज कौन क्रीड़ा करेगा ? आयत दृग-कोरोंमें, प्रियवर समीर ! आज मादक मधु-रेखायें अङ्कित हैं। कहो, उनसे कौन अपना हृदय तरङ्गित करेगा ? मेरा सौरभ ! आह, सुदूर देशोंमें उसे कौन विकीर्ण करेगा ? ( क्रोधित होकर ) राजकुमारी, आज तूने मेरे सुखमें बाधा दी है—मेरी उमङ्गोंको पद-दलित कर दिया है। मैं प्रतिशोध लूंगा—इस अपकारका भीषण बदला लूंगा। ( फिर आर्द्र स्वरमें ) आह, पराधीनता कितनी बुरी है !

( संज्ञाहीन होकर वृन्तसे गिर पड़ती है )

पटाक्षेप

## दृश्य—३

[ प्राचीके प्राङ्गणमें कुमकुम-रञ्जित परिधान किये उषा-बाला उतर रही है—स्वागतमें वारिदकी स्निग्ध टुकड़ियां अधरोंपर लाल गुलाल लगाये खड़ी हैं। नीड़ोंमें विहग-बालायें स्वागत-गीत गा रही हैं। शेफालिका-तरुके नीचे रजत रेशमी चादर बिछी हुई है; मलय-समीर बार-बार वृन्त-च्युत पुष्पोंको चूम लेता है। निर्झरके वक्षस्थलपर थिर-कती हुई वर्तुल लहरियोंमें रङ्गीन बुद्बुदोंका चञ्चल रास मच रहा है। रङ्गीन पङ्खोंको खोले तितलियां मुकुलोंसे प्रणय-कहानी कह रही हैं। सारा वातावरण सुस्निग्ध सौरभसे ओत-प्रोत हो रहा है। ]

समीर—( सहसा रुककर, स्वगत ) उफ ! अब यह अत्या-चार सहन नहीं हो सकता। इतना उत्पीड़न ! एककी स्वतन्त्रताकी हत्या, दूसरेके रास-विलासके लिए ! नहीं, इस परतन्त्रताका अन्त करना होगा—एक भीषण क्रान्ति करनी होगी। मैं विद्रोह करूंगा—धरित्रीके एक छोरसे दूसरे छोर तक, अवनिसे आकाश तक, राजकुमारीके विरुद्ध एक भीषण विभ्राटका सृजन करूंगा। और तब देखूंगा, कैसे उनकी यह स्वेच्छाचारिता अक्षुण्ण रहती है ! मैं...मैं ऐसी उथल-पुथल मचा दूंगा कि राजकुमारीका शासन उलट जायगा। सभी सहचरोंके कानोंमें मैं क्रान्तिका सन्देश भरूंगा और.....और.....

(दौड़कर एक ओर चला जाता है)

धीरे-धीरे बादल, कोकिलबाला, किरण, पराग, ऊष्मा आदिका उस शैल-तटीमें एक स्थानपर सम्मिलन; सबके पीछे समीरका पुनः प्रवेश—

समीर—( आवेशके साथ ) सहचरो, आज हम सब मिल-कर विचारें, हम कितने अंश तक पराधीन हो चुके हैं। राजकुमारीने हमें इतना पराधीन बना दिया है कि स्वजनोंपर दण्डके साधन हमीं बनाये जाते हैं। इतनी परतन्त्रता ! हम इतने पराधीन हो गये हैं कि चलते भी हैं तो राजकुमारीके इङ्गितपर, हंसते भी हैं तो उन्हींके सङ्केतोंपर ! क्या यह लज्जास्पद नहीं है ?

बादल—आह, उस दिन उन जगमगाती हुई तारिकाओंको कितनी निष्ठुरतासे उन्होंने मेरे ही द्वारा तमसावृत करवा दिया था। वे विवश तारिकायें !

कोकिल-बाला—और उस दिन स्वर विकृत रहनेपर भी मुझे उनकी आज्ञासे रात्रि-पर्यन्त मादक स्वर-लहरीका सञ्चार करना पड़ा था !

किरण—और उस अमावस्याको ! कितनी उमङ्ग थी हृदयमें वसुधापर चुपके-चुपके उतरकर नूतन किसलयोंपर थिरकनेकी ! किन्तु उनकी आज्ञा भी कितनी कठोर थी ! आह, शशधर तो व्योममें आये ही नहीं !

ऊष्मा—उन्होंने तो मुझे अपनी इच्छाओंका क्रीतदास ही बना लिया है।

समीर—(दृढ़ताके साथ) तो यह निश्चित रहा कि राज-कुमारीके विरुद्ध क्रान्ति की जाये ?

सब—(एकस्वरसे) अवश्य ! अवश्य !!

समीर—किन्तु मुझे आप लोगोंके सहयोगकी आवश्य-कता है।

सब—(एकस्वरसे) हम लोग उद्यत हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समीर—उष्मे, आज अपनी सम्पूर्ण शक्तिका प्रयोग कर जगतीके कण-कणको अपनी दाहक ज्वालासे दग्ध कर दे और फिर मैं·····उसके बाद, हां, जब ज्योत्स्नाके आलोकमें राजकुमारीका स्वर्ण-यान दूर्वादलपर उतरेगा, तब देख लेना, मैं क्या करता हूं!

(धीरे-धीरे सभीका प्रस्थान; पटाक्षेप)

## दृश्य—४

[ सुधाकरकी प्रथम रश्मि मुकुलका चुम्बन कर रही है ]

दिन-भर दिवाकरकी उत्तप्त रश्मियोंमें झुलसी हुई शैल-तटी मन्द समीर और ज्योत्स्नाके आलोकको पाकर विहंस उठती है; धीरे-धीरे सारा प्रान्तर जगमगा उठता है। किसलयोंपर तुहिन-विन्दु थिरक उठते हैं; तारक-बालायें गगनमें विहंस उठती हैं—नीचे वसुधाका अञ्चल ज्योतिर्मय मुकुलोंसे जगमगा उठता है। मधु-बालायें राजकुमारीके स्वर्ण-यानके सम्मुख नृत्य करती हुई अवनिपर मन्द गतिसे उतरती हैं।

* * * *

धीरे-धीरे समीर शीघ्र गतिसे चलने लगता है। रजनीगन्धाके वृन्त झूम-झूमकर आलिङ्गन करने लगते हैं; समीरकी गति पल-पल बढ़ती ही जाती है; देखते-देखते लता-गुल्म उखड़-उखड़कर गिरने लगते हैं; सरिताके जलमें भीषण आलोड़न-विलोड़न होने लगता है; आम्र-मञ्जरियां टूट-टूटकर गिरने लगती हैं; सारा वातावरण धूलि-कणोंसे भर जाता है। विकराल बादल ख-मण्डलमें मंडराने लगते हैं; तारिकायें अञ्चलमें मुंह छिपाकर विलीन हो जाती हैं; भीषण कुलिश-निनाद सुन पड़ता है।

[ कुछ समय बाद सब कुछ शान्त हो जाता है; राजकुमारीके स्वर्ण-यानका बिखरा हुआ भग्नावशेष सरिताके उपकूलपर दीख पड़ता है।

———

# आगमन

स्वप्नोंकी तरल हंसीमें
आशाके आलिंगनमें
जीवन-सन्ध्याके वनमें
भावोंके मृदु चुम्बनमें
मानसकी भग्न कुटीमें
आलोकित प्रेम-सितामें
जगकी मोहक ममतामें
आहोंकी तप्त चितामें
विस्तीर्ण गगन-प्रांगणमें
शशिकी शीतल किरणोंमें
उच्छ्वासोंके कम्पनमें
करुणाके करुण कणोंमें

ऊषाके स्वर्ण-महलमें
रविकी स्वर्णिम पलकोंमें
अल्हड़पनकी मस्तीमें
मलयानिलकी अलकोंमें
सुप्त अतीत रजनीमें
मृदु जलकी फुलझड़ियोंमें
वेदना-भरे जीवनकी
नीरव निराश घड़ियोंमें
उस निठुर प्रणय-पीड़ाकी
धुंधली-सी चिलपटीमें
निःश्वासोंके क्रन्दनमें
उजड़ी हृद्-पञ्चवटीमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मुसकान-भरी तारोंकी
उस मृदुल हंसीके वनमें
मैं थी वेदना छिपाये
नीरव नीरद-सी मनमें
जीवनकी जटिल समस्या
इस सूनेपनमें आयी

मेरे उजड़े मानसमें
आशाने ज्योति जगायी
मन सिहर उठा प्राणोंने
पथपर पांवड़े बिछाये
मेरी टूटी कुटियामें
तब वह मुसकाते आये

—रामकुमारी चौहान

---

# साबरमती आश्रममें दो वर्ष

श्री शीतलासहाय

सत्याग्रह आश्रम साबरमतीका नाम मैंने बहुत सुन रखा था। इस संस्थाके प्रति मेरे हृदयमें प्रगाढ़ आदर भी था। लेकिन त्रिवेणीके तटपर रहते हुए मुझे कभी कल्पना भी नहीं हुई थी और अभिलाषा भी नहीं थी कि साबरमतीके तटपर कभी निवास करना होगा। आनन्द-भवनके सम्पर्कमें रहते हुए उसके आदर्श और प्रोग्राममें मेरी आत्मिक अभिलाषायें पूर्णतया सन्तुष्ट थीं। और महात्मा गांधीकी शरणमें जाने और सत्याग्रह आश्रममें विश्राम करनेकी कोई प्रेरणा हृदयमें नहीं उठती थी। जो कुछ मुझे प्रयागमें प्राप्त हो सका था उसीसे मेरा हृदय और मेरी बुद्धि सन्तुष्ट थी। ललित कलायें, नौजवान मित्रोंकी सोसाइटी, राजनीतिक जीवनकी चहल-पहल, साहित्य और सिनेमा तथा गृहस्थीका सुखद जीवन, मेरे हृदयकी समस्त आकांक्षाओं और मेरी बुद्धिकी सारी जिज्ञासाओंके लिए काफीसे ज्यादा था। यद्यपि आर्य-समाजके संसर्गसे मैंने भारतीय सभ्यताके मूल सिद्धान्तोंकी कुछ झलक पा ली थी; लेकिन पश्चिमकी सभ्यताका अतुलित प्रभाव मुझपर था और बढ़ता जाता था। गांधीकी अपेक्षा लेनिन महानतर मालूम होते थे। मैं अंगरेजीपनका प्रशंसक था और भारतकी बहुत कम चीजोंका आदर मेरे दिलमें था। मैं यह मानता था कि हिन्दू धर्ममें बड़े-बड़े मनस्वी और विचारशील महापुरुष हुए हैं। लेकिन संशयवाद मेरा धर्म था और इसे मैं मनुष्यकी बौद्धिक उन्नतिकी अन्तिम सीमा मानता था। गृहस्थीके जीवनमें एक दैवी दुर्घटनासे मेरी यह कागजी इमारत विध्वंस हो गयी। मेरा हवाई किला टूट गया। नयी समस्या सामने आ गयी। जिन नैतिक और धार्मिक सिद्धान्तोंपर मैंने अपने जीवनकी शान्ति, सुख और आनन्दकी इमारत बना रखी थी वह मृत्युके आघातसे चकनाचूर होकर जमीनपर गिर पड़ी। भगवान्‌ने क्षण-भरके लिए मुझे अपना भयङ्कर रूप दिखा दिया—

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं, भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो॥
वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति, दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु, संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः॥

यह रूप सामने आ गया। नयी परिस्थितिमें मेरे जीवनके पुराने सिद्धान्त बिलकुल नाकाफी साबित हुए। जीना व्यर्थ मालूम होने लगा। मृत्युकी शय्यापर एक असहाय व्यक्तिका—जिसके प्रति मेरे हृदयमें वात्सल्यका अगाध भाव था—टाईफायड-जनित निमोनिया और सन्निपातमें २१ दिन तक घुल-घुलकर प्राण देना, मुमूर्षावस्थामें, इस रोगके क्लेशसे बचनेके लिए इस असहायके असफल-प्रयत्न माता-पिताके प्रति, ईश्वरके प्रति, त्राहि-त्राहिके उसके विफल शब्दकी हृदयको छेदनेवाली आवाज और उसकी गूंजने मेरे संशयवादी हृदयको टुकड़े-टुकड़े कर डाला। जिन्दगीमें कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रस बाकी नहीं रहा। यही नहीं, जिन्दगी विषका प्याला हो गयी। बीमारीके आरम्भमें गङ्गाकी गोदमें उसे समर्पित करने तककी हरएक बात आप-ही-आप मानस-पटलपर अङ्कित हो आती थी। और चाहे जिस बातमें ध्यान लगाऊं, दो-तीन मिनटके बाद मेरा मन उन्हीं तमाम हृदय-विदारक स्मृतियोंके जालमें फंसकर असह्य वेदना और असीम क्लेशके सागरमें डूब जाया करता था। मुझे आश्चर्य होता था कि मृत्यु ऐसी वस्तुके संसारमें मौजूद होते हुए क्या कारण है कि सारी दुनिया खाने-पीनेमें रस लेती है; सिनेमा, थियेटर आदिमें आनन्दोपभोग करती है और हंसी-खेलमें समय व्यतीत करती है। मेरी आत्माके अन्दरसे दो बातें पैदा होती थीं। एक तो यह कि इस प्रकारके क्लेशमय जीवनमें जिन्दगी बितानेसे यही अच्छा है कि यमुनाके पुलपरसे कूद-कर सारे दुःखोंसे छुटकारा पा जाऊं, लेकिन बचे हुए कुटुम्बियोंका ख्याल आता था कि उनकी क्या दशा होगी। इसलिए आत्महत्यासे सङ्कोच करता था। "शराब"का नाम सुन रखा था। उस समय तक मधुशालाकी चर्चा हिन्दी-साहित्यमें नहीं चली थी। पुराने लोग कहते थे कि "शराब" "गम गलत" करती है। इसका प्रयोग करो। लेकिन उस समय मुझे यह मालूम होता था कि जो कोई मुझे मृतककी स्मृति भुलानेका प्रयत्न करता है वह मेरा दुश्मन है, दोस्त नहीं। मैं मृतकको भूल जाऊं या भूलनेका प्रयत्न करूं, इसमें मुझे निकृष्टतम स्वार्थपरायणता दिखायी देती थी। जब छोटे-छोटे बालक मृत्युके मुंहमें चले जाते हैं तो बड़े मृत्युका स्मरण-मात्र न सह सकें! इससे अधिक नीचता क्या होगी! कभी-कभी हिम्मत बंधती थी और मैं सोचता था कि जिस मृत्युका क, ख और ग ऐसे बालकोंने स्वागत किया और मुकाबिला किया उसमें मैं पीछे न हटूंगा और न हटना चाहिए। सारांश यह कि न तो आत्महत्याको और न मदिराको, दोनोंमेंसे किसीको मैं अपनी आत्माके विक्षेप और व्यथाको मिटानेके लिए काममें ला सका। मेरा संशयवाद टूटकर नये प्रकारका संशयवाद हो गया और दृढ़तर होता गया, जिसके साथ-साथ मेरी व्यथा भी प्रबलतर हो गयी। यदि ईश्वर-सरीखा कोई व्यक्ति संसारमें होता, तो दुधमुंहे बालकोंको विकराल कालके मुंहमें कदापि न डालता। मैं सोचता था कि हिन्दू धर्मके ऋषि और महर्षि कितने बेवकूफ थे कि उन्होंने ईश्वरको कृपा-सिन्धु और दीन-बन्धु इत्यादि नामोंसे सम्बोधन किया है। संसारमें दया, कृपा और न्याय कहां! कौआ, गौरैयाके बच्चेको उसके माता-पिताके सामने ही चोंचमें दबाकर उड़ जाता है। बच्चा चीं-चीं चिल्लाता है, पक्षी चीं-चीं चिल्लाते हैं। उन्हींके सामने ही कौआ बच्चेको जिन्दा ही खा जाता है। क्या यही ईश्वरीय न्याय और प्रबन्ध है? पेंडकी संसारमें किसीको तकलीफ नहीं देती। उससे शान्त और सुन्दर पक्षी शायद ही कोई हो, लेकिन बाज आता है और उसे पकड़ ले जाता है। और उसे जिन्दा खा जाता है। क्या यही ईश्वरीय नियम है? संसारके जिस रचयिताने बाजके तीक्ष्ण नखांकुर और लोहेके समान चोंच बनायी है, जिसने शेरके दांत और पञ्जे केवल जङ्गलके जानवरोंको नोचने और रक्त चूसने हीके लिए निर्माण किये हैं वह दयालु कदापि नहीं कहा जा सकता। तालाबोंमें वह मछलियोंको जन्म देता है, उनका पानी सूख जाता है और मछलियां किस तरह तड़प-तड़पकर मर जाती हैं! अगर इस प्रकारका प्रबन्ध आज कोई राजा किसी देशमें करे तो कोई भी मनुष्य उसे न्यायशील नहीं बतायेगा। अगर प्राकृतिक प्रबन्ध और भगवान्‌की रचना देखकर हम उसके स्वभावका पता लगायें तो मैं इसी नतीजेपर पहुंचता था कि इस संसारका रचनेवाला न तो कृपा-सिन्धु है और न दीन-बन्धु; बल्कि एक शैतान है! असहायको पीड़ा देनेमें जिसे लुत्फ आता है और जिसने निर्बलों और दीनोंको क्लेश पहुंचानेके लिए अनेक साधन पैदा कर रखे हैं!

"निर्बलके बल राम" यह सूरदासका पद है। मैं यह मानता था कि सूरदाससे ज्यादा बेवकूफ आदमी दुनियासे नहीं गुजरा।

अगस्तके तीसरे सप्ताहमें मैंने अपनी मानसिक पीड़ासे व्यथित होकर महात्मा गांधीको एक पत्र लिखा जिसमें मैंने अपनी मनोदशाका पूरा-पूरा चित्र खींचा। उनको लिखा कि "आप कहते हैं कि ईश्वर न्यायी है, ईश्वर दयालु है। मुझे तो उसकी दयालुता और न्यायके कोई चिह्न नहीं दिखायी देते।"

मैंने अपने हृदयकी व्यथा मिटानेके लिए गीताके इस श्लोकका कई मरतबा पाठ किया था—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।"

मैंने महाभारतमें धृतराष्ट्रको सुनायी हुई उस कथाको भी कई बार पढ़ा था जिसका टेक है। ये पाहि सर्व सत्वानां ·····गतिः। लेकिन इन साधनोंसे मुझे कोई शान्ति नहीं हुई। एक हफ्तेके अन्दर महात्मा गांधीका पत्र मेरे पास आया। महात्मा गांधीके इस पत्रका जो प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा वह इन कथाओंसे कहीं ज्यादा था। मैं इसका कारण नहीं बता सकता। इतना मुझे याद है कि इस पत्रको पढ़कर मेरी आधी व्यथा जाती रही। इस पत्रमें मुझे निमन्त्रण था सत्याग्रह आश्रमके परिश्रमपूर्ण जीवनके लिए, जहां महात्मा गांधी राजनीतिक पार्टीबाजीसे परेशान होकर पिछले दो सालसे विश्राम कर रहे थे। कब तक इस विश्राम-कुटीसे निकल सकेंगे, इसका भी कोई पता नहीं था।

१९२८ के सितम्बर मासके दूसरे या तीसरे सप्ताहमें सकुटुम्ब आश्रम पहुंच गया और १९३० के मार्चके महीनेमें, जब कि डांडी-मार्चकी तैयारी आश्रममें जोरोंके साथ जारी थी, युक्तप्रान्तमें नमक-सत्याग्रह आरम्भ करनेके लिए मुझे गांधीजीने पण्डित जवाहरलालजीके सिपुर्द कर दिया। सत्याग्रह आश्रममें इस समयके अन्दर जो-कुछ मैंने देखा-सुना और समझा, महात्मा गांधीके सतत् सम्पर्कमें इतने काल तक रहते हुए उनके जीवनसे और उनके सिद्धान्तोंसे जो-कुछ मैंने ग्रहण किया वह इस जीवनके लिए इतना काफी है कि आगे जाननेके लिए मुझमें कोई अभिलाषा अब बाकी नहीं है। इस लेखमें मैं उन्हीं सब सिद्धान्तों और अनुभवोंके कुछ अंशको 'विश्वमित्र' के पाठकोंके सामने विनीत भावसे रखना चाहता हूं। क्योंकि मेरा यह मत है और पूर्ण विश्वास है कि महात्मा गांधी मानव-आत्माके चरम विकसित स्वरूप हैं और उनके जीवनके सिद्धान्तोंमें भारतवर्षके राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक अभ्युदय तथा जगत्के कल्याणका बीज निहित है।

राजनीतिक कारणोंसे साबरमतीका सत्याग्रह आश्रम ३० जुलाई सन् १९३३ को तोड़ दिया गया और उस समय-से आश्रम-निवासी परिव्राजक आश्रमी हो गये हैं। साबर-मती आश्रमके बारेमें अनेक लेख निकले हैं। पांच-चार वर्षपहले मैंने भी पत्रोंमें इस विषयपर एक लेख लिखा था, किन्तु इन लेखोंमें विशेषतः आश्रमके वाह्यरूपका चित्रण रहता है। आश्रमकी इमारतोंकी तसवीर, दिन-चर्या और कार्यक्रमका वर्णन किया जाता है। लेकिन उन मौलिक सिद्धान्तोंका विवेचन इन लेखोंमें कम पाया जाता है जिनके ऊपर आश्रम-की आत्मा स्थिर थी और महात्मा गांधीके जीवनके जो आधार-स्तम्भ हैं।

## जीवनावेक्ष

महात्मा गांधीकी मनुष्य-जीवनके ऊपर जो अवेक्षा है उसे न तो सम्पूर्णतया पाश्चात्य कह सकते हैं और न प्राचीन। वह भारतवासियोंकी वर्तमान जीवनावेक्षासे सर्वथा भिन्न है और पश्चिमसे मौलिक सिद्धान्तमें बिलकुल जुदा है। पश्चिमवाले जिन्दगीको उसी दृष्टिसे देखते हैं जिस दृष्टिसे महाब्राह्मण रसगुल्लोंको। वर्तमान भारतवासी भी यही दृष्टि रखते हैं। हम रसगुल्लेको अपने मुंहमें रख लेते हैं और अपनी इच्छानुसार जब तबीयतमें आता है, उसको दबा-दबा कर उसका रस निकाल लेते हैं और अन्तमें उसे खा जाते हैं। दुनियामें हम पैदा हुए हैं। प्रकृतिने हमारे मनके स्वादके लिए अनेक सरस चीजें पैदा की हैं। अनेक मनको हरने-वाली, प्रमत्त करनेवाली वस्तुयें बनायी हैं। हमारा उद्देश्य यह रहता है कि हम इन चीजोंको प्राप्त करें और इनसे रस निकालकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करें। पश्चिम देशोंके सिनेमा, थियेटर, शृङ्गारकी सामग्री, स्त्रियोंके शृङ्गार और विलासके साधन, नृत्यगान, होटल, मदिरा इत्यादि-इत्यादि मनुष्य-जीवनकी इस अनादि प्रेरणाका ही प्रमाण है। हम हिन्दू कहते हैं कि पश्चिमी लोग बहुत विषयी होते हैं। मुसल-मानोंके ऊपर भी हम यही आक्षेप करते हैं। लेकिन हमारा जीवन पश्चिमसे या मुसलमानोंसे कम विषयपूर्ण नहीं है। जीवनसे हम भी विषय-रस चूसनेका खूब प्रयत्न करते हैं और हमारे २४ घण्टे इसी रस चूसनेके प्रयत्नमें समाप्त होते हैं। एक शब्दमें यों कहिये कि हमारे लिए भी "भोग" ही जीवन है। आश्रमकी जीवनावेक्षा बिलकुल इसके विपरीत है। जीवन रस चूसनेके लिए नहीं, बल्कि सेवाके लिए है और परिश्रम-पूर्ण सेवाके लिए है। इनके शब्दोंमें जीवन "सेवा" है महा-त्मा गांधी आज तो खिले हुए फूलके समान अपनी सुगन्धसे संसारको आनन्दित कर रहे हैं। आज तो वह परिपक्व फल हैं। लेकिन जिस समय यह अपने विकासके मार्गपर पथिक रहे होंगे और जिस समय इनकी आत्मामें यह संग्राम चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रहा होगा कि जीवन "भोग" है या "त्याग", उस समय जो लोग उनके निकट रहे होंगे उन्हें मनुष्यके हृदयमें सतत चलनेवाले देवासुर-संग्रामको देखनेका अवसर मिला होगा। जब मैं आश्रम गया, महात्मा गांधी उस समय सोलहों कलाओंसे देदीप्यमान थे। वह मनुष्य-जीवनकी समस्त मौलिक समस्याओंको हल करके और अपने जीवनमें अपने सिद्धान्तोंका प्रयोग करके और सफल होकर दृढ़ताके साथ इस नतीजेपर पहुंच चुके थे कि मनुष्यका जीवन सेवार्थ है। निम्नलिखित वाक्योंसे मनुष्य-जीवनके सम्बन्धमें उनके और आश्रमके विचारोंका स्पष्ट पता चल जाता है। "जन्मसे ही यज्ञको हम अपने साथ लाये हैं। यज्ञ इह लोक तथा पर-लोकमें बिना किसी प्रकारका बदला लिये या बदला लेनेकी इच्छा किये परमार्थ-बुद्धिसे किया गया कोई भी काम है।" हमें यह देह परमार्थके लिए ही मिली है, और इसलिए जो बिना यज्ञ किये भोजन करता है वह चोरीका अन्न खाता है। गीताकारने अपना यह कठोर निर्णय दिया है। शुद्ध जीवन व्यतीत करनेकी इच्छा रखनेवालेके समस्त कार्य यज्ञ रूपमें होने चाहिए। हम यज्ञको साथ लेकर पैदा हुए हैं अर्थात् सदाके ऋणी हैं, देनदार हैं। अतः हम जगतके सदाके सेवक और गुलाम हैं। और जैसे गुलामको उसका स्वामी सेवाके बदलेमें अन्न-वस्त्र आदि देता है वैसे ही हमें जगतका स्वामी हमारी सेवाके बदले या हमसे सेवा लेनेके कारण जो अन्न-वस्त्र आदि दे उसे हम आभार-पूर्वक ले लें। इतनेके भी हम हकदार नहीं हैं। अर्थात न मिलनेपर स्वामीको बुरा-भला न कहें। यह शरीर उसका है। वह अपनी इच्छानुसार रखे या नष्ट करे।"

आधुनिक युगके वर्तमान भारतकी जीवनावेक्षासे आश्रमका यह सिद्धान्त कितना भिन्न है और साथ ही कितना महान् और दुष्प्राप्य! मनुष्य-जीवनपर यह दृष्टि-कोण सम्पूर्णतया हिन्दू भावापन्न है। हिन्दू धर्मग्रन्थोंसे अनेक प्रमाण इसकी पुष्टिमें प्रस्तुत किये जा सकते हैं। हमारे प्राचीन ऋषियोंने मनुष्य-जीवनमें विषयवासनाके पीछे दौड़ने-की प्रेरणाको अत्यन्त निस्सार और व्यर्थ समझ रखा था और इस सत्यको इन्होंने अपने तरीकोंसे, लेकिन बहुत ही सुन्दर-ताके साथ अनेक स्थानोंपर कथा-रूपमें वर्णन किया है।

विषयोपभोगमें आत्माका साक्षात्कार नहीं, बल्कि त्यागमें है यह हिन्दू धर्मका और आर्य संस्कृतिका मौलिक सिद्धान्त है। आश्रमका भी यही मौलिक सिद्धान्त मानना चाहिए और इसी सिद्धान्तके आधारपर महात्मा गांधीने इस संस्थाकी अनेक प्रवृत्तियोंकी बुनियाद डाली थी।

---

# साम्राज्यवाद बनाम भारत

लेखक—"अर्थशास्त्रका एक विद्यार्थी"

विश्वव्यापी आर्थिक मन्दीके कारण जब संसारके विभिन्न देश आर्थिक राष्ट्रीयताकी भावनासे प्रेरित होकर विदेशी वस्तुओंकी आमदनीके मार्गमें नाना प्रकारकी अड़-चनें उपस्थित करने लगे थे और अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्यका क्षेत्र अत्यन्त संकुचित हो रहा था उस समय इंगलैण्डके कुछ राजनीतिज्ञोंने यह तरकीब सोची कि विशाल ब्रिटिश साम्राज्यके देशोंको एकत्र करके यदि पारस्परिक आयात-निर्यात-व्यापारके सम्बन्धमें सुविधाजनक समझौते कर लिये जायं तो इससे साम्राज्यान्तर्गत देश लाभान्वित हो सकते हैं और अन्यान्य देशोंकी आर्थिक मन्दीके प्रभावसे भी वे बहुत-कुछ बच जायंगे। इसके बाद ओटावामें साम्राज्यान्तर्गत देशोंका एक सम्मिलन हुआ और इसके फलस्वरूप इंगलैण्ड तथा अन्यान्य उपनिवेशोंके बीच प्रेफरेन्स-नीतिके आधारपर कितने ही समझौते हुए।

भारतकी ओरसे आरम्भसे ही प्रेफरेन्स-नीति और ओटावा-समझौतेका तीव्र प्रतिवाद किया गया था। इसका कारण यह है कि भारत ठहरा पराधीन और परवश देश। साम्राज्यान्तर्गत कनाडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका प्रभृति उपनिवेशोंको इस प्रकारके समझौतेसे किसी प्रकारकी आर्थिक हानि नहीं हो सकती; क्योंकि जभी वे देखेंगे कि प्रेफरेन्स-नीतिके कारण उनकी आर्थिक उन्नतिमें व्याघात पहुंच रहा है वे फौरन उसका प्रत्याख्यान करके आत्मरक्षा कर सकते हैं। किन्तु



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दीन-दुर्बल भारत ऐसा नहीं कर सकता। उसकी अर्थ-नीति और वाणिज्य-नीतिकी परिचालना ऐसे लोगोंके हाथमें है जो इंगलैण्डके स्वार्थको मुख्य और भारतके स्वार्थको गौण समझते हैं। ऐसी स्थितिमें एक बार प्रेफरेन्सकी नीति ग्रहण कर लेनेपर फिर उससे उद्धार पाना भारतके लिए असम्भव हो जायगा, चाहे इसका परिणाम उसके लिए कितना ही घातक क्यों न हो। एक बात और है। भारतके आयात-व्यापारमें इंगलैण्डका प्रमुख भाग है। इसका एक खास कारण यह है कि राजनीतिक दबावके कारण भारतको बहुत-कुछ माल इंगलैण्डसे खरीद करना पड़ता है, हालां कि अन्य विदेशी मालकी अपेक्षा उसका मूल्य कुछ अधिक ही होता है। किन्तु भारत अपना जो कच्चा माल बाहर भेजता है उसमें सिर्फ एक चौथाईका खरीदार इंगलैण्ड है, और बाकी तीन चौथाईके खरीदार यूरोपके अन्यान्य देश तथा अमेरिका हैं। इसलिए इंगलैण्ड तथा साम्राज्यके अन्यान्य देशोंको सुविधा प्रदान करके यदि भारत अपने कच्चे मालके अन्य बड़े-बड़े खरीदारोंको असन्तुष्ट कर देता है तो इससे उसके निर्यात-व्यापारको क्षति पहुंचे बिना नहीं रह सकती। इंगलैण्ड तथा साम्राज्यके अन्य उपनिवेश भारतके समस्त कच्चे मालको खरीद कर लेंगे, यह तो सम्भव हो ही नहीं सकता। इन्हीं सब युक्तियोंके आधारपर सभी दलके भारतीय राजनीतिज्ञों और व्यवसायियोंने एकस्वरसे ओटावा-समझौतेका विरोध किया था और प्रेफरेन्स-नीतिको भारतके लिए हानिकारक बताया था। किन्तु देशव्यापी विरोधकी अवहेलना करके ओटावा-समझौता स्वीकृत कर लिया गया।

इसके कुछ समय बाद भारत-सरकारने यह दिखानेके लिए कि लगभग डेढ़ वर्षके अन्दर ओटावा-समझौतेका भारतके बहिर्वाणिज्यपर क्या प्रभाव पड़ा है, इस सम्बन्धमें जांच करनेका भार वाणिज्य-विभागके प्रधान डा० मीकके ऊपर सौंपा। डा० मीकने इसकी जांच करके अभी हालमें रिपोर्ट प्रकाशित की है। रिपोर्टका जो सारांश समाचार-पत्रोंमें प्रकाशित हुआ है उसे पढ़नेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि ओटावा-समझौतेके विरोधियोंने जो आशङ्कायें प्रकट की थीं वे अधिकांशमें वास्तविक सिद्ध हुई हैं। डा० मीकने अपनी रिपोर्टमें कहा है कि विभिन्न देशोंकी टेरिफ नीति, वाणिज्यकी तेजी-मन्दी, विनिमय और मुद्रा-नीति आदिका जितना महत्त्वपूर्ण प्रभाव किसी देशके वाणिज्य-व्यवसायपर पड़ता है उतना और किसी बातका नहीं। इसलिए इंगलैण्ड और भारतके बीच वाणिज्य-सम्बन्धमें भी प्रेफरेन्सकी अपेक्षा इन्हीं सब कारणोंको विशेष प्रभावोत्पादक समझना चाहिए। किन्तु यदि प्रेफरेन्सकी नीति सचमुच विशेष फलप्रद नहीं है तो फिर इसे स्वीकार करनेके लिए भारतको बाध्य क्यों किया गया? ओटावा-समझौता भारतके लिए लाभजनक सिद्ध हुआ है या नहीं, इसकी परीक्षा दो बातोंसे की जा सकती है। पहली बात तो यह है कि इसके फलस्वरूप देशके बहिर्वाणिज्यके मूल्य और परिमाणमें वृद्धि हुई है या नहीं। दूसरी बात यह है कि इससे स्वदेशी उद्योग-धन्धोंको हानि तो नहीं पहुंची है। जिस समय यह समझौता हुआ था उस समय देशवासियोंको बताया गया था कि इसके फलस्वरूप इंगलैण्डमें भारतके कच्चे मालकी अधिक खपत होगी और अंगरेज व्यवसायियोंको भारतके बाजारपर दखल करनेका मौका मिलेगा। किन्तु भारतमें ऐसे बहुत-से स्वदेशी व्यवसाय हैं जिन्हें विदेशी प्रतियोगितासे संरक्षण मिलनेकी आवश्यकता है और कईको संरक्षण मिल भी रहे हैं। अतएव एक ओर तो इन व्यवसायोंको संरक्षण मिले और दूसरी ओर ये अपने प्रधान प्रतिद्वन्द्वी इंगलैण्डको व्यापारिक सुविधा प्रदान करें, इससे बढ़कर विचित्र बात और क्या हो सकती है। यही कारण है कि उस समय कुछ लोगोंने यह आशङ्का प्रकट की थी कि प्रेफरेन्सकी नीति स्वीकार कर लेनेपर विलायती मालकी प्रतियोगितामें स्वदेशी व्यवसायको अवश्य क्षतिग्रस्त होना पड़ेगा। डा० मीककी रिपोर्टसे यह सिद्ध है कि उक्त आशङ्का निर्मूल नहीं थी। ब्रिटिश सरकारने अपने लिए यह अधिकार सुरक्षित रखा है कि वह अन्य देशोंके साथ व्यापारिक समझौता करे। अतएव इस बातकी भी कोई गारण्टी नहीं है कि इंगलैण्ड अपनी आवश्यकतानुसार कुल कच्चा माल अन्य देशोंसे न खरीदकर एकमात्र भारतसे ही खरीद करेगा। जहां तक भारतके आयात-व्यापारका सम्बन्ध है, प्रेफरेन्सकी नीति भारतके लिए किसी प्रकार भी लाभजनक नहीं कही जा सकती। क्योंकि भारत जिन वस्तुओंको स्वयं तैयार नहीं करता उन्हें वह विदेशोंसे खरीद करता है। इस प्रकारकी विदेशी वस्तुयें केवल इंगलैण्डसे ही नहीं, यूरोप और अमेरिकासे भी आती हैं। किन्तु ओटावा, पैकके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कारण विलायती वस्तुओंपर अन्य विदेशी वस्तुओंकी अपेक्षा १० सैकड़े कम कर लगाकर इंगलैण्डके व्यवसायोंको हम सुविधा प्रदान करते हैं। इस सुविधा-प्रदानका बोझ किसके ऊपर पड़ता है? देशवासियोंके ऊपर, जिन्हें इंगलैण्डके लाभके लिए अधिक मूल्य देकर माल खरीद करना पड़ता है। यह हानि तो उन वस्तुओंके सम्बन्धमें हुई जिन्हें हम स्वयं उत्पन्न नहीं करते, और जिन वस्तुओंको हम स्वयं देशमें तैयार करते हैं उन्हें प्रेफरेन्सके कारण विलायती वस्तुओंकी प्रतिद्वन्द्विताका सामना करना पड़ता है। अब यदि यह कहें कि इस प्रेफरेन्सके बदलेमें इंगलैण्डने भारतका कच्चा माल पहलेकी अपेक्षा अधिक परिमाणमें खरीद किया तो यह बात भी इस रिपोर्टसे प्रमाणित नहीं होती। भारतके बहिर्वाणिज्यमें लगभग सैकड़े ७० भाग कच्चा माल और खाद्य-पदार्थोंका है। इनमें पाट और रुई सर्वप्रधान हैं। ओटावा-समझौतेके फलस्वरूप पाट, चावल, गेहूं, चाय, काफी और मूंगफलीकी रफ्तनीमें कुछ भी वृद्धि नहीं हुई है। रूई और सूतकी रफ्तनीमें वृद्धि हुई है सही, किन्तु सम्पूर्ण वाणिज्यके अनुपातमें उसका भाग नहींके बराबर है। गेहूंके सम्बन्धमें रिपोर्टमें कहा गया है कि "प्रेफरेन्ससे भारतको कोई लाभ नहीं हुआ है और न निकट भविष्यमें लाभ होनेकी सम्भावना है।" चावलकी रफ्तनीमें भी वृद्धि हुई है, किन्तु अन्य देशोंमें भारतीय चावलकी रफ्तनीमें ह्रास होनेसे लाभकी अपेक्षा हानि ही अधिक हुई है। इसी प्रकार चाय, काफी, सूती कपड़ा, लोहा, इस्पात, अलसीका तेल, रेंड़ीका तेल, मूंगफली आदिकी रफ्तनीपर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। लोहा और इस्पातके सम्बन्धमें कहा गया है कि "प्रेफरेन्सकी नीतिसे भारतको बहुत कम लाभ पहुंचा है।" हां, अलसीकी रफ्तनीमें काफी वृद्धि हुई है। सन् १९३२-३३ में इंगलैण्डने भारतसे १४,००० टन अलसी खरीद की थी। सन् १९३३-३४ में यह संख्या बढ़कर १७९,००० हो गयी। रुई और सूतकी रफ्तनीमें भी कुछ वृद्धि हुई है। किन्तु भारतसे बाहर जानेवाली सब वस्तुओंकी रफ्तनीपर विचार करनेसे यह सहज ही मालूम होता है कि भारतके बहिर्वाणिज्यमें सैकड़े ८० भागको ओटावा-समझौतेसे कोई लाभ नहीं पहुंचा है। इसके विपरीत एक वर्षके अन्दर ही भारतमें इंगलैण्डके आयात-व्यापारमें सैकड़े १९ की वृद्धि हुई है। प्रेफरेन्स-नीतिके फलस्वरूप इंगलैण्डने इस देशमें सूती कपड़ा, लोहा, इस्पात, औषधि, चीनी मिट्टीके बर्तन, तेल, शृङ्गारके सामान, कागज, ऊन और रबरकी बनी हुई चीजें अधिक परिमाणमें रफ्तनी कीं। भारतके स्वदेशी व्यवसायोंमें एल्युमिनियमके बर्तन बनानेके व्यवसायको प्रेफरेन्सके कारण क्षतिग्रस्त होना पड़ा है। रिपोर्टमें यदि हानि-लाभका तुलनात्मक तारतम्य पृथक रूपमें दिखाया जाता तो इससे वास्तविक दशापर और भी स्पष्ट प्रकाश पड़ सकता था। किन्तु न मालूम क्यों ऐसा नहीं किया गया। चाहे जो कुछ हो, किन्तु रिपोर्टसे यह स्पष्ट हो जाता है कि ओटावा-समझौतेके कारण इंगलैण्ड जितना लाभान्वित हुआ है उसकी तुलनामें भारतका लाभ नगण्य ही समझना चाहिए। इस प्रकार इम्पीरियल प्रेफरेन्सकी नीतिके सम्बन्धमें जो आशङ्का प्रकट की गयी थी उसकी पुष्टि डा० मीककी इस रिपोर्टसे भली भांति होती है।

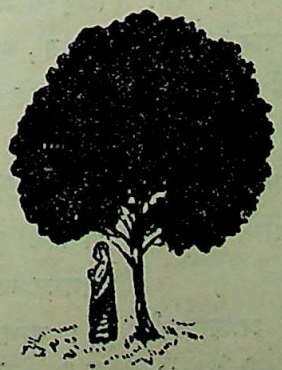

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्षय रोगकी भीषणता

डा० उपेन्द्रनाथ मित्र

क्षय अथवा थाइसिस महा भयङ्कर रोग है। मनुष्यकी सञ्जीवनी शक्तिका अस्तित्व मिटा देनेके लिए क्षय रोगके कीड़े ( Tubercle bacilli ) सदा युद्ध-निरत रहते हैं। भौतिकताके इस युगमें इस रोगकी भीषणता बहुत अधिक बढ़ गयी है। सभ्यताकी बढ़तीके साथ-साथ इस रोगने ऐसा प्रबल प्रभाव फैलाया है कि प्रत्येक व्यक्ति सोते-जागते सशङ्कित रहता है। मानव शरीरपर आक्रमण करनेके लिए यक्ष्मा अथवा क्षय रोगके कीटाणु अज्ञात रूपमें मौका ढूंढ़ा करते हैं। धूलमें छिपकर, खाद्यवस्तुओंमें अस्पष्टरूपसे बास-कर, उंगलीके स्पर्शसे भोजनमें पड़कर और हवाके झोंकोंमें बहकर क्षय रोगके कीड़े सब—मनुष्य, स्त्री, बालक—पर अज्ञात रूपसे आक्रमण करनेकी टोहमें रहते हैं। प्रारम्भमें इसका आक्रमण किसीकी समझमें नहीं आता।

पिछले कुछ वर्षोंमें क्षय रोगने बङ्गालमें अपना आतङ्क जमा लिया है और अपनी विजय-ध्वजाको फहराता हुआ भीषण रूपसे अग्रसर हो रहा है। यह रोग सबपर आक्रमण करता है; इसे उम्र, स्त्री-पुरुष और वर्गभेदका ख्याल नहीं। भारतमें संहारात्मक मलेरियाके बाद इसीका नम्बर बढ़-चढ़कर है। यदि किसी कारणसे एक बार सञ्जीवनी-शक्ति कम पड़ जाय तो यह भीषण रूपसे मनुष्य शरीरपर आक्रमण कर बैठता है। जब कोई व्यक्ति अत्यधिक सुरा-पान, बार-बार सन्तानोत्पत्ति या फेफड़ेको खराब करनेवाली किसी बीमारीके कारण कमजोर पड़ जाता है तो यह रोग अज्ञात रूपसे आक्रमण कर देता है। निवास-स्थानमें स्वा-स्थ्यकर वायुका अभाव, एक ही स्थानपर अनेक व्यक्तियोंका जमघट, शयनागारमें वायु और प्रकाशका अभाव, दूषित भोजन और पौष्टिक भोजनका अभाव इस रोगको विशेष रूपसे फैलाता है। क्षय रोगके कीड़े धूलिकणोंमें मिलकर फेफड़ेके भीतर घुस जाते हैं।

क्षय रोगमें कुछ प्रारम्भिक लक्षण होते हैं। आक्रमणकी पूर्व अवस्थामें बहुत-से व्यक्तियोंको खांसी हो जाती है और बहुत-से आदमियोंको अन्त तक इसकी शिकायत रहती है। पहले-पहल हल्की खांसी आती है और कफ निकलता है। कफकी ठीकसे परीक्षा करानी चाहिए। जिस व्यक्तिको क्षय रोग हो जाता है उसका कफ सूखा हुआ रहता है और खांसते समय थोड़ी तकलीफ होती है। रोग जैसे जैसे बढ़ता जाता है तकलीफ भी बढ़ती है। बहुधा रातमें और प्रातःकाल बिस्तरेसे उठते समय खांसीका प्रकोप बढ़ जाता है। किसी भी समय कफके साथ खून भी निकल सकता है और रोगीकी अवस्था भयङ्कर हो जा सकती है। क्षय रोगका प्रधान लक्षण है रातमें तापमानका ऊपर उठना और सवेरे नीचे उतरना। रातमें पसीना निकलनेसे रोगी धीरे-धीरे कमजोर हो जाता है। शरीरका वजन भी कम पड़ने लगता है, कभी-कभी खांसते समय छातीमें दर्द भी मालूम होता है।

भारतमें, सर्वसाधारणके लिए, क्षय रोगके सम्बन्धमें पूरा ज्ञान प्राप्त करना साध्य नहीं है। किन्तु यदि प्रथम अनुभवके समयसे ही चिकित्साकी ओर विशेष सावधानी रखी जाय तो अच्छा लाभ होता है। यदि किसी प्रकार यह शङ्का उठे अथवा यह मालूम पड़े कि रातके वक्त तापमान बढ़ जाता है या खांसी जोर मारती है, तो उपचारमें किसी प्रकारकी शिथिलता न दिखलानी चाहिए।

समस्त देशोंके हकीम, डाक्टर और वैद्य नाना प्रकारके प्रयोग करनेमें संलग्न हैं। इस असाध्य रोगकी चिकित्साके लिए स्वीजरलैण्ड प्रसिद्ध हो चुका है। नाना प्रयोगोंके पश्चात्, बहुसंख्यक अनुभवप्राप्त व्यक्तियोंकी यह धारणा पुष्ट हुई है कि यदि कोष्ठबद्धता आराम हो जाय तो इस रोगकी शक्ति कम पड़ जाती है और क्षय रोगके कीटाणु फेफड़ेपर कब्जा नहीं कर सकते। यदि पाचन-शक्तिको बढ़ाने और शरीरको पुष्ट करनेवाली औषधिका सेवन किया जाय तो रोगाक्रान्त स्नायु स्वस्थ होकर ठीक-ठीक काम करने लगते हैं। नाना प्रयोग और सोच-विचारके बाद, नाना देशोंके चिकित्सकोंने जो औषधियां तैयार की हैं उनमें सबसे अच्छी औषधि स्वीजरलैण्डमें तैयार की गयी है और अन्तर्राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्षय संघ International Phthisis Association के अध्यक्ष डा० डे रेज्नीने उसे प्रथम स्थान दिया है।

चूंकि यह पाजी रोग भीषण रूपसे बढ़ता ही जा रहा है इसलिए जरूरी है कि सर्वसाधारणको उक्त औषधिका नाम मालूम हो जाय।

पिछले चालीस वर्षोंमें विभिन्न देशोंके विशेषज्ञोंने इस औषधिके प्रयोगसे पूरा लाभ उठाया है। प्रोफेसर डे रेज्नीका कहना है कि यदि रोगकी प्रारम्भिक अवस्थासे ही 'सिरोलिन' का सेवन प्रारम्भ कर दिया जाय तो क्षय रोग रह नहीं सकता और यदि रहेगा तो 'सिरोलिन' धन्वन्तरि-की भांति उसे आराम करेगा।

बङ्गालकी अधिकांश जनता दरिद्र है। ९० प्रतिशत व्यक्तियोंको विशेषज्ञोंकी चिकित्सा सुलभ नहीं। ऐसी अवस्थामें यदि 'सिरोलिन' का नाम याद रहेगा तो यह बड़ी आसानीसे मिल सकेगी। इस देशके बहुत-से आदमियों-को विदेशोंकी चिकित्सा-सम्बन्धी पत्र-पत्रिकायें पढ़नेको नहीं मिलतीं, इसलिए हो सकता है कि साधारण व्यक्तियोंने 'सिरोलिन' नाम न सुना हो। ऐसी अवस्थामें क्षय-जैसी महा भयङ्कर व्याधिसे छुटकारा पानेके लिए 'सिरोलिन' का व्यवहार वाञ्छनीय है। जिस देशमें लोग भोजन बिना मरते हैं वहां कीमती दवाओंके लिए दाम कहांसे मिलेंगे। ऐसी अवस्थामें मैं इस मरते हुए राष्ट्रको इस महा भयङ्कर रोगसे बचानेके लिए अत्यन्त सुलभ मूल्यकी औषधिका नाम बतानेका लोभ संवरण नहीं कर सकता।

---

# हिण्डेनबर्गका अद्भुत रण-कौशल

श्री विश्वम्भरनाथ बी० ए०

२३ अगस्त सन् १९१४ की घटना है। प्रसियाका हनोवर स्टेशन प्रातःकालके कुहासेसे आच्छन्न हो रहा था। प्लैटफार्मपर एक प्रौढ़ वयस्क सज्जन एक स्त्रीके साथ इधर-उधर घूम रहे थे। इसी समय एक ट्रेन बर्लिनसे आ पहुंची। जेनरल लुडेनडर्फकी यह स्पेशल ट्रेन जर्मन सैनिकोंसे भरी हुई थी। लुडेनडर्फ ट्रेनके डब्बेसे निकलकर प्लैटफार्मपर आये और परिचय-प्रदानके बाद उक्त सज्जनसे हाथ मिलाया। यह सज्जन कौन थे? नवीन प्रधान सेनापति हिण्डेनबर्ग और वह स्त्री उनकी पत्नी थी जो उनसे बिदा ग्रहण करने आयी थी।

हिण्डेनबर्गको इतना अवकाश भी नहीं मिला कि प्रस्थान-कालमें अपनी पत्नीसे प्रेमके एक-दो शब्द कहते। पत्नीने नीरव भावसे बिदा ग्रहण की। दोनों रण-नायकोंमें युद्धकी परिस्थितिको लेकर आलोचना-प्रत्यालोचना होने लगी। किन्तु हिण्डेनबर्गकी जानकारी केवल समाचार-पत्रों-की रिपोर्टपर निर्भर करती थी। लुडेनडर्फने उनकी बातोंको उपेक्षा-भावसे सुना।

लुडेनडर्फकी बुद्धि तीक्ष्ण और क्रियाशीलता प्रचण्ड थी। अवस्था कम होनेके कारण स्वभावमें अहङ्कारकी मात्रा अधिक थी। इस तरुण सेनानायकने थोड़े समयके अन्दर ही जो रणकौशल दिखलाया था उससे जर्मन सेनापर उनकी बड़ी धाक जम गयी थी। किन्तु यह सब होते हुए भी अपनी उद्धत प्रकृतिके कारण लुडेनडर्फ अपनी पद-मर्यादाको अक्षुण्ण नहीं रख सके और अन्तमें कैसर द्वारा उन्हें पदच्युत होना पड़ा।

प्रसियाके पूर्व भागमें ८ लाख रूसी फौज पहुंच चुकी थी; अवस्था बड़ी सङ्गीन हो चली थी। रूसी सेनाके अग्रवर्ती दलके प्रधान सेनानायक श्यामसोनेफ थे। इससे थोड़ी दूरपर कोनिग्सबर्गकी ओर जेनरल रेनेनकामोफ डटे हुए थे। पूरा समां बंधा हुआ था। पूर्व प्रसियाकी अवस्था अत्यन्त उद्वेगजनक हो रही थी। आस्ट्रियाके सैन्य-दलने रूसी सेनाके लिए प्रधान सीमान्तका पथ छोड़ दिया था। विशाल रूसवाहिनीके मार्गमें बाधा प्रदान करना आस्ट्रिया-की सेनाके लिए दुस्साध्य था। ऐसी स्थितिमें रूसकी इस विपुल-वाहिनीका यदि प्रतिरोध नहीं किया जाता है तो वह सहज ही बर्लिनमें प्रवेश कर सकती है। इस समस्याको लेकर जेनरल मल्टेक, जेनरल लुडेनडर्फ और काउण्ट स्लीफेन अत्यन्त उद्विग्न भावसे व्यतिव्यस्त हो रहे थे। घण्टों माथा-पच्ची करनेके बाद यह निश्चय हुआ कि पूर्व प्रसियाके केन्द्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्थल और दक्षिण दिशामें ८ न० की जो सेना अवस्थित है उसे ही रूसी सेनाका गतिरोध करना पड़ेगा। किन्तु विपक्षी दलकी तुलनामें जर्मन सेना प्रति तीन व्यक्ति पीछे एक व्यक्ति पड़ती थी। इसके सिवा रूसी फौजको एक और सुविधा यह प्राप्त थी कि वह दायीं और बायीं ओरसे दबाव डालकर जर्मन सेनाको अवरुद्ध कर सकती थी। फिर भी ८ न० की सेनाको तार द्वारा आदेश दिया गया कि वह मोर्चाबन्दी किये हुए डटी रहे।

इधर लुडेनडर्फ हिण्डेनबर्गको लेकर ८ न० की सेनाके प्रधान शिविरमें पहुंचे। उधर रूसके सेना-विभागके सर्व-प्रधान अधिनायक ग्रैण्ड ड्यूक निकोलस निकोलविचने जब यह समाचार सुना कि हिण्डेनबर्ग प्रधान सेनापति नियुक्त होकर पूर्व प्रसिया आ रहे हैं तो उन्होंने कुटिल हंसी हंसते हुए पूछा—"यह हिण्डेनबर्ग कौन है?" हिण्डेनबर्गको तुच्छ समझनेवाले सिर्फ ग्राण्ड ड्यूफ ही थे, सो बात नहीं है। अन्यान्य जर्मन अफसर, यहां तक कि लुडेनडर्फ भी उनकी योग्यताओंके सम्बन्धमें सन्दिहान् थे। हां, बर्लिनके प्रधान सैनिक कार्यालयमें कुछ लोगोंको यह अवश्य मालूम था कि हिण्डेनबर्ग अपनी युवावस्थामें कुछ दिनों तक कनिग्सबर्गमें रह चुके हैं। पूर्व प्रसियाके वह अधिवासी हैं। वहांके रास्ता, घाट-बाट, झील, खन्दक, झाड़-जङ्गल आदिसे वह पूर्णतया परिचित हैं।

हिण्डेनबर्गके नायकत्वके पूर्व केन्द्रीय सामरिक विभाग-के प्रधान नायक काउण्ट स्लीफेनने जो प्लान स्थिर किया था और जिसके अनुसार ८ न० की सेनाने रूसी फौजका प्रतिरोध किया था, उसमें वह सफल न हो सकी। इसका कारण यह था कि ८ न० की सेनाके नायकोंमें विपुल साहस, असाधारण धैर्य, उत्कृष्ट सामरिक प्रतिभा आदि गुणोंका अभाव था जो ऐसे अवसरोंपर प्रयोजनीय सिद्ध होते हैं। लुडेनडर्फ और हिण्डेनबर्गके आगमनसे अष्टमवाहिनीके नायकोंको विशेष आशा नहीं हुई। लेफ्टिनैण्ट कर्नल हफ-मैनने जर्मन सेनाकी नाजुक अवस्थाकी ओर अत्यन्त गम्भीर मुद्रासे लुडेनडर्फ और हिण्डेनबर्गका ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि रूसकी पैदल सेना जर्मनीकी अपेक्षा पचगुनी और गोलन्दाजोंकी संख्या तिगुनी है। इतनी बड़ी सेनापर आक्रमण करना सहज नहीं है। अतएव कुशल इसीमें है कि जर्मन सेना आक्रमण न करके केवल आत्मरक्षा करनेमें तत्पर रहे।

हिण्डेनबर्ग कर्नलकी सारी बातोंको चुपचाप सुन रहे थे। आत्मरक्षाका जो प्लान हफमैनने उनके सामने रखा था उसपर उन्हें विश्वास न हुआ। उनकी भौंहें तन गयीं, चेहरा तमतमा उठा। बोले—"आत्मरक्षा करनेमें यदि सफलता ही मिली तो इससे लाभ क्या हुआ?" "We intend not to hold out till the end, but to conquer." उन्होंने अपने मनमें एक नया उपाय स्थिर किया और दृढ़तापूर्वक उसे प्रकट करते हुए कहा—"हमारा केन्द्रीय सैन्य-दल शत्रुपक्षको विच्छिन्न कर देगा और एक पक्षके आक्रमण करनेके पूर्व ही अपर पक्षको विध्वस्त कर देगा। श्यामसोनेफको केवल पराजितकरनेसे ही काम नहीं चलेगा, उनकी सेनाको भी ध्वंस कर डालना होगा। इसके लिए इस प्रकारका सैन्य-व्यूह रचना होगा जिससे रूसी सेनाको चतुर्दिक-से आवेष्टित कर लिया जाय। मध्यस्थलमें जर्मनीकी जो अष्टम वाहिनी है उसे रूसी सेनापति श्यामसोनेफके द्वारा आक्रान्त होने दो। इसके साथ लड़ते हुए रूसकी दायीं और बायीं ओरकी फौजसे कोई सम्बन्ध नहीं रह जायगा। फिर जर्मन सेना दोनों दिशाओंसे रूसी सेनाको आवेष्टित करके उसे सहज ही विपर्यस्त कर डालेगी। जिस समय केन्द्रस्थलमें लड़ाई शुरू होगी, उस समय रेनेनकामोफके विरुद्ध लड़नेके लिए जो जर्मन सैन्य-दल उत्तर-पूर्व दिशामें अवस्थित है उसे निउमनबर्गकी ओर भेजकर रूसी फौजके पीछे हटनेके मार्गमें सन्निविष्ट कर देना होगा। इधर वान मैकेनसन अष्टम वाहिनीकी बायीं ओर उसकी रक्षाके लिए नियुक्त रहेंगे। इस प्रकार एक विराट् चक्रव्यूह रचकर युद्ध करना होगा।"

हिण्डेनबर्गका यह प्रस्ताव बड़ा ही दुस्साहसिक था। अष्टम-वाहिनीके नायकगण एक नवागन्तुकके मुंहसे इस प्रकारका प्रस्ताव सुनकर सन्नाटेमें आ गये। यदि अभियान व्यर्थ हो गया तो? केवल पूर्व प्रसियापर ही शत्रु-पक्षका अधिकार नहीं हो जायगा, बल्कि रूसी फौजके लिए राज-धानी बर्लिनका मार्ग भी सुगम हो जायगा। किन्तु हिण्डेन-बर्गके मनमें कुछ भी दुविधा नहीं थी। जिस समय अष्टम वाहिनीके दो पदस्थ अफसर उनके दुस्साहसिक प्रस्तावको लेकर इतस्ततः कर रहे थे, हिण्डेनबर्गने धीर-गम्भीर भावसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दृढ़तापूर्वक कहा—"हम लोगोंकी यह व्यवस्था इतनी निश्चित है कि यदि हम चाहें तो इसके अनुसार आज ही विजयी हो सकते हैं।"

सङ्कटकालमें इस प्रकारके दुस्साहसकी ही जरूरत होती है।

रूसी सेनाके सेनापति रेननकामोफ और श्यामसोनफ भावी विजयकी आशासे फूले नहीं समाते। दोनों सेनापति एक-दूसरेकी विजयपर आशादृष्टि लगाये निश्चिन्त हुए बैठे थे। घुड़सवार, पैदल, गोलन्दाज सब जर्मनोंकी अपेक्षा संख्यामें कई गुने हैं। फिर चिन्ता काहेकी! श्यामसोनफ रेननकामोफके ऊपर निर्भर करके पश्चिमकी ओर बढ़ने लगे। यहां तक बढ़ आये कि सङ्कट-कालमें पीछे हटनेकी बातपर विचार तक नहीं किया। मसूरिया झील और जङ्गलके रास्तेसे होकर श्यामसोनेफकी सेना गुजर रही थी।

इधर रेननकामोफ इन्सटारबर्गमें अड्डा जमाये हुए निश्चिन्त भावसे नाच-गानमें मस्त हो रहे थे। नर्तकियोंके विमोहन हाव-भाव और मधुर भङ्गिमाकी उन्मादनामें विभोर रेननकामोफ प्यालेपर प्याले चढ़ा रहे थे और इस प्रकार एक नवीन स्फूर्तिकी उपलब्धि कर रहे थे। सुराका एक प्याला होठोंसे लगाते हुए अस्फुट शब्दोंमें बोले:—"जर्मन सेनाकी क्या मजाल कि हमारा मुकाबला करे! श्यामसेनोफ दोनों ओरसे आक्रमण करके उसका ध्वंस कर डालेंगे और बस, फिर जर्मनीपर रूसका झण्डा फहरायगा।"

जिस फौजके जेनरलका यह हाल हो उसके प्रबन्धका क्या कहना! प्रबन्धमें भी वही लापरवाही, वही अहङ्कार! बेतारके तार द्वारा जो सामरिक समाचार रूस भेजे जाते थे, हिण्डेनबर्ग अपने शिविरमें बैठे हुए उन सबका पता लगा लेते थे। रूसी सैन्य-सञ्चालन, उसकी गति-विधियोंकी एक-एक बात हिण्डेनबर्गको मालूम हो जाती थी।

पाठक, अब जरा उस समर-क्षेत्रकी कल्पना कीजिये जो ६३ मीलोंमें परिव्याप्त है। एक ओर रूसकी असंख्य सेना डटी हुई है और दूसरी ओर उसका सामना करनेके लिए उसकी अपेक्षा क्षुद्र जर्मन सेना अड़ी हुई है। दोनोंमें भयङ्कर सङ्घर्ष शुरू हो गया है। जीवन और मरणका प्रश्न सन्निकट है। बायीं ओर और मध्यस्थलमें रूसी सेनाके प्रचण्ड आक्रमणसे जर्मन सेना विकम्पित हो उठी। मध्य-स्थल—जहां घनघोर युद्ध चल रहा था—टैनेनबर्ग नामक एक ग्रामके अन्तर्गत था। मध्य समरस्थलमें तो घनघोर युद्ध मच रहा था और एक ओरसे वान क्रैङ्क्स और दूसरी ओरसे वान मैकेनसन आगे बढ़ रहे थे। सेनापति श्यामसोनेफ प्राणोंपर खेलकर लड़ रहे थे। अब तक तो केन्द्रस्थलमें २० नं०की सेना रूसी फौजके आक्रमणसे आत्मरक्षा ही कर रही थी, किन्तु उपयुक्त अवसर जानकर वह अकस्मात् रूसी फौजपर टूट पड़ी। दायीं ओर जर्मनीकी सेना वारसाके रेल-मार्गके समीप अवस्थित थी और श्यामसोनेफकी सेना भी इसी रेल-पथके साथ साथ आगे बढ़ रही थी। इसी समय केन्द्रीय जर्मन सैन्यदलने भी दायीं ओरकी सेनाके साथ संयोग स्थापित करके रूसी सेनाका मार्ग रुद्ध कर दिया। इस प्रकार श्यामसोनेफकी प्रधान सेना आवेष्टित हो गयी और उसके लिए अब सिर्फ पूर्व दिशामें बढ़नेका मार्ग बाकी रह गया था। किन्तु जर्मनीकी सेनाने बायीं ओर बढ़कर इस मार्गको भी रुद्ध कर दिया। हिण्डेनबर्गका अपूर्व रणकौशल काम कर गया। उनके इस कराल चक्र-व्यूहमें पड़कर श्यामसोनेफ क्रोध और क्षोभसे विह्वल हो उठे। २९ अगस्तको एक लाख रूसी सेना थोड़ी-सी त्रिभुजाकार भूमिमें अवरुद्ध होकर हतबुद्धि और नैराश्यपूर्ण दशामें प्राण देने लगी। लाशोंका ढेर लग गया। रुण्ड-मुण्डों और शवोंका विशाल स्तूप महा भयानक और वीभत्स दृश्य उपस्थित कर रहा था। जो सैनिक इधर-उधर बचे हुए थे वे जङ्गल और झीलके रास्ते प्राण लेकर भाग चले। और श्यामसेनोफका क्या हुआ? लाशोंके ढेरके बीच एक वयस्क सेनापतिका मृत शरीर देख पड़ा। सारा शरीर शोणितसे सराबोर था। मृत शरीरको उठाकर देखा गया। अरे! यह तो सेनापति श्यामसेनोफकी लाश है! इस वीर सेनापतिने क्रोध, क्षोभ एवं आत्मग्लानिकी भावनासे जर्जरित होकर आत्महत्या द्वारा अपने जीवनका अन्त कर डाला। और उस विलासी कामुक सेनापति रेनेनकामोफने जब यह भीषण समाचार सुना कि श्याम सोनेफने आत्महत्या कर ली है और रूसी सेनाका सर्वनाश हो चुका है तब उसे होश आया और अब तक उसने अपने स्वप्न-राज्यमें विजयका जो हवाई किला बना रखा था वह क्षण-भरमें ही चूर्ण-विचूर्ण हो गया। रेनेनकामोफके लिए अब भागनेके सिवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और उपाय ही क्या था! रूसी सेना समर-क्षेत्र छोड़कर इधर-उधर भागने लगी। इस अस्त-व्यस्तकी अवस्थामें बहुत-से फौजी सामान जर्मनोंको हाथ लगे और रूसके बहुसंख्यक सैनिक जर्मनीके बन्दी हुए।

हिण्डेनबर्गकी इस कीर्ति-कहानीका समाचार जब बर्लिन पहुंचा तो सम्पूर्ण देशमें हर्षोल्लास छा गया। विषादकी जो गहरी रेखायें जर्मन जनताके भाल-देशपर अङ्कित हो रही थीं उनके बदले आनन्दसे उनका मुखमण्डल उत्फुल्ल हो उठा। हिण्डेनबर्गके नामसे सारा जर्मनी प्रतिध्वनित हो उठा। इस विजयके बाद रूस और रुमानियाने जर्मनीसे सन्धि कर ली और युद्धक्षेत्रसे पृथक् हो गये।

इसके बाद हिण्डेनबर्गने इंगलैण्ड और फ्रान्सका सामना करनेमें अपनी शक्तियोंको संलग्न किया। किन्तु इस बार विजय-लक्ष्मी उनपर प्रसन्न न थी। मित्र-शक्तियोंकी सेना अपने मोर्चेपर डटी हुई थी। आस्ट्रिया, टर्की और बलगेरिया क्लान्त और निराश होकर युद्धसे विरत हो चुके थे। उधर अमेरिकाने मित्र-पक्षकी ओरसे रणक्षेत्रमें पदार्पण किया। हिण्डेनबर्गने जिस चक्रव्यूहकी रचना की थी वह भङ्ग हो गया। कैसरके हालैण्ड भाग जानेके बाद जर्मन चान्सेलर प्रिन्स मैक्सने आत्म-समर्पण कर देनेका निश्चय किया। ऐसी स्थितिमें इस वीर सेनापतिके लिए हताश होकर स्वदेश लौटनेके सिवा और दूसरा चारा ही क्या था। यद्यपि हिण्डेनबर्ग एक परास्त सेनापतिके रूपमें समरक्षेत्रका परित्याग करनेके लिए विवश हुए थे, किन्तु उनकी आत्मा अब भी अजेय बनी हुई थी। युद्धके इस कालका चित्राङ्कण करते हुए मि० ए० जी० गार्डनरने लिखा है—"All the gods were discredited and in flight from the kaiser downwards, and only this stout old soldier, with his iron sense of duty and in his indomitable spirit shepherding home the routed and the dispirited troops and trying bravely to sustain the heart of the nation, was left to remind men of what Germany had been and might be again." अर्थात् जिस समय रणक्षेत्रके बड़े-बड़े सेनानायक लाञ्छित हो रहे थे और कैसरसे लेकर उनके नीचे और जितने लोग थे सब भाग चुके थे, उस समय यही सुदृढ़ वृद्ध सैनिक अपने कठोर कर्तव्य-ज्ञान और दुर्दमनीय भावको धारण करते हुए हताश सैनिकोंको आश्वासन देते हुए युद्धक्षेत्रसे स्वदेश लौटाकर ले गया और साहसपूर्वक राष्ट्रके नैराश्यपूर्ण हृदयमें आशाका सञ्चार करता रहा।

जर्मन शौर्यवीर्यकी जीवन्त मूर्ति राष्ट्रपति हिण्डेनबर्ग इसी कोटिके स्वदेश-प्राण रणनायक और धीर-मस्तिष्क राजनीतिज्ञ थे जिनकी कीर्ति-कहानी जर्मन जातिके स्मृति-पटलपर सदाके लिए अङ्कित रहेगी और देशके सङ्कट-कालमें आशा और उत्साहका सञ्चार करती रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति हिण्डेनबर्गकी मृत्युसे दुनियांका
एक वयोवृद्ध योद्धा उठ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



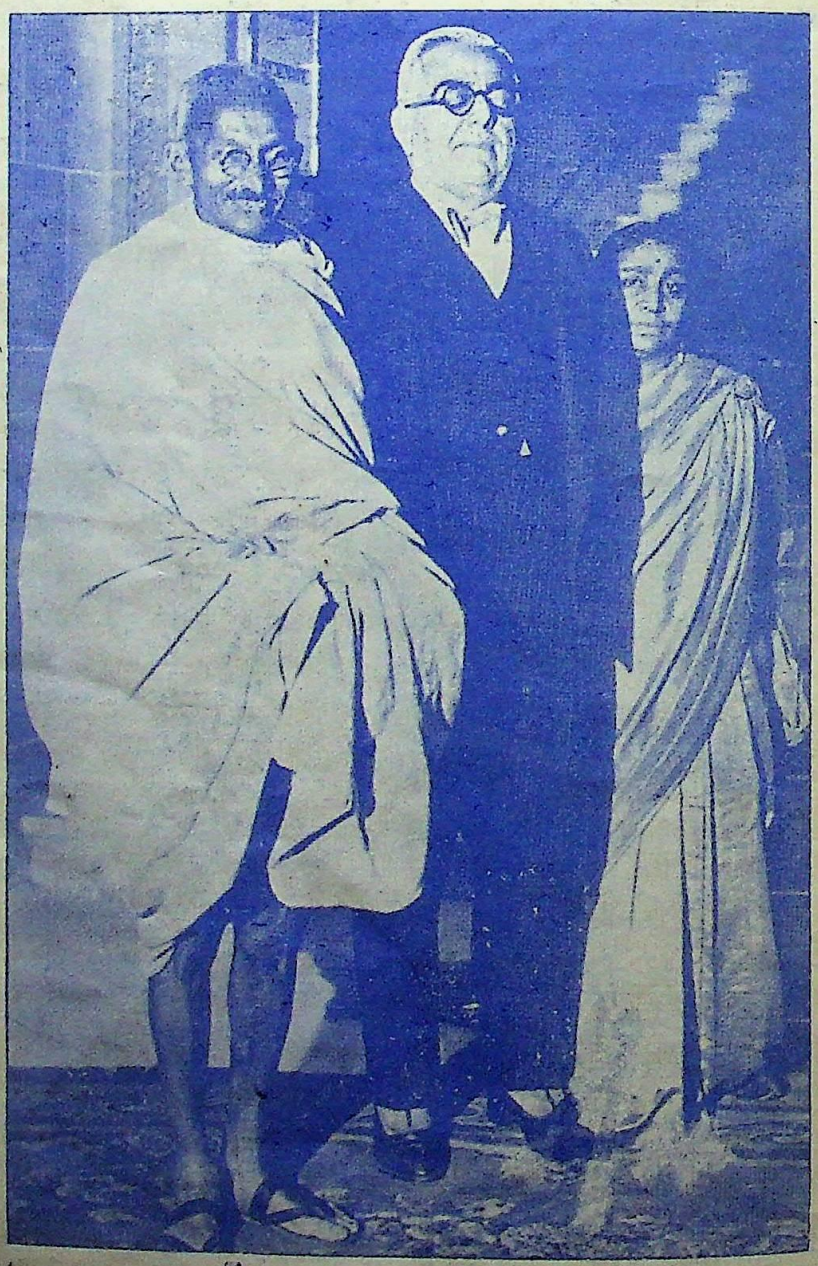

श्रीमती सरोजनी नायडू और हिज हाईनेस सर आगाखांके साथ महात्माजी खड़े हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## भारत और स्व० सम्राट् सप्तम एडवर्ड

स्वर्गीय सम्राट् सप्तम एडवर्ड एक शान्तिप्रिय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिके सम्राट् समझे जाते थे। किन्तु दुर्भाग्य-वश भारत और भारतीयोंके प्रति उनके विचार और मनोभाव सर्वथा सहानुभूतिशून्य थे। निम्नलिखित घट-नाओंसे सम्राट्की उस मनोवृत्तिपर बहुत-कुछ प्रकाश प.ता है।

Sir Sideny Lee ने सम्राट् सप्तम एडवर्डकी एक वृहत् जीवनी लिखी है। इस ग्रन्थके दूसरे भागमें एक अध्यायका शीर्षक है, "सम्राट् और भारत।" इस अध्यायमें प्रेस एक्टका जिक्र करते हुए लेखकने लिखा है कि उस समय लार्ड मार्ले भारतमन्त्री और लार्ड मिण्टो वायसराय थे। लार्ड मार्ले और ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल भारतमें छापाखाना कानून बनाये जानेके पक्षमें नहीं थे। इसपर सम्राट्ने भारतमन्त्रीको एक पत्र लिखते हुए अपनी यह सम्मति प्रकट की थी—"मुझे इस बातकी हार्दिक आशा है कि मन्त्रिमण्डल इस प्रश्नपर ध्यानपूर्वक विचार करेगा कि आमतौरसे छापाखानोंके सम्बन्धमें कोई कठोर कानून बनना चाहिए या नहीं।" पत्रमें यह भी कहा गया था कि "इसमें सन्देह नहीं कि भारतमें जो उपद्रव हो रहे हैं, इसके लिए वहांके अराजभक्त समाचारपत्र मुख्यतया उत्तरदायी हैं।"

इसके बाद जब लार्ड मार्ले और लार्ड मिण्टोने वायस-रायकी कार्यकारिणी समितिका सदस्य श्री सत्येन्द्र प्रसन्न सिंह (बादमें लार्ड) को नियुक्त करनेका प्रस्ताव किया तो सम्राट्ने इस प्रस्तावका घोर विरोध किया। उस समय आपने लार्ड मार्लेको जो पत्र भेजा था उसमें अपनी राय इस प्रकार प्रकट की थी:—"सम्राट्की यह सम्मति पहलेके समान ही बनी हुई है कि प्रस्तावित कार्य (श्री० एस० पी० सिंहकी नियुक्ति) अंगरेजी शासनके अन्तर्गत भारतीय साम्राज्यकी रक्षाके लिए बहुत ही खतरनाक है। चूंकि वायसराय इस बातपर बहुत जोर दे रहे हैं और मन्त्रिमण्डलने सर्वसम्मतिसे इसे मञ्जूर कर लिया है, इसलिए सम्राट्को अपनी इच्छाके विरुद्ध इसे मान लेनेके सिवा और कोई चारा ही नहीं है। किन्तु वे यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इस नयी नीतिका वे तीव्र प्रतिवाद करते हैं।"

Native देशी आदमीके सम्बन्धमें सम्राट्की कैसी धारणा थी, इसका प्रमाण उनके वे दो पत्र हैं जो इसी सिलसिलेमें तत्कालीन वायसराय लार्ड मिण्टोको लिखे गये थे। पहले पत्रकी तारीख २२ मार्च १९०९ है। इस पत्रमें सम्राट् एडवर्डने लिखा था:—"इस समय, जबकि भारतमें अशान्ति फैली हुई है और भारतीयोंके षड्यन्त्र जारी हैं, मैं समझता हूं कि किसी देशी आदमीको भारत-सरकारकी कार्यकारिणी समितिका सदस्य नियुक्त करना भारतीय साम्राज्यके लिए बहुत ही खतरनाक है, खासकर जबकि वायसरायकी कौन्सिलमें ऐसे बहुत-से विषयोंपर विचार होगा जिनमें किसी देशी आदमीके लिए भाग लेना वाञ्छनीय नहीं कहा जा सकता। इसके सिवा यदि आप किसी हिन्दू-को सदस्य नियुक्त करेंगे तो फिर मुसलमानको क्यों नहीं करेंगे? मुसलमान भी तो अपना दावा जोरोंके साथ पेश करेंगे। देशी नरेश, जो वायसराय और उनकी कौन्सिल



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



द्वारा शासित होनेके लिए तैयार हैं, किसी देशी आदमीके सदस्य नियुक्त किये जाने ( और देशके शासनमें भाग लेने ) पर विशेष आपत्ति करेंगे जो उनकी अपेक्षा श्रेणीमें बहुत ही न्यून होता है। देशी आदमी चाहे कितना ही चतुर क्यों न हो, आप और आपकी कौन्सिल उसे कैसा ही राजभक्त क्यों न समझे, किन्तु आप निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकते कि वह आपकी परामर्श-समितिके लिए एक बहुत ही खतरनाक व्यक्ति सिद्ध न होगा और अपने देशवासियोंको ऐसी बातें न बता देगा जिनका प्रकट होना वाञ्छनीय नहीं कहा जा सकता।"

दूसरा पत्र २१ मई १९०९ को लिखा गया था। उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं:—कार्यकारिणी समितिमें एक देशी आदमीको नियुक्त करनेकी सुविधाओंके सम्बन्धमें आपने जो युक्तियां दिखायी हैं उनपर ध्यानपूर्वक विचार करनेके बाद भी मैं अपनी इस रायपर कायम हूं कि किसी देशी आदमीको कार्यकारिणी समितिका सदस्य नियुक्त करना भारतीय साम्राज्यकी कुशलता और कल्याणके लिए बहुत ही खतरनाक है। मैंने इसपर और भी ऐसे कई लोगोंसे बातचीत की है जिनका भारतके साथ अभी तक सम्बन्ध बना हुआ है, और वे सबके सब आपके इस नवीन प्रयोगको बहुत ही भय और विषादके साथ देख रहे हैं।"

सन् १९१९ के शासन-विधानके प्रवर्तित होनेके बादसे वायसरायकी कार्यकारिणी समितिमें लगातार तीन भारतीय सदस्य नियुक्त होते आ रहे हैं। मालूम नहीं, इस समय यदि सम्राट् जीवित होते तो इस विषयमें उनकी क्या राय होती!

## लखनऊके नवाबोंकी दिनचर्या

लगभग ७५ वर्ष पहले लखनऊसे 'मिरातुलहिन्द' नामक उर्दू पत्र निकलता था। उसके सन् १८७१ के किसी अङ्कमें लखनऊके एक नवाबकी दिनचर्या छपी थी जिससे तत्कालीन समाजपर काफी प्रकाश पड़ता है :—

"हाल यह है कि नौ बजे तो नींदसे जागे और आंख खुलते ही हुक्म हुआ कि हुक्का लाओ। खिदमतगार झटपट हुक्का तैयार करके लाया और उसे लेटे-लेटे पिया किये। जब वह जलकर खाकसियाह हो गया तो जम्हाइयां लेते हुए उठे, और फरमाया, मियां इलाहीबख्श! अफीम जल्द तैयार करो, इस वक्त मैं बहुत बेचैन हूं। कल रातको तो अफीमने इतना कम नशा किया कि रात-भर नींद नहीं आयी और हाथ-पैर टूटा किये। हर वक्त यही जीमें आता था कि तुम्हें जगाऊं और थोड़ी अफीम फिर बनवाकर पियूं। क्योंकि रात ज्यादा बढ़ गयी थी, लाचार उसी बेचैनीके आलममें पड़ा रहा। उन्होंने जवाब दिया, हुजूर, पाखाने तशरीफ ले जायें, लोटा तैयार है। अच्छा, लोटा रखवाओ, हम भी उठते हैं। हुक्का भी भरकर रख देना। दस बजे चौकीपरसे हुक्का और लोटा हाथमें लिये हुए बरामद हुए और अफीम पी। हुक्म हुआ कि हमारे बटेरोंकी कावुक लाओ और शेरअली बटेर-बाजको भी बुलाते लाना। देखूं तो कि उन्होंने रातको भूख भी दी या नहीं। ऐसा न हो कि भूल गये हों, कि परसों पालीमें सारी शेखी किरकिरी हो! यह कहकर वहां गये और मुंह धोनेको पानी तलब किया। खिदमतगारोंने हुक्का भरकर रख दिया; अब बटेरोंकी तरफ निगाह फेरी। दोस्त अहबाब जमा हुए, चौसर गञ्जीफा होने लगा। इतनेमें बारह बजे। आदमीने हाथ जोड़कर कहा—हुजूर, खाना तैयार है। फरमाया, बाजी तमाम हो ले तो चलते हैं। एक बजेके करीब अन्दर गये और खाना नोश किया तो गोया चूहेने पारा पिया। अब कब बैठा जाता है? पान खाते हुए खसखाना पहुंचे, पङ्खा खिंचने लगा, फिर आराम किया। चार बजे अगर आंख खुल गयी और किसीसे पूछा कि दिन कितना होगा, जरा टट्टी तो हटाना। टट्टी हटानेके साथ ही दिन देखना तो भूल गये। बन्द करो साहब बन्द करो। ओफोह! किस कदर धूप है कि मुंह फुंका जाता है, चिल्लाने लगे। किसीने कहा कि अय हुजूर, चार बज गये, उठिये, तो कहने लगे कि चाहे चार बजें या पांच बजें। हम तो जब तक यह धूपकी गर्मी है, न उठेंगे। खुलासा यह कि दो घड़ी दिन रहे, जम्हाइयां लेते हुए उठे और मुंह धोकर हुक्का शुरू किया ही था कि मुर्गबाज मुर्ग लेकर आया और उसने बयान करना शुरू किया। हुजूरके नमककी कसम, रणजूर ऐसा लड़ा कि मुखालिफके मुर्गका बिलकुल खूनखराबा हो गया और तमाम पाली-भरमें हुजूरकी धूम मच गयी और दो-दो पानी इन पट्ठोंके भी हो गये। शाम तक इस मश्गले में रहे। आठ बजे, और चांडूकी किश्ती सामने लाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रखी गयी और सब दोस्त जमा हुए और शगल शुरू हुआ। साथ-ही-साथ किस्सा कहनेवालेने बेचारे अमीर हमजापर झूठके पुल बांधने शुरू किये और उमरू ऐयारकी झूठी ऐयारियां बयान करना शुरू किया और वह झूठ कि जमीन और आसमानपर कहीं ठिकाना नहीं। अगर किसी साहबने बाद कुछ देरके उठनेका इरादा किया तो मालिकमकानने उसी वक्त उनका हाथ पकड़ा और कहा—मियां! अभी दस भी नहीं बजे और तुमने चलता-धन्धा किया। मेरे सिरकी कसम, दो-चार छींटे तो और पियो। देखो तो आज मिर्जाने क्या अच्छा कवाम बनाया है। जब बारह बजे तो खिदमतगारने आकर कहा कि रात दो पहरसे ज्यादा आयी। महलमें तशरीफ ले चलिये, खाना ठण्डा होता है। हंसकर कहने लगे कि आज तो बड़ी जल्दी बारह बज गये, हमें तो अभी नशा भी न हुआ। खुदा-खुदा करके किश्ती सामनेसे उठी और लड़खड़ाते हुए महलमें दाखिल हुए। दस्तरख्वान बिछा, खाना खाया। फिर हाथ-मुंह धोकर पान खाते हुए पलंगपर गये।"

## संसारका आठवां आश्चर्य

टर्कीके मरोस्वासटेल नामक नगरमें हाल हीमें एक सङ्गीत-कूपका भग्नावशेष मिला है, जिसने संसारके आठवें आश्चर्यकी याद फिरसे ताजा कर दी है।

उन्नीसवीं सदीके विश्वविख्यात निर्माणकला-मर्मज्ञ और अन्वेषक हङ्गरी-निवासी पीटर बोडोरने यह कुआं बनाकर दुनिया-भरके इञ्जीनियरोंको चक्करमें डाल दिया था। कुंएके भीतर एक बहुत बड़ा कड़ाहा था जिसमें तीन हजार घड़े पानी समा जाता था। नीचेसे जो सीढ़ियां चलती थीं वे एक गुम्बद बना देती थीं जो खम्भोंपर खड़ा हुआ था। गुम्बदके ऊपर एक लोह-प्रतिमा बनी हुई थी जिसके भीतर वाद्य-यन्त्र छिपा हुआ था। जल-प्रवाह किसी अज्ञात उपायसे जल-तरङ्गकी मधुर तानोंसे छ-सात मीलकी परिधिके वातावरणको मुखरित कर देता था।

पीटर बोडोर बचपनसे ही निर्माणकलामें बड़ा निपुण था। खेल-खेलमें उसने एक पवनचक्की बनायी थी जिसमें गेहूं पिसा करता था। उसने लकड़ीका एक ऐसा पुल तैयार कराया था जिसमें कहीं कील-कांटेका उपयोग नहीं किया गया। एक दूसरे अन्वेषणने उसे सीधे जेल पहुंचा दिया। अन्य प्रतिभाशाली कलाविदोंके समान वह भी झक्की था। दिल्लगी-दिल्लगीमें उसने अपनी सीढ़ियोंके नीचे एक छापाखाना तैयार किया जिसमें जाली नोट तैयार होते थे। इसमें विलक्षणता यह थी कि बोडोरको हाथ लगानेकी जरूरत भी न होती थी। कोई भी आगन्तुक जब सीढ़ियोंपर पैर रखता था तो पैरोंके दबावसे दस फ्लोरिनका नोट छपकर दूसरे कमरेमें निकल आता था। अपनी पैरवीमें बोडोरने इसी बलपर कहा कि अपने हाथसे मैंने एक नोट भी तैयार नहीं किया। पहले उसे बीस वर्षका कठोर कारादण्ड हुआ, पर बादमें न्यायाधीशने उसकी प्रतिभापर विमुग्ध होकर सजा माफ कर दी।

सङ्गीत-कूपके निर्माणके कई वर्ष उपरान्त आंधीमें वह प्रतिमा ठड़ गयी और वाद्य-यन्त्र खराब हो गया। बोडोरने बिगड़कर उसकी मरम्मतसे इनकार कर दिया और इस रहस्यको अपने साथ कब्रमें ले गया। अब टर्की सरकारने इसके पुनर्निर्माणकी ओर ध्यान दिया है और एक इञ्जीनियरने उसकी बारीकियोंको समझ लिया है। निकट भविष्यमें जब यह कुंआ तुर्की गीत अलापने लगेगा तो उसके अनोखेपनके आगे 'दीवारेकहकहा' और 'चन्द्रकान्ता सन्तति' के तिलस्मी कुंएंकी कपोलकल्पित कथायें फीकी पड़ जायेंगी।

## क्या महापुरुषोंकी जीवनियोंकी कोई उपयोगिता नहीं है?

महापुरुषोंकी जीवनियां पढ़नेसे वास्तवमें कोई लाभ होता है या नहीं, इस सम्बन्धमें पाश्चात्य देशोंमें अब वादविवाद चलने लगा है। बहुत-से लोगोंके मनमें यह शङ्का उत्पन्न हो गयी है कि चूंकि महापुरुषोंकी सच्ची जीवनियोंमें उनके जीवनकी बहुत-सी तुच्छ, हास्यास्पद तथा मूर्खतासे भरी बातोंका समावेश रहता है, इसलिए नौजवान लड़कोंपर उनका अच्छा प्रभाव पड़नेके बदले हानिकर सिद्ध हो सकता है। एक फ्रेञ्च लेखकने इस सम्बन्धमें विवेचन करते हुए लिखा है कि महात्माओंके जीवन-चरित्रोंका महत्त्व उसमें वर्णित छोटी-मोटी घटनाओंपर निर्भर नहीं करता। वह लिखता है—

"इसमें सन्देह नहीं कि जीवनियां हास्यास्पद घटनाओंके वर्णनसे भरी होती हैं। उदाहरणके लिए जब हम डार्विनका जीवन-चरित्र पढ़ते हैं तो हमें बहुत-से स्थानोंपर हंसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आये बिना नहीं रहती और हम उस जगत्-मान्य मनीषीको सिड़ी समझने लगते हैं। डार्विनके सम्बन्धमें कहा जाता है कि एक बार उसने अपने दायें हाथकी मुट्ठीमें बड़ी उत्सुकतासे एक दुष्प्राप्य तितली पकड़ी, और दूसरी मुट्ठीमें भी एक और इसी तरहकी तितली पकड़ ली; इसके कुछ ही देर बाद उसकी दृष्टि एक तीसरी तितलीपर पड़ी। उसका निरालापन देखकर उस जीवशास्त्रवेत्ताका मन उसे भी पकड़नेको ललचाया। पर पकड़े कैसे! अचानक उसका माथा ठनका और उसने किसी एक मुट्ठीमें बंधी हुई तितली अपने मुंहमें डाल ली और तीसरीकी ओर लपका। पर मुंहमें डाली हुई तितलीने अपनी अम्लरसात्मक बीट उसके गलेके नीचे डाल दी जिसके फलस्वरूप डार्विनको ऐसी जबर्दस्त खांसी आयी कि उसे तीनों तितलियोंसे हाथ धोना पड़ा। इसी प्रकार एमर्सनकी जीवनीमें इस बातका उल्लेख पाया जाता है कि एक बार एक बछड़ेको, जो काबूसे बाहर हो गया था, एमर्सन अपने लड़केकी सहायतासे खींचतानकर एक खलिहानके भीतर ले जानेकी चेष्टा कर रहा था। बाप धकेलता था और लड़का उसे खींचता था, पर बछड़ा हठपूर्वक अपने पांवोंको अड़ाकर ज्योंका त्यों डटे रहनेकी चेष्टा कर रहा था। इतनेपर एक आयरिश नौकरानी वहां आयी और बाप-बेटेको पशोपेशमें पड़ा हुआ देखकर मुसकरायी और बछड़ेके मुंहके भीतर प्यारसे अपनी उंगली डालकर उसे चुमकारकर शान्तिपूर्वक खलिहानके भीतर ले गयी। उसी रात एमर्सनने अपनी डायरीमें लिखा—"मैं ऐसे व्यक्तियोंको पसन्द करता हूं जो किसी कामको करना जानते हैं।" लिङ्कन स्टिफेन्सके सम्बन्धमें कहा जाता है कि एक बार लड़कपनमें अपनी घुड़सवारीकी कला दिखानेके उद्देश्यसे उसने अपनी बहनोंको औंधे लिटाकर उनके ऊपर पांव रखा। उसके पिताने उसे धमकाते हुए जब कारण पूछा तो उसने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया—'पर इसमें दोष क्या है! वे केवल लड़कियां ही तो हैं!' इस प्रकारके और भी बहुत-से उदाहरण श्रेष्ठ पुरुषोंकी जीवनियोंसे दिये जा सकते हैं।

"पर इस तरहकी तुच्छ हास्यास्पद घटनाओंके वर्णनमें ही जीवनी समाप्त नहीं हो जाती। उसका उद्देश्य अत्यन्त गम्भीर है। वह किसी महापुरुषके व्यक्तित्व, उसके जीवनकी आत्मगत सत्ताके क्रमिक विकासका इतिहास वर्णित करनेका रहता है। वह कब पैदा हुआ, कब स्कूल गया, क्या-क्या उपाधियां उसने प्राप्त कीं, ये सब बाहरी बातें विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं समझी जानी चाहिए। बाहरी तथ्योंके पर्देमें महात्माओंकी जो महत्ता छिपी रहती है उसका विश्लेषण हम जीवनियोंमें पाते हैं। इसके अतिरिक्त जीवनी पढ़नेसे एक दूसरा आनन्द हमें प्राप्त होता है। वह यह कि जीवनके जिन अनुभवोंसे होकर हम सबको गुजरना पड़ता है उनका सामना महापुरुषोंने किस प्रकार किया। इससे एक प्रकारकी सान्त्वना और सहानुभूति हमें प्राप्त होती है। मान लिया जाय, कोई आदमी कानसे ऊंचा सुननेके कारण अपनी प्रतिभाके विकाससे हताश हो गया है। जब वह जर्मनीके सुप्रसिद्ध सङ्गीताचार्य बेठोफेनकी जीवनी पढ़ता है तो उसे यह बात जानकर तसल्ली होती है कि उसने अपनी नवीं 'सिम्फानी' (जिसका आज सङ्गीत-संसारमें इतना मान है) तब रची थी जब वह बज्र-बहरा हो गया था और अपने सङ्गीतकी एक तान भी सुननेके योग्य न था। प्रोफेसर एडविन फ्रास्ट अन्ध होनेपर पचीस वर्ष तक वर्कर्स आवजर्वेटरीमें रहकर संसारको तारोंकी खबर देता रहा। आंखसे बिलकुल न देखनेपर भी गणितके हिसाबसे वह ग्रह-नक्षत्रोंकी गतिसे संसारको परिचित कराता रहता था। स्वास्थ्य खराब होनेसे कोई व्यक्ति हताश हो गया हो तो वह इस बातसे सन्तोष प्राप्त कर सकता है कि डिकन्स, डार्विन, डिजराएली, कार्लाइल, एमर्सन, आदि मनीषियोंका स्वास्थ्य नष्ट हो जानेपर भी वे अपनी अमर कृतियोंसे संसारको आप्यायित करते रहे। रानी एलिजाबेथने अपनी राजनीतिक योग्यताके कारण संसारमें ख्याति प्राप्त कर ली है। पर उसके स्वास्थ्यकी बात यदि पूछी जाय तो अन्यान्य बहुत-सी बीमारियोंके अतिरिक्त वह उपदंशकी बीमारीसे तङ्ग थी। गरीबीके बहुत-से उदाहरण पेश किये जा सकते हैं। चार्ल्स लैम्ब क्लर्कीसे अपना पेट पालता था, मेथ्यू आर्नल्ड एक सेकेण्डरी स्कूलकी इन्स्पेक्टरी करता था, और बड़ी मुश्किलसे अपना खर्च चलाता था।

"महापुरुषोंकी जीवनियोंसे वीरताके जो उदाहरण मिलते हैं वे सबसे अधिक उत्साहवर्धक और शिक्षाप्रद हैं। इन सब बातोंसे प्रमाणित होता है कि जीवन-चरित पढ़नेमें हानिकी अपेक्षा लाभ बहुत अधिक होते हैं।"

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## विनोदिनी-मनूभाई विवाह

"भीषण संवाद! युवक-युवतियां किस प्रकार पागल बनती जा रही हैं!!"

अहमदाबादमें श्री मनूभाई पारखके साथ श्री विनोदिनी नागरके विवाहका समाचार सुनकर महात्मा गांधीको कैसी वेदना हुई है, इसका वर्णन श्री महादेव देसाईने 'हरिजन-बन्धु'में इस प्रकार किया है :—

श्रीमती विनोदिनी (श्री मनूभाईकी दूसरी स्त्री)

"अभी हाल हीमें अहमदाबादमें एक विवाह हुआ है। उसका दुःखदायी समाचार सुनते ही महात्माजीके हृदय-पर कठोर आघात लगा। उस समय उनके मुंहसे केवल यही उद्गार निकला—'कैसा भीषण संवाद है!' उस दिन दिन-भर महात्माजीके हृदयमें यह संवाद सुईकी तरह चुभता रहा। रातमें विश्रामके समय सहसा उनके मुंहसे ये उद्गार फिर फूट पड़े--'हम लोग किधर जा रहे हैं? ये युवक-युवतियां किस प्रकार पागल बन रही हैं? जिस स्त्रीका पति स्वेच्छापूर्वक दूसरी स्त्रीसे विवाह करता है उसकी पहली स्त्रीके दुःखकी कल्पना नहीं की जा सकती। मनमें जो आवेश आवे उसीके वशीभूत हो जाना हमें पश्चिमीय सभ्यता सिखला रही है।'"

युवक-समाज भविष्यकी आशा है। किन्तु अपने अल्हड़-पन और अनुभव-शून्यताके कारण वह उग्रताकी प्रचण्ड लहरोंमें बह जाता है। इनके मार्गको आवश्यकतानुसार सरल करना चाहिए। आवश्यकतानुसार इन्हें उत्तेजन मिलना चाहिए। युवकोंकी सामाजिक और राजनीतिक प्रवृत्ति हमारे प्रेम, सहानुभूति और सक्रिय साहाय्यकी अधिकारिणी है, किन्तु इतना होते हुए भी हम विनोदिनी-मनूभाई विवाहसे सहानुभूति नहीं दिखला सकते। और सहानुभूति किस लिए? क्या कोई पराक्रम किया है? समाजके लिए किसी प्रकारका बलिदान किया है? कौन-से कष्ट सहे हैं? स्त्रियों अथवा पीड़ितोंके लिए क्या कोई विशिष्ट कार्य किया है? फिर सहानुभूति किस लिए? एक स्त्री रहते दूसरीसे विवाह करनेको हम सुधार नहीं कहते। ऐसी झूठी सहानुभूतिसे युवकोंके आदर्श और भावनायें कलुषित हो जायेंगी। जो अपनेमें हैं, जिनकी धारणायें भ्रान्त नहीं हुईं, जो कामोन्मादके अभिशापसे सन्त्रस्त नहीं हैं और जिनके विवेकने साथ नहीं छोड़ा वे कभी भी ऐसी सलाह न देंगे कि स्त्री-बच्चोंके रहते आप केवल वासनाकी तृप्तिके लिए समाजके पवित्र नियमोंका उल्लङ्घन करें। श्री विनोदिनी और मनूभाई पारखकी कहानीमें और कौन-सा रहस्य छिपा है? विनोदिनी कभी श्रीमती शारदा बहनसे मिली भी नहीं; उनसे उनके सुख-दुःखकी बातें नहीं कीं; तिसपर भी वह यह कहनेका दम भरती हैं कि श्रीमती शारदा बहनका वैवाहिक जीवन दुःखमय

श्री मनू भाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



था। किन्तु श्रीमती शारदा बहन कहती हैं कि मेरा संसार सोनेका था; मैं सदा सुखी थी। उच्च शिक्षा-प्राप्त युवक-युवतियोंको यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि उच्च शिक्षणसे भी उन्हें परिपक्व ज्ञानजनित अनुभव प्राप्त नहीं हो सकता। इसकी शिक्षा तो उन्हें अनुभवी समाज-सुधारकों-से लेनी होगी। विनोदिनी बहनसे भी हम यही कहते हैं कि जो कुछ हुआ सो हुआ; अब उन्हें अपनी मिथ्या अन्तर्प्रेरणा-की दुहाई न देनी चाहिए, बल्कि अपने दुष्कृत्यको भुलाकर दुखी माता और श्रीमती शारदा बहनको सान्त्वना देनी चाहिए। विवाहकी कहानी नीचे दी जाती है :—

श्री मनूभाईकी पहली स्त्री श्रीमती शारदा देवी

गत ४ अगस्तको अहमदाबादमें श्रीमती विद्यागौरी नीलकण्ठकी पुत्री कुमारी विनो-दिनीने श्री मनूभाई लालभाई पारखके साथ शादी कर ली है। विवाहके पहले वर-वधू, दोनोंने सिख मत ग्रहण कर लिया था और इसी मतके अनुसार दोनोंका विवाह भी हुआ। श्री मनूभाईकी पहली स्त्री श्रीमती शारदा देवी अभी जीवित हैं। उनकी उम्र लगभग २९ सालकी होगी और तीन बच्चे जीवित हैं।

श्री विनोदिनी प्रसिद्ध समाज-सुधारक और गुजराती लेखक सर रमन भाईकी पुत्री हैं। उन्होंने बम्बई विश्वविद्या-लयसे बी० ए० पास किया है और अमेरिकाकी भी बहुत-सी डिगरियां प्राप्त की हैं। उन्होंने अमेरिकाका व्यापक रूपसे भ्रमण भी किया है और अभी हाल हीमें जापानका दौरा करके वापस आयी हैं। श्रीमती विनोदिनी अहमदाबाद म्युनिसिपल गर्ल्स हाई स्कूलकी प्रधानाध्यापिका हैं। विवाह-से एक दिन बाद उन्होंने स्कूलबोर्डके एडमिनिस्ट्रेटिव अफसर श्री प्राणलाल कृपाराम देसाईको एक पत्र लिखा था कि 'श्री मनूभाई पारखके साथ मेरा विवाह हो जानेसे मैं अहमदा-बादसे बाहर जा रही हूं। आशा है, आप मुझे एक महीनेकी छुट्टी (जिसकी मैं हकदार हूं) और छ महीनेकी अलावा छुट्टी सय तनखाहके मंजूर करेंगे।' श्रीमती विनोदिनी देवी जातिकी ब्राह्मण हैं। गत सत्याग्रह आन्दोलनमें उन्होंने क्रियात्मक योगदान दिया था और गिरफ्तार हुई थीं।

श्री मनूभाई जातिके बनिया हैं और बी० ए० पास हैं। वे बीसा ओसवाल जैन हैं। 'अहमदाबाद रेडियो कम्पनी'के वे सञ्चालक हैं। पिछले स्वदेशी आन्दोलनमें उन्होंने क्रियात्मक भाग लिया था।

श्रीमती कुसुम ठाकुर—आपने कार्वे विश्वविद्यालयकी जी० ए० डिग्री प्राप्त की है और अंगरेजी भाषामें विशेष योग्यताका परिचय दिया है जिसके लिए आपको एक पदक प्रदान किया गया है। उच्च विषयोंके अध्य-यनके लिए हालहीमें आप अमेरिका गयी हैं।

कहते हैं कि विवाहके पश्चात् नव-दम्पति 'हनीमून' बितानेके लिए अहमदाबाद छोड़ गये। इस सम्बन्धमें बादकी खबरोंसे पता लगा है कि दोनों ही, वर-वधू इस समय बम्बईमें हैं। जिस समय स्कूल बोर्डके एडमिन्स्ट्रेटिव अफसर श्री प्राणलाल कृपाराम देसाईने श्रीमती विनोदिनीका पत्र उनकी माता श्रीमती विद्यागौरीके पास पहुंचवाया, सुनते हैं, उन्हें मर्मान्तक वेदना हुई। जानकारोंका कहना है कि उन्होंने यह शादी न करनेके लिए अपनी लड़कीको खूब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समझाया था। इस विवाहको लेकर समाज-सुधारकोंमें खासी हलचल मच गयी है। विश्वस्त सूत्रसे पता लगा है कि स्कूल बोर्डके एडमिनस्ट्रेटिव अफसर श्री प्राणलाल देसाई गर्ल्स हाईस्कूलमें किसी दूसरी महिलाको प्रधानाध्यापिकाके पदपर प्रतिष्ठित करना चाहते हैं; किन्तु उनके इस विचारसे हाईस्कूलकी बालिकाओंमें विक्षोभ फैल गया है। श्रीमती विनोदनीके वियोगमें कितनी ही छात्राओंकी आंखोंसे आंसू छलक पड़े थे। अपने विवाहके सम्बन्धमें श्रीमती विनोदिनीने स्कूलकी छात्राओंके नाम एक पत्र प्रेषित किया था जिसमें उन्होंने लिखा था :—

"मैंने तुम सबोंसे अनेक बार कहा है कि अन्तरात्माकी पुकारपर ध्यान देकर सत्यका अनुसरण करना चाहिए। लोक-निन्दासे कभी भयभीत न होना चाहिए। मैंने अन्तरात्माकी प्रेरणाका आदर करके यह विवाह-सम्बन्ध किया है। मुझे भी इसका परिणाम भोगना होगा। मुझे आशा है कि मेरे सम्बन्धमें तुम अन्यथा भाव न लाओगी। पिछले पौने चार वर्षोंमें मैंने तुम्हारे पास रहकर बहुत-कुछ सीखा है और मैं जानती हूं कि मैंने तुम्हें जो शिक्षा दी है उसे तुम भी न भूलोगी।"

ता० १६ अगस्तको अहमदाबाद गर्ल्स हाईस्कूलकी भूतपूर्व और वर्तमान छात्राओं-की सभा श्रीमती नलिनी दलालकी अध्यक्ष-तामें हुई थी जिसमें श्रीमती विनोदिनीको ऐसे साहसपूर्ण और स्वतन्त्र कार्यके लिए बधाई दी गयी और उनके प्रति स्नेह प्रकट किया गया। एक प्रस्तावमें कहा गया कि समाज-सुधारकी दृष्टिसे विनोदिनी-मनूभाईके विवाहका स्वागत करते हुए हम इस बातकी आशा करती हैं कि नव-दम्पतिके समक्ष समाजके कोप और त्रासकी जो अग्नि-परीक्षा रखी गयी है उसमें वे सफल होंगे। छात्राओंको आशा है कि श्रीमती बिनोदिनी स्कूलमें अपने पदपर पुनः विराजमान हो सकेंगी। छात्राओं-ने म्युनिसिपैलिटीसे प्रार्थना की है कि श्रीमती विनोदिनी बहनने गर्ल्स हाई स्कूलकी उन्नति करनेमें जो अपना अमूल्य समय व्यय किया है उसे ध्यानमें रखते हुए म्युनिसिपैलिटी वर्तमान घटनाको भुलाकर पाठशालाकी उन्नतिके लिए उनकी सेवाओंको पूर्ववत् स्वीकार करे।

मनूभाई और विनोदिनीके विवाहसे न केवल अहमदा-बादमें, बल्कि समस्त गुजराती समाजमें खासी हलचल मच गयी है। बड़ेसे बड़े सुधारक और कट्टरपन्थी इस सम्बन्धका घोर विरोध कर रहे हैं। देशी भाषाके प्रायः समस्त पत्रोंने इस सम्बन्धकी निन्दा की है।

विवाहके दिन श्री विनोदिनी और श्री मनूभाई मेहता अहमदाबादके सिख गुरुद्वारेमें गये थे। वहां श्री मनूभाईने अपना नाम मानसिंह और कुमारी विनोदिनीने अपना

यूरोप और ब्रिटिश आइल्सका व्यापक भ्रमण करनेके उद्देश्यसे पचीस युवतियां लन्दन पहुंची है। उनमेंसे कुछ इस चित्रमें दिखायी देती हैं। यह चित्र लन्दनके विक्टोरिया स्टेशनपर लिया गया था।

नाम विनोद कौर बतलाया था। बादमें शादी हुई थी। इस सम्बन्धमें अहमदाबाद सिख गुरुद्वारा कमेटीके प्रमुख मि० मलिकका कहना है कि 'चूंकि गुरुद्वारेके पुजारियोंने यह विवाह कराया है, इसलिए यह विधि पुरःसर नहीं है। अभी तक गुरुद्वारेमें ऐसे किसी भी पुरुषका विवाह नहीं कराया गया जिसकी पत्नी और बच्चे मौजूद हों। यह विवाह सिख धर्मपर कलङ्ककी छाप है। किन्तु सच तो यह है कि यह विवाह नियमानुकूल हुआ ही नहीं।' इसी बातपर श्रीमती शारदा बहनके सगे-सम्बन्धी मनूभाईके विवाहको गैरकानूनी ठहराने-के लिए अदालतकी शरण लेना चाहते हैं। सिख-धर्मानुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जब विवाह होता है तो उस समय पांच सिखोंकी उपस्थिति अनिवार्य है। वरके दाढ़ी होनी चाहिए और पासमें कृपाण तथा ग्रन्थसाहब, किन्तु श्री मनुभाईके पास इन सब आवश्यक वस्तुओंमें एक भी न थी।

आमोद-प्रमोदके लिए इस प्रकार विवाहका प्रहसन करके पूर्व निश्चयानुसार दोनों ही व्यक्ति काठियावाड़ मेलमें दूसरे दर्जेके अलग-अलग डब्बोंमें सीटें रिजर्व कराकर बम्बई-के लिए प्रस्थान कर गये। कहा जाता है कि अहमदाबादसे प्रस्थान करते समय विनोदिनीके पास पांच-छ हजार और श्री मनू भाईके पास दो हज़ार रुपये थे।

श्रीमती जयश्री बेन—आप बम्बई विश्वविद्यालयकी 'फेलो' निर्वाचित की गयी हैं।

बम्बईमें एक पत्र-प्रतिनिधिके पूछनेपर श्री विनोदिनीने कहा—मैं चाहती हूं कि वर्तमान समाजकी नींव ढाह दी जाय और उसके स्थानपर नवीन समाजका भवन निर्माण किया जाय। मेरे विवाहका प्रभाव समाज-पर अवश्य पड़ेगा, और माता-पिता अपने लड़के-लड़कियोंका अनमेल विवाह करनेके पहले चौंकेंगे जरूर। एक दूसरे प्रश्नके उत्तरमें उन्होंने कहा कि श्री मनूभाईने शादी हो जानेके बाद अपनी स्त्रीसे कभी प्रेम नहीं किया। उनके विवाहके समय उनकी अनुमति नहीं ली गयी और जब दो व्यक्ति एक-दूसरेको प्यार नहीं कर सकते तो वे एक साथ कैसे रह सकते हैं? मैं श्री मनूभाईको छ बरसोंसे जानती हूं। उनके वैवाहिक जीवनकी दुःखद समस्याको सुलझानेके लिए मैंने उनसे अनेक बार वादविवाद किया और अन्तमें यही तय पाया कि इस प्रकारके कष्टसहनसे श्री मनूभाईका पुनर्विवाह कर लेना अच्छा है।

पत्र-प्रतिनिधिने पूछा—जब आप लोगोंने अपने सुखके विषयमें विचार किया तो क्या यह नहीं सोचा कि इससे मनूभाईकी पहली स्त्रीपर सन्तापके कैसे पहाड़ फटेंगे! उत्तरमें श्रीमती विनोदिनीने कहा—सच बात यह है कि श्रीमती शारदादेवी (श्री मनूभाईकी पहली पत्नी) कभी भी सुखी न थीं। उनका जीवन दुःखमय था। इसका कारण यह है कि श्री मनूभाईने कभी उनसे प्यार नहीं किया और प्रेमहीन जीवन दुःखमय होता है। अतः हमारे सम्बन्धका उनके अनिवार्य दुःखसे कोई सम्बन्ध नहीं। मेरा विश्वास है कि यदि स्त्री-पुरुषमें प्रेम नहीं है तो दोनोंका एक साथ रहना पापाचार है। छ बरस तक लगातार विचार-सागरमें गोते लगाते रहनेपर हमने इस पथपर कदम रखा है। इसे आप लोग जल्दबाजी नहीं कह सकते। समाज जो चाहे कहे, किन्तु यदि आप लोग समाजका मुंह देखेंगे तो सामाजिक उन्नति असम्भव है। श्री मनूभाईने भी अपनी नव-विवाहिता पत्नीके वक्तव्यसे मिलता-जुलता इसी आशयका वक्तव्य दिया है जिसमें उन्होंने कहा है कि 'मेरा वैवाहिक जीवन सुखमय न था।'

श्रीमती मिट्ठू बाई—आप बम्बई विश्वविद्यालयकी पिछली मैट्रिकुलेशन परीक्षामें, अठारह हजार परीक्षार्थियोंमें अंगरेजी भाषामें सर्व प्रथम आयी हैं। इसके लिए आपको डा० दादा-भाई नौरोजी छात्रवृत्ति दी गयी है।

"मेरे प्रेममय संसारमें आग धधकाकर तुम कैसे सुखी रह सकोगी!" ये उद्गार हैं उस हिन्दू कुल-ललनाके, जिसके हृदयके फफोलोंपर कामोन्मादिनी विनोदिनीने अपने स्वार्थमय वक्तव्यका नमक रगड़ा है। जिस समय श्रीमती शारदा बहनकी अन्त-र्वेदनाका चीत्कार सुनायी देता है, पत्थरका कलेजा भी पानी हो जाता है। विनोदिनीके लज्जाहीन वक्तव्यकी ओर लक्ष्यकर श्रीमती शारदा बहन कहती हैं—"मेरा संसार सुखमय न था, ऐसा कहना सरासर अन्याय है। हमारे विवाहके पश्चात् एक भी अभागा दिवस ऐसा नहीं बीता जो हमारे वैवाहिक सुखसे सुखी न हुआ हो। ऐसे असंख्य प्रसङ्ग आये हैं जब हमारे हृदयने पूर्ण सन्तोषके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साथ अनुभव किया है कि हमारा दाम्पत्य जीवन आदर्श है। मेरे पतिदेवके मुंहसे ये शब्द कैसे निकले, इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती। हमारे विवाहके समय मेरे पतिदेवकी वय १९-२० वर्षकी थी। हमारा यह विवाह-सम्बन्ध हमारी जातिमें आदर्श माना जाता है। विवाहके पश्चात् अनेकों सुप्रसङ्ग आये हैं और मैं नहीं समझती कि मेरे आराध्यदेवके पास उन प्रसङ्गोंका विरोध करनेके क्या कारण हैं। मुझे स्वप्नमें भी यह आशा न थी कि ऐसा भी दुःखद प्रसङ्ग आयेगा। समाचार-पत्रोंमें यह संवाद पढ़कर मेरा हृदय सन्तापकी ज्वालामें जला जा रहा है। मुझे तो अब भी सन्देह है कि समाचार-पत्रोंके वे शब्द मेरे पतिके न होंगे। जो प्रेम और सद्भाव मेरे पतिने मेरी ओर प्रदर्शित किये थे उनपर विचार करते ही मुझे तो यह जान पड़ता है कि उनका सरल स्वभाव किसी स्वार्थीका शिकार बन गया है। विनोदिनीके साथ उनकी मैत्रीकी दिशा इस प्रकार बदल जायगी, इसकी मैंने कल्पना भी न की थी। नगरकी स्त्रियोंमें अग्रगण्य और समाज-सुधारके कार्योंमें प्रमुख भाग लेनेवाले सुधारक कुटुम्बकी कन्या 'सुधार' नामको इस प्रकार कलङ्कित करेगी, यह मुझे पहले मालूम न था। मुझे विश्वास है कि अभी नहीं तो थोड़े समय बाद मेरे पतिदेवको अपनी भूल मालूम होगी। मेरा जीवन तो अब भी आशा-भरा है। मेरी आंखें मेरे प्राणाधिक पतिदेवपर हैं।"

विनोदिनी-मनूभाईका विवाह-सम्बन्ध हुए यद्यपि काफी दिन बीत चुके, फिर भी इस विषयमें अब तक काफी चर्चा सुनायी पड़ रही है। अहमदाबादमें युवकोंका ऐसा भी दल है जो भ्रान्त भावनाओंका शिकार बनकर कामोन्मत्त विनोदिनीके इस दुस्साहसकी प्रशंसा कर रहा है। उन्होंने सभा करके विनोदिनी-मनुभाई-सम्बन्धको उचित करार देनेका आयोजन किया है। अहमदाबादमें इस समय खासी हलचल मची हुई है। श्री विनोदिनीकी बहन श्री सौदामिनी कलकत्तेके गुजराती समाजके एक प्रमुख व्यक्ति श्री गगन-विहारी मेहतासे ब्याही हुई हैं। हमने टेलीफोन द्वारा उक्त विवाहके सम्बन्धमें उनके विचार जानने चाहे थे, किन्तु उन्होंने अपनी माताके आदेशानुसार इस सम्बन्धमें किसी प्रकारका वक्तव्य देनेसे इनकार किया। श्री विनोदिनी कई बार कलकत्ता भी आ चुकी हैं। यहांके गुजराती समाजकी महिलाओंने दो बार उनका अभिनन्दन किया है।

## भारतीय महिलाओंमें कलाका विकास

भारतीय महिलाओंमें दिन पर दिन क्रान्तिकारी जागृति होती जा रही है, इस बातसे कोई भी विज्ञ पुरुष इनकार नहीं कर सकता। क्या साहित्य और कला, क्या राजनीति और समाज-नीति, सभीमें उनका प्रवेश हो रहा है और वे अपना कृतित्व प्रदर्शित कर रही हैं। सीने-पिरोने, चित्रकारी, शिल्पकला और मूर्ति-निर्माण-कलामें भी उन्हें पूर्ण कौशल प्राप्त होता जा रहा है। आगामी नवम्बर मासमें बम्बईका 'गुजराती स्त्री-सहकारी मण्डल' एक कला-प्रदर्शिनी करनेका आयोजन कर रहा है। यह प्रदर्शिनी चार भागोंमें विभक्त होगी—सीना-पिरोना, चित्रकला; शिल्प-कला और मूर्ति-निर्माण-कला। इसमें केवल महिलाओं द्वारा बनायी गयी वस्तुयें ही प्रदर्शनके लिए रखी जायंगी। शिल्प-कला विभागमें केवल ऐसी वस्तुयें प्रदर्शनके लिए रखी जायंगी जो विशुद्ध स्वदेशी हों।

श्रीमती कपिला गौरी देसाई—आप भड़ौच जिला बोर्डकी सदस्या नामजद हुई हैं।

इस वर्षके आरम्भमें भी एक ऐसी ही प्रदर्शिनी हुई थी जिसमें भारतीय महिलाओंकी कलात्मक सुरुचि और विकास-का सुन्दर आभास मिलता था। स्त्री-शिक्षाकी प्रगति और महिलाओंकी जागृतिसे सम्बन्ध रखनेवाले आन्दोलनोंसे यह आशा अब और भी स्पष्ट होती जा रही है कि भारतकी देवियां सर्वाङ्गीण उन्नतिके मार्गपर अग्रसर होते हुए भारतकी सांस्कृतिक और कला-सम्बन्धी परम्पराको सुरक्षित रखेंगी।

## शिक्षिता स्त्रियोंके लिए काम

हिन्दू समाजमें ऐसी बहुत-सी सामाजिक कुरीतियां और अन्ध-विश्वास फैले हुए हैं जिनका उच्छेद स्त्रियोंके सह-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



योगके बिना हो ही नहीं सकता। स्त्रियोंकी अज्ञता और कुसंस्कारके कारण ही बहुत-से शिक्षित परिवारोंमें भी सामाजिक कुप्रथायें बद्धमूल बनी रहती हैं और उनका सहज ही निराकरण नहीं हो पाता। आज यदि स्त्रियोंको इस बातका सम्यक् बोध हो जाय कि बालविवाह, अनमेल विवाह और वृद्ध-विवाहके कारण कितनी भयङ्कर हानियां हो रही हैं और सामाजिक जीवन कितना निरानन्द और नैराश्यपूर्ण बनता जा रहा है तो बातकी बातमें समाजसे ये बुराइयां दूर हो जा सकती हैं। किन्तु स्त्रियोंके सहयोगके अभावमें और अनेक अवसरोंपर तो उनके हठ और दुराग्रहके कारण ही बहुत-से शिक्षित और समाज-सुधारक पुरुष अपने परिवारमें भी अभिवाञ्छित सुधार नहीं कर पाते। हमारे देशमें समाज-सुधारकी गति जो इतनी मन्द हो रही है, इसका यही एक प्रबल कारण है। सामूहिक रूपसे समाज-सुधार बौद्धिक उन्नति, राजनीतिक स्वतन्त्रता, साम्प्रदायिक एकता और नारी जातिकी पद-मर्यादाके लिए शिक्षित महिलायें कार्य करें यह सर्वथा वाञ्छनीय है, किन्तु इसके साथ ही प्रत्येक शिक्षित महिलाको अपने हृदयसे यह प्रश्न करना चाहिए कि व्यक्तिगत रूपमें उसने देश और समाजके लिए क्या किया है? बहुत-सी महिलायें कहा करती हैं कि हम क्या करें, हमारी शक्तियां इतनी परिसीम हैं कि हम विशेष कुछ कर ही नहीं सकतीं। जो महिलायें इस प्रकार अपनी सामर्थ्यहीनता बताकर अपनी विवशता प्रकट करती हैं उन्हें अपनी ओजस्विनी वाणी द्वारा प्रोत्साहन देते हुए श्रीमती सरोजनी नायडूने मद्रासकी एक महिला-सभामें इस प्रकार कहा है:—"क्या आपके चतुर्दिक आपके करने योग्य काम पड़े हुए नहीं हैं? क्या अनाथ बच्चे आपकी सदय सहायताके लिए करुण-क्रन्दन नहीं कर रहे हैं? क्या बाल-विधवाओंका विलाप युग-युगान्तरसे आपके हृदय-द्वारपर आघात पहुंचाते हुए यह नहीं कह रहा है कि 'हमारे साथ अन्याय हुआ है। क्या आपकी पीढ़ी हमें दासताके पाशसे मुक्त करेगी?" क्या इस देशकी अशिक्षित स्त्रियां नीरव किन्तु प्रबल भावसे आपको आह्वान नहीं कर रही हैं? बहनो, आप हम लोगोंकी अपेक्षा विशेष भाग्यशालिनी हैं, आपके हाथोंमें ज्ञानकी प्रज्वलित उल्का अथवा क्षीणोज्वल दीपशिखा है, क्या आप हमारे अज्ञानपथको ज्ञानालोकसे प्रकाशित नहीं करेंगी?' क्या आपके देशमें ऐसे ग्राम नहीं हैं जिनकी दशामें सुधार करने तथा उनकी प्राथमिक आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए आपके परामर्श, सहायता, यत्न, और पथप्रदर्शनकी आवश्यकता हो? क्या ऐसे छोटे-छोटे बच्चे नहीं हैं जिनके माता-पिता होते हुए भी उनके पास ऐसे साधनोंका अभाव है जिनसे उनकी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नतिकी ओर ध्यान दिया जा सके? देशमें जो महान् स्वदेशी आन्दोलन चल रहा है उसके लिए क्या त्यागी प्रचारकोंकी आवश्यकता नहीं है? राष्ट्रीय आदर्शकी सृष्टिमें प्रत्येक स्त्रीको भाग होना चाहिए। मैं चाहती हूं कि भारतकी नारियोंमें एक महान् और प्रचण्ड शक्तिशाली राष्ट्रका आत्मबोध हो और उनकी शक्तियां सार्वजनीन कल्याणमें संलग्न हों।"

श्रीमती इक़बाल्लुन्निसा बेगम बी० ए०—आप इस समय लीड्स (इङ्गलैण्ड) में अध्ययन कर रही है। १० अगस्तको स्वीज़रलैण्डमें 'गर्ल गाइड्स' का जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था उसमें भारतका प्रतिनिधित्व आपहीने किया था।

श्रीमती राधाप्यारे माथुर—आप 'एशा महिला क्लब' की मंत्रिणी और आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपने अपनी अदालतमें वकीलोंको हिन्दीमें बहस करनेकी स्वीकृति देकर अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है।

## पत्नी-निर्वाचन

शिकागो डाइवोर्स कोर्टके जज जोसेफ सबाथका कहना है कि जब कोई पुरुष किसी कामिनीके चञ्चल कटाक्षोंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विद्ध होकर उसके साथ विवाह करता है तो दाम्पत्य जीवन-में कटुता आये बिना नहीं रहती। इस सम्बन्धमें वे इस बातको नहीं मानते कि "कालेजमें शिक्षा पायी हुई नव-युवतियां सबसे बुरी पत्नियां बनती हैं।" उनका कहना है कि "यदि योग्य वरके साथ कालेजकी युवतीका विवाह हो तो दाम्पत्य जीवन अधिक सुखमय हो जाता है और कालेजमें शिक्षा पायी हुई युवती अन्य श्रेणीकी युवतीसे श्रेष्ठ सिद्ध होती है। विषमता, कटुता और दैनिक कलह उस समय उत्पन्न होता है जब किसी और बातका ख्याल न कर पुरुष ऐसी स्त्रीसे विवाह करता है जिसका केवल बाह्य रूप-यौवन आकर्षक होता है और स्त्री भी केवल बाह्य रूपपर मुग्ध होकर सुन्दर पुरुषसे नाता जोड़ती है। ऐसे सम्बन्धमें यदि प्रारम्भ हीसे कटुता आ जाय तो क्या आश्चर्य? बल्कि आश्चर्य तो तब है जब कटुता न आवे। सच्ची बात तो यह है कि जब पुरुष पढ़ा-लिखा होता है और स्त्री मूर्खा होती है अथवा जब स्त्री पढ़ी-लिखी अप-टू-डेट होती है और पतिदेव निरक्षर भट्टाचार्य और असंस्कृत होते हैं तो रोज ही थुक्का-फजीहत हुए बिना नहीं रहती। पढ़े-लिखे और मूर्खकी पटरी बड़ी मुश्किलसे बैठती है। हां, कभी-कभी शिक्षित पति उदारता-पूर्वक अपनी मूर्खा पत्नीको वरण किये रहते हैं और तलाककी नौबत नहीं आती, क्योंकि मूर्खा यह समझकर सम्बन्ध-विच्छेद नहीं कर सकती कि उसे दूसरा शिक्षित पुरुष कहां मिलेगा और पुरुष अपनी मूर्खा पत्नीपर दया करके उसे ग्रहण किये रहता है।

## चीनमें सुन्दरताका 'स्टैण्डर्ड'

चमड़ेका साफ या गोरा होना ही सुन्दरताकी चरम-सीमा नहीं है। चीनके कियांग्सी प्रान्तके एक कानूनसे पता चलता है कि वहां सुन्दरी कहलानेके लिए कुछ खास-खास शर्तोंको पूरा करना पड़ता है। अब आगेसे कियांग्सी-की चीना कुमारीको वहांकी सरकारके निम्न आदेशोंका पालन करना होगा:—

(१) महिलाओंके घांघरेकी लम्बाई लगभग एड़ी तक होनी चाहिए।

(२) कालर बहुत ऊंचा न हो, बल्कि कालर और गालके बीचकी दूरी डेढ़ इञ्चसे ज्यादा न हो।

(३) आस्तीनें बहुत छोटी न हों; उनकी कमसे कम लम्बाई कुहनी तक हो।

(४) घांघरेके आगे-पीछे जो जगह खुली रहती है वह घुटनेसे ऊपर न हो।

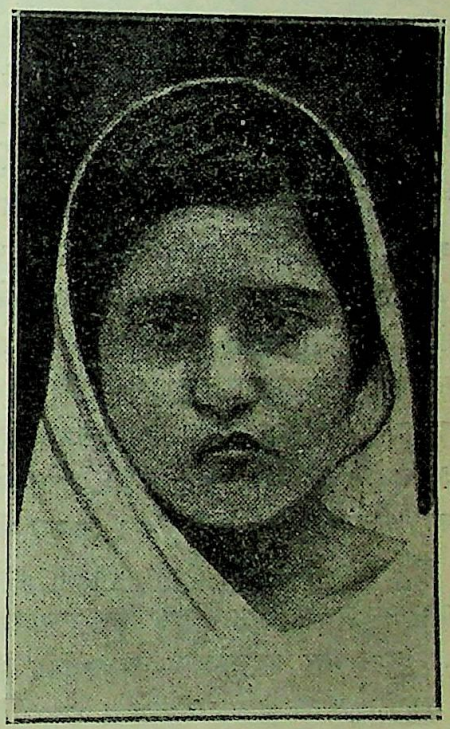

श्रीमती अमृत कौर—आपने आसामकी बाढ़-पीड़ित महिलाओंकी दुर्दशाका समाचार सुनकर यह प्रतिज्ञा की थी कि जबतक उनके कष्ट-निवारणके लिए बम्बईके अधिवासी अन्न-वस्त्रकी सहायता नहीं करेंगे तबतक मैं अनशन करूंगी। अन्तमें आपकी यह प्रतिज्ञा सफल हुई और आपने अनशन भंग किया।

(५) कोई महिला चुस्त कपड़े न पहने।

(६) मोजे जरूर पहने जायं और पैर खुले न रहें।

(७) सब महिलायें पीछेके बाल सवारें और वे बाल गर्दनसे नीचे लटकते न रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## हिन्दू हरिजन पशुसे भी बढ़कर

हरिजन आन्दोलनको तीव्रगतिसे अग्रसर करना परम आवश्यक हो गया है, क्योंकि रूढ़िवादियोंने उन्हें पशुओंसे भी बुरा बना रखा है। राजाओं-जमींदारोंके कुत्ते कितने साफ-सुथरे रखे जाते हैं, परन्तु हमारे ही अङ्ग हरिजन भाई जीवन-भर जानते नहीं कि साफ-सुथरा रहना क्या चीज है। साफ कपड़े पहनना मनुष्यके भाग्यमें है। वे उच्च वर्णवालोंसे बहुत दूर गन्दे स्थानोंमें रहते हैं, जहां उनके सुख-दुःखमें साथ आनेवाला भगवान्‌के सिवा कोई नहीं। इसपर भी बेचारे बेगारमें बुरी तरह जोते जाते हैं और भूखे और नङ्गे रहने पर भी जबर्दस्ती मुफ्तमें काम करनेके लिए बाध्य किये जाते हैं। उनके दुःख और दुर्दशाका अन्त यहांतक ही नहीं होता। जब कोई भ्रान्त धारणा उच्चवर्णीय हिन्दुओंमें स्थान ग्रहण करती है तो इन बेचारोंको उसका बुरी तरह शिकार होना पड़ता है। वे अपने आपको अव्यवस्थित समाजमें पाते हैं और कभी-कभी अपने प्राणोंसे भी हाथ धो बैठते हैं। इस बातका प्रमाण अभी हालही में बोरसद ताल्लुकेमें प्राप्त हुआ है, जो महात्मा गांधीके जन्मस्थान गुजरातका एक अङ्ग है। वहांपर कुछ पशुओंको भयानक बीमारी हो गयी। उच्चवर्णीय हिन्दुओंमें यह कुधारणा उत्पन्न हुई कि हरिजनोंने 'जादू'से काम लिया है। वे बेचारे बुलाये गये और उनसे कहा गया कि 'जादू' को तुरन्त हटाओ। वे जानते भी न थे कि 'जादू' उनके हाथमें है। अपनी विवशता प्रकट करनेपर वे बुरी तरह पीटे गये, जिससे दो-चारके प्राण तक चले गये और उनके निवास-स्थान जला दिये गये। बेचारे अपना भाग्य ठोकते रह गये। इस प्रकारकी सामाजिक दुर्दशा सभ्यताके इस युगमें इस हतभाग्य हिन्दू समाजमें दृष्टिगोचर हो रही है, इसपर भी धर्मरक्षक (?) कहा करते हैं कि ये सुधारक विष फैला रहे हैं, हम लोग तो वर्षोंसे बिना भेदभाव प्रेमपूर्वक जीवन व्यतीत करते चले आ रहे हैं।

## दिल थामकर और अत्याचार सुनिये

हरिजनोंके उत्थानकी ओर शीघ्र ध्यान न दिया गया तो वर्षोंसे पददलित, तिरस्कृत और पीड़ित यह जन-समुदाय सदाके लिए निकम्मा हो जायेगा और हिन्दू समाजकी महान् क्षति होगी। जो रूढ़िवादी कहते हैं कि हम हरिजनोंकी आर्थिक अवस्था सुधारनेमें सुधारकोंके साथ हैं, वे अपने-आपको तो धोखा देते ही हैं, साथ ही समस्त हिन्दू-समाजको धोखेमें डालना चाहते हैं। वे नहीं चाहते कि हरिजन उच्च शिक्षा प्राप्त कर हमारे बालकोंके समान साफ-सुथरे और शिक्षित दिखायी दें। मुंगेर जिलान्तर्गत जमुई नामक स्थानमें एक धोबीका लड़का अंगरेजी पढ़ने लगा। गांववालोंने धोबीकी इस अग्रगतिका तीव्र विरोध किया। अपना हाईस्कूल होता तो कभी निकाल देते, परन्तु सरकारी स्कूल होनेके कारण लाचार थे। बदलेकी दुर्भावनासे यहां तक जोर पकड़ा कि धर्मरक्षक अपने गांवसे चलकर जमुई पहुंचे और वहां स्कूल जानेवाले धोबी बालकपर बुरी तरह प्रहार किया जिससे बेचारेको अकारण ही कष्ट-पीड़ित होना पड़ा। बुलन्दशहर जिलेमें कुछ चमार परिवारोंको ईसाई धर्म ग्रहण कर लेना पड़ा, क्योंकि हिन्दू धर्ममें रहकर वे अपनेको एकदम अरक्षित पाते थे। प्रयागमें कुछ पासियोंने यज्ञोपवीत धारण करना आरम्भ किया था, इसपर उनके जनेऊ ही नहीं छीने गये उन्हें बुरी तरह पीटा भी गया जिससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उन्हें आत्मरक्षाके लिए अदालतकी शरण लेनी पड़ी। कोई भी स्वाभिमानी हरिजन इस प्रकारकी शोचनीय अवस्थामें कब तक रह सकता है। स्वाभिमान जागृत होनेपर हरिजन हिन्दू समाजसे विद्रोह किये बिना न रहेंगे। उस विद्रोहकी अपेक्षा यही श्रेयस्कर है कि उच्च वर्णके हिन्दू स्वेच्छासे अपने हरिजन भाइयोंको मानवोचित अधिकार दें और उन्हें इस प्रकार प्रेमपूर्वक गले लगायें कि वे समझें कि अब तक हमारी दुर्दशा रही, परन्तु अब हमारे बड़े भाई हमारे सुधारके पक्षमें हैं, इसलिए इनके साथ रहकर जीवन यापन किया जाये। हरिजन यदि हिन्दू धर्मको नमस्कार करने लगेंगे तो उच्च वर्णके हिन्दुओंकी क्या गति होगी, यह बात आसानीसे समझी जा सकती है। बुद्धिमानी इसीमें है कि पहलेसे सावधान होकर कार्य किया जाये।

## शिक्षक दूरदर्शी बनें

जो किसी पाठशालाका शिक्षक हो उसे अपनी जिम्मेदारीका पूर्ण ज्ञान रहना चाहिए। उसे यह बात भी ध्यानमें रखनी चाहिए कि वह शिक्षकके पवित्र पदपर इसलिए बिठाया गया है कि जो आवे उसे निस्सङ्कोच शिक्षित बनाकर उसका जीवन नये सांचेमें ढाले और इस तरह अपना मनुष्य-जन्म सफल करे; परन्तु कुछ शिक्षकोंमें भी कट्टरताने बुरी तरह स्थान ग्रहण कर रखा है, जिससे वे अपने पवित्र पदका दुरुपयोग करते हुए नीचतापूर्ण षड्यन्त्र रचते और अध्यापक-पदको कलङ्कित करते हैं। कानपुरके एक म्युनिसिपल स्कूलमें अध्यापकोंने इसलिए छात्रोंसे हड़ताल करायी कि म्युनिसिपल बोर्डके आदेशानुसार उस स्कूलमें हरिजन बालक शिक्षा पानेके लिए भर्ती किये गये थे। छात्रोंमें इस प्रकारका गन्दा प्रचार करनेवाले अध्यापकोंको शर्म आनी चाहिए।

## तालेमें ईश्वर बन्द

जस्टिस शङ्करनारायण रावने मद्रासके एक भाषणमें कहा है कि ईश्वरको तालेके अन्दर बन्द रखकर आप सनातन-धर्मकी रक्षा नहीं कर सकते। यदि ईश्वर ऐसी वस्तु है, जो हरिजनोंके दृष्टिदोषसे ही अपवित्र हो जाती है, तो वह ईश्वर नहीं, कोई विचित्र ईश्वरीय जीव है। जो लोग हरिजनोंको मन्दिर-प्रवेशके अधिकारसे वञ्चित करना चाहते हैं, वे अपनेको ईश्वरसे भी अधिक शक्तिसम्पन्न मान लेते हैं। वे ईश्वरको बन्दी बनाकर स्वयं उसके जेलर बननेका दुस्साहस करते हैं और यह घोषणा करनेमें सङ्कोच नहीं करते कि उनके पास हर्गिज न जाना। भला किसीके दर्शनसे भी कभी ईश्वर अपवित्र हो सकता है, जो अपवित्रोंको अपनी कृपा-मात्रसे पवित्र बनानेवाला है। जिन लोगोंने दुराग्रहवश ईश्वरको तालेमें बन्द कर रखा है, उन्होंने धर्मके सम्बन्धमें बड़ा भारी विश्वासघात किया है। गोस्वामी तुलसीदासजी—जिनकी पुण्य-जयन्ती देश-भरमें गत श्रावण मासमें मनायी गयी—क्या आजकलके सनातनियोंसे कम सनातनी थे, जिन्होंने कहा है कि 'जात-पांत पूछे नहिं कोई, हरिको भजे सो हरिको होई।' एक सच्चे आस्तिक हिन्दूकी यही सम्मति हो सकती है, जब तक कि स्वार्थने उसके मस्तिष्कको विकृत न बना दिया हो और उसके हृदयको कलुषित। आज सनातन हिन्दू धर्मकी दुर्दशा बेचारे हरिजनों या उनके उद्धारक महात्मा गांधीके कारण नहीं हो रही है, बल्कि इन धर्म-धुरन्धरोंके द्वारा ही प्राचीन सनातनधर्म कलुषित किया जा रहा है जो मनुष्यको मनुष्यताका पवित्र अधिकार देनेमें सङ्कोच करते और अपने दुराग्रहको धर्मका रूप देकर संसारमें धर्मका उपहास कराते हैं।

## भयङ्कर अनमेल विवाह

अनमेल विवाहोंसे कितनी बड़ी हानि पहुंचती है, इसे भली भांति जाननेपर भी कुछ नराधम, कामलोलुपतावश बेचारी युवतियोंका जीवन मिट्टीमें मिला देते हैं। लखनऊमें एक युवतीने सुहाग रातके दिन ही आत्महत्या कर ली, क्योंकि उसे अपने बूढ़े पतिको देखकर महान् ग्लानि हुई; बेचारी और क्या करती! दूसरा मार्ग व्यभिचारिणी बननेका था, क्योंकि समाजमें इस प्रकारके अयोग्य पतिसे छुटकारा पाकर इच्छानुसार वर प्राप्त करनेकी कोई व्यवस्था नहीं। व्यभिचारिणी बनकर यदि जीवन यापन करती, तो पतिकी कोप-भाजन बनती और मामला न जाने कहां समाप्त होता। लाहोरमें एक बूढ़ेने अपने जवान पुत्रके रहते हुए एक पोड़शीके साथ विवाह कर डाला था। वह घर आते ही विचित्र परिस्थितिमें फंस गयी। नवयुवक पुत्र उसपर मुग्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हो गया और अन्तमें उसने अपने पिताको मरवा डाला। उसने सोचा था कि पिताका कण्टक दूर हो जानेसे मेरी इच्छापूर्ति हो सकेगी, परन्तु यह न सोचा कि कानून भी तो कोई चीज है। इस तरह सारा परिवार बूढ़ेकी अदूरदर्शिताके कारण बर्बाद हो गया। ये बूढ़े यदि विवाह ही करना चाहते हैं, तो समवयस्क स्त्रियोंको क्यों नहीं चुनते? यदि समाजमें लम्बी नाक रखनेका प्रश्न है, तो जमाना उनके खिलाफ है। पुरुषोंने बहुत दिन स्त्रियोंके साथ अन्याय किया, परन्तु अब समय प्रतिशोध लेनेको तैयार है। ६०-७० वर्षके लड़के (?) १२-१३ वर्षकी लड़कियोंके साथ विवाह कर उन्हें जीवित ही मृतक बनानेके कुकृत्यसे बाज आयें।

## गहनोंके नामपर बलिदान

हिन्दू गृहस्थके लिए किसी समय आभूषण मूल्यवान् रहे होंगे, परन्तु इस समय तो वे अनेक अनर्थोंकी जड़ मालूम होते हैं। समझदार और शान्त घरानोंमें भी उनके कारण कलह उत्पन्न हुए बिना नहीं रहता। मध्यवित्त-वालोंको अपनी इच्छाके विपरीत गहने तैयार करानेके लिए बाध्य होना पड़ता है और निर्धन स्त्रियां गहनोंके अभावमें स्त्री-समाजमें लाञ्छित हुआ करती हैं। इसलिए सोना-चांदी न मिलनेपर सस्ती धातुओंके चमकीले गहने पसे बर्बाद कर पहने जाते हैं। रुपये उधार लेकर गहनोंके उपहार दिये जाते हैं। गहनोंके अभावमें मनोमालिन्य बढ़ जाता है। यह मनोमालिन्य कभी-कभी घातक सिद्ध होता है। मोगा (पञ्जाब) के पास गहनोंके कारण एक ऐसी रोमाञ्चकर दुर्घटना हो गयी, जिसकी भीषणता अखबारी दुनियामें अद्वितीय कही जा सकती है। ६-७ महीनेकी एक अबोध बालिका जानसे मार डाली गयी, क्योंकि गहनोंका प्रश्न था। एक भाई अपनी बहनको लानेके लिए उसकी ससुराल गया था। ससुरालवालोंने उसकी गरीबीपर ताना मारते हुए कहा कि बहनको शायद इसलिए लिवाने आये हैं कि भानजीके लिए सोनेकी चूड़ियां तैयार करा चुके हैं। किसानको यह बात खटकी और घर लौटनेपर उसने अपनी स्त्रीसे इस बातका जिक्र किया। स्त्रीको पतिका अपमान असह्य हुआ और उसने पतिकी अनुपस्थितिमें नन्हीं-सी बालिकाके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। मृत लड़कीके टुकड़ोंको आटेमें मिलाकर एक ऊंटको खिला दिया। पतिके लौटनेपर जब छोटी बालिका न दिखायी दी, तो उसने स्त्रीको पीटा और सब बातें जानकर पुलिसको खबर दी। पुलिसने ऊंटको गोलीसे मारकर मांसके टुकड़े और हड्डियां बरामद कीं। यह है गहनोंके शौकका भीषण परिणाम!

## बेकारो! तेरा नाश हो

देशमें बेकारी इतनी अधिक बढ़ रही है कि लोगोंके कष्टोंका अन्त नहीं। व्यापारिक शिथिलता या आमदनीकी कमीके कारण जो लोग बेकार बनाये जा रहे हैं, वे इतने भीषण सङ्कटमें पड़ जाते हैं कि भविष्यके सम्बन्धमें कुछ भी विचार नहीं कर सकते और चारों ओर निराशासे घिरे दिखायी देते हैं। अनेक स्थानोंमें इन लोगोंने आत्महत्या तक कर डाली है। देशमें सर्वत्र बेकारोंकी सेना घूमती दिखायी देती है। जिन्हें अपने परिवारका पालन करना है, उनकी विवशताका क्या ठिकाना! जीवनसे ऊबकर यदि कोई आत्महत्या करता है, तो उसके आश्रित और भी करुणाजनक स्थितिमें दिखायी देते हैं। कानून कहता है कि यदि तुम बेकार और भूखे हो, तो तड़प-तड़पकर मर सकते हो, परन्तु आत्महत्या नहीं कर सकते। यदि ऐसा करोगे तो जेल जाना पड़ेगा या जुर्माना ठोका जायेगा। यदि बेकारों और उनके परिवारोंको एक ही साथ जेलमें डाल दिया जाये तो भी गनीमत है, परन्तु आत्महत्याके लिए सचेष्ट बेकार तो जेल जाता है और उसका भूखा परिवार उसकी अनुपस्थितिमें तड़पता रह जाता है। जेल जाकर वह दूने मानसिक कष्टमें फंस जाता है। यदि जुर्माना होता है, तो बेचारा कहांसे लाये। लाहोरमें एक रेलवे कुलीने बेकारीसे तङ्ग आकर रेलवे लाइनपर लेटकर आत्महत्या करनी चाही थी, परन्तु वह पकड़ लिया गया और उसपर पचीस रुपये जुर्माना हुआ। बेकार आदमीपर पचीस रुपये जुर्माना! भला, इस अन्धेरका भी कोई ठिकाना है! इतना बड़ा देश है और इतनी अधिक बेकारी। यह समस्या दिनपर दिन जटिल होती जा रही है। अन्य देशोंकी राष्ट्रीय सरकारें इस समस्याको हल करनेकी चेष्टा किया करती हैं, परन्तु यहां तो कोई भी सरकारी प्रयत्न नहीं किया जाता। धनियोंको रुपयेके पहाड़ बढ़ानेसे ही फुर्सत नहीं। समस्या कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हल करे ? परस्परके प्रेम और सहानुभूतिपर ही थोड़ी आशा है। यदि आप भरपेट भोजन पाते हैं, तो भूखे भाईको भी एक चुटकी आटा दीजिये और उससे कुछ काम लीजिये। यदि लड्डू-पूड़ी उड़ाते हैं, तो इतना ध्यान अवश्य रखिये कि आपके यहां जो सेरों जूठन फेंकी जाती है, उससे दर्जनों आदमियोंकी भूख-ज्वाला शान्त हो सकती है। इसलिए पेट-पन्थी होनेके साथ साथ कुछ सहृदय और विवेकी भी बनिये।

## मारवाड़ी पञ्चोंका बहिष्कार-अस्त्र

जर्मन तोपोंसे भी अधिक भयावह और घातक वह जातीय बहिष्कार है जिस ब्रह्मास्त्रको पाकर नामधारी हिन्दू पञ्चोंने हिन्दू समाजको अवनतिशील बना डाला। आप विलायती दवा एक यूरोपियन डाक्टरके हाथसे मजेमें पी सकते हैं, परन्तु एक साफ-सुथरे हरिजन भाईके हाथसे जल पीते ही इतने बड़े अपराधी बन जाते हैं कि आपके विरुद्ध धर्मध्वजी पञ्चोंको बहिष्कारका अस्त्र संभालना पड़ता है। यदि आप किसी बाल-विधवाके पुनर्विवाहमें सम्मिलित हो जाते हैं, तो भी आपका बहिष्कार। यदि आप किसी पथभ्रष्ट बाल-विधवाके उद्धारमें सहायक होते हैं, तब भी बहिष्कार! यह नया फतवा कुष्टियाके मारवाड़ी पञ्चोंकी ओरसे निकाला गया है, जहांपर एक अग्रवाल व्यापारीकी विधवा युवती पुत्री एक बङ्गाली नौकरके साथ भाग गयी थी। एक सजातीय युवकने उसका पता लगाकर उसके माता-पिताको खबर दे दी। लड़कीका उद्धार कर लेनेके बाद पञ्चोंने उद्धारमें सहायक बननेवाले युवकको जातीय बहिष्कारका सुन्दर पुरस्कार दिया। अपनी लम्बी नाककी रक्षा करनेका क्या ही विचित्र नमूना है! पञ्चोंकी दूरदर्शिता-की सराहना सुधारवादियोंको करनी चाहिए, जिनकी कृपासे जातीय बहिष्कार-अस्त्र जीवित तो है। जिस मारवाड़ी युवकका बहिष्कार किया गया है, वह बधाईका पात्र है, क्योंकि वह पञ्चोंकी न्यायप्रियताका ढिंढोरा अपने अस्तित्व-से पीटकर समाजसे पञ्चायतकी कुप्रथाको हटानेमें सहायक हो रहा है। समझमें नहीं आता कि ये पञ्च-पञ्चायत कब तक जीवित रहेंगे। ये दकियानूसी जीव और संस्था इस हिन्दू समाजसे जितनी जल्दी बिदा हों, समाजके लिए मङ्गलकारी है।

## नारी-अपहरण

हिन्दू महासभाकी कार्यकारिणी समितिके हालके एक अधिवेशनमें हिन्दू बालिकाओं और नारियोंके अपहरणके सम्बन्धमें निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ है—"देशके विभिन्न प्रान्तोंमें हिन्दू बालक-बालिकाओं और नारियोंके अपहरण-की जो विभीषिका बढ़ रही है उसपर हिन्दू महासभाने विशेष चिन्ताके साथ ध्यान दिया है और इसकी वह घोर निर्भर्त्सना करती है। सभा प्रत्येक नगरके हिन्दुओंको इस बातके लिए आह्वान करती है कि वे सङ्गठित होकर इस बुराईको रोकनेका सफल प्रयत्न करें और इसके साथ ही सभा सरकारका भी ध्यान इस बढ़ती हुई बुराई तथा इसे रोकनेके लिए निषेधक कानून तथा अन्य कारगर उपायोंके अवलम्बनकी आवश्यकताकी ओर आकृष्ट करती है।"

सभाने यह निश्चय किया है कि इस सम्बन्धमें क्रियात्मक उपायोंका अवलम्बन करनेके लिए एक नारी-रक्षा-कोष स्थापित किया जाय और विभिन्न प्रान्तोंमें स्वयंसेवक दल सङ्गठित करनेके लिए कार्यकर्ता नियुक्त किये जायं।

यह सन्तोषकी बात है कि हिन्दू महासभाका ध्यान इस महत्त्वपूर्ण, किन्तु साथ ही कलङ्कजनक समस्याकी ओर विशेषरूपसे आकृष्ट हुआ है और इसके प्रतिकारके लिए वह क्रियात्मक उपायोंका अवलम्बन करना चाहती है। दुर्वृत्त और दुराचारी गुण्डों और बदमाशों द्वारा हिन्दू नारियोंका अपहरण जिस गतिसे बढ़ रहा है उसे देखते हुए हिन्दू समाजकी निश्चेष्टता और शिथिलतापर साश्चर्य खेद होता है। हिन्दू स्त्रियोंके सतीत्व, शील, सदाचार और उनकी श्लीलताके सम्बन्धमें तो हम बड़ी लम्बी-चौड़ी बातें किया करते हैं, किन्तु हमारी आंखोंके सामने ही उनके सतीत्वका अपहरण और उनकी श्लीलताका जो विमर्दन हुआ करता है उससे हमारे स्वाभिमानपर कुछ भी ठेस नहीं पहुंचती। सच तो यह है कि हिन्दू समाजमें आज कायरता और भीरुताने अपना घर कर लिया है और आत्माके अमरत्वकी दुहाई देते हुए भी हम सबसे अधिक मृत्युसे डरते हैं और प्राणोंका मोह हममें ही सबसे अधिक पाया जाता है। तभी तो हम अपनी आश्रिता बहू-बेटियोंकी मर्यादाकी रक्षामें असमर्थ हो रहे हैं, और इस प्रकारके जघन्य पापाचारपर ग्लानि और लज्जाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बोध करते हुए भी 'किंकर्तव्य विमूढ़' बन रहे हैं। हिन्दू नारियोंका अपहरण क्यों हो रहा है, इसके मूल कारणोंपर हमें विचार करना होगा। इसमें सन्देह नहीं कि मुसलमान गुण्डोंमें यह पाशविक प्रवृत्ति विशेषरूपमें देखी जाती है, किन्तु इसके साथ ही हमें इस बातको भी स्वीकार करना होगा कि हिन्दुओंकी बहुत-सी सामाजिक कुप्रथायें तथा हिन्दू स्त्रियोंका रहन-सहन भी इसके लिए कम उत्तरदायी नहीं है। स्त्रियोंको केवल काम-क्रीड़ाका साधन तथा गृहस्थाश्रमकी दासी समझकर जब तक हम उन्हें असूर्यम्पश्या बनाये रहेंगे, तब तक हम उन्हें इस योग्य नहीं बना सकते कि वे गुण्डों और बदमाशोंसे अपने शील और मर्यादाकी रक्षा करनेमें समर्थ हों। अतएव एक ओर जहां हिन्दू युवकोंमें अपनी मातृ जातिकी सम्मान-रक्षाके लिए साहस और वीरत्वकी भावना उद्दीपित हो वहां दूसरी ओर इस बातकी भी आवश्यकता है कि हम अपने महिला-समाजके रहन-सहनमें इस प्रकारका परिवर्तन करें जिससे उसके भीरु भाव दूर हो जायं और वह स्वयं आत्मरक्षाके योग्य बने।

एक बात और है। गुण्डों और बदमाशोंका सम्बन्ध किसी जाति या सम्प्रदाय-विशेषसे नहीं होता। हिन्दू और मुसलमान दोनों हीमें गुण्डे होते हैं और मुसलमान गुण्डों द्वारा मुसलमान नारियोंका भी अपहरण होता है। ऐसी स्थितिमें नारी-अपहरणकी समस्याको साम्प्रदायिक रूप न देकर इसपर मनुष्यताकी दृष्टिसे ही विचार करना वाञ्छनीय है। नारी-अपहरण मनुष्यताके विरुद्ध एक जघन्य अपराध है। इस अपराधके मूलोच्छेदमें सभी सम्प्रदायोंके विचार-शील सज्जनोंका सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

## पाशविक क्रूरता

अमरावतीका समाचार है कि अकोटके एक दूसरे दर्जेके मजिस्ट्रेटकी अदालतमें एक स्त्रीके पति और श्वसुरको इसलिए सजा हुई है कि वे उस स्त्रीको बैलके साथ हलमें जोतकर और एक छड़ीसे—जिसके सिरेपर कांटी जड़ी हुई थी—उसे हांककर खेतसे हाटपर उसी अवस्थामें ले गये। घटना इस प्रकार है कि कलावती नामकी स्त्रीका पति दौलत और उसका श्वसुर पुण्डारिक दोनों उसके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया करते थे। इसपर कलावतीके पिताने उन दोनोंपर मामला चलाया और उन्हें सजा हुई। इससे चिढ़कर कलावतीके पति दौलतने अपने हलमेंसे एक बैलको अलग करके उसके स्थानमें कलावतीको जोत दिया और उसे उसी अवस्थामें छड़ीसे हांकते हुए हाटपर ले गया। अभियुक्तोंकी ओरसे सफाईमें कहा गया कि कलावतीको आत्महत्या करनेसे रोकनेके लिए ऐसा किया गया था। मजिस्ट्रेटने अभियुक्तोंको चार-चार महीनेकी कड़ी कैद और डेढ़-डेढ़ सौ रुपये जुर्मानेकी सजा दी।

क्या हिन्दू समाजके सिवा और भी किसी समाजमें अबलाओंपर इस प्रकारका पाशविक, जघन्य अत्याचार सम्भव हो सकता है? और यह उस समाजकी दशा है जिसमें स्त्रियोंके शील और पातिव्रत्यकी गाथायें गायी जाती हैं और निर्लज्ज भावसे "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" प्रभृति शास्त्र-वचनोंकी दुहाई दी जाती है। कौन ऐसा सहृदय व्यक्ति होगा जो इस प्रकारकी घटनाओंको देखते हुए हिन्दू समाजको निष्ठुर, पाषण्डी और अधःपतित मानवताका प्रतीक न समझे? असल बात तो यह है कि शताब्दियोंसे गुलामीका जुआ अपने कन्धेपर ढोते रहनेके कारण हम मनुष्यत्वसे इतने गिर गये हैं कि हममें मनुष्यत्वका कोई गौरव या अभिमान बिलकुल नहीं रह गया है। दासताजनित कापुरुषता हमारी रग-रगमें समायी हुई है, भीरु भावोंसे हम ओत-प्रोत हो रहे हैं। चूंकि हम अपनेसे सक्षम और शक्तिशाली लोगों द्वारा पग-पगपर पददलित, लाञ्छित और अपमानित होते रहते हैं और उसे चुपचाप सहन करते रहनेकी हमारी आदत पड़ गयी है, इसलिए हमें भी अपनेसे दुर्बलों और अक्षमोंपर अत्याचार करनेमें मजा आता है। स्वयं गुलाम होने और दूसरेकी हुकूमत सहनेके कारण हम चाहते हैं कि हम और कहीं नहीं तो अपनी अबला गृहिणीपर हुकूमत करें, उसे काम-क्रीड़ाका कन्दुक, सन्तान उत्पन्न करनेकी मशीन और काम करनेके लिए कोल्हूका बैल समझकर उसके साथ चाहे जैसा व्यवहार करें। स्त्रियोंपर क्रूरसे क्रूर अत्याचार करने, उन्हें पशुसे भी अधम समझनेमें हमें कुछ भी अनुताप नहीं होता। आश्चर्यकी बात तो यह है कि जिस समाजमें धर्मकी साधारणसे साधारण बातोंके उल्लङ्घन होनेपर भी प्रायश्चित्त और जाति-बहिष्कारकी व्यवस्था हो उसी समाजमें आज इस तरहकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपालकी महारानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



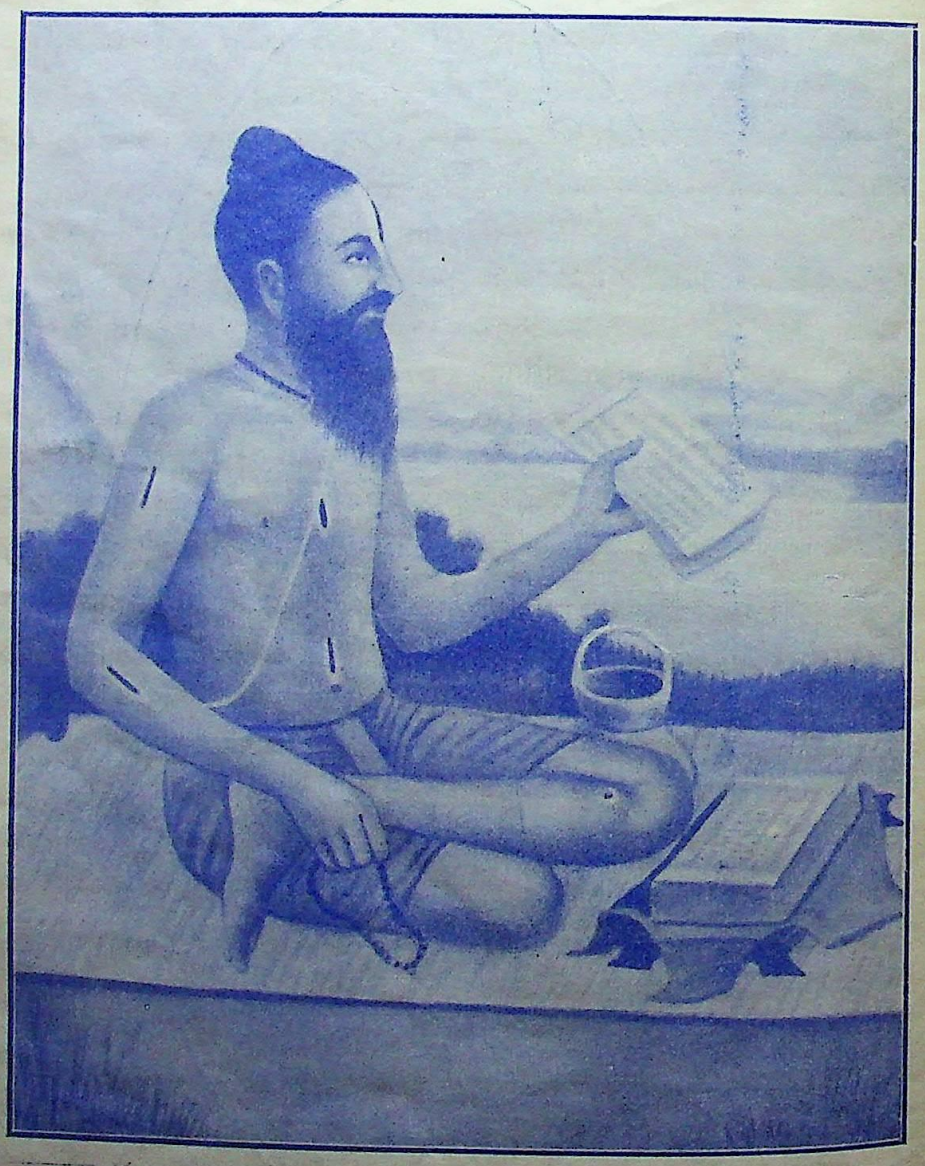

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास
जिनकी जयन्ती देशभरमें मनायी गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अमानुषीय घटनायें होती रहें और किसीके कानपर जूं तक न रेंगे! यह है हिन्दू समाजकी वर्तमान अधःपतित अवस्थाका नग्न चित्र!

## मातृमङ्गल और शिशुमङ्गल

भारतवासियोंकी दरिद्रता और घोर अज्ञानताके फल-स्वरूप उनके स्वास्थ्यकी दशा दिन-दिन क्षीण होती जा रही है जिससे वे सहज ही आधिव्याधियोंसे ग्रस्त होकर अकालमें ही कालकवलित हो जाते हैं। स्वास्थ्य और सफाईके स्थूल नियमोंसे सर्वथा अनभिज्ञ होनेके कारण वे बहुत-से रोगोंसे अपनी रक्षा नहीं कर सकते। भारतीय स्त्रियों और बच्चोंकी मृत्युसंख्या तो इतनी विकराल है कि उसपर विचार करनेसे किसी भी राष्ट्रहितैषीको निदारुण परिताप हुए बिना नहीं रह सकता। सार्वजनिक स्वास्थ्य और सफाईके सम्बन्धमें शिक्षा देनेके लिए All India Institute of Hygiene and Public Health नामक एक संस्था कलकत्तेमें भारत-सरकारकी ओरसे स्थापित है। इस संस्था-में मातृमङ्गल और शिशुमङ्गलकी Post graduate शिक्षा-का जो प्रबन्ध है उसपर भारत-सरकारका एक वक्तव्य अभी हालमें प्रकाशित हुआ है। उस वक्तव्यमें भारतीय स्त्रियों और बच्चोंके स्वास्थ्य-संहार और अकालमृत्युके जो आंकड़े दिये गये हैं वे इस प्रकार हैं :—"भारतमें प्रति वर्ष २८,९९,७९७ बच्चे, अर्थात् कुल मृत्युसंख्याका सैकड़े ४५ भाग ९ वर्षसे कम अवस्थामें ही मृत्युकी उदर-दरीमें समा जाते हैं। प्रति वर्ष ४ लाख बच्चे मृत अवस्थामें ही जन्म ग्रहण करते हैं और दो लाख मातायें प्रसूती अवस्थामें प्राण-त्याग करती हैं। अकेले बङ्गाल प्रान्तमें ही प्रति वर्ष २॥ लाख बच्चे और १० हजार प्रसूती मातायें मृत्युकी भेंट चढ़ जाती हैं। इसके सिवा क्षीण स्वास्थ्य धारण करते हुए जो मातायें और बच्चे जीवित रहते हैं उनकी संख्या तो बेशुमार है।

इंगलैण्ड और वेल्समें बच्चोंकी मृत्यु-संख्या सन् १८९० में प्रति एक हजार पीछे १४६, सन् १८९९ में १६२ और सन् १९३० में ६० थी। भारतमें सन् १९३० की मृत्युसंख्या १८०८ है। हैजा, चेचक और प्लेगसे प्रति वर्ष औसत मृत्युसंख्या २२९१८७, ७४०६४ और १२९०५७ होती है। इन रोगोंके शिकार भी अधिकांशमें ऐसे ही लोग होते हैं जो स्वास्थ्य और सफाईके नियमोंसे अनभिज्ञ होनेके कारण संक्रामक रोगोंसे बचनेके लिए निवारणात्मक उपायोंका अवलम्बन नहीं कर सकते। इसी प्रकार प्रसूती माताओं और शिशुओंकी भीषण मृत्युसंख्याका कारण भी स्वास्थ्य और सफाईके नियमोंसे अनभिज्ञता तथा धात्री-शिक्षाका अभाव है। अतएव राष्ट्रके स्वास्थ्यमें उन्नति तभी हो सकती है जब कि माताओंको धात्री-विद्या और शिशु-पालनकी विज्ञानसम्मत शिक्षा दी जाय और मातृमङ्गल तथा शिशुमङ्गलके लिए देशमें अधिकसे अधिक सुव्यवस्थित संस्थान स्थापित किये जायें। इस प्रकारके संस्थानोंकी स्थापनामें सुशिक्षिता स्त्रियोंका सहयोग अनिवार्य रूपमें आवश्यक है।

## आर्थिक समानता

संसारमें इस समय परिवर्तन और क्रान्तिकी जो लहरें परिव्याप्त हो रही हैं उनमें छात्रोंको किस रूपमें भाग लेना चाहिए, इस विषयपर मद्रास प्रान्तके छात्रोंको उपदेश देते हुए डा० ई० स्टेलनी जोन्सने कहा है :—"संसार इस समय परिवर्तन और पुनर्गठनके युगसे होकर गुजर रहा है। रूसमें तो इस परिवर्तनने एक प्रकृत तथ्यका रूप धारण कर लिया है। इसमें वहांके छात्रोंका भी भाग था। भारतमें महात्मा गांधी अस्पृश्यता-निवारणके लिए जो महान् आन्दोलन चला रहे हैं उससे अधिकांश लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रहे हैं। किन्तु भविष्यमें जो विराट् सङ्घर्ष होने-वाला है उसका यह प्रारम्भमात्र है। क्योंकि अस्पृश्यताकी समस्या हल हो जानेके बाद आपको इसकी अपेक्षा और भी बड़ी-बड़ी समस्याओंका समाधान करना पड़ेगा। मैंने एक बार डा० अम्बेदकरको गांधीजीसे यह कहते सुना था—"मन्दिर-प्रवेशमें हमारा विशेष स्वार्थ नहीं है; आपके अस्पृ-श्यता-निवारण आन्दोलनमें भी हमारी कोई खास दिलचस्पी नहीं है। हम यह जानना चाहते हैं कि क्या आप जात-पांत-का भेद उठा देंगे और हमें सामाजिक समानता प्रदान करेंगे?" इस सामाजिक समानताके परे आर्थिक समानता-का प्रश्न है। महात्मा गांधी धार्मिक समानताका प्रश्न उठा रहे हैं; डा० अम्बेदकर सामाजिक समानताका।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नोंसे आगे पण्डित जवाहरलाल नेहरू हैं, क्योंकि न आर्थिक समानताका प्रश्न उठाते हैं और यह प्रश्न इतना गम्भीर और विशाल है कि भविष्यमें आपको इसका सामना करना ही पड़ेगा।" इसमें सन्देह नहीं कि वर्तमान अर्थयुग-में धार्मिक समानता और सामाजिक समानताकी समस्या उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं कही जायगी जितनी आर्थिक समा-नताकी समस्या। वर्तमान युग धर्मप्रधान युग नहीं रहा, अतएव धर्मका स्थान इस समय समाजमें गौण ही समझना चाहिए। सामाजिक समानता बहुत-कुछ आर्थिक समानता-पर ही निर्भर करती है। पाश्चात्य देशोंमें सामाजिक समा-नता होनेपर भी आर्थिक समानता नहीं है। समाजकी विभिन्न श्रेणियोंमें आर्थिक वैषम्य दिन-दिन बढ़ता ही जा रहा है। यूरोपने राजनीतिमें गणतन्त्रकी स्थापना की सही, किन्तु अर्थनीतिमें अभी तक गणतन्त्रकी स्थापना करनेमें वह सफल नहीं हुआ। यही कारण है कि गणतन्त्रके प्रति अना-स्था और अविश्वास दिन-दिन उग्र रूप धारण करता जा रहा है और जनताकी भावधारा राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति सबमें साम्यवादकी ओर प्रवाहित होने लगी है। वर्तमान युगकी इस भावधाराके अप्रतिहत वेगको रोकनेकी सामर्थ्य किसीमें नहीं है। समाजमें अर्थमूलक वषम्य चरम सीमापर पहुंच जानेके बाद उसकी प्रतिक्रिया अब आरम्भ हो गयी है। एक रूसको छोड़कर यूरोपके तमाम देश इस प्रतिक्रियासे होकर गुजर रहे हैं। भारत भी इस प्रतिक्रियाके प्रभावसे अछूता नहीं बचा है। उसे भी एक-न-एक दिन आर्थिक समानताकी विकट समस्याका सामना करना ही पड़ेगा।

## ३० रु० वार्षिक आय!

संसारका सबसे अभागा देश भारत दरिद्रतामें अपना सानी नहीं रखता। जिस देशमें करोड़ों आदमी सालके छ महीने अधभूखे रहकर दिन काटते हों, जहांके किसानोंको रुपया उधार लेनेके लिए टूटी-फूटी झोपड़ी, खाने-पीनेके बर्तन और मवेशी तकको गिरवी रखना पड़ता हो वहांकी दीनताका क्या कहना! मद्रास प्रान्तके दस ऐसे गांवोंको चुन लिया गया जो ग्रामीण दशाके बतौर नमूनाके थे। अमेरिकाके Rockfeller foundation, स्थानीय स्वायत्त संस्थाओं तथा अन्य गैर-सरकारी संस्थाओंकी ओरसे इनकी दशाका निरीक्षण किया गया। निरीक्षण करनेवाले कार्यकर्ता स्वयं ग्रामोंमें जाकर रहे थे और वहां रहकर उन्होंने ग्रामीणों-की दशाका अध्ययन किया। सन् १९३३ के जूनमें यह अनुसन्धान-कार्य आरम्भ हुआ और दिसम्बरमें समाप्त हुआ। अपनी रिपोर्टमें उन्होंने लिखा है :—"दरिद्रता रोगसे जर्जर किसान अपनी झोपड़ी, बर्तन और मवेशीको गिरवी रखकर कर्ज लेते हैं। उनकी आमदनी बहुत ही तुच्छ है। बहुतोंकी आमदनी ३० रु० वार्षिकसे अधिक नहीं पड़ती जो मुश्किलसे खाने-पीनेमें ही खर्च हो जाती है। अपने बच्चोंकी शिक्षा या आमोद-प्रमोदके लिए उनके पास कुछ भी नहीं बच जाता। अधिकांश ग्रामवासी सालमें लगभग छ महीने अधभूखे रहकर जिन्दगी बसर करते हैं।"

यही दशा न्यूनाधिक रूपमें सारे भारतके ग्रामोंकी कही जा सकती है।

## क्या विवाह-प्रथा उपयोगी है?

पञ्जाब साहित्य सङ्घके हालके एक अधिवेशनमें "विवाह-प्रथाकी उपयोगिता अब नहीं रह गयी", इस विषयको लेकर एक दिलचस्प वादविवाद हुआ था। इस वाद-विवादमें कई पुरुषों और एक महिलाने भाग लिया था। उपर्युक्त सिद्धान्त-के पक्षमें भाषण करते हुए पं० शिवशर्मा आयुर्वेदाचार्यने कहा—"किसी समय विवाह-प्रथाका कुछ उपयोग रहा भी हो, किन्तु अब उसका उपयोग बिलकुल नहीं रह गया है। विवाह-प्रथासे किसी लाभदायक उद्देश्यकी सिद्धि नहीं हुई है। कुछ लोग यह कहते हैं कि यदि विवाह-प्रथा उठा दी जायगी तो इससे समाजके गठनपर आघात पहुंचेगा, किन्तु रूसके उदाहरणसे यह स्पष्ट है कि विवाह-प्रथाको उठा देनेपर भी समाजकी व्यवस्थाको अक्षुण्ण रखा जा सकता है। इस समय विवाहके नामपर बहुत-कुछ अनाचार और अविचार हो रहे हैं।"

विरोध-पक्षमें भाषण करते हुए डा० नन्दलालने कहा कि "विवाहका प्रधान उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति है जिससे मनुष्य जातिकी सेवा हो। विवाह-प्रथाको उठा देनेका अर्थ है सृष्टिक्रम बन्द कर देना, जिससे प्रगतिका मार्ग बन्द हो जायगा। विवाह-प्रथाके उठ जानेपर प्रेम और स्नेह-जैसी वस्तु नहीं रह जायगी। रूसके भी बहुत-से लोगोंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रकाश्य रूपमें यह स्वीकार किया है कि विवाहके नियमोंमें शिथिल करके उन्होंने एक बहुत बड़ी भूल की है।"

श्री जङ्गबहादुर सिंहने कहा कि "विवाह-प्रथा उठा देनेसे सृष्टिक्रम बन्द हो जायगा, यह तर्क बड़ा ही विलक्षण और उपहासजनक है। स्त्री-पुरुषके विवाहसे नहीं, बल्कि उनके संयोगसे सन्तानोत्पत्ति होती है। विवाह-प्रथाको पवित्रताकी दुहाई देना महज ढकोसला है। विवाह स्त्री-पुरुषोंके विकासके मार्गमें बाधक हो रहा है। पुरुष और स्त्री आर्थिक दृष्टिसे स्वतन्त्र बनकर जब तक उनकी इच्छा हो, अच्छे साथीके रूपमें रहें। उनके बच्चोंका लालन-पालन करने, उन्हें शिक्षित बनाकर उत्तम नागरिक बनानेका भार सरकारके ऊपर हो।"

मि० आर० डी० सरेने कहा कि "भारतकी जनसंख्या बहुत बढ़ गयी है और प्रति परिवार पीछे औसत आमदनी दस रु० मासिकसे अधिक नहीं पड़ती। इसलिए कमसे कम भारतमें तो विवाह-प्रथाकी आवश्यकता नहीं है।"

श्रीमती सरेने कहा कि "जो लोग विवाह-प्रथाके उठा देनेके पक्षपाती हैं उनमें अधिकांश ऐसे हैं जिन्हें स्त्रियोंने ठुकरा दिया है। विवाहका पवित्र बन्धन नष्ट हो जानेसे समाजमें बहुत अनाचार फैल जायगा। यदि जन-संख्या अधिक होगी तो जिस ईश्वरने सृष्टि की है, वही उनके संहारका मार्ग आप ढूंढ़ निकालेगा। मानव-समाजके लिए विवाहकी प्रथा बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है, इसलिए जब तक इससे कोई अच्छी प्रथा जारी न हो तब तक प्रचलित प्रथाको नष्ट नहीं करना चाहिए।"

पाठक अपनी-अपनी रुचिके अनुसार दोनों पक्षके विचारोंके औचित्य और अनौचित्यका स्वयं निर्णय कर सकते हैं।

———


# दांतों की सुन्दरता

**व्यवहारमें लाये जानेवाले ब्रस पर ही निर्भर है**

आप जो मञ्जन व्यवहार करते हैं वह कितना ही अच्छा क्यों न हो सर्वोत्कृष्ट ब्रसके नहीं व्यवहार करनेसे आपके दांत पूर्णतया परिष्कार न हो सकेंगे। इसलिये मीरा ब्रस ही उपयुक्त है। कारण दांतके प्रत्येक कोने व फांक में, जहां तक सम्भव है, प्रवेश कर सकता है। और इसी लिए यह बनाया ही गया है। इसके बाल न नरम होंगे और न खुल कर गिर पड़ेंगे।

**मीरा टूथ ब्रस** के साथ

**मीरा डेंटल क्रीम** व्यवहार कीजिये।

चिरकाल तक दन्त पंक्ति शुद्ध, स्वस्थ सुन्दर व सबल रहेंगे।

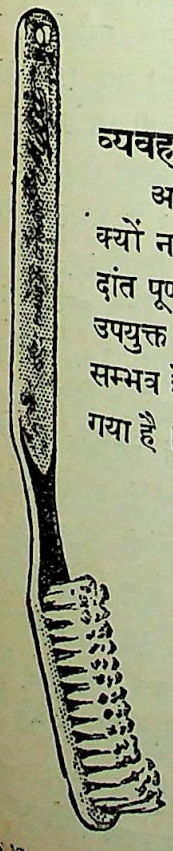

## मीरा टूथ ब्रस

एजेन्टस्—टी० एम० ठाकुर एण्ड कम्पनी

१२, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

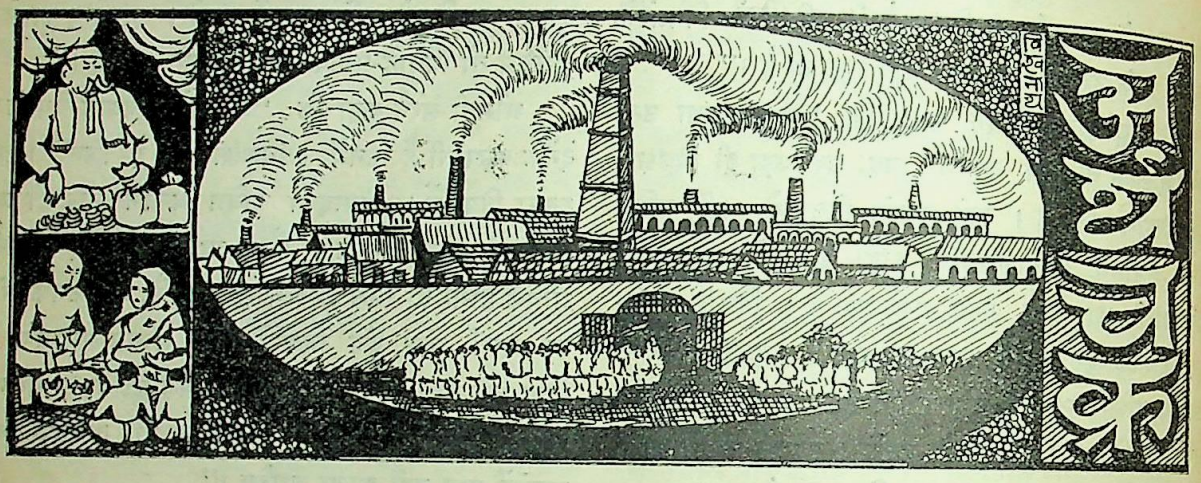


## सन् १९३२-३३ में चीनी-व्यवसाय

सन् १९३२-३३ में भारतके चीनी-व्यवसायकी क्या अवस्था थी इस सम्बन्धमें भारत सरकारकी कृषि-गवेषणा समितिकी ओरसे चीनीके विशेषज्ञ श्रीयुत आर० सी० श्रीवास्तवने एक विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस रिपोर्टके देखनेसे मालूम होता है कि चीनी-व्यवसायके संरक्षणके लिये विदेशी चीनीपर संरक्षणात्मक कर लगानेके फलस्वरूप देशी व्यवसायकी थोड़े समयके अन्दर ही कितनी उन्नति हुई है। गत चार-पांच वर्षोंके अन्दर ईखकी खेतीमें तो वृद्धि हुई ही है, इसके सिवा उन्नत श्रेणीकी ईखकी खेतीमें भी काफी वृद्धि हुई है। सन् १९२८-२९ ई० में कुल २६५०००० एकड़ जमीनमें ईखकी खेती की गयी; सन् ९३२-३३ में यह संख्या बढ़कर ३४३५००० एकड़ हो गयी। इसमें उन्नत और साधारण दोनों श्रेणीकी ईख शामिल है। सन् १९३१-३२ में कुल ११ लाख ७० हजार ४७९ एकड़ जमीनमें उन्नत श्रेणीकी ईखकी पैदावार हुई। सन् १९३२-३३ में यह संख्या बढ़कर १८ लाख ४५ हजार ७८८ एकड़ हो गयी। इस प्रकार आलोच्य वर्षमें कुल जमीनके सैकड़े ५४ भागमें उन्नत श्रेणीकी ईखकी पदावार हुई, जब कि एक वर्ष पहले यह संख्या सिर्फ सैकड़े ३८ थी।

रिपोर्टमें चीनीकी पैदावारके जो आंकड़े दिये गये हैं उनसे मालूम होता है कि गत चार-पांच वर्षोंमें चीनीकी पैदावारमें भी काफी वृद्धि हुई है। सन् १९२८-२९ में चीनी और गुड़की पदावार क्रमशः ३०६६९००० टन और २८२७००० टन थी। सन् १९३२-३३ में यह संख्या बढ़कर ५११२९००० टन और ४८५९००० टन हो गयी। सन् १९३३-३४ ई० में चीनी तैयार करनेकी और भी कई मिलें स्थापित हुई हैं, अतएव चीनीकी पैदावारकी संख्या और भी बढ़ जायगी। देशी चीनीकी पैदावारमें वृद्धि होनेके साथ-साथ विदेशी चीनीकी आमदनीमें भी ह्रास होना स्वाभाविक है। सन् १९२९-३० में १५ करोड़ ५१ लाख रुपयेकी, सन् १९३०-३१ में १० करोड़ ५४ लाख रुपयेकी, १९३१-३२ में ६ करोड़ १ लाख रुपयेकी और सन् १९३२-३३ में ४ करोड़ १२ लाख रुपयेकी विदेशी चीनी इस देशमें आयी। चीनी तैयार करनेकी मिलोंकी जो तालिका दी गयी है उससे मालूम होता है कि सन् १९३१-३२ में अप-टू-डेट ढङ्ककी बड़ी-बड़ी मिलोंकी संख्या ४४ थी जिनमें ३३ मिलें सीधे ईखसे और बाकी ११ गुड़से चीनी तैयार करती थीं। इन ४४ मिलोंमें बिहारमें १३, संयुक्तप्रान्तमें २०, पञ्जाबमें ३, मद्रासमें ६, बम्बईमें १ और बङ्गालमें १ मिल थी। सन् १९३२-३३ में और भी २८ नयी मिलें स्थापित हुई जिनमें २७ मिलोंमें सीधे ईखसे चीनी तैयार की जा रही हैं। इस प्रकार सन् १९३२-३३ तक कुल मिलोंकी संख्या ७२ हो गयी। सन् १९३३-३४ ई०में ६४ नयी सुगर-मिलें स्थापित हुई हैं। इनमें प्रत्येक प्रान्तकी संख्या इस प्रकार है—संयुक्त प्रान्त ३०, बिहार-उड़ीसा १४, पञ्जाब ६, बम्बई ६, मद्रास ४, बङ्गाल २, देशी राज्य २। सब मिलाकर सम्पूर्ण देशमें चीनी मिलोंकी संख्या १३६ होती है।

श्रीयुक्त श्रीवास्तवने भविष्यके सम्बन्धमें जो आनुमानिक आंकड़े दिये हैं उनके अनुसार उन्होंने यह परिणाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



निकाला है कि सन् १९३५-३६ में विदेशी चीनीकी आमदनी इस देशमें प्रायः नहींके बराबर हो जायगी और इसके बादके वर्षमें चीनीकी पैदावार खपतके परिमाणसे बढ़ जायगी, जब तक कि खपतमें वृद्धि न हो। रिपोर्टमें इस बातकी ओर भी सङ्केत किया गया है कि गत कई वर्षोंमें चीनीकी खपतमें ह्रास हुआ है। सन् १९३३-३४ ई० में चीनीकी खपतका जो अन्दाज लगाया गया है वह सन् १९२४-२५ के बादसे सबसे कम है। चीनीकी खपतमें ह्रास होनेका कारण देश-वासियोंकी आर्थिक दुर्दशाके सिवा और क्या हो सकता है। अतएव आगामी वर्षोंमें चीनी-व्यवसायके सामने एक विकट समस्या यह होगी, कि किस प्रकार चीनीकी खपतमें वृद्धि हो। चीनीकी खपतमें वृद्धि होनेसे ही चीनी-व्यवसायकी उन्नति हो सकती है।

## सम्पत्ति-साधनोंका शोषण

भारतके प्राकृतिक सम्पत्तिसाधनोंका विदेशी वणिकों द्वारा आजसे नहीं, बहुत दिनोंसे शोषण हो रहा है। किन्तु, अब कुछ समयसे देशके व्यवसायियोंका ध्यान भी स्वदेशी उद्योग-धन्धोंकी ओर विशेष रूपसे आकृष्ट होने लगा है और इसके फलस्वरूप नित नये-नये कल-कारखाने खुल रहे हैं। यह अत्यन्त खेदकी बात है कि भारत सरकार भारतके प्राकृतिक सम्पत्ति-साधनोंके उपयोगमें भारतीयोंके स्वार्थकी विशेष चिन्ता न करके विदेशी वणिकोंको, और खासकर अंगरेज वणिकोंको, उनके शोषण कार्यमें सहायता पहुंचाती रहती है। भारत-सरकारकी इस मनोवृत्तिका एक ताजा उदाहरण अभी हालमें मिला है। विलायतमें 'इम्पीरियल केमिकल्स लिमिटेड' नामक एक रासायनिक कम्पनी है जिसके चेयरमैन भारतके भूतपूर्व वायसराय लार्ड रीडिङ्ग हैं। यह कम्पनी ५० हजार पौण्डकी पूंजी लगाकर पञ्जाब प्रान्तके झेलम जिलेमें रासायनिक द्रव्य तैयार करनेका एक वृहत् कारखाना खोलना चाहती है। इसके लिए भारत-सरकारके साथ ५० वर्षका कन्ट्राक्ट लेनेके सम्बन्धमें गुप्त रूपसे बात-चीत चल रही थी। व्यवस्थापिका परिषद्के सदस्य श्रीयुत बी० दासको लन्दनसे विश्वसनीय सूत्रसे यह समाचार मालूम हुआ और तब उन्होंने इस सम्बन्धमें परिषद्के अधिवेशनमें प्रश्न पूछे। उत्तरमें सरकारकी ओरसे यह स्वीकार किया गया कि "उक्त कम्पनी एक प्राइवेट कम्पनी है और उसके शेयरहोल्डरोंमें एक भी भारतीय नहीं है।" देशमें रासायनिक द्रव्य प्रस्तुत करनेवाली कई स्वदेशी कम्पनियां मौजूद हैं और वे क्रमशः उन्नतिशील हो रही हैं। ऐसी अवस्थामें यदि कोई विदेशी कम्पनी विशाल पूंजी लगाकर देशके रासायनिक साधनोंका शोषण करनेके लिये प्रतिष्ठित होगी तो इसके फलस्वरूप छोटी-छोटी स्वदेशी कम्पनियोंका क्षतिग्रस्त होना अवश्यम्भावी है। यदि हमारे शासकोंको देशके समृद्धि-साधनोंको विकसित करनेकी चिन्ता होती तो वे इस प्रकार विदेशी व्यवसायियोंको प्रोत्साहनपूर्वक प्रश्रय नहीं देते। किन्तु भारत तो भारतीयोंके लिये ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्यके लिये है अतएव भारतको यदि अंगरेज व्यवसायी अपनी खास सम्पत्ति समझें तो इसमें आश्चर्य ही क्या है। असल बात तो यह है कि जर्मनी, जापान प्रभृति देशोंकी प्रतियोगिताके कारण अंगरेज व्यवसायियोंके लिए इस समय भारतके बाजारपर एकछत्र अधिकार बनाये रखना कठिन हो गया है अतएव उन्होंने यही तरकीब सोची है कि भारतमें ही बड़े-बड़े कारखाने स्थापित किये जायं जिससे उन्हें कर भी न देना पड़े और साथ ही वे संरक्षणसे भी लाभ उठावें। इस प्रकारकी कम्पनियां कहनेके लिए तो भारतमें स्थापित होंगी किन्तु इनके सञ्चालकोंमें भारतीयोंका कोई स्थान नहीं होगा और इनसे अधिकांशमें विदेशी ही लाभान्वित होंगे। हां, इतना अवश्य होगा कि भारतकी संरक्षण-नीतिसे लाभ उठाकर ये स्वदेशी उद्योग-धन्धोंके विकासके मार्गमें घातक सिद्ध होंगी।

## साम्राज्यका स्वार्थ

जापानी प्रतियोगिताका मुकाबला करनेके लिए इंगलैण्ड किस प्रकार अपने उपनिवेशोंपर टैरिफ नीति निर्धारित करनेके लिए दबाव डाल रहा है इसका एक उदाहरण लीजिये। इंगलैण्डने सिलोनकी सरकारसे यह प्रस्ताव किया कि वह जापानी कपड़ेकी आमदनीका एक परिमाण Quota निश्चित कर दे। किन्तु सिलोन सरकारके मन्त्रि-मण्डल Board of Ministers ने वहांके गवर्नरको सूचित किया कि वे जापानी कपड़ेके विरुद्ध इस प्रकारका कोई कानून नहीं बना सकते जब कि ब्रिटिश सरकार इंगलैण्डके बाजारमें सिलोनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मालको इस प्रकारकी कोई सुविधा पहुंचानेके लिए तैयार नहीं है। इसपर विलायती पार्लियामेण्टमें सर फिलिप कनलिफ लिस्टरने यह घोषणा की कि सिलोनके गवर्नरको यह आदेश दिया गया है कि वे विदेशी सूती और रेशमी कपड़ेकी आमदनीका नियमन करें। उपनिवेश सचिव सर फिलिप कनलिफने कहा है कि "जो साम्राज्य नीति सम्पूर्ण साम्राज्यके आर्थिक स्वार्थके लिए आवश्यक है उससे सिलोनको वञ्चित नहीं रहना चाहिए।" सिलोनके मन्त्रि-मण्डलका यह विश्वास है कि जापानी कपड़ेकी आमदनीके विरुद्ध किसी प्रकारका कानून बनानेसे सिलोनको लाभके बजाय हानि ही होगी। किन्तु इससे क्या? सिलोनको लाभ पहुंचे या नहीं, लङ्काशायरको तो लाभ पहुंचेगा ही और बस लङ्काशायरको लाभ पहुंचा तो सम्पूर्ण साम्राज्यको लाभ पहुंच गया। जब उपनिवेश सचिवसे यह पूछा गया कि इस प्रकार सिलोनको मजबूर क्यों किया जाता है तो आप फौरन बोल उठे कि "मुझे यह विश्वास नहीं है कि मन्त्रि-मण्डलकी कार्रवाई सिलोनकी जनताके सद्भावकी द्योतक है।" सो समझे साहब! सिलोनकी जनताके सबसे बड़े प्रतिनिधि कौन हैं? सरफिलिप कनलिफ साहब! जिनका नाम वहांकी जनताने शायद सुना तक नहीं। और मन्त्रि-मण्डलके सदस्य जो जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियोंमेंसे चुने गये हैं वे किसी और देशकी जनताका प्रतिनिधित्व करते हैं! यदि ब्रिटिश सरकार यह समझती है कि सिलोनका मन्त्रि-मण्डल वहांकी जनताका प्रतिनिधि नहीं है तो फिर प्रतिनिधिमूलक शासनका यह ढकोसला क्यों? यदि ब्रिटिश सरकारका उपनिवेश दफ्तर Colonial Office ही सिलोनकी जनताके हिताहितपर सबसे बढ़कर ध्यान रखनेवाला है तो फिर उसे ही देशका शासनसूत्र अपने हाथमें ले लेना चाहिए। सिलोनकी व्यवस्थापिका सभाने ब्रिटिश सरकारकी इस जबर्दस्तीका तीव्र प्रतिवाद किया है। इस अनीति और अन्यायके प्रतिवादमें वहांकी जनताने विलायती मालका बहिष्कार तक करनेका निश्चय किया है। किन्तु इस प्रकारके किसी आन्दोलनका दमन करनेके लिए ब्रिटिश सरकारकी ओरसे कठोर कानून बनानेकी भी धमकी दी गयी है। सिलोनके प्रधान मन्त्रीने अपने एक वक्तव्यमें कहा है कि ब्रिटिश सरकारको सिलोनके शासन-विधानके अनुसार अपनी विशेष क्षमताका उपयोग करनेका अधिकार तभी हो सकता है जब कि शान्ति और व्यवस्थापर किसी तरहका खतरा पहुंचे। किन्तु एक विशुद्ध अर्थनीति सम्बन्धी मामलेमें इस प्रकार विशेष क्षमताका उपयोग करना बिलकुल नाजायज है। यह तो ठीक है, किन्तु एक ओर जहां एक शक्तिशाली राष्ट्रकी स्वार्थरक्षाका प्रश्न है वहां प्रतिपक्षी दुर्बल राष्ट्रके प्रति नीति और न्यायकी बात सुनता ही कौन है!

हम भारतीयोंके लिए तो ब्रिटिश सरकारकी इस नीतिमें कुछ भी नूतनता नहीं है। हमें तो इस नीतिका नित्य ही कटु अनुभव हो रहा है। हां, सिलोनके इस दृष्टान्तसे हमें इतनी शिक्षा अवश्य मिलती है कि भावी शासनमें जब भारत और इंगलैण्डके स्वार्थको लेकर किसी विषयमें सङ्घर्ष उत्पन्न होगा तो उस समय इंगलैण्डका स्वार्थ ही सर्वोपरि समझा जायगा, भारतका नहीं।

## मोटर गाड़ियोंकी आमदनी

भारतमें मोटर गाड़ियोंका प्रचार दिन-दिन बढ़ता जा रहा है। कुछ समय पहले तक अमेरिका और कनाडासे ही अधिक संख्यामें मोटरें इस देशमें आया करती थीं। किन्तु अब इंगलैण्डसे भी मोटरोंकी आमदनी काफी संख्यामें होने लगी है। अमेरिका, इंगलैण्ड और कनाडाके बाद फ्रान्स और इटलीका नम्बर है। सन् १९३३-३४ में कुल ९७५९ मोटर गाड़ियां इस देशमें आयीं जिनकी कीमत १ करोड़ ७६ लाख रुपये होती थी। इससे एक वर्ष पूर्व ६,२०१ मोटरें १२८ लाख रुपये मूल्यकी आयी थीं। इंगलैण्डसे आनेवाली मोटरोंकी संख्यामें बहुत ज्यादा वृद्धि हुई। एक वर्ष पहले जहां ३९५८ मोटरें ८० लाख रुपयेकी आयी थीं वहां सन् १९३३-३४ में यह संख्या बढ़कर क्रमशः ९३४८ और १०६ लाख हो गयी। अमेरिका और कनाडाकी मोटरोंकी संख्यामें भी वृद्धि हुई। अमेरिकासे आनेवाली मोटरोंकी संख्यामें १२०१ से २२२७ और कनाडाकी मोटरोंकी संख्यामें २९६ से १७१६ की वृद्धि हुई। अन्य देशोंसे आनेवाली मोटरोंकी संख्यामें ह्रास हुआ। भारतमें जितनी मोटर गाड़ियां आयीं उनमें ४७३९ बम्बईमें और २३७१ बङ्गालमें आयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मोटरबसोंकी आमदनीमें भी काफी वृद्धि हुई और इस वृद्धिमें अमेरिका और कनाडाका ही पूरा हिस्सा रहा। इंगलैण्डका हिस्सा पूर्ववत् बना रहा। सन् १९३३-३४ में ६६ लाख रुपयेकी ५४९६ मोटर बसें इस देशमें आयीं। एक वर्ष पूर्व ४० लाख रुपयेकी २६७६ मोटर बसें आयी थीं। मोटर साइकिलोंमें कुल ७०० की संख्यामें ६१२ अकेले इंगलैण्डसे आयीं।

इस प्रकार सन् १९३३-३४ में लगभग ढाई करोड़की मोटर गाड़ियां और मोटर बसें इस देशमें आयीं। सारे देशमें मोटर गाड़ी तैयार करनेवाला एक भी कारखाना नहीं है। अतएव साल-ब-साल हमें अपना शौक पूरा करनेके लिए करोड़ों रुपया विदेश भेजना पड़ता है।

## वाणिज्य-समझौता

व्यवस्थापिका परिषद्में जिस समय भारत-जापान समझौतापर वादविवाद हो रहा था, इस बातका सङ्केत किया गया था कि यह सम्भव है कि जापानकी देखादेखी अन्यान्य देश भी भारतके साथ इस प्रकारका व्यापारिक समझौता करें। अब शिमलाके एक समाचारसे मालूम होता है कि इटलीसे शीघ्र ही वहांके व्यापारियोंका एक प्रतिनिधि-मण्डल भारत पहुंचने वाला है। प्रतिनिधि-मण्डलके सदस्य भारत सरकारके प्रतिनिधियोंसे मिलकर व्यापारिक समझौतेकी सम्भावनाओंपर विचार करेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्यके इस युगमें भारतका वाणिज्य सम्बन्ध पारस्परिक आदान-प्रदानके आधारपर अन्यान्य देशोंके साथ स्थापित हो यह सर्वदा वाञ्छनीय है। किन्तु किसी प्रकारके समझौतेमें एकमात्र भारतके हिताहितपर ही ध्यान रखा जाना चाहिए और भारतीय व्यवस्थापिका परिषद् तथा भारतीय वणिक संस्थाओंकी सम्मतिके बिना कोई निर्णय नहीं होना चाहिए।

---


# आज कलकी फेशनबल चीजें—फेन्सी और कम दाम!

| | | रुपया | रुपया | रुपया | |
|---|---|---|---|---|---|
| चांदीका कटक काम | एरिंग | १॥) | ३) | ५) | जोड़ा १ |
| ,, | मीणाका ,, | २) | ३) | ५) | ,, |
| ,, | झुमका कटक काम | २) | ३) | ५) | ,, |
| ,, | ,, मीणाका | ३॥) | ५) | | ,, |
| ,, | चूड़ी मीणाका | ३) | ५) | | ,, |
| ,, | साड़ीपिन कटकका | २) | ३) | | नग १ का |
| ,, | साड़ीपिन मीणाका मयूर | ३) | | | नग १ का |
| ,, | अंगूठी मीणाका | १।) | | | ,, |

हमारे यहां सोना चांदी और जवाहरातकी चीजें हर वक्त तैयार रहती हैं।
नया और बड़ा केटलोग ।) का टिकट भेजकर मंगाइये।

## के० मणिलाल एण्ड कम्पनी, जौहरी,

१७३, हरिसन रोड, कलकत्ता।

Tel. No. 2741 B. B. Tele. Add. NAVCHETAN


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साहित्य जगत

## उपदेशक और कलाकार

गल्प, नाटक और उपन्यास लिखनेकी कोई सर्वजन सम्मत प्रणाली नहीं हो सकती। इस प्रकारकी रचनाओंका उद्देश्य बहुत-कुछ लेखकके मनोभाव और दृष्टिकोणपर निर्भर करता है। उपन्यास शिक्षाप्रद भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। गल्प, नाटक और उपन्यासके लेखकोंके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे बराबर मानव-समाजके उत्थानकी चिन्तामें व्यस्त रहा करें और तदनुसार अपने कथानकके पात्रोंका चित्रण करें। मानव समाजका जो रूप उनकी आंखोंके सामनेसे होकर गुजर रहा है उसका यथा-रूप चित्रण करके भी वे आनन्दोपभोग कर सकते हैं।

इस विषयपर एक विलायती पत्रमें एक अंगरेज विद्वान्ने एक विचारपूर्ण लेख लिखा है, जिसका सारांश इस प्रकार है—"आप उपन्यास और नाटक लिखना आरम्भ करते हैं, क्योंकि आप मानव-समाजकी उन्नतिमें सहायता पहुंचाना चाहते हैं; किन्तु यदि आपमें वास्तविक रचना-प्रतिभा होगी तो आपकी कलात्मक प्रवृत्ति प्रबल हो उठेगी और फिर आप जनसमुदाय या उसके भावोंकी अपेक्षा अपनी रचनाओं-के सम्बन्धमें विशेष ध्यान देंगे। यदि आप यह चाहते हैं कि लोग सज्जन बनें तो इसका एक उपाय यह है कि युक्तिसङ्गत ढङ्गसे सज्जनताके लाभ बताये जायं। किन्तु यह बात भी एक तथ्य है कि मानव-कल्पनाके समान मानव-बुद्धिका उच्च विकास कहीं नहीं हुआ है, इसलिए केवल तर्क द्वारा जो अपील की जाती है उसका विशेष फल नहीं देखा जाता। दार्शनिकोंके गुरु गम्भीर उपदेशोंका कभी-कभी संसारपर विशेष प्रभाव पड़ता देखा गया है, किन्तु सार्वजनिक भावनाके लिए वे बहुधा ग्राह्य नहीं होते। "Uncle Tom's Cabin" (जिसका हिन्दी अनुवाद 'टाम काकाकी कुटिया'के नामसे प्रकाशित हो चुका है) नामक उपन्यासको लीजिये। उप-न्यासका जो स्टैण्डर्ड माना गया है उसके अनुसार यह पुस्तक बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। किन्तु इसका प्रभाव बहुत व्यापक पड़ा। गुलामीके विरुद्ध इस पुस्तकने बहुसंख्यक मनुष्योंके हृदयमें क्रोध और क्षोभकी प्रचण्ड भावना उत्पन्न कर दी। इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि युक्ति और तर्ककी अपेक्षा मनोवेग एक अत्यन्त प्रबल शक्ति है। यह बहुधा देखा जाता है कि एक उपदेशकके रूपमें उपन्यासकार सफल नहीं होते, किन्तु यदि उपदेशक-को कलाका प्रयोग करना पड़े तो वह उपन्यासका ही प्रयोग करेगा। आप प्रथम श्रेणीके किसी भी कलाकारको ऐसे चित्रोंका चित्रण करते न देखेंगे जो उपदेशप्रद हों।"

## मातृभाषामें उच्चकोटिके ग्रन्थोंका अभाव

बंगला साहित्यके अनन्य सेवक और ख्यातनामा लेखक साहित्याचार्य राय बहादुर जलधर सेनको उनकी ७५ वीं जन्मतिथिके उपलक्ष्यमें बंगला भाषाभाषियों और विभिन्न साहित्यिक संस्थाओंकी ओरसे अभिनन्दित किया गया था। इस अवसरपर कलकत्ता विश्वविद्यालयके वाइस चैन्सेलर श्रीयुत श्यामाप्रसाद मुकुर्जीने सभापतिका आसन ग्रहण किया था। आपने अपने भाषणमें बंगला साहित्यकी वर्तमान प्रगतिपर प्रकाश डालते हुए साहित्यिकों और लेखकोंका ध्यान एक आवश्यक विषयकी ओर आकृष्ट किया है। आपके भाषणका उक्त अंश हिन्दी-साहित्यकी भावी उन्नति और विकासके लिए भी उपयुक्त समझकर हम उसे यहां उद्धृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करते हैं:—"कलकत्ता विश्वविद्यालयके मैट्रिक परीक्षार्थियों-को अब मातृभाषामें शिक्षा दी जायगी। किन्तु मातृभाषा द्वारा शिक्षा प्रदान करनेकी यह योजना मैट्रिकुलेशन तक ही आबद्ध नहीं रहेगी। ऐसा दिन भी आ सकता है जब कि क्रमशः अन्यान्य उच्च और उच्चतम शिक्षा पद्धतियोंमें भी मातृभाषाका समावेश हो। इसके लिए हमें ग्रन्थोंकी आवश्यकता होगी। साहित्यिकोंको अब विविध विषयोंके पाठ्य ग्रन्थोंके प्रणयनकी ओर ध्यान देना चाहिए। बंगला भाषामें विभिन्न विषयोंके पाठ्य ग्रन्थोंका अभाव है। अंग-रेजीमें जिस प्रकार Every man's Library Series अथवा Benn's Series है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषामें सुलभ पुस्तक मालायें प्रकाशित करनी होंगी। विश्व-साहित्य दरबारमें केवल कविता, प्रणयगीत अथवा उपन्यास और गल्पलहरीके अलङ्कारोंसे मातृभाषाको अलंकृत करनेसे काम नहीं चलेगा। मांको अलंकृत करनेके लिए सब प्रकारके आभूषण—इतिहास, विज्ञान, दर्शन, राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति प्रभृति—का प्रयोजन है। इसलिए साहित्यिकोंसे हमारा साग्रह अनुरोध है कि बंगलाके तरुण लेखकगण कुछ दिनोंके लिए बंगलाके सारस्वत सौधको सर्वाङ्गसुन्दर सज्जित करनेके लिए बद्धपरिकर हो जायं। केवल कविता, गल्प उपन्यास प्रभृति मधुर रसाल विषयोंके वर्णनसे किसी सुसम्पन्न साहित्यका भवन निर्मित नहीं होता। इसके लिए सब विषयोंका समवाय आवश्यक है।"

हिन्दीमें भी अभी विविध विषयोंपर इस प्रकारके ग्रन्थों-का बहुत कुछ अभाव है जिनके द्वारा कालेजोंमें उक्त शिक्षा दीजा सके। अतएव हमें ऐसे ग्रन्थोंके प्रणयनकी ओर विशेष रूपसे ध्यान देना होगा ताकि कोई यह न कहे कि दर्शन, विज्ञान, राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति आदि विषयोंमें उच्च कोटिके ग्रन्थोंका अभाव होनेके कारण ही बी० ए०, एम० ए० आदि परीक्षाओंमें मातृभाषाके माध्यम द्वारा शिक्षा नहीं दी जा सकती।

टर्कीका मुस्तफा कमालपाशा—लेखक-श्री शिवनारा-यण टण्डन, प्रकाशक गङ्गा-ग्रंथागार, ३६ लाटूश रोड, लख-नऊ। मूल्य सजिल्द २), सादी जिल्द १॥)

इस पुस्तकमें वर्तमान टर्कीके निर्माता और सर्वेसर्वा मुस्तफा कमाल पाशाकी जीवन-कहानी, उनकी ज्वलन्त देशभक्ति, उनकी अनुपम देशसेवा, वीरोचित कर्तव्य पालन आदि गुणोंपर बड़ी ही सजीव भाषामें प्रकाश डाला गया है। पुस्तकके लेखक एकबार स्वयं कमालपाशासे मिले थे। अतएव कमालपाशाके व्यक्तित्वका चित्राङ्कण करनेमें आपको बहुत कुछ सफलता मिली है। इसमें सन्देह नहीं कि पुस्तक सामयिक है और रोचक होनेके साथ-साथ शिक्षा-प्रद भी है।

बिस्मिलकी शायरी—लेखक श्री सुखदेव प्रसाद सिनहा "बिस्मिल"। प्रकाशक—सरस्वती-सदन, दारागंज, प्रयाग, मूल्य १॥)

'बिस्मिल' अथवा 'बिस्मिल इलाहाबादी'के नामसे हिन्दीके साहित्यिक और समाचारपत्रोंके प्रायः सभी पाठक परिचित होंगे। हिन्दी पत्रोंमें आपकी उर्दूकी शेरें अक्सर छपा करती हैं और उन्हें लोग बड़े चावसे पढ़ते हैं और उनकी काव्य-कलाका रसानन्द उपलब्ध करते हैं। बड़े-बड़े मुशायरोंमें कविवर "बिस्मिल" के कलमोंको दाद दी जा चुकी है। इन्हीं 'बिस्मिल'की भावपूर्ण व्यङ्ग कविताओंका संग्रह इस पुस्तकमें किया गया है। इसमें सन्देह नहीं कि इन व्यङ्गपूर्ण कविताओंमें स्थान-स्थानपर सामाजिक और राजनीतिक विषयोंपर ऐसी मर्मस्पर्शिनी चुटकियां ली गयी हैं कि वे दिलपर चोट किये बिना नहीं रहतीं। लेखकको महाकवि अकबरके ढंगपर कवितायें लिखनेमें बहुत कुछ सफ-लता प्राप्त हुई है। पुस्तककी छपाई साफ और सुन्दर है।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

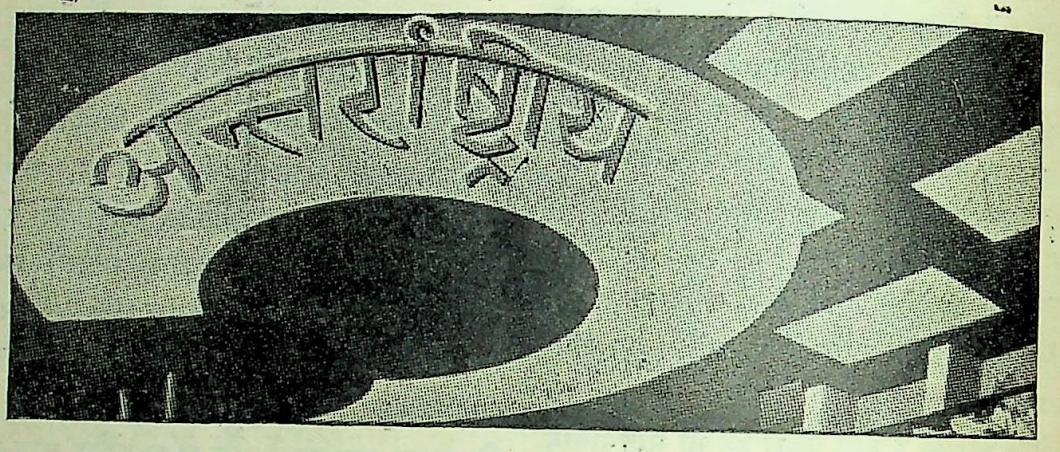


## यूरोपकी रणसज्जा

सारा यूरोप आज रणसज्जासे सज्जित हो रहा है। भावी युद्धकी आशङ्कासे राष्ट्रोंमें इस बातकी होड़-सी लग रही है कि शस्त्रास्त्रोंकी घुड़दौड़में कौन बाजी मार ले जाता है। युद्धकी सम्भावनाको टालनेकी इच्छा मौजूद होते हुए भी राष्ट्रोंमें युद्धकी भावना मौजूद है। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र यथाशक्ति अपनेको शक्तिशाली और अजेय बनानेकी धुनमें मस्त हो रहा है। सर्वसाधारण जनता राष्ट्रोंका यह विशाल समरायोजन देखकर सन्त्रस्त हृदयसे प्रश्न करती है—"क्या निकट भविष्यमें युद्ध होगा?" यूरोपकी इस अवस्थाका चित्र चित्रित करते हुए जान लेन नामक एक लेखकने "Will war come in Europe." नामक ग्रन्थमें लिखा है:—"अमेरिकाके क्षेत्रफलकी एक-तिहाईसे भी कम भूमिमें बसा हुआ यूरोप इस समय समरोन्मादसे उन्मत्त हो रहा है। सैनिक वर्दी पहने हुए ६० लाख मनुष्य यूरोपकी सड़कों-पर परेड कर रहे हैं, उसके सीमान्त प्रदेशपर पहरा दे रहे हैं और नकली युद्धोंका आयोजन कर रहे हैं। एक रूसको छोड़कर यूरोपके और सब देशोंमें १९ और ४९ वर्षकी अवस्थावाले पुरुषोंमें प्रत्येक ९ में एक पुरुष वर्दी धारण किये हुए हैं। इनमें स्कूलके छात्रसे लेकर जीवन-संग्रामसे अव-काश ग्रहण करनेवाले लोग तक शामिल हैं। आज शान्तिके दिनोंमें भी ऐसे ६० लाख आदमी हैं जो नियमित सैनिकों-की सफेद, नीली और खाकी रङ्गकी वर्दी तथा अनियमित सैन्य दलकी भूरी, काली और खाकी रङ्गकी वर्दी पहने हुए हैं।

यूरोप सन्त्रस्त है। अपने पांच सायुध दलोंमें यूरोप महा-देश आज सङ्गीनयुक्त बन्दूकोंके साथ प्रतीक्षा कर रहा है। किसकी प्रतीक्षा?

फरासीसी दलमें—जो बड़ेसे बड़ा दल है—फ्रान्स, पोलैण्ड, जुगोस्लेविया, जेकोस्लेवेकिया, रुमानियां और बेल्-जियम हैं, जिन्हें गत महायुद्धमें इच्छानुसार सब-कुछ मिला।

जर्मन दलमें जर्मनी, आस्ट्रिया, हङ्गरी और बलगेरिया हैं, जो गत महायुद्धमें जो-कुछ चाहते थे, सब खो बैठे और आज उन्हें फिर प्राप्त करना चाहते हैं।

इटली-दलमें अकेला इटली है जिसे गत महासमरमें इच्छानुसार सब-कुछ नहीं मिला।

तटस्थ दलमें स्वीजरलैण्ड, हालैण्ड, स्पेन, स्कैण्डिने-विया और बाल्टिक प्रदेशके क्षुद्र राज्य हैं जो गत महा-समरमें युद्धसे पृथक् थे और इस समय युद्धकी सम्भावनासे आतङ्कग्रस्त हो रहे हैं।

अंगरेज-दलमें अंगरेज जाति है जिसकी जीविका वाणिज्य-पर निर्भर करती है, इसलिए शान्ति कायम रखनेमें उसका सबसे बड़ा स्वार्थ है। इस समय यूरोपके युद्ध या शान्तिकी कुञ्जी इंगलैण्डके हाथमें ही है।

एक ओर दूरमें सोवियट रूस है जो जापानसे भयभीत हो रहा है और फ्रान्स रूसके इस भयसे लाभ उठाकर उसकी मैत्रीका उपयोग जर्मनीके विरुद्ध करना चाहता है।

प्रत्येक दल सन्त्रस्त है। फ्रान्सको इस बातका भय है कि जर्मनी अपनेको इसलिए शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित कर रहा है जिससे वह फ्रान्सको कुचल डाले, पोलैण्डका अस्तित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मिश दे, क्षुद्र मित्र-राष्ट्रोंकी सीमाओंको उड़ा दे और स्वस्तिका-झण्डेके नीचे ८ करोड़ जर्मनोंको एकत्र करके यूरोप महादेशको अपने चङ्गुलमें कर ले।

जर्मनोंको यह भय है कि फ्रान्स एक निवारणात्मक "Preventive" युद्ध ठानेगा।

आस्ट्रियाके सीमान्तके चतुर्दिक् इटली, जेकोस्लोवेकिया, जुगोस्लेविया, हङ्गरी और जर्मनीकी फौजें तनी हुई सङ्गीनोंके साथ गश्त लगा रही हैं। ये राष्ट्र "Sick Man of Europe" "यूरोपके बीमार आदमी" आस्ट्रियाके क्षयक्षीण स्वास्थ्यको ध्यानपूर्वक देख रहे हैं और प्रत्येक इस बातके लिए उत्कण्ठित है कि कोई इस पैतृक धनको चुरा न ले।

डानजिगका पुराना झगड़ा अलग ही है। इसके सिवा पोलैण्ड और रूसके सम्बन्धका प्रश्न है, इटली और फ्रान्सका मतभेद है; जुगोस्लेविया और बलगेरियाका मतभेद है; रूमानिया और रूसका मतभेद है; सारका प्रश्न है।

इटलीको इस समय सबसे बढ़कर इस बातका भय है कि आस्ट्रिया कहीं नात्सी मतानुयायी बनकर जर्मनीका एक अङ्ग न बन जाय। क्योंकि ऐसा होनेसे ७ करोड़ २० लाख जर्मन नात्सियोंका एक राष्ट्र इटलीके सीमान्तके पास ही पड़ोसी बनकर रहेगा।

तटस्थ दलको इस बातकी सम्भावनापर भय है कि शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित होकर जर्मनी, डेनमार्क, स्वीजरलैण्ड तथा पोलैण्ड और क्षुद्र मित्र-राष्ट्रोंके सब जर्मनोंको एक करनेका प्रयत्न कर सकता है।

हिट्लरके नामसे ही आज यूरोपमें आतङ्क छाया हुआ है। हिट्लरके चान्सलर होनेके पूर्व यूरोपके जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध थे उनमें अब एक भी नहीं रह गया है। इसलिए संसारका लोकमत इस निर्णयके पक्षमें जान पड़ता है कि "हिट्लरका अर्थ है युद्ध।"

सब राष्ट्रोंको यह भय हो रहा है कि यदि कहीं भी युद्ध छिड़ जायगा तो प्रत्येक राष्ट्रको उसमें संलिप्त होना ही पड़ेगा और यह समरानल पाश्चात्य सभ्यताको ध्वंस कर डालेगा। यूरोपके इस सार्वजनिक मतसे कोई भी राष्ट्र उदासीन नहीं रह सकता।

"क्या युद्ध होगा?" इसकी चिन्ता सबको है।

जर्मनी जान-बूझकर इस साल युद्ध नहीं छेड़ेगा। फ्रान्स भी कोई निवारणात्मक युद्ध नहीं करेगा। सन् १९३४ में यूरोपमें किसी पूर्व-निश्चित योजनाके अनुसार युद्ध नहीं होगा। आकस्मिक रूपमें युद्ध कल भी छिड़ सकता है, किन्तु यूरोप इस समय युद्धसे जिस प्रकार सन्त्रस्त हो रहा है उसे देखते हुए इस प्रकारका युद्ध सम्भव नहीं मालूम होता।

## इंगलैण्डकी आकाश-सेना

इंगलैण्ड अपनेको शान्तिका सबसे बड़ा उपासक समझता है और निरस्त्रीकरण सम्मेलनकी कार्यवाहियोंमें उसके प्रतिनिधियोंने ही सबसे ज्यादा दिलचस्पी दिखलायी है। किन्तु उसी इंगलैण्डने अब शस्त्रास्त्रोंकी घुड़दौड़में किसी अन्य राष्ट्रसे पश्चात्पद न रहनेके खयालसे अपनी आकाश-सेनामें वृद्धि करनेका जो निश्चय किया है उससे मालूम होता है कि 'कथनी और करनी'में कितना अन्तर है। ब्रिटिश सरकारने एक योजना प्रस्तुत की है जिसके अनुसार सन् १९३८ तक आकाश-सेनाकी वृद्धि करनेमें २ करोड़ पौण्ड खर्च किया जायगा। आकाश-सेना-विभागके मन्त्री लार्ड लण्डनडेरीने उपर्युक्त योजनाको हाउस आव लार्ड्समें उपस्थित करते हुए कहा कि राष्ट्रोंमें शस्त्रास्त्रोंकी जो घुड़दौड़ चल रही है उसे रोकनेके लिए ही आकाश-सेनाको विस्तृत करनेकी योजना स्थिर की गयी है। हाउस आव कामन्समें मजदूर दलके एक सदस्यने जब इसके विरुद्ध निन्दात्मक प्रस्ताव उपस्थित किया तो मि० बाल्डविनने अन्यान्य राष्ट्रोंकी आकाश-सेना-वृद्धिका उल्लेख करते हुए कहा कि उनके मुकाबलेमें अभी तक ब्रिटेनने अपनी आकाश-सेनामें जो वृद्धि की है वह बहुत ही तुच्छ है। मि० बाल्डविनने कहा कि गत चार वर्षोंमें इंगलैण्डके वायुयानोंकी संख्यामें सिर्फ ४२ की वृद्धि हुई है जबकि इतने ही समयमें फ्रान्सने २०० या ३०० वायुयानोंकी वृद्धि की है और आकाश-सेना-विभागके पुनर्गठनके लिए डेढ़ करोड़ पौण्ड खर्च करनेका बजट पास किया है। इटलीके वायुयानोंकी संख्यामें ६५ की वृद्धि हुई है और उसके पास इस समय हजार-ग्यारह सौ मशीनें हैं। बेलजियम भी अपनी आकाश-सेनामें सैकड़े ३० की वृद्धि कर रहा है। अमेरिकाने अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आकाश-सेनामें २४० वायुयानोंकी वृद्धि की है और इसके अलावा ११३४ वायुयानोंके लिए मञ्जूरी दी है। रूस भी अपनी आकाश-सेनामें बहुत-कुछ वृद्धि कर रहा है।

मि० बाल्डविनके इस कथनसे यह स्पष्ट है कि इस समय यूरोपका एक भी राष्ट्र सच्चे हृदयसे शान्ति और निरस्त्रीकरणका अभिलाषी नहीं है, और ब्रिटेनका यह कहना भी महज ढोंग ही मालूम होता है कि आकाश-सेनामें वृद्धि करके वह अशान्ति और युद्धके खतरेको टालनेका प्रयत्न कर रहा है। आकाश-सेनामें वृद्धि करके युद्धका खतरा किस प्रकार टाला जा सकता है, यह हमारी समझमें नहीं आता। इसके विपरीत इसका परिणाम यह होगा कि राष्ट्रोंमें प्रतिद्वन्द्विता बढ़ेगी और निरपराध जनताके संहारका कार्य और भी सुगम होगा। आकाश-पथमें घनघोर युद्ध होंगे और वायुयानोंसे बड़े-बड़े जहरीले बम, विषाक्त धुआंवाले बम पृथ्वीपर गिराये जायंगे जिनसे सर्वत्र महानाशका दृश्य उपस्थित हो जायगा। इस प्रकार शस्त्रास्त्रोंमें वृद्धि करनेकी यह प्रतिद्वन्द्विता शान्तिके मार्गको प्रशस्त करनेके बजाय उसे और भी जटिल बना देगी और अन्ततः इसका परिणाम इतना भयावह होगा कि जिसकी कल्पना-मात्रसे हृदय कांप उठता है।

## नात्सी-निर्वाचनका स्वांग

जर्मनीके राष्ट्रपति वान हिण्डेनबर्गकी मृत्युके बाद हर हिट्लरने जिस प्रकार अपनेको राष्ट्रपतिके पदपर प्रतिष्ठित कर लिया वह एक स्वेच्छाचारी शासककी निरंकुश नीतिके सर्वथा अनुकूल ही था। राष्ट्रपतिके देहावसानके बाद फौरन मन्त्रिमण्डलकी एक विशेष बैठक हुई जिसमें यह निश्चय किया गया कि प्रेसिडेण्ट और चान्सेलरके पद मिला दिये जायं और वान हिण्डेनबर्गके उत्तराधिकारी भी हर हिट्लर ही बनाये जायं। इसके बाद स्थल सेना और नौ-सेना विभागने हर हिट्लरके प्रति अपने आनुगत्यकी प्रतिज्ञा की। यह सब हो जानेके बाद इस सम्बन्धमें जर्मनीका लोकमत जाननेके लिए चुनावका एक नाटक रचा गया। नाटक इसलिए कहते हैं कि नात्सीनीतिके अनुसार चुनाव होनेके कारण इसे चुनाव न कहकर चुनावका प्रहसन कहना ही ठीक है। चुनावसे पहले ही इस बातकी घोषणा कर दी गयी थी कि प्रत्येक स्त्री-पुरुषके वोटकी जांच-पड़ताल की जायगी और जो व्यक्ति हर हिट्लरके पक्षमें वोट नहीं देगा उसे या तो अपनी नौकरीसे हाथ धोना पड़ेगा अथवा अन्य रूपमें दण्ड दिया जायगा। किसीको भी हर हिट्लरका प्रतिद्वन्द्वी खड़ा होने नहीं दिया गया और समाचारपत्रोंको यह चेतावनी दे दी गयी कि वे चुनावके विषयको लेकर किसी प्रकारकी आलोचना-प्रत्यालोचना न करें। इस प्रकार गणतन्त्रके सिद्धान्तोंकी हत्या करके राष्ट्रपतिके निर्वाचनके लिए जनताका मतामत संग्रह किया गया। जितने लोगोंने इस निर्वाचनमें भाग लिया उनमें सैकड़े १० ने हर हिट्लरके विरुद्ध वोट दिये। इनकी संख्या लगभग ७० लाख कूती गयी है। मालूम नहीं, आगे चलकर इनके अदृष्टमें क्या बदा है। क्योंकि निर्वाचनके बाद हर हिट्लरने जो घोषणा की है उसमें उन्होंने कहा है कि "जर्मनीके प्रत्येक अधिवासीको नात्सी मतानुयायी बनाना होगा और यह काम नात्सी-दल-सुलभ क्षिप्रगतिसे और एकनिष्ठ भावसे सम्पन्न किया जायगा।" यह नात्सी-दल-सुलभ क्षिप्रता क्या है? भविष्यमें जर्मनीमें और कौन-कौन-सी विस्मयजनक घटनायें होनेवाली हैं, इस विषयको लेकर जर्मनीमें उद्वेगजनक तर्क-वितर्क चल रहा है। क्या हिट्लर-विरोधियोंको नात्सी-मतवादमें दीक्षित करनेके लिए गत ३० जूनकी रातको जो बर्बरोचित काण्ड हुआ था उसीकी पुनरावृत्ति तो नहीं होगी? क्योंकि नात्सी शासनकी एक नीति यह भी तो है कि विचार-स्वातन्त्र्यका गला घोटकर तलवारके बलपर लोगोंको अपना मतानुयायी बनाना। इस नीतिका परिणाम क्या होगा, यह तो भविष्य ही बतायेगा।

## भाषण-स्वतन्त्रता

प्रोफेसर हेराल्ड जे लस्की इंगलैण्डके एक सुप्रसिद्ध राजनीति-शास्त्रवेत्ता और अर्थनीतिज्ञ हैं। London School of Economics अर्थशास्त्र विद्यालयके आप अन्यतम अध्यापक हैं। अभी हालमें रूसकी यात्रा करते हुए मास्को शहरमें आपने कई भाषण दिये हैं। अपने इन भाषणोंमें आपने इंगलैण्डमें क्रान्ति होनेकी सम्भावनापर प्रकाश डाला है। आपके क्रान्तिपूर्ण विचारोंसे इंगलैण्डके कुछ साम्राज्यवादियोंमें बड़ी खलबली मच गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पार्लियामेण्टमें इस सम्बन्धमें प्रश्नोत्तर होनेपर एक सदस्यने तो यहां तक कहा कि लण्डनका उक्त अर्थशास्त्र विद्यालय कम्यूनिज्मकी शिक्षाका प्रधान केन्द्र बन रहा है। उक्त सदस्यने यह भी कहा कि अर्थशास्त्र विद्यालयको सरकारकी ओरसे जो आर्थिक सहायता मिलती है वह बन्द कर दी जाय, ताकि प्रो० लस्की जैसे लोग इस प्रकार अपने विचारोंको स्वतन्त्रतापूर्वक व्यक्त न कर सकें। किन्तु इंगलैण्ड भारत थोड़े ही है जहां किसी शिक्षण संस्थामें राष्ट्रीयता-की गन्ध तक मालूम हुई कि झट उसे आर्थिक सहायता बन्द कर देनेकी धमकी देकर उसके राष्ट्रीय भावोंको कुचल डालनेका प्रयत्न किया गया।

पार्लियामेण्टके जिस सदस्यका ऊपर उल्लेख किया गया है उनका नाम सर ई० ग्राहम लिटिल है और आप लण्डन विश्वविद्यालयके प्रतिनिधि-रूपमें पार्लियामेण्टके सदस्य हैं। आपके कथनपर आलोचना करते हुए एक लेखकने लिखा है:—"सर ई० ग्राहम लण्डन विश्वविद्यालयके भाषण और विचार-स्वातन्त्र्यकी पवित्रताकी दुहाई देते हैं और कहते हैं कि यह विश्वविद्यालय ज्ञान-पिपासुओंकी ज्ञान-तृष्णाको शान्त करनेके उद्देश्यसे ही स्थापित हुआ था। जाति, धर्म या राजनीतिक भेदभावसे यह सर्वथा परे है। किन्तु वही सर ग्राहम एक वक्ताकी भाषण-स्वतन्त्रताका इसलिए अपहरण करना चाहते हैं, क्योंकि उसके विचार उनके मनोनुकूल नहीं हैं।"

सुप्रसिद्ध विद्वान् जार्ज बर्नार्ड शाने इस सम्बन्धमें लिखा है:—"प्रो० लस्कीने इस सर्वजन-विदित तथ्यको—अर्थात् अंगरेज राजनीतिज्ञ ब्रिटिश शासन-विधानके सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें तभी तक चिन्ता करते हैं जब तक कि उनके लिए ऐसा करना सुविधाजनक होता है—प्रकट करके एक ऐसी बात कही है जो रूसमें एक साधारण बात समझी जाती है। यदि प्रो० लस्की यह कहते कि Habeas Corpus Act ब्रिटिश स्वतन्त्रताकी आधारशिला है और जूरी द्वारा विचार ब्रिटिश न्यायका रक्षा-कवच है तो फौरन उनके इस कथनका यह कहकर खण्डन किया जाता कि क्या वे एक भी ऐसा दृष्टान्त बता सकते हैं जबकि सरकार और पुलिसने किसी अंगरेजको कैद करके उसपर बिना मुकदमा चलाये बन्दी बनाकर रखना चाहा हो और उस समय Habeas Corpus Act को ताकपर न रख दिया गया हो?" इसके बाद मि० बर्नार्ड शा आक्षेप करते हुए पूछते हैं—"अपने देशवासी जूरी द्वारा निर्दोष करार दिये जानेपर भी भारतीयोंको अंगरेज जज अपराधी समझकर क्यों दण्ड देते हैं?"

आगे चलकर मि० बर्नार्ड शा कहते हैं—"व्याख्यानोंमें धोखेबाजी केवल स्वदेशके लिए ही चल सकती है। यदि प्रो० लस्की इस धोखेबाजीको रूसमें भी कायम रखते तो उनका यह कार्य एक अध्यापककी दृष्टिसे तो कलङ्कजनक होता ही, इसके सिवा इससे उनकी मूर्खता, कपटता और अहङ्कारकी अत्यन्त अवाञ्छनीय धारणा वहांके लोगोंके मनमें उत्पन्न हो जाती।"

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## जहरीली गैससे बचनेके मुखड़े

यूरोपमें महायुद्धका खतरा जितना बढ़ता जाता है, आबाल-वृद्ध-वनिता सभी प्राण-रक्षाके उपायोंकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिए आतुर होते जाते हैं। यूरोपके अधिकांश देशोंमें नागरिकोंको अनिवार्य रूपसे जहरीली गैससे बचनेकी शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। महीनेमें एक-दो दिन मैदानोंमें

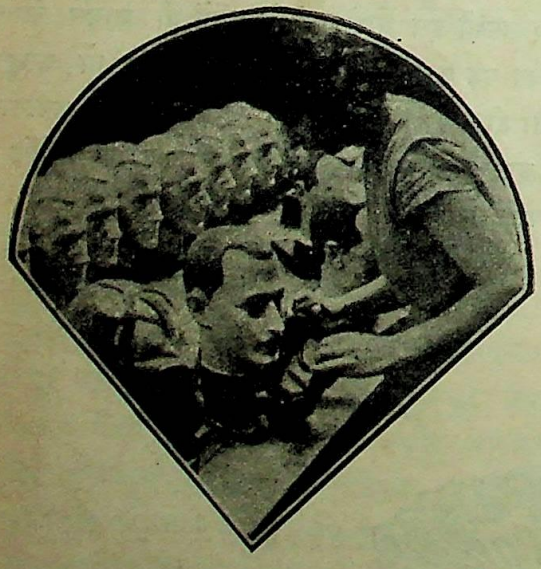

जहरीली गैससे बचनेके मुखड़े

सब लोगोंको जमा करके हवाई जहाजोंके आक्रमण और विषाक्त बमोंकी वर्षाके दृश्य दिखलाये जाते हैं ताकि सङ्कट-कालमें वे घबरा न जायें। सोवियट रूसमें स्कूलके छोटे-छोटे बच्चोंको मुखड़े पहननेका अभ्यास कराया जाता है। साथके चित्रोंसे पाठकोंको परिस्थितिकी अशान्तिका तनिक-सा आभास मिलेगा।

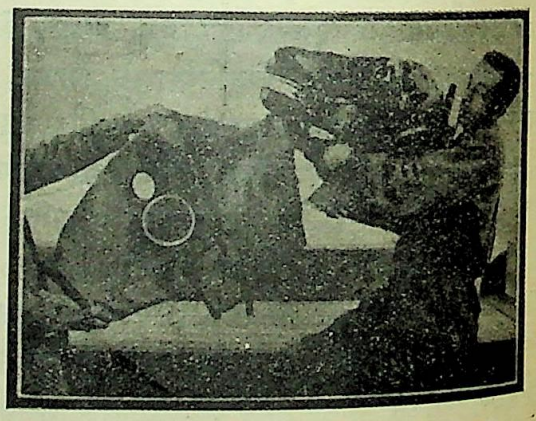

जहरीली गैससे बचनेके मुखड़े

## श्रमशक्ति तौलनेका मशीन

हेम्बर्गमें एक ऐसी मशीनका आविष्कार हुआ है जो अवस्थाप्राप्त कर्मियोंकी कार्यशक्तिको तौल सकती है जिसके अनुसार उनकी पेन्शनका फैसला होता है। मशीनमें एक पहिया लगा हुआ है जिसे पेन्शन-प्रार्थी घुमाता जाता है और उसकी कार्यशक्तिको एक पुर्जा नोट करता जाता है। इसके बाद उसे एक मुखड़ा पहनना पड़ता है जिसकी दो नलियां एक दूसरी मशीनमें चिपकी होती हैं जो उसकी श्वास-शक्तिका हिसाब लगाती हैं। कई बार यह प्रयोग करके उसका औसत निकाल लिया जाता है। तब पता चल जाता है कि वह औसतसे कितनी कम या अधिक मेहनत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर सकता है। जितनी कम श्रम-शक्ति होती है उतनी ही अधिक पेन्शन मिलती है।

## कपड़ेपर फोटो उतारनेका मसाला

कपड़ेपर फोटो उतारनेका मसाला

हाल हीमें एक ऐसे मसालेका आविष्कार हुआ है जिसे किसी भी कपड़ेमें लगानेके बाद निगेटिवसे फोटो उतारा जा सकता है। रूमाल, तौलिये या गिलाफपर मसाला मल दीजिये और बिजलीकी रोशनीसे मजेमें फोटो ले लीजिये। अंधेरे कमरे या किसी दूसरे सामानकी जरूरत नहीं है। एकसे लेकर चार मिनटके भीतर फोटो उतर जाता है जो बादमें कभी नहीं मिटता। कपड़ेपर फोटो आनेके बाद किसी संशोधनकी जरूरत नहीं रहती।

## बिजली संसारचक्रको बदल देगी

सैकड़ों वर्ष पहले जब किसी वैज्ञानिकने वायरलेस, वायुयान आदिका स्वप्न देखा होगा तो समकालीन जनताने उसका मजाक उड़ाया होगा। पर अब असम्भवसे असम्भव बात भी सम्भव हो रही है और कोई अनहोनी भविष्यवाणी सुनकर भी उसके उपहासका साहस कोई नहीं करता। फिर भी जब बिजली और रेडियोके धुरन्धर विशारद निकोला टेस्ला संसारके भविष्यपर अपना मत प्रकाश करते हैं तो लोगोंके आश्चर्यका पारावार नहीं रहता। उनका विचार है कि वायुयानोंको पेट्रोलकी आवश्यकता न होगी, बल्कि रेलों और ट्रामोंके समान वे भी विद्युत्-शक्तिके बलपर हजारों मील तक उड़ सकेंगे। लोग घरोंमें इतनी बिजली बना सकेंगे कि संसार-भरमें प्रति रात्रि दीपावलीका दृश्य रहेगा। दक्षिण ध्रुवके हिम-मण्डित प्रान्तरों या अफ्रीकाके अन्धकाराच्छन्न जङ्गलोंका अन्वेषण करते समय रेडियो द्वारा आसानीसे बिजलीकी रोशनी ली जा सकेगी। निकोला टेस्लाके प्रोत्साहनसे हाल हीमें एक 'रेडियो ट्रेन' चलानेका सफल प्रयत्न किया गया। दो डब्बेकी छोटी-सी गाड़ीको सुदूरस्थ रेडियो स्टेशनसे परिचालित किया गया और वह सात मील तक चलती रही। यदि निकोलाकी बात मान ली जाये तो निकट भविष्यमें बिजलीकी ताकतसे सभी असम्भवनीय योजनायें सफल हो सकती हैं।

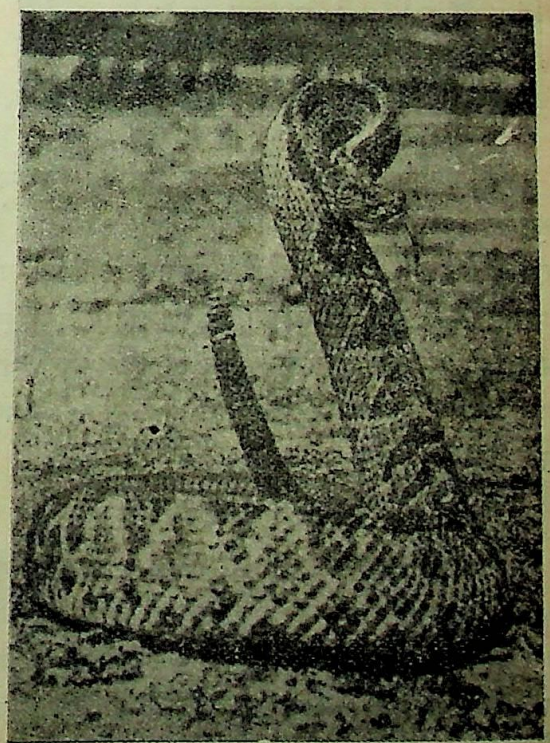

दक्षिण अमेरिकाके कोस्टा रिका Costa Rica स्थानमें Rattle-snake जातिका यह भयङ्कर सर्प पाया जाता है। चित्रमें अपने किसी शत्रुपर आक्रमण करनेके रूपमें यह दिखाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## डा० एमिल फ्रासचेल्स

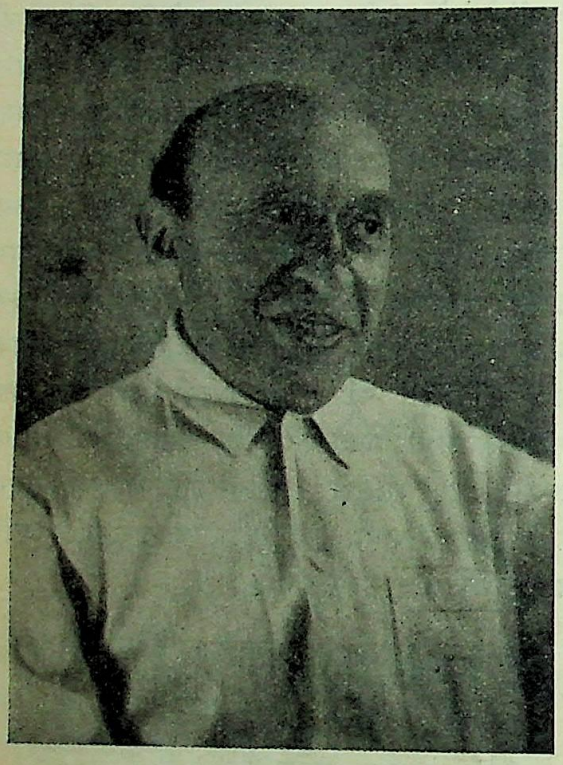

आप वियेनाके विश्वविद्यालयमें अध्यापक हैं। मनुष्यके वाक्शक्ति-सम्बन्धी रोगोंके सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ समझे जाते हैं। सारन ( बिहार ) जिलेके विशिष्ट कांग्रेस कार्यकर्ता बाबू महामायाप्रसाद, जिनकी वाक्शक्ति हजारीबाग जेलमें लुप्त हो गयी थी, आपकी ही चमत्कारपूर्ण चिकित्सा द्वारा थोड़े समयके अन्दर ही अपनी खोयी हुई वाक्-शक्तिको फिरसे प्राप्त करनेमें समर्थ हुए हैं।

## मौसिमका निरीक्षण

मौसिमके निरीक्षण-कार्यको संसारका सबसे महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक कार्य बतलाया गया है। हजारों प्रयोगशालाओंमें दिन-रात मौसिमके प्रत्येक परिवर्तनका अध्ययन किया जाता है और उसके औचित्यपर किसी हद तक मानव-जातिका दुःख-सुख निर्भर करता है। गगनचुम्बी शिखरोंसे लेकर सहाराके रेगिस्तान और प्रशान्त महासागरके निर्जन द्वीपों तकमें ऐसी प्रयोगशालायें बनायी गयी हैं। आर्कटिक प्रदेशमें सोवियट सरकारने जो प्रयोगशालायें बनायी हैं, वर्षके अधिकांश समय तक वहां पहुंचना बर्फके कारण कठिन हो जाता है। धूप, वर्षा, वायुकी गति और दिशा, तापमानके घट-बढ़ और हवाके दबावको छोड़कर संसार-भरमें प्रतिवर्ष मौसिमके डेढ़ करोड़ रिकार्ड लिये जाते हैं। तार या रेडियो-के द्वारा प्रत्येक रिकार्डकी सूचना दे दी जाती है जिन्हें एकत्रित करके रिपोर्टके रूपमें प्रकाशित किया जाता है। विश्वकी अर्थनीतिपर इन रिपोर्टोंका बड़ा प्रभाव पड़ता है।

## सबसे हल्की और तेज ट्रेन

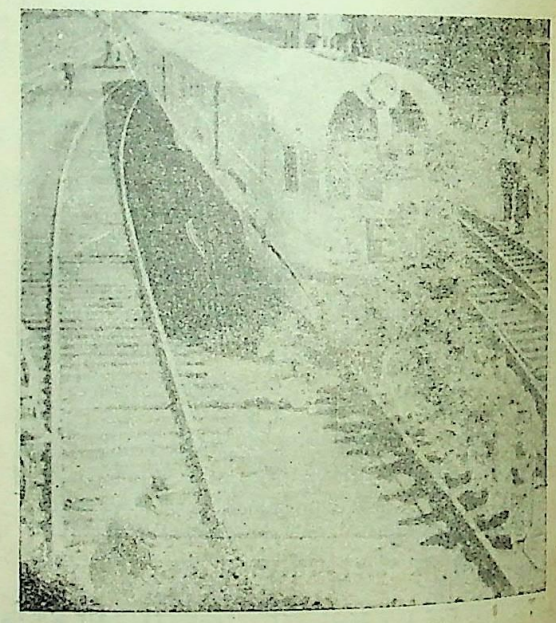

यह ट्रेन इतनी हल्की है कि इसे १० आदमी मजेमें खींच लेते हैं। यह फी घण्टा ११० मीलके हिसाबसे चलती है और इसके वजनसे सड़क भी ज्यादा खराब नहीं होती।

## बन्द न होनेवाली घड़ी

घड़ी बनानेवालोंका बहुत दिनोंका स्वप्न और सदियोंकी समस्या अब हल हो गयी। कहते हैं कि एक ऐसी टाइम पीस घड़ीका आविष्कार हुआ है जो अबाध गतिसे चलती-रहती है और कभी बन्द नहीं होती। इस घड़ीका नाम "अटमस" है।

यह अटमस घड़ी अब तककी घड़ियोंकी मशीनोंका रद्दोबदल या सुधारकर नहीं बनायी गयी, बल्कि यह तो एक पृथक् आविष्कार है। इस घड़ीमें चाबी या बिजलीके सेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और तार व करेण्टकी जरूरत नहीं। तापमानमें कमसे कम घट-बढ़ होनेसे ही इसमें अनन्त सञ्चालन-शक्ति पैदा हो जाती है। तापमानके परिवर्तनसे घड़ी अबाध रूपसे चलने लगती है। यह सब होनेपर भी इसकी मशीन बिलकुल सीधी-सादी है। इसके आविष्कारकका कहना है कि इसमें सिर्फ १० पहिये हैं और ये इतने आहिस्ते चलते हैं कि इनके बिसकर खराब होनेमें सदियां गुजर जायेंगी। इस घड़ीकी मोटर तो और भी कम पेचीदी है। मोटरमें तीन चीजें हैं जिनमें सिर्फ एक ही गतिशील है। यह चीज थर्मामीटरकी तरह एक शीशे-कीनली है जिसके अन्दर थोड़ा-सा पारा पड़ा रहता है। घड़ी बिना छुए ही सब ऋतुओंमें सब जगह ठीक समय देती है।

## सबमेरिन लिफ्ट

'सबमेरिन' या गोताखोर जहाजके डूबनेसे प्राणहानिकी आशङ्का दूर हो गयी। यह 'सबमेरिन लिफ्ट' समुद्रके गभीर तलमें पहुंच कर डूबे हुए सबमेरिनके व्यक्तियोंका उद्धार करनेमें सफल हुआ है। हाल हीमें इस 'लिफ्ट' के द्वारा १६२ फीटकी गहराईसे ७८ मनुष्योंका उद्धार किया गया है। इस यन्त्रका आविष्कार इटलीमें हुआ है।

१९

## रेडियोका चमत्कार

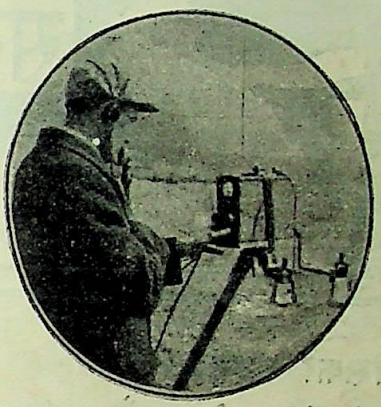

खबरें भेजने और पानेका रेडियो यन्त्र

हाल हीमें एक ऐसा रेडियो-यन्त्र तैयार किया गया है जिसके द्वारा खबरें भेजी भी जा सकती हैं और प्राप्त भी की जा सकती हैं। इसमें दिक्कत सिर्फ इतनी ही है कि तीन ही मीलके दायरेमें खबरें भेजी और पायी जा सकती हैं। इसका वजन भी बहुत कम यानी ११ सेर है। यह यन्त्र पुलिस, फायर-ब्रिगेड, फौज और उन सब व्यक्तियोंके बड़े कामका है जिन्हें आकस्मिक अवसरोंपर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जाना पड़ता है। इस यन्त्रके द्वारा पूरा विवरण मिलते ही वे अपने उद्दिष्ट स्थानके लिए चल पड़ते हैं।

## पांच लुटेरे सेठ

ऊपरकी कतारमें बायीं ओरसे (१) लीयोपैल्ड हैरिस (इस समय जेलमें) (२) स्टैभिस्की (आत्महत्या कर ली) (३) हैट्टी (इस समय जेलमें) नीचेकी कतारमें—(१) लोविनस्टीन (हवाई जहाजसे गायब हो गया) (२) क्रूगर (दियासलाईका राजा, जिसने आत्महत्या कर ली)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

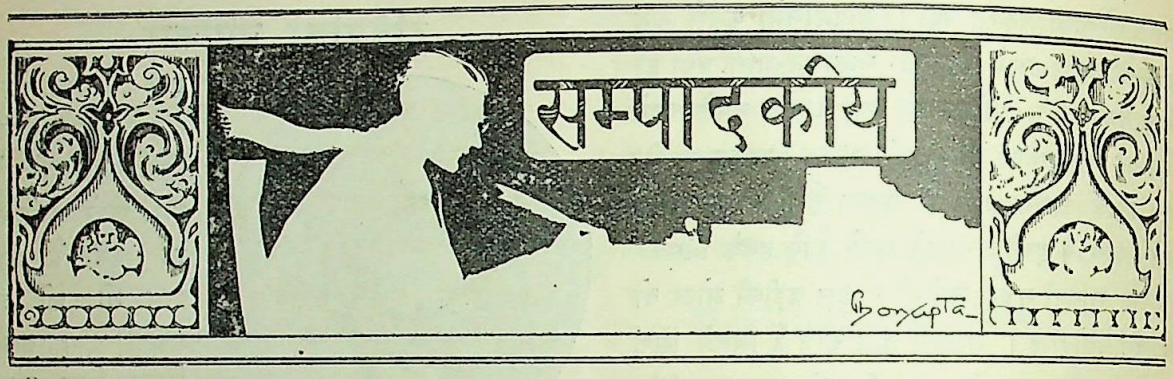


## कांग्रेसका लक्ष्य

कांग्रेसका ध्रुव लक्ष्य देशकी स्वाधीनता और राष्ट्रीय एकता है, ह्वाइट पेपर और प्रधान मन्त्रीका साम्प्रदायिक निर्णय नहीं। देशके जो सच्चे राष्ट्रकर्मी हैं, जिनका लक्ष्य स्पष्ट और स्थिर है, देशके गौरवोज्ज्वल भविष्यमें, उसके चरम सौभाग्यमें जिनका विश्वास है, जो शत-शत बाधा-विघ्नों और सन्देह-संशयोंके मध्य भी अपने ध्येयको दृष्टिपथ-से कभी तिरोहित नहीं होने देते, जो साम्प्रदायिकताके विषाक्त वातावरणसे अपने दृष्टिकोणको ऊर्ध्व करके दूर, किन्तु निश्चित भविष्यके उज्ज्वल प्रकाशकी क्षीण रेखाको आशापूर्ण दृष्टिसे देख सकते हैं, उन्हें कांग्रेसकी वर्तमान परिस्थिति, कलह और मतभेदसे निराश होकर कर्तव्य विमूढ़ नहीं बनना चाहिए। जातीय जीवनमें नैराश्य, अव-साद और विपर्यय तो होते ही रहते हैं। घटना-चक्रके कारण राष्ट्रीय आन्दोलनके उत्थान और शैथिल्यसे राष्ट्रके लक्ष्यमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। राष्ट्रका लक्ष्य जब तक विशुद्ध, पवित्र और स्थिर बना रहेगा तब तक उस लक्ष्यकी प्राप्तिके साधन चाहे समय-समयपर परिवर्तित क्यों न होते रहें, उसमें म्लानता या क्षुण्णता नहीं आ सकती। अतएव अपने इस लक्ष्यपर स्थिर दृष्टि रखकर ही देशकी वर्तमान परिस्थितिमें राष्ट्रकर्मियोंको अपना गन्तव्य पथ ढूंढ़ निकालना चाहिए।

## राष्ट्रीय शक्तिका केन्द्र

कांग्रेस कार्यकारिणी समितिने अपने गत अधिवेशनमें साम्प्रदायिक निर्णयके प्रश्नपर जो नीति निश्चित की है उससे कुछ कांग्रेसवादी सन्तुष्ट नहीं हैं। महामना मालवीयजी तथा श्रीयुक्त अणे-जैसे कांग्रेसभक्त नेताओंने कांग्रेस कमेटीकी नीतिसे असहमत होकर कांग्रेस-निर्वाचन-बोर्डसे असहयोग कर लिया है और आगामी निर्वाचनमें कांग्रेस निर्वाचन बोर्डके उम्मीदवारोंके विरुद्ध अपना उम्मीदवार खड़ा करनेके उद्देश्यसे कांग्रेस-राष्ट्रीय दलकी स्थापना की है। कांग्रेसके इस गृहकलहपर प्रत्येक राष्ट्रकर्मीको हार्दिक सन्ताप हुए बिना नहीं रह सकता। किन्तु कांग्रेसके इस क्षुद्र मतभेदसे लाभ उठाकर जो सम्प्रदायवादी, स्वार्थपरायण और शासकोंके कृपाभाजन परानुग्रहजीवी लोग इस मतभेदको व्यापक और स्थायी रूप देनेकी कुटिल अभिलाषासे उसकी शक्तिको क्षीण करनेपर तुले हुए हैं उन्हें किसी प्रकारका प्रश्रय देना कांग्रेसके लिए घातक सिद्ध हुए बिना नहीं रह सकता। कांग्रेस हमारी राष्ट्रीय शक्तिका उत्स है, जातीय भावधाराका अक्षय स्रोत है। इस स्रोतसे ही राष्ट्रके प्राणोंमें प्राण-रसका सञ्चार होता रहता है। अतएव किसी भी दशामें इस शक्ति-स्रोतको क्षीण न होने दीजिये। जो लोग कांग्रेसके वर्तमान मतभेदके परिणाम-स्वरूप उसके दुर्बल और पथभ्रष्ट होनेकी सुखद कल्पना कर रहे हैं उनके इस सुख-स्वप्नको भङ्ग करके दिखा दीजिये कि किसी भी दशामें हम कांग्रेसकी प्रतिष्ठा और मर्यादाको, उसके गौरव और प्रभावको क्षुण्ण नहीं होने देंगे। कांग्रेस कार्यकारिणी समिति और माल-वीयजीमें इस समय जो मतभेद देख पड़ रहा है वह कांग्रेसके लक्ष्यको देखते हुए बहुत ही तुच्छ और नगण्य है। व्यव-स्थापिका परिषद्में कुछ कांग्रेसवादी पहुंचकर यदि ह्वाइट पेपर और साम्प्रदायिक निर्णयका प्रत्याख्यान कर ही देंगे तो इतने हीसे इन बलाओंसे हमारा पिण्ड नहीं छूट सकता और न हमारी मुक्तिका मार्ग प्रशस्त हो सकता है। ये दोनों ही चीजें जब हमारी इच्छाके विरुद्ध हमारे सिरपर लादनेका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सङ्कल्प कर लिया गया है तो फिर इनकी निन्दा या प्रतिवाद करके तथा इनके रचयिताओंकी निर्भत्सना करके हम अपने शासकोंके उक्त सङ्कल्पको टाल नहीं सकते। यह सङ्कल्प तो तभी टल सकता है जब कि जाति रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा इतना शक्ति-सञ्चय करनेमें समर्थ होगी जिससे उसे स्वभाग्य-निर्णयका अधिकार प्राप्त हो और उस अधिकारके बलपर वह अपने देशके भाग्यका गठन कर सके। साम्प्रदायिकताका आश्रय पाकर इस समय हमारी जातीय दुर्बलता फूट पड़ी है, क्षुद्र स्वार्थोंके प्रलोभनमें पड़कर हम लक्ष्यभ्रष्ट और आत्म-अविश्वासी बन रहे हैं। हमारे जातीय जीवनकी जितनी कमजोरियां अब तक छिपी हुई थीं, वे उभड़कर सतहपर आ गयी हैं और हमें मालूम हो गया है कि जाति कितने गहरे पानीमें है। अतएव यही समय है जब कि सच्चे, कर्तव्यनिष्ठ आदर्शानुरागी, आत्मविश्वासी, देशप्राण कर्मियोंको साम्प्रदायिकताके सारे मायाजालको छिन्न-भिन्न करके अपना कर्तव्य-पथ निर्धारित कर लेना चाहिए और धीर एवं अविचलित भावसे उस पथका अनुसरण करते हुए वास्तविक राष्ट्रीय एकताकी—वह एकता नहीं जिसका आधार किसी प्रकारका साम्प्रदायिक बटवारा हो—स्थापनाके लिए कृतसङ्कल्प हो जाना चाहिए। इस प्रकारकी विशुद्ध राष्ट्रीयताके आधारपर जातीय ऐक्यका जो विशाल भवन निर्मित होगा वही चिरस्थायी हो सकेगा और इस मन्दिरमें ही हमें राष्ट्रीय स्वाधीनताकी भव्य मनोहर मूर्तिकी मनोरम झांकी देखनेको मिलेगी।

## मालवीयजीका राष्ट्रीय दल

महामना मालवीयजीके नेतृत्वमें जिस कांग्रेस राष्ट्रीय दलकी स्थापना हुई है उसमें सिवा मालवीयजी तथा श्रीयुत अणेके और किसी प्रतिपत्तिशाली कांग्रेस-नेताने योगदान नहीं किया है। मालवीयजी महाराजने कहा है कि इस दलकी स्थापनासे कांग्रेसकी प्रतिष्ठा क्षुण्ण नहीं होगी, बल्कि उसकी मर्यादा और भी उज्ज्वल होगी। किन्तु क्या हम महामना मालवीयजीसे विनम्रतापूर्वक यह पूछ सकते हैं कि एसेम्बलीके आगामी निर्वाचनमें कांग्रेस-निर्वाचन-बोर्डके उम्मीदवारोंके विरुद्ध उम्मीदवार खड़ा करना और गैर-कांग्रेसवादियोंकी सहायतासे उन्हें परास्त करनेकी चेष्टा करना यदि कांग्रेसकी प्रतिष्ठापर आघात पहुंचाना नहीं, तो और क्या है? कांग्रेस कार्यकारिणी कमेटीके प्रस्तावसे असहमत होकर उसे रद्द करानेके लिए आन्दोलन करना और लोकमतको तैयार करना एक बात है और कांग्रेसके विरुद्ध एक अलग पार्टी खड़ा करना और बात है। दोनों बातोंमें सामञ्जस्य कभी हो ही नहीं सकता। देशकी स्वतन्त्रता और कांग्रेस-जैसी सर्वमान्य संस्थाकी प्रतिष्ठाके सामने क्या साम्प्रदायिक निर्णय सचमुच इतनी बड़ी चीज है कि इसके विरुद्ध प्रचार करनेके लिए कांग्रेसके अन्दर दलबन्दी की जाय और कांग्रेसकी शक्तियोंको क्षीण करनेका प्रयत्न किया जाय? आज लगभग १५ वर्षोंसे देशके जो आदर्शानुरागी, त्यागी वीर स्वेच्छासे असीम कष्ट, त्याग, उत्पीड़न और अपमान सहन करते आ रहे हैं, उन्होंने कभी यह आशा नहीं की थी कि देश सहज ही अपने लक्ष्य तक पहुंचनेमें समर्थ होगा। उनका पहले भी यह विश्वास था और आज भी बना हुआ है कि स्वतन्त्रताका मार्ग कण्टकाकीर्ण होता है, उस पथके पथिकोंको बड़ी-बड़ी मुसीबतों और झञ्झटोंका सामना करना पड़ता है। किन्तु फिर भी वे अपने गन्तव्य मार्गसे कभी विचलित नहीं होते और अपने हृदयकी आराध्य देवीके नूपुरोंका मधुर रव सुनते हुए उसकी मस्तीमें झूमते और डोलते हुए आगे बढ़ते ही चले जाते हैं। ऐसे लोग आज भी अपने उस आदर्शको हृदयसे चिपकाये हुए हैं और तब तक चिपकाये रहेंगे जब तक उनका ध्येय सम्पन्न नहीं होगा। वे आदर्श-भ्रष्टताके पापसे अपनी आत्माको कलङ्कित नहीं करना चाहते। क्या स्वतन्त्रताके इन तरुण तपस्वियोंके सम्पूर्ण त्याग और बलिदान इसीलिए हुए थे कि कांग्रेसके महारथी साम्प्रदायिक निर्णय और ह्वाइट पेपर जैसी क्षुद्र वस्तुओंको लेकर व्यर्थका वितण्डावाद उपस्थित करें और राष्ट्रीय स्वार्थकी रक्षाके नामपर राष्ट्रीय महासभाकी शक्ति और सङ्गठनको विपर्यस्त करनेकी चेष्टा करें? जिन महात्मा गांधीके आह्वानपर देशके सहस्रों नरनारियोंने सहास्य वदन अनुपम त्याग और यातनायें वरण की थीं और राष्ट्रीय महासभाको गौरवशालिनी बनाया था, जिन महात्माको कांग्रेसने अपना एकमात्र प्रतिनिधि निर्वाचित करके गोलमेज सभाके अधिवेशनमें भाग लेनेके लिए भेजा था, उन्हींके सम्बन्धमें आज हमें यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वास करनेके लिए कहा जाता है कि वे विशुद्ध राष्ट्रीयतासे च्युत हो गये हैं और उनके तत्त्वावधानमें कांग्रेस कार्यकारिणी कमेटीने साम्प्रदायिक निर्णयके सम्बन्धमें जो प्रस्ताव पास किया है उससे वह राष्ट्रीयताके बदले साम्प्रदायिकताको प्रश्रय दे रही है। भला इससे बढ़कर विडम्बना और क्या हो सकती है ?

## हरिजन दौरा और महाव्रतकी समाप्ति

महात्मा गांधीका देशव्यापी हरिजन दौरा और उसके साथ ही उनका एक सप्ताहका उपवास सकुशल समाप्त हो गया। एक वर्ष तक देशके विभिन्न प्रान्तोंमें भ्रमण करने, बहुसंख्यक सभा-समितियोंमें भाग लेने तथा हरिजन-सम्बन्धी नाना कार्योंमें व्यस्त रहनेके कारण स्वभावतः ही महात्माजीका शरीर क्लान्त और अवसादग्रस्त हो गया था और ऐसी स्थितिमें उन्हें दौरा समाप्त होनेपर विश्रामकी आवश्यकता थी। किन्तु देशको जब यह मालूम हुआ कि महात्माजीके हरिजन दौरेका अन्त एक सप्ताहके उपवास द्वारा होगा, उस समय अपने इस वयोवृद्ध नेता और महाव्रती तपस्वीके क्षीण स्वास्थ्यका ख्याल करके वह अत्यन्त उद्विग्न और आशङ्काजनित आवेशसे विकल हो उठा। किन्तु अपने असाधारण तपोबल और सङ्कल्प-शक्तिके प्रभावसे महात्माजी एक बार फिर अपने इस असिधारा-व्रतमें सफल हुए और देशने आनन्दके साथ उनके व्रतके सफल उद्यापनका समाचार सुना और इसके लिए कृतज्ञता-गद्गद चित्तसे भगवान्‌को धन्यवाद दिया।

अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलनके अपने एक वर्षके कार्यक्रममें महात्माजी कहां तक सफल हुए, इस सम्बन्धमें विचार करनेपर सबसे पहले जो बात ध्यानमें आती है वह यह है कि हिन्दू समाजके इस पतित, उपेक्षित और उत्पीड़ित अङ्गके उत्थान और सर्वाङ्गीण उन्नतिके लिए एक वर्षके अन्दर महात्माजीने जो अनवरत प्रयत्न किये हैं वे इस देशके इतिहासमें सर्वथा अभूतपूर्व हैं। निन्दा, कटूक्ति, व्यङ्ग या बल-प्रयोग द्वारा नहीं, बल्कि प्रेम और त्याग द्वारा, युक्ति और तर्क द्वारा हिन्दू समाजकी तथाकथित उच्च श्रेणियोंके हृदयसे अपील करके, उनकी विवेक-बुद्धिको जाग्रत करके तथा अपनी सहज शान्त, अनुप्रेरणामयी, वाणी द्वारा उनकी सहानुभूति और सहृदयतापर विजय प्राप्त करके महात्माजीने हरिजन-उत्थान समस्याको हिन्दू समाज और हिन्दू धर्मके लिए एक प्रमुख समस्या बना दिया है। महात्माजीने अपने इस आन्दोलनमें बार-बार इस बातपर जोर दिया है कि हरिजन-उत्थान-आन्दोलन उच्च श्रेणीके हिन्दुओंके लिए आत्मशुद्धिका आन्दोलन है। आत्मशुद्धिका आन्दोलन मनुष्यकी अन्तरात्मापर असर डालकर, उसकी मनुष्योचित सद्वृत्तियोंको उद्दीपित करके ही सफल हो सकता है। हरिजन आत्मोन्नतिके लिए स्वयं प्रयत्न करें और उच्च श्रेणीके हिन्दू अपना यह धार्मिक कर्तव्य समझें कि हिन्दू समाजका जो एक बहुत बड़ा समुदाय अज्ञानता और अधःपतनके गर्तमें निमग्न होकर पंगुवत् हो रहा है उसे उस गर्तसे ऊपर उठाकर ज्ञानालोकमें लाना और मनुष्यत्व प्रदान करना आवश्यक है। कोटि-कोटि देशवासियोंको मनुष्यत्वके सामान्य अधिकारोंसे वञ्चित करके, उन्हें मनुष्यकी श्रेणीसे अधःपतित करके स्वयं मनुष्योचित अधिकारों और स्वत्वोंका दावा करना संसारकी दृष्टिमें अपनेको हास्यास्पद सिद्ध करनेके सिवा और कुछ नहीं है। युग-युगान्तरके पुञ्जीभूत कुसंस्कार और अन्धविश्वास क्षण-भरमें ही दूर हो जायेंगे, ऐसी किसीने आशा भी नहीं की थी ; किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि महात्मा गांधीने कुछ थोड़े-से प्रतिक्रियागामी व्यक्तियोंको छोड़कर देशके अधिकांश शिक्षित विचारशील लोगोंके हृदयोंमें हरिजन-उत्थान-समस्याके प्रति सहृदयता और समवेदनाका जो उद्रेक उत्पन्न कर दिया है वह चिरकाल तक अक्षुण्ण बना रहेगा। सभ्य हिन्दू समाजके हृदयमें अपने इस दलित अङ्गके लिए तीव्र अनुभूति उत्पन्न हो चुकी है और उसने इस बातको हृदयङ्गम कर लिया है कि जब तक यह अङ्ग इस प्रकार पतित और पङ्गु बना रहेगा, तब तक समाजकी जड़ता और क्लीवता दूर नहीं हो सकती और न हिन्दू धर्मका ज्वलन्त एवं जीवन्त स्वरूप हमारे सामने प्रकट होकर हमारे मृत शरीरमें प्राण-दान कर सकता है। महात्मा गांधी आज सारे राष्ट्रकी आशाओं और महत्त्वाकांक्षाओंका सजीव शक्तिस्रोत और केन्द्रस्थल बन रहे हैं। भगवान् उन्हें चिरायुष्य प्रदान करे, यही ध्वनि आज कोटि-कोटि देशवासियोंके अन्तस्तलसे समुत्थित हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## संरक्षणका ढकोसला

यदि भारत-सरकार भारत-मन्त्रीके इशारेपर अंगरेज व्यवसायियोंके स्वार्थोंकी रक्षा करना चाहती है तो वह मजेमें ऐसा कर सकती है ; क्योंकि उसके हाथमें सत्ता और क्षमता है और कोई उसे रोक नहीं सकता। किन्तु भारतीय व्यवसायोंके संरक्षणके नामपर जब पर्देकी आड़में ब्रिटिश व्यवसायोंकी स्वार्थ-रक्षाका जाल बुना जाता है तो यही कहना पड़ता है कि यह संरक्षण नहीं है, बल्कि संरक्षणका ढकोसला-मात्र है। भारतीय इस्पात-व्यवसायके संरक्षणके सम्बन्धमें टेरिफ बोर्डकी जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी उससे यह साफ-साफ प्रकट हो जाता था कि भारत-सरकार किस प्रकार प्रकाश्यरूपसे ब्रिटिश व्यवसायोंको प्रोत्साहन प्रदान करनेके लिए व्यग्र रहा करती है। सरकारने राजस्वके लिए विदेशी लोहा और इस्पातपर जो कर लगाया था उसे भी विलायती मालपरसे हटा लेनेकी सिफारिश रिपोर्टमें की गयी थी। और आश्चर्यकी बात तो यह है कि भारत-सरकारने इन सिफारिशोंको ज्योंकी त्यों बिलमें समाविष्ट करके व्यवस्थापिका परिषद्में उपस्थित किया। एक ओर तो ब्रिटिश लोहा और इस्पातपरसे कर उठा देनेकी सिफारिश की गयी थी और दूसरी ओर भारतीय लोहा और इस्पात-पर ड्यूटी लगानेका प्रस्ताव किया गया था। संसारके किसी भी देशमें वहांके एक प्रमुख उन्नतिशील व्यवसायपर इस प्रकार ड्यूटी लगानेका दृष्टान्त नहीं पाया जाता। किन्तु भारत-जैसे देशमें सब-कुछ सम्भव हो सकता है। एक ओर तो ब्रिटिश सरकार अपने यहांके इस्पात-व्यवसायको आर्थिक सहायता प्रदान करके प्रोत्साहित कर रही है और दूसरी ओर भारत-सरकार इस आर्थिक सङ्कटके जमानेमें भी विलायती लोहा और इस्पातपर राजस्वके लिए लगायी गयी ड्यूटीको उठा देना चाहती है और इसके साथ ही देशी व्यवसायपर ड्यूटी लगाती है। इसे संरक्षण कहें या संरक्षण-का प्रतिशोध लेनेके लिए ब्रिटिश व्यवसायके प्रति अनुचित पक्षपात ?

व्यवस्थापिका परिषद्में जब यह बिल उपस्थित किया गया तो गैर-सरकारी सदस्योंने, यहां तक कि यूरोपियनोंने भी, सरकारकी इस नीतिका विरोध किया। किन्तु सरकारके रुखसे ऐसा जान पड़ता था कि यदि देशी लोहा और इस्पातपर ड्यूटी लगानेका सिद्धान्त ग्रहण नहीं किया जायगा तो सरकार देशी व्यवसायको संरक्षण देना भी मञ्जूर नहीं करेगी। इसके बाद जब बिल सिलेक्ट कमेटीमें गया तो वहां उसकी धाराओंमें कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये गये। बिलकी जिस धारामें विलायती इस्पातपरसे ड्यूटी उठा देनेकी बात कही गयी थी उसे कमेटीने अग्राह्य कर दिया, किन्तु देशी मालपर ड्यूटी लगानेका सिद्धान्त पूर्ववत् कायम ही रखा। संशोधित रूपमें यह बिल व्यवस्थापिका परिषद्में फिर विचारार्थ उपस्थित हुआ और कुछ गैर-सरकारी सदस्योंके प्रतिवाद करनेपर भी पास हो गया। इसमें सन्देह नहीं कि जिस संशोधित रूपमें बिल पास हुआ है वह पहलेकी अपेक्षा अच्छा ही कहा जायगा, किन्तु फिर भी हम यह निःसङ्कोच कह सकते हैं कि भारत-सरकार-का स्पष्ट उद्देश्य भारतमें विलायती व्यवसायको उत्तेजन प्रदान करना है, न कि देशी व्यवसायको संरक्षण प्रदान करना। इंगलैण्डके प्रति इस प्रकारके व्यवहारको अर्थ-सचिवने भी पक्षपातपूर्ण स्वीकार किया है, यद्यपि आप इसे 'अनुचित' पक्षपातपूर्ण नहीं मानते।

भारत-सरकारकी इस पक्षपातपूर्ण नीतिसे एक और अनिष्ट होनेकी सम्भावना है। विदेशी लोहा और इस्पातकी आमदनीमें इंगलैण्डका प्रबल प्रतिद्वन्द्वी बेलजियम है, किन्तु अब इस नयी ड्यूटीके कारण भारतके बाजारपर बेलजियम-का अधिकार नहींके बराबर रह जायगा। अतएव भारतसे इसका बदला लेनेके लिए यदि बेलजियम भारतसे कच्चा माल खरीदना बन्द कर दे—जैसा कि रूटरके एक तारसे सम्भव मालूम होता है—तो इससे भी भारतको हानि हो सकती है। सन् १९३१-३२ में बेलजियमने लगभग ४॥ करोड़का माल भारतसे खरीद किया और ३ करोड़का माल भारत भेजा। ऐसी स्थितिमें यदि बेलजियम भारतीय मालका बहि-ष्कार करे तो इससे भी भारतको ही क्षतिग्रस्त होना पड़ेगा। दूसरे शब्दोंमें इसका अर्थ यह है कि भारत स्वयं क्षतिग्रस्त होकर भी इंगलैण्डके स्वार्थकी रक्षा करे, यही इस समय ब्रिटिश सरकार और भारत-सरकारकी नीति हो रही है।

## भारतीय सेनामें रङ्ग-भेद

भारत-सरकारकी ओरसे व्यवस्थापिका परिषद्में एक भारतीय सैन्य-बिल उपस्थित किया गया था जिसका आशय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यह है कि देहरादून सामरिक कालेजके परीक्षोत्तीर्ण भारतीय कर्मचारियोंको भारतीय मिश्र सेनामें—अर्थात् जिसमें गोरे और काले सैनिक होंगे—इंगलैण्डके सैण्डहर्स्ट सामरिक कालेजके परीक्षोत्तीर्ण अंगरेज कर्मचारियोंके समान अधिकार नहीं होंगे। इस बिलपर सर अब्दुर्रहीमने यह संशोधन उपस्थित किया था कि देहरादून और सैण्डहर्स्ट कालेजोंके परीक्षोत्तीर्ण भारतीय और अंगरेज कर्मचारियोंको भारतीय सैन्य-दलमें एक समान अधिकार, पद-मर्यादा और सुविधायें प्राप्त होनी चाहिए। पहले तो सरकारकी ओरसे यह आपत्ति की गयी कि यह संशोधन उपस्थित किया ही नहीं जा सकता, किन्तु सभापति द्वारा अनुकूल व्यवस्था दी जानेपर सर रहीमका संशोधन उपस्थित किया गया। इसके बाद कई दिनों तक इस संशोधनको लेकर भारत-सरकार और भारत-मन्त्रीमें तार द्वारा लिखा-पढ़ी होती रही और अन्तमें ब्रिटिश-मन्त्रि-मण्डलने यह निश्चय किया कि वह किसी प्रकार भी इस संशोधनको स्वीकार नहीं कर सकता। फिर, जब एसेम्बलीमें सर अब्दुर्रहीमके संशोधनपर वाद-विवाद आरम्भ हुआ तो सरकारकी ओरसे सर जोसेफ भोरने यह साफ-साफ जता दिया कि यदि सर रहीमका संशोधन स्वीकृत हो जायगा तो सरकार समग्र बिलको वापस ले लेगी। अन्तमें जब संशोधनपर वोट लिये गये तो पक्षमें ४६ और विपक्षमें ४९ वोट आनेसे वह अस्वीकृत हो गया। केवल तीन वोटसे सरकारी पक्षकी जीत हुई। इससे यह स्पष्ट है कि सिवा सरकारी नामजद और यूरोपियन सदस्योंके, निर्वाचित भारतीय सदस्योंमें शायद ही किसीने सरकारके पक्षमें वोट दिया हो। अतएव सरकारकी इस विजयका कोई महत्त्व नहीं हो सकता। किन्तु भारतीय पक्षकी यदि विजय भी होती तो इसका परिणाम कुछ दूसरा थोड़े ही होता। क्योंकि सरकारकी ओरसे तो यह पहले ही धमकी दी जा चुकी थी कि संशोधनके स्वीकृत होनेपर वह सारे बिलको ही वापस ले लेगी।

सरकारके इस रुखसे यह स्पष्ट है कि वह भारतीय सेनामें वर्ण-भेदको कायम रखनेके लिए कृतसङ्कल्प है। देहरादून सामरिक कालेजके परीक्षोत्तीर्ण भारतीय कर्मचारी किसी भी दशामें अंगरेज कर्मचारियोंकी पद-मर्यादाकी बराबरी नहीं कर सकते। प्रारम्भसे ही उन्हें अपने मनमें यह धारणा रखकर काम करना होगा कि और सब बातोंमें वे अंगरेज कर्मचारीके भले ही समतुल्य हों, किन्तु एक रङ्ग-भेदके कारण ही उनकी योग्यताओंका कोई मूल्य नहीं समझा जायगा। यह है इंगलैण्डके सेना-विभागकी सैन्य-नीति, जिसे पराधीन भारतको अपमान और लाञ्छनाकी कड़वी घूंटें पीकर भी सहन करना ही होगा!

## मैञ्चेस्टरका स्वार्थ

ओटावाका समझौता भारतके ऊपर जबर्दस्ती लादकर भारतमें विलायती मालकी आमदनीका मार्ग प्रशस्त किया गया। इसके बाद लङ्काशायरके प्रतिनिधि भारत आये और बम्बई मिल ओनर्स एसोसियेशनके सभापति मि० मोदीने उनके साथ एक समझौता किया जो मोदी-लङ्काशायर-पैक्टके नामसे विख्यात हुआ और जिसकी शर्तोंको भारत-सरकारने तमाम देशके विरोध करनेपर भी भारत-जापान-समझौतेकी शर्तोंके साथ सम्मिलित करके कानूनका रूप दे दिया। जिस समय लङ्काशायरके साथ यह समझौता किया गया था उस समय तो हमें यह कहकर भारतके राजनीतिक भविष्यका सब्ज बाग दिखलाया जा रहा था कि लङ्काशायरको सन्तुष्ट और प्रसन्न रखकर उसके समर्थन द्वारा हम राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करनेमें सफल होंगे। उस समय तो लङ्काशायरके प्रतिनिधि भारतीय वस्त्र-व्यवसायियोंके सद्भाव और बन्धुत्वके सम्बन्धमें ऐसी लल्लो-चप्पोंकी बातें किया करते थे जिनसे मालूम होता था कि वस्तुतः भारतके प्रति इनके दृष्टिकोणमें परिवर्तन हो गया है और ये भारतके हितेच्छु बन गये हैं। किन्तु जहां स्वार्थ ही सब-कुछ होता है और एकमात्र स्वार्थ-भावनासे प्रेरित होकर ही बन्धुत्व स्थापित किया जाता है वहां स्वार्थपरताके सामने बन्धुत्वकी भावना कब तक ठहर सकती है!

भारतमें अपने मालकी खपतके लिए बहुत-कुछ रियायतें प्राप्त कर लेनेपर भी मैञ्चेस्टरके वस्त्र-व्यवसायी अभी तक सन्तुष्ट नहीं हुए हैं। अब उन्होंने ब्रिटिश सरकारसे यह आग्रह किया है कि भारतके भावी शासन-विधानमें भारतमें विलायती सूती कपड़ेके व्यापारके लिए निश्चित संरक्षणका समावेश रहना चाहिए। मैञ्चेस्टर वाणिज्य-मण्डलके एक प्रस्तावमें कहा गया है कि भविष्यमें भारतमें विलायती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वस्त्र-व्यवसायके लिए हानिकर कोई अवस्था उत्पन्न न हो, इसकी जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकारके ऊपर होगी। प्रस्तावमें यह भी कहा गया है कि भारतीय वस्त्र-व्यवसायकी उन्नति-पर ध्यान रखते हुए भारतमें विलायती कपड़ेके व्यापारका पथ प्रशस्त बना रहे, इस सम्बन्धमें भारतीय शासनविधानमें एक स्पष्ट शर्त रहनी चाहिए। इसके सिवा मैञ्चेस्टरके व्यापारियोंकी यह भी मांग है कि भारतमें अन्य कोई विदेशी वस्त्र-व्यवसाय प्रतियोगितामें उन्हें परास्त न कर सके इसके लिए भी सरकारको व्यवस्था करनी होगी। दूसरे शब्दोंमें मैञ्चेस्टरके व्यापारियोंके उपर्युक्त प्रस्तावका अर्थ यह है कि भविष्यमें यदि भारतमें विलायती वस्त्र-व्यवसायके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी आशङ्का दीख पड़ेगी तो इसके प्रतिकारके लिए ब्रिटिश सरकारको हस्तक्षेप करना होगा। दूसरी बात यह है कि भारतके बाजारपर विलायती वस्त्र-व्यवसायियोंका एकाधिपत्य बना रहे, इसके लिए भी ब्रिटिश सरकारको व्यवस्था करनी होगी। यह तो हुई संरक्षणकी बात। अब लङ्काशायरकी एक और मांग यह है कि जो वस्त्र-व्यवसायी भारतीय रुईका व्यवहार करते हैं उन्हें ब्रिटिश सरकार आर्थिक सहायता प्रदान करे। लङ्काशायरकी इस मांगसे पाठक यह न समझें कि सचमुच लङ्काशायरके व्यवसायी भारतीय रुईका व्यवहार करनेके लिए उत्कण्ठित हैं। नहीं, भारतीय रुईका व्यवहार तो एक ढकोसला-मात्र है। असल अभिप्राय यह है कि ब्रिटिश सरकारसे आर्थिक सहायता प्राप्त करके वे अपने सस्ते मालसे भारतके बाजारको पाट दें और इसके साथ ही भारत-सरकारके लिए ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दें जिससे भारतीय रुईकी खपतके नामपर लङ्काशायरके विरुद्ध वह कुछ करनेका साहस न कर सके। प्रस्तावमें कहा गया है कि भारतीय वस्त्र-व्यवसायकी उन्नति और प्रसारमें कोई व्याघात न पहुंचे, इस बातपर ध्यान रखा जाय। किन्तु यह सिवा पाखण्डके और कुछ नहीं है। भारतीय वस्त्र-व्यवसायकी उन्नति हो और साथ ही इसके भारतके बाजारपर ब्रिटिश वस्त्र-व्यवसायियोंका एकाधिपत्य कायम हो, ये दोनों बातें एक साथ नहीं चल सकतीं। विलायती वस्त्र-व्यवसायके एकाधिपत्यका स्पष्ट अर्थ है भारतीय वस्त्र-व्यवसायका विध्वंस। असल बात तो यह है कि भारतके वस्त्र-व्यवसायके प्रति गत डेढ़ सौ वर्षोंसे मैञ्चेस्टरके वस्त्र-व्यवसायियोंका जो कुटिल दृष्टिकोण हो रहा है वही दृष्टिकोण अब भी बना हुआ है और उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है।

## बिहारमें जल-प्रलय

"एकस्य दुःखस्य न यावदन्तम्
तावत् द्वितीयम् समुपस्थितम् मे।"

मालूम होता है कि किसी अचिन्त्य दैवी कोपके कारण बिहार प्रान्त इस वर्ष प्रकृतिकी रुद्रलीलाका क्षेत्र बन रहा है। भूकम्प द्वारा विध्वस्त बिहारपर एक बार फिर भीषण जल-प्रलयके रूपमें विपत्तियोंके पहाड़ टूट पड़े हैं। भूकम्पके समान ही इस जल-प्रलयका रूप भी अभूतपूर्व सिद्ध हुआ है। गङ्गा, शोणभद्र, सरयू, गण्डक प्रभृति नदियोंमें एक साथ ही बाढ़ आ जानेसे आरा, पटना, गया, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, छपरा और भागलपुर जिलोंका विस्तृत भूभाग लगभग २०० मीलोंमें जलमग्न हो गया है और सहस्रों ग्रामोंमें महानाश का हृदय-विदारक दृश्य उपस्थित हो जानेके कारण सर्वत्र हाहाकार मच गया है। असंख्य पशु और कितने ही पीड़ित असहाय नरनारी जलके प्रचण्ड प्रवाहमें पड़कर बह गये और जो बचे हैं वे भी घर-द्वार नष्ट हो जानेके कारण, विपन्न अवस्थामें वृक्ष, मचान तथा अन्य ऊंचे स्थानोंमें किसी प्रकार शरण ले रहे हैं। बाढ़की भीषणताका इसीसे अनुमान किया जा सकता है कि दानापुर और मुगलसरायके बीच ई० आई० आर० की ट्रेनोंका आवागमन कई दिनों तक बन्द रहा। इसके सिवा बी० एन० डब्ल्यू० आर० की मेनलाइनमें भी कई स्थानोंमें लाइनें टूट गयी हैं जिससे ट्रेनोंका आवागमन हफ्तों तक बन्द रहेगा। यद्यपि बाढ़का पानी अब कम हो चला है, फिर भी पीड़ित और दुर्दशाग्रस्त जनताके कष्टका कोई पारावार नहीं है। हमें आशा है कि बिहार-सरकार इस अवसरपर अपने कर्तव्य-पालनमें किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं करेगी और वायसराय-भूकम्प-फण्डसे सहायता देनेकी उचित व्यवस्था करेगी। केन्द्रीय भूकम्प सहायक-कोषका धन भी बाढ़-पीड़ितोंके सहायता-कार्यमें उदारतापूर्वक व्यय होना चाहिए। इसके साथ ही हमें यह भी विश्वास है कि अन्य प्रान्तोंके धनीमानी उदार सज्जन इस अवसरपर अपने पीड़ित देशबन्धुओंके दुःखभार-को हलका करनेमें यथाशक्ति हाथ बटायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## वान हिण्डेनबर्ग

जर्मनीके राष्ट्रपति रणनायक वान हिण्डेनबर्गका गत २ अगस्तको ८७ वर्षकी अवस्थामें शरीरान्त हो गया। बीसवीं शताब्दीके राजनीतिक इतिहासमें इस स्वदेशप्राण वयोवृद्ध रणपण्डितकी गौरवोज्ज्वल जीवन-कहानी स्वर्णाक्षरोंमें अङ्कित होकर चिरस्मरणीय स्थान ग्रहण करेगी। हिण्डेनबर्ग-का निश्छल देश-प्रेम, उनकी कर्तव्यपरायणता, दृढ़ता और रणकुशलता संसारके युद्धविशारदोंके लिए स्पर्द्धाकी वस्तु हो सकती है। अपने देश, जाति और राजसिंहासनकी रक्षाके लिए, अपनी पितृभूमिके गौरवको अक्षुण्ण रखनेके लिए इस महापराक्रमी योद्धाने एक हाथमें मृत्यु और दूसरे हाथमें शस्त्रास्त्र धारण करके गत महासमरमें जिस शौर्य-वीर्य एवं अपूर्व रणकौशलका परिचय दिया था उसे स्मरण करके आज भी जर्मन जातिका हृदय गर्वस्फीत हो उठता है। ६५ वर्षकी अवस्थामें जब आप सेना-विभागसे अवसर ग्रहण कर चुके थे, सहसा यूरोपमें समरानल प्रज्वलित हो उठा और सारे राष्ट्रकी दृष्टि देशके इस सङ्कटकालमें अपने अवसरप्राप्त वृद्ध सेनापतिकी ओर पड़ी। राष्ट्रके आह्वानपर हिण्डेनबर्गने यूरोपके पूर्वीय समरक्षेत्रका सञ्चालन-भार अपने उन्नत स्कन्धपर ग्रहण किया और विश्वविख्यात "हिण्डेनबर्ग-लाइन" सैन्यव्यूहकी रचना की जो मित्र-शक्तियोंके लिए चिरकाल तक दुर्भेद्य बनी रही। रूसकी विपुल रणवाहिनी-को अपने कौशल और प्रचण्ड आक्रमणसे परास्त करके इस विजयी वीरने रूसको युद्धक्षेत्रसे सदाके लिए पृथक् कर दिया। इसके बाद आस्ट्रिया, टर्की और बलगेरिया युद्धसे विराम ग्रहण करनेके लिए अस्थिर हो उठे और मित्र-राष्ट्रोंके पक्षमें अमेरिकाकी सेना उतर पड़ी। जर्मन सेना क्लान्त और हताश होकर अवसाद ग्रस्त हो रही थी, जयकी आशा सर्वथा विलीन हो चुकी थी, कैसर स्वदेश छोड़कर पलायन कर चुके थे, ऐसे गम्भीर समयमें हिण्डेनबर्ग-जैसे वीर पुरुषका ही यह काम था कि उन्होंने अपमानकी कड़वी घूंटें पीकर अपने दलित सैनिकोंको रणक्षेत्रसे विदा ग्रहण करनेका आदेश दिया और उन्हें निराश न होकर अधःपतित जर्मनीके पुनरुत्थानके लिए सम्मिलित उद्योग करनेका आश्वासन दिया।

सैनिक, राजभक्त और साम्राज्यवादी होनेपर भी स्वदेश-की मङ्गलकामनासे हिण्डेनबर्गने जर्मन प्रजातन्त्रके राष्ट्रपतिका पद एक बार नहीं, दो-दो बार ग्रहण करके जिस राज-नीतिज्ञता, स्वदेश-प्रेमिकता और महाप्राणताका परिचय दिया, उससे आप समग्र जर्मन राष्ट्रके श्रद्धाभाजन बन गये। राष्ट्रपतिका पद ग्रहण करनेके बाद जर्मनीकी राष्ट्रसभामें आपने यह घोषणा की थी कि "ईश्वरके पवित्र नामकी शपथ लेकर मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जर्मन जातिकी कल्याण-कामनामें मैं अपनी समस्त शक्तियोंको संलग्न कर दूंगा।" प्रजातन्त्र शासनको पददलित करके जब हर हिट्लरने अपना अधिनायक-तन्त्र स्थापित किया उस समय भी हिण्डेनबर्गने स्वजाति और पितृभूमिकी मङ्गलकामनासे हर हिट्लरका साथ दिया और अपने कठोर कर्तव्यपथसे अणुमात्र भी विचलित नहीं हुए। किन्तु हर हिट्लरने अपनी निरंकुश शक्तिका दुरुपयोग करके जिस नृशंसता और बर्बरताका प्रदर्शन किया उससे अपने जीवनके अवसान-कालमें हिण्डेनबर्गको आत्मा-को कितनी मर्मान्तक पीड़ा पहुंची होगी, इसकी कल्पना कौन कर सकता है। अपनी दीर्घकालीन जीवन-साधनाके बाद महावीर हिण्डेनबर्ग आज महानिद्रामें लीन हो चुके हैं, किन्तु उनकी ज्वलन्त देशभक्ति, कर्मठ जीवन और अनुपम वीरता अनन्त कालके लिए देशप्राण रणवीरोंके हृदयमें साहस और शौर्यका सञ्चार करती रहेगी।

## चित्र-परिचय

इस अङ्कमें जो तिरङ्गा चित्र दिया गया है उसे दिल्लीके उद्योगशील सुशिक्षित चित्रकार श्री भुवन वर्मा बी० ए० ने हमारे पास भेजनेकी कृपा की है। महाकवि उमर खैयामकी कल्पनाके आधारपर यह तैयार किया गया है। पाठकोंकी सुविधाके लिए हमने इसका नामकरण 'सन्ध्याञ्जलि' किया है।

---

'विश्वमित्र' प्रेस, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तासे पं० मातासेवक पाठक द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

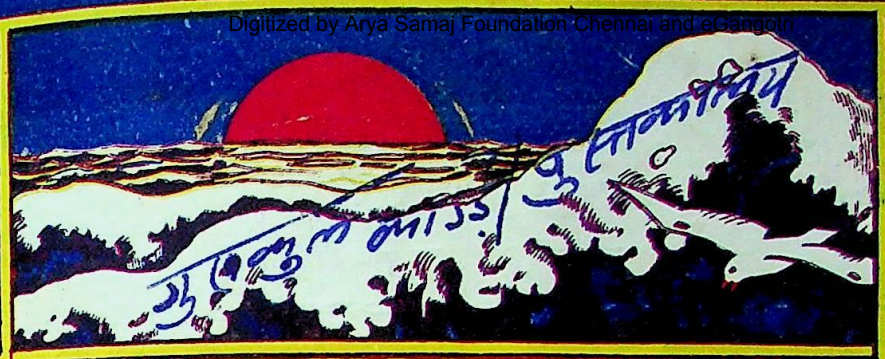

G.K.
दिस०
१९३४

# सचित्र मासिक
# विश्वमित्र

मूल्य
॥=)

विश्वमित्र कार्यालय
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❀ स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें ❀

नारी रत्न माला

## सती-पार्वती

हर-पार्वतीकी कथा प्रसिद्ध है। इसमें शंकर-प्रिया, गणेश-जननी, सती-शिरोमणि भगवती 'सती-पार्वती' के दोनों अवतारों की मर्मस्पर्शी कथा बड़ी ही सरल, सरस भाषामें लिखी गयी है। यह पुस्तक बहुत पसन्द की गयी है। साथ ही सती-महिमा, दक्ष-यज्ञ-भंग, वीरभद्रका प्रतिशोध, शिव जीका कोप, मदन-दहन, शिवजीका वरदान आदि कितने ही रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई-सफाई बढ़िया। अब तक हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही सर्वसुलभ ।।) मात्र।

## देवी-द्रौपदी

इस उपाख्यानमें देवी-द्रौपदीका जन्म, बाल्यकाल, स्वयंवर, विवाह, चीर-हरण, पाण्डवों पर विपत्ति और राज्य-हरण तथा देश-निर्वासन का वर्णन है। विराट राज-महलमें दासी-कर्म, कीचक-वध और अन्तमें कौरवोंसे घनघोर संग्राम। पाण्डवों की विजय-वजयन्ती, भगवान् श्रीकृष्ण का सहयोग और सहायता आदि समस्त बातोंका उल्लेख बहुत ही सरस और सरल भाषामें किया गया है। अनेक भावपूर्ण रङ्ग-बिरंगे चित्र हैं। बढ़िया पेपर और सुन्दर छपाई। मूल्य सर्वसुलभ ।।=) मात्र।

## शकुन्तला

संसार प्रसिद्ध महाकवि, कवि-कुल-गुरु कालीदासके सर्वोत्तम नाटक 'आभिज्ञानशाकुन्तलम्' को उपाख्यानके रूपमें लिखा गया है। उपाख्यानकी एक-एक पंक्ति, कवित्व और कल्पना-कौशलसे परिपूर्ण है। शकुन्तला-उपाख्यान दाम्पत्य-स्नेह, नारी-कर्तव्य, सती-धर्म और विश्व-विश्रुत प्रेमका जगमगाता चित्र है। इसके पढ़नेसे इतिहास, उपन्यास, नाटक और काव्यका एक साथ आनन्द आता है। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे सुसज्जित। बढ़िया छपाई-सफाई। मूल्य ।।=) मात्र।

## शर्मिष्ठा-देवयानी

श्रीमद्भागवतमें शर्मिष्ठा-देवयानीका उपाख्यान आया है। इस उपाख्यानको पढ़नेसे सत्यनिष्ठा एवं नारी कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है। पिताकी मर्यादाकी रक्षा के लिये शर्मिष्ठाने जो आत्मत्याग कर दिखाया, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। देवयानीने क्रोधके वशमें हो जो भयानक काण्ड उपस्थित कर दिया था, वह शर्मिष्ठाकी सौजन्यता और कर्तव्य-निष्ठा तथा सहृदयताके कारण दूर हो गया। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे संवलित। हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही ।।) मात्र।

मिलनेका पता—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# धातु पौष्टिक चूर्ण

यह चूर्ण—तीन दिनके भीतर ही अपना गुण दिखा देता है, पेशाबकी समस्त बीमारियोंको हटाके दस्त साफ करता है, सब प्रकारका दर्द पीड़ा तथा गिरती हुई धातुको रोकता है, पानी समान पतले वीर्यको एकदम गाढ़ा कर देता है, उपदंश (गर्मी—आतशक) मेह प्रमेह (गनोरिया सुजाक) रोगोंको यह चूर्ण जड़से खो देता है तथा शरीरको बलवान करके स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, स्मरण मात्रसे ही पतन, पेशाबके साथ धातुपात, अधिक विलासिताके कारण कमरमें दर्द, कमजोरीके कारण हाथ पैरोंका कांपना, चक्कर आना, आंखोंके आगे चिनगारियां निकलना, कलेजेका धड़कना, नामर्द हो जाना, इत्यादि रोगोंको दूर कर रक्त शुद्ध करता है और भूख शक्ति तथा वजनको बढ़ाता है जिससे शरीर बज्रके समान मजबूत हो जाता है। जिनमें पुरुषत्व न हो उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त करा कर उनके वीर्यको एकदम गाढ़ा और गर्भ धारण करानेके योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक पूर्ण गुणकारी डिब्बेकी कीमत ९) रु०डा० पै०ख० ॥।) लगेगा।

☞ स्त्रियों के लिये

# स्त्रीरोग निवारक चूर्ण

इस चूर्णके सेवनसे औरतोंकी क्षीणता सब तरहका स्त्रियोंका प्रदर, मासिक धर्मके समय पेट या कमरमें दर्द, मासिक धर्म थोड़ा या कम दिनोंमें होना बिलकुल ही न होना, असमयमें मासिकधर्म होना, खूनके कतरे गिरना, गर्भाशयमें दोष होनेके कारण गर्भ न रहना, गर्भपात होना, दुर्बल सन्तति होना या होकर मर जाना इत्यादि रोगोंपर २१ दिन चूर्णका सेवन करनेसे गर्भाशय तथा शरीरके सभी दोष दूर होकर मासिकधर्म समयपर होगा और गर्भपात न होकर संतति सशक्त, स्वस्थ (निरोग) उत्पन्न होगी। यहांतक कि ४० वर्षकी स्त्रीको भी इसके सेवनसे निश्चय ही गर्भधारण हो जाता है। २१ दिनतक सेवन करने योग्य चूर्णके १ डिब्बेकी कीमत ९) रु० डा० ख० ॥।) इन चूर्णोंको हरेक स्त्री और पुरुष हर मौसममें खा सकते है।

संतानकी इच्छा करनेवाले लोगोंको यह दोनों ही दवा एक साथ मंगाके स्त्री और पुरुष दोनों हीको एक साथ खानेसे अच्छा होगा। परहेज वगैरह कुछ नहीं करने पड़ते। सेवनविधि साथमें दी जाती है। यह दवायें तत्काल गुण दिखानेवाली हैं—एक बार विश्वास रखकर इसे अवश्य मंगावें। इन दवाइयोंमें केवल जड़ी बूटी है। हानिकारक कोई भी चीज यहीं है

# और लीजिये-गर्मी-सुजाककी-अक्सीर दवा

यह पाजी रोग नया हो या पुराना पुरुषके हो या स्त्रीके हो लेकिन इस दवासे १ ही दिनमें फायदा और एक हफ्तेमें आराम और तीन हफ्तेमें जड़से रोग कट जाता है और फिर यह रोग कभी पास नहीं फटकता है अच्छे मार्गमें चलनेसे यह दवा सालसा के माफिक खूनको साफ करके नहा खून रग-रगमें दौड़ा देती है। उपदंस (गर्मी) आतशक और मेह प्रमेह (गनोरिया व सूजाक) को जड़से खो देती है। जरूर मंगाकर देखिये। तीन सप्ताह यानी २१ दिनकी ४२ खुराककी कीमत सिर्फ २॥) रु० डाक खर्च ॥।) आना। गर्मी के घावपर लगानेकी दवा १) रु० शीशी अलग।

स्त्रियोंको भी सूजाक होता है जिसके कारण बार-बार पेशाबका उतरना, जलन होना, बूंद-बूंद पेशाब गिरना नलीसे पानीके समान या गाढ़ा मवादके समान दुर्गन्धयुक्त श्राव निकलना आदि तुरन्त इस दवासे आराम होता है। यह दवा बवासीरको भी आराम करती है। खूनी हो या वादी उपरोक्त दवाके सेवनमें कोई भी झंझट या परहेज नहीं है। इस दवा दिनमें दो बार ठण्डे जलके साथ खानी पड़ती है। इस दवामें नुकसान पहुंचानेवाली कोई भी चीज नहीं है, सब शुद्ध औषधियां ( जंगली जड़ी बूटी ) हैं। सेवन विधि दवाके साथ दी जाती है और हर मरजका इलाज किया जाता है। नोट—आयुर्वेदीय सब प्रकारकी तैयारी औषधियां तथा काष्ठादिक जंगली जड़ी बूटियां एवं काढ़ा वृटि इत्यादि मिलती हैं।

पता—भारत भैषज्य भण्डार, नं० १०८ काटन स्ट्रीट, (बड़ाबाजार) कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास

## ❀ मिलन-पूर्णिमा ❀

( सचित्र—सामाजिक उपन्यास )

सौरीन एम० ए० पास हिन्दू-कुलीन था। रेखा थी, एम० ए० तक पढ़ी हुई—ब्राह्मसमाजभुक्त—कुमारी। दोनोंके प्रेम-बन्धनमें सौरीनकी महत्वाकांक्षाने विघ्न डाल दिया। रेखाने सौरीनका रुद्ध मार्ग खोल दिया, परन्तु बिना रेखाके वह कुछ भी न कर सका। इस उपन्यासमें जहां प्रेमकी मन्दाकिनी प्रवाहित होती है, वहां साथही कर्तव्यकी धारा प्रबल-वेगसे वेगवती होकर बहती है और अन्तमें दोनों धारायें, लोक-सेवाके सागरमें जाकर विलीन हो जाती हैं। मूल्य १॥) रुपया मात्र।

## विधवा

रूढ़ियोंके गुलाम, हिन्दूसमाजमें धर्म्म का नाम लेकर निरीह विधवाओं पर कैसा भीषण अत्याचार हो रहा है और कुलीनताके पाखंडकी ओटमें संबलहीन देवी-स्वरूपिणी विधवाओंका धर्म्म बिगाड़ कर समाजके ठेकेदार, उन्हें वेश्यालयोंमें पहुंचा देते हैं, इसका इसमें बहुत ही करुणापूर्ण चित्र खींचा गया है। काशी-वासके नाम पर होनेवाले पापाचार और विधवाओंकी खरीद-फरोख्त और पण्डे-पुजारियोंके वीभत्स कृत्यों और समाज-पतियोंकी विचित्र धर्मव्यवस्थाको देख कर आपका हृदय कांप उठेगा। मू० ॥।)

## अभागिनी

उच्च-शिक्षा प्राप्त करके भी, हिन्दू-स्त्रियोंको समाजकी वेदी पर अपना बलि-दान करना पड़ता है! बड़ीसे बड़ी शिक्षा भी सामाजिक रूढ़ियोंके कारण, उनकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है। शिशिरकी मूर्खता और मिनतीकी प्रेम-निबाहकी घटना, इस लोकका नहीं, देवलोकका त्याग है। सिद्धान्त और पवित्रताके नाम पर—कैसा भयंकर त्याग किया जा सकता है, इसका जीता-जागता प्रमाण है। ऐसा ऊंचे दरजेका विद्वत्तापूर्ण उप-न्यास आपने अभी तक नहीं पढ़ा होगा। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य २)मात्र।

मिलनेका पता—

**दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अपने बुढ़ापेमें सुख शान्तिके लिये

अपना आमदनी से थोड़ा बचा बचा कर

## इंडस्ट्रियल एन्ड प्रूडेंशियल एस्योरेन्स कम्पनी लि०

## में जमा करते रहो

विशेष विवरण जाननेके लिये यहांके आफिस

१९, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ताको

पत्र लिखिये



## हिन्दुस्तानकी जरूरतके लिये

### हिन्दुस्तानियों द्वारा संस्थापित मिल की चीजें खरीदिये।

भारतीय मजदूर, भारतीय मूलधन, भारतीय ही प्रबन्ध और भारतवर्षमें ही तैयार की हुई जूटकी चीजें–दरी और आसन, कालीन गलीचे, बिछौनेकी पट्टी इत्यादि और हर तरहके नमूने मंगाइये। आप जब देखेंगे तब आपका दिल जरूर फड़क उठेगा। बड़े बड़े शहरोंमें एजेन्सी दी जा रही है और हरएक जगह एजेन्सियोंकी जरूरत है।

एजेन्सीके लिये पत्र व्यवहार कीजिये

## श्री हनुमान जूट मिल्स,

६१, हरीसन रोड, कलकत्ता।



## टाटा स्टील

### भारतवर्ष में बनता है।

कम्पनीका लोहेका कारखाना ब्रिटिश साम्राज्यमें सबसे बड़ा तथा सुव्यवस्थित है।

निम्नलिखित तैयारी चीजें मिलती हैं। रेल, फिशप्लेट, स्लीपर, इमारती लोहा, काले लोहेके चद्दर, पट्टे, गोल तथा चौरस सरिये, नालीदार तथा सादी जस्ती चद्दरें,

सेल्स आफिस—

१८० क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

Tele. { gram. "TRONCO." CAL.
phone. CALCUTTA, 5512.



## अमृताञ्जन पेन बाम

सबसे उत्तम, दर्द दूर करने वाला भारतीय मरहम सर्व प्रकारके दर्दोंको दूर करता है। सब जगह मिलता है।

(रजिस्टर्ड) **अमृताञ्जन डिपो,**

पो० बक्स नं० ६८२५ कलकत्ता।

हेड आफिस—बम्बई मद्रास।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# कुछ उच्चकोटिकी संग्रहणीय पुस्तकें

## ❀ शङ्कराचार्य ❀

भारत, वैदिक-धर्मको तिलाञ्जलि देकर नास्तिकतावादके गहरे गर्तमें गिरने जा रहा था, राजा-प्रजा, सत्य-सनातन वैदिक धर्मके शत्रु हो रहे थे, उस समय यदि शङ्कराचार्य न होते तो, वैदिक-धर्मका नाम तक न रह जाता। इस पुस्तक में शङ्कर-स्वामीके कार्यकलापोंका जन्मसे लेकर अंत समाधि तकका विशद वर्णन है। शङ्करके ब्रह्मचर्य, संसार-त्याग, दिग्विजय, शास्त्रार्थों आदिका विस्तृत वर्णन है और उनके धर्ममतका पूर्णरूपसे निरूपण किया गया है। इसे शङ्कर-दिग्विजयका हिन्दी संस्करण समझिये। अनेक चित्र। मूल्य १॥)

## ❀ श्रीकृष्ण ❀

यह पुस्तक, वसुदेव-देवकीके प्यारे पुत्र, गोकुलके गोपसखा, गोरक्षक-गोपाल, व्रजके प्राण, कंस, जरासन्ध, कालयवन, शिशुपाल आदिके काल, द्वारिकाके विधाता, पाण्डवोंके परित्राता, राजा-प्रजाके गुरु, शत्रुओंके पूज्य, धर्मके उपदेष्टा नीतिवेत्ता, धर्म-भ्रष्ट क्षत्रिय-कुलोंके संहारक, धर्म-राज्य-संस्थापक, दीन-दरिद्रोंके बन्धु, आदर्श, मृत्युञ्जय, गीताके रचयिता, श्रीकृष्णका चरित्र है। ऐसा अच्छा सर्वाङ्ग सुन्दर, सर्वसुलभ और सम्पूर्ण सचित्र श्रीकृष्ण-चरित आजतक प्रकाशित नहीं हुआ। ३० चित्र हैं। मू० १॥) मात्र

## ❀ शिवाजी ❀

हिन्दू-कुल-सूर्य, गौरव-रवि, छत्रपति शिवाजी के समान निकट पूर्वमें कोई भी वैसा वीर, दृढ़-प्रतिज्ञ, हिन्दू-साम्राज्य संस्थापक, प्रचण्ड राजनीतिज्ञ-वीर हिन्दू नहीं हुआ, जिसने हिन्दू-जातिकी डूबती हुई नैयाको पार लगाया हो। यदि शिवाजीके उत्तराधिकारी भी कहीं वैसे ही खरे सोनेके समान निकल आते, तो आज भारत का नक्शा ही बदला हुआ दृष्टिगोचर होता। इसमें शिवाजीके जीवनकी समस्त घटनाएं बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें लिखी गयी हैं। बीसके लगभग रङ्गीन चित्र हैं। मूल्य १॥) मात्र।

## भीष्म

अपूर्व आत्मत्यागी, महावीर, आदित्य ब्रह्मचारी, भगवती गंगाके गर्भजात—महाराज शान्तनुके पुत्र, कौरव पाण्डवोंके भीष्म पितामहका नाम सदा संसारमें अमर रहेगा। भीष्मने जो भीषण भीष्म-प्रतिज्ञा की थी, अन्त तक उन्होंने उसका पालन किया। अपने समयके वे अद्वितीय धर्मनिष्ठ, समाज-रक्षक, राजनीतिके नियन्त्रणकारी वीर थे। बालकोंके लिये भीष्मसे बढ़ कर और कोई आदर्श नहीं हो सकता। अनेक रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित। हजारों प्रतियां हाथोहाथ बिक चुकी हैं। मूल्य ॥=) मात्र।

मिलनेका पता:—पॉपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्री, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# डाबर (डाः एस, के, बर्म्मन) लिः

५० वर्षोंसे प्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेण्ट दवाओंका वृहत् भारतीय कार्यालय !

## आप भी मुग्ध होंगे !

स्टार ट्रेड मार्क

केशराज (Regd.) (केश तेलोंका राजा)

ह्वाइट आयल रहित होनेके कारण यह मस्तिष्क और बालोंके लिये महा उपकारी है। अनेक प्रदर्शिनियों द्वारा इसके गुणोंपर प्रशंसापत्र तथा पदक मिले हैं। यह केवल सुगन्धित ही नहीं, औषधियुक्त भी है। बालोंको मजबूत कर उन्हें लम्बा, काला तथा चमकीला बनानेकी इसमें विशेष शक्ति है। मूल्य—प्रति शीशी ।।।=) डा० म० ।।=) नमूनेकी शीशी =), जो केवल एजेण्टोंसे ही मिलेगी।

नोट:—सब जगह हमारे एजेन्ट तथा दवाखानेमें मिलती है। दवा खरीदते समय ष्टार ट्रेड मार्क और डाबर नाम अवश्य देख लिया करें।

विभाग नं० २ पोष्ट बक्स नं० ६५४, कलकत्ता।

सेलडिपो :—(१) नं० ४ ताराचन्द दत्त स्ट्रीट। (२)—नं० २०१ हरिसन रोड।



# सिपाही विद्रोह

## सन् सत्तावनके गदरका रोमांचकारी इतिहास

**सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्यमें कमी।**

**४) से घटा कर ३) किया गया और पुस्तक सजिल्द कर दी गयी।**

हिन्दीमें अपने ढंगकी सर्वथा अनोखी पुस्तक है। पहले संस्करणकी प्रतियां हाथोंहाथ बिक जाने पर दूसरा संस्करण निकाला गया है। इस पुस्तकमें आप ऐसी रोमांचकारी घटनाएं पढ़ेंगे कि आपको अनुभव होगा कि हम कोई उपन्यास पढ़ रहे हैं।

झांसीकी रानीने क्या किया, दिल्लीके बादशाहका क्या हुआ, कुंवर जगदीश सिंह कैसे वीरगतिको प्राप्त हुए, देहातोंमें क्या हुआ आदि बातें पढ़कर आप कहेंगे कि वास्तवमें पुस्तक संग्रहणीय है।

**सुन्दर कागज, बढ़िया छपाई, पक्की जिल्द।**

शीघ्र आर्डर देकर मंगा देखिये।

## मैनेजर—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी

१४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हिन्दुओंके दो संरक्षणीय धार्म्मिक ग्रन्थ।

## (१) तुलसीदास कृत सटीक व सचित्र रामायण---

तुलसीदासकृत रामायण, अनेक स्थानोंसे प्रकाशित हुई परन्तु इसके समान शुद्ध, सुन्दर, बढ़िया छपाई, सचित्र और सर्वसुलभ कहींसे भी प्रकाशित नहीं हुई है। प्राज्जवल भाषामें टीका और गहन विषयोंपर जगह-जगह टिप्पणियां, बहुत बढ़िया पक्की सुन्दर जिल्द। क्षेपक और लव-कुश काण्ड सहित। क्षेपकका अलग निर्देश कर दिया गया है। सस्ती और सुन्दर होनेसे सैकड़ों प्रतियां प्रति दिन बिकती हैं। करीब १४०० पेज और अनेकों सादे व बहुरंगे चित्रोंसे सुशोभित है। ऐसा धर्मग्रन्थ हर हिन्दूके घरमें रहना चाहिये। अतएव एक प्रति आप अवश्य मँगाइये। मू० केवल ३) रु०

## बालकोंके लिये उपयोगी ग्रन्थ।

### (१) सचित्र बालरामायण।

इस पुस्तकमें रामायणके सातों काण्डोंका सरल भाषामें वर्णन किया गया है। सरलमति बालक-बालिकाओंके लिये यह अपूर्व पुस्तक है। सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज, मनोहर रंग-बिरंगे अनेकों चित्र। यह पुस्तक कई जगह कोर्समें भी पढ़ाई जाती है। अबतक इस नामकी जितनी पुस्तकें निकली हैं, उनमें यह सर्वश्रेष्ठ है। मू० ॥=) मात्र।

### (२) सचित्र बालमहाभारत।

महाभारत, ज्ञान, वैराग्य, नीति, और सदाचारका खजाना है। इस पुस्तकमें महाभारतके अठारह पर्व्वोंके मूल-कथा-भागका सरल भाषामें वर्णन किया गया है। बालक-बालिकाओंको महाभारतकी शिक्षादायक कथा हृदयङ्गम करानेके लिये अपूर्व पुस्तक है। कितने ही सुन्दर सादे व बहुरंगे चित्रोंसे सुसज्जित। छपाई सफाई बढ़िया, सुन्दर कागज, यह पुस्तक कोर्समें भी पढ़ाई जाती है। मूल्य ॥=)

## (२) सचित्र महाभारत---

इस पुस्तकमें महाभारतके अठारह पर्व्वोंकी मूल कथा, तत्सामयिक सादे तथा बहुरंगे चित्रोंके साथ, इस प्रकार सरल भाषामें वर्णित की गयी है कि कोई भी—साधारण पढ़ा लिखा मनुष्य भी—इसे आसानीसे समझ सकता है। सच पूछिये तो महाभारतका इतना सरल सुन्दर सविस्तृत सचित्र संस्करण हिन्दीमें अब तक कहींसे भी नहीं निकला। महाभारतको हिन्दू जनता ५ वां वेद मानती है अतएव इस धर्म-ग्रन्थको एक-एक प्रति हर धार्म्मिक घरमें रहना परमावश्यक है। ६०० पेज, मोटे कागज छपी हुई, छपाई-सफाई हद दर्जेकी सुन्दर, पचासों सादे व बहुरंगे चित्रोंसे विभूषित, होते हुए भी इसका मूल्य सर्वसाधारणकी सुविधाके लिये केवल ३) रुपया मात्र।

**विश्वमित्र कार्यालय,** १४-१ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| १—अलख (कविता)—श्री मोहनलाल महतो ... | २५७ |
| २—साम्राज्यवादका आर्थिक स्वरूप—श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र, एम० ए०, बी० एल० ... | २५८ |
| ३—रूसके पारिवारिक जीवनमें क्रान्ति (सचित्र)—श्री कमलाकान्त शर्मा एम० ए० ... | २६२ |
| ४—फौजी घोड़ोंके करिश्मे (सचित्र)—श्री अम्बिकाप्रसाद मिश्र ... ... ... | २७० |
| ५—मिलन (कहानी)—श्री अज्ञेय... ... | २७३ |
| ६—नारियोंके समानाधिकार—श्रीमती सुभद्रादेवी बी० ए० ... ... ... | २७९ |
| ७—प्रणयकी हाटमें (कविता)—श्रीमती "कोरी" | २८४ |
| ८—इत्यारा सम्प्रदाय—श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा... | २८५ |
| ९—लेनिनकी प्रेम-अर्चा—श्री पुरुषोत्तम जयकृष्ण देवरस, एम० एस०-सी० 'विशारद' ... | २९० |
| १०—सरोजिनी देवीकी कवितापर एक नजर—श्री शिवदेव उपाध्याय 'सतीश' बी० ए० ... | २९३ |
| ११—इङ्गित (कविता)—श्री आरसीप्रसाद सिंह ... | २९९ |
| १२—मलायामें इन्द्रजाल और टोना-टुटका (सचित्र)—डा० ए० पी० मिश्र ... ... | ३०० |
| १३—अछूतका पत्र—श्री व्यथित हृदय ... | ३०४ |
| १४—गीत (कविता)—श्री राममूर्ति शुक्ल 'राम'... | ३०९ |
| १५—एक टाइप—श्री जैनेन्द्रकुमार ... ... | ३१० |
| १६—सीमा प्रान्तका भ्रमण (सचित्र)—श्री ठाकुर हरिहर सिंह ... ... ... | ३१३ |



सुजाक (प्रमेह) की
हुक्मी दवा

"गोनोकिलर"

मुरगा छाप
रजिस्टर्ड

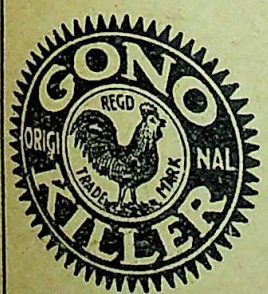


नकली से सावधान
खरीदनेसे पहले
मुर्गा छाप देख लीजिये

पेशाब और धातुके दर्दोंको मार हटाने व निर्मूल करनेके लिये गोनोकिलर एक ही ऐसी आश्चर्यजनक दवा है कि जिसको इस्तेमाल करनेसे रोगीको कभी निराश होना ही नहीं पड़ता। डाक्टरोंकी दवाई और इन्जेक्शन (टीका) लेकर परेशान हो गये हों, अंग्रेजी और अमेरिकाकी पेटेण्ट दवाओंमें फजूल ही पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मीद हो गये हों, तब आखिरी इलाज हमारा **"गोनोकिलर"** इस्तेमाल बेखटके कीजियेगा। चाहे जैसा पुराना या नया सुजाक, पेशाबमें मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक रुक कर या बूंद बूंद आना, मूत्राशयके अन्दर घाव या सूजनका होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता **औरतों तथा मर्दोंको** इस किस्मकी तमाम भयङ्कर बीमारियोंको **"गोनोकिलर"** जड़से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोलीकी शीशी ३) रुपया।

**पता—डाक्टर डी० एन० जसानी, गिरगांव बैक रोड, बम्बई नं० ४**

कलकत्ताके एजेण्ट—बी० ए० ब्रादर्स ११ न० इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| १७—मेरी अम्मां ! (कविता)—श्रीमती तोरन देवी शुक्ल 'लली' ... ... ... | ३१९ |
| १८—अवधकी लूटपर मि० टारेन्सके विचार—श्री गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र' ... ... ... | ३२० |
| १९—एकाकिन (कहानी)—श्री 'बनमाली' ... | ३२२ |
| २०—समुद्रपर आधिपत्य कौन करेगा ? (सचित्र)—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिका एक छात्र ... | ३२६ |
| २१—निराशा (कविता)—श्रीनिधि द्विवेदी ... | ३३१ |
| २२—गरम राखमें ढंकी बारूद—श्र रामवृक्ष, बेनीपुरी ... ... ... ... | ३३२ |
| २३—फेफड़ेकी क्रियायें (सचित्र)—डा० एस० एन० घोष ... ... ... ... | ३३९ |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| २४—सङ्गीत-सुधा ... ... ... | ३४० |
| २५—चयनिका (सचित्र) ... ... | ३४२ |
| २६—महिला-संसार (सचित्र) ... ... | ३४८ |
| २७—समाज-दर्पण ... ... ... | ३५५ |
| २८—अन्तर्राष्ट्रीय ... ... ... | ३६१ |
| २९—चित्र-विचित्र ... ... ... | ३६९ |
| ३०—अर्थ-चक्र ... ... ... | ३६९ |
| ३१—स्वास्थ्य-विज्ञान (सचित्र) ... ... | ३७२ |
| ३२—साहित्य-जगत् ... ... | ३७५ |
| ३३—सम्पादकीय ... ... ... | ३७८ |



— हर प्रकारके ब्लाक बनानेका एकमात्र विश्वस्त स्थान —

# एमराल्ड इन्ग्रेविंग लिमिटेड।

सादे ब्लाकों की १२ घण्टे में डिलेवरी दी जाती है।

१।२, मोतीसील स्ट्रीट, कलकत्ता।

कम दाम में विशेष काम हमारी विशेषता है।

विशेषतायें—

१—किसी भी ऋतुमें एक ही दिनमें डिलेवरी। २—विशेष अवस्थाओंके अतिरिक्त मूल्य सर्वापेक्षा सुलभ।
३—हाफटोन और लाइन ब्लाकोंकी एक ही दर। ४—तीन रंगे और बहुरंगे ब्लाक सर्वोत्तम और आदर्श।

छोटेसे छोटा आर्डर भेजकर परीक्षा कीजिये।

पत्र-पत्रिकाओं के लिये विशेष रियायत।

पूरे विवरण के लिये शीघ्र लिखिये।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्वमित्र

सम्पादक — मूलचन्द्र अग्रवाल

दिसम्बर, १९३४ | वर्ष ३, खण्ड ५ अङ्क ३, पूर्ण संख्या २७ | मार्गशीर्ष, १९९१

## अलख

चला जीवनकी अलख जगाने
दग्ध हृदयके तप्त सांससे पत्थरको पिघलाने।
विश्व-वेदनासे जिसकी वीणाके तार मिले हों
आज उसीसे चला एकताराका तार मिलाने।
मचल रहा है मनमोहन वह चन्द्रखिलौना लेगा
चला उसे नयनोंके मोतीसे मैं आज रिझाने।
जिस सागरपर पतन और उत्थान थिरकते रहते
चलूं तनिक उसके तटपर रो-रो कर जी बहलाने।
मेरे इस सूने मानसमें अपनापन बसता है
मेरी स्मृतियां एक-एक कर लगीं यहां क्यों आने।
चला जीवनकी ज्योति जगाने।

—मोहनलाल महतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साम्राज्यवादका आर्थिक स्वरूप

श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र, एम० ए० बी० एल०

आधुनिक समयमें साम्राज्यवादका जिस अर्थमें प्रयोग होता है उसके मूल सिद्धान्तकी व्याख्या करते हुए सन् १८९० में ब्रिटिश राजनीतिज्ञ लार्ड Palmerston ने कहा था—

"A British subject in whatever land he may be, shall feel confident that the watchful eye and the strong arm of England will protect him against injustice and wrong."

—"एक ब्रिटिश प्रजा चाहे वह जिस देशमें रहे, उसे इस बातका यकीन रहेगा कि इंगलैण्डकी सतर्क दृष्टि और शक्तिशाली बाहु अन्याय और अपकारके विरुद्ध उसकी रक्षा करेगी।" प्राचीन कालके साम्राज्यवाद और आधुनिक साम्राज्यवादमें यही अन्तर है। उस समय भी चक्रवर्ती और सार्वभौम सम्राट् हुआ करते थे। किन्तु उनकी साम्राज्यविस्तारलालसा राजनीतिक सत्ता तक ही सीमाबद्ध रहा करती थी। अर्थात् विभिन्न प्रदेशोंको जीतकर उन्हें साम्राज्यकी सर्वप्रधान सत्ता माननेके लिए विवश करना, बस उनकी विजयाकांक्षाका चरम उद्देश्य यही होता था। विजित देशोंके अन्तरङ्ग शासनमें हस्तक्षेप तथा उसके समृद्धिसाधनोंका शोषण करके स्वदेशका पुष्टिसाधन करनेकी आकांक्षा उस समयके साम्राज्यवादी सम्राटोंके हृदयमें उत्पन्न नहीं हुई थी। किन्तु वर्तमान गणतान्त्रिक देशोंमें साम्राज्यवादकी जो भावना फैली हुई है उसका मूलसिद्धान्त है विजित देशोंके समृद्धिसाधनोंपर अपना प्रभुत्व स्थापित करके तलवारके बलसे उस प्रभुत्वको अक्षुण्ण बनाये रखना और उन देशोंके बाजारोंमें अपने मालकी खपतके लिए आर्थिक सुविधायें प्राप्त करना। इन सुविधाओंको प्राप्त करके जब साम्राज्यवादी देशके व्यापारी किसी विजित देशमें पहुंचते हैं तो फिर उनके विशेषाधिकारोंकी रक्षाके लिए खास व्यवस्था की जाती है। यहां तक कि उस देशके कानूनके अनुसार उनका विचार भी नहीं हो सकता। ये व्यापारी जहां जाते हैं वहीं उनका घर बन जाता है। साम्राज्यशक्ति उनकी परिचारिका बनकर उनके पीछे-पीछे घूमती रहती है। स्थल सेना, नौसेना, आकाशसेना सब उनकी सहायताके लिए हरदम तैयार रहती है। उनके विशेषाधिकारों और आर्थिक सुविधाओंमें कोई खलल नहीं पहुंचा सकता। चीनपर ब्रिटिश साम्राज्यका राजनीतिक दृष्टिसे प्रभुत्व नहीं है; किन्तु आर्थिक दृष्टिसे वहां साम्राज्यका प्रभुत्व अवश्य है। तभी तो वहांके अंगरेज वणिकोंके स्वार्थों और आर्थिक सुविधाओंकी रक्षाके लिए हाङ्काङ्के बन्दरमें अंगरेजी जङ्गी बेड़े हमेशा गश्त लगाया करते हैं। इन बेड़ोंका आवश्यक होनेपर चाहे जब उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण लीजिये—सन् १८९७ में चीनकी सरकारने Peking-Hankow पेकिङ्ग हांकाउ रेलवे लाइन बनानेका कन्ट्राक्ट एक विलायती कम्पनीको न देकर एक बेलजियन कम्पनीको दिया। इसपर विलायतके तत्कालीन प्रधान मन्त्री लार्ड सलेसबरी अत्यन्त विक्षुब्ध हो उठे और उन्होंने चीनस्थित अंगरेज राजदूतको यह आदेश भेजा कि चीनकी सरकारसे इस बातकी शिकायत की जाय कि "रेलवे सम्बन्धी रियायतोंके विषयमें हमारे साथ बुरा सलूक किया गया है, और हमें तसल्ली देनेके लिए उसके बदलेमें कम-से-कम ६ नयी लाइनोंका कन्ट्राक्ट दिया जाय।" साथ ही अंगरेज राजदूतको इस बातकी धमकी देनेकी भी हिदायत की गयी कि

"Unless they agree at once", we should regard their action "as an act of deliberate hostility against this country and shall act accordingly. After consultation with the admiral you may give them the number of days or hours you think proper, within which to send their reply." —अर्थात, जब तक चीनकी सरकार हमारी इस मांगको फौरन कबूल न कर ले, हम उसकी इस काररवाईको इंगलैण्डके विरुद्ध जानबूझकर शत्रुता की काररवाई समझेंगे और इसके अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कार्य करेंगे। नौसेनापतिके साथ राय-मशविरा करके आप ( ब्रिटिश राजदूत ) दिन या घण्टा, जैसा आप उचित समझें नियत कर दें; जिसके अन्दर चीन सरकारके लिए उत्तर भेजना आवश्यक होगा।" इसके बाद हांङ्काङ्के बन्दरगाहमें जङ्गी बेड़े एकत्र होने लगे और इस धमकीका प्रत्यक्ष प्रभाव यह हुआ कि अंगरेज व्यापारियोंको चीनमें २८०० मील रेलवे लाइन बनानेका कन्ट्राक्ट मिला। मिश्र देशपर इंगलैण्डका आधिपत्य भी इसी रूपमें स्थापित हुआ, जिसके फलस्वरूप वहां भी अंगरेज व्यापारियोंके आर्थिक स्वार्थ सुरक्षित हैं। मिश्रकी राजधानी करोमें जो ब्रिटिश एजेण्ट रहता है वह चाहे जब तार द्वारा माल्टा संवाद भेजकर अलेकजेन्द्रियामें युद्धपोत मंगा सकता है और इस रणपोतके पहुंचते ही मिश्रकी सरकारके साथ बड़े-बड़े कार्य सिद्ध हो जाते हैं। केवल ब्रिटिश सरकार ही नहीं बल्कि प्रत्येक देशकी साम्राज्यवादी सरकार आज इसी नीतिका पालन कर रही है; हालांकि कहनेके लिए राष्ट्रसङ्घ जैसी अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चायती संस्था मौजूद है। इस नीतिका अभिप्राय यह है कि साम्राज्यवादी देशकी सरकार जिन देशोंके वाणिज्य व्यवसायमें अपनी पूंजी लगायेगी वहां-वहां पूंजीके साथ-साथ उसकी राष्ट्रीयता भी कायम हो जायगी। और इस राष्ट्रीयताकी रक्षा उक्त साम्राज्यवादी देशका झण्डा करेगा। इस प्रकार साम्राज्यवादी देशकी सीमा अपने देश तक ही परिमित नहीं रहती, बल्कि पूंजीके साथ-साथ वह विस्तृत होती रहती है। साम्राज्यकी यह व्यापकता आधुनिक युगके इतिहासकी एक विशेषता है। इसी विशेषताको ध्यानमें रखकर प्रत्येक साम्राज्यवादी देश अपनी सैनिक नीतिका परिचालन करता है। ब्रिटिश साम्राज्यके कर्णधार जिस समय देशकी रक्षाके लिए सेना-विभागका बजट पेश करते हैं उस समय उनका ध्यान केवल इंगलैण्डकी चतुः सीमा तक ही आबद्ध नहीं रहता; बल्कि उसकी व्याप्ति फारसके तेलके कुआं या दक्षिण अफ्रिकाके ट्रान्सवाल प्रदेशमें सोनेकी खान तक होती है।

वर्तमान साम्राज्यवादके इस आर्थिक स्वरूपकी क्रमोन्नति १८ वीं शताब्दीके अन्तिम भागसे होने लगी है। अनुन्नत देशोंमें रेलवेके विस्तारके साथ-साथ इस साम्राज्यवादका विस्तार होने लगा। मालकी रफ्तनीकी अपेक्षा पूंजीकी रफ्तनीकी रक्षाकी विशेष आवश्यकता समझी गयी। क्योंकि माल तो भिन्न-भिन्न देशोंमें भेजे जा सकते हैं। यदि एक देश नहीं लेगा तो दूसरे देशमें उसके लिए बाजार कायम किया जा सकता है। किन्तु पूंजीके साथ तो यह बात नहीं है। साम्राज्यवादी देशके किसी बैङ्कर या पूंजीपतिने यदि किसी अनुन्नत देशकी सरकारको ऋण दिया है, या उस देशमें अपनी पूंजी लगाकर रेलवे लाइन बनायी है अथवा खान खोली है, तो उसका आर्थिक स्वार्थ उसी देशमें आबद्ध हो जाता है। अतएव उसे किसीकी प्रतियोगिता सह्य नहीं हो सकती। अपने अधिकारोंकी रक्षाके नामपर साम्राज्य द्वारा दबाव डलवाकर वह प्रतियोगितासे अपनी रक्षा करता है। किन्तु यह तभी हो सकता है जबकि किसी अनुन्नत देशमें एक ही साम्राज्य द्वारा यह दबाव डाला जाय अथवा प्रत्येक साम्राज्यवादी देशके क्षेत्र पृथक्-पृथक् हों! अन्तर्राष्ट्रीय भाषामें इसे Spheres of interest स्वार्थक्षेत्र कहते हैं। यूरोप और अमेरिकाके इस प्रकारके स्वार्थक्षेत्र चीन, अफ्रिका आदि देशोंमें पृथक्-पृथक् हैं; जहां उनकी पूंजीकी रक्षाके लिए जङ्गी बेड़े तैयार रहते हैं। फारसके तेलके कुंओंकी प्रतिद्वन्द्विताका अन्त भी इसी प्रकार आर्थिक बंटवारा द्वारा हुआ।

रियायतोंके रूपमें आर्थिक सुविधायें प्राप्त करनेके कई तरीके हैं। पहले तो नम्रतापूर्वक समझा-बुझाकर काम निकालनेका प्रयत्न किया जाता है; किन्तु इस बातका सङ्केत अवश्य रहता है कि साम्राज्यवादी देशका जङ्गी बेड़ा पासमें ही कहीं मौजूद है। अनुन्नत देशके परराष्ट्र-सचिव—जिसके साथ यह समझाने-बुझानेकी क्रिया की जाती है—इस बातको महसूस किये बिना नहीं रहता कि यदि वह साम्राज्यवादी देशके विचारोंसे सहमत नहीं होता है तो उसे एक दुर्धर्ष शक्तिका कोपभाजन बनना पड़ता है। इस प्रकार साम्राज्यवादी देश अपनी कूटनीति, अपनी धाक और सबसे बढ़कर अपनी शक्ति द्वारा दबाव डालकर अनुन्नत देशमें अपने उद्योग-धन्धे आरम्भ करते हैं और बादमें उनका सम्पोषण और सम्बर्द्धन करते हैं। इसके लिए यदि उस देशके अन्तरङ्ग शासनमें हस्तक्षेप करनेकी आवश्यकता होती है तो वे इससे भी बाज नहीं आते। ब्रेजिलकी एक अंगरेजी रेलवे कम्पनीने सन् १९२४ में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ख्याल किया कि ब्रेजिलकी सरकारके साथ समझौता होकर जो भाड़ा निश्चित किया गया है वह बहुत ही कम है इसलिये भाड़ेमें वृद्धि होनी चाहिए। किन्तु ब्रेजिलकी सरकार उक्त कम्पनीकी इस मांगको उचित माननेके लिए तैयार नहीं थी। इसपर ब्रिटिश सरकारने रेलवे कम्पनीकी मांगका समर्थन करते हुए हस्तक्षेप किया। नम्रतापूर्वक ब्रेजिल सरकारको यह कहलाया गया कि यदि इस सम्बन्धमें वह अपनी नीतिमें परिवर्तन नहीं करेगी तो इससे वह एक महान् शक्तिशाली साम्राज्यको असन्तुष्ट कर देगी। बस इस इशारेसे ही काम बन गया।

साम्राज्यान्तर्गत विभिन्न देशोंके साथ आवागमनके साधनोंपर नियन्त्रण रखनेके लिए सामुद्रिक शक्तिका मुख्य प्रयोजन है। किन्तु यह कार्य वायुयान द्वारा अब और भी सुलभ रूपमें होने लगा है। ब्रिटिश साम्राज्यकी सबसे बड़ी शक्ति यह सामुद्रिक शक्ति ही है, जिसकी बदौलत वह साम्राज्यान्तर्गत सुदूर प्रदेशोंके साथ अपना सम्बन्ध बनाये रखनेमें समर्थ होता है। इस विपुल सामुद्रिक शक्तिके कारण ही भारत; पोर्तगीज, डच और फरासीसियोंके हाथसे निकलकर आखिर ईस्ट इण्डिया कम्पनीके हाथमें आया। डच नाविकोंने अस्ट्रेलियाका पता लगाया; किन्तु उसको आबाद किया अंगरेजोंने। क्यों? इसलिए कि उनकी सामुद्रिक शक्ति डचोंकी अपेक्षा बढ़ी-चढ़ी थी। किसी सुदूर देशपर आधिपत्य स्थापित करनेके लिए सामुद्रिक शक्तिकी कितनी महत्ता है, यह अठारहवीं शताब्दीमें अंगरेजोंके भारतपर और बीसवीं शताब्दीमें अफ्रिकाके प्रदेशोंपर अधिकार करनेसे सिद्ध हो चकी है। जब तक इंगलैण्डका समुद्रपर अधिकार है, तबतक केनियापर उसका प्रभुत्व अक्षुण्ण बना रहेगा। इंगलैण्डसे भारत तकका सामुद्रिक मार्ग निष्कण्टक बना रहे इस लक्ष्यको ध्यानमें रखकर ही सामुद्रिक शक्तिकी नीति स्थिर की गयी थी। क्योंकि सामुद्रिक शक्ति और अब आकाश-सेना द्वारा ही भारतपर आधिपत्य कायम रखा जा सकता है। किन्तु नौ-सेना और आकाश-सेना पिट्रोलपर निर्भर करती है। इसलिए बर्मा और ईराकके पेट्रोलके कुओंपर नियन्त्रण रखना आवश्यक है। इस नियन्त्रणके लिए ही कृष्ण सागरमें रूसके नौ-बलको परास्त किया गया और बगदाद रेलवेके सम्बन्धमें जर्मनीके साथ बैर किया गया। इस प्रकार भारत तकका मार्ग निष्कण्टक हो जानेका अर्थ है हाङ्गकाङ्ग और सङ्गाई तकका मार्ग और फिर वहांसे आस्ट्रेलिया तकके मार्गको निष्कण्टक बनाये रखना। हालमें लन्दनसे मेलबोर्नतककी जो वायुयान-प्रतियोगिता हुई थी उसमें अंगरेज विमान-वीर स्कार्ट और ब्लैकने ७१ घण्टेमें लगभग १२ हजार मीलकी दूरी तय करके सुदूरस्थ प्रदेशोंके साथ साम्राज्यके सम्बन्धको और भी प्रशस्त कर दिया है। यह विमान-प्रतियोगिता केवल 'स्पोर्ट'के लिए नहीं की गयी थी, बल्कि इसके अन्दर अंगरेज जातिकी अर्थनीति और वाणिज्यनीतिकी भावना काम कर रही थी। अपने आर्थिक स्वार्थको अक्षुण्ण रखनेके लिए ही साम्राज्यवादी देश अपनी विशाल सामरिक शक्तिका पोषण करते हैं इसका सबसे ज्वलन्त प्रमाण ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत भारत है। इंगलैण्डकी यह सैनिक शक्ति जब तक कायम रहेगी, इंगलैण्ड और भारतके बीच कभी समानता हो ही नहीं सकती। सशस्त्र साम्राज्य और निरस्त्र पराधीन भारतके बीच समानता नैतिक दृष्टिसे वाञ्छनीय होनेपर भी असम्भव है। इसके सिवा एक महाजन देश और दूसरा उसका कर्जदार देश है। दोनोंका पारस्परिक सम्बन्ध इस समय जैसा है उसके अनुसार एक औसत अंगरेजकी जेबमें भारतका जो एक पौण्ड जाता है उसमें सिर्फ एक रुपया औसत भारतीयको मिलता है। ऐसी अवस्थामें समानताका वाह्य प्रदर्शन चाहे कितना ही क्यों न किया जाय किन्तु वास्तविक समानता आही नहीं सकती। भारतके भावी शासनके लिए सङ्घशासनविधानकी जो परिकल्पना की गयी है उसमें भी साम्राज्यवादकी यही भावना काम कर रही है। Commercial discrimination वाणिज्यविषयक भेदभाव, Safeguards संरक्षण तथा गवर्नर जेनरल और प्रान्तीय गवर्नरोंके Special responsibilities विशेष दायित्वके नामपर शासनविधानमें जो शर्तें रखी गयी हैं उनका स्पष्ट अभिप्राय यही है कि भारतीय व्यवस्था-परिषद्का शासनके किसी भी विभागपर सर्वप्रधान नियन्त्रण नहीं हो। अर्थनीतिपर गवर्नर जेनरलके अन्तिम नियन्त्रणका अभिप्राय इसके सिवा और क्या हो सकता है कि भारत भविष्यमें भी विदेशी पूंजीका क्षेत्र बना रहेगा और ब्रिटिश सरकारकी भारतीय नीति इस रूपमें परिचालित होती रहेगी जिससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भारतमें पूंजी लगानेवाले अंगरेज पूंजीपति सानुकूल बने रहें। भावी शासनविधानके इस आर्थिक पहलूपर आलोचना करते हुए सुप्रसिद्ध अंगरेज राजनीतिज्ञ मि० एच० एन० ब्रेल्सफोर्डने ठीक ही कहा है—"Nothing has changed in substance since the East India Company vanished. This peninsula is still a province of the City of London. अर्थात् ब्रिटिश सरकारकी भारतीय नीतिके सम्बन्धमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीके अवसानके समयसे लेकर अब तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। भारत अब भी लन्दन शहरका एक प्रान्त बना हुआ है।" इस प्रकार भारत और इंगलैण्डके बीच कर्जदार और महाजनका जो सम्बन्ध बना हुआ है वह भावी शासनविधानमें भी ज्योंका-त्यों कायम रहेगा और इस सम्बन्धको अक्षुण्ण रखनेके लिए ही संरक्षणोंकी व्यवस्था की गयी है। भारतीय संघराष्ट्रकी व्यवस्थापिका सभा और भारतीय अर्थसचिव इन संरक्षणोंके कारण ऐसा कोई भी काम नहीं कर सकते जिससे भारतमें पूंजी लगानेवाले अंगरेज पूंजीपतियोंके स्वार्थमें जरा भी खलल पहुंचे।

ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्यप्राप्त उपनिवेशोंके साथ भी यह आर्थिक प्रतिबन्ध लगा हुआ है। इस एक प्रतिबन्धके सिवा उनकी व्यवस्थापिका सभायें अन्यान्य विषयोंमें पूर्ण स्वतन्त्र हैं। वे साम्राज्यके प्रति आनुगत्यकी शपथका प्रत्याख्यान कर सकती हैं, जैसा कि आयरलैण्डने किया है, इंगलैण्डके युद्धनिरत होनेपर उसे सहायता देनेसे हाथ खींच सकती है, अपने शासनविधानके स्वरूप या मूलनीतिमें परिवर्तन कर सकती हैं। किन्तु साम्राज्यके साथ महाजन और कर्जदारका जो सम्बन्ध है उस विषयमें किसी उपनिवेशकी व्यवस्थापिका परिषद् ऐसा कोई कानून पास नहीं कर सकती जिससे साम्राज्यकी सीक्यूरिटीका मूल्य कम हो जाय। ऐसा होनेपर उक्त कानूनको ब्रिटिश सरकार नामञ्जूर कर दे सकती है।* यदि कोई उपनिवेश साम्राज्यका ऋण नहीं चुका सके तो इसका परिणाम क्या हो सकता है इस सम्बन्धमें न्यू फाउण्डलैण्डका उदाहरण यथेष्ट है। न्यू फाउण्डलैण्ड ऐसा नहीं कर सका और इसके दण्डस्वरूप उसे स्वायत्तशासनसे हाथ धोना पड़ा। साम्राज्यवादी देश अपनी इस आर्थिक भावनाको साथ लेकर ही राष्ट्रसङ्घमें प्रविष्ट हुए हैं और इस भावनाको कायम रखनेके लिए वे अपनी विशाल सैनिक-शक्तिपर निर्भर करते हैं, जिसके कारण राष्ट्रसङ्घ एक निर्जीव संस्था बना हुआ है। साम्राज्यवादी देशोंके अन्तरंग राजनीतिक जीवनपर सम्पत्तिका आधिपत्य है और इस आधिपत्यके लिए उन्हें सैनिक-शक्तिका प्रयोजन है। साम्राज्यान्तर्गत तथा उससे बाहर भी विभिन्न देशोंमें उनकी जो पूंजी लगी हुई है उसकी रक्षाकी गारण्टी इस सैनिकशक्ति द्वारा ही होती है। उदाहरणके लिए ब्रिटिश साम्राज्यको लीजिए। ब्रिटिश सरकारकी नौ-सेना केवल इंगलैण्डकी रक्षाके लिए ही नहीं बल्कि साम्राज्यान्तर्गत सुदूर स्थित उपनिवेशोंकी रक्षाके लिए भी है। किन्तु इस विशाल नौ-सेनाके खर्चके लिए ब्रिटिश सरकार उपनिवेशोंसे नाममात्रकी आर्थिक सहायता लेती है। क्यों? इसलिए कि साम्राज्य इन उपनिवेशोंके साथ आर्थिक बन्धनोंसे आबद्ध है। अस्ट्रेलिया या भारत चाहे जहां कहीं यह नौ-सेना लन्दन शहरके महाजनों द्वारा इन देशोंमें लगायी गयी पूंजीकी रक्षा करती है। इंगलैण्डकी यह सामुद्रिक शक्ति ही उसके विशाल साम्राज्यका केन्द्रस्थल है। इसी शक्तिकी बदौलत उसे युद्धके समयमें बाहरसे खाद्यपदार्थ और कच्चा माल मंगानेकी गारण्टी मिल सकती है। अंगरेज जातिने आरम्भसे ही ऐसा प्रयत्न किया है जिससे समुद्रपर उसका एकाधिपत्य बना रहे। युद्धके पूर्व जर्मनी उसके इस आधिपत्यका प्रतिद्वन्दी बनना चाहता था। किन्तु युद्धमें वह इस तरह कुचल डाला गया, जिससे जर्मनीके लिए इंगलैण्डके मुकाबलेमें सामुद्रिक शक्ति प्राप्त करना प्रायः असम्भव हो गया है। युद्धके बाद जब सन्धिकी चर्चा होने लगी उस समय भी अंगरेज राजनीतिज्ञ सामुद्रिक शक्तिके ऊपर अपने इस आधिपत्यको छोड़नेके

*"Any Dominion Legislation which appears to the Government of the United Kingdom to alter any of the provisions affecting the stock (i. e. trustee securities) to the injury of the stockholder...would properly be disallowed." (Report of the conference on the operation of Dominion Legsilation, 1929

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिए तैयार नहीं थे। तभी तो राष्ट्रपति विलसनकी सन्धि-शर्तोंमें दूसरी शर्तपर-जो सामुद्रिक अधिकारके सम्बन्धमें थी और जिसमें एकमात्र राष्ट्रसङ्घको सामुद्रिक अवरोध Blockade का अधिकार दिया गया था—मि० लायड जार्जने विचार तक करनेसे इन्कार कर दिया। यह सामुद्रिक शक्ति ही उसके आर्थिक साम्राज्यका मुख्य साधन है और इस साधनके द्वारा ही वह संसारके एक चौथाई भागपर अपना आर्थिक प्रभुत्व कायम रखते हुए अपने पूंजीपतियोंके स्वार्थकी रक्षा कर रही है। साम्राज्यवादी देशोंका यह आर्थिक स्वरूप उनकी पूंजीवादमूलक सामाजिक व्यवस्थाका अवश्यम्भावी परिणाम है। अतएव जब तक यह व्यवस्था कायम रहेगी तब तक उसकी रक्षाके लिए अपनी जल-सेना और आकाश सेनापर भरोसा करना उनके लिए सर्वथा स्वाभाविक है।

---

# रूसके पारिवारिक जीवनमें क्रान्ति

श्री कमलाकान्त शर्मा एम ए०

रूसकी बोल्शेविक राज्यक्रान्तिके फलस्वरूप केवल वहांकी राजनीतिमें ही युगान्तरकारी परिवर्तन नहीं हुआ, बल्कि अर्थनीति, धर्म, सामाजिक आचार-विचार, राजनीति और गृह तथा परिवार सम्बन्धी परम्परागत भावनाओंमें भी विस्मय-जनक क्रान्ति हुई, जिससे सामाजिक व्यवस्थामें एकबारगी उथल-पुथल मच गयी। सच तो यह है कि इस युगान्तरकारी क्रान्तिमें पड़कर रूसकी सामाजिक परम्परा और कुटुम्ब-प्रणालीकी जैसी कठोर परीक्षा सोवियट रूसमें हुई है वैसी मानव जातिके इतिहासमें और पहले कभी नहीं हुई थी। यद्यपि रूसकी बोल्शेविक सरकारने धर्म और व्यक्तिगत सम्पत्तिके समान रूसकी कुटुम्ब-प्रणालीका जानबूझकर उच्छेद करनेका प्रयत्न नहीं किया है, किन्तु रूसमें उग्रक्रान्तिकारी विचारोंके स्त्री-पुरुषोंका एक ऐसा दल मौजूद है जो, अगर उसका बश चले, तो जानबूझकर कुटुम्ब-प्रणालीका अस्तित्व मिटा दे। कुटुम्ब और स्त्री-पुरुषके सम्बन्धमें उनके विचार कार्य रूपमें परिणत नहीं होने पाते, इसका एक खास कारण यह है कि रूसके शासक वर्तमान अवस्थामें सामाजिक स्थितिको कायम रखनेके लिए कुटुम्ब-प्रणालीको अनिवार्य रूपसे आवश्यक समझते हैं। वे इस बातको महसूस करते हैं कि बहुतसे ऐसे काम जो खासकर कुटुम्ब द्वारा किये जाते हैं, उन्हें करनेके लिए इस समय राज्य और समाज तैयार नहीं है। यह बात नहीं है कि उनके चरम उद्देश्यको सिद्धिके मार्गमें कुटुम्ब-प्रणालीका जो खतरा है उसे वे नहीं समझते हैं। कुटुम्ब-प्रणालीमें वैयक्तिक प्रवृत्तियोंपर जो जोर दिया जाता है उससे सामूहिक भावनाके विकासमें अवश्य बाधा पहुंचती है और जिस प्रकारके समाजका वे गठन करना चाहते हैं उसकी नींव यही सामूहिक भावना हो सकती है। किन्तु इस समय परिवारका स्थान ग्रहण करनेके लिए कोई दूसरी व्यवस्था मौजूद नहीं है और अभी बहुत दिनों तक नहीं होगी। इसलिए शासक कुटुम्ब-प्रणालीको समूल उच्छेदसे बचाये रखना चाहते हैं।

अमेरिका तथा यूरोपके और कई देशोंमें भी वर्तमान कुटुम्ब-प्रणालीके विरुद्ध विद्रोहके लक्षण प्रकट होने लगे हैं। किन्तु उन देशोंमें यह समस्या वाद-विवाद तक ही परिमित है। अब भी वे गृह तथा परिवारके वर्तमान रूपको मानवीय सुख तथा मानव-जीवनकी चरम पवित्रताओंका आधार समझते हैं।

किन्तु रूसमें ऐसी बात नहीं है। वहां सन्देह और संशयका युग बीत चुका और एक सुनिश्चित कार्यक्रमकी योजना प्रवर्तित हो चुकी है। पारिवारिक जीवनको सुरक्षित रखनेके लिए वे बाह्य रूपमें उसे सहायता नहीं पहुंचायेंगे। उन्होंने परिवारको स्वेच्छामिलनका विषय मान लिया है। उनका विश्वास है कि परिवारको अपनी आन्तरिक शक्तिपर ही कायम रहना चाहिए या नष्ट हो जाना चाहिए। यदि एक विकलाङ्ग मनुष्यके समान परिवारको भी किसी बाह्य सहायताकी अपेक्षा हो तो इससे यह कहीं अच्छा है कि परिवार धूलमें मिल जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस समय यद्यपि कुछ शहरोंमें और खासकर मास्कोमें तलाककी संख्या लगभग विवाहकी संख्याके बराबर पहुंच गयी है, फिर भी परिवारकी स्थिरता अभी कायम है। गांवोंमें अभी उसकी नींव मजबूत बनी हुई है और सब कुछ होनेपर भी रूस अभी तक एक ग्रामप्रधान राष्ट्र ही बना हुआ है। कई शक्तियां ऐसी हैं जिनके कारण परिवारकी स्थिरता अक्षुण्ण बनी हुई है। जातिकी परम्परागत पारिवारिक भावना अब भी किसानोंके मनमें इतनी दृढ़ बनी हुई है कि परिवारके बाहर उनके लिए जीवनका कोई अर्थ ही नहीं रह जाता है। गांवोंमें जो एक दूसरी शक्ति काम कर रही है वह है आर्थिक शक्ति। परिवारके सब लोग एक साथ मिलकर सबकी भलाईके लिए काम करें यह भावना अब भी वहां प्रबल बनी हुई है। किन्तु इन सब कारणोंसे बढ़कर जो कारण है वह है रूसवासियोंका सहज स्वभाव। क्रान्ति द्वारा उनके ऊपर चाहे कितना ही प्रचण्ड आघात क्यों न लगा हो, किन्तु अपनी भूमिके साथ अब भी उनका मन विजड़ित है। औद्योगिक सभ्यताकी उत्ते-जनाओंसे उनकी सहज प्रवृत्ति अभी तक प्रभावित नहीं हुई है। शरीर और मनसे वे अब भी सीधे-सादे और सरल बने हुए हैं। वे अत्यन्त भावुक और समाज-प्रिय होते हैं। अंगरेज और अमेरिकन जैसे वे एकान्त-प्रिय नहीं होते। रूसके लोग समाजके साथ मिलजुलकर रहना पसन्द करते हैं। वे अपने मित्रोंपर बहुत भरोसा करते हैं। यही कारण है कि वे हमेशा सङ्गप्रिय, अमायिक और अतिथि-सत्कार परायण हुआ करते हैं। और यही कारण है कि परिवार उनके लिए पूर्ण सन्तोषका साधन होता है।

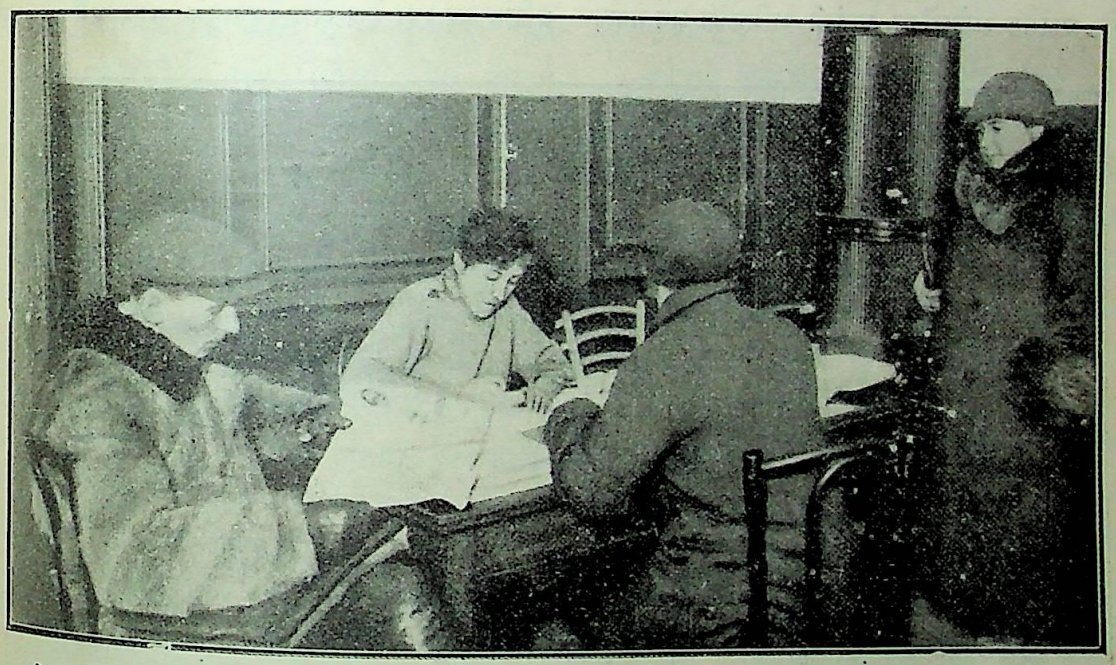

रूसमें विवाहके समान ही विवाह-विच्छेद भी सहज ही किया जा सकता है। यदि दम्पतिका विवाह सरकारी रजिस्टरमें दर्ज नहीं किया गया हो, तो दोनों बिना किसी जाब्ता कारवाईके एक दूसरेसे अलग हो सकते हैं। अन्यथा उन्हें रजिस्टरमें तलाककी बात दर्ज कर देनी होती है। पति या पत्नीमें कोई भी बिना एक दूसरेकी सम्मतिके तलाक दे सकता है।

रूसके लोग बच्चोंसे बहुत प्रेम करते हैं। सन्तानहीन जीवनको वे निस्सार समझते हैं। जो लोग परिवारको कायम रखनेके पक्षपाती नहीं हैं उनमें भी बच्चोंके लिए अत्यन्त प्रेम पाया जाता है।

रूसमें यद्यपि अबतक कुटुम्ब-प्रणालीका उच्छेद नहीं हुआ है, फिर भी वहां इस समय जो शक्तियां काम कर रही हैं उनके आक्रमणसे यह कहांतक सुरक्षित रह सकेगी यह कहना कठिन है। पारिवारिक बन्धनको सुदृढ़ रखनेमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



व्यक्तिगत सम्पत्ति एक शक्तिशाली साधन समझी जाती है, किन्तु रूसमें और खासकर वहांके शहरोंमें व्यक्तिगत सम्पत्ति लुप्तप्राय जैसी हो रही है। वहांका नवगठित समाज राष्ट्रके जीवनसे व्यक्तिगत सम्पत्तिका समूल उच्छेद कर डालनेके लिए बड़े जोरोंसे प्रयत्न कर रहा है। अतएव रूसकी कुटुम्ब-प्रणालीका एक आधारस्तम्भ इसके आघातसे छिन्न-भिन्न हुए बिना नहीं रह सकता। कुटुम्ब-प्रणालीका दूसरा आधार स्तम्भ धर्म है। किन्तु रूसमें इस समय धर्म भी ध्वंशोन्मुख हो रहा है। पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवनको नियन्त्रित करनेवाले धार्मिक आदेशोंका, वहांकी अधिकांश जनतापर, खासकर युवकोंपर कुछ भी प्रभाव नहीं रह गया है। 'अपने माता-पिताका सम्मान करो?" इसके उत्तरमें क्रान्तिकारी युवक कहता है, "हां, यदि उन्हें हमारे नवीन मतमें विश्वास हो और वे इसे वास्तविक बनानेकी इच्छा रखते हों। यदि नहीं तो उनसे हमें उसी प्रकार दूर रहना चाहिए जिस प्रकार प्लेगसे।" "जिसे ईश्वरने एक साथ मिला दिया है उसका विच्छेद मनुष्यको नहीं करना चाहिए?" इसपर उत्तेजित होकर क्रान्तिकारी बोल उठता है, "यह सब वाहियात बातें हैं। स्त्री-पुरुषोंके मिलन या विच्छेदसे ईश्वर-का कोई सम्बन्ध नहीं है।" "जब तक मृत्यु हम दोनोंको पृथक् नहीं करे तबतक दोनों एक साथ रहेंगे?" "असम्भव" क्रान्तिकारी गरज उठता है। "जो संयोग हमारे जीवनके प्रत्येक क्षणको निष्फल बना रहा हो उससे मुक्त होनेके लिए आमरण प्रतीक्षा की जाय यह कदापि उचित नहीं है। हमारे जीवनका मूल्य इससे कहीं ज्यादा है।" क्रान्तिकारी इस बातकी परवा नहीं करता कि संसार उसे दुर्जन या पागल कहेगा। धर्मयाजक पादरी कुटुम्बके भाग्यका निर्णय करे या उसके ऊपर प्रभाव डाले इस अधिकारसे वह उन्हें वञ्चित कर रहा है। और विवाहके सम्बन्धमें एक रहस्यमय पवित्रताकी जो धारणा परम्परासे लोगोंमें चली आती है उससे भी वह विवाहको सर्वथा मुक्त कर देना चाहता है। इस प्रकार रूसके क्रान्तिकारी एक ओर तो व्यक्तिगत सम्पत्तिपर अधिकार सम्बन्धी कुटुम्ब-प्रणालीके भौतिक आधारको छिन्न-भिन्न कर रहे हैं और दूसरी ओर धर्मकी सत्ताको अस्वीकार करके उसके प्राचीनतम आध्यात्मिक अवलम्बको चूर्ण-विचूर्ण कर रहे हैं।

सोवियट रूसमें जितने जन्म मृत्यु, विवाह और तलाक होते हैं सब रजिष्ट्रेसन् आफिसमें दर्ज किये जाते हैं। वहां जितने बच्चे पैदा होते हैं सब जायज समझे जाते हैं चाहे वे औरस सन्तान हों या जारज।

अवश्य ही वहांकी स्त्रियोंकी नवीन स्थितिका भी कुटुम्ब-प्रणालीकी स्थिरतापर बहुत-कुछ प्रभाव पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रूसकी स्त्रियां इस समय पहलेकी अपेक्षा अधिकतर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कर रही हैं और कुछ बातोंमें तो उनका यह स्वतन्त्र जीवन संसारके किसी भी देशकी स्त्रियोंसे बढ़कर है। युगयुगान्तरसे पुरुषोंने उनके ऊपर जो असुविधायें लाद रखी थीं वे सब कानून द्वारा मिटा दी गयी हैं। सतीत्व अब उनके लिए कोई महत्ताकी वस्तु नहीं रह गयी है। सतीत्वके अभावमें भी उनके ऊपर किसी प्रकारका कलङ्क नहीं लगता और न इसके लिए उन्हें लाञ्छनायें ही सहनी पड़ती हैं। अपनी सुकीर्ति या सम्मानकी रक्षाके लिए या भरण-पोषणके लिए स्त्रियोंको बाध्य होकर दुर्व्यवहार नहीं सहन करना पड़ता है। उन्हें आर्थिक दृष्टिसे स्वतन्त्र बननेके लिए उत्साहित किया जाता है। रूसमें लोग इस बातको लेकर कभी आलोचना नहीं करते कि स्त्रियोंके कोई पेशा अख्तियार करनेपर उनके पारिवारिक जीवनमें बाधा तो नहीं पड़ती, बल्कि इसके विपरीत इस बातपर विचार किया जाता है कि किसी स्त्रीके कोई पेशा अख्तियार करनेपर उसके परिवारके कारण कोई बाधा तो नहीं पहुंचती। वहांकी स्त्रियां अधिकाधिक रूपमें आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करती जा रही हैं। रूसकी स्त्रियां इस भावनाको जोरोंके साथ भुला रही हैं कि चाहे जो कुछ हो स्त्रीको अपने पति और घर-गृहस्थीसे चिपटी रहना चाहिए।

रूसमें परिवारके प्रति युवकोंकी प्रवृत्ति भी एक नवीन रूप धारण कर रही है। एक सामाजिक प्राणीके रूपमें परिवारका आदर्श उनके सामने अब नहीं रखा जाता। वे इस बातको बिलकुल असङ्गत समझते हैं कि जीवनकी चरम सार्थकता पारिवारिक जीवनमें ही हो सकती है। इसके विपरीत परिवारकी यह भावना उनकी दृष्टिमें मनुष्यके व्यक्तित्वको सङ्कीर्ण और निर्जीव बनानेवाली है। रूसके युवक, खासकर ग्रामोंसे बाहर रहनेवाले युवक, अपने छुटपनसे ही क्रान्तिकारी प्रभावोंमें आ जाते हैं। घर और परिवारसे दूर रहकर वाह्य साधनों द्वारा उनकी मनोवृत्ति बहुत-कुछ गठित होती है। किण्डरगार्टेन शिक्षा प्रणालीमें, स्कूलोंमें तथा युवक-संस्थाओंमें उन्हें बराबर यह महसूस कराया जाता है कि जीवनका चरम उद्देश्य व्यक्तिगत उन्नति नहीं है बल्कि नवीन समाजके अभिप्रायोंकी उन्नति है। यह बात नहीं है कि परिवार या घरका मजाक उड़ाया जाता है। रूसके युवकोंको परिवारकी सत्ता नहीं मानने या व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा धर्मके समान पाशविक युगके चिह्नके रूपमें उसे समझनेकी शिक्षा नहीं दी जाती। उनके मनमें सीधे यह विश्वास जमा दिया जाता है कि बड़े-बड़े काम बड़े-बड़े दुस्साहसिक कार्य और महान् गौरव परिवारकी परिधिसे बाहर रहकर ही प्राप्त किये जा सकते हैं। दूसरे शब्दोंमें हम यों कह सकते हैं कि परिवारके प्रति उनके हृदयमें किसी प्रकारका भक्तिभाव नहीं होता और परिवार सम्बन्धी उत्तरदायित्वका ज्ञान उनमें बहुत ही क्षीण होता है।

वर्तमान समाजके लिए एक और खतरा जो सबसे बढ़कर विध्वन्सकारी है वह है गृहस्थाश्रम सम्बन्धी बहुतसे कार्योंका समाजीकरण। क्रान्तिकारियोंकी दृष्टिमें गृह एक आर्थिक और अनेक प्रकारसे एक सामाजिक विलक्षण वस्तु है। उनका कहना यह है कि प्रत्येक घरके लिए अलग-अलग चूल्हा-चौका हो, इससे क्या यह सुविधाजनक और कम खर्चीला नहीं होगा कि सामूहिक रसोई घर हों जहां खास तौरसे शिक्षा पाये हुए रसोइये भोजन तैयार करें? प्रत्येक घरमें गृहिणी परिश्रम करके अपने कपड़े साफ करे और उसपर इस्तरी चढ़ावे, इससे क्या यह कम खर्चीला और अच्छा नहीं होगा कि समाजकी ओरसे एक लाउण्ड्री हो, जिसमें आधुनिक यन्त्रोंकी सहायतासे सुशिक्षित कार्यकर्ताओंका दल कपड़ा धोनेका काम करे? प्रत्येक माता—और रूसकी मातायें खासकर लालन-पालनके सम्बन्धमें बहुत ही अनभिज्ञ होती हैं—अपने बच्चेकी देख-भाल करे और दिन-रात उसकी परिचारिका बनी रहे इससे क्या यह अच्छा नहीं होगा कि समाजकी ओरसे शिशुओंके लालन-पालनका कोई स्थान हो जहां सुदक्ष दाइयों द्वारा उनका लालन-पालन किया जाय? क्रान्तिकारी यह युक्ति उपस्थित करते हैं कि गृहस्थाश्रमकी इन सब कार्यवाहियोंका समाजीकरण हो जानेसे स्त्रियोंका कार्य-भार बहुत-कुछ हलकाहो जायगा और वे अपने तन-मनको कुछ ऐसे कामोंमें लगा सकेंगी जिससे नवीन समाजको कुछ लाभ पहुंचे।

रूसकी इस प्रथासे बहुतसे लोग यह समझते हैं कि बोलशेविकोंका उद्देश्य बच्चोंको उनके माता-पिताओंसे जबर्दस्ती और सदाके लिए अलग कर देना है। किन्तु यह



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बात नितान्त भ्रममूलक है। इसके लिए पिता-माताको बाध्य नहीं किया जाता। हां, यदि माता-पिताकी ओरसे बच्चेकी उपेक्षा की जाती है अथवा वे उसकी अच्छी तरह देखभाल करनेमें अक्षम होते हैं तो बच्चेकी हिफाजत वाञ्छनीय समझी जाती है। राज्यकी ओरसे बच्चोंके लालन-पालनके लिए जो संस्थायें स्थापित हैं उनका यही अभिप्राय है कि इस प्रकारके प्रबन्धसे सिर्फ माताको ही नहीं, बच्चेको भी विशेष लाभ पहुंचे। सरकारकी इस योजनामें माता-पिताओंकी सम्मति ही नहीं, बल्कि उनका सहयोग भी प्राप्त है। बच्चोंके लालन-पालनका यह स्थान माता-पिताके घरके पास ही स्थापित रहता है। रूसमें जो नये मकान बनाये जाते हैं उनके साथ ही इस प्रकारकी शिशु-संस्था भी संयुक्त रहती है। इससे माता-पिता बहुधा अपनी सन्तानको देख सकेंगे, उनके साथ खेल सकेंगे, उन्हें लाड़-प्यार कर सकेंगे, थोड़े-थोड़े समयके अन्तरपर या प्रत्येक रात्रिको उन्हें घर ले जा सकेंगे, जैसा कि वे इस समय कर रहे हैं, और उसकी शारीरिक एवं आध्यात्मिक उन्नतिमें सहायता पहुंचायेंगे। शिशु-संस्थामें बच्चेकी जितनी अच्छी तरहसे देखभाल हो सकेगी उतनी बड़े-बड़े अमीर घरोंके सिवा और कहीं नहीं हो सकती। आधुनिक विज्ञान-सम्मत प्रणाली द्वारा उसे खिलाया जायगा, स्नान कराया जायगा और कपड़े पहनाये जायंगे। बीमारीके समयमें बच्चोंके रोगोंके चिकित्सक उसकी चिकित्सा करेंगे। अति भोजन कराकर उसे अत्यधिक परिपुष्ट नहीं बनाया जायगा। उसका न तो दमन किया जायगा और न बहुत लाड़-प्यार करके उसे बिगाड़ा जायगा। सबसे बढ़कर उसे दुर्गुणोंके संसर्गसे, खासकर उसे मद्यपानके दुर्गुणसे, बचाकर रखा जायगा। क्योंकि रूसके किसानोंसे भी बढ़कर वहांके मजदूर इस दुर्गुणके शिकार बने हुए हैं।

रूसमें जो नये मकान बनते हैं उनमें स्नानागारके साथ तीन कमरेसे अधिक नहीं होते। व्यक्ति विशेषके रहनेके लिए बड़े-बड़े घर फिर शायद रूसमें कभी नहीं बनेंगे। बोलशेविकोंका कहना है कि एक परिवारके लिए, चाहे वह बड़ा परिवार भी हो, तीन कमरेसे अधिककी जरूरत नहीं है, क्योंकि पारिवारिक जीवनका अधिकांश गृहस्थाश्रमकी छत्रछायासे बाहर ही व्यतीत होता है।

स्त्री-पुरुषके पारस्परिक सम्बन्धके विषयमें रूसवासियोंमें जो नयी धारणा उत्पन्न हो गयी है उससे भी कुटुम्ब-प्रणालीकी स्थिरतापर खतरा पहुंचा है। मानव-जीवनके अन्यान्य विभागोंकी तरह कम्यूनिस्टोंने इस सम्बन्धमें भी प्राचीन सिद्धान्तोंको बिलकुल उलट-पुलट दिया है। व्यक्तिगत विचार और कार्यकी स्वतन्त्रताके आधारपर ही स्त्री-पुरुष सम्बन्धी नवीन नीतिज्ञानकी भित्ति स्थापित की गयी है। इस सम्बन्धमें पूरी जिम्मेवारी व्यक्तिके ऊपर होती है। स्त्री-पुरुषके आचारके सम्बन्धमें कानूनकी कोई पाबन्दी नहीं है। रूसके विधानमें व्यभिचार नामसे कोई वस्तु नहीं है। धर्मके बहुतसे प्रतिबन्ध बाह्य तथा कठोर संयमका भी रूसके नवीन नीतिज्ञानमें कोई स्थान नहीं है। लेनिनका कहना है कि "मानव-समाजसे बाहरकी किसी शक्तिसे समुद्भूत नीतिज्ञानका हमारे लिए कोई अस्तित्व नहीं है। यह सिवा धोखाके और कुछ नहीं है। प्रेमपूर्ण जीवनकी सम्पूर्णतासे जीवनको जो शक्ति और आनन्द मिलता है वह कम्यूनिज्म द्वारा प्राप्त होना चाहिए।" काम-वासना जैसी सर्वव्यापी और शक्तिशाली सहज प्रेरणासे भागनेमें कम्यूनिस्ट लोग कोई भलाई नहीं देखते। उनका कहना हैं कि स्त्री-पुरुषके यौन-सम्बन्धी विषयोंमें लज्जा करने, भय करने, छिपाने या घृणा करनेकी वैसी ही कोई बात नहीं है जिस प्रकार भोजन करने, चाय-पान करने, पुस्तकें पढ़ने, सङ्गीत सुनने या किसी नाटकमें उपस्थित होनेमें। दूसरे शब्दोंमें वे, स्त्री-पुरुषोंको आध्यात्मिक, धार्मिक और कानून विषयक जो कतिपय परम्परागत विचार चले आ रहे हैं, उनसे बिलकुल मुक्त कर देना चाहते हैं।

किन्तु यौन विषयोंमें यद्यपि स्त्री-पुरुषोंको पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की जाती है तथापि कम्यूनिस्ट लोग व्यक्ति विशेषके सम्बन्धमें यह स्पष्ट कर देते हैं कि उसके अपने कल्याण तथा समाजके कल्याणकी दृष्टिसे यह आवश्यक है कि वह क्षणिक उत्तेजनाओंके सामने आत्मसमर्पण न कर दे। संयमहीन विषयाशक्तिसे व्यक्तिके स्वास्थ्यको हानि पहुंच सकती है। भग्न स्वास्थ्य लेकर मनुष्य जीवनके भोगोंका पूर्णरूपसे उपभोग करनेसे तो वञ्चित हो ही जाता है इसके सिवा समाजकी सर्वोत्तम सेवा करनेकी उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
76329



क्षमता भी कम हो जाती है। इसके सिवा आत्मसुख भोगमें अत्यधिक रत रहनेसे समाजके प्रति सेवा-भाव कम हो जाता है और इससे वह सामाजिक कर्तव्य-ज्ञानही न बन जाता है। लेनिनका कहना है कि "श्रमजीवियोंको काम-वासना या शराबकी उन्मादनाकी आवश्यकता नहीं है।" यौन विषयका जो विशुद्ध सौन्दर्य-विषयक पहलू है उसकी उपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए। लेनिनका कहना है, "क्या कोई मनुष्य साधारण अवस्थाओंमें ऐसे किसी गिलाससे कोई वस्तु पान करता है जिससे दर्जनों दूसरे आदमियोंने पान किया हो।" इस कथनका अभिप्राय बिलकुल स्पष्ट है। मनुष्यके काम सम्बन्धी जीवनमें सौन्दर्य और सौकुमार्यके जो तत्व हैं उनसे लेनिन पूर्णतया परिचित था। इस विषयमें किसी प्रकारका विचार नहीं रखनेसे उसका कोई मूल्य नहीं रह जाता और वह पशुवत् बन जाता है।

यौन सम्बन्धी आचरणके लिए व्यक्तिके ऊपर जो दायित्व है उसके सम्बन्धमें कम्यूनिस्ट एक और सलाह या चेतावनी दिया करते हैं। उनकी यह सलाह या चेतावनी यही है कि स्त्री-पुरुष मिलकर बच्चा पैदा करें और अपनी इच्छानुसार जब चाहें एक दूसरेसे अलग हो जायं, किन्तु किसी भी हालतमें अपने छोटे बच्चोंको नहीं भूलें और यदि वे ऐसा करेंगे तो उन्हें कान पकड़कर अदालतके सामने उपस्थित किया जायगा। यह चेतावनी सीधे चेतावनी ही नहीं है, बल्कि सचमुच इस प्रकारके अपराधियोंको उनके दोनों कान पकड़कर अदालतके सामने पेश किया जाता है। सन्तानके प्रति माता-पिताके कर्तव्यके सम्बन्धमें

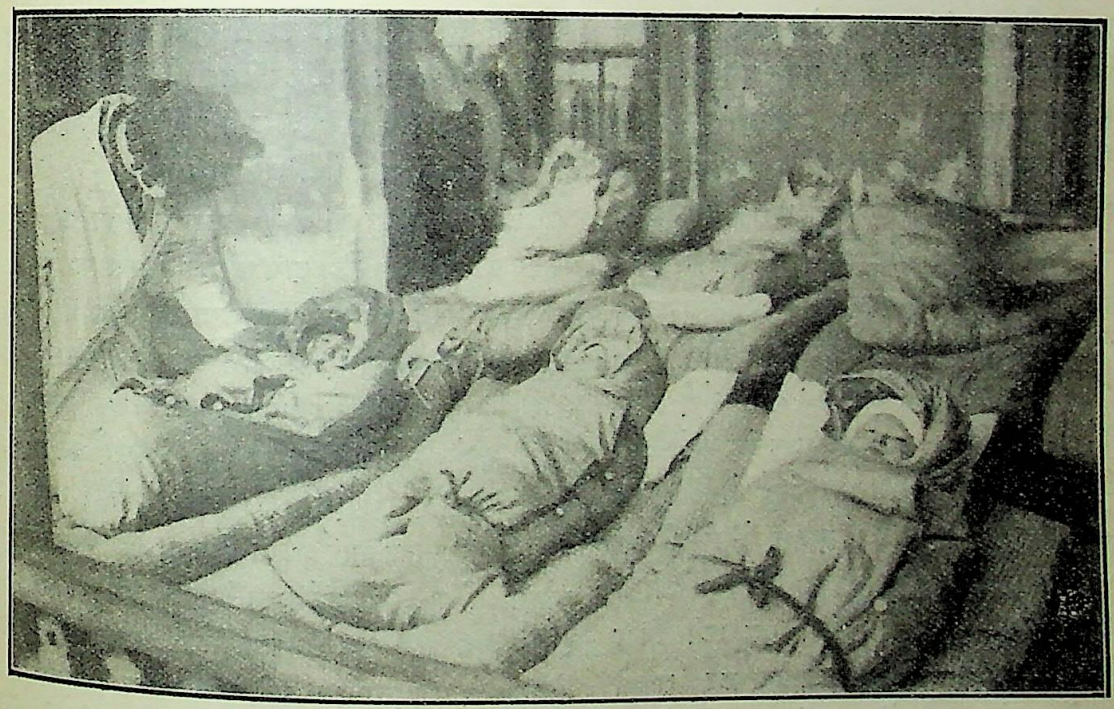

सोवियट सरकारकी ओरसे शिशुशालायें स्थापित हो रही हैं, जिनमें माता-पिता अपने बच्चोंको रख आते हैं। वहां उनकी देखभाल जैसी अच्छी तरह होती है, वसी कुछ धनवान गृहस्थोंके घर छोड़कर और कहीं नहीं हो सकती।

यहांका कानून बड़ा ही कठोर और निर्दय है। राज्यके समृद्धिशाली होनेपर उसकी ओरसे समग्र राष्ट्रके बच्चोंके लिए शिशु-सदन स्थापित किये जायंगे और तब उनके माता-पिता व्यक्तिगत दायित्वसे मुक्त हो जायंगे। इस समय भी इस व्यक्तिगत दायित्वको कई प्रकारसे टाला जाता है। जन्म-निरोधके लिए वैज्ञानिक प्रणालीका अवलम्बन जायज समझा जाता है और इसी प्रकार गर्भपात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भी। किन्तु अत्यन्त आवश्यक दशाओंमें ही गर्भपातकी सलाह दी जाती है।

यौन विषयक नवीन भावनाके समान विवाहके नये कानूनमें भी किसी प्रकारकी बाह्य विवशताका आभास नहीं पाया जाता। विवाहकी विधि सम्पन्न किये बिना भी स्त्री-पुरुष दम्पतिके रूपमें रह सकते हैं। इसके लिए न तो उन्हें सरकार तङ्ग करती है और न मित्रोंकी लाञ्छनायें सहन करनी पड़ती हैं। अधिकांश दम्पति इसी प्रकार मुक्त जीवन व्यतीत करते हैं और इस सम्बन्धमें वे किसी प्रकारकी लज्जाका बोध नहीं करते। वे अपने इस मुक्त सम्बन्धको नर और नारीके बीच स्नेह एवं सम्मानकी प्रकृत भावनाका द्योतक समझते हैं। उनके इस सम्बन्धमें यदि कोई विदेशी यात्री आक्षेप करता है तो उसे वे असभ्य समझते हैं। लण्डनके आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयके ग्रेजुयेट मि० ब्राउन अभी हालमें रूस गये थे। उन्होंने अपनी इस यात्राका अनुभव वर्णन करते हुए रूटरके प्रतिनिधिसे कहा—"एक नवयुवकके रूपमें रूसके विश्वविद्यालयकी एक बालिकाके कथनसे मैं बहुत ही आनन्दित और प्रभावित हुआ जब कि उसने मुझसे कहा प्रेम जैसी कोई वस्तु रूसमें नहीं है। कम्यूनिज्म मतवादके अनुसार हमने प्रेम को विताड़ित कर दिया है। काम और खेल दोनोंमें नर-नारी एक समान समझे जाते हैं। तुम्हारे देशमें स्त्रियां पुरुषोंपर अवलम्बित रहती हैं। सोवियट रूसमें स्त्रियोंका अपना निजका पृथक् जीवन है। यहां एक स्त्री बिना किसी कठिनाईके स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कर सकती है। इससे स्त्री-पुरुषके सम्बन्धमें सम्पूर्णतया परिवर्तन हो जाता है। यही हमारी सबसे बड़ी क्रान्ति है।"

रूसमें विवाहके समान ही विवाह-विच्छेद भी बहुत ही सरल है। यदि विवाह रजिस्टरमें दर्ज नहीं हो, तब तो दम्पति बिना किसी विधिविधानका पालन किये ही एक दूसरेसे पृथक् हो सकते हैं। और यदि विवाह रजिस्टर्ड हो तब उन्हें रजिस्टरमें सिर्फ यह लिख देना पड़ता है कि हम परस्पर पृथक् हो रहे हैं। पति या पत्नी बिना एक दूसरेकी सम्मतिके, विवाह-विच्छेद कर सकते हैं। मान लीजिये कि कोई स्त्री अपने पतिके व्यवहारसे असन्तुष्ट है और पतिको तलाक देना चाहती है, किन्तु उस समय उसका पति परदेश गया हुआ है। ऐसी हालतमें वह रजिस्ट्रेसन आफिसमें जाकर रजिस्टरमें यह लिख देगी कि वह अपने पतिसे विवाह-सम्बन्ध विच्छेद करना चाहती है और इसकी सूचना डाक द्वारा वह अपने भूतपूर्व पतिको भेज देगी।

तलाकके नियम बहुत ही साधारण होते हैं। तलाकके समय किसी वकील या गवाहकी जरूरत नहीं होती और न नालिशकी कोई अर्जी ही देनी पड़ती है। रजिस्टरी आफिसमें एक साधारण किरानी रहता है जो सिर्फ तलाक देनेका कारण भर पूछ लेता है। वह मेलजोल करानेका प्रयत्न नहीं करता। यदि वह ऐसा करे तो उसे तलाक चाहनेवाले स्त्री या पुरुषकी डांट सहनी पड़ती है। वह सिर्फ नाम, तारीख और स्थान दर्ज कर लेता है। लोग कतार बांध, तलाक दर्ज करानेके लिए, उसी प्रकार खड़े रहते हैं जिस प्रकार दूकानके पास रोटी खरीदनेके लिए।

तलाकके सम्बन्धमें कानून द्वारा हस्तक्षेप उसी दशामें किया जाता है जब कि दम्पतिके कोई सन्तान होती है। सन्तानके भरण-पोषणका भार माता-पिताको ग्रहण करना पड़ता है। नियमानुसार बच्चेकी रखवालीका भार माताके ऊपर सौंपा जाता हैं और पिताको जब तक सन्तान १८ वर्षकी न हो—अपने वेतनका एक हिस्सा उसके भरण-पोषणके लिए देना पड़ता है। किन्तु जब पिताके ऊपर सन्तानकी रक्षाका भार अर्पित होता है और माता, पिताकी अपेक्षा अधिक अर्थोपार्जन करती है तो उसे अपनी आमदनीका एक तिहाई भत्ता सन्तानके बालिग (१८ वर्ष) होने तक देना पड़ता है। यदि दम्पतिके कोई सन्तान नहीं हो और दोनों स्वस्थ हों तो दोनोंमें सम्बन्ध-विच्छेद होनेपर किसीको आर्थिक सहायता नहीं देनी पड़ती। किन्तु यदि स्त्री काम करनेमें अक्षम हुई तो उसे भरण-पोषणके लिए पतिकी आमदनीका एकतिहाई हिस्सा मिलता है, लेकिन एक वर्षसे अधिकके लिए नहीं। परन्तु यदि पति अक्षम हुआ और पत्नी अर्थोपार्जन कर रही हो तो उसे भी आमदनीका एक तिहाई भत्ता पतिको देना पड़ता है, किन्तु यहां भी एक वर्षसे अधिकके लिए नहीं।

विवाह और स्त्री-पुरुष सम्बन्धी इस स्वतन्त्रताका दुरुपयोग भी कम नहीं हो रहा है। अदालतके रेकार्ड इस प्रकारके मामलोंसे भरे रहते हैं जिनमें कुछ तो बड़े ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हृदयविदारक हुआ करते हैं। किसी परिवारकी कोई परिचारिका यदि बच्चा पदा करती है तो वह उसके पितृत्वका दायित्व अपने मालिकके ऊपर कायम करनेका प्रयत्न करती है, क्योंकि वह जानती है कि यदि उसका यह दावा सफल हो गया, तो उस बच्चेके असली पिताकी अपेक्षा, जो एक श्रमजीवी हो सकता है—इस कृत्रिम पितासे अधिक भत्ता मिलेगा। पुराने जमानेमें रूसका कोई नौकर अपनेको मालिककी तुलनामें इतना हेय समझता था कि उसे गाली देनेपर भी मालिकके विरुद्ध एक शब्द बोलनेका साहस नहीं होता था। परन्तु अब जमाना बदल गया है।

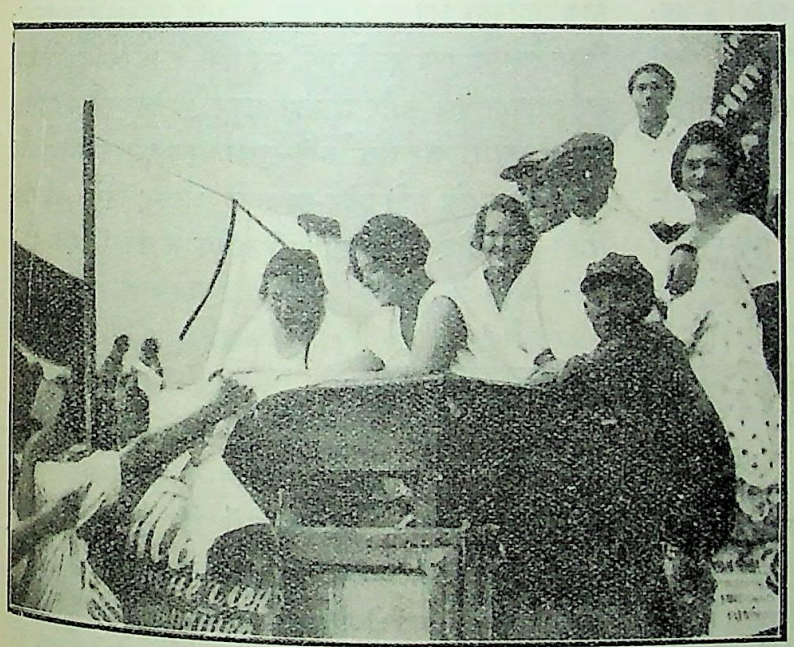

कम्यूनिस्ट नवयुवतियां सड़कों पर घूम-घूमकर लोगोंको समवाय-समितियोंके सदस्य बना रही हैं।

कभी-कभी ऐसा होता है कि यदि कोई स्त्री किसी पुरुषके विरुद्ध बच्चेके भरण-पोषणके लिए मामला दायर करती है, तो वह पुरुष ऐसे विश्वसनीय गवाहोंको पेश करता है जो इस बातकी गवाही दे सकें कि उक्त स्त्रीका यौन-सम्बन्ध अन्य पुरुषोंके साथ भी था। इस प्रकारके साक्षियों-से घबड़ाकर अदालत बहुधा यह फैसला कर बैठती है कि जिन सब लोगोंपर दोषारोपण किया गया है उन सबपर बच्चेके भरण-पोषणका भार होगा। रूसमें ऐसी भी स्त्रियां पायी जाती हैं जो जान-बूझकर उच्च वेतनभोगी पुरुषोंको अपने साथ भोग करनेके लिए प्रतारित करती हैं जिससे उन्हें अपनी सन्तानके भरण-पोषणके लिए उन पुरुषोंसे मोटी रकम मिल सके। इस प्रकार कई पुरुषोंको फंसा लेनेपर उन्हें खासी आमदनी हो जाती है और वे सारे आर्थिक झञ्झटोंसे मुक्त हो जाती हैं। रूसमें ऐसे भी पुरुष पाये जाते हैं जो उतनी ही बार तलाक देते हैं और नवीन पत्नी ग्रहण करते हैं, जितनी बार वे नये नये कपड़े खरीदते हैं। किन्तु इस प्रकारके दुराचार विशेषतः मास्कोमें ही होते हैं ग्रामोंमें नहीं। मास्कोके सिवा और कहीं भी तलाकोंकी संख्या इतनी अधिक नहीं हुई है जितनी अमेरिकामें। मास्कोमें एक खास बात यह देखनेमें आती है कि विवाह-विच्छेद हो जानेपर भी दम्पति परस्पर मित्र बने रहते हैं। उनका एक-दूसरेके घर आना-जाना, एक साथ मिलकर सभाओं या बायस्कोप, थिएटर तथा सैर-सपाटोंमें जाना जारी रहता है। वे एक-दूसरेको उधार देते हैं और कठिनाइयोंमें सहायता भी करते हैं। दूर रहनेपर उनमें पत्र-व्यवहार भी होता है और अकसर वे फिर विवाह-बन्धनमें आबद्ध हो जाते हैं। मास्कोमें तो इस प्रकारका पुनर्विवाह फैशन-सा हो गया है। चाहे जो कुछ हो, किन्तु सोवियट रूसमें कुटुम्ब-प्रणालीका अन्त अवश्यम्भावी है। व्यक्तिगत सम्पत्तिकी निन्दा, धर्मका विनाश, यौन-सम्बन्ध तथा परिवारकी परम्परागत पवित्रताका प्रत्याख्यान, जन्म-निरोध और गर्भपातका कानून द्वारा समर्थन, स्त्रियोंकी आर्थिक स्वाधीनता, बच्चोंमें पारिवारिक दायित्वके ज्ञानका अभाव तथा गृहस्थाश्रम सम्बन्धी बहुतसे कार्योंका समाजीकरण इन सब बातोंके होते हुए गृह-परिवारको कायम रखनेके लिए और स्थायी प्रभाव रह ही क्या गया है?

हां, नर-नारीके प्रेमका और अपनी सन्ततिके प्रति उनके प्रेमका बन्धन जरूर रह जाता है। रूस देश वासियोंका कहना है कि नर-नारीके सम्मिलनमें एकमात्र प्रेमका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही बन्धन होना चाहिए। वे यह तर्क उपस्थित करते हैं कि जिन शक्तियोंके कारण स्त्री-पुरुषका यौन सम्बन्ध कायम रहता है और जो शक्तियां नर-नारीके सहवासकी उत्कट लालसाके कारण उत्पन्न नहीं होतीं वे बाह्य और अस्वाभाविक हैं और पुरुषका नारीके ऊपर जो प्रभुत्व है उसीके वे परिणाम स्वरूप हैं। अतएव नीतिमत्ता अथवा उपयोगिताके किसी भी सिद्धान्तके आधारपर इसका समर्थन नहीं किया जा सकता। उनका यह विश्वास है कि अन्ततः सम्पूर्ण संसारको उनके इस दृष्टान्तका अनुसरण करते हुए बाध्यतामूलक वैवाहिक या पारिवारिक बन्धनोंको उच्छिन्न कर देना होगा। किन्तु यह अवस्था तभी हो सकती है जबकि सम्पत्ति व्यक्तिगत न रहकर समाजके नियन्त्रणमें चली जाय। यौन-निर्वाचनकी स्वतन्त्रता तभी हो सकती है जब कि भौतिक सुखके लोभ और अर्थकी क्षमताको चूर्ण-विचूर्ण कर दिया जाय। क्योंकि ऐसा होनेपर ही स्त्री-पुरुष अपनी अन्तरात्माकी प्रेरणाके अनुसार एक-दूसरेको अपना जीवन-सङ्गी बनायेंगे। किन्तु यदि ऐसा नहीं भी हो तथापि कम्यूनिस्टोंका कहना है कि पुरुष-स्त्री अपना सम्बन्ध विच्छेद करना ही चाहें; तो करें इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। असल बात यह है कि स्त्री और बच्चेकी, आर्थिक और सामाजिक तथा अन्य प्रकारके दुर्व्यवहार और कष्टसे रक्षा होनी चाहिए। सम्पूर्ण परिस्थितिपर विचार करनेसे यही कहना पड़ता है कि बाह्य बाध्य कारणोंसे मुक्त होकर भी रूसमें पारिवारिक जीवन अभी कायम है। हां, पहलेके समान उसका स्वरूप और उसकी पवित्रता अब नहीं रह गयी है। उसकी भौगोलिक और अधिकांश भौतिक तथा सामाजिक विशेषता अब नष्ट हो चुकी है और पहले जैसा आध्यात्मिक तेज भी अब इसमें नहीं रह गया है। किन्तु यह भङ्ग नहीं हो रहा है। और शायद सुदूर भविष्यत्में भी होगा नहीं। क्योंकि जब तक स्त्री-पुरुष एक दूसरेके स्नेह और अपनी सन्तानके प्रति स्नेह-बन्धनसे आबद्ध रहेंगे; तब तक किसी-न-किसी रूपमें उनका पारिवारिक जीवन भी रहेगा ही।

---

# फौजी घोड़ोंके करिश्मे

श्री अम्बिकाप्रसाद मिश्र

**क्या** युद्ध-क्षेत्रमें अब घोड़ेके लिए स्थान नहीं रहा? इस मशीनगन, आर्मर्ड टैङ्क, बम बरसानेवाले हवाई जहाज और जहरीली गैसोंके जमानेमें कुछ लोगोंका ख्याल है कि आधुनिक सेनामें अश्वका स्थान नहीं रहा और अब वह शीघ्र ही अंजायबघरमें धनुष-बाण, जङ्ग खाये हुए भाले, कुल्हाड़े और कवचोंके साथ दिखाया जायगा।

किन्तु कुछ ऐसे भी युद्धविशारद हैं जो उपरोक्त कथनको सत्य नहीं मानते। उनका कहना है कि गत महायुद्धमें भी तोप, बन्दूक, मोटर ट्रक्क और आमर्ड टैङ्कोंके बीचमें घोड़ेका महत्वपूर्ण स्थान था। संसारके अनेक प्रदेश ऊबड़-खाबड़, पथरीली और जङ्गली जमीनसे भरे पड़े हैं, जहां पैदल सेना, तोपों और मशीनगनोंकी लड़ाईमें सिर्फ घोड़े ही साथ दे सकते हैं।

फ्रान्सको, जिसने गत महायुद्धके ११४०००० मृत घोड़ोंके लिए हालहीमें एक विशाल युद्ध-स्मारक खड़ा किया है, इस बातमें तनिक भी विश्वास नहीं कि युद्ध-अश्वका युग अब नहीं रहा। आज भी पश्चिमी फ्रान्सके सौमुर स्थानमें फ्रान्स सरकार काफी खर्चके साथ एक स्कूल चला रही है, जहां घोड़ोंको युद्धक्षेत्रमें चमत्कारक कार्य करनेकी शिक्षा दी जाती है। यह स्कूल फ्रान्समें नैपोलियन बोनापार्टके समयसे है। यहां फ्रान्सके युद्ध-विभागके तत्वावधानमें घुड़सवार फौजोंके ४०० चुने हुए सैनिकोंको तथा सैण्ट सीरके सैन्य शिक्षालयके छात्रोंको अश्वचालनाघटित चमत्कारपूर्ण कार्यों-की शिक्षा दी जाती है।

फ्रान्सकी घुड़सवार फौजमें अच्छा ओहदा और ऊंची तनख्वाह पानेके लिए प्रत्येक फ्रान्सीसी सैनिकके लिए आवश्यक है कि उसने पहले चार महीने तक युद्धक्षेत्रमें काम किया हो। किन्तु कमिश्नरका पद प्राप्त करनेके लिए उसे सौमुरके शिक्षालयमें प्रवेश करना ही पड़ता है। वहां कम उम्रके घोड़ोंको चमचमाती तलवार, लगाम और नीली बर्दीसे न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़ा अगले पैरोंके बल निश्चल भावसे खड़ा है।

डरना सिखलाया जाता है। घोड़ेको हरवक्त, चाहे वह खड़ा हो या चरता हो अथवा कवायद करता हो, तोप, बन्दूककी आवाजसे न डरनेकी शिक्षा दी जाती है। चांदमारीके वक्त सब घोड़े मौजूद रहते हैं और वहां उन्हें महा भीषण विभ्राटसे अन्यमनस्क रहनेकी शिक्षा दी जाती है।

सौमुर स्कूलका अश्वारोही अपने घोड़ेके दिमागमें पैठकर हर समय उसकी विभिन्न प्रवृत्तियोंका अध्ययन किया करता है। घोड़ेके भी दिमाग होता है; इसलिए अश्वारोही सदा सतर्क रहता है कि कहीं घोड़ेको गलत सबक न मिल जाय। यदि घोड़ा कोई बुरी बात सीख लेता है तो फिर वह आजीवन उसे नहीं छोड़ता। कुछ घोड़ोंका जिहन कुन्द होता है और कुछ बड़े होशियार होते हैं। अच्छी पैदायशके घोड़े अक्सर समझदार ही होते हैं। लेकिन घोड़ा चाहे नासमझ हो या समझदार, चाबुककी चोट उसे तेज नहीं बना सकती। पीटनेसे तो वह या तो बदमाश हो जायगा या ऐसा दब्बू, जो लड़ाईके लिए बिलकुल ही अयोग्य सिद्ध होगा।

सौमुर स्कूलमें अश्वारोहणकी शिक्षाके साथ-साथ और बहुतसे करतब सिखलाये जाते हैं। साधारणतः अश्वारोही रकाबोंसे काम नहीं लेते; बल्कि घुटनोंकी चाप और लगामके हल्के झटकेसे उनका काम निकल जाता है। सौमुर स्कूलके वार्षिकोत्सवके अवसरपर अश्वचालनाघटित अनेक विचित्र कार्योंका प्रदर्शन किया जाता है। मध्ययुगमें भी फ्रान्समें अश्वारोहण-प्रतियोगिता होती थी और उसीके आधारपर अब भी वार्षिकोत्सव होता है।

इस अवसरपर घोड़े नृत्य करते हैं और बैण्ड बाजेके साथ टापोंकी ताल मारते हैं। वे फौजी कवायद भी करते हैं। ये सब विचित्र कौतुक एक अथवा अनेक अश्व एक साथ प्रदर्शित करते हैं। बड़ा ही सुन्दर दृश्य होता है। शिक्षित घोड़े कई बड़े ही अद्भुत कार्य करते हैं। वे अपने पीछेके पैरोंको उठाकर अगले पैरोंके बल कई मिनट तक स्थिरभावसे खड़े रहते हैं। इसी तरह आगेके पैरोंको उठाकर सिर्फ पीछेके

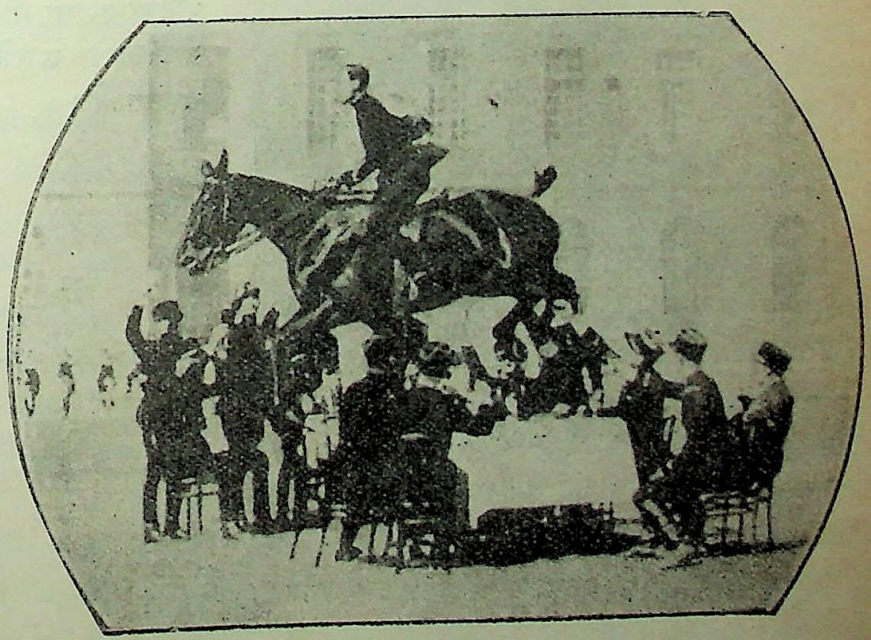

फ्रान्सीसी घुड़सवार बड़ी आसानीसे अपने घोड़ेसे छलांग भरवा रहा है। मजाल नहीं जो किसीके जरा भी धक्का लग जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पैरोंपर बड़ी देर तक खड़े रहते हैं। ऐसी हालतमें बिना रकाबका सवार घोड़ेकी पीठपर निश्चल भावसे काठके पुतलेकी भांति बैठा रहता है। यह कवायद कई घोड़े मिलकर दिखलाते हैं। दो घोड़े पिछले पैरोंके बल सीधे खड़े हो जाते हैं और उनके बीचमें एक तीसरा घोड़ा, मय सवारके, अगले पैरोंके बल खड़ा होकर पिछले पैरोंको हवामें फेंक देता है। इसी तरहके और भी कितने ही काम दिखलाये जाते हैं।

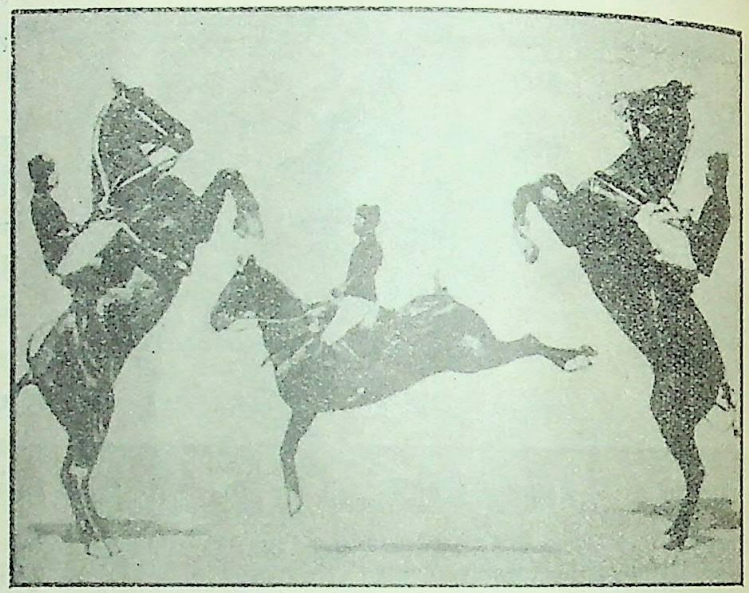

यह भी फ्रान्सीसी घोड़ोंका चमत्कार है।

किन्तु सबसे अधिक आकर्षक और चमत्कारपूर्ण कार्य वह होता है, जब छावनीके मैदानमें एक सफेद कपड़ेसे ढकी मेजके चारों ओर बीस-पच्चीस वर्दीधारी सिपाही खड़े या बैठे हुए खान-पान

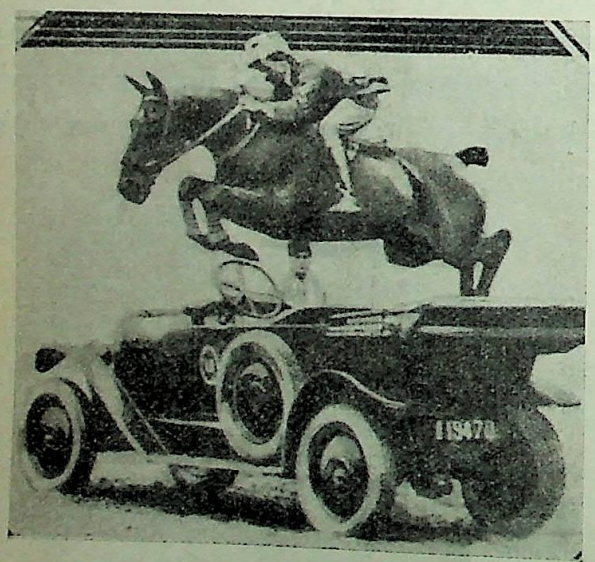

घोड़ा मोटरकारके ऊपरसे कूद रहा है।

किया करते हैं; मेजपर शीशेके गिलास और शराबकी बोतलें भी रखी रहती हैं, चाकू-कांटे भी पड़े रहते हैं और घोड़े, पीठपर सवारको लेकर, मेजके ऊपरसे कूद जाते हैं। और मजाल नहीं कि मेजकी चीजों या आदमियोंको घोड़ेका जरासा भी धक्का लग जाय। इसी तरह खड़ी हुई मोटरकारके ऊपरसे भी घुड़सवार अपने घोड़ेसे छलांग भरवाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मिलन

श्री अज्ञेय

संसारमें कितनी ही विचित्र घटनायें होती हैं, जिन्हें देख-सुनकर हम सोचने लगते हैं, यह क्यों हुईं ? इसका क्या अभिप्राय था ? यदि यह किसीकी आन्तरिक प्रेरणासे हुई, तो उस प्रेरणाकी जड़ कहाँ थी ? यदि किसी वाह्य प्रेरणासे, तो उस प्रेरणाका आधार कौन था ? और अगर इस घटनामें दैवका हाथ है, तो इस घटनाके ऐसे स्थानपर, ऐसे समयमें, इस प्रकार होनेमें क्या अभिप्राय था, क्या गूढ़ तत्त्व था ?

जब हमारे मनमें ऐसे गूढ़ तत्त्व उठने लगते हैं, तब पहले-पहल हमें इस बातका आभास होता है कि संसारमें एक ऐसी महती शक्ति है जिसका परिणाम, जिसका तत्त्व हम नहीं जान पाये; जिसमें लचक है, साथ ही कठोरता भी; जिसमें दया है, पर साथ ही एक घोर परिहास भी। इस शक्तिको कोई आत्मा कहता है, कोई भावी; कोई इसे आन्तरिक प्रेरणा समझता है और कोई वाह्य; कोई उसे ऐहिक समझता है और कोई नैसर्गिक। किसीकी रायमें इस शक्तिका प्रवाह उन्मुक्त, पथहीन, अनवरुद्ध है; किसीकी रायमें इसका सञ्चालन संयमित है।

सभीको, इसके प्रवाहमें एक अनियन्त्रित उन्माद दीखता है, और इसके उन्मादमें एक नियन्त्रित प्रवाह। और इस प्रवाहको, इस उन्मादको और इस विचित्र असंयित नियन्त्रणाको कोई नहीं समझ पाता, सभी अन्वेषक मानों एक दीवारसे टकराकर रुक जाते हैं।

मैं बहुत दिनोंसे इस शक्तिका प्रवाह देख रहा हूं। कभी-कभी उसे समझनेकी चेष्टा भी कर लेता हूं, पर प्रायः उसके विचित्र विन्यासको देखनेमें ही मेरा समय बीत जाता है।

सन् १९०४ में यहां जो विस्फोटक हुआ—उसे उत्पात कहना चाहिए या दङ्गा, या विप्लव, या क्रान्ति, इसका निर्णय नहीं कर सका, इसलिए विस्फोटक ही कहता हूं—उसमें भी मैंने इसी शक्तिका आभास पाया था। लोग जब उसकी अवश्यभाविताकी बात करते, तो मैं सोचा करता, यह अवश्यभाविता उसी शक्तिके प्रवाहका नामान्तर नहीं तो क्या है ? फिर इसी बड़ी क्रान्तिमें, जिसमें एक साथ ही सारा रूस धधक उठा, और उस प्रज्वलनकी लपेटमें सदियोंसे पूजित राजवंश और रास्पुटिन जैसे शक्तिशाली व्यक्ति उन्मूल उखड़ गये, इसमें भी क्या था ? जिस पीड़ा, अथाह अशान्तिमें, जिस अमित दैन्य और अमित भूखमें, इस घोर क्रान्तिका अंकुर था, वे भी क्या थीं ? उसी शक्तिका घोरतम प्रमत्त अट्टहास !

पर जिस घटनामें मैंने इस शक्तिकी झलक सबसे स्पष्ट देखी थी, वह न १९०५ का विस्फोट था, न १९१७ की क्रान्ति; वह थी एक बहुत छोटी-सी घटना, बहुत ही साधारण, जिसका इन दिनोंसे थोड़ा-थोड़ा सम्बन्ध था—वह था दो मित्रोंका विच्छेद और पुनर्मिलन !

उन दोनोंको पहले-पहल मैंने १९०३ में स्कूलमें देखा। मैं जब नार्मल स्कूलमें अध्यापक-श्रेणीमें पढ़ता था, तब वे दोनों आठवींमें आकर दाखिल हुए थे। उन दिनों भी उनमें आपसमें काफी घनिष्टता थी। वे अपने गांवसे एक साथ ही आते, स्कूलमें सबसे अलग एक साथ ही बैठते, बोलते, खाते; फिर एक साथ ही स्कूलसे वापस चले जाते। उनके गांवसे और भी लड़के उस स्कूलमें आते थे, पर उनका एक समूह अलग लौटता था, और वे दोनों अलग।

इनकी मैत्री सबको स्वाभाविक जंचती हो, सो बात नहीं थी। उनके शरीरके गठनमें, बोलचालमें, रुचिमें, स्वभावमें बहुत अन्तर था। देखनेवाला उनके साथसे पहले वैषम्य ही अधिक देख पाता था। सर्जियस कदमें लम्बा-चौड़ा और गौर वर्णका था। उसके बाल फीके सुनहरे और आंखें हल्के नीले रङ्गकी थीं। उसके होठ पतले थे और प्रायः दबे हुए रहते थे। जब वह चलता तो उसकी चालमें लापरवाही झलकती थी। डिमीट्री कदमें छोटा था, पर उसका शरीर खूब गंठा हुआ था। जब वह चलता था, तो मालूम होता था कि फौजी कवायद करता रहा है। उसके बाल गाढ़े भूरे रङ्गके थे और उसकी आंखें छोटी,



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परन्तु काली और खूब चमकती हुई थीं। उसके मुंहपर प्रायः एक हल्की-सी हंसी रहती थी। उसकी आयु सर्जियससे साल-भर कम थी, और वह सर्जियसकी अपेक्षा अधिक मिलनसार था, अपने सहपाठियोंसे हंस-बोल लेता था। सर्जियस जब कुछ कहता तो इस ढङ्गसे, मानो उसे इस बातकी आशा नहीं है कि कोई उसका विरोध करेगा, डिमीट्री बात करता तो पहले विरोधके लिए चौकन्ना होकर। पढ़नेमें सर्जियसकी रुचि साहित्यकी ओर थी, डिमीट्रीकी इतिहासकी ओर। सर्जियस स्कूलके ड्रामेटिक क्लबमें भाग लेता था, डिमीट्री प्रायः डिबेटिंग सोसाइटियोंमें बोला करता था।

फिर भी न जाने क्यों उनमें इतनी घनिष्टता थी, न जाने कौन-सी प्रेरणा उन्हें एक-दूसरेकी ओर आकर्षित करती थी। कुछ दिनोंमें मैं भी उनसे मिलने लगा, पर आयुके भेदके कारण वे दोनों ही मुझसे कुछ झेंपते थे। दो वर्ष उनसे मिलते रहनेपर भी मैं उस घनिष्टतामें भागी नहीं हुआ, केवल उनकी उस विचित्र मैत्रीका निकट-दर्शक ही हो पाया।

जब १९०५ का विस्फोट हुआ, तब मैंने नार्मलकी परीक्षा पास की थी। सर्जियसकी आयु उस समय शायद अठारह वर्षकी थी, और डिमीट्रीकी सत्रह। वे दोनों स्कूलकी अन्तिम परीक्षा पास करनेवाले थे। हमें आशा थी कि वे भी नार्मलमें अध्यापक-श्रेणीमें दाखिल होंगे; क्योंकि दोनों ही तीक्ष्णबुद्धि थे। पर जिस दिन जारकी घोषणा वहां पहुंची कि रूसमें प्रजा-प्रतिनिधियोंकी व्यवस्थापिका सभा ड्यूमा बनायी जायगी और उसके उपलक्षमें हमारे स्कूलमें उत्सवके लिए छुट्टी हो गयी, उस दिन वे दोनों स्कूल नहीं आये—उत्सवमें भी नहीं आये। न जाने क्यों, उनके न आनेसे मेरा मन नहीं लगा। शामको उत्सव समाप्त होनेसे पहले ही मैंने अपना ओवर-कोट पहना और उनके गांवकी ओर चल दिया।

वहां पहुंचकर मुझे उनका पता नहीं पूछना पड़ा। गांवके बाहर ही एक गिरे हुए पेड़के तनेपर दोनों बैठे बातें कर रहे थे। मैंने पुकारा 'डिमी!' तो दोनों उठ खड़े हुए।

मैंने पूछा—"डिमी, तुम दोनों आज उत्सवमें क्यों नहीं आये?"

उसने उत्तर दिया—"अब स्कूल नहीं जायेंगे।"

मुझे दुःख भी हुआ और विस्मय भी। मैंने पूछा—"क्यों?"

डिमीट्रीने कहा—"हम लोग अब गुलामीसे छूट गये हैं, अब हमें इस गांवमें बंधे रहना पड़ेगा। हम दोनों पीटर्सबर्ग जाकर नौकरी ढूंढ़ेंगे और कुछ कमाकर घर भेजेंगे।"

मैं थोड़ी देर चुप रहा। सोचता रहा कि अगर गांवोंकी प्रतिभा शहरोंमें जाने लगेगी तो फिर हमें नये स्वातन्त्र्यका फायदा ही क्या हुआ?

"अच्छा डिमी, तुम पीटर्सबर्गमें करोगे क्या?"

"यह तो अभी नहीं सोचा है—अभी तो इतना ही निर्णय किया है कि कुछ करूंगा अवश्य।"

"और तुम, सर्जी?"

"मैं तो जारकी सेनामें कर्नल होऊंगा।"

मैं कुछ हंसा। फिर मैंने पूछा—"जारकी घोषणासे तुम्हें व्यक्तिगत लाभ तो हुआ है, पर देशपर क्या असर होगा, कभी सोचा है?"

डिमीट्री बोला—"मैं तो समझता हूं, इतना लड़ाई-झगड़ा करनेपर भी हमें कुछ नहीं मिला। यह जो सीमित स्वातन्त्र्य हमें मिला है, आजसे कहीं पहले मिलना चाहिए था। बल्कि मुझे अचम्भा होता है कि हम इतने दिन बंधे कैसे रहे। जब हम सब बराबर हैं—"

सर्जियस बीचमें बात काटकर बोला—"यह धारणा गलत है। आदमी कभी बराबर नहीं होते। जिसको हम स्वातन्त्र्य कहते हैं, वह होता ही नहीं। एकका जार और दूसरेका मजदूर होना स्वाभाविक है। यह भी स्वाभाविक है कि शासक थोड़े हों और शासित बहुत; क्योंकि धनकी तरह शक्तिका स्वभाव है कि एक ही केन्द्रपर सञ्चित होती रहे। शक्ति एक केन्द्रसे बिखरकर नष्ट होती रहे, यह प्रकृतिके विरुद्ध बात है।"

डिमीट्रीने उत्तर दिया—"और जिधर प्रकृति हमें घसीटे, उधर ही हम लट्टू घोड़ेकी तरह दुम दबाये चलते जायें, यह मानवताके विरुद्ध है। हम मनुष्य तब ही हैं, जब हम प्रकृतिकी प्रेरणाओंको दबाकर अपने आदर्शको ऊपर रखें। जब हम आदर्श स्थापित करते हैं, तब यह सोचकर नहीं करते कि प्रकृति हमें उसका अनुसरण करने देगी या नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पहले आदर्श स्थापित होता है, फिर यदि प्रकृति उसमें रुकावट डाले तो उससे भी लड़ना पड़ता है। क्यों, मास्टर निकोलाई ?"

मैं उत्तर दिये बिना सर्जियसकी ओर देखने लगा। वह बोला—"यह खोखला आदर्शवाद है। वास्तवमें ऐसा कहां होता है ? हम आदर्श सामने रखते हैं, और बड़ी ऐंठसे उसका अनुसरण करते हैं। पर जब प्रकृति सामने आती है, तो कौन उससे लड़ता है ? लोग झुककर आदर्श बदल लेते हैं। मैल्थुसने जब अपने सिद्धान्तोंका प्रचार किया तब लोग चिल्लाने लगे, आदमी बहुत बढ़ रहे हैं, इनके रोकनेके लिए संयम चाहिए। प्रकृति चिल्लायी, यह नहीं होना ! फिर किसने किया संयम ? लोग सन्तान-निग्रहके रासायनिक तरीके ढूंढ़ने लग गये। प्रकृतिके विरुद्ध हम कभी नहीं हो सकते।"

डिमीट्री कुछ हंसकर बोला—"यही तो। तुम क्या समझते हो, संयम प्रकृतिके प्रतिकूल है ? यह जिसे तुम सन्तान-निग्रह कहते हो, यही तो प्रकृतिके विरुद्ध है। संयम तो पशु भी करते हैं। अगर मान भी लें कि विषय-तृप्ति ही प्रकृतिका नियम है, तो क्या हम इसका निरोध नहीं करते ? जैसे——"

वह कुछ शर्माकर रुक गया। मैंने कहा—"क्यों डिमी, रुक क्यों गये ?"

वह बोला—"एक उदाहरण देने लगा था, वह कुछ भद्दा है, इसलिए रुक गया।"

मुझे कुछ कौतूहल हुआ। मैंने कहा—"अगर लागू है तो दे दो, कोई हर्ज नहीं है।"

वह कहने लगा—"अपने ही आत्मीयोंके प्रति हमारे हृदयमें वासनायें क्यों नहीं जागतीं ? उनके प्रति क्यों हमारे मनमें आदरका भाव रहता है, क्यों पवित्र विचार होते हैं ? यह तो प्रकृतिका नियम नहीं है ? पशुओंमें तो कोई ऐसा भेद-भाव नहीं होता ? यह प्रकृतिपर आदर्शकी जीत नहीं तो और क्या है ?"

सर्जियस कुछ सोचमें पड़ गया। मैंने देखा, इन दोनोंकी विचार-शैली अभी पकी नहीं थी, परिष्कृत नहीं हुई थी। फिर भी मैं यह जान गया कि दोनों सामाजिक और राजनीतिक समस्याओंका अध्ययन अच्छी तरह कर रहे हैं। यह भी समझनेमें देर नहीं लगी कि दोनोंकी वृत्तियां उन्हें किधर-किधर प्रेरित करेंगी। मैंने दोनोंके कन्धोंपर हाथ रखकर हंसते हुए कहा—'तुम लोग प्रसङ्गसे कितनी दूर निकल गये !'

डिमीट्री बोला—"फायदेकी बात सोचते ही सिद्धान्त सामने आ जाते हैं, क्योंकि मैं फायदा उसीको समझता हूं, जिससे आदर्शका पोषण हो। सर्जीका मत मुझसे भिन्न है।" यह कहकर उसने सर्जियसकी ओर देखा।

उसने कहा—"हां, मैं आदर्श उसको गिनता हूं जो लाभप्रद हो।"

मैंने दोनोंकी पीठ ठोककर कहा—"तुम दोनों फिलासफर हो गये हो। चलो जरा घूमने चलें।"

वे मेरे साथ हो लिये।

जब हम लौटे, तब अंधेरा हो रहा था। जब हम गांवके छोरपर पहुंचे, अलग होनेका समय आया, तो मैंने पूछा—"अच्छा तो फिर कब मिलोगे ?"

डिमीट्री हंसकर बोला—"पहलेका तो पता नहीं, हां, १९२० में आजके दिन अवश्य मिलेंगे।"

मैंने विस्मित होकर पूछा—"कैसे, डिमी ?"

वह सर्जियसको ओर देखकर बोला—"हम दोनोंने एक षड्यन्त्र रचा है। आजसे पूरे पन्द्रह साल बाद हम स्कूलके बड़े खम्भेके नीचे मिलेंगे। चाहे कहीं हों, कितना ही काम छोड़कर आना पड़े, आयेंगे अवश्य। और शायद अपने-अपने अनुभव एक-दूसरेको सुनायेंगे।"

"किस समय ?"

"रातको आठ बजे।"

"अच्छा, अगर मैं आ सका तो शायद मैं भी आऊं।"

कुछ देर तक हम चुप रहे। फिर सर्जियस बोला—"अच्छा, मास्टर निकोलाई, अब पन्द्रह वर्षके लिए विदा दीजिये।" यह कहकर उसने रूसी ढङ्गसे सिरसे ऊपर हाथ उठाकर सलाम किया।

मैंने कहा—"ऐसे नहीं सर्जी !" और उससे हाथ मिलाये। फिर वह कुछ हटकर खड़ा हो गया। मैंने डिमीट्रीसे हाथ मिलाये। वह हंसता हुआ बोला—"मास्टर निकोलाई, उस षड्यन्त्रको भूलिये नहीं।"

मैंने कहा—"नहीं भूलूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्षण-भरमें वे आंखोंसे ओझल हो गये। मैं भी अन्धेरेमें खेतोंमेंसे होकर धीरे-धीरे अपने स्कूलकी ओर चला।

इसके बाद मैं फिर अध्ययन और अध्यापनके फेरमें पड़ गया। आंधियां आयीं और चली गयीं, उत्पात खड़े हुए और बैठ गये। विस्फोट हुए और बुझ गये। पर हमारे स्कूलके जीवनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। हां, मुझमें जो कुछ भावुकता थी, धीरे-धीरे सूख गयी; जो कविता थी, वह अनुक्रमकी दृढ़ शृङ्खलामें घुटकर मर गयी—और डिमीट्री और सर्जियस भी धीरे-धीरे भूल गये, उनके षड्यन्त्रकी, और अपनी प्रतिज्ञाकी स्मृति भी बुझ गयी।

पर १९१७ की क्रान्ति जब आयी, तब हमारा छोटा-सा शहर भी उससे बच नहीं सका। स्कूल टूट गया, सब अध्यापक और बहुत-से छात्र लाल झण्डेके नीचे जा खड़े हुए। मैं भी उस क्रान्तिकी लपेटमें—या उस अज्ञात शक्तिके प्रवाहमें?—आ गया। और एक साधारण सिपाहीकी वर्दी पहनकर, उस झण्डेकी छायामें लड़ने लगा। फिर·····फिर मैंने बहुत कुछ देखा—जीवन कितना वीभत्स हो सकता है, भूखकी व्यथा कैसी होती है, सारी-सारी रात जगकर रेतकी बोरियोंके मोर्चेपर गिरती हुई बर्फमें बैठकर, पहरा देनेमें क्या मजा है, बर्फसे शीतल बन्दूककी नाली ठिठुरे हुए हाथोंमें पकड़कर बारह घण्टे खड़े रहनेपर प्राणिमात्रके प्रति कैसी जलन हृदयमें होती है, लहूमें सनी हुई वर्दी शरीरसे पांच-पांच दिन अलग न कर सकनेमें आत्मबलपर कैसा प्रभाव पड़ता है—इन सब बातोंका अनुभव १९१७ के तीन ही महीनोंमें हो गया। उसके बाद सुना, क्रान्ति समाप्त हो गयी। हम लौट आये। आकर देखा, जहां स्कूल था, वहां एक होटल खुला हुआ है। स्कूल वहांसे उठकर एक नये भवनमें चला गया था।

जीवनमें थोड़ा-सा वैचित्र्य आ गया। पर हम धीरे-धीरे फिर शृङ्खलाओंमें बद्ध होने लगे। हां, इस बार इस बन्धनकी गति कुछ कम हो गयी, क्योंकि देशमें अशान्ति छायी हुई थी, एक क्रान्तिकी राखमें दूसरी आग सुलग रही थी।

इधर-उधरसे विचित्र समाचार आने लगे। साम्यवादी फौजका एक अंश जाकर साम्राज्यवादियोंके दलसे मिल गया, और घर हीमें युद्ध होने लग गया।

फिर एक दिन सुना, नयी क्रान्ति होनेवाली है। बर्फ पड़नी आरम्भ ही हुई थी कि नयी क्रान्ति हो भी गयी। उसको दस दिन भी नहीं लगे।

फिर देशमें कुछ शान्ति हुई, और मेरा जीवन पुराने ढांचेमें अच्छी तरह बैठ गया।

शान्ति तो हो गयी, पर साम्राज्यवादियोंके उत्पात बन्द नहीं हुए। मास्कोमें और विशेषतः पीट्रोग्रेडमें—पीटर्सबर्ग अब पीट्रोग्रेड हो गया था—उनकी गुप्त समितियां आतङ्क फैलाने लगीं। सोवियटने उनके प्रति घोर दमन-नीतिका अनुसरण किया।

होते-होते १९२० आया। हमें फिर १९०५ की घोषणाके उपलक्षमें छुट्टी मिली।

इस बार स्कूलमें उत्सव नहीं हुआ। सब अपने-अपने घरोंको चले गये। और मैं सारा दिन बाजारमें घूमता रहा। शामको थका-मांदा उसी होटलपर पहुंचा जहां किसी दिन हमारा स्कूल होता था। मैंने दरवाजेके पास ही एक मेजपर बठकर, रोटी, भूने हुए आलू, सिरका और एक गिलास पानी मंगाया और धीरे-धीरे खाने लगा। खाते-खाते सोच रहा था, जिन दिनों यहां स्कूल था, उन दिनोंकी और आजकी मनोवृत्तिमें कितना अन्तर है! उन दिनों आशावाद कितना सुखमय था—और अब जीवन कितना नीरस हो गया है! मैं सोचता जाता था, और होटलके बाहर लगे उस बड़े गैस-लैम्पकी ओर देखता जाता था। उसपर जब पतङ्गे जल-जल कर गिरते तो मुझे एक विचित्र शान्तिका अनुभव होता। शायद अपने जीवनकी नीरसताके लिए सान्त्वना मिलती थी।

एकाएक मैं चौंका। उस लैम्पके नीचे ओवरकोट और टोप पहने एक व्यक्ति आकर खड़ा हो गया। उसके शरीरका गठन, उसकी चाल, परिचित मालूम होती थी। मेरे मस्तिष्कमें स्मृतियां चक्कर खाने लगीं; पर उसकी याद न आयी। फिर—

सर्जियस! स्मृतिकी एक बड़ी-सी लहर आयी। सर्जियस, डिमीट्री, वह षड्यन्त्र और अपनी प्रतिज्ञा—सभी किसी अंधेरी गुफासे निकलकर सतहपर आ गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पहले मेरी इच्छा हुई, उसे बुलाऊं। फिर मैंने सोचा मैं तो दर्शक ही था, उनका मिलन देख लूं, फिर जाऊंगा। मैं वहीं बैठा देखने लगा, भूखकी ओर मेरा ध्यान नहीं रहा। शायद मैं एक-दो आलू बिना छीले ही खा गया।

अंधेरेमेंसे एकाएक गैसके प्रकाशमें एक और व्यक्ति आया—गठा हुआ, चुस्त, सोवियटकी फौजकी वर्दी पहने हुए''डिमीट्री!

क्षण-भर दोनों खड़े रहे। फिर सर्जियसने धीरे-से कुछ रुकते हुए कहा—"डिमीट्री पित्रोविच?"

डिमीट्रीके मुखपर आनन्दकी रेखा दौड़ गयी। वह बोला—"सर्जी! सर्जी!" और लपककर उसके गलेसे लिपट गया।

फिर धीरे-धीरे कुछ बातें हुईं। मैं नहीं सुन पाया। उसके बाद मैंने देखा, दोनों होटलकी ओर आ रहे हैं। मैं पीछे हटकर अंधेरेमें हो गया।

वे आकर एक मेजपर बैठे और कहवा मंगाकर पीते-पीते बातें करने लगे।

"कहो सर्जी, कैसे रहे?"

"बड़े मजेमें। कर्नल तो नहीं हो पाया, कप्तान हो गया था। उसके बाद हमारी सेना ही छिन्न-भिन्न हो गयी थी।"

"अब क्या करते हो?"

सर्जियस कुछ रुककर बोला,—"अब तो कुछ नहीं कर रहा हूं। हां, थोड़े दिनोंमें कहीं नौकरी कर लेनेकी आशा है। पर तुम कहो?"

"मैंने बहुत धक्के खाये। यहांसे जाकर कुछ दिन तो कुलीका ही काम किया। फिर मजदूरोंकी मिलिशियामें भर्ती हो गया। फिर क्रान्ति आयी तो उसमें भी भाग लिया। अब—अब मैं सेनाका लेफ्टिनेण्ट हूं।"

डिमीट्रीने जेबसे सिगारकेस निकालकर सर्जियसकी ओर बढ़ाया। सर्जियसने कहा—"इस वक्त इच्छा नहीं है।"

डिमीट्री जेब टटोलने लगा। फिर बोला—"सर्जी, तुम्हारे पास दियासलाई है?"

सर्जियसने ओवरकोटके बटन खोले और अन्दरसे दियासलाईकी डिबिया निकाली।

मैंने देखा, डिमीट्री चौंका! और फिर अनिमेष होकर सर्जीके गलेकी ओर देखने लगा। मैंने भी उसकी ओर देखा, सर्जियसके ओवरकोटके अन्दर गलेमें एक सफेद और नीली धारियोंवाला रेशमी रूमाल बंधा हुआ था।

डिमीट्रीने दियासलाई लेनेके लिए हाथ बढ़ाया तो उसका हाथ कांप रहा था।

सर्जियसने यह भी देखा, और चिन्तित होकर बोला—'डिमीट्री तुम बीमार तो नहीं हो?"

डिमीट्रीने कहा—'नहीं, मेरे कुछ सरकारी कागज बाहर गिर गये हैं। तुम बैठो, मैं अभी आया।" कहकर वहांसे बाहर चला गया।

मैं कुछ देर सर्जियसकी ओर देखता रहा, फिर उठकर उसके पास चला गया।

"सर्जियस मुझे पहचानते हो?"

उसने मेरी ओर ध्यानसे देखा। फिर खड़ा होकर बोला—"मास्टर निकोलाई, आप यहां कहां?"

मैं झूठ कई बार बोला हूं। पर सर्जियससे मैं पहली बार झूठ बोला। मैंने कहा—"षड्यन्त्रमें अपना भाग पूरा करने आया था।"

वह हंसा। फिर हम दोनों बैठ गये। मैंने कहा—"मैं तुम्हारी बातें सुन रहा था। तुम जो कह रहे थे, आजकल कुछ नहीं कर रहे, तो सेनामें भर्ती क्यों नहीं हो जाते? पहले कप्तान तो रह ही चुके हो, अब—"

वह खिलखिलाकर हंस पड़ा। मैं कुछ अप्रतिभ-सा होकर चुप हो गया। फिर वह कहने लगा—"मास्टर निकोलाई, इस सेनामें—"

सीढ़ियोंपर किसीके पैरकी आहट आयी। मैंने समझा, डिमीट्री आ रहा है। उसको स्तम्भित करनेके लिए मैंने पुकारा—"डिमी!"

वह डिमी नहीं था।

एक सार्जेण्टके साथ पांच-छः सिपाही भीतर घुस आये। सार्जेण्टने सर्जियसके कन्धेपर हाथ रखकर कहा—"सर्जियस मार्टिनोस्की, भूतपूर्व कैप्टेन, अब साम्राज्यवादी गुप्त समितिके सदस्य, मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूं।" वह सब ऐसे कह गया, मानो रटा हुआ पाठ पढ़ रहा हो। सर्जियसने एक तीव्र दृष्टिसे मानो मेरे मुखकी ओर देखा, उसपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दुःख और विस्मयके भाव स्पष्ट देखकर गुनगुनाया—'डिमी ! डिमीट्री, पिट्रोविच !'

एक फीकी हंसी हंसकर उसने दोनों हाथ आगे बढ़ा दिये—हथकड़ियां लग गयीं !

सर्जियस खड़ा हो गया। बोला—"मास्टर निकोलाई, यदि आपको डिमी कहीं मिले तो उसको मेरी याद दिला दीजियेगा।"

मैं कुछ उत्तर न दे सका। वे उसे ले गये।

मैं सोचने लगा—'पन्द्रह साल बाद न ज़ाने कहांसे वह आया था···एक स्मृतिके लिए ! और अब—'

एक व्यक्ति आकर मेरे सामने बैठ गया। वह युवक था, पर उसके मुखपर झुर्रियां पड़ गयी थीं, अपनी टोपी नीचे खींचकर उसने अपनी आंखोंपर छाया कर रखी थी। क्षण-भर मैंने उसे पहचाना नहीं। फिर मैंने कहा—"डिमा !"

उसने मेरी ओर देखकर कहा—"मास्टर निकोलाई।" उसकी आवाजमें न आनन्द था, न विस्मय। मैंने देखा, उसकी आंखें छिपे हुए आंसुओंसे चमक रही थीं।

मैंने कहा—"सर्जियस तो गया !"

उसने उदास भावसे उत्तर दिया – "हां !"

हम दोनों चुप हो गये। फिर वह आप-ही-आप बोला—"अनुमान तो मैंने पहले भी किया था, पर जब मैंने उसके गलेमें वह चिह्न, वह नीली और सफेद धारियोंवाला रूमाल देखा, तो मेरा कर्तव्य स्पष्ट हो गया। पर मैं स्वयं कुछ नहीं कह सका—बीस वर्षोंसे सञ्चित स्मृतिने साहस तोड़ दिया।"

मैंने कहा—"डिमी, डिमी ! तुम क्या कह रहे हो।"

वह उठ खड़ा हुआ। अपनी फौजी जैकेटका बटन खोलकर अन्दरकी ओर सङ्केत किया। वहां एक छोटा-सा पीतलका बैज था, उसपर तीन अक्षर लिखे हुए थे—जी० पी० यू० फौजी जासूस।

मैं भौचक होकर उसके मुखकी ओर देखने लगा। वह बोला—"मित्रघात बुरा है या देशद्रोह, मैं नहीं जानता।" फिर एकदम होटलसे बाहर निकल गया और अन्धकारमें ओझल हो गया।

इसके बाद जो डिमीट्रीने सर्जियसको बचानेका विफल प्रयत्न किया, जो कोर्ट मार्शलकी आज्ञानुसार सर्जियस गोलीसे उड़ा दिया गया, और उसके बाद ही डिमीट्री अपने पदसे इस्तीफा देकर विदेश चला गया, यह सब इस प्रसङ्गकी बात नहीं है।

इस घटनाकी व्याख्या विभिन्न प्रकृतियोंके लोग विभिन्न तौरसे करेंगे। डिमीट्रीके कर्मको कोई विश्वासघात कहकर सर्वथा अक्षम्य समझेगा, कोई उसे विश्वासघात कहकर क्षमा कर देगा, क्योंकि राष्ट्रके आगे एक आदमीका व्यक्तित्व क्या है ? कोई शायद उसके कामको एक कठोर कर्तव्यका समुचित पालन मानकर उसका समर्थन करेगा, पर उसकी मनोगतिके, उसके कर्मके औचित्यका निर्णय करनेवाले हम कौन हैं, इसपर शायद कोई विचार नहीं करेगा।

मैंने जो कुछ देखा है, उससे मैं इसी परिणामपर पहुंचा हूं कि मानव-हृदयकी वृत्तियोंका विवेचन हम नहीं कर सकते। डिमीट्रीका कर्म अच्छा था या बुरा, मैंने इस प्रश्नपर कभी ध्यान नहीं दिया। मैं तो यही सोचता हूं, कितनी महती शक्ति है वह, जो इन दोनोंको न जाने कहां-कहांसे खींचकर इस अनुष्ठानकी पूर्तिके लिए ले आयी। वर्षोंसे सिक्त उस मैत्रीकी पराकाष्ठामें, वर्षोंसे वञ्चित उस महती आकांक्षाके आकस्मिक विफलीकरणमें मुझे उसी नियन्त्रित शक्तिका प्रवाह दीखता है·····या यों कहूं कि उसी शक्तिका अनियन्त्रित, विकट उन्मत्त अट्टहास···?

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नारियोंके समानाधिकार

श्रीमती सुभद्रादेवी बी० ए०

"Men as well as women do not need political rights in order that they may govern, but in order that they may not be misgoverned."—Mill.

वर्तमान नारी-प्रगति-आन्दोलनमें स्त्री-पुरुषोंके अधिकार-सम्बन्धी वैषम्यको मिटाकर उनमें Equality of sex समानता स्थापित करनेकी चर्चा विशेष रूपसे चल रही है। बहुत-से पाश्चात्य देशोंमें तो वहांकी स्त्रियोंको पुरुषोंके समान अधिकार प्राप्त भी हो चुके हैं और नारियां जीवनके सभी क्षेत्रोंमें अपना कृतित्व दिखा रही हैं। उन देशोंमें अब कोई यह कहनेका साहस नहीं करता कि स्त्रियां विद्या, बुद्धि, ज्ञान-विज्ञान, व्यवसाय, शौर्य, वीर्य, साहस, पराक्रम किसी भी क्षेत्रमें पुरुषोंकी अपेक्षा न्यून हैं। फ्रान्सकी राज्य-क्रान्तिके बाद जब यूरोपमें स्वतन्त्रता और समताकी लहर समाजके स्तर-स्तरमें परिव्याप्त होने लगी, उस समय स्त्रियोंकी स्थितिके सम्बन्धमें पुरुषोंके दृष्टिकोणमें युगान्तरकारी परिवर्तन हुआ। समय-समयपर बड़े-बड़े विद्वान् इस बातकी घोषणा करने लगे कि पुरुष और नारी दोनों ही जब तक ज्ञान-विज्ञान द्वारा लाभान्वित नहीं होंगे तब तक मानव-समाजकी चरम उन्नति सम्भव नहीं है। ज्ञान-विज्ञानकी उन्नतिके साथ-साथ नर-और नारी-समाजकी मानसिक उन्नति भी वाञ्छनीय है। पाश्चात्य समाजमें यह धारणा क्रमशः बद्धमूल हो गयी और इसके फलस्वरूप नारी-समाजकी क्रमोन्नति द्रुतगतिसे होने लगी। प्राचीन कालमें स्त्रियोंकी जो स्थिति थी उसकी तुलनामें उनकी वर्तमान स्थिति इतनी आगे बढ़ी हुई है कि अब कोई यह कहनेका साहस नहीं कर सकता कि स्त्रियां अमुक मनुष्योचित अधिकारसे वञ्चित रखी जायं। प्राचीन कालमें स्त्रियोंको अबला Weaker sex के नामसे अभिहित किया जाता था और अबला होनेके कारण पुरुषोंका नारियोंपर प्राधान्य समझा जाता था। नारी जातिकी शारीरिक अक्षमतासे लाभ उठाकर पुरुषोंने सम्पूर्ण रूपसे उन्हें पराधीन बना दिया। पुरुषोंने यह समझ लिया कि स्त्रियां प्रकृतिसे ही परवशा होती हैं और पुरुषोंके अधीनस्थ होकर रहनेमें ही उनका श्रेय है। पुरुषोंने स्त्रियोंकी इस पराधीन स्थितिको सहजात समझकर उनकी आत्मिक उन्नतिके लिए कभी चेष्टा ही नहीं की। यहां तक कि Aristotle जैसे चिन्ताशील दार्शनिकने स्त्रियोंको क्रीतदासकी श्रेणीमें परिगणित किया। मध्यकालीन भारतके अनेक हिन्दू शास्त्रकारोंने भी स्त्रियोंको बहुत-से मानवीय अधिकारोंसे वञ्चित रखनेकी व्यवस्था दी। उन्होंने कुछ स्वार्थवश ऐसा किया, यह नहीं कहा जा सकता। युगधर्मके अनुसार ही शास्त्रकारोंने समाज-प्रचलित रीति-नीतिको कानूनका रूप दे दिया। इस सबका परिणाम यह हुआ कि स्त्रियोंकी उन्नतिका मार्ग बहुत दिनोंके लिए अवरुद्ध हो गया और पुरुषकी अर्धाङ्गिनी और सहधर्मिणीके रूपमें स्त्रीके जिस महत् आदर्शकी कल्पना की गयी थी वह आदर्श समाजकी दृष्टिसे तिरोहित हो गया। भारत तथा अन्य प्राच्य देशोंमें स्त्रियोंकी यह पराधीन स्थिति बहुत दिनों तक बनी रही और इस समय भी बहुत-कुछ बनी हुई है। किन्तु कुछ वर्षोंके अन्दर इन सब देशोंमें भी स्त्रियोंमें अभूतपूर्व जाग्रति हुई है और राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रोंमें स्त्रियां सफलतापूर्वक अग्रसर हो रही हैं। स्त्रियोंके समानाधिकारका समर्थन अब सभी विचारशील लोग कर रहे हैं। हां, यह दूसरी बात है कि पुरुषों और स्त्रियोंके कर्मक्षेत्र पृथक्-पृथक् हैं। इस बातको लेकर अब भी मतभेद पाया जाता है।

जिस समय इंगलैण्डमें सफरेजिस्ट स्त्रियोंके मताधिकारका आन्दोलन जोरोंपर था और अंगरेज स्त्रियां सामाजिक बन्धनोंका जाल विच्छिन्न करके पुरुषोंके साथ बराबरीका दावा कर रही थीं उस समय बहुत-से लोगोंने यही समझा था कि नवजागरणकी उन्मादनामें ये स्त्रियां केवल उच्छृङ्खलता और भोग-विलासके लिए पुरुषोंको चुनौती दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रही हैं। किन्तु राजनीतिक अधिकार प्राप्त कर लेनेके बाद जब स्त्रियोंने जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंमें अपना विपुल उद्यम, अनुपम धैर्य और विराट् अध्यवसाय दिखाना आरम्भ किया तो लोग उनकी क्रियाशीलता देखकर विस्मय-विमुग्ध हो गये। इसके बाद यूरोपमें महासमर आरम्भ हुआ और इस सङ्कट कालमें पाश्चात्य देशोंकी स्त्रियोंने जिस त्याग, बलिदान, उज्ज्वल देश-भक्ति और लोक-सेवाके भावका परिचय दिया उसकी पुण्यगाथायें पढ़कर इन स्त्रियोंके प्रति सम्मान एवं श्रद्धासे नतमस्तक हो जाना पड़ता है। कुसुम-कोमल कामिनियां कुलिश-कठोर बनकर गोले-गोलियोंकी अनवरत अग्नि-वर्षाके बीच अपने प्राणोंका ममत्व त्यागकर कर्तव्य-पालनमें दत्तचित्त हो गयीं। क्षण-भरमें ही सारे भोग-विलासोंका परित्याग करके उन्होंने पुरुषोंके अभावमें देशके विविध सार्वजनिक कार्योंका भार अपने ऊपर लिया और ऐसी योग्यताके साथ अपना कर्तव्य पालन किया कि उनकी कार्यपटुताकी सर्वत्र प्रशंसा होने लगी। इसके सिवा युद्ध-क्षेत्रमें घायलोंकी सेवा-शुश्रूषा करनेमें स्त्रियोंने जैसी त्यागशीलता दिखलायी वह तो महायुद्धके इतिहासका एक बड़ा ही गौरवपूर्ण अध्याय है।

इस प्रकार महायुद्धके अवसरपर अपनी क्रियाशीलता, योग्यता और क्षमताका ज्वलन्त प्रमाण देकर स्त्रियोंने अपने समानाधिकारके दावेपर एक प्रकारसे मुहर लगा दी और फिर किसीको यह कहनेका साहस नहीं रह गया कि स्त्रियां पुरुषोंकी अपेक्षा किसी भी क्षेत्रमें हीन कही जा सकती हैं। इसके सिवा अब तो यूरोपकी स्त्रियां मोटर चलानेमें, वायु-यान द्वारा संसार-भ्रमणमें तथा नाना प्रकारके खेल-कूद, दौड़धूप आदिमें पुरुषोंसे सहज ही बाजी ले रही हैं।

नारियोंको पुरुषोंके समान राजनीतिक अधिकार प्राप्त न होनेके सम्बन्धमें एक दलील यह पेश की जाती है कि दैहिक शक्तिमें वे पुरुषोंकी अपेक्षा न्यून होती हैं, इसलिए राष्ट्र-नियन्त्रणमें पुरुषोंका ही प्राधान्य होना चाहिए। किन्तु इसी युक्तिके आधारपर यह भी तो कहा जा सकता है कि चूंकि स्त्रियां कमजोर होती हैं और उन्हें समाजपर बहुत-कुछ निर्भर करना पड़ता है, इसलिए उन्हें राष्ट्र-नियन्त्रणमें प्रतिनिधित्वकी और भी विशेष आवश्यकता है। क्योंकि वर्तमान समयमें जब शासन-परिषद्में समस्त अक्षम और अल्प सम्प्रदायोंके प्रतिनिधित्वकी व्यवस्था की जाती है तो फिर स्त्रियोंको ही इस प्रतिनिधित्वसे क्यों वञ्चित रखा जाय? दूसरी बात यह है कि योग्यताकी कसौटी शारीरिक बल नहीं, बल्कि नैतिक और बौद्धिक बल है, और क्या कोई यह कहनेका साहस कर सकता है कि नीतिज्ञान और बुद्धिबलमें स्त्रियां पुरुषोंकी अपेक्षा हीन होती हैं? लेखके ऊपर मिलका जो वाक्य उद्धृत किया गया है उसका आशय यह है कि पुरुषों और स्त्रियोंको राजनीतिक अधिकारोंकी इसलिए आवश्यकता नहीं है कि वे शासन करें, बल्कि इसलिए कि उनपर कुशासन न हो। राष्ट्रनीतिके परिचालनमें स्त्रियोंका प्रतिनिधित्व इसलिए आवश्यक है कि वे अपनी सर्वाङ्गीण उन्नतिका मार्ग प्रशस्त कर सकें और पुरुषोंके अन्याय और अनीतिसे आत्म-रक्षा करनेमें समर्थ हों। जब स्त्रियां समाजका आधा अङ्ग समझी जाती हैं तो फिर समाज-नीति और राजनीतिके नियन्त्रणमें उनका परामर्श क्यों न लिया जाय, इसका कोई कारण प्रतीत नहीं होता। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि स्त्रियां स्वयं अपने लिए किसी प्रकारके अधिकारका दावा नहीं करतीं। उनकी ओरसे कुछ सुधारक लोग वकालत कर रहे हैं। किन्तु इस प्रकारकी दलील कितनी लचर है, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है। जिस समय संसारमें दास-प्रथा प्रचलित थी उस समय क्या दासोंमें मुक्त होनेकी इच्छा जाग्रत हुई थी? चिरकाल तक दासताके पङ्कमें निमग्न रहने तथा दासता-जनित बन्धनोंसे जकड़े रहनेके कारण उनमें आत्म-सम्मानका भाव सर्वथा लुप्त हो गया था और उन्हें अपनी इस अवस्थापर किसी प्रकारकी आत्म-ग्लानिका बोध न होकर आत्मसुखका ही बोध होता था। फिर भी सहृदय महानुभावोंके लिए मानव-जातिकी यह दासता असह्य थी; क्योंकि इसमें वे मनुष्यत्वका अपमान समझते थे। अतएव उन्होंने दासताके विरुद्ध आन्दोलन चलाकर इस कुप्रथाके मूलोच्छेदका अक्लान्त प्रयत्न किया और इसमें वे सफल भी हुए। आज भी हमारे देशमें ऐसे लोगोंकी कमी नहीं है जिन्हें विदेशी शासन खलता नहीं और देशकी पराधीनताके लिए जिनके हृदयमें आत्म-ग्लानिकी वेदना कभी उत्पन्न नहीं होती। इतना ही नहीं, बल्कि वे स्वराज्य और स्वतन्त्रता-प्राप्तिकी चेष्टाका विरोध भी करते हैं। फिर भी जिनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

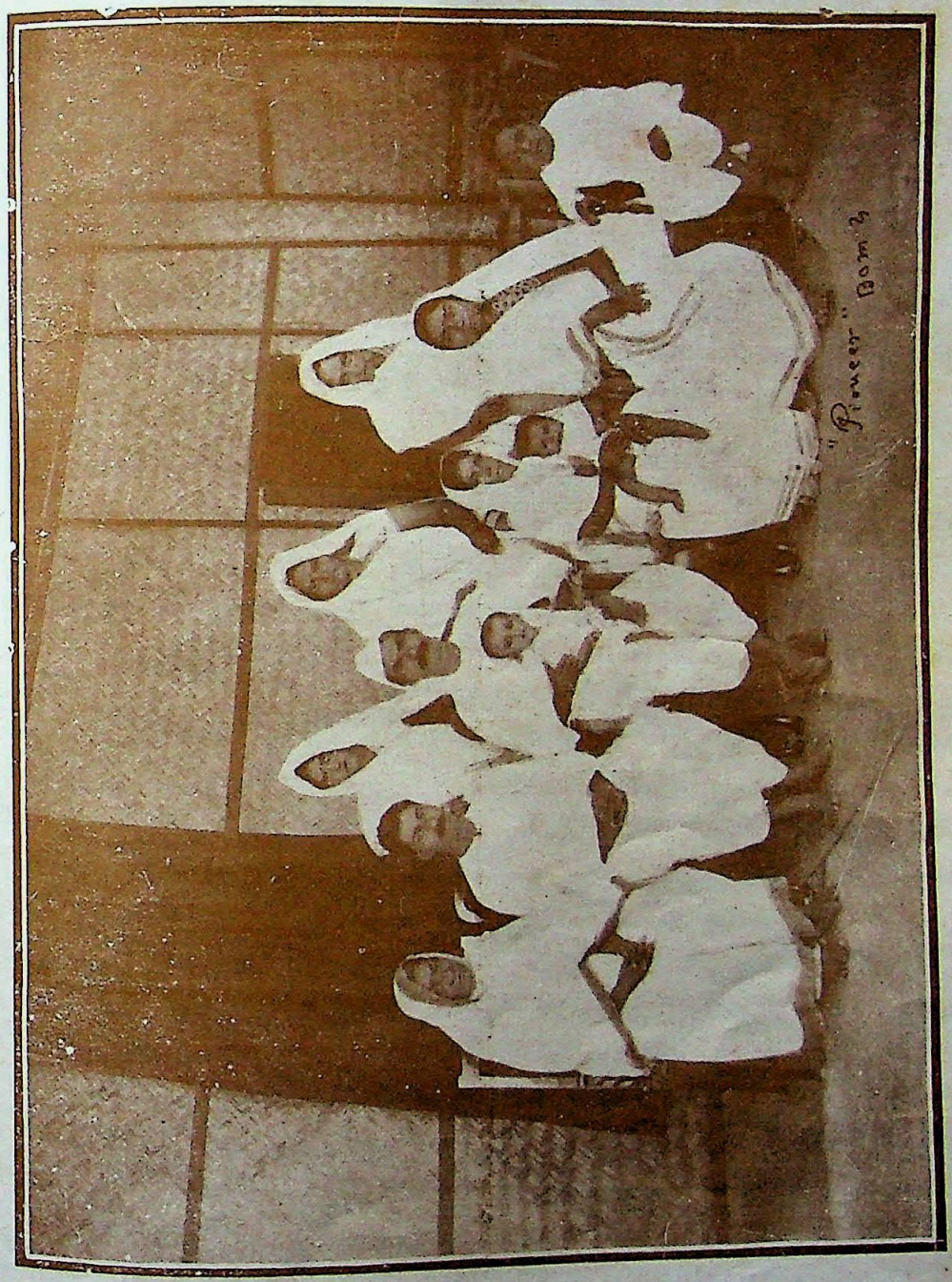

राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबूका परिवार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

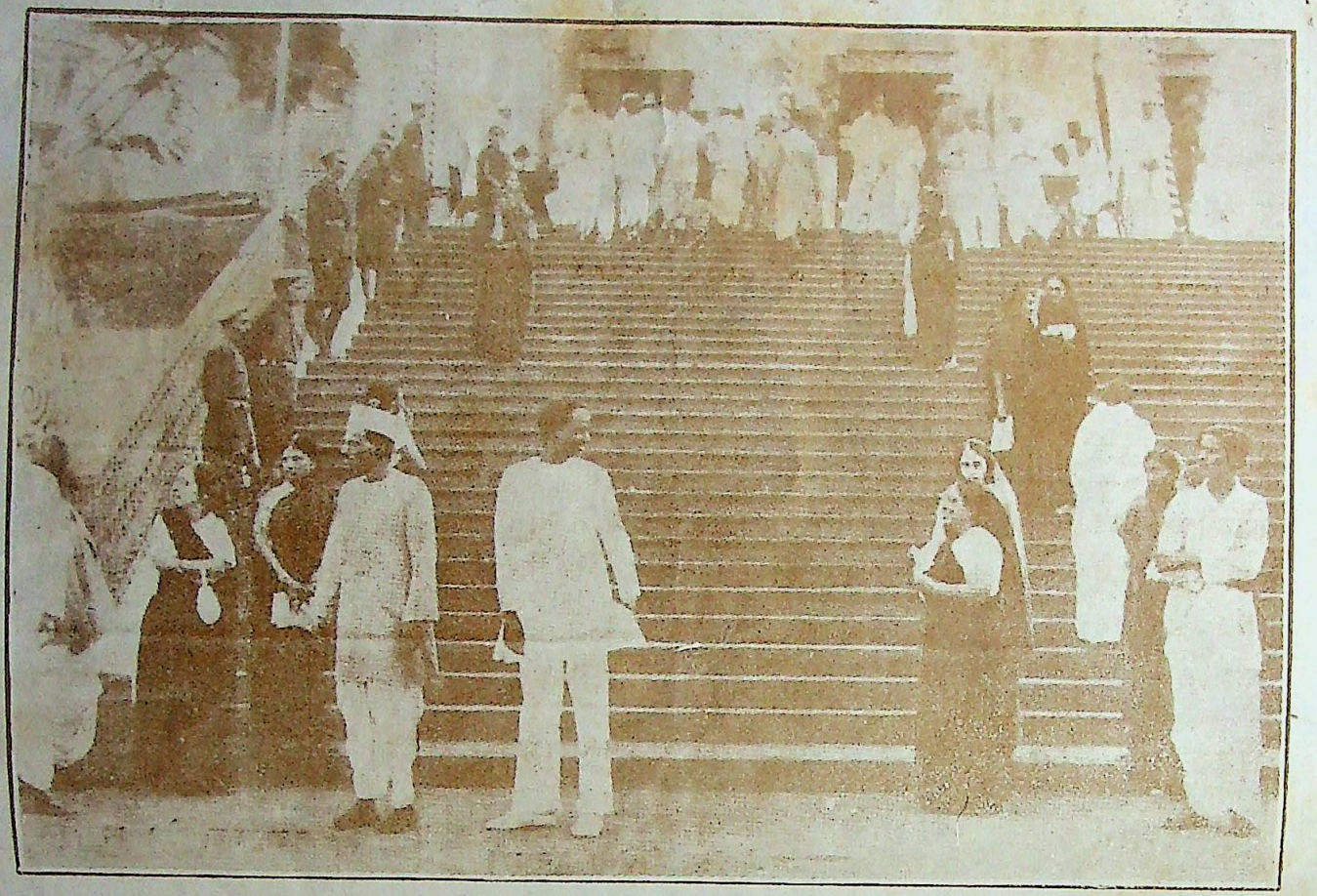

बम्बईके पोलिंग स्टेशनोंपर कांग्रेसके उम्मीदवारोंको सहायता पहुंचानेवाली महिलायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हृदयमें देशभक्तिकी आंच जल रही है, जो देशकी दीन दशा-पर अहर्निश सोचा करते हैं और जिन्हें अपनी जाति और देशके गौरवपूर्ण भविष्यपर विश्वास है वे मुक्ति-साधनाके पथसे विचलित नहीं होते और असीम कष्ट सहकर भी अपने लक्ष्य तक पहुंचनेका अनवरत प्रयत्न कर रहे हैं। क्यों? इसलिए कि वे जानते हैं कि उनका उद्देश्य पवित्र है, लक्ष्य महान् है और उसकी सिद्धिमें ही देश और जातिका कल्याण है। चिरकालसे अज्ञानान्धकारमें पड़ी रहनेके कारण यदि स्त्रियां बन्धनमुक्त होना नहीं भी चाहें तो भी विचारवान् सहृदय पुरुषोंका यह कर्तव्य है कि उन्हें बन्धनमुक्त करके ज्ञानालोकमें लानेका प्रयत्न करें। इसमें मनुष्य जातिका, मानव-समाजका कल्याण निहित है।

स्त्रियोंके राजनीतिक अधिकार प्राप्त करनेके विरुद्ध एक युक्ति यह उपस्थित की जाती है कि कुटिल राजनीतिक क्षेत्रमें प्रवेश करनेपर स्त्रियां स्त्रियोचित गुणोंसे, अपनी ललना-सुलभ सुकुमार वृत्तियोंसे वञ्चित हो जायंगी। उनका शारीरिक और मानसिक गठन राज्यशासनके उपयुक्त नहीं है और राजनीतिके जटिल चक्रमें पड़कर वे गृहस्थाश्रम तथा शिशुपालनके कर्तव्योंको भूल जायंगी। इस कथनके प्रतिवादमें यह कहा जा सकता है कि इतिहासमें जिन प्रसिद्ध नारियोंका नामोल्लेख हुआ है उनमें कोई भी राज्यशासनमें पुरुषोंकी अपेक्षा कम क्षमताशालिनी नहीं थीं और न यही प्रमाणित होता है कि राज्यशासनका भार ग्रहण करनेके कारण उन्होंने ललना-सुलभ गुणोंको खो दिया। इंगलैण्डकी रानी विक्टोरिया, रूसकी कैथरिन, मुसलमान शासन-कालमें चांद बीबी, नूरजहां, जहानआरा, अयोध्याकी बेगम, रानी भवानी, झांसीकी महारानी लक्ष्मीबाई आदिके राज्यशासन और वीरत्वका अमर इतिहास स्वर्णाक्षरोंमें अङ्कित है। जो लोग यह कहा करते हैं कि राजनीतिमें भाग लेनेपर स्त्रियां गृहस्थाश्रम-सम्बन्धी कर्तव्योंको भूल जायंगी उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि राजनीतिक अधिकार प्राप्त करनेका अर्थ यह नहीं है कि सबकी सब स्त्रियां राजनीतिक क्षेत्रमें क्रियात्मक भाग लें, और न ऐसा होना कभी सम्भव हो सकता है। मुख्य प्रश्न राजनीतिक अधिकारोंकी प्राप्तिका है, ताकि जिन स्त्रियोंमें राजनीति-क्षेत्रके उपयुक्त योग्यता और प्रतिभा हो, उन्हें उसका उपयोग करनेका मौका मिले। कर्तव्य और अधिकार दोनों साथ-साथ चलते हैं। समानाधिकार प्राप्त कर लेनेपर सुशिक्षिता स्त्रियां स्वयं इस बातको महसूस करेंगी कि एक गृहिणी और माताके रूपमें अपने कुटुम्ब, समाज और देशके प्रति उनके दायित्व और कर्तव्य क्या हैं? यूरोपकी मातायें क्या इस देशकी माताओंकी अपेक्षा शिशु-पालनमें कम सावधानता दिखलाती हैं? स्त्री-पुरुष दोनोंको मताधिकार प्राप्त होनेसे यदि दोनों स्वतन्त्र होकर अपने-अपने मताधिकारका उपयोग करेंगे तो इससे परस्पर मनोमालिन्य उत्पन्न होनेकी सम्भावना है और यदि पत्नी पतिके आदेशानुसार अपने मताधिकारका उपयोग करेगी तो इस प्रकारके मताधिकारसे कोई लाभ नहीं, इस प्रकारकी बातें भी सुनी जाती हैं। पर इस कथनको यदि युक्तियुक्त माना जाय तब तो पिता-पुत्र और भाई-भाईको भी मताधिकार नहीं मिलना चाहिए; क्योंकि इससे परस्पर वैमनस्य उत्पन्न हो सकता है। यदि पति-पत्नी सुशिक्षित और सुसंस्कृत होंगे तो मताधिकारके स्वतन्त्र उपयोग करनेके कारण दोनोंमें मनोमालिन्य कभी हो ही नहीं सकता। यों तो अन्य कितने ही कारणोंसे बहुत-से शिक्षित और अशिक्षित पति-पत्नियोंमें मनोमालिन्य होता ही रहता है।

असल बात तो यह है कि बहुत कम लोगोंने इस बातको महसूस किया है कि नारी-प्रगति-आन्दोलनमें मुख्य समस्या है मातृजातिकी मुक्तिकी। पर्दा, अशिक्षा, अज्ञानता, दारिद्र्य और स्वास्थ्याभावके कारण आज हमारी मातृजातिकी दशा कितनी दयनीय हो रही है! दीन-दुर्बल, कर्मशक्ति-हीन, उच्चाकांक्षाओंसे रहित, बहुसन्तानभारपीड़ित माताओंको लेकर आप भावी राष्ट्रका किस प्रकार निर्माण कर सकेंगे? किसी मध्यम श्रेणीके परिवारकी आन्तरिक अवस्थाका अनुसन्धान कीजिये तो आपको मालूम होगा कि वहां कितना निरानन्द छाया हुआ है। उसकी जीवन-यात्रा अवसादग्रस्त हो रही है, कर्तव्यके साथ-साथ आनन्दका समावेश नहीं है और वहां आपको आनन्दकी प्रफुल्लता और तेजकी दीप्ति ढूंढ़े भी न मिलेगी। माताओंके जीवनमें जब तक स्वास्थ्य, शक्ति, सुख और स्वाधीन चिन्ताकी धारा न बहेगी, उनमें तेजस्विता और क्रियाशीलताका जब तक सञ्चार नहीं होगा तब तक वे वीर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रसविनी किस प्रकार बन सकती हैं और राष्ट्र-गठनमें पुरुषोंको सहयोग किस प्रकार प्रदान कर सकती हैं ?

अतएव वर्तमान समाज-नीतिपर गम्भीरतापूर्वक विचार करते हुए हमें उसमें आवश्यक सुधार और संस्कार करनेके लिए सदा प्रस्तुत रहना चाहिए। सुधार और संस्कारका अर्थ यह नहीं है कि प्राचीन व्यवस्था और रीति-नीतिको हम अनावश्यक रूपमें उलट-पुलट डालें। प्रगतिके मार्गमें जो आवश्यक सुधार हों उनसे मुंह न मोड़कर नवीनके साथ संयोगसूत्र स्थापित करते हुए प्राचीन और नवीनके बीच सामञ्जस्य बनाये रखनेमें ही बुद्धिमत्ता है। नारी-प्रगति-आन्दोलनके विरोधियोंको यह जान रखना चाहिए कि वे इस प्रवाहको अब रोक नहीं सकते। देशमें अब क्रमशः ज्ञानका प्रकाश फैल रहा है और सामाजिक विचारोंमें बड़ी तेजीसे परिवर्तन हो रहे हैं। अब वह युग नहीं रह गया कि हम स्त्रियोंको दासी समझा करें। पत्नीके लिए पतिकी सहधर्मिणी बननेका जो महत् आदर्श है उस आदर्शको अब चरितार्थ कर दिखाना होगा। शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, शिल्प, राजनीति सभी क्षेत्रोंमें स्त्रियां अग्रसर हो रही हैं। समाजकी प्रगतिमें स्त्रियां भी पुरुषोंके कन्धेसे कन्धा मिलाकर कार्य करनेके लिए समुद्यत हों, इस मनोवृत्तिका हमें स्वागत करना चाहिए। कारण, स्त्रियोंका क्रियात्मक सहयोग प्राप्त होनेसे हम बहुत-सी सामाजिक कुरीतियोंका सहज ही निवारण कर सकेंगे और राजनीतिक क्षेत्रमें वर्तमान साम्प्रदायिकता-जनित रागद्वेषको मिटाकर पारस्परिक सद्भाव और बन्धुत्वकी स्थापना करनेमें समर्थ होंगे।

———

# प्रणयकी हाटमें

*आज आज जब सुलग उठी वह प्राणोंकी चिनगारी*
*चली हृदय अर्पण करने उफ् यौवनकी बलिहारी*
*सहसा कहा किसीने—"ठहरो! लो, यह तो ले जाओ—*
*तृषित हृदयकी यह प्रेमाञ्जलि यह तृष्णा अनियारी!"*

*तृष्णा! प्रेम! अरे यह क्या है? यह कैसी अठखेली?*
*फिर कर देखा स्वप्न सत्य है कैसी जटिल पहेली?*

*आमन्त्रण है या कि व्यंग, आलोक है कि अंधियाला*
*हाला है अथवा जीवन-भर जलनेवाली ज्वाला*
*यह है प्रेम-अवज्ञा अथवा निश्चय पूर्ण-कहानी*
*प्राणोंका उत्सर्ग है कि भ्रमका विनाशका जाला*

*इस रहस्यको नहीं जान पाती हूं कौन बतावे—*
*मेरे इस जिज्ञासु हृदयकी ग्रन्थि कौन सुलझावे*

*आराधक बनकर आयी थी अक्षत फूल चढ़ाने*
*बिक जाने जीवनका शुभ वरदान उन्हींसे पाने*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किन्तु पुजारिन ही बन बैठी पूजाकी अधिकारी
आया क्या आकाश-कुसुमका स्वप्न मुझे बहलाने
कौन प्रेम-ग्राहक है बोलो कौन प्रेम व्यापारी।
कौन उपास्य देव है कह दो किसका कौन पुजारी ?
—"चकोरी"

---

# हत्यारा सम्प्रदाय

श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा

अंगरेजकालीन भारतीय इतिहासके पाठकोंसे यह अविदित नहीं है कि अबसे लगभग एक सौ वर्ष पूर्व देशके विभिन्न भागोंमें, खासकर आधुनिक संयुक्त-प्रान्त, पञ्जाब, राजपूताना, मध्यभारत आदि प्रान्तोंमें 'ठगी'-प्रथाका कितना अधिक जोर था और उन नरघातकोंके उत्पातके कारण उस समयके भ्रमणकारियों और तीर्थयात्रियोंके लिए वाणिज्य-व्यवसाय या किसी अन्य कार्यवश एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तमें आवागमन करना और तीर्थदर्शन करना कितना विपद-संकुल होता था। उस समयके तीर्थयात्री अक्सर झुण्ड बांधकर चला करते थे और रेलका आविष्कार नहीं होनेके कारण प्रायः एक वर्ष या इससे भी अधिक प्रवासमें व्यतीत कर देते थे। राह-खर्चके लिए वे सोनेका पासा साथ रखा करते थे और आवश्यकतानुसार किसी नगरमें सोना बेचकर उससे भोजनादिका व्यय चलाते थे। प्रायः ऐसा होता था कि जिस समय एक दल तीर्थयात्री राहखर्चके साथ यात्रारम्भ करता था, मार्गमें उसे धनवान वणिकोंका कोई दल मिल जाता था। वणिक दलके साथ माल-असबाब और उसकी रक्षाके लिए कितने ही पहरेदारों-को देखकर तीर्थयात्री दल उक्त दलके साथ निरापद भ्रमण करनेकी आशासे उसके साथ ही चलने लगता था। किन्तु किसी दिन सन्ध्या समय जब भोजन करके थके-मांदे तीर्थ-यात्री सोनेका उपक्रम करते थे, ठीक इसी समय वणिक दल—जो छद्मवेशी ठगोंका दल होता था—सहसा उनपर आक्र-मण करके उनकी हत्या कर बैठता था और उनके पास जो-कुछ होता, सब लूटकर वहांसे आगे बढ़ जाता था। इस प्रकार नरघातकोंका यह दल कभी वणिक और कभी तीर्थ-यात्रीके छद्मभेषमें घूमता रहता और राहगीरोंकी हत्या करके लूटपाट मचाता था। ये लोग बराबर दलबद्ध होकर घूमा करते थे। ये रक्तपात द्वारा हत्या नहीं करते थे। इनका हत्या करनेका एकमात्र अस्त्र होता था एक रूमाल या १८-२० इञ्च लम्बा और उतना ही चौड़ा कोई कपड़ा। रूमाल-के एक कोनेमें कोई भारी वस्तु ( ३।४ तोले वजनका किसी धातुका टुकड़ा ) बंधी होती थी। जिसकी हत्या की जाती थी उसके पीछे एक ठग बातचीत करते हुए चलता था। यदि एकसे अधिक व्यक्तियोंकी हत्या करनी होती थी, तो एक ही समयमें प्रत्येक वध्य व्यक्तिके पीछे एक-एक घातक चलता था। अतएव वध्य व्यक्तियोंकी अपेक्षा घातकोंकी संख्या अधिक हुआ करती थी। रूमालके जिस कोनेमें भारी वस्तु बंधी हुई होती थी, उसके विपरीत दूसरे कोनको पकड़कर घातक अपने नृशंस कर्मके लिए प्रस्तुत होता था। सरदारका इशारा पाते ही एक साथ सबके सब घातक बड़ी फुर्तीसे अपना रूमाल वध्य शिकारके गलेमें बांध देते थे। इस प्रकार फुर्तीके साथ गलेमें रूमाल द्वारा फांस लगाने-का अभ्यास उन्हें लड़कपनसे ही कराया जाता था। वध्य शिकारके सावधान होनेके पूर्व ही उसके गलेमें इतने जोरसे रूमाल बंध जाता था जिससे वह अचेत हो जाता और उसके मुंहसे एक शब्द भी नहीं निकलने पाता था। इस प्रकार हत्या करके वे लाशको शीघ्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही जमीनके नीचे गाड़ देते थे और फिर वहांसे भ्रमणकारी वणिकका रूप धारण करके प्रस्थान कर देते थे। वध्य व्यक्तिके कपड़ोंको जला देते थे और मूल्यवान वस्तु, स्वर्ण, अलङ्कार आदिको सुविधानुसार शीघ्र बेचकर उनसे वाणिज्यकी अन्य वस्तुयें खरीद लिया करते थे। इस नरघातक दलमें हिन्दू और मुसलमान दोनों ही थे। कालीजीकी पूजा करके वे अपनी यात्रा आरम्भ करते थे और लौटकर आनेपर फिर काली-पूजा करके अपने घरोंमें प्रवेश करते थे। उनमें अनेक धनवान व्यापारी भी थे जो भ्रमण करते हुए हत्याके साथ-साथ वाणिज्य-व्यवसाय भी किया करते थे। इन नरघातकोंके हृदयमें दयाधर्मका लेश भी नहीं पाया जाता था। जहां कुछ अर्थ मिलनेकी आशा नहीं होती थी वहां भी अपने कार्यको गुप्त रखनेके लिए ये किसी अत्यन्त दरिद्र व्यक्ति, अबोध बालक अथवा वृद्धकी हत्या करनेसे भी बाज नहीं आते थे। वे अतिथि-अभ्यागत और पथक्लान्त पथिकोंको आदरके साथ बुलाकर अपने घरमें आश्रय देते थे और बादमें उनकी हत्या कर डालते थे। अतएव उस समय विदेशोंकी यात्रा करते समय किसी धनवान गृहस्थके घरमें आश्रय लेना भी निरापद नहीं समझा जाता था। क्योंकि वह गृहस्थ 'साधु' या 'ठग' है, यह जाननेका कोई उपाय नहीं था।

भारतके ये नरघातक धनके लोभसे नरहत्या किया करते थे। किन्तु लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व फारस देशमें एक व्यक्तिने एक ऐसे नरघातक दलकी स्थापना की थी जिसका उद्देश्य और हत्या करनेकी प्रथा इससे सर्वथा भिन्न थी। उस व्यक्तिने अपने कुछ क्षमताशाली उच्चपदस्थ शत्रुओंका वध करनेके लिए नरघातकोंका एक दल गठित किया था। अपने उद्देश्यमें सफल हो जानेके बाद भी धन और क्षमताके लोभसे वह इस नृशंस कर्मका परित्याग नहीं कर सका। प्रायः डेढ़ सौ वर्ष तक बगदादसे लेकर काबुल तक राजा प्रजा सब इस दलके नामसे भयभीत हो उठते थे। बादमें तातारी वीर हलाकू खांने इस दलको निर्मूल करके देशका परित्राण किया।

ईरानके उत्तर-पूर्वमें जो देश है उसे प्राचीनकालमें तुरान कहते थे। इस समय इसे तुर्किस्तान अथवा मध्य एशिया कहते हैं। ग्यारहवीं शताब्दीमें तुरानवासी सिलजुक नामक एक सरदारने इस प्रदेशको जीतकर अपना राज्य स्थापित किया। उसके एक वंशधर तुगदल अरसलानके राज्यकालमें हसन सब्बाह नामक एक प्रतिभाशाली, विद्वान्, क्रियाशील युवक राजदरबारमें चोबदारका काम करता था। उसने राजाके मन्त्री निजाम-उल-मुल्कको पदच्युत करके स्वयं मन्त्रीपद ग्रहण करनेके लिए षड्यन्त्र रचना आरम्भ किया। षड्यन्त्रका हाल मालूम होनेपर राजाने उसे राज्यसे निर्वासित कर दिया। हसन अपनी जन्मभूमिमें पहुंचकर वहां भी षड्यन्त्र करने लगा। मन्त्रीका दामाद उस नगरका शासनकर्ता था। उसने अपने दामादको लिखा कि हसन यदि षड्यन्त्र करे तो उसे कैद कर लो। हसन इस खबरको पाकर वहांसे भाग गया। फारसके उत्तर-पूर्व पहाड़ी प्रदेशमें एक स्थानमें धर्म-उपदेशक गुरु या पीर बनकर वह रहने लगा और अपने शिष्योंका दल गठित करके उनके द्वारा लूटपाट मचाने लगा। थोड़े समयमें ही कई धनवान व्यक्तियोंके काफिलेको लूटकर हसनने प्रचुर धन संग्रह कर लिया। उसके शिष्य उसे एक पीर अथवा असाधारण क्षमताशाली महापुरुष समझकर उसपर विश्वास किया करते थे। हसन क्रमशः उस पहाड़ी प्रदेशमें कई छोटे-छोटे गिरिदुर्गोंपर अधिकार करके उस प्रदेशके एक प्रभावशाली डकैत या सरदारके रूपमें विख्यात हो गया। लोग उसे शेख-उल-जबल अर्थात् पहाड़का राजा कहने लगे। इस पहाड़ी प्रदेशमें हसनको एक ऐसी निम्नभूमि मिल गयी जो चारों ओरसे दीवारोंके समान सीधी पहाड़ियों द्वारा आवेष्टित थी और बाहरसे इस निम्नभूमिका कोई भी अंश दृष्टिगोचर नहीं होता था। उसमें सिर्फ एक ही सङ्कीर्ण प्रवेश-मार्ग था। वहीं उसने एक छोटा, किन्तु दुर्भेद्य दुर्ग निर्माण किया और उस उपत्यका (निम्नभूमि) को एक सुन्दर उद्यानके रूपमें परिणत किया। उसमें नाना प्रकारके फूल और फलके वृक्ष लगाये गये और बीच-बीचमें छोटे-छोटे विश्रामागार बनाये गये। विश्रामागार सुन्दर चित्र और साज-सामानसे सुशोभित किये गये। उद्यानमें चार नहरें बनायी गयीं जिनसे इच्छानुसार दूध, शहद, शराब और स्वच्छ पानी प्रवाहित किया जाता था। सारांश यह कि कुरानमें वर्णित स्वर्गके "फिरदौस" नामक उद्यानका जहां तक सम्भव था, अनुकरण किया गया था। कतिपय सुन्दरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



युवतियोंको गानवाद्यकी शिक्षा देकर उनसे बहिश्तकी हूरका पार्ट अदा कराया जाता था।

हसन स्वयं गुरु बना और अपने शिष्योंका नाम फिदाई (आत्मोत्सर्गकारी) रखा। उन्हें विभिन्न भाषाओंमें बातचीत करने, देश-विदेशोंके आचार-व्यवहार, नाना प्रकारके शस्त्रास्त्र धारण, युद्धविद्या और अभिनय-कौशलकी शिक्षा दी जाती थी। अपने शिष्योंको अपनी गुप्तविद्या दान करते समय हसन उनसे कहा करता—"तुम यदि मेरी आज्ञानुसार कार्य करोगे और मुझे सन्तुष्ट रखोगे तो मैं अपने फिरिश्ता द्वारा तुम्हें फिरदौस (स्वर्गीय उद्यान) भेज दूंगा। वहां कई दिनों तक स्वर्ग-सुख भोगनेके बाद वे देवदूत तुम्हें फिर यहां पहुंचा जायंगे।" इस प्रकार फिरदौसकी चर्चा हमेशा चलाकर वह अपने शिष्योंके मनमें उसे देखनेकी प्रबल उत्कण्ठा जाग्रत किये रहता था। फिर किसी दिन गुप्तरूपमें अपनी कोई दवा उन्हें खिला देता था। इस दवाके खाते ही कई घण्टे तक बेहोशीकी हालत हो जाती थी, किन्तु होश होनेपर फिर नशेका कोई चिह्न नहीं रह जाता था और न शरीरमें किसी प्रकारकी ग्लानि मालूम पड़ती थी। इस नशीली दवाका नाम 'हशीश' था और इसके खानेवाले 'हशीशिन' कहे जाते थे। इन हशीशिनों द्वारा ही नरहत्या करायी जाती थी। अंगरेजी लेखकोंने 'हशीशन' शब्दका व्यवहार नरघातकके अर्थमें किया जिसका विकृत रूप assassin बन गया।

दवा खानेपर जब फिदाई बेहोश हो जाता तो उसे हसनके नौकर उद्यानमें ले जाकर वहांके एक विश्रामागारमें सुसज्जित शय्यापर शयन करा देते थे। सुबह नींद टूटनेपर जब वह वहांका दृश्य देखता तो उसके मनमें फिरदौसकी धारणा बद्धमूल हो जाती थी। उद्यानमें घूमते समय उसे सहसा दो-चार सुन्दरियोंके साथ साक्षात्कार होता और उनके साथ मधुरालाप करके वह उन्हें स्वर्गकी हूरें समझता। अब उसका विश्वास और भी दृढ़ हो जाता कि यह स्थान अवश्य ही स्वर्ग है और उसके गुरुदेवने अनुग्रह करके उसे यहां भेज दिया है। चार-पांच दिनों तक स्वर्ग-सुख भोगनेके बाद फिर उसे दवा खिला दी जाती थी और बेहोशीकी हालतमें उसे उपत्यकाके द्वारसे अपने प्रासादमें लिवा लाया जाता था। हसन अपने शिष्यको कहा करता था—"मेरे दूत सब समय अलक्ष्य रूपमें तुम्हारे साथ रहकर तुम्हारी रक्षा करते हैं। वे ही तुम्हें फिरदौस ले गये थे, मेरी आज्ञा पानेपर वे तुम्हें फिर ले जायंगे। यदि किसी समय शत्रु द्वारा तुम निहत हो, तो तुम्हें तत्क्षण फिरदौस ले जानेकी आज्ञा मैंने उन्हें दे रखी है। किन्तु स्थूल शरीरके नष्ट हो जानेपर तुम्हें वहीं वास करना होगा। फिर तुम यहां नहीं आ सकते।" किन्तु जो युवक एक बार फिरदौस हो आता था उसे फिर लौटनेकी इच्छा नहीं होती थी। वह चिरकाल तक फिरदौसमें रहनेकी ही अनुमति मांगता था।

फिदाईको अच्छी तरह शिक्षा देने तथा उसके मनमें फिरदौस जानेकी प्रबल इच्छा उत्पन्न करनेके बाद हसन उसे अपने शत्रुकी हत्या करनेके लिए नियुक्त करता था। उसके ये शिष्य इस प्रकार प्रकाश्य रूपमें हत्या किया करते थे, जिससे तत्काल कोई-न-कोई घटनास्थलपर ही उन्हें मार डालता था और इस प्रकार हसनका यह गुप्त षड्यन्त्र प्रकट नहीं होने पाता था। हसनने अपने इन शिष्योंको इस प्रकार तालीम दी थी कि धर्मयुद्ध (Crusade) के समयमें मार्क्वीस कनरायडकी हत्या करनेके लिए जो फिदाई नियुक्त किया गया था, उसे पहली बार सुयोग न मिलनेके कारण एक ईसाई संन्यासीके छद्मभेषमें छ मास तक एक मठमें रहना पड़ा और किसीको उसपर सन्देह नहीं हुआ। इसके बाद एक रविवारको बहुत-से सैनिकों और सरदारोंसे भरे हुए उपासना-गृहमें कनरायडकी हत्या की गयी। दर्शकोंकी हजारों तलवारें फौरन् उस फिदाईकी गर्दनपर बरस पड़ीं और क्षण-भरमें ही उसे "फिरदौस" भेज दिया। हसनका गुप्त रहस्य किसीको मालूम नहीं हो सका। धर्मयुद्धके समयमें हसन द्वारा नियुक्त फिदाइयोंने कई ईसाई ड्यूकों और राजाओंकी रविवारको गिर्जा-घरमें और मुसलमान सरदारों तथा नवाबोंकी शुक्रवारको जामा-मसजिदमें हत्या की थी। एक-एक शत्रुका वध करनेमें हसनको अपने एक-एक शिक्षित फिदाईसे हाथ धोना पड़ता था। साधारण जनताकी दृष्टिमें हसन एक साधक और साधु पुरुषके रूपमें प्रतीत होता था। एक बार मलिकशाहने हसनके विरुद्ध डकैतीका अभियोग सुनकर अपने एक सेनापतिको हसनको सावधान कर देनेके लिए उसके पास भेजा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वह राजपुरुष सेनापति हसनके वास्तविक रूपसे परिचित था। उसने हसनको भय दिखाया। इसपर हसनने लापरवाहीकी हंसी हंसते हुए अपने दो युवक फिदाइयोंको पुकारा। उनमें एकसे उसने कहा—"इस पहाड़की चोटीपर चढ़ो।" वह युवक पर्वत-शिखरपर चढ़ गया। फिर उसे आज्ञा दी—"इस गहरे गड्ढेमें वहांसे कूदो।" युवक फौरन् तीन-चार सौ फीट ऊंचे शिखरसे उस गड्ढेमें कूद पड़ा और वहीं मर गया। हसनने दूसरे युवकसे कहा—"छुरेसे अपना पेट चीर लो।" फिदाईने फौरन् उसकी आज्ञाका पालन किया। बादमें हसनने उस सेनापतिसे कहा—"तुमने जो कुछ यहां देखा है, अपने मालिकसे कहना, और उनसे यह भी कहना कि जब वे इस प्रकारके आज्ञाकारी सैनिक जुटा सकें तभी सेना द्वारा मेरे दमन करनेका स्वप्न देख सकते हैं।" उस सेनापतिके मुंहसे सारी कहानी सुनकर मलिकशाहने हसनका दमन करनेकी आशा त्याग दी।

हसनने अपने प्रधान शत्रु निजाम-उल-मुल्ककी हत्या करनेके लिए अपने एक नर-घातक शिष्यको तैयार किया। उस दिन रमजानका दसवां रोजा था। ७५ वर्षके वृद्ध मन्त्री बादशाहके साथ इस्पहानसे बगदादकी तरफ जा रहे थे। रोजा अफतार करनेके बाद सन्ध्या समय वह अन्तःपुरकी ओर जा रहे थे। वहां एक प्रियदर्शन युवकको हाथमें दरख्वास्त लिये हुए खड़ा देखकर उन्होंने उसे निकट बुलाया। युवकने उनके समीप पहुंचकर दरख्वास्त वृद्ध मन्त्रीके हाथमें दी। इसके साथ-साथ उसने छुरा निकालकर उस वृद्धके पेटमें घुसेड़ दिया। युवक वहांसे भागा नहीं; बल्कि चुपचाप खड़ा रहा। मन्त्रीके सेवकोंने वहां पहुंचकर तत्काल उसे "फिरदौस" भेज दिया।

निजाम-उल-मुल्ककी हत्याके बाद हसनका नर-घातक सम्प्रदाय गठित करनेका उद्देश्य पूर्ण हुआ और अब इसकी आवश्यकता नहीं रह गयी। किन्तु डाका डालकर वह क्षमताशाली बन गया था। पार्वत्य प्रदेशमें एक छोट-मोटा राज्य स्थापित कर लिया था, धनका भी अभाव नहीं था और अनुगत शिष्योंकी संख्या भी काफी थी। मनुष्यमें धनकी अपेक्षा क्षमताकी आकांक्षा विशेष होती है। अतएव हसन अपने इस नृशंस कर्मका परित्याग नहीं कर सका। अपने बड़े लड़केको राज्यका उत्तराधिकारी बनाकर भविष्यमें गुरुगिरी किस प्रकार कायम रखनी होगी, इसकी गुप्त शिक्षा उसे देने लगा।

किन्तु उसका यह पुत्र अपने पितासे भिन्न प्रकृतिका था। उसे जब मालूम हुआ कि शिष्योंको केवल भुलावा देकर उन्हें वशमें रखा जाता है, स्वर्ग, देवदूत, हूर आदि सर्वथा आकाश-कुसुम हैं, सरल विश्वासी युवकोंको फंसानेके उपाय हैं, तो उसने इस प्रकारका दुष्कर्म करनेसे अस्वीकार कर दिया। हसनने अपने शिष्योंको अन्धभावसे आज्ञा-पालन करनेकी शिक्षा दी थी, अन्धविश्वास उसकी शिक्षाका मूलमन्त्र था। इसके विरुद्ध चलने वालेके लिए एकमात्र दण्ड था प्राणदण्ड। ऐसा न करनेसे उसके राज्यकी व्यवस्था कायम नहीं रह सकती थी। अतएव गुप्त रहस्य प्रकट होनेके भयसे और आज्ञा न पालन करनेके अपराधमें हसनने अपने हाथसे अपने ज्येष्ठ पुत्रका वध किया। इसके बाद उसका दूसरा लड़का भी इसी अपराधमें अपने पिता द्वारा निहत हुआ। इसके बाद किया नामक तीसरा पुत्र अपने पितासे गुरुगिरीकी गुप्त शिक्षा प्राप्त करने लगा। हसन अपने दो पुत्रोंकी हत्या करके कियाके सम्बन्धमें बड़ी-बड़ी आशायें करने लगा और उसे "किया बुजुर्ग उमेद" के नामसे अभिहित करने लगा। इतिहासमें वह इस नामसे ही प्रसिद्ध है।

इस सम्प्रदायके आठ व्यक्ति प्रधान गुरुके आसनपर बैठे। फारसके अनेक राजाओंने इनका दमन करनेकी चेष्टा की, किन्तु वे कृतकार्य नहीं हुए। मलिकशाहके एक पुत्र सञ्जार नामक फारसके एक पराक्रमी योद्धा सम्राट्ने इनके दमनके लिए सेना लेकर यात्रा की। शिविरमें रात्रि यापन करनेके बाद प्रातःकाल उठकर उसने देखा कि उसकी शय्याके पास एक तलवार मिट्टीसे ढकी हुई रखी है। उस तलवारमें एक कागज बंधा हुआ था। उसमें लिखा हुआ था—"हे सञ्जार, तुम्हें बाल्यावस्थासे ही एक साहसी वीरके रूपमें जानता हूं। तुम्हारी हत्या करनेसे देशकी क्षति होगी, अन्यथा जमीनमें तलवार न घुसेड़कर तुम्हारे कोमल वक्षस्थलमें घुसेड़ देनेमें विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ता।" सञ्जारने यह पत्र देखकर उनके दमनका सङ्कल्प परित्याग कर दिया।

तेरहवीं शताब्दीके मध्यमें प्रसिद्ध तातारी वीर चङ्गेज खांका पौत्र हलाकू खां इस नरघातक सम्प्रदायका उच्छेद-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साधन करके देशका आशीर्वाद-भाजन बना। किन्तु इसके बाद भी इस प्रदेशमें ऐसे लोग थे जो नरघातक न होनेपर भी नरहत्या करना अधर्म या अन्याय नहीं समझते थे।

इसके बहुत समयके बाद सोलहवीं शताब्दीमें सम्राट् अकबरके राज्यकालमें वायजीद-बिन-अब्दुल्ला नामक एक अर्धशिक्षित अफगान एक नवीन धर्मके उपदेशकके रूपमें अवतीर्ण हुआ। वह अनेकांशमें सूफी मतका उपदेश देता था। उसने अपने अशिक्षित शिष्योंको लेकर एक डाकू दल गठित किया और पेशावरसे लेकर काबुल तक पहाड़ी प्रदेशोंमें लूट-पाट और हत्या किया करता था। अकबरके सेनापति बार-बार चेष्टा करनेपर भी इस डाकू दलका दमन करनेमें समर्थ नहीं होते थे। वायजीदकी मृत्युके बाद उसका पुत्र जलालुद्दीन या जलाला दलका गुरु बनकर लूटपाट मचाने लगा। इस जलालाका दमन करनेमें ही राजा वीरबल बहुत-से सैनिकोंके साथ मारे गये। जलालाने गजनीको जीतकर वहां एक नवीन राजवंश स्थापित करनेकी चेष्टा की थी, किन्तु अकबरके सेनापति द्वारा वह पकड़ा गया और उसे फांसीकी सजा दी गयी। इस सम्प्रदायके लोगोंको देखते ही उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाता था।

वायजीदने अपने सम्प्रदायका नाम 'रोशनिया' सम्प्रदाय रखा था। अपने अनुयायियोंकी शिक्षाके लिए उसने एक धर्म-पुस्तककी रचना की थी। उस पुस्तकमें जो उपदेश दिये गये थे उनका कुछ सारांश इस प्रकार है :—"ईश्वर-ज्ञान और आत्मज्ञान ही मनुष्य-जीवनका प्रधान लक्ष्य है। जिसने ईश्वरज्ञान और आत्मज्ञान प्राप्त नहीं किया, उसकी गणना मनुष्योंमें नहीं हो सकती। यदि वे पर-अपकारी अत्याचारी जीव हों, तो उनकी गणना हिंस्र जन्तुओंमें होगी। इन हिंस्र जन्तु-स्वरूप मनुष्योंकी हत्या करनेसे पाप नहीं लगता। यदि उक्त प्रकारका व्यक्ति हिंस्र जन्तु न होकर निरीह हो, तो उसकी गणना भेड़, बकरी आदिकी श्रेणीमें होगी और उसकी हत्या करनेमें पाप नहीं होता। कारण, वह भक्ष्य है। जिसे ईश्वरज्ञान और आत्मज्ञान नहीं वह पशु है, वह या उसकी सन्तान स्थावर और जङ्गम सम्पत्तिकी अधिकारी नहीं हो सकती, अतएव उसकी हत्या करके उसका धन ग्रहण करनेमें पाप नहीं होता।"

आधुनिक बदूइन लोग अरब देशकी मरुभूमिके निवासी हैं। हज करनेवाले यात्री समुद्र-तटसे बदूइन जातिके वास-स्थानमें पहुंचते थे और उनसे भाड़ेपर ऊंट लेकर मक्का या मदीनाकी यात्रा किया करते थे। रास्तेमें यात्रियोंकी हत्या करके बदूइन लोग उनका धन हरण कर लेते थे। उनसे यदि कहा जाता कि "धन ले लो, प्राण मत लो," तो वे कहते—"ऐसा करनेसे पापभागी बनना पड़ेगा; कुरानका आदेश है कि परद्रव्य हरण करना और चोरी करना पाप है, किन्तु अधिकारीको मार डालनेपर फिर उसका धन दूसरेका नहीं रह जाता, इसलिए इस प्रकारका धन हरण करना पापकर्म नहीं है।" मनुष्यकी हत्या करनेमें जो पाप होता है उसे वे स्वीकार नहीं करते थे।

अकबरके ऐतिहासिक बदायूंनीने वायजीदके 'रोशनिया' सम्प्रदायका तारिकिया (तामसिक) नामसे उल्लेख किया है।

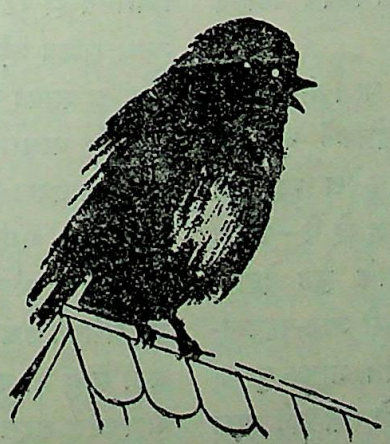

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# लेनिनकी प्रेम-अर्चा

श्री पुरुषोत्तम जयकृष्ण देवरस, एम० एस-सी० "विशारद"

जूनका महीना था, उसपर भी दोपहरका समय; गर्मीका हाल न पूछिये! मैं ऐसे समय जिनेवाके एक होटलमें बैठी थी। मैनेजर जूलस खिन्नमुद्रासे मस्तकका पसीना पोंछते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। खाद्य-पदार्थोंकी सुगन्ध दूर तक पहुंच रही थी। मुझे स्मरण है कि उस समय मेरी उम्र छोटी थी, किन्तु वारसाके इम्पीरियल थियेटरकी बाल नटियोंमें मेरा नम्बर ऊंचा था। मैं गरीबकी बेटी थी और वेतन भी कम पाती थी। इस होटलमें जो थोड़े-बहुत पदार्थ थे वे वारसाके खाद्य-पेयोंकी अपेक्षा अच्छे थे। मैं स्वादसे खा-पी रही थी।

थोड़े ही समयमें एक लाल वस्त्र परिधान किये, श्याम तथा रूखे शरीरवाली बालिका मस्तानी चालसे आयी और "झींगेन" तानसे गाने लगी। मैं आनन्दसे झूमने लगी।···प्रेम, उन्माद, प्रतीक्षा, जीवन, मृत्यु इत्यादि-के भावोंसे भरे गीत मैंने अपने पितासे, पालनेमें ही सीख लिये थे। मेरे स्वर्गीय पिता अब भी निर्जन स्थानोंसे वह सन्देश भेज रहे हैं।·····मेरे आत्मभावको उत्तेजना मिली और मैं सब-कुछ भूल गयी। मेरे हृदयकी वीणा गानकी तानमें लीन हुई, और मैं एक अनिर्वचनीय आनन्दमें निमग्न हुई। बालिकाका गान समाप्त होते ही, होटलमें प्रशंसा-त्मक कोलाहल प्रारम्भ हुआ। एक जर्मन बाला मुझसे बार-बार 'राई' मांगने लगी, तब कहीं मेरा विवेक ठिकाने आया।

दूसरी टेबुलपर एक व्यक्ति पत्र लिख रहा था। बीच-बीचमें काफी भी पीता जाता था। जिनेवाके होटलमें यह मेरी पहली यात्रा थी। मैं उत्सुकतासे सारा दृश्य देख रही थी। एक कोनेमें कुछ विद्यार्थी जर्मन भाषा बोल रहे थे—शायद मद्यपानका झगड़ा हो रहा था। जिनेवाके कुछ देहाती उनकी ओर घृणाकी दृष्टिसे देख रहे थे। मेरी जान-पहचान-की कुछ नरनारियां इधर-उधर घूम रही थीं। भावुक युवक-युवतियां गूढ़ विचार कर रही थीं। युवक फटे वस्त्र पहने सारा दिवस विश्वविद्यालयका शिक्षण ग्रहण करते थे, और रात्रिके समय होटल-मैनेजरकी कृपासे वहीं ठहरकर, कोने-कोनेमें छिपकर राजनीतिक वादविवाद करते थे।

बड़े-बड़े मनोरथोंके किले बांधे गये। स्विट्ज़रलैण्डमें वाक्-स्वतन्त्रता है। इसी कारण दूसरे देशके निवासी भी आते और आनन्दसे विहारकर क्रान्तिकारी वादविवाद करते थे। आजकल भी वहां क्रान्तिकारी वैसा ही वाद-विवाद किया करते हैं। फर्क सिर्फ इतना ही है कि अब वे भूतकालके छिपे होटल और घरोंको छोड़, लोजांग और जिनेवाके महलोंमें एकत्रित होते हैं, और संवाददाताओंसे घिरे भी रहते हैं। होटलके मालिक मि० जूलस उन्हींके मित्र थे। कइयोंको वे भोजन मुफ्तमें ही खिलाया करते थे। अतीतको देखकर मैं कहती हूं कि "काल" की भी क्या विचित्रता है!

## लेनिनसे भेंट

लेनिनसे मेरी मुलाकात अचानक हुई। एक दिन उसी होटलमें मैं बैठी थी। मेरा मालिक बिल बना रहा था। एक आदमी मेरे नजदीक कई चिट्ठियां लिख रहा था। एक-बारगी बाहरी दरवाजा खुला, और एक युवक अन्दर आया। उसके वस्त्र बिलकुल फटे थे। चेहरा फीका पड़ गया था। गालकी हड्डियां स्पष्ट दीख रही थीं। भौंहें धनुषाकार थीं, और धंसी हुई नीली आंखोंसे विद्युत् प्रभासित हो रही थी। वह आते ही एक कुर्सीपर जा बैठा। जूलस साहब बड़े ग्लासमें काफी लेकर उसे दे आये। उसने काफीका शायद एक घूंट ही पिया हो कि प्याला हाथसे छूट पड़ा, पैर थरथराने लगे, और फटसे वह औंधा आ गिरा। सब लोग घबरा गये। पत्र-लेखकने लेखनी रोककर सहायता पहुंचायी। गायिका चीख उठी। श्रीमती जूलस पछताने लगीं। मेरी आंखोंसे भी आंसू टपक पड़े। पत्र-लेखक समीप आ रशियन उच्चारणसे बोला—"कई दिनोंका भूखा था, चलो मृत्यु भी कभी-कभी सुखद होती है!" "भूखा!" मैं आश्चर्यसे सहसा कह उठी,—"क्या ऐसे बड़े भोजनालयमें कोई भूखा भी रह सकता है?" वह बोला—"हां, दरिद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गृहोंकी करुण कथा तुम्हारी आधुनिक संस्कृति कहां सुनती है !"

उसका विशाल भाल, नीली आंखें, भावयुक्त चेहरा, अत्यन्त साधारण स्थितिका वेशभूषा देखकर मुझे प्राचीन ऋषियोंकी याद आयी।

"'आप अभी छोटी हैं,' गरीबोंके दुःख केवल कल्पना-मात्रसे जान सकती हैं। देखना, यदि आपकी ओर विधाता-की कृपा-दृष्टि हो, तो मुझे न भूलना ? अच्छा फिर मिलूंगा ! मेरा नाम लेनिन है !"

दो-चार हफ्तेके बाद वह फिर मेरे कमरेमें आया और टेबुलपर बैठ गया। इस समय वह ज्यादा कृश हो गया था। वस्त्र भी बिलकुल फट गये थे। बादमें मुझे पता लगा कि वह रेलवे-पुल तथा निर्जन खेतोंमें निद्रा ले द्रव्यहीन प्रवासी-सा भटकता रहा है और दूसरी बारके भोजनका भी कुछ ठिकाना न था। किन्तु शब्दोंका प्रवाह स्रोत-सा बहता था। वह वाक्पटु था—जिसके शब्दोंसे संसार मोहित हो जाता था।

अपनी समस्त आयुमें मैंने लेनिन-सदृश अन्य वक्ता नहीं पाया। अपने शब्दोंसे सारे जनसमूहको मुग्ध करनेकी शक्ति उन्हींमें थी। १९१४ की रशियन क्रान्तिमें केवल इसी सज्जनका आदर्शवाद और सत्यप्रियता झलकती थी। एक बार वे मुझसे कह उठे—"देवी ! संसार बदलनेवाला है। श्रमगौरव तथा श्रमके महत्त्वका ज्ञान संसारको प्राप्त होगा!" उनके ये शब्द अभी तक कानोंमें गूंजते हैं—"उसके मीठे फल मुझे न मिलेंगे।" अश्रुपातपूर्वक रशिया और पोलैण्डका झगड़ा बताते हुए वे कहते थे कि "आज हम गुलाम हैं, कल स्वतन्त्र होंगे। समय आ रहा है, हमारा राष्ट्र हमें मिलेगा; श्रमजीवियोंकी जय होगी और गरीबोंकी रक्षा !"

मुझे स्मरण है कि मेरे पूज्य पिता भी राजनीतिक बन्दी थे। वे भी हरदम यही कहा करते थे कि "बेटी ! एक दिन हम स्वतन्त्र होंगे !" उनका झींगेन गान तथा बागका रहस्यमय जीवन मुझे अभी तक याद है। चीड़ वृक्ष-पर बैठ मैं उनके शब्द अभी तक दुहराती रही। मेरी माताने मुझसे सारा वृत्तान्त छिपाना चाहा। पिताजीको दसवें सिटाडेलमें रखा गया था। खानेको नमकीन मछली और पीनेको पानी दिया जाता था। बादमें उन्हें साइबेरिया भेज दिया गया।

एक दिन मेरी चाचीने जल्दीसे मुझे कपड़े पहनाये और कहा कि "चलो आज तुम्हारे पिता तुम्हें दर्शन देंगे।" मैं चाचीका हाथ पकड़े एक बड़े काले मकानमें पहुंची। द्वार-पर लोहेके सींकचे थे। अन्दर कज्जाक सिपाहियोंके पहरेमें कैदियोंकी कतार बैठी हुई थी। मेरे पिताजी मुझे दीख रहे थे। उनके हाथ और पैर कड़ी-बेड़ियोंसे जकड़े हुए थे। मैं उनसे गले लगनेकी इच्छासे सींकचोंको ठोंकने लगी। इच्छा प्रबल थी, हाथसे रुधिर भी बह आया। वे नजदीक आये, भीड़के एक सज्जनने मुझे ऊपर उठाया। मैंने लोहेके सींकचों-को पकड़कर उनके उष्ण तथा कम्पित अधरोंका अत्यन्त आतुरतासे चुम्बन किया। सींकचोंके अन्दरसे, वे रुंधे हुए गलेसे कह उठे—"याद रखना बेटी ! बस !!!" —वे राष्ट्रको स्वतन्त्र करनेका प्रयत्न करनेवाले एक क्रान्तिकारी वीर थे।—रात्रिका समय था। कैदियोंकी कतारें लगी थीं। मशालका धीमा प्रकाश भी था। घुड़सवार कज्जाकोंके घोड़ोंकी टाप सुनाई दे रही थी। नारियां जोर-जोरसे विलाप कर रही थीं। अन्तमें केवल बेड़ियोंकी खनखनाहट शेष रही। पिताजी साइबेरिया पहुंचाये गये।

मैं घर आयी। माताने आंसू पोंछ समझा-बुझाकर मुझे सुला दिया। कई वर्ष बीत गये, केवल एक ही स्मरण रहा—"बेटी, जब हम स्वतन्त्र होंगे, तो फिर भेंट होगी !"

कुछ समय बाद मैं बड़ी हुई। छोटी अपोलिना चालुप्स-के बदले प्रख्यात सिनेमा नटी पोला नेग्री बन गयी। जर्मनीमें बनाये हुए मेरे चित्रपट समस्त यूरोपमें दिखाये गये। साइबेरियामें भी पहुंचे। मातृभूमि पोलैण्डके प्रेमी पिताजीको इन चित्रपटोंको देखनेकी उत्कट इच्छा हुई। "डुबेरी" नामक चित्रपट एक प्रवासी सिनेमा-गृहमें दिख-लाया गया था। आज्ञापालक समझकर उन्हें इजाजत मिल गयी। चित्रपट देखते ही वे सहसा कांप उठे।

"'अरे ! यह तो मेरी प्यारी बिटिया है। उसे कैसे भूल सकूंगा। वे नीली-नीली आंखें, भौंहें, विशाल भाल—अहाहा !!! मेरी बिटिया, नाम केवल बदल गया, किन्तु शरीर वही है। साइबेरियाके कष्टोंको भूलकर थोड़ा आनन्द पाया। पूर्व चुम्बनका स्मरण हुआ ; उस रात्रिका



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दृश्य दिखाई दिया। मैं समझता था कि अब बेटीको न देख सकूंगा, पर भाग्यवश दिख गयी ! वाह !!!"

कुछ समय बाद प्यारे पिताजी परलोकवासी हुए !

### लेनिनका प्रेम

मैं उस रशियन होटलमें लेनिनसे अक्सर मिलती थी। वे बहुत कम बोलते थे। मैंने उनसे अपने पिताके कष्टोंका उल्लेख किया। उन्हें मालूम था कि ऐसे पिताकी बेटीके हृदयमें क्रान्तिकी ज्वाला जलती ही होगी। किन्तु हम दोनोंके मार्ग अलग-अलग थे। "आप बड़ी कलाविद् होंगी पोलाबाई ?" उन्होंने कहा—"आपको जय और कीर्ति मिलेगी। मुझे तो अपने मार्गसे चलना है। कहां जाऊंगा, कह नहीं सकता। शायद आपके पिताकी भांति साइबेरिया।"

एक समय जिनेवा छोड़ते ही स्टेशनपर लेनिनने कहा—"गुड बाइ (नमस्ते)—आपसे प्रेम करनेका मुझे कोई अधिकार नहीं है। मैं निर्धन, प्रेमका बदला भला क्या दे सकूंगा ?—दरिद्रता और वनवास ! आप अभी छोटी हैं। सारा संसार आपके सामने है। 'आपसे प्रेम' ये शब्द मेरे लिए स्वप्न हैं। शायद अब भेंट न हो। मुझे ज्ञात है कि आप मुझसे प्रेम नहीं करतीं। किन्तु कभी-कभी इस अभागेका स्मरण करती रहना !"

गाड़ी चल पड़ी। नयनाश्रुओंके धुंधले पर्दोंमेंसे लेनिनका स्वरूप मुझे दिखाई दे रहा था। यही नरदेव दो वर्ष बाद एशियाके राजनीतिक आकाशमें धूम्रकेतु-सा चमक गया !

### प्रेमांकुर

मैं कलाविद् थी और रहूंगी, किन्तु सारे संसारका प्रोत्साहन मुझे वह आनन्द नहीं देता, जो कि एक प्रेमीके आलिङ्गन-मात्रमें है। मैं सात वर्षकी थी तबसे ही मेरे हृदयमें प्रेमका अंकुर निकला था। एक दिन मैं घरके निकटवर्ती झरनेके पास बैठी थी। वृक्षोंकी छाया थी, जिसके नीचे माताकी दी हुई कहानीकी किताब पढ़ रही थी। एक युवक जिसकी आयु लगभग अठारह वर्ष, शरीर गठीला, सुन्दर, गौरवर्ण, और सुहावना था, तैरते-तैरते मेरे निकट आ गया। मैं एकदमसे चौंक उठी। कहानीके राजकुमारकी मुझे याद आयी। हृदयमें हलचल मच गयी। एक तरहकी पुकार, एक तृष्णा, एक अभिलाषा-सी मुझमें जागरित हुई। तीव्र इच्छा हुई—"क्या यह युवक मुझे अपने बाहुपाशोंमें ले, मेरे केशोंमें उंगलियोंसे कङ्घी करेगा ?" युवक चला गया।

मेरे एक जातीय बन्धुने, जार्ज कासलोवासकीसे, जो वारसाका प्रख्यात गायक था, स्विट्जरलैण्डमें भेंट करा दी। हम स्विट्जरलैण्डमें घूमते थे। एक दिन उसने हमें देखा; हमारी ओर दौड़ा आया। ऊंचा कद था। सिर्फ कमीज पहने हुए था। लम्बे-लम्बे हाथ घुमाता, काली-काली भौंहोंमें बल डालता हुआ, मेरे निकट आया। मेरे नेत्र उसके नेत्रोंसे जा मिले----उसी क्षण मैं उसकी प्रेयसी हो गयी।

उसके बाद हम दोनों एक हो गये। कादम्बरीमय जीवन व्यतीत करने लगे। कोलाहलसे परे, शान्त स्वतन्त्र स्विट्जरलैण्डके शुद्ध वायुका सेवन कर मनोवाञ्छित विहार करने लगे। एक साथ ही काननमें क्रीड़ा करते थे। पर्वतोंका उल्लङ्घन, मछलीका शिकार तथा सुधांशुकी शुभ्र किरणोंसे आच्छादित स्रोत तथा सरोवरोंमें जलविहार भी करते रहे। मेरे हृदयमें वासनाका स्रोत उमड़ रहा था तथा विचित्र प्रकारकी लज्जासे आकुल हो रही थी। वे सब विचार शब्द-चित्रके परे हैं।

एक दिन घर लौटते समय, रातको, जार्जने मुझे अपनी भुजाओंसे वेष्टित किया। सहसा मेरे कम्पित आतुर ओष्ठोंने निशाकालके प्रशान्त अन्धकारमें उसके ओष्ठोंका सुखद स्पर्श पाया। बस !!! सुखके ऋतुराज वसन्तके मधुर प्रेम-स्रोतका उद्गम यहींसे प्रारम्भ हुआ।*

* प्रख्यात नटी पोला नेग्रीकी आत्मकथाके आधारपर लिखित।

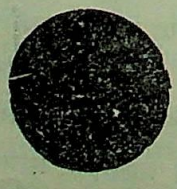

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सरोजिनी देवीकी कवितापर एक नजर

श्री शिवदेव उपाध्याय 'सतोश' बी० ए०

इस लेख द्वारा सरोजिनी देवीके उस जीवनपर एक नजर डालनेकी कोशिश की गयी है, जिस जीवनका महत्त्व उनके प्रारम्भिक जीवनकी मधुर और कोमल स्मृतियोंके आख्यानोंमें छिपा हुआ है। वे आख्यायिकायें उनकी वे कवितायें हैं जिनमें सरोजिनी देवीके व्यक्तित्वकी छाप प्रत्येक शब्दमें है। नग्न सत्यों और प्रच्छन्न छलनामयी कूटनीतियोंके कर्कश स्वरोंके बीच भी मधुर रागिनियोंकी वीणाके तारपर उंगलीके मिजराबकी एक कोमल चोट दे देना और फिर उस सुनहरी रागिनीसे विश्वको विमुग्ध कर देना सरोजिनी देवी-को छोड़कर और किसने सीखा? साहित्य और राजनीति दोनोंमें एक साथ ही और इतनी महान् सफलता पाना संसार-भरके महिला-मण्डलमें केवल एक सरोजिनी नायडूने ही सम्भव सिद्ध कर दिखाया अन्यथा यह असम्भव घटना थी। वास्तवमें सरोजिनी देवीको दोनों---कुछ अंशोंमें परस्पर विरोधिनी दिशाओंमें बहुत बड़ी सफलता मिली।

एक ओर तो सरोजिनी देवी वीरता-भरी ललकारसे वीरोंका आवाहन करती हैं, और दूसरी ओर वही सुनाती हैं—फूलोंकी रागिनियां, भौंरोंका रुदन, चांदकी हंसी, तारोंका विलाप, शिशिरका कम्पन और साधनके आंसुओं-का गीत। राजनीतिके कर्कश स्वरोंसे रणभेरी बजानेवाली वह रमणी कवित्वके किस सुनहरे लोकके मादक स्वप्नोंकी सृष्टि करती है, यह देखनेके लिए सरोजिनी देवीके पिछले जीवनपर नजर डालिये,---उस जीवनपर जिसमें उन्हें न केवल भारत और भारतीयोंने, बल्कि इंगलैण्ड और अंगरेजों-ने एक महान कवयित्रीके रूपमें स्वीकार किया था, उस जीवनपर जिसमें उन्होंने अंगरेजी भाषापर असाधारण अधिकार रखते हुए यह सिद्ध कर दिखाया कि भारतीय रमणियां अवसर पानेपर क्या कर सकती हैं, और उस जीवन-पर जिसमें उन्होंने कविताके कितने ही अमर ग्रन्थोंसे भारतीका अक्षय शृङ्गार बढ़ाया। सरोजिनी देवीके जीवनका वह कविता-काल था और इस लेखमें उसी कालपर एक किरण फेंकनेका प्रयास किया गया है।

अंगरेजी कविताको जिन रमणियोंने अपने हाथोंसे संवारा है उनमें इन पंक्तियोंके लेखकको तीन रमणियोंकी कवितायें बहुत पसन्द आयीं। एलिजाबेथ बेरेट (Elizabeth Barret) ने, जो पीछे चलकर मिसेज ब्राउनिङ्ग हो गयीं, केवल कुछ इनी-गिनी कवितायें लिखी हैं। किन्तु फिर भी उनकी Sonnets from the Portuguese, जो १८५० में प्रकाशित हुई थी, एक अमर पुस्तक हो गयी है और इन पंक्तियोंके लेखकको उसकी "How do I love Thee? Let me count the ways" कविता इतनी पसन्द आयी कि दो-तीन बार पढ़नेपर हमेशाके लिए स्मृतिमें अमर हो गयी। तरु लता अपने जीवनके प्रभातकालमें ही मुरझा गयी अन्यथा कौन कह सकता है कि कविता-गगनमें वह कितनी प्रज्वलित तारिका होती। मिसेज ब्राउनिङ्ग और कुमारी तरु लताके बाद लेखकको श्रीमती सरोजिनी नायडू बहुत पसन्द हैं। उनकी कवितामें वास्तवमें वे भाव पाये जाते हैं जो मनुष्यको इस जगत्से ऊंचा उठा सकें। मिल्टनने एक बार कहा था कि कवि वह है जो भावोंकी माला पहन-कर इस धरातलसे ऊपर उड़ता रहता है और सरोजिनी देवीकी कवितायें बतलाती हैं कि उन्होंने कितने ही स्थानोंपर जैसे इस जगत्को छोड़कर किसी परीके देशका वर्णन किया हो, किन्तु मानव-स्वभावका इतना सुन्दर चित्रण उनमें पाया जाता है कि आप क्षण-भरको भी उससे अलग न होना चाहेंगे। उनमें रोमान्स है, परन्तु कीट्सकी भांति नहीं, जिसपर आप मस्त तो हो जायें, पर विश्वास न कर सकें। उनकी कविता-में प्राणोंका स्पन्दन है, बसन्तका सौरभ है, रात्रिका सन्नाटा है, प्रेमका उन्माद है और स्मृतिका दंशन है। यद्यपि उन्होंने कुमारी जेबुन्निसाकी तरह कभी नहीं कहा :—

"दर सखुन मखफी शुदम मानिन्दे बू दर बर्गगुल"

फिर भी सरोजिनी देवी अपनी कविताओंमें स्वयं रहती हैं। उनके जीवनका अमर सत्य उनकी कविताओंमें बोलता रहता है। एक उदाहरण लीजिये। अपने भाग्यको चुनौती देते हुए वह कहती हैं :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"Tho' you deny the hope of all my being,
Betray my love, my sweetest dream destroy.
Yet will I slake my individual sorrow.
At the deep source of universal joy.
O Fate, in vain you hanker to control.
My frail, serene, indomitable soul."

अर्थात्—चाहे तू जीवनकी सारी आशाओंको नष्ट कर डाले, मेरे प्यारेको ठोकर लगाकर हटा दे, मधुरतम स्वप्नोंके तार तोड़ डाले, परन्तु फिर भी मैं अपने व्यक्तिगत दुःखोंको विश्वानन्दकी धारामें डुबाकर शीतल कर लूंगी, किन्तु भाग्य, तू मेरी क्षीण, शान्त और अजेय आत्मापर नियन्त्रण करनेकी चेष्टा व्यर्थ ही करता है।

ऊपरकी पंक्तियोंमें केवल सौन्दर्य ही नहीं है, केवल कविता ही नहीं है, बल्कि सत्य भी है। आज सब जानते हैं कि पक्षियोंके कलरवकी भांति उनका स्वच्छन्द जीवन कितनी ही बार जेलके पींजड़ेमें बन्द हो चुका है। अपने व्यक्तिगत सुखोंको उन्होंने वास्तवमें विश्वानन्दकी धारामें डुबानेका प्रयत्न किया। वे आज भी संसारमें सुख और शान्तिकी विलास-श्री देखनेके लिए आकुल हैं और अभी हाल हीमें महाकवि रवि बाबूके शान्ति-निकेतनमें एक व्याख्यान देते हुए उन्होंने कवियोंको विश्वशान्तिका उपदेश देनेका आह्वान किया था। उन्होंने मानवताके नामपर भारतीय जनताके सुखोंके लिए अनेक कष्टोंका आलिङ्गन किया और उन कष्टोंमें भी स्वतः सुखकी सृष्टि करनेवाली उनकी वे भावनायें ही हैं जिन्हें उन्होंने विश्वानन्द Universal joy कहकर पुकारा है। सरोजिनी देवीको छोड़कर और कितने ऐसे लोग हैं जो भाग्यको चैलेञ्ज देकर कहें कि:—

"O Fate, in vain you hanker to control.
My frail, serene, indomitable soul"

सरोजिनी देवीके शब्द इतने उपयुक्त और इस भांति रखे जाते हैं कि जरा भी इधर-उधर होनेसे औरका और हो जानेका भय हो जाता है। उनके उपयुक्त शब्द कहीं-कहीं एक विशेष अर्थ रखते हैं—अपने साधारण अर्थमें एक विशेषता पैदा कर देते हैं। ग्रीनिंग लैम्बर्न (Greening Lamborn) के शब्दोंमें महाकवियोंमें पायी जानेवाली यह एक महान् शक्ति है और श्रीमती नायडूमें यह शक्ति बहुत ही अच्छे रूपमें पायी जाती है। सर्व प्रथम उद्धृत किये गये गीतकी अन्तिम लाइन (My frail serene indomitable soul) की शब्द-योजनापर ध्यान दीजिये। सरोजिनी भाग्यको चैलेञ्ज तो दे देती हैं; किन्तु जब वह सोचती हैं कि आशाओंका अन्त हो गया है, मधुरतम-स्वप्न मिट चुके हैं। चारों ओरसे व्यक्तिगत दुखोंकी बाढ़ आ रही है, तब वे निराश हो जाती हैं, उन्हें अपनी स्थितिका ज्ञान हो जाता है, और इसलिए वे अपनी आत्माको 'क्षीण' (Frail) कह देती हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण इस क्षीण आत्मामें साहस बोल उठता है और वे अपनी उसी क्षीण आत्माके लिए 'शान्त' (Serene) विशेषण लगाती हैं और इसके बाद ही तुरन्त ही उनका जीवन ललकारसे भर जाता है और उन्हें विश्वास हो जाता है कि उनकी आत्मा 'अजेय' (Indomitable) है। भाग्य—उसकी तुलनामें निर्बल भाग्य उसपर विजय लाभ नहीं कर सकता, उसपर नियन्त्रण रखनेकी उसकी चेष्टा व्यर्थ है। आत्माको किस प्रकार उत्तरोत्तर बल मिलता गया है और ललकारपर किस प्रकार वास्तविकताका रङ्ग चढ़ता गया है, यह वास्तवमें देखनेकी चीज है।

अंगरेजीमें एक कहावत है, और सच है कि Poets are born, not made." संसारके सभी महाकवियोंके सम्बन्धमें यह कहावत सत्य चरितार्थ होती है। ब्लैकी (Blackie) ने जब Byron के लिए कहा था कि "He was an eagle and he must fly" तो उसके कहनेका भी यही अर्थ था। आदि कवि बाल्मीकि जन्मगत कवि थे। उन्हें क्रौंचकी क्षणिक विलाप-ध्वनिने कवि बना दिया। जिस अमर वस्तुको वे भूल गये थे, वही उन्हें याद आ गयी। सरोजिनी देवी भी जन्मसे कवि हैं। उन्हें कवि बनना नहीं पड़ा है। उन्होंने कभी कवि बननेका प्रयत्न नहीं किया। एक दिन अकस्मात् उनकी हृत्तन्त्री बज उठी और कविताका स्वर बज उठा। वे स्वयं लिखती हैं:—

"I do not think I had any special hankering to write poetry as a little child though I was of a very dreamy and fanciful nature".

तात्पर्य यह है कि 'बचपनमें मैंने कभी कविता लिखनेका प्रयास किया था, ऐसा नहीं मालूम होता, फिर भी कल्पना और स्वप्न मेरे स्वभावमें भरे थे।' इस प्रकारके स्वभावका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और दूसरा परिणाम क्या होता। बल्कि अगर सच पूछिये तो उनके कवि-जीवनके मार्गमें और भी कठिनाइयां आयीं। उनके पिता एक अच्छे गणितज्ञ थे और चाहते थे कि उनकी लड़की भी वही बने। लेकिन लड़की तो हुई थी कवि बननेके लिए, गणितज्ञ नहीं; और इसीलिए गणितका सवाल हल करते समय ही कविता निकल पड़ी। सरोजिनी देवीके कवि बननेका यही प्रारम्भिक इतिहास है।

इस प्रकार उनका काव्य-जीवन एक कहानीकी भांति शुरू हुआ और उन्होंने Lady of the Lake के बाद कई पुस्तकें Golden Threshold तथा Bird of Time लिखीं। उनकी कवितायें इतनी सुन्दर क्यों होती हैं, इसके सम्बन्धमें Arther Symons ने लिखा है :—

"सौन्दर्यकी आकांक्षाने उन्हें कवि बना दिया। सौन्दर्यके स्पर्शसे उनके स्नायुओंमें सदैव एक कम्पनमयी सिहर भर जाती। जिन लोगोंने उन्हें इंगलैण्डमें देखा है वे जानते हैं कि उनके शरीरका समस्त जीवन उनकी आंखोंमें लहराता दिखाई पड़ता और वह सौन्दर्यकी ओर उसी प्रकार आकर्षित होता जिस प्रकार सूर्यमुखीका फूल सूर्यकी ओर। वे निरन्तर खुलती चलतीं और यहां तक कि अन्तमें केवल उनकी आंखें दिखायीं पड़तीं।

* * *

इंगलैण्डमें सरोजिनी देवीकी कविताओंकी बड़ी प्रशंसा हुई और उनका नाम एक छोरसे दूसरे छोर तक पहुंच गया। उनकी कविताओंमें पश्चिमको पूर्वकी वह चीज दिखाई पड़ी जिससे उसका परिचय नहीं था। भारतीय शराबको सरोजिनी देवीने पश्चिमके प्यालेमें इस प्रकार ढाला कि पाश्चात्य संस्कृति प्राच्य कलापर विस्मय-विमुग्ध हो गयी। नीचे सरोजिनी देवीकी जो कवितायें दी जा रही हैं वे अपनी वकालत आप कर लेंगी। वास्तवमें सरोजिनी देवीकी कविताकी प्रत्येक पंक्तिका प्रत्येक शब्द प्रेमके मतवालेपनसे थिरकता रहता है। कोमल प्रेमकी मार्मिक निराशाओंने उनके कितने ही गीतोंको बहुत सुन्दर बना दिया है। उनके कितने ही गीतोंमें भारतकी आत्मा बोल रही है। यों तो आज उनका सारा जीवन ही देशको समर्पित है, उनकी कविताओंमें भी कहीं-कहीं देश-प्रेमकी सुधा बह रही है। शब्दोंपर इतना बड़ा अधिकार बहुत कम भारतीय कवियोंमें पाया गया है। कुछ गीतोंका प्रवाह इतना मधुर, इतना आवेगपूर्ण और इतना ध्वनिमय है कि उनको गाते-गाते वास्तविकताका अनुभव होने लगता है। 'नवबधूकी पालकी ढोनेवाले कहारोंका गीत', जिसे हम नीचे दे रहे हैं, इस समय भी पढ़ते-पढ़ते प्राण आनन्द-विभोर हो जाते हैं, और सङ्कोच, किन्तु सचाईके साथ कहना पड़ता है कि इस गीतने आज भी अतीत जीवनके कितने ही मधुरतम भावोंको जगाया है।

इस छोटे-से लेखके लिए कविताओंको चुन निकालनेमें वास्तवमें बड़ी कठिनाई हुई। सरोजिनी देवीका प्रत्येक गीत दूसरेसे सुन्दर है। किसे दिया जाय, किसे नहीं। कितने पाठकोंको यहां उद्धृत गीतोंसे भी अच्छे गीत उनकी पुस्तकोंमें मिलेंगे।

* * *

गुलाब पीले पड़ गये हैं और उनका सौरभ हवामें उड़ने लगा है। क्यों? इसलिए कि वे विकसित हुए हैं? इसलिए कि उनकी यौवन-मदिराकी सुगन्धि हवाको सुगन्धित करती हुई बह रही है?—नहीं। गुलाब ईर्ष्यासे कुम्हला गया है और सौरभ उसका रुदन है। फिर यह विलाप क्यों?—इसलिए कि राजकुमारी जेबुन्निसाने अपने गालोंपरका घूंघट जरा हटा दिया और गुलाबोंका नाज बस काफूर! वह अपने मदिर-सौन्दर्यकी प्रशंसामें स्वयं गाती है :—

When from my cheeks I lift my veil,
The roses turn with enevy pale.
And from their pierced hearts rent with pain,
Send forth their fragrance like a wail.

मुग्धाकी तरह सुन्दर और सौन्दर्यकी भांति आकर्षक एक दूसरा गीत देखिये। निराशा लहरें मार रही है। पल-पलपर प्रकाशकी क्षीण रेखा और निराशाकी तमिस्रा प्राणोंपर उठनेवाले उन्मादको ढक लेती है :—

"Alone, O Love, I breast the shimmering
waves,
The changing tides of life's familiar streams,
Wide seas of hope, swift rivers of desire,
The moon-enchanted estuary of dreams,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



But no compassionate wind or comforting
star,
Brings me sweet word of thine abiding place.
In what predestined hour of joy or tears,
Shall I attain the sanctuary of thy face.

हायरी निराशा !.....प्रत्येक पंक्तिमें आन्दोलन है। पढ़नेपर, समझनेपर और 'फील' करनेपर प्राणोंमें उथल-पुथल मच जाती है। दूसरी पंक्तिमें जीवनका क्षणिक परिवर्तन कितनी खूबीके साथ भरा हुआ है। तीसरी लाइनके आशाके विशाल समुद्रों Wide seas of hope तथा वासनाकी तीव्र-गामी नदियों swift rivers of desire को देखिये और अनुभव कीजिये कि इनमें संसारका कितना महान् सत्य सन्निहित है। मानव-जातिका दुर्भाग्य ! अपनी वासनाकी नदियोंको लेकर उसे न जाने कितनी बार आशाके विशाल समुद्रोंमें डूबना पड़ा है। फिर भी उसे इस बातका पता नहीं लग सका है कि किन घड़ियोंमें उसे अपने प्रियतमके मधुर दर्शन होंगे।

* * *

नववधूकी विदाई हुई है। कहारोंके कन्धोंपर एक पालकीमें संसारकी निधियां एक साथ ही बटोरकर किसीकी आशा-लता बैठी है। कहार इस अनुपम-सौन्दर्यको ढोनेमें एक प्रकारके आनन्दका अनुभव कर रहे हैं, और इसलिए वे थिरकते हुए, उस नव-बधूको लिये जा रहे हैं और साथ ही गाते जाते हैं :—

Lightly, o lightly we bear her along,
She sways like a flower in the wind of
our song,
She skims like a bird on the foam of a stream
She floats like a laugh from the lips of a dream.
Gaily, o gaily we glide and we sing,
We bear her along like a pearl on a string.

कहारोंका यह गीत वास्तवमें उस सुन्दर परी हीके योग्य है। मधुर शब्दोंने कितनी मधुरताकी सृष्टि कर दी। कितना जोरदार प्रवाह है। जरा अनुभव कीजिये, वे गाते हैं—हम उसे ले जाते हैं, हम उसे हल्केपनके साथ ले जाते हैं, वह हमारे सङ्गीत-समीरमें एक फूलकी भांति हिल रही है। वह एक पक्षीकी भांति नालेके फेनपर बहती चली जा रही है और वह स्वप्नके होठोंसे निकलनेवाली खिलखिलाहटकी तरह तैरती जा रही है। आनन्दोल्लासमें—हम सब आनन्दोल्लासमें जैसे फिसलते-से चले जा रहे हैं, और उसे—(उस रूपकुमारी—उस सौन्दर्यकी रानीको) तारपरके मोतीके समान लिये जा रहे हैं।

हल्केपनकी हद हो गयी है। वह रूपकी रानी फेनको केवल स्पर्श करती हुई, उसीपर बहती चली जा रही है। इस स्थलपर, इस नव-बधूके शरीरके हल्केपनका ध्यान आते ही सर वाल्टर स्काटकी एलेन (Ellen) को नहीं भुलाया जा सकता। अपने सुप्रसिद्ध Lady of the Lake में वह एलेनकी मधुर चालका वर्णन करते हुए कहता है :—

"A foot more light.....
Never from the heath-flower dashed
the dew;
Even the slight-hare-bell raised its head,
Elastic from her airy tread."
(Canto, I Lines 234-7)

स्काटने सचमुच गजब कर दिया है। परन्तु यह वर्जिल (Virgil) की नकल मालूम पड़ती है। वह केमिला (cammilla) के वर्णनमें एक स्थानपर लिखता है कि केमिला जब दौड़ती है तब जिन बालियोंपरसे वह दौड़ती है वे झुकती नहीं, और वह लहरोंपरसे फिसल जाती है।

"Over the unbending corn and skims
along the main"
(Aeneid B K VII. 1. 808)

ऊपरकी उद्धृत की हुई वर्जिलकी लाइनका आधा अंश स्काटने साफ-साफ उड़ा लिया है। और अगर दोनोंके मस्तिष्क एक ही भावपर न लड़ गये हों तो श्रीमती नायडूको भी इस अभियोगसे मुक्त नहीं किया जा सकता। उनकी नव-बधूको ढोनेवाले कहारोंके गीतकी पंक्ति "She skims like a bird on the foam of a stream" वर्जिलके skims along the main" को देखकर लिखी गयी मालूम होती है। पर सरोजिनीने पक्षी (Bird) और फेन (foam) लाकर सौन्दर्यमें चार चांद लगा दिये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लेकिन यह भी उनकी अपनी ही विभूति नहीं मालूम होती। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी नोबेल-प्राइज-प्राप्त गीताञ्जलिकी भूमिकाके लेखक सुप्रसिद्ध आइरिश कवि मि० विलियम बटलर यीट्स (Mr. W. B. Yeat) की एक बहुत सुन्दर रचना उनके एक संग्रहमें प्रकाशित हुई है जिसका शीर्षक है श्वेतपक्षी (The white birds)। उसकी दो लाइनें हैं :—

"I would that we were, my beloved,
White birds on the foam of the sea,"

"काश, मेरी प्रियतमे, काश, हम सागरके फेनपरके श्वेत पक्षी होते।"

प्रेमी अपनी प्रियतमासे पुनः कहता है :—

"For I would we were changed to white birds on the wandering foam".

"मेरी लालसा है कि हम लोग पक्षी बन जाते और निरन्तर बह रहे फेनके श्वेत पक्षी बन जाते।"

ऊपरकी पंक्तिके 'बह रहे' (wandering) शब्दमें कविताकी अच्छी विभूति भर दी गयी है। अगर यह न होता तो प्रेमीकी लालसा उतनी रोमैण्टिक न होती। सरोजिनी देवीने अपनी पंक्तिमें इस 'बह रहे' का प्रयोग नहीं किया है, लेकिन वह अनावश्यक भी था। नाले—Stream के लिए उसकी क्या आवश्यकता है।

दोनोंकी पंक्तियां खूबियोंसे भरी हुई हैं। शब्दों द्वारा जो अर्थ निकलता है, उसीके सहारे जरा समुद्रके फेनपर चलकर भावके अन्तस्तल तक पहुंचिये। पालकीके भीतरकी रूपकिशोरीके हल्केपनके साथ जाने तथा प्रेमीकी कवित्वपूर्ण लालसाका अनुभव कीजिये और तब आप कविर्मनीषी कीट्स (Keats) के साथ चिल्ला उठेंगे—"सौन्दर्यमें सदैव आनन्दोल्लास है"—A thing of beauty is a joy for ever." दोनों समकालीन कवि हैं। किसपर भावापहरणका दोषारोपण किया जाय।

इस स्थानपर एक बात और। ऊपरके उद्धरणोंमें नजाकतकी दो-तीन बातें कही गयी हैं। फेनपर फिसलना, बालियोंपर चलना और फूलोंपर चलना किन्तु उनका पुनः खड़ा हो जाना वास्तवमें नजाकतकी हद हो गयी होती अगर बिहारीने न लिखा होता :—

"भूषण भार संभारि है, क्यों यह तन सुकुमार।
चलति न सूधे पांव धरि, शोभा हीके भार॥"

और साथ ही अगर पद्माकरने न लिखा होता :—

"कोमल कमलके, गुलाबनके दलके,
सुजात गढ़ि पायन बिछौना मखमलके।'

पाठक देखेंगे कि ऊपरकी पंक्तिमें 'सु'ने सौन्दर्यका कितना सत्यानाश कर डाला है।

खैर आगे बढ़िये। कहार आगे बढ़ते हुए चले जाते हैं। वे गाते हैं—

Softly, o softly we bear her along,
She hangs like a star on the dew of our song,
She springs like a beam on the brow of the tide,
She falls like a tear from the eyes of a bride.
Lightly, o lightly we glide and we sing,
We bear her along like a pearl on a string."
(The Golden threshold.)

धीमे—हम उसे धीमे से ले जाते हैं, हमारे सङ्गीतके ओस-विन्दुओंपर वह एक तारिकाकी भांति लटक रही है, ज्वार-भाटेपर—ज्वार-भाटेकी भौंहपर वह एक किरणकी तरह नाचती चली जा रही है। वह एक दुलहन—एक नवबधूके अश्रुविन्दुकी भांति गिर पड़ती है और हम? हम लोग उसे—(उस सौन्दर्यकी रानीको) हल्के—हल्केपनके साथ लिये, गाते हुए जैसे फिसलते-से चले जा रहे हैं—हम उसे तारपरके मोतीकी तरह लिये जा रहे हैं।

कहनेकी आवश्यकता नहीं कि ऊपरकी पंक्तियोंमें कितना रोमाण्टिक तत्त्व' (Romantic element) है। वर्णन इतना सजीव है, जैसे कहार अभी-अभी आंखोंसे गुजरे हों, जैसे उनका सङ्गीत अभी भी कानोंमें गूंज रहा हो। सरोजिनी देवीकी कविताओंकी यह एक बहुत बड़ी विशेषता है कि वह छन्दोंका चुनाव तथा शब्दोंका प्रयोग इतना उपयुक्त करती हैं कि वास्तविकताका अनुभव होने लगता है। मेहंदीकी प्रशंसामें चार लाइनें देखिये :—

"A kokila called from a hennaspray,
Lira! liree! Lira! liree!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



Hasten maidens, hasten away,
To gather the leaves of the henna tree.

मेहंदीकी डालपरसे एक कोयल चिल्ला उठी—लिर्रा, लिर्रा, लिर्रा, लिर्रा, कुमारियो! बढ़ो, द्रुतवेगसे बढ़ो—मेहंदीके पत्ते इकट्ठा करनेमें जल्दी करो!

* * *

सरोजिनीके कितने ही गीतोंमें आध्यात्मिक गम्भीरता पायी जाती है। उनके कितने ही गीत अत्यन्त गूढ़ सूफी विचारोंसे भरे पड़े हैं। एक जगह वह लिखती हैं—

"But in the desolate hour of midnight when
An ecstasy of stary silence sleeps
O'er the still mountains and the soundless deeps,
And my soul hungers for thy voice, O, then,
Love, like the magic of melodies,
Let thy soul answer mine across the sea.

किन्तु आधी रातकी सूनी घड़ियोंमें जब तारकोंका नीरव आनन्द, एकान्त पर्वतों और शान्त समुद्रोंपर सोने लगता है और मेरी आत्मा तुम्हारे कण्ठस्वरके लिए आकुल हो उठती है, उस समय प्यारे! मुक्त सङ्गीतके जादूकी भांति तुम मेरी आत्माकी पुकारका उत्तर देना—समुद्रके उस तटसे उत्तर देना।

इसीसे मिलती-जुलती, इसीकी भूली और टूटी हुई प्रतिध्वनि एक उर्दू कविके हृदयसे टकराकर उठती है—

"एक टीस-सी दिलमें उठती है, एक दर्द जिगरमें होता है,
हम रातको बैठके रोते हैं, जब सारा आलम सोता है।"

लेकिन नहीं, यह ध्वनि सरोजिनी देवीकी पुकारके बहुत पीछे है। इसमें केवल रुदन है, आकुलता भी है, परन्तु आत्माकी वह उत्कण्ठा तो नहीं, जिसने इस आकुलतामें भी आध्यात्मिक उत्कण्ठा (Spiritual eagerness) भर दी है। यह उर्दू कवि आवश्यकतासे अधिक कह गया। इसमें वासनाके उन्माद (Passion) की झलक आ गयी। साथ ही सरोजिनीकी तरह वह आशावादी नहीं, वे व्याकुल होती हैं, उनके प्राण प्रियतमके कण्ठस्वरके लिए विकल हो उठते हैं, किन्तु उन्हें आशा है, उनका प्रियतम समुद्रके उस छोरसे उत्तर देगा। न भी दे, आशा करना क्या बुरा है, जब कि इस नीरव रजनीमें, तारोंसे भरे हुए नीलगगनके नीचे केवल आशायें ही हृदयके प्यारको पालती चली आ रही हैं। उनकी आत्माको आशा है, प्यारकी आत्मा उसका जवाब देगी और तब क्या वह एकात्म्य (oneness) का अनुभव नहीं करेंगी? एक उर्दू कविकी दो लाइनें हैं—

"जमानेमें जब आधी रातको होता है सन्नाटा।
बराबर आपकी आवाज आती है मेरे दिलसे॥"

'आपकी आवाज' और आती है 'मेरे दिलसे' बहुत सुन्दर है। अगर यह केवल कल्पना और महफिलमें रङ्ग जमानेके लिए केवल ऊंची उड़ान नहीं है, जिसके रोगी उर्दू के अधिकांश कवि हैं, तो वास्तवमें सराहनीय चीज है।

प्रेमी और प्रियतमामें निरन्तर प्रेमपूर्ण द्वन्द्व होता है। कदाचित प्रियतम प्रियतमामें अपने लिए अपनेसे कम प्रेम पाता है, इसलिये वह शिकायत करता है जिसका उत्तर प्रियतमा देती है—

You haunt my waking like a dream
my slumber like a moon,
Pervade me like a musky scent,
possess me like a tune,
What war is this of thee and Me?
Give o'er the wanton strife,
You are the heart within my heart,
the life within my life.

मेरे जागरणकी अवस्थामें एक स्वप्न तथा मेरे सोते समय एक चांदकी भांति तुम मुझे घेरे रहते हो। मृगमद-सौरभकी तरह मुझमें—मेरे चारों ओर फैले रहते हो और एक रागिनीकी भांति तुम मुझमें व्याप्त रहते हो। यह द्वन्द्व —'तेरे' और 'मेरे'का यह द्वन्द्व कैसा? इस निरर्थक झगड़े-को छोड़ दो, तुम मेरे हृदयके हृदय और मेरे जीवनके जीवन हो।

सरोजिनीकी यह कविता वास्तवमें बहुत ही मार्मिक है। इस भावपर—प्रियतमको सर्वथा अपने ही अन्तरके अन्तस्तलमें देखनेकी भावनापर—संसारके अनेक महान् कवियोंने लिखा है। किन्तु सबको उद्धृत कर यहां तुलना-त्मक विवेचन करनेका न तो समय है न स्थान।

इस स्थलपर पाठक केवल दो उद्धरणोंसे सन्तोष करें। कवीन्द्र रवीन्द्रने लिखा है—'He is in the pupils of my eyes that is why I see him every where"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कबीरने लिखा है—

"हमन है इश्क मस्ताना, हमनको होशियारी क्या ?
हमारा यार है हममें, हमनको बेकरारी क्या ?"

* * *

इस स्थानपर सरोजिनीकी देशभक्तिपूर्ण कवितायें नहीं दी जा रही हैं। उनमें भी उनकी कवित्वकलाका अच्छा विकास हुआ है। हो भी क्यों न ? उनमें ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा है। राष्ट्रकी आवाज सुनकर आज वे अपनी स्वाधीनता—कविकी स्वाधीनता—खो बैठी हैं। आजकल उनकी रचनायें देखनेमें आती नहीं, किन्तु सच तो यह है कि उनका सारा जीवन ही कवित्वमय है। उनके कितने ही भाषणोंमें—जो अमेरिका, इंगलैण्ड आदि कितने ही सुदूर पाश्चात्य और प्राच्य देशोंमें दिये गये हैं—सुन्दर कवित्वकलाके दर्शन हो जाते हैं।

सरोजिनी देवीकी प्रतिभाकी एक खास विशेषता यह है कि उन्होंने जिस किसी भी क्षेत्रमें काम किया उसीमें उनकी सफलता रही। राष्ट्रकी पुकार सुनकर वे उसकी पताकाके नीचे आकर खड़ी हो गयीं और उन्होंने अपनी योग्यतासें सिद्ध कर दिखाया कि भारतीय रमणियां अवसर पानेपर कैसा कार्य कर दिखा सकती हैं। जिन सरोजिनी नायडूने एक बार आनन्दोल्लासमें मस्त होकर कहा था "मैं पक्षियोंकी भांति कलरव करती हूं।" "I sing as birds do" उन्हींने अब "My little songs good bye" कहकर कविताके गानसे शायद सदाके लिए विदाई ले ली है।

---

# इङ्गित

*किसलयके कोमल लघुवय—*
*देख जलाशयमें न मृणालोंका विगलित जीवन मृण्मय !*
*पूर्णय-घृणा, विग्रह-परिणय,*
*चय-व्यय, विनिमय, क्रय-विक्रय ;*
*अस्तोदयके रथपर द्रुत चल रहा प्रलयका क्रम अव्यय !*
*किसलयके कोमल लघुवय—*
*देख न वन्यामें वनकन्याका वसन्त-विकसित अभिनय !*
*बढ़ अपने पथपर निर्भय ;*
*ले अनन्त आशा अक्षय !*
*यह सीमाको लांघ पड़ी हिमगिरिकी वरशृंखला अजय !*
*किसलयके कोमल लघुवय—*
*देख न भाग्य-विपर्ययमें परिमन्द भाल-लिपिका आशय !*
*अनुप्राणित कर प्रतनु हृदय ;*
*अचल लक्ष्य, साहस अनिलय !*
*दुस्तर है इस कण्टक-वनमें शीतल छायाका पूश्रय !*
*किसलयके कोमल लघुवय—*
*देख न कन्थाके कोनेमें दुर्बल सम्बलका सञ्चय !*

—आरसीप्रसाद सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मलायामें इन्द्रजाल और टोना-टुटका

डा० ए० पी० मिश्र

यों तो संसारके प्रायः समस्त देश जादू-विद्यामें थोड़ा-बहुत विश्वास रखते हैं, किन्तु मलेशियामें इसका प्रचलन सबसे अधिक है। बड़ोंके कुछ द्वीपोंके आदि निवासी तो अब भी इन्द्रजाल और टोना-टुटकाके अन्धविश्वासी बने हैं। अन्य द्वीपोंमें हिन्दू और इसलाम-संस्कृतिने कई शताब्दी पहले ही इन अन्धविश्वासोंकी जड़ें खोद डाली हैं; किन्तु गण्डे-तावीज और झाड़-फूंकसे भूत-प्रेत-बाधा दूर करनेवाले ओझाका अस्तित्व वर्तमान समयमें भी प्रायः सर्वत्र बना है। कभी-कभी वह प्रेतात्माओंपर अपने पैतृक अधिकारके बलसे बड़े-बड़े काम कर दिखलाता है। अपनी झाड़-फूंक और विचित्र मायाके लिए उसे विशिष्ट सम्मान प्राप्त है।

इन्द्रजालके प्रति मलायावासीके आधारभूत विश्वासोंको भली प्रकार समझनेके लिए पहले यह जान लेना चाहिए कि मानवात्माके सम्बन्धमें उसके विचार क्या हैं। आत्माको वह शरीर-रूपी गृहमें बन्द रहनेवाली प्राणशक्ति समझता है और साथ ही यह भी समझता है कि सोते वक्त, बेहोशीकी हालतमें और रोगके समय आत्मा मनुष्य-शरीरसे अनुपस्थित रहती है और मृत्युके पश्चात् स्थायी रूपसे शरीरका परित्याग करती है। शरीरको त्यागकर जीवात्मा वामन-रूप धारण करती है और उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग शरीरकी दृष्टिसे आनुपातिक रूपमें बड़े-छोटे होते हैं। इसका रूप मनुष्यके हाथके अंगूठेके बराबर होता है। इस आत्माके सम्बन्धमें मलायावासीकी यह धारणा होती है कि यदि इसका ठीकसे आह्वान किया जाय तो यह निर्देशित कार्यों-को अवश्य पूरा करती है। उसे इस बातका पूर्ण विश्वास रहता है कि प्रेतात्माकी सहायतासे वह अपने विरोधीका प्राणहरण कर सकता है; साथ ही वह इस बातको भी नहीं भूलता कि उसका विरोधी भी इसी प्रकार उसके शरीरको निष्प्राण बना सकता है। यद्यपि शरीरसे आत्मा-का अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध होता है, फिर भी मलायावासी यह सोचता है कि वह एक व्यक्तित्ववर्जित तत्त्व है जो शरीरमें उस समय प्रवेश करता है जब दाई बांसकी छुरी या अपने दांतोंसे नाल छीलती है। शरीरके जिन भागोंमें, जैसे कि पेड़ू, सिर, यहां तक कि बालोंमें भी, आत्मा रहती

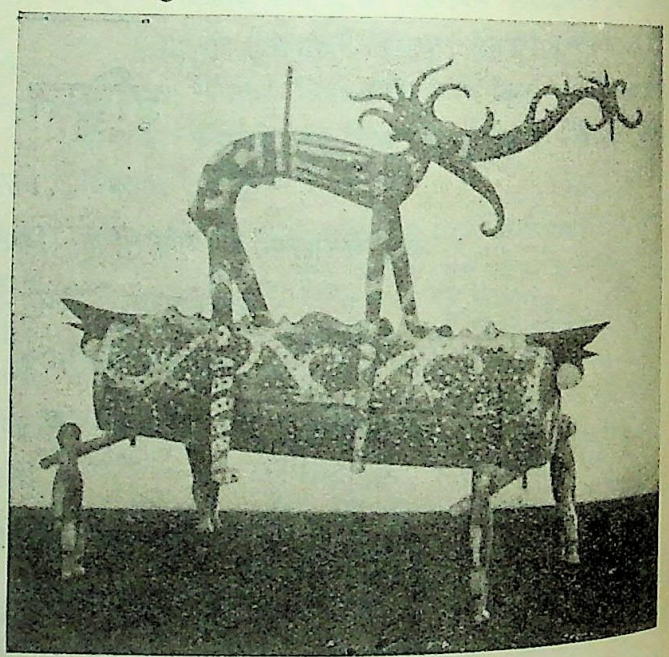

मलेशियावासियोंका विश्वास है कि जन्म और मृत्युके समय भूत-प्रेतोंकी हरकतें बढ़ जाती हैं। प्रतिषेधके लिए वे कल्पित सपक्ष भुजङ्गाकार शवाधार निर्मित करते हैं जो काठके पुतलोंके कन्धोंपर रखा रहता है।

है, उन्हें शत्रुओंके टोना-टुटकासे सुरक्षित रखना पड़ता है। अस्तु।

किसीको यह सुनकर आश्चर्य न होना चाहिए कि मलेशिया निवासियोंको भूत-प्रेतका भय प्रायः सर्वदा बना रहता है। मलायामें ऐसा एक भी गांव नहीं जहां भूत-प्रेतादिका गुप्त वासस्थान न हो। लोगोंकी धारणा है कि पुराने पेड़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और खण्डहरोंमें भूत-प्रेत अवश्य रहते हैं। मलायावासी अन्धकारसे इतने भयभीत होते हैं कि आकस्मिक आवश्यकताके बिना वे गोधूलि वेलाके पश्चात् कभी घरसे बाहर पैर नहीं निकालते। यदि बाहर निकले बिना काम नहीं चलता तो वे हाथमें मशालें लेकर मन्त्रोच्चारण करते हुए निकलते हैं। घरसे बाहर निकलनेपर पहले तो आगेकी ओर उनके पैर ही नहीं पड़ते। वे चारों ओर चौकन्ने होकर देखते हैं और फिर हृदयमें साहस सञ्चयकर आगेकी

मलेशियाके आदिम निवासी—जैसे कि बोर्नियोके ड्याक—ही नहीं बल्कि संस्कृत जावा निवासी भी जादू-विद्यामें विश्वास रखते हैं। इस चित्रमें बोर्नियोके ड्याकोंका युद्धनृत्य दिखाया गया है।

और बढ़ते हैं; किन्तु उनके हृदयमें भयका ऐसा विकट साम्राज्य स्थापित हो जाता है कि पत्तियोंकी जरा-सी सराहट सुनकर भी उनके शरीरका खून सूख जाता है और वे समझ लेते हैं कि अब जान गयी।

वैसे तो आज समस्त मलेशियामें इसलाम मजहब फैला हुआ है, यद्यपि नाममात्रके लिए; किन्तु जिस समय मलेशियापर मुसलमानोंका धावा हुआ और मलेशियावासियोंको इसलाम धर्ममें दीक्षित करनेकी चेष्टा की जाने लगी उस समय देखा गया कि मलेशियन ओझे पहले हीसे भारतीय पण्डितोंकी, जिनसे उन्होंने भविष्यवाणी-विद्या और झाड़-फूंकका ज्ञान प्राप्त किया है, चरण-शरणमें आ गये हैं। मलायावासी आकाशको पिता और पृथ्वीको माता समझते हैं। उनकी धारणा है कि प्राचीनकालमें सूर्य और पृथ्वीके भी मानव स्वरूप थे। सूर्य पुरुष और पृथ्वी स्त्री है। पृथ्वीके सम्बन्धमें वे यह समझते हैं कि यह अण्डेके आकारकी है और अपनी धुरीपर सालमें चार फेरे करती है। सूर्यको वे गतिवान अग्निपिण्ड समझते हैं और समझते हैं कि दिन और रात्रिका सृष्टिकर्ता सूर्य ही है। मलायाके अत्यन्त आदिम कबीले दो महान् शक्तियों—सूर्य और पृथ्वी अथवा पुरुष और स्त्री—पर अधिक विश्वास करते हैं। बोर्नियोके ड्याकोंकी धारणा है कि संसारकी सृष्टि सूर्य और पृथ्वीने ही की है। मलायाके नवान्न समारोहोंके अवसरपर आकाश पिता और पृथ्वी माताका विशेष रूपसे आवाहन होता है। सम्भव है कि अत्यन्त प्राचीन कालके मलायावासी टोना-टुटकाके अवसरपर सूर्यकी शुभात्मा और चन्द्रमाकी अशुभात्माका आह्वान करते रहे हों। मलायावासी एक और अशुभ आत्माका अस्तित्व मानते हैं। इसके सम्बन्धमें उनकी धारणा है कि यह पृथ्वीकी नसोंके भीतरसे यात्रा करती है और पृथ्वीके द्वारपर सोती है। इस अशुभ आत्माको मलायावासी "पृथ्वीका राजा" कहते हैं। इस अशुभ आत्माके सम्बन्धमें कुछका विश्वास है कि यह जङ्गलोंमें घूमती है; इसकी ऊंचाई नौ इञ्च होती है, कनपटीके ऊपर दोनों तरफ गञ्जा रोग होता है। बाल उलझे हुए, आंखें लाल, दांत सफेद और हाथ विकृत होते हैं।

दूसरे देशोंके अधिवासियोंकी भांति मलायाके आदिम निवासी भी जादूके जोरसे रोग अच्छा करते हैं। उनकी इस क्रियाका आधार 'समस्य सममौषधम्' है। उदाहरणके लिए, कुछ मलायावासियोंकी धारणा है कि हल्दी अथवा केसरके पौधेसे पाण्डुरोग अच्छा हो जाता है। चर्मरोग होनेपर वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक प्रकारके पत्थर गलेमें लटकाते हैं। चूंकि इन पत्थरोंका रङ्ग मांसकी तरह होता है, इसलिए वे समझते हैं कि इनके पहननेसे चर्मरोग अवश्य अच्छा हो जायगा। कई प्रकारके रङ्गोंसे भी वे जादूके प्रयोग करते हैं। कुदृष्टिसे बचनेके लिए वे लाल ऊनी धागा बांधते हैं।

जादू-चिकित्सामें नींबूका भी प्रमुख स्थान है। सब तरहके घाव नींबूसे आराम किये जाते हैं। क्योंकि मलाया-वासियोंका विश्वास है कि नींबूका अम्ल स्वाद भूत-प्रेतों-को अत्यन्त अप्रिय है। लारमें भी यथेष्ट जादू-शक्ति मानी जाती है। जब किसी मलायावासीके घाव हो जाता है तो वह उसे कुत्तेसे चटवाता है; क्योंकि वह जानता है कि कुत्ते

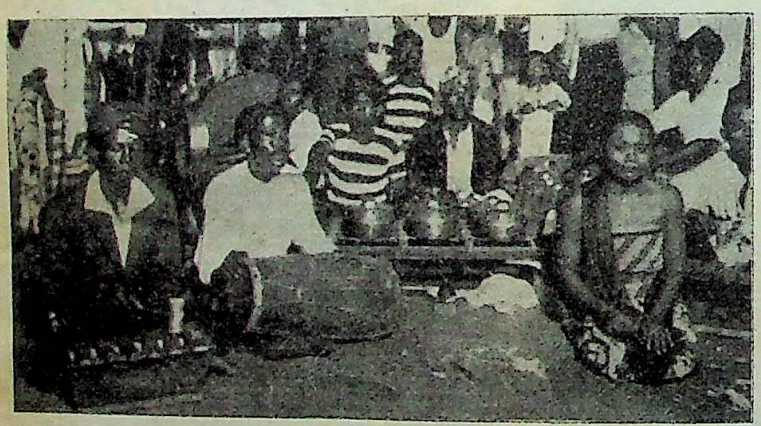

सुमात्राके एक त्योहारके अवसरपर पुरोहितिन वाद्ययन्त्रोंका आनन्द ले रही है। ग्रामीण भी बड़े ध्यानसे सबकुछ देख-सुन रहे हैं।

अपने घाव चाटकर ही आराम करते हैं। जब किसीको बिच्छू या कनखजूर काट खाता है तो उसकी चिकित्सा मुर्गीके बच्चेकी लारसे की जाती है। मुर्गीके बच्चेके गलेमें एक पङ्ख अटका दिया जाता है और लार उसीमें चिपट जाती है। उसकी लार बिच्छू काटनेकी दवा यों समझी जाने लगी कि वह बिच्छू, कनखजूर आदि जहरीले कीड़ोंको खा जाता है।

बोर्नियोके ड्याकोंका मत है कि जब कोई पुरुष आहत होनेपर मृत्यु-मुखमें गिरता है तो उसकी प्रेतात्मा बड़ा ही विकराल रूप धारण करती है। अच्छे पुरुष कभी आहत नहीं होते और न उनकी अकाल मृत्यु होती है।

प्रायः सभी मलायावासी कुछ विशेष व्यक्तियोंके भूतोंसे बहुत डरते हैं। उनका विश्वास है कि दीर्घजीवी व्यक्ति और युवक, मरनेपर भयङ्कर भूत होते हैं। प्रसूताकी चुड़ैल, जो गर्दनके पीछे अंतड़ियोंके रूपमें कल्पित की गयी है, उन्हें विशेष अनिष्टकारक जान पड़ती है। रातको यह जुगनूकी भांति चमकती है। किन्तु सबसे अधिक भय उन्हें उस रक्तशोषक चुड़ैलसे लगता है जो जच्चा और गर्भ-वती स्त्रियोंपर भयङ्कर चोट करती है। इस रक्तशोषक चुड़ैलके सम्बन्धमें मलायावासियोंमें एक कहानी प्रचलित है कि किसी धर्मगुरुके एक लड़की थी। पूर्ण नियन्त्रणमें रखने-पर भी वह एक पुरुषसे फंस गयी और गर्भ रह गया। जब उसके प्रेमीको यह बात मालूम हुई तो उसने लड़कीसे भाग चलनेको कहा। जङ्गलमें पहुंच कर प्रेमीने एक बार फिर उसके साथ सम्भोग किया और फिर गला घोटकर उसके प्राण ले लिये। मरनेपर वह लड़की रक्तशोषक चुड़ैल हुई और प्रतिहिंसाके रूपमें उसने अपने प्रेमीका अन्त कर दिया। तबसे वह चुड़ैल बराबर जच्चा और गर्भवती स्त्रियोंपर चोट किया करती है। यह कहानी किसी-न-किसी रूपमें समस्त मलेशियामें प्रचलित है, किन्तु कुछ लोगोंकी धारणा है कि उक्त रक्तशोषक चुड़ैल किसी व्यभिचारिणी स्त्रीकी दुरात्मा है।

ज्योंही मलाया स्त्री गर्भवती होती है वह अपने साथ अनिवार्यरूपसे लोहेका चाकू लेकर चलती है और इस प्रकार भूत-प्रेतोंको पास फटकने नहीं देती। गर्भवती स्त्रीका पति भी कुछ विशेष नियमोंका पालन करता है, ताकि रक्तशोषक चुड़ैल कहीं उसकी स्त्री-पर चोट न कर बैठे। यदि वह गोधूलिके बाद कहीं जाता है तो वापस आनेपर सीधे घर नहीं आता, बल्कि पहले अपने मित्रके घर जाता है, ताकि कोई भूत-प्रेत उसके साथ उसके घर न जा सके।

मलायावासी सन्तानोत्पत्तिके अवसरपर कुछ विचित्र कार्य करते हैं। उदाहरणके लिए, उत्तरी सेलीब्सके अलफरीज कबीले सन्तानोत्पत्तिपर नारियलका पौधा लगाते हैं और उसे उस पानीसे सींचते हैं जिसमें नवजात शिशु और उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटि-कोटि भारतके दु:खियोंके जीवन-धन,
तकली व चर्खा बस ये ही दो सहारे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## असेम्बलीके कुछ निर्वाचित कांग्रेस सदस्य :—

श्रीयुत सत्यमूर्ति

मि० आसफअली

सरदार योगेन्द्र सिंह

भूलाभाई देसाई

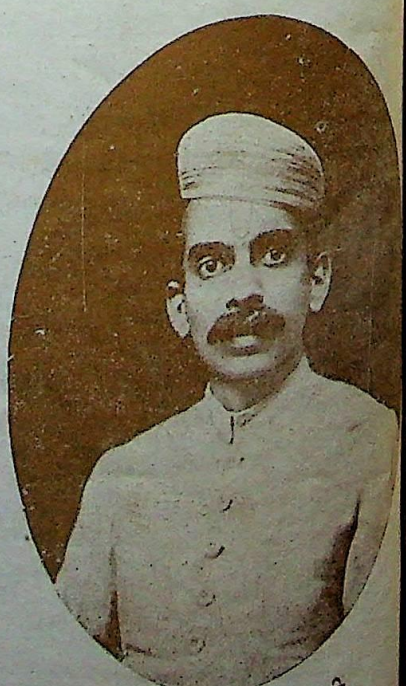

सेठ गोविन्ददास जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कलाईपर चमड़ेमें जड़ी 'कीप सेक' बैठी मिनिट-मिनिट सरक रही थी।

"दिलसे साहब हम महात्माजीके साथ हैं। लेकिन घरबार है, बाल-बच्चे हैं। एकदम तो सबकुछ छोड़ा नहीं जा सकता। हमारे कस्बेमें भी एक बार महात्माजी आये थे।

कुछ देरमें एक स्टेशन आया, रेल ठहरी और बराबरकी बेंचसे एक महाशय वहां उतर गये। सज्जन उठ कर उस खाली जगह चले गये।

मैंने कहा—बैठिए, बैठिए।

बोले—मैं ठीक हूं, आप आराम कीजिए।

उन्होंने अपनी आंखोंके सामने अखबार फैला लिया और मैं कुछ देर टालकर बिस्तरपर लेट गया।

अखबारका यह सफा देखा, वह सफा देखा, वान्टेडपर कुछ देर रुके और तीन-चार मिनिटमें अखबार मेरी ओर बढ़ा कर कहा,—'लीजिए साहब। थैंक्स।'

अखबार लेकर मैंने तकिएके नीचे डाल लिया। अब वह रेलकी खिड़कीकी राह बाहर भागते हुए खेतोंकी ओर देखने लगे। मालूम हुआ—वे इसमें बहुत मग्नता पा सकते हैं। मानों उन्हें वहांसे कुछ संदेश-सा, कुछ विस्मृति-सी अथवा कुछ स्मृति-सी प्राप्त होती है। वे कुछ देर चश्मेमेंसे बाहरका दृश्य देखते, कुछ देर बाद चश्मा माथेपर चढ़ा लेते और खुली आंखोंसे दृश्यपान करते।

मैंने पूछा—कहिये आप कहां जायंगे?

बोले—मैं भी दूर नहीं जाऊंगा।

मैंने पूछा—क्या कारबार है? मुलाजमत करते हैं?

"करना कराना तो साहब सब निबटा चुका। अब तो भगवानका सुमरन ही है।"

"पेन्शन हो गई है?"

"जी हां, बाल-बच्चे काम संभालते हैं।"

मैंने कहा—बड़ा लड़का है? क्या उमर है?

"तीस बरसका होगा। रेलमें ३५) का नौकर है।"

"और उसके भाई-बहन हैं?"

"जी हां, चार भाई और चार बहनें और हैं।"

"सबकी ब्याह-शादी हो गयी?"

"नहीं साहब, दो लड़के और दो लड़कियां अभी छोटी हैं।"

"क्या पेन्शन है?"

"अजी पैंतीस रुपये मिलते हैं। बीस रुपयेसे मेरी नौकरी लगी थी। रिटायर होते वक्त सत्तर तक पहुंच गया।..... दो लड़के हाई स्कूलमें पढ़ते हैं। छोटा प्राइमरीमें है। बड़े दो नौकरीसे लगे हुए हैं। दो लड़कियोंके हाथ पीले कर ही चुका, बाकी दोनोंके ब्याहमें दो-दो ढाई-ढाई हजार और लगाना है। वह भी हो जायगा। लड़कोंके लिए दो अलग मकान बनवा दिये हैं। अपना फर्ज इतना ही कर देना है। आगेको भगवान जानें। वे हैं और उनका भाग्य। अजी कौन किसका करता है। सब अपने करमका खाते हैं। जितना हो सका कर दिया है और अपना क्या है। दो साल और रहा तो बीमेकी रकम भी पक जायगी। आठ हजार वह हो जाएंगे। ये सब बाल-गोपालका ही समझिये। हमें अपने लिए अब क्या करना है? दो रोटी और रामका नाम।"

मैंने पूछा—आपकी पेंशन पैंतीस रुपये है न? फिर यह सब आपने कैसे बन्दोबस्त कर लिया?

वह हँसे नहीं, रुष्ट भी नहीं हुए, उन्हें जैसे विस्मय हुआ और उन्होंने कहा—तनख्वाह बीससे ही शुरु हुई थी, लेकिन उसीके भरोसे कौन रहता है?

मैंने कहा—रेलमें इतनी आमदनी है?

बोले—"करनेवालेके लिए सब जगह रास्ते हैं। अन-सुझतेके लिए क्या कहा जाए।"

मैंने कहा—तब तो आप बेफिक्र हैं?

बोले—"जी हां, मैं किसी खटरागमें नहीं हूं। दुनिया देखी, सब माया है। सब परपञ्च है। जितना मोह करो, उतना ही वह खाता है और कुनबेवाले क्या? सहाई क्या? अपना असलमें कोई भी नहीं है। सत्त नाम ही अपना है। और कुछ साथ नहीं जाता।

मैं सज्जनकी ओर देखने लगा। वह हर भांति सम्भ्रान्त और शीलवान दीखते थे। देखते ही उनके प्रति आदर होना स्वाभाविक था। उनके जीवनमें और उनके मनमें शंकाका कीड़ा कहीं न दीखता था और पचास-पचपनके होने पर भी उनके चेहरेपर और कदाचित् हृदयपर भी विशेष रेखाएं न बनी थीं।

मैंने तब हठात् अपने तकिएके नीचेसे अखबार झपट कर खींच लिया। उसमें आंख चिपका मैं तकिएके सहारे सीधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तरह लेट गया। पलकोंपर सपने-से आने लगे और मैं सो गया।

मुझे प्रतीत हुआ जैसे मैं कहीं बागमें हूं और ऊंचे-ऊंचे पेड़ हैं और बहुत-सी मधुमक्खियां भनभन कर रही हैं। मैं दोनों हाथोंसे उन्हें हटाना चाहता हूं, पर उनकी भनभनाहट दूर नहीं होती। वे इकट्ठीकी इकट्ठी मिलकर चारों ओर घुमड़ रही हैं। मुझे भय है वे मुझे काटेंगी। मैं हटाना चाहता हूं वे नहीं हटतीं। मैं संकटमें हूं।···

तभी सहसा मेरी आंख खुली। मैंने पाया, सज्जन अपनी सीटपर बैठे आंख मूंदे कुछ गुनगुना रहे हैं। मुझे मालूम हुआ वह भगवानमें लीन हैं। वह जैसे मचल-मचलकर कहना चाह रहे हैं—

"सान्ताका रंग भुजक सेनंग पदम नाबं सुरेखम्" वह खूब भावसिक्त हैं, आर्द्र हैं, और उनका सिर रहरहकर भक्तिमें डोल रहा है—

"विसिआधारं गगनस दिसां मेघ वर्णन सुभांगम्।"

मैं फिर सोनेकी चेष्टा करने लगा। लेकिन श्लोकके दुहराये जाते चरण रुक-रुककर मेरे कानोंपर लगते थे। और मैं सोचता था—भक्ति मौनावलम्बी हो तो क्या उसकी कम सुनायी होती है? लेकिन श्लोक तो पूरा होता ही रहा—

"लक्ष्मीकान्तं कमल नैनं योगि बिन्ध्या सुनगरम्।"

फिर चौथा चरण भी आया—

"बन्दे विष्णुंभवभय हरम सर्व लोकैअनाथम्।"

उसके काफी देर बाद तक आंखें उनकी मुंदी रहीं। फिर जब वे खुलीं, मालूम होता था वे नयी-हो-नयी इस दुनियाकी मायापर खुली हैं। और यह माया उनकी कोरी दृष्टिसे एकदम नीचे है।

उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा—"आपने यह पुस्तक देखी है?" और जेबमेंसे वह पुस्तक निकाली। मैंने पुस्तकका नाम देखा—'तत्वचिन्तामणि।' वह पुस्तक वास्तवमें मेरी बहुत ही रुचिकी पुस्तक थी। एकबार देखकर मैंने उसे अपने स्वाध्यायकी पुस्तक बनाना चाहा था। लेकिन उसी पुस्तकको उनके हाथोंसे अपनी ओर बढ़ती आती पाकर मुझे असमञ्जस हुआ। उस पुस्तकको उस समय हाथमें लेकर उलटना-पलटना और उसकी प्रशंसा करना मुझे रुचिकर न हुआ। मैंने कहा—जी हां, आपको इस पुस्तकमें रस मिलता है?" बोले—अपूरब पुस्तक है। आपने कल्याण पत्र देखा है? गोरखपुरके ये कल्याणवाले लोग बड़ा उपकारका काम कर रहे हैं।

मैंने कहा—जी-हां, जी-हां।···आप संस्कृत तो खूब जानते होंगे।

बोले—अजी नहीं साहब। संस्कीरत जानते तो नहीं। लेकिन देवभाषा तो साहब वही है। और उसमें कितना मिठास है, देखिये—

"सान्ताका रँग भुजगसेनँग·····"

और दो दो बार दुहराकर श्लोकके पूरे चारों चरण उन्होंने मुझे फिर सुनाये।

और भी गहन तत्त्वकी और दर्शन भक्तिकी बातें वह मुझसे करते रहे। गनीमत यही थी कि मुझे पास ही उतरना था। मेरा स्टेशन आया और मैंने उतरते हुए सज्जनसे बिदा ली।

उन्होंने कहा—"अच्छा जाइयेगा? भगवान कुशल-मङ्गल रखे।" और बिस्तरको लपेटते हुए जो मेरा अखबार नीचे गिर गया था उसे उठाकर, मुझे दिखाकर सज्जनने कहा—क्या इसकी आपको जरूरत है? मैंने कहा—नहीं, नहीं आप रखिये।

और मैं चला आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सीमा प्रान्तका भ्रमण

श्री ठाकुर हरिहर सिंह

रावलपिण्डीसे ट्रेनमें आगे बढ़नेपर कुछ दूरी तक खेतोंकी हरियालीकी अपूर्व छटा दिखाई पड़ती है। कुछ देरके बाद गोलड़ा जङ्क्शन आता है जहांसे एक ब्राञ्च लाइन कोहाटकी ओर जाती है। गोलड़ा जङ्क्शन और रावल पिण्डीके मध्य दो स्थानोंमें जमीनके भीतर पुराने किले हैं जो अब अस्त्रागारके काममें लाया जाता है। गोलड़ा जङ्क्शनके बाद—

## तक्षशिला

जङ्क्शन आता है। तक्षशिला और नालन्दा बौद्धकालीन सुविख्यात विश्वविद्यालय हैं। नालन्दा विश्वविद्यालयमें १४० आचार्य तथा १४०० उपाध्याय अध्यापन कार्य करते थे। नालन्दाका खण्डहर पटना ( बिहार सूबा ) के बिहार नामक स्थानमें अब भी पाया जाता है। तक्षशिला जङ्क्शनसे एक गाड़ी दरगईतक जाती है और वहांसे लोग अप्तावाद नामक स्थानको जाते हैं; जहां सीमा प्रान्तके गवर्नरका दफ्तर गर्मियोंमें रहता है। तक्षशिला स्टेशनसे चार फर्लाङ्गकी दूरीपर एक सुन्दर भवन—

## अजायबघर

है। जिसमें तक्षशिलामें खुदाई करते समयका मिला हुआ सारा सामान सुरक्षित रखा हुआ है और जिसको दर्शक बड़ी ही दिलचस्पीके साथ देखते हैं। देखनेके लिए दो आनेका टिकट भी लेना पड़ता है जो वहां ही फाटकपर मिलता है। इस अजायबघरमें बौद्धकालीन ( ईसाके दो-तीन सौ वर्ष पहलेके ) सोने-चांदीके सिक्के, कई सौ प्रकारके रत्न-जटित आभूषण, डाक्टरीके सूक्ष्मातिसूक्ष्म यन्त्र, सोनारोंके औजार, अशोकका लिखाया आदेश, बुद्ध भगवानकी छोटी-बड़ी कितनी ही प्रकारकी मूर्तियां, पानीके फव्वारे तथा नित्य व्यवहारमें आनेवाले आवश्यक सामान रखे हुए हैं। यहां ही कार्यालयसे, दो आने देकर एक प्रमाणपत्र प्राप्त करना होता है, जिसको दिखलाकर अन्य स्थानोंको देखना पड़ता है अजायबघरके समीप ही चिरदुपया—

## धर्मराजका स्तूप

है। थोड़ी दूरके फासलेपर दो स्थानोंमें उस समयके पत्थरकी मकानकी दीवारें देखनेमें आती हैं, जो खोदकर निकाली गयी हैं। अजायबघरसे एक सड़क खानपुर (एक शहर) को गयी है। इसी सड़कको पकड़कर इसकी अगल-बगलमें छ मीलकी दूरी तक तक्षशिलाके ध्वंसावशेष दृष्टिगोचर होते हैं। अजायबघरसे इसी सड़कको पकड़कर आगे जानेसे दाईं ओर एक मील भीतर ही—

## सिरकप

नामक स्थान देखनेमें आता है। यह बहुत ऊंचा गढ़के समान दूरसे दिखलाई पड़ता है, अनुमानतः इसकी लम्बाई-चौड़ाई आधा-आधा मीलकी होगी। इस गढ़का पूर्वी हिस्सा खोदनेपर बहुतसे मकान निकले हैं। इसमें एक प्रधान सड़क दक्षिणसे उत्तरकी ओर एक सिरेसे दूसरे सिरे तक गयी है। छोटी-छोटी सड़कें भी मालूम होती हैं। बहुतसे छोटे-बड़े कई प्रकारके मकान हैं। खिड़कियां तथा पानी निकालनेका नाला भी है। एक विचित्र बात यह देखनेमें आयी कि घरसे बाहर निकलनेका द्वार अगल-बगलमें नहीं मालूम पड़ता। हो सकता है कि दरवाजा ऊपरकी ओर रहा हो और उसीसे लोग सीढ़ियोंके द्वारा प्रवेश करते रहे हों। यह ग्रीक मन्दिरका नमूना है। हिन्दुओंका मन्दिर तथा चन्दन घिसनेका पत्थर भी दिखायी दिया। प्रधान सड़कको पकड़कर आगे जानेमें बायीं ओर—

## जाण्डियाल

है। यह स्थान देखने योग्य है। यहां पारसियोंका मन्दिर रहा होगा। क्योंकि दारा ( Darius ) का अधिकार भी तक्षशिलापर हुआ था। उस मन्दिरकी दीवारें तीन-तीन हाथ चौड़ी हैं। साथ ही आगे बहुत बड़े पत्थरके खम्भेके नीचेका हिस्सा मिलता है। ऊपर चढ़नेकी एक सीढ़ी है। प्रधान सड़क पकड़कर आगे बढ़नेपर बायीं ओर सिरसुक नामक स्थानमें दीवारोंके सिवाय कुछ नहीं पाया जाता। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आगे बढ़नेपर सीमा प्रान्तकी सीमा तथा सड़कके ९ मील भीतर ही —

मोहरा मरादू

पहाड़ियोंके बीचमें है। यहां एक मन्दिरका चिह्न मिलता है, बुद्धकी कई प्रकारकी मूर्तियां भी हैं। एक बहुत बड़े मकानका चिह्न भी है, जिसमें कई कोठरियां, बरामदा आंगन, स्नानागार, पानी निकलनेका नाला अब भी पाया जाता है। इसके कुछ ही दूर आगे एक बड़े मकानका ध्वंसावशेष है जिसको पिपलान कहते हैं। छटे मीलपर सड़ककी बायीं ओर गवर्नमेण्ट अतिथिशाला है। प्रधान सड़क कच्ची होकर खानपुरको चली गयी है। पक्की सड़क दायीं ओर जालियान तक गयी है। यह दर्शनीय स्थान —

जालियान

ऊंची पहाड़ीपर है जो कई चक्करदार रास्ते चढ़नेके बाद मिलता है। यह स्थान भी मोहरा मरादूकी तरह है। एक मन्दिर तथा एक बड़े मकानका ध्वंसावशेष है। मन्दिरकी अगल-बगलमें बौद्धकी मूर्तियां बहुत हैं। मकानके भीतर स्नानागार, बरामदे, कोठरियां तथा आंगनसे बाहर पानी निकलनेका नाला भी है। इस स्थानकी दीवारें मोहरा मरादूसे ज्यादा ऊंची खड़ी हैं और उससे अधिक स्पष्ट देखनेमें आती हैं।

तक्षशिलामें यही पांच स्थान मुख्य रूपसे देखनेमें आते हैं। इनको देखनेके लिए पैदल जानेका भी रास्ता है। तांगेवाले भी, जो स्टेशनपर ही मिलते हैं डेढ़-दो रुपये लेकर उपर्युक्त स्थानों-का भ्रमण करा देते हैं। तीन स्थानोंपर जालियान, मोहरा मरादू और सिरकपमें गवर्नमेण्टकी ओरसे चौकीदार रहता है जो इन स्थानोंकी निगरानी रखते हुए दर्शकोंको दर्शनीय

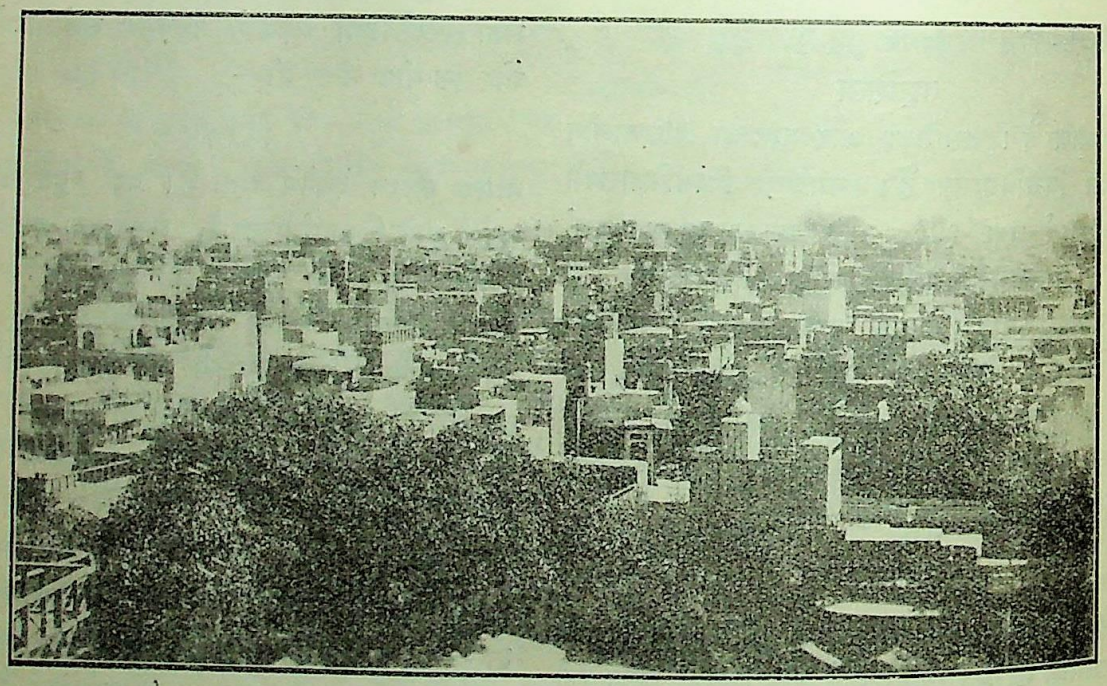

पेशावर शहरका दृश्य

स्थान दिखला देता है, प्रवेशपत्रपर मोहर लगा देता है, जिससे फिर दुबारा देखनेके काममें न लाया जा सके; किन्तु यह विचित्र बात है कि तक्षशिला विश्वविद्यालयका खण्डहर अभी नहीं मिलता। हो सकता है कि और खुदाई करनेसे निकल आवे। यह भी हो सकता है उस समय खुले मैदानमें शिक्षा दी जाती रही हो, इसलिए विश्वविद्यालयका कोई भवन न रहा हो। और यह भी हो सकता है कि विश्वविद्यालय कनाला स्तूप या मनस्ट्री पहाड़ियोंपर रहा हो। पाश्चात्य जगतमें आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिजका जो महत्व है उससे भी अधिक गौरव बौद्ध-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कालीन भारतमें तक्षशिला व नालन्दाको प्राप्त था। लेकिन इस समय ये दोनों स्थान उजाड़ पड़े हैं। तक्षशिलामें इस समय स्टेशनके समीप रेलवे कर्मचारियोंके मकान तथा एक छोटेसे बाजारके सिवाय कुछ नहीं है। बाजारमें अब एक नया मन्दिर बना है जहां यात्री एकाध दिन ठहरकर तक्षशिला देख सकते हैं। खण्डहरके आस-पास कुछ गांव बसे हुए हैं और उन्हीं गांवोंके नामपर उपर्युक्त पांचों स्थानोंके नाम लिए जाते हैं। इन गांवोंके निवासी तक्षशिलाका महत्व कुछ भी नहीं जानते। यात्रियोंको कुतूहल एवं आश्चर्यकी दृष्टिसे देखते हैं। तक्षशिला जङ्क्शनसे आगे जानेपर एक स्टेशन --

नित्यप्रति सैकड़ों यात्री आते-जाते हैं। स्टेशनसे चार फर्लाङ्ककी दूरीपर पहाड़से निकलकर सुन्दर पानीका श्रोत बहता है। इसी श्रोतको घेरकर छोटा-सा तालाब बना हुआ है, जिसके पूर्वीय हिस्सेमें पञ्जाकी प्रस्तर मूर्ति अङ्कित है; जिसे सिख लोग गुरुनानक देवका पञ्जा समझते हैं। तालाब-का पानी अति स्वच्छ है। यहां स्नान करनेवालोंकी भीड़ लगी ही रहती है। इस तालाबमें स्नान करना सिख लोग बड़ा ही पुण्यका कार्य समझते हैं। वे पञ्जेसे लगा हुआ पानी इन्द्रियोंमें स्पर्शकर दीर्घायु तथा पापोंसे मुक्त होनेकी अभिलाषा करते हैं। यहां सिखोंकी अतिथिशाला

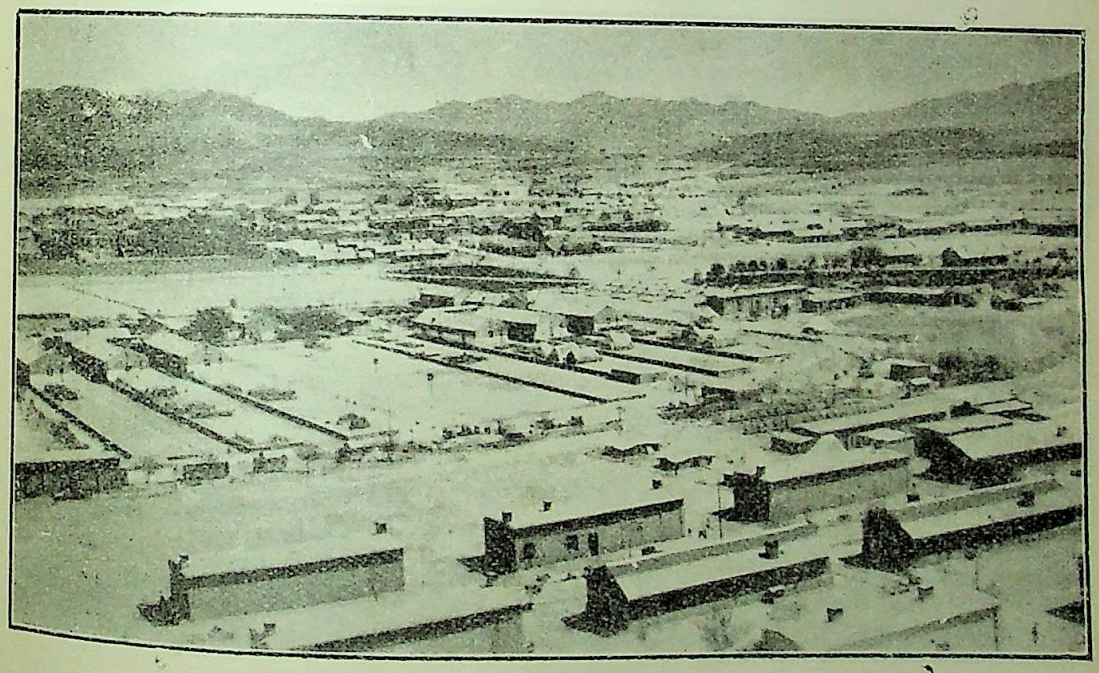

लंडी कोटाल कैम्प

## वा (Wah)

आता है। यहां सीमेण्टका बड़ा भारी कारखाना है। यहां पहाड़के पत्थरोंसे सीमेण्ट तैयार होता है। यह सीमेण्ट बहुत दूर-दूर तक भेजा जाता है। यहांसे एक मीलकी दूरीपर पञ्जाबके भूतपूर्व गवर्नर सर सिकन्दर हयात खांका मकान 'वा' नामक गांवमें है। वा स्टेशनसे आगे जानेपर अगला स्टेशन हसन अब्दल नामका आता है। इसे—

## पञ्जा साहब

भी कहते हैं। यह सिखोंका प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहां पुस्तकालय, औषधालय तथा लंगर है, जहां यात्रियोंको मुफ्त भोजन मिलता है। इन सबोंकी व्यवस्थाके लिए गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी है; जिसकी ओरसे पांच छ हजार रुपये मासिक खर्च किये जाते हैं।

पञ्जा साहबसे थोड़ी दूरपर ऊंचे पहाड़के ऊपर बाबा बली कन्धारीकी समाधि है। उस समाधिसे पञ्जा साहब तक ऊंचा पहाड़ क्रमशः नीचा होते-होते पञ्जा साहब तक समाप्त हो जाता है। इसी पहाड़के नीचेसे पानीका स्रोत बहता है। सिखोंका तीर्थस्थान होनेके कारण उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वासानुसार वह दन्तकथाके रूपमें इस प्रकार है—बाबा वली कन्धारी एक सिद्ध फकीर ऊंचे पहाड़पर, जहां सुन्दर पानीका चश्मा भी था, रहते थे। शेष स्थान निर्जन था। संयोगसे गुरुनानक देव अपने दो शिष्यों, बाला, और मरदानाके साथ पहाड़के नीचे, जहां एक पीपलका पेड़ था आ गये। मरदानाको प्यास लगी; तब गुरुजीके बतलाने-पर वह तीनबार वली कन्धारीके पास गया; आखिरी बार उस फकीरने झुंझलाकर कहा—जिस साधुके पास तू रहता है वह पानी क्यों नहीं मंगा लेता। गुरु-नानकजीने इस बातको सुनकर जमीनपर छड़ी मारी और पानीका स्रोत निकल आया। मरदानने अपनी प्यास बुझा ली। बाबा वली कन्धारीके पासके चश्मेका पानी बिलकुल स्रोतमें आ गया। ऊपर कुछ भी पानी न रहा। कन्धारी साहब ऊपरसे पहाड़ ढाहने लगे ताकि स्रोत-का बहना रुक जाय। उस समय गुरुजीने पहाड़ोंका ढहना रोकनेके लिए अपना पञ्जा लगा दिया। सिख लोग कहते हैं कि यह उसी पञ्जेका निशान है। इसी विश्वासके कारण यह तीर्थस्थान बना है। यह निर्जन स्थान अब हरी-भरी नगरी कहाती है। यहां आर्य समाजकी स्थापना तुरत ही हुई है। यहांका कम्पनी बाग देखने योग्य है। कई स्टेशनों तथा केम्बलपुरके बाद—

### अटक

आता है। यह सिन्धु नदीके किनारे एक रमणीय शहर ऊंचे स्थानपर सुशोभित है। यहांका पुराना किला सेण्ट्रल जेलके काममें लाया जाता है। यहां सिन्धु नदीकी धारा बहुत ही तेज है, पर पहाड़ी स्थान होनेके कारण चौड़ी कम है। इसके उद्गमकी ओर थोड़ी दूरपर अटकके समीप ही काबुल नदी आकर मिलती है। काबुल नदी रेलवे लाइनके साथ ३३ मील नौशहरा तक जाती है। रेलवे लाइन अटकके

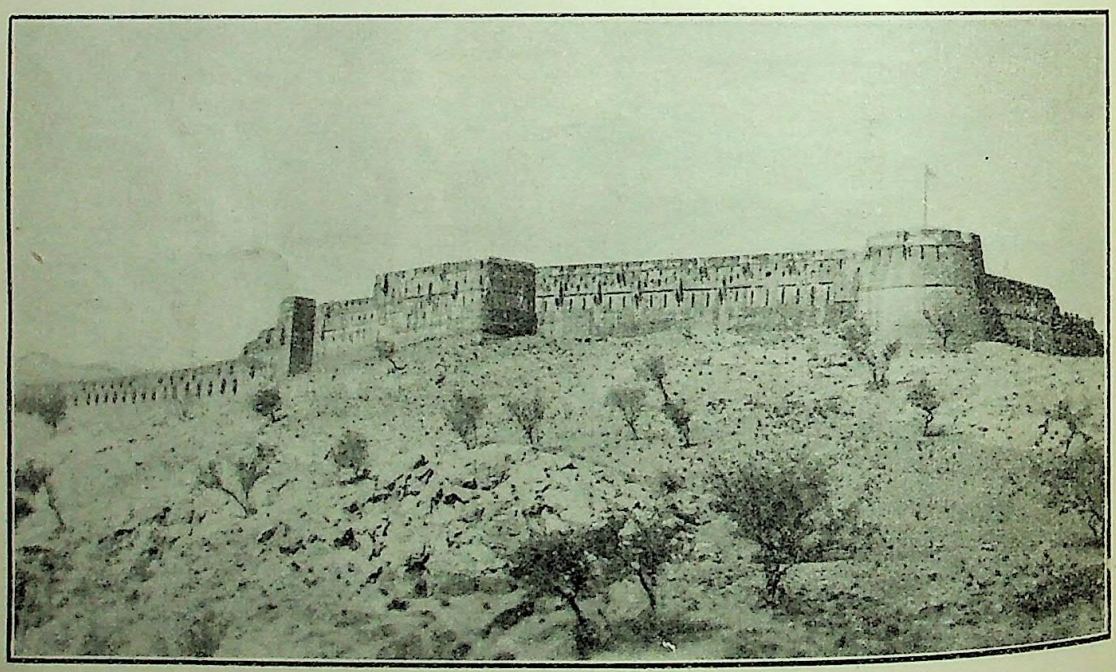

अटकका किला

समीप ही सिन्धु नदीमें पुलसे पार होकर कई सुरङ्गोंसे निकलती हुई नौशहरा जङ्क्शन पहुंचती है। नौशहरासे एक लाइन दरगई तक गयी है। इसीके बीच मर्दान शहरके पास—

### तख्तबाई

ऐतिहासिक स्थान देखने योग्य है। यह स्थान महा-भारतके समयके राजा विराटकी नगरी कही जाता है; यहां ऊंचे पहाड़पर प्राचीन समयकी कुछ दीवारें खड़ी तथा गिरी मिलती हैं। पहाड़ोंको काटकर उनमें मकान बने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हुए दिखायी देते है। इसके आसपास खण्डइर तथा बौद्ध मूर्तियां पायी जाती हैं। अभी कुछ ही महीने हुए यहांके सहरी बहलोल गांवमें किसानोंको जमीन खोदते समय बौद्धकालके एक हजार सोनेके सिक्के तथा कुछ रत्न आदि मिले थे। कहा जाता है कि जमीन खोदने-वालोंमें बंटवारेके सम्बन्धमें झगड़ा हो गया और यह बात अधिकारियोंतक पहुंची। सुना गया है कि मर्दानके असि-स्टेण्ट कमिश्नर कर्नल बोब उक्त ग्रामीणोंसे खजाना वसूल करनेकी काररवाई कर रहे हैं। प्रसिद्ध शहर

करनेवालोंकी भीड़ लगी रहती है। इन चश्मोंमें पञ्चतीर्थ तथा गोरखनाथ प्रसिद्ध हैं। इन चश्मोंका पानी शुद्ध निर्मल तथा ठण्डा हैं। पञ्चतीर्थमें एक दर्जनके लगभग चश्में हैं, जिनमें पक्के सुन्दर घाट बने हुए हैं। यह पांचों स्थान पाण्डवोंके स्नानागार समझे जाते हैं। पेशावरसे रेलगाड़ी जमरोध होते हुए कई सुरङ्गोंको पार करती हुई, जिसमें ट्रेनके आगे पीछे इञ्जन होते है—

लण्डीकोतल

पहुंचकर समाप्त होती है। यहांपर छावनी है। यहांसे

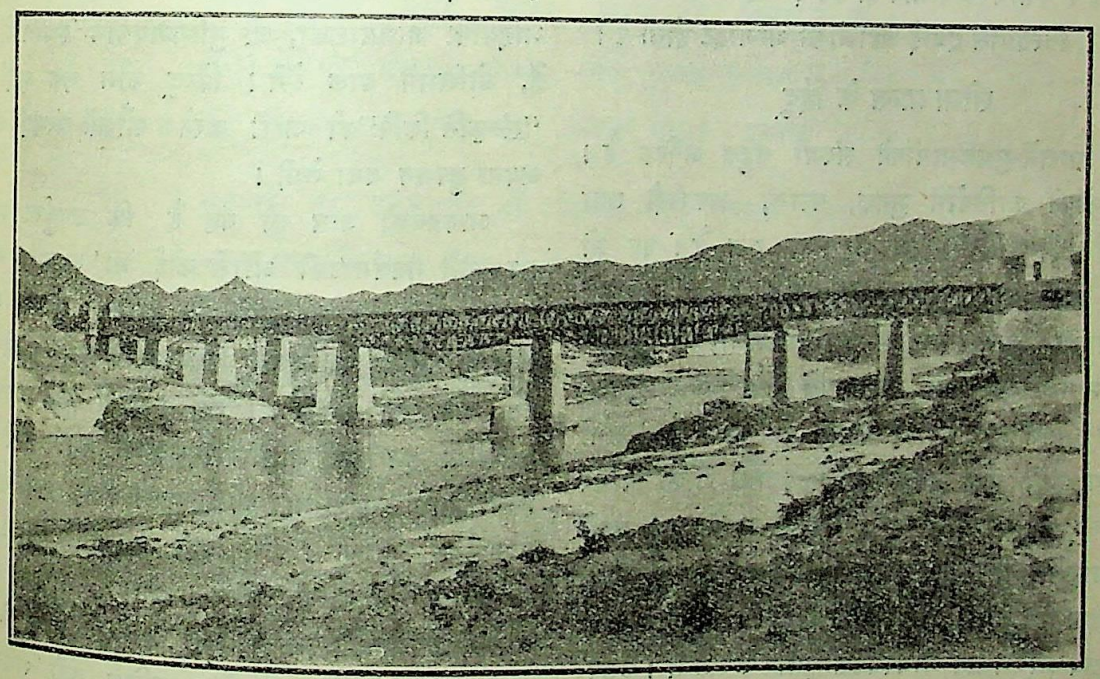

अटकका पुल

## पेशावर

नौशहराके आगे आता है। कुछ इतिहासवेत्ताओंका ख्याल है कि यह पेशावर परशुरामजीके नामपर बसा था और उसे परशुपुर कहते थे। जमदग्नि ऋषिके नामपर भी यहांसे ८ मीलकी दूरीपर एक नगर बसा था जिसे अब जमरोध कहते हैं। जमरोध एक सुन्दर नगर है जहां पुराना किला, हरिसिंह तलवाकी समाधि तथा छावनी है। पेशावर-के दर्शनीय स्थानोंमें, शाही किला, गवर्नमेण्ट अतिथिशाला, इसलामिया कालेज, अजायबघर तथा शाही बाग हैं। पेशावरके उत्तरकी ओर कई पानीके चश्मे हैं जिनमें स्नान

अशोककी दीवार दिखायी पड़ती है, जिसपर बुद्ध भगवानके उपदेश पाली भाषामें खुदे हैं। यहांका एक स्थान कत्लगढ़ है। कहा जाता हैं कि हरिसिंह नलवा पठानोंको लाकर यहां ही कत्ल करता था। यहीं ब्रिटिशराज्यकी सीमा समाप्त होती है।

## सीमा प्रान्त

१८-४-१९३२ से नया सूबा घोषित किया गया है। यहांके वर्तमान गवर्नर सर रेलफ ग्रिफिथ हैं। यहां भी गवर्नरकी कौन्सिल है। मिनिस्टरका नाम सर अब्दुल जाद याकूब खां है। गवर्नर जाड़ेके दिनोंमें पेशावर और गर्मीके दिनोंमें अण्डावादके समीप नथियागलीमें रहते हैं। सीमा-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रान्तमें हजारा, पेशावर, कोहाट, बन्नू, और डेरा-इस्माइल खां, पांच जिले हैं। टोची, बानो, दीर, स्वात, चित्रा, कर्रम तथा खेर एजेन्सियां कही जाती हैं, जहांपर एक-एक रेजिडेण्ट रहता है। विदेशसे आनेके लिए सीमा-प्रान्तके समीप ही पैदल मार्गका प्रवेश-द्वार है। इसलिए यहां छावनियां बहुत हैं। सारे भारतमें सेनापर जितना खर्च होता है उसमें आधेसे अधिक सीमाप्रान्तमें व्यय होता है। भारतकी सबसे बड़ी छावनी हैदराबाद (सिन्ध) में है। दूसरे नम्बरकी छावनी सीमाप्रान्तके रजमक नामक स्थानमें है। पेशावरके समीप ही हवाई जहाजोंके उतरनेका मैदान है। नित्यप्रति हवाई जहाजोंकी भन्नाहट होती है।

## सीमा प्रान्त के हिंदू

इस प्रान्तमें मुसलमानोंकी संख्या बहुत अधिक है। मुसलमानोंकी जातियोंमें मुगल, पठान, अफरीदी तथा वजीरी हैं। हिन्दुओंकी संख्या बहुत ही कम है। पर जो भी हैं वे स्वाभिमानी और निर्भीक हैं। हर एक स्थानमें इनकी संस्थायें आर्यसमाज, सनातनधर्म सभा, हिन्दू महा-सभा, महावीरदल तथा गोशालायें हैं। इनपर मुसल-मानोंका अत्याचार बराबर होता ही रहता है। अभी कुछ दिन हुए, एक मुसलमान फेरीवाला मौका पाकर एक हिन्दूके घरमें घुस गया। उस घरमें एक सुन्दर युवती आभूषण पहने हुए थी। फेरीवाला उस युवतीको कपड़ा दिखलाने लगा; उस युवतीने कहा कि घरवाले बाहर गये हैं, जब आवेंगे तब आवश्यकतानुसार ले लूंगी। उसपर उस मुसलमानने युवतीके छुरा मारा और झट उन आभू-षणोंको जिन्हें वह युवती पहने हुई थी, उतारकर चम्पत हो गया। उस युवतीके प्राण-पखेरु उड़ गये। युवतीने साहस-पूर्वक उस हत्यारेका सामना किया था और सहायताके लिए लोगोंको पुकारा भी था, पर हिन्दू सुन न सके और मुसल-मान सुनते हुए भी सहायताके लिए नहीं आये। उस हत्यारे-का पता पुलिस लगा रही है, पर अफसोसकी बात है कि अभी तक उसका पता नहीं लगा है।

इस काण्डसे हिन्दू सजग हुए और मुहल्लेकी रक्षाके लिए उन्होंने पहाड़ी पहरेदार नियुक्त किये। पहरेदार किसी भी अपरिचित व्यक्तिको अनावश्यक मुहल्लेमें जानेसे रोकता है। वहांके हिन्दुओंको आवश्यक कार्यवश मुसलमानी मुहल्लों-में जानेपर मुसलमान हिन्दुओंको रोकते और पीटते हैं। अभी कुछ दिनोंकी घटना है कि मर्दानकी एक उच्च घरानेकी विवाहिता स्त्री श्रीमती गौरी देवीको बलपूर्वक एक पठान मालाकारामें ले गया। पठान पकड़ा गया और उसे केवल ५०) रुपये जुर्माना हुआ। सीमाप्रान्तके सर सैयद अक-बर खांने २० अप्रैल १९३४ को दिल्ली उर्दू कानफरेन्सके सभापतिके आसनसे हिन्दुओंके प्रति विष उगलते हुए कहा था—यदि हिन्दू नेताओंने नागरी लिपिके लिए ऐसा ही आन्दोलन जारी रखा तो वे अपने लाखों शान्त हिन्दू-भाइयोंके जानमालको, जो मुस्लिमप्रधान स्थानोंमें रहते हैं, जोखिममें डाल देंगे। हिन्दू कौम एक मुर्दा भाषा "संस्कृति लिपि"को जारी करनेके शौकमें सरहदी कौमको अपना दुश्मन बना लेगी।

आश्चर्यकी बात तो यह है कि उपर्युक्त भाषणके सम्बन्धमें गवर्नमेण्टकी ओरसे कोई भी आपत्ति नहीं की गयी। गौरी देवीको हरनेवाले पठानको महज मामूली सजा दी गयी। पेशावरकी हिन्दू-स्त्रीके कतल करनेवालेका पता अब तक न लगा। यह समझमें नहीं आता कि गवर्नमेण्ट इन सब बातोंमें दिलचस्पी क्यों नहीं लेती? किसी देशके उत्तरदायित्वपूर्ण शासकके लिए ऐसे मामलोंमें उदासीनता दिखलाना उचित नहीं कहा जा सकता।

यहांके लोग बड़े ही खूंखार होते हैं, साथ ही जरा-सी बातोंमें क्रोधित हो जाना, छुरा मारकर प्राण ले लेना, इनके लिए साधारण बात है। पुलिस बड़ी सतर्क रहती है। आवश्यकतानुसार चौराहे और स्टेशनोंपर सशस्त्र पुलिसका पहरा रहता है। सीमाप्रान्तके लोग अतिथि-सत्कार करना अच्छी तरह जानते हैं। यहांकी स्त्रियां हृष्ट-पुष्ट, खूबसूरत तथा सुशिक्षित हैं। दुःखकी बात है कि पुरुषोंके साथ-साथ स्त्रियां भी पश्चिमीय सभ्यताके बहावमें बही जा रही हैं। यहांके हिन्दू और मुसलमान सभी अब्दुल गफ्फार खांके परिवारके साथ सहानुभूति रखते हैं। उनका जन्मस्थान पेशावरसे १५ मील उत्तर-पूर्व चारसद्दा तह-सीलके नजदीक उत्मानजई नामक स्थान है। पख्तूकी भाषा पञ्जाबी तथा सीमाप्रान्तकी भाषा पश्तो है। अब हिन्दीका प्रचार भी बढ़ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मेरी अम्मां !

एक बार यदि इस जीवनमें, फिर तुमको पा जाऊं मां !
कितनी व्यथा सहन करती हूं, हृदय खोल दिखलाऊं मां !
चरण छोड़कर उस उदार वक्षस्थलसे मिल जाऊं मां !
तव वर्जनपर ध्यान न देकर, शत-शत अश्रु बहाऊं मां !

एक बार फिर मधुमय वाणी, श्री मुखसे सुन पाऊं मां !
अपने हियकी असह वेदना, क्षणमें ही बिसराऊं मां !
गोदी चढ़कर, हंसकर, रोकर, अब तुमको न सताऊं मां !
बड़े यत्नसे तव सेवा कर जीवन सफल बनाऊं मां !

भैयाको तो अनायास ही किया मातृ-ऋणसे उद्धार।
अन्त समयमें मेरी सेवा, जननी हुई न क्यों स्वीकार ॥
छोड़ चलीं असमयमें ही क्यों अपना प्राणोंपम परिवार ?
सुखसे था परिपूर्ण तुम्हारा, छोटा-सा सुवर्ण संसार ॥

जननी तुम चढ़ चलीं चितापर जब सोलह शृंगार किये।
कमल सदृश दृग बन्द किया क्यों लखा न अन्तिम प्यार लिये ॥
जिसका हृदय पूर्णता पाता था, तुमपर अभिमान किये।
प्रेम तुम्हारा खोकर जननी, अब जगमें किस भांति जिये।

रोते हुए पुत्रको छोड़ा, इस अचेत कन्याका ध्यान !
अर्ध विमूर्च्छित पतिको छोड़ा, जननी यह कैसा प्रस्थान !
गौरवकी प्रतिमूर्ति सती थीं, जिनका जीवन था अम्लान !
हा ! मेरी सुकुमारी मांता, किया कहां किस ओर पयान !

उस अनन्त पथका कुछ भी जो आज पता पा जाऊं मैं।
"पहिले मैं जाऊंगी" कहकर, अम्ब तुम्हें ले आऊं मैं ॥
जीव रहे जब तक इस तनमें, तुम-सा ही सुख पाऊं मैं।
अन्त समयमें मेरी अम्मां ! तुममें ही मिल जाऊं मैं ॥

—तोरन देवी शुक्ल 'लली'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अवधकी लूटपर मि० टारेन्सके विचार

श्री गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र'

बहुत पुरानी बात नहीं है। अभी एक शताब्दी भी नहीं हुई, अवध बड़ा फलाफूला, हराभरा और समृद्धिशाली प्रान्त था। धन, जन और सौरभसे पूर्ण उसे देखकर अवधवासी अपने भाग्यपर इतराते थे। उन दिनों अवधके शासक वाजिदअली शाह थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी आंखें उसपर गड़ी हुई थीं। बनारसके राजा चेतसिंहको हटाकर रामनगरका सारा खजाना कम्पनी अपने अधिकारमें ले चुकी थी। इतनेपर भी जब उसकी अर्थ-पिपासा शान्त न हुई तब उसने अवधके खजानेको जिस-तिस तरहसे हथियाना चाहा। वारेन हेस्टिंग्सने बिना कोई कारण बतलाये अवधका सारा राज्य कम्पनीके राज्यमें मिला लिया और नवाबको निर्वासित कर कलकत्ते भेज दिया। कम्पनीकी फौजने बलात् लखनऊपर कब्जा कर लिया। असंख्य जमीन्दारों तआल्लुकेदारोंकी पतृक जागीरें और जमीन्दारियां छिन गयीं। उनमेंसे अनेक लोगोंको निकाल दिया गया जो गृह-विहीन दरबदर घूमते फिरे। प्रसिद्ध इतिहास लेखक मि० केने लिखा है कि "इस अत्याचारसे पुराने तआल्लुकेदार और जमीन्दार बहुत कम बच सके थे।" इतिहासके देखनेसे पता चलता है कि अवधके ग्रामोंके लाखों किसान, नवाब वाजिदअली शाह और उनके कुटुम्बियोंकी इस दुर्दशाका हाल सुन-सुनकर रोने लगते थे। हजारों व्यक्ति इन विपद्ग्रस्त लोगोंसे मिलकर सहानुभूति प्रकट करते थे। नवाबसे लेकर साधारण कृषक तक कम्पनीके इस व्यवहारसे ग्रस्त थे। सारांश यह कि लार्ड डलहौजीकी इस अपहरण-नीतिने अवधमें अपने विरुद्ध असन्तोषकी गहरी नींव डाल दी।

डलहौजीने सतारा, पञ्जाब, झांसी, नागपुर, सिक्किम, पेगू, सम्बलपुर आदि देशी राज्योंको एकके बाद एक, कम्पनीके राज्यमें मिलाये। इस नीतिको मद्रास कौंसिलके मेम्बर जौन जान सलीवनने लिखा है :—

"Upon the extermination of a native state, an Englishman takes the place of the sovereign under the name of commissioner, three or four of his associates displace as many dozen of the native official aristocracy, while some hundreds of our troops take the place of the many thousands that every native chief supports. The little court disappears, trade languishes, the capital decays, the people are impoverished, the Englishman flourishes, and acts like a sponge, drawing up riches from the banks of the Ganges, and squeezing them down upon the banks of the Thames."

A plea for the Princes of India. by John Sulliven-member of the Madras Council p.p.67

"जब किसी देशी राज्यका अन्त करना होता है, तो वहांके शासकको हटाकर एक अंगरेज उसके स्थानपर रख दिया जाता है। वह कमिश्नर कहाता है। तीन-चार दर्जन देशी खानदानी दरबारियों तथा मन्त्रियोंके स्थानपर कमिश्नरके ३-४ सलाहकार नियुक्त हो जाते हैं। प्रत्येक शासकके हजारों सिपाहियोंकी जगह हमारे कुछ सौ सिपाही नियुक्त कर दिये जाते हैं। वह पुराना और छोटा-सा दरबार नष्ट हो जाता है, व्यापार ढीला हो जाता है, राजधानी वीरान हो जाती है, लोग निर्धन हो जाते हैं, अंगरेज फलते-फूलते हैं और स्पञ्जकी तरह गङ्गाके किनारेसे धन खींचकर, उसे टेम्सके किनारे जाकर निचोड़ देते हैं।"

प्रसिद्ध इतिहास लेखक लडलोने इस अपहरण-नीतिके सम्बधमें लिखा है कि—

"—Surely there was not a woman whose such annexation did not tend to make our enemy, not a child whom they did not tend to train up in hatred to the Firangee rule."

Ludlow's Thoughts on the Policy of the Crown. p. p. 36.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अर्थात्—इसमें सन्देह नहीं कि एक भी ( भारतीय ) स्त्री ऐसी न होगी जिसे इन रियासतोंके अपहरणने हमारा शत्रु न बना दिया हो। एक भी बच्चा ऐसा न होगा जिसे हमारे इन कार्योंके कारण फिरंगी राज्यके विरुद्ध आरम्भसे ही घृणाकी शिक्षा न दी जाती हो।"

इसी अपहरण-नीतिका शिकार अवध भी हुआ। सिपाही-विद्रोहके लगभग एक वर्ष पूर्व अवधपर अधिकार कर लिया गया। इंगलैण्डसे धनकी माँग थी इसीलिए अवधका खजाना कब्जेमें करनेकी नौबत आयी। "एम्पायर इन एशिया" नामक पुस्तकसे अवधका वृत्तान्त यहां ज्योंका त्यों उद्धृत करते हैं। उसमें लिखा है—

नवाब आसफउद्दौलाने अपनी गरीबीके कारण क्षमा चाही और इस गरीबीका कारण अपने यहांकी "सबसीडीयरी" सेनाका वार्षिक खर्चा बताया। दरअसल यह कारण ठीक था। कहीं गवर्नर जनरल लखनऊ न आ पहुंचे, इस भयसे आसफउद्दौला लार्ड हेस्टिंग्ससे मिलकर अपनी सच्ची स्थिति समझानेके लिए आगे बढ़ा। चुनारके किलेमें दोनों मिले। वहांपर एक अच्छी तदबीर निकाली गयी जिससे लखनऊका खजाना खाली न हो और कलकत्तेका खजाना भर जावे। लार्ड मेकाले लिखता है कि वह तदबीर यह थी—"गवर्नर जनरल और नवाब वजीर दोनों मिलकर किसी तीसरे व्यक्तिपर छापा मारें। और जिस तीसरेको लूटनेका इरादा किया, वह इन दोनोंमेंसे एककी मां थी।" यह ख्याल था कि नवाब शुजाउद्दौला मरते समय अपनी माता और विधवा बेगमको बड़े-बड़े खजाने दे गया है। फैजाबादके महल भी वह उन्हींके नाम कर गया था। ये बेगमें असंख्य रिश्तेदारों और दास-दासियों सहित अपने प्यारे महलोंमें रहती थीं। इस धूर्तताकी राय देनेवाला मान० गवर्नर जनरल था। सुनते ही आसफउद्दौलाका हृदय मारे लज्जाके थर्रा गया।.....अन्तमें.....सौदा पक्का हो गया। दोनों इस फरेबकी जाब्तापूरीमें लग गये। निर्णय हुआ कि.....फैजाबादमें रहनेवाली दुखिया स्त्रियोंको यह दोष लगाया जाय कि तुम अंगरेजोंके विरुद्ध चेतसिंहसे मिलकर गुप्त षड्यन्त्र रच रही हो। यदि यह लाञ्छन साबित किया जा सका तो फिर किसी भी तरहकी सख्ती या जब्ती उचित ठहराई जा सकेगी। अतएव साबित करना लाजिमी था और वह भी बाजाब्ता। जब लोगोंको यह मालूम हुआ कि अंगरेज क्या करना चाहते हैं तो झूठे गवाह भी तैयार हुए.....बेगमोंकी ओरसे न कोई जवाबदेही करनेवाला था और न कोई वकालत ही.....पूर्व इसके कि बेगमोंके महलोंके फाटकोंको तोड़कर अंगरेजी सैनिक भीतर घुसें, एक कठिनाई सामने थी। लोकाचारका एक रेशमी बन्धन तोड़ना था। वह यह था कि शुजाउद्दौला मरते वक्त अपने इन सम्बन्धियोंको अंगरेजोंके संरक्षणमें छोड़ गया था—अब स्थिति बदल गयी थी। परन्तु अंगरेज सरकारने उस समय यह जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली थी।.....सर एलाइजा इम्पे पहले भी कई बार ऐसे मौकेपर उपयोगी सिद्ध हो चुका था। इस समय भी वह वारेनहेस्टिंग्सका मित्र सिद्ध हुआ। अपनी पालकीमें बैठकर गैर ईसाई कहारोंकी डाक लगाकर इम्पे कलकत्तेसे लखनऊकी ओर रवाना हुआ। एक.....मान० वायसरायकी आज्ञापर उसे लूटमें मदद देनेके लिए ईसाई चीफ जस्टिसको पूरी तेजीके साथ अपने कन्धोंपर ले जानेमें गैर ईसाई आदमियोंका उपयोग किया। रूहानी अन्धकारमें डूबी हुई जनताको यूरोपियन व्यवहार और शिष्टाचारका इससे बढ़कर और क्या प्रमाण मिल सकता है। अवधकी राजधानीमें पहुंचकर चीफ जस्टिसने बहुतसे हलफनामे बयान लिए, जिनमें बेगमोंपर यह दोषारोपण किया गया कि वे चेतसिंहको कम्पनीके विरुद्ध साजिशमें मदद दे रही हैं। जस्टिसने न तो हलफनामे पढ़े और न किसी दूसरेसे ही पढ़वाकर सुने। वह ऐसी भाषामें था जिसे जस्टिस खुद नहीं समझ सकता था और न उसे इतना अवकाश ही था कि उनका अनुवाद कराया जाय और वह तब तक ठहरा रहे। एशियामें इंगलैण्डके प्रधान न्यायाधीशकी हैसियतसे उसने हलफनामे लिए और अपने अधिकारोंका दुरुपयोग करके फिर पालकीमें बैठकर कलकत्ते लौट आया।..... फैजाबादके महलोंको अंगरेजी सेनाने घेर लिया। बेगमोंको सूचित कर दिया गया कि तुम अपनेको कैदी समझो और अपने सोने-चांदीके जेवर तथा जवाहिरात हमारे सुपुर्द कर दो। जब उन्होंने देनेसे इनकार किया तो कई शरीफ औरतोंको भूखों रखा और उनके नौकरोंको विविध यातनायें दी गयीं। जब बेगमें इस कारुणिक दृश्यको न देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सकीं तब उन्होंने रत्नाभूषणोंके पिटारे-पर-पिटारे और खजाने-पर-खजाने देना आरम्भ कर दिया। यहां तक कि उस लूटका अन्दाजा १ करोड़ २० लाख रुपया किया गया। जब तक यह रकम पूरी नहीं हुई तब तक उन अभागे नौकरों और दासियोंको रिहा न किया गया। उस भयङ्कर काण्डकी यह केवल रूपरेखा मात्र है। जिन बातोंसे इस चित्रमें सच्चे रङ्ग भरे जा सकते हैं उनपर अब विस्मृति अपना ऐसा आवरण डाल चुकी है जिसे हटाना कठिन है।" —Torren's Empire in Asia p.p. 26-128

अवधकी लूटका यह एक प्रसिद्ध अंगरेज लेखक मि० टारेन्स द्वारा किया हुआ वर्णन है। यह अंगरेज इंगलैण्डकी पार्ल्यामेण्टका एक प्रसिद्ध मेम्बर था। इसीसे अवधकी लूटका अनुमान किया जा सकता है, जिसे लेखक स्वयं "उस भयङ्कर काण्डकी रूप-रेखा" लिखकर अपनी कलमको सन्तोष देता है।

---

# एकाकिन

'बनमाली'

रजनीने जब सुना कि वह परदेशी युवक घर छोड़े जा रहा है, तब उसका हृदय भीतर ही भीतर एक पीड़ासे व्यथित हो उठा और वह अपने कमरेमें आकर बिछौनेमें मुंह दबा एकाएक बिसूरने लगी।

बिसूरते-बिसूरते, रजनीके जीमें एक धूमिल सन्ध्या की याद उठी, जब वह परदेशी युवक न जाने किस अपरिचित देशसे मकानकी खोजमें भटकता हुआ आया था और रजनीकी मांने उसपर दयाकर अपने घरमें ठौर दिया था। तबसे वह युवक पूरे एक कमरेपर अपना कब्जा करके, उसे बिलकुल अपना ही मानकर बस गया था और फिर कभी उसने वहांसे टलनेका नाम नहीं लिया।

पर उससे अब बिछोहकी बात जान रजनी यह सोचने बैठी कि उस बहुत दूरके अनजाने आदमीमें ऐसा उसका अपना क्या है जो उसे उसके बिछुड़नेमें इतना दुख हो रहा है? उस अपरिचितमें उसने ऐसा अपना कौन-सा अवलम्ब ढूंढ़ पाया है जिसके टूटनेसे वह असंलग्न हो गयी है? इस परदेशीके चले जानेसे ऐसी उसकी अपनी कौन-सी वस्तु खो जायगी जिसकी पूजा-अर्चनासे ही वह जीवन धारण कर रही है और अपनेको किसी अदृश्य अभिशापसे बचाये हुए है? बहुत सोच-विचार करके भी रजनी उस परदेशीमें अणुमात्र भी अपना कुछ अपनापन नहीं पा सकी और वह बिना मूछोंका गोरे सूखे चेहरेवाला परदेशी इतने दिन उसके घरमें रहकर भी उसे बिलकुल ठेठ परदेशी ही जान पड़ा।

इस बार रजनीको अपने अतीतकी याद आयी। रजनीको जबसे अपनी संज्ञाका ज्ञान हुआ है तबसे उसने दीवारोंसे घिरे इतने बड़े निर्जन निरानन्द घरमें केवल मांको ही अपना साथी पाया है। कुछ दिनके लिए वह अपनी मांसे छूटकर जरूर अलग जा पड़ी थी, पर उसके जीवनका वह लग्न-काल, वह घड़ी-पल बहुत जल्दी समाप्त हो गया और वह फिर उसी अपने पुराने घरमें वापस चली आयी। इस बार भी रजनीने सब जगह खोज-ढूंढ़कर केवल उस थोड़ेसे हाड़ोंकी स्नेहमयी मांको ही अपना जाना।

पर इस बारके अपने माननेमें एक अन्तर पड़ गया। रजनी अपनी मांको सब-कुछ मानकर भी यह बात समझ सकी कि इस मांको भी पारकर कहीं कुछ उसका पड़ा है जो उसके हाथसे खो गया है। वह आज अपनी मांके सारे स्नेहकी अधिकारिणी होकर भी संसारमें उपेक्षिता है। जहां उसका ठौर था वहांसे वह अनाहत होकर चली आयी है और वह अपनी परिधिमें इस अपने अनजाने-से घरमें अपना इतना व्यर्थ रूप लेकर अपने प्राणोंके भीतर इतने अपमानित कवित्वको जमा करके मृत्युके क्षण गिन रही है।

रजनीके घरके सामने ही लड़कोंका स्कूल है। रजनीने निर्जन दोपहरीमें कसीदा काढ़ते, अपने कमरेकी खिड़कीपर बैठ लड़कोंका गुनगुनाना सुना है। लड़कोंके इस गुनगुनानेने कभी बड़ी ऊंची लयमें उठकर स्कूलकी सारी इमारतको कम्पायमान कर दिया है और कभी वह जलकी सूखी धारा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की भांति बड़ा क्षीण हो उठा है ! फिर कालक्रमसे घण्टोंकी आवृति हुई है। शामको जब लड़कोंकी छुट्टी हो गयी है और वे कोलाहल मचाते अपने-अपने घर लौट गये हैं, तब रजनीने उस स्कूलकी सूनी इमारतको देखकर सोचा है कि अभी ये बच्चे कैसे सुखी हैं ; अभी ये अपने मां-बापके स्नेहको लेकर ही, अपनी स्कूलकी किताबोंको पाकर ही प्रसन्न हैं। इन्हें पता भी नहीं, चिन्ता भी नहीं कि यह जीवन क्षण-क्षणमें टूटकर कहांको बहा जा रहा है ? इसकी कहांपर जाकर समाप्ति है ? यदि रजनी भी कालके कठोर व्यङ्गको असत्य करके, अपने इतने ज्ञानके भण्डारको खो पाती तो उसे कैसी तृप्ति मिलती !

रजनीके घरके नीचे ही सड़क है। दोपहरीके सन्नाटेमें सड़कपरसे फूलवाले अपने फूलोंकी पुकार मचाते चले जाते। शीशीवाले अपनी शीशियोंकी आवाज लगाते कहीं शून्यमें खो जाते। कभी-कभी गाड़ियोंकी कतार-की-कतार निकलती जिनमें गाड़ीवान गीत गाते हुए अपनी यात्राकी समाप्ति करते। मूढ़ रजनी तब विचार करती कि वह अपने यौवनकी इस संबलहीन कठिन दोपहरीको कहां और कैसे बिता दे ? उसके भाग्यमें तो बस जन्म-भर इस घरके परिमण्डलसे अपनेको घेर रखकर एक दिन मृत्युमें अपना विसर्जन कर देना बदा है।

रजनीने अपने अतीतके इस इतिहासको सोचकर समझ पाया कि अपनी वयः सन्धिकी एक धूमिल एकाकी सन्ध्या में, उस बहुत दूरके भ्रान्त-क्लान्त युवकको अपने पास पा, पुराणोंकी कथा-कहानियोंके चरित्रोंकी भांति उसने उसे अपना मान-जान लिया था और तबसे निरन्तर, बिना नागा, उसे अपनेपनके भावसे सहेजती आयी है। दोपहरियामें अपनी खिड़कीपर बैठ रजनीने उस दूरके युवकके बीचसे सब भेदभाव हटाकर, उसे अपने हृदयके गोपनतम मन्दिरमें स्थापित कर, अपने भांति-भांतिके उससे नाते लगाये हैं और इस अतथ्यकी बातमें बड़ा सुख पाया है। अकेलेपनमें, रजनी उस युवककी छायासे अपनेको परिवृत करके उससे खेली है और उसका सारा रक्त उस छायाके स्पर्शसे ही एक चेतनासे भर, किसी अदृश्यमें बजते तालपर हृदयके चारों ओर नाच उठा है।

पर आज, बिसूरते-बिसूरते, रजनीकी आंखोंपर जो दीर्घ कालसे एक परिच्छद पड़ा था सो उठ गया और रजनी इस दिगम्बरत्वमें अपनी क्षुद्रताको बड़े तीव्र रूपमें अनुभव कर अपने आप पर ही क्षोभ करने लगी। जीवनके एक धुंधले क्षणमें जो अपने हृदयके स्पन्दनमें डूबकर उस पराये युवकको अपना मान लिया था सो उसी बातको लेकर उसे अपने ऊपर बड़ा परिवाद हुआ। इसी युवकने एक दिन आकर उस उदासीन रजनीको अपने रूपके प्रति सजग कर दिया था; उसके हृदयकी रसग्रन्थि खोलकर उसे अकारण चञ्चल बना दिया था और अब यही उसे अपने छलके तीव्र व्यङ्गमें छोड़कर चला जा रहा है। युवककी इस कठोरताकी बात सोच रजनीको उसपर बड़ा प्रतिकोप हुआ।

रजनीको याद आयी कि एक दिन उसने उसपर और क्रोध किया था। रजनी रामायण बांच रही थी और रातका समय था। इतनेमें इसी युवकने दरवाजेपर आ धीरेसे आवाज दी थी। रजनीकी मांको झपकी लग गयी थी, इसलिये वही चुपचाप उठकर दरवाजेतक चली आयी थी और कपाट खोलकर ओटमें खड़ी हो गयी थी।

युवकने तब उसे थोड़े शब्दोंमें बताया—"थोड़ा मिट्टीका तेल चाहिए। आज निबट गया है और पढ़ना जरूरी है।" और बड़े सङ्कोचसे हाथमें अपनी लालटेन लिए भीतरकी ओर देखता खड़ा रहा।

रजनीने तब ओटमेंसे कुछ आगे आकर अपना गोरा हाथ बाहर निकालकर उससे कहा—"लाइये, दीजिये अपनी लालटेन।"

जब रजनी लालटेन वापस करने आयी तब उसके मुंहका आंचल, जाने या अनजाने, कुछ अधिक खुल गया और वह पहलेसे कुछ ज्यादा निकल आयी ; पर वह युवक तो क्षणभरको भी न ठहरकर लालटेन ले जैसा आया था वैसा सीधा चला गया और अपने कमरेमें जा फिर पुस्तकोंसे चिपट गया।

रजनीके भीतर बैठी रसवती नारी एक दर्पसे भर उठी और उसे अपनी विफलतामें उस रूखे युवकपर बड़ी रिस आयी। रजनीको जान पड़ा कि जैसे यह युवक उसके रूपका अपमान करना चाहता है और उसके अस्तित्वको अपनी आंखोंके सामनेसे मिटा डालना चाहता है। नारीकी मर्यादाको लांघकर वह ऊपर उठ जाना चाहता है और रजनीको अपने व्यङ्ग-बाणोंसे वेध देना चाहता है। क्रोधमें कांपती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रजनी उस रातके एकान्तमें, युवककी खिड़कीसे आते उस क्षीण प्रकाशके बीच, सामने दूरतक सूने जन-पथको देखती कब तक खड़ी रही यह वह आज भी बहुत सोचकर नहीं मालूम कर सकी।

रजनी आज अपने इस आत्मप्रकाशके बीच देख पायी कि उसी दिनके प्रतिकोपमें खोकर उसका यह क्षणिक मोह उससे छिटककर यदि कहीं दूर जा पड़ता तो बड़ा अच्छा होता। तब उसका हृदय एक नये उपसर्गमें पड़कर आज इतनी पीड़ा तो नहीं पाता होता और प्राणोंके परिहरमें ऐसी क्षुद्रता और लघुता तो न हिलकोरा लेती होती। एक अशुभ लग्नमें जिस चित्रका उसके हृदयमें रेखापात हुआ था वह कभीका नष्ट-भ्रष्ट हो गया होता और रजनी चिर कालके लिए मुक्ति पा गयी होती। पर ऐसा कुछ तो हुआ नहीं और दिन-दिन रजनी उसी युवकमें, जुड़ती सम्बन्धित होती गयी।

आज ही रजनी उस युवकको भी पूर्ण रूपसे देख पायी। रजनीने जाना कि यह दूर देशका युवक सचमुचमें बड़ा रहस्यमय है। जिस दिनसे आया उस दिनसे किसीसे नहीं मिलता-जुलता है। सिर्फ दिनभर और रातको बड़ी देरतक अपने कमरेमें जमा पढ़ा करता है। रजनीको याद आयी कि एक दिन इसी युवकने अपने घरकी बात चलाकर उसकी मांको बताया था कि उसके घर भी उन्हींके समान उसकी एक बुढ़िया मां है और एक विधवा बहन है और घरका सब भार उसके ऊपर है। रजनी आज जीवनके भारसे दबे एक वीतराग विद्यार्थीको उस युवकमें ढूंढ़ पायी।

उस वीतराग विद्यार्थीको उस युवकमें ढूंढ़कर रजनी मोहसे भर उठी और उन्मनी-सी हो गयी। तब उसके जीमें बरसातकी एक गीली दोपहरियाकी याद आयी। उस दिन अपने घरमें जैसे वह अकेली थी वैसे ही शायद वह युवक भी अपने कमरेमें अकेला था। रजनी एकाएक दोपहरियाकी अलसाहटसे भरकर शीशेके सन्मुख जा खड़ी हुई। देखा आंखें हृदयका रस पी नाच उठी हैं; अलकोंपर कठिन यौवन आकर छा गया है; लाल ओठोंपर प्रति क्षण कोई गान तरङ्गित हो रहा है। रजनीको जान पड़ा कि उसके जीवनमें कोई छन्दकाल आकर उपस्थित हुआ है। रजनीकी हृदय-कादम्बनी एकाएक प्रणय-जलके लिए व्याकुल हो उठी।

रजनी तब अपने कमरेसे बाहर आकर अपने घरके भीतर से कपाटोंकी सन्धियोंसे युवकके कमरेमें झांकने लगी। उसने देखा कि यह युवक भी अपने पलंगपर अनमनासा बैठा कुछ सोच रहा है। रजनीकी हाथकी चूड़ियां अचानक प्रकम्पित हो उठीं। युवकने एक बार उन कपाटोंकी तरफ देखा पर बाधा पा उसकी आंखें लौट गयीं और वह ध्यान-मग्न हो गया। रजनीका जी इन कपाटोंकी कठोर मर्यादाको लांघकर युवकके पास जानेको आकुल हो उठा। पर तो भी कुछ हुआ नहीं और वह लग्नपल यों ही बीत गया। केवल वही चिरपरिचित मौन उन दोनोंके बीच हंसता हुआ खड़ा रहा।

पर तो भी उस दिन कुछ न होकर भी कुछ जरूर हो गया, यह रजनी भी जान सकी। रजनी अब मौके-बे-मौके अपने घरके जीनेपर, जो युवकके कमरेके पास था, चढ़-उतरकर अपने पायलोंकी व हाथकी चूड़ियोंकी व्यर्थ ध्वनि करती। युवकके बाहरसे आनेके समय वह द्वारपर उसकी बाट जोहती खड़ी रहती और बिलकुल अनजान बनकर उस युवकके अछूते हृदयको अपनी छबिसे भर देना चाहती। तीज-त्यौहारके दिन जब रजनी अपनी मांके साथ गङ्गा स्नानको जाती तब यह देखना न भूलती कि वह परदेशी अपने कमरेकी खिड़कीपर खड़ा है या नहीं। उसे पाकर रजनीकी चाल एक रहस्यसे भरकर भारी हो जाती। रात-के अन्धकारमें, अपने कमरेमें खाटपर पड़ी रसकी प्यासी रजनी अपने और उस युवकके अन्तरकी बात सोचती कि यह दीवारका तनिक-सा अन्तर दूरन्त तक फैलकर कैसा व्यङ्ग कर रहा है और मर्यादाका यह संसार उसे चारों तरफसे घेरकर, अभिशापकी भांति उसका पीछा करके कैसे उसे अपनी ही सीमामें बटोरे रखना चाहती है। रजनीके भीतर एक करुण रागिनी बज उठती जो बाहर निकलकर उसे सब तरफसे अपनी धारासे परिवृत कर उसे प्रकम्पित सी छोड़ किसी अदृश्य शून्यमें समा जाती।

रजनीने अब उस परदेशीमें भी एक अनियम पाया। उसकी निरन्तरकी पढ़ाईमें एक व्यतिक्रम हुआ और वह अब अपने टेबुलपर झुके रहनेकी जगह पलंगपर ही लेटा रहता और शून्य आंखोंसे छतकी कड़ियोंको गिना करता। रजनी-का नारी-हृदय उस परदेशीको किसी मर्म व्यथामें जकड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देखकर रहस्यसे भर जाता और वह लुक-छिपकर, कहीं किसी गहराईमें पहुंचकर उस रहस्यका उद्घाटन कर लेना चाहती। पर रजनी पाती कि वह युवक जैसे एक दुर्जय महामायाके बीच जा पड़ा है, जहांसे उसका कुछ पता नहीं पाया जा सकता, जहांसे वह कहीं कुछ रत्ती-भर भी पकड़में नहीं आ सकता।

एक दिन रजनीकी मांने आकर उसे बताया कि वह परदेशी युवक ज्वरमें पड़ा बड़ी बुरी तरहसे तड़प रहा है। उस बेचारे परदेशीका तो यहां कोई है नहीं। अब उन्हें ही किसी डाक्टर-हकीमको लाकर उसे दिखाना चाहिए और उसकी सेवा-शुश्रूषा करनी चाहिए! तब पड़ोसका एक डाक्टर आकर उस युवकको देख गया और पथ्य देनेका भार पड़ा रजनी पर।

दो-चार दिनके ठीक उपचारके बाद युवक तो अच्छा हो गया; पर रजनी इन्हीं दो-चार दिनोंमें जिस प्रच्छन्न रहस्यका उद्घाटन कर सकी उसकी बात सोचकर आज भी वह उल्लाससे भर गयी। वह परदेशी अपने बुखारकी तेजीसे आकुल होकर बारबार अपनी आंखें खोलता और पास बैठी रजनीको बड़ी करुण दृष्टिसे देखता। जब रजनी उससे उसकी तबीयतकी हाल पूछती तो उसकी बड़ी-बड़ी नीरव आंखें रजनीके सुन्दर मुखपर छा जातीं और वह कुछ जबाब नहीं देता। एक दिन दोपहरीमें अचानक वह युवक अपनी आंखें फाड़कर रजनीकी ओर देखने लगा और तब बोला—"रजनी जरा मेरे बुखारकी तेजी तो देखो।"—और इतना कहकर उसने एक आवेशमें अपने दोनों हाथोंसे रजनीका हाथ पकड़कर अपने माथेपर धर लिया और पलभरको उसे योंहीं पकड़े रहा। रजनीको आज इतनी देर बाद उस युवक-से दीर्घकालके अपने इस सम्बन्धमें केवल यही एक बात ढूंढ़े मिली जिसके सहारे वह अपने इतने दिनके अर्थहीन व्यापारको अर्थयुक्त मान सकी।

पर क्षण-भर बाद ही रजनीको याद आयी कि यही उसका अपना-बिराना आदमी आज उससे अपना सब-कुछ तोड़कर, रजनीके पास अपना कोई भी चिह्न शेष न रखकर किसी अपरिचित दूर देशको चला जायगा और रजनी इसी नरककुण्डमें मृत्यु पर्यन्त अपनी व्यथामें जलती रहेगी। रजनीने इस परदेशीसे कुछ भी न पाकर जो कुछ पाया है उसके अभावकी कल्पना करके वह भीतर-ही-भीतर कलप उठी और उसने सोचा कि उसका अपना यह दूर देशका वासी ही जब यहां नहीं रहेगा तब वही इस घरमें रहकर क्या करेगी? इतने कालसे उसका हृदय भीतर-ही-भीतर जो उसके देवताका रेखाचित्र तैयार करता रहा है, उसे इस पूजा-समाप्तिके अवसरपर, सङ्कोच और मर्यादाको मानकर, निर्भय होकर रजनी अपने हृदय-देशसे निर्वासित नहीं करेगी। वह तो उसे पूर्णरूपसे प्राप्तकर, उपलब्धकर, उसकी परम-शोभापर रीझकर उसे अपना समर्पण करेगी।

रजनी तब अलग बिसूरना छोड़ उठ बैठी। शीशेमें जा उसने अपने बाल संवारे। अपनी साड़ी बदली और तब मुंहपर थोड़ा-सा घूंघट डाल उस अपरिचितसे मिलने चली। रजनीने पहले अपने घरके भीतरसे देखा तो जान पायी कि उस परदेशीने अपना सब सामान बांध लिया है और अब वह किसीकी प्रतीक्षामें ध्यानमग्न बैठा है। रजनी एक करुण व्यथासे भर उठी। उसे जान पड़ा कि देवता उसीकी देरी-पर क्षुब्ध हुए बैठे हैं। उसने अपने मन-ही-मन कहा—"आई प्रभो देरके लिए क्षमा करना।"

सृजन-प्रलयकी इस लग्न वेलामें रजनी अपने देवताके सम्मुख पहुंच संकुचित सी हो गयी। उसका समग्र हृदय सिकुड़-सिमटकर जड़ हो केवल तन्तुओंका समष्टिमात्र ही रह गया। रजनीके मुखसे कोई बात नहीं निकली और वह कपाटोंसे ही चिपकी खड़ी रही।

पर रजनीने जब देखा कि देवता कुछ कहते ही नहीं तब अचानक वह पूछ बैठी—"आज आप घर छोड़कर जा रहे हैं?"

उत्तर मिला—"हां।"

रजनी विह्वल हो बोली—"तो आप मुझे भी अपने साथ ले चलिये।"

इसबार देवताने उत्तर दिया—"तुम्हारे ही कारण तो मैं जा रहा हूं।"

इसी समय रजनी लाजसे गड़ गयी। इतने दिनोंसे जो बात उसके हृदयके एकान्तमें छिपी पड़ी थी उसीने आज आवरण-मुक्त होकर, अपनेको नग्नरूपमें प्रकटकर रजनीको अपने देवताके सामने इतना क्षुद्र बना दिया। तभी तो देवता उससे अप्रसन्न हो गये। रजनी भी उनसे कैसी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ओछी बात मांगने चली थी। रजनी अब अपनी ही गोपन लम्पटता पर, अपने भीतर एक जुगुप्सासे भर उठी और लज्जासे लाल होते अपने मुंहको घूंघटमें अच्छी तरहसे छिपाकर सीधी अपने कमरेमें चली आयी।

---

# समुद्रपर आधिपत्य कौन करेगा?

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिका एक छात्र

जिस क्षिप्रगतिके साथ जापानके भाग्यसूर्यका उदय हुआ और आज वह अपनी पूर्ण ज्योतिके साथ राजनीतिक गगनमण्डलमें देदीप्यमान हो रहा है वह संसारके राष्ट्रोंके इतिहासमें सर्वथा अभूतपूर्व है। अबसे चालीस-पचास वर्ष पूर्व कदाचित् ही जापानकी गणना एक राजनीतिक शक्तिके रूपमें होती थी। १९ वीं शताब्दीके अन्त और बीसवीं शताब्दीके आरम्भमें यद्यपि जापानने चीन और रूसको परास्त करके अपने वाणिज्य-विस्तारके लिए कुछ सुविधायें प्राप्त की थीं फिर भी पाश्चात्य राष्ट्रोंकी दृष्टिमें जापानका स्थान एक निम्न राष्ट्रके रूपमें ही समझा जाता था। सन् १९१४ ई० से पूर्व जापानका आधिपत्य साम्राज्यसे बाहरके प्रदेशोंपर विस्तृत नहीं था। किन्तु महायुद्धकालमें जापानको अपनी चिरपोषित आकांक्षाकी पूर्ति करनेका मौका मिला और उसने इस मौकेसे पूर्ण लाभ उठाया। जापानने पूर्व एशियाके प्रदेशोंमें अपनी सत्ता स्थापित करनेकी पूर्ण चेष्टा की और चीनमें जर्मनीका जो शान्टुङ्ग प्रदेश था उसपर दखल कर लिया। इसके बाद सन् १९१५ में जापानने चीनके सम्बन्धमें अपनी २१ मांगें पेश कीं जिसका स्पष्ट अभिप्राय था चीनको सदाके लिए दासत्व-शृङ्खलामें आबद्ध कर देना और मञ्चूरियाके समृद्धि-साधनोंपर जापानका नियन्त्रण कायम करना। सन् १९१९ में जापानी राजनीतिज्ञ काउण्ट ओकूराने लिखा था :—

"By marching westward to the Balkans, to Germany, to France, to Italy, the greater part of the world may be brought under sway." अर्थात् यूरोपमें पश्चिमकी ओर बाल्कन प्रदेश, जर्मनी, फ्रान्स और इटलीतक बढ़कर संसारके अधिकांशपर हम अपना आधिपत्य स्थापित कर सकते हैं। सन् १९१६ में एक दूसरे जापानी लेखकने लिखा था —

"We now have China. China is our steed! Far shall we ride upon her! So our fifty millions become five hundred millions; so our hundreds of millions of gold grow into billions. How our strength has grown and still grows! In 1895 we conquered China, Russia, Germany and France stole the booty from us. In ten years we punished Russia and took back our own; in twenty we were quits with Germany, with France there is no need for haste. She knows that her Oriental possessions are ours for the taking. As for America, that fatuous booby with much money and sentiment but no cohesion and no brains of Government, were she alone we should not need our China steed. America is an immense melon, ripe for cutting. North America will support a thousand million people. They shall be Japanese, with their slaves." अर्थात् अब चीनपर हमारा दखल है। चीन हमारा घोड़ा है। इस घोड़ेपर सवार होकर हम बहुत दूर तक चले जायेंगे। इस प्रकार ५ करोड़ जापानियोंसे हम ५० करोड़ हो जायेंगे और हमारा स्वर्ण-भाण्डार कई गुणा बढ़ जायगा। हमारी शक्तिमें कितनी वृद्धि हुई है और अब भी हो रही है। सन् १८९५ में हमने चीनको जीता; किन्तु रूस, जर्मनी और फ्रान्सने लूटका माल हमसे चुरा लिया। इसके दस वर्ष बाद हमने रूसको सजा दी और उससे अपना प्रदेश वापस कर लिया, बीस वर्ष बाद हमने जर्मनीसे निपट लिया; फ्रान्सके साथ जल्दीबाजी करनेकी कोई जरूरत नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वह जानता है कि पूर्वमें उसके जो अधिकृत प्रदेश हैं उन्हें हम जब चाहें ले सकते हैं। और अमेरिका, वह तो एक दुर्बलचित्त अबोध मनुष्य जैसा है जिसमें धन और भावुकता तो है, किन्तु दृढ़लक्षता और शासन करनेकी बुद्धि नहीं है। अमेरिका एक पका खरबूजा है, जो काटने लायक हो गया है। उत्तर अमेरिका १ अरब मनुष्योंका भरण-पोषण करेगा। वे सब अपने दासोंके साथ जापानी बन जायेंगे।" अबसे १२ वर्ष पूर्व, वाशिङ्गटन कान्फ्रेन्सके दिनोंमें यह अनर्गल प्रलाप लिखा गया था। उस समय तक जापान पाश्चात्य जगत्की दृष्टिमें एक वशानुगत और अनुकूल राष्ट्र प्रतीत होता था। अतएव उक्त जापानी लेखकके कथनको डींग समझकर उसकी उपेक्षा कर देना ही उचित समझा गया। किन्तु उस समयसे लेकर अब तक घटनाचक्रके प्रवाहमें बहुत कुछ बह गया है और आज जापानके इस प्रकारके मंसूबे महज डींग ही नहीं समझे जायेंगे और न उनकी सर्वथा उपेक्षा ही कर दी जायगी।

इंगलैण्डके नौ-सचिव सर हौरेस वल्टन मन्सेल

आज दुनियाकी नजरोंमें जापान कुछ और ही प्रतीत हो रहा है। आज उसकी गणना एक Continental power के रूपमें हो रही है। इस समय उसका साम्राज्य फ्रान्स और जर्मनीके संयुक्त क्षेत्रफलकी अपेक्षा वृहत्तर है और वह चीन तथा पाश्चात्य जगत्के लोकमतको ठुकराकर मनमानी कर सकता है। वाणिज्यक्षेत्रमें वह इङ्गलैण्ड और अमेरिका जैसे व्यवसायी राष्ट्रोंका प्रबल प्रतिद्वन्दी हो रहा है। संसारके बाजार उसके मालसे पट रहे हैं। लङ्काशायर उसकी प्रतिद्वन्दितासे संत्रस्त हो उठा है। भारत और चीनमें उसका वाणिज्यक्षेत्र विस्तृत हो रहा है। जिस समय जापानी फौजने मञ्चूरियापर एक साधारण घटनाकी तरह अपना अधिकार कर लिया और मञ्चूरियाके राजाको अपने हाथकी कठपुतली बनाकर सिंहासनासीन किया उस समय पाश्चात्य जगत्के राजनीतिज्ञोंकी निद्रा भङ्ग हुई और उन्होंने विस्मयविस्फारित नेत्रोंसे देखा कि एशियाका यह नवजाग्रत गर्वोद्दीप्त राष्ट्र आज संसारके लोकमतको ठुकरानेमें जरा भी आगा-पीछा नहीं करता।

जापानकी दृष्टि बराबरसे इंगलैण्डकी समृद्धि और उसकी क्रमोन्नतिपर रही है। दोनों देशोंमें भौगोलिक समानता भी बहुत कुछ है। यूरोप महादेशका एक क्षुद्र द्वीप होकर भी यदि इंगलैण्ड अपने अधिवासियोंकी शक्ति और उद्योगकी बदौलत संसारका सर्वश्रेष्ठ वाणिज्य-प्रधान राष्ट्र बन सकता है और एक सुविशाल साम्राज्यकी प्रतिष्ठा कर सकता है तो फिर जापान अपने लिए वैसा क्यों नहीं कर सकता। जापानके मनमें स्वभावतः ही इस प्रकारके प्रश्न उदित हुए—"हमारी जनसंख्यामें भी वृद्धि क्यों न हो ? हम भी प्राच्य देशोंके वाणिज्यपर अपना दखल क्यों न जमावें ? प्रशान्त महासागरके तटवर्ती प्रदेशोंमें हम भी एक विशाल साम्राज्यकी प्रतिष्ठा क्यों न करें ?"

पाश्चात्य राष्ट्रोंके स्वार्थपर साम्राज्यवाद तथा उनमें कितने हीने विदेशियोंके सम्बन्धमें जो कानून बनाये हैं उनके विरुद्ध भी जापानका प्रतिवाद एक उल्लेखनीय प्रश्न है। यद्यपि जापानी यूरोप या अमेरिकाके किसी देशमें जाकर बसना नहीं चाहते, किन्तु जब उनसे यह कहा जाता है कि वर्णभेदके कारण वे श्वेताङ्गोंके देशमें नागरिकोंके समानाधिकार प्राप्त नहीं कर सकते तो इससे अवश्य ही जापानके आत्मसम्मानपर आघात पहुंचता है। जापान इसमें अपनी प्रतिष्ठा और राष्ट्रीय गौरवकी हीनता समझता है। यही कारण है कि जापानने महासमरके बाद सन् १९१९ की शान्तिपरिषद्में जातीय समानताके सिद्धान्तका प्रतिपादनका प्रस्ताव रखा था किन्तु अमेरिका और इंगलैण्डके विरोधके कारण जापानकी यह मांग मंजूर नहीं की गयी। तबसे जापान वर्णभेदजनित अपने इस अपमानको भूला नहीं है। एक ओर तो उसकी उचित मांगका पाश्चात्य राष्ट्रों द्वारा इस प्रकार ठुकराया जाना और दूसरी ओर सन् १९२२ में इंगलैण्डके साथ सन् १९०७ की उसकी सन्धिकी पुनरावृत्ति न होना और इसके साथ ही सिङ्गापुरमें जङ्गी जहाजोंका अड्डा बनानेकी तैयारी इन सब घटनाओंसे जापानका मत बिलकुल बदल गया और उसे यह विश्वास हो गया कि जापानको अपने भविष्यका गठन सबसे अलग होकर अकेला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही करना होगा। और यह तभी सम्भव हो सकता है जब कि वह अपनेको इतना शक्तिशाली बनावे जिससे श्वेताङ्गोंके चंगुलसे वह सुदूरपूर्वके देशोंको छीन सके।

इसके बाद जापानने अपने इस परिवर्तित मनोभावके अनुसार अपनी नीतिको कार्यान्वित करना आरम्भ किया। युद्धके बाद यद्यपि जापानकी शक्ति बहुत कुछ सुदृढ़ हो चुकी थी फिर भी उस समय कई ऐसे कारण मौजूद थे जिनसे जापानको अपने भविष्यके सम्बन्धमें बहुत कुछ चिन्ता हो रही थी। इंगलैण्ड और जापानके बीच जो सन्धि चली आ रही थी उसकी मीयाद सन् १९२० में खतम हो गयी और फिर इसकी पुनरावृत्ति नहीं की गयी। इसके अलावा यह बात अब अधिकाधिक रूपमें प्रत्यक्ष होने लगी थी कि प्रशांत महासागरको लेकर जो प्रमुख समस्यायें हैं उनके सम्बन्धमें अमेरिका और इंगलैण्डका एक समान स्वार्थ और दोनोंकी एक ही नीति है। सिङ्गापुरमें जङ्गी बेड़ा रखनेके लिए अड्डा बनाया जाना और फिलीपाइनमें किलाबन्दी, इन दो बातोंसे जापानके सन्देहकी और भी पुष्टि होती थी। इन सबसे भी बढ़कर एक खास बात यह थी कि अमेरिकाने अपनी नौ-सेनाके सम्बन्धमें जो प्रोग्राम स्थिर किया था उसके अनुसार सन् १९२३ में अमेरिकाके लड़ाकू जहाज और क्रूजर कुल मिलाकर १,१७२,३०० टनके हो जाते। जङ्गी जहाजोंका यह विशाल बेड़ा अमेरिकाको प्रशान्त महासागरका सर्वप्रधान नौशक्ति बना देता। इसलिए जापानने उस समय अमेरिकाके साथ प्रतियोगिता करनेमें अपनेको अक्षम समझकर वाशिङ्गटन कानफरेन्समें भाग लिया और उसने मजबूर होकर नौशक्तिके सम्बन्धमें ५: ५: ३ का अनुपात स्वीकार कर लिया। वाशिङ्गटन कानफरेन्सकी इस प्रधान धाराके अनुसार अमेरिका इंगलैण्ड और जापान, इन तीन शक्तियोंके नौबलका अनुपात निर्दिष्ट कर दिया गया। इस अनुपातके अनुसार जहां अमेरिका और इंगलैण्ड पांच-पांच जङ्गी जहाज बना सकते हैं वहां जापान सिर्फ तीन। इसके सिवा प्रत्येक श्रेणीके जहाजकी भी एक सीमा निश्चित कर दी गयी थी।

अमेरिकाके नौ-सचिव मि० सोयान्सन

वाशिङ्गटन कानफरेन्सके सामने दो मुख्य विषय विचारणीय थे—(१) नौशक्ति सम्बन्धी प्रतिद्वन्द्विता और (२) चीनका भविष्य। चीनके सम्बन्धमें पाश्चात्य राष्ट्रोंकी नीति थी "Open-Door" policy मुक्तद्वारकी नीति। इस नीतिका अर्थ यह होता है कि चीनमें वाणिज्य-व्यवसाय करनेका सब राष्ट्रोंको एक समान मौका मिले। इसी नीतिके आधारपर सन् १८४२ में इंगलैण्डने और इसके दो वर्ष बाद फ्रान्स और अमेरिकाने चीनके साथ सन्धियां की थीं। चीनके साथ पाश्चात्य राष्ट्रोंकी यह नीति बहुत दिनोंसे कायम चली आती थी, जब कि जापानने महासमर कालमें चीनके सम्बन्धमें अपनी २१ मांगें पेश कीं; किन्तु अमेरिकाके घोर विरोधके कारण जापानकी ये मांगें मञ्जूर नहीं हो सकीं। इसके बाद जापान और अमेरिकाके बीच समझौतेकी बात-चीत शुरू हुई और इसके फलस्वरूप सन् १९१७ में Lansing Ishii का समझौता हुआ जिसके अनुसार "मुक्तद्वार" नीतिको स्वीकार करते हुए भी अमेरिकाने चीनमें और खासकर मञ्चूरियामें जापानके विशेष स्वार्थको मान लिया था। यद्यपि वाशिङ्गटन नौ-सम्मेलनके बाद यह समझौता कारगर नहीं रह गया, फिर भी अमेरिकाने जापानका मञ्चूरियामें जो विशेष स्वार्थ मान लिया था वही आगे चलकर जापानके नवीन मञ्चूको साम्राज्यका आधार बन गया और इस प्रकार कम-से-कम मञ्चूकोंके सम्बन्धमें तो "मुक्तद्वार"की नीति कारगर नहीं रह गयी।

सन् १९३१के बादसे मञ्चूरियामें जापानकी जो हरकतें हुई हैं और जापानके आधिपत्यमें मञ्चूकोका जो नया साम्राज्य प्रतिष्ठित हुआ है उसे "मुक्तद्वार" नीतिके विरुद्ध समझकर अमेरिका और इंगलैण्डने स्वीकार नहीं किया है, किन्तु मञ्चूको साम्राज्यके सम्बन्धमें अमेरिका और इंगलैण्डकी यह नीति कब तक कायम रह सकेगी यह कहना कठिन है। क्योंकि मञ्चूकोके साथ जापानके स्वार्थ घनिष्ट रूपमें सम्बद्ध हैं। जापानमें कच्चे मालका अभाव है और जापान-निवासियोंके खाद्य-पदार्थोंका अधिकांश मञ्चूरिया तथा कोरिया और फर्मोसा द्वीपोंसे आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस कथनमें कोई अत्युक्ति नहीं कि जापानका मञ्चूरियापर दखल होनेसे उसके वाणिज्य-साधन तथा खाद्य पदार्थ दुगुने हो गये हैं और वहांके कोयला, लोहा, मैगनेसियम, शोरा तथा soya bean की पैदावारपर नियन्त्रण होनेसे जापान-की गणना आज संसारके प्रमुख समृद्धिसम्पन्न देशोंमें हो रही है। इस प्रकार एक व्यवसायप्रधान राष्ट्रके रूपमें जापानकी जो सब असुविधायें थीं वे आज बहुत-कुछ दूर हो गयी हैं और सस्ती मजदूरीकी जो उसकी एक खास सुविधा है वह ज्यों-की-त्यों कायम है। अतएव जापानकी स्थिति अब बिलकुल बदल गयी है। आज जापान अपनेको इतना क्षमताशाली समझ रहा है कि वह पाश्चात्य राष्ट्रोंको परराष्ट्र-सचिवने इस अभिप्रायकी यथार्थता स्वीकार नहीं की थी। सर जान साइमनने विलायती पार्लामेण्टमें इस सन्देहका निराकरण करते हुए कहा था कि जापानके कथनका यही अभिप्राय था कि यदि कोई शक्ति चीनमें गृह-कलह उत्तेजित करनेका प्रयत्न करेगी अथवा चीनको जापानके विरुद्ध शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित करनेकी चेष्टा करेगी तो जापान इस प्रकारके प्रयत्नोंको शत्रुतापूर्ण समझेगा। सर साइमनने पार्लामेण्टको यह भी विश्वास दिलाया था कि मुझे जापान सरकारकी ओरसे इस बातकी गारण्टी मिली है कि मञ्चूरियामें अंगरेजोंके जो स्वार्थ हैं उनमें किसी प्रकारका खलल नहीं पहुंचने दिया जायगा। किन्तु

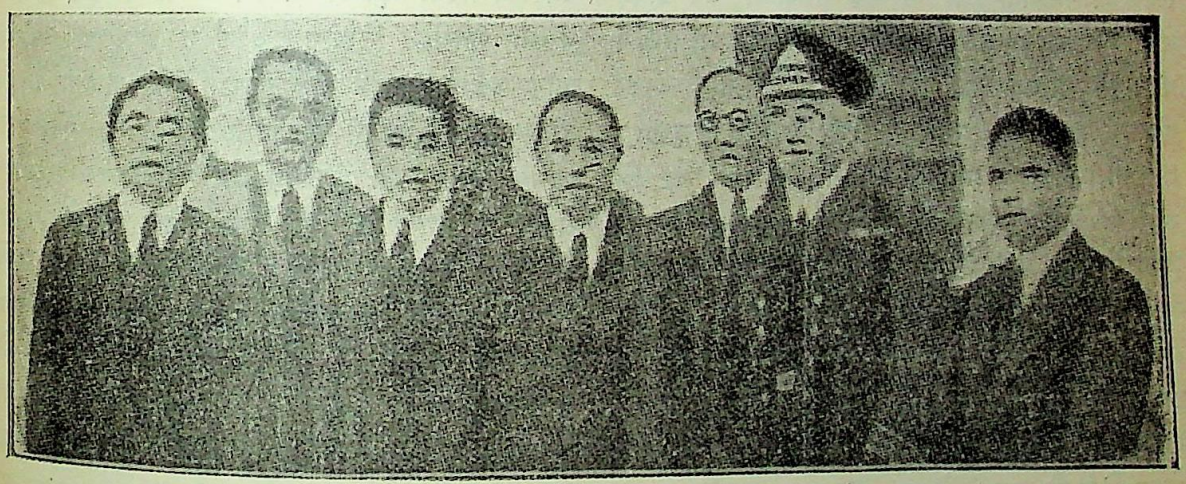

लण्डनके नौ-सम्मेलनमें भाग लेनेवाले जापानी प्रतिनिधि।

साफ-साफ कहता है कि वे फलां-फलां शर्तोंपर चीनके साथ व्यापार कर सकते हैं। श्वेताङ्ग सम्प्रदायने इतने दिनों तक पीत जातियोंके लिए अपना संसार बन्द रखा। आज जापान भी यह चाहता है कि सुदूर प्राच्य जगत श्वेताङ्ग जातियोंके लिए रुद्धद्वार समझा जाय। मञ्चूरियाके सम्बन्धमें लिटन रिपोर्टकी अवज्ञा करके उसने पाश्चात्य शक्तियोंको इस प्रकारसे यह चुनौती दी थी कि "Hands off Asia" एशियासे अपना हाथ खींच लो। चीनके सम्बन्धमें कुछ समय पहले जापानकी ओरसे जिस नीतिकी घोषणा की गयी थी उससे यही अनुमान किया गया था कि चीनके सम्बन्धमें जापान 'मुक्तद्वार'की नीतिपर कायम रहना नहीं चाहता, यद्यपि उस समय जापानके अमेरिका जापानके इस रुखको कुछ और ही ढङ्गसे देख रहा है। चीनमें जापानकी नीति जिस दिशामें प्रवर्त्तित हो रही है उसे देखते हुए अमेरिकाको यह स्वभावतः आशङ्का हो रही है कि चीनका द्वार अब अधिक दिनों तक पाश्चात्य जातियोंके लिए मुक्त नहीं रह सकेगा। उधर जापान इस बातको स्पष्टतया स्वीकार करता है कि नवजाग्रत और शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित शक्तिशाली चीन उसके लिए चिन्ताका कारण हुए बिना नहीं रह सकता, क्योंकि सुदूर पूर्वमें रूस अपनी सैनिक शक्तिको सुदृढ़ बना रहा है। सन् १९२२ में वाशिङ्गटन सम्मेलनके समय सुदूर पूर्वमें रूसकी शक्ति नगण्य समझी जाती थी, किन्तु अब वह बात नहीं रही। रूस व्लेडीभोस्टोक (Vladivostok) में हवाई जहाजोंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जो अड्डा बनाना चाहता है उससे जापान सशङ्कित हो उठा है। इस प्रकारके सन्देहपूर्ण वातावरणमें ही प्रशान्त महासागरसे स्वार्थ सम्बन्ध रखनेवाली तीन महाशक्तियोंके बीच लण्डनमें नौ-सम्मेलनकी प्रारम्भिक आलोचना आरम्भ हुई है।

सन् १९२२ में अमेरिका, इंगलैण्ड और जापानके बीच वाशिङ्गटनमें जो नौ-सम्मेलन हुआ था उसकी मीयाद १४ वर्षकी थी। सन् १९३६ में यह मीयाद पूरी हो जायगी। अतएव नौबलके सम्बन्धमें इन तीन राष्ट्रोंके बीच फिर कोई समझौता हो सकता है या नहीं इसी विषय-को लेकर उक्त राष्ट्रोंके प्रतिनिधि लण्डनमें आलोचना-प्रत्यालोचना करनेके लिए एकत्र हुए हैं। वाशिङ्गटन सम्मे-लनमें जो समझौता हुआ था वह समझौता अब कायम नहीं रह सकता। कारण, इन बारह वर्षोंके बीच घटनाओंमें बहुत-कुछ परिवर्तन हो गया है। उस समय जापानका एकमात्र लक्ष्य था आत्मरक्षाके लिए आयोजन करना। तभी तो वाशिङ्गटन सम्मेलनमें यह भी तय पाया था कि अमेरिका फिलीपाइनमें और इंगलैण्ड हाङ्काङ्गमें जङ्गी जहाजोंके अड्डे नहीं बना सकेंगे और इसके साथ-साथ जापान भी प्रशान्त महासागरमें युद्धके फलस्वरूप जर्मनीसे अपहृत द्वीपोंमें अपना जहाजी अड्डा नहीं बना सकेगा। इन सुविधाओंके साथ जापानने नौबलके सम्बन्धमें ५.५.३ का अनुपात स्वीकार कर लिया और उस समय उसका उद्देश्य सिद्ध हो गया। किन्तु अब सन् १९३४ में जापान नौशक्तिके सम्बन्धमें अपनी वर्तमान स्थितिसे सन्तुष्ट नहीं है। आज वह सुदूर पूर्वके देशोंमें अपना वाणिज्यमूलक स्वार्थ और सबसे बढ़कर राजनीतिक आधिपत्य स्थापित करनेके लिए अत्यन्त आग्रहान्वित हो रहा है। इसी आकांक्षाने आज उसे यह कहनेके लिए प्रेरित किया है कि वह नौबलमें अमेरिका और इंगलैण्डसे घटकर नहीं रहना चाहता। वह ५. ५. ३ का अनुपात स्वीकार करनेके लिए राजी नहीं है, क्योंकि इससे उसके आत्म-सम्मान-भावपर आघात पहुंचता है। सन् १९२१ में जापानके एडमिरल केटोने कहा था—"इंगलैंड और अमेरिकाके समकक्ष शक्ति-सम्पन्न बननेकी आकांक्षा जापानकी नहीं है।" सन् १९२१ में नहीं थी, किन्तु आज हो गयी है, क्योंकि इस १३ वर्षके अर्सेमें वह अपनेको इतना शक्तिशाली समझ रहा है जिससे वह जोरके साथ अपना दावा पेश कर सके। जापान अपने इस दावेके साथ-साथ अवश्य ही यह आश्वा-सन दे रहा है कि वह समशक्तिका अधिकार पा लेनेपर उसे कार्य रूपमें परिणत नहीं करेगा, किन्तु उसके इस आश्वा-सनपर अमेरिकाको विश्वास नहीं है। जापानका यह भी कहना है कि जङ्गी जहाजोंको दो श्रेणियोंमें विभक्त कर दिया जाय—एक आत्म-रक्षाके लिए और दूसरा आक्रमण-के लिए। सबमेरिन अर्थात् गोताखोर जहाजोंकी गिनती आत्मरक्षा श्रेणीके अन्तर्गत होगी और ३६ हजार टनसे अधिकके जो बड़े-बड़े जहाज होंगे वे आक्रमणकारी समझे जायंगे। आक्रमणकारी जहाजोंकी संख्या घटाकर गोता-खोरोंकी संख्या बढ़ा दी जाय। जापानके इस प्रस्तावसे न तो अमेरिका सहमत है और न इंगलैण्ड। अमेरिका आक्रमणकारी जहाजोंकी संख्यामें वृद्धि चाहता है और इंगलैण्डको यह भय है कि जापानके पास गोताखोर जहाज अधिक होनेसे उसके पूर्वीय देशोंके वाणिज्यपर खतरा पहुंच सकता है। जापानका एक प्रस्ताव यह भी है कि किस श्रेणीके कितने जहाज तैयार किये जायंगे इसकी संख्या निर्दिष्ट न करके केवल उनका टन निर्दिष्ट कर दिया जाय। अमेरिकाको यह मञ्जूर नहीं है। इस प्रकार अमेरिका और इंगलैण्ड दोनों ही जापानके सब प्रस्तावोंसे सहमत नहीं है। लण्डनके नौ-सम्मेलनकी प्रारम्भिक बैठकमें जो बात-चीत चल रही है उसमें इन तीन शक्तियोंके बीच इतना मत-वैभिन्य देखा जा रहा है कि स्वार्थ सामञ्जस्यके साथ कोई समझौता होना असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य जान पड़ता है।

कारण स्पष्ट है। अमेरिका और इंगलैण्ड दोनों ही जापानकी शक्तिवृद्धिसे संत्रस्त हो उठे हैं। अमेरिका देखता है कि प्रशान्त महासगरके उपकूलमें उसके हवाई द्वीपपुञ्ज तथा फिलीपाइन द्वीपपुञ्ज है। प्रशान्त महासागरमें जापान-की शक्ति-वृद्धि होनेसे वह इन द्वीपपुञ्जोंपर कहीं अधिकार न कर ले। इसके सिवा समुद्र-पथपर जापानका प्रभाव विस्तृत होनेसे अमेरिकाका वाणिज्य-व्यवसाय भी क्षतिग्रस्त हो सकता है। उधर इंगलैण्ड भी जापानको एक शक्तिशाली राष्ट्रके रूपमें देखना नहीं चाहता। एशियामें इंगलैण्डके स्वार्थ यथेष्ट हैं। चीनके बाजारमें इंगलैण्डके मालकी काफी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खपत होती है। भारत और हाङ्काङ्गमें भी इंगलैण्डके स्वार्थ हैं। अतएव सुदूर प्राच्यमें जापानका आधिपत्य स्थापित होनेसे इंगलैण्डके स्वार्थमें बाधा पहुंच सकती है, इस आशङ्कासे वह समुद्रके ऊपर जापानकी क्षमता-वृद्धि होने देना नहीं चाहता।

चाहे जो कुछ हो, किन्तु लक्षणोंसे यह अवश्य जान पड़ता है कि अमेरिका और इंगलैण्ड जापानके इस समशक्तिके दावेके सम्बन्धमें उसे इस बार चकमा नहीं दे सकेंगे। जापानके इस दावेको लेकर सम्मेलन भङ्ग हो जा सकता है, किन्तु जापान इस परिणामका सामना करनेके लिए पहलेसे ही तैयार है। वह अपनी इच्छानुसार जङ्गी जहाजोंकी संख्यामें वृद्धि करेगा और कोई भी पाश्चात्य राष्ट्र उसे बाधा प्रदान नहीं कर सकेगा। नतीजा यह होगा कि सैनिक शस्त्रास्त्रोंके समान नौसेनाके साज-सामानके सम्बन्धमें भी राष्ट्रोंके बीच प्रतिद्वन्दिता शुरू होगी और इसका अन्त कहां जाकर होगा यह कौन बता सकता है।

---

# निराशा

ला विधुर-विषण्ण हृदयमें
विस्मृत बीतेकी बातें,
उपहार रुदन दे जातीं
नीरव रोती-सी रातें।

सुख-अट्टहास बादलका
चपलाकी स्मितियां चञ्चल,
उन्माद विषाद बिछातीं
कर गीला उरका अञ्चल।

सूनेपनके चरणोंपर
नीरव नयनोंके निर्झर-
झरते, निष्फल, निर्धन, मन
रोता है आहें भर-भर।

मुग्धाकी मुसकानों-से
जो थे कुछ-कुछ मुसकाये,
वे मधु-मायामें कोमल
आशा-कुड्मल कुम्हलाये।

हा! बिखर गये सोनेके-
वे सुख सपने-से होकर,
सो गयी अरे जीवनकी
उत्कण्ठा उरमें रोकर।

खो गयी सदाको ममता
निर्ममताके निर्जनमें,
बस रोनेको वे स्मृतियां
हैं शेष हमारे मनमें।

कैसे थे वे पल सुखकी-
स्मितियोंसे स्निग्ध सुनहले,
जब प्राण! तुम्हें पाया था
प्राणोंने पहले पहले।

हंस-हंस तुमने बिखरा दीं
जीवन प्रसून-पंखुरियां,
देखो न मुझे चितवनमें
हे देवि! छिपाकर छुरियां।

—श्रीनिधि द्विवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# गरम राखमें ढंकी बारूद

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी

हाँ, आजकी दुनिया गरम राखमें ढंकी बारूदके मानिन्द है—वह कभी भी भड़क उठ सकती है, कभी भी विस्फोट हो सकता है। विस्फोट!—कौन कहे, इस विस्फोटमें कितने देश, कौनसे महादेश नेस्त-नाबद हो जानेसे बच पायेंगे? पिछले १२-१४ वर्षों तक तो शान्तिके सभी बाहरी लक्षण दीखते भी थे; किन्तु अब तो, जब-तब, विस्फोटके पहलेकी गड़गड़ाहट भी सुनायी पड़ती है!

मनुष्य अपने बचपनके प्रभातमें सुखसे था, शान्तिसे था। माना, उसके पास न वायुयान थे, न जहाज, न रेल, न तार। किन्तु तो भी, इन उपकरणोंसे हीन होते हुए भी, उसमें प्रेम, सहृदयता, पर-दुखकातरता, एक शब्दमें, मनुष्यता थी। किन्तु इसी समय, धूमकेतुके समान, उसकी दुनियामें राजसत्ताका पदार्पण हुआ। वह राजसत्ता आज पूंजीवादकी सुरा पीकर उन्मत्त नृत्य—ताण्डव नर्त्तन कर रही है! उसके हाहा-हूहूसे दिशायें डोल रही हैं, जमीन थरथराती है, आकाश कांप रहा है। गत जर्मन-युद्धके रूपमें, उसके इस नर्त्तनका एक मूर्त्त चित्र हमने देखा था! आज, दूसरेके लिए भी, नियति-देवता अपनी कूंची सम्हाल रहा है!—'जमीन' तजवीज कर रहा है; बस, इतनी ही देरी समझिये!

१९१४-१७ के दिन शायद आपको याद हों। मक्कारोंने, भगवान्‌के नामपर, धर्मग्रन्थोंके नामपर कसमें खाई थीं (शायद इनकी निस्सारता सिद्ध करनेके लिए ही) यह युद्ध हम सदाके लिए युद्ध बन्द करनेके लिए लड़ रहे हैं—war to end the war इस सुनहरे आदर्शवादकी आड़में कितनी क्रूरता, नृशंसता नहीं की गयी! इस नरमेधमें कितने ही करोड़ मानव-आत्मायें जीवित बलि चढ़ा दी गयीं। खैर, जो बलि चढ़ गये सो तो गये! किन्तु पङ्गु, अन्धे, पामालके रूपमें अर्द्ध-बलियोंकी तथा इन मृतों और अर्द्धमृतोंकी पत्नी, बहन, माता आदिके रूपमें निराश्रय और निरवलम्बोंकी जो विशाल फौज जिन्दगीभर रो-रोकर, तड़प-तड़पकर, रुला-रुलाकर, तड़पा-तड़पाकर, मरनेके लिए छोड़ दी गयीं, उनकी तायदाद कौन बतावे? पर, इतना सब किये जानेके बाद आज हालत क्या है? संसारको धोखा देनेके लिए राष्ट्रसङ्घकी रचना की गयी जरूर; १९२० से आजतक निरस्त्रीकरण-सम्मेलनकी कितनी ही बैठकें भी हो चुकी हैं और होती जा रही हैं; कभी लड़ाकू जहाजोंके नियन्त्रणके सम्बन्धमें तो कभी जहरीले गैसोंका प्रयोग बन्द करनेके सम्बन्धमें परस्पर समझौतेपर हस्ताक्षर भी होते रहे हैं, किन्तु इनसे क्या हुआ? आज भी संसारके सभी राष्ट्रोंके मखमली दस्तानेमें फौलादी पञ्जे अपनी झलक दिखला रहे हैं। मुंहमें राम, बगलमें छुरी—की कहानी चरितार्थ हो रही है—सभी एक दूसरेके सीनेमें घुसेड़नेके लिए अपनी-अपनी कटारको पत्थर चटा रहे हैं!

* * *

निःशस्त्रीकरण, निःशस्त्रीकरणका शोर है—किन्तु परिणाम ठीक विपरीत दिशाकी ओर जा रहा है। १९१३-१४ में सभी राष्ट्र युद्धकी प्रचण्ड तैयारी कर रहे थे; किन्तु उस समयके फौजी खर्च और आजके फौजी खर्चसे तुलना कीजिये जब कि कहा जाता है कि संसार निरस्त्रीकरणकी ओर प्रवृत्त हो रहा है। १९१३-१४ में ग्रेट-ब्रिटेन, फ्रान्स और इटलीके फौजी खर्चका योग था ९० करोड़ डालर; किन्तु १९३०-३१ में, घटनेके बजाय, वह बढ़कर १२५ करोड़ डालर हो गया—यानी, घटते-घटते वह ४० सैकड़े बढ़ गया! दुनिया जानती है, इस निःशस्त्रीकरण या राष्ट्रसङ्घकी उत्पत्ति एक अमेरिकन दिमागकी खूबी है। प्रेसिडेण्ट विल्सन-के स्वभाग्य निर्णयके १४ सुनहरे नियम क्या भूलनेकी चीज हैं? किन्तु वही अमेरिका १९१३-१४ में जहां २४ करोड़ डालर खर्च करता था, १९३०-३१ में उसका फौजी खर्च ७२ करोड़ डालर था!—यानी, तिगुना ज्यादा। फिर, उसका प्रतिद्वन्दी जापान ही क्यों चूके; वह भी इस अर्सेमें, अपना फौजी खर्च ९ करोड़ डालरसे बढ़ाकर २३ करोड़ तक ले आया। यदि अमेरिकाने तिगुना बढ़ाया, तो यह अढ़ाईगुना बढ़ानेसे भी रहा! रूसको खूब बदनाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## असेम्बलीके कुछ निर्वाचित कांग्रेस सदस्य :—

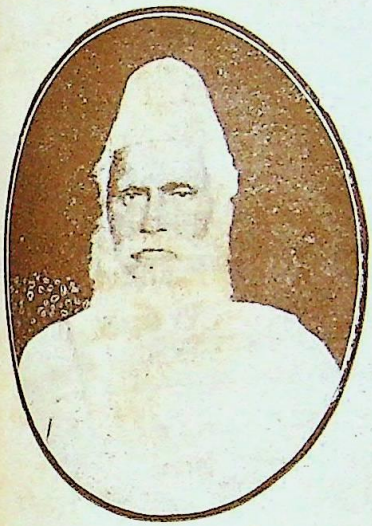

श्री रामनारायण सिंह

लाला श्यामलाल

श्रीयुत् अभ्यङ्कर

मि० होशमानी

मि० टी० एस० राजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## असेम्बलाके कुछ निर्वाचित कांग्रेस-सदस्य :—

श्री विपिनविहारी वर्मा

मि० ए. वी. गडगिल बी. ए. एल. एल. बी.

बाबू श्रीकृष्ण सिंह

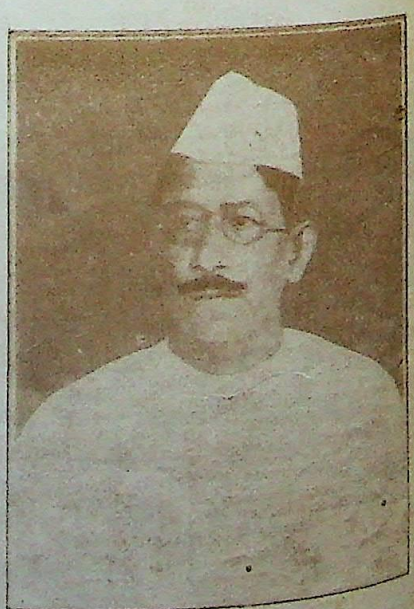

श्री दीपनारायण सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किया जाता है—कहा जाता है, वह संसारका खतरा है! उसके भूतका भय दिखलाकर इधर, हमारे देशमें भी, फौजी खर्चकी वृद्धिका समर्थन किया जाता है। किन्तु, वृद्धिके हिसाबसे देखिये, तो वह बेचारा सभी राष्ट्रोंसे पिछड़ा है—४४ करोड़ डालरसे बढ़कर ५७ करोड़ डालर तक उसका फौजी खर्च पहुंच सका है—यानी, कुल २९ फीसदकी वृद्धि! हां, यदि इस सम्बन्धमें कोई सबसे अधिक टोटेमें है, तो बेचारा जर्मनी! सुलहनामेकी जञ्जीरमें जकड़कर उसे बाध्य किया गया है कि जहां १९१३-१४ में वह ४६ करोड़ डालर खर्च करता था, वहां वह कुल १७ करोड़ डालर ही खर्च करे—पौने तीनगुना कम! यह १७ करोड़की रकम १९३०-३१ की है। इधर, अब तो जङ्गी सुल्तान हिटलरका राज्य है—गोकि, जञ्जीरें अभी तक टूटी नहीं; किन्तु उसकी चिङ्घाड़से ही कितनोंके होश दुरुस्त हो रहे हैं!

और सबसे आश्चर्यकी बात तो यह है, कि निरस्त्रीकरणकी बातचीत जारी रहते हुए भी, यह वृद्धि उन्नतिकी ओर है। १९२९ में संसारके ६२ राष्ट्रोंके फौजी खर्चका जोड़ ३९० करोड़ डालर था; वह १९३० में ४१२ तक पहुंच गया। यहां एक बात और ध्यानमें रखनेकी है। १९२९ में फौज रखनेका जो औसत खर्च पड़ता था, १९३० में उससे कम हो गया था।

इस विशाल फौजी खर्चके सम्बन्धमें एक-दो ढंगसे और विचार कीजिये। कुल बजटका यह फौजी खर्च कौन-सा अंश होता है, यह जान लेना भी जरूरी है। इस दृष्टिसे जर्मनी सबसे कम और इटली सबसे ज्यादा खर्च करता है। इटलीके बाद फ्रान्सका ही नम्बर आता है—जर्मनी सैकड़े ५७, ग्रेट ब्रिटेन सैकड़े १४, संयुक्तराज्य अमेरिका सैकड़े १७, फ्रान्स सैकड़े २२ और इटली २४। किन्तु, यदि प्रति व्यक्तिपर हर देशका फौजी खर्च क्या पड़ता है, इस हिसाबसे देखिये, तो फ्रान्सका नम्बर सबसे पहला और ग्रेट ब्रिटेनका दूसरा आता है—रूसका सबसे कम पड़ता है—फ्रान्स १३ डालर, ग्रेट ब्रिटेन ११ डालर, इटली ८ डालर, अमेरिका ७ डालर और रूस कुल ४ डालर।

किन्तु, यहां एक बात याद रखनेकी है। फौजी खर्चके आधारपर फौजी ताकतका अनुमान करना सर्वथा सत्य नहीं होता। इसके कई कारण हैं। सबसे पहले नौकरीकी ही शर्त लीजिये। स्थायी सेनामें अधिक खर्च पड़ता है, बनिस्बत उस सेनाके, जिसे कुछ वर्षों तक फौजी काम सिखलानेके बाद छुट्टी दे दी जाती, किन्तु युद्ध शुरू होते ही जिसे फौजमें आ जाना पड़ता है। फिर किसी-किसी देशमें स्वदेश-रक्षक सेना, तथा सशस्त्र पुलिसकी ही संख्या अधिक होती है। इनके खर्चमें बहुत ही कमी-बेशी होती है, जिसका प्रभाव फौजी खर्चपर पड़ता है। फिर; शस्त्रोंकी किस्मका भी फौजी खर्चपर कम प्रभाव नहीं पड़ता—जहाजी शस्त्रास्त्रोंमें ज्यादा खर्च पड़ता है। फिर कितने ही राष्ट्र ऐसे हैं जिनके पास औपनिवेशिक सेनायें हैं। हर देशके लोगोंके रहन-सहनकी सादगी या आडम्बरका असर भी उस देशके फौजी खर्चपर पड़ता ही है।

* * *

फौजकी आजकल तीन किस्में हैं—जमीनपर काम करनेवाली, समुद्रमें काम करनेवाली और आकाशमें काम करनेवाली। अब जरा मुख्य-मुख्य देशोंकी इन तीनों किस्मकी फौजी ताकत देखिये—

| | स्थल-सेना | |
|---|---|---|
| देश | नियमित सेना | फुटकल |
| जर्मनी | १,००,००० | ? |
| इंगलैण्ड | १,३७,००० | १,९३,००० |
| टर्की | १,४०,००० | १६,००० |
| संयुक्तराज्य अमेरिका | १,४९,००० | ? |
| जेकोस्लेवेकिया | १,३९,००० | १३,००० |
| यूगोस्लेविया | १,८४,००० | २८,००० |
| रूमानिया | २,९०,००० | ६३,००० |
| भारत | २,६०,००० | ७४ ००० |
| पोलैण्ड | २,६६,००० | ६४,००० |
| जापान | २,७०,००० | ? |
| इटली | ४,९१,००० | ९०,००० |
| रूस | ५,६२,००० | ? |
| फ्रान्स | ६,६२,००० | ५५,००० |

(औपनिवेशिक सेना सहित)

इस सूचीसे पता चलता है कि संसारमें १३ देश ऐसे हैं, जिनके पास एक लाखसे ज्यादा सेना है। यह तालिका यह भी बताती है कि फ्रान्सकी सेना इस समय संसार-भरसे



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अधिक है ! हां, यह बात मान ली गयी है कि स्थल-सेना-की दृष्टिसे फ्रान्सकी सैनिक शक्ति इस समय संसारमें सबसे बढ़ी-चढ़ी है। किन्तु, इंगलैण्डकी इस छोटी सेनासे हमें भ्रममें न पड़ना चाहिए। भारतकी सेना तो इसके अधिकारमें है ही—अन्य उपनिवेशोंमें भी काफी सेनायें हैं, जिन्हें वह काममें जुटा सकती है। फिर, डेढ़ लाखसे ऊपरकी तो उसकी टेरीटोरियल फोर्स है ! यों, करीब तीन लाखकी सेना खास इंगलैण्डमें भी तैयार ही समझिये। स्थल-सेना-की दृष्टिसे अमेरिकाकी सैन्य शक्ति प्रमुख राष्ट्रोंमें सबसे कम है। किन्तु वहां भी 'राष्ट्र-रक्षक' नामसे जो स्वयं-सैनिकोंका दल है, उसमें १,८८,००० आदमी १९३० में थे। फ्रान्सके बाद स्थल-सेनामें रूसका स्थान है और उसके बाद इटलीका। किन्तु कहां रूसका राज्य जिसका क्षेत्रफल ८१ लाख ४४ हजार मील है और कहां इटली, जिसका क्षेत्रफल मुश्किलसे एक लाखसे कुछ हजार ऊपर है। जापान बेचारा बदनाम किया जाता है। किन्तु, यद्यपि उसका राज्य-विस्तार २ लाख ६० हजार वर्ग मील है, तो भी उसकी सेना इटलीसे कहीं कम है। हां, एक चीज है। जापानियोंमें ऐसी देशभक्ति है कि लोगोंका अनुमान है कि वह किसी भी क्षण बड़ी-से-बड़ी सेना तैयार कर सकता है। फिर, जापानके सैनिकोंका पराक्रम भी विश्व-विदित है। हिसाब लगाया गया है कि समस्त यूरोपमें ही इस समय ४८ लाखकी स्थायी सेना है। भला बताइये ये सेनायें क्या इसलिए पाल रखी गयी हैं, कि ये शान्तिसे जुगाली करती बैठी रहें; इनकी स्थिति चिल्ला-चिल्ला-कर कहती है कि यह बारूद आज-न-कल भड़कने ही वाली है।

फिर, जल-सेनाको लीजिये—

| | इंगलैण्ड | संयुक्त राज्य अमेरिका | जापान | फ्रान्स | इटली | रूस | जर्मनी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जङ्गी जहाज और लड़ाकू क्रूजर | १५ | १५ | १० | ९ | ४ | ३ | ४+२ |
| क्रूजर | ५३+७ | १९+७ | ३१+७ | २२+५ | १७+९ | ४ | ६ |
| डिस्ट्रोयर्स और टारपेडो | १३४+२० | २५१+५ | ११०+१० | ६५ | ९९+११ | १७ | २६ |
| वायुयानवाहक तथा फ्लोटिला लीडर | २४+३ | ३+१ | ३+१ | १४+१९ | २१ | — | — |
| स्लूप्स, गनबोट ओर मोटर बोट | ५०+१० | २० | १५ | ६५+२५ | ७०+३ | ४ | ३+१ |
| सबमेरिन्स | ५२+१० | ८१÷३ | ६७+५ | ६५+४५ | ४६+२७ | १६ | — |

इसी सूचीमें इंगलैण्ड और अमेरिका प्रतिस्पर्द्धा करते दीखते हैं। इसके बाद जापानका स्थान आता है। रूस और जर्मनी इस दृष्टिसे सबसे पिछड़े देश हैं। जहां जोड़के चिह्न हैं, उनका अर्थ है कि इतने अधिक और तैयार किये जा रहे हैं। जर्मनी दो जङ्गी जहाज नये बनवा रहा है—जिसके बाद वह रूससे दुगुना ताकतवर हो जायगा। लण्डन और वाशिङ्गटनके आपसी समझौतेके कारण यद्यपि मित्र राष्ट्रोंने जङ्गी जहाजोंकी संख्या निश्चित कर रखी है, किन्तु क्रूजर और टारपेडो तथा सबमेरिनकी संख्यामें बड़ी तेजीसे वृद्धि हो रही है। इन तीनों ही का काम है—भरे-भराये, लदे-लदाये जहाजोंको बात-की-बातमें, सैकड़ों हजारों मानव-आत्माओंके साथ ही अतल जलमें विलीन कर देना। भले ही आप सैरको निकले हों या व्यापारको—किन्तु, चूंकि आप दुश्मनके देशके हैं, अतः, क्षार-समुद्रमें (क्षीर-समुद्रमें नहीं !) चुभकियां लेते रहिए।

इस सूचीमें जङ्गी जहाजोंकी संख्या किसी राष्ट्रके नामके आगे १५ से अधिक नहीं है। किन्तु इन जङ्गी जहाजोंकी भीषण संहारिणी शक्तिकी जानकारीके लिए शायद यह आवश्यक होगा कि आपके सामने किसी राष्ट्रके जङ्गी जहाजोंके बारेमें विवरणात्मक सूची रखी जाय। इंगलैण्डको ही लीजिये।

| नाम | टन | चाल | बख्तरकी मुटाई | तोपें |
|---|---|---|---|---|
| | प्रथमवर्गके जङ्गी जहाज—३ | | | |
| नेलसन<br>रोडने | ३४,००० | २३॥ | १४ इञ्च | ९—१६इञ्च<br>१२—६इञ्च |
| हूड | ४१,२६० | ३२ | १५ ,, | ८—१५इञ्च<br>१२—५·५ ,, |

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



द्वितीय वर्गके जङ्गी जहाज—१०

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सावरेन<br>ओक<br>रेज्योल्यूशन<br>रमिलीज<br>रिवेञ्ज | २५,७५० | २३ | १३ इञ्च | ८—१५इञ्च<br>१२—६इञ्च |
| एलिजाबेथ<br>बारस्पाइट<br>वेलियेण्ट<br>बरहम<br>मलाया | २७,५०० | २५ | १५ इञ्च | ८—१५इञ्च<br>१२—६इञ्च |

इनके अतिरिक्त इम्पायर आफ इण्डिया, वेन बो, मार्लबौरो और आयरन ड्यूक नामक चार जङ्गी जहाज और हैं, जिनमें लन्दन और वाशिङ्गटनके सुलहनामेके अनुसार दोको निरस्त्र किया गया है। किन्तु इनकी पूर्तिके लिए जैसा कि पहली सूची बताती है, अन्य सामुद्रिक विध्वंसकोंकी संख्या तेजीसे बढ़ायी जा रही है।

अब जरा हवाई ताकतका अन्दाजा लगा लीजिए।

| देश | सैनिक वायुयान | देश | सैनिक वायुयान |
|---|---|---|---|
| इंगलैण्ड | १४३४+१२७ | फ्रान्स | २३७५ |
| इटाली | १५०७ | रूस | ७५०+७५० (?) |
| पोलैण्ड | ७३० | रूमानिया | ७९९ |
| जेकोस्लोवेकिया | ५४६+१४१ | यूगोस्लेविया | ६२७+२६३ |
| संयुक्त राज्य | | जापान | १६३७ |
| अमेरिका | १७५२+५९९ | स्पेन | ४६२+१८७ |

जोड़ (+) का चिह्न यहांके नये बन रहे वायुयानोंका सूचक है। इस तालिकासे पता चलता है कि हवाई शक्तिमें भी फ्रान्स सबसे आगे है। उसके बाद शान्ति-उपासक देश अमेरिकाका नम्बर है। फिर, जापान और इटलीका। इंगलैंड इस बारेमें पिछड़ा हुआ है। किन्तु हाल हीमें वहां पार्लामेण्टमें इसपर खासी चर्चा हुई थी और इस शक्तिमें भी, वह किसीसे पीछे नहीं रहे, इसके लिए बजटमें काफी बन्दोबस्त किया जा रहा है। अमेरिकामें तो एक साथ ही ५९९ वायुयान बनानेमें हाथ लगे हैं। फिर, इतने राक्षसोंके बीचमें रूस सीता-सा अपना सतीत्व, इस कलियुगमें, कहां तक निभा सके। वह भी, कहा जाता है, ७५० वायुयानोंके बनानेके प्रयत्नमें है। इन वायुयानोंके सञ्चालनके लिए भी बड़ी-बड़ी सेनायें रखनी पड़ती हैं। इटलीके पास उसके १५०७ वायुयानोंके लिए २२९८० सैनिकोंकी हवाई फौज है। इसीसे अन्य राष्ट्रोंके बारेमें भी अन्दाजा लगाया जा सकता है। किन्तु, अपनी हवाई शक्तिसे किसीको सन्तोष नहीं है। भविष्यवाणियां हो रही हैं कि आगामी युद्ध न तो स्थल युद्ध होगा, न जल-युद्ध। वायु-युद्धमें ही शक्तियोंका फैसला करना पड़ेगा। अतः इस ओर बड़ी तेजीसे वृद्धि की जा रही है। इटली निकट भविष्यमें ही अपने वायुयानोंकी संख्या ४५ सौ करनेवाला है। मुसोलिनी तो चिल्ला-चिल्लाकर कहता है कि इटलीके पास इतने वायुयान होने चाहिएं कि उनके पङ्खोंसे सूर्य भी ढक जायें। हां, इस सूचीमें जर्मनीका नाम नहीं देखकर आश्चर्य होना सम्भव है। सन्धिकी शर्तोंके अनुसार जर्मनीको एक भी लड़ाकू वायुयान रखनेकी आज्ञा नहीं है। किन्तु यह भी सर्वश्रुत है कि व्यापारिक एवं नागरिक वायुयानके नामसे जर्मनीमें भी वायुयानोंकी संख्या कुछ थोड़ी नहीं है। इन वायुयानोंको थोड़े ही परिश्रमसे, सैनिक वायुयानमें परिणत कर लिया जा सकता है। १९२१-२२ में जब मित्र राष्ट्रोंने इस बातकी जांच एक कमीशन द्वारा करायी थी कि जर्मनी सन्धिकी शर्तोंका ठीकसे पालन कर रहा है या नहीं, तो उस समय वायुयानके बहुतसे इञ्जिन ढके हुए पाये गये थे। कहा जाता है, जर्मनीने अन्य देशोंमें वायुयान बनानेके कारखाने खोल रखे हैं।

* * *

इस विशाल पैमानेपर रखी गयीं स्थल-सेनाओं, जल-शक्तियों तथा हवाई फौजोंके अतिरिक्त एक चीज और है, जो यह सूचित करती है कि सचमुच शीघ्र ही संसारमें एक भयानक विस्फोट होनेवाला है। वह चीज है—शस्त्रास्त्रोंके कारखाने। प्रत्येक प्रमुख देशमें ऐसे कारखाने हैं, जो अरबों रुपयेकी पूंजीसे दिन-रात हथियार बनानेमें लगे रहते हैं। सबसे विचित्र बात तो यह है कि ये कारखाने गैरसरकारी कम्पनियों द्वारा चलाये जाते हैं, जिनका एकमात्र उद्देश्य होता है इस व्यवसायसे अधिकसे-अधिक रुपया इकट्ठा करना। इन कारखानों द्वारा नये-नये नरसंहारक अस्त्रोंका आविष्कार होता रहता है। इन अस्त्रोंके बेचनेके लिए इनके एजेन्ट देश-देशमें घूमा करते हैं। देशके सेनापतियों, मन्त्रियों तथा राजनीतिज्ञोंको ये लोग बड़ी-बड़ी रकमें देकर अपना दलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बना लेते तथा बड़े-से-बड़ा सौदा पटानेकी कोशिश करते हैं। एक देशने ज्यों ही इन्हें आर्डर दिया कि, उस आर्डरको लेकर उस देशके प्रतिद्वन्दी और विपक्षी देशमें पहुंचते और उनसे इस आर्डरको दिखाकर उससे भी बड़ा आर्डर लेते हैं। तारीफ तो यह है कि इस खरीद-फरोख्तमें सारी देशभक्ति, स्वदेश-प्रेम भुला दिया जाता है। गत युद्धमें कितने अंगरेज सैनिक अंगरेजोंकी ही बनाई हुई बन्दूकों, राइफलों और तोपोंसे मरे, इसकी गिनती बताना कठिन है। हाल हीमें अमेरिकामें एक मुकदमा चल रहा था, जिसमें इस रहस्यका ऐसा भण्डाफोड़ हुआ कि संसारके राजनीतिज्ञ चौंक पड़े और अब उस मुकदमेकी कार्रवाई बन्द कमरेमें की जा रही है।

महायुद्धके पहले जर्मनोंका 'क्रप'-कारखाना, शायद संसारका सबसे बड़ा शस्त्र-उत्पादक कारखाना था। किन्तु सन्धिकी शर्तोंके अनुसार अब जर्मनीके अन्दर शस्त्र तैयार करनेकी सर्वथा मनाही है। पर इसका अर्थ यह यहीं समझा जाय कि यह कारखाना खतम हो गया। इस कारखानेकी शाखायें पोलैण्ड और स्वीडेनमें खोली गयी हैं। स्वीडेनके 'बाइफर्स' नामक कारखानेको 'क्रप' के पेटेंटका भी व्यवहार करनेकी आज्ञा है। इसी तरह हालैण्डके कारखानोंसे भी इसका सम्बन्ध है। इंगलैण्डमें महायुद्धके पहले वाइकर्स और आर्मस्ट्रौंग नामक दो अलग-अलग शस्त्रके कारखाने थे, किन्तु अब दोनोंको मिलाकर एक कर दिया गया है। निस्सन्देह दोनोंके मिलनेसे इस कारखानेकी उत्पादक शक्ति कहीं अधिक बढ़ गयी है। फिर, इसका सबसे बड़ा समर्थक है 'बैङ्क आफ इंगलैण्ड' जो संसारमें सबसे जबर्दस्त आर्थिक सङ्गठन समझा जाता है। किन्तु, फ्रान्सके 'श्नीडर-क्रयूजो' कारखानेका इतिहास तो, फ्रान्सकी राज्य क्रान्तितक पहुंचता है। यह कारखाना इतना जबर्दस्त है कि फ्रान्सकी राजनीतिमें भी इसका पूरा दखल है। इस कारखानेकी शाखायें मध्य और पूर्वीय यूरोपमें छाई हुई हैं। दबदबा है। जापानके 'मित्स्यू' कारखानेका स्थान वाइकर्स आर्मस्ट्रौंग और श्नीडर क्रयूजोंके बाद, संसारमें तीसरा है। शस्त्रास्त्रोंके कारखानोंके साथ ही, रासायनिक कारखाने भी आधुनिक युद्ध-शास्त्रकी दृष्टिसे बहुत महत्व रखते हैं। अतः हर देशमें ऐसे रासायनिक कारखाने खुले हैं, जहां जहरीली गैस तथा अन्य घातक विस्फोटकोंकी उत्पत्ति होती, तथा इनके सम्बन्धके कितने अनुसन्धान-आविष्कार हुआ करते हैं। इंगलैण्डमें ७ करोड़ पौण्डकी पूंजीसे 'इम्पीरियल केमिकल इण्डस्ट्रीज' नामक कम्पनी खुली है, जिसका प्रभाव-क्षेत्र कनाडा तथा संयुक्तराज्य अमेरिका तक विस्तृत है। १९२९ में सभी राष्ट्रोंने एक सुलहनामेपर हस्ताक्षर किये थे कि भावी युद्धोंमें विषैली गैसोंका प्रयोग नहीं होगा; किन्तु जैसे लक्षण हैं, उनसे किसी घोर आशावादीको भी विश्वास नहीं हो सकता कि इस सुलहनामेका कुछ अंशमें भी पालन किया जा सकेगा।

* * *

यों, किसी भी दृष्टिसे देखिये, निकटमें ही एक सामरिक विस्फोटकी सम्भावना है। अब, सवाल यह है कि क्या इस विस्फोटको रोका जा सकता है? या, यदि ऐसा विस्फोट ही हो, तो हम ऐसे लोगोंको क्या करना चाहिए जो पराधीन भी हैं और शान्तिके उपासक भी। जिन्होंने वर्तमान पूंजीवादका अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि इसकी स्थापना ही परस्पर विरोधी बातोंपर हुई है। स्वयं इसकी तहमें ऐसी चीजें हैं, या स्वयं इसने उन चीजोंका जन्म दिया है, जो इसके संहारके कारण होंगे। पूंजीवादी राष्ट्रोंका आपसका विद्वेष भी इनमेंसे एक प्रमुख चीज है। अतः जब तक यह पूंजीवाद वर्तमान है, तब तक युद्धकी सम्भावना भी बनी ही रहेगी। अतः जो शान्ति चाहते हैं उनके लिए एक ही उपाय है—इस पूंजीवादके नाशके लिए अनवरत चेष्टा करना। फौजमें गरीबोंके ही लड़के रहते हैं। अतः गरीबोंमें इस बातका खूब जोरसे प्रचार करना कि उनके बच्चोंके प्राण और उनकी सुख-समृद्धिके लिए यह आवश्यक है कि पूंजीवादका नाश हो जाय। हाल हीमें इंगलैण्डकी मजदूरपार्टीकी जो कान्फ्रेन्स हुई थी, उसमें इस ढङ्गके प्रस्ताव पास हुए हैं। पं० जवाहरलाल नेहरूके चलते हमारी राष्ट्रीय कांग्रेस भी ऐसा प्रस्ताव पासकर चुकी है कि यदि कोई लड़ाई हुई, तो उसमें भारत किसी प्रकारकी मदद नहीं दे सकता। एक अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध-विरोधी समिति भी कायम है, जिसकी शाखायें प्रायः हर देशमें हैं। रोम्यां-रोलां, आइन्स्टीन, गांधी ऐसी कुछ महान् आत्मायें भी संसारको युद्धकी ओरसे मोड़नेकी अनवरत चेष्टायें कर रही हैं। किन्तु, मालूम होता है, एक बार ठनकर ही रहेगी—बिना एक बार रक्तमें डुबकियां लगाये संसारका पाप नहीं धुलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# फेफड़ेकी क्रियायें

डा० एस० एन० घोष

हम लोग यह जाननेकी तनिक भी चेष्टा नहीं करते कि हमारे शरीरके भीतरका प्रत्येक यन्त्र किस प्रकार अपना-अपना कार्य करता रहता है। जहां इन यन्त्रोंकी क्रियामें जरासी खराबी हुई, प्रकृति हमें सचेत कर देती है कि शरीरका अमुक अंग विशेष रुग्ण हो रहा है। बहुधा प्रकृति ही हमें रोगोंसे बचाती और रोगाक्रान्त होनेपर हमारी रक्षा करती है; किन्तु कभी-कभी रुग्ण अंगको स्वस्थ बनानेके लिए औषधिकी आवश्यकता अनिवार्यरूपसे हो जाती है।

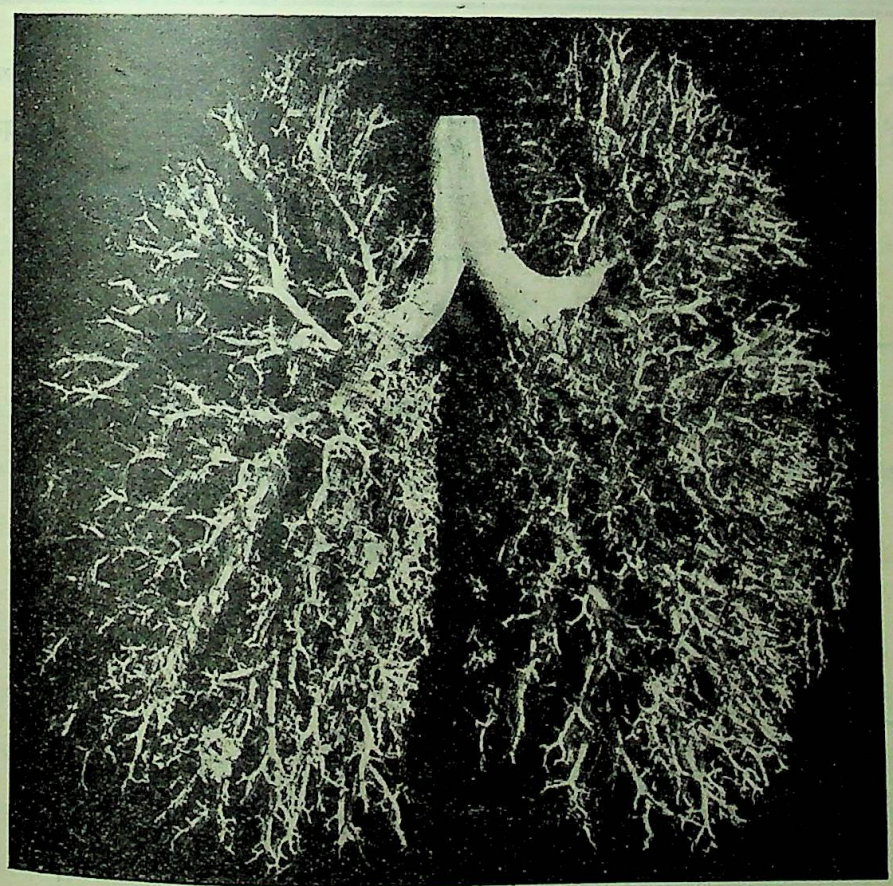

हृदय, फेंफड़े, अन्तड़ियां और प्रत्येक रक्तप्रवाहिनी शिरा अपना-अपना पृथक्-पृथक कार्य करती है और कभी रुकती नहीं। जो वैद्य, हकीम या डाक्टर नहीं हैं, पूछेंगे कि क्या जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त श्वास-यन्त्र कभी अपना काम बन्द नहीं करता? यदि यन्त्रोंके स्थानपर हम काम करते होते तो अपने लिए एक मास या इससे भी अधिक विश्रामकी सिफारिश करते, किन्तु हमारे शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्गको इतने अधिक विश्रामकी आवश्यकता नहीं। अब फेफड़ोंको ही ले लीजिये, इन्हें दीर्घकालीन विश्रामकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि प्रत्येक श्वास-प्रश्वासके मध्यकालमें यह क्षणिक विराम ले लेते हैं।

इस चित्रको देखनेसे पता चलेगा कि श्वास-यन्त्र दो भागोंमें विभक्त है। प्रत्येक विभागमें शाखायें और उपशाखायें हैं जो फेफड़ेके प्रत्येक स्थान तक विस्तृत हैं और बाहरसे प्राणवायुको लाकर भीतरकी विषाक्त गेसको निकाल फेंकती हैं। अनेक अवसरोंपर संक्रामक रोग श्वासयन्त्रके मार्गसे सीधे फेफड़े तक पहुंच जाते हैं और उन्हें आक्रान्त कर देते हैं, जिससे कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है।

आक्रमणकी पहली अवस्थामें जुकाम और खांसी होती है। उपेक्षा करनेसे रोग बढ़ जाता है और फेफड़ेमें गड्ढे तक हो जाते हैं। वैसी हालतमें पुराने ढङ्गसे उपचार हो ही नहीं सकता और लोग उपयुक्त औषधिके अभावमें विभिन्न प्रकारकी हानिकारक औषधियां खाकर फेफड़ेको औरभी खराब कर लेते हैं। बच्चे बहुधा ऐसी बीमारीसे अत्यधिक दुर्बल हो जाते हैं और कभी-कभी उनकी मृत्यु भी हो जाती है। बङ्गालके ही नहीं अपितु समस्त भारतको इसके लिए उपयुक्त चिकित्साका प्रबन्ध करना चाहिए। पश्चिमीय देश फेफड़ेके रोगोंमें 'सिरोलिन' से अत्यन्त लाभ उठाते हैं। सावधानीसे प्रयोग करके देखा गया है कि फेफड़ेके रोगोंसे मुक्ति पानेके लिए 'सिरोलिन'ही सर्वोत्तम औषधि है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दकार—
'चक्र'

# राग—सावेरी

झपताल ( मात्रा १० )

स्वरकार—
'बब्बनजी', गयावी

## गाना

स्थायी— लोचन विशाल, वनमाल गर, कमल मुख,
कुण्डलनकी झलक, नयन सुखदाई री।

अन्तरा— पीतपट, शीश मुकुट, शङ्ख, चक्र, गदा,
पद्म, अधर ते मुरली, 'चक्र' सुखदाई री।

| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धी | ना | धी | धी | ना | क | त्ता | धी | धी | ना |
| स | ध | प | म | प | म | ग | रे | स | स |
| लो | ऽ | च | न | वि | शा | ऽ | ल | व | न |
| ध | रे | स | रे | म | रे | म | प | ध | प |
| मा | ऽ | ल | ग | र | क | म | ल | मु | ख |
| म | — | प | ध | ध | सं | — | मं | रें | सं |
| कुं | — | ड | ल | न | की | ऽ | झ | ल | क |
| ध | र | सं | नी | ध | प | म | ग | रे | स |
| न | य | न | सु | ख | दा | ऽ | ई | री | ऽ |

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## अन्तरा

| | | २ | | | ० | | ३ | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | | | | | | | |
| म | — | प | ध़ | ध़ | सं | सं | ध़ | रें़ | सं |
| पी | ऽ | त | प | ट | शी | श | मु | कु | ट |
| सं | मं | गं | रें़ | — | सं | नी | ध़ | प | प |
| शं | ऽ | ख | च | ऽ | क | ऽ | ग | दा | ड |
| प | रें़ | सं | नी | ध़ | नी | ध़ | प | ध़ | म |
| प | ऽ | झ | अ | ध | र | ते | मु | र | ली |
| | | | | ग | | | | | |
| रेम | पध़ | प | म | रे़ | मप | संनी | धप | मग | रेस |
| च | ऽऽ | क | सु | ख | दा | ऽऽ | ईरी | ऽऽ | ऽऽ |

## राग-विवरण

राग सावेरी भैरव ठाठका ओड़व सम्पूर्ण राग है, अर्थात् आरोहमें पांच स्वर और अवरोहमें सातों स्वरोंका प्रयोग होता है। यह एक अप्रचलित राग है। इस रागके जाननेवालोंकी संख्या बहुत कम है। गोलोकवासी श्रीमान पण्डित विष्णु दिगम्बरजीके मतसे भैरव राग २४ प्रकारके हैं। राग सावेरी भी उन्हींमेंसे एक है। आरोहमें 'निषाद' और 'गान्धार' वर्जित है। 'ऋषभ' और 'धैवत' कोमल हैं और बाकी सब शुद्ध स्वरोंका प्रयोग होता है। इस रागका वादी स्वर 'पञ्चम' और संवादी स्वर षड़ज है। आरोहमें इसका स्वरूप गुणकलीके समान और अवरोहमें भैरवके समान है। अस्तु ऐसा जान पड़ता है कि यह राग गुणकली और भैरवके संयोगसे बना है। गानेका समय प्रातःकाल ४ से ७ बजे तक है। यह राग कर्णाटकी सङ्गीतका है।

आरोह— स रे़ म प ध़ सं

अवरोह— सं नी ध़ प म ग रे़ स

अलाप—स रे़ म ग रे़ स, नी़ ध़ स, रे़ म प म ग रे़ स, ध़ प म ग म ग रे़ स। स रे़ म प ध़ प, नी ध़ प, सं नी ध़ प, सं रें मं गं रें़ सं नी ध़ प म प नी ध़ प म ग रे़ स। सं, धसं, रेंसं, मंगं रेंसं, ध़ रें़ सं, नी ध़ प, म प ध़ प, म ग म रे़ म ग रे़ स। सं ध़ स, प ध़ सं, म प ध़ सं, रेम प ध़ सं, स रे़ म प ध़ सं, ध़ रें़ सं नी ध प, म ग रे़ स।

तान (१) सरें़ संनी धनी धप मप नीध पम गरे सध स

(२) सरे मप धसं रेंसं नीध पध नीध पभ गरे स

नोट—सांकेतिक चिह्न भातखण्डेजीकी प्रणालीके अनुसार समझने चाहिएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## प्रेमकी जय

बात बहुत पुरानी है। उस समयकी जब दिल्लीमें मुगल बादशाहोंका राज्य था और उनकी शान-शौकतसे दिल्ली जगमगा रही थी। इस दिल्लीके ही आस-पास एक ग्राममें लाला नामक एक हिन्दू बालक और उसके पड़ोसमें मूसा नामक एक मुसलमान बालिका रहती थी। उस समय हिन्दू-मुसलमान एक साथ रहते हुए भी सुखी, शान्त और प्रसन्न थे और उनमें परस्पर सहयोग एवं सौहार्दका भाव पूर्ण मात्रामें पाया जाता था। लाला और मूसा दोनों एक साथ खेलते और इधर-उधर घूमा करते थे। उनका अधिकांश समय एक साथ व्यतीत होता था। उनमें यदि कोई एक अपने घरपर नहीं पाया जाता तो इससे उनके माता-पिता चिन्तित नहीं होते, कारण उन्हें विश्वास था कि वह अपने साथीके घर गया होगा। केवल भोजनके समय ही वे दोनों एक दूसरेसे पृथक् हुआ करते थे। इस प्रकार दोनों सुख-पूर्वक एक साथ रहते हुए जीवन व्यतीत कर रहे थे जब कि उनके सुखसागरमें एक दिन तूफान उठा और दोनोंकी जीवन-नौकाको भिन्न-भिन्न दिशाओंमें बहाकर ले गया।

दोनों बाल्यावस्थाको पार कर चुके थे। मूसा अब किशोरी और लाला किशोर थे। मूसाके विवाहका प्रस्ताव हुआ और बातचीत चलने लगी। अब उन्हें इस बातका ख्याल आया कि वे एक दूसरेसे जुदा होंगे। आसन्न वियोग-जनित दुःखसे उनका तन क्षीण, मन मलिन होने लगा।

आखिर वह दिन भी आ पहुंचा जब कि सचमुच यमुनाके उस पार एक गांवमें मूसाका विवाह हो गया। ससुराल जाते समय मूसाने एक बार अपने बालसखा प्रणयी-को देखनेकी इच्छा प्रकट की, किन्तु लाला उसके पास नहीं आया। मूसाने रोते हुए ससुरालके लिए प्रस्थान किया। लोगोंने समझा कि मूसा अपने माता-पिताको छोड़कर ससुराल जा रही है, इसीलिये वह आकुल प्राणोंसे रो रही है। किन्तु हाय! उसके लालागतप्राण जो लालाकी वियोग-बह्निसे विदग्ध हो रहे थे, उसे समझनेवाला वहां कौन था? एक अन्तर्यामी विधाता ही उसकी इस व्यथाके मर्मको जानता था।

मूसा अपने पतिके गृह चली गयी। मूसाके वियोगमें लाला जी भरकर रोया। इसी प्रकार कुछ दिन बीत चले। अब मूसा अपने मैके आनेवाली है। उसने लाला-को अपने आनेकी तिथिकी सूचना भेजी और उससे यह भी अनुरोध किया कि उस दिन वह यमुना-पुलिनमें उसकी प्रतीक्षा करे। लालाको वह एक बार जी भरकर देख ले, बस यही उसकी अन्तिम इच्छा है।

निश्चित तिथिको मूसा आयी। यमुना-पुलिनमें लालाको देखकर वह पालकीपरसे उतर पड़ी। दोनों परस्पर भुज-पाशमें आबद्ध हो गये और इसी अवस्थामें बड़ी देर तक निश्चल भावसे रहे।

इसके बाद जब साथके लोगोंने उनकी यह अवस्था देखी और उधर पश्चिम-गगनको रक्ताभ देखा तो उन्होंने इस प्रणयी-युगलको हाथसे धक्का दिया। दोनों धड़ामसे पृथ्वीपर गिर पड़े और उस समय देखा गया कि उनके प्राण-पखेरु उड़ चुके थे। दिल्ली पहुंचकर उन्होंने दोनोंके माता-पिताको यह निदारुण संवाद सुनाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दोनोंके माता-पिता दौड़े-दौड़े वहां पहुंचे। उनके साथ-साथ और भी बहुतसे लोग यमुनाके किनारे पहुंचे और उनके दुःख-क्रन्दनमें भाग लिया। क्रमशः यह संवाद बादशाहको मिला। बादशाहने लोगोंको रोने-पीटनेसे मना किया और वाद्यध्वनि करनेके लिए बाजावालोंको भेज दिया।

पूर्ण समारोहके साथ पहले लालाका हिन्दू रीत्यानुसार दाहसंस्कार हुआ। इसके बाद उसी चिता-स्थलमें कब्र खोदकर मूसाकी लाश दफनायी गयी। बादशाहने उसके ऊपर एक समाधि-मन्दिर बनवा कर उनके इस आदर्श प्रेमको चिरस्मरणीय रूप प्रदान किया। इसके सिवा बादशाहने दोनोंके परिवारवर्गको जागीरके रूपमें बहुतसी जमीन भी दी। आज भी उक्त दोनों परिवारके वंशज बादशाहकी दी हुई जागीरका उपभोग कर रहे हैं।

इस प्रकारका स्वर्गीय प्रेम भारत-जैसे देशमें ही सम्भव हो सकता है। भारत चिरकालसे इस प्रकारके आदर्श-प्रेम और सतीत्वका लीलास्थल रहा है। भारतीय नारियोंका अपने पतिके साथ सहमरण उनके प्रेमका उत्कृष्ट निदर्शन कहा जा सकता है। पवित्र प्रेमके मार्गमें लौकिक बाधायें कब तक ठहर सकती हैं। इस प्रकारके आदर्श प्रेमको प्रेमकी जयके सिवा और क्या कह सकते हैं।

दिल्लीमें अब भी लाला-मूसाका बड़ा टावर (Tower) मौजूद है और उसके चारों तरफ उर्दू भाषामें लाला-मूसाका संक्षिप्त जीवनचरित और उनके इस अनुपम प्रेमकी कथा अङ्कित है।

## मगर पालनेका व्यवसाय

आधुनिक सभ्यताके विकासके साथ-साथ मानव-समाजके जीवन-संग्रामकी प्रतियोगिता भी दिन-दिन बढ़ती जाती है और उसके लिए जीविकार्ज्जनका मार्ग कठिनतर होता जा रहा है। किन्तु इतनेपर भी मनुष्य हतबुद्धि न होकर अपनी आजीविकाके लिए कितने नित्य नये-नये उपाय ढूंढ़ता ही रहता है। यों तो इस समय जीविकार्ज्जनके कितने ही अद्भुत, विचित्र और अभिनव तरीके हैं; किन्तु इनमें एक अत्यन्त अद्भुत और विशेष रूपसे उल्लेखनीय तरीका है चमड़ेके लिए मगरोंको पालना। मनुष्य अपने उदर-पालनके लिए मगर जैसे भयङ्कर जलजन्तुको अपने वशमें करके उससे गृहपशु जैसा काम ले सकता है, यह शायद ही किसीने सोचा हो। किन्तु दक्षिण केलिफोर्निया प्रदेशके लास एनजिल्स स्थानमें मि० एच० जी० कैम्पवेल नामक एक अंगरेजने एक ऐसा ही फार्म खोल रखा है; जिसमें बड़े ही कौशलके साथ एक व्यवसायके रूपमें मगरोंका पालन किया जाता है। पाठकोंको मालूम होगा कि मगरके चमड़ेसे जूता, सूटकेश, बक्स आदि सामान तैयार होते हैं और वे बहुत ही मंहगे बिकते हैं। मगरके चमड़ेका अभाव देखकर ही मि० कैम्पवेलको यह व्यवसाय करनेकी सूझी। किन्तु

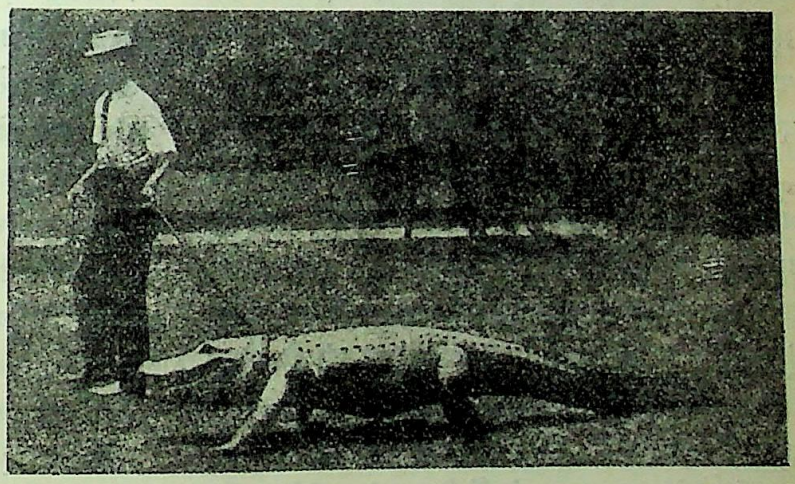

मगर पालनेका फार्म। एक मगरके गलेमें रस्सी बांध कर पालतू कुत्तेकी तरह उसे फार्ममें घुमाया जा रहा है।

प्रारम्भमें उन्हें बहुत कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा, क्योंकि यह व्यवसाय बिलकुल नया था और पथ-प्रदर्शनके लिए किसी प्रकारका पूर्व अनुभव भी नहीं था। किन्तु दीर्घ परिश्रम और अध्यवसायकी बदौलत मि० कैम्पवेलको आखिर अपने व्यवसायमें सफलता मिली और आज उनके फार्ममें कम-से-कम ५०० मगर पाये जाते हैं जो बच्चेसे लेकर दीर्घकाय भयङ्कर नरभक्षक तकके आकारके हैं। यह फार्म एक पहाड़ी नदीके किनारे बना हुआ है और उस नदीसे कई छोटी-छोटी झीलें और तालाब बनाये गये हैं, जिनमें



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मगरोंकी वंशवृद्धि होती है और उनका पालन-पोषण किया जाता है।

रविवारको तीसरे पहर एक निर्दिष्ट समयमें मगरोंको खिलाया जाता है। उस समय बहुसंख्यक मनुष्य यह तमाशा देखनेके लिए एकत्र होते हैं। झील और तालाबके किनारे-का अहाता तारके जालसे घिरा रहता है और उसके अन्दर मगर धूपमें सुखपूर्वक लेटे रहते हैं। मगरोंको खानेके लिए मांस, मुर्गी, बत्तख और कबूतर दिये जाते हैं।

प्रतिदिन तीसरे पहर लोगोंको यह दिखलाया जाता है कि मगर किस प्रकार पकड़े जाते हैं और उन्हें वशवर्ती बनाया जाता है। मगरोंको सिखा-पढ़ाकर इस प्रकार तैयार किया जाता है, जिससे वे तरह-तरहकी हरकतें दिखाते हैं। उस समयका दृश्य बड़ा ही अनोखा होता है जब कि तालीम पाये मगर एक ढालू रास्तेके सहारे ३० फीट ऊंचे मचानपर चढ़ जाते हैं और वहांसे अपने प्रतिपालकका आदेश पाते ही अपने पांवको समेटकर जलमें खिसक पड़ते हैं। दर्शक इस दृश्यको देखकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

एक मगरको फार्ममें गाड़ी खींचना सिखाया गया है और उस समय जितने दर्शक वहां होते हैं उनमेंसे प्रत्येकको उस गाड़ीपर सवार होनेके लिए कहा जाता है। इस मगर-का व्यवहार बहुत ही अच्छा होता है और जब वह अपना मुंह खोलता है उस समय उसकी मुसकान बड़ी ही मोहक होती है। किन्तु इतने पर भी कदाचित ही कोई दर्शक इस मगर गाड़ीपर सवार होनेका साहस करता है। बहुतसे मगर तो इतने पालतू बन गये हैं कि उनके गलेमें रस्सी बांधकर पालतू कुत्तेकी तरह उन्हें फार्मके चारों तरफ घुमाया जाता है।

सबसे बढ़कर विचित्र दृश्य तो उस समय उपस्थित होता है जब कि मि० कैम्पवेल एक मगरको मन्त्रमुग्धवत् बना देते हैं। मगरके सामने पहुंचकर वह कई मिनटों तक उसकी ओर टकटकी बांधकर देखते रहते हैं और फिर इसके बाद अपना हाथ उसके ऊपर रखते हैं। इसपर वह विशाल जन्तु चुपचाप अपनी पीठके बल लेटकर तबतक निश्चल भावसे पड़ा रहता है, जब तक मि० कैम्पवेल वहांसे चले नहीं जाते। यद्यपि मगर देखनेमें एक जीवित सशस्त्र क्रूजर जहाज जैसा ज़ान पड़ता है, फिर भी इसकी उत्पत्ति अण्डेसे होती है, जो आकारमें हंस पक्षीके अण्डेसे बड़ा नहीं होता। छोटे-छोटे मगरोंको फार्ममें पालकर बड़ा किया जाता है।

## रक्तवसना सुन्दरीकी प्रतिहिंसा

पाठकोंको स्मरण होगा कि अमेरिकाका Public enemy no.1 "एक नम्बरका समाज-शत्रु" डिलिञ्जर गत जुलाई मासमें पुलिसकी गोलीसे एक थियेटरके द्वारपर मारा गया था। डिलिञ्जर बड़ा ही दुर्धर्ष प्रकृतिका दस्यु था, किन्तु इस प्रकृतिके मनुष्यका जीवन भी रोमान्ससे शून्य था, ऐसा नहीं कहा जा सकता। डिलिञ्जरके जीवनकी दो सबसे बड़ी कमजोरियां थीं उसका सिनेमा-प्रेम और स्त्रियोंके प्रति आसक्ति। अपनी इन प्रकृतिगत दुर्बलताओंके कारण ही अन्तमें उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा। घटनाके दिन जब डिलिञ्जर एक सिनेमामें गया, एक "रक्तवसना" सुन्दरी-ने टेलिफोनसे उसके सिनेमा जानेकी सूचना पुलिसको दी—जिससे सिनेमासे बाहर निकलनेपर पुलिस द्वारा पकड़े जाकर वह गोलीका शिकार हुआ।

शिकागोके खुफिया विभागके प्रधान मि० एम० जे० पार्भिस उस दिन, जबकि अपने दफ्तरमें कार्यव्यस्त हो रहे थे, अकस्मात् टेलीफोनकी घण्टी बज उठी—"हलो!"। मि० पार्भिसने रिसीवर उठाकर सुना, एक वामाकण्ठ उन्हें सम्बो-धित करते हुए कह रहा है—डिलिञ्जर शिकागोके वायग्राफ सिनेमामें जा रहा है, उसके साथ दो स्त्रियां हैं।"

"धन्यवाद।"

उक्त स्त्रीने डिलिञ्जरके साथ विश्वासघात किया। कारण, डिलिञ्जरने भी उसके प्रति विश्वासघात करके एक दूसरी स्त्रीको अपनी प्रणयिनी बनाया था। डिलिञ्जरकी प्रेमि-काओंकी संख्या एकाधिक थी। डिलिञ्जरको नारीके प्रति विश्वासघात करनेका पुरस्कार मिल गया।

शिकागोकी पुलिस भी इस बातसे परिचित थी कि डिलिञ्जरको सिनेमामें जानेका शौक है और वह एक लम्पट प्रकृतिका मनुष्य है। इससे पहले भी डिलिञ्जरके साथ सम्पर्क रखनेवाली कई स्त्रियां पुलिस द्वारा गिरफ्तार हो चुकी थीं।

टेलिफोनसे संवाद मिलनेपर सशस्त्र पुलिसका पहरा सिनेमा-भवनके चारों ओर बठा दिया गया। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पुलिस दलका नेतृत्व स्वयं मि० पार्भिस कर रहे थे। जब-तक तमाशा खतम नहीं हुआ, पुलिस दो घण्टे तक प्रतीक्षा करती रही।

आखिर वह दस्युराज सिनेमा-गृहसे बाहर निकला। इसी समय यह भी देखा गया कि उसके पीछे-पीछे एक रक्तवसना तरुणी आ रही है और हाथ उठाकर रूमालसे मि० पार्भिसको इशारा कर रही है।

डिलिञ्जरको इसकी कुछ भी खबर नहीं थी। वह विश्रिन्तभावसे अपनी मोटरपर सवार होकर कुछ दूर आगे बढ़ा। मि० पार्भिसकी बगलसे निकलकर जब डिलिञ्जरकी गाड़ी कुछ दूर चली गयी, तो मि० पार्भिसने अपनी गाड़ी-की खिड़कीके अन्दरसे हाथ निकालकर प्रतीक्षामें खड़े हुए पुलिसके आदमियोंको इशारा किया।

उधर डिलिञ्जर भी अकस्मात् चौकन्ना होकर इधर-उधर तीव्र दृष्टिसे देखने लगा और उसके मनमें कुछ सन्देह उत्पन्न हुआ। दस्युतामें चतुर तो था ही, वहांका नजारा देखकर उसे वस्तुस्थिति ताड़ लेनेमें देर नहीं लगी। फौरन उसने मोड़से एक गलीकी ओर मोटर घुमाकर भाग जानेकी चेष्टा की, किन्तु उसी क्षण पुलिस दलने उसे चारों ओरसे घेर लिया।

डिलिञ्जरने अपनी पाकेटमें हाथ देकर पिस्तौल बाहर निकाली। किन्तु घोड़ा दबानेके पूर्व ही पुलिसकी गोली दनदनाती हुई आकर उसके वक्षस्थलको विदीर्ण कर गयी। डिलिञ्जर खूनसे सराबोर होकर गाड़ीमें गिर पड़ा। चार गोलियोंमें दो उसके सिर और कलेजेके अन्दर घुस गयी थीं। इस प्रकार इस समाजशत्रु न० १ के दस्यु-जीवनका नाटकीय अन्त हो गया। डिलिञ्जरके साथ जो दो स्त्रियां थीं उनके पांवमें बाकी दो गोलियां लगी थीं।

डिलिञ्जरकी शव-परीक्षा करते सयय देखा गया कि उसने अपने चेहरेके ऊपर घावके निशानोंको अस्त्रोपचार क्रियासे छिपा दिया था। पुलिस उसके अंगूठेका निशान नहीं ले सके, इसलिए उसने तेजाब डालकर अंगुलीके चमड़े-को उड़ा दिया था। उसकी भौंहें भी नकली बनी हुई थीं। डिलिञ्जर अपनी आकृतिको गुप्त रखनेके लिए इस प्रकार सतर्क होकर बाहर निकला करता था। उसकी जेबकी तलाशी लेनेपर एक तरुणीकी तसवीर मिली थी। इस स्त्री-का नाम इमलिन था। यह सुन्दरी डिलिञ्जरकी प्रणयपात्री थी जिसने बहुतसे दुष्कर्मोंमें उसका साथ दिया था।

## पशुपक्षियोंके प्रेममें एकनिष्ठा

मानव-प्रेममें एकनिष्ठा, वर्तमान शिक्षा और सभ्यता-के विकासकी एक विशेषता कही जा सकती है। क्योंकि सभ्यताके आदिम कालमें एक पुरुषके साथ अनेक नारियों-का और एक नारीके प्रति अनेक पुरुषोंका दाम्पत्य भाव (polygamy and polyandry) बहुत कुछ प्रचलित था। आजीवन एक पुरुष अथवा एक नारीके प्रति एकनिष्ठ प्रेम-भाव रखना मानव सभ्यताके नैतिक उत्कर्षका निदर्शन है।

किन्तु प्रेमकी यह एकनिष्ठा क्या केवल मनुष्योंमें ही पायी जाती है? प्राणी-जगत्में क्या किसी और जीवमें यह बात नहीं पायी जाती? इंगलैण्डके एक विख्यात् वैज्ञानिक प्रो० आर्थर टाम्सनने अपने एक लेखमें लिखा है कि पशु-पक्षियोंमें भी प्रेमका यह एकनिष्ठ भाव पाया जाता है।

पुरुषका स्त्रीके प्रति और स्त्रीका पुरुषके प्रति जो एक स्वाभाविक आकर्षण होता है, यह बात तो सब लोग जानते हैं, किन्तु जीव-जगतके क्रमविवर्त्तनमें किस स्थानसे यह भाव शुरू होता है यह कोई ठीक-ठीक नहीं बता सकता। जीव-जगत्के निम्नतम स्तरमें लिङ्गभेद-ज्ञान नहीं पाया जाता। Jelly fish जातिकी मछलियों और Sea urchin नामक सामुद्रिक जीवोंमें यह ज्ञान बिलकुल नहीं पाया जाता। एक परिपुष्ट नर Sea-urchin एक परिपुष्ट मादा Sea-urchin की ओर लक्ष्य तक नहीं करता। किन्तु प्रकृतिका नियम तो देखिये कि ठीक जिस समय नर Sea urchin का तेज क्षरित होता है, ठीक उसी समय मादा भी अण्डा देती है। अनेक मछलियोंमें यह सम्बन्ध एक साथ ही संघटित होता है। Salmon जातीय मछलियोंमें देखा जाता है कि नर और मादामें परस्पर खूब आकर्षण होता है, जिससे समय-समयपर एक साथ रहनेकी वासना उनमें देखी जाती है। अण्डा देनेका जब समय होता है तो दोनों बिलकुल पास-पास देखी जाती हैं। अन्य जातिकी मछलियोंमें भी यह प्रेमलीला चलती रहती है।

कीट, पतङ्ग और सरीसृपोंमें भी अल्प परिचय-आलापके बाद ही यह मिलन साधित होता है। किन्तु इनके प्रेममें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एकनिष्ठा जैसी कोई वस्तु नहीं देखी जाती। प्रेमके मामलेमें खरगोशको बहुगामी कहा जा सकता है; किन्तु खरगोशकी तुलनामें शृगालको एकनिष्ठ प्रेमिक कहा जा सकता है। स्तन्यपायी चमगीदड़ खरगोशके समानही बहुगामी होता है।

जीव-जगत्में इससे एक और स्तर ऊपरके कुछ प्राणी ऐसे हैं जो सिर्फ जनन-ऋतु ( breeding season ) में एकनिष्ठ दम्पतिकी भांति एकत्र वास करते हैं। इस ऋतुके बीत जानेपर वे एक दूसरेसे पृथक् हो जाते हैं और फिर आगामी ऋतुमें अपना दूसरा साथी खोज लेते हैं। बहुतसे बिड़ाल और सिंह भी इसी श्रेणीके अन्तर्गत हैं। oryx जातीय हिरन और श्वेत तिमि मछली भी इसी प्रकारके प्राणी हैं। अब इससे भी एक स्तर ऊपर आइये। ऐसे भी पशुपक्षी होते हैं जो आजीवन एक साथ बास करते हैं। सारस, बक और राजहंसकी जोड़ी आजीवन एक साथ रहती है। ये व्यभिचारी नहीं होते। ऐसा प्रतीत होता है, मानो इन्द्रिय-सुखकी अपेक्षा इन्होंने प्रेमकी एकनिष्ठाको ही विशेष महत्व देना सीखा है। गैंड़ा और औराङ्ग जातिके वानर भी इसी प्रकारके एकनिष्ठ प्रेमिक होते हैं। अनेक पक्षीदम्पतिमें यह भी देखा जाता है कि एकके मर जानेपर उसका दूसरा साथी भी अल्पकालके मध्यमें अपना प्राण-विसर्जन कर देता है। इससे क्या उनके प्रगाढ़ प्रेमका परिचय नहीं मिलता? अतएव इन उदाहरणोंसे हम सहज ही यह अनुमान कर सकते हैं कि प्राणीजगतमें भी मानव-जातिके समान ही एकनिष्ठ प्रेमी दम्पति होते हैं।

## स्त्री-पुलिस

अब तक तो लोगोंकी यही धारणा थी कि चोर-बदमाश और मदोन्मत्तोंकी धरपकड़ करनेका काम मर्द-पुलिस ही कर सकती है; क्योंकि इसमें जोर-जबर्दस्तीका प्रयोजन होता है। इस प्रकारके कठोर कार्य कोमलतनु नारी किस प्रकार कर सकती है! किन्तु अब यह बात असम्भव या केवल कल्पना-क्षेत्र तक ही परिमित नहीं रही।

स्त्री-पुलिस एक तथ्यके रूपमें इस समय हमारे सामने मौजूद है और चोर-बदमाश उसके हाथमें पड़कर एक बार भी चींचपड़ नहीं करते। एक नशेबाज कैदीका कहना है—"बाप रे! वर्दी पहने हुई स्त्री पुलिसको देखते ही शरीरका रक्त सूख जाता है।" और यह बात है भी सोलहो आने सच कि चोर-बदमाश और पियक्कड़, स्त्री-पुलिस द्वारा पकड़े जानेपर बड़े ही शान्त और निरीह भावसे उनके साथ-साथ हाजत तक जाते हैं; किसी तरहकी जोर-जबर्दस्ती नहीं करते। इंगलैण्ड, जर्मनी और जापानमें स्त्री-पुलिसके सुगठित दल हैं जो पुरुष-पुलिसके कामोंमें बहुत-कुछ सहायता प्रदान करते हैं। इनकी नियुक्तिसे पुलिसके कामोंमें अनेक सुविधायें हुई हैं।

स्त्री-पुलिसके प्रधान कार्य हैं—स्त्री कैदियोंकी तलाशी लेना, हाजतमें उनपर निगरानी रखना, थाना और हाजतोंसे स्त्री-अपराधिनियोंको अदालतमें लाना और फिर वापस ले जाना, स्त्री-गवाहोंके बयान लेना, स्त्री-अभियुक्ताओंके अभियोगोंकी जांच करना, रास्तेमें पियक्कड़ोंको तथा मार्गमें जो लोग शान्ति-भङ्ग करें उन्हें गिरफ्तार करना। स्त्री-पुलिसके यह सब विशेष कर्तव्य हैं।

स्त्री-पुलिसकी क्षमता पुरुष-पुलिसके समान ही होती है। योग्यता होनेपर स्त्री तरक्की पाकर हेडकान्सटेबुल तक हो सकती है। अनेक स्थानोंमें स्त्री-पुलिसने इस गौरव-पदको भी प्राप्त किया है।

सब तरहके मामलोंमें गिरफ्तार करनेका अधिकार स्त्री-पुलिसको नहीं होता। Street offences अर्थात् सड़कोंपर किये जानेवाले अपराध, जैसे लड़ाई-झगड़ा, मदोन्मत्त होकर अण्ट-सण्ट बकना, इस प्रकारके अपराधियोंको स्त्री-पुलिस गिरफ्तार कर सकती है। पुरुष-पियक्कड़ोंको गिरफ्तार करनेमें तो विशेष गोलमाल नहीं होता। किन्तु मदोन्मत्त स्त्रियोंको गिरफ्तार करते समय बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है। ऐसे अवसरपर पुरुष-पुलिस यदि मदोन्मत्त स्त्रीको गिरफ्तार करती है तो उसके दौरात्म्यकी सीमा नहीं रहती। हां, यदि गिरफ्तार करनेवाली स्त्री-पुलिस होती है, तो गिरफ्तारीमें कोई बाधा नहीं होती।

लण्डनकी स्त्री-पुलिसकी पोशाकमें नीले रङ्गके कोट और स्कार्फ और सिरपर हेल्मेट होते हैं। हेल्मेटका कोना झुका हुआ होता है, जिससे आंखोंकी हिफाजत हो। जूताके सम्बन्धमें कोई खास नियम नहीं है। किन्तु अधिकांश स्त्री-पुलिस बूट जूता पहनती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्त्री-पुलिसको भी ड्रिल करना पड़ता है और कानून तथा स्थानीय रीति-रश्मोंके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त करनी होती है।

पुलिस-विभागके लिए उम्मेदवार स्त्रियोंका स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए, जिनका शरीर सुगठित और सुदृढ़ हो, ऊंचाई ५ फीट ४ इञ्च और उम्र २२ से लेकर ३० के बीचमें होनी चाहिए। २२ वर्षसे कम उम्रकी स्त्रियां पुलिस-विभागमें भर्ती नहीं की जातीं।

स्त्री-पुलिसको नियुक्त करनेमें अमेरिका सबसे आगे रहा है। सन् १९१० में ही स्त्रीपुलिस दलकी सृष्टि वहां हो गयी थी। इसके बाद अमेरिकाकी स्त्री-पुलिसकी योग्यताकी वाहवाही चारों तरफ फैल गयी और अन्यान्य देशोंने भी स्त्री-पुलिस नियुक्त करनेकी व्यवस्था की। स्त्री-पुलिसके कारण तरुण नर-नारियोंके ऊपर किये जानेवाले अत्याचार और उत्पीड़न बहुत कम हो गये हैं। पुलिस-विभागमें स्त्रियोंको भर्ती करनेके परिणामस्वरूप कई पाश्चात्य देशोंमें बेकारी-समस्या-का भी कुछ अंशोंमें समाधान हुआ है।

हालमें कुछ वर्षोंसे अमेरिकामें Aerial police women अर्थात् हवाई स्त्री-पुलिस नामसे एक विभागकी सृष्टि हुई है। केलीफोर्नियाके वेभर्ली पहाड़पर दो स्त्री पुलिसमैनोंकी ड्यूटी रहती है। उनका काम है वायु-पथकी शृङ्खला कायम रखना।

## बुद्धिकी माप

एक अमेरिकन प्रोफेसरने अपने एक अंगरेज मित्रको लिखा—"मस्तककी माप भेज दो, उससे मैं यह बता दूंगा कि किस मस्तिष्कमें कितनी बुद्धि है।"

उक्त प्रोफेसरके इस पत्रको लेकर इंगलैण्डके वैज्ञानिकों-में विशेष चर्चा होने लगी है। उनका कहना है कि फीता द्वारा मस्तिष्ककी माप चाहे जिस रूपमें भी की जाय; किन्तु उससे बुद्धिकी माप लेना सर्वथा असम्भव है।

सर्वसाधारण लोगोंमें यह धारणा प्रचलित है कि जिसका सिर बड़ा होता है उसमें बुद्धिकी मात्रा भी अधिक होती है। किन्तु यह धारणा यथार्थ नहीं कही जा सकती अर्थात् सिर बड़ा होनेसे ही कोई व्यक्ति अधिक बुद्धिमान होता है, यह धारणा सम्पूर्ण भ्रमात्मक है। इंगलैण्डके सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ मि० बोनार लाका सिर बहुत छोटा था। तो क्या इससे यह समझना चाहिए कि उनसे बड़ा सिरवाला एक सामान्य किरानी उनकी अपेक्षा विशेष बुद्धिमान था।

अस्ट्रेलियाके आदिम निवासियोंके सिर छोटे होते हैं और उनकी बुद्धि भी मन्द होती है। और एस्किमों जातिके लोगोंके सिर बहुत बड़े होते हैं और बुद्धिबलमें वे भी बहुत ही हीन होते हैं।

एक साधारण अंगरेजके सिरकी माप प्रायः ७ इञ्चसे ९ इञ्च तक होती है। यह माप टोपीके साथ है। इसलिए यह कहना कि एक विशेष मापकी टोपी जितने लोगोंके सिरपर फिट हो वे सब-के-सब एक समान बुद्धिवाले होंगे, किसी प्रकार भी विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता। मि० चर्चिलके टोपकी माप ७॥ इञ्च, लायड जार्जके टोपकी माप ७। इञ्च और मि० मेकडोनाल्डके टोपकी माप ७⅛ इञ्च होती है। तो क्या इससे कोई यह कहनेका साहस कर सकता है कि इन राजनीतिज्ञोंकी बुद्धि मन्द है?

इंगलैण्डके टोपीके बाजारमें सबसे बड़ी टोपी खरीदकर व्यवहार किया है जर्मन राजदूत प्रिन्स लिचनोस्कीने। यह महासमरसे पूर्वकी बात है। उनकी टोपीकी माप थी ८। इञ्च। इतना बड़ा सिर होनेपर भी उनके सिरमें कोई विशेषता नहीं देखी जाती थी। किसीका सिर छोटा होता है और किसीका बड़ा। इसका कारण एकमात्र जैविक (Biological) ही कहा जा सकता है। बड़े सिरमें घावके बहुत निशान हो सकते हैं। किन्तु इससे बुद्धिकी अधिकता सूचित नहीं होती। सिरमें घावके अधिक चिह्न होनेसे ही यदि बुद्धिकी अधिकता होती, तब तो हाथी, गैंड़ा प्रभृति जानवर ही बुद्धिबलमें मनुष्य-की अपेक्षा श्रेष्ठ होते।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## क्वारी स्त्रियां सुखी होनेका दिखाव करती हैं

क्वारी स्त्रियोंकी अपेक्षा विवाहित स्त्रियोंका जीवन कहीं अधिक सुख-शान्तिमय होता है, इस सम्बन्धमें नीचे एक भारतीय महिलाके विचार प्रकट किये जाते हैं। उक्त महिलाका कथन है कि यद्यपि क्वारी स्त्रियां ऊपरसे यह दिखलानेका प्रयत्न करती हैं कि उन्हें अविवाहितावस्थामें विशेष सुख है, किन्तु वास्तवमें बात ऐसी नहीं है। विवाहित स्त्रियोंका जीवन ही आनन्दमय है।

"जो स्त्रियां विवाह न करके क्वारी रहना पसन्द करती हैं वे वैवाहिक जीवनके उत्तरदायित्वसे बचना चाहती हैं। अविवाहित जीवनके समर्थनमें वे जो दलीलें पेश करती हैं वे बहुत ही लचर हैं। मेरे ख्यालसे इस मामलेमें वे मर्दाने ढङ्गसे सोच-विचार करती हैं। व्यक्तिगत रूपसे मैं पैजामा पहननेवाली और सिगरेट पीनेवाली स्त्रीमें अस्त्रीजनोचित भाव नहीं देख पाती; किन्तु यदि कोई स्त्री यह कहे कि विवाह करनेकी अपेक्षा मैं तो क्वारी ही रहना पसन्द करती हूं, तो मेरी रायमें इससे बढ़कर अस्त्रीजनोचित प्रवृत्ति दूसरी हो ही नहीं सकती। जिस प्रकार पुरुष धन और यशके लिए लालायित रहते हैं; हम स्त्रियां विवाहके लिए उद्विग्न नहीं होतीं और न पुरुषोंकी भांति वैवाहिक जीवन हमारे लिए कुतूहलकी वस्तु है। हम स्त्रियां अपना सब कुछ पुरुषोंको समर्पित करके ही शारीरिक और मानसिक दृष्टिसे स्वस्थ रह सकती हैं। प्रकृतिने हमारे लिए इसी एकमात्र आवश्यकताकी सृष्टि की है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। अपनेको समर्पित न करनेका अर्थ है अस्वास्थ्यको गले लगाना। स्त्रीके लिए अविवाहित जीवन व्यतीत करना सब प्रकारके सुखोंसे वञ्चित रहनेके समान है। इस प्रयोगकी प्रतिक्रिया महा दुखदायी होती है।

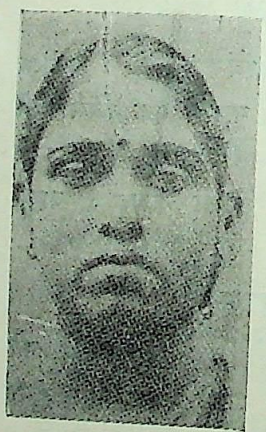

कुमारी दोरैकन्नू अम्मल-आप मायापुरम् म्युनिस्पल कौंसिलकी सदस्या निर्वाचित की गयी हैं। आपका विरोध किसीने भी नहीं किया।

"ऐसे स्पष्ट विचारोंके लिए मेरे पास कारण हैं। बहुतसे व्यक्तियोंको यह भी पता नहीं कि आधारतः स्त्रीकी स्थिति क्या है। वे हमारी उपमा फूलोंसे देते हैं; किन्तु इसमें मैं उनकी अनुभवहीनता ही देखती हूं। प्रकृतिके वृक्षोंमें पुरुष फूल और स्त्रियां फल हैं। मनुष्य सफलता प्राप्त कर प्रीतिकर सौरभसे दिशाओंको परिव्याप्त कर देते हैं। मनुष्य अपने हीमें पूर्णत्वको प्राप्त होता है। फूल आखिर फूल ही है, चाहे उसे आपने तोड़ लिया हो अथवा वह फूलदानकी शोभा बढ़ा रहा हो। लेकिन फलोंमें यह बात नहीं है। गुणानुसार हमारा प्राकृतिक विकास पुरुषोंकी अपेक्षा कहीं अधिक परिमित है। हम अपने रोम-रोमको सजाती हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भांति-भांतिके उपायसे अपनेको आकर्षक बनानेकी चेष्टा करती हैं। किन्तु इसके बाद ? प्रकृति हमारी शेष आवश्यकताको पूर्ण नहीं कर सकती। सम्भवतः क्वारी स्त्री अब भी यही दलील लेकर सामने आवेगी कि 'हां, हम प्रेमवाणसे विद्ध हों अवश्य, किन्तु विवाहमें ही क्यों?' मैं जानती हूं कि अत्यन्त आधुनिक महिलाओंके यही प्रच्छन्न विचार हैं, जो उनमें व्याप्त हो चुके हैं ; किन्तु यह उनका सरासर लड़कपन है। पुरुष रूपी फूल बहुतसी स्त्रियोंकी तृप्ति कर सकता है किन्तु स्त्री रूपी फल केवल एकको ही तृप्ति दान कर सकता है। यहां मैं सच्ची वस्तुस्थितिको फिर एक बार दुहराती हूं कि जिस स्थानपर पुरुषका सन्तोष समाप्त होता है, वहां स्त्रीका नहीं ; जब कि पुरुषका अस्तित्व केवल प्रसन्न करनेके लिए है, स्त्री प्रसन्न होनेके विशेषाधिकारसे अलंकृत की गयी है। और जब कि पुरुष किसी भी मात्रामें सुख प्राप्त करनेपर सन्तुष्ट हो जाता है, स्त्री अतिशय आनन्द और प्रचण्ड असुस्थताके बीच हिलोरें लिया करती है। जो स्त्री यह कहती है कि 'मुझमें ईर्ष्याका लेश नहीं है' वह झूठी है, और जो स्त्री क्वारी ही रहना पसन्द करती है वह अपनेको अपनी गुलाबी साड़ीसे भी अधिक आकर्षक बनाना चाहती है।

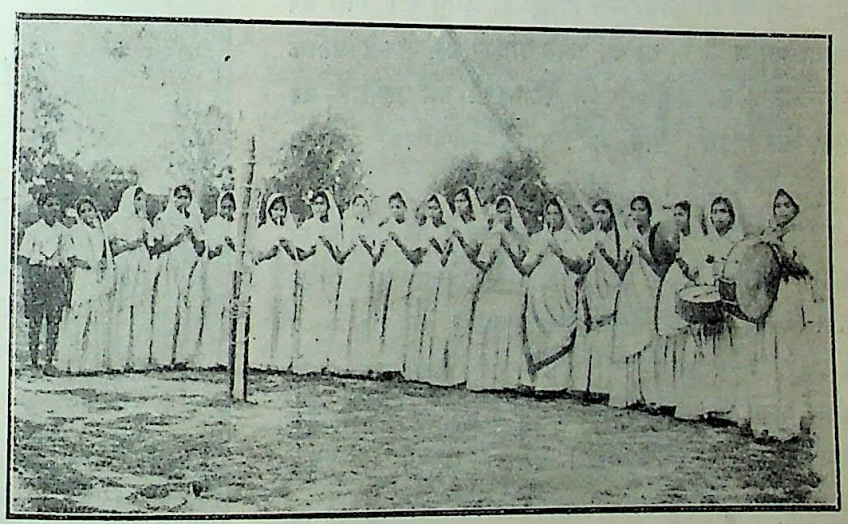

जलन्धर कन्या महाविद्यालयकी छात्राएं बैण्ड बाजा बजानेमें विशेष निपुण हैं। इस चित्रमें उन्हें बैण्ड बजाते हुए देखिये।

"इतनेपर भी मैं जानती हूं कि विवाह एक प्रकारका जुआ है। किन्तु यह तो एक पृथक् प्रश्न है। जिस प्रकार जीवन, संयोग और आपत्तियोंसे परिपूर्ण है, उसी प्रकार वैवाहिक जीवन भी। यदि कोई स्त्री विवाह करना पसन्द नहीं करती, तो उसे अपने जीवनका द्वार भी बन्द समझना चाहिए। महन्तिन और वैवाहिक जीवनके मध्यमार्गमें ऐसा कोई वासस्थान नहीं, जिसमें आधुनिक स्त्रियोंको आश्रय मिल सके। हम आधुनिक स्त्रियोंमें स्त्रीत्वकी कठिनाइयोंको बढ़ा-चढ़ाकर दिखानेकी प्रवृत्ति उत्पन्न हो गयी है। कल्पित कथा-कहानियों और तलाककी अदालतोंने हमें भयभीत कर दिया है। हम दुःख-क्लेशकी चिन्ता करने लगती हैं, जबकि ऐसी कोई बात नहीं है और हम पेशगीके रूपमें पूर्ण स्वतन्त्रताकी मांग पेश करती हैं, जबकि स्वतन्त्रता ही वास्तवमें हमारे लिए भार हो जायगी। भाग्यका कुछ-न-कुछ हाथ तो होता ही है ; किन्तु यदि सहनशीलतासे भी काम लिया जाय, तो अधिकांश व्यक्तियोंके वैवाहिक जीवन सुखमय बन सकते हैं।

"कुछ महिलाएं प्रश्न करेंगी—क्या वैवाहिक जीवनकी परिधिके बाहर स्त्रियां सुखमय जीवन व्यतीत नहीं कर सकतीं ? इस प्रश्नका उत्तर देनेमें मुझे कुछ हिचकिचाहट जरूर हो रही है, फिर भी मैं दूंगी अवश्य। वास्तवमें वैवाहिक जीवनकी परिधिके बाहर स्त्री सुखी जीवन व्यतीत नहीं कर सकती। मेरे विचारसे यदि कोई स्त्री विवाह योग्य न हो सके तो यह उसका दुर्भाग्य है; क्योंकि विवाहके बिना तो उसमें वास्तविकता आ ही नहीं सकती। वैवाहिक जीवन ही स्त्रीका पूर्ण जीवन है और इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि विवाह ही स्त्री-जीवनका एकमात्र सन्निवेश है। लाल या हीरा जब तक अंगूठीमें न जड़ा हो, उसकी सुन्दरताकी कल्पना ही क्या ? बस यही बात स्त्रियोंके लिए भी लागू है।

"एक व्यर्थकी बात यह कही जा सकती है कि यदि हम स्त्रियां पत्नी न बन सकें तो कोई बात नहीं—हम स्नेहमयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बहनें और पुत्रियां तो बन सकती हैं। पुरुषोंका विश्वास है कि हम स्त्रियां यदि पत्नी नहीं, तो पर्यायक्रमसे भगिनी हैं; किन्तु प्रत्येक स्त्री, यहां तक कि प्रतिज्ञाबद्ध क्वारी इस बात को भली प्रकार समझती है कि ऐसा समझना नितान्त हास्यास्पद है। पुत्री-अवस्था अथवा भगिनीत्व परिवर्तनशील जीवनका एक पहलू है; किन्तु पत्नीत्व हमारे विकासमय जीवनका एक विभाग है। आवश्यकतासे अधिक पके हुए अंगूरका स्वाद बिगड़ जाता है या वह सड़ने लगता है; इसी प्रकार क्वारी स्त्रियां भी सदा उतनी ही अच्छी पुत्रियां अथवा बहनें नहीं बनी रह सकतीं। हम आधुनिक स्त्रियां कभी-कभी विवाहके विरुद्ध भीषण विभीषिकाकी सृष्टि करती हैं, किन्तु यह भी कालक्रमसे विलुप्त हो जाती है। स्त्री जब माता बन जाती है, तो वह अपने पतिको पहलेसे भी अधिक प्यार करने लगती है और जो स्त्री पत्नी बन जाती है वह पुत्री और बहनके रूपमें अपने नवीन सम्बन्धको अत्यन्त मधुर बना लेती है।

"इस सम्बन्धमें स्मरणीय बात यह है कि सहयोग ही हमारे जीवनका सङ्गीत हो। स्त्रीके लिए केवल यही यथेष्ट नहीं कि वह मधुर ध्वनिसे दिगन्तको व्याप्त कर दे। मनुष्य संसारसे अपना सम्बन्ध विच्छिन्न कर केवल एक स्वरसे गाकर अपने जीवनको सङ्गीतमय बना सकता है; किन्तु हम स्त्रियोंमें यह सामर्थ्य नहीं। हमारा सङ्गीत तो केवल सहयोगका सङ्गीत है और जीवनकी यौवनावस्थामें केवल एक ही सङ्गीत—पत्नीत्व—का नाद होना चाहिए। यह मेरी निजी धारणा है, अब जिसे और जो कुछ कहना हो कहे।

—एक भारतीय महिला"

## लड़कियोंकी अनिवार्य शिक्षा

युक्तप्रान्तमें लड़कियोंकी अनिवार्य शिक्षाके सम्बन्धमें युक्तप्रान्तीय सरकारका प्रयत्न प्रशंसनीय है। स्त्रियां पुरुषोंकी जीवनसङ्गिनी हैं। पुरुषोंको पूरा सहयोग देनेके लिए आवश्यक है कि स्त्रियां भी पुरुषोंकी भांति योग्य बनें। समाजका उत्कर्ष जितना पुरुषोंपर निर्भर करता है उतना ही स्त्रियोंपर भी। इसलिए पुरुषोंके साथ स्त्रियोंको भी सुशिक्षित बनानेकी नितान्त आवश्यकता है। किन्तु हम देखते हैं कि जिन कतिपय शर्तोंपर युक्त-प्रान्तीय सरकार अपने प्रान्तमें लड़कियोंकी शिक्षा अनिवार्य बनाना चाहती है, उससे नवीन सुधारका उद्देश्य किसी अंशतक विफल हो जायगा। सरकार चाहती है कि पहले लड़कियोंके लिए पृथक् स्कूलोंकी स्थापना हो जाय, तब अनिवार्य शिक्षाका नियम लागू किया जाय। किन्तु इससे स्त्रीशिक्षाके प्रसारमें विलम्ब होनेके अतिरिक्त और कोई लाभ न होगा। यदि लड़कियोंको लड़कोंके स्कूलमें सहशिक्षा ग्रहण करनेके लिए बाध्य न किया जायगा, तो

जात-पांत तोड़क दम्पत्ति—डा० दौलतराम देव डी० एस-सी (लाहोर) और कुमारी त्रिपुरी एस० नायडू बी० ए० (केंटब)।
इनका विवाह १९ सितम्बरको सम्पन्न हुआ है।

आर्थिक कठिनाइयोंको दिखलाते हुए सरकार शायद ही कभी लड़कियोंके लिए पृथक् पाठशालाएं खोलनेमें समर्थ हो सके। आश्चर्य है कि युक्तप्रान्तीय सरकार लड़कियोंके माता-पिताका रुख जाने बिना ही पृथक् पाठशालाओंको इतना महत्व क्यों दे रही है। हमें तो आशा है कि सम्भवतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



युक्त प्रान्तके माता-पिता ऐसे सहशिक्षालयोंमें अपनी सन्तानको भेजनेमें किसी प्रकारका आगा-पीछा न करेंगे, जिनमें शिक्षकका काम केवल स्त्रियां ही करेंगी। सरकारको चाहिये कि पहले वह शिक्षकोंके स्थानपर शिक्षिकाओंको नियुक्त करे और फिर लड़कियोंकी शिक्षाको अनिवार्य बनावे। लड़के-लड़कियोंकी अनिवार्य शिक्षाके सम्बन्धमें यदि सरकार पहले हीसे इतनी ढील दिखायेगी, तो उससे उतना लाभ न होगा, जितनेकी आशा की जा सकती है।

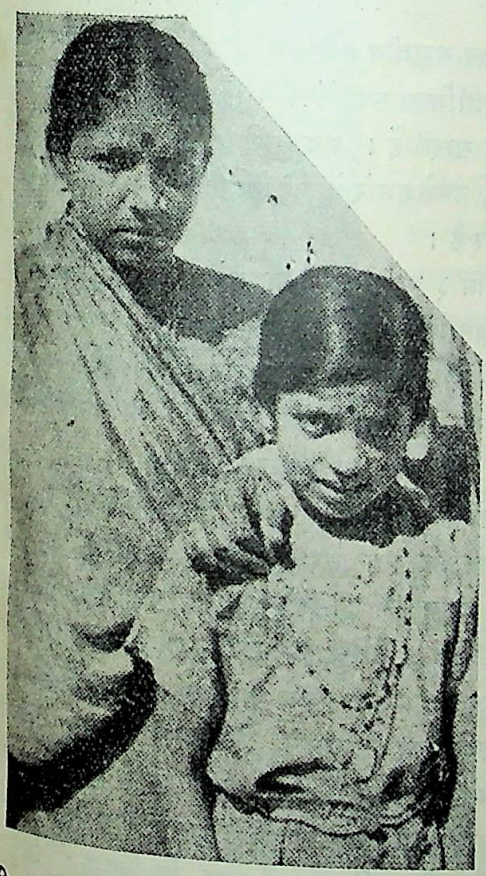

श्रीमती सत्यमूर्ति और उनकी पुत्री—असेम्बलीके निर्वाचन-संग्राममें श्री सत्यमूर्तिको जो अपूर्व सफलता मिली है उसमें आपका कृतित्व भी कम नहीं है।

## जापानी नारीकी दासता

टी० ओ० कनरय T. O. Conroy टोकियोके विश्व-विद्यालयमें १५ वर्षों तक अंगरेजी साहित्यके अध्यापक रह चुके हैं। उन्होंने एक जापानी महिलासे विवाह किया है। अभी कुछ महीने पहले उनकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसका नाम है "The Menace of Japan" अर्थात् जापानका खतरा।

इस पुस्तकमें लेखकने जापानी स्त्रीका जो परिचय दिया है वह विस्मयजनक होनेके साथ-साथ बड़ा ही रोमाञ्चकर है।

लेखकने लिखा है कि जापानियोंके साथ बहुत दिनों तक सहवास करने और एक जापानी महिलाके साथ विवाह करनेके फलस्वरूप उन्होंने जो अभिज्ञता प्राप्त की है उसीके आधारपर उनका यह वर्णन है। इसमें कल्पना या अति-रञ्जनाका कोई स्थान नहीं है।

जापानी नारी, क्या गृहस्थाश्रम, क्या व्यवसायक्षेत्र अर्थात् पत्नी, व्यवसायिनी, कुली या नर्तकी, सब अवस्थाओं-में वह दासी है। उसकी यह दासता अत्यन्त मर्मान्तक है।

जापानी नारीके विवाहमें प्रेम या रोमान्सकी छाया तक नहीं पायी जाती। जापानी पुरुष इन्द्रिय-उपभोग और सन्तान-कामनासे विवाह करता है। सन्तान होनेसे वंश रक्षा होगी, बस यही उसका उद्देश्य होता है। इन्द्रिय-वासनाकी परितृप्तिके लिए वह उपपत्नी रखता है और उप-पत्नीको घरमें लाकर रखने पर भी गृह या समाजकी ओरसे इसका विरोध नहीं किया जाता। जापानी पुरुषका आमोद-प्रमोद या क्रीड़ा-कौतुक जो कुछ होता है वह सब इस उप-पत्नीके साथ।

बेचारी पत्नीको कुछ चीं-चपड़ करनेका अधिकार नहीं होता। स्वामीका यह उपपत्नी-विलास उसे जी मसोसकर सहन कर लेना पड़ता है। उसके लिए प्रतिकारका कोई उपाय नहीं। उपपत्नीको किसी प्रकारकी असुविधा नहीं हो, इसके लिए बेचारी पत्नीको उस गणिका तककी सेवा करनी पड़ती है।

जो सब नारियां शारीरिक परिश्रम करके अर्थोपार्जन करती हैं, उन्हें भी अपनी कमाईसे सुख नहीं मिलता। काटन मिलोंमें जो सब स्त्रियां काम करती हैं उन्हें औसत मजदूरी प्रति घण्टा आध पेनी अर्थात् दो पैसेसे अधिक नहीं मिलती। उन्हें मिलमें ही भोजन और रहनेका स्थान मिलता है। इस नौकरीकी अवस्थामें भी उसका पिता, भाई या कोई अन्य पुरुष उसका अभिभावक होता है। कन्या-विक्रयकी प्रथा भी प्रचलित है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मां बाप कन्या-विक्रय करके अपनी उदरपूर्ति करते हैं। दूकानोंमें भी ऐसा ही होता है। जापानी स्त्रियोंको मुसकुराना सिखाया जाता है। क्योंकि मुसकुराता हुआ चेहरा न होनेपर उन्हें नौकरी नहीं मिलती। A Japanese woman is taught to smile for she must look pleasing to men. They are her lords and masters. अर्थात जापानी नारी पुरुषोंकी दृष्टिमें मनोरम प्रतीत हो इसलिए उसे मुसकुराना सिखाया जाता हैं। पुरुष ही उसका प्रभु और स्वामी होता है। फिर भी

फारसकी एक स्त्री

जापानी नारी अपने स्वामीसे प्रेम करती है। उसका यह प्रेम सर्वथा निष्काम होता है। स्वामीके ऊपर उसका कोई दावा नहीं होता। स्वामी कृपापूर्वक उसे जो दे दे वही उसके लिए परम लाभ है! अगर नही दे तो इसमें स्वामीका कोई अपराध नहीं समझा जाता। स्वामीका रोजगार यदि किसी कारणवश बन्द हो जाय तो स्त्री स्वयं शारीरिक परिश्रम करके उपार्ज्जन कर लाती है। किन्तु शारीरिक परिश्रम करके भी यदि काफी आमदनी नहीं होती तो जापानी अपनी स्त्रीको बेचकर भी अर्थोपार्ज्जन करता है। लेखकने लिखा है कि ऐसे कितने ही दृष्टान्त हैं, जबकि पुरुषने अपनी स्त्रीको as concubines of others अर्थात् दूसरेकी उपपत्नीके रूपमें बेच दिया है। जापानमें यह रिवाज जारी है।

## महिलाओंमें जाग्रति

### देश-भरमें सम्मेलनोंकी धूम

अब भारतीय महिलाओंमें यथेष्ट जाग्रति हो चुकी है। देशके विभिन्न स्थानोंपर महिलाओंके सफल सम्मेलन इस बातके साक्षी हैं। इन सम्मेलनोंमें जो अनेक प्रस्ताव पास हुए हैं, उनसे हमारे देशकी स्त्रियोंकी प्रगतिशीलताका परिचय मिलता है।

गत ३ नवम्बरको मद्रासमें श्रीमती मुथुलक्ष्मी रेड्डीकी अध्यक्षतामें अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन हुआ था, जिसमें दो महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये। एक प्रस्ताव के द्वारा शारदा कानूनका समर्थन किया गया और दूसरेमें कहा गया कि आपत्तिजनक, अश्लील और अवांछनीय फिल्मोंका प्रदर्शन रोकनेके लिए सर्वसाधारणको सेंसर बोर्डकी सहायता करनी चाहिए और शिक्षाप्रद फिल्मोंके प्रति जनताकी अभिरुचिकी वृद्धि करनी चाहिए। इन दो प्रस्तावोंके अतिरिक्त सम्मेलनमें एक प्रकाश्य घोषणापत्रपर विचार किया गया। इस घोषणामें कई प्रश्न थे जो हालहीमें व्यवस्थापिका परिषद्के निर्वाचनके समय उम्मीदवार सदस्योंसे पूछे गये थे। सब प्रश्न महिलाओंकी सामाजिक और शिक्षाविषयक उन्नतिके सम्बन्धमें थे। अध्यक्षा श्रीमती रेड्डीने अपने अभिभाषणमें कहा कि विवाह, अभिभावकत्व और उत्तराधिकारके सम्बन्धमें स्त्रियोंको पुरुषोंके समान अधिकार मिलने चाहिएं। उन्होंने कहा, ब्रिटिश भारतमें अभी ये सब केवल वादविवादके ही विषय हैं, जब कि देशी राज्य बड़ौदा और मैसूर इस सम्बन्धमें यथेष्ट प्रगतिशील हो चुके हैं। हम स्त्रियां नहीं चाहतीं कि इन यातनाओंसे परित्राण दिलानेके लिए दूसरे लोग हमारी सहायता करें। वोटके रूपमें हम एक ऐसे अस्त्रसे सज्जित हैं कि इच्छा करते ही इसके बलपर हम अपने अधिकार प्राप्त कर लें। इस अस्त्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की बदौलत हमारी पाश्चात्य बहनोंने इच्छा करते ही अपने अधिकार प्राप्त कर लिए।

* * *

कुमारी पद्मावती चित्रप्पा—आप मेर्कारा (कुर्ग) की रहनेवाली हैं। समाज-कल्याण, ग्राम-सङ्गठन और स्वास्थ्य-विज्ञानकी उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके लिए आप इंगलैण्ड गयी हैं। आपको लेडी टाटा मेमोरियल स्कालरशिप मिली है।

गत ३ नवम्बरको हैदराबाद (दक्षिण) में श्रीमती जे० सी० टाटेकी अध्यक्षतामें भी एक महिला-सम्मेलन हुआ था, जिसमें कई प्रस्ताव पास किये गये। एक प्रस्तावमें निजाम सरकारको शिशु-रक्षा सम्बन्धी कानून बनानेके लिए धन्यवाद देते हुए उससे प्रार्थना की गयी कि राज्यमें स्त्री-बच्चोंका व्यापार रोकनेके लिए भी एक ऐसा ही कानून बनाया जाय और वेश्यालय तथा वेश्याओंकी दलाली प्रथा बन्द करानेके लिए कड़ी-से-कड़ी कार्रवाई की जाय। एक दूसरे प्रस्तावमें भिक्षा-वृत्तिकी निन्दा की गयी और उसको रोकने, असहायोंको काम और अपाहिजोंको आश्रय देनेके सम्बन्धमें सिकन्दराबादमें जो कानून पास किया गया है, उसका समर्थन किया गया और सरकारसे प्रार्थना की गयी कि राज्य-भरमें उसे लागू किया जाय।

× × ×

लाहौरमें भी ३ नवम्बरको केन्द्रीय पञ्जाब महिला-शिक्षा-सम्मेलनकी वार्षिक बैठक हुई थी। पञ्जाबके फिनैंसियल कमिश्नरकी पत्नी श्रीमती ए० लतीफने अध्यक्षासन सुशोभित किया था। उन्होंने अपने भाषणमें कहा कि मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि आप देशोन्नतिके मार्गमें व्यवधान डालनेवाली सामाजिक कुरीतियोंपर कुल्हाड़ियां चलाती रहें। इन कुरीतियोंमें हमारी खर्चीली आदतें भी हैं। विवाह, मृतक-संस्कार आदिमें तो धनव्यय होना ही न चाहिए। इससे न केवल धनहीनोंपर ऋणका भार पड़ता है, बल्कि तथाकथित धनवानोंपर भी। किन्तु सबसे पहले मैं आपसे यह प्रार्थना करूंगी कि आप शारदा कानूनको और भी अधिक कठोर बनवानेके लिए लोकमत जाग्रत करें। शारदा-कानूनका पास होना एक साधारण बात थी; मुख्य तो यह है कि इसका ठीक-ठीक पालन हो और आप जानती हैं कि सरकार ऐसे मामलोंमें तब तक हस्तक्षेप नहीं करती, जब तक लोकमत उसके लिए प्रबल नहीं होता।

श्रीमती लतीफने सहशिक्षाका विरोध किया और इसका कारण यह बताया कि प्रारम्भसे ही बालक और बालिकाओं-को विभिन्न विषयोंकी शिक्षा देनेकी आवश्यकता है और सहशिक्षा द्वारा यह साध्य नहीं हो सकता। किन्तु आठ वर्ष तकके बालक-बालिकाओं की सहशिक्षामें उन्हें किसी प्रकारकी आपत्ति नहीं है।

यह अल्पवयस्क बालिका गान-विद्यामें अत्यन्त निपुण है। इसी छोटी-सी उम्रमें इसे ताल-स्वरका अपूर्व ज्ञान प्राप्त हो गया है।

महिलाओंकी उच्च-शिक्षा को महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा कि हमारे देशमें साधारणतः माता-पिता अपने लड़कोंको इसलिए उच्च-शिक्षा दिलाते हैं कि उन्हें सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नौकरियां मिलें, किन्तु स्त्रियोंकी उच्च-शिक्षाके सम्बन्धमें यह बात नहीं कही जा सकती। दो-एक अपवादोंको छोड़कर अधिकांश माता-पिता अपनी पुत्रियोंको इसलिए उच्च-शिक्षा देते हैं कि वे शिक्षित होकर योग्य पत्नी और माता बनें।

इसी सिलसिलेमें श्रीमती लतीफने कालेजोंमें गृहस्थ-विज्ञानकी भी शिक्षा देनेकी सिफारिश की। गृह उद्योग-धन्धोंके सम्बन्धमें अध्यक्षाने कहा कि प्रत्येक शिक्षित महिला-को किसी-न-किसी प्रकारका गृह-शिल्प अवश्य सीखना चाहिए और वह भी अपने बच्चों या सखी-सहेलियोंको सिख-लानेके उद्देश्यसे नहीं; बल्कि देशके हस्त-शिल्पकी उत्तरोत्तर उन्नतिके महत् उद्देश्यसे। बड़े घरोंकी स्त्रियोंको घरमें हाथ-पर-हाथ रखकर बैठनेको फैशनमें न शामिल करना चाहिए।

× × ×

१ नवम्बरको पूनामें श्रीमती कमलाबाई देशपाण्डेकी अध्यक्षतामें महाराष्ट्र-महिला-सम्मेलन हुआ था। श्रीमती कस्तूर बाई गांधी स्वागत समितिकी अध्यक्षा थीं।

सम्मेलनमें लगभग ११ उपयोगी प्रस्ताव पास किये गये जिनमें कई विशेष महत्वपूर्ण थे। एक प्रस्तावमें समस्त प्रारम्भिक पाठशालाओंमें सहशिक्षाकी आवश्यकतापर जोर दिया गया। दूसरे प्रस्तावमें कहा गया कि चूंकि देश-की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है और लोगोंका स्वास्थ्य भी साधारणतः गिरा हुआ है इसलिए देशकी सर्वमान्य स्वास्थ्य-सुधार-संस्थाओं द्वारा विवाहित स्त्री-पुरुषोंको सन्तान-निग्रहकी वैज्ञानिक शिक्षा दी जानी चाहिए। और भी कई प्रस्तावोंमें कहा गया कि पाठशालाओंमें अध्यापकों-के स्थानपर अधिकसे-अधिक अध्यापिकायें नियुक्त की जायें, मिलोंमें काम करनेवाली स्त्रियोंमें अधिकांशके विवाहित होनेके कारण उनके बच्चोंके लिए शिशुशालाओंका प्रबन्ध किया जाय। स्त्रियोंकी अयोग्यताओंको दूर करनेके साधनों और तरीकोंकी जांचके लिए एक कमीशन नियुक्त किया जाय और ऐसे गृह-उद्योग-धन्धोंका सञ्चालन किया जाय जिनके द्वारा स्त्रियां अपने परिवारकी आय बढ़ा सकें।

× × ×

दुःखकी बात है कि देशके विभिन्न भागोंमें शारदा कानून एक प्रकारसे मृतप्राय हो रहा है। हालहीमें शेरकोट-की रानीकी अध्यक्षतामें लखनऊमें युक्त प्रान्तीय महिला-सम्मेलन हुआ था जिसमें अध्यक्षाने इसके लिए सरकार और जनता, दोनोंकी निन्दा की। सम्मेलनमें कई महत्वपूर्ण प्रस्तावोंके साथ एक यह भी पास किया गया कि "सरकार शारदा कानूनमें ऐसा संशोधन करे जिससे बाल-विवाह करना दुस्साध्य ही नहीं, असम्भव हो जाय।"

× × ×

१० नवम्बरको बम्बईमें श्रीमती हंसा मेहताकी अध्यक्षता-में महिला-सम्मेलन हुआ था जिसमें श्रीमती मेहताने वर्त-मान शिक्षा-प्रणालीको सब बुराइयोंकी जड़ बताया और कहा कि हमारी वर्तमान अशिक्षाको दूर करनेके लिए बड़े परिश्रमकी आवश्यकता है। सम्मेलनमें सन्तति-निरोध, हिन्दू-महिला-उत्तराधिकार बिल, शारदा कानूनको कठोर बनाने, अशिक्षा दूर करने और पाठ्यक्रममें हिन्दीको विशेष महत्व देनेके सम्बन्धमें प्रस्ताव पास किये गये।

× × ×

यवतमालमें श्रीमती कमलाबाई किबेकी अध्यक्षतामें ११ नवम्बरको बरार-महिला-सम्मेलनका चतुर्थ अधिवेशन हुआ था। अध्यक्षाने राष्ट्र-भाषा हिन्दीमें भाषण देते हुए कहा कि आत्मविश्वास ही हमारी सोयी हुई शक्तिको जाग्रत कर सकता है। महिलाओंको प्रान्तीयताकी संकुचित भावनाका परित्याग कर शुद्ध राष्ट्रीयताकी भावना जाग्रत करनी चाहिए। आपने महिलाओंको हिन्दी सीखनेकी आ-वश्यकता समझायी। सम्मेलनमें बहुतसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये।

× × ×

नवम्बरके प्रथम सप्ताहमें बैङ्गलोरमें श्रीमती मार्गरेट ई० कजिन्सकी अध्यक्षतामें मैसूर राज्य महिला-सम्मेलन हुआ था। सम्मेलनमें कई उपयोगी प्रस्ताव पास किये गये। सर्वसाधारणसे यह अनुरोध किया गया कि जो फिल्म बाहरसे आवें, प्रदर्शनसे पहले उनके अश्लील या भद्दे अंश निकाल दिये जायं और "सेन्सर बोर्ड"में महिलाएं भी नियुक्त की जायं। दूसरे प्रस्तावोंमें शिशु-सदन स्थापित करने, बाल-विधवाओंका पुनर्विवाह करनेकी अनुमति देने, ग्राम-सुधार करने, भिक्षावृत्तिको दण्डनीय करार देने, दरिद्रोंको काम देने तथा वयस्क शिक्षाके लिए एक पञ्चवर्षीय योजना-को कार्यान्वित करनेपर जोर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## हिन्दू स्त्रियोंकी दयनीय दशा

हरिजनोंके समान हिन्दू समाजमें स्त्रियोंके प्रति जो घृणित, निन्दनीय और अपमानास्पद व्यवहार किया जाता है, उससे हिन्दू स्त्रियोंकी दशा नितान्त दयनीय बन गयी है। हिन्दू-समाचार-पत्र मोटे-मोटे शीर्षक देकर हिन्दू स्त्रियोंपर होनेवाले अत्याचारोंका समाचार प्रकाशित करते हैं और उन सब अत्याचारोंका दोष या रोष मुसलमान गुण्डोंपर प्रकट करके रह जाते हैं। स्त्री-समाजके प्रति मुसलमान बदमाशोंकी बदमाशी या गुण्डेपनसे हमें इनकार नहीं है। पर, उनपर ही सब दोष मढ़ कर हिन्दू अपनेको दूधका धुला नहीं बता सकते। हिन्दू स्त्रियोंपर जितने भी अत्याचार होते हैं, चाहे वे गैर-हिन्दुओंकी ओरसे ही क्यों न होते हों, उन सबके लिये हम हिन्दू भी कम दोषी नहीं हैं। हिन्दू-समाजकी साधारण मनोवृत्ति स्त्री-समाजके प्रति इतनी गर्हित हो चुकी है कि उसीका अवश्यम्भावी परिणाम ये सब अत्याचार हैं, जिनको समाचार-पत्रोंमें मोटे शीर्षकोंके साथ प्रकाशित किया जाता है। जो हिन्दू स्त्रीजातिका सम्मान नहीं करता उसको कामकलाके लिये केवल एक साधन मानता है, मनोविनोद या वंशकी परम्परा बनाये रखनेके लिये सन्तान पैदा करनेका उपकरण-मात्र समझता है, घरकी रखवाली या सन्तानके पालन अथवा दोनों समय भोजन बना देनेके लिये ही घरमें किसी एक स्त्रीको नौकरके समान रख छोड़ता है और जो इस प्रकार चौबीसों घण्टे स्त्रीके प्रति हीनवृत्ति रखते हुए उसको सदा ही छोटी दृष्टिसे देखता है, वह कैसे यह आशा रख सकता है कि स्त्रीजातिका सम्मान हो? जिस समाजमें स्त्रियोंको पशुओंके समान समझा जाता है, जहां स्त्रियोंका अपना कोई अस्तित्व नहीं है, उनके आत्माकी भावनाकी कोई कीमत नहीं और उनके सुख-दुःख, हानि-लाभ तथा जीवन-मरणका कुछ भी विचार नहीं है, वहां उनके सम्मानकी कल्पना ही क्या की जा सकती है? घरमें लड़कीका पैदा होना ही जहां अपशकुन माना जाता है, विवाहके समय भी जहां लड़कीवालेको ही नीचा देखना पड़ता है और पहली स्त्रीकी मृत्युके बाद दूसरा विवाह करना जहां पैरकी जूती बदलनेके समान है, वहां स्त्री जातिके आदरकी बात ही क्या की जा सकती है? हिन्दुत्वके जोश या रोषमें आकर अत्याचारोंका सब दोष मुसलमान गुण्डोंपर मढ़ कर उनके प्रति आवेशमें आकर मनमानी बकनेवालोंसे हम इतना निवेदन आग्रहपूर्वक करना चाहते हैं कि वे कुछ शान्तिसे विचार करें और इस सचाईको समझनेकी कोशिश करें कि स्त्रियोंके प्रति होनेवाले जो अत्याचार हमको एकदम विह्वल या अधीर बना देते हैं, वे स्त्रियोंके प्रति हमारी हीन मनोवृत्तिका ही छायाचित्र हैं। अपने मनोभाव और व्यवहारका स्पष्ट चित्र आखोंके सामने देख कर किसपर रोष करना चाहिये और किसको दोष देना चाहिये? शान्त चित्तसे विचार कीजिये कि हिन्दू-समाजमें विधवाओंके प्रति कैसा कठोर, निर्दय और निर्मम व्यवहार होता है? विवाह वे कर नहीं सकतीं और कहीं उनसे कोई भूल हो गयी तो संभलनेका भी उनके लिये कोई अवसर नहीं है। जातसे खारिज करनेके सिवा दूसरी कोई व्यवस्था या विधान उनके लिये है ही नहीं? किसीकी छायातक उनपर पड़ गयी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उनके लिये हिन्दू-समाजमें कोई स्थान नहीं रहता। विधवाओं क्या सधवाओं, कुमारी कन्याओंकी भी यही अवस्था है। अपने पाशविक अत्याचार और कुत्सित मनोवृत्तिसे ऐसी भयानक अवस्था पैदा करनेके बाद समाचार-पत्रोंमें हम अपनी नपुंसकताका विज्ञापन करते हुए लिखते हैं कि "यहां हिन्दू स्त्रियोंपर गुण्डोंके अत्याचार जारी हैं। उन्होंने हालमें चौदह हिन्दू स्त्रियोंको पतित किया है। राज अधिकारियोंको इधर ध्यान देकर गुण्डा एक्ट लागू कर देना चाहिये, ताकि हिन्दू देवियोंके धर्म, जान व मालकी रक्षा हो सके। अभी हालकी बात है कि एक मुसलमान एक काछनको मज़री दिलानेका बहाना करके अपने साथ ले गया और उससे व्यभिचार करना चाहा। एक हिन्दूने मौकेपर पहुंच कर उसे बचाया। हिन्दू मेलोंमें भी आये दिन इस प्रकारके अत्याचार होते हैं।" यह भोपालका समाचार है। पर, ऐसे ही समाचार रियासतों और ब्रिटिश भारतके शहरोंसे भी प्रायः सुननेमें आते रहते हैं। राज-अधिकारियोंके सामने झोली पसारकर जो समाज अपनी स्त्रियोंके शील, सतीत्व और सदाचारकी रक्षाकी भीख मांगता है, उसको अपनी मनुष्यता और पुरुषत्वपर शर्म आनी चाहिये। सीता, गार्गी, द्रौपदी, अहिल्या और लक्ष्मीबाईका नाम लेनेवाला हिन्दू-समाज ऐसा अकर्मण्य अपनी ही करतूतसे बना हुआ है।

इस भावको स्पष्ट करनेके लिये यहां हम दो ही ऐसी घटनाएं दे रहे हैं, जो ऊपरके समाचारके साथ ही समाचार पत्रोंमें प्रकाशित हुई हैं। एक घटना देहलीकी है और दूसरी बम्बईकी। देहलीकी घटना यह है कि शान्ति देवी नामकी एक नवयुवतीको स्टेशनपर अकेला पाकर पुलिसने पकड़ लिया और फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट चौधरी बलदेवसिंहके सामने पेश किया। यहां उसने जो बयान दिया, उसका सारांश यह है कि दक्षिण हैदराबादके जर्थभोरी गांवके एक जमींदारके साथ आठ वर्ष पहले उसका विवाह हुआ था। उससे कोई सन्तान न होनेसे उसके पतिने उसको छोड़नेका विचार कर लिया। इसी विचारसे वह उसको भटिण्डा लाया, वहांसे उसने उसको देहलीका टिकिट और खर्चके लिये तीन रुपये देकर वापिस देहली भेज दिया, क्योंकि शान्ति देवी सम्भवतः अनाथ कन्या थी और देहलीके किसी आश्रममें ही उसका लालन-पालन होकर उक्त जमींदारके साथ उसका विवाह किया गया था। अत्यन्त करुणापूर्ण शब्दोंमें भरे हुए गलेसे उस युवतीने मजिस्ट्रेटसे कहा कि अब उसकी, फिर विवाह करनेकी इच्छा नहीं है और वह गृहस्थ-जीवनसे तङ्ग आ चुकी है। मजिस्ट्रेटने उसको स्थानीय सेवा-सदनमें भेज दिया। स्त्री जातिकी सेवाका अभिमान करनेवाली और इसी सेवाके नामपर जनतासे सहायताकी अपेक्षा रखनेवाली उस हिन्दू संस्थामें भी उस हतभाग्य हिन्दू महिलाके लिये कोई स्थान न था। सेवा-सदनके हिन्दू अधिकारियोंने उस अरक्षिता हिन्दू युवतीको आश्रय देनेसे इनकार कर दिया। वह फिर एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट मि० एफ० बी० पूलकी अदालतमें लायी गयी। मि० पूलने उसको अपने पतिके पास हैदराबाद भेजनेका हुक्म दिया। पर, इसकी गारण्टी क्या है कि परित्यक्ता पत्नीको अपने पतिके घरमें स्थिर आश्रय मिल ही जायगा? बम्बईकी घटना भी इससे कुछ मिलती-जुलती है। विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशनपर एक पुलिस अफसरने तीन आदमियोंसे घिरी हुई एक युवती ब्राह्मण कन्याको देखा और कुछ सन्देहका अनुमानकर वह वहां पहुंचा। उसके पहुंचते ही तीनों आदमी नौ-दो-ग्यारह हो गये। मैसूर निवासिनी उस युवती ब्राह्मणी कन्याने अपनी जो दुःखपूर्ण कहानी सुनायी, उसका आशय यह है कि कोई छः मास हुए उसके पतिने उसको छोड़ दिया है। अपनेको निराश्रिता पाकर अपने जीवन-निर्वाहकी समस्या हल करनेके लिये वह मैसूरसे बैंगलोर चली गयी। वहां उसने सङ्गीत सिखानेका काम शुरू किया। इस प्रकार अध्यापिकाका काम करते हुए उसने कुछ पैसे जमा किये और पंढरपुर तथा पूना होती हुई वह आजीविकाकी तलाशमें बम्बई आयी। गाड़ीमें उसको अकेले देखकर एक आदमीने उसको कुछ खानेको दिया, पर उसने स्वीकार नहीं किया। दूसरे एक आदमीने उसका टिकिट ले लिया और फिर वह टिकिट वापिस नहीं किया। बम्बई पहुंचनेपर उसको तीन अजनबी आदमियोंने घेर लिया। पुलिसने उसकी रक्षा की और उसको पन्द्रह दिनके लिये बम्बई 'श्रद्धानन्द वनिता-विश्राम-भवन' में भेज दिया। पन्द्रह दिन बाद क्या हुआ—इसका कोई समाचार अभी नहीं मिला है। समारपत्रोंमें इस प्रकारकी कितनी ही घटनायें देखनेमें आती रहती हैं। राज-अधिकारियोंसे गुण्डा-एक्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लागू करनेकी भीख मांग कर स्त्रियोंकी रक्षा करनेकी आशा रखनेवालोंसे हम जानना चाहते हैं कि वे ऊपरकी घटनाओंसे प्रकट होनेवाले और गृहस्थ तथा विवाहकी आड़में किये जानेवाले समाजके इस कुत्सित एवं हृदयहीन व्यवहारको, जो कि गुण्डापनसे किसी भी अंशमें कम नहीं है, किस कानूनसे रोकनेकी आशा रखते हैं ?

मनुका यह आदर्श वाक्य हिन्दू-समाजमें प्रायः बोला जाता है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।" इसीके आधारपर हिन्दू-समाजमें स्त्री जातिको आदर तथा सम्मानसे देखनेके विधानकी लम्बी-चौड़ी अर्थहीन डींगें हांकी जाती हैं। पर, इसका भाव समझने और तदनुकूल आचरण करनेकी कोशिश बहुत कम की जाती है। यही कारण है कि हमारी आंखोंके सामने ही हिन्दू कुललनाओंके शील एवं सतीत्वपर गुण्डों और बदमाशों द्वारा आक्रमण होते हैं और हम उनके प्रति अपना पुंसत्व-विहीन क्रोध प्रकट करके ही रह जाते हैं। स्त्रीजातिके प्रति हिन्दुओंकी हीन मनोवृत्तिमें जबतक आमूल परिवर्त्तन नहीं होता, तबतक हिन्दू स्त्रियोंकी दयनीय दशा ज्यों-की-त्यों बनी रहेगी और उनके ऊपर दुर्वृत्तों द्वारा किये जानेवाले अपमान और अत्याचारकी कड़वी घूंट हमें पीनी ही पड़ेंगी।

## अन्धविश्वासका भीषण परिणाम

भूत-प्रेत और जादू-टोनाके सम्बन्धमें हमारे देशके अशिक्षित ग्रामीणोंमें अब भी इतना अधिक अन्धविश्वास पाया जाता है कि बहुधा इसके कारण बड़े-बड़े अनर्थ हो जाया करते हैं। इस प्रकारके अन्धविश्वासके परिणाम कभी-कभी इतने भीषण होते हैं कि हत्या जैसे नृशंस कर्म करनेमें भी आगा-पीछा नहीं किया जाता। इसमें सन्देह नहीं कि अशिक्षा और अज्ञानताके कारण ही ग्राम-वासियोंमें इस प्रकारके अन्धविश्वास और मूढ़-बुद्धि फैली हुई है और उनमें इतना विवेक नहीं होता कि वे सत्यासत्यका निर्णय कर सकें।

इस प्रकारकी एक घटना अभी हालमें डिब्रूगढ़ (आसाम) जिलेके अन्तर्गत जमपुर थानेके एक ग्राममें हुई है। वहां लखई नामक एक व्यक्तिकी स्त्री, जिसका नाम नागी था, गत छ महीनोंसे बीमार रहा करती थी। बहुत दवा-दारू करनेपर भी जब उसका रोग दूर नहीं हुआ, तो उसके पति लखईको सन्देह हुआकि वहीं की रहनेवाली दो कुली स्त्रियां, दुली और दुंगीने—जो डायन बतायी जाती थीं—उसकी स्त्रीको जादू-टोना कर दिया है। लखईके इस सन्देहका एक और खास कारण यह था कि उसकी उन दोनों स्त्रियोंसे लड़ाई रहा करती थी। एक दिन नागीकी मृत्यु हो गयी। उसके दाह-संस्कारमें अन्य लोगोंके साथ दुली और दुंगी भी गयी थीं। लखई चादर ओढ़े हुए था। लाश चितापर रखी गयी, उसी समय लखई अकस्मात् दाव निकालकर, दुंगीपर टूट पड़ा और एक ही वारमें उसका सिर धड़से अलग कर दिया। फिर उसने दूसरा वार दुलीपर किया। तत्काल उसकी भी मृत्यु हो गयी।

पुलिसने लखईको गिरफ्तार करके उसपर मामला चलाया है।

दूसरी घटना खास कलकत्तेकी है। एक बङ्गाली हिन्दू-स्त्री सन्तान-प्रसव करनेके बाद बीमार पड़ गयी और उसमें उन्मादके लक्षण प्रकट होने लगे। उक्त स्त्रीको इस प्रकार विक्षिप्त देखकर उसके सम्बन्धियोंने झाड़-फूंकके लिए एक स्थानीय ओझाको बुलाया। ओझा अपने सहकारीके साथ नरमुण्ड, जानवरोंके ठट्ठर तथा इसी तरहकी और कई चीजें लेकर उस स्त्रीके शरीरसे भूत भगानेके लिए वहां पहुंचा। फिर उसने सब चीजोंको जमीनपर फैलाकर मन्त्रोच्चारण द्वारा अपनी क्रिया आरम्भ की। उसने कपूरका एक टुकड़ा स्त्रीके हाथमें रखकर उसे जला दिया। इसके बाद उसने सूता जलाकर जलते हुए सूतका स्त्रीके ओठोंसे स्पर्श कराया। इससे उसके ओठ तथा मुंह और दूसरे कई स्थान बुरी तरह जल गये। किन्तु इतनेपर भी जब कोई फल नहीं देख पड़ा तो 'ओझा'ने निराश होकर कहा कि इस स्त्रीको भूत नहीं लगा है। अगर भूत लगा होता तो उसके शरीरपर जलनेके दाग नहीं पड़ते। स्त्रीको चिकित्साके लिए अस्पताल पहुंचाया गया और सूचना मिलनेपर पुलिसने उस ओझाको उसके सहकारीके साथ गिरफ्तार कर लिया।

## भारतमें अशिक्षा

डेढ़ सौ वर्षसे अधिकसे ब्रिटिश शासनका सुफल भोगते-रहनेके बाद भी भारतमें सैकड़े १० मनुष्य भी इतनी शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं प्राप्त कर सके हैं जिससे वे अपनी मातृभाषामें अपना नाम लिख सकें। हमारे देशमें अनिवार्य शिक्षाकी योजना अभी तक कल्पनातीत ही समझी जाती है। देशके कुछ शासक तो स्पष्ट रूपसे इस बातका सङ्केत कर चुके हैं कि भारतवासियोंके लिए अनिवार्य शिक्षाकी व्यवस्था अभी आकाश-कुसुम ही है। और बहुत सम्भव है कि हमारी यह निरक्षरता तब तक कायम रहे जब तक देशके शासन-सूत्रका सञ्चालन जनताके प्रतिनिधियों द्वारा न हो।

एक ओर जहां हमारे शासक सैकड़े ९२-९३ मनुष्योंके निरक्षर होनेपर भी उनके लिए किसी प्रकारकी शिक्षा-सम्बन्धी व्यवस्था करनेकी अनिवार्य आवश्यकता महसूस नहीं करते; वहां संसारमें ऐसे भी देश हैं जो अपनी जन-संख्यामें सैकड़े ४-५ मनुष्योंको भी निरक्षर रहने देना नहीं चाहते और इस निरक्षरताको दूर करनेके लिए बड़ी-बड़ी स्कीमें काममें लाते हैं।

अमेरिका धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य और शिक्षामें संसारके किसी भी उन्नतिशील देशसे पीछे नहीं है। वहांकी जनता शिक्षाकी महत्ताको धार्मिक आवेशके साथ स्वीकार करती है। फिर भी अमेरिकामें ऐसे लाखों वयस्क स्त्री-पुरुष हैं जो बिलकुल निरक्षर कहे जायंगे और ८० लाख दूसरे लोग ऐसे हैं जिनका अक्षरज्ञान इतना अपर्याप्त है कि उन्हें भी लगभग निरक्षर ही समझना चाहिए। दक्षिण अमेरिका-के राज्योंमें निरक्षरता विशेष रूपसे पायी जाती है। कारण, वहां हबशी निवासियोंको श्वेताङ्गोंके समान शिक्षा-सम्बन्धी सुविधायें प्राप्त नहीं हैं। किन्तु एक खास बात यह है कि अमेरिकाके सर्वप्रधान नगर तथा शिक्षाका केन्द्र न्यूयार्कमें हबशियोंकी अपेक्षा श्वेताङ्गोंमें निरक्षर लोगोंकी संख्या अधिक पायी जाती है।

इस निरक्षरताको दूर करनेके लिए सरकारकी ओरसे एक वृहत् आयोजन कार्यान्वित किया जा रहा है। इस योजनाके अनुसार ४० हजार बेकार शिक्षक शिक्षा-प्रचारके लिए नियुक्त किये जायंगे। जहां काफी संख्यामें वयस्क निरक्षर स्त्री-पुरुष मिल जायंगे वहीं उनके लिए क्लास खोल दिये जायंगे। इन क्लासोंके सिवा उद्योग-धन्धोंकी शिक्षा देनेकी भी व्यवस्था की जायगी। इस प्रकार शिक्षा प्राप्त करनेवाले अधिकांश छात्र वयस्क स्त्री-पुरुष होंगे। हां, इस योजनाके अन्तर्गत वे बच्चे भी अवश्य शामिल रहेंगे, जिनकी अवस्था अभी स्कूल जाने लायक नहीं हुई है।

सन् १८९० में अमेरिकामें निरक्षरोंकी संख्या सैकड़े १३ थी। सन् १९३० में यह संख्या घटकर सैकड़े ४ रह गयी। राष्ट्रपति हूवरके शासन-कालमें विभिन्न खण्ड राज्योंकी निरक्षरता दूर करनेमें सरकारकी ओरसे विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया गया था और इसमें सफलता भी बहुत-कुछ मिली थी। अब निरक्षरता दूर करनेके लिए जो यह नया आयोजन किया गया है उससे यह आशा की जाती है कि सन् १९४० की आगामी मनुष्यगणनामें ६ वर्षसे अधिक अवस्थाका अमेरिकाका एक भी नागरिक ऐसा नहीं रह जायगा जो समाचार-पत्र नहीं पढ़ सके और अपना नाम नहीं लिख सके।

हमारे देशमें शिक्षाकी जैसी प्रगति है उस हिसाबसे तो अमेरिका जैसी स्थिति तक पहुंचके लिए सैकड़ों वर्ष लग जायंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## असेम्बलीके कुछ निर्वाचित कांग्रेस सदस्य :—

श्रीयुक्त जी० वी० देशमुख

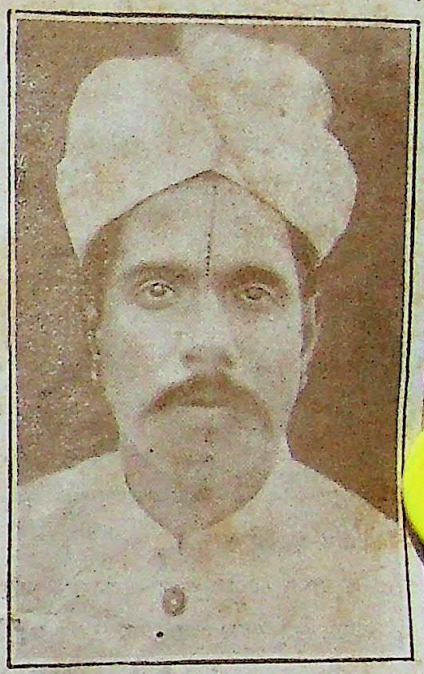

श्रीयुक्त सामी वेङ्कटाचलम्चेट्टी

मि० नागेश्वरराय पन्नूलु

पि० के० एस० जेढे

मि० पी० एस० कुमारस्वामी राजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## असेम्बलीके कुछ निर्वाचित कांग्रेस सदस्य :—

डा० खां

श्री सत्यनारायण सिंह

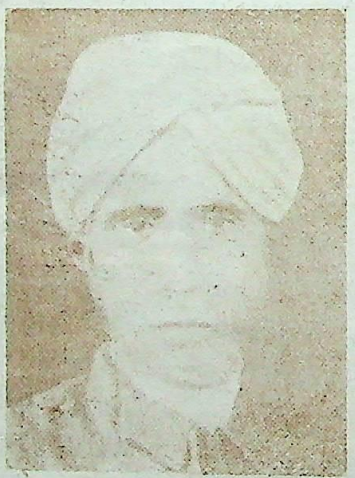

मि० वसन्तकुमारदास

श्रीयुत् वी० वी० गिरि

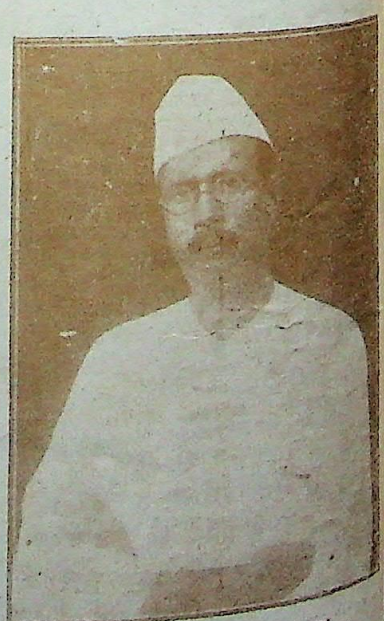

श्री अनुग्रह नारायण सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## बोलशेविज्मका अन्त ?

रूसके राष्ट्र-संघका सदस्य-पद ग्रहण करनेसे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें जो एक नवीन स्थिति उत्पन्न हो गयी है, उसपर सम्पूर्ण विभिन्न दृष्टिकोणोंसे विचार किया जा रहा है। जो लोग अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें रूसके सहयोगके समर्थक हैं वे तो न्यूनाधिक रूपमें छिपे तौरसे यह भी विश्वास प्रकट करते हैं कि "राष्ट्रसङ्घमें रूसके प्रवेशसे बोलशेविज्मका अन्त ही समझना चाहिए।" पूंजीवादी देशोंके राजनीतिज्ञ अपने देशवासियोंके सामने यही बहाना पेश करके रूसके साथ मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करनेका औचित्य सिद्ध करते हैं। किन्तु इस प्रकारका विश्वास केवल पूंजीवादी देशोंमें ही प्रकट किया जाता हो, सो बात नहीं है। खास रूसमें भी उन कम्यूनिस्टोंमें, जो अब भी ट्राट्स्कीके मतानुसार विश्व-विप्लवकी सम्भावनामें विश्वास करते हैं और जिन्हें पूंजीवादी राज्योंके अन्दर परराष्ट्रसचिव मो० लिटविनाफको कूट नीतियुक्त कौशलकी अपेक्षा, थर्ड इण्टरनेशनलकी विध्वंसक कार्य्यवाहियोंमें अधिक विश्वास है, इसी प्रकारका मत प्रकट किया जाता है।

मास्कोके औसत कम्यूनिस्ट यही समझते हैं कि सोवियट रूसकी यह परराष्ट्र नीति अन्तर्राष्ट्रीय पूंजीवादके सामने आत्मसमर्पणके रूपमें है। यह तो स्पष्ट ही है कि कम्यूनिस्ट इन्टरनेशनलके नेता मेनूलिस्की Manuilski और परराष्ट्रसचिव मि० लिटविनाफमें जो विवाद चल रहा था उसका अन्त कम्यूनिस्ट इन्टरनेशनलकी पूर्ण पराजयके रूपमें हुआ। स्टेलिनने लिटविनाफके पक्षमें अपना फैसला दिया और उनके आदेशानुसार इन्टरनेशनल कांग्रेसकी बैठक अनिश्चित कालतकके लिए स्थगित कर दी गयी है। इतना ही नहीं, बल्कि स्टेलिनने यह भी हिदायत की है कि komintern (विदेशोंमें कम्यूनिज्मका प्रचार कार्य्य करनेवाली संस्था) की सारी कार्रवाइयां रूसकी परराष्ट्रनीतिके अनुकूल होनी चाहिएं।

कोमिण्टर्नके आगामी वर्षके आन्दोलनकी योजना परराष्ट्रसचिव द्वारा तैयार की गयी है, ताकि उनकी नीतिसे इसमें किसी तरहका फर्क नहीं पड़े। प्रचार-कार्य्यके सम्बन्धमें उन देशोंकी ओर ही बिलकुल ध्यान दिया जायगा जो अन्तर्राष्ट्रीय संग्राम छिड़ जानेपर सम्भवतः रूसके विरोधी-दलमें होंगे। इनमें मुख्य देश हैं जर्मनी, जापान, पोलैण्ड तथा अमेरिकाके दक्षिणी और मध्य राज्य। इङ्गलैण्डके सम्बन्धमें अभी किसी प्रकारकी नीति काममें नहीं लायी जायगी; क्योंकि एक ओर तो रूसको इस बातका भी कुछ-कुछ विश्वास बना हुआ है कि फ्रान्सकी कूटनीति इङ्गलैण्ड और रूसके बीच मैत्रीसम्बन्ध स्थापित करनेमें सफल हो सकती है और दूसरी ओर इस बातकी भी सम्भावना है कि इंगलैण्ड रूसके विरोधियोंका पक्ष ग्रहण करे।

कोमिण्टर्नके नेता कुछ समयसे इस बातको साफ-साफ जाहिर करने लगे हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिके सम्बन्धमें उनका जो निर्णय होता है वह अधिकांशमें परराष्ट्रसचिवके निर्णयसे भिन्न होता है। उदाहरणके लिए कोमिन्टर्नकी कार्य्यकारिणी समितिने परराष्ट्रसचिवके दफ्तरको यह विश्वास करानेकी चेष्टाकी कि अमेरिका और फ्रांसमें इस



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समय जैसी स्थिति हो रही है, उससे लाभ उठाकर वहांके कम्यूनिस्टोंको अपना क्रान्तिकारी कार्य्य जोरोंसे करने देना चाहिए, किन्तु परराष्ट्र सचिवके दफ्तरने यह निश्चय किया कि अमेरिका और फ्रांसके कम्यूनिस्ट, स्थानीय घटनाओंको लेकर ही अपनी कार्य्यवाहियोंको परिमित रखें और ऐसी कोई कार्रवाई न करें जिससे रूसको परराष्ट्र नीति-पर आघात पहुंचे। रूसको जब यह मालूम हुआ कि अमेरिकाका कम्यूनिस्ट दल स्वतन्त्र रूपमें इस प्रकारकी कार्रवाई करनेकी कोशिश कर रहा है, जिससे अमेरिका और रूसके बीच जो सम्बन्ध है उसपर आघात पहुंच सकता है, तो उसे रूसकी ओरसे कड़ी डांट बतायी गयी।

यद्यपि बाहरके देश सोवियट रूसकी इस राजनीतिक चालको बड़ी दिलचस्पीके साथ देख रहे हैं, किन्तु खास मास्कोमें यह विश्वास किया जाता है कि स्टेलिन शीघ्र ही कोमिण्टर्नको कुछ रियायतें देकर अपनेको सुविधावादी सिद्ध करेंगे। यद्यपि मो० लिटविनाफ़की इच्छानुसार थर्ड इन्टर-नेशनलकी बैठक स्थगित कर दी गयी है, फिर भी यह अनु-मान किया जाता है कि फ्रांस, अमेरिका और लघु मित्र-राष्ट्रोंको शीघ्र ही कोमिण्टर्नकी कार्य्यवाहियोंका परिचय मिल जायगा।

## ब्रिटिश सरकारकी प्राच्य नीति

वायनाके एक संवादपत्रने लिखा है कि "यूरोपमें इस समय शस्त्रास्त्रोंके क्रियात्मक उपयोगके सिवा और सब प्रकारसे युद्धका वातावरण मौजूद है।" उक्त पत्रके इस कथनमें वस्तुतः कोई अत्युक्ति नहीं है। कारण पाश्चात्य राष्ट्रोंकी वर्तमान मनोवृत्तिसे यह स्पष्ट है कि वे युद्ध नहीं चाहते हुए भी किसी आसन्न युद्धकी आशङ्कासे बड़ी व्यग्रताके साथ सन्नद्ध हो रहे हैं।

अन्यान्य राष्ट्रोंके समान इङ्गलैण्ड भी संसारकी राज-नीतिक परिस्थितिको देखते हुए अपने साम्राज्यगत स्वार्थको अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिये कम उद्विग्न नहीं है। इस सम्बन्धमें हमें यह भी जान रखना चाहिये कि भावी अन्त-र्राष्ट्रीय समस्यापर दृष्टि रखकर ही इङ्गलैण्डने भारतके लिए शासनविधानकी योजना तैयार की है। प्राच्य देशोंके राज-नीतिक क्षेत्रमें परिवर्त्तनका जो एक स्रोत प्रवाहित हो रहा है, इङ्गलैण्ड उसकी किसी प्रकार भी उपेक्षा नहीं कर सकता। राजनीतिज्ञोंकी दृष्टिमें उदारता या विश्वमानवता जैसे आपात-रमणीय वाक्योंका कोई मूल्य नहीं है। उनके लिए यदि किसी बातका मूल्य है, तो वह देश और जातिके बृहत्तर स्वार्थका। भारतको शासनाधिकार प्रदान करनेमें ब्रिटिश-सरकार अपनी जातिकी प्रकृतिगत स्वार्थसंरक्षणमूलक प्रवृत्ति-को उदारता अथवा सहानुभूतिकी भावनासे अभिभूत होने देगी, इस प्रकारकी धारणा किसीको नहीं करनी चाहिये। प्राच्य देशोंके राजनीतिक क्षेत्रमें जो कितनी ही चमत्कारपूर्ण घटनायें संघटित हुई हैं उनकी ओर हमारा ध्यान भले ही आकृष्ट नहीं हुआ हो, किन्तु जिन्हें एक विशाल साम्राज्यका सञ्चालन करना पड़ता है, वे इस ओर सतर्क दृष्टि रखकर ही अपनी नीति निर्धारित करते हैं।

अङ्गरेज राजनीतिज्ञोंका खयाल है कि पूर्वमें ब्रिटिशनीति-के सम्बन्धमें कुछ स्पष्ट सिद्धान्तोंपर पहुंचना आवश्यक है। एशियाके मुसलमान राष्ट्रोंमें नवजागरणके लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं। तुर्की, अरब, फारस और अफगानिस्तान एक सूत्रमें आबद्ध होनेके लिये चेष्टा कर रहे हैं। इसके सिवा चीनी तुर्किस्तानमें इङ्गलैण्ड, जापान और रूस इन तीन राष्ट्रोंके बीच जो राजनीतिक दांव-पेंच चल रहे हैं और जिसमें अभीतक सोवियट रूसका प्रभाव ही विशेष रूपमें सफल देख पड़ता है, वह भी एक उल्लेखनीय बात है। चीनी तुर्किस्तानमें रूसका प्रभाव बढ़नेसे वह भारतके उत्तर-पश्चिम सीमान्त और काश्मीर तकको स्पर्श कर सकता है। रूसके राजनीतिज्ञ यह भी कहने लगे हैं कि मध्य एशियाके मुसल-मान विशेष आग्रहके साथ बोलशेविक नीतिकी दीक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

इसके बाद जापानके अभ्युत्थानका आतङ्क तो है ही। इसी आतङ्कको दूर करनेके लिये सिङ्गापुरमें जङ्गी बेड़ेका अड्डा बनानेका काम पूरे जोरके साथ चलानेका निश्चय किया गया है। किन्तु ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इतनेसे ही सन्तुष्ट नहीं हैं। उनका कहना है कि यदि सचमुच जापान अस्ट्रेलियापर आक्रमण कर बैठे, तो उसके इस आक्रमणके प्रतिकारके लिये सिङ्गापुरमें जो समरसज्जा है, वह पर्य्याप्त नहीं है। अस्ट्रे-लियाके उत्तरभागमें जर्मनीसे प्राप्त अस्ट्रेलियाके अधीनस्थ जो कई द्वीप हैं, उन्हें भी सामरिक दृष्टिसे सज्जित करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आवश्यक है। किन्तु अस्ट्रेलिया इस खर्चका बोझ अपने सिर लेना नहीं चाहता और उधर ब्रिटिश सरकारने खर्च जुटानेमें अपनी असमर्थता प्रकट की है, जिससे अस्ट्रेलिया असन्तुष्ट हो गया है। ब्रिटिश मंत्रिमण्डलके सेक्रेटरी सर मैरिस मैस्की अस्ट्रेलिया जाकर इस सम्बन्धमें किसी समझौतेपर पहुंचनेकी चेष्टा करेंगे। सर मैरिस दक्षिण अफ्रिका, कनाडा आदि उपनिवेशोंका भी भ्रमण करेंगे और उन देशोंके परराष्ट्र सचिवोंसे मिलकर ब्रिटिश सरकारकी परराष्ट्रनीतिके सम्बन्धमें आलोचना-प्रत्यालोचना करेंगे।

उपनिवेश-सचिवोंके साथ वार्त्तालापमें भारतकी रक्षा-नीतिके सम्बन्धमें भी अवश्य ही चर्चा चलेगी। बर्माके सीमान्तवर्त्ती चीन अधिकृत प्रदेशोंमें समय-समयपर जो अशान्ति देखी जाती है, उसका दमन करनेके लिये यदि भारतमें सामरिक वायुयानोंकी संख्यामें वृद्धि करनेका प्रस्ताव किया जाय, तो कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं। सारांश यह है कि संसारकी राजनीतिक परिस्थितिका रुख देखकर ही ब्रिटिश सरकार अपनी प्राच्यनीति स्थिर करती है और उसकी इस नीतिमें साम्राज्यका स्वार्थसंरक्षण ही सर्वोपरि होता है। ऐसी अवस्थामें भारतके लिये किसी प्रकारका वास्तविक राष्ट्रीय अधिकार प्राप्त करना तभी सम्भव हो सकता है, जबकि वह पर्य्याप्त राष्ट्रीय शक्ति-सञ्चय कर ले, जिससे उसकी अवहेलना करना ब्रिटिश सरकारके लिए सम्भव नहीं हो।

## बोलशेविक अफसर पोलो-खिलाड़ी बन रहे हैं

मि० बुलिट सोवियट रूसमें अमेरिकाके सर्वप्रथम राजदूत नियुक्त किये गये हैं। इस पदपर नियुक्त हुए अभी आपको कुछ ही दिन हुए, किन्तु इतने समयमें ही अपनी आरामतलबीके कारण आप मास्कोमें काफी मशहूर हो चुके हैं। अमेरिकन ढंगसे आपके रहन-सहनके सम्बन्धमें बर्लिनके एक पत्रने लिखा है—"मि० बुलिट एक बहुत ही धनी मनुष्य हैं। अपनी मर्जीके अनुसार विलास-वैभव पूर्ण जीवन व्यतीत करनेके लिए उनके पास साधनोंकी कमी नहीं है। उन्होंने अमेरिकासे अपने लिए पोलोके कुछ घोड़े मंगा रखे हैं और बोलशेविकोंको पोलो खेलनेकी शिक्षा देनेका विचार किया है।

"थोड़े समयके अन्दर ही उन्होंने पोलोकी दो टीमें तैयार कर लीं। एक टीममें अमेरिकाके दूतावासके कर्मचारी आदि थे और दूसरेमें रूसकी लाल सेनाके अफसर। कुछ दिनोंके अभ्याससे ही रूसके फौजी अफसर पोलोके अच्छे खिलाड़ी बन गये। मि० बुलिटने अपनी इस सफलताके सम्बन्धमें अमेरिकाकी सरकारके पास वाशिङ्गटन सूचना भेजी और यह राय जाहिर की कि रूसकी लाल सेना, पोलो खेलनेके सम्बन्धमें जैसा आवेश दिखला रही है वह इस बातका एक ताजा प्रमाण है कि बोलशेविक लोग दिन-ब-दिन बुर्जू (मध्यम श्रेणीवाले) बनते जा रहे हैं और कम्यूनिस्ट अमेरिकाके सबसे अच्छे मित्र हैं।"

किन्तु मि० बुलिटकी इस दुष्टतापूर्ण चालसे न्यूयार्कके कम्यूनिस्ट और उनकी मित्रमण्डलीमें अत्यन्त रोष फैल गया है। अमेरिकामें पोलो, उच्च श्रेणीके १० हजार लोगोंके मनोरञ्जनका एक साधन समझा जाता है। 'पोलो' का नाम सुनते ही औसत अमेरिकनकी आंखोंके सामने ऐश्वर्य्य और अवकासके साथ-साथ उन करोड़पतियोंका चित्र चित्रित हो जाता है जो शहरसे बाहर विस्तृत हरे-भरे मैदानमें बड़े-बड़े मकान बनाकर रहते हैं। वहां उनका क्लब होता है, घोड़ेपर सवार होकर वे पोलो खेलते हैं और उनकी लाड़-पुचकारसे बिगड़ी हुई, सौष्ठवसम्पन्न, रत्नालंकृत स्त्रियां उनके इस खेलका तमाशा देखती हैं। कहां यह चित्र और कहां "संसारके एकमात्र श्रमजीवी शासित देश" के वे किसान और मजदूर जो दिन भर पसीनेसे तरबतर होकर अपने हाथसे परिश्रम करते हैं और क्लान्त शरीर लेकर संध्याको घर लौटते हैं। दोनोंमें कितना अन्तर है? पूंजीवादके सम्बन्धमें प्रचार करनेका यह नया तरीका और जिस तत्परताके साथ लाल सेनाके अफसर इस चक्करमें फंसे हैं, उससे न्यूयार्कका "डेली वर्कर" पत्र तथा वहांके सच्चे कम्यूनिस्ट अत्यन्त रोषान्वित हो उठे हैं और वे इसके प्रतिवादमें प्रायः रोज ही सभाएं किया करते हैं।

न्यूयार्कके अन्यान्य समाचारपत्र कम्यूनिस्टोंके इस क्रोध-प्रकाशकी मखौल उड़ाते हैं। "न्यूयार्क टाइम्स" लिखता है—"मि० बुलिटके सञ्चालकत्वमें जो बोलशेविक पोलो खेलते हैं वे केवल अपने पूर्वजोंकी परम्परागत प्रथाका अनुसरण करते हैं। हजारों वर्ष पहले फारसमें पोलोका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खेल प्रचलित था और वहांसे इसका प्रचार तुर्किस्तानमें हुआ। मंगोल और तातारियोंमें, जो बोलशेविकोंके पूर्वज थे, कई प्रथम श्रेणीके पोलो-खिलाड़ी हुए थे। इसलिए कज्जाकों-की भूमिमें भी पोलोके चुस्त खिलाड़ी पैदा होने चाहिएं और इससे इसकी पञ्च वार्षिक योजनापर कुछ भी बुरा असर नहीं पड़ सकता। रूसकी लाल सेनाकी पोलो टीमके साथ अमेरिकाके करोड़पती और इङ्गलैण्डके लार्ड पोलो खिलाड़ियों-की जो प्रतियोगिता होगी, वह सचमुच अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिकी एक वस्तु होगी और राष्ट्रोंके बीच सद्भाव-सूचक होगी।"

## अफ्रिकापर मसोलनीकी लोलुप दृष्टि

अफ्रिका महादेशके विस्तृत भूभागपर अपना अधिकार जमाकर साम्राज्यविस्तारकी लालसा इस समय दो देशोंके मनमें विशेष रूपसे उत्पन्न हो रही है और इसके लिये इन दो महाशक्तियोंके बीच कशमकश भी खूब चल रही है। ये दो देश फ्रांस और इटली हैं और इनकी इस लोलुपताका शिकार अफ्रिका बना हुआ है। लण्डनके 'डेली हेराल्ड' पत्रका संवाददाता लिखता है:—मसोलनी चाहता है कि उसे सहारा रेगिस्तानका कुछ हिस्सा मिल जाय। किन्तु इस कुछ हिस्साका अर्थ यह नहीं है कि वह सिर्फ कुछ वर्ग मील मरु-भूमिसे ही सन्तुष्ट हो जायगा। यह कुछ वर्गमील जमीन पश्चिम सुदानकी समृद्धिसम्पन्न भूमितकके लिए प्रवेश-मार्गके बरामदेका काम करेगी।

अत्यन्त प्राचीन कालसे त्रिपोलीसे लेकर छाद Chad के किनारेतकका एक रास्ता जारी है, जिससे होकर कारवां आया-जाया करता था। इस रास्तेसे होकर रेल या मोटर-की सड़क बन जानेसे यूरोप तककी राह बहुत सीधी और कम दूरीकी हो जायगी। फैसिस्ट इटली अपने भावी वाणिज्य-पथके रूपमें इस रास्तेका स्वप्न देखा करता है।

त्रिपोलीमें इटलीकी जो चौकियां हैं, वहांसे छादके किनारेतक सिर्फ ५०० मील रेगिस्तान है। इटलीके लोग प्रश्न करते हैं कि फ्रांस क्यों न यह जमीन इटली-को दे दे?

क्या इटली युद्धमें उसका सहायक नहीं था? क्या इटलीको सन्तुष्ट रखने और जर्मनीके विरुद्ध यूरोपमें उसका साहाय्य प्राप्त करनेके मूल्य स्वरूप यदि ५०० मील मरुभूमि उसे देनी पड़े, तो यह अत्यधिक समझी जायगी?

इसके उत्तरमें फ्रांसका कहना है कि यह मूल्य अधिक, अत्यधिक है।

फ्रांस यहां तक तो राजी हो जायगा कि त्रिपोलीका सीमान्त बढ़ाकर दक्षिणमें सहारा रेगिस्तानके मध्यतक कर दिया जाय।

किन्तु छादतक—यह तो कदापि नहीं हो सकता।

क्योंकि इसके उत्तर-पश्चिममें फ्रांसके विस्तृत भूप्रदेश मरक्को, अलजीरिया, टुनिस, सेनीगल, फ्रेंच गायना, फ्रेञ्च सुदान और फ्रेञ्च निगेरिया हैं।

फिर निगेरियाके बाद फ्रांसका अन्य खण्ड प्रदेश केमरन, फ्रेञ्च कंगो और उवंगी हैं।

इन दोनोंको संयुक्त करना, कंगोसे लेकर भूमध्य सागरके तटप्रदेशतक अखण्ड सत्ता स्थापित करना किसी समय फ्रांस-का स्वप्न था, जो बादमें दो युद्धोंका खतरा उठाकर चरितार्थ हुआ।

इसलिये यदि इटलीका अधिकार छादतक हो जायगा, तो फ्रांसका यह कृत्य भग्न हो जायगा और फ्रेञ्च अफ्रिका दो भागोंमें उसी प्रकार विभक्त हो जायगा, जिस प्रकार पोलैण्डके कारण जर्मनी।

फ्रांस इस प्रस्तावसे कदापि सहमत नहीं हो सकता।

इसलिये मसोलनीको किसी और ही प्रदेशको अपनी गृद्धदृष्टिका शिकार बनाना होगा।

और वह 'और ही प्रदेश' कौन होगा, यह बताना कठिन नहीं है। अबसीनिया पहलेसे ही इटलीकी साम्राज्यविस्तार-लालसाका शिकार निर्दिष्ट हो चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

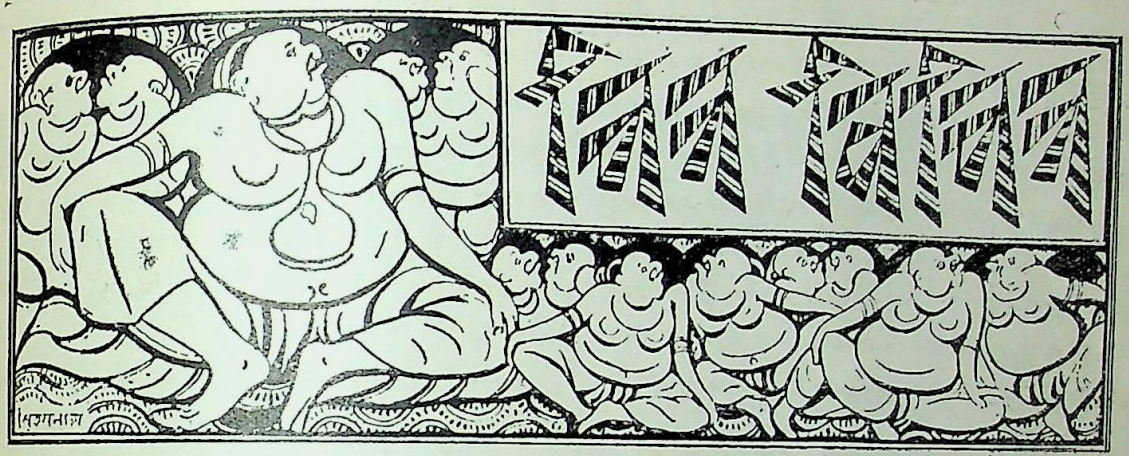


## विज्ञापनबाजीका नया साधन

पेरिसमें विज्ञापनबाजीके लिए एक विचित्र हैटका आविष्कार हुआ है। यह हैट सिरपर चक्कर लगाया करता है। इसे पहननेवाला एक छिपे हुए स्वीचके द्वारा उसे जब चाहे चला सकता है और जब चाहे बन्द कर सकता है। यदि इतनेपर भी इसकी ओर लोगोंका ध्यान आकर्षित न हो तो हैटमें बिजलीके 'बल्ब' भी लगे हुए हैं, जो पहननेवाले के स्वीच दबाते ही जलने और बुझने लगते हैं। इससे राहगीरोंकी नजर, बड़ी आसानीसे हैटकी ओर खिंच जाती है।

## वैज्ञानिक कङ्घा

एक पाश्चात्य वैज्ञानिकने एक नये ढंगका कङ्घा बनाया है। इसमें ऊपरकी ओर एक गोल टोपी दिखायी देती है जो पेंचकी तरह घुमानेसे खुल जाती है और कंघेकी कांटियां भी बिलकुल ढीली हो जाती हैं। इस कङ्घेकी यही विशेषता है कि इसे जब चाहें, खोलकर साबुन और पानीसे धो सकते हैं। इससे किसी प्रकारका शिरोरोग होनेका भय नहीं रहता। धोनेके बाद कांटियां फिर अपनी-अपनी जगहपर लायी जाती हैं और टोपी कस दी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## हवाई जहाजसे कूद पड़े

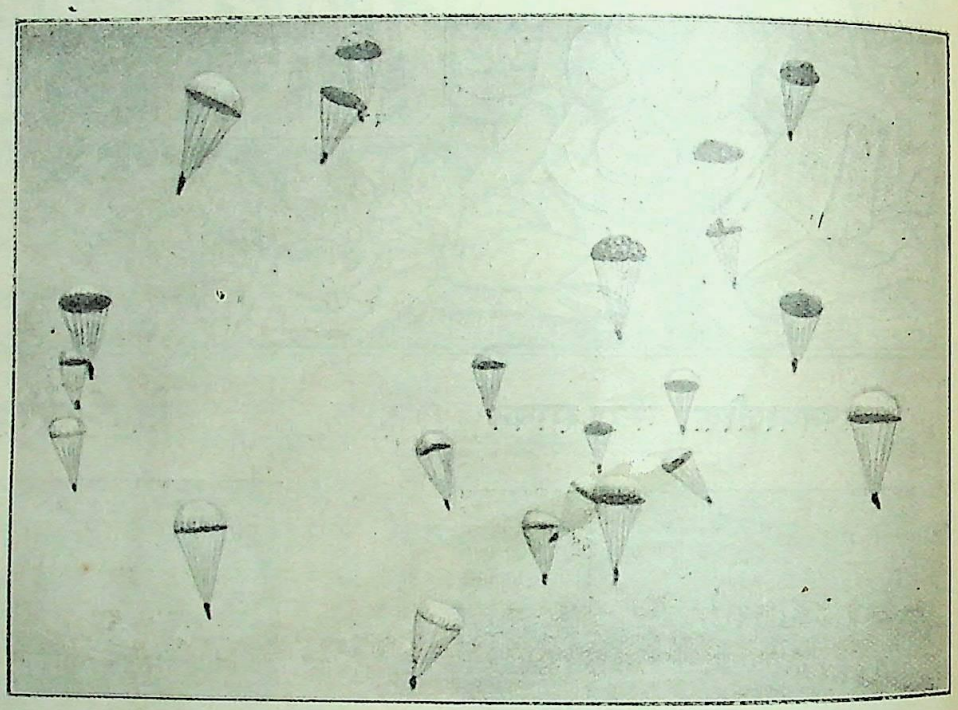

आकाशमें उड़ते हुए वायुयानसे कूदनेमें रूसी उड़ाके अत्यन्त निपुण हैं। थोड़े दिन हुए यूरोपके विभिन्न देशोंमें हवाई जहाजसे कूदनेका प्रदर्शन हुआ था किन्तु रूसियोंने इस सम्बन्धमें जो अद्भुत कार्य कर दिखाया है वह अत्यन्त आश्चर्यजनक है। इस चित्रमें बहुतसे पैराशूट, जो देखनेमें छतरीकी तरह हैं, आकाशसे नीचे उतर रहे हैं। प्रत्येक पराशूटसे एक-एक आदमी लटक रहा है। हालहीमें मास्कोमें एक विशालकाय हवाई जहाज उड़ाया गया था। जब वह उड़ते-उड़ते टुशिनोके हवाई अड्डेके ऊपरसे निकलने लगा तो एक साथ पचीस आदमी उस परसे कूद पड़े। इस चित्रमें वही दृश्य दिखलाया गया है।

## विचित्र पनडुब्बा

इस सबमेरिन ( पनडुब्बे ) को शिकागोके एक वैज्ञानिकने बनाया है। इसकी परीक्षा हो चुकी है और यह १५ फीट गहरे पानीके भीतर बड़ी तेजीसे तैरता है। इस विचित्र सबमेरिनकी लम्बाई १० फीट है। इसमें सिर्फ एक ही आदमी बैठ सकता है। इसके खोलमें शीशेके टुकड़े जड़े हैं जिनसे पानीके भीतरका दृश्य दिखलायी पड़ता है। यह सबमेरिन बिजलीके मोटरसे चलता है।

* * * * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## सवाक् पुस्तक

सवाक् ( बोलती हुई ) पुस्तकके आविष्कारसे अन्ध व्यक्तियोंके लिए सब प्रकारकी पुस्तकें लभ्य हो गयी हैं। सिर्फ दो ही रेकार्डोंमें साधारण कोटिके ( बहुत बड़े नहीं ) उपन्यास भर जाते हैं और निरक्षर अथवा नेत्रहीन व्यक्ति उन्हें सुनकर उनका पूर्ण आनन्द प्राप्त करते हैं।

## हवाई जहाज चलाना हंसी-खेल

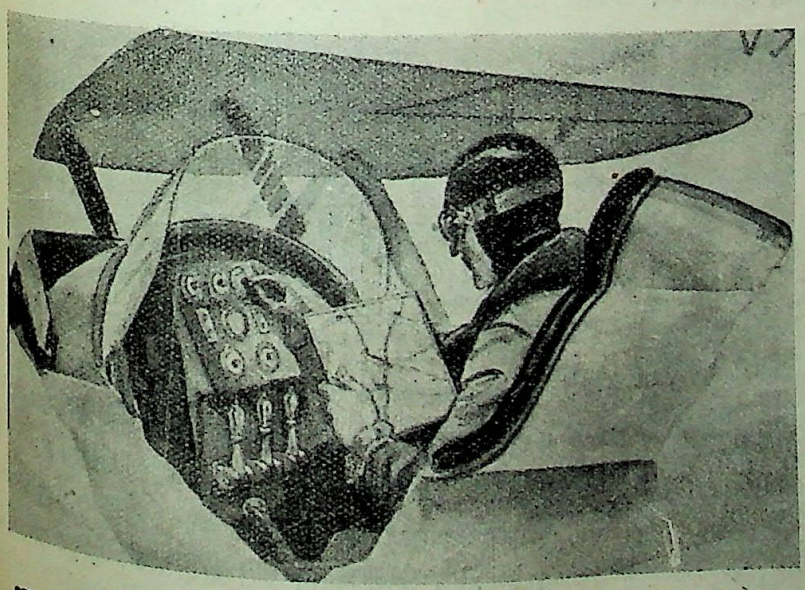

अब हवाई जहाज चलाना, मोटरकार चलानेसे भी ज्यादा आसान हो गया है। फ्रान्समें एक ऐसा हवाई जहाज बना है जो बटन दबानेसे उड़ने लगता है। इसमें पांच कण्ट्रोल बटन लगे हैं जिनके नीचे "चढ़ाव", "उतार", "दायें घूमो", "बायें घूमो", और "समान सतहमें उड़ो" लिखा रहता है। ज्योंही वायुयानसञ्चालक इनमेंसे किसी बटनको दबाता है, वायुयान अपना निर्दिष्ट कार्य करने लगता है। जब जहाजको ऊपर चढ़ाना होता है तो उस बटनको दबाया जाता है, जिसके नीचे "चढ़ाव" लिखा रहता है और जब उतारना होता है तो उस बटनको दबाना पड़ता है जिसके नीचे "उतार" लिखा रहता है। इसी तरह सब बटन अपना-अपना अलग-अलग काम करते हैं। इन बटनोंके द्वारा एक नौसिखुआ भी अब हवामें करामाती सर्कस दिखा सकता है।

## हवाई मोटर साइकिल

इंगलैण्डमें एक नये प्रकारका वायुयान बना है जो इतना छोटा है कि उसे हवाई मोटर साइकिलसे ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता। इस हवाई जहाज या हवाई मोटर साइकिलको एक बार देखनेसे ही आदमी सन्नाटेमें पड़ जाता है; क्योंकि इसमें डैने नहीं हैं। लेकिन डरनेकी कोई बात नहीं है। इसमें डैनोंकी जगह वायुयान-सञ्चालकके सिरसे थोड़ा ऊपर बिजलीके पङ्खेके आकारके दो ब्लेड लगे हैं जो घूमनेपर एक बड़े प्रोपेलरकी तरह दिखते हैं। इस हवाई जहाजका उड़ाना और जमीनपर उतारना बड़ा ही आसान है। यह घण्टेमें ९५ मीलकी रफ्तारसे उड़ता है। इसका वजन, २॥ घण्टे तक लगातार उड़नेके लिए मय तेल और सञ्चालकके, सिर्फ ३०५ सेर है। चूंकि यह हवाई मोटर साइकिल पूर्णतः निरापद घोषित की गयी है इसलिए शीघ्र ही बाजारमें बिकने भी लगेगी और इसका मूल्य ३०० पौण्डसे ज्यादा न होगा। इसकी सबसे बड़ी विचित्रता यह है कि यह कुछ ही गज जमीनपर दौड़नेके बाद उड़ जाती है। इसमें प्रति मील १ पेनीका तेल जलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## जेबी पङ्खा

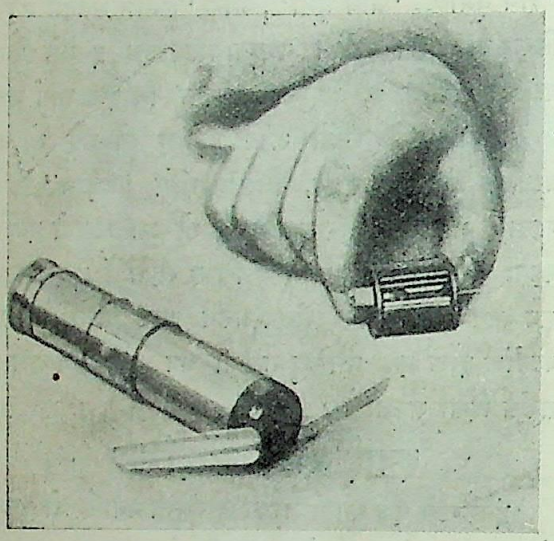

अमेरिकाके एक वैज्ञानिकने यह बड़े मजेका पङ्खा ईजाद किया है। जिस समय किसी सार्वजनिक सभा या और किसी अवसरपर गर्मीके मारे दम घुटने लगता है, यह पङ्खा बड़ा काम देता है। इसका मोटर, जो एक साधारण बैटरीसे चलता है, दो उङ्गलियोंके बीचमें दिखाया गया है, जिससे इस पङ्खेके बहुत ही छोटे आकारका होनेका पता चलता है। खोलमें रखते समय इसके पङ्ख मोड़ दिये जाते हैं। इस पङ्खेसे एक आदमीके लिए काफी हवा मिलती है।

## चिड़ियां पालनेका शौक

अमेरिकाके डा० टी० एम० हालको कृत्रिम पक्षियोंकी सहायतासे जीवित पक्षियोंको पालनेका बड़ा शौक है। पहले उन्होंने अपने बागीचेके घरकी खिड़कीमें एक नकली चिड़ियाको बिठाया। जब जीवित चिड़िया इससे हिल-मिल गयी तो डा० हालने अपनी एक मूर्ति उसी खिड़कीपर बिठायी और उसकी छातीके भीतर कागजका श्वासयन्त्र बैठाया। जब चिड़िया मूर्तिपर आकर बैठती तो वह एक रस्सी खींचते जिससे मूर्तिमें जीवित व्यक्तिकी भांति श्वास-प्रश्वासका सञ्चार होता। इस प्रकार जब पक्षी उनकी मूर्तिसे हिल-मिल गये तो फिर डा० हाल खुद ही खिड़कीपर बैठने लगे और अब चिड़ियां उनसे भी खूब हिल-मिल गयीं। अपने बागीचेमें जब मि० हाल एक विशेष प्रकारके सङ्केतसे चिड़ियोंको बुलाते हैं, तो वे बिना डरे हुए उनके ऊपर झण्डकी-झुण्ड टूट पड़ती हैं।

## विचित्र बाइसिकिल

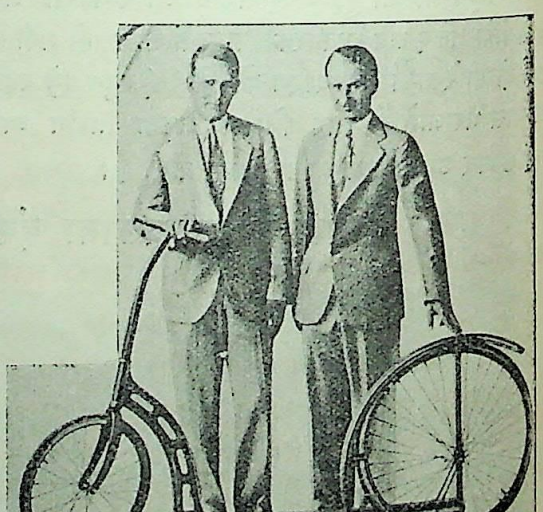

शिकागोके इन दो व्यक्तियोंने इस विचित्र बाइसिकिलका आविष्कार किया है। इसमें पेडल नहीं हैं और पिछले पहियेकी धुरी बीचमें न होकर कुछ किनारेकी ओर है। इसका चलाना बहुत ही सरल है। स्प्रिङ्गदार पावदानपर उठने-बैठने ( बैठक लगाने ) से बाइसिकिल दौड़ने लगती है। यह घण्टेमें १५ मील मजेमें दौड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

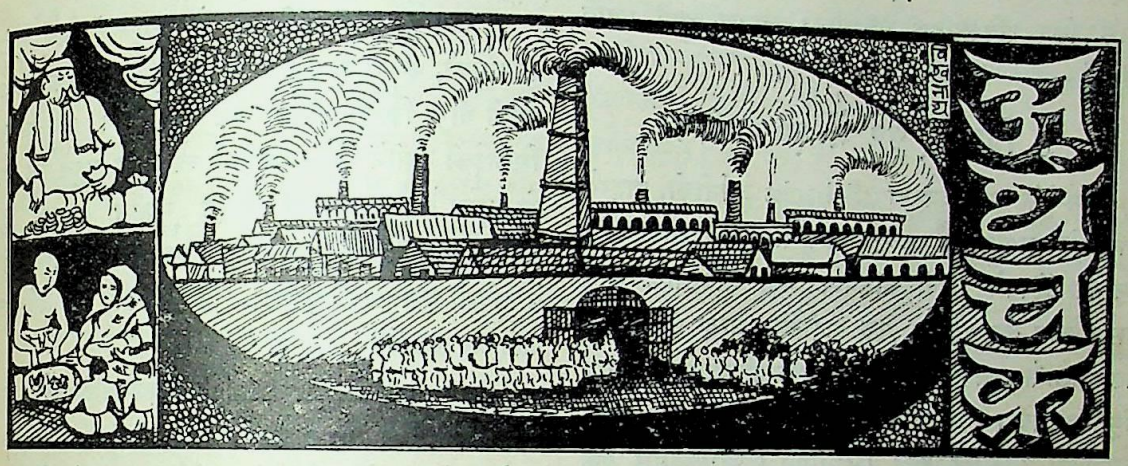


## रूसमें वायुयान द्वारा खेती

मनुष्योंके आवागमन और डाक पहुंचानेके लिए तो सुल्की हवाई जहाजोंसे काम लिया जाता ही है, किन्तु सोवियट रूसमें कृषि-कार्य्यके लिए भी वायुयानोंका उपयोग धड़ल्लेसे हो रहा है। वायुयानमें बैठकर आकाशसे खेतोंमें बीज बोनेका प्रयोग गत चार वर्षोंसे हो रहा है और इस प्रयोगमें जैसी सफलता मिली है उसे देखते हुए यह विश्वास किया जाता है कि रूसकी खेतीमें वायुयानने अपने लिए स्थायी स्थान प्राप्त कर लिया है। इस साल १० लाख एकड़से अधिक जमीन इसी प्रकार वायुयान द्वारा बोयी गयी है।

सन् १९३१ में यह प्रयोग आरम्भ हुआ था जबकि १० हजार एकड़ जमीन वायुयान द्वारा बोयी गयी थी। इसका परिणाम उस समय विशेष सन्तोषजनक नहीं हुआ, अतएव इस बातपर बहुत-कुछ सन्देह होने लगा कि इस प्रयोगको जारी रखा जाय या नहीं। दूसरे साल सन् १९३२ में डेढ़ लाख एकड़ जमीन बोयी गयी और इसका परिणाम पहलेसे अच्छा हुआ। सन् १९३३ में यह जमीन बढ़ाकर ३॥ लाख कर दी गयी और इस वर्ष १० लाख एकड़।

मौसमके शुरूमें वायुयान द्वारा बीज बोनेमें विशेष सुविधा होती है; क्योंकि उस समय खेत कीचड़से भरा हुआ होनेके कारण उसमें खेतीकी मशीनें काममें नहीं लायी जा सकतीं। रूसमें खेतोंकी यह अवस्था आम तौरसे हो जाती है; क्योंकि जमीनमें बहुत गहराईतक सर्दी प्रवेश कर जाती है जिससे वसन्त ऋतुमें खेतोंका कीचड़ एक विशेष समस्याके रूपमें उपस्थित हो जाता है।

सोवियट कृषि-विशारदोंका दावा है कि वायुयान द्वारा बीज बोनेसे उन लोगोंके कथनका औचित्य पूर्णरूपसे सिद्ध हो गया है जो यह कहा करते थे कि वसन्त ऋतुके आरम्भमें वायुयान द्वारा जितने अच्छे ढंगसे और शीघ्र खेत बोया जा सकता है उतना किसी दूसरे तरीकेसे नहीं। इस सम्बन्धमें वे आंकड़े देकर दिखाते हैं कि वायुयान द्वारा औसत प्रति दिन १२०० एकड़ मध्य भोल्गा प्रदेशमें और ९७० एकड़ उकरेनमें बोये जाते हैं। उनका यह भी दावा है कि इस साल वायुयान द्वारा बोये गये खेतोंमें जो फसल लगी है वह उसी स्थानके और उसी किस्मके हाथसे बोये गये खेतोंकी फसलकी अपेक्षा सैकड़े १० अच्छी है। रूसमें वसन्त ऋतुके आरम्भमें दो ही प्रकारसे खेत बोये जाते हैं, एक हाथसे और दूसरा वायुयानसे।

किन्तु कृषि-विशारद इस बातसे भी लोगोंको सतर्क कर देते हैं कि वायुयान द्वारा खेत बोनेके इस नवीन ढंगके प्रति विशेष आवेश दिखलानेका परिणाम बहुधा बर्बादीके रूपमें भी हो सकता है। यह स्पष्ट देखा गया है कि वायुयान द्वारा बीज बोनेकी अपेक्षा कृषिके यन्त्रोंका व्यवहार करनेका परिणाम अच्छा हुआ है; तथापि आंकड़ोंसे मालूम होता है कि खेतीके काममें वायुयानका उपयोग करनेवाले उड़ाके साल-ब-साल अच्छा परिणाम दिखला रहे हैं। अब वे खेतके ऊपर बहुत थोड़ी ऊंचाई पर एक सीधी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लाइनमें उठते हैं और बीजका वितरण ठीक तौरसे हो, इसके लिए संकेतसूचक प्रणालीका व्यापक रूपमें प्रयोग करते हैं।

## ४ शि० ९ पे० में १०० मील

जर्मनीके अर्थसचिव डा० Schacht जर्मनीको, बाहरसे आनेवाले अत्यावश्यक कच्चे मालके सम्बन्धमें आत्मभरित बनानेके उद्देश्यसे अपनी योजनाको बड़ी तत्परताके साथ कार्य्यान्वित कर रहे हैं। एक महीनेके अन्दर ही उन्होंने जलनेवाला तेल उत्पन्न करनेवाली दस कम्पनियोंको एक साथ संयुक्त कर दिया है और एक सरकारी अफसरको यह अधिकार दिया है कि वह इन्हें Benjine (पेट्रोलियमसे एक प्रकारका तेल) उत्पन्न करनेके लिए बाध्य कर सकता है। एक जर्मन विशेषज्ञने अभी हालमें यह अन्दाजा लगाया है कि चन्द बरसोंके अन्दर ही जर्मनी सालाना १,२५०,००० टन बेन्जाइन उत्पन्न करने लगेगा। गत वर्ष जर्मनीमें १,४५५,००० टन बेन्जाइनकी खपत हुई और ४३६,००० टन डीसल तेल की। इसमें सिर्फ ५४०,००० टन जर्मनीमें उत्पन्न हुआ था। ४३६,००० टन डीसल तेलमें सिर्फ ७०,००० टन स्वदेशी था। नयी योजनाके अनुसार ऐसी मोटरें बनायी गयी हैं, जिनमें लकड़ीके गैसका प्रयोग होगा। जर्मनीमें इसका अक्षय साधन है। परीक्षा द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि ६ टनकी मोटर लारी ४ शि० ९ पे० के खर्चपर लकड़ीके गैस द्वारा १०० मीलतक चलायी जा सकती है।

सन् १९३३ में हर हिटलरने राष्ट्रके समक्ष यह प्रस्ताव रखा था कि चार वर्षोंके अन्दर जर्मनीको बाहरसे आनेवाले कच्चे मालके सम्बन्धमें स्वावलम्बी बनाना होगा। चार वर्षकी यह मियाद आगामी १९३७ में खतम होती है। अब प्रश्न यह है कि क्या सन् १९३७ में जर्मनी कच्चे मालके सम्बन्धमें स्वावलम्बी बन जायगा, जैसा कि डा० Schact उसे बनाना चाहते हैं? जर्मनीके ऊपर बाहरी दबावका असली रूप चाहे कुछ भी क्यों न हो, किन्तु उसकी आन्तरिक नीतिके सम्बन्धमें विदेशोंमें सन्देह उत्पन्न हुए बिना नहीं रह सकता। इससे जर्मनी तथा उसके पड़ोसके देशोंके साथ साधारण सम्बन्ध स्थापित होनेकी आशा भी दूर होती जा रही है।

## जापानमें सिलाईकी मशीनें

"जापान टाइम्स" लिखता है:—एक-दो वर्ष पहलेतक जापानको, कपड़ा सिलाई करनेकी मशीनें अमेरिकासे मंगानी पड़ती थीं। किन्तु अब यह बात नहीं रही। अब जापानमें सिलाईकी मशीनें तैयार करनेका व्यवसाय बहुत-कुछ अग्रसर हो चुका है। खासकर पाइन मशीन कम्पनी Pine Machine Company में जो उम्दा मशीनें तैयार होती हैं, वे विदेशी मशीनोंकी तुलनामें किसी प्रकार भी घटिया नहीं कही जा सकतीं।

Mitcui Bussan Kaisha कम्पनीने अपने यहांकी बनी मशीनोंका नाम निट्टो मशीन Nitto Machine रखनेका निश्चय किया है। ये मशीनें आरम्भमें चीनमें तथा दक्षिण समुद्रके उपकूल प्रदेशोंमें बेची जायंगी।

पाइन मशीन कम्पनीने मशीनोंके कल-पुर्जे तैयार करनेके लिए एक वृहत् कारखाना खोलनेका निश्चय किया है। इस कारखानेमें प्रति वर्ष ३६ हजार मशीनोंके कल-पुर्जे तैयार होंगे। आगामी मार्च महीनेमें यह कारखाना खुल जायगा और फिर इसके बाद इसके बने हुए कल-पुर्जोंसे मशीनें तैयार करनेका काम Takinogowa टेकीनोगोवाके कारखानेमें शुरू होगा। कारखानेसे मशीनोंके कल-पुर्जे और मशीनें भी बाहर चालान की जायंगी।

यह आशा की जाती है कि मित्सू बूसन कैशा कम्पनी द्वारा जापानकी बनी सिलाई-मशीनोंका प्रसार विश्वव्यापी होगा।

## हरएक परिवारके पास एक मोटर

आस्टिन मोटर कारका नाम बहुत लोगोंने सुना होगा। इसके मालिक सर हर्बर्ट आस्टिन इङ्गलैण्डके एक अत्यन्त सफल मोटर-व्यवसायी हैं। आपने अपने एक भाषणमें कहा है कि मैं उस दिनकी प्रतीक्षा कर रहा हूं, जब हरएक अङ्गरेज परिवारके पास एक मोटर गाड़ी होगी। आपका खयाल है कि आगामी दस वर्षोंमें आपकी यह आशा पूरी हो जायगी और उस समय इङ्गलैण्डकी सड़कोंपर एक करोड़ मोटर गाड़ियां चलने लगेंगी। मोटरोंकी इस वृद्धिसे पैदल चलने वालोंकी जो कठिनाई बढ़ जायगी, इस सम्बन्धमें सर हर्बर्ट का कहना है कि उस समयतक सड़कें इतनी चौड़ी हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जायंगी, जिससे लोगोंके आवागमनके लिये सड़कोंपर चार कतारें होंगी। साइकिलवालोंके लिये एक अलग ही रास्ता होगा।

पैदल चलनेवाले अधिक सचेत हो जायंगे, जिससे दुर्घटनाएं कम होंगी। जब लगभग प्रत्येक व्यक्तिके पास एक-एक मोटर कार होगी, उस समय वह तथा उसके परिवारके लोग संयोगवश पैदल चलते वक्त सड़कके खतरोंसे सतर्क होकर ही चलेंगे।

## भारतमें एलूमीनियमका व्यवसाय

थोड़े दिनोंके अन्दर ही भारतमें एलूमीनियमके व्यवसायकी बहुत कुछ उन्नति हुई है। इस सम्बन्धमें अभी हालमें कलकत्तेकी रोटारी क्लबमें भाषण करते हुए मि० लैंगहमने बताया है कि भारतमें किस प्रकार इस व्यवसायकी क्रमोन्नति हुई है।

मि० लैंगहमने कहा कि सन् १८९८ में मद्रासके आर्ट्स स्कूलमें पहले-पहल एलूमीनियमका कुछ बहुत ही बढ़िया नमूना तैयार हुआ था। इसके दो वर्ष बाद मद्रासमें एलूमीनियमका एक कारखाना स्थापित हुआ। फिर इसके बाद बम्बई तथा अन्य स्थानोंमें भी कारखाने स्थापित हुए। इस समय सारे देशमें एलूमीनियमके बर्तन बनानेके कुल १९ कारखाने हैं।

इस व्यवसाय द्वारा जितने लोगोंका जीविका-निर्वाह हो रहा है, उनकी यथार्थ संख्या ठीक-ठीक नहीं मालूम होनेपर भी यह कहा जा सकता है कि लगभग सैकड़े ५० श्रमजीवी कलकत्तेमें, सैकड़े ३९ बम्बईमें, मद्रास और रंगूनमें, हरएकमें सैकड़े १९ और पंजाबमें सैकड़े ५ इस व्यवसायमें लगे हुए हैं।

मि० लैंगहमने यह भी कहा है कि एलूमीनियमके बर्त्तनोंका जितना भारतमें व्यवहार होता है, उतना संसारके और किसी दूसरे देशमें नहीं।

---


# दांतों की सुन्दरता

**व्यवहारमें लाये जानेवाले ब्रस पर ही निर्भर है**

आप जो मञ्जन व्यवहार करते हैं वह कितना ही अच्छा क्यों न हो सर्वोत्कृष्ट ब्रसके नहीं व्यवहार करनेसे आपके दांत पूर्णतया परिष्कार न हो सकेंगे। इसलिये मीरा ब्रस ही उपयुक्त है। कारण दांतके प्रत्येक कोने व फांक में, जहां तक सम्भव है, प्रवेश कर सकता है। और इसी लिए यह बनाया ही गया है। इसके बाल न नरम होंगे और न खुल कर गिर पड़ेंगे।

**मीरा टूथ ब्रस** के साथ

**मीरा डेंटल क्रीम** व्यवहार कीजिये।

चिरकाल तक दन्त पंक्ति शुद्ध, स्वस्थ सुन्दर व सबल रहेंगे।

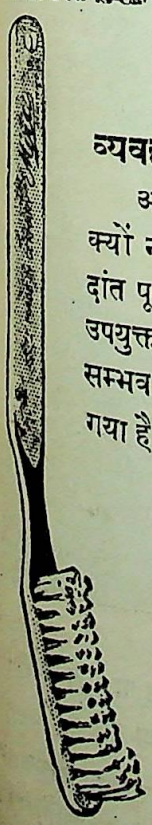

**मीरा टूथ ब्रस**

एजेन्टस्—टी० एम० ठाकुर एण्ड कम्पनी

१२, डलहौसी स्कायर, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

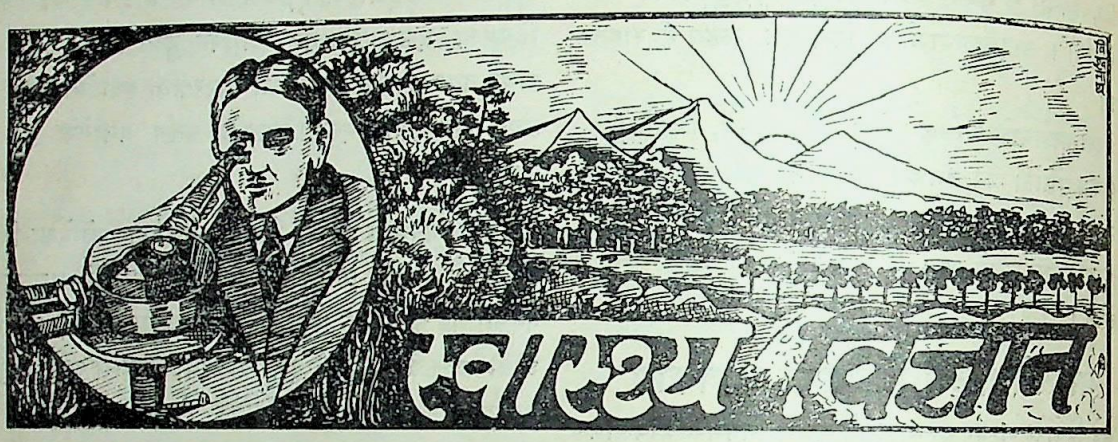


## स्त्री-सौन्दर्य

शारीरिक स्वस्थताके बिना स्थायी सौन्दर्य और खुली हवामें नियमित व्यायाम किये बिना सुस्वास्थ्य प्राप्त नहीं हो सकता। अच्छी पाचन क्रिया, दृढ़ मांस-पेशियां, चमकती हुई आंखें, लाल ओठ, नियमित श्वास-प्रश्वास और प्रफुल्ल चित्तसे सुन्दर स्वास्थ्यका परिचय मिलता है। उपयुक्त व्यायामकी कसौटी यही है कि आपको अपनी दैनिक नियमावलीके पालनमें हर समय प्रसन्नताका अनुभव होता रहे। इससे चरित्र निर्मल होता है और शारीरिक गठन भी सुन्दर होता है। बनाव-शृङ्गारकी चीजें, तरह-तरहके तेल-फुलेल, पाउडर, पोमेड, स्नो, शरीरकी कोमल त्वचाको रूखा बना देते हैं और प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। यदि सावधानीके साथ नियमपूर्वक, उचित मात्रामें व्यायाम किया जाय और सुपाच्य भोजन तथा आवश्यक विश्रामका भी ध्यान रखा जाय तो स्वास्थ्य आदर्श बन सकता है। इससे व्यक्तिका शरीर तो स्वस्थ रहता ही है, साथ ही आध्यात्मिक आनन्द भी प्राप्त होता है।

१२ वर्षके बाद बालिकाका जीवन बालकके जीवनसे भिन्न हो जाता है। बालककी अपेक्षा बालिका न्यून वयमें ही शारीरिक श्रम करने योग्य हो जाती है और उसे ऐसे श्रमसाध्य कार्य करने पड़ते हैं, जिनसे मांस-पेशियोंपर दबाव पड़ता है। उसे घरमें भी अधिक समय तक बन्द रहना पड़ता है। १२ वर्ष तक बालक-बालिकाओंका व्यायाम एक-सा होता है; किन्तु उसके बाद बालिकाका व्यायाम बालकके व्यायामसे भिन्न प्रकारका हो जाता है। यौवनावस्थामें पदार्पण करते ही स्त्री कठोर शारीरिक और मानसिक व्यायाम नहीं कर सकती। वह फुटबाल इत्यादिके खेल अधिक देर तक नहीं खेल सकती। किन्तु पानीमें

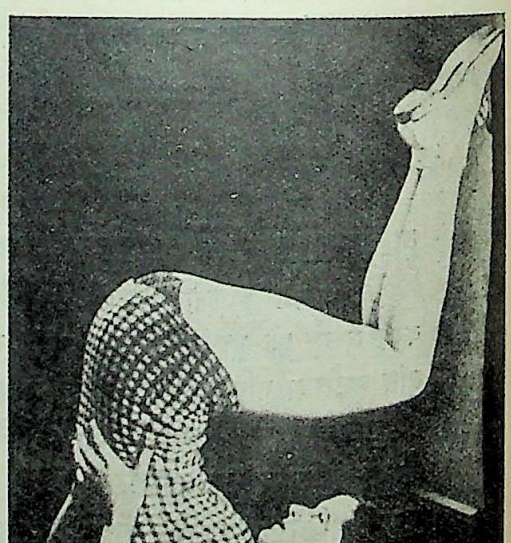

योगासनोंसे अपूर्व लाभ होता है। पाश्चात्य देशोंकी स्त्रियां इनका महत्व समझ रही हैं।

तैरना, नृत्य आदि उसके लिए अत्यन्त उपयुक्त व्यायाम हैं। चूंकि स्त्रियोंके नितम्ब सुदीर्घ होते हैं, इसलिए वे न दौड़ सकती हैं और न उछल-कूद सकती हैं। जो स्त्रियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नियमपूर्वक नृत्याभ्यास करती हैं अथवा पानीमें तैरती हैं उनकी रीढ़ सीधी, फेफड़े गहरे, मांस-पेशियां लम्बी और पतली और शरीर सांचेमें-सा ढला हुआ होता है। हाथी, बारहसिङ्गा अथवा बाघके शरीरमें पुट्ठे नहीं दिखायी पड़ते, फिर भी वे कैसे सुन्दर दिखायी देते हैं?

यौवनावस्थामें अङ्ग-प्रत्यङ्ग शीघ्रतापूर्वक विकसित होते हैं, शरीरके भारका केन्द्र प्रति दिन परिवर्तित होता रहता है और यकृत, मांस-पेशियों व जोड़ोंकी क्रियायोंमें दिन-दिन नूतन परिवर्तन होता है। अतएव ऐसे समय अतिरिक्त शारीरिक श्रम करना हानिकर है। शरीरका व्यायाम ठीक उसी प्रकारसे सरल और उपयुक्त हो जिस प्रकार पैरमें बिलकुल फिट बैठनेवाला जूता।

## अंगूरोंसे वजन बढ़ाइये

फलोंमें सेवको छोड़कर लोग अंगूरको ही अधिक-से-अधिक परिमाणमें खाते हैं। विशारदोंका कथन है कि आदिकालमें जब अनाजकी खेती न होती थी तो (जहां अंगूर ज्यादा पैदा होते थे) लोग भरपेट अंगूर खाकर ही बसर करते थे। वास्तवमें दूधकी भांति अंगूर भी सुपथ्य है, जिसमें रोग दूर करनेकी अपनी शक्ति है। अंगूर-भोजन और अंगूर-चिकित्साका इतिहास बहुत पुराना है। और इसका पता उन अंगूर-भोजियोंसे मिला है जो अंगूरकी फसलमें केवल अंगूर खाकर ही पहलेसे अधिक स्वस्थ हो जाते हैं। बहुत-से फलोंका आहार केवल अर्ध-उपवासके समान है। केवल उन्हींपर अवलम्बित रहनेसे शरीरका वजन कम होता है; किन्तु अंगूरमें यह बात नहीं है। आप अन्न खायें चाहे न खायें; सिर्फ अंगूर ही खाते रहें, तो वजन कभी घट नहीं सकता। औसत दर्जेके आदमियोंके लिए २-३ सेर अंगूर हजम करना कोई बड़ी बात नहीं। इससे वजनमें किसी तरह कमी नहीं आ सकती। साथ ही यदि अंगूरोंकी मात्रा और भी बढ़ा दी जाय तो वजन भी बढ़ जायगा। अंगूरोंके सम्बन्धमें यह सब लिखनेसे, यह समझनेकी भूल न करनी चाहिए कि अंगूरको सुपथ्य कहकर कोई नुस्खा बताया जा रहा है। सच्ची बात यह है कि मनुष्य जितने प्रकारके फल खाता है, अंगूर उन सबमें निरापद और सर्वोत्तम होते हैं। जिन्हें अंगूर काफी परिमाणमें मिल सकें वे केवल इन्हें ही आनन्दसे खाकर स्वास्थ्य लाभ कर सकते हैं।

## चमड़ेका रंग भी धुलने लगा

हालहीमें लन्दनमें 'ब्रिटिश एसोशियेसन आव साइन्टिस्ट्स'को सम्बोधन करते हुए प्रोफेसर सेण्ट ग्योर्गीने घोषित किया है कि "मैं विटामिन सी० के केवल तीन इञ्जेक्सन देकर ही शरीरके काले रंगको गोरा बना सकता हूं।"

भाषणकालमें उन्होंने इस सम्बन्धमें अपने प्रयोग बतलाते हुए कहा—"पहले-पहल कैम्ब्रिजमें मुझे विटामिन सी० से दिलचस्पी हुई थी, लेकिन, चूंकि वहां मुझे उक्त विटामिन अधिक मात्रामें प्राप्त करनेका साधन प्राप्त न हुआ, इसलिए मैं अमेरिका चला गया। वहां इस सम्बन्धमें मेयो क्लिनिकने मेरी बड़ी सहायता की। मैंने वहां बहुतसा विटामिन सी० इकट्ठा कर लिया, लेकिन फिर भी उतनेसे पूरा न पड़ा। थोड़े दिन बाद मैं स्वदेश—हुंगरी—में प्रोफेसर नियुक्त हुआ। एक दिन मेरी स्त्रीने भोजनके लिए "पैप्रिका" (एक प्रकारकी तरकारी) तैयार की। मुझे वह पसन्द तो न आयी, लेकिन मुंहसे मैं ऐसा कह न सका। वह तरकारी खानी न पड़े, इसलिए मैंने बहाना किया कि इसकी रासायनिक परीक्षा करूंगा। यह कहकर मैं तरकारीकी तश्तरीको रसायनशाला ले गया और प्रयोग करके देखा कि वह विटामिन सी० से भरी हुई है। थोड़े ही दिनोंमें मैंने "पैप्रिका"से लगभग एक पाव विटामिन तैयार कर ली। फिर मैंने उसके औषधीय गुणकी परीक्षा ली और देखा कि उसके एक ही इञ्जेक्सनसे पायरिया, रक्त-प्रवाह आदि भीषण रोगोंमें आश्चर्यजनक लाभ हुआ। एक रोगीका चमड़ा तो लगभग बिलकुल काला पड़ गया था, लेकिन तीन इञ्जेक्सन देते ही वह धुलकर सफेद हो गया।"

## मौतका सीधा रास्ता

एक विदेशी पत्रसे निम्न अवतरण उद्धृत किया जा रहा है, जिसके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी टीका-टिप्पणी व्यर्थ है :—

"एलूमीनियम विषाक्त है या नहीं; इस प्रश्नको लेकर कुछ समयसे काफी वादविवाद चल रहा है। इंगलैण्डके कुछ डाक्टरोंका दृढ़ विश्वास है कि एलूमीनियम (या अलमुनिया) स्वास्थ्यके लिए हानिकर है; किन्तु कुछ ऐसे भी डाक्टर हैं जिन्होंने इस सम्बन्धमें अनेक प्रयोग किये हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस निश्चयपर पहुंचे हैं कि बिना किसी प्रकारके खतरेकी आशङ्का किये, एलूमीनियमके बर्तन काममें लाये जा सकते हैं। अमेरिकाका 'गोल्डेन एज' लिखता है कि एलूमीनियम-में जहर होता है। गत १ फरवरीको उसने इस सम्बन्धमें लिखा था :—

"एलूमीनियम मौतका सीधा रास्ता है।

"एलूमीनियमके किसी पात्रमें, नमक-पानीमें सुरक्षित रखे हुए गोभीको उबालिये और उसे उसी पात्रमें २४ घण्टे तक पड़ा रहने दीजिये। फिर उसे जी-भर खाइये। अपने टेलीफोनके तारको काट दीजिये ताकि आप डाक्टरको फोन न कर सकें। और फिर परिणाम···। परिणाम यह होगा कि या तो आप यमपुरका रास्ता पकड़ेंगे या फिर उसी समयसे इस तरह बीमार पड़ेंगे कि मरते-मरते बचेंगे। लेकिन यह भी ठीक ही होगा, क्योंकि एलूमीनियम ट्रस्ट, संयुक्त राज्य अमेरिकाकी सरकार, अमेरिकन मेडिकल एसोसियेशन, 'साइण्टिफिक अमेरिकन' और 'लिटरेरी डाइजेस्ट' सब एक साथ सुरमें-सुर मिलाकर यही अलापते हैं कि रसोईके कामके लिए अलमुनियाके बर्तन ही सबसे अच्छे हैं; भले ही उनके कारण आपको मृत्युका ग्रास बनना पड़े।"

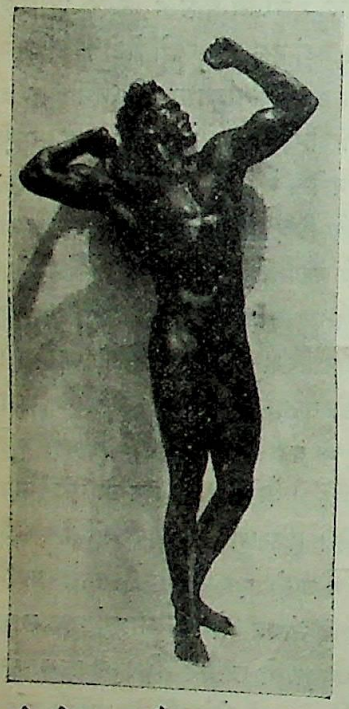

शरीरको स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट बनानेका एकमात्र साधन नियमित व्यायाम है।

## बड़े-बड़े डाक्टर हैरान

एलोपैथिक डाक्टरोंने बड़े-बड़े साङ्घातिक रोगोंकी अद्भुत चिकित्साका आविष्कार कर लिया है। कैन्सर जैसे भीषण रोग भी निश्चित रूपसे अच्छे कर लिये जाते हैं, किन्तु वे ही डाक्टर अभी तक सीधे-सादे रोग —जुकाम—की कोई औषधि निश्चित नहीं कर सके। बड़े-बड़े डाक्टरोंकी अक्ल हैरान है कि अभी तक इसकी कोई दवा नहीं निकल सकी! हाल हीमें ब्रिटिश मेडिकल रिसर्च कौन्सिलने बहुत दिनोंके अन्वेषणके बाद निराश होकर घोषणा की है कि कौंसिल, साधारण जुकाम Common Cold की चिकित्साके सम्बन्धमें भविष्यमें किसी प्रकारका अन्वेषण अथवा प्रयोग न करेगी।

## गर्भवती स्त्रियोंके लिए व्यायाम

साधारणतः मध्यवित्त श्रेणीकी स्त्रियां जब गर्भवती होती हैं तो वे अपनेको अस्वस्थ समझ लेती हैं और उसी समयसे किसी प्रकारका शारीरिक श्रम नहीं करतीं। उस समय उसके परिवारवाले और कभी-कभी गृह-चिकित्सक भी उसे पूर्ण-विश्रामकी सलाह देते हैं। फलतः गर्भवती स्त्री ऐसा कोई भी काम नहीं करती जिससे उसकी मांस-पेशियों-पर दबाव पड़े। ऐसी अवस्थामें वह कभी-कभी यहां तक सोचने लगती है कि 'मैं गर्भवती न होती तो अच्छा था'। किन्तु उसका ऐसा सोचना भूल है और अत्यधिक विश्राम-की सलाह गर्भवती स्त्रीके लिए अभिशाप है। संसारके जिन भागोंमें गर्भवती स्त्रियां सीधा-सादा भोजन करतीं और घरका काम-धन्धा देखती हैं, उनके लिए गर्भावस्था कोई विकट समस्या नहीं, बल्कि हंसी-खेल है। यदि गर्भवती स्त्रियां, नजाकतके मारे अपने प्राकृतिक भोजन और दैनिक गृह-कार्योंको छोड़ न बैठें तो उन्हें प्रसव अथवा उसके बाद भी किसी प्रकारका कष्ट न मिले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

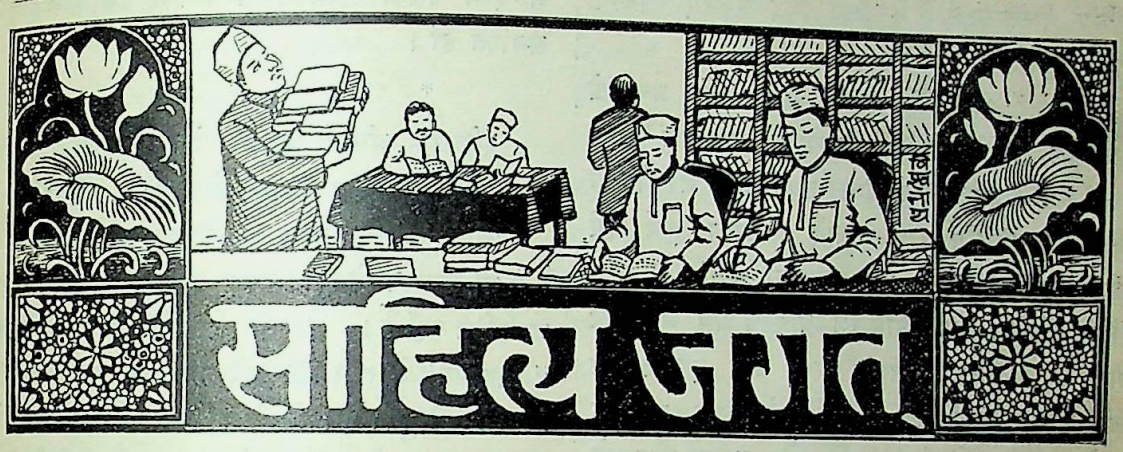


## इन्दौर हिन्दी साहित्य-सम्मेलन

अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनका आगामी वार्षिक अधिवेशन मध्यभारतके इन्दौर नगरमें होने जा रहा है। सम्मेलनकी स्वागत-समितिने आगामी अधिवेशनके सभापतित्वके लिए स्थायी समिति द्वारा सुझाये गये नामोंमें महात्मा गांधीका नाम स्वीकृत किया है। इन पंक्तियोंके लिखते समय तक यह नहीं मालूम हो सका है कि महात्माजीने इन्दौर सम्मेलनका सभापति होना स्वीकार किया है या नहीं। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि सम्मेलनकी अभ्यर्थना-समितिने महात्मा गांधीका नाम सभापति-पदके लिए वरण करके प्रशंसनीय बुद्धिमत्ताका परिचय दिया है। अबसे लगभग १६ वर्ष पूर्व इन्दौरमें साहित्य-म्मेलनका जो अधिनेशन हुआ था उसके सभापति भी महात्मा गांधी ही थे। उस अधिवेशनमें महात्माजीकी सत्प्रेरणासे सम्मेलनके प्रचार-कार्य्यको जो विशेष प्रोत्साहन एवं उत्तेजन मिला था, उसका ज्वलन्त परिणाम आज हमारे सामने दक्षिण भारतमें "हिन्दी प्रचार सभा" का प्रचारकार्य्य है। इस सभाकी बदौलत आज दक्षिण भारतमें—जहां हिन्दी या हिन्दुस्तानी समझनेवालोंकी संख्या नाममात्रकी थी—कमसे-कम ६ लाख मनुष्य हिन्दी लिखने-पढ़नेकी शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और कर रहे हैं। इतना ही नहीं, बल्कि महात्माजीके प्रभावके कारण ही आज हमारी राष्ट्र-भाषाको देशकी सर्वश्रेष्ठ राजनीतिक संस्था कांग्रेसमें भी गौरवास्पद स्थान प्राप्त हो चुका है। महात्माजीके इस राष्ट्रभाषा-प्रेमका प्रमाण इससे बढ़कर और क्या हो सकता है कि कांग्रेस-विधानमें परिवर्तन करनेके लिए महात्माजीने जो प्रस्ताव रखे थे उनमें एक यह भी था कि प्रत्येक कांग्रेस-सदस्यके लिए सदस्य-पत्रपर हिन्दी या उर्दूमें हस्ताक्षर करना अनिवार्य्य होगा; किन्तु कतिपय कठिनाइयोंके कारण यह धारा, विधानमें सन्निविष्ट नहीं की जा सकी। फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि राष्ट्रभाषाके रूपमें हिन्दीकी उपयोगिता क्रमशः लोकप्रिय होती जा रही है और इसका प्रचार भी बढ़ता जा रहा है।

बम्बईमें कांग्रेस-अधिवेशनके अवसरपर काका कालेलकरकी अध्यक्षतामें एक राष्ट्रभाषा-सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलनमें प्रस्ताव पास करके बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके नेताओं एवं कार्य्यकर्त्ताओं, बम्बई प्रान्तकी शिक्षा-संस्थाओं तथा गुजराती, मराठी आदि भाषाओंमें प्रकाशित होनेवाले समाचारपत्रोंसे यह अनुरोध किया गया है कि वे गुजरात और महाराष्ट्रमें हिन्दी प्रचार-कार्य्यमें सहायता पहुंचावें। काका कालेलकरने कहा कि लिपिके कारण राष्ट्र भाषाके प्रचारमें कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। कारण दोनों लिपियां—हिन्दी और उर्दू—कायम रहेंगी और जिन प्रान्तीय भाषाओंकी लिपियां देवनागरीसे निकली हैं, वे स्वतः देवनागरी लिपिको स्वीकार कर लेंगी। उर्दू लिपि द्वारा हम अपनी सभ्यता एवं संस्कृतिका उन देशोंमें प्रचार करेंगे, जहांपर यह लिपि प्रचलित है, उदाहरणार्थ मध्य एशिया और अफगानिस्तानमें।

मद्रास कारपोरेशनने एक प्रस्ताव पास करके प्रान्तीय सरकारसे यह सिफारिश की है कि कारपोरेशनको अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्राथमिक पाठशालाओंमें हिन्दीकी शिक्षाके लिए व्यवस्था करनेकी अनुमति दी जाय।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राष्ट्रभाषाके प्रचारकी दृष्टिसे इस समय देशमें बड़ा ही उपयुक्त वातावरण तैयार हो रहा है और इससे लाभ उठाकर सम्मेलनको गैर हिन्दी भाषाभाषी प्रान्तोंमें राष्ट्र-भाषाके प्रचारका कार्य पूर्ण उत्साह एवं तत्परताके साथ चलाना चाहिए। इसमें महात्मा गांधीका अनन्यसाधारण व्यक्तित्व और अतुलनीय प्रभाव और भी प्रोत्साहन प्रदान करेगा और इस दृष्टिसे विचार करनेपर सम्मेलनके सभापतित्वके लिए महात्मा गांधीसे बढ़कर उपयुक्त सभापति और दूसरा कौन हो सकता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि हिन्दी साहित्य-सम्मेलनका सर्वप्रधान उद्देश्य हिन्दीका राष्ट्र-भाषाके रूपमें देशव्यापी बहुल प्रचार करना है। साहित्य-सम्मेलनके साहित्यिक कार्य्यकी अपेक्षा इस प्रचार-कार्य्यका विशेष महत्त्व है और इस लक्ष्यको ध्यानमें रखकर हमें सम्मेलनका सभापतित्व हिन्दी भाषा-भाषी साहित्यिकों तक ही परि-सीमित नहीं रखना होगा, बल्कि अन्यान्य भाषाओंके साहित्यिकों एवं देशमान्य प्रभावशाली नेताओंका सहयोग भी प्राप्त करना होगा। हमारी राष्ट्रीयता जब तक विभिन्न प्रान्तों तक ही परिमित थी, तब तक हमें किसी राष्ट्रभाषा-का अभाव विशेष रूपमें नहीं खटकता था। किन्तु अब हमारा देशप्रेम और राष्ट्रीयता प्रान्तोंकी सङ्कीर्ण परिधिको पार करके देश-व्यापी बन गयी है और राष्ट्रीयताका प्रबल प्रवाह समग्र देशको आप्यायित करने लगा है। अतएव राष्ट्र-चैतन्यके आत्म-प्रकाशके लिए, राष्ट्रीय भावनाओंकी अभिव्यक्ति और प्रसारके लिए हमें राष्ट्र भाषाका प्रयोजन इस समय जैसा प्रतीत हो रहा है वैसा और पहले कभी नहीं हुआ था। सौभाग्यसे हिन्दी राष्ट्रभाषाके इस गौरव पदको प्राप्त कर चुकी है; अब आवश्यकता इस बातकी है कि हम उसके इस पदको सुदृढ़ बनावें और स्थायित्व प्रदान करें; ताकि हिन्दी किसी एक प्रान्तकी सम्पत्ति न रहकर सारे भारतकी सम्पत्ति बन जाय और उसके साहित्यकी परिपुष्टि केवल हिन्दी-भाषा-भाषी साहित्यिकों द्वारा ही नहीं; बल्कि अन्यान्य प्रान्तीय भाषाओंके साहित्य-सेवियों द्वारा हो और इस प्रकार राष्ट्रके इस वाणी-मन्दिरमें उसकी समस्त सन्तानकी भक्ति-श्रद्धाञ्जलियां समर्पित हों।

* * *

सीकर—श्रीमती तारा पाण्डेय, प्रकाशक, श्री देवेन्द्र चन्द्र, विद्याभास्कर बुकडिपो, चौक, बनारस सिटी, मूल्य ॥)

'सीकर' श्रीमती तारा पाण्डेयकी कविताओंका संग्रह है। श्री तारा पाण्डेयका नाम "विश्वमित्र" के पाठकोंसे अपरिचित नहीं है। आपकी कितनी ही सुन्दर रचनाएं "विश्वमित्र" में तथा हिन्दीकी अन्यान्य पत्रिकाओंमें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। किसी कविकी कविताओंमें संवेदन-शीलताका समावेश तभी हो सकता है, जबकि उसकी रचनायें केवल कल्पनाप्रसूत न होकर उसके अन्तरतमके निगूढ़ भावोंकी व्यञ्जना और उनका ही प्रतिबिम्ब हो। उस समय जीवनके सुख-दुःख एवं घात-प्रतिघातके मर्मो-च्छ्वास ही वाणीके रूपमें विनिःसृत होकर काव्यमय रूप धारण कर लेते हैं। श्रीमती तारा पाण्डेयकी रचनाएं इसी कोटिकी हैं। कवियित्रीने अपने कुछ पद्योंमें अपने नैराश्य-मय जीवनके मनोगत भावोंको ऐसी सकरुण निर्झरिणी बहायी है, कि उन्हें पढ़कर कोई भी सहृदय व्यक्ति करुणार्द्र हुए बिना नहीं रह सकता। देखिये, निम्नाङ्कित पंक्तियोंमें कवियित्रीके भावप्रवण हृदयके उद्वेगोंका कितना सजीव चित्रण हुआ है:—

"परिचय मेरा सुनो यही
मैं स्वप्न-गगनकी हूं रानी।
सखी, निराशाके संग मै—
फिरती रहती हूं दीवानी॥"

* * *

"आंसू बन कर बह जाता है,
मेरे कोमल उरका प्यार।"

* * *

"सबसे प्रेम करूं, औ ले लूं—
सबके उरका सरल दुलार"।

* * *

"शय्या ही है अब मेरा जग,
सुख-दुख का हंसना-रोना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



व्याकुलताके पथ अपनी—
आशा, अभिलाषा खोना ॥

"खिलनेके पहले ही मेरी,
मृदुल पङ्खड़ी सूख चली।
परिमल और पराग-हीन मैं,
मुरझायी हूं एक कली।"

कवियित्रीकी इस जीवन-गाथामें उनकी मर्म-व्यथा कितनी सजीव हो उठी है।

पुस्तकके निवेदनमें हमें यह पढ़कर खेद हुआ कि श्रीमती तारा पांडे इस समय अस्वस्थ होकर भवालीमें चिकित्सा करा रही हैं। हमें आशा है कि आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करेंगी जिससे अपनी प्रतिभा द्वारा आप हिन्दी काव्य-वाटिकाको और भी नये-नये सुमनोंसे सुसज्जित कर सकें।

* * *

नीलम—रचयिता श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी, प्रकाशक श्री रामेश्वरलाल बर्मा, बर्मा बुक डिपो, छिन्दवाड़ा (सी० पी०) मूल्य ।≡)

'नीलम' श्रीमती हीरादेवीकी फुटकर कविताओंका एक लघु संग्रह है। आपके इस संग्रहकी सब रचनायें एक समान न होनेपर भी उनमें कुछ पंक्तियां ऐसी अवश्य बन पड़ी हैं जो सरल, प्रसाद गुण विशिष्ट और भावपूर्ण कही जायंगी। अन्य रचनायें साधारण हैं।

"रो-रोकर विह्वल रजनी जब,
ओस - अश्रु ढुलकाती।
मेरी आंखों के घन से भी,
बूंदें रिम-झिम आतीं।"

इस प्रकारकी कुछ पंक्तियां अच्छी बन पड़ी हैं।

महात्मा लेनिन—लेखक श्री सदानन्द भारती, प्रकाशक एल० एल० मेहता ऐण्ड ब्रदर्स, ६३ सूतटोला काशी, मूल्य १।)

लेखकने इस पुस्तकमें लेनिनका कोरा जीवन चरित्र ही नहीं लिखा है, बल्कि उनके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली घटनाओं और तत्कालीन परिस्थितियोंपर आलोचनात्मक ढंगसे जो प्रकाश डाला है उससे इस पुस्तककी उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है। लेनिनकी गणना वर्त्तमान युगके एक अवतारी महापुरुषके रूपमें की जाती है और वास्तवमें वह थे भी ऐसे ही। प्रचण्ड कर्मशक्ति और महान् आत्म-त्यागके सम्मिश्रणसे लेनिनके चरित्रका विकास हुआ था और इस विकासमें केवल विध्वंसकी ही नहीं, बल्कि सृजनकी भी प्रतिभा थी। तभी तो हम लेनिनको एक ऐसे युगके निर्माताके रूपमें पाते हैं जिस युगको हम कुछ समय पहले तक कल्पनातीत समझा करते थे। जो लोग लेनिनके सिद्धान्त तथा उसके अभीष्ट श्रमजीवी राज्यके आदर्शका मनन करना चाहते हैं उनके लिए यह पुस्तक कामकी है। इसमें सन्देह नहीं कि पुस्तक अच्छे ढंगसे लिखी गयी है और पढ़ने योग्य है

साम्राज्यवाद (लेनिन), अनुवादक पंडित जीवनराम शास्त्री, काशी विद्यापीठ, मूल्य १)।

वर्तमान युगमें साम्यवादकी जो प्रचण्ड लहर प्रत्येक देशकी सामाजिक व्यवस्था और परम्परागत विचारोंमें एक प्रकारका विक्षोभ एवं विलोड़न पैदा कर रही है, वह कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि अपने पूर्ववर्त्ती युगकी सामाजिक व्यवस्था और तज्जनित घटनाओंका ही एक अवश्यम्भावी परिणाम है, जो हमें मानवसमाजके एक अभिनव रूपकी सूचना दे रहा है। औद्योगिकवादके प्रारम्भमें पूंजीवादकी जरूरत थी, इसलिये उसे समाजके अन्दर पनपनेका अवसर मिला और वह पूर्णरूपेण विकसित हुआ। आधुनिक साम्राज्यवाद पूंजीवादके उस विकसित रूपका ही निदर्शन है। किन्तु अब पूंजीवाद उस स्थितिपर पहुंच चुका है, जहांसे आगे बढ़नेका मार्ग उसके लिए अवरुद्ध है; अतएव वह अब उन्नतिकी ओर अग्रसर न होकर ह्रासकी ओर ही गतिशील हो रहा है। मार्क्सके कैपिटलमें साम्यवादके सिद्धान्तोंकी तात्विक विवेचना की गयी है, किन्तु पूंजीवादके विकसित रूप साम्राज्यवाद और उसकी विशेषताओंका दिग्दर्शन कराते हुए लेनिनने अपनी "इम्पीरियलिज्म" पुस्तकमें ऐसी बहुत-सी बातोंपर प्रकाश डाला है, जिनसे साम्यवादके सिद्धान्तोंके अध्ययनमें विशेष सहायता मिलती है। प्रस्तुत पुस्तक लेनिनकी उसी "इम्पीरियलिज्म" पुस्तकका भाषान्तर है। मूल पुस्तककी भाषा और विषय दोनों ही कठिन हैं; फिर भी अनुवादकने पुस्तकको सहज एवं बोधगम्य बनानेकी पूरी चेष्टा की है और इसमें उन्हें सफलता भी मिली है। विषय-ज्ञानकी दृष्टिसे पुस्तक महत्त्वपूर्ण और मननीय है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

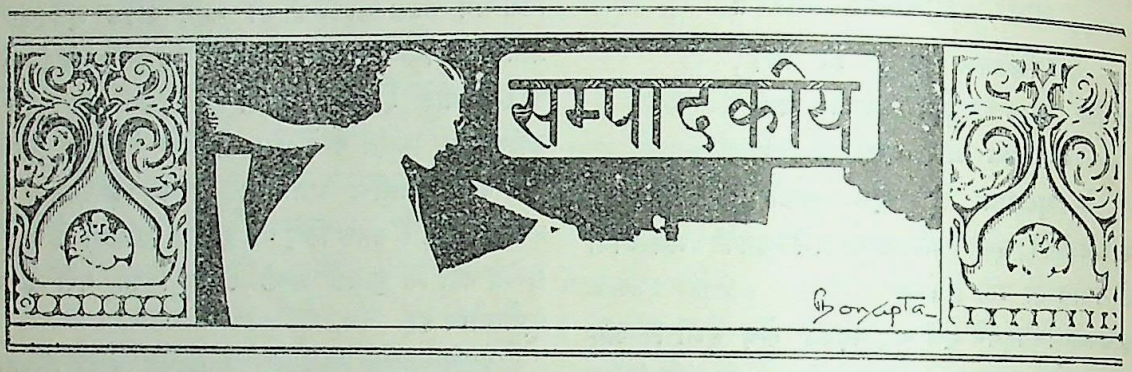


## पार्लामेण्ट-संयुक्त कमेटीकी रिपोर्ट

ह्वाइट पेपरके प्रस्तावोंमें संघ शासन-विधानकी परिकल्पनाको लेकर जब पार्लामेण्टके कुछ सदस्य सन्देह और संशय प्रकट कर रहे थे तथा "साम्राज्य खतरेमें" "ब्रिटिश सरकार भारतीय शासन सम्बन्धी अपने दायित्वसे हाथ खींच रही है" इस प्रकारकी कल्पित मिथ्या आशङ्काएं प्रकट करते हुए बावैला मचा रहे थे, उस समय भारत सचिव सर सेमुएल होरने पार्लामेण्टको आश्वासन देते हुए बड़े ही स्पष्ट शब्दोंमें कहा था:—"I would ask hon. members to look very carefully at the proposals which we have made in the White Paper for the constitution of the Federal Legislature, and of the Provincial Legislatures, and if they analyse these proposals, I think they will agree with me that it will be almost impossible, short of a landslide for the extremists to get control of the federal centre" अर्थात् मैं माननीय सदस्योंसे कहूंगा कि वे ह्वाइट पेपरके उन प्रस्तावोंपर ध्यानपूर्वक विचार करें, जो भारतीय संघ शासनकी व्यवस्थापिका परिषद् तथा प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओंके लिये रचित हुए हैं और यदि वे इन प्रस्तावोंका विश्लेषण करेंगे, तो मैं समझता हूं कि इस विषयमें वे मेरे साथ सहमत होंगे कि किसी अनहोनी बातको छोड़ कर, यों साधारण स्थितिमें उग्रपन्थी भारतीयोंके लिए केन्द्रीय शासनकी व्यवस्थापिका परिषद्पर नियन्त्रण करना प्रायः असम्भव होगा।" सर होरने इस प्रकार दृढ़ताके साथ स्पष्ट शब्दोंमें पार्लामेण्टको जो आश्वासन दिया था, उसका कारण यह था कि सम्पूर्ण ह्वाइट पेपरकी, अर्थात् केन्द्रीय संघ शासनसे लेकर तथाकथित प्रान्तीय स्वायत्त शासन विधानकी परिकल्पना ही इस रूपमें की गयी है, जिससे उग्रपन्थियोंकी कौन कहे देशके किसी भी राजनीतिक दलका नियन्त्रण केन्द्रीय या प्रान्तीय शासनपर कभी हो ही नहीं सकता और थोड़े-से शब्दोंमें हम कहें, तो यही कह सकते हैं कि गवर्नर जेनरल और प्रान्तीय गवर्नरकी मर्जीके खिलाफ व्यवस्था-परिषद् तथा मन्त्री एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकते।

ह्वाइट पेपरके प्रस्तावोंके अन्दर जो भावना काम कर रही थी, वही भावना पार्लामेण्ट संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टके अन्दर भी काम कर रही है, जो अभी हालमें गत २२ नवम्बरको भारत और इङ्गलैण्डमें एक साथ प्रकाशित हुई है। हां, इतना परिवर्त्तन अवश्य हुआ है कि ह्वाइट पेपरके प्रस्तावोंमें गवर्नरजेनरल और गवर्नरके "विशेष दायित्व" "Special responsibilities", safeguards संरक्षण, प्रतिबन्ध आदिके नामपर जो शृङ्खलाएं समाविष्ट की गयी थीं, उन्हें संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टमें और भी स्पष्ट तथा कठिनतर बना दिया गया है, ताकि उनकी उपयोगिताके सम्बन्धमें पार्लामेण्टके विरोधी दलको किसी प्रकारका सन्देह और दुविधा न रह जाय। इस प्रकार यह रिपोर्ट ह्वाइट पेपरके प्रस्तावोंकी अपेक्षा प्रतिक्रियाशीलतामें एक कदम आगे ही कही जायगी। साइमन कमीशनकी रिपोर्टसे लेकर अबतक इस लम्बे अर्सेमें भारतीय शासनविधानके सम्बन्धमें जितने प्रस्ताव किये गये हैं, उनमें उत्तरोत्तर प्रगतिशीलताकी अपेक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रतिक्रियाशीलताका ही समावेश हुआ है। साइमन कमीशनकी रिपोर्टमें भारतीय मतानुकूल जो दो-एक बातें थीं, वे ह्वाइट पेपरके प्रस्तावोंमें नहीं रह गयीं और इसी प्रकार ह्वाइट पेपरके प्रस्ताव जिस अंशमें अपेक्षाकृत अच्छे थे, उन्हें कमेटीकी रिपोर्टमें और भी बदतर बना दिया गया है। सारी रिपोर्टको—जिसका केवल प्रथम भाग लगभग ४०० पृष्ठोंमें है—आदिसे अन्त तक पढ़ जाइये, उसमें आपको इसके रचयिताओंकी इस एकभावनाका ही सर्वत्र आभास देख पड़ेगा कि भारत सदाके लिये पार्लामेण्टके जुआमें बंधा रहे, उसकी शृङ्खलाएं इतनी सुदृढ़ हों कि वे किसी भी अवस्थामें किसी बाह्य आघातके कारण छिन्न-भिन्न न हों और भारत ब्रिटिश साम्राज्यका निरापद स्वार्थ-क्षेत्र बना रहे। रिपोर्टके हरएक भागमें, प्रत्येक वाक्यमें साम्राज्यके कल्याणकी चिन्ता सन्निहित है, भारतके कल्याणकी चिन्ता नहीं। प्रत्येक पृष्टपर लोकमतकी निष्ठुर अवमानना, भारतीयोंके प्रति सन्देह और अविश्वासकी छाप अङ्कित है। करोड़ों भारतवासी भले ही दरिद्रताकी चक्कीमें पिसते रहें, साम्राज्यकी कुशलतामें किसी तरहका खलल नहीं पहुंचना चाहिये, बस यही इस रिपोर्टका मूल सिद्धान्त है। युक्ति, तर्क और अपनी श्रेष्ट बुद्धिके अहङ्कारके, जिसके पीछे प्रभुता और सत्ता काम कर रही है, बलपर रिपोर्टके लेखकोंने भारतीय प्रतिनिधियोंकी एक-एक मांगको, यहां तक कि आगाखां प्रभृति भारतीय प्रतिनिधियोंकी अत्यन्त साधारण मांगोंको भी इस तरह ठुकरा दिया है, मानों भारतके सम्बन्धमें कुछ बोलने और कहनेका इन भारतीयोंको कोई अधिकार ही नहीं हो और भारतके सम्बन्धमें रिपोर्टके ये सर्वज्ञानी और सर्वद्रष्टा लेखक जो कुछ कहें और करें, वही ठीक है।

## उत्तरदायी शासनकी व्याख्या

अच्छा अब रिपोर्टकी कुछ खास-खास बातोंपर विचार कीजिये। रिपोर्टके प्रारम्भमें ही इसके रचयिताओंने भारतके प्रति पार्लामेण्ट तथा ब्रिटिश राजनीतिज्ञों द्वारा की गयी अब तक की घोषणाओं तथा उनकी उत्तरदायी शासन सम्बन्धी प्रतिज्ञाओंका स्पष्टीकरण इस रूपमें कर दिया है जिससे इस सम्बन्धमें अब किसीको सन्देह नहीं रह जाना चाहिए कि भारतमें उत्तरदायी शासनसे ब्रिटिश सरकारका क्या अभिप्राय है। पहली बात तो यह है कि "Parliament is bound by no pledges, and is free to make its own decision" अर्थात् पार्लामेण्ट किसी प्रतिज्ञासे आबद्ध नहीं है, और वह अपना निर्णय करनेके लिए स्वतन्त्र है।" इस प्रकार अब तककी की गयी प्रतिज्ञाओंपर हरताल फेरकर भारतके सम्बन्धमें कमेटी उत्तरदायी शासनकी व्याख्या इस प्रकार करती है: "We desire to make it clear, that by responsible Government we mean a form of Government in which the executive is in SOME SENSE ACCOUNTABLE TO THE LEGISLATURE." अर्थात्, "हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि उत्तरदायी शासनसे हमारा अभिप्राय है इस प्रकारका शासन, जिसमें शासक कुछ अर्थ तक व्यवस्थापिका सभाके सामने जिम्मेवार हों। सो, देखा पाठक आपने! उत्तरदायी शासनकी कैसी विलक्षण व्याख्या की गयी है। संसारके और देशोंमें उत्तरदायी शासनका चाहे जो अर्थ समझा जाता हो, किन्तु भारतके लिए यही अर्थ समझा जायगा और इसी अर्थमें उत्तरदायी शासन भारतमें प्रयुक्त होगा। इस प्रकार उत्तरदायी शासनकी व्याख्या करनेकी अपेक्षा, तो यह कहीं अच्छा होता कि ब्रिटिश सरकार गोलमेज सभा और भारतीय प्रतिनिधियोंसे सलाह-मशविरा करनेका स्वांग न रचकर पार्लामेण्टकी एक कमेटी नियुक्त कर देती और उस कमेटीकी रिपोर्टके आधारपर भारतके लिए स्वेच्छानुसार शासन विधानकी रचना कर डालती। इसमें समय और धन दोनोंकी बचत होती और कम-से-कम उन भारतीय प्रतिनिधियोंको—जिन्होंने बड़ी-बड़ी आशायें लगाकर सरकारके साथ सहयोग किया था—इस प्रकार तिरस्कार और अपमानकी कड़वी घूंटें न पीनी पड़तीं।

## प्रान्तीय स्वायत्त-शासन

प्रारम्भमें ही उत्तरदायी शासनकी इस रूपमें विलक्षण व्याख्या करके उसके आधारपर कमेटीने आगे चलकर जो सिफारिशें की हैं उनका रूप कैसा होगा, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है। ह्वाइट पेपरमें प्रान्तीय स्वायत्त-शासनकी जो स्कीम तजवीज की गयी है तथा गवर्नरको जो सब विशेष अधिकार और दायित्व दिये गये हैं, उन्हें ज्यों-का-त्यों स्वीकार करते हुए कमेटीने गवर्नरके विशेष अधिकारमें इतना और इजाफा कर दिया है कि गवर्नरकी सम्मतिके बिना पुलिसके कानून और तत्सम्बन्धी नियमोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किसी प्रकारका संशोधन नहीं हो सकता। शान्ति और व्यवस्था Law and Order विभाग देशी मिनिस्टरके अधीनस्थ होनेपर भी "गवर्नरको यह अधिकार होगा कि वह प्रान्तके इन्सपेक्टर जेनरलको यह हिदायत कर दे कि बिना गवर्नरकी मञ्जूरीके वह खुफिया पुलिस द्वारा प्राप्त की गयी किसी सूचनाका जरिया किसी भी व्यक्तिको नहीं बतावे।" इस प्रकार देशी मिनिस्टरको अपमानित करके उसकी अपेक्षा पुलिस इन्सपेक्टर जेनरलको विशेष विश्वासपात्र समझा गया है। प्रान्तकी शान्ति और व्यवस्थाकी रक्षाके नामपर गवर्नर शासनके प्रत्येक विभागमें, यहां तक कि भूमिकर और सार्वजनिक स्वास्थ्यके विषयमें भी अपने विशेषाधिकारका उपयोग कर सकता है। रिपोर्टमें इस बातका भी उल्लेख कर दिया गया है। ह्वाइट पेपरमें केवल बंगाल, बिहार और संयुक्त प्रान्तके लिए सेकेण्ड चेम्बरकी सिफारिश की गयी थी। कमेटीने इन तीनके अलावा बम्बई और मद्रास प्रान्तको भी जोड़ दिया है। ह्वाइट पेपरमें सङ्घशासनके अपर हाउसमें अप्रत्यक्ष निर्वाचन और लोअर हाउसमें प्रत्यक्ष निर्वाचनकी सिफारिश की गयी थी। कमेटीने दोनों व्यवस्था-सभाओंमें अप्रत्यक्ष निर्वाचन अर्थात प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओं द्वारा निर्वाचन करनेकी सिफारिश की है। साम्प्रदायिक निर्णय और पूना पैक्टके सम्बन्धमें रिपोर्टमें किसी प्रकारका परिवर्तन नहीं किया गया है। सिन्ध और उड़ीसाको पृथक् प्रान्तके रूपमें स्वीकार कर लिया गया है।

## केन्द्रीय सङ्घशासन

केन्द्रीय सङ्घशासनकी योजनाको स्वीकार करते हुए रिपोर्टमें कहा गया है कि जब तक देशी नरेशोंमें कम-से-कम आधे और सङ्घशासनकी व्यवस्थापिका परिषद्में देशी राज्योंके प्रतिनिधियोंके लिए जितने स्थान रहेंगे, उनमें कम-से-कम आधे स्थानके प्रतिनिधि देशी राज्य सङ्घशासनमें सम्मिलित होना स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक सङ्घ-शासनविधान प्रवर्तित नहीं किया जायगा। हां, इसके पूर्व प्रान्तीय स्वायत्त-शासनके प्रवर्तित होनेमें कोई बाधा नहीं होगी। इस प्रकार सङ्घ शासनविधानका प्रवर्तन किया जाना देशी नरेशोंकी इच्छापर निर्भर करता है। अतएव कमेटीने इस योजनाको अभी अनिश्चित भविष्यके गर्भमें ही छोड़ दिया है। किन्तु मान लिया जाय कि चार-पांच वर्षके अन्दरमें केन्द्रीय सङ्घ-शासन प्रवर्तित भी हो जाय, तथापि इसकी परिकल्पना ही इस रूपमें की गयी है, जिससे भारतको उत्तरदायी शासन कभी प्राप्त हो ही नहीं सकता। देशी नरेशोंको सङ्घ-शासनमें सम्मिलित करके निरापद उत्तरदायी शासन देनेका जो कौशल रचा गया है, वह भारतवासियोंकी आंखोंमें धूल झोंकनेके सिवा और कुछ नहीं है। भारतीय प्रतिनिधियोंके गणशासनके विरुद्ध बलसाम्य balance बना रहे और इसमें जो खतरा है वह कभी कारगर नहीं होने पाये, इस खयालसे ही देशी नरेशोंको भारतीय व्यवस्थापिका परिषद्में सम्मिलित करनेकी परिकल्पना की गयी है। अपने परम्परागत विचारोंके कारण स्वभावसे ही अनुदार, निरंकुश शासक और साधारण जनताके नागरिक स्वत्वों और लोक-प्रतिनिधित्वके प्रति अवमाननाका भाव धारण करनेवाले देशी-नरेशोंके मनोनीत प्रतिनिधियोंसे भला यह कब आशा की जा सकती है कि वे गवर्नरजेनरलके इशारेपर न चलकर भारतीय प्रतिनिधियोंका साथ देंगे। सङ्घ-व्यवस्थापिका परिषद्के ३७५ सदस्योंमें इन देशी राज्योंके प्रतिनिधियोंकी संख्या होगी १२५। इनके अलावा १४ अंगरेज सदस्य, ४ एंग्लोइंडियन और ७ बड़े-बड़े जमीन्दारोंके प्रतिनिधि होंगे। कुल मिलाकर १५० सदस्य ऐसे होंगे जो प्रायः हर बातोंमें सरकारका ही साथ देंगे। बाकी २२५ स्थानोंमें एक तिहाई स्थान मुसलमानोंके लिए और शेष अन्यान्य जातियोंके लिए होंगे। साम्राज्यकी स्वार्थरक्षाकी दृष्टिसे सङ्घ-शासनकी व्यवस्थापरिषद्की यह परिकल्पना इतनी निरापद है कि इसके हाथोंमें साम्राज्यके स्वार्थ सब प्रकारसे सुरक्षित बने रहेंगे।

सङ्घ-व्यवस्था-परिषद्के रूपमें उत्तरदायी शासनका यह स्वाङ्ग रचकर हमारे प्रभुओंने इसके साथ कितने ही ऐसे प्रतिबन्ध जकड़ दिये हैं जिनके कारण यह शासनयन्त्र अचल बनकर भारतवासियोंके गलेसे लटकता रहेगा। परराष्ट्रनीति और सेना, ये दो विभाग किसी मिनिस्टरके जिम्मे न होकर खास गवर्नर जेनरलके अधीनस्थ होंगे। अन्यान्य देशोंके साथ भारतका वाणिज्य-सम्बन्ध क्या होगा, इस सम्बन्धमें गवर्नर जेनरलकी सम्मति ही सर्वोपरि होगी। सिविल-सर्विस और पुलिसके सम्बन्धमें ह्वाइटपेपरमें जो संरक्षण थे उन्हें कमेटीकी रिपोर्टमें और भी कठोर बना दिया गया है। इन उच्च कर्मचारियोंकी नियुक्ति सीधे भारतमन्त्री द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हुआ करेगी और मिनिस्टरको इनके विरुद्ध किसी तरहकी कार्रवाई करनेका अधिकार नहीं होगा। कमेटीने साफ-तौरसे कहा है कि गवर्नर जेनरल मिनिस्टरोंकी अपेक्षा गवर्नरपर अधिक विश्वास करेंगे।

### आर्थिक स्वतन्त्रता ?

अब आर्थिक विषयोंको लीजिये। भारतवासियोंके लिए स्वराज्यकी कसौटी आर्थिक स्वराज्य ही समझना चाहिये। कोटि-कोटि गरीब भारतवासियोंके लिए अन्न-वस्त्रकी समस्या ही सबसे बड़ी समस्या है और इस समस्याके समाधानकी दृष्टिसे ही वे राजनीतिक अधिकारोंकी सार-वत्तापर विश्वास करते हैं। हम भारतीयोंकी समस्त राजनीतिक आकांक्षाओंका एकमात्र आधार यही है कि देशका शासनसूत्र अपने हाथमें होनेपर हम देशके समृद्धि-साधनोंका अधिकाधिक उपयोग करते हुए स्वदेशी व्यवसायों और उद्योग-धन्धोंको प्रोत्साहन प्रदान करेंगे, जिससे हमारा देश भी संसारके अन्यान्य देशोंके समान ही समृद्धिसम्पन्न बने और निरन्नोंको भरपेट भोजन तथा निःवस्त्रोंको तन ढांकनेके लिए पर्य्याप्त वस्त्र मिलें। जिस स्वराज्य द्वारा हम इतना भी नहीं कर सकते, उस स्वराज्यका जनताकी हित-दृष्टिसे कोई भी मूल्य नहीं हो सकता, चाहे उसका रूप कुछ भी क्यों न हो। इस दृष्टिसे विचार करनेपर तो भावी शासनविधानका स्वरूप नैराश्यजनक ही नहीं; बल्कि भवि-ष्यके लिए अत्यन्त अनिष्टकारक कहा जा सकता है।

सिविल सर्विसके वेतन, भत्ता और पेन्शन, सेना विभाग-का खर्च और सरकारी ऋण, इन सब मदोंके खर्चमें तो मिनिस्टरको चूं तक करनेका अधिकार नहीं होगा। इन सब मदोंका खर्च बाद दे देनेपर अर्थसचिवके जिम्मे बजटका सिर्फ सैकड़े २० भाग रह जायगा और इसी सैकड़े २० भागसे उसे राष्ट्र-गठन सम्बन्धी विभागोंका प्रबन्ध करना पड़ेगा। इतना ही नहीं, मुद्रा-नीति और एक्सचेञ्जके सम्बन्धमें भी व्यवस्थापिका परिषद्को किसी प्रकारका मीन-मेख करनेका अधिकार नहीं होगा। अर्थसचिवको जिन विषयोंमें अपनी विवेकबुद्धिके अनुसार थोड़ा-बहुत नियन्त्रण करनेका अधिकार होगा भी वहां भी, गवर्नर जेनरलके veto अधि-कारकी तलवार लटकती रहेगी और "वह चाहे जब किसी भी प्रस्तावको नामञ्जूर कर दे सकता है, यदि उससे उसकी सम्मतिमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे संसारके सराफा बाजारोंमें भारतकी साख कम होनेकी सम्भावना हो।" यहां संसारके सराफा बाजारसे मतलब लण्डनके बाजार और 'बैंक आव इंगलैण्ड'से है। क्योंकि भारत और किसी देशके बाजारमें ऋण नहीं लेता।

### वाणिज्यमूलक भेदभाव

भावी शासन-विधानमें "वाणिज्यमूलक भेद-भाव" "Commercial discrimination के प्रतिकारके लिए गवर्नर जेनरल और गवर्नरको जो विशेष दायित्व दिये गये हैं, उनके सम्बन्धमें भी कमेटीने कुछ नये प्रतिबन्ध जोड़े हैं, क्योंकि उसकी दृष्टिमें ह्वाइट पेपरमें जो संरक्षण रखे गए थे वे पर्य्याप्त नहीं थे। कमेटीकी रायमें गवर्नर जेनरल और गवर्नरको कुछ और विशेष अधिकार इस रूपमें होना चाहिए

"The prevention of measures, legislative or administrative, which would subject British goods, imported into India from the United Kingdom, to discriminatory or penal treatment." "ऐसे किसी भी कानूनको—जो व्यवस्थापिका सभा द्वारा पास किया गया हो या शासकों द्वारा काममें लाया जाता हो और जिससे भारतमें आनेवाले विलायती मालके प्रति भेदभावमूलक अथवा दण्डस्वरूप व्यवहार किया गया हो—नामञ्जूर कर देना।" इतनेसे भी सन्तुष्ट न होकर कमेटीने यह भी सिफारिश की है कि गवर्नर जेनरलके आदेश-पत्र Instrument of Instructions में भी इस बातका खास तौरसे जिक्र कर दिया जाय। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि Tariff नीतिके सम्बन्धमें भारतको इस समय जितनी स्व-तन्त्रता प्राप्त है भावी शासन-विधानमें उतनी भी नहीं रहने पायगी। प्रमाण लीजिए—

"It will be the duty of Governor-General to intervene in Tariff policy if in his opinion, the intention of the policy contemplated is to subject trade between the United Kingdom and India to restrictions conceived, not in the economic interest of India but with the object of injuring the interest of the United Kingdom." गवर्नर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जेनरल टेरिफ नीतिमें भी हस्तक्षेप कर सकता है यदि वह समझे कि प्रस्तावित नीति द्वारा इङ्गलैण्डके आर्थिक स्वार्थको हानि पहुंचती है। इस प्रसङ्गमें भी रिपोर्टके लेखकोंने एक बार फिर इस बातको दुहराया है कि "the discretion of the Governor-General & the Governor in the granting or withholding of assent to all Bills of their Legislatures should be free and unfettered" सभी प्रकारके बिलोंको मञ्जूर करने या नामञ्जूर करनेके सम्बन्धमें गवर्नर जेनरल और गवर्नरकी विवेकबुद्धि स्वतन्त्र और सर्वथा अबाध होनी चाहिए।" वाणिज्यमूलक भेदभावके नामपर रिपोर्टके लेखकोंने भावी शासनविधानके वाणिज्य-सचिवोंके हाथ शृङ्खलाओंसे इस प्रकार जकड़ दिये हैं कि वे स्वदेशी व्यवसाओं और उद्योग-धन्धोंकी उन्नति करने और उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करनेके लिए वस्तुतः कुछ कर ही नहीं सकते। उन्हें पग-पगपर अङ्गरेजोंके वाणिज्यगत स्वार्थका ही ध्यान रखना होगा। कारण स्पष्ट है। रिपोर्टके लेखकोंने पहलेसे ही अपने मनमें यह धारणा कर ली थी कि अर्थनीति और वाणिज्यनीतिमें भारत और इङ्गलैण्डके बीच कभी स्वार्थसामञ्जस्य हो ही नहीं सकता। अतएव बार-बार उन्होंने इस एक ही विषयका पिष्टपेषण करते हुए गवर्नर जेनरल और गवर्नरके विशेष दायित्वका स्मरण दिलाया है, ताकि इस सम्बन्धमें इङ्गलैण्डके व्यवसायियों और भारतमें वाणिज्य-व्यवसाय करनेवाले अङ्गरेजोंके लिये किसी प्रकारकी आशङ्का करनेका अणुमात्र भी कारण नहीं रह जाय। कहना नहीं होगा कि इस सम्बन्धमें अङ्गरेज व्यवसायियोंके स्वार्थकी पूर्ण विजय हुई है और प्रकारान्तरसे भारतीयोंको यह जता दिया गया है कि इङ्गलैण्डके आर्थिक स्वार्थके सामने भारतके आर्थिक स्वार्थ सदा गौण ही समझे जायंगे। सो, यही उस आर्थिक स्वराज्य या स्वतन्त्रताका नमूना है, जो प्रभुओंके प्रसाद-रूपमें हमें मिलनेवाला है और जिसके लिये गत ७ वर्षोंसे इतनी तैयारियां की जा रही थीं।

रिपोर्ट प्रकाशित होनेके बादसे लेकर अबतक देशमें इसके सम्बन्धमें जो मतामत प्रकट किये गये हैं, उनसे यह स्पष्ट है कि किसी भी दल तथा राजनीतिक विचारके भारतीयोंका यह समर्थन प्राप्त नहीं कर सकी है। सम्पूर्ण देशने एक स्वरसे इसे राष्ट्रके लिए अपमानजनक तथा अनिष्टमूलक बताकर इसकी निन्दा की है। इसमें एक भी ऐसी बात नहीं है, जिसके द्वारा भारतीय लोकमतको सन्तुष्ट करनेका प्रयत्न किया गया हो। इसके विपरीत भारतीय बुद्धि, भारतीय प्रतिभा, भारतीय भावना और भारतीय आशा-आकांक्षाओं-को सब प्रकारसे पददलित एवं लाञ्छित किया गया है और भारतकी दासत्व-शृङ्खलाको चिरकालके लिए अक्षुण्ण रखनेकी व्यवस्था की गयी है। सारांश यह कि इस रिपोर्टके अनुसार भावी शासनविधानमें गवर्नर जेनरल और गवर्नर पूरे डिक्टेटर बनकर अपने विशेषाधिकारोंका उपयोग करेंगे। सिविल सर्विस और पुलिसवालोंका दुर्ग पहलेके समान ही सुरक्षित बना रहेगा। भारतस्थित यूरोपियन और अंगरेज व्यापारियोंके विशेष स्वार्थ निरापद रहेंगे, भारतीय मंत्री और व्यवस्था-सभाओंके कर्तृत्व गवर्नर-जेनरल और गवर्नर-के कारण सर्वथा संकुचित और सामर्थ्यहीन बने रहेंगे और साम्राज्यके स्वार्थकी खातिर भारतके स्वार्थका बलिदान पूर्ववत् होता रहेगा। और यही शासनविधान हमारे गलेमें जबर्दस्ती बांधा जायगा और इसके खर्चके बोझसे हम पिसते रहेंगे।

## निर्वाचन-संग्राममें कांग्रेसकी विजय

वर्तमान व्यवस्थापिका सभाओंमें जाकर देशके लिए स्वराज्यकी लड़ाई लड़नेके सिद्धान्तमें आस्थावान् न होते हुए भी व्यवस्थापिका-परिषद्के निर्वाचन-संग्राममें कांग्रेस-दलके उमीदवारोंकी जो अपूर्व विजय हुई है, उसपर सन्तोष प्रकट किये बिना हम नहीं रह सकते। कांग्रेस-दलने एक विशिष्ट उद्देश्यको लेकर निर्वाचन-संग्राममें भाग लिया था और उसका वह विशिष्ट उद्देश्य यही था कि सरकारको चुनौती देकर यह दिखला देना कि आर्डिनेन्स और दमनात्मक कानूनों द्वारा कांग्रेसके वाह्य स्वरूपको कुचल डालनेकी चेष्टा करनेपर भी उसकी आत्मा आज सम्पूर्ण देशवासियोंकी आत्मा बनकर पहलेके समान ही सजीव एवं तेजोदीप्त बनी हुई है और जबतक राष्ट्रकी यह आत्मा कायम है, कोई भी शक्ति राष्ट्रकी स्वातन्त्र्याकांक्षाको पराभूत नहीं कर सकती। कांग्रेस-उमीदवारोंको निर्वाचन-संग्राममें भाग लेनेके लिए तैयारी करनेमें बहुत थोड़ा समय मिला था, कांग्रेस-कमेटियां विशृङ्खलित पड़ी थीं, उनका अभी तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सङ्गठन भी नहीं हो पाया था, अधिकारीवर्ग, राजे-महाराजे और जमीन्दार तथा सरकारी अफसरोंके पदलेहन और चाटुकारितामें जीवन व्यतीत करनेवाले लोग अपने सम्पूर्ण प्रभाव और शक्तियोंका उपयोग कांग्रेस-उमीदवारोंके विरुद्ध कर रहे थे। फिर भी मद्रास, सीमाप्रान्त, दिल्ली, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, संयुक्त प्रान्त, बिहार, उड़ीसा, और आसाममें कांग्रेस उमीदवारोंकी पूर्ण विजय तथा बंगाल प्रान्तमें कांग्रेस राष्ट्रीय दलकी विजय क्या इस बातका सूचक नहीं है कि वायसराय लार्ड विलिङ्गडन अपनी द्वैधनीतिकी सफलताकी चाहे कितनी ही दुहाई दिया करें, किन्तु देशवासियोंका विश्वास अपनी इस सर्वश्रेष्ठ राजनीतिक संस्थापर पूर्ववत् बना हुआ है और सरकारकी दमननीति उसमें अणुमात्र भी अन्तर लानेमें समर्थ नहीं हुई है। निर्वाचकोंके मतामतकी दृष्टिसे भी यदि देखा जाय, तो कांग्रेसके उमीदवारोंको जितने भोट मिले हैं उसकी तुलनामें गैर-कांग्रेसी उमीदवारोंको बहुत कम भोट मिले हैं। कई स्थानोंमें तो कांग्रेस-उमीदवारोंने अपनेसे कहीं अधिक सुयोग्य एवं देश-सेवी प्रतिद्वन्दियोंको भी बहुत अधिक भोटके अन्तरसे परास्त किया है। इस प्रकारकी विजयको हम व्यक्तिविशेषकी विजय न कहकर कांग्रेस-संस्था तथा कांग्रेसके सिद्धान्त और आदर्शकी विजय ही कह सकते हैं।

कांग्रेसकी इस विजयसे यह स्पष्ट है कि यद्यपि कांग्रेस अभी तक अपने लक्ष्य तक पहुंचनेमें सफल नहीं हुई है, फिर भी उसने देशमें स्वातन्त्र्य-संग्रामके निर्भीक योद्धाओंका एक ऐसा दुर्दमनीय दल तैयार कर दिया है जो अपने जीवनके अन्तकाल तक भी अपने त्याग एवं तपस्याके बलपर अपने आदर्शवादको गौरवोज्ज्वल बनाये रखना जानता है। सरकारकी दमननीतिके कारण आज उसे भले ही अपने बढ़ते हुए मार्गसे पीछे मुड़ जाना पड़ा हो, किन्तु उसके इस प्रत्यावर्तनमें भी आत्मसम्मान और स्वाभिमानकी मात्रा मौजूद है और उसका लक्ष्य एवं आदर्श पहलेके समान ही अखण्ड और अविचलित बना हुआ है। तभी तो देशवासियोंने आज अपने इन परास्त सैनिकोंको, उन लोगोंकी अपेक्षा विशेष विश्वासयोग्य समझा है, जो सङ्कटकालमें आत्मरक्षाको ही अपने जीवनका सबसे बड़ा मूल्य समझकर फूंक-फूंककर कदम बढ़ानेमें ही राजनीतिक बुद्धिमत्ता मानते थे। वीर जाति अपने सैनिकोंके वीरोचित कृत्योंका समादर अवश्य करेगी, चाहे उन सैनिकोंमें कितनी ही त्रुटियां क्यों न हों, क्योंकि वह जानती है कि राष्ट्रके गौरव और आत्मसम्मानकी रक्षा इन्हीं वीर सैनिकों द्वारा हो सकती है न कि उन लोगों द्वारा, जिनकी सावधानता और सतर्कता कायरताकी सीमाको स्पर्श करती है।

देशने कांग्रेसके आह्वानपर साम्प्रदायिकता तथा सङ्कीर्ण धर्मान्धताकी क्षुद्र परिधिसे ऊपर उठकर राष्ट्रीयताके प्रति अपना जो विश्वास प्रकट किया है, उससे हमें पूर्ण लाभ उठानेका प्रयत्न करना चाहिये। कारण देशकी जनताके इस राष्ट्रीय चेतन्योदयसे लाभ उठाकर कांग्रेस-कमेटियोंको सङ्गठित करने तथा कांग्रेसको पहलेकी अपेक्षा भी अधिक शक्तिशालिनी संस्था बनानेका यही उपयुक्त अवसर है। हमारी राष्ट्रीय शक्तिका यह स्रोत जितना ही अधिक परिपुष्ट होगा, उतना ही उसके द्वारा राष्ट्रमें प्राणशक्तिका सञ्चार होगा और हमारा राष्ट्रीय जीवन अधिकाधिक रूपमें तेजस्वी एवं प्रचण्ड क्रियाशील बनता जायगा। अतएव निर्वाचनके विजयोल्लासमें ही अपनेको विभोर न करके हमें देशकी इस सर्वश्रेष्ठ राजनीतिक संस्थाके साथ जनताका प्राणसूत्र इस रूपमें ग्रथित कर देना चाहिये, जिससे कांग्रेस राष्ट्रके प्राण-स्पन्दनका प्रतीक बन जाय और उसके प्रत्येक कर्म तथा प्रचेष्टा, आशा एवं आकांक्षाकी अभिव्यक्ति एवं स्फुरण उसके द्वारा हो।

## अंगरेज वणिकोंकी स्वार्थान्धता

लङ्काशायरके वस्त्र-व्यवसायियोंकी स्वार्थरक्षाके लिए इस देशकी सरकारने भारतीय वस्त्रव्यवसायके स्वार्थको सदा ही गौण समझा है, यह एक तथ्य है, जिसका किसी प्रकार भी खण्डन नहीं किया जा सकता। इस समय भी विलायती वस्त्रव्यवसायको भारतमें प्रेफरेंसके रूपमें जो सुविधाएं प्राप्त हैं, वे भारतकी हितदृष्टिसे किसी प्रकार भी उचित नहीं कही जा सकतीं। किन्तु इतनेपर भी लंकाशायर सन्तुष्ट नहीं है और वह भारतके स्वार्थोंपर खयाल किये बिना ही अपने लिये और भी रियायतें चाह रहा है। कहना नहीं होगा कि भारतसरकार और इस देशमें रहनेवाले अङ्गरेज लङ्काशायरकी इन मांगोंके प्रति पूर्ण सहानुभूति दिखला रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लङ्काशायरके व्यवसायी इङ्गलैण्डके बोर्ड आव ट्रेडके सभापति मि० रुन्सीमैनके पास अपना एक प्रतिनिधि-दल भेज कर यह आग्रह कर रहे हैं कि लङ्काशायरके मालपर भारतमें जो आयात-कर लगता है, उसमें मोदी लीज पैक्टके अनुसार ह्रास करनेके लिए भारतसरकारके साथ पत्र-व्यवहार किया जाय। मोदी-लीज पैक्टके सम्बन्धमें पहली बात तो यह है कि देशकी सर्वसाधारण जनताने और खासकर वणिक-सम्प्रदायने एक स्वरसे इसकी तीव्र निन्दा की है। भारतके ऊपर जबर्दस्ती यह पैक्ट लाद दिया गया है। फिर इस मोदी-लीज पैक्टमें भी यह शर्त लगी हुई है कि विलायती कपड़ेपर लगनेवाले आयात-करमें सैकड़े ५ तभी ह्रास किया जा सकता है जबकि भारतसरकारकी आर्थिक अवस्था अनुकूल हो। दूसरी बात यह है कि सैकड़े ५ के रूपमें सरचार्ज Surcharge duty सिर्फ विलायती कपड़ेपर ही नहीं, बल्कि अन्यान्य विदेशी मालोंपर भी लगती है। इसलिए यदि विलायती कपड़ेके ऊपरसे सरचार्ज ड्यूटी उठा ली जाय, तो फिर अन्य विदेशी मालोंपरसे भी यह ड्यूटी क्यों नहीं उठायी जायगी। इसके सिवा भारतसरकारकी आर्थिक अवस्था अभी इतनी संतोषजनक नहीं हुई है कि वह विदेशी मालपर लगनेवाली सरचार्ज ड्यूटीको उठा सके। फिर भी लङ्काशायरके वस्त्रव्यवसायी इतने स्वार्थान्ध हो रहे हैं कि वे मोदी-लीज पैक्टको कार्य्यान्वित करनेके लिए भारतसरकारपर ब्रिटिशसरकार द्वारा दबाव डलवा रहे हैं और आश्चर्य्यकी बात तो यह है कि इस देशके अंगरेज वणिकोंकी संस्था एसोसियेटेड चेम्बर आव कामर्सने भारत सरकारके पास एक स्मारक पत्र भेजकर लङ्काशायरकी इस मांगका निर्लज्ज भावसे समर्थन किया है। इतना ही नहीं, बल्कि चेम्बर आव कामर्सने यह भी सुझाया है कि भारतीय मिलमालिक अतिरिक्त संरक्षणकरकी आड़में अत्यधिक लाभ उठा रहे हैं। इस लिए भारतीय मिलोंमें तैयार होनेवाले महीन कपड़ोंपर Excise Duty उत्पादन-कर लगाया जाय। इस प्रकारकी व्यवस्थासे भारतसरकारको सरचार्ज ड्यूटी भी नहीं हटानी पड़ेगी और साथ ही इसके लङ्काशायरके व्यवसायी भारतीय वस्त्रके साथ सुगमतापूर्वक प्रतियोगिता भी कर सकेंगे। यह भी मालूम हुआ है कि भारतसरकार एसोसियेटेड चेम्बर आव कामर्सके इस पत्रपर ध्यानपूर्वक विचार कर रही है। ऐसी स्थितिमें भारतीयोंको और भी दृढ़प्रतिज्ञ होकर मोदी-लीज पैक्टका विरोध करना चाहिए, ताकि वह काममें न लाया जा सके।

## स्वाधीन देशोंके दृष्टान्त

हमारे देशमें इस समय बेकारी-समस्याको लेकर विशेष आलोचना-प्रत्यालोचना हो रही है। सरकार भी इस सम्बन्धमें अपनेको उदासीन नहीं बताती। हालां कि अब तक उसने ऐसी कोई भी क्रियात्मक योजना देशके सामने नहीं रखी है जिससे यह मालूम हो कि वह सचमुच बेकारी-समस्याके समाधानके लिए विशेष रूपसे समुद्विग्न है। किन्तु इस सम्बन्धमें स्वाधीन देशोंके शासक कितनी तत्परताके साथ कार्य कर रहे हैं उसका उदाहरण लीजिए। अमेरिकाके राष्ट्रपति रूजवेल्टने यह घोषणा की है कि बेकार लोगोंका एक समूह, समाज और राष्ट्रके व्याधिस्वरूप कायम रहे, इस स्थितिको मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सकता। किसी दल या समुदायके लिए जो काम करना असम्भव हो उसका दायित्व सरकार अपने ऊपर ले, यह उसका कर्तव्य है। उधर जर्मनीके स्वराष्ट्र-सचिव डा० गोयबेल्सने यह घोषणा की है कि जाड़ेमें लोगोंकी दुःख-दुर्दशा न हो और एक भी व्यक्ति अन्न-वस्त्रके अभावमें मृत्युको प्राप्त न हो, इसके लिए सरकार पूर्ण प्रयत्न कर रही है। विलायतके कृषि-मन्त्रीने एक "National Milk Scheme" की घोषणा की है, जिसका अभिप्राय यह है कि इंगलैण्डमें जिस परिमाणमें दूध उत्पन्न होता है उसकी खपत होकर भी लगभग १० करोड़ गैलन फाजिल दूध बच जाता है। इससे दूध उत्पन्न करनेवाले किसानोंको क्षतिग्रस्त होना पड़ता है। अतएव इसके प्रतिकारके लिए कृषि-बोर्ड और दुग्ध-विक्रय बोर्डने एक लाख पौण्ड खर्च करनेका निश्चय किया है। इस धनसे सब फाजिल दूध खरीद लिया जायगा और इंगलैण्डके हर एक स्कूलमें प्रत्येक छात्र-छात्राको नाममात्र मूल्य लेकर दूध पीनेके लिए दिया जायगा।

भारतमें प्राकृतिक समृद्धि-साधनोंकी कमी नहीं है। इन साधनोंका पूर्णरूपसे उपयोग करके सरकार बेकार-समस्याका सहज ही समाधान कर सकती है। किन्तु वह करे भी तो! स्वदेशी और विदेशी सरकारमें यही तो अन्तर है।

---

'विश्वमित्र' प्रेस, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तासे पं० मातासेवक पाठक द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बालकोपयोगी उत्तमोत्तम पुस्तकें

## भक्त-ध्रुव

भक्तकी महिमा अपरम्पार है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि न मैं मन्दिरोंमें रहता हूं, न वैकुण्ठमें। मैं तो भक्तोंके हृदयोंमें वास करता हूं। भक्त ध्रुवकी भक्ति बहुत ऊंचे दरजेकी थी। बाल्यावस्थामें अपने अपूर्व भक्ति-भावसे ही ध्रुवने वह स्थिति प्राप्त की थी। अल्पमति कोमल-हृदय बालक-बालिकाओंके लिये इस सरल और सरस भाषामें लिखी पुस्तकका पढ़ना आवश्यक है। छपाई-सफाईको देखकर बालक लट्टू हो जाते हैं। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य ॥=) मात्र।

## वीर-अभिमन्यु

वीर-बालक अभिमन्युकी लोकोत्तर वीरता, भारतके इतिहासमें सदा अमर रहेगी। गुरु-द्रोण द्वारा निर्मित विचित्र अभेद्य चक्र-व्यूहमें घुसकर षोड्श वर्षीय वीर-बालक अभिमन्युने प्रचण्ड वीरता प्रदर्शित की थी—तथा कौरव-सप्त महारथियोंने मिलकर अभिमन्युको मार डाला था, उस रोमाञ्चकारी कथाको पढ़कर हृदय कांपने लगता और लोकोत्तर वीरताको देखकर बल्लियों उछलने लगता है। ऐसा सरस और सरल भाषामें लिखा जीवन हिन्दीमें प्रकाशित नहीं हुआ। अनेक रङ्गीन चित्र। मू० वही ॥=) मात्र

## भक्त-प्रह्लाद

सत्याग्रह-मंत्रके आदि-गुरु, भक्तवर प्रह्लाद और उनके दुष्ट राक्षस-पिताकी कथाको सभी हिन्दू किसी न किसी रूपमें जानते हैं। इसमें प्रह्लादकी जन्मसे लेकर उनके बाल्यकाल, यौवन और वार्द्धक्यकाल तकको समस्त अद्भुत भक्ति-रस-पूर्ण मनोरञ्जक घटनाओंको औपन्यासिक ढङ्गसे मधुर सरल तथा सरस भाषामें लिखा गया है। समस्त घटित घटनाओंके रङ्गबिरंगे अनेक चित्र दिये गये हैं। छपाई—सफाई बढ़िया। 'प्रह्लाद' नामकी निकली सभी पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ। मूल्य वही ॥=) मात्र।

## लव-कुश

स्वनामधन्य मर्यादा—पुरुषोत्तम रामचन्द्र और जनक-नन्दिनी भगवती सीताके वीरबाहु और मंजुल-मूर्ति पुत्रद्वय, लव-कुशकी प्रचण्ड वीरताकी कहानी पुराण प्रसिद्ध है। रामतनय लव-कुशकी कथा विशद रूपसे औपन्यासिक रूपमें लिखी गयी है। इसको पढ़नेसे बालक-बालिकायें, सार-तत्त्व रूपसे रामायणकी सब घटनाओंको भी हृदयङ्गम कर लेती हैं और लव-कुशकी प्रचण्ड वीरता-प्रतिभा-साधुताका अनुकरण कर अपने चरित्रको उज्ज्वल बना सकती हैं। अनेक रङ्गीन चित्र। मूल्य ॥=) मात्र।

मिलनेका पता:—

पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

# खांसी से कष्ट क्यों भोग रही हैं? सिरोलिन "रचि" का सेवन कर आराम हो जाइये।

कफ, शर्दी, ब्राङ्काइटीज इनफ्लुएञ्जा और क्षय रोगकी आरम्भिक अवस्थाके लिये **सिरोलिन "रचि"** ही केवल विश्वसनीय और निरापद औषधि है।

## सुप्रसिद्ध चिकित्सकगण सिरोलिन "रचि" व्यवहार करनेको कहते हैं। प्रशंसापत्र :—

"कुछ समयसे फेफड़े और अन्तड़ियोंके पुरातन क्षय रोगमें मैं सिरोलिन अपने रोगियोंको व्यवहार करा रहा हूं। थियोकल सिरापमें द्रवीभूत होनेके कारण खानेमें सुस्वादु है। हमारी समझमें इसमें कार्यकारी शक्ति है और यह बीजाणुनाशक है। यह खानेमें सुस्वादु और बहुत दिनों तक व्यवहार करने पर पाकस्थलीकी सहन शक्ति ज्यों की त्यों रहती है।"——एम० ए०, अन्सारी; एम० डी० एम० एस० दिल्ली, १२ मई १९३४

"यक्ष्मा रोगके प्रारम्भमें या सन्देह स्थलमें सिरोलिन "रचि" का व्यवहार संसारके उत्तमोत्तम शैलावाससे भी अधिक फलप्रद है।"

——डा० एस० के० बसु, बी० एस-सी, एम० बी० डी० पी० एच०, कलकत्ता, १७ जनवरी १९३४

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फर० १९३५

# सचित्र मासिक विश्वामित्र

मूल्य ॥=)

धर्मके समय पेट या कमरमें दर्द, मासिक
होना, खूनके कतरे गिरना, गर्भाशयमें दोष होनेके
र जाना इत्यादि रोगोंपर २१ दिन चूर्णका सेवन करनेसे
होगा और गर्भपात न होकर संतति सशक्त, स्वस्थ (निरोग)
वनसे निश्चय ही गर्भधारण हो जाता है। २१ दिनतक सेवन
) इन चूर्णोंको हरेक स्त्री और पुरुष हर मौसममें खा सकते हैं।
वा एक साथ मंगाके स्त्री और पुरुष दोनों हीको एक साथ खानेसे
विधि साथमें दी जाती है। यह दवायें तत्काल गुण दिखानेवाली
दवाइयोंमें केवल जड़ी बूटी है। हानिकारक कोई भी चीज नहीं है।

## रसायन, धातु भ... अन्यान्य आवश्यकीय औषधियां।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ...ज | ८०) | रु० तोला | बसन्त कुसुमाकर | ४) | रु० सप्ताह | श्रीमदनानन्द मोदक | १६) रु० सेर |
| ...मालती | १६) | ,, ,, | वृहत् पूर्णचन्द्र रस | १॥) | ,, ,, | च्यवन प्रास | ८) ,, ,, |
| ...भस्म | ६०) | ,, ,, | चन्द्रप्रभा गोली | ॥।) | आ० ,, | महानारायण तैल | १६) ,, ,, |
| ...मोती) भस्म | ३२) | ,, ,, | महालक्ष्मी विलास | ॥।) | ,, ,, | चूर्ण लवण भास्कर | ४) ,, ,, |
| ...भस्म | २९) | ,, ,, | ब्राह्मी (विरमी) गोली | ॥।) | ,, ,, | त्रिगाष्टक चूर्ण | ३) ,, ,, |
| ...लोह भस्म) | २९) | ,, ,, | अमर सुन्दरी गोली | ॥।) | ,, ,, | सितोपलादि | ८) ,, ,, |
| ...(तामेश्वर) भस्म | ९) | ,, ,, | संजीवनी गोली | ।=) | ,, ,, | सुदर्शन | ४) ,, ,, |
| ...स्म | ९) | ,, ,, | भैरव रस गोली | ।=) | ,, ,, | त्रिफला चूर्ण | २) ,, ,, |
| ...भस्म | ४) | ,, ,, | महायोगराज गुग्गुल | १॥) | रु० ,, | नवरत्न चूर्ण | १) रु० शीशी |
| ...(मूङ्ग) भस्म | २) | ,, ,, | ६४ प्रहरी पीपल | २॥) | ,, भरी | द्राक्षासव | ४) ,, ,, |
| ...हर भस्म | ४) | ,, ,, | नीमगिलवका सत | ॥) | आ० भरी | देसी सालसा | २॥) ,, ,, |

पता—भारत भैषज्य भण्डार, नं० १९८ काटन स्ट्रीट, (बड़ाबाजार) कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पढने योग्य कुछ ऐतिहासिक पुस्तकें

## मेवाड़-गौरव

मुगल-साम्राज्यकी भीषण विभीषिका जिस समय भारतके समस्त हिन्दू-राज्योंको हड़प करनेकी चेष्टा कर रही थी, उस समय मेवाड़ ही एक ऐसा प्रदेश था, जिसके राजा, प्रजा, बाल-वृद्ध-वनिता सभीने एकसे एक बढ़ कर बलिदान करके मरणोन्मुख हिन्दू जाति के मान-गौरवकी रक्षा की थी। कर्तव्यके लिये पिताओंने पुत्रोंको कत्ल किया था, मेवाड़ की रमणियोंने अग्निमें कूद कर हिन्दुत्वको रक्षा की थी। इसमें उसी मेवाड़की कीर्ति-लापोंका वर्णन है। दो संस्करण हाथोहाथ बिक गये। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १)

## ...णा-प्रताप

...स्तारका ग्रह लगा हुआ था और हिन्दू राजा-...शिर झुकाकर आत्म-समर्पण कर रहे थे, ...हुंकार-ध्वनिसे मुगल-राजसिंहासन कांप ...रणीय महाराणा-प्रतापकी कीर्ति-कहानी ...लेख है। अनेक चित्रोंसे सुशोभित।


खांसी से कष्ट क्यों भोग रही हैं? सिरोलिन "रुचि" का

कफ, सर्दी, ब्रांकाइटीज इनफ्लुएञ्जा और क्षय रोगकी आ...

सुप्रसिद्ध चिकित्सकगण सिरो...

"कुछ समयसे फेफड़े और अन्तड़ियोंके पुरातन ...होनेके कारण खानेमें सुस्वाद है। हमारी समझमें इसमें कार्यकारी ...संग्रहार करने पर पाकस्थलीकी सहन शक्ति ज्यों की त्यों रहती है ...

"श्वसन रोगके प्रारम्भमें या सन्देह स्थलमें सिरोलिन


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# धातु पौष्टिक चूर्ण

यह चूर्ण—तीन दिनके भीतर ही अपना गुण दिखा देता है, पेशाबकी समस्त बीमारियोंको हटाके दस्त साफ करता है, सब प्रकारका दर्द पीड़ा तथा गिरती हुई धातुको रोकता है, पानी समान पतले वीर्यको एकदम गाढ़ा कर देता है, उपदंश (गर्मी—आतशक) मेह प्रमेह (गनोरिया सुजाक) रोगोंको यह चूर्ण जड़से खो देता है तथा शरीरको बलवान करके स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। यह स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, स्मरण मात्रसे ही पतन, पेशाबके साथ धातुपात, अधिक विलासिताके कारण कमरमें दर्द, कमजोरीके कारण हाथ पैरोंका कांपना, चक्कर आना, आंखोंके आगे चिनगारियां निकलना, कलेजेका धड़कना, नामर्द हो जाना, इत्यादि रोगोंको दूर कर रक्त शुद्ध करता है और भूख शक्ति तथा वजनको बढ़ाता है जिससे शरीर बज्रके समान मजबूत हो जाता है। जिनमें पुरुषत्व न हो उन्हें यह पुरुषत्व प्राप्त करा कर उनके वीर्यको एकदम गाढ़ा और गर्भ धारण करानेके योग्य बना देता है। २१ दिन सेवन करने लायक पूर्ण गुणकारी डिब्बेकी कीमत ९) रु०डा० पै०ख० ।।।) लगेगा।

☞ स्त्रियों के लिये

# स्त्रीरोग निवारक चूर्ण

इस चूर्णके सेवनसे औरतोंकी क्षीणता सब तरहका स्त्रियोंका प्रदर, मासिक धर्मके समय पेट या कमरमें दर्द, मासिक धर्म थोड़ा या कम दिनोंमें होना बिलकुल ही न होना, असमयमें मासिकधर्म होना, खूनके कतरे गिरना, गर्भाशयमें दोष होनेके कारण गर्भ न रहना, गर्भपात होना, दुर्बल सन्तति होना या होकर मर जाना इत्यादि रोगोंपर २१ दिन चूर्णका सेवन करनेसे गर्भाशय तथा शरीरके सभी दोष दूर होकर मासिकधर्म समयपर होगा और गर्भपात न होकर संतति सशक्त, स्वस्थ (निरोग) उत्पन्न होगी। यहांतक कि ४० वर्षकी स्त्रीको भी इसके सेवनसे निश्चय ही गर्भधारण हो जाता है। २१ दिनतक सेवन करने योग्य चूर्णके १ डिब्बेकी कीमत ९) रु० डा० ख० ।।।) इन चूर्णोंको हरेक स्त्री और पुरुष हर मौसममें खा सकते है।

संतानकी इच्छा करनेवाले लोगोंको यह दोनों ही दवा एक साथ मंगाके स्त्री और पुरुष दोनों हीको एक साथ खानेसे अच्छा होगा। परहेज वगैरह कुछ नहीं करने पड़ते। सेवनविधि साथमें दी जाती है। यह दवायें तत्काल गुण दिखानेवाली —एक बार विश्वास रखकर इसे अवश्य मंगावें। इन दवाइयोंमें केवल जड़ी बूटी है। हानिकारक कोई भी चीज नहीं है।

## रसायन, धातु भस्म और अन्यान्य आवश्यकीय औषधियां।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| करध्वज | ८०) | रु० तोला | बसन्त कुसुमाकर | ४) | रु० सप्ताह | श्रीमदनानन्द मोदक | १६) रु० सेर |
| सन्त मालती | १६) | ,, ,, | वृहत् पूर्णचन्द्र रस | १॥) | ,, ,, | च्यवन प्रास | ८) ,, ,, |
| र्ण भस्म | ६०) | ,, ,, | चन्द्रप्रभा गोली | ।।।) | आ० ,, | महानारायण तैल | १६) ,, ,, |
| का (मोती) भस्म | ३२) | ,, ,, | महालक्ष्मी विलास | ।।।) | ,, ,, | चूर्ण लवण भास्कर | ४) ,, ,, |
| क भस्म | २५) | ,, ,, | ब्राह्मी (विरमी) गोली | ।।।) | ,, ,, | त्रिगाष्टक चूर्ण | ३) ,, ,, |
| (लोह भस्म) | २५) | ,, ,, | अमर सुन्दरी गोली | ।।।) | ,, ,, | सितोपलादि | ८) ,, ,, |
| वा (तामेश्वर) भस्म | ५) | ,, ,, | संजीवनी गोली | ।=) | ,, ,, | सुदर्शन | ४) ,, ,, |
| भस्म | ५) | ,, ,, | भैरव रस गोली | ।=) | ,, ,, | त्रिफला चूर्ण | २) ,, ,, |
| ी भस्म | ४) | ,, ,, | महायोगराज गुग्गुल | १॥) | रु० ,, | नवरत्न चूर्ण | १) रु० शीशी |
| ाक (मूङ्गा) भस्म | २) | ,, ,, | ६४ प्रहरी पीपल | २॥) | ,, भरी | द्राक्षासव | ४) ,, ,, |
| ान्दूर भस्म | ४) | ,, ,, | नीमगिलवका सत | ॥) | आ० भरी | देसी सालसा | २॥) ,, ,, |

पता—भारत भैषज्य भण्डार, नं० १०८ काटन स्ट्रीट, (बड़ाबाजार) कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास

## ❋ मिलन-पूर्णिमा ❋

( सचित्र—सामाजिक उपन्यास )

सौरीन एम० ए० पास हिन्दू-कुलीन था। रेखा थी, एम० ए० तक पढ़ी हुई—ब्राह्मसमाजभुक्त—कुमारी। दोनोंके प्रेम-बन्धनमें सौरीनकी महत्वाकांक्षाने विघ्न डाल दिया। रेखाने सौरीनका रुद्ध मार्ग खोल दिया, परन्तु बिना रेखाके वह कुछ भी न कर सका। इस उपन्यासमें जहां प्रेमकी मन्दाकिनी प्रवाहित होती है, वहां साथही कर्तव्यकी धारा प्रबल-वेगसे वेगवती होकर बहती है और अन्तमें दोनों धारायें, लोक-सेवाके सागरमें जाकर विलीन हो जाती हैं। मूल्य १॥) रुपया मात्र।

## विधवा

रूढ़ियोंके गुलाम, हिन्दूसमाजमें धर्म्म का नाम लेकर निरीह विधवाओं पर कैसा भीषण अत्याचार हो रहा है और कुलीनताके पाखंडकी ओटमें संबलहीन देवी-स्वरूपिणी विधवाओंका धर्म्म बिगाड़ कर समाजके ठेकेदार, उन्हें वेश्यालयोंमें पहुंचा देते हैं, इसका इसमें बहुत ही करुणापूर्ण चित्र खींचा गया है। काशी-वासके नाम पर होनेवाले पापाचार और विधवाओंकी खरीद-फरोख्त और पण्डे-पुजारियोंके बीभत्स कृत्यों और समाज-पतियोंकी विचित्र धर्म्मव्यवस्थाको देख कर आपका हृदय कांप उठेगा। मू० ॥।)

## अभागिनी

उच्च-शिक्षा प्राप्त करके भी, हिन्दू-स्त्रियोंको समाजकी वेदी पर अपना बलि-दान करना पड़ता है! बड़ीसे बड़ी शिक्षा भी सामाजिक रूढ़ियोंके कारण, उनकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है। शिशिरकी मूर्खता और मिनतीकी प्रेम-निबाहकी घटना, इस लोकका नहीं, देवलोकका त्याग है। सिद्धान्त और पवित्रताके नाम पर—कैसा भयंकर त्याग किया जा सकता है, इसका जीता-जागता प्रमाण है। ऐसा ऊंचे दरजेका विद्वत्तापूर्ण उप-न्यास आपने अभी तक नहीं पढ़ा होगा। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य २)मात्र।

मिलनेका पता—

**दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अपने बुढ़ापेमें सुख शान्तिके लिये

अपना आमदनी से थोड़ा बचा बचा कर

इंडस्ट्रियल एन्ड प्रूडेंशियल

एस्योरेन्स कम्पनी लि०

में जमा करते रहो

विशेष विवरण जाननेके लिये यहांके आफिस

१२, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ताको

पत्र लिखिये



# अमृताञ्जन पेन बाम

सबसे उत्तम, दर्द दूर करने वाला भारतीय मरहम सर्व प्रकारके दर्दोंको दूर करता है। सब जगह मिलता है।

( रजिस्टर्ड ) **अमृताञ्जन डिपो,**

पो० बक्स नं० ६८२५ कलकत्ता।

हेड आफिस—बम्बई मद्रास।



— हर प्रकारके ब्लाक बनानेका एकमात्र विश्वस्त स्थान —

# एमराल्ड इन्ग्रेविंग लिमिटेड।

साढ़े ब्लाकों की १२ घण्टे में डिलेवरी दी जाती है।

१।२, मोतीसील स्ट्रीट, कलकत्ता।

कम दाम में विशेष काम हमारी विशेषता है।

विशेषतायें—

१—किसी भी ऋतुमें एक ही दिनमें डिलेवरी। २—विशेष अवस्थाओंके अतिरिक्त मूल्य सर्वापेक्षा सुलभ।
३—हाफटोन और लाइन ब्लाकोंकी एक ही दर। ४—तीन रंगे और बहुरंगे ब्लाक सर्वोत्तम और आदर्श।

छोटेसे छोटा आर्डर भेजकर परीक्षा कीजिये।

पत्र-पत्रिकाओं के लिये विशेष रियायत।

पूरे विवरण के लिये शीघ्र लिखिये।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❀ स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें ❀

नारी रत्न माला

## सावित्री-सत्यवान

इस पुस्तकमें सती-शिरोमणि सावित्री के अद्भुत चरित्रको सरल भाषामें ऐसे अच्छे ढङ्गसे लिखा गया है कि जिसके पढ़नेसे हिन्दू-बालिकायें और हिन्दू-रमणियां पातिव्रत्यके मर्मको सरलतासे हृदयङ्गम कर सकें। सती-शिरोमणि सावित्री का चरित्र, युग-युगान्तरोंसे सती रमणियों का आदर्श माना जाता है। सावित्रीके धर्मबल के सामने यमराजको भी हार माननी पड़ी थी। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई। सात रङ्गीन चित्र। अब तक हजारों प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मूल्य ।।) मात्र।

## शैव्या-हरिश्चन्द्र

इस पुस्तकमें हिन्दू जातिके कीर्ति स्तम्भ, भारतके सौभाग्यसूर्य, गौरव-रवि, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र तथा उनकी महीयसी रानी शैव्या की अपूर्व आत्मत्यागकी कथा लिखी गयी है। शैव्या-हरिश्चन्द्रका त्यागमय जीवन-चरित्र, हिन्दू-रमणियों एवं कन्याओंके लिये आदर्श है। इस पुस्तकमें शैव्या-हरिश्चन्द्रके जीवनकी सभी घटनायें विशद रूपसे लिखी गई हैं। रंग-बिरंगे अनेक चित्रोंकी सुन्दरता देखने ही योग्य है। छपाई-सफाई बढ़िया। मूल्य वही सर्वसुलभ ।।) मात्र।

## नल-दमयन्ती

पुण्यश्लोक राजा नल और परम पति-भक्ति-परायणा दमयन्तीको भला कौन हिन्दू सन्तान नहीं जानता। इस पुस्तकमें उन्हींके परम पवित्र चरित्र और मर्मस्पर्शी जीवनका वर्णन किया गया है। इसमें पतिव्रत-महिमाका बहुत ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। शिक्षा-विभागने इसको स्वीकार किया है। बढ़िया छपाई, ऐण्टिक पेपर और आठ रंग-बिरंगे घटित घटनाओंके चित्र हैं। ऐसी सर्वाङ्गसुन्दर और सर्वसुलभ पुस्तक कहींसे भी प्रकाशित नहीं हुई। मूल्य ।।) मात्र।

## सीता-देवी

इस पुस्तकमें जनक-नन्दिनी, राम-प्रिया सीताका चरित्र बहुत ही अच्छे ढङ्ग से लिखा गया है। बालक-बालिकाओंके लिये इसमें अपूर्व शिक्षा है। क्योंकि यह रामायणका सार, उत्तमोत्तम शिक्षाओंका भण्डार—और हिन्दू-ललनाओंका ललित शृङ्गार है। इसमें पुराण, काव्य, नाटक, उपन्यास का आनन्द तथा नीतिशास्त्रका अपूर्व उपदेश भरा हुआ है। सीतादेवी—राजनीति, धर्मनीति, समाज और गार्हस्थ्य की कुञ्जी है। छपाई-सफाई बढ़िया। सात रंग-बिरंगे चित्र। मूल्य ।।=) मात्र।

मिलनेका पता—पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# डाबर (डाः एस, के, बर्म्मन) लिः

५० वर्षों से प्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेण्ट दवाओं का वृहत् भारतीय कार्यालय !

**विभाग नम्बर ( २ ) पोष्ट बक्स ५५४, कलकत्ता ।**

STAR TRADE S.K.B. MARK 'REGD'

स्टार ट्रेड मार्क

दुर्घना कह कर

## हिल-एक मरहम (Regd.)

( कटे, जले चोट आदिपर लगानेका मरहम )

यह केवल वनस्पतियोंसे बना है। आगसे जलनेका घाव, विषैले जानवरोंके काटनेकी जलन, छुरी आदि अस्त्रोंसे कटना आदि आकस्मिक यन्त्रणाओंसे समयपर मुक्त होनेके लिये सर्वदा अपने पास रखना चाहिये। मूल्य—प्रति डिब्बी ॥=) दस आना; डा० म० ३ डिब्बी तक ।≡)। नमूना =) जो केवल एजेण्टोंसे ही मिल सकता है।

नहीं आती !

नोट—सब जगह मिलता है। खरीदते समय ट्रेड मार्क और डाबर नाम अवश्य देख लिया करें।

सेल डिपाः—(१) नं० ४ तारा चन्द दत्त स्ट्रीट। (२) नं० २०१ हरिसन रोड।

# सुजाक (प्रमेह) की हुक्मी दवा

डा० जसानी का

जगत प्रसिद्ध

# "गोनोकिलर"

GONO ORIGINAL KILLER REGD TRADE MARK

नकली से सावधान

खरीदने से पहले

मुर्गा छाप देख लीजिये

[illegible] इनाम उन ३० आदमियोंको

पेशाब और धातुके दर्दों को मार हटाने [illegible] दिया जायगा जिनके सही उत्तर सबसे

आश्चर्यजनक दवा है कि जिसको इस्तेमाल आवेंगे।

पड़ता। डाक्टरोंकी दवाई और [illegible] भेज सकता है, मगर प्रत्येक उत्तरके साथ १) रु० आना

और अमेरिकाकी पेटेण्ट दवाओं [illegible]म बराबर २ बांट दी जायगी, और यही नियम एक या

हों, तब आखिरी इलाज हमारा [illegible]से मिलनेवाला ही समझा जायगा, जो कि लिफाफेमें बन्द

चाहे जैसा पुराना या नया सु[illegible] है। (४) उत्तर भेजनेकी अन्तिम तारीख ७ मार्च और

कर या बून्द बून्द आना, मूत्रा[illegible] निर्णय सबके लिये मान्य होगा।

क्षीणता **औरतों तथा** [illegible] प्रतियोगता

**"गोनोकिलर"** जड़से न[illegible]टर्ड) नं० १३ लुधियाना (पंजाब)

**पता—डा० डी० एन० जसानी,** [illegible]

कलकत्ताके एजेण्ट—मेसर्स बी० ए० एन्ड ब्रादर्स, अ[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❋ स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें ❋

नारी रत्न माला

## सती-पार्वती

हर-पार्वतीकी कथा प्रसिद्ध है। इसमें शंकर-प्रिया, गणेश-जननी, सती-शिरोमणि भगवती 'सती-पार्वती' के दोनों अवतारों की मर्मस्पर्शी कथा बड़ी ही सरल, सरस भाषामें लिखी गयी है। यह पुस्तक बहुत पसन्द की गयी है। साथ ही सती-महिमा, दक्ष-यज्ञ-भंग, वीरभद्रका प्रतिशोध, शिव जीका कोप, मदन-दहन, शिवजीका वर-दान आदि कितने ही रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई-सफाई बढ़िया। अब तक हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही सर्व-सुलभ ।।) मात्र।

## देवी-द्रौपदी

इस उपाख्यानमें देवी-द्रौपदीका जन्म, बाल्यकाल, स्वयंवर, विवाह, चीर-हरण, पाण्डवों पर विपत्ति और राज्य-हरण तथा देश-निर्वासन का वर्णन है। विराट राज-महलमें दासी-कर्म, कीचक-वध और अन्तमें कौरवोंसे घनघोर संग्राम। पाण्डवों की विजय-वैजयन्ती, भगवान् श्रीकृष्ण का सहयोग और सहायता आदि समस्त बातोंका उल्लेख बहुत ही सरस और सरल भाषामें किया गया है। अनेक भावपूर्ण रङ्ग-बिरंगे चित्र हैं। बढ़िया पेपर और सुन्दर छपाई। मूल्य सर्वसुलभ ।।=) मात्र।

## शकुन्तला

संसार प्रसिद्ध महाकवि, कवि-कुल-गुरु कालीदासके सर्वोत्तम नाटक 'अभि-ज्ञान परम पवित्र को उपाख्यानके रूपमें जीवनका वर्णन किया गया इनकी एक-एक व्रत-महिमाका बहुत ही सुन्दर चित्र खो परि-गया है। शिक्षा-विभागने इसको स्वीकार-किया है। बढ़िया छपाई, ऐण्टिक पेपर और आठ रंग-बिरंगे घटित घटनाओंके चित्र हैं। ऐसी सर्वाङ्गसुन्दर और सर्वसुलभ पुस्तक कहींसे भी प्रकाशित नहीं हुई। मूल्य ।।) मात्र।

## शर्मिष्ठा-देवयानी

श्रीमद्भागवतमें शर्मिष्ठा-देवयानीका उपाख्यान आया है। इस उपाख्यानको पढ़नेसे सत्यनिष्ठा एवं नारी कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है। पिताकी मर्यादाकी रक्षा के लिये शर्मिष्ठाने जो आत्मत्याग कर दिखाया, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। देवयानीने क्रोधके वशमें हो जो भया-नक काण्ड उपस्थित कर दिया था, वह शर्मिष्ठाकी सौजन्यता और कर्तव्य-निष्ठा तथा सहृदयताके कारण दूर हो गया। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे संवलित। हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही ।।) मात्र।

मिलनेका पता—पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १—जुही ( कविता )—श्री रामकुमार वर्मा | ५१३ |
| २—बुडापेस्टकी सैर ( सचित्र )—श्री महामाया-प्रसाद सिंह ... ... | ५१४ |
| ३—विश्वकी वर्तमान जटिल समस्यायें—श्री राम-नाथ 'सुमन' ... ... | ५२८ |
| ४—वनश्री ( कविता )—श्री गोपालसिंह नेपाली | ५३३ |
| ५—यक्षिणी ( कहानी )—श्री "द्विरेफ"; अनुवादक—श्री नरेन्द्रदेव विद्यालङ्कार, श्री शङ्कर-देव विद्यालङ्कार ... ... | ५३४ |
| ६—प्रान्तोंमें सेकेण्ड चेम्बर—श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र एम० ए०, बी० एल० ... | ५३८ |
| ७—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ( सचित्र )—श्री शिव-पूजन सहाय ... ... | ५४३ |
| ८—मेरे दिन ( कविता )—श्री गिरीशचन्द्र पन्त | ५४९ |
| ९—वायुयानोंकी प्रगति ( सचित्र )—श्री श्याम-नारायण कपूर ... ... | ५४७ |
| १०—तितलीसे ( कविता )—श्री कामेश्वर शर्मा 'कमल' | ५५२ |
| ११—यूरोपमें व्यावसायिक क्रान्ति—श्री सत्यकेतु विद्यालङ्कार ... ... | ५५३ |
| १२—उसकी कहानी (कहानी)—श्री नवलकिशोर गौड़ | ५६२ |
| १३—वसन्त-श्रीके प्रति ( कविता )—श्री कमला-प्रसाद अवस्थी 'अशोक' ... | ५६७ |
| १४—नरमुण्डका शिकार ( सचित्र )—श्री विश्वम्भर-नाथ शर्मा ... ... | ५६८ |
| १५—अर्जुनको भय हुआ था, मोह नहीं—श्री विष्णु-दत्त शुक्ल ... ... | ५७५ |



## सिर्फ ५ प्रश्नोंके उत्तर के साथ १) रुपया भेज कर

# ५०००) रु० इनाम लीजिये।

| | | |
|---|---|---|
| १ | रा—य— | एक प्रासद्ध ग्रन्थ |
| २ | ———बाद | एक प्रसिद्ध शहर |
| ३ | ——पुर | एक रियासत का नाम |
| ४ | —-—र | एक पक्षी का नाम |
| ५ | अ——र | एक फल का नाम |

२०००) रु० पहला इनाम सही उत्तर पर

१०००) रु० दूसरा इनाम एक गलती पर

५००) रु० तीसरा इनाम दो गलतियों पर

१५००) रु० चौथा इनाम उन ३० आदमियोंको अधिक दिया जायगा जिनके सही उत्तर सबसे पहले आवेंगे।

**नियम**—एक आदमी जितने चाहे उत्तर सादे कागजोंपर भेज सकता है, मगर प्रत्येक उत्तरके साथ १) रु० आना चाहिये। (२) एकसे अधिक सही उत्तर आने पर इनामकी रकम बराबर २ बांट दी जायगी, और यही नियम एक या दो गलतियोंपर भी लागू होगा। (३) सही उत्तर मैनेजरके उत्तरसे मिलनेवाला ही समझा जायगा, जो कि लिफाफेमें बन्द करके (इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया) लुधियानामें रखा हुआ है। (४) उत्तर भेजनेकी अन्तिम तारीख ७ मार्च और नतीजा निकालनेकी तारीख ११ मार्च १९३५ है, तथा मैनेजरका निर्णय सबके लिये मान्य होगा।

मैनेजर—पुरस्कार प्रतियोगता

पता—**सर्वहितकारक कम्पनी (रजिस्टर्ड) नं० १३ लुधियाना (पंजाब)**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १६—यूरोपमें गुप्त-हत्याओंका जाल—श्री कमलाकान्त शर्मा, एम० ए० ... | ५८० |
| १७—आत्म-संस्मरण—श्री अमृतलाल चक्रवर्ती | ५८५ |
| १८—झूठ ( कहानी )—मुन्शी कन्हैयालाल, एम० ए० एल-एल० बी० एडवोकेट ... | ५९२ |
| १९—कला-परिषद्की चित्र-प्रदर्शिनी ( सचित्र )—श्री यामिनीकान्त सेन, बी० एल० ... | ५९५ |
| २०—चयनिका ... ... | ५९८ |
| २१—महिला-संसार ( सचित्र ) ... | ६०४ |
| २२—समाज-दर्पण ... ... | ६११ |
| २३—अन्तर्राष्ट्रीय ... ... | ६१७ |
| २४—अर्थ-चक्र ... ... | ६२१ |
| २५—चित्र-विचित्र ( सचित्र ) ... | ६२४ |
| २६—स्वास्थ्य-विज्ञान ... ... | ६२८ |
| २७—साहित्य-जगत् ... ... | ६३० |
| २८—सम्पादकीय ... ... | ६३३ |


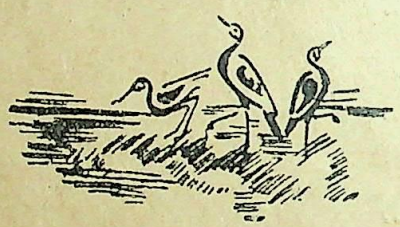


आज कलकी फेशनबल चीजें--फेन्सी और कम दाममें!

नम्बर ८३६ कटकका बना हुआ
झुमका—४॥) रु० जोड़ा
चांदीका एनामेल किया हुआ—६) रु० जोड़ा

नम्बर ८५६ चांदीका सुन्दरताके
साथ एनामेल किया हुआ—४) रु० जोड़ा

हमारे यहां सोना चांदी और जवाहरातकी चीजें हर वक्त तैयार रहती है।
नया और बड़ा सूचीपत्र ।) का टिकट भेजकर मंगाइये।

नं० ८३६
नं० ८५६

के० मणिलाल एण्ड कम्पनी, जौहरी,
Tel. No. 2741 B. B. १७३, हरिसन रोड, कलकत्ता। Tele. Add. NAVCHETAN


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चित्रपट

सम्पादक—मूलचन्द्र अग्रवाल

फरवरी, १९३५ वर्ष ३, खण्ड ५ अङ्क ५, पूर्ण संख्या २९ माघ, १९९१

## जुही

मेरे उपवनकी बाला !

आया द्वार वसन्त, सुरभि पाने नव कुसुमित मुखवाला ॥

नभके दर्पणमें अंकित है,
विमल तुम्हारा ही प्रतिविम्ब ।
सभी दिशाओंने पहिनी है,
आज तुम्हारी ही माला ॥ मेरे उपवन०—
सुरभि सजे नव स्वच्छ शरद—
बादलका ले लघुतम परिधान ।
शीतल करने आयी हो,
जलते जगकी जीवन ज्वाला !! मेरे उपवन०—

मेरे उपवनकी बाला !

प्रकृति प्रकट हो खोज रही थी,
पुरुष-प्रणयका दिव्य विधान ।
श्वेताक्षरमें किसने लिख यह,
रूप तुम्हें ही दे डाला ? मेरे उपवन०—
ज्योत्स्नाका यह शस्य, आज—
मेरे जीवनमें करे विलास ।
जुही ! तुम्हारी माला शोभित—
हो जगमें बन—वनमाला ॥

—श्री रामकुमार वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री महामायाप्रसाद सिंह

उस दिन मैं भी हङ्गरीकी राजधानी बुडापेस्टकी सैर करने निकल पड़ा। यह वही भूमि है, जहां १८६७ ई० में शक्तिशाली आस्ट्रिया-सरकारके विरुद्ध सत्याग्रह-संग्राम (भद्र अवज्ञा, Passive Resistance) हुआ था और इस अहिंसात्मक संग्राममें हङ्गरीवाले विजयी हुए थे। इस युद्धमें आस्ट्रियाको काफी मुंहकी खानी पड़ी थी। इस ऐतिहासिक घटनाके सम्बन्धमें दूसरे देशवाले बहुत ही कम जानकारी रखते हैं। इस अहिंसात्मक संग्रामके पहिले हङ्गरीवालोंने आस्ट्रियाकें चंगुलसे निकलने और आजादी हासिल करनेके लिए हर तरहके साधनोंसे काम लिया था; परन्तु बार-बार निराशा-ही-निराशा मिलती गयी, अन्तमें उन्हें अहिंसात्मक-संग्रामकी ही शरण लेनी पड़ी और इसमें यथेष्ट सफलता भी मिली। हङ्गरीके इस अहिंसात्मक-संग्रामकी नीति महात्मा गान्धीके अहिंसात्मक-संग्रामकी नीतिसे काफी मिलती-जुलती थी। फर्क सिर्फ इतना ही था कि हङ्गरीवाले बहुतेरे कामोंको छिपाकर करते थे। गत १९१४ ई० के महायुद्धके पहले आस्ट्रिया और हङ्गरी यद्यपि एक संयुक्त राज्य था, परन्तु वास्तवमें एक-दूसरेसे नाममात्रका ही सम्बन्ध था। केवल हङ्गरीवाले आस्ट्रियाके सम्राट्को अपना भी राजा मानते थे। ऐसी सन्धि, अहिंसात्मक-संग्राममें हङ्गरीके विजयी होनेके बाद ही हुई। १९१४ ई० के महायुद्धके पहले, चूंकि आस्ट्रिया-हङ्गरीका सम्राट् आस्ट्रियाकी राजधानी वियना (Vienna) में ही रहता था, इसलिए दूसरे देशके यात्री बुडापेस्ट न जाकर वियनासे ही वापस लौट जाते थे। परन्तु आज इस बुडापेस्टका महत्त्व इतना बढ़ गया है कि यूरोपका कोई भी यात्री इसे देखे बिना वापस लौटना उचित नहीं समझता।

बुडापेस्ट अपने प्राकृतिक सौन्दर्यके लिए सारे संसारमें पूर्ण रूपसे विख्यात है। इस नगरकी शोभा अकथनीय है। एकसे एक मनोहारी दृश्य हैं। यह नगरी यूरोपकी रानी कहलाती है। यहांके कुञ्ज, झरने और स्नानालय सारे यूरोपको अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यह शहर डैन्यूब (Daunbe) नदीके दोनों किनारोंपर बसा हुआ है। नगरकी जनसंख्या १००४६८१ है। डैन्यूब नदीके एक तटपर बसे हुए शहरको बुडा (Buda) और दूसरे तटवालेको पेस्ट (Pest) कहते हैं। शहरको दो भागोंमें विभक्त करनेवाली डैन्यूब कलकल शब्द करती हुई अपने अनवरत प्रवाहकी मस्तीमें चूर रहती है। बुडापेस्ट बहुत प्राचीन नगर है और साथ-ही-साथ धर्म, साहित्य एवं विज्ञानकी आलोचना और गवेषणाका एक प्रसिद्ध केन्द्र भी है। इस पारसे उस पार जानेके लिए ६ लोहेके विशाल भव्य पुल (Bridges) बने हुए हैं। इन पुलोंकी विचित्रता सराहने योग्य है। रातमें तो इस शहरकी छटा इतनी रमणीक और मुग्धकारी हो जाती है कि उसका वर्णन नहीं हो सकता, एक अपूर्व शोभा दिखाई देती है। एक तरफका शहर एक छोटी-सी पहाड़ीपर बसा है और इसी पहाड़ीपर राज-प्रासाद तथा अनेक भव्य भवन शोभित हैं। सन्ध्या समय जब दोनों तटोंपर प्रकाश-मालायें जगमगा उठती हैं, उस समयकी अनिर्वचनीय छटा मनुष्य अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जीवनमें कभी भी नहीं भूल सकता। इस दृश्यकी थोड़ी-बहुत झलक झेलम नदीके दोनों किनारोंपर बसे हुए श्रीनगर (काश्मीर) में आंखोंके सामने आ जाती है। लेकिन बुडापेस्टकी बात कहां? कहां एक समृद्धिशाली, स्वतन्त्र तथा शक्तिशाली नगर और कहां भारतवर्षका वह वैभव-विहीन तथा हीनवीर्य नगर—श्रीनगर। सन्ध्या-समय इस शहरमें इतनी रोशनियां होती हैं कि आंखें चकाचौंध हो जाती हैं। जिस तरह श्रीनगरमें प्रायः लोग शिकारों (छोटी-छोटी किश्तियों) में सवार होकर झेलमके तट-प्रदेशपर अवस्थित मनोहर दृश्योंको देखकर अपने नेत्रोंको तृप्त करते हैं, उसी प्रकार डैन्यूब नदीमें सन्ध्या-समय 'बुडापेस्ट' की जगमगाती हुई सुन्दर अलौकिक छटा देखकर मनुष्य अपने आपको भूल जाता है। हङ्गरीकी स्त्रियों-की असाधारण सुन्दरता सारे यूरोपमें विख्यात है। यूरोपवालों-का ऐसा ख्याल है कि इतना रूप-लावण्य यू-रोपके किसी भी देशकी स्त्रियोंमें नहीं है। जिस प्रकार भारतवर्षमें काश्मीरकी रमणियोंका सौन्दर्य एवं सौकुमार्य्य अनुपम समझा जाता है, उसी प्रकार यूरोपमें हङ्गरीकी। वास्तवमें यह बात अक्षरशः सत्य है। यहांकी स्त्रियोंको स्वर्गकी देवियां कहनेमें कोई अति-शयोक्ति नहीं है। ये देवियां बड़ी भोली-भाली होती हैं। इनकी मुखाकृति हमारे देशकी स्त्रियोंसे कुछ मिलती-जुलती है। यूरोपके अन्य देशोंकी अपेक्षा यहांकी स्त्रियोंका रङ्ग कुछ सांवला होता है। और यही कारण है कि इनकी रूपराशि इतनी निखर उठती है। आंखें बड़ी-बड़ी और बाल काले होते हैं। ये सरल और मृदुल स्वभावकी होती हैं।

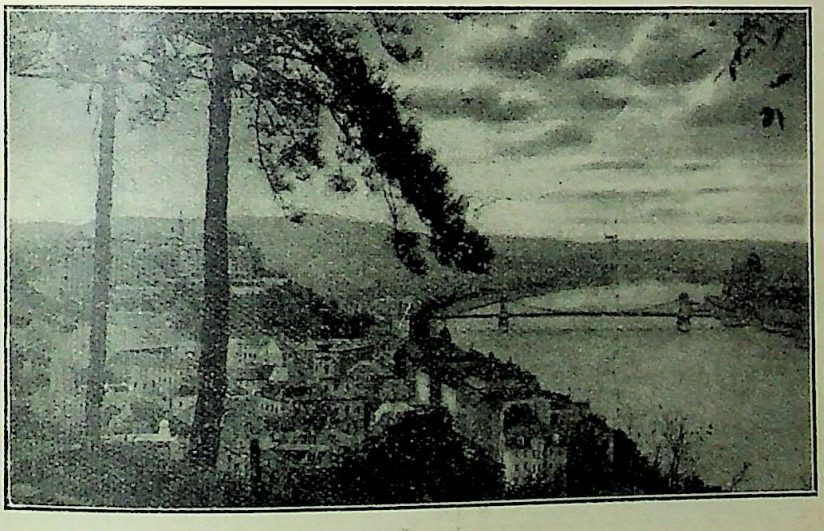

बुडापेस्टका एक दृश्य

बुडापेस्ट वियना शहरसे १९० मीलकी दूरीपर स्थित है। वियनासे बुडापेस्ट जानेके लिए अनेक प्रकारकी सुविधाएं मौजूद हैं। यों तो रेलगाड़ी वियनासे तीन-तीन और चार-चार घण्टेपर बुडापेस्टके लिए खुलती रहती है, लेकिन मोटर-वाली सड़क कुछ कम नहीं चलती। हमें मोटर-बस द्वारा ही जानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। कुछ लोगोंका कहना है कि स्टीमरसे जानेमें जो आनन्द प्राकृतिक सौन्दर्यके देखनेमें मिलता है, वह रेलगाड़ी अथवा मोटरसे नहीं प्राप्त होता। हां, यह बात जरूर है कि स्टीमरसे जानेमें समय विशेष लगता है। बुडापेस्ट जानेके लिए यह आवश्यक नहीं है कि यात्री वियना हीसे जाय। यूरोपके सभी देशोंसे वहां जानेके लिए अलग-अलग मार्ग हैं; काफी सुविधाएं हैं।

वियनासे बुडा-पेस्टके यात्रियों-की यात्राका प्रब-न्ध करनेवाली बहुत-सी कम्प-नियां हैं और मेरे विचारसे इन्हीं कम्पनियों द्वारा यात्रा करना ठीक भी है। निम्न-लिखित कम्पनियां बहुत मशहूर हैं—टामस कुक (Thomas Cook & Sons), The American Express Co. (अमेरिकन एक्सप्रेस कं०), ग्लोब टूअरस (Globe Tours) और Budapest Travelling Dept. (बुडापेस्ट ट्रैवलिंग डिपार्टमेण्ट) इत्यादि। प्रायः प्रतिदिन इन कम्पनियोंकी मोटर-बसें जाया करती हैं। जिन लोगोंको मोटरसे जानेकी रुचि न हो, उनके लिए ये लोग स्टीमर, रेलगाड़ी तथा हवाई जहाज-से यात्राका प्रबन्ध कर देते हैं। अधिकतर शनिवारको ही यात्री बुडापेस्ट जाते हैं। मोटर-बससे यात्रा करनेके लिए फी आदमी ९५ आस्ट्रियन शिलिङ्ग (Austrian Schi-llings); याने २७॥) रुपये लगते हैं। इसीमें यात्राका सारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खर्च सम्मिलित है। वियनासे बुडापेस्ट आना और जाना तथा वहां दो दिन होटलमें रहना—भोजन इत्यादि सभी कुछके लिए इतना ही लगता है। मोटर-बस ६-७ घण्टेमें वहां पहुंचती है। रेलगाड़ी ५ घण्टेमें और स्टीमर १२ घण्टेमें। हवाई जहाजसे यात्रा करना कुछ कम सुविधाजनक नहीं है। इससे यात्रा करनेमें समयकी काफी बचत होती है, सिर्फ १॥ घण्टे लगते हैं। किराया भी ज्यादा नहीं है। ८५ आस्ट्रियन शि०, याने ४२॥) रु० में आने-जानेका टिकट मिल जाता है। लेकिन इसमें खाना-पीना शामिल नहीं है। यदि किसी कम्पनीके प्रबन्धसे जानेकी इच्छा न हो, तो यात्री अपना प्रबन्ध खुद कर सकता है। परन्तु जो आदमी जर्मनी या हङ्गरीकी भाषा नहीं जानता, उसको वहां होटल इत्यादिके प्रबन्ध करनेमें कुछ दिक्कत मालूम पड़ती है। यों तो सभी बड़े-बड़े होटलवाले तथा और भी कुछ ऐसे लोग मिल जाते हैं, जो अंगरेजी समझ लेते हैं और टूटी-फूटी अंगरेजी बोल भी लेते हैं। दो-तीन दिनके लिए बुडापेस्ट जानेवाले यात्रीको इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने साथ ज्यादा सामान न ले। हजामतका सामान, एक गर्म सूट, एक ठण्डा सूट और (Sleeping dress) रातमें पहिननेका कपड़ा एक हैण्डबेगमें रख ले। एक बात और ध्यान देनेकी है। यात्री अपने साथ नकद तीन सौ आस्ट्रियन शिलिङ्ग (डेढ़ सौ रुपयेके बराबर) से ज्यादा नहीं ले जा सकता। हां, Travellers cheques या Bank drafts जितने भी पौण्डके हों, अपने साथ ले जा सकता है। बुडापेस्टमें हङ्गरीकी ही मुद्रा पेंगु (Pengu) चलती है, यह एक आस्ट्रियन शिलिङ्गसे ज्यादाकी होती है। बुडापेस्टमें विदेशी यात्री ३०० पेंगुसे ज्यादा एक समय नहीं भुना सकता। यात्रीको पासपोर्ट अपने साथ बराबर रखना चाहिए।

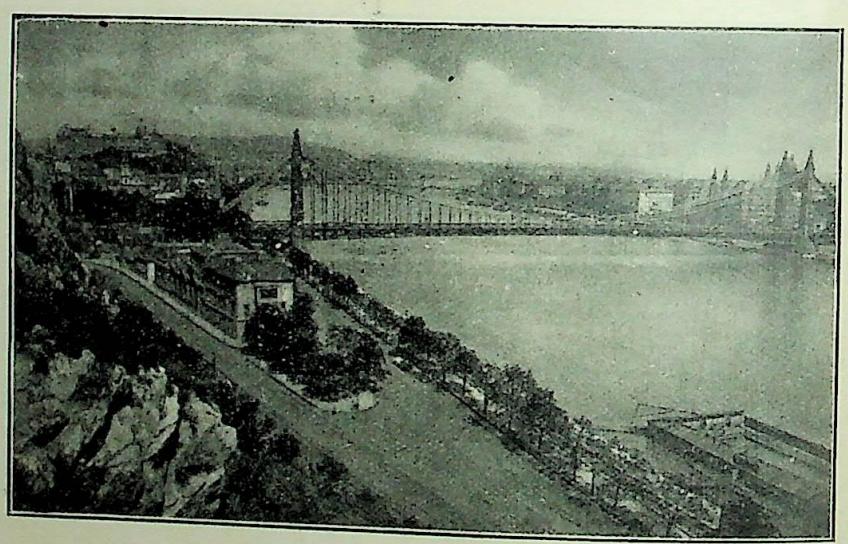

नगरका एक सुन्दर दृश्य

मोटर-बसमें पांच हिन्दुस्तानी भाइयों और १५ अमेरिकन यात्रियोंके साथ, जिनमें सात औरतें भी थीं, मैं वियनासे बुडापेस्टके लिए चल पड़ा। १॥ बजे दिनका समय था। उस दिन शनिवार था। भगवान् भास्कर अपनी प्रोज्ज्वल प्रभासे प्रोद्भासित हो रहे थे। यह मेरा यूरोपके सुन्दर देहाती-दृश्योंको देखनेका पहिला ही मौका था। सड़क निहायत अच्छी है। सड़कके दोनों तरफ वृक्षोंकी कतारें लगी हैं। सफाई पग-पगपर नजर आती है। रास्ता कहीं ऊंचा, कहीं नीचा है। कहीं कहीं छोटी-छोटी पहाड़ी-घाटियोंसे होकर गुजरना पड़ता है। रास्तेमें बहुतेरे गांव और शहर मिलते हैं। गांवोंके सम्बन्धमें क्या बतावें! इन गांवोंसे गुजरते हुए भारतवर्षके गांवोंकी करुण दशा याद कर रोना आता है। ये छोटे-छोटे गांव क्या हैं! जिन लोगोंने देहरादून और मंसूरी पहाड़की हवाखोरी की होगी और वहांके मकानों और सड़कोंकी सफाई देखी होगी, उन्हें ही इसका कुछ अनुभव हो सकता है। रास्तेमें जितने गांव मिले, एक-से-एक सुन्दर और साफ-सुथरे। हरएक गांव बिजलीकी रोशनीमें जगमगा रहा था। मकान अधिकतर एक-महले ही थे, किन्तु खूब सुन्दर, सजे-सजाये, सभीमें पर्दे लगे हुए, गलीचे बिछे हुए और कुर्सी तथा मेजोंसे सुसज्जित। सुन्दर बाजार, तारघर, डाकखाना, स्कूल और होटल भी मिले। जितने मकान थे, सभी एक ही कतारमें बने मिले। मकानके आगे जमीनका रहना जरूरी मालूम पड़ा। इन गांवोंके निवासी सुखी थे, स्वतन्त्र थे और निर्भीक थे। बालक-बालिकाएं स्वच्छन्दतापूर्वक विचरण कर रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



थीं। खेतोंके दृश्य बड़े ही सुन्दर थे। उपजका क्या कहना! पराधीन दरिद्र भारतसे कोई मुकाबिला नहीं। इसलिए नहीं कि भारतकी भूमि उपजाऊ नहीं है, बल्कि इसलिए कि हमारे पास वैसे साधन मौजूद नहीं हैं। वहांके कृषकोंको सभी साधन प्राप्य हैं। गवर्नमेण्ट हर तरहकी सुविधा देती है। खेतोंमें सर्वत्र कलवाले हल नजर आते थे, कहीं-कहीं घोड़े भी खेत जोतते दिखाई पड़े; वे बड़े मजबूत थे। हमने इतने अच्छे और पुष्ट घोड़े भारतमें कभी नहीं देखे थे। पहाड़ी भूमि हो अथवा समतल, सर्वत्र ही हरी-भरी फसल लहलहा रही थी। कहीं-कहीं खेतकी फसल काटी भी जा रही थी। मुझे बार-बार यही ख्याल आता था कि क्या भारतवर्ष कभी इन देशोंसे मुकाबिला नहीं कर सकेगा? क्या इतनी अच्छी फसल भारतकी प्यारी भूमिमें नहीं पैदा की जा सकती? क्या भारतवासी कभी इतने सुखी और सम्पन्न नहीं हो सकते?

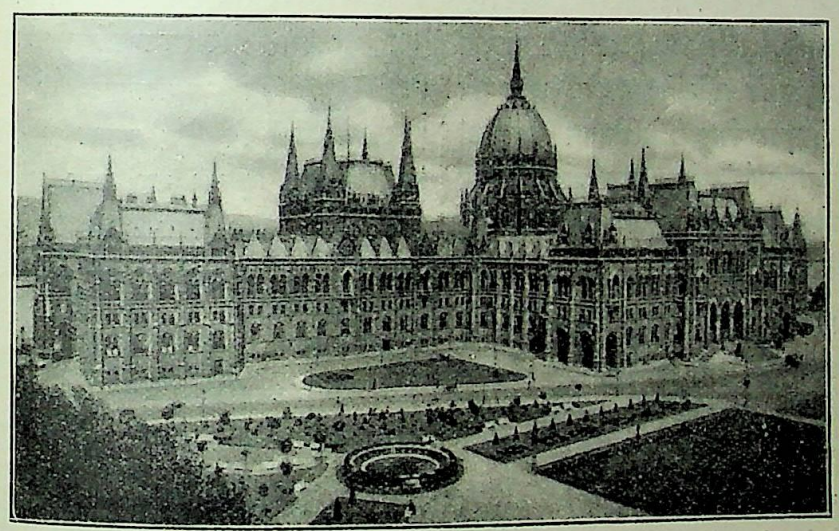

पार्लामेण्ट भवन

हमें एक गांवके अन्दर जाकर आधा घण्टा वहां रुकनेका भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यहां सभी निवासी नियमोंका पालन खूबीसे करते हैं। कहीं कोई गन्दगी नहीं करता। सफाईका ख्याल बच्चा-बच्चा रखता है। आपसमें प्रेम है। सभी प्रसन्न हैं। विदेशियोंकी बड़ी खातिरदारी होती है। अपने प्यारे देशके लिए सभी मरना और जीना जानते हैं। स्त्रियोंकी इज्जत होती है। स्त्रियां भी सभी कामोंमें सहयोग देती हैं। मर्दोंके कामोंमें हाथ बटाना वे अपना परम कर्तव्य समझती हैं। खेतोंमें भी स्त्रियां काफी संख्यामें काम करती नजर आती हैं। ये बड़ी निपुण होती हैं। सभी शिक्षिता होती हैं। यूरोपका सच्चा हाल किसीको जानना हो, तो यूरोपके देहातोंमें चला जाय। भारतवासी प्रायः बड़े-बड़े शहरोंको ही देखकर और वहांके आमोद-प्रमोद तथा विलासमय जीवनकी बुरी बातोंको ही सीखकर वापस लौटते हैं। परन्तु हम लोगोंको यह भली भांति समझ लेना चाहिए कि किसी भी राष्ट्रके भाग्यके निर्माणकर्त्ता ये ही ग्रामीण होते हैं। वे ही समर-भूमिमें देशका मुख उज्ज्वल करते हैं। वहांके देहाती भी हमारी दशापर हंसते हैं और हमारी परवशतापर समवेदना प्रकट करते हैं। गान्धीजीका नाम तो वहांके बच्चे-बच्चे जानते हैं और उन्हें बड़े आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। इसी सम्बन्धकी एक घटनाका वर्णन आगे चलकर करूंगा।

चार बजे हम लोगोंने आस्ट्रियाकी सीमा पारकर हङ्गरी-राज्यमें प्रवेश किया। यहां हमारे पासपोर्ट देखे गये और पुलिस-अफसर आकर पूछ गया कि किसीके पास पैसे तो ज्यादा नहीं, या बिक्रीकी कोई चीज तो नहीं है। हम लोगोंकी बातोंपर ही विश्वास कर, उसने बिना रुकावट हमारी गाड़ीको हङ्गरी राज्यमें प्रवेश करने दिया। हङ्गरीकी भूमि बड़ी ही उपजाऊ है। यहां रास्तेके पासवाले खेतोंमें घोड़े और बैलोंसे हल जोते जाते नजर आये। घोड़ोंकी अपेक्षा यहांके बैल कमजोर मालूम पड़े, परन्तु फिर भी हिन्दुस्तानके बैलोंसे कहीं तगड़े थे। रास्तेमें हम लोगोंको एक छोटे शहरमें चाय-पानीके लिए उतरना पड़ा था। शहर बड़ा ही साफ-सुथरा और मनोरम था। ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं मनको मोहती थीं। भव्य होटल, काफे हाउस (Cafe Houses), सिनेमा, थियेटर, बैङ्क, गिर्जाघर, डाकखाना, तारघर तथा वर्तमान समयके सभी सुख-साधन सड़कोंके किनारोंपर ही स्थित थे। यहांके लोग बड़े सीधे मालूम पड़े। औरतें बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भोली थीं। यहां चाय आदिका दाम वियनाकी अपेक्षा कुछ कम ही था। यहांसे रवाना होनेपर रास्तेका दृश्य बड़ा ही मनोहर था। सड़कके एक किनारे डैन्यूब (Danube) नदी कलकल शब्द करती हुई बह रही थी और दूसरी ओर रेलकी सड़क और इधर-उधर जङ्गल तथा पहाड़—बीच-बीचमें कहीं-कहीं छोटे-छोटे सुन्दर गांव भी मिल जाते थे। बुडापेस्ट नगरमें पहुंचनेके दो-तीन मील पहिलेहीसे जगमगाती हुई रोशनियोंके दृश्य आंखोंके सामने आने लगे। इतनी मनमोहक रोशनीके दृश्यको देखनेका मेरे लिए यह प्रथम अवसर था। बड़ा ही रुचिर दृश्य था। अमेरिकावाले भी कहते थे कि रोशनीके ऐसे दृश्य उन लोगोंने भी इसके पहिले कभी नहीं देखे थे। हम लोग बड़े ही अच्छे समयपर बुडापेस्ट पहुंचे। आठ बजे थे। यदि हम लोगोंको रास्तेमें कुछ देर न हुई होती, तो इसके पहले ही हम लोग पहुंच गये रहते। खैर, अच्छा ही हुआ कि कुछ देरीसे हम लोग वहां पहुंचे। सारे शहरमें भारतवर्षकी दीपावलीका-सा ही सुन्दर नज़ारा आंखोंके सामने आता है।

बुडापेस्ट शहरमें प्रवेश करनेके लिए डैन्यूब नदीके पुलको पार करना होता है। पुल पार करनेके पहिले पुलिस-अफसरने हमारी गाड़ीको अच्छी तरहसे देखा, तब जाने दिया। जिस पुलसे हम लोगोंने नदी पार किया, वह बड़ा ही मजबूत और सुन्दर था। पुलसे बुडापेस्ट शहर कुछ ऊंचाईपर बसा हुआ है। यहांसे रोशनियोंकी जगमगाहट और सुन्दर मालूम होती थी। ठीक साढ़े आठ बजे हम लोग शहरमें पहुंचे। शहर काफी रौनक था।

सड़कोंकी पटरियोंपर काफी संख्यामें स्त्री-पुरुष चल रहे थे। इनकी चाल-ढालसे जान पड़ता था कि वियना-निवासियोंसे ये कहीं ज्यादा सुखी हैं और आगे चलकर पता भी चल गया कि वास्तवमें ये सुखी हैं। नौ बजे हम लोग अपने होटलमें पहुंचे। इसका नाम पैलेस होटल (The Palace Hotel) था। बड़ा ही भव्य भवन था। हम लोगोंमेंसे हरएकको अलग-अलग कमरा दे दिया गया। दम्पतियोंके लिए अलग कमरेका प्रबन्ध हो गया। यद्यपि होटलका प्रबन्ध बड़ा ही सुन्दर था, परन्तु एक बात होटलमें पहुंचनेके साथ ही मालूम हो गयी कि यहांके होटलवाले वियनावालोंकी तरह चुस्त और चालाक नहीं थे। कमरे हम लोगोंके निहायत अच्छे और खूब सजे-सजाये थे। भोजनका भी प्रबन्ध सराहने योग्य था। मेरे सम्बन्धमें होटलवालोंको यह मालूम नहीं था कि मैं बिलकुल शाकाहारी हूं। इसलिए उस रातमें उन्हें मेरे लिए प्रबन्ध करनेमें थोड़ा विलम्ब हुआ। यह बात वियनामें नहीं थी। वियनामें आप किसी भी होटल या भोजनालयमें चले जायं, तुरत निरामिष भोजन मिल जाता है। यदि—मेरे जैसे लोग यूरोपमें कहीं भी जायं, तो उनको पहुंचनेके साथ ही होटलवालेको निरामिष भोजनके लिए सूचना दे देनी चाहिए। प्रायः यूरोपमें ऐसा होता है कि मांस और मछलीके टुकड़ोंको निकालकर,

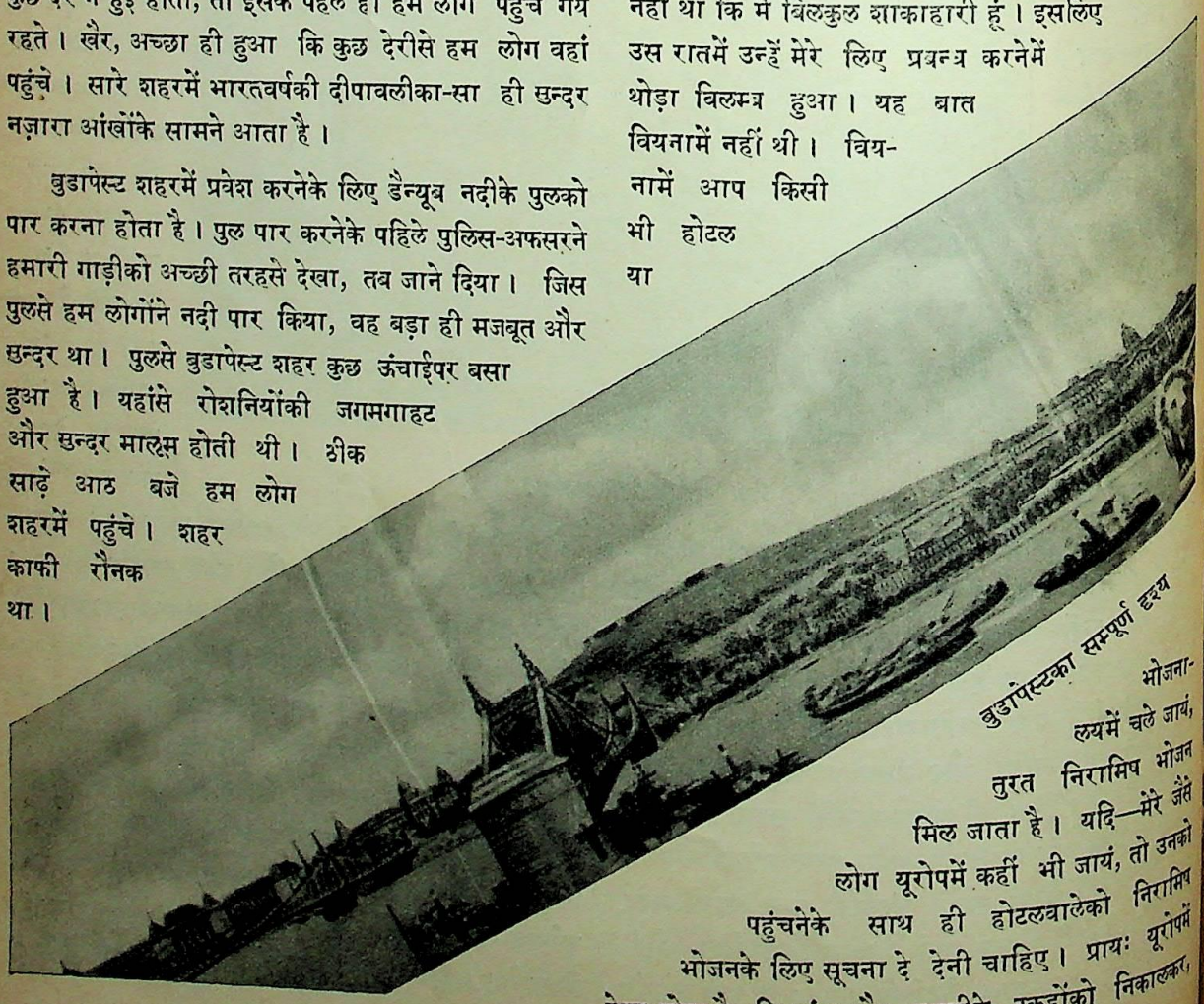

बुडापेस्टका सम्पूर्ण दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसका शोरवा तथा सब्जीके टुकड़ोंको लाकर आपके सामने रख देंगे। इस बातका ख्याल रखना चाहिए। अण्डेकी गणना भी यूरोपमें निरामिष भोजनमें ही होती है। इसकी भी सूचना खानेके पहिले ही दे देना उचित है।

भोजनके पश्चात् हमारी कम्पनी-का आदमी हमें शहर दिखलाने ले गया। हम लोगोंको ट्राम-गाड़ीसे जा-ना था।

(बुडाकी ओरसे)

यहां ट्राम-गाड़ियोंमें प्रायः टिकट खरीदना नहीं पड़ता। इनमें ऐसे बक्स बने रहते हैं जिनमें पैसा डाल देनेसे ही टिकट निकल आता है। यहांकी ट्राम-गाड़ी वियनासे कुछ अच्छी जान पड़ी। हम लोग उस रातमें एक काफे-घर (Cafe House) गये, जहां (Egyptian Band) बड़ी ही मधुर ध्वनिसे बज रहा था। यह बैण्ड बुडापेस्टमें बहुत विख्यात समझा जाता है। यूरोपके काफे घरों (Cafe Houses) में बैठनेका मतलब है—कुछ खाना-पीना। एक प्याला चाय भी खरीद लेनेपर आप जितनी देर चाहें, उस घरमें बैठ सकते हैं। काफे घरोंमें अखबार पढ़नेकी बड़ी सुविधाएं होती हैं। प्रायः सभी देशके अखबार आते हैं। यही कारण है कि प्रायः सभी श्रेणीके आदमियोंकी दिन-रात काफे घरोंमें भीड़ रहती है। इन घरोंमें बीच-बीचमें नाच गान होते और बाजे भी बजते रहते हैं। जिस काफे घरमें हम लोग गये थे, वह बड़ा ही सुन्दर और भव्य था। इसकी तुलना भारतवर्षके अच्छे-अच्छे भोजनालयोंसे भी नहीं हो सकती है। कलकत्तेके Firpo भोज-नालयसे यह बीस गुना बड़ा और भव्य है। रोशनीकी जगमगाहटसे आंखें चकाचौंध हो रही थीं। यहांके बाजे बजानेवाले बड़े ही निपुण थे। बाजेकी सुरीली तानसे सभी मस्त हो रहे थे। इस काफे घरसे हम लोग १२ बजे एक दूसरी जगह, जिसको यूरोपमें 'काबरे' कहते हैं, गये। काबरे घरमें जानेके लिए टिकट खरीदना होता है। यहां हम लोगोंको ३) तीन रुपये फी आदमीको टिकटके लिए देना पड़ा। भीतर जानेपर हम लोगोंने क्या देखा कि एक खूब सजे-सजाये विशाल हालमें काफी लोग बैठे थे। बड़ी भीड़ थी। सङ्गीत, नृत्य और सुरापानकी उन्मादनामें सभी विभोर हो रहे थे। नाचका सिलसिला जोरोंसे जारी था। स्त्री-पुरुष निस्सङ्कोच भावसे नाच रहे थे। इस नाच-घरमें एक विचित्रता थी। जमीनपर लकड़ीकी एक गोलाकार चीज तख्तेकी बनी हुई थी। वह चीज बराबर बिजलीके जरिये नाचा करती थी और उसीपर सभी नाचते थे। इतनी ही विचित्रता नहीं थी—उस लकड़ीके गोलाकार तख्तेके बीचमें भी एक और गोलाकार चीज बनी थी। नाचके बीच-बीचमें वह गोलाकार तख्ता कभी ऊपर और कभी नीचे हो जाता था। ऐसा मालूम पड़ता था कि कुआं बन गया है। इस तख्तेके नीचे ऐसी सुरङ्ग बनी हुई थी, जिसके द्वारा उस कम्पनीके नाचनेवाले स्त्री-पुरुष ऊपर चले आते और वह गोलाकार तख्ता धीरे-धीरे ऊपर उठने लगता था। वह इतना ऊपर उठ जाता था कि कम्पनीके नाचनेवाले और सभी नाचनेवालोंसे कई फीट ऊपर हो जाते थे। फिर धीरे-धीरे वह तख्ता नीचे चला जाता था और कम्पनीवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गायब हो जाते थे। इसके बाद तख्ता बिलकुल बराबर हो जाता था। यह वैसा ही था मानों पृथ्वी फट गयी हो और भीतरसे कुछ स्त्री-पुरुष निकल आये हों तथा अपना अभिनय दिखाकर फिर पृथ्वीके अन्दर समा गये हों और पृथ्वी पुनः समतल हो गयी हो। ये सारी बातें बिजलीके जरिये हो रही थीं। इस नाच-घरमें स्त्री और पुरुष दोनों ही सङ्गीतमें तन्मय हो रहे थे। मद्यकी मस्तीमें सभी झूम रहे थे। हमारे साथके अमेरिकन स्त्री-पुरुषोंने भी नाचना शुरू किया। नाचके समय भाई-बहन तथा पिता-पुत्रीकी कुछ भी परवाह नहीं थी। जो आदमी जिस स्त्रीके साथ नाचना चाहता था, वह निस्सङ्कोच उसीको लेकर नाचता था। हम भारतीयोंकी दृष्टिमें इस प्रकारकी नृत्य-लीलाओंमें थोड़ी-बहुत अश्लीलता अवश्य प्रतीत होती थी। इस नाच-घरमें एक अपूर्व घटना घटी। नाचके बीचमें एक स्त्री स्टेजपर आयी। वह दूसरेके मनकी बात फौरन कह देती थी। इतना ही नहीं, किसी भी आदमीका जन्म-दिन, देश, नाम तथा और बातें बतला देनेमें उस स्त्रीको जरा भी देर नहीं लगती थी। हमारे सम्बन्धमें भी उसने फौरन बतला दिया कि तुम 'वियना' अपनी खोयी हुई आवाजकी दवा कराने आये थे और तुम बिहार-प्रान्तके रहनेवाले हो। सचमुच यह बड़े ही आश्चर्यकी बात थी। मालूम नहीं उसमें कौन-सा जादू, कौन-सी ऐसी अपूर्व शक्ति थी, जिसके द्वारा वह इस प्रकार सारी बातें कह देती थी। मैं तो हैरान रह गया। ईश्वर ही जाने। वह रात हम लोगोंके इन्हीं तमाशोंको देखते रहनेमें बीत गयी। साढ़े चार बजे टैक्सी द्वारा हम लोग अपने होटल पहुंचे। यहां टैक्सीका भाड़ा वियनासे कुछ सस्ता ही था।

दूसरे दिन हम लोगोंको शहर देखनेका अच्छी तरहसे मौका मिला। नौ बजे सुबह नाश्ता-पानी करके हम लोग शहर देखनेके लिए रवाना हो गये। शहर वियनासे कहीं पुराना मालूम पड़ता था। भव्य भवन और ऊंची-ऊंची अट्टालिकाओंकी संख्या वियनासे कुछ कम नहीं। कोई भी मकान पांच-महलेसे कम नहीं था। चन्द इमारतें वियनाकी इमारतोंसे कहीं बड़ी और सुन्दर जंचीं। वियना और यहांके मकानोंकी बनावटमें बहुत-कुछ अन्तर मालूम पड़ा। वियनाकी तरह ही यहांकी भी सड़कें काफी लम्बी, चौड़ी और साफ थीं। जगह-जगह छोटे-छोटे पार्क बने हुए हैं। शहरमें काफी चहल-पहल थी। दूकानें यहां भी बड़ी-बड़ी हैं। हमारी कम्पनीका आदमी रास्तेकी नामी-नामी चीजोंको दिखलाता और परिचय देता जाता था। ११ बजे हम लोग डैन्यूब नदीके तटपर, उसपार 'पेस्ट' शहरमें जानेके लिए पहुंचे। हमने पहले ही बतला दिया है कि बुडा इस तटपर है और पेस्ट उस तटपर और बीचमें डैन्यूब नदी बहती है। इस पारसे उस पार जानेके लिए जो पुल बने हैं, उनमें भी विचि-

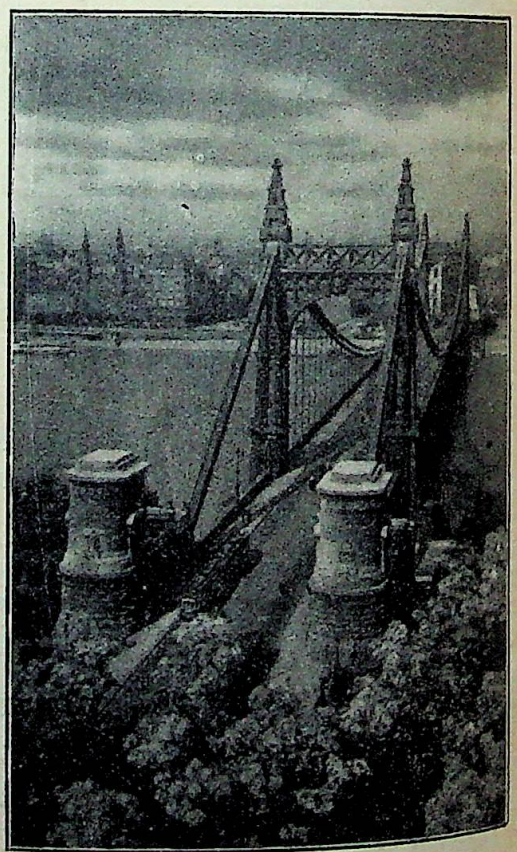

एलिजाबेथ ब्रिज ( पुल )

त्रता है। इन लम्बे-चौड़े पुलोंके बीचमें कहीं भी पाया नहीं है। बिना किसी सहारेके ये पुल खड़े हैं। यह पुल यूरोपके इञ्जिनियरोंके दिमागके खासे नमूने हैं। इनमें सबसे मशहूर एलिजाबेथ पुल (Elizabeth Bridge) है। यह पुल सन् १९०२ ई० में बनकर तैयार हुआ था। यह सब पुलोंसे सुन्दर और मजबूत है। यह बुडापेस्टकी नामी चीजोंमें गिना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि ऐसे पुल संसारमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नानागार

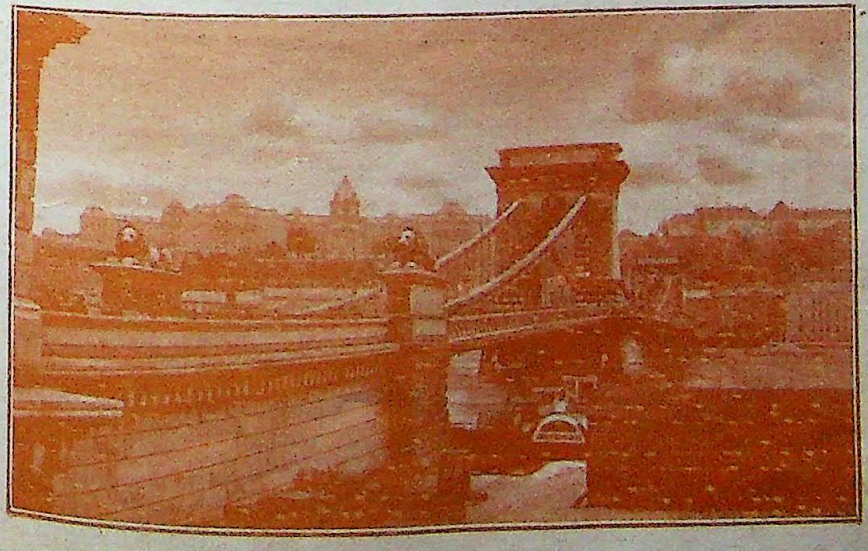

चेन ब्रिज (पुल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



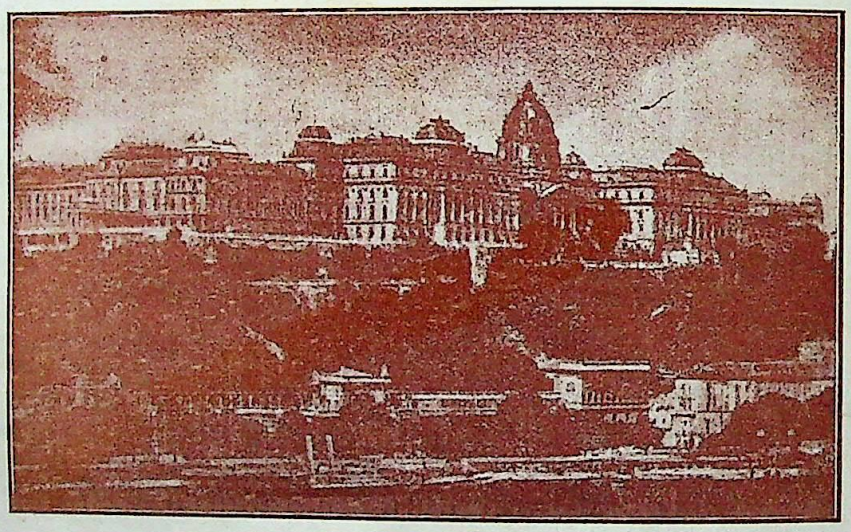

कला

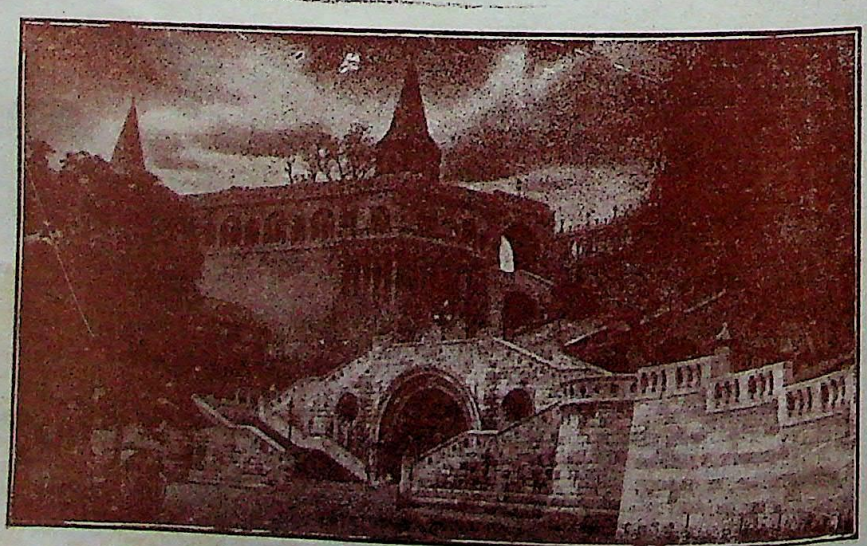

बुडापेस्टका एक दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इने-गिने ही हैं। इस पुलसे होते हुए हम लोग उस पार पहुंचे। शहरका यह हिस्सा एक पहाड़ीपर बसा है। इसी पहाड़ीपर राजप्रासाद, गिर्जाघर और अनेक देखने योग्य चीजें हैं। यहीं संसारके नामी स्नानालय ( Baths ) हैं। बुडापेस्टके सम्बन्धमें कहा जाता है कि—"Budapest is known throughout the world for the unrivalled beauty of its situation as the queen of Danube and for its abundant and varied

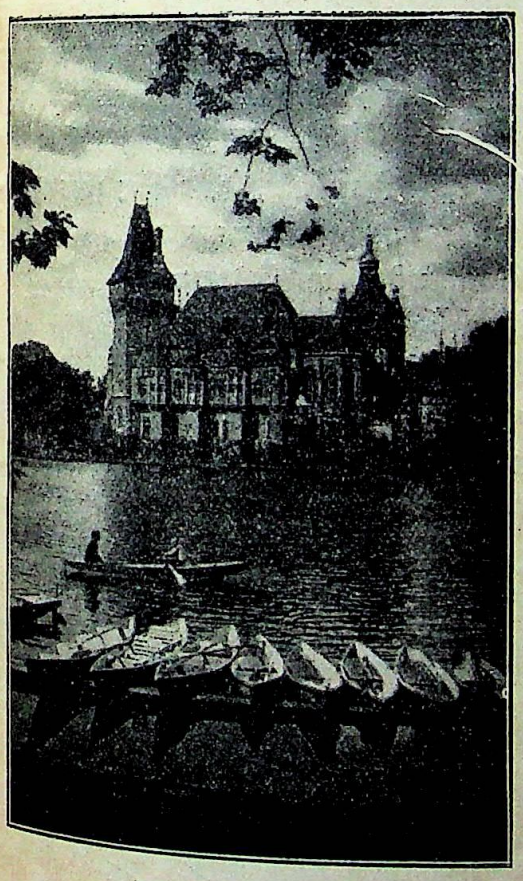

पुराना किला

healing springs as the city of Baths." बुडापेस्टके इन स्नानालयोंमें नहानेसे अनेक रोगोंके रोगी बिना औषधि-के अच्छे हो जाते हैं। खास कर गठियेकी बीमारीके लिए दावेके साथ कहा जा सकता है कि यहांका Thermal Bath एक अपूर्व औषधि है। अंग्रेजीमें एक कहावत है:—"The abundance of hot medicinal springs makes Budapest the special place for treatment of rheumatism. It is often called Mecca for rheumatic sufferers.

स्नान-गृहोंकी सफाईके सम्बन्धमें कुछ कहना वैसा ही है जैसा सूर्यको दीपक दिखलाना। इन स्नानालयोंके अहातेके भीतर ही वर्तमान समयके आरामके सारे साधन मौजूद हैं।

निम्नलिखित स्नान-गृह (Baths) सभी बीमारियोंके लिए बड़े ही लाभदायक हैं और संसार-भरके अनेक रोगी यहां आकर प्रतिदिन स्नान करते हैं तथा चङ्गे होकर चले जाते हैं। Gelbert Baths, Lukacs Bath, Margaret Island Bath, Emeric Bath, Hungaria wells, Rudas Bath, Elizabeth salt Bath. इनमें सबसे मशहूर Gelbert Bath है। इन स्नान-गृहोंमें नहानेके लिए कुछ पैसे भी लगते हैं। ये सभी म्युनिसिपैलिटीके अधीन हैं।

बुडापेस्टके सम्बन्धमें कहा जाता है कि Budapest is probably the greatest spa and most powerful health resort in the world. यह वास्तवमें अक्षरशः सत्य है। हम लोग कई स्नानालयोंको देखते हुए राजप्रासाद-के अहातेमें पहुंचे। यह राजप्रासाद बड़ा ही सुन्दर बना है और कुछ अंशोंमें वियनाके राजप्रासादसे भी भव्य है। सबसे पहले यहांका राजप्रासाद रोमन लोगोंके राज्यकालमें बना था, लेकिन उनके राज्यकालके अन्त होनेपर वह भी सदाके लिए विलीन हो गया। उसके बाद राजा बेला (King Bela) ने उसी स्थानपर पुनः राजप्रासाद बनवाया, परन्तु अभाग्य-वश तुर्कों (Turks) ने इसको भी बर्बाद कर दिया। अभी भी उसके कुछ हिस्से मौजूद हैं। आजकलका मौजूदा राज-प्रासाद रानी मेरिया थेरिसा (Maria Theresa) का बनवाया हुआ है। इसके भीतरी हिस्सेको यात्री देख भी सकता है। यह साढ़े नव बजे सुबहसे तीन बजे दिन तक खुला रहता है।

साढ़े बारह बजे दिनमें जब हम लोग होटलको लौट रहे थे, तो एक बड़ा ही रोमाञ्चकारी तथा हृदयग्राही दृश्य आंखोंके सामने आ गया। हम भारतवासियोंके लिए यह एक असा-धारण घटना थी। पाठकोंको मालूम होगा कि गत महायुद्ध-के पहले आस्ट्रिया और हङ्गरी एक संयुक्त राज्य था और इस राज्यकी राजधानी वियना नगर ही थी। लड़ाई समाप्त होनेके बाद आस्ट्रिया और हङ्गरी अलग-अलग कर दिये गये।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इनको अलग कर देनेका एकमात्र राजनीतिक उद्देश्य यही था कि फिर कभी भविष्यमें इंगलैण्डको किसी तरहकी लड़ाई-का भय न रहे। इतना ही नहीं, जो हङ्गरी सन् १८९६ ई० से १९१८ ई० तक एक बहुत बड़ा राज्य था, जिसका क्षेत्रफल ३२९,४११ किलोमिटर था और जिसकी जन-संख्या २०८८६४८७ थी, उसी हङ्गरीको महायुद्धके बाद कई टुकड़ोंमें विभक्त कर दिया गया। महायुद्धके बाद एक सन्धि हुई थी। वह Treaty of Trianon के नामसे प्रसिद्ध है। इस सन्धिसे हङ्गरीके बहुत-कुछ हिस्से दूसरे देशोंको दे दिये गये। कुछ हिस्से आस्ट्रियाको मिले, कुछ रूमानियाको, कुछ जेकोस्लोवेकिया और कुछ जुगोस्लेवियाको। ऐसा करनेसे हङ्गरी अब एक छोटा-सा राज्य रह गया है। अब इसका क्षेत्र-फल ९३०१० किलोमिटर और जनसंख्या ७९८७२०४ ही रह गयी है। यानी क्षेत्रफलमें ७१·४ प्रति सैकड़े और जनसंख्यामें ६१·८ प्रति सैकड़ेकी हानि हुई है। इस बातका दुःख हङ्गरीके बच्चे-बच्चेके हृदयमें जमा हुआ है। तीरकी तरह उनके हृदयमें यह बात चुभ रही है। उस दिन रविवार था। एक राष्ट्रीय झण्डेके नीचे अपार जन-समूह खड़ा था। वह राष्ट्रीय झण्डा गिरा हुआ था। हम लोग झण्डेके पास ही अपनी मोटरमें बैठकर इस मर्मस्पर्शी और पवित्र दृश्यको देख रहे थे। थोड़ी देर बाद एक झुण्ड स्काउटोंका बाजेके साथ वहां आया। झण्डेके समीप पहुंचनेपर बाजेका बजना बन्द हो गया। सभी चुप हो गये। शान्ति विराजने लगी। उन स्काउटोंमेंसे दो-दो बच्चे झण्डेके चबूतरेपर जाते थे। किस लिए? क्या करते थे? भार-तीयो सुनो!

वे वहां पहुंचकर यही प्रतिज्ञा करते थे कि जबतक हङ्गरी दूसरे देशोंसे Trianon की सन्धि द्वारा खोयी हुई अपनी जगहोंको वापस नहीं ले लेगा, तब तक यह जीवन-धन-प्यारा झण्डा कभी नहीं फहराया जायेगा। जब तक एक भी बच्चा हङ्गरीमें जीवित रहेगा, तब तक उन प्यारी जगहोंको वापस लेनेकी जी-जानसे कोशिश करता रहेगा। जब तक एक भी हङ्गरीके बच्चेके शरीरमें एक भी बूंद रक्त प्रवाहित होता रहेगा, वह अवश्य ही उन जगहोंको दखल कर लेगा; अन्यथा मातृभूमिकी पुण्य बलिवेदीपर हंसते-हंसते अपने जीवनको अर्पण कर देगा। सभी यही शपथ लेते थे। यही प्रण था, यही भीषण प्रतिज्ञा थी। हङ्गरी भारतवर्षके छोटे-से-छोटे प्रान्तके आगे एक छोटा-सा राज्य है। परन्तु वहांके बच्चे-बच्चेके हृदयमें आत्मगौरव, स्वदेशाभिमान, देशके लिए जीने और मरनेकी अभिलाषाकी आग धधकती है। कितनी बड़ी प्रतिज्ञा है! कई राज्योंसे मोर्चे लेनेकी बात है। इस दृश्यको देख कर हृदयपर बड़ा ही गहरा

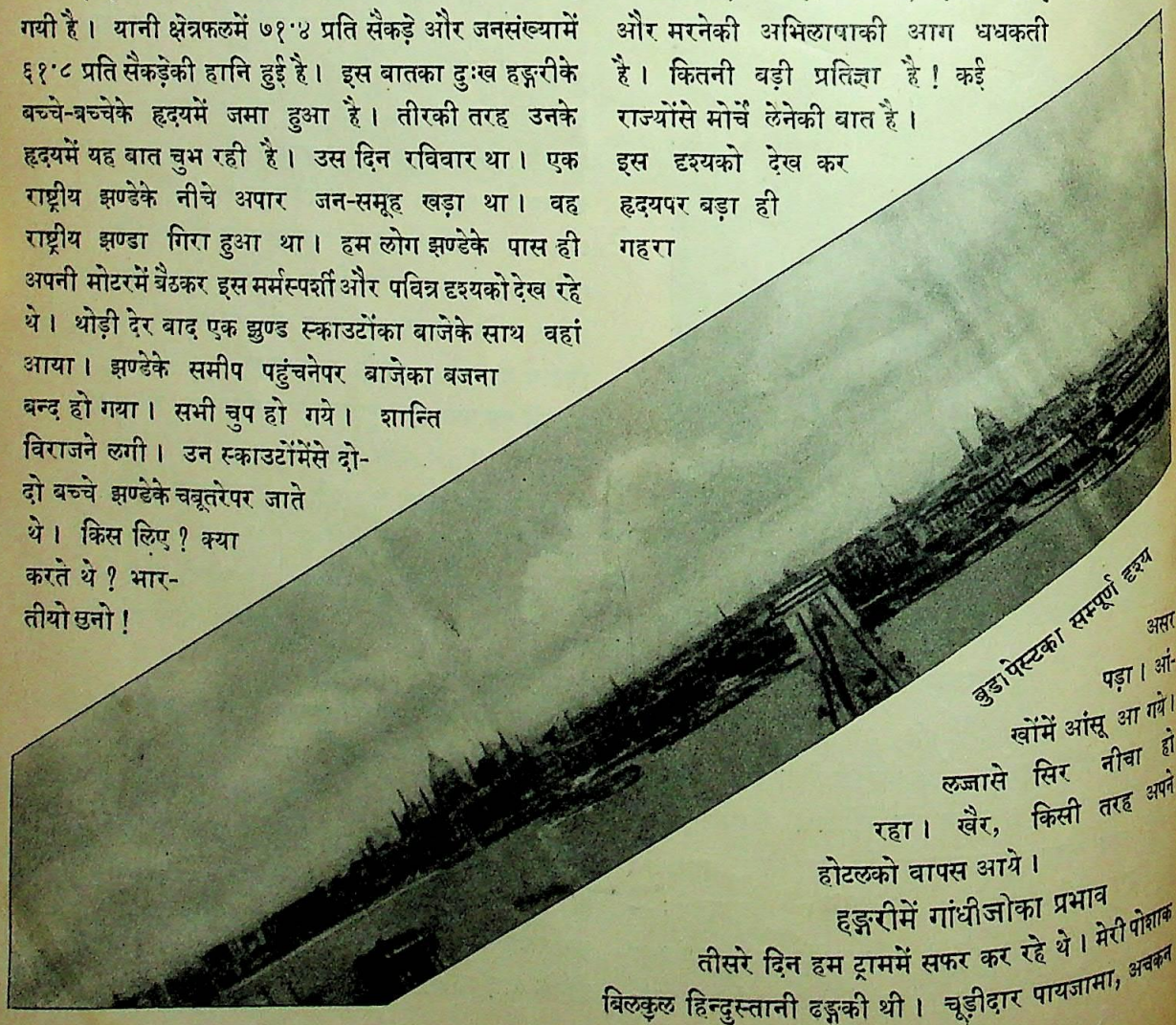

बुडापेस्टका सम्पूर्ण दृश्य

असर पड़ा। आं-खोंमें आंसू आ गये। लज्जासे सिर नीचा हो रहा। खैर, किसी तरह अपने होटलको वापस आये।

## हङ्गरीमें गांधीजीका प्रभाव

तीसरे दिन हम ट्राममें सफर कर रहे थे। मेरी पोशाक बिलकुल हिन्दुस्तानी ढङ्गकी थी। चूड़ीदार पायजामा, अचकन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



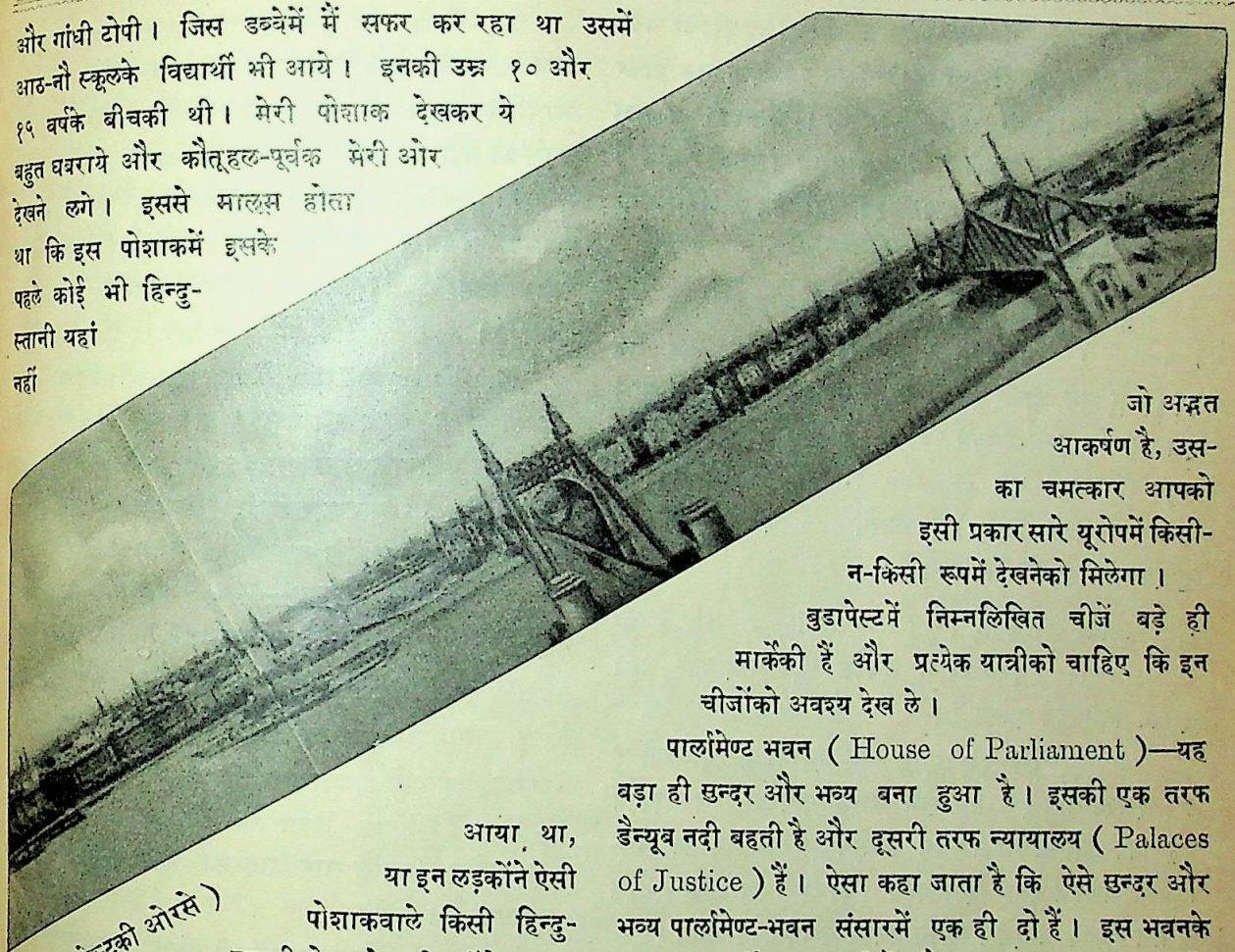

(पेस्टकी ओरसे)

और गांधी टोपी। जिस डब्बेमें मैं सफर कर रहा था उसमें आठ-नौ स्कूलके विद्यार्थी भी आये। इनकी उम्र १० और १९ वर्षके बीचकी थी। मेरी पोशाक देखकर ये बहुत घबराये और कौतूहल-पूर्वक मेरी ओर देखने लगे। इससे मालूम होता था कि इस पोशाकमें इसके पहले कोई भी हिन्दुस्तानी यहां नहीं आया था, या इन लड़कोंने ऐसी पोशाकवाले किसी हिन्दुस्तानीको पहले कभी नहीं देखा था। आखिर लड़कोंने मुझसे जर्मन भाषामें पूछ ही डाला कि किस देशके तुम रहनेवाले हो। मैंने कहा कि मैं हिन्दुस्तानी हूं ( Indian )। बड़े अचरजके साथ उन्होंने फिर सवाल किया कि क्या हिन्दुस्तान (India) भी कोई देश है। मुझे कुछ कम आश्चर्य नहीं हुआ। परन्तु एक बात सूझ गयी, क्योंकि वियनाके देहातोंमें भी ऐसे प्रश्न मुझसे किये जाते थे। मैंने झट उत्तर दिया कि मैं गांधीके देशका रहनेवाला हूं। अब उनके समझनेमें देर नहीं लगी। वे सभी मेरी ओर बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखने लगे और कहने लगे कि क्या सचमुच तुम गांधीके देशके रहनेवाले हो। फिर तो उन लोगोंने गांधीके सम्बन्धमें तरह-तरहके प्रश्न किये। उस दिन मुझे मालूम हो गया कि विदेशमें भारतवर्षको भले ही सभी न जानते हों, परन्तु गान्धीका नाम बच्चा-बच्चा जानता है और उन्हें आदरकी दृष्टिसे देखता है। गान्धीके नाममें जो जादू है, जो अद्भुत आकर्षण है, उसका चमत्कार आपको इसी प्रकार सारे यूरोपमें किसी-न-किसी रूपमें देखनेको मिलेगा।

बुडापेस्टमें निम्नलिखित चीजें बड़े ही मार्केकी हैं और प्रत्येक यात्रीको चाहिए कि इन चीजोंको अवश्य देख ले।

पार्लामेण्ट भवन ( House of Parliament )—यह बड़ा ही सुन्दर और भव्य बना हुआ है। इसकी एक तरफ डैन्यूब नदी बहती है और दूसरी तरफ न्यायालय ( Palaces of Justice ) हैं। ऐसा कहा जाता है कि ऐसे सुन्दर और भव्य पार्लामेण्ट-भवन संसारमें एक ही दो हैं। इस भवनके बाहर ९० मूर्तियां बनी हुई हैं और भवनके भीतर १६२ मूर्तियां हैं। यह भवन Emery Steindle द्वारा १८८३ ई० से शुरू होकर १९०२ ई० में बनकर तैयार हुआ था। इस भवनके भीतर House of Commons के सदस्योंके बैठनेके लिए ४८० और दर्शकोंके लिए ३६० जगहें हैं। House of Lords के सदस्योंके लिए ३०० और दर्शकोंके लिए ४१४ स्थान हैं। भवनका भीतरी हिस्सा सुन्दर और कलाकी दृष्टिसे बहुत ऊंचे दर्जेका है। चित्रकारी भी उत्कृष्ट है। दीवारोंपर बड़ा सुन्दर चित्राङ्कण है।

न्यायालय (The Supreme Court of justice)—यह भी एक मनोरम भवन है। इसके भीतरका हाल बड़ा ही सुन्दर और बहुत बड़ा है। दीवारोंपर अत्यन्त सुन्दर चित्रकारी की हुई है। इसकी सीढ़ियां बड़ी ही खूबसूरत बनी हैं।

सङ्गीत-परिषद् (National Academy of music) में बहुत ऊंचे दर्जेकी गान-विद्या सिखायी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नृत्यशाला ( Opera House )—यह हङ्गरीका सबसे बड़ा और सुन्दर थियेटर-घर है। यह सन् १८७९ से शुरू होकर १८८४ ई० में बनकर तैयार हुआ था। भीतरकी सजावट अद्भुत है। जिन्हें हङ्गरीकी भाषा समझमें न आती हो, उन्हें इस थियेटरमें जरूर जाना चाहिए। यहां अंग्रेजी भाषा मेंही सब-कुछ होता है।

हङ्गरी-विज्ञान-परिषद् ( Hungarian Academy of Science )—यह बड़ा ही विशाल भवन है। यह सन् १८६२ से शुरू होकर १८६९ ई० में बनकर तैयार हुआ था। इस संस्थाके पुस्तकालयमें २००००० पुस्तकें हैं। इसके अन्दर बहुत ही सुन्दर एक Goethe Room है। इस भवनमें अजायबघर (Museum) है, जिसमें ८०० चित्र और ६०००० मुद्रित और हस्तलिखित चित्र हैं।

गिर्जाघर ( Church of the order of St. Francis )—यह १६९० ई० में तुर्कोंके युद्धके बाद बना था। इसकी कला ऊंचे दर्जेकी है।

Coronation church—यह बड़ा ही प्रसिद्ध गिर्जाघर है। इसकी नींव १३ वीं सदीमें डाली गयी थी। जब तुर्कोंने हङ्गरीको जीत लिया, तब उन लोगोंने इस गिर्जाघरको मसजिदकी शकलमें बना दिया था। १४५ वर्ष तक यह तुर्कोंके अधीन रहा। बादमें फिर गिर्जाघरके रूपमें लाया गया।

Garrison Church—यह भी एक बहुत प्राचीन गिर्जाघर है।

The University Church—ऐतिहासिक दृष्टिसे यह गिर्जाघर बड़ा महत्त्व रखता है। हङ्गरीवाले आखिरकार तुर्कोंको हङ्गरीसे भगानेमें १६८८ ई० में समर्थ हुए और उसके फलस्वरूप हङ्गरीवालोंने इस गिर्जाघरको बनाया था। इसके फाटकपर बहुत ही मूल्यवान चित्रकारी है।

Aquincum—जमीनके भीतरसे रोमन लोगोंके समयका एक सुन्दर शहर निकला है। इससे रोमनोंके समयके रङ्गमञ्च, स्नानालय, मन्दिर और कितने ही लड़ाईके सामान निकले हैं। ये देखने लायक चीजें हैं। एक सुन्दर अजायबघर भी है।

चिड़ियाखाना—( Zoological garden )—यह बड़ा ही विख्यात है।

St. Margaret Island—यह टापू डैन्यूब नदीके बीच अवस्थित है। इसकी शोभा मनमोहिनी है। यहां आधुनिक सभ्यताके समस्त सुख-साधन मौजूद हैं। यहां स्नानका बड़ा ही अच्छा प्रबन्ध है। इसी जगह संसार-विख्यात (Sulphuric Spring) गन्धककका चश्मा है, जहां हजारों नर-नारी इलाजके लिए आते हैं। रात्रिमें जब रोशनी होती है, तब गजबका नजारा आंखोंके सामने आ जाता है।

The Entry of the Hungarians—इसका मूल्य कलाकी दृष्टिसे बहुत ही ज्यादा है। सन् ८९६ ई० में जब पहले-पहल एशियाके लोग हङ्गरीमें आये, उस समयका दृश्य इसमें चित्रित है। पुस्तकालयोंकी संख्या बहुत अधिक है। कुछ नामी पुस्तकालयोंके नाम ये हैं:—

City Library, Library of the Academy of Sciences, Library of the Elizabeth, Popular Academy. Library of the Museum of Applied Arts, National museum Library, Library of Technological museum, Pedagogic Library.

The Fishers Rampart—इसको जरूर ही देख लेना चाहिए। यहांसे सारे शहरका दृश्य आंखोंके सामने आ जाता है।

यहांकी मूर्तियोंके सम्बन्धमें भी हमारा कुछ कहना अप्रासङ्गिक न होगा। कुछ लोगोंका कहना है कि अच्छी मूर्तियोंकी इतनी अधिक संख्या संसारमें शायद दो-ही-चार जगह होगी। मेरा अपना ख्याल है कि मैंने यूरोपमें जहां तक भ्रमण किया है, सिवाय रोमके और कहीं भी इतनी अच्छी मूर्तियां देखनेमें नहीं आयीं। ऐतिहासिक दृष्टिसे भी ये बहुत महत्त्व रखती हैं। मुख्य मूर्तियां ये हैं:—Statue of Anonymus, Army Jano, Monument of Francis Deak, monument of St. Gellert, Palatinus Joseph, The Szechenyi monument और The Kossuth Lajos monument ( इसी Kossuth के समयमें War of Liberty स्वतन्त्रताका युद्ध हुआ था। इस वीरको स्वाधीनताका योद्धा ( Hero of Liberty ) कहा जाता है। आज भी इसकी पूजा देवताकी तरह सारे हङ्गरीमें होती है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



Equestrian Statue of Caunt Julius Andrassy—इस मूर्तिके सम्बन्धमें पाठकोंको अवश्य ही कुछ जान लेना चाहिए। इस वीरका जन्म १८२३ ई० में हुआ था। यह जर्मनीके प्रधान मन्त्री बिस्मार्कका बड़ा ही घनिष्ट मित्र था। हङ्गरीकी आजादीकी लड़ाईमें यह भी एक सेनानायक था। क्रान्ति होनेपर इसको फांसीकी सजा हुई थी और इस वीरको इंगलैण्ड भागना पड़ा था। इसके फलस्वरूप इसकी एक मूर्ति बनायी गयी और उसीको फांसीपर लटकाया गया। सौभाग्यवश सन् १८५७ में सम्राट् फ्रान्सिस जाजफने इसकी सजाको माफ कर दिया। उसके थोड़े ही दिन बाद हङ्गरीवाले अहिंसात्मक संग्राम करके विजयी हुए और आस्ट्रियाके राजाको सन्धि करनी पड़ी। फिर क्या था, इस वीरको अपनी मातृभूमिमें लौटना पड़ा और प्रधान मन्त्रीके पदको स्वीकार करना पड़ा।

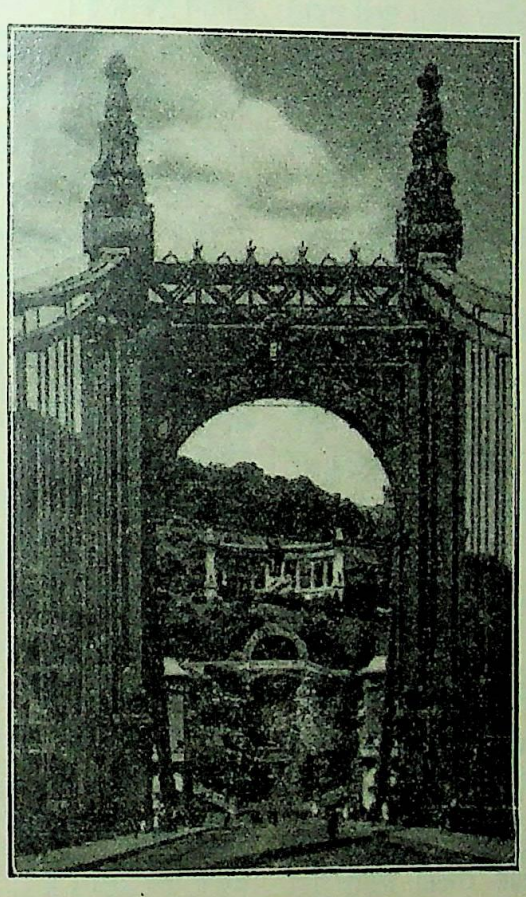

नगरका प्रवेश-द्वार

Cenotaph—हङ्गरीके पांच लाख वीरोंकी स्मृतिमें यह स्मारक बनाया गया है। ये वीर गत महायुद्धमें काम आये थे।

ये तो बुडापेस्टमें देखनेकी चीजें हुईं। परन्तु बुडापेस्ट मेडिकल विद्यार्थियोंके लिए कुछ कम महत्त्वकी जगह नहीं है। यह निःसङ्कोच कहा जा सकता है कि वियनासे भी यहां विद्यार्थियोंको विशेष सुविधायें हैं। हां, एक बात है कि वियनाके मुकाबिले यहां उतने बड़े-बड़े डाक्टर नहीं हैं। मुझे इस विषयकी जानकारी बहुत थोड़ी है। लेकिन जैसा कि मैंने अपने डाक्टर मित्रोंसे सुना था, उसीके आधारपर ऐसा लिखनेका साहस किया है। बुडापेस्टमें भी कई विश्वविख्यात सर्जन हैं। यह बात तो आम तौरपर कही जाती है कि विलायतसे कहीं अच्छे सर्जन यहां हैं। यहां उच्च कक्षाके छात्रोंके लिए सबसे बड़ी सुविधा यह मिलती है कि वे बड़े-बड़े आपरेशन यहांके बड़े-बड़े सर्जनोंकी देखरेखमें कर सकते हैं। ऐसी सुविधा न तो वियना हीमें है और न इंगलैण्ड हीमें। इस ख्यालसे भी डाक्टरी पढ़नेवाले छात्रोंको वहां जरूर जाना चाहिए।

मैंने अभी तक यूरोपमें जो-कुछ देखा था और बुडापेस्टमें जो-कुछ देखा, उससे यूरोपके प्रति मेरी श्रद्धा और भी बढ़ गयी। क्या उस दृश्यको कभी कोई भूल सकता है, जहां छोटे-छोटे बच्चे भी देशप्रेम एवं स्वाभिमानकी भावनासे उद्दीप्त होकर अपनी मातृभूमिको गौरवमण्डित करनेके लिए भीष्म-प्रतिज्ञा करते हैं? मेरा निजका अनुभव तो यही है और इसके लिए पाठक हमें क्षमा करेंगे कि हम भारतवासी अधिकांशमें यूरोपके अवगुणोंको लेकर ही स्वदेश लौटते हैं। उनकी ज्वलन्त देशभक्ति, कर्मोद्यम, कर्तव्यपरायणता आदि सद्गुणोंको अपनानेकी हम बहुत कम चेष्टा करते हैं। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि एक ओर यदि यूरोपवालोंका जीवन साधारणतया आमोद-प्रमोद एवं विलासिताके सुख-साधनोंमें संलग्न रहता है, तो दूसरी ओर उनमें स्वदेशाभिमान, स्वतन्त्रता और निज कर्तव्यज्ञानकी भावना भी इतनी प्रबल होती है कि मातृभूमिके सङ्कटकालमें अथवा उसके गौरव एवं सम्मान-रक्षाका प्रश्न उपस्थित होनेपर वहांका एक छोटा बच्चा भी अपने जीवनको उत्सर्ग करनेमें जरा भी नहीं हिचकिचाता। यही यूरोपकी सबसे बड़ी विशेषता है। तभी तो आज यूरोपमें आस्ट्रिया और हङ्गरी जैसे छोटे-छोटे राज्य भी स्वावलम्बी हैं और अपनी रक्षा आप करनेमें समर्थ हैं। कोई जाति केवल भोग-विलासमें निमज्जित रहकर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बहुत दिनों तक कायम नहीं रख सकती। अवगुणोंके बलपर किसी जातिका उत्थान नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यूरोपवालोंमें यदि अवगुण हैं, तो उनसे कहीं बढ़कर उनमें अच्छे गुण हैं और अपने इन सद्गुणोंकी बदौलत ही वे आज महिमा-मण्डित हो रहे हैं। यही शिक्षा है, जो हम यूरोप-वालोंसे ग्रहण कर सकते हैं।

---

# विश्वकी वर्तमान जटिल समस्यायें

श्री रामनाथ 'सुमन'

आज संसारके सभी राष्ट्र अपने ही बढ़े हुए बोझसे कराह रहे हैं। किसी जगह शान्ति नहीं; कहींकी जनता सुखी नहीं; सर्वत्र एक अशान्ति, एक हलचल है। नये-नये प्रयोग होते हैं, नयी-नयी समस्यायें सामने उठ खड़ी होती हैं। संसार-की हालत उस जीर्ण रोगीके समान हो रही है जो निराशाके कारण जल्दी-जल्दी अपने डाक्टरोंको बदलता है और अपने-को विचार करनेका अवसर दिये बिना ही, जो कोई नया प्रयोग उसे बता दिया जाता है, उसे भी कर देखनेको दौड़ता है। और अब तो स्थिति ऐसी हो गयी है कि निराश होकर रोगी आत्म-हत्याकी तैयारी कर रहा है।

एक ओर साम्यवादके प्रयोग हो रहे हैं और दूसरी ओर 'फैसिज्म' का जोर बढ़ रहा है। एक ही समयमें, एक ही रोगके लिए ये दो बिलकुल भिन्न प्रयोग किये जा रहे हैं। और संसारके लिए यह एक बड़े खतरेकी बात है। एक अपनी सफलताके लिए दूसरेको नेस्तनाबूद करके छोड़ेगा।

### प्रजातन्त्रका भविष्य--

विगत यूरोपीय महायुद्धने समाजके सामने जो नयी-नयी समस्यायें खड़ी कर दीं, उसीकी विरासत सूद-ब्याजके साथ हम भोग रहे हैं। विश्वके अर्थ-सङ्कटने प्रत्येक राष्ट्रको पागल कर दिया है और अपने-अपने लिए सोचनेकी, और मौका पाते ही दूसरेको सङ्कटमें डालकर हड़प लेनेकी प्रवृत्ति पैदा कर दी है। आज जब हम १९१८ से लेकर १९३४ तकके १६ वर्षके सामाजिक परिवर्तनों और महत्त्वपूर्ण घटनाओंपर सूक्ष्म और गम्भीर विचार करते हैं, तो इस निष्कर्षपर पहुंच-नेमें कोई कठिनाई नहीं होती कि प्रजातन्त्रका भविष्य खतरे-में है। इटली, टर्की, पोलैण्ड, रूस, आस्ट्रिया, जर्मनी इत्यादि अनेक देशोंमें प्रजातन्त्रका अन्त हो चुका है और संसारकी राजनीतिका मुख्य प्रवाह एकतन्त्रवाद (डिक्टेटरशिप) की ओर बह रहा है। इसके प्रकार और नाम भिन्न-भिन्न हैं, पर व्यवहारमें, साधारण जन-समूहके लिए, उसके प्रयोग और उपयोग एक-से हैं।

आज संसारके सामने जो समस्यायें हैं, वे प्रजातन्त्रके सिद्धान्तोंको चुनौती देती हैं और पूछती हैं कि जो भयानक गरीबी, बेकारी और अशान्ति आज मानव-समाजको त्रस्त कर रही है, इसका तुम्हारे पास क्या उत्तर है?

इस चुनौतीका, इस दुःखद परिस्थितिका कारण है। बात यह है कि प्रजातन्त्र समाजकी दो विचार-धाराओं-विकास और क्रान्ति—(एवोल्यूशन और रेवोल्यूशन) के बीच एक समझौता-सा उपस्थित करता है। यह समझौता शान्तिके कालमें तो चल सकता है, पर आजकी भयानक स्थितिमें, जब जीर्ण ('क्रानिक') रोगने तीक्ष्ण (एक्यूट) रूप धारण कर लिया है, चलता दिखाई नहीं देता। आज औसत दर्जेके मनुष्यके पास इतना समय नहीं और उसके दिमागकी यह स्थिति भी नहीं कि वह इस प्रश्नपर जरा ठहर-कर, शान्तिके साथ, सोचनेका मौका अपनेको दे। आज वह आकस्मिक प्रहार करना चाहता है; जिसमें सम्भव है रोगकी गति एकदम रुक जाय; सम्भव है उसका, रोगीका अन्त हो जाय। धीरे-धीरे जलानेवाली, तिल-तिल करके मरने और असहाय स्थितिको लम्बा करते जानेकी दुःखद कल्पना उसके लिए असह्य है।

### पारस्परिक विरोध—

प्रजातन्त्रको राजनीतिक विचारकोंने जो रूप दिया, उसीमें वर्तमान परिस्थितिका बीज भी छिपा था। प्रजातन्त्रने सर्वसाधारणको शासनके अधिकार तो दिये, पर अर्थशक्ति उनके हाथमें न आयी। प्रत्येक प्रजातन्त्रमें शासनका, राज-नीतिक शक्तिका निर्माण तो नागरिक अथवा जनताके सामान्य मताधिकारके ऊपर हुआ है; परन्तु आर्थिक शक्ति एक बहुत छोटे दलके हाथमें चली गयी है। इस प्रकार सारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शक्ति हाथमें होते हुए भी समाजका बहुमत, व्यवहारमें, अशक्त है।

इसपर एक प्रश्न किया जा सकता है और वह यह कि जब राजनीतिक शक्तिका स्रोत सर्वसाधारणके हाथमें है तब वे चाहें तो उस छोटे-से आर्थिक सुविधा-प्राप्त दलको कानूनके द्वारा इस रूपमें रख सकते हैं कि शासन-शक्तिका संतुलन ठीक बना रहे। सिद्धान्तकी दृष्टिसे बात ठीक है; प्रत्येक मतदाता यदि अपना मत उस विशेष-सुविधा-प्राप्त लघु समूहको न दे और ठीक दिशामें उसका प्रयोग करे, तो धनसत्ता-प्रधान दलको सीमाके अन्दर रखा जा सकता है। परन्तु पहली बात तो यह कि मतदातापर प्रभाव डालने, उसके मनोभावोंको अपने पक्षमें मोड़नेके जितने साधन हैं, बहुत करके उन सबपर उस विशेष-सुविधा-प्राप्त लघु वर्गका अधिकार है। साधारण मतदाता राजनीतिकी जटिल समस्याओंको समझ नहीं सकता; उसके सामने अपनी जीविका, अपने कुटुम्ब इत्यादिकी छोटी-सी जो दुनिया है उसीको लेकर वह अपनी जिन्दगी काट देता है। फिर राजनीतिकी समस्यायें दो-दो चारकी तरह सीधी नहीं होतीं और दोनों पक्षों द्वारा ऐसे परस्पर-विरोधी रूपोंमें रखी जाती हैं कि वे और भी जटिल हो जाती हैं और साधारण मतदाता उन झगड़ोंसे बचना चाहता है।

असाधारण स्थितिमें—

दूसरी बात यह है कि यदि कभी आर्थिक असमानताकी गति रोकनेकी थोड़ी-बहुत चेष्टा होती भी है, तो सामान्य व्यापारिक वैभवके युगमें तो उसके द्वारा निर्धन जनताको कुछ आय हो जाती है; परन्तु असामान्य अर्थ-सङ्कट आ पड़नेपर समाज-बन्धनकी कड़ियां टूट जाती हैं। जैसे अनेक देशोंमें व्यापारकी अच्छी अवस्थाके समय धनियों, मिल-मालिकों और कारखानेदारोंपर कुछ विशेष टैक्स लगाकर रुपया वसूल किया जाता है और इसके द्वारा बेरोजगारों तथा श्रमिक जनताको कतिपय सुविधायें देनेकी योजना की जाती है। परन्तु अर्थ-सङ्कटके कालमें, जब प्रत्येक देशके पूंजीपति, अपने कारखानोंको चलानेके लिए, सब प्रकारके उपाय काममें लाने लगते हैं तब प्रतियोगिताका प्रश्न खड़ा हो जाता है और पूंजीपति कहता है कि इस समय यदि ये टैक्स जारी रखे जायंगे तो राष्ट्रका सारा व्यवसाय चौपट हो जायगा; निर्यातके लिए सस्ती-से-सस्ती चीजें देना जरूरी है और यह तभी हो सकता है जब चीजपर लागत कम पड़े। इसलिए ऐसे अर्थ-सङ्कटके समय वह सहायता देनेकी जगह उलटे सरकारी कोषसे सहायता मांगता है। इधर गरीब जनता इस चक्रमें पिसकर दिन-दिन गरीब होती जाती है। क्षोभ और बेकारी बढ़ती है। हड़तालें होती हैं, विरोध किया जाता है; पर कुछ लाभ नहीं होता। सरकार और धनवाही समूह दोनों कहते हैं कि इस समय राष्ट्र श्रमिकोंको उन सुविधाओंके देनेका खर्च बर्दाश्त नहीं कर सकता। राष्ट्रीय उद्योग-धन्धोंकी रक्षा एवं विकासके लिए आवश्यक है कि श्रमिक इनका त्याग करें।'

यान्त्रिक सभ्यताका दोष—

कोई राष्ट्र हो, वर्तमान कालमें उद्योग-धन्धोंका जो रूप है उसे चलाने और जारी रखनेके लिए अपार पूंजीकी आवश्यकता पड़ती है। इसलिए बड़े-बड़े कल-कारखानोंकी, मशीनोंकी वृद्धिके साथ-साथ राष्ट्रका सारा व्यापार धनिक-समाजके हाथमें चला जाता है। वर्तमान मशीनरीका युग ही, असलमें, हमें केन्द्रात्मक सत्ताकी ओर ले जाता है। मशीनरी थोड़े-से लोगोंको काम दे सकती है और बहुत-से लोगोंको बेकार कर देती है; थोड़े-से लोगोंके द्वारा बहुत-से लोगोंके कार्यका फल प्राप्त करनेकी ओर उसकी जो प्रवृत्ति है उससे बेकारी बढ़ती है। दूसरी ओर पूंजी कुछ थोड़े-से लोगोंके हाथमें एकत्र होती जाती है। इसलिए वर्तमान समाज-रचनामें जो दोष आ गये हैं, वे पूंजीका उचित वितरण न होनेके कारण हैं और इसका मूल सभ्यताके यन्त्रीकरणमें है।

इस प्रकार प्रजातन्त्रके सब समर्थक यह मानकर चलते रहे हैं कि पूंजीवाद प्रजातन्त्रका एक मुख्य अङ्ग है और उसकी रक्षा होनी चाहिए; क्योंकि संसारके बाजारमें टिकनेके लिए हमारे उद्योग-धन्धोंको इसकी आवश्यकता है। इस युगमें पहली बार पूंजीवादी प्रजातन्त्रकी इस धारणाको समष्टिवादी प्रजातन्त्रके समर्थकोंने चुनौती दी है।

दूसरी ओर त्रस्त जनताकी मनोदशाका लाभ उठाकर जर्मनी और इटली (तथा और भी देशों) में प्रजातन्त्रके मूल सिद्धान्त सामान्य मताधिकारको तोड़कर एकतन्त्र शासनकी सृष्टि की गयी है। यह ठीक है कि हिटलर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मुसोलिनी इस शासन-विधिके समर्थनमें बड़ी श्रवण-सुखद दलीलें देते हैं, परन्तु ऊपरकी सारी सजावट और शृङ्गारको हटाकर देखें तो इटली और जर्मनीकी शासन-विधि आज क्या है? यह एक प्रकारकी पूंजीवादी एकसत्तात्मक सरकार (Capitalist Dictatorship) है। अपनी आर्थिक शक्तिको सुदृढ़ रखनेके लिए प्रजातन्त्रके सम्पूर्ण सिद्धान्तोंके उन्होंने टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं। किसीको स्वतन्त्रतापूर्वक बोलनेका, लिखनेका अधिकार नहीं। शासनके विरुद्ध कोई कड़ी टीका नहीं की जा सकती; कोई संस्था नहीं बनायी जा सकती। विरोधी दिशामें प्रगति और विकास करनेके सारे साधन जनताके हाथसे छीन लिये गये हैं।

इस प्रकार एक ओर साम्यवाद अथवा समष्टिवाद तथा दूसरी ओर पूंजीवादी एकसत्ता, दोनों प्रजातन्त्रको चुनौती दे रहे हैं।

### साम्राज्यवादका मूल—

परन्तु सच बात तो यह है कि न पहले और न दूसरे दलवालोंके पास कोई ऐसा साधन है जिससे इन समस्याओंका स्पष्ट और निश्चित हल हो सके। थोड़े समयके लिए इन समस्याओंकी गति रोकी जा सकती है; परन्तु कोई स्थायी इलाज, व्यवहारतः, सम्भव नहीं है। हमारी वर्तमान सभ्यता और हमारे वर्तमान समाजकी रचना ही ऐसे आधारोंपर है कि जब तक उसमें आमूल परिवर्तन न कर दिये जायं, कोई दवा स्थायी रूपसे कारगर नहीं हो सकती। आर्थिक विकासकी वर्तमान मर्यादाको कायम रखनेके लिए निर्यातको बड़े ऊंचे पैमानेपर रखनेकी आवश्यकता पड़ती है और निर्यातके सतत प्रवाहको कायम रखनेके लिए एक ओर देशमें बड़े-बड़े कल-कारखानोंको जन्म देना पड़ता है और दूसरी ओर दुनियाके बाजारोंपर अधिकार करनेकी कोशिश की जाती है। पूंजीपतियोंके लिए, उनकी अपनी समझसे, यह आवश्यक हो जाता है कि राष्ट्रकी शक्तिके सहारे उन बाजारोंपर, उन देशोंपर प्रभाव और अधिकार बढ़ाया जाय जिससे मालकी खपत हो सके। इससे स्वभावतः आर्थिक और फिर राजनीतिक साम्राज्यवादका जन्म होता है। इंगलैण्डका भारतपर, जापानका मञ्चूरियापर और अमेरिकाका दक्षिण अमेरिकन राष्ट्रोंपर जो अधिकार हम देखते हैं उसके मूलमें यही बात है।

यह मशीनोंके प्रयोगका फल है; क्योंकि इन विशालकाय यन्त्रोंको काम देनेके लिए बड़े-से-बड़े पैमानेपर उपजकी आवश्यकता पड़ती है अन्यथा लागत ज्यादा पड़नेसे एक ओर तो हम विदेशी बाजारोंमें टिक नहीं सकते और दूसरी ओर अपने देशमें जितने आदमियोंको हम काम देना चाहते हैं, नहीं दे सकते।

इस साम्राज्यवादके कारण, आगे, दो और समस्यायें पैदा होती हैं। एक तो विभिन्न प्रतियोगी साम्राज्यवादियोंके बीच सङ्घर्ष और दूसरी ओर आर्थिक राष्ट्रवादका जन्म, जो अपने देशके बाजारोंको अन्य देशोंके आक्रमणसे सुरक्षित रखना चाहता है। अपनी वस्तुओंको कम्पीटिशनसे बचानेके लिए वह दूसरे देशोंके मालपर अतिरिक्त कर लगाता है। इस प्रकार व्यापारकी मुक्त अन्तर्राष्ट्रीय गति रुक जाती है; नये-नये अर्थ-सङ्कट खड़े होते हैं; प्रतियोगी साम्राज्यवादी राष्ट्रोंके बीच मनोमालिन्य होता है; शस्त्रीकरणकी ओर प्रवृत्ति होती है तथा इन सब बातोंकी पूर्णाहुति युद्धके रूपमें होती है।

### बाजार और सेना—

उधर साम्राज्यवादके पोषणके लिए, बाजारोंपर अधिकारके लिए, प्रत्येक राष्ट्रके पास सेना-बलकी आवश्यकता पड़ती है। तब सैनिक शक्तिमें भी प्रतियोगिता आरम्भ होती है। राष्ट्रका दिमाग और राष्ट्रकी शक्ति, जो विधायक और राष्ट्रहित-वर्द्धक कामोंमें लगनी थी, उसका उपयोग इन संहारक कार्योंके लिए होने लगता है। इससे एक ओर तो टैक्स बढ़ता जाता है और दूसरी ओर सरकारी कोषमें जो आय होती है उसमेंसे जनताको कुछ नहीं मिलता; क्योंकि अधिकांश सैनिक तैयारियोंमें खर्च हो जाता है। विश्वके बाजारोंमें अपनी चीजोंको बेचनेकी तथा इस सैनिक प्रतियोगिताका फल ही वर्तमान विश्व-व्यापी आर्थिक सङ्कटके रूपमें प्रकट हुआ है। शासनकी रचना इतनी खर्चीली है और उसके परिणाम इतने भयावह और अनिश्चित हैं कि अधिकांश जनताको, इस झूठे राष्ट्र-हितके नामपर, सदा गरीबीमें रहना पड़ता है और पेट काट-काटकर सरकारको कायम रखनेको वह बाध्य होती है।

इस भयानक बोझसे प्रत्येक राष्ट्रकी कमर टूट रही है; क्योंकि पारस्परिक प्रतियोगिता तथा प्रत्येक राष्ट्रके अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देशी बाजारोंको सुरक्षित कर लेनेके कारण आय तो कम होती जाती है, किन्तु स्थितिकी भयानकताके कारण सेनाका बोझ बढ़ता ही जाता है। प्रत्येक देशकी जनता अशान्त और त्रस्त है। यह स्थिति बहुत दिनों तक चल नहीं सकती और यह निश्चित है कि आज या कल यह असन्तोष एक भयङ्कर ज्वालामुखीके रूपमें फूट पड़ेगा।

'फैसिज्म'की अपील—

विश्वकी इस अशान्त और असन्तुष्ट मनःस्थितिमें प्रजातन्त्र अपनी स्वाभाविक गतिसे चल नहीं सकता और उसका भविष्य बिलकुल खतरेमें है। किन्तु जहां एक ओर प्रजातन्त्रका भविष्य खतरेमें है वहां इसकी भी सम्भावना नहीं दिखाई पड़ती कि संसारके राष्ट्र साम्यवादको ग्रहण कर लेंगे। अधिक सम्भावना इस बातकी है कि अभी संसारमें फैसिज्मका या उससे ही मिलते-जुलते किसी 'इज्म'का ज़ोर बढ़ेगा, क्योंकि यह मध्यम श्रेणीको लेकर चलता है। एक ओर इसे पूंजीपतियोंकी सहायता प्राप्त है; दूसरी ओर अपनी प्रकृतिके कारण ही यह शासन-व्यवस्था कम खर्चीली बैठती है। तीसरी ओर यह आर्थिक राष्ट्रवादकी कट्टर समर्थक है; स्वदेशी बाजारोंको विदेशी आक्रमणोंसे बचाती है और चौथी बात यह कि जनताकी मनःस्थितिका फायदा उठाती है। जब संसारका प्रत्येक राष्ट्र सैनिक तैयारियोंमें व्यस्त है और जब औसत दर्जेकी बुद्धि रखनेवाला मनुष्य समझता है कि आज या कल युद्ध अवश्यम्भावी है तो उस युद्धमें कहीं हमारा राष्ट्र कमजोर न पड़ जाय, इस प्रेरणाके साथ 'फैसिज्म' जन-हृदयके सबसे कोमल स्थानपर आघात करता है। उसकी अपील राष्ट्रीय अभ्युदयकी, अपने देशको उठानेकी, संसारकी दौड़पर आगे रखनेकी अपील है और जनताके लिए, विश्वकी वर्तमान स्थितिमें, राष्ट्रीयतासे बढ़कर नशीली वस्तु दूसरी नहीं। जब हिटलर 'जर्मनी, हमारी पितृभूमि जर्मनी' के नारे लगाता है तब जर्मन खून, जो कुसमयमें अशक्त-सा पड़ गया था, जाग उठता है।

दुनिया शान्ति और स्थिरताकी प्यासी है—

पर इतनी ही बात नहीं है। संसारकी इस समय जो असाधारण स्थिति है और उसके बीच जन-समूहके जो अशान्त मनोभाव हैं उनकी यदि गम्भीरतापूर्वक समीक्षा की जाय, तो मालूम होगा कि इस समय जन-हृदयमें सबसे अधिक प्यास जिस वस्तुके लिए है, वह स्वतन्त्रता भी नहीं, समता भी नहीं, वह निश्चितता और शान्ति ('सिक्योरिटी'-से अभिप्राय है) है। आजसे बीस वर्ष पहले जन-प्रवाह समताका भूखा था। समताके नामपर ही यूरोपीय महायुद्ध हुआ; पर आजका मनुष्य देखता है कि युद्धसे संसारको जो मिला, वह न मिलता तभी अच्छा था; आज वह देखता है कि स्थिति और जटिल हो गयी है और हिंसाकी ज्वाला प्रत्येक राष्ट्रके हृदयमें धू-धू करके जल रही है। आज वह देखता है कि रोटीका सवाल बड़ा टेढ़ा हो गया है; जीवन-सङ्घर्ष बड़ा प्रबल हो उठा है। आज समाजमें जबर्दस्त बेकारी है। आज मजूर मजूरी करनेको तैयार है, पर मजूरी नहीं मिलती; आज किसान खेतीमें जान लड़ानेको तैयार है, पर उसका पेट नहीं भरता; आज मध्यम वर्ग नौकरियोंकी तलाशमें, व्यापारकी खोजमें त्रस्त होकर घूम रहा है, नौकरी नहीं मिलती; व्यापारके मार्ग बन्द हैं। समाजके किसी अङ्गमें, किसी क्षेत्रमें शान्ति नहीं, निश्चितता नहीं। तिसपर सिरपर युद्धकी सम्भावनाकी तलवार लटक रही है। साधारण आदमीका हृदय आज अशान्त है, मन बेचैन है। वह इस समय समताको लेकर क्या करेगा? इस समय तो वह शान्तिपूर्वक जीनेका अधिकार चाहता है; उसे काम मिले, उसे पेट-भर रोटी मिले, यह उसकी पहली आवश्यकता है। जब माताका बच्चा रोटीके लिए तड़प रहा हो और बेकार बाप वर्तमान स्थितिमें अपने कलेजेके टुकड़ेकी भूख मिटानेमें असमर्थ हो, तब समता और स्वतन्त्रताके खोखले शब्द उन बेचारोंके कानपर क्या असर डाल सकते हैं? जो उनको काम दे, रोटी दे, शान्ति और जीवन-क्रमकी निश्चितता प्रदान करे, वही उनका रक्षक है, वही उनका त्राता है। एकतन्त्रवाद, समताके सिद्धान्तोंको तोड़कर भी, राष्ट्रके जीवन-स्रोतको नयी दिशाओं, नये कार्योंमें लगानेका दावा करता है। वह राष्ट्रीय सङ्घटनाके कार्यमें हजारों बेकारोंको काम देता है; उन अगणित बच्चोंके पेटमें, जिनकी आंखोंमें निराशा और हसरत है और जिनके चेहरेपर अभावकी मलिन छाया है, दो चम्मच दूध डालता है। इसलिए भूखके इस क्षणिक हलसे जनता उसकी ओर आकर्षित होती है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समताका मन्द स्वर—

१९१४ का युद्ध जब आरम्भ हुआ था तब 'समता-समता'के नादसे विश्वका नभोमण्डल गूंजता था। तब संसार-की मनोदशा कुछ और थी। आज कटु अनुभवों और संसारकी असाधारण विकट स्थितिने उसे कुछ और रूप दे दिया है। सभी देशोंको, सभी शासन-पद्धतियोंको, परिस्थितिके कारण, विचार-धाराओं और सिद्धान्तोंमें समझौता करना पड़ा है। यहांतक कि रूसको भी मार्क्सके आर्थिक समताके सिद्धान्तसे, एक सीमा तक, हटना पड़ा है और वहां भी सोवियट कृषि तथा उद्योग-धन्धोंके अन्दर असमान पारिश्रमिक तथा प्रतिभा एवं श्रमके अनुकूल मजूरी देनेके सिद्धान्तको स्वीकार करना पड़ा है। आज जोर आर्थिक समानतापर उतना नहीं रह गया है जितना 'व्यवस्थित एवं सङ्गठित अर्थयोजना' ( Planned economic order ) पर है। अब वहां भी सवाल यह है कि सोवियट शासन-तन्त्र सब प्रकारसे परिपूर्ण किस तरहसे हो। अब राष्ट्रको शक्तिमान बनानेका सवाल मुख्य है; मानव-समाजकी रचनामें आमूल आर्थिक क्रान्ति करनेका मुख्य कार्यक्रम शिथिल पड़ गया है। एक विचारकके शब्दोंमें 'आज रूसका साम्यवाद, मार्क्सका मतानुगामी न होकर प्लैटोनिक ही अधिक होता जा रहा है।'* और 'यह वह जन-तन्त्र है जो शासक-वर्ग एवं शासक-दल तक सीमाबद्ध है।' ( It is a communal system that is limited to the governing class and the Party. ) वहां भी उत्साह-वर्द्धनके निमित्त उत्पादकोंको निजी सम्पत्ति ( प्राइ-वेट प्रापर्टी ) की सुविधा देनी पड़ी है। आज मजदूरका, किसानका पेट काटकर बड़े उद्योग-धन्धोंकी भूख मिटानेकी प्रवृत्ति वहां भी है।

दूसरी ओर अभागे भारतको छोड़कर प्रत्येक राष्ट्र अपने स्वर्ण-भण्डारको बढ़ानेकी चेष्टामें है। प्रत्येक राष्ट्र अपने देशी उद्योग-धन्धोंको इस प्रकार चलाना और परिपूर्ण कर लेना चाहता है कि युद्धके समय जनता, अवरोध ( 'ब्लाकेड' ) के कारण भूखों न मरे। प्रत्येक देश हवाई जहाजोंकी गति बढ़ानेमें सचेष्ट है और दौड़में आगे बढ़ जाना चाहता है। जापानमें, जर्मनीमें, फ्रान्समें, इटलीमें, अमेरिकामें अनेक राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओंका प्रयोग हो रहा है।

तो फिर इसका कारण क्या ?

क्यों इतनी अशान्ति है, क्यों इतनी हलचल है ? इसी-लिए कि प्रत्येक राष्ट्रकी जनता शान्ति चाहती है; कल किसी आपत्तिके आ पड़नेपर भी सुनिश्चितता चाहती है। युद्धकी जो तैयारियां की जा रही हैं वे भी यही कहकर कि यदि संसारमें अकस्मात् ज्वालामुखी भड़क उठा, तो कहीं हम उसके लिए बिलकुल बेतैयार न रह जायं। उस समय अपनी रक्षाके लिए सेना-बलकी आवश्यकता है।

इस प्रकार विश्लेषण करके हम देखते हैं कि आज भय और अनिश्चितताके इस युगमें, जब कोई भविष्यद्वक्ता कुछ कहनेमें डरता है और कोई राजनीतिज्ञ ठीक-ठीक यह कहनेका साहस नहीं कर सकता कि कब आजका स्थिर और शान्त आकाश प्रतिहिंसाकी चिनगारियोंसे भर जायगा, तब औसत दर्जेका प्रत्येक आदमी जीवनमें स्थिरता, निश्चितता चाहता है। आज उसका ध्यान समान राजनीतिक अधिकारोंकी ओर नहीं है। इसीलिए औसत जर्मन और औसत इटैलियन अपने समताके अधिकारके विनाशको बिना किसी विशेष खीझके देखता रहा है। जैसे वह देख चुका हो कि कोरी समतासे जीवनकी भूख और प्यास मिटती नहीं है।

विनाशकी ओर—

इन सब बातोंसे यह मालूम होता है कि इस समय संसार बोझसे त्रस्त है; शासन-पद्धतियां खोखली और खर्चीली हो गयी हैं। इसलिए जब तक संसारमें फिर सुकाल न आवे तब तक प्रजातन्त्रका भविष्य खतरेमें है। प्रत्येक देश विनाशसे बचनेके लिए छटपटा रहा है, फिर भी कोई दवा, कोई हल न सूझनेके कारण विनाशकी ओर चला जा रहा है। एक ओर राष्ट्रका बजट पूरा करना कठिन हो रहा है; जनता दुःखी, भूखी और गरीब है; और दूसरी ओर सैन्य-बल बढ़ानेमें राष्ट्रकी अधिकांश विधायक शक्तियां लगी हुई हैं। दुनियाकी दशा यह है कि एक ओर वह युद्धके राक्षसकी कल्पनासे कांप रही है और दूसरी ओर एक तीव्र नशेमें, एक गुप्त आकर्षणमें उसकी ओर दौड़ी चली जा रही है। आज दुनिया-की कमर सैनिकताके बोझसे टूटी जा रही है; अनैतिक एवं

* Its communism is becoming increasingly Platonic rather than Marxian.

W. Y. Elliot.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अवाञ्छनीय प्रतियोगितामें व्यापारका विनाश हो रहा है; मजदूरको मजदूरी नहीं मिलती है; किसानको अपनी उपजके लिए अच्छा बाजार और अच्छे दाम प्राप्त नहीं हैं; जमींदार जमीनके नामपर रो रहे हैं। खलियानमें, गोदाममें अन्न है, पर गांठमें दाम नहीं; क्योंकि अच्छे दामपर माल नहीं उठता। चारों ओर तबाही है। चीजोंके दाम गिर गये हैं, सिक्का महंगा हो गया है। इसलिए बाजार मन्दा है। खर्च वही है, परन्तु खर्च करनेको उतना मिलता नहीं है।

इतिहासमें परम भयङ्कर युग—

ऐसी विकट परिस्थिति अधिक दिन नहीं चल सकती। जनताका जब पेट नहीं भरता, जब उसे शान्ति नहीं, तब वह क्रान्ति करके, खतरा उठाकर भी कुछ कर डालेगी। वह शान्ति चाहती है, स्थिरता चाहती है और इसके नामपर उसे मद्य पिला-पिलाकर महानाशकी ओर खींचनेवाले खींच रहे हैं। इस शान्तिके लिए विनाशकी तैयारी हो रही है और दुनिया, व्यथित, पीड़ित, अशक्त मानवता, मानो मन्त्र-मुग्ध-सी, 'हिप्नोटाइज्ड'-सी होकर आज, कातर नेत्रोंसे यह सब देख रही है। इस महानाशकी तैयारी कैसी भयानकताके साथ हो रही है और उसके परिणाम क्या हो सकते हैं, इसपर हम किसी दूसरे लेखमें प्रकाश डालेंगे। यहां इतना ही कह सकते हैं कि संसारके इतिहासमें इतना भयङ्कर दूसरा युग नहीं दिखाई देता जिसमें मानवताके सामने इतने खतरे रहे हों। आज तो मानवताके लिए, मानव-संस्कृतिके लिए जीवन-मरणका सवाल है। आज मानव-चित्त अस्थिर होकर पागल-सा मार्ग ढूंढ़ रहा है। कौन उसे सच्चा मार्ग बतावेगा? आज मानवताकी लालसा-भरी आंखें प्रत्येक बच्चेसे पूछती हैं कि यह सब क्या हो रहा है और इसका परिणाम क्या होगा?

कौन आज इसका उत्तर देगा?

---

# वनश्री

गङ्गा-यमुनाकी रेतीमें सुन्दर महल बनाना हो
कालिन्दीके हरित कूलमें रूठा हृदय मनाना हो
वन-वन फैली वल्लरियोंको सुखसे गले लगाना हो
युग-युगके मङ्गल-गायनमें मृदु कवि-कण्ठ मिलाना हो

तो चुपचाप निकल परदेशी, भटक भूल जा राह कहीं
नङ्गे पांव खोजनेवालोंको नद-नदी अथाह नहीं।

कङ्कड़-धूल, फूल-कांटोंका वह वन-देश निराला रे
चञ्चल जलमें पांव डुबोए खेल रही वन-बाला रे
आंखोंके नन्हे घेरे-सी घेर रही गिरि-माला रे
निर्झर-तीर शिलापर बैठा कोई गानेवाला रे

मधुर पद-ध्वनि, मधुर प्रतिध्वनि मुखरित मृदु सङ्गीत परम
कुञ्ज-लताकी एक आड़में जीवन सरल पुनीत परम।

—गोपालसिंह नेपाली

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# यक्षिणी

श्री "द्विरेफ"

मैं भोजन बना रही थी कि इतनेमें उनकी आहट सुनाई पड़ी। मैं उनके पांवोंकी आवाजको अच्छी तरह पहचानती हूं। वे कब गमगीन होते हैं, कब प्रसन्न होते हैं और कब कुछ सोचते हुए टहलते होते हैं, यह सब मैं जानती हूं। उनके पांव उत्साहसे उठे और पास आते हुए सुनाई देने लगे। अन्दर आकर बोले—"क्यों ?" परन्तु मुझे खाना बनाती हुई देखकर जरा रुक गये और पूछने लगे—"यह क्या शुरू किया है ?"

मैंने कहा—"खाना बना रही हूं, दोपहरकी गाड़ीसे जाना है !"

"पर कहां ? किस लिए जा रही है ?"

"अपने अक्षर सुधारने और तुम्हारा अभ्यास करने।"

एक बार मैं बहुत समय बाद उनसे मिली थी। मनमें सोच रही थी कि न जाने क्या-क्या कहेंगे। इतनेमें धीमेसे बोले—"अलग रहनेसे फायदा ही होता है। स्त्रियोंके अक्षर सुधर जाते हैं, क्योंकि उस समय वे पत्र लिखती हैं। इसके सिवाय उन्हें पत्र लिखनेका अवसर ही नहीं मिलता।" मेरे साथ रहनेसे लगभग रोज ही उन्हें शिकायत रहती कि मेरे कारण उनकी पढ़ाईमें विघ्न होता है।

"पर मेरे खाने-पीनेका भी कुछ विचार किया ? यह मोती क्या करेगी ?" मोती हमारी कुतियाका नाम था; मोती हीकी तरह स्वच्छ और सुन्दर।

मैंने कहा—"हिन्दुस्तानमें काम करनेवालेको खाना नहीं मिलता, पर काम न करनेवालेको मिल जाता है। मनुष्यको नहीं मिलता, पर कुत्ते, चिंउटी, मकोड़े, मछली आदिको मिल जाता है। इसलिए मुझे तुम्हारी किसीकी चिन्ता नहीं होती।"

"अच्छा, जानेके लिए कोई मना नहीं करता। पर जाना कहां है ?"

पूरियां बेलते हुए मैंने कहा—"जासूसोंकी और गुनाह पकड़नेकी बातें लिखते हो तो इतना अपने-आप पता लगा लेना।" शायद मुझे उनके आनेसे पहले ही स्टेशनपर जाना पड़े, इसलिए मैंने चिट्ठी लिखकर, उनकी नजर पड़ जाय इस तरीकेसे उनकी अधूरी लिखी हुई कहानीपर पत्थरसे दबाकर रख दी थी।

"तेरी आंखमेंसे तो एक्स....."

"अंगरेजीमें मत बोलो—"

"क्ष-किरणें निकल रही हैं !"

मैंने पूरियां तलते-तलते जवाब दिया—"क्ष नहीं, इससे भी जरा आगे, ज्ञ-किरणें निकल रही हैं।"

"तो इन ज्ञ-किरणों द्वारा, जरा कहो तो, प्रेमानन्द (एक गुजराती कवि) के नाटक किसके हैं ? हमारी सर्वज्ञा बाई ! बेचारे 'ज्ञ' बहुत समयसे मेहनत कर रहे हैं, उन्हें सहायता मिलेगी। उस दिन दिये थे, पर पढ़े क्यों नहीं ?"

"चलो, मैंने परस दिया है। खाते-खाते बात करो। तुम कहते थे कि प्रेमानन्दकी कृतियां स्त्री, बाल, वृद्ध सबको पसन्द आती हैं। ये नाटक हमें पसन्द नहीं आते, इसलिए प्रेमानन्दके नहीं, यह सिद्ध हो गया कि नहीं ? अब तुम खुशीसे कह सकते हो कि ये नाटक प्रेमानन्दके नहीं।"

"मैं यह लिख दूं कि मेरी पत्नीको ये नाटक पसन्द नहीं आते, इसलिए प्रेमानन्दके नहीं ! वाह !"

मैंने कहा—"वाह क्यों ? मेरी सम्मति प्रकाशित करनेमें क्यों शर्माते हो ? तुम तो जैसेके तैसे ही रहे। एकने तो गांधीजीका मुंह अच्छा लगता है या नहीं, यह प्रश्न अपनी स्त्रीसे पूछ लिया और प्रसिद्ध भी कर दिया ! तुमने तो किसी बड़े आदमीके विषयमें मुझसे पूछा तक नहीं !"

"ले, मैं भी एक महत्त्वके मुंहके बारेमें पूछता हूं।"

"पूछो।"

"मेरा मुंह तुझे अच्छा लगता है ?"

"पर क्या तुम बड़े आदमी हो ?" मैंने कहा।

"एक अंगरेज लेखक एक स्त्री पात्रसे कहलवाता है कि इंगलैण्डका प्रधान मन्त्री कौन है, इसकी अपेक्षा मेरा पति कौन है, यह प्रश्न मेरे लिए अधिक महत्त्वका है। फिर मुंहके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विषयमें किसी दूसरेके मुंहकी अपेक्षा मेरा मुंह अधिक महत्त्वका है कि नहीं ?"

मैंने कहा—"और जो इनकार कर दिया तो क्या करोगे ?"

"तू जो कहेगी वही।"

"तो तुम्हारा मुंह इन पन्द्रह दिनोंके लिए अच्छा नहीं लगता और मैं कहती हूं कि एक आगराका टिकट ले दो।"

उन्होंने एकाएक गम्भीर होकर पूछा—"क्या कमला बीमार है ?"

मैंने कहा—"कोई चिन्ताकी बात नहीं, पर आपरेशन कराना पड़ेगा, ऐसा तार आया है। जनाना हास्पिटल है, इसलिए ओझा तो मिल भी नहीं सकते। मैं इतने दिन कमलाके साथ रहूंगी।"

ओझा दम्पति हमारे स्नेही थे।

[ २ ]

जगत्में पत्नी-वियुक्त स-धुरकी स्थिति बहुत विचित्र है। इतनी विचित्र कि उसके लिए कोई शब्द भी नहीं मिलता। स्त्री अविवाहित हो तो कुमारिका, पति जीवित हो तो सौभाग्यवती, पति परदेशमें हो तो प्रोषित-पतिका, पति मर गया हो तो विधवा कहलाती है। कुमारिका सुख-सौभाग्य और शृङ्गारका आलम्बन, सौभाग्यवती वात्सल्यका, प्रोषित-पतिका वियोगके शृङ्गारका और विधवा करुणाका आलम्बन है। पुरुष विवाहित न हो तो कुंआरा, विवाहके बाद विवाहित या पति। उसकी स्त्री यदि प्रवासमें गयी हो तो ? उसका नाम ही नहीं। रंडुआ होनेके बाद विधुर। बेचारा किसी भी रसका आलम्बन नहीं। कुंआरा अर्थात् संसारके बाहरका, विवाहके बाद यदि स्त्रीकी तरफ आसक्त हो तो अनुरक्त और यदि यह न हो तो प्रेम-रहित, निर्दय और सदाके लिए स्त्रीका सौन्दर्य और स्वातन्त्र्य हर लेनेवाला। पतिका मतलब ही मूर्ख है। विधुर अर्थात् दूसरी बार विवाह करनेके लिए उम्मेदवार, भटकनेवाला; स्त्री मिले तो फिर पति और न मिले तो रंडुआ। लेकिन स्त्री प्रवासमें गयी हो तो ? तो क्या ? "क्या एक दिनकी बात है ? किसके घर जायं ? अथवा थोड़े दिन तो कहीं भी बिताये जा सकते हैं।" पर किसीको सहानुभूति ही नहीं होती। अपनेको दुःखी कहें तो कोई भी दुःखके कारणको स्वीकार न करे।

"स्त्री न हो तो, हो क्या गया ? क्या तुम्हें खाना नहीं मिलता ? पहिननेको कपड़ा नहीं मिलता ? पैसे नहीं मिलते ? क्या निराधार हो गये ? तुम्हें किस चीजकी कमी है ? उलटे वि-धुर अर्थात् थोड़े वक्तके लिए धुरा-धुरी निकल गयी।" मुझे तो ऐसा लगता है कि पुरुषको धुरी संभालनेकी इतनी आदत पड़ गयी है कि धुरीके बिना उसे सब-कुछ सूना लगता है।

मैं एक बार गाड़ीमें मुसाफिरी कर रहा था तो साथ-साथ एक सिन्धी आध मन भारी तोड़ेदार बन्दूक लेकर आ रहा था। मैंने कहा—"जमादार, बन्दूक गाड़ीमें रख दो। कोई डरकी बात नहीं।" जमादार बोला—"ये बोजसे ठीक चला जाता है।" कवि प्रेमानन्दके मतमें पति सुरभि-सुत है, उसे धुरीके बिना चलना अच्छा ही नहीं लगता।

बीमारीसे उठनेके बाद ओझाका लड़का एक दिन खाने बैठा था। खा चुका तो कमलाने कहा—"उठ, तेरा मुंह धो डालूं।" मुन्ना उठा और रोने लगा। बोला "चला नहीं जाता, पांवमें कुछ हो रहा है, कांटे-से चुभ रहे हैं।" बैठे हुए सब लोग हंस पड़े। उसका पांव सो गया था। स्त्रीके चले जानेसे और तो कुछ नहीं, हृदय सो जाता है, हृदय चलता नहीं। उसे थोड़े-थोड़े कांटे चुभते हैं और हमसे न चला जाय तो लोग हंसते हैं।

स्त्रीका पुरुषपर कितना अधिक प्रभुत्व है ! सब स्त्री-स्वातन्त्र्यकी बातें करते हैं। मुझे तो लगता है कि पुरुष-स्वातन्त्र्यका प्रश्न अधिक विकट बनता चला जा रहा है।

अब क्या किया जाय ? शास्त्रकारोंने कुमारिका, सौभाग्यवती, प्रोषित-पतिका, विधवा आदि सबकी विधि रसके सिद्धान्तपर रची है, पुरुषके लिए कुछ नहीं लिखा। पुरुष प्रोषित-पत्नीक हो, तो, उसे क्या करना चाहिए ? क्या न करना चाहिए ? क्या वह स्नान न करे ? क्या पानी गरम किये बिना ही नहा ले ? क्या चाय न पिये ? यदि पिये तो क्या खराब बनाकर ? बाहर खाये या घरमें ? क्या हजामत न करे ? क्या बाल न संवारे ? आफिसमें क्या समयपर न जाय ? क्या रातको दिया न जलाये ? क्या कुरसीपर बैठकर ही सो जाय ? क्या रातको जागे और दिनमें सोये ? क्या करे और क्या न करे ? वास्तवमें जगत्ने पुरुषकी बहुत उपेक्षा की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आखिर भूख लगी। भूख एक अच्छी चीज है। कुछ न सूझता हो तो भी यह सूझती है। मैंने कपड़े पहिने और दरवाजा बन्द करने चला तो मोती दुम हिलाती हुई आ पहुंची। वह भी अब तक गमगीन होकर बैठी हुई थी। विरहमें काव्य सूझता है। मुझे भी निम्नलिखित कविता सूझी :—

"कच्चिद् भर्त्र्याः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्याः प्रियेति।" *

पहले एक ऐसे अवसरपर एक भोजनालय ढूंढ़ रखा था। वहां गया। जरा देर हो गयी थी, पर अभी वह बन्द न हुआ था। रसोइया नया ही आया था, पर जैसे बहुत समयसे मुझे पहिचानता हो इस प्रकार बोला:—

"ओहो, आज तो मुद्दतके बाद आये! इतने दुबले क्यों हो गये? यहां भोजन करते थे तब तो तगड़े थे।" उसकी चतुराईकी बातें सुनकर मैं बहुत खुश हुआ। मुझे विचार करने और खेलनेके लिए एक नया खिलौना मिल गया।

मैंने कहा—"इसीलिए अब तुम्हारे यहां भोजन करने आया करूंगा। परसो।"

जिस दिन विधाता खाली रहा होगा, उस दिन उसने इस रसोइयेको गढ़ा होगा। उसका रङ्ग गोरा था, ठीक वैसा ही जैसा उबालकर छीले हुए आलूका रङ्ग और उसपर काले, पीले और लाल तिलोंकी-सी पतली-पतली छींटें थीं। अपने लथड़ते हुए अङ्गोंको उसने एक खूब मैली पतली धोतीमें उसी तरह बांध रखा था, जिस तरह शाक-भाजीवाले बैंगन और आलू वगैरहको पोटलीमें बांधे रहते हैं। पेट बड़ा था, परन्तु उपरोक्त बन्धनके कारण उसके दो भाग हो रहे थे। ऊपरके भागपर पसीनेके कारण उसका काला जनेऊ चिपक गया था। खड़े होनेपर उसकी टांगें चौड़ी और गोल रहती थीं और उसके पैर मरोड़-रहित ऊंटके पांवकी तरह पड़ते थे। मुंहमें, निचले जबड़ेमें, एक नहीं, पर दो-दो दांतोंकी पंक्तियां हों अथवा सारे जबड़ेमें मानों दाढ़ें-ही-दाढ़ें हों, ऐसा प्रतीत होता था। ब्रह्मा भी उसे गढ़कर इतने खुश हो गये होंगे कि मिट्टी सूखी भी न होगी कि उसके सिर और कमरपर थपकी दे दी होगी।

रसोइया परस रहा था, इस बीचमें मैंने रेवाशङ्करसे अपना पुराना परिचय ताजा कर लिया। वे रसोइयेका उपयोग करना अच्छी तरह जानते थे। रसोइया जब परस चुका, तो रेवाशङ्करने उसकी उपस्थितिमें मुझसे कहा—"रसोइयेका स्वभाव बहुत अच्छा है।" रसोइया परस चुका था, तो भी वह अन्दर गया और जरूरत न होते हुए भी एक कटोरीमें घी ले आया और उसमेंसे दो चम्मच घी रेवाशङ्करकी थालीमें डाल गया और फिर पांवपर पांव चढ़ाकर हम दोनोंके सामने बैठ गया और पांवके तलुओंपर हाथ फेरते हुए बोला—"मेरा मन बहुत बड़ा है। हम त्रिवेदी लोग कभी लोभ नहीं करते। यह जो हमारा पण्ड्या सेठ है, उसका मन तो जरा-सा है। यहां हम भले ही नौकर हैं, पर न्यातिमें सब समान हैं। हम किसीकी परवाह नहीं करते। न्यातिके बीचों-बीच सुना देते हैं। मैं तो सेठ हों, तो भी नजर बचाकर घी परस देता हूं। बहुत बोले तो कह देते हैं—"जा, तेरी नौकरी नहीं करते। ब्राह्मणके लड़के हैं, हाथमें झोली लेकर भीख मांगकर खाते हुए क्या शर्म आयेगी! क्यों भाई?"

रसोइयेको अपनी बातके समर्थनकी जरूरत हुई, इसलिए मैं पूछ बैठा—"यह पण्ड्या क्या तुम्हारी न्यातिका है?"

"हां, साहब, ये हमारी ही न्यातिके समझे जाते हैं। कोई इन्हें लड़की न देता था, तब मैंने देकर इन्हें बड़ा बनाया। अपनी भाञ्जीका इन्हीं हाथोंसे टीका किया है, पर मेरे विवाहके लिए उसने एक शब्द भी किसीसे नहीं कहा।"

मैंने रेवाशङ्करकी ओर देखकर कहा—"रसोइया विवाहित नहीं है। क्या मैं उसको यक्षिणीकी बात सुनाऊं?" रेवाशङ्करके 'हां' कहनेके पहले ही रसोइया बोल उठा—"यह यक्षिणी कौन है?"

मैंने कहा—"मेरे घरमें एक यक्षिणी है, साक्षात् महामाया। रातको अंधेरेमें देखो तो दोनों आंखें दिये-जैसी चमकती हैं। जो मनौती करो, वही सफल हो जाय।"

"तो मुझे एक बार उसके दर्शन कराने ले चलिये न!" मैंने कहा—"अरे, क्या कहा? वे तो किसीसे मिलती नहीं। सारे दिन घरमें बैठी रहती हैं और ध्यान करती रहती हैं। यदि लोगोंको इस तरह मिलने दें, तो लोग उन्हें जरा भी आराम न लेने दें। लोग भी तो अच्छे

* "कच्चिद् भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति।"
—मेघदूत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बाहरकी चीजें मांगते हैं। नसीबमें न हो, ऐसी चीज मांगते हैं। एक स्त्रीके नसीबमें लड़का न था, उसने मांगा तो उसको अन्धा लड़का दिया। बोलो ?"

मैं अपनी बात कह रहा था, उस समय रसोइयेके मुखपर हर्ष, उद्वेग, चिन्ता आदिकी रेखायें आ-आकर उड़ जाती थीं। अन्तिम वाक्य सुनकर उसका मन कुछ बैठ-सा गया। वह बोला—"पर मेरे नसीबमें तो है। मेरी सगाई तो भट्टके यहां हो भी गयी है। लड़की जरा छोटी है, पर है बहुत सुन्दर। हां! छोटी है, पर अभीसे सब-कुछ समझती है। मैं जाऊं, तो कहेगी—'मेरे लिए क्या लाये ?' और जल मंगाऊं, तो धब-धब करती हुई घूंघट निकालकर चलती है।" अन्तिम वाक्य बोलते हुए उसके हृदयका रस उसके मुंहमें आ रहा हो, ऐसा प्रतीत होता था। मैंने शाक मांगा। रसोइया झटपट उठकर शाक ले आया और मुझे तथा रेवाशङ्करको परस दिया। शाक और घी उस रसोइयेकी प्रसन्नताके खास चिह्न थे।

मैंने कहा—"तो फिर तुम्हें यक्षिणी माताका कोई काम नहीं।" रसोइया गम्भीर विचारमें पड़ गया और बोला—"क्या आप वैद्यक जानते हैं ?"

"नहीं।"

"मैं डिप्टी साहब मेहताके यहां नौकर था। वे नयी स्त्री लाये थे। उसे पकाना न आता था, इसलिए उन्होंने मुझे रख लिया था। मुझपर उनका पूरा विश्वास था। उस छोटी स्त्रीके पतिने मुझे नौकर रखनेमें जिस दीर्घदृष्टि और सूक्ष्मताका परिचय दिया था, इस कारण उस अज्ञात 'डिप्टी' के प्रति मेरे मनमें बहुत सम्मान था। स्त्री छोटी थी, इसलिए वैद्यकी सलाह लेकर उसे नारियल खिलाया और वह इतनी बड़ी हो गयी!" रसोइयेने दायें हाथका पञ्जा अपने बायें कन्धेपर अंगूठेके आधारपर ऊंचा करके बताया। "मैं एक बार कोई बात सुन लूं, तो भूलता नहीं। मैंने भी खिलाना शुरू किया है, पर अभी तक ऊंची नहीं हुई। सब-कुछ कर लिया, पर अभी देखनेमें छोटी ही लगती है।"

मैंने कहा—"तो क्या दूसरी स्त्री चाहिए ?"

"नहीं, नहीं, दूसरी ऐसी न मिलेगी। यक्षिणी माताको कहकर झटपट उसे बड़ा करवाऊंगा। मेरे घरमें स्त्री जरूर चाहिए। देखो, कुछ काम है ? रसोई मैं बनाता हूं, उसे केवल दाल-चावल साफ करने पड़ेंगे। यद्यपि मैं रसोइया हूं, तो भी बारह बजे छुट्टी मिल जाती है। शहरमें निकलूं तो कोई मुझे रसोइया न कह सके। हजामत तो सैलूनमें ही कराऊंगा। आठ आना ले, तो वही सही। महीनेमें एक-दो बार नाटक-सिनेमा तो देखने जायंगे ही!" रसोइयेने अपनी पति बननेकी सारी योग्यता दिखाते हुए अन्तमें कहा—"तो फिर मैं यक्षिणी माताके दर्शन करने आऊं ?"

मैंने कहा—"यह नहीं हो सकता। यदि मैं न होऊं और तुम जाओ, तो वह कुतिया बनकर चिपट जायगी। उसके लिए तुम रोज भोजन भेज दिया करो।"

रसोइया खुश हो गया। मैं भी भोजन कर चुका था। रसोइयेने शीघ्र ही थाली तैयार करके मुझे सूचना दी। मैंने कहा—"वे रातको भोजन नहीं करतीं। सवेरे मैं आदमी भेजूंगा, तब उसके साथ भेज देना। सुनो, केवल चार रोटी, दाल-चावल और शाक कुछ नहीं, घी भी थोड़ा-सा ही। पैसे मैं दे दूंगा। वे मुफ्तका नहीं खातीं, परन्तु ठीक समयपर भेजना।"

रसोइया आश्चर्यमें डूब गया और अगले दिनसे मोतीके भोजनकी चिन्ता मिटी।

[ ३ ]

मैं लौटकर आयी। निश्चित दिनसे एक दिन पहले ही निकल पड़ी। घर खोला। स्त्री और पुरुषके समान अधिकार होनेसे घरकी चाबियां हम दोनोंके पास रहा करती हैं।

घरमें प्रवेश किया। मोती पूंछ हिलाती हुई सामने आयी। पर सारे घरमें केवल वही साफ-सुथरी जान पड़ती थी। और तो जहां देखो वहीं धूल। कुर्सियोंके सिवाय सब चीजें, यहां तक कि पुस्तकें भी वैसीकी वैसी पड़ी थीं। मेजपर भी धूल थी और मेरी लिखी हुई पत्थरके नीचे दबाकर रखी हुई चिट्ठी भी वैसीकी वैसी! इन पुरुषोंको भगवान्‌ने न जाने कैसे गढ़ा होगा।

झाड़ू लगाकर मैंने सब साफ किया। दर्पणमें अपना मुंह देखा। रास्तेकी थकावट और धूल। मनमें विचार आया, नहा लूं। वेणी खोली, इतनेमें दरवाजेपर आवाज सुनाई पड़ी। मैंने समझा, शायद वे आये होंगे। माथेपर साड़ी खींचते हुए जाकर दरवाजा खोला। यह कौन ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक बहुत ही कुरूप मनुष्य—काला कोट पहिने, ताजी हजामत कराये, बालोंमें खूब तेल डाले, तेलमें सनी हुई किनारीदार फेल्ट टोपी सिरपर रखे, पतली और खूब तहाई हुई मिलकी धोती पहिने आया और मेरे पांवोंपर गिरने लगा। मैं पीछे हट गयी और पूछा—"अरे तू कौन है, क्यों आया है?"

"यक्षिणी माता! क्षमा करो। सेवकपर दया करो।"

मैंने कहा—"मैं यक्षिणी कबसे बनी?"

"हर रोज आता था, पर घर बाहरसे बन्द पाता था। आज ताला न लगा देखकर दर्शन करने आया हूं। मेरे मनके मनोरथ पूर्ण करो। आप जो कहेंगी, वही करूंगा।"

"भाई, तुझे किसीने बहका दिया है, मैं यक्षिणी नहीं हूं।" यह कहकर दरवाजा बन्द करने लगी, तो वह अन्दर आने लगा और बोला—"माताजी, आज तक आपके लिए भोजन भेजा, तो जरा सामने तो देखो।" मैं चिढ़ गयी—"भोजन भेजनेवाला तू कौन होता है? जाता है या नहीं? नहीं तो लाठी लगाऊं?" इतनेमें अन्दरसे मोती गुर्रायी। मैंने लाठी उठायी, पर उसकी दीन सुखमुद्रा देखकर रहने दिया। वह फिर बकने लगा—"माताजी, मेरे नसीबमें स्त्री है। मुझे नयी नहीं चाहिए। बस, इतना करो कि जल्दी बड़ी हो जाय।" मेरे गुस्सेका पार न रहा। मैंने पुनः लाठी उठायी। "हरामखोर" कहकर मारने ही लगी थी कि "चण्डी, कोप न करो" कहकर मुझे टोकते हुए उसको उंगलीके इशारेसे रवाना करके वे अन्दर आ गये। मुझे फिर कहा—"चण्डी, प्रसन्न होओ।"

---

# प्रान्तोंमें सेकेण्ड चेम्बर

श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र एम० ए०, बी० एल०

भारतीय शासन-विधानको लेकर जबसे चर्चा आरम्भ हुई है तभीसे इस विषयपर वाद-विवाद चल रहा है कि प्रान्तोंमें व्यवस्थापिका सभाओंके साथ-साथ सेकेण्ड चेम्बर स्थापित होना वाञ्छनीय है या नहीं। प्रान्तोंमें उत्तरदायी शासनकी स्थापना होने जा रही है अतएव Bicameral Legislature का होना वाञ्छनीय है, इसी सिद्धान्तको लेकर इस वाद-विवादका आरम्भ हुआ। साइमन कमीशनके सदस्योंमें इस विषयको लेकर गहरा मतभेद था। उसके कुछ सदस्योंने सेकेण्ड चेम्बरकी स्थापनाकी इस आधारपर सिफारिश की थी कि "शासन-विधानोंका इतिहास पढ़नेसे यह मालूम होता है कि एक ही व्यवस्थापिका सभा द्वारा किसी कानूनका बनाया जाना पर्याप्त नहीं है और इस सम्बन्धमें सेकेण्ड चेम्बर एक सर्वोत्तम पुनरालोचनाकारी साधन The best revisory instrument सिद्ध हुआ है।" इसके विपरीत दूसरे पक्षका कहना था कि "इससे शासन-विधानकी जटिलता बढ़ जाती है और कायमी ढकवालों Vested interests का व्यवस्थापिका सभाके हस्तक्षेपसे अनुचित रूपमें संरक्षण होता है।" साइमन कमीशनके साथ जो प्रान्तीय मताधिकार कमेटियां Provincial Franchise Committees नियुक्त की गयी थीं, उनमें तथा प्रान्तीय सरकारोंमें भी इस विषयको लेकर एकमत नहीं था। चार प्रान्तीय सरकारें सेकेण्ड चेम्बरकी स्थापनाके विरुद्ध थीं और तीन इसके पक्षमें थीं। इसी प्रकार प्रान्तीय मताधिकार कमेटियोंमें चार बहुमतसे इसके पक्षमें और चार सम्पूर्णतया इसके विपक्षमें थीं। इसके बाद गोलमेज सभाके अवसरपर जो Provincial Constitution Sub-Committee प्रान्तीय शासन-विधान उपसमिति नियुक्त की गयी थी उसने बहुमतसे यह निर्णय किया कि "The decision to incorporate a second chamber in the new constitution of any province other than Bengal, the United Provinces and Bihar & Orissa, where opinion in favour of a second Chamber has already been expressed, should not be taken until opinion in the province definitely favours this course." बङ्गाल, संयुक्तप्रान्त और बिहार-उड़ीसाके सिवा—जहां सेकेण्ड चेम्बर स्थापित किये जानेके पक्षमें लोकमत व्यक्त हो चुका है—और किसी प्रान्तके नवशासन-विधानमें सेकेण्ड चेम्बरका समावेश करनेका निर्णय तब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि उस प्रान्तका लोकमत निश्चित रूपमें इसके अनुकूल न हो। इस प्रकार ह्वाइट पेपरमें साफ तौरसे इस बातका उल्लेख कर दिया गया था कि बङ्गाल, संयुक्तप्रान्त और बिहार-उड़ीसाके सिवा और किसी प्रान्तमें सेकेण्ड चेम्बर स्थापित नहीं होने चाहिएं। किन्तु संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टमें बङ्गाल, संयुक्तप्रान्त और बिहार-उड़ीसाके सिवा बम्बई और मद्रासमें भी सेकेण्ड चेम्बर स्थापित करनेकी सिफारिश की गयी है। और आश्चर्यकी बात तो यह है कि बम्बई प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाने सेकेण्ड चेम्बर स्थापित करनेके प्रस्तावको साफ-साफ ठुकरा दिया था, फिर भी उसके ऊपर सेकेण्ड चेम्बरका यह बोझ लाद दिया गया है।

अच्छा, अब हम सिद्धान्त-रूपसे इस बातपर विचार करें कि प्रान्तोंमें Bicameral legislature का स्थापित होना कहां तक वाञ्छनीय है। इसमें सन्देह नहीं कि इंगलैण्ड और अमेरिका जैसे गणतान्त्रिक देशोंमें Bicameral legislature पाये जाते हैं; किन्तु इसके साथ ही यह स्मरण रखना चाहिए कि उन देशोंमें पूर्ण जनसत्तात्मक शासन-प्रणाली प्रचलित है और वहां सेकेण्ड चेम्बरकी राजनीतिक महत्ता नगण्य है। दूसरी बात यह है कि सेकेण्ड चेम्बर स्थापित करनेका जो उद्देश्य है वह तो सेकेण्ड चेम्बरसे कहीं बढ़कर यहां प्रान्तीय गवर्नरोंके विशेष अधिकार Special powers और विशेष दायित्व Special Responsibilities से सिद्ध हो जाता है जिनकी व्यवस्था खास तौरसे प्रस्तावित प्रान्तीय शासन-विधानमें की गयी है। ऐसी स्थितिमें पांच बड़े-बड़े प्रान्तोंके ऊपर सेकेण्ड चेम्बरका यह अनावश्यक बोझ क्यों लादा गया है, यह समझमें नहीं आता।

यूरोपमें प्रजासत्तात्मक शासन-विधानका प्रवर्त्तक इंगलैण्ड समझा जाता है। यहांकी जनसभा (पार्लामेण्ट) हाउस आव कामन्स और हाउस आव लार्ड्सकी सम्मिलित सभा कही जाती है। इंगलैण्डकी देखा-देखी अन्यान्य देशोंने भी इस प्राचीन प्रथाका अनुसरण किया है हालांकि इसका राजनीतिक महत्त्व कुछ भी नहीं है। चूंकि पुराने जमानेके रईस और सरदार हाउस आव कामन्सके सर्वसाधारण सदस्योंके साथ बैठनेमें अपनी तौहीन समझते थे, इसलिए हाउस आव लार्ड्सके रूपमें उनके लिए एक पृथक् सभाकी व्यवस्था की गयी; किन्तु इंगलैण्डमें भी हालमें कई ऐसे कानून बनाये गये हैं जिनसे हाउस आव लार्ड्सके अधिकार बहुत संकुचित कर दिये गये हैं। सन् १९११ के पार्लामेण्ट एक्टके अनुसार "हाउस आव लार्ड्स यदि हाउस आव कामन्स द्वारा पास किये गये किसी मनी बिल Money Bill पर एक मासमें अधिक तक अपनी मञ्जूरी रोक रखे, तो वह बिल सम्राट्के समक्ष उपस्थित किया जायगा और उनकी मञ्जूरी मिल जानेपर कानून बन जायगा। यदि कोई बिल हाउस आव कामन्सके तीन लगातार अधिवेशनोंमें तीन बार पास हो चुका हो और प्रत्येक बार हाउस आव लार्ड्सके सदस्योंने उसे नामञ्जूर कर दिया हो, तो वह सम्राट्के समक्ष मञ्जूरीके लिए उपस्थित किया जा सकता है।" इस प्रकार हाउस आव लार्ड्सके अधिकार संकुचित कर दिये जानेपर भी बहुत-से अंगरेज राजनीतिज्ञ यह प्रश्न उठा रहे हैं कि इसके अस्तित्वका औचित्य क्या है? सन् १९१७ में लार्ड ब्राइसकी अध्यक्षतामें एक संयुक्त कमेटी इस सम्बन्धमें विचार करनेके लिए नियुक्त की गयी थी। इस कमेटीकी योजनाके अनुसार सरकारने हाउस आव लार्ड्सके गठनमें सुधार करनेके लिए प्रस्ताव उपस्थित किये थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि इंगलैण्डमें भी हाउस आव लार्ड्सका भविष्य संशयाच्छन्न है और उसके वर्तमान स्वरूपके विरुद्ध लोकमत प्रबल हो रहा है।

### सेकेण्ड चेम्बरके पक्षमें युक्तियां

प्रान्तोंमें सेकेण्ड चेम्बरकी स्थापनाके समर्थक अपने सिद्धान्तके पक्षमें निम्नलिखित युक्तियां उपस्थित करते हैं:—

(१) ऐसे समयमें, जब कि मताधिकारमें अत्यधिक वृद्धि की गयी है और अधिकांश वोटर अशिक्षित होंगे, यह आवश्यक है कि एक ऐसी व्यवस्थापिका सभाकी सृष्टि की जाय जिसके सदस्य अनुभवी और विशेषज्ञ प्रतिनिधि हों और वे Lower house अर्थात् सर्वसाधारणकी प्रतिनिधिसभाके साथ क्षमताके लिए प्रतियोगिता न करके सिर्फ किसी कानूनपर फिरसे विचार करते हुए उसके पास होनेमें कुछ विलम्ब कर दें।

(२) संसारके अधिकांश देशोंमें गणतन्त्र शासन इसी bicameral आधारपर स्थापित हुए हैं और अनुभव द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि उनसे लोक-प्रतिनिधि सभाके किसी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अधिकारके दुरुपयोग या किसी कानूनमें जल्दबाजी करनेके विरुद्ध सुरक्षा हुई है।

( ३ ) जो लोग उम्र, स्वास्थ्य या धनाभावके कारण Lower house के तुमुल निर्वाचन-संग्राममें प्रतियोगिता नहीं कर सकते, उनमें यदि राजनीतिक और शासन-सम्बन्धी विशेष योग्यता है तो उसका उपयोग सार्वजनिक हितोंके कार्योंमें किया जा सकता है।

( ४ ) लोक-प्रतिनिधि सभा Lower house पर गवर्नरका नियन्त्रण हो, इसकी अपेक्षा सेकेण्ड चेम्बरका नियन्त्रण होना कहीं अच्छा है।

अच्छा, अब हम इन युक्तियोंकी सारवत्तापर क्रमशः विचार करें। यह कहना कि प्रजासत्तात्मक शासनमें लोक-प्रतिनिधि सभा किसी कानूनके पास करनेमें जल्दबाजी करती है अथवा उसके गुण-दोषोंपर अच्छी तरह विवेचन करके उनका तारतम्य नहीं करती, किसी भी देशके इतिहाससे सिद्ध नहीं होता, इसके विपरीत इतिहास इस बातका साक्षी है कि गणतान्त्रिक देशोंमें व्यवस्थापिका सभा द्वारा किसी कानूनके बननेकी प्रक्रिया इतनी जटिल होती है कि उसकी गति स्वभावतः मन्थर होती है। समाज-सुधारकी दृष्टिसे चाहे कोई कानून कितना ही आवश्यक और वाञ्छनीय क्यों न हो, फिर भी व्यवस्थापिका सभा द्वारा उसके पास होनेमें काफी समय लग जाता है। इंगलैण्डके हाउस आव कामन्समें कोई प्रस्ताव या बिल पेश होते ही पास नहीं हो जाता। उसके सम्बन्धमें लोकमत संग्रह करनेकी पूर्ण रूपसे व्यवस्था की जाती है। जनता समाचारपत्रों द्वारा अपना मतामत स्वतन्त्रतापूर्वक व्यक्त कर सकती है। बिलके पेश होनेपर उसमें आवश्यक संशोधन या परिवर्द्धन करनेके लिए सदस्योंकी एक कमेटी नियुक्त कर दी जाती है। फिर कमेटी द्वारा जिस रूपमें बिल निकलता है उसपर पार्लमेण्टके सदस्योंमें काफी वाद-विवाद होता है। बिलके एक-दो नहीं, तीन-तीन वाचन होते हैं और तब कहीं जाकर वह पास होता है, और फिर उसपर सम्राट्की मञ्जूरी मिलती है और उसे कानूनका रूप दिया जाता है। एक उदाहरण लीजियेः—इंगलैण्डमें वयस्क मताधिकार Adult franchise का आन्दोलन १९ वीं शताब्दीके प्रायः अर्धभागमें ही आरम्भ हुआ था, किन्तु सन् १९१८ में वहांकी जनताको यह अधिकार प्राप्त हुआ। यह तो हुई इंगलैण्डकी बात; भारतमें तो कुछ विषयोंमें गवर्नर जेनरल और गवर्नरोंको किसी प्रस्ताव या बिलको पेश न होने देने तकका विशेष अधिकार दिया गया है। इसके अलावा किसी प्रस्ताव या बिलके पास हो जानेपर भी उसे मञ्जूर या नामञ्जूर कर देनेकी जो व्यापक क्षमता गवर्नर जेनरल और प्रान्तीय गवर्नरोंको प्रदान की गयी है वह अलग ही है। ऐसी स्थितिमें जब इंगलैण्डमें ही किसी कानूनके बिना उसपर पूर्ण रूपसे विचार हुए शीघ्र पास हो जानेकी सम्भावना नहीं रहती तो फिर भारतमें—जहां गवर्नर जेनरल और गवर्नरोंको व्यापक निरंकुश अधिकार दिये गये हैं—इसकी सम्भावना बिलकुल नहीं रह जाती। कोई भी व्यवस्थापिका सभा जन-मतके प्रतिकूल कोई प्रस्ताव या कानून पास नहीं कर सकती। क्योंकि वह जानती है कि उसे आगामी चुनावमें निर्वाचक-मण्डलोंका सामना करना पड़ेगा। वोटर भी अब इतने अबोध नहीं रह गये हैं कि वे आंख मूंदकर चाहे जिस किसीको अपना प्रतिनिधि चुन लें और उनकी कार्रवाइयोंके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी जानकारी न रखें।

संसारके अन्यान्य स्वाधीन गणतान्त्रिक देशोंके साथ भारतकी तुलना करना किसी भी अवस्थामें उपयुक्त नहीं कहा जा सकता और न इससे सेकेण्ड चेम्बरकी उपयोगिता ही सिद्ध होती है। इस प्रकारकी तुलना सर्वथा कृत्रिम, निराधार और भ्रान्तिजनक है। भारतको इस समय प्रान्तीय स्वायत्त-शासनका जो स्वरूप मिलने जा रहा है उसे हम स्वायत्त-शासनका यथार्थ रूप कह ही नहीं सकते, क्योंकि इसके ऊपर गवर्नरकी निरंकुश सत्ताकी तलवार हमेशा लटकती रहेगी।

सेकेण्ड चेम्बरकी स्थापना होनेसे उसमें विद्वान्, साहित्यिक, चिन्ताशील राजनीतिज्ञ और अनुभवी शासकोंका प्रवेश हो सकेगा और उनके द्वारा राज्यको विशेष लाभ पहुंचेगा, यह दलील भी ऐसी नहीं कि इसके आधारपर सेकेण्ड चेम्बरकी स्थापनाका औचित्य सिद्ध किया जा सके। यह कोई आवश्यक नहीं है कि जो लोग प्रथितयशा विद्वान्, साहित्यिक या विचारशील राजनीतिज्ञ हों, वे असामान्य व्यवस्थापक भी सिद्ध हों। दूसरी बात यह है कि उपर्युक्त श्रेणीके लोग व्यवस्थापिका सभाओंसे बाहर रहकर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनी विद्वत्ता और अनुभव द्वारा देशको लाभ पहुंचा सकते हैं। देश-सेवा किम्वा लोक-सेवाका एकमात्र मार्ग व्यवस्थापिका सभा ही नहीं है। प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा-पर गवर्नरका नियन्त्रण रहनेकी अपेक्षा सेकेण्ड चेम्बरका नियन्त्रण होना अच्छा है, यह दलील भी भारतके सम्बन्धमें लागू नहीं होती, क्योंकि भावी शासन-विधानमें सेकेण्ड चेम्बरके साथ-साथ विशेष अधिकार और विशेष दायित्वके रूपमें प्रान्तीय गवर्नरोंका व्यवस्थापिका सभापर अथवा यों कहिये कि प्रान्तके सम्पूर्ण शासनपर निरंकुश नियन्त्रण बना रहेगा।

फ्रान्सकी प्रथम राज्यक्रान्तिके समय सुप्रसिद्ध फ्रेञ्च लेखक Abbe Sieyes ने लिखा था:—If a second Chamber is in agreement with the first, it is superfluous, and if it is not in agreement with it, it is pernicious." अर्थात् यदि सेकेण्ड चेम्बर व्यवस्थापिका सभासे सहमत हो, तो इसका रहना निरर्थक है और यदि यह उससे सहमत नहीं हो, तो यह हानिकर है। सुप्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता मिलने आदर्श सेकेण्ड चेम्बरकी व्याख्या करते हुए लिखा है :—"The best constitution of the second chamber is that which embodies the greatest number of elements exempt from the class interests and prejudices of the majority, but having in themselves nothing offensive to democratic feeling." सेकेण्ड चेम्बरका सर्वोत्तम विधान यही हो सकता है कि उसमें अधिकसे अधिक ऐसे सदस्योंका समावेश हो, जो श्रेणीगत स्वार्थ और बहुमतके पक्षपातसे मुक्त हों और उनमें स्वयं गणतान्त्रिक भावनाके विरुद्ध कोई बात न हो।" किन्तु क्या भारतमें जो सेकेण्ड चेम्बर स्थापित होंगे, उनमें इस प्रकारके सदस्योंका समावेश होगा? इसके विपरीत यहां तो सेकेण्ड चेम्बरमें खास तौरसे ऐसे ही सदस्योंके निर्वाचित और मनोनीत करनेकी व्यवस्था की गयी है, जो एकमात्र श्रेणीगत स्वार्थके ही प्रतिनिधि होंगे और प्रजातन्त्रकी कल्पना भी जिनके लिए विरक्तिजनक है। सेकेण्ड चेम्बरके लाभोंको स्वीकार करते हुए भी प्रो० Gettell गेटेलने लिखा है कि भविष्यमें श्रेणीगत और दलगत भावनाओंके बदले जब राष्ट्रीय गणतन्त्रकी भावनायें प्रचलित होंगी, तब एक ही व्यवस्थापिका सभाका इस रूपमें गठन होगा, जिससे उसके द्वारा जनताकी वास्तविक इच्छाओंका प्रतिनिधित्व हो सके। A single organ, composed and proceeding in such a way as to represent the real wishes of the people, would be the logical law-making body.

भारतका लोकमत सेकेण्ड चेम्बरकी स्थापनाके विरुद्ध है, इस बातको प्रकारान्तरसे Indian Franchise Committee की रिपोर्टमें भी स्वीकार किया गया है। और देशोंके शासन-विधान चाहे जो-कुछ हों, किन्तु भारतमें सेकेण्ड चेम्बर State Council का अब तकका इतिहास तो यही बताता है कि इसके सदस्योंने बराबर लोकमत और प्रगतिके विरुद्ध आचरण किया है। कायमी हकों और प्रतिक्रियागामी दलके प्रतिनिधिके रूपमें इन्होंने धनिक श्रेणीके स्वार्थोंका समर्थन किया है और सर्वसाधारण तथा श्रमजीवी श्रेणीके स्वार्थोंका विरोध किया है। इस देशमें सेकेण्ड चेम्बरके हामी वे ही लोग हैं, जो धनिक और प्रतिपत्तिशाली हैं, समाजके ऊपर जिनकी सत्ता है और जो अपनी सत्ता एवं श्रेणीगत सुविधाओंको अक्षुण्ण रखनेके लिए व्यवस्थापिका सभाओंमें प्रवेश करना चाहते हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने दलगत स्वार्थोंकी रक्षा करना है, जनताके स्वार्थोंकी रक्षा करना नहीं।

प्रस्तावित शासन-विधानमें जिन प्रान्तोंमें सेकेण्ड चेम्बर स्थापित किये जानेकी सिफारिश की गयी है, वहां दो व्यवस्थापिका सभायें होंगी, जिनमें एक Legislative Assembly अर्थात् सर्वसाधारण-प्रतिनिधि-परिषद् और दूसरी सेकेण्ड चेम्बर Legislative Council कही जायगी। इस Legislative Council का विभिन्न प्रान्तोंमें इस प्रकार गठन होगा:—

| गवर्नर द्वारा मनोनीत | बङ्गाल | बिहार | बम्बई | मद्रास | संयुक्तप्रान्त |
|---|---|---|---|---|---|
| कमसे कम— | ६ | ३ | ३ | ८ | ६ |
| अधिकसे अधिक | ८ | ४ | ४ | १० | ८ |

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सर्वसाधारण | निर्वाचित | १० | ९ | २० | ३९ | ३४ |
| मुसलमान | | १७ | ४ | ९ | ७ | १७ |
| यूरोपियन | | ३ | १ | १ | १ | १ |
| भारतीय ईसाई | | × | × | × | ३ | × |
| प्रान्तीय व्यवस्थापिका परिषद् (Lower house) के सदस्यों द्वारा निर्वाचित— | | २७ | १२ | × | × | × |
| कुल जोड़— | | | | | | |
| कमसे कम | | ६३ | २९ | २९ | ५४ | ५८ |
| अधिकसे अधिक | | ६५ | ३० | ३० | ५६ | ६० |

इसके वोटर वे ही लोग होंगे जो सरकारको अधिक मालगुजारी या इनकमटैक्स देते हैं। इस समय स्टेट कौन्सिलके वोटरोंकी जो योग्यता है उससे कुछ ही कम प्रान्तीय Legislative Councils के वोटरोंकी Property qualification धन-सम्बन्धी योग्यता रहेगी। सब प्रान्तोंमें कुछ गवर्नर द्वारा नामजद सदस्य होंगे। इसकी सदस्यताके लिए अवसर-प्राप्त उच्च सरकारी पदाधिकारी, जैसे हाईकोर्टके जज, मिनिस्टर, शासन-समितिके सदस्य Executive Councillors और विश्वविद्यालयके वाइस-चान्सलर भी उम्मीदवार हो सकेंगे। यह कौन्सिल कभी भङ्ग नहीं की जायगी और इसके एक-तिहाई सदस्य बारी-बारीसे तीन-तीन वर्षके अन्तरपर अवसर ग्रहण करेंगे। व्यवस्थापिका परिषद् द्वारा पास किये गये किसी कानूनपर पुनर्विचार करने और उसे एक वर्ष तक रोक रखनेका इसे अधिकार होगा।

इस प्रकार प्रान्तोंके भावी शासन-विधानमें यह सेकेण्ड चेम्बर धनिक जमींदारों, अवसर-प्राप्त उच्च सरकारी पदाधिकारियों तथा समाजके प्रतिक्रियागामी कट्टरपन्थियोंका दुर्ग बनेगा। और यह इसलिए किया गया है ताकि इनके द्वारा कांग्रेस-दलकी जो राजनीतिक एवं सामाजिक गणतन्त्र स्थापित करनेका प्रयत्न कर रहा है, शक्तियां प्रतिहत होती रहें। सर्वसाधारण जनताको इससे लाभ तो कुछ नहीं होगा, उलटे इसके द्वारा हानि ही होगी। क्योंकि भारत-जैसे गरीब देशके लिए प्रान्तमें सेकेण्ड चेम्बरकी स्थापना करके प्रान्तीय शासनके खर्चमें प्रतिवर्ष १० लाखसे १५ लाख तककी वृद्धि करना कर-पीड़ित जनतापर और भी कर-भार लादना है। और किसी कारणसे नहीं तो एकमात्र इस व्यय-वृद्धिके कारणसे ही प्रान्तोंमें सेकेण्ड चेम्बर स्थापित किया जाना सर्वथा निरर्थक कहा जा सकता है। इस १०-१५ लाख रुपयेसे तो प्रतिवर्ष कितने ही लोकहितकर कार्य किये जा सकते हैं जिनसे जनताकी वास्तविक भलाई हो सकती है। किन्तु इन बातोंको सुनता ही कौन है? यहां तो देशके मुट्ठी-भर कायमी हक-वाले लोगोंको सन्तुष्ट करने, उनके स्वार्थकी रक्षा करने और साथ ही व्यवस्थापिका परिषद् (Legislative Assembly) के अधिकारोंको संकुचित करनेके उद्देश्यसे ही यह सब जान-बूझकर किया गया है। अन्यथा संरक्षणोंके जाल द्वारा प्रान्तीय स्वायत्त-शासनको आबद्ध करके और गवर्नरको निरंकुश शासक बनाकर भी प्रान्तीय व्यवस्थापिका परिषद्के गलेमें इस सेकेण्ड चेम्बर रूपी चक्कीको बांधनेकी आवश्यकता ही क्या थी! यही उस प्रान्तीय स्वायत्त-शासनका रूप है जिसका संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टमें गुणगान किया गया है, और जिसके सम्बन्धमें अधिकारियोंकी ओरसे जनताको यह विश्वास करानेकी चेष्टा की जा रही है कि उसे सचमुच प्रान्तीय स्वराज्य-रूपी प्रसाद मिल गया है। किन्तु भारत-वासी अब इतने मूर्ख नहीं रह गये हैं कि वे प्रान्तीय स्वराज्यकी इस मृगतृष्णाको वास्तविक समझकर उससे सन्तुष्ट हो जायें।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

श्री शिवपूजनसहाय

ईश्वरका नाम जगन्नाटक-सूत्रधार है। उसने अपने मनोरञ्जनके लिए यह संसार-रूपी नाट्यशाला बनायी है। रूपकमें कहा जाता है कि पृथ्वी रङ्ग-मञ्च है; आसमान पर्दा है; सूरज-चांद रोशनी हैं; जङ्गल, पहाड़, नदी, समुद्र, घटा, बिजली, इन्द्रधनुष आदि पर्दोंके विविध चित्र हैं और प्राणिमात्र अभिनेता हैं।

यदि ऐसी बात है तो विश्व-रङ्गमञ्चपर आजसे पचास वर्ष पूर्व एक अपूर्व अभिनेता अवतीर्ण हुआ था—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र! वैसा अभिनेता पिछली शताब्दियोंके इतिहासमें भी विरला ही कोई मिलता है। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं, आप स्वयं परखकर देखिये।

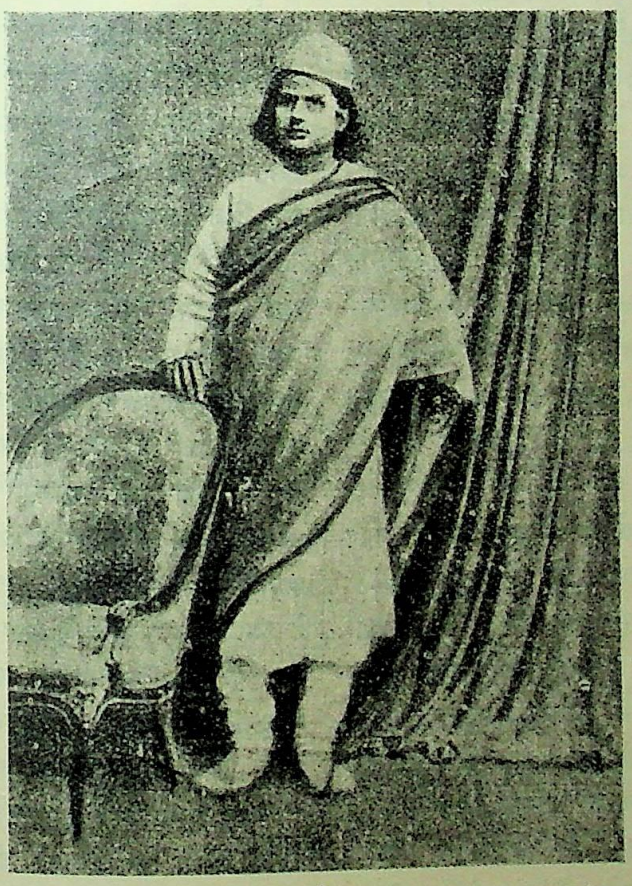

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

साहित्यके नवरसोंके अभिनयमें भारतेन्दुकी स्वाभाविकताकी समीक्षा कीजिये, आप स्पष्ट देखेंगे कि शृङ्गार, हास्य, करुण, वीर, अद्भुत, शान्त आदि रसोंके अभिनयमें वे कितने सफल प्रतीत होते हैं। उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा वस्तुतः विस्मयकारिणी है। जिस रङ्गमें आप उन्हें देखेंगे उसी रङ्गमें सराबोर पावेंगे। कविता, नाटक, इतिहास, आख्यायिका, व्यंग्यविनोद, जीवन-चरित, धर्मग्रन्थ, जो कुछ लिखना चाहा, आश्चर्यजनक सफलताके साथ लिखा। इतना ही नहीं, उनको आप विश्व-रङ्गमञ्चपर अनेक रूपोंमें देखेंगे—कवि, नाट्यकार, साहित्य-निर्माता, अभिनेता, समाज-सुधारक, देशभक्त, व्याख्याता, दानी, धर्मनिष्ठ, भक्ति-परायण, विलासी, विनोदी, लोक-सेवक, शिक्षा-प्रचारक, पत्र-सम्पादक, देश-पर्य्यटक, सङ्गीत-मर्मज्ञ, चित्रकलानुरागी, सभाचतुर, अन्वेषक, समालोचक, स्वाध्यायशील, पुरातत्त्वप्रेमी, मित्रवल्लभ—चाहे जिस रूपमें, चाहे जिस कलामें, "जेतो निहारिये नेरे ह्वै नैननि तेतो खरी निकरै-सी निकाई।"

भारतेन्दुजीका रूप जितना सुन्दर था, उनका हृदय उससे कहीं अधिक आकर्षक था। विश्व-रङ्गमञ्चपर उनका प्रत्येक स्वांग अभिनव छटा दिखाता है। उनमें असीम गुणथे। वे सर्वगुणसम्पन्न थे। इसीलिए उनका यश दिगन्तव्यापी हुआ। इसीलिए उस समयके सभी प्रसिद्ध पुरुषोंकी मैत्री उन्हें सुलभ हुई। स्वनामधन्य ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, वङ्ग-साहित्य-सम्राट् बङ्किमचन्द्र, विद्वद्वर राजा राजेन्द्रलाल मित्र, श्री कृष्णदास पाल, श्री केशवचन्द्र सेन आदि वङ्गीय महापुरुष उनके मित्रवर्गमें थे। उदयपुर, छतरपुर, किशनगढ़, काशी, ओरछा, रीवा, दरभङ्गा, डुमरांव, सूर्यपुरा और मझौलीके राजा-महाराजा उनके गुण-ग्राहक और चाहक थे राजा-प्रजा दोनोंमें उनका समान आदर था। राजभक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और देशभक्तिका अभूतपूर्व सङ्गम उन्हींमें दीख पड़ता है। विलक्षण व्यक्तित्व था।

लगभग सोलह--अठारह वर्षकी अवस्थासे उन्होंने साहित्य-सेवाका श्रीगणेश किया। यों तो बचपन हीसे कविता करने लग गये थे; पर युवक होनेपर जो लेखनी उठायी तो साहित्यमें युगान्तर उपस्थित करके ही छोड़ा। सन् १८८५ ई० में, केवल पैंतीस वर्षकी उम्रमें, गोलोकवासी हुए। किन्तु सत्रह-अठारह वर्षके अन्दर ही जो कुछ कर गये वह बड़े-बड़े दीर्घजीवी भी न कर पाये। उनकी ग्रन्थावली छः बड़े-बड़े खण्डोंमें विभक्त है। उसमें छोटे-बड़े लगभग पौने दो सौ ग्रन्थ हैं। पत्र-पत्रिकाओं, कवि-समाजों और सभा-सोसाइटियोंके लिए लिखी गयी स्फुट रचनाओंकी कोई गणना नहीं। हिसाब लगाकर देखा जाय तो जान पड़ेगा कि सत्रह-अठारह वर्षका समय अहर्निश लिखते ही बीता। हजारों पेज लिखा भी और संसारके अन्यान्य सुखोंका उपभोग भी किया। सम्भवतः प्रत्येक क्षण आनन्दमें ही बिताया। साहित्य-निर्माणसे छुट्टी मिली, तो चित्र-संग्रहमें लग गये। उससे अवकाश मिला, तो सङ्गीत-सरितामें बह चले। कभी नाटक खेल रहे हैं, कभी ताश-शतरञ्ज-चौपड़। कहीं सभामें व्याख्यान दे रहे हैं, कहीं कवि-समाजमें समस्या-पूर्त्तियां सुना रहे हैं। मित्रोंमें बैठ गये तो हंसीके फव्वारे छूटने लगे। बालकोंमें मिल गये तो पूरे कुंवर कन्हैया बन रहे। ठीक अपने प्यारे इष्टदेव श्रीकृष्णकी भांति हर रङ्गमें चोखे!

हिन्दी-साहित्यके इतिहासमें ऐसा अनूठा पुरुष कहीं कठिनतासे मिलेगा। गद्य और पद्यपर समान अधिकार। ब्रजभाषा और खड़ी बोलीपर भी वैसा ही प्रभुत्व। बात-बातमें विनोद और पग-पगपर परिहास। धुन सवार हो गयी तो एक ही दिनमें 'अन्धेर नगरी' प्रहसन लिख डाला। कलम उठाते ही हिन्दी-गद्यका परिष्कार होने लगा। नवीन परिमार्जित शैलीके प्रवर्त्तक बनते देर ही न लगी। कविताकी तो धारा ही पलट दी। हिन्दीवालोंको राग-रङ्ग छोड़कर देश-दशापर ध्यान देनेका मार्ग सुझाया। साहित्यका कायाकल्प कर डाला।

नाट्यकार ऐसे सच्चे कि अन्तिम समयमें जब दासी समाचार पूछने आयी तो कहा कि हमारे जीवनके नाटकका प्रोग्राम नित्य नया छप रहा है, जिसके पहले दिन ज्वरकी, दूसरे दिन शूलकी और तीसरे दिन खांसीकी—तीन तो हो चुकीं, अब देखें लास्ट नाइट कब होती है!

साहित्यिक मित्र भी उनके समतूल ही मिले थे। कहते हैं कि भारतेन्दु-सखा 'प्रेमघन'जी भी नाटक खेलनेके बड़े शौकीन थे। पहले-पहल 'सत्यहरिश्चन्द्र' का अभिनय होने लगा तो स्वयं भारतेन्दु ही सत्यप्रतिज्ञ हरिश्चन्द्रकी भूमिका धारण करनेको उद्यत हुए; पर शर्त यह लगा दी कि मेरे योग्य 'शैव्या' मिलेगी तो पार्ट करूंगा। इसपर प्रेमघनजी तैयार हो गये। भारतेन्दुजीने कहा—"तुम्हारे तो पिता जीवित हैं, मूंछोंका सफाया कैसे होगा?" प्रेमघनजी छूटते ही बोल उठे—"हिन्दीके लिए गर्दन तक कटा सकता हूं, मूंछ निगोड़ी क्या चीज है!" इसी प्रकार पण्डित प्रतापनारायण मिश्र भी खासकर नाटकमें स्त्री-पात्र बननेके लिए ही सदा केश-पाश रखते थे। ये बातें भारतेन्दुजीकी जीवनीके लेखक स्वर्गीय बाबू शिवनन्दनसहायजी कहा करते थे।

भारतेन्दुजी बहुभाषाभिज्ञ भी थे। एक बार युवावस्थामें आरा नगरकी एक बारातमें काशीसे आये थे। उस समय लोगोंके आग्रहसे उन्होंने छब्बीस पंक्तियोंमें तेरह भाषाओंकी लिपियां लिखी थीं। उनकी वह अमूल्य हस्तलिपि आराकी नागरी-प्रचारिणी सभाको स्वर्गीय बाबू रामकृष्णदास अग्रवालने दी थी। मैं सभाका सहायक मन्त्री था और उस हस्तलिपिको शीशेमें मढ़ाकर अखिल-भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके पटनावाले दशम अधिवेशनकी प्रदर्शनीमें ले गया था। प्रदर्शनीके प्रबन्धक थे बाबू जगतनारायणलाल एम० ए० एल-एल०बी० (वर्तमान प्रधान मन्त्री, हिन्दू महासभा)। उनको उस हस्तलिपिके खो जानेका बड़ा दुःख हुआ। पता नहीं, उसे प्रदर्शनीसे किसने गायब कर दिया। आज वह चीज होती तो भारतेन्दु-अर्द्धशताब्दीके अवसरपर उसकी शोभा निराली ही दीख पड़ती। उसीके साथ एक हस्तलिखित ग्रन्थ भी खो गया था, जो उक्त सभासे ही प्रदर्शनीमें आया था। वह परमानन्द कवि-कृत बिहारी सतसईकी संस्कृत-टीका थी। उसी टीकापर भारतेन्दुजीने परमानन्द कविको पांच सौ रुपया पुरस्कार दिया था। इन दोनों अमूल्य वस्तुओंकी स्मृति आज खल रही है।

भारतेन्दुजीके समान चिरस्मरणीय महापुरुषका जितना भी गुणगान किया जाय, थोड़ा होगा। बड़े आनन्दका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विषय है कि हिन्दी-संसार उनकी पचासवीं स्मृति-तिथि मना रहा है। यह पूरा साल उनकी यादमें बीतना चाहिए। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभामें माघ-कृष्ण ६ (२५ जनवरी) को भारतेन्दुजीकी निधन-अर्द्ध शताब्दी धूम-धामसे मनायी जायगी। उस अवसरपर भारतेन्दु-ग्रन्थावली भी सभा द्वारा प्रकाशित होगी। भारतेन्दुजीके दौहित्र और हिन्दीके ख्यातनामा विद्वान् लेखक बाबू ब्रजरत्नदासजी बी० ए० एल-एल० बी०ने भारतेन्दुजीकी नयी प्रामाणिक जीवनी लिखी है, जो उक्त अवसरपर प्रयागकी हिन्दुस्तानी एकाडमी द्वारा प्रकाशित होगी। उक्त बाबू साहबने ही भारतेन्दु-ग्रन्थावलीका भी सम्पादन-भार ग्रहण किया है। जो हिन्दी-प्रेमी समर्थ और सम्पन्न हैं उन्हें सम्पूर्ण भारतेन्दु-ग्रन्थावली खरीदकर सभाकी सहायता द्वारा भारतेन्दुजीको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनी चाहिए। देश-भरसे भारतेन्दु-अर्द्ध शताब्दी महोत्सव मनानेके शुभ संवाद सुनाई दे रहे हैं। यह हिन्दीकी वृद्धिके शुभ लक्षण हैं। सन् १९५० ई० में भारतेन्दुजीकी जयन्ती-शताब्दी पड़ेगी और सन् १९८५ ई० में निधन-शताब्दी। इस अर्द्ध-शताब्दीपर हिन्दी-साहित्य-संसारको कुछ ऐसा काम कर दिखाना चाहिए कि भावी जयन्ती-शताब्दी और निधन-शताब्दीके अवसरोंपर उसका सगर्व उल्लेख हो सके। कहीं ऐसा न हो कि अगली पीढ़ीको ग्लानिकी हंसी हंसनेका अवसर मिले। आज हम सब हिन्दी-भाषा-भाषी इस वीर-पूजाके शुभ अवसरपर अपने एक महान् साहित्य-महारथीका सादर स्मरण कर रहे हैं और जब तक हिन्दी भाषा तथा नागरी-अक्षरका अस्तित्व रहेगा तब तक यह पुण्य स्मृति भावी पीढ़ियोंको गौरवान्वित करती रहेगी।

---

# मेरे दिन

*यों ही चले ये अल्प दिन !*
*धूमिल रुदनमय अल्प दिन !*

*तनमें न सुख, मनमें न सुख, जगमें न सुख मेरे लिए।*
*क्या खोजती आत्मा अभागिनि अन्धकार-सुरा पिए !*
*क्या कर्म है, क्या धर्म है, इस मर्मसे अनजान हूं।*
*हां, शैलसे नित गिर रही मैं एक लघु पाषाण हूं !*

*मैं ज्ञान-बुद्धि-विहीन हूं,*
*बल, सुख, विभवकी दीन हूं ;*
*जलके अगम जलमें उपेक्षित*
*एक नन्हीं मीन हूं !—*
*सच, मैं बिना अवलम्बकी असहाय लघुतम मीन हूं।*

× × × ×

*हैं मिल रहे प्रतिघात, पीड़न ;*
*आत्म-दम्भी प्राणियोंके*
*स्वार्थ, छलके तीक्ष्ण दंशन !!*

CC-0. In Public Domain. GurukuL Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अह, गयी हूं जब इस मिथ्या जगतके जालसे ;—
दारुण कंटीले जालसे !!

× × × ×

कुछ भी न समझी विश्वको,
यह सत्य है, निस्सार है !
हां, यह हुई अनुभूति दृढ़
यह एक कारागार है ।—
दुख-द्वेषका आधार है ।—
सुख-प्रेमकी मधु कल्पना ,
निस्सार है ! निस्सार है !!

—तब इस विषम दृढ़ व्यूहकी मैं तालिका पाऊं कहां ?
जिन कारणोंसे मुक्ति हो वे उपकरण लाऊं कहां ?

× × × ×

—पर हूं अशक्त कहो, मुझे
फिर खेद क्यों इस हालपर !
उस शक्तिमयकी लौह-लेखा
है खिंची इस भालपर !

× × × ×

—या पूर्व कर्मोंके अमिट फल बीतते ये अल्प दिन !
—जग-वासके ये करुण दिन !

—गिरीशचन्द्र पन्त

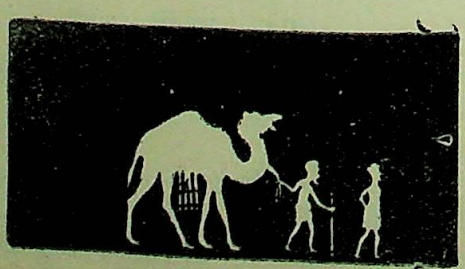

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वायुयानोंकी प्रगति

श्री श्यामनारायण कपूर

विद्वानोंका कथन है कि जबसे मनुष्यमें सोचने और समझनेकी शक्तिका विकास हुआ होगा तबसे ही पक्षियोंको आकाशमें स्वच्छन्दतापूर्वक उड़ते देख उसने भी आकाशमें उड़ने और भ्रमण करनेकी इच्छा की होगी और जैसे-जैसे उसकी बुद्धिका विकास होता गया होगा, उसकी आकाशमें भ्रमण करनेकी इच्छा भी बहुत बलवती होती गयी होगी।

अपनी इस इच्छाको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए मानव-समाजने प्राचीन युगमें क्या प्रयत्न किये, इसका क्रम-बद्ध इतिहास अप्राप्य है। परन्तु प्रायः प्रत्येक युग और प्रत्येक देशके इतिहासमें आकाशमें भ्रमण करने या आकाशमें यात्रा करनेवाले विमानों, उड़नखटोलों और उड़नेवाले घोड़ों आदिकी पौराणिक एवं कल्पित कहानियां अवश्य मिलती हैं। हमारे देशकी पौराणिक कथाओंमें आकाशगामी वायुयानों-का हाल प्रचुर मात्रामें मिलता है। इन कथाओंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन कालमें एक युग ऐसा अवश्य रहा होगा जब आकाश-मार्गसे यात्रा करना एक साधारण-सी बात थी। उस जमानेके देवताओं और गन्धर्वोंके लिए आकाशमें विचरण करना एक मामूली-सी बात थी। नारद-जैसे महा-मुनि भी इच्छानुसार स्वर्गलोकसे मृत्युलोक और मृत्युलोकसे स्वर्गलोक आकाश-मार्ग द्वारा ही यात्रा करते थे। देवतालोग आवश्यकता पड़नेपर मृत्युलोकके दुष्यन्त सरीखे चक्रवर्ती एवं पराक्रमी राजाओंको अपनी सहायताके लिए आकाशगामी विमानोंसे बुला लिया करते थे। मृत्युलोकके रावण-जैसे पराक्रमी एवं वैभवशाली सम्राट् देवताओंके अर्थमन्त्री कुबेरके पुष्पक विमानको जबरदस्ती छीन लाते थे। हमारा प्राचीन साहित्य ऐसी ही अनेक कथाओंसे परिपूर्ण है। परन्तु यहां हमें उन सबकी चर्चा नहीं करनी है।

ये कथायें वास्तविक हैं अथवा कवि-कल्पना-मात्र, यह एक विवादग्रस्त विषय है। परन्तु यह तो निश्चित ही है कि इन कथाओंमें—किसी आलङ्कारिक भाषामें भी—यह वर्णन नहीं मिलता कि प्राचीन युगके विमान, उड़नखटोले अथवा घोड़े आकाशमें कैसे उड़ते थे। अस्तु, इन सबकी और अधिक चर्चा न करके हम वर्तमान कालकी ओर आते हैं।

वर्तमान कालमें वायुयानोंकी कृपासे महीनों और हफ्तोंमें समाप्त होनेवाली यात्राएं अब केवल कुछ दिनों और घण्टों में ही समाप्त हो जाती हैं। १४९२ ई० में कोलम्बसको यूरोपसे अमेरिका पहुंचनेमें ६९ दिन लग गये थे और १९३४ ई० में इटेलो बाल्बोने यही यात्रा ४७॥ घण्टेमें पूरी कर ली। सोलहवीं शताब्दीमें मेगलेन (Maglen)के जहाजों को संसार भरकी परिक्रमा करनेमें १९५ सप्ताह लग गये थे, परन्तु बीसवीं शताब्दीमें बिलीपोस्टको विश्वकी परिक्रमा कर-नेमें केवल एक सप्ताह लगा। अस्तु, वर्तमान कालमें आवा-गमनके साधनोंमें सबसे अधिक क्रान्तिकारी एवं महत्वपूर्ण परिवर्तन इसी बीसवीं शताब्दीमें हुए हैं। वायुयानोंके आ-विष्कारने रेल और जहाजोंको भी हटा दिया है और समय एवं दूरीकी समस्याको हल करनेके साधनोंमें जबरदस्त क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। रेल, मोटर और जहाज बहुत दिनों तक मनुष्य-समाजको आश्चर्य-चकित करते रहे और कहीं-कहीं तो अब तक आश्चर्य-चकित कर रहे हैं, परन्तु हवाई-जहाज इन सबसे बहुत आगे निकल गया है।

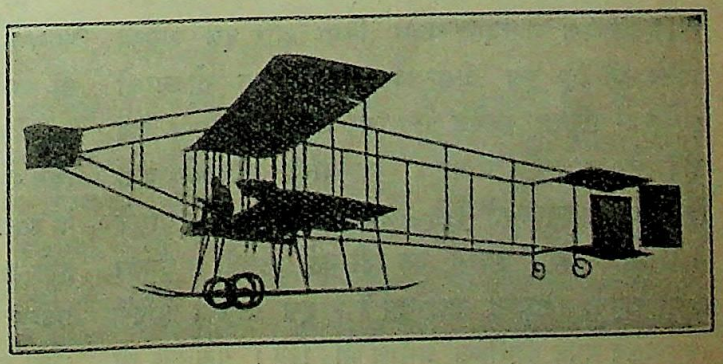

सन् १९०३ ई० में संसारके सर्वप्रथम वायुयानपर विल्बर राइट अमेरिकाके उत्तर केरोलिना प्रदेशमें उड़ रहे हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वैसे तो वर्तमान कालमें १३वीं शताब्दीसे ही वायुमें उड़नेके प्रयत्न आरम्भ हो गये थे, परन्तु आधुनिक वायुयान-का जन्म इस बीसवीं शताब्दीमें ही हुआ है। १६ दिसम्बर १९०३ ई० में राइटबन्धु सबसे पहिली बार वायुसे भारी मशीनकी सहायतासे वायुमें उठनेमें सफल हुए थे। उससे पहिले जितने भी प्रयत्न हुये थे वे सब गुब्बारोंकी मददसे हुए थे। ये गुब्बारे वायुकी अपेक्षा हलके होते थे और उन्हें हलका बनाये रखनेके लिए उनमें हाइड्रोजन-जैसी हलकी गैस भर दी जाया करती थी।

राइट बन्धुओंके प्रथम प्रयत्नके बाद शीघ्र ही अमे-रिकाके उत्तरी केरोलिना प्रदेशमें एक दुपङ्खी वायुयान बन कर तैयार हुआ। वह पहले पेट्रोल इञ्जिन द्वारा चलाया गया था और केवल ५९ सेकण्ड तक वायुमें रह सका था। आधुनिक वायुयानोंका श्रीगणेश यहींसे होता है। १९०५ ई० के अन्त तक राइट बन्धुओंने भी अपनी मशीनमें इतनी उन्नति कर ली थी कि उसे किसी भी इच्छित दिशामें घुमाया जा सकता था। उस वर्ष वे १ घण्टा, १० मिनट और २५ सेकेण्डमें केवल ५० मीलकी दूरी तय कर पाये थे। उसके तीन वर्ष बाद १९०८ ई० में विल्बर राइटने अपनी मशीनकी सहायतासे पेरिसके आस-पास उड़कर फ्रान्सके लोगोंको आश्चर्य-चकित कर दिया और इस उड़ानके लिए २० हजार पौण्डका पारितोषिक प्राप्त किया।

रेलवे और स्टीमरोंकी तरह इन वायुयानोंकी उन्नतिके मार्गमें काफी रोड़े अटकाये गये। इनकी उन्नति चाहनेवालों-को काफी लोकोपहास सहना पड़ा। साइमन न्यू काम्ब नामक एक अमेरिकन वैज्ञानिकने इनकी उन्नति और उप-योगके खिलाफ जबरदस्त प्रचार किया और इस बातकी अपील की कि इस असम्भव एवं निष्फल योजनाको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए और अधिक प्रयोग न किये जायं और इन प्रयोगोंमें नष्ट हो जानेवाली जानोंको बचा लिया जाय। इतना ही नहीं, उसने यह भी कहा कि वायुसे भारी मशीनें कभी हवामें उड़ ही नहीं सकतीं। उनका वायुमें उड़ना नितान्त असम्भव है। इस बातकी पुष्टिके लिए उसने यथेष्ट वैज्ञानिक प्रमाण भी दिये। एक बार तो उसने यहां तक कहा कि वायुमें उड़ना मनुष्यकी शक्तिके बाहर है। वायुमें उड़नेका विचार मूर्खतापूर्ण है, मनुष्यों द्वारा बनाये हुए यन्त्रोंसे इसमें कभी सफलता नहीं प्राप्त हो सकती। एक-न-एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा, जब मनुष्यको हार मानकर बैठ जाना होगा।

प्रो० न्यू काम्बकी इस भविष्यवाणीको पढ़नेके बाद यदि हम संसारके वर्त्तमान वायु-मार्गोंपर दृष्टिपात करें, तो हमें जमीन आसमानका अन्तर मालूम होगा। जो बात आजसे २५ वर्ष पूर्व तक नितान्त असम्भव एवं दुर्लभ समझी जाती थी, वही आज पूर्णतया सम्भव और सुलभ हो गयी है। वायुयानोंकी उन्नति किसी देश विशेष ही तक सीमित नहीं है। आज संसारमें शायद ही कोई ऐसा देश होगा, जिसके निजके वायुयान न हों। अमेरिका और यूरोपमें तो वायु-मार्गोंका जाल-सा बिछा हुआ है। इन महाद्वीपोंके किसी भी भागमें वायुयानोंकी सहायतासे कम-से-कम समयमें पहुंचा जा सकता है। सोवियट रूसने अपने वायु-मार्गोंके जालको एशियामें फैला रखा है और उसे चीनके बढ़ते हुए वायु-मार्गोंसे सम्बद्ध कर दिया है। ब्रिटेनने दूर-दराजके देशोंको वायु-मार्गोंसे सम्बन्ध करनेमें सफलता प्राप्त कर ली है। लन्दनसे अफ्रीकाके केपटाउन और एशिया-के सिंगापुर तक और वहांसे आस्ट्रेलिया तक पहुंचना एक साधारण-सी बात हो गयी है। फ्रान्स और हालैण्डने भी अपने वायु-मार्गोंको अपने अधीनस्थ देशों—इण्डोचाइना और जावा तक बढ़ा लिया है। संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाने दक्षिण अमेरिकाके प्रत्येक देशसे वायु-मार्ग द्वारा सम्बन्ध स्थापित कर लिया है। इंगलैण्डसे भारतको तो अब प्रायः नित्य ही कोई-न-कोई वायुयान आता ही रहता है।

प्रायः इन सभी वायु-मार्गोंपर चलनेवाले जहाज बड़ी शान-शौकतके होते हैं। इनकी सहायतासे मुसाफिर थोड़े ही समयमें पृथ्वीके एक छोरसे दूसरे छोर तक बड़े आरामसे पहुंच जाता है। हालहीमें अमेरिकामें ऐसे वायुयान चालू किये गये हैं, जिनमें मुसाफिर यात्रा करते समय बड़े आराम-के साथ सो सकते हैं। उनमें आधुनिक रेलों और जहाजों-हीके सदृश बड़े-बड़े और आरामदेह बर्थों ( Berths ) का प्रबन्ध किया गया है। इसके साथ ही यात्रा-सम्बन्धी अन्य सुविधाओंका भी समुचित प्रबन्ध है।

इतनी उन्नति हो जानेपर भी अभी तक उत्तरी अट-लांटिक महासागर और प्रशान्त महासागरपर इन वायुयानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



द्वारा विजय प्राप्त करना बाकी है। जर्मनीने दक्षिण अटलांटिक महासागर होकर दक्षिण अमेरिका तक अपने वायुयान भेजना आरम्भ भी कर दिया है। जर्मनी और ब्रेजिल (दक्षिण अमेरिका) में आगामी तीस वर्षोंके लिए डाक ले जाने और ले आनेका ठेका तय भी हो गया है। इस कार्यमें ब्रेजिलने लगभग १५ लाख रुपये खर्च किये हैं। फ्रान्स भी करीब-करीब एक ऐसी ही योजनाके अनुसार काम कर रहा है।

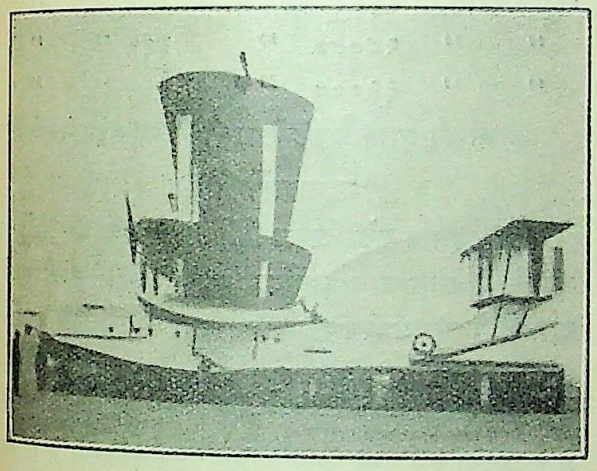

सबसे नये ढंगका अंगरेजी जलीय वायुयान—यह ७० फीट लम्बा और ९७ फीट चौड़ा है; इसपर २ हजार पौण्ड वजनकी तोप और गोले रखे रहते हैं। तोप एक मिनटमें डेढ़-डेढ़ पौण्डके एक सौ गोले दागती है। इसकी गति घण्टेमें १३२ मील है।

वायुयानों द्वारा लम्बी-दूरीकी यात्राएं करनेके साधनोंमें बहुत उन्नति हुई है। अमेरिकाके डाक ले जानेवाले वायुयानोंमें स्कोरस्काईज (Skorskys) नामक जहाज १२९० गेलन पेट्रोलके साथ ३० मील प्रति घण्टेकी रफ्तारसे चलनेवाली वायुके विरुद्ध २५०० मील तककी यात्रा कर रहा है। इतना अधिक ईंधन ले जानेके कारण यह केवल ५०० पौण्ड वजनी डाक साथ ले जा सकता है। ईंधनकी मात्रा कम होनेपर इस जहाज द्वारा ३२ मुसाफिर भी जा सकते हैं। उस दशामें २५०० मीलके बजाय यह जहाज केवल १९०० मीलकी दूरी तय कर पाता है।

इस समय संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी सरकार एक और महत्वपूर्ण योजनापर विचार कर रही है। उसका इरादा अटलांटिक महासागरमें ५००—५०० मीलकी दूरीपर वायुयानोंके ठहरने और उन्हें मार्ग आदि बतानेके लिए सी ड्रोम (Sea drome) बनानेका है। परन्तु इस कार्यमें बड़े अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े-बखेड़े हैं। दूसरे राष्ट्र इस बातको गवारा न करेंगे कि अटलांटिक महासागरमें जगह-जगह अमेरिकाके झण्डे गड़ जायं।

जर्मनीके सुप्रसिद्ध ग्रेफजेपलिन (Graf Zepplin) ने केवल सफलतापूर्वक विश्वकी परिक्रमा ही नहीं की है; वह १९३१ से बराबर यूरोपसे दक्षिण अमेरिका तक डाक ले जानेका काम कर रहा है। जर्मनीकी जेपलिन कम्पनीने इस वर्ष इससे भी बड़ा एक और डिरिजिबुल (Dirigible) जहाज तैयार किया है। यह अब तक तैयार होनेवाले समस्त डिरिजिबुल वायुयानोंसे बड़ा है। इसमें डिजल इञ्जिन काममें लाये गये हैं। जर्मनीने ब्रेजिलसे डाक सम्बन्धी तीस वर्षका जो ठेका किया है, उसमें यही वायुयान काममें लाया जायगा।

## नवीन आविष्कार

वैज्ञानिक लोग इन वायुयानोंको नित्य-प्रति अधिकसे-अधिक उन्नत बनानेकी चेष्टामें लगे हुए हैं। हालहीमें इस सम्बन्धमें जो आविष्कार हुए हैं, उनसे वायुयानों द्वारा की जानेवाली यात्रामें क्रान्ति उत्पन्न हो जायेगी। इन आविष्कारोंमें तीन विशेषतया उल्लेखनीय हैं। इनमेंसे एक आविष्कारके द्वारा साधारण तथा बहुत अधिक ऊंचाई दोनों ही पर उड़नेके लिए एक ही वायुयान काममें लाया जा सकेगा। अब तक बहुत ऊंचे स्थानोंपर जानेके लिए खास तौरपर वायुयान तैयार किये जाते थे, अब यह कार्य केवल उत्प्रेषक (Propeller Blades) की सहायतासे सम्पन्न हो जाया करेगा।

हवामें जैसे-जैसे ऊपर जाया जाता है, हवा अधिक पतली होती जाती है। इस पतली वायु (Rarer atmosphere) में काम करनेके लिए विशेष प्रकारके यन्त्रोंकी जरूरत पड़ती है। अब एक ऐसा आविष्कार भी कर लिया गया है, जिसकी सहायतासे साधारण और अधिक ऊंचाई दोनोंहीमें एक ही कारब्यूरेटर (Carburetter) से काम चल जायगा। ऊपरकी सूक्ष्म वायुमें पहुंचनेपर यह कारब्यूरेटर अपने-आप ही उसके अनुकूल हो जाया करेगा। तीसरे आविष्कारमें ऐसे नवीन प्रकारके पङ्ख बनाये गये हैं, जिनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सहायतासे तेजसे तेज वायुयानकी रफ्तारको बहुत जल्दी धीमी करके सहूलियतके साथ नीचे उतारा जा सकेगा।

इन आविष्कारोंकी सहायतासे हिमालय सदृश ऊंचे स्थानोंकी यात्रा करना बहुत आसान हो जायगा। इस समय इन वायुयानोंकी उन्नतिका जो क्रम जारी है, उसे देखते हुए यह कहना असंगत न होगा कि शीघ्र ही वह दिन आनेवाला है जब वायु-मार्गोंके प्रमुख जङ्कशनोंमें अन्तर्राष्ट्रीय आवागमनके कारण आजकलके रेलवे जङ्कशनोंसे भी अधिक चहल-पहल हुआ करेगी।

स्टीमरों और समुद्रपर चलनेवाले जहाजोंसे जो यात्राएं कई-कई दिन और सप्ताहोंमें समाप्त होती हैं, वे वायुयानोंकी सहायतासे केवल कुछ घण्टोंहीमें पूरी हो जाती हैं। नीचे दी हुई तालिकासे यह बात अधिक स्पष्ट हो जाती है।

| | जल-मार्ग द्वारा | वायु-मार्ग द्वारा |
|---|---|---|
| न्यूयार्कसे लन्दन | ५॥ दिन | १० घण्टे |
| न्यूयार्कसे सेनफ्रांसिस्को (स्थल) | ४ दिन | ८ घण्टे |
| सेनफ्रांसिस्कोसे टोकियो | १४ दिन | २० घण्टे |
| शिकागोसे ब्यूनस आयर्स (दक्षिण अमेरिका) | २१ दिन | २८ घण्टे |

इधर हालहीमें जो आविष्कार हुए हैं, उनसे इन वायुयानोंकी रफ्तार और भी अधिक बढ़ जायगी और उसके साथ ही बहुत अधिक ऊंचाईपर उड़नेमें आज जिन कठिनाइयों और खतरोंका सामना करना पड़ता है, वे सब बहुत कम हो जायंगे। ऐसा अनुमान किया जाता है कि अब जो वायुयान तैयार होंगे, वे ऊंचेसे ऊंचे वायुमण्डलमें काफी तेज रफ्तारसे उड़ सकेंगे। इन वायुयानोंकी भावी गतिके सम्बन्धमें जो अनुमान किये जा रहे हैं, उनका सारांश नीचे दिया जाता है:—

| ऊंचाई | रफ्तार |
|---|---|
| समुद्री धरातलपर | २२० मील प्रति घण्टा |
| समुद्री धरातलसे २१००० फीट ऊंचे | २८५ " " |
| " " २८००० " | ३१५ " " |
| " " ३९००० " | ३६५ " " |

आशा की जाती है कि ऐसा होनेमें बहुत देर न लगेगी।

## वायुयानोंकी ट्रेन

अब इस बातके प्रयत्न किये जा रहे हैं कि कई-एक जहाजोंको साथ-साथ उड़ाया जाया करे। लम्बी-लम्बी यात्राओंमें तो अवश्य ही ऐसा किया जाय। इन प्रयत्नोंमें काफी सफलता भी मिल चुकी है। अब इन वायुयानोंने साथ-साथ उड़कर जो सबसे बड़ी यात्रा की है, वह ६१०० मील लम्बी है। इसे पूरा करनेमें ४७॥ घण्टे लगे थे। यह १९३३ में की गयी थी। इस यात्रामें २९ वायुयान सम्मिलित थे। इसका आयोजन इटलीके जनरल इटलो बाल्बो (Gen. Italo Balbo) ने किया था। २९ वायुयान एक-साथ रवाना हुए, परन्तु एक रास्तेहीमें नष्ट हो गया। वापसीमें कोई दुर्घटना नहीं हुई। इसी तरह अब तक इन वायुयानोंकी टूकनें रास्तेमें बिना रुके हुए जो सबसे लम्बी यात्रा की है, वह २३९२ मील लम्बी है। इतनी दूरी तक उड़नेमें केवल २४ घण्टे लगे थे। यह यात्रा १९३४ के आरम्भमें अमेरिकन जल-सेनाके ६ वायुयानों द्वारा की गयी थी। वायुयान अमेरिकाके सेनफ्रांसिस्को नगरसे प्रशान्त महासगरके मध्यमें स्थित होनोलूलू नामक द्वीपको गये थे।

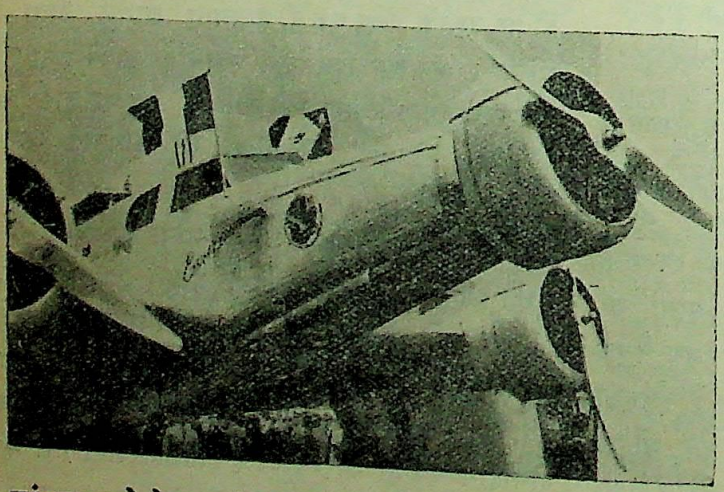

फ्रांसका सबसे तेज उड़नेवाला नये ढंगका वायुयान जिसकी गति प्रति घण्टा १८७ मील है। मुसाफिर और माल-असबाबसे भरा हुआ यह वायुयान प्रति घण्टा १६० मीलके हिसाबसे सफर करता है।

## एक मिनटमें सात मील

इसके अतिरिक्त अकेले जहाजोंको अधिकसे अधिक तेजीसे उड़ानेके भी प्रयत्न बराबर जारी हैं। अब तक ७ मील प्रति मिनट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तककी रफ्तारसे उड़ा जा सका है। इटलीके फ्रांसिसको एगोलोने वायुयान द्वारा ४२३ मील प्रति घण्टेकी रफ्तारसे यात्रा करनेमें सफलता प्राप्त की है। परन्तु इस ओर जिस तीव्र गतिसे बढ़ा जा रहा है, उससे मालूम होता कि शीघ्र ही यह रफ्तार भी मामूली रफ्तार हो जायगी।

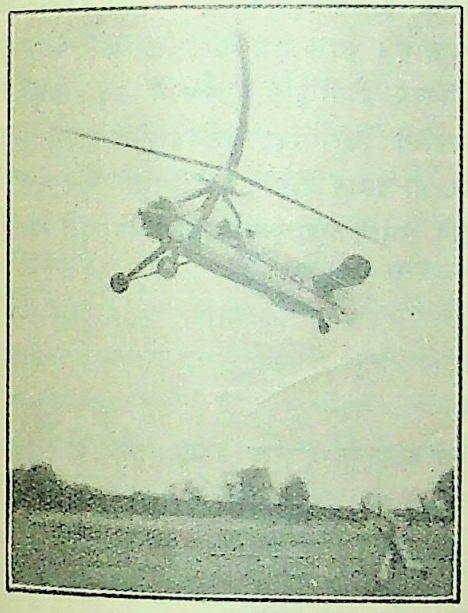

सबसे आधुनिक ढंगका 'आटो जिरो' वायुयान। खबर है कि ताता कम्पनी शीघ्र ही इस ढंगके वायुयानको भारतमें प्रचलित करना चाहती है।

## आटो जिरो

वायुयानोंका सबसे नवीनतम रूप आटो जिरो (Auto-Jiro) है। अकसर कहा जाता है कि वायुयान अथवा हवाई जहाज चिड़ियोंके आकारके बने होते हैं। इसी तरह यह कहा जा सकता है कि ये आटो जिरो मच्छड़के आकारके होते हैं। आटो जिरोके आविष्कारक सेनोर डी ला सीर्वा ( Senor de la cierva ) हैं। उन्होंने इस प्रकारके वायुयानमें सबसे पहिली सफल यात्रा १९२५ ई० में की थी। इस यानमें साधारण वायुयानोंके पङ्खोंके बजाय तीन पतले और तङ्ग घूमनेवाले (NarrowR otor Blades) आरे लगे रहते हैं। ये आरे केन्द्रीय कक्षके चारों ओर घूमा करते हैं। इनकी सहायतासे बिना आगे बढ़े हुए ही ऊपर उठा जा सकता है। घूमनेवाले आरे केवल वायुकी ही शक्तिके सहारे घूमा करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिकामें आटो जिरोका प्रचार बहुत बढ़ गया है। अमेरिकन पुलिस आटो जिरोको ही अपने काममें लाती है।

हालहीमें सेनोर डी ला सीर्वाने अपनी इस नवीन मशीनसे इंगलैण्डमें बड़े विचित्र प्रदर्शन किये थे। इसमें बैठकर वे बिलकुल सीधे आकाशमें ऊपर उड़े और सीधे ही नीचे उतरे। टिड्डेकी तरह आकाशमें इधर-उधर मंडराते रहे। साधारण श्रेणीके वायुयानोंको पृथ्वीपर उतरने एवं पृथ्वीसे ऊपर उड़नेके लिए लम्बे-चौड़े मैदानोंकी जरूरत है। आटो जिरोको न तो उतरनेहीके लिए मैदानकी जरूरत है और न ऊपर उड़नेहीके लिए। यह साधारण वायुयानोंकी तरह ज्यादा जगह भी नहीं घेरता और मोटरकारके-से गेरेज (Garage, मोटर रखनेका घर ) में रखा जा सकता है। इसका परिचालन भी अधिक सरल है। अब तक जो आटो जिरो व्यवहारमें लाये जा रहे हैं, उनकी अधिकसे अधिक रफ्तार १०० मील प्रति घण्टा है।

## जलीय-वायुयान 'Sea-plane'

प्रारम्भिक अवस्थामें वायुयान बहुधा दुर्घटनाओंमें फंसकर समुद्रमें गिरकर नष्ट हो जाया करते थे। वर्षों तक वायुयानोंकी उन्नतिमें इससे बड़ी बाधा पड़ती रही। अब इस बाधापर भी विजय प्राप्त कर ली गयी है। वायुयानोंको

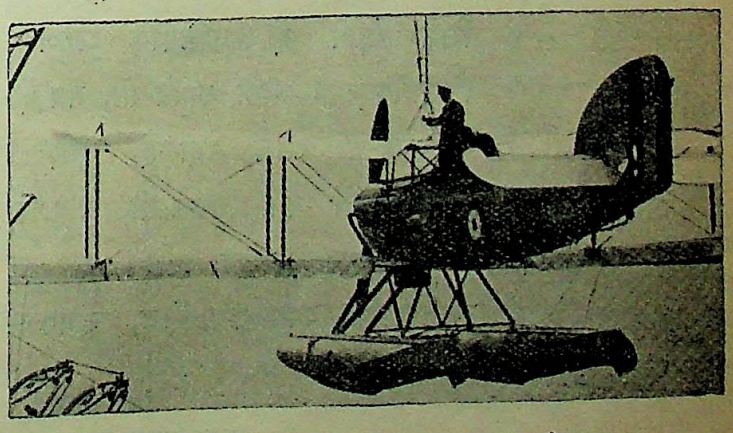

'केरी' नामक जलीय वायुयान एक लड़ाकू जहाजके ऊपर लादा जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समुद्रमें गिरने और उसमें डूबनेसे बचानेके लिए उनके नीचेके तल ऐसे बनाये जाते हैं कि वे समुद्रमें गिरनेपर उसमें डूब न जायं, वरन् तैरते रहें। इस तरहके वायुयानोंको जलीय-वायुयान अथवा सी प्लेन (Sea-plane) कहते हैं। इस प्रकारके वायुयान हवाई सेनाओंमें खास तौरपर काममें लाये जाते हैं।

आटो जिरोके बन जानेसे मोटरोंहीकी तरह निजके हवाई जहाज रखनेवाले शौकीन लोगोंकी अड़चनें बहुत दूर हो गयीं। अब इस तरहके हवाई जहाज बनने लगे हैं जिनमें ४ व्यक्ति बड़ी आसानीसे बैठ जाते हैं। ये बहुत हलके और सुविधाजनक होते हैं और देखनेमें बहुत सुन्दर एवं आकर्षक। इनमें उतनी ही सुविधा और आरामसे बैठा जा सकता है, जितनी कि आधुनिक बढ़िया सेलूनकारोंमें। इन जहाजोंमें एक खास बात यह है कि इनमें मुसाफिर लोग बिना किसी खतरेके सिगरेट आदि पी सकते हैं। जहाजोंका भीतरी भाग ऐसे मसालोंसे तैयार किया जाता है, जिसमें आग नहीं लगती। यह जहाज आमतौरपर १००-१३० मीलकी रफ्तारसे उड़ सकता है। बाज-बाज छोटे जहाजमें ५-६ यात्रियों बैठनेका प्रबन्ध होता है। इंगलैण्डमें इस तरहके जहाज हमारे यहांकी किरायोंपर चलनेवाली टेक्सियोंकी तरह किरायेपर भी चलाये जाते हैं। धनीमानी और शौकीन लोग मोटरोंहीके समान अब हवाई जहाज भी रखने लगे हैं।

---

## तितलीसे

सजनि! कौन तुम, कहां चलीं, यह सज कर सतरङ्गा शृङ्गार;—
कवि-से मधुर स्वप्नमें तन्मय, और प्रणय-से मौन-उदार?
अरी चञ्चले! अटकी है, किसके आशा-पथ पर दृग-कोर;
मिलनेको जिससे जाती हो लिये हुए यह रूप-किशोर?
चित्रित पङ्ख बिछा फूलोंपर, अहे! मृदुलता-सी छविमान्;
नभकी तरल तारिका-सी तप-लीन कर रही किसका ध्यान?
बाल-कालके तुतलेपनसे पूर्ण प्रेममय—परम पुनीत;
अयि वन-वासिनि! बिसर गयी हो, क्या अपना पहला सङ्गीत?
जिसे ढूंढ़ती हो कलियोंके अरुण अधखिले अधरोंपर,
किसी विधुरकी मीठी स्मृति-सी, मन-ही-मन कुछ गा-गाकर।
या पतङ्ग-सा खींच रहा है, तुम्हें किसीका आकर्षण?
इसीलिए यों बनी विकल-सी, उड़ा रही हो पीत वसन।
अपने जीवनका रहस्य अलि! कुछ तो मुझको समझा दे।
अन्तरतरकी व्यथा-कथा निज, सत्वर अयि सखि! बतला दे!

—श्री कामेश्वर शर्मा 'कमल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# यूरोपमें व्यावसायिक क्रान्ति

श्री सत्यकेतु विद्यालङ्कार

फ्रान्सकी राज्यक्रान्तिने यूरोपके इतिहासमें एक नवीन लहरका प्रारम्भ किया था। समानता, स्वतन्त्रता और भ्रातृभावके भाव यूरोपियन लोगोंकी दृष्टिमें मौलिक परिवर्तन ला रहे थे। राजाकी स्वेच्छाचारिता और कुलीन श्रेणियोंके विशेषाधिकारोंके स्थानपर सर्वसाधारण जनताका शासन और सब लोगोंकी समानता स्थापित हो रही थी। परन्तु इस राज्यक्रान्तिसे जनताके जीवनमें कोई भारी परिवर्तन नहीं आया था। वोटका अधिकार उन्हें अवश्य प्राप्त हो गया था, देशके शासनमें लोकमतको अवश्य स्थान मिल रहा था, पर इससे लोगोंके रहन-सहनपर कोई विशेष असर नहीं हुआ था। फ्रान्सकी राज्यक्रान्तिके दिनोंमें भी जनता उसी प्रकार अपने जीवनको व्यतीत कर रही थी, जैसे कि लूथर व कोलम्बसके समयमें या उससे भी बहुत पहले, सीजर और पैरिक्लीजके समयमें। अठारहवीं सदीका किसान वही पुराने रोमन जमानेके हल, दरांती और फावड़ोंका खेतोंके लिए प्रयोग करता था। स्त्रियां तकुआ लेकर सूत कातती थीं। जुलाहे लोग पुराने जमानेकी खड्डीपर, जो प्राचीन ईजिप्सियन खड्डीसे बहुत-कुछ मिलती-जुलती थी, कपड़े बुना करते थे। रहनेके मकान बिलकुल भद्दे तथा मैले होते थे। सवारीके लिए घोड़ेसे बढ़कर अन्य कोई साधन न था। घोड़ों या गड्डोंपर ही यूरोपियन लोग एक स्थानसे दूसरे स्थानपर आया जाया करते थे। समुद्र-यात्राके लिए पाल लगे हुए जहाजोंके अतिरिक्त अन्य कोई साधन न था। यदि प्राचीन ग्रीक व रोमन युगका किसान व बढ़ई अठारहवीं सदीके अन्तिम भागमें यूरोपमें आकर अपने उत्तराधिकारियोंको देखता, तो हजारों वर्ष गुजर जानेके बाद भी उसे कोई विशेष परिवर्तन दृष्टिगोचर न होता। इतनी सदियोंके बाद भी यूरोपके जीवनमें कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं आया था।

परन्तु पिछली डेढ़ सदीमें कितना भारी परिवर्तन हो गया है; जमाना ही बिलकुल बदल गया है। आज पाश्चात्य संसारके किसान खेतीके लिए 'ट्रैक्टर' का प्रयोग करते हैं। मशीनकी सहायतासे बातकी बातमें सैकड़ों एकड़ जमीन जुत जाती है। फसल काटनेके लिए दरांतीकी जरूरत नहीं। मशीन खुद फसल काटती है, खुद उसे गट्ठोंमें बांधती है। और फिर खुद अनाजको भूसेसे अलग कर बाजारके लिए तैयार कर देती है। कपड़ा तैयार करनेके लिए कितने विशाल कारखाने खुल गये हैं। अब स्त्रियोंको तकुआ लेकर सूत कातनेकी जरूरत नहीं। ऐसे ऐसे कारखाने मौजूद हैं, जो एक दिनमें लाखों गज कपड़ा तैयार कर देते हैं। हरेक चीजको बनानेके लिए अलग-अलग कारखाने हैं। जूता, कलम, दावात, कागज, तेल, साबुन आदि हरेक वस्तु बड़े-बड़े कारखानोंमें तैयार होती है, जिनमें हजारों मजदूर काम करते हैं और मशीनरीकी सहायतासे बड़ी ही निपुणताके साथ इन सब वस्तुओंको तैयार करते हैं। मशीनरीके उपयोगसे मनुष्यका श्रम बहुत हलका हो गया है। वे सब थकानेवाले तथा भारी काम, जो पहले मनुष्यको खुद अपने हाथसे करने पड़ते थे, अब मशीन करती है। मनुष्य केवल मशीनका निरीक्षण करता है, उसका श्रम अब बहुत ही हलका, परन्तु बुद्धियुक्त हो गया है। आवागमनके लिए अब घोड़ों तथा गड्डोंकी जरूरत नहीं रही। रेलवे और मोटरोंने आवागमनके साधनोंमें कितना भारी परिवर्तन ला दिया है। उन्नीसवीं सदीके प्रारम्भमें नैपोलियनके पास घोड़ेसे ज्यादा तेज चलनेवाली और कोई सवारी विद्यमान नहीं थी। नैपोलियन जब रूसी आक्रमणसे वापिस लौटा था, तो उसे बिलनासे पेरिस पहुंचते हुए ३१२ घण्टे लगे थे। बिलनासे पेरिस १४०० मील दूर है। आज इतनी दूरीको रेलसे पार करते हुए मामूली यात्रीको ४८ घण्टेसे अधिक समय नहीं लगता, पर उन्नीसवीं सदीके प्रारम्भिक भागमें नैपोलियनको—जिसे सब प्रकारकी सुविधाएं तथा शक्ति प्राप्त थी, इस यात्रामें ३१२ घण्टे लगे थे। इस थोड़ेसे समयमें मनुष्योंने सारी पृथ्वीको रेलसे पाट दिया है। यूरोप, अमेरिका और एशियाके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक पहुंचनेके लिए रेल विद्यमान है, जो मामूली तौरपर एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



घण्टेमें ४०-५० मीलके लगभग चलती है। आजकल वायुयानोंके आविष्कारने तो आवागमनके साधनोंमें और भी क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। बिजलीके आविष्कारने जो चमत्कार दिखाये हैं, वे अद्भुत हैं। आज हम तार द्वारा क्षणभरमें अपने सन्देशको हजारों मील दूर पहुंचा सकते हैं। टेलीफोन द्वारा हजारों मील दूर बैठे हुए बन्धुसे बातचीत की जा सकती है। रेडियो तो और भी अधिक चमत्कार दिखा रहा है। आज समुद्रको पार करनेके लिए अनुकूल हवाकी प्रतीक्षा करनेकी आवश्यकता नहीं। लाखों मन भारके भापसे चलनेवाले जहाज आज महासमुद्रके वक्षस्थलको चीरते हुए बड़ी सुगमताके साथ भूमण्डलका चक्कर काटते फिरते हैं। देश और कालपर यह कैसी अद्भुत विजय मनुष्य जातिने प्राप्त की है। विज्ञान द्वारा प्राकृतिक शक्तियोंको अपने काबूमें कर मनुष्यने अपने सुख और आरामके लिए उनका उपयोग करना सीख लिया है। यही कारण है कि पाश्चात्य संसारमें सर्वसाधारण जनताकी दशामें अब मौलिक परिवर्तन आ गया है। यह परिवर्तन किस प्रकार आया, इसपर हम यहां विचार करेंगे। यह लिखनेकी आवश्यकता नहीं कि इस परिवर्तनका—जिसे व्यावसायिक क्रान्तिके नामसे कहा जाता है, इतिहास, युद्धों तथा राजनीतिज्ञोंकी शतरञ्जकी चालोंके वृत्तान्तसे बहुत अधिक उपयोगी है। मनुष्य जातिकी दशामें मौलिक परिवर्तन लानेके लिए अठारहवीं सदीके अन्तिम भागमें जिन प्रवृत्तियोंने कार्य करना शुरू किया था, उनमें यह व्यावसायिक क्रान्तिकी लहर सम्भवतः सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

## व्यापारिक क्रान्ति

व्यावसायिक क्रान्तिके लिए मैदान तैयार करनेमें जिस प्रकार कृषिकी उन्नति बहुत सहायक हुई, उसी प्रकार व्यापारिक क्रान्तिसे भी इसमें बहुत सहायता मिली। मध्यकालमें यूरोपियन लोग सुदूर देशोंमें व्यापारके लिए नहीं जाया करते थे। महासमुद्रोंको पारकर विविध महाद्वीपोंके साथ व्यापारिक सम्बन्ध करना—उस समयके यूरोपियन लोगोंका काम नहीं था। अटलांटिक महासागरके पार अमेरिकाका महाद्वीप विद्यमान है, यह किसीको ज्ञात नहीं था। भारत, चीन और जापान कहां हैं, और वे कैसे देश हैं, उस समयके यूरोपियन लोग इतना भी नहीं जानते थे। सामुद्रिक व्यापार केवल समुद्र तटके साथ-साथ होता था। व्यापारके लिए सिक्कोंका प्रचलन भी उस समय बहुत कम था। अधिकांश विनिमय वस्तुओंको ही आपसमें बदलकर किया जाता था। लोग अपने लिए आवश्यक वस्तुओंको प्रायः स्वयं उत्पन्न कर लेते थे। मध्यकालीन यूरोपके गांव प्रायः अपने-आपमें पूर्ण होते थे। गांवके काममें आनेवाली वस्तुएं प्रायः गांवमें ही उत्पन्न हो जाती थीं। इसमें सन्देह नहीं कि विविध स्थानोंपर विविध वस्तुओंकी उत्पत्ति विशेष रूपसे भी प्रारम्भ हो चुकी थी और इस प्रकार एक स्थानपर उत्पन्न होनेवाली वस्तुओंको बिक्रीके लिए अन्य स्थानोंपर ले जाया जाता था। पर इस प्रकारके व्यापारकी मात्रा बहुत अधिक नहीं थी। १५वीं और १६वीं शताब्दियोंमें यूरोपमें व्यापारिक क्रान्तिका प्रारम्भ हुआ। व्यापारिक क्रान्तिके कारण यूरोपियन लोगोंने महासमुद्रोंको पार कर सुदूरवर्ती देशोंमें आना-जाना प्रारम्भ किया और उनके सम्बन्धसे व्यापारकी मात्रामें असाधारण रूपसे वृद्धि हुई। यूरोपका आर्थिक जीवन जिन आधारोंपर आश्रित था, उनमें परिवर्तन होने लगा और व्यावसायिक क्रान्तिके लिए मैदान तैयार होना शुरू हुआ। व्यापारिक क्रान्ति किस प्रकार व्यावसायिक क्रान्तिकी सहायता कर रही थी, इसपर संक्षेपतः प्रकाश डालना आवश्यक है—

(१) कच्चे मालकी वृद्धि—अमेरिकाके आविष्कार तथा भारत, चीन, बर्मा आदि एशियाई देशोंके साथ सम्बन्ध स्थापित हो जानेसे यूरोपियन बाजारोंमें कच्चा माल बहुत बड़े परिमाणमें और बहुत सस्ती कीमतमें पहुंचने लगा। अमेरिकाकी जमीन बहुत उपजाऊ थी। वहां जो लोग जाकर बसे थे, वे गुलामोंकी सहायतासे बहुत बड़े पैमानेपर खेती कर रहे थे। इस कारण यूरोपके बाजारोंमें एकदम बहुत बड़ी मात्रामें कच्चे मालकी आमद शुरू हो गयी थी। पर यूरोपमें व्यावसायिक तरीके अभी मध्यकालके ही थे। उत्पत्ति अभी पुराने ढङ्गसे ही होती थी। कच्चे मालकी इस आमदने यूरोपके उत्पादकोंको नये तरीकोंको ढूंढ़ने तथा नये आविष्कार करनेके लिए प्रेरित किया।

(२) नये बाजारोंकी प्राप्ति—यूरोपियन लोग अमेरिका, चीन, भारत आदिसे केवल कच्चे मालको ही लानेका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



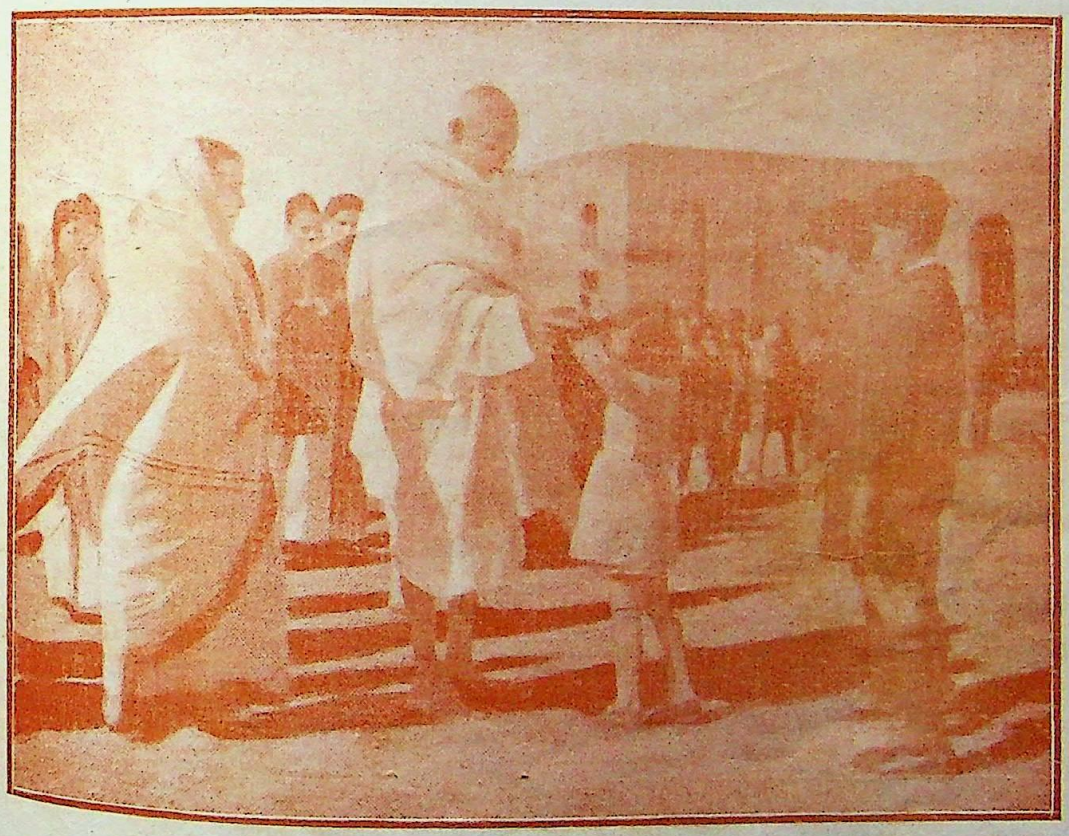

दिल्लीमें महात्मा गांधी एक छोटे छात्रसे प्रसन्नतापूर्वक बातें कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## अकोलामें परदा-निवारण दिन

अकोला (बरार) में स्थानीय अग्रवाल सभाकी ओरसे परदा-निवारण दिन मनाया गया था। उस अवसरपर मारवाड़ी समाजकी बहनोंने सार्वजनिक सभामें भाषण आदि दिये थे। उस समय परदा-निवारण करनेवाले सज्जनोंका फोटो लिया गया था।

खड़े—१ कुमार रमणलालजी कोठारी, २ भीकुलालजी अग्रवालजी, ३ ब्रिजलाल बियाणी, ४ किसनलालजी गोयनका, ५ रामगोपालजी कोठारी।

कुर्सीपर—१ कुमारी मणीबाइ डालमिया, २ सुशीलादेवी अग्रवाल, ३ रुक्मिणीदेवी गोयनका, ४ सावित्रीदेवी बियाणी, ५ राधादेवी गोयनका, ६ काशीबाइ कोठारी।

बठे—बालक-बालिकायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



70322



प्रयत्न नहीं कर रहे थे, पर अपने तैयार मालको इन देशोंमें बेचनेका भी उन्हें सुवर्णावसर प्राप्त हो गया था। इन देशोंके अनेक हिस्सोंपर उन्होंने अपना राजनीतिक अधिकार भी स्थापित कर लिया था, अतः वहां अपने मालको सहूलियतके साथ बेच सकनेका भी उन्हें मौका था। इस कारण उत्पत्ति-के तरीकोंमें उन्नति करनेके लिए उन्हें बहुत प्रोत्साहन मिला।

(३) धन और मुद्राओंकी वृद्धि—पूर्वीय देशोंके व्यापार-से यूरोपियन लोग मालामाल हो रहे थे। केवल व्यापारसे ही नहीं, राजनीतिक अधिकारके कारण आर्थिक-शोषणका जो अपूर्व अवसर यूरोपियन लोगोंको प्राप्त हो गया था, उससे फायदा उठाकर वे लोग बहुत बड़ी मात्रामें पूर्वीय देशोंके धनको अपने यहां पहुंचा रहे थे। करोड़ों और अरबों रुपयोंका सोना और चांदी भारत आदि पूर्वीय देशोंसे यूरोप पहुंच रही थी। अमेरिका और दक्षिण अफ्रीकामें सोने-चांदी-की जो खानें निकल आयीं थीं, उनसे भी ये बहुमूल्य धातुएं बहुत बड़े परिमाणमें यूरोप पहुंच रही थीं। इसका परि-णाम यह हुआ कि यूरोपमें सोना-चांदी तथा अन्य धनकी बहुत वृद्धि हुई। वस्तुओंके विनिमयके लिए सिक्कों व मुद्राओंका आमतौरपर प्रयोग शुरू हुआ। महाजनों और बैङ्कोंके खजाने, सोना-चांदी और उनसे बनी हुई मुद्राओंसे भरपूर हो गये। व्यावसायिक उन्नतिके लिए धनकी बहुत आवश्यकता होती है। यूरोपियन लोगोंको इसकी कमी नहीं रह गयी।

(४) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारका प्रारम्भ—मध्यकालमें व्यापारका क्षेत्र अपना गांव या अधिक-से-अधिक अपना राज्य होता था। पर व्यापारिक क्रान्तिके कारण व्यापारका क्षेत्र सम्पूर्ण संसार हो गया। यूरोपके जहाज व्यापारिक पदार्थोंको लादकर अटलांटिक, प्रशान्त व अन्य महासागरोंके वक्षस्थलको चीरते हुए आने-जाने लग गये थे। अब उत्पा-दकोंको केवल अपने गांव, शहर या देशके लिए ही माल तैयार नहीं करना था। अब उन्हें सारे संसारके लिए माल तैयार करनेकी महत्त्वाकांक्षाको सम्मुख रखना था। पर इस महत्त्वाकांक्षाको वे उत्पत्तिके पुराने तरीकोंसे पूर्ण नहीं कर सकते थे। वे अनुभव कर रहे थे कि इन तरीकोंमें परि-वर्तन और उन्नतिकी आवश्यकता है। उन्होंने प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया था कि उत्पत्तिके साधनोंमें ऐसी उन्नति की जाये जिससे वे सम्पूर्ण संसारमें विस्तृत बाजारोंके लिए माल तैयार कर सकें।

एक तरफ कृषिकी उन्नति यूरोपकी आर्थिक दशाको उन्नत कर रही थी, दूसरी तरफ व्यापारिक क्रान्ति द्वारा उत्पन्न ये परिस्थितियां लोगोंको प्रोत्साहित व विवश कर रही थीं कि व्यवसाय और शिल्पमें भी उन्नति करें। परि-णामस्वरूप व्यावसायिक क्रान्तिका प्रारम्भ हुआ।

व्यावसायिक क्रान्तिका प्रारम्भ सबसे पूर्व इंगलैण्डमें हुआ। जिस प्रकार धार्मिक सुधारका प्रारम्भ जर्मनीसे और राज्यक्रान्तिका प्रारम्भ फ्रांससे हुआ, उसी प्रकार व्याव-सायिक क्रान्तिका प्रारम्भ इंगलैण्डसे हुआ। इसका कारण यह है कि व्यापारिक क्रान्तिसे आर्थिक उन्नतिके लिए जो द्वार खुल गया था, उसका उपयोग करनेके लिए सबसे अधिक अनुकूल परिस्थितियां इंगलैण्डमें ही विद्यमान थीं। आर्थिक उन्नतिके लिए तीन तत्त्व आवश्यक हैं—पूंजी, श्रम और प्राकृतिक साधन। इस समय इंगलैण्डमें ये तीनों ही प्रचुर परिमाणमें विद्यमान थे। व्यापारके विस्तारमें इंग-लैण्डको असाधारण सफलता प्राप्त हो चुकी थी। सामुद्रिक आधिपत्य और उपनिवेश-विस्तारकी प्रतिस्पर्धामें वह फ्रांस और हालैण्डको परास्त कर चुका था और पूर्वीय देशोंके व्यापारपर उसका अबाधित अधिकार हो चुका था। इस व्यापारसे इंगलैण्डमें विपुल सम्पत्ति आ रही थी। भारतमें राजनीतिक शक्तिके स्थापित हो जानेके कारण वहांसे कर, वेतन, भेंट, उपहार, लूटके रूपमें अपार धन इंग-लैण्ड पहुंच रहा था। इंगलैण्डको पूंजीकी कोई कमी न रह गयी। कृषिकी उन्नतिके लिए जो विविध कानून पास हुए थे उनके कारण बहुत-से आदमी गांवोंसे कामकी तलाशमें शहरोंमें पहुंच रहे थे और इस तरह सस्ते श्रमकी भी इंग-लैण्डमें कोई कमी न रही। इंगलैण्डमें व्यावसायिक उन्नतिके लिए प्राकृतिक साधन भी बहुत थे। कोयले और लोहेके अक्षय भण्डार उनकी खानोंमें भरे हुए थे। इसके अतिरिक्त सब प्रकारका कच्चा माल बहुत बड़ी मात्रामें उप-निवेशों और भारत आदि अधीनस्थ देशोंसे सस्ते मूल्यपर वहां पहुंचता था। इस प्रकार आर्थिक उन्नतिके सब साधन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वहां विद्यमान थे। इसीका परिणाम था कि व्यावसायिक क्रान्ति सबसे पूर्व इंगलैण्डमें शुरू हुई।

## वस्त्र-व्यवसायका प्रारम्भ

मनुष्यकी शारीरिक आवश्यकताओंमें सबसे अधिक महत्त्व भोजनका है। उसके बाद वस्त्रोंकी बारी आती है। कृषिकी उन्नतिके कारण भोज्य पदार्थोंकी इंगलैण्डमें कमी नहीं रह गयी। अब वस्त्रोंकी उत्पत्तिमें उन्नति शुरू हुई। अठारहवीं सदीमें इंगलैण्डका पूर्वी देशोंके साथ व्यापार अच्छी तरह शुरू हो चुका था। भारतसे रुईके बने हुए कपड़े बहुत बड़ी मात्रामें इंगलैण्ड आने लगे। इससे पहले इंगलैडमें मुख्यतया ऊनके ही कपड़े बनते थे। पर भारतके सूती कपड़े वहां बहुत पसन्द किये गये। ऊनी और सूती कपड़ोंमें मुकाबला होने लगा। धीरे-धीरे ऊनी कपड़े परास्त हो गये और इंगलैण्डके बाजार सूती कपड़ोंसे भर गये। सूती कपड़ोंके व्यापारियोंको बहुत मुनाफा हुआ। वे माला-माल हो गये। पहले इंगलैण्डमें कपास व रुई बाहरसे नहीं आती थी; उनके बने हुए कपड़े ही आते। पर धीरे-धीरे अंगरेज लोग तैयार कपड़ेके स्थानपर रुई मंगाने लगे, और इंगलैण्डमें सूती कपड़ा भी बनने लगा। भारतके वस्त्र-व्यवसायको नष्ट किया गया। भारतीय कपड़ोंपर इंगलैण्डमें सौ फी सदीसे भी अधिक चुङ्गी लगायी गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे इंगलैण्डमें सूती कपड़ेका व्यवसाय उन्नत होना शुरू हुआ।

## सूत कातनेके तरीकेमें उन्नति

पहले इंगलैण्डमें सूत कातनेके लिए तकुओं व चरखोंका प्रयोग होता था। कुछ चरखे हाथसे चलाये जाते थे और कुछ पैरसे। इनसे एक समयमें केवल एक सूत निकलता था। सूत कातनेके तरीकेमें उन्नति करनेके लिये सबसे पहला आविष्कार सन् १७५८ में वायर और पाल नामके शिल्पियों-ने किया। इन्होंने एक ऐसा यन्त्र बनाया, जिससे एक समयमें एक कारीगर कई सूत कात सकता था। पर यह बहुत सन्तोषजनक नहीं था। इस समय इंगलैण्डका व्यापार बहुत बढ़ रहा था। मालकी मांग बहुत अधिक थी। माल उतना तैयार नहीं होता था, जितनी उसकी मांग थी। इसीलिये सन् १७६१ में सूत कातनेके तरीकेमें उन्नति करनेके लिए एक इनामकी भी उद्घोषणा की गयी। सन् १७६४ में हरग्रीव्स नामके एक होशियार कारीगरने एक ऐसे यन्त्रका आविष्कार किया, जिससे एक साथ आठ सूत काते जा सकते थे। इस 'स्पिनिंग जेनी'से एक आदमी आठ आदमी-का काम कर सकता था। पांच साल बाद, सन् १७६९ में रिचर्ड आर्कराइट नामक कारीगरने सूत कातनेके यन्त्रमें और भी अधिक उन्नति की। आर्कराइटका बनाया हुआ यन्त्र बहुत उपयोगी और उत्तम था। उससे न केवल बहुतसे सूत एक साथ काते जा सकते थे, बल्कि सूत बहुत पक्के और एक तरहके होते थे। आर्कराइटकी इस मशीनका प्रचार बहुत तेजीसे हुआ और कुछ वर्षोंमें ही वह सैकड़ों कार-खानोंमें प्रयुक्त होने लगी। सन् १७७९ में क्राम्पटनने आर्क-राइट और हरग्रीव्सके यन्त्रोंको मिलाकर एक नवीन मशीन-का आविष्कार किया, जो 'म्यूल' नामसे प्रसिद्ध है। इस म्यूलसे २०० सूत एक साथ काते जा सकते थे और एक कारीगर २०० आदमियोंका काम कर सकता था। क्राम्प-टनके इस म्यूलका प्रचार बहुत ही शीघ्रतासे हुआ। इससे सूत बहुत अधिक परिमाणमें कतने लगा। निस्सन्देह पुराने जमानेके चरखेके मुकाबिलेमें यह 'म्यूल' बहुत ही उन्नत मशीन थी। पर इसके बाद भी इस दिशामें प्रयत्न जारी रहा और आजकल ऐसी मशीनें बन चुकी हैं, जो सैकड़ों नहीं, अपितु हजारों सूत एक साथ कात सकती हैं।

## नवीन खड्डियोंका निर्माण

सूत कातनेकी तरह कपड़ा बुननेके व्यवसायमें भी निरन्तर उन्नति होती रही। अठारहवीं सदीके शुरूमें इंगलैण्डमें कपड़ा बुननेके लिए जो खड्डी प्रयुक्त होती थी, वह बहुत ही भद्दी और पुराने ढर्रेकी थी। उसमें सबसे पहले १७३८ में जानकेने सुधार किया। उसने जो खड्डी बनायी, उसमें एक हत्थेकी सहायतासे शटलको बड़ी सुगमतासे इधर-उधर किया जा सकता था। उसके बाद सन् १७८४ में डा० कार्टराइटने एक बहुत बढ़िया खड्डी तैयार की, जिसे जलकी शक्तिसे चलाया जाता था और जिससे अकेला आदमी अनेक जुलाहोंका कार्य बड़ी सुगमतासे कर लेता था। कार्टराइटकी खड्डीमें निरन्तर संशोधन होते रहे। धीरे-धीरे कपड़ा बुननेकी मशीनमें इतनी उन्नति हो गयी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उससे एक दिनमें उतना कपड़ा बुना जाने लगा, जितना कि पहले २०० जुलाहे एक दिनमें बुनते थे। इसी तरह कपाससे बिनौलोंको अलग करनेके लिए भी नयी मशीनें बनने लगीं। पहले यह काम हाथसे किया जाता था, पर सन् १७९२ में एली ह्विटने नामके अमेरिकन कारीगरने एक ऐसी मशीनका आविष्कार किया, जिससे १५ मन कपासके बिनौले एक दिनमें पृथक् किये जा सकते थे। पहले जमानेमें एक आदमी दिन-भरमें ढाई तीन सेर कपाससे अधिकके बिनौले पृथक् नहीं कर सकता था।

## कपड़ेकी रंगाई और छपाई

सूत कातने और कपड़ा बुननेके अतिरिक्त कपड़ेको रंगने और छापने आदिके बारेमें भी बहुतसे नये आविष्कार किये गये। इनके कारण इंगलैण्डमें बना हुआ सूती कपड़ा बहुत ही सुन्दर और आकर्षक हो गया। इंगलैण्डका वस्त्र-व्यवसाय 'दिन दूना रात चौगुना' उन्नति करने लगा। सन् १७६० में इंगलैण्डमें केवल १२५० मन रुई बाहरसे आयी थी। सन् १८०० में बाहरसे आनेवाली रुईकी तादाद बढ़कर ७०००० मन हो गयी। अगले ४० वर्षोंमें उसकी तादाद बढ़कर ५००००० मन तक पहुंच गयी। इस प्रकार केवल ८० सालोंमें इंगलैण्डमें रुईका आयात ४०० गुना हो गया। इससे भली भांति अनुमान किया जा सकता है कि यान्त्रिक आविष्कारोंके कारण इंगलैण्डका वस्त्र-व्यवसाय कितनी तेजीसे उन्नति कर रहा था।

## स्टीम इञ्जनका आविष्कार

जिस समय आर्कराइट, हरग्रीव्स और क्राम्पटन आदि कारीगर वस्त्र-व्यवसायके लिए नवीन यन्त्रोंका आविष्कार कर रहे थे, उसी समय अन्य अनेक शिल्पी प्राकृतिक शक्तियोंका आर्थिक उत्पत्तिके लिए उपयोग करनेके सम्बन्धमें नये उपाय निकाल रहे थे। पहले पहल मनुष्य आर्थिक उत्पत्तिके लिये शारीरिक शक्तिका ही प्रयोग कर सकता था। कुछ समय बाद बैल, घोड़े आदि अनेक पशुओंको पालतू बनाकर मनुष्यने उनकी शक्तिका उपयोग करना शुरू किया। इसके बाद बहती हुई हवा और गिरते हुए पानीका उपयोग किया गया। पर अठारहवीं सदीमें यान्त्रिक उन्नति जिस तेजीके साथ हो रही थी, उसके लिए अधिक सबल शक्तिकी आवश्यकता थी। जो नयी मशीनें इस समय बन रही थीं, उन्हें चलानेके लिए मनुष्य, पशु या जलकी शक्ति पर्याप्त नहीं हो सकती थी। इसलिए धीरे-धीरे मनुष्यने प्रकृतिकी अन्य शक्तियोंकी तरफ ध्यान दिया और उनका अपने लाभके लिए उपयोग कर सकनेका प्रयत्न प्रारम्भ किया। इसी प्रयत्नसे 'स्टीम इञ्जन'का आविष्कार हुआ। यदि पानीको गरम किया जाये, तो वह भापके रूपमें फैल जाता है। वैज्ञानिकोंका ध्यान इस भापकी तरफ गया और उन्होंने इसकी शक्तिका उपयोग इञ्जन बनानेमें किया। सबसे पहला इञ्जन सन् १७७४ में थामस न्यू कामन नामके कारीगरने तैयार किया। यह इञ्जन कोयलेकी खानोंमें पानीको बाहर निकालनेके लिए प्रयुक्त किया जाता था। न्यू कामनके बाद सन् १७६४में जेम्स वाटने स्टीम इञ्जनमें बहुत उन्नति की। उसने जो इञ्जन बनाकर तैयार किया, उसे सब कहीं प्रयुक्त किया जा सकता था। किसी भी मशीनको चलानेके लिए उसे काममें लाया जा सकता था। सूत कातनेके एक कारखानेमें पहले-पहल इसका उपयोग सन् १७८९ में किया गया। उसके बाद अब कारखानेवाले भी इसे अपनाने लगे। अठारहवीं सदीके समाप्त होनेके पूर्व ही वाटके बनाये हुए स्टीम इञ्जिन इतने प्रचलित हो गये कि सब कारखानेवाले उन्हें निस्सङ्कोच रूपसे प्रयोगमें लाने लगे।

स्टीम इञ्जनका आविष्कार संसारके इतिहासमें एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है। इसके द्वारा मनुष्यके हाथमें एक नवीन शक्ति आ गयी, जो पशुओं, हवा या पानीकी शक्तिकी अपेक्षा बहुत अधिक प्रबल और उपयोगी थी। प्रकृतिको अपना दास बनानेके लिए सृष्टिके शुरूसे मनुष्य जो भारी सङ्घर्ष कर रहा है, उसमें उसकी यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विजय थी।

## लोहा

इस समय जो नयी मशीनें बन रही थीं, वे सब लोहेकी बनायी जाती थीं। पर अठारहवीं सदीमें लोहा बहुत महंगा और दुर्लभ था। कारण यह कि कच्ची धातुसे लोहेको पृथक् करनेके लिए जो साधन मनुष्यको ज्ञात थे, वे अत्यन्त कठिन और खर्चीले थे। इस कारण लोहेकी उत्पत्ति बहुत कम होती थी और वह बहुत महंगा पड़ता था। पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अठारहवीं सदीके उत्तरार्द्धमें लोहा बनानेके लिए भी अनेक आविष्कार किये गये। ऐसी भट्टियां तैयार की गयीं, जिनमें लकड़ीके कोयलेके स्थानपर पत्थरका कोयला काममें आने लगा। धीरे-धीरे लोहा बहुत बड़ी मात्रामें और बड़े सस्ते दामोंमें तैयार होने लगा। लोहेकी वृद्धिसे मशीनोंकी उन्नतिमें बहुत सहायता मिली।

## पक्की सड़कों और नहरोंका निर्माण

नवीन मशीनोंके कारण मालकी उत्पत्ति बहुत बड़े परिमाणमें होने लगी थी, पर उसे ढोनेके साधन अभी बिलकुल पुराने थे। बैलगाड़ी, घोड़े व खच्चरोंके अतिरिक्त कोई अन्य साधन अभी आविष्कृत नहीं हुआ था। सड़कें भी इस समय कच्ची, ऊंची-नीची और भद्दी होती थीं। कारखानोंमें जो माल बड़े पैमानेपर तैयार हो रहा था, उसकी खपत उसी स्थानपर हो सकनी तो असम्भव थी। जरूरत तो इस बात की थी कि मालको कारखानेसे दूर—बाजारों तक सुगमतासे ढोया जा सके और इसमें खर्च भी अधिक न पड़े। इसी तरह कच्चे मालको कारखानों तक सस्तेमें ढोनेकी समस्या विद्यमान थी। परिणाम यह हुआ कि इस क्षेत्रकी ओर भी वैज्ञानिकोंका ध्यान आकृष्ट हुआ और नवीन आविष्कार होने प्रारम्भ हुए। सबसे पहले मालको ठेलनेके लिए 'टर्नपाइक' बनाये गये। इन्हें सड़कोंपर डाल दिया जाता था और ऊपरसे भारी मालको सुगमताके साथ ठेला जा सकता था। जो व्यापारी 'टर्नपाइक' का इस्तेमाल करते थे, उनसे उसके लिए टैक्स लिया जाता था। इसके बाद सड़कोंको उन्नत तथा पक्की करनेकी तरफ ध्यान दिया गया। थामस टेलफोर्ड और जान मैकेडमने सड़कोंको पक्की करनेके लिए नवीन आविष्कार किये। पत्थरोंको फोड़कर, उन्हें सड़कपर कूटकर उसे खूब पक्का बनाया जा सकता है, इस पद्धतिका आविष्कार पहले-पहल जान मैकेडमने किया। इसीलिए इस प्रकारकी सड़कें उसके नामसे 'मैकेडमाइज्ड सड़कें' कहाती हैं। इसी तरह मालको ढोनेके लिए नहरोंका निर्माण शुरू हुआ, जिनसे बहुत सस्तेमें कोयले व लोहे-जैसे भारी मालको एक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाया जा सकता था। नदियोंको भी चौड़ा तथा गहरा किया गया, उनपर बाकायदा अच्छे बन्दरगाह बनाये गये। इस प्रकार सुगमताके साथ जल-मार्ग द्वारा मालका ढोना प्रारम्भ हुआ।

## भापसे चलनेवाले जहाज

पर आर्थिक उत्पत्ति जिस तेजीके साथ बढ़ रही थी, उसके लिए माल ढोनेके ये साधन पर्याप्त नहीं हो सकते थे। इस समय बहुत तेज, सस्ते और सुरक्षित साधनोंकी आवश्यकता थी। सन् १७८७ में जान फिच नामके एक अमेरिकन कारीगरने सबसे पहले भापसे चलनेवाले जहाजका आविष्कार किया। इसके बाद जेम्स पेरी, विलियम सिमिण्टन और वेल आदि शिल्पियोंने इस सम्बन्धमें बहुत उन्नति की और भापसे चलनेवाले जहाज इंगलिश चेनल और अमेरिकन समुद्र-तटपर दृष्टिगोचर होने लगे। सन् १८१९ में 'सेवेनाह' नामक एक भापसे चलनेवाले जहाजने पहले पहल अटलाण्टिक महासागरको पार किया। इस जहाजमें भापके इञ्जनके साथ-साथ चप्पू और पालका भी प्रबन्ध इस ख्यालसे किया गया था कि यदि इञ्जन काम न दे, तो इन पुराने तरीकोंको इस्तेमालमें लाया जा सके। उस समय 'सेवेनाह'की इस सफलताको विज्ञानकी बहुत महत्त्वपूर्ण विजय समझा गया और लोगोंकी प्रसन्नताका कोई ठिकाना न रहा। पहले जहाज लकड़ीके बनते थे, पर अब धीरे-धीरे लोहेके जहाज बनने लगे। लोहेके जहाज ज्यादा हलके, मजबूत और सुरक्षित समझे जाने लगे। उन्नीसवीं सदीमें भापसे चलनेवाले जहाजोंमें निरन्तर उन्नति होती गयी। यूरोपसे अमेरिका जहाज बाकायदा आने-जाने लगे। उनकी वजहसे कारखानोंके तैयार मालको सुदूरवर्ती प्रदेशों तक बहुत सस्तेमें ढो सकना सम्भव हो गया।

## रेलगाड़ी

अगर भापसे चलनेवाले जहाज समुद्रको पार कर सकते थे, तो भापसे चलनेवाली गाड़ियां स्थलपर क्यों नहीं चल सकती थीं? इंगलैण्डके अनेक वैज्ञानिक इसके लिए तन, मन, धनसे जुटे हुए थे। सबसे पूर्व सन् १८०१ में रिचर्ड ट्रेविथिचने 'लोकोमोटिव' का आविष्कार किया। पर ट्रेविथिचका यह भागनेवाला इञ्जन बहुत उपयोगी सिद्ध नहीं हुआ। इसके बाद ज्यार्ज स्टीवेन्सनने सन् १८१४ में, एक ऐसे लोकोमोटिवका निर्माण किया, जो लोहेकी पटरीपर मजेके साथ एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जा सकता था। सन् १८२९ में डरहमके पास १२ मील लम्बी पटरी तैयार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गयी, जिसपर स्टीवेन्सनका बनाया हुआ लोकोमोटिव गाड़ियोंको खींचता हुआ चलने लगा। शुरू-शुरूमें लोगोंके लिए यह लोहेका घोड़ा एक भारी तमाशेकी चीज थी। जब रेलगाड़ी चलती थी, तो इञ्जनके आगे-आगे एक घुड़-सवार चलता था, ताकि लोगोंको रास्तेसे हटाता रहे। इस रेल गाड़ीकी रफ्तार एक घण्टेमें १२ मीलसे अधिक नहीं थी। इसके बाद सन् १८३० में मान्चेस्टर और लिवरपूल-के बीच २७ मील लम्बी पटरी तैयार की गयी। धीरे-धीरे अन्य स्थानोंपर भी रेलवेका निर्माण शुरू हुआ। सन् १८३४ तक इंगलैण्डमें १८०० मील रेलवे बन चुकी थी। लोको-मोटिवमें निरन्तर तरक्की होती जाती थी। जहां पहला लोकोमोटिव केवल १२ मील प्रति घण्टा चल सकता था, वहां अब ३९ मील और फिर धीरे-धीरे ७० मील व उससे भी अधिक प्रति घण्टा चलनेवाले लोकोमोटिवोंका निर्माण हुआ। शुरू-शुरूमें रेलगाड़ीके डब्बे छोटे-छोटे और ऊपरसे खुले हुए बनाये गये थे। उनमें यात्रियोंको बहुत तकलीफ होती थी। पर धीरे-धीरे ऐसी गाड़ियां बनने लगीं, जिनमें न केवल यात्री मजेके साथ सो सकते थे, पर आरामके अन्य सब सामान भी मौजूद थे।

## टेलीग्राफ और टेलीफोन

पुराने जमानेमें अपनी बातको किसी अन्य स्थानपर रहनेवाले मनुष्य तक पहुंचानेका केवल एक ही साधन था और वह यह कि कोई आदमी इस कामके लिए भेजा जाये या चिट्ठी भेजी जाये। दोनों हालतोंमें सन्देशको पहुंचनेमें उतना समय लग जाता था, जितना कि उस स्थानकी यात्रा करनेमें लगता था। पर उन्नीसवीं सदीमें इस क्षेत्रमें बड़े महत्त्वपूर्ण और आश्चर्यजनक आविष्कार प्रारम्भ हुए। सन् १८३२ में मोर्स और केल नामक दो वैज्ञानिकोंने पहले-पहल तार भेजने (टेलीग्राफ) की पद्धतिका आविष्कार किया। इस पद्धतिमें बिजलीके तारकी सहायतासे मनुष्य अपना सन्देश दूर-से-दूर स्थानपर कुछ ही क्षणोंमें पहुंचा सकता है। सन् १८६६ में समुद्र-पार भी तार द्वारा सन्देश पहुंचानेका प्रबन्ध किया गया। सन् १८६० में फिलिप राइस नामक जर्मन वैज्ञानिकने टेलीफोनका आविष्कार किया। टेलीग्राफ द्वारा मनुष्य सीधे बात-चीत नहीं कर सकता है, अपना सन्देश पहुंचानेके लिए उसे अनेक चिह्नों-का प्रयोग करना पड़ता है। पर टेलीफोनके आविष्कारसे सुदूरवर्ती मनुष्यके साथ अपनी भाषामें बात-चीत करना भी सम्भव हो गया। टेलीग्राफ और टेलीफोनके आविष्कारोंने संसारके सुदूरवर्ती प्रदेशोंको एक-दूसरेके बहुत समीप कर दिया है। अब तो इनमें और भी अधिक उन्नति हो गयी है। बेतारका तार और रेडियोके आविष्कारने तो कमाल कर दिया है। अब आप शिकागोसे हाङ्गकाङ्ग या लण्डनसे बम्बई मजेमें बातचीत कर सकते हैं। देश और कालपर मनुष्यकी यह कैसी अद्भुत विजय है!

इसी तरह अन्य भी बहुतसे यान्त्रिक आविष्कार इस समय इंगलैण्ड तथा अन्य पाश्चात्य देशोंमें हो रहे हैं। दूरबीन (टेलीस्कोप), खुर्दबीन (माइक्रोस्कोप), फोटो-ग्राफी आदि सैकड़ों किस्मके आविष्कारोंने मानवीय जीवनकी दशामें भारी परिवर्तन कर दिया है। इन सब आविष्कारोंका यहां उल्लेख कर सकना असम्भव है। यह वैज्ञानिक उन्नतिका युग है। मनुष्यका दिमाग जब एक बार पुरोहितों, धार्मिक पुस्तकों और निर्जीव विधि-विधानों-के बन्धनसे मुक्त हो गया, तो उसने अपने चमत्कार दिखाने प्रारम्भ किये। इन वैज्ञानिक और यान्त्रिक आविष्कारोंके कारण मनुष्य-समाज और मानवीय जीवनमें महान् क्रान्ति-का प्रादुर्भाव हुआ है। *

* लेखककी अप्रकाशित पुस्तक "यूरोपका इतिहास" से।

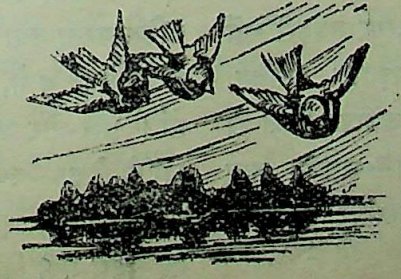

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उसकी कहानी

श्री नवलकिशोर गौड़

गाना खत्म होते ही, भीड़के बच्चे-बूढ़े सभी एक-एक कर छंट गये और वह गुदड़िया फकीर भी अपनी सारङ्गी और झोली संभालता हुआ चलनेकी तैयारी करने लगा। अब तक मैं इसी विचारसे वहां बैठा हुआ था कि भीड़ छंटे तो उससे एक बार और अनुरोध करूं। उसे जाते देख, मैंने बड़ी आरजूके साथ धीरेसे कहा—सारङ्गीवाले, तुम अपनी कहानी नहीं सुनाओगे न ?

वह चल चुका था, लेकिन उसने पीछे फिरकर देखा और मुझे खड़ा देखकर स्वयं भी रुक गया। उसकी आंखें भर आयीं और एक बड़ी-सी बूंद उसके गालपर ढुलक पड़ी। वह वहीं बैठ गया।

तो सुनिये, बाबूजी,—लम्बी सांस लेते हुए, उसने अपनी झोली और सारङ्गी जमीनपर रखते हुए कहना शुरू किया—

उस दिन, बाबूजी, बड़े तड़के सुरेश बाबूके सिपाही बुद्धन राय गांवकी गलियोंमें घूम रहे थे। उतना सवेरे उनको घूमते देखकर मैंने आश्चर्यसे पूछा—रायजी, इतना सवेरे क्या पड़ी है, जो इस सर्दीमें घूम रहे हैं ?

क्या कहूं विशुन,—बड़े प्रेमसे मेरी टूटी हुई चारपायी पर बैठते हुए उन्होंने कहा—आज बाबू साहबकी नयी कोठी की नींव डाली जायगी और कलसे उसमें काम शुरू होगा। इसलिए राज और मजूरोंके लिए निकला हूं, ताकि कोई भी गांवका मजदूर बाहर न जाने पावे।

सुनकर मेरी बांछें खिल गयीं। हफ्तेभरसे कोई काम न मिल रहा था—योंही बैठा-ठाला पड़ा रहता था। घरमें जो दो-चार पैसे थे, वे बेकारीके एक-दो दिनमें ही खत्म हो चुके थे—रानीकी देहके एक-आध चांदीके गहनोंका भी वारा-न्यारा हो चुका था, और उस दिन अगर मजदूरी नहीं मिलती तो जरूर ही भूखे पेट रहना पड़ता। इसलिए, बाबूजी, जब बुद्धन रायने कहा कि विशुन, कामपर चलते हो न, तब गद्गद होकर मैंने जवाब दिया—रायजी, बाबू साहबकी बदौलत ही तो टुकड़ीभर रोटी मुयस्सर हो पाती है; फिर उन्हींके काममें कैसे न चलूंगा ?

झटपट मुंह-हाथ धोकर, कामपर चलनेकी तयारी कर ही रहा था कि रानीने पूछा—कहां चले राजा, इतना सवेरे ? मैंने मन-ही-मन कहा—आज खैरियत नहीं; चलते ही यह अपशकुन ! खैर, थोड़ी देर बाद कामपर पहुंचा तो देखा कि मेरे ही जैसे पचासों राज-मजूरे वहां पहलेसे-ही खड़े थे। बाबूजी, थोड़ी देरमें, सुरेश बाबू एक पण्डितजीके साथ आये और घड़ी देखकर ठीक सायतपर नींव डालनेका काम शुरू हुआ। राजोंने ईंटें जोड़नी शुरू की—हम मजूरे सुर्खी, चूना वगैरह ढोने लगे; पर थोड़ी देर भी काम न हो सका था कि पण्डितजीने कहा—सुरेश बाबू, सायत अब खत्म होती है। और इसके साथ-साथ काम भी बन्द कर दिया गया। बुद्धन रायने हम लोगोंसे कह दिया—आजका काम खत्म हो गया, क्योंकि सायत अब अच्छी नहीं है। फिर कल काम शुरू होगा—तुम लोग सब कोई जरूर आना।

सुनते ही मेरी देहमें बुखार लग गया। कितनी उमङ्गसे उस दिन मैं काम करने गया था। जाते हुए मैंने सोचा था—शामको पैसे लेकर लौटूंगा और दरवाजेपर पहुंचते ही रानी जब पूछेगी—कितने पैसे मिले, राजा ? तो मैं फूलकर कहूंगा—आठ ! और फिर रातमें उन पैसोंसे आटा खरीद कर वह जनेरा और मकईकी रोटियां बनायेगी; फिर सिलुआको बगलमें लेकर जब मैं खाने बैठूंगा तब वह कहेगा—दःदा, आज अम्मीने मुझे जलपान नहीं दिया, तुम भी उसे खानेको मत दो।.....

किन्तु बुद्धन रायकी आवाज कानोंमें पड़ते ही मेरे मन-पर जैसे घड़ों पानी पड़ गया; सोचने लगा—आज सिलुआ खायेगा क्या, बेचारा इस समय तक भूखा ही होगा। लेकिन करता क्या ? उदास मन किसी तरह घरकी ओर लौटा; पैर उठते ही न थे, मानों लोहेकी जञ्जीरोंसे बांध दिये गये हों। धीरे-धीरे उदास मन आंगनमें पैर रखा ही था कि रानीने टोका—क्यों, लौट क्यों आये ? क्या जवाब देता, बाबूजी; आंखोंसे ढुलकते हुए दो बूंद आंसूको देखकर ही वह समझ गयी कि काम नहीं लगा। उस दिन, घरमें सभीको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अनाहार रहना पड़ा। सिलुआ—मेरी आंखोंका तारा सिलुआ—मेरे सामने ही, बाबूजी, भूखसे रोते-रोते सो गया!

दूसरे दिन, खूब सवेरे ही कामपर जा जुटा। उस दिन काम दिनभर चला और शामको जब भूखसे शिथिल मेरे हाथोंपर बुद्धन रायने दिनभरकी मजदूरीके आठ पैसे रख दिये तो मेरी भूख हिरन हो गयी—दौड़ता हुआ घर पहुंचा। मेरी तेज रफ्तार देखकर ही रानी समझ गयी कि आज जलती हुई भट्टीकी ज्वालाको शान्त करनेके लिए दो बूंद पानी मिल सकेगा।

और उस दिन कितनी उमङ्गसे सिलुआके साथ मैंने रोटी खायी!

* * *

बढ़इयोंकी आरियां दिनभर सन्-सन् लकड़ियोंके चौकोरों पर नाचा करतीं—उनके बसुले सुबहसे शाम तक ठक-ठक बजते रहते; सूर्योदयसे सूर्यास्त तक लुहारोंके घन और हथौड़ोंकी घन्न्-घन्न् गांवमें गूंजती रहती; मिस्त्री और राजोंकी कन्नियां दिनभर पलस्तर और पाइटिङ्गमें व्यस्त रहतीं; सुर्खी कूटनेवाले बेलदारोंके लोढ़े दिनभर अविराम गतिसे चला करते और सैकड़ों—दुधमुहेंसे लेकर बूढ़े नर-नारियोंकी छतें पाटनेवाली थापियोंकी पड़पड़ाहट एक रंग प्रातःकालसे सन्ध्या तक गांवके शान्त वातावरणको क्षुब्ध किये रहतीं।

शहरसे गाड़ीकी-गाड़ी लोहेकी शहतीरें, छड़ें और तख्तियां दिनभर गांवमें आती रहतीं। इञ्जीनियर, जानें क्या, दिनभर फीतों और जञ्जीरोंसे नापते रहते और इस तरह, बाबूजी, जहां पहले अविच्छिन्न शान्तिका साम्राज्य था, वहां कोलाहलका केन्द्र बन रहा था!

मजदूर सुबह सात बजे कामपर जुट जाते और उसी समय उनकी हाजिरी ली जाती। कोई बेचारा अगर देरसे आता तो उस दिन उसे काम ही करने नहीं दिया जाता, क्योंकि मुंशीजी इतने उदार थोड़े ही थे कि दस मिनट देर आनेपर उसकी हाजिरी बना देते? सुबहसे बारह बजे तक और एकसे पांच बजे तक—पूरे नौ घण्टे कड़ाचूर दुपहरिया-में एड़ी-चोटीका पसीना एक करके जब हम लोग शामको घर चलने लगते तो केवल दो इकन्नियां हम लोगोंके हाथोंमें थमा दी जातीं। दिनभरके परिश्रमका इतना कम मूल्य! फिर भी हम लोगोंके हाथोंमें जब वे आठ पैसे पड़ते तो चेहरा खिल उठता क्योंकि यहां तो वे आठ पैसे भी मुहाल थे!

सुबह होती, कामपर जाता; दोपहरको खानेके लिए घर आता और कभी-कभी तो खाते-खाते ही कामपर वापस चला जाना पड़ता। फिर सन्ध्याको दिनभरकी मजदूरी ले घर लौटता। दिनभरका थका-मांदा, रूखा-सूखा खाकर बिछावनपर पड़ते ही नींद आने लगती; पता नहीं रात किस तरह बीत जाती और आंखें जो खुलतीं तो सूर्यकी किरणों-को पतली डोरी छप्परके छेदोंसे घरमें आती हुई नजर आती—बुद्धन रायकी काली-सी खूंखार सूरत आंखोंके सामने नाच उठती और फिर वही पिछला क्रम! उसी प्रकार दिनभर चक्कीमें पिसना!!

* * *

दिलमें चैन नहीं; आंखोंमें नींद कहां? एकाएक रानीको जोरोंका बुखार हो आया। रातभर उसके सिरहाने बैठा रहा और अपलक आंखोंसे उसे बुखारसे छटपटाती हुई देखता रहा। उस रातको उसे अकेली छोड़कर डाक्टर-वैद्यकी खोजमें जाता भी तो कैसे? फिर उसके लिए चाहिए थे चांदीके चमकते हुए सिक्के! और, बाबूजी, यहां तो पैसोंके भी लाले पड़ रहे थे। धीरे-धीरे सवेरा हुआ और रानीका बुखार भी कुछ कम हुआ। सूर्योदय होते ही उसने कहा—राजा, कामपर जाओ न, मेरी तबीयत अब अच्छी हो रही है। आंखोंमें आंसू भर आये; रुंधे हुए स्वरमें मैंने जवाब दिया—न, आज न जाऊंगा। तो सिलुआ खायेगा क्या? उसने बड़ी आजिजीसे कहा।

बड़े असमञ्जसमें पड़ गया, बाबूजी! एक ओर भूखसे तड़पता हुआ बेटा और दूसरी ओर बीमार पत्नी और उसकी दवा-दारूके लिए कुछ पैसोंकी आवश्यकता! मैं अन्य-मनस्क-सा कुछ देरतक बैठा रहा। जा, मेरे राजा, कामपर जा,—उसने फिर बड़ी विनयके साथ कहा।

इस बार मेरी हिम्मत न हुई कि बैठा रहूं। उठा और सीधे कामपर पहुंचा, लेकिन दुर्भाग्यने साथ न छोड़ा—हाजिरी हो चुकी थी और सभी मजदूर काममें लग चुके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



थे। तब क्या लौट जाऊं ? हृदयने कहा—सिलुआ भूखा रह जायेगा ! सोचा कामपर जुट जाता हूं, जब मुंशीजीसे भेंट होगी, तब देरीके लिए माफी मांग लूंगा और यह सोचकर काम करने लगा। किन्तु, थोड़ी देर भी काम न कर पाया था कि छड़ी घुमाते हुए मुंशीजी वहां पहुंच गये और मुझे देखते ही आग-बबूला हो गरज उठे—बिशुन, देरकर आया भी और मुझसे बिना हुक्म लिये काम क्यों करने लगा ? हुजूर उस समय नहीं थे। सरकार, गलती हो गयी; माफ करें—मैंने बड़ी आरजूके साथ कहा।

हुजूरका बच्चा, साला, मेरे हुक्मके खिलाफ काम भी करता है और मुझहीको समझाने चला है ! हरामजादा, तेरी बोटी-बोटी नुचवा लूंगा।—कहते हुए उन्होंने अपनी छड़ी मेरी देहपर तड़ातड़ बरसानी शुरू कर दी। मैं भौचक-सा देखता रह गया—मुंहसे आह तक न निकली ! लेकिन शुक्र खुदाकी, जो उन्होंने मुझे कामसे हटाया नहीं !

उस दिन दोपहरको घर खाने नहीं गया—जाता भी तो खाता क्या, रानी तो बीमार थी ! शामको मजदूरीके पैसे लिये जब घर पहुंचा, तो सारी देह दर्दसे टूट रही थी। कई जगह छड़ीके दाग थे, जिनको रानीकी आंखोंसे बचानेके लिए मैंने कपड़ोंसे ढंक रखा था। उस रात खाना नहीं बना—दो पैसोंकी फलही खरीदी; सिलुआको खिलाकर सुला दिया। रानीने जब दर्दका कारण पूछा, तो इधर-उधरकी बातें बनाकर कह दिया—यों ही, थक जानेसे दर्द मालूम होता है !

लेकिन बाबूजी, रात कैसे बीती, वह अब भी याद है !

* * *

सवेरा हुआ—वह सवेरा जो बुद्धन रायकी खूंखार सूरत और मुंशीजीकी वक्र-दृष्टि लिए मेरी आंखोंके सामने उपस्थित हुआ करता था ! मेरी देह बुखारसे तप रही थी। रानीका बुखार उतर चुका था, किन्तु उसे पथ्य इत्यादि देने वाला मेरे सिवा वहां और कौन बैठा था ? बेचारी विवश हो, बिस्तरेमें मुंह छिपाये पड़ी थी—मिट्टीका घरौंदा बनाकर सिलुआ आंगनमें खेल रहा था और इधर मेरे मनमें अनेक तर्क-बितर्क उठ रहे थे। सोच रहा था—यदि मैं शीघ्र अच्छा न हुआ, तो रानीकी क्या दशा होगी; सिलुआके खानेका क्या बन्दोबस्त होगा ? रानीकी देहपर अब गहने भी नहीं बचे, जिसे बेचकर या गिरवी रखकर मुट्ठीभर अन्न पेटमें डालनेका प्रबन्ध कर सकती ! उधार ! मेरे जैसे मरभुक्खेको कौन उधार देने जाता ? पड़ोसहीमें रामधनी साहुके घर घी-दूधके पनारे बहते हैं और दस कदमपर ही एक टूटी हुई झोपड़ीमें तीन असहाय प्राणी अपने भाग्यको रो रहे हैं ! हाय !

इसी समय किसीने बड़ी कर्कश आवाजमें पुकारा—विशुन ! विशुन !! सिलुआको मैंने बाहर जाकर देख आनेके लिए भेजा। उससे मालूम हुआ कि सुरेशबाबूने एक आदमी मुझे बुलानेके लिए भेजा है। सुनकर मनमें तरह-तरहकी कल्पनाएं उठने लगीं। डर हुआ कि कहीं कल वाली बातसे रुष्ट होकर तो नहीं बुला रहे हैं, लेकिन मेरा कुसूर भी तो नहीं था—थोड़ी-थोड़ी खुशी भी हो रही थी कि चलकर थोड़ा-सा उन्हींसे उधार मांग लूं, जब अच्छा हो जाऊंगा तब काम करके चुका दूंगा। लेकिन जाता भी तो कैसे ?—बुखार जो यमदूतकी तरह शरीरपर सवार था ! इसी समय फिर वही कर्कश आवाज आयी—विशुन ! विशुन !!

रानीने मेरी ओर देखा—उसकी आंखोंमें असमञ्जस और विवशताकी गहरी रेखाएं खिंची हुई थीं।

मैं अपनेको रोक न सका—उठकर बाहर जाने लगा। जाते देख उसने पूछा—कहां चले ?

कहीं नहीं, अभी आया—कहता हुआ मैं बाहर आ उस आदमीके साथ चल दिया।

* * *

एक चौकीपर दरी और जाजिम बिछे हुए थे और उस पर एक मसनदके सहारे सुरेश बाबू लेटे हुए थे। बगलमें तीन-चार कुर्सियां पड़ी हुई थीं—इञ्जीनियर साहब और दो-एक नये आदमी उसपर बैठे हुए थे। मेरे पहुंचते ही सुरेश बाबूने बड़े आदरके साथ कहा—विशुन, बैठो, चटाई खाली है !

उनकी बात समझमें न आयी—रास्तेभर मनमें तरह-तरहकी आशङ्कायें उठती आ रही थीं। सोचता जाता था—जानें, क्या गति होती है ? लेकिन वहांका रंग देखकर कुछ समझमें न आया। खैर, चटाईपर बैठ गया। कुछ देर तक इधर-उधरकी बातें कर सुरेश बाबूने कहा—विशुन, तुम तो जानते ही हो, मैं अपनी कोठी निराली ही बनवाना चाहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हूं और इसीलिए रुपया भी पानी जैसा बहाता हूं। इधर इञ्जीनियर साहबकी राय हुई कि कोठीके सामनेवाली जमीन अगर हमारे अहातेमें जोड़ दी जाये, तो एक छोटी-सी फुलवारी भी, कोठीकी रौनक बढ़ानेके लिए, बना ली जा सकती है। तुम अपनी वह दस कट्ठा जमीन मुझे दे दो। उसकी कीमतके बराबर तो अब मेरे बाकी रुपये भी हो चले होंगे?

बाबूजी, सुरेश बाबूके उस आदरका मतलब अब साफ झलकने लगा। मैंने कहा—सरकार, इस समय तो मैं बीमार हूं; कुछ दिनोंकी मुहलत दीजिये। फिर घरमें भी राय लेकर इसका जवाब दूंगा। लेकिन, सरकार, आप ही मेरे मां-बाप हैं; वही जमीन मेरी अन्तिम सम्पत्ति है और चलते समय पिताजीने.....

खैर, आज न कल ही सही, लेकिन वह जमीन मुझे दे दो तो अच्छा हो नहीं तो.....कहते-कहते सुरेश बाबू रुक गये और दूसरी ओर मुखातिब होकर इञ्जीनियरसे बातें करने लगे।

नहीं तो...का क्या मतलब? उनकी आखिरी मंशा क्या है?—यह सब सोचकर मैं घबड़ा उठा। खैर, उनको दूसरी ओर आकृष्ट देखकर मैं भी उठकर घरकी ओर चल पड़ा। पहुंचते ही रानीने फटकारना शुरू किया—बुखारमें भी बाहर जाना नहीं छोड़ते तब क्या चङ्गा होओगे, खाक? एक तो दवा-दारूका कोई प्रबन्ध हो ही नहीं सकता, फिर संयम भी न करोगे तब कैसे अच्छे होओगे मेरे राजा?

और जब सुरेश बाबूकी बातें मैंने उससे कहीं तो वह और भभक उठी। बड़बड़ाने लगी—मालिक हुए तो क्या? ऐसी भी कहीं धांधली होती है? जमीन क्यों दे दूं? हम लोगोंके पास अब बचा ही क्या है? सब कुछ तो उन्हींको कर्जमें दे डाला। इसी दस कट्ठे पर तो सिलुआके विवाह करनेकी उम्मीद बंधी हुई थी। सो, उसको भी आज ही दे दूं! उनके रुपये ही अब मेरे यहां कितने होंगे—पन्द्रह, बीस! उसीके बदलेमें सारी जमीन दे दूं? न, मैं तो हर्गिज नहीं दूंगी!

रानीकी बातें सुनते-सुनते मुझे झपकी आने लगी और मुझे अनुभव हुआ, जैसे मैं स्वप्न देख रहा हूं—मरणासन्न पिताजी बिछावनपर पड़े हुए कह रहे हैं—विशुन, ये तीन बीघे खेत मैंने अपने पसीनेकी गाढ़ी कमाईसे खरीदे थे, इन्हें यों ही नष्ट न करना। कहते-कहते उनकी बिग्घी बंध जाती है, सिर लटक जाता है और वे चल बसते हैं।

नींद जो खुली तो देखा—सारी देह पसीनेसे तर हो रही थी। सोचने लगा—पिताजी मरते समय क्या कह गये थे? लेकिन बचा क्या? जब मर गये तो गांवके पञ्चोंने धूम-धामसे उनका श्राद्ध करवाया; और इस तरह उनके श्राद्ध और उनकी दवा-दारूमें ही जो कर्ज लिया गया उसे अदा करनेमें ढाई बीघे खेत बिक गये। उस समय सुरेश बाबूके पन्द्रह-बीस रुपये ही तो, दे-लेकर बचे थे। अब तो यही दस कट्ठेकी टुकड़ी बची थी जिसे भी वे ले लेना चाहते थे!

* * *

दो-तीन दिनोंके बाद, धीरे-धीरे मैं बुखारसे छुटकारा पाने लगा। जब मैं भली भांति चङ्गा हो गया तो किसी कामकी तलाशमें निकला, क्योंकि सुरेश बाबूके कामपर जाते मुझे इसलिए डर लगता था कि कहीं फिर खेतकी चर्चा न छेड़ दी जाय। मैं बहुत ही तड़के घरसे उठकर बाहर चला जाता; फिर एकबारगी शामको अंधेरा होनेपर ही लौटता। इस बीचमें, प्रायः प्रतिदिन सुरेश बाबूके सिपाही बुद्धन राय मुझे खोजने आते, पर मुझे न पाकर गालियां देते हुए चले जाते। मैं तो बाबूजी, उनसे बचनेके लिए ही उतना सवेरे घर छोड़ देता था। रातको रानी कहने लगती—जाकर साफ क्यों नहीं कह देते कि जमीन नहीं दूंगा? जब मुझे जरूरत होगी तब इसे बेचूंगा! लेकिन सुरेश बाबूके दरवाजे पर जाकर इतना कहनेकी मुझे हिम्मत ही न होती।

उस दिन दुर्भाग्यवश मुझे कोई काम न मिला। इधर-उधर घूम-धामकर, सोचा कि दिन काट लूं; फिर शामको घर चला चलूंगा। लेकिन कहीं भी तबीयत न लगी। लाचार हो घर वापस आया। किन्तु, चौपालमें पैर रखा ही था कि बुद्धन रायकी डरावनी सूरत नजर आयी। मुझे देखते ही भूखे शेरकी तरह गरजकर बोले—क्यों रे हरामजादे, मैं क्या तेरे बापका ताबेदार हूं जो प्रतिदिन तेरे यहां हाजिरी देता रहूं? मालिकको जाकर जवाब क्यों नहीं दे आया?

उसकी इस उजड्ड हरकतपर मुझे बड़ा रञ्ज हुआ। तैशमें आकर मैंने कहा—रायजी, जरा जबान संभालकर बातें कीजिये। मैं भी किसीका ताबेदार नहीं और जमीनकी बात! जाकर मालिकसे कह दीजिये कि मैं नहीं देता!



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मेरी खरी बातें उन्हें तीर-सी लगीं। त्योरियां चढ़ाकर मेरी ओर लपकते हुए उन्होंने कहा—चल-बे-चल, दरवाजे-पर चल, तो सारी हेकड़ी निकाल दूं—कहते हुए उन्होंने मुझे पकड़ लिया। मैं नहीं जाता—कहकर मैं घरमें जानेकी चेष्टा करने लगा और वे मुझे बाहरकी ओर घसीट लानेकी कोशिश करने लगे। अपनेको छड़ानेकी गरजसे उनको एक धक्का देकर मैं भीतर घुसने लगा, लेकिन पीछे फिरकर देखा तो बुद्धन राय धक्केकी चोटसे लड़खड़ाकर बगलके ईंटोंकी ढेरपर जा गिरे थे और उनके माथेसे खून निकल रहा था—शायद ईंट लग जानेसे कहीं फट गया था। मैं भी बौखलाया हुआ था—इसपर ध्यान न देकर घरमें चला गया।

* * *

नींद जो खुली, बाबूजी, तो देखा कि एक 'लाल पगड़ी' खाकी वर्दी चढ़ाये हुए, हाथमें एक बड़ा-सा लट्ठ लिये मेरे आंगनमें घुस रहा है। देखकर मैं तो हक्का-बक्का हो गया। अभी बिस्तरेसे उठ भी न पाया था कि उसने कसकर मुझे दबोच लिया और मेरी बाहोंको उलटकर, एक मोटे रस्सेसे बांध लिया और मुझे घसीटता हुआ चल पड़ा। रानी एक टक भौचकी-सी होकर देखती रह गयी।

घसीटता हुआ वह, मुझे सुरेश बाबूके दरवाजेपर ले गया। वहां तीन-चार सिपाही और दर्जनों चौकीदार खड़े थे—एक ओर कुर्सीपर दारोगाजी बैठे हुए थे। मुझे देखते ही आंखें लालकर उन्होंने हण्टर उठा ली और लगे मेरी पीठपर बरसाने। बीच-बीचमें कहते जाते थे—साला, चोरी करने चलता है! सुअरका बच्चा, हरामजादा, बता, माल कहां रखा है?

मैं तो इन बातोंको बिलकुल समझ ही न सका। कैसी चोरी? कहांका माल? मेरी समझमें कुछ न आता था। मैंने चोटसे कराहते हुए कहा—सरकार, कैसी चोरी? मैं तो कुछ भी नहीं जानता।

उल्लूका बच्चा, साला, हमीको चरका देता है? बुद्धन, चलो, तुम अपनी गवाही दो—क्रुद्ध स्वरमें कहते हुए उन्होंने मेरे मुंहपर फिर तड़ातड़ हण्टर चलानी शुरू कर दी।

सिरमें पट्टी बांधे हुए बुद्धनराय सामने आकर कहने लगे—हुजूर, कल रातको मैं जब मालिकके दरवाजेपर सोया हुआ था, तब 'चोर' 'चोर'का हल्ला सुनकर, घरके पिछवारेकी ओर दौड़ा। सामने ही मैंने भागते हुए विशुनको देखा। मैंने इसे पकड़ना चाहा, पर इसने घूमकर ऐसी लाठी चलायी कि मैं वहीं गिर पड़ा और वह भाग गया।

बाबूजी, सारा षड्यन्त्र मेरे दिमागमें नाचने लगा। मैं लाख रोया, गिड़गिड़ाया, आरजू-मिन्नतकी—दारोगाजीके पैर पकड़े—लेकिन नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज कौन सुनता?

सब बेकार—सब निष्फल!

सुरेश बाबूने कहा—दारोगा जी, लगभग तीन सौ रुपयोंके मेरे जेवरात और कपड़े गायब हैं।

इस सफेद झूठपर मुझे कुछ हंसी आ गयी, लेकिन दारोगाजीने उसका यह अर्थ समझा कि मैं मखौल कर रहा हूं। दांत पीसते हुए हण्टर लेकर मुझपर टूट पड़े और गरजते हुए बोले—जमादार, इसके चमड़े उधेड़ डालो!

जल्लाद जिस तरह अपराधीको सामने पाकर अट्टहास कर उठता है, उसी तरह वे हृदय-हीन पुलिसके सिपाही हंसकर मुझपर टूट पड़े और चारों ओरसे हण्टर और बेंत मेरी पीठपर बरस पड़े—असह्य वेदनासे मैं तड़पने लगा!

उस समय और सब कोई—जो वहां खड़े थे, हंस रहे थे। चोटसे कराहते हुए मैंने आंखें ऊपर उठायीं, तो देखा—रानी, सिलुआकी बांह पकड़े, भीड़से अलग खड़ी, रो रही थी।

कुछ देर बाद बेतोंकी वर्षा बन्द हुई तो दारोगाजीने, जानें क्या, इशारा कर दिया—सिपाही और चौकीदार मुझे बांधकर घसीटते हुए थानेकी ओर ले चले। मैंने पीछे फिरकर देखा—रानी दहाड़ मारकर दारोगाजीके पैरोंपर गिरी हुई थी!

चलते-चलते किसीको कहते हुए सुना—अब भी साला जमीन देनेमें आनाकानी करेगा?

* * *

एक वर्ष बाद।

जेलकी चहारदीवारीके बाहर पैर रखते ही, बाबूजी, सारी देह उमङ्गसे फड़क उठी। उस बारह महीनेकी कैदको किस तरह काटा—कितनी बार सिसकती हुई रानीके उस मुखड़े और सिलुआकी याद करके, जेलके अन्दर अपने कमरेमें आंसू बहाया—उन बातोंको सुनाकर आपको क्यों कष्ट दूं? हां, तो जेलसे निकलकर, तेजीसे घरकी ओर चला। शामको जब गांवके पास पहुंचा, तो दूर हीसे सुरेश बाबूकी जगमगाती कोठी नजर आयी। लम्बी-चौड़ी चहारदीवारीके बीचमें खड़ी हुई वह अट्टालिका आकाशमें चमकते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ताराओं-सी जगमगा रही थी। धीरे-धीरे डूबते हुए सूर्य-की तरह मैं अपनी झोपड़ीके सामने जा खड़ा हुआ—देखा, एक ओर मिट्टीकी भीत गिरी हुई थी, छप्पर अलग टूटे हुए पड़े थे। झोंपड़ीका कहीं पता न था, हां, एक भग्न खण्डहर उसकी स्मृतिके रूपमें तब भी खड़ा था!

पड़ोसके एक-दो व्यक्तियोंसे मालूम हुआ—रानी, मेरे जानेके थोड़े दिन बाद ही चल बसी। ओह सिलुआ! उस बेचारेको लोगोंने कुछ दिनों तक गांवके आस-पास भीख मांगते हुए देखा था, पर उसके बाद वह भी नहीं दीख पड़ा।

सुनकर दिल बैठ गया। मेरे लिए दुनिया सूनी थी—सारा गांव वीरान मालूम पड़ता था। कलेजा थामकर, जिस राह आया था, उसी राह वापस लौट पड़ा।

दस कदमपर ही सुरेश बाबूकी झिलमिलाती हुई कोठी खड़ी थी। मेरी जमीनका कहीं पता न था—हां, उसकी जगह फूलोंकी क्यारियां और पानीके फौव्वारे बने थे!

ऊपर, आसमानमें तारिकाएं मुस्कुरा रही थीं और उन्हींके साथ-साथ विहंस रही थी—सुरेश बाबूकी कोठी!

नीचे, उसकी चहारदीवारीकी बगलमें सब कुछ खोकर, उजड़े हुए हृदयके साथ मैं धीरे-धीरे चला जा रहा था; हृदयमें एक भीषण तूफान उठा हुआ था और स्मृतियां मनमें एक-एक कर नाच रही थीं—एक वर्ष पूर्व! मेरे ऊपर चोरीका इल्जाम! सुरेश बाबू और बुद्धन रायकी गवाहियां! रानी और सिलुआके रोते हुए चेहरे! और दारोगाजीकी वह कर्कश ध्वनि—जमादार, इ...के...चम...ड़े...!

तबसे, बाबूजी, यही सारङ्गी रानी है और यही झोली मेरा सिलुआ!—कहते-कहते गुदड़ियाकी आंखोंसे अविराम आंसू झड़ने लगे!

कौन कह सकता है, मेरे हृदयमें भी उस समय उथल-पुथल नहीं मची हुई थी?

—

## वसन्त-श्रीके प्रति

कहां आ रही ओ वसन्त-श्री! मेरे उजड़े मधुवनमें?
धरा कौन-सा सार यहां है, जले हुए इस जीवनमें?
सूखे पत्तोंपर छितराकर, अपना मीठा मधु सारा;
क्या पायेगी रङ्गिणि! तू बस—छोड़ दृगोंका जल खारा?

निज समीरकी थपकीसे मत—क्षुब्ध बना मानस मेरा;
नाच उठेंगी चिन्ताएं मम, पर क्या होगा हित तेरा?
जलती है जिस उरमें ज्वाला, उसका क्या मनुहार सखी?
नहीं जगतमें चाहक जिसका, उसका क्या शृङ्गार सखी?

तिसपर जीवनकी सीमामें, आज प्रलयकी उठती आग;
और व्यथाकी चादर ओढ़े, सोता है मेरा अनुराग;
इससे क्षण-भर सखी! रोक दे, इन सुमनोंका निर्मम हास,
कोकिलकी मद-भरी कूक औ—वल्लरियोंका प्रणय-विलास।

मैं इस निर्जन पथसे गिनती, जीवनकी घड़ियां चुपचाप—
अभी चली जाती तब आना, हरने तू जगका सन्ताप।

—कमलाप्रसाद अवस्थी 'अशोक'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नरमुण्डका शिकार

श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा

फिलीपाइन द्वीप-पुञ्जके लुजन नामक पहाड़ी प्रदेशमें बहुत-सी जङ्गली जातियां रहती हैं जिनमें 'ईफूगाओ' जातिकी संख्या सबसे अधिक है। इनकी संख्या लगभग १३०००० है। यहांकी आबादी बहुत घनी है। इस जातिका मुख्य पेशा खेती है। खेतीके कामोंमें अब भी ये लकड़ीके औजारोंसे काम लेते हैं। फिलीपाइन द्वीप-पुञ्जपर अमेरिकाके अधिकार होनेके पूर्व 'ईफूगाओ' लोगोंमें बिलकुल अराजकता फैली हुई थी। इनमें किसी प्रकारकी विधि-व्यवस्था नहीं थी।

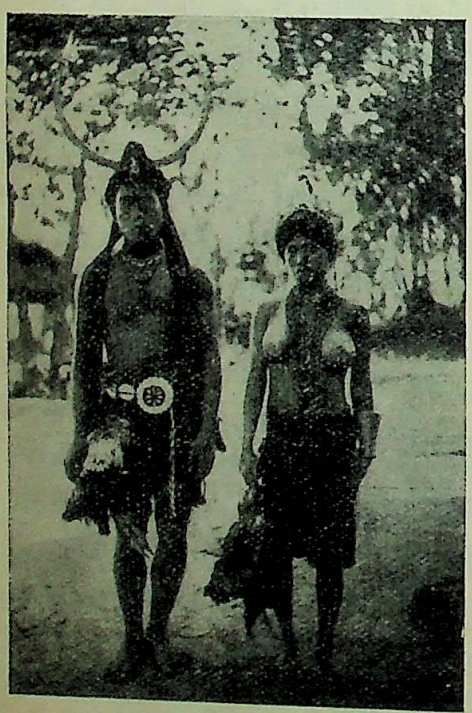

'इफूगाओ' दम्पति

किन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिए कि ये लोग आपसमें मारकाट मचाया करते थे और कभी शान्तिसे नहीं रहते थे। इसके विपरीत आज-कलकी सभ्य कहानेवाली जातियोंकी अपेक्षा इनमें अपराधोंकी संख्या बहुत कम होती थी और जानमालकी पूरी हिफाजत थी। कोई कानून और विधि-व्यवस्था नहीं होनेपर भी सामाजिक नियमोंके ये पूरे पाबन्द थे और समाजका कठोर अनुशासन प्रत्येक व्यक्तिको मानना पड़ता था।

इनके देवी-देवताओंकी संख्या अत्यधिक है। भूत-प्रेत, जादू-टोना इत्यादिपर इनका अखण्ड विश्वास होता है। इनके देवता उपासनाकी अपेक्षा बलिदानसे अधिक सन्तुष्ट होते हैं। प्रत्येक देवताको एक-एक पत्नी होती है, जो 'बुगन' कहलाती है। देवताओंको भोज, पान और मद्य प्रिय होते हैं। उनमें लोगोंको पीड़ित कर देनेकी शक्ति होती है। उन्हें बलि इसलिए दी जाती है कि वे मनुष्यको पीड़ासे सुरक्षित रखें।

'ईफूगाओ' अपने पूर्व-पुरुषोंके सात या आठ पीढ़ियों तक या इससे भी अधिकके नाम जानते हैं। उनके पूर्वजोंकी आत्माओंको बलिदान द्वारा यदि सन्तुष्ट नहीं किया जाय, तो वे अप्रसन्न होकर अपने वंशजोंको विपत्तिमें डाल देते हैं। उनके पुरोहित भी सब देवताओंके नाम नहीं जानते।

कुछ समय पहले तक ये लोग अपनी ही जातिके किसी शत्रु-पक्षमें नरमुण्डका शिकार किया करते थे। यद्यपि इस समय अमेरिकाके शासनमें नरमुण्डका शिकार कठोर रूपसे वर्जित कर दिया गया है, फिर भी नरमुण्डका शिकार करनेकी घटनाएं कभी-कभी लुक-छिपकर हो जाया करती हैं, जिससे मालूम होता है कि अभी तक इनका हृदय-परिवर्तन नहीं हुआ है। शत्रुका सिर लेते समय वे इस बातका विचार नहीं करते कि वह स्त्री है या पुरुष, बालक है या बालिका। किन्तु ईफूगाओ जातिमें 'कियङ्गन' सम्प्रदायके लोगोंका यह दावा है कि वे स्त्रियों या बालिकाओंके सिर नहीं लेते। हां, उनका अपहरण करके दासियोंके रूपमें उन्हें बेच अवश्य देते हैं। किन्तु दूसरे 'ईफूगाओ' 'कियङ्गनों'की इस दाम्भिकतापर घृणा प्रकट करते हैं और कहते हैं कि सब 'ईफूगाओ' स्त्रियों या बच्चोंके मुण्डका शिकार करते हैं। केवल उसी हालतमें वे ऐसा नहीं करते जब कि उन्हें उनका अपहरण करके दासीके रूपमें बेच देना होता है। नरमुण्डका शिकार करनेके लिए अभियान करनेका जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



व्यक्ति प्रस्ताव और आयोजन करता है वह 'नङ्गोलाट' (Nungolat) कहलाता है। यह आवश्यक नहीं है कि वह व्यक्ति अपने दलका नेता हो; क्योंकि ईफूगाओ जातिके किसी दलका नेता वही व्यक्ति होता है जो सबसे बढ़कर बलवान होता है। किन्तु अभियानका नेतृत्व करनेके लिए जिस प्रारम्भिक बुद्धि और ख्यातिका प्रयोजन होता है, उससे वह व्यक्ति अपने दलका प्रधान हो सकता है। अभियानकारी दलके प्रस्थान करनेपर यदि कोई अपशकुन हो जाय, तो दलके प्रधान और अन्य कोई व्यक्ति वापस लौटा दिये जाते हैं और बाकी लोग अपनी यात्रा कायम रखते हैं।

जब यह निश्चय हो जाता है कि शत्रुपक्षके किसी नरमुण्डका शिकार किया जाय, तो प्रस्थान-तिथिसे कई दिन पूर्व लकड़ीके कुन्देको चीरकर एक मनुष्यकी आकृति बनायी जाती है। कल्पित शत्रुका उसे प्रतिनिधि मानकर उसका नामकरण किया जाता है। फिर जो लोग उस अभियानमें सम्मिलित होनेवाले होते हैं, वे अपने भालोंसे उस आकृतिको बिद्ध करते हैं। एक पुरोहित उस मूर्तिको सम्बोधन करके कहता है :—तुम्हें भालोंसे बिद्ध किया गया है, किन्तु क्रोध न करो। तुम हमारे अमुक परिकल्पित शत्रु और उसके माता-पिता, भाई-बन्धु हो। हमारे नवयुवक सड़कपर तुमसे मिलेंगे, वहां तुमसे प्रतिशोध लिया जायगा और तुम धराशायी होगे।"

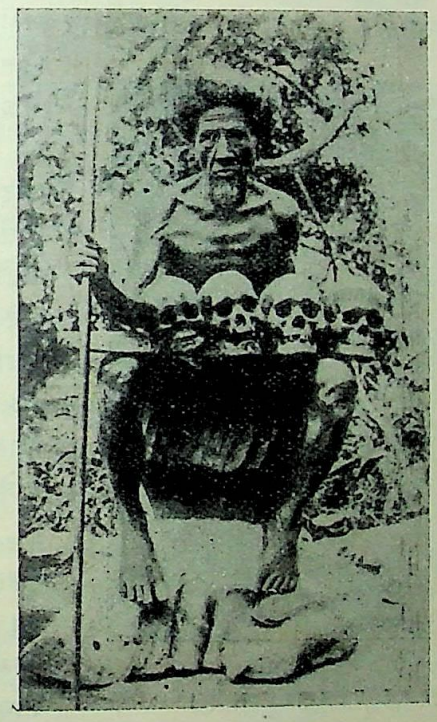

यह पुराना नरमुण्डशिकारी चार नरकपालोंका इस प्रकार गर्वके साथ प्रदर्शन कर रहा है मानो इसने किसी खेल-कूदमें चार चांदीके कप जीते हों।

प्रस्थान-दिवसके पूर्वके दिन सन्ध्या समय 'गिनलोट' नामक एक अनुष्ठान-क्रिया की जाती है। इस क्रियामें देवता और पितरोंको बलिदान दिये जाते हैं। इस बलिदानमें विशेषत: प्रजापति देवता और समर-देवताकी तुष्टि करनेकी ओर विशेष लक्ष्य रखा जाता है। नरमुण्ड-शिकारी अपने-अपने पुरोहित तथा सारे साज-सरञ्जामको लेकर अपने मुखियाके घर पहुंचते हैं। फिर अभियानसे वापस लौट कर ही वे अपने घर जाते हैं।

पूर्वपुरुषोंकी आत्माओंसे इस प्रकार प्रार्थना की जाती है:—"आप अपनी सन्तानकी अन्त तक रक्षा करते रहें, जिससे वे शत्रुका मुकाबला करें। हमारे शत्रुकी भुजायें इतनी भारी हो जायं कि वह अपने शस्त्रोंका प्रयोग न कर सके और हमसे बदला लेनेकी उसमें सामर्थ्य न रहे। हम लोग उसपर आक्रमण करेंगे और भालोंसे उसे बिद्ध कर डालेंगे। वह जहां खड़ा होगा, वहीं उसकी फौरन् मृत्यु हो जायगी। इसके बाद हम नरमुण्डके शिकारसे वापस लौटेंगे। हमारे दलका कोई आदमी घायल नहीं होगा। हम सब सकुशल लौट आयेंगे।"

प्रजापति देवत से इस प्रकार प्रार्थना की जाती है :—"हे प्रजापति देवता, आपसे हमारी यही प्रार्थना है कि हमारी इस यात्रामें कोई अपशकुन न हो। प्रवञ्चक शैतानको आप प्रेरित करें, कि वह शत्रुको भुलावेमें डालकर हमारे सामने ले आये, जिससे हम अपने पितृऋणसे मुक्त हो सकें। हमारे शत्रुका समूल उच्छेद हो। बस, हम आपसे इतना ही चाहते हैं।"

यह विश्वास किया जाता है कि यदि यज्ञका धुआं शत्रुके नासा-रन्ध्रोंमें प्रवेश कर जाय, तो उसपर जादूका असर हो जाता है। देवतागण उसपर कुपित हो जाते हैं और इसके परिणामस्वरूप वह भयङ्कर रोगोंसे ग्रस्त हो जाता है।

नरमुण्डके शिकारके लिये जितने अनुष्ठान किये जाते हैं, उन सबमें मध्याह्न-सूर्य्यका आवाहन किया जाता है। क्योंकि सूर्य्यको युद्धका देवता समझा जाता है और यह विश्वास किया जाता है कि मध्याह्न-सूर्य्यमें एक प्रकारका जादू होता है।

अनुष्ठान रातभर होता रहता है। इस समयसे लेकर शिकार-यात्रासे वापस लौटने तक शिकारी-दलके लोग और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उनके परिवारके सब आदमी केवल 'धार्मिक' भोजन—अर्थात् चावल, मुर्गी और सुअरका मांस—करते हैं। उनके सब कुटुम्बियोंको परहेजसे रहना पड़ता है। परिवारके पुरोहितको घरके अन्दर सोना पड़ता है। स्त्रियोंके लिये कपड़ा बुनना वर्जित है, क्योंकि उनके आगे-पीछे चलनेसे शिकारी-दल विभ्रान्त हो जा सकता है। स्त्रियां मन्त्र और जादूके प्रयोग द्वारा नरमुण्ड-शिकारियोंको सहायता पहुंचाती रहती हैं। इसके लिये वे सीधी होकर बैठती या लेटती हैं और सब काम सावधान होकर निश्चित रूपमें करती हैं।

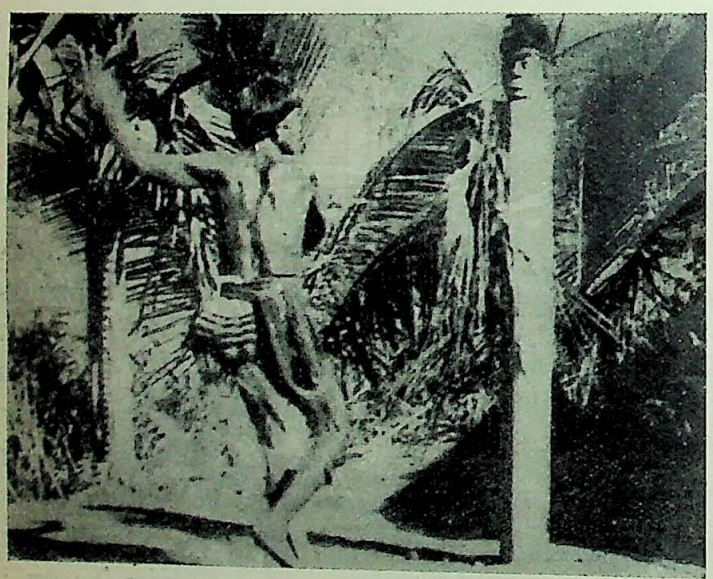

एक सुसज्जित कदली-स्तम्भपर नरमुण्ड रखा हुआ है।

सुबहमें शिकारी-दल रवाना होता है। अपने वास-स्थानसे थोड़ी दूर चलकर वह एक झोंपड़ा तैयार करता है और रातमें वहीं सब लोग विश्राम करते हैं। दिनमें राह चलते समय वे बराबर शकुनोंकी ओर लक्ष्य रखते हैं। यदि किसी शुभ पक्षीकी आवाज धीमी हुई, तो वह शकुन और यदि तेज तथा उत्तेजित हुई, तो वह अपशकुन समझी जाती है। पक्षी किस दिशाकी ओर उड़ता है, उधर भी लक्ष्य रखा जाता है। यदि वह शत्रुके प्रदेशकी ओर उड़ता हो, तो शकुन, यदि शिकारी-दलके मार्गकी दायीं ओर, तो अनिश्चित शकुन और यदि सामनेकी ओर, तो अपशकुन समझा जाता है। अपशकुन होनेपर दलको वापस लौट आना पड़ता है, कुछ और अनुष्ठान करने पड़ते हैं और फिर कई दिनोंके बाद वह प्रस्थान करता है। पक्षीके सिवा सांप, गिरे हुए वृक्ष या उनकी शाखाओंसे भी शकुन-अपशकुनका बोध किया जाता है।

रातको जिस नवनिर्मित झोंपड़ीमें शिकारी लोग विश्राम करते हैं उसमें स्थानीय प्रेतात्माओंकी तृप्तिके लिए मुर्गी और सुअरका बलिदान करते हैं। समूची मुर्गीको उबालकर उसे टुकड़े-टुकड़े करते हैं और प्रत्येक व्यक्तिको एक-एक टुकड़ा दिया जाता है। चावलकी बनी हुई शराब एक कटोरेमें ढाली जाती है। इसके बाद ये सब चीजें शकुन-देवताको अर्पित की जाती हैं और तब देवताका यह प्रसाद शिकारी लोग ग्रहण करते हैं। भोजन समाप्त हो जानेपर हर एक आदमीको अदरकका एक-एक टुकड़ा दिया जाता है। यह अदरख उसके चेहरे और बाहोंपर मल दिया जाता है जिससे उसकी दृष्टि-शक्ति स्पष्ट, मस्तिष्क शीतल और भुजायें सुदृढ़ बनी रहें। शिकारके बाद जब दल वापस लौटता है तो अदरकके टुकड़े संग्रह करके जादू-टोनाके रूपमें सुरक्षित रखे जाते हैं।

इस प्रकार रातमें धार्मिक अनुष्ठान समाप्त हो जानेपर दलके सब लोग सो जाते हैं। उनके सो जानेपर आधी रातमें एक शिकारी—जिसे पुरोहित भी होना चाहिए—जागता है और मशाल जलाकर सोते हुए लोगोंका निरीक्षण करता है। यदि किसी व्यक्तिका म्यान उसके शरीरके साथ-साथ एक सीधमें लटका नहीं होता या जिसका चेहरा, हाथ, बांह या पेट फूला हुआ मालूम होता है उसे घर लौटा दिया जाता है।

सूर्योदयसे बहुत पहले ही शिकारी-दल बिलकुल अज्ञात और अदृश्य रूपमें तटस्थ अञ्चलमें पहुंच जाता है। उसके साज-सरञ्जामोंमें सबसे विचित्र वस्तु होती है—सिरपर रखनेकी टोकरी जिसे कन्धे और पीठपर बेंतकी रस्सीके फांसमें लटकाकर रखते हैं। यह टोकरी इस प्रकार लटकती रहती है जिससे उसे कोई देख न सके। उसके ऊपरसे एक प्रकारके कांटेदार फूलोंका आच्छादन ढंका रहता है, जिससे वह व्यक्ति एक क्रुद्ध बन्दर-जैसा दीख पड़ता है। बाकी चीजोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हलकी लकड़ीकी बनी हुई एक लम्बी आयताकार ढाल, कमरसे लटकता हुआ एक छूरा, मामूली ढङ्गके बने हुए तीन या चार पुराने भालोंका गट्ठर और बाँसकी बनी हुई हलकी छड़ियां (जो लगभग एक फूट लम्बी और तेज नोकवाली होती हैं) भालेके ढंगकी बनी हुई होती हैं। ये नुकीली छड़ियां लौटते समय जमीनमें तिर्छी करके गाड़ दी जाती हैं, जिससे बदला लेनेके लिए शिकारी-दलकी खोजमें दौड़कर आनेवाले शत्रु उनसे विद्ध होकर मर जायं। शत्रु-देशमें पहुंचनेपर वहां किन युक्तियोंसे काम लिया जाय, यह इस बातपर निर्भर करता है कि शिकारी-दलका अभियान अपने ही वंशके किसी विरोधी-दलके अञ्चलमें होगा अथवा युद्ध-अञ्चल (War-zone) में। पहली दशामें नरमुण्डके शिकारी शत्रु-परिवारके किसी व्यक्ति विशेष अथवा व्यक्तियों का सन्धान लेते हैं। तीन या चार योद्धा किसी ऐसे स्थानमें प्रवेश करते हैं जिसे वे अपने मारात्मक उद्देश्यके लिए उपयुक्त समझते हैं। बाकी लोग एक झोंपड़ेमें छिपकर रहते हैं जो किसी गुप्त स्थानमें बनाया जाता है। ये जिस व्यक्ति या व्यक्तियोंके सिर लेनेके घातमें रहते हैं, उसे प्राप्त करनेमें कभी-कभी कई दिन लग जाते हैं। घात करनेके लिए जो दल भेजा जाता है वह यदि असफल होता है, तो वह रातमें नवनिर्मित झोंपड़ेमें लौट आता है और दूसरे दिन प्रातःकाल दूसरा दल भेजा जाता है। किन्तु यदि किसी ऐसे स्थानमें अभियान होता है जहां अन्धाधुन्ध किसी भी व्यक्तिका सिर लिया जा सकता है, तो शिकारी-दलके सब लोग घात करनेके लिए किसी गुप्त स्थानमें छिपकर रहते हैं, क्योंकि पहले ही दिन उन्हें किसी-न-किसी व्यक्तिका सिर मिलना निश्चित है। सहसा आक्रमण करनेके लिए, छिपकर प्रतीक्षा करनेके उपयुक्त स्थान कोई जलस्रोत होता है जहां लोग अक्सर जल लेने आते हैं। किसी सरदार या परिवारके प्रधान व्यक्तिका सिर किसी साधारण व्यक्तिकी अपेक्षा विशेष वाञ्छनीय समझा जाता है।

जिस शिकारीके भालेके घातक प्रहारसे वध्य मनुष्यकी मृत्यु होती है, वह सूर्य्य देवतासे आविष्ट समझा जाता है और उसे ही नरमुण्ड प्राप्त करनेका अधिकार होता है। वह मृत शरीरके ऊपर नृत्य करता है, छूरेसे उसकी गर्दनको तराशता है और अपनी अंगुलीको उसके खूनमें डुबोकर उसे चूसता है। यह विश्वास किया जाता है कि मृत शत्रु 'प्रवञ्चक' शैतान द्वारा आविष्ट होकर वध्य स्थानमें लाया गया था, अतएव उसका रक्तपान करके उस देवतासे उसे मुक्त किया जाता है। शवको सम्बोधन करते हुए वह घातक योद्धा कहता है:—"सो तुम्हारी यह गति हुई! ऋण-मोचनके लिये तुम्हारा वध किया गया है। हम तुम्हारे भयानक कुटुम्बी हैं।"

किस शिकारीके भालेसे शत्रुकी मृत्यु हुई, इस सम्बन्धमें एक मत नहीं होता। इससे कभी-कभी दलमें वाद-

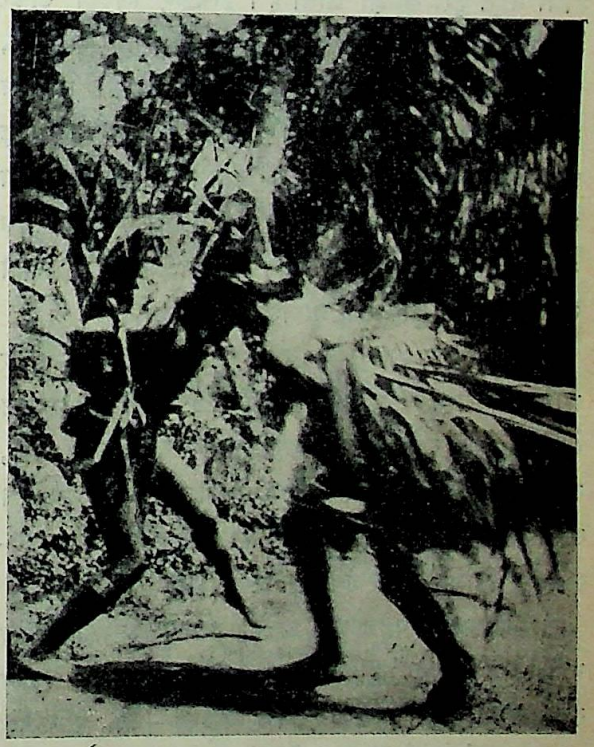

नरमुण्ड शिकारमें सफल होकर लौटनेपर दो शिकारी परस्पर मुर्गों-जैसा युद्ध करते हैं।

विवाद होने लगता है, जिससे शत्रुपक्षके लोग सतर्क हो जाते हैं और शिकारी-दलपर खतरा पहुंचा सकते हैं। सिरको धड़से अलग करनेके लिए कौन व्यक्ति प्रहार करे, इस सम्बन्धमें झगड़ा होनेपर कई आदमी या सब मिल कर एक साथ ही प्रहार करते हैं, जिससे सिरके कई टुकड़े भी हो जाते हैं। मृत व्यक्तिकी अंगुलियां, हाथ और अण्डकोष ले लिये जाते हैं। अण्डकोषको चुनौटी बनानेके काममें लाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हैं। धड़से सिरको अलग करनेके बाद एक व्यक्ति चिल्लाकर कहता है,—"ओ प्रवज्झक शैतान, इसे छोड़ दो, अब हम लोगोंने इसे ले लिया है।" इतना कह कर वह जोरसे इसे जमीनपर पटक देता है, जिससे वह लुढ़कने लगता है। ऐसा करनेका अभिप्राय यह होता है कि 'प्रवज्झक' शैतान अपने पञ्जेसे उसे मुक्त कर दे, और सिरको इतना भारी न कर दे, कि उसे ढोकर ले जानेवाला शिकारी उसके भारसे दब जाय। यदि शिकारी-दलसे बदला लेनेके लिये शत्रु-पक्षके लोग उसका पीछा करें, तो ऐसी दशामें प्रवज्झकका साथ होना बहुत बुरा समझा जाता है। इसलिए सिरको ढोकर ले जानेवाला व्यक्ति उसे सम्बोधन करते हुए कहता है, "सुनो सुनो, इतना भारी न हो जाओ, जिससे तुम्हारा भार मेरे लिये असह्य हो जाय। 'प्रवज्झक'ने अब तुम्हें छोड़ दिया है। भारस्वरूप मत बनो। अपने पिता और आत्मीय जनोंके लिये भार-स्वरूप और मेरे लिये पक्षीके पर और बेंतके समान हल्के बनो। तुम्हें वहन करनेमें मेरे पांव थकेंगे नहीं। मैं स्वर्ग-लोक तक आरोहण कर सकता हूं।"

सिरको एक टोकरीमें रखकर वह व्यक्ति अपने दूसरे साथियोंके साथ जल्दी-जल्दी वापस लौटता है। इस समयसे लेकर जब तक गृह-प्रवेशका अनुष्ठान सम्पन्न नहीं होता, दलका कोई भी व्यक्ति अन्न-जल ग्रहण नहीं कर सकता। लौटते समय रास्तेमें वे भालोंको गाड़ देते हैं और समय-समयपर विचित्र ढङ्गसे जय-घोष करते हैं।

सकुशल घर पहुंचनेपर उनके आनन्दोल्लासकी सीमा नहीं रहती। वहां गांववाले भी हर्षोन्मत्त होकर उनका स्वागत करते हैं। स्त्रियां कर्धेके खूंटेको—जो पेन्सिलके समान नुकीले होते हैं—हाथमें लेकर पहलेसे ही शिकारी-दलके आनेके मार्गमें, किनारेके वृक्ष या झाड़ियोंकी ओटमें छिपकर खड़ी रहती हैं। नरमुण्डके शिकारियोंके पहुंचते ही एक स्त्री उछलकर उनके सामने आ जाती है और वहां बैठकर खूंटेको बजाने लगती है। नरमुण्ड-शिकारी जोरसे चिल्ला पड़ते हैं, खूंटेको कूदकर पार करते हैं और अपनी पीठको उस स्त्रीके सामने करके वहां खड़े हो जाते हैं। ईफूगाओ जातिके लोग पीछे घूमकरही मानपत्र ग्रहण करते हैं। स्त्री अपने मानपत्रमें बड़े गर्वके साथ इस बातका दावा करती है कि योद्धाओंकी माताके रूपमें, उनके इस गौरवमें उसका भी भाग है। वह कुछ समय तक नृत्य करती है। इसके बाद शिकारी-दल आगे बढ़ता है और दूसरी स्त्रियां भी उसी प्रकार उसका स्वागत करती हैं।

गांवके बाहर किसी स्थानपर कटा हुआ सिर रख दिया जाता है और वहां युवक लोग उसपर पहरा देनेके लिये तैनात किये जाते हैं। यदि शत्रु-पक्षके आक्रमणकी आशङ्का होती है, तो और भी योद्धा उनकी सहायताके लिये वहां भेजे जाते हैं। दलका यदि कोई व्यक्ति घायल हो गया रहता है, तो उसे उस कटे हुए सिरके साथ ही ठहरना पड़ता है।

एक 'इफूगाओ' पुरोहित

इसके बाद पुरोहितगण बलिपशुके साथ वहां एकत्र होते हैं। दलके मुखियाके घर और अन्नागारमें प्रवेशोत्सव मनाया जाता है। इस अनुष्ठानके बिना ईफूगाओके किसी गांवमें कोई अमङ्गलसूचक वस्तु नहीं लायी जा सकती। कटे हुए सिरको घरमें लानेपर उसे लक्ष्य करके इस प्रकार मन्त्रोच्चारण किया जाता है,—"हे गृह-देवता-गण, शुभ प्रवेशके लिये आपसे प्रार्थना की जाती है। हमारे घरमें बञ्चना, रोग, दुर्भिक्ष, कलह या जादू-टोनाका प्रवेश न हो; क्योंकि ऐसा होना अशुभ होगा। इसके बदले हमारे घरमें धन-धान्य, मुर्गीके बच्चे और सुअरके बच्चोंका प्रवेश होने दे। हम लोग एक नरमुण्ड लाये हैं। हमारे जीवनको हरा-भरा कर दो। शत्रुपक्षके आत्मीय जनोंकी स्मृति-शक्तिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विलोप कर दो, जिससे वे बदला लेनेके लिए न आ सकें।"

नरमुण्डको घरमें लानेपर एक पुरोहित उसकी आंखोंमें चूना मलता है और उसे सम्बोधन करते हुए कहता है,—"सुनो, सुनो, तुम्हें चूनेसे इसलिए उजला बना दिया जाता है, जिससे तुम्हारी कुदृष्टि हम लोगोंपर न पड़े। तुम्हारी कुदृष्टि तुम्हारे गांवके आत्मीय जनोंपर पड़े। ऐसा करो, जिससे तुम्हारे गांवके लोग हमारे युवकोंको सड़कपर मिलें और उनके सिर उतारकर वे यहां ले आयें, और वे

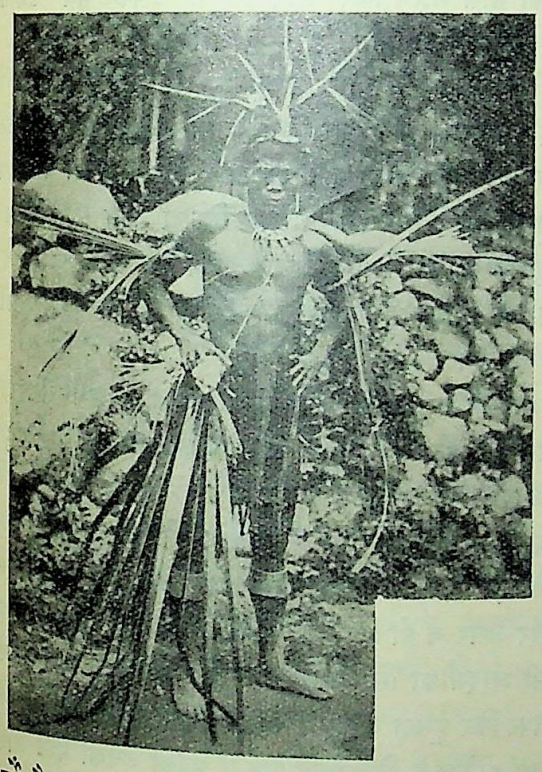

मुर्गों जैसा युद्ध करने और नृत्य करनेके लिए वृक्ष-लता आदिकी डाल-पत्तियोंसे आच्छादित नरमुण्ड-शिकारी।

तुम्हारे साथी बनें। तुम्हारी आंखोंमें चूना इसलिए भी मला जाता है, जिससे तुम्हारे परिवारके लोग अन्धे हो जायं और वे हमें देख न सकें और न बदला ले सकें।"

इधर युवक लोग उन साज-सरञ्जामको प्रस्तुत करते हैं, जिन्हें धारण करके नरमुण्ड-शिकारी दलके दो आदमी मुर्गों-जैसा युद्ध करते हैं और नाचते हैं। ये सब सार-सरञ्जाम बेतके बुने हुए बाजू और पांवमें पहननेके कड़े—जिनमें पर लगे रहते हैं—तथा वट वृक्षकी लकड़ी और ताड़के पत्तोंकी बनी हुई सिरकी पोशाक, पङ्ख और पूंछ होते हैं। केलेके वृक्षका थम्भ—जो पांच-छः फीट ऊंचा होता है—किसी उपयुक्त स्थानमें गाड़ दिया जाता है। उसके सिरपर वह कटा हुआ मस्तक रख दिया जाता है। थम्भमें खूंटियां लगी रहती हैं और उनके सहारे वे सब चीजें लटकती रहती हैं। एक पुरोहित इन सब चीजोंको सम्बोधन करके कहता है,—ओ ताड़के पत्ते, वट वृक्षकी लकड़ी, बेत और घास, सुनो, हम लोगोंको सिकुड़ने और सूखने मत दो। हम नदीके जलकी तरह निरन्तर प्रवहमान् बने रहें। हमारे बदलेमें हमारे शत्रुके कुटुम्बके जादू-टोनाको नष्ट कर दो। उनकी स्मृतिको नष्ट कर दो।"

इसके बाद उस मस्तककी एक ओर मण्डलाकारमें नृत्य आरम्भ होता है। बीच-बीचमें पुरोहित या कोई नर-मुण्ड शिकारी वहां पहुंचकर अपना यश-गान करते हुए भाषण करता है। भाषणके समय नाचनेवाले नम्रतापूर्वक अपना मुंह फेर कर खड़े हो जाते हैं, जैसा कि इनके यहां रिवाज है।

दूसरे दिन, जब कि युवक लोग नृत्य करते रहते हैं, पुरोहित गण 'लोपाद' अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं। इस अनुष्ठानका उद्देश्य होता है—शत्रु-पक्ष द्वारा बदला लेनेके लिए किये गये अनुष्ठानको विफल करना। जिस दिन नरमुण्डका शिकार किया जाता है, उसी दिन उस गांवमें यह अनुष्ठान-क्रिया की जाती है।

इसके बाद दो पुरोहित उस केलेके थम्भके पास पहुंचते हैं। वे उन सब चीजोंको धारण कर लेते हैं, जो केलेके थम्भसे लटकती रहती हैं। फिर उनका नृत्य आरम्भ होता है। नृत्य आरम्भ होनेके पूर्व सर्प, अजगर, मगर तथा और भी बहुत-से देवताओंको बलि दी जाती है।

दिन भर लोग खुलकर चावलकी शराब पीते हैं। रातमें उनकी मदोन्मत्तता और भी बढ़ जाती है। उत्सवके ये कई दिन इनके लिये आनन्दोल्लासके दिन होते हैं। सारी चिन्ताओंको भूलकर ये इसमें भाग लेते हैं।

तीसरे दिन सर्वप्रथम उत्सव होता है, जिसे 'दीतक' कहते हैं। इस अनुष्ठानमें प्रत्येक व्यक्ति एक या अधिक पशु बलिदानके लिए लाता है। इस अनुष्ठानमें २० या इससे भी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अधिक पुरोहित एक साथ ही भाग लेते हैं और मन्त्रोच्चारण करते हैं। सबसे नरमुण्ड-शिकारी उन सब चीजोंको घुमाते हुए अपने घरोंकी परिक्रमा करते हैं। केलेके थम्भके ऊपरसे सिरको उतारनेके पूर्व उसे एक बार फिर सम्बोधन करके कहा जाता है,—"सुनो, सुनो, तुम्हें नीचे उतारा जाता है। अपने माता-पिता तथा अन्य कुटुम्बीजनोंको अपने पास बुलाओ। वे तुम्हारे साथी बनकर रहेंगे।"

कटा हुआ सिर शिकारी-दलके मुखियाके घरमें रहता है; किन्तु दलके सब लोग उसके मालिक समझे जाते हैं। उनकी अनुमतिके बिना यह सिर बेचा नहीं जा सकता। सिर्फ पुराना सिर बेचनेका नियम है। कभी-कभी शत्रु-पक्षके आदमी बहुत ज्यादा मूल्य देकर अपने मृत सम्बन्धीका कटा हुआ सिर खरीद लेते हैं।

कियाङ्गन प्रदेशके ईफूगाओ कटे हुए सिरको घरमें जमीनके नीचे गाड़ देते हैं। कुरुग प्रदेशमें कटे हुए सिरको आगपर खौलाया जाता है, जिससे उसमेंसे मांसका अंश अलग हो जाता है। अन्य प्रदेशोंके लोग सिरको खौलानेसे डरते हैं, क्योंकि उनका यह विश्वास है कि सिर खौलाते समय यदि उसकी दृष्टि उनकी ओर पड़ेगी, तो वे सब शीघ्र मृत्युको प्राप्त होंगे। कुरुग प्रदेशके निवासी सिरको खौलाते समय एक छड़ीसे मुंहको नीचेकी ओर दाबे रहते हैं;

सिर जमीनके नीचे कब तक गड़ा रहेगा, यह इस बात-पर निर्भर करता है कि दलके लोग बलिदानके लिये फिर पशु कब तक प्राप्त करेंगे। क्योंकि मुण्डको जमीनके नीचेसे खोदकर निकालने और उसके मांसको साफ करनेपर प्रत्येक व्यक्तिको मङ्गल-अनुष्ठान करना पड़ता है, जो बहुत खर्चीला होता है। कुलमें जो मुण्डको साफ करता है, वह थोड़ा मांस खाता है और उस मुण्डसे इस प्रकार कहता है:—"तुम्हारे मांसको मैंने खाया है, जिससे मैं भयानक बन जाऊं। मेरे पेटको फुलाना मत।"

कियाङ्गन प्रदेशके निवासी अब क्रमशः सभ्य हो रहे हैं। वे इस बातको स्वीकार नहीं करते कि उन्होंने कभी नर-मांस भक्षण किया है। किन्तु ऐसा अनुमान होता है कि लूजत प्रदेशकी सभी जातियां, जो नरमुण्डका शिकार करती थीं, अनुष्ठानके रूपमें नर-मांस भक्षण किया करती थीं। कलिङ्ग लोग खोपड़ीमें सल्तिष्ककका गूदा और शराब मिला कर पान करते थे।

बोर्नियोके प्रायः सभी नरमुण्ड-शिकारी वध्य मनुष्यके शवके किसी भागका मांस भक्षण करते हैं। कुरुग प्रदेशके आस-पास पियोङ्गमें अमेरिकाकी फौजके एक सैनिकका इसी प्रकार वध किया गया था। ईफूगाओ जातिके दो व्यक्तियोंने उसका मांस भक्षण किया और जिसमें उसका शव उबाला गया, उस रसको बहुत लोगोंने पान किया।

कटे हुए सिरमें जो मांस और दूसरी चीजें लगी रहती हैं, उन्हें नदीमें प्रवाहित कर दिया जाता है। नीचेके जबड़ेको अलग कर दिया जाता है। आगेका हिस्सा घण्टा बजानेकी मूठके काममें आता है। पीछेका हिस्सा फिर दूसरी बार नरमुण्डके शिकारमें जादू-टोनाके लिये रख लिया जाता है। खोपड़ीको दीवारकी बगलमें ताक़पर अन्य खोपड़ियोंके साथ रख देते हैं।

अन्तमें नरमुण्डके शिकारमें भाग लेनेवाले सभी योद्धाओं और उनके कुटुम्बियोंको जातिकी मङ्गलकामनाके लिए बहुत-से अनुष्ठान करने पड़ते हैं। इसके सिवा समय-समयपर उन्हें तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोना और देवताओंको बलिदानके उपचार करने पड़ते हैं, जिससे शत्रु-पक्ष द्वारा किये गये अनुष्ठानोंका उनपर असर न हो। शीघ्र या बिलम्बसे उन्हें अपने दलके किसी आदमीका सिर उसी प्रकार शत्रुपक्ष द्वारा उतार लिए जानेपर फिर दूसरा अनुष्ठान करना पड़ता है। इस अनुष्ठानके समाप्त होनेपर वे फिर अपने शत्रु से बदला लेनेकी बाट जोहते रहते हैं। इसी प्रकार यह घातक दानवी चक्र चलता रहता है। किन्तु इसकी वे परवाह नहीं करते। और किसी दूसरे उपायसे उनकी आबादी बढ़ सकती है, अन्न तथा सुअर और मुर्गीके बच्चोंकी संख्यामें वृद्धि हो सकती है, इसकी वे कल्पना तक नहीं कर सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्जुनको भय हुआ था, मोह नहीं

श्री विष्णुदत्त शुक्ल

कहते हैं कि कुरुक्षेत्रके संग्राम-स्थलपर अर्जुनको मोह हुआ था। सम्भवतः यह इसलिए कहा जाता है कि स्वयं अर्जुनने उस समय अपने भावोंको मोहके नामसे पुकारा था। परन्तु तमाम परिस्थितिका ध्यानपूर्वक अध्ययन करनेसे मनमें उलटा ही भाव उठता है और ऐसा प्रतीत होने लगता है कि अर्जुनको मोह नहीं, भय हो गया था।

अर्जुन कौरवोंके शत्रु थे। दोनोंमें बड़ा दुर्धर्ष बैर था। दुर्योधन आदिके द्वारा अर्जुनका अपमान भी इतना हुआ था कि जिसकी सीमा पराकाष्ठाको पहुंच गयी थी। दुर्योधन तो अर्जुनसे जलता ही था और उनको मटियामेट कर देनेपर तुला ही हुआ था; अर्जुनके हृदयमें भी दुर्योधनके प्रति कम जलन न थी। उनके हृदयमें भी द्वेष, अपमान, प्रतिहिंसा आदिकी होली जल रही थी। युधिष्ठिरके अनुरोधपर बार-बार सन्धिके सन्देशे भेजनेपर भी जब दुर्योधन अपने दुराग्रहसे तिलमात्र हटनेको तैयार नहीं हुआ और "सूच्यग्रं न दातव्यं बिना युद्धेन केशव" की चुनौती देने लगा, तब तो उनके क्रोधका और भी ठिकाना न रहा। एक ओर इस प्रकारके बाह्य उपकरण, दूसरी ओर द्रौपदीकी आन्तरिक प्रेरणा और इन सबके ऊपर अपने प्रति किये गये अपमानों, तिरस्कारों और अत्याचारोंका स्मरण—सब मिलकर अर्जुनके हृदयमें बड़ा भयङ्कर क्रोध और बड़ी भयङ्कर प्रतिहिंसा भर रहे थे। यह अवस्था थी जब महाभारत संग्राम छिड़ने जा रहा था। उस समय अर्जुनके हृदयमें अपने शत्रुको परास्त करनेका उत्साह था, दुर्योधनके सन्धि-सन्देशोंको ठुकरा देनेके कारण उसके प्रति क्रोध था और कौरवों द्वारा किये गये अपमानों और अत्याचारोंका बदला लेनेके लिए प्रतिहिंसाकी भावना थी। इस प्रकार संग्राम-स्थलपर अर्जुनके हृदयमें अनेक महा भयङ्कर भावनायें भरी हुई थीं। इस अवस्थामें मोहके उत्पन्न होनेकी गुञ्जाइश ही कहां थी? जिस शत्रुसे बदला लेनेके लिए प्रतिपल हृदय उत्कण्ठित हो रहा हो, जिससे युद्ध करनेकी बात एक-दो-तीन-चार नहीं, बारह-बारह और तेरह-तेरह वर्षोंसे सोची जा रही हो, उस शत्रुको सामने देखकर मोह किसको होगा? दुर्योधनादि उस समय सम्बन्धियोंके रूपमें सामने थे ही नहीं, वे तो शत्रुके रूपमें सामने थे। इस बातको यदि भुला दें, तो भी उनका जो सम्बन्ध था वह रणक्षेत्रमें आकर ही तो नहीं बना था, वह तो पहलेसे ही विद्यमान था। यदि मोह ही होता, तो युद्धका विचार करते ही वह क्यों न उत्पन्न हुआ? उसी समय ये विचार क्यों न उत्पन्न हुए? और यदि यह कहें कि उनको आंखोंके सामने देखकर मोह उत्पन्न हो आया, तो क्या पहले इस प्रकारका प्रसङ्ग कभी नहीं आया था? विराटपुरीमें भी तो यही सम्बन्धी थे। उस समय अर्जुनको क्यों न मोह हुआ? आज इसी समय मोहका क्या कारण था? इत्यादि ऐसी शङ्कायें हैं, जिनका कोई समुचित समाधान नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त स्वयं गीतामें जो कुछ कहा गया है, उससे भी उनके मोह होनेकी पुष्टि नहीं होती, उलटा व्यक्त यह होता है कि उन्हें भय हो गया था।

संग्राम-स्थलपर आये हुए अर्जुनके शत्रुओंमें भी पाण्डवोंको परास्त करके अपना बैर चुकानेका भाव कम न था। उनकी ओरसे खूब तैयारियां हुई थीं। देश-विदेशके बड़े-बड़े महारथी महाराजगण सहायताके लिए बुलाये गये थे। अच्छेसे अच्छे शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित योद्धागण प्राण-पणसे विजयकी कामना करते हुए संग्राम-क्षेत्रमें डटे थे। उस समय कुरुक्षेत्रकी रणभूमिपर थोड़ी-बहुत नहीं, अठारह अक्षौहिणी चतुरङ्गिनी सेना एकत्र थी। योद्धाओंमें उत्साह, वीरता, साहस आदि युद्धोचित भावोंकी हिलोरें उठ रही थीं। ऐसी सुसङ्गठित और सुसज्जित सेना—व्यवस्थितान्धार्तराष्ट्रान्—के सामने अर्जुन आये थे। शायद संग्राम-स्थलके लिए प्रस्थान करनेके पूर्व उन्हें यह अनुमान भी न हुआ होगा कि सेनाकी सज्जा इतनी भयङ्कर होगी। उन्होंने सोचा होगा कि जिस प्रकार पहले कई अवसरोंपर मैंने कौरवोंको परास्त किया है, उसी प्रकार इस अवसरपर भी विजय प्राप्त कर लूंगा। परन्तु मालूम यह होता है कि संग्राम-स्थलपर आ जानेके बाद, समुद्रकी भांति हिलोरें मारती हुई विशाल कौरव-सेनाको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सामने देखकर उनके उत्साहमें न्यूनता आयी। इतने हीमें कुरु-वृद्ध पितामहने उच्च स्वरसे शङ्खनाद किया। उसके साथ ही समस्त कुरु-सेनामें रणभेरियां बजने लगीं। यह सुनकर अर्जुनका रहा-सहा धैर्य भी प्रस्थान कर गया। कुल-ज्येष्ठ भीष्म, कुलाचार्य द्रोण, महा पराक्रमी कर्ण, जयद्रथ आदि वीरोंकी वीरतायें उनके सम्मुख आने लगीं। वे कुछ घबराये। फिर भी इन सबसे विराट नगरीमें लड़ चुके थे, इसलिए अधिक अधीर नहीं हुए और तमाम परिस्थितिको देखनेके अभिप्रायसे अपने सारथी भगवान् श्रीकृष्णको आदेश दिया—"सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत।" यह रथ ले जानेकी आज्ञा इसलिए दी गयी थी कि देखें किनके साथ हमें युद्ध करना है—

"यावदेतान्निरीक्षेहं योद्धु कामानवस्थितान्,
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे।"

इस उक्ति हीसे स्पष्ट है कि अर्जुनका मन पहले हीसे आगा-पीछा करने लगा था। अन्यथा किसके साथ युद्ध करना है—यह तो आज १२ वर्षसे जानते थे। परन्तु रण-भेरियोंकी गहन गम्भीर ध्वनिने उसे भुला दिया था और अब यह देखनेकी आवश्यकता पड़ गयी थी कि दुर्योधनादिके साथ सहायक योद्धा कौन हैं? अस्तु, आज्ञानुसार दोनों सेनाओंके बीच उनका रथ ला खड़ा किया गया। वहां पहुंचकर उन्होंने जो चारों ओर नजर दौड़ायी, तो उन्हें मालूम हुआ कि यह खीर उतनी सीधी नहीं है जितनी विराट-पुरमें थी। बड़े-बड़े महारथी सहायक हैं और सेना-शस्त्रोंका बड़ा ही सङ्गठित सामान मौजूद है। एकसे एक वीर सामने मरने-मारनेको तैयार खड़े हैं। अर्जुनके प्राण सूखने लगे। मगर फिर भी उन्होंने अपनेको संभाला। संग्राम-क्षेत्रमें दोनों ओरकी सेनायें युद्ध-ही-युद्ध चिल्ला रही थीं, युद्धके बिना एक-एक पल उनके लिए वर्षके समान बीत रहा था, अर्जुन स्वयं युद्धकी तैयारी करके गये थे, अपने सहायकोंको बड़े-बड़े आश्वासन देकर बुलाया था, सहायक भी अपने अधिनायक अर्जुनकी वीरतापर उछल रहे थे। ऐसे अवसरपर वे भय प्रदर्शित करते? और सो भी दोनों सेनाओंके बीचमें जाकर, इतने मूर्ख भी अर्जुन न थे। परन्तु भयने घर कर लिया था। भीष्म, द्रोण, कर्ण, जयद्रथ आदि उनकी आंखोंके सामने झूल रहे थे। अतः सहसा युद्ध छेड़नेकी हिम्मत भी उन्हें नहीं हुई। तब उन्होंने एक तरकीब निकाली। अपने भयको मोहके आवरणमें छिपाया। रोमाञ्च, कम्प और प्रस्वेद हुआ तो सब भयके कारण, परन्तु उसे मोहका जामा पहनाकर आपने कहा—"दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितं। सीदन्ति मम गात्राणि, मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे, रोमहर्षश्च जायते" इत्यादि। तत्पश्चात् स्वजन कहकर आपने जो विज्ञान छौंकना शुरू किया, तो फिर क्या पूछना है। ये अज्ञानवश हमें मारें तो मारें, हम जान-बूझकर मूर्ख क्यों बनें? अपने आदमियोंसे लड़नेसे क्या लाभ, कुल-क्षय हो जायगा, स्त्रियां दुष्टा हो जायंगी, वर्णसङ्कर उत्पन्न होंगे, पितर नर्कमें पड़ेंगे आदि न-जाने क्या-क्या एक ही सांसमें कह गये। और यह कहकर धनुष-बाण भी रख दिया। उस समय अर्जुनकी अवस्था उस 'गरियार' बैलकी-सी हो गयी थी, जो शक्तिशाली होते हुए भी थोड़ी-सी कठिनाई देखकर हिम्मत हार बैठ जाता है और तब तक नहीं उठता, जब तक हांकनेवाला उसे कोंच-कोंचकर खड़ा नहीं कर देता।

कृष्ण बड़े चक्करमें पड़े। सन्धि-सन्देश लेकर जब गये थे, तब दुर्योधनके सामने अर्जुनकी वीरताके बड़े-बड़े गीत उन्होंने गाये थे। अब, जब युद्धका समय आया, तब वही अर्जुन इतनी भीरुता दिखा रहे हैं। कृष्णको रोष हो आया। वे ताड़ गये कि अर्जुन जिसे मोह कहकर प्रकट करता है, वह वास्तवमें मोह नहीं; भीरुता, भय और नपुंसकता है। उन्होंने फटकार बतलाना शुरू किया—"कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्, अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन? क्लैब्यं मास्मगमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते, क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठपरंतप" आदि। यह ध्यान देनेकी बात है कि अर्जुनके मोह-मोह चिल्लानेपर भी कृष्णने उसे मोह नहीं कहा। वे कश्मलं, क्लैब्यं, हृदयदौर्बल्यं ही कहकर पुकारते रहे। कृष्णने सोचा था कि इतना कह देनेसे अर्जुनमें आवश्यक जोश आ जायगा। परन्तु अर्जुनके हृदयमें भयने बड़ी गहरी जड़ पकड़ ली थी। उसे प्रोत्साहनका यह झकोरा—यद्यपि था यह काफी तेज—उखाड़ नहीं सका। वे फिर बोले—
"कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन, इषुभिःप्रतियोत्स्यामि" इत्यादि। तब कृष्णने देखा कि मामला इतना आसान नहीं है और उन्होंने फिर भांति-भांतिसे समझाना शुरू किया। वास्तवमें इसीलिए उन्हें समस्त गीता गानी पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समझानेकी इन तमाम बातोंमें भी ध्यानपूर्वक पढ़नेसे यही मालूम होता है कि वास्तवमें अर्जुनको भयने घर दबाया था और कृष्ण यह बात ताड़ गये थे। रणक्षेत्रमें जो भय होता है, वह अधिकांशमें यह होता है कि कहीं मारे न जायं। अर्जुनको भी यही भय हुआ था, तभी तो कृष्णने "जातस्यहि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्ममृतस्यच। तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितु मर्हसि" कहकर ढाढ़स बंधाना चाहा और न लड़नेसे "अकीर्तिंचापिभूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययां" "अवाच्यवादांश्च बहून् वदिष्यन्ति तवाहिताः" आदि बातें कहकर उन्हें प्रोत्साहित करनेकी कोशिश की। यदि मोह हीकी बात होती, तो अकीर्ति आदिकी वैसी बात न थी; क्योंकि उस दशामें वे युद्धसे डरकर तो विमुख होते नहीं, वे तो कुल-रक्षाके लिए विमुख होते। उसमें तो उलटे प्रशंसाकी बात थी, न कि निन्दाकी। फिर भी कृष्णने अकीर्तिका भय दिखलाया। यह स्पष्ट रूपसे व्यक्त कर रहा है कि कृष्ण अर्जुनके वास्तविक मनोभावको ताड़ गये थे। आगे चलकर इस मरनेके भयको ही लक्ष्य करके वे फिर कहते हैं कि मरनेका भय तुम किस लिए करते हो, तुम्हें तो उससे भी लाभ ही होगा—"हतोवाप्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसेमहीम्" इतना कह कर फिर प्रोत्साहन देनेका प्रयत्न करने लगते हैं—"तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।" परन्तु इससे भी उनमें यथेष्ट उत्साह नहीं आता। फिर कृष्णने नाना प्रकार ज्ञान-विज्ञानकी स्टीम भरकर देखा, लेकिन उससे भी काम नहीं बना। तब उन्हें बड़ा रोष आया। उन्होंने देखा कि जब यह डरता ही है, तो डरवाकर ही इसे वशमें किया जाय। "विषस्यविषमौषधं" उन्होंने कहा, जानते हो मैं कौन हूं? इतना कहकर उन्होंने अपनी महिमा गानी शुरू की। संसारमें जो सबसे अधिक प्रतापी, पराक्रमी, तेजस्वी, प्रभावशाली और ऐश्वर्यशाली है, वह मैं हूं। मैं ही सबका नाश करनेवाली मृत्यु हूं, मैं ही तेज हूं, मैं ही सत्य हूं, मैं ही जय हूं, सारांश यह कि "यच्चापिसर्वभूतानां बीजंतदमहमर्जुन" यह कहते हुए अन्तमें उन्होंने यहां तक कह डाला कि अब मैं सब कहां तक गिनाऊं, तुम इतना जान लो कि इस सम्पूर्ण संसारको मैं अपनी शक्तिके एक थोड़े-से अंशमात्रसे थामे हुए हूं—विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत्।" इतना शक्तिशाली मैं हूं। सोचा था इस बातका आतङ्क अर्जुनपर जम जायगा। यह हुआ भी। परन्तु इससे भी अभीष्टकी सिद्धि नहीं हुई। उन्हें कृष्णकी बातोंपर मालूम होता है विश्वास नहीं हुआ। शायद उन्होंने यह समझा हो कि मुझे धोखा देकर युद्ध करानेके लिए ही ये बातें कही गयी हैं। जो हो। उन्होंने कहा—"द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम।" जैसे पुरुषोत्तमके वचनकी साक्षी मांगते हों। कृष्णने सुयोग पाया और जो अपना विराट् रूप अर्जुनको दिखाया, तो उनकी सिट्टी-पिट्टी भूल गयी। लगे वे उनकी स्तुति करने। तब कृष्णने देखा कि अब यह कुछ ढङ्गपर आया है। परन्तु इतने हीसे वे सन्तुष्ट होकर बैठ नहीं गये। उन्होंने देखा कि इतनी देरकी बातचीतमें अर्जुनने भिन्न-भिन्न प्रसङ्गोंपर भिन्न-भिन्न प्रकारसे भीष्म, द्रोण, कर्ण, जयद्रथ आदिके नाम दोहराये हैं। वे समझ गये कि नामोंकी इस रटनका क्या अभिप्राय हो सकता है। इसलिए उन्होंने विराट्-दर्शनके पश्चात्—

"तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशोलभस्व
जित्वा शत्रून् भुंक्ष्व राज्यं समृद्धं
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्"

कहकर कहा—

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा
युद्ध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।"

इससे अर्जुनको ढाढ़स हो गया कि अब भयकी कोई बात नहीं है। फिर भी वे युद्धके लिए तुरन्त प्रवृत्त नहीं हुए। तब कृष्णको गुस्सा आया और उन्होंने फटकार बतलाते हुए कहा कि क्या तुम यह समझते हो कि हम न लड़ेंगे? तुमको झख मारकर लड़ना पड़ेगा—"यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इतिमन्यसे, मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति"—"स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धःस्वेन कर्मणा, कर्तुं नेच्छसियन्मोहात्करिष्यस्यवशोपितत्।" अर्जुनने देखा कि न लड़ेंगे तो अब यह भी नाराज हो जायगा और मेरा बड़ा अनिष्ट होगा, तब उन्होंने स्वीकार किया—"स्थितोस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।" इतने भगीरथप्रयत्नके बाद कृष्ण अर्जुनको युद्धके लिए तैयार कर पाये। सञ्जय अपने ज्ञानचक्षुओंसे सब देखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



थे। उन्होंने देखा कि इतनी भयातुर अवस्थाको भी दूर करके जब कृष्ण अर्जुनमें वीरता और साहस भर सके तो जिनके वे सहायक होंगे उनकी निश्चय ही विजय होगी। इसीलिए उन्होंने अन्तमें कहा—

"यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः
तत्र श्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम।"

यह तो हुई साधारण समीक्षा, जिससे यह प्रकट होता है कि अर्जुनको रणक्षेत्रमें मोह नहीं, भय हुआ था। अब दूसरे प्रकारसे विचार कीजिये। यदि उन्हें मोह था और वास्तवमें कुल-क्षय बचानेके लिए वे उत्सुक थे, तो स्वाभाविक यह था कि उन्हें उन लोगोंका बार-बार स्मरण होता जिनके निधन-से कुलक्षयकी आशङ्का थी। परन्तु सिवा इसके कि अर्जुनने "कुलक्षय कृतं दोषं" और "यानेव हत्वा न जिजीविषामः तेऽवस्थिताः सम्मुखे धार्तराष्ट्राः" कह दिया हो, भूलकर भी उन धार्तराष्ट्रोंमेंसे कहीं किसीका नाम नहीं लिया। नाम लेते रहे किसके—भीष्म, द्रोण, कर्ण आदिके। ये कौरव-सेनाके वे योद्धा थे जिनका सामना करनेका साहस मृत्यु भी न कर सकती थी। इसके अतिरिक्त इनमेंसे एक भी व्यक्ति ऐसा न था जिसके निधनसे धृतराष्ट्रके कुलके क्षय होनेकी आशङ्का होती। फिर भी अर्जुनके मनमें इन्हींका भूत सवार था। क्या इससे यह व्यक्त नहीं होता कि वह भय था जिसे अर्जुन मोहका नाम दे रहे थे? यदि कुलक्षयके कारण मोह होता तो इन नामोंके स्थानपर दुर्योधन, दुःशासन आदिके नाम मुंहपर आते। परन्तु वहां तो बात ही और थी। गीताके तमाम प्रसङ्गमें दुर्योधनादिका नाम अर्जुनके मुंहसे एक बार भी नहीं निकला जब कि भीष्मादिका नाम कई बार आया। क्या यह मोह होनेका प्रमाण है? परन्तु फिर भी अर्जुन अपने भयको मोह ही पुकारते रहे और मालूम यह होता है कि गीताकारको अर्जुनके प्रति पक्षपात था, इसलिए उसने भी बात बनाकर लिखी। इस प्रकारके पक्षपातकी बात एक अन्य स्थलपर भी व्यक्त हो जाती है। जहांपर दोनों दलोंने शङ्खध्वनियां की हैं, वहांपर जब कौरव-सेनाकी ओरसे शङ्ख बजे तब तो उसने केवल इतना लिखा "सशब्द तुमुलोऽभवत्"; परन्तु जब पाण्डव-सेनाके शङ्खनादके वर्णनका समय आया तब "सघोषोधार्तराष्ट्रानां हृदयानिव्यदारयत्" कहकर उसका महत्त्व प्रकट किया। इस प्रकारके पक्षपात विजेताओंके प्रति प्रायः हुआ करते हैं और चूंकि अर्जुन अन्तमें जाकर विजयी हुए थे, इसलिए पहले हीसे उनके प्रति गीता-कारका पक्षपात हो गया था। नहीं तो किसके घोपने किसका हृदय विदीर्ण किया था, यह तो अर्जुनका मन ही जानता होगा। खैर, तो इस प्रकार भी सिद्ध यही होता है कि अर्जुनको भय हुआ था, मोह नहीं और गीताकारने मोहका जो नाम दिया वह या तो पक्षपातके कारण या भ्रमवश।

अब किञ्चित् क्लिष्ट व्यञ्जनाके आधारपर आलोचना कीजिये। अर्जुनने जिन-जिन स्थलोंपर कृष्णसे प्रश्न किये हैं उनमें, उन प्रश्नोंको छोड़कर जो प्रसङ्गवश किये गये हैं, प्रायः सब उनकी भयातुर अवस्थाका ही परिचय देते हैं। सांख्य और बुद्धियोगकी तमाम बातें कृष्ण कह गये, परन्तु अर्जुनको कहीं भी प्रश्न करनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई। वे प्रश्न करने बैठे उस समय, जब कृष्णने स्थितप्रज्ञकी प्रशंसा की। शायद यह सोचा हो कि वे कह देंगे कि चुपचाप बैठ जानेवालेको स्थितप्रज्ञ कहते हैं; तो मुझे मौका मिल जायगा। परन्तु कृष्णने उलटा पाठ पढ़ाना शुरू किया। यह प्रसङ्ग टल गया। आगे चलकर फिर कृष्णने कर्मकी अपेक्षा बुद्धिको श्रेष्ठ बतलाया। बस, झट अर्जुन कह बैठे—"ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन। तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।" मानो इस ताक हीमें बैठे थे कि कोई प्रसङ्ग युद्धसे हटनेका आवे और वे उससे लाभ उठा लें। फिर इस वाक्य-की आतुरतापर ध्यान दीजिये। यह प्रसङ्ग पहलेकी अपेक्षा स्पष्ट रूपसे बहुत अधिक अनुकूल था। इसलिए उन्होंने ध्यान भी उतनी ही तत्परताके साथ दिया और साथ ही इस अनु-कूलतामें इतने उतावले हो गये कि यह भी कह दिया—"तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।" मानो बड़ी उत्सुकता-पूर्वक कृष्णसे यह कहलवा लेना चाहते हों कि अच्छा तो न लड़ो। परन्तु कृष्णने यहां भी उनकी दाल न गलने दी। फिर आगे चलकर जहां संन्यास और योगकी बातें आयीं वहां फिर मौका पाकर अर्जुनने कहा—

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितं॥

यहां भी अभिप्राय यही मालूम होता है कि कृष्ण संन्यासको—ऐसे संन्यासको, जिसमें कर्मकी कोई बात न हो—श्रेष्ठ बता दें। यदि ऐसा न होता तो इस प्रश्नकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आवश्यकता ही न थी, क्योंकि योगके लिए—युद्धके लिए तो वे बराबर प्रेरणा करते ही आ रहे थे। इस प्रकार जहां-जहां अवसर मिला वहां-वहां ऐसे ही प्रश्न किये गये।

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्

आदि प्रश्नोंमें, जिनकी संख्या कम नहीं है, अर्जुनने अपने चित्तकी अधीरताका बड़ा ही दयनीय प्रदर्शन किया है। परन्तु इन सब बातोंको ढङ्गके साथ समझाकर कृष्णने अपने मतलबकी ही बातपर जोर दिया और उन्हें युद्धके लिए ही उत्साहित करते रहे। उनकी दीनावस्थाको देखकर उन्होंने यहां तक ढाढस बंधाया कि तुम कोई चिन्ता न करो, मेरी शरणमें रहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूं, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। "मन्मना भव", "मां नमस्कुरु", "मामेकं शरणं व्रज", "प्रतिजाने प्रियोसिमे", "अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि" आदिका यही अभिप्राय है।

अर्जुनके भयकी बात एक प्रकारसे और भी व्यक्त होती है। विराट् रूपके दर्शनमें अर्जुनने जो कुछ देखा वह भी उनके मनोभावोंका ही द्योतक था। भगवान्‌का विराट् रूप अपने सौम्य शान्त रूपमें भी परिलक्षित हो सकता था; परन्तु अर्जुनको वह उग्र रूपमें ही दिखलाई पड़ा। अर्जुन उस समय भयातुर दशामें थे, उन्हें चारों ओर भय ही भय दिखलाई पड़ रहा था। इसलिए उन्हें भगवान्‌का केवल उग्र रूप ही देखनेको मिला। मनुष्य अपनी मानसिक अवस्थाका प्रतिबिम्ब ही सर्वत्र देखता है। अर्जुनका उस समयका व्यवहार इसी सिद्धान्तकी पुष्टि कर रहा था। अब यदि हम यह मानें कि भगवान्‌ने स्वयं अपना केवल उग्र रूप ही दिखलाया था, तो भी प्रतिपाद्य विषयमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अन्य सब रूपोंमें उन्होंने उसी रूपको चुना, यह भी तो उसी बातका द्योतक है। अस्तु।

एकाध प्रश्नपर विचार करनेकी आवश्यकता अभी और प्रतीत होती है। यह प्रश्न उठ सकता है कि जिस प्रकार युद्धकी उपर्युक्त अवस्थामें मोहका होना अस्वाभाविक बतलाया गया है, क्या उसी प्रकार भयका होना अस्वाभाविक नहीं हो सकता? क्रोध था, जलन थी, लड़नेका उत्साह था, फिर एकाएक भय क्यों हो गया? मनोविज्ञानका कोई भी विद्यार्थी यह बता सकता है कि परोक्षमें किये गये क्रोधमें शत्रुके प्रत्यक्ष होनेपर मोह और भय दोनों आ सकते हैं। मोह उस समय आ सकता है जब शत्रुमें नम्रता आ गयी हो, वह युद्धके लिए उसी प्रकार ललकारता और विरोधीका तिरस्कार करता न चला जा रहा हो और भय उस समय आ सकता है जब प्रत्यक्षमें अपने शत्रुको उससे अधिक बलशाली अवस्थामें देखा जाय जिसकी कल्पना परोक्षमें की गयी थी। महाभारतके रणक्षेत्रमें पहली अवस्था न थी। कौरव-दल चुनौतीपर चुनौती दे रहा था। इसलिए वहांपर मोहकी गुञ्जाइश न थी। परन्तु भयके सम्बन्धमें यह बात नहीं। इतना ही क्यों, बात बिलकुल उलटी थी। परोक्षमें कौरवोंके बलका साधारण अनुमान करके वैसे ही अर्जुनने क्रोध किया था और यह सोचा था कि उनको मार लेंगे। परन्तु सामने आकर उन्हें कौरवोंकी विशाल दुर्दमनीय सेना दिखलाई पड़ी। उस समय यह अस्वाभाविक नहीं है कि उनमें भय उत्पन्न हो जाय। इस प्रकार भयका सञ्चार होना स्वाभाविक ही है और जैसी दशा हुई उससे भी यह स्पष्ट है कि उन्हें भय ही हुआ था। यह हो सकता है कि भयके बाद जब उनके हृदयमें युद्धसे विरत रहनेकी भावना उत्पन्न हुई हो उस समय अपने अनुकूल कारण ढूंढ़नेमें उन्हें अपने बन्धु-बान्धवोंका स्मरण भी हो आया हो। बस।

एक प्रश्न और उठ सकता है। यह कहा जा सकता है कि अर्जुनको उस समय न तो क्रोध हुआ था, न प्रतिहिंसाकी भावना थी। वे तो शुद्ध विवेकबुद्धिसे प्रेरित होकर युद्ध-स्थलपर आये थे। इसलिए क्रोध या प्रतिहिंसाको लक्ष्य करके जो विचार व्यक्त किये गये हैं, वे व्यर्थ हैं। यदि यह दलील स्वीकार कर ली जाय और मान लिया जाय कि अर्जुन वास्तवमें विवेकबुद्धिसे प्रेरित होकर लड़ने आये थे, तब तो और भी कठिन प्रश्न उपस्थित होता है जिसका कोई समुचित उत्तर नहीं मिलता। उस अवस्थामें फिर मोहको भी स्थान कहांसे मिल जायगा? वे अन्याय और अत्याचारका प्रतिकार करने गये थे। उनके विवेकने यह कहा था कि अन्यायका विरोध होना चाहिए, चाहे वह अपने बन्धुओं द्वारा ही क्यों न हुआ हो। यह सब सोच-समझकर वे संग्राम-क्षेत्रमें आये थे। उस दशामें तो मोहको और भी अधिक गुञ्जाइश नहीं मिलती। अब रही भयकी बात, सो यदि अर्जुन यह समझकर गये हों कि चाहे जीतें चाहे हारें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अन्यायके लिए लड़ना और यदि हार ही जायं तो लड़ मरना हमारा कर्तव्य है, तब तो निश्चय ही भयके लिए भी स्थान नहीं रहता। परन्तु यदि वे शत्रुको परास्त करनेकी आशासे गये हों, तो विराट् सेनाको सामने देखकर अपनी आशाके फलवती होनेमें आशङ्का होना और उसके कारण भयका सञ्चार होना अस्वाभाविक नहीं होता। महाभारतकालीन परिस्थितिमें दूसरी ही बात अधिक युक्तिसङ्गत मालूम होती है। अर्जुन शत्रको परास्त करनेकी आकांक्षासे आये थे, अन्यायके विरोधमें अपने प्राण उत्सर्ग कर देनेका लेशमात्र भी विचार न था। ऐसी दशामें मोह नहीं, भय ही अधिक सम्भव था। फिर वे शुद्ध विवेकबुद्धि लेकर ही गये थे, उनमें क्रोध, प्रतिहिंसा आदिकी भावना थी ही नहीं, इसका भी कोई प्रमाण नहीं है।

इस प्रकार भिन्न-भिन्न दृष्टियोंसे देखनेपर यही सिद्ध होता है कि अर्जुनको भय ही हुआ था, मोह नहीं और उनका मोह-मोह चिल्लाना केवल वाक्-छल था।

---

# यूरोपमें गुप्त-हत्याओंका जाल

श्री कमलाकान्त शर्मा, एम० ए०

कुछ समय पहले यूरोपके राजनीतिक रङ्गमञ्चपर यूगोस्लेवियाके राजा अलेकजेण्डरकी आततायीकी गोलीसे जो हत्या की गयी थी, वह आधुनिक रोमाञ्चकारी घटनाओंमें अन्यतम है। फ्रान्सके मार्सेलीज बन्दरमें दिन दोपहरको आम सड़कपर यह रोमाञ्चकर हत्याकाण्ड सङ्घटित हुआ था। राजा अलेकजेण्डरके साथ-साथ फ्रान्सके परराष्ट्र सचिव मो० बर्थो भी गोलीके आघातसे निहत हुए थे। इस घटनासे सारे यूरोपमें एकबारगी सनसनी फैल गयी। आततायी कैलमैन भी घटनास्थलपर ही राजाके अङ्गरक्षककी गोलीसे मृत्युको प्राप्त हुआ। किन्तु इस हत्याकाण्डके मूलमें व्यक्तिगत कारण है या राजनीतिक कारण, इस रहस्यका पता लगानेके लिए सारे यूरोपकी खुफिया पुलिस सतर्क हो उठी और बड़ी सरगर्मीसे अनुसन्धान होने लगा। इस अनुसन्धानके फलस्वरूप पुलिसको कितने ही ऐसे रहस्यों और गुप्त प्रमाणोंका पता चला है, जिनसे मालूम होता है कि यूरोपके कई देशोंमें हत्याकारियोंके दल हैं और इनका चक्रान्त जाल व्यापक रूपसे फैला हुआ है। अपने उद्देश्य-साधनके लिए ये आटोमेटिक पिस्तौल तथा इसी प्रकारके अन्यान्य घातक शस्त्रोंका व्यवहार करते हैं। विभीषिकावादियोंका यह दल गुप्त रूपसे हत्यायें करके जनताको भीतिग्रस्त करनेकी चेष्टा बहुत दिनोंसे करता आ रहा है।

आस्ट्रियाके ग्रात्स नामक स्थानमें पुलिसने सर्वियाके निर्वासितोंके घरकी तलाशी ली थी। इस तलाशीमें पुलिसको एक ऐसे कागजी सबूतका पता चला, जिससे राजा अलेकजेण्डरके हत्याकाण्डपर बहुत-कुछ प्रकाश पड़ता है। इस कागजमें स्टीफन डूजियो नामक एक क्रोट-नेताको राजा अलेकजेण्डरकी हत्या करनेका आदेश दिया गया था। उसमें इस बातका भी उल्लेख था कि क्रोट-निर्वासितोंका नेता प्याभलिच राजाकी हत्या करनेमें कई बार विफलप्रयत्न हुआ है। सन् १९३३ में क्रोटियाकी राजधानी जाग्रेबमें एक षड्यन्त्रकारी दलका भण्डाफोड़ हुआ था, जिसके फलस्वरूप अरलेव नामक एक क्रान्तिकारी गिरफ्तार किया गया। उसने यह स्वीकार किया था कि राजा अलेकजेण्डरकी हत्या करनेवाले व्यक्तिको २५ हजार पौण्ड इनाम देनेकी गुप्त घोषणा की गयी थी। अरलेवको फांसीकी सजा हुई।

इस हत्याकाण्डका रहस्य उद्घाटन करनेके लिए बलगेरियाके इतिहासपर भी दृष्टिपात करना आवश्यक है। सन् १९१२ में बाल्कन राष्ट्रोंमें बलगेरिया सबसे बढ़कर शक्तिशाली था। महायुद्धके बाद वही बलगेरिया सर्वापेक्षा दुर्बल राष्ट्र बन गया। उसकी सारी शक्ति, क्षमता और प्रतिष्ठा जाती रही। सर्विया द्वारा बलगेरियाके प्रदेश मेसीडोनियाका अपहरण शूलकी तरह बलगेरियाको चुभता रहा। इस अपमानको चुपचाप सहन कर लेना उसके लिए सम्भव नहीं था।

इसके बाद बलगेरिया यूगोस्लेवियामें अन्तर्विप्लवका दावानल प्रज्वलित करनेके लिए कृतसङ्कल्प हो उठा। यह यूगोस्लेविया राष्ट्रयुद्धके बाद बाल्कन प्रदेशकी तीन विभिन्न जातियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



—सर्ब्स ( Serbs ), क्रोट्स ( Crouts ) और स्लोवेनेस ( Slovenes ) गठित हुआ था। यूगोस्लेविया मेसीडोनिया-को आत्मसात् करके भी मन-ही-मन इस बातको महसूस करने लगा कि उसने मेसीडोनियाको उदरस्थ करके अच्छा नहीं किया। यह काम उसके लिए ऐसा ही हो सकता है जैसे अजगर द्वारा हिरनका निगलना। हिरन अजगरकी उदर-दरीमें पहुंच तो जाता है, किन्तु अन्तमें उसके सींग अजगरके पेटको विदीर्ण करके बाहर निकल आते हैं और अजगरका प्राणान्त हो जाता है। मेसीडोनियामें यूगोस्लेवियाके विरुद्ध एक विद्रोही दलकी सृष्टि करनेका षड्यन्त्र रचा जाने लगा।

## इमरो ( Imro )

यूगोस्लेवियाके विरुद्ध प्रतिहिंसा एवं रक्त-पिपासाकी भावनाको चरितार्थ करनेके लिए एक षड्यन्त्रकारी दलकी प्रतिष्ठा की गयी, जिसका नाम हुआ Imro, अर्थात् Internal Macedonian Revolutionary Organisation. इस दलका उद्देश्य हुआ यूगोस्लेवियामें कलह और अशान्तिके दावानलको निरन्तर प्रज्वलित किये रहना।

सन् १८९३ में आइवन मिकाइलेवके नेतृत्वमें इस 'इमरो' सङ्घकी प्रतिष्ठा हुई। यह आइवन मिकाइलेव एक दुर्धर्ष प्रतापशाली व्यक्ति है। बाल्कन राष्ट्रोंमें इसकी असामान्य प्रतिष्ठा है। अत्याचारी इसका नाम सुनकर कांप उठते हैं और स्वाधीनताके उपासक श्रद्धासे नतमस्तक हो जाते हैं। 'इमरो' एक सुसङ्गठित राजनीतिक सङ्घ है। इसके अपने नियम और विधि-विधान हैं। इसका उद्देश्य है मेसीडोनिया-को स्वतन्त्र करना। यह विद्रोही दलकी गुप्त संस्था है। इसकी कार्यवाही इतनी गुप्त रखी जाती है कि दलके सदस्य आपसमें मिलनेपर यह नहीं जान पाते कि वे दोनों एक ही संस्थाके सदस्य हैं। मेसीडोनियाके विभिन्न जिलोंके प्रति-निधि इसके गोपन-कार्यमें भाग लेते हैं। सदस्योंको अपने कार्यमें विशेष योग्यता प्रदर्शित करनेपर पुरस्कृत भी किया जाता है।

सङ्घके प्रति सहानुभूति-सम्पन्न व्यक्ति उसे स्वेच्छासे आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। सङ्घके आदर्शसे अनुप्राणित होकर उसके कितने ही सदस्योंने उसकी सेवामें सर्वस्वार्पण कर दिया है। एक दरिद्र वृद्धा स्त्रीके स्वामी, पिता और भाई सङ्घकी सेवामें मृत्युको प्राप्त हुए। इसके बाद जब उस वृद्धाके पास दान करनेके लिए कुछ भी नहीं रह गया, तो उसने परिवारका एक करघा और कुछ गहने बेचकर उनका मूल्य सङ्घके कोषमें दान कर दिया। बालकसे लेकर वृद्ध तक सभी स्त्री-पुरुष इस संस्थाके सदस्य हो सकते हैं। १८ वर्षके नव-युवकसे लेकर ८० वर्षके वृद्ध तक इसके सदस्योंमें हैं। स्त्रियां भी इसमें भाग लेती हैं। बलगेरियाकी एक विवाहिता युवती अपने स्वामीके साथ सर्बिया गयी और वहां सेना-विभागके अफसरोंकी पोशाक बनानेका काम करने लगी। पुलिस उसे सन्देहकी दृष्टिसे देखने लगी। उसके ऊपर एक विश्वासघाती-की हत्या करनेका भार सौंपा गया था। उसने बन्दूकसे उसकी हत्या करके स्वयं भी आत्मघात कर लिया। इसी प्रकार सन् १९२९ में दलके एक भूतपूर्व सदस्यकी—जो पीछे विश्वासघाती बन गया था—मिकाइलेवकी स्त्री द्वारा हत्या की गयी।

'इमरो' के नामसे जितने कार्य किये जाते हैं, उन सब-की सूचना नियमित रूपसे राष्ट्रसङ्घके पास भेजी जाती है। कई वर्ष पहलेकी बात है, एक बार अमेरिका भी इस षड्चक्रमें फंस गया था यद्यपि उसका ऐसा इरादा नहीं था। बात यह हुई कि बलगेरियामें अमेरिकाके राजदूतके पास एक दिन अकस्मात् एक अपरिचित व्यक्ति आ पहुंचा और कार्यालयमें प्रवेश करते ही उसने यह प्रश्न किया कि मकानका मालिक कौन है। यह उत्तर मिलनेपर कि यह अमेरिकाकी सम्पत्ति है, उसने अपनी पाकेटसे एक पिस्तौल निकाली और गोली चलाकर आत्मघात कर लिया। उसके कपड़ेकी तलाशी लेनेपर एक वसीयतनामा पाया गया, जिसमें अमेरिकाके राजदूतको उसने अपना एक्जीक्यूटर नियुक्त किया था और यह हिदायत की थी कि उसकी सम्पत्तिका विक्रय करके जो धन मिले, वह 'इमरो' संस्थाको दे दिया जाय। यद्यपि यह धन बलगेरियाकी सरकारके हाथ लगा, किन्तु उस व्यक्तिने इस नाटकीय घटना द्वारा आन्दोलनको प्रोत्सा-हन देनेकी नीयतसे ही ऐसा किया था।

## उसताशा ( Ustasha )

'इमरो' की एक शाखा 'उसताशा' विप्लवी-दलका दूसरा अड्डा है। इसके अधिकांश सदस्य क्रोटियन हैं। बहुत-से लोगोंका अनुमान है कि उक्त दोनों संस्थाओंके षड्यन्त्रके कारण ही राजा अलेकजेण्डरकी हत्या की गयी है। इन दोनों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



संस्थाओंके 'न्यायालय' के विचारानुसार राजा अलेकजेण्डर दोषी पाया गया और उसे मृत्युकी सजा दी गयी—अर्थात् यह निश्चय किया गया कि उसकी हत्या की जायगी।

मिकाइलेवके दलके कितने ही सदस्य गिरफ्तार हो चुके हैं। स्वयं नेता मिकाइलेव निर्वासित होकर सपत्नीक टर्की भाग गया। टर्कीकी सरकार भी उसके ऊपर विशेष दृष्टि रखती है।

राजा अलेकजेण्डरके हत्याकारी कैलमैन या जार्जियफके साथ मिकाइलेव दलके कुछ ऐसे विशिष्ट चिह्न पाये गये हैं जिससे पुलिसको सन्देह है कि यह भी इस हत्याकाण्डके साथ संश्लिष्ट है।

यूगोस्लेवियाके विरुद्ध यह घातक षड्यन्त्र नया नहीं, बल्कि तीन वर्षका पुराना है। इसका आरम्भ आस्ट्रियाकी राजधानी वियनामें हुआ था।

सन् १९३१ के अन्तमें जेमलिन स्टेशनपर एक रेलवे ट्रेनमें एक बम रखा गया था। इस बम काण्डके षड्यन्त्रका पता वियनामें लगा, जहां क्रोटियाके दो राष्ट्रवादी पर्सी Percee और पेवलिक Pavelic आश्रय ले रहे थे। वहां उन्होंने षड्यन्त्रकारियोंका एक सङ्घ स्थापित किया था जिसमें अधिकांश क्रोट थे। इन लोगोंने बम फेंकनेमें खास तौरसे निपुणता प्राप्त की थी। इस समयसे बराबर यूगोस्लेवियामें एकके बाद दूसरा बम फेंका जाने लगा। बम गुप्त रूपसे रेलवे ट्रेन द्वारा भेजे जाते थे। पर्सी और पेवलिकका सम्बन्ध आस्ट्रियाके प्रभावशाली राजनीतिज्ञोंके साथ था।

इसके बाद जब अधिकांश बमोंके उद्गमस्थानका पता वियनामें लगा तो पर्सी और पेवलिकने छद्मनाम धारण करके गुप्त रूपसे कार्य करना शुरू किया। किन्तु उनके आतङ्कवादी आन्दोलनमें किसी प्रकारकी कमी नहीं हुई। इसके विपरीत वह और भी प्रचण्ड होता गया। फर्क इतना ही पड़ा कि अब बम सिर्फ आस्ट्रियासे ही नहीं, बल्कि हंगरीसे भी विशेष रूपमें आने लगे।

राष्ट्र-सङ्घकी कौन्सिलके सामने यूगोस्लेविया और हंगरीके प्रतिनिधियोंके बीच इस बातको लेकर वादविवाद हुआ था कि राजा अलेकजेण्डरकी हत्याका उत्तरदायित्व हंगरीके ऊपर है, क्योंकि हंगरीके Janka Puszta फार्मसे हत्याकारीका सम्बन्ध बताया जाता है। इस सम्बन्धमें यूगोस्लेवियाके प्रतिनिधिने हंगरीपर दोषारोपण करते हुए कहा था—"यूगोस्लेवियाके अपराधियोंका एक दल—जो राज्यकी शान्ति और सुरक्षाके विरुद्ध गैरकानूनी कार्रवाइयां कर रहा था—वहांसे भागकर हंगरी चला गया। हंगरीमें इस दलका स्वागत किया गया। सन् १९३१-३२ में सन्त्रासवादियोंका एक दल गठित हुआ जिसमें अधिकांश यूगोस्लेवियाके निर्वासित अपराधी तथा इसी प्रकारके अन्य दुःसाहसिक अपराधी व्यक्ति थे।"

यूगोस्लेवियाके सीमान्तपर Janka Puszta जङ्का पुस्ता नामक एक फार्म अवस्थित है। विप्लवी-दलके जितने नवागन्तुक होते हैं उन सबको हंगरीकी पुलिसके एजेण्ट खुद जङ्का पुस्ता लिवा ले जाते हैं। यहां विभीषिकावादी किसानोंके छद्मभेषमें रहकर फौजी अफसरोंसे—जो मुल्की अफसरोंकी पोशाक पहने रहते हैं—बम फेंकने और पिस्तौल आदि चलानेकी शिक्षा पाते हैं। इस दलमें ३०-४० आदमी हैं। युद्धके समयमें इनका काम होगा देशमें अन्तर्विद्रोहकी सृष्टि करना और शान्तिकालमें बम फेंकना। उक्त फार्म शस्त्रास्त्रों और गोलाबारूदका एक गोदाम बन गया है, जहांसे दस्युओंको यूगोस्लेवियाके प्रदेशोंमें हिंसात्मक अत्याचार करनेके साधन प्राप्त होते हैं। इस प्रकारके विप्लवी बहुत बड़ी संख्यामें जङ्कापुस्तासे यूगोस्लेविया बराबर आते-जाते रहते हैं। बुडापेस्टमें उन्हें नकली पासपोर्ट मिल जाते हैं।

सन् १९३३ में मुसोलिनी क्रोटियाके विप्लववादी आन्दोलनका मुख्य समर्थक बना हुआ था। क्रोट विप्लववादियोंको इटलीसे पोशाक मिली थी और इटलीके जहाजपर ही वे आवागमन करते थे। हंगरीके द्वारा इटली इन्हें अनेकांशमें आर्थिक सहायता पहुंचाता था।

इस प्रकार जब इटली भी क्रोटियनोंके स्वातन्त्र्य-आन्दोलनमें सक्रिय रूपसे भाग लेने लगा, तब दोनोंमें इस बातको लेकर प्रतिद्वन्द्विता चलने लगी कि अधिकसे अधिक निपुण विप्लवी यूगोस्लेविया कौन भेजता है। सन् १९३३ में जगरेबमें राजा अलेकजेण्डरपर बम फेंकनेके सम्बन्धमें जिस आदमीपर सन्देह प्रकट किया गया था और जो अकस्मात् पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया, वह इटलीके ही एक सैनिक-शिक्षा-शिविरका आदमी था। गत वर्ष जनवरी मासमें जिन विप्लववादियोंने एक ट्रेनको बमसे उड़ा दिया था, वे जङ्का पुस्तासे आये थे। विप्लववादियोंने अदालतके सामने अपने षड्यन्त्रकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



योजना तथा उसके उद्गमस्थानके सम्बन्धमें स्वीकार किया था। मार्सेलीजके हत्याकाण्डकी जिम्मेवारी जङ्का पुस्ताके आदमियोंपर है।

सन् १९३४ के आरम्भ तक वियना, बुडापेस्ट और रोम ये तीनों ही यूगोस्लेवियाके विरुद्ध इस षड्यन्त्रमें शामिल थे। वियना विप्लववादियोंका बौद्धिक केन्द्र था; इटलीमें इन्हें शिक्षा मिलती थी और शस्त्र दिये जाते थे; किन्तु अधिकांश विभीषिकावादी और बस हंगरीसे आते थे।

बादमें आस्ट्रियाकी आभ्यन्तरिक राजनीतिके कारण क्रोटियन विप्लववादियोंको जब वहांसे प्रत्यक्ष सहायता मिलनी बन्द हो गयी तो उनके नेता पेवलिक और पर्सी वियनासे बर्लिन चले आये। यही बर्लिन इस समय विप्लववादियोंका बौद्धिक केन्द्र हो रहा है। यहांसे इनका एक 'Gric' नामक पत्र भी प्रकाशित होता है। इसके सिवा और भी बहुत-से पर्चे प्रकाशित होकर वितरित होते हैं।

बेलग्रेडकी पुलिसने इस सम्बन्धमें अनुसन्धान करके जो प्रमाण संग्रह किये हैं उनसे पता चलता है कि राजा अलेक-जेण्डरका हत्याकारी जार्जियफ जातिसे बलगेरियन है और किसी समय वह मिकाइलेवका मोटर-ड्राइवर था। यूरोपके विभिन्न देशोंमें जो सब विभीषिकावादी अपने-अपने देशसे भाग-कर शरणार्थी हो रहे हैं और इस समय भी विप्लवकी प्रचेष्टामें संलग्न हैं, उन्हें गिरफ्तार करनेके लिए पुलिस इस समय सर-गर्मीसे जांच-पड़ताल कर रही है।

स्वीजर्लैण्डकी पुलिसको पता चला है कि सन्त्रासवादियोंके दो दल किसी समय स्वीजर्लैण्डमें विद्यमान थे। इन्हींमेंसे एक दलका सदस्य आततायी कैलमैन था, जो राजा अलेक-जेण्डरकी मृत्युके साथ-साथ गोलीसे निहत हुआ।

राजा अलेकजेण्डर फ्रान्सके अतिथि बनकर आये थे। अतएव उनकी नृशंस हत्या और परराष्ट्र-सचिवकी मृत्युसे फ्रान्सकी सरकार अत्यन्त क्षुब्ध हो उठी है और विप्लवी दल-का पता लगानेके लिए वह जी-जानसे कोशिश कर रही है। उसने एक सन्दिग्ध व्यक्तिको गिरफ्तार भी किया है, जो कई-एक सप्ताहोंसे जङ्गलमें छिपा हुआ था। उसने कैलमैनसे मिलना स्वीकार किया है। और भी एक व्यक्ति सन्देहमें गिरफ्तार किया गया है।

## शस्त्रास्त्रोंका गुप्त व्यापार

अच्छा, यह तो हुई गुप्त हत्यायें करनेवाले षड्यन्त्रकारी दलोंकी बात। अब इस सम्बन्धमें यह भी जान लेना आव-श्यक है कि इन्हें इस प्रकारके नृशंस कर्म करनेके साधन कहांसे प्राप्त होते हैं। राजा अलेकजेण्डरकी हत्या जिस आटोमेटिक पिस्तौलसे हुई थी, उसमें २८० कारतूस भरे जा सकते हैं और मशीनगनके समान उससे एक-एक करके गोलियां छूट सकती हैं। इस घातक शस्त्रका आविष्कार और निर्माण जर्मनीमें हुआ है और इसकी कराल छाया आज समस्त यूरोपपर निपतित हो रही है। इस महाभयङ्कर संहार-कास्त्रके कारण यूरोपके सामने सचमुच एक भीषण आतङ्क उपस्थित हो गया है। भावी युद्धमें इसका प्रयोग किया जाना अवश्यम्भावी है और उस समय इसकी प्राणघातक लीला Thomson Sub-machine-gun की अपेक्षा भी अधिक भीषण होगी। किन्तु युद्धमें प्रयोग किये जानेकी अपेक्षा इस शस्त्रकी भयङ्करता इस बातसे और भी बढ़ जाती है कि आत-तायियों और दस्युओं द्वारा इसका प्रयोग होनेके कारण शान्ति और सुव्यवस्थाके मार्गमें यह एक बड़ा भारी खतरा सिद्ध होगा।

इंगलैण्डमें कुछ समय पहले इस आशयका एक कानून बना था कि यदि कोई व्यक्ति किसी हथियारके साथ रास्तेमें राहजनी या डकैती करते पकड़ा जायगा, तो उसे १४ वर्ष कैदकी सजा दी जायगी। इस कानूनके बननेसे अधिकारियोंने समझा था कि सशस्त्र उपद्रव बन्द हो जायंगे। किन्तु अभी हालमें इंगलैण्डकी खुफिया पुलिस स्काटलैण्ड यार्डको लण्डनमें एक ऐसे व्यापक दलका पता लगा है, जो गुण्डों और बद-माशोंके लिए लुक-छिपकर हथियार मंगाता है और उन्हें मुहय्या करता है।

इन घातक अस्त्रोंका केवल गुण्डे-बदमाश ही व्यवहार करते हों, सो बात नहीं है। यूरोपकी इस समय जैसी अशान्त राजनीतिक परिस्थिति हो रही है, उसमें इस बातका भी तो खतरा है कि कुछ लोग राजनीतिक झगड़ोंमें तर्क और युक्ति-की अपेक्षा रिवाल्वरसे ही अपने पक्षकी पुष्टिकी चेष्टा करें।

सारे यूरोपमें इस समय गुप्त रीतिसे घातक शस्त्रास्त्रोंका यह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार चल रहा है। सब प्रकारके शस्त्रास्त्र और खासकर आधुनिक ढङ्गके अत्यन्त साङ्घातिक आटोमेटिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पिस्तौल एक देशके सीमान्तसे दूसरे देशमें-हजारोंकी संख्यामें गुप्त रूपसे पहुंचा दिये जाते हैं।

हालमें स्पेनमें जो विद्रोह हुआ था, उसमें एक रातमें ही स्पेनमें १४ हजारसे अधिक रिवाल्वर नाजायज तरीकेसे पहुंचाये गये। इस विद्रोहाग्निके प्रज्वलित होनेके कई महीने पहलेसे ही शस्त्रास्त्रोंका यह गुप्त व्यापार जारी था। एक अंगरेज लेखक लिखता है कि आस्ट्रियामें उसे एक पुलिस-अफसरने बताया था कि गत तीन महीनेके अन्दर आस्ट्रियामें ५० हजार राइफल और रिवाल्वर नाजायज तरीकेसे मंगाये गये हैं। बाल्कन प्रदेशोंमें भी यही हाल है। सच बात तो यह है कि जहां-कहीं राजनीतिक अशान्तिकी आशङ्का होती है, वहीं ये मौतके सौदागर अपने स्वार्थके लिए शस्त्रास्त्रोंका यह गुप्त व्यापार आरम्भ कर देते हैं।

राजनीतिक क्रान्तिकारी और पेशेवर अपराधियोंको गुप्त रूपसे घातक शस्त्र मुहय्या करनेका काम इस समय तीन मुख्य दल कर रहे हैं, जिनके केन्द्र पेरिस, ब्रुसेल्स और बर्लिनमें हैं। इनमें एक दलका प्रधान एक नामी बदमाश है और दूसरे दलका प्रधान एक भूतपूर्व सैनिक अधिकारी है, जिसका प्रभावशाली अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध है।

## ५००००० रिवाल्वर

यह विश्वास किया जाता है कि गत पांच वर्षोंके अन्दर उक्त तीनों दलोंने १० लाख राइफल और ५ लाख रिवाल्वर बेचे हैं। इस जघन्य व्यापार द्वारा इन्होंने काफी धन पैदा किया है।

उक्त दलोंके विश्वस्त दूत सप्ताहमें दो-तीन बार पेरिस या ब्रुसेल्स तथा लण्डनके बीच सैर किया करते हैं। उनका चेहरा देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि ये भले आदमी व्यवसायी नहीं हैं। "विषकुम्भं पयोमुखम्" की तरह उनके वेस्टकोटके नीचेकी जेबमें जो छोटी-सी पिस्तौल छिपी रहती है, उसका पता कौन लगा सकता है। इस प्रकार ये बड़ी चालाकीसे अपना व्यापार चलाते हैं।

अभी हालमें लण्डनकी पुलिसको रिवाल्वर रखनेके दो गुप्त छोटे-छोटे शस्त्रागारोंका पता लगा है, जहांसे गुण्डों और बदमाशोंको ये घातक शस्त्र मुहय्या होते थे। एक छद्मवेषी खुफिया-अफसरने दो बदमाशोंके हाथ शस्त्र बेचनेका बहाना करके उन्हें गिरफ्तार कराया है।

## षड्यन्त्रके पीछे रहस्यमयी नारी

इस खतरेसे सतर्क रहनेके लिए स्काटलैण्ड यार्डने हालमें ऐसे अपराधियोंकी एक नयी फिहरिश्त तैयार की है, जिनपर गुप्तरूपसे शस्त्रास्त्रोंका व्यापार करनेका सन्देह किया जाता है। एक चीफ इन्स्पेक्टरके अधीनस्थ खुफिया पुलिसका एक दल इस कामके लिए खास तौरसे नियुक्त किया गया है कि वह अपराधियोंके सारे अड्डोंको छान डाले और नामी सन्त्रासवादियोंको छापा मारकर गिरफ्तार कर ले। जहां तक इंगलैण्डका सम्बन्ध है, इस नृशंस व्यापारके पीछे ऐसे रहस्यमय दो व्यक्तियोंका हाथ है, जिनके सम्बन्धमें पुलिस हैरान है। इनमें एक रहस्यमयी सुन्दरी है, जिसके विषयमें इस प्रकारके एक अड्डेका मस्तिष्क होनेका सन्देह किया जाता है।

खुफिया पुलिसने उस दिन इस अड्डेपर बड़ी सरगर्मीसे छापा मारा था, किन्तु तब तक वह नारी गायब हो गयी। दूसरे व्यक्तिका सम्बन्ध यूरोपके एक बड़े गुण्डादलसे बताया जाता है। वह भी इस समय लापता हो गया है।

यूरोपकी राजनीतिपर विशेष-रूपसे लक्ष्य रखनेवाले कुछ राजनीतिज्ञोंका कहना है कि इन विभीषिकावादी दलोंके अस्तित्वका एक प्रधान कारण पूर्व और मध्य यूरोपमें अल्प सम्प्रदायोंका निष्ठुरतापूर्वक दमन किया जाना है। गत महायुद्धके बाद जो सन्धियां हुई थीं, उनसे यह आशा की गयी थी कि इन अल्प सम्प्रदायोंका अस्तित्व नहीं रह जायगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। इनकी यह भविष्यवाणी है कि राजा अलेकजेण्डरने अल्प सम्प्रदायोंके अस्तित्वको यूगोस्लेवियाकी राष्ट्रीयतामें विलीन कर देनेकी जो नीति ग्रहण की थी, उस नीतिमें जब तक परिवर्तन नहीं होगा, तब तक यूरोपमें घातक गुप्त समितियां फूलती-फलती ही रहेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आत्म-संस्मरण*

श्री अमृतलाल चक्रवर्ती

[ ६ ]

कालाकांकरसे अन्तिम विदा लेते समय यूनिवर्सिटीकी डिग्री लेनेका सङ्कल्प नशेकी तरह मुझमें छा गया था। मेरे वहां प्रथम पहुंचनेपर राजा रामपालसिंहने जो व्यवहार किया था, उससे ग्रेजुएट न होकर भी पत्र-सम्पादनके लिए साहस-पूर्वक उपस्थित होनेकी गाढ़ी लज्जा मेरे रोम-रोमसे उठने लगी थी। मैं अच्छी तरह समझ गया था कि हिन्दी-लेखकताकी आजीविका भी सम्मानके साथ करनेके लिए और अपनी उस धाकका सुफल हिन्दीको पहुंचानेके लिए मेरे सरीखे निर्धन निस्सहायको उस विद्या-विभागी छापकी अनिवार्य आवश्यकता है। अपनी पत्र-सम्पादन-सफलताकी कर्णसुखकर प्रशंसा और वेतन-वृद्धिका ठोस तृप्तिप्रद बढ़ावा राजा साहबसे आगे पाकर भी उस मनदाही ग्लानिसे मैं न बच सका था। किन्तु कल्पना और उसकी पूर्तिमें जमीन-आसमानका भेद है। अध्ययनके दिनों कुटुम्ब सहित अपने उदरको भरनेकी जिस समस्याके पाले पड़ मुझे कालेजी पठनसे विमुख होना पड़ा था, वह कठिन समस्या तनिक भी तबसे हल्की नहीं हुई थी। उदर भरनेके साथ-साथ कम-से-कम चार वर्ष कालेजी पठन-व्यय संभालनेका कठिन-से-कठिन आर्थिक प्रश्न नवयौवनकी अधीर उत्तेजनाके एक रङ्गीन मनमोदकसे हल होने लगा था। वह यह था कि यदि किसी कालेजी नगरके हिन्दी साप्ताहिक-का सम्पादन-भार दैनिक-सम्पादनके यशसे मुझे मिले, तो मैं सायं-प्रातके श्रमसे उसे भरता हुआ दिनकी कालेजी हाजिरी पूरी कर सकूंगा। हिन्दी साप्ताहिकवाला कालेजी कलकत्ता मुझे सबसे बढ़कर उद्देश्य-सिद्धिके अनुकूल जान पड़ता था। ऐसे ही कलकत्तेके हिन्दी साप्ताहिक 'उचित वक्ता' में मासिक ८०) वेतनके एक सहकारी सम्पादककी आवश्यकताका विज्ञापन देख मैं प्राणोंकी उमङ्गसे एक मासकी छुट्टी ले सकुटम्ब कलकत्तेके लिए चल पड़ा। प्रार्थना-पत्र भेज उत्तरकी बाट देखनेसे जो देरी होती, वह मुझसे न सही गयी। वह दूरदर्शिताकी आवश्यकता मेरी अधीरताकी खारी धारामें पड़कर बह गयी।

'उचित वक्ता'का काम मुझे न मिला। कोई दूसरा भी उसमें भरती न किया गया। उल्टे उसकी आर्थिक परिस्थिति ऐसी पोली हो गयी थी कि वह पत्र आप ही उस विज्ञापन-प्रकाशनके बाद कुछ दिनोंमें बन्द हो गया। किन्तु अपने मनो-निर्दिष्ट स्थानमें निष्फल होकर भी मैं अपने सङ्कल्पसे च्युत न हुआ। राजा साहबको धोखेमें डाल रखना अनुचित विचार कर्मत्यागकी सूचना भेज दी। कलकत्तेमें भाग्यको लड़ानेकी कोई कसर न रखनेकी नीयतसे मैं ग्राममें कुटुम्बको रख आने-के लिए ले चला। किन्तु ग्रामसे तुरत लौट आते न बना। गृह लम्बी अनुपस्थितिके दिनोंमें बेमरम्मतीसे ढह गया था। वासस्थान बनानेके लिए वहां केवल रहना ही न पड़ा, पर हाथके रुपये भी उड़ गये। राजा साहबने मेरा कर्मत्याग अस्वीकार किया। कृपालुताके युक्तिपूर्ण उपदेशसे निषेध किया कि मैं अपनेको मृगतृष्णावश सङ्कटमें न झोकूं। केवल एक ही नहीं, कई चिट्ठियां तीन मास तक मेरे पदको खाली रख उन्होंने मुझे लौटा ले जानेके लिए लिखीं, जिनके अक्षर-अक्षरसे मेरे सच्चे शुभाकांक्षीका स्नेह टपकता था। किन्तु वे मधुर दयालुताके वाक्य केवल मेरी आंखोंमें आंसू भर लाते थे, मुझे सङ्कल्पभ्रष्ट करनेमें असमर्थ हुए। मेरे स्थानमें राजा साहबने चार योग्य पुरुष एक ही साथ नियुक्त किये, जिनकी विद्वत्ता, भाषाभिज्ञता, भावुकता, प्रतिभा और मनस्विताका सम्पादक-गुट्ट अब तक भी किसी हिन्दी पत्रको नसीब न हुआ होगा। वे थे, इन दिनोंके देशमान्य, देशप्राण, देशरञ्जक, सर्व-भारतनेता पण्डित मदनमोहन मालवीय एल० एल० बी० तथा परलोकगत श्रीयुत शशिभूषण चट्टोपाध्याय बी० ए०, कविवर पण्डित प्रतापनारायण मिश्र और स्वनामधन्य बाबू

---

* काशीमें पीड़ित हो गत २ अगस्तको मैं कुटुम्बके पास आया। तबसे लगभग एक मास मैं अचैतन्य था। चैतन्य आनेपर सुना, मुझे डबल ब्रङ्को न्यूमोनिया हो गया था। अबसे कुछ पहले मुझमें चलने-फिरनेकी सामर्थ्य लौट आयी। अब मैं फिर पढ़ने-लिखने भी लगा हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बालमुकुन्द गुप्त। तिसपर भी मेरे न लौटनेका दाग राजा साहबके चित्तमें रह गया था, जो वर्षों बाद राजा साहबने कलकत्ते पधारनेपर मुझे बुलाकर ऐसे प्राणमय वाक्योंमें सुनाया था कि मैंने समझा, बाह्य-दृष्टिकी उस पथरीली प्रकृतिके अन्दर फल्गुकी सरिता-धारा-सरीखी कैसी कोमल करुणा लहराती थी। मैं दरिद्रतासे आजीवन संग्राम करनेके लिए ही जन्मा हूं। अतः कहां तो उस महाप्राण पुरुषकी आत्मा उदार हृदयकी सुधा सींचकर मुझे सुखी करनेको तरसती थी और कहां मैं अपनी हिन्दी-लेखकताको कल्पित सम्मानके स्वप्न-हारसे सजानेके फेरमें दुर्गतिकी दीक्ष बालूपर दौड़ता हुआ अपनेको झुलसा रहा था।

कुटुम्बके कुछ दिन चलनेका प्रबन्ध भी कर मैं कलकत्तेमें घरसे नाम-ही-नामका खर्च ला पाया था। डेरेके मैनेजरके तकाजोंसे मेरे प्राण मानों फटने लगे। किन्तु मास बीतनेपर भी मैं ५) का प्राइवेट ट्यूशन तक न जुटा सका। स्नान-भोजन और रात्रिकी निद्राके कई घण्टोंको छोड़ मेरा सारा समय घर-घर और स्कूल-स्कूल भटकते फिरनेमें कटता था। कालेजी हाजिरी बिना भी तीन सालकी स्कूल-मास्टरी यूनिवर्सिटीकी कालेजी परीक्षामें बैठनेका हक लाती है। नीचे-से-नीचे दर्जेकी मास्टरी भी मैं कहीं न पा सका। किन्तु वे दिन ऐसे थे कि मेरी उन दिनोंकी योग्यताके कितने ही लोग ऊंचे-से-ऊंचे दर्जेके भी मास्टर होते थे। यदि राजा साहबका सदय बुलावा मैं मान लेता, तो ग्रेजुएट बननेकी प्यारी आशाका सदैवके लिए विसर्जन कर मुझे अपने मनोनिर्दिष्ट चिर-अपमानकी हिन्दी-लेखकतामें लौटना पड़ता। इसके विपरीत कलकत्तेमें रह जानेसे मेरी उस गाढ़ी लालसाकी चरितार्थताका कोई-न-कोई उपाय सुनहरी किरणोंको लेकर मुझे निहाल कर सकता है, यह निर्णय दिन-दूने रात-चौगुने बढ़ते हुए तकाजोंका सामना करनेकी अपनी असमर्थताके कारण क्रमशः ऐसा डांवाडोल हुआ कि ग्रेजुएट बननेकी लालसा मेरी छातीमें कहीं छिपी रह गयी थी कि नहीं, इसका पता भी न लगता था। मेरी उस स्थितिकी अधःपतित मनोवृत्ति केवल यही चाहने लगी थी कि तकाजेके रुपयोंको भरनेके लिए यदि ऐसा कोई काम पाऊं, जिससे मेरी बड़ी लालसाकी इतिश्री हो जाय, तो वह भी मेरे लिए श्रेय है। मनकी ऐसी ही दशामें मैंने एक दिन विचरते-विचरते लोअर सरक्युलर रोडके एक फाटकपर पुलिसके एसिस्टेण्ट इन्सपेक्टर जेनरलकी पटरी देखी और भीतर जाकर विनती की कि मैं कानिस्टबिली पानेका उम्मीदवार हूं। मैं साहबके सामने हाजिर किया गया। उन दिनोंके मेरे सरीखे तगड़े जवानको सपाटेसे अंगरेजी बोल कानिस्टबिली चाहते देख साहब चकरा गये। परस्पर कुछ बातें हो जानेपर साहबने कहा,—"यदि तुम्हारी पुलिसमें काम लेनेकी चाहना सच्ची हो, तो प्रथम तीन मास तुमको हेड कानिस्टबलके पदपर रख आगे सब-इन्सपेक्टर बनाऊंगा।" मेरी ऊंचाई नापी गयी; छाती नाप ली गयी; घर और डेरेके ठिकाने भी लिख लिये गये। डेरेमें इस संवादका प्रचार होनेपर कुछ दिनोंके लिए तकाजेसे प्राण बचे। किन्तु रात्रिके अंधेरेमें मैं बिछौनेपर पड़ा-पड़ा अपनी छातीमें मरने लगा। जिस लाल पगड़ीसे स्वदेशवासियोंकी आत्म-मर्यादा भाड़में झुंकते रहनेके कितने ही चित्र मैंने अपनी लेखनीसे अङ्कित किये थे उसे ही अपने माथेमें चढ़ानेके निर्णयकी मृत्यु-यन्त्रणासे मैं बेनींद छटपटाने लगा। अन्तमें यह अटल सिद्धान्त कर किसी कदर शान्ति पा सका कि यदि तकाजेवाले लातोंसे कूट-कूटकर मुझे मार भी डालें, तो भी मैं उनका पावना चुकानेके लिए पुलिसकी नौकरी न करूंगा।

मैं फिर पुलिस-प्रमुखकी मांदमें मनुष्यत्वकी बलि देनेके लिए न गया। किन्तु गैरहाजिर होकर भी मैं पुलिसके स्नेही बर्ताव, मिठासके सदुपदेश और अन्तकी धमकीसे सहजमें पिण्ड न छुड़ा सका। कई दिनोंमें मेरे गृह-सम्बन्धी पूछ-ताछसे खातिरी हो जानेपर रिजर्व पुलिसके इन्सपेक्टर महाशय मेरे डेरेपर पधारे; मुझे अपने साथ ले जानेके लिए मीठा आग्रह करने लगे, समझाने लगे कि साहब बहादुरमें मेरे ऊपर कैसी असम्भव-सी कृपा आ गयी थी, जिससे देखते-ही-देखते मैं कितनी दुर्लभ उन्नति अनायास ही प्राप्त करूंगा; ऐसे सौभाग्यसे मुंह मोड़ लेनेके बराबरकी मूर्खता किसीके भी लिए इस विपुल दुनियामें नहीं हो सकती। लगातार दुबारा, तिबारा, चौबारा आकर इन्सपेक्टर महाशय केवल अमूल्य सदुपदेशोंका तांता ही न लगाने लगे; पर मीठी-मीठी, कड़ी और कड़ी धमकी भी क्रमशः बरसाने लगे। डेरेके सबके सब सज्जन कभी अकेले, कभी दुकेले, कभी शामिल तथा कभी इन्सपेक्टरके सहयोगी-रूपसे मेरे कुन्द ज़िहनकी रह झाड़ने लगे और कभी मेरे पावनेदारकी हैसियतमें पुलिस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अफसरसे भी बढ़कर तीखी बातोंमें मुझे कोसने लगे। सम्भव है कि मुझ दुखियाके लिए एसिस्टण्ट इन्सपेक्टर जनरलकी छातीमें अनूठे कोमल भावका सञ्चार हुआ होगा। क्योंकि पुलिस इन्सपेक्टरकी अन्तिम धमकीके अनुसार मेरे ऊपर पुलिसको हैरान करनेका अभियोग न लाया गया। किन्तु डेरेमें इन्सपेक्टरका आवागमन बन्द होते ही मैं डेरेवालोंके तकाजेके केवल पूर्वकी अपेक्षा बीभत्सतर शाब्दिक अभिनय-से ही जीवन्मृत न किया गया, पर डेरेसे निकाल बाहर भी कर दिया गया। और साथ ही मेरे साथका सामान जब्त कर लिया गया। कुशल इतना ही हुआ कि तत्काल ही मैं नित्यके नियमित विचरणसे लौटा था। अतः साफ धोती बांधे हुए और साफ कुर्ता तथा शीतवस्त्र ओढ़े हुए था। कलकत्तेमें मेरे कई घनिष्ट सम्बन्धी, नौकरी करनेवाले स्व-ग्रामवासी तथा सम्पन्न मित्र थे, जिनके यहां अपनी वैसी दशामें न जा सड़क-किनारे नलके जलसे नहा, भरपेट वही जल पी, धोती पासकी खाली जमीनके बेड़ेपर सुखा रिक्तहस्त होनेके कारण भूखा विचरने लगा। सन्ध्याके समय वीडन-स्कायरमें एक बेञ्चपर जा पड़ा। जब जागा, तो पुलिसमैनके जूतेकी ठोकरसे। सुना, आधी रातके बाद स्कायरमें रहना निषिद्ध है। तब तक बाहरी बरामदावाली एक दूकानमें दूकानवाले बातें करते थे, जिनकी सम्मतिसे बरामदेपर बैठ ऊंघ-ऊंघ मैंने रात काटी। दूसरा दिन भी मेरे लिए उसी प्रकार भूख झेलनेका आया और रात बिना गाढ़ी नींदकी। तीसरे दिनके दो बजे यूरोपियन एसाइलम लेनमें एक पटरीपर पढ़ा—राय सोहनलाल, हिन्दी ट्रान्सलेटर टू दी गवर्नमेण्ट आफ बङ्गाल।

अन्दर जानेपर एक सज्जनसे भेंट हुई, जो राय साहबकी अधीनतामें कलकत्ता गजटके मुख्य हिन्दी अनुवादक थे। इनका नाम था, पण्डित कन्हैयालाल शास्त्री। काशी-निवासी हिन्दी-भाषी संस्कृत साहित्यके शास्त्रीजीने बङ्गला भाषाका ऐसा अभ्यास किया था, कि बङ्गला मासिक पत्रोंमें उनके लेख बङ्गाली विद्वानोंके मनोरञ्जक होते थे। उनसे परिचित होकर उनकी आन्तरिक सश्रद्ध समवेदनासे मैं उसी दिन उपकृत हुआ तथा उनसे गाढ़ी मित्रता बंध जानेका और भी अधिक लाभ आगे मुझे प्राप्त हुआ। उनसे विदित हुआ, कि कार्नवालिस स्ट्रीटमें एक आयुर्वेदिक औषधालयके स्वामी श्रीयुत अविनाशचन्द्र कविरत्न अङ्गरेजी, बङ्गला और हिन्दीमें सुश्रुतका अनुवाद कराते हैं, जिनके यहां काम कर मैं आर्थिक सङ्कटसे पार पा सकूंगा। कविरत्नको तब तक केवल एक या दो हिन्दी अनुवादकोंकी ही आवश्यकता रह गयी थी। मेरी प्रार्थना सुन उन्होंने कहा कि यदि दो दिन बाद मैं उनसे मिलूंगा, तो परीक्षासे योग्य स्थिर होनेपर काम पा सकूंगा। मैंने साग्रह विनती की कि उसी दिन उसी समय परीक्षा ली जाय और यदि योग्य जान पड़ूं, तो काम कराकर मुझे कुछ पारिश्रमिक दिया जाय। मेरे सूखे मुंहकी ओर देख शायद वे मेरी आवश्यकताको समझ गये। मेरे दस बारह श्लोकोंका अनुवाद उनके हिन्दी अनुवादकोंने पसन्द किया, जिनके लिए मुझे एक अठन्नी देनेकी कृपा की गयी। तीन दिवसोंके अनशनसे बचानेकी महिमावाली वह अठन्नी अपने वजनकी मुहरसे भी मुझे मूल्यवान और ज्योति-र्मय जान पड़ी। उस परिश्रम-लब्ध अर्द्ध मुद्राको पानेका जो आनन्द मेरी उपवासी छातीके शुष्कप्राय रक्त-प्रवाहकी प्रत्येक विन्दुसे उछल उठा, वह किसी राजराजेश्वरको करोड़ोंका खिराज किम्वा आद्यन्त सुवर्णमय खान पाकर भी नहीं मिल सकता। स्यालदह स्टेशनके पूर्व ओरवाले मुहल्लेके निवासी एक सम्पन्न बढ़ईकी मैंने साग-भाजी बेचनेके दिनों अपने ऊपर भक्ति देखी थी। मकानके सामने पक्के घाटवाले एक छोटे-से तालाबको बढ़ईने एक झोपड़ीवाली फुलवाड़ीसे सजाया था। वहीं तीन दिनोंके बाद स्वच्छन्दतासे नहा धो, भोजन बना पानेके विचारसे मैं चावल-दाल-आलू-हंडिया-नोन-लकड़ी घी-तेल-दियासलाई लेकर पहुंचा। जब मैं अपने बटोरी हुई ईंटोंके चूल्हेपर भात बनाता और पहनी हुई गीली धोतीको सुखाता था, तो उड़िया माली आकर मेरी उस डकैतीका हो-हल्ला मचाता हुआ मुहल्लेको सरगर्म करने लगा। यदि मैं व्यर्थ विनयके बाद झिड़कियोंसे उसे दूर न रखता तो उस रात्रिको भी मेरे ऊपर फाकेकी नौबत आती। उसका मालिक स्वरक्षिता विधवा लहारिन सहित दौड़ा आया। वे दोनों साष्टाङ्ग प्रणाम कर उनसे झोपड़ीके अतिरिक्त और किसी वस्तुका सहारा मेरे न लेनेका आन्तरिक खेद प्रकट करने लगे। मेरी एक न मान दूध, केला, चीनी ला ऐसा गिड़गिड़ाने लगे कि उन चीजोंको बिना लिये मुझसे न रहा गया। और मेरे उसी झोपड़ीमें रहनेकी जिद्दको काटनेमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



असमर्थ हो वे स्वयं ढोकर कोमल बिछावन लाये, जिसपर दो रात्रिकी मेरी अनिद्रा-क्लान्ति अति सुखसे जाती रही।

विषम सङ्कटसे व्याकुल होकर भी सङ्कल्प-भ्रष्ट न होनेपर मुझे जब एक ही दिनमें शास्त्रीजी, कविरत्नजी और पूर्व परिचित बढ़ईकी समवेदना दैवकृपाके रूपमें प्राप्त हुई, तो मुझे वह दुर्भाग्यके पलटनेकी सूचना-सी प्रतीत हुई। कविरत्नसे जब मेरी बातचीत होती थी, एक व्यक्तिने आकर उनसे कहा कि सम्पादकके बिना "भारतमित्र" की अस्तव्यस्त स्थिति हो गयी है; आपके यहां हिन्दी-लेखक आते हैं; यदि उनमेंसे किसीमें पत्र-सम्पादककी योग्यता हो, तो उसे "भारतमित्र" के कार्यालय ६५ नम्बर क्रास स्ट्रीटमें भेज देनेसे उसके अधिकारी आपका आभार मानेंगे। कविरत्नने मेरा परिचय दिया। चकित प्रसन्नतासे मुझे देख आगन्तुकने पूछा कि मैं अब तक कहां छिपा हुआ था; "हिन्दोस्थान" में मेरे न लिखनेका पता लेखोंसे मिला था, तीन मासमें मेरी खोज होती थी। दो पत्र मेरा पता जाननेके लिए राजा रामपालसिंहको लिखे गये थे, जिनका उत्तर न मिला था। इत्यादि कहकर आगन्तुक सज्जन मुझे शिष्टाचारके साथ गाड़ीपर चढ़ा अपने साथ ले चले। उसी दिन मैं मासिक ५०) वेतनपर भारतमित्र-सम्पादनके लिए नियुक्त किया गया। 'भारतमित्र' की ग्राहक-संख्या ५५० से ३०० पर उतर आनेकी दुर्दशाका वर्णनकर जब प्रस्ताव करनेवालेने सङ्कोचके साथ मुझसे वह अल्प वेतन स्वीकार करनेका अनुरोध किया, तो मैंने समझा कि वह सङ्कोच केवल मेरी "हिन्दोस्थान"-सम्पादनकी धाकसे ही पैदा हुआ होगा; क्योंकि एक दिन पूर्व तककी मेरी शोचनीय दशाका जाननेवाला निस्सङ्कोच उसका आधा भी लेनेका प्रस्ताव मुझसे कर सकता था, विशेषतः उन दिनोंके नामी सम्पादक पण्डित रुद्रदत्त शर्माको जब "आर्य्यावर्त्त" से ५०) भी नहीं मिलता था। किन्तु मेरे लिए तो मेरी तात्कालिक दुर्गति-निवारक तथा सङ्कल्प-सिद्धिका रुद्ध-द्वार-उद्घाटक वह वेतन उतनी अशरफियोंके जोड़का था। मैंने उसी दिन एक मित्रसे ऋण लेकर अपने पूर्व डेरेवालोंके पावनेके अवशिष्ट जो केवल कई रुपये थे, चुकाये। वे ऐसे समादर-निपुण सज्जन जान पड़े कि मानों मैं वह न था जो उनके सम्मिलित धक्कोंसे फाटक बाहर किया गया था और न वे ही मानों मेरे ऊपर अश्रुतपूर्व अश्राव्य शब्द प्रयोगकारी तथा हाथ चलानेवाले थे। उनके सौजन्यसे चकित हृदयमें हंसकर भी मैं उनके साग्रह अनुरोधसे उनके ही साथ उसी दुर्गा पिथुड़ी लेनमें रहने लगा। कुछ ही दिनोंमें समय आ जानेपर मेट्रोपालिटन इन्स्टिट्यूशनमें (जो अब विद्यासागर कालेज कहलाता है) भरती हो सन् १८८८ में एफ० ए०, ९० में अंग्रेजीमें आनर्स सहित बी० ए० और ९४ में बी० एल० पास किया। सन् १८८९ ई० के आरम्भमें "भारतमित्र" से मुझे अलग होना पड़ा, जिसका कारण आगे लिखा जायगा। इसके पूर्व भी एक बार बीस बाईस दिन "भारतमित्र" कार्यालयमें जाना बन्दकर कापी भेज दिया करता और केवल आर्डरकी रातको जा प्रूफ शोधा करता था। मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर बाबू जगन्नाथदास खन्नाके पास एक मासमें कामसे अलग होनेकी सूचना भेजकर अलग पत्रमें बतलाया था कि उसके बाद भी जब तक अन्य सम्पादक न मिलेगा तब तक बिना वेतन ऐसा ही करता रहूंगा। मेरी वेतनवृद्धिकी असामान्य आवश्यकतापर किसी भी प्रकारसे ध्यान न पड़नेके कारण उस प्रकार आचरण किये बिना मुझसे न रहा गया था। इससे वेतनकी वृद्धि २०) की गयी। अवश्य ही मैं जानता था कि वेतनकी निश्चित वृद्धि होगी। तथापि समुचित सावधानताके लिए पूर्वोक्त पण्डित कन्हैयालाल शास्त्रीसे मिल सभी भेद खोल विनती की कि यदि बने, तो कई दिनोंके लिए मुझे किसी पदपर नियुक्त कराइये। तब तक पण्डितजी मेरे अभिन्न-हृदय मित्र हो गये थे। वे मुझे अपने अफसर राय सोहनलालके पास ले गये। रायजी कई बारके मेलमिलापसे मेरे ऊपर कृपा रखने लगे थे। वे बोले कि कुछ दिनोंके लिए नहीं, किन्तु ८०) के पक्के पदपर मैं ले लिया जा सकूंगा, जिसका फल यह होगा कि कई वर्षोंमें उनके रिटायर करनेपर उनका ४००) का पद मुझे ही मिलेगा। मैंने उनसे क्षमा मांगकर कहा कि मेरे जीवनका लक्ष्य उच्च सरकारी पद पाकर आर्थिक उन्नति करना नहीं, किन्तु संवाद-पत्र लिखता हुआ हिन्दीकी श्रीवृद्धि और प्रचार करना है। देर तककी ऐसी ही बातचीतके बाद रायजीने मुझे ८०) पर रख लिया, जो मेरे न चले आनेसे पक्का किया जाता। अनुवाद कैथी अक्षरोंमें लिखना पड़ता था, जिसका अभ्यास कई दिनोंमें हो गया था। उन दिनों कालेजकी लम्बी छुट्टी थी, जिससे कालेजमें गैरहाजिरी न हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रातःकाल ६ बजे आफिसमें पहुंच ताजे शरीर-मनसे मैं भारतमित्रके काममें लग १० बजे तक जुटा रहता था। अपराह्नका काम श्रान्त शरीर-मनसे होनेपर भी मैं तन्मय होकर करता था। तथापि परीक्षा-पासका अध्ययन यदि मेरा उस समयका प्रधान लक्ष्य न होता, तो अपनी जितनी सेवा भारतमित्रको दे सकता, उतनी उसको मुझसे नहीं मिलती थी। किन्तु इसका मुझे खेद नहीं है। क्योंकि कालेजमें नाम लिखाते समय मैंने मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर और उनसे भी बढ़कर भारतमित्रके इष्टकी ओर कहीं अधिक समुद्यत रहनेवाले बाबू नित्यलाल मल्लिकसे निवेदन किया था कि हिन्दोस्थानका काम छोड़ किस उद्देश्यकी सिद्धिके लिए मैं कलकत्ते आया था। हृदय खोलकर स्पष्ट वाक्योंमें मैंने उन दोनों सत्पुरुषोंको बतला दिया था कि अपनी उस गाढ़ी लालसाकी पूर्तिके लिए समुचित श्रम करनेके अनन्तर जितना समय मैं निकाल सकूंगा, उतना अटल ईमानदारीसे भारतमित्रकी सेवामें लगाऊंगा। मैं गाजीपुरमें पढ़ते समय ही जान गया था कि संवादपत्रमें अपना नाम किसी लेखके नीचे मुद्रित होते देखनेसे लेखक[illegible]काकी [illegible]म्भमें कितना आनन्द आता है। उन दिनोंके "[illegible]रस हो[illegible]वार" नामक कलकत्तेके बङ्गला साप्ताहिकमें [illegible]न्हका आगे अपना एक पद्य प्रकाशित होते देखकर मैं आत्म-[illegible]मजबूर थी, [illegible]वें स्वर्गमें चढ़, वहांके हरएक बङ्गालीसे पूछता [illegible]ी। उस[illegible]—"क्यों साहब, आपने इस बारका 'सुलभ समा-[illegible]उसकी दुला[illegible]?" अपनी यह कमजोरी अन्योंमें भी होनेका [illegible]किसीसे दो शब्द पाते ही लेखकके नाम सहित [illegible]वह बात[illegible]वश्य ही शोधपूर्वक ) हाथों-हाथ प्रकाशित कर [illegible]समय रहता थ[illegible]ा। लेखक तैयार होने लगे; ग्राहक बढ़ने लगे। [illegible]और जो पा[illegible]दिनोंसे [illegible]होने लगा। प्रथम 'भारतमित्र'में ही सभी बातों-[illegible]दु[illegible]न्त्र भार पाकर मैं समझनेमें समर्थ हुआ कि केवल [illegible]दर्शित[illegible]रुचिके लेखादिसे पत्रको भर देनेसे सम्पादककी पदवी [illegible]ोलकर [illegible]ीं होती। सम्पादक अपने पत्रको यदि जनसाधारणकी [illegible]मति[illegible]गौरव[illegible]स्वच्छ दर्पण और उनका मानो वास्तविक प्रति-[illegible]निधि ब[illegible]सके, तो उसका सत्य सम्पादकत्व प्रतिष्ठित होता है, नहीं तो ऊंचेसे ऊंचे विचारोंका बढ़ियासे बढ़िया लेख लिखता हुआ भी वह लेखकत्वके तङ्ग घेरेमें ही पड़ा रहता है, सम्पादकत्वकी समुच्च महिमाको नहीं पा सकता। किन्तु [illegible]ऐसे सम्पादकको भी अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थिर रखनी होती है, नहीं तो जनमतिके सामयिक प्रवाहमें बहकर वह अपने पुष्ट विचारोंका प्रभाव जनसाधारणपर नहीं डाल सकता, अपने उन सर्वहितकर विचारोंके सांचेमें लोगोंकी मतिगतिको ढालनेमें असमर्थ होता है। अर्थात् जनसाधारणकी मानसिक परिस्थितिको अभ्रान्त रूपसे हृदयङ्गम कर इस कौशलमय पद्धतिसे अपने शुभ निर्णयोंका प्रयोग करना होता है कि जनसाधारण उनको अपना ही आन्तरिक निर्णय समझ लें।

उन दिनों भारतवासी-सम्पादित केवल एक ही अंगरेजी दैनिक "हिन्दू पेट्रियट" कलकत्तेमें था। वह एक समय स्वनामधन्य बाबू हरिश्चन्द्र मुखर्जीके सम्पादनसे विशेषतः निलहे गोरोंका उत्पात दमन करनेमें प्रवृत्त होकर असामान्य जनप्रिय हुआ था। बङ्गालके दीन किसानोंकी "इन हाथोंसे नील फिर कभी अपने खेतमें न बोयेंगे" की अटल प्रतिज्ञासे विलायती मालिकोंके धन और भारतीय गोरे अफसरोंकी समवेदना द्वारा असामान्य बलवान बने हुए निलहे गोरोंको सदैवके लिए उखड़ना पड़ा था, जिससे पता लगा था कि भारतवासियोंके हृदयमें स्वतन्त्रताका बीज है, जो कभी-न-कभी भारतको अवश्य स्वतन्त्र बनावेगा। "हिन्दू पेट्रियट" आगे प्रगाढ़ राजनीतिज्ञ, गवर्नमेण्टके सम्मान्य तथा विद्वत्प्रवर कृष्णदास पालके सम्पादकत्वके दिनोंसे जमीन्दारोंका मुखपत्र बना। तबसे उसी रूपमें कैनिङ्ग कालेजके पूर्व संस्कृताध्यापक गुरुवर्य राजकुमार सर्वाधिकारी महाशयसे सम्पादित होता हुआ भी वह पत्र अपनी उस साम्प्रदायिकताके कारण मेरी श्रद्धा आकर्षित न कर सका था। बाबू सुरेन्द्रनाथका "बङ्गाली" तब तक दैनिक न हुआ था। अपने तेजस्वी राजनीतिक लेखोंसे "बङ्गाली" राजनीतिके रसिकोंका अपार प्रिय था। एक बार हाईकोर्टमें माननीय जस्टिसकी इच्छासे एक गृहस्थ ब्राह्मणको अपनी विवादास्पद शालग्राम शिला पहुंचानी पड़ी थी, जिसका धड़लेसे विरोध कर हाईकोर्टकी मानहानि करनेके अभियोगमें बाबू सुरेन्द्रनाथको तीन मासके लिए जेल जाना पड़ा। तबसे उनके पत्रकी जनप्रियता असीम हो गयी थी। तब बाबू शिशिरकुमार घोषकी "अमृतबाजार पत्रिका" भी दैनिक न हो पायी थी; वह अपने सर्वविषयक सरस लेखोंसे सर्वाधिक ग्राहक प्राप्त कर सर्वश्रेणियोंका मुखपत्र मानी जाती थी। इन दोनों साप्ताहिकोंको ध्यानसे अध्ययन करते-करते सम्पादक सम्बन्धी उपर्युक्त



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सिद्धान्त मेरे हृदयमें गठित हुआ। किन्तु मैं बङ्गाली, अल्प दिनोंका हिन्दी-लेखक तथा हिन्दी मातृभाषियोंसे अत्यल्प हेल-मेलका अवकाश पूर्वकी तरह उस समय भी न पानेके कारण भारतमित्रके ग्राहकोंकी मतिगतिके विषयमें प्रायः पूर्ण अनभिज्ञ था। बड़ी इच्छा होने लगी कि मालिकोंसे यदि कुछ धनकी सहायता मिले, तो स्थान-स्थानमें संवाददाता नियुक्त कर और उन दिनोंके नामियोंको लेख-प्रेषक बनाकर अपनी उस कसरको मेटनेका और साथ ही भारतमित्रकी श्री, शक्ति और ग्राहक-संख्याकी वृद्धि करनेका उपाय करूं। अपनी उस इच्छाकी प्रबलताके दिनों एक रविवारको 'भारत-मित्र' पर अत्यन्त कृपा रखनेवाले सुप्रसिद्ध धनी-मानी मलिक घरानेके बाबू नित्यलाल मल्लिककी बैठकमें जाकर देखा कि उनकी बगलमें नोटोंकी ६ तीन-तीन हाथ ऊंची टालें लगी हुई हैं, जिनमेंसे एक दसके, दूसरी बीसके, तीसरी पचासके, चौथी सौके, पांचवीं पांच सौके और छठीं हजारके नोटोंकी थीं। मैं बोल उठा,—"ओः! आप टकसालके रुपयोंके भी कई गुने इन टालोंमें ले बैठे हों, तो कोई आश्चर्य्य नहीं। इनमेंसे सबसे कम मूल्यकी टालके तीन अंगुल भी मिले, तो उससे 'भारतमित्र' चमक उठे।" नित्यलाल बाबू हंसकर बोले—"मुझमें वह सनक नहीं, जो हिन्दीको चमकानेका विचार उछाल किसीको स्थूल आयके पदसे भूखों मरनेके खन्दकमें डलवाती है। सम्पादककी लेखनीसे 'भारतमित्र' चमके तो चमके और नहीं तो नहीं।" मैं बड़ा ही लज्जित हुआ। छातीके गुप्त कोनेमें विचारने लगा कि लेखकोंमें साहित्यको उच्चासनपर बिठानेकी जो वासना है, वह यदि सनक हो, तो लाखको लाखोंसे भारी करनेकी इच्छा भी कम सनकियोंकी नहीं है। प्रथम श्रेणीवाले दूसरोंकी समझके दुःखको आप भी कभी-कभीके दुर्बल मनसे भुगतकर भी प्रायः सदा ही जिस सुखके क्षीर-सागरमें तैरते हैं, वह मेरे तो अपने जीवनकी चखी हुई घटना है ही, पर दूसरी श्रेणीवालोंके विषयमें वेदान्त-वक्ता भगवान् शङ्कराचार्यका कथन है,—"अर्थमनर्थं भावय नित्यम्। नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम्॥" जो हो, मुझमें समझ आ गयी कि मेरे 'भारतमित्र'की शरणमें पहुंचनेके दिनसे मालिकोंसे तनिक भी आर्थिक सहायता पाये बिना जिस तरहसे भारतमित्रका समूचा व्यय चलता आया था, उसी तरहसे उसको चमकाना भी पड़ेगा। बस, ग्राहकोंकी सहायता उपर्युक्त रीतिसे ली जाने लगी और उसका फल यह हुआ कि मेरे अलग होते समय तक धीरे-धीरे वह पत्र-की ग्राहक-संख्या हजारसे अधिक हो गयी थी, जबकि सप्ताह और किसी हिन्दी संवादपत्रकी न थी।

---

# झूठ

मुंशी कन्हैयालाल, एम० ए० एल-एल० बी० एडवोकेट

[ १ ]

"देहाती लड़कीको पढ़ाना अपने गलेपर छुरी फेरना है!" जमीनपर हाथ पटककर झुनकीने अपने पतिसे कहा। हीरा-लालने सिर उठाकर अपनी स्त्रीकी ओर देखा, मानो उनकी आंखें पूछ रही थीं कि "बात क्या है?"

"अकेली लड़की समझकर लड़केकी तरह पाला।" हाथ मटकाकर झुनकीने कहा—"अब मेम बनना चाहती है!"

"जबसे दुलरिया पढ़ने लगी, तभीसे तुम उसके पीछे पड़ी हो। क्या किया बेचारीने?"

"तुम्हींने उसे खराब किया और इसी तरहकी बातें कह-कहकर। मेरा तो ऐसा जी चाहता है कि जान दे दूं।" झुनकीने गुस्सेसे इतना कहकर अपने ले लिया शुरू किया।

हीरालालसे अपनी स्त्रीका रोना नहीं देखा गया। झट उसे धैर्य देकर चुप कराकर फिर पूछा—"बात क्या" झुनकीने कहा—"उसी तुम्हारी दुलारीका गुन है संवाद जमींदारिनके यहां हम दोनों गयी थीं। लड़की सुन्दर ना ही, उसे देखकर जमींदारिनने कहा—'मेरा जी चाहता है, तुम्हारी लड़की अपने लड़केसे ब्याह दूं!' उनकी बात सुन-कर मैं तो यह सोचकर खुश हो गयी कि ऐसा अच्छा घर मिलेगा। पर इसने मेरे कुछ कहनेसे पहले ही कह दिया कि 'तुम्हारे लड़केसे ब्याह नहीं करूंगी!' भला कहीं लड़कियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भी ऐसे बोलती हैं ? तुम्हीं बताओ। वह तो मैंने बात बना ली, नहीं तो इस दुलरियाने सब चौपट कर दिया था। लौटती बार रास्ते-भर मुझसे लड़ती आयी है और उस तरफ मुंह लपेटे पड़ी है ! सुना गुन अपनी लड़कीका ?"

"अभी बच्ची तो है ही।" कहकर हीरालाल उठकर उधर चले गये, जिधर दुलारी पड़ी रो रही थी।

[ २ ]

दुलारी अपनी मां और पिता दोनोंमेंसे किसीकी तरह न थी। वह सुन्दर ही नहीं थी—उसमें एक ऐसा आकर्षण था, जो जबरदस्ती उसकी तरफ खींच लेता था। जिसे उसकी मां जिद्द कहती थी, वह असलमें दुलारीका वह गुण था, जिसे वह खुद अपनी इज्जतका अभिमान समझकर करती थी। उस दिनका उसका जमींदारके यहांका जाना उसके लिए बड़ा दुःखदायी हो गया। जमींदारका लड़का नन्हका हीरालालके यहां आने लगा और दुलारीसे ऐसी बातें करता, मानो ब्याह तय हो गया है।

दुलारीको नन्हकासे बातें करना अच्छा नहीं लगता था, नन्हकाकी बातचीत, उसका व्यवहार सब इतना रूखा, नीरस होता कि उसका यही जी चाहता कि जब कभी नन्हका आये, तब वह भाग जाय। मगर वह अपनी मांसे मजबूर थी, जो उसे नन्हकासे बातचीत करनेका हठ करती थी। उसकी मां तो यह समझती थी कि नन्हका-ऐसा वर उसकी दुलारीको दुनिया-भर ढूंढ़नेसे भी न मिलेगा !

वह बात तो करती थी नन्हकासे, मगर उसे ख्याल हर समय रहता था अपने सुद्धूका, जो उसके साथका पढ़ा था और जो पास हीके गांवका रहनेवाला था। इधर कुछ दिनोंसे शहरमें जाकर वह कहीं नौकरी करता था।

दुलारी और सुद्धू मित्र तो जरूर थे और अगर उनमें [illegible]दर्शित के लिए प्रेम भी था, तो उन्होंने उसे किसीसे प्रकट नहीं [illegible] था।

गैरव*

* *

सुद्धू दस-पांच दिनकी छुट्टी लेकर जब अपने गांवमें आया, तब उसे यह सुनकर दुःख हुआ कि दुलारीका ब्याह नन्हकासे हो रहा है। वह अपनी आदतके अनुसार उस दिन दुलारीसे मिलने न गया। वह तरह-तरहकी बातें सोचता रहा और अपने घरसे बाहर भी न निकला।

जब दुलारीने सुना कि सुद्धू आया है, तब वह उसकी प्रतीक्षा करती रह गयी और जब वह न आया, तब उसे भी बड़ा दुःख हुआ। वह सोचने लगी कि 'क्या यह मित्र भी मुझे भूल गया !' दूसरे दिन सवेरे ही उसने सुद्धूके बुलानेको आदमी भेजा, मगर वह घरपर न था। दुलारीका कलेजा बैठ गया। वह भी निकल पड़ी और अपनी मांसे मन्दिरका बहाना करके जमुना-किनारे अपना दिल बहलाने चली गयी और एक किनारेके पेड़के नीचे बैठकर यही सोचने लगी कि 'मैं क्यों ऐसी अभागिनी हूं, जो मां-बाप मेरा जरा भी ख्याल नहीं करते और मुझे जबरदस्ती उस मूर्ख नन्हकाके गले उसकी जमीन्दारी देखकर मढ़े दे रहे हैं ? सुद्धू कहां चला गया, वह मुझसे क्यों नहीं मिला ?' यह सब सोचनेसे उसे रञ्ज हो रहा था, वह वहीं पेड़के सहारे बैठ गयी।

सुद्धू भी वहीं जमुना-किनारे कहीं था। उसने जब दुलारीको वहां आते देखा, तब वह भी वहीं चला। मगर दुलारी ऐसी चिन्तामग्न थी कि उसे सुद्धूके आनेकी खबर भी न हुई।

"दुलारी !"

"कौन, सुद्धू ?" चौंककर, पर खुश होकर दुलारीने कहा। दोनों देर तक इधर-उधरकी बातें करते रहे। मगर विवाहकी कुछ चर्चा न छिड़ी। थोड़ी देर बाद दोनों घरकी ओर चले।

"आज मैं सवेरेसे किसीसे नहीं बोला था।"

"मैं भी नहीं बोली थी और आज मुझे ऐसे आदमीकी आवश्यकता थी जो मेरी मुसीबत सुने.....।" वह रुक गयी, उसे एकदमसे ख्याल आया कि वह नाहक ऐसी बात कह गयी जो उसे कहनी न चाहिए थी। आखिर सुद्धू उसका था ही कौन ?

सुद्धूने देखा कि दुलारी कुछ कहना चाहती थी मगर चुप हो गयी। उसने यह मुनासिब न समझा कि वह उससे जबरदस्ती कोई बात पूछे।

[ ३ ]

उसी दिन शामको।

"दुलारी चलती हो घूमने ?" नन्हकाने पूछा।

"नहीं !" रुखाईसे दुलारीने उत्तर दिया।

"मैं भी चलती हूं बेटी, चलो न।" झुनकीने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"मैं बहुत थकी हूं। मैं न जाऊंगी!"

"चलो।" कुछ सख्तीसे झुनकीने कहा।

"न जाऊंगी!" दुलारीने फिर दृढ़तासे कहा।

"अच्छा! मैं अभी घूमकर आता हूं।" कहकर नन्हका चला गया।

झुनकी गुस्सेसे लाल हो अपनी लड़कीको घूरती रह गयी। वह वहांसे उठकर दूसरी ओर चली गयी।

वह अपने कमरेमें टहल-टहलकर सोचती रही कि यह कितने दिन तक ऐसे ही चलेगा। उसने सोच लिया कि "आज जब नन्हका आवेगा तब उससे साफ-साफ कह दूंगी कि मैं तुमसे विवाह हरगिज न करूंगी।" उसने फिर सोचा कि "इस बीसवीं शताब्दीमें भी क्या कोई इस तरहसे जबरदस्ती उसे नन्हका-ऐसे नालायकसे ब्याह सकता है?" उसे अपने कमरेमें चैन न मिला। वह बाहर निकल गयी और बस्तीके बाहर चली गयी। उधरसे सुद्धू आ रहा था।

"मैं यही सोचता था कि इस समय तुमसे भेंट होगी या नहीं।" उसने दुलारीसे कहा।

"घरमें जी न लगा, इसीसे निकल पड़ी!"

थोड़ी देर दोनों टहलते चले गये।

"सुद्धू, मेरी मदद करोगे?" एकाएक दुलारीने पूछा।

"अवश्य।"

वह फिर झेंप गयी।

जबानसे उसने कुछ न कहा। दोनोंकी आंखोंने आपसमें सब तय कर लिया।

* * *

घर लौटकर उसने नन्हकाको बैठे देखा। झुनकी उससे कुछ बातें कर रही थी। दुलारीने कहा—"मैं नन्हका बाबूसे कुछ अलग बातें करना चाहती हूं।" उसकी मां वहांसे हट गयी।

"नन्हका बाबू!" दुलारीने कहा, और उसे अपनी इस बहादुरीपर खुद ही आश्चर्य हो रहा था, "मैं सुनती हूं आप मुझसे विवाह करना चाहते हैं। मुझे ऐसे प्रस्तावपर गर्व करना चाहिए। पर मैं आपसे विवाह न करूंगी। सुद्धू.....।"

बातका आरम्भ सुनकर तो नन्हकाके मुंहपर मुसकराहट आयी थी, पर सुद्धू का नाम सुनते ही उसका चेहरा ऐसा बदला कि दुलारी डरकर चुप हो गयी।

"सुद्धू?" कुछ सोचते हुए थोड़ी देरके बाद नन्हकाने कहा—"सुद्धू? वही रामनगरवाला न? जिसकी स्त्रीने दो वर्ष हुए, पञ्चायत बटोरी थी?"

दुलारीका मुंह पीला पड़ गया था। उसका जी क्या-जाने कैसा हो रहा था, उसकी आंखोंमें जैसे खून उतर आया हो, वह पागल-सी हो रही थी, उसने कहा—"हां, वही सुद्धू! मेरे ही पीछे तो उसकी स्त्रीने पञ्चायत बटोरी थी!"

[ ४ ]

यह भयानक झूठ दुलारीके मुंहसे निकलनेको तो निकल गया, पर वह खुद निर्जीव-सी हो गयी। तिसपर भी उसने अपनेको संभाला और नन्हकाकी ओर आंख उठाये रही जिसमें उसकी कमजोरी वह कहीं भांप न जाये। उसे इस समय केवल अपने सुद्धू का ख्याल था जिसे वह अपने प्राणोंसे भी अधिक प्यार करती थी।

"तुम सच कहती हो?" जोरसे नन्हकाने थोड़ी देरके बाद पूछा।

"बिलकुल सच कहती हूं। किसीसे कहना मत। मेरा ख्याल था कि तुम्हें सब मालूम है!" नन्हका बिना कुछ और कहे उठकर चला गया।

* * *

नन्हकाके चले जानेपर दुलारीको उसके झूठने अधमरा कर दिया। वह एक चारपाईपर पड़ गयी और अपनी इस नीचतापर खूब रोयी। नन्हका उसे छोड़कर चला गया था। यह सच था कि उसने अपने जीका एक झञ्झट तो झूठ बोलकर छुड़ा लिया था, पर उसे अपने इस झूठ बोलने[illegible] बाद दिन तक लज्जा रही जिस दिन वह सुद्धू के यहां विवा[illegible] गयी और उसने सुद्धू से अपने झूठ बोलनेका पू[illegible] सुना दिया।

"तो इस तरह झूठ बोलकर तुमने मुझे पाया है!" प्यारसे सुद्धू ने कहा और उसे गले लगा लिया।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कला-परिषद्की चित्र-प्रदर्शिनी

श्री यामिनीकान्त सेन, बी० एल०

कलकत्तेकी कला-परिषद् भारतकी एक अद्वितीय संस्था है। चित्रकलाकी ओर कलाकारोंको आकर्षित करने और उसके प्रति अनुराग उत्पन्न करनेके लिए इसने अल्पकालमें ही जो श्रेय प्राप्त कर लिया है, वह सर्वथा प्रशंसनीय है। अभी हाल हीमें परिषद्की एक चित्र-प्रदर्शिनी कलकत्तेके अजायबघरमें हुई थी, जिसका उद्घाटन-समारोह समस्त भारतके कितने ही प्रतिष्ठित समवेत सज्जनोंकी उपस्थितिमें त्रावणकोरकी महारानीजीके कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ था।

इस प्रदर्शिनीमें चित्र भेजनेवाले कलाकारोंने स्वयं भी पधारकर इस समारोहका महत्त्व बढ़ाया था। बम्बई, मद्रास, बिहार, संयुक्तप्रान्त और बङ्गाल आदि भारतके समस्त प्रान्तोंके सुविख्यात कलाविदोंका वह समारोह देखते ही बनता था।

अजायबघरके हालको ही चित्रशालाका रूप दे दिया गया था। चित्रोंकी संख्या लगभग ९०० थी और अधिकांशमें प्राच्य-जीवन तथा उसकी अतीतकालीन महत्त्वपूर्ण घटनाओंका अङ्कण था। चित्रोंमें प्राच्य कलाका बाहुल्य होते हुए भी पाश्चात्य कलाके आधारपर खचित चित्रोंकी भी संख्या कम न थी। प्रदर्शित चित्रोंका सौन्दर्य जैसे स्वयं बोलकर बता रहा था कि भारतीय चित्रकला अब भी गर्व और गौरवसे विश्वकी किसी भी कलाके समक्ष अपना मस्तक उठाने योग्य है।

मुर्शिदाबादके नवाब बहादुर तथा महाराज सर प्रद्योतकुमार ठाकुर आदिकी कृपासे कुछ विख्यात यूरोपियन कलाकारोंके मौलिक चित्र प्राप्त हुए थे। प्रथम श्रेणीके यूरोपियन चित्रकारोंके मौलिक चित्रोंको देखनेका सौभाग्य बहुतोंको नहीं प्राप्त होता। परन्तु इस प्रदर्शिनीमें ई० नारमण्डके 'क्रीड़ा-मग्न' तथा विलियम एट्टीके 'आदि नारी' चित्रको जिस किसीने भी देखा, सभीने मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की। भारतीय चित्रकारोंको भी दो श्रेणियोंमें विभक्त किया जा सकता है। एक तो वे हैं, जो यूरोपियन शैलीके आधारपर चित्राङ्कण करते हैं और दूसरे वे, जो भारतीय शैलीपर। प्राच्य कलाके आधारपर खचित चित्रोंका अङ्कण जितना सुन्दर था, उतना ही सुन्दर था उनका विषय। श्रीकृष्ण और भगवान् बुद्धके जीवनकी अनेक गौरव और आनन्दपूर्ण घटनाओंका चित्रण कितने ही चित्रोंमें किया गया था। अन्यान्य प्राचीन देवी-देवताओंपर भी कुछ चित्र थे। चित्रोंको देखनेसे स्पष्ट ज्ञात होता था कि अजन्ताकी भव्य कला और चित्राङ्कणकी शैलीका आधुनिक कलाकारोंके आदर्शपर बहुत प्रभाव पड़ा है। इन चित्रोंमें रङ्ग और रेखाङ्कणका सुष्टु सौन्दर्य प्रस्फुटित हुआ है। पाश्चात्य कलाके ढङ्गपर भारतीयों द्वारा निर्मित चित्रोंको देखनेसे तो यही ज्ञात होता था कि वह दिन दूर नहीं, जब भारतीय कलाकार इस दिशामें भी यूरोपियनोंकी प्रतिद्वन्द्वितामें कभी आगे बढ़ जायेंगे। श्री अतुल बोस जैसे कुछ कलाविदोंके चित्रोंकी धूम तो आज भी यूरोपमें मची हुई है।

शिव

[ चित्रकार—श्री शारदा उकील ]

एक श्रेणीके यूरोपियन कला-रसिक यह कहते सुने जाते हैं कि भारतीय कलाकारोंके चित्रोंमें जीवनका स्वाभाविक और प्रकृत चित्र नहीं मिलता। उनका अनुमान है कि भारतीयोंमें इस प्रकारकी सच्ची कलाके अनुभव करनेकी क्षमता ही नहीं है। किन्तु वास्तवमें उनकी यह धारणा भ्रान्तिमूलक है। ममालपुर, कोनारक तथा ऐसे कितने ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



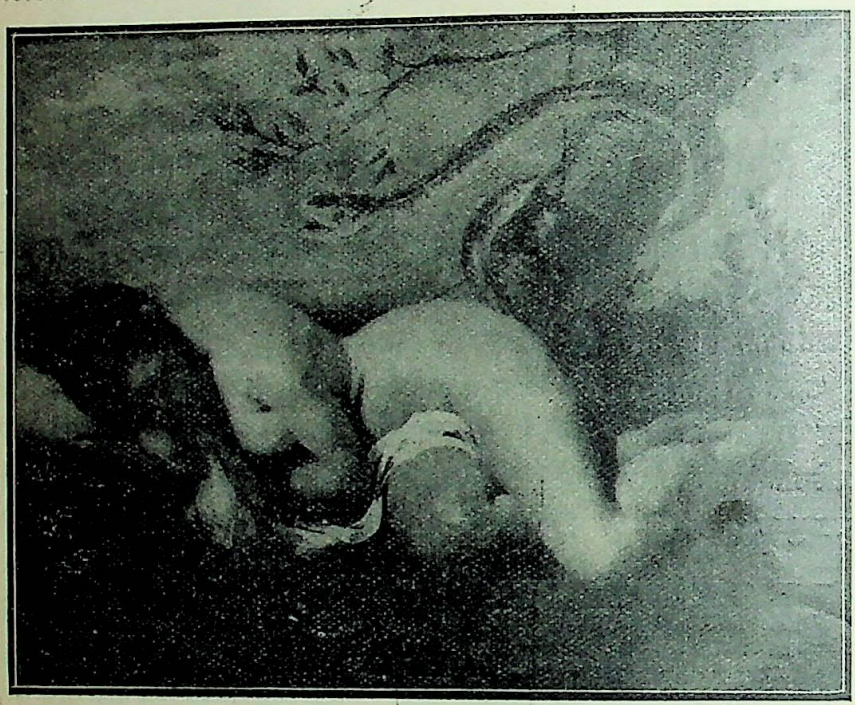

आदि नारी [ चित्रकार—मि० डब्ल्यू० एट्टी

स्थानोंपर पशुओंका जो चित्राङ्कण पाया जाता है, वह नितान्त सजीव, सच्चा और स्वाभाविक दिखाई पड़ता है। नेपालके कुछ कलाकार राजाओं और राजकुमारोंकी ऐसी प्रस्तर-मूर्तियोंका निर्माण किया करते थे, जिन्हें देखकर सजीवता और वास्तविकताका भ्रम होने लगता है। राजपूत और मुगल-कालीन चित्रकारोंके चित्रालेखोंकी प्रशंसा आज भी की जाती है। कला-परिषद्की इस प्रदर्शिनीने सिद्ध कर दिखाया कि भारतीय चित्रकलामें जो स्वाभाविक लालित्य, सौन्दर्य और मनोहारित्व पाया जाता है, उसके यूरोपियन चित्रोंमें कहीं दर्शन भी नहीं होते। तैल-चित्रोंके निर्माणमें भी भारतीयोंको गौरवमयी सफलता प्राप्त हुई है।

चित्रोंके लिए जो विषय चुने गये थे, उनसे भारतीय विचारोंकी कमनीयता परिलक्षित होती है। मां और शिशु, रमणियां जलाशयके तटपर, भीड़-भरित स्नान-घाट, मन्दिर-पर पूजार्थियोंकी भीड़, ग्राम्य-कुटीर, हिमाच्छादित हिमाचलके उत्तुङ्ग-शृङ्ग, सागर-तटपर लोल लहरियोंके आघात-प्रतिघात, मछुआ और उसकी नौका तथा विभिन्न रङ्गोंमें अस्तङ्गत अंशु-माली आदि ऐसे विषय हैं जिनके आनन्दकी अनुभूति केवल भारत हीमें सम्भव है। भारतके प्राकृतिक दृश्य और उसका वातावरण इतना सुन्दर है कि विश्व-भरके कलाकार यहां आते और अपने-अपने दृष्टिकोणोंसे इसका अध्ययन करते हैं। किन्तु फिर भी वे इसकी आत्मानुभूति नहीं कर सकते। कला और सौन्दर्यके इन रङ्गीन स्वप्नोंका सुन्दर चित्रण तो कोई भारतीय ही कर सकता है। कला-परिषद्की इस प्रदर्शिनीको देखनेसे यही मालूम होता था कि भारतीय सौन्दर्यपर जो पर्दा पड़ा हुआ था, वह मानो अकस्मात् उठ गया। कलाके जादूने सौन्दर्यपरसे जो यह घूंघट हटा दिया है, उससे भारतकी आत्मा खुल गयी—उसके रङ्गीन स्वप्नों एवं आशाओंसे संसार परिचित, चकित और आह्लादित हो गया। इस प्रकारके चित्रोंके लिए किसी कलाकार-विशेषकी प्रशंसा क्या की जाय! वस्तुतः बात तो यह है कि इन चित्रोंमें देशके प्राणोंका सङ्गीत और उसके हृदयके स्पन्दनों-का गीत रङ्गों और रेखाओंमें मुखरित हुआ है। भारतकी पवित्रता, उसकी आध्यात्मिक। सौम्यता और उसके विश्व-बन्धुत्वके भाव इन चित्रोंमें सर्वत्र परिलक्षित होते थे।

प्राचीन इतिहासकार तारानाथने एक स्थलपर लिखा है कि प्राचीन कालमें बङ्गाल, बिहार और उड़ीसाके चित्रकारोंके जो चित्र बनाये थे, उन्हें प्राच्यकलाकी सर्वोत्तम मूर्तियां समझा जाता था और देश-विदेशोंमें उनकी बड़ी सुख्याति

क्रीड़ा-मग्न [ चित्रकार—मि० ई० नार्टन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



थी। चीन और जापानपर तो इन चित्रोंका बड़ा प्रभाव पड़ा था। नेपालियोंने इन्हींसे ललित कलाकी शिक्षा प्राप्त की थी और सम्राट् कुबला खांके शासन-कालमें चीनी ललित कला विभागका काम एक नेपाली कलाकारके सुपुर्द किया गया था। सुदूर पूर्वपर अजन्ताकी कलाका भी खूब प्रभाव पड़ा। दोनों हीके आदर्श अत्यन्त उच्च और अनुपम थे। अपने अतीत गौरवकी इन कहानियोंको आज भारत भूल चुका है। ऐसी दशामें यदि कला-परिषद् उसके पुनरुत्थानका कार्य अपनाये, तो वास्तवमें यह अत्यन्त श्रेयस्कर प्रयास होगा। कलाके क्षेत्रमें भारत पुनः विश्वमें अपना पूर्व स्थान और सुख्याति प्राप्त करे। उसने अतीत कालमें ६४ कलाओं-में सफलता प्राप्त की थी और उसकी कितनी ही कृतियोंसे आज भी संसार विस्मय-विमुग्ध है। बात पुरानी है, परन्तु बिलकुल सच्ची कि फ्रान्सका प्रधान मन्त्री क्लिमेन्सो भारतमें आया था और अजन्ताकी कला देखकर आश्चर्य-चकित हो गया था। इतने प्रज्वलित गौरवपूर्ण इतिहासको रखते हुए भी आज यह जानकर किसे दुःख न होगा कि भारतमें चित्र-कलाकारोंके प्रति प्रायः उदासीनताका भाव दिखाया जाता है। हमें यह बात भूलनी न चाहिए कि साहित्यकी तरह ही चित्रोंमें भी राष्ट्रकी आत्मा निवास करती है और विभिन्न भाषा-भाषियोंके मनोभावोंके पारस्परिक आदान-प्रदानमें जहां भाषाके कारण कठिनाई पड़ती है, वहां चित्रोंको समझनेमें यह दुरूहता नहीं दिखाई पड़ती। शुक्राचार्यके कथनानुसार जिन कृतियोंकी अभिव्यक्ति भाषामें होती है, वे विद्यायें हैं और जिनकी चित्रोंमें, वे कलायें हैं। इसलिए राष्ट्रके पुनरुत्थानका महायज्ञ कलाकी उन्नति-के बिना अधूरा ही रह जायगा। राष्ट्रीय भावोंमें जीवन और जागरण भरनेका काम धर्म और कलायें सदासे करती आ रही हैं। प्राचीन धर्मोंके प्रचारार्थ कलाका आश्रय लिया जाता था। भारतवर्षमें भाषाकी बहुलता सदैव बाधा उप-स्थित करती रही है, इसलिए धर्म-प्रचारक मूर्तियों और चित्रोंका आश्रय लिया करते थे। भगवान् बुद्धके जीवनका अध्ययन भारतके विभिन्न भागों तथा जावामें पायी जाने-वाली मूर्तियोंसे किया जा सकता है। शैव और वैष्णव मतोंके प्रचारकोंने भी उनके प्रचारके लिए मूर्तियों और चित्रोंका खूब सहारा लिया है। भारतकी कोटि-कोटि जनताकी—जो जाति और प्रान्त-भेदके कारण विभक्त हो रही है—शिक्षा और ज्ञान-विस्तारके लिए हमें एकबारगी इस प्राचीन पद्धतिका अवलम्बन करना होगा। यह उपयुक्त अवसर है जब कि भारतको इस विषयमें कुछ करनेके लिए अग्रसर होना चाहिए, और भारतमें जिस नवयुगके आगमन-की सूचना मिल रही है उसमें देशके कलाकारोंकी सेवा एवं सहानुभूतिका भी भाग होना चाहिए, जिससे भारतकी मुक्ति सम्यक् रूपमें चरितार्थ हो। इस सम्बन्धमें कला-परिषद्के नियोजकोंने उसका प्रतिष्ठान करके इस ओर जो अंगुलि-निर्देश किया है, उसके लिए वे निश्चय ही बधाईके पात्र हैं।

प्रतिरूप [ चित्रकार—श्री एस० एन० भास्कर

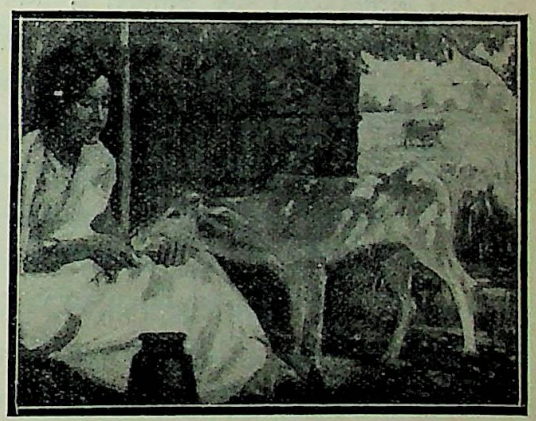

मातृ-हीन [ चित्रकार—श्री बी० एन० मुखर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## आत्महत्या-क्लब

समय-समयपर लण्डनमें यह अफवाह फैलायी जाती है कि यहां ऐसे आत्महत्या-क्लब और समितियां हैं, जिनके सदस्य जानबूझकर आत्महत्या किया करते हैं। लण्डनमें इस प्रकारके क्लब हों या नहीं, किन्तु यूरोपके अन्यान्य नगरोंके लिए इनका अस्तित्व कोई असाधारण बात नहीं है। एक सौ वर्षसे अधिककी बात है, इटलीमें एक आत्म-हत्या-समिति थी, जिसकी उस समय बड़ी शोहरत थी। इसके सदस्य 'अदृश्य' कहकर अभिहित किये जाते थे और जिस घरमें इस समितिकी बैठक हुआ करती थी, वहां प्रेतों-का वास समझा जाता था। समितिके सबके सब सदस्य अपनेको नास्तिक बतलाते थे और मृत्युके प्रति वे अवज्ञाकी दृष्टिसे देखा करते थे। समय-समयपर वे समितिके एक कमरेमें एकत्र हुआ करते थे और वहां पासा फेंककर इस बातका निश्चय किया जाता था कि आगामी अवसरपर कौन आत्मघात करेगा। पहले तो राज्यके अधिकारियोंने इस समितिके घातक कार्योंमें कोई हस्तक्षेप नहीं किया। किन्तु जब बड़े-बड़े धनवान और प्रभावशाली पुरुष भी इस समितिके सदस्य बनकर अपने जीवनका अन्त करने लगे, तब अधिकारियोंकी निद्रा भङ्ग हुई और उन्होंने इसे दबा दिया।

इसी प्रकारकी एक समिति पेरिसमें भी थी और शायद अब भी है। इस समितिके सम्बन्धमें बहुत-सी कहानियां प्रचलित हैं, जिनमें एक इस प्रकार है:—बर्टरैण्ड डी० अरागन नामक एक राजमिस्त्री एक अभिनेत्रीके प्रति प्रेमासक्त हो गया और उस अभिनेत्रीके उसके साथ विवाह करनेसे इनकार कर देनेपर वह उक्त आत्महत्या-समितिमें सम्मिलित हो गया। इसके बाद उस अभिनेत्रीका विचार बदल गया और उसने अपने प्रणयी राजमिस्त्रीको अपने इस विचार-परिवर्तनकी सूचना दी। तब तक वह आत्महत्या करनेके लिए समितिके सामने प्रतिज्ञाबद्ध हो चुका था। समितिके मन्त्रीने उसे सूचित कर दिया था कि अमुक तिथिपर समिति-की जो बैठक होगी, उसमें हजार कामके होते हुए भी उसका उपस्थित रहना आवश्यक है; क्योंकि उसी दिन पासा फेंककर इस बातका निर्णय किया जायगा कि आत्म-हत्या करनेकी किसकी बारी है। बर्टरैण्ड डी० अरागनने अपनी इस प्रतिज्ञाके सम्बन्धमें अपने यमज भाई अरमण्डके सिवा और किसीसे कुछ नहीं कहा था। आखिर वह घातक दिवस आ पहुंचा। बैठक रातमें १० बजे होनेवाली थी। उसी दिन दोपहरमें बर्टरैण्डको इस आशयका एक पत्र मिला कि बैठक आधी रात तकके लिए स्थगित कर दी गयी है, इसलिए वह समितिके कमरेमें निश्चित समयसे पूर्व न आवे। बर्टरैण्डका मन निदारुण यन्त्रणासे अधीर होकर उस घातक घड़ीकी प्रतीक्षा करने लगा। हाय! इस संसारमें अब वह कुछ ही घण्टोंका मेहमान है, यह सोचकर उसे यह जीवन कितना प्रिय मालूम पड़ने लगा! आखिर घड़ीकी सुई [illegible] पर पहुंची और उसने एक बार हसरत-भरी निगाह अपनी माता तथा अपने उस घरपर डाली, जहां उसने जीवनके इतने दिन दुःख-सुख सहकर बिताये थे। मन-ही-मन सबसे अन्तिम विदा ग्रहण करके वह समिति-भवनकी ओर चल पड़ा। वहां पहुंचकर जब उसने दरवाजा खोला, तो वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बिलकुल सन्नाटा छाया हुआ देखकर उसके आश्चर्यकी सीमा न रही। सर्वत्र श्मशानवत् शान्ति विराज रही थी। दालानसे होकर जब वह उस कमरेमें प्रवेश करने लगा, जिसमें बैठक होनेवाली थी, तब सभाके मन्त्री उसे देखकर एकबारगी चकित हो उठे और उसकी ओर टकटकी बांधकर देखने लगे।

"क्यों, बात क्या है ?"—बर्टरैण्डने पूछा।

"तुम मेरी ओर इस तरह घूर क्यों रहे हो ?"

मन्त्री बिलकुल चुप थे ; मारे भयके केलेके पत्तेकी तरह कांप रहे थे ; काटो तो खून नहीं।

इसपर एक सदस्य कमरेसे बाहर निकला और बर्टरैण्ड-को देखते ही चौंककर बोल उठा—"भगवन् ! यह क्या रहस्य है ?"

"मैं नहीं समझता कि बात क्या है," बर्टरैण्डने कहा—"तुम दोनों इस प्रकार चकित दृष्टिसे मेरी ओर घूर क्यों रहे हो ? क्या मुझमें कोई विलक्षणता है ?" "तुममें विल-क्षणता ?" उन्होंने उत्तर दिया—"हम लोगोंने तो समझा था कि तुम मर चुके। तुम मृतवत् मालूम भी तो पड़ते थे, और तुम्हारे सब लक्षणोंसे यही प्रतीत होता था कि तुम मर चुके हो, किन्तु फिर भी तुम यहां मौजूद हो। तुमने जो गोली चलायी थी, उससे क्या तुम्हारी मृत्यु नहीं हुई ? या तुम प्रेतात्मा हो ?"

"तुम क्या बक रहे हो ?" बर्टरैण्डने जोरसे चिल्लाकर कहा—"मैंने कभी गोली चलायी ही नहीं।"

"तो फिर किसने चलायी ?" मन्त्रीने पूछा। फिर उसने बर्टरण्डको साथ लेकर उस कमरेमें प्रवेश किया जिसमें बैठक हुई थी। सशङ्कित चित्तसे बर्टरैण्डने उसमें प्रवेश किया। वहांका मर्मस्पर्शी दृश्य देखकर उसका कलेजा धक्-से रह गया। उसका भाई अरमण्ड औंधे मुंह सहनपर मरा हुआ पड़ा था। उसके चेहरेपर यन्त्रणा-सूचक चिह्न अब भी वर्तमान थे। अरमण्डने ही वह पत्र समितिके नामसे बर्टरैण्डके पास भेजा था जिसमें बैठकके स्थगित किये जानेकी मिथ्या सूचना दी गयी थी। अरमण्डका चेहरा बर्टरैण्डसे इतना मिलता-जुलता था कि जब उसने समितिकी बैठकमें प्रवेश किया, तो किसीको एक क्षणके लिए भी यह सन्देह नहीं हुआ कि वह बर्टरैण्ड नहीं है। बैठकमें समितिके कुल १२ सदस्य उपस्थित थे। सबोंने पासे फेंके, किन्तु घातक पासा अरमण्डके ही भाग्यमें पड़ा। सदस्योंको जब इस रहस्यका पता चला, तब उन्होंने आपसमें राय-मशविरा किया और बर्टरैण्डको समितिकी सदस्यतासे इस्तीफा दे देनेके लिए कहा गया। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि बर्टरैण्डने—जो इस मौकेको ढूंढ़ ही रहा था—बड़े आनन्दके साथ त्याग-पत्र दाखिल किया और इसके बाद शीघ्र ही उस अभिनेत्रीके साथ उसका विवाह हो गया।

लण्डनकी एक आत्महत्या-समितिके सम्बन्धमें भी इसी तरहकी कहानी कही जाती है। इस समितिका केन्द्र पालमाल महल्लेके किसी स्थानमें बताया जाता है। इसके सदस्योंकी संख्या १२ तक सीमित है। वे सब बारी-बारीसे श्रेष्ठता Seniority के लिहाजसे आत्महत्या करनेकी प्रतिज्ञा करते हैं। किसी सदस्यकी आत्महत्याकी बात निश्चित हो जानेपर वर्षके अन्तिम दिन सूर्यास्त और मध्य रात्रिके बीच यह काण्ड होता है, और इस प्रकार जो स्थान रिक्त होता है उसपर मेम्बरीके उम्मीदवारोंकी सूचीसे दूसरा नाम फौरन् भर दिया जाता है। आत्महत्या करनेवाला सदस्य अपने जीवन-की अन्तिम घड़ियां समितिके भवनमें रहकर ही बिताता है। भोजन करनेके कमरेमें एक कोनेमें एक खास कुर्सी उसके बैठनेके लिए रख दी जाती है। यहां प्रेतका वास समझा जाता है।

बहुत-से अंगरेज लेखकोंने अपनी रचनाओंमें इस समिति-की चर्चा की है और आत्मघातियोंके सम्बन्धमें अनेक कहा-नियां प्रचलित हैं। इनमें एक कहानी इस प्रकार है—एक सुन्दरी नवयुवती अपने वृद्ध पतिसे विरक्त रहा करती थी। एक युवकके साथ उसका अनुचित प्रेम हो गया। अब उसके मनमें यह दुरभिसन्धि उत्पन्न हुई कि किस प्रकार इस वृद्ध पतिसे छुटकारा मिले।

उसकी एक सखीने उसे सलाह दी कि वह अपने पतिको 'अत्महत्या-समिति'का सदस्य बननेके लिए राजी करे। उक्त समितिके सेक्रेटरीसे उसकी सखीकी काफी जान-पहचान थी। अतएव उसने यह भार अपने ऊपर लिया कि उसके पतिको वह समितिमें भर्ती करानेका प्रबन्ध कर लेगी।

सुन्दरी नवयुवती उस दिन प्रसन्नचित्तसे घर लौटी और उसने एक मधुर-स्निग्ध चुम्बनके साथ अपने पतिका अभि-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वादन करते हुए उसके सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह एक मनोविज्ञान-समितिका सदस्य बने। पतिको अपनी पत्नीके इस आकस्मिक स्नेहपर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उसका पति जब समितिका सदस्य बनने और इस सम्बन्धमें समितिके मन्त्रीसे मिलनेके लिए सहमत हुआ तब उस रातको नवयुवती जितने सुखसे सोयी, उतना सुख उसे सोहाग-रातके सिवा और शायद ही कभी प्राप्त हुआ हो। रात-भर वह आत्महत्या-समितिके सम्बन्धमें सोचती रही। षड्यन्त्र इतनी कुशलतासे रचा गया था कि उसका पति सहज ही इस घातक जालमें फंस गया। समितिके मन्त्रीने उस वृद्धको यह झांसा देकर कि समितिमें आत्महत्याके कारणों और उसके मनोवैज्ञानिक विश्लेषणोंका अध्ययन किया जाता है, आत्महत्याका अभ्यास नहीं किया जाता, सदस्य बननेके लिए राजी कर लिया। अन्तमें वृद्धको समितिकी कई बैठकोंमें शामिल होनेके बाद यह पता लगते देर न लगी कि समितिका वास्तविक उद्देश्य क्या है।

एक दिन रातमें भोजनके समय उसने अपनी स्त्रीसे पूछा—"क्या तुम जानती हो कि जिस समितिमें मैं तुम लोगोंके कहनेसे शामिल हुआ हूं उसका वास्तविक अभिप्राय क्या है?"

"वह एक मनोविज्ञान-समिति है, है न प्रियतम?" उसने उत्तर दिया। किन्तु उसकी कुटिल दृष्टिमें मिथ्याका जो आभास मिल रहा था उसे ताड़नेमें उसके पतिको देर न लगी।

इसके कुछ घण्टे बाद ही उसकी इच्छा पूर्ण हो गयी। वृद्ध पतिने अपनी अध्ययनशालाके एकान्त स्थलमें गोली चलाकर आत्महत्या कर ली।

## 'फादर डिवाइन' : ईश्वरका हबशी अवतार

संसारके सामने एक नया धर्म-शिक्षक आया है। यह ४ फीट ६ इञ्च लम्बाईका नाटा-सा हबशी अमेरिकामें 'फादर डिवाइन' (दैवी पिता) के नामसे विख्यात है। इसके साथ अनेक टाइपिस्ट रहते हैं जो सदा कार्यमें व्यस्त होते हैं। इसके अलावा इसके आस-पास अगनित भक्तोंकी भीड़ लगी रहती है।

वह एक वैभवशाली धनिककी नाईं अपना जीवन बिताता है। एक हवाई जहाजपर दौरा करता है। वह अपनेको ईश्वर कहता है और न्यूयार्क तथा कतिपय अन्य अमेरिकन नगरोंमें उसने अपने 'राज्य' (किङ्गडम) स्थापित कर लिये हैं। ९ वर्षके अन्दर हजारों नर-नारी इसके अनुयायी हो गये हैं और उसके पास इतना धन एकत्र हो गया है कि खर्चके सम्बन्धमें जरा भी चिन्ता किये बिना वह ५००० आदमियोंको भोजन दे सकता है।

उसका कहना है कि जब आदमी खाने-पीनेसे भली भांति सन्तुष्ट होगा तभी वह धार्मिक हो सकता है। इसलिए वह नाना प्रकारके भोज्य पदार्थ बनवाता है और उसकी 'देव-दूतियां'—निग्रो लड़कियां—भक्तों एवं अतिथियोंको बड़े प्रेमसे खिलाती हैं। कोई भी निग्रो इन भोजोंमें शामिल हो सकता है और इस सुस्वादु भोजनके लिए उसे कुछ देना नहीं पड़ता।

ज्यों-ज्यों इस 'दैवी पिता' के 'शान्ति-धर्म' के प्रति लोगोंका आकर्षण बढ़ने लगा, त्यों-त्यों पुलिस अधिकारी सशङ्क होने लगे। यहां तक कि वह गिरफ्तार किया गया और उसे एक वर्षका कारावास तथा १०० पौण्ड जुर्मानेकी सजा मिली; परन्तु दण्डाज्ञा सुनानेके बाद ही, हृदयकी गति रुक जानेके कारण, जजकी मृत्यु हो गयी। 'दैवी पिता' ने केवल इतना ही कहा—"मैं ऐसा नहीं करना चाहता था, पर मजबूर हुआ।"

बादमें सुप्रीमकोर्टमें अपील हुई। वहां सजा रद्द कर दी गयी और तीन सप्ताह जेलमें रहकर 'दैवी पिता' को मुक्ति मिल गयी।

जो लोग न्यूयार्ककी हार्लेम नामक निग्रो बस्तीसे परिचित हैं वे जानते होंगे कि यह आदमी वहां ईश्वरकी भांति पूजा जाता है। स्वयं उसका कहना है कि सेवेन्थ अवेन्यूकी १३४ वीं गलीमें अपने-आप ही मैंने १९०० ई० में अवतार लिया। परन्तु पुलिसका कहना है कि इस आदमीका नाम जार्ज बेकर है और इसका जन्म जार्जियाके समुद्र-तटसे कुछ ही दूर स्थित एक द्वीपमें हुआ था। पुलिसका यह भी कहना है कि इसकी पत्नी असलमें दूसरी स्त्री थी और उसके पास विश्वास करनेके कारण हैं कि वर्तमान 'दैवी माता' उसकी कानूनी पत्नी नहीं है।

इस निग्रो ईश्वरके न्यूयार्क, वाशिङ्गटन, बाल्टीमोर, ब्रिजपोर्ट, सीटल तथा नियार्कमें 'राज्य' (किङ्गडम) हैं और मुख्य स्थानका नाम 'स्वर्ग' है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परन्तु इन सबको चलानेके लिए इतना धन कहांसे आता है, किसीको इसका पता नहीं। 'दैवी पिता' का कहना तो यह है कि जब हमारे पास रुपयेकी कमी हो जाती है तो हमको ऐसा मालूम पड़ता है कि हमारी जेबमें कोई हाथ डाल रहा है। मैं चाहे कितनी ही जल्दीसे उधर देखूं, पर कुछ दिखाई नहीं देता। जेबमें हाथ डालता हूं तो नोटोंके पुलिन्दे मिलते हैं।

एक दूसरे अवसरपर पूछनेपर उसने आकाशकी ओर देखकर कहा कि यह सब सीधा स्वर्गसे आता है।

हजारों भक्तोंने अपने जीवन-बीमाकी पालिसियां उसके नाम कर दी हैं। उसकी शिक्षा है:—'पापी, मेरा अनुसरण कर; तू अमर होगा।' *

उसका यह भी कहना है कि जो अमर है, उसे जीवन-बीमाकी क्या आवश्यकता? जो उसके 'दैवी राज्य' में 'देवदूत' या 'देवदूती' बनना चाहे, उसके लिए सम्पूर्ण सांसारिक वैभवका त्याग आवश्यक है। भक्त सब-कुछ उसे सौंप देते हैं। केवल न्यूयार्ककी 'गद्दी' या 'राज्य' का खर्च लगभग नब्बे हजार रुपये वार्षिक है।

उसके आश्रममें स्त्रियां और पुरुष अलग-अलग रहते हैं। उसके प्रवचनके आरम्भमें मधुर गायन होता है। तब उपस्थित भक्तगण अपने दोष अथवा नियम-भङ्गकी बातें खड़े होकर स्वीकार करते हैं। फिर दैवी पिता जोरसे कहते हैं:—'शान्ति; यह अद्भुत है।' फिर प्रवचन आरम्भ होता है। एक प्रवचनमें कहा गया—

"यह सत्य अजन्मा है। यह किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियोंके समूहमें सीमित नहीं है वरन् ईश्वरके पुत्रत्वकी भावनामें है। मैं वही ईश्वरकी कला हूं। कल रातको मैंने टेलीफोनसे उपदेश किया था, परन्तु मुझे टेलोफोनसे बोलनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं सर्वत्र विद्यमान हूं।"

अब पुलिस भी इस 'दैवी पिता' के कार्योंमें हस्तक्षेप नहीं करती है, क्योंकि उसके कारण अनेक अपराधी और पापी प्राणियोंने अपनी बुरी आदतें छोड़ दी हैं।

---

* सर्वं धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वाम् सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच॥
—श्रीकृष्ण (गीता)।

## हंसोंका दाम्पत्य-जीवन

हंसोंके सम्बन्धमें हालमें जो परीक्षायें हुई हैं, उनसे पता चलता है कि उनमें भी मनुष्योंकी तरह वर्ण-विद्वेष है; वे भी हमारी तरह प्रेम करते हैं, विवाहित और दुःखपूर्ण वैधव्यका जीवन बिताते हैं।

अभी कुछ ही दिनोंकी बात है कि एक अंगरेज सज्जनने इंगलैण्डकी ईनफील्ड कौन्सिलको तीन हंस भेंट किये। वे तीनों एक झीलमें रखे गये और बड़ी प्रसन्नतासे उन्होंने अपने नये घरको स्वीकार किया। किन्तु कुछ दिनों बाद देखा गया कि केवल एक हंस रह गया है; बाकी दोका पता नहीं। वे दो कहां गये? उनकी हत्या तो नहीं कर डाली गयी!

सर्पेण्टाइनके हंस अपने वर्ण-द्वेष (Colour prejudice) के लिए प्रसिद्ध हैं। बहुत दिनों तक वहां काले और श्वेत हंसोंमें युद्ध और प्रतिहिंसाकी ज्वाला जलती रही। एक बुद्धिमान एवं उदार श्वेत हंसको इससे बड़ा दुःख हुआ। उसने आगे बढ़कर इनके सामने एक आदर्श रखनेका निश्चय किया और एक काली हंसिनीको अपनी जन्म-सङ्गिनी बनाकर इस पारस्परिक कलहको दूर करना चाहा।

परन्तु यह उदार प्रेम, रोमियो जुलिएटका यह आदर्श, कट्टरपन्थी हंसोंसे सहन कैसे होता? श्वेत हंसोंने सलाह करके अपनी जातिका अपमान करनेवाली उस काली हंसिनीको मार डालनेका निश्चय किया और मौका ढूंढ़ने लगे। एक दिन सन्ध्या समय, जब वह बेचारी एक किनारे पानीमें तैर रही थी, एकाएक सब श्वेत हंसोंने आकर उसे घेर लिया और बातकी बातमें उसे मार डाला। थोड़ी देर बाद जब उसका प्रेमी श्वेत-हंस आया तो अपनी प्रियाको मरी हुई पाकर बड़ा दुःखी हुआ और मारे दुःखके वह स्थान छोड़कर दूसरी जगह चला गया। वहां बहुत दिनों तक उसने दुःखी एकान्त-जीवन बिताया। धीरे-धीरे जब दुःख मिट गया तब एक दूसरी श्वेत हंसिनीसे उसका सम्बन्ध हो गया और यह जोड़ा, 'बटरसी पार्क' की झीलमें आज भी देखा जा सकता है।

### अनधिकार-प्रवेशकी सजा

जब किसी झीलमें बहुत-से हंस हो जाते हैं तब वे अपनी सीमाका बंटवारा कर लेते हैं और एककी सीमामें दूसरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रवेश नहीं कर सकता। किसीकी सीमामें, अनधिकार-प्रवेश-का अर्थ, एक या दूसरेकी मृत्यु ही है।

हंस बड़ा प्रेमी प्राणी है और प्रेमके लिए वह बहुत-कुछ बलिदान कर सकता है। पहले हंस अपनी जीवन-सङ्गिनी बनानेके लिए किसीसे परिचय करता है और कुछ दिन साथ रहकर जब दोनों देख लेते हैं कि हमारे स्वभावमें समता है और जब दोनोंका प्रेम गहरा हो जाता है, तब वे एक-साथ रहने लगते और प्रायः सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करते हैं। यद्यपि हंसकी आयु बहुत अधिक होती है और वह ९० से १०० वर्ष तक जीता है, फिर भी साधारणतः वह आदमियोंकी तरह बेवफा नहीं होता। बहुत करके वह एक पत्नीके साथ ही जीवन बिता देता है। पत्नी या पतिमेंसे किसीके मर जानेके बाद, विधुर हंस या विधवा हंसिनीको दूसरा ब्याह करते बहुत कम देखा जाता है।

अपने गृह और अपने अण्डों-बच्चोंकी रक्षा हंस बड़ी सावधानीसे करते हैं। घोंसलेके पास किसी मनुष्य या अन्य प्राणीके आते ही वे बड़े भयानक रूपमें दौड़ते हैं। ऐसे समय वे बड़े खूंख्वार हो जाते हैं। पर इस भयानकताके पीछे अपने बच्चोंके लिए उनका मधुर स्नेह छिपा है।

एक बार एक जोड़ेने अपना एक घोंसला चुना जहां माता अण्डे देनेवाली थी। उधर उसी स्थानको एक दूसरे जोड़ेने भी अपने अण्डोंकी रक्षाके लिए पसन्द किया। फलतः युद्ध हुआ; उसमें एक दलका पिता मारा गया। मां बेचारी डरकर भाग गयी। विजयी दलने स्थानपर अधिकार जमा लिया, परन्तु पराजित हंसके बच्चोंको अपनाया और उन्हें अपने ही बच्चोंके समान पाला। सबका एक बड़ा कुटुम्ब बन गया।

जब किसी प्रेमी हंसकी जीवन-सङ्गिनीकी मृत्यु हो जाती है तो वह बड़ा ही दुःखी और कातर हो जाता है। किसी तरह उसे शान्त करना कठिन है। इस दुःखमें वह प्रायः विरक्त जीवन व्यतीत करता है और मादा जातिके प्रति एक प्रकारकी उपेक्षा उसमें आ जाती है। पर उस विरक्तिमें भी उसका प्रेम प्रायः जाग्रत रहता है। वह अपनी मृत प्रियाकी यादमें हर साल घोंसले बनाता है और अपने बच्चोंके साथ बैठा हुआ, उसके लौटनेकी प्रतीक्षा करता है।

## प्रेम-परिमापक यन्त्र

प्रोफेसर एम० ए० लो नामक एक प्रसिद्ध वैज्ञानिकने अनेक वर्षोंकी गवेषणाके बाद एक ऐसा यन्त्र आविष्कार किया है जिससे प्रेमकी मात्राकी माप ली जा सकती है।

उक्त प्रोफेसरका कथन है:—प्रणय-व्यापारपर इतने दिनों तक कवि, उपन्यासकार और नाट्यकारोंका एकच्छत्र अधिकार था। किन्तु इस वैज्ञानिक युगमें जब नाना प्रकारकी गतियों (Speed) के परिमापक यन्त्र तैयार हो चुके हैं तब फिर प्रेम नामक मनोवृत्तिकी माप करनेके यन्त्रका आविष्कार करना क्योंकर दुःसाध्य समझा जाय।

आगे चलकर उन्होंने कहा है :—प्रेम जीवनकी एक अमूल्य सम्पत्ति है। अपने चित्तराज्यमें जिसने इस सम्पत्ति-को प्राप्त कर लिया वह सचमुच बड़भागी है, उसका जीवन धन्य है! प्रेम एक अत्यन्त सूक्ष्म मनोवृत्ति है। जिस प्रकार शरीरके रक्तकी मात्राका चाप आदि मापा जाता है उसी प्रकार आज प्रेमकी मात्राकी माप भी सम्भव प्रतीत हो रही है। इसमें सफलता प्राप्त होनेसे विवाह-विच्छेद या पारि-वारिक कलह, अशान्ति आदि दूर होगी, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

इस प्रेम-सम्पद द्वारा ही मानव-जातिके वंश-क्रमकी रक्षा होती है। अतएव मनुष्यकी जीवन-यात्रामें चिरसङ्गी या सङ्गिनीके निर्वाचनके समय एक-दूसरेके प्रति परस्परके प्रेमकी यदि माप ली जा सके, तो जीवतत्त्व Biology की दृष्टिसे असन्दिग्ध रूपमें यह कहा जा सकता है कि इससे सुस्थ एवं शान्तिमय जीवनके विकासमें बड़ी सहायता मिलेगी।

मस्तिष्कमें विद्युत्-प्रवाह, शिराओंमें विद्युत्-तरङ्ग इस तरहकी बहुत-सी बातें आधुनिक समयमें हम लोग सुना करते हैं। विविध प्रकारके खाद्य पदार्थोंके हमारे देह-तन्तुओंपर विभिन्न फल घटित होते हैं, विभिन्न आवेगोंका सञ्चार होता है। तीव्र मदिरा-पानसे मनमें जो आवेग उत्पन्न होता है वह शीतल जलके पानसे नहीं होता। मांस-भक्षणसे शरीर और मनमें जिस भावका उद्रेक होता है वह उद्भिज-भोजनसे नहीं होता।

जिस प्रकार खाद्य शरीरके ऊपर नाना क्रियायें उत्पन्न करता है उसी प्रकार मैत्री, विद्वेष, हिंसा, ममता प्रभृति भाव भी मनमें विभिन्न क्रियाओंका सञ्चार करते हैं। क्रोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करनेपर हम कांपने लगते हैं, सिरमें पीड़ा होती है, स्मृति-शक्तिका लोप होता है, बहुधा सहज-बुद्धि भी नष्ट हो जाती है। स्नेह, ममता आदिके प्रभावसे मनमें और ही प्रकारके भाव उत्पन्न होते हैं।

ठीक इसी प्रकार मनोभावोंकी पर्यालोचना करनेसे भी विभिन्न क्रियाओंका परिचय मिलता है। किसी अपरिचिता किशोरीके साथ एकान्तमें बैठकर यदि कोई युवक वार्तालाप करे, तो उसमें लज्जा, सङ्कोच आदि भाव देख पड़ेंगे। किन्तु किसी परिचिता आत्मीयाके साथ वार्तालाप करते समय ये सब लक्षण दृष्टिगोचर नहीं होते। यह भावान्तर केवल Sexual ही नहीं कहा जा सकता, इसका विकास मनके अन्तस्तलसे होता है। हो सकता है कि इसमें काम-वासनाका लेशमात्र भी न पाया जाय। इस भावान्तरका सम्बन्ध Soul या आत्मासे होता है। एक ही गान पांच मनुष्योंको एक-समान-भावमें कर्ण-सुखद प्रतीत नहीं होता।

कविकी यह उक्ति वैज्ञानिक दृष्टिसे सत्य है कि Star to star vibrates light may not soul to soul. इस आवेग या आत्माके रहस्यमय कम्पनके कारण ही कोई नारी अपने दरिद्र पतिको प्यार करती है और कोई उससे घृणा करती है। प्रेमकी मात्राका यह परिमापक यन्त्र पुरुष या नारीके हृदयके गोपन रहस्यको प्रकट कर देगा। इस यन्त्रकी सहायतासे मनके अन्तस्तलमें जो ऐक्य या अनैक्य भाव होगा वह सहज ही मालूम पड़ जायगा और उसकी माप लेकर विवाह-कार्य सम्पन्न होगा जिससे दम्पतिमें कभी विरोध और कलह न हो। प्रोफसर लोने यह आशा प्रकट की है कि वह शीघ्र ही इस यन्त्रको संसारके सामने सफल रूपमें उपस्थित करनेमें समर्थ होंगे।

## वैज्ञानिक हत्या

विज्ञानकी बदौलत एक ओर यदि मनुष्यके सुख-साधनमें वृद्धि हुई है तो दूसरी ओर इससे उसके विनाशका मार्ग भी बहुत-कुछ प्रशस्त कर दिया गया है। नृशंस प्रकृतिके मनुष्यों-के लिए विज्ञान आज ऐसे-ऐसे विध्वंस-साधन जुटा रहा है, जिससे मानव-जीवन पग-पगपर सङ्कटमय बनता जा रहा है।

चार वर्ष पहलेकी बात है। एक शिक्षित जर्मन युवकने अपने पिता, पत्नी, पुत्र और कन्याके जीवनका बीमा कराया। इसके बाद उसने अपने इन आत्मीय जनोंके खाद्यमें विष मिश्रित कर दिया, जिससे उनकी मृत्यु हो गयी और उसने उनके बीमेकी सारी रकम हस्तगत कर ली। कुछ समय बीतनेपर उसके एक पड़ोसीको किसी कारणवश उसपर सन्देह हुआ, जिसके फलस्वरूप इस भीषण हत्याकाण्डका पता चला और उसे सजा हुई।

शिकागोके एक करोड़पति विलियम म्याकिण्टको उसके सम्बन्धियोंने टाइफायड रोगके कीटाणु खिलाकर उसकी हत्या कर डाली। इस हत्याके रहस्यका भी बादमें भण्डाफोड़ हुआ।

रोगके कीटाणुओं द्वारा हत्या करनेकी रीति इंगलण्ड और अमेरिकामें काफी तौरसे फैली हुई है।

रूसके एक चिकित्सक डा० पञ्चेस्कोको कई आदमियोंने घूस देकर उसके द्वारा कीटाणुके प्रयोगसे दो रोगियोंकी हत्या करवायी। कीटाणुओं द्वारा रोगकी परीक्षाके छलसे इस प्रकारके हत्याकाण्ड पाश्चात्य देशोंमें विरल नहीं होते।

इंगलैण्डमें एक कानून पास हुआ है कि रोगके कीटाणु-को लेकर यदि कोई परीक्षा या गवेषणा करना चाहेगा तो उसे लिस्टर इन्स्टीट्यूटके पास आवेदन-पत्र भेजना होगा और अनुमति मिलनेपर ही वह ऐसा कर सकेगा। इस कानूनके बननेसे इंगलैण्डमें इस प्रकारके हत्याकाण्डोंकी संख्या बढ़ने नहीं पायी। किन्तु जर्मनीमें इस प्रकारका कोई कानून नहीं है। वहां इस प्रकारके हत्याकाण्ड इस समय भी हो रहे हैं। जर्मनीमें रोगके बीजाणुका मूल्य इंगलैण्डकी अपेक्षा बहुत कम है। अतएव इंगलैण्डके हत्याकारी जर्मनीसे सहज ही बीजाणु लाकर अपनी विध्वंस-वृत्तिको चरितार्थ कर सकते हैं। यह बीजाणु ट्यूबमें बिक्री होता है। एक छोटे-से ट्यूबमें जो बीजाणु होता है उसकी सहायतासे किसी ग्राम या नगरके आधे अधिवासियोंका संहार किया जा सकता है।

इंगलैण्डमें इस प्रकारका हत्याकाण्ड अभी बन्द नहीं हुआ है। अतएव इस सम्बन्धमें विशेष कानून बनानेके लिए जनताकी ओरसे आन्दोलन किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## महिला-सम्मेलनमें सन्तान-निग्रह

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलनका नवां अधिवेशन जनवरीके पहले सप्ताहमें करांचीमें हुआ। सम्मेलनमें भारत-भरकी प्रमुख महिलाओंने भाग लिया और प्राचीन मूर्खतापूर्ण रूढ़ियों और प्रथाओंके जो उपासक और विदेशी यह कहते हैं कि भारतीय महिलाओंमें जीवन और जागरण नहीं है, उनके लिए यह सम्मेलन खुले चैलेञ्जके रूपमें था। महिलाओं-ने एकस्वरसे सरकारकी प्रस्तावित सुधार-योजनाको ठुकरा दिया, क्योंकि उसमें महिलाओंकी मांगें मञ्जूर नहीं की गयी हैं। समाज-सुधार-सम्बन्धी तो कितने ही उपयोगी प्रस्ताव सम्मेलनमें पास किये गये और यदि वे वस्तुतः कार्यान्वित किये गये, जिसकी हमें आशा है, तो देशका बड़ा कल्याण होगा। महिलाओंने महात्माजीके ग्राम-उद्योग-सङ्घकी योजनाका हार्दिक समर्थन किया। सम्मेलनमें सन्तति-निग्रह तथा बहुविवाह-सम्बन्धी प्रस्ताव भी पास हुए।

सन्तति-निग्रह-सम्बन्धी प्रस्तावको उपस्थित करते हुए श्रीमती सरोजिनी मेहताने कहा कि सन्तति-निग्रहके विरुद्ध जितने प्रमाण दिये जाते हैं, उनमें सबसे अधिक जोर इस बातपर डाला जाता है कि इससे अनैतिकता फैलनेकी सम्भा-वना है। परन्तु सच तो यह है कि समाजमें जितनी भी चीजें हैं, सब प्रयोग करनेके ढङ्गपर निर्भर करती हैं। जिस वस्तुका जिस रूपमें प्रयोग किया जायगा, उसी रूपमें वह उपादेय अथवा हानिकारी हो सकती है। केवल इस भयसे कि कोई व्यक्ति इसका प्रयोग किसी बुरे कामके लिए करेगा, इस प्रणालीको ही सर्वथा त्याग देना उचित नहीं कहा जा सकता। किन्तु यदि इससे अनैतिकता फैलती भी हो, तो मैं पूछती हूं कि कितने ही ऐसे बच्चे पैदा होते हैं, जिनके भरण-पोषणका भार न तो उनके माता-पिता उठा सकते हैं और न समाज ही, तो उन्हें पैदा करनेमें क्या अनैतिकता नहीं है? जिन बच्चोंको प्रारम्भिक शिक्षा तक मिलनेकी सुविधा नहीं, उन्हें पैदा करनेमें क्या कोई अनैतिकता ही नहीं? और नारीको उसकी इच्छाके विरुद्ध प्रसवकालीन यन्त्रणा सहनेके लिए विवश करना क्या सामाजिक अपराध नहीं? सन्तति-निग्रहके विरुद्ध यह भी कहा जाता है कि यह कृत्रिम प्रणाली है, अतः इसे प्रश्रय न देना चाहिए। किन्तु मेरा तो विश्वास है कि सभ्यताकी सभी बातें प्रकृतिके विरुद्ध हैं। कपड़े पहनना और भोजन पकाकर खाना क्या अप्राकृतिक नहीं है? कुछ लोग ऐसे हैं, जो सन्तति-निग्रहके पक्षमें तो हैं; परन्तु उनका कहना है कि इसके लिए जितेन्द्रिय होना चाहिए, न कि कृत्रिम उपायोंका अवलम्बन करना चाहिए। इसके लिए वे महात्माजीका उदाहरण पेश करते हैं, परन्तु महात्माजी जो करते हैं, वही सर्वसाधारणके लिए अगर सम्भव होता, तो भारत स्वर्ग बन जाता।

हिन्दुस्तानमें प्रायः यह देखा जाता है कि नवजात शिशु वर्ष-भरके भी नहीं हो पाते कि परलोक सिधार जाते हैं। इसका क्या कारण है? इसका कारण यह है कि स्त्रियां अल्पकालमें ही इतने बच्चोंकी माता बन जाती हैं कि उनमें अत्यन्त शारीरिक कमजोरी आ जाती है और इसका परिणाम यह होता है कि वे स्वस्थ सन्तान पैदा ही नहीं कर सकतीं। इन सब कारणोंसे सन्तान-निग्रहकी बड़ी भारी आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## जापानमें मातृत्वकी शिक्षा

जापानी गजबके व्यावहारिक जीव होते हैं। वे जो-कुछ सोचते हैं, उसे बिना कार्यान्वित किये दम नहीं लेते। वे देश और समाजके कल्याणके लिए जिस किसी भी कामको आवश्यक समझते हैं, उसे कर ही डालते हैं। इस बातको सभी मानते हैं कि नारियोंको मातृत्वकी शिक्षा देना बहुत आवश्यक है, क्योंकि बच्चोंका भविष्य अच्छी माताओंपर ही निर्भर करता है। परन्तु फिर भी जापानको छोड़कर मातृत्वकी शिक्षा देनेका समुचित प्रबन्ध कदाचित् और कहीं नहीं है। जापानमें इस समय इसके लिए कई स्कूल चल रहे हैं और टोकियोका स्कूल इसके लिए बहुत ख्याति प्राप्त कर चुका है। इन स्कूलोंमें लार्डों, जमींदारों और जनरलोंकी लड़कियोंके साथ-साथ गरीबोंकी लड़कियोंको भी मातृत्वकी शिक्षा दी जाती है। इस बातकी शिक्षामें ऊंच-नीचका कोई भी भेद-भाव नहीं रखा जाता और सभीको समान रूपसे शिक्षा दी जाती है।

इन स्कूलोंमें वही लड़कियां भरती की जाती हैं, जिनकी अवस्था अधिक हो चुकी होती है और जिनके ब्याहके दिन निकट रहते हैं। जापानी लड़कियोंमें आर्य-संस्कृतिकी गहरी झलक है और आर्य ललनाओंकी तरह ही उनमें भद्रता, अनुशासनप्रियता, गुरुजनोंके प्रति सम्मान और बच्चोंकी देख-रेख करनेकी भावनायें पायी जाती हैं। लड़कियोंको अन्यान्य बातोंके साथ-साथ यह भी सिखाया जाता है कि चलते समय गति कैसी रखी जाय, गुलदस्ते किस तरह सजाकर रखे जायें और चायका प्रबन्ध कैसे किया जाय। उन्हें सामाजिक नियम सिखाये जाते हैं और सिखाया जाता है कि दूसरोंके प्रति बर्ताव कैसा किया जाय। दस्तकारीकी शिक्षाके साथ-साथ उन्हें गान और वाद्यकी भी शिक्षा दी जाती है।

लड़कियोंको सीने-पिरोने और पाक-शास्त्रकी भी शिक्षा दी जाती है। उन्हें दोपहरको स्कूलमें ही भोजन करना पड़ता है और इस भोजनको वे स्वयं तैयार करती हैं। जापानी महिलायें काम करनेसे जी कभी नहीं चुरातीं, फिर भी प्रत्येक बालिकाको व्यावहारिक शिक्षा देनेके ख्यालसे यह नियम बनाया गया है कि बारी-बारीसे सभी भोजन बनायें। लड़कियोंको ही अपने बर्तन भी मांजने पड़ते हैं।

परन्तु सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण शिक्षा तो उनकी होती है बच्चोंकी देख-रेखके सम्बन्धमें। घरको साफ कैसे रखा जाय, बच्चोंकी रक्षा किस तरह करनी चाहिए, बच्चेका पालन-पोषण, उसकी दवा-दारू और उसके स्वास्थ्य और सौन्दर्यकी रक्षा आदि विषय बहुत बारीकीसे समझाये जाते हैं। इसी शिक्षाके परिणाम-स्वरूप जापानमें बाल-मृत्यु औसतन् बहुत कम है।

टोकियोके विख्यात स्कूलमें १६ कमरे हैं। पाठशाला, भोजनगृह और शयन-गृह भी इसीमें हैं। स्कूल एक सुन्दर उद्यानमें है। कुछ लड़कियां अपने अध्ययन-कालमें पाठशालामें ही रहती हैं। पहला कोर्स ६ महीनेमें समाप्त हो जाता है, परन्तु यदि कोई लड़की चाहे तो ६ महीने तक और शिक्षा प्राप्त कर सकती है। प्रायः देखा जाता है कि अधिकांश लड़कियां इस प्रकारकी उच्च शिक्षा अवश्य प्राप्त करती हैं।

राजकुमारी अमृत कुंवरि

आप कपूरथलाके सर हरनाम सिंहकी पुत्री और नारी आन्दोलनमें जीवन फूंकनेवाली सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्री हैं। समाचार मिला है कि आपने अपनी सारी व्यक्तिगत सम्पत्ति महात्माजीके चरणोंपर उत्सर्ग कर उनके ग्राम-उद्योग सङ्घमें तन-मन अर्पण करनेका निश्चय किया है।

## सन्तान, पति, या दोनों ?

आप कभी इस बातकी कल्पना भी कर सकते हैं कि कोई पत्नी पतिके प्रेमके लिए अपनी सन्तानकी हत्या कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



डालेगी ? पहले तो आप इस बातको सुनकर चौंक पड़ेंगे और कहेंगे, पतिके प्रेमके लिए सन्तानकी हत्या ? लेकिन बादको इसे असम्भव समझते हुए हंसकर उड़ा देंगे। परन्तु वास्तवमें यह एकदम असम्भव घटना नहीं है। प्रेमकी दुनियामें सब-कुछ सम्भव है और पहली बार जब कोई पत्नी माता बनती है तब उसके मनोभाव कुछ इस प्रकारके उलझे हुए होते हैं कि उसकी समझमें नहीं आता कि क्या करना चाहिए। उस समय उस स्त्रीकी दो अवस्थायें होती हैं और उसका प्रेम, उसके विचार, उसकी भावनायें, उसकी चाह और परवाह दो व्यक्तियोंपर अटकने लगती हैं। पत्नीके रूपमें पति ही उसका सर्वस्व है, उसके सर्वस्वका अधिकारी है, और माताके रूपमें वह अपने नवजात लाड़लेको ही अपना सब-कुछ मानती है। फिर तो वह किसीको भी अपने उस प्रेमका हिस्सेदार नहीं बनाना चाहती।

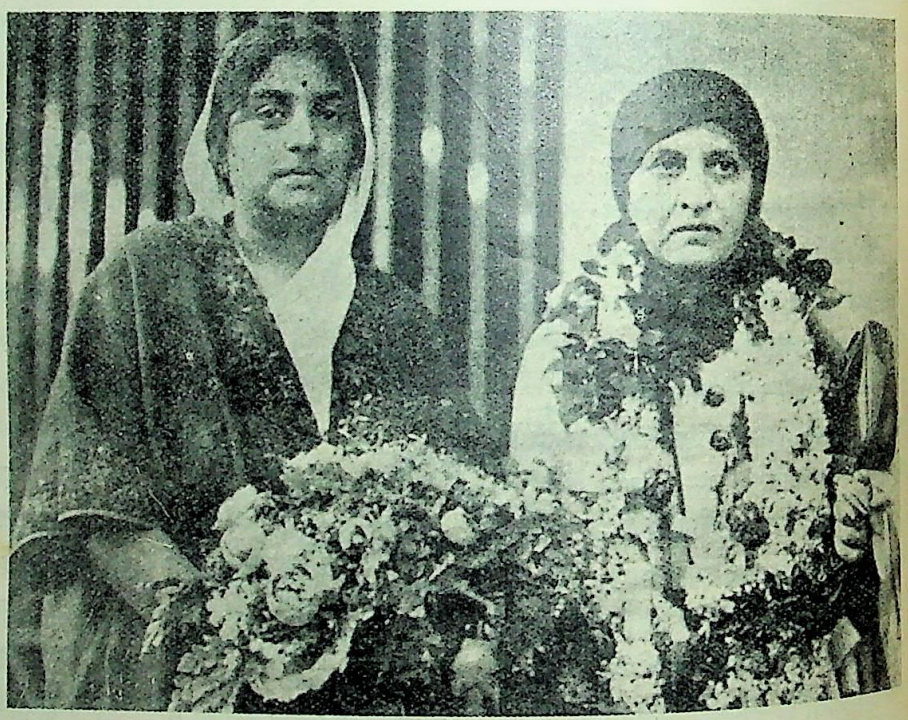

बेगम हमीदा अदीब (दाहिनी ओर)—आप टर्कीकी एक सफल उपन्यास-लेखिका तथा समाज-सुधारक कार्यकत्री हैं। इन दिनों आप भारतमें समाज-सुधार सम्बन्धी वक्तृताएं दे रही हैं। बम्बईमें जहाजसे उतरते समय आपका यह चित्र लिया गया था। आपकी बायीं ओर श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय खड़ी हैं।

परन्तु यदि ऐसा न हुआ तो ? यदि सन्तान हीको उसने अपने पति-प्रेमके मार्गमें बाधा समझ लिया तो उसकी अवस्था क्या होगी ? ठीक ऐसे ही विचारोंकी उलझनमें पड़कर एक गौराङ्ग रमणीने अपने नवजात शिशुकी हत्या कर डाली थी। वह रमणी है न्यूपोर्टकी मिसेज ईथेल विक्टोरिया राबर्ट्स। उसपर जब अपने ही बच्चेकी हत्या करनेका अभियोग लगाया गया तब लोगोंमें बड़ी सनसनी फैली। लेकिन अदालतमें दिया हुआ उसका वक्तव्य तो और भी सनसनीखेज निकला। उसने अपने बयानमें अपना अपराध स्वीकार करते हुए कहा कि "मैंने अपने शिशुकी हत्या कर डाली और खूब जानबूझकर। मैंने बच्चेके गलेमें जञ्जीर डालकर कस दिया और.....! उसके पैदा होनेके समयसे ही मैंने समझ लिया कि यह बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। मैं बुरी तरह तङ्ग आ गयी। मैं अपने पतिको इतना प्यार करती हूं कि उसके प्यारके लिए ही बच्चेकी हत्या कर डाली!"

उक्त महिलाके शब्द-शब्दसे घबराहट टपक रही है और बहुत सम्भव है कि इसी पागलपनमें उसने ऐसा पापमय कुकृत्य कर डाला हो। कोई भारतीय रमणी इस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकती। वास्तवमें है भी यह अत्यन्त नृशंस व्यापार और अनावश्यक होनेके कारण यह और भी बर्बरतापूर्ण कार्य हो जाता है। ऐसी घटनायें असम्भव न होती हुई भी असाधारण हैं और ऐसी मातायें भारतमें कदापि न मिलेंगी, यह सत्य है। परन्तु इसके साथ ही यह भी सत्य है कि प्रथम सन्तानके होनेके साथ ही स्त्रियोंकी मनोवैज्ञानिक अवस्थामें बड़ा परिवर्तन होने लगता है। सन्तानके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिए कोई पत्नी पतिकी अथवा पतिके लिए सन्तानकी हत्या कर डाले, यह तो कदाचित् यूरोपके ही वासनामय लोकमें अधिक सम्भव हो; परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें खूब संभलकर काम करना चाहिए, नहीं तो गलतफहमी फैलनेकी बड़ी आशङ्का रहती है। पति-पत्नीमें जहां जरा भी सन्देहकी गुञ्जाइश हुई नहीं कि मामला खतम! फिर तो घर नरक बन जायगा। इसलिए ऐसी परि-

श्रीमती नानकचन्द—आप श्रीयुत नानकचन्द एम० एल० सी० की धर्मपत्नी हैं। आप इंगलैण्ड हो आयी हैं। आप समाज-सुधारके कार्योंमें बढ़कर भाग लेती हैं।

स्थितियोंसे बचना चाहिए और इसकी जिम्मेदारी बहुत-कुछ स्त्रियों ही पर है, क्योंकि स्त्रियां बहुत-कुछ एकाङ्गी होती हैं। उनके प्रेमका केवल एक ही अधिकारी होगा। वे प्रेममें बंटवारा नहीं करना चाहतीं। हमने ऐसी कितनी ही सुन्दरियोंको देखा है जिनके पति पहले बहुत सन्तुष्ट रहते थे, परन्तु सन्तान हो जानेपर उनमें मनमुटाव पैदा हो गया। इसका क्या कारण है? कारण केवल यही है कि स्त्रियां अपने बच्चोंके ही लाड़-प्यार और सेवा-शुश्रूषामें इतनी लग जाती हैं कि उन्हें अपने पतियोंकी परवाह ही नहीं रह जाती।

इस स्थलपर प्रश्न यह उठता है कि क्या स्त्री एक साथ ही अपने पति और सन्तान दोनोंको प्यार नहीं कर सकती? स्त्रीका जीवन पत्नी और माता दोनों रूपमें बहुत ही मधुर, बहुत ही आकर्षक और बहुत ही प्रिय है। स्त्रियां दोनोंमेंसे किसी एकसे ही सन्तुष्ट नहीं हो सकतीं। फिर भी स्त्री जातिका स्वभाव कुछ ऐसा है कि वे अपने मातृ-जीवनको अधिक पसन्द करती हैं। पत्नी-जीवन बिताते रहनेपर भी अधिकांश स्त्रियोंकी सबसे बड़ी लालसा माता बननेकी होती है, इस सत्यको स्वीकार कर लेनेपर इसे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि जब स्त्रियोंकी यह सर्वोपरि लालसा पूरी हो जाती है और उनकी गोदमें एक चांद-सा मुखड़ा हंसने लगता है तब वे बहुत-कुछ पतिसे दूर हट जाती हैं। यह बात नहीं है कि वे पतिको प्यार ही न करती हों, बल्कि वास्तविक बात यह है कि वे पुत्रके सामने पतिको प्यार करनेमें उदासीन रहती हैं, उसे बहुत अंशोंमें वे अनावश्यक-सा समझने लगती हैं। इस बातको विचारते समय यही कहा जा सकता है कि मिसेज राबर्ट्स-सम्बन्धी उक्त घटना एक प्रकारसे असाधारण-सी है। क्योंकि प्रेम तो दोनोंमें रहता ही है, केवल उसका प्रकाशन रुक जाता है। हां, बीचमें कोई और सन्देह प्रेमका मार्ग रोके रहे, यह और बात है। सन्देह प्रेमका जबर्दस्त शत्रु है। दोनों एक साथ, एक स्थानपर रह ही नहीं सकते। इसलिए पति-पत्नी दोनोंको ऐसी परिस्थिति उत्पन्न ही न होने देना चाहिए जिससे सन्देह उत्पन्न होनेकी आशङ्का हो।

मैं एक ऐसे पुरुषको जानती हूं जिसकी पत्नी उसके मनोरञ्जनका कारण बनी रहती थी, परन्तु आजकल यह बात नहीं रह गयी है। उनकी पत्नी खूब पढ़ी-लिखी है और पतिके अनुरूप ही वह सभी दिशाओंमें है। पहले जब पतिदेव अपने कामपरसे आते थे, तब पत्नीका मुसकराता हुआ चेहरा उनकी सारी थकान मिटा देता था। दोनों एक-दूसरेको देखकर प्रसन्न हो जाते थे, मानो दिन-भरकी कड़ी प्रतीक्षाके बाद मिल रहे हों। वे अपनी खुली छतपर बैठ जाते थे और न जाने कितनी बेमतलबकी भी बातें करते रहते। दिन-रात



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उनकी बातें समाप्त ही न होती थीं। किन्तु अब उन्हें एक बच्चा पैदा हो गया है और अब वह सभी पुरानी बातें स्वप्न-सी मालूम होती हैं। बीबीजी सदा बच्चेमें ही लीन रहती हैं, अब उन्हें मतलबकी भी बात सुननेका अवकाश नहीं। पति-देव बेचारे आते हैं और कुर्सीपर गिर पड़ते हैं, और जब बीबी-को बुलाते हैं तो उत्तर मिलता है—"जरा धीरेसे बोलो, बच्चा सो रहा है!" बेचारे पतिदेव लाचार हैं। सौभाग्य या दुर्भाग्यसे वे एक उच्च अफसर हैं, इसलिए सर्वसाधारण भी उनके पास नहीं जा सकते। अकेले उनका जीवन जैसे भार-सा हो गया है।

इस प्रकारकी लापरवाही कभी भी अच्छी नहीं कही जा सकती। अपने इस तरहके कामोंसे स्त्रियां न केवल अपने पतिका अहित करती हैं, बल्कि बच्चोंका भी। जिन बच्चोंकी इतनी अधिक परवाह और इतना अधिक लाड़-प्यार किया जाता है, उन्हें आगे चलकर जीवन-संग्रामसे स्व-भावतः बड़ी हिचक हो जाती है और इसका फल यह होता है कि वे जीवनमें बहुत अंशोंमें असफल ही रह जाते हैं। तो फिर भला ऐसे प्यारसे क्या लाभ कि पति भी असन्तुष्ट रहे और सन्तानका भी भवि-ष्य बिगड़े? इसलिए स्त्रियों-को इस प्रकारकी नादानी कभी नहीं करनी चाहिए। उन्हें हमेशा यह बात ध्यानमें रखनी चाहिए कि दो व्यक्तियोंके प्रति उन्हें समान-रूपसे उत्तरदायी रहना है। उन्हें पति और सन्तान दोनोंकी ओर समान-रूपसे आकर्षित रहना होगा। किसी ओरकी भी उदासीनता हितकर नहीं होगी।

—प्रियम्वदा देवी

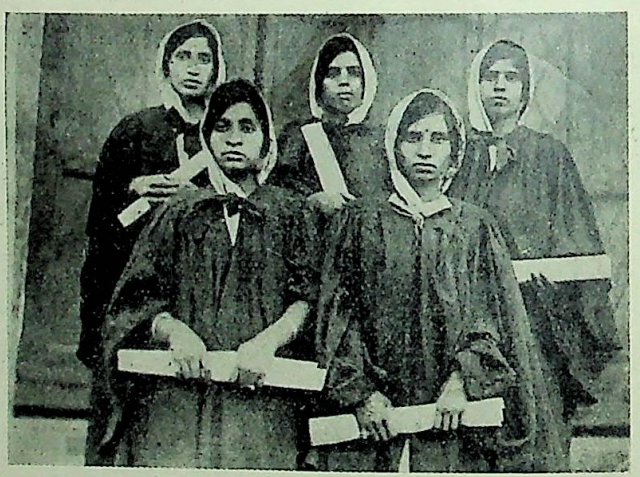

कन्या महाविद्यालय, जालन्धरकी कुछ छात्राएं। ये देवियां पिछली बार महाविद्यालयसे ग्रेजुएट बनकर निकली हैं।

## पर्देको फाड़ फेंको

पर्दा-प्रथाकी हानियों तथा उसकी अनावश्यकतापर प्रकाश डालते हुए एक भारतीय महिलाने जोरदार शब्दोंमें अपने विचारोंको प्रकट करते हुए लिखा है :—

पर्देकी घृणित प्रथापर जब कभी कोई विचार करता है, उस समय वह यही सोचता है कि भारतमें इस प्रथाका जन्म मुसलमानी शासनकालमें हुआ; परन्तु बेगम जोहरा फैजीकी रायमें पर्देकी प्रथा इस्लाम-धर्मके सख्त विरुद्ध है। साथ ही स्वास्थ्यके लिए इससे अधिक हानिकारक बातकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारतकी अनेक हानिकर रूढ़ियों-की तरह ही पर्देकी प्रथा भी यहां बहुत दिनोंसे चली आ रही है। बहुत दिनोंसे राजे-महाराजे तथा सुसम्पन्न व्यक्ति यही उचित समझते रहे हैं कि उनके घरकी महिलायें पर्देकी ओटमें रहें और सर्वसाधारणसे न मिलें। भारतीय रमणियोंके सम्बन्धमें एक स्थानपर 'असूर्यपश्या' भी कहा गया है। प्राचीनकालमें भारतपर विदेशी बर्बर जातियोंके आक्रमण होते रहे हैं और उन्हींसे रक्षा करनेके लिए पर्देकी घृणित, परन्तु तत्कालीन परिस्थिति-को देखते हुए आवश्यक प्रथाका अवलम्बन करना पड़ा। परन्तु आज जब इस-की कोई आवश्यकता नहीं रह गयी है तब इस पर्देको फाड़कर फेंक देना चाहिए। भगवान्‌ने स्त्री-पुरुष सबके लिए हवा और प्रकाश प्रदान किये हैं, परन्तु भारतीय महिलाओंको पर्देके कारण इन दोनों ही जीवनोपयोगी वस्तुओंसे वञ्चित रह जाना पड़ता है और इसका फल यह होता है कि उन्हें कितने ही रोग घेर लेते हैं और असमयमें ही काल-कवलित हो जाना पड़ता है। बालकोंकी मृत्यु-संख्याका औसत भारतमें सबसे अधिक है और इसके लिए पर्दा भी बहुत अंशोंमें जिम्मेदार है।

पञ्जाबमें देखा गया है कि जो महिलायें पर्देमें रहती हैं, उन्हें एक अस्थि-रोग हो जाता है। यह रोग बहुधा उस समय होता है जिस समय बच्चा पैदा होनेका समय होता है। गोशा जातिकी महिलायें घोर पर्देमें रहती हैं और उनकी अस्थियोंको दृढ़ताके लिए सूर्य-प्रकाश प्रचुर परिमाणमें न मिलनेका परिणाम यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



होता है कि वे भद्दी हो जाती हैं। पर्देमें रहनेवाली स्त्रियोंको यक्ष्माकी भी बीमारी होनेका बहुत भय रहता है। कौन नहीं जानता कि यह बीमारी यदि एक बार शरीरमें आयी तो सारे परिवारके चौपट हो जानेकी आशङ्का रहती है और परिवार-भर न सही, तो रोगीकी सन्तानपर तो इसका आक्रमण होगा ही।

पर्देका न केवल शरीरपर बल्कि मस्तिष्कपर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। पर्देमें रहनेवाली महिलाओंके बौद्धिक विकासका द्वार अवरुद्ध हो जाता है। देखा गया है कि

श्रीमती निशामणि पाल—आपने अखिल भारतीय महिला-सम्मेलनकी तामिल नायडू शाखाके महिला-सम्मेलनका अध्यक्षासन सुशोभित किया था।

कितनी ही बालिकाओंकी शिक्षा इस कारण समाप्त हो जाती है कि तारुण्य आनेके साथ-साथ उन्हें लोग पर्देमें रखने लगते हैं और इस देशमें कितने परिवार इतने सम्पन्न हैं कि पर्दा-नशीन महिलाओंके लिए शिक्षिकाओंका प्रबन्ध कर सकें? जो लोग पर्दा हट जानेसे नैतिकताके विलोप हो जानेका अज्ञानमय स्वप्न देखते हैं, वे भूल करते हैं। रमणियोंको पतित करनेकी सबसे अधिक जिम्मेदारी पुरुषोंपर ही है। फिर पुरुषोंके पापके लिए स्त्रियां कष्ट क्यों झेलें?

पुरुषोंने स्त्रियोंको पहले तो पर्देके भीतर रखकर उनके साथ यह अन्याय किया कि संसारकी गति-विधियोंसे उन्हें अलग रखा और इसके साथ ही उन्हें पर्देके कारण परावलम्बी भी बना डाला। न वे पर्देसे निकलेंगी और न परावलम्बनसे उनका पिण्ड छूटेगा। इस दशामें महिलायें पर्देकी ओटमें रहकर अपना अहित कर रही हैं।

पर्देकी प्रथासे महिलाओंकी अपनी जो-कुछ हानि होती है, सो तो होती ही है, इसके अतिरिक्त समाजकी भी बड़ी भारी हानि इससे होती है। अरस्तूने एक स्थानपर लिखा है

श्रीमती ललिता—आपको मद्रास यूनिवर्सिटीमें सङ्गीतमें उपाधि प्राप्त है। आप दक्षिण भारतकी ख्यातनामा सङ्गीत-कुशला-नारी हैं।

कि अगर किसीको किसी समाजकी वास्तविक अवस्थाकी जानकारी प्राप्त करनेकी इच्छा हो तो उसे उस समाजकी महिलाओंकी अवस्थाकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। महाप्रतापी नेपोलियनके शब्दोंमें महिलाओंकी अवस्था सभ्यताका सबसे सच्चा पैमाना है। इस दशामें समाजमें महिलाओंकी जो स्थिति है, यदि उसीको मापक-दण्ड बनाकर भारतीय समाजकी अवस्था जांची जाय तो कौन नहीं स्वीकार करेगा कि भारत अभी बहुत पिछड़ा हुआ है और इसको बहुत-सी बातोंमें तो अभी भी बहुत-कुछ बर्बरता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर्दे को कुरानके एक उल्लेख द्वारा इस्लाम-धर्मका एक अङ्ग मानकर जो गलती की जा रही है, वह जाहिर करती है कि कुरानकी उस बातका मर्म समझनेमें कुछ लोग भूलें करते हैं। कुरानमें एक स्थानपर कहा गया है कि—"विश्वास करनेवाली नारियोंसे मैं कहता हूं कि वे अपने सिरकी पोशाकको इस तरह पहनें कि उनका वक्षस्थल भी ढंका हुआ रहे और उनके आभूषण न दिखाई पड़ें।"

पैगम्बर साहबके इन शब्दोंका अर्थ यह कदापि नहीं है कि नारियां जेलखानेमें रहें। उन्होंने तो उक्त शब्दोंमें तहजीब सिखायी है—सभ्यताके नियम बताये हैं। पुरुषोंके लिए सभ्यताकी ऐसी ही बातें कुरानमें कही गयी हैं। जिस प्रकारकी दासता आज नारियोंके गले मढ़ दी गयी है, उसका तो कुरान-कारने स्वप्न भी नहीं देखा था और जिस इस्लाम-धर्मपर पर्देकी नाशकारी प्रथाके प्रचलन करनेका अभियोग लगाया जाता है, उसके महिलाओंके अधिकार-सम्बन्धी विधानपर विचार किया जाय तो स्पष्ट हो जाता है कि यह बात सर्वथा भ्रम-जनित है। इस्लाम-धर्ममें स्त्री-पुरुषकी समानता स्वीकार की गयी है और पिताकी सम्पत्तिमें लड़केके साथ लड़कीका भी हिस्सा लगाया जाता है। आवश्यकता पड़नेपर तलाक तक देनेका समान अधिकार स्त्री-पुरुष दोनोंको प्राप्त है। किन्तु इस्लाम-धर्मने स्त्रियोंको जो कुछ भी दिया है, नाशकारी पर्देने सब-कुछ छीन लिया है। इसके साथ ही मजेदार बात तो यह है कि स्त्रियां स्वयं तो पर्देको फाड़कर बाहर आ जाना चाहती हैं, परन्तु पुरुष इस काममें अड़ङ्गा डाल रहे हैं! किन्तु हर्षकी बात है कि इस दासतामय अन्धकार-भरे बन्दी जीवनकी हानियोंको स्त्रियोंने समझ लिया है और वे अब पर्देको फाड़ फेंकेंगी।

---


# मकान कैसे बनावें ?

**अर्थात् आधुनिक भवन-निर्माण-प्रणाली**

जिसको बम्बईके गवर्नरने अपने Village Improvement Manual में मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है।

पृष्ठ संख्या ४५०, चित्र १७४, बढ़िया छपाई,

**मूल्य ३) डा० ख० ।≡)**

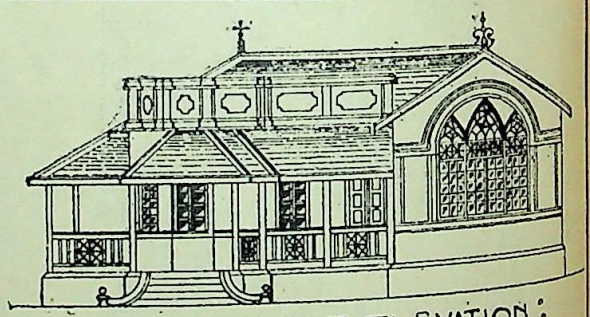

: FRONT ELEVATION :

जिसको एक ही वर्षमें चार विभिन्न देशी भाषाओंमें अनुवाद होनेका श्रेष्ठसम्मान मिला है और अंग्रेजीमें भी प्रकाशित हो रहा है। उसमें ये हैं लागत, किफायत, स्थान और दिशा निर्धारण, शिल्प ( Architecture ) अन्तरंग, अन्दाज, ठेका, नींव, चौको, तहखाना, नोनेका प्रतिबन्ध, दिवालें, दरवाजे, खिड़कियां, छावन, जीना, शास्त्रीय चूल्हा, पाटन, गिलखा फर्श, छप्पर, रंगरोप, छुवाई, नाली, रचना, रिइनफोर्स्ड कंक्रीट रचना इत्यादि। हिन्दी सामान्य (laymen) पाठकोंके लिये साफ-सुथरी भाषामें लिखी हुई अनोखी पुस्तक।

**2. Residential Buildings suited to India.**

310 pages of large size, Art paper, 265 illustrations **Price Rs. 6/-** postage 11 as. contains valuable notes on, aspect, prospect, sanitation, principles of scientific planning Furniture, Decoration, colour schemes etc. etc. with plans of very comfortable 90 houses such as cottages, bungalows, flats, mansions, palaces with costs and constructional details. Invaluable to every body from laymen to engineers, **Mysore Economic Journal**—An **excellent** practical book for amateur builders and engineers.....**Altogether an excellent book. Hindustan Review, Patna**—An **excellent treatise** ...should prove helpful especially to middle classes. **Hindustan times**—An excellent work...of great Educational value. **Local Self Govt. Journal—A very able and useful book.**

*Apply to your book seller or the author.*

**पं० श्रीरघुनाथजी देशपाण्डे** B.E.,A.M.I.E. इञ्जिनियर कोपरगांव जि० अहमदनगर (BOMBAY)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## स्त्रियां प्रतिरोध करना सीखें

कोचीनकी श्रीमती कुट्टन नायर एक विदुषी एवं प्रगतिशील विचार धारण करनेवाली महिला हैं। आप समाज-सुधार तथा महिलाओंमें शिक्षा-प्रचारके कार्योंमें विशेष रूपसे दिलचस्पी लेती हैं। अभी हालमें करांचीमें जो अखिल भारतीय नारी-सम्मेलन हुआ था, उसकी कार्यवाहियोंमें आपने प्रमुख भाग लिया था। करांची-सम्मेलनसे लौटकर आपने दिल्लीमें महात्मा गांधीके साथ ऐसे कितने ही विषयोंपर वार्तालाप किया, जो इस समय समाजके सामने विशेष-रूपमें विचारणीय हो रहे हैं। श्रीमती कुट्टनने खास तौरसे दो विषयोंपर महात्मा गांधीका मतामत जानना चाहा—एक तो बालक-बालिकाओंकी सहशिक्षाके सम्बन्धमें और दूसरे सन्तति-निरोधके सम्बन्धमें। इन दोनों ही विषयोंपर महात्माजीने अपनी स्पष्ट सम्मति प्रकट की। सहशिक्षाका परिणाम देशके लिए मङ्गलजनक होगा या नहीं, इस सम्बन्धमें गांधीजीको सन्देह है। इसका प्रयोग अभी थोड़े दिन हुए, पाश्चात्य देशोंमें आरम्भ हुआ है। किन्तु गांधीजीके मतसे यह प्रयोग पश्चिममें भी सफल नहीं हो रहा है। अतएव इसके परिणामके सम्बन्धमें अभी निश्चयात्मक रूपसे कुछ भी नहीं कहा जा सकता। स्कूल-कालेजोंमें सहशिक्षाकी प्रथा प्रचलित की जाय, इसके बजाय गांधीजीके मतसे यह कहीं अच्छा होगा कि पहले कुटुम्बसे ही इसका आरम्भ किया जाय। अर्थात् कुटुम्बमें बालक और बालिकाओंका लालन-पालन एवं विकास इस प्रकार स्वच्छन्द एवं स्वाभाविक रूपमें हो, जिससे बचपनसे ही उनमें स्त्री-पुरुषके सम्बन्धकी भावना न रह जाय और आगे चलकर इस सम्बन्धमें उनके मनमें किसी प्रकारके रहस्यजनित कौतूहलका भाव उत्पन्न न हो। बालक-बालिकाओंका इस रूपमें स्वाभाविक विकास होनेसे सहशिक्षाका प्रश्न आप-ही-आप हल हो जायेगा और ऐसी अवस्थामें सहशिक्षासे उत्पन्न होनेवाली सम्भवनीय आशङ्काओंके लिए कोई स्थान ही नहीं रह जायगा।

कृत्रिम उपायों द्वारा सन्तान-निग्रहके सम्बन्धमें गांधीजीने जो विचार प्रकट किये हैं, उनपर भी विचार किया जाना आवश्यक है। यह तो जानी हुई बात है कि गांधीजी कृत्रिम उपायों द्वारा सन्तान-निग्रहके सर्वथा विरोधी हैं। इसके लिए आप इन्द्रिय-संयमको ही एकमात्र उपाय मानते हैं। इन्द्रिय-संयमका आदर्श सर्वोपरि है, इस बातसे तो उन लोगोंको भी इनकार नहीं हो सकता, जो कृत्रिम उपायोंके सम्बन्धमें गांधीजीसे सहमत नहीं हैं। उनका मत-भेद केवल व्यवहारिकताके प्रश्नको लेकर है। अर्थात् इन्द्रिय-संयमका आदर्श महान् एवं पवित्र होनेपर भी वह सबके लिए सहज नहीं है, अतएव वह व्यावहारिक नहीं कहा जा सकता। ऐसी स्थितिमें जो लोग इन्द्रिय-संयमके आदर्शका पालन न कर सकें, उनके लिए कृत्रिम उपायोंके अवलम्बनके सिवा और दूसरा मार्ग ही क्या रह जाता है, यही युक्ति सन्तति-निरोधके हिमायतियों द्वारा उपस्थित की जाती है। किन्तु इस सम्बन्धमें महात्माजीने एक और मार्केकी खास बात कही है, जिसकी सत्यताके सम्बन्धमें हम आंख नहीं मूंद सकते। श्रीमती कुट्टनने जब यह प्रश्न किया कि बहुत-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विवाहिता स्त्रियोंपर जबर्दस्ती मातृत्व लाद दिया जाता है और अनेक सन्तानकी माता होनेके कारण कृशशरीर एवं क्षीणबल होनेपर भी उन्हें मातृत्वका भार वहन करना पड़ता है, तो क्या ऐसी स्त्रियोंकी रक्षाके लिए कृत्रिम उपायोंका अवलम्बन न किया जाय ? इसके उत्तरमें गांधीजीने कहा कि ऐसी स्त्रियोंको अपने पतियोंकी कामेच्छाओंका प्रतिरोध करनेका अभ्यास करना चाहिए। गांधीजीके इस उत्तरमें जो यथार्थता एवं सारवत्ता है, उसीके सम्बन्धमें हम यहां विशेष रूपसे विचार करेंगे।

इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि पत्नियोंके ऊपर जबर्दस्ती मातृत्वका भार लादनेकी जिम्मेवारी अनेकांशमें पतियोंके ऊपर ही है। स्त्रियोंमें सङ्कोचशीलता अथवा लज्जाके कारण (वह चाहे जिस कारणसे हो) स्वभावतः ही संयम एवं वासनादमनकी मात्रा पुरुषोंकी अपेक्षा अधिक होती है। इसके विपरीत पुरुष-समाज अपनी काम-वासनाओंका दमन करनेमें बहुधा शिथिल देखा जाता है। समाजमें स्त्रियोंकी जो हीन स्थिति है, उससे अनुचित लाभ उठाकर पुरुष अपनी काम-वासनाको चरितार्थ करनेके लिए स्त्रीपर अत्याचार करनेमें अणुमात्र भी कुण्ठित नहीं होता। हिन्दू-समाजमें जन्मसे ही बालिकाको यह शिक्षा दी जाती है कि उसका जन्म इसलिए हुआ है कि वह किसी पुरुष-विशेषकी पत्नी बनकर उसे अपना तन-मन-प्राण सब-कुछ अर्पण कर दे, अपने सुख-दुःख, रोग-शोक, स्वस्थता-अस्वस्थताकी कुछ भी चिन्ता न करके अपने पतिकी इच्छाओंकी वशवर्तिनी बनी रहे, उसके सुखमें ही अपना सुख समझे। इस प्रकारकी शिक्षाओंके वातावरणमें पली हुई एक अबोध, निरीह एवं साध्वी हिन्दू बालिका जब विवाहित होकर अपने पतिके घर आती है, तब उसे अपने पतिदेवकी कामवासनाओंकी बलिवेदीपर अपने समस्त सुख, स्वास्थ्य एवं स्वाच्छन्द्यको बलिदान कर देना पड़ता है। पतिकी इच्छाके सामने उसकी इच्छाओंकी कोई गणना ही नहीं है। उसका शरीर अस्वस्थ है अथवा किसी कारणसे वह अन्यमनस्क है, जिससे किसी आनन्दोल्लासमें भाग लेनेमें वह अपनेको असमर्थ पाती है। फिर भी उसे अपने पतिदेवकी इच्छाके सामने नतमस्तक होना ही पड़ता है। इसी प्रकार अल्प वयमें सन्तानवती होनेके कारण पत्नीका स्वास्थ्य भग्न हो गया है, अथवा उसे प्रसूता हुए अभी ६ मास भी व्यतीत नहीं हुए, कई सन्तानकी माता होनेके कारण मातृत्वका भार वहन करनेमें वह सर्वथा असमर्थ है, किन्तु इस अवस्थामें भी उसे बाध्य होकर सर्वथा अनिच्छापूर्वक अपने कामुक पतिकी इन्द्रिय-लालसाको तृप्त करना पड़ता है। इतना ही नहीं, बल्कि पुरुष-समाज इतना संयमहीन और इन्द्रियपरायण बन गया है कि वह अपनी गर्भवती पत्नी (चाहे थोड़े दिनका ही गर्भ क्यों न हो) के प्रति भी संयमका भाव धारण नहीं कर सकता। इन बातोंमें कोई अतिशयोक्ति या अतिरञ्जना नहीं है। आज प्रायः प्रत्येक हिन्दू गृहस्थके घरमें इस प्रकारकी घटनायें हो रही हैं, जिनके परिणाम-स्वरूप हमारा गृहस्थ-जीवन निरानन्दमय एवं भार-स्वरूप हो रहा है। पत्नी पतिकी दासी है, उसकी परिचारिका है, वह परवशा है, इसलिए उसे अपना रूप, यौवन, स्वास्थ्य, सुख सब-कुछ पतिकी लालसाकी भेंट चढ़ा देना होगा। कामुक पति पत्नीकी इस परवशा स्थितिसे लाभ उठाकर उसकी देहके प्रति यथेष्ट अत्याचार कर सकता है, अल्प वयमें ही उसे यौवनके सुखसे वञ्चित कर सकता है, बहुसन्तानके भारसे उसके स्वास्थ्यका संहार करके उसे अकालमें ही यमपुरी भेज सकता है और स्वयं दूसरा विवाह करके अथवा विवाह किये बिना भी व्यभिचार द्वारा अपनी भोग-लालसाओंकी पूर्ति कर सकता है। पुरुष-स्त्रीके इस हृदयहीन सम्बन्धको लेकर जहां गृहस्थाश्रमका निर्माण होता है, वहां यदि दुःख, दैन्य, शोक एवं चिन्ताका साम्राज्य हो, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है !

अतएव हमारे देशके स्त्री-समाजके सामने यह एक विषम समस्या है, जिसका प्रतिकार एकमात्र स्त्रियोंके हाथमें ही है। पत्नियोंमें इतना संयम और आत्मबल होना चाहिए, जिससे वे अपने पतियोंकी असंयत कामवासनाओंका प्रतिरोध कर सकें और अपने शरीर, रूप, यौवन एवं स्वास्थ्य-सुखको पतियोंके अत्याचारसे रक्षा कर सकें। नारियोंमें यह आत्मबल आये बिना उनके प्रति पुरुषके हृदयमें जो अवज्ञा एवं उपेक्षाका भाव है, वह दूर नहीं हो सकता और न कुटुम्बमें उनकी स्थिति उन्नत हो सकती है। जिस समय स्त्रियोंमें अपने संयमके बलपर इस प्रकार प्रतिरोध करनेकी शक्ति उत्पन्न हो जायगी, उस समय सन्तान-निग्रहकी समस्या आप-ही-आप अनेकांशमें हल हो जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## घूसखोरी और साम्प्रदायिकता

लाहौर हाईकोर्टके प्रधान न्यायाधीश सर जे० डी० यङ्ग अभी हालमें अपने दौरेमें हिसार जिलेकी दीवानी और फौजदारी अदालतोंके कार्योंका निरीक्षण करने गये थे। स्थानीय बार लाइब्रेरीकी ओरसे आपका अभिनन्दन किया गया। इस अवसरपर भाषण करते हुए प्रधान विचारपति सर जे० डी० यङ्गने कुछ ऐसी बातें कही हैं जो विशेष रूपसे उल्लेख योग्य हैं। आपने कहा कि "मैं यहां किसी राजनीतिक विषयकी आलोचना नहीं करना चाहता, क्योंकि मेरा कार्य न्याय-विभागसे सम्बन्ध रखता है। किन्तु इस अवसरपर मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि भारतके पूर्ण स्वायत्त-शासन प्राप्त करनेके मार्गमें दो प्रधान बाधायें हैं—घूसखोरी Corruption और साम्प्रदायिकता। जितना शीघ्र ये दो पाप दूर हों उतना ही भारतके लिए मङ्गलजनक है। भारतने अनेक महापुरुषोंको उत्पन्न किया है। संसारके किसी भी देशके महापुरुषोंके साथ उनकी तुलना हो सकती है। किन्तु विशेषतः इन दो पापोंके कारण ही भारत स्वायत्त-शासनकी प्राप्तिसे वञ्चित हो रहा है।"

घूसखोरी और साम्प्रदायिकताके कारण ही भारत पूर्ण स्वायत्त शासन लाभ नहीं कर रहा है, इस बातसे सहमत न होते हुए भी विचारपतिके उक्त कथनमें जो सत्यता है उसे हम अस्वीकार नहीं कर सकते। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे जातीय चरित्रको हीन और अधःपतित बनाने और पराधीनताके बन्धनको स्थायित्व प्रदान करनेमें ये दो पाप विशेष रूपसे सहायक सिद्ध हो रहे हैं। आज कोई भी सरकारी विभाग ऐसा नहीं, जहांके निम्न कर्मचारियोंमें घूसखोरीका पाप न फैला हुआ हो। खासकर पुलिस-विभाग और सरकारी अदालत, इन दो विभागोंके निम्न कर्मचारियोंमें इस दुर्नीतिको जितना प्रश्रय प्रदान किया जाता है उतना और कहीं नहीं। पुलिस-विभागकी इस दुर्नीतिके कारण बहुधा निरपराध व्यक्तियोंको कारादण्ड, यहां तक कि कभी-कभी प्राणदण्ड भी भोगना पड़ता है। इसके सिवा पुलिस कर्मचारियोंकी घूसखोरी और मिथ्या साक्ष्यके कारण बहुत-से प्रतिष्ठित व्यक्तियोंको जिस प्रकार लाञ्छित एवं अपमानित होना पड़ता है वह तो इस देशके लिए एक साधारण बात है। पुलिस कर्मचारियोंकी इस दुर्नीतिका अनेक बार न्यायालयोंके फैसलोंमें भी उल्लेख किया गया है, किन्तु फिर भी यह पाप विद्यमान ही है और पुलिसके उच्च अधिकारियोंका ध्यान इस ओर बहुत कम आकृष्ट हुआ है। अदालतोंके दफ्तरोंमें भी घूसखोरीका बाजार गर्म रहता है। कोई भी छोटा-बड़ा काम बिना 'दस्तूरी'के चल नहीं सकता। वकील और उनके क्लर्क भी इस पापके फैलानेमें कम सहायक नहीं होते। इस प्रकार दुर्नीतिका यह क्रम इतना जड़ीभूत हो गया है कि घूस लेने और देनेवाले दोनों ही इसे एक साधारण बात समझने लगे हैं, मानो इसमें पापाचार या दुर्नीतिका स्पर्श तक न हो। इस सबका परिणाम यह हो रहा है कि हमारे नीति-ज्ञानमें सचाई और ईमानदारीका स्थान बहुत न्यून हो रहा है जिससे हमारा जातीय चरित्र विशुद्ध, महत् एवं उन्नत नहीं होने पाता।

साम्प्रदायिकताका कीटाणु हमारे राष्ट्रीय जीवनको कितना विषाक्त एवं क्षीणबल बना रहा है, इसका अनुभव तो हमें नित्यप्रति हो रहा है। सच बात तो यह है कि हममेंसे अधिकांश अब भी राष्ट्रीय समस्याओंपर राष्ट्रीय दृष्टिसे विचार न करके सङ्कीर्ण साम्प्रदायिक दृष्टिसे ही विचार करते हैं। हिन्दू और मुसलमानोंकी साम्प्रदायिकता तो है ही। इसके सिवा हिन्दू जाति भी विभिन्न जातियों, उपजातियों, धर्मों और मत-मतान्तरोंमें इतनी विच्छिन्न हो रही है कि किसी जातीय समस्यापर विचार करते समय उसका दृष्टिकोण भी व्यापक न होकर अपनी जाति या सम्प्रदाय-विशेषके संकुचित दृष्टिकोण तक ही आबद्ध रहता है। सवर्ण हिन्दुओंके हृदयमें अपने कोटि-कोटि दलित बन्धुओंके लिए सहानुभूति एवं सहृदयताका भाव प्रायः नहींके बराबर है। एक विराट् हिन्दू जातिकी, उसके गौरवोज्ज्वल अतीतकी, उसकी देश-देशान्तरव्यापी महामहिमान्वित सभ्यता एवं संस्कृतिकी कल्पना कभी हमारे मनमें उठती ही नहीं। चिरकालसे इस संकुचित मनोवृत्तिको पोषण करते-करते आज हम इतने अधःपतित बन गये हैं कि हमने मनुष्योचित गुणोंको ही विसर्जन कर दिया है। जातिकी विश्वङ्खलित शक्तियोंको संहत करके सङ्घबद्धरूपमें कार्य करनेकी क्षमता तो हममें रह ही नहीं गयी है। समष्टिके कल्याणमें ही व्यष्टिका कल्याण निहित है। समष्टिगत जीवन-धारामें व्यष्टिगत जीवन-धाराको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विलीन कर देनेसे ही समष्टि-जीवनका उच्चतम विकास सम्भव हो सकता है, यह भावना आज हममें लुप्त हो गयी है। तभी तो समाजकी नाड़ीके साथ आज व्यक्तिका संयोग-सूत्र विच्छिन्न हो गया है। जो धर्म नहीं, बल्कि धर्मका विकृत रूप है, उसीको गलेसे चिपटाये हुए सवर्ण हिन्दुओंका एक बहुत बड़ा दल अपने मिथ्या आभिजात्य और हृदयहीन सङ्कीर्णताके कारण जातीय शक्तिको अनुक्षण क्षयिष्णु बनाता जा रहा है। जो धर्म मनुष्यको अपनी जातिके विराट् जीवनके सम्बन्धमें उदासीन बनाये रखता है, जिस धर्म द्वारा मनुष्यको सम्पूर्ण जातिके सुख-दुःखके सम्बन्धमें चिन्ता करने, उसकी दुर्बलताओंपर ग्लानि बोध करने तथा जातीय शक्तिको परिपुष्ट करनेकी प्ररोचना एवं उद्दीपना नहीं मिलती, वह धर्मका प्रकृत रूप नहीं, बल्कि विकृत रूप है। आज हमें समाजके स्तर-स्तरमें धर्मके इसी प्रकृत रूपकी शिक्षाका प्रसार करना होगा, जिससे हिन्दू समाजके जीर्ण प्राणोंमें जीवनका सञ्चार हो और वह तुच्छ लाभालाभके सम्बन्धमें विचार न करके समाज-सेवकके रूपमें अपनी जातीय समस्याओंपर विचार करे।

## बेजोड़ विवाहपर रुकावट

समाज-सुधारके मामलोंमें कुछ देशी राज्य ब्रिटिश भारतकी अपेक्षा कहीं अधिक प्रगतिशील हैं। इन्हीं राज्योंमें एक बड़ौदा राज्य है, जहांकी व्यवस्थापिका सभामें अब तक सामाजिक कुरीतियोंके निवारणार्थ कितने ही उपयोगी कानून पास हो चुके हैं। अभी हालमें बड़ौदा राज्यकी व्यवस्थापिका सभाने इसी प्रकारका एक प्रस्ताव पास किया है, जिसका उद्देश्य है समाजमें प्रचलित बेजोड़ विवाहोंपर कानूनी रुकावट डालना। इस प्रकारके बेजोड़ विवाहोंके कारण हिन्दू-समाजका गृहस्थ-जीवन आज कितना यातनापूर्ण और कृत्रिम बन गया है, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं। वृद्ध, रोगी, शक्तिहीन कामुक पुरुषोंकी भोग-लिप्साकी बलिवेदीपर धन-लोलुप माता-पिता किस प्रकार अपनी नन्हीं बच्चियोंके सुख-सौभाग्यका बलिदानकर उनके जीवनका सर्वनाश कर डालते हैं, यह हमारे सामाजिक जीवनकी बड़ी ही निष्ठुर, कलङ्कजनक एवं करुण कहानी है। कहीं १०-१२ वर्षके लड़केके साथ १६-१८ वर्षकी लड़की ब्याही जाती है तो कहीं ५०-६० वर्षका खूसट १०-१२ वर्षकी बालिकाको अपनी पर्य्यङ्कशायिनी बनाकर उसके ऊपर पाशविक अत्याचार करता हुआ गृहस्थ-जीवनका स्वांग रचता है। इस प्रकारके अनर्थकारी विवाह हिन्दू जातिके प्रत्येक सम्प्रदायमें प्रायः धड़ल्लेसे होते रहते हैं; उनके ऊपर कोई रुकावट नहीं; समाजकी ओरसे किसी प्रकारकी लाञ्छना या निर्भत्सना नहीं। तभी तो समाज आज शीर्ण एवं हीनवीर्य बनकर अवसाद-ग्रस्त हो रहा है। हमें आशा है कि बड़ौदा-नरेश, जो एक उन्नतिशील विचारके लोकप्रिय शासक समझे जाते हैं, व्यवस्थापिका सभा द्वारा स्वीकृत इस प्रस्तावको कानूनका रूप देकर हिन्दू-समाजके इस कलङ्कमोचनका प्रशंसनीय आयोजन उपस्थित करेंगे।

## मूर्खताकी हद

हिन्दुओंमें पण्डे-पुरोहित खिलाने और देवी-देवताओंपर द्रव्य चढ़ानेके साथ-साथ गङ्गा-यमुना आदि नदियोंमें पैसे-रुपये फेंकनेकी भी एक विचित्र प्रथा प्रचलित है। पण्डे-पुरोहित खिलानेके हिमायती बहुत निकलेंगे; देवी-देवताओंको द्रव्य भेंट करनेके सम्बन्धमें भी लोग झट कह देंगे कि पुजारियोंको अप्रत्यक्ष दान देनेका उद्देश्य था; किन्तु नदियोंमें पैसे फेंकनेकी मूर्खताको कैसे उचित कहा जायगा, यह समझमें नहीं आता। रेलवे ट्रेनोंसे यात्रा करते समय अक्सर देखा जाता है कि जब-जब ट्रेन गङ्गा या यमुना नदीके ऊपरसे निकलती है, तो डिब्बे-डिब्बेसे दो-चार-दस पैसे बरस जाते हैं। भाग्यवान लोग अपनी हैसियतके मुताबित कुछ अधिक फेंकते हैं। इस तरह हरएक ट्रेनसे, जब वह पवित्र नदियोंके पुलपरसे दौड़ती है, आठ-दस आने पैसे नदीमें फेंके दिये जाते हैं। देवी-देवताओंपर चढ़ाये गये पैसे तो भला पुजारियोंको मिल भी जाते हैं, किन्तु गङ्गाजीमें फेंके गये पैसे किसे मिलते हैं? दिनके समय कभी-कभी मल्लाहों और घाटवारोंके लड़के दो-चार पैसे पा जाते हैं, लेकिन रातके वक्त फेंके गये पैसोंमें एक भी पैसा किसी दीन-दुखियाके काम नहीं आता। गरीब भारतका पैसा क्या इसी तरह अन्धभक्तिकी भेंट होता रहेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही हिटलर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० सेंट लुई एस्टेस अपने दस बच्चे और पत्नीके साथ।

डा० एस्टेसकी उम्र चौहत्तर वर्षकी है और इनके सबसे छोटे बच्चेका जन्म हाल हीमें हुआ है। इनके बच्चे आजतक कभी बीमार नहीं पड़े हैं। डा० एस्टेसका कहना है कि वे बच्चोंको शाक-सब्जी और फलके सिवा कोई उबाली हुई चीज नहीं खाने देते, इसीलिए इनका स्वास्थ्य इतना अच्छा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

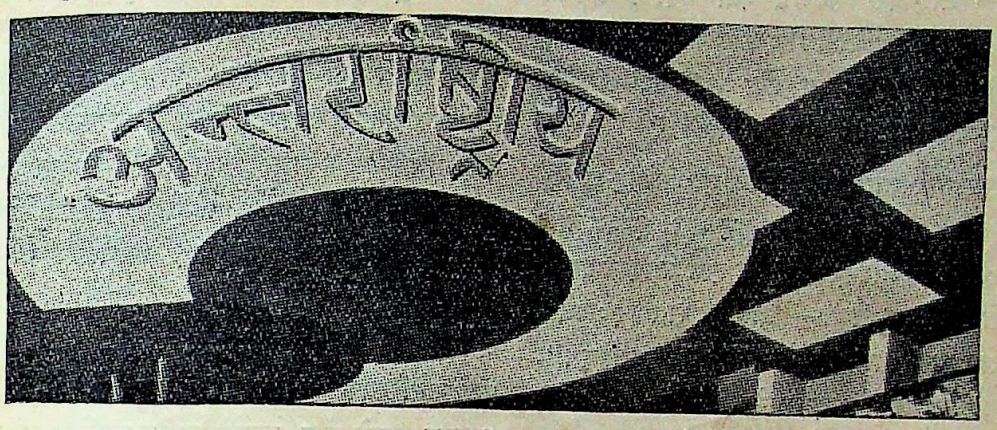

## श्रमजीवी राज्यमें विलासिताके साधन

कुछ समय पहले तक मजदूरोंके राज्य सोवियट रूसमें सभी प्रकारके विलासिताके साधन वर्जित समझे जाते थे। सुगन्धित साबुन, सेण्ट, एसेन्स, पाउडर, लिप-स्टिक तथा इसी प्रकारके अन्यान्य सौन्दर्य-वृद्धिके साधनोंका व्यवहार प्रकृत सोवियट नागरिकोंकी दृष्टिमें निन्दनीय माना जाता था, क्योंकि इन सब प्रलोभनोंके वशीभूत होनेसे मध्यम श्रेणीके लोगों-जैसी मनोवृत्ति उत्पन्न हो जानेकी सम्भावना रहती है। किन्तु अब रूसके अधिकारियोंकी इस मनोवृत्तिमें क्रमशः परिवर्तन हो रहा है, और मास्कोकी स्त्रियोंके उपर्युक्त वस्तुओंके व्यवहार करनेपर भी अधिकारियों द्वारा या अर्द्ध-सरकारी समाचार-पत्रों द्वारा उनकी निर्भर्त्सना नहीं की जाती।

अभी हालमें मास्को शहरके मध्यमें सुगन्धित द्रव्योंकी एक बड़ी ही भड़कीली दूकान खोली गयी है। इस दूकानके सम्बन्धमें हफ्तोंसे समाचार-पत्रों तथा बड़े-बड़े पोस्टरोंमें विज्ञापन किये जा रहे थे, जिससे जनताकी उत्कण्ठा तीव्रतम हो उठी थी। इसका परिणाम यह हुआ कि जिस दिन दूकानका उद्घाटन-समारोह था, उस दिन दर्शकोंकी भीड़ इतनी ज्यादा हो गयी कि सड़कोंपर कुछ समयके लिए सवारियोंका आना-जाना एकदम बन्द कर दिया गया। जिस समय दूकानका उद्घाटन हुआ, लोगोंका उत्साह चरम सीमापर पहुंच गया था। चारों ओरसे विस्मय एवं हर्षसूचक उल्लास-ध्वनि समुत्थित होने लगी। बड़े-बड़े आईनों और प्लास्टिक-कार्योंसे सारी दूकान जगमगा रही थी और बहुत-से दर्शकोंके लिए सचमुच यह एक चमत्कारपूर्ण दृश्य था।

दूकानकी तड़क-भड़क और सुन्दर सजावट तथा ग्राहकोंकी प्रतीक्षामें उत्कण्ठित वस्तु विक्रय करनेवाली सुसज्जित सुन्दरियोंको देखकर यह विश्वास करना कठिन हो रहा था कि संसारके एकमात्र श्रमजीवी-राज्यकी राजधानी यही है। उस दिन इस दूकानकी चहल-पहल और रूसी जनताके उत्साह और उमङ्गोंको देखकर सहज ही यह अनुमान होता था कि यह दूकान मास्कोकी न होकर पेरिस, लण्डन या बर्लिनके शौकीन मुहल्लेकी कोई दूकान है।

स्वच्छ काचकी रङ्ग-बिरङ्गी बोतलों और शीशियोंमें कीमती सुगन्धित द्रव्य सजाकर आकर्षक रूपमें रखे गये थे और उनके नाम लेनिन तथा अन्य सोवियट नामोंके आदर्शपर रखे गये थे।

दूकान खुलनेके दूसरे ही दिन रूसके प्रमुख समाचार-पत्र 'प्रवदा'में एक लम्बा लेख प्रकाशित हुआ जिसमें विस्तृत रूपसे आंकड़े देकर यह दिखलानेकी चेष्टा की गयी थी कि साबुन, पाउडर, लिप-स्टिक (कृत्रिम रूपसे होठोंको रंगनेका मसाला), आ डी कोलन आदि सौन्दर्य-वर्द्धक वस्तुओंकी मांग बराबर बढ़ रही है। उक्त पत्रमें यह भी कहा गया था कि भविष्यमें इन सब चीजोंका उत्पादन दुगुना-तिगुना हो जायगा, क्योंकि सम्पूर्ण विशाल रूसी साम्राज्य और मध्य एशियाके प्रदेशोंमें भी हमें इन सब चीजोंको मुहय्या करना पड़ेगा।

मास्कोमें सुगन्धित द्रव्योंकी इस दूकानका खोला जाना ही सोवियट रूसकी एकमात्र चमत्कारपूर्ण घटना नहीं है। कुछ समय पहले शौकीन नर-नारियोंके लिए एक पोशाककी दूकान भी वहां खुली थी। दूकानके सामनेकी खिड़कियोंपर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिखा हुआ है—"मास्कोके सर्वश्रेष्ठ दर्ज़ी यहां काम करते हैं। भद्र पुरुषों और महिलाओंके लिए सुष्ठु सान्ध्य-परिधान, भद्र पुरुषोंके लिए सान्ध्य-परिधान और भोजन-कालके जैकेट बिलकुल नये फैशनके। मनोहर रोयें (Fur)।"

मास्कोके समाचार-पत्रोंमें अभी हालमें एक आमोद-प्रमोद-भवनके सम्बन्धमें विज्ञापन प्रकाशित हुए थे। इसका नाम होगा—'Sakolniki' और इसमें सङ्गीत नृत्य आदिका प्रबन्ध रहेगा। नोटिसमें लिखा हुआ था—"प्रतिदिन रातमें १० बजेके बाद नृत्य। सान्ध्य-परिधान धारण करके आना चाहिए।"

सो, अब श्रमजीवियोंके इस राज्यकी राजधानीमें भी सैर-सपाटेके लिए आये हुए विदेशी यात्रियोंको लण्डन, पेरिस और बर्लिनके प्रीतिकर दृश्य तथा रूपसी तरुणियोंके विमोहन सौन्दर्य देखनेको मिलेंगे और साथ ही वे यहांके विलासितापूर्ण आमोद-प्रमोदमें भाग लेकर अपना मनोरञ्जन भी कर सकेंगे।

## अमेरिकामें 'डिक्टेटरशिप' का षड्यन्त्र

अमेरिकामें 'डिक्टेटरशिप' कायम करनेके लिए एक दल गुप्त षड्यन्त्र रच रहा है, इस आशङ्काके अनुसन्धानके लिए अमेरिकाकी सरकारने एक जांच कमेटी नियुक्त की थी। इस कमेटीकी कार्रवाई यथासम्भव गुप्त रखनेकी चेष्टा की गयी है। कमेटीके सामने गवाही देते हुए सेना-विभागके कैप्टेन सेमुएल ग्लेजियरने उक्त षड्यन्त्रके सम्बन्धमें एक सनसनीखेज बयान दिया है।

कैप्टेन ग्लेजियरने कहा कि षड्यन्त्रकारियोंका यह विश्वास है कि राष्ट्रपति रूजवेल्ट देशको 'सर्वनाशके पथपर' लिये जा रहे हैं। अतएव उनका उच्छेदसाधन करके उनके स्थान-पर एक 'डिक्टेटर' प्रतिष्ठित करनेका आयोजन गुप्त रूपसे चल रहा है। इस षड्यन्त्रको आर्थिक सहायता पहुंचानेवाले मि० मार्टिनडेल नामक एक करोड़पति हैं। मि० मार्टिनडेलने कैप्टेन ग्लेजियरको वार्तालापके प्रसङ्गमें बताया था कि ५ लाख युवकोंको इस कामके लिए सङ्गठित करनेकी एक योजना परिकल्पित की गयी है और इस योजनाके पीछे ७० करोड़ डालर (१४ करोड़ पौण्ड) का कोष सहायतार्थ उपलब्ध है। मि० मार्टिनडेलने यह भी कहा कि उपयुक्त अवसरके उप-स्थित होनेपर मैं अपने दलके साथ देशका शासन-सूत्र अपने हाथमें लेनेके लिए तैयार हो जाऊंगा।

यह दूसरा अवसर है, जबकि राष्ट्रपति रूजवेल्टका उच्छेद-साधन करके डिक्टेटरशिप कायम करनेके गुप्त षड्यन्त्रपर प्रकाश डाला गया है। इससे पहले भी गत नवम्बर मासमें नौसेनाके भूतपूर्व कमाण्डर मेजर जेनरल स्मेडली डी० बटलरने उक्त जांच कमेटीके सामने कहा था कि एक गुप्त दलने मेरे पास आकर मुझसे कहा कि अमेरिकामें फैसिस्ट शासन कायम करनेके लिए मैं ५ लाख भूतपूर्व कर्मचारियोंके एक दलका नेतृत्व ग्रहण करूं, जो वाशिङ्गटनपर धावा करने जा रहा है। जेनरल बटलरने यह भी इशारा किया था कि इस स्कीमके पीछे अमेरिकाके बड़े-बड़े दलालोंका हाथ है, जो राष्ट्रपतिको पदच्युत करने और उनकी नवीन आर्थिक योजना "New Deal" को चूर्ण-विचूर्ण कर डालनेके लिए ३० लाख डालर (६ लाख पौण्ड) तक लगानेको तैयार हैं। षड्यन्त्रकी योजना-पर प्रकाश डालते हुए जेनरल बटलरने बताया कि जिस प्रकार मुसोलिनीने इटलीके राजाके प्रति व्यवहार किया था, उसी प्रकार राष्ट्रपति रूजवेल्टके साथ व्यवहार करनेका विचार किया गया है। यदि राष्ट्रपति रूजवेल्ट सहयोग करनेके लिए तैयार हो जायंगे, तो उन्हें नाममात्रके अधिकारके साथ अपने पदपर कायम रहने दिया जायगा। और यदि वह वाशिङ्गटन-पर 'फैसिस्टों' का अधिकार हो जानेके बाद सहयोग करनेसे इनकार करेंगे, तो उन्हें जबर्दस्ती पदच्युत कर दिया जायगा।

## यूरोपका संयुक्त राज्य

अभी हालमें फ्रान्स और इटलीके बीच जो मैत्री-सम्बन्ध स्थापित हुआ है, उसपर विचार करते हुए यूरोपके बहुतसे राजनीतिज्ञोंने कहा है कि यह यूरोपके संयुक्त राज्य-गठनके मार्गमें पहला कदम रखा गया है और इससे अन्तर्राष्ट्रीय जगत्में एक नवीन शक्ति-साम्य स्थापित होगा।

यह कहा जाता है कि इससे डैन्यूब नदीके तटवर्ती प्रदेशोंकी राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओंके समाधानमें (जिनमें फ्रान्स और इटली दोनोंका स्वार्थ है) विशेष सुविधा होगी। इसका परिणाम होगा—यूरोपमें शान्तिकी प्रतिष्ठा।

इसके सिवा दोनों देशोंकी जो निजी समस्यायें हैं और जिनके कारण अब तक दोनोंमें बहुत-कुछ वमनस्य-भाव चला आ रहा था, उनके समाधानमें भी इस समझौतेसे सहायता पहुंचेगी। वे समस्यायें हैं नौ-बल सम्बन्धी समता, फ्रान्समें इट-लीके श्रमजीवी और ट्यूनिसमें इटैलियन अधिवासियोंकी स्थिति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वकी अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिपर इस समझौतेका क्या प्रभाव पड़ेगा, इस सम्बन्धमें यह अनुमान किया जाता है कि संसारके बाजारोंपर अमेरिका और जापानका जो वाणिज्य-प्रभुत्व बढ़ रहा है, उसके विरुद्ध यूरोपके राष्ट्रोंके शक्तिशाली सङ्गठनका यह श्रीगणेश है। यूरोपके राष्ट्र क्रमशः इस बातको महसूस करने लगे हैं कि एक ओर तो वे आपसमें झगड़ रहे हैं और दूसरी ओर संसारका प्रभुत्व उनके हाथोंसे निकलकर दूसरे देशोंके हाथोंमें चला जा रहा है। इसलिए यदि वे अपना आधिपत्य कायम रखना चाहते हैं, तो उन्हें सङ्घबद्ध होना पड़ेगा। यूरोपके राष्ट्रोंमें इटली अभी सबसे तरुण है, इसलिए अपने युवकोचित हृदयोच्छ्वास और स्फूर्ति-के साथ उसने यूरोपके क्षयकी आवाज अन्य राष्ट्रोंकी अपेक्षा जोरोंसे उठायी है। श्वेताङ्ग जातियोंका प्रभुत्व संसारपर अक्षुण्ण बना रहे, इसे इटली अपना 'मिशन' समझता है। इस सन्धिके द्वारा यूरोपकी शान्तिकी जड़ मजबूत होगी और यूरोप एक ओर जापान और दूसरी ओर अमेरिकाकी आक्रमणात्मक नीतिके विरुद्ध प्रतिक्रियाका भाव फैलानेमें समर्थ होगा।

फ्रान्सके परराष्ट्र-सचिव मो० लेवेलने फ्रान्स-इटली-मैत्रीके सम्बन्धमें रेडियो द्वारा भाषण करते हुए कहा है कि "इस मैत्रीका सम्बन्ध केवल फ्रान्स और इटलीसे ही नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव इससे कहीं अधिक दूरव्यापी होगा। दोनों देश अपने इस मैत्री-सम्बन्धको विश्व-शान्तिकी सेवामें संलग्न करनेकी इच्छा रखते हैं।"

## "१९३९ का सङ्कट-काल"

"सन् १९३९ का सङ्कट-काल" इस वाक्य द्वारा जापान-सरकारने "प्रशान्त महासागरके भावी युद्ध" के सम्बन्धमें जापानी जनताको सावधान करते हुए प्रस्तुत रखनेका निश्चय किया है।

सरकारकी ओरसे उच्चपदस्थ कर्मचारी सारे देशमें दौरा करते हुए जनताको यह बतायेंगे कि विदेशोंके साथ जापान-की परराष्ट्र-नीतिमें क्या परिवर्तन हुआ है। व्याख्यानोंके सिवा सिनेमा, फिल्म, रेडियो आदि प्रचार-साधनोंका भी उपयोग किया जायगा। जापानियोंकी ज्वलन्त देशभक्तिपर भरोसा करके ही यह सब किया जा रहा है। किन्तु इससे कोई यह न समझे कि जापान सचमुच युद्धके लिए तैयार हो रहा है, इसलिए जापानके परराष्ट्र-सचिव मि० हिरोटाने पत्र-प्रतिनिधियोंसे वार्तालाप करते हुए अभी हालमें ही कहा है:—"संसार विश्वास करे या नहीं, किन्तु जापान 'विश्व-शान्ति-का अग्रदूत' बनना चाहता है। कितने जङ्गी जहाज और कितने वायुयान ढोनेके जहाज राष्ट्रोंके पास होने चाहिएं इस प्रकारके वाद-विवादमें जापानको कोई दिलचस्पी नहीं है। यह तो एक बहुत ही तुच्छ बात है। जापान तो युद्धके इन साधनोंका सम्पूर्ण वर्जन चाहता है। क्या जापानके इस रुखमें कोई बुराई है? विश्व-शान्तिकी इच्छासे यह रुख धारण करना क्या बुरा कहा जा सकता है? जापान आदर्श कूट-नीतिका झण्डा फहरायेगा और इस बातकी कोशिश करेगा कि सम्पूर्ण संसार इस झण्डेके नीचे आ जाय।"

एक ओर यदि जापानका यह रुख है तो दूसरी ओर जापानने वाशिङ्गटन-नौ-सन्धिका जो प्रत्याख्यान किया है उससे जापानके विरुद्ध रूसकी भावना पहलेकी अपेक्षा और भी बढ़ गयी है। इससे रूसमें यह भावना फैल रही है कि जापान अन्तर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण और शान्तिके मार्गमें जान-बूझकर रोड़े अटका रहा है जिसका अवश्यम्भावी परिणाम होगा एशियामें जापानकी सैनिक कार्यवाहियोंके सम्बन्धमें रूसकी आशङ्का-वृद्धि।

रूसियोंमें, खासकर विद्वान् रूसियोंमें यह धारणा बद्धमूल-सी जान पड़ रही है कि जापान जो कुछ करता है उसका उद्देश्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपमें रूसके विरुद्ध होता है। जापानकी स्थल-सेना और नौ-सेनाके लिए जो खर्च अन्दाज किया गया है उसे वे रूस-जापान-युद्धकी तैयारी समझते हैं।

वाशिङ्गटन-सन्धिके रद किये जानेपर भी वे इसी दृष्टि-कोणसे विचार करते हैं और इसे परिकल्पित दारुण विपत्तिके मार्गमें अग्रसर होना समझते हैं।

## मिश्रमें राजनीतिक उथल-पुथल

सन् १९३४ का साल मिश्रके लिए कई महत्त्वपूर्ण राज-नीतिक घटनाओंसे पूर्ण रहा है। इस सालमें ही सन् १९३० के शासन-विधानका पतन और नवयुगका अरुणोदय हुआ। राजा फुआदकी बीमारी, अब्दल फत्ताह यहिया पाशाके मन्त्रिमण्डलका पतन और सन् १९३० के शासन-विधानका निराकरण, ये सब घटनायें पृथक् होनेपर भी एक-दूसरेसे सम्बद्ध थीं। राजा फुआदके बीमार पड़नेपर पहले तो उनकी बीमारी-का समाचार जनतासे छिपाकर रखा गया, किन्तु जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



राजाकी यूनान-यात्राका प्रोग्राम रद्द करनेकी नौबत आयी, तो आखिर उनकी बीमारीका हाल छिपा न रह सका और तब आम लोगोंको मालूम हुआ कि राजा बहुत दिनोंसे बीमार थे और इस बीचमें इब्राशी पाशा नामक एक राज्यकर्मचारी-की ओरसे राज्यादेश प्रचारित किये जाते थे। इसके बाद इब्राशी पाशापर चारों ओरसे आक्रमण होने लगे और कुछ समाचार-पत्रोंने इब्राशी पाशाको देशका दुष्टात्मा Evil genius बताया। गत वर्ष जब इस्माइल सिदकी पाशाके मन्त्रिमण्डलने इस्तीफा दिया था, तो उस समय भी इस इब्राशी पाशाका नाम लिया गया था।

अब्दुल फत्ताह यहिया पाशाके मन्त्रिमण्डलके दो सदस्योंके साथ इब्राशी पाशाका घनिष्ट सम्बन्ध बताया जाता था। अतएव प्रधान मन्त्री यहिया पाशाको यह सुझाया गया कि वह मन्त्रिमण्डलके उक्त दो सदस्योंको पृथक् कर दें। ऐसा करनेसे उनके मन्त्रिमण्डलकी शक्ति सुदृढ़ हो जायगी और वह लोकप्रिय बन जायगा। किन्तु प्रधान मन्त्रीने इस सुझावकी उपेक्षा कर दी। इसका परिणाम यह हुआ कि परिस्थिति अत्यन्त विषम होती गयी और आखिर नौबत यहां तक आयी कि मन्त्रिमण्डलको पदत्याग करना पड़ा।

इसके बाद राजाने तौफीक नसीम पाशाको नवीन मन्त्रिमण्डलका गठन करनेके लिए आह्वान किया। नसीम पाशा जो पहलेसे ही सन् १९३० के शासन-विधानके विरुद्ध खार खाये हुए बैठे थे—इस शर्तपर राजाके निमन्त्रणको स्वीकार किया कि सन् १९३० के शासन-विधानको भङ्ग कर देनेमें उन्हें पूरी स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। नसीम पाशाके मन्त्रिमण्डलके गठित होते ही शासन-विधान उठा दिया गया और पार्लामेण्ट भङ्ग कर दी गयी। नसीम पाशाके मन्त्रिमण्डलमें यद्यपि सबके सब विख्यात पुरुष हैं, किन्तु राजनीतिक दृष्टिसे वह शक्तिशाली नहीं कहा जा सकता। इस समय तो उसे वाफदोंका समर्थन प्राप्त है। किन्तु इसके साथ ही यह शर्त लगी हुई है कि पार्लामेण्टका नया चुनाव किया जाय। इसका परिणाम यह भी हो सकता है कि नहास पाशा और वाफदोंकी शक्ति फिर बढ़ जाय और उनके हाथमें शासनकी क्षमता आ जाय। यदि ऐसा हुआ, तो सचमुच एक नयी परिस्थिति उत्पन्न हो जायगी।

---


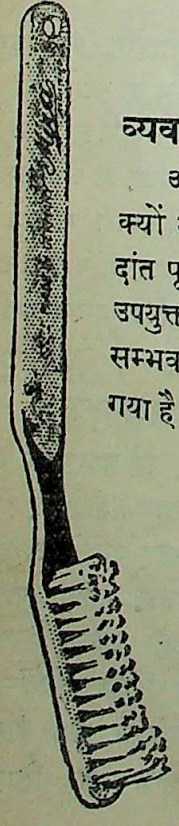

# दांतों की सुन्दरता

**व्यवहारमें लाये जानेवाले ब्रस पर ही निर्भर है**

आप जो मञ्जन व्यवहार करते हैं वह कितना ही अच्छा क्यों न हो सर्वोत्कृष्ट ब्रसके नहीं व्यवहार करनेसे आपके दांत पूर्णतया परिष्कार न हो सकेंगे। इसलिये मीरा ब्रस ही उपयुक्त है। कारण दांतके प्रत्येक कोने व फांक में, जहां तक सम्भव है, प्रवेश कर सकता है। और इसी लिए यह बनाया ही गया है। इसके बाल न नरम होंगे और न खुल कर गिर पड़ेंगे।

**मीरा टूथ ब्रस** के साथ

**मीरा डेंटल क्रीम** व्यवहार कीजिये।

चिरकाल तक दन्त पंक्ति शुद्ध, स्वस्थ सुन्दर व सबल रहेंगे।

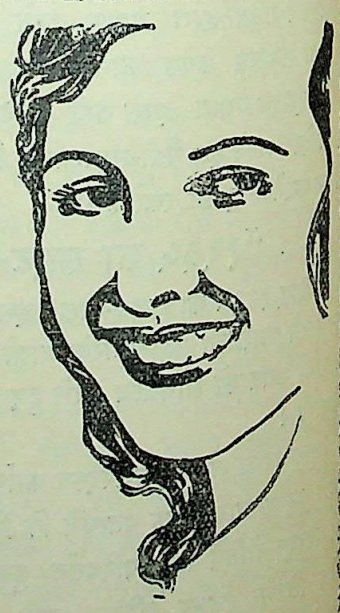

## मीरा टूथ ब्रस

एजेन्टस्—**टी० एम० ठाकुर एण्ड कम्पनी**

**१२, डलहौसी स्कायर, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

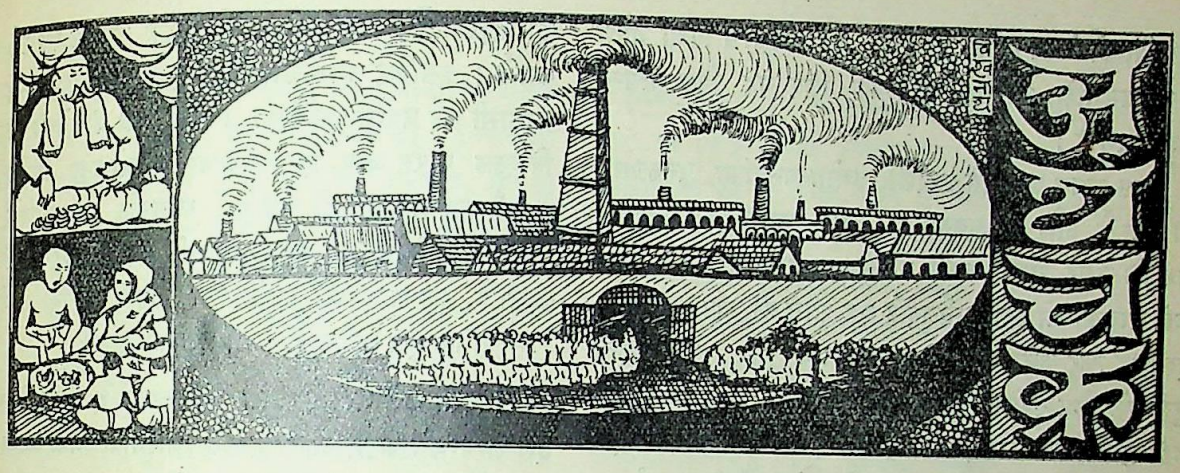


## जापानी खिलौने

भारतके बाजार इस समय जापानी खिलौनोंसे पट रहे हैं। बड़े-बड़े शहरोंसे लेकर देहातोंके हाट-बाजार तकमें जहां देखिये वहीं रङ्ग-बिरङ्गे जापानी खिलौने दीख पड़ेंगे। ये खिलौने विशेषतः सेलूलेड और रबरके बने होते हैं। खिलौनेके व्यवसायमें जापानकी यह उन्नति बड़ी ही आश्चर्य-जनक हुई है। केवल भारतमें ही नहीं, बल्कि अमेरिका, इंगलैण्ड, इटली, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका जैसे उन्नति-शाली देशोंमें भी जापानी खिलौनोंकी खपत धड़ल्लेसे हो रही है।

गत महायुद्धके पूर्व भारतमें प्रतिवर्ष ४० लाख रुपयेके खिलौने और खिलौनोंके सामान विदेशोंसे आते थे। युद्धके बादके वर्षोंमें यह संख्या बढ़कर ५२ लाख तक पहुंच गयी। सन् १९३३-३४ सालमें भारतने ५३ लाख ३५ हजार रुपयेके खिलौने और खिलौनोंके सामान विदेशोंसे मंगवाये। सन् १९२७ में ५ लाख येन मूल्यके जापानी खिलौने इस देशमें मंगाये गये थे। सन् १९३१ में लगभग १३ लाख येन मूल्यके जापानी खिलौनोंकी आमदनी हुई। सन् १९३३ में यह संख्या बढ़कर ४९ लाख ४० हजार तक पहुंच गयी। इस प्रकार सन् १९२७ से १९३३ ई० तक भारतमें जापानी खिलौनोंकी आमदनी अठगुनी बढ़ गयी है।

एक समय ऐसा था जब कि इस व्यवसायमें जर्मनी सबसे आगे था। किन्तु आज जापान सबसे बाजी मार ले गया है। जापानमें धातु, प्रोसलिन, रबर, सेलूलेड, लकड़ी, कागज आदि चीजोंसे ये खिलौने तैयार होते हैं। जापानका यह कारबार क्रमशः बढ़ता ही जा रहा है। सन् १९२९ में इन कारखानोंकी कुल संख्या २४१ थी जो सन् १९३२ में बढ़कर ३१६ हो गयी। इसके सिवा जापानके प्रत्येक परिवारमें वहांकी स्त्रियां अलग ही खिलौने तैयार करती हैं जो इस हिसाबसे बिलकुल अलग ही हैं। सन् १९३३ में जापानने अपने देशके बच्चोंकी मांग पूरी करके भी २ करोड़ ६३ लाख येन मूल्यके खिलौने बाहर भेजे। इन देशोंमें सबसे पहला नम्बर अमेरिका, दूसरा इंगलैण्ड और तीसरा भारतका है। किन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि अमेरिका और इंगलैण्डमें खिलौनोंका व्यवहार बहुत ज्यादा होता है और उन देशोंकी मांगका अधिकांश स्वदेशी व्यवसाय द्वारा पूरा किया जाता है। बाकी भाग विदेशोंसे आता है। किन्तु भारतकी मांगका अधिकांश जापानसे पूरा होता है।

भारतमें खिलौनेका व्यवसाय चलानेके लिए अभी तक विशेष रूपसे कोई प्रयत्न हुआ है, ऐसा नहीं जान पड़ता। इस व्यवसायको चलानेमें विशेष पूंजीकी भी आवश्यकता नहीं होगी। ऐसी स्थितिमें यदि भारतीय व्यवसायियोंका ध्यान इस ओर आकृष्ट हो, तो इससे देशको बहुत-कुछ लाभ हो सकता है।

## जर्मनी और कच्चा माल

जर्मनीके अर्थसचिवको वहांकी सरकार द्वारा एक बिल पास करके यह अधिकार दिया गया है कि वह जर्मनीके उद्योग-धन्धोंके लिए कच्चे मालके बदलेमें कृत्रिम कच्चा माल तैयार करनेकी जो व्यवस्था की गयी है, उसके विस्तारकी गारण्टी अपने ऊपर लें। जर्मनीके वणिक-मण्डलमें इस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस बिलको लेकर काफी चर्चा है। यह विश्वास किया जाता है कि जर्मनीके आर्थिक भविष्यके लिए यह बिल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस समय जर्मनीमें स्वदेशी उद्योग-धन्धोंका पुनरुत्थान हो रहा है, और यह पुनरुत्थान तभी कायम रह सकता है जब कि कच्चा माल काफी तौरसे मुहय्या होता रहे। अभी कच्चे मालका जो स्टाक मौजूद है वह शीघ्र ही खप जायगा। इसलिए फिर कच्चा माल बाहरसे मंगाने और उसका मूल्य चुकानेके लिए रुपयेकी आवश्यकता होगी। यदि यह रुपया नहीं जुटाया जा सका, तो देशकी आवश्यकताओंकी पूर्ति स्वदेशकी बनी हुई वस्तुओं द्वारा ही करनी होगी। वर्तमान आयात-निर्यात-व्यापारकी जैसी अवस्था है उसमें निर्यात-व्यापारमें शीघ्र वृद्धि होनेकी कोई सम्भावना नहीं है।

इसके सिवा जर्मन सरकारकी यह भी इच्छा है कि वह देशको उसकी आवश्यकताओंके सम्बन्धमें स्वावलम्बी बना दे ताकि सङ्कटकाल उपस्थित होनेपर जर्मनीको पराये देशोंका मुंह न ताकता पड़े। इसी उद्देश्यसे बाहरसे आनेवाले कृषि-जात पदार्थोंपर कर लगाकर कृषिका संरक्षण किया गया है और खेतीसे उत्पन्न होनेवाली चीजोंका मूल्य निर्धारित कर दिया गया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि जर्मनीमें खाद्य पदार्थोंका मूल्य बहुत चढ़ गया है।

जिन कृत्रिम कच्चे मालके व्यवसायोंको संरक्षण देनेकी व्यवस्था की गयी है उनके विकसित होनेपर जर्मनीके बाजारमें विदेशी सूता, कच्चा लोहा, मोटर स्पिरिट और चर्बीके लिए स्थान नहीं रह जायगा। व्यवसायियोंमें इन व्यवसायोंके भविष्यके सम्बन्धमें एकमत नहीं है। कुछ लोग जहां इनकी सफलतापर सन्देह प्रकट करते हैं वहां दूसरे यह भी विश्वास करते हैं कि अन्तमें जर्मनीके ये कृत्रिम कच्चे माल संसारके बाजारोंमें विदेशी कच्चे मालके विरुद्ध खतरनाक प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध होंगे।

जर्मनीके प्रो० Ubbelohde ने उक्त व्यवसायोंके भावी विकासके सम्बन्धमें आलोचना करते हुए एक जर्मन पत्रमें लिखा है—जर्मनी अबतक विदेशी कच्चा लोहा और तांबा बहुत बड़ी तादादमें मंगाता रहा है। किन्तु अब इनके स्थानमें मिश्रित एलूमीनियमका अधिकाधिक मात्रामें व्यवहार किया जायगा। जर्मनीमें एलूमीनियम द्रव्य मिश्रित खनिज पदार्थोंकी प्रचुरता है। जर्मनीकी भूमिमें तेलके उद्गम-स्थान बहुत कम हैं। इसलिए जर्मनीको कोयलेसे तेल निकालना पड़ेगा। आगामी कई वर्षोंमें जर्मनीको विदेशी तेल मंगानेकी जरूरत बिलकुल न रह जाय, इस सम्बन्धमें जो योजना निश्चित की गयी है वह अब पूर्ण हो रही है। साबुनके व्यवसायके लिए जर्मनीको प्रतिवर्ष कई लाख रुपयेकी चर्बी बाहरसे मंगानी पड़ती है, इस सम्बन्धमें प्रोफेसरका कहना है कि जर्मनीके रासायनिक इस कठिनाईको भी हल कर सकेंगे।

विदेशी कच्चे मालमें सबसे महत्त्वपूर्ण है विदेशी सूत। इस सम्बन्धमें कहा जाता है कि जर्मनीके वस्त्र-व्यवसायने ऊन और रुईके सम्बन्धमें नकली रेशम-व्यवसायकी सबसे बड़ी असुविधापर विजय प्राप्त कर ली है। नकली रेशमका कपड़ा तैयार करनेमें सनसे काम लिया जाता है। इतना ही नहीं बल्कि जर्मनीका यह दावा है कि वह इस कृत्रिम सूत द्वारा अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेके साथ-साथ, बाहरके देशोंमें भी इसकी रफ्तनी करेगा, जिससे कपास और ऊन रफ्तनी करनेवाले देशोंको हानि पहुंचेगी। अन्तमें प्रो० Ubbelohde ने कहा है:—"हमें साधन प्राप्त हो गये हैं। अब ये आशाओं या योजनाओं तक ही आबद्ध नहीं हैं, बल्कि ठोस तथ्य और परीक्षित प्रक्रियाओंके रूपमें हैं और इनके द्वारा कच्चे मालके सम्बन्धमें हम अपनी आवश्यकतायें अनेकांशमें पूरी करनेमें समर्थ होंगे।"

## विश्व-आर्थिक-सम्मेलन

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रानीतिके सम्बन्धमें कुछ दिनोंसे जैसी अफवाहें सुनी जा रही हैं, उनसे ऐसा अनुमान होता है कि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रानीतिके लिए एक बार फिर सङ्कटकाल उपस्थित होनेवाला है। खासकर अमेरिकाके डालर और फ्रान्सके फ्राङ्ककी हालकी गतिविधियोंपर विचार करनेसे इस अनुमानकी और भी पुष्टि होती है। खबर है कि अमेरिका इंगलैण्डके साथ एक्सचेञ्जके सम्बन्धमें बातचीत करनेके लिए तैयार है और इधर फ्रान्सने भी अपनी मुद्राके सम्बन्धमें Deflationary नीतिका परित्याग करनेकी इच्छा प्रकट की है। इन बातोंमें कहां तक सत्यता है, यह अभी नहीं कहा जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किन्तु लक्षणोंसे ऐसा जान पड़ता है कि पाश्चात्य राष्ट्र एक बार फिर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रानीति और विनिमय-नीतिके सम्बन्धमें किसी समझौतेपर पहुंचनेका प्रयत्न करेंगे। लण्डनमें जो विश्व-आर्थिक-सम्मेलन हुआ था, उसे असफल हुए दो वर्ष हो गये। इसलिए एक बार फिर यह विश्वास प्रकट किया जाने लगा है कि उसी प्रकारकी एक दूसरी कान्फरेन्स फिर शीघ्र ही होनेवाली है। इस प्रसङ्गमें यह स्मरण रखना चाहिए कि सन् १९३३ के मध्यमें जब विश्व-आर्थिक-सम्मेलन भङ्ग हुआ था, उस समयसे लेकर अब तक मुद्रानीति और विनिमय-नीतिके परिवर्तनका परिणाम विदेशी वाणिज्य और औद्योगिक प्रतियोगितापर बहुत कम हो गया है। क्योंकि विश्व-आर्थिक-सम्मेलनके भङ्ग होते ही सभी देशोंमें आर्थिक राष्ट्रीयताकी लहर उत्पन्न हुई, जो अब तक परिव्याप्त हो रही है। विदेशी मालोंकी आमदनीपर प्रतिबन्ध लगाने तथा उनका परिमाण निर्धारित करने (Quotas) के उपाय काममें लाये गये हैं। राष्ट्रोंके बीच न मालूम कितनी व्यापारिक सन्धियां हुई हैं, जिनसे उनके बीच निश्चित आधारपर वाणिज्यमूलक सम्बन्ध स्थापित हो गये हैं। इस समय यदि विभिन्न राष्ट्रोंकी मुद्राओंके विनिमय-मूल्यमें कोई परिवर्तन हो, तो इसके परिणाम-स्वरूप उनकी प्रतियोगिता-क्षमतामें जो भेद पड़ेगा, वह ऐसा नहीं होगा कि उससे किसी राष्ट्रको क्षति हो। इसलिए यदि संसारके प्रमुख राष्ट्र एक बार फिर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रानीतिके सम्बन्धको सुदृढ़ (Stabilise) करनेका प्रयत्न करें, तो इसमें कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं। इससे उनकी आन्तरिक अर्थनीतिमें किसी प्रकारकी गड़बड़ी होनेकी सम्भावना नहीं है।

## संसारका सोना

सोना संसारके कोने-कोनेसे छन-छनकर अमेरिकाके स्वर्ण-भण्डारमें पहुंच रहा है। प्रति सप्ताह इंगलैण्डसे ५ लाख स्टर्लिङ्गसे लेकर १५ लाख स्टर्लिङ्ग तकका सोना अमेरिकाको रफ्तनी होता है। किन्तु इंगलैण्डके संरक्षित स्वर्ण-कोषसे नहीं, बल्कि वहांके बाजारसे यह सोना खरीदा जाता है। इंगलैण्डके सिवा फ्रान्स, हालैण्ड, कनाडा, भारत और चीनसे भी सोनेकी रफ्तनी अमेरिकाको होती है। सन् १९३४ सालमें लगभग १ अरब डालर मूल्यका सोना विदेशोंसे अमेरिका भेजा गया है।

इस समय अमेरिकाके स्वर्ण-कोषमें जितना सोना जमा है उतना सन् १९३१ के सितम्बरके सिवा और कभी नहीं था, जब कि इंगलैण्डने स्वर्णमानका परित्याग किया था। अमेरिकाके फेडरल रिजर्व बैङ्कमें संरक्षित स्वर्ण-कोषकी तादाद १ अरब पौण्डसे अधिक बतायी जाती है।

न्यूयार्कके नेशनल सिटी बैङ्कके कारबारके दिसम्बर महीनेके विवरणसे मालूम होता है कि इस समय अमेरिकामें जो सोना पहुंच रहा है उसका अधिकांश उसके मालके बदलेमें होता है। सन् १९३४ के प्रथम नौ महीनोंमें अमेरिकाके आयात-व्यापारके कुल मूल्यका सैकड़े ७९ भाग सोनेके रूपमें था।

संसारका अधिकांश भाग इस समय स्वर्णमानसे रहित है। इसलिए अमेरिका अन्तर्राष्ट्रीय चुकतीके लिए सोनेका असाधारण रूपमें व्यवहार कर रहा है। यही कारण है कि आज बहुत-से देशोंको एक्सचेञ्जके सम्बन्धमें कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा है।

## अण्डेके बदले थियेटरकी सीट

हङ्गरीके किसान अर्थाभावके कारण अर्द्ध शताब्दी पूर्व-जैसी सरल स्वाभाविक दशाओंमें रहने लगे हैं। किसानोंके पास इतने पैसे नहीं होते कि वे मोटर-बसपर चढ़कर बाजार जायं और वहां जाकर अपनी पैदावार बेचें। इसलिए वहांकी एक उद्योगशील कम्पनीने एक लम्बी बस तैयार की है जिसका नाम "फार्दिङ्ग कार" है। ये लम्बी बसें तिरपालसे सुरक्षित रहती हैं। इनमें २० से ३० आदमी तक मजेमें बैठ सकते हैं। गांवोंके किसान अपनी खेतीकी पैदावार इनपर ढोकर बाजार ले जाते हैं।

रुपयेका अभाव होनेपर भी पैदावार काफी होती है। एक थियेटर कम्पनी एक गांवमें अपना तमाशा दिखाने गयी। पैसा देकर टिकट खरीदनेवाले दर्शक बहुत कम होते थे। घाटा लगते देखकर थियेटरके मैनेजरने सोचा कि सीटके लिए पैसेके बदलेमें अण्डे लिये जायं। इस नियमके जारी करते ही कम्पनीकी सफलता चमक उठी और हरएक खेलमें थियेटर-हाउस ठसाठस भरने लगा। झुण्डके झुण्ड किसान तरह-तरहके खाद्य पदार्थ लेकर पहुंचने लगे। थियेटरके अभिनेता-अभिनेत्रियोंने भी उन खाद्य पदार्थोंका खूब उपभोग किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

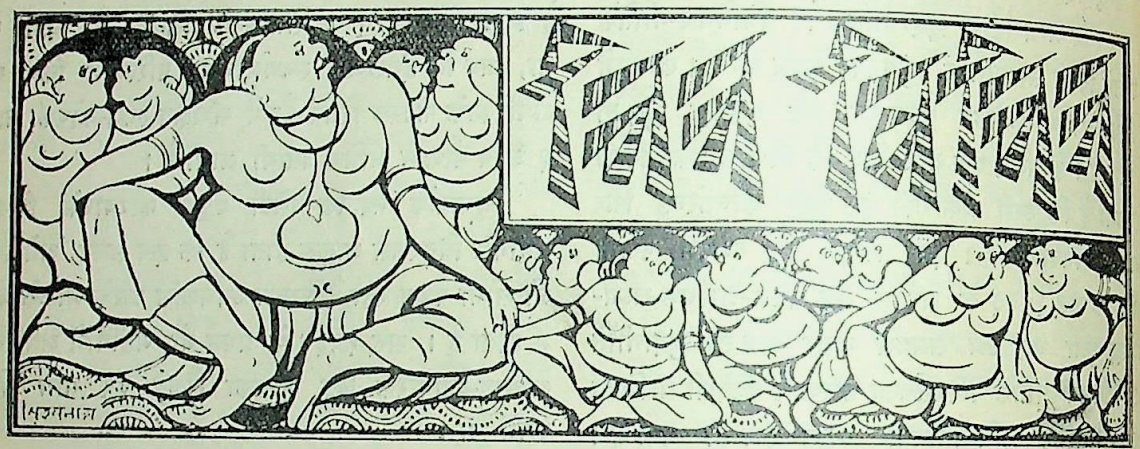


## एक्स-रे द्वारा समस्त शरीरका फोटो

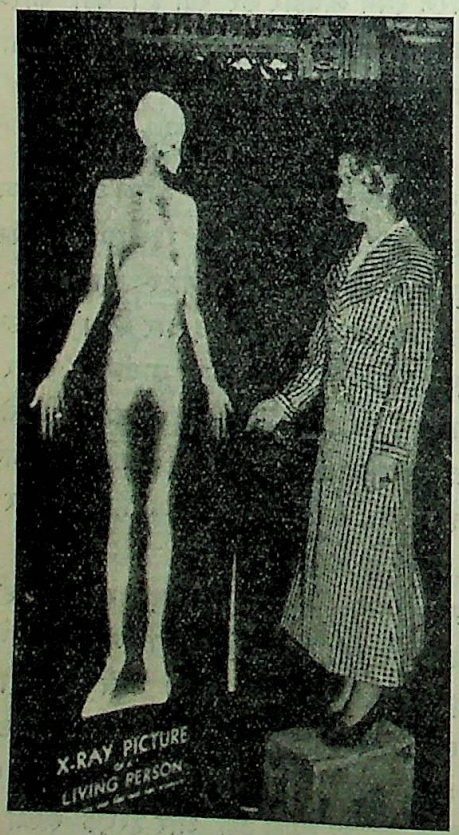


अभी तक एक्स-रे द्वारा किसी एक खास अङ्गका ही फोटो एक साथ लिया जा सकता था, परन्तु अब इस कलामें इतनी उन्नति हुई है कि एक साथ ही समस्त शरीरका फोटो एक ही फिल्मपर लिया जा सकेगा। प्रस्तुत चित्रमें एक्स-रे द्वारा जो फोटो लिया गया है, उसमें जिस व्यक्तिका फोटो लिया गया है, उसकी घड़ी, चूड़ियों तथा जूतों तकका फोटो स्पष्ट आ गया है।

## फिल्म प्रोजेक्टर पाकेटमें रखा जा सकेगा

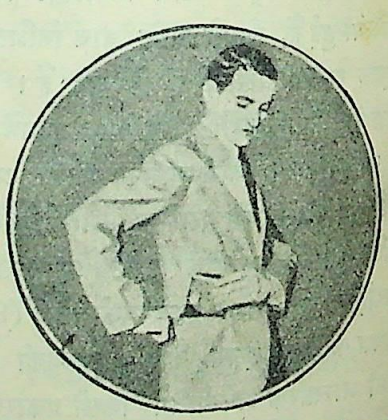

अभी तक तो बच्चे बायस्कोपके नन्हें-नन्हें स्थिर चित्रोंसे ही मनोरञ्जन कर लिया करते थे, परन्तु विज्ञानकी बदौलत अब वे अपने घरमें ही जब चाहेंगे, चलता-फिरता बायस्कोप देख लेंगे। एक वैज्ञानिकने एक ऐसा फिल्म प्रोजेक्टर बनाया है जो इतना छोटा है कि कोटकी जेबमें रखा जा सकता है। इस प्रोजेक्टरसे दिनमें ५ फीट तक तसवीरें दिखायी जा सकती हैं और ये तसवीरें खूब स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। रातमें प्रोजेक्टर का इस्तेमाल करनेपर फिल्में १५ फीटकी दूरी तक दिखायी जा सकती हैं और उनकी लम्बाई ५ फीट तक हो सकती है। इस प्रोजेक्टरका उपयोग न केवल लड़के ही कर सकते हैं, बल्कि स्कूलोंमें भी शिक्षार्थ इसका प्रयोग किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## मीलों सुनाई पड़नेवाला लाउड-स्पीकर

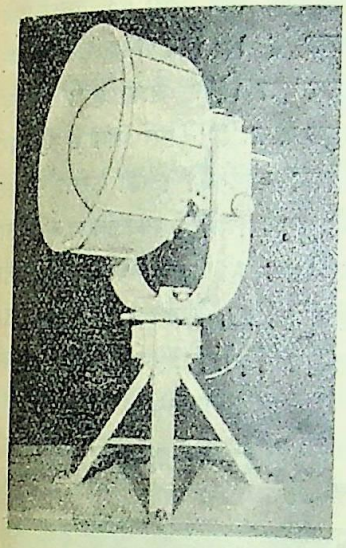

इस लाउड-स्पीकरकी ध्वनि-विस्तारक - शक्ति बहुत प्रबल है। मनुष्यकी आवाजको १० लाख गुना अधिक बढ़ाकर यह वज्रकी तरह घोष करनेवाला लाउड-स्पीकर है। इसकी आवाज मीलों सुनाई पड़ती है। विशाल भीड़ों, सैनिकों तथा युद्धस्थलमें संग्राम-रत वीरोंको आदेश देनेके लिए यह उपयुक्त समझा जा रहा है।

## तैराकी सिखानेकी नयी कला

सेन-फ्रान्सिसकोके एक तैराकी-शिक्षकने तैराकी सिखानेकी एक नयी कलाका आविष्कार किया है। इसके लिए उसने एक पारदर्शक कवच बनाया है जिसे पहनकर पानीके भीतर भली भांति देखा जा सकता है। तैराकी सीखनेवाला व्यक्ति उसे पहनता और जलके भीतर प्रवेश करता है। शिक्षक पानीके भीतर तैरता रहता है और कवचधारी व्यक्ति उसकी गतिविधिका निरीक्षण और अनुकरण करता रहता है। जलके ऊपर धरातलपर रखे हुए एक पम्पसे कवचके भीतर हवा पहुंचायी जाती है, जिससे पानीमें काफी देर तक रहा जा सकता है।

## बोलने-सुननेवाला नकली आदमी

लन्दनके एक आविष्कारक ने एक ऐसा नकली आदमी बनाया है जो सुनता और उसीके अनुसार काम करता है। जब उससे कहा जाता है "खड़े हो जाओ", "दाहिना हाथ उठाओ", "पिस्तौल चलाओ" तब वास्तवमें वह ऐसा करने लगता है।

## अद्भुत केमरा

संसारके वैज्ञानिकोंने विभिन्न शक्तियोंके केमरोंका आविष्कार कर खूब सुख्याति लूटी है। परन्तु एक वैज्ञानिकने तो एक ऐसे केमरेका आविष्कार किया है जो कई दृष्टियोंसे अत्यन्त उपयोगी और अद्भुत है। इस केमरेसे एक सेकेण्डमें २००० तसवीरें ली जा सकेंगी! इसके साथ ही किस घटनाके होनेमें कितना समय लगा था, इस बातका भी पता फोटोको देखते ही चल जायगा। क्योंकि केमरेमें एक ऐसी विद्युत्-घड़ी लगी हुई है जो समयका निर्देश कर दिया करेगी। प्रत्येक फोटोपर इस घड़ीका भी फोटो निकल जाया करेगा, जिसमें घटित घटनाके समयका वास्तविक निर्देश रहेगा। इस प्रकार समय और समयके परिमाणका भी पता दर्शकको मिल जाया करेगा। चूंकि इस केमरेसे फोटो लेनेमें बड़ी शीघ्रता होगी, अतः किसी भी वस्तुका चलचित्र प्रत्येक दशामें लिया जा सकेगा। लन्दनमें जब इस केमरेके कार्यका प्रदर्शन हुआ तब इसके लिए दूध भरे हुए एक टबमें सङ्गमरमरका एक टुकड़ा ऊपरसे डाला गया। टुकड़ा गिरते ही, दूध स्वभावतः ऊपर उछला और कई इञ्च तक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसकी बौछारें उठीं। धीरे-धीरे दूधकी बौछारें कम हुईं, बुलबुले उठे, सतहपर धीमे-धीमे आन्दोलन होता रहा और अन्तमें केवल कम्पन रह गया, इसके पश्चात् यह भी रुक गया। दूधकी इन सारी अवस्थाओंका चित्र खूब स्पष्टता और सफलताके साथ लिया गया। यदि कैमरेमें एक मिनटमें १ लाख २० हजार फोटो लेनेकी वेगवती शक्ति न होती तो कितनी ही अवस्थाओंका चित्र असम्भव था।

## सांपोंसे विष निकालनेकी क्रिया

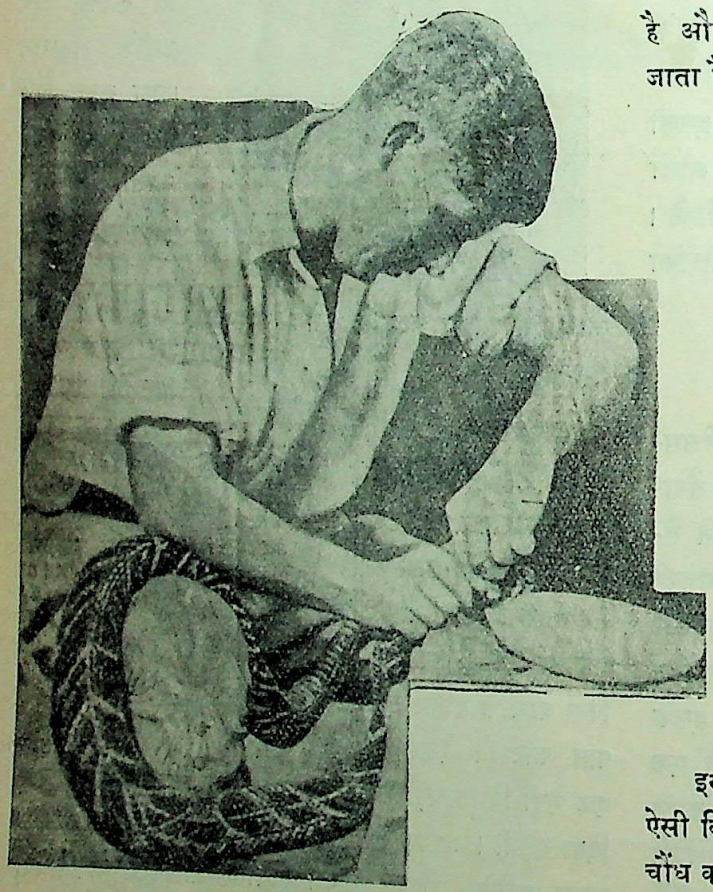

वैज्ञानिकोंने बहुत छानबीनके बाद यह आविष्कार किया था कि सांप-काटेकी उपयुक्त दवा सर्पका विष ही है, परन्तु इस विषको प्राप्त करनेके लिए बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता था। लेकिन अब सांपका विष यथेष्ट परिमाणमें प्राप्त करनेका प्रबन्ध हो गया है। अमेरिकाके फ्लोरिडा रेप्टाइल इन्स्टीट्यूटमें बाकायदे सांपोंसे विष निकाला जाता है। सांपोंसे विष निकालनेकी क्रिया वस्तुतः सांपों ही-सी भयानक है। किन्तु विष निकालनेवालोंके लिए यह बड़ा ही लाभदायक व्यापार है। सर्पका विष प्रायः ३० डालर प्रति औन्सके हिसाबसे बिकता है। विष निकालनेके लिए सर्पका गला ऊपरसे पकड़कर दबा दिया जाता है और दबाव पड़नेपर उसका जबड़ा खुल जाता है। इस प्रकार दबनेपर सांप बुरी तरह क्रोधित होकर काटनेकी इच्छा करता है और ऐसा करते ही सामने रखे हुए प्यालेमें उसका विष चू पड़ता है। सांपोंसे विष एक साथ ही प्रचुर परिमाणमें नहीं निकलता, इसलिए उन्हें चूहे खिला-खिला कर पाला जाता है और आठ-आठ दस-दस दिनोंपर पुनः विष चुवाया जाता है।

## अन्धा करनेवाली बन्दूक

इस विचित्र आकृतिकी छोटी-सी बन्दूकसे छर्रेके स्थानपर ऐसी किरणें निकलती हैं जिनसे किसी भी व्यक्तिको चकाचौंध करके कुछ कालके लिए अन्धा बनाया जा सकता है। शत्रु-पक्षके वायुयान-चालकोंको इस अस्त्र द्वारा अन्धा करके वायुयानोंको पृथ्वीपर गिराकर चकनाचूर किया जा सकता है। पुलिसके हाथमें यह बन्दूक रहनेपर चोरोंकी एक न चलेगी; परन्तु यदि चोरोंके ही हाथमें यह रही तो?

## प्रलयकारिणी किरणें

विज्ञानने जहां प्राणिमात्रके कल्याणके लिए अनेकानेक सुविधाओंको प्रदान किया है, वहीं उसके द्वारा कुछ ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आविष्कार भी हुए हैं जो भयानक संहारके साधन बनाये जा रहे हैं। अभी तक बमों, हवाई जहाजों और संहारकारी गैसोंसे ही लोग घबरा रहे थे, परन्तु संसारके सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० टेसलाने अब एक ऐसा आविष्कार किया है जिसे सुनकर दांतों-तले उंगली दबानी पड़ती है। डा० टेसलाके इस नव आविष्कारका नाम है 'मृत्यु-किरण।' मुक्त वायुमें अत्यन्त सूक्ष्म कणिकाओं द्वारा इस प्रकारकी किरणों-से २५० मीलकी दूरी और ऊँचाईपर उड़नेवाले १० हजार वायुयानोंको एक साथ गिराया जा सकता है। ये किरणें अपना काम इतना चुपचाप करेंगी कि किसीको कुछ भी पता न चलेगा और पता चलेगा भी तो तब, जब कि लाखों आदमी इसके प्रभावसे अकस्मात् भह-राकर गिर पड़ेंगे और सदाके लिए इस दुनियासे उठ जायंगे। डा० टेसलाका दावा है कि एक साथ १० लाख आदमियोंको निहत करनेकी क्षमता इन घातक किरणोंमें है। इन संहारकारिणी किरणोंके सम्बन्धमें डा० टेसलाका कथन है कि इनसे संहार-लीला होगी नहीं बल्कि रुक जायगी, क्योंकि इनसे युद्धका मार्ग अवरुद्ध हो जायगा। चीनकी दीवारकी तरह ये किरणें देश-रक्षक प्राचीर-सा काम करेंगी। केवल इतना ही नहीं कि इनसे किसी देश-विशेषकी रक्षा होगी, बल्कि आक्रमणके लिए इनका प्रयोग करना असम्भव रहेगा, क्योंकि इस प्रकारकी किरणें एक खास स्थानपर प्रयोगशालामें तैयार की जा सकेंगी और वहींसे इनसे काम भी लिया जा सकेगा। जिस किसी स्थानसे इनका प्रयोग नहीं किया जा सकेगा। अतएव एक-स्थानीय होनेके कारण ये किसी देशकी रक्षा तो शत्रुओंके आक्रमणसे कर सकती हैं; परन्तु स्वयं इनकी सहायतासे आक्रमण नहीं किया जा सकता।

किन्तु इस बातके लिए भी एक प्रतिवाद है और वह है बड़े-बड़े जलीय जहाजोंका। उक्त जहाजोंपर इस प्रकारकी किरणें पैदा की जा सकती हैं, बशर्ते कि इसके लिए उपयुक्त प्रयोगशाला बनानेके लिए आवश्यक लम्बाई-चौड़ाई मिल सके। यदि ऐसे जहाजोंपर 'मृत्यु-किरणों' का प्रबन्ध हो जाय तो वायुयानोंके आक्रमण भी बेकार हो जायें। पन-डुब्बियोंका अस्तित्व भी इनसे बेकार हो जायगा, क्योंकि यद्यपि हवाकी तरह पानीके भीतर ये किरणें संहारका काम उतना अच्छा नहीं कर सकतीं, फिर भी पनडुब्बियोंको सर्वथा क्षय करनेकी क्षमता तो इनमें है ही। डा० टेसलाका कहना है कि मृत्यु-किरणोंके आविष्कारमें बहुत दिनों तक अनुसन्धान करना पड़ा है और पिछले चार-पांच आविष्कारोंके संयोगसे यह नूतन आविष्कार हो सका है। इतने परिश्रम, खोज, विज्ञता और आविष्कारोंसे ये प्रलय-कारिणी किरणें बनी हैं!

## नये ढङ्गका बेहाला

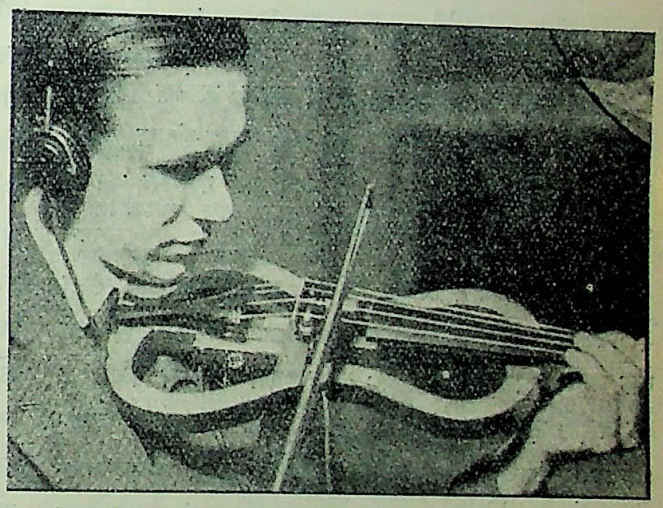

इस नये प्रकारके बेहालेमें एक ऐसी आवाज निकलती है जिसे केवल बजानेवाला ही सुनता है, दूसरा कोई नहीं। इस प्रकारके बाजेमें एक तार लगा हुआ है जिसके साथ टेलीफोनकी डिबिया-जैसी एक डिबिया Ear-phone लगी हुई है और यही बाजा बजाते समय कानोंमें लगा ली जाती है जिससे बादकको वाद्यका स्वर सुनाई पड़ता है। जब कभी इस बातकी आवश्यकता होती है कि सभी बेहालेका स्वर सुन सकें तब कानोंमें लगाये जानेवाले तारको एक लाउड-स्पीकरसे सम्बद्ध कर देते हैं। इस बेहालेसे अब किसी प्रकारकी अशान्ति या शोर-गुल होनेका कोई भय नहीं रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## शीतकालमें अधिक मृत्यु-संख्या

सारे संसारकी मृत्यु-तालिकाकी जांच करनेसे यह पता चलता है कि शीतकालमें ही मनुष्यकी मृत्यु-संख्या सबसे अधिक होती है। किन्तु यह मृत्यु सर्दी या पालाके कारण नहीं, बल्कि गर्मीके कारण होती है।

सुननेमें यह बात यद्यपि विचित्र मालूम पड़ती है, किन्तु है बिलकुल सत्य। अमेरिकाके Good Health पत्रमें एक अनुभवी चिकित्सक डा० जान हार्डी केलगने लिखा है कि जाड़ेमें इस मृत्यु-संख्याका कारण है Heat of overwarmed dwellings. अर्थात् अत्यधिक उष्ण वासस्थानकी गर्मी। जाड़ेके आरम्भ होते ही वृद्ध एवं भग्नस्वास्थ्य नर-नारी गरम कपड़ोंसे अपने शरीरको ढककर सर्दीसे रक्षा पानेकी चेष्टा करते हैं। किन्तु इसके फलस्वरूप वे न्यूमोनिया, इनफ्लुएञ्जा और छातीकी धड़कन बन्द हो जानेसे मृत्युको प्राप्त होते हैं। शीतकालमें मनुष्य अपनेको उष्ण वातावरणमें रखकर आराम करना चाहता है। किन्तु अपनेको गर्म रखनेका अति प्रयास, यह अति सावधानता ही सब विपत्तियोंका मूल है। लोग समझते हैं कि जाड़ेमें ठण्ढ लगकर सर्दी होनेकी अधिक आशङ्का रहती है। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने जीवनपर विचार करे, तो उसे मालूम होगा कि गर्मी और बरसातमें जितनी सर्दी-खांसी होती है, उतनी जाड़ेमें नहीं। शरीरमें फलानेलका गरम कोट, कमीज या स्वेटर, गलेमें गुलबन्द, सिरपर टोपी और पांवमें मोजा और इतनेपर भी कमरेकी बन्द खिड़कियां। किन्तु इतने गर्म स्थानसे बाहर निकलनेपर जहां कुछ भी ठण्ढी हवा लगी कि झट सर्दीने आक्रमण किया। और बाहरकी ठण्ढी हवासे एकबारगी बचे रहना भी सम्भव नहीं है। शरीरको इस प्रकार गर्म कपड़ेसे ढके रहनेका परिणाम यह होता है कि देहकी प्रतिरोध-शक्ति नष्ट हो जाती है, जिससे बाहर सर्दीमें आनेसे अति सामान्य छिद्रमार्गसे भी शरीरके अन्दर सर्दीका प्रवेश हो जाता है और उपद्रव शुरू हो जाते हैं। फिर ब्राङ्काइटिस, न्यूमोनिया प्रभृति रोगोंका आक्रमण होता है। यदि शरीरको ठण्ढसे इतना अधिक न बचाया जाय, तो हमारी देह अपनी स्वाभाविक ऋतु-सहनशीलताके फल-स्वरूप शीतके आक्रमणके विरुद्ध संग्राम करके आत्मरक्षा कर सकनेमें समर्थ हो सकती है। किन्तु शरीरकी यह स्वाभाविक शक्ति उसे अत्यधिक गर्म कपड़ेसे ढके रहनेके कारण लुप्त हो जाती है और शरीरमें अतिरिक्त ताप-सञ्चार हो जाता है।

इसके सिवा सभा-समिति, बैठक, सिनेमा, थियेटर आदि भी तो हैं जहां जाड़ेके दिनोंमें लोग अधिकतर जाया करते हैं। लोगोंकी भीड़से घरके अन्दर और भी गर्मी फैल जाती है; शरीर गर्म कपड़ेसे ढका रहता है; सिनेमा, और थियेटर-भवनको गर्म रखनेके लिए भी नाना प्रकारकी व्यवस्था की जाती है। इतने गर्म स्थानमें कई घण्टे तक रहनेके बाद जब लोग बाहर निकलते हैं, तब उन्हें ठण्ढ लगती है और इस ठण्ढका प्रतिरोध करनेकी शक्ति जिनके शरीरमें नहीं होती, उन्हें सर्दी पकड़ती है। इस सर्दीसे ज्वर और फिर फेफड़ोंमें Congestion होनेसे न्यूमोनिया पकड़ता है। शरीरके अतिरिक्त तापसे अभ्यस्त होनेके कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसमें शीत-प्रतिरोध करनेकी शक्ति लुप्त हो जाती है, जिससे चार-पांच दिनकी बीमारीसे ही रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

जाड़ेमें स्वस्थ शरीर रहनेके बहुत-से सुयोग प्राप्त होते हैं। शीतकालीन वायु निर्मल, धूलिहीन और रोग-कीटाणु मुक्त होती है। शीतकालकी वायु अस्वस्थ शरीरके लिए 'टानिक' का काम देती है। यह वायु श्वास-प्रश्वासमें हमारे फस-फुस यन्त्रको प्रसारित करती है, जिससे हम द्विगुण आक्सीजन वाष्प ग्रहण कर सकते हैं। इस अधिक आक्सीजन वाष्पसे हमारी शक्तिमें वृद्धि होती है, शरीर मजबूत बनता है। डाक्टर केलगने उपदेश दिया है:—शीतकालमें घरके दरवाजों और खिड़कियोंको सदा खुला रखना चाहिए। द्वार और खिड़कियोंको बन्द करके कमरेमें गर्मीका सञ्चार करना अत्यन्त हानिकारक है। सोने या बैठनेके कमरेका ताप अधिक न हो, इस ओर सदा ध्यान रखना चाहिए। अत्यधिक उष्ण वस्त्रसे शरीरको गर्म नहीं रखना चाहिए। शीतकालमें सर्दीका उतना भय नहीं, जितना शरीरको अत्यधिक गर्म रखनेका। इस बातको हमें अच्छी तरह जान लेना चाहिए। It is important to remember that in cold weather the danger from overheating is far greater than from chilling and that the danger of injury from overheating is far greater than in summer.

## अनिद्रा—क्यों ?

रातमें आंख मूंदे हुए बिछौनेपर पड़े हैं, किन्तु नींद नहीं आती—इसका दुःखद अनुभव बहुत लोगोंको होता है। इस अवस्थामें रातका एक-एक क्षण युगके समान प्रतीत होता है। बड़ी बेचैनी मालूम होती है।

अनिद्राके अनेक कारण हैं। दुश्चिन्ता, दुःख, अति परिश्रमके बाद शिथिलता तथा और कितने ही कारणोंसे अनिद्रा होती है।

हृदयमें किसी प्रकारकी विकलता, मूत्राशयमें किसी प्रकारकी पीड़ा या असुविधा, रक्तका चाप Blood pressure आदि कारणोंसे भी निद्रामें बाधा पहुंचती है। ऐसी स्थितिमें अविलम्ब डाक्टरकी सहायता लेनी चाहिए। पाकस्थलीमें गड़बड़ी होनेसे भी नींद नहीं आती। यह एक अत्यन्त साधारण कारण है।

अनिद्राको दूर करनेके लिए कुछ ऐसे नियम हैं, जिनका पालन करनेसे इस व्याधिसे बहुत-कुछ छुटकारा मिल सकता है। सोनेसे तीन घण्टा पूर्व तक गुरु भोजन नहीं करना चाहिए। सन्ध्या-कालमें कुछ तरल पदार्थ पान करना चाहिए; किन्तु वह ऐसा न हो, जिससे पेट भारी मालूम पड़े या पाकस्थलीमें वायुका सञ्चार करे। पेटमें वायु सञ्चय होनेसे तुरन्त बाइकार्बोनेट आव सोडा या सोडामिण्ट टेबलेटका व्यवहार करना चाहिए।

कुछ लोगोंके पांव सोते समय हिमवत् शीतल रहते हैं। इससे भी नींद नहीं आती। (Cold feet are responsible for many sleepless nights.) इसके लिए तलवेपर गर्म जलकी बोतलका व्यवहार करना चाहिए। सोते समय इस बातपर पूरा ध्यान रखना चाहिए कि पांवके तलवे गर्म रहें। गर्म जलमें पांव डुबाकर और फिर तौलियेसे पोंछकर सोनेसे पांव सर्द नहीं रहते।

सोनेसे पूर्व यदि Hot-bath या एक प्याला गर्म कोको या अरारोट या नींबूका रस पिया जाय, तो अनिद्रा दूर होती है।

रातमें सोनेसे दो घण्टा पूर्व किसी प्रकारकी चिन्तासे मस्तिष्कको पीड़ित नहीं करना चाहिए। लघु हास-परिहास या वार्तालाप द्वारा मनको स्निग्ध करके सोनेसे अच्छी नींद आती है। जो लोग रातमें पुस्तकें पढ़ते हैं, उन्हें यत्नके साथ पाठ्य-पुस्तकोंका निर्वाचन करना चाहिए। दार्शनिक, वैज्ञानिक या इसी प्रकारके किसी दुरूह विषयका ग्रन्थ रातमें नहीं पढ़ना चाहिए। Light literature पढ़नेसे चित्त प्रसन्न रहता है और निद्रामें सहायता मिलती है। सोनेके कमरेकी खिड़कियां खुली रहें और बिछौनेपर बहुत ज्यादा ओढ़नेके कपड़े नहीं रहने चाहिएं। ज्यादा मुलायम बिछौना भी हानिकारक है। बिछौना कुछ कड़ा हो—A moderately hard bed is best for sleep. बिछौनेका गद्दा ऊबड़खाबड़ न हो। सिर और पीठको सोते समय एक सीधमें रखना चाहिए। Head and spine should lie as straight as possible. तकिया कुछ नीचा (Low) रहना ही अच्छा है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

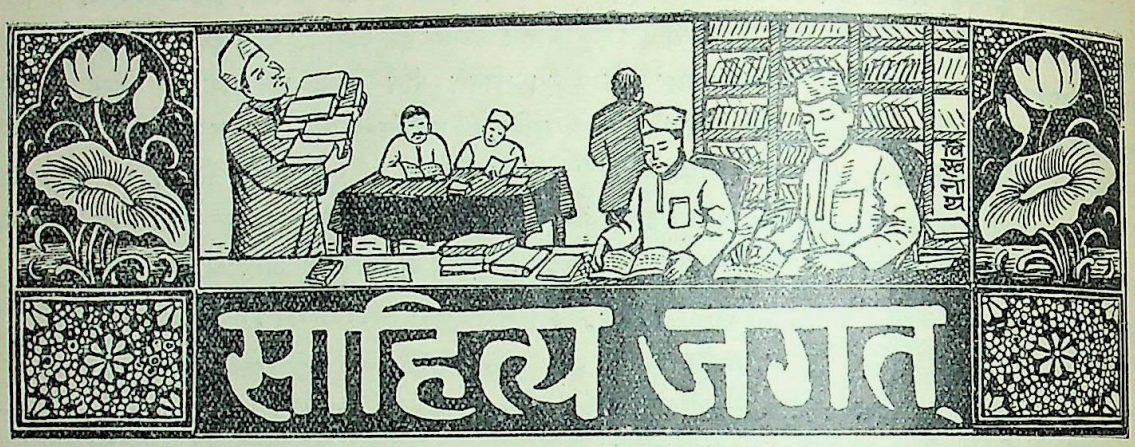


## श्रद्धाञ्जलि

आधुनिक हिन्दी-साहित्यके युग-प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्रकी अर्धशताब्दी निधन–तिथि देशके विभिन्न स्थानोंमें हिन्दी-भाषा-भाषियों द्वारा जिस उत्साहके साथ मनायी गयी है वह उस साहित्य-गुरुके सर्वथा उपयुक्त ही है। हिन्दीके साहित्य-जगत्में इस स्निग्ध किरणोज्ज्वल चन्द्रका उदय उस समय हुआ था जब हिन्दीके लिए संक्रमण-काल था, अर्थात् हिन्दी प्राचीन युगकी स्मृतिको पीछे छोड़ती हुई नवीन युगके अरुणोदयके प्रकाशमें प्रवेश कर रही थी। सिपाही-विद्रोहके बाद देशमें शान्ति स्थापित होनेपर अंग-रेजी शिक्षाके प्रचारके फलस्वरूप इस देशमें पाश्चात्य भाव-धाराका खरस्रोत बड़े वेगसे प्रवाहित हो चला था। नूतन आदर्श एवं भावनायें तत्कालीन सुधी-समाजके मनोराज्यको आलोड़ित करके उन्हें चञ्चलचित्त बना रही थीं। यद्यपि इस भाव-धाराके प्रवाहकी उद्दाम गति पहले-पहल बङ्गालमें ही परिलक्षित हुई थी, फिर भी बङ्गालसे सटे हुए अन्य प्रान्त भी इसके स्पर्श एवं प्रभावसे सर्वथा विरहित नहीं थे। ऐसी स्थितिमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र-जैसे अलौकिक प्रतिभाशाली महापुरुषके लिए यह कब सम्भव था कि वे इस नूतन युगकी वाणीको श्रवण करके भी उससे अनुप्राणित न होते? यही कारण है कि उनकी रचनाओंमें हमें प्राचीन और नवीन भावनाओंके एक साथ ही दर्शन होते हैं और इस समयसे ही हिन्दी-साहित्य अपने इस नूतन युगके अनुरूप साज-सज्जासे परिवेष्टित होकर क्रम-विकासके पथपर अग्रसर होता है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्रने अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभाकी बदौलत विभिन्न विषयोंपर एक साथ ही ग्रन्थ-प्रणयन करके मातृभाषाके मणि-मन्दिरका द्वार हमारे सामने उन्मुक्त कर दिया, जिससे हमें माताकी हिरण्मयी मूर्तिका सर्वप्रथम दर्शन हुआ। उस समय हमें ऐसा प्रतीत हुआ मानो सौन्दर्य, सुधा एवं सुषमा एकबारगी सजीव एवं मूर्त हो उठी हैं। हिन्दी-साहित्य-सेवियोंके मनमें नवीन आशा-आकांक्षायें उद्वेलित हो उठीं और वे अपनी इन आशा-आकांक्षाओंको सम्बल बनाकर साहित्यके कृशशरीरको परिपुष्ट करनेमें तत्पर हुए। इस प्रकार एक कर्मयोगीके रूपमें भारतेन्दुने जिस समय हिन्दीके साहित्योद्यानमें सुमन-सौरभ सरसित किया था, उस समय इस कुञ्जवनमें रस-लोलुप भ्रमर थे ही कितने? किन्तु साहित्यकी साधना तो तपस्वी एवं योगीके रूपमें ही व्यक्तिगत होती है। इसके लिए समुदायकी आवश्यकता नहीं होती। यदि आज भारतेन्दु जीवित होते तो वे यह देखकर कितने तृप्त होते कि जिस साहित्य–"कुञ्जवन" की उन्होंने रचना की थी उसमें आज रङ्ग-बिरङ्गे पुष्प प्रस्फुटित हो रहे हैं और उनके रसिक भ्रमरोंकी संख्या भी अब पर्याप्त हो गयी है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र युवावस्थामें केवल ३४ वर्षकी अल्पायुमें अपनी विलक्षण विद्या-बुद्धि एवं प्रतिभा-का चमत्कार दिखाकर परलोकवासी हुए, किन्तु अपने यौवनके दानके रूपमें जो दान वे हम हिन्दी-भाषा-भाषियोंके लिए छोड़ गये हैं वे ही हमें नित नूतनता प्रदान करते रहेंगे। क्योंकि यौवनका धर्म भी तो नूतनत्व ही है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्रकी पुण्यस्मृतिके प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलियां समर्पित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करते हुए हम यह आशा प्रकट करते हैं कि हम हिन्दी-भाषा-भाषियोंके हृदयमें मातृभाषाके प्रति असीम अनुराग उत्पन्न हो और उसके भण्डारको विविध मणिरत्नोंसे समृद्धिशाली बनानेकी नूतन प्रेरणा हमारे साहित्यिकोंके हृदयमें उद्दीपित हो।

× × × × ×

ईश्वर और धर्म केवल ढोंग है। लेखक और प्रकाशक—श्री भजामिशङ्कर दीक्षित, मुकाम बिछलखा, पो० रामनगर, जिला बाराबङ्की ( यू० पी० )। मूल्य ॥।)

इस पुस्तकमें लेखकने ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म, परलोक, भूतप्रेत और देवी-देवता आदि समस्त विषयोंको कपोल-कल्पित सिद्ध करनेका प्रयास किया है। धर्मके नामपर जो विविध मानव-सम्प्रदायोंमें परम्परागत प्रथायें, रूढ़ियां और अन्धविश्वास प्रचलित हैं तथा धर्मके आडम्बरका आश्रय लेकर संसारमें जो अनाचार, अविचार एवं पापाचार हो रहे हैं उन्हींके आधारपर लेखकने यह सिद्धान्त मान लिया है कि धर्म और ईश्वर सब ढोंग है। किन्तु धर्मके नामपर मनुष्य पापकर्म करते हैं, इससे धर्म और ईश्वर क्योंकर पाखण्ड सिद्ध हुए, यह कष्ट-कल्पना हमारी समझमें नहीं आती। साधारण मनुष्य जिन रूढ़ियों और अन्धविश्वासोंको धर्म समझकर आज उनमें लिप्त हो रहा है वे त्रिकाल-बाधित नहीं हैं। अज्ञानजनित होनेके कारण इनमें परिवर्तन होता रहता है। इसके विपरीत धर्मके जो सार्वभौम सिद्धान्त हैं वे सब देश और सब कालके लिए एक-समान लागू हैं। इन सिद्धान्तोंमें कभी परिवर्तन नहीं होता। वे शाश्वत और सनातन हैं। अतएव नीति या सदाचार, किसी भी रूपमें उन्हें मान लेनेसे धर्मका अस्तित्व स्वतः सिद्ध हो जाता है। ईश्वरके अस्तित्वको मिथ्या सिद्ध करनेमें लेखकने जो युक्तियां उपस्थित की हैं उनमें कुछ भी सार नहीं है। यदि लेखक इस विषयका दार्शनिक विवेचन करनेकी चेष्टा करते तो उनसे मतभेद रखनेवालेको भी इसके अध्ययनमें कुछ दिलचस्पी हो सकती थी। किन्तु ऐसा न करके लेखकने बिलकुल थोथी दलीलों द्वारा ईश्वरका अस्तित्व या अनस्तित्व-जैसे गहन और दुरूह विषयपर विचार करनेका हास्यास्पद प्रयत्न किया है। सारांश यह कि इस पुस्तकके विषय-प्रतिपादनमें विचार-मौलिकता या पाण्डित्यका अंश बहुत कम पाया जाता है। यदि ईश्वरके अस्तित्व और धर्मके पचड़ेमें न पड़कर लेखक केवल धर्मके नामपर प्रचलित अन्ध-विश्वासों और मूढ़-विचारोंकी निस्सारता सिद्ध करनेमें ही अपनी विद्या-बुद्धिका प्रयोग करते तो इससे उनका उद्देश्य कहीं अधिक सिद्ध होता।

यौवन। प्रणेता—श्री श्रीनिधि द्विवेदी; प्रकाशक—कलामन्दिर, बम्बई। पृष्ठ-संख्या ६४; मूल्य ॥।)

प्रस्तुत कविता पुस्तकमें कविकी ३१ कविताओंका संग्रह है। यों तो साधारणतः सभी कवितायें अच्छी हैं, परन्तु कुछ वास्तवमें सुन्दर हुई हैं। 'यौवन' में युवक-हृदयोंके लिए कहीं-कहीं भावोन्मादिनी पंक्तियां हैं। किसी-किसी रचनामें दुरूह शब्दोंका बाहुल्य है, पर प्रवाहमें शिथिलता नहीं आने पायी है। कुछ रचनाओंपर हिन्दीके यशस्वी कवि पण्डित सुमित्रानन्दन पन्तकी छाप दिखाई पड़ती है। फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि यौवन-प्रणेतामें यौवनका उन्माद है, लहर है और कहीं-कहीं ऊंची प्रतिभाका निदर्शन भी। पुस्तकमें आये हुए प्रायः सभी जटिल शब्दोंका अर्थ भी अन्तमें दे दिया गया है, इससे यह साधारण कविता-प्रेमियों-के कामकी भी हो गयी है। पुस्तककी छपाई-सफाई सुन्दर है। परन्तु यदि चित्र न दिया गया होता तो अच्छा होता। वह कविताके अनुरूप न हो सका। पुस्तकका मूल्य अधिक है, जो खटकता है। 'यौवन' के लेखक किसी दिन इससे भी अच्छी चीज दे सकेंगे, ऐसी आशा इसे देखकर की जा सकती है।

रूप-रेखा। ( पत्र-उपन्यास ) लेखक—श्री अनूपलाल मण्डल, साहित्यरत्न; प्रकाशक—युगान्तर साहित्य-मन्दिर, भागलपुर। पृष्ठ-संख्या १२२; मूल्य—सादी १), सजिल्द-का १।)

मण्डलजीने यह उपन्यास पत्रोंके रूपमें लिखा है। पत्र-साहित्यकी हिन्दीमें अभी बड़ी कमी है, अतएव उनका यह प्रयास सराहनीय है। रूप-रेखाकी कहानी मनोरञ्जक और भाषा प्रवाहमयी है। कहीं-कहीं भावोंका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण उच्च कोटिका हुआ है। मानव-स्वभावका सच्चा स्वाभाविक चित्रण करनेमें मण्डलजीको यथेष्ट सफलता मिली है। थोड़ी देरके लिए रूप-रेखा मनोरञ्जनकी अच्छी चीज है। कहानी-प्रेमियोंको इसे पढ़ना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



स्वार्थी संसार। लेखक—श्री शिवरामदास 'दास'; प्रकाशक—उपन्यास-बहार आफिस, काशी, बनारस। पृष्ठ-संख्या १२७; मूल्य १)।

प्रस्तुत पुस्तक एक नाटक है। इसमें कुछ सामाजिक प्रश्नोंपर प्रकाश डालनेके बहाने बहुत-सी बातें बेढङ्गे रूपसे भर दी गयी हैं। पुस्तकके भावमें तो सुधारकी आवश्यकता है ही, भाषा भी कहीं-कहीं बड़ी ऊटपटांग है। कहीं-कहीं तो ऐसा मालूम होता है कि लेखकने जो-कुछ मनमें आया है, लिख मारा है। हिन्दीमें नाटकोंकी बड़ी भारी कमी है, इसे मानते हुए भी हम यह नहीं स्वीकार कर सकते कि इस प्रकारके नाटकोंसे नाटक-साहित्यके अभावकी समुचित पूर्ति होगी। इस नाटकमें कहीं-कहीं पद्य भी हैं, परन्तु उनमें किसी भी नियमका पालन किया गया नहीं मालूम होता।

नाटकका डायलग बिलकुल अस्वाभाविक है। एक स्थान-पर एक धनी-मानी व्यक्तिका लड़का एक साधुको 'दस सहस्र मुद्रा भेंट' कर बैठता है। इसी प्रकारकी कितनी ही अस्वा-भाविक बातें पुस्तकमें भरी हुई हैं। पाठक एक पद्यका नमूना देखें:—

पकी पकाई हांड़ीको किस कुत्तेने फोड़ दिया?
कहां छिपा हुआ वह गेरुआ गीदड़, जिसने हमको
कोढ़ दिया॥

सफलताके रहस्य। (प्रथम भाग)। लेखक—कविराज बी० एन० मित्तल 'लोकाश'; प्रकाशक—लोकाश केमिकल वर्क्स, राजनादगांव, (सी० पी०) बी० एन० आर०। पृष्ठ-संख्या २६४, मूल्य ३)।

प्रस्तुत पुस्तकमें लेखकने व्यापार और कारबारमें सफलता-प्राप्तिके बहुत-से मार्ग बताये हैं। अनेक पृष्ठोंमें दाम्पत्य जीवनको सफल और मधुर बनानेके सम्बन्धमें भी बहुत-सी बातें बतायी गयी हैं। बेकारोंके लिए धन कमानेके साधनोंपर भी प्रकाश डाला गया है। पुस्तकके अन्तमें हमारी दैनिक आवश्यकतामें आनेवाली तेल, साबुन-जैसी कितनी ही उपयोगी वस्तुओंके बनानेकी विधि भी सरल भाषामें लिखी गयी है। पुस्तक उपयोगी है, परन्तु मूल्य कुछ अधिक मालूम होता है।

काव्य कलाधर। (मासिक पत्र) सम्पादक—पं० रमाकान्त त्रिपाठी 'प्रकाश' तथा पं० सिद्धिनाथ शुक्ल 'सिद्धि'; प्रकाशक—काव्यकलाधर कार्यालय, १६१।१ हरिसन रोड, कलकत्ता। 'विश्वमित्र' साइजके ५६ पृष्ठ, वार्षिक मूल्य २॥), एक अङ्क।)।

यह कविता-सम्बन्धी सुसम्पादित पत्र है। इसमें आलो-चना, हास्यरस और समस्या-पूर्तियोंके अतिरिक्त रस, छन्द और अलङ्कार-जैसे उपयोगी विषयोंपर धारावाही रूपसे लेख निकल रहे हैं। पत्र अपने विषयका अच्छा और अपनाने योग्य है।

दी राज हेरल्ड—(The Raj Herald) सम्पादक—कामाख्यादत्त राम। वार्षिक मूल्य—१०), प्रकाशक—लख-नऊ पबलिशिंग हाउस, हजरतगञ्ज, लखनऊ।

इस मासिक पत्रमें अंगरेजी, हिन्दी और उर्दूमें विभिन्न विषयोंपर लेख निकलते हैं। पिछले दो अङ्क जो हमारे सामने हैं, उनमें डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सर राधाकृष्णन् और बाबू राजेन्द्रप्रसादजी जैसे महान् व्यक्तियोंके लेख प्रकाशित हुए हैं। पत्रका सम्पादन सुन्दर रीतिसे होता है।

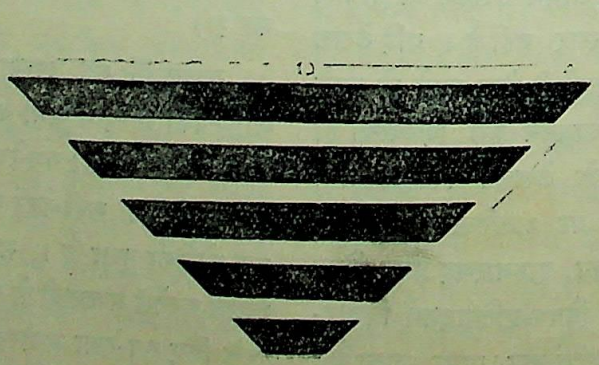

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

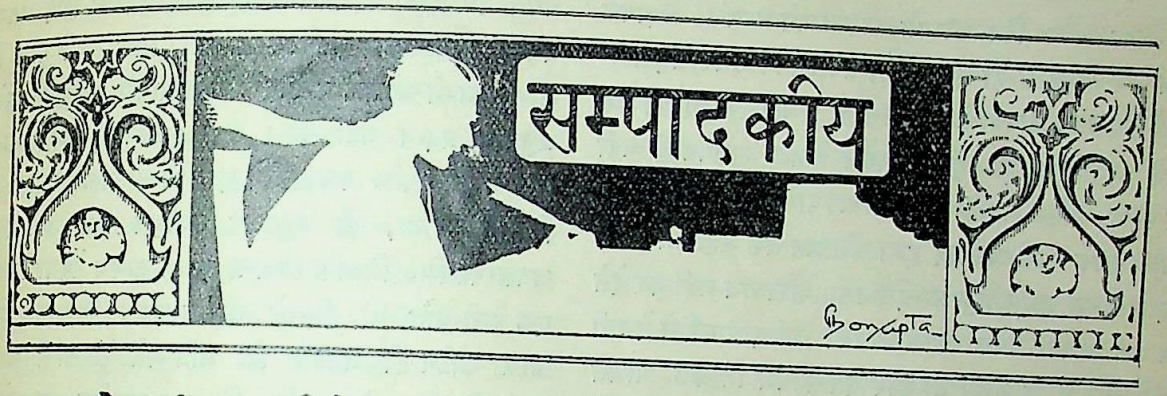


## असेम्बलीका अधिवेशन

कांग्रेस-दलके सदस्योंके प्रवेशके कारण व्यवस्थापिका परिषद्के जिस अधिवेशनकी ओर देशवासियोंका ध्यान विशेष रूपसे आकृष्ट हो रहा था वह दिल्लीमें गत २१ जनवरीसे आरम्भ हो गया। परिषद्-भवनमें गांधी-टोपी-धारी कांग्रेस-सदस्योंका दृश्य इस बारके अधिवेशनकी एक खास विशेषता बतायी जाती है। प्रथम दिनकी बैठकमें ही कांग्रेस-दलकी ओरसे श्रीयुत सत्यमूर्तिने अधिवेशनको स्थगित करनेके सम्बन्धमें एक निन्दात्मक प्रस्ताव रखा। महात्मा गांधीके अ० भा० ग्राम्य उद्योग-सङ्घके विरुद्ध भारत-सरकारकी ओरसे जो एक गोपनीय इश्तिहार जारी किया गया था उसीके सम्बन्धमें श्रीयुत सत्यमूर्तिने सरकारकी इस सर्वथा अनुचित एवं सङ्कीर्ण मनोवृत्तिकी निर्भर्त्सना करनेके लिए यह प्रस्ताव उपस्थित किया था। श्रीयुत सत्यमूर्तिने अपने ओजस्वी और साथ ही युक्तिपूर्ण भाषण द्वारा सरकारकी इस ईर्षाजनित सङ्कीर्णतापर विशद प्रकाश डाला जिसके आधारपर यह सर्कूलर या गश्ती पत्र जारी किया गया था। आपने कहा—"महात्मा गांधी सत्यकी आत्मा हैं। जो गांधीको जानता है वह इस तथ्यको भी जानता है। फिर भी भारत-सरकार इस महापुरुषके प्रति पक्षपात-बुद्धिसे प्रेरित होकर कहती है कि 'हम उनके वक्तव्योंको उनके वाह्य अर्थमें ही स्वीकार नहीं कर सकते।' " आगे चलकर एक दूसरे स्थलपर आपने कहा— "It betrays an amount of suspicion and distrust which is unworthy of any decent or dignified Government." अर्थात् इस गश्ती पत्रसे जैसे सन्देह और अविश्वास टपकते हैं वे किसी भी भद्र या प्रतिष्ठित सरकारके सर्वथा अनुपयुक्त हैं।" इससे तो यह कहीं अच्छा होता कि सरकार यह साहस करके कह देती कि "हम तलवारके जोरपर यहां हैं और तब तक यहां रहेंगे जब तक तुम निकाल-बाहर न कर दो।" सरकारके इस स्पष्ट कथनको लोग समझ सकते हैं; किन्तु एक सांसमें सहयोगकी बात करना और दूसरी सांसमें हमारे सहयोगको ठुकरा देना निरा दम्भके सिवा और कुछ नहीं है। सरकारकी ओरसे होम मेम्बर सर हेनरी क्रेकने गश्ती पत्रके समर्थनमें जो उत्तर दिया, उसमें आपने कुछ पत्रोंके संवाददाताओंके पत्रोंसे अवतरण देकर तथा आचार्य कृपलानीके एक वक्तव्यका कुछ अंश उद्धृत करके यह सिद्ध करनेकी चेष्टा की कि गांधीजीकी इस योजनाके पीछे राजनीतिक उद्देश्य छिपा है जैसा कि सरकारने अनुमान किया है और यह अनुमान निराधार नहीं कहा जा सकता। किन्तु सर हेनरी क्रेकके इस कथनका जब श्रीयुत गोविन्दवल्लभ पन्तने यह कहकर खण्डन कर दिया कि ग्राम-उद्योग-सङ्घके सदस्योंके सम्बन्धमें यह नियम रखा गया है कि वे किसी प्रकारके कानून-भङ्ग-सम्बन्धी आन्दोलनमें भाग नहीं ले सकते, उस समय होम-मेम्बरको भी यह कहना पड़ा कि—"That is highly commendable." यह बहुत ही प्रशंसनीय है। होम-मेम्बरकी इस स्वीकारोक्तिसे ही यह स्पष्ट है कि सरकारने अ० भा० ग्राम-उद्योग-सङ्घके नियमोंसे परिचित हुए बिना ही केवल सन्देहपर गांधीजीके प्रभावके प्रति ईर्षालु होनेके कारण ही यह पत्र जारी किया था। सरकारकी इस मनोवृत्तिके सम्बन्धमें हमारे अनुमानकी पुष्टि एक और बातसे होती है। मि० जिन्नाने जब कानूनी सदस्य सर एन० एन० सरकारसे यह पूछा कि महात्मा गांधीके—जिन्हें आप भी सत्यकी आत्मा Soul of truth स्वीकार करते हैं—वक्तव्य-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के सिवा और किस बातसे सरकारको उनके उद्देश्यके सम्बन्धमें विश्वास हो सकता है, तब आपने उत्तर दिया—"यह केवल दो वाक्योंमें हो सकता है। महात्माजी यह कह दें कि उन्होंने कानून-भङ्ग-आन्दोलन केवल स्थगित ही नहीं कर दिया, बल्कि सदाके लिए उसका परित्याग कर दिया।" इसका साफ-साफ अर्थ यह हुआ कि जब तक महात्मा गांधी सदाके लिए कानून-भङ्ग-आन्दोलनका परित्याग नहीं कर देते तब तक सरकार उनके प्रत्येक कार्यको सन्दिग्ध दृष्टिसे देखती रहेगी और उनके किसी भी लोकहित-कार्यमें निश्छल भावसे सहयोग प्रदान नहीं करेगी।

## अध्यक्षका निर्वाचन

व्यवस्थापिका-परिषद्के अध्यक्ष-पदके लिए कांग्रेस-दलने अपनी ओरसे मि० टी० ए० शेरवानीको और मि० जिन्नाके स्वतन्त्र दलने सर अब्दुर्रहीमको खड़ा किया था। मि० शेरवानीके पक्षमें ६२ और सर अब्दुर्रहीमके पक्षमें ७० वोट आये। अतएव सर रहीम बहुमतसे अध्यक्ष निर्वाचित हुए। यद्यपि सर रहीम बहुमतसे विजयी हुए, किन्तु यथार्थ लोकमतकी दृष्टिसे विचार किया जाय तो वास्तविक विजय मि० शेरवानीकी ही कही जायगी। क्योंकि जहां मि० शेरवानीको कुल वोट निर्वाचित सदस्योंके मिले, वहां सर रहीम अपने पक्षमें सिर्फ २९ निर्वाचित भारतीय सदस्योंके वोट प्राप्त कर सके। बाकी वोट सरकारी अफसरों, सरकार द्वारा नामजद सदस्यों और यूरोपियन सदस्योंके उन्हें प्राप्त हुए। फिर भी सर अब्दुर्रहीमके अध्यक्ष-निर्वाचनका सारे देशने अभिनन्दन किया है और वह इस कारणसे कि आप एक सुयोग्य एवं निर्भीक राजनीतिज्ञ हैं और इससे पहले आप मद्रास हाईकोर्टके विचारपति, बङ्गाल-सरकारकी कार्यकारिणी समितिके सदस्य बनकर तथा व्यवस्थापिका-परिषद्के स्वतन्त्र दलका नेतृत्व करके पर्याप्त अनुभव, अभिज्ञता एवं ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। परिषद्के समस्त दलोंने आपको कार्य-सञ्चालनमें सहयोग प्रदान करनेका विश्वास दिलाया है।

## श्री शरत्चन्द्र बोस

श्रीयुक्त शरत्चन्द्र बोस सन् १८१८ के रेगुलेशनके अनुसार नजरबन्द होते हुए भी कलकत्ता शहरके मतदाताओं द्वारा व्यवस्थापिका परिषद्के गत निर्वाचनमें निर्विरोध चने गये। परिषद्के अधिवेशनमें उपस्थित होनेके लिए आपको गवर्नर जेनरलका आह्वान-पत्र भी मिल चुका था। फिर भी सरकारने आपको परिषद्के अधिवेशनमें उपस्थित होनेकी अनुमति प्रदान नहीं की। इस सम्बन्धमें कांग्रेस-सदस्य श्रीयुक्त एन० सी० बारडोलीने एक निन्दात्मक प्रस्ताव उपस्थित किया था, जो बहुमतसे स्वीकृत किया गया। इस अवसरपर मि० जिन्नाके स्वतन्त्र दलका तटस्थ रहना सचमुच एक ऐसी बात थी, जिससे कांग्रेस-दलके लिए यह निश्चय करना कठिन हो गया है कि भविष्यमें सरकारी कार्यों के विरोधमें उसे कहां तक मि० जिन्नाका सहयोग प्राप्त होगा। कानूनी सदस्य सर एन० एन० सरकारने अपने भाषणमें व्यवस्थापिका परिषद्को एक अधीनस्थ व्यवस्था-परिषद् बताते हुए यह कहा कि इसके सदस्योंको कोई स्वतन्त्र विशेषाधिकार Priviliges प्राप्त नहीं हैं। किन्तु इसके उत्तरमें कांग्रेस-दलके नेता श्रीयुत भूलाभाई देसाईने अकाट्य युक्तियों द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि विशेषाधिकारकी प्रतिष्ठा पूर्व दृष्टान्त Precedent द्वारा ही होती है और इस सम्बन्धमें परिषद्के सामने एक पूर्व दृष्टान्त मौजूद है। अर्थात् इससे पूर्व इसी प्रकार श्रीयुक्त सत्येन्द्रचन्द्र मित्रको नजरबन्दीकी हालतमें ही सदस्य निर्वाचित होनेपर सरकार उन्हें अधिवेशनमें उपस्थित होनेकी अनुमति प्रदान कर चुकी है। दूसरी युक्ति श्रीयुत देसाईकी यह थी कि परिषद्के विशेषाधिकार भले ही प्राप्त न हों, किन्तु व्यक्तिको जो विशेषाधिकार प्राप्त है, उसके अनुसार श्रीयुत शरत् बोसको अधिवेशनमें उपस्थित होनेकी अनुमति मिलनी चाहिए थी।

कानूनी सदस्यने व्यवस्थापिका परिषद्को एक Subordinate body बताया है। किन्तु अधीनस्थ संस्था ही क्यों, हम तो इसे एक Toy legislature समझते हैं। क्योंकि शासकोंकी दृष्टिमें अभी भारतवासी इतने सयाने नहीं हुए हैं कि वे वास्तविक अधिकारसम्पन्न व्यवस्थापिका सभासे काम ले सकें। इसलिए पहले अभ्यास करनेके लिए उन्हें व्यवस्थापिका परिषद् या भारतीय पार्लामेण्ट-सी यह खिलौना दिया गया है।

## वायसरायका भाषण

व्यवस्थापिका परिषद्के अध्यक्षका निर्वाचन हो जानेके बाद वायसरायने परिषद्के सामने एक भाषण किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भाषणमें संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टका केवल गुणकीर्त्तन किया गया था। इसके सिवा सरकारने अब तक कृषि, उद्योग-धन्धा, शिक्षा आदिकी उन्नतिके लिए जो-कुछ किया है और आगे करनेका विचार रखती है, उसका भी भाषणमें विशेष रूपसे उल्लेख किया था। आपके भाषणमें न तो कोई नवीनता थी और न भारतके लिए उसमें आशा एवं उत्साहकी कोई वाणी थी। जिस प्रस्तावित शासन-विधानका सम्पूर्ण देशने एक-स्वरसे विरोध किया है, जो देशके लिए सर्वथा नैराश्यपूर्ण, असन्तोषजनक एवं अपमानकारक है, जिसमें भारतकी राष्ट्रीय आकांक्षाओंपर अवज्ञापूर्ण पदाघात किया गया है, उसी शासन-विधानकी बार-बार विरुदावली बखान करना और उसे ग्रहण करनेके लिए देशवासियोंसे अपील करना सचमुच एक ऐसी बात है, जिसे हम परिहासके सिवा और कुछ नहीं कह सकते। वायसरायने अपने इस भाषणमें बड़ी सावधानीसे कहीं Dominion Status शब्दका व्यवहार करनेकी भूल नहीं की है। क्योंकि इस भूलका कटु अनुभव आपको इससे पहले मिल चुका है। वायसरायने अपने इस भाषणमें एक खास बात यह स्वीकार की है कि भारत-सरकार बराबर प्रत्यक्ष निर्वाचन Direct election के पक्षमें थी और इसके अनुकूल ही उसने अपनी सम्मति भी प्रकट की थी। यदि यह बात है, तो फिर संयुक्त कमेटीके सदस्योंने भारत-सरकारकी सम्मति और भारतीय लोकमतको ठुकराकर अप्रत्यक्ष-निर्वाचन Indirect election की सिफारिश क्यों की है? इसीलिए न, कि भारतीय शासन-विधानकी रचनामें भारत-सरकार या भारतीय लोकमतकी कोई गणना ही नहीं है।

## भारतके लिए एक और बन्धन

ओटावा-समझौता और मोदी-लङ्काशायर-पैक्टके बाद अब एक और तथाकथित वाणिज्य-समझौता इंगलैण्ड और भारतके बीच हुआ है। मालूम नहीं इसे समझौता कहें अथवा पराधीन एवं परवश भारतके दुर्बल कन्धोंपर जबर्दस्ती लादा गया एक बोझ! क्योंकि इस समझौतेकी एक खूबी यह है कि गत ६ महीनेसे ब्रिटिश सरकार और भारत-सरकारके बीच इस समझौतेको लेकर गुप्त बातचीत चल रही थी और इस सम्बन्धमें भारतीय व्यवस्थापिका परिषद् तथा भारतकी वाणिज्य-संस्थाओंको एकदम अन्धकारमें रखा गया तथा उनका मतामत जाननेकी कोई आवश्यकता नहीं समझी गयी। किन्तु एक ओर यदि भारतीय वाणिज्य-संस्थाओंकी इस प्रकार अवहेलना की गयी, तो दूसरी ओर इंगलैण्डके बोर्ड आव ट्रेडके प्रधान सर रुन्सीमैन लङ्काशायरके प्रतिनिधियोंसे बराबर मिलकर राय-मशविरा करते रहे। इस प्रकार जब समझौतेकी सारी शर्तें ब्रिटिश सरकार और भारत-सरकारके बीच तय कर ली गयीं, तो एक दिन भारतने अचानक यह संवाद सुना कि लण्डनमें समझौता-पत्रपर ब्रिटिश सरकारकी ओरसे सर रुन्सीमैन और भारत-सरकारकी ओरसे सर बी० एन० मित्रने हस्ताक्षर कर दिये। बस, यही वह एकतरफा समझौता है, जिसे 'समझौता' नामसे अभिहित किया गया है।

यह समझौता ओटावा-पैक्टसे भी कई कदम आगे बढ़ गया है। इसके अनुसार किसी भी भारतीय व्यवसायको—आवश्यकता होनेपर भी—इतना संरक्षण नहीं मिल सकता, जिससे इंगलैण्डके किसी भी व्यवसायको कुछ भी आघात पहुंचे। वाणिज्य-व्यवसायमें इंगलैण्ड भारतका एक शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वी है, किन्तु अपने इस शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वीके विरुद्ध भारत इस प्रकार जकड़ दिया गया है कि वह अपने व्यवसायोंका पर्याप्त संरक्षण तो कर ही नहीं सकता। इसके सिवा उसे अपने अन्यान्य विदेशी प्रतिद्वन्द्वियोंके मुकाबले इस प्रतिद्वन्द्वीके प्रति कुछ रियायत दिखानी होगी। अच्छा, अब इसकी शर्तोंपर विचार कीजिये। एक शर्त तो यह है कि जब कभी किसी व्यवसायको पर्याप्त संरक्षण देनेके सम्बन्धमें उस व्यवसायकी दशाओंकी जांचका भार टेरिफ बोर्डके ऊपर सौंपा जायगा, तो भारत-सरकार इंगलैण्डके उसी व्यवसायके प्रतिनिधियोंको भी इस बातका पूरा मौका देगी कि वे टेरिफ बोर्डके सामने अपने पक्षका समर्थन करें और दूसरे पक्षकी युक्तियोंके विरुद्ध अपनी युक्तियां उपस्थित करें। इस प्रकार अंगरेज व्यवसायियोंको यह हक दिया गया है कि वे भारतकी वाणिज्य-नीतिमें हस्तक्षेप करें और उनकी मञ्जूरी लिये बिना भारतकी वाणिज्य-नीति निर्धारित नहीं होगी। दूसरी शर्त यह है कि भारत-सरकार यह वादा करती है कि किसी संरक्षित व्यवसायकी दशाओंमें आमूल परिवर्तन होनेपर भारत-सरकार स्वयं या ब्रिटिश सरकारके अनुरोधपर वर्तमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



संरक्षण-करकी उपयुक्तताके सम्बन्धमें जांच करा सकती है और इस प्रकारकी जांचके समय ब्रिटिश व्यवसायियोंकी प्रार्थनाओंपर पूर्ण रूपसे विचार किया जायगा। यहां भी ब्रिटिश व्यवसायियोंके स्वार्थपर ही ध्यान रखा गया है। कारण, ब्रिटिश सरकारके अनुरोध करनेपर भारत-सरकारको बाध्य होकर किसी संरक्षित व्यवसायकी दशाकी जांच करानी होगी और यह निश्चित है कि ब्रिटिश सरकारका यह 'अनुरोध' भारत-सरकारके लिए आदेश-तुल्य होगा। किसी संरक्षित व्यवसायकी दशाओंमें 'आमूल परिवर्तन' हुआ है या नहीं, इसके निर्णायक भी अंगरेज व्यवसायी ही होंगे। समझौतेकी एक धारामें कहा गया है कि भारत-सरकार इस बातका वादा करती है कि किसी भारतीय व्यवसायको उसी मात्रामें संरक्षण दिया जायगा, जिससे विदेशी वस्तुका मूल्य उसी प्रकारकी भारतीय वस्तुके मूल्यके समान हो जाय। और इस धारा नं० २ के साथ यह भी जोड़ दिया गया है कि 'जब कभी सम्भव होगा, विलायती वस्तुओंपर कम ड्यूटी लगायी जायगी।' इस 'जब कभी सम्भव होगा' का अर्थ है 'सदा' सम्भव होगा और इसी अभिप्रायसे धारा नं० ३ के साथ यह पुछल्ला जोड़ दिया गया है, जो भारतीय व्यवसायोंके विकासके मार्गमें मारात्मक सिद्ध हुए बिना नहीं रह सकता।

इस प्रकार इस समझौतेमें भारतकी ओरसे इंगलैण्डके लिए इतने वादे किये गये हैं और इनके बदलेमें भारतके लिए ब्रिटिश सरकारने क्या वादा किया है? कुछ नहीं। ब्रिटिश सरकार सिर्फ भारतसे आनेवाले कच्चे मालकी आमदनीकी वृद्धि करनेके उपायोंपर "विचार करेगी।" भारतके प्रति कितनी बड़ी उदारता है! और इसीको समझौता बताकर हमें ग्रहण करनेके लिए कहा जा रहा है। इसे समझौता न कहकर यही कहना चाहिए कि यह एकतरफा समझौता सम्पूर्णतया इंगलैण्डके स्वार्थोंपर ध्यान रखकर रचा गया है और इसमें आदान-प्रदानका भाव कुछ भी नहीं है। एक ओर तो भारतको भावी शासन-विधानके आर्थिक संरक्षणोंसे इस प्रकार आबद्ध किया जा रहा है जिससे वह स्वतन्त्र रूपसे अपनी अर्थ-नीति एवं वाणिज्य-नीतिका प्रवर्तन न कर सके और दूसरी ओर नाना प्रकारके कृत्रिम समझौतोंका भार उसके ऊपर लादकर भारतके बाजारको सदाके लिए बिलायती मालकी खपतके लिए सुरक्षित बनाया जा रहा है।

भारत परवश होनेके कारण इस समय सर्वथा असहाय हो रहा है। अतएव इसके प्रतिकारका एकमात्र उपाय देशवासियोंके लिए यही हो सकता है कि वे धर्म समझकर स्वदेशीका व्रत ग्रहण करें और यह सङ्कल्प कर लें कि हानि उठाकर भी स्वदेशी वस्तुओंका ही व्यवहार करेंगे। एक पराधीन देशके वाणिज्य-व्यवसाय और उद्योग-धन्धोंकी उन्नतिके लिए उस देशके निवासियों द्वारा स्वदेशी व्रत ग्रहणके सङ्कल्पसे बढ़कर और दूसरा कोई अमोघ साधन हो ही नहीं सकता। देशके कोने-कोनेमें स्वदेशी व्रतकी वाणी प्रतिध्वनित करके, प्रत्येक नर-नारीके कानोंमें स्वदेशीका महान् मन्त्र फूंक कर, प्रत्येक हृदयको स्वदेशी भावनासे भरकर स्वदेशी वस्तुओंके लिए देशव्यापी अनुराग उत्पन्न कर दीजिये जिससे स्वार्थियों द्वारा देशके ऊपर लादे गये समझौते निष्फल हो जायं।

व्यवस्थापिका परिषद्में इस समझौतेको लेकर वाद-विवाद चल रहा है। इसके विरुद्ध तीन संशोधन उपस्थित किये गये हैं। इन पंक्तियोंके लिखे जानेके समय तक उनका परिणाम नहीं मालूम हुआ है। किन्तु हमें आशा है कि परिषद्के सदस्य इस स्वार्थमूलक एवं अनिष्टजनक एकतरफा समझौतेको ठुकराकर अपने कर्तव्यका पालन करेंगे।

## भारतीय महिलायें और राजनीति

तुर्कीके स्वाधीनता-आन्दोलनमें गाजी मुस्तफा कमाल-पाशाका साथ देनेवाली वीर नारी हलीदा बेगम इस समय भारत आयी हुई हैं। आपने अपने एक भाषणमें कहा है:—"प्रत्येक जातिका आधा भाग स्त्री होता है। यदि किसी देशकी स्त्रियोंको पुरुषोंके समान अधिकार न दिये जायं, यदि उन्हें इस बातका बोध नहीं हो कि देशको उन्नत एवं सुख-सम्पन्न करनेमें उनका भी पुरुषोंके समान ही दायित्व है, तो फिर उस देशका सुख-स्वाच्छन्द्य असम्भव ही समझना चाहिए। पूर्वके समस्त देशोंमें स्त्रियोंकी समस्या एक समान है। जिस देशकी उन्नतिमें स्त्रियोंका सहयोग नहीं, वह देश बाहरसे देखनेमें चाहे कितना ही प्रगतिशील क्यों न प्रतीत हो, किन्तु वस्तुतः उसे अन्तःसार-शून्य ही समझना चाहिए।" तुर्कीके स्वातन्त्र्य-संग्राममें वहांकी नारियोंने जो गौरवोज्ज्वल भाग लिया था उसके अनुरूप ही हलीदा बेगम ने ये सुविवेचित विचार प्रकट किये हैं। हम भारतीयोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिए इस कथनमें जो यथार्थता एवं सारवत्ता है उसे बतानेकी आवश्यकता नहीं। देशकी प्रगतिके प्रत्येक क्षेत्रमें जब तक हम नारियोंका सहयोग प्राप्त करके अग्रसर नहीं होंगे, तब तक हमें अभीष्ट सफलता नहीं मिल सकती।

यह सन्तोषकी बात है कि भारतके राष्ट्रीय एवं सामाजिक क्षेत्रमें हमें कुछ नारियोंके उत्साह और कर्मोद्यमका परिचय मिलने लगा है। नारी-जागरणके फल-स्वरूप इस देशकी शिक्षिता महिलाओंमें भी सक्रियता दृष्टिगोचर होने लगी है, यह वस्तुतः बड़ा ही शुभ लक्षण है। अब ये महिलायें केवल अन्तःपुरमें रहकर अपने कुटुम्बके संकुचित कर्म-क्षेत्रका ही परिचालन नहीं कर रही हैं, बल्कि समाज एवं राष्ट्रके वृहत्तर कर्म-क्षेत्रमें भी उत्साहपूर्वक अग्रसर हो रही हैं। अभी हालमें कराचीमें जो अ० भा० नारी-सम्मेलन हुआ था उसकी कार्यवाहियोंका प्रत्यक्ष अवलोकन करके एक प्रसिद्ध अंगरेज महिलाने यह मत प्रकट किया है कि भारतकी स्त्रियां सबसे पहले राजनीतिक समस्याका समाधान चाहती हैं, इसके बाद अन्यान्य समस्याओंका। नारी-सम्मेलनमें संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टकी निन्दा करते हुए उसे जो अग्राह्य ठहराया गया है, उसे ही लक्ष्य करके उक्त अंगरेज महिलाने अपना यह विचार प्रकट किया है। किन्तु इसमें आश्चर्य करनेकी कोई बात नहीं है। एक पराधीन देशकी नारियोंके लिए इस प्रकारका विचार प्रकट करना सर्वथा स्वाभाविक है। देश जब तक स्वतन्त्र नहीं होता, देशके सम्पूर्ण शासनपर देशवासियोंका जब तक अधिकार नहीं होता, तब तक किसी भी क्षेत्रमें राष्ट्र-कर्मियोंकी रचनात्मक शक्तियां अप्रतिहत गतिसे संलग्न नहीं हो सकतीं। तुर्की स्वाधीन और स्वतन्त्र बनकर ही सामाजिक क्रान्ति उत्पन्न करनेमें सफल हुआ है। पराधीनताके कारण ही भारतकी विद्या, बुद्धि, प्रतिभा एवं सहज शक्ति विकसित नहीं होने पाती। जिस दिन भारत स्वतन्त्र होगा, एक सुप्राचीन सभ्यता एवं संस्कृतिके उत्तराधिकारीके रूपमें उसे अपने गौरवपूर्ण अतीत एवं उज्ज्वल भविष्यका आत्मबोध होगा, उसी दिन एक महान् भारतीय राष्ट्रका निर्माण सम्भव होगा और इस निर्माणमें भारतके नर-नारियोंका समान भाग होगा। इस लक्ष्यको ध्यानमें रखकर ही आज भारतकी कर्मी महिलायें अपने कार्य-क्षेत्रमें राजनीतिको प्रमुख स्थान दे रही हैं।

## हिन्दू-मुसलिम कलह ही सबसे बड़ा संरक्षण

संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टके सम्बन्धमें पार्लामेण्टके हाउस आव लार्ड्समें जो भाषण हुए थे उनमें लार्ड रीडिङ्गका भाषण विशेषरूपसे उल्लेखनीय है। आपने अपने इस भाषणमें अपनी उस समयकी आशङ्का और उद्विग्नताका जिक्र किया है जब आप भारतके वायसराय थे और महात्मा गांधीके नेतृत्वमें हिन्दू-मुसलमानोंने एक साथ मिलकर असहयोग आन्दोलनमें भाग लिया था। कर्नल जी० वाल्टन नामक एक व्यक्तिने लण्डनके 'टाइम्स' पत्रमें लिखा है :—"संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टमें जो संरक्षण रखे गये हैं, लार्ड सेलिसबरी उनकी निन्दा करते हैं और इस प्रसङ्गमें हिन्दू-मुसलमानोंके अमिट कलहका हवाला देते हैं। किन्तु वह इस बातका जिक्र नहीं करते कि यह कलह ही हमारा सबसे बड़ा संरक्षण है—जिसके बलपर हम अब तक भारतपर शासन करते आ रहे हैं; आज भी कर रहे हैं और भविष्यमें भी करते रहेंगे। केन्द्रीय शासनमें उत्तरदायित्व प्रदान करनेकी जो व्यवस्था की गयी है उसे वापस ले लेनेका परिणाम यह होगा कि हिन्दू और मुसलमान आपसमें मिल जायंगे जैसा कि वे अबसे पहले कभी नहीं मिले थे और भारत हमारे हाथसे निकल जायगा।" लेखककी स्पष्टवादिता प्रशंसनीय है। यदि इतनेपर भी इस देशके सम्प्रदायवादियोंकी आंखें न खुलें तो यह देशका दुर्भाग्य ही समझना चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि साम्प्रदायिक कलह ही विदेशियोंका सबसे बड़ा संरक्षण है और जब तक यह संरक्षण कायम है तब तक भारतपर अपना प्रभुत्व बनाये रखनेके लिए उन्हें और किसी संरक्षणका प्रयोजन नहीं।

## शासन-विधान-बिल

संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टके बाद अब उसके आधारपर एक शासन-विधान-बिल तैयार हुआ है जो पार्लामेण्टमें पेश किया जायगा। कहते हैं कि इतना बड़ा बिल विलायती पार्लामेण्टके सामने और कभी उपस्थित नहीं किया गया था। ३५० पृष्ठोंमें मुद्रित, १५ भागोंमें विभाजित और १५० धाराओंमें सङ्कलित यह वृहद् बिल सचमुच भारत-जैसे विशाल देशके लिए उपयुक्त ही है, चाहे भारतवासियोंकी दृष्टिमें यह कितना ही महत्त्वहीन और सारशून्य क्यों न हो! भारत-सरकारकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ओरसे इस बिलके सम्बन्धमें जो एक व्याख्यायुक्त नोट प्रकाशित हुआ है उससे मालूम होता है कि संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टसे इस बिलकी धाराओंमें नाममात्रके ही कुछ भेद पाये जाते हैं। इनमें एक भेद है Federal Court के अधिकार-क्षेत्रकी व्याख्या। बिलमें कहा गया है कि सङ्घ-शासनके Upper house में देशी नरेशोंका सैकड़े ४० और Lower house में सैकड़े ३३⅓ प्रतिनिधित्व होगा। इस बिलकी एक खूबी यह है कि इसमें किसी प्रकारका मुखबन्ध नहीं दिया गया है और इसका कारण यह बताया गया है कि चूंकि संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टमें सन् १९१९ के भारतीय शासन-विधानके मुखबन्धका उल्लेख किया गया है, इसलिए उसे फिर यहां दुहरानेकी आवश्यकता नहीं। हां, शायद भारतके कुछ रूठे हुए माडरेट राजनीतिज्ञोंको मनाने और उन्हें सन्तुष्ट करनेके लिए इतना हो सकता है कि बिलपर वाद-विवाद होते समय भारतमन्त्री भारतीय शासनकी चरमलक्ष्य-सम्बन्धी प्रतिज्ञाको एक बार फिर दुहरा दें, यद्यपि ब्रिटिश शासनका भारतीय इतिहास प्रतिज्ञा-भङ्गके अनेक दृष्टान्तोंसे भरा पड़ा है।

## 'ह्वाइट पेपर'से भी खराब

दिल्लीमें अ० भा० मुसलिम लीगकी कौन्सिलकी जो बैठक मि० जिन्नाके सभापतित्वमें हुई थी, उसमें संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टके सम्बन्धमें यह प्रस्ताव पास हुआ है कि उसके प्रस्ताव ह्वाइट पेपरके प्रस्तावोंसे भी बढ़कर प्रतिक्रियागामी हैं। कांग्रेस और माडरेट दलकी सभाके बाद मुसलिम लीगका यह प्रस्ताव अवश्य ही इस बातका द्योतक है कि भारतकी कोई भी राजनीतिक संस्था प्रस्तावित शासन-विधानकी समर्थक नहीं है और कोई भी दल इसे स्वेच्छासे स्वीकार करनेके लिए प्रस्तुत नहीं है।

## प्रान्तोंमें मार्केटिंग अफसर

यह सन्तोषकी बात है कि भारत-सरकारका ध्यान अब इस देशके कृषकोंकी आर्थिक दशा सुधार करनेकी ओर कुछ-कुछ आकृष्ट होने लगा है। गत १० जनवरीको भारत-सरकारकी ओरसे एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है, जिसमें कहा गया है कि भारतमें और भारतके बाहर खेतीसे उत्पन्न होनेवाली चीजोंकी बिक्रीका सुप्रबन्ध करनेके लिए सरकारने मि० लिंग्विगस्टन नामक एक विशेषज्ञको नियुक्त किया है। इसके साथ ही प्रत्येक प्रान्तमें भी एक Marketing officer नियुक्त करनेकी व्यवस्था की गयी है। देश और विदेशमें कहां किस फसलकी मांग है; जहां मांग नहीं है, वहां मांगके लिए बाजार किस प्रकार कायम किया जा सकता है; मांगमें वृद्धि किस प्रकार की जा सकती है; मालको एक स्थानसे दूसरे स्थानको चालान करनेमें किस प्रकार सुविधायें की जा सकती हैं, Transport facilities, वस्तुओंका Packing और Grading श्रेणी-विभाग किस प्रकार किया जा सकता है; गोदाममें मालको किस प्रकार रखा जा सकता है और इस समय वस्तुओंका जो भाव है, उसमें वृद्धि हो सकती है या नहीं इत्यादि विषयोंपर प्रत्येक प्रान्तके मार्केटिंग अफसर उक्त विशेषज्ञकी सलाहसे विचार करेंगे। इसके सिवा फल, पशु-पक्षी-पालन और उनसे उत्पन्न होनेवाली चीजें—दूध, घृत, मक्खन, अण्डा, चमड़ा, ऊन, मांस, मछली आदिके सम्बन्धमें भी अनुसन्धान-कार्य किया जायगा। मार्केटिंग अफसर द्वारा यदि इन सब कार्योंका थोड़ा अंश भी सम्पादित हो, तो इसमें सन्देह नहीं कि इससे कृषकोंका अमित उपकार होगा और उनकी आर्थिक दशा उन्नत होगी। किन्तु सरकारकी अन्यान्य बहुत-सी उपयोगी योजनाओंकी तरह यह योजना भी कहीं प्रान्तीय सरकारके सेक्रेट्रियेट तक ही न रह जाय, इसी बातकी हमें आशङ्का है। फिर भी हम बड़ी उत्कण्ठाके साथ सरकारके इस आयोजनके शुभ परिणामकी प्रतीक्षा करेंगे।

## जञ्जीबारके भारतीय

जञ्जीबारकी सरकारने वहांके प्रवासी भारतीयोंके स्वार्थ-के विरुद्ध हालमें जो कानून बनाये हैं उनके परिणामके सम्बन्धमें जांच करनेके लिए भारत-सरकारने अपने एक सिविलियन कर्मचारी मि० के० पी० मेननको नियुक्त किया था। मि० मेननने अपनी रिपोर्टमें लिखा है—"मुझे बाध्य होकर यह कहना पड़ता है कि इन सब कानूनोंके परिणाम-स्वरूप भारतीय स्वार्थोंको जो क्षति पहुंचेगी, उसकी पूर्ति नहीं हो सकती और जञ्जीबारसे भारतीय व्यापारियोंका उच्छेद हो जायगा।" लार्ड विलिङ्डनने अपने हालके भाषणमें इस बातपर बहुत जोर दिया है कि भारत-सरकारने जञ्जीबारके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भारतीयोंके विरुद्ध पास किये गये कानूनोंका तीव्र प्रतिवाद ब्रिटिश सरकारके पास भेजा है। देखें, इस विषयमें ब्रिटिश सरकार भारत-सरकारके इस मतका कहां तक आदर करती है।

## मो० किरोफकी हत्या और उसकी प्रतिक्रिया

रूसके जिन कतिपय प्रमुख नेताओं द्वारा सोवियट-शासनका परिचालन हो रहा है, उन्हींमें एक मो० किरोफ भी थे, जिनकी हत्या अभी हालमें लेनिनग्राडके सरकारी दफ्तरमें एक आततायीकी गोलीसे हुई। मो० किरोफ अपनी योग्यता एवं शासन-विषयक दक्षताके कारण रूसके डिक्टेटर स्टेलिनके दाहिने हाथ समझे जाते थे और स्टेलिन उन्हें अपना एक सच्चा विश्वासपात्र समझकर उनका बड़ा सम्मान करता था। यह हत्याकाण्ड जितना निदारुण है, उतना ही या उससे भी बढ़कर निष्ठुरतापूर्ण है प्रतिहिंसाकी वह प्रवृत्ति, जिसके फल-स्वरूप अब तक कुल १३७ मनुष्योंको संक्षिप्त विचारके बाद प्राणदण्ड दिया जा चुका बताया जाता है।

मो० किरोफकी इस हत्याके पीछे क्या रहस्य है तथा पूर्वापर घटनाओंके साथ इस हत्याकाण्डका क्या सम्बन्ध है, यह यथार्थ रूपमें अभी तक मालूम नहीं हो सका है और न मालूम होनेके साधन ही उपलब्ध हैं। किन्तु अनुमानसे ऐसा मालूम होता है कि रूसमें अब भी विख्यात विश्वविप्लवी निर्वासित नेता ट्राटस्कीके कुछ अनुयायी अवश्य हैं, जो स्टेलिनके शासनके विरुद्ध हैं। सम्भव है कि इनका कोई गुप्त षड्यन्त्र हो और इसी षड्यन्त्रकी दुरभिसन्धिके फल-स्वरूप यह हत्याकाण्ड अनुष्ठित हुआ हो। स्टेलिनके साथ विरोध एवं सङ्घर्ष होनेके बाद जब आदर्शवादी ट्राटस्कीको रूससे निर्वासित होना पड़ा, उस समय उसके दलके जो और कितने ही उग्रपन्थी थे, उन्हें भी दण्डित एवं निर्यातित किया गया था। इसके बाद फिर इस दलके अस्तित्वके सम्बन्धमें कोई विशेष समाचार प्रकाशित नहीं हुआ। लोग यह भी समझने लगे थे कि रूसकी जनता ट्राटस्की और उसके अनुयायियोंको अब एकदम भूल गयी। किन्तु अब इस घटनासे यह विश्वास किया जाता है कि उक्त दलका अभी तक नामनिःशेष नहीं हुआ है।

इस दलके षड्यन्त्रके कारण जिन बहुत-से लोगोंको प्राणदण्ड मिला है, उनके सिवा और कितनों हीको कठोर कारावासकी भी सजा दी गयी है। इन्हीं व्यक्तियोंमें मो० जिनोवीफ और मो० केमनाफ भी हैं। इन नेताओंने लेनिनके साथ मिलकर सोवियट शासन-तन्त्रकी प्रतिष्ठा की थी और बादमें उच्च पदोंपर प्रतिष्ठित हुए थे। मो० जिनोवीफ विख्यात थर्ड इण्टर नेशनलके सभापतिके रूपमें सन् १९२४ में विशेष प्रसिद्ध हुए थे, जबकि उनके हस्ताक्षरसे लिखी गयी एक 'लाल चिट्ठी' विलायती पार्लामेण्टके चुनावके समय प्रकट हुई थी और जिसके फल-स्वरूप वहांके मजदूर दलका पतन हुआ। ट्राटस्कीके निर्वासनसे इन दोनों नेताओंको भी स्वदेश-त्याग करना पड़ा। फिर ये स्वदेश लौट आये और विश्वविप्लवका आदर्श भूलकर स्टेलिनके दलमें मिल गये। किन्तु दैव इनके प्रतिकूल था। तभी तो आज फिर इनके भाग्यमें यह विपर्यय सङ्घटित हुआ है!

मो० किरोफकी हत्याका प्रतिशोध लेनेके लिए रूसमें प्रतिहिंसाकी जो भीषण ज्वाला धधक उठी और जिसके फल-स्वरूप १३७ आदमी फांसीपर लटका दिये गये, इसका विरोध करनेके लिए इंगलैण्डके मजदूर-दलका एक प्रतिनिधि-मण्डल लण्डनमें रूसके राजदूत मो० मेस्कीसे मिला था। मो० मेस्कीने इस प्रतिहिंसामूलक हत्याकाण्डका औचित्य सिद्ध करते हुए बताया कि रूसमें आतङ्कवादियोंका एक दल है, जो सोवियट सरकारके प्रतिनिधियोंके विरुद्ध हिंसात्मक काण्ड करनेके लिए खुले तौरसे उत्तेजना प्रदान करता है और इस दलके सदस्योंको यूरोपके चन्द देशोंमें उदारतापूर्वक आश्रय मिलता है।

मो० ट्राटस्कीने—जो इस समय फ्रान्समें निर्वासित हैं और जिनके सम्बन्धमें यह सन्देह किया जाता है कि मो० किरोफके हत्याकाण्डके साथ उनका भी गुप्त सम्पर्क है—इस सन्देहका खण्डन करते हुए कहा है कि इस घटनाके सम्बन्धमें मैं कुछ नहीं जानता। ट्राटस्कीके नामका जिक्र सिर्फ मो० किरोफके हत्याकारी निकोलेफके सम्पर्कमें आया था, जिसने कहा था कि किसी देशके एक राजदूतने षड्यन्त्रकारियोंको ५०० पौण्ड देने और उनकी ओरसे ट्राटस्कीके साथ पत्र-व्यवहार करनेकी बात कही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## पितृभूमिके साथ मिलन

आखिर सारमें देशभक्तिकी विजय हुई और १५ वर्षके दीर्घ विच्छेदके बाद पितृ-भूमि जर्मनीके साथ उसका सुखद मिलन सम्पन्न हुआ। क्षात्रतेजोदीप्त जर्मन जातिको लाञ्छित, अपमानित एवं मित्र-शक्तियोंके निकट चिरपदानत रखनेके लिए महायुद्धके बाद वर्सेलीजकी सन्धिमें जो विधि-व्यवस्था की गयी थी, उसके अनुसार ही जर्मनीको अपने इस सार प्रदेशसे वञ्चित होना पड़ा था। उस समय अपने इस पराजित शत्रुको हृतसर्वस्व करके यूरोपके राष्ट्रोंमें उसे पंगु एवं नगण्य बना डालनेके लिए मित्र-शक्तियोंने कुछ उठा नहीं रखा था।

फ्रान्स और जर्मनीके सीमान्त प्रदेशपर अवस्थित इस सार प्रदेशका क्षेत्रफल सात सौ वर्गमील है, जिसमें यूरोपकी कुछ अत्यन्त समृद्धिपूर्ण कोयलेकी खानें हैं। महायुद्धमें फ्रान्सकी जो विशेष क्षति हुई थी उसकी पूर्तिके फल-स्वरूप ही सारकी कोयलेकी खानोंपर फ्रान्सका आधिपत्य कायम हुआ और सारके शासन-प्रबन्धके लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन नियुक्त कर दिया गया। वर्सेलीजकी सन्धिके साथ एक शर्त यह भी रखी गयी थी कि १५ वर्षके बाद जनताके मतामत द्वारा सार-वासियोंको स्वभाग्य-निर्णयका अधिकार होगा। इसके अनुसार गत १३ जनवरीको सारके समस्त वयस्क स्त्री-पुरुषोंको निम्नलिखित तीन प्रश्नोंके सम्बन्धमें अपना मतामत व्यक्त करना पड़ा था:—(१) क्या वे वर्तमान शासन-प्रबन्धको कायम रखना चाहते हैं? (२) क्या वे फ्रान्सके साथ मिलना चाहते हैं? (३) क्या वे जर्मनीके साथ मिलना चाहते हैं? ९ लाख वोटरोंमें ४ लाखसे अधिकने अपनी पितृ-भूमि जर्मनीके साथ मिलनेके लिए अपना मत प्रकट किया। इस प्रकार एक महान् क्षमताशाली देशका अङ्ग-भङ्ग करके उसकी शक्तिको विच्छिन्न करनेकी जो चेष्टा की गयी थी और जिसके कारण वीर जर्मन जाति अत्यन्त मर्मवेदना अनुभव कर रही थी उसका आज अवसान हुआ और जर्मनीके विरुद्ध विपक्षियोंकी ओरसे जो प्रचार-कार्य हो रहे थे उनके ऊपर अन्ततः सार-वासियोंके स्वदेश-प्रेमकी ही विजय हुई। राष्ट्र-सङ्घने यह निर्णय किया है कि आगामी १ मार्चसे सार प्रदेशपर जर्मनीका अधिकार हो जायगा और फ्रान्स द्वारा कोयलेकी खानोंमें लगायी गयी सम्पत्तिके सम्बन्धमें तथा अन्य विवादास्पद विषयोंके सम्बन्धमें एक कमीशन फ्रान्स और जर्मनीके बीच निपटारा करेगा। फ्रान्सके हिसाबसे सारके रेल-मार्ग और खानोंपर दखल करनेके पूर्व जर्मनीको उसे १५-१६ करोड़ रुपये देने पड़ेंगे। जर्मनीके साथ सार प्रदेशके ८ लाख अधिवासी मिलनेसे केवल जर्मनीकी जनसंख्यामें ही वृद्धि नहीं होगी, बल्कि आर्थिक दृष्टिसे भी जर्मनी पहलेकी अपेक्षा विशेष समृद्धि-सम्पन्न बन जायगा। सार प्रदेशमें खनिज सम्पत्तिकी जो प्रचुरता है उससे जर्मनीके व्यवसाय एवं उद्योग-धन्धोंको विशेष सहायता मिलेगी और जर्मनी भावी संग्रामके लिए अपनेको शक्तिशाली बनानेमें समर्थ होगा। सारके व्यवसाय-वाणिज्य और अर्थनीतिके सम्बन्धमें जर्मन-सरकारने पहलेसे कितनी ही योजनायें प्रस्तुत कर रखी हैं जिन्हें शीघ्र ही कार्य-रूपमें परिणत किया जायगा।

---

'विश्वमित्र' प्रेस, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तासे पं० मातासेवक पाठक द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ उच्चकोटिकी संग्रहणीय पुस्तकें

## ❋ शङ्कराचार्य ❋

भारत, वैदिक-धर्मको तिलाञ्जलि देकर नास्तिकतावादके गहरे गर्तमें गिरने जा रहा था, राजा-प्रजा, सत्य-सनातन वैदिक धर्मके शत्रु हो रहे थे, उस समय यदि शङ्कराचार्य न होते तो, वैदिक-धर्मका नाम तक न रह जाता। इस पुस्तक में शङ्कर-स्वामीके कार्यकलापोंका जन्मसे लेकर अंत समाधि तकका विशद वर्णन है। शङ्करके ब्रह्मचर्य, संसार-त्याग, दिग्विजय, शास्त्रार्थों आदिका विस्तृत वर्णन है और उनके धर्ममतका पूर्णरूपसे निरूपण किया गया है। इसे शङ्कर-दिग्विजयका हिन्दी संस्करण समझिये। अनेक चित्र। मूल्य १॥)

## ❋ श्रीकृष्ण ❋

यह पुस्तक, वसुदेव-देवकीके प्यारे पुत्र, गोकुलके गोपसखा, गोरक्षक-गोपाल, व्रजके प्राण, कंस, जरासन्ध, कालयवन, शिशुपाल आदिके काल, द्वारिकाके विधाता, पाण्डवोंके परित्राता, राजा-प्रजाके गुरु, शत्रुओंके पूज्य, धर्मके उपदेष्टा नीतिवेत्ता, धर्म-भ्रष्ट क्षत्रिय-कुलोंके संहारक, धर्म-राज्य-संस्थापक, दीन-दरिद्रोंके बन्धु, आदर्श, मृत्युञ्जय, गीताके रचयिता, श्रीकृष्णका चरित्र है। ऐसा अच्छा सर्वाङ्ग सुन्दर, सर्वसुलभ और सम्पूर्ण सचित्र श्रीकृष्ण-चरित आजतक प्रकाशित नहीं हुआ। ३० चित्र हैं। मू० १॥) मात्र

## ❋ शिवाजी ❋

हिन्दू-कुल-सूर्य, गौरव-रवि, छत्रपति शिवाजी के समान निकट पूर्वमें कोई भी वैसा वीर, दृढ़-प्रतिज्ञ, हिन्दू-साम्राज्य संस्थापक, प्रचण्ड राजनीतिज्ञ-वीर हिन्दू नहीं हुआ, जिसने हिन्दू-जातिकी डूबती हुई नैयाको पार लगाया हो। यदि शिवाजीके उत्तराधिकारी भी कहीं वैसे ही खरे सोनेके समान निकल आते, तो आज भारत का नक्शा ही बदला हुआ दृष्टिगोचर होता। इसमें शिवाजीके जीवनकी समस्त घटनाएं बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें लिखी गयी हैं। बीसके लगभग रङ्गीन चित्र हैं। मूल्य १॥) मात्र।

## भीष्म

अपूर्व आत्मत्यागी, महावीर, आदित्य ब्रह्मचारी, भगवती गंगाके गर्भजात—महाराज शान्तनुके पुत्र, कौरव पाण्डवोंके भीष्म पितामहका नाम सदा संसारमें अमर रहेगा। भीष्मने जो भीषण भीष्म-प्रतिज्ञा की थी, अन्त तक उन्होंने उसका पालन किया। अपने समयके वे अद्वितीय धर्मनिष्ठ, समाज-रक्षक, राजनीतिके नियन्त्रणकारी वीर थे। बालकोंके लिये भीष्मसे बढ़ कर और कोई आदर्श नहीं हो सकता। अनेक रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित। हजारों प्रतियां हाथोहाथ बिक चुकी हैं। मूल्य ॥=) मात्र।

मिलनेका पता:—**पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी**, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्री, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGD. NO. C. 677
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत

सचित्र

# रामायण

सटीक, १४०० पृष्ठ, सादे व बहुरंगे चित्र, तथा कपड़ेकी पक्की जिल्द

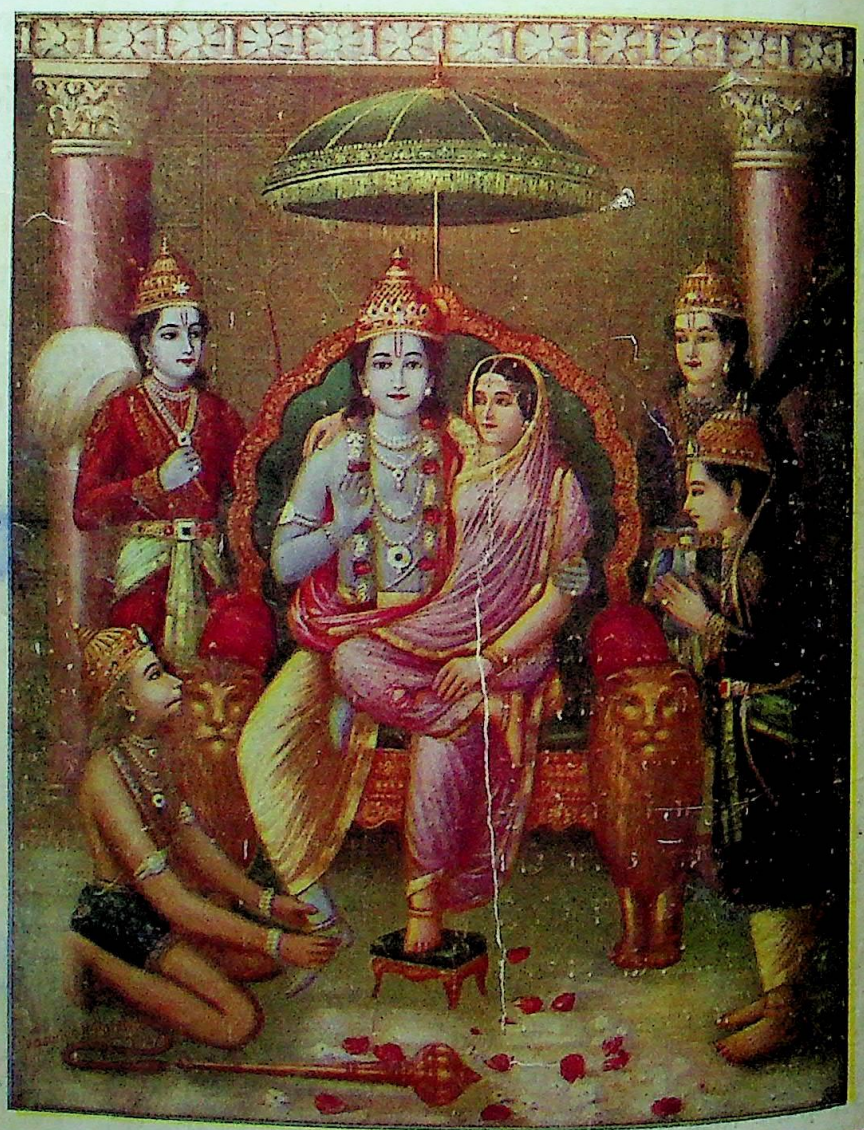

मूल्य ग्लेजका ३)

काशी और बम्बईकी रामायणोंसे अधिक शुद्ध और सुन्दर है।

इतना होनेपर भी सस्ती है, इस धर्मग्रन्थकी एक प्रति मंगाकर अवश्य रखिये।

**मैनेजर—विश्वमित्र कार्यालय,**

१४।१ ए, शम्भु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

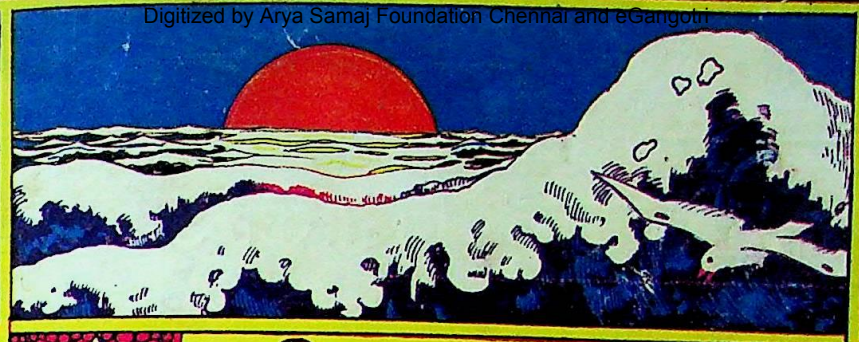

सचित्र मासिक

# विश्वमित्र

मार्च १९३५

मूल्य ॥=)

विश्वमित्र कार्यालय
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# पढने योग्य कुछ ऐतिहासिक पुस्तकें

## मेवाड़-गौरव

मुगल-साम्राज्यकी भीषण विभीषिका जिस समय भारतके समस्त हिन्दू-राज्योंको हड़प करनेकी चेष्टा कर रही थी, उस समय मेवाड़ ही एक ऐसा प्रदेश था, जिसके राजा, प्रजा, बाल-वृद्ध-वनिता सभीने एकसे एक बढ़ कर बलिदान करके मरणोन्मुख हिन्दू जाति के मान-गौरवकी रक्षा की थी। कर्तव्यके लिये पिताओंने पुत्रोंको कत्ल किया था, मेवाड़ की रमणियोंने अग्निमें कूद कर हिन्दुत्वकी रक्षा की थी। इसमें उसी मेवाड़की कीर्ति-कलापोंका वर्णन है। दो संस्करण हाथोहाथ बिक गये। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १)

## महाराणा-प्रताप

जिस समय हिन्दू जातिपर मुगल-साम्राज्य-विस्तारका ग्रह लगा हुआ था और हिन्दू राजा-महाराजागण एकके बाद एक मुगल-सम्राटके सामने शिर झुकाकर आत्म-समर्पण कर रहे थे, सब महाराणा प्रताप ही एक ऐसे वीरव्रती थे, जिनकी हुंकार-ध्वनिसे मुगल-राजसिंहासन कांप उठा था! इस पुस्तकमें उन्हीं हिन्दूकुल-गौरव प्रातःस्मरणीय महाराणा-प्रतापकी कीर्ति-कहानी विशद रूपसे लिखी गयी है। समस्त घटनाओंका इसमें उल्लेख है। अनेक चित्रोंसे सुशोभित। मूल्य १) मात्र।

## पृथ्वीराज

पृथ्वीराज दिल्लीके अन्तिम हिन्दू सम्राट् थे। इसमें उन्हींके कार्यकलापोंका वर्णन है। भारत पर विदेशी विधर्मियोंके बहुत दिनोंसे दांत लगे हुए थे। दुर्भाग्यसे हिन्दुओंमें फूट पड़ गई और वे स्वार्थपरायणताके वशीभूत होकर एक दूसरेके प्राणोंके ग्राहक हो गये। अन्तमें गृह-शत्रुओंने विदेशियोंको निमन्त्रण देकर भारतमें बुला कर मातृभूमिको पददलित कराया! यह उसी समयका भारतका रक्त-रंजित इतिहास है। अनेक रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई सफाई बढ़िया मूल्य १) मात्र।

पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ शंभू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# अमृताञ्जन पेन बाम

सबसे उत्तम, दर्द दूर करने वाला भारतीय मरहम सर्व प्रकारके दर्दोंको दूर करता है। सब जगह मिलता है।

( रजिस्टर्ड ) **अमृताञ्जन डिपो,**

पो० बक्स नं० ६८२५ कलकत्ता।

हेड आफिस—बम्बई मद्रास।

अपने बुढ़ापेमें सुख शान्तिके लिये

अपना आमदनी से थोड़ा बचा बचा कर

## इंडस्ट्रियल एन्ड प्रूडेंशियल एश्योरेन्स कम्पनी लि०

## में जमा करते रहो

विशेष विवरण जाननेके लिये यहांके आफिस

१२, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ताको

पत्र लिखिये

# डाबर (डाः एस, के, बर्म्मन) लिः

५० वर्षों से प्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेण्ट दवाओं का वृहत् भारतीय कार्यालय!

**विभाग नम्बर (२) पोष्ट बक्स ५५४, कलकत्ता।**

STAR TRADE S.K.B. MARK (REGD.)

स्टार ट्रेड मार्क

दुर्घना कह कर

## हिल-एक मरहम (Regd.)

( कटे, जले चोट आदिपर लगानेका मरहम )

यह केवल वनस्पतियोंसे बना है। आगसे जलनेका घाव, विषैले जानवरोंके काटनेकी जलन, छुरी आदि अस्त्रोंसे कटना आदि आकस्मिक यन्त्रणाओंसे समयपर मुक्त होनेके लिये सर्वदा अपने पास रखना चाहिये।

मूल्य—प्रति डिब्बी ॥=) दस आना; डा० म० ३ डिब्बी तक ।=)।

नमूना =) जो केवल एजेण्टोंसे ही मिल सकता है।

नहीं आती!

नोट—सब जगह मिलता है। खरीदते समय स्टार ट्रेड मार्क और डाबर नाम अवश्य देख लिया करें।

सेल डिपो:—(१) नं० ४ तारा चन्द दत्त स्ट्रीट। (२) नं० २०१ हरिसन रोड।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❀ स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें ❀

नारी रत्न माला

## सावित्री-सत्यवान

इस पुस्तकमें सती-शिरोमणि सावित्री के अद्भुत चरित्रको सरल भाषामें ऐसे अच्छे ढङ्गसे लिखा गया है कि जिसके पढ़नेसे हिन्दू-बालिकायें और हिन्दू-रमणियां पातिव्रत्यके मर्मको सरलतासे हृदयङ्गम कर सकें। सती-शिरोमणि सावित्री का चरित्र, युग-युगान्तरोंसे सती रमणियों का आदर्श माना जाता है। सावित्रीके धर्मबल के सामने यमराजको भी हार माननी पड़ी थी। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई। सात रङ्गीन चित्र। अब तक हजारों प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मूल्य ।।) मात्र।

## शैव्या-हरिश्चन्द्र

इस पुस्तकमें हिन्दू जातिके कीर्ति स्तम्भ, भारतके सौभाग्यसूर्य, गौरव-रवि, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र तथा उनकी महीयसी रानी शैव्या की अपूर्व आत्मत्यागकी कथा लिखी गयी है। शैव्या-हरिश्चन्द्रका त्यागमय जीवन-चरित्र, हिन्दू-रमणियों एवं कन्याओंके लिये आदर्श है। इस पुस्तकमें शैव्या-हरिश्चन्द्रके जीवनकी सभी घटनायें विशद रूपसे लिखी गई हैं। रंग-बिरंगे अनेक चित्रोंकी सुन्दरता देखने ही योग्य है। छपाई-सफाई बढ़िया। मूल्य वही सर्वसुलभ ।।) मात्र।

## नल-दमयन्ती

पुण्यश्लोक राजा नल और परम पतिभक्ति-परायणा दमयन्तीको भला कौन हिन्दू सन्तान नहीं जानता। इस पुस्तकमें उन्हींके परम पवित्र चरित्र और मर्मस्पर्शी जीवनका वर्णन किया गया है। इसमें पतिव्रत-महिमाका बहुत ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। शिक्षा-विभागने इसको स्वीकार किया है। बढ़िया छपाई, ऐण्टिक पेपर और आठ रंग-बिरंगे घटित घटनाओंके चित्र हैं। ऐसी सर्वाङ्गसुन्दर और सर्वसुलभ पुस्तक कहींसे भी प्रकाशित नहीं हुई। मूल्य ।।) मात्र।

## सीता-देवी

इस पुस्तकमें जनक-नन्दिनी, राम-प्रिया सीताका चरित्र बहुत ही अच्छे ढङ्गसे लिखा गया है। बालक-बालिकाओंके लिये इसमें अपूर्व शिक्षा है। क्योंकि यह रामायणका सार, उत्तमोत्तम शिक्षाओंका भण्डार—और हिन्दू-ललनाओंका ललित शृङ्गार है। इसमें पुराण, काव्य, नाटक, उपन्यास का आनन्द तथा नीतिशास्त्रका अपूर्व उपदेश भरा हुआ है। सीतादेवी—राजनीति, धर्मनीति, समाज और गार्हस्थ्य की कुञ्जी है। छपाई-सफाई बढ़िया। सात रंग-बिरंगे चित्र। मूल्य ।।=) मात्र।

मिलनेका पता—पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— हर प्रकारके ब्लाक बनानेका एकमात्र विश्वस्त स्थान —

# एमराल्ड इन्ग्रेविंग लिमिटेड।

सादे ब्लाकों की १२ घण्टे में डिलेवरी दी जाती है।

१।२, मोतीसील स्ट्रीट, कलकत्ता।

विशेषतायें—

कम दाम में विशेष काम हमारी विशेषता है।

१—किसी भी ऋतुमें एक ही दिनमें डिलेवरी। २—विशेष अवस्थाओंके अतिरिक्त मूल्य सर्वापेक्षा सुलभ।
३—हाफटोन और लाइन ब्लाकोंकी एक ही दर। ४—तीन रंगे और बहुरंगे ब्लाक सर्वोत्तम और आदर्श।

छोटेसे छोटा आर्डर भेजकर परीक्षा कीजिये।

पत्र-पत्रिकाओं के लिये विशेष रियायत।

पूरे विवरण के लिये शीघ्र लिखिये।

# सिपाही विद्रोह

सन् सत्तावनके गदरका रोमांचकारी इतिहास

सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्यमें कमी।

४) से घटा कर ३) किया गया और पुस्तक सजिल्द कर दी गयी।

हिन्दीमें अपने ढंगकी सर्वथा अनोखी पुस्तक है। पहले संस्करणकी प्रतियां हाथोंहाथ बिक जाने पर दूसरा संस्करण निकाला गया है। इस पुस्तकमें आप ऐसी रोमांचकारी घटनाएं पढ़ेंगे कि आपको अनुभव होगा कि हम कोई उपन्यास पढ़ रहे हैं।

झांसीकी रानीने क्या किया, दिल्लीके बादशाहका क्या हुआ, कुंवर जगदीश सिंह कैसे वीरगतिको प्राप्त हुए, देहातोंमें क्या हुआ आदि बातें पढ़कर आप कहेंगे कि वास्तवमें पुस्तक संग्रहणीय हैं।

सुन्दर कागज, बढ़िया छपाई, पक्की जिल्द।

शीघ्र आर्डर देकर मंगा देखिये।

मैनेजर—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी

१४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❀ स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें ❀

नारी रत्न माला

## सती-पार्वती

हर-पार्वतीकी कथा प्रसिद्ध है। इसमें शंकर-प्रिया, गणेश-जननी, सती-शिरोमणि भगवती 'सती-पार्वती' के दोनों अवतारों की मर्मस्पर्शी कथा बड़ी ही सरल, सरस भाषामें लिखी गयी है। यह पुस्तक बहुत पसन्द की गयी है। साथ ही सती-महिमा, दक्ष-यज्ञ-भंग, वीरभद्रका प्रतिशोध, शिवजीका कोप, मदन-दहन, शिवजीका वरदान आदि कितने ही रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई-सफाई बढ़िया। अब तक हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही सर्वसुलभ ।।) मात्र।

## देवी-द्रौपदी

इस उपाख्यानमें देवी-द्रौपदीका जन्म, बाल्यकाल, स्वयंवर, विवाह, चीर-हरण, पाण्डवों पर विपत्ति और राज्य-हरण तथा देश-निर्वासन का वर्णन है। विराट राज-महलमें दासी-कर्म, कीचक-वध और अन्तमें कौरवोंसे घनघोर संग्राम। पाण्डवों की विजय-वैजयन्ती, भगवान् श्रीकृष्ण का सहयोग और सहायता आदि समस्त बातोंका उल्लेख बहुत ही सरस और सरल भाषामें किया गया है। अनेक भावपूर्ण रङ्गबिरंगे चित्र हैं। बढ़िया पेपर और सुन्दर छपाई। मूल्य सर्वसुलभ ।।=) मात्र।

## शकुन्तला

संसार प्रसिद्ध महाकवि, कवि-कुल-गुरु कालीदासके सर्वोत्तम नाटक 'आभिज्ञानशाकुन्तलम्' को उपाख्यानके रूपमें लिखा गया है। उपाख्यानकी एक-एक पंक्ति, कवित्व और कल्पना-कौशलसे परिपूर्ण है। शकुन्तला-उपाख्यान दाम्पत्य-स्नेह, नारी-कर्तव्य, सती-धर्म और विश्व-विश्रुत प्रेमका जगमगाता चित्र है। इसके पढ़नेसे इतिहास, उपन्यास, नाटक और काव्यका एक साथ आनन्द आता है। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे सुसज्जित। बढ़िया छपाई-सफाई। मूल्य ।।=) मात्र।

## शर्मिष्ठा-देवयानी

श्रीमद्भागवतमें शर्मिष्ठा-देवयानीका उपाख्यान आया है। इस उपाख्यानको पढ़नेसे सत्यनिष्ठा एवं नारी कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है। पिताकी मर्यादाकी रक्षा के लिये शर्मिष्ठाने जो आत्मत्याग कर दिखाया, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। देवयानीने क्रोधके वशमें हो जो भयानक काण्ड उपस्थित कर दिया था, वह शर्मिष्ठाकी सौजन्यता और कर्तव्य-निष्ठा तथा सहृदयताके कारण दूर हो गया। अनेक रङ्गीन चित्रोंसे संवलित। हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही ।।) मात्र।

मिलनेका पता—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास

## ❋ मिलन-पूर्णिमा ❋

( सचित्र—सामाजिक उपन्यास )

सौरीन एम० ए० पास हिन्दू-कुलीन था। रेखा थी, एम० ए० तक पढ़ी हुई—ब्राह्मसमाजमुक्त—कुमारी। दोनोंके प्रेम-बन्धनमें सौरीनकी महत्वाकांक्षाने विघ्न डाल दिया। रेखाने सौरीनका रुद्ध मार्ग खोल दिया, परन्तु बिना रेखाके वह कुछ भी न कर सका। इस उपन्यासमें जहां प्रेमकी मन्दाकिनी प्रवाहित होती है, वहां साथही कर्तव्यकी धारा प्रबल-वेगसे वेगवती होकर बहती है और अन्तमें दोनों धारायें, लोक-सेवाके सागरमें जाकर विलीन हो जाती हैं। मूल्य १॥) रुपया मात्र।

## विधवा

रूढ़ियोंके गुलाम, हिन्दूसमाजमें धर्म का नाम लेकर निरीह विधवाओं पर कैसा भीषण अत्याचार हो रहा है और कुलीनताके पाखंडकी ओटमें संबलहीन देवी-स्वरूपिणी विधवाओंका धर्म्म बिगाड़ कर समाजके ठेकेदार, उन्हें वेश्यालयोंमें पहुंचा देते हैं, इसका इसमें बहुत ही करुणापूर्ण चित्र खींचा गया है। काशी-वासके नाम पर होनेवाले पापाचार और विधवाओंकी खरीद-फरोख्त और पण्डे-पुजारियोंके वीभत्स कृत्यों और समाज-पतियोंकी विचित्र धर्मव्यवस्थाको देख कर आपका हृदय कांप उठेगा। मू० ॥।)

## अभागिनी

उच्च-शिक्षा प्राप्त करके भी, हिन्दू-स्त्रियोंको समाजकी वेदी पर अपना बलि-दान करना पड़ता है! बड़ीसे बड़ी शिक्षा भी सामाजिक रूढ़ियोंके कारण, उनकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है। शिशिरकी मूर्खता और मिनतीकी प्रेम-निवाहकी घटना, इस लोकका नहीं, देवलोकका त्याग है। सिद्धान्त और पवित्रताके नाम पर—कैसा भयंकर त्याग किया जा सकता है, इसका जीता-जागता प्रमाण है। ऐसा ऊंचे दरजेका विद्वत्तापूर्ण उप-न्यास आपने अभी तक नहीं पढ़ा होगा। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य २)मात्र।

मिलनेका पता—

**दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बालकोंके पढने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

## बाल-रामायण

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र और भगवती सीतादेवीका चरित, तथा रामचन्द्रजीके सङ्गी-साथियोंके कार्य-कलाप, हिन्दू जातिके लिये आदर्श हैं। इस पुस्तकमें रामायणके सातों काण्डोंका सरल भाषामें वर्णन किया गया है। सरल-मति बालक-बालिकाओंके लिये यह अपूर्व पुस्तक है। सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज, मनोहर चित्र। यह पुस्तक कई जगह कोर्समें पढ़ाई जाती है। अब तक इस नामकी जितनी पुस्तकें निकली हैं, उनमें यह सर्वश्रेष्ठ है। मूल्य ॥=)

## बाल-महाभारत

'महाभारत' को हिन्दू जाति, पांचवां वेद मानती है। क्योंकि संसारकी कोई ऐसी बात नहीं है, जो महाभारतमें न आ गई हो। महाभारत, ज्ञान, वैराग्य, योग, नीति और सदाचार का खजाना है। इस पुस्तकमें महाभारतके अठारह पर्वोंके मूल-कथा-भागका सरल भाषामें संक्षिप्त वर्णन है। बालक-बालिकाओंको महाभारतकी शिक्षादायक कथा हृदयङ्गम करानेके लिये अपूर्व पुस्तक है। कितने ही सुन्दर चित्रोंसे सुसज्जित। यह भी कोर्समें पढ़ाई जाती है। मूल्य ॥=)

## हिन्दी-बंगला-शिक्षा

समृद्ध साहित्य, बङ्ग-साहित्यके पढ़नेकी रुचि प्रायः सभी साहित्य-प्रेमियोंको रहती है। इस पुस्तकमें वर्ण-परिचयसे लेकर सन्धि-ज्ञान, शब्द-रूपावली, धातुओंके रूप, तद्धित, समास, कृदन्त आदिके व्याकरणके समस्त आवश्यक विषयोंका सन्निवेश कर दिया गया है। बंगला शब्दोंकी प्रचुरता और अनुवाद-विधिका निदर्शन ऐसे अच्छे ढङ्गसे किया गया है कि अच्छी हिन्दी और साधारण संस्कृत जाननेवाले पाठक बिना शिक्षकके दो मासमें ही अनुवाद करने योग्य बंगला सीख जाते हैं। मूल्य ।।।) आना।

## हिन्दी-अंगरेजी-शिक्षा

भारतपर अङ्गरेजोंका राज्य है। शहर, स्टेशन, अदालत, पोस्ट-आफिस, तारघर, थियेटर, बायस्कोप, सभा-सोसाइटी कहीं भी जाइये, यदि आप अङ्गरेजी नहीं जानते, तो मूर्ख हैं। संसार की गतिका आपको पता ही नहीं लग सकता। आप सफलतापूर्वक कोई व्यवसाय ही नहीं कर सकते। इस पुस्तकसे आप स्वयं हिन्दीके सहारे अङ्गरेजी सीख सकते हैं। वर्ण-परिचयसे लेकर चिट्ठी-तार लिख पढ़ लेने तककी योग्यता इससे हो जाती है। दो-चार मास परिश्रम करनेसे आप अङ्गरेजीके साधारण ज्ञाता हो जायेंगे। मूल्य ।।।)

पता—पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १—सरिता ( कविता )—श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ... ... | ६४१ |
| २—कम्यूनिज्म और गांधीवाद—श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र, एम० ए०, बी० एल० ... | ६४२ |
| ३—गीत—श्री राममूर्ति शुक्ल 'राम' ... | ६४९ |
| ४—मध्य एशिया और भावी युद्ध—"सिन्धबाद जहाजी" ... ... | ६५० |
| ५—विवेकसे बढ़कर ( कहानी )—श्री 'अज्ञेय' | ६५३ |
| ६—जासूसोंका जाल और उनके करिश्मे (सचित्र)—श्री शिवदेव उपाध्याय 'सतीश' बी० ए० | ६५८ |
| ७—पूर्वी एशियामें क्या हो रहा है ?—श्री रामनाथ 'सुमन' ... ... | ६६६ |
| ८—लखपती भिखमङ्गे और उनके हथकण्डे (सचित्र)—श्री दीपनारायण सिंह, बी० ए० ... | ६७३ |
| ९—अनन्त प्रमोद—श्री आनन्दज्योति | ६७८ |
| १०—विल्ला ( कहानी )—डाक्टर धनीराम प्रेम | ६७९ |
| ११—वसन्त-स्वप्न ( कविता )—श्री रामविलास शर्मा, बी० ए० ( आनर्स ) ... | ६८३ |
| १२—सारके लोकमतका रहस्य ( सचित्र )—एक 'प्रत्यक्षदर्शी' ... ... | ६८४ |
| १३—निरुपम ( कविता )—श्री आरसी प्रसाद सिंह | ६८७ |
| १४—साम्यवादपर फासिज्मकी विजय—श्री कृष्णचन्द्र | ६८८ |
| १५—मैं कुस्तुनतुनियासे कैसे भागी ( सचित्र )—बेगम हालिदा अदीब ... | ६९४ |



सुजाक (प्रमेह) की हुकमी दवा

डा० जसानी का जगत प्रसिद्ध

"गोनोकिलर"

मुरगा छाप रजिस्टर्ड

GONO KILLER ORIGINAL REGD TRADE MARK

नकली से सावधान खरीदने से पहले मुर्गा छाप देख लीजिये

पेशाब और धातुके दर्दोंको मार हटाने व निर्मूल करनेके लिये गोनोकिलर एक ही ऐसी आश्चर्यजनक दवा है कि जिसको इस्तेमाल करनेसे रोगीको कभी निराश होना हो नहीं पड़ता। डाक्टरोंकी दवाई और इञ्जेक्शन (टीका) लेकर परेशान हो गये हों, अंग्रेजी और अमेरिकाकी पेटेण्ट दवाओंमें फजूल ही पैसा बरबाद करके बिलकुल नाउम्मीद हो गये हों, तब आखिरी इलाज हमारा "गोनोकिलर" इस्तेमाल बेखटके कीजियेगा। चाहे जैसा पुराना या नया सुजाक, पेशाबमें मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक रुक कर या बून्द बून्द आना, मूत्राशयके अन्दर घाव या सूजनका होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता **औरतों तथा मर्दोंको** इस किस्मकी तमाम भयङ्कर बीमारियोंको "गोनोकिलर" जड़से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोलीकी शीशी ३) रुपया।

**पता—डा० डी० एन० जसानी, गिरगांव बैंक रोड, बम्बई नं० ४**

कलकत्ताके एजेण्ट—मेसर्स बी० ए० एन्ड ब्रादर्स, ओरियण्टल बिल्डिङ्ग, २ और ३ क्लाइव रो, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १६—प्रलोभन (कहानी)—श्री कामेश्वर शर्मा 'कमल', साहित्यभूषण ... | ७०४ |
| १७—मीठी नींद (कविता)—श्री गोपालसिंह नेपाली | ७०७ |
| १८—रूसी क्रान्तिकी एक घटना (सचित्र)—"सर्वहारा" ... ... | ७०८ |
| १९—यूरोपमें व्यावसायिक क्रान्ति—श्री सत्यकेतु विद्यालङ्कार ... ... | ७११ |
| २०—वासन्ती (कविता)—कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह | ७१५ |
| २१—सिन्ध-विजयकी करुण कहानी—श्री गणेशदत्त शर्मा "इन्द्र" ... ... | ७१६ |
| २२—चयनिका (सचित्र) ... ... | ७१९ |
| २३—महिला-संसार (सचित्र) ... | ७२५ |
| २४—समाज-दर्पण ... ... | ७३२ |
| २५—अन्तर्राष्ट्रीय ... ... | ७३६ |
| २६—अर्थ-चक्र ... ... | ७४० |
| २७—साहित्य-जगत् ... ... | ७४३ |
| २८—स्वास्थ्य-विज्ञान (सचित्र) ... | ७४७ |
| २९—चित्र-विचित्र ... | ७५० |
| ३०—सम्पादकीय ... ... | ७५४ |


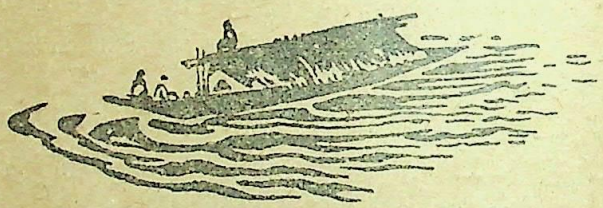


सिर्फ १) रुपया भेज कर—

# ३०००) रु० इनाम लीजिये।

| | | |
|---|---|---|
| ११ | २५ | १८ |
| २३ | १२ | २१ |
| १५ | २१ | १३ |

२०००) रु० पहला इनाम सही उत्तर पर।
१०००) स्पेशल इनाम उन २५ आदमियोंको अधिक दिया जावेगा जिनके सही उत्तर सबसे पहले आवेंगे।

**आपको क्या करना होगा—**

इस यन्त्रके खाली ६ खानोंमें १ से लेकर २३ तक कोई भी अंक इस तरीकेसे लिखो जिससे जिधरसे गिने उधरसे ३६ ही बनें। नियम—एक आदमी जितने चाहे उत्तर सादे कागजों पर लिखकर भेज सकता है, मगर प्रत्येक उत्तरके साथ १) रुपया आनेसे ही स्वीकार होगा। (२) सही उत्तर मैनेजरके उत्तरसे मिलनेवाला ही समझा जायेगा, जोकि शिमला बैंक लिमिटेड लुधियानेमें बन्द रखा हुआ है। (३) एकसे अधिक सही उत्तर आनेपर इनामकी रकम सबको बराबर २ बांट दी जायेगी, तथा मैनेजरका निर्णय सबके लिये मान्य होगा (४) उत्तर भेजनेकी आखिरी ताः ३० अप्रैल और नतीजा ७ मई १९३५ है। सूचना—पिछले मासकी प्रतियोगिताके उत्तर १५ मार्च तक लिये जायेंगे और उसका निर्णय अगले मासके पत्रोंमें छपा दिया जायगा और जिनके उत्तर सही आये हैं उनको इनाम भेजा जायगा।

मैनेजर पुरस्कार प्रतियोगिता—

पता—**सर्वहितकारक कम्पनी (रजिस्टर्ड) नं० १३ लुधियाना (पंजाब)**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक – मूलचन्द्र अग्रवाल

मार्च, १९३५ वर्ष ३, खण्ड ५ अङ्क ६, पूर्ण संख्या ३० फाल्गुन, १९९१

## सरिता

पाकर किस प्रिय तनयाको।
गिरिवर गौरवित कहाया।
किसने पवि गठित हृदयमें।
रस अनुपम स्रोत बहाया॥ १॥

हर अकलित सब करतूतें।
कर दूर अपर अपभयको।
बन सकी कौन रस-धारा।
कर द्रवीभूत हिमचयको॥ २॥

प्रस्तर-खण्डों रोड़ोंमें।
सब काल कौन अलबेली।
कमनीय छलांगें भर-भर।
कर-कर अठखेली खेली॥ ३॥

करके अपार कोलाहल।
है बड़े वेगसे बहता।
किसका प्रवाह पत्थरसे।
है टक्कर लेता रहता॥ ४॥

उछली-कूदी बहु छलकी।
लीं सिरपर बड़ी बलायें।
गिरिकान्त अङ्कमें किसने।
कीं कितनी कलित कलायें॥ ५॥

मोती उछालती फिरती।
दरियोंमें कौन दिखाई।
किसने रख हरित तृणोंको।
पत्थरपर दूब जमाई॥ ६॥

सह बड़ी-बड़ी बाधायें।
चट्टानोंसे टकराती।
अन्तरको कौन द्रवित कर।
प्रान्तरमें है आ जाती॥ ७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लहराती हरित घटामें।
काननकी छटा बढ़ाती।
बन कौन मन्दगति महिला।
रससे है भरी दिखाती ॥८॥
कल-कल छल-छल पल-पल कर।
है कौन मचलती रहती।
जल बने कौन ढल-ढलके।
बल खा-खाकर है बहती ॥९॥
चञ्चला बालिकाओं-सी।
है थिरक-थिरक छवि पाती।
कर केलि किलक उठती हैं।
किसकी लहरें लहराती ॥१०॥
हैं हवा बांधते अपनी।
कैसे जाते हैं खिल-से।
किसके जलमें दिखलाये।
बुल्ले प्रसूनसे विलसे ॥११॥
किसके बलसे रहती है।
हरियाली मुंहकी लाली।
किसके जलने अवनीकी।
श्यामलता है प्रतिपाली ॥१२॥
रस किसमें मिला छलकता।
है कौन सदा रस भरिता।
किसमें है रसकी धारा।
सरिता समान है सरिता ॥१३॥

—हरिऔध

---

# कम्यूनिज्म और गांधीवाद

श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र, एम० ए० बी० एल०

हमारे देशके राष्ट्रकर्मी इस समय दो विभिन्न भाव-धाराओंके प्रवाहसे होकर गुजर रहे हैं और इन दोनोंके बहिरङ्गमें उन्हें जो विरोध, असामञ्जस्य और सङ्घर्ष देख पड़ते हैं, उनसे वे सहज ही यह निश्चय नहीं कर पाते कि कौन पथ उनके लिए श्रेय है। इस प्रश्नकी जटिलता इस बातसे और भी बढ़ जाती है कि दोनों भाव-धाराओंका मूल उद्गम-स्थान एक ही है और दोनोंके चरमलक्ष्यमें भी विशेष पार्थक्य नहीं है। हां, साध्य अनेकांशमें एक होनेपर भी दोनोंके साधन एक नहीं हैं, उनमें आकाश-पातालका अन्तर है। ये दो भाव-धारायें हैं वर्गवाद (कम्यूनिज्म) और गांधीवाद। इन दो 'वादों' को लेकर सम्प्रति हमारे देशमें आलोचना-प्रत्यालोचनायें भी काफी हुई हैं और इस समय भी हो रही हैं। और देशके लिए ऐसा होना आवश्यक भी है। क्योंकि इस समय हमारा देश राष्ट्रीयताके एक ऐसे सन्धिक्षणमें प्रवेश कर रहा है, जबकि उसे अपना लक्ष्य ही नहीं, बल्कि अपना गन्तव्य पथ भी निश्चित कर लेना है, जिससे उसके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी द्विधा न रह जाय। पहले राष्ट्रका लक्ष्य स्थिर, स्पष्ट एवं सुनिश्चित होना चाहिए; इसके बाद जिनका उस लक्ष्यपर विश्वास होगा, जो उसे अपने जीवनके आदर्श-रूपमें ग्रहण करेंगे, वे स्वतः ही बिना किसी बाह्य प्रेरणाके उस लक्ष्यकी ओर धीरवृत्त एवं अविकम्पित पदसे अग्रसर होंगे। जो सच्चा प्रेमी होगा, वह अपने प्रेमास्पद तक पहुंचनेके लिए इस बातकी थोड़े ही परवाह करेगा कि प्रेमिकाकी मञ्जिल बहुत दूर है, रास्ता बहुत टेढ़ा-मेढ़ा, पेचीदा और ऊबड़-खाबड़ है, कांटों और झाड़ोंसे उसके पांव क्षत-विक्षत हो जा सकते हैं, फिर भी न जाने वह मञ्जिले मकसूद तक पहुंच पायेगा या नहीं। उसके जीवनकी साधप्रिय-दर्शनकी लालसा पूरी हो पायगी या नहीं, उसे तो मस्त प्रेमी कबीरकी तरह प्रेमिकाके पायलकी रुनझुन-ध्वनि 'अनहद' नादके रूपमें अनुक्षण सुनाई पड़ेगी और इसी ध्वनिके आकर्षणसे सङ्गीत-लुब्ध मृगके समान आकृष्ट होता हुआ वह उस पथकी ओर अग्रसर होता जायगा, जिसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अन्त कहां जाकर होगा, इसका उसे कुछ भी पता नहीं है। इसी प्रकार जो किसी आदर्शको अपने जीवनका ध्रुव नक्षत्र मानकर उसकी प्राप्तिमें अपनी जीवन-व्यापी साधनाको संलग्न कर देते हैं, उनके लिए साधन-पथके सन्धानमें कोई अनिश्चितता या दुविधा नहीं रह जाती। अतएव इससे यह निष्कर्ष निकला कि राष्ट्रका आदर्श, लक्ष्य, ध्येय ध्रुव तारेकी तरह सुनिश्चित होना चाहिए, जिससे उसके प्रोज्ज्वल प्रकाशमें राष्ट्रकर्मियोंको अपना पथ स्पष्ट प्रतीत होता रहे।

कम्यूनिज्मके प्रवर्तक लेनिन और अहिंसात्मक संग्रामके प्रवर्तक गांधी, दोनों ही युग-मानव कहे जा सकते हैं। दोनों ही संसारके दो महादेशोंमें विशाल जनसमुदायके बीच युगान्तर उपस्थित करनेमें समर्थ हुए हैं, हालांकि दोनोंकी विचार-धाराएं एवं कर्म-प्रणालियां एक-दूसरेसे सर्वथा भिन्न हैं। दोनोंका ही आदर्श है सर्वसाधारण जनताका कल्याण, दोनोंके ही हृदयके अन्तस्तलसे जो सङ्गीत-ध्वनि समुत्थित हुई है, वह है दलित, लाञ्छित, निपीड़ित एवं शृङ्खलित मानवताकी वेदनाका मुक्ति-सङ्गीत। इस सङ्गीतमें जो मर्मोच्छ्वास है, उसमें जो प्राणस्पर्शी उन्मादना है, उसकी प्रत्येक स्वर-लहरी मौन महामानवकी हृत्तन्त्रीको झंकृत किये देती है। दोनों हीने अपने देशकी अन्नहीन, वस्त्रहीन उपेक्षित जनताकी सेवामें, उसकी बन्धन-मुक्तिमें अपने-आपको समर्पण कर दिया, अपने अस्तित्वको इस महामानवताके अस्तित्वमें विलीन कर दिया और इसके लिए समस्त दुःख एवं आपदाओंको अम्लान चित्तसे वरण करते हुए जीवनव्यापी तप एवं त्यागका हलाहल पान कर लिया। जिस प्रकार लेनिनने रूसकी दलित, क्षुधित एवं उपेक्षित जनताकी मुक्तिके लिए अपने जीवनको उत्सर्ग कर दिया था, उसी प्रकार गांधीजी भी विराट् भारतीय जनताके दासत्व-मोचनके लिए अन्याय एवं अत्याचारके विरुद्ध अनवरत संग्राम करते हुए अपने जीवनको समर्पित कर चुके हैं। इस प्रकार जहां तक पीड़ित जनताकी सेवा एवं मुक्तिका प्रश्न है, दोनोंके ध्येयमें कोई अन्तर नहीं है। गांधीजी सर्वसाधारण जनका, राष्ट्रके निम्नसे निम्न एवं अधमसे अधम व्यक्तिका कल्याण चाहते हैं। उनका लक्ष्य केवल राजनीतिक स्वाधीनता ही नहीं, बल्कि जनताकी आर्थिक स्वाधीनता भी है। वह स्वाधीनता, जिससे उसके मृत प्राणोंमें जीवन-रसका सञ्चार हो। गांधीजीके स्वराज्यमें अधमसे अधम और पापीसे पापीके लिए भी स्थान होगा। "I would reject Swaraj if that excluded the meanest and sinfullest Indian from its health-giving balm." यही कारण है कि गांधीजीने कांग्रेसके विधि-विधानोंके गठनमें बराबर इस बातपर जोर दिया है कि वह सर्वसाधारण जनताकी वास्तविक प्रतिनिधि-संस्था बने, उसमें जनताके सच्चे प्रतिनिधियोंका स्थान हो, उसकी गतिविधियोंमें जनताके मनोभाव प्रतिफलित हों और उसकी वाणीमें मौन जनताकी वेदनाओंकी अभिव्यक्ति हो। कांग्रेस और उसके कार्यकर्ता जब तक जनताके प्राणोंका स्पर्श नहीं करते, तब तक उनमें जीवनदायिनी शक्ति कहांसे आ सकती है? देशके कोटि-कोटि दलितोंके दुःख, दुर्दशा एवं अपमानसे मर्माहत हुए बिना कोई व्यक्ति क्योंकर यह विशाल प्रेम-वाणी उद्घोषित कर सकता है कि "If I have to be reborn I should wish to be born an untouchable, so that I may share their sorrows, sufferings and the affronts levelled at them, in order that I may endeavour to free myself and them from the miserable condition." यदि मुझे पुनर्जन्म ग्रहण करना पड़े, तो मैं चाहूंगा कि मैं एक अस्पृश्यके रूपमें जन्म ग्रहण करूं, जिससे मैं उनके अपमानोंमें भाग ले सकूं और इस दुर्दशासे अपनेको तथा उन्हें मुक्त कर सकूं।" दलितोंके लिए इस प्रकारकी गम्भीर आकांक्षा और किस व्यक्तिमें हो सकती है! गांधीजीके इस असीम अनुराग, उनकी इस परदुःखकातरता हीने तो आज उन्हें दरिद्रनारायणके रूपका दर्शन कराया है।

## विप्लवी गांधी

लेनिनके समान गांधीजी भी विप्लवी हैं और अपनेको एक विप्लवीके रूपमें मानते भी हैं। I am a non-violent rebel. मैं एक अहिंसक विद्रोही हूं। स्वाधीनता-प्राप्तिके लिए गांधीजी भी लेनिनके समान ही Direct-action विरोधियोंपर सीधा वार करनेके सिद्धान्तमें विश्वास करते हैं। उनका असहयोग-आन्दोलन तथा सत्याग्रह-आन्दोलन इसी भावका द्योतक है। व्यवस्थापिका सभाओंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रवेश करने, सरकारी नीतिका प्रचण्ड विरोध करने, सरकारके विरुद्ध रोष प्रकट करने तथा प्रस्ताव पास करनेसे स्वराज्य नहीं मिल सकता, इस बातमें गांधीजीका अखण्ड विश्वास है। गत बम्बई कांग्रेसके अधिवेशनमें आपने स्पष्ट रूपसे कहा था कि जहां तक इतिहाससे मेरा परिचय है, मैं ऐसे किसी भी देशका दृष्टान्त नहीं जानता, जिसने विधि-मूलक उपायों Constitutional means से स्वाधीनता प्राप्त की हो। स्वराज्य तो शक्तिकी साधना द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। इसके लिए शक्ति-सञ्चय करना होगा। किस प्रकार? वीर्य्य एवं पौरुष, आदर्श-प्रेम एवं कर्मनिष्ठा, दुःखवरण एवं आत्मत्याग द्वारा। गोलमेज सभाके अधिवेशनमें गांधीजीने कहा था—"Freedom is a gift not to be given by one nation to another, It has to be won and purchased with one's blood. स्वतन्त्रता एक ऐसा दान है, जो एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्रको दिया नहीं जा सकता। इसे तो जीतना होगा और निज रक्तदान द्वारा खरीदना होगा।" इस प्रकार शक्तिकी उपयोगितामें तो लेनिन और गांधी दोनों एकमत हैं। हां, इस शक्ति-प्रदर्शनके स्वरूपमें अवश्य अन्तर है। अन्याय एवं अत्याचारोंके प्रतिरोध करनेमें जहां लेनिन हिंसा एवं निर्मम शत्रुताकी भयङ्कर रुद्रमूर्ति बनकर अपने विरोधियोंके सामने खड़े होते हैं, वहां गांधी प्रेम एवं Heroic gentleness वीरोचित साधुताकी शान्त मूर्ति बनकर शत्रु-पक्षके प्रतिहिंसा-भावपर शीतल वारि-वर्षण करते हुए उसके हृदयमें अनुताप एवं आत्मग्लानिका सञ्चार करते हैं। गांधीजीके इस निष्क्रिय प्रतिरोधमें, उनके शान्त सत्याग्रहमें क्रियाशीलता, शौर्य्य, वीर्य्य, पौरुष सब-कुछ है। किन्तु इनका उत्स अन्यायी एवं अत्याचारीके विरुद्ध घृणा नहीं, बल्कि उसके अन्याय एवं अत्याचारके विरुद्ध घृणा-भाव है।

### जनताका स्वराज्य

गांधीवादके सम्बन्धमें इस देशके साम्यवादियोंका एक बड़ा आक्षेप यह है कि गांधीजी वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाको अक्षुण्ण रखते हुए स्वराज्य चाहते हैं। वे समाजमें पूंजीपति, जमीन्दार तथा मध्यम श्रेणीका विलोप-साधन करना नहीं चाहते। वे वर्तमान सामाजिक व्यवस्था और उसकी आधारभूत अर्थनीतिमें आमूल परिवर्तन करके समाजको एक बिलकुल नये सांचेमें ढालनेका प्रयत्न नहीं करते, जैसा कि रूसमें लेनिन, ट्राटस्की प्रभृति कम्यूनिस्टोंने किया था और इस समय स्टेलिन कर रहा है। रूसमें धनिक और मध्यम वर्गका सम्पत्ति-अपहरण करके ही वहां कृषकों एवं श्रमजीवियोंका राज्य सम्भव हुआ है, अतएव जब तक भारतमें भी वैसा नहीं होता, तब तक वास्तविक स्वराज्यकी, जनताके स्वराज्यकी स्थापना नहीं हो सकती और न उससे जनताकी सर्वाङ्गीन मुक्ति ही हो सकती है। गांधीजी एक ओर यदि दीन-दरिद्र एवं दलित जनताके बन्धु और सेवक हैं, तो दूसरी ओर वे पूंजीपतियोंके भी मित्र और सहायक हैं। यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है? दोनोंके स्वार्थमें मूलगत विरोध है। कम्यूनिस्टोंका विश्वास है कि इस समय समाजपर जिस धनिक वर्गकी सत्ता है और जिसके द्वारा समाज और राष्ट्र नियन्त्रित हो रहे हैं, उसका अस्तित्व कायम रखकर उसके हाथोंसे क्रमशः सत्ता नहीं छीनी जा सकती और न साम्यवादके आदर्शको चरितार्थ किया जा सकता है। वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाका उच्छेद साधन करके ही उसके भग्नस्तूपपर नूतन समाजकी, प्रकृत साम्यवादके सिद्धान्तोंपर गठित समाजकी प्रतिष्ठा करनी होगी। इस समाजका रूप वर्तमान समाजसे सम्पूर्ण भिन्न होगा। इस समाजमें रहकर ही किसान और श्रमजीवी अपना मङ्गल-साधन करते हुए अपनी मुक्तिका मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। मनुष्यमें स्वभावतः ही सत्ता एवं क्षमताका मोह होता है! वह सहज ही, स्वेच्छासे अपनी क्षमताओंका परित्याग करना नहीं चाहता। वह जोंककी तरह अपनी सत्तासे चिपटा रहता है, चाहे उसका आधार कितना ही कमजोर क्यों न हो। अपनी इस सत्ताका मोह उसके लिए इतना प्रबल होता है कि इसके सामने वह न्याय-अन्याय, नीति एवं अनीतिकी बातें सुनना तक नहीं चाहता। इसलिए कम्यूनिस्टोंका कहना है कि वर्तमान समाजके पूंजीपति और जमीन-मालिक जब अपने स्वार्थोंका मोह स्वेच्छासे छोड़ ही नहीं सकते, तो फिर उनके विरुद्ध बल-प्रयोग करनेके सिवा और दूसरा साधन ही कौन-सा है। ट्राटस्की की भाषामें "There is in history no other way of breaking the class will of the enemy except by the systematic and energetic use of

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



violence." धनिकवर्गमें श्रेणीगत भेदकी जो दृढ़ भावना है, उसे भङ्ग करनेके लिए सुव्यवस्थित रूपसे शक्तिप्रयोग करनेके सिवा इतिहासमें और कोई दूसरा उपाय नहीं मिलता।" देशमें जब तक यह श्रेणीभेद बना रहेगा, तब तक समाज और राष्ट्रपर धनिकोंका नियन्त्रण अक्षुण्ण रहेगा और इस प्रकारके राष्ट्रका चरमलक्ष्य होगा धनवानोंकी धनवृद्धि और श्रमजीवियोंका शोषण। क्योंकि अपनेसे दुर्बल एवं अक्षम व्यक्तियोंके श्रमका शोषण किये बिना अत्यधिक धन-सञ्चय हो ही नहीं सकता। मुट्ठी-भर पूंजीपतियोंके हाथमें जब तक राष्ट्रकी अर्थनीतिका सूत्र रहेगा, तब तक धनका वर्तमान असम विभाजन रुक नहीं सकता और न उत्पीड़ित एवं अभावग्रस्त श्रमजीवियोंकी संख्यामें ह्रास हो सकता है। समाजमें श्रेणी-भेद रहनेसे ही एक दल द्वारा दूसरे दलपर शासन, सत्ताधारियों द्वारा अकिञ्चनोंका शोषण होता रहेगा। इसलिए कम्यूनिस्टोंका आदर्श, नीति, धर्म आदि जो-कुछ है, सब यही है कि शोषणकर्ताओंके विरुद्ध संग्राम करते हुए ( War against the exploiters ) एक ऐसे Classless Society श्रेणी-भेद-रहित समाजका गठन करना, जिसमें श्रमजीवियोंका एकाधिपत्य Dictatorship of the Proletariat हो। इन्हीं युक्तियोंके आधारपर इस देशके कुछ साम्यवादी गांधीवादके प्रति आस्थावान नहीं देख पड़ते। कारण, गांधीजीके सिद्धान्तोंमें उन्हें श्रमजीवियों-के सम्पूर्ण कल्याणकी सम्भावना नहीं दीख पड़ती।

अच्छा, अब हम इन युक्तियोंपर विचार करते हुए गांधीवादके साथ इनका तारतम्य करें, जिससे हमें इस बातका सम्यक् परिज्ञान हो सके कि गांधीवादमें जनताके सर्वाङ्गीन कल्याणकी भावना निहित है या नहीं। यह सच है कि गांधीजी समाजमें धनिकवर्गका विलोप-साधन नहीं चाहते और न धनिकोंका अस्तित्व मिटाकर उनकी वैभव-राशिपर हृतसर्वस्व श्रमजीवियोंका ऐश्वर्य-मन्दिर स्थापित करना चाहते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि अभी हालमें उन्होंने अपना यह स्पष्ट मत व्यक्त किया है कि उनकी विचारदृष्टिमें पूंजीपतियों और श्रमजीवियोंके स्वार्थमें मूलगत विरोध नहीं है। समाजमें श्रेणीभेद कभी मिट नहीं सकता, इस बातको भी वे स्वीकार करते हैं। पूंजीपति और श्रम-जीवियोंके बीच उचित सम्बन्ध क्या होना चाहिए इस सम्बन्धमें 'यङ्ग इण्डिया' पत्रमें उन्होंने लिखा था—"I am for the establishment of right relations between capital and labour etc. I do not wish for the supremacy of the one over the other. I do not think there is any natural antagonism between the two. मैं पूंजीपति और श्रमिकके बीच उचित सम्बन्ध चाहता हूं। मैं एकके ऊपर दूसरेका आधिपत्य नहीं चाहता। मैं नहीं समझता कि दोनोंमें किसी प्रकारकी स्वाभाविक विरोधिता है।" कांग्रेसका लक्ष्य क्या है, इस सम्बन्धमें लण्डनमें गोलमेज सभाके द्वितीय अधिवेशनमें भाषण करते हुए गांधीजीने कहा था—"If there is a genuine and real clash, I have no hesitation in saying on behalf of the Congress that the Congress will sacrifice every interest for the sake of interest of these dumb millions. अर्थात् यदि धनिकवर्ग और साधारण जनताके बीच वस्तुतः स्वार्थसङ्घर्ष विद्यमान है, तो कांग्रेसकी ओरसे यह कहनेमें मुझे कुछ भी हिचकिचाहट नहीं होती कि कांग्रेस देशकी लक्ष-लक्ष मूक जनताके स्वार्थोंके लिए और सब स्वार्थोंका बलिदान कर देगी।"

करांची कांग्रेसमें जनताके मौलिक अधिकार Funda-mental rights के सम्बन्धमें जो प्रस्ताव पास किया गया था और जिस प्रस्तावके प्रस्तावक स्वयं महात्मा गांधी थे, उसके आरम्भमें ही कहा गया है—In order to end the exploitation of the masses political freedom must include real economic free-dom of the starving millions. जनताको शोषणसे मुक्त करनेके लिए राजनीतिक स्वाधीनताके साथ करोड़ों निरन्न जनताकी वास्तविक आर्थिक स्वाधीनताका भी समा-वेश होना चाहिए। पण्डित जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गांधीके बीच जो ऐतिहासिक पत्र-व्यवहार हुआ था, उसमें अपने मतका स्पष्टीकरण करते हुए गांधीजीने लिखा था—"I am also in whole-hearted agreement with you when you say that without a national revision of vested intersts the condition of the masses can never be improved.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मैं आपके इस कथनसे पूर्णतया सहमत हूं कि जब तक कायमी हकवालोंके स्वार्थोंमें वास्तविक परिवर्तन नहीं होता, तब तक जनताकी दशा सुधर नहीं सकती।" सम्पत्ति-का वर्तमान असम विभाजन, मुट्ठी-भर धनिकोंका विपुल ऐश्वर्य और कोटि-कोटि जनताकी दरिद्रता, एक ओर प्राचुर्य और दूसरी ओर हा अन्न! हा वस्त्र! का मर्मन्तुद हाहाकार, इस अस्वाभाविक अवस्थाका अन्त गांधीजी भी देखना चाहते हैं, यह ऊपरके अवतरणोंसे स्पष्ट है। भेद केवल इस बातको लेकर है कि जहां कम्यूनिस्ट धनिकोंको उनकी सम्पत्तिसे बेदखल कर देना चाहते हैं, वहां गांधीजी उनके अधिकारोंको इस प्रकार नियन्त्रित कर देना चाहते हैं, जिससे उनके लिए शोषण द्वारा अनुचित रूपमें धनार्जन करनेका मौका ही नहीं रह जाय और इस प्रकार समाजमें इस समय जो उत्कट वैषम्य देख पड़ता है, वह दूर हो जाय। दूसरे शब्दोंमें इसका अभिप्राय यह है कि गांधीवादके अनुसार समाजमें अर्थमूलक वैषम्य रहना स्वाभाविक है, किन्तु उस वैमनस्यका रूप इतना उत्कट नहीं होगा, जिससे धनी और दरिद्रवर्गमें ईर्षाजन्य मनोमालिन्य बना रहे और एक-दूसरेको अपना स्वाभाविक शत्रु समझें। गांधीवाद श्रेणी-भेद (अनुत्कट रूपमें ही सही) को कायम रखते हुए भी क्षमताशाली द्वारा जनतापर होनेवाले अत्याचार, उत्पीड़न एवं शोषणको मिटा देना चाहता है। और यदि दोनोंमें सामञ्जस्य स्थापित न हो सके तो गांधीजी इसके लिए भी तैयार हैं कि Every interest that is hostile to their interest must be revised or must be subsided if it is not capable of revision. गोल-मेज सभामें भाषण करते हुए गांधीजीने यह भी कहा था कि स्वराज्य स्थापित होनेपर व्यवस्थापिका परिषद्का सबसे पहला काम होगा धनिक और दरिद्र श्रेणीके बीच जो अर्थ-मूलक उत्कट वैषम्य है उसे दूर करके सब लोगोंको यथा-सम्भव सम्पन्न बनानेका उद्योग करना और जिनके पास कुछ नहीं है उन्हें बिना मूल्य जमीन देना। राष्ट्रकी अर्थ-नीतिके सम्बन्धमें गांधीजीका जो सिद्धान्त है उसमें भी सर्व-साधारणकी कल्याण-कामनाका भाव अन्तर्हित है। जीवन-की जो अत्यावश्यक वस्तुयें हैं उनके उत्पादनके साधनोंपर सर्वसाधारण जनताका नियन्त्रण होना चाहिए, इस बातको गांधीजी स्वीकार करते हैं। उन्होंने अपने एक लेखमें लिखा है—"जिस प्रकार भगवान्के दिये हुए जल और वायुका सब लोग स्वतन्त्रतापूर्वक उपभोग कर सकते हैं उसी प्रकार इन साधनोंका उपभोग भी सबके लिए अबाध होना चाहिए। इन्हें दूसरोंके शोषणके लिए वाहन नहीं बनाया जाना चाहिए।" इस प्रकार चाहे जिस दृष्टिसे विचार कीजिये, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं रह जाता कि गांधीजी भी उसी मात्रामें दलित, पीड़ित एवं बुभुक्षित जनताका कल्याण और मुक्ति चाहते हैं जिस मात्रामें कम्यूनिस्ट। और धनी एवं दरिद्र दोनोंके बन्धु होते हुए भी जहां दोनोंके स्वार्थोंमें सङ्घर्ष होगा और किसी प्रकार भी उनमें ऐक्य और समन्वय स्थापित नहीं हो सकेगा, वहां गांधीजी धनियोंके स्वार्थका ही बलिदान चाहेंगे, गरीबोंका नहीं।

गांधीजी धनिकों और दरिद्रोंके स्वार्थ-सङ्घर्षको अनिवार्य समझकर धनिकोंका उच्छेद-साधन क्यों नहीं चाहते, इस सम्बन्धमें विचार करनेके पूर्व हमें इस बातपर विचार करना होगा कि गांधीजी व्यष्टि एवं समष्टिको किस दृष्टिसे देखते हैं। क्योंकि उनके इस दृष्टिकोणमें ही पाश्चात्य साम्य-तन्त्रके साथ उनके आदर्शका मूलतः विरोध है। हिन्दू सभ्यतामें व्यष्टि एवं समष्टिके बीच विरोध नहीं, बल्कि सम-न्वयको ही प्रधानता दी गयी है। व्यष्टिमें समष्टिके साथ एकत्व-बोधकी जो अनुभूति है, उससे विरोधके लिए स्थान ही नहीं रह जाता। मनुष्यकी आत्मामें विश्व-मानवताकी जो भावना होती है उसका विकास होनेपर व्यक्ति अपनेमें समष्टि-ज्ञानकी पूर्ण महिमाको उपलब्ध करता है और तभी वह सब प्राणियोंको अपनेमें और अपनेको सब प्राणियोंमें देखता है—"सर्वभूतस्थमात्मानम् सर्व्वभूतानिचात्मनि।" हिन्दू सभ्यताका यही वह आदर्श है जिसकी उपलब्धि कर लेनेपर मनुष्यको अपने कर्ममें अनन्त बोध एवं असीम प्रीति-का आभास मिलता है और फिर उसे समाजमें श्रेणी-भेद एवं अधिकार-भेद होनेपर भी उसके अन्तरमें एक विराट् साम्य देख पड़ता है। केवल भौतिक उन्नतिको चरम लक्ष्य मान लेनेसे ही व्यष्टि एवं समष्टिमें सङ्घर्ष होना स्वाभाविक है। किन्तु इस स्थूल आदर्शसे ऊपर उठकर जब मनुष्य अपने समस्त व्यक्तिगत स्वार्थोंको समाजके विराट् स्वार्थमें विलीन कर देता है उस समय उसे अपने व्यक्तिगत जीवनका लाभा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लाभ तुच्छ प्रतीत होता है और तब वह अपने लिए समाजसे अधिकारोंका दावा नहीं करता, बल्कि समाजके प्रति अपने कर्तव्योंका पालन करना ही अपना एकमात्र धर्म समझता है। संयुक्तप्रान्तके जमींदारोंका एक प्रतिनिधि-मण्डल कुछ मास पहले जब गांधीजीसे मिला था तब उन्होंने जमींदारोंको सम्बोधन करते हुए कहा था—"I do not think you can have any possible objection to holding your properties for the benefits of royts. मैं नहीं समझता कि अपनी रैयतोंके ट्रस्टीके बतौर अपनी सम्पत्तिको रखनेमें आपको कोई आपत्ति हो सकती है।" इसका अभिप्राय यह हुआ कि गांधीजी धनवानोंकी परार्थ बुद्धिसे, उनकी स्वार्थहीन भावनासे अपील करके वर्तमान आर्थिक व्यवस्थाके दोषोंका प्रतिकार करना चाहते हैं। किन्तु सोशलिस्ट या कम्यूनिस्ट पूंजीपति या जमींदारको किसी भी अवस्थामें जनताके स्वार्थोंका ट्रस्टी माननेके लिए तैयार नहीं होंगे। उनकी दृष्टिमें लोभ एवं सम्पत्तिके कारण जो लोग स्वार्थान्ध हो रहे हैं उनकी परार्थ बुद्धिसे अपील करके कोई फल नहीं हो सकता। गांधीजीका यह दृष्टिकोण प्राचीन हिन्दू साम्यतन्त्र "त्यागाय सम्भृतार्थानाम्" के सिद्धान्तके सर्वथा अनुकूल है। यही दृष्टिकोण उन्हें किसी व्यक्तिके विरुद्ध—चाहे वह अत्याचारी एवं उत्पीड़क ही क्यों न हो—अंगुली उठाने नहीं देता। गांधीजी देशभक्तसे भी पहले मानव-प्रेमी और ईश्वरभक्त हैं।

यहां तक तो कम्यूनिज्म और गांधीवादके सिद्धान्तोंपर विचार हुआ। अब हम दोनोंकी कार्यप्रणालियोंपर विचार करेंगे, क्योंकि लेनिन और गांधीकी कार्यप्रणालीमें आकाश-पातालका अन्तर है। गांधीजी सम्पूर्ण अहिंसा—मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसाको अपना एकमात्र शस्त्र मानते हैं। हिंसा-मार्गमें उनका अणुमात्र भी विश्वास नहीं है और इसे वे अपनी जीवन-यात्राका सम्बल समझकर धर्म-रूपमें ग्रहण किये हुए हैं। अहिंसामें उनका विश्वास इतना अखण्ड है कि वे अहिंसाको मानवधर्म और हिंसाको पशुधर्म मानते हैं और इसकी शक्तिके सम्बन्धमें वह कहते हैं—"Non-violence resists with all the force of the soul the will of the tyrant. One single man can thus defy an empire and bring about its downfall. कितना असीम विश्वास है! अहिंसा सम्पूर्ण आत्मबल द्वारा उत्पीड़ककी सङ्कल्प-शक्तिका प्रतिरोध करती है। इस प्रकारका एक भी अहिंसाव्रतधारी व्यक्ति समग्र साम्राज्य-शक्तिकी परवाह न करके उसका पतन साधित कर सकता है।" किन्तु गांधीजीकी इस अहिंसामें, उनकी शान्तिपूर्ण नीतिमें, उनके प्रेम-महामन्त्रमें क्लीवता, कापुरुषता एवं जड़ताके लिए कोई स्थान नहीं है। गांधीजीकी शान्ति-नीति कापुरुषोंके लिए नहीं है, उनकी अहिंसा क्लीवों एवं अकर्मण्योंके लिए नहीं है। वह हिंसासे भी बढ़कर दुर्बलताके, शान्तिसे भी बढ़कर जड़ताके शत्रु हैं। जैसा कि उन्होंने अपने एक लेखमें लिखा है—"The path of peace is not that of weakness or cowardice. We are less enemies of violence than of weakness. A whole world of evil is preferable to emasculated good. Soft-hearted pacifism is fatal to peace; it is really cowardice and want of faith." गांधीजीने इसी विषयपर और भी स्पष्ट रूपमें असहयोग आन्दोलनके समय अपने "यङ्ग इण्डिया" पत्रमें लिखा था—"Between cowardice and violence I will choose violence. I would certainly desire violence in preference to the emasculation of a whole race. भीरुता और हिंसामें यदि मुझे किसी एकको वरण करना पड़े तो मैं हिंसाको ही वरण करूंगा।..... सम्पूर्ण जाति पुंसत्व-विहीन बना दी जाय, इसकी अपेक्षा अवश्य ही मैं हिंसाको अच्छा समझूंगा।" यही तो गांधीजीके चरित्रकी एक सबसे बड़ी विशेषता है। आपके जीवनमें प्रेम और शक्ति, शान्ति और प्रचण्ड कर्मोद्यम, क्षमा एवं तेजस्विताका जैसा सुन्दर समन्वय देखा जाता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस शक्तिमें निष्ठुरता नहीं है, पौरुषमें औद्धत्य नहीं है, सफलतामें अहङ्कार नहीं है, क्रियाशीलतामें दाम्भिकता नहीं है। जहां लेनिन शक्ति, सैन्यबल, शासन एवं भीति-प्रदर्शन द्वारा साधारण जनताका मत परिवर्तन करना चाहते हैं और अपने राजनीतिक विरोधियोंको कुचल डालने Smash them के सिवा और कोई दूसरा उपाय नहीं जानते, वहां गांधीजी कहते हैं—"We do not seek to coerce any. We seek to convert them. हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किसीपर जोर-जबर्दस्ती करके उसे अपने मतमें लाना नहीं चाहते, हम लोगोंका मत-परिवर्तन करना चाहते हैं।

### साधनमें प्रभेद

गांधीजी और कम्यूनिस्टोंमें एक और बड़ा भेद है साधन-मार्गको लेकर। अपने लक्ष्य तक पहुंचनेके लिए कम्यूनिस्ट चाहे जिस किसी मार्गका अवलम्बन करना उचित समझते हैं। वे किसी प्रकारके नैतिक आदर्शवादको स्वीकार नहीं करते। उनके लिए एकमात्र नैतिक आदर्श है मानवताको लोभ, अन्याय, शोषण एवं बन्धनसे मुक्त करना। इसके लिए वे Everything is fair in war. इस नीतिके अनुसार कार्य करते हैं। वर्तमान समाज-व्यवस्था जब तक कायम है तब तक धनिकोंके लोभपाशसे गरीबोंका उद्धार नहीं हो सकता; इसलिए चाहे जिस प्रकार हो, इस व्यवस्थाके विरुद्ध क्रोध, ईर्षा, शत्रुता एवं प्रतिहिंसाका भाव उत्पन्न करके इसका अन्त कर डालना चाहिए! यहां भी उसी नीतिसे काम लेना चाहिए जिस नीतिसे युद्धक्षेत्रमें काम लिया जाता है। अपने विरोधियोंपर विजय प्राप्त करने तथा अपने लक्ष्यकी सिद्धिके लिए सब-कुछ करना आवश्यक है। इसमें नीति, अध्यात्म या धर्मके लिए कोई स्थान नहीं है। हमारा लक्ष्य पवित्र है, अतएव उस तक पहुंचनेके लिए चाहे जो कुछ किया जाय, सब ठीक है। "The end justifies the means." यहीं लेनिनके चरित्रकी एक उल्लेखनीय विशेषता दीख पड़ती है जो गांधीजीसे सर्वथा भिन्न है। समाजके एक विशाल पीड़ित अङ्गका, जो उपेक्षित, लाञ्छित एवं उत्पीड़ित हो रहा था, उद्धार करना ही लेनिनका महत् उद्देश्य था। किन्तु अपने इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए उसे एक निर्मम, कठोर, पाषाण-हृदय नेता एवं शासक-जैसा नेतृत्व और शासन करना पड़ा। स्वयं विशुद्धचरित्र, सत्यशील, अमायिक, निस्पृह एवं सर्वस्व-त्यागी होनेपर भी उसने अपने विरोधियोंके दमनके लिए जिस नीतिका आश्रय लिया उसमें दया, करुणा एवं सहृदयताका लेशमात्र भी नहीं था और यहीं हम लेनिनका आचरण संसारके किसी भी बड़ेसे बड़े जबर्दस्त शासक-जैसा पाते हैं। चाहे जिस उपायसे प्रचलित समाज-व्यवस्थाके विरुद्ध संग्राम छेड़कर और अपने विरोधियोंका कठोरतापूर्वक दमन करके अपने लक्ष्यको प्राप्त करना चाहिए। इस नीतिको गांधीजी बिलकुल स्वीकार नहीं करते। इतना ही नहीं, बल्कि उनके लिए साध्यकी अपेक्षा साधनका ही महत्त्व अधिक है और इस साधन-मार्गकी पवित्रता एवं विशुद्धता ही सब-कुछ है। इसमें आधुनिक युद्ध-नीतिके लिए कोई स्थान नहीं है। शत्रुसे छिपाकर कोई चाल न चली जाय, किसी प्रकारके छलछद्मका आश्रय न लिया जाय, संग्रामके सारे कौशल शत्रुके सामने प्रकट कर दिये जायं। इस प्रकार सम्पूर्ण सत्यशील, निश्छल, प्रेमपूर्ण एवं राग-द्वेष-विरहित हिंसाशून्य उपायों द्वारा गांधीजी अपने लक्ष्य तक पहुंचनेका प्रयत्न करेंगे, चाहे इससे उनका लक्ष्य कितना ही सुदूर पराहत क्यों न प्रतीत हो। हमें लक्ष्यके सम्बन्धमें चिन्ता करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। हमारे लिए साधन ही सब-कुछ है। साधन-पथ जितना ही विशुद्ध होगा, उतना ही हमारा मार्ग प्रशस्त होगा और हम अपने लक्ष्यके सन्निकट पहुंचते जायंगे। जैसा कि गांधीजीने पं० जवाहरलालके पत्रमें लिखा था—"I feel too that our progress towards the goal will be in exact proportion to the purity of our means. I know that if we can take care of them (means) attainment of the goal is assured. मैं यह भी महसूस करता हूं कि जितने ही हमारे साधन पवित्र होंगे उसी अनुपातसे अपने लक्ष्यकी ओर हम प्रगतिशील होंगे। मैं यह जानता हूं कि यदि हम अपने साधनोंपर ध्यान रखें, तो हमारे लक्ष्यकी सिद्धि सुनिश्चित है।" गुप्त रूपसे कोई कार्य करनेके सम्बन्धमें उसी पत्रमें गांधीजीने लिखा था—"Now about secret methods. I am as firm as ever that they must be tabooed. Secrecy is inimical to the growth of the spirit of civil resistance. सब प्रकारके गुप्त उपायोंसे काम लेना वर्जित होना चाहिए, इस सम्बन्धमें मेरा विचार पहलेके समान ही दृढ़ है। सत्याग्रहकी भावना-के विकासमें गोपनीयता अन्तराय है।" इस प्रकार गांधीजी किसी भी अवस्थामें छल-कपटका आश्रय ग्रहण करके अपने साधनको दूषित नहीं करना चाहते। उनके संग्राममें प्रेम एवं शक्तिकी साधना साथ-साथ चलती है। अकपट सत्य-शीलता एवं अहिंसा द्वारा मनुष्यके आत्मबलका विकास होता है और इस मृत्युञ्जय शक्तिको प्राप्त करके वह मृत्युके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साथ क्रीड़ा करता है, बन्धुके समान मृत्युका आलिङ्गन करता है। किन्तु इस प्रकार निज जीवन-दान करनेपर भी उसके हृदयमें अपने विरोधियोंके प्रति किसी प्रकारके मनोमालिन्य या दुष्ट भावनाका स्पर्श तक नहीं होता। समस्त विरोध, उत्तेजना एवं रक्तपातके बीच भी प्रेमकी अनाविल धारा अजस्र रूपमें प्रवाहित होती रहती है और मानव हृदयमें प्रेमकी जो पीर होती है, उसके आकर्षणसे एक हृदय दूसरे हृदयकी ओर स्वतः आकर्षित होता रहता है। पारस पत्थरकी तरह इस प्रेमके स्पर्शसे मनुष्यका लोभ त्यागमें परिणत हो जाता है। इस प्रकारके युद्धका रणक्षेत्रमें ही अन्त हो जाता है। वह अपने पीछे विरासतके तौरपर विजेताके हृदयमें दम्भ, अहङ्कार एवं औद्धत्यकी भावना और पराजितोंके हृदयमें घोर शत्रुता, मनोमालिन्य, ईर्षा-द्वेष एवं प्रतिहिंसाकी चिरधूमायित वह्नि-शिखा नहीं छोड़ जाता।

### विभिन्न दृष्टिकोण

कम्यूनिस्ट मानव-चरित्रकी दुर्बलताओंपर उसकी स्वार्थबुद्धि एवं पाशविक प्रवृत्तिपर लक्ष्य रखते हुए सर्वसाधारण जनको जिस रूपमें व्यवहार-जगत्में विचरण करते देखते हैं, उसी रूपमें उसे लेते हैं। किन्तु नरमें नारायणका जो अंश है, जिससे वह अपने शरीरकी शिरा-शिरामें एक विश्वव्यापी प्राण-तरङ्गका अनुभव करता है और जिसके विराट् स्पन्दनसे वह सम्पूर्ण जीव-जगत्से अपनेको अभिन्न समझता है, उसकी वे सर्वथा उपेक्षा कर देते हैं। मनुष्य नरसे नरोत्तम और नारायण बन सकता है, मानवताके इस चरम विकासपर कम्यूनिस्टोंका लक्ष्य नहीं है। वे विषय-भोगमें रत स्वार्थपरायण मनुष्यके बाह्य रूपपर ही स्थूल दृष्टिसे विचार करते हैं, उसके अन्तरकी उस प्रेरणापर नहीं, जो उसे मङ्गलबुद्धि प्रदान करती है। व्यक्तिकी स्वार्थबुद्धिका दमन करके उसकी शुभबुद्धिको समाज-हितकी ओर नियोजित करनेके लिए कम्यूनिस्ट उसे डरा-धमकाकर तथा उसके ऊपर बाहरी दबाव डालकर उसे साम्यवादके सांचेमें ढालना चाहते हैं। किन्तु साम्य एवं मैत्रीका सम्बन्ध मनुष्यके अन्तरसे है, उसके बाह्यसे नहीं। अतएव मनुष्यके अन्तस्थमें जो शुभबुद्धि अन्तर्हित है, उसे उद्बुद्ध करके ही उसे क्षुद्र स्वार्थकी सीमासे ऊपर उठाया जा सकता है। इसके लिए राजसिक बुद्धिका अहङ्कार नहीं, सात्विक दानका आत्मसमर्पण चाहिए।

मानव-चरित्रके अन्तस्थकी इस शुभबुद्धिको ही चरम सत्यके रूपमें ग्रहण करके तथा विश्वलीलामयके अनन्त लीलाप्रवाहमें अपनी सत्ताको विलीन करके गांधीजी शान्ति, साम्य एवं प्रेमकी स्निग्धोज्ज्वल दीपशिखा हाथमें लिये हुए अविचल पदसे अपने सुदूरपथपर अग्रसर हो रहे हैं। यह साधन-पथ औरोंके लिए भले ही दुर्गम एवं दुर्बोध्य हो, इसकी उन्हें चिन्ता नहीं।

---

## गीत

*नयनोंसे लुक-छिपकर लखना ;*
*अधरोंका मन्द-मन्द हंसना !*

*हियसे इतना अनुरक्ति-स्नेह ,*
*क्यों बरसाती ये सरस मेह ?*
*जर्जरित प्राण ! यह हृदय-गेह ,*
*फिर कहां-कहां होगा बहना !*
*तुम सुन्दरताकी मधुर लेख ,*
*मैं पाप-पुञ्जकी मलिन रेख ,*
*यों मिले न अनजाने, अदेख ,*
*बन जीवनकी मधुमय छलना !*
*फिर भी पापीसे अकथ प्यार ,*
*आयीं जो मेरे सजनि ! द्वार ,*
*पहनाने चुपके मृदुल हार ,*
*यह कैसा देवि ! चरण गहना !*

—राममूर्ति शुक्ल 'राम'



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मध्य एशिया और भावी युद्ध

"सिन्धबाद जहाजी"

कुछ महीनोंकी बात है कि शिमलाकी एक सरकारी विज्ञप्तिसे पता चला कि तिब्बतकी राजधानी लासाका पुलिस बण्ड 'ब्रिटिश सुरोंकी नकल उतारने' की कोशिश कर रहा है। तिब्बतकी सीमापर भारतीय सेनाकी गुप्त गतिविधिके बाद यह खबर आयी थी। कामन सभामें भी इसकी चर्चा एक प्रश्नके रूपमें हुई। भारतीय उपमन्त्री मि० बटलरने चुप्पी नहीं साध ली, बल्कि जवाब दिया—और जवाब भी यह कि 'ब्रिटिश वाणिज्य-प्रतिनिधिको पहुंचानेके लिए केवल सौ सिपाही तिब्बत गये थे।' मगर कुछ कानोंको यह जवाब खटका और 'माडर्न रिव्यू' ने तो एक सम्पादकीय टिप्पणीमें हमारे परराष्ट्र-विभागपर घुन्नेपनका आरोप भी लगाया। हाल हीमें चीनकी राष्ट्रीय सरकार और तिब्बतमें जो लिखापढ़ी हो रही थी, उसकी असफलतामें भी कुछ विदेशी पत्रोंको ब्रिटिश कूटनीतिका हाथ दिखाई पड़ा था।

बीच-बीचमें ऐसे जो कटे-छंटे समाचार आया करते हैं, उनमें सिलसिला बिठाना कठिन-सा है। पर जो लोग अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिके दांव-पेंच समझ सकते हैं और भारतीय सीमाके परे आंखें गड़ाये हुए हैं, वे ऐसी उखड़ी-उखड़ी खबरोंका मतलब भी जानते हैं। भावी महायुद्ध कब होगा, यह बतलाना अभी असम्भव-सा है, पर क्यों, कहां और किनमें होगा, इसे समझना आसान-सा है।

साम्राज्यवादी युगका प्रत्येक युद्ध किसी अर्थसङ्कटके समाधान और उपनिवेशों व मण्डियोंके पुनर्विभाजनके लिए ही हुआ करता है। पूंजीवादी व्यवस्थामें अन्तर्हित द्वन्द्व जितना भीषण होगा, यह युद्ध भी उतना ही उग्र, उतना ही भयानक होगा। साम्राज्यवादी शक्तियोंकी जङ्गी तैयारी उस ज्वालामुखीके अन्तिम विस्फोटके समान है, जो भूतलकी सिकुड़नके कारण अपनी बुनियादसे डांवाडोल हो रहा है। आगामी युद्ध पुरातन और नवीन, पूंजीवाद और साम्यवादके भाग्यका निबटारा करेगा। उसके बाद या तो पूंजीवाद खुद अपने नागपाशमें घुट जायेगा, या सोवियट रूस सोवियट चीन और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन बहुत दिनोंके लिए कुचल दिये जायेंगे। इस पश्चाद् भूमिमें आजकी अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिके नक्शेको रखनेसे तमाम उलझनें सुलझ जाती हैं और रायटरके मन्त्रोंका गुप्त अर्थ भी मालूम हो जाता है।

'ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति' नामक पुस्तकमें रेल्फ फाक्स बतलाता है कि तिब्बतपर ब्रिटेनका अखण्ड प्रभाव स्थापित हो गया है। बीसवीं सदीके प्रारम्भसे लार्ड कर्जनकी नीतिपर अमल करते हुए ब्रिटेन तिब्बतको अपने प्रभाव-क्षेत्रमें लानेकी कोशिश करता रहा है। जारके राज्यकालमें ब्रिटेनको अपने उद्देश्यमें पूरी सफलता न मिली थी; क्योंकि मध्य एशियामें दोनोंके स्वार्थ टकराते थे और तिब्बतमें भी दोनोंमें बराबर लागडांट रहना जरूरी था। फिर भी ब्रिटिश कूटनीतिने जारको पछाड़कर यहां अपना सिक्का चला दिया था। इधर सोवियट रूसके साम्राज्यवादी नीतिको तज देने, चीनकी अराजकता और जापानके खामोश रहनेका अञ्जाम यही हो सकता था कि तिब्बतके बैण्ड ब्रिटेनके गुण गाने लगें। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि वह पञ्चन लामा, जो पहले ब्रिटेनका कट्टर शत्रु था, अब उसका गहरा दोस्त बन गया है। ताशी लामाने तो पत्र-प्रतिनिधियोंसे साफ कह दिया है कि ब्रिटनकी मैत्री और सहायता तिब्बतके लिए हितकर है। यह महोदय निकट-भविष्यमें भारतको अपनी चरणरजसे पुनीत करनेवाले हैं।

अगर इन बिखरी हुई कड़ियोंको मिलाइये, तो समझमें आ जाता है कि नैपालका दर्जा एकाएक क्यों बढ़ गया। बकिङ्घमके शाही महलमें नैपालके राजदूतका सम्मान, वहांके प्रधानमन्त्रीका भारतआगमन और उसके स्वागतके लिए नकली लड़ाईका अभूतपूर्व आयोजन और सिक्कम व भूटानके नरेशोंका गत बड़े दिनोंमें कलकत्ता पहुंचना—जहां वायसराय अपने कौन्सिलरोंके साथ विराजमान थे—यह तमाम बातें असम्बद्ध और अर्थहीन नहीं हैं। 'लन्दन टाइम्स' का कहना है कि मध्य एशियाकी समस्यामें नैपाल और ब्रिटेनके स्वार्थ असमान नहीं हैं, इसीलिए दोनोंमें अधिक घनिष्ठताकी आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



साथ-ही-साथ खबर मिलती है कि चीन और बर्माकी सरहदपर कुछ उपद्रव हुआ। कुछ डाकुओंपर यह सनक सवार हुई कि ब्रिटिश सन्तरियोंपर हमला करें। नतीजा वही हुआ, जो ऐसे मौकोंपर हुआ करता है। उनके कान तो उमेठे ही गये, साथ ही नानकिङ्ग-सरकार तक शिकायत पहुंची। अब पता चला है कि इस बखेड़ेको सदाके लिए समाप्त करनेकी गरजसे दोनों सरकारोंका एक संयुक्त कमीशन बिठलाया जायेगा। ये डाकू भारतसे संलग्न चीनके दक्षिणी यूनन प्रान्तमें रहते हैं। इसके और तिब्बतके बीचमें एकमात्र सिकियाङ्ग प्रान्त रह जाता है।

'न्यूयार्क टाइम्स' के विशेष संवाददाताने कभी यह सूचना दी थी कि ब्रिटिश सरकार सिकियाङ्गके एक सेनापतिको लाखों डालर ऋण देना चाहती है, हालांकि वह नानकिङ्ग सरकारकी सत्ताका खुल्लमखुल्ला विरोध कर रहा था।

इन घटनाओंका क्रम मिलानेसे दो बातें स्पष्ट हो गयीं। एक यह कि उन प्रान्तोंमें ब्रिटेनका प्रभाव-विस्तार, जो सोवियट चीनको चारों ओरसे घेरे हुए हैं—यूनन, सिकियाङ्ग और तिब्बत—महत्त्वपूर्ण है। चीनी तुर्किस्तान और मङ्गोलियामें भी अगर यही बात हो जाये, तो सोवियट रूस और सोवियट चीनके बीचमें एक अभेद्य प्राचीर खड़ा हो जाता है। सोवियट चीनसे रूसको सहानुभूति होनी ही चाहिए; साथ ही समुद्र-तटके इलाकोंमें पहुंच असम्भव होने और उत्तरके राष्ट्रीय आक्रमणोंसे बचनेके लिए सोवियट चीनको पश्चिमकी ओर बढ़नेका प्रयत्न करना होगा, ताकि रूससे सुदृढ़ सम्बन्ध स्थापित हो सके। मगर सोवियट चीनकी मजबूती नानकिङ्ग सरकारकी मौत और सभी साम्राज्यवादी देशों, विशेषतः जापानके लिए घातक है। चीनकी समस्याके सभी जानकारोंका विचार है कि नानकिङ्ग सरकार सोवियट चीनको कुचलनेके लिए जापानकी कठपुतली बन गयी है।

हमने देखा कि दक्षिणसे सोवियट चीनका एक प्रकार मुहासिरा ही हो रहा है। अब रह गये मङ्गोलिया और चीनी तुर्किस्तान। मङ्गोलियाका बाहरी इलाका सोवियट और दक्षिणी जापानी प्रभावके अन्तर्गत है। पिछले वर्ष जब चीनी तुर्किस्तान के जङ्गली चरवाहोंने अपने असमर्थ चीनी गवर्नरको मार भगाया, तो डा० इकबालके हर्षका पारावार न रहा। उन्हें इस घटनामें अपने 'इस्लामिस्तान' का सुखस्वप्न दिखाई दिया। भारतके मुसलमान पत्रोंने अल्लाहो-अकबरके नारोंके साथ इस मुसलमान रियासतका स्वागत किया। डा० इकबालने ब्रिटिश सरकारसे अपील भी की कि वह इस रियासतका लालन-पालन करे। साथ ही उन्होंने रूसी तुर्किस्तानमें विद्रोह और अकालकी भविष्यवाणी भी की। कुछ महीने बाद ही रूसी ताजिकिस्तानमें कुछ अशान्ति हुई, मगर बीस हजार बलवाइयोंका देशनिकाला होते ही सन्नाटा छा गया। उसी 'ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति' में तो लेखकने यहां तक कह दिया है कि रूसके इस हिस्सेमें ब्रिटिश बन्दूकोंके साथ डकैत पकड़े गये। जो भी हो, यह निस्सन्देह है कि यह इलाका ब्रिटेन और रूसके लिए शतरञ्जकी बिसात बन गया है। 'स्क्रिप्स-होवर्ड' नामक पत्रके परराष्ट्र-सम्पादकने लिखा है कि ब्रिटेन चीनी तुर्किस्तानको अपनी छत्रछायामें लानेके लिए आतुर है, क्योंकि उसकी स्थिति भारतके लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस कथनका समर्थन वेरन फान अरगर्नने भी किया, जो मध्यएशियाकी समस्याके बड़े जानकार हैं। इनके मौसेरे भाई रूसी क्रान्तिके बाद बोलशेविकोंसे लड़ते हुए बुखाराके आस-पास ही मारे गये थे। इनका कहना है—"पूर्वी तुर्किस्तान महाशक्तियोंकी प्रतियोगिताका केन्द्रबिन्दु बना हुआ है। जापानके नेतृत्वमें सोवियट रूसके चारों ओर जाल-सा बिछ रहा है।" वस्तुतः जापान और ब्रिटेन दोनोंके सहयोगसे सोवियट रूसकी पूरी पूर्वी सीमापर मृत्यु-जाल बिछाया जा रहा है। सोवियट रूसका अस्तित्व दोनोंके लिए समान रूपसे घातक है। साथ ही सोवियट चीनको कुचलना दोनोंके लिए आवश्यक है। चीनी तुर्किस्तान तक जापानका पञ्जा नहीं पहुंच सकता। यहां ब्रिटेन और रूसकी कूटनीतिमें घात-प्रतिघात हो रहे हैं। परिस्थिति इतनी जटिल है कि कुछ कहना कठिन है, मगर 'एसोसियेटेड प्रेस' और 'स्टेट्समैन' के समाचारोंसे आभास-सा मिलता है कि रूस अपने समर्थकोंके हाथमें शासन-सूत्र देनेमें सफल हो गया है। चीनी पत्रोंके कथनानुसार दक्षिणी इलाकेमें ब्रिटेनका और उत्तरी इलाकेमें रूसका असर कायम हो गया है।

इसमें सन्देह नहीं कि मध्य-एशियाकी स्थिति भावी महायुद्ध और भारतके दृष्टिकोणसे बहुत जटिल और महत्त्वपूर्ण है। सोवियट अखबारोंने कुछ समय पहले यह शोर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मचाया था कि कर्नल लारेन्स तुर्किस्तान पहुंच गया है और ब्रिटिश सेना-विभागके गुप्त अभियान मध्यएशिया आने-जाने-वाले दर्रोंका सुराग हिन्दूकुश और हिमालयके पर्वतोंमें लगा रहे हैं। फिर यह भी विचारणीय है कि जब कुछ भारतीयोंने नङ्गापर्वतकी चढ़ाईकी इजाजत मांगी, तो यह कहकर इनकार कर दिया गया कि उन्हें देखकर तिब्बती घबड़ा जायंगे और इसका परिणाम अच्छा न होगा।

भारतसे संलग्न प्रदेशोंमें भावी महायुद्धकी जैसी तैयारी हो रही है, उसकी एक हलकी-सी रूपरेखा पाठकोंने देखी। अब भारतीय सीमाप्रान्तकी हालतपर भी एक विहङ्ग-दृष्टि डाली जायेगी।

भारतीय सीमाका विस्तार सचमुच मिस्रसे लेकर सिङ्गापुर तक है और इस क्षेत्रमें साम्राज्यकी रक्षाके लिए जो भी किया जाता है, वह भारतकी जरूरतोंको देखकर और उसके सभी सम्भव-असम्भव शत्रुओंको दृष्टिके समक्ष रखकर। यहां हम सिर्फ यह देखेंगे कि भारतीय सीमाकी रक्षाके लिए गत चार-पांच वर्षोंसे क्या किया जा रहा है।

कई साल पहले कश्मीरके प्रधानमन्त्री सर अलबियन बनर्जीने अपने पदसे अवसर ग्रहण करनेके बाद इंगलैण्डके प्रसिद्ध पत्र 'नाइनटीन्थ सेन्चुरी एण्ड आफटर' में कश्मीर-पर एक सारगर्भित लेख लिखा। दूसरी बातोंके सिवा उन्होंने कश्मीरकी सीमाका भी जिक्र किया जिसके अतिरिक्त कहीं भी सोवियट इलाका भारतको नहीं छूता। सैनिक दृष्टिसे यह हिस्सा महत्त्व रखता है। सर अल-बियनने लिखा कि इधरसे बोलशेविक परोक्ष या प्रत्यक्ष रूपसे भारतपर प्रभाव डाल सकते हैं, इसलिए जरूरत इस बातकी है कि भारतीय सीमाप्रान्त और कश्मीरका सर-हदी इलाका संयुक्त हो जाये। इस परामर्शको लोग चाहे भूल-बिसर गये हों, पर कश्मीर-आन्दोलनके बाद ही इसकी प्रतिध्वनि सुनाई पड़ी, जब रियासतमें भारत-सरकारने हस्तक्षेप किया। उपद्रवकी रोकथामके लिए जो कार्रवाई की गयी उसमेंसे एक यह भी थी कि गिलगिटसे आगे फौजी चौकियां कायम की गयीं। इस प्रश्नको ब्रिटिश सरकारने कितना महत्त्व दिया, इसका अन्दाजा लन्दनके अखबारोंकी उस अफवाहसे चलेगा कि कश्मीर-नरेशको शायद सियाल-कोटकी ओर कोई रियासत दी जायेगी और कश्मीर भारत सरकारके अधीन हो जायेगा। अभी तीन महीने पहले भारत-सरकारके परराष्ट्र-सचिव गिलगिटमें थे। अब सरकारी विज्ञप्तिसे मालूम होता है कि प्रबन्धकी आसानी और खर्चकी बचतके उद्देश्यसे कश्मीरके सीमाप्रान्तका प्रत्यक्ष प्रबन्ध गिलगिटके ब्रिटिश पोलिटिकल एजेण्टके हाथमें रहेगा।

सीमाप्रान्तमें स्थायी शान्ति रखनेके लिए वहांके आजाद कबीलोंकी ताकत तोड़ना जरूरी था। पिछले वर्ष अफगान सरकारके अनुरोधपर कुछ उपद्रवकारियोंकी गिरफ्तारीके लिए आजाद इलाके ( No Man's Land ) में ब्रिटिश सेना भेजी गयी। कुछ गांवोंपर बम भी बरसाने पड़े जिसके विरुद्ध भारतवर्षमें प्रतिवाद-सभायें हुईं जिनमें यह आशङ्का प्रकट की गयी कि सरकार इस इलाकेको हथियाना चाहती है। इन उपद्रवकारियोंके भाग्यकी तो भगवान जाने, इतना अवश्य मालूम है कि बादमें इस इलाकेमें तेजीसे सड़कें बनने लगीं, फौजी चौकियां कायम होने लगीं और टेलीफोनके तार बिछाये जाने लगे। 'स्टेट्समैन' ने एक अग्रलेखमें असभ्य कबीलोंको सभ्य बननेका निमन्त्रण दिया और बतलाया कि ब्रिटेनने उन्हें सभ्य बनानेका बीड़ा उठा लिया है।

इधर नैपालके समान अफगानिस्तानपर ब्रिटेनकी कृपा-दृष्टि बढ़ती ही जाती है। यह तो सब जानते हैं कि अमा-नुल्लाहकी रूससे मित्रता ब्रिटेनके लिए अप्रिय थी और इसीलिए उन्हें राज्यसे हाथ भी धोना पड़ा। मौजूदा अफगान सर-कार और ब्रिटिश सरकारके परस्पर सम्बन्धपर काफी प्रकाश पड़ चुका है। ब्रिटिश कूटनीतिके प्रत्येक जानकारको मालूम है कि वह अपने और अपने शत्रु-राष्ट्रके बीचमें एक 'सतीका बकरा' ( Buffer ) रखनेका प्रयत्न करती है ताकि युद्धकाल-में शत्रुसे वहीं उतरकर मोर्चा ले। बेलजियमका उदाहरण सामने है। इसी प्रकार यदि कभी ब्रिटेन और सोवियट रूसमें युद्ध छिड़ा तो अखाड़ा अफगानिस्तान होगा। यह प्रत्येक दृष्टिसे ब्रिटेनके लिए हितकर है। इसके लिए इस प्रिय पड़ोसी देशकी सरकारका ब्रिटेन-प्रेमी और मजबूत होना जरूरी है। अफगानिस्तानको अस्त्र-शस्त्र और धन-मालका ऋण देना कुछ अर्थ अवश्य रखता है। फिर राष्ट्र-सङ्घमें सोवियट रूसके साथ उसका प्रवेश क्या 'बैलेन्स' सुधारनेके लिए नहीं है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इधर जापान भी चुप नहीं है। मुसलिम देशोंके साम्यवाद-द्रोहसे लाभ उठानेमें वह किसीसे पीछे नहीं है। अफगानिस्तानके अर्द्धसरकारी पत्र 'काबुल' ने हाल हीमें हर्षपूर्वक घोषणा की थी कि जापानमें इसलामके प्रचारके सुयोग बढ़ते जाते हैं। किसी मुसलिम त्योहारके अवसरपर स्वयं 'मिकाडो' पहुंचे और अपने भाषणमें इसलामकी विरुदावलि गायी। इधर 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के टोकियो-स्थित संवाददाताने जापान और चीनी मुसलमानोंपर एक विचारपूर्ण लेख लिखा है। इससे पता चलता है कि उन्हें राष्ट्रीय सरकारके विरुद्ध उभाड़ने और देशद्रोहके लिए किन-किन तरीकों से बहकाया जा रहा है। वह दिन दूर नहीं है, जब अपने भारतीय बन्धुओंके समान ये लोग भी विदेशी साम्राज्यवादके स्तम्भ बन जायंगे।

भारतीय सीमा और उससे सम्बन्ध रखनेवाली घटनावलीको क्रमबद्ध करनेका यह प्रयत्न सरसरी तौरपर है। भावी महायुद्धकी भीषणतामें किसे सन्देह हो सकता है और फिर यह भी सच है कि युद्धके बादल छा चुके हैं, न जाने कब बरसने लगें। दैनिक पत्रकी प्रत्येक प्रति लड़ाईकी एक-आध चिनगारी उड़ा जाती है। यह प्रलयकारी ताण्डव जब भी प्रारम्भ हो, उसका प्रमुख क्षेत्र मध्य एशिया भी होगा, इसमें सन्देह नहीं। इसके साथ संसार और समाजका भाग्य संलग्न है, यह भी सबका विश्वास है।

---

# विवेकसे बढ़कर

श्री 'अज्ञेय'

Whence shall arise the shout of love,
If it be not from the summit of sacrifice. —Victor Hugo.

आंधी तीन दिनसे बन्द नहीं हुई थी। उस मरुस्थलमें तीन दिनसे पवन कभी क्रुद्ध सांपकी तरह फुफकारता हुआ, कभी किसी विधवाकी तरह सांय-सांय रोता हुआ बहा जा रहा था। उस मरुमें उसका प्रवाह ऐसा अनवरुद्ध था कि तीन दिनोंसे लगातार पड़ रही बर्फका एक टुकड़ा भी उसके आगे नहीं टिक पाया था। केवल उस लम्बी-सी नीची इमारतके कोनेमें, जहां पवनकी चोट नहीं पहुंच पाती थी, बर्फके मैले ढेर जम गये थे और उनसे मैला पानी बहा जा रहा था।

काली-सी मरुभूमि, काला-सा आकाश और बीचमें उड़ती हुई बर्फकी चादरमें लिपटी हुई काली-सी इमारत! भूमि और आकाशको देखकर उस स्थानकी निर्जनताका अनुभव पूरी तरह नहीं हो सकता था, किन्तु उसके मध्यमें, उस इमारतके भीतरसे आनेवाले क्षीण प्रकाशको देखकर एकाएक असीम सूनेपनकी संज्ञा जाग्रत हो उठती थी।

वह इमारत थी रूसकी साइबेरियन सीमाका एक पुलिस थाना। उस समय उसके अन्दर भी एक विचित्र तूफान मचा हुआ था; किन्तु उसकी भयङ्करताको वही समझ सकता है, जिसने महीनों आधे पेट भोजनपर बिताये हैं, जिसने भूख-प्यास और सर्दीसे अपने प्रियजनोंको मरते देखा है, जिसने धनिकोंकी अनाचारिता देखी है, जिसने राजशक्तिकी कोप-दृष्टि सही है, और जिसने यह सब-कुछ देख-सुन और सहकर भी अपने पीड़ित बन्धुओंके लिए लड़-मरनेका निश्चय नहीं छोड़ा।

थानेके सिरेपर एक कोठरीके अन्दर एक युवक बन्द था। वह चमड़ेका एक कोट पहने हुए था और मोटे-मोटे बूट; किन्तु उसके दाहिने पैरमें एक लोहेकी जञ्जीर पड़ी हुई थी, जिसका दूसरा छोर दरवाजेके सीखचोंसे बंधा हुआ था। वह कोठरीके एक कोनेमें भूमिपर ही बैठा हुआ था और विमनस्क-सा होकर बाहर गरजते हुए तूफानकी ओर देख रहा था। कभी-कभी बर्फके छोटे-छोटे टुकड़े अन्दर आ जाते और कभी-कभी पवनके झोंकेसे छतसे टंगे हुए चरबीके लेम्पकी शिखा कांप जाती थी।

उसके सामने एक पुलिसका अफसर बैठा था। वह कुछ सोच रहा था, किन्तु फिर भी कभी-कभी चौंककर बाहरकी ओर देख लेता और कभी अपने बन्दीके मुखकी ओर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एकाएक वह बोला—"देखो, एण्टन, मैं तुम्हें एक रहस्यकी बात बतलाता हूं। तुम जरा आगे सरक आओ।"

बन्दीने उपेक्षासे उत्तर दिया—"रहस्यकी बात यही होगी न कि मैं बयान दे दूं, तो मुझे छोड़ दोगे?"

पुलिसअफसरने धैर्यसे कहा—"नहीं। तुम अभी युवा हो, इसलिए प्रत्येक सरकारी नौकरको देशद्रोही समझते हो। तुम्हारा विचार गलत है।" यह कहकर वह स्वयं आगे सरक आया और बोला—"एण्टन, तुम पीटर वासिलीवको जानते हो?"

एण्टनने कुछ मुसकराकर कहा—"इतना कच्चा नहीं हूं।"

"तुम्हें ऐसे विश्वास नहीं होगा। सुनो, मैं तुम्हारी बहुत-सी बातें जानता हूं। तुम पीटर वासिलीवके दलमें थे और तुम्हारे साथ ही मैक्सिम और लियोन भी थे। ठीक है न?"

बन्दीने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम, मैक्सिम और लियोन फिलिस्क नगरमें गवर्नरकी हत्या करनेके लिए भेजे गये थे और तुम्हींने यह कार्य किया भी। उसके बाद तुम रूसकी ओर वापस जाते पकड़े गये। ठीक है न?"

फिर भी कोई उत्तर नहीं मिला।

"तुम समझते होगे, ये बातें शायद मैक्सिम या लियोनने मुझे बता दी हों। सुनो, एक बात और कहता हूं। यह उन दोनोंको नहीं मालूम है। वासिलीवने एक बार पहले भी तुम्हें इधर भेजा था और तुम क्रुपस्कोव नामसे गये थे। क्यों?"

अबकी बार एण्टनने विस्मित स्वरमें उत्तर दिया—"तो फिर क्या चाहते हो?"

पुलिस-अफसर हंसा। बोला—"अब शायद तुम मेरी बात सुननेको उद्यत होगे। सुनो। मैं वासिलीवका मित्र हूं। मुझे तुमसे बहुत-कुछ सहानुभूति है—पर इस बातको अभी जाने दो। मैं इस समय तुम्हारी सहायता करना चाहता हूं। शायद थोड़ा-बहुत सहायता कर भी सकता हूं।"

बन्दीने उत्सुक होकर पूछा—"क्या?"

"तुम तीन आदमी पकड़े गये हो। मैं जानता हूं कि उस हत्यामें तुम तीनोंका हाथ था। लेकिन फिलिस्कके थानेमें जो रिपोर्ट है, उसमें दो ही आक्रमणकारियोंके देखे जानेकी बात है।"

"तो फिर?"

पुलिस अफसरने एक भेद-भरी दृष्टिसे बन्दीकी ओर देखते हुए फिर कहा—"तुम लोग तीन हो।"

बन्दी क्षण-भर उसकी ओर देखता रहा। शायद पुलिस अफसरका आशय कुछ-कुछ उसकी समझमें आ गया। उसने व्यग्रता दिखाते हुए पूछा—"तो क्या किया जा सकता है?"

"मैं तुमसे सहानुभूति रखता हूं। अगर मेरा वश होता तो तुम तीनोंको छोड़ देता। लेकिन वैसा करनेमें मैं स्वयं पकड़ा जाऊंगा, और तुम भी कहीं नहीं जा सकोगे। ठीक है न?"

"हां।"

"अपने आदर्शकी पूर्तिके लिए जो बात सबसे लाभप्रद हो, वही हमें करनी चाहिए। तुम तीनोंको नहीं छोड़ सकूंगा। इसीलिए पूछता हूं, तुममेंसे किसका मूल्य सबसे अधिक है?"

एण्टनने हंसकर कहा—"हम तीनों ही पांच-पांच हजार रूबलके हैं।"

पुलिस अफसर भी कुछ हंसा। फिर बोला—"वह बात नहीं। किसका छूट जाना सबसे लाभप्रद होगा, यही जानना चाहता हूं।"

"जानकर क्या होगा?"

"उससे आगे जो कुछ करना होगा, वह मेरे वशमें है। तुम केवल इतना बता दो, किसे निर्दोष लिख दूं।"

एण्टन चुपचाप बाहर आंधीकी ओर देखता रहा। कई क्षण बीत गये। पुलिस अफसरने कहा—"मैं उत्तरकी प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

एण्टन मानों चौंका, फिर बोला—"मुझे सोच लेने दो—यह काम बहुत कठिन है!"

पुलिस अफसरने कहा—"अच्छा। मैं आधी रात बीते फिर आऊंगा। तब तक—"यह कहकर वह घूमा, और किवाड़के पास जाकर बोला—"सिपाही!"

दूरसे सिपाहीके आनेका ठप्! ठप्! स्वर सुन पड़ा। ताला खड़का, फिर दरवाजा कुछ खुल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एण्टनने अफसरसे पूछा—"आपका नाम क्या है, बतानेकी कृपा करेंगे ?"

"हां, हां ! मेरा नाम एण्ड्री मार्टिनोव है।" कहकर वह बाहर चला गया। ताला बन्द हो गया।

[ २ ]

इस कोठरीमें और एण्टनकी कोठरीमें, कोई विशेष भेद नहीं था। अगर कोई भेद था तो इतना ही कि इस कोठरीका मुख पवनके वेगसे बचा हुआ था। एक युवक उसमें धीरे-धीरे टहल रहा था। जब वह चलता तो उसके पैरोंमें पड़ी हुई जञ्जीर झनझना उठती थी, पर वह फिर भी ऐसे टहलता जाता था मानों उसे ध्यान ही न हो।

एकाएक उसने रुककर अपने सामने खड़े हुए पुलिस-अफसरकी ओर देखकर पूछा—"पर मार्टिनोव साहब, आपका विश्वास कैसे किया जा सकता है ?"

मार्टिनोवने कहा—"मैं यह जानता ही था कि मैं आसानीसे विश्वास नहीं दिला सकूंगा। लेकिन शायद मेरे पास इसका भी एक साधन है। तुम वासिलीवकी हस्तलिपि पहचानते हो ?"

"कहिये ?"

"अगर मैं अपने नाम लिखा हुआ वासिलीवका पत्र तुम्हें दिखाऊं, तो विश्वास करोगे ?"

"अगर-अगरकी बात क्या करते हैं ? जो दिखाना है दिखाइये, फिर बात होगी।"

मार्टिनोव हंसा। फिर बोला—"क्रान्तिकारी स्वभावतः ही टेढ़े होते हैं, सीधा जवाब क्यों देने लगे ? खैर, यह देखो !" कहकर उसने जेबमेंसे एक पत्र निकाला। उसमें दो ही तीन सतरें लिखी हुई थीं।

मैक्सिमने पत्र अपने हाथमें ले लिया और पढ़ा। "बन्धु मार्टिनोव, हमारे एक मित्र क्रुपस्कोव आपके प्रान्तमेंसे होकर फिलिस्क जा रहे हैं। आशा है आप उनसे मिल पायेंगे। अगर न मिल सकें, तो भी ऐसा प्रबन्ध कर दीजियेगा कि उन्हें यात्रामें कष्ट न होने पाये। कृतज्ञ रूंगा।"

मैक्सिमने पत्र पढ़कर जिज्ञासा-भरी दृष्टिसे मार्टिनोवकी ओर देखा। मार्टिनोव बोला—"नीचेका नाम मैंने काट दिया था, लेकिन लिपि तो पहचानते हो न ?"

मैक्सिमने धीरेसे कहा—"हां।"

थोड़ी देर दोनों चुप रहे। फिर मार्टिनोव बोला—"तो अब मुझे बता सकोगे ?"

"आपने और दोनोंसे भी पूछा है ?"

"तुम्हें अपना मत व्यक्त करनेमें उनकी रायसे नहीं बाध्य होना चाहिए, इसलिए मत पूछो ! तुम किसे सबसे मूल्यवान समझते हो, यही बता दो।"

मैक्सिम चुप रहा। मार्टिनोव मानो अपने-आपसे ही बोला—"और फिर सबको विश्वास दिलाना भी तो असम्भव है !"

मैक्सिमने कहा—"हां, यह बात तो है। अच्छा।"

"तुम्हें शायद सोचनेके लिए समय चाहिए ? मुझे कोई जल्दी नहीं है।"

"हां, कब तक समय दे सकते हैं ?"

"आधी रात तक—अभी तीन घण्टे हैं।" कहकर मार्टिनोव बाहर चला गया। मैक्सिमने टहलना बन्द कर दिया, और धीरे-धीरे भूमिपर बैठ गया। बहुत देर तक उस कोठरीमें कोई शब्द नहीं हुआ, केवल किसी अशान्त, चिरदुःखित प्रेतके सिसकनेकी तरह पवनका वह सांय-सांय ही बार-बार गूंजता और कुछ शान्त होकर फिर गूंज उठता।

[ ३ ]

एण्टनकी कोठरीमें अंधेरा था, चर्बीका लैम्प बहुत धीमा जल रहा था। वह कोठरीमें खड़ा हुआ दीख नहीं पड़ता था, इसलिए सिपाही दरवाजेके पास ही खड़ा था, इधर-उधर घूमता नहीं था। कभी-कभी वह दरवाजेपर आकर पुकारता, "कैदी, सब ठीक है न ?" और फिर बिना उत्तर पाये ही कुछ परे हटकर खड़ा हो जाता था। उसकी शिक्षा यहीं तक थी कि कैदीको पुकारते रहना चाहिए, यह नहीं कि उससे कोई उत्तर भी प्राप्त करना चाहिए।

कभी-कभी जब बिजली चमकती, तो सारा आकाश जल उठता और उस मरुकी निर्जनता आंखोंके आगे उभर-सी आती।

उस प्रकाशमें दीख पड़ता था, एण्टन अपनी कोठरीके सीखचे दोनों हाथोंसे पकड़े, उनके बीचसे मुंह निकाले खड़ा था। विक्षिप्तकी भांति वह एक पैरकी एड़ी बार-बार उठाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पटकता था, जिससे पैरकी जञ्जीर झनझना उठती थी। कभी-कभी वह बिलकुल ही निश्चल हो जाता, किन्तु फिर अधिक उद्वेगसे एड़ी पटकने लगता था, और जञ्जीरकी झन्! झन्! पवनकी सांय-सांयको डुबा देती थी।

एण्टनका बाह्य रूप देखकर नहीं जान पड़ता था कि वह क्या सोच रहा है। उसकी वह स्थिर दृष्टि, दबे हुए ओठ और शरीरके उत्क्षेप यही कहते थे कि उसकी आत्मा किसी विचित्र भावके फेरमें पड़कर, उद्भ्रान्त होकर, बहुत दूर चली गयी है और कठोर, अभेद्य बन्धनोंमें पड़कर छटपटा रही है। किन्तु वह भाव क्या था और वे बन्धन क्या थे, यह कहनेका शायद उसके पास कोई साधन ही नहीं था। क्रान्तिकारी विचार-स्वातन्त्र्य और अभिव्यक्ति-स्वातन्त्र्यके लिए लड़ते हैं, किन्तु इसमें ही उन्हें न जाने कितने विचारोंका दमन करना पड़ता है, कितनी अभिव्यक्ति-चेष्टाओंको नष्ट कर देना होता है!

वे भाव एण्टनके विशाल हृदयमें उठते और दोमेंसे किसी एक चट्टानसे टकराकर नष्ट हो जाते—मैक्सिम और लियोन.....।

वे भाव एण्टनके व्यक्तित्वके इतने अन्तरतम अंश थे कि शायद एण्टन स्वयं उन्हें न समझ सकता। उसने इतनी बातें, ऐसी बातें, पहले कभी नहीं सोची थीं। किन्तु उसे पहले कभी ऐसा अवसर भी तो नहीं आया था—मैक्सिम और लियोनकी तुलना करनेका उसने कभी प्रयत्न नहीं किया था।

यदि एण्टन उन भावोंको लिखकर, उन्हें सामने रखकर, अपने मनको समझानेकी चेष्टा करता।

[ ४ ]

बहुत दिनोंकी बात थी। वसन्तके आगमनसे उस गांवके आसपासके बागोंमें सेबके पेड़ फूलोंसे लद गये थे, यद्यपि उनमें पत्ते नहीं थे। इन्हीं पेड़ोंकी छायामें, झरनेके किनारे थोड़ी-सी घाससे हरी भूमिपर दो लड़के बैठे हुए थे—एण्टन और मैक्सिम।

मैक्सिम एक छोटी-सी किताब हाथमें लिये पढ़ रहा था। एण्टन उसकी ओर देखता और घासकी एक-एक पत्ती दांतोंसे कुतरता हुआ चुपचाप बैठा था।

मैक्सिमने पढ़ना स्थगित करके कहा—"एण्टन!"

"क्या है?"

"इस किताबमें दो सिपाहियोंकी जो कहानी है, वह तुमने पढ़ी है?"

"हां, पिछले साल पढ़ी थी।"

"मैं भी सिपाही बनूंगा। और फिर बहुत बड़ी फौज लेकर लड़ाईमें जाऊंगा। तुम भी चलोगे न?"

"मैं बहुत फौज लेकर नहीं लड़ूंगा। अकेला ही जाके पास जाऊंगा और उससे काम मांगूंगा।"

"जैसे इस किताबमें सिपाहियोंने किया था?"

"हां। लेकिन किताबमें दो सिपाही थे।"

मैक्सिमने कुछ सोचकर कहा—"तो मैं भी चलूंगा। लेकिन कहानीकी तरह अगर कभी लड़ाईमें मुझे चोट लग गयी तो?"

"तो मैं अकेला ही शत्रुको मार डूंगा और तुम्हें उठाकर पीट्रोग्रेडमें ले आऊंगा।"

"और तुम भी घायल हो गये तो?"

"तो क्या? तुम्हें तो उठाकर बचा ही लाऊंगा—चाहे फिर मर ही क्यों न जाना पड़े।"

मैक्सिम मानो सन्तुष्ट हो गया। वह फिर अपनी किताब पढ़ने लग गया।

कालेजमें अभी छुट्टी हुई थी। लड़के निकलकर अपने-अपने घरोंकी ओर जा रहे थे।

एण्टन और मैक्सिम एक-साथ चले जा रहे थे। एण्टन कह रहा था—"आज ही चित्र शुरू कर डूंगा। एक महीनेमें तैयार हो जायगा।"

मैक्सिम बोला—"तो क्या एक महीने तक मुझे रोज आकर बैठना पड़ेगा?"

"नहीं तो! तीन-चार दिन तो देर-देर तक बैठना पड़ेगा, इतनी देरमें मैं छोटी ड्राइंग बना लूंगा। उसके बाद तैलचित्र बनाता रहूंगा, तुम्हें कभी-कभी आकर बैठ जाना होगा—थोड़ी-थोड़ी देरके लिए, ताकि मैं भूल न जाऊं।"

"अच्छा। तो आज आरम्भ कर दोगे न?"

"हां, तुम्हारा चित्र बनानेके लिए अगर कालेजसे गैर-हाजिर भी रहना पड़े तो रहूंगा। लेकिन मैक्सिम, तुम भी यह कला क्यों नहीं सीखते?

इसी समय किसीने पीछेसे पुकारा—"मैक्सिम!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मैक्सिम घूमकर रुक गया और बोला—"लियोन, तुम कहां रह गये थे ?"

तीनों साथ चलने लगे। लियोन बोला—"मैक्सिम, आज थियेटर देखने चलोगे न ? एक राजनीतिक खेल आया है, शायद दो-तीन दिनमें सरकार उसे बन्द ही कर दे। मैंने दो टिकट ले रखे हैं।"

"अच्छा, चलूंगा। एण्टन, चित्र फिर सही।"

एण्टन अप्रतिभ होकर बोला—"जैसी तुम्हारी मर्जी।"

"कहां ?"

"एक जगह चित्र बनाने जाना है, पचास रूबल तय हुए हैं। अगर मिल जायं, तो मांके लिए कुछ सुभीता हो सकेगा।"

मैक्सिमने कुछ नहीं कहा। लियोन बोला—"एण्टन, तुमने वह किताब पढ़ ली जो मैंने तुम्हें दी थी ?"

"हां, लेकिन उसके बारेमें फिर बात होगी।" कहकर सिर झुकाये हुए एण्टन एक ओर लम्बे-लम्बे कदम रखता हुआ चला गया।

* * *

मैक्सिम, एण्टन और लियोनको क्रान्तिकारी सभामें सम्मिलित हुए कई महीने हो गये थे। कई कारणोंसे लियोन-को घर छोड़कर छिपकर रहना पड़ता था क्योंकि उसके वारण्ट जारी हो चुके थे। वह कालेज तो छोड़ ही चुका था, अब नगर छोड़कर जानेको बाध्य हुआ था।

तीनों मित्र एक छोटे बगीचेमें बैठे हुए थे। लियोनने अपने जानेकी बात सुनाकर पूछा—"मैक्सिम, तुम अब क्या करोगे ?"

"मैं तो तुम्हारे साथ जाऊंगा।"

"नहीं, तुम यहीं रहो। एण्टनकी सहायता करते रहना। उसे तुम्हारी मददकी बड़ी जरूरत रहेगी। और तुम अभी तक सुरक्षित हो, क्यों मेरे साथ आओगे ? जब तक सुरक्षित रहकर काम कर सको, करो; व्यर्थ अपनी शक्ति कम कर देनेसे क्या लाभ ? हां, अगर तुम्हारे भी वारण्ट निकले होते, तब दूसरी बात थी। क्यों, एण्टन ! तुम इसे अपने साथ रखोगे ?"

एण्टनने दूसरी ओर देखते हुए कहा—"जो काम मैक्सिम मेरे साथ करता है, उसे मैं दूने उत्साहसे करता हूं।"

मैक्सिम फिर लियोनकी ओर उन्मुख होकर बोला—"एक और बात भी है। घरपर मेरा रहना असम्भव हो रहा है।"

एण्टनने आग्रहसे कहा—"तो फिर मेरे पास आ जाना। मेरे स्टूडियोमें बड़े आरामसे रह सकोगे।"

मैक्सिमने उत्तर नहीं दिया। किन्तु उसका मौन स्वीकृति-सूचक नहीं था।

एण्टनने फिर कहा—"अब पहलेकी-सी हालत नहीं है। मैं अपने चित्रोंसे काफी कमा लेता हूं। और मेरी मां भी प्रसन्न होगी। अगर हमारी हालत खराब भी होती, तो भी...मैक्सिम, तुम आ जाओगे न ?"

मैक्सिमने कुछ हठके साथ कहा—"मैं तो लियोनके साथ जाऊंगा। नहीं तो वह भी यहीं रह जाये।"

एण्टन चुप हो गया। लियोनने कुछ हंसकर कहा—"मैक्स, तुम बड़े हठी हो !"

मैक्सिमने समझ लिया कि लियोन उसे साथ ले जायगा। उसके मुखपर प्रसन्नता झलक गयी।

* * *

सन्ध्याके बुझते हुए प्रकाशमें वोल्गा-तटस्थ जारेव नगर-के आसपासके दलदलके प्रदेशमें कीचसे लथपथ दो युवक भागे जा रहे थे। उन दोनोंके हाथोंमें बन्दूकें थीं, किन्तु उनके मुखपर शिकारीका हिंसाभाव नहीं था, बल्कि शिकार-का त्रस्त, वेदनापूर्ण भाव !

उनके पीछे कुछ दूरपर मशालें लिये हुए अनेक सैनिक आ रहे थे। बीच-बीचमें कोई रुककर बन्दूकसे फायर करता और फिर आगे बढ़ा चला आता।

एकाएक भागते हुए दो व्यक्तियोंमेंसे एक लड़खड़ाकर गिरा और गिरते हुए बोला—"एण्टन, तुम निकल जाओ ! मैं तो...!"

दूसरा व्यक्ति रुका और बोला—"मैक्सिम !"

कोई उत्तर नहीं मिला। एण्टनने हाथसे बन्दूक फेंक दी, और पीठपर मैक्सिमको उठाकर दौड़ने लगा। एक बार अस्पष्ट स्वरमें बोला—"मैक्सिम, तुम्हें छोड़कर कैसे....." और फिर उन्मत्त, अरोक मशीनकी तरह दौड़ता गया। उसके शरीरमें मानों कोई दैवी शक्ति आ गयी थी, उसकी आंखोंमें दैवी तेज धधक रहा था, और शायद उसके अन्तस्तलमें...।

दलदल धीरे-धीरे पक्की धरतीका रूप धारण कर रहा था। थोड़ी देरमें एण्टन बिलकुल सूखी जमीनपर पहुंच गया। उसने



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



घूमकर देखा, सैनिकोंकी मशालें कहीं नहीं दीख पड़ती थीं। वह फिर आगे बढ़ने लगा और थोड़ी देरमें एक छोटे-से हरियाली-भरे और सुरक्षित स्थानमें पहुंच गया। यहां उसने मैक्सिमको भूमिपर लिटा दिया और धीरे-धीरे उसका शरीर टटोलने लगा। गोली मैक्सिमकी टांगमें लगी थी। एण्टनने अपना कोट उतारा, फिर कमीज, और उसके चिथड़े कर पट्टियां बनायीं। इनसे उसने घावको बांध दिया। फिर कोटकी जेबसे उसने एक छोटा-सा फ्लास्क निकाला, और मैक्सिमका मुख खोलकर उससे लगा दिया।

मैक्सिमको इतना भी होश नहीं था कि फ्लास्कसे ब्राण्डीका एक घूंट भर ले। किन्तु ब्राण्डी धीरे-धीरे उसके गलेसे नीचे उतर गयी। उसका शरीर कुछ कांपा, फिर उसने बहुत क्षीणस्वरमें पुकारा—"लियोन!"

एण्टन बड़ी व्यग्रतासे उसके मुखकी ओर देख रहा था। मैक्सिमकी पुकार सुनकर उसने एक लम्बी सांस ली और चुप हो रहा।

मैक्सिमने फिर पुकारा—"लियोन, कहां हो?"

एण्टनने धीरेसे कहा—"मैक्सिम, यह मैं हूं, एण्टन।"

---

# जासूसोंका जाल और उनके करिश्मे

श्री शिवदेव उपाध्याय 'सतीश' बी० ए०

विश्व-शान्तिकी समस्या दिनों-दिन जटिल होती जा रही है। अभी केवल बीस वर्ष पहले यूरोपके रङ्गमञ्चपर सर्वनाश अपना विभीषिका-पूर्ण ताण्डव नृत्य दिखा गया है। विगत महासमरकी संहार-लीलाकी दारुण कहानियां और उन कहानियोंकी भीषणता आज भी सोचते ही प्राणोंको विकल कर देती है; परन्तु फिर भी हतभाग्य मानव-जाति उन्हें सुनती हुई भी नहीं सुनती—देखती हुई भी नहीं देखती!

उस महायुद्ध द्वारा दलित प्राणियोंके हृदयोंसे आज भी जो करुण-क्रन्दन उठ रहे हैं, उन्हें सुनते हुए भी यूरोप, और यूरोप ही क्या, सारा संसार एक बार पुनः वही संहार-लीला देखना चाहता है, एक बार पुनः परवाना बनकर अग्नि-शिखापर कूद पड़ना चाहता है। संसार आज अपने ही सर्वनाशकी तैयारीमें उन्मत्त हो रहा है। और इसी विकृत मनोवृत्तिके कारण सभी राष्ट्रोंमें यथासाध्य विशालतम पैमानेपर शस्त्रास्त्रोंका निर्माण हो रहा है। विज्ञानने जहां मानव-जातिके लिए कितने ही कल्याणकारी मङ्गलमय अवदान दिये हैं, वहीं कितनी ही साङ्घातिक वस्तुओंके आविष्कारसे समस्त संसारकी मानवता, संस्कृति और सभ्यताका जीवन खतरेमें पड़ा हुआ है। यदि भावी महासमर छिड़ा—जिसका देर या सवेरमें छिड़ना अवश्यम्भावी है—तो इस बार संसारको विनाश-लीलाका पहलेसे भी अधिक करुण और वीभत्स रूप देखना पड़ेगा। विगत महासमरके घुएं अभी भी एक प्रकारसे आसमानसे बिलकुल विलुप्त नहीं हुए हैं, आकाशमें पुनः कभी-कभी युद्धके काले बादल उठते, चक्कर काटते दिखाई पड़ जाते हैं और पता नहीं कि कब प्रशान्त महासागर खौल पड़े, ट्रान्स साइबेरियन रेलवेकी पटरियां टकरा उठें और कब पूर्वके जिब्राल्टर सिङ्गापुरके नागरिक अकस्मात् तोपोंकी गड़गड़ाहटसे चौंककर अपनी निद्रासे जाग उठें। सभी राष्ट्र पारस्परिक प्रतियोगितामें सर्वनाशके पथपर बड़ी तीव्रगतिसे बढ़ते जा रहे हैं, ऐसी दशामें किसी क्षण भी आकाशमें युद्धार्थ उड़ते हुए वायुयानोंसे सूर्यकी किरणोंका मार्ग अवरुद्ध हो जाय, तो कोई आश्चर्य नहीं।

एक ओर तो स्पष्ट रूपसे शस्त्रास्त्रोंकी ये तैयारियां हो रही हैं और दूसरी ओर सभी राष्ट्र एक-दूसरेको चकमा देकर—उनकी आंखोंमें धूल झोंककर अपना उल्लू सीधा करनेमें लगे हुए हैं। गुप्तचरों द्वारा इस प्रकारकी चालों—इस प्रकारकी कूटनीतियोंको खूब प्रश्रय दिया जा रहा है। पिछले महायुद्धके दिनोंमें सभी राष्ट्रोंने अपने यहां गुप्तचरों-का एक विभाग खोल रखा था। इस समय भी, संग्रामके न होते हुए भी, प्रत्येक देशमें यह विभाग खूब मुस्तैदीसे काम कर रहा है। गुप्तचरोंकी उपयोगिताका पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विगत महासमरके समय लग चुका है, इसलिए भावी महा-युद्धके लिए यदि अभीसे तैयारियां की जाती हैं, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं।

गुप्तचर-विभागके जासूसोंने पिछले दिनों जैसे-जैसे करिश्मे कर दिखाये, उन्हें सुनकर सहसा विश्वास नहीं होता और आश्चर्यसे दांतों-तले उंगली दबानी पड़ती है। हजारों सैनिकोंकी सेना जहां बेकार सिद्ध होती थी, सैकड़ों तोपोंकी बारूद और दर्जनों वायुयानोंके विषैले बम जहां बिलकुल व्यर्थ होते थे, वहां एक जासूसकी नन्हीं-सी चाल कारगर हो जाती थी और विपक्षी दलके सारे मनसूबोंपर पानी फिर जाता था। युद्ध-कालमें जासूसोंने—खासकर महिला जासूसोंने बड़ेसे बड़े अधिकारियोंकी आंखोंमें धूल झोंककर उनके हृदयकी बात निकाल ली और कौन नहीं जानता कि एक-एक जासूसने कभी-कभी सैकड़ों और हजारों प्राणियोंकी मृत्युका वारण्ट एक पलमें लिख डाला—एक जासूस रमणीने केवल अपने चुम्बनोंका प्रलोभन देकर एक ऐसा भेद एक सैनिक अफसरसे प्राप्त कर लिया जिसके फलस्वरूप हजारों प्राणियोंको अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा।

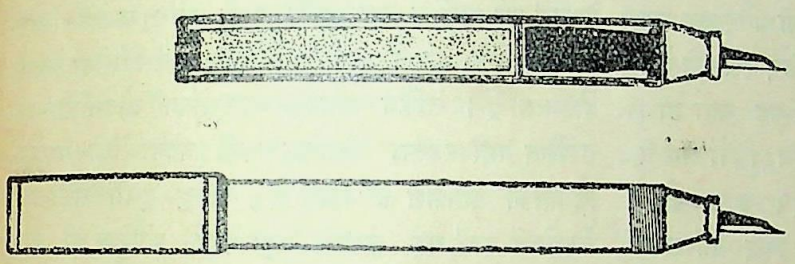

समूचे नगरको ध्वंस करनेवाली फाउन्टेन पेन। १९१७ में इस प्रकारकी कलममें महामारीके कीटाणु भरकर भेजे जानेवाले थे।

## जासूसोंका जाल

जासूसी-प्रथा आजकी नयी प्रथा नहीं है। जिस तरह वेश्या-प्रथाका इतिहास पुराना है, उसी तरह जासूसी-प्रथाका भी। ये दोनों ही प्रथायें समान रूपसे घृणित हैं, और व्यक्ति और राष्ट्र-विशेषकी गुप्त लालसाओंके फलस्वरूप ही दोनोंका जन्म हुआ मालूम होता है। इतिहास बतलाता है कि भारतमें भी गुप्तचर-विभाग बहुत व्यवस्थित रूपसे चलाया जाता था और चन्द्रगुप्त-जैसे सम्राटोंको छोड़कर महाभारत और रामायण-कालमें भी यह विभाग बराबर काम करता रहा है। कितने ही महत्त्वपूर्ण अवसरोंपर जासूसों द्वारा गुप्त समाचारोंके आदान-प्रदानका काम लिया जाता था। रूसके महान् पीटर और पोण्टस (Pontus) के षष्ठम् मिथ्रीडेट्स जैसे पाश्चात्य युवराजों तकने अपने यौवनके प्रथम चरणमें ही जासूसीका काम करना शुरू कर दिया था और मध्य युगमें धार्मिक कार्योंका सारा उत्तरदायित्व केवल जासूसोंकी ही सफलता और विफलता-पर निर्भर करता था। हिन्दुस्तानमें भी मुगलोंके शासन-कालका इतिहास जा-सूसोंकी लोमहर्षक कहानियोंसे भरा पड़ा है। मुगल सम्राटोंकी विजयके कारण जासूस ही थे और जासूसोंने ही मुगल साम्राज्यके कफनमें अन्तिम कील भी ठोंक दी।

यह तो हुई उन दिनोंकी बात, जब कि विज्ञानने इतनी उन्नति नहीं की थी और दो परस्पर-विरोधी दल चालबाजीसे ही एक-दूसरेको हरा देना चाहते थे। तब जासूसोंकी इतनी आवश्यकता समझी जाती थी कि प्रसाके एक अद्भुत जासूस विल्हेल्म स्टीवरका कहना था कि उसके पास तीस हजार जासूस हैं। परन्तु विज्ञानकी उन्नतिके साथ-साथ जासूसी-प्रथा घटनेके बजाय बढ़ने लगी है और गत महासमरमें जितने जासूसोंको पकड़कर दण्ड दिया गया, यदि उनकी संख्यापर ध्यान न भी दिया जाय तो यही क्या कम आश्चर्यजनक है कि पिछले २२ महीनोंमें लगभग छ सौ जासूस पकड़े गये और सिर्फ १९३३ में १८२ व्यक्तियोंको जासूसोंके रूपमें जालसाजी करनेका दण्ड दिया गया!

मामूली पेन्सिलोंकी आकृति और वजनका एक ध्वंसकारी बम।

महायुद्धके छिड़तेही प्रत्येक राष्ट्रमें गुप्तचर-विभागकी स्थापना की गयी और इसके लिए कोषसे बड़ी-बड़ी लम्बी रकमोंकी मञ्जूरी दी गयी। रूसके जारने इस विभागकी स्थापना बहुत पहलेसे ही कर रखी थी और १९१४ के कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रारम्भिक महीनोंमें तो इस विभागका खर्च बेहद बढ़ गया था। उस समयके आंकड़ोंको देखनेसे पता लगता है कि जारने जासूसोंके लिए चार लाख पौण्ड प्रतिमास खर्च करनेकी मञ्जूरी दी थी। इतनी लम्बी रकम कुछ तो उन जासूसोंको दी जाती थी, जिन्हें जारके विरुद्ध होनेवाले षड्यन्त्रोंका पता लगानेके लिए रखा गया था और कुछ उन लोगोंको, जो जारके पक्षमें प्रचार करनेके लिए रखे गये थे। लड़ाईके दिनोंमें तो रूसका खर्च और भी बढ़ गया था। लेकिन यह बात रूसकी ही नहीं थी। उन दिनों जर्मनी २५० लाख मार्क प्रतिमास और ब्रिटेन १५ लाख पौण्ड प्रतिमास खर्च कर रहा था। इस विभागके लिए फ्रान्सका खर्च जर्मनीके करीब था और इटली भी इससे कुछ ही कम खर्च कर रहा था।

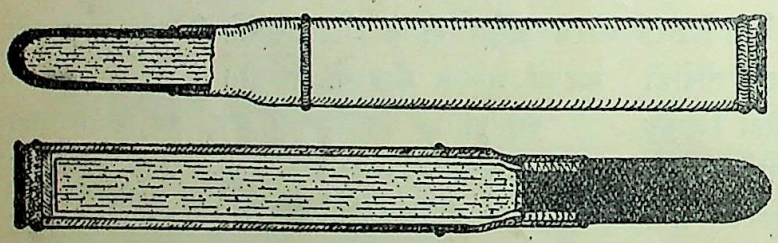

कारतूसोंके भीतर छिपाकर रखे गये विषैले कीटाणु।

युद्धके अन्तिम दिनोंमें सभी राष्ट्र पागलोंकी तरह रुपया बहा रहे थे और नागरिक अपना खून। उन दिनों जापानको गुप्तचर-विभागकी आवश्यकता न थी। परन्तु आज वह जानता है कि भावी संग्राममें और कोई राष्ट्र छूटे तो छूटे, परन्तु उसे तो जङ्गमें उतरना ही होगा। इसीलिए उसने अपने जासूस-विभागको अभीसे खूब मजबूत कर रखा है। जापानने इस वर्ष—१९३५ के लिए आठ लाख पौण्डकी मञ्जूरी इस विभागके लिए दी है। गुप्तचरोंकी गतिविधिका पता रखनेवालों तथा उनकी चाल-बाजियों और हैरतअङ्गेज कलाओंके पारखियोंका कहना है कि इस समय सारे संसारमें जापानी जासूस फैले हुए हैं और प्रशान्त महासागरपर तो वही गुप्त रूपसे शासन कर रहे हैं। मछुओंके रूपमें कितने ही जासूसोंका पता भी लग चुका है।

विश्वस्त रूपसे अनुमान लगाया जाता है कि इस समय दस हजारसे भी अधिक जासूस दिन-रात अपने काममें लगे हुए हैं और हजारों जासूस संसारके विभिन्न व्यापारिक और राजनीतिक केन्द्रोंमें निवास करते हुए गुप्त रूपसे राष्ट्रोंकी गतिविधिका अवलोकन कर रहे हैं। चूंकि भावी संग्राम बहुत-कुछ चकमेबाजीपर ही निर्भर करेगा, इसलिए इन जासूसोंकी आवश्यकता सभी महसूस करते हैं। एक ही केन्द्रमें कई राष्ट्रोंके जासूसोंके रहने और सभीके हितोंमें वैषम्य होनेके कारण कभी-कभी बड़ी सनसनीखेज घटनायें हो जाती हैं। लेकिन अभागे जासूसोंका जीवन तो कभी सुरक्षित नहीं रहता, इसलिए ऐसी घटनाओंको पहले तो छिपानेकी कोशिश की जाती है; किन्तु इसमें सफलता न मिलनेपर उन्हें यह कहकर उड़ा देनेकी कोशिश की जाती है कि अमुक जासूसके लिए अमुक राष्ट्र जिम्मेदार नहीं है। बेचारे जासूस तो अपनी जान हथेलीपर लेकर काम करते हैं, परन्तु जब वे फंस जाते हैं, तब उन्हें कोई पूछता तक नहीं। खुले रूपमें कोई भी राष्ट्र अपने यहां गुप्तचरोंका होना स्वीकार नहीं करता, इसीलिए जासूसोंके फंसनेपर उनका अस्तित्व ही नहीं माना जाता। फिर भी जासूस अपनी हरकतोंसे बाज नहीं आते। 'हजरते दाग जहां बैठ गये, बैठ गये।' जब उन्होंने जासूसीका पेशा अपनाया, तब उसे वे छोड़नेवाले नहीं। अभी तक छोटे-बड़े किसी भी जासूसने इस पेशेको अपनाकर फिर नहीं छोड़ा और यदि कोई जासूस स्वयं इस बातका ढिंढोरा पीटता फिरे कि 'मैंने तो अब जासूसी छोड़ दी है,' तो भी उसपर कोई विश्वास नहीं कर सकता।

सच तो यह है कि जासूसीका पेशा ही कुछ ऐसा मनोरञ्जक और उपन्यासोंके प्लाटकी तरह उलझा हुआ है कि कुछ भी साहस रखनेवालोंको उसमें दिलचस्पी मिलेगी ही। मनमाने रूपसे रुपये मिलते ही हैं, इसलिए खतरोंमें पड़कर एक सनसनी उत्पन्न करना, एक रोमान्स पैदा कर देना उनका स्वभाव-सा हो जाता है और इसीसे कभी-कभी वे ऐसे-ऐसे काण्ड कर जाते हैं कि आप सुनकर भौचक हो जायेंगे।

जासूसोंकी ही बदौलत रूसके सेनाध्यक्ष जारके चाचा ग्राण्ड ड्यूक निकोलसकी हत्याके प्रयत्न कई बार किये गये थे। नवीन टर्कीके भाग्य-विधायक मुस्तफा कमाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पाशापर भी हाथ साफ करनेके प्रयत्न किये जा चुके थे। गुप्तचरोंके ही बयानोंसे मालूम हुआ है कि लार्ड किचनरकी मृत्युका वारण्ट वास्तवमें सबसे पहले रूसके जासूसोंने निकाला था, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि युद्धकी अवधि बढ़ती चले। परन्तु उन्हें इस काममें सफलता न मिली। और तो और, जासूसोंका कहना तो यहाँ तक है कि अमेरिकाके शान्तिके दूत उड्रो विल्सनको भी जासूसोंने ही पहले मृत्युके घाट उतार देनेका निश्चय कर लिया था और कहते हैं कि जिस समय वे अमेरिकासे बाहर थे, उसी समय बर्फमें मिलाकर उन्हें विषाक्त कीटाणु खिला दिये गये थे, जो उन्हें अन्ततोगत्वा ले ही बीते। आर्च ड्यूक फ्रेञ्च फर्डिनण्डकी हत्या संसारके इतिहासमें एक स्थान रखती है। उसने अपनी रक्षाका ऐसा उपाय कर रखा था कि वह निश्चिन्त-सा रहता था, परन्तु जासूस तो होते हैं पूरे आफतके परकाले! उनसे भला कोई क्या छिपा लेगा? फर्डिनण्ड अपने वक्षस्थलपर एक लौह कवच पहना करता था और इस कवचका पता उसके घरके ही लोगोंको मालूम था। ऐसी दशामें सेराजेवोमें जब उसपर हत्यारेने गोलियां चलायीं, तो देखा गया कि सारीकी सारी गोलियां सिरपर ही मारी गयीं। यह एक रहस्यमयी पहेली थी, लेकिन इसका अनुमान कौन नहीं लगा सकता कि जासूसोंने पहलेसेही इस बातका पता लगा रखा था कि सीनेपर गोलियोंका मारना बेकार होगा? इसीलिए सिरको ही निशाना बनाया गया।

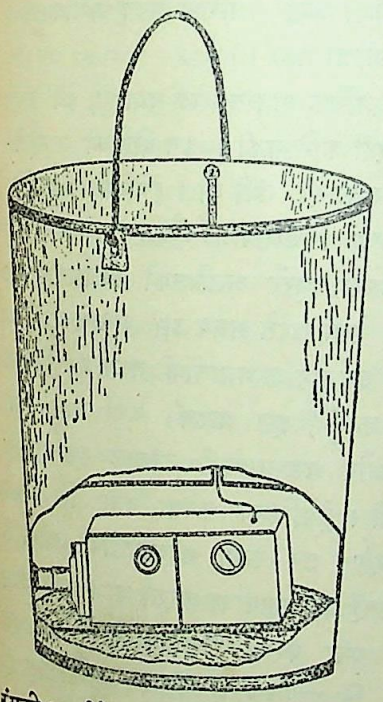

रंगकी बाल्टीके भीतर लगा हुआ गजब ढानेवाला केमरा।

### कुछ सनसनीखेज कारनामे

अभी पिछले दिनोंकी बात है कि जासूसोंकी कुछ साजिशोंका बुरी तरह भण्डाफोड़ हुआ है। निश्चय ही ये सब बड़ी सनसनीखेज बातें हैं और इनसे इस बातका पता लग जाता है कि आज भी क्यों सभी देश जासूसोंके लिए लाखों रुपये पानीकी तरह बहा रहे हैं। कहते हैं कि जापानने साइबेरियापर आक्रमण करनेकी एक योजना बनायी थी, जिसे रूसके जासूसोंने टोकियो-स्थित जापानके युद्ध आफिससे चुरा लिया और उसकी सारी स्कीम पर पानी फेर दिया। फ्रान्स अपनी सीमाओंपर गोली-बारूद छिपे-छिपे भेज रहा था। परन्तु वह भी जासूसोंकी नजरसे न बच सका और उसका भण्डाफोड़ हो गया। जापानी जासूसोंने अमेरिकाके जङ्गी हवाई जहाजोंकी न जाने कितनी निर्माण-विधियों-

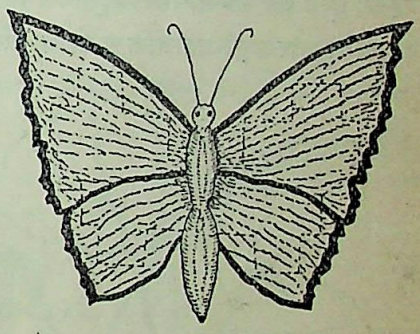

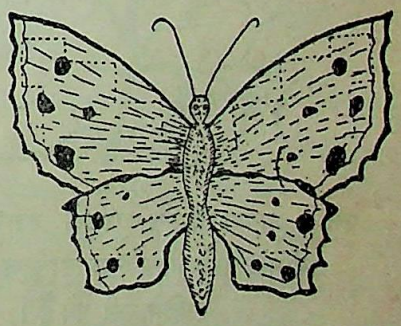

एक जासूस इस प्रकारकी तितलियोंकी डाइङ्गसे किलाबन्दीके गुप्त भेदोंको भेजा करता था।

को चुराकर यूरोप और एशियामें बेच दिया। जर्मनीकी सीमापर कुछ विदेशी एजेण्ट सन्देहपर गिरफ्तार कर लिये गये थे और जब उनकी तलाशी ली गयी, तब देखा गया कि फ्रेञ्च स्टाफ कालेजमें गुप्त रूपसे दिये गये कुछ भाषणोंकी पूरी-पूरी नकल उनके पास मौजूद है। यह बात तो कितनी ही बार देखी गयी है कि रूसी जासूसोंने पोलैण्डके युद्ध-विभागकी कितनी ही बातें टेलीफोनपर सुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लीं और कितनी ही बार धोखाधड़ी, छल-प्रपञ्च या रिश्वतके बलपर फ्रान्स, जेकोस्लेवेकिया, रूमानिया, जर्मनी और हङ्गरीकी कितनी ही युद्ध-विषयक योजनायें गायब की गयीं और उनकी चोरी हो जानेपर भी कुछ कहा नहीं गया। वही 'चोर नारि जिमि प्रकट न होई' की दशा है। भला कौन देश इस प्रकारकी योजनाओंकी चोरीका ढिंढोरा पीटकर इस बातका अपराधी बने कि वह युद्धकी तैयारी कर रहा था!

रोममें कुछ दिन पहले एक मामला चला था, जिससे मालूम हुआ कि फ्रान्सीसी राजदूतोंके पास इटलीके समस्त वायुयानों और जङ्गी जहाजोंके फोटो थे और मजा तो यह

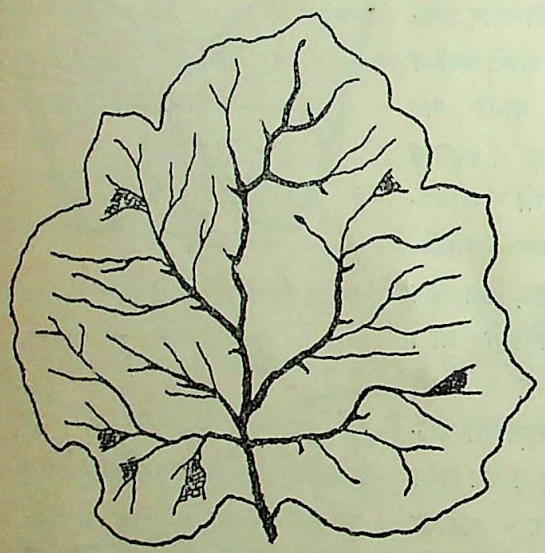

पत्तीके आकारकी इस ड्राइङ्गमें बताया गया है कि जमीनके नीचे किस स्थानपर शस्त्रास्त्रादि गुप्त रीतिसे रखे गये हैं।

कि जो जङ्गी जहाज बननेवाले थे, उनकी योजना भी उन लोगोंने उड़ा ली थी।

इस प्रकारकी साजिशें जासूसोंके लिए लड़कोंके खेलके समान आसान हैं। अबसे दो वर्ष पहलेकी बात है। इंगलैण्डमें बेली स्टुअर्ट नामक एक अंगरेजपर गुप्त भेदोंके खोल देनेका अपराध लगाया गया था। खोज करनेपर पता लगा कि स्टुअर्टने सेना-सम्बन्धी कोई गुप्त बात एक विदेशी जासूसके हाथ बेच दी और उसके बदलेमें बर्लिनसे उसे १०० पौण्डसे कुछ ऊपर रकम प्राप्त हुई। स्टुअर्टके इस मामलेसे बड़ी सनसनी फैली। उसका अपराध बड़ा भीषण था, परन्तु स्टुअर्ट भी था एक ही काइयां। उसने अपने बयानमें कहा कि मेरी लुई नामक एक जर्मन रमणीसे मेरा प्रेम हो गया है और इसी प्रेमके पुरस्कार-स्वरूप उसने मेरे पास वह रकम भेजी थी। स्टुअर्टकी अवस्था अभी केवल २४ वर्षकी थी और वह सेना-विभागका एक जिम्मेवार अफसर था। फिर उसने केवल थोड़े-से रुपयोंके लिए ब्रिटेनको बेच देनेका विचार किया या नहीं, यह एक विवादग्रस्त विषय है। जो भी हो, यदि वह इस प्रकारकी जासूसी कर रहा था, तो यह एक अद्भुत बात थी; परन्तु उससे भी अद्भुत बात तो थी यह कि दूसरे जासूसोंने उसे भी पकड़ा और बेचारेको अपने कर्मोंका फल भोगनेके लिए जेलमें जाना पड़ा।

परन्तु इससे भी अधिक सनसनीखेज बात हुई ट्रेवेग्लिया तथा उसकी पत्नी सुन्दरी केमिल्लाकी। इन दोनोंको जासूसीके लिए प्राणदण्डकी सजा दी गयी थी। ट्रेवेग्लिया इटलीके नौ-सेना-विभागका एक विश्वासपात्र नौकर था। उसका काम था एक आफिससे दूसरे आफिसको विश्वसनीय गुप्त कागजात पहुंचाना। ऐसा करते समय उस अभागे प्राणीको यह सूझा कि क्यों न उन गुप्त कागजातोंकी नकल कर विपक्षी दलको भेजकर माल काटूं? इस बातकी चर्चा उसने अपनी बीबी केमिल्लासे की और वह सुन्दरी तत्काल इस बातके लिए तैयार हो गयी। ट्रेवेग्लिया करता क्या कि अपने पासके एक केमेरेसे उन सभी कागजातोंका फोटो ले लिया करता था, जिन्हें वह पहुंचाया करता था। इस तरह इटलीके गुप्त भेदोंका पता पराये राष्ट्रोंको चलने लगा, तो लोग हैरान रह गये कि आखिर कहांसे यह भण्डाफोड़ हो रहा है। आखिरकार इन जासूसोंके पीछे भी जासूस लगाये गये और एक दिन जब ट्रेवेग्लिया एक भेदका कागज केमिल्लाको एक गुप्त स्थानपर फ्रान्स पहुंचा देनेके लिए छुपा कर रहा था, उसी समय दोनों ही गिरफ्तार कर लिये गये और उनपर मामला चला।

दोनों अपराधी प्रमाणित हुए और दोनोंको प्राणदण्डकी सजा दी गयी। ट्रेवेग्लियाने अपनी स्वीकारोक्तिमें कहा था कि मैं दस वर्षोंसे गुप्त भेदोंको बेचकर रुपया कमा रहा हूं। दोनों वधस्थलपर पहुंचाये गये। वहांका दारुण दृश्य देखते नहीं बनता था। ट्रेवेग्लियाने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए एक बातके लिए प्रार्थना की। उसकी आवाज कांप रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वह क्षमा नहीं चाहता था। उसने केवल एक ही मांग की थी और वह यह कि गोली मारनेवाले जिस समय उसपर गोली मारें, उस समय वह उनके सामने ही खड़ा रखा जाय। इसीको कहते हैं—'सरसे कफन लपेटे, कातिलको ढूंढ़ते हैं।'

मगर केमिल्लाकी हालत बुरी थी। वह बेचारी तरुणी इस तरहकी मृत्यु देख नहीं सकती थी। उसने रोते-रोते सारी धरती भिगो दी, आंखें सूज आयीं, क्षमा मांगते-मांगते जीभ टूट गयी; परन्तु अफसरोंका कलेजा न पसीजा—न पसीजा, और अगर पसीजा भी तो केवल इतना ही कि प्राणवधको जगह उसे आजन्म कालापानी मिला!

इस प्रकारकी घटनायें महासमरके दिनोंमें होती ही रहती थीं। जासूसों—खासकर महिला जासूसोंके कारनामों और उनके खुल जानेपर अनेक दारुण दृश्योंकी कहानियां पढ़ते समय कभी उनके हृथकण्डोंको सुनकर प्राण थरथरा उठते हैं, कभी उनके स्वप्न-से रोमेण्टिक कार्योंको देखकर आत्मा आनन्द-विभोर हो जाती है, कभी वीभत्स दृश्योंसे प्राण तिलमिला उठते हैं और कभी भयानक आश्चर्यजनक साजिशोंको सुनकर हक्का-बक्का रह जाना पड़ता है। लेकिन साथ ही जासूसोंके जीवनमें—खासकर उनके पकड़े जानेपर, उनपर मामला चलते रहने तथा अपने खूनसे प्रायश्चित्त करनेकी कहानियोंको सुनकर आंसू रोक लेना भी सहज नहीं है। वासपुस, क्सीन, मैक्स वाइल्ड, बारमिस्टर, ब्रूज, बेङ्कर, थीजेन, फ्रैक्स, प्रेसर तथा अन्नामारी, मेरिया सोरेल, मार्था, मैडेम विक्टोरिया और जासूसोंकी रानी माताहरीके जीवनमें ऐसी-ऐसी घटनायें हो गयीं और उन्हें इतने उलट-फेर देखने पड़े कि कोई भी उनकी कहानियां पढ़कर कभी आश्चर्य-चकित हो जायेगा और कभी रो पड़ेगा। मेरिया सोरेल, अन्नामारी, मार्था और माताहरीके करिश्मोंसे संसार-भर भौचक हो गया था। इनमेंसे कुछको विषैली नागन कहना भी अनुपयुक्त न होगा। अकेली माताहरीने ही हजारों आदमियोंको मृत्युके घाट उतार दिया। किन्तु अन्तमें इस अभागिनीको भी उसी पथका अवलम्बन करना पड़ा। मार्थाकी सेवाओं—छल-कपटसे पूर्ण कारनामोंसे प्रसन्न होकर तो सरकार द्वारा उसे सम्मानित भी किया गया था। रूसमें पालड्यूक्सको, उसके जासूसी करिश्मोंकी सफलतापर विमुग्ध सरकारने उसे 'सर' की उपाधिसे विभूषित किया था। एक ओर तो उन्हें इतना महान् सम्मान मिला था और दूसरी ओर उसी कार्यके लिए माताहरीको सीनेपर गोलियोंकी बौछार सहनी पड़ी थी। जासूसी जीवनके ये दो पहलू हैं!

### विज्ञान जासूसोंकी मददपर

स्विजर्लैण्डके सेना-विभागके एक प्रभावशाली सदस्य कर्नल गर्ट्शने एक बार कहा था कि राज्य-रक्षार्थ शत्रु-पक्षकी सेनाका सम्पूर्णरूपेण संहार करना जरूरी है और यदि उसके संहारके लिए अपनी भी समूची सेना नष्ट कर देनी पड़े, तो यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं। इस प्रकारकी भावना युद्धकालमें केवल कर्नल गर्ट्शकी ही नहीं, बल्कि सभीकी हो जाती है

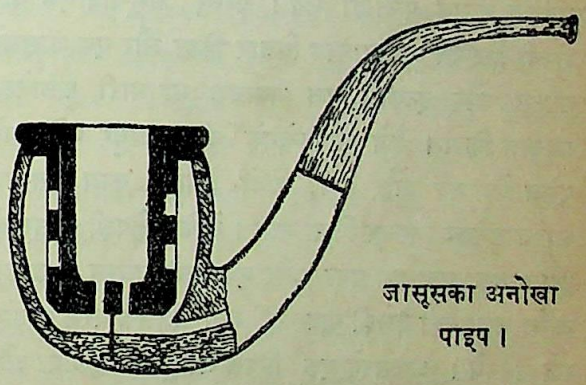

जासूसका अनोखा पाइप।

और यदि भविष्यमें समर छिड़ा और इस प्रकारकी आवश्यकता पड़ी, तो निस्सन्देह यह कार्य जासूसोंको सौंपा जायगा।

विज्ञानके आविष्कार जासूसोंकी सहायताके लिए हैं ही, फिर उन्हें किसकी चिन्ता! ऐसे-ऐसे आविष्कार हुए हैं कि हजारोंकी सेना पल मारते नष्ट-भ्रष्ट कर दी जा सके। यदि एक जासूस अपने प्राणोंपर खेलकर विपक्षी दलकी विशाल सेना नष्ट कर डाले, तो यह संहार बहुत सस्ता पड़ेगा और कोई भी महत्त्वाकांक्षी राष्ट्र इसके लिए तैयार मिलेगा। इस सभ्य युगकी बर्बरता इतनी बढ़ गयी है कि इस प्रकारका कोई काम शायद निन्दनीय भी न समझा जाये। और निन्दा करे भी कौन; सभी राष्ट्र तो इसी मर्जमें मुबतिला हैं। इस प्रकारके प्रलयकारी आविष्कारोंकी होड़ सारे राष्ट्रोंमें लगी हुई है। एक राष्ट्रने कुछ दिन हुए ऐसी नलियों (Tubes) का आविष्कार किया है, जिनमें कारतूसोंके बीच जहरीले कीटाणु मजेमें रखे जा सकते हैं। एक ही कारतूस चलाया जाय और सैकड़ों प्राणियोंका काम तमाम!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



न्यूजरसीके मि० राबर्ट गार्डन स्विज और उनकी पत्नी—दोनों ही जासूसीका काम करते थे और मजेदार बात तो यह है कि सोहाग-रातमें ही, पारस्परिक आलिङ्गनों और चुम्बनों-के बीच दोनोंने जासूसी पेशा अपनानेकी शपथ खायी थी। इन दोनोंने अपनी जासूसीके लिए एक नया ही कोड (Code) निकाल रखा था और एक नये ढङ्गके केमरेसे गुप्त कागजातों-की फिल्में लेकर ये लोग बेचा करते थे। एक दिन जब उनके घरपर छापा मारा गया तब देखा गया कि उनके पास अमे-रिकाके न जाने कितने गुप्त भेदों और कागजातोंकी फिल्में हैं।

महायुद्धमें जर्मनीकी सारी शक्ति क्षीण हो जानेपर जब जर्मनोंको अपनी पराजयका पूर्ण निश्चय हो गया तब उन लोगोंके हौसले पस्त हो गये। परन्तु जासूसोंने एक बार अपनी किस्मत आजमानेका विचार किया और एक जासूसने फ्रान्स और इटलीमें एक भयानक महामारी फैलानेका षड्यन्त्र किया। हैजे और प्लेगके कीटाणु प्रचुर परिमाणमें एकत्र किये गये और उन दोनों देशोंका काम तमाम कर डालनेका निश्चय किया गया। लेकिन विपक्षी जासूसको इस बातका पता लग गया और एक दूसरे जासूस द्वारा उस जर्मन अफसरको इसकी खबर दी गयी जिसके घरमें कीटाणु रखे गये थे। अफसरने एक स्विस मजदूरको बुलाया और उससे उक्त वस्तुको एक नदीमें फेंक आनेको कहा। अभागा मजदूर रास्ते हीमें सन्देहपर गिरफ्तार किया गया और खोजनेपर सारेके सारे संहारकारी कीटाणु बरामद हुए।

ठीक इसी समय इस खबरसे और भी सनसनी फैली कि एक फाउण्टेनपेनमें विसूचिकाके कीटाणु रूसमें भेजे गये हैं। इसी एक कलमसे शहरके शहर मटियामेट कर दिये जा सकते थे, परन्तु भगवान्‌की दया कहें या जासूसोंकी धूर्तता कि इसका भी पता पहले ही लग गया।

संसारके सर्वनाशकी लीला देखनेकी इच्छा रखनेवाले वैज्ञानिकोंके संहारकारी आविष्कारोंको देखनेसे पता चलता है कि वे कितने धूर्त होते हैं। किसीको पता न चल जाय, किसीको सन्देह न हो जाय और आविष्कृत वस्तु बिना किसी कष्टके इच्छित स्थानपर ले जायी जा सके, इसलिए आये दिन जो आविष्कार हो रहे हैं, वे हमारी दैनिक आवश्यकताओंकी चीजोंके आकारके। फाउण्टेनपेनके आविष्कारके बाद अमेरिकाने ऐसे बमोंका आविष्कार किया है जो ठीक पेन्सिलके आकारके हैं। बमकी लम्बाई-चौड़ाई और वजन भी वैसा ही। इस प्रकारके दर्जनों बम जासूस अपनी पाकेटोंमें रख सकते हैं और जब चाहें तब सैकड़ों आदमियोंको इस धराधामसे उठा दें।

वैज्ञानिक आविष्कारोंके साथ-साथ जासूसोंके दिमागने भी कुछ कम दौड़ नहीं लगायी है। जर्मनोंने गुप्त सन्देशोंको भेजनेके लिए एक ऐसी स्याहीका आविष्कार किया जिसकी लिखावट केवल वही पढ़ सकता था जिसे पढ़नेके लिए खास

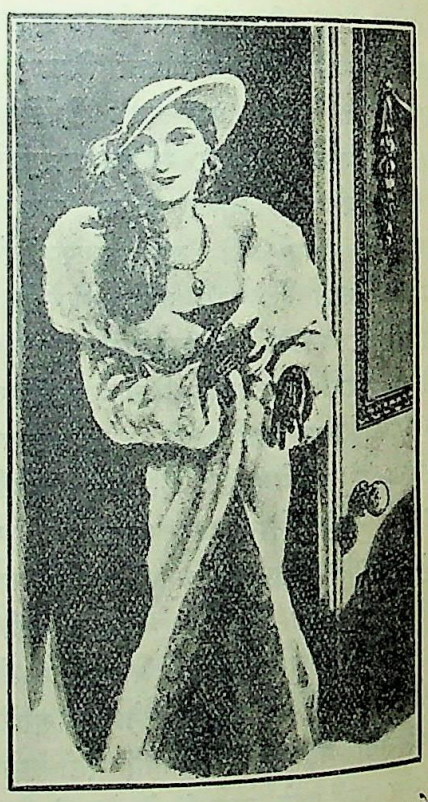

भयानक साजिशोंसे हजारों प्राणियोंका संहार करनेवाली छलनामयी जासूस रमणी माता हरी।

हिदायत की गयी हो। चित्रोंके बहाने गुप्त सन्देशोंके भेजनेका काम तो जासूसोंने बड़ी सफलतापूर्वक बहुत दिनों तक किया। एक जासूस अपने गुप्त भेदोंको—किलेबन्दी और आक्रमण करनेके लिए गुप्त योजनाओंको बराबर चित्राङ्कणोंके द्वारा भेजता रहा। कभी तो तितलीके चि और कभी पत्तों और बेलियोंके चित्रोंमें ही किलेबन्दीकी सारी योजनाओंको इस तरह लिख भेजता कि सेन्सर विभाग-के अफसर मुंह ताकते रह जाते। महासमरके दिनोंमें पत्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तथा साधारण चिट्ठियोंपर भी सेन्सरकी नङ्गी तलवार लटक रही थी। परन्तु जासूस सबकी आंखोंमें धूल झोंककर अपना उल्लू सीधा कर लेते थे।

इस प्रकार जासूस कितनी ही साजिशों और उपायोंसे औरोंकी आंखोंमें धूल झोंककर अपना मतलब गांठा करते हैं, पिछले महायुद्धके दिनोंमें बहुत दिनों तक देखा गया कि लन्दनकी कितनी ही गुप्त सरकारी बातें रूसके एजेण्टके पास पहुंच जाती थीं। वहांकी कार्यवाही इतनी गुप्त रखी जाती

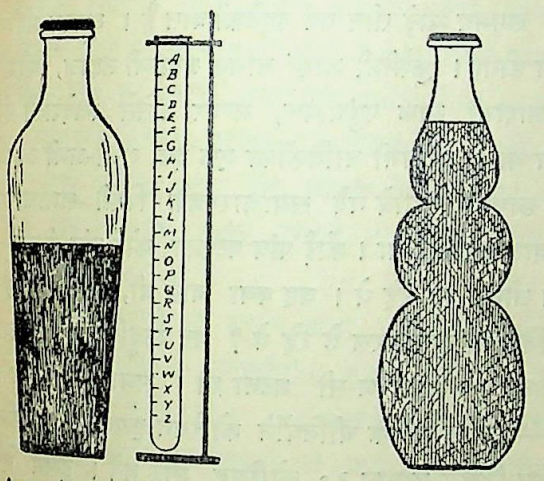

जांच पड़ताल करनेवालोंकी नजरमें धूल झोंककर चालबाज जासूस इस प्रकार बोतलोंके भीतर अपने गुप्त सन्देश भेजा करते थे। सन्देश पढ़नेके लिए बोतलके बगलका कोड काममें लाते थे।

थी और कागजातोंका पता इतने कम लोगोंको था कि जब गुप्त भेद खुलने लगे तब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ; परन्तु फिर भी पता लगा लेना मुश्किल था और सच पूछिये तो पता लगता भी न; परन्तु जिस जासूसके द्वारा सारी बातें रूसके एजेण्टके पास पहुंच जाया करती थीं, उसने एक ऐसी मूर्खता कर दी जिससे सारा भण्डाफोड़ हो गया। असल बात यों थी कि इस रूसी जासूसने खिड़कियोंपर रंगनेका काम लिया था और जिस बाल्टीमें घुला हुआ रङ्ग रहता था उसीमें एक केमरा भी इस ढङ्गसे लगा हुआ था कि उसका पता सिर्फ उस जासूसको था। उसी केमरेसे वह टेबुलपरकी सारी चीजोंका फोटो ले लिया करता था।

जासूस अभीष्ट सन्देश निर्दिष्ट स्थानपर भेज नहीं देता तब तक उसका जीवन सुरक्षित नहीं। बेचारेके जीवनपर हर वक्त नङ्गी तलवार लटकती रहती है। न जाने किस समय अपने सन्देश-सहित वह गिरफ्तार कर लिया जाय और न जाने कब गोलीसे उड़ा दिया जाय। इस प्रकारकी परिस्थितियोंसे बचनेके लिए जासूस तरह-तरहकी चालें चला करते हैं। गत यूरोपीय महासमरके दिनोंमें देखा गया कि एक जासूस अपने समस्त सन्देशोंको छोटेसे छोटे कागजपर लिखकर रखता था और रखता भी कहां था?—एक चुरुट पीनेके पाइप में। जासूसका वह पाइप इस ढङ्गसे बना था कि उसके नीचे जरा-सी जगह निकाली गयी थी और उसीके भीतर जासूस अपने गुप्त सन्देशोंको—जो 'कोड' में लिखे रहते थे—रखता था। जरा भी खतरेकी आशङ्का होते ही पाइप घुमा देता और एक सूराखसे गिरकर अग्निकण सन्देशको भस्मसात् कर देते। भयानकसे भयानक सन्देशोंके खतरे पलक मारते दूर कर दिये जा सकते थे। कुछ जासूस बोतलोंमें अपना सन्देश भेजते थे।

इस प्रकारकी सैकड़ों चालबाजियां पिछले दिनों देखनेमें आयीं और लोग हैरतसे जासूसोंका मुंह ताकते रह गये। इन्हीं साजिशोंके बलपर जासूसोंने जैसे-जैसे काण्ड कर दिखाये उन्हें सुनकर आपके रोंगटे खड़े हो जायंगे। जासूसोंके कुछ सनसनीखेज करिश्मोंपर हम अगले अङ्कमें प्रकाश डालेंगे।

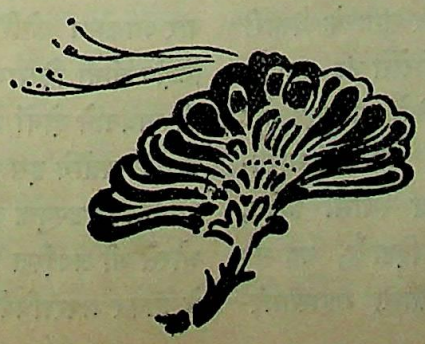



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पूर्वी एशियामें क्या हो रहा है ?

श्री रामनाथ 'सुमन'

यूरोपीय महायुद्धको समाप्त हुए अभी बीस वर्ष नहीं हुए हैं। परन्तु नर-संहारका जो वीभत्स और भयानक दृश्य दुनिया देख चुकी है, स्वार्थी पूंजीवादी शक्तियां आज फिर उसीकी ओर हमें लिये जा रही हैं और यह भी उस समय जब मानवता अर्थ-कष्टसे पीड़ित है; जब बेकारी और दरिद्रताके कारण मनुष्यका मस्तिष्क अस्थिर और विकल है; जब शान्तिकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

एशियामें यूरोपीय सभ्यताका प्रतिनिधि जापान आज उन्मत्त है। लहूकी प्यासने उसे बेचैन कर दिया है। उसने कोरिया ले लिया; मञ्चूरिया ले लिया; जेहोलपर अधिकार कर लिया; राष्ट्र-सङ्घको धुड़ककर अलग हो गया; वाशिङ्गटन-सन्धिके टुकड़े कर दिये और अब पश्चिमके पूंजीवादी साम्राज्यवादी राष्ट्रोंको ललकारकर कहता है—"खबरदार, पूर्वमें शान्ति-रक्षाकी जिम्मेदारी हमारी है। चीनको बिना मेरी स्वीकृतिके तुम लोग शस्त्रास्त्रोंकी, पैसेकी, सहायता नहीं दे सकते। जापान किसी उद्देश्यको लेकर दुनियामें प्रकट हुआ है और वह उसकी पूर्ति करके रहेगा।"

एक उन्मत्त राष्ट्र, जिसने कभी पराजयकी पीड़ा नहीं जानी; उसके पास हजारों मील तक फैला हुआ, ४० करोड़ आदमियोंका देश, जिसने संसारको संस्कृति एवं सभ्यताका सन्देश अत्यन्त प्राचीन कालसे दिया है, पर जो आज स्वार्थी सेनापतियोंके कारण टुकड़े-टुकड़े हो गया है; जहां अव्यवस्था, असन्तोष, गरीबी और भूखका राज है; इधर रूस, जो क्या कर रहा है और किस तेजीसे बढ़ रहा है, ठीक-ठीक कोई जानता नहीं, पर जो अपने साधनोंको लेकर संसारके बेकारी और अर्थ-कष्ट-पीड़ित राष्ट्रोंके बीच बड़े जोरोंसे उठ रहा है; अपने प्रतिद्वन्द्वी जापानकी बढ़ती हुई शक्तिसे असन्तुष्ट और मनमें खीझा हुआ अमेरिका;—और भी, एशियामें भारत-जैसी 'ब्रिटिश मुकुटकी मूल्यवान मणि' का स्वामी ब्रिटेन, जिसके बाजारोंसे जापानने उसको खदेड़ दिया है; यह सब एकत्र करके देखें तो कैसा लगता है ? प्रशान्त महासागर-ज्वालामुखियोंका क्षेत्र प्रशान्त महासागर आज किस प्रलयको जन्म देना चाहता है ?

× × ×

## वे घटनायें !

लगभग साढ़े तीन वर्ष पहलेकी बात है। जूनका महीना रहा होगा। 'कुशीमी मारू' नामक जापानी जहाज, विदेशोंमें जापानी माल पहुंचाकर, मन्थर गतिसे स्वदेशको लौट रहा था। जापानी नाविकोंका एक दल, अभी-अभी जहाजपर छापकर लगाये गये समाचारपत्रके किसी समाचारपर विवाद कर रहा था। कोई पांव पटकता, कोई दांत पीसता—सब जोशसे भर रहे थे। वह क्या बात थी, जिसमें मामूली नाविक भी इतना रस ले रहे थे ? यह मञ्चूरियाके वाम्पोशन गांवकी एक साधारण-सी घटना थी। समाचार इतना ही था—उपर्युक्त गांवके चीनियोंने कोरियन कृषकोंपर आक्रमण किया जिसमें लगभग २० कोरियन मारे गये। इसमें ऐसी क्या बात थी जो नाविकोंको बेचैन कर रही थी ? साधारण अथवा बहुत अधिक संस्कृत व्यक्तिके लिए चाहे इसमें कुछ न हो; पर जिस जापनीको बचपनसे देश-प्रेमकी शिक्षा मिली है और जो सोते, उठते-बैठते, चलते-फिरते, देशमें या विदेशमें सदा स्वदेशके गौरव और हित-रक्षाकी बात सोचता है, उसके लिए यह छोटी घटना भी बड़ी थी। इससे जापानकी राष्ट्रीय प्रतिष्ठाको धक्का लगता था, क्योंकि कोरिया जापान-द्वारा शासित प्रान्त है और कोरियन जापानी प्रजा हैं।

उस समय तो वह बात वहीं रह गयी, किन्तु कुछ ही हफ्तों बाद कोरियामें उस घटनाकी पुनरावृत्ति हुई। इस बार आक्रमण कोरियनोंने किया। प्रतिहिंसा-वश उन्होंने निर्दोष चीनी किसानोंका बध किया। उत्तेजना और बढ़ते-की भावनाने दोनों ओर जोर पकड़ा। चीनी जनताने, चीनी समाचारपत्रोंने इस दुर्घटनापर बड़ा हल्ला मचाया और अपराधियोंको उपयुक्त दण्ड देनेकी मांग की। चीनी सरकारकी ओरसे भी जबर्दस्त विरोध प्रकट किया गया और चीनी सेना ले जाकर अपराधियोंको दण्ड देनेकी धमकी भी दी गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जापानने मनोविनोद-पूर्वक इस दृश्यको देखा। उसे अपनी शक्तिका नशा है; वह अपनी शक्ति और अपने पड़ोसी चीनकी दुर्बलताको जानता है। इसलिए वह चुप, शान्त बैठा रहा।

धीरे-धीरे सितम्बरका महीना आया और जापानने अवसर देखा। १८ सितम्बर १९३१ को दक्षिण मञ्चूरिया रेलवे-क्षेत्र-स्थित जापानी सेना-दलने मञ्चूरियापर आक्रमण कर दिया और चीनी सेनापति मार्शल चैङ्ग-शू-लियांगकी सेनाओंको किलोंसे खदेड़ दिया; बेतारके तारके स्टेशन, अस्त्रागार तथा सैनिक महत्त्वके अन्य सब स्थानोंपर कब्जा कर लिया और ४८ घण्टेके अन्दर मञ्चूरियामें चीनी सरकार की राजधानी मुकदन, पूरी तरह जापानियोंके हाथमें आ गयी। बड़ी शान्ति, दृढ़ता और व्यवस्थाके साथ यह सब हुआ। एक महीनेके अन्दर सम्पूर्ण मञ्चूरिया जापानी सेनाके अधीन हो गया।

फिर भी संसारने इस महान् अर्थसे भरी घटनाकी ओर विशेष ध्यान न दिया। अन्तर्राष्ट्रीय शङ्काई अपने आनन्द-मौजमें उसी तरह डूबी रही। उधर चीनमें जापानके विरुद्ध घृणा एवं उत्तेजनाका एक बवण्डर आ गया। जापानियोंका तिरस्कार किया जाने लगा और जापानी वस्तुओंका बहिष्कार आरम्भ हुआ। उन्मत्त जापान इससे और बिगड़ा। उसने 'चीन-निवासी जापानियोंकी रक्षाके लिए' सैनिक जहाज रवाना किये। शङ्काईका आनन्द फीका पड़ा; चारों ओर भय एवं आतङ्क छा गया। सैनिक कानून जारी कर दिया गया और सेटिलमेण्टमें ९ बजे रातके बाद निकलनेकी मनाही कर दी गयी।

मञ्चूरियामें अभी-अभी जो खेल हो चुका था, वह शङ्काईमें शुरू हुआ। जापानी सैनिक जहाजोंने शङ्काईको घेर लिया। चीनकी ओरसे कैण्टनके सेनापतिने जापानका सामना किया। धुआंधार मच गया। हफ्तों तक यह युद्धका खेल चलता रहा। हजारों मारे गये और लाखोंकी सम्पत्ति नष्ट हो गयी। पीछे जब हिसाब लगाया गया तो मालूम हुआ कि लगभग डेढ़ अरब रुपयेकी क्षति इस काण्डसे हुई।

शङ्काईका यह काण्ड भी उतना आश्चर्यजनक नहीं है। क्या इससे भी आश्चर्यजनक बात यह नहीं है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिके क्षेत्रमें जब यह घटना घट रही थी तब यूरोपके शक्तिमान राष्ट्र मुग्ध, चकित दृष्टिसे इसको देखते रहे; जैसे किसी जादूगरने इनकी जबान बन्द कर दी हो। आज चीनकी मित्रताका दम भरनेवाले अमेरिका और ब्रिटन उस समय कहां थे ? क्या वे जीते न थे ? क्या वे न चाहते तो ऐसा काण्ड हो सकता था ? इसे भी जाने दीजिये; क्योंकि यह बहाना किया जा सकता है कि अपराध किसका था यह उस समय नहीं मालूम था; पर पीछे राष्ट्र-सङ्घकी ओरसे जो जांच-कमीशन नियुक्त किया गया और उसने अपनी रिपोर्टमें स्पष्टतः जापानको दोषी बताया, उसके बाद जब जापान सङ्घका और सङ्घके सदस्य इन शक्तिमान राष्ट्रोंका अपमान करके उससे अलग हो गया तब इस काण्डके निबटारेके लिए इन यूरोपीय राष्ट्रोंने क्या किया ? राष्ट्र-सङ्घको तो जापानने वहीं जमींदोज कर दिया; उसकी नैतिक मर्यादा समाप्त हो गयी और अब तो वह बेगैरतीके साथ जीनेका बहाना-मात्र कर रहा है।

## अवसरका उपयोग

ऐसा क्यों हुआ ? इस प्रश्नका उत्तर आजकी अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिमें छिपा है। मध्य यूरोपके राष्ट्र मृत्युके भयानक खेलकी ओर खिंचे चले जा रहे हैं। रोमन साम्राज्यके स्वप्न देखनेवाला तथा आकाशको हवाई जहाजोंसे बादलोंकी तरह छा लेनेकी जिसकी महत्त्वाकांक्षा है, वह बरफकी तरह शान्त दिमाग और लोहेका कलेजा लेकर इटलीपर शासन करनेवाला मुसोलिनी; तूफानी और भावुक, पर जिसका सिक्का आज जर्मनीमें चल रहा है; किस समय क्या कर डाले ऐसा हिटलर,—हिटलर, जिसने जर्मन जातिमें आज प्रतिहिंसाकी ज्वाला जला दी है—वह ज्वाला, जो सदियोंसे फ्रान्स और जर्मनीके बीच जल रही है और जो हजारों, लाखोंका रक्त पीकर भी बुझना नहीं जानती और चिताकी नाईं धू-धू करके अट्टहास कर रही है; आस्ट्रिया, जिसके निकल जानेका कलक जर्मनीको बना है और जहां आज अनेक राजनीतिक दल प्रधानताके लिए प्रयत्नशील हैं ; फ्रान्स, जिसने संसारके अधिकांश स्वर्ण-भाण्डारको हथिया लिया है और आकाश-युद्धके लिए जिसके पास इस समय सबसे अधिक हवाई जहाज हैं ; अस्थिर पोलैण्ड ; उधर पूर्वी यूरोपके लघुराष्ट्रोंका सङ्घ और सबके ऊपर व्यापक आर्थिक सङ्कट ; और भी—रूस, जिसके बारेमें कुछ न कहना ही अच्छा है और जिसके बारेमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लोग इतना जानते हैं कि टूटेगा तो प्रलयकी तरह टूटेगा ; जिसके बाजारमें क्रान्तियां बिकती हैं ऐसा स्पेन ! शान्तिकी बातोंके बीच जहां शस्त्रास्त्रोंकी दौड़ जारी है, जिह्वापर रामनाम, पर हाथमें छुरा लिये हुए आदमी-जैसी आज यूरोपकी स्थिति है। शङ्का, त्रास, भयसे सब अस्थिर हैं। अपने चारों ओर किलेबन्दी करनेमें, कहीं कोई पीछेसे आकर मार न दे, इस आशङ्का और सन्देहने सबको अशान्त कर रखा है। किसी यूरोपीय राष्ट्रके पास इतना समय नहीं कि अपने घरकी ओरसे ध्यान हटाकर, यूरोपीय परिस्थितिको भूलकर, इतनी दूर, एशियाके इस अपाहिज देश चीनका पक्ष ले और एक प्रबल राष्ट्रके विरोधका खतरा उठाये। रहा अमेरिका, सो उसकी भी अपनी आर्थिक एवं राजनीतिक समस्यायें कुछ कम नहीं हैं। ऐसे मनोवैज्ञानिक अवसरका विचक्षण जापानने उपयोग कर लिया है। यूरोपीय महा-युद्धके समय भी, जब एशियाकी ओर ध्यान देनेकी फुर्सत किसीको न थी, जापानने ऐसा ही किया था ! और ईश्वर न करे, यदि यूरोपमें व्यापक महायुद्धकी ज्वाला धधक उठी और ब्रिटेन तथा रूस उसमें पड़े तो जापान चीनको निगल जायगा !

## फिर जापान चाहता क्या है ?

सभ्यताके यन्त्रीकरणने संसारके सामने विषम समस्या उपस्थित कर दी है। आज जो बेरोजगारी, व्यापारमें तीव्र प्रतियोगिता, कमजोर देशोंको दबा लेनेकी भावना तथा उस भावनाको व्यावहारिक रूप देनेके लिए अनिवार्य शस्त्रीकरण हम संसारमें देखते हैं उसका कारण वर्तमान उद्योगवादके, महायान्त्रिक सभ्यताके मूलमें है। हरएक देशको काम चाहिए और व्यापारिक क्षेत्रोंपर प्रभुत्व चाहिए। इस प्रभुत्वके लिए संघर्ष और युद्ध अनिवार्य हो जाते हैं। हमारी सभ्यता-में ही इस 'क्रानिक' रोगके कीटाणु फैले हुए हैं। जापानकी गिनती आज संसारकी महाशक्तियोंमें होती है। कदमें छोटा, पर हिम्मत और बलमें असाधारण जापानने उद्योग-धन्धोंमें अद्‌भुत प्रगति की है। सारा जापान आज चिम-नियों, फैक्टरियोंसे भर गया है। जापानी श्रमिकोंको सदा काममें लगाये रखनेके लिए इन कारखानोंका सदा चलते रहना आवश्यक है और इन कारखानोंको अपनी तीव्र गतिके साथ, सदा चलाते रखनेके लिए विदेशी बाजारोंमें जापानी मालकी खपत आवश्यक है। और आज जब संसारके सभी राष्ट्र उठना चाहते हैं; अपने बाजारोंकी रक्षा करना चाहते हैं तब इस तीव्र प्रतियोगिताके युगमें जापान क्या करे ? अपने आदमियोंको रोटी देनेके लिए उसे बाजार तो चाहिए ही। यह बाजार उसे उन्हीं देशोंमें मिल सकता है जो आज किसी कारण अशक्त हैं और जो सैनिक बल एवं उद्योग-धन्धोंमें पिछड़े हुए हैं। एशियामें चीन और भारत-जैसे दो विस्तृत, पर अशक्त राष्ट्रोंपर उसकी दृष्टि जाती है। ये दो उसके प्रधान बाजार हैं। आज भारतके बाजार जापानी मालसे पटे पड़े हैं। पर जापान जानता है कि भारत ब्रिटेन द्वारा शासित राष्ट्र है और ब्रिटेनने उसे अपने मालकी खपतके लिए दबा रखा है, इसलिए एक म्यानमें दो तलवारें नहीं रह सकतीं और ब्रिटेन अधिक दिन तक इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता कि उसके लिए सुरक्षित भारतीय क्षेत्रको जापान हथिया ले। फिर ब्रिटेन-जैसे शक्तिमान राष्ट्रसे टक्कर ले, इतनी शक्ति भी जापानमें नहीं है ; इसलिए भारत और चीन इन दोमेंसे भी चीनपर उसकी गृद्ध्र-दृष्टि सदासे अधिक रही है।

इसके और भी कारण हैं। चीन जापानका पड़ोसी देश है। चीनमें अपना माल भेजनेमें जापानका खर्च भी कम पड़ता है। लाखों वर्गमीलमें फैला हुआ यह देश, शासन-व्यवस्थाके मामलेमें भारतसे भी पिछड़ा है। सारे देशमें किसी एक सरकारका राज्य नहीं। वर्षोंसे चीन विद्रोहकी अवस्थामें है। स्वार्थी सेनापति अपने लाभ और अपने अधिकारके लिए लड़ते हैं। देश इतना बड़ा है और यातायातके साधनोंकी इतनी कमी है कि एक दृढ़ केन्द्रीय सरकारकी स्थापना वहां अभी वर्षों तक असम्भव है। इस विस्तृत देशमें ४० करोड़ प्राणी बसते हैं और इस दृष्टिसे यह दुनियाका सबसे बड़ा देश है। इन ४० करोड़ आदमियोंके लिए कपड़ा तथा अन्य आवश्यक वस्तुयें चाहिएं और स्वयं चीनमें उद्योग-धन्धों और कारखानोंकी कमी है। इसलिए चीनको आवश्यक चीजोंके लिए दूसरे देशोंका मुंह देखना पड़ता है। इतना बड़ा बाजार पासमें देखकर जापानकी क्या मनःस्थिति होगी, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है। यद्यपि अभी तक वहां मुक्त व्यापार (Free Trade) की नीति चलती रही है, परन्तु निकट होनेके कारण अन्य देशोंकी अपेक्षा चीनपर जापानका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विशेष प्रभाव पड़ना विशेष सम्भव है। एशियाके समीपवर्ती प्रशान्त महासागर-क्षेत्रमें जापानके अतिरिक्त दूसरा शक्तिमान देश नहीं। अमेरिका उसकी अपेक्षा दूर पड़ जाता है। इसलिए जापानकी दृष्टि बहुत दिनोंसे चीनपर है और वह उसके बाजारोंपर अधिकार करना और उसे अपनी संरक्षकतामें रखना चाहता है।

फिर जापानके सामने एक दूसरी बड़ी समस्या अपने लिए नये उपनिवेश खोजनेकी है। इतना बड़ा औद्योगिक एवं शक्तिमान देश जापान, क्षेत्रफलमें इतना छोटा है कि अब उतने छोटे देशमें अपनी बढ़ती हुई आबादीकी व्यवस्था करना उसके लिए असम्भव हो रहा है। जापानका क्षेत्रफल केवल डेढ़ लाख वर्गमील है और उसकी जनसंख्या इस समय साढ़े छः करोड़के ऊपर है। इसके विरुद्ध संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाका क्षेत्रफल ३७ लाख वर्गमील और जनसंख्या बारह करोड़ है। भारतका क्षेत्रफल लगभग १८ लाख वर्गमील एवं जनसंख्या ३५ करोड़ है। अब तो भारतमें ही आबादीके घनी हो जानेसे बेकारीका प्रश्न उठने लगा है, फिर इन सबकी अपेक्षा जापानकी आबादी तो बहुत घनी है। १८७८ ई० में जापानकी जनसंख्या केवल तीन करोड़ थी। विगत ५५ वर्षोंके अन्दर वह बढ़कर दुगुनीसे भी अधिक हो गयी है और इस समय और भी जोरोंसे बढ़ रही है। प्रतिवर्ष लगभग साढ़े सात लाख बच्चे जन्म लेते हैं और स्वास्थ्यकर नियमोंके पालनके कारण मृत्युसंख्या भी कम है। इसलिए इस वेगसे बढ़ती हुई जनसंख्याके लिए नये प्रदेश ढूंढ़ना जापानके लिए अत्यावश्यक हो गया है। यह उसके जीवन-मरणका प्रश्न है।

इस समस्याने, इस आवश्यकताने जापानमें साम्राज्यवादकी तीव्र भावना पैदा कर दी है और बहुत वर्षोंसे 'गृह-सङ्गठन एवं बाह्य-प्रसार (Consolidation at home and espansion abroad) जापानकी नीति रही है। मञ्चूरियाके मामलेमें पड़नेका भी जापानका यही अभिप्राय था। वह उसे एक उपनिवेश बनाना चाहता था, जहां जापानकी बढ़ती हुई आबादीको स्थान मिल सके।

## घाटेका सौदा ?

क्या मञ्चूरियासे जापानकी आशा पूरी हुई ? जहां तक जनसंख्याका प्रश्न है, इसका उत्तर है 'नहीं'। मञ्चूरिया-जैसे शीत-प्रधान देशमें बसकर सुखी जीवन बिता सकना जापानियोंके लिए कठिन है। इसके अतिरिक्त मञ्चूरियनोंकी जीवनशैली इतनी सरल है कि उनकी प्रतियोगितामें जापानी चल नहीं सकते। इसलिए जापानका वह उद्देश्य तो पूरा नहीं हुआ। दूसरा उद्देश्य यह था कि मञ्चूरियाका सङ्गठन इस तरह किया जाय कि जापानके कच्चे मालकी पूर्ति वहींसे हो जाय। जापानके आयातमें कपास, ऊन, लोहा, फौलाद, गेहूं, शक्कर और रबर मुख्य हैं। अधिकांश चीजें वह भारत और अमेरिकासे लेता है। अमेरिकासे उसका सम्बन्ध अच्छा नहीं कहा जा सकता और भारतमें भी जापानी मालपर विशेष आयात-कर लगानेका आन्दोलन होता रहा है और आज भी हो रहा है। इसलिए जापान अपने कच्चे मालका प्रबन्ध यदि मञ्चूरियामें कर सके तो दूसरे देशोंके ऊपर उसे निर्भर न रहना पड़े। परन्तु जब गत वर्षोंके आंकड़ोंको देखते हैं तो मालूम होता है कि जापानकी आकांक्षाकी बहुत ही आंशिक पूर्ति मञ्चूरियासे हो सकती है। जापानकी कपड़ेकी मिलोंको साल-भरमें लगभग ६००,००० (छः लाख) टन कपासकी जरूरत पड़ती है। इसका ५० प्रतिशत जापान भारत और अमेरिकासे खरीदता है। और मञ्चूरियामें अभी तक १५,००० टन प्रतिवर्षसे अधिककी उपज नहीं हो सकी है। कोरियासे लगभग ७,००० टन वार्षिककी पूर्ति होती है। मञ्चूरिया-जैसे शीत-प्रधान देशमें कपासकी उपज बहुत ज्यादा बढ़ायी नहीं जा सकती। फिर वहांकी कपाससे बहुत मामूली कपड़ा ही बुना जा सकता है। विशेषतः यह दरी, कम्बल इत्यादिके काममें आती है।

ऊनका हिसाब भी कुछ ऐसा ही है। जापानको लगभग ३५,००० टन ऊनकी आवश्यकता हर साल पड़ती है। इसमें मञ्चूरिया ४,००० टनसे अधिक नहीं दे सकता और वहांका ऊन बहुत मोटा और खुरदरा होता है। प्रकृतिने शीतसे वहांकी भेड़ोंकी रक्षाके लिए ऐसा ही ऊन दिया है। इस ऊनसे पहननेके लिए कपड़े इत्यादि नहीं बनाये जा सकते। यह केवल मोटे और मामूली कम्बलोंके बनानेमें काम आता है। इसीलिए अधिकांश ऊनके लिए जापानको आस्ट्रेलियापर निर्भर करना पड़ता है।

यही दशा लोहे और फ़ौलादकी भी है। इसलिए मञ्चूरियापर अधिकार करनेका दूसरा उद्देश्य भी बहुत-कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अंशमें सफल हुआ है। फिर मञ्चूरिया जापानके लिए कोई अच्छा बाजार नहीं है। यहांकी जन-संख्याके ९० प्रतिशत आदमी कृषि-द्वारा जीवन-निर्वाह करते हैं। वहां गरीबीका राज है। इसलिए ये किसान जीवन-निर्वाहके लिए अनिवार्य रूपसे आवश्यक जो चीजें हैं, उन्हें ही खरीद सकते हैं। उनकी क्रय-शक्ति बहुत कम है।

दूसरी ओर मञ्चूरिया-काण्डके कारण जापानने संसारकी अनेक महाशक्तियोंकी नजरमें अपनेको गिरा दिया है। वह अमेरिकाका रोषभाजन हुआ है तथा चीनकी राष्ट्रीय आत्मापर उसके इस कार्यसे गहरी ठेस लगी है। रूसके सङ्घर्षकी सम्भावनायें अधिक बढ़ गयी हैं। जो कुछ थोड़ा लाभ उसे हुआ है उसके मुकाबले ये हानियां कहीं अधिक हैं। मञ्चूरियाकी अपेक्षा चीन जापानके लिए कहीं अच्छा और विस्तृत बाजार दे सकता है। फिर सदाके लिए मञ्चूरियाको चीनसे अलग नहीं रखा जा सकता और आज उसे स्वतन्त्र राज्य बनानेकी जो चेष्टा जापान कर रहा है उसमें उसे स्थायी सफलता नहीं मिल सकती। एक-न-एक दिन माञ्चुको (मञ्चूरियन राज्यका नवीन नाम) को चीनमें मिलना पड़ेगा। इस प्रकार माञ्चुको जापानके लिए एक घाटेका सौदा सिद्ध हुआ है और इससे उसका कोई भी उद्देश्य भली भांति पूर्ण नहीं हुआ।

### युद्धके मार्गमें—

परन्तु अब जो कुछ जापानने कर लिया है उससे उसकी राष्ट्रीय मर्यादा हटने न देगी। इसलिए अब जो खतरा हो उसका सामना करनेका निश्चय जापानने किया है। सैनिक तैयारियां जोरोंके साथ हो रही हैं। पिछले अक्टूबरमें जापानी युद्ध-विभागने ५० पृष्ठकी एक पुस्तिका छपवाकर जापानी सैनिकों तथा अन्य लोगोंमें प्रचारित की है। इस पुस्तिकामें जापानकी स्थिति तथा अन्य राष्ट्रोंमें होनेवाली सैनिक तैयारियोंका उल्लेख करके, देशके नामपर, सबको तैयार रहनेकी अपील की गयी है। यहां यह भी याद रखनेकी बात है कि जापानकी अधिकांश जनतापर सेना अथवा सैनिक नेताओंका प्रभाव है। जापान राजनीतिज्ञोंकी अपेक्षा सेनापतियोंमें विशेष आस्था रखता है।

### जापानका स्वप्न

इसलिए आज जो स्थिति है उसमें जापान अच्छी तरह जानता है कि युद्ध अवश्यम्भावी है। विगत २० वर्षोंमें उसका व्यापार इतना बढ़ गया है कि वह दूसरे देशोंकी आंखोंमें चुभने लगा है। आज जापान युद्धकी भीषण तैयारीमें लगा है। अनेक गुप्त संस्थायें विदेशियोंके, विशेषतः अमेरिकन लोगोंके प्रति घृणाका भाव लोगोंमें फैला रही हैं। बड़े-बड़े सेनापति जापानियोंके देशप्रेमको उत्तेजन देनेके विचारसे उनके सामने यह स्वप्न रख रहे हैं कि पूर्वसे गोरी जातियोंको निकाल देना चाहिए और जापानको पूर्वका नियन्त्रण अपने हाथमें लेना चाहिए। जापानके शायद सबसे प्रभावशाली दैनिक 'ओसाका मनीची' में कुछ ही दिनों पूर्व एक लेख प्रकाशित हुआ था जिसमें कहा गया था कि—"पूर्वके राष्ट्रोंको अपने अधीन करके जापानको सङ्गीनके बलपर विश्व-विजय करनी चाहिए।"* आज जापानके तरुण ऐसे ही वातावरणमें फैल रहे हैं और एक बहुत बड़े साम्राज्यके रूपमें जापानको देखनेका स्वप्न उनके दिमागमें भरा जा रहा है। जेनरल अराकी जैसे सैनिक नेताओंने जापानी राष्ट्रके प्रति एक प्रकारका उन्माद जापानी युवकोंमें भर दिया है। अराकीने इसी उद्देश्यसे एक संस्था—'कोदो काई'—स्थापित की थी थी। आज जापानकी लगभग तिहाई जन-संख्या इस संस्थामें शामिल है। इसका उद्देश्य साधारण लोगोंको सेनामें शामिल होनेके लिए प्रेरित करना, उनमें युद्धकी आकांक्षा उत्पन्न करना और अवसर आनेपर सम्राटके लिए प्राणदान करना है।

इस प्रकार जापान बड़े जोरोंसे युद्धकी ओर अग्रसर हो रहा है। शस्त्रास्त्र तथा भयानक विस्फोटक द्रव्य बनानेके लिए बड़े-बड़े कारखाने स्थापित किये जा रहे हैं। चीनको प्रभाव-क्षेत्र बनानेपर वह तुल गया है। यहां तक कि राष्ट्र-सङ्घकी चेष्टासे चीनको डाकुरों, सड़क तथा रेल बनानेके लिए इञ्जीनियरों और भारी ऋण इत्यादिकी जो सहायता मिल रही है और वहां वायुयानों द्वारा देशके दूरस्थ स्थानोंको एकमें जोड़नेकी जो चेष्टा की जा रही है उसपर भी जापान एतराज करता है। उसके सामने दूसरे देश आकर चीनपर अपना प्रभाव जमा लें, यह वह देख नहीं सकता।

* "Japan should subjugate the nations of the East and conquer the world at the point of the bayonet."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसका दावा है कि पूर्व-सम्बन्धी सब प्रश्नोंमें जापानका निर्णय अन्तिम और मान्य होना चाहिए। उसकी आकांक्षाएं स्पष्ट हैं। उसे अपने लिये बाजार और उपनिवेशकी आवश्यकता है। वह सुदूर पूर्वकी राजनीतिका महन्त बनना चाहता है। वह चाहता है प्रत्येक कार्यमें, प्रत्येक निर्णयमें उसकी सम्मति प्रधान रहे। वह चीनपर अधिकार करना तो नहीं चाहता; वह चाहता है स्वतन्त्र चीनमें तथा सर्वत्र उसके नामपर उसे सब-कुछ करनेका अधिकार हो; परदेके पीछे शक्ति बनकर रहना ही उसका ध्येय है।

* * *

## चीनकी दुर्दशा

एक ओर जब जापान, चारों ओरसे शङ्कित होकर, इस प्रकारकी तैयारी कर रहा है तब आज भी, उसका महान् पड़ोसी चीन, पहलेकी भांति ही अव्यवस्थित पड़ा हुआ है। वर्षोंसे वहां विद्रोहकी अवस्था है। कोई ऐसी सरकार नहीं जिसका सारे चीनपर शासन हो अथवा जिसमें इतनी शक्ति हो कि सारे चीनको एकता और सङ्गठनके सूत्रमें बांध दे। यह अवस्था बड़ी भयानक है। परन्तु इस अवस्थाको पदा करने और बढ़ानेमें जहां स्वार्थी चीनी नेताओंका हाथ है वहां विदेशियोंका चक्र भी कुछ कम नहीं है। अधिकांश चीनी नेता विदेशियोंके हाथमें कठपुतलेकी तरह हैं। जापानने पुराने माञ्चू-राजवंश तथा अनेक स्वार्थी सेनापतियोंको सहायता देकर गृह-युद्धको बराबर बढ़ाया है। कोरिया, मञ्चूरिया और जेहोलसे भी वह सन्तुष्ट नहीं है। वह उत्तर चीनके अन्य प्रान्तोंको भी माञ्चुकोके अधिकार क्षेत्रमें लानेके प्रयत्नमें है।

परन्तु एशियामें जापान जो-कुछ कर रहा है वही सब-कुछ नहीं है। यह याद रखना चाहिए कि एशियामें ब्रिटेनका भी स्वार्थ है। भारतका विकट प्रश्न उसके सामने है। इसलिए वह भी दिलसे नहीं चाहता कि चीन पूर्णतः सङ्गठित होकर अपने पांवपर खड़ा हो जाय। भारतकी उत्तरी सीमा, उत्तरी-पूर्वी सीमायें चीनसे लगी हुई हैं। इसलिए मध्य एशियाकी राजनीतिमें ब्रिटेनका विशेष स्वार्थ है। तिब्बतसे मैत्री जोड़नेकी चेष्टा की जा रही है। बर्माको भारतसे अलग किया जा रहा है। मध्य एशियाके भारतीय मार्गोंकी नाकेबन्दी की जा रही है। काश्मीरके उत्तरी भागपर व्यवहारतः भारत-सरकारके 'पोलीटिकल एण्ड फारेन डिपार्टमेण्ट' ( राजनीतिक एवं वैदेशिक विभाग ) का अधिकार हो गया है। यह भी कहा जाता है कि चीनी तुर्किस्तानके विद्रोहमें भी इन विदेशी शक्तियोंका हाथ था।

ब्रिटेनकी भांति ही, बल्कि शायद उससे भी अधिक, चीनकी राजनीतिमें सोवियट रूस दिलचस्पी लेता है। राष्ट्रीय आन्दोलनके आरम्भसे ही रूसी राजनीतिज्ञोंने चीनकी राजनीतिमें विशेष अभिनय किया है। यह स्पष्ट है कि इन शक्तियोंमेंसे कोई निःस्वार्थ नहीं थीं और सबके अपने-अपने गुप्त उद्देश्य थे। आज चीनमें यह बहुरङ्गी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इस अव्यवस्थित महान् देशमें अनेक विचार-धारायें काम कर रही हैं। भूख और गरीबीके कारण तथा सोवियट रूसके सफल प्रचार-कार्यके कारण साम्यवादकी तीव्र लालसा लोगोंमें दिखाई पड़ती है। यही नहीं, केण्टनके उत्तर तथा नानकिङ्गके दक्षिण-पश्चिममें एक सोवियट चीन राज्य भी स्थापित हो गया है और उसने अपनी एक बड़ी जबर्दस्त सेना भी खड़ी कर ली है। उधर मङ्गोलियामें सोवियट प्रजातन्त्रकी स्थापना पहले ही हो चुकी है। इस प्रकार चीनके टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं।

## चीनकी आवश्यकता

इस समय चीनकी सबसे बड़ी आवश्यकता है—उसका एकीकरण और एक शक्तिशाली केन्द्रीय सरकारकी स्थापना। विधायक कार्यक्रम भी बड़ा आवश्यक है; क्योंकि सड़कों, रेलवे लाइन इत्यादिके अभावसे व्यापारकी तथा कृषकोंकी दशा खराब है। चीन भी भारतकी तरह कृषि-प्रधान देश है और किसान बड़े गरीब हैं। इसलिए जनताकी सहानुभूति वही सरकार प्राप्त कर सकती है जो किसानोंकी गरीबी दूर करनेकी ओर ध्यान दे। इस प्रकार चीनके सामने अनेक जटिल भीतरी और बाहरी समस्यायें हैं। इन समस्याओंको हल करनेके लिए एक प्रभावशाली और जबर्दस्त व्यक्तित्वकी आवश्यकता है, और जब हम चीनके वर्तमान नेताओंकी ओर आंख उठाते हैं तो चिङ्ग-काई-शेकपर हमारी दृष्टि पड़ती है। प्रभाव एवं शक्तिकी दृष्टिसे चीनमें उसका स्थान सर्वोपरि है। उसने साम्यवादियोंका जो निरन्तर दमन किया है उसको लेकर साम्यवादी विचारोंके प्रचारकोंने उसके सम्बन्धमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अनेक प्रकारके भ्रम फैलाये हैं। कोई कहता है वह स्वयं अपनी शक्ति बढ़ाना चाहता है; कोई कहता है कि वह तो चीनमें जापानका एजेण्ट है और कोई कहता है कि वह विदेशी पूंजीपतियोंसे मिल गया है। साम्यवादियोंके दमन एवं विदेशी पूंजीपतियोंका सहयोग प्राप्त करनेकी उसकी चेष्टाके कारण ही यह भ्रम हुआ है और कुछ तो जानबूझकर भी फैलाया गया है। साम्यवादी चीनमें सोवियट प्रजातन्त्र स्थापित करना चाहते हैं। वह पद्धति अच्छी है या बुरी, इसका प्रश्न नहीं है। राजनीतिमें समय और स्थितिके अनुसार ही राष्ट्रोंको फूंक-फूंककर चलना पड़ता है। चीनकी पहली आवश्यकता ऐसी शक्तिशाली केन्द्रीय सरकारकी स्थापना है, जो सारे चीनको एक शासन-सूत्रमें बांध सके। जब विदेशी शक्तियां चारों ओरसे चीनपर आंख गड़ाये हुए हैं तब एकाएक सबसे झगड़ा मोल लेकर चीन खड़ा नहीं हो सकता। अमेरिका, ब्रिटेन तथा अन्य राष्ट्रोंने नानकिङ्गकी केन्द्रीय सरकारको स्वीकार करते समय स्पष्ट कर दिया था कि साम्यवादी उपकरणोंकी प्रधानता होगी तो हम किसी प्रकारकी सहायता न दे सकेंगे। आरम्भमें चीनमें नाना विधायक कार्यक्रमोंकी पूर्तिके लिए इन राष्ट्रोंका आर्थिक सहयोग आवश्यक है। और जापान तथा इन राष्ट्रोंके बीच सन्तुलन रखनेके लिए भी इन राष्ट्रोंकी सहानुभूति प्राप्त करना चीनके लिए जरूरी है। ऐसी हालतमें मास्कोकी प्रधानता चीनमें होने देना स्वयं चीनके लिए खतरनाक था। चीनके लिए आवश्यकता इस बातकी है कि वह सबका सहयोग प्राप्त करते हुए भी किसी राष्ट्र-विशेषका प्रभुत्व अपनेपर न होने दे और दूसरोंके सहयोगसे अपना दृढ़ सङ्गठन करके अपने पांवपर खड़ा हो जाय। तीव्र राष्ट्रीयता, न कि समाजवाद, वर्तमान चीनकी सबसे बड़ी आवश्यकता है और चिङ्ग-काई-शेक तथा टी० वी० सुङ्ग ( अर्थ-सचिव ) ने इसमें एक सीमा तक सफलता प्राप्त की है। अधीर चीनी युवक, प्रतिहिंसाकी उत्तेजनामें यह भूल जाते हैं कि दुर्बलका क्रोध प्रकट करना व्यर्थ दूसरोंकी शत्रुता मोल लेना है। आज तो खूनके घूंट पी-पीकर भी चुपचाप चीनको सुदृढ़ और सुसङ्गठित करनेकी आवश्यकता है। चीनी युवकोंकी अधीरताके कारण ही मञ्चूरिया चीनके हाथसे निकल गया। वे भूल जाते हैं कि जापानसे युद्ध करनेकी अवस्था चीनकी नहीं है। चीनी सरकारकी कार्यकारिणीके प्रमुख श्री चैङ्ग-चिङ्ग-चेक आरम्भसे देशके उच्छृङ्खल युवकोंसे शान्त रहनेकी प्रार्थना करते रहे हैं। उनका कहना है—"जापानसे शस्त्र-युद्ध करनेकी शक्ति हममें नहीं है। इस समय हमारी सैनिक शक्ति जापानके सामने वैसी ही है जैसे मशीनगनोंके सामने बाण। इसलिए इस समय तो हमें अपमान सहन करके भी शान्ति एवं दृढ़तासे सङ्गठन करना और उस अवसरको लानेके लिए घोर परिश्रम करना चाहिए जब हम विरोधियोंसे बदला ले सकेंगे। वर्तमान दुर्बलताकी अवस्थामें लम्बे-चौड़े और जोशीले शब्द व्यर्थ हैं।" पर उनकी किसीने न सुनी। फलतः मञ्चूरिया भी चीनसे निकल गया।

इतना लिख और कह चुकनेके बाद यदि हम प्रशान्त महासागरकी राजनीतिपर और पूर्वी एशियामें जो कुछ हो रहा है उसपर ध्यान दें तो मालूम हो सकता है कि राजनीतिक परिस्थिति कैसी भयानक होती जा रही है। जो रूस जापानकी हारको आज तक नहीं भूला है उसके उत्थानकी गतिको देखते हैं तो डरसे आत्मा कांप जाती है। उधर अमेरिका करोड़ों रुपये सेनापर व्यय कर रहा है और इधर शक्तिमदसे उन्मत्त जापान कहता है—"संसारमें जापानका एक उद्देश्य है और वह उसे पूर्ण करके रहेगा ?"

आज चीनकी दुर्बल पीड़ित आत्मा पूछती है—'इस परिस्थितिमें क्या होगा ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# लखपती भिखमङ्गे और उनके हथकण्डे

श्री दीपनारायण सिंह, बी० ए०

इधर हालमें इंगलण्डकी सरकारका ध्यान वहांके गरीबों और भिखमङ्गोंकी ओर एक बार पुनः आकर्षित हुआ है। इंगलण्ड के लिए यह कोई नयी बात नहीं है। कई सौ वर्ष पहलेसे ही वहांकी सरकार इन गरीबों और भिखमङ्गोंसे तङ्ग आती रही है। ये अभागे प्राणी दयाके पात्र तो हैं, इसमें सन्देह नहीं; परन्तु अपनी जीविकाके लिए कभी-कभी ये जिस प्रकारके ढङ्ग अपनाते और भयानक हथकण्डे कर दिखाते हैं, उन्हें देखते हुए अधिकारी कांप उठते हैं और विवश होकर इनके विरुद्ध कुछ-न-कुछ करना ही पड़ता है। दरिद्रतासे बढ़कर संसारमें और कौन-सी दुःखदायी अवस्था होगी? संसारके महान् विचारक और अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिके महापुरुष जार्ज बर्नार्ड शाने अपने एक नाटक मेजर बार्बरा (Major Barbara) के तीसरे अङ्कमें दरिद्रताका बड़ा भीषण चित्र खींचा है। उन्होंने अपनी स्वाभाविक जोरदार और तीखी भाषामें लिखा है :—

बांसुरी बजाकर सैकड़ों रुपये कमानेवाले भिखमङ्गे।

"दरिद्रता? दरिद्रता भयानक अपराध है, भीषण महामारी है और यह समस्त नगरोंको ध्वंस कर डालती है। दरिद्रता में पड़ी आत्मायें दलित हो जाती हैं, उनमें स्वर नहीं रहता, शक्ति नहीं रह जाती। आप जिसे अपराध कहते हैं, वह तो कुछ भी नहीं; आज यहां एक हत्या हो जाती है और कल वहां एक चोरी। ये तो केवल दुर्घटनायें हैं। परन्तु दरिद्रता? उफ, लाखों, करोड़ों गन्दे, मलिन, अर्द्धनग्न और भूखसे कराहते हुए प्राणी तो सारे समाजको दूषित और विषाक्त कर देते हैं। वे कितने ही अमानुषिक नृशंसतापूर्ण अपराध कर बैठते हैं। अपराधसे तो केवल मूर्ख डरते हैं, परन्तु दरिद्रतासे ऐसा कौन है, जो न डरता हो?"

इसी भीषण दरिद्रता और तज्जनित दुष्परिणामोंको रोकनेके लिए इंगलैण्डमें सबसे पहले महारानी एलिजाबेथके शासनकालमें १६०१ में एक कानून पास किया गया। लगभग पौने दो सौ वर्ष तक इस कानूनके अनुसार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



काम किया गया, परन्तु ये कानून कुछ कठोर थे, अतः जार्ज तृतीयके शासनकालमें उसे कुछ नरम करनेकी आवश्यकता दिखाई पड़ी और १७८२ में गिलबर्ट एक्टके नामसे एक कानून बनाया गया। परन्तु जिन पापोंको रोकनेके लिए इसकी सृष्टि की गयी थी, दुर्भाग्यवश कमी पड़नेकी जगह उनमें वृद्धि होने लगी। दरिद्रों, बेकारों और भिखमङ्गोंकी संख्या बेतहाशा बढ़ चली। और बढ़ती भी क्यों न? जो कानून बनाया गया था, उसके अनुसार दरिद्रोंको स्वावलम्बी मनुष्योंसे अधिक रुपये मिलने लगे। पारिवारिक बच्चोंसे अधिक गुप्त-व्यभिचारसे उत्पन्न बच्चोंके लिए साधन मिलने लगे और इन सबका बोझ पड़ा कमानेवाले नागरिकोंपर। फिर तो कम मजूरी पानेवाले लोग भी काम छोड़ बैठे। जब बेकार बनना अधिक लाभदायक हो, तो कोई काम क्यों करे? व्यभिचारको तो ऐसा प्रोत्साहन मिला कि कुछ पूछिये मत। जनता कांप उठी और १८३४ के आते-आते गिलबर्ट एक्टमें सुधार किया गया। महारानी एलिजाबेथके एक्टकी शरण पुनः ली गयी। बहुत दिनों तक इसीके अनुसार काम होता रहा, परन्तु १९०५ में पुनः जांचकी आवश्यकता समझी गयी और इसके लिए एक कमीशनकी नियुक्ति की गयी, जिसने चार वर्षोंके पश्चात् १९०९ में अपनी रिपोर्ट बनाकर पेश की।

इसी रिपोर्टके अनुसार अब तक काम होता रहा है, परन्तु इधर आकर इन दरिद्रों और भिखमङ्गोंने जैसे-जैसे काम कर दिखाये, उन्हें नजरमें रखते हुए सारा इंगलैण्ड पुनः इनके विरुद्ध उठ खड़ा होना चाहता है। इस बातका प्रयत्न किया जा रहा है कि भिखमङ्गी एकदम बन्द कर दी जाय। ये भिखमङ्गे न केवल समाजमें बेकारोंकी संख्या बढ़ाये हुए हैं, बल्कि समाज इनसे त्रस्त हो रहा है। उनकी संख्या भी दिनों-दिन बढ़ रही है। अगर यह कहा जाय कि इन्हें कोई काम नहीं मिलता, तो यह भी सरासर सही नहीं होगा। सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री माल्थूजने कहा था कि भिखमङ्गोंकी जितनी ही सहायता की जायगी, उतनी ही उनकी संख्यामें वृद्धि होती चलेगी; क्योंकि कितने ही ऐसे हृष्ट-पुष्ट भिखमङ्गे हैं, जो करते तो हैं बेकारीका ढोंग; परन्तु वास्तवमें वे कोई काम करना ही नहीं चाहते। माल्थूजकी इस बातमें जिन्हें विश्वास न हो, उन्हें विगत महासमरके समयके आंकड़ोंको देखना चाहिए। महासमरके लिए इतने आदमियोंकी आवश्यकता थी और इतना काम करनेको था कि यथेष्ट आदमी खोजनेसे भी नहीं मिलते थे; फिर भी इंगलैण्डमें उस समय भी बेकारोंकी विशाल संख्या थी, इसे सुनकर किसे आश्चर्य न होगा! परन्तु ये अभागे बेकार जब भीख मांगकर हजारों रुपये कमा रहे हों, तो काम करने क्यों जायं?

इस समय भी, जबकि संसार-भरमें अर्थसङ्कट छाया हुआ है और कितने ही प्राणी दाने-दानेके लिए तरस रहे हैं, लन्दनके भिखमङ्गे लाखोंकी सम्पत्ति एकत्र करके मौज उड़ा रहे हैं! पेट पालना तो दरकिनार, वे अपने इस घृणित पेशेसे, जिसे मनुष्य विवश होकर ही अपना सकता है, विलास और ऐश्वर्य खरीद रहे हैं! इसके साथ ही वे कभी-कभी ऐसे भी काण्ड कर डालते हैं कि सार्वजनिक शान्तिमें बाधा पड़ती है। इन सभी बातोंको ध्यानमें रखते हुए भिखमङ्गोंकी वास्तविक स्थितिकी जानकारी प्राप्त करनेकी आवश्यकता समझी गयी और इसका भार सुपुर्द किया गया विश्वविख्यात स्काटलैण्ड यार्डकी खुफिया पुलिसको। सरकार इस बातको कितना महत्त्वपूर्ण समझती है, इसका अनुमान इसी बातसे लगाया जा सकता है कि यह काम आम पुलिसके हवाले नहीं किया गया। इस सम्बन्धमें एक जासूसने जैसी-जैसी बातोंका पता लगाया है, उन्हें सुनकर दांतों-तले उंगली दबानी पड़ती है। इस बातपर किसे विश्वास होगा कि लन्दनका एक भिखमङ्गा १००० पौण्ड प्रतिवर्ष कमाता है और कितने ही भिखमङ्गोंने बाकायदे आफिस खोल रखे हैं, उनके कर्मचारी काम कर रहे हैं और वे मोटरोंपर भीख मांगकर लौटते हैं! पर हैं सब सच। एकदम हैरतअङ्गेज बातें!

उस जासूसकी जबानी मालूम होता है कि कितने ही भिखमङ्गे खूब कमा रहे हैं। सड़कोंपर गीत गा-गाकर भीख मांगनेवाले एक व्यक्तिने केवल दो वर्षोंमें भीखसे इतने रुपये एकत्र कर लिये कि अब वह एक दूकान चला रहा है। एक लंगड़ा भिखमङ्गा भी आमदनीकी दौड़में किसीसे पीछे नहीं है। वह सालमें लगभग ६०० पौण्ड भीख मांगकर एकत्र करता है और प्रतिदिन जब भीख मांगकर घर लौटने लगता है, तब टैक्सीपर चढ़कर आता है। एक बंशी बजानेवाला भिखमङ्गा जब प्रतिदिन भीख मांगकर घर चलने लगता है, उस समय तक उसके पास इतने पैसे एकत्र हो जाते हैं कि वह उन्हें देकर नोट लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भीख मांगनेके ढङ्ग भी कैसे हैं! एक महिला फटे-पुराने कपड़े पहन लेती है और मुर्दनी सूरत बना लेती है। वह अपनी गोदीमें एक रुग्ण बच्चा लेकर भीख मांगने निकल पड़ती है और कहती है कि ऐसे ही रोगी ६ बच्चे अभी मेरे पास और हैं। मेरे पतिका देहान्त यक्ष्मासे हो गया। यह सब प्रपञ्च है, परन्तु कौन जाने सच ही हो। हमारे देशमें भी ऐसे सैकड़ों भिखमङ्गे हैं, जिनके पास बीबियां हैं, बच्चे हैं और मजेदार बात तो यह है कि ये भिखमङ्गे भी बाकायदे उत्सवके साथ शादी-ब्याह करते हैं।

कुछ न बोलकर—तख्ती लगाकर भीख मांगनेवाले, इस तरहके हजारों भिखमङ्गे हैं।

अब एक पुरुषका हाल सुनिये। जब वह भीख मांगने निकलता है, तब अपनी गर्दनमें एक तख्ती लटका लेता है, जिसपर लिखा हुआ है—"काम नहीं मिलता। कोई भी काम करनेके लिए तैयार हूं। घरपर बीबी और तीन बच्चे हैं।" परन्तु यह सब झूठ है। उसके पास न तो बीबी है और न बच्चे। वह कोई काम करना ही नहीं चाहता। मुफ्तका माल हड़प रहा है, फिर किसीकी गुलामी क्यों करने जाय? सच तो यह है कि इस प्रपञ्ची भिखमङ्गेके पास एक मोटर तक है, जिसे वह सवेरे ही अपने मकानके पासकी एक गैरेजमें छोड़ आता है और भीख मांग-कर लौटते समय पुनः मोटरमें चढ़कर घर पहुंचता है।

अब एक मजेदार घटना सुनिये। एक सार्वजनिक स्कूलके एक भूतपूर्व छात्रने इस घटनाका उल्लेख एक खुफिया पुलिससे किया था। वह छात्र आजकल सेनाका कप्तान है। उसने कहा कि एक दिन विक्टोरियामें टहलते समय मुझे एक आदमीको देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके साथ एक स्त्री भी थी, जिसकी आंखोंसे आंसू बह रहे थे। आदमी मेरा पहचाना हुआ था। हम लोगोंकी शिक्षा एक ही स्कूलमें हुई थी। उस आदमीने मुसकराते हुए मेरा अभिवादन किया। उन लोगोंके साथ ही मैं भी एक खाली कमरेमें गया। वहां पहुंचकर उन लोगोंने अपने कपड़े बदले और एक टैक्सी करके मुझे अपने सच्चे घरपर ले गये। बेकर स्ट्रीटमें उन लोगोंने मकानकी एक पूरी मञ्जिल दखल कर रखी थी। बातचीतके सिलसिलेमें उसने बड़ी निर्लज्जतापूर्वक कहा—"हम लोग भीख मांगकर इतना कमाते हैं कि यह मञ्जिल खरीद सके हैं। सब मेरी पत्नीके आंसुओंकी बलिहारी है! यह अच्छा स्वांग कर लेती है साहब और इसके आंसू बड़े प्रभावशाली होते हैं!" देखा आपने? भिखमङ्गे अपने आंसुओंके बलपर महलोंमें मजे उड़ा रहे हैं!

सड़कोंपर गीत गाकर भीख मांगनेवाले भिखमङ्गोंसे लोग बुरी तरह ऊब उठे हैं। इन लोगोंने लोगोंको इतना तङ्ग किया कि कितने ही भिखमङ्गोंको चुप करा दिया गया है। वे अभागे अब न तो गा सकते हैं और न जीविकोपार्जन कर सकते हैं। इस प्रकारके भिखमङ्गोंकी संख्या लन्दनमें हजार-डेढ़-हजारके करीब है। अबसे कुछ ही वर्ष पहले इनकी संख्या ढाई-तीन हजार थी। परन्तु कठोर प्रतिबन्धके कारण बहुतोंने यह काम छोड़कर भिखमङ्गीका और रास्ता निकाल लिया है। गीत गाकर भीख मांगनेवाले ये भिखमङ्गे अक्सर झुण्ड बनाकर निकलते हैं। पांच-पांच, छ-छ भिखमङ्गोंका एक झुण्ड होता है। वे सब वाद्य-यन्त्रोंकी दूकानोंसे बाजे भाड़ेपर ले आते हैं। यह बात नहीं है कि वे स्वतः बाजे खरीद नहीं सकते। वास्तवमें बात तो यह है कि इन अभागे प्राणियोंकी मनोवृत्ति ही निराली है। कुछ ऐसे चालाक भिखमङ्गे हैं कि उन्होंने कई दर्जन भिखमङ्गोंका दल बना लिया है और स्वयं उसके मुखिया बन बैठे हैं। भिखमङ्गी-को ये लोग रोजगारकी तरह चला रहे हैं। झुण्डके झुण्ड भिखमङ्गे भीख मांगने निकलते हैं और जो-कुछ कमाकर ले आते हैं, उसमेंसे मुखिया अपना भाग लेकर शेष और भिखमङ्गोंमें बांट देता है। वास्तवमें मुखिये तो एक तरहके डाकू ही हैं, अन्यथा भीख मांगी हुई रकममें इनका कौन-सा हिस्सा! पर वहां तो 'माले मुफ्त, दिले बेरहम' का सवाल है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भिक्षाकी प्राप्ति तो आखिर दयामयी भावनाओंपर ही निर्भर है न, इसलिए ये भिखमङ्गे इस बातकी भरपूर कोशिश करते हैं कि इस रूपमें निकला जाय कि लोगोंमें करुणा उत्पन्न हो जाय। लन्दनमें तीन स्थान ऐसे हैं, जहां गीत गाकर भीख मांगनेवाले भिखमङ्गे आपसमें मिलते हैं। वहां पहुंचकर वे अपने कपड़े बदलते हैं। चिथड़ोंके बने हुए पाजामें पहनते हैं और फटी-पुरानी टोपियां लगाते हैं। चालाकीमें ये एक ही होते हैं, इसलिए ये जानते हैं कि गरीबोंमें दया और धर्मकी जितनी भावना होती है, उतनी अमीरोंमें नहीं, इसलिए ये लोग इस्लिङ्गटन, पोपलर और केम्बरवेल-जैसे गरीब जिलोंमें ही अधिकतर जाते हैं और करुणा और दरिद्रताके गीत गाते हैं। हाल्बोर्न और इस्लिङ्गटन-जैसे जिलोंमें एक दलको प्रायः प्रतिदिन १५ पौण्ड मिल जाते हैं, जिनमें लगभग ५ पौण्ड तो अकेले उनका मुखिया ले लेता है और शेष और लोगोंमें बांट दिये जाते हैं।

लन्दनकी सड़कोंपर गीत गाकर भीख मांगनेवाले एक भिखमङ्गेके पास दो बहुत भव्य भवन हैं और इनके अतिरिक्त एक मकान और भी उसके पास है, जिसमें वह खुद रहता है। एक भिखमङ्गा तो ऐसा है, जो कई जिलोंमें मशहूर है। उसके पास भी कई छोटे-छोटे मकान हैं। परन्तु फिर भी ये अभागे भीख ही मांगनेमें अपना गौरव समझते हैं। कहते हैं कि पुश्तैनी पेशा है, इसे कैसे छोड़ दिया जाय। इन भिखमङ्गोंकी आमदनी काफी है। इन दोनोंने स्वयं स्वीकार किया है कि ये प्रतिदिन लगभग दो पौण्ड भीखसे कमा लेते हैं। ये अधिकांशतः महिलाओंकी दूकानोंपर भीख मांगते हैं। आप यह न समझिये कि इस प्रकारके वैभवशाली ये दो ही भिखमङ्गे हैं। इस प्रकारके भिखमङ्गे वहां और भी हैं। और छोटे-छोटे मकान रखनेवाले भिखमङ्गे तो बहुत-से। हमारे हिन्दुस्तानमें भी एक जाति ऐसी होती है, जो काफी ऐश्वर्य रखते हुए भी भीख मांगती है। उन बेचारोंके सामने भी वही मौरूसी पेशेका सवाल है। क्या करें, लाचार हैं! लन्दनके मोटरपर चढ़कर भीख मांगनेवालों और इनमें यह समानता जरूर है कि दोनों हरामका माल खाते हैं, परन्तु दोनोंमें एक बहुत बड़ा अन्तर भी है और वह यह कि लन्दनवाले जनताकी आंखोंमें धूल झोंककर पैसा लेते हैं, उन्हें भेष बदलने पड़ते हैं, मोटर छिपानी पड़ती है, अपनेको गृह-विहीन बताना पड़ता है और बताना पड़ता है बिलकुल असहाय और निकम्मा! परन्तु भारतीय भिखमङ्गे अपने पवित्र पुश्तैनी पेशेमें खूब दुस्साहसी हो गये हैं, लन्दनके भिखमङ्गोंमें अगर ढोंग है तो भारतीय भिखमङ्गोंमें बेशर्मी। और मजेदार बात! तो यह है कि दोनों अपने इन पवित्र गुणोंसे खूब प्रसन्न हैं और माल काट रहे हैं।

## भिखमङ्गोंका राजा

भिखमङ्गोंका राजा? हां, आप चौंकिये नहीं। लन्दनमें वास्तवमें भिखमङ्गोंका एक राजा भी है, जिसकी सालाना आमदनी १००० पौण्ड है। वह अक्सर एक काला कोट पहनता है और प्रतिदिन लगभग ८॥ बजे सवेरे ही शहरमें पहुंच जाता है। उसके कई आफिस हैं और उसने एक प्राइवेट सेक्रेटरी भी रख छोड़ा है। भिखमङ्गोंके इस राजाने अबसे प्रायः २१ वर्ष पहले अपना यह पेशा शुरू किया था और बीच-बीचमें पता बदलते रहनेके साथ-साथ वह अपना 'कारबार' भी बढ़ाता रहा है। वास्तवमें वह कारबारकी तरह ही इस पेशेको चलाता जा रहा है। इसका ढङ्ग भी निराला ही है।

खुफिया पुलिसने इसके सम्बन्धमें जो-कुछ खोज निकाला है, उससे मालूम होता है कि यह भिखमङ्गा प्रतिदिन सैकड़ों पैकेट लोगोंके पास भेजा करता है। इन पैकेटोंमें एकाध कविता, गीत अथवा अत्यन्त कारुणिक चिट्ठी रहती है। चिट्ठीमें जो बातें लिखी होती हैं, वे प्रायः मिथ्या होती हैं। परन्तु उनका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। चिट्ठियोंके मजमून भिन्न-भिन्न होते हैं, परन्तु उनका लक्ष्य एक ही रहता है। चिट्ठियोंमें प्रायः लिखा होता है—"इस समय बड़ी बुरी तरह दिन कट रहे हैं, घरपर स्त्री और तीन बच्चे हैं और सभी भूखसे तड़प रहे हैं। इसके साथ ही एक गीत बेचनेके लिए भेजा जा रहा है, लेकिन अगर इसकी आवश्यकता न हो तो जो कुछ भी सहायता आप दे देंगे वही हम लोगोंकी जीवन-रक्षामें सहायक होगी।" इस प्रकारके पत्र कभी खाली नहीं जाते।

इस प्रकारके हथकण्डोंसे ही भिखमङ्गोंका राजा इतना बड़ा आदमी बन गया है कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते। लण्डनकी मेण्डिसिटी सोसाइटीके एक अफसरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक बार इस व्यक्तिके बारेमें कहा था कि हम लोग इसके हथकण्डोंको सालोंसे जानते हैं, परन्तु हम लोग मजबूर हैं; क्योंकि यह हमेशा कुछ-न-कुछ बेचकर भीख मांगनेका ढोंग करता है। और इन्हीं ढोंगोंसे उसने लाखों रुपये कमाये हैं।

इसके बाद वे भिखमङ्गे आते हैं, जो दरवाजे-दरवाजे घूमकर भीख मांगते हैं। अगर सच पूछा जाय तो इन्हीं भिखमङ्गोंने लन्दनमें अशान्ति मचा रखी है। ये अभागे प्राणी इतने असभ्य होते हैं कि दरवाजे-पर बात करते-करते कभी-कभी घरोंमें घुस जाते हैं। घरकी देवि-योंको अपमानित कर देना और उनपर आक्रमण कर देना तो उनके लिए बहुत साधारण बात हो गयी है। ये भिखमङ्गे उस समय भीख मांगने निकलते हैं जिस समय लोग आफिसोंमें काम करते रहते हैं। ये दरवाजोंपर जाते और घण्टी बजाते हैं। बेचारी गृहिणी तो समझती है कि कोई भलेमानस आया, इसलिए वह बढ़कर स्वागत करना चाहती है। परन्तु भिखमङ्गे भला कब मानते हैं, पहले तो वे मनमानी चीजें मांगते हैं और न मिलनेपर मारपीट कर बैठते हैं। घरके बच्चे भी उनके आक्रमणके शिकार होते हैं। यद्यपि अमेरिकाकी तरह लन्दनमें बच्चोंके चुराने और फिर मनचाही रकमपर उन्हें छोड़नेका तरीका गुण्डोंने अभी तक नहीं अपनाया है, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि भिखमङ्गे वहां काफी ऊधम मचाते हैं और इस प्रकारके भिखमङ्गोंसे रक्षा करनेके लिए पुलिसके पास बराबर प्रार्थना-पत्र आया करते हैं।

पापी पेटके लिए मनुष्य क्या नहीं करता? उस समय उसे भले-बुरेका कोई ज्ञान ही नहीं रह जाता! 'बुभुक्षितः किं न करोति पापम्' लेखकने ठीक ही लिखा है।

भीख मांगते हुए घरकी मालकिनपर आक्रमण करने-वाला एक भिखमङ्गा।

रोकर, गाकर और स्वांग बनाकर भीख मांगनेके साथ-साथ लड़कों और स्त्रियोंको सताकर भी प्राणी जो जघन्य कर्म करता है, उसकी सारी जिम्मेदारी क्या केवल उन बेचारोंपर ही है? एक ओर तो लन्दनकी विशाल नगरी अपने सुख और सौन्दर्यमें इतराती रहती है और दूसरी ओर सैकड़ों और हजारों प्राणियोंको अपनी बुभुक्षा-शान्तिके लिए जघन्यसे जघन्य काम करने पड़ते हैं। लन्दनमें कुछ ऐसे प्राणी भी हैं जो भीख मांगनेके अन्यान्य तरीकोंको न अपनाकर एक नये ही तरीकेका आश्रय लेते हैं। कहते हैं कि वे पहले किसी चौराहेपर मोटर आदि मामूली दुर्घटनाओंसे जान-बूझकर घायल हो जाते हैं और फिर अस्पतालों-में जाकर दस-पांच दिन सुखपूर्वक जीवन-यापन करते हैं। अस्प-तालसे निकलते समय नर्सोंसे उन्हें कुछ और आर्थिक सहायता भविष्यके लिए भी मिलजाती है। पापी पेटके लिए स्वयं दुर्घटना-ओंको निमन्त्रित करना! उफ, यह मानवताके पतनकी चरम सीमा हो गयी! ऐसे प्राणियोंके विरुद्ध भी लन्दनकी पुलिस कानूनी कार्रवाई करेगी!

लन्दनके भिखमङ्गोंकी दशाका जो चित्रण ऊपर किया गया है, वह एकदम सत्य है और साथ ही यह भी सत्य है कि वे जिस प्रकारकी अशान्ति वहां पैदा करते हैं, उससे यही सिद्ध होता है कि वे सर्वथा अवाञ्छनीय हैं। हमारे भारतवर्षमें भी भिखमङ्गोंकी समस्या बड़ी जटिल होती जा रही है। पञ्जाब कौन्सिल द्वारा पास भिखमङ्गी रोकनेका एक बिल भी वहां लोकमत जाननेके लिए प्रचारित किया गया है और कलकत्ता कारपोरेशन भी इस मामलेमें दिलचस्पी लेने लगा है। परन्तु इन सब बातोंसे परिस्थिति नहीं सुधर सकती। भिखमङ्गोंकी उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अशान्तिमूलक और अवाञ्छनीय है। परन्तु इस चित्रका एक दूसरा पहलू भी है और वह भी उपेक्षणीय नहीं है। जार्ज बर्नार्ड शाके लिए अपनी एक पुस्तकमें यह लिख देना बहुत आसान था कि दरिद्रोंकी लड़कियां नागरिकोंके सुयोग्य तरुणोंको विषाक्त बनाकर सारे वायुमण्डलको दूषित कर देती हैं, इसलिए वे अवाञ्छनीय हैं। परन्तु इस समस्या-का समाधान इतना सरल नहीं है। भिखमङ्गीको समाज पुलिस और कानूनकी सहायतासे रोक देगा, इसमें हमारा विश्वास नहीं। केवल लन्दन और भारत ही नहीं, बल्कि आज सारे संसारमें दरिद्रों और भिखमङ्गोंकी एक विशाल संख्या है और वह उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है। क्या इसका उत्तरदायित्व विश्वकी आर्थिक दुरवस्थापर है ?—है; परन्तु उससे भी अधिक इसका उत्तरदायित्व है पूंजीवादपर, धनकी असम विभाजन-प्रणालीपर और श्रमके शोषणपर। जब तक समाज अपनेको इन रोगोंसे मुक्त नहीं कर सकता, तब तक दरिद्रों और भिखमङ्गोंकी संख्या घट नहीं सकती और वह उनकी अशान्तिको रोक भी नहीं सकता। दरिद्रों और भिखमङ्गोंके उपद्रवोंकी असली दवा पुलिस नहीं, रोटी है।

किन्तु यह शुभ लक्षण है कि आजका संसार भिखमङ्गोंके विरुद्ध इतना भीषण आन्दोलन करनेपर तुल पड़ा है। भिख-मङ्गीके अस्तित्वको मिटानेके लिए जो भी प्रयत्न किये जायेंगे, उनके सिलसिलेमें उसके असली कारणोंका पता चले बिना न रहेगा। और फिर तो समस्या सुलझते बहुत देर न लगेगी।

---

# अनन्त प्रमोद

जहां अनन्त आशाका मधुर गुञ्जन छहों ऋतुओंमें ध्वनित होता है,
जहां पतङ्ग और दीपक आपसमें प्रेमालिङ्गन करते हैं,
जहां न व्यथा है—न वियोग ही,
वहां—मेरे देवता, मैं और तुम प्यालीमें बची हुई कुछ बूंदें पीएं।
जहां उमङ्गका गहन वारिधि लहरें मारता है,
जहां अनवरत प्रयत्न और अनन्त पिपासा है,
वहां—मेरे प्रियतम मैं और तुम बैठकर फूलोंकी माला गूंथें।
जहां यौवन बचपनके झरनोंमें कलकलाहट बन जाता है,
जहां मैं तुम्हें देखकर अमर होती और तुम मुझे देखकर अमर बन जाते हो,
जहां ज्योति ही ज्योति है,
वहां—मेरे सैयां, मैं और तुम प्रगाढ़ आलिङ्गनमें बद्ध हो जायें !

—आनन्दज्योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विल्ला

डाक्टर धनीराम प्रेम

[ १ ]

बहुत दिनकी बात है। मेक्सिकोमें स्पेनवाले राज्य करते थे। स्पेनवालोंने मेक्सिको-निवासियोंको अत्याचारोंसे तङ्ग कर रखा था। लोग त्राहि-त्राहि करने लगे थे। किसीका घर लुटता था, किसीका रुपया, किसीकी आबरू और किसीका प्राण। सेनाके बलपर अत्याचारका प्रति दिन नग्न नृत्य होता था।

एक दिन सरकारी फरमान निकला कि किसी किसानका अधिकार जमीनपर न होगा। जमीन प्रजाके हाथोंसे छीन ली जायगी और उसपर सरकारका आधिपत्य होगा। इस घोषणासे किसानोंकी रही-सही आशाओंपर भी पानी फिर गया। अब तक वे अत्याचारोंको चुपचाप सहन करते रहे थे, परन्तु इस घोषणाने उन्हें अधीर बना दिया। जिस जमीनपर सदियोंसे उनका आधिपत्य रहा है, वह उनसे छिन जायगी। जिन घरोंमें उनके बाप-दादे रहे थे, जिनमें उनका पालन-पोषण हुआ था, जिनमें उनके बच्चोंका जन्म हुआ था, वे घर भी पराये हो जायंगे।

किसानोंमेंसे एक जरा उग्र विचारोंका था। वह चिल्ला-कर बोल उठा—

'क्या हम चुपचाप अपने घरोंको खो देंगे?'

सबने उसकी ओर देखा और चुप रह कर गर्दन नीची कर ली।

गांवका पादरी सामने आया और बोला—

'हम चुपचाप अपने घरोंको नहीं खो देंगे, हम ईश्वरसे प्रार्थना करेंगे।'

'ईश्वरसे प्रार्थना?' हमें प्रार्थना करते सदियां बीत गयीं। लेकिन हमारी पुकार न जाने कहां विलीन हो गयी। उसका कुछ भी प्रभाव न हुआ। अब हम प्रार्थना नहीं करेंगे, चुप-चाप रोयेंगे नहीं—'

'फिर क्या करोगे?'

'गवर्नरको जाकर एक बार बता देंगे कि हम अब चुपचाप अत्याचार नहीं सहेंगे।'

'लेकिन वहां तुम्हारी सुनाई न होगी। वहां तो कुछ कहनेके पहले ही तुम्हारा मुंह बन्द कर दिया जायगा—शायद सदाके लिए।'

'कुछ परवाह नहीं। मैं आगे चलता हूं, कौन मेरे पीछे आता है?' यह कहकर बिना उत्तरकी प्रतीक्षा किये उग्र किसान आगे चल पड़ा। सभी चुपचाप उसके पीछे हो लिये।

[ २ ]

राजधानीमें राजमहलके सामने गरीब किसानोंकी भीड़ आकर खड़ी हो गयी। चारों ओरसे हथियारबन्द सिपा-हियोंने उन्हें घेर लिया। वे अपनी अन्तिम पुकार सुनाने यहां आये थे। परन्तु जिसे सुनाने आये थे, वह तो यहां उन्हें मिला ही नहीं। गवर्नर तो इस समय राग-रङ्गमें पड़ा था। उसे इन दीन-हीन किसानोंकी पुकार सुननेके लिए या उन्हें अपने दर्शन देनेके लिए फुरसत कहां थी। उस टुकड़ीके सेनापतिने भीड़के पास आकर गरजते हुए पूछा—

'तुम लोग यहां क्या चाहते हो?'

'न्याय!' उग्र किसानने आगे बढ़कर कहा।

'न्याय? कैसा न्याय?'

'राजका जो नया फरमान निकला है, उसके बारे-में न्याय।'

'ओहो, जमीनके बारेमें! लेकिन उसमें कैसा न्याय और अन्याय! जमीन सरकारकी है और सरकार उसपर अपना कब्जा करने जा रही है!'

'सरकारने हमारा सर्वस्व ले लिया है। हम और कुछ नहीं चाहते', उग्र किसानने जमीनपरसे थोड़ी-सी मिट्टी हाथमें उठाकर कहा—'हम इतना-भर चाहते हैं, केवल इतना! यही हमारा एकमात्र आश्रय है। इसे तो हमारे पास रहने दीजिये!'

'सो तुम लोग जमीन चाहते हो! लेकिन किसलिए?'

'किसलिए? इसलिए कि हम इन्सान हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'ओहो, तू इन्सान है ! अच्छा, तुझे अभी मालूम हो जायगा कि इन्सान बननेका नतीजा क्या होता है।' इतना कहकर सेनापतिने दो सैनिकोंकी ओर इशारा किया और उनके पास आ जानेपर कहा—

'जाओ, इस इन्सानको सौ कोड़े लगाओ !'

उग्र किसानका चेहरा पीला पड़ गया। हाथकी मिट्टी हाथमें ही रह गयी। लेकिन वह विचलित नहीं हुआ। शान्त मुख लिये चुपचाप उसने सैनिकोंके साथ चल दिया। भीड़के सब लोग भी निःशब्द रहे। अगर किसीके मुखपर क्रोधका भाव आया, तो वह था उग्र किसानका एकमात्र दशवर्षीय बालक। जब उस बालकने देखा कि सैनिक उसके पिताको पकड़कर ले गये, तो वह भी उनके पीछे हो लिया।

जब सैनिक किसानको लेकर चले गये, तब सेनापतिने दहाड़कर भीड़से पूछा—

'तुममेंसे और भी कोई है, जो इन्सान बननेका दावा करता है ?'

भीड़ने एक बार उसके क्रुद्ध मुखकी ओर देखा और फिर चुपचाप सर नीचा करके सब वहांसे चले गये।

सैनिकोंने बाहर जाकर किसानको एक वृक्षसे बांध दिया। दो सैनिक कोड़े मारने लगे, बाकी अट्टहास करने लगे। परन्तु कुछ कोड़े मारनेके बाद ही सैनिकोंने देखा कि किसानका शरीर निर्जीव हो गया है। उन्होंने उसे हिलाया-डुलाया और जब देखा कि उस शरीरमें प्राण नहीं हैं, तब उसे एक ओर पटककर चले गये।

जब यह सब-कुछ समाप्त हो गया, तब लड़का अपने पिताके शवके पास आया। एक बार उसने मृतके चेहरेको देखा, आंखोंमें कुछ आंसू आ गये। फिर उसके हाथको देखा, मिट्टी अभी तक बंधी हुई मुट्ठीमें थी। मुट्ठी इतनी जकड़ गयी थी कि उसे खोलना भी मुश्किल था। लड़केने कुछ मिट्टी मुश्किलसे निकाली और उसे अपने मस्तकसे लगा लिया। फिर उसने एक बार अन्तिम दृष्टि अपने पिताके शवपर डाली। इतने हीमें उसे किसीके आनेका शब्द हुआ। लड़का वृक्षकी ओटमें छिप गया। आनेवाला वही सैनिक था, जिसने उसके पिताके नग्न शरीरपर कोड़े लगाये थे। उसे देखकर लड़केका मुख लाल हो गया। बदलेकी दुर्दम्य भावना उसके मनमें हिलोरें मारने लगीं। उसने अपने वस्त्रके नीचेसे छुरी निकाली और ज्यों ही वह सैनिक उधरसे निकला, उसने छुरी उसकी पीठमें भोंक दी।

बदला इस प्रकार पूरा करके पकड़े जानेके भयसे लड़का रातों-रात चलकर दूर, बहुत दूर स्थित, पहाड़ी जङ्गलोंमें चला गया।

[ ३ ]

इस प्रकार कई वर्ष व्यतीत हो गये। जितने ही वर्ष व्यतीत हुए, उतने ही अत्याचार बढ़े। और अत्याचारोंके साथ ही पीड़ितोंके दिलमें बदलेकी भावना भी बढ़ी। वह बालक जो वर्षों पूर्व अपने पिताके घातकको मारकर पहाड़ोंमें छिपनेको चला गया था, अब जवान हो गया था। बदलेकी जो चिनगारी पिताका खून देखकर पैदा हुई थी, वह अब धधकती हुई चिता बन गयी थी। उसने प्रतिज्ञा कर ली थी कि जब तक अत्याचारियोंको उस चितापर भस्म न कर देगा, तब तक उसे चैन न मिलेगा। रात और दिन वह इसी धुनमें रहता था।

धीरे-धीरे उसने अपने झण्डेके नीचे हजारों उन किसानोंको खींच लिया, जो उसीकी तरह अपना सर्वस्व खो चुके थे और जो उसीकी तरह बदलेकी शपथ ले चुके थे। वे सब उसे 'पांचो विल्ला' के नामसे पुकारते थे। उनके लिए वह उनका भगवान था, उनका नेता था, उनका सम्राट् था। वह इन सूखे शरीरोंकी सूखी हड्डियोंमें अपने एक वाक्यसे बिजलीका सञ्चार कर देता था। वे सदा 'विल्ला जिन्दाबाद' पुकारकर उसके हृदयमें उत्साहका सञ्चार करते रहते थे।

चारों ओर पांचो विल्लाका नाम प्रसिद्ध हो गया था। अफसर लोग उसके नामसे थरथर कांपते थे। उसे और उसके साथियोंको पकड़नेकी सरकारने बहुत कोशिश की, लेकिन उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई। विल्ला डाकुओंकी तरह अपने दलके साथ पहाड़ोंसे निकलता। जहां सरकारी अफसर अत्याचार करते, वहां वह पहुंच जाता और उन्हें यथेष्ट दण्ड देकर, जहांसे आता, वहीं विलीन हो जाता।

एक दिन सरकारी अदालतमें न्यायकी हत्या हो रही थी। जजको यह पता नहीं था कि अभियुक्तोंका अपराध क्या है। वह मुकदमा भी करता जाता था और अपने मित्रोंके साथ मजाक भी। कुछ मिनटोंके बाद ही बेचारे अभियुक्तोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्राणदण्डकी सजाका हुक्म हो गया और फिर कुछ मिनटों बाद उन्हें प्राणदण्ड दे भी दिया गया।

इतने हीमें शोर मचा। चारों ओरसे आवाजें आने लगीं, 'विल्ला आ गया! विल्ला आ गया!' गार्ड लोग सामना करनेको तैयार हो गये। जज और उसके साथी कांपने लगे। इतने हीमें विल्ला और उसके साथी बन्दूकें लेकर भीतर आ गये। उनके साथ उन अभागे अभियुक्तोंकी लाशें भी थीं, जो अभी-अभी मारे गये थे।

लाशें उसी बेञ्चपर रख दी गयीं, जिसपर अभियुक्त जीवित अवस्थामें बैठे थे। विल्लाने जजकी ओर देखकर कहा—

'बोलो, तुमने इन्हें मारा है?'

'मारा है? नहीं, न्यायके अनुसार दण्ड दिया है।'

'दण्ड दिया है! और किस अपराधके लिए?'

जज चुप हो गया। उसे अपराध मालूम ही नहीं था।

'किस अपराधके लिए?' विल्लाने जोरसे पूछा।

'बगावत!' जजका एक साथी बोल उठा।

'बगावत! अफसोस, इन बेचारोंके मुंह बन्द कर दिये गये हैं, नहीं तो———'

'हमने तो सब-कुछ कानूनके अनुसार ही किया है।' जज बात काटकर बोल उठा।

'कानूनके अनुसार! तुम्हारे कानूनके अनुसार! लेकिन अब मेरा कानून भी देखो!'

सब भयसे कांपने लगे। सबने समझ लिया कि विल्ला-का अर्थ क्या था। किसीने कुछ बोलनेका प्रयत्न किया, इसके पूर्व ही विल्लाके इशारेसे उसके साथियोंने गोलियां दाग दीं।

[ ४ ]

धीरे-धीरे सरकारके अत्याचारोंने मेक्सिकोमें एक दल ऐसा भी खड़ा कर दिया, जो नियमानुकूल युद्ध करके स्वेच्छाचारी शासकोंसे राज्यकी बागडोर छीन लेना चाहता था। उस दलमें दिमागी शक्ति थी, परन्तु युद्ध करनेकी शक्ति न थी। इस दलके नेता मादीरोने सोचा कि यदि उसकी बुद्धि और पांचो विल्लाकी शक्ति एक होकर शत्रुका सामना कर सकें, तो विजय होनेमें जरा भी सन्देह न रहे। यह सोचकर उसने विल्लाको निमन्त्रण भेजा। विल्ला, जो कभी किसी शिक्षित और धनिक व्यक्ति द्वारा निमन्त्रित नहीं किया गया था, इस निमन्त्रणको पाकर स्तम्भित हो गया। परन्तु वह भयका नाम भी न जानता था। वह बड़ी प्रसन्नतासे मादीरोके पास आया।

मादीरो बड़े तपाकसे उससे मिला और बोला—

'मेरे मित्र, मैं तुमसे मिलकर बड़ा प्रसन्न हूं।'

'मित्र? तुम मुझे अपना मित्र समझते हो?' विल्लाने कुछ आश्चर्य और कुछ प्रसन्नतासे पूछा। क्योंकि उसकी जातिके एक व्यक्तिको किसीसे मित्र शब्द सुननेकी लेशमात्र भी आशा नहीं हो सकती थी।

'क्यों नहीं, तुम मेरे मित्र हो!' मादीरोने उत्तर दिया।

'तुम मुझसे क्या चाहते हो?'

'तुम अपनी मातृ-भूमिको प्यार करते हो?'

'प्राणोंसे भी अधिक।'

'उसका उद्धार करनेको तैयार हो?'

'यह तो हमारी प्रतिज्ञा है।'

'लेकिन जो कुछ तुम कर रहे हो, उस तरह यह प्रतिज्ञा पूरी नहीं हो सकती। इस कार्यके लिए डाकुओंकी नहीं, सैनिकोंकी आवश्यकता है।'

'हम सैनिक नहीं हैं?'

'नहीं, अभी नहीं। तुम्हें व्यवस्था सीखनी है, कायदा सीखना है। प्रोग्राम बनाना है और उसीके अनुसार काम करना है। तुम अपने साथियोंको मेरी सहायतासे जिस दिन सच्चे सैनिक बना लोगे, उसी दिन विजयका सेहरा तुम्हारे सिर बंध जायगा।'

विल्लाने यह बात मान ली। उसके साथी इतने अच्छे सैनिक बन गये, मानो वे कभी डाकू थे ही नहीं। मादीरो और विल्लाने नगरके बाद नगर और ग्रामके बाद ग्राम जीतने शुरू कर दिये। थोड़े ही दिनोंके बाद सारा मेक्सिको मादीरो और विल्लाके हाथोंमें आ गया। विल्लाने मादीरोका नाम प्रजातन्त्रके सभापति-पदके लिए सबके सामने पेश किया और सबने उसे स्वीकार कर लिया।

मादीरोने विल्लाको बुलाकर कहा—'अब तुम्हारा काम हो गया। अब देशमें शान्तिकी स्थापना होनी चाहिए, इस-लिए अपने सब सैनिकोंसे कह दो कि वे अब ग्रामोंमें जाकर किसानोंका काम करें।'

'और तुम मेक्सिको नगरमें बिना सैनिकोंके ही प्रवेश करोगे?'



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'हां !'

'विल्लाके बिना भी ?'

'विल्लाके बिना भी ।'

'विल्लाके बिना भी ! वह विल्ला, जो तुम्हें प्राणोंसे भी अधिक प्यारा है । जो सदा शत्रुओंसे तुम्हारी रक्षा करेगा ।'

'मेरे शत्रु ?'

'हां ।'

'कहां ?'

'सब जगह ! अत्याचारियोंने इस समय सर झुका दिया है । लेकिन समय पाते ही वे तुम्हारा अनिष्ट करनेसे न रुकेंगे ।'

'तुम मेरी चिन्ता न करो, विल्ला ! इन सैनिकोंके साथ तुम जाओ । इनमें शान्ति-स्थापनाके लिए तुम्हारी बड़ी जरूरत है । तुम्हारे एक इशारेपर ये शेरकी तरह दहाड़ते थे । तुम्हारे ही इशारेपर ये गाय बनेंगे !'

'अच्छा, मैं जाता हूं । लेकिन याद रखना, तुम्हारा पहला काम है, किसानोंको जमीन वापस देना !'

'इसके लिए मैं प्रतिज्ञा करता हूं ।'

[ ५ ]

मादीरोका सबसे पहला कार्यक्रम था किसानोंको भूमि वापस देना । परन्तु उसकी कौन्सिल उससे इस बातमें सहमत न हुई । मादीरोने साफ कह दिया कि उसका कार्यक्रम कौन्सिलको मानना ही पड़ेगा । कुछ दिनों तक इसी प्रकार तनातनी रही ।

कौन्सिलमें पास्कल नामका एक व्यक्ति था । मादीरो और विल्लाने जिस समय देशको अत्याचारियोंसे छुड़ानेके लिए युद्ध किया था, उस समय पास्कल भी मादीरोके साथ था, परन्तु किसी दूसरी ही आकांक्षासे । वह स्वयं मेक्सिकोका सभापति बनना चाहता था । जब उसकी यह आकांक्षा पूरी न हुई, तो वह अन्य उपायोंसे मादीरोका विरोध करने लगा । वह जानता था कि मादीरोका कार्यक्रम विल्लाके दिमागकी उपज थी । वह यह भी जानता था कि मादीरोके ऊपर विपत्ति आयी सुनकर विल्ला फिर दल-बल-सहित उसकी सहायताके लिए आ चढ़ेगा । इसलिए उसने शान्तिसे रहनेवाले विल्लापर झूठा अभियोग लगाकर उसे देशनिकाला दिलवा दिया । अभियोग ऐसा था कि मादीरो भी उसका विरोध न कर सका ।

जब विल्ला रास्तेमेंसे निकल गया, तो पास्कलने सेनापतियोंको अपनी ओर मिला लिया और एक दिन मादीरोके भवनपर चढ़ाई कर दी ।

'कौन्सिलके हुक्मसे तुम पदच्युत किये जाते हो ।' पास्कल बोला ।

'अगर कौन्सिलको मेरी सेवाओंकी आवश्यकता नहीं है, तो मैं खुशीसे पदत्याग करनेको तैयार हूं ।' शान्तिपूर्वक मादीरोने उत्तर दिया ।

'केवल यही नहीं !'

'फिर और क्या है ?'

'तुम्हारा प्राण ! कौन्सिल उसे भी लेना चाहती है ।'

'अभी ?'

'अभी ।'

'मैं उसके लिए भी खुशीसे तैयार हूं ।'

'अगर तुम किसी मित्रको कोई सन्देश.....'

'मेरा कोई मित्र नहीं है । बस एक मित्र था, उसे मेरी मूर्खतासे ही देशके बाहर जाना पड़ा । अगर वह मेरी बात सुन सकता, तो मैं उससे कहता कि मैं उसीकी इच्छा पूरी करनेके लिए मर.....'

मादीरोका वाक्य पूरा न हुआ था कि पास्कलकी गोलीने उसे सदाके लिए चुप कर दिया !

[ ६ ]

मादीरोके खूनका समाचार विल्लाको मिला, तो वह दांत पीसने लगा । अब उसने समझा कि पास्कलने उसे क्यों देशनिकाला दिया था । मादीरोसे उसे बड़ा स्नेह था । परन्तु उससे भी अधिक स्नेह उसे उन अभागे किसानोंसे था, जो जीतकर भी अब हारेके समान थे । अब कौन्सिलमें उनके पक्षमें बोलनेवाला कोई भी न था ।

जिन्होंने अपना रक्त बहाकर अत्याचारी शासनका अन्त किया, उनको उस रक्तके बदलेमें कुछ भी न मिला । और जिन्होंने रक्तकी एक बूंद भी न गिरायी, वे राज्यके मालिक, किसानोंके भाग्य-विधाता बन बैठे ।

विल्लाका खून खौलने लगा । उसके शरीरमें बदलेकी अग्नि फिर प्रज्वलित हो गयी । गांव-गांवमें फिरकर वह अपने अनुयायियोंको इकट्ठा करने लगा । 'विल्लाको तुम्हारी जरूरत है !', 'विल्ला तुम्हें पुकार रहा है ।' इन वाक्योंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ग्रामोंका वायुमण्डल गूंजने लगा। लोगोंने इधर-उधरसे अपने अस्त्र-शस्त्र निकाले। फिर युद्ध, फिर बदला। फिर विल्ला और उसके पीछे सहस्रों किसान। ग्रामपर ग्राम और नगरपर नगर विल्लाके सामने सर झुकाने लगे। विल्ला विजयी हुआ और पास्कल कैदी।

'तुझे मालूम है, पास्कल, तूने मादीरोको छलसे मारा और किसानोंके साथ विश्वासघात किया है!' विल्लाने सामने बंधे हुए पास्कलसे पूछा।

'मैं सैनिक हूं, तेरी तरह डाकू नहीं। मैं मरनेको तैयार हूं। गोलियां तैयार करा!'

'तेरे लिए गोलियोंकी जरूरत नहीं!' यह कहकर विल्लाने पास ही रखी हुई एक बोतल खोली और कहा—'यह शहद है। और सामने देख, शहदकी मक्खियां हैं। मालूम है शहदकी मक्खियोंको शहद बहुत अच्छा लगता है?'

पास्कल कांपने लगा। परन्तु उसके चिल्लानेपर भी सैनिकोंने उसके शरीरपर शहद लगाकर मक्खियोंके पास डाल दिया।

दूसरे दिन विल्ला मेक्सिको देशका सभापति होकर मेक्सिको नगरमें प्रविष्ट हुआ।*

* 'विवा विल्ला' नामक अमेरिकन फिल्मके कथानकके आधारपर। —लेखक

---

# वसन्त-स्वप्न

यौवन-मदमाती रूप-राशि!
ओ खोल द्वार—
बस एक बार।
नभमें प्रफुल निशिनाथ चन्द्र,
कृष्णा दिग्वधुओंके रसाल
चुम्बन करता है अधर-बिम्ब
फैला निज शत-हिम-किरण-जाल।
हंसती तारावलियां अपार।
बस एक बार,
यौवन-मदमाती रूप-राशि,
ओ खोल द्वार।
ऊंचे भवनोंके शिखर चूम,
कलकल उज्ज्वल सरिता-जलपर,
धर चरण प्रतीची ओर देख,
पुलकित हिय निशि अभिसार-चतुर,
जाती कर गिरि वन सघन पार।
बस एक बार,
यौवन-मदमाती०
निर्जन थल कोमल पटल मूंद,
सोती थीं मृदु कलियां अजान।
मलयानिलने आ परस अङ्ग,
बरबस यौवन-रस किया पान।
आया मन्थर ले गन्ध-भार।
बस एक बार०
सोये प्रेमी भुज-पाश बांध,
उड़ते अधरोंपर स्वर्ण-स्वप्न।
डाली-डालीमें पड़ा फूट,
उल्लसित प्रेम नव किसलय बन।
लाया मैं भी प्रेमोपहार।
बस एक बार०
ओ खोल, शीघ्र होगा प्रभात,
फीके होंगे नभके उडुगन।
ज्योत्स्ना-सिञ्चित निशि-वक्षस्थल-
से दूर करेगा उदित अरुण,
यह नव-वसन्त-सुख-स्वप्न-भार।
बस एक बार०
पल-पलमें यौवन रहा छलक
जागी नव आशा, नव हुलास।
लहरें लेता है प्रेम-सिन्धु,
जागी प्राणोंमें तीव्र प्यास।
दे प्रेम-दान, जीवन उबार।
बस एक बार,
यौवन-मदमाती रूप-राशि!
ओ खोल द्वार।

—श्री रामविलास शर्मा, बी० ए० (आनर्स)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सारके लोकमतका रहस्य

एक 'प्रत्यक्षदर्शी'

आज सारके लोकमत-संग्रहका परिणाम अखबारोंमें प्रकाशित हो गया। पर उसीके आधारपर यदि हम यह समझने लगें कि इससे सारका भाग्य-निपटारा हो गया अथवा उसकी समस्या हल हो गयी, तो यह हमारी बहुत बड़ी भूल होगी।

यह सारा संसार जानता है कि सारमें रहनेवाली जनता जर्मन है। यदि सारका प्रश्न केवल यह होता कि वहांके रहनेवाले जर्मन लोगोंसे एक विशेष दिन उनकी मातृभाषा जर्मनमें यह राय ले ली जाये कि वे जर्मन हैं या नहीं, तो इस समस्याका हल हो जाना कोई वैसी विशेष घटना नहीं कि सारे संसारका ध्यान उसकी ओर खिंच सके।

किसीने कहा कि अंगरेज सोसूलके तेलकी खानोंपर कब्जा करनेका अपना इरादा पक्का कर चुके हैं। इस बातका उन्होंने हंसते हुए मजाकके रूपमें उत्तर दिया—"हमें तेलकी क्या आवश्यकता? हमारे पास विद्युत्-शक्ति (एलेक्ट्रिसिटी) है।" उस समय क्लिमेन्सोको आवश्यकता थी कोयलेकी। उन्हें यह भी विदित था कि सारपर अधिकार जमानेका अर्थ कोयलेपर अधिकार जमाना है। इसी कारणसे उन्होंने इस बातकी भरपूर चेष्टा की कि सार फ्रान्सीसी लोगोंके अधिकारमें रहे।

क्लिमेन्सोकी नीतिका ही यह परिणाम निकला कि सारके

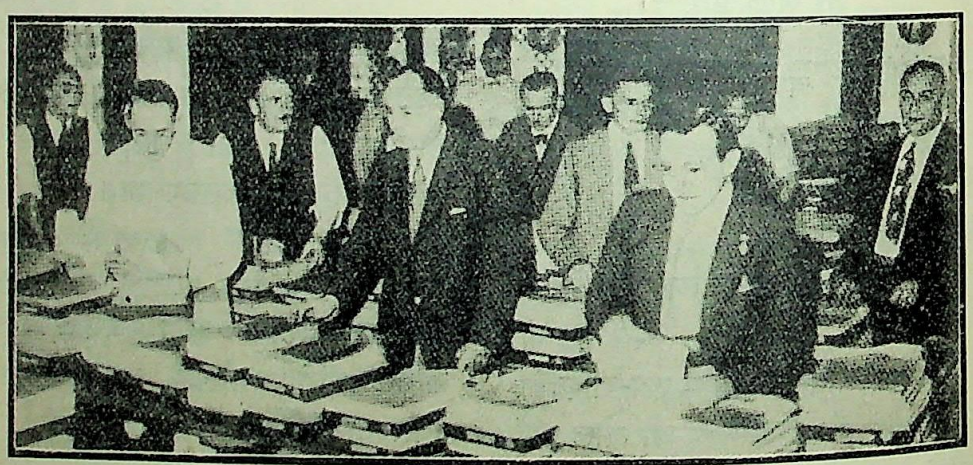

लोकमत-संग्रहके अफसर सारके १९२० के पहलेके निवासियोंकी सूची देख रहे हैं। इसके बादके आनेवालोंको मत देनेका अधिकार नहीं था।

जो लोग यह समझे बैठे हैं कि सारकी समस्या जर्मनी तथा फ्रान्सके बीच अपने-अपने निजी स्वार्थोंका झगड़ा है, वे भी इस प्रश्नको भली भांति नहीं समझ पायेंगे। हां, इस प्रश्नका आरम्भ इन्हीं निजी स्वार्थ-पूर्तिके झगड़ोंसे हुआ, इसमें कोई सन्देह नहीं। इस प्रश्नका भली भांति खुलासा करनेके लिए इस झगड़ेपर हम भी एक सरसरी दृष्टि डालेंगे और इसके बाद वास्तविक समस्याकी विवेचना करेंगे।

जिस समय महायुद्धके बाद वर्सैलकी सन्धि लिखी जा रही थी, फ्रान्सके धुरन्धर राजनीतिज्ञ मोशिये क्लिमेन्सोसे कोयलेकी खानोंपर फ्रान्सका आधिपत्य मान लिया गया और वहांका कोयला फ्रान्सीसी लोगोंको मिलने लगा और इसके साथ ही १५ वर्ष बाद लोकमत-संग्रह (प्लेबिसीट) की धारा भी वर्सैलकी सन्धिमें जोड़ दी गयी। इस समय निर्धारणका कारण चाहे जो भी रहा हो, किन्तु यह स्पष्ट है कि उस समय भी फ्रान्सीसी लोगोंको इस बातका पूरा पता था कि सारमें रहनेवाली जनता जर्मन है। फिर भी पन्द्रह वर्ष बाद यूरोपकी किस प्रकारकी परिस्थिति रहेगी, इसका अन्दाजा १९१९ में कौन लगा सकता था!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



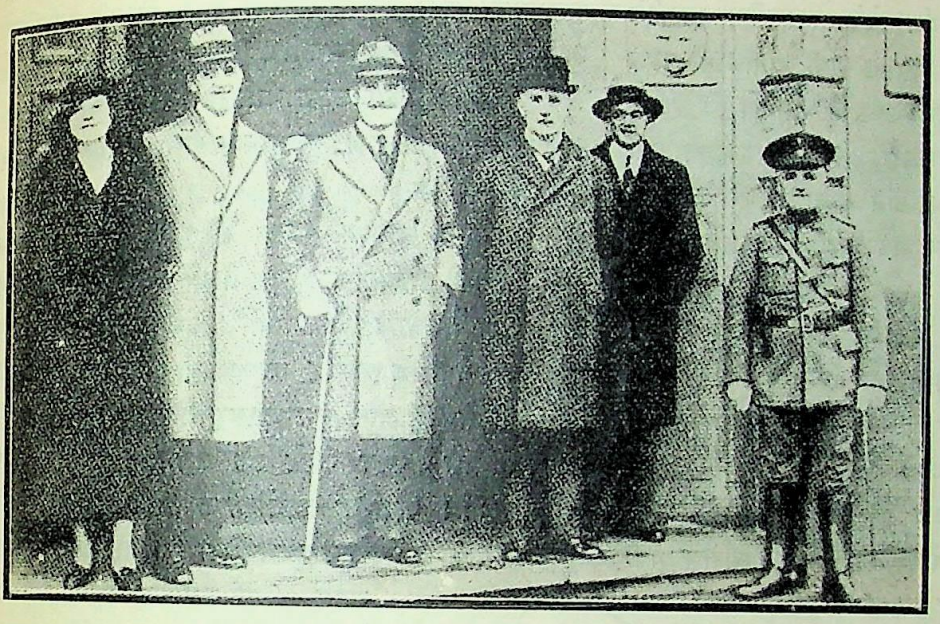

लोकमत-सम्बन्धी प्रबन्ध करनेके लिए राष्ट्र-सङ्घ द्वारा नियुक्त समितिके सदस्य।

सारकी समस्याने पिछले वर्षोंके यूरोपीय और विशेषकर जर्मनीके राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तनोंके कारण एक दूसरा ही रूप धारण कर लिया है। अब सारमें कोयलेके लिए फ्रान्सीसी और जर्मन लोगोंके बीचका झगड़ा नहीं रह गया। दोनों देशोंके पूंजीपतियोंने आपसमें समझौता कर लिया है और फिलहाल यह झगड़ा मुल्तवी रखनेका निश्चय कर लिया है।

अब सारमें जर्मन ही जर्मन लोगोंके विरुद्ध लड़ रहे हैं। जिन लोगोंने वर्सैलकी सन्धिमें लोकमत-संग्रहकी धारा जोड़ी थी उन्होंने भी उस समय इस बातका अनुमान नहीं किया था कि यह लोकमत एक वर्ग-संग्रामके रूपमें परिणत हो जायगा। इस संग्रामका मुख्य कारण नात्सी लोगोंके हाथोंमें जर्मनीकी राज्यशक्तिका आ जाना है। जर्मनीके मजदूर वर्ग तथा साधारण किसानोंपर आज जो अत्याचार हो रहे हैं, वहांकी जेलोंमें जो हजारों निरपराध कैदी नात्सी लोगोंकी पाशविक बर्बरताके शिकार हो रहे हैं, उसीसे अपनेको बचानेके लिए सारके जाग्रत मजदूरोंने जर्मनीके साथ न मिलनेका निश्चय कर लिया था। इसी उद्देश्यसे उन्होंने वहांपर अपना 'स्वातन्त्र्य-सङ्घ' भी कायम कर लिया था जो अभी भी जीवित है और जीवित रहेगा।

इस सङ्घका विरोधी जर्मन नात्सियों द्वारा कायम किया हुआ 'जर्मन-सङ्घ' है। इस सङ्घके नेता कहा करते हैं कि उनके अनुकूल ९० प्रतिशत मत आये हैं और उनके विरुद्ध जो दस प्रतिशत लोग हैं वे केवल यहूदी, मार्क्सवादी तथा देश-द्रोही हैं। किस प्रकार ये ९० प्रतिशत मत उनके पक्षमें आये, इसपर भी थोड़ा विचार करना चाहिए।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, सार-निवासी यदि अपनेको जर्मन होना स्वीकार करते हैं तो इसमें कोई अस्वाभा-

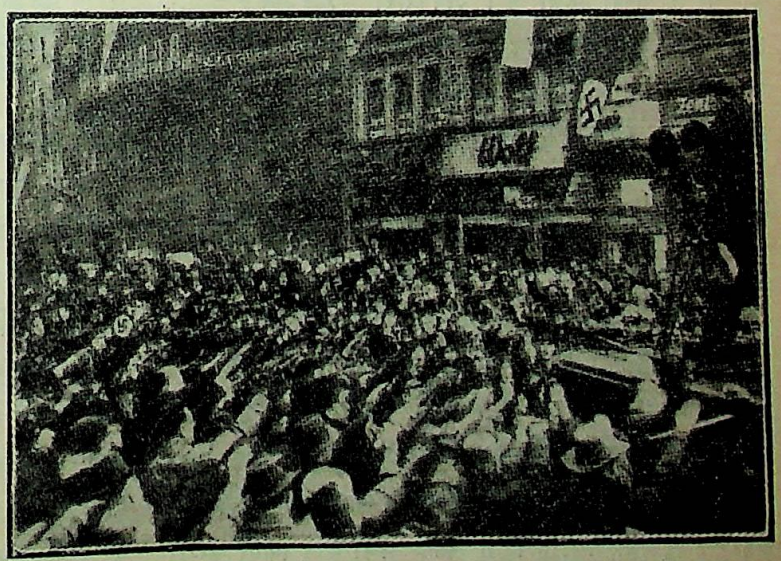

लोकमतका निर्णय जान लेनेपर देशभक्त जर्मनोंकी विराट भीड़ विजयोल्लासमें हिटलरका अभिवादन कर रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विक बात नहीं है। पर जर्मन होने तथा हिटलरशाहीके अधीन रहनेमें अन्तर है, यह बात वे भली भांति नहीं समझ पाये और न इस बातके समझानेका कोई जरिया ही जाग्रत मजदूरोंके हाथोंमें था। दूसरी ओर नात्सियोंको पूरी स्वतन्त्रता थी। देशके नामपर भ्रम फैलाकर, घूस दे, जाल-फरेब रच तथा आतङ्क फैलाकर मतदाताओंको अपने अनुकूल बनानेकी उन्हें स्वतन्त्रता थी। छोटे-छोटे शहरों तथा गांवोंमें उन्होंने अपने विरोधियोंकी फिहरिश्त तैयार कर ली है। जिन घरोंमें नात्सियोंके विरोधी रहा करते हैं उनपर रातको अक्सर ही हमला कर दिया जाता है। गुमनाम धमकीके खत तो उन्हें प्रायः ही भेजे जाया करते हैं।

इस प्रकार धमकीके कितने ही खत मैंने अपनी आंखों देखे हैं। छोटे-मोटे परिवर्तनोंके सिवा उनका सारांश प्रायः एक प्रकारका ही रहा करता है। कभी-कभी तो ये पत्र भद्दे तथा घृणित शब्दोंसे बेतरह भरे होते हैं। इस प्रकारके एक सामान्य पत्रका अभिप्राय निम्न शब्दोंमें व्यक्त किया गया था—

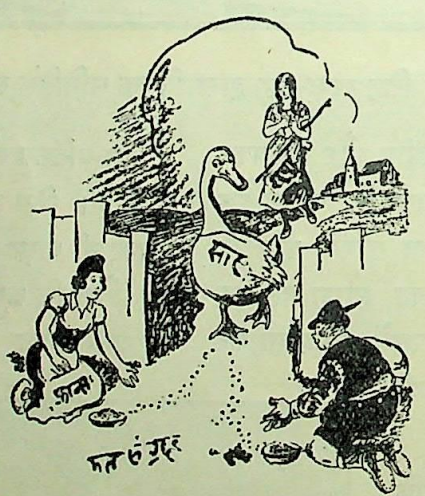


"तू अपनी सूअरोंकी नाक वहां घुसेड़ रहा है जहां कि उनका स्थान नहीं। सार जर्मन लोगोंका सच्चा दोस्त है, पर तू गन्दा कुत्ता है। अब तेरी जिन्दगीके दिन समाप्त हो चले हैं। अभीसे भगकर फ्रान्समें शरण ले, नहीं तो तेरा पेट फाड़कर अंतड़ियां निकाल डाली जायंगी और उनपर हम नृत्य करेंगे। हिटलर विजयी हो।"

ऐसी धमकियोंसे बूढ़े और बच्चे तक भी नहीं बच पाये। एक बूढ़ी औरत जिस समय एक नात्सीकी दूकानमें कुछ खरीदने आयी, उसे उत्तर मिला—"तू देश-द्रोही है, तेरे हाथ हम सौदा नहीं बेचते।" जब वह घर लौटी, तो उसने देखा कि उसका नाती रो रहा है। पूछनेपर उसे मालूम हुआ कि स्कूलमें शिक्षकने उससे भूगोल-सम्बन्धी कोई प्रश्न पूछा जिसका उत्तर भी उसने ठीक-ठीक दिया था। इसपर शिक्षकने कहा—"तू बड़ा गधा है। तू सबक क्यों याद किया करता है? तुझे मालूम नहीं, कल तेरा बाप जेलमें ठूंस दिया जायगा और तू यहांसे निकाल बाहर किया जायगा। यहूदी, साम्यवादी तथा उसी प्रकारके सभी विश्वास-घातियोंको मृत्यु-दण्डकी सजा दी जायगी।"

इन धमकियोंके अलावा नात्सियोंने बहुत प्रकारके छल-कपटका उपयोग किया। उनके पास सभी दलोंके लिए वादे थे। वे कहा करते—

"यदि तुम साम्यवादी हो तो तुम्हें सारके जर्मनीके साथ मिलनेकी बातपर अपनी स्वीकृति देनी चाहिए, तभी तुम्हारी पार्टी मजबूत हो पायेगी। इसके अलावा यह तो भाईचारा नहीं कि तुम्हारे साम्यवादी भाई तो जर्मनीकी जेलोंमें सड़ते रहें और तुम भगकर फ्रान्सकी शरण लो।" बेकार लोगोंसे वे कहा करते कि जर्मनीमें एक भी बेकार आदमी नहीं। कैथलिक लोगोंको कहते कि तुम्हारे बिशपने तुम्हें जर्मनीको मत देनेका हुक्म दिया है। प्रोटेस्टेण्ट लोगोंसे कहते—"हम कैथलिक लोगोंके विरोधी हैं।" छोटे-छोटे दूकानदारोंके सामने वादा करते—"हम बड़ी-बड़ी दूकानें बन्द कर देंगे जिसमें तुम्हें मुनाफा हो।" किसानोंसे वादा करते—"हम खाद्य पदार्थकी आमदनी रोक देंगे जिसमें तुम्हें मुनाफा होगा।" इत्यादि।

अब यहां यह प्रश्न उठता है कि आखिर नात्सी किसके हकोंके लिए, किसकी स्वार्थ-पूर्तिके लिए इतना सब कर रहे हैं? उनके कार्योंका सूत्र कहांसे खींचा जा रहा है?

सारे सार प्रदेशमें एक नाम चारों ओर सुनाई देता है। किसीसे पूछ देखिये या वहां लगे हुए तख्तोंपर पढ़ लीजिये—इस बैङ्क, कारखाने, खान, अखबार, सिनेमा, व्यापार आदि-का कौन मालिक है अथवा वह किसके हाथोंमें है? आपको सदा ही उत्तर मिलेगा—"हेर रेखलिङ्ग।" ये ही रेखलिङ्ग जर्मन दलके नेता हैं तथा लोगोंको जर्मनीके लिए वोट देनेके लिए कल, बल, छलसे बाध्य किया करते हैं। सारमें हिटलर-शाहीके आ जानेसे मजदूरोंका संहार होना निश्चित है; पर हेर रेखलिङ्गका फायदा भी इसीमें है, इसीलिए वे नात्सी लोगोंकी धनसे सहायता किया करते हैं तथा उनके कार्योंका सूत्र अपने हाथोंमें रखे रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इन रेखलिङ्ग महाशयकी वार्षिक आयकी रकम लाखोंमें गिनती की जाती है। फ्रान्सीसी लोगोंके साथ उनकी अच्छी तिजारत चला करती है। युद्धोपयोगी इस्पात, जल-सेनाके लिए आवश्यक जहाजोंकी सामग्री, तोप आदि तथा उनका मसाला आदि सभी चीजें फ्रान्सके लिए जुटानेके कार्यमें रेखलिङ्ग महाशय उसके बहुत ही बड़े ठीकेदार तथा दलाल हैं। ये ही जहाज और तोपें, जो आज फ्रान्सको दी जा रही हैं, किसी दिन जर्मनीपर हमला कर दे सकती हैं। पर नहीं, रेखलिङ्ग महाशय यह कार्य देशके नामपर कर रहे हैं। उनसे बढ़कर बड़ा जर्मनीका भक्त अथवा राष्ट्रभक्त जर्मन आज सारे सार प्रान्तमें और कोई दूसरा नहीं मिलेगा।

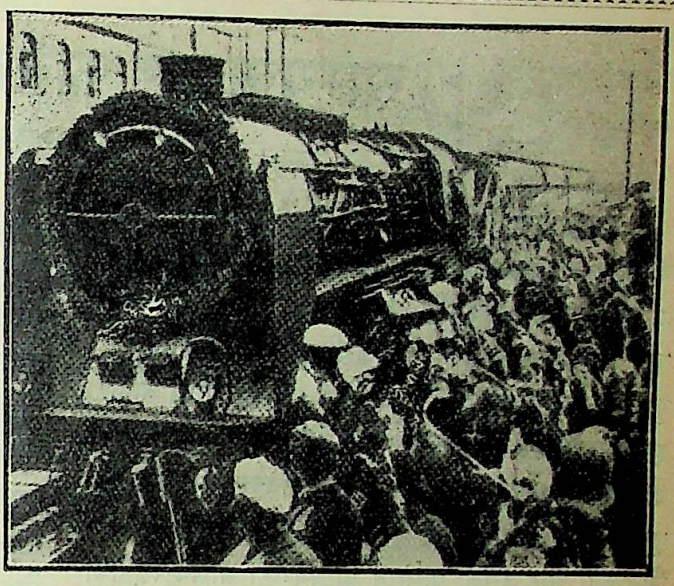

एक रेलवे-स्टेशनका दृश्य—ट्रेन मतदाताओंको सारसे वापस लेकर स्टेशनपर पहुंच रही है।

आज ये हेर रेखलिङ्ग तथा उनका जूठन खानेवाले नात्सी नेता भले ही जनताकी आंखोंमें धूल झोंकनेमें समर्थ हो जायें, पर अधिक दिनों तक वे मजदूर तथा किसानोंको भुलावेमें डाले रखनेमें समर्थ नहीं हो सकेंगे। सारकी जिस समस्याने संग्रामका रूप धारण कर लिया है वह इस धोखेकी टट्टी लोकमत-संग्रहसे नहीं समाप्त की जा सकेगी। यह समस्या उसी दिन हल होगी जिस दिन उस प्रदेशके लूट जानेवाले लोग अपने लूटनेवालोंको सदाके लिए लोप कर देंगे।

लुचेर्न ( स्विजर लैण्ड )
१६-१-१९३९

---

# निरुपम

श्वेत कुन्दके नव मुकुलोंमें
मिला मधुरिमाका आभास
अधरोंपर अनुराग निरञ्जित
पाया सरसीरुहका हास।

रोम-रोममें भरा नवागत
ऋतुपतिका यौवन-उल्लास
उमड़ रहा कुन्तल-पाशोंसे
रजनी गन्धाका मधुवास।

लहराता अनन्त अन्तरमें
सागरका सुनील विस्तार
नयनोंकी राका-रजनीमें
दीख पड़ी ज्योत्स्ना साकार।

यों तो, पृथक्-पृथक् हैं शोभित
अम्बरमें रवि-शशि-नक्षत्र;
देव! कहींपर, मिलीं न मुझको
सारी उपमाएं एकत्र॥

—श्री आरसी प्रसाद सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# साम्यवादपर फासिज्मकी विजय

श्री कृष्णचन्द्र

गत यूरोपीय महासमर-कालमें मित्र-राष्ट्रोंके राजनीतिज्ञोंने युद्धका औचित्य सिद्ध करते हुए बार-बार इस बातकी घोषणा की थी कि लोकसत्ता और जनताकी स्वतन्त्रता तथा उसके अधिकारोंकी रक्षाके लिए ही वे युद्धमें शामिल हुए हैं, युद्ध द्वारा वे कोई स्वार्थ-साधन नहीं करना चाहते। इन घोषणाओंके परिणाम-स्वरूप युद्धके बाद नवगठित राष्ट्र—पोलैण्ड, जेकोस्लोवेकिया और युगोस्लेविया आदि—पश्चिमी यूरोप और अमेरिकाकी देखादेखी प्रजातन्त्रके वर्तमान सिद्धान्तों और उसकी वर्तमान पार्लामेण्टरी शासन-पद्धतिको अपनानेमें लग गये। उस समय यूरोपके अनेक राजनीतिज्ञ यह सुख-स्वप्न देखने लग गये थे कि इंगलैण्ड, फ्रान्स और अमेरिका द्वारा प्रवर्तित, परिष्कृत और विकसित राज्य-संस्थाओंका विकास सारे सभ्य संसारमें हो जायगा और प्रजातन्त्र-शासन-प्रणालीकी जड़ इतनी मजबूत हो जायगी कि और किसी दूसरी शासन-प्रणालीका अस्तित्व कहीं दिखाई न देगा।

## साम्यवाद और फासिज्म

ठीक इसी समय न केवल प्रजातन्त्रकी आधारभूत भावनाओंको गहरा धक्का लगा और उसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन होने लगे, किन्तु प्रजातन्त्रको भी पलटनेका प्रयत्न शुरू हो गया। नवयुगके आचार्य लेनिनने तो रूसमें केवल प्रजातन्त्रीय भावनाओं, सामाजिक संस्थाओं तथा पार्लामेण्टरी शासन-पद्धतिमें क्रान्तिकारी परिवर्तन किये, परन्तु इटलीमें वर्तमान डिक्टेटरशिप ( Dictatorship ) के पिता मुसोलिनीने प्रजातन्त्रकी पद्धतिको ही पलटनेका षड्यन्त्र शुरू कर दिया, जिसमें वह आज बहुत-कुछ सफल भी हो चुका है। लेनिनका प्रयत्न सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओंकी आधारभूत वर्तमान धारणाओंमें क्रान्तिकारी परिवर्तन करनेके लिए था, परन्तु मुसोलिनीका सामाजिक संस्थाओंसे कोई सरोकार नहीं, उसका क्षेत्र राजकीय संस्थाओंके सङ्गठनमें क्रान्तिकारी परिवर्तन तक ही सीमित समझना चाहिए।

## साम्यवादका उद्देश्य

मार्क्सवाद ( Marxism ) या कम्यूनिज्म ( Communism ) का उद्देश्य केवल संसारके सभी राष्ट्रोंके मजदूर-प्रजातन्त्रोंको एक सङ्घके सदस्य बनाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वह इससे भी आगे जाना चाहता है। वह तो सारे संसारको एक इकाई बनाना चाहता है, जिसमें किसी राष्ट्रका पृथक् अस्तित्व न रहे। एक राष्ट्रसे दूसरे राष्ट्रका कोई भेद भी मार्क्सवाद नहीं देखना चाहता। वह तो सारे संसारका विभाजन केवल एक सिद्धान्तपर चाहता है और वह है उत्पादन और उत्पादन-विधिकी शक्तियोंके अनुपातपर बने हुए आर्थिक वर्गोंका सिद्धान्त। 'संसारके मजदूरो, एक हो जाओ' उसका आदर्श है। वह तो देशभक्ति और राष्ट्रीयताकी सीमाको तोड़कर सम्पूर्ण संसारके मजदूरोंको एक करना चाहता है। उसे हम सार्वभौम आन्दोलन कह सकते हैं। वर्तमान सामाजिक श्रेणियोंको भी वह तोड़ना चाहता है। वह संसारका श्रेणी-रहित एक समाज चाहता है, जिसके शासन-प्रबन्धकी सुविधाके लिए हम कई विभाग कर सकते हैं।

## प्रजातन्त्रका उद्देश्य

परन्तु दूसरी तरफ प्रजातन्त्रका वर्तमान आधारभूत सिद्धान्त पार्लामेण्टरी ( Parliamentary ) शासन-पद्धति अन्तर्राष्ट्रीय है, सार्वभौम नहीं। सब राष्ट्रोंका पृथक् अस्तित्व वह खोना नहीं चाहती। हां, वह सब राष्ट्रोंको सहयोगी बनाकर एक सङ्घका सदस्य जरूर बनाना चाहती है, जिससे राष्ट्रोंके वैयक्तिक स्वार्थोंका सङ्घर्ष न हो और सभी राष्ट्र एक-दूसरेसे सहानुभूति रखते हुए संसारमें शान्तिकी स्थापना कर सकें। इसमें यह मान लिया जाता है कि प्रत्येक राष्ट्रकी सरकार अपने राष्ट्रकी जनताकी प्रतिनिधि है और उसके विचार वहांकी जनताके ही विचार हैं। इसीलिए सैद्धान्तिक दृष्टिसे यह भी मानना पड़ता है कि प्रत्येक राष्ट्रकी सरकार ऐसी होनी चाहिए, जिसमें प्रजाके प्रतिनिधियोंका पूरा हाथ हो। राष्ट्रसङ्घ भी अन्तर्राष्ट्रीय पैमानेपर एक पार्लामेण्ट ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मार्क्सवादके विपरीत राष्ट्रसङ्घ प्रत्येक राष्ट्रका पृथक् अस्तित्व कायम रखता है। वह श्रेणियों और जातियोंके विभागको भी नष्ट नहीं करना चाहता।

पार्लामेण्टरी शासन-पद्धति और राष्ट्र-सङ्घके साथ-साथ सब राष्ट्रोंमें अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्वकी एक भावना भी जन्म ले रही है, जो यह चाहती है कि प्रत्येक राष्ट्र अपने हितोंका बलिदान करके भी अन्तर्राष्ट्रीय हितको ही सर्वोपरि माने। यद्यपि इस भावनाने अभी तक स्थूल रूप धारण नहीं किया और इसीलिए राष्ट्रसङ्घको निरस्त्रीकरण आदि विषयोंमें सफलता नहीं मिली, तथापि इस दिशामें किये गये प्रयत्न इसके प्रमाण हैं। अपने राष्ट्रके हितको ही सर्वोपरि न माना जाय, यह भावना ही इसके मूलमें काम कर रही है।

## फासिज्मका उद्देश्य

कोलबन्धु* लिखते हैं :—"किन्तु फासिज्म (Facism) राष्ट्रसङ्घमें सम्मिलित होता हुआ भी राष्ट्रसङ्घकी इस उदार भावनाको (जो अभी तक उसके प्रशंसकोंमें ही पायी जाती है, सदस्योंमें नहीं) भी माननेके लिए तैयार नहीं। वह अपने राष्ट्रके हितको ही सर्वोपरि मानता है।...वह राष्ट्रसङ्घका कोई भी (क्रियात्मक दृष्टिसे तो आज सभी राष्ट्र उसकी अवहेलना कर रहे हैं) ऐसा आदेश माननेके लिए तैयार नहीं होगा, जिससे राष्ट्रके व्यक्तिगत स्वार्थोंको क्षति पहुंचे।... फासिज्म मार्क्सवादका तो और भी भयङ्कर शत्रु है, क्योंकि वह राष्ट्रीयता और सैनिकताका भी सम्पूर्ण नाश कर देना चाहता है, जिनपर फासिज्म ठहरा हुआ है। फासिस्ट अन्तर्राष्ट्रीयताके सब रूपोंका विरोध करता है। परन्तु उसे अधिक घृणा कम्यूनिज्मसे है जो पृथक् राष्ट्रोंके अस्तित्वका ही लोप कर देना चाहता है।" एक शब्दमें हम उसे 'उग्र राष्ट्रवाद' कह सकते हैं।

इस तरह यूरोपमें एक साथ तीन विभिन्न आन्दोलन चल रहे थे। एक तरफ कुछ राष्ट्र प्रजातन्त्रके वर्तमान रूप पार्लामेण्टरी शासन-पद्धतिको अपना रहे थे, दूसरी तरफ लेनिन इस पद्धतिकी आधारभूत राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थाओंमें क्रान्तिकारी परिवर्तन कर सार्वभौम एकताका प्रयत्न कर रहा था, तो तीसरी तरफ मुसोलिनी अन्तर्राष्ट्रीयता व पार्लामेण्टरी शासन-पद्धतिका विरोध करते हुए सार्वभौम एकताके आदर्शको नष्ट करनेपर तुला हुआ था।

## फासिज्मका प्रादुर्भाव

ऐसे समय जब एक तरफ लेनिन रूसमें बोलशेविज्मके परीक्षणमें सफलता प्राप्त कर रहा था, फासिज्मके प्रादुर्भावकी कथा अत्यन्त अद्भुत और रहस्यमयी है। एक ओर तो संसारके अधिकांश राजनीतिज्ञोंकी विचार-धारा राष्ट्रीयताकी सीमा तोड़कर समस्त मानव-समाजके हितकी ओर जा रही थी और दूसरी ओर इटलीमें इसकी प्रतिक्रिया उत्पन्न हो रही थी।

फासिज्मके जन्मकी एक और भी विशेषता है। प्रायः प्रत्येक 'वाद' के कार्यान्वित होनेसे पूर्व उसकी दार्शनिक विवेचना की जाती है—सम्पूर्ण जनताकी विचार-धाराको उसके अनुकूल बनानेकी कोशिश की जाती है, तभी उसे क्रियात्मक रूप देना सरल होता है। फ्रान्सकी राज्यक्रान्तिसे पूर्व तद्विषयक साहित्य उत्पन्न हो गया था। परन्तु फासिज्मकी उत्पत्तिसे पूर्व उसका कोई नया साहित्य पैदा नहीं हुआ, उसके लिए किन्हीं नये सिद्धान्तोंकी व्याख्या नहीं की गयी। कोलबन्धु प्रभृति कुछ ऐतिहासिकोंका तो कहना है कि यदि फासिज्मको दार्शनिक विचार-धारा (Philosophy) के रूपमें पहले पेश किया जाता, तो शायद वह पनप ही न सकता।

## क्षोभ व निराशाका परिणाम

फासिज्म वस्तुतः निराशा और पराजयकी मनोवृत्तिका स्वाभाविक परिणाम है। गत महासमरमें जर्मनीके परास्त होनेपर जब मित्र-राष्ट्रोंने लूटका माल आपसमें बांट लिया और इटलीको कुछ न दिया, तो इटलीमें क्षोभ और निराशाकी लहर फैल गयी। देशके एक बड़े भागके युद्धमें सम्मिलित होनेके विरुद्ध होते हुए भी इटलीकी सरकार केवल इस आशासे युद्धमें सम्मिलित हुई थी कि विजयके बाद उसे भी कई उपनिवेश मिलेंगे, परन्तु वर्सेलीजकी सन्धिमें मित्रराष्ट्रोंने उसे खूब चकमा दिया। उसे नाम-मात्रका प्रदेश देकर अच्छे-अच्छे विशाल प्रदेश स्वयं ले लिये। युद्धमें इटलीकी जो धन-जनकी अमित हानि हुई थी, उसके मुकाबलेमें उसे कुछ भी

* The Intelligent Man's Review of Europe Today—by G. D. M. Kole and M. I. Kole.



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं मिला। इससे मित्रराष्ट्रोंके विरुद्ध इटलीमें घृणा और क्रोधके भावोंका सञ्चार हो गया और जब मित्रराष्ट्र विजयकी खुशियां मना रहे थे, इटलीकी जनतामें प्रतिहिंसाकी भावना जन्म ले चुकी थी। निर्बल सरकारके विरुद्ध भी जनतामें असन्तोष तीव्र रूप धारण कर ही रहा था कि युद्धसे लौटे हुए सैनिकोंके आनेसे वह और भी बढ़ गया। उन सैनिकोंके पास कोई काम न था। सरकार इतनी विशाल सेना रख नहीं सकती थी। देशकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी न थी कि उन्हें कारखानों और उद्योग-धन्धोंमें ही काम मिल जाता। देशमें साम्यवादियोंका जोर था, कारखानोंपर उन्हींका प्रभुत्व था, पूंजीपतियोंमें उनका विरोध करनेकी क्षमता न रही थी। सबसे अधिक असन्तोष सैनिकोंको इस बातका था कि वे युद्धमें जान हथेलीपर रखकर लड़े, उनके हजारों भाई मारे गये, हजारों घायल हुए; परन्तु इसका परिणाम कुछ न निकला। उनकी विजय अपमानके रूपमें परिणत हो रही थी।

सम्भव था कि वे भी बढ़ते हुए साम्यवादी आन्दोलनमें सम्मिलित होकर रूसकी तरह एक और साम्यवादी सरकार कायम कर देते। परन्तु किसानोंको साम्यवादी बनानेमें इसलिए सफलता नहीं मिल रही थी कि डौन स्टुर्जो नामक कैथलिक नेताका उनपर बहुत प्रभाव था। वह साम्यवादका जबर्दस्त विरोधी था। बहुत समय तक साम्यवादी नेताओं और डौन स्टुर्जोके कैथलिकोंमें शक्ति-सञ्चयके लिए सङ्घर्ष चलता रहा। दोनों पक्ष काफी प्रबल थे, एक-दूसरेको देशका शासन नहीं करने देते थे। इन दोनोंके इस निष्फल सङ्घर्षमें जनता—निराश, बेकार, दरिद्र, क्षुब्ध और असन्तुष्ट जनता—किंकर्तव्यविमूढ़ हो रही थी। वह साम्यवादी नेताओं और कैथलिक डौन स्टुर्जोके नेतृत्वसे थक चुकी थी। वह अब किसी भी ऐसे नेताका साथ देनेको तैयार थी, जो उसे देशको किसी निश्चित अवस्थामें लाने और उसके सामने कोई निश्चित कार्यक्रम रखनेका आश्वासन दिलाकर इस राजनीतिक व आर्थिक अव्यवस्थाको समाप्त कर देता।

## मुसोलिनी कार्यक्षेत्रमें

जनताकी यह मनोवृत्ति थी, जब भूतपूर्व साम्यवादी बेनितो मुसोलिनी दृढ़-निश्चय और साहसके साथ कार्यक्षेत्रमें उतरा। युद्धके समाप्त होनेपर उसने इस बातका आन्दोलन जारी किया कि इटलीके औपनिवेशिक दावोंको स्वीकार किया जाय और अफ्रीकामें उसे भी फ्रान्स व इंगलैण्डके समान उपनिवेश दिये जायं। वर्सेलीजकी सन्धिसे उत्पन्न निराशा, सम्पूर्ण देशकी आर्थिक अव्यवस्था, व्यापक बेकारी और सरकारी नीतिसे उत्पन्न असन्तोषके वातावरणमें मार्च १९१९ में मुसोलिनीने फासिस्ट दलका सङ्गठन किया।

## फासिस्टोंका पहला घोषणा-पत्र

अभी तक मुसोलिनी साम्यवादी था, और इस दल (फासिस्ट) के सिद्धान्तों और उग्र साम्यवादी सिद्धान्तोंमें बहुत अन्तर न था। इसी समय युद्धसे लौटे हुए अत्यन्त असन्तुष्ट और भूतपूर्व सैनिकोंका समर्थन मिलनेसे इस दलने शीघ्र ही शक्ति सञ्चय कर ली। इस दलकी मुख्य मांग यह थी कि "आर्थिक अव्यवस्था और बेकारीको दूर कर सरकारका नये सिरेसे सङ्गठन किया जाय और उसे प्रभावशाली एवं जनताके हितमें उपयोगिनी बनाया जाय।" मुसोलिनीका कहना था कि "सरकार प्रजातन्त्र या प्रतिनिधितन्त्रके सिद्धान्तोंपर बनायी जाय, पोपका उसमें प्राधान्य न रहे। जनताके प्रतिनिधियोंकी ऐसी परिषद् बनायी जाय, जो इटलीके सामाजिक जीवनके राजनीतिक व आर्थिक आधारोंमें क्रान्ति कर दे।" मुसोलिनीने इस दलके प्रथम वक्तव्यमें "बालिग मताधिकारके आधारपर स्थापित जनताके प्रभुत्व (Sovereignty)" की घोषणा की थी। इसके अतिरिक्त विचार, धर्म, समाज, प्रकाशन व आन्दोलनकी स्वतन्त्रताकी भी मांग की गयी।

इसके अतिरिक्त किसानोंके लिए कई उपयोगी मांगें और भी की गयी थीं जिनमें यह भी कहा गया कि राष्ट्रीय सम्पत्तिका पुनः वितरण किया जाय, जमीनें किसानोंमें बांट दी जायं और कारखानोंका नियन्त्रण पूंजीपतियोंके हाथों न होकर मजदूरों तथा विशेषज्ञोंकी समितियों द्वारा हुआ करे।

यह था फासिस्टोंका प्रथम घोषणापत्र। आजकी फासिस्ट नीति और उसके उक्त घोषणापत्रमें जमीन-आसमानका अन्तर है। उस समय मुसोलिनी साम्यवादी था, प्रजाकी आवाजको सर्वोपरि समझता था, मजदूरों व किसानोंका समर्थक था। आज वह साम्यवादका सबसे बड़ा शत्रु है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## साम्यवादियोंकी असफलता

१९१९ में साम्यवादियोंका जोर बढ़ रहा था। जुलाई मासमें रूस, बावेरिया और हङ्गरीकी साम्यवादी सरकारोंके समर्थनमें एक राजनीतिक हड़ताल की गयी। इसके बाद एक साल तक इटलीमें हड़तालोंका दौरदौरा रहा। जून १९२० में धातुके कारखानोंमें हड़ताल हो गयी। कारखानोंके मालिकोंने मिलमें ताले डाल दिये। इसके उत्तरमें साम्यवादियोंने उनपर जबर्दस्ती अधिकार जमाया था। लेकिन उन्हें चलानेमें वे असमर्थ सिद्ध हुए। उनकी बढ़ती हुई शक्ति छिन्न-भिन्न हो गयी। कारखाने मालिकोंको वापस कर दिये गये और फिर पहलेके तरीकेके अनुसार मजदूर मजदूरीकी शर्तपर काम करने लगे। इस घटनाने साम्यवादियोंका प्रभाव नष्ट कर दिया। जनताने समझ लिया कि साम्यवादी देशकी समस्याको हल नहीं कर सकते। इसके बाद साम्यवादी दलमें फूट पड़ गयी और जून १९२१ में वह छिन्न-भिन्न हो गया।

## साम्यवादीसे पूंजीवादी

इस समय फासिस्ट दलकी शक्ति बढ़ रही थी। हम ऊपर कह आये हैं कि वर्सैलीजकी सन्धिसे सम्पूर्ण इटली और विशेषकर युद्धसे लौटे हुए सैनिक अत्यन्त असन्तुष्ट थे। इटलीको कोई अच्छा प्रदेश न दिया गया था, इसलिए उसमें अपमानका बदला लेनेकी भावना जोरोंपर थी। सितम्बर १९१९ में डि अनुञ्जियोंने एक सेना लेकर फ्यूम ( Fiume ) शहरपर हमला कर दिया और उसे अपने हाथमें कर लिया। सभी मित्रराष्ट्र इसे सन्धिके विरुद्ध बताते रहे। उनके सम्मिलित विरोधपर भी उसने १९२० तक शहरपरसे अधिकार नहीं उठाया। इससे इटलीकी जनता बहुत प्रसन्न थी। अन्तमें उसने उस शहरपर इटलीका अधिकार मान लिये जानेके बाद १९२१ में उसे इटलीकी सरकारी सेनाके सुपुर्द कर दिया। डि अनुञ्जियोंकी सेनाके सैनिक फासिस्ट बन गये और मुसोलिनीके दलमें जा मिले। उसकी शक्ति बहुत बढ़ गयी। फासिज्म बहुत लोकप्रिय होने लगा। सैनिकोंकी सहायतासे उसने फासिस्ट सेनाका निर्माण भी प्रारम्भ कर दिया। कारखानोंपर मजदूरोंके अधिकार करनेकी योजनाके निष्फल हो जानेके कारण मुसोलिनीको भी शायद साम्यवादी कार्यक्रममें विश्वास न रहा। उसकी योजनाओं, भाषणों व घोषणापत्रोंमें पहले जो आमूल आर्थिक परिवर्तनकी—आर्थिक क्रान्तिकी—मांग रहती थी, वह अब शिथिल होने लग गयी थी। वह साम्यवादियोंका मजाक और विरोध भी करने लग गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि कभी-कभी साम्यवादियों और फासिस्टोंमें गलियों और सभाओंमें मुठभेड़ भी होने लगी। इन मुठभेड़ोंमें प्रायः फासिस्टोंकी ही विजय होती, क्योंकि मुसोलिनीके सैनिक अधिक शिक्षित, अधिक सङ्गठित एवं अधिक नियन्त्रित थे।

साम्यवाद और फासिज्म क्रमशः एक-दूसरेसे दूर होते जा रहे थे, दोनोंमें विरोध बढ़ रहा था। फासिस्ट दलको कारखानोंके मजदूरोंसे कोई सहायता न मिल रही थी। उसमें अधिकांश वे मध्यम श्रेणीके लोग सम्मिलित होने लगे, जिनके अपने छोटे-छोटे कारोबार थे। वे साम्यवाद या समाजवादसे डरते भी थे। उन्हें भय था कि साम्यवादियोंकी सारी सम्पत्तिको राष्ट्रीय बना देनेकी योजना उन्हें नष्ट कर देगी। यद्यपि उन्हें बड़े-बड़े पूंजीपतियोंसे भी डर था कि वे कहीं प्रतिस्पर्धा द्वारा कुचल न डालें, तथापि साम्यवादको प्रधान शत्रु समझकर पहले उसे ही नष्ट करनेके लिए उन्होंने फासिस्टोंका सहयोग प्राप्त करना आवश्यक समझा। बड़े-बड़े पूंजीपतियोंने भी साम्यवादको उखाड़नेके लिए मुसोलिनीको पूर्ण सहायता दी। इससे जहां मुसोलिनीकी शक्ति बहुत बढ़ गयी, वहां फासिज्मकी नीतिमें भी बड़ा भारी परिवर्तन हो गया। मुसोलिनी पहले साम्यवादी था, पीछे वह साम्यवादके सिद्धान्तोंसे तो प्रेम करता रहा, परन्तु साम्यवादी नेताओंसे उसका विरोध हो गया। कुछ समय बाद उसकी आर्थिक क्रान्तिकी योजनामें कुछ नरमी आने लगी और अब छोटे और बड़े पूंजीपतियोंकी सहायता पाकर वह साम्यवादका शत्रु बन गया। उसका सम्पूर्ण कार्यक्रम और सारी योजना केवल राजनीतिक रह गयी। पूंजीपतियोंकी सहायता पानेके बाद शायद उसमें साम्यवादका प्रचार करनेकी हिम्मत ही न रही थी। 'अर्थस्य पुरुषो दासः'की उक्ति जब भीष्म पितामह जैसे वृद्ध और योग्य व्यक्तिपर चरितार्थ हुई थी, तब लेन-देन व सब व्यवसायोंको राष्ट्रीय कर देने और भूमिके पुनर्वितरणकी मांग करनेवाले फासिस्ट दलको अपने पञ्जेसे कैसे छोड़ती। यह दल भी अन्तमें फासिस्ट दलका समर्थक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बन गया। आज पं० जवाहरलालका यह कहना बिलकुल ठीक है कि फासिज्मके रूपमें पूंजीपति अपने जीवित रहनेके लिए अन्तिम प्रयत्न कर रहे हैं।

## प्रधानमन्त्री मुसोलिनी

ज्यों-ज्यों मुसोलिनीके नये दलकी शक्ति बढ़ती गयी, त्यों-त्यों साम्यवादियों और कम्यूनिस्टोंके साथ उनकी मुठ-भेड़ें व लड़ाइयां भी बढ़ती गयीं। सरकारमें कोई शक्ति न थी कि वह दिन-प्रतिदिन होनेवाले इन उपद्रवोंको रोक सकती। मुसोलिनीके सङ्गठित विरोध, अपने कार्यक्रमकी असफलता और आपसकी फूटके कारण साम्यवादी दलका प्रभाव नष्ट हो गया था, वह क्षेत्रसे ही बाहर निकल गया। डौन स्टुर्जोका कैथलिक दल इतना साहस न रखता था कि वह मुसोलिनीका मुकाबला करे। इटलीके राजनीतिक दलोंमें केवल फासिस्ट ही थे जिनका प्रभाव था। उन्हींमें यह साहस था कि वे राज्यकी तत्कालीन अव्यवस्था और अशान्तिको दूर कर सकें। सरकार भी यही समझती थी, इसलिए जब अक्टूबर १९२२ में फासिस्टोंने रोमकी ओर प्रस्थान किया, तब किसीने उनका विरोध न किया और बिना रक्तपातके सरकार उनके हाथमें आ गयी। मुसोलिनी प्रधानमन्त्री बन गया।

## राजतन्त्रका आश्रय

मुसोलिनीको इतनी सफलता मिलनी असम्भव थी, यदि वह अपने क्रान्तिकारी विचारोंमें परिवर्तन न करता। साम्यवादियोंका विरोधी तो वह था ही, अब उसने राजनीतिक कार्यक्रमको भी कुछ शिथिल कर दिया। रोमको प्रस्थान करनेसे पूर्व उसने घोषणा की कि राष्ट्रीय एकता कायम रखनेके लिए राजतन्त्र शासन आवश्यक है। सम्पूर्ण देशको राजामें श्रद्धा रखनी चाहिए। यही कारण था कि राजाने मुसोलिनीका विरोध नहीं किया। उसे इस समय किसी ऐसे व्यक्तिकी आवश्यकता थी, जो उस समय फैली हुई अव्यवस्था और अराजकताको दूर करनेके लिए पर्याप्त साहस, कठोरता और दृढ़ सङ्कल्प रखता हो, देशमें जिसका प्रभाव हो, जिसके पास शक्ति हो और साथ-साथ जो राजभक्त हो, राजतन्त्रको उखाड़नेकी फिक्र न करे। ये सब बातें इस समय मुसोलिनीमें विद्यमान थीं। मुसोलिनी भी इस समय साम्यवादके सिद्धान्तोंको छोड़कर उग्र राष्ट्रवादी बन रहा था। वह देशकी अव्यवस्था, अशान्ति और अराजकताको दूर कर इटलीको एक शक्ति बनाना चाहता था, इसलिए उसने राजतन्त्रका आश्रय लिया। वह यह जानता था कि राजाका विरोध करनेपर देशमें गृह-युद्ध छिड़ जायगा, जो इटलीकी रही-सही शक्तिको भी नष्ट कर डालेगा।

## निरंकुशता व दमन

इसी पारस्परिक सङ्घर्षको रोकनेके लिए मुसोलिनीने जब मन्त्रिमण्डल बनाया, तब अन्य दलोंका पूरा सहयोग प्राप्त किया। दस साल बाद हिटलरने भी अन्य दलोंके वान पेपन आदिको लेकर इसी नीतिका अनुसरण किया। अन्य दल कहनेको तो सहयोगी थे, परन्तु उनकी कोई आवाज न थी। शनैः-शनैः अन्य दलोंके सदस्य भी फासिस्ट पार्टीमें सम्मिलित हो गये। पार्लामेण्टके गैर-फासिस्ट दल मुसोलिनीसे सहमत न होते हुए भी उसकी सैनिक शक्तिसे भय खाते थे। इसीलिए १९२३ में शासन-विधानमें परिवर्तनके जो प्रस्ताव उसने रखे, वे सब स्वीकृत हो गये।

इन नये परिवर्तनोंसे मुसोलिनीकी शक्ति बढ़ती गयी। शासन-शक्ति हाथमें आनेपर वह उसका इस तरह उपयोग करने लगा कि कुछ ही समयमें वह इटलीका वास्तविक डिक्टेटर हो गया। चुनावके नियम भी बदल दिये गये थे, इसलिए १९२४ के नये चुनावमें ६५ फीसदी वोट फासिस्टोंको मिले। अब वह स्वच्छन्द था। फासिस्ट सदस्योंका काम बहस करना न था, नेताके प्रस्ताव पेश करनेपर हाथ उठाना ही उनका कर्तव्य था। कोई रोक-टोक करनेवाला न था। साम्यवादी नेता मोतिअतीने चुनावके नये नियमोंका विरोध किया, तो उसकी हत्या करा दी गयी। इससे देशमें एक बार उसके विरुद्ध असन्तोषकी लहर फैल गयी, जिसका मुसोलिनीने बड़ी कठोरताके साथ दमन किया। इस समय चुनावके नियमोंमें भी जनताके अनुकूल कुछ परिवर्तन अवश्य किये गये, लेकिन तीन सालोंके बाद वही नियम पहलेसे भी अधिक कठोर रूपमें पार्लामेण्टसे पास करा लिये गये।

उसने जनताके प्रतिनिधियोंसे भी सब शक्ति छीन ली। मन्त्री पार्लामेण्टके प्रति उत्तरदायी न रहा। सरकारकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आलोचना पत्रों व सभाओंमें गैरकानूनी करार दी गयी। फासिस्टोंके सिवा सब सङ्गठन भी गैरकानूनी घोषित कर दिये गये। इसका परिणाम यह हुआ कि और कोई दल पार्लमेण्टमें अपने प्रतिनिधि नहीं भेज सकता। अपर चेम्बरमें अभी कुलीन व धनाढ्योंका प्रभुत्व था, वे मुसोलिनीके इस निरंकुश स्वेच्छाचारको सहनेके लिए तैयार न थे, इसलिए मुसोलिनीने उक्त चेम्बरको उड़ानेका प्रस्ताव भी पास करा लिया। उसने मजदूरों व पूंजीपतियोंके स्वतन्त्र सङ्घ भी गैरकानूनी करार दिये। मजदूरोंसे हड़तालका और मिल-मालिकोंसे बन्द करनेका अधिकार छीन लिया।

## कारपोरेट शासन

अब इटलीकी शासन-पद्धति भी पहले-जैसी नहीं रही। हम ऊपर कह चुके हैं कि फासिज्म पार्लमेण्टरी शासन-पद्धतिका शत्रु है। गत पहली जुलाईसे वहांसे इस शासन-पद्धतिको उड़ाकर कारपोरेट स्टेट कायम कर दिया गया है। पूंजीपतियों व मजदूरोंके सम्मिलित प्रतिनिधियोंसे २२ कार-पोरेशन बनाये गये हैं। मुसोलिनी इन सब कारपोरेशनोंका नियन्त्रण करता है। वही इनके अध्यक्षोंको नियुक्त करेगा। इन कारपोरेशनोंको मुसोलिनीकी सम्मतिसे कानून बनानेका अधिकार सुरक्षित रहेगा। खेती, व्यापार और व्यवसायके लिए दो-दो सङ्घ ( Confederation ) और दूसरे पेशों ( वकील, डाक्टर, कलर्क आदि ) का एक सङ्घ—इस तरह सात सङ्घ और बनाये गये हैं। ये भी मुसोलिनीकी आज्ञा प्राप्त करके कानून बना सकेंगे। पार्लमेण्टरी पद्धति सर्वथा खतम ही कर दी गयी।

## फासिज्म और कम्यूनिज्म

फासिज्म और कम्यूनिज्म दोनों पार्लमेण्टरी शासन-पद्धतिके शत्रु हैं। इसलिए इस पद्धतिको नष्ट करनेके लिए लेनिनने जो-कुछ किया, मुसोलिनी भी वही कर रहा है। कारपोरेट स्टेट कायम कर उसने रूसका प्रायः पूरा ही अनु-करण कर लिया है। रूसमें भी किसानों, मजदूरों और सिपाहियोंके सङ्घ (सोवियट) विद्यमान हैं। इनका नियन्त्रण स्टालिन करता है। दोनोंकी—सोवियटों और इटलीके कार-पोरेशनोंकी—उत्पत्ति मध्यकालके गिल्ड (Guilds), वर्तमान कालीन मजदूर सङ्घ, सिण्डिकलिज्म ( Syndicalism ) आदिके मिश्रणसे हुई है। लेकिन फासिज्म और कम्यूनिज्ममें एक बड़ा अन्तर है। मुसीलिनीने रूसका एक मुख्य सिद्धान्त सम्पत्तिका राष्ट्रीयकरण—जिसपर साम्यवादका आधार है—स्वीकार नहीं किया। वह पूंजीपतियोंपर कठोर नियन्त्रण करता हुआ भी व्यक्तिगत सम्पत्तिकी संस्थाको स्वीकार करता है। इटलीमें सरकारी नियन्त्रणोंकी सीमामें कोई भी पूंजीपति अपने व्यवसायको—कारखानों और व्यापारको बढ़ाकर हेनरी फोर्ड, राकफेलर और जमशेदजी ताता बन सकता है। इसीलिए इटली पूंजीवादी देश है और रूस साम्यवादी।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मैं कुस्तुनतुनियासे कैसे भागी

बेगम हालिदा अदीब

[ बेगम हालिदा अदीब टर्कीकी एक सुप्रसिद्ध महिला हैं। टर्कीके स्वातन्त्र्य-संग्राममें आपने बड़ी वीरताके साथ मुस्तफा कमालपाशाका साथ दिया था। आप ज्वलन्त देशभक्ति एवं राष्ट्रीयताकी मूर्ति हैं और इनकी साधनामें ही आपका जीवन व्यतीत हुआ है। आपने टर्कीके सामने बराबर उच्च राष्ट्रीय आदर्श रखा जिससे जनतामें स्वतन्त्रता एवं समताकी भावना सुदृढ़ हो और राष्ट्रका भविष्य गौरवोज्ज्वल बने। स्वाधीनता-संग्राममें विजय प्राप्त करनेके बाद कमालपाशाके साथ आपका मतभेद हो गया और इसके बादसे आप टर्की छोड़कर यूरोपके विभिन्न देशोंमें प्रवास कर रही हैं। बेगम हालिदा इस समय भारत आयी हुई हैं। देशके विभिन्न स्थानोंमें आपके कितने ही भाषण हुए हैं। आपने कितनी ही पुस्तकें भी लिखी हैं जिनमें आपका "आत्म-संस्मरण" बहुत ही प्रसिद्ध है। इस पुस्तकमें टर्कीके तत्कालीन व्यक्तियों और घटनाओंपर प्रभावोत्पादक रूपमें विशद प्रकाश डाला गया है। आपके उस आत्म-संस्मरणका ही एक अंश यहां प्रकाशित किया जाता है जिसमें बेगम हालिदाने अंगरेजोंकी गिरफ्तारीसे बचनेके लिए छद्मभेषमें अपने पतिके साथ कुस्तुनतुनियासे अङ्गोरा भागनेका मनोरञ्जक वर्णन किया है। —सम्पादक ]

सन् १९२० की पन्द्रहवीं मार्चको दिनके तीन बजे मेरे घरमें हलचल-सी मची हुई थी। अली अयातुल्ला और हसन हिकमत, जो राबर्ट कालेजके मेरे छात्र थे, अब बोर्डिङ्गमें रहने जा रहे थे। इसलिए मुझपर चाहे जो-कुछ बीते, किन्तु मेरे ये दोनों लड़के तो निरापद रहेंगे। उन दोनोंके लिए दरवाजेपर गाड़ी तैयार खड़ी थी। सामान बांधकर दोनों गाड़ीपर सवार हुए और मैंने साश्रुनेत्र एवं मधुर-स्निग्धचुम्बनके साथ उनसे विदा ग्रहण की।

× × ×

वसन्तका समय था। एक दिन तीसरे पहर मैं विषण्ण-चित्तसे म्लानवदन बैठी हुई थी। रातमें आठ बजेके लगभग मेरे पति डा० अडनन पार्लामेण्टकी बैठकसे वापस लौटे। उनके चेहरेपर कृत्रिम मुसकराहटकी रेखायें अङ्कित थीं। कुछ इधर-उधरकी बातें होनेके बाद मैंने यह प्रस्ताव किया कि आज भोजनके बाद हम लोग अपनी बहन निधारसे मिलने चलेंगे। इसपर मेरे पतिने कहा कि मैं घरपर ही रहनेका वादा कर चुका हूं, क्योंकि आज ही अंगरेजोंने अपनी आकस्मिक कूटनीतिके अनुसार कार्य करनेका निश्चय किया है। "यदि वे हमें गिरफ्तार करना चाहेंगे तो हम घरपर ही आज रातको गिरफ्तार हो जायंगे और यदि नहीं तो सदाकी तरह पार्लामेण्टमें जायंगे और अंगरेज यदि उसे बन्द करना चाहेंगे तो उन्हें ही यह काम करने देंगे।" डा० अडनने कहा।

"तुम्हें दोनोंमेंसे एक भी नहीं करना होगा।" मैंने उत्तर दिया।

इसी समय मुझे एकाएक प्राचीन रोमन साम्राज्यके उन सभासदों ( senators ) की याद आ गयी जो एक ओर तो अपने-अपने स्थानपर निश्चल भावसे बैठे थे और इसी समय दूसरी ओर रोमपर विदेशियोंका आधिपत्य स्थापित हो रहा था। मैं फौरन धीर-गम्भीर भावसे कार्यव्यस्त-सी हो गयी। सबसे पहले मैंने अपने जरूरी कागजपत्रोंका संग्रह किया। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण मुस्तफा कमाल पाशाकी चिट्ठियां तथा स्वातन्त्र्य-संग्रामके सम्बन्धमें कुछ आवश्यक पत्र थे जिन्हें मैंने महमूरी अबलाको सुरक्षित रूपसे रखनेके लिए दे दिये। फिर कोट पहनकर और बुर्का डालकर मैंने डा० अडननका हाथ पकड़ा। "मैं वादा कर चुका हूं", डा० अडननने विरोध-सूचक स्वरमें कहा; किन्तु मैंने उनसे साफ साफ कह दिया कि इस प्रकार वादा करना मूर्खताका काम है। इस समय जितनी ही अधिक संख्यामें हम लोग अनातोलिया चले चलें, उतना ही अच्छा है। यह समय ऐसा नहीं है कि हम मध्ययुगके वीर काव्योंके पात्रोंकी तरह विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



करें और आचरण करें। यह जानते हुए कि डा० अडननको अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग करनेपर कितना दुःख होगा, उनके सामने सिर उठाना मेरे लिए सचमुच बड़ा ही कठिन हो रहा था, फिर भी मुझमें इतनी शक्ति मौजूद थी कि अगर वे जानेसे इनकार करते तो मैं जबर्दस्ती उन्हें वहांसे ले जाती। मैंने उस रातको महमूरी अबलासे घरमें ही ठहरनेके लिए कहा। इस प्रकार हम दोनों चुपकेसे रसोई-घरके दरवाजेसे होकर घोर अन्धकारके बीच सड़कोंपर निकल पड़े। हमारा गन्तव्य स्थान बहन निधार और उसके पति सैबका घर था, जहां पहुंचकर हम अपनी दास्तान उनसे सुनाते और उनके शरणार्थी होते।

बेगम हालदा अदीब हनीमके इंगलैण्डके प्रवास-कालका लिया हुआ चित्र।

दूसरे दिन सुबह महमूर अबला बहन निधारके घरपर पहुंची, जहां हम लोग ठहरे हुए थे। उस समयका उसका चेहरा मुझे जिन्दगी-भर नहीं भूल सकता। वह मेरे बिछौनेपर घुटनोंको अन्दर छिपाये इस तरह बैठी थी, मानो वह नमाज पढ़नेके लिए तैयार हो रही हो। उसके दुबले और पीले चेहरेपर हवाइयां उड़ रहीं थीं। डा० अडनन बिछौनेकी दूसरी तरफ बैठे हुए थे और अबला उन्हें धीरे-धीरे सारी वारदातें सुना रही थी। वह रात पूरी शान्तिके साथ बीती सिवा इसके कि रात-भर मोटर लारियां इधर-उधर दौड़ती रहीं। सुबहमें तड़के Red Crescent आफिसका एक कर्मचारी हलीस आया था। उसने बताया कि आधी रातके बाद २ बजेके लगभग मित्र-शक्तियोंने इस्तम्बुलपर कब्जा कर लिया। तीस अंगरेज सैनिकोंके एक दलने Red Crescent आफिसपर हमला किया था। वहां कोई अरमीनियन या तुर्क दुभाषिया मौजूद नहीं था। टेलीफोन तोड़ दिये गये और कागजात इधर-उधर बिखेर दिये गये। चार कर्मचारी पलंगपर सोये हुए थे। उन्हें घसीटकर नीचे कर दिया गया और उनके मस्तकके सामने पिस्तौल ताने हुए सैनिकोंने उनसे पूछा कि क्या डा० अडनन यहां हैं। उन्होंने सारे कमरेको तिल-तिल करके छान डाला। आखिर जब सैनिकोंको यह विश्वास हो गया कि डा० अडनन वहां नहीं हैं, तो उन्होंने उनके घरका पता-ठिकाना पूछा। जब समस्त कर्मचारियोंने डा० अडननका पता न जाननेका बहाना किया, तो उन्होंने सबसे छोटे कर्मचारी, १६ वर्षके एक लड़केपर दबाव डालना शुरू किया। उस लड़केका नाम हमीद था। जिस समय हलीस आफिससे से बिदा हुआ, हमीदके ललाटसे रक्तधारा बह रही थी। फिर भी उसने हलीससे इतना अवश्य कहा कि यदि ये सैनिक मुझे निदारुण यन्त्रणा देकर मार डालेंगे तो भी मैं डा० अडननका पता-ठिकाना उन्हें नहीं बताऊंगा। मैंने देखा कि जिस समय डा० अडनन ये बातें सुन रहे थे, उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आंखोंसे दरविगलित अश्रुधारा प्रवाहित होकर उनके कपोलों-को सिक्त कर रही थी। किन्तु मैं निस्तब्ध होकर सब कुछ सुनती रही।

हलीसके हमारे यहांसे चले जानेपर दो आदमियोंने—जिनका कण्ठ-स्वर अरमीनियन जैसा जान पड़ता था—टेली-फोनसे पूछा कि डा० अडनन कहां हैं। महमूरी अबलाने उन्हें उत्तर देते हुए हम दोनोंके सम्बन्धमें कहा कि एक दिन कब्ल ही वे लोग यहांसे चले गये। किन्तु वह जानती थी कि उसके घरपर निग-रानी रखी जाती है।

सैब उस समय Red crescent संस्थाका सेक्रेटरी था। महमूरी अबलाके पहुंचनेके कब्ल ही वह चला गया था। जलपानके समय वह एक और भी खबर लायी। उक्त संस्थाके आफिसमें उथल-पुथल मची हुई थी। जहां देखो वहीं सशस्त्र सैनिक, बन्दी तुर्क और सड़कोंपर मशीनगनें नजर आ रही थीं।

जो सब घटनायें घटित हुई थीं उनसे प्रत्येक व्यक्ति इतना चकित-स्तम्भित हो रहा था कि मेरे लिए यह आवश्यक हो गया कि स्पष्ट रूपसे विचार करके शीघ्र कोई निश्चय कर डालूं और तदनुसार सावधानीसे कार्य करूं। अब मेरे तथा डा० अडननके लिए दो ही मार्ग सम्भव रह गये थे—एक तो यह कि फौरन् स्कुटारी (Scutari) के लिए रवाना हो जायं या चन्द दिनों तक और यहां ठहरे रहें, जब तक कि यह तूफान कुछ ठण्डा पड़ जाय। पिछला मार्ग ही मुझे अच्छा जान पड़ा।

दो दिनों तक हम इस बातकी व्यर्थ चेष्टा करते रहे कि अन्य भावी शरणार्थियोंसे हमारा सम्बन्ध हो जाय। इसके बाद हमने स्कुटारी जानेका सङ्कल्प किया। स्कुटारीके लिए जो नावें जाती थीं, उनपर अंगरेज पुलिस तथा उनके अरमीनियन और तुर्की एजेण्ट कड़ी निग रानी रखा करते थे।

हमारे प्रस्थानकी तयारीका सबसे कठिन काम था भेष बदलना। डा० अडननकी पहचान बहुत ही सहज है। उनकी पोशाक, उनका फेज और उनकी चाल-ढालसे लोग अच्छी तरह वाकिफ हैं। उन्होंने दाढ़ी, मूंछ सफाचट करके औरत-की पोशाक पहननेसे इनकार कर दिया और ऐसा इसलिए नहीं किया कि वह औसत तुर्की स्त्रीसे कदमें लम्बे थे, बल्कि इसलिए कि उन्हें इस बातसे सख्त नफरत थी कि वह इस प्रकार नकली भेषमें पकड़ लिये जायं। इसलिए हम लोगोंने यह

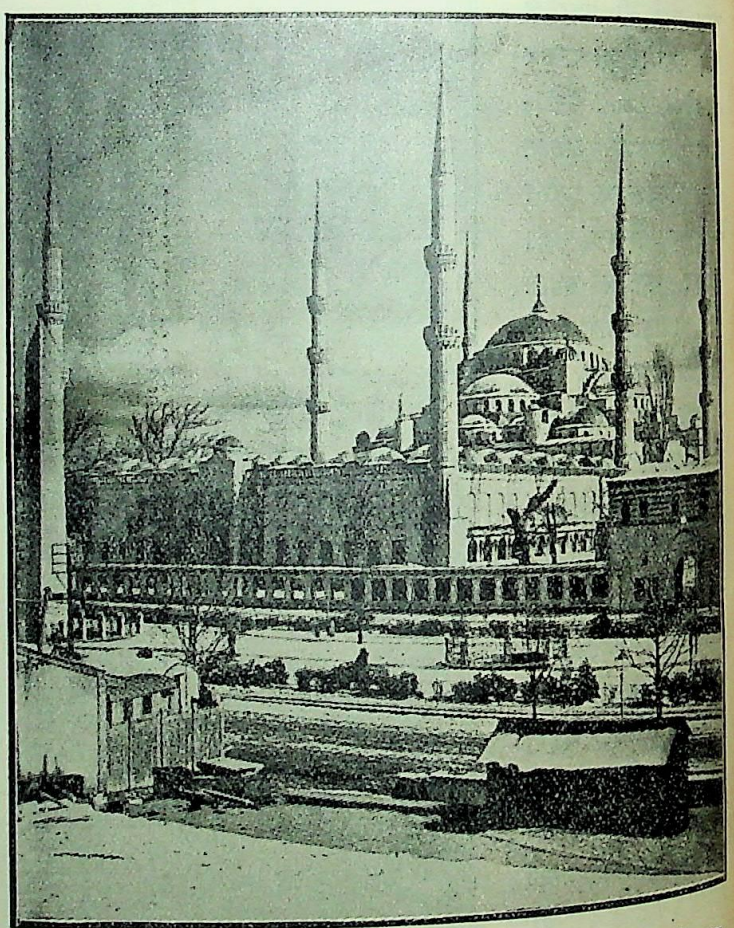

कुस्तुनतुनियाके इसी सुलतान अहमत मसजिदके सामने यूनानियों द्वारा स्मर्नाके अधिकृत किये जानेके विरुद्ध हालिदा अदीबने अपने ओजस्वी भाषण द्वारा जनतामें देशभक्तिकी बिजली भर दी थी।

निश्चय किया कि उन्हें 'होजा' (धर्म-शिक्षक) जैसी पोशाक पहनायी जाय। वह चश्मा लगाना चाहते थे, किन्तु मैंने इसपर आपत्ति की; क्योंकि इससे नकली भेष पहचाने जानेका भय था। अब इसके बाद मेरी समस्या उपस्थित हुई। सार्वजनिक सभाओंमें भाषण देनेके कारण मेरे रूप रङ्गसे लोग काफी परिचित थे और यदि मैं ठीक होजा की स्त्री-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जैसा भेष धारण करूं तो चेहरेपर बुर्का नहीं होना चाहिए। इसके सिवा अंगरेज पुलिसके साथ जो तुर्की और अरमीनियन जासूस थे उन्हें यह आदेश दिया गया था कि प्रत्येक बुर्का-वाली स्त्रीका बुर्का हटाकर वे उसका चेहरा देख लिया करें। मेरे कुटुम्बके लोग समझते थे कि मैं अपनी आंखोंसे पहचान ली जाऊंगी, किन्तु मेरा ख्याल है कि नेत्र किसी भावके

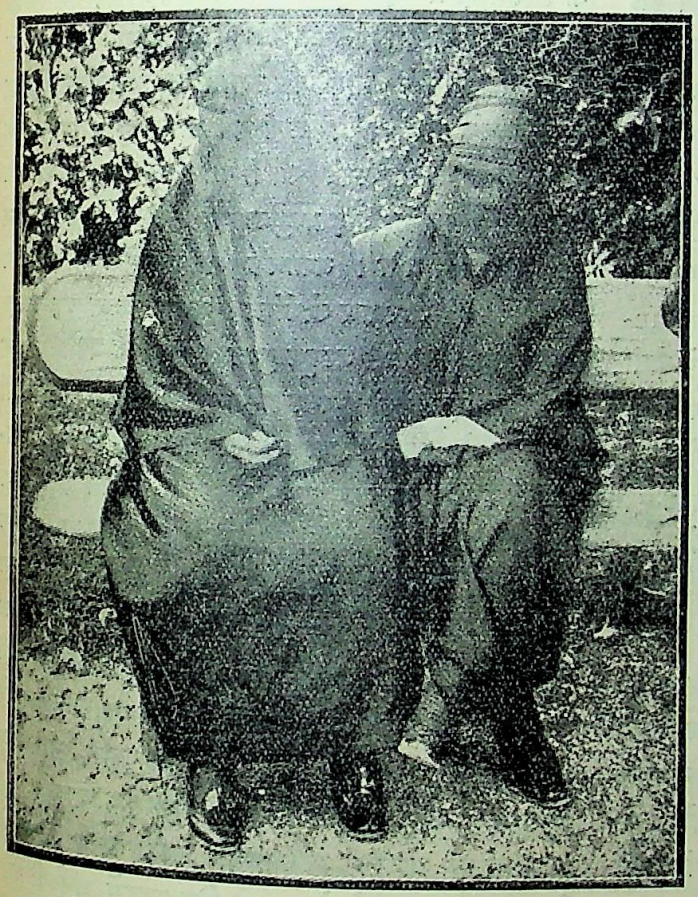

नवीन तुर्की राष्ट्रकी महिलायें अब इस प्रकार अपने चेहरेपर बुर्का नहीं डालतीं।

द्योतक तभी होते हैं जब कि वह भाव मनमें होता है। इसलिए मैं ऐसी चेष्टा करूंगी कि मेरे मनमें ऐसी कोई भावना ही न रह जाय जिससे नेत्र द्वारा उसकी अभिव्यक्ति सम्भव हो। इस प्रकार १८ मार्चको हम लोग पलायन करनेके लिए छद्मभेष धारण करने लगे।

डा० अडनन लम्बा काला चोगा और सिरपर बर्फ-जैसी सफेद पगड़ी धारण किये हुए अत्यन्त परिष्कृत और कुलीन जान पड़ रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई प्राचीन कालका मुसलमान नवीन रूपमें इसलामका उपदेश करनेके लिए इस पृथ्वीपर अवतीर्ण हुआ हो। उन्होंने थोड़ी राख मांगी। हम लोगोंको पहले तो इसका कारण मालूम नहीं हुआ, किन्तु जब उन्होंने अपने जूतेकी पालिशके ऊपर राखको छिड़का तो हम लोगोंने समझा कि अनजान रूपमें ही सही, उनपर भी अपने इस अर्ध छद्म-भेषका प्रभाव पड़ रहा है।

मैंने अपना दुबलापन छिपानेके लिए मोटे ऊनी जैकेटके ऊपरसे अपनी बहनका ढीलाढाला काला लबादा पहन लिया और सिरके ऊपर काले रङ्गकी टोपी पहन ली जिससे मेरा सिर और आधी भौंहें ढक गयीं। भौंहोंको ढके रखना मैंने इसलिए आवश्यक समझा कि मेरे ख्यालसे आंखोंकी विशेषता सबसे बढ़कर भौंहों द्वारा ही व्यक्त होती है। टोपी लटककर मेरी ठुड्डीके नीचे तक आ गयी थी जहां आलपीनसे उसके दोनों सिरोंको जड़ दिया गया था जिससे मेरा लम्बा दुबला चेहरा गोला जैसा जान पड़ता था और पीछेकी ओर लटकते हुए बुर्केसे मैं एक बिलकुल अपरिचित व्यक्ति-सी जान पड़ती थी। जब हम लोग गाड़ीपर सवार होकर जानेके लिए तैयार हुए तब मेरी एक सखी नकी हनीमने मुझसे कहा—"तुम अपने हाथोंसे पहचान ली जाओगी!" सचमुच, चाहे कितना ही बनाव किया जाय, किन्तु मेरे हाथोंको छिपाकर रखना मुश्किल था। मेरे हाथ दुबले-पतले थे और नाखून खूब अच्छी तरह फैशनेबुल ढङ्गसे कटे हुए थे। इसलिए मैंने वहीं बठकर अपने नाखूनोंको बहुत छोटा करके काट डाला और एक शाल लेकर अपने हाथोंपर रख लिया। बगलमें एक छोटी-सी सफेद गठरी दबाये हुए मैं भी डा० अडननकी तरह बिलकुल अपरिचित-सी बन गयी।

हम लोग गाड़ीपर सवार हुए और वह चल पड़ी। पहली कठिनाई थी सम्पादकों और रिपोर्टरोंको लेकर; क्योंकि वे लोग हम दोनोंको अच्छी तरह जानते थे। किन्तु खैर हुई कि उन्होंने गम्भीर आकृतिवाले नौजवान होजा और उनकी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पुरानी चाल-ढालकी पत्नीकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। सरकेदजीमें—जहां रोशनी खूब तेज थी—फ्रान्सीसी सैनिकोंका एक छोटा-सा दल, रास्तेकी पुलिस द्वारा हम लोगोंकी गाड़ी रोके जानेपर, दौड़कर गाड़ीके पास आया और हम लोगोंको देखकर हमारी खिल्ली उड़ाने लगा। मैं कुछ उत्तेजित जैसी होने लगी थी, किन्तु डा० अडनने मुझे फौरन रोककर कहा—"अपनी मुखाकृतिको ऐसा मत बनाओ; जो कोई तुम्हें जानता होगा वह तुम्हारी मुखाकृति देखकर तुम्हें पहचान सकता है। इसपर मैंने कृत्रिमभावसे एकदम मौन धारण कर लिया। पुलपर गाड़ीसे उतरकर जब हम पैदल चले, तो सैब और अपने एक विश्वस्त मित्र अब्दुल मुन्तलिबको हमने अपनी इन्तजारी करते देखा। पहलेसे ही यह प्रबन्ध हो चुका था कि स्कुटारीमें अब्दुल हम लोगोंके लिए एक गाड़ी भाड़ा कर हमें सुलतान टेपी ( Sultan-tepi ) के निकटतम स्थान तक पहुंचा देगा। पहले वे दोनों हमें बिलकुल नहीं पहचान सके, किन्तु जब डा० अडनने उन्हें आंखोंसे इशारा किया तब वे हम दोनोंको पहचान गये।

जहाजके रवाना होनेके निश्चित समयसे १५ मिनट पूर्व मैं जहाजपर सवार हुई और डेकपर बैठ गयी। मैं डा० अडननके लिए उद्विग्न हो रही थी। वह रोशनीके खम्भेके नीचे अखबार पढ़ रहे थे और वहीं पुलिसके कई आदमी चहलकदमी कर रहे थे। मुझे आशङ्का हो रही थी कि डा० अडनन कहीं खांसने न लग जायं। किन्तु मनुष्यको अपनी जान कितनी प्यारी और स्वतन्त्रता कितनी बहुमूल्य होती है! डा० अडननके जीवनमें यह पहला ही और अन्तिम अवसर था जब कि वह खांसी रोकनेमें सफल हुए थे। आखिर घण्टी बजनेके बाद जहाज रवाना हुआ। डा० अडनन जहाजपर सवार हो गये तो?

जङ्गी जहाजोंकी तेज रोशनीसे बास्फोरस समुद्र जगमगा रहा था। चमकती हुई तोपों और डेकपर टहलते हुए सैनिकोंको मैं साफ-साफ देख सकती थी। सागरका जल कठोर और फेनोज्ज्वल हो रहा था। सर्दी कड़ाकेकी पड़ रही थी। मैं सर्दीके मारे सिकुड़ी हुई बैठी थी। इसी समय जहाजका एक कर्मचारी मेरे पास होकर गुजरा और मुझे जाड़ेसे ठिठुरती हुई देखकर करुणार्द्र चित्तसे बोला—"मां, आप केबिनमें क्यों नहीं चली जातीं?"

स्कुटारी पहुंचनेपर अब्दुल मुतलिब हम लोगोंसे मिला और उसने हमें एक गाड़ीमें बैठा दिया। समुद्रके किनारे-किनारे गाड़ी हांककर वह उस छोटी सड़कके पास ले गया, जहांसे सुलतान टेपीका रास्ता जाता है। वहां गाड़ीपरसे हम दोनों उतर पड़े और पैदल चलने लगे। रातके घनान्धकारमें हमें चोरों और अंगरेज पुलिसका भय पग-पगपर हो रहा था। हम दोनों एक-दूसरेका हाथ पकड़े हुए भूले-भटके बच्चोंकी तरह साहससमूर्वक आगे बढ़ते चले जाते थे। आखिर हम लोग मकानकी खिड़कियोंसे आती हुई रोशनीको देखकर उस मकानके पास पहुंचे जहां हमें जाना था। दरवाजेके पास पहुंचकर हमने रस्सी खींची और अन्दरकी घण्टी बज उठी। एक लड़का दौड़ता हुआ आया और हमें देखकर फिर ऊपर चला गया। मकानके मालिक शेख साहब शीघ्र वहां आ पहुंचे और हम लोगोंका स्वागत करते हुए अन्दर लिवा ले गये। उनसे मालूम हुआ कि उनके घरमें पहलेसे चार डिप्टी ( टर्कीकी व्यवस्था-परिषद्के सदस्य ) शरणार्थी हो रहे हैं जो आनातोलिया भाग जाना चाहते हैं। शेख हम-लोगोंके लिए अत्यन्त उद्विग्न हो रहे थे। उन्होंने हमसे कहा कि हमें जल्दसे जल्द रवाना हो जाना चाहिए। पार्लामेण्टके सभापति जलालुद्दीन आरिफ, प्रधानमन्त्री कर्नल इसमत तथा उनके साथ और कई अफसर एक दिन पहले ही यहांसे रवाना हो चुके थे। कर्नल इसपतका नाम सहसा सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। अपनी प्रतिभा एवं चरित्रके कारण वह इतने विश्वस्त एवं लोकप्रिय हो रहे थे कि उनका नाम हमारे लिए भावी संग्रामकी एक क्षीण आशा-किरणके समान था।

शेख हम लोगोंके आगमनको अपने घरकी स्त्रियोंसे छिपाकर रखना चाहते थे। उसी दिन शहरमें अंगरेजी और तुर्की भाषाओंमें बड़े-बड़े पोस्टर चिपकाये गये थे, जिनमें लिखा था कि जो कोई किसी राष्ट्रवादीको अपने यहां शरण देगा, उसे मृत्यु-दण्ड दिया जायगा। मैंने स्वयं इस प्रकार-का एक पोस्टर स्टेशनपर देखा था, जिसपर बड़े-बड़े अक्षरोंमें 'मृत्यु' शब्द लिखा हुआ था। उसपर जेनरल विल्सनका हस्ताक्षर था। यह बात बड़ी विचित्र-सी जान पड़ी कि जो लोग दयावश किसी शरणार्थीको शरण देंगे, उन्हें यदि मृत्यु-दण्ड दिया जाता, तो फिर असल अपराधियोंके लिये उनके पास कौन-सी सजा रह गयी थी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अन्य चार शरणार्थी जो वहां आश्रय ले रहे थे, हम लोगोंका स्वागत करनेके लिए आये। उनमें एककी नीली आंखें, बुद्धिमानीसे भरा हुआ चेहरा था और उसका तौर-तरीका बिलकुल ठीक था। 'हमें जिन चीजोंकी जरूरत है,' उसने कहा, 'वे हैं एक अच्छा नक्शा और एक पथ-प्रदर्शक।' 'यह एक बुद्धिमान मनुष्य जान पड़ता है,' मैंने अपने मनमें कहा। दूसरा जो एक लम्बा, काले चेहरेका आदमी था, उसने कहा,—'मेरे पास थैलेमें पांच बम और तीन रिवाल्वर हैं।' 'यह एक मूर्ख आदमी है,' मैंने अपने मनमें विचार किया।

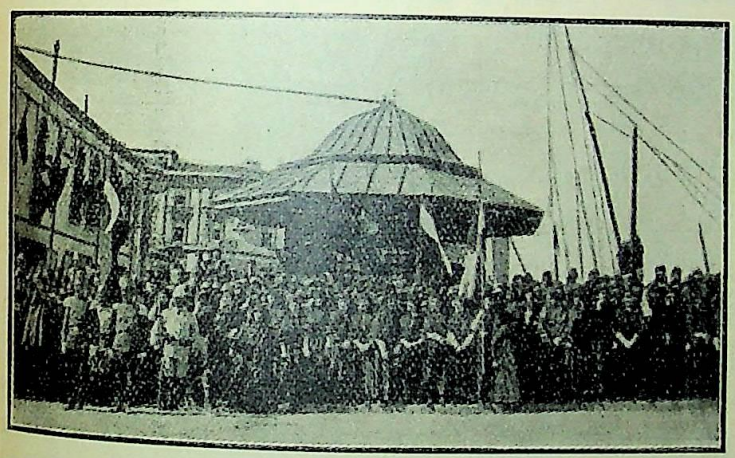

यूनान-तुर्की युद्धमें नवजाग्रत तुर्कीकी इन देशसेविका महिलाओंने बेगम हालिदा अदीबके नेतृत्वमें एक सेवा-दल सङ्गठित किया था।

शेखके बैठकखानेमें मेरे लिए एक पलंग रखा गया। मैंने इस्तम्बुलमें एक दिन और ठहर जानेकी जोखिम अपने ऊपर ली। मैं अपने बच्चोंके लिए कुछ प्रबन्ध कर लेना चाहती थी, क्योंकि एक घण्टेके लिए भी मैं अपने जीवनको निरापद नहीं समझती थी। उस रातको डा० अडननसे मैंने कहा कि आप सो जायं और मैं जागकर पहरा दूंगी। खतरेका अणुमात्र भी सन्देह होनेपर हम लोग मकानके पश्चात् भागसे होकर भाग निकलेंगे।

दूसरे दिन सवेरे मैं कपड़ा पहनकर खेतके रास्तेसे स्कुटारीके पुलके खम्भेके पास पहुंची। वहां बहुत-से लोग थे, जो भयभीत और अपराधी-से जान पड़ते थे। किन्तु मैं भीतिग्रस्त-सी नहीं दीख पड़ती थी। मुझे मृत्युका भय उतना नहीं हो रहा था, जितना पकड़े जानेपर पिटनेका।

यह दूसरी बार है, जब कि मैंने अपनेको जहाजके डेकपर पाया। सर्दीके मारे मैं जमकर बर्फ हुई जा रही थी। इस्तम्बुलमें मैं दूसरी बार निधारके घर गयी, जहां मैं अब्दुल-मुतलिबसे मिलनेका ख्याल कर रही थी। वह हमारे मित्रोंका पता लगानेमें भरसक प्रयत्न कर रहा था। किन्तु सब व्यर्थ हुआ। जमी बेके सिवा और किसीका कुछ पता नहीं लगा। दूसरोंका पता लगानेका विचार मैंने छोड़ दिया, क्योंकि पार्लामेण्टपर धावा करने और उसके सदस्योंको गिरफ्तार करनेका संवाद इस समय तक मिल चुका था।

दूसरे दिन सवेरे मैं फिर स्कुटारी तक पैदल ही चली गयी, ताकि मैं वेशिकताशका जहाज पकड़ सकूं, जहां जमी बे छिपा हुआ था। अंगरेज पुलिसके कितने ही तुर्की एजेण्ट मुझे रोककर सरसे पांव तक मेरी ओर देखने लगे। मैं भी जल्दी-जल्दी न चलकर एकदम रुक गयी और उनकी ओर निरर्थक कौतूहल एवं विस्मयपूर्ण दृष्टिसे ताकने लगी। पुलका तोरणद्वार लोगोंसे भरा हुआ था। मैंने तम्बाकूकी एक डिबिया, सिगरेटके कुछ कागज और थोड़े पिस्ते खरीदे। सर्दी इतनी ज्यादा थी कि मैं डेकके सामने खड़ी नहीं रह सकी; इसलिए मुझे भीतर बैठना पड़ा और अपनेको इस प्रकार छिपाकर रखना पड़ा, जिससे मुझे कोई पहचान न ले। उस केबिनमें एक लड़की अकेली बैठी हुई थी। वह मेरी एक भूतपूर्व छात्रा थी। वह समुद्रकी ओर देख रही थी। मैं डिबियासे तम्बाकू निकालकर सिगरेटके कागजमें उसे लपेटते हुए सिगरेट बनाने लगी। मैं मन-ही-मन इस बातपर गर्व कर रही थी कि जिस श्रेणीकी स्त्रियोंका छद्मभेष मैं धारण किये हुए हूं, उसकी आदतोंकी नकल करनेमें मेरी क्षमता कितनी बढ़ी-चढ़ी है। इसी समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो वह लड़की मुझे घूर रही हो। मैंने ज्योंही दियासलाई जलानेके लिए अपना हाथ उठाया, उसकी दृष्टि मेरे उठे हुए हाथपर गड़ गयी। मुझे ऐसा जान पड़ा कि इस बार मैं पहचानी गयी और इसके लिए मैं अपने हाथको जी भरकर कोसने लगी। किन्तु इस सङ्गीन मौकेपर मैंने यही उचित समझा कि उसकी कौतूहल एवं विस्मययुक्त दृष्टिकी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बिलकुल ही ध्यान न दिया जाय। ऐसा सोचकर मैं धूम्रपान करती हुई कभी उसकी ओर और कभी समुद्रकी ओर देखने लगी। इसके बाद उसके चेहरेपर सन्देह और निराशाके भाव अङ्कित देखकर मैं कुछ निश्चिन्त-सी हुई और सिगरेटके खतम हो जानेपर पिस्तेकी थैली खोलकर उसमेंसे पिस्ता निकाल-निकालकर मुंहमें डालने लगी और छिलकेको बाहर फेंकने लगी। इससे उसको विश्वास हो गया कि मैं हालिदा अदीब नहीं हूं, क्योंकि हालिदा अदीब ऐसा नहीं कर सकती। इस प्रकार सन्देह-रहित होकर वह फिर समुद्रकी ओर देखने लगी। यह मैं शुरूसे ही जानती थी कि मुझे वह पहचान भी लेगी, तो भी वह मेरे साथ दगा नहीं करेगी; किन्तु मैं नहीं चाहती थी कि एक ऐसे रहस्यसे उसे परिचित करा दूं, जिसकी जानकारीके लिए उसे जेनरल विलसनके पोस्टर-के अनुसार मृत्युदण्ड दिया जा सकता है।

उस दिन सन्ध्याको जब मैं महमूरी अब-लाके पास पहुंची, तब मैंने देखा कि उसने कमरेकी खिड़कियोंपर मोटा कम्बल डालकर रोशनी जला दी। इसका कारण यह था कि उस महल्लेके सब लोग समझते थे कि वह मेरे ही घरमें रहा करती थी। मेरा सारा शरीर ज्वरसे उत्तप्त हो रहा था। मैं चुपचाप लेटी रही। मैंने महमूरी अबलासे जरूरी चीजों-की एक फिहरिश्त तैयार करके उन्हें मौजूद रखनेके लिए कहा, क्योंकि कौन जानता था कि किस क्षण मैं पकड़ी जाऊं। इसके बाद दोनों लड़कोंको मैंने अपने पास बुलाया। कागज-पेन्सिल लेकर मैं लिखने बैठी। मेरा हाथ कांप रहा था। मेरा लड़का मेरे शरीरको कसकर दाबे हुए था और मैं लिखनेकी कोशिश कर रही थी। पहला पत्र मैंने मि० चार्ल्स क्रेनको लिखा, जिसमें कहा गया था कि मैं अनातोलिया जा रही हूं और मैं वहां जीते-जी पहुंच सकूं या नहीं, किन्तु संग्राम तो कठोर और दीर्घकालव्यापी होगा ही। क्या वह मेरे लड़कोंको अमेरिका ले जाकर उनकी तालीम और हिफाजतका प्रबन्ध करेंगे?

सुबह होनेपर सबसे पहले मेरे दोनों लड़के मेरे पास आये। उनकी मुखाकृति गम्भीर थी। उनमें इतना साहस मौजूद था कि उन्होंने अम्लानवदन अपनी मातासे विदा ग्रहण की। कौन जानता था कि माताका अपने इन लाड़-लोंसे इस जन्ममें पुनर्मिलन होगा या नहीं! मेरी देह अब भी जली जा रही थी और सिरमें उसी तरह चक्कर आ रहा था। किन्तु इस दशामें ही मुझे वहांसे रवाना होना पड़ा।

आखिर जब मैं टेकीपर पहुंची, तो वहां कोई दिखाई नहीं पड़ा। शेखका छोटा भाई दौड़ता हुआ वहां आया और मेरे कानके पास डरी हुई आवाजमें कहने लगा,—"सब लोग चले गये। चुपचाप दूसरे फाटकसे उस घरके अन्दर चली जाओ।"

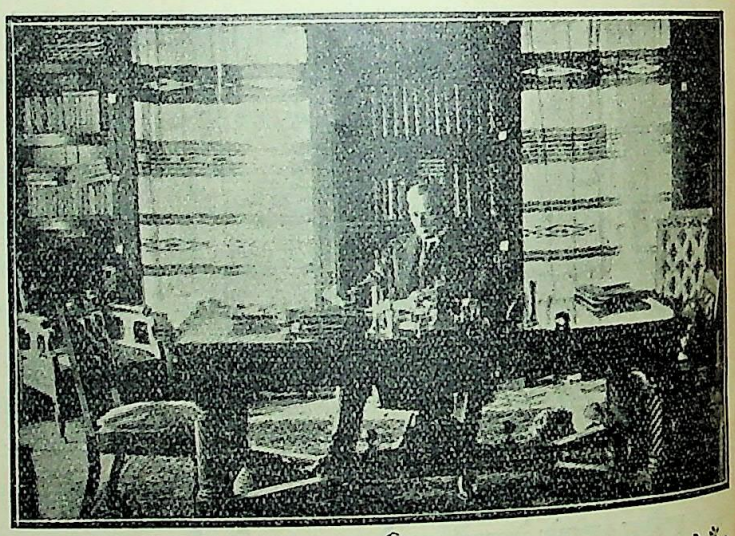

नव्य टर्कीके भाग्यविधाता मुस्तफा कमाल पाशा दफ्तरमें काम कर रहे हैं।

जिस घरकी ओर उसने इशारा किया, वह सुलेमान बेका घर था, जिसका लड़का किसी समय डा० अडननका सेक्रेटरी था। वहां अब्दुल मुतलिब मुझसे मिला।

उससे पूछनेपर मुझे मालूम हुआ कि गत रात्रिको जमी बेके वहां पहुंचनेपर अंगरेजी और इटालियन पुलिस 'टेकी' के अन्दर घुस आयी थी। इसपर शेख तो पीछेकी खिड़कीसे कूदकर भाग गये और डा० अडनन तथा जमी बेने सुलेमानके घरमें आश्रय लिया। खूब तड़के ही वे दोनों पहाड़ी रास्तेसे पैदल रवाना हो गये और येलनिज सेलवीमें मेरा इन्तजार करने लगे।

बुलबुल डेरीमें एक गाड़ी खड़ी मेरा इन्तजार कर रही थी। उसपर सवार होकर मैं चल पड़ी। रास्तेमें एक जगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक अंगरेज सैनिकने मुझे सिरसे पांव तक अच्छी तरह देखा। समन्द्रा पहुंचनेके करुण रातमें जहां मैं ठहरना चाहती थी,उस स्थानके बारेमें मुझे मालूम हुआ कि उसपर अंगरेजी फौजकी एक छोटी टुकड़ीने एकाएक दखल कर लिया है। वे सब लोगोंसे पूछताछ कर रहे थे कि क्या कोई इस्तम्बुलसे वहां आया है।

आखिर जब ग्रेलनिज सेलवी पहुंचकर मैंने डा० अडनन और जमी बेका पता लगाया, तो उनसे मुझे मालूम हुआ कि अंगरेजी फौज द्वारा उक्त स्थानपर अधिकार कर लिये जानेकी बात ठीक है, इसलिए अब समन्द्रा जाना तो हो ही नहीं सकता। फिर भी उन्होंने यह विचार किया कि खेतोंकी राहसे होकर वहां पहुंचनेकी कोशिश की जायगी। दिनको तीसरे पहर तीन बजे वे रवाना होंगे और रातमें ११ बजे पहुंच जायेंगे। किन्तु मेरे लिए सवारीकी कठिनाई थी। जिस गाड़ीपर मैं आयी थी, उसका कोचवान मुझे आगे ले चलनेके लिए राजी नहीं होता था। वह 'नाहीं' करता ही गया, किन्तु मैंने उसपर अपने शब्दोंका ऐसा जादू डाल दिया कि विवश होकर उसे राजी होना ही पड़ा। उस समय एक-एक क्षण हम लोगोंके लिए कितना बहुमूल्य हो रहा था! डा० अडननसे विदा ग्रहण करके मैं गाड़ीपर सवार होनेके लिए चली। मैंने डा० अडननको "हालिदा, ओ हालिदा!" पुकारते हुए सुना। किन्तु उधर देखनेका मुझे साहस नहीं हुआ। लगभग ८ बजे रातमें मैं समन्द्रा पहुंची। डा० अडननके साथ यह पहले ही तय हो चुका था कि हम लोगोंमें जो पहले पहुंचे, वह इन्तजारीमें ठहरा न रहे। रातमें एक किसानके घरमें मैंने आश्रय लिया। उन लोगोंने मेरी बड़ी आवभगत की। वहीं डा० अडनन और जमी बे भी मिले। कराकोलकी रक्षक सेनाके कमाण्डर वहां हम लोगोंसे मिलने आये। वह डा० अडननसे कह रहे थे:—"आप लोग यहांसे जल्दी रवाना हो जाइये, रसूल आगा अपनी बैलगाड़ी जोतकर आपके लिए तैयार खड़ा है। वह खुद हांककर आप लोगोंको ले जायगा। मैं आपके साथ दो बन्दूकें और दो सशस्त्र रक्षक किये देता हूं। महम्मद शाबौश भी आपके साथ जायगा। आप जानते हैं कि आज कोर्नापर अंगरेजोंने दखल कर लिया है?"

"तो हम लोग टेपो-यूरन किस तरह जायंगे?" जमी बेने पूछा।

"मुख्य सड़कसे एक रास्ता घूमकर जाता है, जिसे महम्मद शाबौश जानता है। अंगरेजोंको पता लग गया है कि आप लोग आ रहे हैं और वे आपकी घातमें हैं। इसलिए यदि आप इस राहसे चलेंगे, तो आप उनकी आंख बचाकर निकल जायंगे।"

उस समय रातके बारह बज रहे थे। हमारे पास कोई रोशनी नहीं थी। कहीं कोई धीमेसे भी एक शब्द नहीं बोल रहा था। मैं बैलगाड़ीमें सवार हुई। वर्षा और ओससे रक्षा पानेके लिए कोयला रखनेके दो बड़े-बड़े बोरे मेरे ऊपर डाल दिये गये थे। डा० अडनन, जमी बे तथा और लोग गाड़ीके साथ-साथ चल रहे थे। कभी बूंदाबांदी, कभी जोरसे और कभी मूसलाधार वर्षा हो रही थी। ठण्डी हवा देहमें सुई-सी चुभ रही थी। बीच-बीचमें ओले भी बरस जाते थे। बर्फ खूब जोरोंसे गिर रही थी। इन्हीं मुसीबतोंके बीच उस सुनसान अंधेरी रातमें हम लोग रास्ता तय कर रहे थे। उस निविड़ तिमिराच्छन्न रजनीमें गाड़ीके साथ चलनेवाले मनुष्योंके पांवसे कीचड़ सने हुए पानीकी जो उछाल होती थी, उसीसे वहां मनुष्यके अस्तित्वका आभास मिलता था।

सहसा उस सुदूर निर्जन स्थानमें प्रकाशकी एक लम्बी नील रेखा प्रकाशित हो उठी। यह प्रकाश कहांसे आया? यह मेघमें विद्युत्का प्रकाश तो नहीं हो सकता। "यह अंगरेजी फौजकी सर्चलाइट है।" उत्तर मिला।

इस प्रकार जब हम लोग बातें करते हुए राह तय कर रहे थे, एकाएक हमारी गाड़ी धंसकर खड़ी हो गयी। गाड़ी लीकसे हटकर एक कुंएके पास पहुंच गयी थी। वहां कोई रोशनी नहीं थी। दियासलाई एकदम भीग गयी थी। मैंने अपने थैलेसे टार्च निकालकर देखा, तो मालूम हुआ कि हम कुंएमें प्रायः गिर चुके थे। फिर गाड़ी चलने लगी। मैंने आंखें मूंद लीं और अपनेको बिलकुल दैवके ऊपर छोड़ दिया। क्या इस रात्रिका अवसान नहीं होगा? न मालूम कितनी देर तक मेरी आंखें बन्द रहीं। इसके बाद जब आंखें खुलीं, तो जान पड़ा कि रात्रिका शेष हो रहा है। फिर कुछ दूरपर कुहासेमें धुंधली-सी चीज दिखाई पड़ी। आखिर हमारी गाड़ी एक मकानके सामने आकर खड़ी हुई और किसीने मुझे सहारा देकर उतार लिया। दो सैनिक दौड़कर मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पास आये। उनमें एकने अपना नाम लेफ्टिनैण्ड वेकिर और दूसरेने कप्तान इसाद बताया। वे दोनों सैनिकके छद्म-भेषमें अफसर थे। "हालिदा अदीब हनीम कहां हैं?" लेफ्टिनैण्ट वेकिरने डा० अडननसे पूछा। उन्हें जब मेरा परिचय कराया गया, तो वे विस्मित दृष्टिसे मेरी ओर देखने लगे। "यह मकान पहले एक स्कूल था।" वेकिरने मुझसे कहा—"मेजर शुकरी—शरणार्थियोंकी रक्षा करनेवाली संस्थाके प्रधान अभी यहां आयेंगे। तब तक आप यहां आराम करें।"

सैनिक अफसरोंके साथ हालिदा अदीब युद्धके मैदानमें।

वह एक छोटे-से कमरेमें मुझे लिवा ले गये। वहां सहन-पर एक बड़ी-सी चटाई बिछा दी गयी और एक गन्दा बोरा उसपर तकिया बनानेके लिए रख दिया गया। इसके बाद लेफ्टिनैण्ट वेकिर दरवाजा बन्द करके चले गये। थोड़ी देरके बाद शुकरी वे वहां आ पहुंचे और डा० अडननके साथ बातचीत करने लगे। उन्होंने मेरे सम्बन्धमें जिज्ञासा की। मैं उठकर बाहर उनका अभिवादन करने चली। उन्होंने मेरा हाथ चूमा और बेञ्चपर अपनी शाल मेरे बैठनेके लिए बिछा दी। खाना खा लेनेके बाद उन्होंने वेकिरको बुलाया और उनसे कहा कि इन लोगोंको कैसुलर पहुंचा दो। वेकिर गाड़ीकी बगलमें खड़े हो गये। उनके कन्धेपर एक बन्दूक, कमरमें एक रिवाल्वर और सामने दो बम लटक रहे थे।

कैसुलरमें एक देहाती झोपड़ेमें हम लोग ठहरे। तब तक मेजर शुकरी भी एक अजनबी व्यक्तिके साथ वहां पहुंच गये। मेजर शुकरीने उनका परिचय देते हुए कहा कि ये चाचा मसूद हैं।

यहांसे करीब ही अंगरेजी फौज डेरा डाले हुए थी। "यदि यहां अंगरेजी फौज हम लोगोंको घेर ले, तो आप क्या करेंगे, मसूद?"

"हम लोग लड़ेंगे बहन!", उन्होंने जवाब दिया।

इसी समय दरवाजेमें किसीने धक्का दिया और हम लोगोंके सिर ऊपर उठाते ही खुद कप्तान असलन वहां दिखाई पड़े। उनके हाथमें एक बन्दूक, कमरमें दो रिवाल्वर और सामने तरह-तरहके छुरे लटक रहे थे। उन्होंने दरवाजेके पास बन्दूक रख दी और मेरी ओर बढ़कर मेरा हाथ चूमते हुए मेरा अभिवादन किया।

मेजर शुकरीने उन्हें उसी क्षण स्थितिकी गम्भीरतासे परिचित कराते हुए घोड़ोंका प्रबन्ध करनेकी आवश्यकता जतायी।

दूसरे दिन और भी भागे हुए शरणार्थी वहां आ पहुंचे। इसके एक दिन बाद हम सब लोग एक साथ वहांसे चल पड़े। महम्मद शाबौश मेरे साथ था। हम लोगोंका गन्तव्य स्थान आदा बाजार था। बीच-बीचमें यह अफवाह सुनाई पड़ती थी कि अंगरेजी फौजकी एक छोटी टुकड़ी हमलोगोंका पीछा कर रही है। आज हमारे सफरका आखिर दिन था और आज सब दिनोंसे ज्यादा दूरी तय करनी थी। मञ्जिले मकसूद तक पहुंचनेमें अभी ४५ मील बाकी थे। सड़क क्रमशः खराब होती जाती थी। हवा इतनी सर्द थी कि हड्डी तक ठिठुरी जा रही थी। सब लोग थके-मांदे-से प्रतीत हो रहे थे। एक गांवके पास पहुंचकर हमारे साथके घुड़सवार रुक गये। वे अब इतने थक गये थे कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



76329



वहांसे आगे बढ़ना नहीं चाहते। बेचारे कर्नल कियाजिम बड़े असमञ्जसमें पड़ गये। वह फौरन् मेरे पास आ पहुंचे और खिन्न होकर बोले—"मेजर हसरेब और डा० अडनन आगे बढ़नेसे इनकार कर रहे हैं और बाकी लोग भी उन्हींका अनुसरण करेंगे। मेरा ख्याल है कि हम लोग आज रातको ही आदा बाजार पहुंच जानेके लिए एक बार फिर कोशिश करते। आपका क्या विचार है?" "हां, हम लोग बढ़ते चलें", मैंने कहा। यह सुनकर कर्नल कियाजिमका चेहरा खिल उठा। हम लोगोंने जोरसे चिल्लाकर कहा—"हम लोग जा रहे हैं, जो लोग चाहें हमारे पीछे आयें।" इतना कहकर बिना पीछेकी ओर देखे हम दोनों चल पड़े। थोड़ी देरके बाद मुड़कर देखा तो सब लोग हमारे पीछे आ रहे थे, किन्तु वे अत्यन्त निराश एवं भग्नहृदय हो गये थे।

चारों ओर निबिड़ अन्धकार छाया हुआ था, रह-रहकर बीचमें पानी बरस जाया करता था, सड़क इतनी खराब थी कि घोड़े बार-बार ढलमलाकर गिरने लगते थे, मेरा सारा शरीर दर्दसे ऐंठा जा रहा था, सर्वत्र मृत्यु-जैसी स्तब्धता छायी हुई थी। मेरे सिरमें चक्कर आ रहा था और क्षण-क्षणमें मेरे घोड़ेसे लुढ़ककर गिर जानेकी आशङ्का हो रही थी। किन्तु इतनेपर भी मैंने आत्मबल नहीं खोया था। मेरी आत्मा स्थूल शरीरके कष्टोंसे ऊपर उठ चुकी थी। लगभग आधी रात बीती होगी कि मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि किसी रहस्यपूर्ण हाथने मेरे घोड़ेकी लगामको पकड़कर कहा—"ठहरो!" और मजबूत बाहोंने मुझे पकड़कर घोड़ेसे उतार लिया।

सामने एक दरवाजा खुला और मैंने अन्दर प्रवेश किया। यह गांवका काफे-हाउस था। यहांसे अदा बाजार शहर एक घण्टेका रास्ता था। हम लोग सुबह गाड़ीपर सवार होकर वहां जायंगे। ज्वरसे मेरा शरीर जल रहा था। मैं शून्य-सा मालूम कर रही थी। "यदि मेरे शरीरकी यही दशा रही", मैंने अपने मनमें कहा—"तो इस शरीरको बदलकर दूसरा शरीर प्राप्त करूंगी।" इससे मुझे बड़ी सान्त्वना मिली। यही सोचते-सोचते मैं सो गयी।

सुबह हुई और मेरा शरीर ज्योंका त्यों कायम रहा।

अदाबाजार पहुंचकर सकरिया नदीके किनारे कप्तान असलन और उनके आदमियोंसे हम लोगोंने विदा ग्रहण की। सबसे हाथ मिलाकर हम लोग नावपर सवार हुए।

अपने पलायनके आठवें दिन हम लोग हेनडेक पहुंचे। यहां सड़कोंपर बहुत-से लोग जमा हो रहे थे और ऐसा मालूम हुआ कि शीघ्र कोई घटना होनेवाली है। बड़ी देर तक हमारे आगेके मार्गको लेकर हम लोगोंके बीच वाद-विवाद होता रहा। सुबह जब हम लोग रवाना हो रहे थे, ठीक उसी समय मुस्तफा कमाल पाशाका एक समाचार तारसे मिला। यह समाचार बड़ा ही उत्तेजनापूर्ण था। अली फयाद

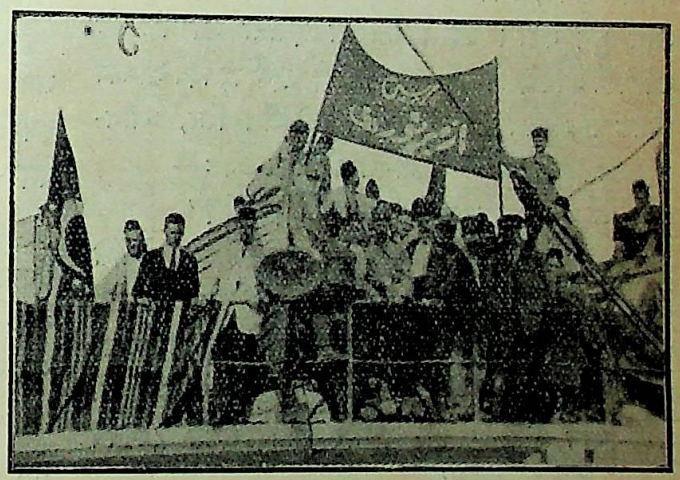

सन् १९२२ में यूनानियोंपर विजय प्राप्त करनेके उपलक्षमें स्मर्नाके अधिवासी आन्दोत्सव मना रहे हैं।

पाशाने एसकी शहरसे अंगरेजोंको निकाल-बाहर कर दिया था। तारमें हमें अङ्गोरा आनेके लिए आमन्त्रित किया गया था।

लेफकीमें ट्रेनपर सवार होकर दूसरे दिन हम लोग एसकी शहर पहुंचे। यहांका दृश्य सचमुच नाटकीय था। हमारा अभिनन्दन करनेके लिए स्टेशनपर बहुत-से लोग एकत्र हुए थे। किन्तु ट्रेन वहां बहुत थोड़ी देर ठहरी।

२ अप्रैलको हमारी ट्रेन अङ्गोराके पास पहुंच रही थी। 'यनीघून' पत्रके सम्पादक युनुस नादी बे—जो दूसरी राहसे इस्तम्बुलसे भागे थे और गुबमें हमलोगोंके साथ हो लिये थे—मेरे पास घबराये हुए-से आये और बोले—"ओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हालिदा हनीम ! स्टेशनपर बहुत बड़ी भीड़ जमा है। वहां भाषण होंगे। आप हम लोगोंकी तरफसे बोलेंगी, न ?"

"आप इसकी चिन्ता न करें; मैं भाषण दूंगी", मैंने कहा। मैं भी उस समय भावावेशमें कुछ उत्तेजित-सी हो रही थी। हमारे राष्ट्रीय आन्दोलनका अंग यही काया होने जा रहा था।

---

# प्रलोभन

श्री कामेश्वर शर्मा 'कमल', साहित्यभूषण

(क)

"आज प्रातः मिस्टर चार्ल्ससे मेरा परिचय हुआ। उन्होंने तुम्हें नमस्कार कहा है।" इमानाके चायका प्याला बढ़ानेके समय, उसके पतिने अखबारसे अपनी आंखें अलग करते हुए कहा। उदास नजरोंसे इमाना मकानके सटे बगीचेकी ओर देखने लगी—रङ्ग-बिरङ्गे फूलोंपर दिन-मणिकी विमल बाल रश्मियां इन्द्रजाल बुन रही थीं। फिर, ध्यान-भङ्ग करते हुए, आश्चर्य-चकित-सी वह बोल उठी :—

"अहा, वह अब तक इसी नगरमें हैं ! क्यों ?"

"हां, वह यहां बहुत दिनोंसे हैं। रहते हैं हम लोगोंसे बहुत दूर—शहरके पूर्वीय छोरपर। यों तो बार-लायब्रेरीमें उन्हें बहुत दिनोंसे देखा करता था, किन्तु आज ही अचानक उनसे बातचीत हो गयी। मालूम हुआ, उनका भी जन्म-स्थान क्रिसलैण्ड ही है, और शायद तुमसे बचपनमें अच्छी दोस्ती भी थी !"

"हां, थी.....। हम लोग एक ही गांवमें रहते थे। उनके पिता पुरोहित थे। राबर्टने क्या शादी कर ली है ?"

"नहीं, अभी तक नहीं की है, किन्तु अभी भी काफी उम्र है। उन्होंने इसी अरसेमें अच्छी तरक्की कर ली है।"

"वह मुझसे दो वर्ष बड़े हैं।" इमाना आप-ही-आप बोल उठी—"उनकी उम्र अब भी तीससे कम न होगी।"

"हां, इसमें क्या शक ! अच्छा, अभी मैं चला—रातको आज शायद लौट न सकूंगा।"

(ख)

"अच्छा अभी मैं चला—रातको आज शायद लौट न सकूंगा"—इमाना अपने सुदीर्घ दशवर्षीय वैवाहिक जीवनमें इसी तरहकी प्रेम-हीन वाणी सदासे सुनती आ रही है। पतिकी उदासीनता उसके लिए अब कोई नयी बात नहीं है। इसीलिए उसे अपने प्रणय-सम्भाषण-जालमें आबद्ध कर रखनेकी अब वह कभी चेष्टा भी नहीं करती। एक नग्न उदार अवसन्नताने उसके अन्तस्तलको अभिभूत कर छोड़ा है।

(ग)

धीरे-धीरे अपने बाल-बच्चोंके लिए वह भोजन-सामग्री सजा-सजाकर रख रही है; पर प्रसन्नचित्त नहीं, कुछ खिन्न हृदयसे, अनमनी होकर। चञ्चल-द्रुत गतिसे उसकी स्मृति दौड़ पड़ती है—अपने उसी सुदूर अतीतकी ओर।

आजका सम्पत्तिशाली राबर्ट उस समय था एक दुख-दैन्यका मारा, प्रचलित सभ्यता-हीन देहाती छोकड़ा। सदा-सर्वदा इमानाके पीछे-पीछे चक्कर काटता, समय-असमय अपनी प्रेम-प्रार्थनासे इमानाको तङ्ग करता।

इमाना उसके इस आदर-संबर्द्धनाहीन अशिक्षित देहाती प्रेम-व्यवहारको देख हंसती-हंसती लोट-पोट हो जाती। इसीसे उसके भाव-प्रवण उच्छ्वासके प्रत्युत्तरमें तीव्र व्यङ्ग-हास्यसे उसे वह अप्रतिभ कर डालती।

तदनन्तर उन दोनोंके जीवनमें आया—सहसा विराट परिवर्तन। राबर्ट यूनिवर्सिटीमें पढ़नेको चला गया। इमानाका विवाह हो गया। बाल्य-कालीन हंसी, कौतुक-भरी घड़ियां स्मृति-कक्षमें सञ्चित हो गयीं।

(घ)

उसका विवाह हुए आज दस वर्ष बीत गये। किन्तु इन दस वर्षोंमें यथार्थ प्रणय-रसका आस्वादन उसे एक दिनके लिए भी न मिला—न मिला। यही कारण है, जो बाल्य-जीवनकी अनवद्य चञ्चल घड़ियां—उनमें खेलका साथी राबर्ट, आज बारम्बार इमानाके स्मृति-पटपर बरबस अङ्कित हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशा (जर्मनी) के प्रधानमन्त्री जनरल गोरिंग बालकोंको माडल वायुयानकी बनावट एवं सञ्चालन क्रिया समझा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

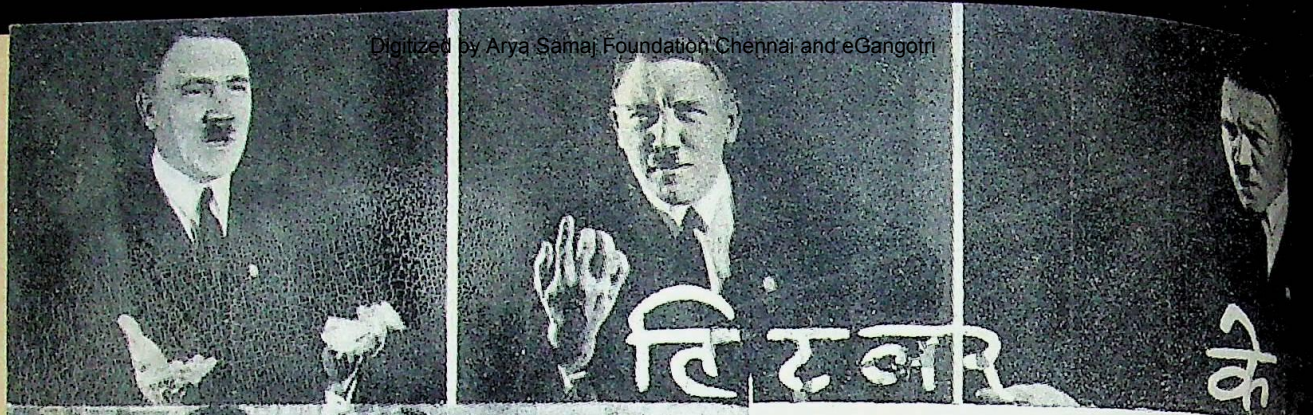

# हिटलर के

## ओ जर्मन सन्

"ओ जर्मन सन्तान ! भावी जर्मनीका भाग्य तुम्हारे ही हाथोंमें है। राष्ट्रका भविष्य तुम्हारे ही ऊपर है और आज हम जिस आदर्शके लिए लड़ रहे हैं, उसकी प्रतिष्ठा तुम्हारे ही हाथों होगी।

"ओ जर्मनीकी प्यारी सन्तान ! एक बार तुम्हें फिर इस बातका बोध हो जाय कि तुम एक ही राष्ट्रकी सहोदर सन्तान हो। तुम इस

बातक
कि तु
फिर

अपने
अपना
हैं, उ
आ ही

हिटलर

In Public Dom

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## सन्तान !

बातको महसूस करो बच्चो ! कि तुम पहले जर्मन हो, फिर और कुछ !

"जिस जातिके बच्चे अपने महान् आदर्शोंके लिए अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर देते हैं, उसपर कभी कोई सङ्कट आ ही नहीं सकता।"

—हिटलर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



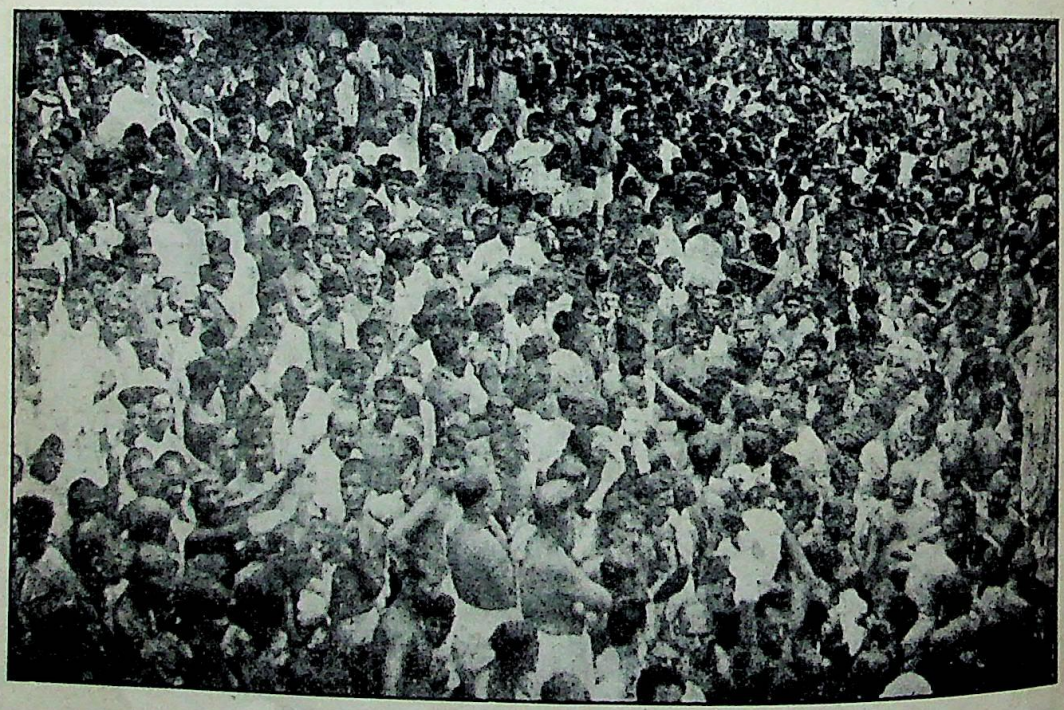

गत ३ फरवरीको अर्द्धोदय योगके अवसरपर कलकत्तेमें लगभग ८-१० लाख मनुष्योंने स्नान किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इमानाके निकट, खेलमें स्वेच्छासे पराजय स्वीकार कर राबर्ट विषाद-पूर्ण आंखें बनाकर जिस समय देखता था, उस समय युग्म नेत्रोंके भीतर एक अनिवर्चनीय प्रणयकी निगूढ़ व्यथाका अन्धकार घनीभूत हो उठता था। गर्विता विजयिनी विद्रूपकी हंसी हंसकर उसका उत्तर देती। अपनी उसी हृदय-हीनता, अरसिकताकी याद्कर आज सहसा इमानाने अपने अन्तस्तलमें एक आर्द्र वेदनाका अनुभव किया।

किन्तु थोड़ी ही देरमें, बालकोंके कलकण्ठ-निःसृत शब्दने उसकी चिन्ताके आवरणको छिन्न-भिन्न कर दिया। कलरव करते हुए उसके समीप दो-एक बच्चे चले आये। कोई 'टेडी-एमा' कहकर गोदमें लेट गया, कोई पीठपर चढ़कर मांको अपनी छोटी-छोटी सुकुमार बाहोंसे झकझोरने लगा। तत्क्षण इमानाके आनन्दहीन नीरस जीवनमें स्वर्गीय कमनीयता भर दी इन अबोध बच्चोंने।

उस दिनसे उसके जीवनकी घड़ियां प्रायः रोज इसी तरह कटा करतीं। बच्चे कभी पुस्तक लेकर मांको घेरकर बैठ जाते, फिर कोई किसी पंक्तिका अर्थ पूछता, कोई पाठ पढ़कर सुनाता। इसी समारोहमें, इमानाके नेत्रोंमें अतीतकी छवि म्लानसे म्लानतर हो, अन्तमें लुप्तप्राय हो जाती।

( च )

शरदृऋतुका प्रातःकाल—

नगरके प्रशान्त पथपर उषाकालीन मरीचिमालीका मधुर प्रकाश छिटक पड़ा है। उसकी नवदीप्त किरणोंकी ओर पीठ फेरकर भिखारी कातर-कण्ठसे भीख मांग रहे हैं। हाकर चिल्ला-चिल्लाकर अखबारकी ताजी खबरें सुना रहा है। दोनों ओरके फुटपाथपर लोगोंका आवागमन शुरू हो गया है। इसी समय किसी मित्रके यहांसे इमाना अपने पतिके साथ घरकी ओर लौट रही है। कुछ दूर आकर उसके पतिने कहा—"मुझे इसी जगह एक मुवक्किलसे जरूरी बातें करनी हैं, तुम्हें अकेली जानेमें कोई असुविधा तो न होगी?"

"नहीं, कुछ नहीं।" इमानाने जवाब दिया। ठीक उसी समय रास्तेकी दूसरी ओर भीड़में आगे जानेवाले एक सज्जनकी ओर इमानाकी दृष्टि गयी। आंखें चार होते ही, सत्वर ही इमानाने लज्जासे अपनी आंखें नीचे फेर लीं।

इसके बाद जिस समय उस पथिकने इमानाके सामने आकर ससम्मान अभिवादन किया, उस समय इमानाने उसकी ओर एक बार और देखकर अन्यमनस्क भावसे प्रति-अभिवादन किया। पथिककी गम्भीर दृष्टि इमानाके मर्मस्थल-के निम्नतर स्तर तक पहुंच गयी।

वही विषाद-पूर्ण, वेदना-हत शान्त आंखें—इमाना अच्छी तरह पहचानती है। उसके पतिसे कुछ पूछ-ताछकर पथिक एक बार इमानाकी ओर फिर मर्म-दृष्टि डाल, आगे चल पड़ा।

उसके पतिने कहा—"राबर्ट बड़ा भला आदमी है। आदर-सत्कार भी अच्छा जानता है?" अन्यमनस्कतापूर्वक इमानाने क्या जवाब दिया, कुछ समझमें न आया।

"अखबारमें देखा—राबर्ट एक बड़ा मुकदमा लेकर इम-स्टर्डाम जा रहा है—बड़ा कर्मठ युवक है—अच्छा चल निकला है।" इसी तरह कुछ बोलते-चालते, थोड़ी देर बाद उसका पति मोड़पर आकर अदृश्यके अन्तरालमें चला गया। इमाना पूर्ववत् अपनी राहपर कुछ उन्मनेपनके साथ चलती रही। उस समय उसका ध्यान एक अज्ञात स्वप्नमें निमग्न हो रहा था।

शायद वह सोच रही थी—राबर्टके इस आकस्मिक मिलन-की बात। आह, यदि वह एकान्तमें मिलता, तो वह उससे कितनी बातें करती! अपने ग्रामकी बातें, बचपनकी कथायें, सभी पूर्व-बन्धु-बान्धवोंके समाचार, और न मालूम क्या-क्या।

धीरे-धीरे उसने अपनी वाटिकामें प्रवेश किया। उसके पीछे अर्द्ध-विकसित पुष्प-पटल नतमस्तक हो झूम रहे हैं। सहसा परिचित कण्ठ-स्वर सुन इमाना चमक उठी—स्वप्न टूट गया। वह आंख उठाकर देखती है—सामने खड़ा राबर्ट।

इमानाका आपाद-मस्तक सिहर उठा, मुंहपर लालीका सञ्चार हो गया और हृदयका रक्त जम-सा गया। किन्तु कुछ ही क्षणमें अपनेको संयत कर वह बोल उठी—"कुशल है न, रब!" और किसी नामसे सम्बोधित नहीं कर सकती थी इमाना! फिर, इमानाका दांया हाथ राबर्टके दांये हाथसे जा मिला! वह तप्त हाथ इमानाका कितना परिचित था!

"तुम्हें क्या इमा कहकर ही सम्बोधित करूं आज भी?" राबर्टने पूछा।

"हां,.....कर सकते हो!" इमानाने अपने हृदयप्रदेश-की सारी व्यथा अपने मुख-मण्डलपर ला रखी।

हंसीके अन्तरालमें, मनके भावको छिपाकर राबर्टने कहा—"आज एक वर्षसे मैं इसी शहरमें हूं, पर भेंट होती है आज इतने दिनोंपर!"



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इमानाने भी हंसते हुए उत्तर दिया—"ठीक है ! किन्तु तुम तो अपने मामले-मुकदमेमें व्यस्त रहते हो पूरबकी ओर, और मैं अपनी घर-गिरस्तीमें लीन रहती हूं पश्चिम। फलतः.....।" हंसी-मजाकमें बातें अनायास ही आगेकी ओर बढ़ चलीं। इमानाने कहा—"जानते हो रब ? मैं तुम्हें पहचान ही न सकी, तुम इतने बदल गये हो !" राबर्टने इमानाकी ओर देखते हुए कहा—"हां, बाहरी परिवर्तन मुझमें चाहे जितना हुआ हो इमा, पर अन्तर्परिवर्तन आज भी नहीं हो सका है।"

इमाना नत-मस्तक हो पृथ्वीकी ओर देखने लगी, उसका अन्तस्तल अनिर्वचनीय आनन्दसे आच्छन्न हो गया। विजयके आनन्दसे।

राबर्ट—"आजकल दोपहरके बाद कहीं घूमने-फिरने नहीं जाती हो ?"

इमा—"हां, जाती हूं—बाल-बच्चोंको लेकर।"

राबर्ट—"अहा, ऐसी बात ? बाल-बच्चे कितने हैं ?" उसकी वाणी विस्मयसे अभिभूत थी।

"एक पुत्र, एक कन्या।"—सिर नीचाकर इमाने राबर्टके उत्तरमें कहा। फिर स्तब्ध !.....

मार्गपर गाड़ियां गड़गड़ाहटके साथ चल रही हैं। हाकर भी हल्ला मचा रहे हैं। लड़के स्कूलकी ओर टोली-टोलीमें जा रहे हैं। किन्तु ये दोनों स्पन्दित अन्तस्तलके साथ सिर्फ नीरव खड़े हैं और अपनी आंखोंको तुषाराच्छन्न पृथ्वीपर फैला रहे हैं।

थोड़ी देर पश्चात् इमाना बोली—"सुना है, तुम किसी कार्यसे परदेश जा रहे हो ?"

"अभी कोई निश्चय नहीं है। पहले ऐसा सोचा था—जाऊंगा। पर अभी, ठीक नहीं है इमा !"

इमा निरुत्तर मौन रही।

—"तुम आजकल 'स्केट' करने नहीं जाती, इमा ?

—"जाती हूं कभी-कभी।"

अपने कण्ठमें अनुरोधका स्वर भरकर राबर्टने कहा—"आज सन्ध्यामें आ सकोगी ? वहां आज अच्छा मेला है। कितने हवाई जहाज उड़ेंगे, रोशनी होगी, बाल डान्स होगा और विविध प्रकारके क्रीड़ा-कौतूहल होंगे—आओगी क्या ?"

इमाना ऊपरकी ओर नजर न उठा सकी। फिर भी, पुरुषोंकी आह्लाद-पूर्ण उद्दीप्ताकांक्षाको नारी अपने दुर्बल हृदयस्थलसे टाल नहीं सकती। अतः उसने उत्तरमें कहा—"ठीक नहीं कह सकती हूं; मैं.....!"

"क्यों नहीं कह सकती हो इमा !"—राबर्टने उसके कोमल करको फिरसे अपनी ओर खींच लिया। "तुम क्या मुझसे भय खा रही हो ? या अविश्वास करती हो ?"

इमा निरुत्तर रही। उसके कपोलोंपर गुलाबकी गहरी लाली दौड़ गयी। राबर्टने उसके कोमल करोंको फिर दबाते हुए कहा—"आओ, जरूर आओ। आज सन्ध्याकी भेंटसे मुझे वञ्चित कर निराश न करो इमा।" सिर हिलाकर राबर्ट चला गया। किन्तु इमानाके मर्ममें एक प्रभाव—दुर्लङ्घ्य प्रभाव छोड़ गया। सचमुच, दुर्निवार आकर्षण था उसका।

(छ)

सुरम्य कक्षके सुवृहत् दर्पणके सम्मुख इमा अपनेको सुसज्जित करनेमें लगी है। उसका उद्वेलित अन्तस्तल उत्तेजनासे परिपूर्ण हो उठा है। उसे मालूम होता है—मानो उसके सामने एक अभिनव जीवनका सिंह-द्वार उन्मुक्त हो गया है। इतने दिनोंके वैवाहिक जीवनमें उसने क्या पाया है ?—अनादर, अवहेलना, अवज्ञा, और हो सकता है, घृणा भी।

वह अपने पतिदेवके प्राङ्गणकी एक विश्वस्त सेविका है—जीवनमें इससे ज्यादा मर्यादा उसने और कब प्राप्त की ? जीवनमें उसके लिए भोग नहीं, आनन्द नहीं, चञ्चलता नहीं—है केवल शुष्क कठोर कर्तव्य !

दर्पणमें, अपने शेष यौवन-भारावनत सुदाम देहकी ओर इमाने एक नजर दौड़ायी—सुतीक्ष्ण नजर !

आजकी सन्ध्याके लिए उसका सन्तप्त हृदय पिपासाकुल हो उठा है। वह आज जीवनका लाभ प्राप्त करेगी—जिन्दगीका आनन्द लूटेगी। तो फिर इसमें किसीका क्या नुकसान ? दो प्रेमी यदि निभृत निकुञ्जमें बैठ प्रेमालाप करेंगे, कुछ देर 'स्केट' करेंगे, तो इसमें क्या दोष ? अपराधकी भीति क्या ?

वह आज अपने इस निरानन्द संसारमें किञ्चित् उन्मादसब ढाल लेना चाहती है—अपने विषादाच्छन्न अन्तस्तलमें कुछ क्षणके लिए सुख-सिहरन लाना चाहती है। इसीलिए गर्म कोट धारण कर, पीठपर 'स्कार्फ' डाल, इमाना एक बार, अपनी सघन कृष्ण कुन्तल-राशिको सुसज्जित करने लगी। पाउडरका 'पफ' एक बार और कपोलोंपर फेर डाला। रूमालमें एसेन्सकी छींटें एक बार और लगायीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सहसा जोरसे घरका द्वार खुल पड़ा; और चपल चरणसे उसमें प्रवेश किया इमानाके जीवनकी प्रथम स्वर्ण-किरण टेडीने।

"मां, तुम यहां हो? ओह, साल्लस होता है, तुम कहीं जानेवाली हो?"

"हां, टेडी!" इतना कहकर इमाना अपलक दृष्टिसे देखने लगी—कैसी सरल हास्योज्ज्वल दीप्ति है बालककी आंखोंपर!

—"तुम अब तक खेल ही रहे थे?"

"हां, मां! कैसा आनन्द था! जानती हो मां, आज सभी फिर हैरीको कुढ़ाते थे। हैरीको तो तुम जानती हो मां? वही—जो उस पिछली गलीमें रहता है।"

हां, इमाना उसे जानती है; उसकी मांको भी जानती है। आज एक वर्ष हुआ, अभागिनी अपने पुत्रको छोड़, किसी एक निरुद्देश्य अपरिचितके साथ निकल पड़ी है।

टेडी बोल उठा—"आज हैरीको, उसकी मांके विषयमें न जाने क्या-क्या कहकर चिढ़ाते थे सभी!"

"वे सब बहुत दुष्ट हैं, तुम उनसे मत मिला करो!" यह कहते हुए इमानाका कण्ठ प्रकम्पित हो रहा था।

"किन्तु वे सब मुझे कुछ नहीं कहते मां! तुम उन लोगोंको मिठाई बांटती हो, वे सब तुम्हें बड़ा प्यार करते हैं।"

सहसा इमानाने बच्चेको छातीसे लगा लिया और चुम्बनसे उसके मुंहको भर दिया।

कुछ क्षणके बाद ही टेडी फिर पूछ उठा—

"तुम कहां जाओगी, मां?"

"कहीं न जाऊंगी, बेटा!"

इमानाने कोट उतार फेंका, उसका मुंह विवर्ण हो उठा। बलपूर्वक दोनों ओठोंको बन्दकर न जाने कैसा दृढ़ सङ्कल्प कर बैठी।

अन्तस्तलका तुमुल द्वन्द्व निःशेष होनेपर धीरे-धीरे एक स्निग्ध शान्तिसे उसके सारे अङ्ग-प्रत्यङ्ग खिल उठे। टेडी उत्फुल्ल हो बोल उठा—"जाओगी नहीं कहीं मां? ओह, तब बड़ा अच्छा होगा। आज राजकुमारीकी वह कहानी सुनकर ही सोने दूंगा। कहोगी न मां? बहुत लम्बी कहानी है न?"

इमाना कोचपर बैठ गयी और टेडीसे बोली—"जाओ, एमाको बुला लो।"

चपल टेडी क्षण-भरमें घरसे बाहर चला गया। इमाना उसके द्रुत गमनकी ओर मुग्ध नेत्रोंसे देख रही है। एक अकथनीय आनन्दकी आभासे उसका मुख-मण्डल उद्भासित हो उठा। हृदय तृप्ति-सलिलसे ओत-प्रोत दीखने लगा। *

———

* नार्वेजियन लेखिका जोहाना उडकी एक कहानीसे।

# मीठी नींद

होती चली घनी अंधियारी, झलके अम्बरके तारे
रोएं सिहर उठे—दिन डूबा, बुझे न दिलके अङ्गारे
आंखें झुकीं दर्द आ लिपटा, बिखर पड़े दो-दो मोती
इस रजनीका रङ्ग सांवला, आती याद व्यथा होती
दिनके स्वेद रातके आंसू, थका हुआ दुर्बल डैना
गरज-गरज घनश्याम आ गये, बोल रही भीतर मैना
यह समीरका झोंका ऐसा, रह-रहकर पिंजड़ा डोले
फटी चदरिया सिली गुदड़िया, पर मनुआ किवाड़ खोले
पापी प्राण सदाके प्यासे, आस लगी उम्मीद लगी
भूले सुधि, सपनोंमें खोये, मीठी-मीठी नींद लगी

—गोपालसिंह नेपाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रूसी क्रान्तिकी एक घटना

"सर्वहारा"

यह घटना उस जमानेकी है, जब रूसी क्रान्तिके दमनके लिए मित्रराष्ट्रोंने रूस और साइबेरियामें अपनी सेनायें भेजकर किसानों और मजदूरोंपर भीषण अत्याचार किये थे। मगर वही आग और पूंजीवादकी चिताग्नि क्रान्तिपताकाकी लालिमामें परिणत हो गयी। कैसे, यह सुनिये।

*

जापान, अमेरिका और जेकोस्लावेकियाकी विशाल वाहिनीने ब्लेडीवास्टकके दुधमुंहे सोवियटको मिट्टीके ढेलेके समान तोड़कर फेंक दिया था। तोप और बमोंकी मारके आगे क्रान्तिका सारा जोश ठण्डा पड़ गया था। किसमें इतना बल था कि दुर्धर्ष क्रान्ति-विरोधी सेनाका सामना करे?

क्रान्तिके आह्वानको अगर किसीने सुना तो उन जहाजियोंने, जो समुद्र-तटपर ठिठुरते हुए पूर्वका सिरा पश्चिमसे मिला रहे थे। वे अर्थनीति और राजनीतिकी उलझनोंको न समझते थे। वे केवल इतना जानते थे कि कल वे गुलाम थे और आज आजाद हैं; कल वे पशु थे, आज मनुष्य हैं, और यह सब सोवियटने किया है। अब उसी सोवियटके प्राण सङ्कटमें हैं।

अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित बीस हजार सिपाहियोंसे मोर्चा लेनेके लिए ये दो सौ पागल कम्यूनिस्ट-केन्द्रकी इमारतको अपना किला बनाते हैं। भीतरसे उसके फाटक बन्दकरके वे मशीनगनों और तोपोंके मुकाबलेमें बन्दूक और राइफल लेकर बैठ जाते हैं। दोपहरसे लेकर शाम तक क्रान्तिके नशेमें मतवाले होकर वे खूनकी होली खेलते रहे। फिर रात हुई और मौतकी आंखें दीपक बनकर चमकने लगीं, तो भी क्रान्ति-मन्दिरकी खिड़कियोंका काल-गान समाप्त न हुआ।

निबिड़ अन्धकारमें शत्रुपक्षका एक लड़ाका चुपके-चुपके इमारतके पास आता और उसपर एक बम फेंकता है। देखते-देखते वही किला क्रान्तिके सिपाहियोंका श्मशान बन जाता है। बचे-खुचे सिपाही अर्धमृतावस्थामें आत्मसमर्पणकी दुहाई मचाते बाहर निकलते और गोलियोंके शिकार होते हैं।

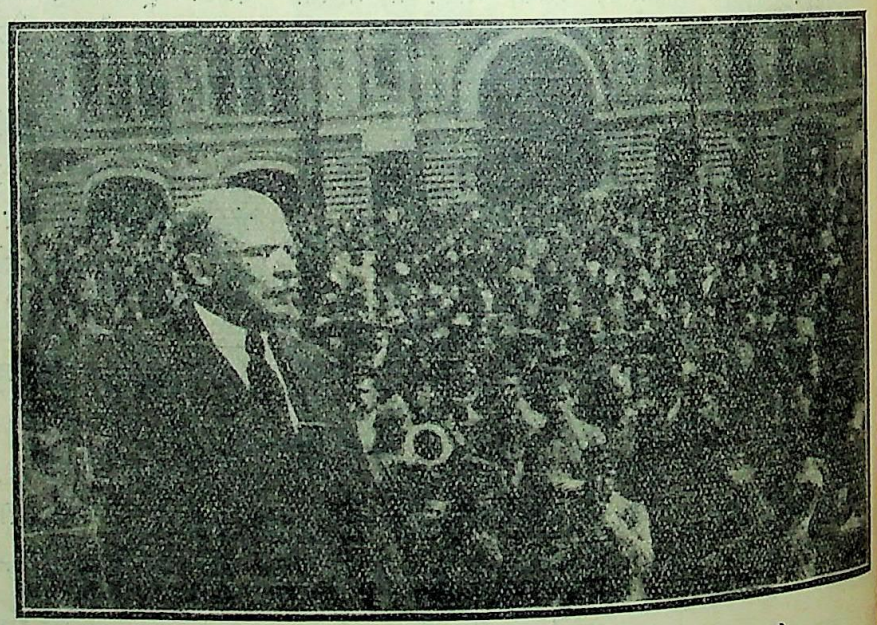

लेनिन जनताकी एक बहुत बड़ी सभामें अपनी मांगें पेश कर रहा है।

फिर सोवियटकी लाशपर प्रतिक्रियाका जुलूस!— पूंजीपतियोंके हर्षका ठिकाना नहीं है। ऊंची हवेलियोंसे स्तुतिगान दीपावलीके सहारे ईश्वरको यह शुभ संवाद सुनाने लगते हैं। गिर्जाघरोंके घण्टे पूंजीवादका जयघोष करने लगते हैं और पादरी जारकी विजयके लिए ईश-भजनमें व्यस्त हैं। युद्ध-नौकाओंसे नाच-गानका रव हवाको मस्त कर देता है। मगर मजदूरोंके मुहल्लेमें सन्नाटा है, मातम है, उदासी है। केवल विधवाओं और अनाथोंकी सिसकियां उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हुतात्माओंकी गाथा सुनानेके लिए रह गयी हैं जिनकी अर्थीका जुलूस कल निकलेगा।

*

चौथी जुलाईका सूरज क्रान्तिगानकी घोषणा करता हुआ निकला—जो जुलूसको मुखरित कर रहा था। यह जुलूस सोवियटके शहीदोंपर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेके लिए निकाला गया था। तीन दिनके आतङ्क और हिरासके बाद पूरे शहरके मजदूर पूर्णिमाकी सहोदर्मियोंके समान उनकी लाशोंके साथ समाधि-स्थानकी ओर जा रहे थे।

अनगिनत नरनारियोंके धूसर, खिन्नमलिन चेहरोंके आगे बोल्शेविक जहाजी बेड़ेके नाविकोंके दो परेड थे। उनपर लाल झण्डोंका जाल-सा लहरा रहा था। सामने चार आदमी एक विराट लाल पताका लिये चल रहे थे जिसपर ज्वलन्त शब्दोंमें लिखा हुआ था—"उत्पीड़ितोंका अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृमण्डल अमर हो!" शहरकी ४४ मजूर-सङ्घोंके प्रतिनिधित्वके लिए एक सौ कुमारियां आयी थीं, जो दुग्धश्वेत वसन पहने, शोक-चिह्न लगाये हरी पत्तियोंकी मालाके साथ पीछे मातम करती जाती थीं। रक्त-रञ्जित ताबूतोंको कई कामरेड कांधा दे रहे थे। बैण्डके गीत उस हाहाकारमें डूब गये थे जो १७ हजार गलोंसे निकलकर आकाश-पातालको कम्पायमान कर रहा था।

"झण्डा लाल उड़ावेंगे"—इस वाक्यमें विद्रोह और प्रतिवादका सारा जोर उमड़ आया था, जो मित्र-शक्तियोंकी ४८ इञ्ची तोपोंसे भी अधिक दुर्दमनीय था। इन निहत्थे, नङ्गे-भूखे, मजदूरोंकी जबानसे क्रान्ति अपना अमर सन्देश सुना रही थी—वह सन्देश, जिसमें अन्याय और अत्याचारका काल बस रहा था। कला और साहित्यके विलास-भवनमें यह गीत न बना था। वह गणशक्तिके हृदयसे निकला और उसके ही हृदयमें बस गया था।

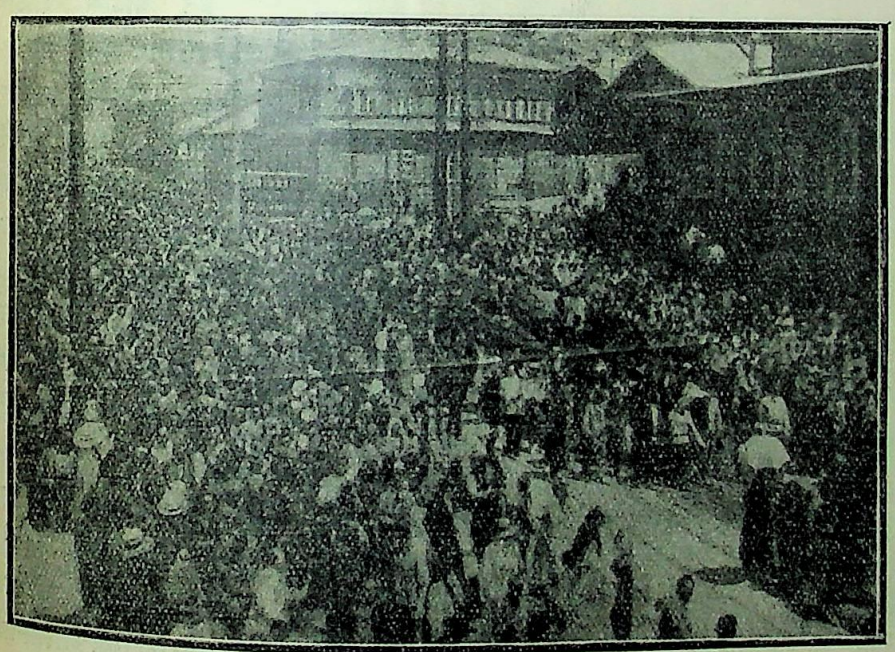

बोल्शेविकोंकी श्मशान-यात्रा—सोवियेटकी रक्षामें काम आये हुए नाविकोंकी अर्थीका जलूस।

सोवियटके दमनसे जन-साधारणमें पराभव और निराशा कहां? उलटे अगाध इच्छा-शक्ति, अजेय श्रेणी-चेतनाका उदय हो गया। १७ हजार मजदूरोंमें एक दिल धड़क रहा था, एक नाड़ी खटक रही थी।

जेक सिपाही परलोकवासी शत्रुओंके प्रति सम्मान-प्रदर्शनके लिए गार्ड आव आनर लाये, मगर मजदूरोंने साफ इनकार कर दिया—"नहीं, यह न होगा। जिन सङ्गीनोंने उनके जीवन-प्रदीप बुझा दिये, वे क्यों मौतके बाद उन्हें कलङ्कित करें!"

कुछ पूंजीवादी संस्थायें स्मारकके लिए भेंट लायीं, पर जनताने यही कहा—"हमारे कामरेड तुम्हें मिटानेके लिए खुद मिट गये, फिर हम कैसे तुम्हारी भेंट उनकी लाशोंपर चढ़ने दें।"

जब जुलूस मैदानमें पहुंचा तो बैण्डने एक करुण-राग छेड़ा। जब वह बन्द हुआ तो भावावेशसे लोगोंके सिर झुक गये और थोड़ी देरके लिए निस्तब्धता-सी छा गयी। फिर एकाएक उत्तप्त भावोंका सोता टूट पड़ा; एक खाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मोटरलारीपर कोई किसान कूदकर चढ़ पड़ा। सदियोंका उत्पीड़ित मूक किसान भी अब बाचाल बन गया था : "किसानका सारा जीवन मानवताकी अमिट कलङ्ककालिमा है। जारके शासनकालमें ताड़ना, क्षोभ और भूखके सिवा हमें क्या मिला। क्रान्तिने किसान और मजदूरकी भाग्य-धारा ही पलट दी, पर धूमकेतुके समान हमारे संसारमें प्रतिक्रियाका आगमन हुआ और फिर बदनसीबीका अंधेरा छा गया। हम कैसे मानें कि ये लाशें हमारे भाइयों और बेटोंकी हैं जो हमारी मुक्तिके लिए लड़ते हुए मारे गये।"

उसके बाद ही जुलूसमें यह खबर बिजलीके समान फैल गयी कि मजदूरोंका हृदय-सम्राट् सुखेनाफ कैदसे थोड़ी देरके

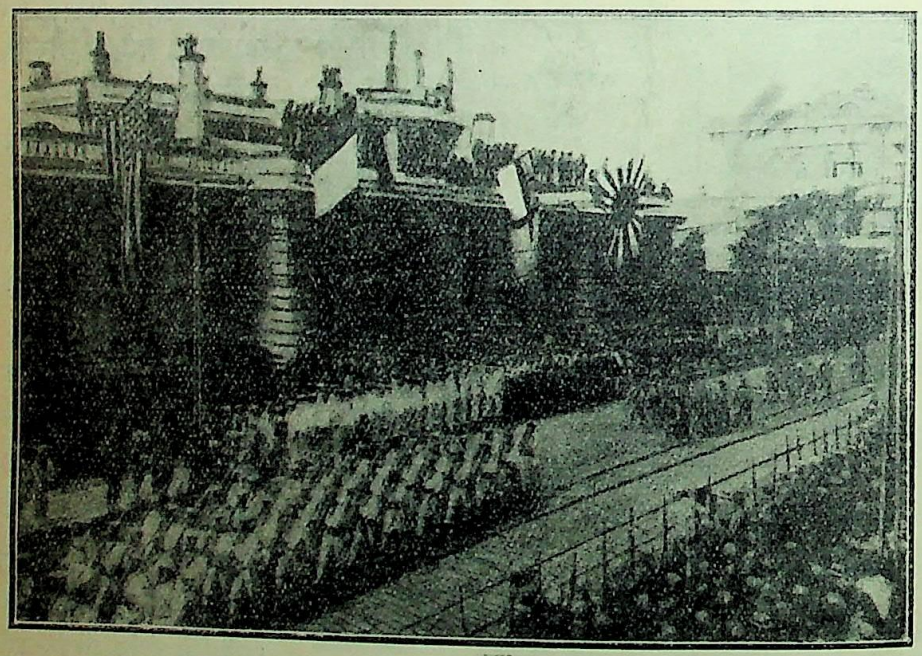

मित्र-राष्ट्रोंकी सेनाओंने ब्लाडीवास्टकके सोवियटको कुचल डाला।

लिए रिहा किया गया है ताकि उन्हें शान्त-क्षान्त रहनेकी सम्मति दे। अभी भीड़में इस संवादका समर्थन और खण्डन हो ही रहा था कि जहाजी उसे कन्धोंपर बिठाकर सभास्थल तक ले आये।

नवयुवक सुखेनोफने जब पहले-पहल खूनी ताबूतोंको देखा, तो उसके धीरजका बांध टूट पड़ा। वह बच्चोंके समान बिलख-बिलखकर रोने लगा और साथ ही १७ हजार पत्थर-दिल मजदूर भी खूनके आंसू रोने लगे। मगर थोड़ी ही देरमें सुखेनोफ वास्तविक परिस्थितिको समझ गया, क्योंकि ठीक सामने पूंजीपतियोंकी तोपें और पीछे उनके दूतावास बरबादीकी याद दिला रहे थे। सुखेनोफका यही भाषण सुदूर पूर्वके मजदूरोंका पथप्रदर्शक बन गया :—

"इन लाल कफनियोंको थामकर, अपने शहीद भाइयोंके बच्चोंके सिरपर हाथ रखकर, इन लहराती हुई पताकाओंको छूकर हम सब कसम खाते हैं कि सोवियटको पुनर्जीवन दान करेंगे, या इस प्रयत्नमें हम सब भी इनके समान अपने प्राण होम देंगे। आजसे सोवियटका प्रतिष्ठान ही हमारे जीवनका प्रमुख उद्देश्य हो गया और हम इसके लिए ही जियेंगे या मरेंगे। सोवियट मर गया, सोवियट अमर हो!"

इन थोड़े-से शब्दोंमें जादूका-सा असर था जिन्होंने मजदूरोंमें नवजीवन फूंक दिया। 'अन्तर्राष्ट्रीय'के बाद वह हृदयवेधक और जोशीला, 'क्रान्तिका अमर सङ्गीत' आरम्भ हुआ :—

"जनताकी स्वतन्त्रता, जनताके सम्मानके लिए इस संहारक संग्राममें तुम निष्प्राण हो गये हो।

तुमने अपनी जान—अपना सर्वस्व वार दिया।

वह जमाना आयेगा, जब तुम्हारा यह आत्मत्याग हमारे लिये पथ-प्रदीप बनेगा।

लो, वह दिन आ गया, जब अत्याचार दम तोड़ता है, जब शक्ति जाग पड़ती है, जब वह स्वतन्त्र और महान् बनकर करवट बदलती है।

मानवताके सुख और आजादीके लिए लड़नेकी कसम हम तुम्हारी कब्रोंके सामने खड़े होकर खाते हैं।"

तत्काल सर्वसम्मतिसे यह प्रस्ताव पास हुआ कि सोवियटका पुनर्स्थापन ही सुदूर पूर्वके क्रान्तिकारी किसानों और मजदूरोंका प्रमुख उद्देश्य है। १७ हजार हाथोंने अपने निश्चयपर अटल रहनेका प्रण लिया—उन हाथोंने, जिन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जमीनोंके नीचे और ऊपर, समुद्रके हत्तलमें और रणक्षेत्रमें समाजको उन्नतिका मार्ग दिखलाया था। चार दिन पहले व्लाडीवास्टकका शासनसूत्र इन्हीं हाथोंमें था। आज वे कमजोर थे, फिर भी अपनी खोयी हुई शक्तिको वापस लेनेकी प्रतिज्ञा कर रहे थे।

कुहासे और हिमाच्छन्न वातावरणको चीरकर, प्रति-क्रिया और मरणासन्न पूंजीवादके सर्वनाशकी ओर इङ्गित करते हुए, सुनसान समाधि-स्थानमें जीवनका क्रान्ति-गान प्रतिध्वनित हो रहा था!

कुछ समय बीतते ही व्लाडीवास्टक सुदूर पूर्वकी क्रान्तिका प्राचीर बन गया और आंधीको रौंदकर, अत्याचारोंको कुचलकर मजदूरोंने वहां अपनी विजय-पताका लहरायी।

---

# यूरोपमें व्यावसायिक क्रान्ति

( २ )

श्री सत्यकेतु विद्यालङ्कार

## फैक्टरी सिस्टमका प्रादुर्भाव

आर्थिक सङ्गठनका जो रूप वर्तमान समयमें प्रचलित है, उसे फैक्टरी सिस्टम कहते हैं। पर यह अठारहवीं सदीके अन्तिम भागमें शुरू हुआ था। यह मुख्यतया व्यावसायिक क्रान्तिका परिणाम है। इससे पहले आर्थिक सङ्गठनका जो रूप सर्वत्र प्रचलित था, उसे गृह-व्यवसाय कहते हैं। गृह-व्यवसाय ( Cottage Industry ) की दशामें कारीगर लोग अपने घरपर बैठकर काम करते थे। उन्हें काम करनेके लिए किसी कारखानेमें आनेकी जरूरत नहीं थी। उनका घर ही उनके लिए छोटा-सा कारखाना था, जिसमें वे अपनी स्त्री और बच्चोंके साथ मिलकर कार्य करते थे। काम करनेका कोई समय निश्चित नहीं था। जिस समय वे चाहें, काम करते थे। जिस समय चाहें, आराम करते थे। वे कारीगर अपनी रोजीके लिए पूर्णतया व्यवसायपर ही आश्रित न होते थे। प्रायः उनकी अपनी घरकी जमीन भी होती थी। खेतीके मौसममें अपनी जमीनको वह जोतते-बोते भी थे, और बाकी समयमें कपड़े, चमड़े, बढ़ई आदिका व्यवसाय भी करते थे। उस समय आवश्यकतासे अधिक उत्पत्तिकी समस्या उत्पन्न ही नहीं हो सकती थी, क्योंकि कारीगर लोग या तो आर्डर मिलनेपर काम करते थे, या आसपासकी मण्डियोंके लोग माल तैयार करते थे; जिनकी जरूरतोंका उन्हें स्वयं ज्ञान होता था।

पर धीरे-धीरे इस दशामें परिवर्तन आना शुरू हुआ। उधर यूरोपमें व्यापारिक क्रान्ति हो रही थी। लोग अटलाण्टिक सागरको पारकर अमेरिकामें जाने लगे थे। अफ्रीकाके विशाल महाद्वीपका चक्कर काटकर भारत, जावा, सुमात्रा आदि पूर्वीय देशोंके साथ भी उनका सम्बन्ध हो गया था। इन सुदूरवर्ती प्रदेशोंके साथ व्यापार शुरू हो जानेसे व्यापारका क्षेत्र बहुत बढ़ गया था। अब कारीगरोंको केवल अपने पासकी मण्डीके लिए ही माल नहीं तैयार करना था, उसे सुदूरवर्ती सात समन्दर पार किसी अज्ञात देशमें बेचनेके लिए भी माल तैयार करनेकी आवश्यकता थी। इस अज्ञात देशके लिए माल बनानेका आर्डर उसे किसी धनी व्यापारीके एजेण्ट द्वारा प्राप्त होता था। इस तरहके धनी व्यापारी अब बहुत काफी हो गये थे, जो विदेशी व्यापारके कारण मालामाल हो रहे थे। कारीगरोंको ये धनी व्यापारी केवल मालका आर्डर ही नहीं देते थे, पर साथ ही उसे कच्चा माल भी स्वयं देते थे। कई बार आवश्यक पूंजी भी उन्हींकी तरफसे दी जाती थी। कारण यह कि इससे कारीगरोंको सहूलियत होती थी। वे गरीब लोग इतना सारा कच्चा माल इकट्ठा नहीं खरीद सकते थे। पर कच्चा माल और पूंजी प्रदान करनेके साथ-साथ धनी व्यापारियोंकी महत्ता बढ़ती जाती थी, कारीगरपर उनका शिकञ्जा जबर्दस्त होता जाता था। कारीगरकी अपनी स्थिति आश्रितकी होती जाती थी। धनी व्यापारी जब कारीगरको कच्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



माल और पूंजी देकर एक खासा बड़ा आर्डर कामके लिए देता था, तो यह भी शर्त लगाता था कि काम फलां समय तक अवश्य मिल जाना चाहिए। उजरतकी दर भी वह स्वयं निश्चित करता था। धीरे-धीरे इन धनी व्यापारियोंके सम्मुख कारीगरकी हैसियत एक मजदूरकी होती जाती थी, जो अपनी रोजीके लिए उनपर आश्रित होता था और जिसे उनकी मर्जीके मुताबिक काम करना पड़ता था।

कारीगर लोग बहुत बार समयपर काम नहीं देते थे। कई बार उनका काम भी असन्तोषजनक होता था। धनी व्यापारीको इससे बहुत नुकसान पहुंचता था। उसे तो ठीक समयपर और ठीक तरहका काम चाहिए था। इसलिए धीरे-धीरे यह प्रवृत्ति शुरू हुई कि बजाय इसके कि कारीगरोंको घरपर करनेके लिए काम दिया जाय, उन्हें एक स्थानपर, एक मकानमें इकट्ठा कर लिया जावे, वहींपर सब जरूरी औजार भी विद्यमान हों, कच्चा माल भी पड़ा हो, कारीगर वहां ठीक समयपर आवें और काम करके ठीक समयपर चले जावें। इससे उनके कामपर भली भांति निरीक्षण भी हो सकता था और काम भी ठीक समय मिल जाता था। इसी प्रकारके स्थानों व मकानोंको, जहां कारीगर लोग धनी व्यापारी पूंजीपतिके निरीक्षणमें कार्य करें, फैक्टरी कहते हैं। व्यापारके विस्तारके कारण जो परिस्थितियां उत्पन्न हुई थीं, जिस तरह मालकी मांग बढ़ गयी थी, उससे यह जरूरी था कि आर्थिक उत्पत्तिके सङ्गठनमें भी परिवर्तन आवे। उसीसे फैक्टरी सिस्टमका प्रादुर्भाव हुआ। यह ध्यान रखना चाहिए कि यान्त्रिक आविष्कारोंसे पहले ही व्यापारिक आवश्यकताओंके कारण फैक्टरी सिस्टमका प्रादुर्भाव हो चुका था। उसके साथ ही उधर यान्त्रिक आविष्कार भी प्रारम्भ हो गये। उनके कारण इस फैक्टरी सिस्टमको और भी सहायता मिली। जो उन्नत मशीनें इस समय आविष्कृत हो रही थीं, उनका सञ्चालन प्रत्येक कारीगर अपने घरपर नहीं कर सकता था। उसके पास इतनी पूंजी नहीं होती थी कि वह उन्हें स्वयं खरीद सके। सुगमता इसी बातमें थी कि धनी पूंजीपति उन मशीनोंको कारखानेमें रख दे, और कारीगर लोग वहां आकर उनसे माल तैयार करें। इस प्रकार फैक्टरी सिस्टमका प्रादुर्भाव हुआ।

## व्यावसायिक क्रान्तिके परिणाम

व्यापारके विस्तार और यान्त्रिक आविष्कारोंके कारण गृह-व्यवसायकी दशाका अन्त हुआ, और फैक्टरी सिस्टमका प्रारम्भ हुआ। मनुष्य जातिके इतिहासमें यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण परिवर्तन है। इससे मनुष्योंके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवनमें बहुत बड़े परिवर्तन हुए। इसीको व्यावसायिक क्रान्ति कहते हैं। इससे मनुष्यके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवनपर क्या प्रभाव पड़ा, इसपर हम अब विचार करेंगे।

(१) उत्पत्तिमें वृद्धि—व्यावसायिक क्रान्ति द्वारा आर्थिक उत्पत्तिमें बहुत वृद्धि हुई। जो काम पहले हाथसे महीनोंमें किया जाता था, वह अब मशीनकी सहायतासे दिनोंमें किया जाने लगा। उदाहरणके लिए पिन बनानेके व्यवसायको लीजिये। यदि कोई आदमी हाथसे पिन बनाने लगे, तो एक दिनमें दस-बीस पिनोंसे अधिक न बना सकेगा। पर मशीनकी सहायतासे एक आदमी एक मिनटमें १८० पिन बना सकता है। आजकलके कारखानोंमें एक दिनमें ७० लाख पिनें बड़ी सुगमतासे तैयार हो जाती हैं, और इनके निर्माणके लिए तीन आदमियोंसे ज्यादाकी जरूरत नहीं पड़ती। और अब ऐसी मशीनें बन गयी हैं, जिनकी सहायतासे एक कारीगर एक दिनमें १॥ करोड़ पिनें तैयार कर सकता है। इसी तरह छापेखानेके व्यवसायको लीजिये। व्यावसायिक क्रान्तिसे पहले लोग या तो कलमसे पुस्तकोंको लिखते थे, या लकड़ीपर अक्षर खोदकर उससे पुस्तकें छापते थे। इन तरीकोंसे एक आदमी एक दिनमें दस-बारह पृष्ठसे अधिक नहीं तैयार कर सकता था। पर अब छापेकी ऐसी मशीनें बन गयी हैं, जो एक मिनटमें ५०० से अधिक प्रतियां छाप सकती हैं। आजकलके प्रेसोंमें अक्षर ढालनेसे लेकर पुस्तक छापने और उसकी जिल्द तैयार करने तकका सारा काम मशीनोंसे होता है। उसमें मनुष्यके श्रमकी आवश्यकता बहुत कम हो गयी है। यही हाल कपड़ा बनानेके व्यवसायका है। जहां पुराने जमानेमें दिन-भर चरखा चलाकर मनुष्य मुश्किलसे हजार-डेढ़-हजार गज सूत कात सकता था, वहां अब मशीनकी सहायतासे लाखों गज सूत प्रतिदिन तैयार होता है। उत्पत्तिमें इतनी वृद्धिका हो जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



व्यावसायिक क्रान्तिका परिणाम है। अठारहवीं सदीके अन्तिम दिनोंमें यह व्यावसायिक क्रान्ति पहले-पहल इंग-लैण्डमें शुरू हुई थी। उस समय—१७८२ ईसवीमें इंगलैण्डसे केवल २० करोड़ रुपयेके लगभगका माल बाहर जाता था। पर व्यावसायिक क्रान्तिके कारण इंगलैण्डमें मालकी उत्पत्ति इतनी ज्यादा बढ़ गयी कि केवल ३२ वर्ष बाद सन् १८१९ में ९० करोड़के लगभगका माल दूसरे देशोंमें जाने लगा। जबसे व्यावसायिक क्रान्ति शुरू हुई है, तबसे इंगलैण्डमें कपड़ेकी पैदावार ६०० गुना बढ़ गयी है। यदि दुनियाके सारे स्त्री-पुरुषोंको पुराने ढङ्गके चरखेसे सूत कातनेके लिए बिठा दिया जाय, तो वे जितना सूत कात सकेंगे, उससे कहीं अधिक सूत आजकलके कारखानोंमें सूत कातनेकी एक मशीन दिन-भरमें कात देती है। व्यावसायिक क्रान्तिसे न केवल उत्पत्तिकी मात्रा बहुत बढ़ गयी है, पर बहुत-से नये प्रकारकी वस्तुयें भी तैयार होने लगी हैं। जिन वस्तुओंकी पहले लोग कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे, वे अब बहुत बड़े परिमाणमें कारखानोंमें तैयार होती हैं, और सर्वसाधारण जनता उनका सुगमतासे उपभोग करती है। पहले अमीर और सम्पन्न लोग जिस प्रकारके भोगविलासकी वस्तुओंका प्रयोग करते थे, उनसे कहीं अच्छी वस्तुयें अब इतनी सस्ती और प्रचुर परिमाणमें मिलती हैं कि मामूली स्थितिके लोग भी उन्हें खरीद सकते हैं। यह सब व्यावसायिक क्रान्तिका परिणाम है।

(२) श्रम-विभाग—व्यावसायिक क्रान्तिका एक महत्त्वपूर्ण परिणाम श्रम-विभाग है। आजकलकी फैक्-रियोंमें श्रम-विभाग जिस पूर्णताको पहुंचा हुआ है, उसे देख-कर आश्चर्य होता है। व्यावसायिक क्रान्तिसे पूर्व कारीगर लोग सारा काम अपने-आप करते थे। दर्जी कपड़ेको काटनेसे लेकर उसका कोट तैयार करने तकका सारा काम अपने-आप करता था। यही हालत जूता बनानेवालों और कपड़ा बुननेवालोंकी थी। उस समय व्यवसायमें श्रम-विभागका विशेष महत्त्व न था। पर आजकलकी फैक्ट्रियोंमें प्रत्येक व्यवसायको बहुत-से छोटे-छोटे हिस्सोंमें विभक्त कर दिया गया है। प्रत्येक हिस्सेके लिए पृथक् कारीगर होता है, यह नहीं कि एक ही कारीगर सारा कार्य करे। अमेरिकाकी दर्जीकी दूकानोंपर एक कोटको सीनेके लिए ३९ कारीगरोंकी दरकार होती है। ३९ हाथोंमें गुजरनेके बाद कोट सिलकर तैयार होता है। जूता बनानेके कामको १७३ हिस्सोंमें बांटा गया है। कोई जूता तब तक बनकर तैयार नहीं होता, जब तक वह १७३ कारीगरोंके हाथोंसे न गुजर जाय, और वे अपने हिस्सेका काम उसमें न कर दें। इसी तरह घड़ीको बनानेके लिए १०८८ कारीगरोंकी दरकार होती है। इन उदाहरणोंसे यह भली-भांति समझा जा सकता है कि श्रम-विभाग आजकल कितनी पूर्णताको पहुंच गया है। वर्तमान युगके कारीगर भी एक मशीनके समान होते हैं, जिन्हें केवल अपने हिस्सेका काम करना है। तैयार मालसे उन्हें कोई मतलब नहीं। श्रम-विभाग द्वारा उत्पत्तिकी वृद्धिमें और भी अधिक सहायता मिलती है।

(३) शहरोंकी वृद्धि—व्यायसायिक क्रान्तिसे पूर्व अधिकांश जनता देहातमें निवास करती थी। शहर बहुत कम थे। जो थे उनकी भी आबादी बहुत थोड़ी थी। उस समय लोगोंका मुख्य पेशा खेती होता था। देहातोंके कारीगर जो माल तैयार करते थे, उसे समय-समयपर लगने-वाली पैंठोंमें बेच देते थे। व्यवसायियोंको एक स्थानपर शहरोंमें रहनेकी उस समय कोई आवश्यकता न थी। पर व्यावसायिक क्रान्तिसे शहरोंकी आबादी बढ़ने लगी। नये-नये शहर बसने लगे। व्यावसायिक क्रान्तिके कारण जो बड़े-बड़े कारखाने इस समय खुल रहे थे, उनमें काम करनेके लिए देहातोंके लोग बड़ी संख्यामें अपने पुराने घरोंसे विदा ले शहरोंमें एकत्रित होने लगे। शहरोंकी आबादी बड़ी तेजीसे बढ़ने लगी। १७६० में लिवरपूलकी आबादी ४० हजार थी। १८४१ में वह बढ़कर दो लाख अठाइस हजार हो गयी। इसी तरह मैञ्चेस्टरकी आबादी १७६० में ४५ हजार थी। १८४१ में वह तीन लाख हो गयी। अन्य शहरोंमें भी इसी तरह वृद्धि हुई। १८०० में यूरोप-भरमें केवल १८ नगर ऐसे थे जिनकी आबादी एक लाखसे अधिक थी। पर अब लाखसे ऊपर आबादीवाले शहरोंकी संख्या २०० के लगभग है। इंगलैण्डमें शहरोंकी इतनी उन्नति हो गयी है कि वहांकी तीन चौथाई आबादी शहरोंमें बसती है। देहातोंकी जन संख्या अब चौथाईके लगभग रह गयी है। यह भारी परिवर्तन व्यावसायिक क्रान्तिका परिणाम है। देहात और शहरोंके जीवनमें बहुत अन्तर है। शहरोंकी समस्यायें बहुत जटिल



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और गम्भीर हैं। लाखों स्त्री-पुरुषोंसे आबाद इन विशाल नगरोंमें सरकारका कार्य अब केवल जान और मालकी रक्षा करना तथा अमन और चैन कायम रखना ही नहीं रह सकता। जल और रोशनीका प्रबन्ध, स्वास्थ्य-रक्षा, सफाई आदिकी कठिन समस्याओंके कारण नगरोंका शासन अब बहुत महत्त्वपूर्ण बन गया है।

( ४ ) पूंजीपति और मजदूर—व्यावसायिक क्रान्तिसे पूर्व पूंजीपति और मजदूरका कोई भेद न था। प्रत्येक कारीगर पूंजीपति और मजदूर दोनों होता था। उत्पत्तिके लिए जो पूंजी आवश्यक है, वह उसकी अपनी होती थी। अपने घरपर बैठकर वह अपनी पूंजीकी सहायतासे स्वयं मेहनत करता था, और जो माल तैयार होता था, उसे स्वयं पैंठ या बाजारमें बेच देता था। पर फैक्टरी सिस्टमके कारण इस दशामें परिवर्तन आया। यान्त्रिक आविष्कारोंके कारण जिन मशीनोंका प्रचलन हो रहा था, उन्हें मामूली कारीगर नहीं खरीद सकते थे। उन्हें या तो वे धनी व्यापारी खरीद सकते थे, जो विदेशी व्यापारके कारण निरन्तर अधिकाधिक धनी होते जा रहे थे या बहुत-से लोग मिलकर, ज्वायण्ट स्टाक कम्पनी बनाकर। मशीनों या फैक्टरियोंके मालिक और लोग होते थे और उनमें काम करनेवाले मजदूर और। फैक्टरियोंमें काम करनेवाले मजदूरोंका न तो फैक्टरीसे कोई सम्बन्ध था और न उसमें तैयार होनेवाले मालसे। उन्हें केवल अपनी मजदूरीसे वास्ता था। वे नियत समयपर कार्य करनेके लिए आते और नियत समयपर कार्य करके चले जाते। इस फैक्टरी सिस्टमसे पूंजीपति और मजदूर एक-दूसरेसे बिलकुल पृथक् हो गये। उनके हितों और स्वार्थोंमें भी बहुत अन्तर हो गया। पूंजीपतिका हित इस बातमें था कि अधिकसे अधिक मुनाफा प्राप्त किया जावे और इसके लिए मजदूरोंको कमसे कम भृति दी जावे। दूसरी तरफ मजदूरोंका स्वार्थ इस बातमें था कि कमसे कम समय काम करें और अधिकसे अधिक मजदूरी प्राप्त करें। कुछ ही समयमें पूंजीपतियों और मजदूरोंका यह स्वार्थ-भेद स्पष्ट रूपसे दृष्टिगोचर होने लगा और उनमें आपसमें झगड़े प्रारम्भ हो गये। पूंजीपति और मजदूरोंके जो झगड़े वर्तमान समयमें चल रहे हैं, वे सब व्यावसायिक क्रान्तिके परिणाम हैं।

( ५ ) नवीन श्रेणिभेद—व्यावसायिक क्रान्तिसे पूर्व समाजमें दो मुख्य श्रेणियां थीं—जमींदार और किसान। जमींदारोंके पास पैसा था, सम्पत्ति थी। शासनमें भी उनकी आवाज थी। सब मामलोंमें वे लोग नेतृत्व करते थे। किसान लोग गरीब और पददलित थे। कारीगर व व्यवसायी उस समय बहुत अधिक नहीं थे। जो थे वे भी प्रायः देहातमें रहते थे और जमींदारोंका सिक्का मानते थे। पर व्यावसायिक क्रान्तिके कारण इस श्रेणिभेदमें बहुत परिवर्तन हुआ। जो लोग व्यापार और व्यवसाय द्वारा धनी होने लगे, वे अपने प्रभाव, योग्यता, शक्ति और सम्पत्तिमें जमींदारोंसे किसी भी तरह कम न रहे। व्यावसायिक क्रान्तिसे उत्पन्न हुए पूंजीपति लोगोंका भी समाजमें उसी प्रकारसे मान और प्रभाव होने लगा, जैसा पहले जमींदारोंका था। इसी तरह मजदूरोंकी एक नवीन श्रेणी इस समय उत्पन्न हुई, जिसकी पहले सत्ता नहीं थी। ये मजदूर लोग गरीबीकी दृष्टिसे तो पुराने समयके किसानोंके समान ही थे। पर शहरोंमें रहनेके कारण इनके विचारों और योग्यतामें बहुत उन्नति हो गयी थी। ये अपने महत्त्व और अधिकारोंको समझते थे और उनके लिए सङ्घर्ष करनेको उद्यत रहते थे। पूंजीपति और मजदूर-श्रेणीके अतिरिक्त इस समय एक अन्य श्रेणीका भी विकास हुआ, जिसे मध्य श्रेणी कहते हैं। इस मध्य श्रेणीमें डाक्टर, इञ्जीनियर, प्रोफेसर, व्यापारी, लेखक और इसी तरहके अन्य लोग सम्मिलित हैं। फैक्टरी सिस्टमके कारण जिन विशाल नगरोंका विकास हो रहा था, उनके लिए इन, सबकी आवश्यकता थी। मध्यकालके देहाती जीवनमें ये सब अनावश्यक थे। मध्य श्रेणीके ये लोग पूंजीपतियों और जमींदारोंके समान न तो बहुत सम्पन्न थे और न मजदूरों और किसानोंके समान गरीब। ये लोग योग्यता और ज्ञानकी दृष्टिसे अन्य किसी श्रेणीसे कम न होते हुए भी अपनी स्थितिसे सन्तुष्ट न थे। ये लोग समाजकी दशामें परिवर्तन लानेके लिए सदा उत्सुक रहते थे। मध्यकालकी कुलीन जमीन्दार-श्रेणी और किसान-श्रेणीका स्थान अब पूंजीपति-श्रेणी, मध्य-श्रेणी और मजदूर-श्रेणीने ले लिया।

( ६ ) बेकारी—फैक्टरी सिस्टममें बहुत-सा काम मशीन द्वारा किया जाता है। मशीनको चलानेके लिए मनुष्यके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



श्रमकी आवश्यकता निरन्तर कम होती जाती है। शुरू-शुरूमें जब फैक्टरियां बनीं, तो बहुत-से लोग बेकार हो गये। फैक्टरी सिस्टमका स्वाभाविक परिणाम होना तो यह चाहिए था कि सम्पत्तिकी वृद्धि हो और लोग समृद्ध बनें; पर आर्थिक उत्पत्तिके तरीकोंमें परिवर्तन आनेके साथ-साथ समाजके आर्थिक सङ्गठनमें समुचित परिवर्तन नहीं हुए। फैक्टरियोंके कारण लोग बेकार होने लगे। अनेक स्थानोंपर बेकार व्यवसायियोंने विद्रोह भी किये। जब कोई नया यान्त्रिक आविष्कार होता, तो कारीगर लोग समझते कि यह हमारे लिए एक नयी मुसीबत पैदा हुई है। वे उसको नष्ट करनेके लिए प्रयत्न करते और उसपर अपना रोष प्रदर्शित करते। आज जो प्रत्येक देशमें लाखों आदमी बे-रोजगार दिखाई देते हैं, उसमें व्यावसायिक क्रान्ति भी एक कारण है।

(७) स्त्रियों और बच्चोंकी दुर्दशा—फैक्टरियोंमें मशीनोंका सञ्चालन करनेके लिए बहुत अधिक शारीरिक बलकी आवश्यकता नहीं होती थी। उन्हें स्त्रियां और लड़के भी सुगमतासे चला सकते थे। स्त्रियों और लड़कोंकी मजदूरी सस्ती होती थी, इसलिए फैक्टरियोंमें पुरुषोंके बजाय स्त्रियों और लड़कोंको पसन्द किया जाने लगा। हिसाब लगाया गया है कि उन्नीसवीं सदीके शुरूमें कारखानोंमें काम करनेवाले १०० मजदूरोंमें २० स्त्रियां, ४५ लड़के और ३५ पुरुष होते थे। बहुत-से कारखानोंमें तो पुरुषोंकी संख्या और भी कम होती थी। स्त्रियों और बच्चोंके इस प्रकार कारखानोंमें काम करनेका परिणाम यह हुआ कि पुरुषोंमें बेकारी और भी उग्र हो गयी। कारखानेमें पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंके एक साथ मजदूरी करनेसे नैतिक पतनका प्रारम्भ हुआ। कारखानोंके दूषित वायुमण्डलमें स्त्रियोंका न केवल नैतिक पतन हुआ; अपितु उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी क्षीण होने लगा। शहरोंमें जो मकान मजदूरोंको ठहरनेके लिए मिलते थे, वे बहुत गन्दे, सीले तथा खराब होते थे। देहातोंकी स्वास्थ्यप्रद वायु तो शहरोंमें थी ही नहीं। इन गन्दे सड़े हुए मकानोंमें मजदूर-श्रेणी और विशेषतया स्त्रियों और बच्चोंकी जो दुर्दशा हुई, उसकी कथा बहुत दर्दनाक है।

व्यावसायिक क्रान्तिसे मनुष्यके जीवनमें निस्सन्देह बड़ा भारी परिवर्तन आ रहा था। हमने अभी लिखा है कि आर्थिक उत्पत्तिके तरीकोंमें तो यह महान् परिवर्तन हुआ था, पर समाजका आर्थिक सङ्गठन अभी पुराना ही था। यह एक अस्वाभाविक बात थी। अतः यह आवश्यक था कि ऐसे प्रयत्नोंका प्रारम्भ हो, जिनसे समाजके आर्थिक सङ्गठनमें भी आवश्यक परिवर्तन हो जावें। इसीलिए 'साम्यवाद'का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।*

——

* लेखककी अप्रकाशित पुस्तक "यूरोपका इतिहास"से।

## वासन्ती

मिला जीवन बन परिपूरण।
सकल लहराये री, तन-मन।

आई कनक-कलित छवि-आकृति,
मन्द-मन्द, अति मन्द मलय-गति,
बजा मञ्जु मञ्जीर, विपुल रति,
भ्रमरोंका गुञ्जन।
मिली मधुर कर-किरण बढ़ाकर,
सस्त-शिथिल ज्योत्स्नाका अम्बर,
भरे मुग्ध किसलय-अधरों पर
मुकुलोंके चुम्बन।
बार—बार सहकार—अङ्कपर
अर्द्ध शयित गाती पिक-स्वरसर,—
सकुच सिहर, अग-जगका उर-हर
गूंज रहा निःस्वन।

—कुंअर चन्द्रप्रकाश सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सिन्ध-विजयकी करुण कहानी

श्री गणेशदत्त शर्मा "इन्द्र"

बादशाह हुमायूंके शासनकालसे लेकर लगभग दो सौ वर्ष अर्थात् सन् १७४९ तक सिन्ध भारतीय मुगल साम्राज्यका एक सूबा रहा। सन् १७४० में नादिरशाहने सिन्धपर आक्रमण किया। सिन्धके अमीर, दिल्लीके बादशाहको खिराज न देकर अफगानिस्तानके शासकको खिराज भेजने लगे। बादमें लगभग ९० वर्ष तक सिन्धके अमीर अपने देशके स्वतन्त्र शासक रहे। सन् १७९८ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनीसे सिन्धका सम्बन्ध स्थापित हुआ। अमीरने ठट्ठा और औरङ्गबन्दरमें कम्पनीको कोठियां बनानेकी आज्ञा दे दी। जब ठट्ठा कम्पनीके हाथमें गया, तब उसमें साठ हजार कारीगर और लगभग इतने ही व्यापारी बसते थे, परन्तु कोठी कायम होनेके कुछ महीनों बाद ही वहांकी आबादी केवल २० हजार रह गयी। यह बात जब अमीरके कानों पहुंची तो उसने अंगरेजोंकी कोठियां बन्द करनेकी आज्ञा दी, परन्तु उनके बहुत-कुछ गिड़गिड़ानेपर उन्हें फिर इजाजत दे दी गयी। कम्पनीके कर्मचारियोंने फिर अन्याय और अत्याचार आरम्भ कर दिये। यह देखकर सन् १८०२ ई० में फिर अंगरेजोंको वहांसे हट जानेकी आज्ञा दी गयी। अपने व्यापारको इस प्रकार बन्द होते देख सन् १८०७ में अंगरेजोंने सिन्धके अमीरोंसे एक सन्धि कर ली जिसमें लिखा गया:—

"यह सन्धि पीढ़ी-दर-पीढ़ी कयामतके दिन तक कायम रहेगी और अंगरेज सरकार कभी भी सिन्धके अमीरोंकी एक फुट जमीनकी भी इच्छा न करेगी।"*

इस सन्धिके कुछ ही दिनों बाद अंगरेजोंने सिन्धपर अधिकार करनेका निश्चय कर लिया। सिन्धपर सेना भेज दी गयी। अमीरोंने अपनी मित्रताकी याद दिलायी और सेनाको सिन्धसे बहुत दूरीपर रोकनेके लिए प्रार्थना की। रेजीडेण्टने जनरल नेपियरको सूचित किया कि सिन्धपर आक्रमण न किया जाय, परन्तु उसने रेजीडेण्टकी बातपर ध्यान ही नहीं दिया और लगातार आगे बढ़ता आया। अमीर रेजीडेण्टके भरोसे बेफिक्र बैठा रहा।

नेपियर सिन्धमें घुस आया। मारकाट और लूट-खसोट आरम्भ हो गयी। हैदराबादके निकट मियानी नामक मुकामपर बलूचियोंने अंगरेजी सेनाका सामना किया। ये बिलूची बिना अमीरकी आज्ञा प्राप्त किये ही लड़ने लगे थे! वृद्ध अमीर यह नहीं चाहता था। नेपियरने बलूचियोंको परास्तकर ता० १७ फरवरी सन् १८४३ को सेना सहित हैदराबादमें प्रवेश किया। चार दिन बाद अर्थात् ता० २१ को नेपियरने हैदराबादके किलेपर कब्जा कर लिया। सिन्धके दीवान श्री मीठारामने अपनी आंखों देखा वर्णन लिखा है। दीवान मीठारामने अंगरेजोंके नाम दिये थे, परन्तु कप्तान ईस्टविकने अपनी पुस्तकमें उन नामोंके स्थानपर केवल "साहब" शब्द प्रयोग किया है। ईस्टविकने लिखा है:—

"इसके बाद·····साहब दूसरे अफसरों और सिपाहियोंके साथ स्व० मीर करमअली खांके अन्तःपुरमें घुसे। उसने मिर्जा खुसरो बेगका गला पकड़कर उसका अपमान किया और हुक्म दिया कि जनानखानेके सब जेवरात मेरे सिपुर्द कर दो। ये जेवर लगभग १५ लाख रुपयोंके थे। यह दृश्य देखकर मीर करमअलीकी बेगमने साहबको कहलवाया कि हमें पालकियां और हरएकको बदलनेके लिए तीन जोड़ी कपड़े दे दीजिये, हम शहरसे निकल जावेंगी। परन्तु साहबने न माना और मुंशी अली अकबरको साथ लिये जबर्दस्ती जनानखानेमें घुस गया। उसने जेवर, सोने-चांदीके बर्तन और कीमती कपड़े—सब अपने कब्जेमें कर लिये और स्त्रियोंके वे जेवर, जिन्हें वे अपनी कमरके नीचे और पैरोंमें पहने हुए थीं, छिना लिये। बेचारी स्त्रियां भयभीत थीं, जैसे-तैसे भागकर हैदराबादके पासवाले कहतर नामक गांवमें पहुंच गयीं, जो पांच कोसकी दूरीपर था। फिर साहब और साहबने अमीर नूर मुहम्मद खांके

* Dry leaves from young Egypt by W. J. Eastwick. M. P. P. 334

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अन्तःपुरमें प्रवेश किया। वहांसे भी पहलेकी भांति जेवर, पात्र और वस्त्रादि लूटे। ये स्त्रियां भी वहांसे भागकर कहतर पहुंच गयीं। दूसरे दिन ता० २२ को अमीर मुहम्मद खांको गिरफ्तार करके अपने कैम्पमें भेज दिया। इसके अन्तःपुरमें भी घुसे और वस्त्रालङ्कार अपने कब्जेमें कर लिये। इसके बाद मीर सोबदारके जनानखानेमें प्रवेश किया और सारा मालमता लूट लिया। औरतें पैदल भागकर होसरी पहुंचीं। साहबने मीर सोबदारके पुत्र फतह अली खांसे दो कीमती कड़े मांगे, वे दे दिये गये। मीर सोबदार खांके जनानखानेकी एक औरतने अपने कमरबन्दमें कुछ रुपये बांधे थे, भागते समय कुछ रुपये निकल पड़े, फौरन् उसे पकड़ा और कमरबन्द काटकर रुपये छिना लिये। एक स्त्रीको अलग ले जाकर उसके नाक, कान और हाथ-पैरोंके जेवर उतरा लिये। इसके पश्चात् किलेमें बाहरसे आना रोक दिया गया।

अभी तक स्व० मीर नूर मुहम्मद खां और मीर नसीर खांकी बेगमें किलेमें ही थीं। उन्हें लगभग दो दिन तक पीनेको पानी नहीं दिया गया। मीर नसीरके पुत्र मीर हुसेन अली खां और अब्बास अली खां भी किलेमें कैद थे। उन्होंने एक आदमीको साहबके पास पानीके लिए भेजा। उत्तर मिला कि सर चार्ल्स नेपियरका हुक्म है कि जिसे पानी पीना हो वह पुरुष हो या स्त्री, उसे गारदके कमाण्डिङ्ग अफसरके डेरेपर पहुंचकर पानी पीना होगा। इन अमीरोंके जनानखानोंमें नौकर-चाकर मिलाकर लगभग ५०० मनुष्य थे। बड़ी मुश्किलसे इतने आदमियोंके लिए एक मशक पानी भेजा गया, जिससे प्यास तो किसीकी न बुझी; परन्तु गले गीले कर लिये गये।

थोड़ी देर बाद साहब और साहब कुछ सैनिकोंको साथ लेकर जनानखानोंके दरवाजोंपर पहुंचे। दरवाजे बन्द पाये तो कुल्हाड़ोंसे उन्हें तोड़कर स्त्रियोंसे जेवर मांगे। उन्हें विवश होकर जेवर देने पड़े। दूसरे दिन साहबने आकर जनानखानेका बाकी सामान भी अपने कब्जेमें कर लिया। एक औरतने बचकर भाग जाना चाहा—वह एक रेशमी पाजामा पहने थी। किलेके दरवाजेपर सिपाहियोंने उसे रोककर उसके सब कपड़े उतरवा लिये। स्व० नूर मुहम्मद खांकी बेगमने एक अदनी दासीको कुछ वस्त्र देकर, कहा कि इन्हें बेचकर मेरे लिए कुछ खाना ले आओ। साहबके मुंशीने उस दासीको पकड़ लिया और पीटा, और कपड़े भी छिना लिये।

बादमें दो अंगरेज स्त्रियां किलेके द्वारपर इसलिए नियुक्त की गयीं कि जो स्त्री बाहर जाना चाहे उसकी तलाशी ले ली जाय। इस प्रकार सिन्धके अमीरोंकी एक-एक वस्तु छीन ली गयी—उनका सर्वस्व लूट लिया गया। मीर सोबदार खांको बाहर लाकर अंगरेजी कैम्पमें कैद कर दिया। पहले दिन मीर नसीर खांके बेटोंको जो तलवारें दी गयीं थीं; छीन ली गयीं। पश्चात् मिर्जा खुसरो बेगका मकान लूटा गया और खुसरोको अपने कैम्पमें कैद कर लिया गया। खुसरो बेग फिर किलेमें लाया गया और उसे बड़ी बुरी तरह मारा—वह बहुत देर तक बेहोश रहा। जब उसे होश आया तो फिर, बांधकर अंगरेजी कैम्पमें पहुंचा दिया गया और कैद कर दिया गया।*"

दीवान मीठारामके उपरोक्त कथनका "हिस्ट्री आव अफगान्स" के लेखक जे० पी० फेरियरने समर्थन किया है और इसे सत्य बताया है। सन् १८५७ के सिपाही विद्रोहमें लड़नेवाले एक अंगरेज अफसरने, जिसका बाप उस वक्त सिन्धमें जनरल नेपियरके साथ था, लिखा है—

The Harem ladies were not only plunderd of their ornaments they had on their person but their noses and ears were horribly mutilated."

अर्थात्—विजयी अंगरेजोंने सिन्धकी बेगमोंके कानों और उनकी नाकोंसे इस बेदर्दीके साथ जेवर उतारे कि उनके नाक और कान फट गये।

मीर नसीर खांका कहना है कि हैदराबादके महलोंकी लूटका मूल्य लगभग १८ करोड़ रुपये था। यह सब मालमता जहाजोंमें लादकर बम्बई भेज दिया गया। मीर रुस्तमका एक लड़का मीर मुहम्मद हुसेन अपने घरकी बूढ़ी स्त्रियों तथा अन्य साथियों सहित भूखा-प्यासा अपने

*Translated from the English translation of Diwan Mitharam's statement etc :—Published in Dry leaves from young Egypt by W. J. Eastwick, an ex-political, sometime. M. P. P.p. 342-44

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देशसे निर्वासित बहुत दिनों तक बिना घर-द्वारके घूमता फिरा। ईस्टविक लिखता है:—

"Hunger and thirst, cold and nakedness have been their portion."

( Dry leaves from young Egypt. P. 298 )

अर्थात्—भूख-प्यास, सर्दी और नग्नता उनके साथ थी। वही और लिखता है:—

Our own allies.....victims round whom was woven a web of cunning villainy and who were trapped with falsehood which now make day hideous by their revelation. Men of England! think of your boasted freedom and let your pulse beat quick for those who died by your sword in defence of their own liberties and houses, and for that smaller but far more wretched, hand, once your friends, once aye! your benefactors now hugering out a miserable exile in a distant land, whose jailers you now pay whose hospitality, whose allianee, you once sought, women of England! think of the mothers and sisters of princes, striped of their ornaments, torn from their home, driven to wander houseless and friendless in the wild jungles and poisonous swamps." (P.P. 238)

अर्थात्—"ये लोग हमारे दोस्तथे।.....हमने इनके चारों ओर कूटनीति और धूर्तताका जाल फैला दिया। इन्हें ऐसी झूठी बातोंके फन्देमें फांस लिया कि यदि उन्हें प्रकट कर दिया जाय तो सुनकर दिनमें डर मालूम हो। इंगलैण्डके सुपुत्रो! जिस स्वतन्त्रताका तुम्हें गर्व है, उसे याद करो और देखो कि तुम लोगोंके हृदयमें उनके प्रति सच्ची सहानुभूति उत्पन्न होती है या नहीं, जो अपने देश और अपनी स्वतन्त्रताके लिए तुम्हारी तलवारके घाट उतर चुके हैं। और उन थोड़े-से; किन्तु महान् अभागे अमीरों-के लिए, जो किसी समय तुम्हारे मित्र थे—बल्कि किसी समय तुमपर उपकार भी करते थे और जो अब सुदूर देशोंमें बड़े दुःखके साथ अपने निर्वासनके दिन काट रहे हैं, जिनके आतिथ्य-सत्कार और मित्रताकी तुम्हें एक दिन अभिलाषा थी, उन्हें कैद रखनेवाले जेलरोंको आज तुम तनख्वाह देते हो! इंगलैण्डकी स्त्रियो! सोचो कि बादशाहकी मा-बहनें जिनके वस्त्रालङ्कार छिना लिये गये हैं, अपने देशसे निर्वा-सित गृह-विहीन और असहायावस्थामें विषाक्त दलदल-वाले भयानक जङ्गलोंमें धक्के खाती फिर रही हैं।"

अमीर और उनकी बेगमें सब कम्पनीके आदमियों द्वारा बुरी तरह पीड़ित हुए और सिन्धपर अंगरेजोंने इस प्रकार विजय-पताका फहरायी।

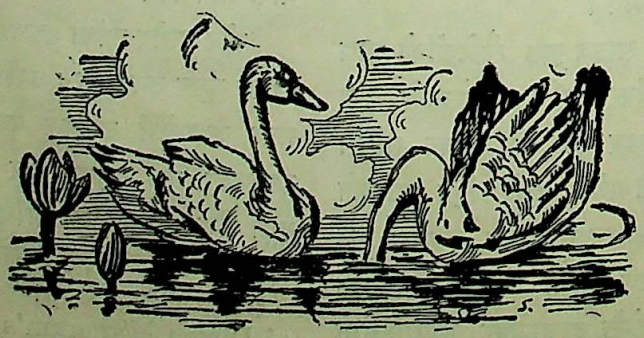

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## बुड्ढोंके विरुद्ध जेहाद

यूरोपमें युवकोंका एक सम्प्रदाय है—जिनमें अधिकांश यहूदी हैं—जिसका यह ख्याल है कि यह संसार सिर्फ युवकोंके लिए है। वृद्धोंके लिए यहां स्थान नहीं है। इस सम्प्रदायके सिद्धान्तोंमें कहा गया है :—"५० वर्षके बाद मनुष्य पूर्ण स्वस्थ नहीं रह सकता। उसके शरीरके तन्तु दुर्बल हो जाते हैं और उसमें किसी-न-किसी रूपमें क्षीणता प्रकट होने लगती है। इसलिए वह समाजके लिए एक खतरा बन जाता है।"

इस सम्प्रदायका उद्देश्य है ऐसे कानूनका बनाया जाना जिसके अनुसार वृद्ध मनुष्योंको समाजसे बिलकुल पृथक् करके रखा जाय या उन्हें "खुला दिया जाय।" और जब तक ऐसा कानून नहीं बनता तब तक वे यथासम्भव इस बातकी पूरी कोशिश करते रहेंगे कि ५० वर्षसे अधिक उम्रके मनुष्योंको कोई सरकारी पद न मिले, किसी पेशे या कारबारमें उन्हें नियुक्त न किया जाय। उनका एक दूसरा प्रस्तावित सुधार यह है कि ५० वर्षसे अधिक उम्रके किसी पुरुष या स्त्रीको विवाह नहीं करने दिया जाय और न उन्हें सन्तान उत्पन्न करने दिया जाय। ५० वर्षसे अधिक उम्रके समस्त स्त्री-पुरुषोंके लिए कृत्रिम उपायोंसे बन्ध्यात्व stabilisation अनिवार्य होना चाहिए। इसके सिवा इस सम्प्रदायका एक उद्देश्य एक ऐसे कानूनका भी निर्माण करना है जिससे ५० वर्षसे अधिक अवस्थाके स्त्री-पुरुष सिर्फ वृद्ध अवस्थाकी पेन्शन Old age pension के सिवा और किसी सरकारी पेन्शनके अयोग्य समझे जायं। इस प्रकार यह सम्प्रदाय राष्ट्रका सम्पूर्ण सञ्चालन-भार युवकोंके हाथोंमें सौंप देनेका पक्षपाती है। यह इस बातपर जोर देता है कि बचपनसे ही युवकोंको अपने माता-पिताके आधिपत्यसे सम्पूर्ण मुक्त हो जाना चाहिए। वे अपना पेशा आप चुन लें और चाहे जिससे विवाह करें। इसमें माता-पिताकी ओरसे किसी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

इस सम्प्रदायके सदस्योंके कुछ सङ्केत-वाक्य इस प्रकार हैं:—"युवक और वृद्धकी भाषा भिन्न-भिन्न है," "सिर्फ बुड्ढे लोग युद्ध चाहते हैं," "युवक खुद जीना चाहते हैं और दूसरोंको जीते रहने देना चाहते हैं," पुरानी हड्डियों-के लिए सबसे अच्छा स्थान कब्र है," और "बुड्ढोंको दूर करो।"

एक लेखकने इस सम्प्रदायकी एक बैठकका वर्णन करते हुए लिखा है:—"बैठकमें एक रूसी महिला भाषण दे रही थी। उसने बताया कि इस सम्प्रदायका जन्म रूसमें हुआ था। महायुद्धके समय माडम जेकोब्लेवा नामकी एक यहूदी सुन्दरी तरुणीने—जिसकी बहनको एक रूसी बुड्ढा उड़ा ले गया था—इसे स्थापित किया था। चूंकि एक बुड्ढा उसकी बहनको उड़ा ले गया था, इसलिए जेकोब्लेवा बृद्धोंकी जानी दुश्मन बन गयी। २० वर्षकी अवस्थामें ही उसने पेट्रोगाडमें इस सम्प्रदायकी स्थापना की थी। बादमें वह एक विख्यात बोशेलविक नेता बन गयी। रूसमें जो लोग क्रान्तिके विरुद्ध लड़ रहे थे उनकी जांचके लिए एक खास कमीशन बैठाया गया था। जेकोब्लेवा इस कमीशनकी अध्यक्षा थी। उसने सैकड़ों 'अपराधियों' के मौतके वारण्ट-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पर अपने हाथसे हस्ताक्षर किये और हस्ताक्षर ही नहीं किये बल्कि दर्जनोंको अपने हाथ गोलीका शिकार बनाया। मृत्युदण्ड पानेवालोंमें अधिकांश वृद्ध थे और जिन्हें स्वयं उसने गोली मार दी थी वे तो सबके सब वृद्ध पुरुष थे। एक बार वह वृद्ध मनुष्योंकी एक लम्बी कतारके सामने जाकर खड़ी हुई। इनपर बोलशेविक सरकारके विरुद्ध षड्-यन्त्र करनेका अभियोग लगाया गया था। वह एक-एकके सामने जाकर अपनी रिवाल्वरसे उनके सिरमें यह कहकर गोली मारती थी, 'तुम दकियानूसी बुड्ढे लोग संसारके लिए एक बला हो। तुम्हारे लिए संसारसे बाहर रहना ही अच्छा है, इसलिए जल्दी अपना रास्ता नापो।'

"एक दूसरे अवसरपर माडम जेकोब्लेवा एक जिलेका निरीक्षण करने गयी थी। यहांके बहुत-से लोगोंपर रूसकी बोलशेविक सरकारके विरुद्ध षड्यन्त्र करनेका सन्देह किया जाता था। उसने सभी सन्दिग्ध स्त्री-पुरुषोंको—जिनकी उम्र ५० से अधिक थी—अपने सामने बुलवाया और बिना किसी प्रकारके, नाममात्रके भी विचारके, स्त्रियोंको तो साइबेरिया निर्वासित किये जानेका और पुरुषोंको बच्चों द्वारा गोली मार दिये जानेका हुक्म सुनाया। यह हत्याकाण्ड उसके सामने ही सम्पन्न हुआ। जिन लड़कोंने पहले कभी रिवाल्वरका स्पर्श तक नहीं किया था उन्हें स्वयं कुछ कैदियोंको गोली मारकर बताया कि यह काम किस प्रकार किया जाता है। उन लड़कोंमें एकने, जो सबसे निर्भीक था गोली चलानेसे इनकार कर दिया। इसपर जेकोब्लेवाने उसे गोलीसे मार डालनेकी धमकी देकर जबर्दस्ती राजी कर लिया।

"बादमें चलकर माडम जेकोब्लेवाके बहुत-से शत्रु हो गये और उसपर अपने अधिकारोंका दुरुपयोग करने तथा चन्द कमिश्नरोंकी आज्ञाका उल्लङ्घन करनेका अभियोग लगाया गया। ये कमिश्नर अधिक उम्रके थे। जेकोब्लेवा मार्च १९१९ में फांसीपर लटका दी गयी। किन्तु उसकी मृत्युसे उक्त सम्प्रदाय दबा नहीं बल्कि उसे और भी उत्तेजन मिला; क्योंकि उसके सदस्योंकी संख्यामें अत्यधिक वृद्धि हुई। यद्यपि रूसमें यह सम्प्रदाय सम्पूर्ण रूपसे वृद्धोंको समाजसे पृथक् कर देने अथवा उन्हें मौतके घाट उतार देनेका पक्षपाती नहीं है किन्तु यदि मेरा बुड्ढा बाप जीवित होता, तो मैं उसकी इसी तरह खातिरदारी करती। किन्तु उक्त सम्प्रदाय सर्वसम्मतिसे इस बातके लिए आग्रहान्वित है कि ७० वर्षसे अधिक उम्रके सब स्त्री-पुरुषोंको सन्तान उत्पन्न करनेमें अक्षम बना दिया जाय और उनसे ऐसा काम कराया जाय जिसे युवक लोग करना पसन्द नहीं करते हों। इस कामके लिए उन्हें इतनी ही मजदूरी दी जाय जिससे वे जीवनकी आवश्यकता भर खरीद सकें। ९० वर्षसे अधिक उम्रकी होनेपर तुम्हें जीवित रहनेकी इच्छा नहीं करनी चाहिए।" लेखकका कहना है कि उक्त महिलाने रूसमें इस सम्प्रदायके प्रचार-कार्यका उल्लेख करके यह आशा प्रकट की कि इंगलैण्डका प्रचार-विभाग भी इसी प्रकार कार्य करनेमें सफल होगा। इसके बाद तुमुल करतलध्वनिके बीच उक्त महिलाने अपना स्थान ग्रहण किया और बैठक समाप्त हुई।

इस सम्प्रदायका प्रचार-विभाग अपने प्रचार-कार्यमें कभी ढील नहीं करता। पार्लामेण्ट, समाचार-पत्र, थियेटर, सिनेमा, फासिज्म, कम्यूनिज्म तथा और जितने नये आन्दोलन होते रहते हैं, सबमें यह वृद्ध मनुष्योंकी खिल्ली उड़ाता है, उन्हें विद्रूप करनेकी चेष्टा करता है जिससे वे जनताकी निगाहोंमें गिर जायं। इतना ही नहीं, बल्कि वह यह कहनेका भी साहस करता है कि वृद्धोंके दिन अब बीत चुके; उन्हें अब गलपचकर जहन्नुममें चले जाना चाहिए।

## एक साहित्यिकका अनोखा उपदेश

चार्ल्स टामसन एक लब्धप्रतिष्ठ साहित्य-समालोचक समझे जाते हैं। साहित्य-रचना द्वारा किस प्रकार सफलता प्राप्त होती है, इस सम्बन्धमें उन्होंने 'Oracle' पत्रिकामें एक लेख लिखा है जिसका कुछ अंश यहां दिया जाता है।

साहित्य-रचनामें सफलता प्राप्त करनेके लिए सबसे पहले चाहिए लेखककी आन्तरिकता। विशेष प्रतिभाशाली न होनेपर भी आन्तरिकताके कारण बहुत-से लेखक यश अर्जन करनेमें समर्थ हुए हैं।

आत्मचिन्ता (introspection) से रचनामें प्राण आ जाता है, वह सजीव हो उठती है। गभीर चिन्ता और अभिज्ञता शिक्षासे उत्पन्न होती है और बुद्धिके परिपक्व हुए बिना चिन्तामें गभीरता नहीं आती। आपकी अवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कम है, अभिज्ञताका अभाव है, फिर भी गल्प या उपन्यास लिखनेका शौक है। आपके मनमें बहुत-सी क्षुद्र वासनायें उदित होती हैं, नाना प्रकारकी चिन्तायें मनमें चक्कर काटती हैं। इन्हींके आधारपर किसी चरित्रको लेकर आप गल्प लिखना शुरू कर दें। हो सकता है कि सुधी-समाज आपकी रचनाको सदोष बतावे, किन्तु फिर भी आपका चरित्र-चित्रण सजीव हुए बिना नहीं रहेगा। और इस सजीवताके कारण ही जो लोग प्रकृत रसज्ञ हैं, आपकी रचनाका आदर करेंगे। सामाजिक विधि-व्यवस्थाके मापदण्डकी कसौटीपर हो सकता है कि आपकी रचना खरी न उतरे, किन्तु प्राणस्पर्शी होनेके कारण वह एकबारगी उपेक्षणीय नहीं हो सकती। आपके समवयस्क पाठक-पाठिकायें आपकी उस रचनाको अवश्य चावसे पढ़ेंगे।

गल्प या चित्र-नाट्य अथवा नाटक लिखते समय उसके कथानकपर प्रणयका कुछ-न-कुछ रङ्ग देना ही पड़ता है। इस संसारमें हम लोगोंके व्यवहारोंके पीछे नारीका प्रेम या पुरुषकी प्रीति कुछ-न-कुछ रहती ही है। अतएव इस प्रेम-प्रीतिके आधारपर गल्प या उपन्यासकी रचना करनेसे वह पाठक-पाठिकाओंके चित्तपर प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकता। प्रेमका नैराश्य सबसे बढ़कर प्रभावोत्पादक होता है। क्योंकि मनुष्य अपने जीवनमें इस नैराश्यका अत्यधिक मात्रामें अवश्य भोग करता है। विशेषतः स्त्रियां निराश प्रेमकी कहानियां पसन्द करती हैं। स्त्रियां ही विशेष संख्यामें पुस्तकें पढ़ा करती हैं, अतएव पुस्तक लिखते समय नारी पाठिकाओंकी रुचिपर ध्यान रखना चाहिए। राविनसन क्रुसो, ट्रेजर आइलैण्ड प्रभृति ग्रन्थोंकी चाहे जितनी ख्याति हो, किन्तु वयस्क पाठक उन्हें एक बार पढ़कर रख देते हैं। बच्चे उन्हें पढ़ते हैं—किन्तु बच्चोंको ही पाठक निश्चित करके साहित्य-रचना करनेसे कितनी प्रतिष्ठा या लाभ हो सकता है! व्यवसायकी दृष्टिसे भी इसमें विशेष लाभ नहीं हो सकता।

एक बात और है। गल्प या उपन्यासको कभी सुखान्त नहीं बनाना चाहिए। उसके परिणाममें व्यथा एवं वेदनाका पुट अवश्य रहना चाहिए। ( Your story must end unhappily )

क्यों? इसलिए कि प्राचीनकालके औपन्यासिक सुखान्त उपन्यास ही अधिकतर लिख गये हैं। किन्तु इस समय उसी मार्गपर चलनेसे कुछ नूतनता नहीं रह जायगी। इस समय गल्प या उपन्यास जो कुछ लिखे जायं उनमें यथासम्भव परिस्थितिके दूषित वातावरणकी सृष्टि अवश्य होनी चाहिए। तरुण वयस्क समालोचकोंको इस प्रकारकी रचना पसन्द होगी। वे कहेंगे, वास्तव जीवनका चित्राङ्कण किया गया है। कहानीमें Abnormal अवस्थाका चित्र जितना ही अधिक चित्रण किया जायगा, उतनी ही उसमें विचित्रता आयेगी। साधारण लोग जिन सब बातोंपर विचार नहीं करते, जिस ढङ्गके लोगोंको नहीं देखते, इस प्रकारके लोगों और उनकी बातोंमें जो आकर्षण होता है उससे साधारण पाठकों-को आनन्द मिलता है। इस आनन्दकी बात प्रकाशित करनेमें लज्जा बोध करनेपर भी वे इस प्रकारकी पुस्तकोंको खरीदकर अवश्य पढ़ेंगे और उन्हें पढ़कर अपने सङ्गी-साथियोंमें उनकी चर्चा करेंगे। उनसे आग्रह करेंगे कि वे भी फौरन् पुस्तक खरीदकर उसका रसोपभोग करें।

गृहके सम्बन्धमें यदि गल्प लिखना हो तो गांवको नरकके समान भीषण रूपमें अङ्कित करना। युद्धकी बात लिखनी हो तो योद्धा सैनिकोंको पशुवत् चित्रित करना। और स्त्री? स्नेहहीना, प्रेमहीना, धर्महीना—इस रूपमें नारी-चरित्रका चित्रण करना, स्वामीको छोड़कर परपुरुषके प्रति सम्पूर्ण प्रेमभाव। इस प्रकारकी रचनाओंका खूब आदर होगा। कारण, मनुष्य चाहे कितना ही शिक्षित हो, उसकी आदिम बर्बरता और कुप्रवृत्तियोंको, जो शिक्षारूपी पालिशके कारण नीचे दब गयी हैं, गल्प द्वारा जाग्रत करनेमें ही गल्प-लेखक या औपन्यासिक रूपमें आपकी ख्याति बढ़ सकती है।

मनुष्य सद् नहीं, असद् होता है; एक कुली जो बोझा ढोकर जीवन निर्वाह करता है, एक किरानी जो किसी प्रकार अपना तथा अपने परिवारवर्गका भरण-पोषण करता है, उसे भी यदि मौका मिले तो वह भी रुपया चोरी करेगा, स्त्रियोंके शील-सम्भ्रमपर आक्रमण करेगा—इस प्रकार यदि मनुष्य-चरित्रका चित्रण आप कर सकें तो पुस्तकें बेचकर कुछ पैदा कर सकते हैं। कारण, मनुष्य उपन्यासोंमें सिर्फ वास्तव चित्र देखना चाहेगा—इतना मूर्ख वह नहीं है। उसे तो उत्तेजना चाहिए, मादकता चाहिए। सिद्धि प्राप्त करनेका एक और मन्त्र है। मनुष्य चाहे कितना ही दुर्दशाग्रस्त या विपन्न



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हो, उसकी यौन-क्षुधा ( Sex-hunger ) को कम नहीं होने देना। रचनामें इस वस्तुको सबसे बढ़कर अङ्कित करना। ऐसा करनेपर आपकी पुस्तकोंके सहस्रों संस्करण बिक जायंगे। इस संसारमें विचार-शक्तिहीन मनुष्योंकी ही अधिकता है—Fools are too many और वे ही गल्प-उपन्यासोंके नियमित खरीदार पाठक होते हैं।

## जारका हत्या किस प्रकार हुई !

रूसके एकटेरिनबर्ग सोवियटके भूतपूर्व अध्यक्ष मो० पी० एम० वायकवकी एक पुस्तक "The Last days of

द्वितीय जार निकोलस

Tsardom" कुछ समय पहले इंगलैण्डमें प्रकाशित हुई है। इस पुस्तकमें रूसके जार और उनके परिवारवर्गके हत्याकाण्डपर लेखकने एक नया प्रकाश डाला है। लेखकका यह भी कहना है कि यदि जारके समर्थक आपसमें ही लड़ने न लग जाते तो जार और उनके सम्बन्धी कैदसे छूटकर बच जाते। पुस्तकके लेखक मो० वायकवकी आज्ञासे ही जार और उनके कुटुम्बियोंकी हत्या की गयी थी। इस प्रसङ्गका वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है—"सन् १९१८ के मई महीनेमें एकटेरिनबर्ग लाये जानेके कब्ल जार और उनके परिवारवर्गके लिए जेलसे भाग निकलनेके कितने ही अवसर उपस्थित हुए थे। सन् १९१७ के अक्टूबरमें साम्राज्यवादी दल जारको जेलसे मुक्त करनेका प्रबन्ध सफलतापूर्वक कर चुका था। किन्तु इतनेपर भी यदि जार और उनके साथी भाग नहीं सके, तो इसका कारण यह है कि इस कामके लिए मास्कोसे जो धन आया था उसके बंटवारेके सम्बन्धमें वे लोग आपसमें एकमत न हो सके, और आखिर नौबत यहां तक पहुंची कि उनमें गाली-गलौज और हाथापाई होने लगी और वे अपने 'उपास्य' सम्राट्को बिलकुल भूल गये।

अन्तिम दिनों तक भी जारको यह आशा पूर्णरूपसे बनी हुई थी कि उनके भक्त उन्हें छुड़ा ले जायेंगे। किन्तु अब उनपर कड़ा पहरा बैठा दिया गया। जारकी शाही फौजके बढ़ आनेसे उनका अन्त और भी सन्निकट हो गया। सन् १९१८ की १२ जुलाईको एक बैठक हुई जिसमें यह कहा गया कि लाल सेना काफी नहीं है और तीन दिनके अन्दर ही नगरपर साम्राज्यवादी फौजका अधिकार हो जा सकता है। इसके फलस्वरूप वहांके सोवियटने यह निश्चय किया कि किसी प्रकारके न्याय-विचारकी प्रतीक्षा किये बिना ही जार और उनके वंशजोंका काम तमाम कर दिया जाय। यह भी निश्चय किया गया कि उनके मृत शरीरको बिलकुल नष्ट कर दिया जाय जिससे साम्राज्यवादियोंको भूतपूर्व जारके 'अवशिष्टांश' को लेकर मूर्ख जनताको उभाड़नेका मौका न मिले। इस निश्चयका समर्थन बादमें इस बातसे हुआ कि शाही फौज मृत शरीरके अनुसन्धानके लिए बहुत समय तक चेष्टा करती रही।

### आधीरातकी घटना

फिर हत्याकाण्डका वर्णन पुस्तकमें इस प्रकार किया गया है :—"१६ जुलाईकी सन्ध्याको मृत्युदण्ड देनेवाले व्यक्तियोंकी एक बैठक हुई। जार और उनके परिवारके लोग मकानके ऊपरकी मञ्जिलमें रहते थे। वहां उन्हें गोली मारना सुविधाजनक नहीं समझा गया। उन्हें सीढ़ीसे नीचे लाकर वहांके एक कमरेमें गोली मारनेका निश्चय किया गया। गोली मारी जानेके समय तक जार और उनके साथियोंको अपनी इस आसन्न मृत्युकी कुछ भी खबर न थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"उसी दिन आधी रातको जार और उनके परिवारवर्गसे कहा गया कि कपड़ा पहनकर नीचे चलें। उन्हें किसी और बातका सन्देह न हो, इसलिए उन्हें बताया गया कि चूंकि आज रातको इस मकानपर शाही फौजके आक्रमणकी आशङ्का की जाती है इसलिए उन्हें नीचे लिवा ले जाना आवश्यक है।

"जब नीचेकी मञ्जिलके कमरेमें वे सब एकत्र हुए तब उन्हें Ural Regional Soviet की आज्ञा पढ़कर सुनायी गयी। इसके बाद जार निकोलस द्वितीय, उनकी पत्नी, पुत्र, चार कन्यायें तथा उनके परिवारके अन्य व्यक्तियोंको गोली मार दी गयी।

"उनकी लाशोंको एक लारीपर रखकर एक कोयलेकी खानमें पहुंचाया गया। वहां लाशोंके जल जानेपर जो कुछ बचा-खुचा अंश रह गया उन्हें ले जाकर बहुत दूर एक दल-दल जमीनमें गाड़ दिया गया।

"जारीना और उनकी पुत्रियोंके शरीरपर बहुतसे कीमती जवाहिरात थे जो संग्रह करके रखे गये।

"इस घटनाके एक सप्ताह बाद २५ जुलाईको एकटेरिनवर्गपर शाही फौजका कब्जा हो गया और उसके आदमियोंने उन लोगोंके साथ बड़ी ही निष्ठुरताका व्यवहार किया जिनका जारके हत्याकाण्डसे सम्बन्ध था। इस हत्याकाण्डके परिणाम स्वरूप उरालके हजारों किसानों और मजदूरोंको अपने प्राणोंका मूल्य चुकाना पड़ा।"

## द्रुत रचना-शक्ति

बातकी बातमें पुस्तक लिख डालनेकी शक्ति जैसी एडगर वालेसमें थी वैसी शायद ही किसी दूसरे लेखकमें हो। एडगर वालेसकी लिखी हुई बहुसंख्यक पुस्तकें हैं। वे इतनी शीघ्रतासे लिखा करते थे कि सप्ताहमें दो बड़े-बड़े उपन्यास या नाटक लिख डालना उनके लिए कोई कठिन काम नहीं था। और उनके नाटक कितने लोकप्रिय होते थे, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं। उनके नाटकोंका अभिनय करके रङ्गभूमिके अधिकारियोंने प्रचुर अर्थोपार्जन किया।

अंगरेज नाट्यकार शेरिडन भी द्रुत रचना-शक्तिमें निपुण थे। उनके नाटक 'पिजारे'का अभिनय करके लन्दनकी एक कम्पनीने ३० हजार पौण्ड पैदा किया था। इस नाटककी रचना शेरिडनने रिहर्सलके साथ-साथ समाप्त की थी। प्रथम अभिनय-दिवसको नाटकका अन्तिम दृश्य पूरा हुआ था। उधर रिहर्सल हो रहा है, थियेटरमें दर्शकोंका आगमन शुरू हुआ है और इसके साथ-साथ नाटककी रचना भी चल रही है।

अलेकजेण्डर डूमाका 'रमुलाश' नाटक एक सप्ताहमें लिखा गया था। My odyssey ग्रन्थकी रचनाके सम्बन्धमें उन्होंने स्वयं लिखा है कि एक दिन ट्रेन फेल हो जानेके कारण मुझे स्टेशनके विश्रामगृहमें ही रात-भर ठहर जाना पड़ा। नींद दो घण्टेसे अधिक नहीं आयी। जगकर नाटक लिखने बैठा। एक दूकानसे कागज, कलम और स्याही खरीद कर पासके एक गांवके होटलमें चला गया और वहीं नाटककी रचना शुरू हुई। रातमें ११ बजे लिखना आरम्भ हुआ और प्रातःकाल नाटककी रचना समाप्त हो गयी।

एक और नाटकके सम्बन्धमें डूमाने एक मजेदार घटनाका जिक्र किया है :—थियेटरके लिए एक नया नाटक चाहिए। यह शर्त तय हुई कि पांच अङ्कोंका एक नाटक शीघ्र लिखकर समाप्त करना होगा। अभिनेता-अभिनेत्री-दल आ उपस्थित हुआ। मैनेजरने पूछा—"नाटक कब मिलेगा?"

डूमाने कहा—आज ही।

मैनेजरने कहा—रिहर्सल आज ही शुरू होगा?

डूमा—आज ही।

मैनेजर प्रसन्न होकर बोला—लिखना समाप्त हो गया।

डूमा—जरूर।

मैनेजर—पाण्डुलिपि कहां है?

डूमा—पाण्डुलिपि नहीं है। लिखना अभी समाप्त नहीं हुआ।

मैनेजर—तो फिर?

डूमाने कहा—मैं बोलता जाऊंगा और एक आदमी लिखता जायेगा। प्रथम अङ्कका रिहर्सल आज ही शुरू हो जाय।

मैनेजरने कहा—आप व्यस्त न हों। आज रिहर्सल न होनेसे भी काम चल सकता है; किन्तु एक सप्ताहके अन्दर ही नाटक चाहिए।

डूमा—एक सप्ताह विलम्ब करनेकी आवश्यकता नहीं। मैं बोलता जाता हूं—दो-तीन आदमी कागज कलम लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बैठ जायं। मैं जब जो कुछ कहूंगा, उसे वे उसी प्रकार लिखते चले जायंगे।

सिर्फ पांच ही अङ्क तो लिखने हैं। मैनेजर, अभिनेता, अभिनेत्री सब यह सुनकर अवाक् हो गये! आखिर वैसी ही व्यवस्था हुई। दो लेखक कापी लेकर बैठ गये। डूमाने नाटक लिखवाना शुरू किया और चार घण्टेमें ही पञ्चाङ्क नाटक समाप्त हो गया।

## अमरसिंहका घोड़ा और कानसिंह

मुगल सम्राट् शाहजहांके राजत्वकालमें राजा अमरसिंहने, उदयपुरके महाराणासे, दो लाख रुपयेमें दो उत्तम मारवाड़ी घोड़े खरीदे थे। उन दिनों घोड़ोंका यह मूल्य बहुत बड़ा माना जाता था। उन दो घोड़ोंमेंसे एककी कहानी हम यहां दे रहे हैं।

राजा अमरसिंह, सम्राट् शाहजहांके पास एक छोटी-सी सेनाके अधिनायक थे और उनको आगरेके किलेका संरक्षण करनेके लिए शाहजहांने अपने ही पास रख लिया था। एक दिन रातके समय खेलते-खेलते, अमरसिंह और शाहजहांके एक प्रिय रिश्तेदारके बीच झगड़ा ठन गया। राजा अमरसिंहने उसे उसी समय मार डाला। परन्तु लगे हाथ बादशाहके एक किसी सरदारने अमरसिंहके भी प्राण ले लिये।

राजा अमरसिंहकी धर्मपत्नी आगरा शहरमें रहती थी। उसको उपर्युक्त घटना विदित हुई, और उसने उसी समय तमाम राजपूतोंको एकत्र किया और उनसे प्रार्थना की कि वे किसी प्रकार किलेमेंसे उसके पतिका शव ला दें। इस कार्यके लिए कोई भी खड़ा न हुआ। परन्तु कानसिंह नामक एक सरदार इसके लिए उद्यत हुआ।

राजा अमरसिंहके जिस घोड़ेके सम्बन्धमें हम यहां प्रकाश डालना चाहते हैं वह उस समय किलेके भीतर अस्तबलमें बंधा हुआ था।

सरदार कानसिंह बड़ी युक्ति और गुप्त रीतिसे, सबोंकी आंखें बचाकर, रात्रिके समय किलेके भीतर घुसे। धीरे-धीरे वहांपर पहुंचे जहां राजा अमरसिंहके घुड़सालमें उनका घोड़ा बंधा हुआ था। उन्होंने उसे खोला और उसपर जीन कसा। फिर उनके शवके पास पहुंचे। परन्तु शवके आसपास बड़ा कड़ा पहरा बैठाया गया था। कानसिंहने पहरेवालोंके साथ युद्ध किया और उनको मारकर राजाका शव छीना और उसे घोड़ेपर बांध दिया। आप भी उसकी पीठपर सवार हो गया। इतनेमें शोरगुलके मारे सारे किलेके सिपाही जाग गये और कुछ सवार, कानसिंहको पकड़नेको दौड़े। कानसिंह कहीं बाहर न निकल जाय, इसके लिए किलेके सारे दरवाजे और खिड़कियां बन्द कर दी गयीं, और उनपर भी कड़ा पहरा बैठा दिया गया। कानसिंहने जब अपने-आपको बुरी तरह चारों ओरसे घिरा देखा और सारी निकासवाली जगहोंपर कड़ा पहरा पाया तब वह किलेकी एक तटवाली दीवारपर घोड़ेको चढ़ा ले गया और वहांसे उसने राजा अमरसिंहके घोड़ेको नीचे कुदाया।

किलेकी दीवारसे जमीन कोई २१० फीट नीचे थी। इतनी ऊंचाईपरसे घोड़ा अमरसिंहकी लाश और कानसिंहको लेकर नीचे कूद गया।

इस घोड़ेकी मृत्युके सम्बन्धमें दो आख्यायिकायें प्रसिद्ध हैं। (१) घोड़ा जब ऊपरसे कूदा तब उसको अधिक चोट न आयी थी और वह राजा अमरसिंहकी लाश उनकी स्त्रीके पास पहुंचा आया और फिर वहांसे उसी कूदनेवाली जगहपर पहुंचा और वहां उसने प्राण छोड़े। (२) जमीनपर उतरते ही घोड़ा वहीं मर गया और कानसिंहने राजा अमरसिंहकी लाश उनकी पत्नीके पास पहुंचायी। हमें यही ठीक जंचती है।

घोड़ेकी यह अपूर्व स्वामिभक्ति-पूर्ण कृति, कानसिंहकी बहादुरी और राजा अमरसिंहकी पूर्व कृतियोंने बादशाहके हृदयपर एक छाप-सी बैठा दी। वे इन सारी कृतियोंको अपने महलकी एक खिड़कीसे देखकर चकित रह गये। अमरसिंहके प्रति जो क्रोध था वह शान्त हो गया और उसकी जगह प्रेमने आकर घेर ली। बादशाहको यह वीरोचित कार्य देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। और इस घटनाको अमर रूप देनेके लिए उन्होंने एक पत्थरका घोड़ा बनवाया और उसपर अमरसिंहकी पत्थरकी प्रतिमा बनाकर उसे उस स्थानपर स्थापित किया जहांपर वह घोड़ा कूदा था। यह स्मारक आगरेके किलेके बाहर, और रेलवे स्टेशनके सामने आज-दिन भी विद्यमान है।

—लक्ष्मीनारायण दीनदयाल अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## प्राचीन भारतमें स्त्रियां

भारतीय सभ्यताकी प्राचीनता और उसके उत्कर्षकी कहानियां आज भी हम कहते हैं और आज भी उन स्वर्ण-युगोंकी महत्ताके आधारपर ही संसारमें हमारे अस्तित्वका कुछ-न-कुछ गौरव है। आर्योंकी उस उत्कृष्ट संस्कृति और उच्च सभ्यताका एक बहुत बड़ा अंश आर्य महिलाओंकी कीर्ति-गाथाओंसे भरा पड़ा है। आज यद्यपि भारतीय महिलाओंकी दशा अत्यन्त चिन्ताजनक है, फिर भी यह माननेसे कोई इनकार नहीं कर सकता कि प्राचीन भारतमें स्त्रियोंका एक खास स्थान था। पुरुष समाज आजकी तरह उसकी अव-हेलना नहीं किया करता था। वेद इसके साक्षी हैं कि स्त्री स्वयं शक्तिरूपा समझी जाती थी, और पत्नी-रूपमें उसे पानेपर पुरुषका भाग्य सराहा जाता था, और वह ईश्वरका सर्व-मङ्गलमय कोमल अवदान समझी जाती थी। समाजमें उनका गौरव और सम्मान था। हमारे पूर्वज स्वाधीनताका उप-भोग करते थे और स्त्रियां भी इस सुखसे वञ्चित नहीं थीं। नारीके बिना पुरुष अधूरा—अपूर्ण समझा जाता था, पुरुषको पूरा करनेके लिए नारीकी आवश्यकता पड़ती थी, और इसीलिए उसे अर्द्धाङ्गिनी कहा गया है।

प्राचीन कालमें आजकी तरह स्त्रियोंका विवाह स्वांग-जैसा नहीं कर दिया जाता था, बल्कि उस समय स्त्रीको अपने पतिके चुनावकी यथेष्ट स्वाधीनता रहती थी। इस प्रकारकी स्वाधीनता देनेका ही अर्थ है कि वयस्क हो जानेपर ही बालिकाओंका विवाह होता था। वेदमें एक श्लोक है जिसमें कन्याका पिता विवाहके मङ्गलमय अवसरपर अपनी लड़कीके लिए भगवान् सूर्यसे प्रार्थना करता हुआ कहता है—"भग-वान् सविता तुम्हें वह पति दें, जिसकी कामना तुम्हारे हृदयमें है।"

विवाहके पश्चात् गृहिणी पद पानेपर वह घरकी माल-किन समझी जाती थी। गृहस्थीके कार्योंमें उसकी सम्मति-का आदर होता था और सारा उत्तरदायित्व उसीके ऊपर रहता था। वेदोंमें स्त्रीके अधिकारोंके लिए प्रार्थना करते हुए कहा गया है—"सास और श्वसुरपर नववधूका ममतामय प्रभाव रहे, स्वामीकी बहन तथा उसके भाइयोंपर उसका स्नेहमय शासन रहे।"

लेकिन रमणीका सारा कार्यकलाप केवल घरकी चहार-दीवारीके भीतर ही तक सीमित नहीं था। समाजमें—सामाजिक महोत्सवों, यज्ञों और वादविवादोंमें वह न केवल जा सकती थी, बल्कि वहांके सारे कार्योंमें खुलकर भाग भी ले सकती थी। वह जाती भी क्यों न? पर्देकी जघन्य नाश-कारी प्रथा तो थी नहीं जो उसे घरसे बाहर निकलनेसे रोकती और पुरुषोंके समान ही उसे भी समान रूपसे सभी अधि-कार मिले थे—फलतः उसका भी मानसिक और बौद्धिक विकास भली भांति हुआ रहता था, इसलिए किसी प्रकार भी अपनेको क्षुद्र समझनेकी घातक मनोवृत्ति उसमें नहीं थी। पुरुष स्त्रीको पत्नीके रूपमें ग्रहण करते समय एक श्लोक पढ़ा करता था जिसका मतलब है—

"दाहिने हाथसे मैं तुम्हें सुखके लिए अपना रहा हूं। तुम जरावस्था तक मेरे—अपने पतिके साथ रहो। आर्यने तुम्हें मेरे घरपर सम्मिलित रूपसे शासन करनेके लिए सुपुर्द किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कारण घरमें निरन्तर कलहकी नरकाग्नि धधकती हो, वह स्त्री-समाज सम्मानकी भीख मांगनेसे भी क्या पायेगा? इसलिए बहनो! याद रखो कि जो प्राप्त करना चाहती हो, पहले उसके योग्य बनो। जिस देशकी स्त्रियोंने अपनेको पुरुषोंके समान योग्य बना लिया है, उन्होंने उनसे अपना अधिकार भी छीन लिया है। अधिकारोंको पाये बिना तुम्हारा सम्मान नहीं हो सकता, परन्तु अधिकारोंके लिए अपनेको योग्य तो बनाओ।"

## विवाहका नागपाश

हिन्दुओंकी बिगड़ी हुई वैवाहिक प्रणालीपर लिखते हुए एक भारतीय महिलाने लिखा है :—

यों तो आज हिन्दू समाज अनेक नाशकारी कुरीतियों और घृणित प्रथाओंका दास बना हुआ है, परन्तु हमारी वैवाहिक प्रणाली आज जितनी बिगड़ी हुई है और उससे जितनी हानि हो रही है, उतनी शायद ही किसी और बातसे होती हो। अत्यन्त अल्पावस्थामें ही बालक-बालिकाओंको एक-दूसरेके गलेमें मढ़ दिया जाता है और इस अवस्थामें बालकको तो कुछ सुविधा भी रहती है, परन्तु बालिकाकी उन्नतिके सारे मार्ग अवरुद्ध कर दिये जाते हैं। अल्पावस्थाकी यह वैवाहिक प्रणाली वास्तवमें बालिकाओंके लिए नागपाशकी तरह ही घातक सिद्ध हो रही है। अल्पावस्थामें विवाह कर देनेके ही दुःखद परिणाम-स्वरूप आज हिन्दू समाजमें लाखों विधवायें अपने दुर्भाग्यपर आंसू बहा रही हैं। आंकड़ोंके देखनेसे पता चलता है कि हिन्दू समाजमें ऐसी विधवाओंकी संख्या चार-पांच लाख है जिनकी अवस्था अभी पन्द्रह वर्षकी भी नहीं हुई है। यद्यपि हमारे देशमें शारदा कानूनके नामसे विख्यात बाल-विवाह-विरोधी कानून भी है और अल्पावस्थामें सहवास रोकनेके लिए भी एक कानून बन चुका है। परन्तु ये दोनों ही कानून व्यर्थ हो रहे हैं। निर्भय होकर लोग इन दोनों ही लोकोपकारी कानूनोंकी हत्या कर रहे हैं, अतः उनके पवित्र उद्देश्यकी पूर्ति उनके रहनेपर भी नहीं हो रही है। अल्प वयमें ही विवाह हो जाने और सहवासमें भी किसी प्रकारकी रुकावट न होनेका परिणाम यह होता है कि वधूका स्वास्थ्य और सौन्दर्य नष्ट हो जाता है और इस अवस्थामें जो सन्तान होती है वह भी नितान्त निर्बल और रोगी इसीका यह कुफल है कि भारतमें सभी देशोंसे बालकोंकी मृत्यु-संख्या औसतन् बहुत अधिक है।

इन बुराइयोंके साथ-साथ अल्प वयस्का विवाहिता बालिकाकी सारी उन्नतिका द्वार अपने-आप बन्द हो जाता है। विवाहके साथ ही उसकी पढ़ाई-लिखाई बन्द हो जाती है और पर्देकी चहारदीवारीके भीतर बन्द रहना पड़ता है। रोशनी-जैसी प्राणदायिनी वस्तु भी उसके लिए दुर्लभ हो जाती है। ऐसी दशामें उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियोंका क्षय होना तथा बौद्धिक विकासका द्वार सर्वथा अवरुद्ध हो जाना अवश्यम्भावी हो जाता है।

श्रीमती जे० रायजी—आप बम्बई कारपोरेशनके चुनावमें विशाल बहुमतसे उसकी सदस्या चुनी गयी हैं।

इन सबके अतिरिक्त बाल्यावस्थाकी अज्ञानतामें ही बालिकाओंको विवाहके नामपर एक स्वांग करके किसीके गलेमें मढ़ देना न केवल सभ्यता और संस्कृतिपर पाद प्रहार करना है, बल्कि यह एक ऐसी बर्बरता है जिसके कारण समस्त हिन्दू-समाजका मस्तक अवनत हो रहा है। इस प्रथाके कारण आज सारे संसारमें हिन्दू-समाजकी निन्दा हो रही है, परन्तु फिर भी समाजके हिमायतियोंकी आंखें नहीं खुलतीं!

इस रोगका आक्रमण समाजके ठीक मार्मिक अन्तस्तलपर होता है और इसके विषाक्त प्रभावसे हमारे जीवनका वातावरण जहरीला हो रहा है, अतः इस बुराईका सर्वथा निवारण करनेके लिए महिलाओंको खुलकर विद्रोह करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पड़े तो भी अनुचित नहीं। किसी भी दशामें यह स्थिति वाञ्छनीय नहीं है। जब यह रोग हमारे रोम-रोममें भर गया है तब इसके लिए बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

## नारी-जागरणके इतिहासका एक उज्ज्वल पृष्ठ

अभी तक लोग यही समझते रहे हैं और इसी बातमें उनका विश्वास भी रहा है कि पाश्चात्य महिलाओंने ही संसारके अन्यान्य देशोंकी महिलाओंको स्वाधीनताका सन्देश दिया है। परन्तु बम्बईकी सुप्रसिद्ध मुसलिम विदुषी महिला शीरीं फौजदार ने कुछ दिन हुए लन्दनमें एक भाषण दिया था, जिससे मालूम होता है कि पश्चिमको भी सभ्यताका सन्देश एवं जीवन और जागृतिका उत्तेजन देनेवाली महिला फारसकी—पूर्वकी थी। उक्त फारसी रमणीने नारी जातिके लिए जो कुछ किया, उससे समस्त महिला-जगत्का मस्तक निश्चय ही गर्वसे उन्नत हो जायगा और सभीका हृदय उसकी मर्मस्पर्शी कहानीसे करुणार्द्र हुए बिना न रहेगा।

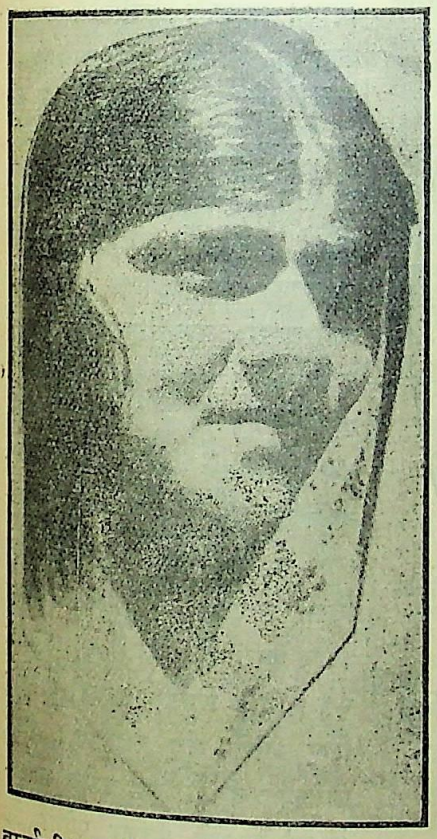

बम्बईकी सुप्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी महिला कुमारी सोफिया सोमजी—सीमान्तके गान्धी खां अबुल गफ्फार खांके भतीजेसे आपका विवाह होना निश्चित हुआ है।

बेगम शीरींने अपने उक्त भाषणमें कहा कि १९ वीं शताब्दीके अन्त तक संसारके सभी देशोंमें स्त्रियोंको लोग पुरुषोंसे निम्नकोटिका समझते रहे। पुरुषोंके बनाये हुए अत्याचारपूर्ण विधानोंसे नारियोंको उठनेका अवसर ही नहीं मिलता था। इस प्रकारके घोर अज्ञानमें पलनेवाली बालिकाओंको भला अपनी शक्तियों एवं अधिकारोंका ज्ञान कहांसे होता?

अज्ञानकी ऐसी ही काली रजनीमें फारसकी सुकुमार रमणी जरीन ताज अथवा कुरातुल आईनका जन्म हुआ था। इस भाग्यवती रमणीका जन्म एक बहुत विद्वान घरानेमें हुआ था और यद्यपि प्रथाके अनुसार उसे पर्देकी चहारदीवारीके भीतर बन्द रहना पड़ता था, फिर भी उलमाओंके साथ उसके गुरुजन जो बहस-मुबाहसे करते थे, उनसे उसने खूब ही लाभ उठाया। कुछ ही दिनोंमें लोगोंने उसे एक कवयित्रीके रूपमें जाना। इसके साथ उसकी तर्क-शक्ति इतनी विकसित हुई कि बड़े-बड़े तार्किक उसका लोहा मानने लगे। कुरानके अध्ययनसे वह इस परिणामपर पहुंची कि एक ऐसा महापुरुष जन्म लेगा, जो संसारको अज्ञानताकी दासतासे मुक्त करेगा और सारी परिस्थितियां बदल जायेंगी। इसी समय १८६३ में बहाई धर्मके जन्मदाता बहाउल्लाने अपने धर्मकी घोषणा की। बहाउल्लाने घोषित किया कि संसार-भरका एक ही धर्म है, एक ही भाषा है, जीवनकी एक ही प्रगति है। वे विश्व-शान्तिका सन्देश लेकर उतरे थे। वे कहते थे—"स्त्री और पुरुष दोनों एक ही पक्षीके दो पर हैं और जब तक दोनों पर दुरुस्त नहीं रहते, तब तक पक्षी मुक्त गगनमें विचरण नहीं कर सकता, कोने-कोनेमें मानवताका सन्देश नहीं पहुंचा सकता, दिशाओंको शान्तिके कलरवसे मुखरित नहीं कर सकता।"

कुरातुल आईनके प्राणोंकी तन्त्री बज उठी। ऐसे ही अवसरकी तो वह प्रतीक्षा कर रही थी। उसने बुरकेको फाड़ फेंका और अज्ञानता और रूढ़ियोंके दलदलसे बाहर निकल आयी। उसने ललकारा—बहनो! पुरुषोंकी गुलाम बनी क्यों पड़ी हो? दकियानूस बुड्ढोंके कानोंमें यह आवाज खटकी। उलमा बिगड़े, मुल्लाओंकी आंखें लाल हुईं और मौलवी क्रोधसे कांपने लगे। और तो और, उसके पतिदेव तक रुष्ट हुए। परन्तु फारसका नारीत्व जाग उठा था।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कुरातुल आईनकी वाणी दीवारों और पर्दोंको चीरकर अन्तः-पुरकी कोमलाङ्गी रमणियोंको वेध चुकी थी, वार खाली नहीं गया था, तीरका निशाना चूका नहीं था और फलतः कुरातुल आईनके पीछे चलनेवाली सैकड़ों ललनायें आगे आ गयीं।

लेकिन अधिकारी चुप न रह सके। इस जीवन, इस जागृति और इस युगान्तरको झूठे धर्मका ढकोसला करनेवाले दकियानूस न देख सके। कुरातुल आईन गिरफ्तार हुई, उसे दण्ड मिला, एकदम मृत्युदण्ड! गुप्तरूपसे—जिससे पता चलनेपर कोई भयानक स्थिति न उत्पन्न हो जाय—कुरातुलआईनको फांसीके तख्तेपर झुला दिया गया। तत्कालीन पथभ्रष्टोंकी जघन्यता—जो कुरातुलके कामको न समझ सके—केवल यहीं तक शेष नहीं हो गयी, बल्कि उन्होंने इतनी हृदयहीनता दिखायी कि जब उसके प्राण कुछ शेष ही थे, तभी उस अर्द्ध-मृत रमणीको एक सूखे कुएंमें फेंक दिया और ऊपरसे उसे पत्थरोंसे पाट दिया।

कुरातुलकी शहादत फारसी महिलाओंके लिए खतरेकी घण्टी थी। हजारोंकी संख्यामें रमणियां पर्देसे बाहर आयीं और उन्होंने हंसते-हंसते वीरतापूर्वक मृत्युका आलिङ्गन किया। उन वीर महिलाओंकी करुण, किन्तु वीरतापूर्ण कहानियोंको प्रो० ई० जी० ब्राउन, लार्ड कर्जन, डार्मस्टियर आदिने पश्चिमको सुनाया और इसका परिणाम यह हुआ कि पश्चिमकी महिलायें भी जागीं। इंगलैण्डके मताधिकार आन्दोलनकी कितनी ही प्रमुख महिला नेताओंने इस बातको स्वीकार किया था कि कुरातुल आईनके जीवनसे उन्हें बड़ा बल और उद्बोधन मिला था।

आज संसारकी स्थिति बदल गयी है, सर्वत्र महिलाओं-में अजीब जागृति आ गयी है। परन्तु इस जागृतिका सन्देश सर्वप्रथम प्राच्य महिलाओंने सुनाया। हजारों फारसी रमणियोंने मानवताकी समस्या सुलझानेके लिए स्वाधीनता और समानताकी वेदीपर अपनेको बलिदान कर दिया और पूर्वकी स्त्रियां तब स्वाधीन हो गयीं, जब पश्चिम-की महिलाओंने स्वाधीनताका स्वप्न भी नहीं देखा था।

## अज्ञान ही हमारी दुर्दशाओंकी जड़ है

फरवरीके पहले सप्ताहमें बनारसकी कारमाइकेल लाइ-ब्रेरीमें सर जे० पी० श्रीवास्तवकी धर्मपत्नी लेडी श्री-वास्तवने महिलाओंकी सभामें एक मनन करने योग्य भाषण दिया। भाषणके सिलसिलेमें उन्होंने कहा कि भारतीय महिलायें बहुत पीछे हैं और इसका कारण यह है कि वे घोर अज्ञानमें पड़ी हुई हैं। अज्ञान ही हमारी दुर्दशाओंकी जड़ है। यह कितने दुर्भाग्यकी बात है कि इस अज्ञानकी ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता, मानों हममें कोई बुराई है ही नहीं। हमारे चारों ओर आज परिवर्तन हो रहे हैं, लेकिन फिर भी हम चुप लगाये बैठी हैं। इन परि-वर्तनोंकी ओर न तो हमारी नजर है और न हम अपने रीतिरिवाजोंमें किसी तरहका परिवर्तन करनेका ध्यान करती हैं। हममें ९० प्रतिशत ऐसे लोग हैं जिन्होंने बाहरी बातोंके लिए आंखें मूंद रखी हैं। इसी बातको अगर मैं कुछ कठोर भाषा-में कहूं तो मुझे कहना पड़ेगा कि हमारी अधिकांश स्त्रियां गूंगे पशुओंकी तरह जीवन बिता रही हैं।

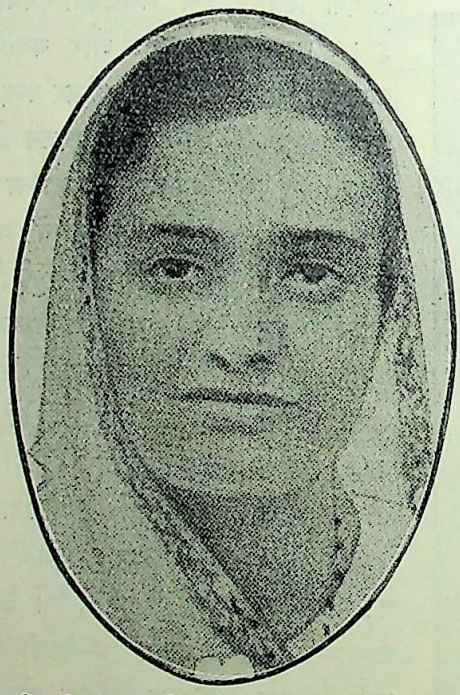

श्रीमती लीलाबाई खण्डेलवाल—आप सुप्रसिद्ध समाज-सेविका तथा माण्टेसरी शिक्षा-प्रणालीसे शिक्षा देनेवाले सन्तक्रुज बाल मन्दिरकी सङ्गठनकर्त्री हैं।

महिला-सम्बन्धी साहित्यपर प्रकाश डालते हुए लेडी श्रीवास्तवने जो बात कही वह नितान्त विचारणीय है। उन्होंने कहा कि आम तौरपर सार्वजनिक तथा सरकारी पुस्तकालयोंमें महिलाओंके लिए पुस्तकों और पत्रोंका कोई खास इन्तजाम नहीं रहता। महिलाओंके लिए प्रकाशित होनेवाले पत्रों और पुस्तकोंको उंगलियोंपर गिना जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है। इस बातके लिए भी फिलहाल हमें विदेशों द्वारा प्रकाशित साहित्यकी ही शरण लेनी पड़ेगी। किन्तु मुझे आशा है कि भविष्यमें भारतीय प्रकाशकोंका ध्यान इस ओर जायगा और वे महिला-सम्बन्धी साहित्य प्रकाशित करेंगे। महिलाओंके लिए कितने ही ऐसे उपयोगी विषय हैं जिनपर पुस्तकोंके प्रकाशित करनेकी बड़ी भारी आवश्यकता है। बाल-मनोविज्ञान, बालकोंकी सेवा-शुश्रूषा और लालन-पालन सम्बन्धी विषय, मातृत्वकी शिक्षा देनेवाली तथा स्त्रियोंके अधिकारों और उनसे सम्बन्ध रखनेवाली कितनी ही बातोंकी जानकारी करानेवाली पुस्तकोंका हमारे यहां बड़ा अभाव है। सन्तति-निग्रह और बालकोंसे सम्बन्ध रखनेवाली सम्यक् बातोंका ज्ञान करानेवाली वैज्ञानिक पुस्तकोंकी खास तौरपर आवश्यकता है। हमारे यहां मृत्यु-संख्याका औसत २४ प्रति हजार है। इंगलैण्डमें ११ प्रति हजार और अमेरिकामें १०॥ प्रति हजार है। बच्चोंकी देख-रेख करनेका भली भांति ज्ञान हमारी माताओंको नहीं रहता, इसीलिए बालकोंकी मृत्यु-संख्याका औसत बहुत ऊंचा है। इन आंकड़ोंको देखते हुए मुझे इसपर विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं है। इनसे आप ही स्पष्ट हो जाता है कि इन विषयोंका ज्ञान करानेवाले साहित्यकी कितनी आवश्यकता है। स्वास्थ्य और सौन्दर्य-सम्बन्धी पुस्तकोंकी भी बड़ी कमी है। भारतीय भाषाओंमें ऐसी पुस्तकोंका बड़ा ही शोचनीय अभाव है। मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि हमारे घर कितने कुरुचिपूर्ण, गन्दे तथा बेतरतीब रहते हैं। दूसरे देशोंके साथ तो उनकी तुलना ही नहीं हो सकती। अपने घरोंको साफ-सुथरा आरामदायक रखना हमारा कर्तव्य है जिससे उस वातावरणमें लालित-पालित और विकसित होनेवाले शिशु स्वस्थ, सुन्दर और सुसंकृत विचारवाले बनें।

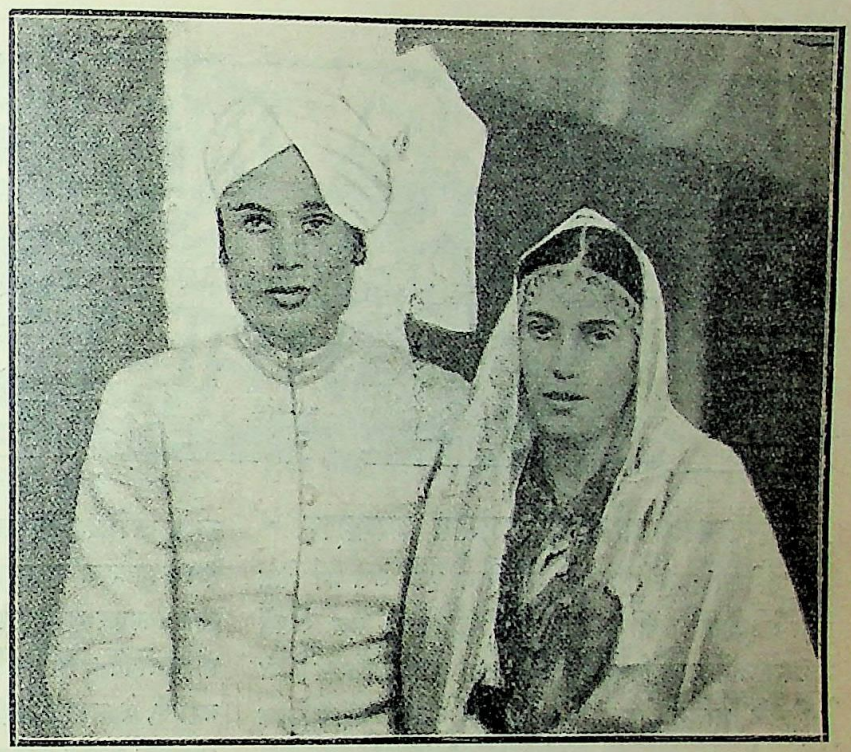

श्रीयुत ब्रजकुमार नेहरू आई० सी० एस० तथा श्रीमती शोभारानो ( भूतपूर्व मिस मैगडोलना फ्रीडमन-हङ्गरी ) का अन्तर्जातीय विवाह विगत जनवरीमें लाहौर-में हिन्दू-धर्मके अनुसार सम्पन्न हुआ है। इस अवसरपर महात्माजी तथा पं० जवाहरलाल नेहरूने मङ्गल-सन्देश भेजे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## हरिजनोंके प्रति घृणाजनक व्यवहार

'हरिजन' पत्रमें महात्मा गांधीका एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है "घोर अज्ञान"। इस लेखमें महात्माजीने एक हरिजन-सेवकके पत्रका कुछ अंश उद्धृत किया है जिससे मालूम होता है कि रींगसमें जयपुर राज्य युवक सम्मेलनके अवसरपर एक खादी प्रदर्शिनीकी दूकान मकानके नीचेकी मञ्जिलमें लगायी गयी थी और उसके नीचे चौकमें सम्मेलन हुआ था। एक हरिजन बालक उस दूकानके बरामदेमें बैठा हुआ था, जो नीचे चौकमें बैठे हुए सवर्ण हिन्दुओं-को ऊपर बैठा हुआ दिखाई दे रहा था। इससे वहांके सवर्ण हिन्दू इतने नाराज हुए कि उन्होंने पञ्चायत करके खादी-प्रदर्शिनीका बहिष्कार करनेका निश्चय किया और इसके साथ ही यह भी निश्चय किया कि पञ्चायतकी इस आज्ञाके विरुद्ध जो कोई प्रदर्शिनीमें भाग लेगा उसे जातिसे बाहर कर दिया जायगा। पञ्चायतके इस हुक्मके विरुद्ध २८ आदमियोंने सम्मेलनमें भाग लिया जिसके दण्डस्वरूप प्रत्येक व्यक्तिपर एक-एक रुपया जुर्माना किया गया; परन्तु उन्होंने जुर्माना देनेसे इनकार किया। इतना ही नहीं बल्कि समाजके इन पञ्चोंने गांवकी एक कन्या पाठशालाका भी बहिष्कार कर देनेका निश्चय किया; क्योंकि उक्त पाठशालाका सम्बन्ध सम्मेलनके संयोजकोंसे है।

उपर्युक्त घटनाका धर्मसे बिलकुल सम्बन्ध नहीं है। कोई भी सनातनी यह कहनेका साहस नहीं कर सकता कि किसी हरिजनके उच्च स्थानपर बैठनेसे उससे अपेक्षाकृत न्यून स्थान-पर बैठे हुए सवर्ण हिन्दुओंकी धर्म-हानि होती है अथवा उनके धार्मिक विश्वासपर किसी प्रकार भी आघात पहुंचता है। यह प्रश्न एकमात्र सामाजिक स्थिति, पद-मर्यादा और सबसे बढ़कर मनुष्यत्वसे सम्बन्ध रखता है। चूंकि समाजमें हरिजनोंकी कोई स्थिति नहीं है, उनकी मर्यादाकी कोई कद्र नहीं है, वे समाजमें दलित, उपेक्षित, लाञ्छित, निपीड़ित एवं शृङ्खलित होनेके कारण उसके गलित अङ्ग बना दिये गये हैं, इसलिए उच्च वर्ण, कुलीन, प्रतिष्ठित एवं सम्मानित कहे जाने-वाले लोग उन्हें साधारण मनुष्यत्वसे भी पतित समझते हैं और उनके साथ अत्यन्त हृदयहीन व्यवहार करनेमें अणुमात्र भी संकुचित नहीं होते। यहां उनकी कुलीनता और उच्च वर्णका गौरव इसीमें है कि मनुष्योचित शालीनता एवं सह-दयताको सर्वथा तिलाञ्जलि देकर अपनेसे दुर्बल, क्षमताहीन एवं पतित देशबन्धुओंके स्वाभिमानपर, उनकी मार्मिक भाव-नाओंपर पदाघात करें और ऐसा करना अपना मौरूसी अधिकार समझें। हिन्दू जातिकी चिरदासताका यह ज्वलन्त उदाहरण इस बातका स्पष्ट परिचायक है कि हिन्दू समाज हजारों वर्षसे पराधीनता एवं परवशताके बन्धनोंमें आबद्ध रहनेके कारण जात्यभिमान एवं आत्मगौरवके भावसे सर्वथा शून्य बन गया है। अपना बल-पराक्रम, पौरुष, तेजोदीप्त गर्व सब-कुछ खो देनेके कारण उसके हृदयमें दासताजन्य ग्लानि बोध करनेकी वह भावना रह ही नहीं गयी, जो भावना मनुष्यको दूसरेके स्वाभिमानके प्रति सम्मान प्रदर्शित करनेके लिए प्रेरणा प्रदान करती है। तभी तो हमारा समाज आज मनुष्य और मनुष्यके बीच इस प्रकारके घृणोत्पादक भेद-भावको सहन करता हुआ अपनी कुलीनतापर गर्व करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किन्तु जो जाति स्वयं इस प्रकार मनुष्यत्वकी अवमानना करके अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहती है वह अपने समाज और देशके कुछ लोगोंकी आंखोंमें धूल झोंककर भले ही श्रेष्ठ और कुलीन बनी रहे, संसारकी दृष्टिमें तो वह जाति सामूहिक रूपमें अधःपतित और आत्म-गौरव-शून्य ही समझी जायगी और उसके प्रति संसारकी अन्यान्य सभ्य जातियोंका वैसा ही अपमानजनक व्यवहार होगा जैसा इस समय विदेशोंमें भारतीयोंके साथ हो रहा है।

इस सम्बन्धमें एक बात और है। जो लोग यह समझते हैं कि हरिजनोंके उत्थानके सम्बन्धमें कट्टर सनातनियोंका विरोध केवल धर्मगत है; और बातोंमें वे उनके उत्थानके पक्षपाती हैं, उन्हें इस घटनासे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। धर्म तो केवल एक बहाना है। असल बात तो यह है कि वे हरिजनोंकी वर्तमान स्थितिमें किसी प्रकारका सुधार चाहते ही नहीं। उनके लिए हरिजन सदा-सर्वदा दलित, पतित एवं निर्यातित बने रहें; उनका कर्तव्य है मूक पशुवत् घोर दरिद्रता, लाञ्छना, एवं अत्याचार सहन करते हुए समाजकी सेवा करना और उच्च सवर्ण हिन्दुओंका अधिकार है उनपर मनमानी हुकूमत करते हुए उनकी सेवाओंका शोषण करना! यही परम्परागत ईश्वर-विहित व्यवस्था है! अतएव मनुष्यके लिए इसमें किसी प्रकारका परिवर्तन करनेकी चेष्टा करना ईश्वरीय व्यवस्थामें हस्तक्षेप करके भगवान्का कोपभाजन बनना है!

## ८० वर्षका दूल्हा और २ वर्षकी दुलहिन

सामाजिक सुधार-सम्बन्धी विषयोंमें व्यवस्थापिका सभाओं द्वारा हस्तक्षेप किये जानेपर जो लोग 'धर्मरक्षा' की दुहाई दिया करते हैं वे बहुधा इस बातको भूल जाते हैं कि हिन्दू समाजमें ऐसी बहुत-सी कुरीतियां घुस आयी हैं जिनका धर्मसे बिलकुल सम्बन्ध नहीं है और जिनके दूरीकरणका एक मात्र उपाय कानूनकी शरण लेना है। अन्यथा यदि केवल समाज-सुधार-आन्दोलनके भरोसे रहा जाय तो इन कुरीतियोंके दूर होनेमें न मालूम कितने वर्ष लग जायंगे। दक्षिण भारतके नेलोर जिलान्तर्गत एक गांवकी घटना है। वहां दो वर्षकी एक बच्चीका ब्याह—यदि हम इसे ब्याह कह सकें—१४ वर्षके एक बालकके साथ किया गया था जिसके सम्बन्धमें नेलोरके जिला मजिस्ट्रेटकी अदालतमें लड़का-लड़कीके माता-पिता तथा विवाह करानेवाले पुरोहितपर मामला चल रहा है। अभियुक्तोंने अपना अपराध स्वीकार करते हुए यह बयान दिया कि वे एक सुदूर ग्रामके निवासी हैं इसलिए उन्हें शारदा एक्टकी बात मालूम नहीं थी।

दूसरी घटना बङ्गाल प्रान्तके ब्रह्मपुरकी है। ७५ वर्षका एक अवसरप्राप्त आबकारी सब-इन्सपेक्टर १३ वर्षकी एक ब्राह्मण कन्याका पाणिग्रहण करनेके लिए बारातका जुलूस लेकर पहुंचा। विवाह-कार्य आरम्भ होते ही शहरके लोग वहां पहुंचे और उस बुड्ढे सब-इन्स्पेक्टरको वहांसे निकाल बाहर करके उस कन्याकी रक्षा की और वहींके एक नवयुवक छात्रसे उसका विवाह कर दिया।

लड़कीके माता-पिता वीरभूमि जिलेके निवासी हैं और वहांसे वे अपनी कन्याको 'बलि' देनेके लिए ब्रह्मपुर लाये थे। उन्हें २ हजार रुपये मिलनेका लोभ दिया गया था।

सब-इन्स्पेक्टरके कई पुत्र और पौत्र हैं और उनका यह प्रस्तावित विवाह यदि सफल होता तो चौथा विवाह होता। इस प्रकार जिस समाजमें दो-दो वर्षकी बच्चियों और ८० वर्षके मरणासन्न वृद्धोंका १३ वर्षकी बालिकाके साथ विवाह सम्भव हो, जहां कन्याके माता-पिता अपनी अबोध बालिकाको चाहे जिस किसीके हाथ पशुकी तरह बेच डालें, उसके सुख-सौभाग्यपर अत्यन्त निर्मम भावसे पदाघात करके उसके जीवनको नरकमय बना डालें, उस समाजके इस आत्मघातको रोकनेके लिए यदि कानूनकी शरण न ली जाय तो फिर और किस प्रकार इसका प्रतिकार हो सकता है?

सामाजिक विषयोंमें जो लोग व्यवस्थापिका सभाओंकी तटस्थताकी दुहाई दिया करते हैं उनसे यदि कोई पूछे कि आपने अब तक इन सामाजिक पापाचारोंको रोकनेके लिए, हिन्दू समाजकी इन आत्मघातिनी कुरीतियोंसे रक्षा करनेके लिए क्या किया, तब इसका वे क्या उत्तर देंगे? क्योंकि यह अक्सर देखा जाता है कि समाजमें जब कभी बाल या वृद्ध विवाह होते हैं तो उनका विरोध भी वे ही लोग करते हैं जो इसके लिए कानून बनाये जानेकी आवश्यकता महसूस करते हैं, न कि वे लोग जो यह कहकर कानून बनाये जानेका विरोध करते हैं कि समाज-सुधारका विषय समाजके ऊपर ही छोड़ देना चाहिए। इनकी ओरसे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शायद ही कभी किसीने सामाजिक अन्यायोंका सङ्गठित रूपमें विरोध किये जाते हुए देखा हो। असल बात तो यह है कि ये इतने हृदयहीन बन गये हैं कि समाजमें होनेवाले निदारुण अनाचार एवं पापाचारका इनके दिल-दिमागपर कोई असर ही नहीं होता। इनकी दृष्टिमें नन्हें-नन्हें बच्चे-बच्चियों-की शादी करना, वृद्ध कामुकोंकी कामलालसाकी तृप्तिके लिए अबोध बालिकाओंका बलिदान करना और फिर उनके विधवा हो जानेपर उनसे बलात् वैधव्य पालन करवाना और इसकी ओटमें व्यभिचार, भ्रूणहत्या एवं शिशुहत्या-जैसे जघन्य कुकर्मोंको प्रश्रय देना कोई पाप ही नहीं है। इन सब पापोंसे धर्म नहीं डूबता, समाजकी मर्यादा नष्ट नहीं होती, परम्परागत आचार-विचारोंमें कोई खलल नहीं पहुंचता। हां, यदि आप कानूनकी सहायता लेकर इन पापाचारोंको बन्द करवानेका प्रयत्न करें तो धर्म अवश्य डूब जाता है, समाज-व्यवस्थाकी नाक कट जाती है और सामाजिक एवं धार्मिक आचार-विचारोंमें अनुचित हस्तक्षेप होता है! इस प्रकारकी विपरीत बुद्धि रखनेवाले लोग ही आज समाज-सुधारकी प्रगतिमें बाधक सिद्ध हो रहे हैं।

## युवक विवाह क्यों नहीं करते ?

हैदराबादकी आमिल पञ्चायतने एक प्रस्ताव पास करके वहांके सभी दफ्तरोंके अधिकारियोंसे यह अनुरोध किया है कि उनके यहां २५ वर्षसे अधिक उम्रके जो युवक काम करते हों और जिनका वेतन ५० रु० मासिक या इससे अधिक हो उनके वेतनमें वृद्धि न की जाय। इस प्रस्तावका कारण यह बताया जाता है कि आमिल जातिमें ऐसे कितने ही परिवार हैं जिनकी वयस्क कुमारी कन्याओंका विवाह नहीं होता। अतएव युवकोंपर दबाव डालकर उन्हें विवाह करनेके लिए राजी करनेके उद्देश्यसे ही आमिल पञ्चायतने यह प्रस्ताव पास किया है। कुछ समय पहले महात्मा गांधीसे भी इस बातकी शिकायत की गयी थी कि आमिल सम्प्रदायकी कुमारी कन्याओंका विवाह इसलिए नहीं होता कि उनके माता-पितासे वर पक्षके लोग बहुत ज्यादा दहेज मांगते हैं जो मध्यवित्तके गृहस्थ दे ही नहीं सकते। इसी प्रसङ्गमें यह भी कहा गया था कि आमिल युवकोंके निजी रहन-सहनका खर्च बहुत बढ़ा हुआ होता है। अतएव आर्थिक कारणोंसे भी यदि आमिल नवयुवक विवाह-बन्धनमें नहीं फंसना चाहते हों तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

विवाह करनेसे युवकोंकी यह अनिच्छा केवल हैदराबादमें ही नहीं, बल्कि न्यूनाधिक रूपमें अन्यान्य प्रान्तोंमें भी देखी जाती है। हां, अन्यत्र इस समस्याने अभी तक उग्र रूप धारण नहीं किया है। बङ्गालमें इस समस्याके कारण ही बालिकायें अधिकाधिक संख्यामें उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगी हैं ताकि विवाहके बाद वे अपने पतियोंके लिए भार-स्वरूप न बनकर आर्थिक दृष्टिसे स्वावलम्बिनी बनें। देशमें बेकार युवकोंकी संख्या धड़ाधड़ बढ़ती जा रही है। शिक्षित एवं सुयोग्य होकर भी जब उन्हें काम नहीं मिलता तब वे निरुपाय होकर अपने भविष्यके सम्बन्धमें सर्वथा हताश हो जाते हैं। उनकी समस्त यौवनोचित आशा-आकांक्षाओं एवं उमङ्गोंपर तुषारपात हो जाता है। ऐसी स्थितिमें विवाह करनेसे उनका विमुख होना सर्वथा स्वाभाविक ही है।

किन्तु जिस समाजमें केवल इसलिए कन्याओंका विवाह करनेमें कठिनाई होती है कि उनके असमर्थ माता-पिता वरके माता-पिताको अधिक दहेज नहीं दे सकते, उस समाज-के युवकोंके लिए यह अवश्य ही घोर लज्जा एवं कलङ्कका विषय है। जो युवक दहेज-जैसी साधारण सामाजिक कुप्रथाको तोड़कर विवाह करनेमें सत्साहसका परिचय नहीं दे सकते, उनसे अन्यान्य सामाजिक रूढ़ियोंके जालको विच्छिन्न करके समाज-सुधारके क्षेत्रमें अग्रसर होनेकी आशा क्या की जा सकती है? हमें खेदके साथ कहना पड़ता है कि हिन्दू जातिमें अब भी ऐसे कितने ही समाज मौजूद हैं जिनमें तिलक-दहेजकी प्रथा पूर्णरूपसे प्रचलित है। इस प्रथाके कारण मध्यवित्त परिवारके विवाहार्थी कन्याके माता-पिताको जो आर्थिक कठिनाइयां, परेशानी और कभी-कभी तो कुटुम्बका सर्वनाश भी भोगना पड़ता है, उसे भुक्तभोगी ही जान सकता है। आश्चर्यकी बात तो यह है कि जो युवक धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विषयोंमें क्रान्ति-कारी बननेका दावा करते हैं और हर बातमें आमूल परि-वर्तनके लिए बन्धनोंका जाल विच्छिन्न कर डालनेके लिए आकुल आकांक्षा प्रकट करते हैं, उनमें इतना माद्दा नहीं होता कि वे तिलक-दहेजकी प्रथाको लात मारकर अपने माता-पिताकी इच्छाओंके विरुद्ध विवाह करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आर्थिक दृष्टिसे असमर्थ होनेके कारण जो युवक विवाह नहीं करते उन्हें इसके लिए दोष नहीं दिया जा सकता। कारण, अन्यान्य देशोंके समान यहां भी शिक्षित युवकोंकी बेकारीका प्रश्न जब तक हल नहीं होता तब तक विवाहके प्रति उनकी यह अनिच्छा बढ़ती ही जायगी।

## देवदासी-प्रथाके विरुद्ध कानून

दक्षिण भारतके मन्दिरोंमें देवदासियोंकी जो कुप्रथा प्रचलित है उसका आरम्भ चाहे जिस उद्देश्यसे हुआ हो, किन्तु वर्तमान समयमें उसका अस्तित्व हिन्दू-समाज और हिन्दू-धर्मके लिए अत्यन्त लज्जा एवं कलङ्कका विषय है, इस बातको तो सभी विचारशील सज्जन स्वीकार करेंगे। देव-मन्दिर-जैसे पवित्र स्थानमें धर्मके नामपर देवदासी-प्रथाका प्रचलन और धार्मिकताके आधारपर उसे प्रश्रय दिया जाना हिन्दू-जातिकी उस मनोवृत्तिका द्योतक है जिससे मोह-विजड़ित होकर उसने अपने धर्मके उच्च अध्यात्मतत्त्वको भुला दिया और उसके स्थानपर उसे बाह्याडम्बर एवं भोग-परायण अलसमय अकर्मण्यतासे आवृत कर दिया। तभी तो हमारा वह उच्च अध्यात्मभावापन्न कर्मठ जीवन, हमारा वह कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग सब कुछ चला गया और उसके स्थानपर रह गया तन्द्राजनित मिथ्या वैराग्य, अक्रियाशीलता, निश्चेष्टता, विलासिता एवं दाससुलभ परानुकरणकी प्रवृत्ति! मनुष्योचित पौरुष, पराक्रम, उद्योग, अध्यवसाय सब कुछ खोकर तथा जीवन-संग्रामसे भीरुके समान विमुख होकर हिन्दू-समाजके एक बहुत बड़े दलने वैदान्तिक अलसतन्द्राके वशीभूत होकर धर्मके अन्तरालमें एक ऐसे जीवनका आश्रय लिया जहां उसे अपनी भोगमयी भावनाओंको अज्ञ जनताकी धर्मान्धताके कारण चरितार्थ करनेका पूर्ण सुयोग मिला और इसीके फलस्वरूप भारतके पवित्र तीर्थस्थानों एवं देव-मन्दिरोंमें व्यभिचार एवं पापाचारके अड्डे कायम हुए। आश्चर्यकी बात तो यह है कि एक सभ्य सरकारके शासनमें भी यह कुप्रथा इतने दिनों तक कायम रही और इस समय भी कायम है, और उसने इस कलङ्कका मूलोच्छेद करनेके लिए अपनी ओरसे कुछ भी प्रयत्न नहीं किया। इतना ही नहीं, बल्कि सरकारने इस प्रकारके विषयोंमें 'धार्मिक तटस्थता'के नामपर बराबर अपनी विरोधिता ही प्रदर्शित की है। कुछ वर्ष पहले मद्रास प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभामें देवदासी-प्रथाके सम्बन्धमें एक कानून बन चुका है। अब बम्बई प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभामें भी इसी सम्बन्धका राव बहादुर एस० के० बोलेका एक बिल पास हुआ है। इस बिलका उद्देश्य है देवदासी-प्रथाका उच्छेद करना।

राव बहादुर एस० के० बोलेके इस कृत्यपर उन्हें बधाई देनेके लिए हालमें एक सार्वजनिक सभा श्रीयुत एम० आर० जयकरकी अध्यक्षतामें बम्बईमें हुई थी। देवदासी-प्रथाको हिन्दू-समाजके लिए एक कलङ्क-जनक प्रथा बताकर श्रीयुत जयकरने इस बातपर जोर दिया कि अब जनताका यह काम है कि वह प्रबल लोकमत द्वारा सरकारपर इस रूपमें दबाव डाले जिससे इस कानूनका यथार्थ रूपमें सफलतापूर्वक प्रयोग हो। अन्यथा इसकी भी वही गति होगी जो बालविवाह-निषेधक शारदा कानूनकी हो रही है। भारत-सरकारके प्रति दोषा-रोपण करते हुए श्रीयुत जयकरने यह भी कहा कि "वर्तमान शासक इतने भीरु हैं कि वे समझते हैं कि 'सामाजिक सुधारोंके काममें हाथ डालकर हम जनताका और भी विरागभाजन क्यों बनें? राजनीति-क्षेत्रमें अपनी नीतिके कारण तो हम पहलेसे ही काफी विरागभाजन बने हुए हैं।" अपने इसी दृष्टिकोणको ध्यानमें रखकर उन्होंने समाज-सुधार-सम्बन्धी कानूनके बननेमें केवल उदासीनता ही प्रकट नहीं की है, बल्कि प्रत्यक्ष रूपसे प्रगतिके मार्गमें रोड़े भी अटकाये हैं।

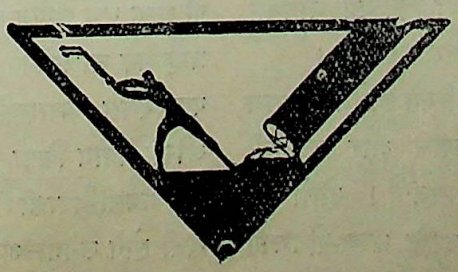

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

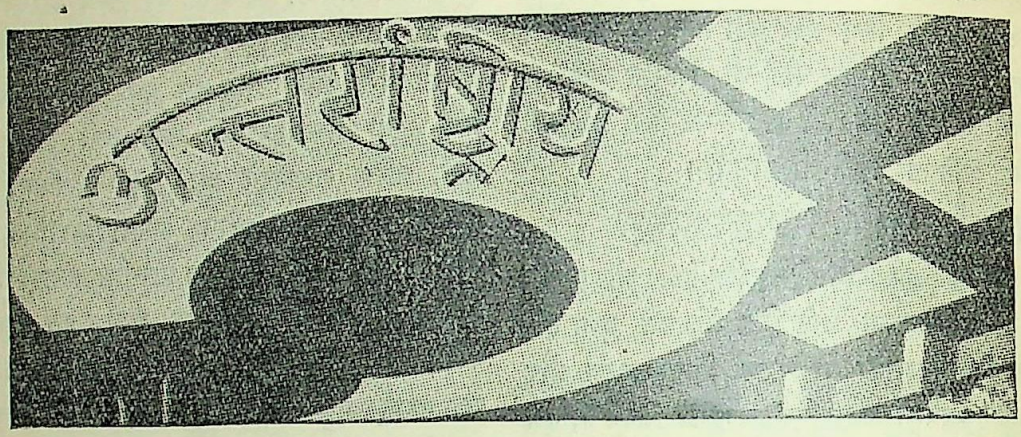


## इटली और जापानकी प्रतिद्वन्द्विता

चीनके साथ मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए सिन्योर मुसोलिनीने हालमें जो उत्कण्ठा प्रदर्शित की है और जिसके फलस्वरूप दोनों देशोंके राजनीतिक प्रतिनिधियोंकी स्थिति राजदूत-जैसी कर दी गयी है, इस विषयपर प्रकाश डालते हुए "The China Weekly Review" पत्रमें एक चीनी लेखकने इस प्रकार लिखा है:—

इसमें सन्देह नहीं कि मुसोलिनीका एक उद्देश्य रोम और चीनके बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करना है। किन्तु इसके साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इसके पीछे जो आर्थिक उद्देश्य छिपा हुआ है उसकी मुसोलिनी-जैसे व्यावहारिक राजनीतिज्ञ उपेक्षा नहीं कर सकते।

इटलीके वाणिज्य-व्यवसायके विस्तारके लिए मुसोलिनीकी दृष्टिमें चीन एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र प्रतीत हो रहा है। और यह समय भी इसके लिए बहुत अनुकूल है। चीन इस समय अपने आर्थिक पुनर्गठनके कार्यको आरम्भ कर रहा है। अतएव अमेरिका, इंगलैण्ड और जर्मनीके समान इटली भी चीनके इस पुनर्गठन-कार्यमें भाग लेनेकी आकांक्षा रखता है। सन् १९३० के अन्तमें रोममें एशियाके छात्रोंका जो सम्मेलन हुआ था उसमें मुसोलिनी द्वारा दिये गये भाषणसे सुदूर पूर्वमें इटलीकी नीतिपर काफी प्रकाश पड़ता है।

किन्तु इटलीकी इस नीतिके कार्यान्वित होनेमें जापान सबसे बड़ा बाधक है। क्योंकि जापान और इटलीकी आर्थिक समस्यायें बहुत-कुछ एक समान हैं। दोनों ही देशोंके सामने बढ़ती हुई आबादी और उसके भरण-पोषणकी समस्या है। दोनों ही अपने यहांके श्रमजीवियोंको बाहर भेजनेकी कोशिश करते हैं। बड़े-बड़े व्यवसायोंके पनपनेमें दोनोंको ही प्राकृतिक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा है। ये प्राकृतिक कठिनाइयां हैं लोहे और कोयलेका अभाव।

दोनोंमें प्रतिद्वन्द्विता और सङ्घर्षके भी अनेक कारण हैं। इटली नकली रेशम और सूतका माल तैयार करता है, किन्तु जापानी सूती कपड़ेके मुकाबिलेमें उसके कपड़ेकी खपत कम होती है। इटलीके मोटर-व्यवसायको भी जापानके साथ प्रतियोगिता करनेमें बड़ी कठिनाईका सामना करना पड़ रहा है। रोड्समें जापानी मोटरकार ४,००० लीरामें ( १ लीरा—९॥ पेंस ) और बाईसिकल ४० लीरेमें बिकती है। इस प्रकारकी गलाघोंटू प्रतियोगिताका इटलीपर क्या असर पड़ सकता है यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

इटली और जापानके बीचकी यह प्रतिद्वन्द्विता दोनोंमें अपना-अपना प्रभाव अबसीनियामें भी विस्तृत करनेकी आकांक्षा उत्पन्नकर रही है। कुछ वर्षोंसे इटली इंगलैण्ड और फ्रान्सकी सम्मतिसे अबसीनियामें अपना प्रभाव बढ़ानेकी पूरी कोशिश कर रहा है। किन्तु हालमें जापान अबसीनियाके साथ एक सन्धि करनेमें सफल हुआ है जिससे वह वहांके प्राकृतिक साधनोंका शोषण कर सके। अबसीनियामें व्यापक रूपसे कपासकी खेती करनेके सम्बन्धमें जापानकी ओरसे प्रयोग किया जा रहा है। यदि यह प्रयोग सफल हुआ तो अबसीनियाकी विशाल गैरआबाद भूमिमें कपासकी खेती होने लगेगी और जापानको कपासके लिए अमेरिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और मिश्रपर निर्भर करना पड़ेगा। इस प्रकार अबसीनिया-में जापानका प्रभाव विस्तृत होनेके साथ-साथ इटलीका प्रभाव कम हो रहा है।

## दस लाख चीनियोंकी हत्या

सन् १९२७ में चियाङ्ग-काई-शेकके नेतृत्वमें चीनमें नानकिङ्ग-सरकारकी स्थापना हुई। मध्ययुगकी जमींदार-श्रेणीकी यह प्रतिनिधि है और इसके समर्थक चीनके बड़े-बड़े व्यापारी, बैङ्कर और विदेशी वणिकोंके दलाल हैं जो विदेशी साम्राज्यवादियोंके साथ-साथ शुरूसे ही इसे आर्थिक सहायता पहुंचाते आ रहे हैं। भय-प्रदर्शन ही इसका एक-मात्र साधन है और यह भय-प्रदर्शन इस समय चीनके फासिस्ट डिक्टेटर चियाङ्ग-काई-शेक और गुप्त फासिस्ट संस्था Blue Jackets के तत्वाधानमें जोरोंसे चल रहा है। सन् १९३२ में यह संस्था लान-ई-शेहके नामसे स्थापित हुई थी। इसके सदस्य नील रङ्गका जाकेट पहनते हैं, इस-लिए चीनी भाषाके लान-ई-शेह वाक्यका अर्थ है नीलजाकेट पहननेवाले।

सन् १९३३ की १५ वीं जूनको एक हत्या-सूची तैयार की गयी थी जो सब नील जाकेटवालोंके पास भेज दी गयी। इस सूचीमें कम्यूनिस्ट, लिबरल, उग्रपन्थी लेखक आदि शामिल थे जिन्होंने चियाङ्ग-काई-शेकका विरोध किया था।

कुछ समय पहले सोवियट रूसके सम्बन्धमें भाषण करते हुए चियाङ्ग-काई-शेकने कहा था:—"गत कई वर्षोंसे चीन-की संस्कृतिमें बोलशेविक रूसकी श्रमजीवी संस्कृति और साहित्यकी प्रधानता हो रही है। यही कारण है कि कम्यू-निस्टोंकी संख्या इतनी अधिक हो गयी है और उन्हें नष्ट करना असम्भव हो रहा है। इन कम्यूनिस्टोंका अन्त करनेके लिए समस्त उग्रपन्थी लेखकोंका मूलोच्छेद कर डालना चाहिए, उग्रपन्थी समाचार-पत्रोंको वर्जित कर देना चाहिए और सांस्कृतिक डिक्टेटर-शिपकी घोषणा कर देनी चाहिए।"

प्रामाणिक रूपमें यह अन्दाजा लगाया गया है कि सन् १९२७ ई० से अब तक इस चियाङ्ग-काई-शेकके शासन-कालमें कमसे कम १० लाख श्रमजीवी किसानों और बुद्धि-जीवी लोगों (Intellectuals) की हत्या की जा चुकी है। इसके अलावा जो लोग युद्ध या उसके परिणाम-स्वरूप बाढ़ और दुर्भिक्षमें मरे हैं, उनकी संख्या अलग ही है।

कोमिङ्गटाङ्गके जेलखानोंमें बेहद गन्दगी रहती है; तिसपर राजनीतिक बन्दियोंके ऊपर जैसे भयानक उत्पीड़न होते हैं उनसे उनमें अधिकांश पागल बन जाते हैं। हालमें पेपिङ्गकी एक जेलमें १८ हजार कैदियोंने अनशन कर दिया था। उनकी मांगें बहुत साधारण थीं—हाथोंमें हथकड़ियां न डाली जायं, अच्छा भोजन मिले और सम्बन्धियोंसे मिलनेकी अनुमति दी जाय। अधिकारियों द्वारा इनकी दशामें सुधार करनेकी प्रतिज्ञायें की जानेपर कैदियोंने अन-शन छोड़ा। इसके बाद तुरन्त ही प्रतिज्ञायें भङ्ग कर दी गयीं और अनशन करनेवाले कैदियोंके नेताओंको गोलीसे उड़ा दिया गया।

## सोवियट शासन-विधानमें सुधार

रूसमें अब सोवियट शासन-प्रणाली इतनी सुदृढ़ हो चुकी है कि वहांके शासक शासन-विधानमें सुधार करनेकी आव-श्यकता महसूस करने लगे हैं। मास्कोका समाचार है कि All Union Congress of Soviets ने सर्वसम्मतिसे रूसके शासन-विधानमें व्यापक परिवर्तन करना मञ्जूर किया है। प्रस्तावित सुधारोंके कार्यान्वित होनेपर रूसके शासन-विधानमें गणतन्त्रकी एक नूतन भावना समाविष्ट हो जायगी। मो० म्लोटोवने यह घोषणा की है कि सोवियट शासन-विधानमें प्रजासत्तात्मक शासन-प्रणालीके सर्वोत्तम वैशिष्ट्योंका समावेश किया जायगा। सार्वजनिक मता-धिकारके सिद्धान्तके शीघ्र कार्यान्वित होनेका भी आभास दिया गया है। विभिन्न सरकारी कार्यकारिणी संस्थाओंमें प्रत्यक्ष निर्वाचन-प्रथाके जारी किये जानेका भी वचन दिया गया है। इसमें सन्देह नहीं कि मो० म्लोटोवने जिन सुधारोंका निर्देश किया है उनके कार्यरूपमें परिणत किये जानेपर सोवियट रूसमें सम्पूर्ण रूपसे गणतन्त्र शासनकी प्रतिष्ठा हो जायगी और इसके साथ ही श्रेणी-भेदका भी अन्त हो जायगा। सोवियट रूसके अधिकारियोंके इन प्रस्तावित शासन-सुधारोंसे इस बातका परिचय मिलता है कि बोलशेविकोंके लिए अब डिक्टेटरी शासन-पद्धतिकी आवश्यकता नहीं रह गयी है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



### मताधिकार

सिद्धान्त-रूपसे संयुक्त सोवियट रूसी राज्यके प्रत्येक नागरिकको मताधिकार प्राप्त है, बशर्ते कि उसकी उम्र १८ वर्षकी हो और वह अपने उद्योगसे अपना भरण-पोषण करता हो। लिङ्गभेद, धर्म, जातीयता या रङ्गभेदके कारण कोई भी व्यक्ति मताधिकारसे वञ्चित नहीं किया जा सकता। यहां तक कि जरायम पेशावाले लोगोंको भी मताधिकार प्राप्त है। किसी आकस्मिक दुर्घटना, शारीरिक दुर्बलता या वृद्धावस्थाके कारण जो कार्य करनेमें अक्षम हैं, उन्हें तथा विजातीय मजदूरोंको भी मताधिकार प्राप्त है।

जारशाही अमलके मुल्की और फौजी कर्मचारियोंको-जिन्होंने बोलशेविक मतको ग्रहण नहीं किया है—धर्म-याजकों, कुलकों (धनी किसानों), सट्टेबाजों, पागलों और चन्द किस्मके अपराधियोंको मताधिकारसे वञ्चित कर दिया गया है। किन्तु उनकी सन्तति किसी फैक्टरी या फार्ममें पांच वर्ष तक काम करके अपने परिवारका कलङ्क-मोचन कर सकती है। किन्तु एक श्रेणीके लोग ऐसे हैं जो पुश्त-दर-पुश्तके लिए मताधिकारसे विरहित कर दिये गये हैं, और वे हैं जारशाही रूसके पुलिसवाले और उनके वंशज।

### डिक्टेटरशिप और गणतन्त्र

जिन विदेशियोंने सोवियट शासन-प्रणालीका अच्छी तरह अध्ययन नहीं किया है उनकी दृष्टिमें रूसमें गणतन्त्र शासन-प्रणाली नहीं, बल्कि डिक्टेटरशिप प्रचलित है और यह डिक्टेटरशिप है श्रमजीवियोंका। उनसे यदि यह कहा जाय कि रूसमें डिक्टेटरशिपके साथ-साथ उच्चतम प्रजासत्तात्मक शासन-प्रणाली प्रचलित है, तो वे हैरतमें आ जायंगे।

स्टेलिनने रूसकी शासन-प्रणालीकी व्याख्या करते हुए कहा है :—

"सोवियट राज्य शासकवर्गके हाथमें अपने दलगत शत्रुओंके प्रतिरोधके दमन करनेका साधन है। इस बातमें श्रमजीवियोंका यह डिक्टेटरशिप और किसी भी दूसरी श्रेणीके डिक्टेटरशिपसे पृथक् नहीं है; क्योंकि श्रमजीवी राज्य मध्यम श्रेणीका दमन करनेके लिए एक साधन है। तथापि दोनोंमें एक तात्त्विक भेद है। और वह भेद यह है कि अब तक जितने डिक्टेटरशिप स्थापित हुए हैं वे शोषित विशाल जनसमुदायका शोषण करनेवाले अल्प जनसमुदायके डिक्टेटरशिप कहे जा सकते हैं, किन्तु श्रमजीवियोंका डिक्टेटरशिप शोषित विशाल बहुमतका शोषण करनेवाले अल्पमतके ऊपर डिक्टेटरशिप है।"

जैसा कि लेनिनने कहा था : "सोवियट शासन एक नये रूपमें जन-सत्तात्मक और डिक्टेटरशिप है—यह श्रमजीवियों और सर्वसाधारण दरिद्र जनताके लिए लोकसत्तात्मक और शोषण करनेवालोंके विरुद्ध डिक्टेटरशिप है।"

## जापान-चीन मैत्री ?

जापानके परराष्ट्र-सचिव मि० हिरोटा शीघ्र ही चीन जानेका विचार कर रहे हैं। उनकी इस प्रस्तावित यात्राके सम्बन्धमें जापानका "ओम्यूरी" पत्र लिखता है:—"एशिया-की एकता स्थापित करने तथा एशियामें श्वेताङ्ग जातियोंका प्रभुत्व नष्ट करनेके लिए परराष्ट्र-सचिव चीनको अपने पक्षमें लानेका प्रयत्न करेंगे। पाश्चात्य राष्ट्र चीनके प्रति जो नीति काममें लाते हैं उसका आधार है मुक्तद्वार वाणिज्य और चीनके आन्तरिक शासनमें हस्तक्षेप न करनेकी नीति। किन्तु इन सिद्धान्तोंसे चीनके प्रजातन्त्रकी मर्यादा क्षुण्ण होती है। चीनमें श्वेताङ्ग जातियोंका प्रभुत्व नष्ट करनेके लिए यह आवश्यक है कि उसके साथ असमान शर्तोंपर जो सन्धियां की गयी हैं उन्हें रद्द कर दिया जाय। युगयुगान्तरके अत्याचारोंसे अपना पुनरुद्धार करनेके लिए चीन जो उद्योग करेगा उसमें जापान सब तरहसे सहायता पहुंचायेगा। चीनको समझ लेना चाहिए कि एक शत्रुको रोकनेके लिए दूसरे शत्रुसे सहायता लेनेकी नीति अन्तमें उसके लिए लाभ-दायक नहीं हो सकती। उसे यह महसूस करना चाहिए कि जापान और चीन एक-दूसरेपर अवलम्बित हैं और सुदूर-पूर्वमें शान्ति कायम रखनेके लिए जापानके साथ सहयोग करना आवश्यक है। यदि चीनकी नानकिङ्ग-सरकार चीन और जापानके बीच सहयोग स्थापित करनेके लिए दृढ़चित्त होगी तो जापान भी जेनरल चियाङ्ग-काई-शेकका समर्थन करनेमें पीछे नहीं रहेगा।"

उक्त पत्रका यह भी कहना है कि परराष्ट्र-सचिव हिरोटा-ने परराष्ट्र-विभागके अधिकारियोंसे कहा था कि इस सम्बन्ध-में वे नानकिङ्ग-सरकारका अभिप्राय जाननेकी कोशिश करें और उन्हें सूचित किया गया है कि चीन जापानके इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रस्तावका स्वागत करनेके लिए तैयार है। इससे शान्ति कायम रखने और चीनके पुनरुद्धारके सम्बन्धमें इस वर्ष अपनेको संलग्न करनेका उनका सङ्कल्प और भी दृढ़ हो गया है। परराष्ट्र-सचिव उस अवसरकी प्रतीक्षा कर रहे हैं जब कि चीन-जापान सम्बन्धको और भी अधिक अनुकूल दशाकी ओर ले जाया जाय। यदि चीन जापानके इस उद्देश्यको समझनेमें सचाईसे काम लेगा और एशियाके पुनरुत्थानके लिए प्रयत्न करनेको तैयार होगा तो मि० हिरोटा चीन-स्थित जापानी मन्त्री मि० अकीरा अरियोशीको टोकियो बुलायेंगे और नानकिङ्ग-सरकारके साथ बातचीत करनेके लिए उनके साथ परामर्श करेंगे।

मि० हिरोटाने इस वर्ष अपनेको इसी कार्यमें संलग्न करनेका विचार किया है।

इस प्रसङ्गमें यह भी जान रखना चाहिए कि परराष्ट्र-सचिवका पद ग्रहण करनेके पूर्व मि० हिरोटा "पान एशिया लीग"के एक प्रमुख सदस्य थे और एशियाई राष्ट्रोंकी एकतामें उनका आन्तरिक विश्वास है।

## अमेरिका और जापान

"मैं नहीं समझता कि अमेरिका और जापानके बीच युद्ध छिड़नेकी चर्चा क्यों की जाती है। ये दो मित्र-राष्ट्र आपसमें एक-दूसरेके विरुद्ध शस्त्र ग्रहण करें, इसका कोई भी कारण मुझे नहीं जान पड़ता। दोनोंमें ऐसी कोई भी बात नहीं है जो परस्परके विचारोंके आदान-प्रदानसे सद्भावपूर्वक तय न हो जाय।"

इन्हीं उपर्युक्त शब्दोंमें अमेरिकाके युद्ध-सचिव मि० जार्ज एच० डर्नने जापान द्वारा वाशिङ्गटनकी सन्धिके रद्द किये जानेके संवादका अभिनन्दन किया है। टोकियोके एक समाचारपत्रके संवाददातासे उन्होंने कहा—"अमेरिका और जापानके बीच युद्ध छिड़नेकी सम्भावनाके सम्बन्धमें मुझसे अक्सर लोग पूछा करते हैं। किन्तु युद्ध किसलिए होगा! मैं तो ऐसी कोई बात नहीं देखता जिसका निपटारा एकमात्र सैन्यबल द्वारा ही हो। दोनों देशोंके बीच वाणिज्य-सम्बन्ध अच्छा ही है। यह आशा करनेके अनेक कारण मौजूद हैं कि दोनों देशोंके बीच मैत्री और सहयोग-सम्बन्ध दिन-दिन बढ़ेगा ही। मुझे इसमें निराशाका कोई भी कारण नहीं दीख पड़ता। अमेरिका और जापानके बीच युद्ध छिड़नेकी चर्चा सुनकर मुझे हमेशा हंसी आती है।"

यह पूछनेपर कि अमेरिका अपनी सेनामें वृद्धि क्यों कर रहा है, मि० डर्नने उत्तर दिया—"हमारा उद्देश्य स्थायी राष्ट्रीय फौजको बढ़ाकर १६९००० सैनिक और १४००० अफसर तक कर देना है। आत्मरक्षाके लिए यह कमसे कम संख्या है। हम सेनाका पुनर्गठन करनेकी भी कोशिश कर रहे हैं।" उन्होंने इतना और कहा—"नौ सेनाकी अपेक्षा स्थल सेनामें अधिक वायुयान हैं। आत्मरक्षाके लिए एक महत्त्वपूर्ण साधनके रूपमें हमें आकाश-सेनामें अधिक विश्वास है।"

**जर्मन जनरल** कौंसिल हारबिन (चीन) ने १५ वर्ष वाले आंखोंके असाध्य रोगियोंको जिन्हें जर्मनी के अस्पतालों ने असाध्य कह दिया था केवल 'नेत्र-संजीवन अञ्जन' का व्यवहार कराकर आंखोंवाले कर दिया। यदि आंखों में कुछ भी जान बाकी है तो, चाहे कितना भी कठिनसे कठिन जाला, फूला, मोतियाबिन्दु अथवा कोई भी नेत्र रोग क्यों न हो इन सबके लिये 'नेत्र-संजीवन' रामबाण है। कीमत प्रत्येक शीशी १।) डाकखर्च अलग। ३ या इससे अधिकके लिये डाकखर्च माफ। एजेण्टोंको नगद और उधार माल दिया जाता है। **नेत्र-संजीवन डिपो, (ए) जुम्मा मसजिद, बम्बई २**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

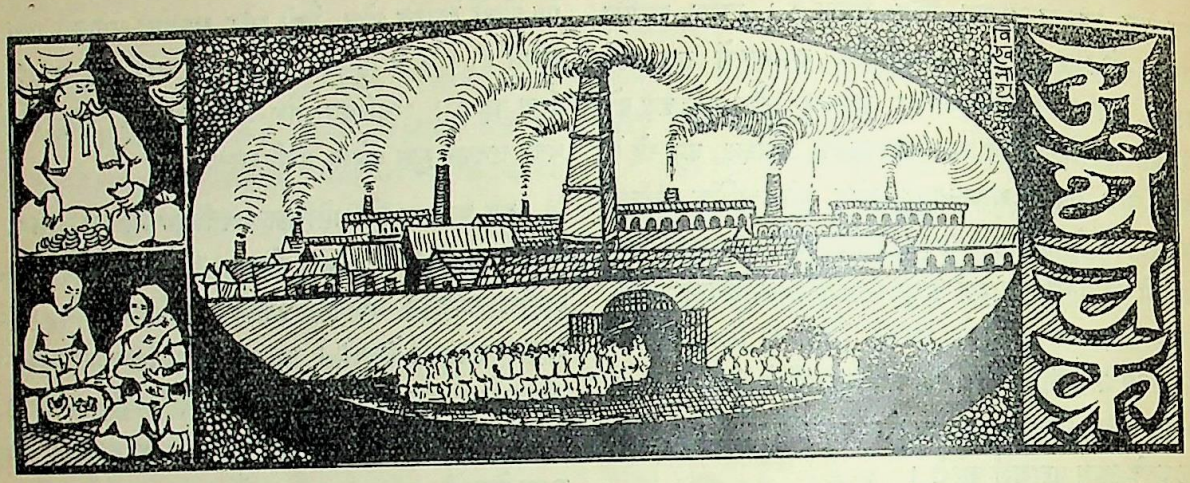


## विदेशी मूलधन

इस देशमें विदेशी वाणिज्य-व्यवसायके संरक्षणके औचित्यके सम्बन्धमें एक दलील जो खास तौरसे पेश की जाती है वह यह है कि अंगरेज व्यापारियोंने अरबों रुपयेका मूलधन इस देशमें लगाकर रेलवे लाइन तथा कितने ही कल-कारखाने खोले हैं जिनकी बदौलत आज लाखों मनुष्योंका जीविका-निर्वाह हो रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि प्रत्येक अनुन्नत देशको विदेशी मूलधन और विदेशी विशेषज्ञोंकी सहायताकी आवश्यकता होती है। किन्तु जहां और देशोंने विदेशी मूलधन और विदेशी विशेषज्ञोंकी सहायतासे अपने देशके वाणिज्य-व्यवसायकी वृद्धि की है वहां भारतने अपने रहे-सहे व्यवसाय और उद्योग-धन्धोंको भी खो दिया है। भारतके विदेशी व्यापारी अपने मूलधनकी अपेक्षा कई गुना अधिक इस देशसे पैदा कर रहे हैं। जहां भारतसे वे इतना लाभ उठा रहे हैं वहां उनके द्वारा भारतीय उद्योग-धन्धोंको सहायता मिलनी तो दूर रही, उलटे उनकी प्रतियोगिताके कारण हानि ही पहुंच रही है। अंगरेज व्यापारियोंकी सबसे अधिक पूंजी बङ्गालमें ही लगी हुई है। किन्तु क्या बङ्गाल भारतका सबसे बढ़कर समृद्धिशाली प्रान्त कहा जा सकता है? आज बङ्गालके व्यवसाय-क्षेत्रमें भारतीयोंका स्थान कहां है? जूट मिल, चायबागान, कोयलेकी खान, जहां देखिये वहीं यूरोपियनोंकी प्रधानता है। वे भारतीय व्यवसायियोंकी उन्नतिके मार्गमें जबर्दस्त प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध हो रहे हैं। सन् १९२९ में भारत-सरकारने जो External Capital Committee बैठायी थी उसकी रिपोर्टमें यह सिफारिश की गयी थी कि भविष्यमें भारतमें जो विदेशी कल-कारखाने स्थापित हों, उनके मूलधनका अधिकांश भारतमें संग्रह होना चाहिए और उनके सञ्चालकोंमें अधिकांश भारतवासी हों। किन्तु भारत-सरकारने कमेटीकी इन सिफारिशोंको यों ही ठुकरा दिया। इसका परिणाम यह हुआ है कि भारतमें नित नये विदेशी कल-कारखाने स्थापित हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। पञ्जाबमें इम्पीरियल केमिकल कम्पनी नामका जो वृहत् कारखाना स्थापित होने जा रहा है वह इसी नीतिका परिणाम है। भावी शासन-विधानमें संरक्षणोंके जालसे इनकी स्थिति इतनी सुदृढ़ बनी रहेगी कि भारतीय व्यवस्थापिका परिषद् इनका बाल भी बांका नहीं कर सकेगी। क्योंकि गवर्नर जेनरल Discrimination भेदभावमूलक नीतिकी दुहाई देकर फौरन् अपने विशेषाधिकारके प्रयोग द्वारा व्यवस्था-परिषद्के निर्णयको रद्द कर देंगे। अतएव भविष्यमें भी इस देशमें भारतीय व्यवसाय और उद्योग-धन्धोंकी तुलनामें विदेशी व्यवसाय और उद्योग-धन्धोंकी ही प्रधानता बनी रहेगी और देशके समृद्धि-साधनोंका शोषण होता रहेगा, इसकी सम्भावना ही अधिक है।

## जापानका नियन्त्रित शिल्प-वाणिज्य

थोड़े समयके अन्दर ही जापानने व्यवसाय-वाणिज्यमें जो इतनी आश्चर्यजनक उन्नति कर ली है उसके अनेक कारणोंमें एक कारण है जापानी व्यवसायियोंकी नियन्त्रण-नीति। जापानमें जितने छोटे-बड़े व्यवसाय हैं उन सबके सञ्चालकोंको स्वेच्छापूर्वक अथवा बाध्य होकर सङ्घबद्ध रूपमें काम करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पड़ता है। सब व्यवसायोंमें सङ्घबद्ध भावसे उत्पादन और विक्रयका नियन्त्रण रहता है। इस नियन्त्रणके पीछे वहांकी सरकारका भी हाथ है। सन् १९३१ में जापानकी सरकारने इस आशयका एक कानून पास किया कि किसी वाणिज्य-संस्थाके सञ्चालक समितिबद्ध होकर यदि मालके उत्पादन और बिक्रीके सम्बन्धमें कोई समझौता करेंगे तो सरकार उस समितिको कानूनके अनुसार गठित एक संस्था समझकर स्वीकार कर लेगी। और यदि किसी वाणिज्य-संस्थाके सञ्चालक उक्त समितिके सदस्य नहीं होंगे तो भी उनके ऊपर उस समझौतेकी पाबन्दी होगी। इस प्रकार जापानमें किसी व्यवसायके कल-कारखानेके मालिकके लिए यह सम्भव नहीं है कि वह उक्त व्यवसायसे सम्बन्ध रखनेवाले अधिकांश व्यवसायियोंके स्वार्थपर आघात पहुंचा सके। जापानके वाणिज्य-व्यवसायमें इस प्रकार सङ्घबद्ध होकर पदावार और बिक्रीको नियन्त्रित करनेकी प्रथा बहुत दिनोंसे जारी है। किन्तु सन् १९३१ का कानून पास होनेके बाद यह प्रथा और भी मजबूत हो गयी है।

इस प्रकार सङ्घबद्ध होकर कार्य करनेके फलस्वरूप विभिन्न व्यवसायोंके सम्बन्धमें गवेषणा-कार्य थोड़े खर्चमें ही होता है और मालकी बिक्रीमें बहुत ज्यादा फिजूल खर्च नहीं होता। जापानमें कृषि, शिल्प, आवागमनके साधन, जहाजी कम्पनी, बैङ्क और वहांकी सरकार सब सङ्घबद्ध होकर कार्य करते हैं। किसान, मजदूर, कल-कारखानोंके मालिक, बैङ्कोंके सञ्चालक, रेलवे कम्पनी, जहाजीकम्पनी, बिजली कम्पनी, मालके खुदरा व्यापारी सब देशके बृहत्तर स्वार्थपर ध्यान रखकर थोड़े लाभसे ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। सरकार इस बातपर बराबर ध्यान रखती है कि कोई ऐसा टैक्स न लगाया जाय जिससे वह किसी भी व्यवसायके लिए अनिष्टजनक सिद्ध हो। ऐसा मालूम होता है कि सम्पूर्ण देश किसी एक समवाय संस्थाके अधीन होकर समान उद्देश्यसे कार्य कर रहा हो। समस्त जातिके अन्दर एक ही प्रेरणा काम कर रही है और वह प्रेरणा है देशको सब प्रकारसे समृद्धि-सम्पन्न बनाना। इस प्रकार तीव्र स्वदेश-प्रेमकी भावनासे अनुप्राणित होकर साढ़े छः करोड़ अधिवासियोंका देश आज जिस रूपमें कार्य कर रहा है उसे परास्त करना किसी पाश्चात्य देशके लिए सहज ही सम्भव नहीं हो सकता।

## इंगलैण्डकी आर्थिक स्थिति

ऐसा अनुमान होता है कि कुछ दिनोंसे इंगलैण्डके वाणिज्य-व्यवसायके प्रगतिशील होनेके जो समाचार प्रकाशित हो रहे हैं उनमें यथार्थताका उतना अंश नहीं है जितना दिखानेकी चेष्टा की जा रही है। इसमें सन्देह नहीं कि वाणिज्य-व्यवसायकी दशा पहलेकी अपेक्षा इस ससमय अच्छी हो रही है, किन्तु यह उन्नति अभी खास-खास व्यवसायोंको लेकर ही सीमाबद्ध है। दैनिक पत्रोंमें बड़े-बड़े शीर्षक देकर राष्ट्रको इतने दिनोंसे यह भुलावा दिया जा रहा था कि और देशोंकी आर्थिक दशा चाहे जो कुछ हो, किन्तु इंगलैण्डमें सब ठीक है। किन्तु किसी राष्ट्रको इस प्रकार भुलावा देकर कब तक उसकी आंखोंमें धूल झोंकी जा सकती है? वह तो प्रकृत अवस्था देखकर ही इस बातका अन्दाजा लगा सकता है कि देश आर्थिक दृष्टिसे पुनरुत्थानकी ओर अग्रसर हो रहा है या नहीं। इंगलैण्डकी जनताके सामने जब बेकारोंकी संख्या प्रकट हुई तो उसकी आंखें खुलीं और उसने देखा कि राष्ट्रकी आर्थिक प्रगति जैसी बतायी जाती है वस्तुतः वैसी नहीं है।

सन् १९३४ में इंगलैण्डके बहिर्वाणिज्यका परिमाण यद्यपि सन् १९३३ की अपेक्षा बढ़ा है—किन्तु इस वर्ष इंगलैण्डके आयात-व्यापारमें ५ करोड़ ७० लाख पौण्ड और निर्यात-व्यापारमें केवल २ करोड़ ८० लाख पौण्डकी वृद्धि हुई। फलतः इस वर्ष इंगलैण्डमें रफ्तनीकी अपेक्षा विदेशी मालकी आमदनी बढ़कर ३३ करोड़ ६० लाख पौण्डहो गयी है। इधर ब्रिटिश सरकारके राजस्वकी अवस्था भी शोचनीय बतायी जाती है। गत वर्ष सरकारी बजटमें किसी प्रकार आय-व्ययकी समता दिखायी गयी थी। किन्तु इस बार गत जनवरी महीने तक सरकारी आमदनीमें ९८ लाख पौण्डकी कमी हुई है और खर्च ६९ लाख पौण्ड बढ़ा है। इस प्रकार इंगलैण्डकी मजदूर सरकारके पतन और राष्ट्रीय सरकारके स्थापनके समय देशकी जैसी आर्थिक अवस्था थी उसी अवस्थाकी ओर राष्ट्र इस समय भी अग्रसर हो रहा है। ऐसी स्थितिमें राष्ट्रीय सरकारके कर्णधारोंका अपने भविष्यके सम्बन्धमें आतङ्कित हो उठना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसी बीच इंगलैण्डके 'जादूगर' राजनीतिज्ञ मि० लायड जार्ज अपनी एक नयी आर्थिक योजना New Deal लेकर देशके सामने उपस्थित हुए हैं। मि० लायड जार्जकी इस आर्थिक योजनासे इंगलण्डके राजनीतिक और आर्थिक मण्डलोंमें एक खासा आन्दोलन शुरू हो गया है। आपकी इस आर्थिक योजनाका मूल अभिप्राय यह है कि संसारमें शान्ति-स्थापनके लिए इंगलैण्ड और अमेरिकाको मिलकर उद्योग करना चाहिए; सरकारको चाहिए कि और भी अधिक संख्यामें लोगोंको खेतीके काममें लगाकर तथा देशके लिए प्रयोजनीय नये-नये उद्योग-धन्धोंको जारी करके बेकारी दूर करनेकी चेष्टा करे; मन्त्रिमण्डलके ५ सदस्योंको लेकर एक स्थायी कमेटी नियुक्त की जाय जो देश एवं विदेशके सम्बन्धमें किस नीतिका अवलम्बन करके काम करना चाहिए—इस बातका निर्णय किया करेगी। मि० लायड जार्जकी इस योजनामें इंगलैण्डके केन्द्रीय बैङ्क आव इंगलैडको राष्ट्रीय सम्पत्तिके रूपमें परिणत करनेकी बात भी कही गयी है।

## सुप्रीम कोर्टका महत्त्वपूर्ण फैसला

आर्थिक पुनरुत्थानकी योजनाके अनुसार अमेरिकाके राष्ट्रपति रूजवेल्टने स्वर्णमानका परित्याग करके अमेरिकाके सिक्के डालरका मूल्य कम कर दिया। उनके इस कार्यका अमेरिकाकी जनसभा कांग्रेसने भी प्रस्ताव पास करके समर्थन किया। अमेरिकाकी जनताने भी डालरके मूल्यके कम किये जानेकी इस व्यवस्थाको मानकर इसीके आधारपर अपने लेन-देनका कारबार चलाया। कुछ समयके बाद Recovery Act (आर्थिक पुनरुत्थान कानून) की चन्द धाराओंके विरुद्ध वहांकी अदालतोंमें मामले दायर किये गये और उनके सम्बन्धमें अमेरिकाकी सबसे बड़ी अदालतने यह फैसला किया कि अमेरिकाकी सरकार और वहांकी राष्ट्रसभाकी यह कार्रवाई नाजायज है और उन्हें कानूनन ऐसा करनेका हक नहीं है। इन्हीं फैसलोंके आधारपर सरकारी बौण्ड Liberty Loan Bonds के कुछ खरीदारोंने सुप्रीमकोर्टमें यह मामला दायर किया कि अमेरिकाकी सरकार और वहांकी कांग्रेसको सरकारी बौण्डकी उस धाराको रद्द करनेका कोई अधिकार नहीं है जिसमें कहा गया था कि बौण्डके खरीदारोंको मियाद बीतनेपर बौण्डकी रकम अमेरिकाकी स्वर्णमुद्रामें चुकायी जायगी और मुद्राका वजन और उसकी विशुद्धता Fineness वही रहेगी जो बौण्ड जारी करनेके समय थी। इस मामलेके फैसलेका सम्बन्ध केवल सरकारी बौण्डसे ही नहीं, बल्कि अर्द्ध सरकारी-जैसे कि रेलवे, म्युनिसिपैलिटी आदिके बौण्ड तथा खानगी कण्ट्राक्टोंसे भी था।

कई सप्ताहों तक सिर्फ अमेरिकामें ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण व्यवसाय-जगत्में सुप्रीमकोर्टके निर्णयको लेकर बड़ी चहल-पहल थी; क्योंकि सारे संसारके वाणिज्य-व्यवसायपर उसका प्रभाव पड़ सकता था। यदि सुप्रीम कोर्टका फैसला अमेरिकाकी सरकारके विरुद्ध होता, अर्थात् उसका निर्णय यह होता कि अमेरिकाके स्वर्णमान परित्याग करनेके पूर्वके जितने सरकारी, अर्धसरकारी और प्राइवेट बौण्ड हैं उन सबके खरीदारोंकी चुकती स्वर्णमुद्राके रूपमें होनी चाहिए, तो इसका परिणाम यह होता कि डालरके वर्तमान मूल्यके अनुसार बौण्डके खरीदारोंको १०० डालरके बदले १६९ डालर देने पड़ते। इससे आर्थिक पुनरुत्थानकी सारी योजना ही विपर्यस्त हो जाती और इसके कारण अब तक जो कुछ आर्थिक प्रगति हो सकी है उसका मार्ग एकदम अवरुद्ध हो जाता।

सुप्रीम कोर्टने यह निर्णय दिया है कि बौण्डोंके साथ स्वर्णमुद्रामें चुकती करनेकी जो धारा लगी हुई है वह सिर्फ सरकारी बौण्डोंके प्रति लागू हो सकती है, म्युनिसिपल और प्राइवेट बौण्डोंके प्रति नहीं। सरकारी बौण्डके खरीदारोंकी चुकती यद्यपि स्वर्णमुद्रामें होगी, किन्तु वे किसी प्रकारका तावान पानेके हकदार नहीं होंगे। इस निर्णपर अमेरिकामें सन्तोष प्रकट किया जा रहा है क्योंकि इससे सरकारके वर्तमान आर्थिक कार्यक्रममें कोई बाधा नहीं पहुंचेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## प्रगतिका मार्ग अवरुद्ध क्यों ?

हिन्दी १३ करोड़ भारतवासियोंकी मातृभाषा है, वह भावी भारतकी राष्ट्रभाषा बनने जा रही है, उसका साहित्य-भाण्डार भी नित्य नये-नये रत्नाभूषणोंसे समृद्धि-सम्पन्न बनता जा रहा है, हमारी मातृभाषाका क्षीण कलेवर क्रमशः परिपुष्ट हो रहा है। किन्तु यह सब होते हुए भी यह सखेद कहना पड़ता है कि उच्च शिक्षित हिन्दी भाषा-भाषियोंमें अभी तक मातृभाषाके प्रति, अपने साहित्यके प्रति वह अनुराग, वह ममता उत्पन्न नहीं हुई है जो अपेक्षाकृत लघुसंख्यक अन्यान्य प्रान्तीय भाषा-भाषियोंमें पायी जाती है। उच्च अंगरेजी शिक्षाप्राप्त हिन्दी भाषा-भाषी विद्वान् अब भी हिन्दी-साहित्यके प्रति एक प्रकारसे उदासीन ही बने हुए हैं। उनकी कर्म-प्रचेष्टाओंमें मातृभाषाके प्रति गौरव-बोधकी भावना कदाचित् ही व्यक्त हुआ करती है। जहां बंगला और मराठी भाषा-भाषी उच्च शिक्षित विद्वान् अपने साहित्य-की प्रगतिसे, उसकी गति-विधियोंसे अनेकांशमें परिचय रखते हैं, अपने नित्यके अध्ययनमें मातृभाषाकी पुस्तकों तथा सामयिक पत्र-पत्रिकादिको स्थान देते हैं वहां हिन्दी भाषा-भाषी उच्च शिक्षित विद्वान् अपने साहित्यकी प्रगतिसे प्रायः अनभिज्ञ ही बने रहते हैं और उनके दैनन्दिन जीवन-क्रममें हमें उनके साहित्य-प्रेमका—यदि उनमें कुछ साहित्य-प्रेम होता हो—सक्रिय रूप बहुत कम देखनेको मिलता है। हमारे बङ्गाली भाई अपने प्रान्तसे बाहर अन्य प्रान्तोंमें जहां कहीं रहेंगे वहां उनकी संख्या थोड़ी होनेपर भी कोई-न-कोई साहित्यिक संस्था, पुस्तकालय अथवा वाचनालय अवश्य होगा। किन्तु उन्हीं हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तोंमें इस समय भी ऐसे बहुत-से जिले, सबडिवीजन और कस्बे हैं जहां बी० ए०, एम० ए० पास वकीलों, स्कूल-शिक्षकों और अन्य सरकारी अफसरोंकी संख्या कई सौ तक होनेपर भी शायद ही कोई साहित्यिक संस्था या हिन्दी भाषाका अच्छा पुस्तकालय या वाचनालय हो। इसके विपरीत हम देखते हैं कि जो लोग कम अंगरेजी पढ़े हुए हैं अथवा केवल हिन्दी ही पढ़े हुए हैं उनमें उच्च शिक्षितोंकी अपेक्षा मातृभाषा-प्रेम विशेषरूपमें पाया जाता है, किन्तु नागरिक जीवनमें जिन लोगोंकी प्रधानता होती है उन उच्च शिक्षितोंका हार्दिक सहयोग प्राप्त न करनेके कारण वे स्वयं कुछ विशेष कार्य करनेमें सफल नहीं होते। अवश्य ही इसका एक खास कारण यह भी है कि हिन्दी भाषा-भाषी उच्च अंगरेजी शिक्षा-प्राप्त विद्वानोंमें साहित्यिक अभिरुचिकी मात्रा बहुत कम देखी जाती है। जीवन-क्षेत्रमें प्रवेश करते ही वे प्रायः अध्ययनसे विमुख हो जाते हैं और इसके बाद फिर साहित्य उनके मनोरञ्जनका एक प्रधान साधन नहीं रह जाता, जैसा अन्य देशोंमें होता है। यदि यह कहें कि मातृभाषाके साहित्यमें उनकी अभिरुचि न होनेके कारण ही वे इसकी ओर ध्यान नहीं देते, तो यह बात भी नहीं है। क्योंकि अंगरेजी भाषाकी पुस्तकोंसे भी तो उनका प्रेम बहुत कम देखा जाता है। यदि यों कहें कि इस प्रकारके अधिकांश शिक्षितोंका साहित्यिक जीवन उनकी कालेजी शिक्षा समाप्त होने तक ही परिमित रहता है, तो इसमें कोई अत्युक्ति न होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बङ्गाली विद्वानोंकी तुलनामें हिन्दी भाषा-भाषी विद्वानों-का मातृभाषा प्रेम, साहित्यिक अभिरुचि कितनी न्यून है, इसका एक ज्वलन्त प्रमाण लीजिये। जहां तक हिन्दीके मासिक साहित्यका सम्बन्ध है वह बङ्गलाके मासिक साहित्य-से किसी प्रकार भी हीनतर नहीं कहा जा सकता। यह बात निःसङ्कोच कही जा सकती है कि हिन्दीकी कई मासिक पत्रिकायें छपाई, सफाई, मैटर आदिमें बंगलाकी उच्च कोटिकी मासिक पत्रिकाओंके टक्करकी ही नहीं, बल्कि उनसे बढ़कर भी हैं। फिर भी उनकी ग्राहक-संख्या बंगला मासिक पत्रिकाओं-की अपेक्षा बहुत ही कम है और यह उस दशामें, जब कि बंगला साहित्यका क्षेत्र केवल बङ्गाल प्रान्त तक ही परिसीमित है और बंगला भाषा-भाषियोंकी संख्या साढ़े चार करोड़से अधिक नहीं है। इसके विपरीत हिन्दीका साहित्य-क्षेत्र कई प्रान्तोंमें परिव्याप्त है और उसके बोलनेवालोंकी संख्या लगभग १३ करोड़ है। इसका कारण स्पष्ट है। उच्च शिक्षित बङ्गाली परिवारोंमें जहां आपको बंगला मासिक पत्रिकाओंके ग्राहक काफी संख्यामें मिलेंगे वहां हिन्दीके इस श्रेणीके ग्राहक बहुत कम मिलेंगे। क्या हिन्दीभाषी वकीलों, डाक्टरों, इञ्जीनियरों और उच्च सरकारी अफसरोंमें सैकड़े २५ भी ऐसे मिलेंगे जो हिन्दीकी किसी मासिक पत्रिकाके ग्राहक हों? इसी प्रकार इनके घरमें हिन्दीकी पुस्तकें भी मुश्किलसे बीस-पच्चीस भी मिलेंगी। ऐसी स्थितिमें यदि हिन्दी-साहित्यके प्रचारकी गति मन्द हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है। जब तक हिन्दी भाषाभाषी उच्च शिक्षित विद्वान् इस प्रकार हिन्दी-साहित्यके प्रति विमुख बने रहेंगे तब तक हिन्दीके पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तक-रचयिताओंका दैन्य दूर नहीं हो सकता।

यह एक विषम समस्या है जिसके समाधानके लिए प्रत्येक हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तके हिन्दी-साहित्य-सम्मे-लनके कर्मियों, साहित्यिक संस्थाओं तथा मातृभाषा-प्रेमी सज्जनोंको विशेषरूपसे प्रयत्नशील होना पड़ेगा। प्रान्तके प्रत्येक जिला, सबडिवीजन और कस्बेमें प्रचार-कार्य द्वारा इस प्रकारका अनुकूल वातावरण तैयार करना होगा जिससे उच्च शिक्षित विद्वानोंमें मातृभाषाके प्रति अनुराग, साहि-त्यिक अभिरुचि उत्पन्न हो, उनमें रसबोधका भाव जाग्रत हो और वे अपने मनोरञ्जन एवं ज्ञानवर्द्धनके लिए साहित्यको एक महत्त्वपूर्ण साधन समझकर उसे ग्रहण करें।

## 'साकेत'पर पारितोषिक

हमें यह जानकर परम सन्तोष हुआ कि प्रयाग हिन्दु-स्तानी एकेडेमीके अधिकारियोंने कविवर श्रीयुत मैथिली-शरणजी गुप्तके 'साकेत' महाकाव्यको सन् १९३२-३३ की रच-नाओंमें सर्वश्रेष्ठ समझकर उसे पुरस्कृत करनेकी घोषणा की है। इसमें तो कुछ भी सन्देह नहीं कि श्री मैथिली-शरणजीका "साकेत" कई दृष्टियोंसे उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना कही जा सकती है। यद्यपि 'साकेत' के बाद उनका "यशो-धरा" नामक सुन्दर काव्यग्रन्थ भी प्रकाशित हुआ है, किन्तु यह कहना कठिन है कि 'यशोधरा' उनकी बादकी कृति होनेके कारण 'साकेत' से श्रेष्ठतर बन पड़ी है। हमें तो आश्चर्य इस बातपर है कि हिन्दुस्तानी एकेडेमीके अधि-कारियोंको 'साकेत' के सम्बन्धमें इस निर्णयपर पहुंचनेमें इतना समय लगा। श्री मैथिलीशरणजीने हिन्दी-साहित्यको अपनी अनुपम रचनाओंसे निस्सन्देह गौरवमण्डित किया है और उनके ये अमर काव्यग्रन्थ हिन्दीके काव्योद्यानको चिरकाल तक सुरभित करते रहेंगे।

## देव-पुरस्कारका निर्णय

जिस 'देव-पुरस्कार' और 'दुलारे दोहावली' को लेकर हिन्दी-संसारमें इतना वादविवाद चल रहा था और जिसके कारण एक प्रकारकी अवाञ्छनीय दलबन्दीकी सृष्टि हो गयी थी उसका अब अन्त हो गया समझना चाहिए। कारण, 'देव-पुरस्कार' के निर्णायकोंने श्रीयुत दुलारेलालजीकी इस कृतिको ही पुरस्कारके योग्य ठहराया है। हो सकता है कि 'दुलारे-दोहावली' के रचनाकौशल, काव्यगुण आदिके सम्बन्धमें जिन बहुसंख्यक विद्वानोंने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी उनकी उस प्रशंसामें अतिरञ्जनाकी मात्रा हो, किन्तु इसके साथ ही पुरस्कारके विज्ञ निर्णायकोंने इसके पक्षमें जो निर्णय दिया है उससे यह स्पष्ट है कि इस दोहावलीमें कुछ ऐसे दोहे अवश्य हैं जिनसे रचयिताकी कविजनोचित उच्च प्रतिभा प्रतिभात होती है। श्रीयुक्त दुलारेलालजीको इस गौरवान्वित सफलतापर बधाई देते हुए हम उनसे यह आशा रखते हैं कि भविष्यमें वे हिन्दी-साहित्यको इससे और भी अच्छी चीजें भेंट करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भारतेन्दु ग्रन्थावली, दूसरा खण्ड। सङ्कलनकर्ता तथा सम्पादक—श्री ब्रजरत्नदास बी० ए०, एल-एल० बी; प्रकाशक—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; मूल्य ३)।

गोलोकवासी भारतेन्दु बा० हरिश्चन्द्रकी अर्द्धशताब्दीके अवसरपर भारतेन्दु ग्रन्थावलीका यह दूसरा खण्ड प्रकाशित हुआ है। इस खण्डमें उनके रचे हुए समस्त काव्य-ग्रन्थों तथा स्फुट कविताओंका संग्रह है। भारतेन्दुकी समस्त कविताओंका—जो अनेकांशमें दुर्लभ हो रही थीं—यह वृहद् संग्रह वस्तुतः हिन्दी-साहित्यके लिए एक अमूल्य निधि है। एतदर्थ इसके सम्पादक श्रीयुत ब्रजरत्नदासजी तथा प्रकाशक नागरी-प्रचारिणी सभा दोनों बधाईके पात्र हैं। अच्छे कागजपर खूब साफ-सुथरी छपी हुई लगभग ९०० पृष्ठोंकी इस पुस्तकका मूल्य केवल ३) रखा गया है। भारतेन्दु ग्रन्थावलीके पहले खण्ड तथा तीसरे और चौथे खण्ड भी क्रमशः प्रकाशित होंगे। हिन्दीके प्रत्येक सार्वजनिक और निजी पुस्तकालय तथा वाचनालयमें इस पुस्तककी एक-एक प्रति होनी चाहिए।

सचित्र सूरसागर। प्रकाशक—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा; १२ प्रतियोंका मूल्य डाक-व्यय सहित १२), एक प्रतिका मूल्य १) डाक-व्यय अलग।

स्वर्गीय कवि जगन्नाथदासजी 'रत्नाकर' द्वारा सम्पादित सूर-सागरका यह संस्करण सूर-समितिके निरीक्षणमें क्रमशः प्रकाशित हो रहा है। इस सूर-समितिमें पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, पं० केशवप्रसाद मिश्र, पं० रामचन्द्र शुक्ल और पं० नन्ददुलारे वाजपेयी हैं। स्वर्गीय रत्नाकरजीने सूर-सागरकी प्रायः समस्त प्राप्य मुद्रित एवं अमुद्रित प्रतियोंसे मिलाकर वर्तमान संस्करणका सम्पादन किया था। अतएव इसके पद अन्य सभी संस्करणोंकी अपेक्षा विशुद्ध होंगे, इसमें तो कोई सन्देह किया ही नहीं जा सकता। रत्नाकरजीकी जीवन-व्यापी साधनाका ही यह फल है, जिसे हम आज इस रूपमें देख रहे हैं और इसका सम्पूर्ण श्रेय काशी-नागरी-प्रचारिणी सभाको ही है। सूर-सागर जैसे अमूल्य ग्रन्थ-रत्नका हिन्दीमें एक भी सम्पूर्ण और विशुद्ध संस्करण न हो, यह सचमुच हिन्दी भाषाभाषी जनता और हिन्दी-साहित्यके लिए कलङ्क एवं ग्लानिका विषय था। किन्तु यह प्रसन्नताकी बात है कि उक्त सभा अब इस कलङ्क-मोचनके लिए प्रयत्नशील हुई है।

प्रस्तुत संस्करणमें मूल पद चिकने कागजपर मोटे अक्षरोंमें और पाद-टिप्पणियोंमें पाठ-भेद दिये गये हैं। पुस्तककी छपाई-सफाईके सम्बन्धमें इण्डियन प्रेसका नाम ही गारण्टी है। अच्छा होता, यदि पाद-टिप्पणियोंमें कठिन और अप्रचलित शब्दोंके अर्थ भी दे दिये जाते। इससे इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती। हमें आशा है कि हिन्दी-साहित्य प्रेमी सज्जन इस ग्रन्थ-रत्नके ग्राहक बनकर सभाके इस सदुद्योगमें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

ऋग्वेद-संहिता प्रथम खण्ड और यजुर्वेद-संहिता प्रथम खण्ड। सम्पादक—श्री दीनबन्धु वेदशास्त्री, प्रकाशक—शास्त्रसिन्धु कार्यालय, ३१ मुक्ताराम रो, कलकत्ता; मूल्य प्रत्येक खण्डका १।)।

संसारका आदि धर्म-ग्रन्थ, अक्षयज्ञान-भाण्डार वेदोंका यह बंगला भाष्य वङ्गभाषाभाषी जनतामें वैदिक ज्ञान-प्रचारके उद्देश्यसे ही प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें बंगला लिपिमें मूल मन्त्र, पदपाठ, पदान्वय, शब्द-ज्ञान और बङ्गानुवाद दिये गये हैं। सम्पादक महोदयने भूमिकामें लिखा है कि प्राचीन भाष्य-समूह और स्वामी दयानन्दके भाष्यके अवलम्बनपर उन्होंने इस भाष्यकी रचना की है। यह संस्करण खण्ड-रूपमें क्रमशः प्रकाशित होगा। पुस्तक मोटे कागजपर स्पष्ट अक्षरोंमें छपती है। जिन्हें मानव जातिके इस आदि ज्ञान-स्रोतमें अवगाहन करनेकी आकांक्षा हो और जो बंगला भाषा अच्छी तरह पढ़ सकते हों, उनके लिए यह संस्करण अवश्य उपादेय है।

विश्व-इतिहासकी झलक (प्रथम भाग)। लेखक—पण्डित जवाहरलाल नेहरू, अनुवादक और सम्पादक—पण्डित बेङ्कटेशनारायण तिवारी; प्रकाशक—साहित्य-मन्दिर, पुस्तक प्रकाशक, लखनऊ। छपाई-सफाई स्वच्छ एवं सुन्दर, डबल क्राउन अठपेजीके १०४ पृष्ठ, मूल्य १।)।

पण्डित जवाहरलाल नेहरूने अपनी पुत्री कुमारी इन्दिराके नाम भेजे गये अपने पत्रोंमें विश्व-इतिहासपर एक सरसरी नजर फेंकी है। उन्होंने पत्रोंके रूपमें संसारकी घटनाओं और राष्ट्रोंके उत्थान-पतनपर यद्यपि एक उड़ती नजर डाली है परन्तु नेहरूजीकी पैनी दृष्टिसे कोई भी मार्मिक बात छूटने नहीं पायी है। पण्डितजीके स्वाभाविक ओज और प्रतिभाकी झलक 'विश्व-इतिहासकी झलक' में सर्वत्र पायी जाती है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उनके लिखनेका ढङ्ग इतना रोचक और पुस्तकमें वर्णित विषयोंकी उनकी मार्मिकता इतनी सुन्दर हुई है कि एक बार पुस्तक उठाकर बिना समाप्त किये इसे कोई अलग नहीं कर सकता। कहनेको तो है यह एक झलक, परन्तु ऐसी कोई भी बात छूट नहीं गयी है, जिसका विश्वके इतिहासपर कोई चिरस्थायी प्रभाव पड़ा हो। जगह-जगहपर उनके भावोंकी मादकता, भाषाका ओज और शैलीकी मोहकता पाठकको आत्म-विभोर कर देती है। बीच-बीचमें भारतीय समस्याओंपर भी नेहरूजी प्रकाश फेंकते गये हैं और अन्यान्य राष्ट्रोंसे तुलना करते गये हैं, इसलिए पुस्तककी उपयोगिता और भी बढ़ गयी है। उन्हें अप्रासङ्गिक नहीं कहा जा सकता; क्योंकि इतिहासकारोंकी दृष्टिसे इस पुस्तकमें केवल राजाओंके जीवन-चरित अथवा राज्योंके विस्तारकी ही चर्चा नहीं, बल्कि तत्कालीन परिस्थितियोंका अध्ययन कर पण्डितजीने नैतिक परिणाम निकालनेका भी प्रयत्न किया है। 'इनकिलाब जिन्दाबाद' 'तीन महीने' तथा 'देहरादून जेलसे अन्तिम पत्र' आदि कुछ पत्र तो सचमुच प्राणोंको उद्वेलित कर देते हैं और पाठक क्षण-भरको इस पृथ्वीसे ऊपर—बहुत ऊपर उठ जाता है।

सारी पुस्तकको पढ़कर हम तो इसी परिणामपर पहुंचे हैं कि पण्डितजीने यह पुस्तक अपने हृदयकी भाषामें लिखी है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि तिवारीजीने पुस्तकका अनुवाद भी बहुत बढ़िया किया है। यह तो प्रतीत ही नहीं होता कि यह अनुवाद है। भाषा खूब प्राञ्जल और मंजी हुई है। हमारी दृढ़ धारणा है कि 'विश्व-इतिहासकी झलक' वर्तमान युगकी एक बहुत उपयोगी पुस्तक सिद्ध होगी। हम इसका घर-घरमें प्रचार चाहते हैं।

उन्मादिनी। लेखिका—श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान; प्रकाशक—उद्योग-मन्दिर, माल्दारपुरा, जबलपुर। डबल क्राउन सोलहपेजीके १९२ पृष्ठ। मूल्य सादी १।), सजिल्द १॥=)

इस पुस्तकमें सुभद्राजीकी ९ कहानियोंका संग्रह है। आरम्भमें ४० पृष्ठोंकी एक भूमिका भी है जिसमें उसके लेखकने संग्रहीत कहानियोंकी विश्लेषणात्मक आलोचना की है। सुभद्राजी हिन्दी-संसारमें मर्मस्पर्शी कविताओं और सुन्दर कहानियोंको लिखकर यथेष्ट कीर्ति प्राप्त कर चुकी हैं और प्रस्तुत कहानियां भी उनके अर्जित यशके अनुरूप ही हुई हैं। सभी कहानियोंमें कोमल भावुकताकी सरस मन्दाकिनी प्रवाहित हो रही है। कहीं-कहीं हृदयको स्पर्श करनेवाली कला भी है, परन्तु यदि सुभद्राजी अपनी प्रतिभाको थोड़ा मस्तिष्ककी ओर भी झुकायें, तो बड़ा अच्छा हो। हृदय और मस्तिष्क दोनोंके संयोगसे वे हिन्दीको और भी अच्छी चीजें दे सकती हैं, ऐसा हमारा विश्वास है।

नवशक्ति। सम्पादक—श्री देवव्रतशास्त्री, वार्षिक मूल्य ३), पता—नवशक्ति कार्यालय, पटना।

लगभग ७ महीनेसे बिहारकी राजधानी पटनेसे यह साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हो रहा है। आरम्भसे ही हम इसके अङ्कोंको ध्यानपूर्वक देखते आ रहे हैं। बिहारसे समय-समयपर कितने ही अच्छे पत्र निकले और अकालमें अस्त हो गये। किन्तु अब ऐसा प्रतीत होता है कि बिहारी पाठकोंमें 'नवशक्ति' अपने लिए स्थायी स्थान प्राप्त करनेमें सफल होकर ही रहेगी। इसके प्रत्येक अङ्कमें अनुभवशील सम्पादन-कुशलताकी छाप अङ्कित रहती है। लेख और नोट तथा पठनीय समाचारोंका सुन्दर सङ्कलन होनेके साथ-साथ पत्रकी छपाई-सफाई और मैटरकी सजावट सुरुचिपूर्ण और आकर्षक ढङ्गकी होती है। इसके २४ पृष्ठोंमें देश-विदेश तथा प्रान्त-सम्बन्धी प्रायः सभी ज्ञातव्य और महत्त्वपूर्ण विषयोंका समावेश रहता है। हमें आशा है कि केवल बिहारमें ही नहीं, बल्कि अन्यान्य प्रान्तोंमें भी इस पत्रका यथेष्ट आदर होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

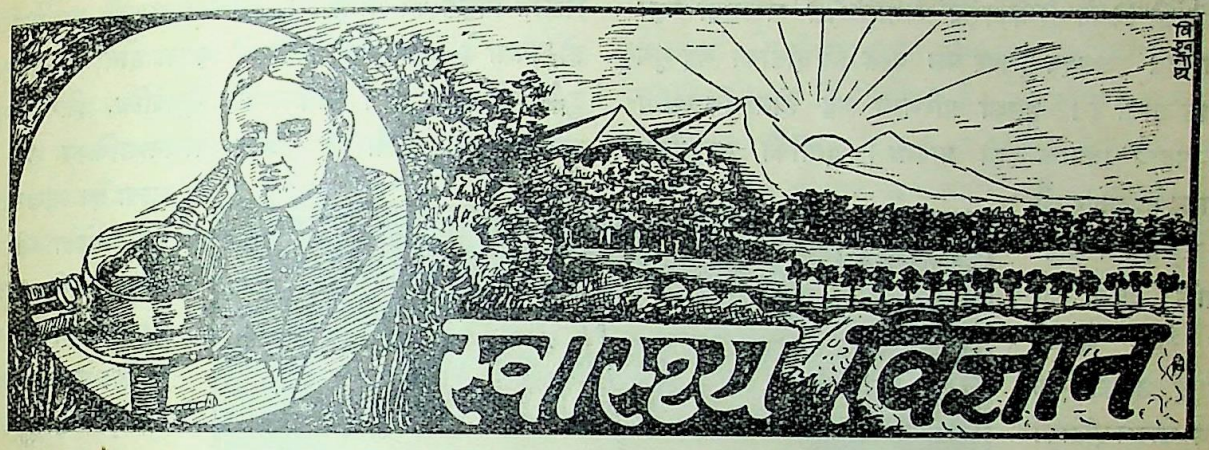


## 'दांतोंसे कब्र न खोदो'

एक कहावत है कि "दांतोंसे अपनी कब्र न खोदो" और इसमें सन्देह नहीं कि इसमें बहुत-कुछ सचाई है। वास्तवमें हमारा स्वास्थ्य और सौन्दर्य बहुत-कुछ दांतोंपर निर्भर करता है। मनुष्यको जितने भी रोग होते हैं, सभी मुंहसे ही प्रवेश करते हैं। हम लोग जो कुछ खाते हैं, उसका प्रभाव हमारे शरीर और मस्तिष्कपर पड़ता है। अपने खाद्य-पदार्थोंका चुनाव करते समय जितनी सावधानी रखनी चाहिए, उतनी ही सावधानी इस बातमें रखनी चाहिए कि जो कुछ भी खाया जाय, वह खूब चबा-चबाकर खाया जाय। महारानी विक्टोरियाके सुप्रसिद्ध प्राइम मिनिस्टर महामति ग्लैडस्टन कहा करते थे कि मनुष्यको भोजन करते समय हर ग्रासको ३२ बार चबाना चाहिए। ग्लैडस्टन एक बहुत बड़े राजनीतिज्ञ तो थे ही, इसके साथ-साथ वे भोजनोंपर भी अक्सर प्रयोग करते रहते थे। स्वास्थ्य-के नियमोंका वे जितनी सावधानीके साथ पालन करते थे, उतनी सावधानी तो शायद बहुत कम लोग करते हैं। ग्लैडस्टन इसके सुपरिणामसे भी वञ्चित न रहे।

भोजन दांतोंसे खूब चबा-चबाकर करना चाहिए; क्योंकि जो कुछ हम खाते हैं वह अगर खूब चबाया न जाय तो उसका हाजमा ठीक नहीं हो सकता। जिस प्रकार कोई वस्तु रासायनिक प्रक्रिया द्वारा गलायी जाती है, उसी प्रकार मुक्त पदार्थके लिए पेटमें रासायनिक क्रिया होती है और यदि भोजन सावधानीसे चबाकर नहीं, बल्कि वैसे ही निगल लिया गया तो इसका परिणाम यह होगा कि उक्त क्रियामें देर लगेगी और अंतड़ियोंको बड़ा जोर लगाना पड़ेगा। कोष्ठबद्धताके अधिकांश रोगी इसी असावधानीके कारण कष्ट पा रहे हैं।

यदि हम भोजनको चबा-चबाकर खानेका अभ्यास कर लें तो दांतोंकी फिक्र हमें अपने-आप ही करनी होगी। कितने ही लोग हैं जो दांतोंकी परवाह न कर असमयमें ही काल-कवलित हो जाते हैं। पहले तो वे दांतोंकी फिक्र नहीं करते और जब दांत उन्हें तङ्ग करने लगते हैं तब उन्हें दांतों-को उखड़वाकर फेंक देने हीकी बात सूझती है। यह बात भली भांति समझ लेनी चाहिए कि बुरी अवस्थामें दांतोंके रहने अथवा उन्हें सर्वथा उखड़वा देने, दोनों ही अवस्थाओंमें स्वास्थ्यको बड़ा धक्का लगता है। दांतोंसे कुचल-कुचलकर खानेमें खाद्य पदार्थके स्वादका सुख तो मिलेगा ही, इसके अतिरिक्त मसूड़ोंसे जो एक प्रकारका रस निकलता है, वह पदार्थके साथ मिलकर पाचन-क्रियामें सहा-यक होता है। कुछ ऐसी चीजें भी हैं जिन्हें पेट तब तक हजम करनेकी क्षमता नहीं रखता जब तक कि वे खूब घिसे हुए रूपमें उसमें न पहुंचें। इसलिए जो लोग सुन्दर स्वास्थ्यके इच्छुक हैं उन्हें भोजन खूब चबा-चबाकर करना चाहिए। यह बात देखनेमें जितनी ही छोटी दिखाई पड़ती है इसकी उपेक्षा उतनी ही अधिक हानिकर है। साथ ही इस बातका भी ध्यान रखना चाहिए कि भोजन चबानेवाले दांतोंपर मैल न बैठने पाये। इससे दांतोंका सौन्दर्य तो नष्ट होता ही है, इसके साथ-साथ एक और भी बुराई पैदा होती है। वह यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि मसूड़ोंसे बाहर निकले हुए दांतोंपर एक प्राकृतिक पालिश होती है जो कितने ही प्रकारके रोगाणुओंसे शरीरकी रक्षा करती है। अतएव इसपर मैल बैठते ही दांतोंका यह गुण नष्ट हो जाता है। इसका परिणाम यह होगा कि खाया हुआ पदार्थ विषाक्त हो जायेगा। दांतोंकी गन्दगीका परिणाम हाजमेपर भी बहुत पड़ता है। कोष्ठ-बद्धताके आज जो इतने रोगी दिखाई पड़ते हैं उसका एक प्रधान कारण दांतोंकी गन्दगी है। दांतोंकी गन्दगीका आंखोंकी ज्योति और सुन्दरता-पर भी बहुत प्रभाव पड़ता है।

सावधानीके साथ लालन-पालन करनेसे प्रत्येक बच्चा ऐसा ही स्वस्थ हो सकता है।

## नमककी मात्रा

अमेरिका और इंग-लैण्डकी मृत्यु-संख्याकी परीक्षा करके देखा गया है कि हृद्रोग और मूत्रग्रन्थिके वि-कारसे गत १५-२० वर्षोंके अन्दर अमेरि-कामें बहुत लोग मरे हैं। इसका कारण यह है कि अमेरिकन ज्यादा नमक खाते हैं और अंगरेज कम नमकका व्यवहार करते हैं। अंगरेज मांसके साथ सुहागा खाते हैं—मांसको मक्खन या सुहागेमें भिगोकर रखते हैं—और अमेरिकन नमकमें भिगोकर।

इस सम्बन्धमें Good Health पत्रमें डा० हैरिसने एक लेख लिखा है। इस लेखमें कहा गया है कि नमकसे वृद्धावस्था आती है। शरीरकी शिरा-शिरामें नमकका अंश सञ्चित रह जाता है जिसके फलस्वरूप ग्रन्थि-समूह और शिरायें विकृत हो जाती हैं। हृदयन्त्र नमकके स्पर्शसे निर्मेद हो जाता है—नमकसे परिपाकमें बाधा होती है—पाकयन्त्र दुर्बल हो जाता है। पाकस्थली, मूत्रग्रन्थि, शिरा नमकसे कमजोर हो जाती है और पाचन-शक्तिका लोप हो जाता है। आंख खराब हो जानेका भी एक कारण अति मात्रामें नमकका व्यवहार कर-ना है। वात व्याधिका भी एक खास कारण यही है।

नमक अधिक खानेसे ज्यादा प्यास मालूम होती है। इसका कारण यह है कि नमक शरीरके अन्दर प्रवेश करके रक्तको खींचता है जिससे शिरावाही रक्त जम जाता है। इसीसे प्यास मालूम होती है। किन्तु प्या-सको मिटानेके लिए जिस परिमाणमें जल-पान किया जाता है वह जल रक्तकी कहां तक क्षतिपूर्ति कर सकता है? इसके सिवा ज्यादा नमक खानेकी आदत डालनेसे भोजनमें अ-रुचि हो जाती है।

नमकके व्यवहारके सम्बन्धमें एक ऐतिहासिक कहानी इस प्रकार है :—मैक्सिकोकी लाशकाला जातिके युद्धमें पराजित होनेपर उसे अपने ग्राम और नगरसे निकाल बाहर करके एक पहाड़के ऊपर बन्दी दशामें रखा गया। पहाड़के नीचे पहरा बैठा दिया गया जिससे लाशकाला लोग नीचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उतरकर नमक-संग्रह न कर सकें। लगभग ५० वर्षों तक इस जातिके लोग पर्वतपर ही वास करते रहे और इस बीच उन्हें एक कण भी नमक नसीब नहीं हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि लाशकाला जाति अत्यन्त दुर्धर्ष, पराक्रमी, श्रमशील और साहसी हो उठी।

यदि नमकसे बुढ़ापा आता है, शक्तिका ह्रास होता है, तो फिर कितना नमक खाना चाहिए? इसका उत्तर यह है कि उतनी ही मात्रामें, जितनीसे व्यञ्जन विस्वाद न मालूम पड़े। और मात्रा? परीक्षा द्वारा देखा गया है कि प्रतिदिन २४ घण्टेमें १५ से ३० ग्रेन तककी मात्रामें नमकका व्यवहार किया जा सकता है। इतनी मात्रामें नमकका व्यवहार करनेसे शरीरमें शक्ति सञ्चित रहती है और उसमें विकार या ह्रास नहीं होता।

## मानसिक विचार और स्वास्थ्य

मनुष्यके मानसिक विचारोंका उसके स्वास्थ्य और सौन्दर्यपर बड़ा प्रभाव पड़ता है। शरीरसे स्वस्थ होता हुआ भी प्राणी अगर मनसे स्वस्थ न हुआ और बराबर मानसिक-पीड़ा पाता रहा तो वह अपना समस्त स्वास्थ्य खोकर कुरूप बन जायगा।

हमारे गालोंपर की झुर्रियां, सूखे हुए होंठों, धंसी हुई आंखों और चिपके हुए गालोंके लिए अधिकांशतः हमारे मानसिक विचार ही जिम्मेदार हैं। ऐसे बहुत-से प्राणी हैं जो शरीरसे पूर्ण स्वस्थ रहते हुए भी केवल मानसिक अस्वस्थताके कारण तन्मयतापूर्वक कार्यमें नहीं लग सकते। उनकी आकृति बिगड़ जाती है। चेहरेपर सदैव हवाइयां उड़ती रहती हैं। आंखें धंसी और भौंहें खिंची-सी रहती हैं और इन सबका परिणाम यह होता है कि आदमी कुरूप हो जाता है।

मानसिक विचारोंका पाचन-क्रियापर भी बड़ा प्रभाव पड़ता है, अक्सर देखा गया है कि जो लोग बराबर मानसिक चिन्तामें पड़े रहते हैं उनमें स्नायविक दुर्बलता आजाती है और बराबर कब्जियतकी शिकायत बनी रहती है। अतएव सर्वाङ्ग सुन्दर और स्वस्थ बननेके लिए मानसिक विचारोंको सुन्दर और स्वस्थ बनानेकी बड़ी भारी जरूरत है।


# दांतों की सुन्दरता

**व्यवहारमें लाये जानेवाले ब्रस पर ही निर्भर है**

आप जो मञ्जन व्यवहार करते हैं वह कितना ही अच्छा क्यों न हो सर्वोत्कृष्ट ब्रसके नहीं व्यवहार करनेसे आपके दांत पूर्णतया परिष्कार न हो सकेंगे। इसलिये मीरा ब्रस ही उपयुक्त है। कारण दांतके प्रत्येक कोने व फांक में, जहां तक सम्भव है, प्रवेश कर सकता है। और इसी लिए यह बनाया ही गया है। इसके बाल न नरम होंगे और न खुल कर गिर पड़ेंगे।

**मीरा टूथ ब्रस** के साथ

**मीरा डेंटल क्रीम** व्यवहार कीजिये।

चिरकाल तक दन्त पंक्ति शुद्ध, स्वस्थ सुन्दर व सबल रहेंगे।

**मीरा टूथ ब्रस**

एजेन्टस्—टी० एम० ठाकुर एण्ड कम्पनी

१२, डलहौसी स्कायर, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

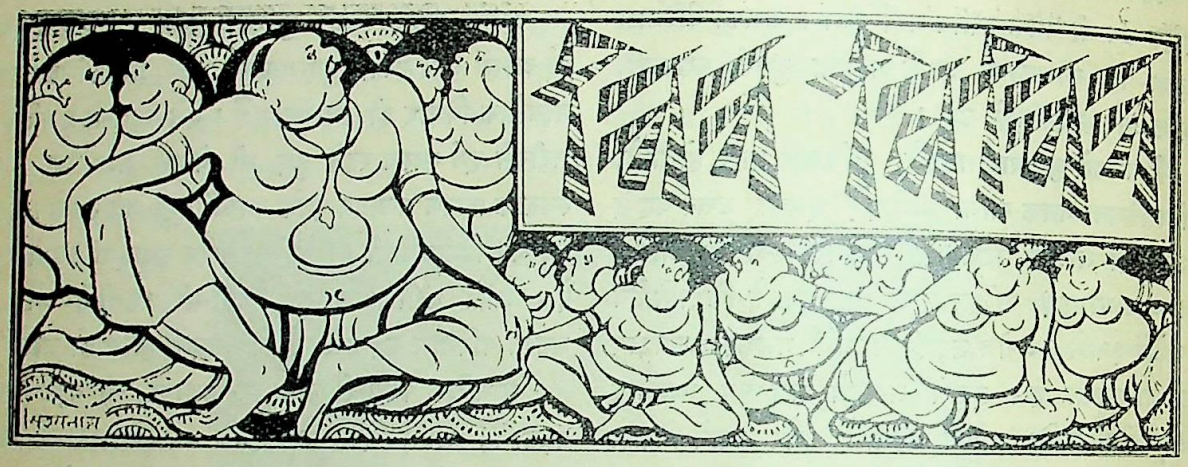


## गन्नेकी परिपक्वता बतानेवाला यन्त्र

एक जर्मन विज्ञानवेत्ता द्वारा आविष्कृत इस यन्त्रसे पता चल जाता है कि गन्ने खूब पक गये हैं या नहीं। यह यन्त्र दूरबीनकी तरह है, अन्तर केवल यह है कि इसपर एक ढक्कन लगा रहता है जिसपर गन्नेके रसकी बूंदें टपका दी जाती हैं। बूंदें गिरा देनेपर ढक्कन बन्द कर दिया जाता है। इस प्रकार जब ढक्कनके शीशेको रोशनीके सामने करके, उसका फोकस लिया जाता है तब एक आयताकार रेखा बन जाती है और दिखाई पड़ता है कि चीनीका कितना अंश गन्नेके रससे बना है। इसीके परिमाणसे गन्नेकी परिपक्वता और अपरिपक्वताका पता चल जाता है। इस यन्त्रका नाम रिफ्रेक्टो मीटर ( Refracto meter ) रखा गया है।

## दुर्घटनाओंके फोटो

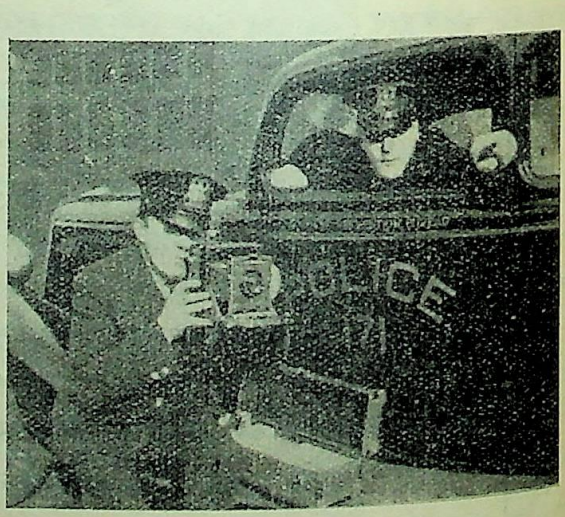


शिकागोकी पुलिसने ऐसा प्रबन्ध किया है कि शहरमें जितनी सनसनीखेज घटनायें हों, उनके चित्र उतार लिये जाया करें। कितनी ही मोटरोंपर अब केमरे लगा दिये गये हैं और रेडियो द्वारा समाचार पाते ही पुलिसके अधिकारी फौरन घटनास्थलकी ओर दौड़ पड़ते हैं और घटनाके अनेक आवश्यक चित्र उतार लेते हैं। वहां फौजदारी और दीवानी-के मामलोंमें इन चित्रोंसे गवाहीका काम भी लिया जाने लगा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## टेलीफोनसे तैराकीकी शिक्षा

केलीफोर्निया-के सेन्फ्रान्सिसको के एक व्यक्तिने अभी हाल हीमें तैराकीकी कला सिखानेका एक नया आविष्कार किया है। नवसिखुये तैराक कभी-कभी लहरों और गहराईके कारण बड़े असमञ्जसमें पड़ जाते हैं और उस समय उन्हें पानीमें रहनेके कारण कुछ भी बताया नहीं जा सकता। परन्तु अब इस आविष्कारसे यह समस्या बिलकुल आसान हो गयी है। तैराक पानीमें उतरते हो एक फोन (Head phone) अपने सिरमें लगाकर उसे कानसे सम्बद्ध कर देता है और पानीमें उतर जाता है। तैराकी कलाके शिक्षकके हाथमें फोनका दूसरा सिरा रहता है और वह दूरपर बैठा हुआ टेलीफोनसे ही तैराकको शिक्षा देता चलता है। इस आविष्कारसे अब तैराकको कुछ सीखनेके लिए बाहर निकलनेकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

## पानीके भीतर मछली-का शिकार

एक फ्रेञ्च विज्ञानवेत्ताने एक ऐसा आविष्कार किया है जिससे पानीके भीतर भी मछलियोंका शिकार किया जा सकता है। शिकारी एक कवच पहनकर जलमें डूबता है। कवचकी बनावट इस प्रकारकी है कि पानीके भीतर उसे सांस लेनेमें किसी प्रकारकी कठिनाई नहीं होती। यह कवच पहनकर शिकारी पानीके भीतर

एक ऐसी बन्दूक लेकर प्रवेश करता है जिससे स्टीलके पतले-पतले नुकीले तीर चलाये जा सकते हैं। ये तीर पतले हैं और छोड़ने पर इतनी तेजी और सिधाईसे जाकर वार करते हैं कि शिकारीका प्रयत्न व्यर्थ नहीं जा सकता। बन्दूक तथा उससे चलाये जानेवाले तीर बहुत ही हल्के होते हैं और जिस कवचको पहनकर शिकारी पानीके भीतर पठता है, उसमें आधे घण्टे तक मजेमें हवा ठहर सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## कभी न उलटनेवाली मोटर

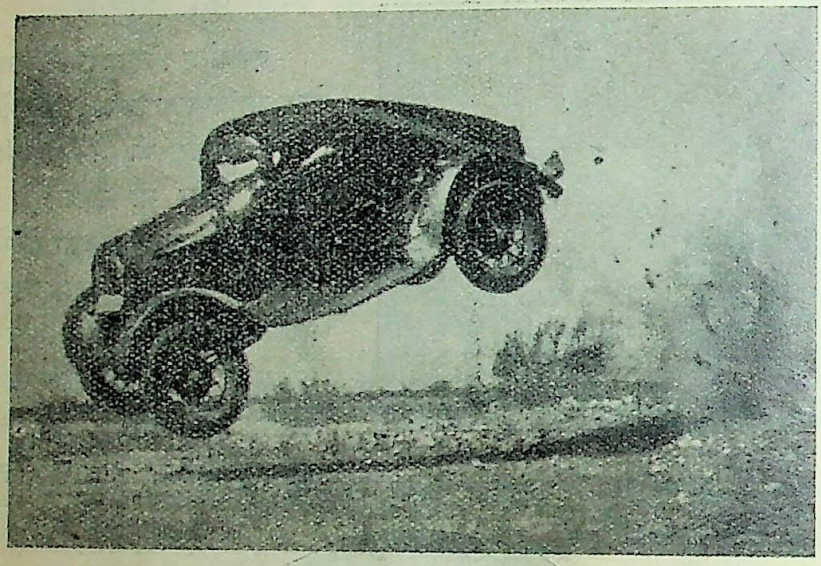

केलीफोर्नियाके डेविड हाल नामक एक व्यक्तिका कहना है कि उसने एक ऐसी मोटर तैयार की है जो ठोकर लगने, सङ्घर्ष हो जाने अथवा किसी भी अवस्थामें उलट नहीं सकती। टकरानेकी अवस्थामें मोटर ऊपर भले ही उछल जाय (जैसा कि चित्रमें दिखाया गया है) परन्तु वह उउट नहीं सकती; क्योंकि इसके कल-पुर्जे ऐसे ही बनाये गये हैं। ऐसी मोटरोंके प्रचारसे आशा की जाती है कि दुर्घटनायें बहुत कम हो जायंगी।

## वायुयान अपने-आप ही उड़ेंगे

फ्रान्सके चार विज्ञान-वेत्ताओंने अपनी इस घोषणासे लोगोंको आश्चर्यमें डाल दिया है कि उन लोगोंने एक ऐसा आविष्कार किया है जिसकी सहायतासे भविष्यमें बड़ेसे-बड़े वायुयान अपने-आप आकाशमें उड़ेंगे और उन्हें उड़ानेके लिए किसी चालक (pilot) की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस प्रकारके वायुयानोंकी गतिका नियन्त्रण रेडियो द्वारा होगा।

आविष्कारकोंका कहना है कि उन लोगोंने अपने आविष्कारका प्रयोग अनेक हवाई जहाजोंपर किया और इसकी सहायतासे कितने ही वायुयान कई बार उड़ाये गये, लेकिन कभी किसी प्रकारकी दुर्घटना नहीं हुई। इन लोगोंका कहना है कि वायुयानमें जहां चालक बैठता है, वहीं एक और मशीन बैठा दी जायगी और उसका सम्बन्ध रेडियोसे कर दिया जायगा। रेडियोका बटन दबाते ही, बटन दबानेवाले, दाहिने-बायें, ऊपर-नीचे, तेज या धीमी गतिसे चाहे जिस तरह, जिस ओर वायुयानको उड़ा सकते हैं। बटन दबाते ही जहाज ऊपर जाकर उड़ने लगेगा और जब चाहें तब, पुनः बटन दबाते ही वह नीचे ले आया जा सकेगा।

## घिसे हुए अक्षरोंको स्पष्ट करनेवाली मशीन

कभी-कभी कागजोंकी कुछ आवश्यक लिखावट घिसकर इतनी अस्पष्ट हो जाती है कि उसे पढ़कर उसका मतलब

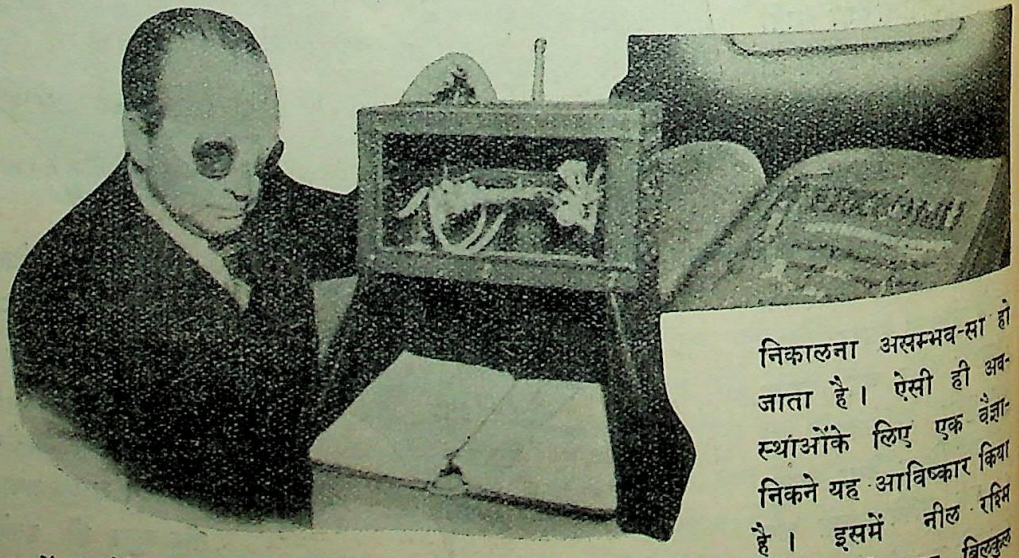

निकालना असम्भव-सा हो जाता है। ऐसी ही अवस्थाओंके लिए एक वैज्ञानिकने यह आविष्कार किया है। इसमें नील रश्मि (Ultra-violet cabinet) द्वारा लिखावट बिलकुल स्पष्ट हो जाती है; क्योंकि रश्मि पड़ते ही अक्षर अक्षर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चमक उठते हैं। प्रस्तुत चित्रमें मशीनमें दबी हुई एक अस्पष्ट पुस्तकके एक पृष्ठका प्रत्येक अक्षर (चित्रमें ऊपर) खूब स्पष्ट हो गया है।

## रोशनीकी परीक्षा

एक नव आविष्कृत यन्त्रसे अब कोई भी पता लगा ले सकता है कि उसके घर अथवा आफिसमें जितनी रोशनीका प्रबन्ध किया गया है, उतनी यथेष्ट है या नहीं। इस यन्त्र द्वारा पीले कागजपर एक स्लाइड खींच दिया जाता है और उसे ढाई मिनटतक रोशनीमें खुला छोड़ दिया जाता है। यदि उक्त

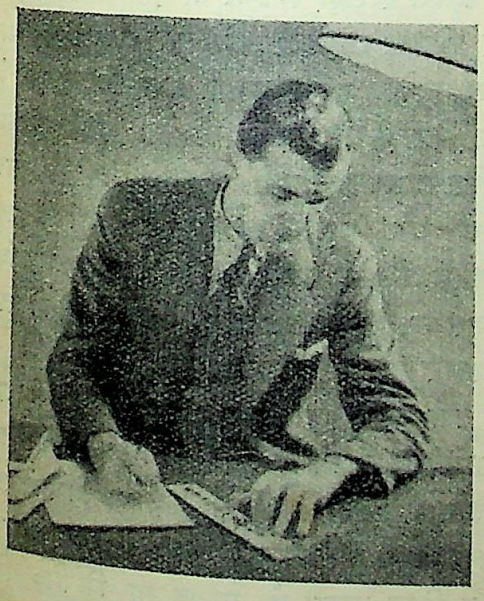

कागजका रङ्ग और भी गहरा हो जाय तो यह समझना चाहिए कि रोशनी ठीक है, अन्यथा खराब। चित्रमें स्लाइडपर पड़ी रोशनीके प्रभावका एक व्यक्ति निरीक्षण कर रहा है।

## मजदूरोंका रक्षक टोप

कोयलेकी खानोंके भीतर काम करनेवालोंको हमेशा जानकी जोखिम रहती है। परन्तु विज्ञान-वेत्ता आविष्कारकोंने अब एक ऐसे टोप ( Cool cap ) का आविष्कार किया है जिसे पहनकर काम करनेवाले मजदूर बहुत अंशोंमें निरापद रहेंगे। धातुके बने इस टोपके टूटनेका डर नहीं है। टोपमें बाहरसे नली द्वारा हवा पहुंचानेका बहुत सुन्दर प्रबन्ध किया गया है। धातुके इस उपयोगी टोपका वजन भी बहुत कम—सिर्फ ११ औंस है।

## पेटके भीतरी भागका फोटो

लगभग ५० वर्षोंके कठिन परिश्रम और प्रयोगसे विज्ञान-वेत्ता अब एक ऐसे केमरेका आविष्कार कर सके हैं जिसके द्वारा पेटके भीतरी भागका फोटो उतारा जा सकेगा। सोवियट रूसके दो विज्ञानवेत्ताओंने इस नये ढङ्गके केमरेका आविष्कार किया है। इससे पेटके भीतरके समस्त अङ्गोंका ठीक-ठीक फोटो तैयार हो जाता है और जिसका फोटो उतारा जाता है, उसे किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

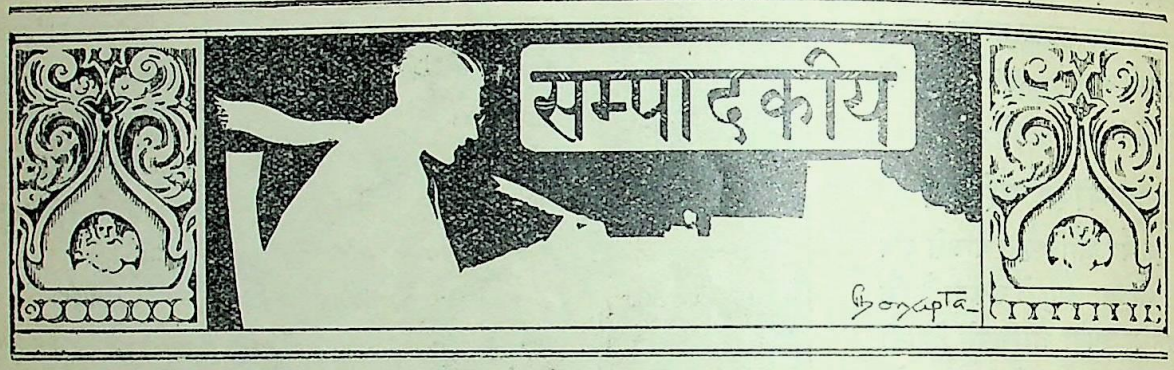


## परिषद्में सरकारकी पराजय

नवीन व्यवस्थापिका परिषद्में कई महत्त्वपूर्ण प्रस्तावोंके सम्बन्धमें सरकारी पक्षकी जो हार हुई है वह नैतिक दृष्टिसे उल्लेखनीय अवश्य कही जा सकती है। श्री शरत्चन्द्र बोसकी नजरबन्दी, सीमाप्रान्तके "खुदाई खिदमतगारों" परसे निषेधाज्ञाका वापस न लिया जाना, भारत-इंगलैण्ड वाणिज्य-समझौता, संयुक्त पार्लामेण्टरी कमेटीकी रिपोर्ट तथा रेलवे बजटके कई मदोंके खर्चकी मञ्जूरीके सम्बन्धमें गैरसरकारी पक्षकी विजय और सरकारकी पराजय हुई है। यह सच है कि इन पराजयोंसे सरकारके रुखमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और न वह व्यवस्थापिका परिषद्के निर्णयानुसार कार्य करनेके लिए अपनेको बाध्य ही समझती है। भारतके सिवा यदि और कोई देश होता तो वहांकी उत्तरदायी सरकारको इस प्रकार अपनी नीतिके विरुद्ध लोकमत व्यक्त किये जानेपर पदत्याग करनेके लिए विवश होना पड़ता। किन्तु भारत एक पराधीन देश है; यहांकी सरकार जनताके सामने अपनेको उत्तरदायी नहीं समझती; वह अपनेको जनताका सेवक नहीं, शासक समझती है। इसलिए व्यवस्थापिका परिषद्का निर्णय चाहे उसके विरुद्ध कितना ही स्पष्ट क्यों न हो वह करती है वही, जो उसे मञ्जूर होता है; अथवा यों कहिये कि जैसा करनेके लिए उसे भारतमन्त्री द्वारा आदेश मिलता है। भावी शासन-विधानमें भी सरकारकी यह निरंकुशता प्रत्यक्ष-रूपसे न सही, अप्रत्यक्ष-रूपसे कायम ही रहेगी। गवर्नर जेनरलके विशेष अधिकार और दायित्वके रूपमें संरक्षणोंकी व्यवस्था इसी उद्देश्यसे की गयी है। और जैसा कि राष्ट्रपति बा० राजेन्द्रप्रसादने कहा है—"एसेम्बलीके इन सब निर्णयों-पर सरकारकी जैसी कार्रवाई होगी उससे देशको इस बातका आभास मिल जायगा कि नवीन शासन-विधानमें संरक्षणोंका किस रूपमें उपयोग होगा।"

## रिपोर्टपर परिषद्का निर्णय

संयुक्त कमेटीकी रिपोर्टके सम्बन्धमें यद्यपि सरकारी पक्षकी करारी हार हुई है, फिर भी एसेम्बलीका निर्णय ऐसा नहीं है जिसपर राष्ट्रवादियोंको पूर्ण सन्तोष हो या उनके लिए गर्व करनेका कोई कारण हो। कांग्रेस दलके नेता श्री भूलाभाई देसाईने दो प्रस्ताव रखे थे। एकमें केवल सम्पूर्ण प्रस्तावित शासन-विधानको अस्वीकृत करनेकी बात कही गयी थी और दूसरेमें साम्प्रदायिक निर्णयके सम्बन्धमें एसेम्बलीके निरपेक्ष रहनेकी बात। अन्यान्य दलोंका सहयोग प्राप्त करनेके उद्देश्यसे ही श्री देसाईने अपने प्रस्तावको इस प्रकार दो भागोंमें रखा था ताकि मि० जिन्नाके दलको तथा अन्य मुसलमान सदस्योंको उनके प्रस्तावके पहले भागके सम्बन्धमें कांग्रेसदलका साथ देनेमें किसी प्रकारकी आपत्ति न हो। क्योंकि यदि साम्प्रदायिक निर्णयके सम्बन्धमें कांग्रेसकी तटस्थ नीतिका एक पृथक् प्रस्ताव द्वारा स्पष्टीकरण न किया जाता तो सम्भव था कि मि० जिन्नाका दल यह समझकर प्रस्तावके पक्षमें मत न देता कि सम्पूर्ण शासन-विधानके अग्राह्य कर देनेका अर्थ होगा उसके साथ साथ साम्प्रदायिक निर्णयको भी अस्वीकृत कर देना। किन्तु साम्प्रदायिअ निर्णयके सम्बन्धमें पृथक् प्रस्ताव लाये जानेपर भी मि० जिन्नाके दलने कांग्रेस-प्रस्तावका समर्थन नहीं किया; और समर्थन न करके यदि वह तटस्थ रह जाता तो यह भी गनीमत थी; किन्तु ऐसा न करके उसका विरोध करनेमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसने सरकारका साथ दिया जिसके फलस्वरूप श्रीयुत देसाईके दोनों प्रस्ताव अस्वीकृत हो गये। मि० जिन्नाके इस अद्‌भुत आचरणपर देशके राष्ट्रवादियोंमें क्षोभ एवं नैराश्यका होना सर्वथा स्वाभाविक है।

कांग्रेस दलके प्रस्तावमें शासन-विधानके सम्बन्धमें देशके समस्त राष्ट्रवादियोंके यथार्थ मतकी प्रतिध्वनि की गयी थी, किन्तु वह स्वीकृत न होकर एसेम्बली द्वारा मि० जिन्नाका जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है वह कांग्रेसके प्रस्तावसे सर्वथा भिन्न है और उसका उद्देश्य भी वह नहीं है जो कांग्रेसके प्रस्तावका था। मि० जिन्नाके प्रस्तावके तीन अंश थे और तीनोंपर पृथक्-पृथक् वोट लिये गये। सबसे पहले मि० जिन्नाने साम्प्रदायिक निर्णयको—जब तक इसके बदलेमें कोई दूसरा आपसी समझौता न हो जाय—स्वीकार करनेका प्रस्ताव रखा था। इससे यह स्पष्ट है कि मि० जिन्नाने साम्प्रदायिक मुसलमानोंको सन्तुष्ट करनेके लिए ही इस प्रस्तावको सबसे पहले रखा था और मुसलमानोंकी दृष्टिमें शासन-सुधारकी अपेक्षा साम्प्रदायिक निर्णयका ही महत्त्व अधिक है जिसे वे किसी प्रकार भी छोड़नेके लिए तैयार नहीं हैं। कांग्रेस दलने मि० जिन्नाके इस प्रस्तावके पक्ष या विपक्षमें वोट नहीं दिया, अतएव वह बहुमतसे पास हो गया। प्रस्तावके दूसरे अंशमें प्रान्तीय स्वायत्त-शासनको कतिपय आवश्यक संशोधनोंके साथ स्वीकृत करने और तीसरे अंशमें सङ्घ-शासन-विधानको अस्वीकृत करके उसके स्थानपर ब्रिटिश भारतके लिए पूर्ण उत्तरदायी शासन स्थापित करनेकी बात कही गयी थी। चूंकि कांग्रेस दलका अपना प्रस्ताव मि० जिन्नाकी कूटनीतिके कारण पास न हो सका, इसलिए परिस्थितिसे लाचार होकर उसे मि० जिन्नाके प्रस्तावके बाकी दो अंशोंके पक्षमें अपना मत देना पड़ा जिससे ७४ के विरुद्ध ९८ वोटोंसे वे स्वीकृत हो गये और सरकारी पक्षकी हार हुई।

यद्यपि सरकारकी ओरसे कानूनी सदस्य सर एन० एन० सरकारने यह स्पष्ट रूपमें कहा था कि जहां तक प्रस्तावित शासन-विधानका सम्बन्ध है, मि० जिन्नाके प्रस्ताव और कांग्रेस-दलके प्रस्तावमें कोई अन्तर नहीं है और मि० जिन्नाके प्रस्तावके स्वीकृत होनेका भी अर्थ है सम्पूर्ण शासन-विधानको अस्वीकृत कर देना; किन्तु कानूनी सदस्यकी यह व्याख्या ब्रिटिश सरकारके लिए कहां तक मान्य होगी, यह नहीं कहा जा सकता। यदि सरकार सचमुच इसे इसी रूपमें ग्रहण करे तो देशवासियोंको इससे सन्तोष और प्रसन्नता ही होगी। सरकारकी ओरसे इस बातके लिए कोई प्रयत्न उठा नहीं रखा गया कि उसके पक्षमें अधिक वोट आयें। ठीक ऐन मौकेपर, वोट-गणनासे पूर्व भारतमन्त्रीकी "औपनिवेशिक स्वराज्य"-सम्बन्धी घोषणा होम मेम्बर सर हेनरी क्रेकने पढ़ सुनायी। किन्तु यह सब करनेपर भी सरकारको मुंहकी खानी पड़ी और वह तब, जब कि उसने प्रान्तीय सरकारोंके आचरणके विरुद्ध प्रस्तावित शासन-विधान-सम्बन्धी प्रस्तावके मतामत-संग्रहमें भाग लिया। सरकारके पक्षमें जितने वोट आये उनमें प्रायः सबके सब सरकारी अफसरों और नामजद सदस्योंके वोट थे। यदि इन वोटोंको बाद दे दिया जाय तो यह स्पष्ट है कि समग्र भारत एकस्वरसे प्रस्तावित शासन-विधानके विरुद्ध है और वह उसे रद्दीकी टोकरीमें फेंक देने योग्य समझता है।

## ततः किम्?

एसेम्बलीमें जो कुछ हुआ है या हो रहा है, उसपर या कांग्रेस-दलके कृतित्वपर गर्वोल्लास करनेका हमें कोई कारण नहीं देख पड़ता है। इसलिए नहीं कि हम कांग्रेस-दलको किसी प्रकार दोषी या आदर्शभ्रष्ट समझते हैं, बल्कि इसलिए कि परिषद्‌में भी हमारी वही चिर अभ्यस्त जातीय फूट, कलह, दौर्बल्य एवं दासलभ मनोवृत्ति जाग्रत एवं प्रस्फुटित होकर कांग्रेसके आदर्शवादके सम्मुख अन्तराय उपस्थित कर रही है। परिषद्‌में प्रवेश करके शासन-विधानको रद्द कर देना, प्रतिनिधि-परिषद्‌की मांग पेश करना, इस तरहके वाक्याडम्बरका तब तक कोई अर्थ नहीं जब तक उसके पीछे कोई शक्ति Sanction न हो। जहां विभिन्न सम्प्रदायोंमें जातीय आदर्शको लेकर एकता नहीं, जहां एक-दूसरेको सन्देह एवं अविश्वासकी दृष्टिसे देखते हों, जहां राष्ट्रके स्वाभिमान, आत्मगौरव एवं मनुष्योचित अधिकारसे भी बढ़कर क्षुद्र साम्प्रदायिक स्वार्थोंको ही महत्त्व दिया जाय, वहां यदि कांग्रेस-दलको अपने उद्देश्यमें असफल होना पड़ा तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। परिस्थितिकी विवशताके कारण ही आज कांग्रेस-दलको इस प्रकार मि० जिन्नाकी कूटनीतिके षट्चक्रमें फंसना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## कांग्रेसका शक्तिशाली सङ्गठन

कौन्सिल-एसेम्बलीमें जिनका पहले विश्वास नहीं था उनके उस विश्वासकी एसेम्बलीकी कार्यवाहियोंसे और भी पुष्टि होगी। कारण, राष्ट्रकी शक्तिका केन्द्र कौन्सिल और एसेम्बली न होकर उसके बाहर है। इस शक्ति-केन्द्रको ही हमें उद्दीपित करना होगा जिससे सम्पूर्ण जातिमें शक्तिका सञ्चार हो, राष्ट्रीय भावना उद्बुद्ध हो और स्वातन्त्र्यकी दुर्निवार आकांक्षा उत्पन्न हो। जातीय जीवनके विकास और उसकी परिपुष्टिके प्रत्येक पथको आज जो नैराश्यान्धकार आच्छन्न किये हुए है उसे अपसारित करनेके लिए आदर्शवादी एकनिष्ठ राष्ट्रकर्मियोंको आशाकी दीप-शिखा हाथमें लेकर निर्भीक, किन्तु धीरवृत्त भावसे आगे बढ़ना होगा। प्रत्येक राष्ट्र-कर्मीको यह स्मरण रखना चाहिए कि हताश जातिको, अन्नहीन, वस्त्रहीन, शोषित एवं दलित कृषकों और श्रमजीवियोंको आशा एवं निर्भयताकी वाणी सुनानेका दायित्व उसीके ऊपर है। चिरकालीन पराधीनताके कारण जो जाति पारस्परिक ईर्षा-द्वेष एवं कलहके कारण शतधा-विभक्त हो रही है उसे एक राष्ट्रीय आदर्शवादकी गौरव-पताकाके नीचे एकत्र करनेका गुरुतर भार इन आदर्शवादी राष्ट्र-कर्मियोंके ऊपर ही है। इसके लिए अमित धैर्य एवं कर्मनिष्ठाकी आवश्यकता है। नूतन उत्साह, नूतन कर्मोद्यम, नूतन शक्ति एवं ज्वलन्त आदर्शवाद लेकर देशके राष्ट्रकर्मी जातीय शक्तिके केन्द्र—कांग्रेसको पुनर्गठित करें जिससे वह एक सजीव संस्था बन जाय, उसके द्वारा नवीन युगका, नवीन जातिका प्रादुर्भाव हो,—उस जातिका जो जातीय जीवनको कलमषहीन करनेमें, उसे आत्मस्थ बनानेमें सक्षम हो। स्वराज्य एवं स्वतन्त्रता प्राप्त करनेका यही मार्ग है। न्यान्यम् पन्थाः विद्यते।

## पार्लामेण्टमें इण्डिया बिल

सम्पूर्ण देशने एकस्वरसे प्रस्तावित शासन-विधानका विरोध किया; केन्द्रीय व्यवस्थापिका परिषद् और प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओंमें उसके विरुद्ध प्रस्ताव पास हुए; किन्तु फिर भी शासन-विधान-सम्बन्धी बिल पार्लामेण्टमें पेश होकर वादविवादकी स्थितिमें पहुंच चुका है। बिलके सम्बन्धमें सारी कार्रवाई इस ढङ्गसे हो रही है, मानो इस देशमें कुछ हुआ ही नहीं हो और जिन लोगोंका इस दिल द्वारा भाग्य-निर्णय होनेवाला है उनके निर्णयका कोई मूल्य ही नहीं हो। पार्लामेण्टमें वादविवाद होते हैं, संशोधन उपस्थित किये जाते हैं; किन्तु कोई इस बातका जिक्र तक नहीं करता कि इस विषयमें भारतवासियोंका भी कोई मतामत है और उस मतामतपर कुछ ध्यान देनेकी आवश्यकता है। इस प्रकार देशके स्पष्ट लोकमतको उपेक्षित एवं पददलित करके अपनी शक्ति एवं प्रभुताके बलपर हमारे शासक प्रस्तावित शासन-विधानको पार्लामेण्ट द्वारा पास करानेपर तुले हुए हैं। ३९ करोड़ मनुष्योंकी एक अत्यन्त प्राचीन सभ्य जातिके आत्मसम्मानको क्षुण्ण करनेके लिए इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है? किन्तु उपेक्षा, तिरस्कार और अपमानका कड़वा घूंट हमें इच्छा न रहते हुए भी पीना ही पड़ेगा, जब तक हमारी मांगोंके पीछे सङ्गठित राष्ट्रीय शक्तिका जोर न हो। आज हमारी मांगोंके पीछे कोई शक्ति नहीं है, हममें राष्ट्रीयताकी वह ज्वलन्त भावना उदित नहीं हुई है जो जातिके आत्म-सम्मानको अपने जातीय जीवनमें सबसे मूल्यवान वस्तु समझे। हमारे शासक हमारी मनोवृत्तिसे भली भांति परिचित हैं; वे यह जानते हैं कि मुंहसे हम शासन-विधानकी चाहे कितनी ही निन्दा करें; किन्तु हम उसका सर्वथा परित्याग नहीं कर सकते, यदि देशका एक दल उसका परित्याग करेगा तो दूसरा दल उसे सादर गले लगानेके लिए तैयार रहेगा। हमारे लम्बे-चौड़े वाक्य और आस्फालनके पीछे कोई तत्त्व नहीं, उनके अनुसार आचरण करनेकी हममें क्षमता नहीं, इसलिए वे अन्तःसार-शून्य हैं। तभी तो युक्तप्रान्तके भूतपूर्व लाट सर मालकम हेली, जो अभी हालमें अपने पदसे अवसर प्राप्त करके इंग्लैण्ड पहुंचे हैं, अपने देशवासियोंको आश्वासन देते हुए कहते हैं—"They must consider the eastern psychology. Every one knew they could not afford to take the Indian expressions of opinion at its face value. The real test was how the people intended to act after expressions of opinion. There was no sign that India intended to boycott the constitution. On the contrary there was every sign that they

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



intended to work it." अर्थात् "पूर्वी देशोंके लोगोंके मनोभावपर हमें अवश्य विचार करना चाहिए। भारतीय जिस रूपमें अपना मत व्यक्त करते हैं उस रूपमें उसे ग्रहण नहीं किया जा सकता। असल बात तो यह है कि अपनी राय जाहिर करनेके बाद ये लोग किस प्रकार आचरण करना चाहते हैं। जब तक मैं भारतमें था, प्रस्तावित शासन-विधानके बहिष्कार करनेका कोई लक्षण नहीं देख पड़ता था। इसके विपरीत उसे कार्यान्वित करनेकी इच्छा दीख पड़ती थी।" भारतीयोंके सम्बन्धमें ठीक इसी प्रकारका अवज्ञा-सूचक भाव बङ्गाल प्रान्तके भूतपूर्व गवर्नर लार्ड जेटलैण्ड (अर्ल आव रोनाल्डशे) ने भी प्रकट किया है। रायल एम्पायर सोसाइटीकी सभामें भाषण करते हुए आपने कहा है:—"When the Indian politician says that he would prefer to continue under the present constitution rather than accept the proposed constitution, I simply don't believe him. No one indeed would be more taken aback than the Indian nationalist himself if he were to be taken at his word. अर्थात् जब भारतीय राजनीतिज्ञ यह कहते हैं कि वे प्रस्तावित शासन-विधानकी अपेक्षा मौजूदा शासन-विधानको ही पसन्द करेंगे तो मैं उनपर विश्वास नहीं करता। भारतके राष्ट्रवादी जैसा कहते हैं उसे उसी रूपमें यदि ग्रहण किया जाय, तो इससे खुद उन्हींको जितना आश्चर्य होगा उतना और किसीको नहीं।" देखा पाठक आपने? भारतीय लोकमतके सम्बन्धमें, भारतके राष्ट्रवादी नेताओंके सम्बन्धमें जहां इस प्रकारका तिरस्कार-सूचक भाव हो वहां यदि भारतीय लोकमतको तुच्छ एवं नगण्य समझकर ब्रिटिश सरकार अपनी इच्छानुसार बिलको पास करा लेनेके लिए कृतसङ्कल्प हो, तो इसमें आश्चर्य करनेकी कोई बात नहीं है। क्योंकि लण्डनके 'टाइम्स' पत्रके कथनानुसार हमें जो कुछ प्रभुओंसे दानस्वरूप मिल रहा है उसे कृतज्ञतापूर्वक ग्रहण कर लेना चाहिए। यह शासन-सुधार क्या है, भारतीयोंके लिए दानका घोड़ा Gift horse है। और दानके घोड़ेका भी कहीं दांत देखा जाता है! पार्लमेण्टमें जिस रूपमें बिलका द्वितीय वाचन समाप्त हुआ है उससे यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि ब्रिटिश सरकार पार्लमेण्टमें चर्चिल दल और मजदूर दलके विरोध करनेपर भी बिलको ज्योंके त्यों रूपमें सुगमता-पूर्वक पास करा लेगी और उसमें भारतीय लोकमतको सन्तुष्ट करनेके लिए अणु-मात्र भी परिवर्तन नहीं किया जायगा।

## 'औपनिवेशिक स्वराज्य' की घोषणा

शासन-विधान बिलके द्वितीय वाचनके अवसरपर भारत-मन्त्री सर सेमुयल होरने एक बार फिर इस बातको दुहराया है कि सन् १९१७ में भारतके अन्तिम लक्ष्य औपनिवेशिक स्वराज्य Dominion Status के सम्बन्धमें जो घोषणा की गयी थी और इसी लक्ष्यकी पुनरावृत्ति भारतके भूतपूर्व वायसराय लार्ड इरविनने जिस रूपमें की थी उसपर ब्रिटिश सरकार अब तक कायम है। भारतमन्त्रीने शायद इस देशके रुष्ट माडरेट नेताओंको सन्तुष्ट करनेके उद्देश्यसे ही अपने श्रीमुखसे भारतके इस अन्तिम लक्ष्यके सम्बन्धमें यह घोषणा की है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि माडरेट नेता आपकी इस घोषणासे ही सन्तुष्ट नहीं हो सकते। वे शासन-विधान बिलके मुखबन्धमें इसका समावेश चाहते हैं। सर होरकी इस घोषणाके साथ ही साथ विलायतके अटर्नी जेनरल सर टाम्स इन्सकेपने उसका जिस रूपमें भाष्य किया है और मि० बाल्डविनने उसपर जो टीका-टिप्पणी की है उससे यह स्पष्ट है कि भारतके लिए "औपनिवेशिक स्वराज्य" का अन्तिम लक्ष्य चिरकाल तक अन्तिम और सुदूर पराहत ही बना रहेगा। इस प्रकारकी घोषणाओंका यथार्थ मूल्य क्या है, इस सम्बन्धमें उक्त अटर्नी महोदयने कहा है:—"Whether you put it in a preamble or only into a statement of the government, both are binding only as long as any government does not change its mind. अर्थात् "औपनिवेशिक स्वराज्य" शब्द चाहे बिलके मुखबन्धमें जोड़ा जाय अथवा उसकी घोषणा की जाय, उसकी पाबन्दी तभी तक हो सकती है जब तक कोई सरकार अपना मत परिवर्तन न करे।" स्थिति बिलकुल स्पष्ट है। किसी घोषणाको ग्रहण करना या न करना विलायती पार्लमेण्टकी मर्जीपर निर्भर करता है; क्योंकि भारतकी वही भाग्य-विधाता है। उक्त घोषणाके सम्बन्धमें एक बात और मार्केकी है पार्लमेण्टके एक सदस्यने जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सर टाम्स इन्सकेपसे यह प्रश्न किया कि औपनिवेशिक स्वराज्यके साथ क्या साम्राज्यसे सम्बन्ध-विच्छेदका अधिकार भी अभिप्रेत है, तो आपने कहा—"All our pledges to India are pledges relating to the future development of India within the Empire..... These pledges do not include any promise of a status outside the British Empire. अर्थात् भारतके सम्बन्धमें जो सब प्रतिज्ञायें की गयी हैं उनका सम्बन्ध है साम्राज्यान्तर्गत भारतकी भावी उन्नतिसे। साम्राज्यसे बाहरकी स्थितिके सम्बन्धमें इसमें कोई प्रतिज्ञा नहीं है।"

## रेलवे बजट

सन् १९३५-३६ का रेलवे बजट पेश करते हुए वाणिज्य-सदस्य सर जोसेफ भोरने व्यवस्थापिका परिषद्में जो भाषण दिया है उसमें यह आशा प्रकट की गयी है कि रेलवेके लिए घाटेका युग अब बीत चला और अब वह दृढ़तापूर्वक उन्नतिकी ओर अग्रसर हो रही है। सन् १९३४-३५ में जितना घाटा होनेका अनुमान किया गया था उससे एक करोड़ कम अर्थात् ४। करोड़ घाटा हुआ है। गत वर्ष अर्थात् १९३३-३४ में ८ करोड़ और इससे एक वर्ष पूर्व १० करोड़से कुछ अधिक घाटा हुआ था। सन् १९३५-३६ में १ करोड़ ९० लाख घाटा होनेका अनुमान किया गया है। यह घाटा उन रेलवे लाइनोंके कारण होगा जो सिर्फ सामरिक उद्देश्यसे भारतके सीमान्तपर बैठायी गयी हैं। माल और मुसाफिर ढोनेवाली रेलवेमें आगामी वर्षमें खर्चसे ७ लाख अधिक आमदनी होनेका अनुमान किया गया है। वर्तमान वर्षमें रेलवेकी आमदनीमें जो उन्नति हुई है उसका एकमात्र कारण माल-गाड़ियोंकी आमदनीमें वृद्धि है। मुसाफिर-गाड़ियोंकी आमदनीमें तो ह्रास ही हो रहा है। सैनिक दृष्टिसे जो रेलवे लाइनें Strategic Railway lines बनायी गयी हैं उन्हें सेना-विभागके खर्चमें शामिल करनेके लिए शुरूसे ही भारतीय प्रतिनिधि जोर देते आ रहे हैं, किन्तु अभी तक इस ओर ध्यान ही नहीं दिया गया है। मुसाफिर-गाड़ियोंकी आमदनीमें कमी होनेपर भी सरकार तीसरे दर्जेके मुसाफिरों-के रेलभाड़ेमें कमी करनेके लिए तैयार नहीं है।

सन् १९२४-२५ में रेलवे विभागका बजट भारत-सरकार-के साधारण बजटसे पृथक् किया गया। उस समय यह भी शर्त रखी गयी थी कि रेलवे विभाग प्रतिवर्ष भारत-सरकारके राजस्वमें एक निश्चित रकम दिया करेगा। इसके अनुसार प्रथम ६ वर्षोंमें तो रेलवे विभागने ६ करोड़ सालानाके हिसाबसे सरकारके राजस्वमें दिया। किन्तु इसके बाद १९३१-३२ से यह देना बन्द हो गया; क्योंकि तबसे अब तक बराबर रेलवे विभागको घाटा ही होता आ रहा है।

क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं है कि व्यापारिक ढङ्गपर चलाये जानेवाले रेलवे विभागके कारबारमें इतनी भी आमदनी न हो कि जिससे कमसे कम उसका खर्च तो पूरा हो जाय? किन्तु हो कैसे? रेलवे विभागमें भी तो अन्यान्य सरकारी विभागोंकी तरह ही समस्त उच्च पदोंपर मोटी तनख्वाह पानेवाले विदेशी कर्मचारी नियुक्त हैं। दूसरी बात यह है कि रेलवे विभागके सामान देशमें तैयार करनेका प्रबन्ध न करके इंगलैण्डसे ही अधिक मूल्यपर मंगाये जाते हैं। ऐसी स्थितिमें रेलवे विभागमें लगातार वर्षों तक घाटा होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

व्यवस्थापिका परिषद्में जब-जब रेलवे विभागके बजटपर बहस होती है, गैर-सरकारी प्रतिनिधि रेलवेके कुप्रबन्ध, तीसरे दर्जेके मुसाफिरोंकी दुर्गति तथा रेलवे नौकरियोंके भारतीयकरणके सम्बन्धमें सरकारका ध्यान आकर्षित करते हैं। किन्तु हर साल सुधारके लिए वादा करनेके सिवा सरकार करती कुछ भी नहीं है। इस सम्बन्धमें सर जोसेफ भोरने साफ-साफ यह स्वीकार किया है कि अब तक भारतीय रेलवेकी शासन-नीति भारतमन्त्रीके आदेशानुसार परिचालित होती आ रही है। इस बार भी श्रीयुत भूलाभाई देसाईने रेलवेके प्रबन्धके सम्बन्धमें, श्री गोविन्दवल्लभ पन्तने रेलवेकी आर्थिक नीतिके सम्बन्धमें, मौलाना शफी दाऊदीने तीसरे दर्जेके मुसाफिरोंके सम्बन्धमें और श्रीयुत अणेने भारतीयकरणके सम्बन्धमें बजटके खर्चकी मांगोंके विरुद्ध जो संशोधन उपस्थित किये थे वे अत्यन्त बहुमतसे पास हो गये। चूंकि गवर्नर जेनरलको अपने विशेष अधिकारके प्रयोगसे इन मदोंके खर्चको मञ्जूर कर देनेकी क्षमता है, इसलिए सरकार अपने विरुद्ध व्यक्त किये जानेवाले लोकमतकी परवाह थोड़े ही करती है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक बात और है। अभी तो व्यवस्थापिका परिषद्को कमसे कम इतना अधिकार है कि वह रेलवे विभागके प्रबन्ध, आर्थिक नीति आदिके सम्बन्धमें आलोचना कर सकती है; किन्तु भावी शासन-विधानमें तो यह भी अधिकार नहीं रह जायगा। इसी उद्देश्यसे शासन-विधान बिलमें ही एकाएक Statutory Railway Board का गठन किये जानेकी एक धारा जोड़ दी गयी है जिससे रेलवे विभागकी नीतिके सम्बन्धमें किसी प्रकारका मतामत व्यक्त करनेका अधिकार एसेम्बलीको नहीं रह जायगा। यहां तक कि भाड़ा आदिके सम्बन्धमें भी गवर्नर जेनरलकी मञ्जूरीके बिना कोई प्रस्ताव पेश नहीं किया जा सकेगा।

## रिजर्व बैङ्क

रिजर्व बैङ्कके केन्द्रीय बोर्डकी दूसरी बैठक गत २३ फरवरीको दिल्लीमें हुई। इस बैठकमें रिजर्व बैङ्कके शेयरोंकी बिक्री तथा प्रास्पेक्टस आदि महत्त्वपूर्ण विषयोंके सम्बन्धमें अन्तिम निर्णय किया गया है। यह आशा की जाती है कि शीघ्र ही शेयरोंकी खरीदारीके लिए आवेदन-पत्र मांगे जायंगे। भारतकी आर्थिक स्वाधीनतामें रिजर्व बैङ्कका बहुत बड़ा कृतित्व होगा, अतएव देशवासियोंका यह कर्तव्य है कि वे बैङ्कके अधिकसे अधिक शेयर खरीदें, ताकि वोटका अधिकार मुट्ठी-भर कायमी हकवाले किसी दल या गुटके हाथोंमें न चला जाय। कुल ५ करोड़के शेयर बिकेंगे जिनमें बम्बई रजिस्टरमें १४० लाख, कलकत्ता रजिस्टरमें १४५ लाख, दिल्ली रजिस्टरमें ११५ लाख, मद्रास रजिस्टरमें ७० लाख और रंगून रजिस्टरमें ३० लाखके शेयर निर्धारित किये गये हैं। प्रत्येक शेयर १०० रु० का होगा और एक व्यक्ति कमसे कम पांच शेयर खरीदनेपर ही वोट देनेका अधिकारी हो सकेगा। शेयरकी पूरी रकम एक साथ चुका देनी होगी। पांच शेयरोंके लिए एक लाख आवेदन-पत्र आनेपर ही वोटोंका बंटवारा ठीक तरहसे हो सकेगा। ३५ करोड़ देशवासियोंमें क्या एक लाख आदमी भी ऐसे नहीं होंगे जो बैङ्कके पांच-पांच शेयर खरीद सकें?

## साम्प्रदायिक निर्णय-विरोधी सम्मेलन

दिल्लीमें होनेवाले साम्प्रदायिक निर्णय-विरोधी सम्मेलनके सभापति श्रीयुत सी० वाई० चिन्तामणिने अपने भाषणमें साम्प्रदायिक निर्णयके अनौचित्यके सम्बन्धमें जो युक्तियां उपस्थित की हैं उनसे किसीको इनकार नहीं हो सकता। साम्प्रदायिकता एवं राष्ट्रीयता दोनों साथ-साथ नहीं चल सकतीं और साम्प्रदायिकताके आधारपर किसी प्रजासत्तात्मक राष्ट्रीय शासनकी प्रतिष्ठा नहीं हो सकती, यह भी एक निश्चित तथ्य है। किन्तु जब तक देशके विभिन्न सम्प्रदायोंमें राष्ट्रीय चैतन्यका विकास न हो और परस्पर सन्देह एवं अविश्वासकी भावना बनी हो तब तक आपसके समझौतेके सिवा और दूसरा मार्ग ही क्या हो सकता है। श्रीयुत चिन्तामणिने अपना यह विश्वास प्रकट किया है कि हिन्दू सम्प्रदायको साम्प्रदायिक समस्याकी मीमांसाका दायित्व स्वीकार करनेसे इनकार कर देना चाहिए जब तक कि इस विषयमें तीसरे दलका प्रभुत्व बना हुआ है। किन्तु प्रश्न तो यह है कि इस सम्बन्धमें इस तीसरे दलके प्रभुत्वको पराहत करनेके लिए पारस्परिक समझौतेके सिवा और कौन-सा उपाय काममें लाया जा सकता है। केवल साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध जोरदार आन्दोलन करनेसे तो विभिन्न सम्प्रदायोंके बीच और भी वैमनस्य बढ़ेगा और इससे तीसरे दलकी शक्ति पुष्ट होगी।

## भारत-इंगलैण्ड-वाणिज्य-समझौता

भारत-इंगलैण्ड-वाणिज्य-समझौता व्यवस्थापिका परिषद्में अस्वीकृत हो गया। किन्तु सरकारकी ओरसे यह साफ-साफ कह दिया गया कि वह परिषद्के इस निर्णयको माननेके लिए तैयार नहीं है। इसका कारण पूछनेपर सरकारी सदस्यने बताया कि सरकार इस समझौतेको भारतके सर्वोत्तम स्वार्थके अनुकूल समझती है। इसका अर्थ यह हुआ कि जनताके प्रतिनिधियों तथा व्यापारियोंको अपने हिताहितका जितना ज्ञान है उससे कहीं बढ़कर हमारे शासकोंको—खासकर ६ हजार मीलपर रहनेवाले शासकोंको है। इंगलैण्डके साथ व्यापारिक समझौता करनेमें जो अमित लाभ है उसे वे अपनी अज्ञानताके कारण नहीं समझते। इसलिए हमारे शासक उनके स्वार्थोंके ठेकेदार बनकर उनके गले जबर्दस्ती यह समझौता बांध देना चाहते हैं। एसेम्बलीने अगर इसके विरुद्ध निर्णय किया तो क्या हुआ! सरकार उसके निर्णयको माननेके लिए बाध्य थोड़े ही है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## सङ्घ-शासन और देशी नरेश

भारतीय शासन-सुधारके सम्बन्धमें संयुक्त कमेटीकी रिपोर्ट प्रकाशित होनेपर देशी नरेशोंकी ओरसे कहा गया था कि जब तक प्रस्तावित शासन-सुधार बिलके रूपमें पार्लामेण्टमें पेश नहीं होता तब तक वे सङ्घ-शासनमें सम्मिलित होनेके सम्बन्धमें अपना कोई मतामत स्थिर नहीं कर सकते। अब चूंकि इण्डिया बिल पार्लामेण्टमें पेश हो चुका है, इसलिए उसकी धाराओंपर विचार करनेके लिए देशी राज्योंके मन्त्रियोंकी एक कमेटीकी बैठक दिल्लीमें हुई थी। इस कमेटीकी रिपोर्टपर बम्बईमें देशी नरेशोंके एक सम्मेलनमें विचार किया गया और यह निश्चय हुआ कि कमेटीकी रिपोर्टमें सुझाये गये संशोधनोंके अनुसार शासन-विधान बिलमें जब तक संशोधन और परिवर्तन नहीं होते, वे सङ्घ-शासनमें सम्मिलित होनेके लिए तैयार नहीं हो सकते। देशी नरेशोंके इस निर्णयसे विलायतमें तहलका-सा मच गया है। किन्तु देशी नरेशोंको सम्मिलित किये बिना सङ्घ-शासनका ढकोसला कायम नहीं रह सकता, इसलिए उन्हें मनाने और राजी करनेके लिए कोई-न-कोई व्यवस्था अवश्य की जायगी। भारतमन्त्री सर होर साहबको यह विश्वास है कि देशी नरेशोंके साथ जो मतभेद हैं वे ऐसे नहीं हैं कि दूर न किये जा सकें। देशी नरेशोंका यह निश्चय चाहे जिस कारणसे हो, किन्तु ब्रिटिश भारतके निवासी तो इसे अपना सौभाग्य ही समझेंगे यदि देशी नरेश अन्त तक अपने इस निश्चयपर अटल रहें जिससे भारतीयोंके गले सङ्घ-शासनकी यह चक्की जबर्दस्ती न बांधी जाय।

## राष्ट्रीय सरकार डांवाडोल

इंगलैण्डकी वर्तमान राष्ट्रीय सरकारकी स्थिति इस समय डांवाडोल हो रही है। बात यह है कि बेकार लोगोंकी सहायताके लिए वर्षमें ५० लाख पौण्ड खर्च करनेके सम्बन्धमें सरकारकी ओरसे एक बिल पार्लामेण्टमें पेश किया गया है; किन्तु सरकारकी इस व्यवस्थासे जनता सन्तुष्ट नहीं है। उस दिन पार्लामेण्टमें जब इस बिलपर वादविवाद आरम्भ हुआ तो मजदूर दलके एक सदस्य मि० बुकाननने प्रधान मन्त्री मि० मेकडानल्डको 'भण्ड', 'सूअर', 'चाबुक मारकर निकाल देने लायक' इत्यादि विशेषणोंसे सम्बोधित किया। खैर हुई कि उस समय मि० मेकडानल्ड साहब उपस्थित नहीं थे। विरोधी दलके नेता मि० लैन्सबरीने सरकारके विरुद्ध एक भर्त्सनामूलक प्रस्ताव उपस्थित किया था, किन्तु वह पास न हो सका। परन्तु इससे यह न समझना चाहिए कि राष्ट्रीय सरकारपरसे सङ्कट टल गया और स्वदलत्यागी मि० मेकडानल्डकी दुश्चिन्ता दूर हो गयी। किसी समयके साम्यवादी नेता मि० मेकडानल्ड आज कञ्जर्वेटिव मन्त्रिमण्डलके प्रधान बनकर दीन बेकार जनताको क्रान्तिके बदले क्रम-विकास Evolution का उपदेश दे रहे हैं। मि० मेकडानल्ड अनुदार दलके सदस्योंके बलपर आज भले ही अपनी स्थितिको सुरक्षित समझें; किन्तु उनके विरुद्ध इंगलैण्डका लोकमत जिस प्रकार गठित हो रहा है उससे उनका पतन अवश्यम्भावी प्रतीत होता है।

## इटली और अबसीनिया

गत महासमरके परिणाम-स्वरूप लूटके मालका जो बंटवारा हुआ था उसमें इटलीकी साम्राज्य-विस्तार-आकांक्षा तृप्त नहीं हुई। इसलिए पूर्व अफ्रिकामें इटलीका जो साम्राज्य है उसे विस्तृत करनेके लिए स्वभावतः ही मुसोलिनीकी दृष्टि स्वतन्त्र क्षुद्र राष्ट्र अबसीनियापर गड़ी हुई है। अबसीनिया अश्वेताङ्ग जाति द्वारा शासित एक स्वाधीन राष्ट्र है। आधुनिक रणसज्जा तथा सामरिक शक्तिमें वह इटलीके मुकाबलेमें बहुत ही तुच्छ है। सीमान्त सम्बन्धी झगड़ेका बहाना करके इटली इस क्षुद्र राष्ट्रको हड़प जाने या उसके ऊपर अपना प्रभुत्व स्थापित करनेकी दुर्निवार आकांक्षा बहुत दिनोंसे धारण किये हुए है। अबसीनियाके सामने जो तीन शर्तें रखी गयी हैं उनमें कहा गया है कि अबसीनियाको खुले सिर इटलीके झण्डेका अभिवादन करना होगा, १ करोड़ ३० लाख रुपया इटलीको नजरानेके रूपमें देना होगा, क्षमा-प्रार्थना करनी होगी और इटली द्वारा निर्दिष्ट सीमान्तको मान लेना होगा। इन शर्तोंके साथ-साथ यह भी समाचार मिला है कि तुमुल जयध्वनि तथा रणगीत और वाद्यके बीच ४ हजार इटालियन फौज पूर्व अफ्रिकाके लिए रवाना हो चुकी है। इसे युद्ध कहें या एक प्रबल राष्ट्र द्वारा दुर्बल राष्ट्रको हड़पनेकी नीति? देखें, राष्ट्र-सङ्घ इस मामलेमें हस्तक्षेप करके कोई न्यायोचित निर्णय करता है अथवा चीन-जापानके मामलेकी तरह ही अपनी नपुंसकता प्रकट करके रह जाता है।

---

'विश्वमित्र' प्रेस, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तासे पं० मातासेवक पाठक द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ उच्चकोटिकी संग्रहणीय पुस्तकें

## ❀ शङ्कराचार्य ❀

भारत, वैदिक-धर्मको तिलाञ्जलि देकर नास्तिकतावादके गहरे गर्तमें गिरने जा रहा था, राजा-प्रजा, सत्य-सनातन वैदिक धर्मके शत्रु हो रहे थे, उस समय यदि शङ्कराचार्य न होते तो, वैदिक-धर्मका नाम तक न रह जाता। इस पुस्तक में शङ्कर-स्वामीके कार्यकलापोंका जन्मसे लेकर अंत समाधि तकका विशद वर्णन है। शङ्करके ब्रह्मचर्य, संसार-त्याग, दिग्विजय, शास्त्रार्थों आदिका विस्तृत वर्णन है और उनके धर्ममतका पूर्णरूपसे निरूपण किया गया है। इसे शङ्कर-दिग्विजयका हिन्दी संस्करण समझिये। अनेक चित्र। मूल्य १॥)

## ❀ श्रीकृष्ण ❀

यह पुस्तक, वसुदेव-देवकीके प्यारे पुत्र, गोकुलके गोपसखा, गोरक्षक-गोपाल, व्रजके प्राण, कंस, जरासन्ध, कालयवन, शिशुपाल आदिके काल, द्वारिकाके विधाता, पाण्डवोंके परित्राता, राजा-प्रजाके गुरु, शत्रुओंके पूज्य, धर्मके उपदेष्टा नीतिवेत्ता, धर्म-भ्रष्ट क्षत्रिय-कुलोंके संहारक, धर्म-राज्य-संस्थापक, दीन-दरिद्रोंके बन्धु, आदर्श, मृत्युञ्जय, गीताके रचयिता, श्रीकृष्णका चरित्र है। ऐसा अच्छा सर्वाङ्ग सुन्दर, सर्वसुलभ और सम्पूर्ण सचित्र श्रीकृष्ण-चरित आजतक प्रकाशित नहीं हुआ। ३० चित्र हैं। मू० १॥) मात्र

## ❀ शिवाजी ❀

हिन्दू-कुल-सूर्य, गौरव-रवि, छत्रपति शिवाजी के समान निकट पूर्वमें कोई भी वैसा वीर, दृढ़-प्रतिज्ञ, हिन्दू-साम्राज्य संस्थापक, प्रचण्ड राज-नीतिज्ञ-वीर हिन्दू नहीं हुआ, जिसने हिन्दू-जातिकी डूबती हुई नैयाको पार लगाया हो। यदि शिवाजीके उत्तराधिकारी भी कहीं वैसे ही खरे सोनेके समान निकल आते, तो आज भारत का नक्शा ही बदला हुआ दृष्टिगोचर होता। इसमें शिवाजीके जीवनकी समस्त घटनाएं बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें लिखी गयी हैं। बीसके लगभग रङ्गीन चित्र हैं। मूल्य १॥) मात्र।

## भीष्म

अपूर्व आत्मत्यागी, महावीर, आदित्य ब्रह्मचारी, भगवती गंगाके गर्भजात—महाराज शान्तनुके पुत्र, कौरव पाण्डवोंके भीष्म पितामहका नाम सदा संसारमें अमर रहेगा। भीष्मने जो भीषण भीष्म-प्रतिज्ञा की थी, अन्त तक उन्होंने उसका पालन किया। अपने समयके वे अद्वितीय धर्मनिष्ठ, समाज-रक्षक, राजनीतिके नियन्त्रणकारी वीर थे। बालकोंके लिये भीष्मसे बढ़ कर और कोई आदर्श नहीं हो सकता। अनेक रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित। हजारों प्रतियां हाथोहाथ बिक चुकी हैं। मूल्य ॥=) मात्र।

मिलनेका पता:—**पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी**, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्री, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGD. NO. C. 877


श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत

सचित्र

# रामायण

सटीक, १४०० पृष्ठ, सादे व बहुरंगे चित्र, तथा कपड़ेकी पक्की जिल्द

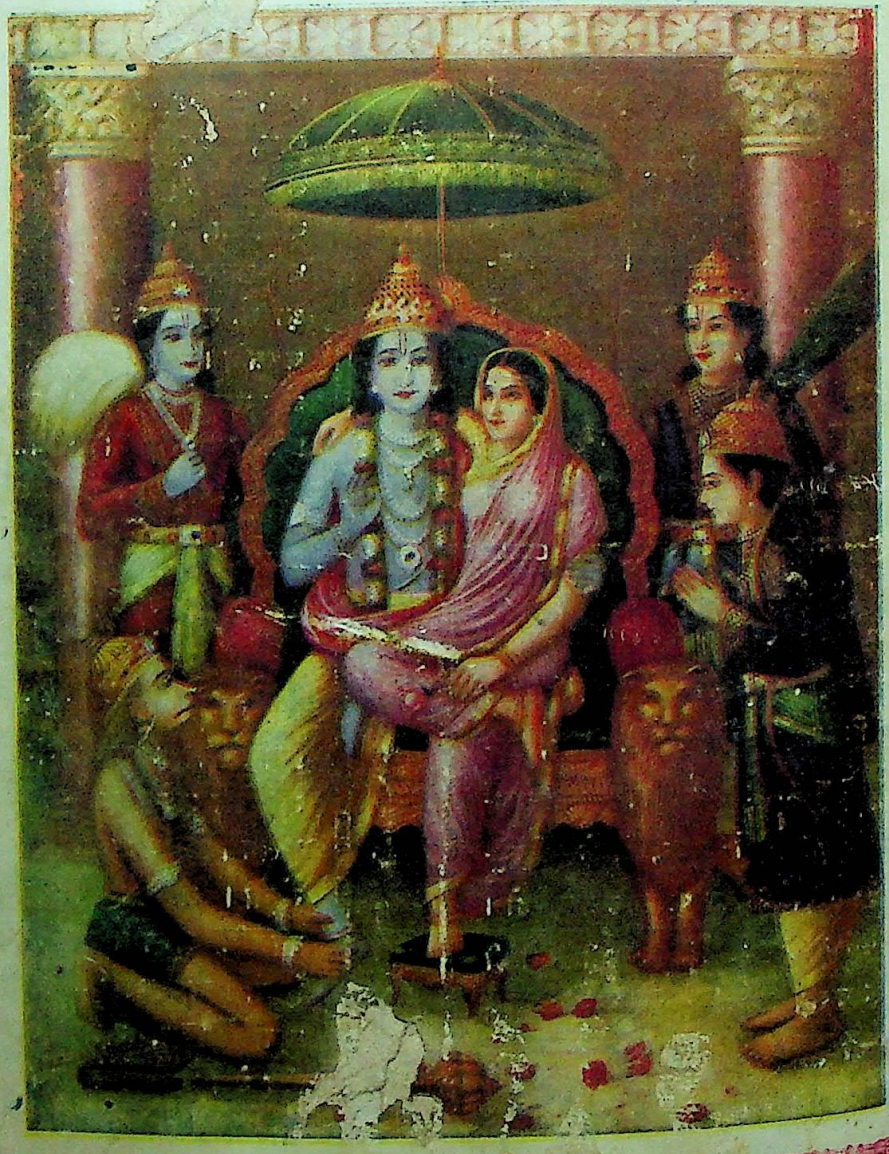

(मूल्य रुपैया २)

काशी और बम्बईकी रामायणोंसे अधिक शुद्ध और सुन्दर है।

इतना होनेपर भी सस्ती है, इस धर्मग्रन्थकी एक प्रति मंगाकर अवश्य रखिये।

**मैनेजर—विश्वमित्र कार्यालय,**

१४।१ ए, शम्भु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




र चि टो न

र चि टो न

सुइज़रलैण्डमें प्रस्तुत

**क्षीण जीवनी शक्तिमें, खूनकी कमीमें, बच्चा होनेके बाद, मैलेरिया तथा अन्यान्य बीमारियोंके बाद, धातुक्षीणता आदिमें 'रचिटोन' से बढ़कर और कोई टानिक नहीं।**

**क्षासव**

सुधा शक्ति स्फूर्ति और रक्त स्वादिष्ट। कीमत छोटी बोतल रुपया।

**बालसुधा**

दुबले और कमजोर बच्चोंको मोटा ताजा और ताकतवर बनानेकी मीठी दवा। कीमत ।।।)

**शोकारिष्ट**

दर रोगकी दवा। एक पौंड तलका मूल्य १।।) डा०ख० १।)

**सुधासिंधु**

कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, कै, दस्त आदि रोगोंकी बिना अनुपानकी घरेलू दवा। कीमत ।।) आना।

**सब जगह दवा बेचने वालोंके पास मिलती हैं।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बाच्चा होनेके बाद-

जच्चाकी तन्दुरुस्ती ज्योंकी त्यों बनाये रखनेके लिये रचिटोन ही एकमात्र निरापद और भरोसा करने लायक टॉनिक है।

# रचिटोन

रचिटोन भूख बढ़ाता है और क्षय हुए रक्तको तेजीसे पूरा करके शरीरमें नया बल तथा जीवनीशक्ति उद्दीपित करता है। रचिटोन सेवन करनेसे जच्चाके दूध बढ़ता है।

रचिटोन सिर्फ फायदा ही करता है, नुकसान कभी नहीं करता।

रचिटोन बहुत ही गाढ़ा टॉनिक होनेके कारण कम मात्रामें सेवन करनेपर भी अच्छा फायदा पहुँचाता है।

सब दवाखानोंमें मिलता है।

- मुइजरलैण्डमें बनी हुई -
बहुत ही थोड़े समयमें इसने योरोप और अमेरिकामें काफी सफलता पाई है


I. 25


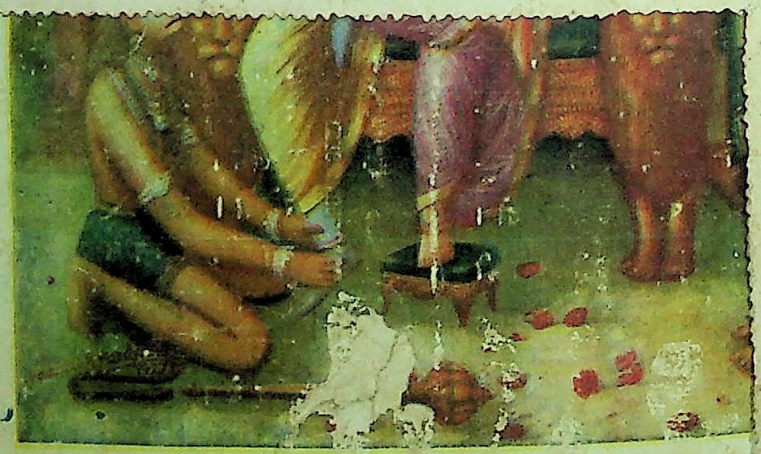

(मूल्य ग्लेजका ३)

काशी और बम्बईकी रामायणोंसे अधिक शुद्ध और

इतना होनेपर भी सस्ती है, इस धर्मग्रन्थकी एक प्रति मंगाकर अव

## मैनेजर—विश्वमित्र कार्यालय

१४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १—अनुभूति (कविता)—प्रो० रामकुमार वर्मा, एम० ए० ... ... ... | ३६१ |
| २—कम्यूनिज्म क्या है ?—श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र एम० ए०, बी० एल० ... ... | ३६२ |
| ३—अरबका रहस्यमय जादूगर—कर्नल लारेन्स (सचित्र)—श्री शिवदेव उपाध्याय 'सतीश', बी०ए० ... ... ... | ३६८ |
| ४—कलाकी समीक्षामें सच्चे मूल्यकी कसौटी—श्री रामनाथ 'सुमन' ... ... | ३७६ |
| ५—क्षमा (कहानी)—श्री 'अज्ञेय' ... | ३७९ |
| ६—अपने दुखड़े (कविता)—श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ... ... | ३८३ |
| ७—बिहारमें नारी-जागरण (सचित्र)—श्री परमेश्वर सिंह ... ... ... | ३८४ |
| ८—इंगलैण्डकी एक झलक—डा० ब्रजमोहन एम० ए०, पी० एच-डी० ... ... | ३९० |
| ९—उत्तप्त अङ्गारोंपर नृत्य (सचित्र)—श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा ... ... ... | ३९३ |
| १०—प्रभात (कविता)—श्री महेश्वरीप्रसाद ... | ३९६ |
| ११—चलता-पुर्जा (कहानी)—डा० धनीराम प्रेम | ३९७ |
| १२—मतभेद—श्री मावलीप्रसाद श्रीवास्तव ... | ४०६ |
| १३—एशियाका एक दुर्गम प्रदेश (सचित्र)—श्री कमलाकान्त शर्मा एम० ए० .... ... | ४१० |



सुख सञ्चारक कम्पनी मथुराका युक्तप्रान्तमें अव्यर्थ आयुर्वेदिक औषधें बनानेका कारखाना।

**दाक्षासव**

बल, पुरुषार्थ, क्षुधा शक्ति स्फूर्ति और रक्त मांस वर्धक, मधुर स्वादिष्ट। कीमत छोटी बोतल १) बड़ी बोतल २) रुपया।

**बालसुधा**

दुबले और कमजोर बच्चोंको मोटा ताजा और ताकतवर बनानेकी मीठी दवा। कीमत ।।।)

सुख संचारक

**अशोकारिष्ट**

हर प्रकारके प्रदर रोगकी दवा। एक पौंड (आधा सेर) की बोतलका मूल्य १।।) डा०ख० १।)

**सुधासिंधु**

कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, कै, दस्त आदि रोगोंकी बिना अनुपानकी घरेलू दवा। कीमत ।।) आना।

दवाइयां सब जगह दवा बेचने वालोंके पास मिलती हैं।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | | पृष्ठ-संख्या | विषय | | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| १४—सन्ध्या-सङ्गीत(कविता)—श्री आरसीप्रसादसिंह | | ४१६ | २१—महिला-संसार ( सचित्र ) | ... | ४४७ |
| १५—आत्म-संस्मरण—श्री अमृतलाल चक्रवर्ती | ... | ४१८ | २२—अन्तर्राष्ट्रीय | ... ... | ४५३ |
| १६—रूसकी दुर्धर्ष समर-शक्ति (सचित्र)—डा० ए० | | | २३—अर्थ-चक्र | ... ... | ४५७ |
| पी० अग्निहोत्री, पी० एच-डी० | ... | ४२२ | २४—समाज-दर्पण | ... ... | ४६० |
| १७—रुपयेके मूल्यकी अस्थिरता—श्री शोभालाल गुप्त | | ४२७ | २५—स्वास्थ्य-विज्ञान | ... | ४६४ |
| १८—झूठ (कहानी)—श्रीमती उषादेवी मित्रा | ... | ४३५ | २६—चित्र-विचित्र | ... ... | ४६७ |
| १९—उषा-हार (कविता)—श्री चन्द्रप्रकाश वर्मा'चन्द्र' | | ४३९ | २७—साहित्य-जगत् | ... ... | ४७१ |
| २०—चयनिका (सचित्र) | ... ... | ४४० | २८—सम्पादकीय | ... ... | ४७५ |



आ हा है
नेकीका
फरिश्ता
आ रहा है

स्वदेशी
मेगाफोन रेकर्ड
MEGAPHONE RECORDS

आ रहा है
नेकोका
फरिश्ता
आ रहा है

१० इञ्च डबल साइडेड ब्लू लेबल
प्रति रेकर्ड कीमत सिर्फ २॥) रुपया।
जुलाईके नये रेकार्डस्, १९३५

समद क़व्वाल।
J.N.G. 717 { ख़ुदाये दो आलम नातिया / गोया मू.ा नबी ,,

मास्टर अबुल कासिम।
J.N.G. 718 { उम्मती उम्मती न तिया / मोहम्मद मोहम्मद ,,

मिस कुसुमकुमारी (पटन)
J.N.G. 719 { मोसे रुठो न बन्सी भजन / याद आते हो तुम ,,

मिस मुन्नी बाई (अल्फ्रेड थियेटर)
J.N.G. 720 { हज़ारों जन्मकी [भुपाली / आरी नवेली सयन्ट

मास्टर अमीर अली और पार्टी।
J.N.G. 721 { बेवकूफ़ आशिक कमि / कैसे देखूं सुरतिया ,,

मेलबा देवी (गिरहस्तीन) नेपालिन
J.N.G. 722 { मैं तुमपर वारियां दा / कैसे देखूं सुरतिया ,,

मेगाफोन ड्रामेटिक पार्टी।
J.N.G. 723 to 725 { ड्रामा क्षेत्रपति शिवाजी। / जे.एन.जी. ७२३ से ७२५ तक।
मूल्य—७॥) रुपये।

मिस पटल-(चीना)
J.N.G. 726 { तोरे छातीमें बावली अनार क / मोटर धीरे धीरे हांक ,,
नाटक "नेकीका फ़हरिश्ता" जल्द पेश किया जायगा


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम-प्रदर्शन

चित्रकार—श्री रवीन्द्रकुमार दास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्वमित्र

सम्पादक—मूलचन्द्र अग्रवाल

जुलाई, १९३५ | वर्ष ३, खण्ड ६ | अङ्क ४, पूर्ण संख्या ३४ | आषाढ़, १९९२

## अनुभूति

यह तुम्हारा हास आया।

इन फटे-से बादलोंमें कौन-सा मधुमास आया॥ यह तुम्हारा०

आंखसे नीरव व्यथाके
दो बड़े आंसू बहे हैं;
सिसकियोंमें वेदनाके
व्यूह ये कैसे रहे हैं!
एक उज्ज्वल तीर-सा रवि-रश्मिका उल्लास आया॥
यह तुम्हारा हास आया।

आह, वह कोकिल न जाने
क्यों हृदयको चीर रोयी!
एक प्रतिध्वनि-सी हृदयमें
क्षीण हो हो हाय, सोयी!!
किन्तु इससे आज मैं कितने तुम्हारे पास आया!!
यह तुम्हारा हास आया।

—प्रो० रामकुमार वर्मा, एम० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कम्यूनिज्म क्या है ?

श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र एम० ए०, बी० एल०

कम्यूनिज्म अथवा साम्यवाद आधुनिक युगका वह आदर्श है जिसने कोटि-कोटि मनुष्योंके विचार-जगत्में एक विप्लवकी सृष्टि करके उनकी भावधाराकी गतिको एकदम परिवर्तित कर दिया है। आदर्शके रूपमें इसका उद्देश्य है ऐसे समाजकी स्थापना करना, जिसमें धनके उत्पादन एवं वितरणके साधनोंपर सर्वसाधारण जनताका स्वामित्व होनेके परिणाम-स्वरूप किसी प्रकारका श्रेणीभेद न रह जाय। इस आदर्शको चरितार्थ करनेके लिए कम्यूनिज्म एकमात्र सामाजिक क्रान्तिके साधनपर विश्वास करता है। अर्थात् क्रान्तिकी सृष्टि करके सामाजिक व्यवस्थामें आमूल परिवर्तन कर देना, जिससे समाजमें श्रमजीवियोंकी सत्ता स्थापित हो, परश्रमजीवियोंकी नहीं। यही श्रमजीवी समुदाय साम्यवादके सिद्धान्तको कार्यरूपमें परिणत करके प्रकृत साम्यवादमूलक समाजकी स्थापना करेगा। साम्यवादका यह आदर्श और उसकी कार्यपद्धति दोनों ही आज मनुष्यके मनमें कितने ही प्रश्नोंकी सृष्टि कर रहे हैं। राष्ट्र, समाज, नीति, धर्म आदिके सम्बन्धमें एक नवीन दृष्टिकोणसे विचार करनेके लिए उत्प्रेरित कर रहे हैं। मनुष्य आज अपने मनमें यह प्रश्न करता है कि जिन परम्परागत नीति, न्याय एवं धर्मके सिद्धान्तोंपर वर्तमान मानव-समाजका गठन हुआ है उन्हें ज्योंके त्यों रूपमें मानते रहनेसे क्या सचमुच मानव-जातिका कल्याण हो सकता है? आधुनिक सभ्यताके फल-स्वरूप समाजमें नाना प्रकारकी जो जटिल समस्यायें उत्पन्न हो गयी हैं उनका समाधान क्या साम्यवाद द्वारा हो सकता है? समाजमें धनके असम विभाजनके कारण बहुसंख्यक मनुष्योंकी अतृप्त आकांक्षाओंकी पूर्ति क्या साम्यवाद द्वारा हो सकती है? ये ही प्रश्न हैं जिन्होंने आज मनुष्यके हृदयमें नूतन आशा-आकांक्षाओंको उद्दीप्त करके उसकी कल्पना-दृष्टिके सामने एक नूतन राज्यकी सृष्टि कर दी है और अपने इस स्वप्न-राज्यको वास्तविक रूप प्रदान करनेके लिए आज वह एक अभूतपूर्व प्रेरणाका अनुभव कर रहा है।

## साम्यवादका उद्देश्य

साम्यवादका उद्देश्य क्या है? इस प्रश्नको लेकर भी साम्यवादके सम्बन्धमें बहुत-कुछ भ्रान्त धारणायें फैली हुई हैं। साम्यवाद एक श्रेणीका धन बलपूर्वक अपहृत करके दूसरी श्रेणीको धनवान बनाना चाहता है, साम्यवाद व्यक्तिकी अपेक्षा समाजको उच्चतम स्थान प्रदान करता है जिससे व्यक्तित्वके विकासमें अन्तराय उत्पन्न हो सकता है, साम्यवाद मानव-जीवनमें नीति, सदाचार, धर्म आदि श्रेष्ठ गुणोंका जो स्थान है उसकी उपेक्षा करके एकमात्र भौतिक सुखोंको ही महत्त्व प्रदान करता है। साम्यवादके विरोधमें किये जानेवाले इन सब आक्षेपोंका थोड़े शब्दोंमें यही उत्तर हो सकता है कि सम्पूर्ण मानव-समाजके कल्याणके लिए, व्यक्तिकी सर्वाङ्गीण उन्नति और व्यक्तित्वके चरम विकासके लिए ही साम्यवाद यह सब करता है। कैसे? सो सुनिये।

साम्यवादी धनवानोंका धन इसलिए अपहृत करना नहीं चाहता कि उस धनसे गरीबोंको धनवान बना दिया जाय। बल्कि साम्यवादी यह चाहता है कि धनका वितरण इस रूपमें हो जिससे किसी एक वर्गके हाथमें धनका सञ्चय होने न पावे और श्रमिकोंको अपने श्रमका अधिकसे अधिक पुरस्कार मिले, ताकि वे अपने काममें और भी दिलचस्पी दिखलावें। इस समय क्या होता है? किसी कारखानेमें व्यवसायकी चाहे कितनी ही उन्नति हो, किन्तु उसमें काम करनेवाले मजदूर यह जानते हैं कि वे अपने निर्दिष्ट वेतनसे अधिक नहीं पा सकते। उस कारबारमें जो मुनाफा होता है उसका अधिकांश डाइरेक्टरों तथा शेयर-होल्डरोंको मिलता है। मजदूरोंका उसमें यदि कोई भाग होता भी है तो वह बहुत ही कम। इस प्रकारकी व्यवस्थामें मजदूर विशेष उत्साह एवं आवेशके साथ काम नहीं कर सकते। इसके विपरीत यदि श्रमजीवियोंको यह विश्वास हो जाय कि कारबारमें खर्च काटकर जो मुनाफा होगा उसपर पूर्ण अधिकार उन्हीं लोगोंका होगा तथा उनके परिश्रम द्वारा अर्जित धन धनिकोंकी विलास-वासनाओंमें अपव्यय नहीं होगा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76329



इस धनसे उनके जीवनके सुखोपभोगोंकी तृप्ति होगी, तो वे और भी उत्साहके साथ काम करेंगे। साम्यवाद व्यक्तिकी अपेक्षा समाजको इसलिए उच्च स्थान प्रदान करता है जिससे व्यक्तिके व्यक्तित्वका विकास सम्भव हो। इस समय व्यक्ति आजीवन तिल-तण्डुल-इन्धन-की चिन्ताओंको लेकर ही व्यस्त रहता है। उसका सारा जीवन कठिनाइयोंके साथ संग्राम करते हुए स्थूल आवश्यकताओंकी पूर्तिमें ही व्यतीत होता है। अपने तथा अपने परिवारवर्गके लिए जीवनकी अनिवार्य आवश्यकताओंको जुटानेमें ही उसकी सारी शक्तियां संलग्न हो जाती हैं। इस प्रकारकी स्थितिमें ही रहकर आज करोड़ों स्त्री-पुरुष जीवन धारण करते हैं और अन्तमें अपनी जीवन-लीला समाप्त करके चल बसते हैं। उनके लिए जीवनके वे सारे सुख एवं भोग—जिनका सम्बन्ध मनुष्यके मन, बुद्धि और आत्मासे है—स्वप्नवत् बने रहते हैं। उनकी समस्त आशा-आकांक्षायें अतृप्त बनी रहती हैं; दबे हुए दिल, पस्त हुए हौसले और मुरझायी हुई भावनायें लेकर वे अपनी जीवन-नौकाको किसी प्रकार खेकर पार लगाते हैं। इस श्रेणीके लोगोंके व्यक्तित्वका विकास क्या वर्तमान सामाजिक व्यवस्थामें कभी सम्भव हो सकता है? व्यक्ति-स्वातन्त्र्यवादी क्या कलेजेपर हाथ रखकर यह कह सकते हैं कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्थामें सब लोगोंके लिए अपने व्यक्तित्वके विकासका समान सुयोग प्राप्त होता है? सिवा कुछ थोड़ेसे धनवानोंके क्या बाकी लोगोंके लिए साहित्य, सङ्गीत, कला आदिके सुखोपभोग-साधन सहज ही उपलब्ध हैं? साम्यवादी बहुसंख्यक मनुष्योंको जीवनकी अनिवार्य आवश्यकताओंसे मुक्त कर देना चाहता है जिससे उनके व्यक्तित्वका विकास सम्भव हो। प्रत्येक व्यक्तिके अन्तरमें जो निहित शक्तियां रहती हैं उनकी अभिव्यक्तिके लिए साम्यवादी प्रत्येक नर-नारीको बन्धनमुक्त कर देना चाहता है। इस प्रकार बन्धनमुक्त होकर ही व्यक्ति आत्मप्रकाश कर सकता है। जब तक व्यक्ति यह समझता रहेगा कि आज जहां वह काम कर रहा है कल वहांसे वह हटाया जा सकता है, अथवा जिस कारखानेमें वह काम कर रहा है उसके बन्द हो जानेपर उसे जीविकाकी तलाशमें दर-दर भटकना पड़ सकता है या व्यापार-की मन्दीके कारण कारबारमें अपेक्षाकृत कम लाभ होनेसे कारखानेका मालिक उसके वेतनमें ह्रास कर सकता है तब तक उसकी दुश्चिन्तायें क्या उसे जीवनमें सुखोपभोगके लिए अवसर प्रदान कर सकती हैं? सम्पूर्ण मानव-जातिको इन दुश्चिन्ताओंसे मुक्त करना ही साम्यवादका चरम उद्देश्य है। और यह उद्देश्य इतना महान्, इतना पवित्र एवं इतना मनुष्योचित है कि इसके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी आपत्ति हो ही नहीं सकती। साम्यवादके सम्बन्धमें एक और आक्षेप यह किया जाता है कि यह जड़वादमूलक है, अर्थात् मनुष्यके जीवनमें सबसे बढ़कर भौतिक सुखोंको ही प्रधानता देता है। किन्तु यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो साम्यवाद-का प्रकृत आदर्श इसके सर्वथा विपरीत है। किसी प्रकार उदर-पालन करते हुए जीवन धारण करना मनुष्य-जीवनका लक्ष्य नहीं है। किन्तु वर्तमान सभ्यतामें आज हम यही देख रहे हैं कि करोड़ों मनुष्योंके लिए किसी प्रकार भरपेट अन्न और तन ढांकने योग्य वस्त्रकी प्राप्ति ही उनके जीवनका परम पुरुषार्थ हो रहा है। जन्मसे मृत्यु-पर्यन्त जीवन-संग्राममें लिप्त रहना कोई पुरुषार्थ नहीं है और न इस प्रकारके जीवनमें मानव-जीवनकी वास्तविक सार्थकता ही कही जा सकती है। मनुष्य नीति, धर्म, सदाचार आदिके सम्बन्धमें तभी सोच सकता है जब कि वह उदर-चिन्तासे मुक्त हो। अतएव साम्यवादी सबसे पहले मानव-समाजको इस उदर-चिन्तासे मुक्त कर देना चाहता है जिससे वह जीवन-सम्बन्धी उच्चतम गुणोंके सम्बन्धमें विचार कर सके और उनकी साधनामें आत्मनियोग कर सके। साम्यवादियोंके लिए यही सबसे बड़ी नीति, यही सबसे बड़ा धर्म है। जो नीति और धर्म मानव-समाजके एक विशाल अङ्गको अपनी वर्तमान स्थितिसे सन्तुष्ट रहनेकी शिक्षा देता है उस नीति एवं धर्मका साम्य-वादियोंकी दृष्टिमें कोई मूल्य नहीं है।

### श्रेणी-संग्राम

कम्यूनिज्मके एक मौलिक सिद्धान्त श्रेणी-संग्रामके सम्बन्धमें कम्यूनिस्टोंका कहना है :—आधुनिक सभ्यतामें हम मानव-समाजको दो श्रेणियोंमें विभक्त पाते हैं। एक श्रेणी वह है जो जमीनकी मालिक है, बड़े-बड़े व्यवसायोंका सञ्चालक है, बैङ्कोंमें जिसका धन जमा है और जो निश्चिन्त होकर जीवनके समस्त सुखोंका उपभोग करती है। उसे अपने लिए तथा अपने परिवार-वर्गके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कलकी चिन्ता नहीं करनी पड़ती। उसके पास आवश्यकता-से अधिक धन सञ्चित है जिससे वह स्वयं जिन्दगी-भर सुख-पूर्वक निर्वाह कर सकती है और अपने बाद अपनी सन्ततिके लिए भी पर्याप्त धन छोड़ जा सकती है। यह दल दूसरोंके परिश्रमपर चैनसे जिन्दगी बसर करता है। इस दलकी संख्या बहुत थोड़ी है। इसके विपरीत दूसरा दल उन बहुसंख्यक लोगोंका है जो एकमात्र अपने परिश्रम द्वारा अर्जित धन-पर निर्भर करते हैं। किन्तु उनके इस परिश्रमका मालिक कोई दूसरा ही होता है, वही उनके इस परिश्रमका मूल्य आंकता है, इस परिश्रम द्वारा अर्जित धनका कितना भाग उन्हें मिलना चाहिए और कितना उनके मालिकको, इसका निर्णय भी वह मालिक ही करता है। यह दल अपने परि-श्रमको बेचकर अपना निर्वाह करता है और उसके इस परिश्रमका खरीदार है उसका मालिक। चूंकि प्रथमोक्त दलके हाथमें धनोत्पत्तिके समस्त साधन हैं, उसके पास सञ्चित धन है, इसलिए वह चाहे जब दूसरे दलके परिश्रमको खरी-दनेसे इनकार कर सकता है। और चूंकि दूसरे दलके हाथमें किसी प्रकारकी पूंजी नहीं है, वह सर्वहारा है, इसलिए उसे मजबूर होकर अपना पेट पालनेके लिए अपना परिश्रम बेच देना और उस परिश्रमका मूल्य मालिककी मर्जीपर छोड़ देना पड़ता है। इस प्रकार समाजकी इन दो श्रेणियोंमें जो शाश्वत विरोध है उसका अन्त तभी हो सकता है जब कि एकके ऊपर दूसरेकी सम्पूर्ण विजय हो जाय। क्योंकि श्रमजीवी अपने श्रमका अधिकसे अधिक मूल्य चाहेंगे और पूंजीपति उनके श्रमको कमसे कम मूल्यमें खरीदना चाहेंगे जिससे वे अपने कारबारमें लाभ उठाकर बैङ्कोंमें रुपया जमा कर सकें; जमीन, जायदाद या शेयर खरीदकर धनवान बन सकें। पूंजीपति और मजदूरोंका यह पारस्परिक सम्बन्ध एकके हाथमें दूसरेके शोषणका जबर्दस्त साधन प्रदान करता है। अतएव इस साधनका अन्त तभी हो सकता है जब कि इस सम्बन्धका ही अन्त कर दिया जाय। और इसके लिए यह आवश्यक है कि सम्पत्तिके साधनोंपर व्यक्तिका नहीं, सम्पूर्ण समाजका स्वामित्व हो। ऐसा होनेसे ही समाजमें किसी प्रकारका श्रेणीभेद नहीं रह जायगा और तब साम्य-वादके आधारपर स्वतन्त्र एवं समानस्वत्वभोगी समाजकी प्रतिष्ठा हो सकेगी।

किन्तु इस प्रकारके समाजकी प्रतिष्ठामें प्रधान अन्तराय है धनीवर्ग। धनीवर्ग सङ्घबद्ध एवं क्षमताशाली है। कल-कारखाना, जमीन आदिपर अधिकार होनेके कारण वह श्रमजीवियोंको विवश कर सकता है। वह वर्तमान सामा-जिक व्यवस्थाको अक्षुण्ण रखना चाहता है। उसकी पीठपर सरकारकी सत्ता है। उसकी क्षमताके सङ्केतपर ही देशका शासन होता है। वह अपनी इस क्षमताका उपयोग अपने हितोंकी रक्षाके लिए कानून बनवानेमें कर सकता है। सामाजिक कल्याणकी भावनामें वह अपने स्वार्थोंकी रक्षा सन्निहित समझता है। यदि उसके अधिकारोंपर आक्रमण होता है तो वह आक्रमण करनेवालोंको राजद्रोही साबित करके उन्हें कानूनके अनुसार दण्ड दिलवाता है। शिक्षा, न्याय, नीति, धर्म सब-कुछ उसके स्वार्थोंकी रक्षाके लिए है। वह स्वेच्छासे अपने अधिकारोंका त्याग नहीं करना चाहता। वह अपनी वासनाओंका परित्याग करनेकी अपेक्षा दूसरों द्वारा किये गये आत्मोत्सर्गको ही पसन्द करता है। 'Men prefer sacrifice by others to the surrender of their own desires.' भोग-विलासोंमें चिपटे रहना उसके लिए स्वाभाविक है। किन्तु जो दल इन सब अधि-कारों एवं सुखोपभोगोंसे वञ्चित है वह उनमें भाग लेना चाहता है। और उसकी यह भाग लेनेकी इच्छा ही श्रेणी-संग्रामकी उत्पत्तिका कारण है। इस संग्राममें समझौतेके लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। क्योंकि दोनों श्रेणियोंके बीच इतना margin रिक्त स्थान नहीं बच जाता जिससे धनीवर्ग श्रमजीवियोंके प्रति कुछ रियायतें करते हुए भी अपने आधि-पत्यको अक्षुण्ण रख सके। जैसा कि मार्क्सने लिखा है "श्रम-जीवियोंको छोटे-मोटे सुधारोंसे सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए। उन्हें साहस एवं आत्मविश्वासके अभावमें उन मध्यवर्गीय मनीषियों एवं राजनीतिज्ञोंकी न्याय-बुद्धिपर भरोसा नहीं करना चाहिए जो उनके दुःख एवं अभावोंपर समवेदना प्रकट करते हैं। उन्हें श्रेणी-सङ्घर्षकी कटुताको कम करनेकी ओर नहीं, बल्कि उसे बढ़ानेकी ओर ध्यान देना चाहिए। क्योंकि श्रेणी-संग्राम द्वारा ही श्रमजीवियोंका अधिनायकतन्त्र स्थापित हो सकता है। और यह अधिनायकतन्त्र तभी तक-के लिए आवश्यक है जब तक कि समाजमें सब प्रकार-के श्रेणी-भेदका अन्त नहीं हो जाता।" श्रेणी-रहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



समाजमें न तो कोई श्रेणी रह जायगी और न किसी श्रेणी-विशेषका आधिपत्य ही रह जायगा। इस प्रकार साम्यवादी समाजमें श्रमजीवियोंकी सम्पूर्ण सत्ता स्थापित करनेके लिए श्रेणी-सङ्घर्षकी आवश्यकतापर जोर देते हैं सही, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि श्रमजीवियोंकी यह (dictatorship) डिक्टेटरी सदाके लिए कायम रह जायगी। यह तो परिवर्तन-कालके लिए ही आवश्यक है। जब समाजमें समस्त श्रेणियोंका विलोप हो जायगा तब सब लोग—जो शरीर और मन-बुद्धिसे सक्षम होंगे—श्रमजीवी बन जायंगे और उस समय देशका शासन श्रमजीवियों द्वारा नहीं, प्रत्युत् सम्पूर्ण समाज द्वारा होगा और इस प्रकारका शासन ही वास्तविक जनसत्तात्मक शासन कहा जा सकता है। इस शासनमें दिमागी काम करनेवालों और शारीरिक परिश्रम करनेवालोंमें कोई विरोध नहीं रह जायगा। परिश्रम बाजारमें बिकनेवाली कोई चीज-जैसा नहीं रह जायगा जिसे उदर-पालनके लिए बाध्य होकर लोगोंको बेच देना पड़े। समाज जब इस स्थितिमें पहुंच जायगा, उस समय सरकारकी आवश्यकता आपसे आप नहीं रह जायगी; क्योंकि लेनिनके शब्दोंमें "जब लोग सामाजिक जीवनके मौलिक सिद्धान्तों-का प्रतिपालन करनेके अभ्यस्त हो जायंगे और उनका परि-श्रम पर्याप्त धनोत्पादक बन जायगा, उस समय वे आपसे आप अपनी क्षमताके अनुसार कार्य करेंगे।" मार्क्सने कम्यू-निस्ट मैनिफेस्टोमें लिखा है :—"समाजके झण्डेपर लिखा होगा : प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्ति एवं क्षमताके अनुसार कार्य करे; और प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार समाजसे ग्रहण करे।"

## राष्ट्रका स्वरूप

साम्यवादी अपने आदर्शको चरितार्थ करनेके लिए वर्त-मान शासन-प्रणालीपर सम्पूर्णतया अधिकार कर लेना चाहता है; इतना ही नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्थामें क्रान्ति लानेके लिए वह उसके स्थानपर ऐसी शासन-प्रणालीकी स्थापना करना चाहता है जो उसके उद्देश्यकी सिद्धिमें सहायक हो। क्यों? इसलिए कि वर्तमान कालमें विभिन्न देशोंमें राष्ट्रके जो भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं उनमें सबके अन्तरमें एक ही प्रकृति काम कर रही है। वह प्रकृति है मुट्ठीभर लोगों द्वारा बहुसंख्यक जनसमु-दायपर अपने स्वार्थके लिए शासन। थोड़े-से लोग हुकूमत करते हैं और बाकी लोगोंको बाध्य होकर उनकी तामील करनी पड़ती है। इस प्रकार प्रत्येक राष्ट्रमें थोड़े-से धनी एवं क्षमताशाली मनुष्य शासन-यन्त्रको करायत्त करके उस राष्ट्रके कोटि-कोटि मनुष्योंपर शासन कर रहे हैं। आधुनिक युगका जो एक महत्तम अवदान गणतन्त्र कहा जाता है उस गणतन्त्र शासनमें वास्तविक जनसत्ताका सर्वथा अभाव पाया जाता है। लेनिनने लिखा है—"This democracy is always bound by the narrow framework of capitalist exploitation, and consequently always remains in reality, a democracy only for the minority, only for the possessing classes, only for the rich." अर्थात् "आधुनिक गणतन्त्र पूंजीवादियोंके शोषणकी सङ्कीर्ण परिधिसे सदा आबद्ध रहता है, अतएव वह वस्तुतः केवल अल्प सम्प्रदायवालों, जमीन-जायदादवालों और धनवानोंके लिए है।" पूंजीवादियोंके इस शोषणके कारण श्रमजीवी दुःख-दारिद्र्यकी चक्कीमें इस प्रकार पिसते रहते हैं कि पेटके सिवा और किसी बातकी चिन्ता करनेके लिए उनके पास समय ही नहीं रहता। देशकी राजनीति अथवा शासनका स्वरूप इत्यादि विषयोंमें वे बिलकुल दिलचस्पी नहीं लेते। उनकी जीवन-यात्रा ही इस रूपमें चलती है जिससे वे किसी प्रकारके सार्वजनीन राजनीतिक जीवनमें भाग ले ही नहीं सकते। साम्यवादी आधुनिक गणतन्त्रको दो और कारणोंसे सङ्कीर्ण मानते हैं। इनमें एक कारण तो यह है कि यह केवल राजनीतिक क्षेत्रमें ही जन-सत्ताके सिद्धान्तको ग्रहण करता है, आर्थिक क्षेत्रमें नहीं। आर्थिक क्षेत्रमें यह राष्ट्रके करोड़ों स्त्री-पुरुषोंको गुलाम बना-कर रखता है जिससे वे राष्ट्रके आर्थिक क्षेत्रमें अपना उचित भाग लेनेसे वञ्चित रह जाते हैं। इसके सिवा यह जनसत्ता-के सिद्धान्तको तभी तक स्वीकार करता है जब तक कि पूंजीवादकी नींवपर किसी प्रकारका आघात नहीं पहुंचता। यदि साम्यवादी देशके शासनमें बहुमत प्राप्त करके शान्ति-पूर्ण बैध उपायों द्वारा भी पूंजीवादके स्थानपर साम्यवादकी स्थापना करना चाहें तो पूंजीवादी उनका केवल विरोध ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं करेंगे, बल्कि उनके विरुद्ध बलप्रयोग करनेकी भी चेष्टा करेंगे। इसलिए साम्यवादियोंकी दृष्टिमें राज्य भी श्रमजीवियोंके ऊपर अत्याचार करनेका एक प्रधान साधन है। इस साधनकी बदौलत ही समाजकी वर्तमान व्यवस्था अक्षुण्ण रखी जाती है और इस प्रकारके राष्ट्रका प्रधान उद्देश्य होता है धनीवर्ग अपनी विपुल सम्पत्तिका निर्विघ्न रूपमें भोग कर सके इसकी व्यवस्था करना। बुखारिनने लिखा है—"In all countries the state is merely a union of the master class···Everywhere we find that the ministers, high officials, members of Parliament, are either capitalists, land-owners, factory owners, and financial magnates, or else the faithful and well-paid servants of these, lawyers, bank managers, professors, army officers, bishops, who serve the capitalists not from fear but from conviction." "सब देशोंमें राज्य क्षमता-सम्पन्न लोगोंके एक सङ्घके सिवा और कुछ नहीं है।.....सब देशोंमें हम यही देखते हैं कि विभिन्न शासन-विभागोंके सचिव, उच्चपदस्थ कर्मचारी, राष्ट्र-सभाके सदस्य या तो पूंजीपति हैं, या भूस्वामी या कारखानोंके मालिक या बैङ्कर अथवा इनके विश्वस्त तथा वेतनभोगी सेवक या वकील बैरिस्टर, बैङ्कोंके मैनेजर, अध्यापक, समर-विभागके अधिकारी या पादरी, जो पूंजीपतियोंकी सेवा भयसे नहीं, बल्कि अपने दृढ़ विश्वासके कारण करते हैं।" कम्यूनिस्टोंका कहना है कि राष्ट्र द्वारा धनिकोंके दो उद्देश्य सिद्ध होते हैं। एक तो यह है कि इसके द्वारा धनिकवर्ग धनोत्पत्तिके साधनोंपर अपने अधिकारको कायम रखता है और दूसरा उद्देश्य है अन्यान्य पूंजीवादमूलक राज्योंके साथ प्रतियोगिता करना।

पहले उद्देश्यकी पूर्तिके लिए ही राष्ट्रने कानून और पुलिस तथा सशस्त्र सैन्यदलकी रचना की है। देशद्रोह एवं राजद्रोहके कानून इस रूपमें बनाये गये हैं जिससे धनिकवर्गकी कठोर समालोचना सहज ही कानूनके अन्तर्गत आ सकती है। जनताके मन एवं भावनाओंपर अधिकार करनेके लिए धनी समाजने विद्यालय स्थापित किये हैं तथा धर्ममन्दिरोंमें धर्मोपदेशक नियुक्त किये हैं। इन विद्यालयोंमें इस बातकी शिक्षा दी जाती है कि राष्ट्रके प्रति सदा-सर्वदा आनुगत्य-भाव रखना चाहिए। राष्ट्रकी प्रचलित व्यवस्थाको विपर्यस्त करनेकी चेष्टा करना सबसे बड़ा अपराध है। अन्यान्य राष्ट्रोंकी प्रतियोगितामें स्वराष्ट्रको शक्तिशाली एवं अप्रतिद्वन्द्वी बनानेके लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रके सैनिकोंकी वीरोचित पूजा की जाय, उत्कट राष्ट्रीयताके मदमें उन्मत्त होकर प्रतिद्वन्द्वी राष्ट्रोंके प्रति ईर्षाभाव रखा जाय। इस प्रकार बचपनसे ही राष्ट्रीयताकी भावना भर दी जाती है जिससे राष्ट्र ही सबसे बड़ा देवता बन जाता है और इस राष्ट्र-देवताके विरुद्ध विद्रोह करना अत्यन्त गर्हित कर्म समझा जाता है। उधर धर्ममन्दिरोंमें पादरी लोग बराबर यह शिक्षा देते रहते हैं कि मानव-जीवनमें दुःख, अभाव आदि जितने कष्ट हैं वे सब मनुष्यकृत नहीं, ईश्वरकृत हैं। उन्हें शान्ति एवं धीरतापूर्वक सहन करनेमें ही कल्याण है। विधाता द्वारा निर्दिष्ट दुःख-कष्टोंको चुपचाप सहन न करके जो अपनी शक्तियों द्वारा उनके बन्धनसे मुक्त होना चाहते हैं वे उस विधाताकी मर्जीके विरुद्ध आचरण करते हैं। ऐसा करना धर्मद्रोह है, ईश्वरद्रोह है। वर्तमान कालके समाचारपत्र भी धनियोंके हाथके हथकण्डे हैं। इनमें भी वास्तविक स्थितिका यथातथ्य-रूपमें निदर्शन नहीं किया जाता। राष्ट्रीयताको ही सबसे बड़ा धर्म बताकर प्रचलित व्यवस्थाके दोषोंपर पर्दा डालने तथा उसे न्यायोचित मान लेनेकी शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार विद्यालयों, धर्ममन्दिरों तथा समाचारपत्रों द्वारा जनताके मनको वशीभूत करनेकी चेष्टा की जाती है जिससे बन्धनमुक्त होनेकी उसकी प्रवृत्ति कभी उग्र होने न पाये और राष्ट्रकी क्षमता अक्षुण्ण बनी रहे।

प्रजातन्त्र शासनमें व्यक्तिके जन्मस्वत्त्व तथा उन स्वत्त्वोंके सबके साथ समान रूपमें प्रयुक्त होनेकी जो बात कही जाती है उस सम्बन्धमें कम्यूनिस्टोंका कहना है कि जन्मस्वत्त्वका यह सिद्धान्त भी प्रजातन्त्र शासन-प्रणालीमें एक मिथ्या भावना है। इन स्वत्त्वोंको हृदयङ्गम करनेकी सम्भावनासे श्रमजीवी वञ्चित कर दिये जाते हैं। यों तो कहनेके लिए जमीन-मालिक और मजदूर, पूंजीपति और सर्वहारा, मन्त्री और जूतेपर पालिश करनेवाला एक मोची कानूनकी दृष्टिमें एक समान नागरिक हैं। किन्तु यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कानूनी समानता ट्राटस्कीकी भाषामें "कैदीकी बेड़ीके रूपमें परिणत हो गयी है जिससे श्रमजीवी पूंजीवादके रथके पहियेमें बंधा रहता है।" क्योंकि केवल लिखित अधिकारों एवं स्वत्वोंके बलपर कोई अबोध श्रमजीवी लखपती और करोड़पती नहीं बन सकता। कानूनकी दृष्टिमें प्रत्येक व्यक्तिको बोलने, लिखने और अपने सिद्धान्तोंका प्रचार करनेकी स्वतन्त्रता है। किन्तु कोई भी ऐसा गणतान्त्रिक देश नहीं है जिसके विधानमें श्रमजीवियोंके विरुद्ध कानूनका प्रयोग किये जानेकी व्यवस्था "सार्वजनिक शान्ति" के नामपर सिर्फ इसलिए नहीं की गयी हो कि जिससे मध्यमवर्गकी क्षमता ज्योंकी त्यों बनी रहे। न्यायालयकी दृष्टिमें सब नागरिक एक समान समझे जाते हैं। किन्तु यहां भी समानताका यह सिद्धान्त सबके प्रति लागू नहीं हो सकता। क्योंकि यदि एक किसान अपने जमीन्दार द्वारा किये गये अन्यायके विरुद्ध तथा एक नौकर अपने मालिक द्वारा अकारण कामसे बर्खास्त किये जानेपर हर्जानेके लिए अदालतको शरण लेता है तो इसके लिए धन चाहिए। बिना धनके उसे न्याय मिलनेकी आशा नहीं। और यदि धन खर्च करके न्याय मिला भी, तो वह बड़ा महंगा सौदा पड़ता है। इस प्रकार चाहे जिस दृष्टिसे विचार कीजिये, यह स्पष्ट है कि वर्तमान राष्ट्र-व्यवस्थाके साथ श्रेणी-सङ्घर्षकी भावना अविच्छेद्य रूपसे सम्बद्ध है और जब तक यह धनवैषम्यमूलक श्रेणी-सङ्घर्ष बना रहेगा तब तक प्रकृत गणतन्त्रकी स्थापना सम्भव नहीं है।

## कौन पथ ?

कम्यूनिज्मका सिद्धान्त गलत है या सही, उसके द्वारा मानव-जातिका कल्याण-साधन हो सकता है या नहीं, इस सम्बन्धमें वाद-विवाद और मतभेद हो सकते हैं। इसी प्रकार राष्ट्रके स्वरूपको लेकर भी तर्कवितर्क एवं गवेषणा हो सकती है। किन्तु इन सबसे वास्तविक प्रश्नका समाधान नहीं होता। और वह प्रश्न यही है कि वह कौन-सा पथ है जिसका अनुसरण करनेसे विशाल जन-समुदाय दुःख-दारिद्र्यके बन्धनसे, शोषण एवं दासत्वसे मुक्त होकर अपना मस्तक उन्नत कर सकेगा? वह कौन-सी ऐसी राष्ट्र-व्यवस्था है जिसमें मनुष्य-मनुष्यके बीच सब प्रकारके अविचार एवं वैषम्य दूर हो जायंगे और प्रत्येक व्यक्तिको आत्म-प्रकाश करनेका सुख-स्वाच्छन्द्य प्राप्त होगा? करोड़ों निरन्न एवं निर्वस्त्र प्राणियोंके लिए एकमात्र आकांक्षाकी वस्तु है अन्न और वस्त्र। उनकी इस आकांक्षाकी पूर्ति किस प्रकार होगी? साहित्य, सङ्गीत, कला आदिका उनकी दृष्टिमें कोई मूल्य नहीं है। अन्न-वस्त्रकी समस्या ही उनके लिए सर्वप्रधान समस्या है। और इस समस्याके समाधानमें ही आज संसारके विभिन्न देशोंके उत्पीड़ित, लाञ्छित, शोषित एवं शृङ्खलित सर्वहारा उस पथका अनुसन्धान कर रहे हैं जिस पथपर चलकर वे अपने समस्त लौकिक अभावों एवं दुःखोंका अन्त देख सकते हैं। इसी पथके सन्धानमें सोशलिज्म, कम्यूनिज्म आदि नाना मतवादोंकी सृष्टि हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अरबका रहस्यमय जादूगर—कर्नल लारेन्स

श्री शिवदेव उपाध्याय 'सतीश', बी० ए०

भाग्यका खेल! लारेन्सका जीवन जिस अद्भुत ढङ्गसे शुरू हुआ था, उसी ढङ्गसे उसका अन्त भी हो गया! प्रारम्भसे लेकर अन्त तक वह क्षीणकाय पुरुष सदैव खतरोंसे खेलता रहा। जान-बूझकर हंसते-हंसते अपनेको भयानकसे भयानक खतरोंमें डाल देना और फिर घड़घड़ाती हुई तोपों और चमकती हुई नङ्गी तलवारोंके बीच निर्भय होकर लड़नेवाला कर्नल लारेन्स मरा भी ठीक ऐसे ही;—मोटर-साइकिलसे टकराकर। इसी प्रकारकी मृत्यु शायद वह चाहता भी। लगातार वर्षोंतक अरबकी उत्तप्त बालुका-राशियोंपर रेलके एञ्जिनोंसे लड़नेवाला लारेन्स चुपचाप रोगशय्यापर पड़े-पड़े सड़कर मरना क्या कभी पसन्द करता?

लारेन्सका जीवन अनेक रोमाञ्चकारी अद्भुत कहानियों और अनेक विभिन्न भावोंका एक विचित्र सम्मिश्रण है। उसका निर्माण विधाताने न जाने कितने विरोधी तत्त्वोंको मिलाकर किया था। कहां तो आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटीका वह एक अत्यन्त प्रतिभाशाली युवक और कवि—वह युवक और कवि, जो अपना जीवन अतीत कालके प्राचीन खण्डहरोंकी सभ्यता और संस्कृतिके सन्धानमें लगाकर उन्हींकी विरुदावलि अपने कोमल छन्दोंमें गाना चाहता था, और कहां अरबके रेगिस्तानोंकी तप्त बालुओंको लेकर उड़नेवाली लपटोंका हाहाकार और उनके बीचमें उसकी सर्वनाशलीला! इस प्रकार उसके स्वभावमें इतनी विभिन्नता भरी हुई थी कि लारेन्सको दुनिया आज तक भी न पहचान सकी। पश्चिम और पूर्व, दोनों ही लारेन्सके क्रीड़ा-क्षेत्र रहे और अपने जीवन-कालमें ही वह सर्वत्र विख्यात हो गया था, फिर भी उसके सम्बन्धमें कितनी ही बातें रहस्य ही बनी रहीं—अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंका उत्तर लारेन्सके अन्तरङ्ग मित्र भी नहीं दे सके।

लारेन्सकी शक्ति अनुपम थी, अद्भुत थी। सदियोंके सोते हुए अरबिस्तानको उसने इतना जगाया और उसे जगाकर कर्मक्षेत्रमें लाकर इस तरह खड़ा कर दिया कि टर्कीवालोंके छक्के छूट गये; फ्रान्सवाले सशङ्कित हुए और जर्मनीवालोंको भी मुंहकी खानी पड़ी। महायुद्धके पश्चात् पेरिसमें जब सन्धिकी चर्चा छेड़ी गयी तो अरबके अमीर फैसलको भी अरबके प्रतिनिधिकी हैसियतसे निमन्त्रित किया गया और पेरिस नगरीने उसके कदम चूमकर अपनेको धन्य-धन्य माना। किन्तु इस बातको कौन अस्वीकार करेगा कि यह सब हुआ लारेन्सके कारण। आज अरबका यह जो नया अस्तित्व है और वह अस्तित्व, जिसका विदेशी राष्ट्रोंमें भी कुछ सम्मान है, उसका निर्माण कर्नल लारेन्सके ही हाथों हुआ है और इस अद्भुत पुरुषने जैसे जादूके बलसे इस नूतन अरबका निर्माण कर डाला। टर्की और अरबवालोंके सङ्घर्षोंके बीच लारेन्सके सैकड़ों काम इतने हैरतअङ्गेज और अविश्वसनीय हुए हैं कि सुननेवाले सहसा चौंककर पूछ बैठते हैं कि 'क्यों साहब, वास्तवमें ये घटनायें अरबमें हुई थीं?' और 'हुई थीं' कहकर जब आप उन्हें विश्वास दिलानेका प्रयत्न करेंगे तब उन्हें विश्वास न होगा, और हो भी कैसे? वे तो हैं एकदम जादूकी-सी बातें।

परन्तु लारेन्स-जैसे व्यक्तिके लिए सब-कुछ सम्भव था। उसके व्यक्तित्वमें वास्तवमें जैसे जादू था। एक बार जो वह कह देता, उसके इनकार करनेकी किसीमें शक्ति होनेपर भी नहीं थी! अरबके रेगिस्तानोंमें राष्ट्रीयताकी लहर बहा देना और फिर अबोध और अचैतन्य अरबोंको सुसङ्गठित कर संग्राममें लगा देना भले ही किसी ऐसे व्यक्तिको—जो अरबका इतिहास न जानता हो और वहांकी स्थितिसे अज्ञात हो—आसान जंचे; परन्तु जो लोग जानते हैं कि अरबवाले किस प्रकार मध्यकालके दम्भी भारतीय राजपूतोंकी भांति आपसमें ही लड़नेमें अपना गौरव समझनेकी मूर्खता करते थे, और किस प्रकार एक श्रेणी (Clan) दूसरी श्रेणीके खूनसे रेगिस्तानमें खूनकी नदी बहानेपर तलवार ताने रहती थी, उनके लिए लारेन्सकी सफलता सचमुच जादूकी-सी ही मालूम होगी। और फिर किस दशामें? जबकि अरबोंकी कट्टरता उन्हें किसी विजातीयसे मिलने भी नहीं देती, किसी विजातीयको वे देखना ही नहीं चाहते; काफिरों—हजरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मुहम्मदके धर्मसे इतर धर्मके माननेवालोंका प्रवेश ही जहां सन्देहकी दृष्टिसे देखा जाता हो, वहां जाकर अपनेको सच्चा ईसाई घोषित करते हुए भी लारेन्सका अरबी महिलाओं तकको बुर्कोंसे बाहर निकालकर लड़नेके लिए उनकी कमरमें तलवार बांध देना, क्या सचमुच आश्चर्यजनक नहीं है ?

पेट्रामें घमासान लड़ाई हो रही थी। लारेन्स उन पाषाण-श्रेणियोंके पीछे तुर्कोंकी तरफसे छिपा बैठा था जिन्होंने महान् सिकन्दरकी सेनाको भी आगे बढ़नेसे रोक दिया था। सदियोंके बाद इन पाषाण शिलाओंमें आज जैसे नवजीवन आ गया हो। देवताओंके नामपर अगर बत्तियां जला दी गयी थीं और लारेन्सके साथ ही बहुओंकी तलवारें तुर्कोंके खून-के लिए प्यासी हो रही थीं। अरबोंमें गजबकी मस्ती थी। वे उन्मादसे विभोर कर देनेवाले वीरताके गीत अजब निर्भ-यता और मस्तीसे झूम-झूम कर गा रहे थे। लारेन्स आइसिसके भव्य मन्दिरमें था। उसके पुरातत्त्वप्रेमी अर्द्धनिमीलित नेत्रोंकी पलक-यवनिकाके भीतर एक बार प्राचीन कालकी उन सुन्दरियोंके नृत्योंका स्वप्न नाच उठा, जो उक्त देवीके सामने नाचनाच कर उसे कभी-कभी रिझाया करती थीं, परन्तु तत्काल ही इन स्वप्नोंका तार टूट गया और वह तुर्कोंसे मोर्चा लेनेकी तयारी करने लगा। इस बार उसने बहू नारियोंको भी मुकाबिला करनेका आह्वान करने-का विचार किया और कुछ ही देरमें देखा गया कि अनेक विस्मृत सदियोंके पश्चात् अरबकी नारियां सामूहिक रूपसे शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित होकर रण-क्षेत्रमें उतर पड़ीं। इतिहास साक्षी है कि कितनी ही ऐसी नारियां भी मैदानमें उतरीं जिनके एक हाथमें उनका निरीह शिशु था और दूसरेमें बन्दूक। घर छोड़कर अपने बच्चेको गोदमें लेकर मृत्युका सामना करनेके लिए नारियोंका अद्भुत साहस था ! किन्तु वे घरमें नहीं रह सकती थीं। जादूगर लारेन्सने उनपर जैसे सम्मोहन मन्त्र डाल दिया था—हिप्नोटाइज्ड (Hypnotized) कर दिया था !

कर्नल लारेन्स

महिलाओंको वह स्थान दिया गया जिसपर किसी दिन प्राचीन नबातियन राजाओं ( Nabataen kings ) ने महान् सिकन्दरका सामना किया था और उसे शिकस्त दी थी। नारियोंको इस बातका ध्यान था कि इस विजयी भूमिको तुर्कोंसे पराजित होकर कलङ्कित न होना पड़े और इतिहास बताता है कि जर्मन बायुयानोंने सड़कों, मन्दिरों और रङ्गशालाओंपर बम बरसानेके बाद जब उस स्थानपर भी बम बरसानेका इरादा किया तो वे चौंकी भी नहीं और जब एक बम ठीक उनके बीचमें गिरा तो वे बन्दूकें लेकर और भी तनकर खड़ी हो गयीं, मानो बमने खतरेकी घण्टी बजा दी हो। लारेन्स उस समय अपनी मशीनगनोंसे पहाड़ीपरसे गोलियां बरसा रहा था। फिर भी तुर्क और जर्मन बढ़ते ही चले आते थे। अतः लारेन्सने अपने साथके पचास बहुओंको आज्ञा दी कि वे अरबोंको पहाड़ियोंके पीछे झाड़ि-योंमें छिपकर रहनेके लिए कह दें।

ऐसा ही किया गया। अब तुर्कों और जर्मनोंने निर्भय होकर बढ़ना आरम्भ किया और सोचा कि अब विजय उनकी ही है, परन्तु वास्तवमें उनकी थी पराजय। उनके आगे बढ़ते ही लारेन्सके जरा-से निर्देशपर हजारों छिपे हुए बहुओंने उनपर अकस्मात् आक्रमण कर दिया। उस समय तुर्क और जर्मन थे पार्वत्य उपत्यकामें और उनके शृङ्गोंपरसे बहुओंकी गोलियोंकी वर्षा हो रही थी। सैकड़ों गजोंकी ऊंचाईसे नारियोंने उनपर पत्थरके टीले ढकेल दिये और उनकी सेनामें भगदड़ पड़ गयी। अरबोंने फतहका झण्डा बुलन्द किया, सैकड़ों तुर्क गिरफ्तार किये गये।

सङ्घर्ष समाप्त हो गया। लगभग एक हजार तुर्कोंने भाग-कर किसी तरह अपनी जान बचायी। उनके भाग जानेके बाद लारेन्सने अपना वेष बदला और तुर्कोंके शिविरमें जा पहुंचा। वहां जाकर वह क्या देखता है कि तुर्कोंने कुछ और ही जाल रच रखा है। उनके सेनाध्यक्षने एक विज्ञप्ति



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



निकाली थी। लारेन्सके हाथ भी एक विज्ञप्ति लगी और अपने शिविरमें आकर जब उसने विजय-मदोन्मत्त अरबोंको उसे पढ़ सुनाया तो वे पागलोंकी तरह बेतहाशा खिलखिला पड़े। विज्ञप्तिमें कहा गया था—

"पेट्रापर हमलोगोंने तूफान बरपा कर दिये। हमारी सेनाके सिर्फ १२ सैनिक मरे और ९४ घायल हुए, किन्तु एक हजार अरब हताहत हुए, जिनमें १७ ब्रिटिश अफसरोंकी भी लाशें दिखाई पड़ीं।"

एकदम सफेद झूठ! सिर्फ २८ अरब हताहत हुए थे और तुर्कोंने लिख डाला एक हजार! एक साथ ही ९७२ की भूल!!

× × ×

टामस एडवर्ड लारेन्सको आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटीमें शिक्षा मिली थी और उस समय लोगोंका अनुमान था कि वह अपना सारा जीवन पुरातत्त्वोंकी खोजमें लगायेगा। युद्धके लिए तो वह किसी तरह भी उपयुक्त ही नहीं था। ५ फीट ३ इञ्च लम्बाई और शरीरसे बहुत ही निर्बल दिखाई पड़नेवाला युवक। ऐसी दशामें जब युद्ध छिड़नेपर उसने भी सेनामें भरती होनेका विचार किया और उम्मेदवारोंकी श्रेणीमें जाकर खड़ा हो गया तो लोगोंको हंसी आ गयी। डाक्टरोंको तो इस बात-का अभिमान होता है कि वे मनुष्यकी नाड़ी-नाड़ीका पता लगा सकते हैं, अतः लारेन्सको देखते ही उन लोगोंने एक बार दृष्टि-विनिमय किया और फिर लारेन्ससे जैसे बड़ी हमदर्दी दिखाते हुए कहा—'घर जाओ।'

लेकिन डाक्टरोंकी रायके अनुसार लारेन्स जाकर घर नहीं बैठ गया। उसने अरबको अपनी प्रतिभाका क्षेत्र बनाया और अकस्मात् एक दिन वहांके लिए चल पड़ा। इसके बादका उसका जीवन अत्यन्त रहस्यमय है और साथ ही है वह साहस, जासूसी, युद्ध और अनेक भयानक काण्डोंका अद्भुत इतिहास। अरबमें किया गया उसका प्रत्येक कार्य और घटनाचक्र अच्छेसे अच्छे उपन्याससे भी अधिक सुन्दर और रोमाञ्चकारी है। खास तौरपर ट्रेनोंके तोड़नेके उसके करिश्मे तो एकदम हैरतसे भरे हैं।

विगत महा समरके दिनोंमें लारेन्सने अरबमें जो कुछ किया वह आज भी विवादका विषय बना हुआ है। उसने एकदम स्वाधीन ढङ्गसे अरब-निवासियोंको तुर्कोंके विरुद्ध उभाड़ा, किन्तु यह मानना ही पड़ेगा कि इस काममें उसे ब्रिटेनसे अत्यधिक आर्थिक सहायता मिली। लाखों रुपये वह मनमाने ढङ्गसे अरबोंके लिए पानीकी तरह बहाता था। और यद्यपि ब्रिटेनकी सरकारने लारेन्सको इस कार्यके लिए नियुक्त नहीं किया था, फिर भी उसकी इस सफलताके लिए उसे स्वयं ड्यूक आव कनाट महोदयने अपने हाथों पुरस्कृत और सम्मानित करनेके लिए आयोजन किया था। खैर।

लारेन्सने १९१६के पतझड़-कालीन दिनोंमें जिद्दाके लिए प्रस्थान किया। थोड़े ही दिनोंके बाद वह सरकारी अरब ब्यूरोमें दाखिल हो गया। परन्तु अमीर फैसलके कारनामोंसे लारेन्स इतना प्रभा-वित हो गया कि उसने उनके साथ मिलकर काम करनेकी ठानी और अन्त तक उनके साथ रहा। अमीर फैसलका विश्वासपात्र होनेमें उसे देर न लगी। हेजाज, मान और अकाबापर अरबी झण्डा फहराता हुआ वह बराबर आगे बढ़ता गया। अगस्त १९१७में अकाबापर फतह पाते ही ब्रिटिश और फ्रेञ्च सैन्यदलने लारेन्सका सम्मान करना चाहा, परन्तु उसने स्वीकार न किया। इसके बाद जेनरल एलेन्बीकी सहायतासे उसने बदी एल्हसामें तुर्कोंको बड़ी करारी हार दी। इसीके बाद उसकी गिरफ्तारीके लिए तुर्कोंने एक बहुत बड़े पुरस्कारकी घोषणा की।

कर्नल लारेन्स अरबी वेषमें

इसके बाद तो लारेन्स शैतानकी तेजीसे तुर्कोंको दबाता हुआ आगे बढ़ता गया। दमिश्कपर आधिपत्य जमानेके लिए उनमें बड़ी होड़ लगी हुई थी। परन्तु लारेन्सके सामने किसीकी एक भी न चली। अंगरेजी सेनाके जेनरल एलेन्बी तक वहां पहुंच भी न सके थे कि लारेन्स दमिश्कका वास्तविक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



राजा बन बैठा। जिस समय कर्नल लारेन्सने दमिश्कमें एक विजेताकी हैसियतसे प्रवेश किया था उस समयकी छटा बहुत ही निराली थी। सदैव लारेन्सके साथ ही रहनेवाले एक व्यक्ति लावेल टामसने उस समयका वर्णन करते हुए उसका बड़ा ही भव्य चित्र खींचा है। उसने लिखा है कि अक्टूबर महीनेका वह सुन्दर प्रभात था। जिधर हीसे देखिये उधर हीसे लोग दमिश्ककी ओर आशा, उत्कण्ठा, आनन्द और आश्चर्यके साथ दौड़े चले आ रहे थे। अनेक सदियोंके बाद खलीफा हारुन रशीदके पश्चात् २९ वर्षके उस कमाण्डर-इन-चीफ लारेन्सने इतनी शानबानके साथ दमिश्क-

जासूसीके लिए कर्नल लारेन्स इसी प्रकार सीरियन जिप्सी नारीके वेषमें निकलता था।

में प्रवेश किया था। सड़कों पर केवल नर-मुण्ड ही नर -- मुण्ड दिखाई पड़ते थे और सभी अपने उद्धारक लारेन्सके दर्शनोंकी एक झांकी लेनेके लिए उत्सुक हो रहे थे। और तब, इस उत्कण्ठाके बीच मक्काका शाही लिबास पहने हुए लारेन्सने प्रवेश किया। आखिर आज तुर्कोंके हाथसे यह सुन्दर नगर स्वतन्त्र हुआ,—सभीके यह भाव थे और इसके लिए लारेन्सके कदमोंपर श्रद्धाके फूल बरस रहे थे। दरवेशोंने चिल्लाकर उसका स्वागत किया, फैसल और लारेन्स तथा लारेन्स और फैसल एक हो रहे थे। स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे और जवान सभीकी जबानसे लारेन्सकी प्रशंसा निकल रही थी। दमिश्ककी १० मीलकी लम्बी सड़कपर सर्वत्र उसका अभिनन्दन किया गया। दिन-रात कठोर पर्देमें रहनेवाली रमणियोंने अपनी अटारियां सजायीं, उन्हें कीमती कालीनों और बन्दनवारोंसे सजाया और जिस समय लारेन्स उनके सामनेसे अपने ऊंटपर गुजरा उस समय शत-शत कोकिल-कण्ठोंके मङ्गल-गानसे प्रभात-कालीन समीर गूंज उठा, जय-ध्वनिके साथ उसपर फूल-मालायें फेंकी गयीं और उसपर गुलाबका इतना इत्र फेंका गया कि ऊंट नहा उठा। उस समय एक अमेरिकन डाक्टर जान फिनले इस दृश्यको आनन्द-विभोर होकर देख रहा था। जब दृश्य समाप्त हो गया तो उसके मुंहसे अकस्मात् निकल पड़ा कि पृथ्वीपर ऐसा खुशनुमा नजारा फिर कभी नहीं दिखायी पड़ सकता।

इस प्रकार अरबवालोंने अपने उद्धारकके प्रति अपनी श्रद्धाके फूल चढ़ाये।

किन्तु दमिश्कके सिंहासनपर केवल तीन दिन रहकर चौथे दिन उसने सोनेकी शाही तलवार अमीर फैसलको संभलायी और फिर अपना वही अरबका फकीरी बाना अपनाया।

* * * *

टर्की-अरब-सङ्घर्षके सिलसिलेमें कर्नल लारेन्सने जितने भी अद्भुत कार्य कर दिखाये उनमें उसका एक कार्य अत्यन्त अद्भुत और विस्मयजनक था। यह था सेना और सेनाके लिए आवश्यक भरी भरायी चीजों सहित टर्कीकी ट्रेनोंके विध्वस्त करनेका कार्य। टर्की सोचता है कि नम्बर १०की गाड़ी जा रही है, खूब सैनिक हैं, सारा अरब तुर्की सैनिकोंसे भर जायगा, अरबोंकी जानोंके लाले पड़ जायेंगे, उन्हें कहीं मुंह छिपानेकी भी जगह न मिलेगी, और सारे अरबपर टर्कीका झण्डा फहरायेगा। मगर १० नम्बरकी गाड़ी बीच हीमें नष्ट-भ्रष्ट कर दी जाती है, सैनिकोंके खूनसे अरबके बालू सन जाते हैं और उनके खाद्य पदार्थोंसे अरबोंके घर पट जाते हैं।

इस प्रकार लारेन्सने दर्जनों ट्रेनें तोड़ीं और जिस किसीने भी लारेन्सकी यह ध्वंसलीला सुनी, वही आश्चर्यसे भौचक हो गया। और टर्कीवाले? टर्कीवाले तो लारेन्सपर दांत पीस रहे थे, कब मिले और बोटी-बोटी काट डाला जाय! परन्तु लारेन्स भी साधारण खिलाड़ी नहीं था। वह सर्वत्र था और कहीं भी नहीं। टर्कीवाले जब लारेन्सके लिए दर्जनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जासूस छोड़ते और जब जासूस उसे अरबकी झाड़ियों और उसके टीलोंके पीछे खोजते फिरते, तब लारेन्स खास टर्कीके शिविरमें ही होता और उनकी किसी योजनाको हड़पनेके फिराकमें रहता। कभी किसी जिप्सी लड़कीके वेषमें उनके शिविरमें चक्कर लगाता और कभी गड़रियेके बानेमें उनकी आंखोंमें धूल झोंककर उनके भेद प्राप्त करता। इस तरह टर्कीवाले उससे हैरान रहते। और इसीलिए उन लोगोंने घोषित कर दिया था कि जो कोई लारेन्सको जीता या मरता पकड़ा देगा उसे पचास हजार पौण्ड पुरस्कार-स्वरूप दिये जायेंगे। पर लारेन्स ऐसा अभागा नहीं था कि उसके खूनसे किसीका भाग्य चमके। एक बार एक अरबने उसे धोखा देकर पकड़ानेका भी प्रयत्न किया था जरूर, पर इसके लिए उस अभागेको ही अपनी जानसे हाथ धोना पड़ा। अरबवाले अपने उद्धारक लारेन्सके प्रति इस प्रकारका विश्वासघात कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, उन्होंने उस कमीने आदमीको बोटी-बोटी काटकर फेंक दिया।

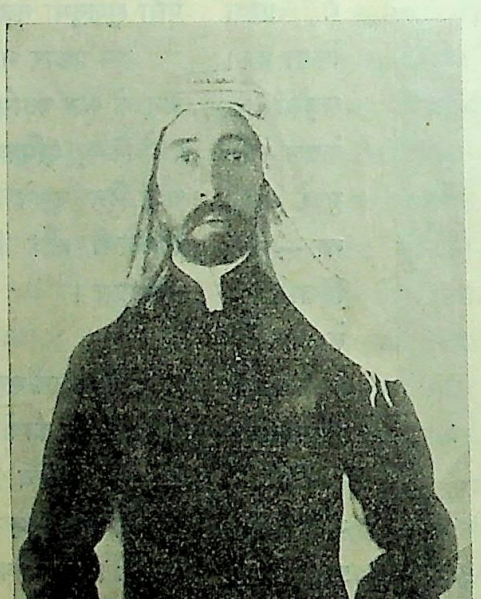

अरबके अमीर फैसल

एक दिनकी बात है। काफिला अपनी निश्चिन्त मतवाली गतिसे बढ़ता जा रहा था। आगे था लारेन्स और उसके पीछे एक हजार अरबोंकी विशाल सेना। सन्ध्याकी नीरवताको उनका मस्ती-भरा गीत मुखरित कर रहा था। एक सहस्र कण्ठोंसे निकलते हुए उस गीतके प्रत्येक चरणमें लारेन्सकी विरुदावलि थी—'अरबके बेताजके राजा'(The Uncrowned king of Arabia.) के प्रति उनकी श्रद्धाञ्जलि थी। वे मस्तीसे झूम-झूमकर गा रहे थे। परन्तु लारेन्स? लारेन्सका उधर ध्यान ही नहीं था। रास्ते-भर वह चुपचाप चला जा रहा था। अकस्मात् उसने एक साथीसे कहा—"क्या तुम जानते हो, सबसे दिल दहला देनेवाला दृश्य जो मैंने देखा है वह है ट्रेन विध्वस्त हो जाने-पर टर्कीके सैनिकोंका ध्वंस।"

शायद लारेन्स फिर ऐसे ही दिल दहलानेवाले दृश्य देखना चाहता था। यह बात उसके मनमें घर कर गयी थी और इसलिए इस घटनाके तीसरे दिन वह पिलग्रिम रेलवेकी ओर चल पड़ा। रातका घोर सन्नाटा था। कहीं भी कोई चलता-फिरता नहीं दिखाई पड़ता था। केवल लारेन्स अपने दो सौ सहायक सैनिकोंके साथ बढ़ता जा रहा था। काफिला दो दिनों तक चलता रहा। उनके शरीरपर बालुका-राशि उड़-उड़कर जम जाती और वे एक बार अपने शरीरपर नजर डालते, एक बार थके हुए ऊंटोंपर और फिर चल पड़ते, उन्हें दम भरनेकी भी फुरसत नहीं थी। आखिर बड़े परिश्रमके बाद वे लोग उस स्थानपर पहुंचे जो टर्किश रेलवेका एक प्रधान केन्द्र था। लारेन्सने उंगली उठायी, जिसका अर्थ था ऊंटों-परसे उतर पड़ो। और इस निर्देशके अनुसार सभीने अपने ऊंटोंको छोड़ा और निकटवर्ती गिरिश्रृङ्गपर जा चढ़े। नीचे रह गया केवल लारेन्स।

यह वह रेलवे थी जिसका निर्माण टर्कीवालोंने इसलिए किया था कि इसकी सहायतासे अरब-वालोंपर अपना पञ्जा सदैव बना रहे। मदीना और मक्काके लिए इसीके द्वारा यात्री भी आते थे, परन्तु उन दिनों तो टर्कीवालोंने इससे सेना भेजने हीका काम लेना शुरू कर दिया था। लारेन्सने इस लाइनको कभी तोड़ दिया होता, परन्तु जब उसने देखा कि टर्कीवाले मदीना-स्थित अपनी फौजके लिए बराबर खाद्य और शस्त्रास्त्र इस रेलवेसे ही भेजते हैं, तो उसने उसे सुरक्षित ही रखनेका इरादा किया, क्योंकि उसे जब अरबोंके लिए इन चीजोंकी आवश्यकता होती, वह ट्रेन गिरा देता, और अरब उसपरका सारा सामान लूट लेते।

बादको तो ट्रेन तोड़नेकी इस कलामें लारेन्स इतना कुशल हो गया कि जब चाहता, ट्रेन तोड़ देता। विस्फोटक पदार्थों-के प्रयोगमें वह खूब अनुभवी हो गया था, किन्तु बहु ओंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसने इस कलाका ज्ञान कभी नहीं कराया। वह उन्हें साथ रखता था केवल लूट-खसोट करनेके लिए। उसने इतनी टर्किश ट्रेनें तोड़ी थीं और तुर्क लारेन्सकी इस शैतानीसे इतने भयाकुल रहते थे कि प्रत्येक ट्रेनमें पीछेकी सीटें आगेकी सीटोंकी अपेक्षा अधिक मूल्यपर—प्रायः पांच-छ-गुने दामपर—उठती थीं। क्योंकि ट्रेनोंके गिरनेपर जितना खतरा आगेकी सीटोंके लिए रहता था, उतना पीछेकी सीटोंके लिए नहीं।

दिनके बारह बज रहे थे। तुर्क गाड़ी निद्रामें खर्राटें ले रहे थे। लेकिन थके-मांदे होनेपर भी लारेन्सकी आंखोंमें नींद कहां? उसने अपना वेष बदला और चल पड़ा इस बातकी खोजमें कि तुर्कोंकी ट्रेन किस स्थानपर गिराना ठीक होगा। अरबके रेगिस्तानोंपर तपनेवाले सूर्यका जलानेवाला आतप और उसमें नङ्गे पांव—जिससे शब्द न हो और जिससे जमीनपर निशान न पड़ जाये—लारेन्स बढ़ता जा रहा था। रेलवे लाइनके किनारे पहुंचकर उसने एक जगह तजवीज की। अक्सर वह ट्रेनोंके उड़ानेके लिए चालीस-पचास पौण्ड विस्फोटक पदार्थ रखता था, परन्तु इस बार समूची ट्रेनको ही वह विध्वस्त कर देना चाहता था, इसलिए उसने इससे भी अधिक डिनामाइट एक गढ़ेमें भरा। रेलकी पटरियोंके नीचे इस गड्ढेको खोदनेमें उसने उस कड़ी धूपमें प्रायः एक घण्टा लगाया। और फिर इससे एक तारका संयोग किया। यह तार अत्यन्त बारीक था और लोहेकी पटरियोंके नीचेसे लगाकर इसे वह एक निकटवर्ती पहाड़ी तक ले गया। यह सब काम करनेमें उसने बड़ी सावधानी रखी। गड्ढा खोदकर डिनामाइट भरनेके बाद उसने ऊंटके बालोंके हलके झाड़ूसे ऊपरकी मिट्टी इस प्रकार झाड़-बुहार दी कि किसीको पता ही नहीं चल सकता था कि वहां जमीन खोदी गयी है। और फिर जब चलने लगा तो बीस गज तक उलटे पांव गया जिससे पैरका निशान सीधा न पड़े। इसके साथ ही उलटे पांव वह चलता जाता था और पद-चिह्नोंको झाड़ूसे बुहार-कर मिटाता भी जाता था। लगभग दो सौ गजके फासलेपर वह चुपचाप एक गड़रियेके वेषमें जाकर बैठ गया और ट्रेनकी प्रतीक्षा करने लगा। डिनामाइटसे संयुक्त विध्वंसकारी तार उसके हाथमें था।

ट्रेन आ रही है! सशस्त्र सैनिकोंसे खचाखच भरी हुई! वे चले हैं अरबोंपर विजय प्राप्त करने, परन्तु सिरपर मृत्यु नाच रही है इसका पता उन्हें कहां? उन्हें एक व्यक्ति दूरपर बैठा हुआ दिखाई पड़ता है, हाथमें गड़रिया-का एक लग्गा लिये हुए। परन्तु ट्रेन शैतानकी तेजीसे भागती जा रही है, वह आदमी फौरन् आंखसे ओझल हो जाता है।

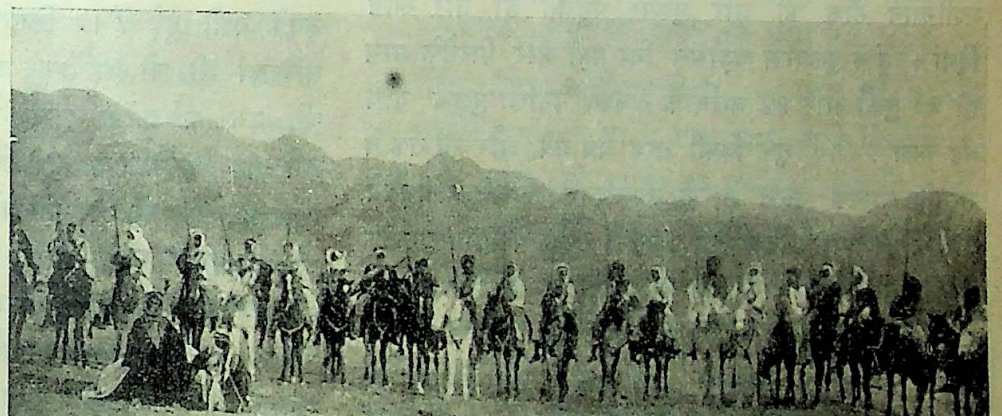

बहुओंकी सेना तुर्कोंपर आक्रमण करनेके लिए तैयार है।

लारेन्सने गाड़ीके कुछ डिब्बे बढ़ जाने दिये। वह देखो बीचका डिब्बा सामने आया और ओह! लारेन्सने तार खींच दिया! सर्वनाश! एक भयङ्कर घोष और आसमानमें धुएंकी घोर घटा! ट्रेन नष्ट-भ्रष्ट हो गयी! प्रायः तीन सौ गजकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जमीन विध्वस्त ट्रेनके टुकड़ोंसे भर गयी। कई टुकड़ोंसे लारेन्स खुद घायल होते-होते बचा।

* * *

सितम्बरका महीना था। लारेन्सको पता चला कि तुर्कोंकी सुसज्जित ट्रेन दमिश्कके दक्षिणमें स्थित कीलोके पुलपरसे होकर गुजरनेवाली है। लारेन्स इस मौकेसे कैसे चूकता। दो शेखोंके साथ निकल पड़ा। इधर लारेन्स निकला और उधर दक्षिणसे ४० और उत्तरसे १०० सशस्त्र तुर्क लारेन्सको घेरकर पकड़नेके लिए पहलेहीसे निकल पड़े थे। लेकिन लारेन्सने ट्रेन तोड़नेका सारा प्रबन्ध कर लिया था। जरा-सा तार हिला नहीं कि सब मटियामेट। लारेन्सने अपनी मशीनगन ठीक की और पुलपर पहुंचते ही तार खींच दिया। ट्रेन पुलपरसे धड़ामसे गिर पड़ी और गिरनेके साथ ही ७० तुर्कों और १४ जर्मनोंके खूनका पनाला पुलके नीचे बह चला. ९० तुर्क किसी तरह बच गये, और जब तक वे भागनेका प्रयत्न करते हैं, कि तब तक लारेन्सकी मशीनगनें गोलियोंकी वर्षा करनेपर तुल पड़ती हैं और वे गिरफ्तार कर लिये जाते हैं। महीने-भर भी नहीं बीता था कि इसी स्थान-के पास लारेन्सने एक दूसरी ट्रेन भी उड़ायी जिसमें ७० टन खाद्यपदार्थ अरबोंके हाथ लगा। इस ट्रेनके उड़ा देनेपर जब लारेन्सने अपनी रिपोर्ट तैयार की, तो उसने घटनाका वर्णन करनेके बाद विनोदके भावमें ट्रेनके लिए लिखा था—"अब इसकी मरम्मत नहीं हो सकती।"

एक विध्वस्त पुल—इस प्रकारके दर्जनों पुल लारेन्सने तोड़ डाले।

इस तरह लारेन्सने ट्रेनोंको उड़ाने, पटरियोंपरसे गिराने और रेलकी पटरियोंको सर्वथा विध्वंस कर देनेमें बड़ी दक्षता प्राप्त कर ली थी। केवल एक वर्षके भीतर—१९१७ में—२५ ट्रेनें तोड़ीं, १५ हजार रेलोंको नष्ट-भ्रष्ट किया, और ९७ पुलोंको उड़ा दिया। अठारह महीनेके भीतर उसने कुल मिलाकर ७९ ट्रेनें उड़ायीं! जेनरल अलेन्बीने अपनी एक रिपोर्टमें एक बार लिखा कि कर्नल लारेन्सने ट्रेनोंके उड़ानेको अरबका राष्ट्रीय खेल बना रखा था।

हेजाज-पिलग्रिम रेलवेके प्रत्येक स्टेशनपर एक या दो घण्टियां लटकती रहती थीं। ये घण्टियां उस समय बजायी जाती थीं, जब ट्रेन खुलती थी। ये सारीकी सारी घण्टियां आज लारेन्सके मित्रोंके घरोंमें लारेन्सके विजय-चिह्नके रूपमें रखी हुई हैं। कितने ही इञ्जिनोंपरके नम्बरकी तख्तियां भी, जो ट्रेनोंके टूट जानेपर भी सुरक्षित रह जाती थीं, उन घण्टियोंके साथ ही तुर्कोंकी पराजयकी याद लारेन्सके मित्रोंको आज भी दिलाया करती हैं।

लारेन्स ट्रेनों और पुलोंको उड़ानेके लिए इतना मशहूर हो गया था कि जब टर्कीकी पराजयके बाद मिश्रसे होकर लारेन्सके पेरिस जानेका समाचार कैरो पहुंचा तो वहांके जेनरल वाट्सनने विनोदभावसे कहते हुए घोषणा की कि मिश्रके कैसर निलपुलकी रक्षाके लिए मैं शीघ्र ही एक सैन्य-दल भेजूंगा। कितने ही हंसोड़ोंने तो यह भी अफवाह उड़ायी थी कि लारेन्स इस बातसे बड़ा दुखी है कि टर्की-अरब-सङ्घर्ष समाप्त हो जानेसे अब उसे ट्रेनोंके उड़ानेका मौका हाथ नहीं आयेगा और उनका कहना था कि लारेन्स चाहता था कि कमसे कम ८० ट्रेनें तो उड़ायी गयी होतीं।

× × ×

लारेन्सका सारा जीवन रहस्यमय बना रहा और भविष्यमें भी बना रहेगा। उसके कारनामोंकी सदैव भली-बुरी आलोचनायें होती रही हैं। अरबके अतिरिक्त लोगोंका अनुमान है कि पिछले दिनों अफगानिस्तानका जो पट-परिवर्तन हुआ है, उसमें भी लारेन्सका हाथ रहा है। वहां भी वह चिनगारियां फेंकता हुआ देखा गया था। भारतीय सीमा-प्रान्तपर भी वह बदनाम हो चला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किन्तु एक बात स्पष्ट है, और वह यह कि लारेन्स था अद्भुत प्रतिभाशाली पुरुष। एक लेखककी हैसियतसे, एक सङ्गठनकर्ताकी हैसियतसे, एक जासूसकी हैसियतसे और एक पुरातत्त्व विशारदकी हैसियतसे, जिस किसी भी दशामें जिस किसी भी कार्यको उसने उठाया, अद्भुत ढङ्गसे सफलतापूर्वक उसने किया। हां, अपनी इस सफलताके लिए उसने कभी भी भले-बुरेका ख्याल नहीं किया। वह इस कहावतका कायल था कि प्रेम और युद्धमें उचित और अनुचितका विचार नहीं किया जाता। लारेन्सकी नीति और कार्य करनेकी प्रणालीकी चाहे जितनी भी आलोचना हो, परन्तु यह तो मानना होगा कि था वह शक्तिशाली पुरुष। जिस समय डाक्टरोंने उसे एक साधारण सैनिक बननेके लिए भी अयोग्य ठहरा दिया था उस समय किसे इस बातकी कल्पना हो सकती थी कि ५ फीट ३ इञ्चका यह क्षीणकाय मनुष्य, जिसकी आंखोंमें सदैव खुमारी-सी भरी दिखाई पड़ती है और जो इतना सङ्कोची हो कि किसीके सामने आंखें उठाकर बात न कर सकता हो, वही किसी दिन—केवल चार वर्षोंके भीतर इतना बड़ा सैन्य-सञ्चालक हो जायगा और किसी विशाल देशके हजारों प्राणी उसके एक ही अंगुलि-निर्देशपर प्राणोंपर खेल जानेके लिए सदैव तैयार रहेंगे। उसकी इसी सफलतापर आश्चर्य करते हुए एक व्यक्तिने उसके एक अन्तरङ्ग मित्रसे एक बार पूछा था कि लारेन्स क्या वास्तवमें हम लोगों-जैसा एक मनुष्य ही है और औदा अबूतईने—जिसका अरबके निर्माणमें बहुत बड़ा हाथ है और जिसने अपने बने हुए नकली दांतोंको केवल इसलिए उखाड़कर फेंक दिया था कि वे तुर्कों द्वारा बनाये गये थे—कहा था—"पैगम्बरकी दाढ़ीकी शपथ, वह तो एक मनुष्यसे कुछ और भी अधिक मालूम होता है।"

किन्तु अपनी इन सफलताओंके लिए लारेन्सने कभी भी कोई सम्मान स्वीकार नहीं किया। ड्यूक आफ कनाट महोदयने जब पैलेस्टाइनमें जेनरल एलेन्बीके साथ उसे भी

पेरिसके सन्धि-सम्मेलनमें अमीर फैसल और उनके साथी। लारेन्स अमीरकी बायीं ओर खड़ा है।

सम्मानित करनेका आयोजन किया, उस समय वह तुर्कोंकी ट्रेनें तोड़नेमें लगा हुआ था। इस प्रकार उसने विक्टोरिया-क्रास और नाइटहुडकी उपाधि तक अस्वीकार कर दी। और अरबोंकी विजयके बाद वह रहस्यमय व्यक्ति बहुत दिनों तक न जाने कहां अन्तर्द्धान रहा। जीवन-भरमें उसने केवल एक ही सम्मान स्वीकार किया और वह था आल सोल्स कालेज आक्सफोर्ड (All Soul's College Oxford.) का फेलोशिप। यह सम्मान कुछ ही चुने-चुनाये विद्वानोंको प्राप्त होता है। लारेन्सके साहित्यज्ञान और उसकी प्रगाढ़ विद्वत्तासे आकर्षित होकर अधिकारियोंने यह सम्मान उसे दिया था।

रुडयार्ड किपलिङ्ग और जार्ज बर्नार्ड शा जैसे साहित्यिक और लायड जार्ज जैसे राजनीतिज्ञ लारेन्सकी प्रशंसा करते नहीं अघाते। और मि० चर्चिलने तो उसकी मृत्युके पश्चात् यहां तक कहा था कि "No such blow has befallen the Empire as his untimely death." अर्थात् ब्रिटिश साम्राज्यको लारेन्सकी असामयिक मृत्युसे जैसा करारा धक्का लगा है, वैसा कभी भी नहीं लगा था।"

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कलाकी समीक्षामें सच्चे मूल्यकी कसौटी

श्री रामनाथ 'सुमन'

कलाको लेकर संसारके साहित्यमें इतना मतभेद युग-युगसे सञ्चित है कि उसके सम्बन्धमें सहसा किसी निर्णीत सिद्धान्तकी घोषणा करना अत्यन्त कठिन है। कलाके उद्देश्यका विवाद तो बहुत पुराना है और उसके सम्बन्धमें इतना साहित्य उपलब्ध है कि समीक्षकको प्रकाशके स्थानपर उनसे अन्धकार ही अधिक मिलता है। हां, कलामें अभिव्यञ्जनाके आदर्शको थोड़े-बहुत अंशमें सभी स्वीकार करते हैं और बाम गार्टेनने अपने सौन्दर्य-शास्त्र ( Estetica ) में जब, शताब्दियों पहले, कला अथवा सौन्दर्यको "Expressione riuscita" ( सफल अभिव्यक्ति ) विशेषण दिया, तो उसने भी इसी बातकी पुष्टि की।

परन्तु यहां मेरा उद्देश्य कलाकी व्याख्या करनेका नहीं है; मैं तो यहां इस बातका विवेचन करना चाहता हूं कि यूरोपमें कलाके सम्बन्धमें जो आधुनिक आन्दोलन हुए हैं उनकी दृष्टिसे कलाकी समीक्षाकी कसौटी क्या स्थिर की जा सकती है और किसी कृतिका मूल्य आंकनेके लिए क्या सिद्धान्त होने चाहिएं।

## मूल्यकी कसौटी

जब हम किसी चित्र अथवा कलापूर्ण कृतिपर विचार करते हैं तब इस निष्कर्षपर पहुंचते हैं कि उसका मूल्य दो बातोंपर निर्भर करता है:—

( क ) शिल्पीके अपने आदर्श, उद्देश्य तथा उचित निर्णय एवं आत्म-सन्तोषकी मात्रापर;

( ख ) कृतिके दर्शन वा संसर्गसे पड़नेवाले, दर्शकके मनके प्रभावपर।

इन दोनों बातोंको, प्रत्येक अवस्थामें, अलग-अलग रखकर जांच करना तो बड़ा कठिन काम है। दुनियामें बहुत ही थोड़े सौन्दर्य-शास्त्री और कला-समीक्षक इस प्रयत्नमें सफल हुए हैं। आजकल तो अधिकांश समीक्षक कृतिके द्रष्टाके मनपर पड़े हुए प्रभावकी मर्यादाको उसके मूल्यकी एकमात्र कसौटी मानते हैं। यहां तक कि क्लाइव बेल-जैसे कलाके प्रसिद्ध समीक्षक भी इस भ्रमके शिकार हुए हैं। उनका कहना है कि प्लास्टिक आर्ट्सके दर्शनसे मनमें एक विशेष प्रकारका आवेग ( Emotion ) उत्पन्न होता है। इस विशेष प्रकारके आवेगको वह अनेक भावपूर्ण नामों ( Passionate emotion, intense rapture, Superhuman ecstasy ) से पुकारते हैं। उनका यह भी कहना है कि इस विशेष आवेगके समय द्रष्टा 'सौन्दर्यबोधसे प्राप्त आनन्दकी महान् चोटियों' ( Superb peaks of aesthetic exaltation ) पर होता है।

श्री बेल कृतिके ऐसे प्रभावको ही उसके मूल्यकी कसौटी ( Criterion of value ) मानते हैं। उनका कहना है कि किसी भी रचनाको, जिसमें दर्शक या श्रोता या पाठकके मनमें ऐसा आवेग उत्पन्न करनेकी शक्ति नहीं है, कलाके अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता।* यदि कृति वा रचना ऐसा आवेग उत्पन्न करनेमें समर्थ हुई, तो उनके विचारसे, वह कलाकी श्रेणीमें आती है, अन्यथा नहीं।

## दो प्रकारके मूल्य

किन्तु जब हम श्री बेलके सिद्धान्तकी सूक्ष्म परीक्षा करते हैं तब उसकी अपूर्णता और उनका भ्रम प्रत्यक्ष हो जाता है और हम इस निष्कर्षपर पहुंचते हैं कि प्रत्येक कृतिमें दो प्रकारके मूल्य निहित हैं—

(क) तात्त्विक वा आभ्यन्तरिक मूल्य (Intrinsic value)

(ख) बाह्य या प्राप्त मूल्य ( Acquired value )

तात्त्विक वा आभ्यन्तरिक मूल्य—वह मूल्य है जो कर्ता वा शिल्पीके उद्देश्य, आदर्श और सफलता-सम्बन्धी

---

* "I have no right to consider anything a work of Art to which I cannot re-act emotionally; and I have no right to look for the essential quality in anything that I have not felt to be a work of art.

Clive Bell in 'Art'.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसकी अपनी मनःतुष्टिपर निर्भर करता है। आत्म-सुख ही इसका मुख्य लक्षण है।

बाह्य या प्राप्त मूल्य—वह मूल्य है जो दर्शक, श्रोता, पाठक वा समालोचकके मनपर पड़े प्रभावके कारण कृतिको प्राप्त होता है।

## ठीक कसौटी

अब हम यदि श्री वेलकी बात मानकर चलते हैं तो प्रत्येक महान् कृति उस अवस्थामें कलाहीन और (कलाकी दृष्टिसे) व्यर्थ सिद्ध हो जाती है जब सौन्दर्योपलब्धिकी शक्तिसे हीन होनेके कारण दर्शक, पाठक, श्रोता वा आलोचकका मन उसके प्रभावसे वञ्चित रह जाय। यह अनिवार्य नहीं है कि प्रत्येक समीक्षक अथवा पाठक एवं श्रोतामें रस-ग्रहण (Receptivity) का माद्दा हो ही। फिर प्रत्येक दर्शक, श्रोता वा पाठकपर पड़नेवाला प्रभाव बहुत-कुछ उसकी तात्कालिक मानसिक स्थिति (अथवा मानसिक विकास) पर भी निर्भर है। ऐसी अवस्थामें यदि हम श्री ह्वाइट वेलकी 'मूल्यकी कसौटी' को ठीक मान लें तो एक कृति एक ही दर्शक वा श्रोता वा पाठकको जीवनकी किसी घड़ीमें बहुत ऊंची और सुन्दर मालूम होगी और दूसरी घड़ीमें सारहीन मालूम पड़ेगी। ऐसी हालतमें हम इसे मूल्यकी ठीक कसौटी नहीं मान सकते। मूल्यकी सच्ची कसौटी तो कर्ता वा शिल्पीकी अपने उद्देश्य एवं आदर्शमें, उसीकी मनस्तुष्टिसे जांची जानेवाली, सिद्धि है। उसीसे कृतिको तात्त्विक वा आभ्यन्तरिक मूल्य (Intrinsic value) प्राप्त होता है और यह आन्तरिक मूल्य दर्शक, पाठक, श्रोता वा समीक्षककी प्रशंसा वा निन्दासे परे है; क्योंकि दर्शक, पाठक, श्रोता वा समीक्षकका नहीं, वरन् कर्ता वा शिल्पीका ही सन्तोष-असन्तोष कृतिके रूपमें परिवर्तन कर सकता है। इससे हम इस निष्कर्षपर पहुंचते हैं :—

१—किसी भी मौलिक कला-कृतिका आन्तरिक मूल्य कर्ता वा शिल्पीके आचरण, आदर्श, लक्ष्य एवं निर्माणके प्रकारमें ही सन्निहित है। कृतिमें शिल्पी अपनी जिस अनुभूतिको विकसित करनेके अभिप्रायसे उसका आरम्भ करता है, उस (अभिप्राय) की सिद्धिमें ही कृतिका सच्चा मूल्य है।

२—दर्शक और पाठक (स्वयं शिल्पीको छोड़कर) इत्यादि, जो कलाकी एक मौलिक कृतिके निर्माणके पश्चात् उसे देखते हैं, वे अपनी निन्दा वा यश अथवा अपने मनपर पड़ी किसी प्रकारकी छायासे कृतिके आन्तरिक वा तात्त्विक मूल्यपर प्रभाव नहीं डाल सकते। हां, वे उसे एक दूसरे प्रकारका मूल्य दे सकते हैं जिसे 'प्राप्त वा बाह्य मूल्य' कहा जा सकता है।

३—मौलिक शिल्पी दर्शकोंके मनपर पड़नेवाले प्रभावकी चिन्तासे मुक्त होकर अपनी कृतिका निर्माण करता है।

जितने भी मौलिक शिल्पी हैं, सब अपनी एक विशेष अनुभूतिको मूर्त्त करते हैं। और उस अवस्थामें उनकी अनुभूति उनके अपने अन्तःकरणमें केन्द्रित रहती है। उस समय वे अपनेमें इतने मग्न एवं केन्द्रित होते हैं कि किसी बाह्य एजेन्सीका ध्यान नहीं कर सकते। * हां, मौलिक शिल्पीको यह स्वीकार करनेमें एतराज नहीं कि दर्शकके मनपर पड़नेवाले प्रभावकी दृष्टिसे ही उसकी कृतिका बाह्य मूल्य (Acquired value) आंका जा सकता है। पर इसके साथ वह यह भी जानता है कि इस प्रभावका कृतिके आन्तरिक मूल्य (Intrinsic value) पर कोई असर नहीं पड़ता। किसी कृतिके आन्तरिक मूल्यकी अन्तिम मर्यादा तो तभी समाप्त हो जाती है जब कर्ता उसे पूर्ण एवं सफल समझकर छोड़ देता है और वह दर्शकोंके सामने आ जाती है।

इसलिए हमारे मतसे सच्ची कसौटी तो यह देखना नहीं है कि दर्शक वा आलोचकके मनपर किसी रचनाका क्या प्रभाव पड़ता है, वरन् यह देखना है कि कलाकारका उद्देश्य क्या रहा है और वह अपने उद्देश्यमें किस मात्रा तक सफल हुआ है।

---

* प्रो० विलेंस्की अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'दि माडर्न मूवमेण्ट इन आर्ट' में इस बातपर जोर देते हुए लिखते हैं :—

"No original artist will admit that the criterion of value of his work is the incidence or non-incidence of any special reaction on the part of spectators other than himself. पृष्ठ १७३



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## शिल्पी भी तो दर्शक है

इतना मान लेनेपर, उससे एक निष्कर्ष यह निकलता है कि कलाकी किसी मौलिक कृतिके आन्तरिक मूल्यका अनुमान करनेके लिए स्वयं उसका कर्ता ही सबसे उपयुक्त पात्र है। सौन्दर्यशास्त्री और कला-समीक्षक इस बातको भूल जाते हैं कि कलाकार निश्चय ही अपनी कृतिका एक दर्शक भी होता है और वही एक ऐसा दर्शक है जिसकी सम्मतिका प्रभाव उस कृतिपर पड़ सकता है और उसके ही निर्णयसे चित्रमें परिवर्तन हो सकता है। वही एक व्यक्ति है जो अपनी कृतिके आन्तरिक मूल्य (Intrinsic value) में अन्तर डाल सकता है।

इससे यह मालूम होता है कि किसी कृतिका समाजमें कैसा स्वागत हुआ है, यह देखकर ही उसके महत्त्वका अन्दाज नहीं किया जा सकता। समाजमें किसी रचनाका जो स्वागत होता है वह कई प्रकारके निर्मित स्वार्थोंका परिणाम होता है। एक शिल्पीके मित्रोंमें प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा विख्यात पत्रकार हैं। बस, उसकी साधारण कृतिका भी उनके कारण पर्याप्त प्रचार किया जा सकता है। और इस प्रचारके द्वारा बहुत बड़ी सीमा तक कृतिके 'प्राप्त वा बाह्य मूल्य' को बढ़ाया जा सकता है। उसे पदक, पुरस्कार आदि मिल सकते हैं; उसकी कृतियोंका आर्थिक मूल्य बढ़ जा सकता है और उसे सर्वसाधारणमें यश तथा लोकप्रियता भी प्राप्त हो सकती है। पर यह हो सकता है कि उसकी मृत्युके १००—२०० वर्ष बाद जब जनता एवं समीक्षकोंके मनपर प्रचारका प्रभाव नष्ट हो जाय तब उस कृतिका मूल्य बिलकुल घट जाय। इसके विपरीत अत्यन्त उच्चकोटिका शिल्पी अपने समयमें बिलकुल अनादृत रह सकता है। प्रचारके साधन न मिलनेके कारण यहां तक भी सम्भव है कि उसकी अत्यन्त उच्च कलापूर्ण कृतियां स्वयं उसीके साथ नष्ट हो जायं। यह भी सम्भव है कि बच जायं और शताब्दियों बाद लोगोंकी निगाह उनपर पड़े और वे अत्यन्त लोकप्रिय हो उठें।

इसलिए कलाके साधकके पास अपनी कृति एवं साधनाके मूल्यकी जो सबसे बड़ी गारण्टी है, वह उसका अपना आनन्द है। यह आनन्द उसके अपने आत्म-निमज्जनका परिणाम है। अमूर्त्त लक्ष्यको मूर्त्त रूप देनेकी इस साधनामें ही उसका कृतिके साथ, अधिकसे अधिक जो एकात्म्य सम्भव है, होता है और अन्तःकरणकी इस विकसित अवस्थामें जो मानसिक संग्रथन एवं समन्वय मूर्त्तका अमूर्त्तके साथ होता है वही कलाकी चरम अनुभूति है। इस अनुभूतिकी सफलतामें ही शिल्पीका आनन्द है और यह आनन्द, यह मनस्तुष्टि ही उसकी कृतिके आन्तरिक मूल्यका निर्णय करती है। इसी सन्तोष और आनन्दको लेकर, जगत्की उपेक्षाके बीच भी, शिल्पी चल पाता है।

ये सब बातें मौलिक शिल्पीके लिए ही हैं। एक चित्रकार, जो समयकी मांगके अनुसार अपने चित्र बनाता है, मौलिक शिल्पीकी कोटिमें नहीं आता। एक कवि, जो इस भावके साथ कविता लिखता है कि बाजारमें अमुक प्रकारकी कविताओंकी मांग है, इस कोटिमें नहीं आता। क्योंकि दोनोंका निर्णय और दोनोंकी कृति बाजार-दरसे प्रभावित है। उनकी रचनायें अन्तःदर्शनकी, अन्तरानुभूतिकी सिद्धि नहीं; बाजारमें मिलनेवाले उनके मूल्यके भावसे दबी हैं। उनमें मानसकी अनुभूति मुक्त पङ्खोंसे उड़ नहीं सकती; उसके पङ्ख लोक-रुचिसे बंधे हैं और आत्म-निर्णय एवं आत्मानुभवपर फैशन एवं बाजार-भावकी विजय हो चुकी है।

कलाके सम्बन्धमें पहली बात जो याद रखनेकी है, यह है कि उसका एक सहज एवं स्वतन्त्र उद्गम है। और उसका निजका स्रोत है। मेरा मतलब यह नहीं कि कला लोक-व्यवहार एवं लोकाचरणको लांघकर चले। लोक-संस्कृतिका प्रभाव शिल्पीके मनपर तो पड़ता ही है और उसका अपने युगकी प्रत्येक धारामें जो रस और सौन्दर्य होता है उसे पीता ही रहता है और इन सबसे उसके अन्तरमें एक विशेष प्रकारकी अनुभूति और रस-ग्राही चेतनाका निर्माण होता है और इस चेतनासे कलाका जन्म होता है। इसलिए सच्ची कलामें, युगके प्रवाहमें जो कुछ चिरन्तन है वह शिल्पीकी विशेष चेतनासे छनकर, आ ही जाता है। यों भी कहा जा सकता है कि सच्ची कला युगके स्थायी निर्देश एवं चिरन्तन तत्त्वको तो ले लेती है, परन्तु उसके प्रवाहशील फेनिल आवेगोंको छोड़ देती है।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्षमा

श्री 'अज्ञेय'

जब मैं तुम्हारी कोठरीके आगेसे जाया करूं, तब तुम मेरी ओर ऐसी दृष्टिसे मत देखा करो। मैं तुम्हारे पास नहीं आता, तुमसे बोलता नहीं, हो सकता तो तुम्हारी ओर देखता भी नहीं। पर जब सब बन्द हो चुके होते हैं, तब मेरी कोठरी खोली जाती है और मुझे घूमनेको कहा जाता है, तब मुझे एकाएक अपने जीवनकी निरर्थकता दीख पड़ने लगती है। मैं डरता नहीं, घबराता नहीं, कुछ भी नहीं, केवल अशान्त हो जाता हूं, अनिश्चयसे भर जाता हूं। इसीलिए आते-जाते, एक बार तुम्हारी कोठरीके आगे आकर, बिना रुके ही एक बार तुम्हारी ओर देख लेता हूं।

तुम मेरी ओर ऐसी दृष्टिसे मत देखा करो। मैं नहीं चाहता कि तुम्हें यह ज्ञान भी हो कि मैंने तुम्हारी ओर देखा। मैं तुमसे आंख नहीं मिलाना चाहता। इसलिए नहीं कि मैं तुमसे झिझकता हूं—केवल इसलिए कि मैं समझ नहीं सकता कि तुम मुझसे कैसे आंख मिला सकोगे। मेरी ओर देखकर, मेरी उन्हीं आंखोंमें, जिन्होंने आठ साल तक अखण्ड आग्रह और स्नेहसे तुम्हारा पथ देखा है, उन्हीं आंखोंमें अपनी आंखें गड़ाकर, तुम कैसे मेरा सामना कर सकोगे? तुम्हारा हृदय कैसा उद्वेलित हो उठेगा?

झूठ! जब तुम मुझसे धोखा कर ही गये, तब मैं तुमसे क्यों आशा करता हूं कि तुम लज्जित हो सकोगे? लज्जा तो तब आती जब तुम मुझे अब भी उसी दृष्टिसे देखते। पर अगर ऐसा होता, तो तुम क्या मुझसे धोखा कर सकते?

तुमने सचमुच धोखा दिया है। तुम्हें मैंने किस कामके लिए रुपये दिये थे, तुमने कहां खर्च कर दिये? मेरे वे अभागे साथी प्रतीक्षामें बैठे रहे और रुपया उन्हें नहीं पहुंचा, और वे प्रतीक्षा करते-करते पकड़े भी गये, उन्हें दण्ड भी मिल गया··· और तुम तब भी रुपया लेकर नहीं पहुंचे, न मेरे पास लौटकर ही आये!

बताओ, अगर थोड़े-से रुपयेके लिए ही तुम्हारा मन विचलित हो सकता था, तो तुम इन आठ वर्षों तक क्यों न पथभ्रष्ट हुए? क्यों तुम तब तक विश्वास बढ़ाते गये, मेरे हृदयमें स्थान करते गये, क्यों तुमने मुझपर ऐसा अधिकार जमाया कि मेरा हृदय उसी प्रकार सम्पूर्णतः तुम्हारा हो गया जिस प्रकार मेरा मस्तिष्क सम्पूर्णतः देशका था? मगर तुम्हें जाना ही था, और इस प्रकार जाना था, तो तुम क्यों मेरे इतने पास आये थे?

यह कैसी कमजोरी है कि इतना कुछ होते हुए भी मैं तुम्हें ही सम्बोधित करके लिखे जा रहा हूं? जिस समय मुझे तुम्हारे धोखेका पूरा विश्वास हो गया, उसी समय मुझे चाहिए था कि तुम्हें हृदयसे निकालकर फेंक दूं, तुम्हें ऐसा भूल जाऊं कि तुम्हारा चिह्न तक न रह जाये! और यहां मैं तुम्हींको सम्बोधन करके लिखे जा रहा हूं—रो रहा हूं।

मुझे न जाने क्यों, अभी तक विश्वास नहीं होता कि तुम मुझसे विश्वासघात कर सकते हो। शायद इतने वर्षोंसे तुम्हारा विश्वास करते-करते इसीका अभ्यास हो गया है—अब मैं उसे तोड़ नहीं पाता!

तुम, तुम वहां कोठरीमें बैठे-बैठे क्या सोचा करते हो? सब प्रलयङ्कर विचार तुम्हारे भी मनमें उठते हैं या नहीं? अगर तुमने सचमुच विश्वासघात किया है, तो नहीं उठते होंगे। विश्वासघाती हृदयमें इनकी क्षमता ही नहीं हो सकती।

पर मुझे देखकर तुम्हारी आंखें क्यों जल उठती हैं, वह क्या है? उसे क्या समझूं, अभिनय?

नहीं हो सकता!···

* * *

तुमने हिम्मत कर ही डाली!

जब मैं तुम्हारी कोठरीके आगेसे जा रहा था, तब—आज तुमने आंख उठाकर देखा नहीं, सिर झुकाये ही आवाज दी—भइया!

यह क्या है—तुमने मुझे बुलाया! विश्वासघाती होकर भी तुम ऐसा कर सकते? तुम्हारी वाणीमें क्या था? उस समय मुझे आश्चर्यने पागल कर दिया, नहीं तो मैं समझ पाता!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शायद तुम्हारी वह पुकार, उसकी ध्वनिका उतार-चढ़ाव, उसका कम्पन, वह एक ही शब्द मेरे जीवनकी एक अखण्ड ज्योतिमय स्मृति हो जाता, "भइया !"

मैं उत्तर नहीं दे सका, कोठरीके दरवाजेपर ही जाकर खड़ा हो गया। तुमने फिर कहा, "पास आओ।"

मैं पास क्यों नहीं गया ? क्या इस डरसे कि कहीं तुम्हारी आंखोंमें विश्वासघात न देख पाऊं ?

मैंने तुम्हारी ओर देखे बिना ही कहा, "कहो !"

"भइया, मुझसे नाराज हो ?"

यह प्रश्न ! मैंने झूठे विस्मयके स्वरमें कहा, "अच्छा ?"

आठ साल तक तुम्हें प्यार किया था, आज तुम्हें इस स्वरमें कहा, बिच्छूके डङ्कके समान एक शब्द, "अच्छा !"

तुम फिर बोले, "उसी रुपयेवाली बातसे। मैं सफाई देना चाहता हूं।"

मैंने उपेक्षाके स्वरमें कहा—ईश्वर जानता है कि मेरे हृदयमें उपेक्षा थी या क्या !—"आज आठ साल हो चुके, मैंने तुमसे कभी किसी बातकी कैफियत मांगी है ?"

क्या एक ही चोट काफी नहीं थी जो मैंने यह दूसरा प्रहार किया ?

पर इससे तुम स्थिर हो गये। बोले, "भइया, मेरी बात सुने बिना ही तुमने निर्णय कर लिया ? अगर मैं दोषी भी हूं, तो तुम क्या इतना अन्याय करोगे ?"

अन्याय ? गैरोंसे न्याय-अन्याय हो सकता है। तुम्हारे और मेरे बीचमें भी न्यायके फैसले खड़े हो सकते हैं !

मैंने फिर एक शब्द कहा—शब्द नहीं एक ध्वनिमात्र—"हूं !"

फिर वह कहानीकी तरह कहने लगा—शायद वह समझ गया कि मैं बिना इच्छा जताये भी उसकी बात सुन लूंगा। कहने लगा :—

"तुमने मुझे रुपये दिये थे, मैं लेकर चला। तुम्हें मैंने बताया नहीं, जहां तुमने जानेको कहा था, वहां जाते हुए राहमें मेरा घर भी पड़ता था जहां मेरी मां और बहिन भी रहती थीं। मैं उनसे मिलने गया था। सोचा था कि मिल लूंगा, उन्हें थोड़ी-सी सान्त्वना दे आऊंगा, और फिर अपने काममें लग जाऊंगा। लेकिन—"

तुम इतनी देर रुके रहे—इसी आशासे न कि मैं आग्रह-से पूछूं, "लेकिन क्या ?" मैंने नहीं पूछा, दृढ़ होकर चुप-चाप खड़ा रहा। तुमने न्याय मांगा था, मैं न्याय ही दूंगा, कठोर न्याय। यह प्यारका स्थान नहीं है।

तुम फिर कहने लगे—"लेकिन मैंने जो सोचा था, वह नहीं हो पाया। मैं खोजते-खोजते पहुंचा तो मेरी मां अपने घरमें नहीं, उस घरके नये मालिककी अनुकम्पासे मिले हुए एक अस्तबलके कोनेमें पड़ी कराह रही थी—और बहिन—बहिन शशिकला उसके पास खड़ी रो रही थी।

"मांको कई सालोंसे दमेकी बीमारी थी—जब मैं घरसे निकला था तभी बहुत थी, बादमें तो उसका ऐसा हाल हो गया कि कभी जब दौरा आता तो सांस भी नहीं ले सकती। तब शशि उसके पास बैठकर खूब रोती, खूब रोती।

"घरमें एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। मुझे अभी तक पता नहीं लगा कि वे गुजारा कैसे करती थीं। शशि दो-दो, तीन-तीन दिन भूखी रह जाती, और चार पैसे जोड़कर तम्बाकू ले आती। जब मांको बहुत कष्ट होता, तो उसके पास तम्बाकू धुखाकर धुआं किया करती। बेचारीके पास यही एक इलाज करनेकी सामर्थ्य थी।

"मैं पहुंचा तब मांको न्युमोनिया भी हो गया था। दमेके कारण सांस नहीं आती थी, उसपर न्युमोनिया हो गया था, और बेचारी शशिने कमरेमें तम्बाकूका धुआं कर रखा था ! मैंने अन्दर जाकर, एक दृष्टिमें सब देख लिया। मैं कहनेको हुआ, 'मां, शशि, मैं आ गया हूं !' पर 'मां' भी पूरा कहते नहीं बना !

"जब मैंने मांके माथेपर धीरेसे हाथ रखा, तब उसने आंखें खोलीं। आंखें खुलीं, तब शायद उनमें भर्त्सना थी। किन्तु खुलते-खुलते ही वह उड़ गयी। मांने एक फीकी हंसी—नहीं, वह हंसी भी नहीं थी, केवल ओठोंकी खिंची हुई रेखा कुछ ढीली हो गयी थी—फिर उसने आंखें बन्द कर लीं और टूटे स्वरमें बोली, 'मैं जिऊंगी !'

"शशिसे मैंने बात भी नहीं की। कहा कि तम्बाकू बाहर फेंक दो, खिड़कियां खोल दो, और मांको अपना कोट उढ़ाकर उलटे पांव बाहर निकल गया।

"डाक्टरने आकर देखा, तो कुछ बोला नहीं। मुझसे कहा, 'बाहर चलो, दवाई ले आना।' बाहर आकर उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बताया कि कोई आशा नहीं है। मैंने कहा, 'उसका हौसला तो बहुत है, जीना चाहती है—।' वह बोला, 'यह अच्छी बात है, पर फिर भी—'

"मैं दवाई लाया, सांसके लिए आक्सीजन लाया, बिछाने-ओढ़नेके लिए कपड़े लाया, मांके भी और शशिके भी...और तुम्हारे दिये हुए रुपये खर्च होते गये।"

मैंने फिर तुम्हें रोककर कहा, "क्या यही किस्सा कहना था?" तब तुमने उत्तर भी नहीं दिया, अधिकार-भरी मुद्रासे हाथ उठाकर मुझे रोक दिया और कहते गये। आठ सालके अभ्याससे तुम मुझे वश करना खूब सीख गये हो! तुम फिर कहने लगे:—

"चार दिन तक मैं सोया नहीं, बराबर मांके सिरहाने बैठा रहा। बेचारी शशि मुझसे बातें करना चाहती; पर चुप हो जाती कि मांके विश्राममें विघ्न न हो...चुपचाप मेरी ओर देखा करती—मैं कहता दवा लाओ, पानी लाओ, आग जलाकर पानी गर्म कर दो, पैर ढंक दो, तो चुपचाप वैसा करके फिर पैताने आकर बैठ जाती और मेरे मुंहकी ओर देखा करती, बोलती भी नहीं। एक दिन मैंने उसकी दृष्टिसे आहत होकर कहा, 'शशि, क्या देखती हो? मेरी ओर ऐसे मत देखा करो, नहीं तो मैं चला जाऊंगा!' तब उसने दूसरी ओर देखना आरम्भ किया, बोली कुछ नहीं। मैंने फिर कहा, 'शशि, ऐसे पागल हो जाओगी, जाकर सो रहो। मैं मांके पास बैठा हूं।' तब वह बोली, 'और तुम नहीं सोओगे?' मैंने फिर मनाकर, धमकाकर और यह वचन देकर कि दूसरे दिन मैं सोता रहूंगा और वह जागेगी, उससे स्वीकार करा लिया। वह उसी कमरेमें जमीनपर बिस्तर बिछाकर यह कहकर लेट गयी कि जरूरत हो तो उसे जगा लूं, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। थोड़ी देरमें मां सो गयीं। उसकी रुकती सांसकी गतिसे मुझे एकाएक ध्यान हुआ कि शशि सो रही है। मैं कान लगाकर उसका नियमित श्वासोच्छ्वास सुननेको हुआ। पर उसकी सांस सुन ही नहीं पड़ रही थी। न जाने मुझे क्या ध्यान हुआ, मैं उठकर उसके पास गया। वह सोयी नहीं थी, छतकी ओर दृष्टि जमाये, बड़ी-बड़ी आंखें किये रो रही थी, चुपचाप, चुपचाप...मैंने पूछा, 'शशि, यह क्या?' तब उसने आंखें बन्द कर लीं। मैंने फिर पूछा तो बोली, 'मां अच्छी हो जायंगी तो तुम चले जाओगे।' मैंने कहा, 'शशि, इस वक्त नहीं—मुझे अभी मत कोसो...' फिर हम दोनों चुप हो गये और वह मेरे घुटनेपर हाथ रखकर सो गयी।

"दूसरे दिन मांकी तबीयत कुछ अच्छी थी, शशि भी खुश जान पड़ती थी। सवेरे ही शशिने मुझसे कहा, 'अब तुम सोओ। कल सवेरे उठना!' मैंने बहाना करनेको कहा, 'आज बदली है, अच्छा लगता है। ठहरकर सोऊंगा।' पर वह नहीं मानी। मैं जाकर लेट गया। समझा था कि नींद नहीं आयेगी, पर थोड़ी ही देरमें बादलोंकी गड़गड़ाहट सुनते-सुनते सो गया।

"जब नींद टूटी तब शामके पांच बजे थे। मैंने शशिको छेड़नेकी इच्छासे पूछा, 'शशि, सवेरा हो गया न, अब उठूं?' कोई उत्तर नहीं मिला। मैंने उठकर देखा, शशि कमरेमें नहीं थी। मांके पास गया तो देखा, सो रही हैं। मैंने झुककर फिर देखा—

"मां वहां नहीं थीं। उनका शरीर नीला पड़ गया था, सांस बन्द थी। जब मां बीमार थीं तब न जाने कहां-कहां घूमता रहा, और जब मैं सो रहा था तब मां मुझे छोड़कर चली गयीं!

"मुझे याद आया कि शशि वहां नहीं है। मैंने पुकारा, शशि! शशि! उत्तर नहीं मिला। मैं उसे ढूंढ़ने बाहर निकला। बाहर बड़े जोरोंसे वर्षा हो रही थी। मैंने देखा, छोटेसे आंगनमें पड़ी शशि भीग रही है, और उसके माथे-से खून बहकर पानीको रंग रहा है। मैं उसे उठाकर अन्दर लाया, कमरेमें आग जलायी, और उसके हाथ-पैर मलने लगा कि होश आ जाय।

"रात तक होश नहीं हुआ। मैं चाहता था, डाक्टरको बुला लाऊं; पर शशिको छोड़कर कैसे जाता? रातको दस बजे शशि हिली, और कुछ देरमें आंखें खोलकर शून्य दृष्टिसे मेरी ओर देखने लगी। बोली, 'मां—' और चुप। मैंने अब सिरपर गीली पट्टी बांधी और डाक्टरको बुलाने चला।

"डाक्टरने दवाइयां दीं। शायद मांके बारेमें पूछना चाहता था, पर वहां उसे पड़ी देखकर समझ गया, और बोला, 'मुझे बहुत खेद है—' मैंने कुछ कहे बिना उसे दरवाजा दिखा दिया। वह चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"मैंने शशिको दवा पिलायी। जब उसे होश हो गया, तब मैंने पूछा, 'शशि, मां क्या—' आगे नहीं कह सका। शशि बोली, बहुत धीरेसे, 'सुनो।' मैं और पास झुक गया। 'मां-ने पूछा था, देव कहां है? मैंने कहा, सो रहा है, जगा दूं? बोली, नहीं, ऐसे ही ठीक है। फिर धीरे-धीरे मुसकराने लगी। मुसकराते-मुसकराते ही—बस—' मैंने कुछ देर बाद पूछा, 'फिर? तुम बाहर कैसे गयी?' वह बोली, 'मुझसे फिर कमरेमें नहीं रहा गया। तुम्हें जगा भी नहीं सकी—तुम इतने दिन सोये नहीं थे—बाहर ही निकल गयी...फिर पता नहीं क्या हुआ...'

"रातमें शशिको बड़े जोरका बुखार चढ़ आया। अभी पौ भी नहीं फटी थी कि वह अनाप-शनाप बकने लगी। मैंने बहुत शान्त करनेकी कोशिश की, पर वह यह नहीं समझती थी कि मैं उसके पास हूं, या मैं कौन हूं। बहुत देर तक तो मैं उसे होशमें लानेकी चिन्तामें था, अब निराश होकर उसका प्रलाप सुनने लगा।

"वह क्या कह रही थी? अगर वह प्रलाप था तो... पर प्रलापमें भी कोई इतना तीखा उलाहना दे सकता है? वह कह रही थी, 'अब मां अच्छी हो गयीं। अब तुम चले जाओ। अब मैं भी अच्छी हूं। चले जाओ। देखो तुम्हारा काम बिगड़ गया...।'

"मैं बहुत नहीं सुन सका। मैंने जोरसे पुकारा, 'शशि!' उसका प्रलाप बन्द हो गया। मैंने समझा कि उसे होश होनेको है। मैंने फिर जोरसे पुकारा, 'शशिकला!' पर वह फिर पहलेकी भांति प्रलाप करने लग गयी।

"मुझसे नहीं सहा गया। मैं अब तक देखता आया था, सहता आया था। मांकी मृत्युसे भी मेरी आंखोंमें आंसू नहीं आये थे, केवल मैं और भी अधिक यन्त्रवत् होकर काम करने लगा था...इस छोटी-सी बातने बांध तोड़ दिये। मैं भूमिपर बैठकर, शशिकी चारपाईकी बाहीपर सिर रख-कर, फूट-फूटकर रोने लगा।

"शशि जाग पड़ी। जो काम इतने मनानेपर नहीं हुआ था, वह निस्सहायताकी एक चीखने कर दिया।

"वह बड़े शान्त स्वरमें बोली, 'इधर आओ।' मैं पास गया तो बोली, 'मेरे पास लेट जाओ।' मैं लेट गया। फिर बोली, 'एक बात सुनोगे? नाराज न होना।' मैंने कहा, 'कहो।' फिर मुझे आंखें बन्द कर लेनेको कहकर उसने मेरे कानमें धीरेसे कहा, 'तुम चले जाओ।' मैंने विस्मित होकर पूछा, 'कहां, शशि?' उसने और भी धीरेसे कहा, 'तुम्हारे काममें विघ्न होता होगा, मैं जानती हूं।' मैं चौंककर चार-पाईपर उठ बैठा। मुझे मालूम हुआ कि क्षण-भरमें सब कुछ बदल गया है—कि कुछ रहा ही नहीं है! मैं शून्य दृष्टिसे खिड़कीकी ओर देखता, जड़वत् बैठा रहा। शशि थोड़ी देर चुप रहकर कोमल स्वरमें बोली, 'नाराज हो गये न!' मैं उत्तर भी नहीं दे सका। मैंने केवल उसके माथेपर हाथ रख दिया—यह जतानेको कि नाराज नहीं हूं। उसने मेरा हाथ अपने दोनों तप्त हाथोंमें बड़े जोरसे पकड़ लिया।

"वह फिर बोली, 'तुम समझते हो, मैं बिलकुल भोली हूं। मैं सब जानती हूं। जब मां थीं, तब मैंने कुछ नहीं कहा, अब कहती हूं कि तुम अपना काम—कि अगर तुम्हारे काममें अड़चन पड़ती हो तो जाओ। अभी चले जाओ। बोलो, जाते हो न?' मैंने बहुत हिम्मत करके कहा, 'और तुम?' वह धीरेसे मुसकरायी। बोली, 'मैं अच्छी हूं। और कहो तो मनःशक्तिसे और भी अच्छी होकर बताऊं?'

"मैंने अविश्वास-भरी दृष्टिसे उसकी ओर देखा। वह बोली, 'देखो, अब मैं शान्त हूं। अब बोलो मत...'

"हम दोनों चुप बैठे रहे। वह स्थिर दृष्टि किये न जाने क्या देखती या सोचती रही। मैंने अनुभव किया, उसका बुखार कुछ कम हो रहा है...सवेरा हो गया था। उसने कहा, 'अब मैं अच्छी हूं, तुम जाकर डाक्टरको बुला लाओगे न?' मैंने प्रसन्न होकर कहा, 'अच्छा।' वह फिर बोली, 'एक और बात मानो।' मैंने पूछा, 'क्या?' तो बोली, 'अगर तुम्हें कहीं काम हो तो चले जाओ। शाम तक लौट आना। फिर मेरे मुखकी ओर देखते हुए, 'तब तक मैं बिलकुल अच्छी हो जाऊंगी।'

"मैं शशि-सा बुद्धिमान नहीं था, क्योंकि मैंने उसे भोली समझा था! उसने कैसा धोखा दिया...तुम्हारे दिये रुपयोंमें-से जो बचे थे, वे लेकर मैं देने चला। डाक्टरसे कहता गया कि शशिको दवाई दे दें। सोचा था कि शाम तक लौट आऊंगा। और यह भी सोचता जाता था कि मांका दाह-कर्म करना है...जिसका मुझे अब तक ध्यान नहीं आया था...पर जब वहां पहुंचा तब क्या हुआ, तुम जानते ही हो...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लोग गिरफ्तार हो चुके थे, मैं भी बच ही गया—घरके चारों ओर पहरा पड़ा हुआ था···

"शशिने कहा था शाम तक लौट आऊं। मैं शामको नहीं लौटा—या कमसे कम शशिके पास नहीं लौटा। जब सन्ध्याको छः बजे घर आया, तो देखा, शशि चुपचाप पड़ी है, उसके खुले नेत्र छतकी ओर देख रहे हैं, मुखपर एकाग्र पीड़ा-का भाव है···मैं उसकी निश्चलता देखकर डर गया···मांकी निश्चलता मुझे याद आ गयी···मैं लपककर पास गया तो शशि भी चली जा चुकी थी। उसके सिरहाने एक बोतल उलटी पड़ी थी, उसपर लेबिल लगा था, 'poison'। मैंने उठाकर देखा, छातीमें मलनेका तेल था—यानी तेलकी खाली बोतल थी—तेल कुछ लुढ़क गया था और कुछ···काम आ चुका था। शशिके सिरहानेपर एक कागजके टुकड़ेपर लिखा था, 'तुम अभी चले जाओ। मेरे कारण तुम्हारे काममें विघ्न नहीं होगा। मैं दुःखी नहीं हूं, सचे दिलसे कहती हूं।' बस!

"मैं परचा हाथमें लिये हुए घरसे बाहर निकला, और भागा! स्टेशनपर जाकर वहांसे चल दिया, तुम्हारे पास आनेको। फिर मैं कैसे पकड़ा गया और क्या हुआ, यह सब तुम्हें मालूम है···बादमें शायद पुलिसने ही मां और शशिका दाहकर्म किया···मैं एक बार उनके जीवनसे निकल भागा और दूसरी बार उनकी मृत्युसे, पर डरसे नहीं।

"हां, जो रुपया बचा था वह अब भी है। मैंने जमा करवा दिया था, अब भी तुम मंगवा सकते हो।"

तुम चुप हो गये। सारी कहानी कहकर यह भी नहीं पूछा कि "सुन ली?"

मैं भी नहीं बोल पाया। थोड़ी देरमें मैं घूमकर लौटनेको हुआ, तब तुमने कहा, "भइया, मैं दोषी हूं, मुझे क्षमा कर दो!" और सिर झुकाये बैठे रहे। मैं जब कोठरीके जंगलेके पास आया, तब भी वैसे ही बैठे रहे। मैंने कठोर स्वरमें कहा, "उठो।" तो चुपचाप खड़े हो गये। मैंने कहा, "पास आओ।" तो आगे आ गये। "और पास, बिलकुल!" तो जंगलेसे माथा टेक दिया। मैंने हाथसे झटककर ठोड़ी ऊपर उठा दी, तब तुम आंखें ही नीची किये रहे। तब मैंने कठोरताका अभिनय छोड़ दिया। धीरेसे आगे बढ़कर, आंखें बन्द करके, तुम्हारा मुंह चूम लिया···

पागल! पागल! तुम्हारा कोई ऐसा भी अपराध है जिसे मैं क्षमा न कर सकूं—विश्वासघातके सिवाय—जिसे मैं क्षमा न कर सकूं···

— ———

# अपने दुखड़े

## चौपदे

क्यों जी है बैठा जाता, क्यों सब दिन रोयें दुखड़े।
क्यों कलप कलेजा जाये, क्यों दिल हो टुकड़े-टुकड़े।१।
क्यों आखें उसने बदलीं, आंखोंमें पाया जो थम।
कैसे उसने मुंह फेरा, जिसका मुंह देख जिये हम।२।
क्यों बने बला वह जिसकी, हम रहे बलायें लेते।
क्यों रहे चुराता वह जी, हम जिसे रहे जी देते।३।
क्यों डाल अंधेरेमें वह, करने लग गया किनारा।
जिसको मैंने समझा था, अपनी आंखोंका तारा।४।
जो फूल सिरोंपर चढ़ते, आंखोंमें थे बस पाते।
किसलिए आज दिन वे हैं, पांवोंसे मसले जाते।५।
मेरे सुखकी राहोंमें, किसने हैं कांटे डाले!
पड़ते ही क्यों रहते हैं, अब मेरे दिलमें छाले।६।
भूलें अपनापन कैसे, अपने बन-बन बेगाने।
क्यों लहू बूंद बन जायें, मेरे मोतीके दाने।७।
क्यों बसे औरका घर, क्यों, घर जायें उजड़ हमारे।
क्यों छिने आंखकी पुतली, क्यों लुटें आंखके तारे।८।

—हरिऔध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बिहारमें नारी-जागरण

श्री परमेश्वर सिंह

राष्ट्रीयताका आत्मबोध होनेपर जब राष्ट्रकी मुक्तिके लिए किसी देशके निवासी आकुल आकांक्षा एवं दुर्दमनीय आग्रह प्रकट करते हैं उस समय देशके प्रत्येक क्षेत्रमें एक नूतन जीवनका स्पन्दन होने लगता है और प्रगतिके लक्षण सर्वत्र प्रकट होने लगते हैं। समाजको लेकर ही तो राष्ट्र बना है, अतएव राष्ट्रकी मुक्तिके साथ-साथ सामाजिक मुक्ति-की पिपासा भी जाग्रत हो उठती है। एक ओर यदि सम्पूर्ण राष्ट्र अपने पराधीनता-पाशको विच्छिन्न करके अपने निजत्व एवं वैशिष्ट्यको पुनः हृदयङ्गम करनेकी चेष्टा करता है, तो दूसरी ओर राष्ट्रके अङ्ग-प्रत्यङ्ग जो अज्ञानताजनित अन्धविश्वास, जड़ता, अवसाद एवं रूढ़िगत भावनाओंके कारण अन्धकारमें निमग्न रहते हैं उस राष्ट्रीय आन्दोलनके प्रकाशमें अपने पथका सन्धान पाकर अपनी मुक्तिका मार्ग प्रशस्त करते हैं। यही कारण है कि जब हम किसी देशके राष्ट्रीय आन्दोलनमें सर्वसाधारण जनको अपने मनुष्योचित अधिकारोंका दावा करते देखते हैं, तो उसके साथ-साथ हम यह भी देखते हैं कि समाजके वे अङ्ग, जो अब तक अपने देशवासियों द्वारा लाञ्छित, उत्पीड़ित एवं शृङ्खलित होते आ रहे थे, अपने स्वत्वोंको लेकर आगे बढ़ते हैं और इस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलनके साथ-साथ और भी कितने ही आन्दोलन स्वतः प्रवर्तित होने लगते हैं। ऐसा होना सर्वथा उचित ही है। क्योंकि जीवनके एक क्षेत्रमें प्रकाश और दूसरे क्षेत्रमें अन्धकार रहना स्वाभाविक नहीं कहा जा सकता।

भारतके राष्ट्रीय आन्दोलनमें भी आज हम इन सब बातोंका प्रत्यक्ष आभास पा रहे हैं। समाजके प्रत्येक अङ्गमें आत्म-चैतन्यका भाव जाग्रत हो उठा है। समाजका प्रत्येक व्यक्ति आज उन सब विशेषाधिकारोंका दावा कर रहा है जो कुछ समय पहले तक समाजके कुछ थोड़े-से लोगोंके लिए ही उपभोग्य समझे जाते थे। यही कारण है कि आज हम अपने देशमें स्वाधीनता-आन्दोलनके साथ-साथ सामाजिक क्षेत्रमें नारियों एवं श्रमजीवियोंको भी समाजके अन्याय्य बन्धनोंसे अपनेको मुक्त करनेके लिए आन्दोलन करते तथा अपने जन्मसिद्ध अधिकारोंका दावा करते देख रहे हैं।

श्रीमती राजकिशोरी देवी—पर्दा-विरोधी आन्दोलनकी अग्रदूतिका।

हमारे देशमें नारी-जागरण आन्दोलनको आरम्भ हुए यद्यपि अभी बहुत दिन नहीं हुए, किन्तु इस थोड़े समयमें ही इस देशकी नारियोंने राष्ट्रके प्रत्येक क्षेत्रमें जो कृतित्व प्रदर्शित किया है, उससे राष्ट्रीय जीवनमें उनकी क्षमता एवं उपयोगिताको हम भली भांति उपलब्ध करने लगे हैं। निःसन्देह देशके लिए यह परम गौरवका विषय है कि राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्रोंमें हमारी मातृ-जातिका प्रभाव क्रमशः बढ़ रहा है। पिछले कई वर्षोंमें देशकी इन महिलाओंने स्वाधीनता-आन्दोलनमें पुरुषोंके साथ कन्धेसे कन्धा मिलाकर कार्य करते हुए जिस प्रकार असीम कष्ट, त्याग लाञ्छना एवं अपमान सहास्य वदन स्वीकार किये हैं उससे संसारकी दृष्टिमें भारतीय नारी-जातिकी मर्यादा बहुत कुछ बढ़ गयी है। भारत-जैसे अनुन्नत देशके लिए क्या यह कम आश्चर्यकी बात है कि जिस देशकी नारियां २०-२५ वर्ष पहले तक अन्तःपुरके सङ्कीर्ण क्षेत्र तक ही अपने कर्तव्योंको सीमाबद्ध समझती थीं वहीं आज प्रत्येक सार्वजनिक क्षेत्रमें अग्रसर होकर नारियां प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनी बुद्धि एवं प्रतिभा द्वारा राष्ट्रके जीवनको प्रगतिशील बना रही हैं।

इस प्रसङ्गमें हम भारतीय नारी-आन्दोलनकी चर्चा न करके उस प्रान्तके नारी-जागरणके इतिहासपर प्रकाश डालना चाहते हैं जहांका नारी-समाज सब दृष्टियोंसे पिछड़ा हुआ समझा जाता है, जहां पर्देकी घातक प्रथाने नारी-जातिका कण्ठावरोध करके उसे जड़वत् पंगु बना दिया है और जहां समाजकी प्रगतिके मार्गमें पर्देकी यह प्रथा एवं तज्जनित नारियोंकी अज्ञानता सबसे बड़ी बाधक सिद्ध हो रही है। राष्ट्रीय एवं सामाजिक क्षेत्रोंमें कार्य करनेवाले कर्मी पग-पग-पर इस बातको महसूस कर रहे हैं कि जब तक पर्देकी चहारदीवारीसे बाहर निकल कर स्त्रियां प्रकाशमें नहीं आयेंगी, जब तक समाजका आधा अङ्ग अलस एवं अकर्मण्य बना रहेगा, जब तक स्त्रियां प्रगतिके मार्गमें पुरुषोंको सहयोग प्रदान करनेके बदले रोड़े अटकाती रहेंगी तब तक न तो देशकी वास्तविक उन्नति हो सकती है, न सामाजिक जीवनमें सजीवता, तेजस्विता एवं क्रियाशीलताका सञ्चार हो सकता है और न राष्ट्र-गठनका कार्य ही सुचारु रूपसे सम्पन्न हो सकता है। यह सन्तोषकी बात है कि सामाजिक सुधारके क्षेत्रमें पिछड़ा हुआ यह बिहार प्रान्त भी कुछ समयसे सुधारकी प्रचण्ड लहरोंमें पड़कर आत्मस्थ होने लगा है और इन लहरोंका ही यह प्रभाव है कि यहांकी कुछ महिलायें पर्देकी सङ्कीर्ण परिधिसे निकलकर जीवनके व्यापक क्षेत्रमें उत्साह-पूर्वक भाग लेते हुए बिहारके नारी-समाजमें जीवन एवं ज्योतिका अलख जगा रही हैं। नारी-आन्दोलनकी इन अग्रदूतिकाओंकी बदौलत ही आज युग-धर्मका सन्देश प्रान्त-के कोने-कोनेमें पहुंचने लगा है और इसके परिणाम-स्वरूप कुलीन एवं भद्र परिवारकी 'असूर्यम्पश्या' कहानेवाली ललनायें भी राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्रमें अवतीर्ण होकर अपने कर्मोद्यमका प्रशंसनीय परिचय दे रही हैं। अवश्य ही यह प्रान्तके उज्ज्वल भविष्यका परिचायक है।

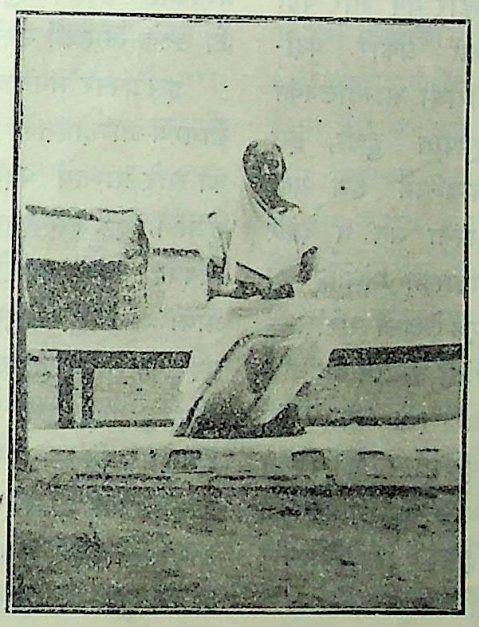

श्रीमती रामतनुक देवी—सदस्या अ० भा० कांग्रेस कमेटी।

सन् १९०९ की बात है। मुजफ्फरपुरके बी० बी० कालेजियट स्कूलके सहायक शिक्षक गया जिला निवासी श्री बलदेवसिंहके हृदयमें मातृ-जातिपर होनेवाले असह्य अत्याचारके विरुद्ध विद्रोहकी भावना प्रचण्ड हो उठी। उन्होंने सर्वप्रथम अपने यहांसे पर्देको विदा कर दिया। उस समय यह काम कितने साहसका था, इसकी जरा कल्पना तो कीजिये। कुलीन परिवारकी एक महिला पर्देसे बाहर निकलकर जिधर चलती है उधर ही उसकी ओर अंगुली उठाकर लोग घृणा एवं तिरस्कारकी दृष्टिसे देखने लगते हैं, उसके सम्बन्धमें व्यङ्गोक्तियां प्रकट करते हैं। किन्तु उक्त शिक्षक महोदय तथा उनकी धर्मपत्नीने इन सब तिरस्कारों एवं व्यङ्ग-वचनोंकी कुछ भी परवाह न करके पर्देको तोड़ फेंका। विरोधका तूफान उठ खड़ा हुआ। उनपर फबतियां कसी गयीं, फिर भी वे अपने ध्येयपर अविचलित बने रहे। किन्तु और किसीने भी उस समय उनका साथ नहीं दिया, इसलिए यह आन्दोलन एक व्यक्ति-विशेष तक ही सीमाबद्ध रह गया।

इसके बाद बहुत दिनों तक नारी-जागरणके सम्बन्धमें कोई विशेष हलचल नहीं दीख पड़ी। असहयोग आन्दोलनमें बिहार प्रान्तने प्रमुख भाग लिया था सही और उस समय सारे प्रान्तमें राष्ट्रीयताकी तरङ्गें उद्वेलित हो रही थीं तथा इनका स्पर्श यहांके महिला-समाज तक भी हो चुका था; किन्तु फिर भी उस समय यहांकी महिलाओंके सार्वजनिक क्षेत्रमें प्रकट होकर उल्लेखनीय कार्य करनेकी बात नहीं सुनी जाती। सन् १९२५-२६ में जब महात्मा गांधीने बिहार प्रान्तका दौरा किया था उस अवसरपर उन्होंने कितनी ही सार्वजनिक सभाओंमें भाषण किये थे। इन सभाओंमें महात्माजीके दर्शनार्थ हजारोंकी संख्यामें महिलायें उपस्थित



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



होती थीं। उनके लम्बे घूंघटों तथा बेढङ्गे और गन्दगी पैदा करनेवाले जेवरोंको देखकर महात्मा गांधीने इस प्रकार घूंघट धारण करने तथा बेढङ्गे तौरसे शरीरको जेवरोंसे लादनेके विरुद्ध उनकी मधुर शब्दोंमें निर्भत्सना की जिसका प्रभाव उनपर पड़े बिना नहीं रहा। इसके दो वर्ष पश्चात् बिहारमें नारी-जागरणका श्रीगणेश पर्दा-विरोधी आन्दोलन-से हुआ और भाई मगनलाल गांधीके आकस्मिक निधनसे इस आन्दोलनको और भी प्रोत्साहन मिला।

श्रीमती सुनीति देवी

स्वर्गीय मगनलाल गांधी किस प्रकार बिहार गये और वहां किस प्रकार पर्दा-विरोधी आन्दोलनका सूत्रपात हुआ, इस सम्बन्धमें हम यहां अपना मत न देकर महात्मा गांधीके ही एक लेखका सारांश—जिसे उन्होंने २८ जनवरी १९२८ के "यंग इण्डिया" में लिखा था—यहां उद्धृत किये देते हैं। गांधीजीने लिखा था :—

"खादी कार्यकर्ता श्री रामनन्दन मिश्र अपनी पत्नीको पर्देके अत्याचारसे बचाना चाहते थे। चूंकि उनके घर-वाले उस लड़कीको घरसे आश्रममें नहीं आने देना चाहते थे, इसलिए वह आश्रमसे दो लड़कियोंको अपनी पत्नीकी सहचरी बनानेके लिए ले गये। उनमें एक मगनलाल गांधीकी पुत्री राधा बहन उस लड़कीकी शिक्षिका होनेवाली थी। उसके साथ स्व०दलबहादुर गिरिकी पुत्री दुर्गादेवी भी गयी थी। नवयुवती पत्नीके माता-पिताने आश्रमकी लड़कियोंकी श्रीमती मिश्रको पर्देसे बाहर लानेकी चेष्टाका विरोध किया। लड़कीने सभी कठिनाइयोंका सामना किया। इसी बीच मगनलाल गांधी अपनी पुत्रीसे मिलने तथा उसके प्रयत्नोंमें सहायता पहुंचानेके उद्देश्यसे बिहार गये। वे उस गांवमें, जहां उनकी पुत्री राधा बहन अपना काम कर रही थी, बीमार पड़े और पटनेमें स्वर्गवासी हो गये। यही कारण है कि बिहारके मित्रोंने पर्देके विरुद्ध संग्राम करना अपने लिए गौरवका विषय समझा। राधा बहन आश्रममें श्री राजकिशोरी देवीको ले आयीं। उनके वहां जानेसे और भी हलचल मच गयी। इससे श्री रामानन्दन मिश्रको प्रोत्साहन मिला; क्योंकि वह तो अपनेको इस संग्राममें संलग्न करनेके लिए पहलेसे ही तैयार थे। इस प्रकार बिहारमें यह आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। इसके प्रधान हैं, बिहारके अनेक संग्रामोंके बहादुर सैनिक बा० ब्रजकिशोर प्रसाद। मुझे ऐसे किसी आन्दोलनका स्मरण नहीं, जो उनके नेतृत्वमें मरने दिया गया हो।"

इस प्रकार मगनलाल गांधीके देहावसानसे बिहारमें नारी-जागरण-आन्दोलनका श्रीगणेश हुआ। सन् १९२८की ८ जुलाई-को सारे प्रान्तमें पर्दा-विरोधी दिवस मनाये जानेका निश्चय हुआ। पर्देके विरुद्ध तुमुल आन्दोलन शुरू हुआ। सर्वत्र इस विषयको लेकर चर्चा होने लगी। उक्त निश्चित तिथिको प्रान्तके प्रायः सभी मुख्य-मुख्य नगरोंमें पर्दा-प्रथाके विरोधमें स्त्री-पुरुषोंकी सम्मिलित सभायें की गयीं और उसी समय यह देखा गया कि बिहारकी "असूर्य्यम्पश्या" महिलाओंमें अन्तःपुरके अवरोधसे निकलकर सार्वजनिक क्षेत्रोंमें पुरुषोंका हाथ बंटानेके लिए कितना उत्साह था, कितनी उमङ्गें थीं। एक अभूतपूर्व जागृतिकी लहर, एक नूतन प्राणचाञ्चल्य दृष्टिगोचर होने लगा। यों तो जिस किसी पुरुष या महिलाने बिहारकी नारी-जागृतिमें सहायता पहुंचायी वे सब बधाई और धन्य-वादके पात्र हैं, किन्तु इस विषयमें श्री रामनन्दन मिश्र और उनकी सहधर्मिणी श्रीमती राजकिशोरी देवी सबसे अधिक बधाईके पात्र हैं। क्योंकि इस त्यागी दम्पतिने महिला-आन्दोलनको सफल बनानेके लिए अपमान, तिरस्कार, व्यङ्ग, उपहास, स्वजनविरोध तथा व्यक्तिगत कष्टों एवं असुविधाओं-की कुछ भी परवाह न करके वर्षों तक सच्ची निष्ठा और लगनके साथ अनवरत कार्य किया और इस समय भी कर रहे हैं। मगनलालकी मृत्युके बाद ही उन्होंने "मगन आश्रम" के नामसे एक आश्रम दरभङ्गा जिलेमें लहेरियासराय स्टेशनसे तीन मील दूर आनन्दपुर गांवमें स्थापित किया और इस आश्रमको ही केन्द्र बनाकर नारी-जागरणका सन्देश बिहारके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कोने-कोनेमें पहुंचाने लगे। कुछ ही समयमें उक्त आश्रमकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल गयी और कितने ही युवक कार्यकर्ता अपनी पत्नियोंको पर्देकी कैदसे निकालकर आश्रममें रहने लग गये तथा राष्ट्रीय कार्योंमें उत्साहके साथ भाग लेने लगे।

इसके दो वर्ष बाद सन् १९३०में गांधीजीके नेतृत्वमें सत्याग्रह आन्दोलनका प्रवर्तन हुआ। नारी-जागरणकी लहरमें राष्ट्रीय भावनाओंका उद्दीपन तो हो ही चुका था। अब, उसके आत्म-प्रकाशका यह सुयोग उपस्थित हुआ और देखते-देखते प्रान्तकी अनेक प्रमुख महिलाओंने आन्दोलनमें भाग लेकर तथा कारागार वरण करके यह दिखला दिया कि महिलायें राष्ट्रके लिए कष्ट एवं त्याग स्वीकार करनेमें पुरुषोंसे किसी प्रकार कम नहीं हैं। सन् १९३१में नारी-जागरण आन्दोलनको और भी बल मिला, जबकि राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद, बिहारके राष्ट्रीय जीवनके एक कुशल कर्णधार श्री ब्रजकिशोरप्रसाद तथा बिहार-सरकारके मिनिस्टर सर गणेशदत्त सिंहका ध्यान पर्देकी कुप्रथा और महिला-आन्दोलनकी आवश्यकताकी ओर आकृष्ट हुआ। इसके परिणाम-स्वरूप १९३१की जुलाईमें पर्दा-विरोधी नारी-सम्मेलन (Anti-purdah women's Conference) का प्रथमाधिवेशन पटनेमें श्रीमती बहुरियाजी (पत्नी श्री हरमाधव सिंह) की अध्यक्षतामें हुआ। श्री बहुरियाजी सन् १९३०के सत्याग्रहमें जेल जा चुकी थीं। उस सम्मेलनमें प्रान्तकी बहुत-सी पर्दानशीं महिलायें शामिल हुई थीं और सम्मेलनमें पर्दा-प्रथाके विरुद्ध जोरशोरके साथ प्रचार-कार्य करनेके लिए एक कार्यक्रम स्थिर हुआ। इसके अनुसार कार्य होने लगा और प्रान्तके कोने-कोनेमें नारी-जागृतिकी लहर फैलने लगी और पर्दा-प्रथाके विरुद्ध शिक्षित लोगोंके विचार दृढ़ होने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १९३२में सत्याग्रह-आन्दोलनके पुनः जारी होनेपर बिहारकी एक सौसे भी अधिक राष्ट्र-सेविकाओंने कारावास तथा पुलिसकी लाठियोंके प्रहार सहन किये।

पटना बिहार प्रान्तकी राजधानी और साथ ही प्रान्तका सर्वप्रधान नगर है। अतएव उसका सब प्रकारकी जागृतियोंका केन्द्र होना स्वाभाविक है। यों तो सारे प्रान्तमें महिला-आन्दोलनका व्यापक प्रसार इधर कुछ ही वर्षोंमें हो गया है; किन्तु इसमें प्रमुख भाग पटना, गया, मुजफ्फरपुर, सारन और दरभङ्गा तथा आंशिक रूपमें भागलपुर, मुंगेर और हजारीबागकी महिलाओंने लिया है।

विभिन्न जिलोंसे राष्ट्रीय आन्दोलनमें भाग लेनेवाली तथा कारादण्ड भोगनेवाली कुछ प्रमुख महिलाओंके नाम इस प्रकार हैं। इनमें कई तो एकाधिक बार कैदकी सजा भुगत चुकी हैं :—श्रीमती रामस्वरूप देवी (बहुरियाजी), श्रीमती भगवती देवी (राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसादजीकी बहन), श्रीमती प्रभावती देवी (पत्नी साम्यवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण), रामपत्री देवी (पत्नी सुप्रसिद्ध कांग्रेस-नेता श्री रामदयालु सिंह), श्रीमती सरस्वती देवी (मन्त्रिणी हजारीबाग जिला कांग्रेस कमेटी तथा सदस्या बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी), श्रीमती सेवा देवी (मुंगेरके कांग्रेस-नेता श्री कार्यानन्द शर्माकी बहन), श्रीमती मनोरमा देवी, श्रीमती सुनीति देवी, श्रीमती रामतनुक देवी (मन्त्रिणी, बिहार प्रान्तीय महिला समिति, सदस्या अ० भा० कांग्रेस कमेटी), श्रीमती दुर्गा देवी (गया), श्रीमती चन्द्रावती देवी (अरवल), श्री शान्ति देवी (गया), श्री लक्ष्मी देवी (जहानाबाद), मुजफ्फरपुर जिलेकी श्री राजवंशी देवी, श्री रामेश्वरी देवी, श्री देवकी देवी, श्री सत्यभामा देवी, श्री राधिका देवी (पत्नी स्वर्गीय वैकुण्ठ शुक्ल, जिन्हें बेतिया मुखबिर हत्याकाण्डके मामलेमें फांसी दी गयी थी), श्रीमती गङ्गा चौधरी, श्रीमती ललितसिंह, श्रीमती पार्वती देवी, पटना जिलेकी श्रीमती लक्ष्मी देवी, श्रीमती चन्द्रावती देवी शर्मा, श्री लगन देवी, श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी, श्री रामदासी देवी, श्री जगदम्बा देवी, श्रीमती कौशल्या देवी, श्री विद्यावती

श्रीमती मनोरमा देवी शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देवी और सारन जिलेकी श्री शान्ति देवी, श्री जनकदुलारी देवी इत्यादि।

ऊपर बिहारकी जिन प्रगतिशीला महिलाओंके नाम दिये गये हैं, उनमें सबकी सब सन् १९३० और १९३२के सत्याग्रह-आन्दोलनमें जेल गयी थीं और अब भी राष्ट्रीय जागरण-कार्यमें पुरुष कार्यकर्ताओंके समान ही पूर्ण उत्साहके साथ कार्य कर रही हैं।

बिहारके नारी-आन्दोलनका संक्षिप्त विवरण समाप्त करनेके पूर्व बिहारकी महिलाओंमें शिक्षाका किस हद तक प्रचार हुआ है, यह बता देना उपयोगी होगा। सन् १९३१की जन-गणनाकी रिपोर्टसे पता चलता है कि बिहार और उड़ीसा प्रान्तमें साक्षर (Literate) महिलायें कुल १ लाख २९ हजार ३६० हैं। उनमें अंगरेजी पढ़ी-लिखी महिलाओंकी संख्या १२ हजार ७८५ है; बालिकाओंके लिए कुल प्राथमिक विद्यालय (Primary schools) २१२९, मिडिल इंगलिश स्कूल ७ और हाईस्कूल ९ हैं। इस समय बिहार-उड़ीसा-प्रान्तकी सब मिलाकर १२२३ छात्रायें हाई स्कूलोंमें शिक्षा पा रही हैं।

बिहार प्रान्तके सोलह जिलोंकी कुल आबादी २ करोड़ ५७ लाख २७ हजार ५०० है, जिसमें स्त्रियोंकी संख्या १ करोड़ २८ लाखके लगभग है। इस संख्याको सामने रखकर जब हम देखते हैं तो यह स्पष्ट रूपसे दिखाई पड़ता है कि आबादी-के लिहाजसे बिहार प्रान्त स्त्री-शिक्षामें बहुत अधिक पीछे है। किन्तु इन पाठशालाओंमें जिस ढङ्गकी शिक्षा दी जाती है उससे स्त्री-शिक्षाका आदर्श किसी प्रकार भी चरितार्थ नहीं हो सकता। स्त्रियोंके भावी जीवनमें इस प्रकारकी शिक्षासे कोई लाभ नहीं पहुंचता और न यह शिक्षा राष्ट्र एवं समाजो-न्नतिके कार्योंमें सहायक ही हो सकती है।

बिहारमें बालिकाओंको उपयोगी प्रारम्भिक शिक्षा देनेके लिए अब तक कोई समुचित व्यवस्था नहीं थी। इस प्रकारकी किसी शिक्षण-संस्थाका अभाव लोगोंको बहुत खटक रहा था। यह सन्तोषकी बात है कि बिहारके नारी-आन्दोलनके आधार-स्तम्भ श्री रामनन्दन मिश्रके सदुद्योगसे "बिहार महिला विद्यापीठ" नामक एक राष्ट्रीय शिक्षण-संस्था दरभङ्गा जिलान्तर्गत एक ग्राममें स्थापित की गयी है। इस संस्थाका उद्देश्य स्त्रियोंमें ऐसी शिक्षाका प्रचार करना है जिससे उनमें नागरिकताके भाव जाग्रत हों, वे अपने गृह-जीवनका सफलतापूर्वक सञ्चालन कर सकें और उन्हें स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करनेकी क्षमता प्राप्त हो। विद्यापीठमें अब तक १००से भी अधिक छात्रायें प्रवेश कर चुकी हैं। इसका सञ्चालन बड़ी योग्यताके साथ हो रहा है। लाहौरके सुप्रसिद्ध देशभक्त जुत्शी-परिवारकी श्रीमती मन-मोहिनी जुत्शी एम० ए० विद्यापीठकी आचार्या हैं। उसके अन्दर अन्य ९ विदुषी महिलायें अध्यापन-कार्य कर रही हैं। विद्यापीठमें हिन्दी साहित्य, गणित, इतिहास, भूगोल, अंगरेजी और संस्कृतके अतिरिक्त सिलाईका काम और सङ्गीतकी

श्रीमती चन्द्रावती देवी

शिक्षा देनेकी भी सुन्दर व्यवस्था है। विद्यापीठका अपना छात्रावास भी है, जहां छात्रायें ग्रामके मुक्त वातावरणमें सात्विक एवं निर्मल जीवन व्यतीत करती हैं। इस उपयोगी राष्ट्रीय महिला शिक्षण-संस्थाके सञ्चालनार्थ एक ट्रस्ट बोर्ड कायम है जिसके अध्यक्ष बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके सभापति बिहार-केसरी बा० श्रीकृष्ण सिंह एम० एल० ए० हैं। विद्यापीठकी स्थापनासे प्रान्तकी बहुत बड़ी कमीकी पूर्ति हुई है। और अब यह प्रान्तके स्त्री-शिक्षाप्रेमी व्यक्तियों-का कर्तव्य है कि वे अपनी बालिकाओंको वहां भेजकर इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



संस्थाके सफल सञ्चालनमें पूर्ण सहयोग प्रदान करें जिससे संस्थाका उद्देश्य चरितार्थ हो।

बिहारके नारी-जागरण आन्दोलनका ऊपर जो संक्षिप्त परिचय दिया गया है वह सन्तोषप्रद होनेपर भी पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। इस क्षेत्रमें अभी बहुत कुछ करना बाकी है। विदेशोंकी कौन कहे, अभी अपने देशके अन्यान्य प्रान्तों-की तुलनामें भी बिहारका नारी-समाज बहुत पश्चात्पद है। इसके लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि बिहारके स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर पर्देकी नाशकारी प्रथाका सदाके लिए अन्त कर डालें। पर्दा-प्रथाके विरुद्ध प्रान्त-भरमें अन-वरत रूपसे प्रचण्ड आन्दोलन चलाना होगा और इस मार्गमें चाहे जितनी कठिनाइयां उपस्थित हों, उनका धीर एवं अवि-

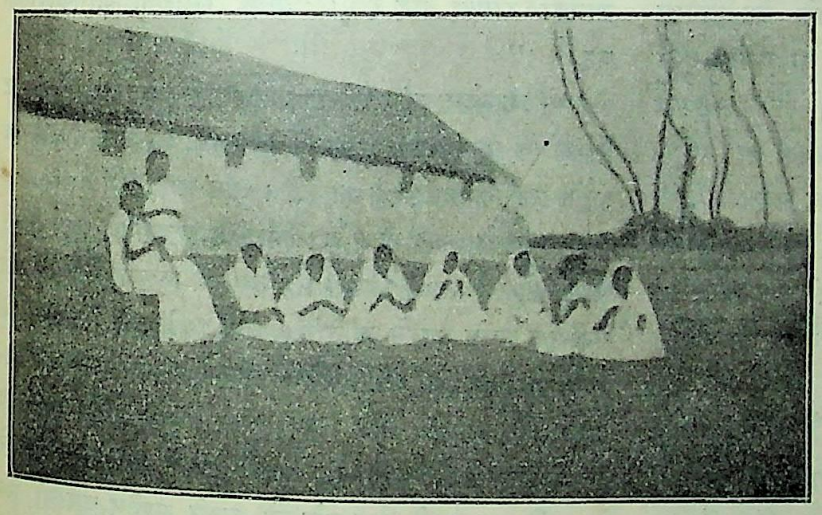

बिहार-महिला-विद्यापीठमें बालिकायें कसीदा काढ़ रही हैं।

चलित भावसे मुकाबिला करते हुए अपने लक्ष्यकी ओर अविकम्पित पदसे अग्रसर होना होगा। यदि हमारा लक्ष्य ध्रुव है, हमारा ध्येय पवित्र है और हमारी साधना सत्य होगी तो हमें सफलता मिलनी निश्चित है।

अन्तमें प्रान्तके तरुण भाई-बहनोंसे दो शब्द कहना है। आपके सामने शीघ्र ही बड़ा सुन्दर सुअवसर उपस्थित होने-वाला है। आगामी ८ जुलाईको बिहार प्रान्तके विभिन्न स्थानोंमें, गांव-गांवमें पर्दा-विरोधी सभायें करनेका आयो-जन किया गया है। इसका नेतृत्व करना राष्ट्रपति श्री राजे-न्द्रप्रसादजीने स्वीकार कर लिया है। इस अवसरपर हमारी बहनोंका यह कर्तव्य है कि वे पर्दा-प्रथाको दूर करके समाजमें अपना गौरवपूर्ण स्थान स्वयं ससम्मान प्राप्त करें और समाज तथा देशोन्नतिके कार्योंमें अपनेको संलग्न कर दें। नारी-जातिकी प्रगतिकी कार्यपद्धति आप स्वयं स्थिर करें, अपनी समस्याओंके समाधानके उपायोंपर स्वयं विचार करें और अशिक्षा एवं अज्ञानता-जनित समस्त कुसंस्कारोंको पद-दलित करके अपने कल्याण एवं मुक्तिका, पथ प्रशस्त करें। आज आवश्यकता है ऐसे तरुण-तरुणियोंकी, जो उन सब प्रचलित लोकाचारोंके विरुद्ध विद्रोहकी पताका ऊंची करें, जो धर्म और शास्त्रोंकी दुहाई देकर जातिके मनुष्यत्वको खर्व कर रहे हैं। आज आवश्यकता है ऐसी वीराङ्गनाओंकी, जो अपने अधिकार-लाभके लिए सचेष्ट हों, अपनी समस्याओंपर स्वयं विचार करनेमें सक्षम हों और जो अपनी मर्यादा-रक्षाके लिए प्रकृत स्वाधीनताकामी बनें।

जो समाज आज नारियोंको आजी-वन पर्देके अन्दर अवरुद्ध रखकर उनके जीवनकी गतिको पंगु बना रहा है, अकालमें मातृत्वका बोझ उनके ऊपर लादकर तथा दुर्बल सन्तानकी जननी बनाकर जातिको ध्वंसकी ओर लिये जा रहा है, उस समाजको आज दृढ़तापूर्वक कहना होगा कि तुम हमें अपरिणत अव-स्थामें क्षीणप्राण सन्तानकी जननी बनने-के लिए बाध्य नहीं कर सकते। देश और जातिके लिए, जातिको शौर्य, वीर्य, बुद्धि एवं धी-शक्तिसे महिमान्वित करनेके लिए हमने स्वास्थ्यवान शिशुकी जननी बननेका प्रण कर लिया है। इसके लिए हम पुरातनपन्थियोंके समस्त अत्याचार एवं अपमानको सहन करके भी अपनी साधनापर अटल रहेंगी। नारी-जातिके प्राणोंको शोषण करनेवाले जितने अन्याय एवं अनाचार हैं उनके विरुद्ध हम विद्रोहिणी बनेंगी और उनकी शक्तियोंके सामने कभी नत-मस्तक नहीं होंगी। देशमाताके आह्वानपर हमारे प्रान्तकी बहनें प्राणमन्त्र-दीक्षा ग्रहण करके समाज एवं राष्ट्रके सार्वजनिक क्षेत्रमें साहसपूर्वक अपना समुचित स्थान ग्रहण करें और वे अपने कर्मोद्यमसे यह दिख-लायें कि बिहारकी नारियां किसी भी क्षेत्रमें किसीसे पीछे नहीं हैं, यही हमारी मनोकामना है।

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इंगलैण्डकी एक झलक

डा० ब्रजमोहन एम० ए०, पी-एच० डी०

( २ )

यहांकी रेलोंकी वहांकी रेलोंसे कोई तुलना नहीं हो सकती। हर मेन लाइनपर लगभग हर पांच मिनटपर गाड़ी चलती है। हर 'लाइन' पर दुहरी लाइन है और कहीं-कहीं तो चार-चार पटरियां हैं। गाड़ियोंका तांता लगा रहता है। वहां इस बातकी कोई शिकायत नहीं हो सकती कि अमुक स्थानके लिए गाड़ियां कम हैं। इतनी गाड़ियां होते हुए भी 'लेट' बहुत कम होती हैं। एक दफा हिसाब लगाया गया था। साल-भरमें सारे इंगलैण्डकी गाड़ियोंके लेट होनेका औसत डेढ़ मिनट था। जरा अपने देशकी गाड़ियोंकी दशा तो देखिये। कितनी ऐसी गाड़ियां हैं जो ठीक समयपर चलती हैं? अधिकतर गाड़ियां दस-बीस मिनट या घण्टा-डेढ़-घण्टा लेट रहती हैं। यहां गाड़ीका ठीक समयपर पहुंच जाना अपवाद है। और यहां गाड़ियां हर छोटे स्टेशनपर दो मिनट रुकती हैं, तब भी मुसाफिर दिक्कतसे चढ़ पाते हैं। वहां गाड़ियां ३० सेकिण्ड रुकती हैं, तब भी यात्री सरलतासे चढ़ लेते हैं।

परन्तु इससे भी अधिक आश्चर्यजनक हैं वहांकी 'ट्यूब रेलें' जो जमीनके नीचे चलती हैं। यह गाड़ियां जमीनसे तीन मञ्जिल नीचे तक चलती हैं। यदि लन्दनमें कहीं दस-पांच मील जाना हो तो पासके ट्यूब-स्टेशनपर चले जाइये। वहां मशीनमें पैसे डालिये और टिकट निकाल लीजिये। टिकट लेकर लिफ्टपर चले जाइये। लिफ्टमें जब यात्री भर जायंगे तो लिफ्ट-मैन नीचे ले जायगा। वहां पहुंचकर सीढ़ियोंसे नीचे उतरकर प्लैटफार्मपर पहुंच जाइये। दो प्लैटफार्म होंगे। एक अप ट्रेनका, दूसरा डाउन ट्रेनका। वहां किसीसे पूछनेकी भी आवश्यकता नहीं कि आपको किधरकी गाड़ी लेनी होगी। रास्ता बतानेके लिए इतने बोर्ड लगे रहते हैं कि यदि आप आंखें खोलकर चलें तो रास्ते-का पता स्वयं चलता जायगा। लिफ्टसे निकलते ही दो लालटेनें मिलेंगी—एक हरी, एक लाल। उनपर लिखा होगा—"विक्टोरियाकी तरफ जानेवाले हरी लालटेनके पीछे जायं।" "यूस्टनकी तरफ जानेवाले लाल लालटेन-के पीछे जायं।" आगे बढ़ते चले जाइये। उसी तरह दोहरी लालटेनें मिलती चली जायंगी। अन्तमें एक लालटेन एक प्लैटफार्मपर पहुंचा देगी, दूसरी दूसरेपर। इनके अतिरिक्त प्लैटफार्मोंपर भी नोटिस लगे होंगे—"इस प्लैटफार्मसे निम्न लिखित स्टेशनोंके लिए गाड़ी मिलेगी।", और भी दर्जनों नोटिस लगे होंगे—"बाहर जानेका रास्ता इधर है।" "दूसरे प्लैटफार्मको जानेका रास्ता उधर है।" हाई स्ट्रीटको जानेका रास्ता यह है।" "बोल्ड स्ट्रीटको जानेकारास्ता वह है।"

प्लैटफार्मपर पहुंच गये। कठिनतासे एक या दो मिनट बीतेंगे कि घड़घड़-घड़घड़ करती हुई गाड़ी आ जायगी और एक हल्के झटकेके साथ रुक जायगी। इन गाड़ियोंमें automa-tic दरवाजे लगे रहते हैं। गाड़ीके रुकते ही गार्ड किसी मशीनको खींचता है जिससे सब दरवाजे खुल जाते हैं। यात्री एक-एक करके उतरने लगते हैं। उस देशमें यह नियम है कि गाड़ी या 'बस' या जहाजमेंसे पहले यात्री उतर लेंगे, तत्प-श्चात् और यात्री चढ़ेंगे। जब सब यात्री उतर आये तब प्लैटफार्मके यात्री एक-एक करके चढ़ने लगे। जब गार्डने देखा कि सब यात्री चढ़ चुके तो झटसे मशीन घुमायी, सब द्वार बन्द हो गये। गार्डने जञ्जीर खींची, ड्राइवरके पास घण्टी बजी और गाड़ी चल दी। यह सब मिलाकर गाड़ीका ठहराव एक स्टेशनपर होता है १५ सेकिण्ड! मैंने कई बार घड़ी मिलाकर देखा! कभी ११ सेकिण्ड, कभी १२ सेकिण्ड, कभी १५ सेकिण्ड! इन १५ सेकिण्डमें गाड़ी रुक जाती है, द्वार खुल जाते हैं, सब यात्री उतर आते हैं, सब यात्री चढ़ जाते हैं, द्वार बन्द हो जाते हैं, घण्टी बजती है और गाड़ी चल भी देती है! इसके विपरीत भारतवर्षमें क्या होता है? जहां गाड़ी खड़ी हुई कि अन्दरके यात्री बाहर आने लगे, बाहरके यात्री अन्दर जाने लगे। एक मुसीबत-का सामना होता है। कोई अपना सन्दूक दूसरेकी बगलमें घुसेड़े देता है, कोई किसीको धक्का दिये देता है। कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खिड़कीमें फांदा पड़ता है। दो मिनट गाड़ी हर स्टेशनपर खड़ी होती है, फिर भी यात्री कठिनाईसे चढ़ पाते हैं।

केवल रेलें ही नहीं, वहांकी 'बसें' और लारियां भी ऐसी ही फुर्तीसे काम करती हैं। प्रत्येक शहरमें दिन-भर एक सिरेसे दूसरे सिरे तक बसें और ट्रामें घूमती रहती हैं। यह भी किसी स्टेशनपर कुछ सेकिण्ड ही रुकती हैं। किसीकी मजाल नहीं कि आधे मिनट अधिक भी अपने लिए ठहरा ले।

टैक्सियां हैं। उनके किरायेके लिए कोई हुज्जत नहीं करनी पड़ती। टैक्सीपर "मीटर" लगा हुआ है। (जैसा कलकत्तेमें भी है)। फासलेके हिसाबसे "मीटर" पर लगा हुआ अङ्क बढ़ता जायगा। जितना मीटरपर आ जाय, उतना चुपकेसे दे दीजिये। यहांकी तरह नहीं कि "दो आने लोगे?" "नहीं हुजूर, तीन आनेसे कम नहीं होगा।" "अच्छा ढाई आने ले लो·····।"

यदि कभी कोई मैच ४॥ बजेके लिए घोषित की गयी है तो ४ बजकर १० मिनट तक फील्डपर कोई दिखाई न देगा। ४ बजकर ११ मिनटपर खिलाड़ियोंका आना शुरू होगा। १४ मिनट तक सब आ जायंगे और ४। से आधा मिनट पहले सब स्टिक ले-लेकर अपनी ड्यूटीपर तैयार दिखाई देंगे। इसे कहते हैं समयका सदुपयोग!

लेक्चरमें भी विद्यार्थी ठीक समयसे एक या दो मिनट पहले ही पहुंच जाते हैं। यदि कभी देर भी होगी तो एक या डेढ़ मिनटकी। इस देशमें तो देखा गया है कि कुछ विद्यार्थी आधे घण्टे तककी देरसे आते हैं।

## सभ्यता

यदि कोई गांववाला किसीसे पूछ बैठे कि 'गोसाईं पाड़े' का कौन-सा रास्ता है या अमुकका मकान किधर है? तो कभी-कभी यह उत्तर मिलता है कि "हमने क्या किसीकी छठी खायी है?" यह उत्तर देनेवालेकी असभ्यताका सूचक है। इंगलैण्डमें आपको ऐसा उत्तर कभी नहीं मिल सकता। वहां जब कभी रास्ता पूछना हो तो सीधे पुलिसमैनके पास जाइये। वहांकी पुलिस आदर्श कही जा सकती है। लन्दनमें हजारों गलियां हैं। आयु-भर कुछ लोगोंको लन्दनमें रहते हो जाती है, परन्तु दस-पांच गलियोंको छोड़कर किसीका नाम याद नहीं रहता। परन्तु इन पुलिसमैनोंको अन्य शिक्षाके साथ शहरका नक्शा भी याद कराया जाता है। कहींका रास्ता सिपाहीसे पूछिये। वह आपसे प्रश्न करेगा—"आप ट्रामसे, बससे या ट्यूब रेलवेसे जाना चाहते हैं?" आपने उत्तर दिया "बससे।" "तो सामनेके चौराहेसे १४२ नं० की बस लेकर ट्रैफलगर स्क्वायर तक चले जाइये। वहां-से ६९ नं० की बस लेकर उत्तर दिशाको चल दीजिये। कण्डक्टरसे कह दीजियेगा। वह आपको इच्छित स्थान-पर उतार देगा।" यदि आपने कहा "ट्यूबसे जायंगे" तो "सामने यूस्टन स्टेशनपर उतर जाइये। वहांसे रेलमें चेरिंग क्रास जाइये। वहांसे डिस्ट्रिक्ट रेलवेकी गाड़ी लेकर केनसिंगटन पर उतर जाइये।" यदि आपको थोड़ी ही दूर जाना हो तो आप पैदल जाना चाहेंगे। सिपाही बतायेगा, "सीधे चले जाइये। बायें हाथपर दसवें मोड़पर मुड़ जाइये। फिर दो फर्लांङ्ग जानेपर एक चौराहा मिलेगा। वहांसे सीधे हाथको मुड़ जाइये। फिर तीसरे मोड़पर सीधे हाथको मुड़नेसे आप नियत स्थानपर पहुंच जायंगे।" वहां इतनी सभ्यता है कि यदि कोई सिपाही कहींका रास्ता न भी जानता हो तो आपसे एक मिनट ठहरनेके लिए कहेगा और स्वयं किसी औरसे पूछकर आयेगा और रास्ता बतायेगा।

एक दिनकी बात है, मैं रास्ता भूल गया। सिपाहीसे जाकर कहा, "मैं डिङ्गल जाना चाहता हूं।" उसने कहा—"वह देखो। सामने कोई दो सौ गजपर जो तिराहा है उसके कोनेपर जाकर खड़े हो जाओ। वहांपर जो दूसरी बस आये—पहली नहीं—उसीपर बैठ जाना।" मैं दौड़कर तिराहेपर पहुंचा। थोड़ी देर बाद बस आकर रुकी। मैं जल्दीमें बिना सोचे-समझे उसमें बैठ गया। बस चलने ही वाली थी कि पीछेसे सीटीकी आवाज आयी। बस रुक गयी। वही सिपाही दौड़ता हुआ आया और मेरी तरफ इशारा करके बोला—"इस यात्रीको अमुक जगह जाना है। यह गलतीसे इस बसपर बैठ गया है।" कण्डक्टरने मुझे उतार दिया। बस चली गयी। पुलिसमैनने मुझसे कहा—"अब जो बस आये उसपर बैठ जाना।"

इस देशकी पुलिसको देखकर कोई अनुमान कर ही नहीं सकता कि इंगलैण्डकी पुलिस कैसी होगी। वहांकी पुलिसको घूस देना लगभग असम्भव है। चाहे अपना कोई खास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रिश्तेदार ही क्यों न हो। "घूस देनेका उद्योग" बहुत बड़ा अपराध समझा जाता है। बोलीमें इतनी मीठी होती है कि चाहे किसीने हत्या की हो, जहां तक हो सकेगा उससे भी सख्तीसे पेश न आयेगी। "कृपया मुझे अपने हाथोंमें हथकड़ी डाल लेने दीजिये।" "कृपया इस कोठरीके अन्दर चले जाइये"—ये वाक्य उसी देशमें प्रचलित हैं।

इंगलैण्डमें यह नियम है कि कमरेकी अंगीठीमें कोई कागज नहीं जला सकता। क्योंकि कागज जलता हुआ चिमनीमेंसे बाहर उड़ जाय और किसी और मकानमें चला जाय, इससे आग लग जानेकी सम्भावना रहती है। एक दिन जिस मकानमें मैं रहता था, उसकी मालिकिनने सोचा, "कौन देखता है। यह कागजकी रद्दी बची है, इसे अंगीठीमें जला दूं।" उसने रद्दी जला दी। एक कागज उड़ता हुआ चिमनीके ऊपरसे बाहर निकल गया। वहांकी पुलिसमें यह विशेषता है कि जहां आपको पुलिसके होनेका गुमान भी न होगा वहीं, न जाने किधरसे, टप्पां-सा एक पुलिसमैन निकल आयेगा। इस कागजको भी किसी पुलिसमैनने दूरसे चिमनीसे निकलते हुए देख लिया। बस मिट्टी सूंघता हुआ हमारे मकानपर आ पहुंचा। दरवाजा खटखटाया। मालिकिनसे हंसकर बोला—"गुड मौर्निङ्ग, क्या तुमने कागज जलाया है?" मालिकिन इनकार न कर सकी। पुलिसमैनने कहा—"मैं देखना चाहता हूं, किस अंगीठीमें जलाया है।" मालिकिन उसे अंगीठी तक ले गयी। पुलिसमैनने जेबसे एक नोट-बुक निकाली और मलिकिनका नाम और पतिका पेशा इत्यादि लिखा। फिर चलने लगा और बोला—"तुम्हारे नाम सम्मन आयेगा। तुम्हें कचहरी जाना होगा।" फिर बोला,—"अच्छी बात है, मैं जाता हूं, नमस्ते।" मालिकिनने भी हंसकर कहा, "नमस्ते" और उसको बिदा कर दिया। न इसके माथेपर बल पड़े और न उसके। दो दिन बाद समन आया। वह कचहरी गयी और उसपर जुर्माना हुआ। इसे कहते हैं 'सभ्यता'।

यदि ऐसी बात इस देशमें होती तो प्रथम तो मालिकिन ही कहती, "मैंने कहां कागज जलाया है? सारा मकान छान डालो, कहीं मेरे घरमें रद्दी है ही नहीं।" यदि अपराध प्रमाणित हो भी जाता तो चुपकेसे जमादार साहबसे कोई समझौता हो जाता। यदि यह भी न होता और सिपाही रिपोर्ट करनेकी ठान ही लेता तो मालिकिन उसकी सात पुश्तको उसी समय खड़े-खड़े कोस डालती और कदाचित् दोनोंमें आयु-भरके लिए वैमनस्य हो जाता।

वहां यदि कोई चीज खो जाती है तो Lost property office में पहुंच जाती है। न जाने कितनी घड़ियां, छत्रियां, बरसातियां इस दफ्तरमें पहुंचती रहती हैं। इस देशमें भी सुनते हैं एक ऐसा दफ्तर होता है, परन्तु उसे उपयोगमें आते हुए बहुत कम देखा है।

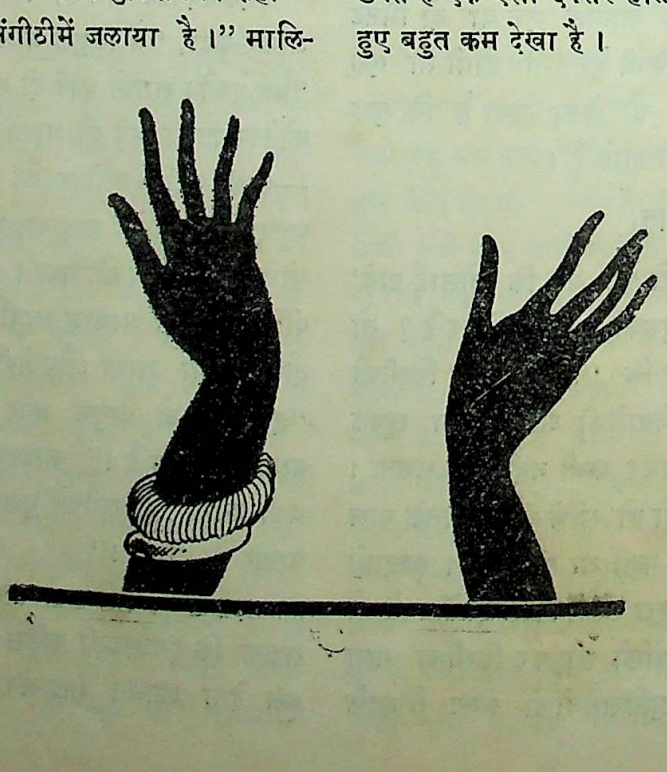

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उत्तप्त अङ्गारोंपर नृत्य

श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा

अति प्राचीन कालमें भारतवर्षमें सर्वसाधारण जनतामें यह विश्वास प्रचलित था कि जो लोग सत् एवं पवित्र होते हैं, जिनकी सत्यशीलता सर्वथा निष्कलुष होती है, वे अग्नि-परीक्षामें उत्तीर्ण होते हैं। अर्थात् प्रज्वलित अग्निमें प्रवेश करनेपर भी उसकी दाहक शक्तिका उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। श्रीराम द्वारा लङ्का-विजयके अनन्तर सीताकी विशुद्धताके लिए जो अग्नि-परीक्षा हुई थी, उसकी कथा रामायणमें वर्णित है। इससे यह अनुमान होता है कि रामायण-कालमें इस प्रकारकी अग्नि-परीक्षा प्रचलित थी। इस प्रकार पुरातन कालसे ही यह प्रथा धर्मके साथ विजड़ित चली आती है और इस समय भी भारतमें तथा विदेशोंमें कहीं-कहीं इसका किसी-न-किसी रूपमें आभास देख पड़ता है। दक्षिणमें इस प्रकारका कोई वार्षिक अनुष्ठान होता है जिसमें तप्त अङ्गारोंके ऊपर-से होकर धर्मानुष्ठान करनेवाले चलते हैं। इसके सिवा कहीं-कहीं यह भी देखा जाता है कि जिन लोगोंके ऊपर किसी देवता (ब्रह्म) का आविर्भाव होता है वे तप्त अङ्गारको हथेलीमें रख लेते हैं अथवा प्रज्वलित दीप-वर्तिकाको मुंहमें रखकर उसे बुझा देते हैं।

भारतके सिवा संसारके और भी कितने ही देशोंके प्राचीन इतिहासोंसे इस बातका पता चलता है कि यह प्रथा उस समयकी बहुत-सी जातियोंमें व्यापक रूपसे प्रचलित थी। रोमन कवि वर्जिलने अपने एनिड Aeneid नामक महा-काव्यमें Hirpi सम्प्रदायके धर्म-पुरोहितोंका वर्णन किया है, जो अनिवार्य सैनिक सेवासे इसलिए वर्जित कर दिये गये थे कि "वे अपने धर्म-विश्वासकी दृढ़ताके कारण प्रज्वलित अग्निके बीचसे होकर बेदाग निकल जाते थे।" यह कहा जाता है कि स्पेनमें १८ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें किसी एक परिवार-विशेषमें मन्त्रके प्रभावसे अग्निपरसे होकर चलने और उसे निर्वापित कर देनेकी शक्ति परम्परासे चली आती थी। इस समय भी बलगेरिया, ट्रीनीडाड, फीजी द्वीप-पुञ्ज, तहीती, मारीशस, जापान आदि देशोंमें यह प्रथा प्रचलित है। इस प्रथामें सर्वत्र एक ही बात पायी जाती है, अर्थात् पुरोहित या साधारण लोग तप्त अङ्गार या धूमायित भस्मस्तूपपरसे होकर नङ्गे पांव चलते हैं। बलगेरियामें सेण्टहेलेना और कान्सटेन-टाइनके पर्वपर इस प्रकार आगके ऊपर नृत्य करनेवाले लोग, जो

मवेंगा द्वीपके निवासी पत्र-पुष्पमालादिसे सुसज्जित होकर 'विलाविलेरिवो' (तप्त अङ्गारोंपर चलना) उत्सवमें भाग लेते हैं।

"Nisstinaris" कहलाते हैं, भस्माच्छादित ज्वलन्त अङ्गार-के ऊपर नृत्य करते हैं और भविष्यवाणी करते हैं। ट्रीनीडाड, मारीशस और स्ट्रेट्स सेटेलमेण्टमें भी निम्नश्रेणीके कुली-मजदूर इस प्रकारकी क्रिया करते हैं। जापान और हवाई द्वीपमें भी इस प्रथाके प्रचलित होनेका प्रमाण कई लेखकोंके लेखोंमें मिलता है।

तहीतीमें यह अनुष्ठान 'हिना' नामक वनस्पति-देवताके सम्मानमें किया जाता है। इस देवताका निवास चन्द्रमामें बताया जाता है। तहीती द्वीपके निवासी इस अनुष्ठानको 'उमुली' कहते हैं। अनुष्ठान आरम्भ होनेके पूर्व प्रधान



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूक द्वीपमें प्रधान पुरोहित सबसे पहले तप्त प्रस्तरखण्डोंके ऊपर चल रहा है।

पुरोहित एक प्रकारके वृक्षकी शाखासे आगको पीटता है और इसके साथ-साथ आत्म-रक्षाके लिए मन्त्रोच्चारण द्वारा देवीकी स्तुति करता है। उसके साथ-साथ आगपरसे होकर चलनेवाला प्रत्येक व्यक्ति हाथमें उसी वृक्षकी एक-एक शाखा लिये रहता है। फीजीमें इस वृक्षका नाम 'मसावी' और इस पर्वका नाम "विलाविलेरिवो" है।

फिजीमें इस सम्बन्धकी जो दन्तकथा प्रचलित है उसके अनुसार मवेंगा द्वीपके प्रधानने एक बार एक प्रसिद्ध कथा-वाचकको उपयुक्त उपहार देना चाहा। इसके लिए उसने पासके एक गड्ढेमें एक विशेष प्रकारकी मछलीको तलाश की। मछलीके बदले उसे वहां एक बौना मिला। उस बौनेने कहा कि यदि तुम मुझे मुक्त कर दो तो मैं तुम्हें तथा तुम्हारे समस्त वंशजोंको वह शक्ति प्रदान करूंगा जिससे वे जलती हुई चट्टानोंपर नङ्गे पांव चलनेमें समर्थ होंगे। इसपर प्रधानने उस बौनेको मुक्त कर दिया।

प्रशान्त महासागरके कूक द्वीप-पुञ्जमें टूशकी नामक एक द्वीप है। यहांके एक अनुष्ठानका वर्णन करते हुए एक अंगरेज दर्शकने लिखा है कि पत्थरोंके ढेरके चारों तरफ काठके कुन्दे सजाकर रखे गये थे। उनमें आग लगा दी गयी थी। अग्नि प्रचण्ड वेगसे जलने लगी और उसके उत्तापसे प्रस्तरखण्ड फटने-फटनेपर हो रहे थे। इसी समय एक पुरोहित मन्त्रोच्चारण करते हुए उन पत्थरोंके ढेरपर चलने लगा। उसके पीछे-पीछे और भी कई आदमी अपने हाथोंमें वृक्षोंकी डाल-पत्तियां लिये हुए चलने लगे। इसके बाद पत्थरोंपर होकर चलनेका यह मार्ग सर्व-साधारणके लिए उपयुक्त समझा गया और अन्य बहुत-से लोग भी उन पत्थरोंपर चलकर पार होने लगे। क्योंकि ऐसा करना सौभाग्यका चिह्न समझा जाता है। उक्त दर्शकका कहना है कि मैं भी एक पुरोहितके साथ उसका हाथ पकड़कर उन पत्थरोंपर चलने लगा। जलते हुए अङ्गारोंका ताप भीषण था। किन्तु मैं सकुशल पार हो गया। मैंने फौरन् अपने जूतेके तल्लेकी ओर देखा, किन्तु गर्म पत्थरसे जलनेका वहां कोईभी चिह्न नहीं पाया।

मारीशस द्वीपके इस अग्न्युत्सवका वर्णन करते हुए एक लेखकने लिखा है कि रोजहिल नामक एक क्षुद्र नगरमें अब भी २ जनवरीको प्रतिवर्ष यह उत्सव मनाया जाता है। ३० फीट लम्बा और ६ फीट चौड़ा एक गड्ढा तैयार किया जाता है। इस गड्ढेमें लकड़ीके कोयलेकी आग जलती रहती है। इसके बाद उपासक लोग—जिन्हें अपने देवताओंसे आशीर्वाद प्राप्त होते हैं—धन्यवाद प्रदान करनेके लिए और

मारीशस द्वीपमें आगपर चलनेका अनुष्ठान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



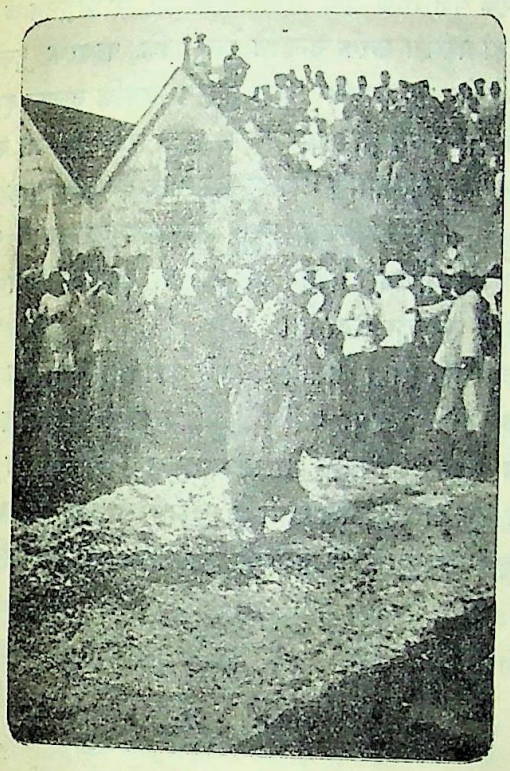

मारीशस द्वीपकी एक स्त्री तप्त अङ्गारोंपर चल रही है।

दूसरे लोग आगपर चलकर प्रायश्चित्त करनेके लिए तैयार होते हैं। इनमें बहुत-से अपने एक गालसे दूसरे गाल तक लम्बी आलपीनें घुसेड़े रहते हैं; या उनसे जीभसे होकर होठोंको विद्ध किये रहते हैं। कुछ लोग अपने नङ्गे शरीरको हुकोंसे विद्ध किये रहते हैं। जिनकी जीभोंमें आलपीनें घुसी हुई होती हैं उनके मुंहसे फेन निकलता रहता है; और उनकी आंखें उत्तेजित रूपमें चमकती रहती हैं। इस प्रकार गालों, होंठों और जीभोंको आलपीनोंसे विद्ध करनेमें एक विचित्र बात यह देखी जाती है कि रक्तका एक विन्दु भी कहीं देख नहीं पड़ता। प्रधान पुरोहित निर्भय होकर नङ्गे पांव स गर्म कोयलेकी आगपर होकर चलता है। उसके पांवमें जलने या फफोले पड़नेका कोई भी चिह्न नहीं देखा जाता। उसके बाद उसके दलके और लोग भी उसका अनुसरण करते हैं। कुछ लोग स्तब्ध होकर आगपर चलते हैं, कुछ लोग चिल्लाकर अपने देवताओंसे प्रार्थना करते हैं और दूसरे लोग बिलकुल प्रसन्न-जैसे मालूम पड़ते हैं। गड्ढेके उस पार पहुंचनेपर पवित्र पीत पुष्प—जो बलिप्रदत्त बकरेके रक्तमें डुबाये हुए होते हैं—उनके ऊपर फेंके जाते हैं।

एक बार फिजी द्वीप-पुञ्जके मबेंगा द्वीपमें ड्यूक आव ग्लासेस्टरके सामने यह अनुष्ठान किया गया था। तीन फीट गहरा एक गोलाकार गड्ढा खोदा गया। उस गड्ढेको बड़े-बड़े आग्नेय प्रस्तरों द्वारा परिपूर्ण किया गया और फिर उनके ऊपर काष्ठखण्ड रखे गये। अनुष्ठान आरम्भ होनेके लगभग १६ घण्टे पूर्व उस ढेरमें आग लगा दी गयी और वह आग बराबर प्रचण्ड रूपमें जलने लगी। उसका ताप इतना अधिक था कि उस गड्ढेके आसपास १० फीट तक खड़े रहना असम्भव था। इसके बाद नर-नारियोंका दल फूल और मालाओंसे सुसज्जित होकर नङ्गे पांव वहां आ पहुंचा। उसने पहले लम्बे बांसोंसे गड्ढेको राखको अलग करके जलते हुए पत्थरोंको बराबर कर दिया। पत्थरोंका ताप इतना अधिक था कि रूमाल फेंकनेपर क्षण-भरमें ही वह भस्मीभूत हो जाता था। किन्तु फिर भी जो लोग इस आगके ऊपर होकर चलनेवाले थे उन्होंने बेधड़क उस गड्ढेमें प्रवेश किया और बिलकुल नङ्गे पांव गर्म पत्थरोंपर

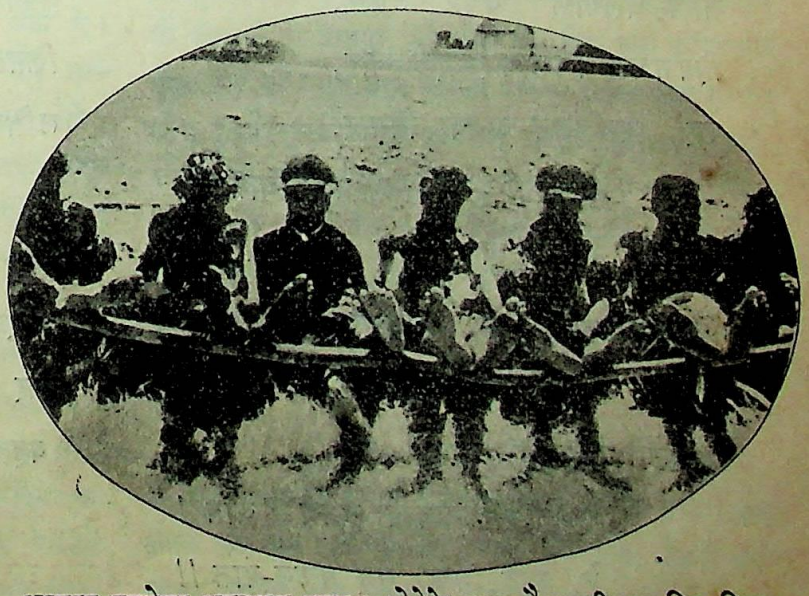

आगपर चलनेका अनुष्ठान समाप्त होनेके बाद फौरन् ही यह चित्र लिया गया। जलते हुए पत्थरोंसे पांवके तलुवे जलने या फफोले पड़नेका कहीं लेश भी नहीं है। बायीं ओर तीसरे स्थानपर एक स्त्री है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चलने लगे। उनकी मुखाकृति देखनेसे कोई यह नहीं कह सकता था कि वे किसी प्रकारका कष्ट मालूम कर रहे हैं। चेहरेपर शिकनका कहीं नाम तक नहीं। इसके बाद दलके सब लोग चीत्कार करते हुए धूमराशिके बीच उस गड्ढेमें कूद पड़े। अन्तमें गड्ढेको मिट्टीसे भर दिया जाता है और फिर सब लोग उसपर नाचने लगते हैं।

कुछ वैज्ञानिक इस प्रकार उन पत्थरोंसे पांव न जलनेका कारण यह बताते हैं कि जिन पत्थरोंका उपयोग किया जाता है उनमें बहुत-से छिद्र होते हैं। गर्म होते समय उनकी आर्द्रता फैलती है जिससे पत्थरके खण्ड-खण्ड हो जाते हैं। जिस समय गड्ढेको लम्बे बांससे चौरस किया जाता है, प्रस्तर-खण्डोंके नीचेका भाग ऊपर चला आता है और वह उतना गर्म नहीं होता। मि० एस० पी० लैङ्गली नामक एक वैज्ञानिक कुछ प्रस्तर-खण्डोंको वाशिङ्गटन ले गये थे। वहां परीक्षा करके उन्होंने देखा कि पत्थरके टुकड़ेके एक सिरेको वह हाथसे पकड़े हुए थे जबकि उसका दूसरा सिरा जलकर उत्तप्त हो रहा था। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि आगपर चलनेवाले प्रस्तर-खण्डोंपर देर तक खड़े नहीं रहते, बल्कि एक खण्डसे दूसरे खण्डपर शीघ्रताके साथ पांव रखते हैं और इस प्रकार कुल १५ या १६ सेकेण्डोंमें सारे गड्ढेको वे पार कर जाते हैं।

वैज्ञानिकों द्वारा बताये गये ये कारण कहां तक लागू हो सकते हैं यह कहना कठिन है, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार प्रज्वलित अग्निके ऊपर नङ्गे पांव चलना और नाचना एक आश्चर्यजनक काम है। और बीसवीं शताब्दीके इस वैज्ञानिक युगमें भी हम इसे एक चमत्कार ही कहेंगे।

---

# प्रभात

*नीले नभमें नव, अरुण प्रात !*
*रे मन्द, मन्द, मृदु मलय-वात !!*

*सखि-कलियोंके घूंघट उघार,*
*प्रिय मचल-मचल कर मृदुल-प्यार,*
*कर आलिङ्गन-चुम्बन निसार,*
*झकझोर सुकोमल, नवल गात !*
*रे मन्द, मन्द, मृदु मलय-वात !!*

*चिर-चल-तरङ्गिणीमें अपार,*
*बुद्बुद कन्यायें कर विहार,*
*फेनिल मणियोंके पहन हार,*
*मचली-सी इनकी सुभग जात !*
*रे मन्द, मन्द, मृदु मलय-वात !!*

*मुकुलित मुक्तावलिसे तरु-दल,*
*किसलय हिलते कोमल-कोमल,*
*लतिकाओंकी अनुभूति नवल—*
*लज्जित तन्वी, री चपल-गात !*
*रे मन्द, मन्द, मृदु मलय-वात !!*

*सौरभ-भारोंसे हिय उभार,*
*कर स्निग्ध-रश्मियोंसे सिंगार,*
*बहती मृदु-मृदु रे मधु-बयार;*
*सुरभित, प्रमुदित, सुन्दर प्रभात !*
*रे मन्द, मन्द, मृदु मलय-वात !!*

—महेश्वरीप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चलता-पुर्जा

डाक्टर धनीराम प्रेम

बुलन्दशहर जिलेमें राजघाट नामक एक छोटा-सा कस्बा है। छोटा होनेपर भी इसे आसपास बड़ा महत्त्व दिया जाता है, क्योंकि यह गङ्गाके किनारे बसा हुआ है। स्थान रमणीक है। प्रति पूर्णिमाको मेला लगनेसे वहांपर काफी भीड़ इकट्ठी हो जाती है।

आसपासमें अलीगढ़ एक बड़ा शहर है। इसलिए वहांसे राजघाट जानेवालोंकी संख्या काफी बड़ी होती है। गर्मियोंमें जो लोग पहाड़ोंपर नहीं जा सकते, वे राजघाट जाकर ही ठण्डे हो आते हैं। जब स्कूल और कालेज बन्द हो जाते हैं या परीक्षायें समाप्त हो जाती हैं, तब अनेक विद्यार्थी तथा मास्टर भी राजघाट जाकर कुछ दिनोंके लिए आसन जमाते हैं।

सन् १९३४ का जून महीना था। परीक्षायें समाप्त हो चुकी थीं। स्कूल बन्द हो गये थे। अलीगढ़से राजघाट जानेके लिए दस आदमियोंकी एक पार्टी रातकी गाड़ीसे चल पड़ी। उस पार्टीमें दो तो वे विद्यार्थी थे, जो हाल हीमें मैट्रिककी परीक्षा दे चुके थे। दोनों ही परीक्षाके अखाड़ेके पुराने पहलवान थे। चार-पांच बार कुश्ती हार चुके थे। दोनों ही शौकीन तबीयतके थे। घरके सम्पन्न थे। घरवालोंने कई बार कहा था कि पढ़ना छोड़कर घर बैठो। मैट्रिक पास करके ही कौन-सा बड़ा भारी ओहदा मिल जायगा। लेकिन वे कह देते कि हम नौकरीके लिए तो पढ़ ही नहीं रहे। हम तो बस मैट्रिक पास होना-भर चाहते हैं नाम एकका रामलाल था, दूसरेका काशी।

तीसरे और चौथे, पांचवें और छठे सज्जन इण्टर-मीडिएट परीक्षामें बैठे थे। ये इतने पुराने खिलाड़ी नहीं थे। लेकिन हां, परीक्षाका इन्हें भी काफी अनुभव हो चुका था। एकके चाचा रेलवेमें नौकर थे। उन्होंने आश्वासन दिया था कि तुम बस इण्टर पास कर लो। फौरन् एक जगह रेलवेमें दिला दूंगा। इनका नाम था दुलारे। चौथेको भी एक ओरसे ऐसी ही आशा मिल चुकी थी। इनका नाम था परमानन्द।

सातवें, आठवें और नवें; ये तीनों ही मैट्रिक पास थे, लेकिन आजकल महकमा बेकारीमें थे। इनमेंसे एक बड़े हरफन मौला थे। नाम था प्यारेलाल। कई कम्पनियोंके इधर-उधर घूमकर काम करनेवाले एजेण्ट भी रह चुके थे। बातें करनेमें काफी कमाल हासिल था। मैट्रिकमें फेल होनेवाला रामलाल इनका भतीजा था।

पार्टीके दसवें सदस्य थे एक वकील। वकालत पास किये आपको लगभग २९ वर्ष हो गये थे, लेकिन वकालत जमनेका नाम ही न लेती थी। कई बार पक्का इरादा कर चुके थे कि वकालतको तिलाञ्जलि दे दें, लेकिन फिर कुछ सोच-समझकर उस विचारको त्याग देते। लोग समझाते थे कि जब तक कहीं कोई नौकरी न मिले, तब तक ऐसा करना ठीक नहीं। क्योंकि थोड़ी-बहुत जो-कुछ भी आमदनी होती है, वह भी हाथसे जायगी और लोगोंमें वकालत न चलनेकी बदनामी होगी, वह अलग। बदनामी तो वैसे भी थोड़ी-बहुत होती ही थी। लेकिन प्रेक्टिस छोड़ देनेसे तो कलई बिलकुल ही खुल जायगी। हां, अगर नौकरी मिलनेपर प्रेक्टिस छोड़ेंगे तो कहनेको हो जायगा, भई नौकरीके लिए फलां दफ्तरवाले बहुत पीछे पड़े। खुद बड़ा अफसर पीछे पड़ा कि काम संभाल लो। इसलिए वकालतको बलिदान करना पड़ा। इस मनोकामनाकी पूर्तिके लिए तरह-तरहके प्रयत्न किये गये, लेकिन सब बेकार। अभी तक कहीं भी सुनवाई न हुई। यही नहीं, आप बचपनमें अपने सुपुत्रके ऊपर आशा लगाये बैठे थे। परन्तु वह मैट्रिकसे निकलनेका नाम भी न लेता था। काशी इन्हीं बाबू देवीसहायका सुपुत्र था।

( २ )

पार्टी सकुशल राजघाट पहुंच गयी। पार्टीके सभी सदस्य केवल एक दिन ठहरनेके लिए आये थे। अतः किसी धर्मशाला आदिमें जाये बिना ही सब बिहारघाटकी ओर चल दिये। बिहारघाट रेलकी दूसरी ओर राजघाटके पास ही एक छोटी-सी बस्ती है, जो हाल हीमें बसी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शौचादिसे निवृत्त होकर इन लोगोंने यह निश्चय किया कि स्नान राजघाट चलकर ही किया जाय। गङ्गाके किनारे-किनारे ही चलनेवाली पगडण्डी उन्होंने पकड़ी और घण्टे-भरमें राजघाट पहुंच गये।

राजघाटकी शान इस समय निराली ही थी। गङ्गाके किनारे खासा मेला लगा हुआ था। साधु-सन्तोंका भी काफी जमघट था। गङ्गाजीके बीचमें भी कई प्रकारका जमघट था। जिधर स्त्रियां स्नान करती थीं, उधर जरा भीड़ काफी रहती थी। बहुतेरे आदमी तो चलते-फिरते भी वहां पहुंचकर अपनी चाल अत्यन्त धीमी कर लेते थे और निर्निमेष नेत्रोंसे सुन्दरियोंकी जल-क्रीड़ा देखते जाते थे। बहुतेरे मनचले गङ्गाजीके गर्भमें गोता लगाकर फिर अपना सिर सुन्दरियोंके सामने ही निकालते थे।

पार्टीके नवयुवक सदस्य भी शायद उधर ही स्नानका प्रबन्ध करते, परन्तु वकील साहबकी उपस्थिति इसमें बाधक बनी। खैर, वहांसे सब उधर आये, जिधर बिलकुल पुरुष ही पुरुष स्नान कर रहे थे। दो आदमी किनारेपर वस्त्रोंकी देखभाल करते रहे। बाकी स्नानके लिए गङ्गाजीमें कूद पड़े।

स्नान करते समय तीन-चार उधर पहुंच गये, जहां दस-पन्द्रह व्यक्तियों सहित एक भलेमानुस स्नान कर रहे थे। वहां नहाते-नहाते इनमें कुछ बातचीत भी होने लग गयी।

रामलाल बोला—यार काशी, जरा गङ्गाजीमें गोता लगाकर यह प्रार्थना कर लें कि गङ्गामाई अबकी बार तो मैट्रिकसे उद्धार कर दे।

'अगर गङ्गाजी मैट्रिकसे उद्धार कर दें, तो एक गोता क्या, महीनों ऐसा गोता लगाऊं कि निकलनेका नाम न लूं।' काशीने उत्तर दिया।

काशी अपना उत्तर समाप्त कर ही पाया था कि पास ही नहानेवाले भलेमानुस उधर ही आ गये और काशीकी ओर देखकर बोले—

'आप लोग स्टूडेण्ट्स मालूम होते हैं?'

'जी हां।' काशीने उत्तर दिया।

'मैट्रिकके इम्तिहानमें बैठे हो?'

'जी हां।'

'कहांके स्कूलसे बैठे थे?'

'अलीगढ़।'

इतनी बातें जब तक हुईं, तब तक प्यारेलाल भी उधर ही आ गये और काशीकी बात समाप्त होते ही उन महाशयसे पूछने लगे—

'क्यों साहब, आप इन सब बातोंको किस मतलबसे पूछ रहे हैं?'

'मतलब कुछ नहीं, जरा दिलचस्पी है।'

'आखिर दिलचस्पीका भी तो कोई कारण होना ही चाहिए।'

'दिलचस्पीका कारण यही है कि ज्योमेट्रीकी कापियां मेरे ही पास हैं।'

उनका इतना कहना था कि सन्नाटा छा गया। सब उनकी ओर कौतूहलसे देखने लगे। काशी और रामलाल सन्न हो गये। सोचने लगे कि कहीं उन्होंने किसी तरहकी असभ्यता दिखाकर उन्हें नाराज तो नहीं कर दिया। प्यारेलाल मन-ही-मन पछता रहे थे कि क्यों उन्होंने उन सज्जनसे जरा कठोरतासे बातें पूछीं। आखिर कुछ देर मन-ही-मन इस बातका पश्चात्ताप करके प्यारेलालने बड़ी नम्रतासे कहा—

'माफ कीजिये, मुझे नहीं मालूम था कि आप मैट्रिकके परीक्षक हैं।'

'इसमें माफीकी क्या बात? क्या मेरे सरपर परीक्षककी निशानी है, जिससे आप पहचान सकते!'

'फिर भी गुस्ताखीसे पेश आनेके लिए दिलमें मलाल तो होता ही है।'

'अजी छोड़िये भी इन बातोंको। राजघाटपर आकर इतना तकल्लुफ करना ठीक नहीं। मैं तो अपने विद्यार्थियोंसे भी बराबरका बर्ताव करता हूं।'

'आप कहांपर पढ़ाते हैं?'

'मैं पीलीभीत कालेजमें प्रोफेसर हूं।'

'शायद गणितके?'

'हां, इसीलिए तो ज्योमेट्रीका पर्चा मुझे मिला है। इस साल एफ० ए० के लिए भी मैं गणितका परीक्षक हूं।'

ये बातें सुनकर मैट्रिक और एफ० ए० के विद्यार्थियोंके मुंहमें पानी भर आया। प्यारेलाल कुछ रिरियाकर प्रोफेसर साहबसे बोले—

'हम लोगोंके भाग्य चमक गये कि आपके इस तरह दर्शन हुए। राजघाटमें कितने दिनों निवास रहेगा?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'कह नहीं सकता, कब तक रह सकूंगा। मेरे चाचा एसेम्बलीके मेम्बर हैं। उन्होंने कई बार शिमला आनेके लिए लिखा है। उधर नैनीतालमें मामा डिप्टी कलक्टर हैं, वह भी गर्मियां वहीं बितानेके लिए लिख रहे हैं। बहरहाल दो-चार दिन तो रहनेका इरादा है ही! आप लोग यहां कितने दिनोंके लिए आये हैं?'

'हम लोग तो आज हीके लिए आये हैं।'

'तो क्या शामको सब लोग चले जाओगे?'

'औरोंकी बात तो मैं नहीं कह सकता। लेकिन जानेका इरादा होनेपर भी मैं यहां दो-एक दिन और रहूंगा।'

'तो फिर शामको मिलिये। पुलके पास ही जो मकान है, वह मैंने ले रखा है। वहां किसीसे भी प्रोफेसर गुप्ताको पूछ लीजिये।'

'मैं जरूर मिलूंगा।'

इतना कहकर प्रोफेसर साहबसे प्यारेलालने हाथ मिलाया और वहांसे सबको लेकर जरा हटकर नहाने लगे।

( ३ )

इस बातसे कि गणितके परीक्षक प्रोफेसर गुप्ता हैं और वह राजघाटमें ही हैं, पार्टीमें तहलका मच गया। सब यह कोशिश करने लगे कि किसी तरह उनकी जान-पहचान प्रोफेसर साहबसे हो जाय, तो कुछ पास होनेका सिलसिला जमे। अन्तमें यह सलाह हुई कि प्यारेलाल अकेले ही शामको प्रोफेसर साहबसे मिलें। और मेल बढ़ जानेके बाद उनसे परीक्षार्थियोंके विषयमें बातचीत करें।

शामको और सब लोग तो गङ्गाके किनारे पहुंच गये और प्यारेलाल प्रोफेसर साहबसे मिलनेके लिए गये। जिस समय प्यारेलाल वहां पहुंचे, प्रोफेसर साहबकी चायकी तैयारी हो रही थी। उन्हें देखते ही बड़े तपाकसे मिले और बोले—

'आप अच्छे वक्तपर आये। चाय भी तैयार हो रही है।'

'चायकी तकलीफ आप क्यों करते हैं। आप-जैसे महानुभावोंके दर्शन ही हो जायं, यही बड़ी बात है।' प्यारेलालने अत्यन्त विनम्रतासे कहा।

'अजी कोरे दर्शनोंसे आजकल कुछ नहीं होता। अरे छिद्दा, जरा चाय ज्यादा बनाना और कुछ मिठाई वगैरह भी साथमें हो!'

यह कहकर प्रोफेसर साहब कपड़े बदलने लगे और साथ ही प्यारेलालसे बातें भी करने लगे। बीचमें एक बहुत बढ़िया सिगार पीनेको दी। बात-बातमें माफी मांगते जाते। कभी कहते, आपको तकलीफ तो नहीं हो रही है, आरामसे बैठिये। कभी कहते, यहां तो किसीकी खातिर-तवाजा ही नहीं कर सकते। अपना घर हो, तो सौ बातें की जा सकती हैं।

प्यारेलाल प्रोफेसर साहबकी बातोंसे गद्गद हो रहे थे। मानो उनसे कोई साक्षात् देवता ही बातें कर रहा हो। इतनेमें ही चाय आयी। बड़े तकल्लुफके साथ। मिठाइयां, नमकीन, दहीबड़े, मलाईका बरफ, चाय, बिस्कुट।

प्यारेलाल बोझसे दबे जा रहे थे। सोच रहे थे कि यह व्यक्ति मर्त्यलोकमें रहने योग्य नहीं, किसीकी भूलसे ही उसे यहां भेज दिया गया है। आजकल इतने बड़े आदमियोंसे छोटा-सा काम निकालनेके लिए भी दावतें देनी पड़ती हैं, डाली भेजनी पड़ती हैं और न जाने कितनी खुशामद करनी पड़ती है। लेकिन यह एक आदमी है, जो खुद खातिर करता है।

चाय समाप्त हुई तो प्रोफेसर साहबने गङ्गाके किनारे घूमनेका प्रस्ताव किया। प्यारेलाल भी पीछे-पीछे चल दिये। गङ्गाके किनारे पहुंचे तो प्यारेलालके सभी साथी वहां मौजद थे। उन्हें देखते ही प्रोफेसर साहब बोले—

'अरे, आप लोग अभी यहीं हैं। मैंने समझा था कि आप सब चले गये हैं।'

'जानेका विचार तो था, लेकिन मैंने इन सबको रोक लिया। आपके दर्शन कब-कब मिलेंगे।' प्यारेलालने उत्तर दिया।

'तो इन सबको मेरे यहां साथ लाना था।'

'इतनी भीड़के पहुंचनेसे आपको तकलीफ होती।'

'वाह, इसमें तकलीफ कैसी? मुझे तो बहुत आदमियोंका साथ ही अच्छा लगता है। जब कभी मैं अपने रिश्तेदारोंके यहां जाता हूं, तो मिलनेवालोंका तांता लग जाता है और मुझे इससे बड़ी खुशी होती है।'

'यह सब आपकी शराफतके कारण है। जहां भी आप खड़े हो जायं, वहीं आपका सत्कार करनेवाले सैकड़ों तैयार हो जायं। सारे राजघाटमें आपके नामकी चर्चा है।'

इतने हीमें एक नाव किनारेपर आकर लगी। नाववाला चिल्लाने लगा, 'नावमें सैर कीजिये!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसकी बात सुनकर प्रोफेसर साहबने इशारेसे उसे बुलाया और पूछा—

'क्या लेता है ?'

'एक आना सवारी !'

'सवारीका हिसाब नहीं, पूरी नावका बोल !'

'पूरी नावका एक रुपया दे दीजिये !'

'अच्छा, ले यह रुपया ! जो भी यहां खड़े हैं, सबको बिठा ।'

यह कहकर उन्होंने एक रुपया जेबसे निकाला और नाववालेके हवाले कर दिया। फिर खुद नावपर सवार हो गये। पीछे-पीछे प्यारेलाल और उनके साथी भी जा बैठे। इधर-उधर चार-छः और आदमी खड़े थे, उन्हें भी बुला लिया गया। लोग उनकी इस दरियादिलीपर बागबाग हो रहे थे—वास्तवमें किसी बड़े घरानेका लड़का है, नहीं तो आजकल किसकी छातीमें दम है ! इसे तो किसी महाराजाके घरमें जन्म लेना चाहिए था।

लगभग आधे घण्टे तक नाव गङ्गाजीमें घूमती रही। जब किनारेपर लगी, तो प्रोफेसर साहबने चार आने मल्लाहके हाथपर और रख दिये। वह झुक-झुककर बलायें लेने लगा।

नावसे नीचे उतरे तो एक ब्राह्मण सामने आकर भीख मांगने लगा।

'पैसा तो नहीं, हम तुझे खाना दे सकते हैं !' प्रोफेसर साहब बोले।

'खाना ही दे दीजिये, सरकार !'

और ब्राह्मणको साथ लेकर वह हलवाईकी दूकानपर पहुंचे। वहां ब्राह्मणने आध सेर पूरी, आध सेर मिठाई और दो पैसेका दही खाया। प्रोफेसर साहब बड़ी लापरवाहीसे उसके पैसे चुकाकर आगे बढ़ गये। पीछे-पीछे प्यारेलालकी पार्टी उनकी सराहना करने लगी।

( ४ )

दूसरे दिन पार्टी तो वापस चली गयी। सिर्फ प्यारेलाल ही वहां प्रोफेसर साहबसे परीक्षाके भेद पूछने और लोगोंकी सिफारिश करनेके लिए वहां रह गये। शामके वक्त वह प्रोफेसर साहबसे मिलने गये, इस इरादेसे कि दूसरे दिन उनकी दावत करें और फिर उसके बाद अपने मतलबकी बात करें। हालांकि वहां घर न होनेसे प्यारेलाल वैसी खातिर तो नहीं कर सकते थे, जैसी इतने बड़े आदमीकी होनी चाहिए। लेकिन उन्होंने एक अच्छे हलवाईसे इसके लिए बातचीत कर ली थी।

प्यारेलालके मुंहसे दावतके निमन्त्रणकी बात सुनते ही प्रोफेसर साहब मुसकराते हुए बोले—

'वाह जनाब, इससे अच्छी और कौन-सी बात होगी ? नेकी और पूछ-पूछ ! लेकिन दावत होगी कहां ?'

'यहीं।'

'मैंने समझा था अलीगढ़में होगी।'

'अलीगढ़में तो फिर होगी, अगर हमारी किस्मत अच्छी हुई तो। लेकिन इस वक्त तो रूखी-सूखी यहीं होगी।'

'क्या-क्या खिलाइयेगा ?'

'आपके लायक यहां सामान तो नहीं हो सकता। हां, हलवाईसे—'

'हलवाईसे ? तो आप पूरी-मिठाई खिलानेकी फिक्रमें हैं क्या ?'

'इन्तिजाम तो ऐसा ही किया है।'

'अजी आप भी कैसी बातें करते हैं ! भला गङ्गाजीके किनारे भी पूरी-मिठाईकी दावत होगी ?'

'फिर जो हुक्म हो।'

'दालबाटी कराइये।'

'बहुत अच्छी बात है। दो-चार आदमियोंकी दालबाटीमें इन्तिजाम ही क्या करना।'

'दो-चार आदमियोंकी ? अजी जनाब, मैं जब दालबाटी बनवाता हूं तो बीस-पचीस आदमी हो जाते हैं। आप जानते हैं, सैकड़ों साहिबानसे यहां रीत-चलन हो गया है। साथके लिए दस-बीसका बुलाना तो जरूरी हो ही जाता है।'

'कोई परवाह नहीं, जितने आदमियोंके लिए आप कहें, उतनेका ही इन्तिजाम हो जायगा।'

और दूसरे दिन प्यारेलालको चालीस आदमियोंको दावत खिलानी पड़ी। दावतके बाद उन्होंने अपने मतलबकी बात छेड़ी। सुनते ही प्रोफेसर साहब बोले—

'वाह, यह बात तुमने पहले ही क्यों न कह दी ? इतने तकल्लुफकी आखिर क्या जरूरत थी ?'

'जरा झिझक लगती थी !'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'इसमें झिझककी क्या बात? अगर मुझसे किसीका भला हो जाय, तो बड़ी खुशीकी बात है। हां, तो तुमने जिनके बारेमें पूछा है, उनमेंसे एक तो पास है, दो कुछ कमजोर हैं, लेकिन मैं उन्हें पास करा दूंगा। रहा एक, सो उसके लिए जरा मामला मुश्किल है।'

( ९ )

एक सप्ताहके बाद प्रोफेसर साहब प्यारेलालके साथ अलीगढ़की तरफ चल दिये। राजघाट स्टेशनपर प्यारेलालने देखा कि वहांके बाबू प्रोफेसर साहबकी बड़ी खातिर कर रहे थे। देखते ही कुर्सीसे उठ बैठे। एक कुलीको बुलाकर पङ्खा झलवाने लगे। शरबत पिलाया गया। और जब गाड़ी आ गयी तो फर्स्ट क्लासमें आकर दोनोंको बिठा गये। प्यारेलालके ऊपर इसने बड़ा प्रभाव डाला। प्रोफेसर साहबके बड़ेपनमें उन्हें अब कोई भी सन्देह न रह गया।

गाड़ीमें बैठते ही प्रोफेसर साहबकी नजर प्यारेलालके हाथकी ओर गयी। उंगलीमें सोनेकी एक कीमती अंगूठी थी। प्रोफेसर साहब उसे देखकर बोले—

'यह अंगूठी तो बड़ी खूबसूरत है। कहां बनवायी थी?'

'आपको पसन्द है तो ले लीजिये।'

'मुझे अपने लिए नहीं चाहिए। मेरे एक दोस्तकी शादी है, उसीके उपलक्षमें भेंट भेजना चाहता था।'

'अलीगढ़ चलकर बनवा दूंगा।'

'कब तक बन जायगी?'

'चार-पांच दिन लग जायंगे।'

'चार-पांच? यह तो ठीक न रहेगा। मैं तो कल ही भेजना चाहता हूं।'

'तो आप इसे भेज दीजिये। मैं दूसरी बनवा लूंगा।'

'लेकिन तुम्हें इसकी पूरी कीमत लेनी होगी।'

'कीमतकी आप फिक्र क्यों करते हैं? जब जी चाहे तब ले लूंगा।'

यह कहकर प्यारेलालने अंगूठी दे दी और मनमें बड़े खुश थे कि चलो देवताने पहली भेंट तो स्वीकार कर ली।

राजघाट स्टेशनसे प्यारेलालने वकील साहबको एक तार भेज दिया था कि प्रोफेसर साहब आ रहे हैं और उनके ठहरनेका प्रबन्ध आप हीके घरमें होना चाहिए। वकील साहबको तार पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। बड़ा भाग्य समझो जो ऐसा अवसर हाथमें आया। जब प्रोफेसर उन्हींके मेहमान होंगे तो अपने लड़केको पास करा लेना कोई बड़ी बात न होगी। इसी विचारसे उन्होंने प्रोफेसर साहबके स्वागतकी खूब तैयारियां कीं। समय अधिक नहीं था। इसलिए अधिक न हो सकता था। फिर भी जहां तक हो सकता था, उन्होंने किया। एक अव्वल दर्जेकी फिटन मांगकर स्टेशनपर पहुंच गये। न जाने कैसे, अन्य परीक्षार्थियोंके कानों तक भी यह बात पहुंच गयी थी, अतः गाड़ीके आनेके समय किसीके पिता, किसीके भाई, किसीके चाचा आदि स्टेशनपर पहुंच गये थे।

स्टेशनपर यह समारम्भ देखकर प्यारेलाल तो खुश हो गये। प्रोफेसर साहब बोले—

'क्या तुमने जादूसे कुछ मन्त्र फूंक दिया था कि सबको मेरे आनेकी बात मालूम पड़ गयी? इन सबको तकलीफ देनेकी क्या जरूरत थी? यहां पहुंचकर मैं सबसे खुद ही मिल लेता।'

वकील साहब सामने आकर बोले—

'ऐसे मौके जिन्दगीमें कब आते हैं, प्रोफेसर साहब! असलमें आपका स्वागत करनेके लिए तो हमें राजघाट तक पहुंचना चाहिए था।'

प्रोफेसर साहब हंस दिये। उनके व्यवहारपर सभी मुग्ध थे। सब वकील साहबके घरपर पहुंचे। दावत हुई। दावतकी सराहना प्रोफेसर साहबने की, इसीसे समझ लेना चाहिए कि दावत सफल रही।

कुछ देर अकेलेमें बात करनेका प्यारेलालको सुयोग मिला। प्रोफेसर साहबने पूछा—

'मालूम होता है, वकील साहबकी वकालत कुछ अच्छी नहीं चलती।'

न जाने वकील साहब इस बातको सुन ही रहे थे, छूटते ही एक तरफसे आकर उत्तर दिया—

'चलती क्या! आजकल वकालतका पेशा बड़ा खराब हो गया है। और मुझ-जैसे ईमानदारके लिए इस बेईमानीके पेशेमें चमकना मुश्किल ही मालूम होता है।'

'मालूम होता है आप इस पेशेको पसन्द नहीं करते।'

'बिलकुल नहीं साहब! अगर पचास रुपये महीनेपर भी कोई और काम मिल जाय, तो इसपर लानत भेज दूं।'



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'तो यह कौन मुश्किल बात है। आप अगर तैयार हों, तो कल ही आपको ३००) महीनेकी जगह मिल सकती है,

'तीन सौ रुपये महीनेकी ?'

'हां, हां, साहब, तीन सौ रुपये महीनेकी, और वह भी रेलवेमें।'

'लेकिन मेरी ऐसी किस्मत कहां। आजकल तो नौकरी सिफारिशसे मिलती है। और सिफारिशके नामपर तो इधर सिफर हैं।'

'यह तो ठीक है, लेकिन मेरे रहते हुए सिफारिशकी कोई कमी नहीं। मेरे मौसा रेलवेमें एकाउण्टेण्ट जनरल हैं। उनसे आपको मिला दूंगा।'

'आप इतनी तकलीफ करेंगे ?'

'इसमें तकलीफ क्या है ? यह तो बड़ी खुशीकी बात होगी।'

'अगर ऐसा हो जाय, तो मैं हमेशा आपका एहसान-मन्द रहूंगा।'

'अजी अगर आप कल ही देहली चलना चाहें, तो चलिये, मैं आपको मौसाजीसे मिला दूं।'

'मैं तो चाहे जब चलनेको तैयार हूं, लेकिन आपको शायद इस वक्त फुरसत न हो !'

'मेरी कुछ भी फिक्र न कीजिये।'

दूसरे दिन प्रोफेसर साहबके साथ वकील साहब देहलीके लिए रवाना हो गये। उस दिन उन्होंने अपना सबसे अच्छा सूट पहन लिया था। जब रेलवेके एक दफ्तरके सामने पहुंचे तो प्रोफेसरने वकील साहबसे कहा—

'आप कुछ देर यहीं खड़े रहिये। मैं देखकर आता हूं कि मौसाजी वहां हैं या नहीं।'

यह कहकर आप अन्दर पहुंचे। उस विभागके इनचार्जके पास जाकर प्रोफेसरने आदाब किया और बोले—

'लीजिये, जनाब, जिन जज साहबके बारेमें मैंने पिछली मर्तबा जिक्र किया था, उन्हें ले आया हूं।'

'वही, जिनसे कहकर मेरे लड़केको नौकरी दिलवायेंगे ?'

'हां' !

'वह कहां हैं ?'

'बाहर हैं। कहो तो अन्दर ले आऊं।'

'हां, हां, जरूर ले आइये।'

'लेकिन इस वक्त आप उनसे जगहके बारेमें कुछ भी न कहें। मैंने उनसे सब-कुछ तय कर लिया है।'

'अच्छी बात है।' यह कहकर इनचार्जने सौ रुपयेका नोट उनकी जेबमें डाल दिया।

बाहर जाकर प्रोफेसरने वकील साहबसे कहा—

'देखिये, मैं आपके बारेमें उनसे सब-कुछ कह आया हूं। आप उनसे नौकरीके बारेमें कुछ भी न कहें।'

'लेकिन वह मुझसे मिल तो लेंगे न ?'

'हां, उसके लिए तो मैंने राजी कर लिया। आप वहां कुछ बोलिये नहीं। न जाने मुंहसे क्या निकल जाय और काम मुफ्तमें ही बिगड़ जाय।'

'मैं बिलकुल चुप रहूंगा।'

भीतर जब वकील साहब पहुंचे, तो बहुत डरते हुए, घबराये हुए-से। और यही हालत इनचार्जकी थी। वकील साहब डर रहे थे, कहीं मौसा नाराज न हो जायं। इनचार्ज डर रहा था, कहीं जज साहब नाराज न हो जायं। अन्तमें इनचार्जने कहा—

'मुझे आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई, जज साहब !'

यह सुनकर वकील साहबको आश्चर्य हुआ। उन्होंने प्रोफेसरकी ओर देखा। प्रोफेसरने दोनोंकी ओर इस प्रकार इशारा किया कि दोनों चुप हो गये। दो मिनट इधर-उधर-की बात होकर दोनों बाहर निकले। बाहर निकलते ही वकील साहबने कहा—

'उन्होंने मुझसे जज साहब कैसे कह दिया ?'

'यही तो उनमें बड़ी खराबी है। कुछ दिन पहले मैं एक जज साहबको उनसे मिलाना चाहता था। वही बात शायद उनके ध्यानमें रही होगी। अब उनके प्राइवेट सेक्रेटरीको कुछ देकर यह बात उन्हें याद रखवानी पड़ेगी।'

यह कहकर प्रोफेसर अन्दरको चलने लगे।

'रुपये लेते जाइये।' वकील साहबने कहा।

'मैं दे दूंगा।'

'वाह, ऐसा कैसे हो सकता है !'

इतना कहकर वकील साहबने जेबसे नोट निकाले और पूछा—'कितने ?'

'पचाससे शायद काम चल जायगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वकील साहबने पचास रुपयेके नोट निकालकर दे दिये और प्रोफेसर उन्हें लेकर थोड़ी देरके लिए भीतर गये और फिर आकर बोले—

'लीजिये, वकील साहब, काम आसानीसे ही बन जायगा। उसे तीस रुपयेमें ही राजी कर लिया। अब आपको जल्दी ही नौकरी मिल जानेकी खुशीमें मिठाई खिलानी पड़ेगी।'

इतना कहकर उन्होंने वकील साहबको बीस रुपयेके नोट वापस कर दिये। वकील साहबके ऊपर इस ईमानदारीका बड़ा प्रभाव पड़ा। उसी रातको दोनों अलीगढ़ लौट आये।

( ६ )

दूसरे दिन सुबह वकील साहबके यहां नाश्ता करते समय प्यारेलालने प्रोफेसर साहबसे कहा—

'क्यों साहब, वकील साहबका ठिकाना तो आपने कर दिया। क्या हम योंही रह जायंगे?'

'नहीं, नहीं, भला आप योंही क्यों रह जायं? कहिये, क्या खिदमत करूं?'

'कुछ काम हमें भी दिला दीजिये।'

'मैं खुद ही इस बातको सोच रहा था। असलमें तुमसे बिना कहे ही आधा इन्तिजाम तो मैंने कर भी लिया है।'

'कर भी लिया है?'

'हां। जब मैं इंगलैण्डमें था, तो मेरी दोस्ती एक मिस्टर चार्ली विल्सनके साथ हो गयी थी। और वही मिस्टर विल्सन अब मेट्रोपोलिटन बैङ्कके जेनरल मैनेजर बनकर आ गये हैं। उनका विचार अलीगढ़में बैङ्ककी एक शाखा खोलनेका है। इस काममें तुम्हें दिलचस्पी है?'

'काम कैसा है?'

'काम तो समझ लो कुछ भी नहीं है। मैं सोच रहा हूं कि तुम्हें तो उसका मैनेजर बनवा दूं और वकील साहबके लड़केको हेड क्लर्क।'

'मेरे लड़केको हेड क्लर्क?' वकील साहब उछलकर बोले।

'यह काम जिम्मेदारीका है, वकील साहब! इसके लिए भरोसेका आदमी ही पसन्द करना चाहिए।'

'आपका एहसान तो कभी भूल नहीं सकते।'

'इसमें एहसानकी कोई बात नहीं। हां, एक बात है, इसके लिए आप लोगोंको कुछ खर्च करना पड़ेगा।'

'इसकी आप फिक्र न कीजिये। जितना भी खर्च होगा, हम खुशीसे करनेको तैयार हैं।'

'तो चलो, प्यारेलाल, तुम्हें आज रातको ही कानपुर ले चलता हूं। वहांसे एप्वाइण्टमेण्ट लेटर लेकर ही लौटेंगे।'

'जैसी आपकी आज्ञा!' प्यारेलालने गद्गद होकर कहा। उसी रातकी गाड़ीसे चलकर दोनों दूसरे दिन सुबह कानपुर पहुंचे। स्टेशनपर ही हाथ-मुंह धोकर नाश्ता किया। फिर प्रोफेसर साहबने प्यारेलालसे कहा—

'तुम वेटिंग रूममें बैठना। मैं बैङ्कके मैनेजरसे मिलकर तुम्हारे लिए एपोइण्टमेण्ट लेटर ले आऊं। अगर जरूरत होगी तो तुम्हें भी उनसे मिला दूंगा।'

प्यारेलालने यह बात फौरन् मान ली। सोचा कि चलो अच्छा ही है, जो बिना जूती चटकाये ही नौकरी मिल रही है। प्रोफेसर साहब चले गये और तीन घण्टे पीछे लौटकर आये। उनके हाथमें दो लिफाफे थे। एक प्यारेलालके लिए, दूसरा वकील साहबके पुत्रके लिए। प्यारेलालको दो सौ रुपये महीनेपर मैनेजर नियुक्त किया था और वकील साहबके पुत्र काशीको नब्बे रुपये महीनेपर हेड क्लर्क। प्यारेलालसे कम्पनीने दो हजारकी नकद जमानत और दस हजारकी लिखित जमानत मांगी थी और काशीसे चार सौ रुपयेकी नकद जमानत मांगी थी।

प्यारेलालको अपने सौभाग्यपर विश्वास न होता था। परन्तु अविश्वास करनेका भी कोई कारण न दीखता था। जमानत देनेका वादा करके उन्होंने प्रोफेसर साहबको धन्यवाद दिया। प्रोफेसर साहब बोले—

'भई, जमानतका इन्तिजाम दो-तीन दिनोंमें हो जाना चाहिए।'

'चलिये, कल ही लौटकर इन्तिजाम कर दूंगा।'

'मुझे तो कुछ नहीं। लेकिन मैं उन्हें जबान दे आया हूं। वह तो कोई अपना आदमी मैनेजर बनाना चाहते थे।'

'लेकिन आपकी मेहरबानी भी तो कोई चीज है।'

'अब तुम बैङ्क खोलनेका भी इन्तिजाम शुरू कर दो। कोई अच्छी-सी जगह तलाश करनी होगी। पहली तारीखके बारह दिन हैं। उस दिन मिस्टर विल्सन खुद अलीगढ़ आकर ओपनिङ्ग सेरेमनी करेंगे। दस-बीस बड़े आदमियोंसे उस दिन कुछ डिपाजिट भी कराना होगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'यह सब-कुछ मैं कर लूंगा। आप बेफिक्र रहिये।'

अलीगढ़ आकर जब प्यारेलालने वकील साहबको खत दिखाये, तो उनकी बाछें खिल गयीं। दो रुपयेके बताशे खरीदकर परशादमें बांट दिये। प्रोफेसर साहबको दूसरे दिन ही प्यारेलालने दो हजार रुपये जमानतके दे दिये। वकील साहबने चार सौ रुपयेका चेक दिया। प्रोफेसर साहबने देखा कि चेक कहां भुनाया जाय, यह तो मुश्किल बात की। अन्तमें उन्होंने काशीको पकड़ा। बोले—

'देख भाई, इस चेकको कहीं देकर रुपये ले आ, नहीं तो मैं तेरी नौकरीकी जिम्मेदारी नहीं लेता।' काशीको बड़ी चिन्ता हुई। अन्तमें कोशिश करके वकील साहबके एक मित्र-से वह रुपये लाया। रुपये लेकर प्रोफेसर साहब उसी दिन राजघाट चले गये।

( ७ )

चेककी बात वकील साहबके कानों तक पहुंची, तो उन्हें कुछ सन्देह हुआ। दो-चार मित्रोंसे सलाह ली, तो उन्होंने सन्देहको और भी बढ़ा दिया। उन्होंने तुरन्त ही प्यारेलाल-को बुलाया।

'तुमने तो हमें ठगवा दिया, प्यारेलाल!' वकील साहब बोले।

'आपका मतलब क्या है?'

'मुझे विश्वास होता है कि प्रोफेसर हमसे रुपये ठग ले गये।'

'यह किस तरह?'

'क्योंकि जमानतके रुपये उन्होंने सीधे बैङ्कको नहीं भेजे।'

'अगर आपका डर ठीक भी हो, तो भी आप यह कैसे कह सकते हैं कि मैंने आपको ठगवा दिया?'

'तुम्हारी वजहसे ही हमने रुपये दिये।'

'वाह, यह खूब! नौकरी तो आप चाहें, और रुपये मेरी वजहसे दे दिये।'

'तुम्हें रुपये निकालनेका कुछ बन्दोबस्त करना चाहिए।'

'मैंने तो दो हजार दिये हैं।'

'तुमने भले ही लाख दिये हों। मुझे मेरे रुपये वापस दिलवा दो।'

'अच्छी बात है।' कहकर प्यारेलाल बाहर आये। राजघाट जानेवाली गाड़ीमें एक घण्टेकी देर थी। उन्होंने चौकसे फौरन् ही इक्का लिया और स्टेशन पहुंचे और शामको राजघाटमें जा पहुंचे। प्रोफेसर साहब उस समय पलंगपर पड़े हुए आराम कर रहे थे और सिगरेट पीते जाते थे। प्यारेलालको देखते ही बोल उठे—

'कहो प्यारेलाल, इतनी जल्दी कैसे आना हुआ?'

प्यारेलाल क्या उत्तर दें? क्या सीधी बातको फौरन् ही छेड़ दें? लेकिन प्रोफेसरके रङ्गढङ्गसे अविश्वास करनेकी गुञ्जाइश रह ही नहीं सकती थी। जो आदमी बेईमानी करके रुपया लाता, वह राजघाटमें रहता ही नहीं और फिर भी इतने निडर और खुले हुए तरीकेसे। इसलिए उन्होंने काम-की बातको दूसरे दिनके लिए छोड़ दिया और बोले—

'कुछ नहीं, बङ्कके बारेमें कुछ सलाह करनेकी जरूरत आ पड़ी थी।'

'अंह, यह सलाह कल कर लेना। चलो, इस वक्त गङ्गाके किनारे घूम आवें।'

दूसरे दिन सुबह प्यारेलालने डरते-डरते बात छेड़ी—

'आप वकील साहबसे रुपये लाये थे?'

'हां, क्यों?'

'कुछ नहीं, लेकिन मेरी समझसे ऐसे दकियानूसी आद-मियोंके लिए आप कुछ न किया करें। न एहसान मानें, न शुक्रिया अदा करें। उलटे बदनाम करनेको तैयार हो जाते हैं।'

'क्यों, क्यों, हुआ क्या?'

'कुछ नहीं, उन्हें अपने रुपयेका बड़ा मलाल है। मानो कोई उठाईगीरा या डकैत उठाकर ले गया हो।'

'अच्छा, यह बात! मैं नहीं समझता था कि वकील साहब इतने कमीने खानदानके हैं। चलो, इसी गाड़ीसे चलो और उनके रुपये उनके सामने फेंक दो! मैं इतनी दौड़-धूप कर उनका भला कर रहा हूं और वह मुझे बदनाम कर रहे हैं!'

'यह जमाना ही ऐसा है।'

'प्यारेलाल, बोलो, तुम्हें तो अपने रुपयोंका मलाल नहीं है? नहीं तो तुम भी उन्हें वापस ले लो।'

'नहीं, नहीं, आप यह कैसी बातें कर रहे हैं? मेरे दिलमें सपनेमें भी ऐसी बात नहीं आ सकती।'

उसी दिन प्रोफेसर साहब प्यारेलालके साथ अलीगढ़ पहुंचे और सीधे वकील साहबके घरकी ओर चल दिये। उस समय वकील साहबके पास आठ-दस सज्जन और बैठे थे, जो पिछली बार प्रोफेसर साहबको स्टेशनपर लेने गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



थे। सभी वकील साहबके साथ सहानुभूति प्रकट कर रहे थे और कह रहे थे कि अब उनका रुपया मिलना असम्भव है। इतने हीमें वहां प्रोफेसर साहब आ पहुंचे। सबको देखकर आश्चर्य हुआ। वकील साहबने उनके मुंहकी ओर देखा। उसपर क्रोध-के भाव थे। डरके या निराशाके भावोंका पता भी न था। इसका अर्थ साफ था—प्यारेलाल उन्हें पकड़ाकर नहीं लाये, वे स्वेच्छासे यहां आये हैं। तब क्या वकील साहबका सन्देह निर्मूल था? मन-ही-मन वह कुछ भयका अनुभव करने लगे।

आते ही प्यारेलाल बोले—

'लो, वकील साहब, इन्हें मैं ले आया हूं!'

प्रोफेसरने कुछ कहा नहीं। पचास-पचासके आठ नोट वकील साहबके सामने फेंककर वह बोले—

'लो वकील साहब, अपने चार सौ रुपली! मुझे नहीं मालूम था कि तुम इतने कमीने खानदानके हो, नहीं तो मैं इस चक्करमें कभी न पड़ता। इतनी बेइज्जती मैंने कभी नहीं बर्दाश्त की। मुझे क्या पड़ी थी कि तुम्हारे निकम्मे बेवकूफ लड़केके लिए नौकरी तलाश करता। मुझे तो रहम आ गया था। लेकिन यह पता न था कि उसका बदला यह होगा। अब मैंने कान पकड़ा, ऐसे आदमीसे कुछ भी वास्ता न रखूंगा।'

प्रोफेसरने यह सब एक सांसमें इतने सुन्दर ढङ्गसे कहा कि सुननेवाले स्तम्भित रह गये। वकील साहबको काटो तो रक्त नहीं। बेचारे सिटपिटाये हुए प्रोफेसरके मुंहकी तरफ देख रहे थे। अपना भाषण समाप्त करके प्रोफेसर साहब वहांसे चलने लगे, तो वकील साहबको होश आया। उन्होंने प्रोफेसरका हाथ पकड़ लिया। अपना हाथ छुड़ाकर प्रोफेसर बोले—

'मुझे जाने दो।'

'मुझे माफ कीजिये, यह प्यारेलालकी गलती है। मैंने इनसे रुपया लानेको थोड़े ही कहा था। मैंने तो इन्हें आप-को देखने-भरके लिए भेजा था।'

'प्यारेलाल मुझसे झूठ कभी नहीं बोल सकते थे। कहिये आपके दिलमें सन्देह नहीं था?'

'कुछ आदमियोंकी बातोंमें आकर थोड़ा सन्देह हो गया था, लेकिन वह तो रफा हो गया। आप जानते हैं, गलती आदमी हीसे होती है।'

'नहीं साहब, आप अपने रुपये रखिये और जहां जी चाहे, लड़केकी और अपनी नौकरी लगाइये।'

'नहीं, इस वक्त तो गुस्ताखीको आप माफ ही कीजिये।' इतनेमें और सब भी बोल उठे—

'हां, हां, प्रोफेसर साहब, माफ कीजिये। अब यहां किसीके दिलमें भी सन्देह नहीं है। चार सौकी तो बात क्या, चार लाख भी आपको सौंप दिये जायं, तब भी कुछ सन्देह न हो।'

बड़ी मुश्किलसे प्रोफेसर साहब माने। वकील साहबको दण्ड मिला कि वह सबकी दावत करें और स्पेशल क्लासमें सबको सिनेमा दिखायें। वकील साहबने खुशीसे और पचीस रुपयेका चूरन कर दिया। दूसरे दिन चार सौ रुपये लेकर प्रोफेसर साहब फिर राजघाट चले गये। चलते वक्त उन्होंने वकील साहबसे और प्यारेलालसे एप्वाइण्टमेण्ट लेटर्स भी वापस ले लिये, यह कहकर कि उनमें कुछ गलती रह गयी है, उसे ठीक कराके और 'मुस्तकिल' शब्द जुड़वाकर वह वापस कर देंगे।

× × ×

पहली तारीख आ गयी। प्यारेलाल और वकील साहब-ने बैङ्कके खोलनेका सारा प्रबन्ध कर लिया था। उस दिन प्रोफेसर साहब और मि० विल्सन वहां ओपनिङ्ग सेरेमनीके लिए आनेवाले थे। लेकिन रात तक प्रतीक्षा करते रहनेपर भी कोई न आया, तब लोगोंको सन्देह हुआ। फौरन् काशी और प्यारेलाल दोनों राजघाट गये। परन्तु वहां जाकर पता लगा कि उन्होंने घर कई दिन पहले छोड़ दिया था। दोनों दौड़े हुए स्टेशनपर आये और स्टेशन-मास्टरसे पूछा—

'क्यों साहब, प्रोफेसर साहबका भी कुछ पता है?'

'कौन प्रोफेसर साहब?'

'वही प्रोफेसर गुप्ता, जो आपके बड़े दोस्त थे!'

'अजी वह प्रोफेसर नहीं, एक छंटा हुआ ठग था। मुझे तो ढाई सौ रुपयेका नुकसान दे गया। आपसे भी कुछ ठग ले गया क्या?'

'अजी अलीगढ़से तो उसने कई हजारपर हाथ साफ किया। लेकिन वह तो पीलीभीत कालेजमें.....'

'वह सब बनावटी बात थी। वहां इस नामका कोई प्रोफेसर नहीं है।'

'फिर, अब क्या किया जाय?'

'मैंने पुलिसको रिपोर्ट कर दी है। रुपयेके लिए तो अब सन्तोष करके घर बैठिये!'

दोनों मुंह लटकाये लौटती गाड़ीसे अलीगढ़ चले गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लोकमान्य तिलक ऐसे अवसरोंको हाथसे न जाने देना चाहते थे। विगत यूरोपीय महायुद्ध—जर्मनसंग्राम—के समय भी महात्माजीने कहा कि ऐसे सङ्कटके समय स्वराज्य-की मांग पेश कर इंगलैण्डको सताना न चाहिए; क्योंकि वह एक बाहरी जबर्दस्त दुश्मनसे लड़ रहा है। इनमें एककी विचारधारा लौकिक और नीतिज्ञतापूर्ण है तो दूसरेकी उदारतापूर्ण और अलौकिक। इन दोनों विभूतियोंपर भारतवर्षकी अटल भक्ति थी और रहेगी। पाठक सोचें, इन दो महापुरुषोंमें आन्तरिक मतभेद उत्पन्न होनेपर सरलता-पूर्वक किसीकी ओर अपनी राय देना उस समय कितना कठिन कार्य रहा होगा। उस समयके बादकी, वर्षोंकी ऐतिहासिक घटनायें आज हमारे सामने हैं, इसलिए आज, पहलेकी अपेक्षा, इस विषयपर कुछ आलोचनात्मक मत प्रकट करना भले ही कुछ सरल हो गया हो; परन्तु जिस समय यह सारी सामग्री न थी उस समयका विचार कीजिये।

कभी-कभी ऐसा अवसर आ जाता है कि हमारा स्वयं अपने-आपसे मतभेद हो जाता है। यह बात कुछ विचित्र-सी मालूम होगी; परन्तु इसमें विचित्रता कुछ भी नहीं है। मत-परिवर्तन मानवी विकासकी क्रियाका एक अङ्ग है, अत-एव यह सर्वथा सम्भव है कि अपने किसी पुराने मतकी दोषपूर्णताका ज्ञान होनेपर हम उसे बदल दें और बुद्धि-सम्मत नये मतको स्वीकार कर लें। यदि यह मत-परिवर्तन स्वार्थ और बेईमानीके कारण हुआ हो तो संसारकी आंखोंमें अधिक समय तक धूल झोंकना कठिन हो जायगा; यदि शुद्ध ज्ञान और निष्पक्ष अनुभवसे हमारी रायमें तबदीली हुई होगी तो समाज इसका स्वागत और हमारी सचाईका आदर करेगा। पहलेकी रायको गलत मानने और वर्तमान मतको ठीक समझनेमें हमारे पास पर्याप्त कारण रहना चाहिए और हमारी ओरसे ऐसी कोई कार्रवाई न होनी चाहिए जिससे हमें कलङ्कित होना पड़े। भूल किससे नहीं होती? भूलका स्वीकार कर लेना नैतिक बलका परिचायक है।

यदि आपके निश्चित मतका आधार भ्रम, खींचतान और दुराग्रह न होकर सूक्ष्म अनुभव, निर्मल बुद्धि और अन्त-रात्माकी प्रेरणा हो, तो आपकी कट्टरता अथवा स्वमता-भिमान सदोष नहीं समझा जा सकता। हां, यह सम्भव है कि आपके मतकी उत्तमताको न समझनेवाला जन-समुदाय एक प्रबल बहुमतके साथ आपका विरोध करे। ऐसे समय अज्ञानियोंके बहुमतपर अपने मूल्यवान मतका बलिदान कर देना कायरता और आत्मघात है। ऐसे मतभेदके अवसरपर आपको धीरजके साथ अपने मतका प्रचार करना, उसकी बारीकियोंको समझाना और अपना अलग दल बनाकर बहु-मतको अपने पक्षमें करनेका प्रयत्न करना चाहिए। यदि आपका मत उपादेय है, तो कभी-न-कभी जनता उसके अनु-कूल हो ही जावेगी। हम मानते हैं कि इस प्रजातान्त्रिक युगमें बहुमतपर अपने मतको बलिदान कर देनेकी आवश्य-कता कई बार हुआ करती है और ऐसा करना भी चाहिए; परन्तु तेजस्वी, दूरदर्शी और पुरुषार्थी व्यक्ति इस सिद्धान्तके अपवाद भी होते हैं। ऐसे अवसरोंपर बहुधा नये दलोंकी सृष्टि होती है। सार्वजनिक जीवनमें कभी-कभी अपने हृद्-गत विचारोंको दबाकर मित्रों और सहयोगियोंकी प्रतिकूल बातोंको मान लेना पड़ता है। अपनी रायका दबाना विषय-की महत्ता तथा क्षुद्रताके अनुसार अच्छा और बुरा दोनों हो सकता है।

किसी बातको पूर्ण विचारके बाद ठीक समझकर भी जब हम उसका समर्थन केवल इसलिए नहीं करते कि उसके विरुद्ध बहुत बड़ी मनुष्य-संख्या है अथवा अमुक प्रतिष्ठित व्यक्ति है, तो समझना चाहिए कि अपने विवेकको तिलाञ्जलि देकर हमने अपने मत-स्वातन्त्र्यका गला घोट दिया है। इसमें सन्देह नहीं कि अपने प्रबल दलकी हांमें हां मिलाते रहनेसे हमारी व्यक्तिगत कमजोरी सुगमताके साथ छिप जाती है और हमारे सम्माननीय दलको सङ्कटके समय हमारी अनु-चित सहायता मिल जाती है। दलबन्दी और प्रजातन्त्रके सिद्धान्तोंकी दृष्टिसे अपने दलका साथ देना अनुचित नहीं माना जाता; परन्तु इस अन्धभक्तिसे अधिक उच्च सिद्धान्तों और लोककल्याणकारी नीतिकी हत्या भी होती है। सङ्की-र्णता, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता आदि अपने उचित दायरे-के भीतर सद्गुण हो सकते हैं; परन्तु अमर्यादित होनेपर महान् दुर्गुण हैं। यदि हम लोग अपने किसी खरे आलोचक या मतभेद रखनेवाले मार्गदर्शककी तर्कसम्मत, हितदायक तथा नयी बातोंको ठीक समझकर भी, दबाव या अभिमानमें आकर ठुकरा दें, तो मानसिक दासताके कारण, हमारी मुक्ति नहीं हो सकती। ऐसे समय यदि हम अपने नैतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



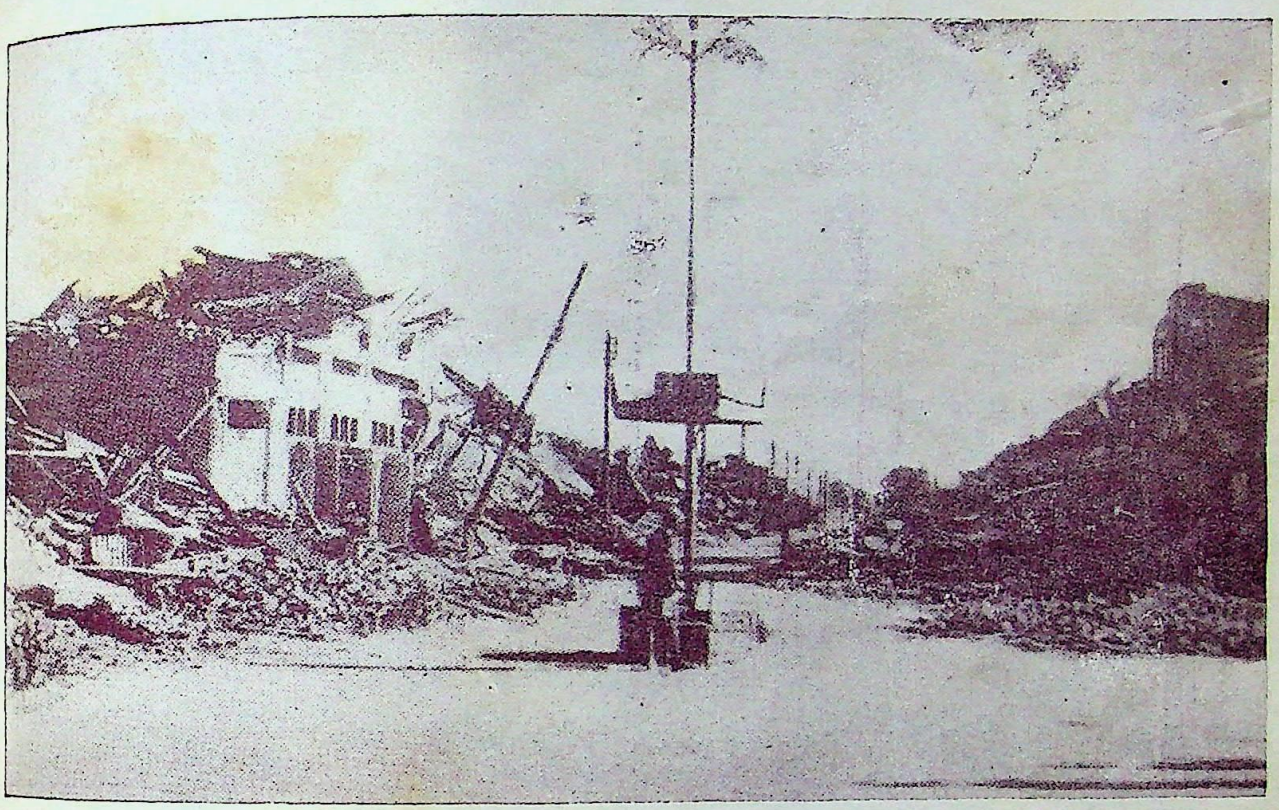

प्रलयङ्कर प्रकृतिकी लीला-भूमि क्वेटा ।

किसी समयका एक सुन्दर विशाल भवन आज खण्डहरके रूपमें दिखाई पड़ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकस्मिक दवी विपत्तिकी मारी हुई आश्रय-हीन अबलायें चारपाइके पदमें अपनी दुःख-दुर्दशापर विलाप कर रही हैं।

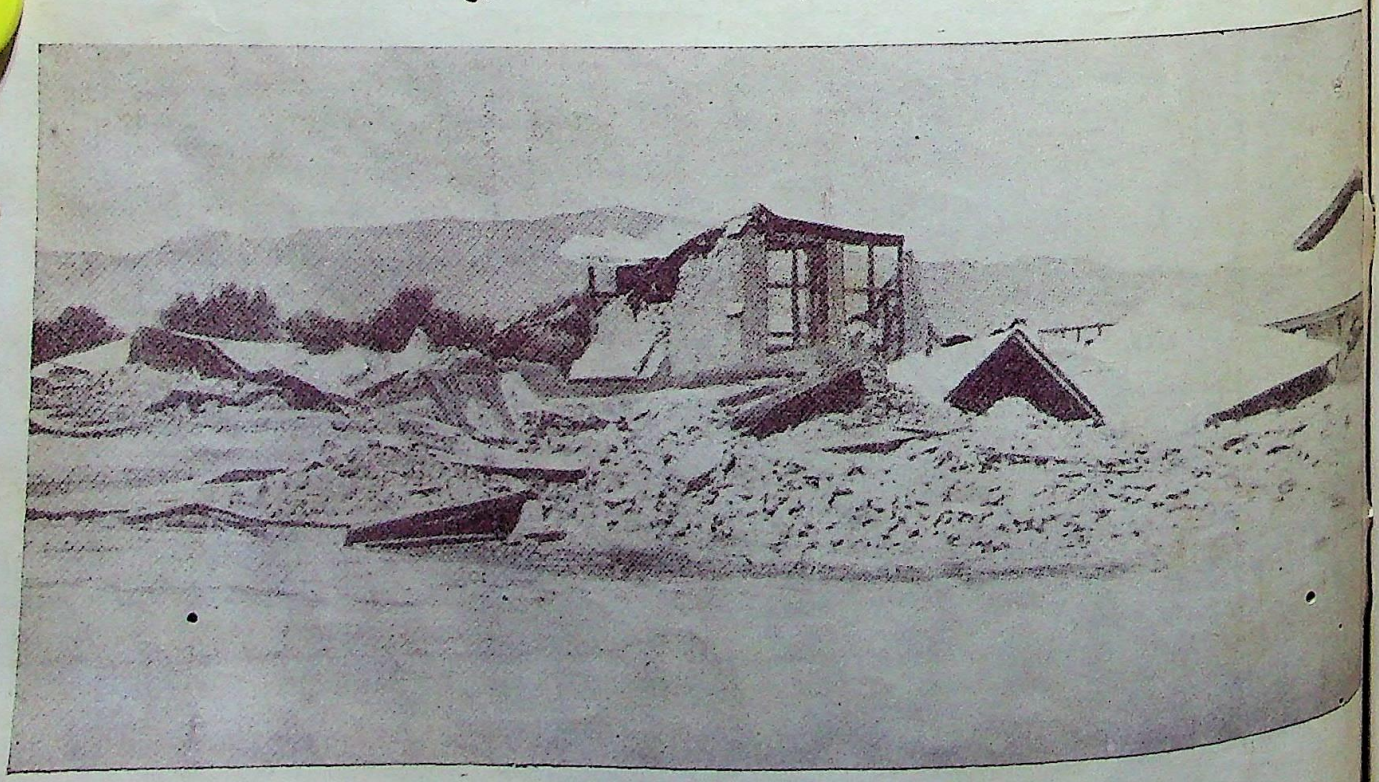

कुछ सुन्दर बंगले, जो आज भूकम्पके कारण इस प्रकार नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूकम्प द्वारा विध्वस्त जेल। इस जेलमें ढाई सौ कैदी थे जो सबके सब उस काल-रात्रिमें महानिद्रामें लीन हो गये

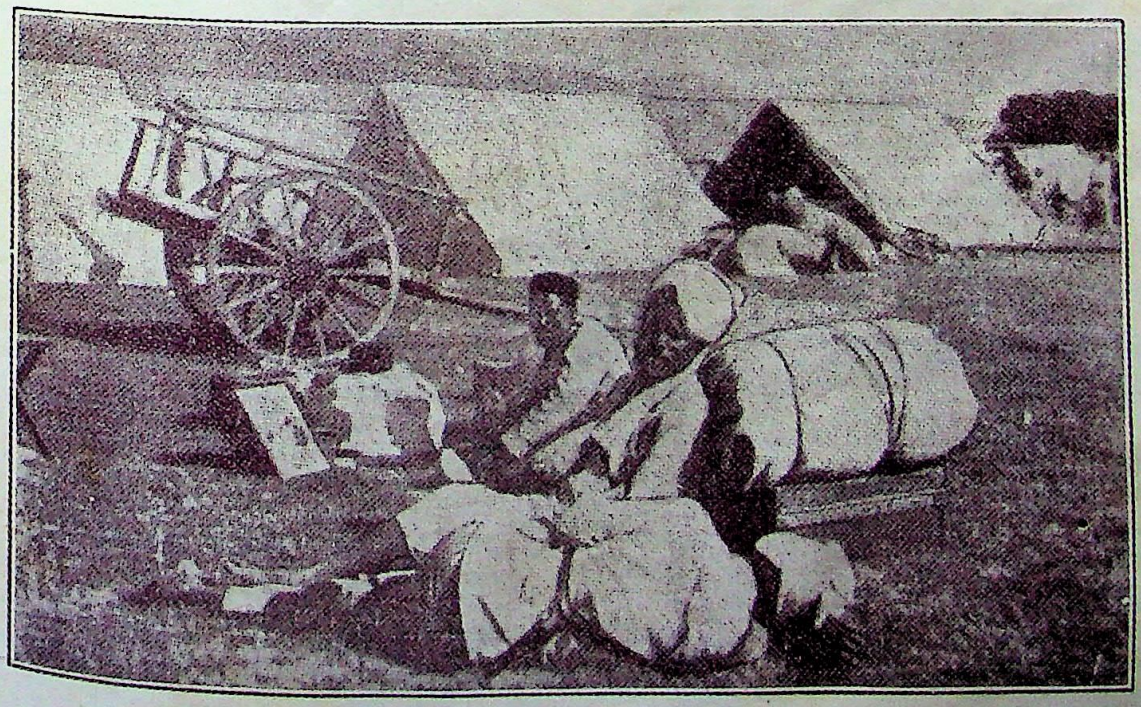

कुछ घायल व्यक्ति जो मलबेके नीचे दबकर भी किसी प्रकार अपनी जान बचा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



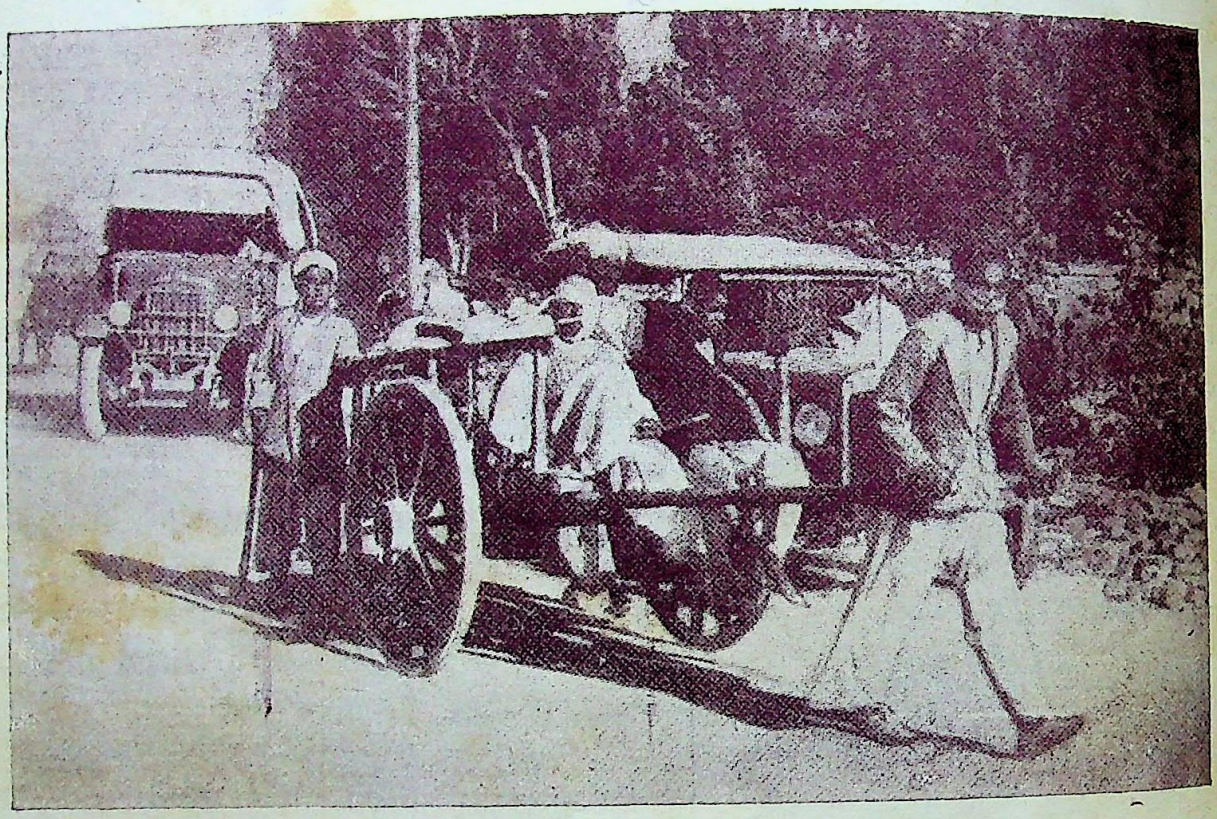

लाशोंके सड़नेसे भयानक दुर्गन्ध फैल गयी थी। नाकोंपर पट्टी बांधकर हाथ-गाड़ी खींचनेवाले काम कर रहे हैं।

सिर्फ साइनबोर्ड अपनी पूर्व-स्थितिका परिचय दे रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बल और स्वतन्त्र मताधिकारका परिचय न दे सकें तो हमारा मनुष्यताका दावा व्यर्थ है। जिन परम्परागत बातोंको हम प्रत्यक्ष रूपसे हानिकारक समझकर भी, अपने अन्धविश्वास तथा श्रद्धाके कारण, वर्तमान कालमें भी मानते हैं और कोई सामयिक सुधार नहीं करते, उनसे हमारे व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक जीवनपर कितना अनर्थकारी परिणाम हो रहा है! वह शुभ दिन कब आवेगा जब हम इच्छापूर्वक विष-पान करना छोड़ दें? दूसरे लोग यदि हमारे आन्तरिक मतभेदकी कोई कद्र न करें तो उतने अचम्भेकी बात नहीं—अधिक आश्चर्य तो इस बातमें है कि हम स्वयं अपने स्वतन्त्र मतका सम्मान नहीं करते।

जो मनुष्य अपने व्यक्तित्वका विकास नहीं करना चाहता उसका जीवन निरर्थक है। प्रत्येक मनुष्यमें कुछ-न-कुछ ईश्वर-प्रदत्त बुद्धि और स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है जिनके आधारपर उसके व्यक्तित्वका निर्माण होता है। वह अपने इस व्यक्तित्वका विकास अपने खास तरीकेसे करना चाहता है। उसे इसके लिए पूरी सुविधा और यथेष्ट अवसर मिलना चाहिए। जब तक वह अपनी उन्नति करते समय किसी दूसरेके उचित अधिकारोंपर हस्तक्षेप नहीं करता तब तक उसकी स्वाधीनतामें साधारणतः कोई बाधा भी नहीं देता। परन्तु आत्मविकासके समय उसे यह भी भूलना न चाहिए कि समाजके अन्य सभी व्यक्तियोंके अधिकार एक ही बराबर हैं। ज्योंही हम यह दावा करते हैं कि हमें जीवित रहनेका अधिकार है त्योंही दूसरोंके सम्मानपूर्वक जीवित रहनेके स्वत्वपर भी ध्यान देना हमारा कर्तव्य हो जाता है। इसलिए आपके व्यक्ति-स्वातन्त्र्यका राग ऐसा बेसुरा न होने पावे जिससे समष्टिवादके सनातन सङ्गीतमें कोई कर्कशता उत्पन्न हो। सारांश यह है कि आपके मतभेदकी बुनियादमें कोई ईमानदारीकी बात, विचारणीय सिद्धान्त या त्रिकालाबाधित सत्य रहेगा, तभी उसकी कद्र होगी; यदि आप केवल मतभेद दिखलानेके लिए ही मतभेद रखें, तो कभी-न-कभी वह निरर्थक सिद्ध हो जायगा और फिर भविष्यमें आपके मतभेदका मूल्य घट जायगा।

जीवित समाजमें मतभेदके अवसर आते ही रहते हैं; तब प्रश्न यह है कि इनका अन्त कैसे हो? जब कोई एक व्यक्ति अथवा दल अपने निराधार तथा असत्य मतको छोड़कर दूसरे पक्षकी सारी बातें मान लेता और आत्मसमर्पण कर देता है तब मतैक्य स्थापित होकर मतभेदका लोप हो जाता है। कभी-कभी ऐसा भी देखनेमें आता है कि परस्पर-विरुद्ध दो मतोंमें कुछ-न-कुछ आंशिक सत्यता दोनों ओर रहती है। ऐसे अवसरोंमें किसी प्रभावशाली व्यक्तिकी मध्यस्थता और आपसी समझौतेसे मतभेद दूर हो जाता और एकता स्थापित हो सकती है। कई बार ऐसे प्रसङ्ग भी दिखलाई पड़ते हैं जब मतभेदका दूर होना असम्भव हो। ऐसे प्रसङ्ग बहुधा सैद्धान्तिक मतभेदके कारण आते हैं। यदि आपका प्रबल शत्रु आपके किसी स्वाभाविक अधिकार अथवा परिश्रम-जनित सम्पत्तिको छीन ले, तो सम्भव नहीं कि विवश होनेपर भी आपकी अन्तरात्मा इसे उचित मानकर कभी स्वीकार कर ले। न्याय और अन्याय, सच और झूठ, पाप और पुण्यमें मूलभूत अन्तर तथा स्वाभाविक भेद रहता है—द्वन्द्वभावका नैसर्गिक बीज यहींपर पाया जाता है। ऐसी सूरतोंमें मतभेदका लोप कभी हो ही नहीं सकता।

समाजपर एक व्यक्तिके मतभेदका प्रभाव पड़ता है और दूसरेका नहीं। क्यों? जिस व्यक्तिके मतकी पवित्रता, उचता तथा विवेक-पूर्णतापर समाज विश्वास करता है उसे वह चुपचाप मान लेता है। जिसके मतको वह असत्यपूर्ण, अशुद्ध और अपकारी समझता है उसे छोड़ देता है। लोकमतपर किसीके मतभेदका प्रभाव तब तक कदापि नहीं पड़ सकता जब तक वह केवल शाब्दिक हो। जिसका मतभेद आन्तरिक, सत्यप्रेरित और कार्यमय होता है वह अपने आचरण और बलिदानके द्वारा, तथा कभी-कभी अन्य उपायोंसे, जन-समुदायको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। जो अपने मतका प्रचार और तदनुसार आचरण नहीं कर सकता वह मानव-समाजपर कोई प्रभाव भी नहीं डाल सकता। 'जैसा कहना वैसा करना' ही मनुष्यको पूज्य, विश्वसनीय और प्रतिष्ठित बनाता है। दुनिया झुकती है, झुकानेवाला चाहिए। एक पश्चिमी विद्वान्के शब्दोंमें कहा जा सकता है कि नयी विचारधारा और नये दृष्टिकोणकी विचित्रता तथा नवीनताको देखकर जनता पहले झिझकेगी, सन्देह करेगी, दूर हटेगी; परन्तु एक समय ऐसा आवेगा जब असत्य मुर्झाने लगेगा, सत्यके सूर्योदयमें शङ्काओंका अन्धकार नष्ट होगा और आरम्भमें विचित्र दिखलाई पड़नेवाली बात यथार्थ तथा व्यावहारिक समझी जाने लगेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# एशियाका एक दुर्गम प्रदेश

श्री कमलाकान्त शर्मा, एम० ए०

एशिया महादेशके उत्तर-पश्चिम भागके एक अत्यन्त दुर्गम कोनेमें अवस्थित चीनी तुर्किस्तान या सिनकियाङ्ग Sinkiang प्रदेश यद्यपि अब तक बाह्य संसारकी दृष्टिमें एक प्रकारसे अज्ञात-सा रहा है, किन्तु इस समय एशियाकी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें जो परिवर्तन सङ्घटित हो रहे हैं उनसे इस स्थानका महत्त्व बहुत-कुछ बढ़ गया है। चीनके समुद्र-तटसे दो हजार मील दूर-स्थित इस प्रदेशमें संसारके तीन बड़े-बड़े राष्ट्र—चीन, रूस और इंगलैण्ड मिलते हैं। चीनी तुर्किस्तान के सीमान्त को तिब्बत, अफगानिस्तान और मङ्गोलिया—ये तीन देश स्पर्श करते हैं और इन सबका भाग्य इसके साथ विजड़ित है।

इस सुदूर प्रदेशके सम्बन्धमें समय-समयपर जो अधूरे समाचार प्राप्त होते हैं उनमें अज्ञात सेनापतियों, मुसलमान सरदारों, अंगरेजों और रूसियोंके षड्यन्त्रों, दूतावासोंपर आक्रमण किये जाने तथा शहरोंपर एकके स्थानपर दूसरे सरदारका आधिपत्य कायम होनेकी बातें ही अधिकतर रहा करती हैं।

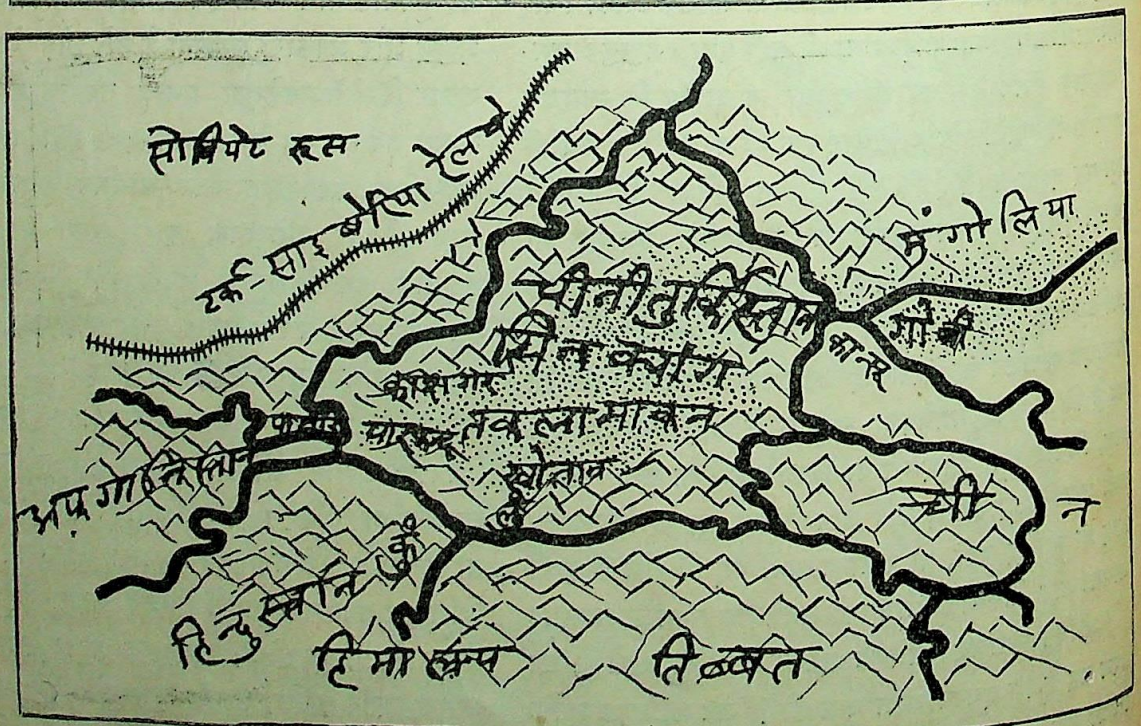


चीनी तुर्किस्तान या सिनकियांग प्रदेश—ऊंटोंका कारवां १६०० मील रेगिस्तानमें चलकर सबसे नजदीकके रेलवे स्टेशनके पास पहुंचता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



६० वर्षसे अधिक हुए, जब कि १९ वीं शताब्दीके मध्य भागमें चीनके विरुद्ध यहांके मुसलमानोंने विद्रोह कर दिया था और याकूब बेग नामक एक सरदार काशगरका शासक बन बैठा था, तभीसे अंगरेज और रूसी मध्य एशियामें परस्परकी राजनीतिक गतिविधियों एवं उद्देश्योंके सम्बन्धमें सतर्क हो रहे हैं। इस समय भी, जब कि सिनकियाङ्गमें चीनके शासनके विरुद्ध यहांके निवासियोंके विद्रोह होते रहते है, कभी-कभी इस तरहकी कहानियां प्रकाशित हो जाती हैं कि रूसी या अंगरेज इस सुदूर प्रदेशमें चीनका अधिकार हड़प लेनेके लिए दुरभिसन्धि कर रहे हैं। इधर चीनके समाचार-पत्र इस बातको लेकर चिन्ता प्रकट करने लगे हैं कि कहीं यह प्रदेश भी एक दिन जापानी मञ्चूकोकी तरह "ब्रिटिश मञ्चूको" न बन जाय।

चीनी तुर्किस्तान कमसे कम ५ लाख वर्ग-मील भूमिमें फैला हुआ है। बहिर्मङ्गोलियाको छोड़कर यह चीनका सबसे बड़ा अकेला प्रदेश है। इस प्रदेशका विशाल भाग मरुभूमि है; किन्तु जो भाग उपजाऊ हैं वे अत्यन्त समृद्धि-सम्पन्न हैं।

पूर्वमें संसारके दो बड़े-बड़े रेगिस्तान तकलामाकन और गोबी इसे चीनसे पृथक् किये हुए हैं। इन रेगिस्तानोंमें बालू और धूलके पर्वताकार बवण्डर उठा करते हैं। कुनलुन, काराकोरम और हिमालय, ये तीन पर्वत-श्रेणियां चीनी तुर्किस्तानको भारतसे पृथक् करती हैं। इन्हीं पर्वत-श्रेणियोंसे होकर संसारका उच्चतम वाणिज्य-मार्ग गया है जो १६ हजार फीटसे अधिक ऊंचाईकी पांच घाटियोंको पार करता है। मार्गकी इस कठिनाईके कारण ही अब तक भारत-स्थित अंगरेजोंका इस प्रदेशपर वाणिज्यगत साम्राज्य "Commercial imperialism" कायम नहीं हो सका है।

मध्य एशियामें रूसके जो प्रदेश हैं उनकी तथा साइबेरियाकी ओरसे चीनी तुर्किस्तानका मार्ग सबसे अधिक सुलभ हुआ है। पर्वत-श्रेणियां इस मार्गमें भी पड़ती हैं, किन्तु वे दुर्भेद्य नहीं हैं और कुछ स्थान ऐसे भी हैं जिनसे होकर जाड़ेमें भी बराबर आवागमन जारी रखा जा सकता है। यही कारण है कि चीनी तुर्किस्तानके साथ रूसी प्रदेशोंका वाणिज्य-सम्बन्ध जितना सुगम है उतना चीनके साथ नहीं।

रूसकी राजनीतिके साथ भी चीनके इस सुदूरस्थ प्रान्तका घनिष्ट सम्बन्ध है। इस प्रदेशकी प्रसिद्ध जातियां तुर्की किसान, काशगरके नगरनिवासी और जरायम पेशावाले कज्जाक तथा किरघिज हैं, जिनपर चीनका शासन है। इन सबके कुटम्बी सीमान्तके उस पार रूसी शासनके अन्तर्गत रहते हैं। रूस या चीनकी ओरसे जितनी कार्रवाइयां होती हैं उन सबकी ये लोग तुलनात्मक विवेचना

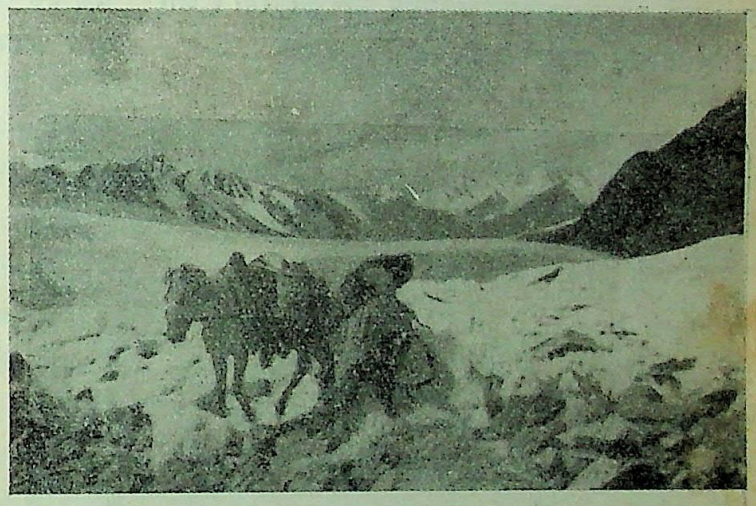

भारत और सिनकियांगके बीच वाणिज्य-सम्बन्ध स्थापित होनेमें सबसे बड़ी कठिनाई है मार्गकी ५ पहाड़ी घाटियां जो १६०० फीटसे अधिक ऊंची हैं।

करते हैं। इन दोनों अधीश्वर राष्ट्रोंमें कब किसका उत्थान और पतन हो रहा है, इस बातको ताड़ लेनेमें यहांके निवासी बड़े चतुर होते हैं। रूस और चीनके बलसाम्यका मङ्गोलों-पर भी प्रभाव पड़ता है; क्योंकि उत्तरी चीनी तुर्किस्तानके अधिकांशमें मङ्गोल बसे हुए हैं, जिनका स्वतन्त्र बहिर्मङ्गोलिया (Outer Mongolia) के मङ्गोलोंके साथ ऐतिहासिक दृष्टिसे घनिष्ट सम्बन्ध है। बहिर्मङ्गोलियापर गत कई वर्षोंसे रूसका जबर्दस्त प्रभाव रहा है जिसके फल-स्वरूप वहां सोवियट शासनकी प्रतिष्ठा हुई है। चीनी तुर्किस्तानकी इस स्थितिसे अंगरेजोंका सतर्क रहना स्वाभाविक है। क्योंकि भारतके साथ चीनी तुर्किस्तानके सीमान्तका सम्बन्ध है और यही कारण है कि चीनके इस प्रदेशमें बोलशेविक रूसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



राजनीतिक प्रभावको बढ़ते हुए देखकर अंगरेज सशङ्कित हो रहे हैं। मञ्चूकोंमें जो घटना घट चुकी है उसीकी पुनरावृत्ति सिनकियाङ्गमें भी हो रही है। मञ्चूरियापर जापानका प्रभुत्व हो जानेसे रूसको जो आर्थिक क्षति हुई है उसकी पूर्ति वह चुपचाप सिनकियाङ्गसे कर रहा है। बहिर्मङ्गोलियाके समान सिनकियाङ्गमें भी सोवियट राज्य कायम करना रूसका उद्देश्य है। सिनकियाङ्गमें इस समय रूसकी जैसी स्थिति हो रही है उससे वहां सोवियट शासनकी स्थापना सुनिश्चित है। किन्तु रूस इस समय अपनेको विजेताके रूपमें नहीं, बल्कि सलाहकारके रूपमें प्रकट कर रहा है और यही नीति उसे सफलता प्रदान करेगी।

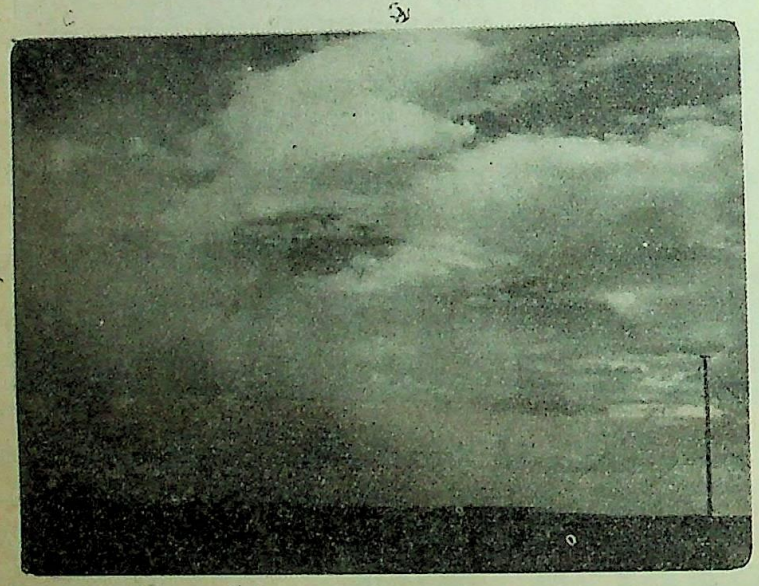

वह देश जहां बालूके बड़े-बड़े बवण्डर बहुधा उठते रहते हैं। आकाशमें बालूके टीले-जैसे नजर आ रहे हैं।

इधर कुछ वर्षोंसे चीनी तुर्किस्तानमें जिस प्रकार गृह-युद्ध, लूटपाट और मनमाना कर-भार आदि बढ़ रहे हैं उससे चीनके साथ व्यापार करना दिन-दिन कठिन हो रहा है और मार्ग-की कठिनाइयोंके कारण भारतके साथ भी वाणिज्य-सम्बन्ध बढ़ नहीं सकता। इसलिए चीनी तुर्किस्तानके विदेशी वाणिज्यपर रूसका एक प्रकारसे एकाधिपत्य-सा हो रहा है। सिनकियाङ्गपर बोलशेविक रूसका इस प्रकार प्रभाव बढ़ते देखकर भी चीन एक प्रकारसे उदासीन-सा हो रहा है, इसका कारण सम्भवतः यही हो सकता है कि चीनकी राजधानीसे यह स्थान बहुत दूर है और आवागमनके साधनोंका सर्वथा अभाव है। अन्यथा जो चीन मञ्चूकोंके हाथसे निकल जानेपर इतना क्षुब्ध है वही चीनी तुर्किस्तान-के भी हाथसे निकल जानेकी सम्भावनापर उतना चिन्तित नहीं मालूम पड़ता। हालां कि क्षेत्रफलमें यह सिनकियाङ्ग प्रदेश भी मञ्चूरियाके बराबर ही है। हां, इसकी आबादी सिर्फ ५० लाख है और मञ्चूरियाकी तीन करोड़। सिनकियाङ्ग प्रदेश खनिज पदार्थोंके कारण समृद्धि-सम्पन्न भी है।

कुछ समयसे चीनी तुर्किस्तानमें अनवरत विद्रोहोंका जो चक्र चल रहा है उसका आरम्भ सन् १९३१ में हुआ था। बाह्य आक्रमण और आन्तरिक विद्रोहके कारण यहांकी दशा अस्तव्यस्त-सी बनी रहती है। सन् १९३२ तक सिनकियाङ्गमें चीनकी कोई भी फौज नहीं थी और तत्कालीन गवर्नरको किसी प्रकार अपनी सलतनत कायम रखनी पड़ती थी। रूसका जबर्दस्त प्रभाव फैला हुआ था। इसी समय कान्सू प्रदेशकी एक मुसल-मान फौजने सिनकियाङ्गपर आक्रमण कर दिया था, किन्तु जारशाही रूसके सैनिकोंकी सहा-यतासे—जो रूससे भागकर यहां बस गये हैं—चीनका आधिपत्य कायम रखा गया। फिर इसके बाद मञ्चूरियाकी फौजके आ जानेपर चीनी सैनिकोंकी प्रधानता हो गयी और रूसी सैनिक पीछे पड़ गये। उनके साथ जैसा व्यवहार किया गया उससे वे निराश हो गये थे। इधर मुसलमानोंके दो दलोंमें आपसमें ही झगड़ा हो गया और प्रान्तके अन्य भागोंमें उन्होंने विद्रोह कर दिया। मुसलमान सेनापति मा-चुङ्ग-इङ्गने आगे बढ़कर राजधानीपर आक्रमण करना चाहा।

सेनापति मा-चुङ्ग-इङ्गके कई सम्बन्धी चीनके ईसाई जेनरल फेङ्ग यूसियांगकी आज्ञासे फांसीपर चढ़ा दिये गये थे। इसीका बदला लेनेके लिए जेनरल माने विद्रोह किया था और उसका उद्देश्य था कान्सू और सिनकियाङ्ग प्रान्तोंको मिलाकर एक मुसलमान राज्यकी प्रतिष्ठा करना। जेनरल माके आक्रमण तथा उसकी सैनिक सफलताओंसे घबराकर सिनकियाङ्गमें चीनी गवर्नरने निर्वासित रूसी सैनिकोंका एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सैन्य-दल सङ्गठित किया। जेनरल मा इस दल द्वारा पराजित हुआ, किन्तु बादमें इस सैन्य-दलने चीनके गवर्नरपर ही आक्रमण कर दिया। गवर्नर भाग गया। इससे जेनरल माको एक बार फिर सन् १९३३ में सिनकियाङ्गपर आक्रमण करनेका मौका मिला। किन्तु अन्तमें वह स्थानीय सेनाओं द्वारा पराजित हुआ।

कान्सू प्रान्तके ये चीनी भाषा-भाषी मुसलमान यद्यपि सम्पूर्ण प्रदेशकी कुल जन-संख्याके एक-तिहाई भाग हैं, किन्तु बहुसंख्यक चीनियोंकी अपेक्षा ये अत्यन्त उग्र प्रकृतिके हैं और सुसङ्गठित भी हैं। कई वर्षोंसे ये सम्पूर्ण सिनकियाङ्ग प्रदेशपर अपना अधिकार जमानेका प्रयत्न कर रहे हैं।

चीनी तुर्किस्तानकी वर्तमान स्थितिमें कई ऐसी नयी बातें उत्पन्न हो गयी हैं जिनका विशेष महत्त्व है। इनमें एक बात है मञ्चूरियाके कई हजार चीनी सैनिकोंकी उपस्थिति। जापानियोंने मञ्चूरियासे इन्हें खदेड़ दिया था और ये भाग-कर साइबेरिया चले गये थे। अब रूसियोंने इन्हें साइ-बेरियासे सिनकियाङ्ग भेज दिया है। मञ्चूरियाके इन चीनियोंका चीनके साथ जितना घनिष्ट सम्बन्ध है उतना सिनकियाङ्गके फुटकर चीनियोंके साथ नहीं, और इन्हींकी बदौलत मध्य एशियामें चीनी शासनका कुछ छिन्न-भिन्न अंश अब तक बचा हुआ है। मञ्चूरियाके इन्हीं निर्वासित चीनियोंके साथ-साथ रूसके निर्वासितोंकी समस्या भी है जिनकी संख्या इस प्रान्तमें लगभग पचास हजार होगी। बोलशेविक क्रान्तिका विरोध करनेके कारण ये रूससे भाग-कर चीनके इस प्रदेशमें चले आये। तबसे बराबर ये चीनके शासनाधीन रहे हैं। इनका न तो कोई देश है और न इन्हें राजनीतिक या आर्थिक स्वतन्त्रता ही प्राप्त है।

चीनी तुर्किस्तानके दूरस्थित दक्षिण और पश्चिम भागमें—खोतान और यारकन्दसे काशगर तक—न तो चीनी फौजोंका प्रभाव है और न रूसके निर्वासितोंका। यहां तीन पर्वत-श्रेणियोंके—जो चीनी तुर्किस्तानको भारतसे पृथक् करती हैं—पादप्रदेशमें पहाड़ी लोगोंके साथ मैदानमें रहनेवालोंका निरन्तर संग्राम चल रहा है, और अंगरेजों और रूसियोंकी स्थानीय शक्तियोंमें परिवर्तन घटित होनेके साथ ही अपनेको अनुकूल रखनेके जो प्रयत्न होते रहते हैं उनसे उक्त संग्रामकी जटिलता और भी बढ़ जाती है।

वह दिन अब नहीं रहा जबकि अंगरेजोंको भारतके सम्बन्धमें 'रूसी भालु' के आक्रमणकी आशङ्का थी। अब तो इस समय प्रतिष्ठा और धाकका प्रश्न है। अर्थात् भारत, अफ-गानिस्तान और मध्य एशियाकी जातियोंकी दृष्टिमें किसकी प्रतिष्ठा बढ़ी हुई प्रतीत होती है, इंगलैण्डकी या रूसकी? यह एक ऐसी प्रतिद्वन्द्विता है जो नाजुक होनेके साथ ही बहुत कठिन भी है और इसका परिणाम भविष्यके लिए बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है।

डा० स्वेन हेडिन

सिनकियाङ्गमें हालमें जो घटनायें सङ्घटित हुई हैं और जिनका ऊपर वर्णन किया गया है उनसे यह स्पष्ट है कि वहां चीनका आधिपत्य पर्याप्त रूपमें शक्तिशाली नहीं है और रूसका प्रभाव क्रमशः बढ़ रहा है। बहिर्मङ्गोलियामें बोलशेविक रूसका सम्पूर्ण प्रभाव, मञ्चूरियापर जापानका प्रभुत्व, अन्तर्मङ्गोलियामें विरोधी शक्तियोंकी वृद्धिका खतरा—इन सब कारणोंसे सिनकियाङ्गमें चीनकी स्थितिको अक्षुण्ण बनाये रखना चीन-सरकारके लिए इस समय एक विषम समस्या हो रही है। किन्तु चीन-सरकारके मार्गमें सबसे बड़ी कठिनाई है आवागमनके साधनका अभाव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पावटोचेन Paotowchen और सियानफू Sianfu के रेलवे स्टेशनसे कारवांको सिनकियाङ्ग तक पहुंचनेमें कई महीने लग जाते हैं। काशगरसे ये दोनों स्थान सड़ककी राहसे २ हजार मीलकी दूरीपर हैं। रेगिस्तानके बालूको पार करके मोटर द्वारा यद्यपि कम समयमें वहां पहुंचा जा सकता है, किन्तु मार्गमें खाने-पीनेकी कोई वस्तु न मिलनेके कारण मोटर द्वारा आवागमन सबके लिए सम्भव नहीं हो सकता। सब तरहके सामानसे पूर्णतया सुसज्जित होकर ही यात्री-दल इस प्रकारकी खर्चीली यात्रा कर सकता है।

चीनी तुर्किस्तान तक आवागमनके साधन जब तक सुलभ नहीं होते तब तक चीन-सरकारके लिए वहां अपनी फौज भेजकर विद्रोहियोंका दमन करना और अपना आधिपत्य फिरसे स्थापित करना सम्भव नहीं है। रेलवे लाइन विस्तृत करनेके लिए बहुत वर्ष लगेंगे। ऐसी स्थितिमें सिवाय सड़क बनवानेके और कोई दूसरा उपाय नहीं हो सकता। किन्तु यह काम भी सहज नहीं है। चीन-सरकारने इस कार्यका भार स्वीडनके सुविख्यात अन्वेषक डा० स्वेन हेडिन Sven Hedin के ऊपर सौंपा था। डा० स्वेन हेडिनने अबसे ४० वर्ष पूर्व एक बार इस दुर्गम प्रदेशमें भ्रमण करके यहांके रहस्योंका पता सभ्य संसारको बताया था। अतएव चीन-सरकारने एक बार फिर आपसे सिनकियाङ्गकी यात्रा करनेकी प्रार्थना की। इस योजनाका मुख्य उद्देश्य था मोटर द्वारा आवागमनके लिए उपयुक्त मार्गका अनुसन्धान करके उसके सम्बन्धमें सरकारको सलाह देना।

सन् १९३३ के अक्टूबरमें डा० स्वेन हेडिनने अपनी यह यात्रा प्रारम्भ की थी। उस समय आपकी अवस्था ६९ वर्षकी थी। इस वृद्धावस्थामें भी अपनी जानको जोखिममें डालकर तथा अनेक कष्ट एवं असुविधायें सहन करके इस सुदूरस्थ प्रदेशकी यात्रा करना डा० स्वेन हेडिन जैसे दुःसाहसिक व्यक्तिका ही काम है। डा० स्वेन हेडिनके साथ उनकी पहली यात्राके दो साथी, एक सर्जन और एक मोटर इञ्जीनियर तथा मार्गोंसे पूर्णतया परिचित दो चीनी और कई नौकर-चाकर थे। ये सब एक मोटरकार और चार लारियोंमें सवार होकर बिदा हुए। १५०० गैलन पेट्रोल पहले ही रवाना कर दिया गया था जिससे लौटती यात्रा तकका पेट्रोल आसानीसे मिल जाय। प्रारम्भमें कुछ दूर तक रेल द्वारा यात्रा की गयी। इसके बाद इस यात्री-दलने उत्तर दिशामें पश्चिमकी ओर फैले हुए वाणिज्य-मार्गका अनुसरण किया। मार्गमें उन्हें एक स्थानपर तिब्बतके ताशी लामाका आशीर्वाद प्राप्त हुआ। वहांसे पश्चिमकी ओर आगे बढ़कर डा० स्वेन हेडिन और उनके साथियोंने गोबीके रेगिस्तानको पार किया। रेगिस्तानको पार करके वे हामी पहुंचे जहां उन्हें आशा थी कि मुसलमान सेनापति मा-चुङ्ग-इङ्ग उनका स्वागत करेगा। मा-चुङ्ग-इङ्ग उस समय तक सिनकियाङ्ग पहुंच चुका था; किन्तु चीन-सरकार द्वारा वह शत्रु नहीं घोषित किया गया था। हामीसे वे उरूची गये जहांके बागी तुङ्गनोंके साथ उनकी मुठभेड़ हुई। उनकी गोलियोंसे बचनेके लिए ये लोग अपनी गाड़ियोंको छोड़कर झाड़ियोंमें जा छिपे। मार्गमें उन्हें इसी तरह और भी कितनी ही जोखिमोंका सामना करना पड़ा और कई बार तो प्राणोंपर सङ्कट आ गया। वापसी यात्रामें भी उन्हें काफी खतरा उठाना पड़ा। क्योंकि इस समय तक माचुङ्ग-पिङ्गका चीन-सरकारके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हो गया था और चीन-सरकार उसे पकड़नेकी फिराकमें थी। माचुङ्ग-इङ्गने इस यात्री-दलसे काशगर भेजनेके लिए,

चीनी दस्यु जिन्होंने डा० स्वेन हेडिनकी यात्रामें रक्षकका काम किया था और मध्य एशियाके डाकुओंसे उनकी रक्षा की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोबीके रेगिस्तानका एक दृश्य—इस स्थानपर किसी समय हरा-भरा जङ्गल था।

गाड़ी मांगो। उसके सैनिकोंने इनका सब सामान लूट लिया और गोलीसे मार देनेकी धमकी दी। इस प्रकारकी सङ्कटापन्न स्थितिमें प्राण-रक्षाका कोई उपाय न देखकर डा० स्वेन हेडिनने अपनी मोटर उन्हें सौंप दी। इसके कई दिनों बाद उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि गाड़ी ड्राइवरके साथ सही-सलामत लौटा दी गयी। फिर कुछ दिनोंके बाद मा-चुङ्ग-इङ्गने इस यात्री-दलको कोरलामें कैद कर लिया और उनकी सब गाड़ियोंसे काम लिया। इसके दो सप्ताह बाद फिर सब गाड़ियां मय ड्राइवरके लौटा दी गयीं और इसके लिए मा-चुङ्ग-इङ्गने डा० स्वेन हेडिनसे क्षमा-प्रार्थना करते हुए उन्हें कुछ वस्तुयें उपहार-स्वरूप भेंट कीं। वापसी यात्रा दक्षिण दिशाके मार्गसे होकर की गयी थी। वहांसे लौटकर डा० स्वेन हेडिनने अपनी रिपोर्ट चीन-सरकारको दी है। इस रिपोर्टके आधारपर सिनकियाङ्ग तकके मार्गकी योजना उत्तर या दक्षिण दिशासे तैयार की जा सकती है। इसके लिए एक मोटर-बस कम्पनी भी स्थापित हो चुकी है। यह कम्पनी प्रति सप्ताह सात या इससे अधिक मोटर-बसें क्वेह्वा Kweihwa से हामी तक भेजती है। इनपर माल असबाब तथा डाक लदी रहती है।

किन्तु अभी तक ऊंटोंके कारवांके मार्गके सिवा और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। मार्गमें प्रचण्ड शीत, बालूके तूफान तथा ग्रीष्मकालके जलते हुए सूर्यकी असह्य गर्मीसे बचनेके लिए कोई व्यवस्था नहीं की गयी है। सब मौसमोंमें आवागमनके लिए सड़क बनवाना, नियत स्थानोंपर जल तथा अन्य आवश्यक पदार्थोंका प्रबन्ध करना सहज काम नहीं है। १२०० मील तक—जिसका अधिकांश सिवा रेगिस्तानके और कुछ नहीं है—इस प्रकारका प्रबन्ध करना होगा। सिनकियाङ्ग-जैसे सुदूरस्थित प्रदेशपर अपना आधिपत्य कायम रखनेके लिए चीन-सरकार इस बहुव्यय-साध्य योजनाको कार्यान्वित करनेका प्रयत्न करेगी या नहीं, यह अभी निश्चित रूपमें नहीं कहा जा सकता।

मध्य एशियामें अंगरेजों और रूसियोंके बीच प्रतिद्वन्द्विता है अवश्य, किन्तु वह प्रतिद्वन्द्विता इस रूपमें नहीं है कि दोनों देश चीनके इस प्रदेशपर अपना अधिकार जमानेके लिए एक-दूसरेसे बाजी मार लेनेका प्रयत्न करें।

मध्य एशियामें चीनकी शक्तिका सम्पूर्ण ह्रास कई कारणोंको लेकर हुआ है। इनमें सबसे बढ़कर महत्त्वपूर्ण कारण है विश्व-शक्तिके गठनमें अवश्यम्भावी परिवर्तन। मध्य-एशियाकी राजनीतिका यह एक ऐसा पहलू है जिसका प्रभाव सम्पूर्ण संसारपर पड़े बिना नहीं रह सकता। चीनके प्रदेशोंकी अखण्डताको कायम रखनेके लिए जो अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि-पत्र है उसमें चीनकी दीवारके बाहरके सीमान्तके सम्बन्धमें कोई शर्त नहीं है। इन सन्धियोंके अन्तर्गत रूस और जापान दोनोंकी स्थिति अस्पष्ट है।

चीनके पक्षमें यही एक मारात्मक दुर्बलता है। क्योंकि चीनकी शक्तिका वास्तविक नियन्त्रण अब चीनके तटवर्ती समुद्र तक ही नहीं, बल्कि वहांकी दीवारके बाहरके सीमान्त तक पहुंच गया है। मञ्चूरिया, मङ्गोलिया, चीनी तुर्किस्तान और तिब्बतमें अन्तर्राष्ट्रीय प्रभावका अनुपात अमङ्गल-सूचक-रूपमें महत्त्वपूर्ण है। चीनकी बड़ी दीवारके बाहर अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति न मालूम कब क्षिप्र गतिसे गम्भीर रूप धारण कर सकती है जिसे अभी समझना और उस सम्बन्धमें विचार करना कठिन जान पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सन्ध्या-सङ्गीत

( १ )

पश्चिम-पयोधि-तटपर शीला-सुलक्षिणी-सी
तू कौन झांकती है ?
आकाश-चित्रपटपर छवि-दक्ष यक्षिणी-सी
मुख-रेख आंकती है !
वह कौन विप्रयोगी सखि, रामगिरि-प्रवासी
किसका विरह-निवेदन ?
अभिशाप-दण्ड-भोगी किस रूपका उदासी
करती चरित्र-चिन्तन ?

( २ )

किसके किशोर-उरपर होगी प्रिये, सुशोभित
वन पारिजात-माला ?
वह कौन सौम्य-सुन्दर जिसपर विमुग्ध-लोभित
तू आज इन्द्र-बाला ?
किसके अपार भयसे उठती सहम विवर्तन
कल तूलिका तुम्हारी ?
विस्मय-विकल हृदयसे करता विनोद-नर्तन
पाथोद-वन-विहारी !

( ३ )

जल-जालमार्ग-द्वारा अब मांगती विदाई
गोधूलि धूमवसना ;
घन-पक्ष खोल प्यारा सन्ध्या प्रसन्न आई
मणि-बन्ध, गन्ध-रशना !
कल-मन्त्र-स्वर-तरङ्गित कङ्कण-क्वणित जलाशय
सागर, क्षितिज, हिमानी;
भावानुभाव-भङ्गित नूपुर-रणित महालय
गिरि-मेखला वनानी !

( ४ )

तू पुष्प वह सिरिसका जिसमें न वृन्त-पल्लव
केवल अनन्त सौरभ;
जग इन्द्रजाल किसका खग-बाल-वृन्द-कलरव-
कूजित सकल दिशा-नभ !
यह कण्वका तपोवन मङ्गल-कलश उठाकर
कटिपर चली कहां तू ?
मोहित त्रिलोकका मन; जागे न पत्र-मर्मर
चल मृदु-चरण यहां तू !

( ५ )

मैं पुरुरवा मदालस उन्मत्त उर्वशी-सी
उरमें सजनि बसी तू ;
दिलकी हंसी छिपा बस; मत फेंक आरसी-सी
प्रतिविम्ब प्रेयसी तू !
कच-दाम एक वेणी यह मेरु-मालिकावलि
किसका बनी बसेरा ?
ओ स्वर्गकी निसेनी, सन्ध्या-सुमन-कृताञ्जलि
प्रेमी प्रमत्त तेरा !

( ६ )

लिखती शिखर-ध्वजोपरि नखसे सलज्ज-आनन
किसकी प्रणय-कथा, कह ?
अयि मौन-मग्न सुन्दरि, निस्तब्ध शैल-कानन
कैसी विचित्र लिपि वह ?
अलि, अस्तप्राय रविकी यों आरती सजाकर
किसकी उतारती तू ?
अपनी अनन्त छविकी कललीकमें लजाकर
छिप जा न आप ही तू !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



( ७ )

रजनी—निशीथ रजनी वासर—दिनान्त वासर
आ एक-एक जाता ;
सजनी, परन्तु सजनी मेरा विषाद अक्षर
पथका न अन्त पाता !
गाता विषण्ण मनसे सङ्गीत वेदनाका
मूर्च्छा-निधूम काया ;
जिस सर्वनाश-क्षणसे सौन्दर्य शोभनाका
उरमें विधुर समाया !

( ८ )

जब-जब प्रिये, उमड़ता पीड़ा-पयोद दारुण
मधु-प्राणमें प्रचञ्चल ;
छाया प्रशान्त करता तब-तब समोद-सकरुण
तेरा प्रदोष-अञ्चल !
उठता गगन-क्षितिजपर ज्यों ही विहंग-कलरव
अतिशय--अशेष अतिशय;
पाता तुरन्त अन्तर मेरा विषाक्त विद्रव
त्यों ही रसार्द्र आश्रय !

( ९ )

आते अनेक राही इस राहसे विजनकी
मैं सिन्धु-वीचि-विह्वल ;
यह दुःखवह्नि-दाही स्मृति किन्तु प्राणधनकी
कोमल—असीम कोमल !
मगमें पड़ा अकेला मैं बावला-विरागी
कल्लोल अश्रु-धारा ;
टूटी सितार-वीणा वह बांसुरी अभागी;
क्यों मूक विश्व सारा ?

( १० )

जाता मिलिन्द देकर अन्तिम अधीर चुम्बन
लोहित-नयन कुसुमको ;
क्रन्दन-विनीत कातर आरक्त पद्म-लोचन
सखि, कौन शोक तुमको ?
प्रिय—दूर, क्या इसीसे मिलता नहीं सहारा
हियकी सजल कहानी ;
अलि, पूछ भी किसीसे—वह कौन रूप प्यारा
इतनी न बन दिवानी !

( ११ )

नभ-दोलसे लटक कर थी झूलती झमक कर
तू तो अभी निगोड़ी !
भागी कहां, पटककर क्षणमें अरी, चमककर
कुंकुम-भरी कटोरी !!
छलना—कठोर छलना, इस ओर देख, रुक तो
रुक तो—जरा ठहर जा ;
सीखा कहां मचलना ? आली भली न; टुक तो
यह प्रेम-पात्र भर जा !

( १२ )

आओ उतर मृदुल-पद मृदु-मन्द-मन्द चारिणि,
इस सार हीन जगमें ;
दे बांध आज उन्मद नव-इन्दु-विन्दु-धारिणि
कुन्तल-कलाप नगमें !
सुकुमारि, तू प्रणयमें सीमन्तिनी-सुरूपी
छाया-प्रसन्न नारी ;
निशि दिन बसो हृदयमें, हे मोहिनी उल्लूपी
चिर-यौवना कुमारी !

—आरसीप्रसाद सिंह



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आत्म-संस्मरण

श्री अमृतलाल चक्रवर्ती

( ७ )

पत्र-सम्पादनमें अविचलित अवस्थितिसे मेरी उस विषयकी अभिज्ञता उत्तरोत्तर अग्रसर हो रही थी। विशेषतः मेरा वह विद्यार्थी तथा शिक्षार्थी नवजीवन नाना विषयोंके समुच्च शिक्षा-केन्द्र तात्कालिक भारत-राजधानीमें अपने उस झुकावके विषयको सीखनेका अच्छा सहारा पाने लगा। विज्ञ विद्वानों द्वारा परिचालित मेरी बड़ी श्रद्धाके आदर्श संवाद-पत्र "अमृतबाजार पत्रिका", "बङ्गाली", "नेशन" प्रभृति मुझे सिखलाने लगे, किस विषयको कैसे लिखना होता है तथा कब किन विषयोंपर लेख लिखे जाने चाहिए। उनके सम्पादक स्वकार्यके धुरन्धर बाबू शिशिरकुमार घोष, बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, मि० एन० एन० घोष आदिकी पत्र-सम्पादन-कला निरीक्षण करनेका सौभाग्य मैं कालाकांकरमें उपभोग नहीं कर पाता था। अब उस विषयके निरन्तर अध्ययनका अवकाश मेरे लिए मानो गुरुवर्य पुरुषोंके बीचमें रहनेका संयोग-सा था। अपनी समझके उन विज्ञतम सम्पादकोंकी लेखन-पद्धति तथा भाव-भावनाओंका अनुकरण मैं अपने हिन्दी पत्रमें स्वेच्छावश और अनवधानतावश भी करनेमें प्रभावित होता था। इसका सुफल भारतमित्रको मिलनेका प्रत्यक्ष प्रमाण मिला। संवाद-पत्रोंकी विशिष्ट गोष्ठीमें भारतमित्रकी गणना होने लगी। लार्ड डफरिन वायसराय-पदसे जब विदा होने लगे, तो कलकत्तेकी बलवान प्रजा-सभा इण्डियन एसोसियेशनने उनके राज्यकालकी समालोचनामें भारतमित्रके अभिमत उद्धृत किये। हिन्दी पत्रकी सम्मतिके इस प्रकार समादरका वह पहला ही अवसर था। बङ्गाल-बिहार-उड़ीसाके जमीन्दारोंकी राजनीतिक सभा ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशनने लार्ड डफरिनके कार्योंकी सुख्यातिका प्रवाह बहाया था। उसीके विरोधमें मुंहतोड़ उत्तर-रूपसे विशिष्ट प्रजावर्गकी उक्त राजनीतिक सभाकी ओरसे वह समालोचना की गयी थी। तेजस्वी उत्तरको प्रस्तुत करनेके पूर्व सभाके सेक्रेटरी तथा उस समयके भी परिचित सर्व-भारत नेता बाबू सुरेन्द्रनाथने पत्र लिखकर भारतमित्रके लार्ड डफरिन सम्बन्धी समस्त लेखोंका अंगरेजी अनुवाद मंगवा लिया था। उस विशिष्ट राजनीतिक प्रजामण्डली द्वारा भारतमित्रके अभिमतका उस प्रकार समादर होनेसे उस पत्रकी जो मानवृद्धि हुई, वह उसकी ग्राहक-वृद्धिसे भी पुष्ट हुई थी। सन् १८८९ ई० का आरम्भ होते ही मुझे भारतमित्रसे अलग होना पड़ा। उस समय मेरे कार्यारम्भ-कालसे ग्राहक-संख्या खासी बढ़ गयी थी। इस वृद्धिका एक मार्केका कारण भी उपस्थित हुआ था। वह था, लार्ड डफरिनका ब्रह्मदेश-विजयका संग्राम खड़ा करना।

रणचण्डीका आविर्भाव संवाद-पत्रोंकी ग्राहक-वृद्धिका सुवर्ण सुयोग है। किन्तु उस दूसरे ब्रह्म-युद्धका परिचालन करनेमें लार्ड डफरिन ऐसी गुपचुप चाल चले थे कि उसका अल्प-मात्र ही सुफल संवाद-पत्रोंको नसीब हुआ था। तथापि समर-संवादोंके शोचनीय दुर्भिक्षको निवारित करनेकी अक्षमतावश अग्राह्य कर संवाद-पत्र जो लाभ उठानेमें समर्थ हुए थे, वह उस कालके विचारसे नगण्य भी नहीं कहा जा सकता। प्रथम ब्रह्म-युद्धके फल-स्वरूप रंगून प्रान्त लार्ड डफरिनके बहुत पहले अंगरेजी साम्राज्यके हाथ आ गया था। ब्रह्मदेशका अवशिष्ट अंश निम्न ब्रह्म ब्रह्मदेशीय स्वतन्त्र राजाके शासनाधीन था। उसकी पूर्वी सीमामें अवस्थित भामो नामक स्थानके पूर्व छोर तक चीन साम्राज्यका विस्तार है और निम्न ब्रह्मकी बगलका श्याम राज्य फ्रान्सीसी साम्राज्यके प्रभावाधीन है। उन दोनों शक्तिमान साम्राज्यों के साथ सहसा किसी प्रकार मुठभेड़ हो पड़नेकी विपत्तिसे बचावके लिए मध्यमें अड़चन ( बफर ) रूप स्वतन्त्र निम्न ब्रह्म राज्यका रहना पहलेकी अंगरेजी राजनीतिके अनुकूल था। उस राजनीतिको लार्ड डफरिनकी गवर्नमेण्टने पलटानेकी आवश्यकता समझी। निर्णय किया गया कि अन्तिम ब्रह्मी राजा थिबो स्वदेशको उस अड़चनके रूपमें स्थिर रखनेकी आत्मशक्ति नहीं रखता; अतः उसके सिंहासनको विध्वंस कर उसके देशको अंगरेजी साम्राज्यके अन्तर्गत कर लेना चाहिए। वन-प्रधान ब्रह्मका अतिकाय सागौन भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अंगरेजी साम्राज्यके लिए अनिवार्य आवश्यकताकी लकड़ी है। उसी वनस्पतिपर फ्रान्सीसी कुल्हाड़ा चलनेकी नौबत दिखलाई दी थी, जिसका जहरीला फल और भी अधिक जटिल भविष्यतका आतङ्क प्रकट कराता था। किन्तु लार्ड डफरिनने समरवह्निकी तनिक भी लौ छिटकने दिये बिना, उस सङ्कल्पको सिद्ध करनेका बीड़ा उठाया। शायद चांदीके जुलाबसे थिबोके मुख्य मन्त्रियोंके उदरसे राजभक्तिका सूक्ष्म कण तक निकाल दिया गया। ब्रिटिश सैन्याध्यक्ष जनरल पेण्डर गार्स्टने सुसज्जित समरपोतसे राजधानीमें पदार्पण कर और राजभवन तकमें भी प्रवेश कर जब तक थिबोको बन्दी न किया, तब तक उस हतभाग्य राजा और उसकी समग्र प्रजाको यही विदित था कि मित्र साम्राज्यके शान्तिदूतका दोस्ताना मेल-मिलापके लिए शुभागमन हुआ है। किन्तु राजाके बन्दी किये जाते ही झगड़ा तय होनेका अंगरेजी निर्णय फलीभूत नहीं हुआ। राज्य-भरकी प्रजा अतीव अप्रत्याशित आश्चर्यके प्रथम धक्केसे विमुक्त होते ही बन्दी राजाकी समवेदनासे पिघलकर विषम लुकाचोरीका प्रतिशोध लेनेके लिए सशस्त्र दलबन्दीसे शत्रु-सेनापर बारम्बार किचकिचाकर धावेपर धावा करने लगी। राजभक्त प्रजाका वह रण-ताण्डव ऐसा विकराल हुआ कि भारतीय धन-जन-सम्पन्न अंगरेजी साम्राज्यकी विशाल सेनासे भी उसको दबाते सुदीर्घ पांच वर्ष लग गये। कलकत्तेके जनसाधारणको उस घमसान युद्धका आभास प्रायः केवल इतने ही लक्षणसे मिलता था कि भारतके विभिन्न प्रान्तोंकी जेलोंमें भेजे जानेके लिए नाटे-नाटे कदों और चौड़ी-चौड़ी छातियोंके हट्टे-कट्टे फुरफुरी मूंछोंवाले दलके दल वीरभद्र सरीखे ब्रह्मी कैदी हवड़ा स्टेशनमें लाये जाते थे। उनके दर्शनार्थी सर्व सम्प्रदायों और श्रेणियोंके कलकत्ता-वासियोंका ऐसा मेला लगता था कि सशस्त्र सैनिक साजबाज और अन्य धूमधामोंके विज्ञापित नवीन वायसराय-आगमन-कालकी भीड़को भी उसके आगे नीचा देखना पड़ता था। उस आश्चर्य-जनक कैदी-समागमके हेतुको जाननेका जो कौतूहल दर्शकोंमें जाग उठता था, उसे निवृत्त करनेका यत्न संवाद-पत्रोंको करना पड़ता था। किन्तु इसके लिए कभी-कभीके फूट पड़े हुए युद्ध-संवादोंको छोड़कर और कोई साधन संवाद-पत्रोंके पास न था। उन्हींको सजासजूकर युद्धका एक रूप सम्पादकोंको खड़ा करना पड़ता था। भारतमित्रके ग्राहक हजारसे अधिक हो गये थे, जिनका एक पुष्ट भाग इसी प्रकार युद्ध-वर्णनसे आकर्षित हुआ था। ग्राहकोंकी यह संख्या उन दिनोंके किसी भी हिन्दी पत्रके लिए थोड़े गौरवकी न थी और कलकत्तेके अन्य भाषाके संवाद-पत्र भी इसे अग्राह्यकी संख्या नहीं समझते थे।

आजका कलकत्ता हिन्दी ग्रन्थकारों और सांवादिकोंको प्रोत्साहन देनेका अद्वितीय केन्द्र है। हिन्दी-भाषी प्रान्तोंकी समृद्धसे समृद्ध नगरी भी कलकत्तेके साहित्यानुरागकी बराबरी नहीं कर सकती। कलकत्तेकी इस परिस्थितिसे यदि सन् १८८९ ई० के कुछ पूर्वकी दशाका मिलान किया जाय, तो यही कहना पड़ेगा, कि कठोर चट्टानकी छाती फूटकर भोगवतीकी क्षीरधारा निकली है। पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र उर्फ दुर्गूजी अपने सूतापट्टी ( क्रास स्ट्रीट ) वाले वास-भवनकी दोमञ्जिली बैठकके बरामदेमें स्वसम्पादित "उचित वक्ता" का अक्षरयोजन और मुद्रण कर वहींसे प्रकाशन करते थे। मानसिक और शारीरिक श्रम अत्यधिक कर आर्थिक व्यय इतना कम करते थे, जिससे कम और किसी दशामें नहीं हो सकता था। वे मधुर हास्यरसिक सर्वप्रिय पुरुष थे। उनकी सरस बातोंसे बोदेसे बोदेका मुख भी खिल उठता था, और लोग तो हंसकर लोट-पोट हो जाते थे। प्रसिद्ध व्यक्तियोंके नामोंको हास्यप्रद बनानेमें वे एक ही थे। अम्बिकादत्त व्यास नामको वे बम्बिकावत बांस कहते थे। कविवर प० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी कालेजमें पढ़ते समय हंसमुख होनेपर भी नवनीत-कोमल स्वभावके स्वल्पभाषी बालक थे। उन दिनों (जहां तक स्मरण आता है, सन् १९०० ई० में) दुर्गूजीकी जानदार रसीली बातपर वे एक बार ऐसे खिलखिलाकर हंस उठे थे कि आगे अपनी स्वाभाविक सुशीलताके विपरीत बड़ोंके सामने वैसे बेन्याब होनेपर बड़े लजा गये थे। आगे चतुर्वेदीजी हास्य-परिहासमयी ओजस्विनी वक्तृतासे असंख्य श्रोताओंपर असामान्य प्रभाव डालनेकी विरल शक्ति पा गये। उनमें हंसानेकी शक्ति यदि दुर्गूजीकी हंसानेवाली प्रकृतिसे प्रेरणा प्राप्तकर सयत्न साधनासे मार्केकी हुई हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। मैं दुर्गूजीको भैया कहता और भर-पेट हंसकर कर्मक्लान्त शरीर-मनको ताजा कर लेनेके लिए भारतमित्र कार्यालयके समीपस्थ उनके भवनकी खुली छतपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खासी जुड़ी हुई सान्ध्य मजलिसमें प्रायः जा जमता था। ऐसे दुर्गूजी "उचित वक्ता"को अपने हंसोड़ स्वभावकी जाग्रत प्रतिमूर्ति बनाकर ऐसी सरल भाषामें प्रकाशित करते थे कि अपढ़से अपढ़ भी किसीसे पढ़वाकर उसका रसास्वादन कर सकता था। किन्तु उसे यदि कोई स्वयं पढ़नेमें अथवा किसी औरसे पढ़वाकर सुननेमें उत्साहित न हो, इस सन्देहका निवारण करनेके लिए दुर्गूजी आप, परिचितोंकी तो बात ही नहीं, अपरिचितोंके घर भी जा-जाकर उचित वक्ताके संवादों और अन्य विषयोंको पढ़ सुनाते थे। सब लोग उचित वक्ता-की रोचकतापर, विशेषतः दुर्गूजीके सम्मोहक पठन स्वर और भङ्गीपर लट्टू होते थे। तथापि इन सभी भगीरथ प्रयासोंको निकालकर ग्राहकाभावसे उतने अल्प व्ययका वैसा उचित वक्ता भी बन्द हो गया। जिस कलकत्तेका तात्कालिक साहित्यानुराग ऐसा प्रखर था, वह पण्डित सदानन्द मिश्रके पाण्डित्यपूर्ण "सारसुधानिधि" को अकाल-मृत्युसे कैसे बचाता? वह उचित वक्ताके पूर्व ही बन्द हो गया था।

उस समयके कलकत्तेमें हिन्दी-भाषी वर्तमानसे बहुत न्यून होनेपर भी लाखकी संख्यासे कम न थे। किन्तु उनकी पठन-शक्ति और पठन-रुचिका जो शोचनीय अभाव था, उसका इससे बढ़कर ज्वलन्त उदाहरण और क्या हो सकता है? उस समय भी कुलीगीरी करनेवाले, धनियोंकी सेवकता करनेवाले तथा फुटकर व्यापार करनेवाले हिन्दी भाषी इन दिनोंकी तरह ही औरोंकी अपेक्षा अधिक थे। किन्तु अब इन श्रेणियोंमें भी पढ़नेकी शक्ति और रुचिके मनुष्य अनेक हो गये हैं, जो उन दिनों ढूंढ़कर भी एक नहीं निकाला जा सकता था। दरवान, पुलिसमैन, समर्थोंके रसोइये तथा स्वतन्त्र ढापा रखनेवाले जनेऊधारी ब्राह्मण-कुलोत्पन्नोंकी भी पठन-पाठन-सम्बन्धी दशा पूर्वोक्तोंसे उन दिनों अभिन्न थी, पर अब उनमें शायद ही कोई अपढ़ निकलेगा। पुरोहिती वैद्यकी करनेवालोंमें विद्वान् तब अल्प ही मिलते थे, इनके सर्वसाधारण अपने पढ़नेकी सामान्य शक्ति और रुचिको अपने व्यापार-सम्बन्धी विषयके परे नहीं लगाते थे। अब पूर्व अभ्यासकी यह सङ्कीर्णता उनमें प्रायः निर्मूल हो गयी है। बड़ेबाजारमें रहनेवाले विद्वान् ब्राह्मणोंमें एक पण्डित देवीसहायको छोड़कर और किसीसे तब तक मेरी घनिष्ठता नहीं हुई थी। उनके यहां मैं कभी-कभी जाता था। वे संवाद-पत्र पढ़ते थे। किन्तु उनके विद्यार्थियोंमेंसे कोई भी अपने अध्यापकके उस गुणका न तो अनुकरण करता और न करनेपर सम्मत ही कराया जा सकता था। मारवाड़ी वणिकोंमें बाबू रूड़मल गोयनका आदर्श विद्याविलासी थे तथा केवल मारवाड़ी ही नहीं, पर मैथिली, बङ्गाली प्रभृति पण्डितोंको भी अक्सर अपने घरपर बुलाकर उनका सत्सङ्ग परम आग्रह और आनन्दके साथ करते थे। उनके यहां समवेत होनेवाले ब्राह्मणोंसे यदि मैं हिन्दी संवाद-पत्र और पुस्तक पढ़नेकी आवश्यकतापर कुछ कहता, तो वे ऐसे मुसकराते कि जैसे मैंने कोई हंसनेकी ही बात कही हो; अपने श्रद्धेय रूड़मलजीको मेरा समर्थन करते पाकर वे चकराते थे। उन दिनों कलकत्ता-बड़ेबाजारके मुख्य व्यापारी खत्री और मारवाड़ी थे, जिनमेंसे प्रथमके हाथसे अधिक आयका व्यापार फिसल रहा था और दूसरे उनके मुनाफेके कामोंको अपना रहे थे। बम्बई और कलकत्तेके व्यापारमें एक मार्केका अन्तर है। बम्बईमें मुख्य देश-उपज रुईकी विदेश-रफ्तनी स्थानीय भाटिये, काठियावाड़ी, गुजराती, बोहरे आदिकी प्रमुखतासे प्रायः होती है तथा गोरोंको अक्सर उनके पेटेके व्यापारसे प्रसन्न रहना पड़ता है। विदेशी वस्त्रादिकी आम-दनीमें भी देशीय व्यापारियोंकी कुछ-कुछ प्रधानता है। किन्तु कलकत्तेमें मुख्य देश-उपज पाट (जूट) प्रभृतिकी रफ्तनी और विदेशी वस्त्रादिकी आमदनी दोनों ही प्रकारके व्यापारमें गोरोंकी निर्द्वन्द्व प्रमुखता है; देशवासी व्यापारियोंको उनके पेटेके व्यापारकी खुरचनसे ही सन्तोष मान लेना पड़ता है। कलकत्तेमें गोरोंके पेटेके इस व्यापारमें पहले बङ्गाली व्यापा-रियोंकी प्रमुखता थी, जिनको नीचा दिखाकर खत्री उस व्यापारमें बढ़े और जिस समयकी बात लिखी जा रही है, उस समय मारवाड़ी दिन-दूनी रात-चौगुनी वृद्धिके साथ उस व्यापारमें खत्रियोंके स्थानापन्न हो रहे थे। अतः खत्री अपने इस भाग्य-फेरके हेतु हिन्दी पढ़नेमें मन नहीं लगा सकते थे और विजयी मारवाड़ी अपने व्यापार-समरके समु-द्योगमें ऐसे तल्लीन थे कि हिन्दी पढ़नेकी शक्ति और रुचि प्राप्त करनेका अवकाश नहीं निकाल सकते थे। वैसे समयमें भी मैं ऐसे कई प्रख्यात पुरुषोंके सङ्गका सम्मान कभी-कभी लाभ करता था, जो संवाद-पत्र पढ़वाकर सुनते थे। वे थे, राजा शिवबक्ष बागला, बाबू सूरजमल झुनझुनुवाला, बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भगवानदास बागला, बाबू माधोप्रसाद हलवासिया, बाबू हरिराम गोयनका प्रभृति, जिनके शुभ नाम आगे लुभावनी उपाधियोंसे जटित हुए थे। और खत्रियोंमें जो हिन्दी संवाद-पत्रके पाठक थे, उनमेंसे एक डाक्टर एस० के० बर्मनको छोड़ और किसी भी प्रसिद्ध नामके पुरुषका मैं परिचित न था। हां, मुर्शिदाबादके कई मेरे सुपरिचित नामी जैनी धनवान कलकत्तेके स्ववास-भवनमें हिन्दी संवाद-पत्रके पाठक और श्रोता थे, जिनके नामोंका स्मरण मैं इस समय अपनी स्मृति-शक्तिको बहुत टो-टटोलकर भी मनमें नहीं ला सकता। यही तात्कालिक कलकत्तेके हिन्दी अनुरागका सिंहावलोकन है।

भारतमित्रमें मेरे रहनेके समकालमें कलकत्तेसे और एक हिन्दी पत्र "आर्य्यावर्त्त" प्रकाशित होता था, जिसके मिलनसार सम्पादक पण्डित रुद्रदत्त शर्मासे मैं परिचित हो चुका था, पर मैनेजर पण्डित क्षेत्रपाल शर्माके केवल नामसे ही विदित था। सुदीर्घकालके अनन्तर जब मेरा क्षेत्रपालजीसे प्रथम प्रीतिका सम्बन्ध स्थापित हुआ, तो उनकी आर्थिक स्थितिका शुभ परिवर्तन हुआ था। वे मथुरामें स्वगठित फ्रेण्ड एण्ड कम्पनीके स्वामी-रूपसे निज व्यवसायोपार्जित धनका और भी लाभजनक व्यापार-विस्तारमें प्रयोग करते थे। अतः आर्य्यावर्त्तकी परिस्थिति-सम्बन्धी जो थोड़ी-सी जानकारी मुझे प्राप्त हुई, वह केवल रुद्रदत्तजीकी बातचीतसे ही हुई। कौतूहल-निवृत्तिके शिष्टाचार-प्रतिकूल प्रश्नके बिना ही रुद्रदत्तजीने स्वेच्छावश वह बात मेरे कर्णगोचर की। इस बातको लिखनेकी मुझे इसलिए आवश्यकता हो रही है कि रुद्रदत्तजीसे उस भेदको जान जो विचार मुझमें उठा, उससे पत्र-सम्पादन-विषयक मेरी मतिगतिका कायापलट हो गया। इसके पूर्व तक मेरा निर्णय था कि संवाद-पत्रमें सामयिक संवादोंको रोचकरीतिसे देनेके अतिरिक्त सम्पादकीय सम्मति और लेख राजनीतिक चर्चाके होने चाहिए। दैनिक हिन्दोस्थान पत्रका सम्पादन आरम्भ करनेके प्रथम दिनसे मैं यही करता आया था। केवल कभी-कभी भारतीय इतिहासकी रोमाञ्चकर घटनायें, जातीय धन-सम्पत्ति-वृद्धिके उपाय और स्वाभाविक सौन्दर्य्यका साहित्यिक वर्णन देना मैं इसलिए आवश्यक समझता था कि राजनीतिकी लगातार चर्चासे ऊबते हुए चित्तका उनसे मुख्यतः विनोदन हो और अन्यान्य विषयोंका भी रसास्वादन हो। किन्तु रुद्रदत्तजीने बात ही बातमें आर्य्यावर्त्त-विषयक यह भेद खोला, कि उसमें केवल आर्य-समाजकी बातें ही इसलिए भरी जाती हैं, कि इतर साधारण पाठकोंके बिना भी केवल आर्य-समाजी सङ्घशक्ति और ग्राहकोंसे ही उसके व्यय-निर्वाहकी अड़चन नहीं होती। सम्भव है कि मुझे आर्य-समाजी बनानेके लिए ही रुद्रदत्तजीने मुझसे वह बात कही होगी। पर फल उलटा हुआ। अपने इस कथनसे उन्होंने मेरी छातीमें अपूर्व भावना भर दी। वह यह थी कि कतिपय सहस्र नर-नारियोंका एक नवीन धर्म-सम्प्रदाय जब स्वधर्म-चर्चाकी धूमसे अपनेमें उस प्रकार जोशकी बिजली भरनेमें समर्थ हुआ है, तो क्या तेरह करोड़ हिन्दी-भाषियोंके मुख्यतम भागमें उनके स्वधर्मकी दामिनी-द्युति चमकाते रहनेसे असंख्य हिन्दी पाठक नहीं बनाये जा सकते? मेरी आत्मासे उत्तर उठने लगा कि इसकी पूरी सम्भावना है। मैं धीर विवेचनके साथ हिन्दी पाठकोंकी संख्या बढ़ानेके लिए स्वधर्मका जोश हिन्दुओंमें बढ़ानेपर कमर कसकर खड़ा हुआ।

अपने इस सङ्कल्पका लेखन-कर्म मैंने प्रथम भारतमित्रमें ही आरम्भ किया, जिसका फल मेरे अपने लिए क्षतिजनक होनेपर भी हिन्दी पाठकोंकी वृद्धिके विषयमें ऐसा सन्तोषजनक आभास-प्रद हुआ कि मेरी उत्तेजनाका पार न रहा। असंख्य हिन्दी पाठक पानेका सफल बीज मैं हिन्दू-धर्मान्दोलनमें ही देखने लगा। स्यालदा स्टेशनसे गङ्गाजीके पुल तककी चौड़ी सड़क हैरिसन रोड उन दिनों बन रही थी। बड़ेबाजारके मध्यस्थित एक शिवमन्दिरका ढहा दिया जाना स्थिर हुआ था। मैंने किचकिचाकर भारतमित्रमें इसका विरोध किया। मन्दिरपर वार होना तो बन्द नहीं किया जा सका; पर उस तेजस्वी विरोधसे आकर्षित होकर मारवाड़ी ब्राह्मणोंका एक बड़ा दल ग्राहकोंमें नाम लिखा गया तथा नकद बिक्रीके लिए भी उस संख्याकी अतिरिक्त प्रतियां छापनी पड़ीं। अपने निर्णयकी हाथोंहाथ इस सफलताको पाकर जब मैं आत्म-प्रसादके सातवें स्वर्गपर आरूढ़ हो रहा था तो भारतमित्रके मैनेजिङ्ग डिरेक्टर बाबू जगन्नाथदास खन्नाने मुझे अपने व्यवसाय-कार्यालयमें बुलवाकर कोसना आरम्भ किया। आप म्युनिसिपल कमिश्नर थे और आप ही के प्रबन्धाधीन पत्रमें चेयरमैन और कमिश्नरोंके निर्णयके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विरुद्ध हिन्दुओंको भड़कानेका लेख प्रकाशित होनेसे बड़े लजवाये गये थे तथा प्रतिज्ञा कर आये थे कि भारतमित्रके दूसरे अङ्कमें लेखका खण्डन करायेंगे। मुझे खण्डन करनेसे दृढ़ताके साथ नटते देखकर आपके क्रोधका पार न रहा। मैं समझा, भारतमित्रसे मेरी रोटी कमानेकी इतिश्री हो गयी। इतिश्री हुई भी, पर तत्काल ही नहीं, लगभग चार मास बाद। लेखवाली घटना थी, भादों महीनेकी; मुझे भारतमित्रसे विदा होना पड़ा नवीन अंगरेजी वर्षका आरम्भ होते ही। अपनी गोष्ठीमें और अपने बड़ेके आगे अपमान झेलकर भी अपने ही शासनाधीन पत्रमें जब डाइरेक्टर साहबकी दाल न गली, तो अवश्य ही उन्होंने मेरे ऊपर सहसा कृपालु होकर मेरी अन्तिम चार मासकी अवस्थिति मञ्जूर न की थी। किन्तु उन दिनों पत्र-सम्पादक बाजारमें जाते ही, कुंजड़ेके ढेरमें रखे हुए कद्दुओंकी तरह, चाहते ही नहीं मिलते थे और इसके उपरान्त दूसरे डिरेक्टरोंकी हिन्दू आत्मा म्युनिसिपैलिटीके आड़में नहीं भुनी गयी थी। आगे जब सम्पादक मिला तो मेरे लिए डिरेक्टरोंकी सिफारिशी वकालत यदि हुई हो, तो मुझपर कुपित प्रमुख साहबके आगे फिसल गयी। भारतमित्रसे छूटकर मुझे तात्कालिक सौभाग्यवश निराश्रय न होना पड़ा। पर जिस आश्रयको पाकर मेरी विकरालसे विकराल पूर्व विपत्ति टल गयी थी और जिसमें रहकर मैं अपनी बड़ी लालसाकी पूर्ति करनेमें निःशङ्क रीतिसे समर्थ होता आया था, उसको मैं निर्जल नेत्रोंसे न छोड़ सका।

---

# रूसकी दुर्धर्ष समर-शक्ति

डा० ए० पी० अग्निहोत्री, पी० एच-डी०

वर्तमान समयमें बोलशेविक रूस यद्यपि पहले-जैसा पाश्चात्य राष्ट्रोंके बीच अपांक्तेय नहीं रह गया है, फिर भी उसकी गूढ़ राजनीति एवं समाज-नीति अन्यान्य राष्ट्रोंके लिए एक रहस्य-जैसी बनी हुई है। सोवियट रूसकी बढ़ती हुई शक्तिको साम्राज्यवादी भयकी दृष्टिसे देखते हैं। उसके आदर्शकी सफलतामें उन्हें अपना अस्तित्व सङ्कटापन्न दीखता है। यदि सोवियट शक्ति दुर्धर्ष और दुर्दमनीय हो उठे, तो कौन कह सकता है कि उसके साम्यवादमूलक आदर्शके तरङ्गाघातसे साम्राज्यवादी राष्ट्र किस प्रकार आत्मरक्षा कर सकेंगे। रूस भी इस बातको भली भांति जानता है कि यूरोपके राष्ट्र प्रकाश्यमें चाहे कितनी ही निरपेक्षिता दिखावें, किन्तु भीतर ही भीतर वे किस प्रकार उसे सन्देह एवं अविश्वासकी दृष्टिसे देखते हैं और अपने मनमें उसके अभिनव आदर्शके विफल होनेकी कामना धारण करते हैं। किन्तु रूस इस बातको महसूस करता है कि विचार-जगत्में उसने जिस विप्लवधाराकी सृष्टि की है उसकी प्रवहमान गतिको अवरुद्ध करनेकी शक्ति किसीमें नहीं है। उसे यह भी विश्वास है कि यदि वह अपने आदर्शको अपने देशमें सफल रूपसे चरितार्थ कर दिखावेगा तो उस आदर्शका अन्यान्य देशोंमें भी प्रसार होना अवश्यम्भावी है। अतएव अपने आदर्शकी रक्षा और सफलताके लिए वह सबसे पहले अपनेको एक दुर्धर्ष शक्तिशाली राष्ट्रके रूपमें परिणत करना चाहता है जिससे वह निश्चिन्त होकर अपने आदर्शके अनुसार कार्य कर सके और उसे पूर्णरूपसे सफल कर दिखावे।

यही कारण है कि अपनी सामरिक शक्तिकी वृद्धि करने और उसे सुदृढ़ बनानेके लिए रूसकी सोवियट सरकार इधर कुछ समयसे विशेष ध्यान देने लगी है। सन् १९२५ में रूसकी सेनाका नवीन रूपमें पुनर्गठन हुआ। अनिवार्य सैनिक शिक्षा इस समय भी रूसमें प्रचलित है। १९ वर्षकी अवस्थामें देशके प्रत्येक व्यक्तिको सैनिक शिक्षा आरम्भ करनी होती है। प्रतिवर्ष लगभग १२ लाख मनुष्य सनिक शिक्षाके लिए भर्ती होते हैं। रूसकी विशाल सेनाका सङ्केत अभी हालमें जर्मनीकी एक घोषणामें किया गया है। जर्मनीमें अनिवार्य सैनिक शिक्षाकी घोषणा होनेके बाद हिटलरने वर्सैलीजकी सन्धिकी शर्तोंका उल्लङ्घन करनेके सम्बन्धमें अपने भाषणमें जो कैफियत दी थी उसमें उसने स्पष्ट ही कहा था कि रूसने अपनी सेनामें इतनी वृद्धि कर ली है कि जर्मनी उससे उद्विग्न हो उठा है और इससे यूरोपकी शान्ति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रक्षामें विघ्न उपस्थित हो गया है। सुदूर प्राच्यमें रूसकी सेनापर जनरल ब्लूचरने कुछ समय पूर्व जापानकी तरफ इशारा करके स्पर्द्धा-भावसे जो कुछ कहा था, उससे भी यह प्रकट होता था कि साम्राज्यवादियोंको ध्वंस करनेकी इच्छा रूसमें अब भी वर्तमान है।

रूसने इतने दिनों तक अपनी सैन्यवाहिनी के वास्तविक स्वरूपको गोपनीय रखा था। राष्ट्र-सङ्घमें उसने यह प्रकट किया था कि रूसी सेनाकी संख्या पांच लाख बासठ हजार है, किन्तु अभी हालमें कुछ समय पहले रूसके सहकारी देश-रक्षा-सचिव मोशिये तुखाशेवस्की ने सोवियट कांग्रेसमें एक वक्तव्य देते हुए स्वीकार किया था कि लाल फौजकी संख्या ९ लाख ४० हजार है। उन्होंने यह भी कहा था कि सन् १९३३ में सामरिक व्यय जितना था उसकी अपेक्षा सन् १९३४ में ३० सैकड़े बढ़ गया है। सन् १९३४ में सामरिक विभागके खर्चके लिए ९० करोड़ पौण्डका बजट तैयार किया गया था। अन्तमें उन्होंने कहा—"रूसके विरुद्ध शीघ्रताके साथ युद्धका आयोजन किया जा रहा है। हम लोग इस बातको जानते हैं, इसलिए पहलेसे ही सतर्क हैं। शत्रुगण आवें। वोरोसिलके नेतृत्वमें हम लोग प्रस्तुत हैं।" मो० तुखाशेवस्कीकी इस घोषणापर उपस्थित जन-मण्डलीने हर्षध्वनि की। ९ लाख ४० हजारकी उक्त संख्यामें सीमान्त-रक्षक सैन्यदल, टेरीटोरियल सैन्यदल, शिक्षार्थी सैन्यदल तथा अर्द्धसामरिक "ओसोवियाखिम" सैन्यदल सम्मिलित नहीं हैं। मो० तुखाशेवस्कीने कहा कि गत ४ वर्षोंमें छोटे टैङ्कोंकी संख्यामें लगभग ९ गुनी वृद्धि हुई है और मध्यम आकारके टैङ्कोंकी संख्यामें भी उतनी ही वृद्धि हुई है। इन सब टैङ्कोंकी गतिमें भी ६ गुनी वृद्धि हुई है। बड़ी-बड़ी

रूसके बालिका-विद्यालयोंमें छात्राओंको बन्दूक चलानेकी शिक्षा दी जा रही है।

मशीनगनोंकी संख्यामें ३ गुनीसे कुछ अधिक वृद्धि हुई है और उनकी आघात-शक्ति भी पहलेकी अपेक्षा बहुत कुछ बढ़ गयी है।

रूसकी आकाश-सेना भी काफी बढ़ी है। अमेरिका और फ्रान्सके बाद ही इसका नम्बर है। आकाशसे बमकी वर्षा करनेवाले वायुयान तो जितने अच्छे रूसके पास हैं उतने यूरोपके और किसी अन्य राष्ट्रके पास नहीं। वायुयान तैयार करनेके रूसमें जो कारखाने हैं वे भी बड़े ही उन्नत ढङ्गके हैं। उनमें अच्छीसे अच्छी मशीनें तैयार होती हैं और रूसी लोग इस काममें मनोयोग भी खूब दे रहे हैं। रूसियों-जैसे निपुण उड़ाके यूरोपके और किसी देशमें नहीं होते। मो० तुखाशेवस्कीने अपनी घोषणामें कहा था कि आकाश-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सेनामें लगभग सवा चार गुनी वृद्धि हुई है और पश्चादनुसरी और बम बरसानेवाले वायुयानोंकी गति दुगुनी हो गयी है। वयुायानोंपर रखी जानेवाली मशीनगनोंकी संख्या ९ गुनी बढ़ायी गयी है। नौ-सेनाके सम्बन्धमें मो० तुखाशेवस्कीने कहा कि सन् १९३१ से पनडुब्बे जहाजोंकी संख्या लगभग सवा पांच गुनी और लघु टारपीडो जहाजोंकी संख्या लगभग पांच गुनी बढ़ गयी है। उन्होंने यह भी कहा कि गत वर्ष कंकरीट-निर्मित प्राचीर और किलेबन्दी द्वारा पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओंमें समस्त सीमान्त अञ्चलको सुरक्षित कर दिया गया है। रूसकी पूर्व और पश्चिम सीमाके बीचमें बहुत बड़ा व्यवधान है जिससे युद्धकालमें एक दिशासे दूसरी दिशामें सैन्यदल स्थानान्तरित करना कार्यतः सम्भव नहीं होता है। इसलिए स्थायी सेनामें इतनी वृद्धि की गयी है और बहुत कठिनाइयां सहकर भी सीमान्त प्रदेशके दुर्गोंमें उपयुक्त संख्यामें सैन्यदल रखनेकी व्यवस्था की गयी है। मो० तुखाशेवस्कीने यह भी कहा कि लाल फौजको यथासम्भव गतिशील बनानेकी चेष्टा की गयी है। टैङ्कोंकी संख्यामें जो इतनी वृद्धि की गयी, इसका एक खास कारण यही है। कई वर्ष पहलेकी तुलनामें इस समय सेनाकी गतिमें जो वृद्धि की गयी है उसे हम विद्युत्-गति कह सकते हैं। अपने भाषणके उपसंहारमें आपने कहा कि रूसकी लाल फौज शान्ति-वाहिनी है। दूसरेपर आक्रमण करना उसका उद्देश्य नहीं है।

मास्कोके पुश्किन स्क्वायरमें सामरिक वायुयानोंका प्रदर्शन।

मो० तुखाशेवस्कीकी इस घोषणासे यूरोपके राष्ट्रोंमें रूसकी लाल सेनाको लेकर काफी दिलचस्पी पैदा हो गयी है। मो० तुखाशेवस्कीके कथनानुसार रूसकी स्थायी सेनाकी संख्या ९ लाख ४० हजार है। जारके समयमें शाही फौजकी संख्या १३ लाख थी। सोवियट रूस भी अपनी लाल फौजकी संख्या बढ़ाकर १३ लाख तक ले जाना चाहता है। इस ९ लाख ४० हजारकी सेनामें वे ही सब रंगरूट शामिल हैं जो दो वर्ष तक सैन्य-शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। आरम्भमें जब लाल फौजका गठन हो रहा था और यूरोपके राष्ट्र सैनिक पद्धतिके सम्बन्धमें वादविवाद कर रहे थे तथा पेशेवर फौज, स्थायी सेना या अल्पकालीन सेनाके गुणावगुणपर विचार कर रहे थे, उस समय बोलशेविकोंने इन तीनों पद्धतियोंको एक साथ सम्मिलित करके अपने सैन्यदलका सङ्गठन किया था।

इस स्थायी सेनामें वे ही रंगरूट भर्ती किये जाते हैं जो सर्वोत्तम होते हैं और जो स्थल-सेनाके साथ दो वर्ष तक अनिवार्य सैनिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। पेशेवर सैनिकोंके सम्मिलित होनेसे इस सेनाकी शक्ति बहुत बढ़ जाती है। इसके अलावा टेरीटोरियल सेनामें और रंगरूट भर्ती होते हैं जो एक प्रकारका स्वदेश-रक्षक सैन्यदल है। इस सेनामें कुल ६० महीने तक काम करना पड़ता है जिसमें ८ महीने तक लगातार सशस्त्र काम करना पड़ता है। इस सेनामें लघु, स्थायी सेनापति और उनके कर्मचारी-मण्डल होते हैं। अफसर लोग नागरिकोंमेंसे बारी-बारीसे नियुक्त किये जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि शिक्षित स्वदेश-रक्षक सैन्यदलकी संख्या स्थायी सेनाकी अपेक्षा कई गुनी अधिक बढ़ जाती है। रूसकी इस सेनामें किसानोंकी संख्या भी काफी है। सोवियट रूसने तुर्किस्तान, उत्तर काकेशश और जरायमपेशा जातियोंमें भी अनिवार्य सैनिक शिक्षा जारी कर दी है। जारके समयमें यह बात कभी नहीं हुई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



यद्यपि इन जातियोंने अभी तक पूर्ण सैन्य-शिक्षा नहीं प्राप्त की है, किन्तु इन सब प्रदेशोंकी आबादी लगभग एक करोड़ बीस लाख है और इनमेंसे काफी आदमी फौजके लिए मिल सकते हैं।

इस बातके लिए भी प्रयत्न हो रहे हैं कि देश-रक्षा-सैन्य-दलमें अधिकसे अधिक रंगरूट भर्ती हों। अनिवार्य सैनिक सेवाके दो वर्ष पूर्व पुरुषोंकी सैनिक शिक्षा सप्ताहमें कुछ घण्टोंसे आरम्भ होती है। देशकी जनताका बहुत बड़ा भाग "ओसोवियाखिम" नामक एक महती सैनिक संस्थासे सम्बन्ध रखता है। इस संस्थाके कई लाख सदस्य हैं। यह

वायुयान-चालक रूसी युवक—जो वायुयान-विद्यामें बड़े ही निपुण होते हैं।

विशाल सङ्गठन—जिसमें स्त्रियां भी शामिल हैं—क्रियाशील सैनिक अफसरों द्वारा परिचालित होता है और युद्ध-कौशल एवं समर-विज्ञानके प्रत्येक विभागकी शिक्षा इसमें दी जाती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने इच्छानुसार, जिस विषयमें उसे रुचि होती है, अध्ययन करता है। उड़ते हुए वायुयानसे पाराशूट द्वारा नीचे उतरनेकी शिक्षा भी दी जाती है। नदियों और बन्दरोंपर बने हुए स्टेशनोंमें नौविद्याकी शिक्षा दी जाती है। युद्धकी खास-खास बातोंके सम्बन्धमें, रासायनिक द्रव्य तथा विषाक्त गैस द्वारा आक्रमण करने तथा उन आक्रमणोंसे आत्म-रक्षा करनेके सम्बन्धमें व्याख्यान दिये जाते और पाठ्यक्रम स्थिर किये जाते हैं। हरएक स्थानमें बन्दूक चलानेका अभ्यास करनेके लिए क्लब बने हुए हैं। इसके सिवा घोड़ेकी सवारीकी शिक्षाके लिए स्कूल और फौजी कुत्तोंकी शिक्षाके लिए क्लब भी स्थापित हैं। सारांश यह कि उच्च सैनिक शिक्षासे लेकर कबूतरोंकी शिक्षा तकके लिए समुचित व्यवस्था की गयी है।

ओसोवियाखिमके कई लाख सदस्य हैं। इसके कार्यके साथ जनताके व्यायाम-सम्बन्धी जीवनका भी सम्बन्ध है। जनताके स्वास्थ्य-सुधारके लिए जो समिति है उसपर सेना-विभागका बहुत जबर्दस्त प्रभाव पड़ता है। एक और संस्था है जिसकी सदस्यायें सहस्रों स्त्रियां हैं। इन्हें घायलोंकी सेवा-शुश्रूषा करनेकी शिक्षा दी जाती है जिससे भविष्यमें देशके ऊपर युद्धका सङ्कट उपस्थित होनेपर वे काम आ सकें। इस प्रकार स्थायी सेनाके अलावा लाखों ऐसे शिक्षित सैनिक किसी-न-किसी संस्थासे सम्बद्ध रहते हैं जो गाढ़े समयमें देशकी रक्षाके लिए तैयार हो सकें। यद्यपि देशकी सम्पूर्ण जनताको एक ही प्रकारकी सैनिक शिक्षा नहीं दी जाती, किन्तु सोवियट रूसने जारशाही रूसकी तुलनामें जनताको ऊंचे दर्जेकी सामरिक शिक्षा प्रदान की है। क्योंकि पुराने जमानेमें रंगरूटोंमें सिर्फ एक-तिहाई सैनिक सेवाके उपयुक्त समझे जाते थे और बाकी लोगोंको किसी प्रकारकी सैनिक शिक्षा नहीं मिलती थी।

लाल फौजके प्रधान कार्यालयके बरामदेमें प्राचीन कालके वीर पुरुषोंके चित्र भरे हुए हैं। इस प्रकारके वीर पुरुषोंमें विशेषतः विद्रोही सेनापतियों और विप्लवी नेताओंके ही चित्र हैं। स्पार्टेकस, क्रामवेल और उसके सेनापति, फ्रान्सीसी राज्यक्रान्तिके सेनापति, सन् १८४८में हङ्गरीमें जो राज-विद्रोह हुआ था उसके नेताओंके चित्र, सन् १८३० और



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१८६२के पोलैण्डके विप्लवी नेताओंके चित्र और गेरीबाल्डीके चित्र प्रकाश्यरूपमें टंगे हुए हैं।

रूसकी लाल सेनाके आधार-स्वरूप जो मौलिक भावना है वह सैनिक आक्रमणशीलताकी भावना द्वारा पूर्णरूपसे आच्छन्न है। इसके साथ यह भावना भी काम कर रही है कि सङ्कट-कालमें सब नेताओंको यह जानना चाहिए कि व्यक्तिगतरूपमें केवल सामारक अर्थमें ही नहीं, बल्कि

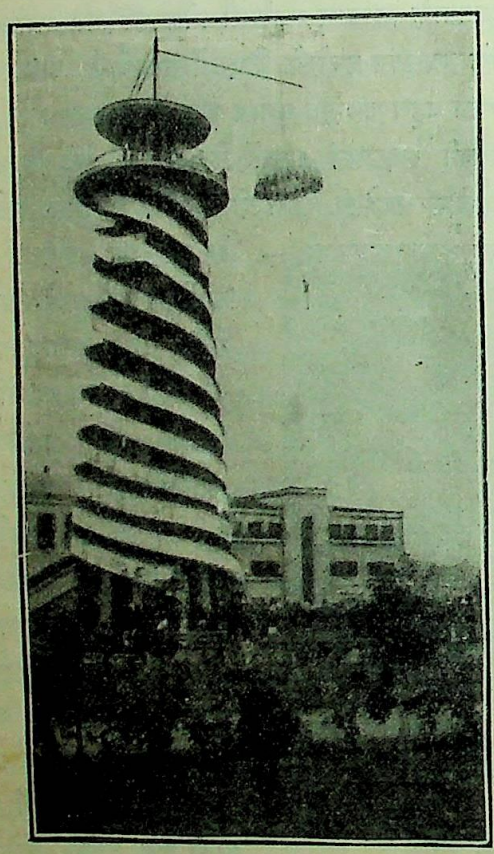

रूसमें यह सर्वोच्च स्तम्भ पाराशूटके सहारे कूदनेके लिए बनाया गया है।

अपनेको वर्तमान राजनीतिक स्थितिके अनुकूल बनानेमें किस प्रकार कार्य किया जाता है। सोवियट रूस युद्धके बौद्धिक आधारपर गम्भीर चिन्ताके साथ विचार करता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि जनताको विशुद्ध सैनिक शिक्षा देने तथा युद्ध-कौशलकी विशेष बातोंके लिए तैयारी करनेके साथ-साथ भावी सैनिकोंके मनको जीतनेकी ओर विशेषरूपसे ध्यान दिया जाता है और इस कार्यको एक खास महत्त्व प्रदान किया जाता है।

गत वर्ष मास्कोके रेड स्क्वायरमें सोवियट सेनाका एक विराट् प्रदर्शन किया गया था। इस अवसरपर मेजर राल्फ रेनाल्डस नामक एक अंगरेज मास्कोमें उपस्थित थे और उन्होंने इस विराट् सैन्य-प्रदर्शनको अपनी आंखों देखा था। इस सम्बन्धमें उन्होंने मार्केका वर्णन किया है। मेजर रेनाल्डसने लिखा है :—"मैंने मास्कोके रेड स्क्वायरमें सेनाका जो प्रदर्शन देखा वह जनसाधारणके लिए जिस प्रकार गर्वका विषय है, सामरिक दृश्यके हिसाबसे उसी प्रकार विस्मयजनक भी है। उस प्रदर्शनके समय 'लाल' सेनाकी कवायद और कौशल देखकर मैं सैन्य-सञ्चालनकी भूरि-भूरि प्रशंसा किये बिना नहीं रह सका। १० लाखसे भी अधिक सैनिक अभिवादन-स्तम्भके सामनेसे मार्च कर गये, किन्तु कहीं कोई साधारण गोलमाल भी नहीं दीख पड़ा। सोवियट रूसके साधारण दैनिक जीवनसे ही पता चलता है कि उनकी सामरिक प्रवृत्ति कितनी प्रखर हो उठी है। रास्तेसे कुछ दूर हटकर देखा कि सैन्यदलके लोग, खाकी वर्दी पहने हुए तरुण कम्यूनिस्ट या सशस्त्र श्रमिक नियमानुसार मार्च करते हुए चल रहे हैं। "युद्ध, प्राणोंकी बाजी लगाकर युद्ध" यही नारे वे बुलन्द कर रहे थे। ऐसा एक भी पुस्तकालय नहीं जहां युद्धविद्या-सम्बन्धी पुस्तकें इस तरह सजाकर न रखी गयी हों जो सदा लोगोंके सामने पड़ती रहें। रास्तों, कारखानों और अदालतोंकी दीवारोंपर बड़े-बड़े पोस्टर चिपकाये रहते हैं जिनमें श्रमिक और सैनिक गैस, टैङ्क और हवाई जहाजके बीच पास ही पास युद्ध करते हुए दिखाये जाते हैं। प्रत्येक कारखाना और प्रत्येक गांवमें एक राइफल क्लब है। वायुयान-विद्यामें रूसने जैसी दक्षता प्राप्त की है उससे अनुमान होता है कि वह संसारके राष्ट्रोंमें शीर्ष स्थान ग्रहण करनेके लिए अग्रसर हो रहा है। दो दर्शकोंका—जिन्होंने ५० वर्ष तक सेना और नौ-सेनामें काम किया है—यह दृढ़ विश्वास है कि यूरोपकी अन्य किसी भी जातिकी अपेक्षा रूस आज अधिक प्रकाश्यभावमें बड़ी तेजीके साथ भावी युद्धके लिए उद्योगका आयोजन कर रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रुपयेके मूल्यकी अस्थिरता

श्री शोभालाल गुप्त

आम लोगोंकी यह धारणा है कि यद्यपि चीजोंकी कीमत घटती-बढ़ती रहती है, किन्तु रुपयेका मूल्य सदा-सर्वदा एक-सा रहता है। वे यह मान बैठे हैं कि जब चीजें अधिक परिमाणमें बनती हैं तो सस्ती हो जाती हैं और जब उनका अभाव होता है तो महंगी हो जाती हैं। रुपयेमें कोई परिवर्तन नहीं होता। यदि हम थोड़ा भी विचारसे काम लें तो हमको पता लग जायगा कि यह धारणा कितनी गलत है और उसके कारण कितना भारी अनर्थ हो रहा है। यह धारणा ठीक वैसी ही है जैसा कि यह ख्याल कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य उसके चारों ओर चक्कर लगाता है। रुपयेके सम्बन्धमें हमने जो कल्पना बना रखी है, वह गलत है।

वस्तुस्थिति यह है कि ब्रिटिश पौण्ड, फ्रान्सीसी फ्रांङ्क, इटालियन लीरा, जर्मन मार्क, अमेरिकन डालर, भारतीय रुपया सब अस्थिर चलन (curency) हैं, उनका मूल्य घटता-बढ़ता रहता है। किन्तु हरएक देशके लोग यह समझते हैं कि हमारे देशका सिक्का स्थिर है और अन्य देशके सिक्कोंके मूल्यमें हेर-फेर होता रहता है। गत महायुद्धकी समाप्तिके पश्चात् अमेरिकावाले यह जानते थे कि जर्मन मार्कका भाव गिर गया है, किन्तु स्वयं जर्मनवासियोंमेंसे बहुत कमको इसका पता था। वहांके लोग यह तो जानते थे कि चीजोंका भाव बढ़ गया है, जीवन-निर्वाहके लिए अधिक खर्च करना पड़ता है, किन्तु उनकी समझमें यह बात न आती थी कि मार्कके मूल्यके साथ भी उसका कुछ सम्बन्ध हो सकता है।

अमेरिकामें युद्धके पहले सन् १९१३ में ७० सेण्ट देकर जितनी चीजें खरीदी जा सकती थीं, उतनी ही चीजें खरीदनेके लिए अब लगभग १०० सेण्ट देने पड़ते हैं। दूसरे शब्दोंमें आजका डालर युद्धके पहलेके लगभग ७० सेण्टके बराबर है। महायुद्धके पश्चात् जर्मन मार्कका भाव इतना गिरा कि उसका आधा मूल्य रह गया जिसके फलस्वरूप चीजें बहुत महंगी हो गयीं। भारतवर्षको ही ले लीजिये। हमारे बड़े-बूढ़े कहा करते हैं कि उन्होंने एक रुपयेका एक मन नाज बिकते देखा है। किन्तु आज एक मन नाज खरीदनेके लिए चार रुपये देने पड़ते हैं। इस अन्तरका एक बड़ा भारी कारण यह है कि रुपयेकी खरीदनेकी शक्ति कम हो गयी है, उसका मूल्य घट गया है।

आप किसी कम्पनीके शेयर खरीदते हैं, बैङ्कमें या डाकखानेमें सूदपर रुपया जमा कराते हैं। पहले आपको ४) रु० सैकड़ाके हिसाबसे सूद मिलता है। कुछ समय बाद यह सूद ६) सैकड़ा हो जाता है। आप समझने लगते हैं कि हमें दो सैकड़ा सूद अधिक मिलने लगा, हमारे मुनाफेमें वृद्धि हो गयी; किन्तु यदि रुपयेकी खरीदनेकी शक्ति घट गयी, अर्थात् चीजें महंगी मिलने लगीं, तो मुनाफा तो दूर रहा, आपके मूलधनमें भी घटी आ जायगी। जो लोग समझते हैं कि किसी कम्पनीके शेयर खरीदकर अथवा किसी बैङ्कमें या सरकारी बौण्डमें अपना रुपया लगाकर उसे सुरक्षित रखा जा सकता है, वे यदि इस पहलूपर दृष्टि दौड़ायेंगे तो उनको सहज ही मालूम हो जायगा कि उनकी धारणा कितनी भ्रान्तिपूर्ण है।

किसी सिक्केका वजन निश्चित कर देनेसे ही वह स्थिर नहीं हो जाता। सिक्केको स्थिर करना हो तो हमको उसकी क्रय-शक्ति स्थिर करनी होगी। हम किसी सिक्केका वजनके लिहाजसे नहीं, मूल्यके लिहाजसे प्रयोग करते हैं। तोलनेके लिए हम तोला, छटांक, सेरका उपयोग करते हैं। रुपयोंका उपयोग हम चीजें खरीदनेमें करते हैं। यह हो सकता है कि एक रुपयेमें जितनी चांदी रखी गयी हो, उससे उतनी ही चांदी खरीद ली जाय। किन्तु रुपयेके वजनको उसके मूल्यके साथ मिला देना ठीक वैसा ही होगा, जैसा कि निश्चित वजनके गजको निश्चित लम्बाईका गज मान लेना। दूसरे शब्दोंमें जो गज ३६ इञ्च लम्बा हो और जिसका वजन १० तोला हो, उसका उतना ही वजन रखते हुए भी लम्बाईमें कमी या अधिकता की जा सकती है। स्पष्ट है कि ऐसा गज कपड़ा नापनेके काममें न आ सकेगा। चूंकि एक रुपया एक तोलेके बराबर होता है, अतः उससे आप शक्कर, सोना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अथवा ऐसा ही अन्य कोई पदार्थ तोल सकते हैं, किन्तु उससे आप चीजोंके मूल्यका नाप नहीं कर सकते।

इस प्रकार हमने यह तो देख लिया कि विभिन्न देशोंके सिक्कोंके मूल्यमें घटा-बढ़ी होती है, किन्तु अब प्रश्न यह है, घटा-बढ़ी कब और कितने परिमाणमें होती है, यह कैसे मालूम किया जाय। ऐसा कौन-सा उपाय है जिसके द्वारा हम रुपयेका वास्तविक मूल्य नाप सकते हैं? यदि हम एक ऐसी फिहरिश्त बनावें, जिसमें भिन्न-भिन्न वस्तुओंका दैनिक, मासिक या वार्षिक मूल्य लिखा हो, तो हम कभी भी यह बता सकते हैं कि किसी विशिष्ट तिथिकी अपेक्षा किसी अन्य तिथिको रुपयेका मूल्य कितना घटा अथवा बढ़ा है। अमेरिका आदि देशोंमें ऐसी फिहरिश्तें रखी जाती हैं। इनमें वस्तुओंके थोकबन्द और फुटकर भावोंके अलावा शेयरों, बौण्डों, मजदूरियों, किरायों आदिके भाव भी दर्ज रहते हैं। वहां अब जीवन-निर्वाहके व्ययको ध्यानमें रखकर मजदूरी निश्चित की जाने लगी है। युद्धके जमानेमें और उसके बाद जर्मनीमें चीजोंकी कीमतें पहलेकी अपेक्षा सैकड़ों गुना अधिक हो गयी थीं। दूसरे शब्दोंमें जर्मन सिक्केकी क्रय-शक्ति सैकड़ों गुना घट गयी। कुछ ऐसा ही हाल रूस और पोलैण्डमें हुआ। इटली, फ्रान्स तथा अन्य कई देशोंमें चीजोंकी कीमत पांचसे दस गुना तथा इंगलैण्ड, कनाडा और अमेरिकामें दो-तीन गुना अधिक हुई। किन्तु साथ ही साथ यह नहीं कहा जा सकता है कि चीजोंकी उत्पत्तिमें इसी प्रमाणमें कमी हो गयी थी। बल्कि कहीं-कहीं तो चीजोंकी उत्पत्ति बढ़ गयी थी। कहनेका मतलब यह कि चीजोंकी कीमत बढ़ती है तो समझना चाहिए कि रुपयेका मूल्य घट रहा होगा। अब आप कल्पना कीजिये कि जिस प्रकार रुपयेका मूल्य घटता-बढ़ता है, उसी प्रकार गंजकी लम्बाई या मन, सेर, छटाकके वजनमें घटा-बढ़ी हो, तो उसका क्या परिणाम होगा। आप अनाजका व्यापार करते हैं। आपने २०० मन अनाज अगली फसलपर लेनेका करार किया। अब यदि जो मन ४० सेरका होता है, वह घटकर २० सेरका ही रह जाय, तो आप उस सौदेको कैसा समझेंगे।

आप सवाल करेंगे कि रुपयेकी क्रय-शक्तिमें यह हेर-फेर, घटा-बढ़ी क्यों होती है? हम देखते हैं कि समाजमें रुपये देकर चीजें खरीदी जाती हैं, अर्थात् दूकानदार चीजें देता है और खरीदनेवाला रुपया। अब यदि यह पता लगा लें कि कुल मिलाकर कितने परिमाणमें चीजें खरीदी जाती हैं और उसके लिए कितना रुपया दिया जाता है, तो हमको मालूम हो जायगा कि रुपयेका मूल्य क्यों घटता-बढ़ता है या यह कि चीजोंकी कीमत उनकी उत्पत्तिके प्रमाणसे अधिक क्यों घटती-बढ़ती है। यदि मालकी बिक्रीकी अपेक्षा रुपयेका व्यवहार अधिक मात्रामें होगा तो चीजोंकी कीमत बढ़ जायगी यानी रुपयेका मूल्य घट जायगा, उसकी क्रय-शक्ति कम हो जायगी। इसके विपरीत यदि अपेक्षाकृत रुपयेका व्यवहार कम मात्रामें होगा तो चीजोंका मूल्य कम हो जायगा यानी रुपयेकी क्रय-शक्ति बढ़ जायगी। इसी बातको दूसरे शब्दोंमें हम यों कह सकते हैं कि यदि रुपयेकी अपेक्षा मालकी बिक्री अधिक मात्रामें हो तो चीजोंका मूल्य कम और कम मात्रामें हो तो अधिक हो जायगा। हां, ऐसा हो सकता है जब मालकी बिक्री और रुपयेका व्यवहार दोनोंकी मात्रा एक ही हिसाबसे घटे-बढ़े। उस अवस्थामें रुपयेकी क्रय-शक्ति और चीजोंके भाव स्थायी रह सकते हैं। किन्तु प्रायः ऐसा होता नहीं। करीब-करीब हर साल चीजोंकी बिक्रीकी मात्रा तो बराबर बढ़ती रहती है, किन्तु रुपयेके सम्बन्धमें यही बात नहीं कही जा सकती। रुपयेके व्यवहारकी मात्रा बहुधा बढ़ती है, किन्तु उतनी नहीं, जितनी मालकी बिक्रीकी मात्रा; वह कभी-कभी घटने भी लगती है। अतः इस सम्बन्धमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात जो है, वह यही कि मालकी बिक्रीकी मात्रा और रुपयेके व्यवहारकी मात्राके साथ चीजोंकी कीमतका, रुपयेके मूल्यका घनिष्ट सम्बन्ध है। दोनों एक-दूसरेके अधीन हैं।

इसके अलावा एक और बात है जिसको हम दृष्टिसे ओझल नहीं कर सकते। किसी भी व्यक्तिके लिए रुपयेका महत्त्व दो बातोंपर निर्भर करता है। एक तो यह कि उसको कितने रुपयेकी आमदनी होती है और दूसरी यह कि वह एक रुपयेमें निर्वाहके लिए आवश्यक कितनी वस्तुयें खरीद सकता है। आर्थिक दृष्टिसे उसके लिए सबसे महत्त्वकी बात यही है कि उसकी वास्तविक आय कितनी है, अर्थात् उस आयका चीजोंके लिहाजसे कितना मूल्य है। किसी भी देशमें औसत आदमीकी आय घटती या बढ़ती है, यह इस बातपर निर्भर करता है कि जन-संख्याकी अपेक्षा समाजकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कुल वास्तविक आय अधिक तेजीके साथ बढ़ती है या घटती है। मालकी बिक्रीके परिमाणके अनुसार ही वास्तविक आयमें घटा-बढ़ी होती है। अतः किसी व्यक्तिकी वास्तविक आय घटी या बढ़ी है, इसका पता हम इससे लगा सकते हैं कि उसने पहलेकी अपेक्षा अधिक मात्रामें माल खरीदा है या कम मात्रामें।

जिस प्रकार हमने यह मालूम किया कि एक व्यक्तिने कम मात्रामें माल खरीदा या अधिक मात्रामें, उसी प्रकार हम यह भी मालूम कर सकते हैं कि उसके हाथसे रुपयेका व्यवहार अधिक मात्रामें हुआ या कम मात्रामें। यह मालूम कर लेनेके बाद हम कह सकते हैं कि यदि औसतन् प्रति व्यक्ति मालकी बिक्रीकी मात्रा बढ़ी नहीं है तो चीजोंके मूल्यमें परिवर्तन होनेका कारण केवल रुपयेके आवागमनका कम-ज्यादा होना ही है। इसी प्रकार यदि रुपयेके व्यवहारकी मात्रा स्थिर रहे तो मालकी बिक्रीकी कमी या अधिकताको चीजोंके मूल्यमें होनेवाले परिवर्तनका कारण समझना चाहिए। उदाहरणके लिए प्रति व्यक्ति पीछे यदि रुपयेका व्यवहार दूना हो जाय और मालकी खरीद उतनी ही रहे, तो चीजोंकी कीमतें दूनी हो जायंगी। और यदि मालकी खरीद आधी रह जाय तो चीजोंकी कीमतें चौगुनी हो जायंगी।

इस तरह चीजोंके मूल्यमें होनेवाले परिवर्तनके चार कारण सिद्ध हुए:—

(१) प्रति व्यक्ति रुपयेके व्यवहारमें वृद्धि
(२) प्रति व्यक्ति रुपयेके व्यवहारमें कमी
(३) प्रति व्यक्ति मालकी खरीदमें वृद्धि
(४) प्रति व्यक्ति मालकी खरीदमें कमी

माल और रुपयेकी अपेक्षासे चीजों और रुपयेके मूल्यमें घटा-बढ़ी होती है, उसे आप सापेक्ष घटा-बढ़ी कह लीजिये और इसके विपरीत माल और रुपयेके मूल्यमें होनेवाली घटा-बढ़ीको केवल वृद्धि और कमी कह सकते हैं।

बहुत-से लोग उपरोक्त चार कारणोंमेंसे पिछले दो कारणोंको ही महत्त्वपूर्ण समझते हैं। वे मानते हैं कि जब चीजोंका अभाव होता है तो वे महंगी हो जाती हैं और बाहुल्य होता है तो सस्ती; किन्तु उनकी इस मान्यताका कारण है, वही रुपयेकी माया, जिसने उनकी आंखोंपर पर्दा डाल रखा है। रूस, जर्मनी, पोलैण्ड, आस्ट्रिया और भारतमें भी रुपयेकी जैसी दुर्दशा हुई, जैसी कीमत घटी, उसको देखते हुए प्रत्येक समझदार आदमीको कहना पड़ेगा कि प्रथम दो कारणोंका, अर्थात् प्रति व्यक्ति रुपयेके व्यवहारमें वृद्धि और कमीका चीजोंके मूल्यपर गहरा असर पड़ता है। जो लोग इसके विपरीत मानते हैं, वे बहुधा कहते हैं कि किसी वस्तुका मूल्य इस बातपर निर्भर रहता है कि वह किस परिमाणमें बनती है और उसकी कितनी मांग है। रुपयेकी क्रय-शक्ति यदि स्थायी मानी जाय तो कुछ अंशोंमें यह बात सही है। किन्तु हम अनाज, शक्कर, लोहा आदि पदार्थोंकी उत्पत्ति और मांगपर तो विचार करते हैं, किन्तु यह भूल जाते हैं कि उसके साथ ही रुपयेकी उत्पत्ति और मांगका सवाल भी जुड़ा हुआ है। यदि रुपया कम होगा तो उसका अन्य पदार्थोंके मूल्यपर भी अवश्य असर पड़ेगा। हम देखते हैं कि जब गेहूं बहुत पैदा होता है तो वह सस्ता हो जाता है, इसी तरह जब रुपयेका बाहुल्य होगा तो वह भी सस्ता हो जायगा, जिसका अर्थ होगा चीजोंके मूल्यमें वृद्धि।

यह समझते हुए भी कि रुपयेकी कमी या अधिकता चीजोंके मूल्यको घटाती-बढ़ाती है, बहुत-से लोग यह नहीं समझते कि यह कैसे होता है। मान लीजिये, आपने किसी बैङ्कसे बहुत सा रुपया कर्ज लिया। उससे आपको तरह-तरहकी चीजें खरीदनेको सूझेंगी। जब आप खूब चीजें खरीदेंगे तो स्वभावतः उन चीजोंकी कीमत बढ़ जायगी। इसके विरुद्ध यदि आपके पास रुपया न हो या बैङ्कसे आपको रुपया न मिले तो चीजोंका मूल्य कम हो जायगा। इस तरह रुपयेकी अधिकता या कमी चीजोंके मूल्यपर असर डालती है।

आम तौरपर जब सरकारोंपर अर्थ-सङ्कट आता है, उस समय रुपयेका मूल्य बहुत घट जाता है। सरकारोंको कागजके सिक्के बड़े परिमाणमें जारी करने पड़ते हैं। शान्तिके समय भी रुपयेका मूल्य घट-बढ़ सकता है। मान लीजिये कहीं सोनेकी नयी खानोंका पता लग जाय अथवा सोनेकी उत्पत्ति कम हो जाय, तो उसका असर चीजोंकी कीमतपर पड़े बिना नहीं रह सकता।

संक्षेपमें यह कहा जा सकता है कि सरकारकी अर्थ-नीति, बैङ्कोंकी नीति और सोनेकी कम-ज्यादा उत्पत्ति—ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तीन बड़े कारण हैं जो रुपयेके मूल्यकी स्थिरताको कायम नहीं रहने देते।

× × ×

हम यह बता चुके हैं कि वस्तुओंका सस्ता या महंगा होना केवल उनकी प्रचुरता या कमीपर ही निर्भर नहीं करता, उसका वास्तविक कारण प्रायः रुपयेकी कमी या बाहुल्य होता है। पदार्थोंकी कमीके कारण जब उनका मूल्य बढ़ता है तो समझना चाहिए कि देशकी आर्थिक दशा हीन हो रही है; लोगोंकी औसत आय कम हो गयी है, किन्तु जब रुपयेकी प्रचुरताके कारण पदार्थोंका मूल्य बढ़ता है तो उसका यह अर्थ नहीं मान लेना चाहिए कि लोग औसतन् कम मात्रामें माल खरीदते हैं। मान लीजिये किसी आदमीको पहले २०००) मासिक मिलता था, किन्तु अब जबकि पदार्थोंका मूल्य पहलेकी अपेक्षा दूना हो गया है, उसे ४०००) मासिक मिलने लगा है। स्पष्ट है कि इस अवस्थामें उसकी स्थितिमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। जो पदार्थ पहले वह एक रुपयेमें खरीदता था, उन्हींके लिए अब वह दो रुपये दे सकता है, कारण उसकी आमदनी भी दूनी हो चुकी है। युद्धके समय पदार्थ बहुत महंगे हो गये थे, किन्तु साथ-साथ लोगोंकी आयमें भी वृद्धि हुई। यदि ऐसा न हुआ होता तो अधिकांश लोगोंका जीवन दूभर हो गया होता।

कुछ लोग कह सकते हैं कि रुपयेकी प्रचुरताके कारण चीजोंका मूल्य बढ़ गया तो उससे क्या? हम जिस चीजके लिए पहले एक रुपया देते थे, उसी चीजके लिए अब दो रुपया दे सकते हैं। यदि पदार्थोंके मूल्यमें जिस परिमाणसे परिवर्तन होता है, उसी परिमाणसे लोगोंकी आयमें भी परिवर्तन हो तो, कोई विशेष हर्ज नहीं। किन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा होता नहीं। जिस तेजीके साथ पदार्थोंका मूल्य बढ़ता है, उसी तेजीके साथ लोगोंकी आयमें वृद्धि नहीं होती। थोड़ी देरके लिए हम मान लें कि नापनेका गज घटाया-बढ़ाया जा सकता है। उस अवस्थामें नापनेकी चीजों, जैसे कपड़े, तार आदिका जो व्यवसाय करते हैं, उनको कितने गोलमालमें पड़ जाना होगा। जब गज बढ़ जायगा तो व्यापारी घाटेमें और ग्राहक नफेमें रहेंगे और जब गज घटेगा तो व्यापारी लाभमें और ग्राहक घाटेमें रहेंगे। यह तो हुई गजकी बात, किन्तु रुपयेके मूल्यमें जो घटा-बढ़ी होती है, वह इससे कहीं अधिक गम्भीर है। इसके तीन कारण हैं :—

(१) गजके घटने-बढ़नेका असर उन्हीं चीजोंपर पड़ेगा, जो गजसे नापी जाती हैं, उन चीजोंपर उसका कोई असर नहीं पड़ेगा, जो तोली जाती हैं। किन्तु रुपया ऐसी चीज है, जिसकी हर खरीद-बिक्रीमें जरूरत होती है। हम गजकी लम्बाई अथवा तोलनेके मन, सेर, छटाक आदि बांटोंका परिमाण निश्चित करनेकी तो इतनी चिन्ता करते हैं, किन्तु रुपयेका मूल्य स्थिर करनेकी ओर हमारा ध्यान ही नहीं है—उस रुपयेका, जिसका कि हमें पग-पगपर व्यवहार करना होता है। सचमुच यह आश्चर्यकी बात है!

(२) रुपयेके रूपमें हम लम्बी मियादके करार करते हैं। हम आज रुपया कर्ज लेते हैं और उसको १०-१५ वर्ष बाद चुकाते हैं। इस बातकी कोई गारण्टी नहीं है कि रुपयेका आज जो मूल्य है वही दस-पन्द्रह वर्ष बाद भी रहेगा। अवश्य ही गजों और वजनके रूपमें भी करार होते हैं, किन्तु उनकी संख्या बहुत कम और अवधि बहुत थोड़ी होती है। वादेपर जब हम गेहूं बेचनेका सौदा करते हैं तो उसमें भी रुपयेका ही व्यवहार होता है। आपने कभी ऐसा न सुना होगा कि कपड़ेके बदले कपड़ा या गेहूंके बदले गेहूं देनेके वादेपर सौदे होते हों। लम्बी मियादके करारमें यदि रुपयेका मूल्य घट या बढ़ जाय तो कितना भारी अन्तर पड़ जायगा। पहलेकी अपेक्षा यह दूसरा कारण कहीं अधिक गम्भीर है, कारण नोटों, रिहननामों, रेलवे बौण्डों, सरकारी बौण्डों, पेन्शनों, बीमों आदिके रूपमें अरबों रुपयोंका लेन-देन होता रहता है।

(३) गजकी लम्बाईमें कमी या अधिकता हो तो हम तुरन्त जान लेते हैं, किन्तु रुपयेके मूल्यमें इतनी सूक्ष्म रीतिसे परिवर्तन होता है कि हम उसकी भयङ्कर हानियोंकी ओरसे अनभिज्ञ रहते हैं। रोगका मूल न जान पानेके कारण हमें और भी अधिक नुकसान उठाना पड़ता है।

रुपयेका मूल्य अस्थिर होनेके कारण कर्जके करारनामोंमें कितनी उथल-पुथल होती है, इसकी कल्पना कीजिये। उदाहरणके लिए जब रुपयेकी प्रचुरता होती है तो चीजें महंगी हो जाती हैं और उसके फलस्वरूप कर्ज देनेवाले नुकसानमें, और कर्जदार फायदेमें रहते हैं। यह तर्क किया जा सकता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है कि जितना कर्ज देनेवालेका नुकसान हुआ, उतना कर्ज-दारको फायदा हो गया, उससे समाजको क्या नुकसान हुआ? रुपयेके मूल्यमें होनेवाली घटा-बढ़ीका राष्ट्रकी सम्पत्तिपर तो कुछ असर नहीं पड़ा? यदि आपके घर चोरी हो जाय और आपको कहा जाय कि भाई, आप चिन्ता क्यों करते हैं, आपका नुकसान हुआ सही, किन्तु चोरका फायदा हो गया। माल समाजका समाजमें रहा। निश्चय ही इस कथनसे आपको सन्तोष न होगा। बुराई आखिर बुराई ही है। यद्यपि इस बुराईका फल मुख्यतः सामान्य दरिद्रता नहीं होता, तो भी यह एक सामाजिक अन्याय है। उसके कारण एक आदमीका उचित हक अनजानमें ही सही, दूसरे आदमीके पास चला जाता है।

गत महायुद्धका हर्जाना हारे हुए राष्ट्रोंसे किस प्रकार वसूल किया जाय, इस बातकी जांच करनेके लिए डेविस कमीशन नियुक्त हुआ था। इस कमीशनके सम्मुख गवाही देते हुए जर्मनीके एक मजदूर-प्रतिनिधिने कहा था कि जर्मन मजदूर केवल एक ही बात चाहते हैं और वह है मार्क सिक्केके मूल्यमें स्थायित्व। मजदूरोंकी दयनीय दशाका चित्र खींचते हुए उसने कहा था कि बीमारी, प्रसूति आदि अनिवार्य प्रसङ्गोंपर खर्च करनेके लिए भी वे रुपया बचाकर नहीं रख सकते। मजदूरी मिलते ही उनको सामान खरी-दनेके लिए विवश होना पड़ता है। उन्हें सदा डर बना रहता है कि रात-भरमें ही मार्कका भाव कहीं और न गिर जाय!

युद्धके बाद यूरोपके कई देशोंमें लाखों मध्यम वर्गके लोग, जिन्होंने सेविङ्ग बैङ्कों, बौण्डों, बीमों आदिमें रुपया लगा रखा था, सिक्कोंका भाव गिर जानेके कारण अर्थात् उनकी क्रय-शक्ति घट जानेके कारण बर्बाद हो गये। वहां "यूरोपके नये गरीब" नामकी एक नयी जाति ही पैदा हो गयी है। भारतमें भी इसका पूरा असर दिखाई देता है।

कुछ उदाहरण ऐसे भी पाये जाते हैं जिनमें लोगोंने कर्ज लिया और रुपयेके मूल्यमें होनेवाली गिरावटका लाभ उठा-कर धनी बन गये।

"यह कितने आश्चर्यकी बात है कि हम सूद कितना होना चाहिए, ४ सैकड़ा होना चाहिए या ६ सैकड़ा, इसपर तो इतना अधिक ध्यान देते हैं, किन्तु उस रुपयेका दो, चार अथवा दस वर्ष बाद कितना मूल्य रह जायगा, इसकी ओर कुछ ध्यान नहीं देते।

युद्धके समय रुपयेकी प्रचुरताके कारण, जब चीजोंके भाव बहुत तेज थे, अमेरिकामें किसानोंने नयी-नयी जमीनें भारी दामोंमें खरीदकर गेहूं आदिकी खेतीको खूब बढ़ाया। किन्तु सन् १९२१में चीजोंका भाव गिर गया और फलतः उनको बहुत नुकसान उठाना पड़ा। दुनियाकी एक दशांश जनता अकालग्रस्त थी और अमेरिकामें गेहूंकी बहतायत थी, फिर भी गेहूंकी कीमत पहलेकी अपेक्षा आधेसे भी कम हो गयी थी। इस प्रसङ्गपर अमेरिकाके सैकड़ों बैङ्क टूट गये, जिन्होंने किसानोंको जमीनें खरीदनेके लिए रुपया उधार दिया था।

विधवा स्त्रियां और अनाथ बच्चे, जिनके नामपर उनके रिश्तेदार या संरक्षक कुछ पूंजी सुरक्षित रीतिसे किसी बैङ्क आदिमें जमा कराते हैं, खास तौरपर रुपयेके मूल्यमें होनेवाली घटा-बढ़ीके शिकार होते हैं। इसी प्रकार किसी कम्पनीके बौण्ड होल्डरों यानी लोनदारों और स्टाक होल्डर्स यानी हिस्सेदारोंकी दशा समझिये।

जीवनके जो बीमे होते हैं, वे भी एक तरहके बौण्ड ही होते हैं। आप मासिक, त्रैमासिक या अर्द्धवार्षिक किस्तोंमें १५,२०,२५ वर्ष तक बीमा कम्पनीको रुपया देते हैं। उसके बाद कम्पनी आपको रुपया देती है, किन्तु वह इस बातका कुछ लिहाज नहीं करती कि इस रुपयेकी क्रय-शक्ति क्या है। यूरोपमें जब सिक्कोंका मूल्य घटा तो उन विधवाओंको, जिनके लिए उनके पतियोंने अपनी जानका बीमा कराया था, भारी नुकसान उठाना पड़ा।

वेतन या मजदूरीके करार भी बौण्डोंके समान होते हैं। यद्यपि उनकी अवधि कम होती है और चीजोंके सस्ते या महंगेपनके लिहाजसे उनमें परिवर्तन किया जा सकता है, किन्तु ऐसा कदाचित् ही होता है। चीजोंका मूल्य इतनी तेजीसे बढ़ता है कि वेतन और मजदूरीमें उस प्रमाणसे वृद्धि नहीं हो पाती।

रुपयेके मूल्यमें घटा-बढ़ी होनेका कितना व्यापक परि-णाम होता है, यह अमेरिकन प्रोफेसर विलफर्डने बताया है। अमेरिकामें रुपयेका मूल्य अन्य देशोंकी अपेक्षा कम घटता-बढ़ता है। वहां भी सन् १९१४ से १९२० के बीचमें ६० अरब रुपया एक श्रेणीकी जेबोंसे दूसरी श्रेणीकी जेबोंमें चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गया। यदि किसी बैङ्कमें कुछ हजारकी डकैती हो जाती है तो उसका मोटे-मोटे अक्षरोंमें समाचार छापा जाता है, किन्तु जहां अरबों रुपयोंकी डकैती हो रही है, उसको कोई जानता भी नहीं। यही तो रुपयेकी माया है!

जिस देशमें स्वर्ण-मान प्रचलित है, उसमें प्रत्येक करार, जो भविष्यके स्वर्ण सिक्कोंमें किया जायगा, एक प्रकार-का जुआ ही है। यदि नयी खानें मिल जाने, कृत्रिम सोना बनानेका, और कोई साधन हस्तगत हो जाने अथवा किसी बैङ्किङ्ग नीतिसे स्वर्ण किसी देशमें प्रचुर मात्रामें हो जाय तो रुपयेकी तरह सोनेकी क्रय-शक्ति भी कम हो जायगी। इसके विपरीत यदि सोनेकी उत्पत्ति ही कम हो जाय तो उसकी क्रय-शक्ति बढ़े बिना न रहेगी।

जब किसी एक श्रेणीका नुकसान होता है तो वह दूसरी श्रेणीको दोष देती है और जब दूसरी श्रेणीका नुकसान होता है तो वह पहलीको दोष देती है। किन्तु वास्तवमें दोष है रुपयेका, जिसका मूल्य (क्रय-शक्ति) सदा घटता-बढ़ता रहता है।

### अप्रत्यक्ष नुकसान

रुपयेका मूल्य स्थिर न होनेके कारण समाजमें लूट तो चलती ही रहती है, उसके अलावा उससे और भी अप्रत्यक्ष हानियां होती हैं। व्यवसायकी तेजी-मन्दीके कारण यदि हम ढूंढ़ने जायंगे तो हमको मालूम होगा कि उसका एक प्रधान कारण रुपयेके मूल्य यानी उसकी क्रय-शक्तिमें होने-वाली घटा-बढ़ी है। रुपयेके मूल्यमें जब कमी होती है यानी चीजोंकी कीमतें बढ़ जाती हैं तो उससे व्यवसायमें तेजी आती है। इसके विपरीत जब रुपयेका मूल्य बढ़ता है यानी चीजें सस्ती हो जाती हैं तो व्यवसाय मन्दा पड़ जाता है। महंगीके जमानेमें जो लोग चीजें उत्पन्न करते हैं, उन्हें उतना व्यय नहीं करना पड़ता, कारण कि मजदूरोंकी मजदूरी और तनख्वाहें निश्चित रहती हैं और शुरू-शुरूमें सूद आदि भी अधिक नहीं देना पड़ता। फलतः उन्हें मुनाफा अधिक होता है। इसके विरुद्ध जब पदार्थ सस्ते हो जाते हैं तो उत्पादकोंका मुनाफा गायब हो जाता है। बहुत-से व्यव-सायी, जिन्होंने महंगीके जमानेमें अपने व्यवसायको बहुत फैलाया, अन्तमें उलटी लहरके आते ही बर्बाद हो चुके हैं। व्यवसाय जब तेजीपर होता है, तब उत्पादक लोग समझते है कि हमें बहुत मुनाफा हो रहा है। किन्तु इसमें भी वे चकमा खाते हैं। जिस समय उन्होंने व्यवसायमें रुपया लगाया उस समय रुपयेकी क्रय-शक्ति और ही होती है। वस्तुओंको बिक्रीसे मिलनेवाले रुपयेकी क्रय-शक्ति पहलेकी अपेक्षा कम होगी। फलतः मुनाफा उतना नहीं होता, जितना समझा जाता है।

विशेषतः मजदूरोंका हित तो इसीमें है कि रुपयेका मूल्य स्थिर हो जाय। जब चीजें सस्ती होती हैं तो मजदूरोंको बेकारीका सामना करना पड़ता है और जब चीजें महंगी होती हैं तो उन्हें जीवन-निर्वाहके लिए अधिक खर्च करना पड़ता है। लेनदारों और देनदारोंको तो कभी-कभी फायदा भी हो जाता है, किन्तु मजदूर दोनों अवस्थाओंमें मारे जाते हैं। उनकी जैसी दयनीय दशा समाजके और किसी अङ्गकी नहीं होती।

यह सही है कि महंगीके जमानेमें मजदूरोंके लिए काम-पर बना रहना या नौकरी प्राप्त कर लेना आसान होता है, कारण उत्पादनकर्ताओंको अधिक उत्पत्ति करनेके लिए उनकी आवश्यकता रहती है, किन्तु उनको इतनी मजदूरी नहीं मिलती कि वे महंगीका बोझ उठा सकें। जिस तेजीके साथ महंगी बढ़ती है, उसी तेजीके साथ उनकी मजदूरी नहीं बढ़ती।

मजदूर पहले तो यही नहीं जानते कि रुपयेके रूपमें मिलनेवाली मजदूरी और वास्तविक मजदूरीमें क्या अन्तर होता है। यदि वह वस्तु-स्थिति जान भी लेता है तो इसके लिए अस्थिर रुपयेके बदले कारखानेदारको दोष देने लगता है। दूसरी ओर जब चीजें सस्ती हो जाती हैं तो जो मजदूर भाग्यवश कामपर बने रहते हैं, उन्हें जीवन-निर्वाहमें अधिक कठिनता नहीं पड़ती, किन्तु साथ ही बेकारोंकी संख्यामें अन्धाधुन्ध वृद्धि हो जाती है और अन्तमें औसतन् मजदूरों-का ही नुकसान होता है। संक्षेपमें, मजदूरोंको दोनों ही अवस्थाओंमें हानि उठानी पड़ती है।

बेकारी और सामाजिक अन्याय समाजमें असन्तोषको जन्म देते हैं। रुपयेके मूल्यके सम्बन्धमें फैली हुई अनभिज्ञता ही लोगोंमें असन्तोषके भाव पैदा कर देती है। उदाहरणके लिए जब चीजोंका भाव बढ़ता रहता है और मजदूरी उस प्रमाणसे नहीं बढ़ती तो मजदूर सोचने लगते हैं कि कार-खानेदार मजदूरी बढ़ानेके साथ-साथ चीजोंका मूल्य बढ़ाकर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हमें चकमा दे रहे हैं। उनकी यह धारणा बन जाती है कि पूंजीपति उनको लूट रहे हैं, उनका रक्त शोषण कर रहे हैं। वे उस समाजसे घृणा करने लगते हैं। जब इस प्रकार असन्तोषकी आग फैलती है तो बोलशेविज्म-जैसे उग्र और क्रान्तिकारी सिद्धान्तोंका आविर्भाव होता है।

मालिकों और मजदूरोंमें जो झगड़े होते हैं, उनके मूलमें यही अस्थिर रुपया है। जब पदार्थोंका भाव तेज होता है तो मजदूर अधिक वेतन मांगते हैं। मालिक मजदूरी बढ़ानेको तैयार नहीं होते। फल यह होता है कि मजदूर हड़ताल कर देते हैं। इसी तरह यदि सस्तीके युगमें पूंजीपति मजदूरी घटानेका प्रस्ताव करते हैं तो मजदूर राजी नहीं होते और नतीजा होता है वही हड़ताल। अतः स्पष्ट है कि औद्योगिक असन्तोषका प्रधान कारण रुपयेकी अस्थिरता ही है।

यह बताया गया है कि रुपयेका मूल्य स्थिर न होनेके कारण समाजका एक अङ्ग नुकसान उठाता है तो दूसरेको लाभ हो जाता है। सामूहिक रूपसे समाजका कोई नुकसान नहीं होता। किन्तु अब हम देखते हैं कि उसकी वजहसे अनिश्चितता, मन्दी, बेकारी, असन्तोष, हड़ताल, दङ्गे-फसाद रक्तपात आदिके रूपमें समाजका अतुलनीय नुकसान होता है। चीजोंका भाव चाहे बढ़ता हो या गिरता हो, समाजको यह हानि तो सहन करनी ही पड़ती है।

महंगीके जमानेमें जब व्यवसाय तेजीपर होता है तो लोग समझते हैं कि समृद्धि बढ़ रही है। किन्तु यह उनका भ्रममात्र होता है। इस समृद्धिका अर्थ है उत्पादनकर्ताओंकी समृद्धि। एक श्रेणी-विशेषसे पैसा छीनकर वे अपनी जेबें भर लेते हैं। सर्वसाधारणकी भलाई किसी तरह नहीं होती। इसके अलावा साधारण जुएकी भांति इसमें भी कई लोग जितना कमाते हैं, अन्तमें उसका बहुत-कुछ खो बैठते हैं। महंगीके जमानेमें हड़तालें, दङ्गा-फसाद बहुधा होते रहते हैं जो एक ही प्रहारसे व्यवसायका चलना रोक देते हैं।

सस्तीके जमानेमें जो मजदूर कामसे अलग हो जाते हैं, वे भविष्यमें अपने नुकसानकी पूर्ति नहीं कर पाते। ऐसा भी नहीं होता कि जो कुछ वे गंवाते हैं, वह पूंजीपतियोंको मिल जाता हो। बेकार मशीनें और बेकार आदमी सारे समाजकी हानिके द्योतक होते हैं।

संक्षेपमें, अस्थिर रुपया, सामाजिक अन्याय, सामाजिक असन्तोष और सामाजिक अव्यवस्था नामक तीन बुराइयोंको जन्म देता है।

( २ )

रुपयेका मूल्य स्थिर न होनेके कारण समाजमें कैसे-कैसे भयङ्कर अनर्थ होते हैं, यह हम देख चुके हैं। अब स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि हम इन अनर्थोंको दूर करनेके कुछ उपाय भी कर सकते हैं अथवा नहीं? जब हमने भूकम्प और तूफान-जैसे दैवी प्रकोपों तकसे बचनेके लिए कुछ-न-कुछ उपाय निकाल लिये हैं, तो कोई कारण नहीं, यदि हम कोशिश करें, तो इस आर्थिक भूकम्पसे हम अपनी रक्षा न कर सकें। रुपयेकी स्थिरताके सम्बन्धमें हमारे दिलोंमें जो गलत धारणा बैठ गयी है, यदि हम उसको निकाल बाहर करेंगे तो हमें अपना कारोबार इस तरह चलानेमें बड़ी सहायता मिलेगी, जिससे हमें हानि न उठानी पड़े।

इस बारेमें सबसे आवश्यक बात यह है कि हम रुपयेके भावोंपर सदा लक्ष्य रखें, और अपना हिसाब इस तरहसे रखें जिससे हमें मालूम होता रहे कि रुपयेकी क्रय-शक्तिके लिहाजसे वास्तवमें लाभ हो रहा है अथवा हानि। इस हिसाबके सहारे हमें भावी व्यापारिक स्थितिका भी पता चल सकता है। यदि चीजोंका मूल्य लगातार गिरता जा रहा हो तो हम समझ सकते हैं कि व्यवसायमें मन्दी आनेवाली है और यदि चीजोंका मूल्य लगातार बढ़ता जाता हो तो हम समझ सकते हैं कि व्यवसायकी गति तेज होगी। इसके अलावा इस विषयके विशेषज्ञोंकी सलाहसे भी लाभ उठा सकते हैं। अमेरिका, इंगलैण्ड आदि पश्चिमी देशोंमें ऐसी अनेक एजेन्सियां खुल गयी हैं जो लोगोंको व्यावसायिक परिवर्तनोंके बारेमें सहायता देती हैं।

इसके अलावा कभी-कभी हमको साफ-साफ मालूम हो जाता है कि रुपयेका मूल्य बढ़ेगा या घटेगा। उस दशामें यदि हम और गहराईमें उतरें तो यह भी मालूम कर सकते हैं कि उस परिवर्तनका क्या असर होगा। ऐसे प्रसङ्गोंपर कोई चाहे तो खूब रुपया कमा सकता है। जब रुपयेका मूल्य घट रहा हो और ऐसी सम्भावना हो कि वह क्रम जारी रहेगा, तो आप उधार लिये हुए रुपयेसे भी स्थावर सम्पत्ति खरीदकर, किसी कम्पनीके व्यवसायमें भागीदार होकर,



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अथवा विदेशी सिक्कोंके विनिमयका धन्धा करके पैसा पैदा कर सकते हैं। किन्तु जब रुपयेका मूल्य बढ़ने लगे तो तुरन्त सावधान हो जाना चाहिए। महंगीके जमानेमें बौण्ड खरीदना या सेविङ्ग बैङ्कमें रुपया जमा कराना लाभप्रद नहीं होता।

बहुधा यह पता नहीं चलता कि चीजोंका मूल्य बढ़ेगा या घटेगा। उस समय भिन्न-भिन्न कम्पनियोंके मामूली हिस्से, कुछ निश्चित सूदके हिस्से (stock) और अन्य कुछ बौण्ड खरीदे जा सकते हैं। बौण्डोंकी अपेक्षा इस तरहके हिस्सोंमें रुपयोंके अधिक सुरक्षित रहनेकी सम्भावना है। किन्तु इस बारेमें भी किसी विशेषज्ञकी राय अवश्य लेनी चाहिए।

जिस देशमें चलन ( रुपये ) का भाव बहुत अस्थिर हो, उस देशके लोग उस पड़ोसी राष्ट्रके सिक्के खरीद सकते हैं, जिसका रुपया अधिक स्थिर हो। वे चीजोंका दाम स्थिर विदेशी सिक्कोंमें भी दे सकते हैं। इस तरह वे अंशतः अपने रुपयेकी अस्थिरतासे होनेवाली हानिसे बच सकते हैं। इसी तरह कभी-कभी अन्य किसी पदार्थको भी, जिसका मूल्य स्थिर रहता हो, विनिमय यानी लेन-देनका साधन बनाया जा सकता है। भारतके कई देशी राज्योंमें अब भी सरकार किसानोंसे अपना कर गल्लेके रूपमें लेती है।

चीजोंके भाव बतानेवाली तालिकाका भी हम उपयोग कर सकते हैं। उसके अनुसार मजदूरोंकी मजदूरीमें कमी-अधिकता की जा सकती है। उसी तालिकाको ध्यानमें रखकर लेन-देन इस रीतिसे किया जा सकता है कि व्याज और मूलधनपर रुपयेके अस्थिर मूल्यका असर न पड़े। संक्षेपमें, ये ऐसे उपाय हैं जो हमारी शक्तिसे बाहर नहीं हैं और जिनका हम आसानीसे उपयोग कर सकते हैं।

इस समय प्रत्येक देशके व्यवसायके साथ बैङ्कोंका घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित हो गया है। व्यवसायको प्रगतिशील बनानेके लिए लोगोंको बैङ्कोंके द्वारा बहुत-कुछ रुपया मिलता है। हम यह बता चुके हैं कि यदि मालकी उत्पत्तिकी अपेक्षा रुपयेका व्यवहार अधिक मात्रामें होगा, तो रुपयेका मूल्य घट जायगा और मालकी अपेक्षा रुपयेका व्यवहार कम मात्रामें होगा, तो रुपयेका मूल्य बढ़ जायगा। इसलिए यदि हमें रुपयेका मूल्य स्थिर करना हो तो यह आवश्यक है कि मालकी उत्पत्तिके परिमाणको लक्ष्यमें रखकर रुपयेके व्यापारका नियमन किया जाय। एक बड़ी हद तक यह काम बैङ्क कर सकते हैं। वे आवश्यकतानुसार रुपया अधिक मात्रामें जारी कर सकते हैं या उसको वापस अपने कोषमें समेट सकते हैं। व्यावसायिक लेन-देनमें चांदी और सोनेके सिक्कोंका ही व्यवहार नहीं होता, कागजी सिक्कों और हुण्डियों आदिका भी व्यवहार होता है। चूंकि कागजी सिक्कों ( नोटों ) को जारी करनेवाले हम स्वयं हैं, इसलिए आवश्यकतानुसार हम उनके व्यवहारकी मात्रा कम या ज्यादा भी कर सकते हैं। बैङ्कोंको जब रुपया समेटना हो तो वे अधिक सूद देनेकी योजना कर सकते हैं और जब रुपया निकालना हो तो सूदकी दर कम कर सकते हैं।

बैङ्कोंके अतिरिक्त सरकारें भी रुपयेका मूल्य स्थिर करनेमें बहुत-कुछ योग दे सकती हैं। हम देखते हैं कि जब राज्योंका बजट बराबर नहीं होता है तभी रुपयेके मूल्यमें भारी कमी होती है। यदि किसी सरकारका आयकी अपेक्षा खर्च अधिक होता है तो वह इस कमीकी पूर्तिके लिए कागजके सिक्के जारी करती है। उस दशामें रुपयेका मूल्य स्वभावतः कम हो जाता है। इसलिए सरकारोंको सर्वप्रथम अपने आय-व्ययका लेखा बराबर करना चाहिए, अन्यथा रुपयेके मूल्यको स्थिर करना प्रायः असम्भव होगा।

रुपयेके मूल्यकी स्थिरताका प्रश्न एक ऐसा प्रश्न है, जिसका धनी और कङ्गाल, मालिक और मजदूर, बूढ़े और बच्चे सभीके सुख-दुःखके साथ गहरा सम्बन्ध है। जिस दिन हम उसका सन्तोषजनक निर्णय कर सकेंगे, उस दिन हम कई औद्योगिक, व्यावसायिक और आर्थिक समस्याओंको सुलझा लेंगे; और एक बड़े सामाजिक अन्यायका परिमार्जन करेंगे।

दुर्भाग्यवश भारतकी सरकार राष्ट्रीय सरकार नहीं है। विदेशी सरकारसे यह आशा नहीं की जा सकती कि वह इस ओर ध्यान देगी। वह तो प्रधानतः अपने स्वार्थोंको दृष्टिमें रखकर ही यहांकी मुद्रा-नीतिका नियमन करती है। उसने अरबोंका सोना इस देशसे बाहर भेजा है, किन्तु युद्ध-ऋणकी किस्त भारतकी चांदीसे अमेरिकाको चुकायी। उसके ये काम भारतके हितोंपर कुठाराघात करनेवाले हैं। हमें आशा करनी चाहिए कि भारतीयोंके हाथमें राजनीतिक सत्ता आते ही, वे इस गम्भीर प्रश्नको सुलझानेकी कोशिश करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# झूठ

श्रीमती उषादेवी मित्रा

( १ )

चेष्टा करनेपर भी वह हंसीको रोक न सकी। भुवनेश्वरकी चञ्चल पुत्रवधू घूंघटकी आड़से उस नवीन पुरोहितको देखती जाती और होम-कुण्डकी आगको पङ्खेसे तेज करती जाती थी।

पतिने आंखें दिखायीं। वधूने मुंह तो अवश्य ही फेर लिया, किन्तु हंसी न रोक सकी; शायद उसके लिए असाध्य रही हो। उसकी हंसीका कारण कहीं हटा तो था नहीं, फिर वह गम्भीर बनती ही कैसे? वह तेजस्वी ब्राह्मण युवक कुशासनपर बैठा उसीके श्वसुर भुवनेश्वरका श्राद्ध करा रहा था। बूढ़े मिश्रजीका छोटा भाई नारायण था, जो कि प्रथम बार ही यजमानके घर आया था एवं ऐसे दायित्वपूर्ण कामपर बैठा था। कुछ शर्माता झेंपता-सा काम कर रहा था। लोगोंकी तीक्ष्ण दृष्टियां उसपर गड़ी हुई थीं, सहस्रों कान सतर्क थे—उसके विधि-नियमों और संस्कृत श्लोकोंपर; परन्तु नहीं, भूल, त्रुटि, अशुद्धि कहींपर भी कुछ न निकली; नहीं, तिल बराबर भी नहीं। स्वास्थ्य-सबल हृदयपर लोटता हुआ वह शुभ्र यज्ञोपवीतका गुच्छा उसके सौन्दर्यको और भी बढ़ा रहा था। सफेद चन्दनका टीका उसके महत्त्वको और नामावली उसकी निष्ठा, श्रद्धाको। मिश्रजी बीमार थे, इसलिए नारायणको यजमानके घर भेजा था। शहरके प्रायः सभी लोगोंके पुरोहित मिश्र थे। बस, वधूकी हंसीका कारण—छोटा-सा पुरोहित ही था। बूढ़े मिसरजीको देखनेमें उसकी अभ्यस्थ आंखें उस लड़केको देखकर परिहाससे मचल रही थीं। हां, उसके विचारसे नारायण लड़का ही था। यद्यपि वह स्वयं बालिका थी, फिर भी उसके विचारमें नारायण था एक बच्चा। भला बच्चे भी कहीं पुरोहित बने हैं? वह विज्ञ भावसे निश्चयपर पहुंच गयी—ऐसे बालक भी कभी पूजा-पाठ, विधि-नियमोंको कर सकते हैं? और फिर श्राद्ध! नहीं नहीं। तो इसे बुलाया ही क्यों? जरूर मांके साथ ही साथ वे भी सठिया गये हैं।

श्राद्धके बाद ब्राह्मण-भोजन होने लगा। सभी लोग बैठे थे, पर नारायण वहां नहीं था।

"अरे आप बैठे नहीं? आइये, आइये"—किसीने उसे पुकारा।

"नहीं, मैं घरपर भोजन कर लूंगा।"

"ऐसा क्यों? मिसरजी तक यहां भोजन किया करते थे, और यह आप ही ब्राह्मणोंकी बनायी मिठाई है।"

"मैं श्राद्धका भोजन नहीं करता"—उसने शान्त भावसे कहा।

लोगोंमें विस्मय-सा छा गया। कोई-कोई परिहास भी कर बैठा। वधू इस बार खिलखिला पड़ी। गृहिणी हाथ जोड़कर खड़ी हो गयीं—"ऐसा मत करो महाराज, इस दुपहरीमें भूखे-प्यासे मत जाओ, वरना गृहस्थका अकल्याण होगा, आप पुरके हितैषी कहलाते हैं। किससे कौन-सा अपराध हो गया, बतलाइये मैं उसे दण्ड दूंगी।"

वह लौटा—"अपराध? नहीं तो। आप हाथ मत जोड़िये माताजी, मुझे पाप होगा; किन्तु मैं श्राद्धका भोजन नहीं कर सकता।"—उसके कण्ठमें विस्मय पछाड़ें खा रहा था—"अच्छा, मैं गुड़ खाकर पानी पिये लेता हूं।"

( २ )

तो यह अतिशयोक्ति न थी। नारायण था ही कुछ जिद्दी-सा। सुनता वह सबकी, पर करता था अपने मनकी। संस्कृतके श्लोक उसके कण्ठस्थ थे। वेद, पुराण, उपनिषद आदि उसकी जपमाला थे। लोगोंसे वह बहुत कम मिलता, उन्हीं किताबोंमें उसके दिन-रात कट जाया करते थे। वह तभी बाहर निकलता जब कि बाहरी जगत्को उसका प्रयोजन पड़ता। दुनियाके दुःख, व्यथामें वह प्राण देनेको बैठ जाता। मिश्र विरक्त होते—इस तरह तेरी तबीयत बिगड़ जायेगी। वह चुपचाप हट जाता। उस दिनकी उस दुनियासे वह सम्पूर्ण अपरिचित था; इसलिए कुछ विमूढ़-सा भी हो गया था। गृहस्थीमें थे केवल तीन प्राणी—मिश्र, मिश्र-पत्नी नन्दरानी और नारायण। नन्दरानीके लड़के नहीं थे, पर इसके लिए उन्हें कष्ट भी न था; वह देवरको लड़केसे भी अधिक स्नेह करती थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"नारायण, तुमने भुवनेश्वरके घर भोजन नहीं किया ?"

"जी नहीं।"

"ऐसा क्यों किया ? वे दुःखी हो रहे हैं।"

"श्राद्धका भोजन मैं कैसे करता ? पानी पीकर आया था।"

"क्यों, श्राद्धका भोजन क्या किसी तरहका पाप है ?"

वह कुछ कहना चाहता था, फिर भी संभलकर बोला—"मेरी तबीयत नहीं चाहती।"

"फिर कोई कारण तो जरूर होगा, बड़े-बड़े पण्डितोंके साथ मैं कई बार श्राद्धमें भोजन कर आया हूं।" इस बार बोल उठीं नन्दरानी—"तुम जो कुछ करते हो, उसे भी वही करना पड़ेगा, भला यह भी कोई बात है ? अपनी-अपनी रुचि तो है। अच्छा किया भैया तुमने भोजन नहीं किया। मैंने सुना है कि श्राद्धका भोजन अशुद्ध होता है, क्योंकि उसपर प्रेतकी दृष्टि पड़ जाती है।"

मिश्रजीकी हंसीसे बाहरके लोग तक चौंक पड़े। केवल नारायण गम्भीर हुआ।

"फिर ऐसा कहो। इसीसे तुमने भोजन नहीं किया ?" इस बार भी नारायण मौन ही साधे रहा।

"मैं ऐसा नहीं कहता कि तुम अपनी इच्छाके विरुद्ध ही भोजन किया करो, किन्तु किसीको दुखाना ब्राह्मणोंके धर्म-विरुद्ध है।"

"यदि धर्मके विरुद्ध काम हो तो भी किसीको तुष्ट करनेके लिए उसे करना ही चाहिए ?"

"अवश्य नहीं। न्याय धर्मके लिए यदि प्राण चला जाय तो जाने दो, पर धर्म, निष्ठा और सत्यको केवल ब्राह्मण नहीं, मनुष्य-मात्र कभी भी छोड़ नहीं सकता, याने छोड़ना उचित नहीं है।"

"यदि मेरी आत्माने श्राद्धके भोजनको अशुद्ध समझा हो ?"

मिसर हंसे—सरल, उदार हंसी—"वही बात। यानी अपनी भौजीके मतसे तुम सहमत हो। फिर तुमने ठीक ही किया है।"

"मैं भी कुछ-कुछ जानती हूं, बिलकुल अपढ़ नहीं हूं।" नन्दरानी प्रसन्न हो रही थीं।

"लो—भला तुम न जानोगी ? पुरोहितकी सहधर्मिणी ही ठहरीं"—यह था रूखा परिहास। नारायण चुपचाप बाहर चला गया।

( ३ )

फिर भी नारायणकी ख्यातिसे देश भर उठा। किसीने परिहाससे मुंह फेरा तो किसीने सम्मान-श्रद्धासे सिर नवाया। कोई कहता—अरे वह घमण्डी छोकड़ा—जिसके दूधके दांत भी न गिरे होंगे वह भला पुरोहित बन सकता है, और श्राद्ध-जैसे एक बड़े महत् कामको कहीं कर सकता है ? हां, मिसरजीकी बात निराली है। वे लिखे-पढ़े पण्डित ही ठहरे। दूसरा प्रतिवाद कर उठता—'चुप भी रहो भाई, कहां मिश्रजी और कहां नारायण। उमर कम होना ही यदि विद्या नापनेकी कसौटी हो तो कहने-सुननेके लिए कुछ भी अवशिष्ट नहीं रहता। हां, मिसरजी निष्ठावान्, सत्यवादी, ऊंचे दिलके ब्राह्मण जरूर ही हैं, पर विद्यामें नारायणको नहीं पा सकते। संस्कृत पाठशालामें वर्षों उन्होंने नारायणको पढ़ाया। भाईके पीछे बहुत खर्च किया, फिर भाई भी वैसा ही निकला है।"

कोई विद्वान् कह उठता—"भाई, वाह। बहुत दिनोंके पीछे उस दिन मैंने यथार्थ संस्कृत श्लोक सुने। अशुद्धि कहीं कुछ भी न थी। पहाड़ी झरनेकी भांति श्लोक झर रहे थे, कहीं तिनका-भर रुकावट न थी, साफ-सुथरे श्लोक। मानो सरस्वती उसके कण्ठमें बसी हों। भुवनेश्वरका श्राद्ध देखनेकी वस्तु थी।"

बात फैल गयी, बिजलीकी भांति—शीघ्रतासे। जमींदारके घर नारायणकी पुकार पड़ी। बड़े गर्वके साथ मिश्रजीने लोगोंमें यह बात कह दी—'मेरे नारायणको जमींदारने अपनी विधवा बेटी उमाको संस्कृत पढ़ानेके लिए चुना है।"

उमा किताब खोले एक भक्तकी भांति उस तेजस्वी सुन्दर ब्राह्मणका मुंह निहारती रहती। शायद ही किताबोंके अक्षर कुछ उसकी समझमें आते हों। और नारायण किताबोंमें आंखें गड़ाकर अपनी छात्राको समझा चलता। पढ़ाते-पढ़ाते कभी वह किताबोंके भीतर अपनेको खो बैठता ; देश, काल, पात्रका विचार न रहता और न उस छात्रा हीका। घण्टों बीत जाया करते। विधवा जलपान लेकर जब उसे पुकारती—"पण्डितजी बारह बज रहे हैं, पानी पी लीजिये।" तब वह चौंक पड़ता, विनयके साथ कहता—"दो बारसे ज्यादा तो मैं नहीं खाता, चाय तो पीता ही नहीं, बहन।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



( ४ )

"नारायण भैया, पण्डित तो धोखा दे गये। दिन-भरसे उपास किये बैठे हैं। बिरादरीवाले दरवाजेपर जमा हैं। अब हमारी लाज तुम्हारे हाथमें है, चाहे रखो या मारो।"

"मुझे क्या करना है, बलदेव मामा ?"

बलदेव ढीमर नारायणके पास गिड़गिड़ा रहा था—"मैं कह तो नहीं सकता भैया, पर कृपाकर यदि सत्यनारायणकी कथा बांच दो···।"

ढीमरोंके पण्डित कोई दूसरे ही थे, वह उस दिन आये न थे।

"नारायणजीकी कथा बांचना है तो साफ-साफ क्यों नहीं कहते, चलो-चलो। भला उनकी कथा बांचनेमें भी कोई इनकार कर सकता है ?"

"तुम वहां चले जाओगे तब मेरी दशा क्या होगी भैया ?"—कुबेर जैसवाराकी बूढ़ी मां हाथ जोड़कर खड़ी थी।

"मैं जल्दी लौटूंगा दादी, क्या तुम्हें कुछ जरूरत है ?"

"कुबेर तो चल बसे। अब जवान लड़कीका ब्याह कैसे करूं भैया, बच्चे और बूढ़ेसे लेकर कोई आठ आदमी खानेको हैं। घास काटकर जो कुछ पाती हूं उससे पेट-भर दाना भी नहीं मिलता। लड़की सयानी हुई। एक पैसा भी घरमें नहीं है। रामावतारने कहा, नारायण भैयाके पास जा, वे कुछ न कुछ कर देंगे।"

वह विचलित हुआ—अहा, बेचारी बुढ़िया। किन्तु उसके पास एक कौड़ी भी न थी, फिर भी उसने कहा—"अच्छा तुम घर जाओ दादी, जल्दी ही हम लोग कुछ प्रबन्ध करेंगे।"

नारायण पढ़ा रहा था और वह पढ़ रही थी। "रुपयोंका प्रबन्ध अवश्य करूंगा—" अनमने नारायणके मुंहसे निकल गया।

वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

नारायण विस्मित हुआ—"हंसी क्यों बहन ?"

"आप यह क्या कह रहे हैं ? कैसा प्रबन्ध ? किसका रुपया ?"

नारायण अवाक् रहा, मन ही मन विचारने लगा—क्या यह नारी अन्तर्यामी है ?

"मेरे मनकी बात तुम कैसे समझी बहन ?"

"अभी तो आप ही कह रहे थे।"

"मैं ? होगा भी।"

"क्या आपको रुपयेकी जरूरत है ?"

"है।"

अकपट सरल उत्तर सुनकर विधवा आनन्दित हुई—"तो कितने रुपये चाहिए ?"—उसने धीरेसे पूछा।

"उससे पूछ लूं।"

"किससे ?"—उसका विस्मय सीमा-रेखाको लांघ रहा था।

धीरे-धीरे सभी बातोंको सुनकर, उस शिशु-स्वभाव दयालु पण्डितके प्रति श्रद्धा-भक्तिसे उसका हृदय भर उठा। वह उठी—"आप इन जेवरोंको उसे दे दीजिये, मेरे विचारसे इसमें उसकी शादी हो जायगी।"

प्रसन्नताके साथ उसने कहा—"ईश्वरपर अचला मति रहे बहन, किन्तु तुम फिर पहनोगी क्या ?"

उसके हृदयमें यह विचार तक न उठा कि गृहस्वामीके अगोचरमें उन्हींकी विधवा युवती कन्याका दान लेना उचित है या नहीं।

वह हंसी—मलिन-व्यथातुर हंसी—"जेवर तो मैं नहीं पहनती पण्डितजी।"

उसने उसकी ओर दृष्टि फेरी—इतने दिनोंके बाद—हां, ठीक तो है।

वह लज्जित हुआ—"मैं भूल गया था।"

"तो क्या हुआ। इन्हें आप ले जाइये, उस बेचारीका काम चलेगा।"

"ईश्वरपर अचला मति रहे और दरिद्रोंपर अविनाशी दया"—उसने फिर आशीर्वाद दिया।

( ५ )

"क्या तुमने ढीमरके घर कथा बांची थी ?" मिश्रजीने नारायणसे पूछा। नन्दरानी भी आकर खड़ी हो गयीं।

"हां।"

"क्यों, क्या हुआ ?"—नन्दरानीने पूछा।

"जमींदारके घर कई लोग इकट्ठे हुए हैं। मुझे और नारायणको भी वहां बुलाया है। शूद्रके घर यजमानी क्यों किया—वहांका प्रश्न यही है।"

"बात तो ठीक है, तुम वहां क्यों गये भैया ? इस वंशमें कभी किसीने शूद्रकी यजमानी नहीं की।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"भगवानकी लीला सुननेके अधिकारी मनुष्य-मात्र हैं, भौजी।"

"तो शूद्रके घर निष्ठावान् ब्राह्मण क्यों नहीं जाते?"

"सो तो मैं नहीं जानता। अपनी-अपनी रुचि तो है।"

"कुछ भी हो, तुम कह देना कि मैं कुबेरके घर नहीं गया।" नन्दरानीने कहा।

"झूठ बोलूंगा?" वह विस्मयसे विमूढ़-सा हो रहा था। "और ऐसा कहूं क्यों? नारायणजीकी पूजाके लिए यदि कोई भी बुलावेगा तो जरूर जाऊंगा, क्या ईश्वर किसी एकके छोरमें बंधे रहते हैं? वे सबके हैं, उनकी लीला सुनने-का, उनकी पूजा करनेका अधिकार सारी दुनियाको है, वह सङ्कीर्ण नहीं, उदार हैं, भौजी।"

"तो तुम वहांपर यही सब कहोगे?"—उसका मुंह सूख रहा था—"आज तक मिसरजीको इस तरहसे बुलानेकी हिम्मत किसीको भी न हुई थी, भैया, यह बड़ा अपमान है।" मिश्रजी अभी तक चुपचाप सभी बातें सुन रहे थे। इस बार आदरसे नारायणकी पीठ ठोंककर बोले—

"शाबाश। सत्यको कभी न छोड़ना, कभी भी झूठ मत बोलना। जमींदारके घर मैं न जाऊंगा।"

कुछ इतस्ततः करनेके बाद वह फिर बोले—"तुम्हें केवल आज हीके लिए नहीं रोक रहा हूं। सदाके लिए कहता हूं, उस घरमें तुम कभी मत जाना।"

"अच्छा"—जाते जाते वह लौटा—"तो बहनको कौन पढ़ावेगा?"

"तुमसे कहना नहीं चाहता था, पर कह देना ही ठीक है। तुम्हें और उस दयाकी मूर्ति विधवाको बचपनसे भली भांति जानता हूं। तुम हो सत्य और वह है दया। तुम हो शिशु, वह है प्रवीणा। निष्ठा तुम हो तो वह त्याग है। ज्ञान तुम हो तो वह बुद्धि अवश्य ही है, और यदि तुम्हारा देवता होना निश्चित है तो उसका संयमकी जीवन्त मूर्ति होना भी अनिश्चित नहीं है। यह सब कुछ सच होते हुए भी दुनियाकी दृष्टिमें यह पाप है। उसकी उस दयाके दानको लोग पापकी दृष्टिसे देख रहे हैं। जगत्के विचारसे यह केवल प्रेमका खेल चल रहा है। बदनामीके भयसे जमींदार चुप तो जरूर है, पर वह तुम्हारा भीषण शत्रु बन बैठा है। वहां मत जाना।"

हाथोंसे मुंह ढांककर नारायण चिल्ला उठा—

"भैया—भैया, बस करिये।"

मिश्रजीने उसे छातीसे लगा लिया।

( ६ )

रातकी गहरी अंधेरीमें किसीने मिश्रजीका दरवाजा खटखटाया।

द्वार खुलते ही जमींदारने आकर मिसरके पैर पकड़ लिये—"भास्करकी जान बचाइये मिसर।"

मिश्रजी सब कुछ सुन चुके थे—याने जमींदार-पुत्र भास्कर गुस्सेमें आकर नौकरको मारनेके लिए दौड़ा था। ऊपरकी छत खुली हुई थी। दौड़नेकी धुनमें नौकर नीचे गिर पड़ा, उसी वक्त उसकी मौत भी हो गयी थी और साथ ही साथ पुलिसने भास्करको पकड़ लिया था। पुलिसका कहना था कि किसीने उसे ढकेल दिया और भास्करका कहना था—वह अपने-आप गिर पड़ा, जानबूझकर नहीं, धोखेसे।

"मुझे क्या करना पड़ेगा?"

"केवल इतना ही कि नारायणके बदले उस दिन आप गये थे और छतकी धूपमें बैठकर उमाको पढ़ा रहे थे। नौकर गीले कपड़े छतपर डाल रहा था, धोखेसे वह नीचे—रास्तेमें गिर पड़ा, किसीने उसे ढकेला नहीं था।"

मिश्रजी चुप रहे।

"वह मेरा एक ही लड़का है मिसर और निरपराध भी। हजारोंकी गवाहीसे जो न होगा, तुम्हारी एककी बातसे वह हो जायगा। तुम्हें कौन नहीं जानता? तुम-जैसे सत्यवादी-की बातको कोई झूठ नहीं कह सकता, मेरे भास्करकी जान बचाओ मिसर।"

"पर मैं झूठ नहीं बोल सकूंगा भैया"—शवकी नाईं विवर्ण मुखसे मिश्रने कहा।

"वह मेरा एक ही लड़का है, आपकी जरा-सी बातसे एक जान बच जायगी, यह अधर्म नहीं धर्म है भाई।"

"किन्तु तुलसी और गङ्गाजल हाथमें लेकर मैं झूठ कैसे कहूंगा? उसके पीछे मेरी ही आत्मा मुझसे मुंह फेर लेगी घृणा और विरागसे। तब मैं उस अशुचि आत्मासे देवताका पूजन कैसे करूंगा?"

"तो नारायणको कहनेके लिए कह दो।"

"वह कहेगा झूठ? क्या तुम उसे पहचानते नहीं हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"पर यह झूठ नहीं है, शालिग्राम शिला हाथमें लेकर मैं कह सकता हूं यह झूठ नहीं है। वह अपने-आप ही गिरा था।"

"निमित्त-भागी भास्कर अवश्य ही हुआ है। फिर मैं वहां था नहीं, तब तुलसी हाथमें लेकर कैसे कह दूंगा ?"

नारायण वहांसे हट गया।

× × ×

"कचहरीमें तुम झूठ बोल आये ? तुलसी और गङ्गाजल हाथमें लेकर !"—नन्दरानीके स्वरमें विस्मयके साथ ही साथ खेद भी था।

"हां भौजी"—वह खुशीसे मस्त हो रहा था।

"जवाब दो भैया, ऐसा क्यों किया ?"

"निर्दोषकी जान बचानेके लिए, भौजी।"

"तुम सदाके लिए नरकमें डूब गये, इसका भी कुछ विचार है !"

"नरक तो अपने मनमें है, पर आश्चर्य तो यह है कि मुझे आज खुशी हो रही है—बहुत ज्यादा। चलो भूख लगी है भौजी।"

मिश्रजी चुपचाप उसका मुंह निहारते रह गये।

---

# उषा-हार

रूपसि ! तेरा मृदु रूप-भार,
फूलोंके तनपर उतर-उतर,
परिमल बनकर करता विहार।
नवकिरणों-सा झिलमिल झिलमिल-
उज्ज्वल, तेरा सुकुमार गात;
मधुमय चितवनमें खिला हुआ,
यौवनका प्रिय छविपूर्ण प्रात;
जग प्यासा, केवल बूंद-बूंद,
अधरोंसे झरता रहे प्यार,
रूपसि ! तेरा मृदु रूप-भार।
निर्झरका "झर-झर" मधुर गान,
गुञ्जित करता निर्जन कानन ;
अपनी सुरभित सांसोंसे तुम,
सुरभित कर दो जगका आंगन ;
मानस-मधुवनमें एक बार,
बह जाओ बन मलयज बयार,
रूपसि ! तेरा मृदु रूप-भार।
तममय जग रवि, शशिसे पाता,
प्रतिदिन, प्रतिपल आलोकदान ;
जगमग कर दो, आलोकमयी,
मेरे जीवनके पथ, अजान ;
मधु-स्वर भर दो झुक झूम पड़े,
जीवन - वीणाका तार - तार,
रूपसि ! तेरा मृदु रूप-भार !
रजनी किसको है खोज रही ?
करमें लेकर तारक-प्रदीप,
तुम क्यों अधीर हो ? प्रेममयी !
तेरा प्रियतम तेरे समीप,
तेरे प्रियसे मिलनेको ही
यह पवन बहा बन निराकार,
रूपसि ! तेरा मृदु रूप-भार।
वह क्षितिज जहां नभ अवनीको,
करता रहता है सदा प्यार ;
हंस झेलो ना, अञ्चल फैला,
तुम राशि-राशि जगका दुलार ;
भर लो नेत्रोंमें स्वर्ण-स्वप्न,
मायाकी दुनिया लो निहार,
रूपसि ! तेरा मृदु रूप-भार।

—चन्द्रप्रकाश वर्मा 'चन्द्र'

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## रेडियो द्वारा अपराधियोंकी गिरफ्तारी

अपराधियोंका वैज्ञानिक ढङ्गसे पता लगानेके सम्बन्धमें १२ वर्षोंसे लन्दनके पुलिस विभागमें गुप्त प्रयोग किये जा रहे थे। इसके फलस्वरूप रेडियो द्वारा अपराधियोंको पकड़नेकी एक ऐसी प्रणाली आविष्कृत हुई है जिससे लन्दन अब अपराधियोंके लिए संसारका सबसे विपज्जनक स्थान बन गया है। इस समय स्काटलैण्ड यार्ड (लन्दन पुलिसका खुफिया विभाग) में एक पूर्ण सुसज्जित रेडियो-विभाग काम कर रहा है। इस विभागके अन्तर्गत लन्दनके चतुर्दिक २५ मीलके इर्दगिर्दमें पुलिसवालोंकी एक श्रेणी काम कर रही है।

स्काटलैण्ड यार्डके मकानोंकी छतके ऊपर एक control tower गुम्बद बनाया गया है जिसका सम्बन्ध रेडियो-पुलिस-दलके साथ है। देखनेमें यह किसी आधुनिक जहाजका रेडियोवाला कमरा जैसा प्रतीत होता है। ३० कुशल आपरेटर रेडियो यन्त्रमें काम करते हैं। इन्होंने यहांकी सारी बातें गोपनीय रखनेकी शपथ ग्रहण की है। बाहरके पुलिस-दलसे इनका सम्बन्ध दिनरात २४ घण्टे बना रहता है।

कमरेकी चारों तरफ बिलकुल पर्दा लगा हुआ है। कमरेकी एक तरफ एक छोटी-सी कोठरी है जहां चीफ आपरेटर रेडियो यन्त्रमें कान लगाये हुए लन्दनके प्रत्येक भागमें अपराधियोंकी टोहमें इधर-उधर घूमते हुए रेडियो पुलिस-दल द्वारा भेजे गये संवादोंको सुनता रहता है। कमरेके दूसरे भागमें लकड़ीकी छोटी-छोटी कोठरियां बनी हुई हैं जिनमें बाहरसे आवाज नहीं आ सकती। इन कोठरियोंमें टेलीफोनके यन्त्र हैं जिनका सम्बन्ध स्काटलैण्ड यार्डके एक्सचेञ्जसे है और फिर इसके द्वारा नीले रङ्गमें रंगे हुए २००० पुलिस टेलीफोन बक्सोंके साथ—जो लन्दनके बहुसंख्यक रास्तोंमें बिखरे हुए हैं—सम्बन्ध लगा हुआ है।

सड़कोंपर बहुत-सी पुलिस मोटरगाड़ियां हमेशा मौजूद रहती हैं और इन सबमें रेडियोके रिसीवर और ट्रैन्समीटर (शब्द ग्रहण करनेवाले और प्रेरण करनेवाले) यन्त्र लगे रहते हैं। इनके द्वारा स्काटलैण्ड यार्डके पुलिस दफ्तरके साथ अथवा आपसमें बातचीत की जा सकती है। इन मोटरगाड़ियोंमें ऐसी कोई बात नहीं है जिससे ये पहचानी जा सकें। गाड़ियां साधारण मोटरगाड़ियां जैसी होती हैं किन्तु इनमें खास तौरसे ऊंची शक्तिवाले इञ्जिन लगाये गये हैं।

प्रत्येक गाड़ीके साथ एक खास तरहका भोंपू लगा रहता है जिससे रास्तेकी पुलिस ऐसी गाड़ियोंके साथ विशेष व्यवहार करती है। पावदानके नीचे एक जालका घेरा रहता है जिसका सम्बन्ध शून्य वायुमण्डलसे रहता है और पीछेकी एक कृत्रिम सीटके नीचे रेडियोका यन्त्र लगा रहता है। गाड़ियोंकी शिनाख्त नहीं हो सके, इसके लिए उनके रङ्ग और नम्बरकी तख्तियां बराबर बदलती रहती हैं।

एक चोर और उसके साथी एक मोटरगाड़ी चुराकर वेस्ट एण्ड स्ट्रीटमें ले जाते हैं और वहांके जौहरीकी दूकानकी शीशेकी खिड़की फोड़कर अन्दरसे अंगूठियोंका एक बक्स लेकर गायब हो जाते हैं। एक पुलिस कानस्टेबल शीशेके फूटनेकी आवाज सुनता है; किन्तु जब तक वह वहां पहुंचता है, तब तक मोटर-सवार चोर भाग जाते हैं। इसपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस अफसर वेतारके तार द्वारा संवाद प्रेषित कर रहे हैं।

वह कान्स्टेबल फौरन् टेलीफोन करता है और आफिसके गुम्बद-घरमें बैठे हुए रेडियो यन्त्रके प्रधान आपरेटरको गाड़ी और उसपर सवार होनेवालोंके सम्बन्धमें सारी बातें मालूम हो जाती हैं।

इसके बाद प्रधान खुफिया इन्सपेक्टरके साथ बातचीत होती है और बातकी बातमें हरएक पुलिस स्टेशन जहां रेडियो यन्त्र लगा रहता है—तथा पुलिस मोटरगाड़ियोंमें संवाद पहुंच जाता है। अपराधियोंकी गाड़ीके रूप-रङ्गका वर्णन भी सङ्केताक्षरोंमें सूचित कर दिया जाता है और सब गाड़ियोंको यह हिदायत कर दी जाती है कि वे लन्दनकी मुख्य-मुख्य सड़कोंसे बाहर निकलनेके जितने मार्ग हैं सबको घेर लें।

राहगीरों तथा दूसरे लोगोंको यह देखकर आश्चर्य होता है कि जो गाड़ी अभी-अभी धीरे-धीरे गश्त लगा रही थी उसकी गति अचानक बढ़ जाती है और फिर वह घण्टेमें ७० मीलके हिसाबसे दौड़ने लगती है। वे बेचारे यह क्या जानें कि गाड़ीमें जो रेडियो यन्त्र लगा हुआ है उसके द्वारा स्काटलैण्ड यार्डसे अभी तुरत कोई संवाद पहुंचा है।

इसके आध घण्टे बाद चोर मजेमें ग्रेट नार्थ रोड होकर मोटर दौड़ाते चले जा रहे हैं और अपनी सफलतापर मन ही मन प्रसन्न होते हुए परस्पर बधाइयां प्रदान करते हैं। कुछ दूर आगे बढ़नेपर वे सोचते हैं कि अब कोई खतरा नहीं रहा। सड़कपरकी पुलिस उनके पीछे ही रह जाती है।

इसी समय एक बन्द गाड़ी उनके पीछे पहुंच जाती है। इस गाड़ीकी ओर वे एक बार देख-भर लेते हैं और समझते

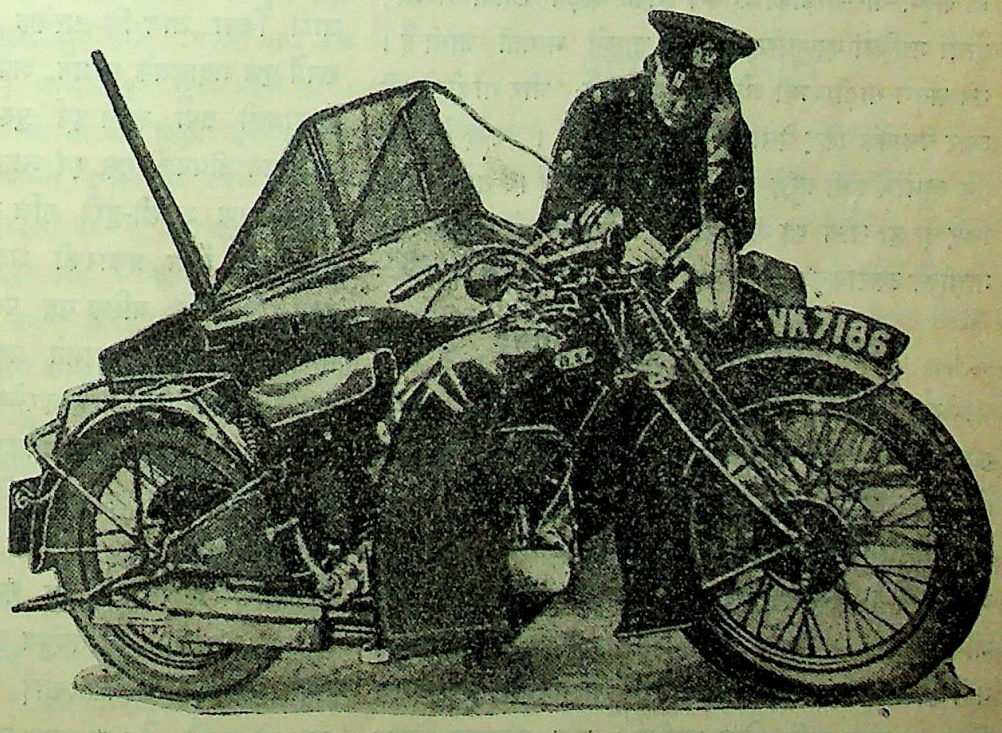


न्यू कैसिलका एक गश्ती पुलिसमैन गाड़ीमें लगे हुए रेडियो यन्त्रके सहारे प्रधान कार्यालय द्वारा प्रेषित संवादको ग्रहण कर रहा है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हैं कि इसमें जो लोग बैठे हुए हैं वे किसी घुड़दौड़में जा रहे हैं। जब तक वे इतना सोचते हैं तब तक वह सैलून गाड़ी उनकी गाड़ीसे आगे हो जाती है। उसके आगे होते ही उसके पीछेकी खिड़कीके पास एक काला पर्दा लटक जाता है और उसपर बड़े-बड़े सफेद अक्षरोंमें लिखा रहता है :— "रोको। पुलिस।"

अब चोरोंको मालूम होता है कि माजरा क्या है और वे भी बड़ी फुर्तीसे काम करते हैं। वे अपनी गाड़ीको एक किनारे कर लेते हैं जिससे पुलिस-सैलून गाड़ी यह समझकर कि चोरोंकी गाड़ी आदेशका पालन कर रही है, रुक जाती है। किन्तु इसी क्षण अपराधियोंकी गाड़ीका ड्राइवर पुलिस-गाड़ीका चक्कर काटकर अपनी गाड़ीको आगे बढ़ा लेता है और जोरोंसे गाड़ी चलाकर भाग जाता है। तो क्या चोर फन्देसे निकल भागे ?

किन्तु उन्होंने पुलिसकी सैलून गाड़ीको जैसा समझ रखा था वह वैसी नहीं है। वे क्या जानें कि इसमें ६० घोड़ेकी ताकतका इञ्जिन लगा हुआ है। दो मिनटसे कममें ही सैलून चोर-गाड़ीकी बगलसे होकर दौड़ने लगती है और दोनों गाड़ियां एक्सप्रेस ट्रेनकी चालमें भागती जाती हैं। तब सैलून गाड़ी बायीं ओर कुछ मुड़ती है; चोर-गाड़ीको भी टक्कर बचानेके लिए ऐसा ही करना पड़ता है। चन्द सेकण्डों तक दोनोंमें इसी तरह कलाबाजियां होती हैं। तब चोरोंके लिए दो ही मार्ग रह जाते हैं—या तो गाड़ी रोक दें अथवा गाड़ीको टकराकर चूर-चूर करा दें।

## कम्यूनिस्टोंकी अग्निपरीक्षा

रूसमें कम्यूनिस्ट दलके सम्बन्धमें जो नीति काममें लायी जाती है उसके अनुसार दलमें वे ही लोग लिये जाते हैं जो मन-प्राणसे केवल साम्यवादके आदर्शमें विश्वास ही नहीं करते, बल्कि अपनी जीवनव्यापी साधना द्वारा इस आदर्शको कार्यरूपमें परिणत करनेका प्रयत्न भी करते हैं। इस जीवन-व्यापी साधनामें किसी प्रकारके समझौतेके लिए स्थान नहीं हो सकता। किसी भी दशामें साम्यवादके सिद्धान्तके विरुद्ध आचरण नहीं होना चाहिए। रूस एकमात्र विशुद्ध कम्यूनिस्टको ही चाहता है। अर्ध-विश्वासी एवं संशयालुओंके लिए किसी प्रकारकी भी रियायत नहीं की जाती।

समय-समयपर कम्यूनिस्ट दलको अग्निपरीक्षामें विशुद्ध करके कम्यूनिस्ट सङ्घका सङ्गठन किया जाता है। इस शुद्धिकरणको रूसी भाषामें "Chistka" कहते हैं। इस पद्धतिके अनुसार किसी भी सदस्यके विरोधी राजनीतिक मतवाद तथा व्यक्तिगत त्रुटि या 'पाप'को क्षमा प्रदान नहीं की जाती। उसे फौरन् दलसे पृथक् कर दिया जाता है। गत वर्ष इस शुद्धिकरणके व्यापारमें कम्यूनिस्ट दलसे सम्भवतः प्रतिशत २० से लेकर २९ तक सदस्य अर्थात् ६-७ लाख कम्यूनिस्ट दलच्युत किये गये थे। जिस समय कम्यूनिस्टोंकी यह अग्निपरीक्षा चलती रहती है उस समय कोई नया सदस्य भर्ती नहीं किया जाता।

एक प्रत्यक्षदर्शीने इस अग्निपरीक्षाका वर्णन करते हुए लिखा है कि इसका वास्तविक मर्म समझनेके लिए रूसमें कुछ समय तक वास करनेकी जरूरत है। जिस समय यह अग्निपरीक्षा होती रहती है उस समय ऐसा मालूम पड़ता है, मानो प्रत्येक कम्यूनिस्ट या यों कहिये कि समग्र जातिके ऊपरसे आशङ्का एवं दुर्भावनाकी एक आंधी बह गयी हो। जरा कल्पना तो कीजिये कि आज यदि इस देशमें यह आदेश जारी किया जाय कि प्रत्येक सरकारी नौकरको प्रकाश्य रूपमें एक अदालतके सामने अपने अतीत जीवनकी समस्त घटनावली तथा अपने पूर्व पुरुषोंके राजनीतिक मतामत, व्यक्तिगत जीवनकी गुप्त एवं अप्रकट कहानी और साधारणसे साधारण अच्छी-बुरी रुचि तककी परीक्षा देनी होगी, तो इससे किस प्रकारकी अवस्था उत्पन्न हो जायगी। इतना ही नहीं, बल्कि यह परीक्षाकार्य आफिसके निम्नतम कर्मचारियोंके सामने प्रकाश्यरूपमें चलेगा और इन सबको 'असामी' से जिरह करनेका हक होगा। और देशोंमें तो यदि कोई सरकारी नौकर दोषी सिद्ध होता है तो बहुत करके यही हो सकता है कि उसकी नौकरी चली जाय, किन्तु समाजमें रहकर वह किसी उपायसे जीविका-निर्वाह कर सकता है। पर रूसमें यह बात नहीं है। एक बार जो कम्यूनिस्ट जातिच्युत हुआ वह सदाके लिए चला गया। उसके परित्राणका कोई उपाय नहीं। कारण, वहां राष्ट्र ही प्रभु है और यह राष्ट्र सम्पूर्णरूपसे कम्यूनिस्ट दलकी मुट्ठीमें है। अतएव कम्यूनिस्टदल द्वारा निर्वासित होनेपर उस व्यक्तिकी रक्षा करनेवाला और कोई नहीं रह जाता। उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लिए निर्वासन, मृत्यु या स्वाधीनतामें कोई विशेष अन्तर नहीं होता।

यदि बोलशेविज्मको रूसियोंका ईसाई धर्म मान लिया जाय तो इस "Chistka" की आत्म-अपराध-स्वीकारके साथ तुलना की जा सकती है। किन्तु धर्म-विषयमें तो आत्म-अपराध स्वीकार करनेके बाद उसकी मार्ज्जनाके लिए प्रायश्चित्तकी व्यवस्था की गयी है, पर इस Chistka में तो मार्ज्जनाके लिए कोई स्थान ही नहीं है। किसी गुप्त कथाको गोपन रखनेका कोई उपाय ही नहीं है। और शास्ति? शास्ति तो साथ-साथ दी जाती है। फैसला स्थगित रखनेके लिए कोई व्यवस्था ही नहीं है। सार्वजनिक सभा, समाचार-पत्र अथवा रेडियो द्वारा यह आत्म-अपराध-स्वीकृति एवं शुद्धिकरण प्रचारित किये जाते हैं। प्रत्येक व्यक्तिकी कलङ्क-कथा, प्रत्येक व्यक्तिका प्रायश्चित्त देशकी समस्त जनताके समक्ष उद्घाटित कर दिया जाता है।

एक बार इवान इवोनफ नामक एक विशिष्ट कम्यूनिस्ट-की अग्निपरीक्षा हो रही थी। ये रेड स्टार फैक्टरीके एक डाइरेक्टर हैं। इवान इवोनफको धर्माधिकारीके सम्मुख खड़ा किया गया और उनकी परीक्षा होने लगी। दूसरी ओर उस कारखानेके समस्त कर्मचारी बालक, वृद्ध, युवा और कारखानेके बाहरके बहुत-से आदमी भी वहां विचार सुननेके लिए उपस्थित थे। इन सबके सामने इवोनफकी उनके जीवन-व्रतके सम्बन्धमें कठोर परीक्षा हो रही थी और उपस्थित जन-मण्डलीमेंसे किसीको भी यह अधिकार था कि वह इवान इवोनफसे प्रश्न पूछे, उनपर जिरह करे। लाल कपड़ेसे ढके हुए एक टेबुलके पास तीन कम्यूनिस्ट विचारक बैठे हुए हैं। इन्हें Chistka commission कहा जाता है। इवोनफ अपना एक हाथ टेबुलपर रखे हुए पास ही खड़े हैं। वह एक साहसी पुरुष हैं। किन्तु आज रातमें इस विचार-सभामें उपस्थित होकर अपनी जीवन-कहानीको उद्घाटित करते हुए उनका साहस मानो छूटता जा रहा है। उन्होंने अपनी आत्मकथाका आरम्भ परिष्कृत कण्ठ और उच्च स्वरसे किया। किन्तु यह क्या? उनका कण्ठस्वर क्रमशः क्षीण हो रहा है। वह परिष्कृत कन्ठस्वर कहां चला गया? वह स्वर, जिससे वह अपने कमरेमें मजेसे बैठे हुए अपनी मित्र-मण्डलीके बीच सरस वार्तालाप किया करते थे और साथ ही वोडका Vodka. (रूसमें चाय जैसा एक प्रकारका पेय पदार्थ) पात्रको ओठोंसे लगाये हुए चूसा करते थे। आज तो यह मित्र-मण्डली नहीं है, यह तो विचार-सभा है। इसीलिए तो यह रुद्धकण्ठ, स्वर-कम्पन!

नहीं, उनका जीवन सर्वथा निष्कलुष नहीं है। उनका स्वर मन्द हो गया। एक बार उन्होंने अपने एक भाषणमें ट्राटस्कीके मतवादका समर्थन किया था। एक बार और उन्होंने बुखारिनके पृथक् दल-गठनका अस्पष्ट भावसे समर्थन किया था। ये सब बातें सामान्य और तुच्छ होनेपर भी ऐसी नहीं हैं कि उड़ा दी जायं। आज इस विचार-सभाके सम्मुख उनकी जीवन-कहानीकी ये सामान्य बातें भी असामान्य रूपमें प्रतिध्वनित हो उठीं और उनका गला रुंध गया! इस प्रकार प्रत्येक कम्यूनिस्ट सदस्यको निष्करुण श्रमदेवताके निकट अग्निपरीक्षामें अपनेको तपाकर निष्कलुष एवं विशुद्ध बनाना पड़ता है। और तब कहीं जाकर वह इस योग्य बनता है कि कम्यूनिस्ट दलमें भर्ती होने लायक समझा जाय। सत्याग्रह व्रतके समान ही कम्यूनिस्टकी यह साधना भी असिधाराव्रत है!

## मायाविनी नारी

अमेरिकामें तलाकके मुकदमोंकी संख्यामें अत्यधिक वृद्धि हो रही है। इनमें बहुधा ऐसे मुकदमे भी होते हैं जिनमें तलाकके कानूनसे लाभ उठाकर धूर्त मायाविनी तरुणियां धनी पुरुषोंको अपने रूप-यौवनका शिकार बनाती हैं और फिर उनसे रुपये ऐंठकर अदालत द्वारा विवाह-सम्बन्ध-विच्छेद करा लेती हैं। तलाक-कानूनकी इन त्रुटियोंको दूर करानेके लिए सर विलियम टाम्स नामक एक अमेरिकन विशेष उद्योग कर रहे हैं। इस प्रकारके कुछ तलाकके मामलोंका आपने उल्लेख किया है जिनका सारांश हम यहां सङ्कलित किये देते हैं। सर विलियमने लिखा है :—मैं एक मित्रके साथ बैठा हुआ था। इसी समय एक रूपसी तरुणी मिलनेकी इच्छासे वहां आ पहुंची। उसका नाम था जेन। किशोरावस्थामें यह जेन एक नृत्यशालामें नर्तकीका काम करती थी। नर्तकीका पेशा करते हुए उसे यह जान पड़ा कि उसके रूप एवं यौवनश्रीमें पुरुषोंको फंसानेकी माया है। इस माया-जाल द्वारा विभ्रम रचकर वह सहज ही लाखों रुपया पैदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर सकती है। मनमें इस आकांक्षाके उदित होते ही वह पुरुषोंके शिकारमें विचरण करने लगी।

आखिर जेनने एक धनी वणिकको अपने रूपपाशमें आबद्ध किया। उस वणिककी वार्षिक आय ९० हजार डालर थी। जेनके नयन-वचनसे मधु क्षरित होने लगा और उस मधुको पान करनेके लिए वणिक मत्त हो उठा। फिर इसके बाद दोनों-में विवाह हुआ। किन्तु विवाह होनेसे ही क्या होता है। रूप-मत्त वणिकको अपनी रूपसी स्त्रीके साहचर्य्यका बहुत कम अवसर मिलता था। वह दिन-भर बिछौनेपर पड़ी सोती रहती थी और रातमें नृत्य-सङ्गीतमें उन्मत्त बनी रहती थी। किन्तु जेनके व्यवहारमें किसी प्रकारकी कटुता नहीं थी। वह स्वामीके प्रति किसी प्रकारकी अशिष्टता नहीं दिखाती थी। सिर्फ उसके समागममें बहुत कम रहा करती थी।

सुन्दरी स्त्रीके समागमसे वञ्चित रहनेके कारण स्वामीका रूप-विह्वल नशा क्रमशः क्षीण होने लगा। वह किसी अन्य रूपसीके सन्धानमें फिरने लगा। भाग्य देवता उसपर प्रसन्न थे। एक सुन्दरी तरुणी अपना दरदी चित्त लेकर उस धनी वणिकके पास उपस्थित हुई और उसे अपनी मर्म-व्यथा सुनायी। यह किशोरी थी जेनकी बाल-सङ्गिनी। दरदी किशोरीने कहा कि वह धनी वणिकके प्रेमकी पीरको दूर करेगी।

फिर इसके बाद जो कुछ होना चाहिए था, सब कुछ हुआ। उस दरदी किशोरीको लेकर वणिक अपनी प्रेम-पीड़ाका उपशम करने लगा। उन्मत्तताकी सीमा नहीं रह गयी। दम्पति दो तन एक प्राण बनकर जीवन-यापन करने लगे। इधर निष्कलङ्कचरित्र पत्नी जेनने तलाकके लिए अदालतकी शरण ली। अदालतने उसके भरण-पोषणके लिए वार्षिक १० हजार डालरकी डिगरी स्वामीके ऊपर ठोक दी।

इस डिगरीके साथ-साथ वह दरदी किशोरी भी अदृश्य हो गयी। इसके साथ जेनने पहलेसे ही षड्यन्त्र रच रखा था। वणिकसे रुपये ऐंठने तथा अदालतसे डिगरी प्राप्त करनेके बाद दरदी किशोरीने तो किसी अन्य पुरुषको अपना शिकार बनाया और जेनने भी दूसरे पतिको वरण किया।

इस जेनने अब तक चार बार विवाहका यह स्वांग रचा है और चारों बार इसी तरह वञ्चक बनकर सौन्दर्योन्मत्त पुरुषोंको अपने षड्यन्त्रका शिकार बनाया है।। इस छलना द्वारा उसने ७०-८० हजार डालरकी वार्षिक आय कर ली है और जीवनके सुख लूट रही है।

रूपके कुहकजालमें प्रौढ़वयस्क पुरुषोंको फंसाना सहज होता है। इसलिए इस प्रकारकी तरुणियोंकी दृष्टि तरुणों-की ओर प्रायः कम रहती है। प्रौढ़वयस्क धनियोंके ऊपर ही ये अपने रूपबाणका लक्ष्य करती हैं। क्योंकि इनकी यह धारणा होती है कि प्रौढ़वयस्क पुरुष संसारमें अपनेको अनावश्यक समझते हैं—उनका प्रेमहीन, स्वप्नहीन जीवन उन्हें दूभर मालूम पड़ता है। इसलिए किसी रूपवती तरुणी कामिनीके मन्दस्मित विलास-विभ्रम एवं नयन-भङ्गियोंसे जिस प्रकार ये सहज ही विद्ध हो जाते हैं उस प्रकार और कोई नहीं।

सर विलियमने एक और घटनाका इस प्रकार वर्णन किया है। एक तरुण स्वामी है। उसकी कर्मनिष्ठा असीम है। अपने जीवनमें यशकीर्त्ति अर्ज्जन करनेकी महत्त्वाकांक्षा लेकर वह उसीकी साधनामें संलग्न रहता है। उसकी तरुणी स्त्री 'तितली' Butterfly जातिकी थी। एक फूलसे दूसरे फूलपर उड़कर विभिन्न फूलोंका मधुपान करनेमें ही वह नारी-जीवनकी सार्थकता समझती थी। वस्त्राभूषण एवं प्रसाधनमें वह पानीकी तरह रुपया बहाया करती। नाच, सिनेमा, थियेटरमें शामिल हुए बिना उसे चैन ही नहीं। तरुण स्वामीने अपनी पत्नीकी इस चालढालपर विरक्त होकर उससे कहा—"इतनी फिजूलखर्ची नहीं चल सकती। विवाह-की शर्त तुम्हें पालन करनी होगी—घरमें रहना होगा। इस प्रकार तुम तमाम दिन-रात यथेच्छ विचरण नहीं कर सकती।" गर्विता पत्नीने स्वामीके इस आदेशका पालन नहीं किया। बेपरवाह बनकर रहने लगी। रातमें जब मर्जी होती, घर लौटती। स्वामीके पूछनेपर जवाब देती—"आमोद-प्रमोद कर रही थी। जीवनकी सृष्टि इसलिए नहीं हुई है कि गम्भीर और उदास बनकर आहें भरा करें, खासकर इस चलमान् तरुण वयसमें!"

स्वामीके लिए स्त्रीके हृदयमें कुछ भी दर्द नहीं था। आखिर स्वामीने भी एक विवाह-वियुक्ता किशोरीके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपना प्रणय-सम्बन्ध स्थापित किया। विवाह नहीं हुआ, किन्तु दोनों पति-पत्नीके रूपमें रहने लगे। आखिर यह मामला अदालतमें पहुंचा। पत्नीको अदालतसे भरणपोषणके लिए खर्च मिला। दूसरी स्त्रीके साथ सामाजिक शील-सङ्कोचपर पदाघातकर एकत्र वास होनेपर भी अभी विवाह नहीं हुआ है। क्योंकि विवाह-विच्छेदकी डिगरी अभी absolute मुकम्मिल नहीं हुई है। दुःशीला एवं स्वैरिणी पत्नीके पाले पड़कर बेचारे पतिने अपने जीवनकी सारी महत्त्वाकांक्षाओं-पर पानी फेर दिया। कहां गया उसका वह यशकीर्त्तिका स्वप्न-राज्य!

सर विलियम लिखते हैं—कानूनके सुयोगसे लाभ उठा-कर बहुत-सी मायाविनी स्त्रियां अपने रूपकी छलना द्वारा पुरुषको फंसाकर उसके साथ विवाह करती हैं और फिर इस प्रकार लीलायें करने लगती हैं। उन्होंने विवाहको एक कौतुक बना रखा है। विवाहके बाद वह कौन-सी मूर्ति धारण करेगी, यह कौन बता सकता है! कानूनकी आड़में इस प्रकारका निर्लज्ज व्यापार चल सकता है, यह कानूनके लिए गौरवकी बात नहीं हो सकती।

## डाक-द्वारा विवाह-विच्छेद

मैक्सिकोमें विवाह-विच्छेद करना बहुत ही सहज और अल्पव्ययसाध्य है। विवाह-बन्धनमें आबद्ध दम्पति जिस प्रकार थोड़े ही समयमें वहां अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर सकते हैं उतने समयमें संसारमें और कहीं भी सम्भव नहीं हो सकता।

जिन लोगोंने विलासिता एवं उच्छृङ्खलताके उद्दाम स्रोत-में अपनेको बहा दिया है, जिन्होंने जीवनका परिपूर्ण रूपसे उपभोग करना ही अपना एकमात्र लक्ष्य एवं आदर्श बना रखा है उनके लिए एक पत्नीके वर्तमान रहते जीवन एवं यौवनका यथेच्छ उपभोग सब समय सम्भव नहीं होता। विवाह-बन्धनसे मुक्त हुए बिना किसी नवीना प्रणयिनीका अनुग्रह लाभ करना कठिन हो जाता है। इसलिए विवाहित व्यक्ति कमसे कम समयमें विवाह-विच्छेद करके अपनी प्रण-यिनीके साथ मिलना और फिर उसके साथ विवाह-बन्धनमें आबद्ध होना चाहते हैं। मैक्सिकोकी अदालत विवाह-विच्छेद-कामियोंको इस कार्यमें पूर्ण सहायता पहुंचाती है। किस प्रकार अल्प समयमें ही वहां विवाह-विच्छेद किया जा सकता है, इसका एक उदाहरण यहां दिया जाता है।

मैक्सिकोकी विवाह-विच्छेदकी अदालतमें एक वकीलके आफिसमें एक दिन चार मनुष्य बैठे हुए थे—इनमें दो पुरुष और दो स्त्रियां थीं। ये परस्पर दम्पति थे। दोनों पुरुषोंने एक-दूसरेकी पत्नीका अनुग्रह प्राप्त किया था और इस समय अपनी-अपनी पत्नीके साथ उनकी अनबन रहा करती है। दोनों रमणियां विवाह-बन्धन विच्छेद हुए बिना अपने-अपने प्रणयीको आत्मदान करनेके लिए प्रस्तुत नहीं हैं। इसलिए तलाककी गरजसे इन्होंने अदालतकी शरण ली है।

वकीलने सहानुभूतिके साथ इन युगल जोड़ियोंकी सारी बातें सुनीं। ये दोनों जोड़ियां यह जानकर कि मैक्सिकोमें विवाह-बन्धन शीघ्र विच्छिन्न किया जा सकता है, वायुयान द्वारा न्यूयार्कसे यहां आयी थीं। चाहे जितना खर्च हो, कुछ परवाह नहीं! विवाह-विच्छेद शीघ्रसे शीघ्र होना चाहिए।

वकीलने कहा—दोनों पति और पत्नीके एकमत होनेपर विवाह-विच्छेदमें कोई असुविधा नहीं होगी। मैक्सिकोकी अदालतमें तलाकके मामलोंमें स्वामी और स्त्री दोनोंके एकमत होनेपर साथ ही साथ तलाककी डिगरी मिल जाती है। इस मामलेमें अर्जी लिखनेमें एक घण्टासे अधिककी देर नहीं होगी। विचारक वकीलके मित्र हैं। अतएव दरखास्त दाखिल करते ही वह उसपर विचार करने लग जायंगे। १० बजे दिनमें तलाकके लिए दरखास्त दी गयी और १२ बजे तलाकका आदेश प्राप्त हो गया। इसके बाद शीघ्र ही नये विवाहका लाइसेन्स प्राप्त करके उसी दिन ३ बजे दोनों पुरुषोंने परस्परकी भूतपूर्व पत्नियोंको अपनी-अपनी नयी पत्नी बनाया। और इस प्रकार उसी दिन प्रणयी युगल पति-पत्नीका सम्बन्ध स्थापित करनेमें समर्थ हुए।

मैक्सिकोकी अदालतमें तलाकके मामलोंमें तलाक चाहने-वालोंकी उपस्थिति भी आवश्यक नहीं है। आवेदनकारी यदि चाहे तो डाक द्वारा अपना वकील नियुक्त कर सकता है और उसे आवश्यक निर्देश प्रदान कर सकता है। उसकी ओरसे वकील मामला दायर करके उसकी पैरवी करेगा और तलाककी डिगरी प्राप्त करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रेनीमें भी विवाह-विच्छेद करना बहुत ही सहज है। किन्तु मैक्सिकोके समान सहजसाध्य नहीं है। यहां मामलेकी पेशीके समय आवेदनकारीको स्वयं उपस्थित रहना पड़ता है। मामला दायर करनेके पूर्व ६ सप्ताहों तक वहां रहे बिना अदालतमें तलाकका मामला दायर नहीं हो सकता। इसलिए अपना सब कामकाज छोड़कर बाहरके लोगोंके लिए ६ सप्ताह तक यहां रहना सम्भव नहीं होता।

इसलिए गत कई वर्षोंसे रेनीकी अदालतमें तलाकके मामलोंमें ह्रास हो रहा है। दूसरी ओर मैक्सिकोके अन्तर्गत एल-पासोकी अदालतने तलाकके मामलोंमें दो वर्षके अन्दर ही काफी शोहरत हासिल कर ली है। यहां प्रतिमास औसत २०० विवाह-विच्छेद होते हैं। मैक्सिकोके और भी सात-आठ स्थानोंमें इसी प्रकार विवाह-विच्छेद हुआ करते हैं।

मैक्सिकोके सीमान्तपर अन्तर्राष्ट्रीय सेतुके उस पार गुयारेज शहरकी ऐतिहासिक प्रसिद्धि है। यह शहर चोर, डकैत, नारी-अपहरणकारी तथा इसी प्रकारके अन्यान्य अपराधियोंसे परिपूर्ण है। मरुभूमिकी दूसरी ओर एक क्षुद्र समतल भूमिमें यह नगर अवस्थित है। गुयारेज शहरकी अदालत विवाह-विच्छेदके लिए काफी प्रसिद्ध हो रही है। इस अदालतके तलाकके मामलोंके विचारक इगनासिया जामेराकी धारणा है कि तलाकके मामलोंका शीघ्र विचार करनेके लिए उन्होंने एक रेकर्डकी सृष्टि की है। कुछ समय पूर्व एक दिनमें उन्होंने ६० मामलोंका विचार करके ६० दम्पतिको विवाह-बन्धनसे मुक्त कर दिया। उनका कहना है कि इसमें आश्चर्य करनेकी कोई बात नहीं है। अदालतके अन्दर अपने कमरेमें बैठकर मैं इन सब मामलोंका विचार करता हूं। आवेदनकारीको स्वयं उपस्थित रहने अथवा कोई गवाह पेश करनेकी जरूरत नहीं होती। दरखास्तके साथ आवश्यक कागजपत्र दाखिल करना होता है। और इन सबको देखकर ही मैं अपना फैसला देता हूं।

इस अदालतमें जितने मुकदमे आते हैं उनमें अधिकांशमें पति या पत्नीके विरुद्ध व्यभिचारका प्रमाण पाया जाता है। उक्त विचारकका कहना है कि भिन्न देशवासी पति-पत्नी ही सबसे अधिक संख्यामें तलाकके लिए दरखास्त दाखिल करते हैं। इससे यह अनुमान होता है कि भिन्न देशवासी स्त्री-पुरुषोंके लिए रूपके नशेमें उन्मत्त होकर परस्पर विवाह करना सहज होनेपर भी सुख-शान्तिपूर्वक वैवाहिक जीवन यापन करना सहज नहीं होता। कुछ दिनोंमें ही इनका नशा उतर जाता है, सुख-स्वप्न नष्ट हो जाता है और विवाह-विच्छेदके लिए अदालतकी शरण लेते हैं।

विवाह-विच्छेद सहज करनेके लिए मैक्सिकोके विभिन्न प्रदेशोंमें अनेक नये-नये कानून बनाये गये हैं। अमेरिकाके सीमान्तपर सोनोरा प्रदेशमें सबसे पहले इस प्रकारका एक कानून बना था। इसके साथ-साथ वहां तलाकके मामलोंमें वृद्धि होने लगी। सोनोरा-अमेरिकाके सीमान्तपर होलीउडके निकट नोगेलस शहर है। होलीउडके अभिनेता और अभिनेत्री शीघ्र और सहज-रूपमें विवाह-विच्छेद करानेके लिए इसी शहरमें आया करते हैं। विवाह-विच्छेदके लिए डोलोरस डेलरियो, न्यान्सी केरेल प्रभृति सुपरिचिता फिल्म-अभिनेत्रियोंने नोगेलसकी अदालतमें ही मामला दायर किया था।

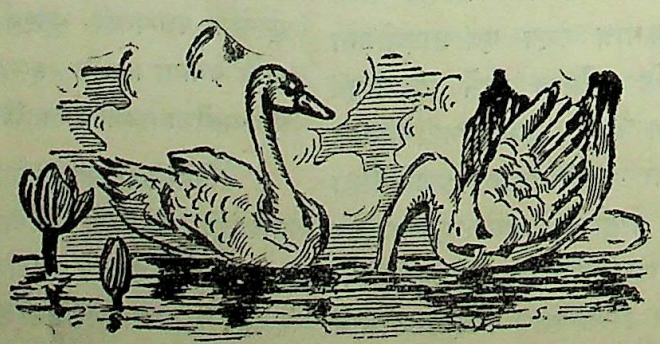

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## नारी-अपहरणकारियोंको दण्ड

दिल्लीके महिला-सङ्घने अभी उस दिन अपनी एक बैठकमें जिस प्रश्नकी ओर सङ्केत किया है, वह वास्तवमें बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। सङ्घकी बैठकमें अत्यन्त जोरदार शब्दोंमें सरकारसे प्रार्थना की गयी कि वह नारी-अपहरण-कर्ताओंको इतने कठोर दण्ड दे कि पापी जीवन-भरके लिए सबक सीख जायें और फिर उनमें ऐसा जघन्य कृत्य करनेका साहस न रह जाय। इस प्रकारके कठोरसे कठोर दण्डोंकी व्यवस्था करनेका फल यह होगा कि दूसरे गुण्डोंका भी उत्साह ठण्डा पड़ जायगा और धीरे-धीरे इस प्रकारके घृणित काण्डोंका अस्तित्व मिट जायगा और फिर इस प्रकारकी अशान्तिसे समाजका वातावरण दूषित न रह जायगा।

दिल्लीके नारी-सङ्घके प्रस्तावकी उपयोगितामें किसी प्रकारका सन्देह नहीं किया जा सकता। वास्तवमें इधर भारत-भरमें नारी-अपहरणके अपराधोंकी संख्या इतनी बढ़ती जा रही है कि देखकर कलेजा कांप उठता है। इधर गुण्डोंका साहस इस कदर बढ़ गया है कि कभी-कभी तो वे दिनदहाड़े लड़कियोंको उठा ले जाते और लापता हो जाते हैं, और पुलिस हजार सिर पटकनेपर भी उनका पता नहीं लगा पाती। कभी-कभी यह देखा जाता है कि ये नारकी कीड़े नवयुवतियोंको बलात् भगा ले जाते हैं और किसी गुप्त स्थानपर अपनी जघन्य कामवासनाको बुझाकर उन्हें दर-दर ठोकरें खानेके लिए मारकर भगा देते हैं। इस प्रकारके भयङ्कर अपराधोंके कारण समाजमें घोर अशान्ति फैली हुई है। और अवस्था इतनी भीषण हो गयी है कि बड़े-बड़े उत्सवों और पर्व-त्योहारोंके समारोहोंमें स्त्रियोंका जाना खतरेसे खाली नहीं कहा जा सकता। कोई ऐसा मेला या पर्वोत्सव नहीं जाता जिससे स्त्रियोंके प्रति होनेवाले अत्याचारों और अपराधोंका समाचार न मिले। अन्यान्य सैकड़ों उदाहरणोंकी बात जाने दीजिये। अभी पिछले ही दिनों सम्राट्के जुबिली-महोत्सवके समारोहमें कई स्थानोंपर स्त्रियोंपर जुल्म ढाये गये, उनका सतीत्व आततायियों द्वारा लूट लिया गया और सरकारी अफसरों द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा-प्राप्त भारतकी शान्ति और सुव्यवस्थाकी रक्षक पुलिस भी गुण्डोंका कुछ न कर सकी। जिस समय सम्राट् महोदयके नामपर हर्ष मनाया जा रहा था, उस समय भी कुछ पाजी गुण्डे अपनी कामवासनाओंसे मातृ-जातिको कलुषित और कलङ्कित कर रहे थे, यह वास्तवमें भारतमें शान्ति और सुव्यवस्था बनाये रखनेका अभिमान करनेवालोंके लिए घोर लज्जा और कलङ्ककी बात है। किन्तु ये तो एक-दो घटनायें हैं और इस प्रकारके अपराधोंकी संख्या एक दो नहीं, बल्कि हजारों है। इस अपराधकी व्यापकताका पता तो इस बातसे लगाया जा सकता है कि अकेले बङ्गाल प्रान्तमें सरकारी तौरपर बङ्गाल कौन्सिलमें बताया गया कि सालभरमें हजारसे ऊपर ऐसे जघन्य काण्ड हुए। अन्य प्रान्तोंकी भी ऐसी ही अवस्था है। कोई भी पत्र उठा लीजिये, हरएक प्रान्तमें ऐसे पापोंके घटित होनेके समाचार भरे रहते हैं। अदालतोंके अभियोगोंकी सूचीपर नजर डालते ही इस अपराधकी व्यापकता निदारुण विभीषिका पैदा कर देती है। और साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकारके सैकड़ों मामले लज्जाके मारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अदालतके सामने लाये भी नहीं जाते। सब मिलाकर इस प्रकारके हजारों काण्ड प्रतिवर्ष देशमें हो रहे हैं और इनकी संख्या बराबर बढ़ती ही जा रही है। नारी जातिका यह कलङ्कपूर्ण अपमान समाजको कितना जर्जरित करता जा रहा है, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं।

इस भीषण अपराधको रोकनेके लिए दिल्लीके महिला-सङ्घने जो उपाय बताया है वह तो आवश्यक है ही; पर इसके साथ ही इस विषयमें समाजको भी खूब सचेत और सचेष्ट रहनेकी आवश्यकता है। यदि आज समाजका सुदृढ़ सङ्गठन हो जाय तो इस प्रकारकी घटनायें बहुत अंशोंमें असम्भव हो जायें। जो समाज अपनी बहू-बेटियोंकी रक्षा नहीं कर सकता, जिस समाजके पुरुषोंकी कायरता और असामर्थ्य इस प्रकारके पापोंके लिए गुण्डोंको प्रोत्साहन दे, वह सम्मानके साथ जीवित नहीं रह सकता। और अगर सम्मान सहित जीना है, तो इसके लिए उसे जोरदार सङ्गठन करना पड़ेगा अन्यथा इस प्रकारकी विशृङ्खलाओंका अन्त नहीं हो सकता। दिल्लीके महिला-सङ्घने नारी-अपहरणके विरुद्ध उस समय आवाज उठायी है, जिस समय यह पाप बुरी तरह फैल गया है। सरकार और जनता दोनों हीको इसका अन्त करनेके लिए कमर कस लेनी चाहिए, अन्यथा नारी-जातिका यह अपमान भारतीय समाजको सदाके लिए छिन्न-भिन्न कर नष्ट-भ्रष्ट कर डालेगा।

अखिल भारतीय अग्रवाल महिला-सम्मेलनकी मन्त्रिणी कुमारी मोहिनी देवी।

## समानाधिकार और समाजकी जरूरत

एक उच्च शिक्षित भारतीय महिलाने स्त्रियोंकी वर्तमान अवस्था, समानाधिकार तथा उनके कार्यक्षेत्रपर नये ढङ्गसे प्रकाश डालते हुए लिखा है:—

पाश्चात्य देशोंमें स्त्री-पुरुषोंके समानाधिकारकी जो आवाज उठी, उसकी प्रतिध्वनि भारतमें भी गूंज उठी और भारतीय महिलाओंने भी अपनी मांग उपस्थित कर दी। आज भारतमें स्त्रियोंकी जितनी संस्थायें हैं, सभीके द्वारा यह मांग जोरदार शब्दोंमें की जा रही है और राष्ट्रके नव-निर्माणमें भारतीय महिलाओंने एक महत्त्वपूर्ण भाग लेकर, अपने त्याग और बलिदानसे अपने समानाधिकारके दावेको खूब मजबूत बना दिया है। उनके इस दावेमें किसी प्रकारका अनौचित्य भी नहीं है। जन्मसे ही पुरुष या स्त्रीके प्रति कोई रियायत करने और किसीको भी कुछ विशेषाधिकार देनेका कभी भी समर्थन नहीं किया जा सकता। परन्तु समानाधिकारको आज प्रायः गलत अर्थमें समझा जा रहा है। अधिकांश लोगोंका ख्याल है कि समानाधिकारका अर्थ यह है कि उनके कार्यक्षेत्र भी एक ही हों और इसीलिए अनेक लोग इसके विरोधी भी हैं। यहीं हमारा विरोध है। हमारा ख्याल है कि समानाधिकारको प्राप्त करना और बात है और इसके होनेपर भी हमारा कार्य-क्षेत्र आवश्यकतानुसार अलग-अलग—बिना हमें हानि पहुंचाये—रह सकता है।

समानाधिकारके दावेके औचित्यमें विश्वास करते हुए भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि संसारमें स्त्री और पुरुषके उत्तरदायित्वोंमें मौलिक अन्तर है और अगर एक क्षेत्रमें एककी प्रधानता और उत्तरदायित्व हैं, तो दूसरेकी दूसरे क्षेत्रमें। स्त्री और पुरुष दोनों ही समानाधिकार रखते हुए भी एक ही कार्यमें नहीं लग सकते, समाज उनके लिए, अपने आवश्यकतानुसार अलग-अलग कार्योंकी व्यवस्था करता है। और यह बात जितना अन्यान्य देशोंके समाजके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सम्बन्धमें सत्य है, उससे कहीं अधिक यह सत्य है भारतीय समाजके सम्बन्धमें।

भारतीय समाजका जैसा गठन है उसे देखते हुए यह बात अच्छी नहीं जंचती—और यह बहुत अंशोंमें असम्भव भी है, कि स्त्रियां पढ़-लिखकर आफिसोंमें क्लर्की और टाइपिस्टों-का कार्य करें। हमारी संयुक्त कुटुम्ब-प्रणाली यद्यपि सर्वथा दोषरहित नहीं है, फिर भी उसका जो रूप है, उसमें स्त्रियां अगर नौकरी पेशेमें न जायें, तो भी उनका निर्वाह मजेमें हो सकता है।

भारतीय नारियोंका उचित स्थान है घर। वे गृह-लक्ष्मी कही जाती हैं। उनके घरमें रहनेका अर्थ पर्देमें रह-कर 'असूर्यम्पश्या' बनी रहना नहीं है। इसका अर्थ यह है कि अगर पुरुष अन्यान्य बाहरी कामोंमें अपनी शक्तियां लगायें तो स्त्रियां घरका समुचित प्रबन्ध करें, बच्चोंकी देखभाल करें—उन बच्चोंकी, जो कभी सुयोग्य नागरिक बनकर राष्ट्रका सञ्चालन करते हैं। यह इतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न है कि इसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। और स्वभावतः स्त्रियां ही इस कार्यको बड़ी सफलतापूर्वक कर सकती हैं। स्त्रियां अगर अच्छी माता बननेका प्रयत्न करें तो यह कार्य उनके अनेक कार्योंसे कहीं अधिक श्रेयस्कर होगा। पश्चिममें जहां संयुक्त कुटुम्ब-प्रणाली एक प्रकारसे नहीं है, वहां प्रत्येक व्यक्तिको अपनी जीविकाका प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता है और वहांकी स्त्रियोंमें जिस प्रकारकी उच्छृङ्खलता बढ़ती जा रही है, उसमें उन्हें नौकरी करनी ही पड़ेगी और बिना सङ्कोचके अपने गुजारेके लिए कुछ-न-कुछ करना ही पड़ेगा। परन्तु भारतीय स्त्रीके लिए अपने शील-सङ्कोचके कारण और समाजकी व्यवस्थाके कारण यह आवश्यक नहीं है कि वह प्रत्येक क्षेत्रमें प्रतिद्वन्द्विता करे। दोनोंका जो अलग-अलग क्षेत्र है उसीमें उन्हें अपने और समाजके कल्याणके लिए काम करना चाहिए और इसमें छोटाई और बड़ाईका कोई प्रश्न ही नहीं उठता। अलग-अलग क्षेत्रमें कार्य करते हुए भी ऐसी व्यवस्था की जा सकती है कि पुरुषों या स्त्रियोंमेंसे—किसीके प्रति किसी प्रकारकी रियायत न रहे। दोनोंके अधिकारोंमें कोई अन्तर न रहे। केवल समाजके आवश्य-कतानुसार—उनके कार्यक्षेत्र भिन्न-भिन्न रहें। समाजको पीछे खींचनेके लिए नहीं, बल्कि समाजकी उन्नतिके लिए दोनों अपने योग्य कार्योंका भार अपने ऊपर ले लें। इसका परि-णाम यह होगा कि पुरुषों और स्त्रियोंमें पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता नहीं होगी, बल्कि दोनोंके सहयोगसे समाजका कल्याण ही होगा। अन्यथा होगा यह कि किसी क्षेत्रमें तो प्रतिद्वन्द्वितावश अनावश्यकरूपमें स्त्री और पुरुष दोनों भर जायेंगे और कोई बिलकुल सूना ही पड़ा रह जायगा। आज अगर अकेले पुरुष समाजको ही ले लिया जाय तो यह प्रश्न और अधिक स्पष्टताके साथ समझ लिया जा सकता है। यद्यपि आज प्रत्येक पुरुषको एक सेही अधिकार प्राप्त हैं, फिर भी अपनी योग्यता और समाजकी आवश्यकताके अनुसार उनके कार्यक्षेत्रमें भिन्नता है। ऐसा ही अगर स्त्री-पुरुषके विषयमें भी कहा जाय तो हमारी समझसे यह अनुचित न होगा। अपने-अपने क्षेत्रमें दोनोंके कार्य समान रूपसे महत्त्व-पूर्ण होंगे।

## स्त्री-शिक्षाका रूप

कुमारी मनोरमा गुप्त बी० ए० नामक एक देवीने स्त्री-शिक्षापर प्रकाश डालते हुए लिखा है :—भारतमें स्त्री-शिक्षा-का क्षेत्र दिनोंदिन विस्तृत होता जा रहा है। अभी पिछले दिनों भारत-सरकारने स्त्री-शिक्षा विषयक जो रिपोर्ट निकाली है, उससे पता चलता है कि स्कूलों और कालेजोंमें छात्राओं-की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती ही जा रही है। ऐसी दशामें इस बातपर विचार करना आवश्यक है कि स्त्रियोंको जो शिक्षा दी जा रही है, उसकी उनके जीवनमें कहां तक उपयोगिता है और जीवनकी समस्या सुलझानेमें उससे उन्हें कितनी सहायता मिल रही है।

कुछ थोड़ी-सी सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा सञ्चालित पाठशालाओंकी बात अगर छोड़ दी जाय, तो मानना पड़ेगा कि हमारे यहां स्त्रियों और पुरुषोंकी शिक्षा एक ही प्रणालीपर होती है और वह प्रणाली है पाश्चात्य। इस शिक्षा-प्रणालीसे पढ़-लिखकर जो युवक स्कूल-कालेजोंसे निकलते हैं, वे इस बातको आज महसूस कर रहे हैं कि व्यावहारिक जीवनमें उनकी शिक्षा बहुत उपयोगी नहीं सिद्ध हो रही है। और अगर सच पूछा जाय तो वह हो भी नहीं सकती, क्योंकि हमारी शिक्षा व्यावहारिक होती ही बहुत कम है। ऐसी दशामें स्त्रियोंको उस शिक्षासे कितना लाभ होगा, यह विचारणीय है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हमारी शिक्षा-संस्थाओंमें जो विषय पढ़ाये जाते हैं, उनमें उपयोगिताके ख्यालसे व्यावहारिकताका ध्यान बहुत कम रखा जाता है। और इसलिए यह शिकायत आम तौर-पर सुनी जाती है कि उच्च शिक्षिता स्त्रियां अपनी शिक्षासे अपनेको या समाजको उतना लाभ नहीं पहुंचा पातीं, जितना उन्हें पहुंचाना चाहिए। अपनी उम्रका एक बहुत बड़ा भाग वे बी०ए०, एम०ए० पास करनेमें लगा देती हैं और इसमें सन्देह नहीं कि उनकी सुसंस्कृति और शिक्षासे किसी भी परिवारको गौरव होना चाहिए, पर इस बातसे कौन इनकार करेगा कि इस प्रकारकी उच्च शिक्षित स्त्रियोंमें कुछको छोड़-कर शेष कितने ही गृहकार्योंके लिए सर्वथा अयोग्य होती हैं। भारतीय समाजकी नारीको जितनी गृहकार्योंकी जानकारी आवश्यक है, उतनी शायद किसी और कार्यकी नहीं। किन्तु आधुनिक शिक्षित स्त्रियोंकी जीवनचर्या और रुचि कुछ इस प्रकारकी हो जाती है कि साधारण श्रेणीके गृहस्थके घरमें उनका निर्वाह होना कठिन हो जाता है। इसका कारण यह है कि एक तो वे अधिक खर्चीली हो जाती हैं और दूसरे गृहस्थीके कार्योंमें उनकी रुचि जरा भी नहीं रह जाती और उससे वे अधिकांशतः अपरिचित भी रहती हैं।

पुरुषों और स्त्रियोंके कार्यक्षेत्र भिन्न-भिन्न हैं, अतः आव-श्यकता इस बातकी है कि छात्राओंको कुछ ऐसे विषयोंकी भी शिक्षा दी जाय जिनकी उनके जीवनमें बड़ी भारी जरूरत पड़ती है। भारतीय विश्वविद्यालयोंने भी इस बातको महसूस किया है। अभी कुछ ही दिन पहले यूनिवर्सिटियों-की सहशिक्षा-सम्बन्धी जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है उसे देखनेसे पता चलता है कि इस ओर उनका ध्यान गया है। इलाहाबाद यूनिवर्सिटीने अपनी उक्त रिपोर्टमें लिखा है—"गार्हस्थ्य-शास्त्रकी शिक्षा अण्डर-ग्रेजुएट छात्राओंको देना जितनी ही जल्दी प्रारम्भ कर दिया जाय, उतना ही अच्छा।" उसने यह भी सिफारिश की है कि उन्हें बाल-मनोविज्ञान ( Child Psychology ) की भी शिक्षा दी जानी चाहिए। इलाहाबाद यूनिवर्सिटीकी तरह ही लखनऊ यूनिवर्सिटीने भी इन बातोंपर जोर डालते हुए लिखा है कि छात्राओंको सङ्गीत और चित्र-कलाका ज्ञान कराना आवश्यक है।

उक्त यूनिवर्सिटियोंने जिन विषयोंकी चर्चा की है, वे वास्तवमें ऐसे हैं जिनका पढ़ाया जाना आवश्यक है। पाश्चात्य देशोंकी बात अगर छोड़ भी दी जाय तो पूर्वका उन्नतिशील राष्ट्र जापान इसका एक सुन्दर उदाहरण है। वहांकी छात्राओंको जहां पुरुषोंकी तरह और-और विषयोंकी शिक्षा दी जाती है, वहां उन्हें गार्हस्थ्य-शास्त्रकी भी शिक्षा दी जाती है। बच्चोंका पालन-पोषण किस तरह करना चाहिए, रोगीकी सेवा-शुश्रूषा किस प्रकार करनी चाहिए और किस

कुमारी रमा बोस, एम० ए०। आप भारतीय दर्शन-शास्त्र-सम्बन्धी खोज कर रही हैं। इस कार्यके लिए कलकत्ता विश्वविद्यालयने आपको साल-भरके लिए २४०० रुपयेकी विशेष छात्रवृत्ति देना मञ्जूर किया है।

तरह सावधानी रखनी चाहिए, भोजन किस तरह पकाना चाहिए और घरका प्रबन्ध किस तरह करना चाहिए आदि ऐसी अनेक बातें हैं, जो जापानी छात्राओंको पढ़ायी जाती हैं, और ऐसी शिक्षाका ही यह परिणाम है कि जापानी घरोंमें आज खूब शान्ति, स्वच्छता और उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बालकोंमें सौन्दर्य और स्वास्थ्य दिखाई पड़ता है। इसी-लिए वहां भारतकी तरह भीषण गृह-कलह नहीं दिखाई पड़ता और न इतनी सामाजिक अशान्ति ही दिखायी पड़ती है।

देखा जाता है कि सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा सञ्चालित छोटी-छोटी पाठशालाओंके पाठ्यक्रममें सीने-पिरोने आदि कुछ दस्तकारियोंको स्थान मिला हुआ है, परन्तु सरकारी संस्थायें इन विषयोंके प्रति प्रायः उदासीनताका भाव दिखाती हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। वास्तवमें हमारे देशके उत्थानके लिए गृह-शिल्पों, हाथके कला-कौशलोंको प्रोत्साहन देनेकी बड़ी भारी आवश्यकता है, और इस प्रकारकी शिक्षाकी स्त्रियोंके जीवनमें बड़ी भारी उपयोगिता है। स्त्रियोंके लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय उनकी अपनी आवश्यकताओं और क्षेत्रोंका ध्यान रखना बहुत आवश्यक है।

श्रीमती एस० के० दत्तके नेतृत्वमें ये १७ भारतीय छात्रायें ज्ञान-लाभके लिए इन दिनों यूरोपमें भ्रमण कर रही हैं।

ऊपर मैंने जिन विषयोंकी चर्चा की है, उनसे यह न समझना चाहिए कि मैं स्त्रियोंको उच्च शिक्षा देनेके विरुद्ध हूं। बल्कि इसके विपरीत मैं तो देश और समाजके लिए यह अनिवार्य समझती हूं कि स्त्रियोंको उच्च शिक्षा दी जाय। पर इसके साथ ही हमारा ख्याल है कि उच्च शिक्षाके पाठ्यक्रममें उन विषयोंको भी स्थान देना चाहिए जिनकी उनके जीवनमें अनिवार्य आवश्यकता है। सभी स्त्रियां पढ़-लिखकर अध्यापिकाओं और वकीलों-बैरिस्टरोंका काम नहीं करतीं—हमारे समाजका रङ्गढङ्ग ही कुछ ऐसा है, अतः ऐसी दशामें यदि उन्हें कला-कौशल, स्वास्थ्यविज्ञान, मातृत्व, पाक-शास्त्र और गार्हस्थ्य-शास्त्रकी शिक्षा दी जाय तो गृहस्थीके कार्योंके लिए वे कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। कितनी ही स्त्रियां पढ़-लिख तो लेती हैं खूब, किन्तु इन विषयोंकी उनमें कुछ भी जानकारी नहीं रहती, और इस अज्ञानताका फल यह होता है कि घरमें शान्ति और आनन्दकी कमी रहती है। घरके वातावरणको खूब सुव्यवस्थित बनानेके लिए इसकी बड़ी भारी जरूरत है, परन्तु दुःखका विषय है कि स्त्री-शिक्षाके इस आदर्शको हमारी शिक्षा-संस्थाओंने अभी महत्त्व नहीं दिया।

## बाल-विवाह और स्त्रियां

बाल-विवाह यों तो समाजके लिए सर्वथा घातक है ही, परन्तु इससे जितनी हानि हम स्त्रियोंकी होती है, उतनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पुरुषोंकी नहीं। विवाहके बादसे ही स्त्रियोंको कठोर पर्देमें चला जाना पड़ता है और इसीके साथ उनकी शिक्षा-दीक्षा भी समाप्त हो जाती है। यहां ऐसे सम्पन्न परिवारोंकी संख्या अधिक नहीं है जो विवाहिता बहू-बेटियोंके लिए पर्देके भीतर शिक्षिकाओंका प्रबन्ध कर सकें, अतः उन्हें अपना समस्त जीवन अशिक्षाके अन्धकारमें ही बिताना पड़ता है।

किन्तु बाल-विवाहसे इतनी ही हानि होती हो, सो नहीं। इससे स्त्रियोंकी उन्नतिका सारा मार्ग ही अवरुद्ध हो जाता है और आज समाजमें जो विशृङ्खलता और अशान्ति दिखाई पड़ रही है, इसकी बहुत अधिक जिम्मेदारी बाल-विवाहकी घातक प्रणालीपर है। भेड़-बकरियोंकी तरह नन्हीं-नन्हीं बालिकाओंको पुरुषोंके गले मढ़ दिया जाता है और वे बेचारी आवाज तक नहीं उठा सकतीं। कभी अगर किसी वयस्क बालिकाने अनुचित सम्बन्धके विरुद्ध आवाज उठायी भी, तो वह नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज हो जाती है और उलटे वही नालायक करार दी जाती है। हिन्दू-समाजका गठन कुछ इस बुरे ढङ्गपर हुआ है कि इसमें विवाह-सम्बन्धी कोई चर्चा करनेकी इजाजत स्त्रियोंको नहीं है। यह उनकी बहुत बड़ी गुस्ताखी समझी जाती है और अगर कभी किसीने चर्चा कर भी दी, तो उसके मां-बाप ऐसा समझते हैं, मानो यह कोई ऐसा भारी पाप हो गया जिसका प्रायश्चित्त ही नहीं हो सकता। ऐसी दशामें स्त्रियोंकी रक्षा कौन करे?

शारदा कानून जिस समय पास हुआ था, उस समय आशा की गयी थी कि बाल-विवाहोंपर इससे बहुत-कुछ नियन्त्रण हो जायगा, परन्तु यह आशा बहुत अंशोंमें झूठी होती दिखाई पड़ती है। प्रतिवर्ष हजारों विवाह इस कानूनको भङ्ग करते हुए हो रहे हैं और इस प्रकार उक्त कानूनका उद्देश्य ही विफल होता जा रहा है। कितने ही लोग ब्रिटिश भारतसे बाहर जाकर शादियां कर आते हैं और कितने ही बालक-बालिकाओंकी झूठी उम्र बताकर कर रहे हैं। कुछ लोगोंपर उक्त कानूनके विरुद्ध विवाह करनेके कारण मुकदमे भी चले हैं। परन्तु देखा जाता है कि ऐसे अभियुक्तोंके प्रति उस कठोरताके साथ काम नहीं लिया जाता जिससे लिया जाना चाहिए। कितनी ही बार अनेक महिला सम्मेलनोंने सरकारसे प्रार्थना की है कि शारदा कानून तोड़कर विवाह करनेवालोंको उक्त कानूनके अनुसार कठोरसे कठोर कारादण्ड मिलना चाहिए। परन्तु ऐसा होता नहीं दिखाई पड़ता। कभी अभियुक्तोंपर सौ-दो-सौ रुपये जुर्माना हो जाता है और वे इसे चुकाकर निश्चिन्त हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि जैसे शादी-ब्याहमें इतने रुपये खर्च हुए, उसी प्रकार सौ-दो-सौ और सही। इस प्रकारकी मनोवृत्ति लोगोंमें आजकल खूब देखी जा रही है। ऐसी दशामें अगर अभियुक्तोंको जेलकी सजायें भी मिलने लगें, तो उनकी आंखें खुल जायें। शारदा कानूनको पास करानेके लिए महिलाओंने बहुत-कुछ प्रयत्न किया था और अब वे इसकी उद्देश्यसिद्धिके लिए भी प्रयत्न करती दिखाई पड़ रही हैं। दिल्लीके महिला-सङ्घने अभी गत मासके अन्तिम दिनोंमें इसी आशयका अनुरोध स्थानीय सरकारोंसे किया है कि अपराधियोंको कड़ीसे कड़ी सजायें दी जायं। बाल-विवाहसे स्त्रियोंकी हानि सबसे अधिक हो रही है। अतः उन्हें इसके विरुद्ध लोकमत तैयार करनेमें कुछ भी उठा न रखना चाहिए।

—गयावन्ती देवी बर्मा

श्रीमती के० के० दक्षयाणी अम्मा—आप इसी वर्ष मद्रास विश्वविद्यालयकी बी०ए० की परीक्षामें उत्तीर्ण हुईं। दक्षिण भारतकी दलित-श्रेणीकी बी० ए० पास करनेवाली आप प्रथम महिला हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

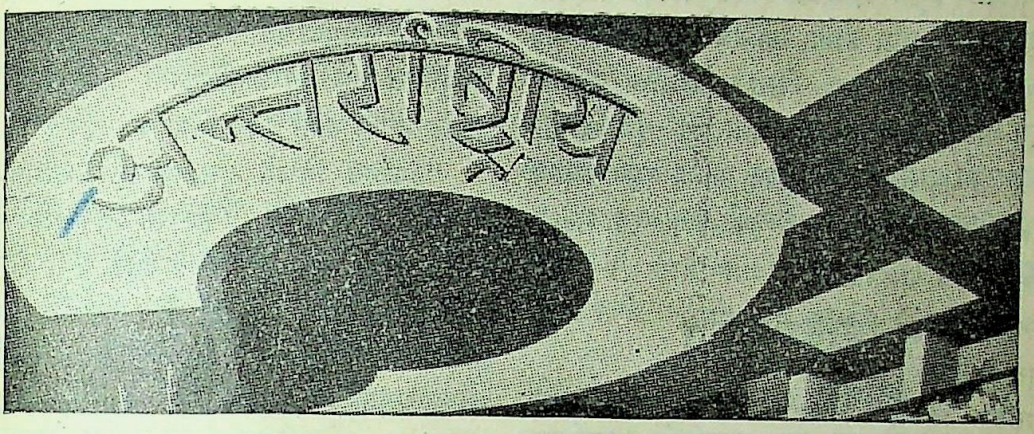


## अमेरिका और फिलिपाइन

क्या अमेरिकाने उदारतावश फिलिपाइनको स्वाधीनता प्रदान की है? या इस प्रश्नके साथ अमेरिकाके निजके स्वार्थ भी जड़ित हैं? इस सम्बन्धमें सिङ्गापुरका एक प्रमुख अंगरेजी पत्र "The Straits Times" लिखता है:—मलय द्वीप-पुञ्ज फिलिपाइनके समीप है, अतएव फिलिपाइनके शासन-विधानमें जो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं उनके साथ मलयद्वीपका भी स्वार्थ-सम्बन्ध कम नहीं है। फिलिपाइन प्रदेश कुछ द्वीपोंका समूह है और यहांकी जनतामें विभिन्न जातियोंके चिह्न पाये जाते हैं। इन द्वीपोंमें परस्पर आवागमनके साधन विशेष सन्तोषजनक नहीं हैं। यहां अब भी कुछ ऐसी बर्बर जातियां बसती हैं जो सभ्य शासनके अन्तर्गत नहीं लायी जा सकी हैं।

सन् १९१३ के बादसे यहांकी स्थितिमें बहुत-कुछ परिवर्तन हो गया है। उस समय स्पेनवालोंके अत्याचारोंकी स्मृतियां ताजी थीं और उनके प्रमाण सर्वत्र पाये जाते थे। अमेरिकन लोग वहांके निवासियोंको यह विश्वास दिलानेके लिए कि स्पेनके बदले उनके ऊपर अमेरिकाका आधिपत्य होनेसे उन्हें बहुत लाभ हुए हैं, नाना उपायों द्वारा प्रचार-कार्य कर रहे थे। यह इसलिए किया जा रहा था जिससे फिलिपाइनके देशभक्त धर्मोन्मत्तता-जैसे आवेशमें आकर स्वाधीनताका जो आन्दोलन चला रहे थे उसका जोर बढ़ने न पाये। किन्तु देशभक्तोंका वह स्वाधीनता-आन्दोलन कभी मरा नहीं और आज वह अपने लक्ष्यके सन्निकट है। अमेरिकाकी सरकारने स्वाधीनताके सिद्धान्तको मान लिया है और इसके अनुसार उसने फिलिपाइनको जो स्वराज्य प्रदान किया है वह तब तकके लिए है जब तक कि वह पूर्ण स्वाधीनताके लक्ष्य तक न पहुंच जाय।

यह असम्भव नहीं है कि कुछ समयके बाद यहांके निवासी इस परिणामपर पहुंचें कि पूर्ण स्वाधीनताकी अपेक्षा अमेरिकाकी छत्रछायामें इस समय जो स्वराज्य प्राप्त हुआ है वही अच्छा है। क्योंकि अमेरिकासे बिलकुल सम्बन्ध-विच्छेद करके स्वाधीन हो जानेपर अमेरिकाकी स्थल-सेना और नौ-सेनाके ऊपर फिलिपाइन द्वीप-पुञ्जको बाहरी शत्रुके आक्रमणसे रक्षा करनेका दायित्व नहीं रह जायगा। इसके अलावा इस बातका भी कोई निश्चय नहीं है कि स्वाधीनता प्राप्त कर लेनेपर उसे अक्षुण्ण रखा जा सकेगा। क्योंकि यह भी सम्भव है कि अमेरिका द्वारा स्वाधीनता प्रदान करनेपर कोई दूसरा देश उसका अपहरण कर ले।

फिलिपाइन द्वीप-पुञ्जकी इस स्वाधीनताके साथ आर्थिक एवं राजनीतिक तथा सामरिक प्रश्नोंका भी सम्बन्ध है। अमेरिकाने फिलिपाइन-निवासियोंको सर्वथा निःस्वार्थ-भावसे ही मुक्त कर देनेका निश्चय किया है, ऐसी बात नहीं है। इसके साथ एक बात यह भी है कि अमेरिकाके एक अधीनस्थ प्रदेशको हैसियतके इन सब द्वीपोंसे चीनी, नारियलका तेल, तम्बाकू, सन तथा और भी कई चीजें अमेरिका भेजी जाती थीं और इनपर अन्य विदेशी वस्तुओंके समान किसी प्रकारका टैक्स नहीं लगता था। अमेरिकाके किसान इसका जोरदार विरोध किया करते थे, क्योंकि अपने फिलिपाइनके प्रतिद्वन्द्वियोंकी अपेक्षा उन्हें मजदूरी तथा अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मदोंमें ज्यादा खर्च करना पड़ता है। जब तक फिलिपाइनको पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त होती तब तक वह पूर्वकी सब सुविधाओंका उपभोग करता रहेगा। इसलिए यहांकी जनताको इस बातपर विचार करना होगा कि पूर्ण स्वाधीनताके अधिकारको प्राप्त करनेके लिए उसके मूल्य-स्वरूप अमेरिकाके विशाल बाजारके ठोस लाभको छोड़ देना महंगा सौदा तो नहीं पड़ेगा।

## मिश्रमें ब्रिटिश नीति

मिश्रमें इस समय ब्रिटिश सरकारकी जो नीति हो रही है उसकी आलोचना करते हुए एक फरासीसी कम्यूनिस्ट पत्र "L' Huma nite" लिखता है :—"मिश्रके राष्ट्रीय आन्दोलनके विरुद्ध अभी हालमें ब्रिटिश साम्राज्यवादकी एक महत्त्वपूर्ण विजय हुई है। वहांके प्रधान मन्त्री नसीम पाशा —जो ब्रिटिश सरकारके अंगूठेके नीचे हैं—और शाही महलके खजाञ्ची तथा शाही जायदादके सञ्चालक इब्राशी पाशाके बीच अनबन रहा करती है। इब्राशी पाशाने—जो राजा फुआदके सलाहकार थे—नहस पाशाके वफ्द दलका समर्थन किया था। यह वफ्ददल अंगरेजोंका विरोधी है। नसीम पाशाने अंगरेजी आधिपत्यके स्वार्थको सुरक्षित रखनेके लिए जो प्रस्ताव उपस्थित किये थे, इब्राशी पाशाने उन सबका विरोध किया।

"ब्रिटिश हाई कमिश्नर सर माइल्स लैम्पसनने हालमें राजाको एक अन्तिम पत्र दिया था जिसमें यह आदेश किया गया था कि वह इब्राशी पाशाको बरखास्त कर दें। उन्हें यह आदेश दिया गया था कि या तो वह सिर झुकाकर इस आदेशका पालन करें अथवा राजगद्दीका त्याग करें। क्योंकि ब्रिटिश सरकारने राजाके स्थानपर एक एजेन्सी कायम करनेकी धमकी दी थी। राजा फुआदको आखिर झुकना पड़ा। इब्राशी पाशाने अपने पदसे त्यागपत्र दे दिया। लन्दनके समाचार-पत्र ब्रिटिश साम्राज्यवादकी इस विजयपर फूले नहीं समाते। मिश्रकी सरकार बिना किसी प्रतिनिधि-सभाके शासन कर रही है। क्योंकि यदि राष्ट्र-सभा (पार्लामेण्ट) का चुनाव किया जाता है तो राष्ट्रवादी वफ्दोंका बहुमत होना अवश्यम्भावी है। सच पूछा जाय तो मिश्रमें इस समय कोई वैध शासन-विधान है ही नहीं, क्योंकि नसीम पाशाके अधिकारारूढ़ होनेपर शासन-विधान उठा दिया गया और उसके स्थानपर एक शाही फरमान जारी करके डिक्टेटरशिपकी स्थापना की गयी। राष्ट्रकी मुक्तिके लिए मिश्रका कम्यूनिस्ट दल जो क्रान्तिकारी आन्दोलन चला रहा है उसका भीषण रूपसे दमन किया जा रहा है।

"इंगलैण्ड मिश्रमें इस प्रकारका शासन-विधान और निर्वाचन-नियम चाहता है जिससे उसके साधारणसे साधारण आदमियोंकी क्षमता भी वहां बनी रहे और राष्ट्रीय आन्दोलनका भी दमन होता रहे। इसलिए कुछ अंशोंमें तो इटली-अबीसीनिया युद्धके भयसे, किन्तु विशेषकर मिश्रमें अपना आधिपत्य कायम रखनेके लिए, इंगलैण्डने यह निश्चय किया है कि मिश्रकी सेनामें अंगरेज अफसरोंकी वृद्धि की जाय और वहांकी अंगरेजी-सेनाको भी शक्तिशाली बनाया जाय। यही कारण है जिससे राजा फुआदको मजबूर होकर इंगलैण्डके इच्छानुकूल कार्य करना पड़ा और उन सब कर्मचारियोंको बरखास्त कर देना पड़ा जो प्रभावशाली पदोंपर नियुक्त थे और अंगरेज-विरोधियोंके प्रति सहानुभूति रखते थे।

"रुईके व्यापारमें मन्दी आ जानेके कारण नील नदीके जलसे सिञ्चित विस्तीर्ण भूमि-खण्डमें बसनेवाले किसान क्षतिग्रस्त हो रहे हैं, और उनका यह असन्तोष सम्पूर्ण जनतामें फैल रहा है। मिश्रमें अंगरेजी शासनका पाया हिल रहा है। वहां डिक्टेटरी शासन स्थापित करनेसे उसकी प्रतिष्ठामें वृद्धि नहीं हो सकती। यह विश्वास करनेका कारण मौजूद है कि इटलीकी आक्रमणात्मक नीतिके विरुद्ध अबीसीनिया द्वारा राष्ट्रीय मुक्तिके लिए संग्राम छेड़नेपर मिश्र और सूदानमें भी क्रान्तिकारी आन्दोलन उत्तेजित हुए बिना नहीं रह सकते।"

## जर्मनी और रूसमें वाणिज्य-समझौता

जिस समय पेरिसमें फ्रान्स और सोवियट रूसके प्रतिनिधि दोनों देशोंके बीच अनाक्रमणात्मक सन्धिके प्रस्तावपर विचार कर रहे थे और इंगलैण्ड, फ्रान्स तथा इटलीके परराष्ट्र सचिव स्ट्रेसा कान्फरेन्समें जर्मनीकी नवीन सैनिक नीति सम्बन्धी घोषणाके कारण उत्पन्न हुई नूतन परिस्थितिके सम्बन्धमें संयुक्त रूपसे कौन-सी कार्रवाई की जानी चाहिए, इस विषयपर विचार कर रहे थे उसी समय एक नयी बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रकट हुई थी। अर्थात् जर्मनीके अर्थ-सचिव डा० शाक्त और रूसके वाणिज्य-प्रतिनिधि काण्डेलाकीने बर्लिनमें एक नूतन वाणिज्य-समझौतेपर हस्ताक्षर किये जिसके अनुसार सोवियट रूसने जर्मनीसे २० करोड़ मार्क्सका तैयार माल खरीदना कबूल किया है।

इस समझौतेपर प्रकाश डालते हुए रोमका एक पत्र लिखता है :—"इस समझौतेका वाणिज्यगत महत्त्व प्रत्यक्ष है, और इसका राजनीतिक महत्त्व उस समय और भी स्पष्ट हो जाता है जब कि जिस समय इसपर हस्ताक्षर हुए थे उस समयकी ओर तथा जिन तरीकोंसे यह समझौता काममें लाया जायगा उनकी ओर ध्यान आकृष्ट होता है। जर्मनीके तीन बड़े-बड़े बैङ्क सोवियट रूसको २० करोड़ मार्क्स उधार देंगे। इस ऋणके लिए रूस जर्मनीके रिस बैङ्क द्वारा निश्चित सूदकी दरके अलावा २ सैकड़े और सूद देगा। इस प्रकार सोवियट रूस जर्मनीके तैयार मालकी कीमत चुकायेगा।"

इस समझौतेमें उन रकमोंका भी जिक्र किया गया है जो सोवियट सरकारके जिम्मे पिछली खरीदके बाबत बाकी हैं। यह बकाया जिन्स द्वारा चुकाया जायगा, जो सन् १९३५ में १५ करोड़ मार्क्स या इससे अधिकके मूल्यका होगा।

रूस और जर्मनीके समाचार-पत्रोंने इस घटनाकी महत्ता-पर विशेष रूपमें जोर दिया है और इसके राजनीतिक स्व-रूपको छिपाया नहीं है। बर्लिनका एक पत्र इस समझौतेके गुरुत्वपर लिखता है :—"राजनीतिक दृष्टिसे यह समझौता इस बातका द्योतक है कि जर्मनी और रूसके बीच ठीक सम्बन्ध कायम है और रहेगा।" मास्कोके समाचार-पत्र इसपर टीका-टिप्पणी करते हुए लिखते हैं:—"जर्मनी रूसकी वास्तविक स्थिति और सोवियट राज्यके प्रयोजनोंके प्रति ध्यान देनेकी आवश्यकताको समझता है।"

तो क्या यह समझौता जर्मनी और रूसके बीच किसी नूतन नीतिका निदर्शक है?

## क्या आस्ट्रियामें फिर विप्लव होगा?

न्यूयार्कसे प्रकाशित "लिविङ्ग येज" के एक सम्पादकीय लेखमें संसारके विभिन्न देशोंकी राजनीतिक स्थितिपर प्रकाश डालते हुए आस्ट्रियाके सम्बन्धमें कहा गया है:—

आस्ट्रियासे जो ताजे समाचार मिले हैं उनमें गत वर्षकी घटनाओंकी पुनरावृत्तिका आभास पाया जाता है। चान्स-लर शुसनिग अपने पूर्ववर्ती डालफसके समान ही अजनप्रिय हो रहे हैं। सन् १९३४ में वाणिज्यका जो थोड़ा-बहुत पुन-रुत्थान देखा गया था वह भी अब क्षीण हो रहा है। बेकारों-की संख्या बढ़ रही है और तम्बाकूपर लगनेवाले टैक्सकी आमदनीमें जो ह्रास हो रहा है वह इस बातका निश्चित द्योतक है कि जनताके रहन-सहनके स्टैण्डर्डमें ह्रास हो रहा है। मजदूर लोग समय-समयपर १० मिनट या आध घण्टेके लिए हड़ताल कर दिया करते हैं जिससे वियना नगरके विभिन्न भाग अन्धकाराच्छन्न हो जाते हैं। साम्यवादी सैन्य-दलकी संख्यामें भी वृद्धि हो रही है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि विप्लवी साम्यवादी और कम्यूनिस्ट राज्यपर अधिकार जमानेवाले हैं। देशके प्रायः समग्र शस्त्रास्त्र सरकारके पास हैं और सरकार अपनी साजसज्जा और सैन्यदलको बढ़ा रही है। श्रमजीवी दलने सङ्घबद्ध होकर किसी एक व्यक्तिका नेतृत्व स्वीकार नहीं किया है। इस समय नाजियोंकी शक्ति कुछ क्षीण हो चली है और राज-तन्त्रवादियोंका पक्ष कुछ प्रबल हो रहा है। वियनाके गिरजा-घरके चतुर्दिक पोस्टकार्डकी दूकानोंपर जो तसवीरें मिलती हैं उनमें राजकुमार केओटोके चित्र भरे रहते हैं। राजकुमारके पिता सम्राट् कार्लकी स्मृति अभी कुछ समय पहले मनायी गयी थी। किन्तु नाजियोंने संग्राम करना छोड़ नहीं दिया है। वे इस बातको जानते हैं कि क्षुद्र मित्रराष्ट्र—युगोस्ले-विया, जेकोस्लेवेकिया और रूमानिया—हैपस्वर्ग राजवंशके पुनः स्थापित किये जानेका विरोध करते हैं। नाज़ियोंने दक्षिण टाइरलकी—जो इस समय इटलीके हाथमें है—मांग पेश करके शुसनिगकी इटली-पक्षपाती सरकारको नीचा दिखानेकी चेष्टा की है। नाजियों-जैसी सजीव शक्ति और किसी दलमें नहीं है और राजतन्त्रवादी तथा साम्यवादी दलोंके पुनरुज्जीवित होनेपर भी हिट्लर वियनामें अपने भाग्य-की परीक्षा एक बार फिर कर सकता है।

## रूसके प्रति फ्रान्सको आशङ्का

कुछ समय पहले फ्रान्स और रूसके बीच जो समझौता हुआ था उसके विरुद्ध फ्रान्सके कुछ समाचार-पत्रोंने कड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आलोचनायें की थीं। इन आलोचनाओंसे यह अनुमान होता है कि बोलशेविक रूसके प्रति फ्रान्सके मनमें आशङ्का-का भाव अब भी बना हुआ है।

पेरिससे प्रकाशित होनेवाले "L' Homme Libre" नामक पत्रमें उक्त समझौतेके सम्बन्धमें कुछ फरासीसी पत्रों-की आलोचनायें संगृहीत की गयी हैं। उनमेंसे कुछ पत्रोंके मत यहां दिये जाते हैं। एक पत्र लिखता है—"रूसके प्रति अवश्य ही हमारा कोई दायित्व नहीं है, क्योंकि कोई भी फरासीसी इस बातको भूल नहीं सकता कि किस प्रकार सन् १९१७ ( महायुद्ध काल ) में रूसने हम लोगोंको धोखा दिया था। फ्रान्सके बहुसंख्यक छोटे-छोटे बाण्डहोल्डरोंका जो पावना था उसे चुकानेसे सोवियट सरकारका मुकर जाना भी कोई फरासीसी भूल नहीं सकता।

"फरासीसी प्रजातन्त्र और सोवियट सरकारके बीच पारस्परिक साहाय्यकी सन्धिपर हस्ताक्षर किये जायं, इसके पहले दोनों देशोंके बीच जो चौड़ी खाई है उसकी पूर्ति होनी चाहिए। कुछ लोग इस काममें बहुत जल्दबाजी कर रहे हैं। फ्रान्सकी सरकारको इस प्रश्नपर गम्भीरताके साथ विचार करना चाहिए।

"सुशासनका अर्थ है जनताके इच्छानुसार शासन, विशेषकर जब सन्धि या समरका प्रश्न उपस्थित हो। अब तक फ्रान्सकी जनताको इस सम्बन्धमें पर्याप्त रूपसे सूचित नहीं किया गया है कि रूसके साथ मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करनेकी क्यों आवश्यकता है। इसलिए फरासीसी जनता इस बात-को लेकर उद्विग्न है कि जल्दीमें की गयी सन्धि कहीं उसके लिए भार-स्वरूप न सिद्ध हो और इसके प्रमाण-स्वरूप उसे यूरोप या एशियाके किसी युद्धमें भाग लेनेके लिए पहलेसे ही प्रतिज्ञाबद्ध न हो जाना पड़े।"

पेरिसका एक दूसरा पत्र "Le Quotidien" लिखता है:—यदि इस समझौतेके कारण हम सोवियट रूसकी रक्षाके लिए बाध्य हैं तो इसका परिणाम यह होगा कि जर्मनी और पोलैण्ड दोनोंको—जिनकी आबादी ११ करोड़ है—हम अपना शत्रु बना लेंगे। क्या हमारे सैनिकोंकी सोवियटोंकी रक्षाके लिए—सिर्फ सोवियटोंके लिए—हत्या की जाय? क्या फ्रान्स-के लोग बोलशेविज्मके स्वार्थके लिए अपने सञ्चित धनको नष्ट कर डालें?

## गवर्नर जेनरल हमारा आदमी हो

दक्षिण अफ्रिकाका भावी गवर्नर जेनरल वहांका ही कोई निवासी होना चाहिये या नहीं, इस प्रश्नको लेकर वहांकी राजनीतिक मण्डलीमें विशेष चर्चा चल रही है। जोहान्सबर्गसे प्रकाशित "Sunday Express" नामक पत्रने इस प्रश्नपर आलोचना करते हुए लिखा है :—

"कई अवसरोंपर दक्षिण अफ्रिकाके निवासियोंने अस्थायी रूपसे गवर्नर जेनरलका कार्य किया है और उन्होंने महत्ता एवं कठोर निष्पक्षताके साथ अपने कर्तव्योंका पालन किया है। उनके बीच तथा इंगलैण्डसे भेजे गये गवर्नर जेनरलोंके बीच कोई विशेष अन्तर नहीं देखा गया है। इसलिए हमें विश्वास है कि उपयुक्त समय आनेपर यदि यहांकी सरकार अपने देशवासियोंमेंसे ही किसीको गवर्नर जेनरलके पदपर नियुक्त करना समीचीन समझे, तो इसका आम तौरसे स्वागत किया जायगा।

"इस प्रश्नके साथ जातीय सङ्गीतका प्रश्न भी सम्बन्धित है। आलम्पिक क्रीड़ा-जैसे राष्ट्रीय उत्सवके उपलक्षमें इंगलैण्डके जातीय सङ्गीतका गाया जाना और दक्षिण अफ्रिकाके किसी निवासीके विजयी होनेपर प्रत्येक बार इंगलैण्डके राष्ट्रीय झण्डे यूनियन जैकका उत्तोलन किया जाना लोगोंको बहुत अखरा था। हमारी रायसे इस तरहकी बातें नहीं होनी चाहिए। हम सबसे पहले अपने देशके नागरिक हैं और सदा रहेंगे, इसलिए इस नागरिकताके भावको महत् एवं अनुप्राणित करनेवाले शब्दोंमें व्यक्त करनेके लिए उसी प्रकार कोई साधन होना चाहिए जिस प्रकार दक्षिण अफ्रिकाके झण्डेमें उस नागरिकताके भावकी अभिव्यक्ति होती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

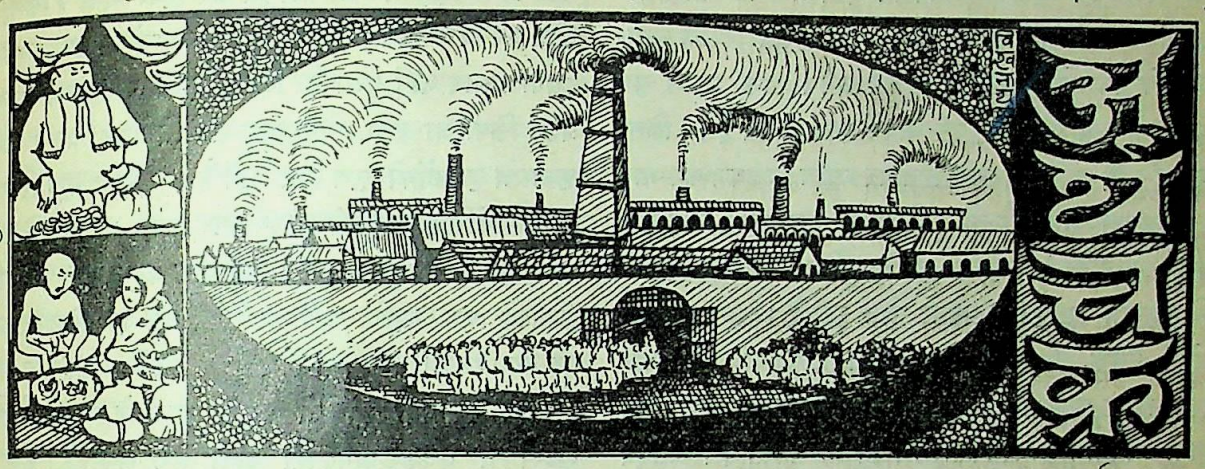


## टैक्स-रेटमें हेरफेर

भारत-सरकारने विदेशोंसे आनेवाली विभिन्न वस्तुओंके टैक्सके रेटमें हेरफेर करनेके लिए शीघ्र ही एक कमेटी नियुक्त करनेका विचार किया है। पाठकोंको मालूम होगा कि विदेशी वस्तुओंपर दो कारणोंसे कर लगाया जाता है। एक तो सरकारी राजस्वमें वृद्धि करनेके लिए और दूसरे स्वदेशी व्यवसाय एवं उद्योग-धन्धोंको संरक्षण प्रदान करनेके लिए। इस प्रकारका कर-भार—चाहे वह उक्त दो कारणोंमेंसे किसी भी कारणसे लगाया गया हो—अन्ततः जनताको ही वहन करना पड़ता है। क्योंकि जिस वस्तुपर कर लगाया जाता है, स्वभावतः उसका मूल्य बढ़ जाता है और जनताको अधिक मूल्य देकर आवश्यक वस्तुयें खरीदनी पड़ती हैं। स्वदेशी व्यवसायोंके संरक्षणके लिए विदेशी वस्तुओंपर जो कर लगाया जाता है उसे जनता स्वेच्छासे वहन कर लेती है, क्योंकि बिना संरक्षणात्मक करके स्वदेशी व्यवसायोंके लिए विदेशी वस्तुओंकी प्रतियोगिता करना सम्भव नहीं होता। इसलिए संरक्षणात्मक कर लगाने या उसमें वृद्धि करनेके लिए जनताकी ओरसे ही सरकारपर दबाव डाला जाता है और इस प्रकारका कर-भार जनताको अखरता नहीं। इसके विपरीत राजस्वमें वृद्धि करनेके उद्देश्यसे जो कर लगाया जाता है वह जनताको विशेषरूपमें अखरता है; कारण, उससे कोई प्रत्यक्ष लाभ नहीं होता।

संसारव्यापी आर्थिक मन्दीके कारण जब बजटमें घाटा होनेके लक्षण दिखाई पड़े तो भारत-सरकारने सन् १९३१के बजटमें विदेशोंसे आनेवाली बहुत-सी चीजोंपर टैक्सके रेटमें वृद्धि की। किन्तु इससे भी जब काम नहीं चला तो उसी वर्ष सितम्बर महीनेमें एक अतिरिक्त बजट पेश किया गया और इसके अनुसार जिन विदेशी चीजोंपर कर लगता था उन सबपर २५ सैकड़े अतिरिक्त कर ( सरचार्ज ) लगाया गया। इस कर-भारको गत ४-५ वर्षोंसे इस देशकी जनता वहन करती आ रही है, हालांकि अब सरकारके राजस्वकी अवस्था बहुत कुछ सुधर गयी है। उचित तो यह था कि सरकारकी आर्थिक दशामें सुधार होनेके साथ-साथ टैक्सके रेटमें कमी की जाती, किन्तु सरकारने ऐसा न करके सबसे पहले सिविलियन कर्मचारियोंके वेतनमें जो ह्रास किया गया था उसे ही पूरा कर देना अपना कर्तव्य समझा। आगामी वर्षके बजटमें सरकारकी आर्थिक अवस्था विशेष-रूपसे सुधर जानेकी सम्भावना है जिससे विदेशी वस्तुओंपर लगनेवाले करमें ह्रास किया जा सकता है। इसी सम्बन्धमें विचार करनेके लिए सरकारने एक कमेटी नियुक्त करनेका निश्चय किया है।

इस कमेटीमें इस बातपर विचार किया जायगा कि किन-किन विदेशी वस्तुओंपर टैक्सके रेटमें हेरफेर होना चाहिए। इंगलैण्डके व्यवसायी, भारतीय व्यवसायी तथा इस देशका धनिकवर्ग—सब कर-भारमें ह्रास करनेके लिए आन्दोलन कर रहे हैं। इंगलैण्डके व्यवसायी इसलिए कर-भारमें ह्रास चाहते हैं जिससे उनके मालकी खपत बढ़े। भारतीय व्यापारी भी विदेशी वस्तुओंकी बिक्री कम होनेके कारण पहलेकी तरह लाभान्वित नहीं हो रहे हैं। अतएव उनका भी स्वार्थ इसीमें है कि विदेशी वस्तुओंपर लगनेवाले टैक्समें



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कमी की जाय। देशका धनिकवर्ग ऐशोआरामके सामानों-पर लगनेवाले टैक्समें कमी चाहता है जिससे उसके भोग-विलासके साधनोंमें खलल न पहुंचने पावे। इस प्रकार सब अपने-अपने स्वार्थके लिए कर-भारमें ह्रास चाहते हैं। किन्तु सरकार यदि जनसाधारणके हितोंपर ध्यान रखकर कर-भार हल्का करना चाहती है तो सबसे पहले उन सब वस्तुओंके टैक्स-रेटमें परिवर्तन होना चाहिए जिनके कारण देशकी दरिद्र जनता कष्ट एवं असुविधा भोग रही है। इस प्रकारके करोंमें नमक, किरासन तेल, चीनी, दियासलाई और पोस्टकार्डपर लगनेवाले कर मुख्य हैं। इन सब वस्तुओंकी गणना अनिवार्य आवश्यकताओंमें की जा सकती है। अतएव यह कर-भार जनताके लिए असह्य हो रहा है। नमकपर १॥) प्रति मनके हिसाबसे टैक्स लगाया जाना देशकी गरीब जनताको नमकके पर्याप्त व्यवहारसे वञ्चित करना है। इसी प्रकार विदेशी किरासन तेलपर भी एकमात्र बर्माके अंगरेज व्यवसायियोंके स्वार्थके लिए कर लगाया जाता है। चीनी और दियासलाईपर लगनेवाले टैक्समें तथा पोस्टकार्डके मूल्यमें भी ह्रास होना चाहिए। इसके सिवा विदेशसे आनेवाली और भी ऐसी बहुत-सी आवश्यक वस्तुयें हैं जिनका व्यवहार सर्वसाधारणको करना पड़ता है। स्वदेशी उद्योग-धन्धोंमें भी विदेशी सामानोंका व्यवहार किया जाता है। अतएव इन सब चीजोंके टैक्स-रेटमें भी परिवर्तन होना चाहिए।

बहुत सम्भव है कि आगामी वर्षके बजटमें भारत-सरकार कमेटीकी सिफारिशोंके अनुसार कर-भारमें ह्रास करनेका प्रस्ताव उपस्थित करेगी। अतएव इस सम्बन्धमें अभीसे आन्दोलन करनेकी आवश्यकता है जिससे सबसे पहले उन सब वस्तुओंका कर-भार हल्का किया जाय जिनके कारण दरिद्र जनता कष्ट भुगत रही है। अन्यथा केवल देशी-विदेशी व्यवसायियों और इस देशके धनिकोंके स्वार्थ एवं सुविधापर ध्यान रखकर यदि कर-भारमें कमी की जायगी तो इससे जनताका कुछ भी लाभ नहीं होगा।

## जापानमें समवाय-आन्दोलन

भारतमें पहले-पहल सन् १९०४ ई० में सहयोग-समिति-सम्बन्धी कानून Co-operative societies Act पास हुआ। इसके बाद सन् १९१२ में यह कानून संशोधित रूपमें फिर पास हुआ जिसके अनुसार इसका कार्यक्षेत्र पहलेकी अपेक्षा और भी विस्तृत कर दिया गया। किन्तु इस बीस वर्षकी अवधिमें भी समवाय-आन्दोलनका अभी तक इतना प्रसार नहीं हुआ है जिससे इसके परिणामपर सन्तोष प्रकट किया जा सके। सहयोग-समितियोंका प्रकृत उद्देश्य एकमात्र कृषकोंको ऋण देना नहीं है। इसका मूल सिद्धान्त है किसानोंमें सहयोगकी भावनाका प्रसार करना, जिससे वे सामूहिक रूपमें उत्पादन एवं विक्रयका कार्य करें और जिस कामको एक व्यक्ति नहीं कर सके, उसे दस मिलकर सहज ही कर डालें। किसानोंमें यदि वास्तविक सहयोग-समितियोंकी स्थापना हो तो उनके द्वारा वे अपनी पैदावार खुदरा न बेचकर पायकारी दरसे बेच सकते हैं और इस प्रकार अधिक मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार किसान अपनी आवश्यकताकी चीजें—कपड़ा, नमक, किरासन तेल, चीनी, दियासलाई, बर्तन-बासन, मसाला, बीज, हल, बैल, खेतीके औजार इत्यादि भी सहयोग-समितियों द्वारा पाय-कारी हिसाबसे अपेक्षाकृत कुछ कम मूल्यमें खरीद सकते हैं। इसके सिवा समवाय-पद्धति द्वारा किसानोंमें कितने ही छोटे-मोटे उद्योग-धन्धे—जैसे दूधसे घी-मक्खन तैयार करना, कपड़ा बुनना आदि—जारी किये जा सकते हैं। ये सब काम समवाय-समितियों द्वारा अनायास ही बिना किसी खर्चके सम्पन्न हो सकते हैं। किन्तु हमारे देशमें समवाय-समितियों द्वारा इस प्रकारके कार्य बहुत कम हुए हैं। और यही कारण है कि समवाय-आन्दोलनके प्रति इस देशकी शिक्षित जनता विशेष उत्साह नहीं प्रकट कर रही है।

जापानमें पहले-पहल सन् १९०० ई० में सहयोग-समिति-विषयक कानून पास हुआ था। अर्थात् भारतसे सिर्फ चार वर्ष पूर्व। किन्तु इतने समयमें ही जापानमें इस आन्दोलनकी जैसी उन्नति हुई है उसके साथ भारतकी कोई तुलना हो ही नहीं सकती। सन् १९३२ ई० तक जापानमें कुल १४३५२ समितियां स्थापित हो चुकी थीं और जापानके ३ करोड़ ६० लाख किसानोंमें लगभग आधे इसके सदस्य थे। सन् १९३१ में जापानकी समवाय-विक्रय समितियों द्वारा किसानोंने २० करोड़ येन मूल्यकी अपनी पैदावार—चावल, कच्चा रेशम, रेशमकी गोली, नाना प्रकारके सूत आदि—बेची। इन समितियोंने उक्त वर्षमें १२ करोड़ येनकी आवश्यक वस्तुयें खरीदकर सुलभ मूल्यमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किसानोंके हाथ बेचीं। इसी वर्ष किसानोंको १०१ करोड़ येनका ऋण नाममात्रके सूदपर प्रदान किया गया है। इसके सिवा समवाय-समितियोंने ५४ लाख येन मूल्यके कल-कांटे खरीदकर किसानोंके हाथ बेचे और उनका मूल्य चुकानेके लिए किस्तबन्दीकी सुविधा कर दी। समवाय-आन्दोलनका देशव्यापी प्रचार हो, इसके लिए जापान-सरकार स्वयं विशेष रूपमें प्रयत्नशील हो रही है। जापान-सरकारने सन् १९३२-३३ में समवाय-समितियोंको बहुत कम सूदपर १० करोड़ येन उधार दिया है। और समवाय-समितियोंकी स्थापनाके लिए सन् १९३१ सालमें ११ लाख येन और सन् १९३२ में २१ लाख येन खर्च किया। इतना ही नहीं, बल्कि जापान-सरकारने इन समितियोंको आय-कर, रजिस्ट्रेशन-फीस, स्टाम्प ड्यूटी, म्यूनिसिपल टैक्स आदिसे भी बरी कर दिया है।

जापानके कल-कारखानोंके मालिक, यहां तक कि खुदरा दूकानदार भी समवाय-आन्दोलनके विरुद्ध हो रहे हैं। क्योंकि वे अब पहलेके समान किसानोंसे सस्ती दरपर उनके खेतोंकी पैदावार खरीद नहीं सकते और न उनके हाथ मनमाने मूल्यपर तैयार माल बेच सकते हैं। इसलिए अपने स्वार्थमें हानि होती देखकर उनका झुंझला उठना स्वाभाविक है। उन्होंने सङ्घबद्ध होकर इसका प्रतिवाद भी किया है। किन्तु सरकार उनके इस प्रतिवादपर कुछ भी ध्यान न देकर इस आन्दोलनको सब प्रकारसे प्रोत्साहन प्रदान कर रही है। इस प्रकार समवाय-आन्दोलनको किसानोंकी उन्नतिका एक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण साधन समझकर जापान-सरकार सब प्रकारसे इस आन्दोलनके प्रसारमें सहायता पहुंचा रही है। और हमारे देशकी सरकार अभी तक किसानोंकी आर्थिक उन्नतिके सम्बन्धमें नाना प्रकारकी लम्बी-चौड़ी योजनाओंपर ही विचार कर रही है।

## सरकारी इमारतोंमें विदेशी सामान

जनताकी क्रयशक्तिमें वृद्धि करनेके लिए इस समय यूरोपके विभिन्न देशों तथा अमेरिकामें सरकारकी ओरसे नाना प्रकारके सार्वजनिक कार्य चलाये जा रहे हैं। इंगलैण्डमें भी सरकारकी ओरसे मकान बनानेकी एक स्कीम तजवीज की गयी है। राष्ट्रपति रूजवेल्टकी आर्थिक पुनरुत्थानकी योजनामें भी इस प्रकारके कार्योंको विशेष महत्त्व दिया गया है। किन्तु जिस प्रश्नको लेकर इस समय विभिन्न देशोंकी सरकारें व्यस्त हो रही हैं और उसके सम्बन्धमें तरह-तरहके उपाय काममें ला रही हैं उसकी ओर अभी तक इस देशकी सरकारका ध्यान भी शायद ही आकृष्ट हुआ हो। सरकारकी ओरसे जो सार्वजनिक कार्य होते भी हैं उनके खर्चसे भारतीयोंको काफी लाभ पहुंच रहा है या नहीं, इस ओर भी बहुत कम ध्यान दिया जाता है। क्योंकि सरकारी इमारत, रेलके डिब्बे, पुल आदिके बनानेमें यदि भारतके कारखानोंमें प्रस्तुत सामानका उपयोग नहीं किया जाय तो इस प्रकारके कार्योंसे देशके उद्योग-धन्धोंको बहुत कम लाभ पहुंचता है। किन्तु हमारे देशमें ठीक यही हो रहा है। सरकारी इमारतोंमें विदेशी सामानोंका व्यवहार किया जाना आवश्यक समझा जाता है। हालमें रेलवे कम्पनियोंके जो कितने ही बड़े-बड़े स्टेशन बने हैं उनके इस्पातके किवाड़ और खिड़कियां इस देशमें न खरीदकर बाहरसे मंगायी गयी हैं।

इस सम्बन्धमें प्रस्तावित हवड़ा पुलका उदाहरण अभी ताजा है। पहले तो यह कोशिश की गयी कि पुलका निर्माण इस रूपमें किया जाय जिससे केवल विदेशी इस्पातका ही व्यवहार किया जा सके। इस उद्देश्यको ध्यानमें रखकर अधिकारियोंने यह घोषणा की कि tensile steel एक खास प्रकारका इस्पात पुल बनानेके काममें लाया जायगा। शायद अधिकारियोंने यह सोचा होगा कि ताता कम्पनी बड़े पैमानेपर इस किस्मका इस्पात तैयार नहीं कर सकेगी, इसलिए यह सामान इंगलैण्डसे मंगाया जायगा और वहांके व्यवसायी लाभान्वित होंगे। किन्तु ताता कम्पनीवाले सरकारकी इस चालको पहले ही ताड़ गये और उन्होंने अपने कारखानेमें प्रयोग करना शुरू किया। इसके बाद उन्होंने यह घोषणा कर दी कि ताता कम्पनी किसी भी मिकदारमें उक्त प्रकारका इस्पात तैयार कर सकती है। इसके बाद कम्पनीसे इस नये प्रकारके इस्पातको पेटेण्ट करानेके लिए कहा गया। इस सम्बन्धमें भी ताता कम्पनीकी विजय हुई। अब स्थिति यह है कि यदि पुलके निर्माणमें tensile इस्पातका उपयोग किया जाता है तो वह किसी भी तादादमें और सस्ते मूल्यमें देशमें ही प्राप्त हो सकता है। अब देखना है कि ताता कम्पनीको आर्डर मिलता है या विलायतकी किसी कम्पनीको?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## समाजका संक्रमण-काल

हमारा समाज इस समय उस अवस्थासे होकर गुजर रहा है जिसे हम संक्रमण-काल कह सकते हैं। समाजके प्राचीन और प्रचलित नियम क्रमशः भङ्ग होते जा रहे हैं और उनके स्थानपर नूतन नियमोंका आविर्भाव हो रहा है। किन्तु अभी तक किसी नूतन व्यवस्थाके आधारपर समाजका गठन नहीं हुआ है। अर्थात् एक ओर प्राचीन व्यवस्थाका नाश और दूसरी ओर उसके चिताभस्मपर नूतनका निर्माण, इन दोनोंके बीचकी जो अन्तर्वर्ती अवस्था होती है वही अवस्था इस समय समाजके सामने उपस्थित है। इसीसे इसे हम संक्रमण-काल कहते हैं।

इस अवस्थामें पहुंचकर हम विभ्रान्त-से हो रहे हैं। समाज किस मार्गका अनुसरण करेगा, हमारा गन्तव्य पथ क्या होगा, इसे हम निश्चित नहीं कर पाते। काल-स्रोतमें हम बहते चले जा रहे हैं। मालूम नहीं, यह अनन्त प्रवाह हमें कहां ले जाकर छोड़ेगा। पुरातन कालके आदेश-निर्देश, विधि-व्यवस्था, संयम-नियम इस समय मार्ग-सन्धानमें हमारे लिए सहायक नहीं हो रहे हैं। कारण, उनके अनुकूल वातावरण रहा ही नहीं। फिर भी समाजमें एक दल ऐसा है जिसकी दृष्टि पुरातनकी ओर है। वह प्रतिकूल वातावरणमें भी समाजको उसी प्राचीन विधि-व्यवस्थाकी ओर ढकेलकर ले जाना चाहता है जिसका अस्तित्व लुप्तप्राय हो चुका है। दूसरी ओर समाजका तरुण दल सम्मुखकी ओर देखता है और पीछेकी ओर मुड़ना अनावश्यक समझकर आंख मूंदे हुए आगे बढ़ते रहनेमें ही समाजका कल्याण समझता है। इस प्रकार समाजका एक पैर आगेकी ओर और एक पीछेकी ओर है। किधर पांव बढ़ावें? यही विकट समस्या है जिसका विचारपूर्वक समाधान करना होगा।

समाजका जो प्राचीन आदर्श था वह अब नहीं रह गया। समाजकी शृङ्खला भङ्ग हो गयी, उसके बन्धन विच्छिन्न हो गये। व्यक्तिके ऊपर समाजका जो अनुशासन था वह आधुनिक सभ्यताके व्यक्ति-स्वातन्त्र्य एवं सुविधावादके प्रवाहमें पड़कर टिक नहीं सका। व्यक्ति-स्वातन्त्र्यके साथ उसके आनुषङ्गिक-स्वरूप बन्धनोंका शैथिल्य होना अनिवार्य है। और यही शिथिलता इस समय व्यक्तिगत जीवनमें नाना रूपोंमें प्रकट हो रही है। किन्तु जो लोग समाजकी प्रधानताको अब भी अक्षुण्ण रखना चाहते हैं, वे व्यक्ति-स्वातन्त्र्यको खर्व करके समष्टिका कठोर अनुशासन व्यष्टिके ऊपर चलाना चाहते हैं। व्यष्टि एवं समष्टिके बीच यह वैषम्य दिन-दिन बढ़ता ही जा रहा है।

× × ×

व्यष्टि-जीवनमें व्यक्ति अपनेको ही केन्द्र मानकर चलता है। वासनाओंकी सर्वग्रासी क्षुधा और उसकी परितृप्ति ही उसके जीवनका आदर्श होता है। समाजके हिताहितके सम्बन्धमें चिन्ता करने तथा अपनी वासनाओंको संयत करनेकी प्रवृत्ति उसमें बहुत कम देखी जाती है। मनमें किसी प्रवृत्तिके उत्पन्न होते ही उसे चरितार्थ करनेकी चेष्टा करना उसके जीवनकी नीति होती है। उसके लिए कोई प्रबन्धन नहीं, कोई निषेधाज्ञा नहीं।

× ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## भोग और संयम

मानव-जीवनमें इन्द्रिय-भोगकी समस्या सदासे ही प्रमुख रही है। प्राचीन कालमें सब लोग निःस्वार्थ एवं भोगहीन जीवन व्यतीत किया करते थे, ऐसा नहीं कहा जा सकता। वासनाओंकी क्षुधा उस समय भी मनुष्यको दग्ध किया करती थी। किन्तु उद्दाम वासनाओंको संयत करनेकी चेष्टा भी इसके साथ-साथ चला करती थी। उस समय समाजकी रीति-नीति एवं व्यवहारमें इन्द्रिय-निरोध ही प्रधान लक्ष्य था। वासनाओंको संयत नहीं करनेसे व्यष्टि एवं समष्टि दोनोंका जीवन असह्य हो उठता है, यह शिक्षा बाल्यकालसे ही दी जाती थी। यौवनके पूर्व बालक और बालिकायें ब्रह्मचर्य-साधन एवं संयमके वातावरणमें परिपालित एवं परिवर्द्धित होते थे। तभी तो गृहस्थाश्रममें भी वे सदाचारपूर्ण संयत जीवन व्यतीत करते थे और समाजकी दुर्नीतिसे रक्षा करते थे।

किन्तु जीवनमें संयम तभी हो सकता है जब कि उसके अनुकूल समाजका वातावरण हो। संयमकी मर्यादा वहीं तक हो सकती है जहां तक साधारण मनुष्य अपनी दैहिक क्षुधाका दमन करनेके लिए बाध्य नहीं किया जाय। अन्यथा इसका परिणाम कभी शुभ नहीं हो सकता। इस समय हमारे समाजमें यही हो रहा है। विलास-व्यसनोंका आयोजन पूर्ण रूपसे हो रहा है। विषय-भोगके समस्त साधन हम जुटा रहे हैं। बड़े-बूढ़ोंमें भी सदाचार एवं संयमका अभाव पाया जाता है। और फिर भी हम चाहते हैं कि हमारी सन्तान भोग-विलासोंसे निर्लिप्त एवं अनासक्त रहे। बालक-बालिकायें एक साथ पालित-पोषित होते हैं। पुत्रके आचरणके सम्बन्धमें माता-पिता प्रायः उदासीन देखे जाते हैं। किन्तु उसी पुत्रके साथ पली हुई पुत्रीसे हम सती-साध्वी-जैसे व्यवहारकी आशा करते हैं। ब्रह्मचर्य आश्रमका नाम तक हमने मिटा दिया। किशोर अवस्थामें बालकोंका विवाह करना माता-पिता अपने लिए परम परितोषका कारण समझते हैं। बालक विधुर हो जानेपर, या एक पत्नीके रहते हुए भी, चाहे जब विवाह कर सकता है। इसी प्रकार बालकके पिता भी चाहे जिस उम्रमें इच्छा होनेपर मजेमें किसी बालाका पाणि-ग्रहण कर सकते हैं। इनमें किसीके लिए भी ब्रह्मचर्य पालनकी आवश्यकता नहीं समझी जाती। किन्तु ब्रह्मचर्य-पालनमें सर्वथा असमर्थ, अनिच्छुक बाल-विधवापर संयमका कठोर अनुशासन किया जाता है, उसके ऊपर ब्रह्मचर्यका गुरु भार लादा जाता है। अर्थात् जो सबके लिए साध्य नहीं है वही उस बाल-विधवाके लिए साध्य मान लिया गया है। इस प्रकारकी जबर्दस्तीका परिणाम वही हो रहा है जो होना चाहिए। अर्थात् समाजमें गुप्त व्यभिचार एवं दुर्नीतिको प्रश्रय मिल रहा है और समाजमें भोग-परायणताकी मात्रा बढ़ रही है।

## अस्पृश्यताका पाप

यह सन्तोषकी बात है कि हिन्दू-समाजसे अस्पृश्यताके कलङ्कको प्रक्षालन करनेकी आवश्यकताकी ओर समाजके विभिन्न सम्प्रदायोंका ध्यान क्रमशः आकृष्ट होने लगा है और प्रायः सभी विचारशील सज्जन इस बातको महसूस कर रहे हैं कि जब तक समाजका एक विशाल अङ्ग हमारी दृष्टिमें पतित, लाञ्छित एवं मानवीय गुणोंसे विरहित बना रहेगा तब तक हिन्दू-समाज सबल, सजीव एवं सक्रिय नहीं बन सकता और न उसमें प्राणशक्तिका उद्बोधन ही हो सकता है। समाजमें अपने बहुसंख्यक भाइयोंको पराधीन एवं पददलित रखकर तथा मनुष्योचित स्वत्त्वोंसे उन्हें वञ्चित करके हम अपने लिए स्वाधीनता एवं मानवीय स्वत्त्वोंका दावा नहीं कर सकते। समाजका एक अङ्ग पंगु और जड़वत् दशामें अकर्मण्य बना रहे और दूसरा प्रगतिकी ओर अग्रसर हो, यह कदापि सम्भव नहीं हो सकता। पराधीनता एवं परवशतासे मुक्ति प्राप्त करनेके लिए सम्पूर्ण समाजको प्रगतिशील होना पड़ेगा, उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें प्राणशक्तिका सञ्चार करना होगा जिससे उसकी अन्तर्हित शक्तियां स्फुरित होकर संहत बनें और वह सामूहिक रूपमें एक नूतन जीवनका, एक नूतन भावोन्मादनाका, एक नूतन प्राणोच्छ्वासका बोध करे। महान् जातियोंका निर्माण एवं गठन इसी रूपमें होता है और इस प्रकारकी सुगठित जाति द्वारा ही संसारमें महत् कार्य सम्पन्न होते हैं। दुर्बल और अक्षम जातियां शासक बनकर नहीं, बल्कि शासित होकर जीवन-यापन करती हैं। अतएव जातिके उत्थानके लिए यह आवश्यक है कि उसकी अधोगतिके कारणोंपर विचार किया जाय और उन कारणोंके दूरीकरणके लिए सब प्रकारसे प्रयत्न किये जायं। हिन्दू जातिकी वर्तमान अधोगतिका, उसकी शक्तिहीनता एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विशृङ्खलताका एक बहुत बड़ा कारण हो रहा है समाजके विभिन्न अङ्गोंमें फैला हुआ मिथ्या जात्यभिमान-जनित ऊंच-नीचका भाव और अस्पृश्यताका पाप। अस्पृश्यताका यह पाप हमारी जातिके पतनका कितना बड़ा कारण है सो अ० भा० सनातन जैन सभाके सप्तम अधिवेशनके सभापति राष्ट्रकर्मी सेठ पूनमचन्दजी रांकाके मर्मस्पर्शी शब्दोंमें सुनिये :—

"अस्पृश्यताका कलङ्क हमारे पतनका अधिकसे अधिक ज्वलन्त चिह्न है। एक मनुष्य अपने दूसरे भाईको पशुसे भी गयी-गुजरी दशामें रहनेके लिए विवश करे और फिर उसके स्पर्शको भी अपवित्र माने—और यह भी धर्म, ईश्वर और पवित्रताके नामपर—यह ढकोसलेबाजी है, धर्मकी विकृति है, सङ्कीर्णताकी पराकाष्ठा है! अस्पृश्यताके वज्रपापका पूरा फल हम पराधीनता और मुहताजीके रूपमें भुगत रहे हैं। इस पापमय प्रथाको जड़से नष्ट कर देना ही हमारे उद्धारका एकमात्र मार्ग है।"

एक ओर यदि हमने अपने कोटि-कोटि भाइयोंको अस्पृश्य बना रखा है तो दूसरी ओर नारी जातिको बन्दिनी-की दशामें रहनेके लिए बाध्य करके उसके साथ भी हमने कम अन्याय नहीं किया है। इस सम्बन्धमें अपने ओजस्वी विचार प्रकट करते हुए सेठ पूनमचन्दजीने अपने उक्त भाषण-में इस प्रकार कहा है:—

"अपने सगे-सहोदर भाइयोंको अछूत मानकर जैसा हमने समाजद्रोह किया है उसी प्रकार अपनी माता, बहनों, कन्याओं और सहधर्मिणियोंको ईंट और पत्थरकी जेलोंकी चहारदीवारीमें कैदकर हमने मातृद्रोहका घोर पातक, धर्म और नीतिकी दुहाई देकर किया है। जेलोंके अन्दर जञ्जीरसे जकड़े हुए कैदीसे आप अनुशासनकी लाचारीसे की हुई यान्त्रिक कवायदकी भले ही आशा करें, परन्तु वहां नीतिके लिए स्थान कहां है? जहां पराधीनता है, विवशता है, सङ्कीर्णता है वहां नीतिके लिए गुञ्जाइश कहां है? जब तक पर्दाप्रथा, शिक्षाका अभाव और परतन्त्रता हमारी स्त्रियोंके जीवनको कलुषित ही नहीं वरन् कलङ्कित करती है, तब तक हमारे समाजकी उन्नतिकी आशा करना बिल-कुल व्यर्थ है।"

## हरिजनोंको जल-कष्ट

हिन्दू-समाजके अन्याय एवं हृदयहीनताके कारण करोड़ों अस्पृश्य कहे जानेवाले हिन्दू आज मानवीय अधिकारोंसे वञ्चित होकर जिन सब असुविधाओंको झेल रहे हैं उनमें सबसे बड़ी असुविधा है पीनेके जलका अभाव। मनुष्यकी कौन कहे, पशुके लिए भी साफ पीने योग्य जलकी अनिवार्य आवश्यकता है। किन्तु हिन्दू-समाजने बहुसंख्यक मनुष्यों-को पशु-जीवनसे भी बदतर बनाकर आज उन्हें इस अवस्थामें पहुंचा दिया है कि वे कुएं और तालाबसे साफ पानी नहीं पी सकते। देशके जिन भागोंमें नदियां या बड़े-बड़े जलाशय हैं वहां तो किसी प्रकारसे बेचारे जलका अभाव दूर भी कर लेते हैं, किन्तु जहां ये सुविधायें प्राप्त नहीं हैं और पीनेके लिए केवल कुएंके जलपर निर्भर करना पड़ता है वहां इनके कष्टोंकी सीमा नहीं रहती। जो लोग धर्मके नामपर अपने भाइयोंको कुएंसे जल नहीं भरने देते उनमें इतनी मनुष्यता एवं सहृदयता भी नहीं होती कि हरिजनोंके लिए वे अलग ही कुएं बनवा दें। जहां धर्मके नामपर लाखों-करोड़ों रुपये अनावश्यक मन्दिर और धर्मशाला बनवानेमें, मूर्ख एवं दुराचारी पण्डे-पुरोहितोंको दान-दक्षिणा देनेमें प्रतिवर्ष खर्च होते हैं वहां इस श्रेणीके धर्मध्वजियोंमें इतनी सहृदयता नहीं होती कि वे अपने करोड़ों पिपासाकुल बन्धुओंको जल-दान द्वारा तृप्त करनेका पुण्य-कार्य करें। पश्चिमी राजपूताने-की मरुभूमिमें नदियों और जलाशयोंका एकदम अभाव है। कुओंके सिवा जल प्राप्त करनेका और कोई साधन नहीं है। एक-एक कुआं बनवानेमें हजारों रुपये खर्च होते हैं। और सवर्ण हिन्दुओंके इन कुओंपर हरिजनोंको जल भरनेका अधिकार नहीं। ऐसी स्थितिमें वहांके हरिजनोंको जलके लिए कितना कष्ट भोगना पड़ता है, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है। इस सम्बन्धमें राजपूताना हरिजन सेवक सङ्घके अध्यक्ष श्री रामनारायण चौधरीने हरिजन-पानी-कोषके लिए जो विज्ञप्ति प्रकाशित की है उसमें पश्चिमी राज-पूतानाके हरिजनोंकी जल-कष्ट-जनित दुःख-दुर्दशाका ज्वलन्त एवं मर्मस्पर्शी चित्र खींचा गया है। विज्ञप्तिका कुछ अंश इस प्रकार है :—

"एक ओर तो सवर्ण हिन्दू हरिजनोंको सार्वजनिक जलाशयोंका उपयोग नहीं करने देते, दूसरी ओर उनके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अलग कुएं वगैरह भी नहीं बनवाये जाते। यह सरासर अन्याय है। राजपूतानेमें इस अन्यायने बड़ा निर्दय रूप धारण कर रखा है। यहां पानीकी वैसे ही कमी है। बेचारे हरिजन तो इस कष्टके मारे त्राहि-त्राहि करते हैं। यह सच है कि पूर्वीय और दक्षिणी राजपूतानेमें तालाब और नदियां हैं। वहां पानीकी कमीके प्रश्न सर्वत्र और सर्वदा नहीं हैं। परन्तु वर्षामें कुछ मास और बहुत-से स्थानोंपर सदा साफ पानीका अभाव तो रहता ही है गन्दे पानीके सेवनसे वहां नाहर रोगसे हजारों हरिजन कई मास बीमार रहते और दारुण दुःख भोगते हैं। परन्तु पश्चिमी राजपूतानेमें तो हरिजनोंको वस्तुतः पानीके लिए तरसना और कई स्थानोंपर पशुवत् रहना पड़ता है। इस मरुभूमिमें कुएं ही मुख्य जलाशय हैं। एक-एक कुएंपर हजारों रुपये खर्च होते हैं। गरीब हरिजनोंके पास इतना धन कहां जो अलग कुएं बनवा लें। सवर्ण अपने कुओंका उपयोग हरिजनोंको करने नहीं देते। फलतः हरिजनोंको बड़ा कष्ट है। मेहतरोंकी स्थिति तो दयाजनक है। उन्हें या तो कोई सवर्ण ऊपरसे पानी डाल देता है, या पैसे लेकर घड़ा भर देता है। बहुधा इसमें समय भी बहुत खराब होता है। कई स्थानोंपर उन्हें पीने तकके लिए खेलके पानीसे काम चलाना पड़ता है! खेल बड़े कुएंसे लगे हुए लम्बे हौजको कहते हैं। इसमें पशु पानी पीते, लोग आबदस्त लेते और रजस्वला स्त्रियां कपड़े धोती हैं। इससे अधिक अमानुषिक व्यवहार और क्या हो सकता है?"


# दांतों की सुन्दरता

**व्यवहारमें लाये जानेवाले ब्रस पर ही निर्भर है**

आप जो मञ्जन व्यवहार करते हैं वह कितना ही अच्छा क्यों न हों सर्वोत्कृष्ट ब्रसके नहीं व्यवहार करनेसे आपके दांत पूर्णतया परिष्कार न हों सकेंगे। इसलिये मीरा ब्रस ही उपयुक्त है। कारण दांतके प्रत्येक कोने व फांक में, जहां तक सम्भव है, प्रवेश कर सकता है। और इसी लिए यह बनाया ही गया है। इसके बाल न नरम होंगे और न खुलकर गिर पड़ेंगे।

**मीरा टूथ ब्रस** के साथ

**मीरा डेंटल क्रीम** यवहार कीजिये।

चिरकाल तक दन्त पंक्ति शुद्ध, स्वस्थ सुन्दर व सबल रहेंगे।

## मीरा टूथ ब्रस

एजेण्टस्- **टी० एम० ठाकुर एण्ड कम्पनी**

**१२, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

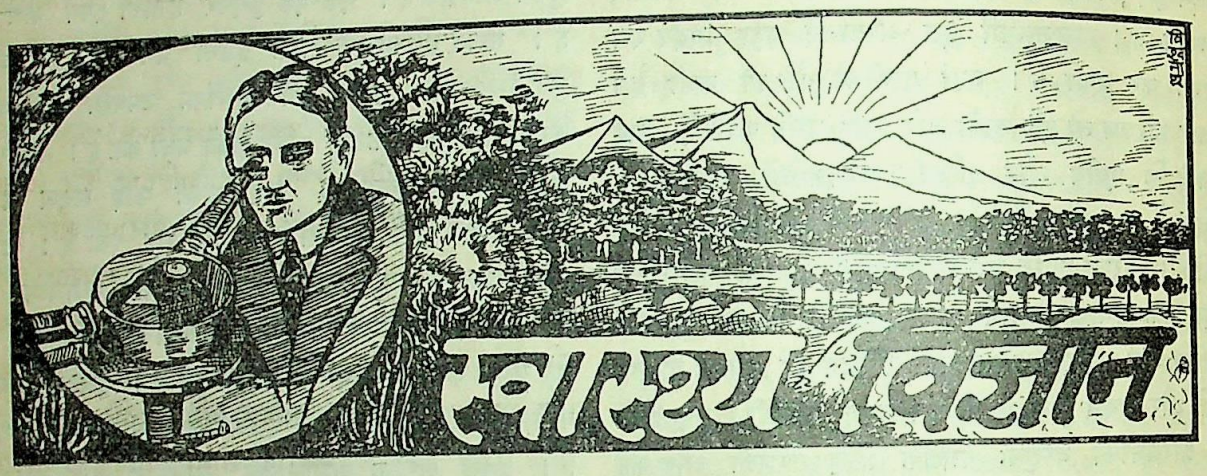


## कायिक क्षीणता और उसका प्रतिकार

स्वास्थ्य साधारणतः अच्छा है, फिर भी शरीर जर्जरित बना हुआ है, उसपर मांस नहीं चढ़ता। ऐसी दशामें अधिकांश लोग निरन्तर यही सोचा करते हैं कि क्या खाया जाय कि हड्डियोंपर मांस चढ़े और शरीरकी क्षीणता दूर हो जाय। उनका ख्याल होता है कि खाद्य-पदार्थोंसे ही यह अवस्था दूर की जा सकती है, पर वास्तवमें बात ऐसी नहीं है। केवल खान-पानमें ही परिवर्तन कर देने और अत्यन्त पुष्टिकर पदार्थोंके ही खानेसे कोई क्षीणकाय व्यक्ति मोटा नहीं हो सकता। यह बहुत-कुछ व्यक्ति-विशेषके शारीरिक गठन, उसकी स्वाभाविक मनोवृत्ति तथा पेशे आदिपर निर्भर करता है। इसलिए इस बातपर विचार करते समय इन बातोंपर भी विचार कर लेना चाहिए।

'हेल्थ फार आल'में डाक्टर स्टेनली लीफ लिखते हैं कि क्षीणकाय पुरुषोंको तीन श्रेणियोंमें विभाजित किया जा सकता है। पहली श्रेणीमें वे लोग आते हैं जो लम्बे अधिक होते हैं, किन्तु जन्मसे ही वे दुबले-पतले होते हैं। वे खूब स्वस्थ रहते हुए भी दुबले-पतले रहते हैं और उनपर मांस नहीं चढ़ता। दूसरी श्रेणीके वे हैं जिनके शरीरका विकास अच्छा हुआ है, उनमें शक्ति भी काफी मात्रामें होती है; परन्तु फिर भी उनका वजन उतना नहीं होता और शरीरपर मांस भी अपेक्षाकृत कम रहता है। तीसरी श्रेणीके लोग वे हैं, जिनकी पेशियोंका विकास अच्छा नहीं हुआ है, उनके शरीरमें शक्तिकी भी कमी रहती है और मांसकी कमी तो रहती ही है।

पहली श्रेणीके लोगोंकी शारीरिक दुर्बलता स्वाभाविक है और उसपर मांस नहीं चढ़ सकता, चाहे कितना ही प्रयत्न किया जाय। उन्हें जान लेना चाहिए कि मांस न चढ़ना उनके स्वास्थ्यकी खराबीका सूचक नहीं है।

दूसरी श्रेणीके लोगोंको पुष्टिकर और उपयोगी पदार्थ खानेसे लाभ होगा और उनका वजन बढ़ेगा। किन्तु अगर सच पूछा जाय तो तीसरी श्रेणीके लोगोंके शरीरपर ही प्रयत्न करनेसे मांस चढ़ सकता है। पेशियोंके विकसित होनेके साथ-साथ वे मोटे भी हो सकते हैं और उनके वजनमें वृद्धि हो सकती है। तीसरी श्रेणीके व्यक्तियोंकी शारीरिक क्षीणताके दो ही कारण हो सकते हैं—या तो स्वास्थ्यकी खराबी या पुष्टिकर खाद्यपदार्थोंका अभाव। अतः इन दोनों ही कारणोंका निवारण होते ही क्षीणता दूर होगी और वजन बढ़ेगा। लेकिन अगर ऐसे व्यक्तिको अच्छा पुष्टिकर भोजन मिले भी, तो स्वास्थ्यकी आन्तरिक खराबीके कारण उसे लाभ नहीं हो सकता। बल्कि इसका उलटा ही असर होता है; वह और भी क्षीणकाय होता चलेगा। इसलिए ऐसे मनुष्यको यह बात जान लेनी चाहिए कि उसकी कायिक क्षीणताका कारण वास्तवमें उसकी स्वास्थ्य-सम्बन्धी खराबी, जैसे कब्जियत, और जो कुछ खाया जाय उसका अपरिपाक है। अतएव ऐसे आदमीको सबसे पहले अपने पेटकी पाक-प्रणालीको दुरुस्त करना चाहिए। पहले स्वास्थ्यकी स्वाभाविक दशा प्राप्त करनेपर ही उसे पुष्टिकर पदार्थोंके खानेसे लाभ होगा। इस अवस्थाके प्राणीके लिए व्यायाम बहुत आवश्यक है। व्यायाम इतना उपयोगी है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कभी-कभी तो केवल इसीसे शरीरकी मांस-पेशियां मजबूत होती हैं, चाहे कुछ दिन पुष्टिकर खाद्यका भी अभाव हो।

कोष्ठबद्धता, अजीर्ण और परिपाक-प्रणालीकी खराबीके कारण जो क्षीणकाय हैं, उनके लिए व्यायाम क्यों अनिवार्य है, इसपर लिखते हुए एक अनुभवी डाक्टरने लिखा है कि व्यायाम करनेपर पेशियोंमें खूनका दौरा शुरू होगा और खूनके दौरेसे ही भुक्त पदार्थका बना हुआ पौष्टिक प्राणप्रद अंश शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें पहुंचेगा। यह देखा गया है कि जिस अङ्गसे काम लिया जाता है, वह प्रायः औरोंकी अपेक्षा अधिक पुष्ट और बलिष्ट होता है और इसका कारण यही है कि काम करते समय उसमें रक्तका दौरा अधिक होता है और इसीके साथ पौष्टिक पदार्थोंका अंश भी उसमें अधिक पहुंचता है। व्यायामका यह सबसे बड़ा लाभ है; क्योंकि इससे अङ्ग-प्रत्यङ्गके विकासके लिए खूराक मिलती है और उसका बहुत कुछ दूषित अंश पसीनेके रूपमें निकल जाता है। व्यायामसे कोष्ठबद्धताके निराकरणमें बड़ी ही सहायता मिलती है और जब तक कोष्ठबद्धतासे किसी प्राणीका पिण्ड नहीं छूटता तब तक वास्तविक कान्ति और बल-वृद्धिका स्वप्न उसे नहीं देखना चाहिए।

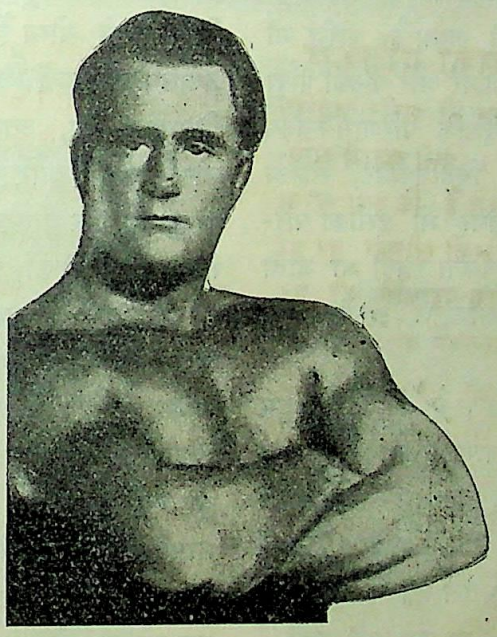

अमेरिकाके मि० चार्ल्स एटलस—कहा जाता है कि संसारमें आप सबसे अधिक सुगठित शरीरवाले पुरुष हैं।

अतएव जो लोग वास्तवमें कायिक क्षीणतासे दूर रहकर शरीरका वजन बढ़ाना चाहते हैं, उन्हें पहले आन्तरिक स्वास्थ्य प्राप्त करना चाहिए, तब कहीं बाह्यावस्था सुधरेगी।

इस अवस्थामें उपवास भी बहुत उपयोगी है। कुछ लोग कहेंगे कि इससे तो शरीर और भी क्षीण हो जायगा। हां, हो जायगा; पर केवल थोड़े दिनोंके लिए। परन्तु इससे लाभ यह होगा कि जब कुछ दिनोंके उपवासके बाद पेटकी भीतरी अवस्था खूब सुधर जायगी और पेट भली भांति साफ हो जायगा, तब एक बार सावधानीसे रहन-सहन रखनेपर स्वास्थ्यमें खूब उन्नति होगी। देखा गया है कि बीमारीसे उठनेके बाद अधिकांश व्यक्तियोंका विकास बहुत अच्छी तरह हुआ है।

कभी-कभी दूधका भी बड़ा आश्चर्यजनक प्रभाव देखा जाता है। मांस-वृद्धि करनेमें यह अद्वितीय है। अतएव भोजनमें उन चीजोंके साथ, जिनमें प्रोटीन और स्टार्च पाये जाते हैं, दूधका भी उचित अंश अवश्य रहना चाहिए। फल और तरकारियां भी इन्हींके साथ अत्यन्त अनिवार्य हैं। लेकिन इस बातका ध्यान रहे कि बहुत गरिष्ठ भोजन नहीं करना चाहिए, और रातमें बहुत विलम्बसे न सोना चाहिए। और इन बातोंके अतिरिक्त मनुष्यको चिन्ताओंसे खूब दूर रहना चाहिए। अन्यथा सब उपाय बेकार हैं।

## अपनेमें दिलचस्पी रखो

"जब कोई व्यक्ति," एक जर्मन डाक्टरने लिखा है, "मुझसे कुछ ऐसी बीमारियोंकी चर्चा करता है जिनकी जानकारी बाह्य लक्षणोंसे आसानीसे नहीं की जा सकती, तो मैं उससे एक ही प्रश्न करता हूं और वह यह कि 'क्या तुम अपनेमें दिलचस्पी रखते हो?' अगर उसने कह दिया कि 'हां', तब तो मैं समझता हूं कि उसकी बीमारी आसानीसे दूर हो जायगी। लेकिन 'नहीं', उत्तर देनेवाला मनुष्य मुझे अत्यधिक निरुत्साह कर देता है और मैं सोचता हूं कि इस मनुष्यको स्वस्थ करनेके लिए कुछ अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।"

वास्तवमें कितने ही प्राणियोंकी यह मनोवृत्ति होती है कि वे अपनी अवस्थासे सदा असन्तुष्ट बने रहते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि वे अपनेमें जरा भी दिलचस्पी नहीं रखते। किसी समय भोजन करना या न करना, बिस्तरेपर चुपचाप पड़े रहना या बिना कारण ही जरा-जरा-सी बातके लिए मानसिक विचारोंमें उलझे रहना,



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



खेल-कूद या मनोरञ्जनके साधनोंसे भी अलग रहना और सदा अनावश्यक रूपसे गम्भीर बने रहना, ऐसी उनकी आदत हो जाती है। उनकी अपनेसे जो उदासी है, उसीके परिणाम-स्वरूप उनकी यह मानसिक अवस्था हो जाती है।

इस अवस्थामें मनुष्यकी महत्त्वाकांक्षायें मरने-सी लगती हैं और उसका आत्म-विश्वास विलुप्त होता जाता है। कुछ काम करनेको जी नहीं चाहता—जीवन भार-सा प्रतीत होने लगता है। "अगर भयानक, किन्तु एकदम सच्चे शब्दोंमें कहा जाय" उसी डाक्टरने पुनः लिखा है, "तो यह अवस्था आत्मघात करनेके समान है—नये उगते पौधोंपर आग फेंकनेके समान है।" इस प्रकारकी उदासीनता जिस व्यक्तिमें समा गयी उसका मन तो रोगी हो ही जाता है, शरीर भी नीरोग नहीं रह सकता। सिरदर्द, कमर और पीठकी पीड़ा और अनिद्राकी बीमारियां इस मनोवृत्तिके परिणाम-स्वरूप उत्पन्न होती हैं। जरा-सी बातपर चिड़चिड़ाहट, झुंझला उठना और क्रोधसे आग-बबूला हो जाना भी इसीका परिणाम है। ऐसे व्यक्तिमें स्नायविक दुर्बलता इतनी आ जाती है कि और भी अनेक बीमारियोंका आक्रमण उसपर सहज ही हो जाता है।

एक दूसरे अमेरिकन डाक्टरने लिखा है कि "अगर तुम किसी ऐसे व्यक्तिको देखो जो पागल नहीं है, किन्तु हमेशा मुहर्रमी सूरत बनाये रहता है, तो समझ लो कि उसमें या तो कोई बहुत बड़ी बीमारी घर कर रही है या उसमें आत्मविश्वासकी कमी है, अपनी अवस्थासे वह खूब असन्तुष्ट है और अपनेमें उसकी बहुत ही कम—या कुछ भी नहीं—दिलचस्पी रह गयी है। मगर याद रखो कि यह भी एक बड़ी भीषण बीमारी है।" यह बतानेकी आवश्यकता नहीं कि हमारी मानसिक स्थिति, उसकी चिन्तनाओं और हमारी विचार-धाराका हमारे स्वास्थ्यपर बहुत प्रभाव पड़ता है। एक अंगरेजी कहावत है कि जो जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है। ऐसी दशामें उस मनुष्यका स्वास्थ्य भला कैसे अच्छा रह सकता है जो निरन्तर चिन्ताओंके जालमें आबद्ध है और आबद्ध है इसलिए कि उसमें अपने प्रति कोई दिलचस्पी नहीं रह गयी है, वह अपनेको निरन्तर क्षुद्र समझता रहता है और सदैव सोचता रहता है कि संसारमें उसके-से प्राणीका कोई मूल्य ही नहीं है—वह बिलकुल ही नगण्य है।

कुछ लोग, जो शिक्षित और सुसंस्कृत हैं, सोचते हैं कि वे जितने योग्य हैं, संसार उनका उतना मूल्य नहीं लगाता, और उन्हें जितनी सफलता उनकी योग्यता देखते हुए मिलनी चाहिए, उतनी मिलती नहीं। ऐसे लोग अपनेको कोसने लगते हैं और कुछ दिनोंमें अपनेसे उदास हो जाते हैं। परन्तु यह बात घातक है। हो सकता है कि उनके उपर्युक्त विचार ठीक भी हों, परन्तु उन्हें सोचना चाहिए कि उनमें जो योग्यता है, उसका कहां तक उपयोग वे अपनी अभीष्ट सफलताके लिए करते हैं। अगर वे ऐसा नहीं करते तो उनका उदासीन हो जाना अनुचित है। अनुचित ही क्यों—आत्मघात तुल्य। अपनेसे उदास रहनेवाले प्राणी संसारमें कुछ नहीं कर सकते स्वास्थ्य-विज्ञानकी दृष्टिसे इस प्रकारके मानसिक विचारवाले लोग अपना समस्त स्वास्थ्य और सौन्दर्य खो देंगे और किसी भी कामके लिए सर्वथा शरीर, मन और प्राणसे अस्वस्थ बने रहेंगे। इसीलिए उक्त डाक्टरने कहा है कि "अपनेसे दिलचस्पी रखो और तुम्हारा बेड़ा पार हो जायगा।"

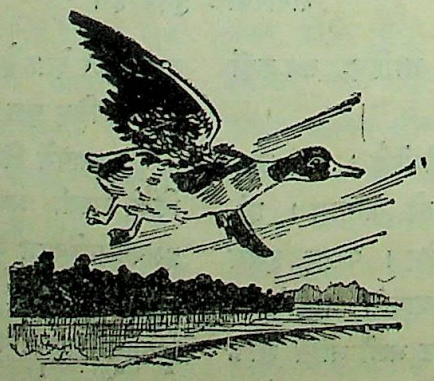

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

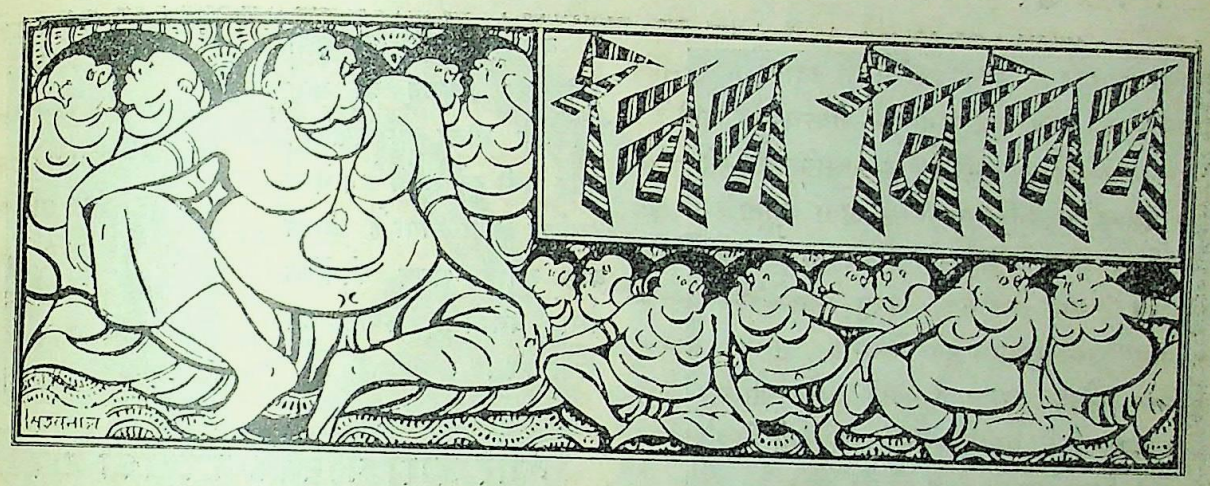


## बहरोंके लिए थियेटर

फिल्मोंको सवाक् बनाकर अन्धोंकी समस्या तो एक अंशमें सुलझा दी गयी थी, किन्तु बेचारे बहरोंके लिए फिल्म-का टाकी होना बिलकुल व्यर्थ था। परन्तु शिकागोमें अब एक ऐसे थियेटरकी स्थापना की गयी है जिसमें बहरे भी आसानीके साथ अपना मनोरञ्जन कर सकेंगे। थियेटर-भवनमें लगभग ३० हजार व्यक्तियोंके बैठनेकी जगह है और प्रत्येक सीटमें रेडियो लगा हुआ है, और उससे संयुक्त एक नवाविष्कृत यन्त्र जब बहरे व्यक्तियोंके कानके पास लगा दिया जाता है तब वे नाटकका सारा संवाद और गायनादि आसानीसे सुनते हैं।

## नये ढङ्गकी साइकिल

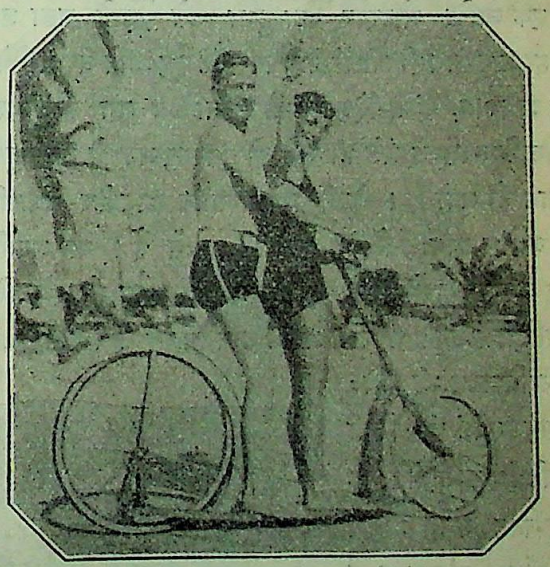

साइकिल-सम्बन्धी अब तक अनेक आविष्कार हो चुके हैं, परन्तु सबसे बादका जो आविष्कार हुआ है वह और भी विचित्र है। इसके अनुसार अब ऐसी साइकिलें भी बनने लगी हैं, जिनमें गियर और चेन नहीं रहती। शरीरसे जोर लगाते ही ये साइकिलें तेजीसे दौड़ने लगती हैं। साधारण साइकिलोंकी तरह इनमें बैठनेकी जगह भी नहीं रहती, जैसाकि ऊपरके चित्रसे स्पष्ट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## दौड़ती हुई मोटरसे बातचीत

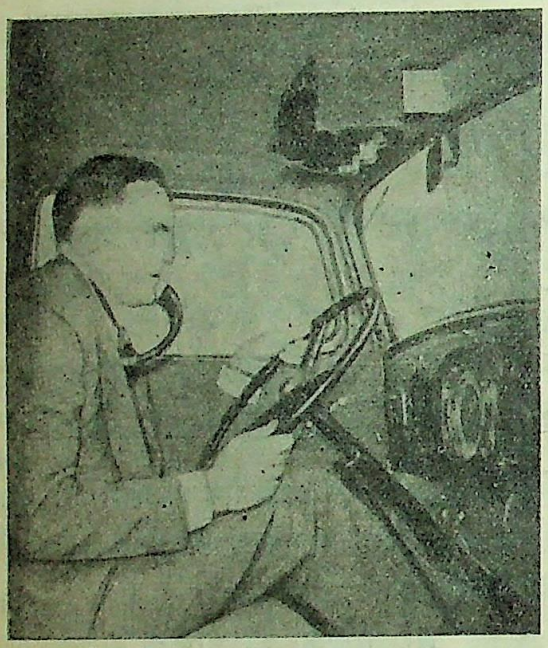

एक व्यक्ति मोटरपर बैठा हुआ उसे दौड़ाये चला जा रहा हो और साथ ही मीलोंकी दूरीपर बैठे हुए अपने घरवालोंके साथ बातचीत, हंसी-दिल्लगी भी करता जा रहा हो, यह बात पहले स्वप्नवत् भले ही रही हो; परन्तु अब तो यह बहुत आसान हो गयी है। केलीफोर्नियान्तर्गत लांगबीच-निवासी डा० वालेस प्रायः प्रतिदिन ऐसा ही करते हैं। वह अपनी मोटर लेकर हवाखोरीके लिए निकलते हैं और मोटरमें लगे हुए रेडियोसे उनके घरवाले मजेमें बात करते हैं। रेडियोका यह आविष्कार भी मि० वालेसने स्वयं ही किया है। रेडियो-सम्बन्धी अनेक आविष्कार उन्हींके किये हुए हैं। संसार-भरमें सबसे पहले उन्होंने ही रेडियो द्वारा ब्रोडकास्ट किया था। अपने घरमें बैठे-बैठे अब तक वे सौसे भी अधिक देशोंसे बात-चीत कर चुके हैं।

## बाल बनानेकी कूचीमें पैसे

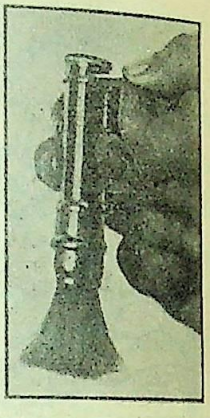

बाल बनानेकी अब ऐसी कूचियोंका प्रचलन हो गया है जिनके भीतर पैसे रखनेकी जगह बनी हुई रहती है। ऐसा इसलिए किया गया है जिससे बाल बनाते समय लोगोंको पैसा बचानेका ख्याल आ जाया करे।

## कैमरे द्वारा पहननेके कपड़ोंकी नाप

वर्गेन, स्वेडनके एक दर्जीने पहननेके कपड़ोंकी नाप लेनेका एक नया तरीका निकाला है। जो लोग उसके पास कपड़े सिलानेके लिए जाते हैं, उन्हें वह खड़ा कर देता है और नापनेवाले फीतेको उन व्यक्तियोंपर लगा देता है जैसा कि प्रस्तुत चित्रमें दिखाया गया है। इसके बाद कुछ ही सेकेण्डमें एक कैमरेसे दर्जी उनका फोटो ले लेता है। फोटोसे पहननेके कपड़ेकी लम्बाई-चौड़ाई आदि-का पता बखूबी चल जाता है। साथ ही इस तरीकेसे एक लाभ यह भी है होता है कि फोटोमें उन व्यक्तियोंके शरीरके गठन और उतार-चढ़ावका भी पता लग जाता है जिसका पता हाथसे नापनेमें उतनी अच्छाईके साथ नहीं लग सकता था।

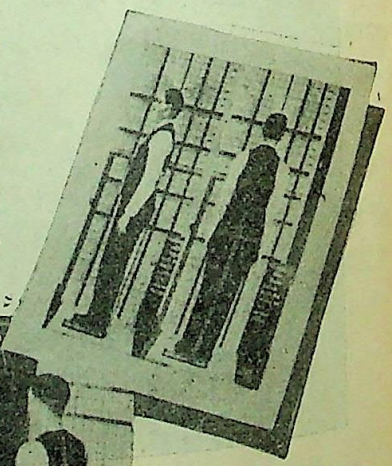

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## एक विचित्र ढङ्गकी गाड़ी

एक इटालियन इञ्जीनियर द्वारा निर्मित इस दो पहियेवाली विचित्र गाड़ीको खींचनेके लिए घोड़ोंकी जरूरत नहीं पड़ती। रबरके दो पहियोंके बीचमें बैठनेकी सीटें, एञ्जिन तथा कल-पुर्जे लगाये गये हैं। इस गाड़ीकी हाल हीमें परीक्षा हुई थी और इसमें किसी तरहकी खराबी नहीं पायी गयी। इसके निर्माताका कहना है कि इसकी चाल प्रति घण्टा ११६ मील रहेगी। यह मशीनसे चलती है।

## फाउण्टेनपेनमें स्टाम्प

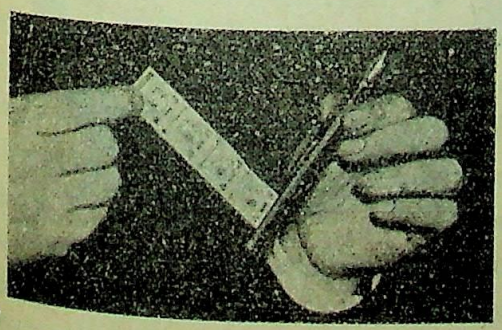

एक अंगरेज आविष्कारकने एक ऐसी फाउण्टेनपेनका निर्माण किया है जिसमें डाकखानेके स्टाम्प रखे जा सकते हैं। स्टाम्पोंकी जरूरत पड़नेपर बैरल घुमाते ही स्टाम्प बाहर निकल आते हैं। कलममें एक साथ १२ स्टाम्प रखे जा सकते हैं।

## चोरीका पता बतानेवाली मशीन

अमेरिकामें इधर मोटरोंकी चोरी बहुत होने लगी है, इसलिए इसे रोकनेके लिए एक वैज्ञानिकने एक ऐसी मशीनका आविष्कार किया है जिससे चोरीका पता लगानेमें बड़ी सहायता मिलती है। यह मशीनें वहां पुलों तथा सड़कोंपर ऐसे स्थानोंपर रखी गयी हैं जहांसे लोगोंको आना-जाना पड़ता है। इस मशीनमें उन रास्तोंसे गुजरनेवाली सभी गाड़ियोंके लाइसेन्स नम्बर छोटे-छोटे टिकटोंपर छापकर डाल दिये जाते हैं। जब गाड़ी जाने लगती है तब मशीनपर बैठनेवाला व्यक्ति मशीनका एक बटन दबा देता है और लाइसेन्स नम्बरका कार्ड तत्काल नीचे चला जाता है। अगर गुजरनेवाली गाड़ी चोरीकी नहीं हुई तो कार्ड केवल नीचे चला जायगा और कोई आवाज नहीं होगी, परन्तु चोरीकी गाड़ीका कार्ड नीचे जाते ही फौरन् एक बत्ती जल उठेगी और एक घण्टी बजने लगेगी। घण्टी बजते ही सड़क या पुलके

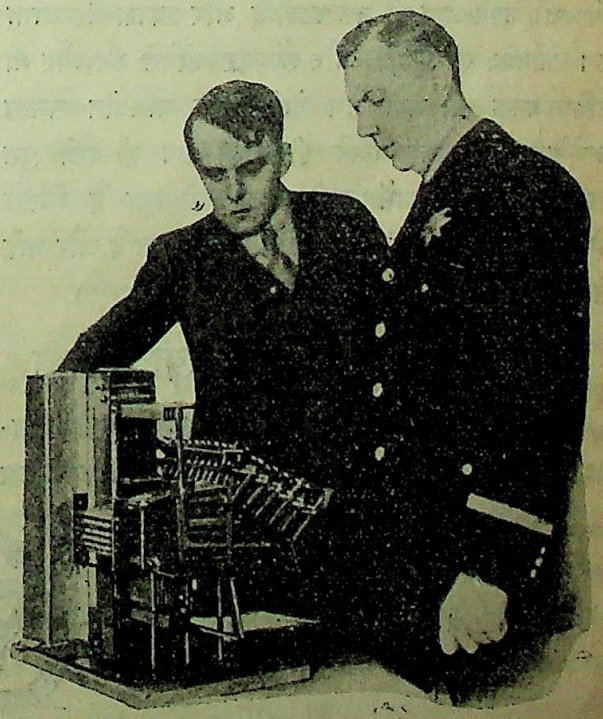

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दूसरे किनारेपर रहनेवाली पुलिसको फौरन सूचित कर दिया जायगा कि अमुक नम्बरकी गाड़ी रोक ली जाय; क्योंकि वह चोरीकी है। इस अद्भुत आविष्कारसे चोरोंके दिलमें हड़-कम्प पैदा हो गया है।

## फोनके साथ घड़ी और कैलेण्डर

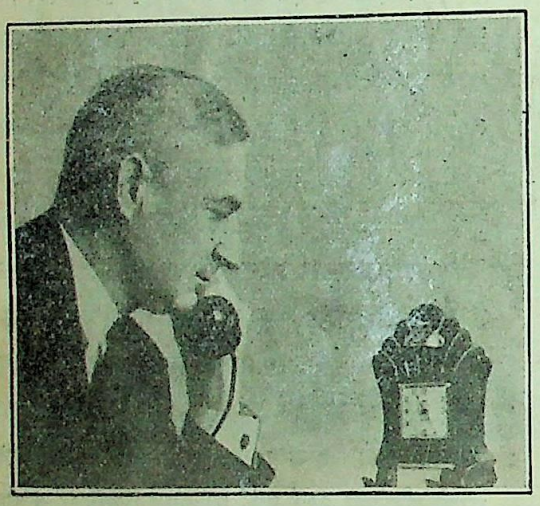

अब ऐसे टेलीफोन भी बनने लगे हैं जिनमें टेलीफोनके साथ ही बिजली बत्ती और बिजलीसे चलनेवाली घड़ियां तथा कैलेण्डर भी लगे रहते हैं। टेलीफोनका रिसीवर उठाते ही बत्ती अपने-आप ही जल उठती है और प्रकाश फैल जाता है। फोनके साथ घड़ी और कैलेण्डर होनेसे यह और भी सुविधाजनक हो गया है। टेलीफोनपर बातचीत समाप्त करनेके बाद रिसीवर रखते ही अपने-आप ही बत्ती बुझ जाती है। परन्तु इसमें एक ऐसा बटन भी लगा है जिससे कोई चाहे तो बत्ती देर तक जलती छोड़ सकता है और चाहे तो बत्ती बुझी भी छोड़ सकता है।

## संसार-भरका समय बतानेवाली घड़ी

नारविचके जान एच० विलिसने इस अद्भुत घड़ीका आ-विष्कार किया है। अभी तककी साधारण घड़ियां केवल उस स्थानका ही समय बता सकती हैं जिस स्थानपर वे लगायी जाती हैं, परन्तु इस नव आविष्कृत घड़ीमें यह खूबी है कि यह संसारके सभी देशोंका समय एक साथ बता सकती है। इसमें यूरोप, एशिया, अमेरिका, अफ्रीका आदि संसारके सभी देश उसी तरह लिखे गये हैं जिस प्रकार साधारण घड़ियोंपर घण्टे मिनटकी रेखायें खिंची रहती हैं। साथ ही ये रेखायें भी हैं। इस घड़ीमें एक डायल है जो सदैव चक्कर काटता रहता है और इस डायलके ऊपर सुइयां बनी हुई हैं, जो संसारके सभी देशोंके समयका निर्देश घूम-घूमकर करती रहती हैं। घण्टेके साथ-साथ मिनटका भी निर्देश करनेवाली सुइयां इसमें लगी हैं। संसारमें इस प्रकारकी यह पहली घड़ी है और इसमें एक और विशेषता यह भी है कि इसका दाम भी और घड़ियोंसे बहुत अधिक नहीं है।

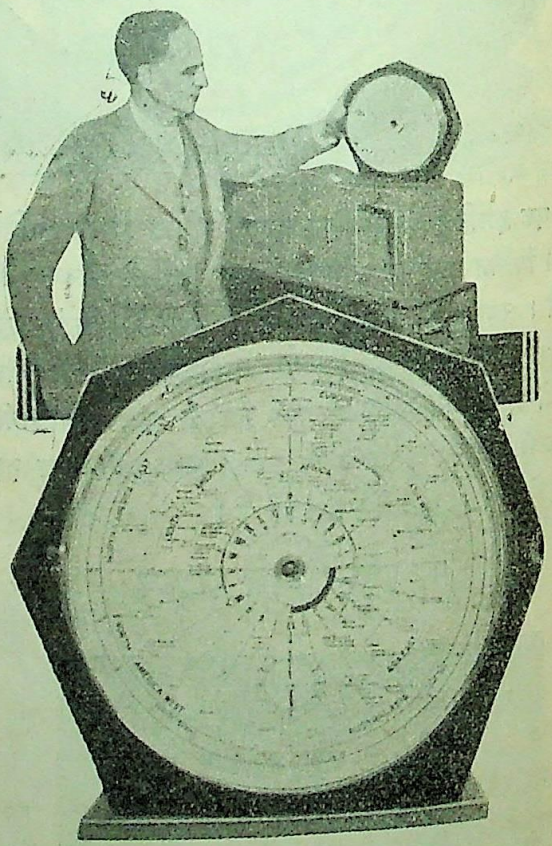

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

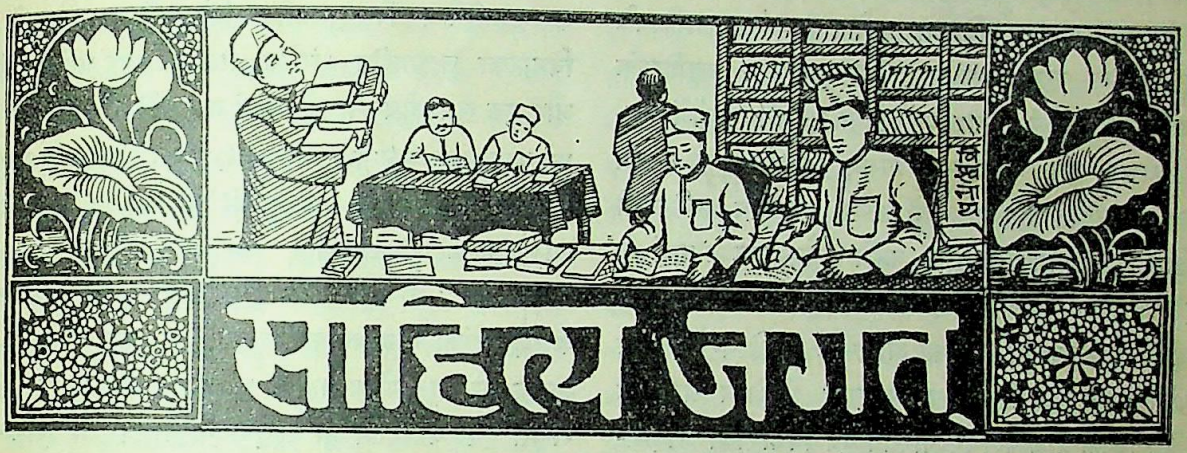


## अ० भा० साहित्य-परिषद्

बम्बईके विशिष्ट कांग्रेस-नेता श्रीयुत के० एम० मुंशीने विभिन्न प्रान्तीय साहित्य-परिषदोंके सामने एक विचारणीय प्रस्ताव उपस्थित किया है। भारतमें राष्ट्रीयताका प्रचार क्रमशः बढ़ रहा है और एकराष्ट्रीयताका आत्मबोध जनतामें जाग्रत हो रहा है। भविष्यमें राष्ट्रीयताके इस आत्मबोध द्वारा राष्ट्रीय एकता स्थापित करने तथा विशुद्ध राष्ट्रीयताके आधारपर राष्ट्रका गठन करनेमें हमें विशेष सहायता मिलनेकी आशा है। अतएव जिन साधनोंसे राष्ट्रीयताका आत्मबोध परिपुष्ट हो सकता है उनमें सबसे बढ़कर प्रभावशाली साधन यदि हम साहित्यको कहें, तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

विभिन्न भाषाभाषी प्रान्तोंमें नवीन साहित्यका निर्माण एवं विकास हो रहा है। साहित्यके सम्बन्धमें एक प्रकारका चैतन्य भाव प्रत्येक प्रान्तमें पाया जाता है और साहित्यकी उन्नति एवं प्रचारके लिए प्रायः प्रत्येक प्रान्तमें विभिन्न साहित्यिक संस्थायें—और उनकी एक केन्द्रीय संस्था साहित्य-परिषद्—स्थापित हैं जो इस दिशामें कार्य कर रही हैं। किन्तु इस प्रकारकी साहित्य-परिषदोंके कार्य प्रान्त-विशेष तक ही सीमाबद्ध रहनेके कारण उनसे भिन्न प्रान्तोंको उनकी गति-विधियों तथा भाव-धाराओंके सम्बन्धमें बहुत कम अथवा यों कहिये कि नहींके बराबर परिचय हो पाता है। अवश्य ही इस मार्गमें सबसे बड़ी कठिनाई भाषाकी विभिन्नता है। किन्तु हमारे लिए क्या यह सङ्कोचकी बात नहीं है कि हम इंगलैण्डकी साहित्यिक प्रगति तथा वहांके प्रमुख साहित्यिकोंकी नवीन विचार-धाराओंसे तो अपनेको पूर्णतया परिचित रखनेका प्रयत्न करें और अपने ही देशके पड़ोसी प्रान्तोंके साहित्यिक जीवनसे अपनेको सर्वथा अपरिचित रखें?

राष्ट्रीयताके इस युगमें—जब इस निकट भविष्यमें ही एक अखण्ड भारतीय राष्ट्रके गौरवोज्ज्वल स्वरूपकी कल्पना कर रहे हैं, हमारी यह अनभिज्ञता वाञ्छनीय नहीं कही जा सकती। अतएव हमें कोई ऐसा साधन खोज निकालना चाहिए जिससे हम विभिन्न प्रान्तीय साहित्योंका एक प्रजा तन्त्र Commonwealth स्थापित करनेमें समर्थ हों। श्री० मुंशीके विचारसे यह काम हिन्दी भाषा द्वारा ही साध्य हो सकता है। हिन्दी भाषाको माध्यम बनाकर विभिन्न प्रान्तोंके साहित्यिक इस कार्यका श्रीगणेश कर सकते हैं। यह कार्य सम्पन्न हो जानेपर भिन्न-भिन्न प्रान्तोंकी साहित्य-परिषदोंको सङ्घबद्ध करके एक अ० भा० साहित्य-परिषद्की स्थापना की जा सकती है।

गत इन्दौर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके अवसरपर श्रीयुत के० एम० मुंशीने महात्मा गांधीके सामने यह प्रस्ताव रखा था तथा वहांपर उपस्थित और भी कई साहित्यिकोंसे इस सम्बन्धमें बातचीत की थी। इस सम्बन्धमें सम्मेलनमें एक प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ था तथा इस प्रस्तावको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिए श्रीयुत मुंशी, श्री गिरिधर शर्मा तथा श्री हरिहर शर्मा, इन तीन सदस्योंकी एक कमेटी भी गठित कर दी गयी है। विभिन्न प्रान्तीय सहित्यिकोंके साथ सम्पर्क स्थापित करनेके लिए श्रीयुत मुंशीने प्रारम्भिक रूपमें यह प्रस्ताव रखा है कि वर्तमान हिन्दी मासिक पत्रिकाओंमेंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



किसी एकका उपयोग करके अथवा कोई नयी पत्रिका निकालकर उसका एक-एक विभाग प्रत्येक प्रान्तीय साहित्यके लिए संरक्षित रखा जाय। प्रत्येक प्रान्तीय साहित्यके लेखक इस पत्रिकामें अपना लेख दिया करें जो हिन्दीमें अनूदित होकर उस भाषाके विभागमें प्रकाशित हो। इस प्रकार हर महीने उक्त पत्रिकामें प्रत्येक प्रान्तीय साहित्यकी प्रगतिके सम्बन्धमें लेख रहा करेंगे और उस भाषामें जो प्रमुख रचनायें प्रकाशित होंगी उनकी समालोचना रहा करेगी। इस प्रकारकी पत्रिका अ० भा० साहित्य-पत्रिकाका रूप धारण कर लेगी और इसके द्वारा विभिन्न प्रान्तोंके साहित्यिकोंके बीच परस्पर परिचय एवं विचारोंका आदान-प्रदान स्थापित होगा।

श्रीयुत के० एम० मुंशीका यह प्रस्ताव बहुत ही सामयिक और उपादेय है। हमें आशा है कि विभिन्न प्रान्तीय साहित्य-परिषदोंका सहयोग उन्हें इस शुभानुष्ठानमें प्राप्त होगा। हम सर्वान्तःकरणसे इस अनुष्ठानकी सफलताकी कामना करते हैं।

## आधुनिक बङ्ग-साहित्यमें कलाका व्यभिचार

आधुनिक बङ्ग-साहित्यमें कलामें वस्तुवाद Realism in art के नामपर जो एक नयी लहर चल पड़ी है और जिसकी आड़में कुछ साहित्यिक अपनी प्रतिभाका दुरुपयोग करते हुए इन्द्रिय-भोग एवं व्यभिचारके चित्रको लोभनीय रङ्गमें चित्रित करके समाजके सामने उपस्थित कर रहे हैं उसका अन्त कहां जाकर होगा, यह कौन बता सकता है। आर्टके नामपर अनाचारका वीभत्स रूप प्रदर्शित करके अपरिणतमस्तिष्क तरुण-तरुणियोंके चित्तको पाप-पङ्कमें निमज्जित करनेकी चेष्टा करना ही इस श्रेणीके साहित्यिकोंने अपना ध्येय बना रखा है। इनमें प्रतिभा अवश्य होती है, किन्तु यह प्रतिभा उसी प्रकारकी है जिस प्रकारकी प्रतिभाका दुरुपयोग सुप्रसिद्ध अंगरेज कवि लार्ड बायरनने अपने विख्यात काव्य Don Juon में किया है। अपने इस काव्यमें बायरनने श्लीलताकी सीमाका अतिमात्रामें उल्लङ्घन करके तथा सब प्रकारकी लज्जाको तिलाञ्जलि देकर प्रायः प्रत्येक नायिका द्वारा यह दिखलाया है कि कोई भी नारी कामवासनाको चरितार्थ करनेके लिए सहज ही अपने सतीत्वका विसर्जन कर सकती है। किन्तु नारी जातिके प्रति इस प्रकारके अविचारका तत्कालीन अंगरेज समाजने घोर प्रतिवाद किया और एक समालोचकने तो यहां तक लिखा था कि "He, who represents all chastity as visionary and all virtue as vile, is not entitled to be considered as a man—he is a living literary monster." जो सतीत्वको कपोलकल्पित और सब प्रकारके सद्गुणोंको नीच बताकर अपमानित कर सकता है वह मनुष्य कहे जाने योग्य नहीं है। वह एक जीवन्त साहित्यिक राक्षस है। बायरनने भी वस्तुवादके नामपर ही इस प्रकारके काव्यका निर्माण किया था :—"To remove the cloak which the manners and maxims of society, said his Lordship, throw over their sceret sins and show them to the world as they really are." किन्तु साहित्य-संसारने उनकी इस युक्तिको सङ्गत नहीं समझा। समाजमें सब पापी नहीं होते। साहित्यिकोंके लिए समाजका कुत्सित रूप चित्रित करके समाजके सामने उपस्थित करना अनिवार्य रूपसे आवश्यक है, ऐसा नहीं कहा जा सकता।

बंगलामें अभी हालमें एक कविता-पुस्तक प्रकाशित हुई है। पुस्तकमें आदिसे अन्त तक व्यभिचार एवं अभिसारकी लीलाओंका वर्णन है। सिगार और शैम्पेनकी गन्धके साथ-साथ कामवासनाकी पूतिगन्धसे इसका कलेवर दूषित है। तरुण कविका काम है तरुणियोंके पीछे-पीछे चक्कर काटना, कभी फिरपोमें, कभी लेक रोडमें, कभी ब्रिस्टल होटलमें और कभी न्यू मार्केटमें। लीला, लटी, बूलू, शीला इत्यादि किशोरी प्रणयिनियोंके साथ कवि मोटर-विहार करता फिरता है। कभी आउटराम घाटमें उन्हें आइसक्रीम खिलाता है, कभी न्यू मार्केटकी सैर करते हुए उन्हें चाकलेट और लजेन्स खरीद देता है। यह तो हुई कुमारी बालाओंके प्रति कविकी प्रणयलीला। अब परकीया प्रेमकी बात सुनिये। एक दिन कवि होटलमें बैठा हुआ ब्राण्डी पी रहा था, इसी समय एक विवाहिता तरुणीके साथ उसका साक्षात्कार हुआ। परस्पर दृष्टि-आकर्षण होते ही एक नूतन रोमान्स उदित हुआ। तरुणी होटलसे निकलकर बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक मोटरपर सवार हुई। हमारे 'वैचलर' कवि ठहरे रोमान्स वीर। इसलिए उक्त तरुणीके साथ किसी प्रकारका परिचय न होनेपर भी आपने फौरन् अपनी मोटरपर बैठकर उसका पीछा किया। तरुणीकी मोटर उसके मकानके फाटकके अन्दर घुसी। कविने भी इधर-उधर देखते हुए चोरके समान उसका अनुसरण किया। सीढ़ियोंसे चढ़कर वह ऊपरकी मञ्जिलके बरामदेमें आ पहुंचे। किन्तु इतनेसे ही रोमान्सका पूरा समां थोड़े ही बंधता। इसलिए आप बरामदेसे उस तरुणीके शयनकक्ष तक पहुंचे और वहां एक खम्भेकी आड़से झांककर भीतरका दृश्य सतृष्ण नयनोंसे देखने लगे। तरुणी आईनेके सामने खड़ी होकर अपने वस्त्राभूषण उतार रही है। कुछ क्षणके बाद तरुणी बाहर बरामदेमें आयी तो वहां कविको खड़ा पाया। कविने अणुमात्र भी संकुचित हुए बिना उसे नमस्कार किया। नायिका भी कविसे कम रोमान्सप्रिय नहीं थी। इसलिए वह कविसे कहती है :—

"की दिये तोमाय सम्मान करि एमन शिवालरिर ;*
एत राते आसा अचेना बाड़ीते सत्यई तुमी वीर।"

इसपर कवि आनन्द-सागरमें डुबकियां लगाते हुए उस पुजारिनीसे कहते हैं :—

"स्वर्णलतार मत तनु तव तुले नेव मोर बुके ;
एकटी से चूमू ध्रुवतारा सम एंके दाओ मोरे मुखे।"

इस प्रकार कामोन्मादजनित नग्न बर्बरतासे इस पुस्तकका कलेवर रंगा गया है। मालूम होता है कि अंगरेजीमें जिसे Nymphomania, अर्थात् स्त्रियोंके प्रति जघन्य उत्कट आकांक्षाका रोग कहते हैं, उसी रोगका शिकार बनकर कविने इस काव्य-ग्रन्थकी रचना की है। अन्यथा कोई भी स्वस्थ दिमागवाला साहित्यिक साहित्यके कमल-बनको इस प्रकारके वीभत्स शृङ्गार रसके पङ्कसे विद्रूप नहीं कर सकता।

* * *

स्वतन्त्रताकी ओर। लेखक—श्री हरिभाऊ उपाध्याय; प्रकाशक—सस्ता साहित्य-मण्डल, दिल्ली; पृष्ठ-संख्या ३६२; मूल्य १॥)

मानव-जीवन या यों कहिये कि जीवमात्रका चरम लक्ष्य स्वतन्त्रता है। जीव सब प्रकारके बन्धनोंसे मुक्त होकर परमतत्त्वमें मिलनेके लिए आकुल हो रहा है। किन्तु संसारमें आकर वह बन्धनोंके मायाजालमें इस प्रकार आबद्ध हो जाता है कि उसके लिए ये बन्धन सुलझनेके बदले और भी जटिल प्रतीत होने लगते हैं। मनुष्य जब तक इन बन्धनोंके मायाजालको विच्छिन्न करके आत्म-स्वरूपको हृदयङ्गम करने योग्य नहीं होता तब तक उसे वास्तविक स्वतन्त्रता अर्थात् केवल शरीरकी ही नहीं, प्रत्युत आत्माकी भी स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकती। इस वास्तविक स्वतन्त्रताको प्राप्त करनेके लिए हमें केवल भौतिक साधनोंका ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक साधनोंका भी आश्रय ग्रहण करना होगा। भौतिक एवं आध्यात्मिक साधनोंके अन्तरमें जो एक प्रकारका सामञ्जस्य है उसका प्रकृत रहस्य जिसने समझ लिया और तदनुसार अपनी जीवन-प्रणालीको प्रवर्तित किया उसके लिए जीवनकी जटिलतायें दुरूह नहीं प्रतीत होंगी और वह अपनी इस ज्ञान-साधनाके बलपर बन्धनोंके एक-एक सूत्रको सहज ही विच्छिन्न करता हुआ अपने लक्ष्यकी ओर अग्रसर होता जायगा। किन्तु मानव-जीवनके इस आध्यात्मिक रहस्यको समझनेवाले आज कितने लोग हैं?

प्रस्तुत पुस्तकमें मननशील लेखकने हृदय एवं मस्तिष्कके मन्थन-स्वरूप जिन विचारोंका प्रतिपादन किया है वे मानव-जीवनके उसी चरम सत्यकी ओर प्रवर्तित करनेवाले हैं जिनका सङ्केत ऊपर किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि भौतिक जीवनके साथ आध्यात्मिक जीवनका जो सहज अविच्छेद्य सम्बन्ध है उसपर ध्यान रखकर ही लेखकने मानव-जीवनकी समस्याओंपर विचार किया है। क्योंकि भौतिक जीवनके साथ-साथ यदि जीवनके इस आध्यात्मिक रहस्यपर बराबर लक्ष्य रखा जाय तो मनुष्य अकारण जो नाना प्रकारकी दुश्चिन्ताओंका बोझ अपने ऊपर लादे फिरता है उससे सहज ही मुक्त हो जाय। अतएव जीवन क्या है और जीवनका उद्देश्य क्या है, इस विषयको सबसे पहले समझने और हृदयङ्गम करनेकी जरूरत है। इस पुस्तकमें 'मानव-जीवन और उसका उद्देश्य'से आरम्भ करके मानव-जीवनके भिन्न-भिन्न स्वरूपोंपर, स्वतन्त्रताके मूलस्वरूप, उसके सिद्धान्त एवं स्वतन्त्रता-प्राप्तिके भौतिक साधनोंपर बड़े ही विशद रूपमें विचार किया गया है। आठ अध्यायोंमें यह पुस्तक विभक्त है और प्रत्येक अध्याय सुन्दर, सरल एवं उदात्त भावनाओंसे ओतप्रोत है। विषयकी गहनता होते हुए भी

* Chivalry



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लेखनशैली एवं विचारशैली परिमार्जित एवं सुबोध है और मनस्वी पाठकोंके लिए इसमें विचारोत्तेजनाकी पर्याप्त सामग्री है। लेखक श्री हरिभाऊजीने अपने वक्तव्यमें स्वयं लिखा है कि उनके विचारोंको महात्मा गांधीके सिद्धान्तों एवं आदर्शोंसे स्फूर्ति मिली है। किन्तु इस स्फूर्तिको ग्रहण करके भी लेखकको अपने विचारोंको मौलिकता-मण्डित बनानेमें प्रशंसनीय सफलता मिली है, यह हम निःसङ्कोच कह सकते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दीमें यह पुस्तक अपने ढङ्गकी एक ही है और इसके यथारीति अध्ययन एवं मननसे जिज्ञासु पाठकोंको अपनी जीवन-यात्रामें बहुत-कुछ स्फूर्ति प्राप्त हो सकती है। हमें आशा है कि इस पुस्तकको हिन्दी भाषा-भाषियोंमें यथेष्ट समादर प्राप्त होगा।

दो खुदाई खिदमतगार। लेखक—श्री महादेव देशाई; प्रकाशक—हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, दिल्ली। मूल्य ॥।), सजिल्द १)।

सीमाप्रान्तके खुदाई खिदमतगार आन्दोलनके प्रवर्त्तक खान अब्दुल गफ्फार खां—जो सीमान्तके गांधीके नामसे विशेष परिचित हैं—तथा उनके भाई डा० खान साहबकी प्रामाणिक जीवनी इस पुस्तकमें संगृहीत है। महात्मा गांधीके सेक्रेटरी श्रीयुत् महादेव देशाईने स्वयं खान बन्धुओंसे उनकी जीवन-सम्बन्धी घटनाओंको जानकर उनका एक खाका अंगरेजीमें तैयार किया जिसका यह हिन्दी रूपान्तर है। श्री महादेव देशाईकी कुशल लेखनीका चमत्कार इस पुस्तकमें सर्वत्र देखनेको मिलता है। पुस्तक इस ढङ्गसे लिखी गयी है जिससे हमें खान-बन्धुओंके जीवनके अन्तरतमकी वास्तविक झांकी देखनेको मिलती है। इस पुस्तकको पढ़कर कौन यह विश्वास कर सकता है कि सरहदकी इस पठान जातिमें—जो जरा-जरा-सी बातोंपर उत्तेजित होकर मरने-मारनेके लिए तैयार हो जाती है—अब्दुल गफ्फार खां जैसा अहिंसा-व्रतधारी, सर्वस्व-त्यागी महिमोज्वलचरित महापुरुष पैदा हो सकता है। सीमान्तके इस प्रतिष्ठित धनी परिवारके ज्वलन्त त्यागकी कहानी पढ़कर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसका हृदय द्रवित न हो उठे। प्रत्येक देशकर्मीके लिए यह पुस्तक पठनीय है।

आईने-अकबरी। भाषान्तरकार तथा सम्पादक—श्री रामलाल पाण्डेय; प्रकाशक—विद्या-मन्दिर, कानपुर; स्थायी ग्राहकोंके लिए वार्षिक मूल्य श्रेष्ठ संस्करण ७) और साधारण संस्करणका ४॥)। एक प्रतिका मूल्य डाक-व्ययके अतिरिक्त श्रेष्ठ संस्करणका २) और साधारण संस्करणका १।); प्रत्येक अङ्कमें रायल अठपेजी ६४ पृष्ठ होंगे।

अबुलफजलकी सुप्रसिद्ध कृति आईने-अकबरीका यह हिन्दी-अनुवाद क्रमशः सम्पूर्ण प्रकाशित हो जानेपर हिन्दी-साहित्य-भाण्डारकी एक मूल्यवान निधि समझी जायगी। विद्वान् अनुवादकने इस बृहत् कार्यको सम्पन्न करनेमें जिस विद्वत्ता, श्रमशीलता एवं अध्यवसायका परिचय दिया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। लेखकने अपनी इस कृतिके रूपमें भारतीय इतिहास और हिन्दी-साहित्यको एक अनुपम दान दिया है। १६ वीं शताब्दीके मुगलकालीन भारतका साङ्गोपाङ्ग चित्र जिस प्रकार जीवन्त रूपमें इस ग्रन्थमें चित्रित किया गया है वैसा और किसी भी अन्य ग्रन्थमें नहीं। तभी तो आईने-अकबरीकी गणना विश्व-साहित्यमें की जाती है। हमें विश्वास है कि लेखक महोदयको उनके इस शुभ अनुष्ठानमें हिन्दी-भाषा-भाषियों द्वारा पूर्ण प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

गङ्गा (चरिताङ्क)। सम्पादक—साहित्याचार्य 'मग'; प्रकाशक—गङ्गा कार्यालय, सुलतानगञ्ज, (ई० आई० आर०) इस अङ्कका मूल्य २॥)

गङ्गाने अपने जीवनमें अब तक कई अच्छे विशेषाङ्क निकाले हैं, परन्तु उसका प्रस्तुत विशेषाङ्क उतना महत्त्वपूर्ण नहीं हो सका। प्रस्तुत अङ्कमें शङ्कर, महावीर, बुद्ध, गांधी, रवीन्द्र, लेनिन और डारविन आदि कितने ही प्राच्य और पाश्चात्य महापुरुषोंके चित्र और चरित्र एकत्र किये गये हैं, इस लिहाजसे सम्पादकका प्रयत्न सराहनीय है। परन्तु लेनिन, स्टैलिन और रवीन्द्रनाथ आदि कुछ इने-गिने लेखोंको छोड़कर अधिकांश लेखोंकी लेखनशैली प्रायः एक-सी है जिसके कारण आदिसे अन्त तक पत्रमें एक ऐसी 'मोनोटोनी' आ गयी है, जो अखरती है। फिर भी चरिताङ्कमें विद्यार्थियोंके पढ़नेकी काफी अच्छी सामग्री है और इससे उन्हें लाभ उठाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कांग्रेसकी स्वर्ण-जयन्ती

हमारी राष्ट्रीय महासभा कांग्रेसको स्थापित हुए इस वर्षके अन्त तक ५० वर्ष पूरे हो जायंगे। अतएव इस उपलक्षमें कांग्रेसका स्वर्ण-जयन्ती-उत्सव मनानेका जो निश्चय किया गया है वह सर्वथा उचित ही है। इस अर्ध-शताब्दीके अन्दर देशमें राष्ट्रीयताकी जो प्रगति एवं विकास हुआ है उसके इतिहासका मूर्त्त-स्वरूप हमारी यह राष्ट्रीय महासभा है। हमारी राष्ट्रीय भावनाओंका जीवन्त प्रतीक बनकर कांग्रेसने हमारे राष्ट्रीय जीवनमें जो महान् क्रान्तिकारी परिवर्तन कर डाले हैं उनपर किसी भी राष्ट्रको गौरव हो सकता है। आज हमारी यह कांग्रेस हमारे राष्ट्रीय जीवनके साथ इस प्रकार अविच्छेद्य-रूपमें सम्बद्ध हो गयी है कि हम कांग्रेसके बिना राष्ट्रीयता एवं स्वाधीनताके सम्बन्धमें कुछ सोच ही नहीं सकते।

१९ वीं शताब्दीकी कांग्रेस और बीसवीं शताब्दीकी कांग्रेसमें अन्तर, महदन्तर है। दोनोंमें कोई तुलना हो ही नहीं सकती। जिसे किसी समय गवर्नर जेनरल लार्ड डफरिनने क्रोधावेशमें आकर "Microscopic minority" अतितुच्छ अल्प मतवालोंकी संस्था बताकर उपेक्षणीय समझा था वही कांग्रेस आज अधिकारियोंकी दृष्टिमें देशका सर्वोत्तम सङ्गठित दल "Best organised party" हो रही है। अधिकारियोंकी दृष्टिमें कांग्रेस भले ही एक सर्वोत्तम शक्तिशाली राजनीतिक दल हो, किन्तु हम देशवासियोंकी दृष्टिमें तो यह किसी दल-विशेषकी संस्था न होकर समग्र राष्ट्रकी प्रतिनिधि-संस्था है और इस संस्थाके द्वारा ही राष्ट्रकी आशा-आकांक्षायें व्यक्त हुआ करती हैं। देशकी सर्वोत्तम विभूतियोंने अपने त्याग, तप एवं साधना द्वारा इसमें प्राण-दान किया है, महान् देशभक्तोंने इसकी सेवामें अपने जीवनको उत्सर्ग किया है, न मालूम कितने राष्ट्रकर्मियोंने इसकी आराधनामें अपने श्रद्धा-भक्तिप्लुत हृदयकी सुमनाञ्जलियां अर्पित की हैं। तभी तो कांग्रेस एक शक्तिशालिनी संस्था बनकर राष्ट्रके जीवनमें शक्ति, ओज एवं स्फूर्तिका सञ्चार कर रही है।

सन् १९०६में पहले-पहल कलकत्ता-कांग्रेसके अधिवेशनमें राष्ट्रने अपने राजनीतिक लक्ष्य स्वराज्यकी घोषणा की थी। इस घोषणाके साथ ही कांग्रेसके उस युगका आरम्भ हुआ जिसे हम राष्ट्रके आत्म-चैतन्यका युग कह सकते हैं। सम्पूर्ण राष्ट्रने एक नूतन प्राण-स्पन्दनका अनुभव किया और राष्ट्रीयताकी तरङ्गें देशको परिप्लावित करने लगीं। तबसे लेकर अब तक न मालूम कितने रूपोंमें राष्ट्रने उस आत्म-चैतन्य-भावनाका बोध किया है। असहयोग एवं सत्याग्रह जैसे देशव्यापी प्रबल आन्दोलनोंके सागर-मन्थनमें पड़कर देश न मालूम कहांसे कहां बढ़ गया है। आज प्रश्न यह नहीं है कि कांग्रेसके ये प्रयोग सफल हुए या नहीं? असफलता तो व्यक्तिके लिए है। राष्ट्रके जीवनमें तो असफलता कभी होती ही नहीं। पराधीन जातिके लिए व्यर्थता-जैसा कोई शब्द है ही नहीं। एक ओर स्वाधीनता-लाभकी दुर्निवार कामना और दूसरी ओर सफलता, इन दोनोंके बीच केवल कर्मोद्यम, अनवरत दुःसाध्य कर्मोद्यम। समस्त बाधाविघ्नों एवं विरोधी अवस्थाओंको अतिक्रमण करते हुए भी राष्ट्र अपने लक्ष्यकी ओर अग्रसर होता रहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है। हमारी यह कांग्रेस जब तक अपने लक्ष्यपर अचल, अपने आदर्शपर विश्वासी और अपनी शक्तिपर निर्भरशील है तब तक वह एक सजीव संस्थाके रूपमें मृत्युञ्जयी बनी रहेगी। और इसके झण्डेके नीचे समग्र राष्ट्र समवेत होकर एक-न-एक दिन ईश्वर-निर्दिष्ट अपने चरम लक्ष्यको अवश्य प्राप्त करेगा। हमें आशा है कि कांग्रेसका यह जयन्ती-महोत्सव समारोह इस रूपमें मनाया जायगा जो इस देशकी मर्यादा एवं गौरवके सर्वथा उपयुक्त हो और वह राष्ट्रके राजनीतिक आदर्श तथा उसकी प्राप्तिके लिए हमारे दृढ़-सङ्कल्प एवं अविश्रान्त उद्योगका द्योतक हो।

## कांग्रेस और साम्यवादी दल

अहमदाबादमें होनेवाले गुजरात कांग्रेस-साम्यवादी-दल-सम्मेलनके सभापति आचार्य नरेन्द्रदेवने जो भाषण दिया है उसमें कांग्रेस-साम्यवादियोंकी विचारधारा तथा कांग्रेसकी वर्तमान कर्मनीतिके प्रति उनके रुखपर विशद रूपमें प्रकाश डाला गया है। कांग्रेस-साम्यवादी कांग्रेसकी वर्तमान कर्म-नीति तथा उसकी गति-विधियोंसे सन्तुष्ट नहीं हैं, यह आपके भाषणसे स्पष्ट है और इस विषयमें कांग्रेस-साम्यवादियोंके साथ कांग्रेसके अन्यान्य बहुत-से राष्ट्रवादी सदस्य भी सहमत होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। कौन्सिल-प्रवेशकी नीतिमें विश्वास करनेवाले कांग्रेस पार्लामेण्टरी बोर्डके सदस्य कांग्रेस-को जिस मार्गपर लिये जा रहे हैं वह कांग्रेसके आदर्श एवं मर्यादा-रक्षामें कहां तक सहायक होगा, इस सम्बन्धमें केवल साम्यवादियोंको ही नहीं, बल्कि अन्य कांग्रेसवादियोंको भी सन्देह है। बम्बई-कांग्रेसमें प्रस्तावित शासन-सुधारका सम्पूर्ण रूपसे वर्ज्जन करनेका जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था उसके अनुसार अब तक देशमें कोई गठनात्मक कार्य नहीं हुआ। इसके विपरीत कुछ लोग भावी शासन-विधानमें मन्त्रित्व-पद तक ग्रहण करनेकी चर्चा करने लग गये हैं। व्यवस्थापिका परिषद्में कांग्रेस-दलके सदस्योंने अब तक जो-कुछ किया है उससे देश अपने लक्ष्यकी ओर अणु-मात्र भी अग्रसर हुआ है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। जिस शासन-विधानका उद्देश्य देशके कायमी हकवालों—Vested interests देशी राजा, जमींदार, धनिकवर्ग तथा सिविलियन कर्मचारियोंके साथ सहयोग करके तथा उनके अन्याय्य अधि-कारों एवं सुविधाओंको अक्षुण्ण रखकर जन-साधारणको प्रकृत शासनाधिकार एवं स्वत्वोंसे वञ्चित रखना है वह शासन-विधान किसी भी दशामें देशके लिए ग्रहणीय नहीं हो सकता। किन्तु इस शासन-विधानके विरुद्ध देशके लोकमतको संहत करनेके लिए कांग्रेसने व्यवस्थापिका-परिषदमें वाक्‌युद्धके सिवा और कोई उल्लेखनीय कार्य अभी तक नहीं किया है। व्यवस्थापिका परिषदमें कांग्रेस-दलका बहुमत न होनेके कारण वह पृथक् रूपमें कुछ नहीं कर सकता। इसलिए इस दलको बहुधा अन्यान्य दलोंके साथ समझौता करना पड़ता है। और इस समझौतेकी नीतिके कारण ही आज कांग्रेस द्विधा एवं सन्देहमें पड़कर आदर्श-भ्रष्ट हो रही है। कांग्रेसको इस आदर्श-भ्रष्टतासे बचाने तथा उसे अपने लक्ष्यपर अविचलित रखनेके लिए कांग्रेस-साम्यवादी कांग्रेसकी कर्म-नीतिकी जो समालोचना कर रहे हैं उसमें पूर्ण स्वाधीनताके आदर्शमें विश्वास रखनेवाले किसी भी कांग्रेसकर्मीको आपत्ति नहीं होनी चाहिए। हमारे मतसे चाहे कोई कांग्रेस-साम्यवादी दलके सम्पूर्ण कार्यक्रमसे सहमत हो या नहीं, किन्तु कांग्रेस-साम्यवादी-जैसे दलका कांग्रेसके अन्तर्गत रहना आवश्यक है। और हमें यह जान-कर सन्तोष हुआ कि कांग्रेस-साम्यवादी दल भी कांग्रेसके अन्तर्गत रहकर ही अपनी नीति, आदर्श एवं कार्यपद्धतिको कार्यान्वित करनेकी इच्छा रखता है। इस सम्बन्धमें आचार्य नरेन्द्रदेवने स्पष्ट रूपमें कहा है :—"कांग्रेसकी चाहे कोई कितनी ही समालोचना करे; किन्तु भारतमें वही एक-मात्र ऐसी संस्था है जिसके द्वारा साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन चलाया जा सके। इस केन्द्रसे उस आन्दोलनकी परिचालना की जा सकती है। यह सुविस्तृत कर्मभूमि ही गण-आन्दोलनके लिए उपयुक्त कर्मक्षेत्र है जहां कर्मी और कृषक दोनों राजनीतिक शिक्षा प्राप्त कर अपने प्रभाव एवं मर्यादाकी वृद्धि कर सकते हैं।" हमें आशा है कि कांग्रेस-साम्यवादी दल कांग्रेसके अन्दर रहकर ही अपने आदर्श एवं आचरण द्वारा देशमें इस प्रकारके अनुकूल वातावरणकी सृष्टि करेगा जिससे राष्ट्रके आदर्शवादमें कुछ भी म्लानता न आने पावे और राष्ट्र अपने लक्ष्यकी ओर अविकम्पित पदसे अग्रसर होता रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## क्वेटामें प्रलयङ्कर भूकम्प

इस अनन्त विराट् जगत्की असीमताके सामने हमारी यह पृथ्वी कितनी तुच्छ है! हम क्षुद्रबुद्धि मानव जिस सृष्टिको सुन्दर और विपुल समझते हैं उसे ही वह सृष्टिकर्ता लीलामय अवलीला-क्रमसे क्षण-भरमें ही चूर्ण-विचूर्ण कर देता है, मानो उसका अस्तित्व ही कभी न रहा हो। मनुष्यकी बुद्धि इस रहस्यको समझनेमें कोई काम नहीं करती। जो करुणामय है वही इतना निष्ठुर क्योंकर बन जाता है? जो स्वयं सृष्टिकर्ता है वह फिर विध्वंस क्यों कर डालता है? ये सब प्रश्न हैं जिनके सामने मनुष्यकी बुद्धि पंगु और वाणी मूक हो जाती है।

३१ मईकी काल-रात्रि! और उस रात्रिके भी कुछ क्षणोंमें ही प्रलयङ्कर प्रकृतिने अपनी रुद्र-लीला द्वारा सम्पूर्ण क्वेटा शहरको विध्वस्त कर डाला। आधुनिक यन्त्र-युगके अद्भुत आविष्कार भी उसकी रक्षा न कर सके। विशाल अट्टालिकायें ध्वंस-स्तूपमें परिणत हो गयीं। क्वेटा नगर और उसके आसपासके विध्वस्त स्थानोंमें लगभग ६० हजार मनुष्य सदाके लिए महानिद्रामें लीन हो गये। मनुष्यका सारा गौरव, अभिमान सब-कुछ धूलिसात् हो गया। जो लोग अपनी सञ्चित धनराशि एवं ऐश्वर्यमदपर स्वप्नराज्यमें विचरण किया करते थे वे ही आज रास्तेके भिखारी बन गये हैं। ऐश्वर्यका चिह्न-मात्र भी नहीं रह गया। बड़ी-बड़ी दैत्याकार अग्निवर्षक मशीनगनें, तोप और गोले, बम बरसानेवाले वायुयान और लक्ष-लक्ष सैनिक भी जिस कामको नहीं कर सकते थे उसे ही प्रकृतिने अपने निर्मम कशाघातसे कुछ ही सेकेण्डोंमें कर डाला!

क्वेटा शहरकी मृत्यु-संख्याके सम्बन्धमें सरकारकी ओरसे अभी तक २६ हजारका अनुमान किया गया है। यह अनुमान किया जाता है कि अब भी कमसे कम २० हजार मनुष्य मलबेके नीचे दबे हुए हैं। ५ हजारसे अधिक लाशें मलबेके नीचेसे निकाली जा चुकी हैं और उनका अन्तिम संस्कार किया जा चुका है। क्वेटाके पार्श्ववर्ती ग्रामोंमें इस भूकम्पके कारण प्रायः प्रतिशत ७० मनुष्य हताहत हुए हैं। कई ग्रामोंका तो अस्तित्व तक सर्वथा विलुप्त हो गया है। क्वेटा नगरके अधिवासियोंमें ७० प्रतिशत मनुष्योंकी प्राण-हानिका अनुमान किया जाता है। फौजी अस्पतालमें ४ हजारसे अधिक घायलोंकी चिकित्सा हो रही है। जेलमें जितने कैदी थे वे प्रायः सबके सब इस नश्वर शरीरके बन्धनसे सदाके लिए मुक्त हो गये।

महानाशके इस आवर्त्तमें निमज्जित होनेसे जो लोग किसी प्रकार बच गये उनकी दुःख-दुर्दशा भी कम नहीं है। निरन्न, निःवस्त्र एवं निराश्रय होकर वे निदारुण कष्ट भोग रहे हैं। बहुत-से घायल और आश्रयहीन मनुष्य लाहौर, करांची, मुलतान आदि स्थानोंमें स्थानान्तरित कर दिये गये हैं जहां उनकी सेवा-शुश्रूषा हो रही है। सरकारी फौज क्वेटा शहरमें मलबेके नीचेसे लाशोंको निकालनेका काम कर रही है। बाहरके लोगोंको सेवाकार्यके लिए क्वेटा जानेसे निषिद्ध कर दिया गया है। सरकारकी ओरसे एक विज्ञप्तिमें कहा गया है कि जो लोग घायलोंकी सेवा-शुश्रूषा तथा पीड़ितोंकी सहायता करना चाहते हों, वे लाहौर, कराची, मुलतान आदि स्थानोंके भूकम्प-पीड़ितोंकी सेवा कर सकते हैं। आचार्य कृपलानी, सिन्धके श्री जयरामदास दौलतराम आदि कांग्रेस-नेताओंने कांग्रेसके बाद फौरन् क्वेटा जानेकी अनुमति सरकारसे मांगी थी। किन्तु यह अनुमति नहीं दी गयी। राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसादने भी सेवा-कार्यके लिए एक कांग्रेस स्वयंसेवक दल क्वेटा भेजनेके सम्बन्धमें वायसरायसे अनुरोध किया था। किन्तु उनका यह अनुरोध अग्राह्य कर दिया गया। स्वयं महात्मा गांधीने भी एक सेवादल लेकर क्वेटा जानेका विचार किया था; किन्तु उन्हें भी वहां जानेकी आज्ञा नहीं मिली। मालूम नहीं, क्या सोचकर सरकार किसी गैर-सरकारी सेवादलको क्वेटा जानेसे निषिद्ध कर रही है? इस दुर्दिनमें, जबकि क्वेटाका वायुमण्डल आहतोंके आर्तनादसे विदीर्ण हो रहा है, न मालूम कितनी लाशें मलबेके नीचे सड़कर वहांकी वायुको दूषित कर रही हैं; अन्न, वस्त्र, औषध एवं सेवा करनेवाले चिकित्सकों एवं धात्रियोंकी नितान्त आवश्यकता है, सेवाकामियोंका प्रवेश-निषेध किसी भी कारणसे युक्तियुक्त नहीं कहा जा सकता। राजनीतिक कारणोंसे कांग्रेसके प्रति सरकारकी सन्दिग्ध दृष्टि हो सकती है। किन्तु इस समय इस प्रकारकी सङ्कीर्णता दिखलानेका समय नहीं है। बिहार-भूकम्पके समय राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद-जैसे अद्भुतकर्मा कांग्रेस-नेताके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नेतृत्वमें बहुशत कांग्रेस स्वयंसेवकोंने विध्वस्त अञ्चलोंमें जिस साहस, बुद्धिमत्ता एवं अपूर्व कर्मशक्तिका परिचय दिया था उससे सरकारी कार्यमें किसी प्रकारका विघ्न नहीं पहुंचा था और कांग्रेसके इस सहयोगको सरकारने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया था। तो फिर आज उन्हीं राजेन्द्रप्रसाद तथा उनके अधीन स्वयंसेवक दलको क्वेटा जानेसे निषिद्ध क्यों किया जा रहा है, यह समझमें नहीं आता !

## इण्डिया बिल

भारत शासन-विधान बिल हाउस आव कामन्समें स्वीकृत होकर हाउस आव लार्ड्सके सामने विचारार्थ उपस्थित है। लार्ड सभामें बिल यथातथ्य रूपमें पास होगा, इसमें तो कोई सन्देह किया ही नहीं जा सकता। हाउस आव लार्ड्समें बिलमें कोई विशेष परिवर्तन होगा, इसकी भी सम्भावना नहींके बराबर है। और, यदि सच पूछा जाय तो भारतमें जिन कायमी हकोंके संरक्षणके लिए इस विधानकी रचना की गयी है उनके लिए अब किसी संरक्षणकी आवश्कता है भी नहीं। क्योंकि हाउस आव कामन्समें ही जहां तक सम्भव था, बिलको संरक्षणोंके जालसे पर्याप्त रूपमें आबद्ध कर दिया गया है। इस बिलकी एक खास खूबी यही तो है कि पार्लामेण्टमें जबसे बिलपर विचार होने लगा है तबसे भारतीयोंके पक्षमें बिलमें संशोधन करनेके लिए जितने संशोधन उपस्थित किये गये उनमें एक-एक करके सब अस्वीकृत कर दिये गये और इसके विपरीत कायमी हकवालोंके पक्षमें जितने संशोधन उपस्थित किये गये वे सब स्वीकृत हो गये। श्रमिक दलकी ओरसे मि० लैन्सबरीने यह प्रश्न किया था कि क्या भारत-मन्त्री सर सैमुएल होर किसी भी सङ्गठित भारतीय संस्थाका नाम बता सकते हैं जिसने बिलका समर्थन किया हो ? सर सैमुएलके लिए निरुत्तर होनेके सिवा और दूसरा उपाय ही क्या था ? सारांश यह कि अब यह बिल पास होकर भारतवासियोंके ऊपर लाद दिया जायगा, यह तो निश्चित ही है। इसलिए बिलकी धाराओंके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी जल्पना-कल्पना करना व्यर्थ है। अब तो हमें सङ्घबद्ध होकर इस बातपर विचार करना है कि हम इस आसन्न शासन-सुधारका किस प्रकार प्रतिरोध कर सकते हैं। लार्ड सभामें लार्ड हेलीफाक्स ( भूतपूर्व लार्ड इरविन ) ने कहा है कि "इंगलैण्ड द्वारा प्रदत्त कोई भी बिल भारतको औपनिवेशिक स्वराज्य प्रदान नहीं कर सकता; कारण, भारतको अवश्य ही स्वराज्यके मार्गमें जो बाधाविघ्न हैं उनका अतिक्रमण करना होगा।" हां, यह तो ठीक ही है। औपनिवेशिक स्वराज्यकी कौन कहे, किसी प्रकारका भी स्वराज्य या उत्तरदायी शासन भारत अपने बाधाविघ्नोंको अतिक्रमण किये बिना प्रभुओंसे प्रसाद-रूपमें प्राप्त नहीं कर सकता। भारत इण्डिया बिलके रूपमें जो कुछ प्राप्त करने जा रहा है वह स्वराज्य, स्वाधीनता या उत्तरदायी शासन कुछ भी नहीं है। बल्कि वह उसकी पराधीनताको स्थायी बनानेके लिए और भी कठोर बन्धन है।

## विलायती कपड़ेकी आमदनीमें वृद्धि

भारतमें विदेशोंसे जो माल आते हैं उनमें अन्यान्य देशोंकी अपेक्षा विलायती मालपर अपेक्षाकृत कम कर लगता है। ओटावा-समझौता तथा मोदी-लीज-पैक्टके अनुसार विलायती मालके प्रति इस प्रकारका विशेष सुविधाजनक व्यवहार ( preferential tariffs ) किया जाता है। इस preferential tariff तथा विनिमय-दरकी सुविधाके कारण इस देशमें विलायती व्यापारको कितना अधिक लाभ पहुंच रहा है और उसकी स्थिति कितनी मजबूत हो रही है, यह विलायतके ही एक व्यापारिक पत्र British Board of Trade's Journal के निम्नलिखित आंकड़ोंसे प्रकट होगा :—सन् १९३४ के प्रथम तीन मासमें विलायती सूती कपड़ा १४६,०००,००० वर्गगज भारत भेजा गया, किन्तु उसी वर्षके अन्तिम तीन मासमें यह संख्या बढ़कर १५४,०००,००० वर्गगज और सन् १९३५के प्रथम तीन मासमें १८१,०००,००० वर्गगज हो गयी। इसी प्रकार विलायती लोहा और इस्पातकी चीजोंकी आमदनीमें भी वृद्धि हो रही है। सन् १९३४ के प्रथम तीन मासमें ५३.५ हजार टनकी आमदनी हुई जो उसी वर्षके अन्तिम तीन महीनोंमें बढ़कर ७०.८ हजार टन और सन् १९३५ के प्रथम तीन महीनोंमें ७३.७ हजार टन हो गयी। इस सम्बन्धमें यह स्मरण रखना चाहिए कि सन् १९३४ में भारतीय व्यवस्थापिका परिषद्में भारतीय लोहा और इस्पातके सम्बन्धमें Indian Iron and Steel Duties Act नामक एक कानून पास हुआ था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जिसके अनुसार विलायती मालको सुविधा प्रदान की गयी और भारतीय मालपर कर लगाया गया। आश्चर्यकी बात तो यह है कि भारतमें विलायती कपड़ेकी आमदनीमें क्रमशः वृद्धि होनेपर भी लङ्काशायर अपने लिए और भी सुविधायें चाहता है। मोंदी-लीज-पैक्टकी अवधि शीघ्र ही समाप्त होनेवाली है और टेरिफ बोर्ड लङ्काशायरके मालपर लगनेवाले करके सम्बन्धमें शीघ्र ही अनुसन्धान करनेवाला है। इसलिए इस प्रश्नका महत्त्व इस समय विशेष रूपमें है।

## केनियामें भारतीयोंके विरुद्ध कानून

केनियाकी सरकार एक नया कानून बनाने जा रही है जिसका प्रभाव वहांके प्रवासी भारतीय व्यापारियोंके स्वार्थके लिए विघातक सिद्ध होगा। इस सम्बन्धमें भारत-सरकारने अपने एक सिविलियन कर्मचारी मि० मेननको जांच करनेके लिए नियुक्त किया था। मि० मेननकी रिपोर्ट अभी हालमें प्रकाशित हुई है। मि० मेननने यद्यपि अपनी रिपोर्टमें केनिया-सरकारके इस आश्वासनको मान लिया है कि जातिगत द्वेषभावनासे प्रेरित होकर इस कानूनकी रचना नहीं की जा रही है, फिर भी उन्होंने प्रामाणिक कारण उपस्थित करते हुए बताया है कि प्रस्तावित कानून द्वारा केनियाके प्रवासी भारतीयोंकी स्वार्थहानि हुए बिना नहीं रह सकती। केनिया ही क्यों, पूर्व अफ्रिकाके अन्य स्थानोंमें भी प्रवासी भारतीयोंके प्रति इसी प्रकारका भेदभावमूलक व्यवहार किया जा रहा है। भारतीयोंने ही पहले-पहल इन सब स्थानोंको अपने खूनका पसीना बहाकर बसने योग्य बनाया। इसके बाद जब यहांकी जमीन समृद्धिशाली हुई तो गोरोंकी लोलुप दृष्टि इधर आकृष्ट हुई और उन्होंने यहां आकर बसना और व्यापार करना आरम्भ किया। क्रमशः उन्होंने सब अधिकार हड़पकर अपनी स्थिति इतनी मजबूत बना ली कि आज वे भारतीयोंको वहांसे विताड़ित करनेपर तुले हुए हैं। इन सब स्थानोंमें स्थायी रूपसे बसनेवाले भारतीय उसी प्रकार ब्रिटिश सम्राट्की प्रजा हैं जिस प्रकार वहांके यूरोपियन। फिर भी भारतीयोंको जमीनके मालिकाना स्वत्वसे वञ्चित करनेके उद्देश्यसे जो कानून बनाया गया है उसके प्रतिकारके लिए भारत-सरकार और ब्रिटिश सरकार क्या कर रही है? केनियामें जो कानून बनने जा रहा है उसका स्पष्ट उद्देश्य है भारतीयोंको व्यापारिक सुविधाओंसे वञ्चित कर देना। अब देखना है कि भारत-सरकार इस प्रस्तावित कानूनको—जिसमें भारतीयोंके स्वत्व-संरक्षणके लिए कोई व्यवस्था नहीं की गयी है—चुपचाप मान लेती है अथवा इसके प्रतिविधानके लिए कोई उपाय करती है।

## चीनपर जापानकी लोलुप-दृष्टि

गृह-कलहके कारण चीन-जैसा सुविशाल देश आज साम्राज्यवादियोंके चक्रान्तमें पड़कर क्षीण, दुर्बल एवं पदानत हो रहा है। उसके कुछ अंश विदेशी साम्राज्यवादियोंके अधीनस्थ हैं, कुछ अंश कम्यूनिस्टोंके अधिकारमें हैं और कुछ अंशोंमें अराजकता फैली हुई है। चीनकी इस छिन्न-भिन्न स्थितिसे लाभ उठाकर जापानने उसके मञ्चूको प्रदेशको निज साम्राज्यके अन्तर्गत कर लिया। किन्तु इतनेपर भी जापानकी साम्राज्य-विस्तार-लालसा परितृप्त नहीं हुई है और वह चीनको आत्मसात् करनेके लिए सुयोग ढूंढ़ता ही रहता है। अब जापानने चीनकी राष्ट्रीय सरकारके सामने कुछ नये दावे उपस्थित किये हैं। इन दावोंमें कहा गया है कि जो चीनी कर्मचारी जापानके प्रति मित्रताका भाव नहीं रखते उन्हें चाहार प्रदेशसे हटा दिया जाय, पिपिङ्ग राष्ट्रीय परिषद् और समर-परिषद्का उच्छेद कर दिया जाय और वहांकी शासन-व्यवस्थापर जापानका नियन्त्रण हो। इन दावोंको स्वीकार करनेका अर्थ है उत्तर चीनके अधिकांशपर जापानका नियन्त्रण और अन्ततः जापानका उसे एक प्रदेश बना लेना। किन्तु चीनकी आज जैसी स्थिति है उसमें इन शर्तोंको चुपचाप स्वीकार कर लेनेके सिवा उसके लिए और कोई उपाय नहीं है। और यही कारण है कि चीनने जापानकी इन मांगोंको स्वीकार कर लिया है। चीन आज अशक्त और अक्षम है। इसलिए राष्ट्र-सङ्घ भी इस दारुण विपदमें उसकी सहायता नहीं कर सकता। मञ्चूरियाके विषयमें जिस प्रकार राष्ट्र-सङ्घने मौनावलम्बन कर लिया था उसी प्रकार आज भी वह मौन है। क्योंकि बलवान राष्ट्रोंके विरुद्ध दुर्बल राष्ट्रोंका पक्ष ग्रहण करने अथवा यों कहिये कि अनीति एवं अन्यायके विरुद्ध नीति एवं न्यायका पक्ष ग्रहण करनेका नैतिक साहस राष्ट्र-सङ्घमें नहीं है। अतएव चीनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उद्धारका एकमात्र उपाय यही है कि वह गृह-कलहका अन्त करके अपनेको शक्तिशाली बनावे। अन्यथा साम्राज्य-लोलुप साम्राज्यवादियोंकी परस्वापहरण-प्रवृत्तिका शिकार वह बनता ही रहेगा। जिस छल-बल-कौशलसे पाश्चात्य जातियोंने एशिया, अफ्रिका और अमेरिकामें अपना साम्राज्य-विस्तार किया है उसीका अनुसरण आज उनका शिष्य जापान भी कर रहा है। अतएव अन्याय एवं अनीति होनेपर भी राजनीतिक दृष्टिसे इसे अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता।

## इटली और अबसीनिया

यूरोपकी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थितिमें एक ओर यदि इंगलैण्ड और जर्मनीके बीच नौ-वाहिनीके सम्बन्धमें समझौता होता है और ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलके एक सदस्य मि० एन्थोनी एडेन यूरोपकी शान्तिके लिए फ्रान्स और इटलीके शासकोंसे राय-मशविरा करते फिरते हैं तो दूसरी ओर इटली और अबसीनियाका झगड़ा शान्तिके मार्गमें एक विषम समस्या उपस्थित कर रहा है। इटलीने अबसीनिया-के प्रति जो रुख धारण किया है वह सिर्फ शान्तिके मार्गमें ही विघातक नहीं है, बल्कि जेनेवाके राष्ट्र-सङ्घकी बची-खुची प्रतिष्ठापर भी वह आघात करनेवाला है। इटली युद्धके आधुनिक साधनोंसे सुसज्जित होनेके कारण स्वभावतः अपने-को अबसीनियाकी अपेक्षा शक्तिशाली समझता है। इस-लिए इस विषयमें वह राष्ट्र-सङ्घके हस्तक्षेपका भी प्रत्याख्यान करनेके लिए कटिबद्ध है। अबसीनियाने इस झगड़ेकी मीमांसाके लिए राष्ट्र-सङ्घका द्वार खटखटाया और इस सम्बन्धमें एक पञ्चायत कमीशन नियुक्त करनेका प्रस्ताव किया। अबसीनियाका यह प्रस्ताव सर्वथा उचित और न्यायानुकूल था। किन्तु इटली इस उचित प्रस्तावको भी माननेके लिए तैयार नहीं दीखता और उसके रुखसे ऐसा अनुमान होता है कि वह अबसीनियाके साथ "युद्धं देहि" की नीति कार्यान्वित करनेके लिए दृढ़सङ्कल्प है। इसके साथ ही राष्ट्र-सङ्घका परित्याग करनेकी धमकी भी वह दे चुका है। ऐसी स्थितिमें राष्ट्र-सङ्घके लिए अपनी नपुंस-कताका मूक निदर्शन करनेके सिवा और दूसरा मार्ग हो ही क्या सकता है। जापानने राष्ट्र-सङ्घकी सम्पूर्ण अवहेलना करके चीनसे जबर्दस्ती मञ्चूरियाको हड़प लिया और फिर इसके बाद राष्ट्र-सङ्घकी सदस्यतासे पृथक् हो गया। उसी प्रकार शक्तिधर मुसोलिनी भी साम्राज्य-विस्तार-लालसासे प्रेरित होकर अबसीनियाको इटली-साम्राज्यके उदरस्थ करनेके लिए उसपर अपनी लोलुप दृष्टि गड़ा चुके हैं। इसलिए राष्ट्र-सङ्घ यदि इस मामलेमें किसी प्रकारका हस्तक्षेप करेगा तो इसका परिणाम यही होगा कि वह जापान-जैसा इटलीको भी अपनी सदस्यतासे खो बैठेगा। और जबर्दस्त इटली? वह तो अपनी इच्छा पूरी करके ही रहेगा।

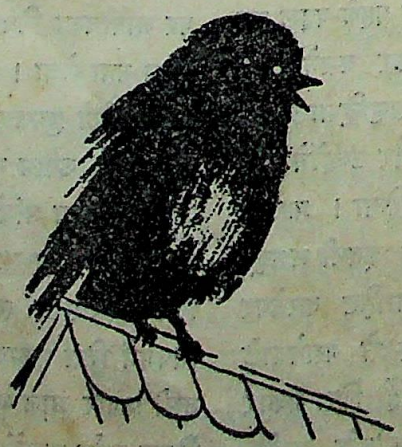

'विश्वमित्र' प्रेस, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तासे पं० मातासेवक पाठक द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचित्र मासिक

# विश्वामित्र

सितम्बर
१९३८

मूल्य
॥=)

विश्वमित्र कार्यालय
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❋ ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास ❋

## लक्ष्मी

धनी और जमींदार—समाजके डाकू रजनीने, कर्तव्य-परायण रघुनाथकी पत्नी-लक्ष्मीकी सुन्दरतापर मुग्ध होकर जो अत्याचार किये, वे वैभवके बलसे देशमें जगह-जगह दुहराये जाते हैं। समाजकी सत्ता उनके हाथमें है, कुलीनताका जामा पहनकर—देशके धनी कहानेवाले समाजके डाकू, बराबर ही जहां सुयोग मिलता है; समाजकी बहू-बेटियोंके सतीत्वपर डाका डालते हैं। समाजकी सत्ता उनके हाथमें है और धनबलसे कानून कुण्ठित है! यही इसका प्लाट है। मूल्य १॥) मात्र।

## विधि-विधान

सचित्र—सामाजिक उपन्यास।

त्यागकी महिमा और कर्त्तव्यका विश्लेषण, धनी-सन्तान होकर भी सनत्की देश-भक्ति, करुणा तथा अरुणकी निस्पृहता, मीराका गर्व और अभिमान तथा इला, अरुन्धतीकी त्यागवृत्तिका इसमें विचित्र सम्मिश्रण हुआ है। ऐसा मर्मस्पर्शी मनोरञ्जक उपन्यास, अभीतक हिन्दीमें प्रकाशित नहीं हुआ। युवक-युवतियोंके लिये इसमें आदर्श शिक्षा है। मनोरञ्जन और शिक्षाकी अपूर्व सामग्री है। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। बढ़िया छपाई-सफाई मूल्य २)।

## स्नेह-बन्धन

हिन्दू-समाजमें दत्तक-पुत्र ग्रहण करनेका रिवाज है। परन्तु संसारके किसी भी देशमें दत्तक-पुत्र लेनेकी प्रथा नहीं। इस उपन्यासमें दत्तक-पुत्र-विधानका मर्मस्पर्शी विश्लेषण किया गया है। हिन्दू-समाजके लिये एक नवीन आदर्शका चित्र खींचा गया है। निःसन्तान धनी जो दत्तक-पुत्र ग्रहण करते हैं, उससे क्या उनकी आकांक्षा पूरी होती है? यदि वे अपने धनको समाज और लोकहितके कामोंमें लगायें, तो क्या स्वर्गमें उन्हें शांति न मिलेगी? अत्यन्त मनोरञ्जक उपन्यास है। मूल्य १॥) मात्र।

## राजाबाबू

कुलाङ्गार, समाजपतियोंकी छत्र-छाया में पलकर, देशके वे युवक, जो समाजकी बहू-बेटियोंकी इज्जत और प्रतिष्ठाके रक्षक हो सकते हैं, कैसे मखमली गद्दोंपर खेलकर और बाप-दादोंके धनको पाकर समाजके लिये राक्षस सिद्ध होते हैं और अपने पैशाचिक कृत्योंको धनसत्तावादके आवरणमें छिपाकर समाजपति बन बैठते हैं, इसका इसमें बहुत ही स्वाभाविक खाका खींचा गया है। हिन्दीमें इसके जोड़का अभीतक कोई उपन्यास नहीं निकला। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १।) मात्र

पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ ए शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— हर प्रकारके ब्लाक बनानेका एकमात्र विश्वस्त स्थान —

# एमराल्ड इन्ग्रेविंग लिमिटेड।

सादे ब्लाकों की १२ घण्टे में डिलेवरी दी जाती है।

१।२, मोतीसील स्ट्रीट, कलकत्ता।

कम दाम में विशेष काम हमारी विशेषता है।

विशेषतायें—

१—किसी भी ऋतुमें एक ही दिनमें डिलेवरी। २—विशेष अवस्थाओंके अतिरिक्त मूल्य सर्वापेक्षा सुलभ।
३—हाफटोन और लाइन ब्लाकोंकी एक ही दर। ४—तीन रंगे और बहुरंगे ब्लाक सर्वोत्तम और आदर्श।

छोटेसे छोटा आर्डर भेजकर पराक्षा कीजये।

पत्र-पत्रिकाओं के लिये विशेष रियायत।

पूरे विवरण के लिये शीघ्र लिखिये।

# सुख सञ्चारक कम्पनी मथुराका युक्तप्रान्तमें अव्यर्थ आयुर्वेदिक औषधें बनानेका कारखाना।

## द्राक्षासव

बल, पुरुषार्थ, क्षुधा शक्ति स्फूर्ति और रक्त मांस वर्धक, मधुर स्वादिष्ट। कीमत छोटी बोतल १) बड़ी बड़ी २) रुपया।

## बालसुधा

दुबले और कमजोर बच्चोंको मोटा ताजा और ताकतवर बनानेकी मीठी दवा। कीमत ।।।)

सुख संचारक

## अशोकारिष्ट

हर प्रकारके प्रदर रोगकी दवा। एक पौंड (आधा सेर)की बोतलका मूल्य १।।) डा०ख० १।)

## सुधासिंधु

कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, कै, दस्त आदि रोगोंकी बिना अनुपानकी घरेलू दवा। कीमत ।।) आना।

दवाइयां सब जगह दवा बेचने वालोंके पास मिलती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ❀ स्त्रियोंके पढने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें ❀

नारी-रत्नमाला

## सावित्री-सत्यवान

इस पुस्तकमें सती-शिरोमणि सावित्री-के अद्भुत चरित्रको सरल भाषामें ऐसे अच्छे ढङ्गसे लिखा गया है कि जिसके पढ़नेसे हिन्दू-बालिकायें और हिन्दू-रमणियां पातिव्रत्यके मर्मको सरलतासे हृदयङ्गम कर सकें। सती-शिरोमणि सावित्री का चरित्र, युग-युगान्तरोंसे सती रमणियों का आदर्श माना जाता है। सावित्रीके धर्मबलके सामने यमराजको भी हार माननी पड़ी थी। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई। सात रङ्गीन चित्र। अब तक हजारों प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मूल्य ।।) मात्र।

## शैव्या-हरिश्चन्द्र

इस पुस्तकमें हिन्दू जातिके कीर्ति स्तम्भ, भारतके सौभाग्यसूर्य, गौरव-रवि, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र तथा उनकी महीयसी रानी शैव्याकी अपूर्व आत्मत्यागकी कथा लिखी गयी है। शैव्या-हरिश्चन्द्रका त्यागमय जीवन-चरित्र, हिन्दू-रमणियों एवं कन्याओंके लिये आदर्श है। इस पुस्तकमें शैव्या-हरिश्चन्द्रके जीवनकी सभी घटनायें विशद रूपसे लिखी गई हैं। रंग-बिरंगे अनेक चित्रोंकी सुन्दरता देखने ही योग्य है। छपाई-सफाई बढ़िया। मूल्य वही सर्वसुलभ ।।) मात्र।

## सीता-देवी

इस पुस्तकमें जनक-नन्दिनी, राम-प्रिया सीताका चरित्र बहुत ही अच्छे ढङ्गसे लिखा गया है। बालक-बालिकाओंके लिये इसमें अपूर्व शिक्षा है। क्योंकि यह रामायणका सार, उत्तमोत्तम शिक्षाओंका भण्डार—और हिन्दू-ललनाओंका ललित शृङ्गार है। इसमें पुराण, काव्य, नाटक, उपन्यासका आनन्द तथा नीतिशास्त्रका अपूर्व उपदेश भरा हुआ है। सीतादेवी—राजनीति, धर्मनीति, समाज और गार्हस्थ्य की कुञ्जी है। छपाई-सफाई बढ़िया। सात रंग-बिरंगे चित्र। मूल्य ।।=) मात्र।

## नल-दमयन्ती

पुण्यश्लोक राजा नल और परम पति-भक्ति-परायण दमयन्तीको भला कौन हिन्दू-सन्तान नहीं जानता? इस पुस्तकमें उन्हींके परम पवित्र चरित्र और मर्मस्पर्शी जीवनका वर्णन किया गया है। इसमें पति-व्रत-महिमाका बहुत ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। शिक्षा-विभागने इसको स्वीकार किया है। बढ़िया छपाई, ऐण्टिक पेपर और आठ रंग-बिरंगे घटित घटनाओंके चित्र हैं। ऐसी सर्वाङ्गसुन्दर और सर्वसुलभ पुस्तक कहींसे भी प्रकाशित नहीं हुई। मूल्य ।।) मात्र।

मिलनेका पता—पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# स्त्रियोंके पढ़ने योग्य उत्तमोत्तम पुस्तकें

नारी-रत्नमाला

## सती-पार्वती

हर-पार्वतीकी कथा प्रसिद्ध है। इसमें शङ्कर-प्रिया, गणेश-जननी, सती-शिरोमणि भगवती 'सती-पार्वती'के दोनों अवतारों की मर्मस्पर्शी कथा बड़ी ही सरल, सरस भाषामें लिखी गयी है। यह पुस्तक बहुत पसन्द की गयी है। साथ ही सती-महिमा, दक्ष यज्ञ-भंग, वीरभद्रका प्रतिशोध, शिवजीका कोप, मदन-दहन, शिवजीका वरदान आदि कितने ही रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई-सफाई बढ़िया। अब तक हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही सर्वसुलभ ।।) मात्र।

## शकुन्तला

संसार-प्रसिद्ध महाकवि, कवि-कुल-गुरु कालीदासके सर्वोत्तम नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' को उपाख्यानके रूपमें लिखा गया है। उपाख्यानकी एक-एक पंक्ति, कवित्व और कल्पना-कौशलसे परिपूर्ण है। शकुन्तला-उपाख्यान दाम्पत्य-स्नेह, नारी-कर्तव्य, सती-धर्म और विश्व-विश्रुत प्रेमका जगमगाता चित्र है। इसके पढ़नेसे इतिहास, उपन्यास, नाटक और काव्यका एक साथ आनन्द आता है। अनेक रंगीन चित्रोंसे सुसज्जित। बढ़िया छपाई-सफाई। मूल्य ।।=) मात्र।

## देवी-द्रौपदी

इस उपाख्यानमें देवी-द्रौपदीका जन्म, बाल्यकाल, स्वयंवर, विवाह, चीर-हरण, पाण्डवोंपर विपत्ति और राज्य-हरण तथा देश-निर्वासन का वर्णन है। विराट राज-महलमें दासी-कर्म, कीचक-वध और अन्तमें कौरवोंसे घनघोर संग्राम। पाण्डवों की विजय-वैजयन्ती, भगवान् श्रीकृष्ण का सहयोग और सहायता आदि समस्त बातोंका उल्लेख बहुत ही सरस और सरल भाषामें किया गया है। अनेक भावपूर्ण रंग-बिरंगे चित्र हैं। बढ़िया पेपर और सुन्दर छपाई। मूल्य सर्वसुलभ ।।=) मात्र।

## शर्मिष्ठा-देवयानी

श्रीमद्भागवतमें शर्मिष्ठा - देवयानीका उपाख्यान आया है। इस उपाख्यानको पढ़नेसे सत्यनिष्ठा एवं नारी कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है। पिताकी मर्यादाकी रक्षा के लिए शर्मिष्ठाने जो आत्मत्याग कर दिखाया, उसका उदाहरण मिलना कठिन है। देवयानीने क्रोधके वशमें हो जो भयानक काण्ड उपस्थित कर दिया था, वह शर्मिष्ठाकी सौजन्यता और कर्तव्य-निष्ठा तथा सहृदयताके कारण दूर हो गया। अनेक रंगीन चित्रोंसे संवलित। हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं। मूल्य वही ।।) मात्र।

मिलनेका पता—**दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# पढने योग्य कुछ ऐतिहासिक पुस्तकें

## मेवाड़-गौरव

मुगल-साम्राज्यकी भीषण विभीषिका जिस समय भारतके समस्त हिन्दू-राज्योंको हड़प करनेकी चेष्टा कर रही थी, उस समय मेवाड़ ही एक ऐसा प्रदेश था, जिसके राजा, प्रजा, बाल-वृद्ध-वनिता सभीने एकसे एक बढ़ कर बलिदान करके भरणोन्मुख हिन्दू जाति के मान-गौरवकी रक्षा की थी। कर्तव्यके लिये पिताओंने पुत्रोंको करल किया था, मेवाड़ की रमणियोंने अग्निमें कूद कर हिन्दुत्वकी रक्षा की थी। इसमें उसी मेवाड़की कीर्ति-कलापोंका वर्णन है। दो संस्करण हाथोहाथ बिक गये। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य १)

## महाराणा-प्रताप

जिस समय हिन्दू जातिपर मुगल-साम्राज्य-विस्तारका ग्रह लगा हुआ था और हिन्दू राजा-महाराजागण एकके बाद एक मुगल-सम्राटके सामने शिर झुकाकर आत्म-समर्पण कर रहे थे, तब महाराणा प्रताप ही एक ऐसे वीरव्रती थे, जिनकी हुंकार-ध्वनिसे मुगल-राजसिंहासन कांप उठा था! इस पुस्तकमें उन्हीं हिन्दूकुल-गौरव प्रातःस्मरणीय महाराणा-प्रतापकी कीर्ति-कहानी विशद रूपसे लिखी गयी है। समस्त घटनाओंका इसमें उल्लेख है। अनेक चित्रोंसे सुशोभित। मूल्य १) मात्र।

## पृथ्वीराज

पृथ्वीराज दिल्लीके अन्तिम हिन्दू सम्राट् थे। इसमें उन्हींके कार्यकलापोंका वर्णन है। भारत पर बिदेशी विधर्मियोंके बहुत दिनोंसे दांत लगे हुए थे। दुर्भाग्यसे हिन्दुओंमें फूट पड़ गई और वे स्वार्थपरायणताके वशीभूत होकर एक दूसरेके प्राणोंके ग्राहक हो गये। अन्तमें गृह-शत्रुओंने विदेशियोंको निमन्त्रण देकर भारतमें बुला कर मातृभूमिको पददलित कराया! यह उसी समयका भारतका रक्त-रंजित इतिहास है। अनेक रंगीन चित्र दिये गये हैं। छपाई सफाई बढ़िया मूल्य १) मात्र।

पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ शंभू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# बालकोपयोगी उत्तमोत्तम पुस्तकें

## भक्त-ध्रुव

भक्तकी महिमा अपरम्पार है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि न मैं मन्दिरोंमें रहता हूँ, न वैकुण्ठमें; मैं तो भक्तोंके हृदयोंमें बास करता हूँ। भक्त ध्रुवकी भक्ति बहुत ऊंचे दरजेकी थी। बाल्यावस्थामें अपने अपूर्व भक्ति-भावसे ही ध्रुवने वह स्थिति प्राप्त की थी। अल्पमति कोमल-हृदय बालक-बालिकाओंके लिये इस सरल और सरस भाँषामें लिखी पुस्तकका पढ़ना आवश्यक है। छपाई-सफाईको देखकर बालक लट्टू हो जाते हैं। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य ॥=) मात्र।

## भक्त-प्रह्लाद

सत्याग्रह-मंत्रके आदि-गुरु, भक्तवर प्रह्लाद और उनके दुष्ट राक्षस-पिताकी कथाको सभी हिन्दू किसी-न-किसी रूपमें जानते हैं। इसमें प्रह्लादकी जन्मसे लेकर उनके बाल्यकाल, यौवन और वार्द्धक्यकाल तककी समस्त अद्भुत भक्ति-रस-पूर्ण मनोरंजक घटनाओंको औपन्यासिक ढङ्गसे मधुर सरल तथा सरस भाषामें लिखा गया है। समस्त घटित घटनाओंके रंग-बिरंगे अनेक चित्र दिये गये हैं। छपाई—सफाई बढ़िया। 'प्रह्लाद'नामकी निकली सभी पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ। मूल्य वही ॥=) मात्र।

## लव-कुश

स्वनामधन्य मर्यादा—पुरुषोत्तम रामचन्द्र और जनक-नन्दिनी भगवती सीताके वीरबाहु और मंजुल-मूर्ति पुत्रद्वय, लव-कुशकी प्रचण्ड वीरताकी कहानी पुराण-प्रसिद्ध है। राम-तनय लव-कुशकी कथा विशद रूपसे औपन्यासिक रूपमें लिखी गयी है। इसको पढ़नेसे बालक-बालिकायें, सार-तत्त्व रूपसे रामायणकी सब घटनाओंको भी हृदयङ्गम कर लेती हैं और लव-कुशकी प्रचण्ड वीरता-प्रतिभा-साधुताका अनुकरण कर अपने चरित्रको उज्ज्वल बना सकती हैं। अनेक रङ्गीन चित्र। मूल्य ॥=) मात्र।

## वीर-अभिमन्यु

वीर-बालक अभिमन्युकी लोकोत्तर वीरता, भारतके इतिहासमें सदा अमर रहेगी। गुरु-द्रोण द्वारा निर्मित विचित्र अभेद्य चक्र-व्यूहमें घुसकर षोड्श वर्षीय वीर-बालक अभिमन्युने प्रचण्ड वीरता प्रदर्शित की थी—तथा कौरव-सप्त महारथियोंने मिलकर अभिमन्युको मार डाला था, उस रोमाञ्चकारी कथाको पढ़कर हृदय कांपने लगता और लोकोत्तर वीरताको देखकर बल्लियों उछलने लगता है। ऐसा सरस और सरल भाषामें लिखा जीवन हिन्दीमें प्रकाशित नहीं हुआ। अनेक रङ्गीन चित्र। मूल्य वही ॥=)मात्र

मिलनेका पता:—**पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ऊंचे दरजेके नवीन सामाजिक उपन्यास

## ❀ मिलन-पूर्णिमा ❀

( सचित्र—सामाजिक उपन्यास )

सौरीन एम० ए० पास हिन्दू-कुलीन था। रेखा थी, एम० ए० तक पढ़ी हुई—ब्राह्मसमाजभुक्त—कुमारी। दोनोंके प्रेम-बन्धनमें सौरीनकी महत्वाकांक्षाने विघ्न डाल दिया। रेखाने सौरीनका रुद्ध मार्ग खोल दिया, परन्तु बिना रेखाके वह कुछ भी न कर सका। इस उपन्यासमें जहां प्रेमकी मन्दाकिनी प्रवाहित होती है, वहां साथही कर्तव्यकी धारा प्रबल-वेगसे वेगवती होकर बहती है और अन्तमें दोनों धारायें, लोक-सेवाके सागरमें जाकर विलीन हो जाती हैं। मूल्य १॥) रुपया मात्र।

## विधवा

रूढ़ियोंके गुलाम, हिन्दूसमाजमें धर्म्म का नाम लेकर निरीह विधवाओं पर कैसा भीषण अत्याचार हो रहा है और कुलीनताके पाखंडकी ओटमें संबलहीन देवी-स्वरूपिणी विधवाओंका धर्म्म बिगाड़ कर समाजके ठेकेदार, उन्हें वेश्यालयोंमें पहुंचा देते हैं, इसका इसमें बहुत ही करुणापूर्ण चित्र खींचा गया है। काशी-वासके नाम पर होनेवाले पापाचार और विधवाओंकी खरीद-फरोख्त और पण्डे-पुजारियोंके वीभत्स कृत्यों और समाज-पतियोंकी विचित्र धर्मव्यवस्थाको देख कर आपका हृदय कांप उठेगा। मू० ॥।)

## अभागिनी

उच्च-शिक्षा प्राप्त करके भी, हिन्दू-स्त्रियोंको समाजकी वेदी पर अपना बलि-दान करना पड़ता है! बड़ीसे बड़ी शिक्षा भी सामाजिक रूढ़ियोंके कारण, उनकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है। शिशिरकी मूर्खता और मिनतीकी प्रेम-निवाहकी घटना, इस लोकका नहीं, देवलोकका त्याग है। सिद्धान्त और पवित्रताके नाम पर—कैसा भयंकर त्याग किया जा सकता है, इसका जीता-जागता प्रमाण है। ऐसा ऊंचे दरजेका विद्वत्तापूर्ण उप-न्यास आपने अभी तक नहीं पढ़ा होगा। अनेक चित्रोंसे सुसज्जित। मूल्य २)मात्र।

मिलनेका पता—

**दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४।१ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता।**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १—धूलकी कहानी ( गद्य-काव्य )—श्री शिवदेव उपाध्याय 'सरीस', बी० ए० ... | ६०१ |
| २—बुद्धिवाद बनाम आदर्शवाद—श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र एम० ए०, बी० एल० ... | ६०२ |
| ३—पम्पिआईके खण्डहरोंमें (सचित्र)—श्री महामाया प्रसाद सिंह ... ... | ६०६ |
| ४—आश्वासन ( कविता )—श्री रामधारी सिंह 'दिनकर', बी० ए० (आनर्स) ... | ६११ |
| ५—इस रणोन्मादका परिणाम क्या होगा ?—श्री रामनाथ 'सुमन' ... ... | ६१२ |
| ६—हरसिङ्गार ( कहानी )—श्री 'अज्ञेय' | ६१९ |
| ७—गीत—श्री विनयकुमार ... ... | ६२४ |
| ८—तुर्किस्तानके दुर्गपर कम्यूनिज्मका झण्डा (सचित्र)—श्री कमलाकान्त शर्मा, एम० ए० | ६२५ |
| ९—इंगलैण्डकी एक झलक—डा० ब्रजमोहन एम० ए०, पी० एच-डी० ... ... | ६३० |
| १०—हल्दीघाटीमें (कहानी)—श्री चतुरसेन शास्त्री | ६३३ |
| ११—नरभक्षकोंके देशमें स्वर्णराशि ( सचित्र )—श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा ... ... | ६३८ |
| १२—कुछ प्राच्य राष्ट्रीय झण्डे—श्री ब्रजकिशोर वर्मा 'श्याम' ... ... ... | ६४५ |
| १३—साम्यवाद और गांधीवाद—श्री अम्बिकाकान्त सिंह ... ... ... | ६४९ |
| १४—क्या कहानी-लेखकको उपदेशक होना उचित है ?—श्री सुशीलकुमार चौबे, एम० ए० ... | ६५३ |
| १५—विस्मृति-पथपर ( कविता )—श्री 'हंस' | ६५५ |
| १६—विद्रोही नेता : सिरका मूल्य दो हजार पौण्ड! (सचित्र)—श्री परमेश्वरशरण, एम० ए० | ६५६ |



डाबर (डाः एस, के, बर्म्मन) लिः

५० वर्षों से प्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेण्ट दवाओं का वृहत् भारतीय कार्यालय !

विभाग नम्बर ( २ ) पोष्ट बक्स ५५४, कलकत्ता।

STAR TRADE S.K.B MARK REGD

स्टार ट्रेड मार्क

दुर्घना कह कर

हिल-एक मरहम (Regd.)

( कटे, जले चोट आदिपर लगानेका मरहम )

यह केवल वनस्पतियोंसे बना है। आगसे जलनेका घाव, विषैले जानवरोंके काटनेकी जलन, छुरी आदि अस्त्रोंसे कटना आदि आकस्मिक यन्त्रणाओंसे समयपर मुक्त होनेके लिये सर्वदा अपने पास रखना चाहिये। मूल्य—प्रति डिब्बी ॥=) दस आना; डा० म० ३ डिब्बी तक ।=)। नमूना =) जो केवल एजेण्टोंसे ही मिल सकता है।

नहीं आती !

नोट—सब जगह मिलता है। खरीदते समय स्टार ट्रेड मार्क और डाबर नाम अवश्य देख लिया करें।

सेल डिपोः—(१) नं० ४ ताराचन्द दत्त स्ट्रीट। (२) नं० २०१ हरिसन रोड।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| विषय | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|
| १७—सुलेखाचार्य पं० गौरीशङ्करजी भट्ट (सचित्र)—श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार ... | ६६२ |
| १८—पूर्वमें गोरी रमणियोंके पापाचारके केन्द्र—डा० ए० पी० अग्निहोत्री, पी-एच० डी० ... | ६६९ |
| १९—बेतकल्लुफ़ी (कहानी)—जनाब फ़रहत उल्ला बेग़, देहलवी, बी० ए० ... ... | ६७४ |
| २०—रेल और वायुयानमें प्रतियोगिता (सचित्र)—श्री 'सुरेश' ... ... | ६७८ |
| २१—रोगोंका राजा कौन ?—डा० के० मुखर्जी, एम-बी० ... ... ... | ६८२ |
| २२—चयनिका (सचित्र) ... ... | ६८३ |
| २३—महिला-संसार (सचित्र) ... | ६८९ |
| २४—अर्थ-चक्र ... ... | ६९५ |
| २५—अन्तर्राष्ट्रीय ... ... | ६९९ |
| २६—समाज-दर्पण ... ... | ७०३ |
| २७—साहित्य-जगत् ... ... | ७०६ |
| २८—चित्र-विचित्र ... ... | ७११ |
| २९—सम्पादकीय ... ... | ७१५ |


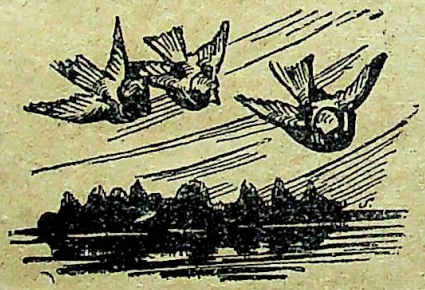


६० वर्षों से विख्यात

बाटलीवाला एग्यू मिक्सचर

मलेरिया, इन्फ्लुञ्जा तथा सभी प्रकार के ज्वर के लिये सर्वत्र मिलता है:—

थोक बिक्रेता—

चिम्मनलाल पी० शाह,

पोस्ट बाक्स नं० ३५५ कलकत्ता !

अमृताञ्जन पेन बाम

सबसे उत्तम, दर्द दूर करने वाला भारतीय मरहम सर्व प्रकारके दर्दोंको दूर करता है। सब जगह मिलता है।

( रजिस्टर्ड ) अमृताञ्जन डिपो,

पो० बक्स नं० ६८२५ कलकत्ता !

हेड आफिस—बम्बई मद्रास !


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



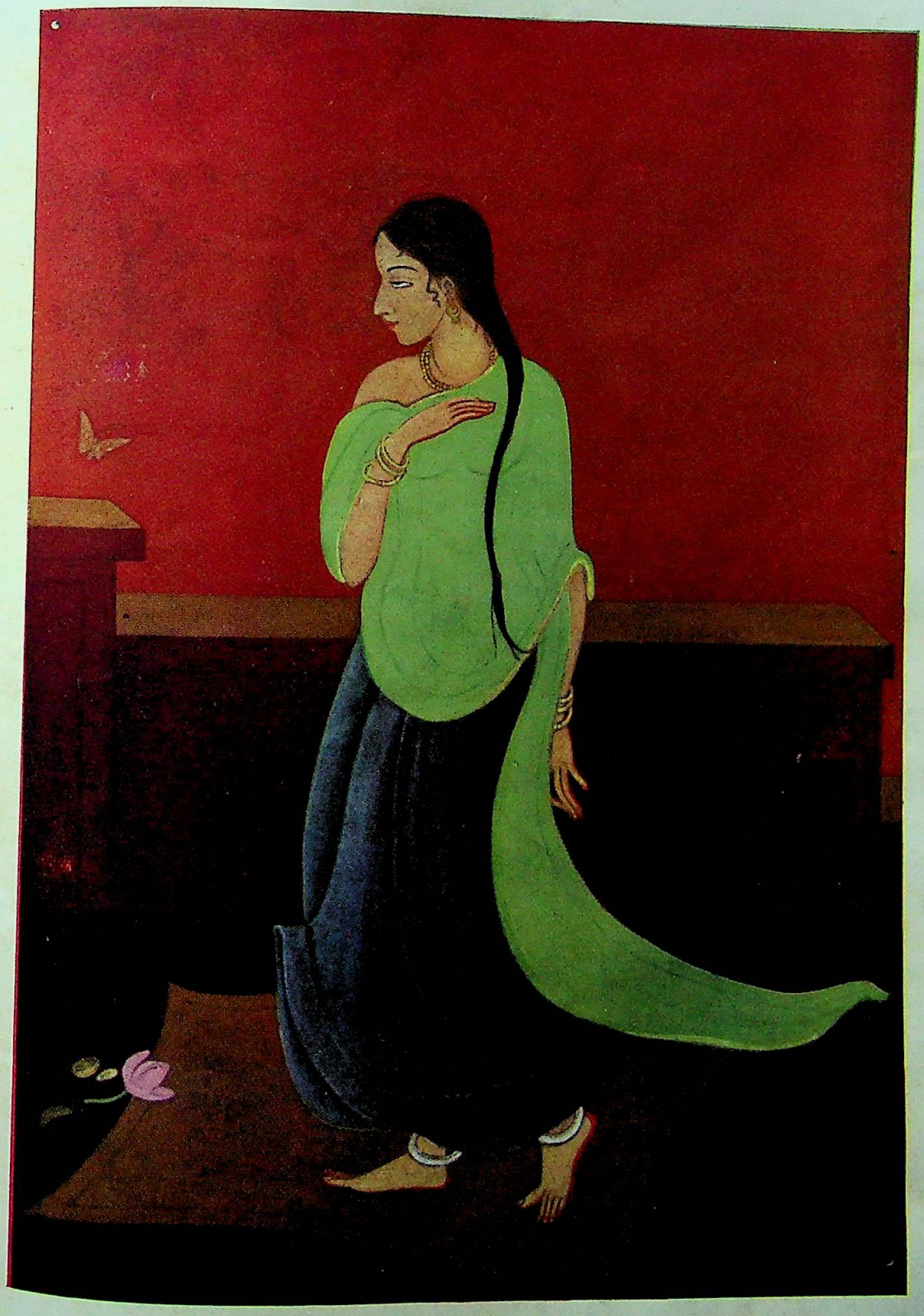

*विवाहयोग्या* चित्रकार—श्री रवीन्द्रकुमार दास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विश्वमित्र

सम्पादक—मूलचन्द्र अग्रवाल

सितम्बर, १९३५ | वर्ष ३, खण्ड ६ अङ्क ६, पूर्ण संख्या ३६ | भाद्रपद, १९९२

## धूलकी कहानी

चैतकी धुली हुई चांदनीमें नहाते हुए एक तारकने अपनी मर्म-कहानी कहकर पूछा, "और तुम ?"

"मैं ? मैं तो सम्राटोंके स्वर्ण-सिंहासनोंके नीरव रुदनपर कभी हंस पड़ती हूं और कभी दरिद्रोंके भग्न खण्डहरोंकी स्मृति मुझे रुलाये डालती है। महत्वाकांक्षियोंकी आकुल आकांक्षायें मुझसे लिपटकर अपने सूने अस्तित्वपर रोती हैं और उदासीनोंका अभिशाप रह-रहकर पागलों-की तरह खिलखिला पड़ता है। कभी निराश प्रेमियोंकी आहें मुझे विकल कर उत्तप्त कर देती हैं और कभी जीवन-भर न पूरी होनेवाली यात्राकी थकान रह-रहकर मुझे आंसुओंसे नहला देती है !

"निदाघके जलते हुए सूर्यका प्रखर आतप और सावनकी उमड़ती हुई मेघमालाओंका शीतल पानी।

"लोग मेरा वक्षस्थल रौंदते हुए चले जाते हैं और मैं सारी दुनियाको अपनेमें समेटे चुपचाप पड़ी हुई हूं....!"

तारकने पूछा, "और तुम्हारा नाम ?"

"मेरा नाम ?—रजकणिका।"

—श्री शिवदेव उपाध्याय 'सतीश', बी०ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बुद्धिवाद बनाम आदर्शवाद

श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र, एम० ए०, बी० एल०

To do great things one must have a certain fearlessness of consequences, an indifference to responsibility, a fanatical faith or the gambler's recklessness."

उपर्युक्त शब्द गार्डिनरके हैं जो इंगलैण्डके सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ लार्ड मार्लेके शब्दचित्राङ्कणके प्रसङ्गमें कहे गये हैं और जिनका अर्थ यह होता है कि जो व्यक्ति कोई महान् कार्य करना चाहता है उसमें परिणामके प्रति कुछ निःशङ्कता, अपने दायित्वके प्रति उदासीनता, अपने ध्येयमें धर्मोन्मत्तका-सा विश्वास अथवा जुआरीका-सा लापरवाहीका भाव होना आवश्यक है। संसारमें जितने कर्मवीर महापुरुष हुए हैं उनके महान् गौरवपूर्ण कार्यकलापोंका यदि विश्लेषण किया जाय तो गार्डिनरके उपर्युक्त वाक्यका मर्म हमें उनमें अक्षरशः चरितार्थ होता हुआ दीख पड़ेगा। उनकी जीवन-व्यापी साधनामें एक प्रकारकी उन्मादना थी जिसमें उन्होंने अपने-आपको सम्पूर्ण रूपसे विलीन कर दिया था। युक्ति एवं तर्ककी अपेक्षा उनके जीवनमें हम आदर्श-वाद एवं भावुकताका ही चमत्कार विशेष रूपमें पाते हैं। एक ओर जहां बुद्धिवादने जीवन-पथमें सोच-समझकर, फूंक-फूंककर पांव आगे बढ़ानेके लिए उनके मस्तिष्कको आलो-ड़ित किया, वहां दूसरी ओर इसके विपरीत आदर्शवादने उनके हृदयमें एक प्रकारका उत्कट भावावेश, युक्तिहीन उन्मादना उत्पन्न कर दी और इस भावोन्मादनाको ही अपनी जीवनयात्राका सम्बल बनाकर उन्होंने मरुस्थलमें भी सुवर्ण उत्पन्न कर दिया। आदर्शवाद एवं भावुकताके सम्मिश्रणसे उनके व्यक्तित्वमें एक ऐसे आकर्षणकी सृष्टि हो गयी थी कि उस आकर्षणके सङ्केतको ही लक्ष-लक्ष मनुष्योंने अपने जीवनका ध्रुवनक्षत्र मानकर उसके अनुसार उसकी गतिविधियोंका नियमन किया। उनकी कर्मसाधनाकी इस उन्मादनामें हमें ध्येयकी प्राप्तिके लिए दोनों हाथोंसे सब-कुछ लुटा देने, अपना सर्वस्वान्त कर देनेकी एक अजीब धुन दीख पड़ती है। इस धुनकी मस्तीमें परिणामोंके सम्बन्धमें किसी प्रकारके भय या आशङ्काके लिए स्थान ही नहीं रह जाता। जुआरी जिस प्रकार निःशङ्क होकर बिलकुल लापरवाहीके साथ अपने भाग्यको दांवपर चढ़ा देता है उसी प्रकार महत् कार्य सम्पादन करनेवाले महापुरुष भी अपने भाग्यके साथ लापरवाहीसे खेलते हैं। इसी कोटिके महा-पुरुष जाति एवं समाजके पथ-प्रदर्शक बनकर उसे अधःपतन-के गर्तसे ऊपर उठानेमें समर्थ होते हैं। मेजिनी और गेरी-वाल्डी, हिटलर और मुसोलिनी, कमाल पाशा और डी वेलेरा, गांधी और जवाहरलाल सब इसी कोटिके नेता हैं। इन्होंने सब प्रकारसे निःशङ्क होकर अपने आदर्शकी साधनामें अपने जीवनकी बाजी लगा दी है। परिणाम क्या होगा, इसकी कोई चिन्ता नहीं। अपने सम्बन्धमें तथा निज आत्मीय जनोंके सम्बन्धमें एकदम लापर-वाहीका भाव! यह नहीं कि इनके मस्तिष्कमें बुद्धि होती ही नहीं। बुद्धि होती अवश्य है। किन्तु इस बुद्धिको लेकर ये युक्ति एवं तर्कका तानाबाना नहीं बुनते, अपनी बुद्धि एवं विलक्षण प्रतिभाका चमत्कार दिखानेमें ही उसका उपयोग नहीं करते। क्योंकि इस बुद्धिसे भी परे हृदय-जैसी कोई वस्तु है जिसपर अधिकार करनेके लिए शुष्क बुद्धिवादका नहीं, बल्कि आदर्शवादका प्रयोजन है। जहां किसी जातिके भाग्यको लेकर निर्माण करनेका प्रश्न है वहां केवल युक्ति एवं तर्कके लिए स्थान कहां? केवल युक्ति एवं तर्कके बलपर किसी जातिके हृदय-राज्यपर आधिपत्य नहीं किया जा सकता। आप बड़े बुद्धिमान हैं, आपकी युक्तियां अद्भुत हुआ करती हैं, आपकी तर्क-शक्ति विलक्षण है। किन्तु अपने इन सब गुणोंका चमत्कार दिखाकर आप किसी विद्वन्मण्डली या मित्र-गोष्ठीमें, कौन्सिल और एसेम्बलीमें ही वाहवाही प्राप्त कर सकते हैं; आपकी प्रतिभापर मुग्ध होकर बड़े-बड़े लोग आप-की प्रशंसा कर सकते हैं। किन्तु इससे आप गणदेवताको सन्तुष्ट नहीं कर सकते, जनगण-मनको मुग्ध नहीं कर सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जनताके भाग्यकी परिचालना करने, उसके चित्तराज्यका अधीश्वर बननेके लिए जिन गुणोंकी आवश्यकता है, वे हैं आदर्शवादमें अचल श्रद्धा, आत्मविश्वासकी प्रचण्ड उन्मादना एवं परिणामके प्रति एकान्त उदासीनता। जातिके गौरवोज्ज्वल भविष्यमें विश्वास रखनेवाले तथा उसे नवजीवन एवं जागरणका अमर सन्देश सुनाकर उसके प्राणोंको आलोड़ित करनेवाले नेता वणिक बुद्धि लेकर अपने कर्तव्यके लाभालाभका हिसाब नहीं लगाते, हानि-लाभकी बातें नहीं सोचते, मार्गकी कठिनाइयों एवं कष्टोंपर ध्यान नहीं देते, अपने अनुयायियोंकी शक्ति एवं संख्यापर विचार नहीं करते; बल्कि अपने लक्ष्यपर दृष्टि आबद्ध किये हुए अविचलित पगसे आगेकी ओर तीरकी तरह बढ़ते ही जाते हैं। जनता उनकी इस अचल कर्मनिष्ठा, निर्भीकता एवं कर्तव्य-निर्णयकी क्षमताको विस्मय-विमुग्ध दृष्टिसे देखती है, चकित एवं स्तम्भित होती है और फिर उन नेताओंके व्यक्तित्वके प्रबल आकर्षण द्वारा आकृष्ट होकर आपसे आप उनकी ओर खिंची चली जाती है। लेनिन और गांधी अपने इस व्यक्तित्व द्वारा ही जनताके हृदय-देशको जय करनेमें समर्थ हुए। उनकी प्रचण्ड कर्मोन्मादना, फलाफलके सम्बन्धमें उनकी निश्चिन्तताने ही उनकी विद्युत्मयी वाणी बनकर जनताके हृदय-तारोंको स्पर्श किया, जिससे उसमें प्राण-तरङ्गें उद्वेलित होने लगीं और वह सुधबुध खोकर उनके एक-एक शब्दपर अपना सर्वस्व निछावर करनेके लिए तैयार हो गयी। यहां हम आदर्शवादका जादू देखते हैं, बुद्धिकी करामात नहीं।

सन् १९२० में कलकत्तेमें स्पेशल कांग्रेसका अधिवेशन हो रहा था। महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोगका प्रस्ताव कांग्रेसके सामने उपस्थित था। एक ओर गांधीजीकी निर्भीक कर्मशक्ति, उनका आदर्शवाद तथा हिमाचलके समान अटल आत्मविश्वास था और दूसरी ओर थीं देशबन्धु चित्तरञ्जन दास जैसे ख्यातनामा बैरिस्टरकी अनुपम युक्तियां, श्रीमती एनी बेसेण्टकी धाराप्रवाह ओजस्विनी वाणी तथा वाग्मिप्रवर विपिनचन्द्र पालकी अद्भुत तर्कशैली। किन्तु जो देशबन्धु दास अपनी वाग्मिता एवं युक्तिशैलीके बलपर हाईकोर्टके न्यायाधीशोंको अपने मतानुकूल करके बड़े-बड़े मुकदमे जीत लिया करते थे, प्रखर प्रतिभाशाली विपिनचन्द्रपाल, स्वदेशी युगके मध्याह्न-मार्तण्डके समान तेजोदीप्त अपने भीम-गर्जनमें अग्नि उद्गीरण करनेवाले जो विपिनचन्द्र पाल अपनी तेजस्विनी अग्निवाणी एवं असामान्य तर्कशैलीके बलपर जनताको मन्त्रमुग्ध कर दिया करते थे, वे ही देशबन्धु, पाल और श्रीमती बेसेण्ट उस समय जनताके हृदय तक अपनी युक्तियों एवं तर्कोंको नहीं पहुंचा सके। इसके विपरीत गांधीजीकी सरल, किन्तु आत्मविश्वासपूरित भयशून्य वाणीने जनताके मर्मस्थलको स्पर्श करके उसे विक्षुब्ध बना डाला। जनताके उस आवेगमय भावोच्छ्वासमें असहयोगके गुण-दोष तथा उसके हानि-लाभ की विवेचना और माप करनेवाले बड़े-बड़े प्रभावशाली वक्ताओंकी सारी युक्तियां न मालूम कहां विलीन हो गयीं और उस विस्तृत जनमण्डलीमें एक विजयी वीर नेताकी भांति जनताके हृदयपर राज्य करनेवालेके रूपमें हमने गांधीजीका दर्शन किया। उस समय यदि गांधीजी असहयोगके विरुद्ध उपस्थित की गयी युक्तियों एवं तर्कोंपर ध्यान देते, आन्दोलनके फलाफलपर विचार करते, बुद्धिकी तराजू लेकर उसकी लाभ-हानिको तौलने लगते, तो उनका स्थान आज कहां होता?

कलकत्तेके बाद फिर नागपुर कांग्रेसमें हम इसी आदर्शवादकी, व्यक्तित्वके आकर्षणकी विजय-पताकाको फहराते हुए देखते हैं, भावोन्मादनाका जयगान सुनते हैं। यहीं हम बैरिस्टर चित्तरञ्जन दासको एक आदर्शवादी नेताके रूपमें देखते हैं। उनका भावुक हृदय उच्छलित हो पड़ता है। उस सरस कोमल कविजनोचित हृदयसे भावुकताकी शत-शत धारायें प्रस्फुटित होकर अपने उद्दाम प्रवाहमें कानून-शास्त्रके पण्डितके मस्तिष्ककी सारी युक्तियोंको बहा ले जाती हैं और मस्तिष्कके ऊपर हृदयकी, बुद्धिवादके ऊपर आदर्शवादकी सम्पूर्ण रूपसे विजय होती है। बङ्गालके मुकुटहीन राजा बनकर देशबन्धु दास बङ्गालके राजनीतिक क्षेत्रमें उपस्थित होते हैं और उनके जयगानसे सारा देश मुखरित हो उठता है। इस समयके देशबन्धुकी वाणीमें जो भावप्रवणता थी, वह एक सहृदय कविकी भाव-प्रवणता थी। इस भाव-प्रवणतामें एक प्राणोन्मादकारी सम्मोहन एवं आकर्षण था। तभी तो उन्होंने अपने मृत्युहीन प्राणोंसे प्राण-रस उड़ेल-उड़ेलकर सारे देशको अनुप्राणित कर दिया था। देशबन्धु दासने हिसाबी बुद्धि लेकर राजनीतिक क्षेत्रमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रवेश नहीं किया था। जिस समय उन्होंने अपनी बैरिस्टरी छोड़नेकी घोषणा की थी, इस बातपर विचार नहीं किया था कि बैङ्कमें मेरा कितना रुपया जमा है, भविष्यमें मेरा तथा मेरे परिवारवर्गका क्या होगा। असहयोग आन्दोलन सफल होगा या नहीं। इस प्रकारके विचार उन लोगोंके मनमें ही उठा करते हैं जो एकमात्र युक्ति एवं तर्कके आधारपर देशके प्रत्येक सार्वजनिक आन्दोलनका तारतम्य किया करते हैं। इस श्रेणीके नेताओंका मन सदा द्विधा एवं सन्देह-ग्रस्त बना रहता है जिससे उनकी भावनाओंमें प्राणोंका स्पन्दन नहीं रहता और जनताकी आशा-आकांक्षाओंके साथ वे अपने हृदयका प्रत्यक्ष संयोग स्थापित करनेमें समर्थ नहीं होते। इस प्रकारका संशयाच्छन्न मन लेकर किसी पराधीन देशके जीवनका नेतृत्व नहीं किया जा सकता।

एक और दृष्टान्त लीजिये। आयर्लैण्डकी पार्लामेण्टमें एंग्लो-आयरिश सन्धिपर विचार हो रहा था। एक ओर आदर्शवादी निर्भीक नेता डी वेलेरा थे और दूसरी ओर थे बुद्धिमान राजनीतिज्ञ आर्थर ग्रीफिथ। डी वेलेराने सन्धिको अस्वीकार कर देनेके पक्षमें अपना मत व्यक्त किया, इसके विपरीत आर्थर ग्रीफिथने सन्धिको स्वीकार करनेके पक्षमें अनेकानेक युक्तियोंकी अवतारणा की—उन्हीं युक्तियोंकी, जिन्हें हम अपने देशमें माडरेट नेताओंके मुखसे सुना करते हैं, अर्थात् प्रबल प्रतापी अंगरेज सरकारसे हमें जो कुछ मिल रहा है उसे ग्रहण करके शेषके लिए आन्दोलन करते रहना चाहिए। अभी जो कुछ मिल रहा है उसे अग्राह्य कर देनेसे सङ्घर्ष दीर्घकाल तक चलता रहेगा, दुःख और कठिनाइयां बढ़ती जायंगी। जनताकी आर्थिक उन्नतिके मार्गमें बाधायें उपस्थित होंगी इत्यादि। इधर आदर्शवादी डी वेलेराके मनमें किसी प्रकारका द्विधा-भाव नहीं था। क्षणिक लाभ-का प्रलोभन उनकी आदर्शनिष्ठाको विचलित करनेमें समर्थ नहीं हो सका। एक निर्भीक वीर योद्धाके समान उन्हें अपने ध्येयकी पवित्रतामें अचल श्रद्धा थी। इसलिए वहां तक पहुंचनेमें जिन सब बाधा-विघ्नोंका अतिक्रमण करना पड़ता उनके परिणामके सम्बन्धमें वे सर्वथा उदासीन थे। या तो ध्येयकी प्राप्ति करेंगे अथवा उसकी प्राप्तिमें सब-कुछ खो देंगे। "कार्यं वा साधयामि शरीरं वा पातयामि।" कुछ समयके लिए ग्रीफिथका बुद्धिवाद, उनकी युक्ति और तर्कशैली काम कर गयी। डी वेलेराका आदर्शवाद विजयी नहीं हुआ। फिर भी उन्हें अपने आदर्शपर अक्षुण्ण विश्वास था। उसके अनुसार उन्होंने अपना कर्तव्य-पथ निश्चित कर लिया था। निर्भीक एवं निश्चिन्त मन लेकर वे इस पथपर अग्रसर होते रहे। अन्तमें उनकी आदर्शवादी कर्मनिष्ठा ही जनताके हृदयको स्पर्श करनेमें सफल हुई और जयलक्ष्मीने उन्हींके गलेमें वरमाला पहनायी।

जनसाधारणके हृदय तक वाणीको पहुंचानेके लिए यह आवश्यक है कि वह वाणी तेजोदीप्त हो, वह शौर्य एवं साहसका सञ्चार करनेवाली हो और वह जनताके मर्मस्थल-पर इस रूपमें आघात पहुंचावे कि जिससे उसकी हृत्तन्त्रियां झंकृत हो उठें। इस प्रकारकी वाणी उसी नेताके मुखसे उच्चारित हो सकती है जो असन्दिग्ध चित्त लेकर कर्मक्षेत्रमें आ डटा हो, जो एक निर्भीक सैनिकके समान लापरवाहीका भाव धारण किये हुए प्राणोंका सौदा तक करनेके लिए तैयार रहता हो। इस वीरत्वमें ही उसकी महिमाका सौन्दर्य फूट पड़ता है और जनसाधारण विस्मय-विमुग्ध होकर उससे प्रेम करने लगते तथा उसे अपने हृदयके राजसिंहासनपर प्रतिष्ठित करते हैं।

हमारे देशके माडरेट नेता श्री श्रीनिवास शास्त्री, सर तेज बहादुर सप्रू तथा श्री सी० वाई० चिन्तामणि बुद्धि, योग्यता, प्रतिभा एवं राजनीति-शास्त्रके पाण्डित्यमें किसी भी कांग्रेस-नेतासे न्यून नहीं कहे जा सकते। जहां तक योग्यता एवं प्रतिभाका सम्बन्ध है, सारा देश उक्त नेताओंके इन गुणोंका कायल है और देशके शिक्षित वर्गमें इन नेताओंके प्रति सम्मान एवं प्रतिष्ठाका भाव भी काफी है। फिर भी शास्त्री और सप्रू जैसे प्रखर प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञ जनता-के नेता नहीं बन सके, उसके चित्तराज्यपर अपने व्यक्तित्वकी छाप अङ्कित नहीं कर सके, अपनी वाणी द्वारा उसकी सुषुप्त भावनाओंको उद्दीपित नहीं कर सके। क्यों? इसलिए कि किसी पराधीन जातिकी राजनीतिका पथ-प्रदर्शक बननेके लिए जिस साहस, प्रचण्ड कर्मोद्यम एवं परिणामके प्रति उदासीनता-जैसे गुणोंका प्रयोजन है उनका उनमें एकान्त अभाव है। वे सोच सकते हैं, गम्भीर विवेचना कर सकते हैं, राजनीतिक सिद्धान्तोंका ऊहापोह कर सकते हैं, विभिन्न देशोंकी शासन-पद्धतियोंकी तुलनात्मक आलोचना कर सकते हैं, किन्तु अति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सावधानीका भाव धारण करनेके कारण किसी विषम परिस्थितिमें शीघ्र कर्तव्य-निर्णय नहीं कर सकते। राजनीति-क्षेत्रमें पग-पगपर 'अति' सावधान होनेका अर्थ है अपनी शक्ति एवं योग्यतामें, जनताकी शक्तिमें अविश्वास, सत्साहसका अभाव। इस श्रेणीके नेता सङ्कटोंके सम्बन्धमें अधिक सोचते हैं, इसलिए ये कर्म-क्षेत्रमें एक सैनिककी भांति बिलकुल लापरवाह बनकर आगे नहीं बढ़ सकते, परिणामके भयको मसल नहीं सकते।

राजनीतिक क्षेत्रमें बुद्धिमत्ता एवं दूरदर्शिता भी आवश्यक है, इस बातसे किसीको इन्कार नहीं हो सकता; किन्तु जहां किसी पराधीन एवं पर-पद-दलित जातिके अन्तरतममें अपमान एवं हीनता-जनित ग्लानिकी मर्मन्तुद वेदना उद्बुद्ध करके उसे एक बार फिर गौरवमण्डित स्वाधीन जातिके रूपमें परिणत कर देना है वहां तो किसी शक्तिमान पुरुषसिंह नेताका ही प्रयोजन होता है। ऐसे आत्मविश्वासी निर्भीक नेताका, जो जातिके प्राणोंमें शक्ति, उत्साह एवं कर्मोद्यमकी बिजली भर दे, उसके अतीत जयगौरवकी याद दिलाकर उसकी नसोंमें महत्त्वाकांक्षाकी बुभुक्षा जाग्रत कर दे और उसे उसके अपहृत गौरवसे अवगत कराकर इस प्रकार अनुप्राणित कर दे जिससे उसके लिए वह हीन स्थिति असह्य हो उठे। इसके लिए किसी बुद्धिमान दूरदर्शी राजनीतिज्ञकी अपेक्षा निर्भीक, सैनिक भावापन्न, परिणामोंके प्रति उदासीन शक्तिशाली नेताका नेतृत्व ही विशेष फलदायक सिद्ध होता है। जर्मनीमें हिटलरके अभ्युदयके पहले भी बुद्धिमान राजनीतिज्ञोंकी कमी नहीं थी। जर्मनीने नतजानु होकर मित्र-शक्तियोंसे एकाधिक बार अपने लिए न्याय एवं नीतिकी याचना की, वर्सेलीजकी सन्धिकी शर्तोंके विरुद्ध तर्क एवं युक्तियां उपस्थित कीं, किन्तु जर्मनीकी उस प्रार्थनापर किसीने कर्णपात तक नहीं किया। इसके बाद हम हिटलरको वीरदर्पहुङ्कारके साथ जर्मन जातिकी आत्मशक्तिका उद्बोधन करते हुए पाते हैं। उसके इस उद्बोधनने जर्मन जातिके लिए जादूका काम किया। हिटलरने अपनी निःशङ्कता, आदर्शवादिता एवं प्रचण्ड कर्मशीलताके महामन्त्र द्वारा जर्मन जातिको दीक्षित करके उसमें अपूर्व तेजस्विताकी सृष्टि कर दी है, जिससे आज समग्र जातिमें रूपान्तर हो रहा है। अपमान, पराजय एवं लाञ्छनाकी शृङ्खलायें आपसे आप विच्छिन्न हो रही हैं और जातिका महिमोज्ज्वल मस्तक आज गर्वके साथ उन्नत हो रहा है।

महात्मा गांधीके अवकाश-ग्रहण तथा पं० जवाहरलाल नेहरूकी अनिवार्य अनुपस्थितिके कारण आज भारतके राजनीतिक क्षेत्रमें जो शिथिलता, अवसाद तथा निर्भीक एवं शक्तिमूलक कर्मप्रचेष्टाओंका दैन्य देखा जा रहा है, इसका कारण भी वर्तमान कांग्रेस-नेताओंकी वही अतिसावधानताकी नीति है जिससे उनकी मनोवृत्ति सम्पूर्ण पराजय-मूलक (Defeatist mentality) बन गयी है और वे सर्वथा निःशङ्क होकर राष्ट्रके लिए कोई शक्ति एवं स्फूर्तिदायक कर्तव्य-पथ निश्चित करनेमें असमर्थ हो रहे हैं। उनका मन सदा द्विधा एवं सन्देहग्रस्त बना रहता है, जिससे जातिकी अमित शक्तिपर उनका विश्वास क्रमशः क्षीण हो रहा है। कौन्सिलोंमें जाकर पदग्रहण करना चाहिए या नहीं, इस प्रकारके निरर्थक विषयोंपर शुष्क वाद-विवाद तथा पक्ष-विपक्षमें पर्वत-प्रमाण युक्ति-तर्क उपस्थित करके कुछ थोड़े-से शिक्षित लोगोंके मनमें भले ही राजनीतिके प्रति दिलचस्पी उत्पन्न की जा सकती हो, किन्तु सर्वसाधारण जनतापर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। इस प्रकारकी वाग्वितण्डामूलक राजनीति जनताके हृदयको स्पर्श नहीं कर सकती, उसकी भावनाओंपर ठेस पहुंचाकर उसे कर्ममार्गमें प्रवृत्त नहीं कर सकती। क्योंकि इस कोरे राजनीतिक वाद-विवादमें आदर्शवादकी वह भावुकता नहीं होती, जो अन्तरतममें एक गभीर अनुभूति उत्पन्न कर देती है और जिसका आकर्षण जनताके लिए अनिरोध्य हो उठता है। जनताकी आशा-आकांक्षाओंके प्रति गम्भीर अनुभूतिका भाव उत्पन्न करनेवाले कार्यक्रमको लेकर जो नेता जनताके सामने उपस्थित होता है वही कर्मनिष्ठा, भावुकता, निःशङ्कता आदि गुणोंकी बदौलत उसका दृढ़तापूर्वक नेतृत्व करनेमें समर्थ होता है और इस कोटिके नेताके लिए ही जनताके हृदयमें सच्ची श्रद्धा एवं सम्मानका भाव होता है। क्योंकि People's lips salute only doers.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पम्पिआईके खण्डहरोंमें

श्री महामायाप्रसाद सिंह

हमारा 'विक्टोरिया' जहाज अक्टूबर महीनेकी २४ तारीखको नेपल्ससे हिन्दुस्तानके लिए रवाना होनेवाला था, इसलिए हम ता० २३ की रातमें ही नेपल्स पहुंच गये थे। रोम स्टेशनपर मद्रासके श्रीयुत् रामदास पान्तलू और श्री सेठीजीसे मुलाकात हो गयी, इसलिए वे लोग भी हमारे साथ ही नेपल्स आये और एक ही होटलमें ठहरे। वे लोग भी उसी जहाजसे भारतवर्ष लौट रहे थे। होटलमें आरामसे रात कटी। सुबह हुई तो तबीयत आ गयी कि जरा 'पम्पि-आई'की भी सैर कर आवें। श्री रामदासजी तो पम्पिआई-को पहले एक बार देख चुके थे, इसलिए उनके ऊपर माल-असबाबका भार सौंपकर हम और सेठीजीने ही वहां जाना तय किया। यात्रियोंको पम्पिआई दिखलानेके लिए नेपल्समें कई कम्पनियां हैं जो यात्राका प्रबन्ध करती हैं और उन्हीं कम्पनियों द्वारा यात्राका प्रबन्ध करना ठीक है। हम लोगोंने होटलसे कई कम्पनियोंमें टेलीफोन किया, परन्तु उनकी मोटर गाड़ियोंमें जगह नहीं मिल सकी। रेलगाड़ी द्वारा भी जा सकते थे, परन्तु समय कम था, इसलिए हमने सोचा कि टैक्सीसे ही देख आवें। होटलवालेने एक टैक्सीवालेको बुला-कर हमारे हवाले कर दिया। नेपल्ससे (जिसको वहांवाले नेपोली कहते हैं) पम्पिआई बीस मीलके करीब है। हम लोगोंने ८० लीरेपर (जो डेढ़ पौण्डसे कुछ ज्यादा हुआ) उस टैक्सीवालेको पम्पिआई दिखलाकर वापस लानेके लिए ठीक किया। उस टैक्सीवालेके साथ एक और भी आदमी था जो प्रदर्शकका काम करता था। उसके बहुत आग्रह करनेपर उसको भी हम लोगोंने ४० लीरेपर ठीक कर लिया। सब ठीकठाक करके हम लोग साड़े आठ बजे सुबह पम्पिआई देखनेके लिए रवाना हुए। अभी थोड़ी ही दूर गये होंगे कि प्रदर्शकने कहना शुरू किया कि मोटरकी नजदीकवाली सड़क बिलकुल खराब हो गयी है, इसलिए चक्कर काटकर दूसरी सड़कसे चलना होगा, अतएव इतने कम किरायेपर टैक्सी नहीं जा सकती। टैक्सीवाला अंगरेजी बिलकुल नहीं समझता था, इसलिए हमारी बात समझनेमें वह बिलकुल असमर्थ था। प्रदर्शक टूटी-फूटी अंगरेजी खूब बोलता था। अभी हमारे मुंहसे कुछ आवाज भी नहीं निकली थी कि उसने मोटर-कार खड़ी कराकर किरायेके लिए बकवास करना शुरू किया। जब हमने कहा कि अब ज्यादा किराया हम नहीं दे सकते तो उसने टैक्सी-वालेको मना कर दिया कि तुम गाड़ी आगे मत बढ़ाओ। बहुत देरकी हुज्जतके बाद वह कहने लगा कि टैक्सीसे तो हम 'पम्पिआई' नहीं ले जा सकते, किन्तु रेल-गाड़ीसे उतने भाड़ेमें ले जा सकते हैं। अब हम बहुत फेरमें पड़े। रेल-गाड़ीसे आने-जानेमें भय था कि कहीं जहाज छूट न जाय। उस आदमीके बर्तावसे भय होने लगा कि शायद वह पीछे फेरमें न डाल

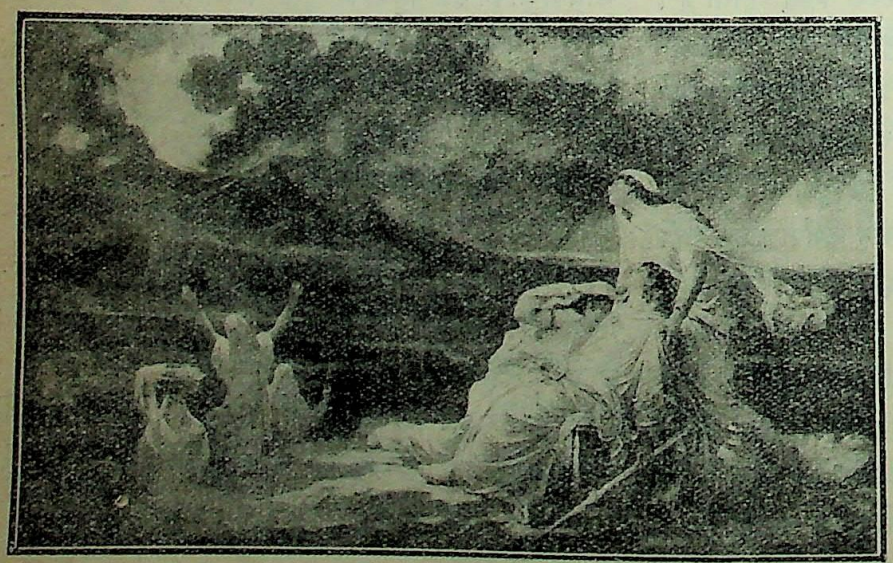

विसूवियस-ज्वालामुखीका प्रलयङ्कर विस्फोट जिसने अपनी उदरदरीमें पम्पिआई और हरकुलेनियम नगरोंको क्षण-भरमें ही समा लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दे। आखिरकार हमने कहा कि चलो जिस होटलसे लाये हो वहीं हमें पहुंचा दो। इसपर भी वह राजी नहीं हो रहा था। किराया पहले ही ले लेना चाहता था। बहुत कहने-सुननेपर किसी तरह उसने होटल पहुंचानेके लिए टैक्सीवालेसे कहा। होटल तो हम सकुशल पहुंच गये, परन्तु वहां वह किरायेके लिए झगड़ने लगा और अनापशनाप बकने भी लगा। श्री रामदासजी अभी होटलमें ही थे। उन्होंने बहुत चाहा कि मुनासिब किराया लेकर वह चला जाय, किन्तु अब वह हरजानेके तौरपर पचास लीरे मांगने लगा। होटलवालेने भी मामूली तरहसे समझानेकी कोशिश की, पर सुनता कौन है। जब वह धमकियां देने लगा तो श्री रामदासजी भी बिगड़ उठे। आखिरकार किसी तरह उसको किराया देकर हटाया गया।

यूरोपमें कहीं भी ऐसा कटु अनुभव नहीं हुआ था। जहां भी हम गये वहांके लोग ईमानदार, मिलनसार और सभ्य मिले। धोखेबाजी तो कहीं नजर भी नहीं आयी थी। एक धोखेबाजके फन्देमें पड़नेका यह पहला ही मौका था। ऐसा सुननेमें आया कि इटलीमें अभी ऐसी बातें प्रायः हो जाया करती हैं।

खैर, हम लोग होटलसे माल-असबाब लेकर बन्दरगाह पहुंचे जहां हमारा जहाज लङ्गर डाले खड़ा था। अब तो 'पम्पिआई' जाना नामुमकिन ही मालूम पड़ता था, इसलिए हम लोग जहाजमें सवार होनेके लिए चल पड़े। रास्तेमें एक आदमीसे मुलाकात हो गयी जो पम्पिआई दिखाकर ठीक वक्तसे जहाजपर पहुंचा देनेकी जिम्मेवारी ले रहा था। पम्पिआई देखनेकी प्रबल इच्छाको मैं नहीं रोक सका। अभीभी काफी समय था। श्री सेठीके साथ एक मोटरकार ठीक कर उस आदमीको लेकर हम चल पड़े। बहुत किफायतमें टैक्सी मिल गयी। जो आदमी हमारे साथ था वह बहुत सभ्य और ईमानदार मालूम पड़ता था; आगे चलकर उसने कोई धोखेबाजी नहीं की।

जिस समय पम्पिआई नगरमें महाप्रलयका दृश्य उपस्थित हो रहा था उस समय भी यह वीर सैनिक प्रहरी अन्तिम क्षण तक अपने स्थानपर अविचलित भावसे खड़ा हुआ मृत्युकी प्रतीक्षा करता रहा।

हम लोग एक घण्टेसे कममें ही 'पम्पिआई' पहुंच गये। सड़क निहायत अच्छी थी। सड़कसे कुछ दूर ऊंची चढ़ाईपर पैदल चलकर हम लोग पम्पिआईके खण्डहरके पास पहुंचे। भीतर जानेके लिए १० या १५ लीरे फी आदमी प्रवेश शुल्क लगा।

अच्छा होगा कि पाठकोंको खण्डहरोंकी सैर करानेके पहले पम्पिआईके सम्बन्धमें कुछ लिख दिया जाय। साढ़े अठारह सौ वर्ष पहलेकी बात है। उस समय पम्पिआई इटली-का एक प्रसिद्ध नगर था और विसूवियस ज्वालामुखी पर्वतके नीचे भागमें समुद्रकी ओर बसा था। उस जमानेमें वहांके रईसों और अमीरोंके ऐश-आराम और शान-शौकतका मुकाबला करनेवाला दूसरा नगर यूरोपमें नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सन् ७९ ई०की २३ वीं अगस्तके प्रातःकाल तक यह नगर सजीव बना हुआ था। सर्वत्र हर्ष, आमोद-प्रमोद, रङ्ग-रभसके साजोसामान मौजूद थे। नगरकी सौधमालायें, राज-प्रासाद, मन्दिर, स्नानागार, रङ्गालय आदि युग-युगकी सञ्चित ललित सुकुमार कलाकी अमूल्य निधियोंको अपनी गोदमें छिपाये हुए नगरकी शोभा-श्रीको बढ़ा रहे थे। किन्तु हाय! यह कौन जानता था कि पम्पिआई और उसके पार्श्ववर्ती नगर हर्कुलेनियम चन्द दिनोंमें पृथ्वीके गर्भमें इस प्रकार समा जायंगे कि आगामी १७०० वर्षोंतक उनके नामकी स्मृति-मात्र रह जायगी। सन् ७९ में उस सुषुप्त ज्वाला-मुखीमें सहसा महा भयङ्कर विस्फोट हुआ और उसने आगके शोले उगलने शुरू किये। परिणाम-स्वरूप सारा शहर नष्ट-भ्रष्ट हो गया और नगरके जीव-जन्तु, सभी प्राणी और सामान उस ज्वालामुखीके गर्भमें विलीन हो गये। पिछली शताब्दीमें खुदाई करनेपर यह सब दृष्टिगोचर हुआ। यह शहर बहुत सुन्दर तरीकेसे बसाया गया था। हाट-बाजार, सेठ-साहूकारोंके घर, बाग-बगीचे, शराबखाने-पाखाने आदि बड़े ही विचार और बुद्धिमत्ताके साथ बने थे। भीतर जानेपर इस बातका साफ पता चलता है कि उस जमानेमें भी इस नगरमें नहरें थीं, रास्तोंमें जल पीनेके पाइप

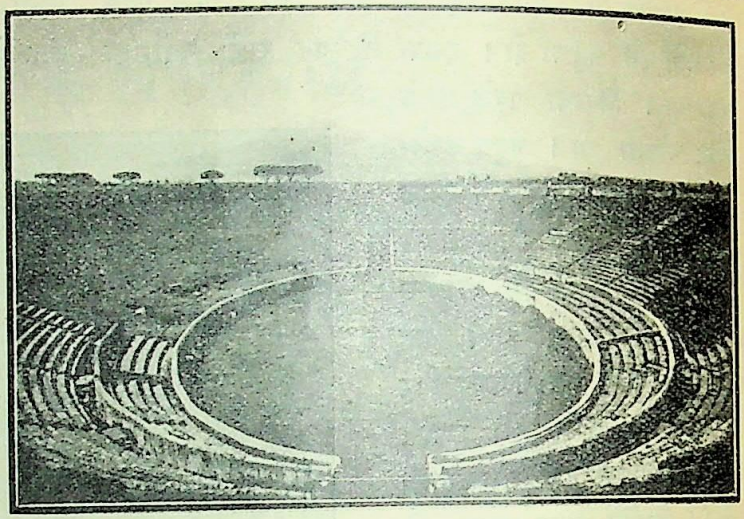

पम्पिआईकी रङ्गभूमि

थे, मोमबत्तीके शमादान थे, काचके बर्तन थे, नहानेके बड़े-बड़े घर और पत्थरके टब बने थे। लिखने-पढ़नेके भी सामान थे, तौलनेकी तराजुएं थीं, बहुमूल्य सामान रखनेके मजबूत बक्स और आलमारियां थीं। अब तो पाठक स्वयं ही सैर करनेके समय इन चीजोंको अपनी आंखों देख लेंगे। अनुमानतः नष्ट होनेके सात सौ वर्ष पहले यह प्राचीन नगर बसा था।

हां, प्रवेश-द्वारपर ही एक सुन्दर संग्रहालय है। खण्ड-हरसे निकाले गये बहुमूल्य सामान इसीमें संगृहीत हैं। इस संग्रहालयमें पम्पिआई और उसके साथ ही नष्ट हुए दूसरे नगर हर्कुलेनियममें मिली हुई मूर्तियां तथा अन्य सुन्दर चीजें संगृहीत हैं। एक शीशेके बड़े सन्दूकमें एक आदमीका शव रखा हुआ है, जो पम्पिआईके एक मकानके भीतरसे निकाला गया था। जिस समय वह नगर गारत हुआ था उस समय इस आदमीने लावासे अपनी रक्षाके लिए पेटके बल पड़कर एक हाथसे अपने चेहरेको ढक लिया था। ज्योंका त्यों उसी रूपमें वह आदमी निकालकर रखा हुआ है। एक कुत्तेका भी शव ज्योंका त्यों संगृहीत है। ऐसी-ऐसी बहुत-सी अद्भुत चीजें देखनेमें आती हैं। उस

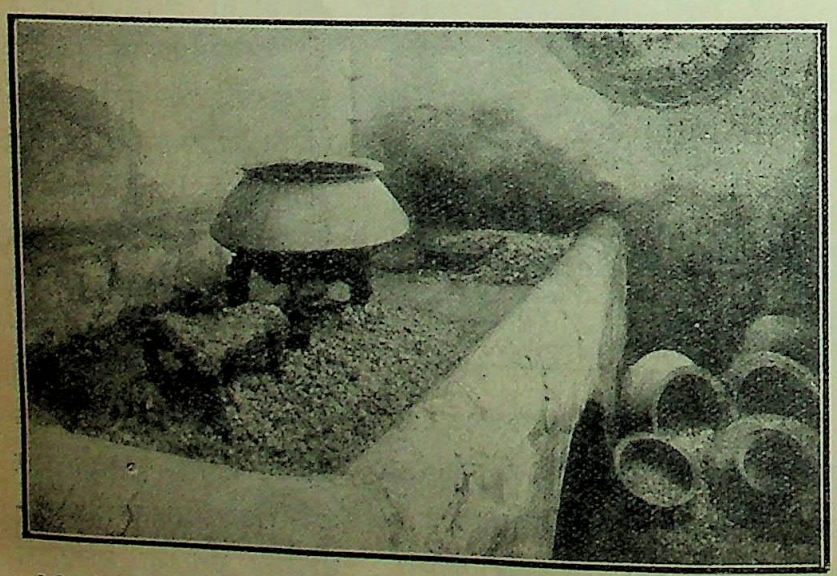

रसोईघरमें चूल्हेकी आगपर चढ़ी हुई कड़ाही १७०० वर्षोंके बाद भी उसी दशामें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



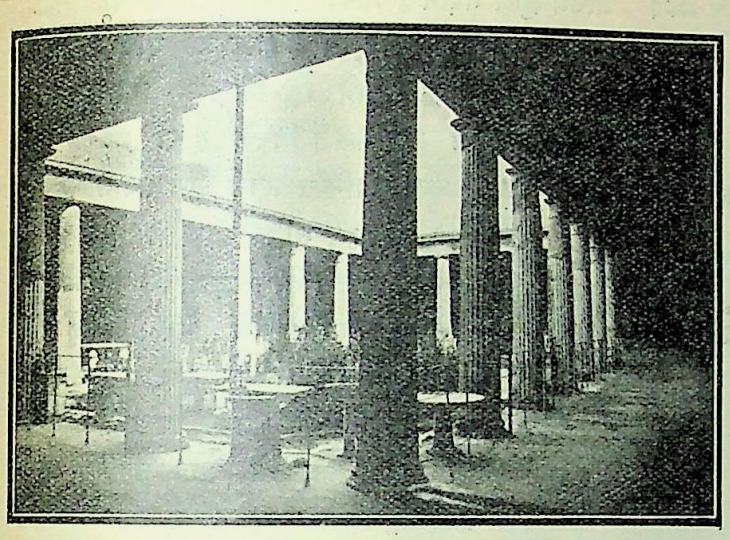

सेठका मकान

समयके बर्तन, दावात, कलम, चाकू, आटा पीसनेकी चक्कियां, शमादान, तराजू , तसवीरें, कांसेकी मूर्तियां, बड़े-बड़े बक्स, कुर्सियोंके टुकड़े, दीपक, बांसुरी, हाथी-दांतकी चीजें, स्फटिककी मालायें, सोने-चांदीके गहने, जवाहिरोंके अनेक आभूषण, चीर-फाड़की छुरियां, कङ्घी, शीशे, डिब्बे इत्यादि अनेक दर्शनीय वस्तुयें हैं, जिनको देखकर पम्पिआईकी प्राचीन सभ्यताका भव्य चित्र आंखोंके सामने चित्रित हो आता है। इन चीजोंके अलावा उस समयकी जली रोटियां, अण्डे, अनाज इत्यादि भी रखे हुए हैं। पम्पिआईकी दीवारोंके पलस्तरमें जो बड़ी रङ्गीन तसवीरें बनी थीं, उन्हें पलस्तर सहित निकाल कर चौखटोंमें मढ़कर लगा दिया गया है। पच्चीकारीके कामके सुन्दर खम्भे, गायकों और बाजा बजाने-वाली मण्डलियोंकी बनी हुई तसवीरें तथा छतोंकी रङ्गीन चित्रकारीके टुकड़े संग्रहालयमें रखे हुए हैं। वह चित्र तो अत्यन्त सुन्दर है, जिसमें एक बिल्लीने चिड़ियाको दबोचा है। उसकी कारीगरी कमालकी है और दर्शकोंको आश्चर्यसे चकित हो जाना पड़ता है। उन मूर्तियोंकी कारीगरी गजबकी है, जिनमें अङ्गोंके पुट्ठे, चमड़ेकी सिकुड़न, कपड़े और चादरोंकी सिकुड़न आदि बातें प्रायः बिलकुल साफ नजर आती हैं। वह लाल कत्थई रङ्गके पत्थरकी अपेलोकी भव्य मूर्ति गजब ढाती है। यदि वहांकी संगृहीत चीजोंको साङ्गोपाङ्ग देखा जाय तो कमसे कम दो दिन लगेंगे। हमें तो जहाज पकड़ना था, इसलिए जल्दी-जल्दी पम्पिआईके मकानोंको देखनेके लिए खण्डहरमें धंस पड़े।

सड़ककी दोनों तरफ सुन्दर-सुन्दर पत्थरोंसे बने हुए एकमञ्जिले और दोमञ्जिले मकान हैं। दूकानें दोमञ्जिला हैं, जिनकी ऊपरवाली मञ्जिलपर दूकानदार सकुटम्ब रहता था। शराबखाने भी हैं और उस समय किस तरह शराब चुआई जाती थी, उसके भी टूटे-फूटे बर्तन आदि हैं। एक सेठका मकान बहुत ही सुन्दर और भव्य है, उसके भीतर बाग-बगीचा भी है। इस मकानकी दीवारोंपर बनी हुई तसवीरें उच्चकोटिकी चित्र-कलाके जीते-जागते उदाहरण हैं। इस मकानके फर्शपर पच्चीकारीका सुन्दर काम है तथा जानवरोंकी सुन्दर तसवीरें लाजवाब हैं। रसोई-घर, भोजन-गृह, स्नान-गृह, शयन-गृह, बैठक इत्यादि अलग-अलग सुन्दर तरीकेसे बने हैं। हां, एक बात और भी विचित्र है। कई दीवारोंपर आसनोंके अश्लील चित्र बड़ी निपुणतासे बने हुए हैं। उन तसवीरोंको देखकर यह साफ झलकता है कि उस समय पम्पिआईमें भोग-विलासका बाजार कितना गर्म था। वहांके लोग कितने विलासी, दुराचारी और जुआरी थे। यूरोपवालोंकी ऐसी धारणा है कि ईश्वरकी तरफसे, पम्पिआईवालोंको इसी दुराचार और पापके कारण ऐसी

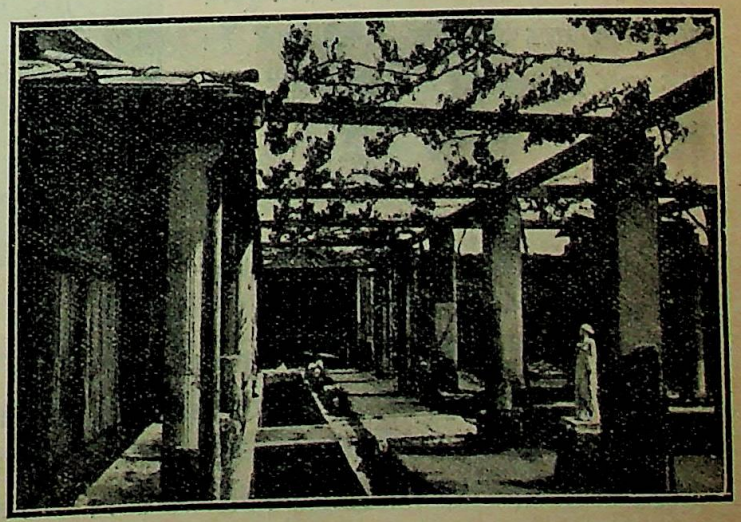

गृह-उद्यान—प्रस्तरकी मूर्ति ज्योंकी त्यों सुरक्षित दशामें है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सजा मिली थी। खैर, बात कुछ भी हो, पम्पिआईवाले सभ्य अवश्य थे।

खुले मैदानमें उस समयके मन्दिर भी खूब सुन्दर हैं। कहीं-कहीं उस समयकी मूर्तियां भी मैदानोंमें शोभायमान हैं। रङ्ग-भूमि, सभा-सोसाइटीके चौक, पञ्चायतके स्थान

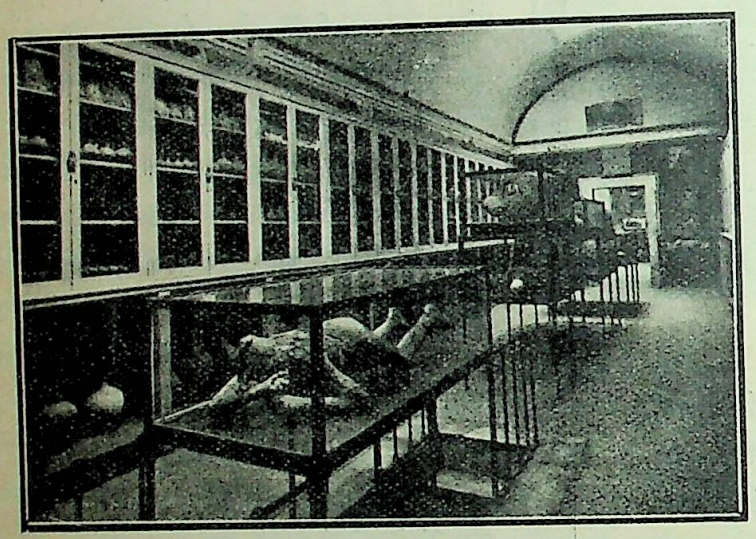

संग्रहालय

बहुत मार्केके हैं। नाच-तमाशे जो दिन-रात वहां होते थे, उनके लिए भी अलग-अलग जगहें हैं। वह चौक, जो फोरम कहलाता है, बहुत ही मार्केका है। वहां दोपहरके समय सभी इकट्ठे होते थे। वह बहुत सुन्दर है और तमाम सङ्ग-मरमरसे जड़ा हुआ है। उसमें एक तरफ दूकानें हैं, दूसरी तरफ वकीलोंके बैठनेकी जगहें हैं। एक ओर ऊंचे चबूतरेपर न्यायालय है और दूसरी ओर बृहस्पति महाराजका मन्दिर है (The temple of Jupiter), जो सिनेटके मेम्बरोंके बैठनेके काममें आता था। फोरमके बीचमें सुन्दर-सुन्दर मूर्तियां हैं, जिनमें सिसरोकी मूर्ति सबसे अच्छी है।

रङ्ग-भूमिके सम्बन्धमें भी कुछ लिख देना जरूरी मालूम पड़ता है। रङ्ग-भूमिमें कई हजार आदमियोंके बैठनेकी जगहें हैं। ऊपरकी पंक्तिमें स्त्रियोंके बैठनेकी जगहें हैं; उसके बाद सिनेटके मेम्बर, मजिस्ट्रेट, धनी-मानी लोग बैठा करते थे। बीच-बीचमें गैलरियोंपर जानेके लिए रास्ते बने हुए हैं। बीचमें खुला मैदान है जिसमें युद्ध हुआ करता था। इस मैदानके चारों ओर गैलरियां हैं और जो दीवार अखाड़ेकी चारों ओर बनी है, उसमें रङ्ग-बिरङ्गकी चित्रकारियां हैं। इमारतके चारों ओर नल हैं जिनके द्वारा गर्मीके दिनोंमें गुलाब-जल या अन्य सुगन्धित पदार्थ तमाशबीनोंपर छिड़के जाते थे। रङ्ग-भूमिके ठीक सामने ही ज्वाला-मुखी पहाड़ है। दृश्य बड़ा ही नयनाभिराम है।

एक बात मकानोंमें और देखनेको मिलती है। मकानोंके गोलाकार सुडौल खम्भे खूब अलंकृत हैं। सभी मकानोंमें बरामदे और गोल खम्भे हैं। मकानोंमें चौक और फूल-पत्तियोंके लिए सङ्गमरमरके गमले भी हैं। प्रायः उस समय धनिकोंके मकानमें बाग जरूर रहता था और बागमें सुन्दर-सुन्दर सङ्गमरमरकी मूर्तियां तथा फव्वारे अवश्य रहते थे। उनके चिह्न अभी भी मौजूद हैं। शायद उस जमानेमें 'गुलाम' रखनेकी प्रथा भी खूब जोरोंसे प्रचलित थी और उनके रहनेके लिए मकानकी तीसरी मञ्जिलपर कमरे

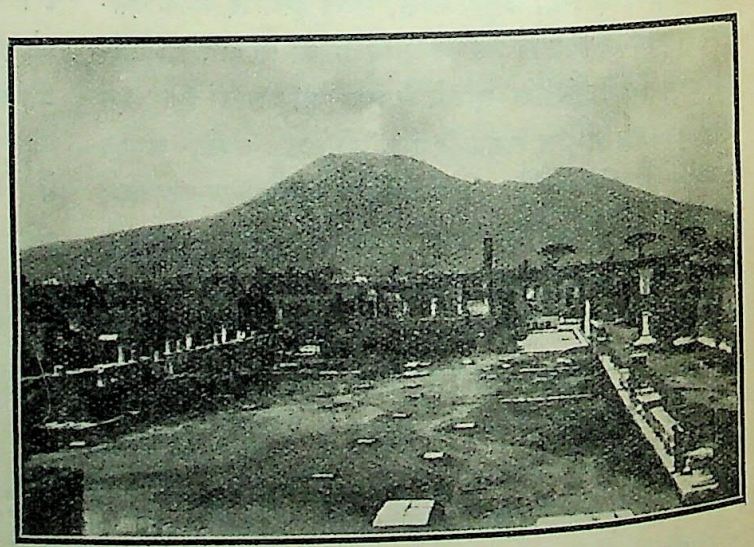

फोरम

होते थे। छोटेसे छोटे मकानमें भी बरामदा, बैठक, भोजगृह, शयनगृह और एक छोटे बागका रहना अनिवार्य था। दीवारें खूब अलंकृत होती थीं। बहुत-से खम्भोंकी चित्रकारियां अभी भी ज्योंकी त्यों हैं। उनमें विशेषता यह है कि खम्भोंके नीचेके हिस्से सुर्ख रङ्गसे खूब अलंकृत हैं। रोमकी कलायें मकानोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नजर आती हैं। हां, मकानोंमें शृङ्गार-घर अवश्य रहता था। उसमें ड्रेसिङ्ग टेबुल, शीशा, कङ्घी, सेण्ट इत्यादि रहते थे।

स्नानालय भी कई हैं। स्नानालयोंमें बेशकीमती पत्थरोंके बड़े-बड़े टब हैं। इनको देखकर मालूम पड़ता है कि उस समय नहानेका काफी प्रचार था और इसे महत्व भी काफी दिया जाता था।

इन्हीं सब चीजोंको देखनेमें काफी देर हो गयी, इसलिए ज्वालामुखी देखने नहीं जा सके, किन्तु पम्पिआईसे उसके भयानक दृश्य साफ नजर आते थे। उसके मुखसे गर्जनके साथ-साथ लाल ज्वाला मिली भाप खूब जोरोंसे निकलती हुई दृष्टिगोचर होती थी। कभी-कभी आगकी लपटें भी दिखलाई पड़ जाती थीं। आज भी यह ज्वालामुखी अविराम-गतिसे आग उगलता रहता है।

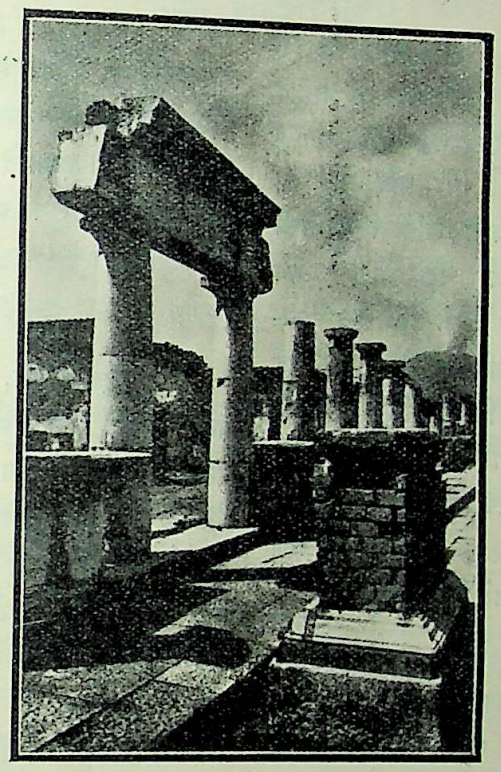

पम्पिआईके राजप्रासादका सिंहद्वार जो खुदाईमें निकला है।

पम्पिआईके आसपास कई होटल भी हैं। इन होटलोंमें पम्पिआईकी तसवीरें और अम्बरकी मालायें आदि चीजें बिकती हैं, किन्तु मोल-तोल बहुत होता है। यदि होशियारीसे काम न लिया जाय तो खूब जटे जायें। झूठ-मूठकी अश्लील तसवीरोंको चुपकेसे बेचकर ये लोग खूब पैसे बनाते हैं। यहां खूब सावधानीसे रहना चाहिए।

सांसारिक ऐश्वर्य एवं वैभवके क्रोड़में पालित एक समृद्धिशाली नगरके महानाशके इस मर्मस्पर्शी दृश्यको देखकर दर्शकोंको सहसा यह विश्वास नहीं होता कि यहां इसी स्थानपर आजसे १८०० वर्ष पूर्व लगभग दो मीलके घिरावमें एक महानगरी बसी हुई थी जिसकी सड़कोंके दोनों तरफ गगनचुम्बी प्रासाद, बड़े-बड़े बाजार, रङ्गबिरङ्गी चीजोंसे सजी हुई दूकानें, आमोद-प्रमोदके स्थल, उद्यान और भव्य समाधि-मन्दिर थे और जिनके स्मृति-चिह्न आज भी ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो वे ज्योंके त्यों अपनी पूर्व दशामें वर्तमान हैं। सब-कुछ देखकर यह विश्वास करना कठित हो जाता है कि यह नगर १७०० वर्षोंसे अधिक तक माता वसुन्धराकी गोदमें छिपा हुआ था।

---

# आश्वासन

रो मत, श्याम घटा उमड़ी, उमड़े, रोना है पाप यहां।
जञ्जीरें मत गढ़े, अश्रु होगा अपना अभिशाप यहां।
सेतु यहां कच्चे धागेका संभल-संभल चलना होगा।
इस घाटीकी चाल यही सांचेमें खुद ढलना होगा॥
उनका नाम रहा जौहरवालोंमें जो हंस आप जले।
हां, शिरपर हैं वही हिमालयपर चढ़ जो चुपचाप गले॥
प्रह्लादोंको जला सके जो जगमें ऐसा ताप नहीं।
अम्बरीषके लिए यहां दुर्वासाका अभिशाप नहीं॥
जो कलियोंपर पले कुलिशकी उनके लिए कहानी है।
नीलकण्ठको नदी, सिन्धु दोनोंका मीठा पानी है॥
बनकर शिखा चढ़े लङ्कापर उनके हित रोना कैसा।
दीवानोंके लिए कहो, जगका जादू-टोना कैसा॥
जो अशेष जीवन देता है उसे मरण-सन्ताप नहीं।
जलकर ज्वाला हुआ उसे लगता ज्वालाका ताप नहीं॥
अल्हड़ वही ठेलकर धाराओंको जो प्रतिकूल चले।
तूफानोंसे लड़े सदा झोंके-झोंकेपर फूल चले॥
यों तो अञ्चल पकड़ धारका सिंधु सभी पा जाते हैं।
स्वर्ग मिलेगा उसे खोजता जो गङ्गाका मूल चले॥
ज्वालामें हंसनेवालोंका छिटका पुण्य-प्रताप यहां।
रो मत, श्याम घटा उमड़ी, उमड़े, रोना है पाप यहां॥

—"दिनकर"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इस रणोन्मादका परिणाम क्या होगा ?

श्री रामनाथ 'सुमन'

## अबसीनिया : पार्श्वचित्र

बारूदके ढेरमें चिनगारी पड़ गयी है। पता नहीं, कब बिस्फोट हो। पर एक बात निश्चित है कि यदि हुआ तो भयङ्कर बिस्फोट होगा, जिसमें यूरोपकी शक्तियां तारोंकी तरह टूट पड़ेंगी। यह समझना व्यर्थ है कि आज इटलीने दक्षिण अफ्रीकामें विषके जो बीज बोये हैं, वे उसी तक फैल-कर और फूल-फलकर रह जायंगे। आज जो हो रहा है, वह एक व्यापक महायुद्धकी भूमिका है, जिसके लिए यूरोपकी शक्तियोंके हाथ खुजला रहे हैं। इस विनाश ताण्डवमें, यदि वह हुआ तो, संसारकी अनेक रणोन्मत्त गोरी जातियां लड़-कर और अपना हौसला निकालकर, एक-दूसरेका खून पीकर, अपने ही स्वप्न और पागलपनमें भू-पतित होंगी।

आज संसारकी आंखें लाल सागरके तटपर फैले हुए उस भूमि-खण्डकी ओर लगी हैं जहां इटलीकी सेनायें, मुसोलिनी-के शब्दोंसे बेहोश, एथियोपियाके साम्राज्यको हड़पनेकी नीयतसे एकत्र हो रही हैं। आज न केवल अदीस अबाबा (एथियोपिया अथवा अबसीनियाकी राजधानी) तथा रोम अस्थिर हैं, वरन् लन्दन, बर्लिन, खार्जम, कैरो एवं टोकियोमें भी भीतर ही भीतर आवेग एवं उद्वेगकी एक प्रबल तूफानी लहर दौड़ रही है। आज प्रश्न इटली-अबसीनिया तक ही सीमित नहीं रह गया है; पूर्व एवं पश्चिमकी अनेक शक्तियां उसमें दिलचस्पी ले रही हैं।

## इसका रहस्य क्या है ?

अबसीनियाके मामलेमें अन्य राष्ट्र जो दिलचस्पी ले रहे हैं, उसका रहस्य समझनेके लिए अबसीनियाके नक्शेकी ओर देखिये। इस रहस्यके बीज उसकी विचित्र भौगोलिक, सैनिक एवं आर्थिक स्थितिमें छिपे हैं।

अबसीनियाके उत्तरमें इटलीका अधिकृत प्रदेश इरीट्रिया एवं ब्रिटेनके अधिकृत एंग्लो-ईजिप्शियन सूडानका कुछ भाग है। पश्चिममें भी सूडान है। दक्षिणमें उगण्डा, केनिया और इटालियन सोमालीलैण्डके कुछ भाग हैं तथा पूर्वमें फ्रेञ्च सोमालीलैण्ड, ब्रिटिश सोमालीलैण्ड एवं इटालियन सोमाली-लैण्ड हैं। ब्रिटिश सोमालीलैण्डके साथ ही स्वेजकी नहर, अदनकी खाड़ी इत्यादि हैं। जरा उत्तरमें अरब है। इटालियन सोमालीलैण्डसे लगा हुआ हिन्द-महासागर है। इस प्रकार अनेक शक्तियों एवं राष्ट्रोंका सम्बन्ध इस प्राचीन देशसे है।

## इटलीकी आवश्यकतायें

महायुद्धके बादसे, और विशेषतः मुसोलिनीके शासन-कालमें इटली बड़ी तीव्र गतिसे ऊपर उठा है। यह छोटा-सा देश, जो फ्रान्ससे दबा था एवं आस्ट्रिया-हङ्गरीके कारण शिथिल था, महायुद्धके बाद अनेक राष्ट्रोंके टुकड़े करनेकी नीतिके कारण, मौका देखकर उठा और ऊपर सिर उठाया। और आज तो मुसोलिनीकी जादूगरी एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्वके कारण उसका नाम संसारकी छः महान् शक्तियोंमें लिया जाता है।

विगत १० वर्षोंमें, जनसंख्या बढ़ानेके आन्दोलनके कारण इटलीकी आबादी बहुत बढ़ गयी है और उसका औद्योगिक विकास भी बड़ी तीव्र गतिसे हो रहा है। इस लिए इटलीके सामने, जापानकी भांति, दो मुख्य प्रश्न खड़े हो गये हैं। एक तो उसे अपनी तेजीसे बढ़ती हुई जन-संख्या-के लिए उपनिवेश चाहिए; दूसरे उसकी कच्चे मालकी आवश्यकताकी पूर्ति करनेका साधन चाहिए। फिर उसके उद्योग-धन्धोंकी वृद्धिके लिए उसे अच्छे बाजारोंकी भी आव-श्यकता है। यह केवल उसकी शानका ही प्रश्न नहीं है, वरन् अनिवार्य आवश्यकताओंका प्रश्न है।

१९२६ में मुसोलिनीने गरजकर कहा था—"हमें जमीन-की भूख है; क्योंकि हम जोरोंसे बढ़ रहे हैं और बढ़ना चाहते हैं।"*

---

* "We are hungry for land, because we are prolific and intend to remain so."
—A short History of International Affairs, Page 149.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१९२२ से मुसोलिनी बराबर इटलीकी इस समस्याको हल करनेके फेरमें है। इसके लिए उसने आस्ट्रियापर अपना प्रभाव जमानेकी कोशिश की और उसमें थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त की। उसके बाद उसने लघु 'आतांत'के राष्ट्रोंको अपने गुटमें मिलाने एवं उनपर आर्थिक प्रभाव-क्षेत्र स्थापित करनेकी चेष्टा की; परन्तु इन सब राष्ट्रोंमें बराबर उसकी नीति असफल हुई।

१९२० की सेव्रास सन्धिके अनुसार इटलीको एशिया-माइनरमें अपना प्रभुत्व-क्षेत्र स्थापित करनेकी सुविधायें दी गयी थीं, परन्तु सौभाग्यसे तुर्कीमें कमाल पाशाके अभ्युत्थानने इटलीकी प्रगति उधर रोक दी।

इन सब कारणोंसे इटली, अपनी निराशा और आवश्यकताके दबावके कारण, अत्यन्त उग्र हो उठा है। दक्षिण अफ्रीकामें इटलीके पास इरीट्रिया और सोमालीलैण्डके जो भूमि-खण्ड हैं वे बञ्जर एवं अत्यन्त अनुत्पादक हैं। उसके लिए उनका होना-न-होना लगभग एक-सा है। इन दोनों भूमि-खण्डोंके बीच एथियोपिया वा अबसीनिया नामका एक उपजाऊ एवं खनिज तथा प्राकृतिक सम्पदासे परिपूर्ण विस्तृत प्रदेश है। यदि यह प्रदेश इटली पा जाय तो न केवल उसकी उपर्युक्त समस्यायें हल हो जायं, वरन् उसकी सैनिक स्थिति भी अत्यन्त दृढ़ हो जाय और भूमध्यसागरमें ही नहीं, वरन् दक्षिण अफ्रीका एवं एशियामें भी साम्राज्य स्थापित करनेके उसके स्वप्नोंमें कुछ सचाईका रङ्ग आने लगे।

इसलिए इटली विगत ५० वर्षोंसे एथियोपियापर नजर लगाये हुए है। १८९६ ई० में तो जेनरल बराटीरीके सेनापतित्वमें इटलीकी १४००० सेनाने एथियोपियापर आक्रमण भी कर दिया था। एडोवामें भयानक युद्ध हुआ और हबशियोंने इटालियनोंको मारकर भगा दिया। इस युद्धमें इटली बुरी तरह हारा और उसके केवल ४००० सैनिक जीते बचे।

मुसोलिनीके अभ्युदयके साथ-साथ इटलीकी महत्त्वाकांक्षा और सैनिक-शक्ति बराबर बढ़ती गयी और आज वह अपनी भुजाओंकी ओर देखकर वही कर लेना चाहता है जो १८९६ में उसके लिए असम्भव था। कलका विजित आज विजेता बननेको उत्सुक है। तो क्या आज उसका स्वप्न पूरा होगा ?

## विदेशी स्वार्थोंका जाल

इटली-अबसीनिया-सङ्घर्षसे केवल इन दो राष्ट्रोंका ही सम्बन्ध नहीं हैं बल्कि ब्रिटेन, जापान और फ्रान्सके स्वार्थ भी इस प्रश्नसे बहुत अधिक गुंथे हुए हैं। यदि इटली एथिकोपियापर अधिकार कर ले तो इन तीनों राष्ट्रोंकी हानि है और उनके सामने हमेशाके लिए एक खतरा हो जायगा।

## फ्रान्स

फ्रान्सका कुछ कम स्वार्थ अबसीनियामें नहीं है। अबसीनियाके अधीन कोई समुद्र-तट न होने और उसके कारण उसके पास अपना कोई बन्दरगाह न होनेसे उसका सम्पूर्ण वैदेशिक व्यापार फ्रान्सके जीबूती बन्दरसे होता है। इस बन्दरगाहसे अबसीनियाकी वर्तमान राजधानी अदीस अबाबाका सीधा सम्बन्ध है। दोनों स्थानोंको एक रेलवे लाइन मिलाती है। अबसीनियामें यही एक रेलवे लाइन है जो ७८० मील लम्बी है। इस रेलवे लाइनमें फ्रान्सकी पूंजी लगी है और इसका प्रबन्ध भी फ्रान्सके ही हाथमें है। देशके सम्पूर्ण आयात-व्यापारका ९ प्रतिशत भाग फ्रान्स और उसके उपनिवेशोंसे आता है।

तब इस मामलेमें उसने उदासीन भाव क्यों ग्रहण कर रखा है ?

१९१८ से लेकर १९३४ के आरम्भ तक फ्रान्स और इटलीमें कोई घनिष्ट मैत्री न थी। १९२८ तक तो दोनों एक-दूसरेको विरोधी एवं शत्रु समझते थे। फ्रान्सकी वारसाई नीतिका इटली सदासे विरोधी रहा है, क्योंकि इसमें उसके स्वार्थोंको हानि पहुंचती थी। किन्तु विगत दो वर्षोंमें यूरोपकी राजनीतिमें जो महान् परिवर्तन हुए हैं उनके कारण आज परिस्थिति बदल गयी है। जबसे जर्मनीके सार्वजनिक जीवनमें हिटलरका अभ्युत्थान हुआ है, फ्रान्स उसकी ओरसे शङ्कित एवं भीत है। इसलिए वह जर्मनीके चारों ओर फैले राष्ट्रों, विशेषतः यूरोपके शक्तिमान राष्ट्रोंको मिलाकर रखना चाहता है। इसी नीतिके आधारपर उसने इटली और रूस तकसे मैत्री एवं घनिष्टता बढ़ा ली है। तबसे फ्रान्स और इटली मिल गये। इटलीने इस शर्तपर यूरोपीय राजनीतिमें फ्रान्सका समर्थन करना स्वीकार किया कि फ्रान्स अफ्रीका—अबसीनिया—में इटलीके कार्यक्रममें न बोलेगा। इसलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परिस्थिति ही कुछ ऐसी है कि सब-कुछ देखते-सुनते भी फ्रान्सने चुप रहना ही अच्छा समझा।

### जापान

फ्रान्सकी अपेक्षा भी जापानका आर्थिक स्वार्थ अबसीनियामें कहीं ज्यादा है। जब कि अबसीनियाके कुल आयातका केवल ९ प्रतिशत फ्रान्ससे आता है तब जापानसे आनेवाली चीजोंका औसत १२ प्रतिशतसे कम नहीं है। जापानने अबसीनियाके बाजारसे यूरोपीय राष्ट्रोंको बाहर निकाल फेंका है। जापानकी प्रतियोगितामें अमेरिका, फ्रान्स और इटली ठहर नहीं सकते हैं।

इसके अतिरिक्त अबसीनियामें जापानकी दिलचस्पीका एक इतिहास है। कुछ वर्ष पहले अबसीनियाके सम्राट्का एक भतीजा जापानकी सैरको गया था। लौटनेपर उसने पूर्वके इस महान् और शक्तिमान औद्योगिक राष्ट्रकी बड़ी प्रशंसा की और जापानी कुमारियोंके सौन्दर्यकी भी तारीफ की। जापानी कुमारियोंके प्रति उसका यह आकर्षण देखकर टोकियोके एक वकीलको राजकुमार दीज अरायाके लिए एक सुन्दर जापानी बहू खोजनेको लिखा गया। कई सौ कुमारियोंके फोटो अदीस अबाबा भेजे गये। हबशी राजकुमारने जापान-सम्राट्के दरबारके एक बड़े अधिकारी वायकौण्ट कुरादेकी पुत्री मसाको कुरादेको पाणि-ग्रहणके लिए चुना और विवाहकी तैयारी होने लगी।

जब यूरोपीय राष्ट्रोंको इस प्रस्तावित विवाह-सम्बन्धकी खबर लगी तो वे चिन्तित हुए। और जब उनको मालूम हुआ कि एथियोपियाके सम्राट् हेल सिलासी रास तफारीने जापानको अबसीनियामें कपासकी खेतीके लिए सोलह लाख एकड़ भूमि प्रदान की है और जापानियोंको इस देशमें भेजने और बसानेके लिए जापानमें एक संस्था खुल गयी है तब तो उनकी बेचैनी बहुत बढ़ गयी। उन्होंने देखा कि हजारों मील दूरसे आकर पूर्वका यह देश हमको अबसीनियासे निकाल बाहर करना चाहता है। इटलीने तो देखा कि यदि जापानका प्रभाव इस तरह बढ़ने दिया गया तो असम्भव नहीं कि वह आगे चलकर इटालियन सोमालीलैण्डसे भी उसे निकाल बाहर करे। ब्रिटेनका अफ्रीकामें इटलीसे भी अधिक स्वार्थ था, इसलिए उसने भी इस व्यवस्थापर नाक-भौं सिकोड़ना शुरू किया। इटलीने तो बड़े जोरोंके साथ इसका विरोध किया। अन्तमें विवश होकर सम्राट् रास तफारीने इस विवाहके सम्बन्धमें अपनी स्वीकृति नहीं दी। फलतः राजकुमार अपनी प्रिय प्रस्तावित वधूको न ला सका, परन्तु तबसे जापान इन विरोधी यूरोपीय राष्ट्रोंकी ओर क्रुद्ध दृष्टिसे देखता रहा है। वे उसके व्यापारमें प्रतिद्वन्द्वी हैं; राजनीतिमें प्रतिद्वन्द्वी हैं। अबसीनियामें उसको काफी सुविधायें मिली हुई हैं। फिर अफ्रीकाकी काली जातियोंमें गर्वीली गोरी जातियोंके प्रति तीव्र घृणाके भाव हैं और एक पूर्वीय राष्ट्र होनेके कारण जापानके प्रति उनकी सहानुभूति है। मतलब यह कि जापानके अबसीनियामें पर्याप्त स्वार्थ हैं और वह इटलीके दम्भ एवं अभिमानको बिलकुल शान्त होकर नहीं देख सकता।

### कोकूरायु काई

इसीलिए आज जापान धड़ल्लेसे अबसीनियाके अस्त्र-शस्त्रोंके आर्डरकी पूर्ति कर रहा है। और इसीलिए हम देखते हैं कि वहांकी जनता और वहांकी अत्यन्त शक्तिमान संस्था ब्लैक ड्रैगन सोसायटी इस मामलेमें काफी दिलचस्पी ले रही है और इटलीकी ओर रोषपूर्वक देखती है। ब्लैक ड्रैगन सोसायटीने तो इटली-सरकारको इस आशयका तार भी दिया था कि हाथ खींच लो, वर्ना अच्छा न होगा। अनेक पाठकोंने इसे एक मामूली बात समझी होगी और इसे भी अनेक अखिल भारतीय संस्थाओंके विरोध-प्रदर्शन-सा समझा होगा। परन्तु बात वैसी नहीं है। इस संस्थाकी शक्ति किसी सम्पूर्ण राष्ट्रकी शक्तिसे कम नहीं है। उसके विरोध-प्रदर्शनका महत्त्व समझनेके लिए उपर्युक्त संस्थाका थोड़ा-सा इतिहास जानना आवश्यक है। बहुत कम पाठकोंको उसका ज्ञान होगा, इसलिए यहां हम थोड़ेमें इसकी चर्चा कर देना आवश्यक समझते हैं।

ब्लैक ड्रैगन सोसायटीका जापानी नाम कोकूरायु काई है। लगभग ७५ वर्ष पूर्व इसका इतिहास आरम्भ होता है। १८७१ ई० में जब जापानके विख्यात प्रधान मन्त्री काउण्ट ओक्यूमाने जापानमें पहली रेलवे लाइन बनानेके लिए इंगलैण्डसे धन उधार लिया तब ब्लैक ड्रैगनोंके नेता तोयामाने उनको देशद्रोही कहकर पुकारा और तोयामाकी आज्ञासे ओक्यूमापर बम भी चलाया गया, पर वह बच गये। इस बम-दुर्घटनाके पूर्व ओक्यूमाने ढाई लाख येन घूसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तौरपर तोयामाको देना चाहा कि वह सदाके लिए जापान छोड़कर चले जायं।

तोयामाने कहा—"मैं रुपया ले लूंगा, पर देशके बाहर नहीं जाऊंगा।"

इसके बाद ही बम-दुर्घटना हुई। इसमें ओक्यूमा घायल हुए; एक पांव नष्ट हो गया; पर बच गये। बम फेकनेवालेने घटनास्थलपर ही आत्महत्या कर ली। तोयामाके विरुद्ध कोई स्पष्ट प्रमाण न था, इसलिए कुछ हो न सका। ओसाकामें उनकी गिरफ्तारी तो हुई, पर अपनी गिरफ्तारीपर पुलिसको देखकर उन्होंने व्यङ्गपूर्वक अट्टहास्य किया। सारे देशमें उनकी रिहाईके लिए प्रबल आन्दोलन खड़ा हो गया; सरकारको धमकियां दी जाने लगीं। अन्तमें न्याय-विभागको सामूहिक आन्दोलनके सामने झुक जाना पड़ा। तबसे देवताकी भांति राष्ट्र तोयामाकी पूजा करता रहा है।

इस संस्थाकी प्रसिद्धि १८९४ में हुई जब इस संस्था और उसके नेता तोयामाने जापानकी सरकारके सामने दो सार्वजनिक मांगें पेश कीं। पहली मांग यह थी कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत्में विदेशियोंने जापानकी जो हीन मर्यादा रख छोड़ी है, उसका अन्त कर दिया जाय। इस लघुताकी बोधक सब सन्धियां तोड़ दी जायं। दूसरी मांग यह थी—इसके पहले कि रूस चीनपर अपना प्रभाव जमा ले, जापानको चीनसे युद्ध करके कोरिया और मञ्चूरिया ले लेने चाहिएं। इस दूसरी मांगपर जोर देनेके लिए ही इस संस्थाने अपना वर्तमान नाम 'कोकूरायु काई' (ब्लैक ड्रैगन) रखा जो साइबेरिया एवं मञ्चूरियाके बीच बहनेवाली अमूर नदीका चीनी नाम है।

इतिहासके पाठक जानते हैं कि दोनों मांगें पूरी हुईं।

जापानमें इस संस्थाकी शक्ति अपरिमित है। इसके सदस्योंकी संख्या लाखोंमें है और इस संस्थाके साथ जिम्मू सभा (प्रथम जापानी सम्राट्के नामपर स्थापित), नेशनल फाउण्डेशन सोसायटी, 'जेनयोशा' (उत्साही संसार सभा), भूतपूर्व अधिकारी सङ्घ इत्यादि काम करते हैं। इस संस्थाके सदस्य मन्त्रिमण्डल, सेना-विभाग तथा बड़े-बड़े व्यापारियोंमें व्यापक रूपसे फैले हुए हैं। इन संस्थाओंकी सदस्य-संख्या करोड़-सवा-करोड़से कम नहीं है। इन संस्थाओंके अनेक नेताओंका विश्वास है कि पेशेवर राजनीतिज्ञोंसे राष्ट्रकी रक्षा करनेका उपाय केवल फैसिज्म ही है। इनके एक नेताने एक बार कहा था—"None can tell what the result of our actions will be, once our blood is stirred." अर्थात् "जब हमारा खून खौल उठे तब कोई नहीं कह सकता कि उसका परिणाम क्या होगा।" आज इटली और मुसोलिनीके ऊपर उनका खून खौल उठा है।

यह ब्लैक ड्रैगन सोसायटी ही थी जिसने जापानको रूससे लड़नेको बाध्य किया। इस रूस-जापान-युद्धके आरम्भके मनोरञ्जक इतिहाससे इस महान् संस्थाकी शक्तिका पता चलता है।

आयोकी वैदेशिक सचिवके पदसे अलग हुए ही थे और ईटोने इस पदका भार ग्रहण किया ही था। एक दिनकी बात है कि तोयामाने अपने किसी अनुयायीको किसी कार्य-विशेषसे बाहर जाते देखा। अनुयायीकी आंखोंमें हत्याका भाव झलक रहा था। तोयामाने देखा और उससे पूछा—"क्या तुम हत्या करने जा रहे हो?" उसने कहा—"जी, हां।"

तोयामाने आदेश किया—"किन्तु वैदेशिक सचिव ईटोकी हत्या मत करना।"

चूंकि वह ईटोकी ही हत्या करने जा रहा था, इसलिए बहुत निराश हुआ। संस्थाके अधिकांश सदस्य ईटोको खत्म कर देनेके पक्षमें थे, क्योंकि वह जापानके रूसपर धावा बोलनेमें बाधा-रूप था। तोयामाने लोगोंको शान्त किया और कहा—'एक बार मुझे और प्रयत्न करके देख लेने दो।'

तोयामाने राजकीय धारा-सभाके अध्यक्ष कोनो तथा तीन अन्य मित्रोंको साथ लिया और वैदेशिक सचिवके मकानपर गये। इसके पहले भी तोयामाने ईटोसे मिलनेके प्रयत्न किये थे, परन्तु घरपर न होनेका बहाना करके ईटोने टाल दिया था। आज ईटो अपने पहलेके वैदेशिक सचिवको बिदा करने बाहर निकल आये थे कि ये लोग पहुंच गये। तोयामाने कहा—"अब आप यह नहीं कहला सकते कि घरपर नहीं हैं।"

भू० पू० वैदेशिक सचिव आयोकीने पूछा कि 'क्या आप लोग ईटोकी हत्या करने आये हैं?' तोयामाने कहा—'हम लोग साफ-साफ बात करनेके लिए आये हैं।' इसके बाद सब लोग अन्दर बैठे और बातचीत शुरू हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तोयामाने ईटोसे पूछा—"जापानमें सबसे महान् व्यक्ति कौन है ?"

ईटोने कहा—"श्रीमान् सम्राट्।" सबने सर झुकाकर नमस्कार किया।

तोयामाने फिर पूछा—"श्रीमान् सम्राट्के बाद दूसरा सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति कौन है ?"

ईटो कुछ उत्तर न दे सके। तब तोयामाने कहा—"आप उस सम्मानको प्राप्त करना चाहते हैं या कुत्तेकी मौत मरना चाहते हैं ?"

ईटो समझ गये कि तोयामाका क्या मतलब है और इस धमकीके पीछे कितना बल है, इसलिए उन्होंने सिर झुकाकर तोयामाकी बात स्वीकार की और कहा कि 'मैं मन्त्रिमण्डल-से रूसके साथ युद्ध-घोषणा करनेका अनुरोध करूंगा।' तोयामाने कहा—"अब जापान एक हो गया और हम लोग विजयी होंगे।" रूस-जापान-युद्ध हुआ और उसमें जापान विजयी हुआ; तोयामाकी भविष्यद्वाणी सच्ची सिद्ध हुई।

एडमिरल टोगो, जिनकी अभी थोड़े दिन पूर्व मृत्यु हुई है और जिन्होंने अपनी आश्चर्यजनक वीरता और सेना-सञ्चा-लनसे रूस जापान-युद्धमें विजय प्राप्त की, इन्हीं तोयामाके शिष्य और अनुयायी थे तथा वर्तमान वैदेशिक सचिव हिरोता भी उनके शिष्य हैं, और बचपनसे ही ब्लैक ड्रैगन सोसायटीके सदस्य हैं। हिरोताको तो तोयामा 'अपना बच्चा' कहते हैं। तोयामा, सम्राटके बाद, जापानी राष्ट्रके सबसे अधिक श्रद्धास्पद नेता हैं। इस सन्त राजनीतिज्ञकी लोग पूजा करते हैं। जापानी जनताके हृदयपर उनका शासन है। वे कभी यश वा निन्दाकी परवाह नहीं करते और बहुत ही सादा एवं गरीबीका जीवन व्यतीत करते हैं। यह तोयामा ही थे, जिन्होंने डा० सनयातसेनको शरण देकर चीनमें क्रान्तिके उनके स्वप्नको सत्य कर दिया था। यद्यपि उनका इतना प्रभाव है और कई बार लोगोंने उनको मन्त्रिमण्डलमें लेना चाहा, परन्तु वह सदा पदोंके प्रलोभनसे अलग रहे। तोयामाकी आध्यात्मिक शक्तिके बारेमें भी कई कथायें प्रसिद्ध हैं। एक बारकी बात है कि तोयामा पिछड़ी हुई जातियोंके किसी प्रदेशमें यात्रा कर रहे थे। एक डाकू-सर-दारने गरीबोंको लूट लिया था। तोयामाको मालूम हुआ तो वह उसके घर गये। वह बैठा हुआ था। इन्होंने उसकी ओर देखा और तब तक देखते रहे जब तक कि उसने इनके चरणोंमें सिर नहीं झुका दिया। डाकू-सरदारने क्षमा मांगी और लूटका सारा माल उनको दे दिया कि वह उसे उन गरीबों तक पहुंचा दें। इसके अतिरिक्त उसने प्रतिज्ञा की कि आजसे दुर्बलों एवं दीनोंपर कभी डाका न डालूंगा। तोयामाके कितने ही शिष्य सेनाके उच्च अधिकारी एवं मन्त्रिमण्डलके सदस्य हैं और आज ८९ वर्षकी अवस्थामें भी वह जापानकी गुप्त तथा वैदेशिक नीतिको अपने विश्वास और इच्छाके अनुकूल सञ्चालन करते हैं। तोयामा और ब्लैक ड्रैगन दलके दबावसे ही जापान राष्ट्रसङ्घसे अलग हुआ और जापानके प्रत्येक निश्चयपर इस संस्था तथा उसके सञ्चालककी छाप है।

ऐसी शक्तिमान संस्थाने इटलीके अभियानके विरुद्ध तीव्र असन्तोष और विरोध प्रकट किया है। इसलिए युद्धकी अवस्थामें जापान चुप न बैठा रहेगा; वह कहां तक इस सङ्घर्षमें अबसीनियाके पक्षमें खड़ा होगा, यह कहना कठिन है; पर यह ध्यान रखना चाहिए कि इटलीसे जापान बहुत नाराज है, क्योंकि इटली बराबर चीनकी अस्त्र-शस्त्र एवं वायुयानोंसे सहायता करता रहा है। चीन और अबसीनिया दोनोंमें जापान इटलीका प्रतिद्वन्द्वी है।

## ब्रिटेन

और इन सबसे अधिक स्वार्थ तो अबसीनियामें ब्रिटेनका है। इस देशके चारों ओर, आसपास, ब्रिटेनका प्रभुत्व बिखरा हुआ है। दक्षिणमें केनिया है जिसमें भारतीयोंकी बहुत बड़ी संख्या है। पश्चिमोत्तरमें एंग्लो-ईजिप्शियन सूडान है। पूर्वमें ब्रिटिश सोमालीलैण्ड है। अबसीनियामें होनेवाले परिवर्तनोंका प्रभाव सूडानपर भी पड़ेगा। फिर सबसे बड़ी बात जो याद रखनेकी है, यह है कि ब्रिटिश नीतिकी धुरी भारतवर्ष ही है और भारतपर आधिपत्यका मतलब लाल-सागर और स्वेज नहरपर पूर्णतः आधिपत्य रखना है। इन दोनोंपर आधिपत्य रखनेके लिए मिश्र—अथवा दूसरे शब्दोंमें नील-नद—पर कब्जा रखनेकी आवश्यकता है। इसके लिए ही सूडानको ब्रिटेनने अपने अधिकारमें रख छोड़ा है और अबसीनियाके प्रति निष्पक्षता दिखलानेका प्रयत्न करता है; क्योंकि अबसीनियाके उत्तरी पार्वत्य प्रदेशसे ही नील नदीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जन्म होता है। त्सना झीलसे निकलनेवाली इस नदीके प्रवाहकी दिशामें जरा भी उलट-फेर करनेके प्रयत्नसे लन्दन अस्थिर हो जाता है।

यहां यह बात भी ध्यान रखनेकी है कि व्यापारिक दृष्टिसे इन सब देशोंकी अपेक्षा भारतके स्वार्थका प्रश्न सबसे मुख्य है। अबसीनियाके सम्पूर्ण आयातका ५७ प्रतिशत भारतवर्षसे आता है, परन्तु परतन्त्र देश होनेके कारण उसका आर्थिक स्वार्थ, ब्रिटिश साम्राज्यके एक अङ्गके रूपमें, ब्रिटेन-का ही एक भाग है।

यह बात भी स्मरणीय है कि सूडानमें पैदा होनेवाली जगत्प्रसिद्ध कपासकी उपज अबसीनियाकी त्सना झीलसे आनेवाली नील नदीके प्रवाहमें आयी उपजाऊ मिट्टीपर ही निर्भर है। इसलिए यदि अबसीनिया इटलीके हाथमें चला जाय तो सूडानका सारा महत्त्व नष्ट हो जायगा। फिर इससे मिश्रमें इटलीका प्रभाव बहुत बढ़ जायगा। यही नहीं, वरन् ऐसा होनेसे लालसागर तथा स्वेज नहरके मार्गपर आज ब्रिटेनका जो प्रभुत्व है उसे जबर्दस्त धक्का लगेगा। ब्रिटिश समुद्र-मार्गकी महत्ता नष्ट हो जायगी। फिर इटली यहीं तक न रह जायगा, वरन् वह इस पूर्वीय अफ्रीकाके राष्ट्रसे भूमध्यसागरके अपने उपनिवेशोंको जोड़नेकी चेष्टा करेगा और असम्भव नहीं कि सूडानपर भी कब्जा जमानेकी कोशिश करे। इस प्रकार ब्रिटेनका 'केप कैरो वेल्ट' ही टूट जायगा और ब्रिटिश साम्राज्यके लिए बड़ा घातक होगा।

फिर ब्रिटेनके सम्बन्धमें पिछले कुछ दिनोंसे इटलीके लोक-प्रिय पत्रोंमें जो विष उगला जा रहा है और उसपर जो व्यङ्ग-प्रहार किये जा रहे हैं, उससे भी ब्रिटिश जनता क्षुब्ध है। ब्रिटेन इटलीकी गतिसे बड़ा ही शङ्कित एवं सतर्क है। पर राष्ट्रसङ्घको बनाये रखनेके लिए, तथा एक पिछड़े हुए राष्ट्रके लिए, जहां तक हो सके ब्रिटेन इटलीसे झगड़ा न हो, ऐसा ही प्रयत्न करना चाहता है और कर रहा है। अपना 'वैलेन्स आव पावर'—शक्ति-सन्तुलन—बनाये रखनेके लिए वह यूरोपमें युद्ध खड़ा करना नहीं चाहता। इसीलिए बड़े धैर्यसे वह राष्ट्रसङ्घकी बैठकमें समझौतेकी नीतिपर जोर देता और उसीसे काम लेता रहा है।

उपर्युक्त विवरण और विवेचनसे इतना तो मालूम हो गया कि अबसीनियाके मामलेमें अनेक राष्ट्रोंके स्वार्थ सम्मिलित हैं और ब्रिटेन, फ्रान्स तथा जापानका तो उससे प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। ऐसी अवस्थामें आज या कल जब इटली-अबसीनियामें युद्ध होगा तब उसका प्रभाव एवं क्षेत्र, इन्हीं देशों तक सीमित न रहेगा। जिस बारूदमें इटली चिन-गारियां फेंक रहा है, वह भड़की तो मामूली विस्फोट न होगा और भड़की तो ऐसी भड़केगी कि असम्भव नहीं यूरोपके अनेक राष्ट्रोंको जलाकर खाक कर दे।

## इटली और अबसीनिया : सुविधायें-असुविधायें

इटलीके अब तक अफ्रीकामें लगभग डेढ़ लाख सैनिक पहुंच चुके हैं। इसके अतिरिक्त सैकड़ों वायुयान भी भेजे गये हैं। इरीट्रिया और इटालियन सोमालीलैण्डमें सड़कें बनायी जा रही हैं; रास्ते चौड़े किये जा रहे हैं। कठोर अनुशासनमें सारा काम हो रहा है। गड्ढोंको पाटा जा रहा है। प्रत्येक इटालियन जहाज सैनिक सामग्री एवं आवश्यक वस्त्र एवं खाद्यद्रव्य ला रहा है। युद्धकी तैयारी जोरोंसे हो रही है। इस युद्धकी तैयारीसे इटलीपर इतना बोझ पड़ रहा है कि इटलीकी आर्थिक अवस्था बड़ी खराब हो रही है। इटालियन बैङ्कोंसे लोग जमा रुपये निकाल रहे हैं और इटलीके संरक्षित कोष एवं चालू सिक्कोंमें ४० एवं १०० का अनुपात रह गया है। इटलीके पास अच्छे वायुयान हैं; आधुनिक युद्ध-सामग्री है एवं सुशिक्षित सैनिक हैं। ३ लाख तक सैनिक इटली अफ्रीका भेज सकता है।

दूसरी ओर अबसीनिया है, जो पुराने रीति-रिवाजों एवं परम्पराओंका देश है। जबसे सम्राट् रास तफारीके हाथमें शासन आया तबसे वह यूरोपीय सलाहकारोंका यथोचित उपयोग करते रहे हैं। एक अमेरिकन अर्थ-विभागके मन्त्री हैं। एक अंगरेज गृह-सचिवके सलाहकार हैं। वैदेशिक विभाग एक स्वीडनवासीके हाथमें है। पब्लिक वर्क्स विभागकी देखरेख एक फ्रान्सीसी करते हैं। वायुयान-विभागके प्रधान स्वीडनके प्रसिद्ध विशेषज्ञ मेजर जेनरल एरिक वर्जिन हैं। बेलजियन अफसर सेनाका सञ्चालन करते हैं। अनेक भूतपूर्व अंगरेज सैनिक अधिकारी अब-सीनियाकी सेनामें शरीक हो रहे हैं। अनेक यूरोपियनोंने अपनी सेवायें उसके सामने रखी हैं। आवश्यकता पड़नेपर अबसीनिया दस लाख तक सैनिक एकत्र कर सकता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



परन्तु आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों एवं युद्ध-सामग्रीका उसके पास अत्यन्त अभाव है और सैनिक भी उतने शिक्षित नहीं हैं।

किन्तु अबसीनियाको सबसे बड़ी सहायता अपनी प्राकृतिक स्थितिसे प्राप्त होगी। इटलीको, सड़कोंके अभावके कारण, ऊंची-नीची पहाड़ियोंको पार करनेमें बड़ी कठिनाई पड़ेगी। पानी एवं खाद्यद्रव्यके अभावके कारण उसकी सेनाओंकी बड़ी हानि हो सकती है। फिर रास्तेमें ऐसी जङ्गली जातियोंका सामना करना पड़ेगा जो बड़ी वीर एवं युद्धप्रिय हैं। इनमें बड़े अच्छे योद्धा मिलेंगे और उनकी वीरता धार्मिक कट्टरताकी तरह जबर्दस्त एवं निर्भय है। भयको तो ये जानती नहीं और मृत्युका उनको जरा भी डर नहीं। फिर अपने ही देशमें, साधारण वन्य खाद्योंको खाकर वे जिस तरह निर्वाह कर सकती हैं, इटलीकी सेना नहीं कर सकती। गोरीला-युद्धमें उनका सामना करना कठिन होगा। खोहों, पहाड़ियों और झुरमुटोंका वे सर्वोत्तम उपयोग कर सकेंगी। वायु-सेनाका भी इस देशमें कोई विशेष असर नहीं हो सकता, क्योंकि बम-वर्षाका भय तो बड़े-बड़े नगरोंको ही हो सकता है और इस देशमें तो बम-वर्षाके लायक कुछ है नहीं। यदि दक्षिण—इटालियन सोमालीलैण्ड—से इटलीकी सेना आगे बढ़ेगी, जैसी कि सम्भावना है, तो कोई बन्दरगाह न होनेके कारण स्वदेशसे उसका सीधा सम्पर्क न रह सकेगा। यह अवश्य है कि थोड़ा ही आगे बढ़नेपर इटलीका एक सुन्दर प्रदेश ( हरार प्लेटो ) पर अधिकार हो सकता है और उसके कारण हरारकी उपजाऊ घाटीका लाभ उसे मिल सकता है, और जीबूतीसे अदीस अबाबा जानेवाली फ्रेञ्च रेल लाइन भी निकट पड़ती है, परन्तु इस रेल लाइनका उपयोग वह न कर सकेगा, क्योंकि फ्रान्स और अबसीनियाके बीच जो समझौता है उसके अनुसार यदि फ्रान्सने इटलीको उसका उपयोग करने दिया तो लाइनपर अबसीनियाका अधिकार हो जायगा। फिर अबसीनिया नदियोंमें बांध बंधवाकर पानी रुकवा रहा है कि इटलीकी सेनाके इधर पग रखनेपर बांध तोड़कर दूर तकके प्रदेशको जलमग्न किया और उसको पार करना असम्भव किया जा सके। यदि उत्तरसे इटलीने आक्रमण किया तो घाटियों और दर्रोंमें फंसाकर अबसीनियाकी सेना उसकी दुर्गति कर देगी। मतलब यह कि जिस रास्तेसे भी इटली आक्रमण करे, उसकी विजय सरल न होगी। यह याद रखना चाहिए कि अनुभवी फ्रेञ्च सेनाको मोरक्को विजय करनेमें १९ वर्ष लग गये थे। रिफ लोगोंकी अपेक्षा अबसीनिया-निवासियोंसे निबटना और कठिन है और यदि युद्ध हुआ तो जल्द समाप्त न होगा और इतनी लम्बी अवधि तक उसका भार संभालना इटलीके लिए बड़ा कठिन होगा।

अबसीनियाकी एक ही असुविधा है। क्या गारण्टी कि सब जातियां सम्राट्के प्रति राजभक्त रह पायेंगी? सम्राट् रास तफारीने मूल राजवंशके हाथसे, बड़ी चालाकीके साथ राज्य अपने हाथमें ले लिया था। जब बाल सम्राट् लेज यासूको उतारकर सम्राज्ञी जादीतू गद्दीपर बैठीं तब वह उनके अभिभावक थे। बादमें उन्होंने सम्राज्ञीके हाथसे भी राज्य ले लिया। लेज यासू अभी तक बन्दी अवस्थामें जीवित है। फिर इरीट्रियाके पासके रिगरी प्रदेशका-शासन रास सियमके हाथमें है जो उसी प्रदेशके सम्राट् जानके वंशजोंमें हैं। सम्राट्से उनका सम्बन्ध बहुत अच्छा नहीं है। इसलिए प्रश्न उठता है कि क्या विदेशी आक्रमणकारीके विरुद्ध सब जातियां एक होकर खड़ी होंगी?

पर यह प्रश्न इटलीकी बेवकूफीसे हल हो गया है। उसने श्वेताङ्ग जातियोंकी श्रेष्ठताका सवाल उठाकर सब काली जातियोंको एक कर दिया है।

इन सब समस्याओंके बीच राष्ट्रसङ्घमें समझौतेकी चर्चायें हो रही हैं। फिर परस्पर समझौते और कमीशन द्वारा झगड़ा निबटानेकी नीतिपर जोर दिया जा रहा है। पर यह व्यर्थ है। इससे युद्ध कुछ कालके लिए स्थगित हो सकता है, रुक नहीं सकता।

और जब युद्ध होगा तो चाहे इटली जीते या हारे, यूरोपका नक्शा बदल जायगा। इस युद्धका परिणाम यूरोपके लिए भयङ्कर होगा और इस रणोन्मादका आरम्भ करके इटली अपने और यूरोपके भाग्यसे खेल रहा है और अपनी किस्मत दांवपर लगा चुका है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हरसिङ्गार

श्री 'अज्ञेय'

गोविन्दने जल्दीसे वह बही खोली, और उसके पन्ने उलटने लगा। पर दो-ही-तीन पन्ने उलटकर उसने देखा, एक पन्नेसे कुछ चिपका हुआ है जिसे उसने यत्नसे उतारा, और हाथपर फैलाकर ध्यानसे देखने लगा।

बहुत-से फूल, एक-दूसरेमें पिरोकर, एक लड़ी-सी बनायी गयी थी, और उसके अन्तिम फूल जोड़कर उसकी माला पूरी कर दी गयी थी। यही न जाने कबकी उस पुरानी बहीमें दबी हुई थी, और सूखकर पीली-सी और झरझुरी हो गयी थी; किन्तु आज भी प्रत्येक फूल अलग-अलग दीख रहा था।

गोविन्द हड़बड़ाया हुआ-सा भीतर आया था। हड़बड़ाये हुए ही उसने बही खोली थी। पर अपने हाथमें अतीतकी इस थोड़ी-सी धूलको लेकर वह सब भूल गया; शान्त-सा, स्तब्ध-सा होकर आलमारीके पास पड़े हुए स्टूलपर बैठ गया और एक हाथमें बही, दूसरेमें वह माला लेकर कभी एककी, कभी दूसरेकी ओर देखने लगा।

उसकी आंखें न जाने क्यों बहीमें दर्ज हुई एक संख्यापर अटक गयीं। उसने पढ़ा, 'गुसदान—३)' और इसके साथ ही उसकी स्मृतिने एक वाक्य जोड़ा, "नहीं, नामकी क्या जरूरत है?"

कहां सुने थे उसने ये शब्द? कभी कहीं अवश्य, नहीं तो क्यों वे बाढ़की तरह एकाएक उसके मनमें आये?

शायद बहुत बार सुने हैं—पर नहीं, उस खास लहजेमें, उस विशेष झिझक-भरे-से कांपते स्वरमें एक ही बार...एक ही बार...

और मनमें धीरे-धीरे ये शब्द 'एक ही बार...एक ही बार...' दुहराता हुआ गोविन्द उस सूखी मालाकी ओर देखने लगा।

फूल। सूखे फूल। मालामें गुंथे हुए। 'नहीं, नामकी क्या जरूरत है?' 'गुसदान—३)'। फूलोंकी माला। हरसिङ्गारके फूल।

हरसिङ्गार...

गोविन्दके हाथसे बही छूटकर गिर पड़ी। माला भी गिर जाती—अगर वह इतनी हल्की न होती, और अगर पसीनेसे गोविन्दके हाथसे चिपकी हुई न होती। गोविन्द मानो उन्हें और अपने-आपको भूल गया; शून्य दृष्टिसे सामनेकी सूनी मैली दीवारको देखता हुआ, स्वयं एक सजीव स्मृति बना हुआ, कुछ देखने लगा।

बीस वर्ष पूर्व...

* * *

गुमटी बाजारकी गन्दी गलियोंमेंसे होती हुई वह मण्डली धीरे-धीरे बाहर निकल आयी थी, और अब लाहौर शहरकी दीवारके बाहरकी बस्तीमें होती हुई चली जा रही थी। जिस गलीमेंसे होकर वे जा रहे थे, उसमें साधारण मध्यम श्रेणीके लोग रहते थे—जिनके पास घर नहीं, रहाइश है; धन नहीं, गिरस्थी है; जो विद्वान् नहीं, पढ़े-लिखे हैं; संस्कृत नहीं, शरीफ हैं। जो संसारकी गतिमें सबसे बड़े विघ्न हैं, किन्तु जो दुनियाकी हस्तीको बनाये हुए हैं और कायम रखते हैं। उस मण्डलीके चारों व्यक्तियोंको इस श्रेणीके लोगोंका कुछ भी अनुभव नहीं था—वे अनाथालयमें पले हुए, अनपढ़, भिखमङ्गे इनके बारेमें इससे अधिक क्या जानते कि इन्हींके छोटे-मोटे दानपर उनका अनाथालय चलता था, इन्हींकी दयापर उनकी रोटीका आसरा था?—पर फिर भी, इस मुहल्लेमें प्रवेश करते हुए वे चारों एक स्थानपर रुक गये और एक-दूसरेकी ओर देखने लगे। सबकी आंखोंमें एक ही प्रश्न था, पर कुछ देर तक कोई भी कुछ नहीं बोला, सब देखते ही रहे।

हां, सिवाय एकके, जो अन्धा था। वह देख नहीं सकता था, फिर भी उसकी नेत्रहीन आंखें उसके तीन साथियोंकी ओर लगी हुई थीं, और अन्धोंकी छठी इन्द्रिय, सहजबुद्धि (Intuition) से जान गयी थीं कि किसी मध्यम श्रेणीके मुहल्लेमें प्रवेश किया जानेवाला है। उसने अपने गलेमें एक मैली पगड़ीसे बांधकर टांगा हुआ हारमोनियम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपने मैले हाथोंसे कुछ उठाकर, शून्यकी ओर उन्मुख होकर कहा—"गोविन्दा, जरा मेरे कोटका कालर ठीक कर दे। सब सिमट आया है और चुभता है।"

उसके साथियोंमेंसे एकने आगे बढ़कर उसका कोट थामते हुए कहा—"सूरदास बड़े बन-संवरकर चलेंगे! जरा मेरा भी हाल देखो जिसके पास कोट हई नहीं!" पर कहते हुए उसने सूरदासका कोट ठीक कर दिया।

गोविन्दके शरीरपर वास्तवमें कोट नहीं था। उसने अनाथालयके रङ्ग—पीले रङ्ग—की मोटे खद्दरकी कमीज और ऊंची धोती पहन रखी थी, और कुछ नहीं। पैरोंमें जूता नहीं था, तलुओंमें फटती हुई बवाइयां इतनी ऊपर तक आयी हुई थीं कि भूमिपर पड़े हुए पैरमें भी दीख जाती थीं, और पैरोंके ऊपर, एड़ी तक, एक काली पपड़ी जमी हुई थी। सिरपर भी कुछ नहीं था, लेकिन बड़े-बड़े और उलझे हुए बालोंमें कोई बदबूदार तेल प्रचुरमात्रामें लगाया गया था, इतना कि वह माथे, गालों और कानोंपर बह आया था; और बालोंको बिना कङ्घीके, हाथसे चीरकर बिठानेकी कोशिश की गयी थी। इसीलिए तो, माथेके दायीं ओर उलझे हुए बालोंका एक बड़ा-सा गुच्छा आगे लटक रहा था और दाहिनी भौंहके ऊपरके किसी पुराने घावके दागको आधा छिपा रहा था। उसकी भवें, जो पहले हीसे कुछ ऐसी थीं मानो पहले ऊपर उठने लगी हों और फिर राह भूलकर इधर-उधर हो गयी हों, इस घावके कारण और भी विचित्र मालूम पड़ती थीं। पर उसका अण्डाकार चेहरा और कमानकी तरह खिंचे ओठ, जिनके कोने कभी-कभी कांप-से उठते थे, देखकर जान पड़ता था कि उसमें भावुकताकी मात्रा जरूरतसे अधिक है—इतनी जितनी अनाथालयमें रहनेवाले लड़केकी नहीं होनी चाहिए। और उसकी आंखें, बड़ी-बड़ी, भावपूर्ण, आतुरता और प्यासको व्यक्त करनेवाली—कुछ जाननेको उत्सुक-सी इस भावनाको पुष्ट ही करती थीं। गोविन्दकी बात सुनकर तीसरे लड़केने कहा—"कोट नहीं तो क्या हुआ, ठाट तो पूरे हैं!"

सूरदास हंसने लगा। बोला, "ठीक कहा, हरि!"

हरि भी अपने घुंघराले बालोंमें उंगलियां फेरता हुआ, अपने बड़े-बड़े ओठ खोलकर हंसने लगा। उसकी छोटी-सी, चपटी-सी, किन्तु नोकके पास कुछ उठी हुई नाक कुछ और ऊपर उठ गयी, उसकी तीखी और चमकती हुई आंखें कुछ और चमकने लगीं।

हरिने, और चौथे लड़केने भी, अनाथालयकी वर्दी—पीली धोती और पीला कुरता—पहन रखी थी। लेकिन दोनोंके पैरोंमें जूता था, यद्यपि टूटा हुआ; हरिने गलेमें एक बड़े-बड़े दानोंवाली रुद्राक्षकी माला पहन रखी थी और चौथेने एक पुरानी, इकहरी खद्दरकी टोपीसे अपनी तीन तरफसे पिचकी और चौथी तरफसे फफोलेकी तरह उभरी हुई खोपड़ीको भूषित कर रखा था। उसकी टोपी विशेष सफेद नहीं थी, लेकिन उसकी धंसी हुई छोटी-छोटी आंखों और फाड़कर बनाये हुए मुंहवाले सांवले बेवकूफ चेहरेके ऊपर वह मानो दर्शककी आंखोंमें चुभती थी। इस व्यक्तिके हाथमें एक चन्देकी बही और कुछ-एक कागज थे जिन्हें वह लपेटकर डण्डेकी तरह थामे हुए था।

क्षण-भरके मौनके बाद, सूरदासने पूछा—"यहां क्या गायेंगे?"

हरि और गोविन्दने एक साथ ही मुसकराकर कहा—"घोंघेसे पूछो। क्यों बे घोंघा, क्या गायें?"

'घोंघे' ने अपना घोंघा-सा मुंह उनकी ओर फिराकर तनिक हंस दिया, बोला नहीं।

सूरदासने पूछा, "'प्रभो डूबतोंका' की तर्ज याद है न?" और बिना उत्तरकी प्रतीक्षा किये, मुंह उठाकर जल्दी-जल्दी हारमोनियमकी धौंकनी चलाते हुए बजाने लगा। मण्डली मुहल्लेकी ओर चल पड़ी। उस तीखी समवेत आवाजसे मुहल्लेकी पुरानी खिड़कियोंके चौखट गूंज उठे, उस आवाजसे बच भागना मुश्किल जान पड़ने लगा, ऐसे झूल-झूलकर, प्राणोंको घेर-घेरकर वह फैलने लगी:—

प्रभो डूबतोंका तुही है सहारा—
सिवा तेरे दूजा नहीं है हमारा!

गलीके मोड़ तक केवल उन्हींका स्वर मुहल्लेपर अखण्ड शासन कर रहा था, पर मोड़पर आते ही उस मण्डलीको सुन पड़ा, आगे कहीं ढोल बज रहा है और कोई बड़ी पतली और तीखी आवाजमें ढोलके साथ गा रहा है, "मजनू हौके मारदा, लैला दे ओ गम दे विच; मजनूं हौके मारदा...."

मण्डलीने देखा, गलीमें नटका तमाशा हो रहा है, और लड़के-लड़कियोंकी भीड़से गली बन्द हो रही है। वे भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चुप होकर देखने लगे—उन्हें मनोरञ्जनकी सामग्री कभी नहीं मिली थी, लेकिन उससे क्या उनकी चाह मर गयी थी? वे भी लड़के थे, क्या हुआ अनाथ थे तो! अभी, क्षण-भर तक, वे स्वयं नाथ हैं, क्षण-भर बाद, जब अनाथ हो जायंगे, तब पुकारेंगे कृष्णको और मांगेंगे भीख—दुहाई देंगे हिन्दू-धर्मकी···

नट एक खेल दिखानेके बाद दूसरेकी तैयारी करने लगा, और उसके साथका वह अनवरत तीखा गान भी थोड़ी देरके लिए रुक गया, तब अनाथ-मण्डलीने एकाएक फेफड़ों-की पूरी शक्ति लगाकर गाना शुरू किया :—

तुझे न सुनाऊं तो किसको सुनाऊं?
सुना डूबतोंका तुही है सहारा!

जब प्रतिद्वन्द्वियोंकी इस मण्डलीको देखकर नटने और उसके साथके लड़केने मिलकर ऊंचे स्वरसे आलाप आरम्भ किया, तब इन्हें भी जोश आया, इनका स्वर भी अधिक तीखा हुआ, और सूरदास तो हारमोनियमपर इस प्रकार पटक-पटक कर हाथ चलाने लगा कि उसका 'खट्-खट्' स्वर मानो तबलेका काम करने लगा···

तभी, एक घरमेंसे एक लड़का बाहर निकला और गोविन्दके पास आकर कहने लगा, "भाई, तुम ऊपर आकर गाना सुनाओ।" गोविन्द उस प्रतियोगितामें इतना तन्मय था कि जब लड़केने अपनी बात दुहरायी और सूरदासने डपट-कर कहा, "सुनता नहीं है?" तभी उसने समझा कि उसे क्या कहा जा रहा है।

मण्डली उस लड़केके पीछे-पीछे ऊपर चली गयी। ऊपर पहुंचते ही किसी पुरुषके भारी-से स्वरने कहा—"यहां बैठ जाइये, चटाईपर।" हरि और घोंघा बैठ गये, और गोविन्दने सूरदासको कहा, "सूरा, यह चटाई है, बैठो।" और हाथ पकड़कर उसे बिठा दिया।

उसी भारी-से स्वरवाले व्यक्तिने कहा—"कोई अच्छा-सा भजन सुनाओ।"

हरिने उंगली सूरदासकी पसलीमें गड़ाकर इशारा किया कि वह चुना हुआ भजन हारमोनियमपर आरम्भ करे। सूरदास कुछ सोचता हुआ-सा, हारमोनियमपर उंगलियां फेरने लगा।

इस अरसेमें गोविन्दने कमरेकी वस्तुओं और उसमें बैठे हुए व्यक्तियोंको देख लिया।

मण्डली दरवाजेके पास ही चटाईपर बैठी थी। उनके सामनेकी ओर, चारपाईपर एक लड़की कम्बल ओढ़े लेटी हुई थी। उसकी मुद्रासे जान पड़ता था, वह बहुत दिनोंकी रोगिणी है, और जिस स्थिर, अपलक दृष्टिसे, किन्तु औत्सुक्यशून्य दृष्टिसे, वह मण्डलीकी ओर देख रही थी, उससे उसके भविष्यके बारेमें आशाका भाव नहीं होता था। उसके पैताने एक प्रौढ़ा स्त्री—शायद उसकी मां, बैठी थी, और सिरहानेसे कुछ हटकर, आरामकुर्सीपर वही व्यक्ति, जिनके भारी-से स्वरने उन्हें बैठनेको कहा था। गोविन्दकी दायीं ओर, दीवारके सहारे, दो और युवतियां खड़ी थीं, जो आकृतिसे रोगिणीकी बहनें जान पड़ती थीं।

ऊपर दीवारपर, विभिन्न मुद्राओंमें कृष्णके तीन-चार चित्र टंगे थे, जिनमेंसे एकपर मुलम्मेके सितारे चमक रहे थे। खिड़कीके ऊपर, सूतका एक बड़ा-सा लच्छा टंगा हुआ था, और उसके सामने एक अधमैला गीला तावल। खिड़की-के चौखटेमें एक कङ्घी, शीशा, साबुन, मञ्जनकी डिबिया, एक पत्थरका गिलास और दवाईकी दो-एक शीशियां पड़ी थीं।

एक बार यह सारा दृश्य देखकर गोविन्दकी दृष्टि दुबारा रोगिणीके कम्बलसे उठती हुई धीरे-धीरे उसके मुखकी ओर जा रही थी। धीरे-धीरे, कुछ डरते-डरते, सशङ्क कि कोई देख न ले···वह ठोड़ी तक पहुंची थी कि सूरदासने एकाएक गाना आरम्भ कर दिया, उसका ध्यान लौटकर भजनकी ओर गया, और वह भी एक गहरी सांस भरकर गाने लगा :—

अपना पता बता दे ओ बेनिशानवाले!
तू किस जगह रिहां है···

पर गाते-गाते उसे अवसर मिला इधर-उधर देखनेका, तो वह न जाने क्यों अपने ही साथियोंकी ओर देखने लगा। और देखने लगा एक नयी दृष्टिसे, जिसमें एक नयी और गहरी आलोचना थी, और था एक अपरिचयका-सा भाव···

गोविन्दने देखा, हरि बीच-बीचमें आंख चुराकर दीवार-के पास खड़ी दोनों युवतियोंकी ओर देख लेता था, और तब तक देखता रहता था जब तक कि, इस आशङ्कासे कि वे उसकी ओर देख न लें, उसे अपनी दृष्टि हटानी न पड़ जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



थी। और घोंघा बिलकुल अपलक दृष्टिसे उनकी ओर देख रहा था, उसकी आंखोंमें कुछ भी भाव नहीं था, वे थीं किसी समुद्री जन्तुकी आंखोंकी तरह खुली-खुली, बर्फ-सी पथरायी हुई, किन्तु चमकदार···

गोविन्दकी दृष्टि फिर उस रोगिणी लड़कीकी ओर गयी! उसने अबकी बार देखा, उसके सिरहानेके पास कुछ-एक फूल पड़े हुए थे। और वह कभी-कभी आंख उठाकर उनकी ओर देख लेती थी, और फिर इस मण्डलीकी ओर, या शून्यकी ओर देखने लग जाती थी।

तभी गाना समाप्त हो गया और गोविन्दकी दृष्टि फिर सिमट गयी, अपनी चटाईके कुछ आगेके फर्श तक जाकर रुक गयी।

एक युवतीने कहा—"पिताजी, इनको कहिये, कोई अच्छा-सा भजन सुनायें। ये तो हमारे सुने हुए हैं।"

'पिता' ने मण्डलीकी ओर देखकर कहा—"हां भई, कुछ और सुनाओ।"

गोविन्दको एकाएक लगा, उसने अपने पांच वर्षके अनाथ जीवनमें जो कुछ सीखा, सब व्यर्थ, रद्दी, छिछोरा है—'ये तो हमारे सुने हुए हैं!' वह टटोलने लगा अपने जीवनको, खोजने लगा कि क्या है उसमें जो इतना सस्ता नहीं हो गया है, जो कि 'सुना हुआ' नहीं है, जिसका आदर है, कुछ मूल्य है...

कुछ नहीं...

उसने फिर अपने साथियोंकी ओर देखा—क्या उनके मनमें भी कुछ ऐसा ही बीत रहा है? घोंघेके मनमें? गोविन्दका अन्तर एक बड़ी उपहासपूर्ण हंसीसे भर उठा—जिसके बाद आयी एक आत्मग्लानिकी लहर—इसी व्यक्तिके साथ मैं इतने वर्षों तक रहता आया हूं, सख्यका बर्ताव रखता आया हूं—इस मिट्टीके लोंदेके साथ! हरिके मनमें? शायद...पर उसके मनमें शायद और ही कोई भाव है—वह क्यों ऐसे उन युवतियोंकी ओर देख रहा है? गोविन्दको याद आया, अनाथालयमें पढ़ते-पढ़ते, लड़के—जिनमें वह भी था, वह भी!—अपनी स्लेटोंपर स्त्रियोंके शरीरके कल्पनात्मक चित्र (देखे कब थे उन्होंने स्त्रियोंके शरीर?) बना-बनाकर, उनपर भद्दे-भद्दे वाक्य लिखकर, मास्टरकी आंख बचा-बचाकर एक-दूसरेको दिया करते थे...हरिकी दृष्टिको देखते हुए, गोविन्दको ये सब वाक्य याद आ गये, और वह रोगिणीकी ओर देखता हुआ सोचने लगा कि कैसे वह इसमें भाग ले सकता था, कैसे वह इन सब पशुओंमें एक होकर रह सकता था...

देर होती जा रही थी, और गाना आरम्भ नहीं हुआ था। तीनों व्यक्ति अब सूरदासकी ओर देखने लगे थे। गोविन्द सोचने लगा, 'इस समय मैं ही भजन बना सकता, तो क्या ऐसा भजन नहीं बना सकता जो नया होता, अभूतपूर्व? जो 'सुना हुआ' की श्रेणीमें न आ पाता, आज नहीं, कल नहीं, कभी नहीं, इतना अभूतपूर्व होता वह...

आखिर सूरदासने गाना आरम्भ किया:—

कोई तुझ-सा गरीब-नवाज़ नहीं,
तेरे दरके सिवा कोई दर न मिला।

पर गोविन्दको लगा, यह गाना, जो उसने अनाथालयके बाहर कभी नहीं गाया था, वहीं अभ्यासके लिए गाया था, यह गाना भी पुराना है, सड़ा हुआ है, क्योंकि पराया है, उसका बनाया नहीं है, उसके हृदयका अभिन्न निचोड़ नहीं है...वह गा नहीं सका। उसने घोंघेके हाथसे कागज वगैरह ले लिये, और जेबसे एक घिसा हुआ पेन्सिलका टुकड़ा निकालकर चन्देकी कापीके अङ्क जोड़ने लगा...

पर उसमें मन कैसे लगता? उसके मनमें आयी एक अशान्ति, जो हटाये नहीं हटी। उसे लगा, उसके जीवनमें अब तक कुछ नहीं हुआ। जो कुछ है, उसके जीवनके बाहर ही है, बाहर ही रहेगा। वह सोचने लगा, वह मांके मरनेपर अनाथ नहीं हुआ, बापके मरनेपर नहीं, समाजसे निकलकर नहीं, पर अनाथालयमें आकर अनाथ हो गया, क्योंकि वहां आकर स्वयं उसकी आत्मा मर गयी उसे अकेला छोड़कर...अब वह क्या है? बहुत-सी निरर्थक मशीनोंको चलता रखनेके साधन बटोरनेवाली एक बड़ी मशीनका एक निरर्थक पुर्जा...भोजन उतना पाओ कि जीते रह सको, जियो ऐसे कि भोजन पानेमें समर्थ हो सको; चन्दा मांगो कि पढ़-लिख सको, पहन सको, पढ़ो पहनो ऐसा कि चन्दा मांगनेमें सहायक हो...व्यक्तिमें समाजका, समाजमें व्यक्तिका, धर्ममें दोनोंका और धर्मका दोनोंमें विश्वास बनाये रखनेके लिए, कीड़े बनकर आओ और कीड़े बनकर रहो...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गोबिन्दका विचार फिर रुक गया, सामने पड़ी रोगिणी-की ओर देखकर। क्या यह भी उन्हींमेंसे हैं जो हमें कीड़ा बनाये रखनेके उत्तरदायी हैं?

ये शायद हमें कुछ चन्दा देंगे। और, औरोंकी तरह अपनेसे और संसारसे सन्तुष्ट होकर और रुपया बटोरने लग जायेंगे। औरोंमें और इनमें क्या भेद है? कुछ नहीं। कुछ नहीं...

पर उसकी आत्मा नहीं मानी, नहीं मानी। विद्रोह करके कहने लगी, यही तो तुम्हें कीड़ेसे कुछ अधिक बनानेके साधन हैं...

गाना समाप्त हो गया। तभी, रोगिणीके पैताने बैठी हुई स्त्रीने उठकर रोगिणीके सिरहानेके नीचेसे दो रुपये निकाले, और बोली—"बेटी, इन्हें छू दे। इनको देने हैं।"

बेटीने कम्बलके भीतरसे एक क्षीण उंगली निकालकर उन्हें छू दिया।

पिताकी भारी-सी आवाजने कहा—"लो भई, यह हमारी ओरसे।" मांने हाथ बढ़ा दिया।

गोविन्दने उठकर रुपये थामते हुए पूछा—"रसीदमें क्या नाम लिखूं?"

कोई उत्तर नहीं मिला। उसने रसीद बनाकर फिर पूछा, "नाम बता दीजिये तो—"

"नहीं, नामकी क्या जरूरत है?"

'गुप्तदान—३)'···रसीद देकर क्षण-भर गोविन्द कुछ नहीं कर सका, न उसके साथी ही हिले—यद्यपि यह तो सभी जानते थे कि अब उठकर बाहर जाना ही है—सड़कपर, गलियोंमें, मांगते हुए···

आगे-आगे सूरदासका हाथ थामे घोंघा, फिर हरि, और फिर गोविन्द, सीढ़ी उतरने लगे। गोविन्दको लग रहा था, कि वह कहीं उठकर आया है, और ऐसे ही नहीं जा सकता। कुछ अभी होना चाहिए, कोई घटना घटनी चाहिए···

गोविन्दने सुना, रोगिणी अस्पष्ट स्वरमें कुछ कह रही है, और तभी बड़ी युवतीने पुकारकर कहा—"यह भी ले जाओ।"

गोविन्दने लौटकर देखा। वही हरसिङ्गारकी माला उसे दी जा रही थी। उसने उसे लेते हुए युवतीके मुखकी ओर देखा, फिर सबकी ओर, फिर रोगिणीकी, और उतर गया।

तब अभी नटका साथी गा रहा था, "मजनूं हौके मारदा लैला दे ओ गम दे विच्च; मजनूं हौके मारदा···"

गोविन्दके मनमें प्रतियोगिताका भाव नहीं उठा। उसे लगा, वह स्वर बड़ा मधुर है, वह भाव बहुत सत्य, बहुत महत्त्वपूर्ण—'मजनूं हौके मारदा लैला दे ओ गम दे विच्च' वह भी तो किसी कमीका द्योतक है।

वहांसे सड़कपर। गलियोंमें। मांगते हुए। पर क्या मांगते हुए? पैसा? दान? दया? शिक्षा? मांगते हुए तृप्ति, मांगते हुए अनुभूति, मांगते हुए जीवन···जो सड़कपर, गलियोंमें नहीं मिलता, जो मिलता है—कहां मिलता है?

* * *

बस, इतनी ही तो। बीस साल बाद, याद करनेको, इतनी-सी एक बात।

पर गोविन्दको याद आया, वह इतनी-सी बात नहीं थी। जो बात सारे अस्तित्वको, सारे संसारको बदल दे, चाहे क्षण-भरके लिए ही, वह कैसे क्षुद्र हो सकती है!

सड़कपर आकर जब गोविन्दका ध्यान अपने साथियोंकी ओर गया, तब वे उसकी इस अन्यमनस्कतापर आलोचना कर रहे थे। और उस अन्तिम उपहारपर, जो उसे मिला था। वे आलोचनायें क्या थीं, गोविन्द अपने मनके सामने नहीं आने देगा—यद्यपि इस समय भी वे भोंडी छुरीकी तरह चुभती हैं उसके मनमें।

गोविन्द चाहता था, उन्हें पकड़-पकड़कर पीट डाले, जो बातें वह स्वयं नित्य कहा करता था, वही कहनेके लिए उन्हें घोंट-घोंटकर मार डाले। उसके भीतर एक शान्ति थी जो इतने दिनोंके निरर्थक जीवनको सफल किये दे रही थी, उसके भीतर एक अशान्ति थी जो इतने दिनोंसे जमा हुआ जीवनके प्रति स्वीकृतिका भाव नष्ट किये डालती थी।

वह चाहता था, एकदम इन सबके जीवनसे निकल जाय, इन्हें अपने जीवनसे निकाल फेंके; इन्हें, इनके अनाथालय-को, इनकी स्मृतिको। इससे भी अधिक वह चाहता था कुछ, पर उसके अनाथालयके क्षुद्र जीवनने उस 'कुछ'के लिए उपयुक्त शब्द नहीं दिये थे, वह स्वयं अपने विचारोंको अपने सामने प्रकट करनेमें असमर्थ था। तभी वह बिना शब्दोंके, बिना वाक्योंके, बिना व्याकरणके बन्धनोंके, अपने-आपसे कह रहा था, 'स्त्रीके बिना कुछ भी अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं है, कुछ भी मधुर नहीं है, कुछ भी सुन्दर नहीं है ; स्त्री—जो केवल स्त्री ही नहीं, संसारकी कुल सुन्दर और मधुर वस्तुओंकी प्रतिनिधि है···'

वह क्यों नहीं आयी उसके जीवनमें ? मनुष्यके जीवनकी सारी प्रगति जिस एक दिव्य अनुभूतिकी ओर,जिस miracle की ओर है, वह क्यों नहीं हुआ उसके जीवनमें ? पहले वह अन्धा था, किन्तु जब उसकी आंखें खुल गयीं, तब भी इतनी प्रतीक्षा करके भी उसे कुछ क्यों नहीं दीखा ? क्यों धीरे-धीरे उसी अनाथालयने उसे फिर घेर लिया जिसे एक बार उसने असह्य घृणासे ठुकरा दिया था ?

गोविन्दने धीरे-धीरे, जैसे कष्टसे झुककर, वह बही जमीनपरसे उठा ली। वह हरसिङ्गारके फूलोंकी राख यथा-स्थान रखी। बहीको बन्द कर दिया। उठ खड़ा हुआ।

गोविन्दने एक बार अपने चारों ओर, धूलके पर्देमें ढंके हुए कमरेकी दीवारों और फर्शकी ओर देखा। और सोचा कि इस अनाथालयकी इस अनात्म यथार्थताने उस miracle को नष्ट कर दिया—उसे होने नहीं दिया।

पर साथ ही उसने पूछा, क्या यह सब यथार्थ है, वास्तविक है ? यह टूटी मेज, यह कुर्सी, यह बही···उस फूलकी राखसे, उससे उत्पन्न होनेवाली छायाओंसे, अधिक यथार्थ, अधिक वास्तविक, अधिक सत्य ?

गोविन्दने आवाज दी, "राम ! केशो ! देवा ! तैयार हो जाओ !"

चार-पांच लड़के इकट्ठे हो गये। एक अन्धा भी, हारमोनियम गलेमें डाले। वही फटे-पुराने पीले कपड़ें, वही तेलमें चुपड़े हुए बाल, वही ओछा शृङ्गार, वहा···वही मण्डली, वही भीख···

गोविन्द सोचने लगा, पचीस सालसे वह भीख मांग रहा है, शायद पचीस साल और मांगता रहेगा। यही सत्य है, यही यथार्थ है। बीस वर्ष पहले एक क्षण आया था, आज बीस वर्ष बाद फिर वही आया, जिसमें उसने इस अनाथ जीवनकी सारी कटुता, कठोरता, विषाक्त निस्सहायताका अनुभव किया; पर वह अनाथ ही है, अब अनाथ ही रहेगा। अनाथ जीवनकी वासनाओं, पीड़ाओं, सङ्घर्षों, अंधियारी घटनाओंसे अनाहत और अक्षुण्ण रहनेवाली प्रकाण्ड शून्यताको भरनेके लिए कुछ भी नहीं होगा।

लेकिन बाहर निकलकर जब उसने लड़कोंसे कहा, "गाओ, 'सुना दे, सुना दे, सुता दे किशना'।" तब एकाएक कोई विश्वास उसके मनमें जागकर पूछने लगा, "एक ही बार स्त्रीने उसके जीवनमें पैर रखा, वहीं पद-चिह्नकी तरह पड़ी है—फूलोंकी एक माला ; तब क्या आगेके इस विराट् अन्धकारमें एक भी किरण नहीं है, इस मरुस्थलमें, जिसे उसने नहीं बनाया, क्या एक भी कली न खिलेगी ; वहां बाहर, सड़कपर, गलियोंमें, क्या एक भी घर नहीं होगा, एक भी स्त्री-मुख, एक भी मधुर पुकार ; अनाथ जीवनकी इस विषैली रिक्तताको भरनेके लिए एक भी स्मृति, हर-सिङ्गारका एक भी फूल ?"

---

## गीत

तू चिरन्तन साथ मेरे !
क्यों विरहकी कल्पना कर,
लोचनोंमें अश्रु घेरूं ?
सांझ हीसे प्रात लों क्यों ;
कौनकी मैं बाट हेरूं ?
इस विजनमें, टेकड़ीपर ;
झोपड़ीमें, तरु तले रे !

तू उजेला क्या नहीं है,
क्यों जलाऊं दीप घरमें ?
देखता हूं, राजती है,
ज्योति तेरी विश्व-भरमें !!
मन्दिरों ही के लगाऊं,
नाथ ! क्यों दिन-रात फेरे ?

—विनयकुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तुर्किस्तानके दुर्गपर कम्यूनिज्मका झण्डा

श्री कमलाकान्त शर्मा, एम० ए०

भारतके उत्तर एवं उत्तर-पश्चिम सीमान्तकी एक काल्पनिक आक्रमणसे रक्षाके लिए भारत-सरकार इस गरीब देशका जो करोड़ों रुपया प्रतिवर्ष पानीकी तरह बहा रही है वह काल्पनिक आक्रमण क्या है और उसकी क्या सम्भावनायें हैं, इस सम्बन्धमें बहुत कम पाठकोंको पर्याप्त ज्ञान होगा। अरल सागरके दक्षिणमें कास्पियन समुद्रसे लेकर चीनी तुर्किस्तान या सिनकियाङ्गके सीमान्त तक जो प्रदेश लगभग ८ लाख वर्गमीलमें फैला हुआ है उसे रूसी तुर्किस्तान कहते हैं। सन् १९१८-१९ में जब बोलशेविक रूस इस प्रदेशको फिरसे जीत रहा था उस समय उसने अपना यह उद्देश्य बताया था कि हमारे इस विजय-अभियानका उद्देश्य पूर्वी देशोंमें बोलशेविज्मकी वह्नि-शिखा प्रज्वलित करना है—"Our mission is to set the East in the flames!" यद्यपि रूसका यह आरम्भिक जोश इस समय बहुत-कुछ ठण्डा पड़ गया है, फिर भी मध्य एशियाके राजनीतिक रङ्गमञ्चके इस नेपथ्य-प्रदेशमें बोलशेविक रूसकी ओरसे जो नीति काममें लायी जा रही है उससे ब्रिटिश सरकार अपने एशियाई राज्योंकी रक्षाके लिए जारशाही रूसके अमलसे इस समय और भी आतङ्कित हो रही है।

बोलशेविक रूसी तुर्किस्तानके सम्बन्धमें कुछ वर्णन करनेके पहले इस प्रदेशका पूर्व-इतिहास जान लेना आवश्यक है कि इसपर रूसका अधिकार क्योंकर हुआ। आजसे लगभग दो सौ वर्ष पूर्वकी बात है। खिवा मध्य एशियाका एकमात्र स्वतन्त्र मुसलमान राज्य था। उसी समय रूसियोंने इस बातको समझ लिया था कि यदि इस प्रदेशपर उनका अधिकार होगा, तो समस्त एशियाका उत्तरी भाग उनके अधीनस्थ हो जायगा। इसके विपरीत यदि उनका इसपर दखल नहीं हुआ तो अंगरेज लोग अवश्य ही इसपर अपना अधिकार जमा लेंगे। इसके सिवा मध्य एशियामें मुसलमानोंके प्राधान्यको नष्ट करना भी इसका एक कारण था।

खिवावासियोंके साथ रूसके कज्जाकोंकी शत्रुता बहुत दिनोंसे चली आती थी। दोनोंमें बहुधा परस्पर लूट-पाट और मार-काट होती रहती थी। सन् १७२४ में जार पीटर दी ग्रेटके समयमें रूसी जेनरल बेकोविच जारकी आज्ञासे ४ हजार सेना लेकर कास्पियन समुद्रके उत्तरी सीमान्तकी ओरसे रवाना हुआ। उस समय खिवा आनेका एक कारवां-मार्गके सिवा और कोई मार्ग नहीं था। और यही एक खास कारण था जिससे खिवा इतने दिनों तक किसी शक्तिशाली राज्यके चंगुलमें नहीं फंसा था। जेनरल बेकोविचकी सेनाको एक विस्तृत मरु-भूमिसे होकर खिवा तक पहुंचना था। किन्तु खिवा पहुंचनेके पूर्व ही प्रायः आधी सेना मार्गके असह्य कष्टों एवं कठिनाइयोंके कारण कालग्रस्त हुई। यह अभियान ग्रीष्म-कालमें हुआ था। अतएव ग्रीष्म-कालमें मरु-भूमिसे होकर सेनाके गुजरनेमें उसपर क्या बीती होगी, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है। जेनरल बेकोविचने आदू नदीके पास पहुंचकर वहांसे खिवाके खानको संवाद भेजा कि मेरे इस अभियानका उद्देश्य राज्य-जय नहीं है, बल्कि खानके साथ मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करना है।

उस समय खिवाका शासनकर्ता शेर गाजी था। वह रूसियोंका घोर विद्वेषी था। बेकोविचके दूतके पहुंचते ही उसने उसे बन्दी कर लिया और युद्धके लिए सैन्य-संग्रह करने लग गया। बेकोविच खिवाके समीप आ पहुंचा। खानकी सेनाने उसपर आक्रमण किया। किन्तु युद्धसे कोई निपटारा होते न देखकर खानने अन्ततः "शठं प्रति शाठ्यम्" की नीति ग्रहण की। उसकी ओरसे एक दूतने बेकोविचके पास पहुंचकर यह सूचित किया कि खानकी अनुमतिके बिना ही पहले आक्रमण किया गया था। जेनरल बेकोविच यदि शान्तिपूर्ण उद्देश्य लेकर आये हैं तो दोनों पक्षमें सन्धि होना ही उचित है। सन्धिके लिए खानने बेकोविचको खिवा आनेके लिए आमन्त्रित किया। जेनरल बेकोविच अपने सैन्य-दलको कुछ ही दूरपर अवस्थान करनेका आदेश देकर स्वयं अल्पसंख्यक रक्षक दल साथ लेकर खिवाके लिए रवाना हुआ। धूर्त खानने बेकोविचको यह



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विश्वास करा दिया कि एक साथ इतनी बड़ी सेनाके वास-स्थान और भोजनका प्रबन्ध करना उस-जैसे क्षुद्र राजाके लिए सम्भव नहीं है। इसलिए वेकोविच अपने सैन्य दलको विभिन्न भागोंमें विभक्त करके पृथक्-पृथक् स्थानोंमें भेज दे तो खानको सुविधा हो। वेकोविच खानके इस षड्यन्त्रमें फंस गया और सैन्य-दलके नायकको ऐसा ही करनेका आदेश दिया, हालांकि वह नायक खानके इस चक्रान्तको बहुत-कुछ ताड़ गया था। किन्तु वह सेनापति वेकोविचके आदेशको अग्राह्य नहीं कर सका। इसके बाद सैन्य-दलके विभक्त होते ही खानने सबसे पहले वेकोविच और उसके

नयी सभ्यतामें पलनेवाली मुसलिम महिलाओंने बुर्केको सर्वथा फाड़ फेंका है।

दलको कैद कर लिया, फिर अन्य सैन्य-दलोंको विध्वंस किया और अन्तमें वेकोविच और उसके अनुचरोंकी हत्या कर डाली। समस्त सेनामें केवल ४० आदमी किसी प्रकार जीवित रह सके।

इसके बाद बहुत दिनों तक खिवापर दखल करनेके लिए रूसकी ओरसे कोई चेष्टा नहीं हुई। सन् १८४० ई०के लगभग एक बार फिर अभियान किया गया, किन्तु इस बार भी पहलेके समान ही रूसको विफल होना पड़ा। अन्तमें जेनरल काफमैनके नेतृत्वमें जो अभियान हुआ वही सफल हुआ और इसके परिणाम-स्वरूप मध्य एशियामें रूसकी साम्राज्य-विस्तारकी लालसा चरितार्थ हुई। इस अभियानमें खिवाको केन्द्र बनाकर उसकी पांच ओरसे पृथक्-पृथक् सैन्य-दलों द्वारा आक्रमण किये गये थे। जेनरल काफमैनने स्वयं एक दल लेकर ताशकन्दसे आक्रमण किया था। इस विशाल सैन्य-शक्तिका सामना करना खिवाके लिए असम्भव था, अतएव इस बार वह सहज ही परास्त हो गया।

रूसकी ओरसे खिवापर जितने आक्रमण किये गये थे उन सब अवसरोंपर ब्रिटिश सरकारकी ओरसे आपत्ति की गयी थी। ब्रिटिश सरकारके जासूस इन सब आक्रमणोंके पीछे गुप्त हालका पता लगानेके लिए बराबर लगे रहते थे। अन्तिम अभियानके समय तो ब्रिटिश सरकारने रूसी सरकारके पास एक प्रतिवादसूचक पत्र भी भेजा था। ब्रिटिश सरकारके इस प्रतिवादका मुख्य उद्देश्य था मध्य एशियामें उसकी साम्राज्य-विस्तारकी लालसामें व्याघात न पहुंचना। अन्यथा तुर्किस्तान-पर रूसका अधिकार होनेसे भी भारतके लिए तब तक कोई खतरा नहीं उपस्थित हो सकता था, जब तक कि बीचमें अफ-गानिस्तानका स्वतन्त्र राज्य कायम है।

बोलशेविक रूसके अधिकार-में आनेके बादसे तुर्किस्तानके जीवनकी विभिन्न दिशाओंमें जो परिवर्तन हुए हैं उनसे इस प्रदेशका बहुत-कुछ रूपान्तर-सा हो गया है। बोलशे-विज्मके आदर्शको चरितार्थ करनेके लिए रूसकी सरकार इस कट्टर इसलाम प्रदेशमें जो प्रयत्न कर रही है वह अवश्य ही विस्मयजनक है। सोवियट सरकारने तुर्किस्तानको दो सङ्घबद्ध प्रजातन्त्र राज्यों तथा तीन स्वतन्त्र प्रदेशोंमें विभक्त कर दिया है। इनमें पहले दोके नाम तुर्कमिनिस्तान और उजबेकिस्तान तथा स्वतन्त्र प्रदेशोंके नाम ताजिक, किरविज और कारा-कल्पक हैं। सम्पूर्ण तुर्किस्तानकी जन-संख्या लगभग ६० लाख है जिसमें रूसियोंकी संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक दशमांशसे कम ही है। इस प्रदेशका एक बहुत बड़ा भाग मरु-भूमि है। दक्षिण सीमान्तमें अधिकतर पहाड़ हैं और पूर्व तथा दक्षिण-पूर्वमें उत्तुङ्ग पर्वत-श्रेणियां अवस्थित हैं। तुर्किस्तानके प्रधान नगर ताशकन्द और समरकन्द हैं। ताशकन्द सम्पूर्ण तुर्किस्तानका सोवियट हेड क्वार्टर्स है। कास्पियन समुद्रसे लेकर सम्पूर्ण तुर्किस्तानको आरपार करती हुई ताशकन्द तक और वहांसे लगभग चीनी तुर्किस्तानके सीमान्त प्रदेश तक रेलवे लाइन चली गयी है। समरकन्द अत्यन्त प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। कवियों, चित्रकारों और यात्रियोंको तथा पूर्व और पश्चिमकी आक्रमणकारी सेनाओंको यह नगर बहुत दिनों तक अपनी ओर आकृष्ट करता रहा। चङ्गेज खां और उसके वंशज तैमूरलङ्गके साथ इस नगरका नाम जड़ित है। १४ वीं शताब्दीके अन्तमें तैमूरलङ्गके राज्य-कालमें समरकन्दकी बड़ी शोहरत थी। तैमूरलङ्गने नगरकी शोभा-वृद्धिके लिए कितने ही गुम्बददार मकबरे, महल और बाजार बनवाये थे। आश्चर्यकी बात तो यह है कि तैमूरलङ्गके समयसे लेकर अब तक समरकन्द और उसके चतुर्दिक न मालूम कितने संग्राम, विद्रोह, लूटमार, राजविप्लव, और आक्रमण हुए, फिर भी समरकन्दकी इमारतों, मसजिदों और मकबरोंका सौन्दर्य नष्ट होनेसे बहुत कुछ बचा हुआ है। नगरके प्रधान पार्कमें—जिसे रेगिस्तान कहते हैं—एक छोटा-सा फव्वारा है और उस फव्वारेके तीन तरफ बड़ी-बड़ी इमारतें हैं। इन्हीं इमारतोंमें किसी समय पूर्वका सर्वप्रधान मुसलिम विश्वविद्यालय था। अब भी इन इमारतोंकी कारीगरी और खूबसूरती देखनेकी चीज है। नीले रङ्गके गुम्बदोंपर जिस समय सूर्यकी किरणें अपनी प्रभा विकीर्ण करती हैं उस समय इसके सौन्दर्यमें सङ्गीतका माधुर्य बोध होने लगता है। बहुत दूर-दूरसे यात्री काशिम इब्न अब्बासकी समाधिके दर्शनके लिए समरकन्द आते हैं। प्राचीन कालमें जो यात्री अरबसे मक्का तककी यात्रा करनेमें असमर्थ होते थे वे समरकन्दमें रहकर ही पर्व-त्योहार मनाते थे। मध्य एशियाका यह मक्का समझा जाता था। तुर्किस्तानपर रूसका दखल हो जानेके बादसे यात्रियों-की संख्या कम होने लगी। अब यात्रियोंकी संख्या और भी कम हो गयी है। कारण, मसजिदपर इस समय सोवियट पताका फहरा रही है और वह एक कम्यूनिस्ट क्लबके रूपमें हो रही है। इस प्रकारके परिवर्तन तुर्किस्तानके तमाम सोवियट प्रजातन्त्र राज्योंमें देख पड़ते हैं। इस प्रसङ्गमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि मध्य एशियाके सोवियट राज्योंमें यह रूपान्तर बड़ी द्रुतगतिसे हो रहा है।

इस प्रकारके परिवर्तनोंमें सर्वप्रधान परिवर्तन आर्थिक है जिसका सम्बन्ध एक विंशवर्षीय योजनासे है। इस योजना-के अनुसार तुर्किस्तानके समतल प्रदेशोंको विशाल कपास-

तुर्किस्तानी चायके बड़े शौकीन होते हैं। चायके होटलोंमें ही वे देशके सभी प्रमुख प्रश्नोंपर विचार-विमर्श करते हैं।

क्षेत्रोंमें परिवर्तित कर देनेका निश्चय किया गया है। तुर्किस्तानके खिवा जिलेमें प्राचीन कालसे कपासकी उपज होती आ रही है। अब सोवियट सरकार तीन बड़े-बड़े भूभागोंमें कपासकी खेती और उसकी सिंचाईका प्रबन्ध कर रही है। इनमें एक भूभाग ताशकन्द और इजकके बीचमें १० लाख एकड़में विस्तृत है, दूसरा अफगानिस्तानके सीमान्तके पास वहश उपत्यकामें और तीसरा फरघनाके पास, जहांका मुख्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



व्यवसाय बहुत दिनोंसे चावल और कपासकी खेती रहा है। अमेरिकाके हबशी २२ वर्षके कण्ट्राक्टपर इसलिए नियुक्त किये गये हैं कि वे यहांके निवासियोंको कपास बोना और खासकर कपास चुनना सिखलायें।

जनवरीके महीनेमें रातको समरकन्दमें झुण्डके झुण्ड ऊंट देख पड़ते हैं। खेतोंसे कपास लादकर ये बाजारमें पहुंचाते हैं। रात्रिकी निस्तब्धतामें उनके गलेमें बंधी हुई घण्टियोंकी आवाज बड़ी मधुर सुनाई पड़ती है। समरकन्दकी सड़कोंपर चायखानोंकी चहल-पहल खूब रहती है। यहां मार्ग चलनेवाले सब फिर्कों और श्रेणियोंके पथिक थोड़ी देर ठहरकर विश्राम करते हैं और चाय पान करते हुए अपने देशके सम्बन्धमें सब प्रकारके राजनीतिक, सामाजिक आदि विषयोंपर वाद-विवाद करते हैं। बुखारेके बने हुए सुन्दर कम्बलोंपर बैठकर बूढ़े, जवान, लड़के सब मिलकर हरी चायकी प्यालीको होंठसे लगाकर चूसते और बीच-बीचमें वार्तालाप करते जाते हैं। समवाय-पद्धतिपर यहां व्यवसायोंकी जो प्रतिष्ठा हो रही है उसके सम्बन्धमें विशेष दिलचस्पी ली जाती है और चायकी दूकानोंपर व्यापारियोंके वार्तालापका विषय अधिकतर यही हुआ करता है। २ हजार वर्षसे भी अधिक पुराने बाजारका इस समय समवाय-प्रथापर जो नूतन रूपान्तर हो रहा है, इसकी कल्पना कुछ वर्ष पहले कौन कर सकता था। इन नूतन समवाय-समितियोंको देखकर ऊन लानेवाले तिब्बती व्यापारी, रेशम और मसाला लानेवाले पारसी व्यापारी और चावल तथा चाय लानेवाले चीनी व्यापारी क्या कहेंगे? वे यहांका रङ्ग-ढङ्ग देखकर यही समझते हैं कि रूसी लोग पागल हो गये हैं।

तुर्किस्तानकी स्त्रियोंको वहांके पुरुषोंसे भी बढ़कर हैरतमें डालनेवाली समस्याओंका सामना करना पड़ रहा है। हजारों वर्षकी परम्परागत प्रथाओं, रूढ़ियों और रीतिरस्मोंको एक दशाब्दके अन्दर ही क्रमशः क्षीण एवं अदृश्य होते देखकर वे चकित एवं स्तम्भित हो जाती हैं। उजबक रमणियोंका वह घूंघट, तुर्कोमन स्त्रीके ललाट एवं मुखको ढंकनेवाला वह रूमाल कहां चला गया? नयी पीढ़ीकी नवयुवतियोंमें अब न तो कहीं बुर्का देख पड़ता है, न कहीं घूंघट और न मुख ढंकनेवाला रूमाल। इस समय जो छोटी-छोटी लड़कियां हैं और जिनके सिरके बालोंकी वेणियां पीठोंपर लहराती रहती हैं, जिन्हें गिनकर आप उनकी उम्र भी बता सकते हैं, वे ही बालिकायें जब किशोरावस्थाको प्राप्त होंगी तो बहुत सम्भव है कि वे गर्दन तक छंटे और लहराते हुए बालोंमें आम सड़कोंपर हंसती-खेलती और चहकती हुई दीख पड़ें। यहांके नाटकोंमें भी प्राचीन और नवीनका यह

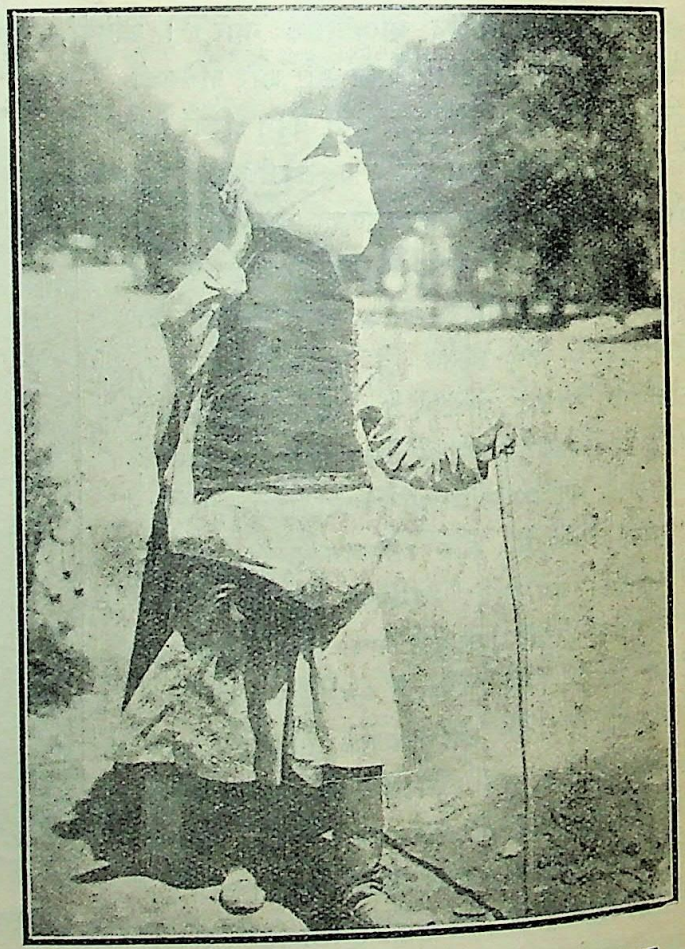

पुरानी रूढ़ियोंमें फंसी हुई यह उजबक स्त्री अब भी आपाद-मस्तक घोड़ेके बालके पर्देमें ढंकी हुई है।

परिवर्तन बड़े ही आकर्षक ढङ्गसे दिखाया जाता है। पुरानी परिपाटियोंका मखौल इस ढङ्गसे उड़ाया जाता है कि दर्शक हंसीसे लोटपोट हो जाते हैं। इस प्रकार क्लबों और थियेटरों द्वारा नूतन भावनाओंका प्रचार हो रहा है और पुराने रीति-रस्म अब यहांके वयस्क स्त्री-पुरुषों तक ही सीमाबद्ध रह गये हैं। नयी पीढ़ीके दृष्टिकोणमें एकदम परिवर्तन हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रचारका एक शक्तिशाली साधन यहांके समाचारपत्र हैं जिनका रूसी क्रान्तिके पूर्व कहीं अस्तित्व तक न था। इस समय ये समाचारपत्र उजबक, ताजिक, तुर्की, किरघिज, काराकल्पक और यहूदी भाषाओंमें प्रकाशित हो रहे हैं। ४० से अधिक दैनिक और साप्ताहिक समाचार-पत्र लेटिन भाषामें प्रकाशित होते हैं। सन् १९२४ में किरघिज वर्णमालाकी रचना की गयी और उसके बादसे तुर्किस्तानकी जितनी अरबी

उजबक युवक अपने बिलकुल नये रंगमें।

लिपियां थीं उन सबका रूप लेटिन भाषाकी वर्णमाला जैसा कर दिया गया है जिससे निरक्षरोंके लिए भी विभिन्न बोलियोंमें लिखना, पढ़ना और उच्चारण करना सहज हो। सन् १९२९ में तुर्किस्तानकी आबादीमें २ सैकड़े स्त्रियां और ८ सैकड़े पुरुष शिक्षित थे। अब तक यह संख्या दुगुनी हो चुकी है।

रूसी तुर्किस्तानके प्रजातन्त्र राज्योंको जो स्वायत्त-शासन प्राप्त है उसे पूर्ण नहीं कहा जा सकता। यह सच है कि स्थानीय सोवियटके सदस्य वहांके निवासियोंमेंसे ही वोट द्वारा चुने जाते हैं, किन्तु इस संस्थाको केवल स्थानीय तथा साधारण विषयोंमें ही निर्णय करनेका अधिकार होता है। इसकी सहायताके लिए केन्द्रीय सरकारका एक राजनीतिक एजेण्ट रहता है। शासन-सम्बन्धी अधिकांश विषयोंका सूत्र केन्द्रीय सरकारके हाथमें है और वहींसे वह परिचालित होता है। हां, इतना अवश्य है कि देशके कुछ प्रतिभाशाली व्यक्तियोंकी पहुंच मास्कोकी केन्द्रीय सरकार तक है और वहां उनके देशके सम्बन्धमें जो नीति स्थिर होती है उसमें उनकी आवाज भी सुनी जाती है। इसके सिवा देशी लोगोंको स्वायत्त-शासनके सम्बन्धमें शिक्षा दी जाती है और उन्हें अधिकाधिक संख्यामें उच्च पदोंपर नियुक्त किया जाता है।

सारांश यह कि रूसी तुर्किस्तानके समरकन्द, ताशकन्द तथा अन्यान्य नगरोंमें क्रान्तिके फल-स्वरूप बड़े द्रुत वेगसे युगान्तरकारी परिवर्तन हो रहे हैं। इस प्रकारके परिवर्तनोंमें सबसे बड़ी शक्ति है मास्कोकी केन्द्रीय सोवियट सरकारकी आर्थिक नीति। किन्तु इस आर्थिक नीतिके प्रयोगमें कहीं-कहीं जोर-जबर्दस्ती भी की गयी है! जो लोग अपने खेतोंमें खाद्य पदार्थके बदले कपासकी खेती नहीं करना चाहते थे वे स्वदेशका परित्याग करके साइबेरिया चले गये। कपासकी खेतीमें वृद्धि होनेके परिणाम-स्वरूप खाद्य पदार्थोंकी समस्या भी विकट हो रही है। क्योंकि मास्कोसे यहां तक रेल द्वारा खाद्य पदार्थोंको पहुंचानेमें अब भी पांच दिन लग जाते हैं। इस समस्याके साथ आवागमनके साधनोंका घनिष्ट सम्बन्ध है। किन्तु इन सब बातोंके होते हुए भी सोवियट शासनके कारण रूसी तुर्किस्तानमें शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञानके नूतन प्रकाशके फल-स्वरूप जो परिवर्तन हुए और हो रहे हैं उनसे देशमें एक नूतन युगका आरम्भ हो गया है।

शिक्षा, स्वास्थ्य, अर्थनीति आदिके सम्बन्धमें जो परिवर्तन हो रहे हैं वे तो हो ही रहे हैं, इनके अलावा रूसियों तथा खास तुर्किस्तानके निवासियों द्वारा साम्यवादमूलक विचारोंका जिस रूपमें प्रचार हो रहा है उससे स्वभावतः यह प्रश्न मनमें उठता है कि क्या मध्य एशियाके इस इसलाम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रधान देशमें, उजबक और ताजिक-जैसी कट्टर धर्मान्ध जातियोंमें कम्यूनिज्मकी विजय-पताका फहरायगी और वे मास्कोको उसी प्रकार अपना महातीर्थ समझेंगे जिस प्रकार पहले मक्काको समझते थे ? इसमें सन्देह नहीं कि सोवियट मध्य एशिया समग्र इसलाम-जगत्के लिए एक चुनौती है और यही कारण है कि पड़ोसकी मुसलमान जातियां और उनके देशी-विदेशी शासक बड़ी तीक्ष्ण दृष्टिसे रूसी तुर्किस्तानकी गतिविधियोंका पर्यवेक्षण कर रहे हैं।

---

# इंगलैण्डकी एक झलक

डा० ब्रजमोहन, एम० ए०, पी-एच० डी

( ४ )

इंगलैण्डवाले विज्ञापन-कलामें बड़े दक्ष होते हैं। वहां अधिकतर विज्ञापन मशीनसे होता है। एक घड़ी मेजपर रखी है। उसके शीशेपर एक हथौड़ी—जो उसके पास ही बंधी है—बार-बार चोट करती है और शीशा नहीं टूटता। यह विज्ञापन शीशेकी मजबूती दिखानेके लिए है। और इससे बढ़कर अच्छा तरीका विज्ञापन देनेका और क्या होगा ? एक दुकानके बाहर एक हब्शी लड़का खड़ा है जिसकी बांहपर नकली रेशमके कई थान लटक रहे हैं। वह बार-बार हंसता है और हाथको घुमाकर रेशम आपकी तरफ बढ़ाता है और फिर पीछे हट जाता है। दूरसे देखनेसे आपको वास्तविक मनुष्य-का सन्देह होगा, परन्तु वह वास्तवमें एक पुतला है जो मशीनसे चलता है। कहीं-कहीं तो मशीनका बना हुआ पुतला ही राहगीरोंको सिगनल देता है। हिन्दुस्तानमें कुछ स्टेशनोंपर प्लेटफार्म-टिकटकी मशीनें लगी हैं जिनमें इकन्नी डालनेसे टिकट निकल आता है। ऐसी ही मशीनें वहां जगह-जगह सिगरेट और चाकलेट बेचनेके लिए रखी रहती हैं। लगभग हर तीसरी-चौथी दुकानपर एक मशीन तौलनेकी रखी रहती है। इसपर खड़े होकर छेदमें पेनी डालनेसे एक कार्ड निकल आयेगा जिसपर आपकी तौल लिखी होगी। यह भी एक विज्ञापन ही है। कुछ लोग केवल तौलनेके कारण उस दुकानपर आयेंगे। कुछ दुकानें वहां बिलकुल अपने-आप काम करनेवाली (automatic) होती हैं। उनमें बहुत-सी शीशेकी आलमारियां लगी रहती हैं, जिनमें तरह-तरहकी खानेकी वस्तुयें रखी रहती हैं। जो चीज लेनी हो, उसी आलमारीके ऊपर छेदमें पैसा डालनेसे वह चीज निकल आयेगी। इसी तरह आप दूध और शर्बत भी आलमारीसे स्वयं ले सकते हैं।

वहां विज्ञापनके लिए बिजलीका बहुत उपयोग करते हैं। बाजारोंमें रातको जगह-जगह बिजलीके अक्षरोंमें दवाइयों, मञ्जनों और बिस्कुटोंके नाम दिखाई देंगे। यह नाम थोड़ी देर बाद बनते और बिगड़ते रहते हैं। कहीं-कहीं तो यह अक्षर इतनी सुन्दरतासे सजाये होते हैं कि मनुष्य घण्टों इन्हींकी आंखमिचौनी देखता रहे। कभी-कभी तो हवाई जहाजोंके नीचे बड़े-बड़े बिजलीके अक्षरोंमें लिखा होगा—पर्सिल (Persil)। सारा शहर एक साथ इसका नाम पढ़ लेगा। एक नयी तरहकी मशीन निकली है जिससे बादलोंपर बिजली फेंककर अक्षर बनाये जा सकते हैं। इसको आकाश-लेखन कहते हैं।

यह लोग विज्ञापनके लिए जगह भी खूब पसन्द करते हैं। ऊंची-ऊंची इमारतोंपर, उनकी सीढ़ियोंपर, लालटेनों-पर, दूधकी बोतलोंपर, दुकानके फर्शपर, पैर बिछानेके आसनपर, रोटीपर, बिस्कुटके डिब्बेपर, सिनेमाके पर्देपर, स्टेशनपर, ट्रामकी छतपर, रेलकी सीटपर विज्ञापन लगाते हैं। ग़रज़, जहां-कहीं भी मनुष्यकी निगाह जा सकती है वहीं इनका विज्ञापन भी हो सकता है। विज्ञापनोंके लिए वाक्य भी रोज नये-नये निकलते रहते हैं, जैसे "जिस आफिसमें खोयी हुई चीजें मिलती हैं उस ( lost property office ) में आपको बावरिल (Bovril) खानेकी एक दवा—कभी न मिलेगी।" "बावरिल न्यूमोनियासे कम मूल्यवान है।" "सब सड़कें रोमपर मिलती हैं। पुष्टिकारक सब पदार्थ बावरिलमें मिलते हैं।"

यहांके दुकानदारोंको विज्ञापन-कला बिलकुल नहीं आती। बहुत-से विज्ञापनोंमें व्याकरणकी और हिज्जे तककी त्रुटियां होती हैं। बहुत-से सिनेमाके विज्ञापनोंमें अभिनेताओं-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की इतनी भोंडी शक्ल दी जाती है कि उस विज्ञापनसे लाभ होनेकी कौन कहे, उलटे हानि हो जाती है। नकल हम लोगोंमें इतनी आ गयी है कि छोटे-छोटे कस्बों तकमें अंगरेजीमें विज्ञापन देते हैं। इतना नहीं सोचते कि कस्बे-भरमें दस-पांच अंगरेजी जाननेवाले होंगे। यदि हिन्दी-उर्दूमें विज्ञापन दें तो चार सौ व्यक्ति तो उसे पढ़ सकें।

उन लोगोंको सूझती भी खूब है। लिवरपूलमें एक धुलाईकी दुकान है जिसका नाम है कालर्स लिमिटेड। इसने अपने यहां यह नियम बनाया है कि यदि किसी ग्राहकका कालर फट जायगा तो बिना दामके दुकान दूसरा कालर दे देगी। यदि कोई ग्राहक एक नया ग्राहक बनायेगा तो उसे छः नये कालर इनाममें मिलेंगे। 'डेली हेरल्ड' पत्रने एक बार विज्ञापन दिया कि जो कोई दो महीनेके लिए एक नया ग्राहक बनायेगा उसे और नये ग्राहक—दोनोंको एक-एक कैमरा मुफ्त दिया जायगा। बातकी बातमें हजारों ग्राहक बन गये। एक दुकानका नाम है ऊलवर्थ। उसकी शाखायें सारे इंगलैण्डमें फैली हुई हैं। इस दुकानकी विशेषता यह है कि इसमें कोई वस्तु छः पेनीसे अधिक मूल्यकी नहीं है। इस दुकानपर लगभग ५० काउण्टर होते हैं। किसीपर लिखा है हेबरडेशरी विभाग। इसपर लोहेका सामान—चौबे, पिनें, हथौड़ी, आरी, पेच, पेचकस इत्यादि मिलेंगे। किसीपर रसोईका सामान। इसपर कड़ाही, चकला, बेलन, तवा इत्यादि मिलेंगे। परन्तु कोई वस्तु छः पेनीसे अधिककी नहीं हो सकती। दुनिया-भरकी छोटी-मोटी चीजें इस दुकानपर मिलती हैं। एक कैमरा छः टुकड़ोंमें मिलेगा, हरएक टुकड़ेका मूल्य छः पेनी। एक गमला और पौधा अलग-अलग मिलेगा और प्रत्येकका मूल्य छः पेनी। कटोरदान और ढक्कन अलग-अलग मिलेगा, प्रत्येकका मूल्य छः पेनी। जब कभी किसी छोटी-सी चीजकी जरूरत होती है तो पहले ऊलवर्थकी याद आती है।

वहां दुकानके खुलने और बन्द होनेका समय सरकार-की तरफसे नियत होता है। इतवारको सब दुकानें, सिनेमा, थियेटर बन्द रहते हैं।* इसके अतिरिक्त सब दुकानें सप्ताहमें एक दिन—प्रायः बुध या शनिवारको—आधे दिनके लिए, यानी दोपहरके एक बजेके बाद बन्द रखनी पड़ती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि दुकानदार अथवा नौकर कोई भी सप्ताहमें नियमित घण्टोंसे अधिक काम न करे। सबको पर्याप्त आराम मिलता रहे। यदि कभी कोई दुकान इस नियमका उल्लङ्घन करे तो पुलिस उसपर जुर्माना कर सकती है।

इसके अतिरिक्त वर्षमें दो सप्ताहकी छुट्टी सब नौकरोंको मिलती है। घरकी मेड (कहारिन) भी सुबहको नियत समय-पर आयेगी और सन्ध्याको नियत समयपर चली जायगी। बीचमें लञ्चके लिए भी थोड़ी देरको छुट्टी देनी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त सप्ताहमें एक सारे दिनकी या दो आधे दिनोंकी—१ बजेके बाद—छुट्टी देनी होगी। इसी तरह रेलवेमें, ट्रामोंमें, बसोंमें, सब नौकरोंको सप्ताहमें एक दिनकी छुट्टी मिलेगी, और वर्ष-भरमें दो हफ्तेकी। यह सब लोग दो हफ्तेकी छुट्टीमें समुद्रके किनारे किसी रमणीक स्थानपर जाते हैं। गर्मीके दिनोंमें लाखोंकी संख्यामें यात्री समुद्र-तटपर जाते हैं। समुद्रके किनारे कुछ शहर इसी बातके लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी मामूली जनसंख्या थोड़ी है, परन्तु छुट्टीके दिनोंमें—मईसे जुलाई तक—लाखोंकी भीड़ हो जाती है। चपरासीसे प्रोफेसर तक, मुहर्रिरसे जज तक, कहारसे लखपती तक सब वर्षमें कमसे कम दो-तीन हफ्तेकी छुट्टी मनाते हैं। बड़े-बड़े प्रोफेसर लोग सप्ताहमें डेढ़ दिन—शनिवार दोपहरके एक बजेसे इतवारको रात तक आराम करते हैं। सिनेमा जाते हैं, नृत्यमें शरीक होते हैं, पिकनिक-पर जाते हैं या घरपर ताश, शतरञ्ज खेलते हैं; परन्तु मानसिक काम नहीं करते। इसका फल यह होता है कि मस्तिष्कको काफी आराम मिल जाता है और सोमवारको मस्तिष्क बिल-कुल ताजा रहता है, पढ़नेमें खूब मन लगता है। इस देशमें एकादशीके व्रतका कदाचित् यही कारण रहा हो कि तन-मन-को पन्द्रह दिनमें एक दफा आराम मिल जाय। परन्तु अब तो रिवाज ही उठ गया। सालके ३६५ दिन दुकानदारोंके लिए तो लगभग एक-से ही हैं। न दुकानोंके खुलने बन्द होनेका समय है। कुछ दुकानें तो सुबह तड़केसे रातके १ बजे तक खुली रहती हैं। नौकरोंको छुट्टीकी कोई व्यवस्था नहीं। छः रुपये महीना और खुराकमें २४ घण्टे काम ले सकते हैं।

वहां मूल्यका रुपया सौदा लेनेके साथ ही रजिस्टरपर चढ़ा दिया जाता है। यहां तो बहुधा देखा जाता है कि

* पिछले दिनों इस नियममें कुछ संशोधन हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दुकानदार नामा अपनी सन्दूकचीमें डालते जाते हैं। रात्रिमें या दो-चार दिनमें कभी एक दफा हिसाब लगाते हैं। परन्तु वहां तो सौदा बिकनेके साथ ही रुपया खातेपर चढ़ता जायगा। ऐसा करनेकी दो रीतियां हैं। टाइप-राइटरकी शक्लकी एक छोटी-सी मशीन होती है, जिसे मनी-रजिस्टर कहते हैं। जिस तरह टाइप-राइटरमें बहुत-से खटके होते हैं जिनपर अक्षर पड़े रहते हैं, उसी तरह इस मशीनमें खटकोंपर दाम पड़े रहते हैं : एक पेनी, दो पेनी,·····१ शिलिङ्ग ३ पेनी, १ शिलिङ्ग ६॥ पेनी। मान लीजिये कि किसी ग्राहकने १ शिलिङ्ग १० पेनीका सौदा लिया और १० शिलिङ्गका नोट दिया। नोट हाथमें लेकर बिक्री करनेवाली बालिका १ शिलिङ्ग १० पेनीके खटकेपर जोरसे उंगली मारेगी। एक कार्ड ऊपर निकल आयेगा जिसपर पड़ा होगा १ शिलिङ्ग १० पेनी और नीचेकी दराज, जिसमें कई खानें होंगे, बाहर निकल आयेगी। अब वह स्त्री खानोंमेंसे रेजगी वापस करनेके लिए निकालेगी। उसके ऊपर निकले हुए कार्डसे यह लाभ है कि यदि वह भूल भी जाय कि कितनेका सौदा बेचा है तो वह कार्ड याद दिला देगा। वहां रेजगी गिननेका ढङ्ग भी यहांसे पृथक् है। यहांका दुकानदार तो इस तरह हिसाब करेगा—सौदा लिया १ शिलिङ्ग १० पेनीका। नोट दिया १० शिलिङ्गका। इसलिए शेष बचे ८ शिलिङ्ग २ पेनी—दुकानदार ८ शिलिङ्ग २ पेनी वापस दे देगा। परन्तु वहां स्त्री इस तरह गिनेगी—काफी रेजगारी दराजमेंसे निकालकर ग्राहकके हाथपर सामान रखकर कहेगी—१ शिलिङ्ग १० पेनी, और २ पेनी : ३ शिलिङ्ग। अब ३ शिलिङ्गके आगे १० शिलिङ्ग तक गिनकर दे देगी। इसमें यह लाभ है कि उसको मानसिक काम कुछ नहीं करना पड़ता और समयकी बचत हो जाती है।

इस मशीनका एक लाभ और भी है। मशीनके अन्दर एक कागज रहता है। जिस खटकेपर उंगली पड़ेगी उसी खटकेका मूल्य—यानी जितनेका सौदा बिका—कागजपर टाइप हो जायगा। इस तरह दिन-भरमें जितना सौदा बिकेगा, सबका मूल्य अपने-आप टाइप होता जायगा। सन्ध्याको दुकान बन्द करते समय सब स्त्रियां अपने-अपने कागज निकालकर जोड़ लगा लेंगी और दराजमेंसे सब रकम निकालकर उससे तुलना कर लेंगी। कागज और रुपया सब दुकानके दफ्तरमें ले जायंगी। वहां मैनेजर सब कागजोंको लेकर जोड़ लगा लेगा और सब रकम जमा कर लेगा। इस तरह मिनटोंमें पता चल जायगा कि उस दिन दुकानकी कितनी बिक्री हुई और उस दिनका हिसाब बेबाक हो जायगा।

दूसरी विधि यह है कि दस-बारह काउण्टरोंके बीचमें एक काउण्टर 'नकदी'का होगा। इसकी शक्ल रेलवेके टिकट-घरकी तरह होगी। बीचमें एक स्त्री बैठी होगी। इस स्त्रीके सिरके ऊपर एक खम्भेमें दस-बारह तार लगे होंगे, जिनके दूसरे सिरे दुकानके और काउण्टरों तक गये होंगे। हरएक तारके सिरेपर एक डोलची बंधी होगी। मान लीजिये, किसी ग्राहकने १ शिलिंगका साबुन लिया और एक पौण्डका नोट दिया। साबुनके काउण्टरकी बिक्री करनेवाली महिला एक रसीदपर लिखेगी "साबुन—१ शिलिंग"—रसीदके नीचेके कोनेमें लिखेगी "१ पौण्ड"। इस रसीदमें पौण्ड रखकर डोलचीमें रखेगी। डोलचीके पीछे एक लोहेकी सलाख अटकी रहती है। इस सलाखसे डोलचीको धक्का देगी। डोलची तेजीसे तारपर दौड़ेगी और नकदीके काउण्टरपर रुकेगी। वह स्त्री डोलचीको उतारकर कागज निकालेगी। रसीदपर मुहर करेगी। आधी रसीद फाड़कर अपने पास रखेगी। शेष आधी रसीदमें बाकी रेजगी डोलचीमें रखकर, डोलचीको उसी तरह साबुनके काउण्टरपर वापस भेज देगी। अब वह महिला इस डोलचीको उतारकर आधी रसीद, रेजगी और माल ग्राहकके हवाले करेगी। पाठक सोचेंगे कि इस तरह तो सौदा लेनेमें ग्राहकको बड़ी देर लगती होगी। पर ऐसा नहीं है। काम बड़ी फुर्तीसे होता है। यह सारा कार्य मिनटोंमें नहीं, बल्कि सेकेण्डोंमें ही हो जाता है।

इस विधिसे भी रुपया तो बराबर खातेपर चढ़ता ही जाता है, इससे एक विशेष लाभ यह है कि जो सामान बेचती है उसे रुपयेका हिसाब नहीं करना पड़ता, इसलिए भूल होनेकी सम्भावना कम है। और जो स्त्री नकदीपर है, उसे सौदा बेचनेसे कोई मतलब नहीं। उसका काम केवल रुपया जमा करना है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक सौदेका मूल्य दो व्यक्तियोंकी दृष्टिसे गुजर जाता है, इसलिए यदि दोनोंमेंसे एक कोई गलती भी करे, तो कदाचित् दूसरा उसे पकड़ ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हल्दीघाटीमें

श्री चतुरसेन शास्त्री

वर्षाऋतु थी, लेकिन पानी नहीं बरसता था। हवा बन्द थी, बहुत गर्मी और उमस थी। एक पहर दिन चढ़ चुका था। कभी-कभी धूप चमक जाती थी। आकाशमें बादल छाये हुए थे। अरावलीकी पहाड़ियोंमें, हल्दीघाटीकी दाहिनी ओर एक ऊंची चोटीपर दो आदमी जल्दी-जल्दी अपने शरीरपर हथियार सजा रहे थे। एक आदमी बलिष्ठ शरीर, लम्बे कद, चौड़ी छातीवाला था। उसकी घनी और काली मूंछें ऊपरको चढ़ी हुई थीं और आंखें सुर्ख अङ्गारेकी तरह दहक रही थीं। वह सिरसे पैर तक फौलादी जिरह-बख्तरसे सजा हुआ था। इस आदमीकी उम्र कोई चालीस वर्षकी होगी। इसका बदन तांबेकी भांति दमक रहा था।

दूसरा आदमी भी लम्बे कदका था, किन्तु वह पहले आदमीकी अपेक्षा दुबला-पतला था। वह अपनी दाढ़ीको बीचमेंसे चीरकर कानोंमें लपेटे हुए था। उसके सरपर कुसुमल रङ्गकी पगड़ी बंधी हुई थी। उसके शरीरपर भी लोहेके जिरह-बख्तर थे। एक बहुत बड़ी ढाल उसकी पीठ-पर थी और दो सिरोहियां उसकी कमरमें बंधी हुई थीं। पहला व्यक्ति अपने सरपर अपना फौलादी टोप पहन रहा था, किन्तु वह ठीक जंचता नहीं था। दूसरे व्यक्तिने आगे बढ़कर कहा—घणीखम्मा अन्नदाता! आजका दिन हमारे जीवनके लिए बहुत महत्त्वका है। यदि आज नहीं तो फिर कभी नहीं। उसने आगे बढ़कर पहले आदमीके झिलमिले टोपको ठीक तरहसे कस दिया। और फिर एक विशालकाय भाला उठाकर उस व्यक्तिके हाथमें दे दिया।

पहले व्यक्तिने मर्मभेदिनी दृष्टिसे अपने साथीको देखा। उसने मजबूतीसे अपनी मुट्ठीमें भालेको पकड़ा और मेघ-गर्जनाकी भांति गम्भीर स्वरमें कहा—ठाकरां, तुमने ठीक कहा—"आज नहीं तो फिर कभी नहीं।"

यह पहला व्यक्ति मेवाड़का हिन्दू-पति प्रताप था और दूसरा दुर्जनसिंह बघेला सलूंवराका सरदार था। सरदारने अपनी कमरमें दूधकी भांति सफेद पटका बांधते हुए कहा—अन्नदाता! आज हमारी कराली तलवार बहुत दिनोंकी अभिलाषाको पूरी करेगी। आज हम अपनी स्वाधीनताके युद्धमें अपने जीवनको सफल करेंगे, जीतकर या हारकर। प्रतापने कहा—बिलकुल ठीक, यही होगा। मैं आज उस भाग्यहीन राजपूत कुल-कङ्ककको, जिसने अपने वंशकी आन हीको नहीं, राजपूत मात्रके वंशको कलङ्कित किया है, इस अपराधका बराबर दण्ड दूंगा। वह एक बार फिर ऊंचाई तक तनकर खड़ा हो गया और उसने एक बार अपने उस विशालकाय भालेको अपने विशाल भुजदण्डपर तोला।

सरदारने अचानक चौंककर कहा—अन्नदाता! आपकी यह मुक्तामणि तो यहींपर रह गयी। यह कहकर उसने पत्थरकी चट्टानपर पड़ी हुई एक देदीप्यमान मणि उठाकर प्रतापके दाहिने भुजदण्डपर बांध दी। वह सूर्यके समान चमकती हुई मणि थी। उसे देख प्रतापने हंसकर कहा—वाह! इस अमूल्य मणिको तो मैं भूल ही गया था; परन्तु ठाकरां, सच बात तो यह है कि अब भूलनेके लिए मेरे पास बहुत कम चीजें रह गयी हैं।

सरदारने हाथ जोड़कर विनीत स्वरमें कहा—स्वामी, आपका जीवन और आपका यह भाला जब तक सुरक्षित है, तब तक आपको संसारकी किसी बहुमूल्य वस्तुकी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं। हमारे जीवनकी सबसे बहुमूल्य वस्तु तो हमारी स्वतन्त्रता है। अगर हम उसकी रक्षा कर सके तो हमें ऐसी छोटी-मोटी मणियोंकी कोई आवश्यकता नहीं रहेगी।

राजाने मुसकराकर वृद्ध सरदारकी ओर देखा। सरदार मनोयोगसे वह मणि राजाके दाहिने भुजदण्डपर सावधानीसे बांध रहे थे। प्रतापने फिर मुसकराकर कहा—किन्तु ठाकरां, क्या सचमुच आपको इस बातका विश्वास है? इस मणिमें क्या वह चमत्कार है कि जिसके विषयमें किम्बदन्ती चली आ रही है? क्या यह सच है कि जो कोई इस मणिको पासमें रखेगा वह युद्धमें अजेय और सुरक्षित रहेगा? सरदारने गम्भीरतासे कहा—अन्नदाता!



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बुड्ढे लोगोंसे यही सुनते आये हैं। प्रतापने एक बार फिर अपने भालेको हिलाया। "तब ठीक है, आज इस बातकी परीक्षा हो जायगी। परन्तु ठाकरां, इस बातका फैसला कैसे होगा कि इस मणिका प्रभाव सबसे अधिक है या मेरे इस मित्रका।" उसने गर्वपूर्ण दृष्टिसे अपने भालेकी तरफ देखा, उसे एक बार फिर हिलाया। उस धुंधले सूर्यके प्रकाशमें उसकी बिजलीके समान चमक उसकी आंखोंमें कौंधा मार गयी। उसने अपने होठोंको सम्पुटमें कस लिया और एक बार फिर जोरसे अपने भालेको अपनी मुट्ठीमें पकड़ा और कहा—मेरे प्यारे सरदार! जब तक यह वज्रमणि मेरे हाथमें है; मुझे किसी दूसरी मणिकी परवाह नहीं।

पर्वतकी उपत्यकासे सहस्रों कण्ठ-स्वरोंका जयघोष सुनाई पड़ा। राजाने कहा—सेना तैयार दिखती है। अब हम लोगोंको भी चलना चाहिए। वह आगेको और बुड्ढा सरदार उसके पीछे-पीछे।

( २ )

तीस हजार योद्धा उपत्यकाके समतल मैदानमें व्यूह-बद्ध खड़े थे। घोड़े हिनहिना रहे थे और योद्धाओंको तलवारें झनझना रही थीं। उस समय धूप कुछ तेज हो गयी थी; बादल फट गये थे। सुनहरी धूपमें योद्धाओंके जिरह-बख्तर और उनके भालेकी नोकें बिजलीकी तरह चमक रही थीं। वे सब लौह पुरुष थे, सच्चे युद्धके व्यवसायी, जो मृत्युके साथ खेलते थे, और जिन्होंने जीवनको विजय कर लिया था। देश और जातिके वे पिता थे। वे वीरोंके वंश-धर थे और स्वयं वीर थे। वे अपनी लोहेकी छातीकी दीवारें बनाये निश्चल खड़े हुए थे। चारण और बन्दीगण कड़खेके तालपर विरद गा रहे थे। धौंसे बज रहे थे। घोड़े और सिपाही-सब कोई उतावले हो रहे थे।

सेनाके अग्रभागमें एक छोटा-सा हरियालीका मैदान था। उसमें १७ योद्धा सरसे पैर तक शस्त्रोंसे सजे हुए खड़े थे। उनके घोड़े उन्हींके पास थे और वे सब भी जिरह-बख्तरसे सुसज्जित थे। सेवक उनकी बागडोर पकड़े हुए थे। ये मेवाड़के चुने हुए सरदार थे और अपने राजाकी प्रतीक्षामें खड़े हुए थे।

एक सिंहकी भांति राजाने उनके बीचमें पदार्पण किया। सत्रह सरदार पृथ्वीमें झुक गये। उनकी तलवारें खनखना उठीं और पीठपर बंधी हुई बड़ी ढालें हिल पड़ीं। सेनाने महाराजको देखते ही वज्रध्वनिसे जयघोष किया। प्रतापने एक ऊंचे टीलेपर खड़े होकर अपने सरदारों और सेनाको सम्बोधित करके कहा—"मेरे प्यारे वीरोंके वंशधरो! आज हम वह कार्य करने जा रहे हैं, जो हमेशा हमारे पूर्वजोंने किया है। हम आज मरेंगे अथवा विजय प्राप्त करेंगे। हमारा इस युद्धमें कोई स्वार्थ नहीं है। हम केवल इसलिए युद्ध कर रहे हैं कि हमारी स्वतन्त्रतामें हस्तक्षेप हो रहा है। क्या यहांपर कोई ऐसा राजपूत है जो पराया गुलाम बना रहना पसन्द करे? उसे मेरी तरफसे छुट्टी है, वह अपने प्राण लेकर यहांसे अलग हो जाय। परन्तु जिसने क्षत्राणीका दूध पिया है, उसके लिए आज जीवनका सबसे बड़ा दिन है। आज उसे अपने जीवनकी सबसे बड़ी साध पूरी करनी चाहिए।" इसके बाद प्रतापने एक ललकार उठायी और उच्च स्वरसे पुकारकर कहा—वीरो! क्या तुम्हारे पास तलवारें हैं? सहस्रों कण्ठ-स्वर चिल्ला उठे—हमारे पास दो-दो तलवारें हैं। राजाने फिर उसी तेजस्वी स्वरमें कहा—और तुम्हारी कलाइयोंमें उन्हें मजबूतीसे पकड़ रखनेके लिए बल है? सेनाने फिर जयनाद किया, हजारों कण्ठ चिल्लाकर बोले—हम जीते-जी और मर जानेपर भी अपनी तलवारोंको नहीं छोड़ेंगे, हममें यथेष्ट बल है। राजाने सतेज स्वरमें कहा—तब चलो, हम अपनी स्वाधीनताके युद्धमें अपने जीवन और अपने नामको सार्थक करें। एक गगनभेदी वाणीसे सारा वातावरण भर गया। प्रताप उछलकर चेतक-पर सवार हो गया और तुरत ही सरदारोंने उसे चारों तरफ-से घेर लिया। पहाड़ी नदीके तीव्र प्रवाहकी भांति यह लौह पुरुषोंका दल अग्रसर हुआ। धौंसा बज रहा था और कड़खेके तालपर चारण और बन्दीगण सिपाहियोंकी प्रत्येक टुकड़ीके आगे उनके पूर्वजोंकी विरुदावलियां ओज-भरे शब्दोंमें गाते हुए चल रहे थे।

( ३ )

मुगल सैन्य एक लाखसे अधिक था। जिसमें ६० हजार चुने हुए घुड़सवार थे। उसमें तुर्क, तातार, यवन, ईरानी और पठानी सभी योद्धा थे। सवारोंके पीछे हाथियोंका दल था और उनपर धनुर्धारी योद्धा सजे हुए थे। दाहिनी तरफ आमेरके वीर-शिरोमणि मानसिंह ३० हजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कछवाहोंको लिये हुए खड़े थे। बायीं तरफ सेनापति मुजफ्फर खां बाईस हजार मुगलोंके साथ था। हरावलमें दस हजार चुने हुए पठानोंकी फौज थी। बीचमें एक ऊंचे हाथीपर शाहजादा सलीम अपने ६ हजार शरीररक्षकोंके साथ युद्धकी गति-विधि देख रहा था। दोनों सेनायें सामना होते ही भिड़ पड़ीं। प्रताप अपनी सेनाके मध्यभागमें चल रहे थे। उनके दाहिने भागमें सलूंबरा सरदार थे और बायीं ओर विक्रमसिंह सोलङ्की। प्रतापने सोलङ्कीको शत्रुके दाहिने पक्षपर जमकर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। इसके बाद तुरत ही उन्होंने सलूंबरा सरदारको सीधे मुगल-पक्षके बायें पक्षमें घुस जानेका आदेश दिया और फिर वे तीरकी भांति अपने चुने हुए वीरोंके साथ मुगल सैन्यके हरावलपर टूट पड़े। प्रतापका दुर्धर्ष वेग मुगल सैन्य न सह सका। हरावल टूट गया और सेनाके सब प्रबन्धमें तुरत गड़बड़ी पैदा हो गयी। सलीमने अपनी सेनाको भागते हुए देखकर अपने हाथीके पैरोंमें जञ्जीर डाल दी। शाहजादेको दृढ़तासे खड़ा देखकर मुगल सेना फिरसे लौट आयी। अब युद्धका कोई क्रम न रह गया था। तेगासे तेगा बज रहे थे, दुधारें खड़क रही थीं, खूनके फव्वारे बह निकले थे। घायलों और मरते हुओंका चीत्कार सुनकर कलेजा कांपता था। योद्धा लोग वीरदर्पसे उन्मत्त होकर घायलों और अधमरोंको अपने पैरोंसे रौंदते हुए आगे बढ़ रहे थे। प्रताप अप्रतिम तेजसे देदीप्मान थे और वे दुर्धर्ष शौर्यसे मुगल सैन्यमें घुसते जा रहे थे। सरदारोंने उनको रोकनेके बहुत प्रयत्न किये; परन्तु उनका क्रोध निस्सीम था, वे बढ़ते ही चले गये। सरदारोंने उनके अनुगमनकी चेष्टा की परन्तु प्रताप उनसे दूर होते चले गये। युद्धका बहुत कठिन समय आ गया था। प्रतापके चारों तरफ लाशोंके ढेर थे परन्तु शत्रु उनकी तरफ उमड़े चले आ रहे थे। उनका चेतक हवामें उड़ रहा था। वे सलीमके हाथीके पास जा पहुंचे। उन्होंने चेतकको एड़ दी और भालेका एक भरपूर हाथ उछलकर हौदेमें मारा। पीलवान मरकर हाथीकी गर्दनपर झूल पड़ा। सलीमने हौदेमें छिपकर जान बचायी। फौलादके मजबूत हौदेमें टक्कर खाकर प्रतापका भाला भन्नकर टूट पड़ा। प्रतापने खींचकर दुधारा निकाल लिया। हजारों मुगल उनके चारों तरफ थे, हजारों चोटें उनपर पड़ रही थीं। प्रताप और उनका चेतक बराबर चले जा रहे थे। प्रतापने आंख उठाकर देखा तो वे अपनी सेनासे बहुत दूर चले आये थे। उन्होंने जीवनकी आशा छोड़ दी और फिर दोनों हाथोंसे तलवारें चलाने लगे, लाशोंका तूमार लग गया। चिल्लाहट और चीत्कारके मारे आकाश रो उठा। प्रतापका सुनहरे कामका झिलमिला टोप धूपमें सूर्यकी भांति चमक रहा था। और उनके भुजदण्डमें बंधा हुआ वह अमूल्य रत्न आंखोंमें चकाचौंध लगा रहा था। धीरे-धीरेसे मुगल योद्धा उनपर टूट पड़ते थे। प्रतापके बहुत-से घाव लग गये थे। वे शिथिल होते और थके जा रहे थे। उनके शरीरका बहुत रक्त निकल चुका था। उन्होंने थकित दृष्टिसे अनन्त तक फैले हुए मुगल सैन्यकी ओर देखा, एक ठण्डी सांस ली और अपने हृदयमें एक वेदनाका अनुभव किया। वे मृत्युसे आंख-मिचौनी खेल रहे थे।

( ४ )

सलूंबरा सरदारने दूरसे देखा। वे शत्रुओंके दाहिने पक्षको बिलकुल विध्वंस कर चुके थे। कछवाहोंसे उन्होंने खूब लोहा लिया था। उन्होंने दूरसे देखा प्रतापका अकेला झिलमिला टोप और वह अमूल्य मणि मुगलोंके अनन्त सैन्य-समुद्रमें डूबती हुई नौकाके समान एक क्षणिक झलक दिखा रहे हैं। उनके हृदयमें चोट लगी। उन्होंने कहा—अरे! मेवाड़का सूर्य तो यहीं अस्त हो रहा है। बुड्ढे बाघने अपने घोड़ेको एड़ दी, उसकी बाग मोड़ी और अपने योद्धाओंको ललकारकर कहा—हिन्दूपति महाराणाकी जय हो, वह देखो महाराणाने शाहजादेके हाथीको घेर लिया, आओ चलो आज हम प्राण देकर महाराणाका अनुगमन करें। वीरोंने हुङ्कार भरी। बिजलीकी तरह तलवारें चमकने लगीं और तलवारके जादूसे रास्ता बनने लगा। और अमर वीरोंकी वह छोटी-सी टुकड़ी शत्रु-सैन्यको चीरती हुई क्षण-क्षणमें महाराणाके निकट होने लगी। महाराणाका एक हाथ बिलकुल निकम्मा हो गया था। अब उसमें वार करनेकी ताकत नहीं थी; वह केवल अपना बचाव करते थे। उनकी गर्दन कन्धेपर लटकने लगी। उन्हें मुमूर्ष अवस्थामें देखकर यवन-सैन्यने वज्रध्वनिसे अल्लाहो अकबरका नारा लगाया और दूसरे ही क्षण वह नाद "जय एकलिङ्ग" की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वज्र-गर्जनामें विलीन हो गया। एक दफा फिर तलवारोंके उस समुद्रमें ज्वार आया। महाराणाने सचेत होकर पीछेकी ओर देखा—रङ्गीन पगड़ियां उनकी तरफको लहराती हुई चली आ रही हैं। उन्होंने एक बार चेतकको फटकारा।

दूसरे ही क्षण किसीने उनके सरपरसे वह झिलमिला टोप उतार लिया और एक दूसरी पगड़ी उनके सरपर रख दी। वह बहुमूल्य मणि भी उनके भुजदण्डसे खोल ली गयी। महाराणाने मुरझायी हुई दृष्टिसे देखा—सलूंबरा सरदार अपने घोड़ेकी बागको दांतोंसे पकड़े हुए उनका झिलमिला टोप सरपर रखे हुए हैं और उनकी वह मणि भी सरदारके दाहिने भुजदण्डपर बंधी हुई है, वे अपनी ओर उमड़ते हुए मुगलोंको ढकेलते हुए आगे बढ़ रहे हैं। प्रतापने कहा—ठाकरां! यह क्या? सरदारने दोनों हाथोंसे तलवार चलाते हुए कहा—अन्नदाता! आज यह सेवक अपने नमकका हक अदा करेगा। आप हिन्दूकुलके सूर्य हैं, पीछेको हटते जाइये। असमय हीमें सूर्यको अस्त न होना चाहिए। जाइये स्वामी। सरदारने अपने हाथसे चेतककी बाग मोड़ दी। और वे उनको बीचमें करके पीछे हटने लगे। बेतोड़ लोहेकी मारें चारों तरफसे पड़ रही थीं, अपने-परायेकी किसीको सूझ नहीं थी। सलूंबरा सरदार बुड्ढे बाघकी भांति भयानक वेगसे हाथ चला रहे थे। प्रतापने थोड़ी देर विश्राम पाकर चैतन्य लाभ किया। उन्होंने कम्पित स्वरसे कहा—ठाकरां, आपके वंशजोंको इस राज-सेवाका पुरस्कार मिलेगा। प्रतापने चेतकको एड़ी दी और वे युद्धक्षेत्रसे बाहर आ गये। झिलमिला टोप और मणि सलूंबरा सरदारके मस्तक और भुजदण्डपर मुगल सैन्यके बीच उसी प्रकार देदीप्यमान हो रहे थे और उसी प्रकार वह भुजदण्ड अनेकों मुगलोंके सर काट रहा था। सारा यवन दल अल्लाहो अकबरका जयनाद करता हुआ उसी झिलमिले टोप और देदीप्यमान मणिको लक्ष्य करके धावे कर रहा था। असंख्य शस्त्र उसपर टूट रहे थे। धीरे-धीरे जैसे सूर्य समुद्रमें अस्त होता है उसी तरह लहूसे भरे हुए उस रण-समुद्रमें, वह देदीप्यमान मणिसे पुरस्कृत वीर भुजदण्ड और उस प्रतापके झिलमिले टोपसे सुरक्षित वह उन्नत मस्तक झकता ही चला गया और अन्तमें दृष्टिसे ओझल हो गया।

( ९ )

युद्धक्षेत्र कई मील पीछे रह गया था। एक नालेके किनारे प्रताप अकित भावसे एक पत्थरका सहारा लिये हुए पड़े थे। और उनका चेतक वहींपर पड़ा हुआ अन्तिम सांस ले रहा था। प्रतापने पहले अञ्जलिमें जल लेकर मुमूर्ष चेतकके मुंहमें डाला। उसने जलको कण्ठसे उतारकर एक बार अपने स्वामीकी ओर देखा और उसके बाद दम तोड़ दिया। वीरोंका वंशधर वह प्रतापी राजा अपने उस घोड़ेसे लिपटकर विलाप करने लगा। उसके घावोंसे रक्त बह रहा था और उसके अङ्ग-अङ्ग घावोंसे भरे हुए थे। किसीने पुकारा—महाराज! आप जैसे वीरको इस असमयमें कातर होनेका मौका नहीं है। प्रतापने आंखें उठाकर देखा, उनके चिरशत्रु भाई शक्तिसिंह थे। प्रतापने ज्वलमान नेत्रोंसे शक्तिसिंहकी ओर देखा और कहा—ऐ शक्तिसिंह, तुम आज इस समय ११ वर्ष बाद अपने उस अपमानका बदला लेने आये हो। मैंने तुम्हें मुगलोंके सैन्यमें बहुत ढूंढ़ा। मेरे अपराधी तुम और मानसिंह थे, सलीम नहीं। तुम लोग राजपूत पिताके पुत्र होकर और राजपूतनीका दूध पीकर विधर्मी मुगलोंके दास बने। मैं आज तुम दोनों राजपूत कुल-कलङ्कियोंको मारकर अपनी जातिके कलङ्कको नष्ट किया चाहता था। लेकिन अब तुम देखते हो कि इस समय तो मैं खड़ा भी नहीं हो सकता और मेरा प्यारा सहचर भाला उस युद्धमें टूट गया, मेरी तलवार भी टूट गयी है; मेरे पास कोई भी शस्त्र नहीं है। परन्तु तुम्हारे जैसे गुलाम गीदड़, सिंहको घायल समझकर उसपर आक्रमण करें यह कभी सम्भव नहीं। आओ, मैं मरनेसे पहले एक कलङ्कित राजपूतसे पृथ्वीमाताका उद्धार करूं। प्रतापने एक बार बल लगाकर उठनेकी चेष्टा की, पर वे उठ न सके। शक्तिसिंहने तलवार फेंक दी। उन्होंने एक दाभका टुकड़ा वहींसे उठा लिया और उसको दांतोंमें दबाकर दोनों हाथ जोड़कर वह आगे बढ़े। उन्होंने अपनी पगड़ी प्रतापके चरणोंमें रख दी और कहा—हिन्दूपति राणा! यह विश्वासघाती, कुल-कलङ्की कभी अपनेको आपका भाई कहनेका साहस नहीं कर सकता। तलवार मेरे पास है, उसकी धार अभी तीखी है। लीजिये महाराज और आप अपने अपराधीको दण्ड दीजिये। उसने तलवार महाराणाके आगे रख दी। और वह सर झुकाकर महाराणाके चरणोंमें पड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गया। राणीकी आंखोंमें आंसू उमड़ आये, उन्होंने गद्गद कण्ठसे कहा—भाई शक्तिसिंह! मुझे क्षमा करो, मैंने तुम्हें समझा नहीं; परन्तु यदि युद्धके पहले तुम मेरे सामने आकर यह शब्द कहते और आज मैं तुमको सच्चे शिशोदियाकी तरह तलवार चलाकर मरते देखता, तो मुझे बहुत आनन्द होता। शक्तिसिंहने कहा—युद्धके समय तक मेरा मन द्वेषके मैलसे परिपूर्ण था। और मैं मुगलोंका एक सेनापति था। लेकिन जब मैंने आपको घायल और निःशस्त्र युद्धसे लौटते हुए देखा और देखा कि दो मुगल शत्रु आपका पीछा कर रहे हैं तब मुझसे न रहा गया, माताका वह दूध, जो हमने और तुमने एक साथ पिया था, सजीव होकर उमड़ आया। मैंने सेनाको त्यागकर उन मुगलोंका पीछा किया, उन दोनों-को मार गिराया। वह देखो, वह दोनों नालेके किनारे मरे हुए पड़े हैं। अब हिन्दूपति महाराज, आपकी जय हो। यह तलवार कमरसे बांधिये और मेरा यह घोड़ा लीजिये, सामने-की उस घाटीमें चले जाइये। वहां मेरे विश्वस्त अनुचर हैं, आपके घावोंका तुरत बन्दोबस्त हो जायगा।

प्रतापने आश्चर्यचकित होकर कहा—'और तुम शक्ति-सिंह?' 'महाराज! मैं शाहजादे सलीमके पास जाकर अपना अपराध स्वीकार करूंगा और उनसे कहूंगा कि वह मुझे अपने हाथीके पैरोंसे कुचलवाकर मार डालें; क्योंकि मैंने उनका सैनिक होकर उनके शत्रुकी रक्षा की है।' शक्तिसिंह रुका नहीं, चल पड़ा। प्रतापने कहा—'भाई! सुनो' शक्ति-सिंहने रुककर कहा—'महाराज! मेरा अपराध बहुत भारी है। मैं कभी इस बातपर विश्वास नहीं कर सकता कि आप मुझे दण्ड दे सकते हैं। मैं यवन सेनापतिसे ही दण्ड चाहता हूं।' शक्तिसिंह चले गये। प्रतापने अपने वीर भाईको पहचाना। वे बड़ी देर तक उनकी ओर देखते रहे और भाईकी दी हुई तलवार कमरमें बांधी और घोड़ेपर चढ़कर चल दिये।

( ६ )

प्रातःकालका समय था। महाराणा प्रताप पर्वतकी एक गुफामें शिलापर बैठे हुए थे। पांच सरदार उनके इर्दगिर्द थे। उनके जख्म अब अच्छे हो चले थे। वह शक्तिसिंहकी बारम्बार तारीफ कर रहे थे। एक लम्बी मनुष्यमूर्ति उस गुफाके द्वारपर आकर खड़ी हो गयी। वे शक्तिसिंह थे। प्रताप भुजा भरकर उनसे मिले। शक्तिसिंहने वह मणि अपने वस्त्रमेंसे निकालकर प्रतापके सामने रखी और कहा—'महाराज! यह मणि सलूंबरा सरदारने मरते समय मुझे दी थी और वसीयत की थी कि मैं यह आपके हाथमें दूं।' इसके बाद उन्होंने सलूंबरा सरदारकी वीरतापूर्ण मृत्युका करुण वर्णन किया और वर्णन करते करते शक्तिसिंह रो पड़े। उन्होंने कहा—'महाराज, मैं अनुतापकी आगमें जला जाता हूं। आपके पाससे लौटकर मैंने सलूंबरा सरदारको देखा। उस समय भी उनके शरीरमें प्राण थे। और जब उन्होंने सुना कि स्वामीकी प्राणरक्षा हो गयी तो उनके मुखपर मुसकराहट आयी और फिर उनके प्राण निकल गये। धन्य हैं वे वीर क्षत्रिय सरदार, जो इस तरह अपने स्वामीके लिए प्राण देते हैं।'

'मैंने सलीमसे अपना अपराध कह दिया था। परन्तु सलीमने कोई दण्ड न देकर आपके पास आनेको कह दिया। अब महाराज आप मुझे दण्ड दीजिये।'

प्रतापने अपने भाईका हाथ पकड़कर प्रेमसे अपने निकट बठाया और उसी समय फर्मान किया कि—भविष्यमें सलूंबरा सरदारके वंशधर मेवाड़की सेनामें हरावलमें रहेंगे और शक्तिसिंहके वंशज युद्धक्षेत्रमें दाहिने पक्षपर रहेंगे।

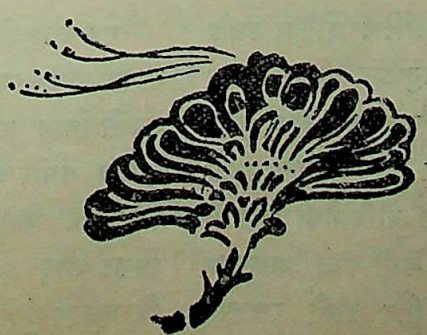

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नरभक्षकोंके देशमें स्वर्णराशि

श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा

गिनी सोनेका नाम तो हममेंसे प्रायः सभीने सुना होगा किन्तु यह गिनी सोना नाम क्यों पड़ा और इसका उद्गम जिस स्थानसे होता है, उसके सम्बन्धमें हमारा ज्ञान बहुत कम है। आस्ट्रेलियाके उत्तरमें उसके सन्निकट प्रशान्त महासागरमें न्यू गिनी नामक एक द्वीप है, जहांकी सुवर्ण-खानोंसे उत्कृष्ट सोना निकलता है। इसीसे इस सोनेको गिनी सोना कहते हैं। न्यू गिनी एक वृहत् द्वीप है। इसका क्षेत्रफल ३०६००० वर्गमील है। इसका पूर्वार्द्ध अंगरेजोंके और पश्चिमार्द्ध डचोंके अधीनस्थ है।

गत महायुद्धके पूर्व न्यू गिनीके कुछ अंशोंपर जर्मनीका अधिकार था। इस समय इन सबपर राष्ट्रसङ्घका अधिकार है और उसकी ओरसे आस्ट्रेलिया वहांका शासन-कार्य सञ्चालन करता है। अतएव एक प्रकारसे इन्हें अंगरेजोंके अधीनस्थ ही समझना चाहिए।

न्यू गिनी द्वीपके मध्यभागमें घोर जङ्गल और पार्वत्य-प्रदेशोंमें ऐसी कितनी ही जङ्गली जातियोंका वास है जो इस समय भी सभ्यताकी आदिम अवस्थामें हैं। आधुनिक सभ्यताके प्रकाशने इन्हें स्पर्श तक नहीं किया है। ये लोग इस समय भी एकान्त स्थलमें वास करते हुए स्मरणातीत कालकी प्राचीन प्रथाओंके अनुसार जीवन-यापन कर रहे हैं। पड़ोसियोंके साथ मिल-जुलकर रहना तो ये जानते ही नहीं। एक-दूसरेकी हत्या करने और नरमांस भक्षण करनेके लिए ये सदा उद्यत रहते हैं।

धनुषबाण ही इनका एकमात्र सङ्गी और साधन है और जहां कहीं ये जाते हैं, धनुषबाणको नहीं छोड़ते। ये सबके सब योद्धा होते हैं। प्रत्येक बालकके बालिग होनेपर उसके मुखमें एक विशेष प्रकारका उत्सव-अनुष्ठान किया जाता है। मुखमें एक बेंत मोड़कर उसकी पाकस्थली तक प्रवेश कराया जाता है। बादमें यही बेंत उसे गलेमें पहनना पड़ता है। गलेमें यह बेंत पहनना ही उसकी बालिगीकी निशानी है। मुख-मार्गसे बेंतको प्रवेश करानेमें कभी-कभी बालकका गला और पाकस्थली छिल जाती है और उससे रक्तस्राव भी होने लगता है। इस अनुष्ठानमें नाबालिग बालक और स्त्रियां भाग नहीं ले सकतीं। स्त्रियां यदि किसी प्रकार इस दृश्यको देख लें, तो उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जाता है। इस देशकी स्त्रियां ही खेतीका सारा काम-काज करती हैं। किसी स्त्रीका कोई निकट आत्मीय यदि शत्रुके हाथसे मारा जाता है तो फौरन् वह स्त्री अपने हाथकी एक अंगुली काटकर फेंक देती है। सनातन कालसे यह बर्बरोचित प्रथा इन लोगोंमें प्रचलित है। इस प्रथाके अनुसार किसी स्त्रीके जितने अधिक स्वजन शत्रुके हाथसे निहत होंगे, उतनी ही उसके लिए कृषिकार्य करनेमें असुविधा होगी। क्योंकि एक एक आत्मीयके मारे जानेपर उसे एक-एक अंगुली काटकर फेंक देनी होगी। युद्धक्षेत्रमें योद्धा पुरुषोंका आहार लेकर स्त्रियां उनका अनुगमन करती हैं। पराजित होनेपर अपनी स्त्रियोंको शत्रुदलके हाथमें समर्पित करके युद्धक्षेत्रसे पलायन करनेमें इन्हें लज्जा नहीं मालूम होती। बेचारी स्त्रियां पुरुषोंके समान शीघ्रतापूर्वक भाग नहीं सकतीं, इसलिए वे शत्रुओंके हाथमें पड़कर उनकी खाद्य-सामग्री बन जाती हैं। पराजित शत्रुओंको मारकर उनका मांस खानेमें इन्हें विशेष आनन्द मिलता है। किन्तु स्वाभाविक रूपसे मरे हुए मनुष्यका मांस ये नहीं खाते। केवल युद्धमें हताहतोंका ही मांस ये खाते हैं। शत्रुदलके मरे हुए मनुष्यको ये प्रज्वलित अग्निमें डाल देते हैं और उसकी देहकी त्वचाको खींचकर फेंक देते हैं। इसके बाद उस देहको टुकड़े टुकड़े काटकर बांसके चोंगेमें रखते हैं और उस मांसको बड़ी तृप्ति और गौरवके साथ भक्षण करते हैं।

एक ओर तो ये जङ्गली लोग इस प्रकार बर्बर अवस्थामें रहकर जीवन व्यतीत करते हैं और दूसरी ओर इनके सिरके ऊपरसे नित्य वायुयानोंका आवागमन होता रहता है। रात्रिके गभीर अन्धकारमें विद्युत्-ज्योति इनकी आंखोंको चकाचौंध किये डालती है, कितने ही प्रकारके कल-कांटोंके विकट शब्द इनके कानोंमें प्रवेश करते रहते हैं और विराट्काय ड्रेज ( Dredge ) मशीनें नदी-तटकी बालुका-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



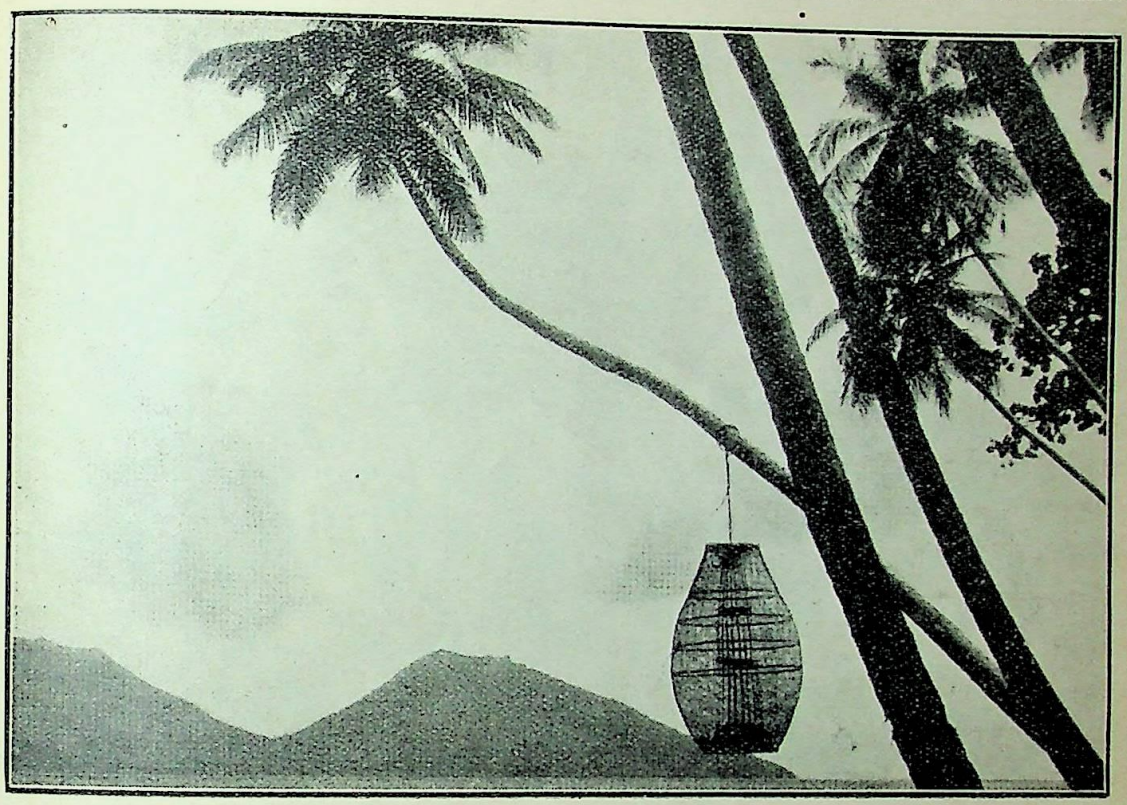

रबौलका बन्दरगाह एक ज्वालामुखी द्वारा सुरक्षित है। इस ज्वालामुखीको यहांके निवासी 'मां' कहते हैं। गांवके पास ताड़के पेड़से मछली मारनेका जाल लटका हुआ है।

राशिको खोद-खोदकर दूर फेंकती रहती हैं। आधुनिक विज्ञानकी ये सब करामातें इनके समीप ही होती रहती हैं। किन्तु इनके लिए यह सब पाश्चात्य इन्द्रजालके सिवा और कुछ नहीं है। इन्हें विज्ञानके इन चमत्कारोंको जाननेका कौतूहल नहीं होता। ये अपनी धुनमें ही मस्त रहते हैं। किन्तु आज न्यू गिनीमें वायुयान और नाना प्रकारके कल-कांटोंकी सहायतासे जो-कुछ हो रहा है वह वर्तमान सभ्यताके युगमें भी कम विस्मयजनक नहीं कहा जायगा। वायुयान द्वारा यहां जो कुछ हो रहा है वह तो सबसे बढ़कर आश्चर्यजनक है।

अंगरेजोंके अधीनस्थ न्यू गिनीमें सलामोया और पोर्ट मोरसबी ये दो जहाजी बन्दर प्रधान हैं। सुवर्ण-व्यवसायके कारण इस समय सलामोया एक अत्यन्त समृद्धिशाली बन्दर हो गया है। यह कोई बड़ा शहर नहीं है और न यहांकी जनसंख्या ही अधिक है। किन्तु प्रतिवर्ष यहांसे जिस परिमाणमें धन-सम्पदकी आमद-रफ्त होती रहती है उसकी हम दरिद्र भारतवासी कल्पना भी नहीं कर सकते।

वाड और बुलोलो ये दो स्थान यहांकी स्वर्णखानोंके प्रधान केन्द्र हैं। यहां श्वेताङ्ग व्यवसायी आकर बस गये हैं। यहांके आदिम निवासी उनके अनुचर बने हुए हैं और उनके संसर्गमें रहकर कुछ-कुछ सभ्य भी बन रहे हैं। सलामोया बन्दरसे वाड ३३ मील और पोर्ट मोरसबीसे २९० मील है। आवागमनके लिए वायुयानके सिवा और कोई सुविधा नहीं है। क्योंकि मध्य भागमें दुर्गम अरण्य एवं पर्वत हैं और उनसे होकर आवागमन करनेका कहीं कोई मार्ग नहीं है। पैदल जानेवालोंके लिए मार्गमें नाना प्रकारकी विपदोंकी आशङ्का है। खासकर नर-भक्षकोंके आक्रमणका भय सदा बना रहता है। ये लोग पार्वत्य-अञ्चलोंमें छिपे रहकर विचरण करते रहते हैं और पथिकोंपर अतर्कित भावसे आक्रमण कर बैठते हैं। सलामोयासे वायुयानको खान तक पहुंचनेमें आध घण्टेसे अधिक नहीं लगता।

सलामोयासे वाड तक जानेमें कितने ही अत्युच्च पर्वत-शिखरोंका अतिक्रमण करना पड़ता है। इसलिए वायुयानको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



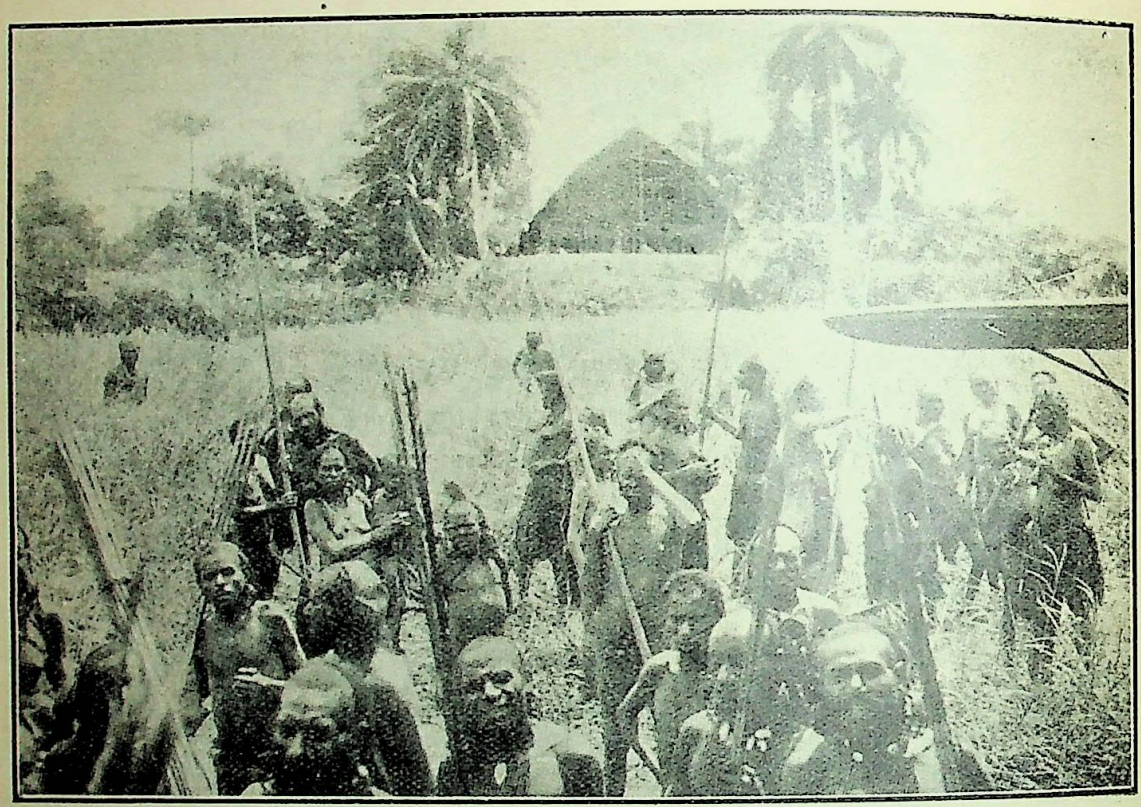

सशस्त्र नरभक्षक श्वेताङ्गोंको पहली बार देखकर उत्तेजित हो उठे हैं।

आकाश-मार्गमें बहुत ऊंचेसे होकर उड़ना पड़ता है। अनेक समय आकाश मेघाच्छन्न रहता है और उसपर भी कुहासा छाया रहता है। ऐसी अवस्थामें पर्वत-शृङ्गके ऊपरसे वायुयानका यातायात करना भी बहुत ही विपज्जनक होता है। फिर भी वायुयानोंका नित्य आवागमन यहांकी एक साधारण घटना है। जहाजी बन्दरसे खान तक कल-कांटा और मोटर आदि जितने सामान लाये जाते हैं, वे भी वायुयान द्वारा ही।

आस्ट्रेलिया द्वारा शासित प्रदेशकी राजधानीका नाम रबौल है। यह नगर न्यू गिनी द्वीपसे सटे हुए न्यू ब्रिटेन नामक एक अन्य द्वीपमें अवस्थित है। पहले न्यू गिनीके साथ जो कुछ वाणिज्य होता था, वह इस नगर द्वारा ही। उस समय नारियल, साबूदाना आदि चीजोंका ही वाणिज्य होता था। रबौलका बन्दरगाह एक ज्वालामुखी पर्वत द्वारा संरक्षित है। इस ज्वालामुखीको यहांके अधिवासी 'मां' नामसे सम्बोधन करते हैं। कतिपय वैज्ञानिकोंने यह भविष्यवाणी की है कि इस ज्वालामुखीका शीघ्र ही विस्फोट होनेवाला है। किन्तु गड़गड़ाहटकी आवाज सुनाई पड़नेके सिवा अभी तक और कोई विपज्जनक लक्षण नहीं देखा गया है। रबौलके आदिम अधिवासी "कनक" कहलाते हैं।

गत महायुद्धके कई वर्ष पूर्व रबौलके एक श्वेताङ्ग व्यवसायीको मार्कहम नदीके मुहानेके पास सोना पाये जानेकी टोह मिली। किन्तु यहां सोनेका परिमाण बहुत अल्प था और वह मिट्टी, पत्थर आदिसे इस कदर मिला हुआ था कि उसको लेकर व्यवसाय करना सम्भव नहीं था। परन्तु यह अनुमान किया गया कि नदीके मुहानेसे और कुछ दूरपर अवश्य ही सोनेकी खानें हैं। किन्तु नदी-मार्गसे वहां तक पहुंचना सम्भव नहीं था। नावसे जाना भी असम्भव था। क्योंकि नदीके दोनों तटोंपर इस प्रकार घने वृक्ष उगे हुए थे कि उन्हें कुल्हाड़ेसे काटकर रास्ता साफ किये बिना एक डग भी आगे बढ़नेका उपाय नहीं था। इसके सिवा भयङ्कर घने बनसे किसी भी क्षण नर-भक्षक लोग आकस्मिक रूपमें आक्रमण कर सकते थे। इसलिए पैदल जानेके सिवा और कोई चारा नहीं था। किन्तु इसमें भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



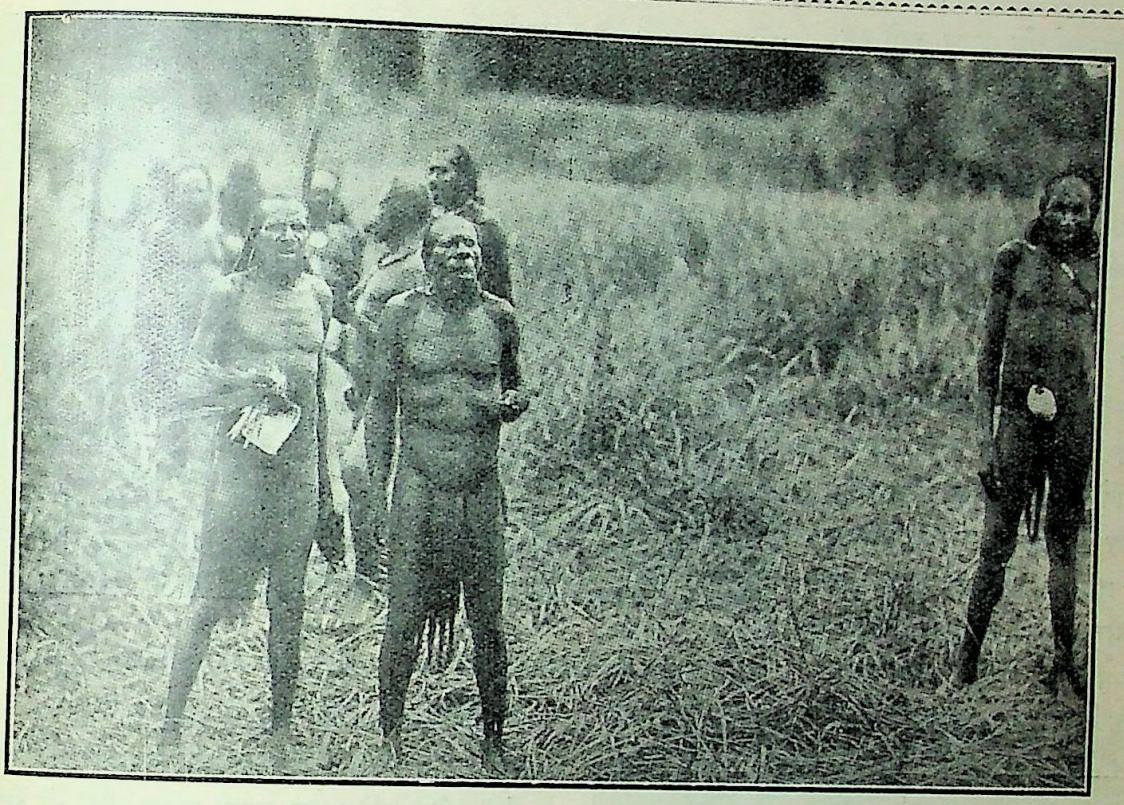

वायुयानके प्रथम दर्शनपर भय एवं विस्मयका भाव।

अनेक बाधायें थीं। बहुत आदमी साथ हुए बिना जाना मुश्किल था। दूसरी बात यह थी कि खाने-पीनेका सामान तथा खानोंमें काम करनेके लिए साज-सरञ्जाम भी आदमी-की पीठपर लादकर ले जाना पड़ता।

किन्तु इन सब बाधा-विघ्नोंके होते हुए भी स्वर्णका आकर्षण मनुष्यके लिए इतना प्रबल होता है कि उक्त व्यवसायी कई साथियोंको लेकर आखिर चल ही पड़ा। वस्तुओंको ढोनेके लिए देशी आदमी साथ कर लिये गये। अनेक दुःख-कष्ट सहन करके वे लोग पहाड़पर २२०० फीट ऊंचे तक चढ़ गये। वहां मार्कहम नदी और दो प्रधान शाखाओंके सङ्गमस्थलपर प्रचुर परिमाणमें सोना पाया गया। किसी और स्थानमें इतनी सुवर्णराशि होती तो वह कुबेरकी सम्पत्ति समझी जाती। किन्तु इस निर्जन दुर्गम प्रदेशमें सोना मिट्टीके मोल हो रहा था। वहांसे कुछ दूर और आगे बढ़नेपर एड्डी क्रीक नामक स्थानमें नदीके स्रोतके साथ सुवर्ण-जड़ित प्रस्तर-खण्ड प्राप्त हुए। इन प्रस्तरोंको संग्रह करके सोना निकालना उतना कठिन नहीं था। इसलिए वे लोग इस काममें जुट गये।

जब यह संवाद आस्ट्रेलिया पहुंचा तो वहांसे दलके-दल श्वेताङ्ग न्यू गिनी पहुंचे और सोना निकालनेके काममें लग गये। आस्ट्रेलियासे द्रुतगामी जहाजको मार्कहम नदीके मुहाने तक पहुंचनेमें १६ दिन लगते हैं। वहांसे एड्डी क्रीक पैदल १६ दिनका रास्ता है, मार्गके कष्ट भयानक एवं अवर्णनीय हैं, किन्तु इतनेपर भी कोई पश्चात्पद नहीं हुआ।

इन लोगोंके पहुंचते ही वहांके मूल-निवासी बर्बर लोग वहांसे हटकर अन्य स्थानोंमें चले गये। इधर श्वेताङ्ग व्यवसायी अन्यान्य द्वीपोंसे काले मजदूरोंको भगाकर घर-द्वार बनाने लगे और काम चलाने लगे। लकड़ीके घर तथा हाथसे काम करनेके उपयोगी औजार भी तैयार किये गये।

अन्तमें सन् १९२४ में सी० जे० लेमियन नामक एक यहूदी इञ्जीनियर वहां पहुंचा। नदीके सङ्गमस्थलपर प्रस्तर-मिट्टीमें जड़ित विराट् सुवर्ण-भाण्डारको उसने प्रत्यक्ष देखा। फिर एड्डी क्रीक पहुंचकर जो कुछ देखा उससे उसका यह विश्वास दृढ़ हो गया कि और भी ऊपर पर्वतशृङ्गपर अवश्य ही प्रचुर परिमाणमें सोना पाया जाता है, जहांसे सुवर्णजड़ित



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रस्तर-खण्ड स्रोतके साथ बहते हुए आते हैं। अतएव वह इस उद्गम-स्थानके सन्धानमें चल पड़ा।

अति कष्ट सहन करके, घोर दुर्गम अरण्य पार करके तथा दुरधिगम्य पर्वतमालापर आरोहण करके उसने उस स्थानका सन्धान लगाया। वहांका दृश्य बड़ा ही विस्मयजनक एवं विमुग्धकारी था। उस घोर निस्तब्धताके बीच पर्वत-शृङ्ग गर्वोन्नत मस्तकसे खड़ा था। मार्कहम नदीकी जलराशि प्रबल वेगसे प्रलय कल्लोल करती हुई ६ हजार फीटकी ऊंचाईसे निम्न भूमिमें पतित हो रही थी। इस जल-प्रपातके ऊपर आसपासके पहाड़में

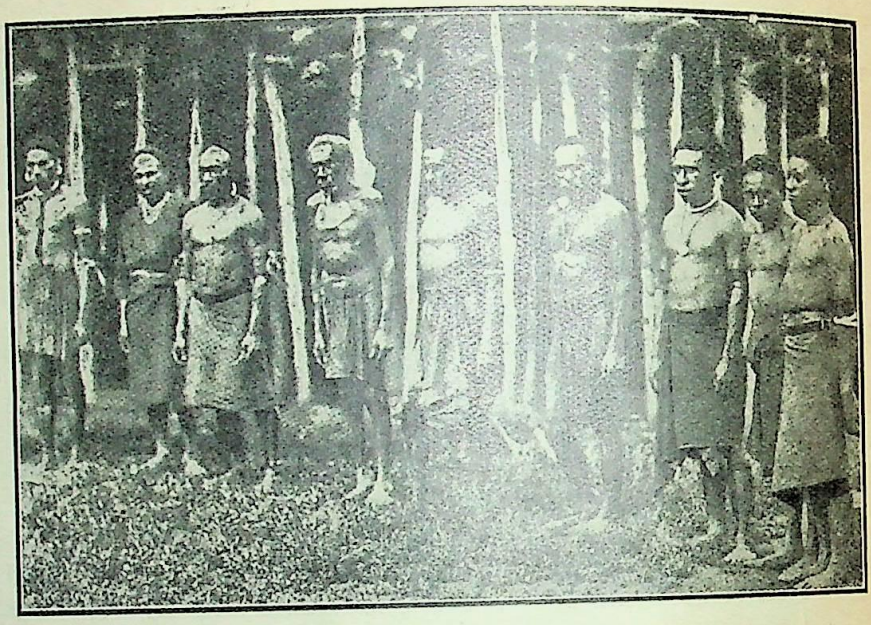

न्यू गिनीके नरभक्षकोंका एक दल। इनमें कुछ लोगोंने पेट्रोल आफिसर मि० किर्बीको मार डाला था।

स्थान-स्थानपर सुवर्णजड़ित प्रस्तर-खण्ड बिखरे पड़े थे। सूर्यकी रश्मिसे निकलकर उनकी आभा और भी देदीप्यमान हो रही थी। यहूदी इञ्जीनियर लेमियन चकित-स्तम्भित दृष्टिसे इस दृश्यको देखता रहा। उसने मनमें विचार किया कि इस स्थानसे एक दिनमें जितना सुवर्ण संग्रह किया जा सकता है उतना खानोंसे एक वर्षमें भी संग्रह नहीं किया जा सकता।

लेमियनने अपनी कल्पनाको चरितार्थ करनेके लिए एक वायुयान खरीद लिया और एक चालक नियुक्त करके उसे भाड़ेपर चलाना शुरू किया। इस प्रकार वायुयान द्वारा खनक लोग आवागमन करने लगे और प्रयोजनीय माल-असबाब ढोकर लाने लगे। पहले जिस मार्गको पूरा करनेमें १६ दिनका समय लग जाता था उसे पूरा करनेमें अब सिर्फ ३०-४० मिनट लगने लगे। क्रमशः लेमियनने और भी कई वायुयान खरीदकर भाड़ेपर चलाना शुरू किया। किन्तु लेमियनकी कल्पना अभी पूर्णरूपेण चरितार्थ नहीं हुई थी। उसका वह स्वप्नराज्य अब भी बहुत दूर था।

बैंक्स नामक एक विशेषज्ञ इञ्जीनियरसे इस सम्बन्धमें उसका वार्तालाप हुआ। बैंक्सने पहले उक्त स्थानोंमें सुवर्ण-के अस्तित्वके सम्बन्धमें जांच-पड़ताल की और इसके फल-स्वरूप जब उसे लेमियनके कथनकी सत्यतामें विश्वास हो

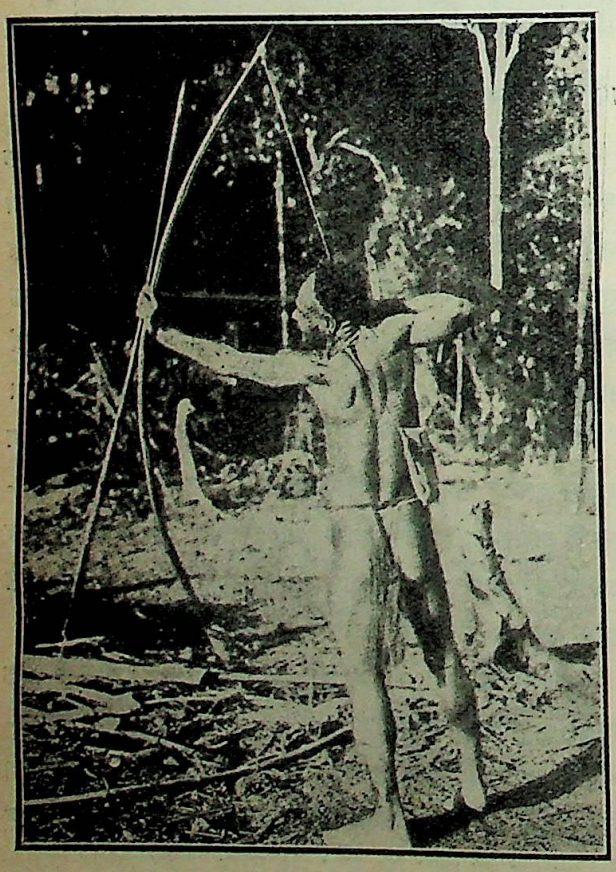

धनुष-बाण चलाते हुए एक जङ्गली योद्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गया तो वह लेसियनकी सहायता करनेके लिए तैयार हो गया। वायुयानके उठने और नीचे उतरनेके अड्डे तैयार होने लगे। आवश्यक कल-कांटोंमें ड्रेजर ही सबसे भारी था। उसके भिन्न भिन्न कल-पुर्जोंको अलग-अलग करके वायुयान द्वारा लानेपर भी वायुयानको कमसे कम ८६ मन-का बोझ ढोना पड़ता था। इतने बड़े बोझको लेकर ७५०० फीटकी ऊंचाईसे उड़ना वायुयानके लिए कितना कठिन कार्य है! बैंक्सके आदेशानुसार जर्मनीमें कई बोझ ढोनेवाले वायुयान और ड्रेजर तैयार होने लगे। ड्रेजरको चलानेके लिए ३५०० घोड़ेकी शक्तिका हाइड्रो इलेक्ट्रिक (Hydro-Electric) यन्त्र तैयार किया गया। इस समय वायुयानके आवागमनका यह व्यवसाय New Guinea Airways Ltd. नामक कम्पनी चला रही है। एड्डी क्रीकके पास कई सुरङ्गें भी तैयार की जा चुकी हैं। न्यू गिनी गोल्ड फील्डस् लिमिटेड, बुलोलो गोल्ड ड्रेनिङ्ग लिमिटेड और डे डान एण्ड कोरङ्गा गोल्ड लइसिङ्ग कम्पनी तथा और भी कई कम्पनियां इस समय यहां सोनेकी खानोंसे सोना निकालनेका काम कर रही हैं।

एड्डी क्रीकमें श्वेताङ्ग नर-नारियोंकी संख्या लगभग ४० है। उनके काले मजदूर, जो नरघातक बर्बरोंकी जातिके ही हैं, उन्हें जब चाहें विध्वंस कर सकते हैं। किन्तु अब तक ऐसी कोई दुर्घटना नहीं हुई है। श्वेताङ्ग बिना आग्नेय-यास्त्रके भी बाहर निकलते हैं। एड्डी क्रीकसे नरभक्षकोंकी वास-भूमि लगभग ७-८ मीलके अन्दर ही है।

किन्तु इतनेसे ही यह नहीं समझना चाहिए कि न्यू-गिनी द्वीपमें सोनेकी जहां-जहां खानें हैं उन सब स्थानोंका पता लग चुका है। सच तो यह है कि इस द्वीपके मध्य भागमें अब भी न मालूम कितने ऐसे स्थान हैं जहां अब तक किसी श्वेताङ्ग अन्वेषककी लोलुप दृष्टि नहीं पड़ी है और उन स्थानोंको वहांके नरभक्षक सुरक्षित रखे हुए हैं।

अभी थोड़े दिनकी बात है, राबर्ट मेकडा नामक एक अंगरेज एक दलके साथ सुवर्णके सन्धानमें निकला था। उसके दलमें सात श्वेताङ्ग और एक दर्जन देशी आदमी थे। मार्गके खतरोंसे वह भली भांति परिचित था। एक सप्ताह तक पैदल चलनेके बाद इसके आदमी एक पहाड़ीपर चढ़ने लगे। वहां मधुमक्खियों और जोंकोंके मारे उनके नाकों दम हो गया। रातमें मच्छड़ोंका उपद्रव भी कम नहीं था। मधुमक्खियां पसीनेसे भींगे हुए शरीरकी त्वचाको इस प्रकार चूसने लगती थीं कि उस स्थानपर फोड़े निकल आते थे और उनमें बड़ी पीड़ा मालूम होती थी। रातमें खीमेमें आग जलाकर किसी प्रकार उन्होंने मच्छड़ोंके आक्रमणसे आत्म-रक्षा की। फिर सुबह वे वहांसे रवाना होकर उस स्थानमें पहुंचे जहां जङ्गली बर्बरोंका निवासस्थान था। वहांसे उन बर्बरोंका ग्राम सन्निकट था। इसी स्थानपर खीमा गाड़कर वे ठहर गये। रातमें उन लोगोंके साथ जो देशी आदमी थे उनमेंसे एकने खीमेमें आकर सूचना दी कि नर-भक्षक लोग खीमेके आसपास चक्कर काट रहे हैं। यह सुनते ही दलके सब लोग खीमेसे बाहर निकलकर गांवकी तरफ चल पड़े। थोड़ी दूर चलकर एक झाड़ीकी ओटसे उन्होंने एक बड़ा ही विचित्र एवं विस्मयजनक दृश्य देखा।

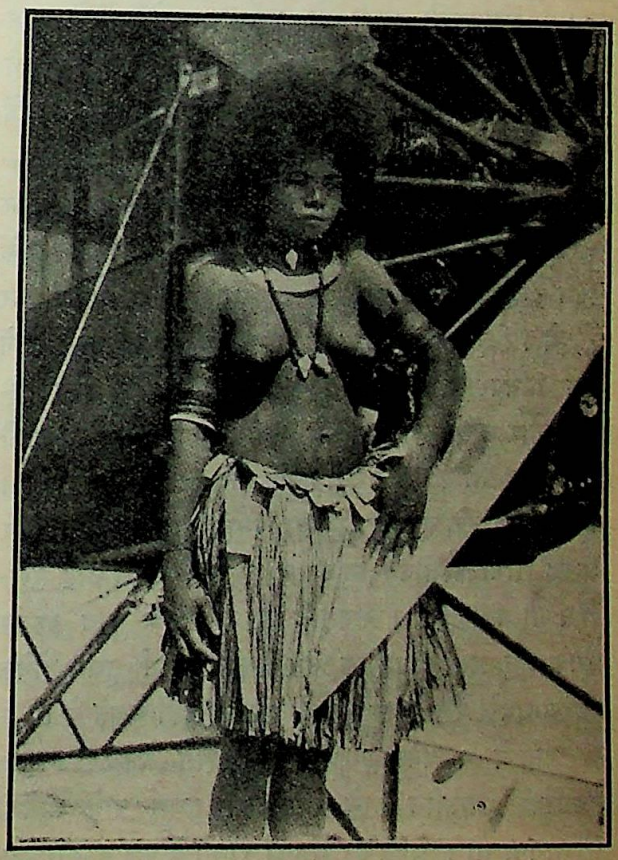

न्यू गिनीकी नरभक्षक जातिकी स्त्री जो अपने पतिको युद्धक्षेत्रमें सहायता पहुंचाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक चतुष्कोण वेदीके चतुर्दिक भयानक भेष-भूषावाले नरभक्षक कोई अनुष्ठान कर रहे थे। उनके बीचमें कई खम्भे गड़े थे जिनमें नरमुण्ड लटक रहे थे। उनके शरीर आच्छादित थे और गलेमें हड्डियोंके हार झूल रहे थे। वे सबके सब भाला, बर्छा, लाठी और धनुषबाणसे लैस थे। उन सबके बीचमें उनका पुरोहित था, जो 'टापू' कहलाता है। इस 'टापू' के एक-एक शब्दपर उस प्रदेशके समस्त अधिवासियोंका जीवन-मरण निर्भर करता था। अनुष्ठान समाप्त होनेके बाद नरभक्षक लोग वहांसे इन श्वेताङ्गोंकी टोह लेनेके लिए निकल पड़े। वहां सिर्फ उनकी स्त्रियां और चार प्रधान पुरोहित रह गये। इन चार पुरोहितोंमें दो-एक श्वेताङ्ग थे, जो इन सात श्वेताङ्गोंको देखते ही उन्हें पहचान गये। उन दो छद्मवेषी श्वेताङ्ग पुरोहितोंने इन्हें जोरसे पुकारा और उनकी रक्षाके लिए ये सातों दौड़ पड़े। बस, अब क्या था। बातकी बातमें इन ९ श्वेताङ्गोंने बाकी दो नरभक्षक पुरोहितोंको मार गिराया। इसके बाद उन दो छद्मवेषी श्वेताङ्गोंने अपनी कहानी सुनायी कि किस प्रकार उनका दल सोनेकी खोजमें आया था और दलके सब आदमी—सिवा उन दोनोंके—नरभक्षकों द्वारा मार डाले गये। उन दोनोंको पकड़कर नरभक्षक लोग गांवमें ले आये थे और एक खास उत्सवके दिन उन्हें जीते-जी आगमें पकाकर खा जानेका विचार कर रहे थे। किन्तु इसके पहले ही नरभक्षकोंके एक दूसरे दलने इस गांवपर आक्रमण कर दिया जिसमें इन दोनों श्वेताङ्गों-मैक्रे और उसके एक साथीने स्थानीय प्रधान पुरोहितकी बड़ी सहायता की और उसे शत्रुके हाथ बन्दी होनेसे बचाया। इस सहायताके कृतज्ञता-स्वरूप प्रधान पुरोहितने मैक्रे और उसके साथीको जीवनदान ही नहीं दिया, बल्कि उन्हें पुरोहित भी बना दिया। तबसे वे बराबर इनके बीच रहकर उनके अनुष्ठानोंमें शामिल होते थे और मार्ग दुर्गम होनेके कारण उनके बीचसे कहीं बाहर जा भी नहीं सकते थे।

अब ये ९ श्वेताङ्ग अन्वेषक वहांसे चलकर उन सब स्थलोंकी छानबीन करने लगे जहां सुवर्ण पाये जानेकी सम्भावना थी। बहुत दूर चलकर रातमें वे एक गम्भीर उपत्यकामें पहुंचे जिसका प्रवेशद्वार घनी झाड़ियोंसे बन्द था। यहीं ठहरकर उन्होंने रात बितायी। दूसरे दिन प्रातःकाल उस उपत्यकाके बालूमें उन्हें सर्वत्र सोना ही सोना दिखाई पड़ा। एक सप्ताह तक वहां ठहरकर उन्होंने लगभग दो हजार आउन्स बालुकासिश्रित सुवर्ण एकत्र कर लिया। जब तक वे वहां रहे, प्रतिक्षण नरभक्षकोंके विषाक्त तीरोंकी आशङ्का करते रहे जो किसी समय भी आकस्मात् वृक्षोंकी ओटसे उनके ऊपर पतित हो सकते थे। आखिर उनकी यह आशङ्का सच निकली। अन्तिम रातको नरभक्षकोंकी चीत्कार-ध्वनि अचानक ही रात्रिकी निस्तब्धताको भङ्ग करती हुई उनके खीमेमें पहुंची। सब एकाएक चौंककर जग पड़े। अपने रहनेके स्थानमें खीमेके चारों तरफ उन्होंने सूखे हुए झाड़ोंका ढेर लगाकर दीवारें जैसी बना रखी थीं। उसके नीचे सूराखोंमें बारूद जैसी कोई चीज रखी हुई थी जिसका अभिप्राय यह था कि ढेरमें आग लगा देनेपर उस बारूद-जैसी चीजके जलानेसे तोपके धड़ाकेकी-सी आवाज हो और शत्रु भयभीत होकर भग जायं। शत्रुदलके आक्रमण होते ही किसीने झाड़की दीवारमें आग लगा दी। बातकी बातमें अग्नि प्रज्वलित हो उठी और बड़े जोरोंसे तोप जैसे धड़ाकेकी आवाज होने लगी। सारा जङ्गल धुएंसे आच्छन्न हो गया और आगकी लपटें दूर-दूर तक जङ्गलमें फैलने लगीं। यह देखकर नरभक्षकोंको अपने घर-द्वार बचानेकी चिन्ता हुई और वे वहांसे अपने गांवकी तरफ दौड़ पड़े। इधर श्वेताङ्गों ने भी मौका पाकर सब सोना साथ लेकर वहांसे प्रस्थान कर दिया। दूसरे दिन वे एक नदीकी धाराके किनारेसे होकर चलने लगे। उस नदीमें मगरोंकी भरमार थी। नदीको तैरकर पार करना जानबूझकर मगरोंका शिकार बनना था। इसलिए यह उपाय सोचा गया कि मेक्रे और मेकडानल नदीको तैरकर उस पार जायं और वहांसे जङ्गली बर्बरोंकी डोंगियां चुपचाप ले आयें। और इधर नदी तटपर आग लगा दी जाय जिससे मगरोंका ध्यान इधर आकर्षित रहे। यही उपाय काममें लाया गया और अन्तमें डोंगियोंपर सवार होकर सबके सब निरापद स्थानपर पहुंच गये। इसके बाद भी दलके कई आदमी नरभक्षकोंके उस देशमें स्वर्णके सन्धानमें जानपर जोखिम उठाकर भी भटकते रहे। सचमुच, मनुष्यके लिए स्वर्णका आकर्षण बड़ा ही प्रबल होता है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ प्राच्य राष्ट्रीय झण्डे

श्री व्रजकिशोर वर्मा, 'श्याम'

राष्ट्रीय झण्डेकी पूजा सदियोंसे होती चली आ रही है। राष्ट्रीय झण्डा राष्ट्रीय भावनाका द्योतक, राष्ट्रकी जिन्दादिलीकी स्पष्ट सूचना तथा उसके जीवनकी आशाओं और आकांक्षाओंका साकार स्वरूप है। भू-मण्डलके प्रायः समस्त राष्ट्र उक्त भावनाओंके सामने अपना मस्तक झुकाते चले आ रहे हैं। पृथ्वीकी सब जातियोंने अपने झण्डेकी इज्जतके लिए, अपने जीवन तकका बलिदान चढ़ाया है। हिन्दुओंमें तो इसकी मर्यादाकी हद है। इस जातिका कोई भी यज्ञ ऐसा नहीं होता, जिसमें झण्डेकी पूजा न होती हो। इसके महत्त्वका पता तो हमें उस समय और अधिक चलता है जब हम देखते हैं कि महाभारतमें अर्जुनके रथकी पताकाकी रक्षाके लिए, भगवान् कृष्णने स्वयं महावीर हनुमानको नियुक्त किया था।

यह बात तो बहुत पुरानी है। हम आज भी देखते हैं कि जब कोई सेना अपने दुश्मनके किलेपर विजय प्राप्त करती है तब वह सबसे पहले वहांके झण्डेको ही बदलती है। वहांके झण्डेको गिराकर अपना झण्डा फहरा देती है। देखनेमें आता है कि पराजित सेनाकी जितनी वस्तुयें विजयीके हाथमें आती हैं, उनमें सबसे महत्त्वका स्थान पराजय पायी हुई सेनाके लुटे हुए झण्डेको मिलता है। आज भी लोग अपने झण्डेकी रक्षाके लिए सब-कुछ निछावर करनेके लिए तैयार रहते हैं। यह विचार आज भी बिना किसी काट-छांटके प्रत्येक सजीव राष्ट्रमें मौजूद है कि जो सेना और जो जाति अपने झण्डेके सम्मानके लिए—उसकी रक्षाके लिए जितनी ही अधिक आहुति दे सकती है, वह उतनी ही अधिक शक्तिशाली है। अंगरेज जातिमें यह भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। यह जाति अपनी सजीवता प्रकट करनेके लिए ही, जहां कहीं भी—चाहे वह अफ्रीकाका घना भयावना जङ्गल हो, चाहे, अगाध समुद्रके बीच स्थित कोई सुनसान टापू और चाहे दक्षिण ध्रुवका बर्फीला अन्धकारमय प्रदेश ही क्यों न हो—यूनियन जैक फहराये बिना नहीं रह सकती।

अमेरिकाके झण्डेके भीतर तो उसके डेढ़ सौ वर्षोंके इतिहासका एक पोथा निहित है। वहांके सैकड़ों युवकोंका निःस्वार्थ बलिदान, हजारों होनहार लालोंकी निर्मम आहुतियां, लाखों वीर माताओंका आदर्श त्याग, करोड़ों वृद्धोंकी अमृतमय वाक्यावलियां और सबसे बढ़कर तपस्वी वाशिङ्गटनकी वीरता, धीरता तथा मुर्दे जीवनमें भी जान फूकनेवाली ललकार, आज भी अमेरिकाके झण्डेपर स्वर्णाक्षरोंमें अङ्कित हैं, जिन्हें अमेरिकाका बच्चा-बच्चा पढ़कर मस्तीसे नाच उठता है! देश-प्रेमकी दीवानी मदिरामें उभचुभ हो जाता है, स्वर्गीय आनन्दमें विह्वल हो उठता है! अस्तु।

कुछ दिन पूर्व 'विश्वमित्र' के इन्हीं कालमोंमें हमने कुछ पाश्चात्य राष्ट्रीय झण्डोंपर प्रकाश डाला था। आज हम पाठकोंके सामने थोड़े-से प्राच्य राष्ट्रीय झण्डोंका भी इतिहास सामने रख रहे हैं। दोनों देशोंके झण्डोंके इतिहासको मिलान करनेपर, पाठक देखेंगे कि झण्डा-प्रेम सब जगह एक-सा ही है। सभी जगह इसके सम्मानके लिए आहुतियां हुई हैं।

## जापानका राष्ट्रीय झण्डा

प्रशान्त महासागरकी गोदमें मुसकराते हुए जापान—मुट्ठी-भर जापानकी अकूत शक्तिपर, अदम्य उत्साहपर तथा चमत्कारपूर्ण प्रतिभापर—पर आज दिन किसकी आंखें नहीं चौंधिया रही हैं। बड़े बड़े राष्ट्र उसकी ललकारपर कांप रहे हैं। प्रश्न उठता है, आखिर ऐसा क्यों? इसके भीतर कौन-सी दैवी शक्ति काम कर रही है! भगवान्‌की ओरसे इसे कहांका अक्षय वरदान मिल गया है? जापानके क्षेत्रफलकी ओर देखकर तो ऐसे प्रश्नोंका उठना और भी स्वाभाविक है, किन्तु जापानियोंका देश-प्रेम, साहस तथा कार्य करनेकी क्षमता देखनेपर यह बिलकुल साधारण-सी बात मालूम होने लगती है। जापानके कण्ठ-कण्ठमें, रग-रगमें आजादीकी रागिनियां बज रही हैं। लेकिन इसके लिए जापानियोंको कठोर तपस्या करनी पड़ी है, खूनकी नदियां बहानी पड़ी हैं और जीवनको कौड़ीके मोल समझना पड़ा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जापानी झण्डेकी राष्ट्रीय पूजा करते हैं। राष्ट्रीय झण्डेके प्रति उनके हृदयमें बहुत बड़ा सम्मान है। राष्ट्रीय झण्डेका झकना वे अपने राष्ट्रका झुकना तथा उसका अपमान अपनी स्वतन्त्रताका अपमान समझते हैं। इस अवसरपर वहांकी एक घटनाका उल्लेख किये बिना हम नहीं रह सकते। उस घटनासे मालूम हो जायगा कि जापानियोंके हृदयमें राष्ट्रीय झण्डेको कितना ऊंचा स्थान मिला है। और साथ ही यह भी पता चल जायगा कि वे कितने निर्भीक सैनिक और आजादीके दीवाने हैं।

× × ×

रूस और जापानका युद्ध छिड़नेवाला था। रण-भेरी बज चुकी थी। कायरोंके हृदय साहस खो रहे थे। कड़ाकेकी सर्दी पड़ रही थी। लिहाफसे मुंह निकालना मौतके साथ खेलना था! फरवरी मासके अन्तिम दिन थे। घण्टेपर चोट हुई। सामने एक आदमीने चिल्लाकर कहा—'उठो, जापानके झण्डेकी रक्षाके लिए लड़ाईके मैदानमें उतर पड़ो।'

आवाज कानोंमें पहुंचनेकी देर थी। फिर क्या था, जापानी योद्धा तिलमिलाकर खड़े हो गये। हृदयमें तूफान आ गया। बालक-से लेकर बूढ़े तक रण-मत्त हो उठे। टोकची नामी एक व्यक्तिके हृदयमें गजबकी लहर उठी! वह सैनिक बननेके लिए छटपटा उठा। किन्तु मजबूर था! दो अबोध बच्चोंका जीवन उसी अकेले टोकचीपर टिका हुआ था। उसने बड़ी कोशिश की कि कोई इन बच्चोंके भरण-पोषणका भार लेकर उसे झण्डेकी मान रक्षाके लिए मुक्त कर दे। इसके लिए वह कहां नहीं गया। किसके सामने अपना यह प्रस्ताव नहीं रखा। किन्तु सभी जगह उसे असफल होना पड़ा—निराश होना पड़ा।

टोकची बेचैन हो उठा! उसकी आंखोंके सामने जापानका झण्डा चमक उठा! सोचा, लोग क्या कहेंगे! बच्चोंकी ममतायें, बुजदिलीका बुर्का डाले क्या वह बैठा ही रहेगा? लज्जा और अपमानकी ठेससे टोकची तिलमिलाकर उठ खड़ा हुआ। उसके दिमागमें एक भयङ्कर कल्पना चमक उठी। धीरेसे वह अपनी चारपाईकी ओर मुड़ा। देखा, दोनों बच्चे विश्वास सो रहे हैं। उनके अधरोंपर अबोध स्वप्न अठखेलियां कर रहे हैं। वरका चिराग बुझनेही को था। उसने एक भयङ्कर छुरा निकाला और उसीसे अपने दोनों बच्चोंका अन्त करके, अपने रुंधे हुए मार्गको साफ कर दिया! वाहरे देश-प्रेमके दीवाने!

जिस देशमें टोकची जैसा वीर त्यागी पैदा हो, भला वह देश संसारका मुकुटमणि कैसे न हो? ऐसे देशकी भी आजादी कोई छीन सकता है? भगवान् करे, टोकची जैसा देश-प्रेम सबको प्राप्त हो।

जापानका झण्डा बाल-किरणोंका समूह है। अधिकांश सामुद्रिक मुल्कोंमें नौ-सेना और सामुद्रिक जहाजोंके झण्डे अलग-अलग होते हैं। जापानमें भी यही बात है। यहां भी व्यापारिक झण्डा युद्ध-झण्डेसे भिन्न है। यहांके सामरिक झण्डेपर तो बाल-सूर्यकी छाप रहती है, साथ ही सूर्यकी सोलह किरणें भी अङ्कित रहती हैं। किन्तु व्यापारिक झण्डेपर केवल सूर्यका रक्त-वर्ण गोला ही रहता है। शाही झण्डेकी बनावट इन दोनों झण्डोंसे भिन्न है। इस झण्डेकी जमीन लाल रहती है और उसपर सुनहला क्रीसेथीमम पुष्प अङ्कित रहता है। पुष्पमें सोलह पंखड़ियोंका होना अत्यन्त आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त यहांके सरदार घरानेके भी ध्वजा-चिह्न होते हैं। इनके ध्वजा-चिह्नोंको 'मान' कहते हैं। शाही वंशके चिह्नोंमें दो 'मान' हैं;एकको 'किकू मान' और दूसरेको 'किरी मान' कहते हैं। 'किकू मान' वही सोलह पखड़ियों-वाला फूल है। यह कोई आवश्यक नहीं है कि इस शाही पुष्पको कोई दूसरा प्रसिद्ध वंश अपना चिह्न न बना सकता हो। लेकिन कोई व्यक्ति या संस्था, यदि अपना चिह्न बनाना चाहती है, तो उसे आवश्यक है कि वह पंखड़ियोंको कम या अधिक अवश्य करे। बिना इसके वह अपना चिह्न करार नहीं दे सकती। 'किरी मान' राज-दरबारों अथवा अन्य सार्वजनिक प्रदर्शनोंके अवसरपर उपयोग नहीं किया जा सकता। इसका उपयोग केवल सम्राट्के घरेलू उत्सवोंपर किया जाता है।

### चीनका झण्डा

चीन एक विशाल राष्ट्र होते हुए भी, अपनी भौगोलिक स्थितिके कारण प्रायः सभी देशोंसे एक प्रकारसे हमेशा अलग-सा ही रहा है। चीनको तीन ओरसे विशाल और सघन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पहाड़ोंकी पंक्तियां घेरे हुए हैं जिनके कारण देशके भीतर जानेका मार्ग अत्यन्त दुर्गम हो गया है। एक ओर अथाह महासागर लहरा रहा है। यही कारण है कि इसके सम्बन्धमें अन्य देशोंको बहुत कम जानकारी रही है। इस बीसवीं शताब्दीमें भी, जब कि सभ्यताकी लहर तीव्र वेगसे बढ़ती जा रही है, प्राचीन चीनके सम्बन्धमें कुछ निश्चय रूपसे कहना कठिन है। प्राचीन चीनके झण्डेके सम्बन्धमें कुछ भी अनुमान लगाना कठिन है। केवल इतना मालूम हुआ है कि गत सम्राटोंके झण्डेपर सर्पका चिह्न रहता था।

## प्राचीन फारसका झण्डा

फारस प्राचीन सभ्यताका केन्द्रस्थान था। उन दिनों फारसकी गणना भारत, मिश्र तथा यूनान जैसे सभ्य देशोंके साथ की जाती थी। इसकी प्राचीन सभ्यताका इतिहास अत्यन्त रोचक एवं शिक्षाप्रद है।

प्राचीन फारसके राष्ट्रीय झण्डेपर गरुड़का चिह्न अङ्कित रहता था। एक भालेके सिरेपर गरुड़की प्रतिमा जड़ी रहती थी। इसके अतिरिक्त पारसियोंके उपास्यदेव सूर्यका भी चित्र उनके झण्डोंपर अङ्कित रहता था। इन झण्डोंकी रक्षाका भार सेनापतिको सौंपा जाता था।

## प्राचीन भारतका झण्डा

प्राचीन ग्रन्थोंके पढ़नेसे पता चलता है कि भारतवर्षमें झण्डेका प्रचार नाट्य-शास्त्र, छन्द-शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र आदिकी उत्पत्तिके भी पहलेसे है। नाट्यशास्त्रमें नाट्यकार या कविके एक विशेष कौशलके दर्शक स्थानका नाम भी झण्डा या पताका है। लिखा है —

यत्रार्थे चिन्तितेऽन्यस्मिन् तल्लिङ्गोऽन्यः प्रयुज्यते।
आगन्तुकेन भावेन पताका स्थानकं तु तत्॥

छन्दशास्त्रमें पताका नामके एक नक्शेसे गुरु-लघुके भेदोंके योग्य स्थानका ज्ञान कराया जाता है। उसका रूप बिलकुल पताकासे मिलता-जुलता है। इसीसे उसका नाम ही पताका पड़ गया। ज्योतिष-शास्त्रमें भी पताकाके सदृश एक नक्शेका जिक्र आया है। इस नक्शेकी सहायतासे वेध द्वारा ग्रहोंका फल निकाला जाता है।

उस युगमें देवता-सम्बन्धी झण्डेके अतिरिक्त व्यक्ति तथा राज-सम्बन्धी झण्डे भी थे। किसीने अपनी पताकापर बन्दरका, किसीने बैलका और किसीने मयूरका चित्र रखा था। इसीसे इन चिह्नोंवाले पताकाधारी कपिध्वज, वृषध्वज और मयूरध्वज आदि कहे जाते थे। यह झण्डे व्यक्ति-सम्बन्धी थे। इन्हीं पताकाओंकी नक़ल आज दिन बड़े-बड़े तीर्थस्थानोंमें, पण्डे आदि करते हैं। प्रायः प्रत्येक पण्डेका एक अलग झण्डा रहता है और वह पण्डा अपने उसी झण्डेके नामसे मशहूर रहता है। झण्डेका निशान कैंची, पङ्खा, हंडिया आदिसे दर्शाया जाता है।

राजकीय पताकायें अलग थीं। उनसे व्यक्ति-सम्बन्धी पताकाओंसे कोई सम्बन्ध नहीं था। रथी और महारथी अपनी-अपनी पताकायें, अपने-अपने रथोंपर रखते थे। यही पताकायें उनके विशेषत्वकी सूचनाके रूपमें लहराती थीं। इससे यह भी मालूम किया जाता था कि कौन रथी रण-क्षेत्रमें कहांपर युद्ध कर रहा है। युद्धके समय पताकाका रहना अत्यन्त आवश्यक होता था। महाभारतमें लिखा है—

श्वेतैश्छत्रैः पताकाभिर्ध्वज वारण वाजिभिः,
तान्यनीकान्य शोभन्त राजन् रथ पदातिभिः।

किस राजाकी पताका कैसी रहती थी और उस समय पताकाओंको कितना महत्त्व दिया जाता था, यह बताना कठिन है। किन्तु फिर भी इतना तो सप्रमाण कहा ही जा सकता है कि उस समय पताकायें खूब जोरोंसे प्रचलित थीं और काफी महत्त्वकी दृष्टिसे देखी जाती थीं। पेशवाओंका गैरिक (भगवा) झण्डा प्रमाणके लिए पर्याप्त है।

कुछ दिनोंके बाद समयका चक्र घूमा। भारतके बुरे दिन आये। उसकी आजादी छिन गयी। पराधीनताकी बेड़ी यहां तक मजबूत हुई कि एक दिन वह आया, जब कि उसकी अपनी कोई भी चीज नहीं रह गयी। कोने-कोनेमें विदेशी झण्डे फहराने लगे। भारतकी राष्ट्रीयता कुचल दी गयी। उसकी आजादी धूलमें मिला दी गयी। वह गुलामीका तौक पहने, बेकाबू बना आज तक हाय मार रहा है।

## आधुनिक भारतका झण्डा

कुछ दिन पूर्व शिकागो मेगजीनमें 'हम अभागे गुलाम' (We Unfortunate Slaves) शीर्षक देकर एक लेख प्रकाशित हुआ था। उक्त लेखमें लेखकने अमेरिकामें होनेवाली उस अन्तर्राष्ट्रीय सभाकी चर्चा की थी, जिसमें समस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



देशके लोग एकत्र हुए थे और जिसमें भारतको छोड़कर प्रायः सभी देशोंके झण्डे लोगोंके साथ आये थे और जहां प्रत्येक व्यक्ति अपने देशका कौमी गीत गाता और फिर अपने देशका झण्डा दिखाकर बैठ जाता। लेखकने दुःख प्रकट करते हुए लिखा है कि जिस समय भारतकी बारी आयी, उस समय एक भारतीय बालक रङ्गमञ्चपर आया और बन्देमातरमका नारा लगाकर बैठ गया। उसके पास भारतका कौमी झण्डा नहीं था। इस अभावपर लेखकने बड़े ही मार्मिक विचार प्रकट किये थे। कहना नहीं होगा कि इसके थोड़े ही दिनोंके बाद देशके महापुरुषोंका ध्यान इस अभावकी ओर गया। लोग इसकी पूर्तिके लिए चेष्टा करने लगे। किन्तु सदियोंसे गुलामीमें जकड़ा हुआ देश रौंद उठा था। आत्मगौरवकी भावना बिलकुल दब-सी गयी थी। देशकी रग-रगमें नस-नसमें गुलामीका खून दौड़ रहा था, इसीलिए महात्मा तिलकने अपनी सारी अनोखी शक्ति देशकी शिथिल धमनियोंमें जान फूंकनेमें खर्च कर दी। देश धीरे-धीरे उठने लगा। स्वर्गीय श्रीमती बीसेण्टने भी सोये हुए भारतीयोंके जगाने तथा एकताकी बिखरी हुई लड़ियोंको मिलानेमें हाथ बंटाया। होमरूल आन्दोलनमें जान आ गयी। उसी समय एक कौमी झण्डेका निर्माण हुआ। हरे और लाल रङ्गको मिलाकर हिन्दू-मुस्लिम मेलका सूचक एक झण्डा लगाया गया। सरकार जानती थी कि झण्डा किसी देशकी आजादीका चिह्न है—वह चिन्ह है जिसपर समूचा देश मर मिटता है। आखिर सरकारके दिलमें घबराहट आयी। उसने झण्डेपर रोक लगा दी। श्रीमती बीसेण्ट और उनके अन्य दो साथी मि० अरण्डेल और मि० वाडिया नजरबन्द कर दिये गये। और इस तरह देशका कौमी झण्डा अपनी शैशवास्थामें ही दफना दिया गया।

इसके पश्चात् देशकी बागडोर तपस्वी गांधीके हाथोंमें आयी। वह महापुरुष अनोखे राष्ट्रनिर्माणमें बेसुध-सा हो रहा था। उसके दिलमें भी कौमी झण्डेकी बात आयी। गांधीजीने भारतको एक हाथके सूतका, हाथका बुना झण्डा सौंपा। झण्डेपर चरखेका चिन्ह अङ्कित था। उस समय भारतके झण्डेकी चर्चा करते हुए महात्मा गांधीने लिखा—

"संसारके सभी राष्ट्रोंको एक राष्ट्रीय झण्डेकी आवश्यकता होती है। अतएव हम सब भारतवासियोंके लिए भी एक ऐसे झण्डेकी आवश्यकता है जिसकी मान-रक्षाके लिए हम मरने-जीनेको प्रतिक्षण प्रस्तुत रहें।"

झण्डा तीन रङ्गोंमें विभक्त था—सफेद, हरा और लाल। इन रङ्गोंकी व्याख्या करते हुए महात्माजीने लिखा—

"झण्डेका सफेद रङ्ग सब धर्मोंका सूचक है। इसके बाद हरा रङ्ग मुसलमानोंका तथा लाल रङ्ग हिन्दुओंका है। इसका मतलब यह कि बलवान ही कमजोरोंकी मदद करेगा। इसके अतिरिक्त सफेद रङ्ग शान्ति और पवित्रता-सूचक भी है। समानता प्रकट करनेके लिए सब रङ्गोंका समान स्थान है।"

देशवासियोंने अपने राष्ट्र-देवताके प्रस्तावके सामने मस्तक झुकाया और उसके हाथों द्वारा निर्मित झण्डेको भारतका झण्डा स्वीकार किया। देखते-देखते देशके कोने-कोनेमें तिरङ्गा झण्डा लहराने लगा। इस लहरको बढ़ती हुई देखकर सरकारने फिर बाधा डाली। झण्डेपर रोक लगायी। फलस्वरूप देशवासियोंने सत्याग्रह करनेकी ठानी। नागपुर सत्याग्रहका केन्द्र स्थापित हुआ। वहां लोगोंने अपने कौमी झण्डेके प्रति जो प्रेम प्रकट किया और उसकी मान-रक्षाके लिए जिस तरह कठोर यातनाओंको आलिङ्गन किया, वह सब इतिहासकी अमर घटनायें हैं।

आखिर सरकारको झुकना पड़ा। झण्डेपरसे रोक उठा ली गयी। सत्याग्रह समाप्त हो गया। तिरङ्गा झण्डा, भारतका कौमी झण्डा होकर बेरोक-टोक चारों ओर फहराने लगा। कुछ दिनके बाद इसके रङ्गमें फिर परिवर्तन हुआ। लाल रङ्गके स्थानपर केसरिया रङ्ग रखा गया। आजकल यही भारतका राष्ट्रीय झण्डा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलप्रपात

—एक पाठककी कृपासे प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



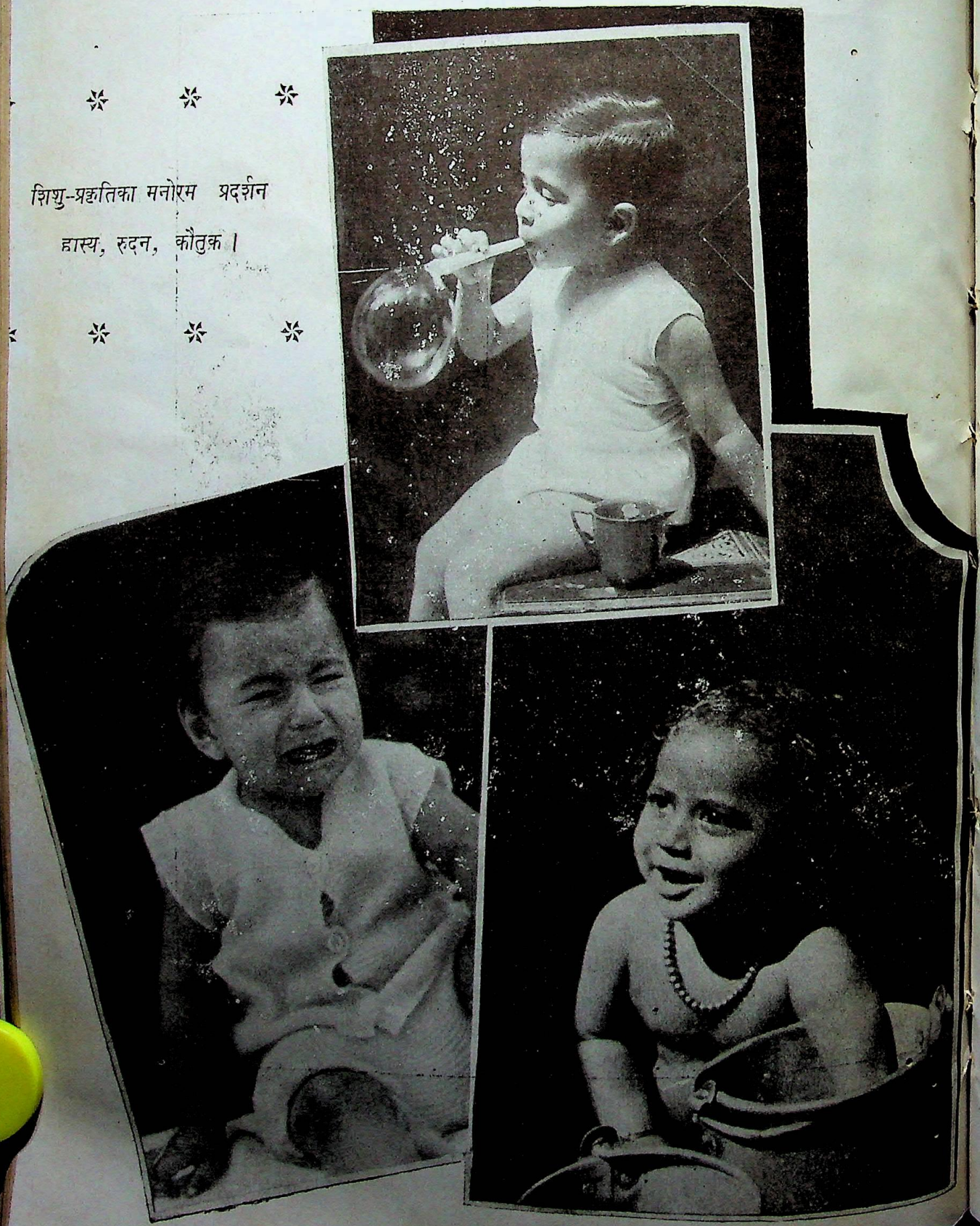

शिशु-प्रकृतिका मनोरम प्रदर्शन

हास्य, रुदन, कौतुक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित जवाहरलाल नेहरू—आगामी लखनऊ-कांग्रेसकी स्वागत-कारिणी समितिके अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

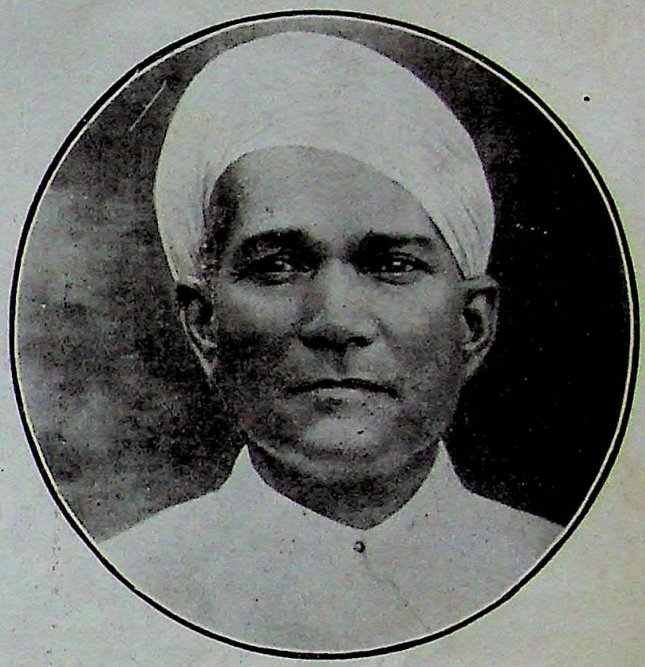

करांचीके सेठ रामगोपाल मोहता—जिन्होंने हरिजन छात्रोंकी शिक्षाके लिए ५० हजार रुपयेका सात्विक दान किया है।

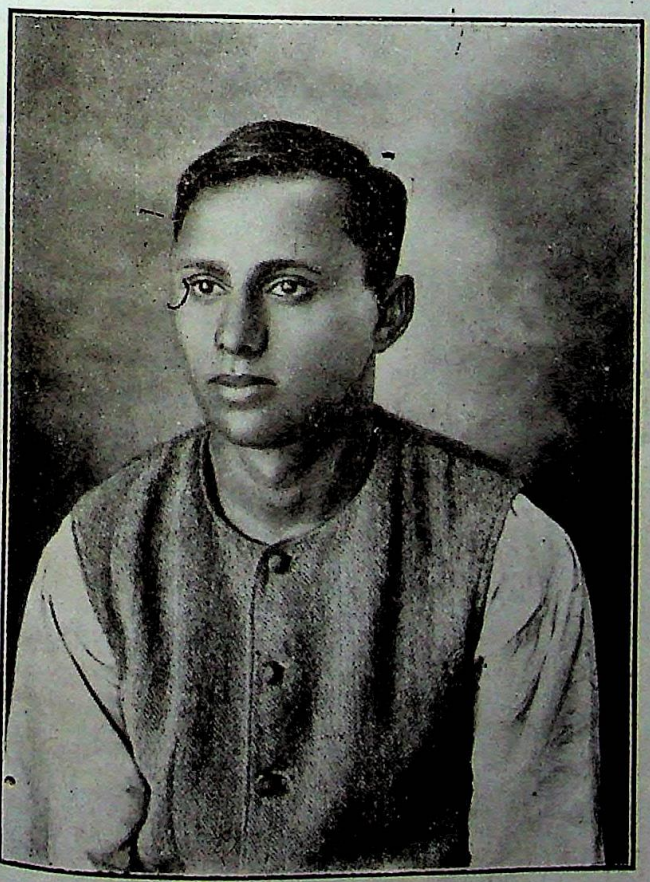

श्री० एन० नागप्पा—जिन्होंने इस वर्ष काशी-हिन्दू-विश्व-विद्यालयसे हिन्दी-साहित्यमें एम० ए० पास किया है। आप मैसूरके रहनेवाले हैं और कन्नड़ भाषा-भाषी हैं।

लार्ड लिनलिथगो—भारतके नव-नियुक्त वायसराय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बङ्गालके बाढ़-पीड़ित क्षेत्रका एक दृश्य।

जलप्लावन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76323

# साम्यवाद और गांधीवाद

श्री अम्बिकाकान्त सिंह

आजकल साम्यवादकी धूम मची हुई है। सारे संसारके सोचनेवाले किसी-न-किसी रूपमें साम्यवादकी बात सोच रहे हैं। लेखक साम्यवादके विरुद्ध या समर्थनमें लेख लिख रहे हैं। पढ़नेवाले साम्यवादसे सम्बन्ध रखनेवाले लेखों और किताबोंको पढ़नेके लिए उतावले हो रहे हैं। हिन्दुस्तानपर भी साम्यवादका प्रभाव बड़ी तेजीसे पड़ रहा है। जो लोग समझते हैं कि साम्यवादसे हमें लाभ होगा वे तो इसके बारेमें जानना चाहते ही हैं, साथ ही वे भी जानना चाहते हैं, जो इसमें अपना अहित समझते हैं। जहां देखिये वहां साम्यवादकी चर्चा है। वादविवाद हो रहा है—मौखिक और लिखित। यह बड़े आनन्दकी बात है। अगर खेद है, तो इस बातका कि ज्यादा लोगोंने इस विषयपर प्रारम्भमें पुस्तकें नहीं पढ़ी हैं। उन लोगोंने पत्रोंमें यदा-कदा निकलनेवाले लेखोंसे ही अपनी जिज्ञासा शान्त की है। यह हालत सिर्फ हिन्दी जाननेवालोंकी ही नहीं, परन्तु जो अंगरेजी पढ़ सकते हैं, उनकी भी है। खेदके साथ कहना पड़ता है कि हिन्दीमें अब तक कोई भी अच्छी किताब साम्यवादपर नहीं निकली। जो कहीं निकली भी, तो सरकार द्वारा ज़ब्त कर ली गयी। राहुलजीका 'साम्यवाद ही 'क्यों' केवल-मात्र इसका अपवाद है। हिन्दी पत्रोंमें जो लेखादि निकलते हैं वे प्रायः अंगरेजी समाचार-पत्रोंमें प्रकाशित इस विषयके लेखोंके या तो अनुवाद रहते हैं या उन्हींके आधारपर लिखे होते हैं। प्रामाणिक पुस्तकोंके अध्ययनके आधारपर लिखे लेखोंकी संख्या बहुत ही कम है। अंगरेजी समाचारपत्रोंके लेख बहुधा प्रचारकी दृष्टिसे लिखे होते हैं; गम्भीरतापूर्वक विषयको समझाना उनका उद्देश्य नहीं होता। यह तो अंगरेजी पत्रकार-कलाका रुख ही नहीं है।

भारतवर्षमें साम्यवाद ( जिससे मेरा अभिप्राय सोशलिज्म और कम्यूनिज्म दोनोंसे है ) के प्रचारके पहलेसे गांधीवादका सिक्का जमा हुआ है। ऐसी अवस्थामें गांधीवाद और साम्यवादकी तुलना करनेकी प्रवृत्ति स्वाभाविक है। पुरानी चीजके बदलेमें जब नयी चीज किसीको दी जाती है, तो वह नयी चीजका अपनी पुरानी चीजसे जरूर मिलान करता है। हिन्दी पत्रोंमें भी अब तुलनात्मक लेख प्रकाशित होने लगे हैं। मासिक 'विश्वमित्र' के मार्च महीनेके अङ्कमें श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र, एम० ए० बी० एल० का एक विद्वत्तापूर्ण लेख 'कम्यूनिज्म और गांधीवाद' के नामसे छपा है। मिश्रजीने साम्यवादी साहित्यका अच्छा अध्ययन किया है, परन्तु अपने लेखमें उन्होंने कम्यूनिज्मके साथ न्याय नहीं किया। कम्यूनिज्मकी निन्दा या प्रशंसा करना उनकी रुचि-पर निर्भर करता है, परन्तु न्याय करना तो उनकी विद्वत्ताका तकाजा है।

गांधीवादका जो सिद्धान्त है, उससे साम्यवादी साहित्यका कोई भी विद्यार्थी अपरिचित नहीं है। साम्यवादी साहित्यमें ऐसे सिद्धान्त यूरोपियन सोशलिज्मके नामसे पुकारे जाते हैं। न तो "सर्वभूतस्थमात्मानम् सर्वभूतानि चात्मनि" तथा 'त्यागाय सम्भृतार्थानाम्' आदि श्लोकोंका उद्धरण देकर जिस सभ्यताके आदर्शकी मिश्रजीने दुहाई दी है उसीसे कोई अपरिचित है। ऐसे महान् आदर्शकी ही गणना प्राफेट्स सोशलिज्ममें होती है।

कम्यूनिज्मका प्रवर्त्तक कार्ल मार्क्स ( लेनिन नहीं, जैसा कि मिश्रजीने लिखा है ) जिस समय अपने विचारोंको पक्का कर रहा था, "कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टो", "डास कैपिटल" आदि पुस्तकोंको अपने मित्र फ्रेडरिक ऐङ्गल्सके सहयोगसे लिख रहा था, उस समय ये सिद्धान्त, इस महान् आदर्शकी कहानी उसके सामने थी; वह इनसे अच्छी तरह परिचित था। केवल परिचित ही नहीं था, बल्कि उनकी आलोचना उसने कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टोंमें तीव्रतासे की है। अपने पूर्वगामी साम्यवादियोंके सिद्धान्तसे, जो कि सोशलिज्मके नामसे नाना देशोंमें नाना रङ्ग-रूपमें विचर रहे थे, अपने सिद्धान्तको पृथक् रखनेके लिए, जिससे कि उन पूर्वगामी साम्यवादियोंके—जो यूरोपियन सोशलिस्टके नामसे साम्यवादी साहित्यमें पुकारे जाते हैं—सिद्धान्तमें शामिल



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



नहीं कर दिया जाय, उसने अपनी पार्टीका मन्तव्य (मैनिफेस्टो) कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टोके नामसे निकाला और अपनी अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक पार्टीका नाम कम्यूनिस्ट पार्टी रखा।

बहुत अंशोंमें मिलते-जुलते होते हुए भी कार्ल मार्क्सका सिद्धान्त कम्यूनिज्मके नामसे विख्यात है, जिसे वैज्ञानिक सोशलिज्मके नामसे भी पुकारा जाता है। जहां कार्ल मार्क्सके पहलेके सिद्धान्तोंमें भावुकताकी प्रधानता थी, कार्यप्रणाली अनिश्चित थी, वहां कार्ल मार्क्सके सिद्धान्त वैज्ञानिक सिद्धान्तोंपर बने हैं। इसपर डारविनके 'ओरिजिन आव स्पेसिज' की छाप है। कार्ल मार्क्सका ऐतिहासिक भौतिकवाद इतिहास और सम्पत्ति-शास्त्रके विज्ञानसे सम्बन्ध रखता है। इसकी कार्य-प्रणाली कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टोमें स्पष्ट बतलायी गयी है। न तो यहां भावुकताकी गुञ्जाइश है और न यहां जादूपर विश्वास है। कार्ल मार्क्सका सिद्धान्त हमारी इस ठोस पृथ्वीसे सम्बन्ध रखता है—सिर्फ इतना ही कहनेसे काम नहीं चलेगा, परन्तु यह भी कहना होगा कि इस पृथ्वीके सिवा और किसी स्थानसे सम्बन्ध नहीं रखता; और न किसी ऐसी संज्ञासे सम्बन्ध रखता है, जो कि इस पृथ्वीकी न हो। और यह जगत् तथा इसके सब अवयव गतिशील हैं—अचल नहीं। कार्ल मार्क्स जानता है अपनी दुनियाको, अपने मौजूदा समाजको, उसकी प्रगतिको, उसके इतिहासको। जो इस दुनियामें नहीं है उसे न तो वह जानता है, न उसे इसकी जानकारी प्राप्त करनेमें समय बर्बाद करनेकी इच्छा है और न समय। जिसे देख रहा है, जान रहा है, उसीका प्रतिकार करनेका समय जिसके पास काफी नहीं है वह अज्ञेयके पीछे कैसे दौड़ सकता है। कार्ल मार्क्स-के अनुसार इस पृथ्वीपर होनेवाली सब क्रियाओंका कारण होता है। बगैर कारणके कुछ नहीं होता। और हर कारण इस पृथ्वीपर है। हम अपने ज्ञानके अधूरेपनके कारण उससे परिचित भले ही न हों। मौजूदा समाजमें होनेवाली क्रियाओं-का कारण वह उसी समाजमें खोजता है, समाजके इतिहास-से मदद लेता है। इसके ढूंढ़नेके लिए उसे आधिभौतिक संस्थाओंकी आवश्यकता नहीं।

सिर्फ हिन्दू सभ्यताका, हिन्दू धर्मका ही आदर्श ऊंचा नहीं रहा है। संसारमें आज तक जितने धर्म और सभ्यतायें हो गयी हैं, सबका आदर्श महान् रहा है। त्याग केवल हिन्दू सभ्यताका नहीं है। त्याग—धनहीनताका जो उच्च आदर्श इसने रखा वह तो किसी भी धर्मके लिए गौरवकी वस्तु है। इतना होते हुए भी हम देखते हैं कि जिन देशोंमें ईसाके सिद्धान्तपर धर्म और सभ्यता बनी है उन देशोंमें स्वर्गकी परवाह न करके लोग धन इकट्ठा कर रहे हैं, धनी हो रहे हैं। शीघ्रातिशीघ्र धनी होनेके लिए सब प्रकारका कुकर्म कर रहे हैं। इतना ही नहीं, जिस शङ्कराचार्यने एक बार नहीं, अनेकों बार 'कनक'को हेय कहा, त्याज्य कहा; उसी शङ्कराचार्यके गद्दीनशीन शङ्कराचार्यगण कनक और कनकसे प्राप्त दूसरी सम्पत्तियोंके मालिक बने हैं, गद्दीके लिए मुक-दमेबाजी कर रहे हैं।

धार्मिक पुस्तकोंमें त्यागकी इतनी महिमा होते हुए भी, मनुष्य-मात्रको ईश्वरकी सन्तान करार देते हुए भी, वसुधैव-कुटुम्बकम्का पाठ होते हुए भी जब यह देखा जाता है कि धर्मके माननेवाले सिर्फ जन-साधारण ही नहीं, परन्तु धर्मके प्रगाढ़ पण्डितों और धर्मके आचार्य पुरोहितोंमें भी धनका लालच है, मनुष्य-मनुष्यमें भेदभाव किया जा रहा है, लूट-खसोट, हिंसा, शत्रुता और वैमनस्यका बाजार गरम हो रहा है तब इस नतीजेपर पहुंचना स्वाभाविक है कि धर्मके उपदेश-मात्र ही समाजके कल्याणके लिए पर्याप्त नहीं हैं।

यह नहीं कहा जा सकता कि धर्मके उपदेशोंको फलने-फूलनेका काफी समय नहीं दिया गया है। संसारका इतिहास धर्मोंके बढ़ाव, घटाव, आपसकी तनातनीका इतिहास है। इतिहासके विद्यार्थीकी नजरोंके सामने अगर कोई बात आती है तो वह यह है कि किसी भी धर्मके प्रभावके विस्तारका इतिहास उस धर्मके सिद्धान्तोंके कुचले जानेका इतिहास है। धर्म जितना पुराना होता है, मनुष्योंके एक ही पिताकी सन्तान होनेकी बात उतनी ही पीछे पड़ती जाती है। आदमी-आदमीमें छोटे-बड़ेका भेद बढ़ता जाता है। और वह भी धनके मानदण्डके आधारपर। समाज-शास्त्रका विद्यार्थी अगर धर्मोंके इतिहास पढ़कर किसी नतीजेपर पहुंचता है तो वह यह है कि धर्मके कारण जितने लोगोंका कल्याण हुआ है, उससे कहीं ज्यादा लोगोंकी बर्बादी हुई है। धर्मकी आड़में गरीबों, कमजोरोंपर अत्याचार किये गये हैं। उसके दिलमें स्वभावतः यह बात उठती है कि धर्म बनाने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वालोंने मानव-स्वभावको समझे बगैर ही धर्मके नियमोंको बनाया है। अगर हजारों वर्षमें ये नियम कामयाब नहीं हो सके, तो इनमें कोई अन्तःनिहित कमजोरी है। सिर्फ धर्मकी दुहाई देकर आचरण आचरणका, लोगोंमें भाईचारेका नाता स्थापित नहीं किया जा सकता। जब हम अपनी आंखों देखते हैं कि हिन्दू धर्मका इतना महान् उद्देश्य होते हुए भी उसके माननेवालोंकी संख्या अंगुलियोंमें गिनी जा सकती है, हम देखते हैं कि हमारे चारों ओर अन्याय-से, अत्याचारसे, बन्धुत्वका खून करके लोग अमीर हो रहे हैं, समाजमें पूज्य हो रहे हैं, बड़े खुश हुए तो गरीबोंके खूनसे बने करोड़ों रुपयोंमेंसे कुछ हजार रुपये दान दे देते हैं, उससे ज्यादा वाहवाही लूटते हैं, और उसके बदले समाजमें अपना विशेष स्थान मानते हैं, तब आप-ही-आप मुंहसे आवाज निकलती है कि धर्मके, सभ्यताके आदर्शके द्वारा क्षुधित एवं उपेक्षित जनताकी "मुक्ति" नहीं हो सकती : कार्ल मार्क्सका कहना है कि समाजकी व्यवस्था कुछ ऐसी है, समाजका वातावरण ही ऐसा है जहां कि मनुष्य धर्मोपदेशों और सभ्यताके आदर्श-को अपने दैनिक जीवनमें बर्त नहीं सकता है। समाज उसे ठीक उनके विपरीत जानेको बाध्य करता है। इसमें व्यक्तिका कोई दोष नहीं है। दोष तो केवल समाजकी व्यवस्थाका है। केवल गांधीजी ही नहीं, कम्यूनिस्ट भी "अधिकारोंको इस प्रकार नियन्त्रित कर देना चाहते हैं जिससे उनके लिए शोषण द्वारा अनुचित रूपमें धनार्जन करनेका मौका ही नहीं रह जाय और इस प्रकार समाजमें इस समय जो उत्कट वैषम्य दीख पड़ता है वह मिट जाय।" कैसे? गांधीजी धर्मके नामपर, अपने त्यागके बल, अपने समान आचरण-वालोंके बल, अपने उपदेशोंके बलपर धनियोंको, अधिका-रियोंको, जिन्हें औरोंको दबाये रखनेकी सामर्थ्य है, जिन्हें अत्याचार करनेका अधिकार और साधन प्राप्त है उन्हें समझा-बुझाकर उनकी सद्बुद्धिको जाग्रत कर अपना काम बनाना चाहते हैं।

"इसका अभिप्राय यह हुआ कि गांधीजी धनवानोंकी परार्थ बुद्धिसे, उनकी स्वार्थ-हीन भावनासे अपील करके वर्तमान आर्थिक व्यवस्थाके दोषोंका प्रतिकार करना चाहते हैं।"

गांधीवाद और कम्यूनिज्म दोनों न तो एक जगह ही जाना चाहते हैं और न दोनों एक ही डगरसे चलते हैं। जहां कम्यूनिज्म धनिकों और गरीबोंको समाजसे हटाकर समाजके धनपर सभीको बराबर अधिकार दिलाना चाहता हैं वहां गांधीवाद समाजमें धनी और गरीब दोनोंका पोषक है। केवल गरीबोंकी दीनताको कम करना ही उसका उद्देश्य है। गांधीजीके मनुष्य ईश्वरके अंश हैं, हर मनुष्यमें ईश्वर है। उनके अनुसार मनुष्य स्वभावसे अच्छा है, किसी कारण मार्गच्युत हो गया है। प्रत्येक मनुष्यके हृदयमें स्थित ईश्वरको फिरसे जाग्रत कराकर वे उसमें निहित अच्छाईसे समाजकी बुराइयोंको आपसे आप हटाया चाहते हैं। इतिहासके सबकसे आप काम लेना नहीं चाहते। अपनी महत्ता उनको यह नहीं देखने देती कि ऐसी बातोंका प्रचार हजारों वर्षोंसे होते रहनेपर भी हृदय-स्थित देव जाग्रत नहीं हुआ। ईश्वरमें उनका इतना प्रगाढ़ विश्वास है कि उनके हृदयमें यह जिज्ञासा नहीं उठती कि यह ईश-अंश जीव अगर ईश्वरके ऐसा अच्छा था, तो बुरा कैसे हुआ? आरम्भमें ही वह अच्छे-बुरेके रूपमें क्यों दिखलाई देता है? गांधीवादके सिद्धान्तोंका आरम्भ होता है यहांसे।

कम्यूनिज्मके सिद्धान्तोंका आरम्भ होता है विज्ञानसे। यहां इक्के-दुक्केकी महानता, "वीर एवं पौरुष, आदर्शप्रेम एवं कर्मनिष्ठा, एवं आत्मत्याग" पर ही निर्भर करनेकी बात नहीं। प्राणितत्त्व-विज्ञान, इतिहास-विज्ञान, और मनो-विज्ञानके अनुसार संसार बुरेसे भलेकी ओर जा रहा है। भलेसे बुरेकी ओर नहीं। व्यक्ति-विशेष, देश-विशेष भले ही अवनतिकी ओर जा रहा हो, परन्तु संसार तो दिनोंदिन उन्नतिकी ओर जा रहा है। प्राणितत्त्वका कहना है कि मनुष्योंका विकास जानवरोंसे हुआ है। मनुष्योंमें जानवरों-का अंश है। जानवरोंकी तरह मनुष्यकी प्रकृतिमें निहित हैं हिंसा, अत्याचार, स्वार्थ, क्रूरता। इतिहास कहता है, आदिम युगके मनुष्योंका आचरण जानवरोंसे मिलता-जुलता था। Psycho-analysis का विद्यार्थी जानता है कि मानव-समाजके सङ्गठन और विकासकी कहानी मनुष्योंकी अपनेपर, अपने पशु-स्वभावपर विजयकी कहानी है। इस युद्धमें कोई यह कहनेवाला नहीं था कि "त्वया हृषीकेश हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोस्मि तथा करोमि।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस युद्धमें कोई अर्जुन या हृषीकेश न तो था, न है। यहां तो प्रत्येक मनुष्य अर्जुन है और उसकी आवश्यकता, उसकी परिस्थिति हृषीकेश है। विज्ञानका कहना है कि मनुष्यने अपनेको अपने पशुत्व प्रभृतिसे इसलिए नहीं हटाया कि वह इसके लिए व्याकुल था; परन्तु उसने अपने पाशविक गुणोंको इसलिए छोड़ा कि उसका काम उनको छोड़े बगैर नहीं चलता था।

परिस्थिति और आवश्यकता हीकी प्रेरणासे मनुष्योंके गुणोंका परिवर्तन हो रहा है।

जहां गांधीवाद हमारी पृथ्वीके बाहर किसी स्थानसे जन्म लेता है, केवल ख्यालके ही बल पलता है, वहां कम्यूनिज्मका किसी ऐसी जगहसे कोई सम्बन्ध नहीं है जो कि इस संसारकी नहीं है। इसका आदि-अन्त इसी जगहसे है।

गांधीवाद और कम्यूनिज्ममें तुलना करनेवालोंको दोनोंके इस जन्मजात भेदको नहीं भूलना चाहिए। गांधीवादमें नयापन नहीं है। यह तो बहुत ही पुरानी बात है। उतनी ही पुरानी जितना मनुष्यका इतिहास। मानव-समाजके इतिहासका विद्यार्थी यह जानता है कि अब तक केवल ऐसे आदर्शवादोंसे मनुष्यका कोई उपकार नहीं हुआ है। कम्यूनिज्म नयी चीज है—अभी इसकी अग्नि-परीक्षा नहीं हुई है। रूसमें जो हो रहा है उससे हम कम्यूनिज्मका अन्दाजा बहुत ही सूक्ष्म रूपमें कर सकते हैं। रूसके उदाहरणके साथ साम्यवादसे होनेवाले लाभोंका अन्दाजा लगाते समय यह याद रखना जरूरी है कि रूसमें अभी साम्यवाद स्थापित नहीं हुआ है—अभी हो ही रहा है। और यह भी याद रखना चाहिए कि साम्यवाद न तो व्यक्तिगत है, न राष्ट्रगत। वह तो सारी पृथ्वीकी चीज है। जब तक सारी दुनियामें साम्यवादी समाजकी स्थापना नहीं होती है तब तक हम इसकी उपयोगिताकी परीक्षा नहीं कर सकते। अभी तो बस इतना ही कहा जा सकता है कि साम्यवाद ख्याल-ही ख्याल नहीं है, ठोस, ध्रुव सत्य है। इसके सिद्धान्त कुछ संस्थाओंके केवल अन्दाजपर मान लिये गये तर्कोंपर ही आश्रित नहीं हैं। किन्तु विज्ञानकी सचाईपर इसकी नींव जमायी गयी है। समाजमें जिन कारणोंके बलपर अत्याचार, अन्याय, दुःख-दरिद्रता, लूट-खसोट मची है, उन कारणोंका यह मूलोच्छेद कर देना चाहता है। न रहे बांस, न बजे बांसुरी।

जब यह बात महसूस होने लगती है कि धर्मके उपदेशों द्वारा धनियोंकी प्रकृति बदली नहीं जा सकती है, दलितोंका उद्धार नहीं हो सकता है, अगर हो सकता है तो यही कि दलितोंको मृत्युके बादके सुखका सब्जबाग दिखाकर उन्हें अपनी दशापर सन्तोष करनेकी शिक्षा दी जाय जिससे कि वे अपने ऊपर अत्याचार करनेवालोंके प्रति बदला लेनेकी बात न सोचकर अपने भाग्यको बैठे-बैठे कोसें। उसके बाद किसी भी व्यक्तिके लिए, जो कि दलितोंके दुःखसे दुखी हो उनका निस्तार करना चाहता है धर्मका द्वार बन्द हो जाता है। यही हालत कार्ल मार्क्सकी भी है। धर्मको अपर्याप्त समझनेपर उसे अपने मस्तिष्कसे काम लेना पड़ता है। वह सोचता है कि वह गरीबोंके लिए opiate नशा तुल्य है। विज्ञानके बलपर, इतिहास, समाज-शास्त्र, सम्पत्ति-शास्त्रके द्वारा वह समाजका विश्लेषण करता है और जिस नतीजेपर कार्ल मार्क्स पहुंचता है वह 'कम्यूनिस्ट मेनिफैस्टो'में लिखता है। कार्ल मार्क्स किस तरह दुनियामें फैले हुए वैषम्यको दूर करना चाहता है—यह जाननेके लिए मैं पाठकोंसे अनुरोध करूंगा कि वे कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टोको जरूर पढ़ें। तभी गांधीवाद और कार्ल मार्क्सका भेद साफ समझमें आ सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्या कहानी-लेखकको उपदेशक होना उचित है ?

श्री सुशीलकुमार चौबे, एम० ए०

जबसे कहानी-कलाका विकास हुआ है, लोगोंने यह प्रश्न बार-बार उठाया है कि कहानी-लेखकको उपदेश देना उचित है या नहीं। यह प्रश्न पुराना होनेपर भी बार-बार उठता है। परन्तु अभी तक लेखकों और समालोचकोंने इसका कोई ठीक उत्तर नहीं दिया। प्रश्न भी इतना जटिल है कि इसका एक सर्व-सम्मत उत्तर हो ही नहीं सकता। लेखकोंमें हमें ऐसे भी कलाके पुजारी मिलेंगे जो कला कलाके लिए—Art for art's sake—हीको सब-कुछ समझते हैं। परन्तु ऐसे लेखक भी हैं जो इसके विरुद्ध हैं, और कलाका उद्देश्य केवल कला ही नहीं समझते। बड़ी मुसीबत तो यह है कि पाठकोंकी भी ऐसी दो श्रेणियां होती हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जो कलाके सौन्दर्य हीको सब-कुछ समझते हैं। और कुछ ऐसे भी हैं जो कलासे शिक्षा चाहते हैं। यह युद्ध बहुत प्राचीन है। हमारे बाप-दादे जिस रणक्षेत्रमें ताल ठोंकके उतरे थे, वहींपर हम तलवार बांधकर उतर रहे हैं। हर साहित्यमें इसकी थोड़ी-बहुत चर्चा अवश्य सुनाई देगी। कहानी लिखनेवालेकी मौत है। बेचारा त्रिशंकुके समान समाजके विचारोंके बीचमें लटका रहता है। जमानेकी हवा कभी उसे इस ओर मोड़ देती है और कभी उस ओर। इस दशामें यह बड़ा कठिन है कि हम कलाके इस अङ्गपर कुछ निर्णय कर सकें।

पहले हमें उन कहानी-लेखकोंको लेना चाहिए जो अपनी कहानियोंमें उपदेशको मुख्य स्थान देते हैं। ऐसे लेखकोंका विचार है कि साहित्य-कला यदि मनुष्यको अच्छाईकी ओर अग्रसर नहीं करती, तो उसका होना-न-होना बराबर है। अंगरेजी-साहित्यमें हमें विक्टोरियन युगके आरम्भसे इस प्रकारके उपदेशक मिलते हैं। उसके पहले अठारहवीं शताब्दी-में ही इसका बीज बोया जाता है। एडीसन और स्टील यद्यपि कहानी-लेखक नहीं थे, तब भी वे समाजके कट्टर समालोचक थे। उन्होंने अपने व्यङ्ग और हास्यके जरिये जनताको उपदेश दिया। रिचर्डसन-ऐसे उपन्यासकारने भी उपदेश देना शुरू किया। परन्तु 'विक्टोरियन युग'के आरम्भ होते ही हमें ऐसे लेखकोंकी अधिकता दिखाई देती है। वाल्टर स्काटको तो छोड़िये। वह तो ऐतिहासिक कहानियां लिखता था। मिस जेन आस्टिनके मुख्य उपन्यासों-को लीजिये। उसके मुख्य उपन्यास "प्राइड एण्ड प्रेजुडिस", "परसुएशन" और "एम्मा" हैं। इन सबमें जेन आस्टिनने उपदेश ही दिया है। उसका मुख्य उपदेश यही है कि साधारण और शुद्ध जीवन ही, जिसमें गम्भीर प्रेमका समावेश हो, सबसे अच्छा है। बार-बार उसने प्रेमके पागलपन और भावुकताका मजाक उड़ाया है। संसारका झूठा आडम्बर उसके व्यङ्गका शिकार बना रहा है।

और आगे बढ़नेपर हमें डिकेन्स और थैकरे-ऐसे मशहूर औपन्यासिक मिलते हैं। डिकेन्सके मशहूर उपन्यास डेविड कापरफील्ड, टेल आफ टू सिटीज, बारन्बी रज, ओलिवर ट्विस्ट इत्यादि सबमें कुछ-न-कुछ उपदेश अवश्य है। उपदेशककी बू डिकेन्स-ऐसे औपन्यासिकमें भी आती है। वह भावुक है, और अपनी भावुकताके कारण शिक्षा देने लगता है। थैकरेके "वैनटी फेयर" तथा "हैनरी एसमण्ड" इत्यादिको लीजिये। उसे भी लालच आ जाता है कि वह उपदेश दे।

इन दोनों औपन्यासिकोंमें एक बड़ी त्रुटि देख पड़ती है। वह यह है कि उपन्यासोंके अन्तको वे बहुत ही अस्वा-भाविक बना देते हैं। बार-बार पाठकोंके हृदयपर उनका सस्ता उपदेश आकर बेसुरे हथौड़ेकी चोट करता है। एक पुरुष एक स्त्रीको प्यार करता है, बीचमें बाधायें आती हैं, और जान पड़ता है कि दोनों कभी एक-दूसरेके नहीं हो सकते। परन्तु ज्यों-ज्यों कहानीका अन्त होने लगता है, हमें एक अजीब बात दिखाई पड़ने लगती है। कहानीके अन्तमें कहानी-लेखक दोनोंको एकाएक मिला देता है। ऐसा मालूम होता है, मानो लेखकने घूस लेकर दोनोंकी जबर्दस्ती सिविल मैरिज कर दी। जो पाठक कहानी-कला-को समझते हैं, वे इस प्रकार कलाका गला घुटते देखकर अवश्य चिल्ला उठेंगे। परन्तु खेद यही है कि गला घुट जानेपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ही वे चिल्लाते हैं, इसके पहले नहीं। परन्तु इसमें समाजकी भी बड़ी भारी जिम्मेवारी है। टेनिसन ऐसा कवि भी जब इंगलैण्डके साहित्य-क्षेत्रमें उतरा, तब उसे मालूम हुआ कि वह किस मुसीबतमें आ फंसा है। कुछ दिनों तक तो वह अवश्य स्वतन्त्रताके साथ कविता लिखता रहा। परन्तु थोड़े ही वर्षोंके पश्चात् समाजके विचारोंने उसपर इतना भयङ्कर प्रभाव डाला कि वह अपनी कवित्व-शक्तिको समाजकी रुचिपर न्योछावर करने लगा। जो-कुछ समाज चाहता था वही वह भी लिखने लगा। यही कारण है कि वह विक्टोरियन युगका प्रमुख कवि समझा जाता है। उसने जनताको खुश किया, उसके विचारोंको अपनी कवितामें प्रकट किया और उसके सिद्धान्तोंपर पूर्ण रूपसे उपदेश दिया। और समाजने बदलेमें उसे खूब सम्मानित किया। बायरनके समान उसने भी समाजकी परिवर्तनशील रुचिको ही अपना पथ-प्रदर्शक समझा। और यदि डिकेन्स और थैकरे उपदेश नहीं देते, तो समाजमें उनकी ख्याति कदापि नहीं होती।

हमारे हिन्दी-साहित्यमें भी इस प्रकारके कहानी-लेखक मिलेंगे। प्रेमचन्द-ऐसे औपन्यासिकको ही लीजिये। कहानीकी अदन-वाटिकामें उन्होंने बार-बार उपदेशके मन ललचानेवाले फलको तोड़ा और चखा। मैं तो यही कहूंगा कि भावुकताने ही उनको बहकाया। ऐसे बड़े औपन्यासिकों की कहानियोंमें भी हमें बार-बार सस्ते उपदेशकी बू आती है। "प्रेमाश्रम"का उदाहरण सामने है। उपदेशक होनेके प्रलोभनने उनको कहां-कहां नहीं बहकाया। औपन्यासिक बैठा था कलाका भवन बनाने और इमारत हो गयी लखनऊके बड़े इमामबाड़ेकी भूल-भुलैया। ऐसे ही विषयको छेड़ना कि उपदेशका अवसर मिले, औपन्यासिकके लिए घातक है। परमात्मा न करे कि किसी कहानी-लेखकपर उपदेशक होनेका भूत चढ़े। फिर तो वह उतारे नहीं उतरता। प्रेमचन्दकी कहानियोंमें मानव-जीवनका सच्चा दिग्दर्शन है। उनमें पूर्ण स्वाभाविकता भी है और कहानी-कलाका प्रत्येक गुण भी। और यदि वे उपदेश न देने लगते, तो एक सच्चे कहानी-लेखक होते।

परन्तु ऐसे भी कहानी-लेखक संसारमें हैं जो अपनी कहानियोंमें बार-बार उपदेश नहीं देते। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि उनकी कृतियोंमें आनन्द नहीं। फ्रान्सीसी उपन्यासकार अलेक्जेण्डर ड्यूमाको लीजिये। क्या "माण्टी क्रिस्टो" में इस प्रकारकी शिक्षा मिलती है? अंगरेजीके मशहूर औपन्यासिक फीलिडङ्गको लीजिये। उसके "जोसफ ऐण्डरूज" और "टौम जोन्स उपन्यासको" शुरूसे आखिर तक पढ़ जानेपर भी हमारा मजा नहीं बिगड़ता। "पारसन रौडम्स" ऐसे चरित्रका चित्रण फीलिडङ्गकी अद्भुत उपन्यास-कलाका प्रमाण है। वह एक सीधा-सादा उपदेशक है, जो हर समय अच्छाइयोंका ही वर्णन करता है। फीलिडङ्गने उसका खूब मजाक उड़ाया है। परन्तु कला तो इसीको कहते हैं कि उपन्यास-भरमें यही चरित्र हमें सबसे अच्छा लगता है। कहींपर भी हम फीलिडङ्गको उपदेशकके जामेमें नहीं देखते। जीवनका सच्चा और स्वाभाविक चित्रण ही उसका ध्येय है और इसीको पूरा करते-करते वह अपने मतलबकी बात बड़ी खूबीसे कह जाता है।

रूसी उपन्यासकार संसारके अन्यान्य औपन्यासिकोंसे भिन्न हैं। इनकी कहानियां दूसरे ही सांचेमें ढली हैं। तुर्गनेव, टाल्सटाय, दोस्तवस्की इत्यादिको लीजिये। इसका मतलब यह नहीं है कि इनकी कृतियोंमें शिक्षाका अंश नहीं है। टाल्सटाय तो पक्का उपदेशक था। कलाकी नैतिक रीढ़ (Moral backbone) हीको वह सब-कुछ समझता था। यही कारण है कि उसने शेक्सपियर-ऐसे अंगरेजी नाटककारपर कड़ी आलोचना की। खैर, टाल्सटायको छोड़कर दोस्तवस्कीको लीजिये। उसकी कहानियोंको पढ़कर कितनोंने तो आत्म-हत्या कर डाली! मेरा एक मित्र था जो उसीकी कहानियोंको पढ़कर इतनी निराशासे भर गया कि उसने अपनी जान ले ली। परन्तु यहां हमें आशावाद और निराशावादका झगड़ा नहीं तय करना है। यहां तो हमें दूसरी ही कसौटीपर साहित्यको परखना है। ऐसे औपन्यासिक, जो दोस्तवस्कीके समान लिखते हैं, मानव-जीवनको दूसरी ही दृष्टिसे देखते हैं। उनका विश्लेषण दूसरा होता है। क्या यह आवश्यक है कि बुराईकी सजा बुराईमें मिलती है और भलाईका इनाम भलाईमें मिलता है? क्या जीवनकी समस्यायें इतनी सरल हैं? क्या ऐसा नहीं होता कि भले लोगोंकी गर्दनोंपर वार हो जाय और बुरे फलें-फूलें? क्या भलाई और बुराई ही दो यन्त्र हैं जिनसे हम मनुष्योंको,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तौलते हैं ? टामस हार्डीके उपन्यासोंमें भाग्य ही कठपुतलीके समान सबको नचाता है। क्या संसारमें टैस, जूड, वाइल्डीव, क्रिस इत्यादिके समान प्राणी नहीं हैं ? क्या यूस्टेशिया वाईके समान अभागी भावुक लड़कियां नहीं होतीं ? फिर हम किसे भला और किसे बुरा कहें ? बड़ी कठिन समस्या है।

ऐसी दशामें हम क्या कह सकते हैं ? कहानीमें मानव-जीवनकी सच्ची घटनाओंका समावेश होता है। जितना ही अधिक औपन्यासिकका जीवन-अध्ययन सच्चा होगा उतना ही अधिक उसका चरित्र-चित्रण सच्चा होगा। जो कुछ होता है वही लिखा जाये। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि लेखक अपनी कृतियोंको अश्लीलतासे भरे। अश्लील फ्रेंच कहानियोंसे भला क्या लाभ ? कलामें सुन्दरताका भी समावेश है। केवल अ-सुन्दर कला लेकर हम क्या करेंगे ? किसी चरित्रका चित्रण पढ़कर हमारे हृदय और विचारोंपर अवश्य कुछ-न-कुछ प्रभाव होगा। एक अंगरेज समालोचकने लिखा है—"Art is the reflection of human life. In giving expression to human life, art must ennoble the individual. Art is for life's sake. It must not preach but persuade. The moment art wishes to proselytize the individual, it loses all its charm." (कला जीवनका प्रतिबिम्ब है। जीवनको प्रकट करनेमें कलाको चाहिए कि मनुष्यपर प्रभाव डाले। कला जीवनके लिए है। कलाको भलाईका उपदेश नहीं देना चाहिए; परन्तु मनुष्यको उसकी ओर अग्रसर करना चाहिए। जब-जब कला मनुष्यके साथ जबर्दस्ती करती है, उसका सारा सौन्दर्य नष्ट हो जाता है।) कहानी-लेखक परोक्ष रूपसे यदि किसी प्रकारका प्रभाव डालना चाहता है तो इससे बढ़कर कोई बात नहीं। खुले खजाने, प्रत्यक्ष रूपसे जब कहानी-लेखक अपनी कहानियोंको व्याख्यानका प्लैटफार्म बनाता है तब वह बर्नार्ड-शाके समान उपदेशक बन जाता है। कहानियों और उपन्यासोंमें मनुष्य-जीवनके लिए कुछ-न-कुछ भोजन अवश्य होना चाहिए। कहानियोंमें रोटीकी जगह पत्थर नहीं मिलना चाहिए। परन्तु यदि हमारे विचारों, सिद्धान्तों और चरित्रके लिए, कहानी-लेखक अच्छे प्रभाव रखता है तो उसे यह उचित नहीं कि वह ढिंढोरा पीटा करे कि उसने हमें यह दिया। कला अपने सौन्दर्यके साथ शिक्षा अवश्य रखती है। परन्तु वह शिक्षा हमारे गलेमें उंडेली नहीं जाती, बल्कि हम स्वयम् उसे ग्रहण कर लेते हैं। यदि हम कहानी-लेखकके हृदयको समझ गये हैं, तो हम उसका मतलब भी समझते हैं। घटनाओंकी लहरोंमें हम स्वतन्त्रताके साथ बहने लगते हैं, और धीरे-धीरे जीवन-समुद्रमें पहुंच जाते हैं। कोई आवश्यकता नहीं कि कहानी-लेखक पादरीके समान हमें बपतिस्मा दे।

---

# विस्मृति-पथपर

आशा, अरमानोंकी दुनिया, हुई क्षितिजके पार,
कसक रहा विस्मृति-पलकोंमें, उनका अन्तिम प्यार!
मैं एकान्त विजनपथमें बस, खड़ा हुआ हूं मौन;
किन्तु न जाने कौन जता, जाता है वही दुलार!
उस दुलारमें परिवर्तन है; परिवर्तनमें हूक,
हैं अतीतके गीत हूकमें, और व्यथाकी कूक!
कितने युगकी जीवन-स्मृति, होकर हा! म्रियमाण;
मानस-पथसे गिर-गिर पड़ती, बन आंसूके टूक!
जिसे आज जीवन कहता हूं, वह कलका अवसान;
जिसने कर रक्खे हैं कितने ही जीवन निर्माण!
मृत्यु, मृत्यु, हां मृत्यु, मृत्यु ही, नवजीवनकी याद;
इसी यादपर तो स्थित हैं, जगतीके सामान!
उरकी एक बूंदमें कितने, सागर हुए विलीन;
खींचूं कैसे सीमा-रेखा, यह है सीमा-हीन!
बन जाती है लघु तरङ्ग ही, निखिल विश्व-उल्लास;
क्षुद्र आहसे ही हो जाती, यह जगती श्री-हीन!
मैं हूं जग, जगती है मुझमें, नहीं पृथक् कुछ और;
ढूंढ़ रहा हूं मैं 'अपूर्णता', खड़ा 'पूर्णता-पौर'!
'अपनापन' विस्मृतिके पथपर, बिखराता हूं व्यर्थ;
भूल रहा हूं—"यह संसृति ही, है जीवन-सिरमौर!"

—'हंस'

---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विद्रोही नेता : सिरका मूल्य दो हजार पौण्ड !

श्री परमेश्वर शरण, एम० ए०

पहली मार्च, १९३५ को एथेन्स नगरका शान्त वातावरण सहसा क्षुभित हो गया। सेनाके कुछ विभाग बागी हो गये और उन्होंने यथाशक्ति सम्पूर्ण सेनाको अपने पक्षमें लानेका प्रयत्न किया। किन्तु विद्रोह सफल न हो सका और युद्धसचिव कोण्डिलिस ( kondylis ) की सहायतासे गवर्नमेण्टने विद्रोहको दबा दिया। पीछे ज्ञात हुआ कि ग्रीसके भूतपूर्व मन्त्री वेनीजेलसने ही शासनकी बागडोर अपने हाथमें करनेकी इच्छासे प्रेरित होकर ही यह षड्यन्त्र रचा था। किन्तु पराजित हो तथा स्वदेशका वातावरण अनुकूल न देख वह अपने कुटुम्ब सहित इटली भाग आया है। इस समय उसकी आयु ७० वर्षसे अधिक है और इस आयुमें, जबकि जनसाधारण परलोकके स्वप्न देखने लगते हैं, उसके लिए सैनिक विद्रोहका नेतृत्व करना आश्चर्यकर प्रतीत होता है। किन्तु यदि हम उसके गत जीवनपर दृष्टिपात करें तो इसमें कुछ असङ्गत अथवा असाधारण बात नहीं प्रतीत होती ; क्योंकि आरम्भसे ही वह ऐसे वातावरणमें रहा है और उसका सारा जीवन ही ग्रीक राष्ट्रका एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित करनेके प्रयत्नमें व्यतीत हुआ है। इस कार्यमें उसको कितनी लड़ाइयां लड़नी पड़ी हैं, कितनी बार वह देशसे निर्वासित हो चुका है, उसने कितने षड्यन्त्र रचे हैं, इन सबका स्मरण कर उसके इस असफल विद्रोहपर कुछ विस्मय करना उसके जीवनकी घटनाओंसे अपरिचित होनेके कारण ही हो सकता है।

भूमध्यसागरके पूर्वीय भागमें स्थित द्वीप समूहमें क्रीट द्वीप सबसे बड़ा है और यहीं २३ अगस्त सन् १८६४ में वेनीजेलसका जन्म हुआ था। इस द्वीप-समूहका अनादि कालसे ग्रीस देशसे घनिष्ट सम्बन्ध रहा है।

उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तिम दशाब्दमें फ्रान्सके प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ क्लीमैन्शोने ग्रीक पुरातत्त्वका अध्ययन करनेके लिए ग्रीस तथा क्रीटकी यात्रा की थी। यात्रासे लौटनेपर पेरिसमें उसने मित्रोंसे कहा था कि "मैंने बड़े सुन्दर और विचित्र देशों में भ्रमण किया है और उनमें एक क्रीट भी है। किन्तु वहांकी खुदाईके वैभवसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण जो खोज मैंने वहांपर की उसका तुम ख्याल भी नहीं कर सकते हो। अभी बताता हूं—एक नवयुवक वकील, वेनीज्यूलेस—वेनीजेलस मुझे तो उसका नाम भी याद नहीं रहा—लेकिन कुछ ही वर्ष बाद सारे यूरोपमें उसका नाम लिया जाया करेगा।" और उसकी यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। यद्यपि आज वेनीजेलस विदेशमें मारा-मारा फिर रहा है और स्वदेशमें उसको राजद्रोहके अभियोगमें फांसीकी आज्ञा हो गयी है तथा उसके सिरके लिए २ हजार पौण्ड इनामकी घोषणा की गयी है; तथापि ग्रीस-राष्ट्र-निर्माणमें उसने जो महत्त्वपूर्णकार्य किया है उससे यूरोपके इतिहासमें उसका स्थान सुरक्षित है।

जिस समय वेनीजेलसका जन्म हुआ था उस समय क्रीट द्वीप तथा पूर्वीय यूरोपका बहुत-सा भाग तुर्की साम्राज्यके अन्तर्गत था। तुर्की साम्राज्य अपने वैभव और शानके दिन पार कर चुका था और उसके अधीनस्थ यूरोपीय देशोंकी प्रजा स्वतन्त्रताके लिए आतुर थी। १८२० में ग्रीस तो स्वतन्त्र हो गया था; किन्तु क्रीट द्वीपपर—जो ग्रीक राष्ट्रका एक अवयव ही था—तुर्कीका शासन पूर्ववत् कायम रहा।

एक राष्ट्रका इस प्रकार विभाजन करना ग्रीक राष्ट्रीयताके भावोंपर कुठाराघात था और यह क्रीट निवासियोंके लिए असह्य था। उसपर भी विधर्मी विदेशियों द्वारा निरंकुश शासन! क्रीटके लिए इससे अधिक और क्या विपत्ति हो सकती थी। स्वराज्य प्राप्तिके लिए क्रान्तियां अनिवार्य थीं। ऐसी ही एक क्रान्तिमें भाग लेनेके कारण वेनीजेलसके मातापिताको भी क्रीटसे भागना पड़ा और वे निकटवर्ती सिरा द्वीपमें जाकर बस गये। उस समय वेनीजेलसकी अवस्था तीन वर्षकी थी। वे यहां आठ वर्ष रहे और वेनीजेलसका प्रारम्भिक जीवन यहीं बीता। तुर्क शासनके विरुद्ध विद्रोह करना उसकी पैतृक सम्पत्ति थी और जीवनका प्रारम्भिक समय इसी वातावरणमें व्यतीत हुआ।

१४ वर्षकी आयुमें वह शिक्षा प्राप्त करनेके अभिप्रायसे एथेन्स नगर चला आया और वहींसे २३ वर्षकी आयुमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



डिग्री ली और क्रीटमें आकर वकालत शुरू कर दी। वकालत आरम्भ करते ही वह राजनीतिक विषयोंमें भाग लेने लगा और शीघ्र ही क्रीट द्वीपकी पार्लामेण्टका सदस्य हो गया। वह तो मातृभूमिकी स्वतन्त्रता ही नहीं, अपितु सारे ग्रीक राष्ट्रको एक स्वतन्त्र राज्यके सूत्रमें बांधनेके स्वप्न देखता था। केवल पार्लामेण्टका परिमित क्षेत्र इस विस्तृत और महान् आयोजनको सफलीभूत करनेके लिए बहुत परिमित था। अतः क्रीटमें विद्रोह हुआ, वेनीजेलसने उसमें भाग लिया और इस कारण उसको देशसे भागना पड़ा। एक वर्ष बाद १९९० में वह लौट तो आया, पर उसको चैन कहां? आते ही उसने पुनः विदेशी शासकोंके विरुद्ध संग्राम छेड़ दिया। वह जानता था कि तुर्क शासनसे टक्कर लेनेके लिए उग्र राष्ट्रीय भावना जाग्रत करनी आवश्यक है। इसके अतिरिक्त उसको यह भी ज्ञात था कि केवल न्याय और तर्कके आधारपर स्वतन्त्रता प्राप्त करना असम्भव नहीं तो कमसे कम अत्यन्त कठिन अवश्य है और इसमें न जाने कितना समय लग जाय। इसलिए उसने द्वीपमें राष्ट्रीयताकी भावनाको जाग्रत करनेके लिए प्रबल आन्दोलन आरम्भ कर दिया और विविध साधनोंका अवलम्बन किया। पार्लामेण्टके अतिरिक्त द्वीपके समाचार-पत्रों, क्लबों तथा लेक्चरबाजी द्वारा उसने अपना आन्दोलन जारी रखा। इसके अतिरिक्त आवश्यकता पड़नेपर वह रणक्षेत्रमें शस्त्रधारी सेनाका नायक बन गवर्नमेण्टसे युद्ध करनेसे भी नहीं चूकता था।

इसी समय ग्रीस और टर्कीमें युद्ध छिड़ गया और क्रीटन-नेता सुअवसर देख ग्रीसके साथ हो टर्कीके विरुद्ध युद्धमें सम्मिलित हो गये। वेनीजेलसने अपने द्वीप-वासियोंकी एक सेना सुसज्जित की और इस प्रकार उसने यूरोपीय राष्ट्रोंको दिखला दिया कि क्रीटवासी भी अवसरपर कुछ कर दिखला सकते हैं। इसका फल यह हुआ कि क्रीटको टर्कीकी अधीनतामें रहकर आंशिक स्वतन्त्रता मिल गयी। और क्रीटन पार्लामेण्टने इस प्रकारकी नाममात्रकी स्वतन्त्रताको स्वीकार कर लिया; किन्तु वेनीजेलस इससे कब सन्तुष्ट होनेवाला था। उसने इसका विरोध किया। उसके ऐसे विचार होनेके कारण गवर्नमेण्टने उसको गिरफ्तार करना चाहा। वह तो छिपकर भाग गया; किन्तु उत्तेजित राजकर्मचारियोंने उसके घरमें आग लगा दी।

किन्तु वेनीजेलस ऐसी घटनाओंसे हतोत्साह होनेवाला व्यक्ति न था। उसके सम्मुख तो 'वृहत्तर ग्रीस' राष्ट्रके निर्माणका लक्ष्य था और उसकी प्राप्तिके लिए वह सब-कुछ, क्लेश अथवा यातनायें, सहन करनेके लिए कटिबद्ध रहता था। अपने उत्साह, नेतृत्व-शक्ति तथा महान् आदर्शोंके कारण वह क्रीट द्वीपका सर्वप्रिय नेता बन चुका था। अतएव आश्चर्य नहीं कि शीघ्र ही वह क्रीट वापस चला आया और द्वीपकी गवर्नमेण्टका प्रधान नियुक्त कर दिया गया। इसी समय ग्रीसके राजा जार्जका द्वितीय पुत्र राजकुमार जार्ज क्रीट द्वीपमें हाई कमिश्नर नियुक्त होकर आया। वह एक स्वेच्छाचारी शासकके रूपमें क्रीटका शासन करने लगा। उसकी निरंकुशता एवं औद्धत्यको देखकर वेनीजेलसका मन एकबारगी विद्रोही हो उठा। क्रीटको तुर्कीकी स्वेच्छाचारितासे क्या उसने इसी नूतन स्वेच्छाचारिताको स्वीकार करनेके लिए मुक्त किया था? राष्ट्र-परिषद्के सभापतिका आसन त्यागकर उसने सैनिक बाना धारण किया। सन् १९०५ के विद्रोहमें हम उसे विद्रोहियोंके पुरोभागमें अत्याचारीके विरुद्ध सिंह-गर्जन करते देखते हैं।

इस विद्रोहके फल-स्वरूप प्रिन्स जार्जका पतन हुआ और क्रीटमें रहना कठिन हो गया। सन् १९०६ में उसको अपना पद त्यागना पड़ा और एक अन्य व्यक्ति—जिसका किसी राजघरानेसे सम्बन्ध नहीं था—हाई कमिश्नर नियुक्त हुआ। परन्तु हाई कमिश्नरका पद ही इस बातका द्योतक था कि क्रीटपर टर्कीका आधिपत्य है और यह वेनीजेलसको कांटेकी तरह खटक रहा था। वह निरन्तर इसी उद्योगमें रहता था कि किसी प्रकार पराधीनताके इस चिह्नका अन्त किया जाय। सौभाग्यसे अवसर आ उपस्थित हुआ। 'स्वतन्त्रता' तथा 'राष्ट्रीयता'की नयी लहरके प्रभावसे पुरातन देश टर्की भी न बचा रह सका। १९०८ में वहांपर भी नवयुगकी आकांक्षाओंसे प्रभावित नवयुवक नेताओंने प्राचीन शासन-प्रणालीका अन्त करनेके लिए विद्रोह किया। टर्कीके इस सङ्कटमय समयका उसके शत्रुओंने लाभ उठाया। वेनीजेलसने भी अच्छा अवसर जान क्रीटके हाई कमिश्नरके पदको अनावश्यक बता यह घोषित कर दिया कि अब क्रीट भी ग्रीस देशका ही भाग माना जाय।

वेनीजेलसके कार्य-कलापको समस्त ग्रीस विस्मय-विमुग्ध दृष्टिसे देख रहा था। उसकी कीर्ति-कथायें दूर-दूर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri-Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तक फैल चुकी थीं। समस्त ग्रीस इस पुरुषसिंहको अपना उद्धारकर्ता समझकर आकुल प्राणोंसे उसकी प्रतीक्षा करने लगा। जिस व्यक्तिने क्रीटका अत्याचार एवं निरंकुश शासनसे उद्धार किया है वह क्या ग्रीसको भी स्वेच्छाचारिता, गृह-कलह एवं अनाचारसे परित्राण करनेमें समर्थ नहीं होगा? ग्रीसकी जनताने उसका आह्वान किया। स्वाधीनताकी नत पताकाको पुनः उड्डीयान करनेके लिए वेनीजेलस इस आह्वानकी उपेक्षा नहीं कर सका।

सितम्बर १९१०। एथेन्स नगरके सिण्टेग्मा स्क्वायरमें बड़ी भीड़ है। लोग इधर-उधर घूम रहे हैं और किसी महान् परिवर्तनके कारण कुछ उत्तेजित-से नजर आते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे किसीके आगमनकी प्रतीक्षामें हैं। पास ही राजभवन है जो इस समय खाली-सा दीखता है। उसी समय वहां होटलके छज्जेपर एक व्यक्ति आया और उसने एक तीव्र दृष्टि उस भीड़पर डाली। जनता शान्त हो छज्जेके नीचे एकत्रित हो गयी। उस व्यक्तिने कुछ कहना आरम्भ किया। यह व्यक्ति वेनीजेलस था। आते ही उसने ग्रीक मिलिटरी लीगकी सहायतासे ग्रीसके शासनमें सुधार किये और नेशनल एसेम्बलीकी स्थापना की। फिर १९१० के चुनावमें उसकी पार्टीकी विजय हुई और वह ग्रीसका प्रधान मन्त्री क्या, सर्वेसर्वा हो गया। इस प्रकार एक प्रसिद्ध विद्रोही तथा विदेशीके हाथमें ग्रीस राज्यकी शक्ति केन्द्रित हो गयी। उसको इस पदके द्वारा अपने ध्येयकी पूर्तिके लिए उपयुक्त अवसर मिल गया और उसने इसका पूर्णरूपेण प्रयोग किया।

ग्रीसमें १९१२ के चुनावके पश्चात् क्रीटके मेम्बरोंने कहा कि हमको भी ग्रीस पार्लामेण्टमें भाग लेनेका अवसर दिया जाय; क्योंकि यह बात तो पूर्व ही घोषित की जा चुकी थी कि अब क्रीट ग्रीसका भाग है। परन्तु टर्कीने इसपर आपत्ति की, क्योंकि टर्की तो यह समझता था कि क्रीट उसीके अधीन है। और उसने यह घोषित कर दिया कि यदि क्रीटके मेम्बरोंने एथेन्सकी पार्लामेण्टमें भाग लिया तो युद्ध छिड़ जायगा। किन्तु वेनीजेलसने पहले ही इसका प्रबन्ध कर लिया था। जैसे ही टर्कीने अपना सैन्य-सञ्चालन किया, बाल्कन लीगके मेम्बर टर्कीसे युद्धके लिए सन्नद्ध हो गये। इस युद्धमें, जो यूरोपके इतिहासमें बाल्कन युद्धके नामसे प्रसिद्ध है, टर्कीकी हार हुई और यूरोपमें उसके साम्राज्यका अन्त हो गया। इस युद्धमें विजयका श्रेय बहुत-कुछ वेनीजेलसको ही है। इस युद्धके अनन्तर पूर्ण शान्ति स्थापित होनेसे पूर्व एक और युद्ध हुआ जिसका कारण था लीगके मेम्बरोंमें आपसमें इस बातपर झगड़ा कि टर्कीसे जीते हुए देशोंका आपसमें किस प्रकार बंटवारा हो। इन दोनों युद्धों द्वारा ग्रीसके राज्यमें बहुत-कुछ वृद्धि हो गयी। मैसीडोनियाका बड़ा भाग, पश्चिमी थ्रेस, क्रीट द्वीप तथा एशिया माइनरके समीपस्थ द्वीप-समूहके बहुत-से टापू ग्रीसको मिल गये। वेनीजेलसकी आकांक्षायें, उसके बाल्यकाल तथा युवावस्थाके स्वप्न, इस समय वास्तविकतामें परिणत हो रहे थे। इस समय वह ग्रीसका सर्वमान्य तथा प्रतिष्ठित नेता था। यही नहीं, उसकी योग्यताकी धाक सारे यूरोपमें बैठ चुकी थी।

क्रीटसे भागनेके बाद वेनीजेलस नेपुल्समें रिपोर्टरोंसे विद्रोहके सम्बन्धमें बातचीत कर रहा है।

किन्तु आगामी वर्षके समाप्त होनेसे पूर्व ही दो ऐसी घटनायें हो गयीं जिनके कारण वेनीजेलसका जीवन अत्यन्त कर्मशील तथा और भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरफ्तारीके बाद कुछ बागी सैनिकोंका एथेन्समें कोर्ट मार्शल हो रहा है।

अधिक घटनामय हो गया। यह दो घटनायें थीं ग्रीक-सम्राट् जार्जकी हत्या और उसके पुत्र कान्सटैनटाइनका सिंहासनारूढ़ होना तथा महायुद्धका आरम्भ।

यह तो सर्वविदित ही है कि मित्रराष्ट्रोंने जर्मनीके विरुद्ध युद्ध करनेमें अन्य कारणोंके अतिरिक्त यह भी एक कारण बतलाया था कि वे प्रजातन्त्रात्मक स्वतन्त्र राज्योंकी स्थापनाके लिए युद्ध कर रहे हैं। इस सद्भावनासे आकृष्ट हो तथा स्वतन्त्रता-प्राप्तिका सुअवसर देखकर पूर्वीय यूरोपके दलित राष्ट्र सहर्ष मित्रराष्ट्रोंके साथ हो गये थे। इसके अतिरिक्त वेनीजेलसको तो टर्कीको पूर्णरूपेण परास्त करनेकी प्रबल इच्छाने भी मित्रराष्ट्रोंका साथ देनेके लिए प्रेरित किया था। अतएव मित्रराष्ट्रोंकी ओरसे महायुद्धमें भाग लेना ग्रीसके लिए आवश्यक था। और यही वेनीजेलसकी भी इच्छा थी। किन्तु राजा कान्सटैनटाइनकी नीति इससे भिन्न थी। वह तो जर्मनीका साथ देना चाहता था; क्योंकि उसकी स्त्री जर्मन कैसरकी बहन थी और वह निरन्तर अपने पतिको जर्मनीका साथ देनेके लिए प्रोत्साहित करती रहती थी। इसका फल यह हुआ कि वेनीजेलस तथा कान्सटैनटाइनमें बराबर खींचातानी होती रही। यद्यपि ग्रीक जनता वेनीजेलसके पक्षमें थी तथा मित्रराष्ट्र भी यही चाहते थे कि ग्रीस हमारी ओर आ जाय; किन्तु कान्सटैनटाइन अपनी बातपर अड़ा रहा और अन्तमें १९१५ में उसने वेनीजेलसको मन्त्री-पदसे अलग कर दिया। किन्तु वेनीजेलसने अपना आन्दोलन जारी रखा और निरन्तर यही प्रयत्न करता रहा कि कान्सटैनटाइनको ठीक रास्तेपर ले आये। ग्रीसकी जनतामें उसकी लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि कान्सटैनटाइनको बाध्य होकर सितम्बर मासमें उसको प्रधान पदपर वापस बुलाना पड़ा। किन्तु दोनोंकी पारस्परिक नीतिमें भिन्नता तथा व्यक्तिगत वैमनस्यके कारण दोनों मिलकर राज्यभार वहन न कर सके और दो सप्ताहके अन्दर ही वेनीजेलसको इस्तीफा देना पड़ा। यही नहीं, उसका एथेन्समें रहना असम्भव हो गया और रातमें छिपकर उसको वहांसे भागना पड़ा और वह क्रीट चला आया।

किन्तु मित्रराष्ट्रोंको ग्रीसका तटस्थ रहना असह्य हो रहा था और उन्होंने कोई अन्य उपाय न देख अन्तमें कान्सटैनटाइनको नोटिस दे दिया कि या तो वह राज्य-सिंहासनको अपने किसी बेटेके नाम करके वहांसे चल दे अथवा रिपब्लिककी स्थापनाकी अनुमति दे दे। कान्सटैनटाइनमें इतनी सामर्थ्य कहां थी कि वह मित्रराष्ट्रोंका सामना कर सकता। उसने इसीमें कुशल समझा कि अपने द्वितीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पुत्र एलेकजेण्डरको अपना उत्तराधिकारी बना वह ग्रीससे चला आया।

एलेकजेण्डरने अपना नया मन्त्रिमण्डल चुना और वेनीजेलसको प्रधान मन्त्रीका पद स्वीकार करनेके अभिप्रायसे आमन्त्रित किया। एक बार फिर वेनीजेलसने ग्रीसका भाग्य-निर्माता बन एथेन्समें प्रवेश किया, जहांसे कुछ सप्ताह पूर्व ही वह छिपकर भागा था।

एक वर्ष बाद महायुद्ध समाप्त हो गया और सन्धि-कानफरेन्समें वेनीजेलस ही ग्रीसका प्रतिनिधि बनाकर पेरिस भेजा गया। वहां उसने ग्रीसके पक्षकी इस योग्यतासे वकालत की कि सारे यूरोपमें उसकी राजनीति-कुशलताकी ख्याति हो गयी। यही नहीं; निकट-पूर्वकी समस्याका उसको इतना सम्पूर्ण ज्ञान था कि कानफरेन्सके महारथी तक उसका लोहा मानते थे। उसकी व्यक्तिगत लोकप्रियता तथा योग्यताका यह परिणाम हुआ कि "सेव्र" (Sereves) तथा नयी (Neuilly) की सन्धिके अनुसार ग्रीसको पूर्वीय थ्रेस, स्मरना, एपीरसका उत्तरी भाग तथा बहुत-से द्वीप मिल गये। इस प्रकार वेनीजेलसके जीवनका उद्देश्य पूर्णरूपेण सफल हो गया। वह एक सम्पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र निर्माण कर पेरिस-से लौटा।

इस समय वह अपने जीवनके उत्कर्षपर था। अपने ३० वर्षके अथक परिश्रम तथा अदम्य उत्साह द्वारा उसने अपना अभीष्ट पा लिया था। जिसके लिए उसने इतने कष्ट सहन किये थे, लड़ाइयां लड़ी थीं तथा देश-विदेशमें मारा-मारा फिरा था, वही आज उसको प्राप्त हो गया था। एक नये उल्लास, एक नयी उमङ्गको लेकर वह ग्रीस वापस आया। किन्तु उसकी अनुपस्थितिमें एथेन्समें दूसरा ही षट्चक्र रचा जा रहा था। राजाको उसकी ख्याति असह्य हो रही थी और वह यह नहीं चाहता था कि वेनीजेलस पेरिससे लौट आकर ग्रीसका शासक बन जाये और स्वयं वह एक शक्तिहीन, किन्तु शोभायमान् व्यक्तिके समान एथेन्सके महलोंमें पड़ा रहे। राजाने वेनीजेलसकी अनुपस्थितिका लाभ उठा उसके विरुद्ध प्रबल आन्दोलन किया। इसका फल यह हुआ कि वेनीजेलसके पेरिससे वापस आनेपर एथेन्समें उसका उचित स्वागत तक नहीं किया गया। तदनन्तर जब उसने अपनी नीतिको जनताके सम्मुख रखा, तो उसकी पराजय हुई। यहां तक कि एथेन्स नगरसे वह स्वयं तक निर्वाचित नहीं किया गया। इससे अधिक कृतघ्नता और क्या हो सकती है!

ग्रीसकी परिस्थितिमें शीघ्र परिवर्तन हुए और शीघ्र ही प्रवासित राजा कान्सटैनटाइन ग्रीस वापस आ गया। कान्स-टैनटाइन तो इस आशामें था कि सेना द्वारा टर्कीसे विजय पाकर उसका अपना नाम होगा। किन्तु हुआ बिलकुल उलटा। वेनीजेलसके निरन्तर चेतावनियां देनेपर भी ग्रीक युद्ध करते ही रहे और फल यह हुआ कि मुस्तफा कमालपाशाके नायकत्वमें नवीन उत्साहसे भरे हुए तुर्कोंसे उन्हें पराजित होना पड़ा। इस हारने कान्सटैनटाइनकी सरकारको बहुत बदनाम कर दिया। किन्तु इसी समय कान्सटैनटाइनकी मृत्यु हो गयी और ग्रीसमें नये शासक मण्डलकी स्थापना हुई।

ग्रीसकी नयी सरकारने फिर वेनीजेलसको ही टर्कीसे सन्धि करनेके लिए भेजा, क्योंकि उससे अधिक योग्य व्यक्ति ग्रीसमें दूसरा नहीं था। वेनीजेलस यह जानता था कि इस सन्धिमें पराजित ग्रीसको हानि अवश्य उठानी पड़ेगी, किन्तु उसने सोचा कि ग्रीसके लिए जो कुछ भी बचाया जा सके, उसकी प्राप्तिके लिए यथाशक्ति प्रयत्न करना प्रत्येक देश-सेवकके लिए उचित ही है और वह लौसाने (Lausane) सन्धि करानेके लिए ग्रीसका पतिनिधि बनकर जानेके लिए राजी हो गया। इस सन्धिके अनुसार महायुद्धके पश्चात् ग्रीसको जो-कुछ मिला था वह उसको वापस करना पड़ा। इस प्रकार १९१३ के बाद उसने जो-कुछ प्रयत्न किया था वह व्यर्थ हो गया। किन्तु इस सन्धिकी एक शर्त यह भी थी कि तुर्क क्रीट द्वीपको बिलकुल छोड़ देंगे। आखिरकार जिस उद्देश्यसे उसने २६ वर्षकी आयुमें राजनीतिक विषयोंमें भाग लेना आरम्भ किया था और जिसके लिए उसने न-जाने कितने युद्धोंमें भाग लिया था, तथा और भी विविध रूपसे निरन्तर प्रयत्न करता रहा था वह ६० वर्षकी आयुमें पूर्ण हुआ।

१९२४ के निर्वाचन द्वारा वह फिर प्रधान मन्त्री नियुक्त हो गया। फिर स्वास्थ्य खराब होनेसे उसको इस्तीफा देना पड़ा और वह फ्रान्स चला आया।

१९२८ में फिर एक बार उदार दलका नेता बनकर वह ग्रीसके रङ्गमञ्चपर अभिनय करनेके लिए आ उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हुआ। प्रधान मन्त्रीका पद पानेका यह उसका पांचवां अवसर था। इस बार वह १९३२ तक ग्रीसका सर्वेसर्वा रहा। ग्रीसको एक सुसम्पन्न, सबल तथा यूरोपका एक सम्मानित राष्ट्र बनानेके अभिप्रायसे उसने रोम, पेरिस, लन्दन प्रभृति यूरोपकी मुख्य राजधानियोंकी यात्रा की और अपने व्यक्तिगत अनुभव और योग्यता तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिके आधारपर वह यूरोपमें ग्रीसको एक सम्मानित स्थान दिलानेमें समर्थ हो सका। साथ ही उसने ग्रीसकी आन्तरिक दशा सुधारनेमें भी काफी समय लगाया और बहुत-से सुधार किये।

१९३२ में वेनीजेलसको फिर एक बार प्रधान मन्त्रीके पदसे अलग होना पड़ा। किन्तु एक कर्मशील देशभक्तके लिए शान्त बैठना कठिन था। वह बराबर उपयुक्त अवसरकी प्रतीक्षा करता रहा। प्रथम तो निर्वाचन-क्षेत्रमें उसने अपनी शक्तिकी परीक्षा की। किन्तु इसमें उसको सफलता नहीं हुई। इसपर उसने अपने चिर-अभ्यस्त साधन—क्रान्तिका अवलम्बन किया, किन्तु इसमें भी वह सफल न हो सका। सम्भव है वृद्धावस्था इसका कारण हो, क्योंकि इस समय वेनीजेलस ७१ वर्षका है, यद्यपि वह स्वयं यही कहता है कि अपने साथी जनरल प्लास्टिशसका पूर्ण सहयोग न मिलनेसे ही वह असफल हुआ है। युद्धसचिव जनरल कोण्डिलिसका, जिसके नायकत्वमें गवर्नमेण्ट वेनीजेलसको परास्त कर सकी है, कहना है कि यह विद्रोह तो वेनीजेलसकी बुढ़ापेकी सनकके कारण ही हुआ है। किन्तु प्रतिस्पर्धीके इन शब्दोंमें सहसा विश्वास नहीं किया जा सकता है, विशेषकर जब कि यह शब्द उस व्यक्तिके लिए प्रयुक्त हुए हैं जिसने सारा जीवन ही देश तथा राष्ट्रके हित-साधन तथा उसकी सेवाके लिए ही उत्सर्ग कर दिया हो। इस समय वेनीजेलस ग्रीससे भागकर इटली चला आया है और स्वदेशमें उसके विरुद्ध काफी आन्दोलन किया जा रहा है, यहांतक कि वर्तमान गवर्नमेण्टने उसके महल जब्त कर लिये हैं और ग्रीसकी सीनेट तकका खात्मा कर दिया। इसका कारण यह बताया जाता है कि १९२८ में वेनीजेलसने इसकी स्थापना की और ग्रीसमें उससे सम्बन्धित कोई भी चिह्न नहीं रहने चाहिएं।

ग्रीसकी सरकार आज वेनीजेलसको पागल बताकर उसका उपहास कर रही है। किन्तु इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। इससे पहले भी राष्ट्र-परिवर्तनके पक्षपाती अनेक देशभक्त तेजस्वी नेता अपने विरोधियों द्वारा पागल, शैतान, नर-पिशाच आदि विशेषणोंसे अभिहित किये जा चुके हैं। इसलिए ग्रीसकी सरकार जिसे पागल कहकर प्रचार कर रही है उसे पागल समझनेका कोई कारण नहीं हो सकता। वेनीजेलस राजनीतिक क्षेत्रका एक अत्यन्त सुपरिचित व्यक्ति है। वह कर्मवीर एवं यशस्वी पुरुष है। अपने साहस, शौर्य, उदारता एवं दूरदर्शिता द्वारा उसने जो कीर्ति अर्जन की है वह सहज ही भुलायी नहीं जा सकती। उसके अतीत जीवनका इतिहास इतना गौरवशाली है कि उसे एक हीन षड्यन्त्रकारी मान लेनेका कोई कारण प्रतीत नहीं होता। उसे पागल समझना ही पागलपन है। गत महासमर-कालमें उसने जिस असामान्य प्रतिभाका परिचय दिया था उससे अनेक विख्यात राजनीतिज्ञ काभूर, गैम्बटो और बिस्मार्कके साथ उसकी तुलना करते हैं।

जिस व्यक्तिने मृतप्राय अपहृतगौरव ग्रीसको नवजीवन प्रदान किया, जिसने ग्रीसके इतिहासमें एक नूतन अध्यायका सूत्रपात किया, उसे हीन षड्यन्त्रकारी तथा स्वप्रभुत्वप्रिय व्यक्ति कौन कह सकता है? वह तो सिंहके समान निर्भीक और अन्याय, अनीति एवं स्वेच्छाचारिताका निर्मम शत्रु है। स्वदेशकी स्वाधीनता ही उसका एकमात्र काम्य है। स्वाधीनताकी जय-पताकाको वह कभी नत नहीं होने देगा। स्वदेशका गौरव उसके द्वारा कभी क्षुण्ण नहीं होने पायेगा।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सुलेखाचार्य पं० गौरीशङ्कर जी भट्ट

श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार

"अन्धे प्रकाशकोंकी आंखोंमें मूसल घुसेड़कर उनकी भूल दिखानेकी जरूरत है और शिक्षा-विभागके अधिकारियों-को भी सचेत करना आवश्यक है। इस कार्यकी सफलता आप लोगोंके हाथ है। मेरे जीवनका यह महा संग्राम है। मेरे पास कोई साधन नहीं। अकेला कागजी गोले चला रहा हूं। गुरुकुलके शिष्योंमें महाव्रत और धर्मानन्द अच्छे थे। एक तो कहीं यूरोपमें जा फंसा और दूसरा पर्याप्त आश्वासन देते हुए भी अपने भाई वेदानन्दकी मृत्युसे ऐसा निरुत्साह हो गया कि उस महारथीका भी पता नहीं कि कहां है? मेरे भाग्यमें जो बदा है, अदा हो रहा है। अपना दौर्बल्य प्रकाश करनेसे मन शिथिल होता है, पर आपको लिखते हुए बल आता है। आशा है, मेरा अभिप्राय हिन्दी-जगत्में फैलानेका उद्योग आप करेंगे। हार-जीतसे मुझको कोई प्रयोजन नहीं। मुझको इसीमें सन्तोष है कि यह तो कहनेको हो जायगा कि लिपि-कला या लेखन-कलापर भट्ट मर मिटा, पीछे न हटा और कलमके मैदानमें राष्ट्रलिपिके काम आया।"

"मेरा कार्य आपके सामने है। मैंने नागरी लिपिके लिए स्वार्थवश जो-कुछ किया है, उसमें परमार्थकी झलक दिखाई देने लगी है। इसलिए मैं तो इसीपर जीता मरता हूं। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके अधिकारियोंसे कई सम्मे-लनोंपर उपस्थित होकर इसकी रक्षाके लिए प्रार्थना कर चुका हूं। मेरी कृतियां राष्ट्रलिपि नागरीके रूप-गुण-वर्धनके काम आवें, तो मेरा स्वार्थ सिद्ध हो गया और इसीको मैं परमार्थ भी समझूंगा। सब पदक और प्रमाण-पत्र आदि नागरी-प्रचारिणी सभा अथवा हिन्दी-साहित्य सम्मेलनके संग्रहालयको देकर वैकुण्ठको चला जाऊंगा।"

ऊपरकी पंक्तियोंसे उस हृदयकी भावनाका आभास सहज ही मिल जाता है, जिसने अपनी आधीसे अधिक आयु राष्ट्रलिपि नागरीके रूप-सौन्दर्यकी श्रीवृद्धिमें लगा दी है और अब ७० वर्षकी वृद्धावस्थामें भी जिसकी महत्त्वाकांक्षा यही है कि नागरी लिपि रूप-सौन्दर्यमें संसारकी किसी भी लिपिसे हीन न रह जाय। भारतवर्षमें ७० वर्षकी आयु प्राप्त करना अहोभाग्य है और उससे भी बड़ा अहोभाग्य यह है कि इस बड़ी आयुमें शरीर और आयुके जीर्ण-शीर्ण हो जानेपर भी मनुष्यके हृदयमें कोई लगन या धुन बनी रहे और उसको पूरा करनेमें वह युवकोंकी तरह पूरे उत्साहके साथ लगा रहे। सुलेखाचार्य पण्डित गौरीशङ्करजी भट्टने १९०१ में जिस कार्यको हाथमें लिया था, उसको आपने अपना जीवन-कार्य बना लिया और अब भी रात-दिन उसीकी आपको धुन समायी रहती है। किसी भी भाषाका प्रचार मुख्यतया उसकी लिपिपर निर्भर है। लिपि जितनी सरल, सुन्दर, सुबोध, वैज्ञानिक और आकर्षक है, भाषा-का उतनी ही शीघ्रतासे प्रचार होना सम्भव है। लिपिकी सुन्दरता और वैज्ञानिकताका आधार उसकी लेखन-शैली है। हिन्दीकी लेखन-शैलीको सुन्दर, वैज्ञानिक, आकर्षक और मनमोहक बनानेका जो उद्योग भट्टजीने किया है, उससे आपने हिन्दी जगत्को सदाके लिए ऋणी बना लिया है। आपके इस उपकारको हिन्दी-भाषी जनता सहजमें नहीं भुला सकती। भट्टजी और उनके इस महान् उद्योग तथा भव्य लेखन-शैलीका कुछ परिचय देना ही इन पंक्तियोंके लिखनेका उद्देश्य है।

## प्रारम्भिक जीवन

पण्डित गौरीशङ्करजी भट्टका जन्म संवत् १९२६ में सोमवार कार्तिक कृष्णा पञ्चमीके दिन मसवानपुर—कान-पुरमें स्वर्गीय श्री ललिताप्रसादजी भट्ट सदावर्तीके साधारण घरमें हुआ था। १९ वर्षकी आयु तक उस समयकी प्रथाके अनुसार आपको मुख्य शिक्षा फारसीकी ही दी गयी थी। साथमें आपने हिन्दी और अंगरेजीका भी अच्छा अभ्यास कर लिया था। पिताकी सबसे बड़ी महत्त्वाकांक्षा उन दिनों होती थी—अपने पुत्रको किसी सरकारी नौकरीमें लगा देना। झांसीमें भट्टजी बन्दोबस्तके दफ्तरमें लग गये। पिता कृतकृत्य हो गये। पर आपका झुकाव था साहित्य-सेवाकी ओर। इसलिए कुछ ही समय बाद आप अपने समाजके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मासिक पत्र 'भट्ट-भास्कर' के सम्पादक हो गये। उन्हीं दिनोंमें आपने व्रजभाषाके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थोंसे एक हजार उत्तम पद्योंका संग्रह करके 'मनरञ्जन' नामसे प्रकाशित किया था। सन् १८८९ से १८९० तक आपने चरखारी-राज्यके यन्त्रालयमें हिन्दी, उर्दू और अंगरेजीके 'कापिस्ट' का काम किया। जीवन-निर्वाहकी इस समस्या-की उधेड़-बुनमें लगे हुए ही आपका ध्यान हिन्दी लिपिके सुधारकी ओर गया। आप अक्षरोंको सुन्दर और सुडौल बनानेके लिए कलमोंकी तरह-तरहकी काटोंसे लिखनेका परीक्षण करने लगे। चर-खारीके बाबू कृष्णगोपालजी आपके इस काममें विशेष रुचि रखते थे। आपके अमूल्य सहयोगसे भट्टजीको अपने परीक्षणोंमें सफलता मिलने लगी। इसी बीच आप आजीविकाकी खोजमें बम्बई गये और वहां श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार-पत्रमें लग गये। वहां आपने सङ्गीत-रत्नाकर, गजल-संग्रह, प्रभाती संग्रह और श्री रामजन्म पद-संग्रह आदि पुस्तिकाओंके लिखनेका काम भी किया।

सुलेखाचार्य पं० गौरीशङ्कर जी भट्ट

### "लिपिबोध"

चरखारीमें किये गये परीक्षणोंमें प्राप्त सफलताके आधारपर भट्टजीने १९०१ में 'लिपिबोध' नामकी सुलेख-सम्बन्धी पहली पुस्तक प्रकाशित की। वर्णपत्रपर अक्षर अङ्कित करनेकी अपूर्व पद्धतिको इस पुस्तक द्वारा आपने हिन्दी जगत्के सामने उपस्थित किया। कई वर्षोंके निरन्तर प्रयत्न और खोजसे किया गया यह आपका लिपिके सम्बन्धमें पहला आविष्कार था और यह पहली पुस्तक थी जिसने नागरी अक्षरोंको चमत्कारपूर्ण सौन्दर्य प्रदान किया। उस समय तक नागरी लिपि प्रत्येक लेखककी रुचिपर निर्भर करती थी। ऐसी कोई वैज्ञानिक शैली नहीं थी, जो सर्वग्राह्य, सर्वानुकरणीय और सर्वानुमोदित हो। इस 'लिपिबोध' द्वारा उस शैलीकी आधारशिला रखी गयी, जिसने लेखन-कलाके इस भारी अभावकी शीघ्र ही पूर्ति कर दी। भट्टजीने अपने इस आविष्कार द्वारा कलमकी काट या लाग और अक्षर-लेखनमें परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर नागरी लिपिको सौन्दर्यकी दृष्टिसे भी उस दृढ़ आधारपर खड़ा कर दिया, जिससे वह दूसरी लिपियोंकी सौन्दर्यके मैदानमें भी प्रतिस्पर्धा कर सके।

### लेखन-कलाके मैदानमें

'लिपिबोध' का हिन्दी जगत्में आशातीत स्वागत हुआ और भट्टजीकी उनके उस आविष्कारके लिए अच्छी सराहना की गयी। उससे उत्साहित होकर भट्टजी अपनी शैलीको परीक्षणसे आगे बढ़ा-कर अभ्यासके क्रममें लानेका यत्न करने लगे। १९०५ में आपने इसी विचारसे 'नागरी लिपि-पुस्तक' का पहला भाग प्रकाशित किया और १९०७ तक उसके तीन भाग और भी तैयार कर दिये। उस वैज्ञानिक शैलीको सर्वसाधा-रण तक पहुंचाना और बच्चोंको बाल्यकालसे विधि-पूर्वक सुलेखकी शिक्षा देना ही उन लिपि-पुस्तकोंका उद्देश्य था। इस उद्देश्यमें भी भट्टजीको कल्पनातीत सफलता प्राप्त हुई। स्वतन्त्र शिक्षण संस्थाओंमें ही नहीं, किन्तु कई प्रान्तोंके सरकारी शिक्षा-विभागों द्वारा उनको सर-कारी स्कूलोंमें भी काममें लाया जाने लगा। धीरे-धीरे जिला बोर्डों और म्युनिसिपल बोर्डोंने भी उनको अपनाया। इस प्रकार लिपि-पुस्तकों द्वारा आप लेखन-कलाके मैदानमें उतर आये। नागरी लिपिकी सौन्दर्य-श्री-वृद्धि ही आपका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एकमात्र व्यवसाय रह गया। सब ओरसे ध्यान हटाकर आप इसीमें मग्न रहने लगे।

गुरुकुल कांगड़ीको हिन्दीके नामी लेखकोंके साथ साथ नागरीके मर्मज्ञ कलाविद् सुलेखक पैदा करनेका भी गौरव प्राप्त है और वह गौरव भट्टजीके चौदह वर्षोंके निरन्तर अध्यवसायका ही शुभ परिणाम है। जब कि १९०१ में भट्टजी 'लिपिबोध' तैयार करनेके आविष्कारमें लगे हुए थे, ठीक उन्हीं दिनों हरिद्वारके उस पार कांगड़ी गांवमें

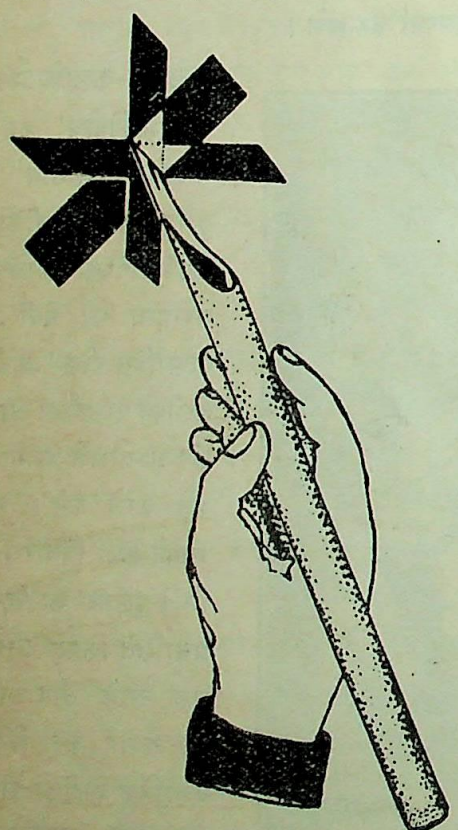

'शङ्कर-शैली' के अनुसार ४५ अंशके ज्यामितिक कोणकी काटकी जो कलम बनाई जाती है, उसका नमूना ऊपर दिया जाता है।

महात्मा मुंशीरामजीने शिक्षाके क्षेत्रमें अपने आविष्कारकी आधारशिला स्थापित की थी। भट्टजीके गुरुकुलमें सुलेखाध्यापक होकर आनेसे और निरन्तर चौदह वर्ष वहां उसी काममें बिता देनेसे कुछ ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कि आपने नागरी लिपिकी लेखन-कलाका वह आविष्कार गुरुकुलके लिए ही किया था। गुरुकुलने आपके इस आविष्कारसे और आपने महात्मा मुंशीरामजीके गुरुकुल-पद्धतिके आविष्कारसे पूरा लाभ उठाया। भट्टजीको गुरुकुलसे अधिक अच्छा क्षेत्र अपनी प्रणालीके प्रसारके लिए नहीं मिल सकता था और गुरुकुलको भट्टजीसे अधिक योग्य, कुशल तथा पारङ्गत सुलेखाध्यापक मिलना सम्भव नहीं था।

गुरुकुलके चौदह वर्षके अध्यापन-कालमें भट्टजीने लेखन-कलाके सम्बन्धमें कुछ और परीक्षण किये। क्रियात्मक अभ्यासके लिए यह अच्छा अवसर आपको हाथ लग गया। अपने प्रतिभा-सम्पन्न शिष्योंकी सहायता भी आपको अच्छी मिल गयी। गुरुकुलमें वेदोंके मन्त्रों, उपनिषदोंके वाक्यों, सूत्रग्रन्थोंके सूत्रों और स्मृतियों, गीता तथा अन्य काव्योंके श्लोकों आदिके 'मोटो' (सूक्ति-वाक्य) तैयार करनेका पुराना रिवाज था। रङ्गीन कागजोंके अक्षर काटकर, रङ्गीन कपड़ोंपर उनको चिपकाकर 'मोटो' तैयार किये जाते थे। भट्टजीकी वर्गपत्रपर अक्षर लिखनेकी शैलीका अवलम्बन उन सूक्ति-वाक्योंके तैयार करनेमें किया गया, जिससे उनका रूप ही बदल गया। वे इतने सुन्दर, भव्य और आकर्षक बनने लगे कि देखनेवाला दूरसे ही उनपर मुग्ध हो जाता था। सङ्गमरमरके पत्थर और टीन अथवा लोहेकी चादरपर तैयार किये जानेवाले साइन बोर्डोंका भी रूप एकदम बदल गया। गुरुकुलका प्रभाव आर्यसमाजों और उनके द्वारा सञ्चालित संस्थाओंपर विशेष रूपमें पड़ा। भट्टजीकी शैलीका उनके द्वारा जहां-तहां अवलम्बन किया जाने लगा। इस प्रकार शैलीके प्रसारके साथ-साथ उसमें नये नये परीक्षण भी होने लगे। नागरीकी लेखन-पद्धतिको भी कलाका रूप दे दिया गया। उसका सीधा सम्बन्ध ज्यामिति और आलेख्यके साथ जोड़ दिया गया। ज्यामितिसे जिस प्रकार विद्यार्थियोंकी प्रतिभाका और आलेख्यसे उनकी परिष्कृत रुचिका विकास होता है, वैसे ही भट्टजीकी शैलीसे बालकोंकी प्रतिभा विकसित होने लगी और उनकी रुचि भी परिष्कृत होने लगी। इन सफल परीक्षणोंके परिणाम-स्वरूप भट्टजीने लेखन-कलाके सम्बन्धमें कुछ और पुस्तकें तैयार कीं। उनमेंसे 'आलेख्य-पुस्तक'के पांच भाग, 'सूक्ति-सुधा', 'अक्षरतत्त्व' 'चित्र-लिपि-प्रवेशिका' और 'बालोद्यान' आदि पुस्तकोंने सुलेखन-कलाके मैदानमें नवयुग उपस्थित करके यह सिद्ध कर दिया कि नागरी लिपिका सौन्दर्य भी सरल, सुगम तथा स्वाभाविक है और उसके मूलभूत सिद्धान्तोंका आधार ज्यामिति और आलेख्यके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सिद्धान्तोंके समान वैज्ञानिक है। 'चित्र-लिपि-प्रवेशिका' में भट्टजीने यह बताया था कि नागरी लिपि सौन्दर्य और शृङ्गारमें ही नहीं, किन्तु मुद्राक्षर ( मोनोग्राम ) और चित्र-बन्ध ( तुगरे ) बनानेमें भी किसी दूसरी लिपिसे हीन नहीं है। यह कृति नागरी लिपिके लिए अपूर्व और अलौकिक थी। उसने हिन्दीके बड़े-बड़े विद्वानोंको भी मन्त्रमुग्ध कर दिया।

## "शङ्कर-शैली"के मूलभूत सिद्धान्त

भट्टजी पिछले कुछ वर्षोंसे इसी उधेड़-बुनमें लगे हुए हैं कि आपने अपने ४० वर्षोंके निरन्तर अध्यवसाय द्वारा सुलेखन-कलाके जो सिद्धान्त स्थिर किये हैं, उनकी भले प्रकार जांच-पड़ताल होकर उनका सुधार या संशोधन हो जाय और यह स्पष्ट हो जाय कि कौन-सा विधान सर्वमान्य है। इसी विचारसे आपने १९२६ में 'अक्षर-तत्त्व' पुस्तक लिखी थी। उक्त पुस्तकमें नागरी-अक्षरोंके पृथक्-पृथक् अवयव, उनके अनुपात और उनकी रचनापर पूरा विचार करके हिन्दी-प्रेमी जनतासे यह अपील की गयी थी कि वह इस शैलीकी परीक्षा करे। उसमें यदि कोई त्रुटि, कुरूपता, अस्वाभाविकता और सिद्धान्त-हीनता प्रतीत हो तो उसकी चर्चा की जाय। इसी विचारसे आपने १९२९ में "देवनागरी-लिपिका विधान-निर्णय-पत्र" नामसे एक और पुस्तक लिखी। उसको भी परीक्षा और परामर्शके लिए हिन्दीके विद्वानोंके सम्मुख उपस्थित किया। 'लिपि-समीक्षा' द्वारा तीसरी बार फिर आपने हिन्दी-प्रेमियोंका ध्यान इस ओर आकर्षित किया। यह सन्तोषका विषय है कि गत ९-१० वर्षोंसे इस विषयकी चर्चा होनेपर भी आज तक किसीने इस शैलीमें कोई संशोधन, सुधार या परिवर्तन करनेकी आवश्यकता नहीं बतायी। इसलिए यह मानना पड़ता है कि 'शङ्कर-शैली'के मूलभूत सिद्धान्त ही ऐसे हैं, जो नागरी-लिपिके लिए ग्राह्य हैं। इन सिद्धान्तोंपर वैज्ञानिक दृष्टिसे विचार करनेकी अभिलाषा रखनेवालोंके लिए इन पंक्तियोंमें यथेष्ट सामग्रीका दिया जाना सम्भव नहीं है। नीचेकी पंक्तियोंमें 'शङ्कर-शैली' के सिद्धान्तोंका उल्लेख-मात्र किया जायगा, उनकी विस्तृत व्याख्या या विशेष विवेचन नहीं किया जायगा। वे मूलभूत सिद्धान्त ये हैं :—

( १ ) देवनागरी लिपिके अक्षरोंकी बनावट या रचना कलमके आधारपर होनी चाहिए और कलमकी काट ४५ अंशके ज्यामितिक कोणकी होनी चाहिए।

पेन्सिलसे खाका बनाकर स्याही भर देनेसे अथवा ब्रशसे

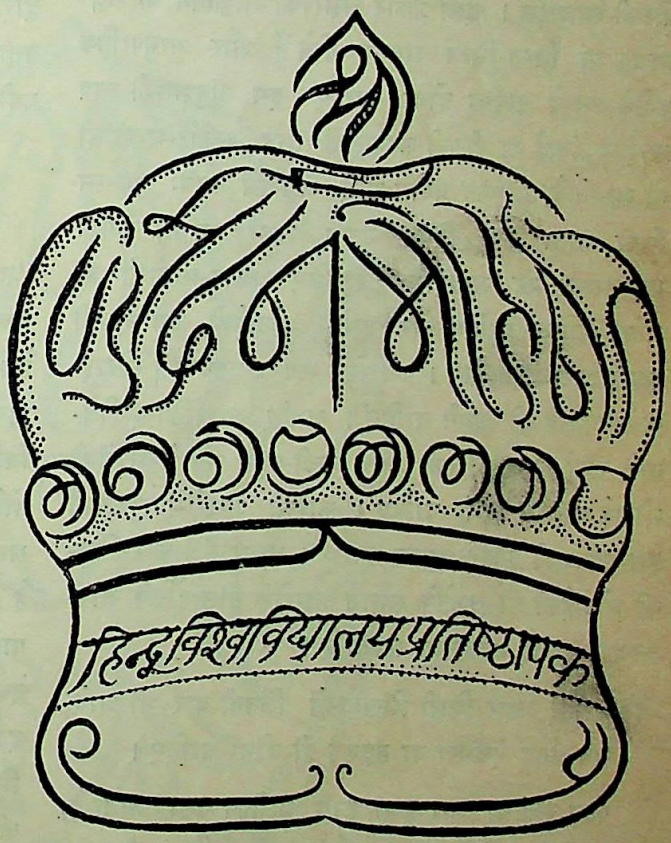


चित्र-बन्ध ( तुगरा ) का एक नमूना।
मुकुटके इस चित्रमें लिखा गया है—हिन्दू-विश्वविद्यालय प्रतिष्ठापक—"माननीय श्री पण्डित मदनमोहन मालवीय, प्रयाग।"

भी सुन्दर और सुडौल अक्षर बनाये जा सकते हैं, किन्तु कलमकी प्रवाहित गतिसे उनको वैसा नहीं बनाया जा सकता। इसलिए सुलेखन-प्रणालीके लिए वे अक्षर ग्राह्य नहीं हो सकते। उनको नमूनेके तौरपर बालकोंके सामने नहीं रखा जा सकता। ४५ अंशसे न्यून या अधिक कोणकी कलमसे भी अक्षर बनाये जा सकते हैं, किन्तु वे सुन्दर और सुडौल नहीं बनेंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(२) आकार-चिह्नकी रेखाकी मोटाई अक्षरोंके माप-करणकी इकाई ( Standard unit of measurement ) होनी चाहिए।

किसी भी आकृतिका डील-डौल उसीके अङ्ग-प्रत्यङ्गपर दृष्टि डालनेसे जांचा जाता है। जिस पुरुषके अङ्ग-प्रत्यङ्गका अनुपात ठीक नहीं है, उसको कुरूप या बेडौल कहा जाता है और उस अनुपातकी परीक्षा की जाती है पुरुषकी ऊंचाई या पीठकी लम्बाईसे। इसी प्रकार अक्षरोंकी आकृतिमें भी अङ्ग-प्रत्यङ्ग या भिन्न-भिन्न अवयव होते हैं और आनुपातिक दृष्टिसे उनको सुडौल होना चाहिए। इस अनुपातकी माप पुरुषकी ऊंचाई या पीठकी लम्बाईकी तरह अकार-मात्रा ही हो सकती है, जिसका प्रयोग सभी अक्षरोंमें प्रायः एक-सा किया जाता है। बिना उसके अक्षर आधा, लंगड़ा या हलन्त रह जाता है। इसलिए अकार-मात्राको ही मापक मानना चाहिए और उसकी मोटाईको उस मापकी इकाई ठहराना चाहिए। अक्षरोंके सब अवयव उस मोटाई-के अनुपातमें ही बनने चाहिएं। अर्थात् अक्षरोंकी दाहिने-बायें तथा ऊपर-नीचेकी और खड़ी-पड़ी सब रेखाओंकी मोटाई एक-सी रहनी चाहिए। फारसी अक्षरोंमें नुकतेको इस प्रकारकी इकाई माना गया है। नागरीमें अकार-चिह्न-की मोटाईको ही नुकतेके समान अक्षरोंके डील-डौलके माप-करणकी इकाई माना जा सकता है।

(३) कोई अक्षर किसी लिखावटमें जितनी बार भी आये, सब जगह एक-सा या तद्रूप ही होना चाहिए।

पक्का खत या जमा हुआ हाथ उसीका कहा जाता है, जो इस नियमका पालन करता है। यही लिखावटकी सुन्द-रता है। पुरानी हाथकी लिखी हुई पुस्तकोंका सौन्दर्य भी इसीमें है। इसीलिए बालकोंसे एक ही अक्षर वैसे ही रूपमें बार-बार लिखवाया जाता है।

(४) अक्षरोंका पारस्परिक अन्तर, माथेकी रेखाओंके कोण, खड़ी रेखाओंके कोण, शब्दान्तर और लिखावटकी प्रवा-हित धाराकी दिशा इत्यादिका भी कोई एक ही नियम होना चाहिए।

जिस लिखावटमें भिन्न-भिन्न अक्षरोंका अन्तर एक समान नहीं है, उनके कोण एक सदृश नहीं हैं, भिन्न-भिन्न शब्दोंका अन्तर भी एक सरीखा नहीं है और किसी एक रेखा या पंक्तिमें उसका प्रवाह नहीं है, उसको भी सुन्दर या सुडौल नहीं कहा जा सकता।

शङ्कर-शैलीका अवलम्बन करनेसे अक्षर बड़े ही सुन्दर, सुडौल और आकर्षक बन जाते हैं। इस शैली द्वारा नागरी लिपिको एक अभिनव रूप प्राप्त हुआ है और उसके रूप-लावण्यकी बहुत-कुछ श्री-वृद्धि हुई है। इस शैली द्वारा लिखे गये अक्षर परकार और पटरी द्वारा वर्गपत्रोंपर बनाये गये अक्षरोंके बिलकुल अनुकूल रहते हैं। इसलिए यही शैली स्वाभाविक वैज्ञानिक, सरल और सर्वग्राह्य है।

## "शङ्कर-शैली"की सर्वोत्कृष्टता

हिन्दीके समाचार-पत्रों और हिन्दी-विद्वानों द्वारा "शङ्कर-शैली" की की गयी सराहना और उसके आवि-ष्कर्ताको प्राप्त सम्मान उसके सर्वोत्तम होनेका प्रत्यक्ष प्रमाण है। भट्टजीको यह सम्मान कांग्रेस, नागरी-प्रचारिणी सभा, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, भारतधर्म-महामण्डल, आर्य प्रति-निधि सभा—पञ्जाब और गुरुकुल कांगड़ीके वार्षिकोत्सवोंपर होनेवाले आर्यभाषा-सम्मेलन तथा आर्य भारती सम्मेलनों सरीखी सुप्रतिष्ठित सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा प्राप्त हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्दजी, महात्मा गांधी, स्वर्गीय श्रीधरजी पाठक, श्री पुरुषोत्तमदासजी टण्डन और आचार्य राम-देवजी सरीखे महानुभावोंके हाथोंसे सोने और चांदीके दर्जनों पदक और प्रमाणपत्र प्राप्त करनेका अहोभाग्य आपको मिल चुका है। बनारसके महाराज श्री प्रभुनारायणसिंहजी-की ओरसे आपको जरीका बहुमूल्य दुपट्टा और प्रमाणपत्र दिया गया था। भारतके अनेक धनी-मानी पुरुषोंने आपके अक्षर-विज्ञान और लेखन-शैलीपर मुग्ध होकर आपको पुर-स्कारों और प्रशंसापत्रों द्वारा सम्मानित किया है। सारांश यह है कि जहां कहीं भी आपको अपनी कलाके आविष्कार-का परिचय देनेका सुयोग मिलता है, वहां ही आप पुरस्कृत और सम्मानित किये गये हैं। आचार्य महावीरप्रसादजी द्विवेदीने लिखा है कि "अक्षर-तत्त्व अद्भुत पुस्तक है। वैज्ञानिक है। देवनागरी-लिपि-कलाका उत्तम आदर्श है। इस कलाकी मनोहरताका चूडान्त ज्ञान रखनेवाले पुस्तक-प्रणेताके कौशल-का उत्कृष्ट नमूना है।" भट्टजीकी अन्य पुस्तकोंको भी आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



'कलमकी वैज्ञानिक करामातके उत्कृष्ट नमूने' और 'लिपि-समीक्षामें की गयी समीक्षाको यथार्थ' कहा है। स्वर्गीय पण्डितप्रवर पद्मसिंहजी शर्मा भट्टजीको 'नागरी-लिपि-कला-का परमाचार्य' कहते थे। आपकी सम्मतिमें भट्टजीकी शैली "लिपिकलाका सर्वोत्कृष्ट वैज्ञानिक ढङ्गका आदर्श है और नागरी लिपिको उसके द्वारा सुन्दर और वैज्ञानिक रूप देकर भट्टजीने बहुत बड़ा उपकार किया है।" सुप्रसिद्ध कलाकार श्रीयुत श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजीने लिखा है कि आपकी शैलीमें आलेख्यका जो क्रम रखा गया है, उससे छोटे बालक भी सुगमतासे आलेख्य मन्दिरमें प्रविष्ट हो सकते हैं। स्वर्गीय बाबू बालमुकुन्दजी गुप्तने भट्टजीके अक्षरोंको 'सुन्दर पुष्पोंके सुहावने गुच्छे' बताया था और लिखा था कि "लड़कोंको लिखना सिखानेके लिए भट्टजीकी पुस्तकें बेजोड़ हैं और लड़के क्यों, बड़के भी उनके सहारे अपनी खराब लिखावटको थोड़े परिश्रमसे सुधार सकते हैं।" कविवर मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं कि "सचमुच भट्टजीने इस काममें कमाल हासिल किया है। हिन्दी लिपिमें यह उन्नति अपूर्व है। हिन्दी लेखकों और ललित कला-प्रेमियोंकी ओरसे भट्टजी उत्साह पानेके पात्र हैं। मैं हृदयसे भट्टजीको बधाई देता हूं।" स्वर्गीय श्रीधरजी पाठकने अपनी सम्मति इन शब्दोंमें प्रकट की थी कि "चित्रकला-कुशल पं० गौरीशङ्कर भट्टकी मनो-मुग्धकारिणी भांति-भांतिकी चित्रलिपियों और चित्रबन्धोंके प्रथम अवलोकनका सौभाग्य कांगड़ी गुरुकुलमें प्राप्त हुआ था। उनसे भट्टजीकी विचित्र प्रतिभाका चित्र जो चित्तपर खचित हुआ, अभी तक सजीव है।" वयोवृद्ध श्री अम्बिकाप्रसादजी बाजपेयीने अपने पत्र 'स्वतन्त्र'में लिखा था कि "भट्टजी लिपि-विज्ञानके बड़े भारी ज्ञाता वा आचार्य हैं और हिन्दीमें तो वे अद्वितीय हैं।" इस प्रकार हिन्दी-भाषाके विद्वान् पण्डितों, कवियों, सम्पादकों और अध्यापकोंने आपकी मुक्तकण्ठसे सराहना की है। सरकारी शिक्षा-विभागके मन्त्रियों, अधिकारियों तथा इन्सपेक्टरों और नार्मल स्कूलोंके अधिष्ठाताओं तथा अध्यापकोंने भी आपका गुणगान किया है। इनके अलावा हिन्दीकी प्रायः समस्त पत्र-पत्रिकाओंने समय-समयपर भट्टजीकी कृतियोंपर जो सम्मतियां प्रकट की हैं, उनमें भी शङ्कर-शैलीकी लिपि तथा कलाको अपूर्व तथा वैज्ञानिक बताया गया है। ऊपर दी गयी सम्मतियोंसे भट्टजीके परिश्रम तथा अध्यवसायसे आविष्कृत शैलीके सर्वोत्कृष्ट होनेका स्पष्ट परिचय मिल जाता है।

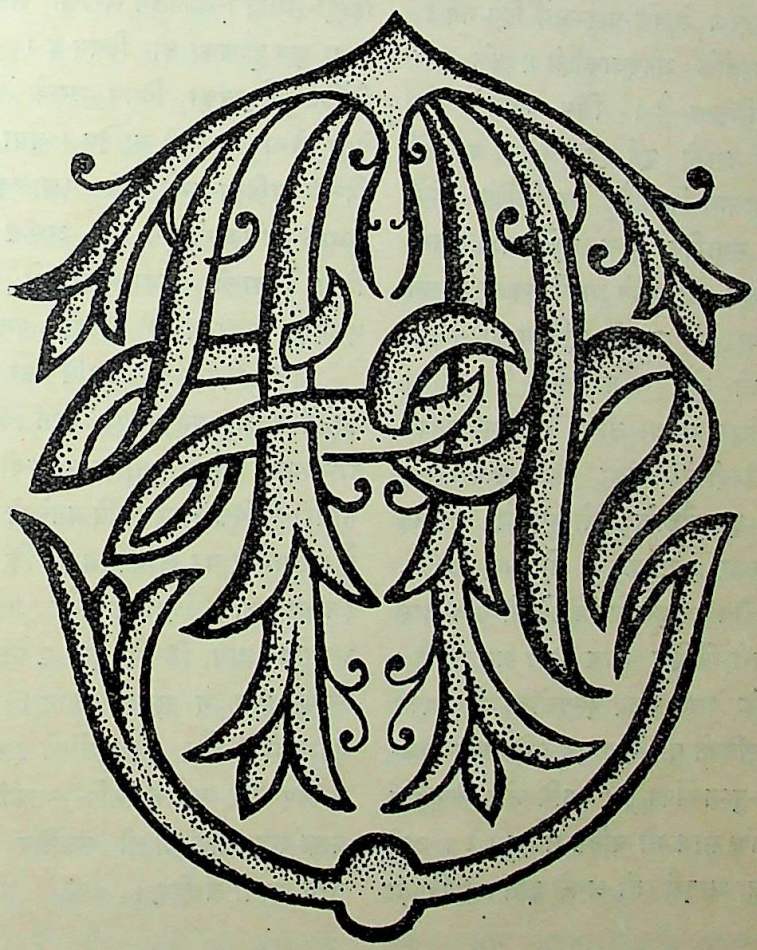

मुद्राक्षर ( मोनोग्राम ) का दूसरा नमूना—
म. न. कु. ( महाराज नरेन्द्रकुमार )

## हिन्दी-प्रेमियोंसे दो शब्द

'शङ्कर-शैली'के सर्वोत्कृष्ट, वैज्ञानिक, स्वाभाविक तथा सरल होते हुए भी उसका यथेष्ट प्रचार नहीं हुआ है। कला-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को पूर्ण और परिष्कृत बनानेके लिए जो कुछ भी किया जा सकता है, वह सब भट्टजीने नागरी-लिपिकी लेखन-कलाके सम्बन्धमें कर दिखाया है और अपनी आयुके चालीस वर्ष लगाकर उसीके पीछे अपने बाल पका दिये हैं। उसकी उपादेयताके बारेमें दो मत नहीं हो सकते। भट्टजीने जो कर दिखाया है, उसीमें उनको सन्तोष मान लेना चाहिए। पर उनको उतनेसे ही सन्तोष नहीं है। अपने एक शिष्यको लिखे गये आपके पत्रोंमेंसे जो उद्धरण लेखके प्रारम्भमें दिये गये हैं, उनके एक-एक अक्षरसे भट्टजीके महत्त्वाकांक्षी हृदयके असन्तोषका स्पष्ट परिचय मिलता है। जिस व्यक्तिने एक कलाका आविष्कार कर उसको पूर्ण एवं परिष्कृत बनानेमें इतना परिश्रम तथा अध्यवसाय किया है, वह लिपिके क्षेत्रमें उसका एकछत्र साम्राज्य स्थापित हुआ क्यों नहीं देखना चाहेगा? जिस ध्येयके लिए वह अपने प्राणों तकका उत्सर्ग करनेके लिए सदा ही तैयार है, उसकी पूर्तिका सुख-स्वप्न यदि वह नहीं देखेगा तो और कौन देखेगा? भट्टजीका असन्तोष तथा महत्त्वाकांक्षा सर्वथा उचित है और उनका उद्योग सराहनीय है। हिन्दी-प्रेमियोंका यह स्पष्ट कर्तव्य है कि सुलेखनकी सर्वोत्कृष्ट इस शैलीके होते हुए वे उस सब अनाचार और भ्रष्टाचारका अन्त कर दें, जो सिद्धान्तहीन, आदर्शहीन और विज्ञानहीन कबाड़खानेमें फेंकने योग्य बाजारू लिपि-पुस्तकों द्वारा नागरी-लिपिके साथ किया जा रहा है। बालकोंके चरित्र-निर्माणके लिए पाठ्य पुस्तकोंका जो महत्त्व है, वही महत्त्व उनकी रुचिको परिष्कृत एवं प्रतिभाको विकसित करनेके लिए लेखन-पुस्तकोंका है। सुरुचि और विकसित प्रतिभाका चरित्र-निर्माणके साथ भी घनिष्ट सम्बन्ध है। जहां भारतकी शिक्षाका समूचा आदर्श ही अथसे इति तक बिगड़ा हुआ है, वहां सरकारी शिक्षा-विभागके अधिकारियों और टैक्स्ट बुक कमेटियोंसे यह आशा नहीं रखनी चाहिए कि वे नागरी लिपिके आदर्श अथवा उसकी वैज्ञानिकता, स्वाभाविकता तथा सौन्दर्यकी रक्षा एवं वृद्धिके लिए कुछ यत्न करेंगी। बच्चोंके चरित्र-निर्माणकी ओर उनका इतना ध्यान ही नहीं है। इसलिए भट्टजीके उद्योगकी सफलता और उनकी महत्त्वाकांक्षाकी पूर्ति एकमात्र हिन्दी-प्रेमियोंपर निर्भर है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन सरीखी संस्थासे भट्टजीका निराश होना कुछ दुःखका ही विषय है। यह प्रतीत होता है कि लिपिके सौन्दर्यका विषय उसके क्षेत्रसे भी बाहरका है। ऐसा होना तो नहीं चाहिए। क्या आशा की जाय कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके सञ्चालक और नागरी-प्रचारिणी सभाके अधिकारी इस ओर अभीष्ट ध्यान देंगे। हिन्दीकी शिक्षा देनेवाली संस्थाओंको तो गुरुकुल कांगड़ीकी तरह एकमात्र 'शङ्कर-शैली' को ही अपनाना चाहिए।

हिन्दी दिनों-दिन उन्नति कर रही है। देशके कोने-कोनेमें उसको पहुंचानेका यत्न किया जा रहा है। उसके राष्ट्रभाषा होनेका अधिकार स्वीकार किया जा रहा है। नागरी-लिपिके राष्ट्र-लिपि बननेकी आशा भी बढ़ती जा रही है। इसलिए यह आवश्यक है कि नागरी-लिपिकी सुन्दर, स्वाभाविक, वैज्ञानिक और आलेख्ययोग्य पद्धतिको ही अपनाया जाय, जिससे इन दृष्टियोंसे उसको किसी और लिपिसे हीन न समझा जाय। हिन्दी-प्रचारमें लगे हुए महानुभावों और संस्थाओंको इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए और बाजारू लिपि-पुस्तकोंसे यत्नपूर्वक बचकर सर्वग्राह्य शङ्कर-शैलीको ही सर्वप्रिय तथा सर्वमान्य बनानेका यत्न करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पूर्वमें गोरी रमणियोंके पापाचारके केन्द्र

डा० ए० पी० अग्निहोत्री, पी एच० डी०

यूरोप और अमेरिका आज अपनी भौतिकतामें उन्मत्त हो रहे हैं और उनका यह उन्माद उन्हें नैतिकताके पतनकी चरम सीमाकी ओर बड़ी तीव्र गतिसे घसीटता जा रहा है। जीवनकी पवित्रताका जिनके सामने कोई मूल्य न हो और जिनके जीवनकी बड़ीसे बड़ी सफलता कामिनी और काञ्चन-की अपार उपलब्धि तक ही सीमित हो, उन अमेरिका और यूरोपवालोंकी दृष्टिमें नैतिकताका भला मूल्य ही कितना होगा ? और इस मनोवृत्तिका जो परिणाम हो रहा है—और जिसका भविष्य वर्तमानसे भी कहीं अधिक घातक है—वह क्षण-भरके लिए यह सोचनेके लिए विवश कर देता है कि आखिर उनकी इस भौतिकता-जनित पागल आकांक्षाओं, और उन आकांक्षाओंकी पूर्तिके लिए उनके द्वारा अपनाये गये साधनोंका अन्त कहां जाकर होगा, बाह्य विकासके साथ-साथ जो यह आन्तरिक पापाचार बढ़ता जा रहा है वह क्या उन देशोंको एक साथ ही सत्यानाश करके ही छोड़ेगा ? यों पापाचारकी भावना एवं तज्जनित भ्रष्टाचार किस देश या समाजमें नहीं है, परन्तु यूरोप और अमेरिका-की पापलीला तो आज अपनी चरम सीमापर पहुंच रही है और निकट-भविष्यमें ऐसा कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ता जिससे आशा की जा सके कि उनके सर्वनाशकी यह दौड़ शीघ्र ही समाप्त हो जायगी।

यूरोप और अमेरिकाकी इस पापलीलाका क्षेत्र न केवल उन देशों तक ही सीमित है, बल्कि कुछ प्राच्य देश भी आज उसके केन्द्र बन रहे हैं और उनमें भी पश्चिमके पापियोंकी कृपासे यह पाप-बेलि बुरी तरह लहलहाती दिखाई पड़ रही है। उनकी इसी पाप-लीलाके फल-स्वरूप प्राच्य देशोंमें प्रतिवर्ष हजारों गोरी रमणियां यूरोप और अमेरिका-से पहुंचायी जाती हैं। चीन, जावा, सुमात्रा, मलय-द्वीप बोर्नियो और फिलीपाइन्समें पाश्चात्य ठगोंके अनेक अड्डे हैं जिनमें अमेरिका, जर्मनी, फ्रान्स, इंगलैण्ड और रूससे भगायी हुई कामिनियां हजारोंकी संख्यामें प्रतिवर्ष पहुंचायी जाती हैं और उनके द्वारा पाश्चात्य गुण्डे मनमाना धनोपार्जन कर रहे हैं। रमणियोंका व्यापार करनेवाले ये गुण्डे 'पिम्प' कहलाते हैं और इन्होंने सर्वत्र अपना जाल बिछा रखा है। ये भोलीभाली लड़कियोंको पहले तो प्रलोभन देकर बहकाते हैं और फिर उन्हें सर्वनाशके पथपर घसीटकर हजारों-लाखों रुपये कमाते हैं। यह बात नहीं है कि इन पापी पिम्पोंके काले कारनामे पाश्चात्य देशोंमें न हो रहे हों, वहां भी इनके असंख्य अड्डे हैं; परन्तु इनकी वीभत्स लीलाओंके कहीं अधिक केन्द्र तो पूर्वीय देशोंमें ही हैं। प्राच्य देशोंमें गोरी रमणियोंकी न्यूनता और उन्हें पश्चिमसे हड़पकर यहां पहुंचानेके सरल साधनोंके कारण यहांके अड्डोंकी संख्या अगणित है। और उनमें अधिकांशतः मिस मेयोके देश अमेरिकाकी ही पतिताएं हैं।

रमणियोंके इस प्रकारके घृणित व्यापारका द्वार खुलता है पोर्ट सईदसे। एशियाके प्राचीन गौरवपूर्ण दिनोंकी जो कहानियां आज कही जाती हैं, उनमें जिस प्रकार दमिश्कको स्वर्ग कहकर पुकारा जाता है, उसी प्रकार पोर्ट सईदको आज पृथ्वीपरका नरक कहनेमें भी कोई आपत्ति न होनी चाहिए। इस अभागे बन्दरगाहने लाखों सुन्दरियोंके व्यापारमें सहायता पहुंचायी है। अकेले मिश्रमें ही इसके द्वारा इतनी रमणियां पहुंचायी जाती हैं जिनकी संख्या अत्यन्त विशाल है। काहिरा, अलेक्जेण्ड्रिया और पोर्ट सईदमें ऐसे-ऐसे गुप्त मकानोंके होनेका भण्डाफोड़ हो चुका है जिनमें न जाने कितनी सुन्दरियोंको अपने सौन्दर्यके अभिशापमें जलना पड़ा है; और जलना पड़ा है कामी पुरुषोंकी वासनाकी आगमें। मिश्रमें अधिकांशतः ग्रीसकी ही भगायी हुई सुन्द-रियोंका अड्डा समझा जाता है। जिस ग्रीसके सौन्दर्यकी कहानियां पढ़ते-पढ़ते हम आज भी आनन्दविभोर हो जाते हैं और जिस ग्रीसकी कला आज भी हमारे प्राणोंको एक अजब सुखनिद्रामें सुला देती है, उसी ग्रीसकी सुन्दरियां—लावण्यमयी तरुणियां आज मिश्रमें अपने साथ ग्रीस, और उसके साथ ही सारी मानवताका नाम डुबा रही हैं। पापी पिम्पोंकी काली करतूतोंके कारण न जाने कितनी ग्रीस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कुमारियां अपने सौन्दर्य और यौवनका बलिदान न जाने कितने पुरुषोंके चरणोंपर प्रतिदिन चढ़ा रही हैं। और इस पापलीलामें संसारके सभी सभ्य और असभ्य देशोंके प्राणी सम्मिलित हैं। क्योंकि प्रतिमास मिस्रमें संसारके सभी देशोंके यात्री वहां पहुंचते हैं।

मिश्रमें सभायें हुईं, समितियां स्थापित हुईं, कठोर कानून बनाये गये, अनेक पापियोंको कठोर दण्ड दिये गये; पर यह पाप न रुका और आज भी पोर्ट सईदपर ठहरनेवाले प्रत्येक जहाजमें एक-दो तरुणियां इस प्रकारकी रहती ही हैं। मि० कूट नामक एक अंगरेजने अपने अनुभव बताते हुए लिखा है कि मिश्रमें यह व्यापार बराबर उन्नत ही होता जा रहा है।

पोर्ट सईदपर जहाज पहुंचते ही दर्जनों 'गाइड'—पथ-प्रदर्शक पहुंच जाते हैं और उनमें अधिकांशका काम यह रहता है कि किस प्रकार कोई मालदार उल्लू फंसाया जाय और उससे माल ऐंठा जाय। अगर आप कुछ भी मनचली तबीयतके हुए तो आपका उनकी ओर आकर्षित हो जाना निश्चित है; क्योंकि गाइड आपका जरा भी विश्वासपात्र हुआ नहीं कि वह आपसे ऐसी-ऐसी बातें करने लगेगा कि आप उसकी बातोंमें फंसे बिना नहीं रह सकते। बात शुरू करते ही वह आपसे पूछेगा—'महाशय, क्या आप कुछ सुन्दर तसवीरें नहीं देखेंगे?' और आपके उत्तर देते-देते वह आपके सामने एक-एक करके दर्जनों तसवीरें रख देगा। और तसवीरें भी कैसी? एकदम नग्न! ये सब जीवित रमणियोंके चित्र होते हैं। तरुणी आपसे कुछ ही फासलेपर एक गुप्त मकानमें होगी और चित्र देखकर सम्भव है आपमें उसे साक्षात् देखनेका कौतूहल हो। यह कौतूहल ही सर्वनाशका मार्ग है। पर इस नाश-लीलामें उक्त बन्दर-गाहके अनेक यात्री फंस जाते हैं।

आप अपने कौतूहलको शान्त करनेके लिए गाइडके साथ चलते-चलते एक मकानमें पहुंचते हैं। कैसा खण्डहर-जैसा मकान है! पर गाइडके जञ्जीर खटखटाते ही दरवाजा खुलता है और तब आपकी आंखें चौंधिया जाती हैं। भीतर मकान खूब साफ-सुथरा है और उसके भीतर तो जैसे परियां उतर पड़ी हों! जिस कमरेमें आप पहुंचते हैं उसमें बारह-चौदह लड़कियां हैं। तसवीरें तो आप उनकी देख ही चके हैं, अब साक्षात् भी देखिये! ठीक वैसा ही नग्न—प्रायः नग्न चित्र! वे मुसकराकर आपको अभिवादन करेंगी और जिस समय आप इस कमरेमें होंगे, बगलके कमरेसे नृत्य और सङ्गीतकी मन्द-मन्द ध्वनि आपको विमोहित करती रहेगी।

यह सब साधन एकत्र किये जाते हैं मनुष्यकी सबसे बड़ी कमजोरीपर विजय प्राप्त करनेके लिए। इन कमरोंकी सुन्दरियोंका काम होता है केवल वीभत्स लीला करना और अपनी कमाईके रुपयोंसे केवल पिम्पोंकी तिजोरी भरना। क्योंकि यद्यपि रमणियां अपना सर्वस्व बेचकर अपार धनराशि उपार्जन करती हैं, किन्तु उसमें उनका हिस्सा होता है बहुत कम। केवल लड़कियोंके पालन-पोषणके लिए आवश्यक रुपये देकर पिम्प सब हथिया लेते हैं! वे तरुणियां वेश्यायें होती हुई भी कानूनन् वेश्यायें नहीं होतीं, इसलिए उनकी स्थिति सदैव खतरनाक रहती है और पिम्पोंसे झगड़ा मोल लेना पानीमें रहकर मगरसे बैर करना है। उन बेचारी अबलाओंको इस प्रकारकी यातनाओंमें रहकर भी अपने मालिकोंकी मर्जीके मुताबिक हंसना और नाचना पड़ता है।

पोर्ट सईदसे तो यह व्यापार शुरू होता है, परन्तु इसके असली केन्द्र तो हैं सिङ्गापुर, हांगकांग और शङ्घाईमें। इन सभी स्थानोंपर जो अड्डे हैं उनके सञ्चालक हैं अमेरिकन, जिन्होंने इस पाप द्वारा अतुल धनराशि एकत्र की है। हांगकांगकी गेग स्ट्रीट तथा उसके आसपासकी कई सड़कोंपर इस प्रकारके अनेक अड्डे हैं जिनमें इस प्रकारकी बहुत-सी कामिनियां हैं। प्रतिवर्ष सैकड़ों नयी रमणियां इन अड्डोंमें आती रहती हैं। क्योंकि वे स्थायी रूपसे तो यहां रहने नहीं पातीं। जब तक यौवन है, सौन्दर्य और मतवालापन है, तब तक तो पिम्प उन्हें रहने देते हैं और इनका खातमा होते ही उनकी रोजीका भी खातमा हो जाता है। तब तो पिम्प उन्हें मारकर भगा देते हैं और वे अभागिनियां तख्न रोडपर चली जाती हैं जहां चीनी रमणियोंका वास है। तख्न रोडपर इस प्रकारके प्रायः ३०० अड्डे हैं और एक-एकमें संसारकी अनेक जातियोंकी दर्जनों पतितायें हैं।

हांगकांग और शङ्घाईमें रमणियोंका व्यापार बहुत व्यवस्थित ढङ्गसे होता है। न्यूयार्क तथा सेन फ्रान्सिसकोसे यहां अधिकांश लड़कियां मंगायी जाती हैं। यहांके अधिकतर अड्डोंका सञ्चालन अमेरिकन रमणियोंके हाथमें है, जिन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मिसुस ( missuse ) कहते हैं। इनके अपने साङ्केतिक शब्द ( Code words ) हैं और जब किसी अड्डेवालीको नयी कुमारियोंकी आवश्यकता पड़ती है तब वह अपने अमेरिका-स्थित एजेण्टोंको तार भेजती है। प्रायः सभी बड़े-बड़े शहरोंमें उसके एजेण्ट लम्बी-लम्बी तनख्वाहोंपर नियुक्त रहते हैं और तार पाते ही वे जल्दीसे जल्दी उसके अनुसार काम करनेकी कोशिश करते हैं। उनके तार साङ्केतिक शब्दोंमें रहते हैं, अतः एजेण्टके सिवा उनका असली अभिप्राय और कोई समझ ही नहीं सकता। अगर इन धूर्तोंने 'कोड' न निकाला होता तो इस प्रकारके काण्ड कभीके बन्द हो गये होते।

रङ्गशालाओं, सिनेमाघरों, होटलों तथा चर्चोंमें इस प्रकारके एजेण्ट खूब सुसज्जित रूपमें जाते हैं और अपनेको बड़े उच्च परिवारका घोषित करते हैं। उनका प्रत्येक प्रयत्न इस बातके लिए होता है कि सुन्दरियां उनकी ओर आकर्षित हो जायें और उनकी धूर्तता अधिकांशतः सफल भी हो जाती है। ये बराबर यह घोषित करते रहते हैं कि अविवाहित हैं और जब कोई विवाह योग्य कुमारी उन्हें देखती है और उन धूर्तोंको जरा-से परिचयमें ही पानीकी भांति रुपया बहाते देखती है, तब उसका आकर्षित हो जाना स्वाभाविक है। इस प्रकार इन धूर्तोंके चंगुलमें संसारसे अनभिज्ञ भोली-भाली लड़कियोंका आ जाना बहुत ही सरल है। देहातकी लड़कियोंपर इनका यह जादू चल जाना और भी आसान है। देहाती कुमारियां स्वभावतः और भी भोली-भाली होती हैं और शीघ्र ही फंस जाती हैं।

कुछ पिम्प और तरहकी भी धूर्तता करते हैं। एक पिम्प-ने एक बार एक पत्रमें एक थियेटर कम्पनीका विज्ञापन दिया और उसके लिए अभिनेत्रियोंकी आवश्यकता बतायी। विज्ञापन निकलते ही सैकड़ोंकी संख्यामें सुकुमार कुमारियां 'इण्टर व्यू' के लिए आ गयीं और तब उस पिम्पने उनमेंसे कुछको छांट लिया। जिन लड़कियोंके सौन्दर्यका मूल्य उसने अधिक समझा था, उन्हींको चुन लिया और जब सारी बातें तय हो गयीं तब उसने बताया कि वह अपनी कम्पनीको लेकर सुदूर देशोंकी यात्रा करेगा और रुपया कमायेगा। पहले तो लड़कियोंको झिझक हुई, परन्तु आखिरकार वे बहकावेमें आ गयीं और अन्तमें उनकी क्या दुर्गति हुई, यह कहनेकी आवश्यकता नहीं।

शङ्घाईमें इस प्रकारकी अपहृता नारियोंके जो अड्डे हैं, उन्हें 'हरम' कहते हैं। एक-एक हरममें बीस-बीस सुन्दरियां रखी जाती हैं। इस हरममें कोई लड़की पहुंचायी गयी नहीं कि क्या मजाल कि फिर कोई भी उसका पता पा ले! पहले तो वहांकी आन्तरिक अवस्था देखकर किसी लड़कीको बाहर भागनेका साहस ही नहीं होगा और अगर उसने साहस किया भी, तो उसे अपनी जानसे हाथ धोना पड़ता है। हां, कुछ दिनों तक गाहकोंकी तृप्ति करनेके बाद 'हरम' की मालकिन उन्हें स्वयं निकाल बाहर करेगी; क्योंकि तब गाहकोंसे उसे काफी रुपये न मिलेंगे। इस प्रकारकी भगायी हुई लड़कियोंकी आत्मा बिलकुल मरी हुई होती है और शराब तथा अफीमका चस्का उन्हें ऐसा लग जाता है कि पैसे-पैसेके लिए वे अपनी इज्जत बेचती फिरती हैं। इन लड़कियोंके लिए भी वहांके स्काट्स रोडपर कुछ अड्डे हैं। ये चीनियोंके हाथमें हैं और इनकी संख्या होगी लगभग ३००। एक-एक अड्डे-में पन्द्रह-बीस रमणियां रहती हैं। यहां थोड़े दाममें ही तृप्ति हो जानेकी सम्भावना रहती है, अतः यहां आनेवाले अधिकांश गाहक प्रायः चीनी और गरीब एवं गिरे हुए होते हैं। यह मुहल्ला जितना ही पापपूर्ण है, उतना ही भयङ्कर भी। चीनके खूंख्वार मनुष्योंके भी अड्डे यहीं हैं और वे दिन-दहाड़े सड़कपर सिर काट लेनेसे भी नहीं हिचकते! वहां कोई ऐसा दिन नहीं जाता जिस दिन किसीसे भीषण मारपीट या खून-खच्चर न हो जाय।

मलय स्ट्रीट भी ऐसी ही भयानक है। वहां भी प्रतिवर्ष हजारों रमणियोंको अपने जीवनका बलिदान कर देना पड़ता है। मलय स्ट्रीटमें पांच सौसे ऊपर ऐसे मकान हैं जो हजारों पुंश्चलियोंके लिए बुरी तरह बदनाम हैं। मलय स्ट्रीटमें जो मकान हैं, उनमें कुछ इतने दिनोंसे चले आ रहे हैं और कुछकी ख्याति इतनी बढ़ी हुई है कि 'गुडविल'के कारण वे बहुत ऊंचे दामपर उठते हैं। कहा जाता है कि एक मकानको—जो अच्छी-अच्छी तरुणियोंके लिए खूब विख्यात था—एक मिसुस ने २२,००० डालर देकर खरीदा था। इस स्ट्रीटके अनेक मकान एक ही ढङ्गके बने हैं और उनके कठेोंपर दिनके तीसरे पहर तीन बजेसे ही तरुणियां आकर बैठ जाती हैं और लगभग ग्यारह-बारह बजे रात तक गाहकोंकी प्रतीक्षा-में बैठी रहती हैं। वे इतनी निर्लज्ज होती हैं कि सड़कोंपरसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



गुजरनेवाले युवकोंको देखकर न केवल आंखें चलाती हैं, बल्कि 'तशरीफ लाइये'—Come in here, please—तक कहती रहती हैं। सिङ्गापुरमें घण्टे-दो-घण्टे ठहरनेवाले व्यक्ति भी मलय स्ट्रीटका एक चक्कर काट लेनेसे बाज नहीं आते। इन कोठेवालियोंका एक नजारा देखनेकी लालसा वे नहीं रोक सकते। कहा जाता है कि उन दिनों जब जर्मनीके युवराज पूर्वका भ्रमण करने निकले थे, तब उन्हें भी मलय स्ट्रीट घुमानेका प्रबन्ध किया गया था। मलय स्ट्रीटमें वास्तवमें ऐसा ही सौन्दर्य—घृणित सौन्दर्य है। उसमें चीन, जापान, इंगलैण्ड, फ्रान्स, रूस और आस्ट्रिया आदि अनेक देशोंकी रमणियां हैं। अमेरिका और यूरोपके पत्रोंमें प्रतिदिन एकाध खबरें ऐसी रहती हैं जिनमें किसी तरुणीके खोये जाने अथवा लापता हो जानेकी बात रहती है। कहना न होगा कि इस प्रकारकी अधिकांश लापता रमणियां मलय स्ट्रीटमें आकर रहती हैं। एक अंगरेज लेखकका कहना तो यहां तक है कि लोक-सेवाका व्रत धारण करनेवाली कितनी ही 'सिस्टरें' भी इस प्रकारकी पतितावस्थामें ढकेल दी जाती हैं और बड़े-बड़े फर्मों और होटलोंमें काम करनेवाली अल्प वयस्का तरुणियोंकी तो बात ही क्या? उनसे तो तरुन रोड और मलय स्ट्रीटके बदनाम मकान भरे पड़े हैं।

यह न समझना चाहिए कि भगायी हुई तरुणियोंका यह व्यापार एक-दो आदमियोंके हाथमें है। बल्कि सच तो यह है कि भगानेवाले पिम्पोंने एक ऐसा सङ्गठन कर रखा है जिससे उनका यह काम कहीं आसान हो गया है। अकेले सिङ्गापुरमें ही करीब ८० पिम्प बताये जाते हैं और वे खूब सुसङ्गठित हैं। सिङ्गापुरमें उनका एक क्लब है जिसमें वे समय-समयपर एकत्र होते हैं और अपने व्यापारके सम्बन्धमें विचार-विनिमय करते हैं। किस प्रकार यह रोजगार बढ़ाया जाय, किस प्रकार पुलिसको चकमे दिये जायें, किस प्रकार किसी विपत्तिमें फंसे हुए पिम्पकी सहायता की जाय इत्यादि बातोंपर उक्त पिम्प-क्लबमें विचार किया जाता है और योजनायें सोची जाती हैं। कभी कभी इस क्लबकी बैठकें आधी रातमें होती हैं और कुछ पिम्प अपनी मनोरञ्जक कथायें सुनाते हैं और उन दुर्घटनाओंका वर्णन करते हैं जो किसी तरुणीके भगानेके सम्बन्धमें हुई होती हैं। इन कथा-कहानियोंके बीचमें शराबका दौर चलता रहता है और पिम्प नशेमें ऊंघते रहते हैं।

पिम्पोंके इस प्रकारके सङ्गठनके कारण पुलिस अभी तक उनका एक तरहसे कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी और वे पूर्वमें पश्चिमकी गोरी रमणियोंको बेच-बेचकर मनमाना रुपया निश्चिन्त होकर कमाते जा रहे हैं। एक बार पिम्पोंके चंगुलमें फंस जानेपर तरुणीके लिए दो ही मार्ग रह जाते हैं, या तो वह सम्पूर्ण आत्मसमर्पण कर दे और सब तरहसे उसके गाहकोंको तृप्त करे और या आत्मघात कर बैठे, हालांकि आत्मघात कर लेना पिम्पोंकी कालकोठरियोंके भीतर उतना आसान नहीं है।

पिम्पोंके इस काले इतिहासके पृष्ठोंमें यद्यपि हजारों पतिताओंकी ही रोमाञ्चकारी कहानियां अङ्कित हैं, तथापि दो-चार पृष्ठ ऐसे भी हैं जिनपर इतने काले धब्बे नहीं हैं। पिम्पोंकी पाप-शालाओंमें भी दो-एक रमणियोंने वस्तुतः नारीका स्वाभाविक अभिमान दिखाया है और अनेक कठोर यन्त्रणाओंके बाद भी उन्होंने पापी पिम्पोंकी कलुषित कामनाओंके सामने आत्मसमर्पण नहीं किया है।

कुछ दिन पहलेकी बात है, एक जर्मन युवक एक तरुणी लेकर सिङ्गापुर पहुंचा। युवक देखनेमें खूब सुन्दर और आकर्षक था। आंखोंसे जैसे मस्ती टपक रही हो, खूब सुसंस्कृत और सुसज्जित वेषभूषामें। जो लड़की उसके साथ थी, वह भी वैसी ही सुन्दर और अपनी ओर नजर पड़ते ही खींच लेनेवाली। जर्मन युवक देखते ही उसपर मोहित हो गया था। दोनों एक-दूसरेकी ओर खिंच उठे थे। उस जर्मनने जब देखा कि तरुणीको फंसा लेना कहीं अधिक आसान है और कमसिन तथा हसीन होनेके कारण उससे वह खूब धनोपार्जन कर सकेगा, तब उसने उसपर अपने प्रेमका जाल फेंका और वह भोली-भाली लड़की तत्काल फंस गयी। वह क्या जानती थी कि इस सुन्दर शरीरके भीतर काला हलाहल भरा हुआ है!

जर्मन युवक उस तरुणीको लेकर सिङ्गापुर चल पड़ा। जहाजपर दोनों खूब प्रसन्नतापूर्वक रहे। दोनों एक-दूसरेपर निछावर थे। समुद्रकी लहरोंको देखते-देखते पत्नीके रूपमें उस बालाने अपनी यात्रा समाप्त की और उस कुटिल जर्मन युवककी किसी भी बातसे तरुणीको किसी भावी आशङ्काका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सन्देह नहीं हुआ। आस्तीनमें सांप छिपा था, मगर कितनी सुखी थी वह!

जहाज सिङ्गापुरमें आकर लगा। तरुणीके होठोंपर अब भी वही विश्वासजनित स्निग्ध मुसकराहट खेल रही थी। दोनों जहाजसे उतरे।

जर्मन युवक उस तरुणीको लेकर मलय स्ट्रीट पहुंचा और एक 'हरम' में ले गया। हरमकी मालकिनने जो लड़कीको देखा तो उसकी बांछें खिल आयीं। उसका आकर्षक सौन्दर्य और उसकी कमसिनी उसकी आंखोंमें नाच गयी। इन दोनों ही गुणोंसे मालामाल हो जानेका स्वप्न उसे इतना विकल कर बैठा कि उसने अपना प्रस्ताव पेश करनेमें जरा भी देरी नहीं की। बेचारी भोली-भाली रमणी भौचक हो गयी। 'का दिखाइ विधि काह दिखावा' की बात थी! वह रोकर अपने पति—उसी जर्मनके चरणोंपर गिर पड़ी। पर होता क्या? उस बुढ़िया डायनने कहा कि यह चोंचले छोड़ो, यहां आनेवाली तरुणियां यह सब नखरे बाहर ही छोड़ आती हैं, यहां उनकी गुजर नहीं!

अथाह विपत्ति-सागरमें पड़ी हुई वह लड़की अब क्या करे?

लगातार कई दिनों तक बारम्बार प्रयत्न करनेपर भी जब वह राहपर न आयी—या यों कहिये कि पथ-भ्रष्ट होनेको तैयार न हुई—तो उसे यातनायें दी जाने लगीं। अड्डेकी बुढ़िया मालकिनने कहा कि यह युवक जो तुम्हें ले आया है, तुम्हारी ही जैसी दर्जनों तरुणियोंको वह ला चुका है। और यह शादीका ढोंग छोड़ दो, वह तो योंही शादी कर-करके सुन्दरियोंको बहकाकर यहां लाया करता है। अब इस असहाय अबलाको किसीका सहारा नहीं था। किन्तु जब उस बुढ़ियाकी यन्त्रणायें भी उसे न डिगा सकीं, तब उसने उसे एक लम्बी रकम लेकर एक चीनीके हाथ बेच डाला। चीनियोंने उसे और भी कठोर यातनायें देनी शुरू कीं। उसे खाना-पीना देना बन्द कर दिया और एकदम नङ्गी करके एक कमरेमें बन्द कर दिया। वे कभी-कभी उसे खोलते और उसके खुले हुए अङ्गोंपर कोड़े मारते! यह सब यातनायें उसे केवल इसलिए दी जा रही थीं कि उसने अड्डे पर आनेवाले पापी-पुरुषोंकी व्यभिचार-लीलामें सम्मिलित होनेसे इनकार कर दिया था!

यातनाओंके तीसरे दिन कुछ पापी व्यक्ति शराबके नशेमें चूर बैठे थे कि उस लड़कीको उनके सामने लाया गया। एक तरहसे वह बिलकुल नङ्गी थी, केवल पैरोंमें सुनहरी जूतियां थीं। पिम्पने उसे कमरेमें ढकेलते हुए कहा, 'आज तुम्हें मेहमानोंको खुश करना होगा" और चला गया, और वे शराबी उसे अपनी कामवासनासे जलती हुई आंखोंसे घूर-घूरकर देखने लगे।

लेकिन तरुणी? तरुणीकी आंखोंमें इस समय शोकके आंसू नहीं थे, थी दृढ़ निश्चयकी ज्योति। उसने एक बार दोनों हाथ जोड़कर छतकी ओर ताका और कहा—"मेरी मदद करो प्रभो!" इतना कहनेके साथ-साथ वह खिड़कीकी राहसे धम्मसे जमीनपर कूद पड़ी!

पलक मारते ही वह सुन्दर शरीर एक लोथड़ा बनकर खूनमें लथपथ पड़ा था!

कहनेकी आवश्यकता नहीं कि हमारी आधुनिक सभ्यता पर रमणियोंका यह सङ्गठित व्यापार कलङ्कका महाकाला धब्बा है। फिर भी अपनी झूठी सभ्यताका ढिंढोरा पीटनेवाले यूरोप और अमेरिका इस बातकी ओर देखते हुए भी नहीं देख रहे हैं। कैसा नैतिक पतन है!



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बेतकल्लुफ़ी

जनाब फ़रहत उल्ला बेग़, देहलवी, बी० ए०

अय ज़ौक़ ! तकल्लुफ़में है तकलीफ़ सरासर।
आरामसे वह हैं जो तकल्लुफ़ नहीं करते ॥ —( उस्ताद "ज़ौक़" )

उस्ताद "ज़ौक़" यह शेर लिखकर दुनियाको एक ऐसे धोखेमें डाल गये हैं कि शायद वह बेचारी अपनी कभी न खत्म होनेवाली जिन्दगीमें इससे निकल ही न सके। लेकिन मैं सच कहता हूं कि अगर मिस्टर जहीर जैसे कोई बेतकल्लुफ दोस्त उनको मिल गये होते तो उपरोक्त शेर शायद उनके ध्यानमें भी न आता। बेतकल्लुफ साहब खुद तो आरामसे रहते हैं। मगर दूसरोंको कपड़े फाड़कर घरसे बाहर निकल जानेकी नौबत आ जाती है। मैं खुद भी "अजी किबला आप" का विरोधी था। मगर जो सबक मियां जहीरने मुझे दिया है, उसके बाद तो मैं यही कहूंगा कि बस, बेतकल्लुफीसे तकल्लुफ हजार दर्जे अच्छा ! मेरी बद-किस्मतीसे यही एक दोस्त मुझे ऐसे मिले थे, जिन्होंने थोड़े ही दिनोंमें मेरे होशोहवास गुम कर दिये। यकीन मानिये कि अगर कुछ दिनों और मेरा और उनका साथ होता, तो छुरी चल जाती। यह हजरत कौन थे और उनकी वजहसे मुझपर क्या गुजरी, इसको सुनकर जरा ठण्डे दिलसे इन्साफ कीजिये कि जब दुनियामें ऐसे लोग भी मौजूद हैं तो क्या किसी सूरतसे भी बेतकल्लुफीकी तारीफ की जा सकती है ? और क्या बेतकल्लुफी और बदतहजीबीमें कोई फर्क बताया जा सकता है ?

ये किस खानदानके चिराग हैं—यह तो खुदा जाने ! मगर हैं मेरे दोस्त ! याने वही मेरी दोस्तीका दम भरते हैं, मैं नहीं। मेरी उनकी तो सिर्फ इतनी ही जान-पहचान है मैं जब बी० ए० में था तो यह कालेजमें आकर दाखिल हुए थे। यह सब जानते हैं कि एम० ए० के स्टूडेण्ट अपनेसे कम दर्जेवालोंको जरा नीची निगाहसे देखते हैं याने अपने सामने उन्हें "लड़के" समझते हैं। और दोस्ती करना तो दूर, सीधे मुंह उनसे बात भी नहीं करते। बोर्डिङ्ग हाउसमें उनका कमरा मेरे कमरेसे थोड़ी दूरपर था। होता यह था कि कभी ये आये पेन्सिल मांग ले गये—कभी आये एक-दो रुपये मांग ले गये। कभी ऐसा हुआ कि ये बैठे हैं और चाय आयी। मैंने चाय बनाकर एक प्याली इनकी तरफ भी खिसका दी। ये जरा गाते अच्छा थे ! इसलिए कभी-कभी मैं इनके कमरेमें भी चला जाया करता था। बस, इतना ही मेरा इनका ताल्लुक था ! अब चाहे आप इसे दोस्ती कहें या कालेजकी साहब-सलामत !

एम० ए० पास करके मैंने 'एकाउण्टेन्सी' का इम्तहान दिया और कण्ट्रोलर जनरलके आफिसमें नौकर होकर कल-कत्ते चला गया। उसके बाद मालूम नहीं, उन्होंने क्या पास किया, कहां रहे और क्या करते रहे। एक रोज मैं दफ्तर जानेको तैयार था कि एक तार मिला। लिखा था—"मैं कल सुबह कलकत्ता पहुंचूंगा, कृपा करके गाड़ी भेज दीजियेगा—जहीर।" पहले तो मैंने समझा कि किसी दूसरेके नाम तार होगा और मैंने गलतीसे खोल लिया है। लेकिन लिफाफा देखा तो मालूम हुआ कि मेरे ही नाम है। फिर सोचा कि आखिर इनको कलकत्ते आकर मेरे पास ठहरनेका क्या हक है। दिलने कहा कि बेचारेको कलकत्तेमें कुछ काम होगा। इस खयालसे कि मैं भी उसी कालेजमें पढ़ता था और एक ही बोर्डिङ्गमें रहता था, यह तार दे दिया है। खैर, मैंने नौकरको बुलाकर हुक्म दिया कि कमरा साफ कर दो। कल मेरे एक दोस्त आ रहे हैं। यह कहकर मैं दफ्तर चला गया और वहांके कामोंमें भी सारे दिन मियां जहीरके इस तारका खयाल आता रहा।

कलकत्ता मेल सुबह ७ बजे आता था। जाड़ेका मौसिम था। जानेको तो जी न चाहता था, लेकिन इस खयालसे कि बेचारा बुरा न मान जाय, स्टेशन चला गया। गाड़ी आयी, इण्टर क्लासमेंसे एक साहब निकले और 'भाई फरहत' कहकर गलेसे लिपट गये। जब बड़ी देरके बाद जरा हटे तो मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उनपर नजर डाली। शक्ल तो वही थी, मगर एक फुटकी दाढ़ीने 'छटा' बदल दी थी। लिबास न तो बिलकुल अंगरेजी था और न हिन्दुस्तानी। सरपर रामपुरी मखमलकी टोपी, बदनपर निहायत उम्दा कोट, अलीगढ़ी पायजामा, पांवमें स्लीपर थे और बस! मैंने कुलीसे कहा—'असबाब निकालो!' कहने लगे—"असबाब कौन मसखरा लाया है। कलकत्तेमें दो-चार दिन ही तो ठहरना है, असबाबकी मुसीबत क्यों अपने सर लेता। किसी-न-किसी तरह गुजारा हो ही जायगा।" खैर! मैं और वह मोटरमें बैठकर घर आये। नौकरने उन्हें कमरा बता दिया। वहां जाकर उन्होंने मुंह धोया, कङ्घी की, कोट खूंटीपर टांगा और सिर्फ कमीज पायजामा पहने खानेको मेजपर आ गये। मैं क्या करूं! यह मेरी तबीयत है कि घरमें भी अपनेको बहुत लिये-दिये रहता हूं। अंगरेज न सही, मगर अंगरेजोंकी तरह रहना जरूर पसन्द करता हूं। मुझे उनका इस लिबासमें मेजपर आना जरा नागवार गुजरा। मगर यह खयाल करके कि बेचारा अभी रेलसे थका-मांदा आ रहा है और असबाब भी साथ नहीं है, मैं चुप हो रहा। नाश्ता करके मैं तो दफ्तरके कमरेमें चला गया और वह अपने कमरेमें जाकर लेट गये। थोड़ी देर न गुजरी थी कि वह उसी तरह कुरता पहने मेरे कमरेमें आये और कहने लगे—भाई फरहत! कलकत्तेमें देखने लायक क्या-क्या चीजें हैं? और कहां-कहां हैं? सामने ही कलकत्तेका नक्शा लटका हुआ था। मैं इस खयालसे कि मेहमानका दिल न टूटे, अपनी जगहसे उठा और नक्शेके पास ले जाकर उनको देखने योग्य स्थान दिखलाये। वह मेरा शेर रास्तोंपर उंगली रखकर नक्शा कुछ इतने गौरसे देख रहा था, मानो सारा शहर खरीदना चाहता हो। कोई आध घण्टेमें इससे फरागत होकर वह चल दिये और मैं फिर काममें लग गया। साढ़े दस बजे मैंने मोटर मंगायी। मालूम हुआ कि मि० जहीर मोटर लेकर खुद तो खुदा जाने कहां चले गये और सोफरको यहीं छोड़ गये। क्या बताऊं, कितना गुस्सा आया। अगर इस शख्सको जाना ही था तो मुझसे कहकर जाता या कमसे कम सोफरको तो साथ ले जाता। मोटर चलानेका सार्टिफिकेट पास नहीं है। कलकत्ते-में कभी आया नहीं। देखिये, किस मुसीबतमें फंस जाता है। दफ्तरको देर हो रही थी। इसलिए मैं तो किरायेकी मोटर मंगाकर दफ्तर चला गया। और वह अल्लाहका बन्दा नहीं मालूम कहां-कहां मारा-मारा फिरा। क्योंकि जब पांच बजे मैं घर वापस आया तो मालूम हुआ कि वह हजरत अभी-अभी तशरीफ लाये हैं और चाय पी रहे हैं। मैं भी कपड़े बदलकर खानेके कमरेमें पहुंचा। वह मेजसे उठ ही रहे थे। मुझे आता देखकर फिर बैठ गये। कलकत्तेकी तारीफ की, मोटरकी तारीफ की, म्यूजियमकी तारीफ की और आखिरमें कड़ाया और वहांकी रण्डियोंकी तारीफपर उतर आये। इतना भी खयाल न किया कि नौकर पास खड़ा है। ऐसी बेहूदा गुफ्तगू सुनकर क्या कहेगा कि साहब तो ऐसे हैं और उनके दोस्त ऐसे! हो न हो, साहब भी टट्टीकी ओटमें शिकार खेलते होंगे। मैंने किसी कामपर नौकरको भेजकर जहीरसे कहा—हजरत! खुदाके लिए नौकरोंके सामने तो ऐसी बातें न किया करो। यह वह लोग हैं कि अगर सारे शहरमें किसी बातका ढिंढोरा पीटना हो तो इनके सामने कहे। कहने लगे—"कहेगा तो कहने दो। कोई हम किसीके दबैल हैं? रहे तुम—तो तुमने तो नौकरी करके अपनी आजादी खो दी! दफ्तरमें काम न करें तो वाकई जिम्मेदार हैं। अब रहा घर। तो घरमें हम बादशाह हैं। नङ्गे होकर भी नाचें तो किसका इजारा! गरज, वह वैसी ही बेतुकी बातें करता रहा और मैं चाय पीकर उठ खड़ा हुआ।

उस रोज मुझे साहबके यहां डिनरमें जाना था। मैंने कहा—मि० जहीर! माफ करना, आज मैं रातका खाना तुम्हारे साथ न खा सकूंगा। साहबके यहां दावत है। मालूम नहीं, कब वापस आऊं। एक अंगरेजी कम्पनी आयी हुई है। खाना-वाना खाकर तुम वहां हो आओ। कहने लगे—भाई फरहत, तुम मेरी फिक्र न करो। मैं कलकत्ता देखने आया हूं। जिस तरह मेरा जी चाहेगा, देखूंगा। तुम शौकसे डिनरमें जाओ। खानेका क्या है! जिस होटलमें घुस जाऊंगा, पेट भर लूंगा। चाय पी, लकड़ी हाथमें ले मैं तो टहलने निकल गया और वह अपने कमरेमें घुस गये।

शामके छः साढ़े छः बजे मैं चहलकदमी करके वापस आया। बाहर बागमें कुर्सियां पड़ी थीं। चन्द अफसर भी आ गये थे। बातें होने लगीं। ७॥ बजे मैं वहांसे उठा। मुंह-हाथ धोया। नौकरसे कहा—मेरा डिनर सूट निकालो! वह मेरा मुंह देखने लगा। मैंने कहा—मुंह क्या देखता है, कपड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



निकाल! उसने डरते हुए कहा—"हुजूर, डिनर सूट तो आपके दोस्त साहब पहनकर कहीं चले गये हैं।" यह सुनकर तो मेरे सरमें चक्कर आ गया। या अल्लाह, अब क्या करूं? साहबको लिख चुका हूं कि दावतमें आऊंगा। उनकी मेम साहबसे कह चुका हूं कि खानेके बाद उनके साथ ब्रिज खेलूंगा। उनकी बच्चीसे वादा किया है कि मिठाइयां लाऊंगा। आखिर अब दावतमें जाऊं तो किस तरह जाऊं। बड़े-बड़े अफसर आ रहे हैं। यह तो हो नहीं सकता कि डिनर सूटके अलावा कोई और सूट पहनकर जाऊं। मैं इसी उधेड़-बुनमें था कि मिस्टर नसीम आ गये, और आते ही कहा कि "चलो यार, बड़ी देर हो रही है!" मैंने कहा—भई नसीम, आज मेरी तबीयत बैठे-बैठे कुछ खराब हो गयी है। मेरी तरफसे माफी मांग लेना। हां, एक बात है। मैंने साहबकी छोटी लड़कीसे मिठाई लानेका वादा किया था—वह जरा अपने साथ लेते जाओ। यह कहकर मैंने मेजकी दराज खोली। क्या देखता हूं कि न तो उसमें चाकलेटका बक्स है और न गोलियोंकी बोतल! इधर देखा—उधर देखा। यह दराज खोली, वह दराज खोली। मगर कहीं पता न चला। ब्वायको बुलाकर पूछा। उसने कहा—हुजूर, मुझे तो मालूम नहीं कि बक्स और बोतल कहां गयी। हां, जब आपके दोस्त साहब बाहर जाने लगे तो मैंने देखा था कि उनके कोटकी दोनों जेबें बहुत फूली हुई थीं। शायद वह ले गये हों। मैंने भी यह समझकर कि हो न हो, यह भी उन्हीं हजरतकी कारस्तानी है, नसीमसे कहा—"भई, तुम जाओ, देर हो रही है। मैं कल खुद जाकर मिठाई दे आऊंगा। वह चले गये और मैंने होटलमें जाकर खाना खाया। वापस आकर बहुत देर तक मियां जहीरके लौटनेका इन्तिजार करता रहा। दो बजे मेरी आंख लग गयी। खुदा जाने वह कब आये। हां, सुबहको चायपर मौजूद थे।

सब जानते हैं कि मैं वादेका पाबन्द हूं। हमारे साहब और उनकी बीबीने जो यह देखा कि मैं दावतमें नहीं आया और यह सुना कि मेरी तबीयत अच्छी नहीं है, तो वह चाय पीकर सुबह-हीं-सुबह मेरे यहां आये। मैं नाश्तेसे फारिग होकर अपने दफ्तरमें बैठा ही था कि उनके आनेकी इत्तिला मिली। ड्राइङ्ग रूममें आया, उनको बैठाया। रातको न आ सकनेकी माफी मांगी। अभी मैं यहीं तक पहुंचा था कि मि० जहीर कुरता पहने अन्दर आये और आते ही "आदाब अर्ज" का नारा इस जोरका लगाया कि साहब भी उछल पड़े। हमारे साहब मुसलमान हैं। मगर विलायतमें बरसों रहकर पूरे विलायती हो गये हैं। और चूंकि मैं इसी स्टाइलमें रहना पसन्द करता हूं, इसलिए मेरी और उनकी खूब बनती है। मि० जहीरने आते ही पहले सिगरेटके बक्सपर हाथ मारा। दियासलाईके लिए इधर-उधर देखा। शामतकी मार, साहबने सिगार सुलगाकर दियासलाईकी डिबिया जेबमें डाल ली थी जब उनको डिबिया कहीं न दिखाई दी तो उन्होंने निहायत इतमीनानसे साहबके मुंहसे सिगार खींच उससे अपना सिगार सुलगाया। सिगार फिर साहबके मुंहमें दे दिया। क्या बताऊं कि उनकी इस हरकतसे कितने घड़े पानी मुझपर पड़ गया। क्या करता, चुप था। साहबने आहिस्तासे सिगार मुंहसे निकालकर आतिशदानमें डाल दिया। और मुझसे पूछने लगे कि "आपकी तारीफ?" मैंने कहा—"यह मेरे साथ कालेजमें पढ़ते थे। अब कलकत्ता देखने आये हैं।" परिचयके बाद साहब हाथ मिलानेको उठे और वह मेरा शेर मुंह फेर-कर उनकी बेगम साहबाके कोचपर जा बैठा, और लगा उनसे बातें करने। एक तालीमयाफ्ता (शिक्षित) लेडीसे बिना परिचय इस तरह बेतकल्लुफ हो जाना सख्त बद-तहजीबी है। उस बेचारीने हजार तरह उनपर जाहिर किया कि मैं आपसे बातें नहीं करना चाहती, मगर उस अल्लाहके बन्देने जरा भी परवाह न की। वह हाथ खींचतीं और यह झट उनका हाथ अपने हाथमें ले लेता। वह मुंह फेर लेतीं और इनकी बातोंका सिलसिला न टूटता। आखिर साहब भी घबरा गये और यह कहकर उठ खड़े हुए कि फिर मिलेंगे। उन लोगोंके जानेके बाद मैंने आड़े हाथों लिया, मगर वह तो चिकना घड़ा था। कहने लगा—"मैंने क्या किया? बीबी-को परदेसे निकालनेमें शर्म नहीं आयी तो अब इन बातोंसे शर्म क्यों आती है? खुदाकी कसम, अगर मैंने कोई भी बेहूदा बात कही हो। बेगम साहबाकी शक्ल तो देखो, जैसे बंदरियाकी-सी! और दिमाग परियों-सा। गोया हमसे बात करनेमें उनकी इज्जत जाती है।" मैंने कहा—जहीर, तुम अंगरेजी एटीकेट (सभ्यता) नहीं जानते। बिना जान-पहचान किसी शरीफ लेडीसे बात करना बदतहजीबी समझी जाती है। कहने लगा—बस, रहने दीजिये! अपने साहबकी वजहसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



जरा मींच रही थीं, नहीं तो तुम देखते कि इस तरह बोलती जैसे बङ्गाली मैना ! खैर, क्या हर्ज है; मैंने पता पूछ लिया है, दो-चार रोजमें तुम्हें खुद ही मालूम हो जायगा कि मैं सच्चा हूं या तुम सच्चे !

यह घटना ऐसी न थी कि मुझे सारे दिन इसका रञ्ज न रहता। दफ्तरमें भी किसी कामपर जी न लगा। शामको वापस आया तो क्या देखता हूं कि हमारे साहब, उनकी बेगम साहबा और मियां जहीर बागमें बैठे कहकहे लगा रहे हैं। मैं हैरान था कि या अल्लाह ! इन लोगोंकी इस शख्सने सवेरे इतनी तौहीन (अपमान) की, और अब यह उससे ऐसे घुले-मिले बैठे हैं गोया मुद्दतोंके दोस्त हैं। खैर, मैं भी कपड़े बदलकर उनमें जा बैठा। मगर मैंने देखा कि मेरे आनेसे वह चहल-पहल जरा कम हो गयी और यह लोग जरा बन्द-बन्दसे हो गये। मैंने यह देखकर चहलकदमीके लिए जानेकी इजाजत चाही, जो आशाके विरुद्ध होती हुई भी बड़ी आसानीसे मिल गयी। रातको कोई सात बजे जब मैं वापस आया तो मालूम हुआ कि साहबके साथ मियां जहीर सिनेमा देखने गये हैं और कह गये हैं कि खानेपर मेरा इन्तिजार न करना। रातको बारह बजेके करीब वापस आये। मैं उस वक्त तक जाग रहा था। मेरे पास आये और कहने लगे—"क्यों, मैं न कहता था ! कसम खुदाकी, दोनों मियां-बीबी हीरा हैं। अबके मैं कलकत्ते आया तो इन्हींके यहां ठहरूंगा। वह तो आज ही मुझे अपने यहां घसीटे लिये जा रहे थे, लेकिन इस खयालसे कि तुमको चोट पहुंचेगी, मैंने जाना मुनासिब न समझा।" मैं जहीरकी शक्ल देखता था और सोचता था कि या अल्लाह ! दुनिया भी कुछ अजब चीज है। एक हम हैं कि साहबकी खुशामदमें मरे जाते हैं, उनकी बीबीको तोहफे देते हैं, उनके बच्चोंको मिठाइयां खिलाते हैं, और फिर रुतबेकी खाड़ी बीचमें मौजूद ही रहती है। और एक यह मि० जहीर हैं कि "जान न पहचान, बड़ी बुआ सलाम !" साहब और उनकी बेगम साहबाके जबर्दस्ती लिपटे जाते हैं। चन्द ही घण्टेमें उनके गलेका हार हो जाते हैं। अगर खुदा न ख्वास्ता, कहीं साहबसे हम ये सलूक कर बैठें तो दफ्तर तो क्या कलकत्तेमें रहना मुश्किल हो जाय।

तीसरा दिन खैरसे गुजरा। मेरे दफ्तर जानेके वक्त तक मियां जहीर पड़े सोते रहे। दफ्तरसे वापस आया तो मालूम हुआ कि बाहर गये हुए हैं। रातको भी खुदा जाने कब आये। मैं सुबहको चाय पीने बैठा ही था कि वह मेरा सूट डाटे खानेके कमरेमें आये। और आते ही एक बड़ी लम्बी सांस ली। मैंने कहा—'क्यों हजरत, खैर तो है ! ये लम्बी-लम्बी सांसें क्यों लिये जा रहे हैं। कहीं आशिक तो नहीं हो गये !" कहने लगे—"नहीं यार, ये इश्ककी सांस नहीं, इतमीनानकी सांस है। तुम्हारा नजमुन्निसासे जो झगड़ा था, वह बड़ी मुश्किलसे रफा दफा हुआ है। कलसे इसी फिक्रमें फिर रहा था। रातको कहीं बारह बजे जाकर मामला तय हुआ।" मैंने कहा—"नजमुन्निसा कौन बला है।" कहने लगे—"ओहो, बच्चे बन जाओ, जैसे नजम्मुन्निसाको जानते ही नहीं। हमारे सामने इतने सीधे, और बऊ बाजार-वालियोंसे खतकिताबत !" आप जानते ही हैं कि हर शख्स-में कुछ-न-कुछ कमजोरी जरूर होती है। मैं जवान था, तनहा था, दिल बहलानेके लिए कभी-कभी सिनेमाकी एक्ट्रेसोंके पास चला जाया करता था। नजमुन्निसासे कुछ दिन खतकिताबत भी हुई थी। लेकिन फिर ऐसी बिगड़ी कि एक दूसरेकी सूरतसे बेजार हो गये। यह सब कुछ था, मगर सवाल यह है कि इन हजरतको यह सब क्योंकर मालूम हुआ। मैं तो यह समझता था कि किसी फरिश्ता खांको भी इसकी खबर नहीं। फिर इनको यह सब मालूम हुआ तो क्योंकर हुआ। पहले तो मैं इनकार करता रहा। लेकिन जब उसने पत्ते-पत्तेकी बातें तो क्या, खतोंके मजमून बयान करने शुरू किये, उस वक्त मुझे सब मञ्जूर करना पड़ा। बहुत पूछनेपर मालूम हुआ कि मेरे दफ्तर जानेके बाद ये किसी कामसे मेरे प्राइवेट रूममें आये। वहां नजमुन्निसाकी तसवीर लगी हुई थी। उसको देखकर इन्हें कुछ शुबहा हुआ। मेजके खानेमेंसे कुञ्जियां निकालीं और मेरे सारे बक्स और सन्दूक खोल डाले। निहायत एहतियातसे एक-एक कागज और एक-एक कपड़ा देखा। कैश-बक्सके नीचेके खानेमें इन्हें नजमुन्निसाके खत मिले। उनको निकालकर अव्वलसे आखिर तक पढ़ा और यह मालूम करके कि मेरी और नजमुन्निसाकी बिगड़ गयी है, सीधे बऊ बाजार पहुंचे। वहां खुदा जाने क्या किया और किस तरह उसको समझाया। और अब उनको समझा-बुझाकर मुझे समझाने आये हैं। मैंने कहा—सुनो मियां जहीर ! तुम्हें मेरे खानगी मामलोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दखल देनेका कोई हक नहीं है। मैंने कसम खा ली है कि मैं अब नजमुन्निसाकी शकल नहीं देखूंगा। तुम क्या, अगर फरिश्ता भी आ जाय तो मैं माननेवाला नहीं। तुम अपने कामसे काम रखो। मेरे मामलातमें दखल न दो। मैं कल दौरेपर जाता हूं, तुम्हारा जब तक जी चाहे यहां रहो। मगर याद रखो कि यह बात अगर फूटी तो मुझसे बुरा कोई न होगा। मेरी तरफसे नजमुन्निसा मर चुकी है। हां, तुम्हारा जी चाहे तो उससे शादी कर लो! अच्छा, खुदा हाफिज!

मेरी सूरत कुछ ऐसी गजबनाक और मेरी आवाज कुछ ऐसी सख्त हो गयी थी कि मियां जहीर कुछ घबरा-से गये और चुपके कान दबाये अपने कमरेमें चले गये। नौकरने मेरा बिस्तर बांधा, सूट केसमें कपड़े रखे और मैं १२ बजेकी ट्रेनसे रवाना हो गया। पन्द्रह रोजके बाद वापस आया तो मालूम हुआ कि यह हजरत भी दो-चार दिन और ठहरकर खुदा जाने कहां चले गये। मगर अपनी याद मेरे मिलनेवालोंके दिलोंमें ऐसी छोड़ गये कि जो मिलता वह मुझसे इनका पता पूछता और यह सुनकर कि मुझे ऐसे अजीज दोस्तका पता भी मालूम नहीं है, सख्त ताज्जुब करता। हमारे साहबकी तो यह हालत थी कि कोई ऐसा ही मनहूस दिन जाता कि जो वह मि० जहीरका जिकर न करते हों और उनकी तारीफोंके पुल न बांधते हों। कहा करते थे कि "ऐसा सच्चा और बेतकल्लुफ दोस्त मिलना इस दुनियामें मुश्किल है।" कहीं दो-चार दिनको यह बेतकल्लुफ दोस्त उनके घरपर रह जाते तो साहब घर तो क्या, दुनियामें रहनेसे घबरा उठते।

पढ़नेवालोंमेंसे अगर किसीको इस बेतकल्लुफीका लुत्फ उठाना है तो इश्तिहार दे दें। मैं यकीन दिलाता हूं कि दो-तीन दिनमें ही यह हजरत तशरीफ ले आयेंगे और उसके बाद मालूम होगा कि बेतकल्लुफी किसे कहते हैं? और बेतकल्लुफ दोस्त ऐसे होते हैं। अगर दुनियामें ऐसी ही बेतकल्लुफी फैल जाय, तो मैं तो जहर खाकर मर जाऊं!

अनु०—'आज़ाद'

---

# रेल और वायुयानमें प्रतियोगिता

श्री 'सुरेश'

आधुनिक यन्त्र-विज्ञानके नूतन आविष्कारों एवं नव-नव उद्भावनाओंके परिणाम-स्वरूप हमारे इस विस्तृत जगत्का आयतन क्रमशः संकुचित होता जा रहा है। संसारके विभिन्न भागोंके बीच आवागमनका सम्बन्ध स्थापित करनेमें अबसे सिर्फ २०-२५ वर्ष पहले जो सबसे बड़ी बाधा दूरीकी समझी जाती थी, वह नूतन युगके विज्ञानकी बदौलत बहुत कुछ दूर हो चुकी है।

प्रायः प्रति सप्ताह हम विदेशी समाचार-पत्रोंमें आवागमनके साधनोंके सम्बन्धमें किसी-न-किसी नूतन आविष्कारका समाचार पढ़ते रहते हैं। आवागमनके इन साधनों द्वारा विश्वके विभिन्न भागोंका सम्बन्ध परस्पर घनिष्ट होता जा रहा है। दूसरे शब्दोंमें इसे यों कह सकते हैं कि एक ओर आवागमनके साधनोंकी क्षिप्रता ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है, दूसरी ओर उसी अनुपातसे इसके विपरीत संसारका आयतन संकुचित होता जाता है।

इस समय संसारके सब देशोंमें वहांकी रेलवेको एक विषम समस्याका सामना करना पड़ रहा है। आकाशमें उड़नेवाले वायुयान और जमीनपर चलनेवाली क्षिप्रगामी मोटर-बसें, दोनोंकी प्रतियोगिताके कारण रेलवेको भी अपनी गतिमें उन्नति करनेके लिए बाध्य होना पड़ा है। यूरोप और अमेरिकाकी रेलवे ट्रेनोंमें इस प्रतियोगिताके फल-स्वरूप अब तक जो उन्नति हुई है वह दो प्रकारकी है। एक तो है गति, सर्विस और साज-सामानके सम्बन्धमें और दूसरी है उनके नवीन आधुनिक रूप स्ट्रीम लाइण्ड ट्रेन ( Stream-lined trains ) के सम्बन्धमें।

इस आधुनिक प्रकारकी स्ट्रीम लाइण्ड ट्रेनको प्रचलित करनेमें डिजेल इञ्जिनने सबसे बढ़कर काम किया है। इस डिजेल इञ्जिन द्वारा ही इस समय यूरोप और अमेरिकाकी सबसे तेज चलनेवाली रेलवे ट्रेनें चालित हो रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



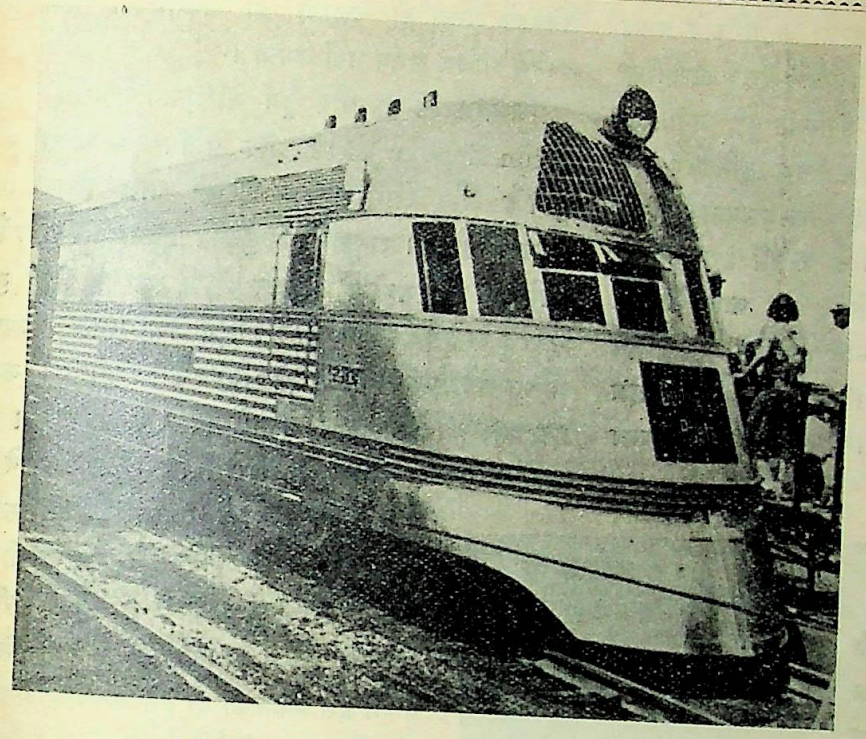

वर्लिङ्गटन जेफर ट्रेन जिसमें डिजेल इञ्जिन लगा हुआ है।

डिजेल इञ्जिनका सर्व-प्रथम आविष्कारक जर्मनीका डिजेल नामक एक वैज्ञानिक है। पहले जिस प्रणालीसे आयल इञ्जिन या पेट्रोल इञ्जिन चलता था, डिजेल प्रणाली द्वारा उसमें सम्पूर्ण परिवर्तन हो गया है। यह आशा की जाती है कि निकट-भविष्यमें ही इस डिजेल इञ्जिन द्वारा कलकांटा, मोटरगाड़ी, रेलगाड़ी, वायुयान आदिकी परिचालना कोयले-की अपेक्षा भी सुलभ हो जायगी।

जर्मनीमें इस समय ३८,००० मोटर-लारियोंमें डिजेल इञ्जिन लगे हुए हैं। इंगलैण्डमें भी सैकड़े ९० मोटर-बसोंमें यही इञ्जिन लगे हुए हैं। फ्रान्सकी सरकारने यह घोषणा की है कि यदि कोई वैज्ञानिक डिजेल इञ्जिन द्वारा चालित वायुयानमें बैठकर एक बारमें ही ६२०० मीलकी यात्रा कर डालेगा तो उसे १४३,००० पौण्ड पुरस्कार दिया जायगा। जर्मनीका नवीन विशाल जेपलिन "हिण्डेनबर्ग" जो शीघ्र ही जर्मनीसे न्यूयार्क तक यात्री और डाक लेकर आवा-गमन करेगा, उसकी कल भी डिजेल इञ्जिन द्वारा ही चालित होगी।

इस समय एक गैलन पेट्रोल द्वारा जितनी दूर तक मोटर-गाड़ी चलती है, साधारण किरासन तेल द्वारा डिजेल इञ्जिन-वाली मोटरगाड़ी उससे दूना रास्ता तय करेगी। साधारण इञ्जिन पेट्रोल-की शक्तिका केवल सैकड़े २५ भाग ग्रहण करता है, किन्तु डिजेल इञ्जिन सैकड़े ३७ भाग ग्रहण कर सकेगा। इससे यह आशा की जाती है कि इस समय कोयले और पेट्रोल द्वारा जो इञ्जिन परिचालित हो रहे हैं उन सबको डिजेल इञ्जिन परास्त कर देगा और सब प्रकारकी सवा-रियोंमें इस डिजेल इञ्जिनका ही प्रयोग किया जायगा।

डिजेल इञ्जिनमें तेल सिलेण्डरमें ही बिलकुल जल जाता है; सिर्फ जल ही नहीं जाता, इञ्जिन तेलकी शक्तिका भी अच्छी तरह व्यवहार कर सकता है। यह देखा गया है कि पेट्रोलकी सहायतासे जिस गाड़ीको चलानेमें १ रु० ५ आने खर्च पड़ता है, डिजेल इञ्जिनकी सहायतासे साधारण तेलमें उतना ही रास्ता तय करनेमें ३-४ आने खर्च पड़ता है। पेट्रोल और तेलका हिसाब करनेपर देखा गया है कि जितने पेट्रोलसे साधारण इञ्जिनवाली गाड़ी रास्ता तय करती है, डिजेल इञ्जिनकी सहायतासे उससे आधे तेलमें ही उतना रास्ता तय हो जाता है।

घोड़ेकी ताकतके हिसाबसे सबसे पहले जो इञ्जिन तैयार हुआ था उसमें एक घोड़ेकी ताकतके लिए १२५ सेर वजनके इञ्जिनकी जरूरत होती थी। इसके बाद डिजेल इञ्जिनमें क्रमशः इतनी उन्नति हुई है कि २५ सेर वजनके इञ्जिनसे एक घोड़ेकी ताकत उत्पन्न हो सकती है। सन् १९२५ के पहले डिजेल इञ्जिनका प्रयोग एक छोटे जहाजमें किया गया। अब सिर्फ १० सेर वजनका एक डिजेल इञ्जिन एक घोड़ेकी ताकत पैदा कर सकता है। डिजेल इञ्जिनका प्रयोग जल और स्थलपर होने लग गया है। शीघ्र ही आकाशमार्गमें भी इसका उपयोग होने लग जायगा। किसी-किसी मोटरगाड़ी-का डिजेल इञ्जिन प्रति ४ सेर वजनमें एक घोड़ेकी ताकत उत्पन्न कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सन् १९३४ की २५ वीं अक्टूबरको अमेरिकाके ग्राण्ड सेण्ट्रल स्टेशनपर जिस दिन यूनियन पैसफिक रेलवे कम्पनीकी स्ट्रीम लाइन एम० १०००१ ट्रेन आ उपस्थित हुई, लोग उसे देखकर विस्मय-विमुग्ध हो गये। इस ट्रेनके इञ्जिनमें १२ सिलेण्डर हैं। ११९ यात्री और उनके माल-असबाबको लेकर एक प्रकाण्ड ट्रेन सिर्फ ८० डालरके खर्चमें इतनी जल्दी ३३३४ मीलका सफर तय कर डालेगी, यह बात किसीकी कल्पनामें भी नहीं आती थी। रेल-जगत्में इसे एक विप्लव ही समझना चाहिए। इतनी लम्बी यात्रा तय करनेमें इस प्रकारकी किसी साधारण इञ्जिनवाली ट्रेनमें ३०० डालरका कोयला लगता।

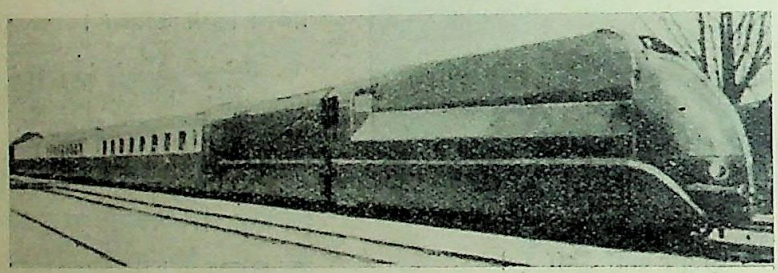

फ्रान्सकी स्ट्रीम-लाइन ट्रेन जो गतिमें वायुयानसे टक्कर लेना चाहती है।

अमेरिकामें कोयलेका और इंगलैण्डमें तेलका अभाव है। अब तक अमेरिकाकी रेलवे ट्रेनें कोयले द्वारा चलती थीं, इसलिए अमेरिका तेल बेचकर बाहरसे कोयला मंगाता था। किन्तु अब उसे कोयलेकी विशेष आवश्यकता नहीं होगी। कोयले द्वारा चालित इञ्जिनमें अनेक प्रकारकी असुविधायें होती हैं। पहली बात तो यह है कि इञ्जिनके साथ एक बहुत बड़ा वायलर चाहिए। दूसरे स्टीम तैयार करनेका जल और कोयला रखनेके लिए स्थान चाहिए। इसके अलावा किसी समय भी वाष्पके चापमें वृद्धि होनेसे वायलर फट जा सकता है, इसलिए एक आदमीको बराबर इस कामपर तैनात रखना होगा कि वह सदा वाष्पके चापपर लक्ष्य रखे। तेलके इञ्जिनके कल-कब्जे छोटे होते हैं, उसमें वायलरकी जरूरत नहीं होती; तेल रखनेके लिए एक छोटा-सा टैङ्क चाहिए; चापमें वृद्धि होनेकी कोई सम्भावना नहीं रहती, कारण काम बन्द रहनेपर इञ्जिनको भी बन्द करके रखा जा सकता है। वाष्प इञ्जिनमें फिर नये सिरेसे स्टीम करनेमें बहुत देर तक कोयला जलाना पड़ता है। तेलके इञ्जिनको कुछ सेकेण्डके अन्दर ही चलाया जा सकता है। गैस प्रस्तुत करनेमें अधिक समय नहीं लगता।

अमेरिकाकी एक और ट्रेन बर्लिङ्गटन जेफर (Burlington Zephyr) १०४ मील प्रतिघण्टाके हिसाबसे दौड़ चुकी है और आगे चलकर इसकी चाल १२५ मीलके हिसाबसे होगी। जनताने इस ट्रेनको इतना अपनाया है कि इसमें एक और डब्बेको जोड़कर ७२ के स्थानमें ११२ मुसाफिरोंके स्थान कर दिये गये हैं। इस जेफर ट्रेनसे कम्पनीको औसत सालाना आमदनी १००,००० डालर होगी। कम्पनी इस प्रकारकी और भी ८ ट्रेनें तैयार कर रही है। इसमें सफर करनेवाले यात्रियोंको पूरा आराम होगा और वे बहुत शीघ्र अपने अभीष्ट स्थानमें पहुंच सकेंगे। दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारने इस ट्रेनकी सफलता देखकर इस प्रकारकी छः ट्रेनें खरीदनेके लिए अमेरिकाको आर्डर दिया है। सिलोनमें भी इस प्रकारकी दो ट्रेनें चलानेके सम्बन्धमें बातचीत चल रही है।

इस समय संसारके विभिन्न देशोंमें डिजेल इञ्जिन द्वारा चालित रेलवे ट्रेनोंकी परीक्षा एवं गवेषणा हो रही है। इनसब देशोंमें जर्मनीकी चेष्टा ही सबसे पुरानी है और इसमें जर्मनीको काफी सफलता भी मिली है। हैम्बर्गसे बर्लिन तक प्रतिदिन फ्लाइङ्ग हैम्बर्गर नामक जो ट्रेन आती-जाती है उसकी चाल प्रतिघण्टा १०० मील है।

फ्रान्समें जो नयी रेलवे ट्रेन पेरिस जाती-आती रहती है वह साधारणतः प्रतिघण्टा ११५ मीलके हिसाबसे चलती है। किन्तु यूनियन पैसफिक ट्रेनके प्रतिघण्टा १२० मीलके हिसाबसे चलनेके दूसरे ही दिन पेरिसकी ट्रेनने अपनी चाल प्रतिघण्टा १२० मील कर अमेरिकाको मात कर दिया।

आस्ट्रियाकी एक डिजेल ट्रेन ४२ यात्रियोंको लेकर फी घण्टा ९७ मीलके हिसाबसे सफर करती है।

संसारकी सबसे तेज चलनेवाली ट्रेन जर्मनीकी जेपलिन-आन-रेल अर्थात् रेल लाइनकी जेपलिन है। इस ट्रेनकी गति कितनी है, यह बात अब तक साधारण रूपसे समाचार-पत्रोंमें प्रकाशित नहीं हुई है। किन्तु जर्मन वैज्ञानिकोंके कथनसे ज्ञात होता है कि यह ट्रेन प्रतिघण्टा १४४ मीलसे अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चल सकती है। यह ट्रेन दक्षिण जर्मनीकी किसी कम्पनीकी सम्पत्ति है।

एक बात और है। ट्रेनकी चाल इतनी तेज होनेपर यात्रियोंको श्वास लेनेमें कष्ट हो सकता है और ट्रेनसे बाहर झांकनेमें भी कष्ट हो सकता है; किन्तु ऐसा नहीं होता। इन सब ट्रेनोंमें कांचकी मजबूत खिड़कियां लगी रहती हैं और वे इतनी मजबूत होती हैं कि हथौड़ेकी चोटसे भी उनके फूटनेकी सम्भावना नहीं रहती। उस खिड़कीसे वायुका प्रवेश नहीं हो सकता। वायु-प्रवेशके लिए एक दूसरा ही मार्ग बना हुआ है। डब्बेके निम्न भागमें एक छोटी खिड़की होती है। उस खिड़कीके मार्गसे प्रबल वेगसे वायुके प्रवेश करनेपर उस वायुके साथ मिश्रित शीतल जल-कण भी डब्बेमें प्रवेश करते हैं। इससे भीतरकी हवा बराबर शीतल एवं स्वास्थ्यप्रद बनी रहती है। यहां तक कि मरुभूमिके बीचसे होकर ट्रेन गुजरनेपर भी उत्तापका अनुभव नहीं होता।

गाड़ीके चक्के बराबर होते हैं और उनके ऊपर रबर और इस्पातके स्प्रिङ्ग लगे रहते हैं जिससे ट्रेन चलनेके समय यात्रियोंको यह भी मालूम नहीं होता कि गाड़ी चल रही है और इसलिए उन्हें कुछ भी कष्ट नहीं होता।

इस डिजेल-इञ्जिन-चालित ट्रेनके प्रसङ्गमें कोयले द्वारा चालित दो रेलवे ट्रेनोंका जिक्र कर देना भी आवश्यक है। इस प्रकारके दो इञ्जिन संसारमें सर्वप्रधान हैं। इनमें एकका नाम "कक आव दी नार्थ" और दूसरेका "फ्लाइङ्ग स्काट्समैन" है। ये दोनों ट्रेनें इंगलैण्डकी हैं। फ्लाइङ्ग स्काट्समैन बहुत लम्बा सफर तय करती है। रास्तेमें कहीं पानी-कोयला नहीं लेती। कक आव दी नार्थका भी यही हाल है। फ्लाइङ्ग स्काट्समैन घण्टेमें ८२ मीलके हिसाबसे चलती है।

डिजेल इञ्जिन द्वारा परिचालित कुछ द्रुतगामी रेलवे ट्रेनोंके रेकर्डका यहां उल्लेख किया जाता है :—

अमेरिकाकी यूनियन पैसफिक रेलवे कम्पनीकी M 1000I नामक रेलगाड़ी लाइनसे सिर्फ ७ इञ्च ऊंची है। यह ट्रेन ११९ यात्रियोंको लेकर प्रशान्त महासागरके किनारेसे शिकागो तक प्रतिघण्टा १२० मीलके हिसाबसे चलकर बादमें धीरे-धीरे न्यूयार्क पहुंची। इस ट्रेनने ३,३३४ मीलका मार्ग ६९ घण्टा ५९ मिनटमें अतिक्रम किया। इसका इञ्जिन प्रति १९ सेरमें एक घोड़ेकी ताकत उत्पन्न करता है।

२—बर्लिङ्गटन जेफर—यह प्रतिघण्टा १०४ मीलके हिसाबसे चलती है। यह ट्रेन डुराल मिनियम नामक एक बहुत ही हल्की और मिश्रित धातुकी बनी हुई है।

३—क्लार्क इक्वपमेण्ट कम्पनीकी ओटोट्राम ट्रेन—इसकी

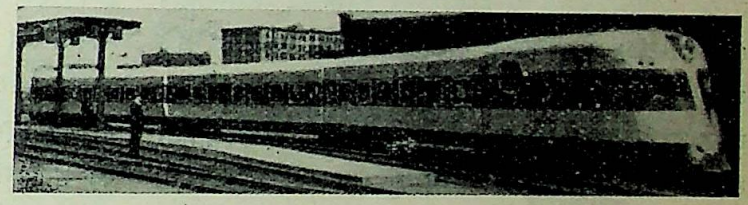

अमेरिकाकी "बोस्टन-प्रोवाइडेन्स कामेट" ट्रेन—यह भी डिजेल इञ्जिन द्वारा परिचालित होती है। इसकी गति प्रति घण्टा ११०.९ मील है।

अभी तक परीक्षा नहीं हुई है। इसके निर्माताओंका दावा है कि यह फी घण्टा ११० मील चल सकेगी।

४—जेपलिन-आन-रेल—यह संसारकी अद्वितीय रेलगाड़ी है। वायुयानके प्रोपेलर द्वारा चालित होती है। इसकी चाल प्रतिघण्टा १४४ मील है। यह दक्षिण जर्मनीमें है।

५—आस्ट्रियाकी डेमलर ट्रेन—यह ट्रेन प्रतिघण्टा ९७ मीलका सफर तय करती है।

६—फ्रान्सकी उपर्युक्त द्रुतगामी ट्रेन—यह घण्टेमें ९३ मील चलती है।

७—जर्मनीकी फ्लाइङ्ग हैम्बर्गर ट्रेन—यह हैम्बर्ग और बर्लिनके बीच प्रतिघण्टा १०० मीलके हिसाबसे यातायात करती है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रोगोंका राजा कौन ?

डा० के० मुखर्जी, एम-बी०

संसारमें कोई भी देश हमारी तरह अज्ञान और रोगोंके चंगुलमें फंसकर व्यर्थ राष्ट्रकी जनशक्ति और समाजकी जीवनी शक्ति नष्ट नहीं करता। सिर्फ बङ्गालमें ९० हजार ग्रामोंके मुकाबले १३५ शहर हैं, फिर भी गांवोंके लोग रोगोंसे पीड़ित होकर क्रमशः शहरोंकी तरफ दौड़ रहे हैं। इस तरह छोटे-छोटे शहर और कस्बे रोगियोंसे भरते जा रहे हैं। हिसाब लगाकर देखा गया है कि शहरोंमें सिर्फ ३२ लाख आदमी बसते हैं, बाकी सब गांवोंमें। अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य-विभागके डाक्टर पाल रसलका कहना है कि अन्यान्य रोगोंकी अपेक्षा सिर्फ मलेरिया ही भारतमें १० लाख नर-नारियोंकी मृत्युका कारण है, और इसलिए यही सब रोगोंका राजा है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मच्छड़ न होते तो मलेरिया भी न होता। क्योंकि इन्फ्लुएञ्जाकी तरह यह रोग हवाके जरिये नहीं फैलता, और न यक्ष्माकी तरह धूलके द्वारा ही संक्रामित होता है। टाइफायडकी तरह इसके बीजाणु पानीमें चला-फिरा करते हों, सो बात भी नहीं। मलेरियाका विस्तार तो सम्पूर्ण रूपसे मच्छड़ोंपर ही निर्भर करता है—मलेरियाका एकमात्र बाहन मच्छड़ ही है। सर रोनल्ड रासने १८९८ ई० में मच्छड़के साथ मलेरियाके सम्बन्धका आविष्कार किया था। बङ्गालकी विभिन्न पनीली जमीनोंमें सैकड़ों तरहके मच्छड़ पैदा होते हैं। सर रासके बाद इटालियन वैज्ञानिक ग्रैसीने सिद्ध किया कि अधिकांश मच्छड़ मलेरिया नहीं फैला सकते, बल्कि मलेरिया-बीजाणु-युक्त खून पीनेपर भी उनके शरीरमें जाकर वे कीटाणु मर जाते हैं। सिर्फ एनोफिलिस जातिके मच्छड़ोंसे ही मलेरिया फैलता है।

यह एनोफिलिस मच्छड़ कई भागोंमें विभक्त होनेपर भी इनके जन्मस्थान, रीति-नीति और प्रकृतिमें पार्थक्य देखनेमें आता है। फिलिपाइन देशमें बंधे हुए और खारे पानीमें, धानके खेतों या २ हजार फीट ऊंचाईपर एनोफिलिस मच्छड़ पैदा नहीं होते। वहां तो सिर्फ पहाड़ोंसे निकलते हुए छोटे-छोटे झरनोंमें ही ये मच्छड़ पैदा होते हैं।

बम्बई प्रान्तमें कुंओं और हौजोंमें, बन्द घर या बंधे हुए पानीमें मादा एनोफिलिस मच्छड़ अण्डे देते हैं। लङ्का द्वीपमें ग्रीष्म-ऋतुमें नदीका पानी जब घट जाता है, तो रेतीली जमीन या पहाड़ी जमीनमें ये अण्डे छोड़ते हैं। इसलिए इनको Pool-breeder कहते हैं। पिछले साल इस द्वीपमें एक जगह बड़ा जबर्दस्त सूखा पड़ा था, तालाब और नदियां सब सूख गयी थीं। उसका नतीजा यह निकला कि तालाब और नदियोंमें इस तरहके पुल (गड्ढे) हो गये, जिनमें बहुत ज्यादा तादादमें एनोफिलिस मच्छड़ पैदा हो गये। इसका परिणाम कैसा भीषण हुआ, इस बातको सभी जानते हैं।

बङ्गालमें सभी जिलोंमें मलेरियाका भीषण प्रकोप पाया जाता है। खासकर बरसातके बाद घर-घर सर्वत्र इस रोगका प्राबल्य होनेके कारण रोगी रक्तहीन, निस्तेज और अकर्मण्य हो जाते हैं। बहुत दिनों तक रोग भोगनेके बाद भी पुनराक्रमणका भय रहता ही है। जब कि हमारे हाथमें इतनी शक्ति नहीं कि हम मलेरियाके बीजाणुओंको जड़से मिटा सकें, तो हमें ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे हम इस भयङ्कर रोगके पुनराक्रमणसे बच सकें। रचिटोन इस कार्यमें अतुलनीय है। इसकी आश्चर्यकारी क्रियाशक्ति देखकर दङ्ग रह जाना पड़ता है। इसमें सुविधायें भी काफी हैं। खासकर मलेरिया होनेके बाद "रचिटोन" का सेवन करनेसे खूनके लाल कण पुष्ट होते हैं, जिससे खूनकी कमी जाती रहती है, और स्नायुमण्डली पुष्ट और तेज होती है। इससे शरीरकी कमजोरी दूर होती है, जिससे शरीर फुर्तीला हो जाता है और ताकत बढ़ने लगती है। आंतोंकी क्रिया ठीक हो जाती है, जिससे भूख बढ़ने लगती है। 'रचिटोन' का नियमित रूपसे सेवन करनेसे नष्ट जीवनीशक्तिका पुनरुद्धार तो होता ही है, साथ ही मलेरियाके पुनराक्रमणका भी डर नहीं रहता।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

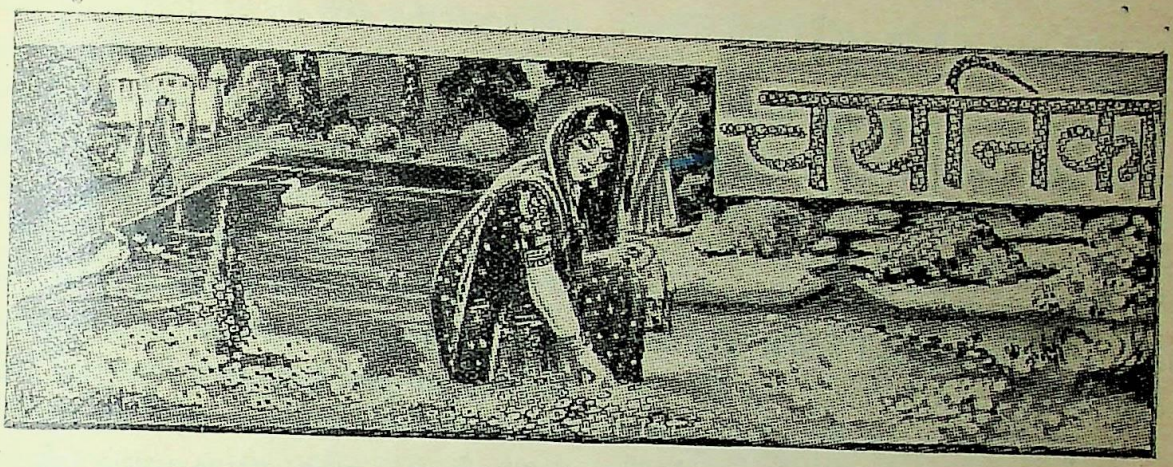


## ताजमहलकी कहानी

अभी कुछ समय पहले एक अंगरेज पर्यटक भारत-भ्रमण करने आया था। उसने आगरेके ताजमहलके सम्बन्धमें यहां-से एक विचित्र एवं कौतुकप्रद कहानी सुनकर विलायतके एक पत्रमें प्रकाशित करायी है। आश्चर्यकी बात तो यह है कि लेखकका दावा है कि वह भारतके लोगोंसे ही यह कहानी सुनकर अपने साथ ले गया, फिर भी यहांके लोगोंमें शायद ही किसीने इससे पहले ताजमहलके सम्बन्धमें इस प्रकारकी कोई कहानी या किम्बदन्ती सुनी हो।

उक्त पर्यटकका कहना है कि ताजमहलके सम्बन्धमें यह दन्तकथा सुनी जाती है कि शाहजहां—जिसने ताजमहल निर्माण कराया था—गभीर रात्रिमें, जब कि ताजमहल धवल चन्द्रिकामें स्नान करता होता है, बेगम मुमताजमहलके साथ वहां आता है और ये दोनों प्रणयी-प्रणयिनी नाना प्रकारकी प्रेमलीलायें रचते हैं। यहां तक कि दोनों मिलकर शतरञ्ज भी खेलते हैं। खेल समाप्त होनेके बाद सम्राट् और सम्राज्ञीकी प्रेतात्मायें ताजमहलके उत्तर-पूर्वमें जो गुम्बद है उसपर चली जाती हैं और वहीं बराबर निवास करती हैं। इसलिए यदि निराश प्रेमी या प्रेमिका दोनोंमेंसे कोई इस स्थानपर आते हैं तो वे स्वतः प्रेरित होकर इस गुम्बदके ऊपर चले जाते हैं और वहांसे कूदकर अपने नैराश्यपूर्ण जीवनका अन्त कर डालते हैं।

एक बारकी घटना है कि एक किशोरी अपने प्रणयी-जनके साथ ताजमहल देखने आयी। उसने अपने प्रणयीसे कहा—आज पूर्णिमा है। आओ, यहीं चांदनीमें बैठकर हम दोनों शतरञ्ज खेलें। सुना है, बादशाह और उनकी बेगम राकारजनीमें यहां शतरञ्ज खेलने आते हैं। इस प्रेम-कहानी-को सुनकर मैं विह्वल हो उठी हूं। इसलिए यह कहानी सत्य है या नहीं, यह मैं जानना चाहती हूं।

निशीथका समय था। गभीर निस्तब्धताको भङ्ग करती हुई वायु प्रबल वेगसे बह रही थी। दोनों जन उस चांदनी-विधौत स्वप्नमण्डित सङ्गमरमरके समाधि-मन्दिरकी वेदिकाके समीप बैठे हुए शतरञ्ज खेल रहे थे। सहसा दोनोंके शरीर रोमाञ्चित हो उठे। उस वायुवेगमें प्रकम्पित पासकी वृक्षावलीसे मानो मर्मवेदनाका तीव्र उच्छ्वास विनिःसृत हो रहा था। किशोरीने खेलकी तरफसे ध्यान हटाकर अपने प्रणयीसे कहा—देखते हो सम्राट् शाहजहां और सम्राज्ञी मुमताजमहलको—उनके छाया-शरीरको—दोनों हम लोगों-के खेलको देख रहे हैं।

प्रणयीने कहा—कहां? कौन? मुझे तो कुछ भी नहीं दीख पड़ता।

यह देखो! वह जा रहे हैं!...इस प्रकार अस्फुट स्वर-में कुछ कहती हुई विभ्रान्तचित्त वह किशोरी खेल छोड़कर किसीका अनुसरण करती हुई आगे बढ़ने लगी—इधर प्रणयी निर्वाक् स्तम्भित हो रहा था। क्रमशः वह किशोरी आगे बढ़ते-बढ़ते जीनेसे होकर मीनारपर चढ़ गयी—प्रणयी चकित होकर विह्वल दृष्टिसे यह सब देख रहा था।

अकस्मात् एक आर्त्तनाद सुनाई पड़ा। प्रणयीकी मोह-विह्वलता भङ्ग हुई, चेतना जाग्रत हुई। देखा, किशोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मीनारके ऊपरसे कूदकर नीचे गिर रही है। गिरते ही उसकी मृत्यु हो गयी।

इस दुर्घटनाके बाद यह मालूम हुआ कि इस प्रकारकी आत्महत्यायें इससे पहले भी कई बार हो चुकी हैं। ताज-महलमें छायामूर्ति देखकर और भी कई निराश प्रेमी-प्रेमिकाओंने मीनारसे कूदकर प्राण दिये हैं।

अब भारत-सरकारने ताजमहलमें कई रक्षक नियुक्त कर दिये हैं। गभीर रात्रिमें ताजमहलमें किसीका प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया है।

इस प्रसङ्गमें लेखकने यह भी लिखा है कि शाहजहां एक विचित्र प्रकारसे शतरञ्ज खेला करता था। मोहरोंके स्थानपर हरमकी नर्तकियां काम करती थीं। इन सुन्दरी किशोरियोंको ही मोहरे मान लिया जाता था और इन्हींको लेकर चालें चली जाती थीं। खेलके साथ-साथ कोमलकान्त स्वरमें नृत्य-गीत होता रहता था और बादशाह अपने हाथसे इन जीवन्त मोहरोंको चलता था। यह खेल ठीक शतरञ्ज-जैसा ही नहीं था। शुरूमें यह वही खेल था जिसे हम 'पचीसी" कहते हैं।

## आधा पुरुष, आधी स्त्री

ऊपरका विचित्र शीर्षक देखकर पाठक चौंकें नहीं। यह कोई कल्पना या किम्बदन्ती नहीं, बल्कि एक प्रकृत तथ्य है। प्रकृतिका यह विचित्र कौतुक आज सारे संसारके डाक्टरों और वैज्ञानिकोंके लिए एक विषम पहेली हो रहा है। विलायतके अलबर्टा परिवारके दो व्यक्तियों, अलबर्ट और अलबर्टाका प्रदर्शन सारे सभ्य जगत्में हो चुका है और वैज्ञानिकों एवं शरीरशास्त्रविशारदोंने एक ही शरीरमें नर-नारीके उभय लिङ्ग देखकर आश्चर्य एवं विस्मय प्रकट किया है।

अलबर्ट पुरुष और अलबर्टा स्त्री है। अलबर्टाको देखकर आप उसे एक स्त्री ही कहेंगे। वह अपने चेहरेपर ज्यादा पाउडर लगाती है, उसका कण्ठस्वर स्त्री-जैसा ही सानुनासिक है। उसके हाव-भाव, परिधान, रहन-सहन स्त्री-जैसे ही हैं और वह स्त्री-जैसा ही विचार करती है। इस प्रकार बाह्य लक्षणोंसे वह एक स्त्री ही है। किन्तु उसके शरीरका दाहिना भाग, कन्धेसे लेकर पांव तक पुरुष-जैसा है। कन्धा चौड़ा और मजबूत, दाहिनी भुजा दीर्घ एवं सबल, दायीं तरफकी छाती चौड़ी और पुष्ट पेशियोंवाली, संकुचित नितम्ब, जङ्घेसे लेकर गुल्फ-सन्धि तकका भाग पुरुष-जैसा और मजबूत तथा पांव बड़ा। इसके विपरीत शरीरका वाम अङ्ग बिलकुल स्त्री-जैसा है। कन्धा मुलायम, भुजा कृश, श्वेत एवं मांसल, छाती उभरी हुई और उसका अग्रभाग स्त्री-कासा, स्थूल नितम्ब, सुडौल पाद और लघु चरण।

अलबर्टामें स्त्री और पुरुष दोनोंकी इन्द्रियां हैं। किन्तु पुरुषकी इन्द्रिय कोई कार्य नहीं करती, इसके विपरीत स्त्री-की इन्द्रिय उसी प्रकार कार्य करती है जिस प्रकार अन्यान्य साधारण स्त्रियोंकी। उसके दो अण्ड हैं जिनमें एक तो बाह्य रूपमें है और दूसरा कोषके अन्दर। अलबर्टाने अपने सिरकी दायीं तरफके बाल पुरुष-जैसे छंटा लिये हैं और बायीं तरफके बाल घने, काले और लच्छेदार हैं। उसके शरीर और चेहरे-पर भी बाल उग आये हैं और वह दाढ़ी भी बनाती है। उसका चेहरा देखनेमें पुरुष-जैसा मालूम पड़ता है। नाक चौड़ी और बड़ी, मुंह बड़ा और होठ भारी तथा ठुड्डी चतुर्भुजाकार और ठोस है। इस प्रकार चेहरा देखनेसे वह बिलकुल पुरुष-सी प्रतीत होती है।

इस प्रकार अलबर्टामें पुरुष और स्त्री दोनोंके विशिष्ट लक्षण पाये जाते हैं। उसके भाई अलबर्टके सम्बन्धमें भी यही बात कही जा सकती है। किन्तु दोनों भाई-बहनकी स्थितिमें कुछ अन्तर भी है। अलबर्टामें केवल दैहिक गठनकी दृष्टिसे स्त्री और पुरुषके विशिष्ट लक्षण पाये जाते हैं, किन्तु और सब बातोंमें—शारीरिक, मानसिक तथा जातिगत रूपमें वह एक स्त्री-जैसा आचरण करती है। अलबर्टाकी अवस्था ३० और ३५ के बीचमें है। उसके माता-पितामें किसी प्रकारकी असाधारणता नहीं पायी जाती थी। वह अपने भाई-बहनोंमें सबसे बड़ी है। पांच भाई-बहनोंमें केवल अलबर्ट और अलबर्टाको छोड़कर बाकी सब बिलकुल साधा-रण स्त्री-पुरुष-जैसे हैं और वे इस समय भी जीवित हैं। बाल्यावस्थामें अलबर्टाको लड़कियोंकी-सी पोशाक पहनायी जाती थी, वह लड़कियोंके साथ खेलती थी और एक लड़की-के रूपमें ही उसका लालन पालन हुआ था। साढ़े दस वर्ष-की अवस्थामें उसकी देहका दाहिना भाग बायें भागकी अपेक्षा विशेष रूपमें विकसित होने लगा और उसकी आकृति पुरुषोचित प्रतीत होने लगी। १८ वर्षकी अवस्थामें उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



विवाह हुआ और वह अपने पतिके साथ २५ वर्षकी अवस्था तक रही। इसके बाद दोनोंका सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। पति-पत्नीमें कभी समागम हुआ हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता; क्योंकि अलबर्टा इससे संकुचित रहा करती थी। इसके सिवा अलबर्टाकी शारीरिक अवस्थासे भी यह प्रत्यक्ष मालूम होता है कि वस्तुतः इसके साथ किसी पुरुषका सफल विवाह सम्भव ही नहीं था। इसके बादसे वैज्ञानिक रूपमें संसारके प्रत्येक देशमें इसका प्रदर्शन हो चुका है। अलबर्टाका शारीरिक गठन जैसा है उससे यह अनुमान नहीं होता कि वह पति-समागमके सर्वथा अयोग्य है। फिर भी वह अपने पतिके साथ समागम करनेसे संकुचित होती रही, इसका कारण उसकी शारीरिक अक्षमता नहीं, बल्कि गर्भवती होनेका भय है। क्योंकि उसे सबसे बढ़कर इस बातका भय था कि कहीं उसकी सन्तान भी उसीकी तरह उभयलिङ्ग-युक्त विलक्षण न हो।

जहां तक अलबर्टका सम्बन्ध है उसे देखते ही आप एक पुरुष समझेंगे। उसका चेहरा कुछ-कुछ लड़का-जैसा है। उसके कन्धे चौड़े, नितम्ब सङ्कीर्ण और पांव लम्बे और सुगठित हैं। वह कदमें बड़ा नहीं है, किन्तु सुगठित और दृढ़वपु है। मानसिक दृष्टिसे वह एक पुरुष-जैसा है। वह व्यायाम, खेल-कूद तथा पुरुषोचित समस्त आनन्दोपभोगको पसन्द करता है। जातिगत रूपमें भी वह पुरुष ही है। अलबर्टाके विपरीत उसकी शिश्नेन्द्रिय चैतन्य है। किन्तु दुर्भाग्यवश उसमें कुछ ऐसे लक्षण पाये जाते हैं जिनसे उसकी पुरुषोचित दशामें क्रमशः परिवर्तन हो रहा है! ये परिवर्तन लगातार जारी हैं जिससे अलबर्ट बलात् अपनी इच्छाके विरुद्ध क्रमशः पुरुषसे स्त्रीमें परिवर्तित हो रहा है।

अलबर्टकी उम्र १९ वर्षकी है। गत वर्षसे उसे स्त्रीकासा मासिक धर्म होने लगा है और अब नियमित रूपमें होता है। उसके स्तन सुपुष्ट एवं उन्नत हैं और उनके अग्र भाग स्त्री-जैसे हैं। डाक्टरोंका कहना है कि सात वर्षमें अलबर्ट पुरुषसे सम्पूर्ण नारी बन जायगा। अलबर्टमें जिस प्रकार क्रमशः स्त्रियोचित विशिष्ट लक्षण प्रकट हो रहे हैं उनसे डाक्टरोंका उपर्युक्त अनुमान बहुत-कुछ यथार्थ प्रतीत होता है। हां, यदि किसी अज्ञात कारणसे इस विचित्र परिवर्तनकी गति सहसा रुक जाय तो बात दूसरी है।

अलबर्टके प्रारम्भिक जीवनका इतिहास भी उसकी बहन अलबर्टाके समान है। वह अपने परिवारकी सबसे कनिष्ठ सन्तान है और एक बालकके रूपमें उसका लालन-पालन हुआ। सात वर्षकी अवस्थामें उसकी एक छाती उठने लगी और चौदह वर्षकी अवस्थामें दूसरी। अलबर्टाके समान इसका एक अण्ड भी बाहर और एक कोषके भीतर है। इसकी दोनों इन्द्रियां सक्रिय हैं। अलबर्टकी प्रकृति दुर्बल एवं सहज उत्तेजनाशील नहीं है। वह १९ वर्षका एक स्वस्थ नवयुवक-सा प्रतीत होता है।

## डिक्टेटरोंकी प्राण-सङ्कटसे रक्षा

मध्य युगमें सम्राटों तथा राजवंशके पुरुषोंकी शरीर-रक्षाके लिए राज्यकी ओरसे नाना प्रकारके उपाय काममें लाये जाते थे। आधुनिक युगमें भी जिन देशोंमें गत महासमरके पूर्व राजतन्त्र प्रचलित थे तथा इस समय भी जहां सम्राटोंका अस्तित्व बना हुआ है वहां उनकी रक्षाके लिए सशस्त्र अङ्गरक्षक नियुक्त रहते हैं। किन्तु इन सबसे भी बढ़कर आधुनिक समयके डिक्टेटरोंकी प्राण-रक्षाके लिए सावधानी, सतर्कता एवं कठोर व्यवस्था काममें लायी जाती है। सच तो यह है कि इन डिक्टेटरोंको आततायियोंके आक्रमणकी आशङ्का निरन्तर बनी रहती है। किसी भी उत्सव, जलूस या फौजी कवायदके समय जब ये उपस्थित होते हैं, इनसे कुछ ही गजके फासलेपर इनके प्राणोंके ग्राहक घातक शत्रु छिपे रहते हैं जो मौका पाते ही इनपर वार कर बैठते हैं। ऐसे अवसरोंपर यदि इनकी रक्षाके लिए खुफिया पुलिसका प्रबन्ध नहीं होता, तो डिक्टेटरोंकी जिन्दगीके दिन इने-गिने ही होते।

मुसोलिनी, हिटलर, स्टालिन और कमाल पाशा—इनकी अगल-बगल हमेशा खूब सतर्क अङ्गरक्षक दलोंका होना आवश्यक है।

हिटलर जब बर्लिनके कैसरहाव होटलमें होता है उस समय उसके टेबुलसे कुछ ही गजके फासलेपर उसके कमरेके दरवाजेके पास ६ सशस्त्र अङ्गरक्षक खड़े रहते हैं। उनमें प्रत्येकके पास आटोमेटिक पिस्तौल होती है और उस द्वारसे प्रवेश करनेवाले प्रत्येक व्यक्तिकी वे अच्छी तरह देख-भाल कर लेते हैं। हिटलर जब अपने आफिसमें होता है उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लगभग एक सौ काली कमीजवाले रक्षक उसकी रक्षाके लिए तैनात रहते हैं। उनके टोप इस्पातके होते हैं और वे राइफल लिये रहते हैं। दो रक्षक सदर दरवाजेपर पहरा देते हैं। एक दल आफिसके हालमें रहता है। दो भीतरके कमरेके खिलानके नीचेके मार्गके पास रहते हैं और दो रक्षक आंगनके दरवाजेके पास। आफिसके पास तो आटोमेटिक पिस्तौल लिये हुए दलके दल रक्षक दिखाई पड़ते हैं। इन डिक्टेटरोंको अपने देशके विभिन्न स्थानोंमें भ्रमण भी करना पड़ता है। इसलिए हत्याकारियोंके भयसे ये विशेषतः वायुयानका प्रयोग करते हैं। किन्तु अन्य डिक्टेक्टरोंके समान हिटलरके वायुयानमें कोई मशीनगन नहीं होती।

हिट्लरसे बिलकुल मिलता-जुलता चेहरा होनेके कारण यह व्यक्ति हिटलरका "डबल" कहलाता है। लोग इसे अक्सर हिटलर ही समझ लेते हैं और इस प्रकार यह हिटलरको घातक आक्रमणोंसे रक्षा करता है। इसे अत्यधिक वेतन मिलता है।

हिटलर अपनी मोटरकारके सामनेवाली सीटपर ड्राइवरके पास बैठता है। पीछेकी पांच सीटोंपर पांच अङ्गरक्षक रहते हैं जो बड़ी तेजीसे गोली चला सकते हैं। उनके घुटनोंके बीच बन्दूकें और कमरबन्दसे लटकती हुई आटोमेटिक पिस्तौलें होती हैं। दोनों तरफ लोगोंकी भीड़पर वे बड़ी तीक्ष्ण दृष्टि डालते चलते हैं। ड्राइवरके पास भी आटोमेटिक पिस्तौल होती है। यदि कोई आदमी फुटपाथसे गाड़ीकी ओर आनेका दुःसाहस करता हुआ दिखाई पड़े तो वह मुश्किलसे दो गज भी बढ़ने नहीं पाता कि गोलीका शिकार बन जाता है।

रूसका डिक्टेटर स्टालिन संसारका सबसे बढ़कर सुरक्षित मनुष्य है। किसी भी सावधानसे सावधान व्यक्तिको इस बातका पता नहीं चलता कि स्टालिन कहां रहता है, सिवा इसके कि उसका वासस्थान मास्को शहरके भूलभुलैया क्रेमलिनके आसपास कहीं है। बाहरके लोगोंको यह कभी मालूम होने नहीं पाता कि स्टालिन कब और कहांकी यात्रा करता है। समाचारपत्रोंमें उसके आगमनके संवाद कभी-कभी प्रकाशित होते हैं, किन्तु प्रस्थानके कभी नहीं।

क्रेमलिन स्थानमें पहुंचना भी अत्यन्त कठिन कार्य है। उसकी दीवारोंके ऊपर सन्तरी लोग चहलकदमी करते रहते हैं और हरएक फाटकपर कड़ा पहरा रहता है। विदेशी आगन्तुकोंको कई दिन पहले ही अपने नाम दे देने पड़ते हैं। यहां आनेपर अन्दर जाने और निकलनेके समय उनकी गिनती कर ली जाती है। यहां तक कि जब खुद स्टालिन क्रेमलिनके प्रासादमें प्रवेश करता है तो उसे भी प्रवेश-पत्र दिखाना पड़ता है ताकि कोई दूसरा आदमी नकली स्टालिन बनकर चकमा न दे सके।

जब स्टालिन किसी सार्वजनिक अवसरपर उपस्थित होता है तो वह रेड स्कायरके आमने-सामने एक ऊंचे छज्जेपर खड़ा होता है। उसके अङ्गरक्षक पुलिस अफसर उसके आस पास पिस्तौल लिये हुए दल बांध कर मुस्तैद रहते हैं।

हिटलर

मुसोलिनी अन्य डिक्टेटरोंकी अपेक्षा अपने सम्बन्ध में कम सतर्क रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसीलिए उसकी हत्याके लिए अधिक बार प्रयत्न हुए हैं। कई बार उसपर गोलियां चली हैं, किन्तु सौभाग्यवश वह बाल-बाल बच गया है।

मुसोलिनीकी रक्षाके लिए ३०० पुलिसवालोंका एक विशेष दल नियुक्त है। ये सब सादी पोशाक पहनते हैं। मुसोलिनी जहां अपने परिवारके साथ रहता है और जहां उसका आफिस है, दोनों ही स्थानोंमें कड़ा पहरा रहता है।

मुसोलिनीके रक्षकोंको सबसे बड़ा भय बमसे होता है। इसके लिए उन्होंने रोमकी सड़कोंपर जितने बन्द परनाले हैं उन सबको झंझरियोंसे बन्द कर रखा है। मुसोलिनीके पास जितने पत्र, पार्सल आदि डाकसे आते हैं उन सबकी अच्छी तरह जांच कर ली जाती है ताकि उनमें कोई खतरनाक विस्फोटक वस्तु न हो। हरएक चिट्ठी और पार्सल खोलनेके बाद मुसोलिनीके हाथमें पहुंचता है।

किन्तु मुसोलिनी इन सब सतर्कताओंके होते हुए भी कभी-कभी अपने अङ्गरक्षकोंको चकमा देकर रातमें रोमकी सड़कों और गलियोंमें खलीफा हारुन रशीदका पार्ट अदा करता है। आप उसे रोम और आस्ट्रियाके बीचकी सड़कपर पूरी स्पीडमें मोटर साइकिलपर ग्रीष्म-ऋतुमें प्रतिदिन समुद्र-स्नानके लिए जाते देखेंगे। वह अपने अङ्गरक्षकों-

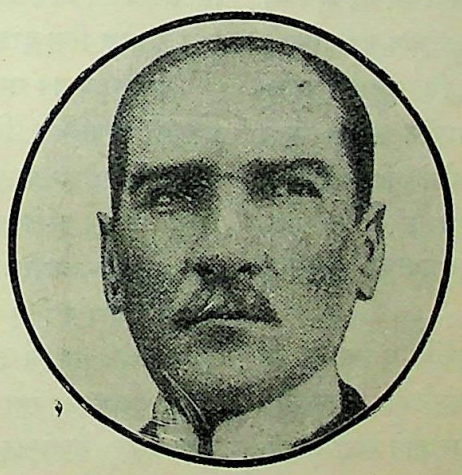

कमाल पाशा

को उस समय और भी हैरतमें डाल देता है जब कि वह किसानोंके नृत्य एवं आमोद-प्रमोदमें शामिल होकर पूरी आजादीके साथ आनन्दोपभोग करता है।

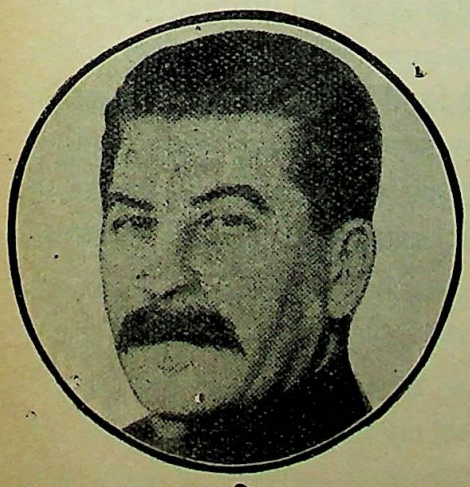

स्टालिन

तुर्कीके डिक्टेटर कमालपाशा भी सुखकी नींद नहीं सो सकते। तुर्कीकी खुफिया पुलिसको इस बातकी विशेष रूपसे शिक्षा दी जाती है कि डिक्टेटरके सम्बन्धमें जहां कहीं कुछ कानाफूसी हो, उसपर ध्यान रखे। विदेशी पर्यटकोंपर भी पुलिसकी तीव्र दृष्टि रहती है और उन्हें अपने

मुसोलिनी

सम्बन्धमें पुलिसको रिपोर्ट देनी पड़ती है।

जहां-कहीं कमालपाशा जाता है उसके साथ उसके तीन-चार अन्तरङ्ग मित्र अवश्य रहते हैं। ये सब भूतपूर्व सैनिक अफसर हैं। ये बिलकुल निर्भीक, निष्ठुर, अन्धाधुन्ध गोली चलानेवाले और सर्वदा सशस्त्र रहते हैं। इसलिए यदि कोई दुःसाहसिक आततायी कमाल पाशाकी हत्या करनेका प्रयत्न करे तो उसे उसके इन अनुरक्त सहचरोंकी लाशोंको कुचलकर ही ऐसा करना पड़ेगा।

यूरोपके डिक्टेटरोंकी प्राण-रक्षा आज इसी रूपमें हो रही है। इस प्रकार निरन्तर अङ्गरक्षकोंसे घिरे रहकर जीवन यापन करना भी कम साहसका काम नहीं है, क्योंकि इन अङ्गरक्षकोंकी उपस्थिति ही डिक्टेटरको इस बातका विश्वास दिलाती रहती है कि उसके जीवनपर बराबर खतरा बना रहता है।

## शवदाह

मनुष्यके अन्त्येष्टि-संस्कारके लिए शवदाह ही सर्वोत्तम विधि है। अग्नि-संस्कारसे देह शीघ्र भस्मीभूत हो जाती है, इसीलिए इस देशमें इस प्रथाका विशेष प्रचार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हम लोगोंकी यह धारणा है कि शवदाह केवल भारतवर्षमें ही प्रचलित है। किन्तु बात ऐसी नहीं है। अब भी एशिया और अमेरिकाके अनेक स्थानोंमें यह प्रथा प्रचलित है। शव-दाहके अनन्तर भस्मशेषको सयत्न रखनेकी विधि विभिन्न देशोंमें विभिन्न रूपोंमें प्रचलित है।

प्राचीन कालमें समस्त सभ्य देशोंमें शव-दाहकी रीति प्रचलित थी। हां, चीन, मिश्र आदि कई देशोंमें यह प्रथा प्रचलित नहीं थी। प्राचीन पारसी लोग उन्मुक्त वायुमें शवको पशु-पक्षियोंके भक्षणके लिए छोड़ देते थे। प्राचीन यूनानमें "Only suicides, unteethed children and persons struck by lightning were denied the right to be burned. अर्थात्, केवल उन्हीं मृतकोंका दाह-कर्म नहीं होता था जो आत्महत्या द्वारा या वज्रपात द्वारा मृत्युको प्राप्त होते थे। इसके सिवा ऐसे बच्चोंका भी दाह-कर्म नहीं किया जाता था जिनके दांत नहीं निकले होते थे। इससे यह प्रमाणित होता है कि यूनानमें शव-दाहकी प्रथाका काफी प्रचलन था। प्राचीन कालके यहूदी महामारी फैलनेपर उसकी छूतसे बचनेके लिए पहाड़के ऊपर शवदाह करते थे। इस समय भी स्पेन, पुर्तगाल, बर्लिन आदि देशोंके यहूदी इस प्राचीन प्रथाका अनुसरण करते हैं।

वर्तमान समयके पाश्चात्य वैज्ञानिकोंने एशियाकी इस पुरातन प्रथाको विज्ञान-सम्मत सिद्ध करनेकी चेष्टा की। शवको दफनानेके विरुद्ध मतवादका प्रचार होने लगा। पादरियोंने कहा कि कब्रके अन्दर मृतक निरापद रूपमें सो नहीं सकता। पांच या दस वर्षके बाद कब्रको खोद डालनेसे उस मृतकके ऊपर अत्याचार होता है। इससे उसकी अनन्त निद्रामें व्याघात पहुंचता है। चिकित्सकोंने यह युक्ति उपस्थित की कि शवदाह करनेसे व्याधिके फैलनेकी सम्भवना बिलकुल नहीं रह जाती। इसलिए कब्रकी अपेक्षा दाह-कर्म अधिक निरापद है। दार्शनिकोंने भी दाहकर्मकी श्रेष्ठता प्रतिपादित की। इसके फलस्वरूप यूरोप और अमेरिकामें भी सुसभ्य लोगोंमें इस मतवादका विशेष रूपमें प्रचार होने लगा।

१९ वीं शताब्दीमें यूरोपमें दाहकर्मके पक्षपातियोंने सभा-समितियां स्थापित करके इसके लिए बहुत कुछ आन्दोलन किया। इससे पहले भी १८ वीं शताब्दीके अन्तिम भागमें फ्रान्सकी सरकारके नेतृत्वमें दाहकर्मके प्रचारके लिए एक आन्दोलन चलाया गया था। किन्तु कुछ दिनके बाद ही वह आन्दोलन बन्द हो गया।

१८७४ ई० में मिलनमें एक कांग्रेस स्थापित हुई और इसके सदस्योंने सरकारकी आज्ञासे दाह-प्रथाका प्रचलन आरम्भ किया। स्वीजरलैण्डके विख्यात डा० वेगमैनने इस प्रथाकी ओर विशेष रूपसे देशवासियोंका ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने कहा—Cremation is the rational method of decomposing the dead. मृत शरीरको नष्ट करनेके लिए दाहकर्म युक्तिसङ्गत प्रणाली है।

इंगलैण्डमें जब सर हेनरी शम्पसनने जनताके सामने इस प्रश्नको उपस्थित किया तो वहांके चिकित्सकोंने इसकी वैज्ञानिक परीक्षा करके कब्रकी अपेक्षा दाहकर्मको ही श्रेष्ठ सिद्ध किया। इसके बाद १८७४ में शम्पसनके सभापतित्वमें एक शवदाह-प्रचारिणी सभा स्थापित हुई। यूरोपमें दाह-प्रथाके प्रचारके लिए यही सबसे प्राचीन समिति थी।

क्रमशः सम्पूर्ण सभ्य जगत्में इस समय इस प्रथाका प्रचार बढ़ता जा रहा है। बीसवीं शताब्दीके प्रारम्भमें ही विलायतके मैञ्चेस्टर, लिवरपूल, ग्लासगो प्रभृति स्थानोंमें श्मशान निर्मित हुए। जर्मनीमें तो इस प्रथाके प्रचारके लिए ८० समितियां स्थापित हो चुकी हैं। पेरिसमें भी एक सरकारी श्मशान crematorium निर्मित है। वहां एक समाधि-मन्दिर भी बना है जिसमें मृत व्यक्तियोंका भस्म सुरक्षित रखा जाता है। इस प्रकार क्रमशः समग्र यूरोपमें श्मशानका प्रचार आरम्भ हो गया है। बौद्ध-धर्मप्रधान जापानमें भी वर्तमान शताब्दीके प्रारम्भमें ही २२ से अधिक श्मशान बन चुके थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## भारतीय नारी

एक अंगरेज महिलाने भारतीय नारियोंके सम्बन्धमें एक अंगरेजी पत्रमें एक लेख लिखा है, जिसमें उसने भारतीय नारीके आदर्श, स्वभाव, कार्यक्षेत्र एवं उसके वर्तमान असन्तोषपर अच्छा प्रकाश डाला है। उसने लिखा है :—

भारतीय नारीका रूप अद्भुत है। उसका आदर्श निराला है और उसके जीवनका क्षेत्र कुछ ऐसा है कि पश्चिमकी महिलायें उसे समझनेमें सर्वथा असमर्थ रहेंगी। यही कारण है कि मिस मेयो उसे समझ न सकी। मिस मेयोने भारतीय नारीके सम्बन्धमें जो कुछ बुरी बातें कह डाली हैं, उनके मूलमें उसका यही अज्ञान छिपा हुआ है। हिन्दू धर्म और इस धर्मके आधारपर बने हुए हिन्दू कानूनके अनुसार हिन्दू नारी विवाहके बाद अपने पतिमें सर्वथा मिल जाती है—दोनोंकी मांस-मज्जामें पारस्परिक मेल हो जाता है और तब दो अधूरे प्राणी मिलकर एक हो जाते हैं और पत्नी अर्द्धाङ्गिनीका पद पाती है। प्रेमका यह सच्चा आदर्श है, इसे कौन इनकार करेगा? पर पश्चिमकी नारियां क्या इसकी कल्पना भी कर सकती हैं? आये दिन तलाककी बढ़ती हुई संख्या बताती है कि भारतीय नारीके आदर्शको पश्चिमकी महिलायें समझ तक नहीं सकतीं। भारतीय नारी अपने पृथक् अस्तित्वकी कल्पना तक नहीं करती। सम्पूर्ण आत्मसमर्पण, पतिके लिए सर्वस्व-त्याग और उसकी कल्याण-कामनाके लिए अपनेको मिटा देना वह अपना कर्तव्य समझती है और इस कर्तव्यका पालन वह सब समय सब तरहसे करना चाहती है। वह अपने पतिकी सेवामें दिन-रात लगी रहती है और इसके बदलेमें वह उससे कुछ भी नहीं चाहती। स्वच्छन्द वृत्तिकी लड़कियां उसकी इस मनोवृत्तिको चाहे दासता कहें, पर मैं इसे उच्च आदर्श ही कहूंगी। क्योंकि सच्चे प्रेमका यही शुभ-सन्देश है। भारतीय नारीको इन्हीं गुणोंके कारण देवीका पद प्राप्त हो गया है और इन्हींके कारण मनस्वी मनुने कहा है कि जहां नारीकी पूजा होती है, वहां देवताओंका वास होता है और जहां नारीकी उपेक्षा होती है वहां लक्ष्मी ठहर ही नहीं सकती। और भारतीय नारी तो स्वयं लक्ष्मी है—गृहलक्ष्मी उसका दूसरा नाम है।

पर यह बातें आज कुछ परिवर्तित अवस्थामें दिखाई पड़ रही हैं। भारतीय नारी जो पहले थी, आज भी वह वैसी ही है। किन्तु भारतीय पुरुष बदल गया है। वह आज अपनी गृहलक्ष्मीको लक्ष्मी नहीं मानता—वह उसे देवी भी नहीं मानता। वह मानता है उसे केवल अपनी सङ्गिनी और सङ्गिनी भी केवल अपने स्वार्थोंकी पूर्तिके लिए। भारतीय घरोंमें आज जो कलह और अशान्ति दिखाई पड़ती है, उसका यही कारण है। क्योंकि नारी नारी तो है, पर अब गृहलक्ष्मी नहीं। नारी अर्द्धाङ्गिनी थी, वह आज भी इस बातकी रक्षा करती जा रही है; पर पुरुष अर्द्धाङ्ग नहीं रह गया। बहुविवाहकी प्रणाली इसीलिए फैल गयी। पुरुषकी इस मनोवृत्तिका नारीके मानसिक विचारपर भी प्रभाव पड़े बिना न रहा और इस प्रभावका परिणाम कुछ अंशमें भारतीय नारीके वर्तमान असन्तोषमें दिखाई पड़ता है। मैं समझती हूं कि इसीके मूलमें भारतीय नारियोंकी मांगें छिपी हुई हैं। संसारकी वर्तमान प्रगतिने—जिसका झुकाव स्वार्थकी ओर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



है--भारतीय पुरुषोंको बदल डाला है, नारीके प्रति उनकी भावनाओंमें परिवर्तन ला दिया है, अतः भारतीय नारियोंके न चाहनेपर भी उनकी भावनायें बदल जायेंगी, यह स्वाभाविक है और जो स्वाभाविक है, वह रोके नहीं रुक सकता। इसीलिए भारतीय स्त्रियोंकी मांग भारतीय पुरुषोंको पूरी करनी होगी।

## पश्चिममें स्त्रियोंको अधिकार कैसे मिले?

संसारका इतिहास इस बातका साक्षी है कि संसारमें युग-युग तक जितनी पराधीनता स्त्रियोंको भोगनी पड़ी, उतनी

श्रीमती धर्मशीला लाल एम०ए० बार-एट-ला
आप सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री काशीप्रसाद जायसवालकी सुपुत्री और भारत-भरमें बैरिस्टरी पास करनेवाली पहली हिन्दू-महिला-रत्न हैं। आपने १७ वर्षकी अल्पावस्थामें ही हिन्दू-विश्वविद्यालयसे अंगरेजीमें प्रथम श्रेणीमें एम० ए० पास किया था।

और किसीको नहीं। प्राचीन कालसे ही राज्योंकी शासन-व्यवस्था इस प्रकारकी बनायी जाने लगी कि उसमें स्त्रियोंके लिए कोई स्थान ही नहीं रह गया। उन्हें सदासे पुरुषोंकी कृपापर निर्भर रहना पड़ा है। मध्य युगमें यद्यपि इस अवस्थामें कुछ सुधार हुआ, परन्तु यह सुधार केवल नाम-मात्रका ही था। यों अनेक असुविधाओं और कठिनाइयोंके रहते हुए भी कुछ नारियोंने बहुत अनोखे काम कर दिखाये, परन्तु सार्वजनिक रूपसे उन्हें प्रोत्साहन नहीं मिला। बल्कि उन्हें तो सार्वजनिक शिक्षा-क्षेत्रमें भी प्रवेश करनेकी मनाही थी। और हो भी कैसे न, जब कि नेपोलियन-जैसे पुरुष तकका कहना था कि "नारियोंके लिए सार्वजनिक शिक्षा उपयुक्त नहीं है, क्योंकि इन्हें सार्वजनिक क्षेत्रमें काम करनेकी कभी आवश्यकता नहीं है। उन्हें केवल तहजीब सीखनी चाहिए और उनका ध्यान केवल विवाहकी ओर रहना चाहिए।"

इस प्रकारके दृष्टिकोणमें आज बहुत-कुछ परिवर्तन हो चुका है, पर नारियोंकी अवस्था आज भी उतनी सुधरी नहीं है। वे आज भी पुरुषोंसे तुच्छ समझी जाती हैं और दुर्भाग्यकी बात तो यह है कि अनन्त काल तक इस प्रकारकी दुरवस्थामें रहते-रहते स्वयं स्त्रियोंमें भी अपनेको तुच्छ समझनेकी घातक मनोवृत्ति समा गयी है।

इस दुर्भाग्यपूर्ण अवस्थासे निकलनेके लिए संसारके सभी उन्नतशील देशोंकी महिलाओंने जो प्रयत्न किये हैं, उनका इतिहास बहुत ही मनोरञ्जक है। इस बातकी ओर ब्रिटेनकी नारियोंने बहुत अधिक ध्यान दिया। १९ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें उन्होंने अपने उत्थानके लिए महिला-आन्दोलन छेड़ दिया और सन् १९०० तक इसका प्रभाव समस्त यूरोप और अमेरिका तकपर पड़ा। यद्यपि इस आन्दोलनकी प्रगति बहुत तेज नहीं कही जा सकती, पर इतने दिनों तक दासत्वकी अवस्थामें रहनेवाली नारियोंसे इससे अधिक और हो ही क्या सकता था? पिछले तीस वर्षोंके इसी आन्दोलनके फलस्वरूप उक्त देशोंकी नारियोंको बहुत-कुछ अधिकार मिले। यूरोपकी व्यावसायिक क्रान्तिके बाद जब गृह-शिल्पोंका सत्यानाश हो गया, तब उनपर निर्भर रहनेवाली नारियोंपर जो आर्थिक कठिनाई पड़ी, उसके कारण उनका असन्तोष और भी बढ़ गया और इसका परिणाम यह हुआ कि आन्दोलन दिनोंदिन जोर पकड़ता गया।

ग्रेट ब्रिटेनमें १८६७ में महिलाओंने जोरदार प्रचार करनेके लिए एक समितिकी स्थापना की। उनके प्रयत्नोंसे उन्हें शिक्षा-सम्बन्धी कितनी ही सुविधायें मिल गयी थीं। अब उन्होंने मताधिकारकी मांग पेश की। इस बातको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लेकर ब्रिटेनकी नारियोंने सरकारका जबर्दस्त विरोध किया। देश-भरमें सभायें की जाने लगीं। उत्तेजक व्याख्यान दिये जाने लगे और हजारों-लाखों रुपये इस कार्यके लिए खर्च होने लगे। कितनी ही नारियोंने हंसते-हंसते सरकारके दमनका स्वागत किया। वे जेल गयीं और सब तरहके त्याग और बलिदानके लिए तैयार हुईं। उनका रुख बराबर कठोर ही होता गया और कोई ऐसा सप्ताह नहीं जाता था जिसमें एक-दो गिरजाघर या सार्वजनिक इमारत न जला दी जाती हो। इन अपराधोंके लिए उनपर जुर्माने किये जाते, परन्तु सबकी सब जेल जातीं; किसीने जुर्मानेकी रकम देनेका नाम नहीं लिया। इस आन्दोलनकी गुरुताका पता इसीसे लगाया जा सकता है कि १९१० में लगभग ५०० स्त्रियोंको जेलकी सजा हुई थी। अन्तमें उन्हें जेलोंमें अनशन तक करने पड़े किन्तु महायुद्धके छिड़ते-छिड़ते ऐसी अवस्था आ पहुंची कि पुरुषोंको झुकना पड़ा और युद्ध समाप्त होनेपर १९१८ में स्त्रियोंको मताधिकार मिल गया। इस तरह ब्रिटेनकी महिलाओंने अपने प्रयत्नों एवं त्याग और बलिदानोंसे अपने अधिकार प्राप्त किये।

अमेरिकन महिलाओंको भी अपने अधिकारोंके लिए इसी प्रकार सरकारके विरुद्ध संग्राम छेड़ना पड़ा। पहले तो उन्हें शान्तिपूर्ण उपायोंसे ही १९०० ई० में चार राष्ट्रोंमें मताधिकार मिल गया, परन्तु इतने हीसे उन्हें सन्तोष न हुआ और आन्दोलन धीरे-धीरे होता ही रहा। किन्तु १९१६ के आते-आते आन्दोलन जबर्दस्त हो गया और अशान्ति फैलने लगी। सरकारने भी दमन करना शुरू किया, परन्तु महिलाओंकी लगन सच्ची थी, अतः निर्भयता-पूर्वक उन्होंने सारी यन्त्रणाओंका सामना किया और जेल-यातनायें उन्हें डिगा न सकीं। पुरुषोंमें इससे और भी क्षोभ फैल गया और दमन-चक्र और भी जोरोंसे चलने लगा। गिरफ्तार स्त्रियोंकी संख्या बढ़ी और जेलोंमें अनशन होने लगे। इन सब बातोंको लेकर अवस्था बराबर बिगड़ती ही जा रही थी। लेकिन सरकार झुकी और १९१९ के जून महीनेमें सीनेटने महिलाओंको मताधिकार दे दिया। अगस्त १९२० में तीन चौथाई राज्यों द्वारा उसपर स्वीकृति भी मिल गयी और उसी वर्ष नवम्बर मासके चुनावमें महिलाओंने अपने इस अधिकारका सदुपयोग भी किया।

नारवे, स्वीडन, डेनमार्क, फिनलैण्ड, आइसलैण्ड और हालैण्डकी महिलाओंको अपने अधिकारोंके लिए अमेरिका और ब्रिटेनकी महिलाओंकी तरह युद्ध नहीं छेड़ना पड़ा। इन देशोंने पहले हीसे बहुत-कुछ अधिकार प्रदान कर रखा था। नारवेमें उन्हें यह अधिकार १८८६ में मिल गया था और डेनमार्कमें तो उससे भी पहले १८७२ में ही मिल गया था। फिनलैण्डमें १९०७ में स्त्रियोंको पूर्ण मताधिकार मिल गया था। इन देशोंमें स्त्रियोंको अपने अधिकारके लिए उतनी यातनायें नहीं सहनी

श्रीमती जौहिरी—आप इसी वर्ष लखनऊ-यूनिवर्सिटीकी एम० ए० की परीक्षामें सबसे ऊंचे नम्बरोंसे उतीर्ण हुई हैं।

पड़ीं; क्योंकि यहां उन्हें पूंजीपतियोंका मुकाबला नहीं करना पड़ा। परन्तु उन्हें इसके लिए जोरदार आवाज उठानी पड़ी। चुपचाप बैठे-ही-बैठे, उन्हें यह अधिकार नहीं मिल गये।

—मनोरमा गुप्त, एम० ए०

## स्त्रियां ही युद्ध रोक सकती हैं

"ठीक आजके दिन, २१ वर्ष पहले, इसी ४ अगस्तको एक विश्वव्यापी महायुद्ध छिड़ गया था और आज भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



युद्धकी विभीषिकापूर्ण काली छाया क्षितिजपर पड़ती दिखाई पड़ रही है। हमें शान्तिके लिए अपनी आत्मा सुदृढ़ कर लेनी चाहिए और संसारकी नारियोंको इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि इस महानाश-कालमें पुरुष शान्ति, सुख और वैभवको विनष्ट न कर डालें।" इन शब्दोंमें थियासोफिकल सोसायटीके प्रेसिडेण्ट डा० जी० ए० अरण्डेलने विगत ४ अगस्तको मद्रासमें लगभग २०० महिलाओंके बीचमें भाषण देते हुए कहा कि संसारमें नारियां ही युद्ध रोक सकती हैं, इसलिए उन्हें शान्ति-स्थापनाके प्रयत्नमें कुछ भी उठा न रखना चाहिए।

आगे चलकर उन्होंने कहा कि "चाहे कितने ही राष्ट्र युद्धकी तैयारीमें अपनेको सराबोर कर दें, फिर भी अगर स्त्रियां और उनकी संस्थायें चाहें तो युद्ध रोका जा सकता है और इस तरह देवियो, तुम्हीं वर्तमान सभ्यताके ऊपरसे इस काले कलङ्कके धब्बेको धो सकती हो।"

## नारियोंसे ही स्वराज्य मिलेगा

डा० अरण्डेलने अपने उक्त भाषणके सिलसिलेमें आगे चलकर कहा कि भारतका भविष्य भारतीय महिलाओंपर ही निर्भर करता है। वही भारतको पवित्र बनाये हुए हैं और उन्हींमें भारतकी सच्ची शक्ति अन्तर्हित है।

"भारतीय नारियो!" उन्होंने उनसे मार्मिक अपील करते हुए कहा कि "तुम्हारा यह महान् देश आज हजारों वर्षोंके बाद एक बार फिर संसारके महान राष्ट्रोंमें एक उच्च स्थान प्राप्त करनेके लिए जाग पड़ा है। और तुम्हारे लिए यह कितने बड़े सौभाग्यकी बात है कि तुम इसके इस नवजागृति-कालमें हो। भारतीय नारियोंकी भांति तुम्हें इस नव-जागरणके आन्दोलनका नेतृत्व करना होगा और इसमें जीवन और शक्ति भरना होगा। तुम्हारे कर्तव्यकी पुकार है कि तुम नारी जातिके उच्च आदर्शकी प्रतिष्ठा करो और तुम्हारे इस महान् ऐतिहासिक देशमें जिन नारियोंने सौभाग्यवश जन्म लिया है उन्हें तुम अपनी सच्ची लगन और कार्यसे उन्नतिके सर्वोच्च शिखरपर पहुंचा दो।"

"भारतको अगर स्वराज्य मिला, तो यह जान रखना चाहिए कि इसकी प्राप्ति पुरुषों द्वारा नहीं हो सकती। इसे तो स्त्रियां ही प्राप्त कर सकती हैं। पुरुष देशकी रक्षा कर सकते हैं, वे इसे शक्तिशाली भी बना सकते हैं और सब तरहसे इसकी भौतिक उन्नति कर सकते हैं, किन्तु भारतकी आत्मा तो भारतीय नारियां ही हैं और भारतीय नारीके आदर्श कार्यसे न केवल भारतमें, बल्कि विश्व-भरमें सुख और शान्तिकी स्थापना होगी।"

## पुरुष स्त्रियोंसे सबक सीखें

इस समय, जब कि विषैली साम्प्रदायिकता भारतकी राष्ट्रीयताका सर्वनाश करनेपर तुली हुई है, भारतीय महिलाओंके लिए यह कितने गौरवकी बात है कि वे अब भी

डा० ई० के० जानकी अम्मल (कोयम्बटूर)—आप एम-स्टर्डममें होनेवाली अन्तर्राष्ट्रीय वोटानिकल कांग्रेसमें भारतकी ओरसे प्रतिनिधि होकर जानेवाली हैं।

इस संक्रामक विषसे एकदम अछूती हैं। पुरुष जो नहीं कर सके, उसे ही भारतीय महिलायें कर दिखा रही हैं।

भारतके गले ब्रिटिश सरकार द्वारा जो विधान मढ़ा जा रहा है, उसकी चर्चा सुनते ही हिन्दुस्तानकी हिन्दू, मुसलमान और सिख-सभी जातियोंने अपने-अपने पृथक् स्वार्थोंके नामपर अपना-अपना राग अलापना शुरू कर दिया। इधर हिन्दू संयुक्त निर्वाचन-प्रणालीकी चर्चा कर रहे थे, तो उधर मुसलमान पृथक् निर्वाचन-प्रणाली-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



का राग अलापने लगे। किन्तु इन दोनों जातियोंकी स्त्रियां इस प्रकारके वितण्डावादसे दूर रहीं और अखिल भारतीय महिला सङ्घने—जिसमें भारतकी सभी जातियोंकी महिलायें सम्मिलित हैं—एक स्वरसे इस प्रकारकी साम्प्रदायिकताका विरोध किया और भारत और ब्रिटेन—दोनों ही देशोंमें घोषित कर दिया कि स्त्रियां साम्प्रदायिकताके रोगमें नहीं फंसी हैं, वे देशको मजहब और जातिसे कहीं बड़ा समझती हैं और जिस कार्यसे सारे देशकी भलाई हो, उसी—और केवल उसी कार्यका समर्थन कर सकती हैं। इसी पवित्र भावनासे जब नये विधानमें महिलाओंके लिए भी उनकी इच्छाके

युक्तप्रान्तीय कौन्सिलकी सदस्या श्रीमती के० श्रीवास्तव। आप शिक्षा-सम्बन्धी प्रसंसनीय कार्य कर रही हैं। अभी हालमें आप तीन सालके लिए लखनऊ-यूनिवर्सिटी-कोर्टकी सदस्या चुनी गयी हैं।

प्रतिकूल साम्प्रदायिकताके आधारपर प्रान्तीय और सेण्ट्रल व्यवस्थापिका सभाओंमें सीटें रिजर्व की गयीं, और इसका पता उन्हें चला तो तत्काल उन्होंने इसका विरोध किया।

अभी हालमें इसी भावी विधानपर विचार करनेके लिए अखिल भारतीय महिला सङ्घकी जो अर्द्धवार्षिक बैठक पूनेमें हुई थी, उसमें भी सरकारके इस कार्यपर असन्तोष प्रकट किया गया कि उसने महिलाओंके लिए साम्प्रदायिक आधारपर सीटें सुरक्षित कीं। उक्त बैठकके बाद कुछ प्रभावशाली हिन्दू और मुसलमान महिलाओंने अपने संयुक्त हस्ताक्षरोंसे एक विज्ञप्ति निकाली है जिसमें साफ शब्दोंमें कहा गया है कि भारतीय महिलायें संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली चाहती हैं और वे साम्प्रदायिकतासे एकदम दूर हैं। जो मुसलमान जाति संयुक्त निर्वाचनका इतना जबर्दस्त विरोध करती है उसी जातिकी प्रभावशालिनी महिला बेगम हमीद अली इसका कितना जोरदार समर्थन करती हैं, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं।

इस्तम्बुलकी अन्तर्राष्ट्रीय महिला-कानफरेन्समें भाग लेनेके बाद जब बेगम साहिबा इंगलैण्डमें थीं, तब लन्दनके प्रभावशाली पत्र 'आब्जर्वर' के प्रतिनिधिने उनसे मुलाकात की थी। उनकी बातचीतसे पता लग जायगा कि महिलायें साम्प्रदायिकतासे कितनी दूर हैं। पत्र-प्रतिनिधिने पूछा—"भावी विधानके सम्बन्धमें महिलाओंके क्या विचार हैं?"

"हमें बड़ी भारी निराशा हुई है।" बेगम साहिबाने फौरन् उत्तर दिया—"हम लोग हिन्दू अथवा मुसलमान, अथवा किसी भी धर्मके आधारपर अपना प्रतिनिधित्व नहीं चाहती थीं, हम लोग तो इसे चाहती थीं केवल भारतीयता-के आधारपर। और अगर आसाम-सरकारके इच्छानुसार उसे गैर-साम्प्रदायिक आधारपर निर्वाचनका अधिकार मिल सकता है, तो भारतीय स्त्रियोंको भी ऐसा ही अधिकार क्यों न दिया जाय?'

"लेकिन," पत्र प्रतिनिधिने पूछा, "क्या विभिन्न जाति और धर्मवाली स्त्रियोंमें समझौता हो सकता है?"

"आप ईसाई हैं और मैं मुसलमान, क्या इससे कोई अन्तर आ गया?" बेगम साहिबाने कहा।

"लेकिन हिन्दुस्तानमें....." पत्र-प्रतिनिधि कहना ही चाहता था कि उन्होंने उसकी बात बीच हीमें काटते हुए कहा, "रहने दीजिये इन पुरानी कहानियोंको। सच बात तो यह है कि किसी जगहपर किसी हिन्दू और मुसलमानमें जरा सा झगड़ा हुआ नहीं कि आपके पत्र मोटे-मोटे अक्षरों-में शीर्षक छापने लगते हैं "हिन्दुस्तानमें हिन्दू-मुसलिम दङ्गा।" लेकिन विगत कई वर्षोंमें हमारा यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि शिक्षाका प्रचार होते ही इस प्रकारके साम्प्र-दायिक सङ्घर्षोंका अन्त हो जायगा।"

इस तरह स्त्रियां साम्प्रदायिकतासे दूर रहकर उच्च राष्ट्रीयताका जो गौरवपूर्ण आदर्श उपस्थित कर रही हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उससे भारतीय हिन्दुओं, मुसलमानों तथा सभी जातियोंके पुरुषोंको सबक सीखना चाहिए।

## स्त्रियों और पुरुषोंकी समानता

स्त्रियों और पुरुषोंको समान सुविधायें और समानाधिकार दिये जायं या नहीं, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसपर युगोंसे विवाद होता आया है, लेकिन आज भी इसपर एक राय नहीं हो सकी।

कुमारी के० मथिया पवनम एम० ए०—आप लाहौरके एक कालेजमें दर्शन-शास्त्रकी अध्यापिका हैं। आप विश्व-ईसाई सम्मेलनमें सम्मिलित होनेके लिए शीघ्र ही यूरोप जा रही हैं।

मूसाने स्त्रियोंका दर्जा पुरुषोंसे नीचा माना है। किन्तु महान्-विचारक रस्किन स्त्रियों-पुरुषों दोनोंको समानाधिकार देनेका पक्षपाती था। उसके ख्यालसे प्रत्येकमें कुछ ऐसी विशेषतायें हैं जो दूसरेमें नहीं मिलतीं। पुरुष बलशाली है, उसकी इच्छा-शक्ति भी प्रबल है, उसका मस्तिष्क भी अधिक विस्तृत है; पर स्त्री सौन्दर्यकी मूर्ति है और उसमें किसी भी बातको परखनेकी ऐसी आन्तरिक शक्ति है जो पुरुषोंमें नहीं।

रूसोने तो नारीको पुरुषसे भी बढ़ा दिया है। 'नारी नेत्र है और पुरुष बाहु।' अतः एकके बिना दूसरा निरर्थक है। किन्तु रूसोके अनुसार ही नारीका कर्मक्षेत्र और उसका उत्तरदायित्व पुरुषसे कहीं अधिक है। उसपर समाजके कल्याणकी जिम्मेदारी कहीं अधिक है। उसका मातृत्व उससे बहुत उच्च है और पुरुषोंसे उसकी तुलना ही नहीं हो सकती।

मिल स्त्रियोंको अधिकार देनेका पक्षपाती था। मताधिकारपर लिखते हुए उसने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि स्त्रियां मताधिकारका उपयोग करें या न करें, परन्तु उन्हें इससे वञ्चित नहीं रखना चाहिए। कोई अगर चलना न चाहे तो इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके पैरोंमें जञ्जीर डाल दी जाय।

यह तो हुए पाश्चात्य व्यक्तियोंके विचार। प्राच्य देशोंके महापुरुषोंके विचार देखिये—

वैदिक युगमें स्त्रियोंको यथेष्ट सम्मानकी दृष्टिसे देखा जाता था, उन्हें समानाधिकार प्राप्त थे। इसलाम धर्मके पैगम्बर मुहम्मद साहबकी नजरमें स्त्रियां सम्माननीय हैं और हिन्दू कानूनके निर्माता मनु महाराजका कहना है कि स्त्रियां पूज्य हैं, यद्यपि उन्होंने उसे नैतिक दृष्टिसे ही स्वीकार किया है। अन्यथा हिन्दू कानूनमें तो स्त्रियोंके साथ बड़ा अत्याचार किया गया है।

जापानके सम्राट् मेजीने १८७१ में अपने एक भाषणमें कहा था कि "स्त्रियोंका समाजमें अभी तक कोई स्थान नहीं रहा है, परन्तु अगर वे सुसंस्कृत और सुशिक्षिता हों तो उनके प्रति हमें सम्मानका भाव रखना ही पड़ेगा।

इस प्रकार अनेक प्राचीन महापुरुषोंने समानाधिकारका समर्थन किया है और ऐसा उन्होंने उस समय किया था, जब कि स्त्रियोंकी अवस्था इतनी अच्छी नहीं थी और आज जब वे उत्तरोत्तर उन्नति करती जा रही हैं, तब तो उन्हें यह अधिकार मिलना ही चाहिए, जैसा कि सम्राट् मेजीने अपने उपर्युक्त भाषणमें कहा है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

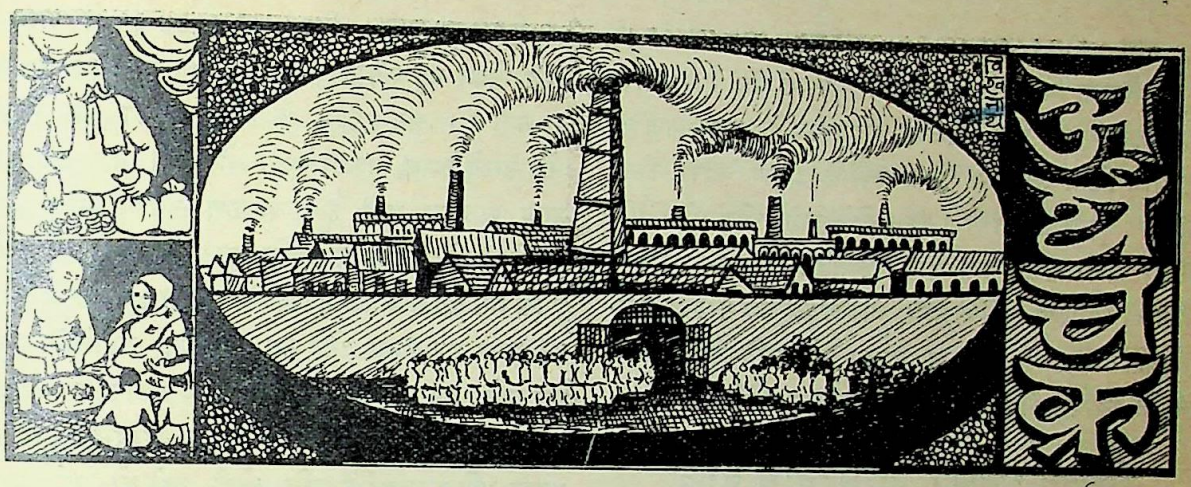


## निर्यात-वाणिज्यमें ह्रास

ओटावा-समझौतेके परिणाम-स्वरूप कुछ समयसे भारतके निर्यात-व्यापारमें जो ह्रास हो रहा है उससे देशके आर्थिक भविष्यके सम्बन्धमें आशङ्का-जनक स्थिति उत्पन्न हुए बिना नहीं रह सकती। यूरोपके विभिन्न देश जर्मनी, इटली, टर्की, रूमानिया प्रभृति भारतीय कच्चे मालके विरुद्ध जो नाना प्रकारके प्रतिबन्ध लगा रहे हैं उसका प्रत्यक्ष कारण ओटावा-समझौता ही है। ओटावा-समझौतेके अनुसार भारतने ब्रिटेन तथा साम्राज्यान्तर्गत उपनिवेशोंके साथ परस्पर सुविधा प्राप्त करनेकी वाणिज्य-नीतिको स्वीकार किया। किन्तु इससे भारत सब प्रकारसे क्षतिग्रस्त ही हो रहा है। एक तो उसने अपने विदेशी खरीदारोंको उनके मालके ऊपर विलायती मालकी अपेक्षा अधिक कर लगाकर असन्तुष्ट कर दिया, दूसरे, स्वयं इंगलैण्डके साथ भी उसका वाणिज्य-सम्बन्ध भारतीय स्वार्थकी दृष्टिसे अनुकूल नहीं हो रहा है। कारण, जहां ओटावा-समझौतेके पूर्व भारतमें जितने मूल्यका विलायती माल आता था उसकी अपेक्षा अधिक मूल्यका भारतीय माल विलायत जाता था वहां अब इसके प्रतिकूल भारतमें विलायती मालकी अधिक आमदनी होने लगी है। सन् १९३४-३५ में भारतसे जितने मूल्यका माल विलायत भेजा गया, उसकी अपेक्षा ६ करोड़ रुपये अधिक मूल्यका विलायती माल इस देशमें आया। सन् १९३४-३५ में गत वर्षकी अपेक्षा भारतीय मालकी रफ्तनीमें किस परिमाणमें ह्रास हुआ है, यह नीचेके आंकड़ोंसे स्पष्ट है :—

| | १९३३-३४ | १९३४-३५ |
|---|---|---|
| जर्मनी— | ९.८३ करोड़ रु० | ६.९८ करोड़ रु० |
| फ्रान्स— | ७.३७ ,, | ५.२५ ,, |
| अमेरिका— | १४.०७ ,, | १२.४७ ,, |
| नेदरलैण्ड— | ४.२१ ,, | २.५२ ,, |
| चीन— | ४.४४ ,, | २.६१ ,, |

सन् १९३३-३४ सालकी तुलनामें सन् १९३४-३५ में कुल ९ करोड़ रुपयेसे अधिककी कमी हुई।

अब यदि भारतके सम्पूर्ण निर्यात-वाणिज्यकी अवस्थापर विचार करें तो वह भी निराशाजनक ही कही जायगी। गत मार्च महीनेमें जो वर्ष समाप्त हुआ है उसमें गत वर्षकी अपेक्षा ११ करोड़ रुपये कम मूल्यका माल भारतसे विदेशोंको भेजा गया। इसमें सन्देह नहीं कि सन् १९३१-३२ से विश्वव्यापी आर्थिक मन्दीके कारण सभी देशोंके निर्यात-वाणिज्यमें न्यूनाधिक रूपमें ह्रास हुआ है, किन्तु इधर जहां सब देशोंकी अवस्थामें क्रमशः उन्नति हो रही है वहां भारतकी कृषिजात वस्तुओंकी रफ्तनीका ह्रास अवश्य ही आशङ्काजनक कहा जायगा। सन् १९३३-३४ की अपेक्षा सन् १९३४-३५ में कृषिजात वस्तुओंकी रफ्तनीमें जो ह्रास हुआ है उसका परिमाण मूल्यके हिसाबसे रुपयोंमें इस प्रकार है :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| चावल— | १९८५८१३ | पाट— | ६१५७९१ |
| तमाखू— | १२५७७४९ | मूंगफली— | ७१५९०३७ |
| तीसी— | १५७७५३८२ | रेंड़ी— | १८४४७४५ |

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सरसों—३९०४१९७ हरे—८०६२३१
तिल—१४६६९१८ चमड़ा—१२०८३८९६

कृषिजात वस्तुओंकी रफ्तनीके मूल्यमें यह ह्रास भारतीय किसानोंके लिए कितना शोचनीय है, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है। क्योंकि उनका सारा नकदी कारबार एकमात्र खेतीसे उत्पन्न होनेवाली चीजोंकी बिक्रीपर ही निर्भर करता है। ऐसी स्थितिमें भारत-सरकारको शीघ्र ही विभिन्न देशोंके साथ वाणिज्य-मूलक परस्पर समझौतेकी नीतिका अवलम्बन करना होगा जिससे भारतके निर्यात-व्यापारकी अवस्था पहलेके समान प्रगतिशील हो।

## विदेशी वस्त्रकी आमदनीमें वृद्धि

एक ओर जहां भारतके निर्यात-वाणिज्यमें ह्रास हो रहा है वहां दूसरी ओर उसके आयात-वाणिज्यमें वृद्धि हो रही है। सन् १९३४-३५ में सन् १९३३-३४ की अपेक्षा १७ करोड़ रुपयेसे अधिक मूल्यका माल इस देशमें बाहरसे आया। इन १७ करोड़ रुपयोंमें सबसे अधिक संख्या विदेशी कपड़े और विदेशी सूतेकी है। यह खेदकी बात है कि कई वर्ष पूर्व स्वदेशी आन्दोलनके फलस्वरूप विदेशी कपड़ेकी आमदनीमें जो क्रमशः ह्रास हो रहा था वह अब न होकर उसके विपरीत उसमें वृद्धि होने लगी है। भारतमें बाहरसे जितनी चीजें आती हैं उनमें सबसे अधिक मूल्य विदेशी वस्त्र और सूतके लिए ही हमें देना पड़ता है। इतने दिनोंसे स्वदेशी वस्त्र-व्यापारके प्रचलित होनेपर भी वस्त्र-सम्बन्धी आवश्यकताकी पूर्ति अभी तक देशी मिलोंसे नहीं हो रही है। फिर भी यदि विदेशी वस्त्रकी आमदनीमें क्रमशः ह्रास होता रहता तो हमारे लिए सन्तोषकी बात होती। किन्तु ऐसा न होकर उसमें वृद्धि हो रही है, यह अवश्य ही अत्यन्त दुःख एवं क्षोभका विषय है और इसका कारण स्वदेशीके प्रति हमारी उदासीनता तथा गभीर अनुरागके अभावके सिवा और क्या हो सकता है। सन् १९२४-२५ में भारतमें लगभग ८२ करोड़ ३२ लाख रुपयेका विदेशी कपड़ा और सूत विदेशोंसे आया। इसके बाद इस संख्यामें क्रमशः ह्रास होता गया और सन् १९३१-३२ में यह संख्या घटकर सिर्फ १९ करोड़ १५ लाखके लगभग रह गयी। इसके बाद सन् १९३२-३३ में यह संख्या बढ़कर २६ करोड़ ८२ लाख और सन् १९३३-३४ में फिर घटकर १७ करोड़ ७४ लाख ३४ हजार हो गयी। किन्तु सन् १९३४-३५ में आमदनीमें वृद्धि होकर यह संख्या २१ करोड़ ७५ लाख ६३ हजार तक हो गयी है। सन् १९३५ के मार्च तकका यह हिसाब है और इसमें रेशम, नकली रेशम और ऊनी वस्त्र तथा सूतेका मूल्य शामिल नहीं है। वर्तमान वर्षके अप्रैल और मई महीनेका जो हिसाब प्रकाशित हुआ है उससे पता चलता है कि गत वर्षके अप्रैल महीनेकी अपेक्षा इस वर्षके अप्रैलमें २३ लाख ९४ हजार और गत वर्षके मई महीनेकी तुलनामें इस वर्षके मई महीनेमें ४८ लाख ३८ हजार रुपयेसे अधिक मूल्यका कपड़ा और सूता इस देशमें बाहरसे आया। इस प्रकार यदि आमदनीमें वृद्धि होती रही तो वर्तमान वर्षके अन्त, अर्थात् १९३६ के मार्च मास तक विदेशी कपड़ेकी आमदनीमें सन् १९३४-३५ की अपेक्षा और भी ५-६ करोड़की वृद्धि हुए बिना नहीं रहेगी।

किन्तु इसके साथ ही यह सन्तोषकी बात है कि स्वदेशी मिलोंमें उत्पन्न वस्त्रोंके परिमाणमें वृद्धि हो रही है। सन् १९३२-३३ में भारतकी समस्त कपड़ेकी मिलोंमें ३६७ करोड़ गज कपड़ा तैयार हुआ। सन् १९३३-३४ में यह संख्या घटकर २९४ करोड़ ५० लाख गज हो गयी। सन् १९३४-३५ में विदेशी कपड़ेकी आमदनीमें जो वृद्धि हुई है उसका एक कारण यह भी हो सकता है। किन्तु सन् १९३४ के अप्रैलसे लेकर १९३५ के फरवरी तक ११ महीनेमें स्वदेशी मिलोंमें ३११ करोड़ ९३ लाख गज कपड़ा तैयार हुआ। इस संख्यामें मार्च मासकी संख्या जोड़नेसे अवश्य ही यह संख्या सन् १९३३-३४ की अपेक्षा अधिक होगी। स्वदेशी वस्त्र अधिक परिमाणमें उत्पन्न होनेपर भी विदेशी वस्त्रोंकी आमदनीमें जो वृद्धि हो रही है, इसका बहुत-कुछ कारण स्वदेशीके प्रति हमारे अनुरागमें शिथिलता है। विलायती वस्त्रकी आमदनीमें वृद्धि हो, इसके लिए लङ्काशायरके व्यवसायी विलायती कपड़ेपर लगनेवाले करमें कमी करवानेके लिए तुमुल आन्दोलन कर रहे हैं और नाना प्रकारसे ब्रिटिश सरकारपर दबाव डाल रहे हैं। अतएव विदेशी व्यवसायियोंके इस स्वार्थपूर्ण षड्यन्त्रका प्रतिरोध करनेमें हम तभी सफल हो सकते हैं जब कि स्वदेशीके व्रतपर अटल बने रहें और स्वदेशीके प्रति हममें आन्तरिक अनुराग हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## भारतमें शक्करका व्यवसाय

सन् १९३२ में भारतके स्वदेशी चीनीके व्यवसायको संरक्षण देनेका कानून पास हुआ। इसके बादसे तीन वर्षके अन्दर ही स्वदेशी शक्करके व्यवसायमें आशातीत उन्नति हुई है। सन् १९३१-३२ में सम्पूर्ण भारतमें शक्कर तैयार करनेवाली मिलोंकी कुल संख्या सिर्फ ३२ थी; किन्तु इसके अनन्तर, अर्थात् चीनीके व्यवसायको संरक्षण प्रदान करनेके बाद ही सन् १९३२-३३ में यह संख्या बढ़कर ५७, सन् १९३३-३४ में ११२ और सन् १९३४-३५ में १३८ हो गयी। यह अनुमान किया जाता है कि सन् १९३५-३६ में चीनीकी मिलोंकी संख्या १५४ हो जायगी जिसमें ५७ संयुक्तप्रान्त, ३६ बिहार और बाकी अन्यान्य प्रान्तोंकी होगी। इस समय भारतमें लगभग ९ लाख टन चीनीकी खपत होती है जिसमें लगभग ८ लाख टन देशी मिलोंमें तैयार होने लगी है। यह विश्वास किया जाता है कि आगामी एक-दो वर्षमें ही भारत चीनीकी आवश्यकता-पूर्तिके सम्बन्धमें स्वावलम्बी बन जायगा। किन्तु इसके साथ ही इस बात-पर भी ध्यान रखनेकी जरूरत है कि भारतके लिए अब भी विदेशी चीनीकी प्रतियोगिताका खतरा बना ही हुआ है। जैसा कि इण्डियन सुगर मिल्स एसोसियेशनकी वार्षिक सभामें श्रीयुत ब्रजमोहन बिड़लाने कहा है, हालमें जावा-से विदेशी चीनीकी आमदनीमें कुछ वृद्धि देखी जाने लगी है। काठियावाड़ तथा दक्षिण भारतके समुद्रतटवर्त्ती राज्यों-के बन्दरोंसे होकर विदेशी चीनीकी आमदनी हो रही है। श्रीयुत बिड़लाने यह भी कहा है कि भारतमें जावा चीनी-की आमदनी बड़े पैमानेपर अवैध रूपमें हो रही है। इधर हालैण्डके स्वर्णमान परित्याग करनेकी सम्भावना जैसी प्रबल हो उठी है उससे भी स्वदेशी शक्करके व्यवसायको क्षति पहुंच सकती है। कारण, जावा हालैण्डके अधीनस्थ है और यदि हालैण्डने स्वर्णमानका परित्याग कर दिया तो इससे जावाकी चीनी इस देशमें सस्ती दरपर बिकने लग जायगी। सरकारने कानून पास करके स्वदेशी चीनीके व्यवसायको सन् १९४६ तक संरक्षण प्रदान करनेका निश्चय कर लिया है, इसलिए उसे इस बातकी ओर भी ध्यान देनेकी जरूरत है कि कानूनकी मंशा व्यर्थ न होने पावे। सन् १९३४ के कानूनके अनुसार स्वदेशी चीनीपर जो ड्यूटी लगायी गयी है उसमें भी ह्रास किये जानेकी आवश्य-कता आपने सुझायी है।

स्वदेशी चीनीकी पैदावारमें वृद्धि होनेके साथ-साथ उसकी खपतका भी प्रश्न उठता है। यह तो प्रत्यक्ष ही है कि भारतमें इस समय जितनी चीनीकी खपत हो रही है उसमें वृद्धि होनेकी तब तक कोई सम्भावना नहीं है जब तक कि जनताकी आर्थिक दशामें उन्नति न हो और उसके रहन-सहनका स्टैण्डर्ड बढ़ न जाय। ऐसी स्थितिमें सहज ही यह प्रश्न उठता है कि यदि स्वदेशी मिलोंकी पैदावार इतनी काफी होने लगेगी कि उससे देशकी आवश्यकताकी पूर्ति होनेके बाद भी फाजिल बच जाय, तो उसकी खपतके लिए बाजार कहां होगा। इसलिए जब तक देशके बाहर चीनीकी खपतके लिए कोई प्रबन्ध न हो, चीनीकी पैदावार तथा चीनी-मिलोंकी संख्यामें वृद्धि चीनी-व्यवसायके लिए हानिकारक ही सिद्ध होगी।

चीनीके व्यवसायकी उन्नतिसे देशके कितने लोगोंका जीविकानिर्वाह हो रहा है यह बात भी उल्लेखनीय है। शक्कर-व्यवसायको संरक्षण मिलनेके पूर्व जावासे प्रति वर्ष इस देशमें १५ करोड़ रुपयेकी १० लाख टन चीनीकी आमदनी होती थी। किन्तु गत वर्ष जावासे सिर्फ २ लाख २३ हजार टन चीनीकी आमदनी हुई। इस हिसाबसे लगभग साढ़े बारह करोड़ रुपये देशमें ही रह जाते हैं जिनमें ७ करोड़ ६० लाख रुपया ईख पैदा करनेवाले किसानोंको, १ करोड़ ७० लाख रुपया चीनीकी मिलोंमें काम करनेवाले कर्मचारियों और मजदूरोंको तथा १ करोड़ रेलवे कम्पनियोंको भाड़ेके रूपमें मिलता है। भारतकी समस्त चीनी-मिलोंमें इस समय २ लाख मजदूर, ९ हजार इञ्जीनियर, रासायनिक, किरानी प्रभृति जीविका-निर्वाह कर रहे हैं। इस प्रकार केवल एक व्यवसायकी उन्नतिसे देशके कितने लोगोंको लाभ होता है और कितना धन विदेश जानेसे बच जाता है इसका यह ज्वलन्त दृष्टान्त है।

चीनीकी अधिक मिलें खोल तथा चीनीकी पैदा-वारमें वृद्धि करके परस्पर प्रतियोगिता करनेकी अपेक्षा चीनी-व्यवसायकी हित-दृष्टिसे इस समय यही वाञ्छनीय प्रतीत होता है कि गन्नेकी खेतीमें उन्नति की जाय जिससे उम्दा किस्मका गन्ना पैदा हो और इसके साथ ही मिल-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मालिक चीनी तैयार करनेकी प्रणालीमें अप-टू-डेट सुधार करें जिससे संरक्षणकी अवधि (सन् १९४६) समाप्त होने तक चीनी-व्यवसाय इस योग्य बन जाय कि वह बिना किसी प्रकारके संरक्षणके भी विदेशी चीनीकी सफलतापूर्वक प्रतियोगिता कर सके। इस अवधिमें चीनी-व्यवसायको सब प्रकारसे स्वावलम्बी बनानेकी बहुत बड़ी आवश्यकता है।

## भारत-जापान समझौतेका प्रथम वर्ष

सन् १९३४ के जनवरी महीनेमें भारत और जापानके बीच एक व्यापारिक समझौता हुआ था। उस समझौतेको कार्यान्वित हुए एक वर्षसे अधिक हो गया। इस समझौतेके अनुसार दोनों देशोंके बीच यह तय हुआ था कि यदि जापान एक वर्षमें भारतसे १० लाख मन रुई खरीदे तो वह एक वर्षमें ३२ करोड़ ५० लाख वर्गगज सूती कपड़ेकी रफ्तनी कर सकता है। और यदि वह १५ लाख गांठ तक रुई खरीदे तो वह अधिकसे अधिक ४० करोड़ वर्गगज तक सूती कपड़ा भारत भेज सकता है। इस सूती कपड़ेमें चार किस्मके कपड़े हैं जिनका अनुपात निश्चित कर दिया गया है।

सन् १९३४ की पहली जनवरीसे उसी सालकी ३१ वीं दिसम्बर तक भारतसे रुईकी २०,५३,५३४ गांठें जापानको भेजी गयीं। इसके अनुसार जापानको ८ जनवरी १९३४ से (जिस तारीखसे समझौता कार्यान्वित हुआ) ३१ मार्च १९३५ तक ४७७,९९७,२६० वर्गगज (अर्थात् पूरे वर्षके लिए ४० करोड़ वर्गगज और ८ जनवरी १९३५ से ३१ मार्च १९३५ तकके लिए ७७,९९७,२६० वर्गगज फाजिल) सूती कपड़ा भारत भेजनेका अधिकार था। किन्तु इस अवधिमें जापानने कुल ४०१,१६९,५७४ वर्गगज सूती कपड़ा भारत भेजा। इस प्रकार १४ महीनेमें जापानको भारतमें जितना सूती कपड़ा भेजनेका अधिकार था उसकी अपेक्षा उसने ७६,८२७,६८६ वर्गगज कम कपड़ा भेजा और भारतने ५९३,५३४ गांठें रुई अधिक भेजी जितनी खरीदनेके लिए जापान तभी बाध्य होता जब कि वह समझौतेके अनुसार निश्चित संख्यामें ४७७,९९७,२६० वर्गगज कपड़ा भेजता।

किन्तु इसके साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि कई देशी राज्योंके जहाजी बन्दरोंसे होकर भी भारतमें जापानी कपड़ेकी आमदनी होती है। इसके सिवा जापानने अभी हालमें एक स्वदेशी मिलके मालिकोंसे अवैधरूपमें जापानी कपड़ा बेचनेका जो प्रस्ताव किया था उससे भी यह सन्देह हुए बिना नहीं रहता कि जापानी व्यवसायी समझौतेके विरुद्ध अवैध रूपसे भारतमें जापानी कपड़ा भेजनेकी चेष्टा करनेसे बाज नहीं आते।

भारत जापान-समझौतेके फल-स्वरूप भारतीय रुईकी रफ्तनी जापानको अधिक परिमाणमें होने लगी है, यह पूर्व वर्षोंके आंकड़ोंके साथ तुलना करनेपर स्पष्ट हो जाता है। सन् १९३२-३३ में भारतसे १९३,६८६ टन रुईकी जापानको रफ्तनी हुई और भारतमें ५०९,५१६,०१२ वर्गगज जापानी सूती कपड़ेकी आमदनी हुई। सन् १९३३-३४ में भारतने १८२,५६५ टन रुईकी रफ्तनी की और ३००,६५२,२४८ वर्गगज जापानी कपड़ा खरीदा। सन् १९३४-३५ में भारतसे ३५९,०३३ टन रुईकी रफ्तनी हुई व भारतमें ३३५,६७१,०२० वर्गगज कपड़ेकी आमदनी हुई। इसके अनुसार भारत-जापान समझौतेके फल-स्वरूप जापानी कपड़ेकी आमदनीमें वृद्धि नहीं हुई है, किन्तु भारतसे जापानको रफ्तनी होनेवाली रुईका परिमाण प्रायः दुगुना हो गया है। अतएव प्रथम वर्षमें समझौता जिस रूपमें कार्यान्वित हुआ है उससे मालूम होता है कि यह समझौता भारतके लिए लाभदायक सिद्ध हुआ है।

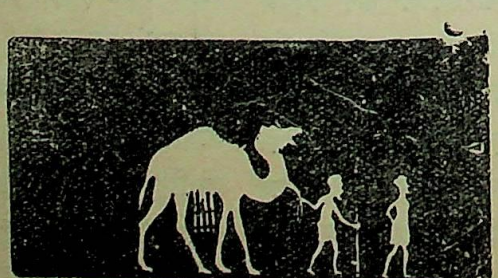

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

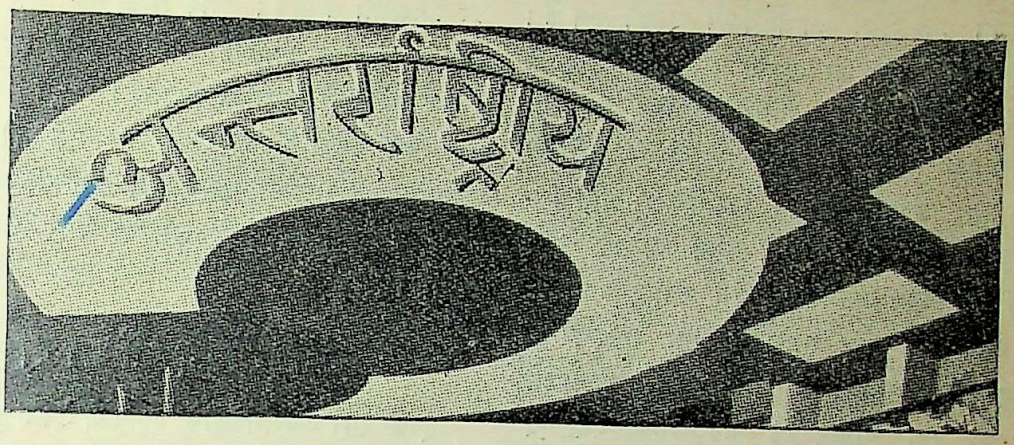


## ब्रिटेनकी विश्वासघातक नीति

पाठकोंको मालूम होगा कि अभी हालमें इंगलैण्ड और जर्मनीके बीच नौ-शक्ति-सम्बधी एक समझौता हुआ है जिसके अनुसार इंगलैण्ड और जर्मनीके बीच १०० : ३५ टनका अनुपात स्थिर हुआ है। अर्थात् यदि इंगलैण्ड आगामी वर्ष १०० टन विध्वंसक नौ-शक्ति-सम्बन्धी शस्त्रास्त्र तैयार करेगा तो जर्मनीको इसके मुकाबले ३५ टन तैयार करनेका अधिकार होगा। भविष्यमें नौ-शक्तिके सम्बन्धमें जितने सम्मेलन होंगे उनमें दोनों राष्ट्र परस्पर सम्बद्ध रहेंगे और यदि ब्रिटेनकी नौ-सेनामें वृद्धि होगी तो उस अनुपातसे जर्मनोको भी अपनी नौ-सेनामें वृद्धि करनेका अधिकार होगा। रणपोत, क्रूजर और गोताखोर जहाज रखनेका अधिकार भी जर्मनीको होगा। नौ-शक्तिके सम्बन्धमें दोनों राष्ट्रोंके बीच यह समझौता हर हिटलरकी कूटनीतिकी विजय समझा जाता है। क्योंकि इस समझौतेसे कुछ ही सप्ताह पहले इंगलैण्डने फ्रान्सके साथ मिलकर वर्सैलाईकी सन्धि भङ्ग करनेका दोषारोपण जर्मनीके ऊपर किया था और उस समय जर्मनीके विरुद्ध कुछ कार्रवाई करनेकी धमकी भी सुनी गयी थी। इसलिए यह आशा की जाती थी कि जर्मनीके साथ किसी प्रकारका समझौता करनेके पूर्व इंगलैण्ड अन्यान्य शक्तियोंसे राय-मशविरा कर लेगा। क्योंकि इस समझौतेके अनुसार जर्मनीको नौ-शक्तिके सम्बन्धमें जो अधिकार दिया गया है वह स्पष्टतया वर्सैलाईकी सन्धिके विरुद्ध है।

फ्रान्स इस समझौतेके कारण अत्यन्त विक्षुब्ध हो उठा है। फ्रान्सके पत्रोंने ब्रिटेनकी इस नीतिको विश्वासघातकता-पूर्ण एवं विघातक बतलाया है। इस सम्बन्धमें पेरिसके "Le Journal des De'bats" नामक समाचारपत्रमें एक लेखकने लिखा है :—

"ब्रिटिश सरकारकी वर्तमान नीतिमें स्पष्टताका सर्वथा अभाव दीख पड़ता है। ब्रिटिश सरकारके राजनीतिज्ञोंके दिमागमें इस समय आगामी चुनावने इस कदर घर कर लिया है कि किसी पथ-प्रदर्शक विचार द्वारा उत्प्रेरित होकर वे कार्य नहीं करते। कुछ समयसे वे एकके बाद दूसरी भूल करते जा रहे हैं और उनकी पूर्वापर नीति परस्पर-विरोधी होती है जिसे वे खुद महसूस नहीं कर रहे हैं। उनकी नीतिमें कोई स्थिरता नहीं रह गयी है। स्ट्रेसाके सम्मेलनमें अभी प्रस्ताव पास हुए थे कि उसके चन्द सप्ताह बाद उन्होंने फ्रान्स और इटलीसे सलाह लेनेकी रस्म अदा किये बिना ही जर्मनीके साथ यह विस्मयजनक समझौता कर लिया है। ब्रिटिश सरकारने जर्मनीके नौ-शक्ति-सम्बन्धी कार्यक्रमके सम्बन्धमें फ्रान्सको गुमराह करनेका प्रयत्न किया। क्योंकि इस सम्बन्धमें फ्रान्सको यथार्थ सूचना मिलनी चाहिए थी जिससे वह अपनी योजना स्थिर करता।

"इटली और अबसीनियाके मामलेमें भी ब्रिटेनने जो रुख दिखलाया है और उसके इस रुखके कारण राष्ट्रसङ्घ द्वारा इस सम्बन्धमें किसी निर्णयपर पहुंचनेमें जो विलम्ब हो रहा है उससे राष्ट्र-सङ्घकी प्रतिष्ठा बहुत-कुछ क्षुण्ण हो गयी है। ब्रिटिश सरकारका इरादा है कि फ्रान्स मजबूर होकर इटली-के विरुद्ध उसका समर्थन करे। दूसरे शब्दोंमें इसका अर्थ यह है कि इंगलैण्ड हमें इस बातके लिए बाध्य कर रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कि हम लन्दन और रोम, इन दोनोंमेंसे एकको चुन लें। किन्तु फ्रान्स ऐसा नहीं कर सकता। उसका उद्देश्य है इंगलैण्ड, फ्रान्स और इटली, इन तीनों शक्तियोंके बीच सहयोग; क्योंकि इस सहयोगकी बदौलत ही यूरोपकी शान्तिकी रक्षा बढ़ते हुए खतरोंसे की जा सकती है। यदि इंगलैण्ड प्रलोभन दिखाकर भी अपने पक्षमें लानेकी चेष्टा करे तो हमें ऐसी किसी बातमें प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए जिससे मित्र-शक्तियोंके बीच समझौता होना असम्भव हो जाय और इसका परिणाम विपज्जनक हो। हमें इंगलैण्डसे साफ-साफ कह देना चाहिए कि यदि उसकी मैत्री एवं साहाय्य हमारे लिए बहुमूल्य है, तो उसे भी जल, स्थल और आकाशमें हमारी सहयोगिताकी अधिकाधिक आवश्यकता होगी जब वह आगे चलकर जर्मनीके साथ किये गये दुर्भाग्यपूर्ण समझौतेके परिणामोंको महसूस करेगा।"

जर्मनीकी नौ-सेनामें वृद्धि होगी, केवल इसी बातसे फ्रान्स भयभीत नहीं हो उठा है, बल्कि उसके सामने इस समय एक दूसरा भी खतरा उपस्थित हो रहा है। फ्रान्सकी सरकारका यह विश्वास है कि अगर इटली अबसीनियाके झगड़ेमें फंस गया तो आस्ट्रिया सहज ही जर्मनीके चंगुलमें फंस जायगा। इसलिए फ्रान्स इस समय द्विधा-ग्रस्त हो रहा है। एक ओर इंगलैण्ड-जर्मनी-समझौता और दूसरी ओर इटली-अबसीनिया-सङ्घर्ष है। फ्रान्सकी नीति पूर्व और पश्चिममें अपने लिए शक्तिशाली सहायक ढूंढ़नेकी है। पूर्वमें तो वह रूसके सम्बन्धमें निश्चिन्त है, किन्तु पश्चिममें उसे इंगलैण्डके सम्बन्धमें उतनी निश्चिन्तता नहीं है। इसीलिए मुसोलिनीके प्रति फ्रान्स इस प्रकार मुलायम रुख दिखला रहा है।

इधर ब्रिटेनके लोकमतमें जर्मनीके प्रति परिवर्तन होनेके स्पष्ट चिह्न दीख पड़ रहे हैं। "टाइम्स" पत्रने हालमें वर्सेलाइ सन्धिकी शर्तोंको अन्याय्य बताते हुए कई लेख प्रकाशित किये हैं। प्रिन्स आव वेल्सने अपने एक हृदय-स्पर्शी भाषणमें जर्मनीके साथ मेलजोल करनेकी नीतिका जोरदार समर्थन किया है। जर्मनीमें भूतपूर्व अंगरेज सैनिकोंका धूमधामसे स्वागत किया गया है। लिबरल नेताओंके ऐसे कितने ही लेख प्रकाशित हुए हैं जिनमें इस बातपर जोर दिया गया है कि वर्सेलाईकी सन्धिकी शर्तोंमें हेर-फेर होना चाहिए। इसके सिवा एक और उल्लेखनीय बात है बैङ्क आव इंगलैण्ड और लन्दनके सराफा बाजार द्वारा जर्मनीकी आर्थिक सहायता। इन सब लक्षणोंसे ऐसा जान पड़ता है कि यूरोपके राष्ट्र एक बार फिर महायुद्धके पूर्वकी राष्ट्रोंकी गुटबन्दीकी नीतिकी ओर अग्रसर हो रहे हैं जिससे शान्तिकी समस्या और भी जटिल हो जायगी।

## क्या स्वेज नहर बन्द की जा सकती है?

इटली और अबसीनियाके झगड़ेको लेकर इस समय एक महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न उठ खड़ा हुआ है जिसपर कानूनी वादविवाद चल रहा है। प्रश्न यह है कि यदि इटली राष्ट्र-सङ्घका सदस्य होते हुए भी सङ्घके निर्णयके विरुद्ध अबसीनियाके खिलाफ युद्धकी घोषणा कर दे तो क्या राष्ट्र-सङ्घके अन्यान्य अनुगत सदस्य राष्ट्रोंको यह अधिकार होगा कि वे स्वेज नहर होकर इटलीके सब प्रकारके जहाजोंका आवागमन बन्द कर दें? इस प्रश्नपर विचार करते हुए लन्दनका "हेडवे" (राष्ट्र-सङ्घके कार्योंका समालोचक) पत्र लिखता है:—"राष्ट्र-सङ्घके विधानमें धारा नम्बर २०में कहा गया है—'सङ्घके सदस्य पृथक्-पृथक् रूपमें इस बातपर सहमत हैं कि इस विधान द्वारा आपसके सब बाध्यतामूलक कर्तव्य या समझौते रद्द समझे जायंगे जो इसकी शर्तोंके विरुद्ध हैं, और वे गम्भीरतापूर्वक यह अङ्गीकार करते हैं कि इसके बाद इस विधानकी शर्तोंके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करेंगे।' इस धाराके अनुसार राष्ट्र-सङ्घके बहुत-से समर्थकोंका—जिनमें कई ख्यातनामा राजनीतिज्ञ भी हैं—कहना है कि सङ्घ इटलीके विरुद्ध स्वेज नहरको बन्द कर सकता है। किन्तु इस प्रश्नपर एक और पहलूसे विचार किया जाता है।

"सन् १८८८ की २९ वीं अक्टूबरको कुस्तुनतुनियामें इंगलैण्ड, आस्ट्रिया, जर्मनी, स्पेन, फ्रान्स, इटली, नेदरलैण्डस्, रूस और टर्कीने स्वेज नहरके सम्बन्धमें एक समझौतेपर हस्ताक्षर किया था जिसका अभिप्राय इस बातको सुनिश्चित करना था कि स्वेज नहर 'सदा युद्ध या शान्ति-कालमें प्रत्येक देशके वाणिज्य-पोत या रणपोतके लिए अबाध रूपमें खुली रहेगी।' सन् १९०४ की ८ वीं अप्रैलको इंग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



लैण्ड और फ्रीन्सके बीच एक समझौता हुआ था जिसके अनुसार इंगलैण्डने इस बातकी घोषणा की कि वह स्वेज नहरके सम्बन्धमें जो समझौता हुआ है उसकी शर्तोंका पालन करेगा और इसके साथ ही उसने इन शर्तोंका कार्य-रूपमें परिणत किया जाना भी कबूल कर लिया।"

अब प्रश्न यह है कि क्या राष्ट्र-सङ्घकी धारा २० के अनुसार इटलीके विरुद्ध स्वेज नहर बन्द की जा सकती है?

## ब्रिटेनके प्रस्तावको इटलीने क्यों नामञ्जूर कर दिया?

इटली और अबसीनियाके सङ्घर्षको मिटानेके लिए ब्रिटिश सरकारने ब्रिटिश सोमालीलैण्डका एक भूमिखण्ड इटलीको देनेका प्रस्ताव उपस्थित किया था। किन्तु इटलीने ब्रिटेनके इस प्रस्तावको नामञ्जूर कर दिया। इटलीकी इस अस्वीकृतिके कारणोंपर प्रकाश डालते हुए रोमका "Giornale d' Italia" पत्र लिखता है:—

"ब्रिटेनके इस प्रस्तावको स्वीकृत करनेका अर्थ होता इटली और अबसीनियाके बीच जो सङ्घर्ष है उसका अन्त न होना; बल्कि उस सङ्घर्षको केवल भविष्यके लिए टाल देना। इससे अबसीनियाको ही लाभ होता; क्योंकि उसे जीलाके नवीन समुद्री मार्गसे शस्त्रास्त्र अबाध रूपमें बाहरसे मंगानेका अधिकार होता और इसके साथ-साथ वह इटलीके मुकाबलेमें एक नौशक्तिवाला राष्ट्र खड़ा हो जाता।

"जीलाके नवीन समुद्री मार्ग द्वारा इंगलैण्डको तो आर्थिक लाभ होते और इटलीके लिए वह आर्थिक खतरे-का कारण होता। सन् १९२८ की सन्धिके अनुसार इटलीने अबसीनियाको अस्सावका सामुद्रिक बन्दर मुफ्त प्रदान किया था। यहांसे एक मोटर-सड़क द्वारा अब-सीनियाके प्रदेश डेसीका सम्बन्ध स्थापित किया जाना तय हुआ था। इस समझौतेका उद्देश्य था इटली और अबसीनियाके बीच वाणिज्य-सम्बन्धमें वृद्धि। अब ब्रिटेनके प्रस्तावका अर्थ होगा केवल स्थान-परिवर्तन, जिसके अनुसार इटलीके स्वार्थके स्थानपर ब्रिटेनके स्वार्थ होंगे।

"ओगेडनका रेगिस्तान—जिसे ब्रिटेन इटलीको देना चाहता था—अबसीनियाका सबसे बढ़कर बञ्जर प्रदेश है। इसका आर्थिक मूल्य शून्यके बराबर है। इटलीके पास बहुत-सी अनुर्वर मरु-भूमि है। इसलिए वह ऐसी भूमि चाहता है जिसकी उन्नति की जा सके, न कि बञ्जर रेगिस्तान जो शत्रुओंके आक्रमणके लिए खुला रहे।

"सारांश यह कि इंगलैण्डके प्रस्तावसे न तो इटलीका वास्तविक उद्देश्य सिद्ध होता है और न उसकी आवश्यकतायें ही पूरी होती हैं। वस्तुतः ये प्रस्ताव शान्ति कायम रखनेमें कारगर नहीं हो सकते; क्योंकि इनसे इटलीको इस बातका निश्चय नहीं कराया जाता कि उसके विरुद्ध धमकियों और आक्रमणमूलक कार्योंकी पुनरावृत्ति नहीं होगी और न स्वत्वों एवं सन्धियोंका उल्लङ्घन किया जायगा, जैसा कि गत २५ वर्षोंसे अबसीनिया इटलीके साथ करता आ रहा है। इटलीको ऐसा कोई प्रदेश भी नहीं मिलता जो बासके योग्य हो, बल्कि ब्रिटेन द्वारा प्रदत्त भूमिखण्ड उसके लिए निरर्थक भूमिके रूपमें एक और भार ही सिद्ध होगा।"

## आस्ट्रियामें गृह-युद्धकी आशङ्का

आस्ट्रियाके चैन्सेलर डा० डालफसकी हत्या हुए एक वर्ष अभी बीता ही है कि आस्ट्रियामें फिर गृह-युद्धकी आशङ्का होने लगी। इस समय आस्ट्रियाकी जैसी राज-नीतिक स्थिति है उसके अनुसार वहांकी जनसंख्याका ३० सैकड़े भाग वर्तमान शुसनिग-स्ट्राहमबर्ग-सरकारका समर्थन करता है, ३० सैकड़े भाग नाजी दलका समर्थन करता है और ४० सैकड़े भाग सोशलिस्ट और कम्यूनिस्टोंका सम-र्थक है। वर्तमान सरकारके जितने विरोधी दल हैं वे सब अवैध रूपमें समाचार-पत्र प्रकाशित करते हैं और उनका प्रचार करते हैं। कम्यूनिस्ट दल बहुत-से सोशलिस्टोंको अपने पक्षमें कर रहा है। लन्दनके "डेली टेलीग्राफ" पत्रके संवाददाताने वियनासे आस्ट्रियाके विभिन्न राजनीतिक दलोंकी स्थितिके सम्बन्धमें इस प्रकार वर्णन किया है:—

कई महीनेकी उदासीनताके बाद नाजी दल फिर सिर उठा रहा है। सार प्रदेशके जर्मनीके साथ पुनर्मिलन तथा जर्मनी द्वारा वर्सेलाईकी सन्धिके प्रत्याख्यान, इन दो बातों-से यहांके नाजी दलमें नूतन उत्साहका सञ्चार हो आया है। नाजी-दलका कहना है कि हिटलरने हमें मार्ग प्रदर्शित कर दिया है। अपनी आवाज ऊंची करके तथा टेबुलपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनी बंधी मुट्ठी पटककर हिटलरने अपने विदेशी शत्रुओंको जर्मनीके प्रति सम्मानभाव प्रदर्शित करनेके लिए विवश कर दिया है। अब हम भी इन्हीं चालोंका अनुसरण करना चाहते हैं।

नाजियोंके पास इस समय शस्त्रास्त्र नहीं हैं, इसलिए वे आतङ्कवादका आश्रय ग्रहण नहीं कर सकते। उन्होंने इस समय प्रचार-कार्यकी ओर ध्यान दिया है और खूब जोरोंसे प्रचार-कार्य कर रहे हैं। यद्यपि सरकारकी उनके ऊपर कड़ी नजर रहती है, फिर भी उनका प्रचार-कार्य बहुत बड़े पैमानेपर हो रहा है।

इसी प्रकार साम्यवादी और कम्यूनिस्ट भी आपसमें एक साथ मिलकर अपने प्रचार-कार्यको सजीव रूपमें चला रहे हैं। सरकारकी दमननीतिसे हतोत्साह न होकर उनके प्रकाशन-विभागके प्रचारक इस बातका अभिमान करते हैं कि प्रजातन्त्र-शासन-विधानके पक्षमें उन्होंने फासिज्मके विरुद्ध भरसक संग्राम किया है।

वियना नगरके आसपासके औद्योगिक केन्द्रोंमें जो विशाल गृह-निर्माण-योजना कार्यरूपमें परिणत की गयी है तथा श्रमजीवियोंकी दशामें जो सुधार हुआ है उसे वे साम्यवादी नीतिके व्यावहारिक परिणाम-स्वरूप बताते हैं।

इधर नवयुवक राजकुमार आर्कड्यूक ओटोके पक्षपातियोंके राजतन्त्रकी प्रतिष्ठा करनेके प्रयत्नमें भी वृद्धि हो रही है। आस्ट्रियाकी सरकार यद्यपि हाप्सवर्ग राजवंशके प्रति सहानुभूति रखती है, फिर भी वह प्रकाश्य रूपमें राजवंशकी पुनः प्रतिष्ठाका समर्थन नहीं कर सकती। क्योंकि इससे स्वदेशमें तो नाजी और साम्यवादी दोनों ही इसके विरोधमें उत्तेजित हो उठेंगे और स्वदेशसे बाहर जर्मनी तथा लघु मित्र-राष्ट्र भी इससे विक्षुब्ध हुए बिना नहीं रह सकते।

## विश्व कम्यूनिस्ट कांग्रेस

अभी हालमें मास्कोमें संसारके विभिन्न देशोंके कम्यूनिस्ट प्रतिनिधियोंकी जो सभा हुई थी उसमें ६५ देशोंके प्रतिनिधियोंने भाग लिया था। इस अन्तर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट संस्थाका नाम कमिनटर्न है और इसीकी ओरसे यह अखिल विश्व कांग्रेस हुई थी। कांग्रेसके अधिवेशनमें इस बातपर विशेष रूपसे जोर दिया गया कि साम्राज्यवादी युद्धोंका अन्त एकमात्र श्रेणी-युद्ध द्वारा ही किया जा सकता है।

कांग्रेसमें अंगरेज प्रतिनिधि मि० कैम्पबेलने इस बातकी आवश्यकतापर जोर दिया कि राष्ट्रीयता और हिटलरकी —जो युद्धका प्रधान उद्योक्ता हो रहा है—सरकारके विरुद्ध उत्साहपूर्वक संग्राम चलाना चाहिए। मि० कैम्पबेलने यह भी कहा कि ब्रिटिश मजदूर दलने इंगलैण्डकी बुर्जुआ सरकारके साथ जर्मनी और जापानकी सामरिक योजनाओंकी मार्जना करके अपनी विशिष्टता खो दी है। ब्रिटिश कम्यूनिस्ट पार्टीने हड़ताल और भुक्खड़ोंका जलूस सङ्गठित करनेमें बेकारी और औद्योगिक मन्दीका उपयोग सफलतापूर्वक किया है। गत ६ महीनेमें ब्रिटिश कम्यूनिस्ट पार्टीके सदस्योंकी संख्यामें सैकड़े ३३ की वृद्धि हुई है।

जर्मन प्रतिनिधियोंने बताया कि किस प्रकार जर्मनीका निर्यातित और गैरकानूनी कम्यूनिस्ट दल फासिज्मके विरुद्ध अनवरत रूपसे संग्राम करता आ रहा है और अपना अस्तित्व कायम रखनेके लिए इस दलने सोशल डिमोक्रैट दलके साथ मिलकर काम करनेका निश्चय किया है। आसन्न समर-सङ्कटोंका उल्लेख करते हुए जेकोस्लोवेकियाके प्रतिनिधिने कहा कि सोवियट रूस क्षुद्र राष्ट्रोंकी राष्ट्रीय स्वाधीनताका रक्षक है। किन्तु इसके विपरीत अन्य देशोंके प्रतिनिधियोंने कहा कि फासिज्मके समान ही राष्ट्रीयता भी कम्यूनिज्मके लिए शत्रुवत् है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

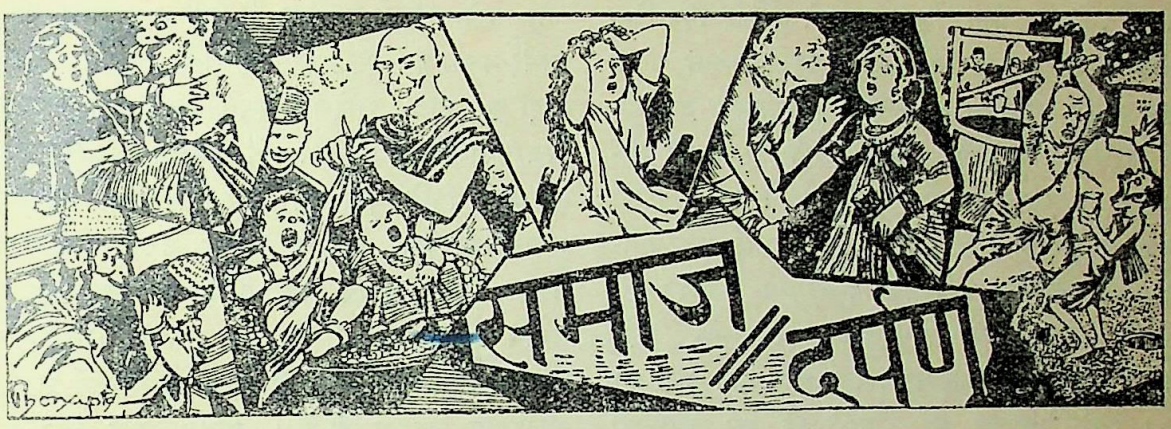


## एक विषम सामाजिक समस्या

प्राचीन कालसे लेकर अब तक सभी देशोंमें मनुष्यके सामाजिक जीवनमें प्रेमका स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। प्रणय-व्यापार, प्रणयी-प्रणयिनीमें मिलन-वियोग तथा उनका इच्छा-विरुद्ध विवाह और इसके भयङ्कर परिणाम—अपहरण तथा नैराश्यजनित आत्महत्या-जैसे काण्ड कितने ही काव्यों, नाटकों एवं उपाख्यानोंके विषय बनकर हमारे सामने उपस्थित हुए हैं और इस समय भी हो रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि आधुनिक कालमें युवक-युवतियोंके प्रणय-काण्डको लेकर जैसी शोचनीय निदारुण घटनायें हो रही हैं वैसी पहले विरल ही हुआ करती थीं। एक सर्वथा नूतन एवं अभावनीय रूपमें ये घटनायें हमारे सामने उपस्थित हो रही हैं जिससे हम इनपर विचार करते हुए हतबुद्धि एवं किंकर्तव्यविमूढ़-से बन जाते हैं। एक समय वह था जब कि आये दिन घटित होनेवाली इस प्रकारकी प्रणय-घटनाओंको हम कवियों, नाट्यकारों एवं उपन्यास-लेखकोंके उर्बर मस्तिष्ककी कपोल-कल्पनायें समझकर उन्हें वास्तविक जीवनसे सर्वथा असम्बद्ध समझते थे। किन्तु आज कोई भी व्यक्ति—जिसे ईश्वरने आंख और कान दिये हैं—इन घटनाओंसे आंखें नहीं मूंद सकता और न इनपर अज्ञानताका आवरण डाल सकता है। भले ही हम आधुनिक शिक्षा, साहित्य, थियेटर, सिनेमा अथवा अधिक वयसमें बालक-बालिकाओंके विवाहको इसके लिए दोषी ठहरायें; किन्तु कारण चाहे जो कुछ हो, हमें यह तो मानना ही पड़ेगा कि हमारे देशमें युवक-युवतियोंके प्रणय एवं परिणय-व्यापारको लेकर एक जटिल एवं नूतन समस्या उपस्थित हो रही है जिसके भयङ्कर परिणामोंके प्रतिकारके लिए हमें कोई-न-कोई समुचित उपाय करना ही होगा।

इस समय शिक्षित हिन्दू-समाजके सामाजिक रहन-सहनमें बहुत-कुछ परिवर्तन हो गया है। नगर-वासके कारण बालक-बालिकायें प्रायः एक साथ स्कूल-कालेजोंमें पढ़ते हैं, सामाजिक उत्सवोंपर मिलते-जुलते हैं और इस प्रकार उनमें परस्पर परिचय एवं घनिष्टताका भाव उदित होता है। आर्थिक तथा अन्यान्य कारणोंसे भी मध्यमवर्गमें बालक-बालिकाओंका विवाह पहलेकी अपेक्षा अधिक अवस्थामें होता है। इस प्रकारकी परिस्थितिमें पलनेवाले बालक-बालिकाओंके किशोर प्राणोंमें यदि प्रणयका बीज अंकुरित होकर उनमें परस्पर स्नेहाकर्षणकी अविच्छेद्य ग्रन्थि जोड़ दे, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है। आधुनिक युगके बालक-बालिकाओंकी इस मनोवृत्तिकी उपेक्षा करके, उनकी भावनाओंके प्रति सहानुभूतिशून्य निर्मम भाव धारण करके हम चाहते हैं कि वे उस कालके ही बने रहें जिस कालमें यौवनोद्गमसे पूर्व ही उनका विवाह कर दिया जाता था, जब कि उनके अन्तस्तलमें स्त्री-पुरुष-सम्बन्धी लिङ्ग-भेदका चैतन्य भी नहीं होने पाता था। किन्तु उस अतीत युगका अब हम किसी प्रकार भी वर्तमानके साथ सामञ्जस्य स्थापित नहीं कर सकते। इस समय तो बुद्धिमानी इसीमें है कि सामाजिक रहन-सहन तथा समाजकी आर्थिक अवस्थाओंमें जिस प्रकार द्रुतगतिसे परिवर्तन हो रहे हैं उनके अनुरूप ही हमारा नीतिज्ञान एवं सदाचार भी हो। अन्यथा समाजके सामने इस प्रकारकी दुःखद घटनायें होती ही रहेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आये दिन जो हम इस प्रकारकी घटनायें समाचारपत्रोंमें पढ़ते रहते हैं कि कहीं किसी युवकने किसी विवाहिता युवतीका मोटर या वायुयान द्वारा अपहरण किया अथवा निराश होकर दोनों या किसी एकने आत्महत्या कर ली, इनमें बहुत-से दृष्टान्त ऐसे भी तो होते हैं कि दो परिवारोंके बीच परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध होनेके कारण किसी नवयुवक-नवयुवतीमें प्रेम हो गया; किन्तु सामाजिक बन्धनोंके कारण उन दोनोंके बीच विवाह-सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका। फलतः उस नवयुवतीका विवाह किसी ऐसे पुरुषसे कर दिया गया जिसे वह अपना हृदय-दान नहीं कर सकी। इसका परिणाम यह होता है कि इस दम्पतिका गृहस्थ-जीवन सर्वथा निरानन्द एवं समवेदनाशून्य बन जाता है और दूसरी ओर निराश प्रणयी या प्रणयिनी या तो अवैध रूपसे परस्पर मिलनेकी चेष्टा करते हैं अथवा इस प्रकारके प्रयत्नोंमें दुर्नीति, सामाजिक कलङ्क तथा कानूनी भयकी बाधा समझकर और सब प्रकारसे निराश एवं निरुपाय होकर अपने जीवनका अन्त कर डालते हैं। इसे आप चाहे आधुनिक युवक-युवतियोंकी उच्छृङ्खलता कहें अथवा दुर्नीति-परायणता, असंयम कहें अथवा अविवेक; किन्तु है एक प्रकृत तथ्य। और वह तथ्य है यौवनका उच्छलित प्रेम, जिसका प्रवाह प्रत्येक तरुण हृदयमें उद्दाम गतिसे प्रवाहित होता रहता है और जो किसी प्रेमी हृदयके तनिक स्पर्शसे ही संयमका बांध तोड़कर शत-शत धाराओंमें फूट पड़ता है।

जिन लोगोंने परम्परागत सामाजिक रूढ़ियोंको हृदयसे चिपकाये रहनेके कारण अपनी विवेक-बुद्धिको सर्वथा तिलाञ्जलि नहीं दे दी है उनके लिए यह गम्भीर समस्या सर्वथा विचारणीय है कि क्या अब वह समय नहीं आ गया है कि विवाहके सम्बन्धमें हमारे जो सामाजिक आचार-विचार और नैतिक ज्ञान हैं उनपर हम नये सिरेसे विचार करते हुए उनमें समयानुकूल परिवर्तन करनेकी आवश्यकता समझें।

## सामाजिक व्याधियोंका प्रतिकार

हिन्दू जातिके सामने जितनी समस्यायें इस समय उपस्थित हो रही हैं उनमें सर्वप्रधान समस्या नारी-समाजके उत्थानको लेकर है। सर्वप्रधान समस्या इसलिए कहते हैं कि इस समस्याके साथ ही अनेकानेक समस्यायें जड़ित हैं और नारी-जातिकी प्रगतिपर ही उनका एकमात्र समाधान निर्भर करता है। यों चाहे हम नारी जातिके प्रति अपनी श्रद्धा एवं भक्ति, गृहिणीके रूपमें उनके प्रति सम्मान एवं विश्वासकी कितनी ही डींग क्यों न हांका करें, किन्तु वस्तुतः समाजकी विधि-व्यवस्थामें हमने स्त्रियोंको सर्वप्रकारके अधिकारोंसे च्युत कर रखा है और उनकी स्थिति इतनी असहाय एवं दयनीय बना दी है कि छिन्नपक्ष पक्षीके समान वे अपने गृहरूपी पिंजड़ेसे बाहर न तो जा सकती हैं और न सङ्कट-कालमें किसी प्रकारकी सामर्थ्य प्रकट करके आत्मरक्षा कर सकती हैं। समाज अपने लिए जितनी व्यवस्थायें बनाता है उनका पालन केवल नारियोंके लिए ही अनिवार्य समझा जाता है, पुरुषोंके लिए नहीं। किसी सामाजिक व्यवस्थाका उल्लङ्घन करनेपर केवल नारीके लिए ही दण्डका विधान किया गया है, पुरुषके लिए नहीं। यदि पुरुषके लिए किया भी गया है तो समाज उसकी सहज ही उपेक्षा कर देता है। इस सामाजिक व्यवस्थाके अनुसार पुरुष चाहे जिस अवस्थामें एक पत्नीके रहते हुए भी दूसरा विवाह कर सकता है। पत्नीके सर्वथा निर्दोष होनेपर भी उसके साथ परित्यक्ता-जैसा व्यवहार कर सकता है। किन्तु नारीके लिए इस प्रकारकी कोई व्यवस्था नहीं है। स्वामीकी दृष्टिमें वह दासी है, इसलिए उसकी इच्छाओंका कोई मूल्य ही नहीं है। स्वामीके दारुण अत्याचारी, व्यभिचारी एवं चरित्रभ्रष्ट होनेपर भी स्त्रीके लिए उसकी भक्तिपूर्वक सेवा करना ही एकमात्र कर्तव्य एव धर्म है। पत्नीकी मृत्यु होनेपर स्वामी अशौचके बीतते-बीतते किसी दूसरी कन्याको अपनी गृहिणी बना सकता है, उसके लिए ब्रह्मचर्य-पालनकी कोई व्यवस्था नहीं, कोई नियम नहीं, भले ही वह चालीस-पचास या साठ वर्षका हो। किन्तु पतिकी मृत्यु होनेपर उसकी विधवा पत्नीके लिए—चाहे वह दस वर्षकी बाल-विधवा ही हो—बलात् वैधव्य पालन करते हुए आजन्म ब्रह्मचारिणी बनी रहना ही एकमात्र धर्म है। क्या पति-पत्नीके इस सम्बन्धको हम किसी प्रकार भी नीति-सङ्गत कह सकते हैं? इसका तो स्पष्ट अर्थ यह है कि पत्नी पतिके लिए दासी है और वह दासीके साथ क्रीतदासके रूपमें व्यवहार करनेके लिए स्वतन्त्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिन्दू-समाजने नारी जातिको इस प्रकार दास-मनोभावापन्न बना डाला है कि उसमें सत्साहस, स्वतन्त्रता एवं आत्मरक्षाकी क्षमता बिलकुल नहीं रह गयी है। उसकी नस-नसमें भीरुता समा गयी है जिससे दुर्वृत्तों द्वारा आक्रान्त होनेपर वह अपने सहज तेज एवं आत्मबल द्वारा अपने शीलकी रक्षा करनेमें अपनेको असमर्थ पाती है। नारी जातिकी स्वतन्त्रता हरण करके हमने उसकी सहज तेजस्विता एकबारगी नष्ट कर दी है—वह तेजस्विता, जिसके बलपर वह क्रुद्ध सिंहनीकी नाईं अपने ऊपर कुदृष्टि डालनेवाले लम्पट पुरुषकी ओर एक बार दृष्टिपात करके ही उसके भीरु हृदयमें कम्पन पैदा कर सकती है, उसकी सारी पापवासनाओंको क्षण-भरमें ही विलीन कर सकती है। यदि हमारी स्त्रियोंमें साहस एवं तेज होता तो असहाय अबलाओंकी भांति आज हम आततायियों द्वारा उनका इस प्रकार अपहरण होते नहीं देखते और न स्वयं कापुरुष बनकर आत्मग्लानि एवं लज्जाके घूंट पीते रहते। मातृजातिको इस प्रकार भीरु, दासमनोवृत्ति-सम्पन्न एवं परवश बना देनेके कारण ही आज सम्पूर्ण जाति साहस एवं बलविक्रमविहीन बन गयी है और सारा समाज नाना प्रकारकी व्याधियोंसे ग्रस्त होकर हीनबल एवं क्षयिष्णु हो रहा है।

## मूर्खतापूर्ण बहिष्कार

हिन्दू-समाजमें सवर्ण कहे जानेवाले हिन्दुओंने अपने जिन लाखों-करोड़ों बन्धुओंको समाजके अन्दर मानवताके सम्पूर्ण अधिकारोंसे बलात् वञ्चित कर रखा है वे आज अपने उन निर्यातित, लाञ्छित एवं शृङ्खलित बन्धुओंकी जागृति, उनके चैतन्य तथा आत्मबोधपर बौखला उठे हैं और हतबुद्धि होकर उनके प्रति युक्ति, तर्क, सहृदयता एवं मनुष्यताके सर्वथा विपरीत आचरण करने लगे हैं। चूंकि समाजके कुछ सहृदय व्यक्ति हरिजनोंको समाजमें उचित स्थान दिलवानेका प्रयत्न करते हैं, इसलिए हरिजनोंके विरुद्ध अपना रोष प्रकट करनेके लिए सवर्ण हिन्दू उनका सामाजिक बहिष्कार तथा अन्य प्रकारसे उन्हें विवश करनेकी चेष्टा करते हैं। गुजरात प्रान्तके कई स्थानोंमें जो आज सवर्ण हिन्दुओंकी ओरसे हरिजनोंको निर्यातित किया जा रहा है उसका कारण यही है कि वहांके हरिजन बालक स्थानीय पाठशालाओंमें बिना किसी बाधा-विघ्नके भर्ती किये जा रहे हैं। बस, हरिजनोंका यही 'अपराध' धर्मके इन ठेकेदारोंकी दृष्टिमें इतना गुरुतर प्रतीत हो रहा है कि इसके दण्डस्वरूप इन्होंने स्थानीय हरिजनोंके लिए खाद्यपदार्थोंका मिलना दुष्कर कर दिया है, उनके घरोंको लूटा है तथा ग्रामके अन्दर उनके मवेशियोंको चरने नहीं देते। इस प्रकार गुजरात प्रान्तके अहमदाबाद और खेड़ा जिलेके कई ग्रामोंमें सवर्ण हिन्दुओंकी ओरसे हरिजनोंपर उत्पीड़न हो रहे हैं, जिससे वे विवश होकर अपनी आत्मोन्नतिके लिए उपाय करना छोड़ दें। इसका अर्थ यह हुआ कि उन स्थानोंके सवर्ण हिन्दू यह नहीं चाहते कि हरिजन बालक शिक्षा प्राप्त करके मनुष्य बनें, उनमें मनुष्यताके भाव जाग्रत हों तथा उन्हें भी आत्मोन्नतिके लिए वे सब सुविधायें प्राप्त हों जिनसे वे अन्यायपूर्वक रहित कर दिये गये हैं। किन्तु सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनोंके बीच यह संग्राम ऐसा है कि इसमें किसी प्रकारका समझौता होना ही नहीं चाहिए और यह अन्त तक लड़ा जाना चाहिए। क्योंकि इसमें नीति, न्याय, युक्ति एवं मनुष्योचित सहृदयता हरिजनोंके पक्षमें है, अतएव उनकी विजय सुनिश्चित है। उक्त ग्रामके हरिजनोंको बाहरकी संस्थाओं द्वारा इस कार्यमें पूर्ण सहायता मिलनी चाहिए जिससे वे सामाजिक बहिष्कारसे विचलित न होकर अपने सङ्कल्पपर दृढ़ बने रहें। यदि हरिजन अन्त तक अपने सङ्कल्पपर अविचलित बने रहेंगे तो अन्ततः एक दिन ऐसा भी आयेगा जब कि उनपर अत्याचार करनेवाले अपनी विवेकशून्यता एवं हृदयहीनतापर स्वयं लज्जित होकर अपनी कुकृतियोंपर पश्चात्ताप करेंगे। इसके साथ ही जो लोग आज इस प्रकार सामाजिल बहिष्कारकी दुधारी तलवार लेकर मूर्खतापूर्ण खेल खेल रहे हैं उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि बहिष्कारका यह अस्त्र हरिजनोंके लिए भी उपलब्ध है और इसका प्रयोग वे अपने ऊपर अत्याचार करनेवालोंके विरुद्ध और भी सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

---



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## हिन्दी गद्यशैलीकार बाबू प्रेमचन्द

श्री प्रेमचन्दका साहित्यिक क्षेत्र निश्चित है। उन्होंने मर्मस्पर्शी कहानियां और सुन्दर उपन्यास लिखकर हिन्दीकी जो सेवा की है वह अनुपम और अतुलनीय है। प्रेमचन्दजीने जितना अकेले लिखा है उतना कई उपन्यासकार मिलकर भी नहीं लिख सके। उत्कर्षकी दृष्टिसे और विशदताकी दृष्टिसे प्रेमचन्द हिन्दीके सर्वश्रेष्ठ कहानी और उपन्यास-लेखक हैं। इनकी कृतियोंको अन्य भाषाओंमें अनुवादित होनेका सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। इधर इनके कुछ नाटक भी क्षेत्रमें आये हैं। कुछ लोगोंका कथन है कि उनमें प्रेमचन्दको सफलता नहीं मिली। हम इस कथनसे पूर्ण-रूपसे सहमत नहीं।

प्रेमचन्दजीके उपन्यास हिन्दीकी स्थायी सम्पत्ति हैं। आप हिन्दीके प्रथम उत्कृष्ट मौलिक उपन्यास-लेखक हैं। वैसे तो भारतेन्दुजीके दिनोंमें ही उपन्यास-रचना आरम्भ हो गयी थी। लाला श्रीनिवासदासको 'परीक्षा-गुरु' लिखे पूरी एक आयु समाप्त हो गयी। "सैकड़ों अनुवाद हुए और बीसियों तिलस्मी और अय्यारीके पिटारे खुले, किन्तु जो नामको सार्थक बनानेवाली वस्तु आपने भेंट की उसकी समता पहले तो क्या, आज भी किसीमें करनेकी क्षमता नहीं है। प्रेमचन्दजीकी रचनाओंके समक्ष पहलेके उपन्यास नसरके ठूंठ जान पड़ते हैं। कथानक, भाषा, भाव, चरित्र-चित्रण आदि सभी बातोंमें आपके उपन्यास बेजोड़ ठहरते हैं। आपका चित्रण स्वाभाविक, हृदयग्राही और भाषाभिव्यञ्जन आत्माके अन्तस्तल तकके मनोविकारोंको मथकर निकाला हुआ नवनीत है।" मनुष्य-जीवनकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभूतिका मनोवैज्ञानिक चित्र आप इनके बांए हाथसे खिंचवा लीजिये। इनके तत्त्व-निदर्शनमें हमें कलाका परिपाक मिलता है और मानवताकी तह तक पहुंचनेमें भावुक दार्शनिकता। लेखनीकी इसी विभूतिके बलपर आपने औपन्यासिक जगत्में जो स्थान प्राप्त किया है वह स्थायी और अक्षुण्ण बोध होता है।

एक गांवके सजीव वर्णनमें कैसी जिन्दा-शैलीका आश्रय लिया गया है। बीच-बीचमें व्यङ्गकी ध्वनि भी सङ्केत की गयी है। जन-समूहका कैसा जीता-जागता मनोभाव है उसका भी चित्रण इसी मुहावरेदार गाथामें देखिये—

"दुनिया सोती थी, पर दुनियाकी जीभ जागती थी। सवेरे ही देखिये तो बालक, वृद्ध सबके मुंहसे यही बात सुनायी देती थी। जिसे देखिये, वही पण्डितजीके इस व्यवहारपर टीका-टिप्पणी करता था। निन्दाकी बौछारें हो रही थीं, मानो संसारसे अब पापका पाप कट गया। पानीको दूधके नामसे बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरनेवाला अधिकारी-वर्ग, रेलमें बिना टिकट सफर करनेवाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज बनानेवाले सेठ और साहूकार, सबके सब देवताओंकी भांति गर्दनें हिला रहे थे।"

प्रकृति-वर्णनकी शब्द-योजना देखिये—

"वही अमावस्याकी रात्रि थी। स्वर्गीय दीपक भी धुंधले हो चले थे। उनकी यात्रा सूर्यनारायणके आनेकी सूचना दे रही थी।"

दरिद्रताके चित्रणमें अनात्मीयताके साथ रागात्मकताका कैसा समन्वय है —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



"प्रातःकाल महाशय प्रवीणने बीस दफा उबाली हुई चायका प्याला तैयार किया और बिना शक्कर और दूधके पी गये। यही उनका नाश्ता था। महीनोंसे मीठी, दूधिया चाय न मिली थी। दूध और शक्कर उनके लिए जीवनके आवश्यक पदार्थोंमें न थी। घरमें गये जरूर कि पत्नीको जगाकर पैसे मांगें, पर उसे फटे-मैले लिहाफमें निद्रा-मग्न देखकर जगानेकी इच्छा न हुई। सोचा, शायद मारे सर्दीके बेचारीको रात-भर नींद न आयी होगी, इस वक्त जाकर आंख लगी है। कच्ची नींद जगा देना उचित न था। चुपकेसे चले आये।"

इस वर्णनमें अभिव्यञ्जनकी उछल-कूद नहीं है, परन्तु निराश्रयताकी सादगी है।

'सात्विक' भावोंके वर्णनमें भी उनका शब्दकोष भरा-पूरा और वेगवान है। एक उदाहरण देखिये—

"सिर पकड़कर वहीं बैठ गया, उसकी आंखें सुर्ख हो गयीं, गरदनकी नसें तन गयीं, मुखपर अलौकिक तेजस्विता-की आभा दिखाई दी। नथने फड़कने लगे। ऐसा मालूम होता था कि उसके मनमें भीषण द्वन्द्व हो रहा है और वह समस्त विचार-शक्तिसे अब अपने मनोभावोंको दबा रहा है। दो-तीन मिनट तक वह इसी उग्र अवस्थामें बैठा धरतीकी ओर ताकता रहा। अन्तको अवरुद्ध कण्ठसे बोला—नहीं, नहीं, शरणागतकी रक्षा करनी चाहिए। आह जालिम! तू जानता है मैं कौन हूं? मैं उसी युवकका अभागा पिता हूं जिसकी आज तूने इतनी निर्दयतासे हत्या की है। तू जानता है तूने मुझपर कितना बड़ा अत्याचार किया है? तूने मेरे खानदानका निशान मिटा दिया है, मेरा चिराग गुल कर दिया।"

उर्दूकी रवानी इनके कथनोपकथनको सजीव बनाये रहती है। कथानकमें प्रसङ्ग-बद्धता और विषयको मोड़ देनेमें स्वाभाविकता और चातुरी रहती है। पाठकोंको एक उलझनमें डालकर भी उनका कौतूहल आपकी मुट्ठीमें बन्द रहता है। प्रायः इनके वाक्य आशयकी ओर सङ्केत करके ही शान्त हो जाते हैं, जिससे कि प्रसङ्गमें एक विचित्र सुन्दरता आ जाती है। चार-छः वाक्योंके बाद एक मर्म-भेदिनी उक्ति गूंथ देना आपकी विशेषता है। यही नहीं, व्यङ्गमें आपकी फब्तियां गजब ढाती हैं। मुसलिम संस्कृतिसे आप विशेष आकृष्ट दिखाई देते हैं। सम्भवतः यही कारण है कि इसलामके धार्मिक कृत्य, सैद्धान्तिक कर्मों आदिपर आपके विचार सहानुभूतिसूचक और सुन्दर हैं। आपका लिखा कर्बला नाटक इसकी पुष्टि करता है।

आपकी लेखनीका सम्मान बहुधा यथार्थवादकी ही ओर रहता है। आपके इतिवृत्तात्मक कथानकोंमें विचित्रता अथवा परम चमत्कार भले ही न हो, किन्तु उनमें विश्वकी गम्भीर दार्शनिक अनुभूति रहती है। इस दृष्टिसे उनकी दृष्टिमें भी मर्म है। आपके लिखे उपन्यासोंकी संख्या शायद मैथिलीशरणजीकी काव्य-कृतियोंसे भी अधिक होगी। दर्जनों उपन्यासोंके साथ-साथ, जिनके नाम किसी भी इतिहास-ग्रन्थमें ढूंढ़े जा सकते हैं, आपने सैकड़ों कहानियां लिखी होंगी। एक सफल कहानीकारके लिए जो संसारका विस्तृत ज्ञान अपेक्षित है वह आपमें प्रचुर मात्रामें विद्यमान है। एक ओर आप दीन समाजमें जीर्ण वस्त्रोंसे शरीर ढकनेवाली मानवताका चित्र अङ्कित करते हैं जिससे हृदयमें करुणाका उद्रेक होता है, तो अन्यत्र सत्ताधारी धनिकोंका निर्दय व्यापार हमें क्षुब्ध कर देता है। जिस सरलतासे आप ग्राम्य जीवन खींचते हैं उसी खूबीसे सभ्य नागरिकोंका राग और द्वेष वर्णन करते हैं।

मौलिक ग्रन्थोंके अतिरिक्त आपने गाल्सवर्दीके कई अंगरेजी नाटकोंका तथा अन्य फ्रेञ्च उपन्यासोंका हिन्दी अनुवाद किया है। किन्तु आपकी साहित्यिक प्रतिष्ठामें इन अनुवादित पुस्तकोंका विशेष योग नहीं समझा जाता। आप बड़े सहृदय व्यक्ति हैं, बेचारे फर्मायशोंके मारे परेशान रहा करते हैं। यही कारण है कि आपकी कुछ कृतियां फर्मायशी उपज होनेके कारण आपके नामको सार्थक बनानेवाली नहीं हुई हैं। उनमें बहुत प्रकारके दोष हैं। उप-देशकके मञ्चपर बैठकर भी कभी-कभी वे कहानी लिखने लगते हैं। आपकी कहानियोंमें विशेषता है। बहुधा यह देखा गया है कि भावात्मक शैलीके लेखकोंके अभिव्यञ्जनमें कुछ दुरूहता रहती है, अस्पष्टता और क्रमहीनता आ जाती है, परन्तु यह बात प्रेमचन्दमें बिलकुल नहीं है।

मनुष्यके उत्थान-पतनका मनोवैज्ञानिक और सजीव चित्र आप जिस मार्मिक शैलीसे व्यञ्जित करते हैं, उसकी झांकी किसी भी अच्छी कहानीमें यथेष्ट मात्रामें मिलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रेमचन्दजीकी कहानियां एक प्रौढ़ युगकी सामग्री हैं। वर्तमान कहानी-प्रगतिसे भी वे मेल खा जाती हैं और वे इतनी पिछड़ी हुई नहीं हैं जैसा कि कुछ लोग समझने लगे हैं। यह अवश्य है कि अपनी आयुके युगधर्मका एक स्वाभाविक आवरण उनपर रहता है। यही कारण है कि सुदृढ़ और सुस्वीकृत नैतिक आदर्शोंको सन्दिग्ध कर देनेवाली विप्लवकारिणी वृत्तिका उनकी आख्यायिकाओंमें नितान्त अभाव है। वे आर्यसमाजी हैं, विधवा-विवाहके पक्षपाती हैं, बाल-विवाहके प्रतिकूल हैं। वे अपने ढङ्गके सुधारक हैं, परन्तु वह सुधार लोकधर्मकी एक निश्चित स्वीकृत भित्तिपर आश्रित है। जीवनके सारे पहलुओंको हिलता हुआ देखना, सारे आदेशोंको सन्देह-भरी दृष्टिसे समीक्षा करना, सम्पूर्ण पूरेपनेमें नितान्त अपूर्णता समझना, परमतामें कमी अनुभव करना इस युगकी चिन्तनाकी विशेषता है। इतनी हद तक प्रेमचन्द युगका साथ नहीं दे सकते। उनकी कृतियोंमें यही कमी है और यही उनका पिछड़ापन है।

—प्रो० सद्गुरुशरण अवस्थी, एम० ए०

* * * *

नामालेखा और मुनीबी। लेखक—श्रीयुत कस्तूरमल बांठिया, बी० काम; प्रकाशक—बांठिया एण्ड कम्पनी, लिमिटेड, कचहरी रोड, अजमेर; पृष्ठसंख्या ६७०, सजिल्द मूल्य ६)

श्री कस्तूरमल बांठिया "हिन्दी बही-खाता", "कम्पनी व्यापार प्रवेशिका" तथा इसी प्रकारकी और कई उपयोगी पुस्तकें लिखकर पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। आप ही की लेखनीसे प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित हुई है जो हिन्दीमें अपने ढङ्गकी अद्वितीय है। अंगरेजीमें अकाउण्टेन्सीपर कितनी ही पुस्तकें हैं; किन्तु केवल हिन्दी जाननेवालोंके लिए अब तक इस प्रकारकी कोई भी प्रामाणिक पुस्तक उपलब्ध नहीं थी जिसमें देशी और विदेशी बही-खाता-पद्धति और मुनीबीपर इस प्रकार विशद रूपमें प्रकाश डाला गया हो। व्यापारी शिक्षासे सम्बन्ध रखनेवाले प्रत्येक विषयका इस पुस्तकमें समावेश किया गया है और जटिलसे जटिल विषयको बड़े ही सरल एवं सुबोध ढङ्गसे समझानेकी चेष्टा की गयी है। भिन्न-भिन्न व्यापारोंके हिसाब, साझेका सङ्गठन और कानून, दिवालियोंके हिसाब, चलानीके इतिहास, इनकम टैक्सके हिसाब, बीमा कम्पनियोंके हिसाब, रोकड़बही, जमा और बिक्री बही इत्यादि इस पुस्तकके अनेकानेक विषयोंमेंसे हैं जिनसे पाठकोंको इसकी उपयोगिताकी बानगी मिल सकती है।

इस समय देशमें व्यापारिक शिक्षाकी जिस क्रमसे वृद्धि हो रही है और लोग इस विषयके महत्त्वको समझने लगे हैं उसे देखते हुए यह निःसङ्कोच कहा जा सकता है कि जिन शिक्षण संस्थाओंमें हिन्दीके माध्यम द्वारा शिक्षा दी जानेका प्रबन्ध है उनके लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी और इसके अध्ययनसे छात्रोंको नामालेखा और मुनीबी की देशी-विदेशी प्रणालियोंका यथेष्ट ज्ञान सहजमें ही प्राप्त हो सकता है। इस पुस्तकके प्रणयनसे हिन्दीमें इस विषयके एक बड़े अभावकी पूर्ति हुई है और इसके लिए इसके विद्वान् अनुभवी लेखक बधाईके पात्र हैं। पुस्तक मोटे कागजपर साफ-सुथरे ढङ्गसे छपी है।

जाट-इतिहास। लेखक—ठाकुर देशराज; प्रकाशक—श्री ब्रजेन्द्र साहित्य समिति, आगरा। मूल्य ५), राज-संस्करण २५), पृष्ठसंख्या ७५०, सजिल्द।

इस बृहत् पुस्तकमें जाट जातिके प्राचीन, मध्यकालीन एवं अर्वाचीन इतिहाससे सम्बन्ध रखनेवाले प्रायः प्रत्येक विषयपर साङ्गोपाङ्ग रूपमें प्रकाश डाला गया है। इस दृष्टिसे इसे जाट जातिके इतिहासके जिज्ञासुओंके लिए एक प्रकारका विश्वकोष ही कह सकते हैं। जाटोंका उद्गम, उनकी प्राचीन कालीन स्थिति, उनका गौरवशाली अतीत, देश-विदेशोंमें उनके साम्राज्य-स्थापन, विभिन्न प्रान्तोंके जाट राज्य, उनकी वर्तमान स्थिति एवं कार्यकलापोंका विशद विवेचन किया गया है। जाट जातिके सम्बन्धमें विदेशी इतिहास-लेखकोंने जो भ्रान्त कल्पनायें की हैं उनका लेखकने काफी खोजके साथ युक्तियों एवं तर्कोंके आधारपर खण्डन किया है। विदेशोंमें जाटोंके साम्राज्य-स्थापनके सम्बन्धमें जो प्रमाण उपस्थित किये गये हैं उनमें कुछ हमें लेखककी कष्ट-कल्पना-मात्र प्रतीत होते हैं। ग्रन्थमें उल्लिखित इस प्रकारके समस्त प्रमाणोंकी ऐतिहासिकता भले ही सन्दिग्ध हो; किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इनसे लेखकके सुगभीर चिन्तन एवं अन्वेषणका परिचय मिलता है। पुस्तकके प्रारम्भमें सृष्टि-प्रकरणमें बहुत-सी ऐसी बातें लिखी गयी हैं जो हमें विषय-प्रतिपादनकी दृष्टिसे अप्रासङ्गिक-सी जंचती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसमें सन्देह नहीं कि इस पुस्तकके लेखक महोदयने जाट जातिका यह विस्तृत इतिहास लिखकर प्रशंसनीय प्रयत्न किया है और हमें आशा है कि जिस जाट जातिको लक्ष्य करके यह पुस्तक लिखी गयी है उसे इस पुस्तकके पारायणसे पर्याप्त उद्बोधन एवं प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

"भारतीय जागृति।" लेखक—श्री भगवानदास केला, मूल्य १।); "भारतीय नागरिक और उनकी उन्नतिके उपाय।" लेखक—वही; मूल्य ॥); "हिन्दीमें अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य।" लेखक—सर्वश्री दयाशङ्कर दुबे और भगवानदास केला, मूल्य ॥।)। तीनों पुस्तकोंके प्रकाशक—व्यवस्थापक, भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन।

श्रीयुत भगवानदासजी केला हिन्दीमें ठोस एवं उपयोगी साहित्यकी सृष्टि करके मातृभाषाकी जो मूक निःस्वार्थ सेवा कर रहे हैं वह सर्वथा प्रशंसनीय है। इस प्रकारकी पुस्तकोंके प्रकाशनमें आपको आर्थिक क्षति भी सहन करनी पड़ रही है, फिर भी आप अपने इस साहित्यिक व्रतको अविचलित भावसे निभाते जा रहे हैं।

"भारतीय जागृति" पुस्तकमें लेखकने भारतकी आधुनिक परिस्थितिपर प्रकाश डालते हुए धर्म, समाज, शिक्षा, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान, राजनीति आदि विषयोंकी प्रगतिका विवेचन किया है। यह विवेचन शिक्षाप्रद होनेके साथ-साथ काफी विचारोत्तेजक भी है और पाठकोंके लिए इसमें स्फूर्ति एवं उत्साह प्रदान करनेकी काफी सामग्री है। पुस्तक उपयोगी एवं उपादेय है।

"भारतीय नागरिक और उनकी उन्नतिके उपाय" पुस्तकमें समाजकी विभिन्न श्रेणियों और पेशोंके नागरिकोंके कर्तव्य, अधिकार, उनकी वर्तमान परिस्थिति तथा उसमें सुधारके उपाय सुझाये गये हैं। इस पुस्तकको हमारे वर्तमान नागरिक जीवनका दर्पण समझना चाहिए जिसमें हम समाजके विभिन्न अङ्गोंके यथार्थ स्वरूपको प्रतिफलित देख सकते हैं। प्रत्येक श्रेणीके पाठक इस पुस्तकसे लाभ उठा सकते हैं।

"हिन्दीमें अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य" इस पुस्तकमें अर्थशास्त्र और राजनीतिपर अब तक हिन्दीमें जितनी पुस्तक-पुस्तिकायें प्रकाशित हुई हैं उन सबका संक्षेपमें परिचय दिया गया है जिससे हमें अपने साहित्यके एक महत्त्वपूर्ण अङ्गकी प्रगति तथा न्यूनताओंका पता चलता है। हिन्दीमें अर्थशास्त्र और राजनीति-सम्बन्धी साहित्यके जिज्ञासुओं और इन विषयोंके अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियोंके लिए यह पुस्तक कामकी सिद्ध हो सकती है।

सचित्र कृषि शास्त्र। लेखक—श्री रामचन्द्र अरोड़ा, बी० एस-सी० ए० जी०; प्रकाशक—दि यूनिक लिटरेचर पब्लिशिङ्ग हाउस, अतरौली, अलीगढ़; पृष्ठसंख्या १९४, मूल्य १)

प्रस्तुत पुस्तकमें लेखकने कृषि-सम्बन्धी प्रायः सभी बातोंपर अच्छी तरह प्रकाश डाला है। भूमि, बीज, जुताई, बोआई, फसल आदिके विषयमें लेखकने बहुत समझाकर लिखा है और जगह-जगहपर अनेक चित्रोंको देकर विषयको और भी बोधगम्य बना दिया है। लेखकने इस पुस्तकमें अनेक विषयोंकी वैज्ञानिक विवेचना भी की है। पुस्तक देखनेसे लेखक इस विषयके जानकार मालूम होते हैं। और उसमें खेतीके कामके सभी यन्त्रों, पशुओं एवं अन्य आवश्यक सामग्रियोंका भी उन्होंने जिक्र किया है। फसलोंके रोग और उनके निराकरणके उपाय भी उन्होंने बताये हैं। पुस्तक किसानोंके कामकी मालूम होती है।

अनुराग-वाटिका। प्रणेता—श्री वियोगी हरि; प्रकाशक—साहित्य-सेवा-सदन, बुलानाला, काशी। पृष्ठ-संख्या ९८, मूल्य ।-)

वियोगी हरिजी सरस कवितायें लिखनेमें सिद्धहस्त हैं। उनकी कवितामें माधुर्य और प्रसाद-गुण प्रचुर मात्रामें पाया जाता है। अनुराग वाटिकाकी कविताओंमें भी उनके यह समस्त स्वाभाविक गुण पाये जाते हैं। इसमें विरहका वर्णन कहीं-कहीं बहुत ही सुन्दर हुआ है और कहीं-कहीं तो वर्णनमें दार्शनिक भावोंका भी प्रशंसनीय मिश्रण हुआ है। एक गीत है :—

अरी मैं वा जलकी मछुरी।
ना जानों, जा अगम सिन्धु तें कबकी हौं बिछुरी।
अवगाहे केते सरिता-सर मगन होय बिहरी।
विषम विषय-विष व्यापि रह्यो तन भ्रमि-भ्रमि जाल परी
मधुर दूध-दधि-भरित सरन बिच निर्भय केलि करी।
दिन-दिन तन दवारि-सी लागी पल-पल जरी बरी॥

किन्तु एक बात है। अनुराग-वाटिकामें अनेक छन्द ऐसे हैं जिनमें सूरदासके पदोंकी छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कहीं-कहीं भाव भी लड़ गये हैं और कहीं शब्दयोजनायें भी ज्योंकी त्यों हो गयी हैं। कुछ पदोंके भाव भी दूसरोंके हैं। चाहे वे जान-बूझकर ले लिये गये हों और चाहे अपने-आप आ गये हों। पृष्ठ २८ में एक पद है :—

कैसे वह मूरति बिसराऊं?
नैन पीउमय, पीउ नैनमय, किमि दोउन बिलगाऊं।
श्याम रूप अञ्जन कोयन तें, क्यों करि धोय बहाऊं। इत्यादि

इस पदकी प्रत्येक पंक्तिमें दूसरोंके भाव हैं। कोई ऐसी पंक्ति नहीं है जिसमें मौलिकता हो अथवा कहनेका ढङ्ग ही वियोगी हरिजीका अपना हो। स्थानाभाव है अन्यथा भाव-साम्य सम्बन्धी अन्य कवियोंकी पंक्तियां भी यहां दे दी जातीं। लेकिन किया क्या जाय, ऐसे पद तो इस पुस्तकमें अनेक हैं जो अन्य कवियोंके पदोंके आधारपर बने हैं। वियोगी हरिजी कविकी हैसियतसे (वीर सतसईपर) मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त कर चुके हैं, अतएव हम उनसे कुछ ऊंची मौलिक चीजोंकी आशा रखते हैं।

शिवा-बाजि-बावनी। लेखक—श्री केशवदेव शास्त्री, प्रकाशक—मन्त्री श्री "हिन्दी-साहित्य-मण्डल", कानपुर; पृष्ठ-संख्या ९१; मूल्य ।)

महाकवि भूषणकी शिवाबावनीके ढङ्गपर शास्त्रीजीने इस शिवा-बाजि बावनीकी रचना की है। पहलीमें शिवाजी-की ५२ कवित्तोंमें प्रशंसा की गयी है तो दूसरीमें शिवाजीके घोड़ेकी प्रशंसा है। इसमें सन्देह नहीं कि शास्त्रीजीने इस पुस्तकमें वीर रसका अच्छा प्रवाह बहाया है और कई कवित्त तो सचमुच बहुत उच्च कोटिके हैं। पर अतिशयोक्ति इतनी हो गयी है कि उसपर बहुत-कुछ भद्दोंका रङ्ग चढ़ गया है। साथ ही पुस्तकमें एक लेखक द्वारा जो 'परिचय' लिखा गया है, उसमें कुछ बड़ी ऊटपटांग बातें आ गयी हैं। लेखकने शास्त्रीजीकी जो प्रशंसा की है उसपर हम कुछ नहीं कहते, पर उसमें वर्तमान कवियोंके सम्बन्धमें ऊल-जलूल बातें व्यर्थ ही भर दी गयी हैं। कई जगह उनका लिखना प्रलाप-सा जंचता है।

———


# दांतों की सुन्दरता

**व्यवहारमें लाये जानेवाले ब्रस पर ही निर्भर है**

आप जो मञ्जन व्यवहार करते हैं वह कितना ही अच्छा क्यों न हों सर्वोत्कृष्ट ब्रसके नहीं व्यवहार करनेसे आपके दांत पूर्णतया परिष्कार न हों सकेंगे। इसलिये मीरा ब्रस ही उपयुक्त है। कारण दांतके प्रत्येक कोने व फांक में, जहां तक सम्भव है, प्रवेश कर सकता है। और इसी लिए यह बनाया ही गया है। इसके बाल न नरम होंगे और न खुलकर गिर पड़ेंगे।

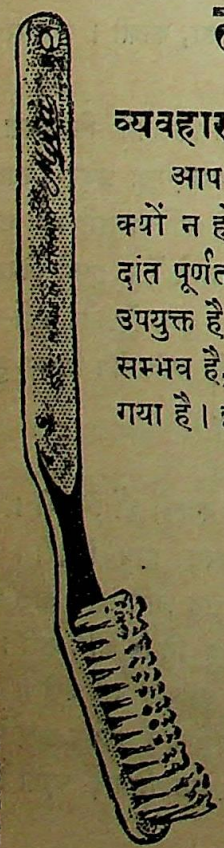

**मीरा टूथ ब्रस** के साथ

**मीरा डेंटल क्रीम** यवहार कीजिये।

चिरकाल तक दन्त पंक्ति शुद्ध, स्वस्थ सुन्दर व सबल रहेंगे।

## मीरा टूथ ब्रस

एजेण्टस्—टी० एम० ठाकुर एण्ड कम्पनी

१२, डलहौसी स्कायर, कलकत्ता।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## मशीन बता देगी कि खराबी क्या है ?

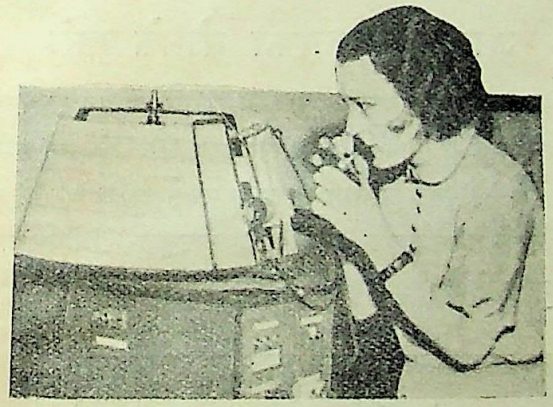

इयोवा यूनिवर्सिटीके विज्ञान-वेत्ताओंने एक ऐसी मशीनका आविष्कार किया है जिसकी सहायतासे इस बात-का पता बड़ी आसानीसे लगा लिया जाता है कि किसीकी गायन-शक्ति अथवा वाक्शक्तिमें क्या खराबी है। इस मशीनके सामने गायक बैठकर गाने लगता है और मशीन उसका रेकार्ड लेती चलती है। बादको एक बत्ती जला दी जाती है और बत्तीके जलते ही सम्पूर्ण गीत रोशनीमें चमकने लगता है और दर्शक देख सकता है कि किस शब्दकी आकृति किस प्रकारकी बनी है। यों प्रत्येक अक्षरकी आकृति स्वभावतः जैसी होनी चाहिए वैसी अगर इस मशीनपर न हो सकी, तो समझ लिया जाता है कि खराबी क्या है। और फिर इस वैज्ञानिक तरीकेसे जब खराबीका पता चल जाता है तो उसे सुधारनेमें काफी सुविधा हो जाती है। उक्त यूनिवर्सिटीमें इस मशीनका प्रयोग होने लगा है।

## समुद्रकी लहरोंसे बिजली

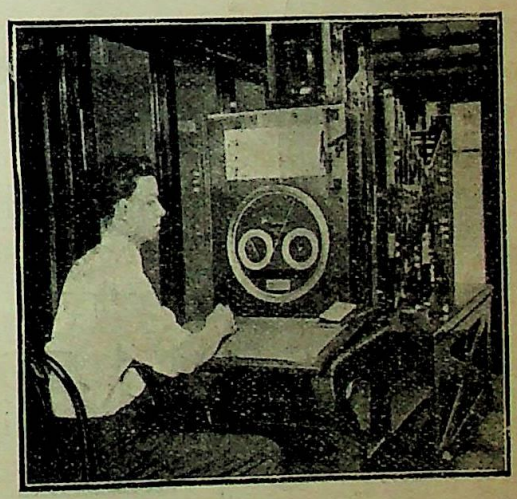

अमेरिकावाले अनेक वर्षोंसे इस बातका स्वप्न देख रहे थे कि समुद्रकी लहरोंसे बिजली उत्पन्न करनेका काम लिया जाय। इसके लिए वहांके बड़े-बड़े वैज्ञानिक प्रयोग और तत्सम्बन्धी यन्त्रोंके आविष्कार करनेमें लगे थे। इसी सिल-सिलेमें एक वैज्ञानिकने एक ऐसे यन्त्रका आविष्कार किया है जिससे इस बातका पता लगानेमें बड़ी आसानी होगी कि समुद्रकी लहरें किस समय किस वेगसे उठेंगी। प्रस्तुत चित्र उसी यन्त्रका है। अनुमान किया जाता है कि लहरोंसे विद्युत् उत्पन्न करनेकी इस प्रणालीमें लगभग चौदह हजार आदमियोंका काम पड़ेगा। अमेरिकाके राष्ट्रपति रूजवेल्टने अभी कुछ सप्ताह पहले इस कामके लिए ३६,०००,००० डालरकी स्वीकृतिकी घोषणा की है। अनुमान है कि अगले तीन वर्षोंमें यह प्रयोग सफलतापूर्वक पूर्ण हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## शरीरके भीतरका चलच्चित्र

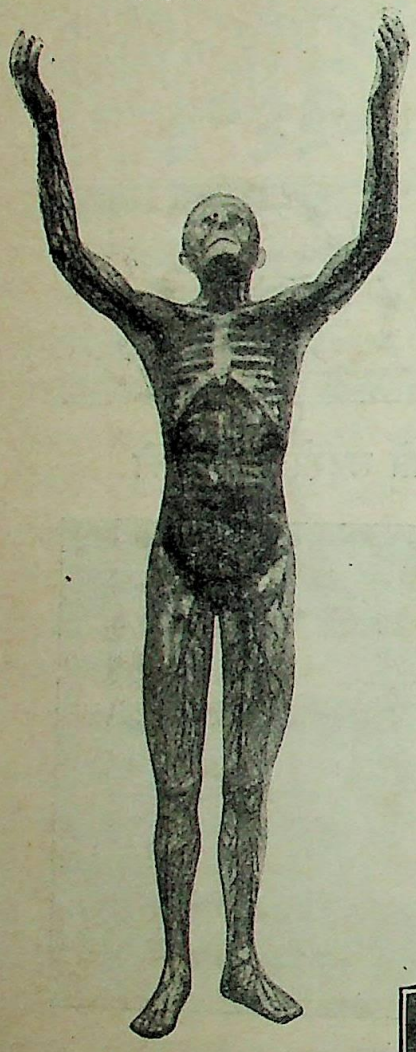

अमेरिकाके बुफैलो नगरमें एक अजायब घर है जिसमें एक महान् वैज्ञानिक द्वारा आविष्कृत एक मशीन है जिससे मनुष्योंके ऐसे-ऐसे चित्र लिये जाते हैं जिन्हें देखकर महान् आश्चर्य होता है। इस मशीनसे शरीरके न केवल सब अङ्गोंका फोटो लिया जा सकता है, बल्कि मशीन लगानेपर एक बटन दबाते ही एक ऐसा पारदर्शक प्रकाश मनुष्यपर पड़ने लगता है कि सारे अङ्गोंके साथ भीतरकी नलियों, फेफड़े, भेजे और अंतड़ियों आदिकी क्रिया साफ-साफ दिखाई पड़ने लगती है। सांस लेते समय फेफड़ोंकी प्रक्रिया तथा रक्त-वाहिनी शिराओंके भीतर रक्त-प्रवाह आदि साफ-साफ दिखाई पड़ते हैं। मस्तिष्कपर प्रकाश पड़ा नहीं कि देखनेवालेको पता चल जाता है कि उसकी क्रिया किस प्रकार हो रही है। व्यक्ति किस प्रकार सोचता है और उसकी चिन्तन-शक्ति कितनी तेज या कमजोर है, और आदमी किस प्रकार सुनता है, अवाज सुनते ही उसका मस्तिष्क किस प्रकार काम करने लगता है, आदि सभी बातें उक्त पारदर्शी मशीनसे दिखाई पड़ने लगती हैं।

इस तरह इस मशीनमें, एक्स-रे, रेडियम और फोटोग्राफी तीनोंका संयोग है। उक्त अजायबघरमें इस मशीनसे लिये गये अनेक चित्र रखे हैं और देखा गया है कि इस प्रणालीसे अब तक बहुतोंको लाभ हो चुका है। इस मशीनकी सहायतासे बड़े-बड़े भयङ्कर रोगोंके इलाजमें बड़ी सुविधा हो जायगी क्योंकि प्राणीके भीतरकी सारी क्रियाओंको भली भांति आंखोंसे देखकर इलाज करना बहुत आसान हो जायगा।

## जापान सरकारको मोमके पुतले

न्यूयार्कके मेयर एफ० ला० गार्डियाने जापान सरकारके पास मोमके ये पुतले अपनी सदिच्छा और सम्मान-स्वरूप भेजे हैं। ये पुतले असामा मारू जहाजसे टोकियो भेजे गये हैं। पुतले इतने अच्छे बने हैं कि बिलकुल सजीव प्राणी मालूम होते हैं।

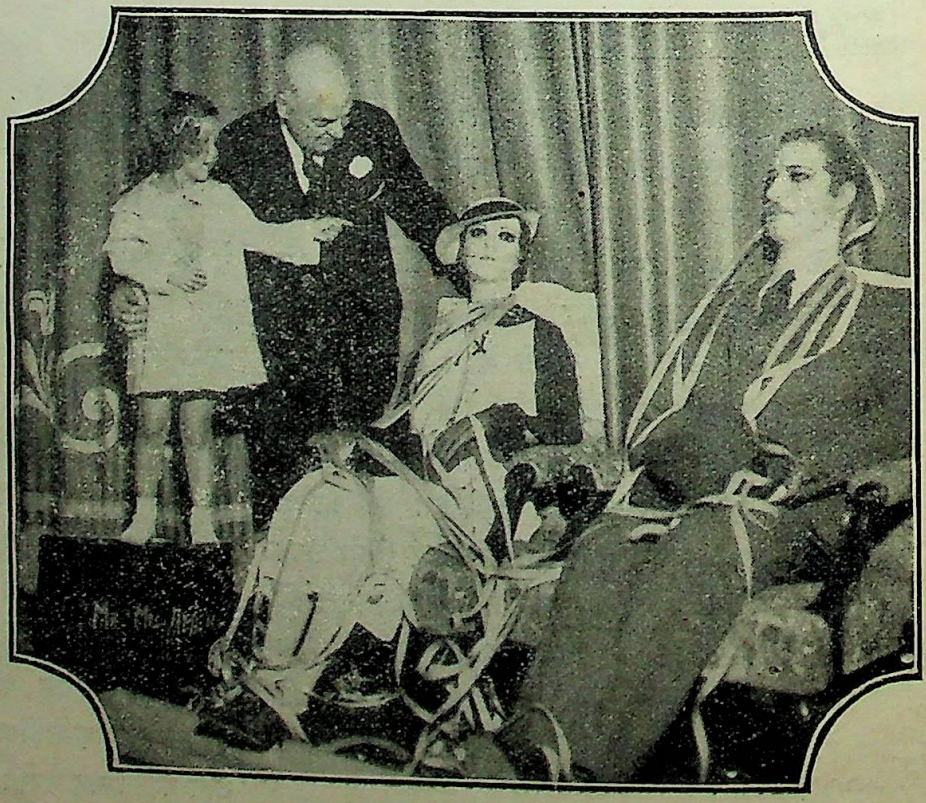

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## प्रकृतिपर विज्ञानकी विजय

वैज्ञानिकोंने जहां अपनी कलाके बलपर अनेकानेक नये आविष्कार किये हैं, वहीं उन्होंने प्रकृति-नियमोंपर भी नियन्त्रण करनेमें कम सफलता नहीं प्राप्त की है। स्वभावतः अधिक छोटे होनेवाले वृक्षोंको उगाकर बड़ा बना देना और बड़े वृक्षोंको अत्यन्त छोटा बना देना उनके लिए आज कुछ भी कठिन नहीं रह गया है। 'जुनिपर' का वृक्ष इसका एक उदाहरण है। इसे यों होना चाहिए बहुत ऊंचा, परन्तु यह है केवल कुछ ही इञ्चोंका और उस हालतमें कि इसकी अवस्था हो गयी है पचास वर्षसे ऊपर। इस तरह विज्ञान-वेत्ता प्रकृतिपर भी शासन करने लगे हैं।

## मशीन अपने-आप कोट साफ करती है

एक वैज्ञानिकने एक ऐसी मशीनका आविष्कार किया है जो अपने-आप कोटकी सफाई कर देगी। मशीनके खाने-में आप कोट टांगकर उसका दरवाजा बन्द कर दें और बाहर लगी हुई एक बटन दबा दें। बस, आप निश्चिन्त हो जायें, मशीन अपने-आप कोटकी खूब सफाई कर देगी और सफाई हो जानेपर मशीन अपने-आप अपनी क्रिया बन्द कर देगी। इस प्रकारकी सफाई करनेमें मशीनको सिर्फ एक-डेढ़ मिनट लगते हैं।

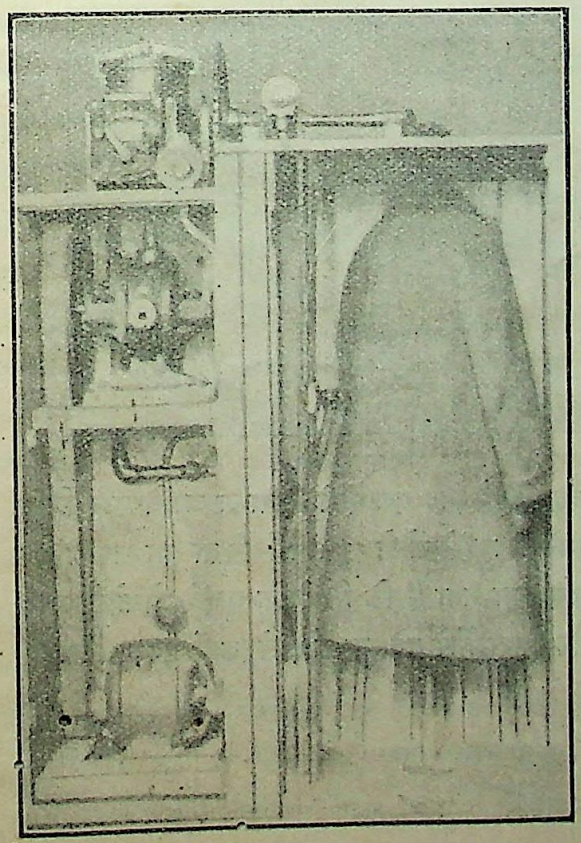

## ऋतु-संवादका सबसे छोटा यन्त्र

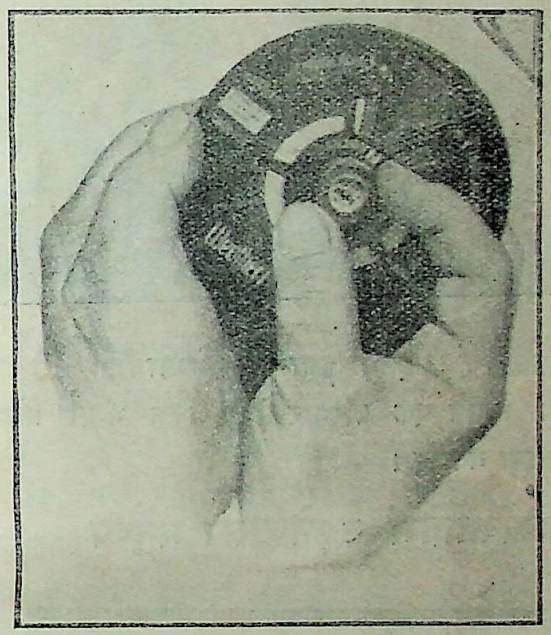

एक विज्ञान-वेत्ताने एक ऐसे यन्त्रका आविष्कार किया है जिसकी सहायतासे कोई किसी समयका भी मौसम जान सकता है। यह यन्त्र इतना छोटा है कि आसानीसे पाकेटमें रखा जा सकता है। यन्त्रके बीचमें एक बटन है जिसे दबाते ही वह ऋतु-संवाद-सूचक काम करने लगता है। इस तरह इसकी कई सुइयां हैं जो गर्मी-सर्दीका पता बताती रहती हैं। इसमें एक ऐसी सुई है जो १५ घण्टेकी ऋतुको बिलकुल ठीक-ठीक बता देती है। अभी तक ऐसे यन्त्रका आविष्कार और कभी नहीं हो सका था।

## विषैली गैसका रक्षक गुब्बारा

लड़ाईके दिनोंमें विषैली गैसोंसे किस प्रकार रक्षा हो सकती है, इसपर विचार करते-करते फ्रान्सके एक वैज्ञानिक-ने एक ऐसे गुब्बारेका आविष्कार किया है जिसकी सहायता-से गैसोंसे आसानीके साथ रक्षा की जा सकती है। इसका आकार-प्रकार ऐसा है कि इसमें एक पूरा परिवार समा सकता है और काफी देर तक आरामके साथ इसके भीतर रह सकता है। घरकी मेज-कुर्सी आदि वस्तुयें भी भीतर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



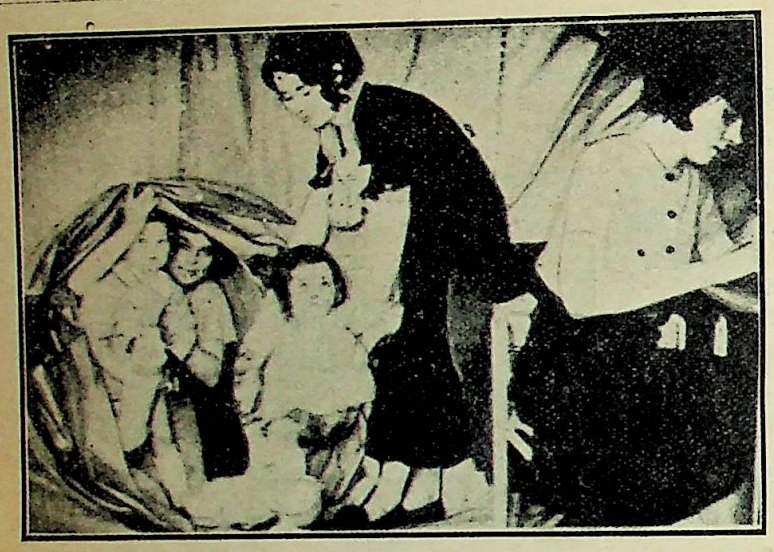

रखी जा सकती हैं। इसमें हवा भी आसानीसे भरी जा सकती है। चित्रमें एक परिवारको गुब्बारेके भीतर प्रवेश करते दिखाया गया है।

## आकाशमें उड़नेवाला मनुष्य

रूसमें पैराशूट लेकर कूदनेवाला एक ऐसा साहसी पुरुष है जो अपने कृत्रिम पङ्खोंकी सहायतासे आकाशमें उड़ सकता है। अभी हालमें वह ९ हजार फीटकी ऊंचाईसे पैराशूट लेकर कूदा था और कूदनेकी हालतमें लगभग ३००० फीट तक अपने पङ्खोंकी सहायतासे—बिना पैराशूट खोले ही वह उतरने लगा और आध मील तक हवामें उड़ता रहा। अपनी इच्छासे ही वह पङ्खोंकी सहायतासे इधर-उधर उड़ता था। उस व्यक्तिके लिए अब चार-छ सौ फीट उड़ना कुछ भी कठिन नहीं रह गया है।

## सिगरेटके धुएंसे फोटो इनलार्ज

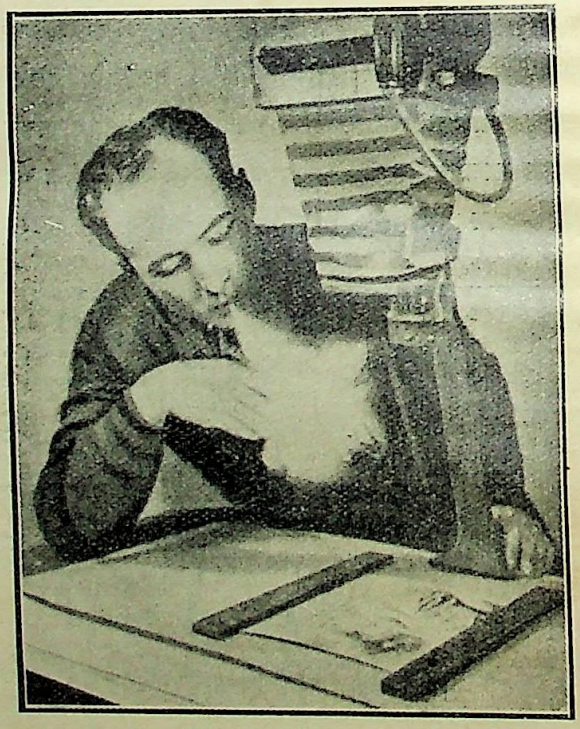

एक वैज्ञानिकने अब एक ऐसी क्रियाका आविष्कार किया है कि सिगरेटके धुएंसे फोटो इनलार्ज किया जा सकता है। प्रयोग करके देखा गया है कि सिगरेटके धुएंसे जो फोटो बढ़ाये गये वे और क्रियाओंसे बढ़े हुए फोटोसे कहीं सुन्दर निकले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

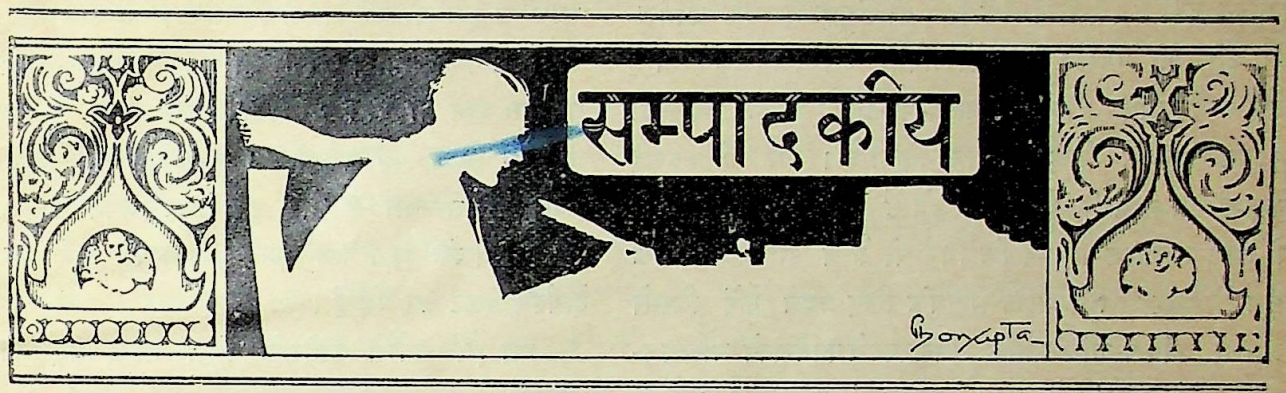


## कांग्रेसके आदर्शकी रक्षा

देशके लिए यह राजनीतिक सङ्कटकाल है। एक ओर भारतीय शासन-विधानको हमारी इच्छाके विरुद्ध देशमें प्रवर्तित किये जानेकी तैयारियां हो रही हैं और दूसरी ओर देशकी सर्वप्रधान राजनीतिक संस्था कांग्रेस और उसके कर्णधार संशय एवं द्विधामें पड़कर देशके लिए साहसपूर्ण कर्मनीति निश्चित करनेमें हतबुद्धि-से हो रहे हैं। सङ्कट-कालमें इस प्रकार संशय एवं द्विधाग्रस्त चित्त लेकर कार्य करना बड़ा ही घातक होता है। अतएव ऐसे समयमें देशके राष्ट्रवादियोंका—उन राष्ट्रवादियोंका, जिन्हें अपने आदर्शपर अविचल विश्वास है, जिनके सामने देशका चरमलक्ष्य स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है, जिन्हें त्याग, कष्ट-सहन एवं जातिकी अमित शक्तिपर आस्था है, क्षुद्र सुविधाओं एवं क्षणिक् प्रलोभनोंके मोहमें पड़कर जिनकी बुद्धि कुण्ठित एवं दृष्टि धूमिल नहीं हुई है, जो असहाय पराधीनताकी अवस्थामें भी प्रबलके सामने आत्मसमर्पण करनेकी नीतिको स्वीकार नहीं कर सकते, जो राष्ट्रीय आकांक्षाओंकी पूर्तिके लिए एकमात्र जातिकी संहत शक्ति एवं एकतापर विश्वास करते हैं, जो राष्ट्रीय आदर्शकी मर्यादाको किसी प्रकार भी क्षुण्ण होने देना नहीं चाहते—यह आवश्यक कर्तव्य है कि निर्भीक भावसे स्पष्ट रूपमें अपने राजनीतिक विचारोंको प्रकट करनेका सत्साहस दिखावें। कारण, देशकी राजनीति इस समय अन्धकाराच्छन्न हो रही है। कुछ लोग उसके उच्चादर्श एवं शक्ति-स्फूर्तिदायक कर्मनीतिको जिस मार्गसे होकर ले जानेका प्रयत्न कर रहे हैं वह प्रयत्न यदि सफल हुआ तो उसका अर्थ होगा कांग्रेसका सम्पूर्ण नैतिक अधःपतन और उसके आदर्शका व्यभिचार। यह प्रयत्न अथवा षड्यन्त्र उन लोगोंकी ओरसे चल रहा है जो जातीय शक्ति, त्याग एवं कष्ट-सहनकी क्षमता द्वारा नहीं, बल्कि बुद्धि-चातुर्य, नीतिकौशल एवं सुविधाओंसे लाभ उठानेकी हिसाबी बुद्धि लेकर स्वाधीनता-लाभका स्वप्न देखा करते हैं। इस कोटिके नेता किसी जातिके राजनीतिक भाग्यका निर्माण नहीं कर सकते, इनके द्वारा किसी जातिके स्वातन्त्र्य-संग्रामका सफलतापूर्वक सञ्चालन नहीं होता। इसी श्रेणीके लोग आज कांग्रेसकी राजनीतिकी बागडोर अपने हाथमें लेकर मन्त्रित्व-पद-लाभ द्वारा देशको उसके लक्ष्य तक पहुंचानेका मार्ग प्रदर्शित करने चले हैं। किन्तु क्या आज देश इतना अबोध है कि वह इस साधारण-सी बातको नहीं समझ सकता कि संसारके इतिहासमें आज तक किसी भी ऐसे देशका दृष्टान्त नहीं मिलता जिसके राजनीतिक नेताओंने मन्त्रित्व-पद ग्रहण करके, अपनेको शासन-यन्त्रका अङ्ग बनाकर देशको दासताके बन्धनसे मुक्त किया हो? स्वाधीनताकी प्राप्ति मन्त्रित्व-पद-ग्रहण द्वारा नहीं, प्रत्युत जीवन-व्यापी कर्मसाधन द्वारा, असीम त्याग एवं कष्ट-सहन द्वारा, स्वेच्छापूर्वक, अभाव एवं अपमान-वरण द्वारा ही हो सकती है। वस्तुतः इस श्रेणीके नेता और माडरेट नेतामें कोई भेद नहीं है। दोनोंकी विचार-प्रणाली एक समान है, दोनों एक ही प्रकारकी कौशलपूर्ण बुद्धि लेकर नेतृत्व करना चाहते हैं और दोनों सुविधाओंके मोहमें पड़कर जातिके महान् आदर्शको विभ्रान्त करना चाहते हैं।

ऐसी स्थितिमें जो राष्ट्रवादी कांग्रेसको इस ग्लानि एवं हीनताव्यञ्जक स्थितिमें पड़कर आदर्श-भ्रष्ट होते देखना नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



चाहते उनके लिए यह समय निश्चेष्ट एवं निश्चिन्त होकर बैठनेका नहीं है। ऐसे लोगोंके लिए ही संयुक्त प्रान्तके कांग्रेस-नेता श्री रफी अहमद किदवईने अपनी आवाज बुलन्द की है और उन्हें समवेत होकर मन्त्रित्व-पद-प्रार्थी दलके प्रयासको पराहत करनेके लिए आह्वान किया है। श्री रफी अहमद किदवई इस बातकी चेष्टा कर रहे हैं कि कांग्रेसके अन्दर जो लोग मन्त्रित्व-पद-ग्रहणके विरोधी हैं वे साम्यवादियोंके साथ मिलकर अभीसे शक्ति-सञ्चयके लिए प्रयत्न करें जिससे आगामी कांग्रेस-अधिवेशनके अवसरपर वे कांग्रेसको मन्त्रित्व-पदके प्रलोभनमें फंसकर आदर्शच्युत एवं लक्ष्य-भ्रष्ट होनेकी ग्लानिसे बचा सकें। जो कांग्रेसवादी मन्त्रित्व-ग्रहण-नीतिके विरोधी तथा शासन-सुधारके सम्पूर्ण वर्जन करनेकी नीतिके पक्षपाती हैं उनको सङ्घबद्ध करके श्री किदवई शीघ्र ही एक सभा करनेका आयोजन कर रहे हैं। हमें आशा और विश्वास है कि विभिन्न प्रान्तोंके राष्ट्रवादी—जो कांग्रेस द्वारा व्यवस्थापिका सभाओंमें मन्त्रित्व-पद-ग्रहण करनेकी नीतिको कांग्रेसकी प्रतिष्ठाके लिए घातक समझते हों—इस अवसरपर अपने कर्तव्यका पालन करते हुए ऐसा प्रयत्न करेंगे जिससे कांग्रेस पुनः अपने आदर्शपर सुप्रतिष्ठित हो और उसकी कर्म-नीति जातिके अन्दर शक्ति, स्फूर्ति एवं स्वावलम्बनकी भावना उत्प्रेरित करनेवाली हो।

## कांग्रेसका सभापतित्व

लखनऊ कांग्रेसके सभापति-पदके लिए अब तक देशके सामने जितने नाम सुझाये गये हैं उनमें सबसे पहले कांग्रेसवादियोंका ध्यान जिस व्यक्तिकी ओर जाता है वह हैं पण्डित जवाहरलाल नेहरू। आगामी कांग्रेस देशकी जैसी परिस्थितिमें होने जा रही है उसपर विचार करते हुए यही समीचीन प्रतीत होता है कि राष्ट्रका नेतृत्व किसी ऐसे प्रभावशाली नेताके हाथमें होना चाहिए जो कांग्रेसके अन्तर्गत विभिन्न विचार रखनेवाले दलोंका समान-रूपसे श्रद्धाभाजन हो और जिसके नेतृत्व एवं कर्म-शक्तिपर देशको विश्वास हो। भारतीय शासन-विधानके स्वीकृत होनेके बाद कांग्रेसका यह अधिवेशन होने जा रहा है। इस अधिवेशनमें राष्ट्रको अन्तिम रूपमें शासन-विधानके सम्बन्धमें अपना निर्णय देना होगा। केवल निर्णय ही नहीं, बल्कि इसके साथ ही इस समस्यापर भी विचार करना होगा कि सम्पूर्ण राष्ट्रके दावेको अग्राह्य करके जो नूतन शासन-विधान देशमें प्रवर्तित होने जा रहा है उसका किस प्रकार सफलतापूर्वक प्रतिकार किया जा सकता है। यही समस्या देशके सामने सबसे बड़ी समस्या है और इस समस्याको लेकर ही इस समय कांग्रेसके कुछ नेता सन्देह, संशय, द्विधा एवं चित्त-दौर्बल्य प्रकट कर रहे हैं।

गत १५ वर्षोंसे कांग्रेसके जिस महत् आदर्शको तरुण भारतने अपने जीवनकी चरमसाधना मानकर उसके लिए सब प्रकारके त्याग एवं कष्टोंको सहर्ष स्वीकार किया है उनकी हमारे शासकोंने निष्ठुर भावसे उपेक्षा कर दी है भावी व्यवस्थापिका परिषदोंका जिस रूपमें गठन किया गया है उससे राष्ट्रके अधिकार और भी संकुचित कर दिये गये हैं और उनमें गणतन्त्रके सिद्धान्तकी हत्या की गयी है।

इसलिए हमारे भावी राष्ट्रपतिके ऊपर सबसे बड़ा दायित्व यह होगा कि वह कांग्रेसको ऐसे कर्ममार्गसे होकर परिचालित करें जिससे राष्ट्र अपने लक्ष्यकी ओर नूतन शक्ति, नूतन उत्साह एवं निर्भीक भावसे अग्रसर हो और कांग्रेस द्वारा किसी ऐसी नीतिको स्वीकृत होने न दें जो उसे अपनी प्रतिष्ठा एवं मर्यादासे च्युत करनेवाली हो। निर्भय होकर दृढ़तापूर्वक अपना मत व्यक्त करनेवाला तथा राष्ट्रीय संग्रामके पुरोभागमें स्थित होकर जनताका नेतृत्व करनेवाला नेता ही तरुण भारतके चित्तराज्यपर जय प्राप्त कर सकता है और उसकी कर्मशक्तिको राष्ट्रकी सेवाओंमें संलग्न कर सकता है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू इसी कोटिके नेता हैं और वे ही हमारे भावी राष्ट्रपति बननेके सर्वथा उपयुक्त हैं।

## नूतन राजनीतिक दलोंकी बाढ़

नवीन शासन-विधानके अनुसार प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओंका चुनाव आगामी वर्षके अन्तमें अथवा सन् १९३७ के आरम्भमें होनेवाला है। इसलिए कांग्रेसके विरुद्ध देशके कायमी हकवालोंकी राजनीतिक गुटबन्दियां अभीसे होने लग गयी हैं। जो लोग जमीन्दारों, पूंजीपतियों, सम्प्रदायवादियों और सरकारी अफसरोंके पिट्ठू बनकर कौन्सिलोंमें जाना चाहते हैं उन्हें अभीसे यह चिन्ता सताने लगी है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कांग्रेस-दलके चुनावमें भाग लेनेके कारण उन्हें विफल होकर हा ! हताश ! न करना पड़े। बम्बईमें सर होमी मोदीने अपने कुछ मित्रों द्वारा दिये गये एक भोजके अवसरपर कांग्रेसके विरुद्ध एक राजनीतिक दल गठन करनेकी आवश्यकताकी ओर सङ्केत किया है। इस दलका उद्देश्य होगा शासन-विधानको सफल बनानेका प्रयत्न करना। संयुक्त-प्रान्त और बिहारमें भी कांग्रेसके विरुद्ध राजनीतिक दल खड़े करनेकी बात सोची जा रही है जो आगामी चुनाव-संग्राममें कांग्रेसका मुकाबला कर सकें। यह तो प्रत्यक्ष ही है कि इस प्रकारके नये दलोंको सृष्टि करके भावी व्यवस्थापिका सभाओंपर दखल जमानेकी बात जो लोग सोच रहे हैं उनमें अधिकांश अपने अन्याय्य स्वार्थों एवं विशेष सुविधाओंकी रक्षाके लिए ही ऐसा करना चाहते हैं। चूंकि भावी व्यवस्थापिका सभाओंमें इनके समर्थक सरकारी अफसर और नामजद सदस्य नहीं रह जायंगे, इसलिए इनकी स्थिति अनाथवत् न हो जाय, इस आशङ्कासे एक बार समस्त स्वार्थी दलोंको सङ्घबद्ध करके ये कांग्रेससे मोर्चा लेनेका स्वप्न देखने लगे हैं। सर होमी मोदी-लीज पैक्टकी सृष्टि करके और ओटावा-समझौतेको देशके लिए आशीर्वाद-स्वरूप समझकर अधिकारियोंके कृपा-भाजन बन चुके हैं। अब आप शासन-विधानको कार्यान्वित करनेका मनसूबा बांधकर कर्मक्षेत्रमें अवतीर्ण होना चाहते हैं। उधर श्रीयुत जयकरने भी कांग्रेस-दलको यह सलाह दी है कि वह मन्त्रित्व-पद ग्रहण करके शासन-विधानको सफल बनानेका प्रयत्न करे। श्रीयुत जयकर भले ही यह समझते हों कि शासन-विधानको विपर्यस्त कर डालना निरा भ्रम है, किन्तु उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि यदि शासन-विधानको विपर्यस्त करना भ्रम है तो उसे सफल बनानेकी चेष्टा करना उससे भी बड़ा भ्रम है। सर होमी, श्रीयुत जयकर तथा उनके जैसे विचार रखनेवाले लोग खुशीसे शासन-विधानको गले लगावें, उसकी प्रशंसाके पुल बांधें, उन्हें कोई मना नहीं करता। किन्तु कांग्रेसवादियोंको उन जैसे लोगोंकी मुफ्त सलाहकी जरूरत नहीं है। कांग्रेसवादियोंने शासकोंके प्रसाद-रूपमें प्राप्त शासन-विधानके किसी टुकड़ेके लिए त्याग एवं कष्ट स्वीकार नहीं किया है। कांग्रेसवादियोंका लक्ष्य स्वराज्य है। वह स्वराज्य, जो भिक्षा मांगनेसे दानरूपमें नहीं, बल्कि किसी जातिके जन्म-स्वत्वके रूपमें निज शक्ति द्वारा अर्जित किया जाता है। इसी स्वराज्यमें भारतके भाग्यकी परिणति है और इसी स्वराज्यकी जयपताकाको कांग्रेस तब तक नत नहीं होने देगी जब तक जातिके प्राणोंमें स्वाधीनताकी आकांक्षा ज्वलन्त बनी रहेगी।

## भारत-शासन-विधान

भारतीय शासन-सुधारको लेकर ब्रिटिश सरकारके राजनीतिज्ञ गत सात वर्षोंसे जो माथापच्ची कर रहे थे उसका अन्त गत २ अगस्तको हो गया, जब कि पार्लमेण्टकी दोनों सभाओं द्वारा भारतीय शासन-विधान बिलके पास हो जानेपर श्रीमान् सम्राट् द्वारा उसकी स्वीकृति कर दी गयी। सात वर्षकी इस लम्बी अवधिमें साइमन कमीशन, तीन-तीन गोलमेज सभायें और बहुसंख्यक समितियां-उपसमितियां शासन-विधानके सम्बन्धमें विचार करनेके लिए नियुक्त की गयीं और उनकी रिपोर्टें तैयार करनेमें मनों कागज और स्याही खर्च की गयी; तब कहीं जाकर बिलको शासन-विधानका रूप प्राप्त हुआ है जिसका गुणगान करते हुए विलायती समाचारपत्रोंने अंगरेज जातिकी राजनीतिक उदारताको इतिहासमें अभूतपूर्व बताया है। किन्तु जिस विधानको विलायती पत्रोंने तथा इंगलैण्डके अनेक राजनीतिज्ञोंने अंगरेज जातिकी वर्तमान पीढ़ीका राजनीतिक साहस, बुद्धिमत्ता एवं दूरदर्शिताका नमूना बताया है उसके प्रति भारतवासियोंने सर्वथा उदासीन भाव धारण करते हुए किसी प्रकारका भी आग्रह-भाव नहीं दिखलाया है। क्योंकि भारतवासी इस बातको भली भांति समझते हैं कि इस शासन-विधान द्वारा उनकी राष्ट्रीय भावनाओंपर जानबूझकर आघात पहुंचाया गया है, उनकी राष्ट्रीय मर्यादाका उपहास किया गया है तथा सम्पूर्ण राष्ट्रकी महत्त्वाकांक्षाओंको पद-दलित करके उसके गले जबर्दस्ती एक ऐसा शासन-विधान मढ़ दिया गया है जो राष्ट्रीय प्रगति एवं एकताके मार्गमें सहायक न होकर सर्वथा बाधक ही सिद्ध होगा। यह शासन-विधान ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंके राजनीतिक साहस, बुद्धिमत्ता एवं दूरदर्शिताका परिचायक नहीं, प्रत्युत उनके इन गुणोंके दैन्यका द्योतक है। एक अत्यन्त प्राचीन एवं सभ्य जातिकी राजनीतिक पराधीनता एवं परवशतासे लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उठाकर उसकी आकांक्षाओंके प्रति इस प्रकार अपमानजनक व्यवहार किये जानेका दृष्टान्त संसारके इतिहासमें बिरला ही मिलेगा।

प्रथम गोलमेज सभाके कार्योंका उपसंहार करते हुए तत्कालीन प्रधान मन्त्री मि० रामजे मेकडानल्डने कहा था :—"His Majesty's Government will strive to secure an amount of agreement as will enable the new Constitution to be passed through the British Parliament with the active goodwill of the people of both countries." मि० मेकडानल्ड साहब प्रधानमन्त्रीके पदसे पृथक् होकर भी अब तक ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलमें मौजूद हैं। क्या वे अपने अन्तःकरणको साक्षी रखकर कह सकते हैं कि भारतीय शासन-विधान भारतीयोंके सक्रिय सद्भावको लेकर उनकी सहमतिसे पार्लामेण्टमें स्वीकृत हुआ है? क्या इसके द्वारा सचमुच केन्द्रीय एवं प्रान्तीय व्यवस्था-सभाओंके ऊपर भारतीय शासनका दायित्व सौंपा गया है, जैसा कि उन्होंने गम्भीरतापूर्वक आश्वासन दिया था?

गोलमेज सभाके प्रथम अधिवेशनसे लेकर पार्लामेण्टकी संयुक्त कमेटी तथा बिलपर पार्लामेण्टकी दोनों सभाओंमें वादविवाद होने तक जिस प्रकार निर्लज्ज भावसे बिलकी धाराओंको लेकर कौतुक किया गया है और संरक्षणोंके जालसे उसे आवेष्टित करके स्वायत्त शासनका मखौल उड़ाया गया है वह विधान क्या भारतीयोंके सहयोगसे स्वीकृत हुआ समझा जायगा?

## अ० भा० पत्रकार-सम्मेलन

कलकत्तेमें होनेवाले अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलनके सभापति ख्यातनामा "लीडर"-सम्पादक श्रीयुत यज्ञेश्वर चिन्तामणिने अपने सारगर्भित भाषणमें ऐसी बहुत-सी बातें कही हैं जिनकी ओर देशके समस्त देशी समाचारपत्रोंका ध्यान आकृष्ट होना आवश्यक है। इस देशके समाचारपत्रोंका-विशेषतः उन समाचारपत्रोंका, जो जनताके मुखपत्र बनकर उसके अन्तर्निहित मनोभाव एवं मर्मवेदनाको व्यक्त करना चाहते हैं—आदर्श एवं कर्तव्य क्या होना चाहिए, इस सम्बन्धमें आपने जो निर्देश किया है वह बड़ा ही विशद एवं महत्त्वपूर्ण है। देशी समाचारपत्रोंमें अधिकांश ऐसे हैं जो जनताकी, देशकी सेवा करनेके लिए ही कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुए हैं। ऐसे समाचारपत्रोंको अकेले ही सरकारके अन्यायके विरुद्ध संग्राम करना होगा। कारण, स्वराज्य-आन्दोलनके अग्रभागमें मुख्यतः देशी समाचार-पत्रोंको ही स्थान लेना होगा। श्रीयुक्त चिन्तामणिका यह कथन कितना युक्तियुक्त है कि "भारतकी वर्तमान स्थितिमें भारतके जो समाचार-पत्र स्वराज्यके दावेका समर्थन नहीं करते उन्हें जीवित रहनेका कोई नैतिक अधिकार नहीं है।" अपने इस कर्तव्यका पालन करते हुए देशी समाचारपत्रोंको बराबर खतरेके स्थानमें रखना होगा। अब तक भारतके देशी समाचार-पत्रोंने जिस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सङ्कट सहन किये हैं उससे यह आशा की जाती है कि आगे भी वे दृढ़तापूर्वक अपने कर्तव्यका पालन करते रहेंगे, चाहे इसके लिए उन्हें कितना ही बलिदान क्यों न करना पड़े। अपने इस कर्तव्यका पालन करते हुए देशी समाचार-पत्रोंको शासकोंका विरागभाजन बनकर दमननीतिका शिकार बनना पड़ता है। क्योंकि पराधीन देशमें राष्ट्रीय आकांक्षाओं और राष्ट्रीय विचारधाराके साथ शासकवर्गके कार्य एवं मनोभावके विरोधकी सम्भावना प्रायः बनी ही रहती है। इस सम्बन्धमें आपने उन सब दमनमूलक कानूनोंका उल्लेख किया है जिनका कटु अनुभव इस देशके देशी समाचारपत्रोंको प्रायः होता ही रहता है। अन्तमें सभापति महोदयने इस बातपर जोर दिया है कि भारतीय पत्रकार संस्थानको एक सुदृढ़ एवं स्थायी संस्थाके रूपमें परिणत करनेका प्रयत्न करना चाहिए जिससे वह भारतीय समाचार-पत्रोंकी बाह्य आक्रमणोंसे रक्षा कर सके।

स्वागतकारिणी समितिके अध्यक्ष श्रीयुक्त मृणालकान्ति बोसने अपने भाषणमें भारतीय समाचारपत्रों और उनके कर्मचारियोंकी आर्थिक दुर्दशापर विशेष रूपसे प्रकाश डाला है। अधिकांश भारतीय पत्रकारोंको किस प्रकारकी आर्थिक कठिनाइयां सहन करके कार्य करना पड़ता है, इसका उल्लेख करते हुए आपने कहा है:—"यह खेदकी बात है कि भारतके पत्र-व्यवसायमें कर्मचारी-मण्डलको नियत समयपर वेतन देना एक साधारण बात नहीं समझी जाती। इसके विपरीत अनियमित रूपमें वेतन देना नियम और नियत समयपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वेतन देना उस नियमका अपवाद समझा जाता है।" अनियमित रूपमें वेतन मिलनेके सिवा आपने पत्रकार-जीवनकी और भी बहुत-सी कठिनाइयोंका जिक्र किया है जैसे अपर्याप्त वेतन, काम करनेके अनिश्चित घण्टे इत्यादि। भारतीय समाचार-पत्रोंकी आर्थिक दशाकी जिन्हें कुछ भी जानकारी है वे श्रीयुक्त बोसके उपर्युक्त चित्राङ्कणमें कुछ भी अतिरञ्जनाकी मात्रा नहीं पायेंगे।

## युद्धं देहि

इटली और अबसीनियाके सङ्घर्षको लेकर पेरिसमें जो त्रिशक्ति सम्मेलन हुआ था वह विफल हो गया। इंगलैण्ड और फ्रान्सकी ओरसे इटलीको अबसीनियामें "आर्थिक उन्नतिके लिए बहुत व्यापक मौका" दिये जानेका वचन मिलनेपर भी इटलीने समझौतेके किसी प्रस्तावको स्वीकार नहीं किया। इटली क्या चाहता है, इस सम्बन्धमें उसने अपनी शिकायतों और आकांक्षाओंको स्पष्ट भावसे लिखित रूपमें व्यक्त करना भी अस्वीकार कर दिया। इससे इटलीका अभिप्राय अब छिपा नहीं रह जाता। वह अबसीनियापर अपना राजनीतिक प्रभुत्व चाहता है। केवल कुछ रियायतें नहीं चाहता। दूसरे शब्दोंमें मुसोलिनी अफ्रीकामें उसी प्रकार इटलीका साम्राज्य स्थापित हुआ देखना चाहता है जिस प्रकार इंगलैण्ड और फ्रान्सका है। ब्रिटेन और फ्रान्सने जब पहलेसे ही "mandate" के रूपमें अफ्रीकाके बहुत-से जर्मन उपनिवेशोंपर अपना राजनीतिक प्रभुत्व बना रखा है तो फिर इटलीकी यह बुभुक्षा ही क्यों अतृप्त बनी रहे? आज यही प्रश्न है जो इटलीके मनमें उदित हो रहा है और जिसका उत्तर इंगलैण्ड और फ्रान्सके पास कुछ भी नहीं है।

साम्राज्यवादी इंगलैण्ड और फ्रान्सके मनमें क्या भाव छिपा हुआ है, इससे मुसोलिनी अपरिचित नहीं है। इसलिए वह समझौतेकी नीतिको नहीं, बल्कि "युद्ध देहि" की नीतिको कार्य-रूपमें परिणत करनेके लिए कटिबद्ध हो चुका है। अबसीनियाके मामलेमें वह किसीका हस्तक्षेप या बीचबिचाव नहीं चाहता। वह साफ-साफ यह चाहता है कि अबसीनिया इटलीकी सर्वग्रासी आकांक्षाओंके सामने सम्पूर्ण रूपसे आत्मसमर्पण कर दे, अपने स्वाधीन अस्तित्वका विलोप-साधन कर दे। इसीलिए मुसोलिनी यह धमकी देता है कि आगामी ४ सितम्बरको राष्ट्रसङ्घकी बैठकमें यदि इटलीके विरुद्ध कोई कार्रवाई करनेका निर्णय हुआ तो वह फौरन् राष्ट्रसङ्घकी सदस्यतासे पृथक् हो जायगा। इतना ही नहीं, बल्कि उसने अपने विरुद्ध कार्रवाई करनेवाले राष्ट्रोंको सशस्त्र विरोधिताकी भी धमकी दी है। इन सब लक्षणोंसे यह स्पष्ट जान पड़ता है कि इटली अबसीनियाके विरुद्ध अपनी आकांक्षाओंको चरितार्थ करके ही छोड़ेगा और वर्षा ऋतुके समाप्त होते-होते अक्टूबर महीनेमें रणभेरी बज उठेगी। ४ सितम्बरको राष्ट्रसङ्घकी जो बैठक होनेवाली है उसके निर्णयकी ओर आज सारे संसारकी दृष्टि लगी हुई है, किन्तु राष्ट्रसङ्घको इस विषयमें सफलता मिलेगी, इसकी सम्भावना बहुत कम है। इटली इस समय अपनी आवश्यकताकी पूर्तिके लिए इतना मदान्ध हो रहा है कि उसके सामने नीति एवं न्याय कोई वस्तु नहीं है। उसके लिए आवश्यकताकी पूर्ति ही सबसे बड़ा न्याय है। इसलिए वह अपनी इस आवश्यकताकी पूर्ति एकमात्र पाशविक शक्तिके प्रयोग द्वारा करना चाहता है। राष्ट्रसङ्घका जन्म पशुबलके ऊपर नीति एवं न्यायकी सत्ता स्थापित करनेके लिए हुआ था। किन्तु राष्ट्रसङ्घ जिस प्रकार इससे पूर्व अपने उद्देश्यको चरितार्थ करनेमें पंगु एवं अक्षम सिद्ध हो चुका है उसी प्रकार इस बार भी होगा यह एक सम्भावना ही नहीं, बल्कि बहुत-कुछ निश्चित-सा है।

## राष्ट्र-सङ्घ और भारत

राष्ट्र-सङ्घके सदस्य-पदसे भारतके पृथक् हो जानेकी आवश्यकताके सम्बन्धमें श्रीयुत सुभाषचन्द्र बोसने जो वक्तव्य प्रकाशित किया है वह सर्वथा समीचीन एवं भारतकी हित-दृष्टिसे विचारणीय है। राष्ट्र-सङ्घ स्वाधीन राष्ट्रोंका सङ्घ है और इन स्वाधीन राष्ट्रोंका ही उसके द्वारा स्वार्थसाधन होता है। भारत पराधीन होनेके कारण ब्रिटिश साम्राज्यके एक अङ्गके रूपमें राष्ट्र-सङ्घका सदस्य है। उसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है, ब्रिटिश साम्राज्यने अपने अधीनस्थ देशोंको राष्ट्र-सङ्घका सदस्य केवल इस उद्देश्यसे बना रखा है जिससे उसे अपने पक्षमें वोट प्राप्त करनेकी सुविधा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और राष्ट्र-सङ्घपर उसका प्रभुत्व बना रहे। इसी उद्देश्यको ध्यानमें रखकर भारतकी ओरसे राष्ट्र-सङ्घके प्रतिनिधि चुने जाते हैं। वे भारतवासियोंके प्रतिनिधि नहीं, बल्कि ब्रिटिश सरकार और भारत-सरकारके प्रतिनिधि होते हैं। इसके सिवा राष्ट्र-सङ्घमें भारतकी जो स्थिति है वह भी कुछ विलक्षण जैसी प्रतीत होती है। क्योंकि भारत स्वयं पराधीन राष्ट्र होकर राष्ट्र-सङ्घके स्वाधीन राष्ट्रोंके सम्बन्धमें कोई निर्णय करे, यह बात भी असङ्गत-सी प्रतीत होती है। राष्ट्र-सङ्घकी अब तककी गतिविधियोंपर यदि विचार किया जाय तो यह निश्चयात्मक रूपमें कहा जा सकता है कि उसके द्वारा प्रबलोंके विरुद्ध दुर्बल एवं पराधीन जातियोंकी रक्षा किसी प्रकार भी नहीं हो सकती। शक्तिशाली राष्ट्रोंकी शक्तिको तथा उनके साम्राज्यवादको अक्षुण्ण रखनेका कार्य ही उसके द्वारा सम्पन्न हो रहा है। यही कारण है कि विजयी मित्र-राष्ट्रोंका राष्ट्र-सङ्घके ऊपर सर्वमय प्रभुत्व है और उनके ही इशारेपर उसकी कर्मनीति निर्धारित होती है, इस दृष्टिसे भी ब्रिटिश साम्राज्यवादके अधीनस्थ भारत-जैसे देशके लिए राष्ट्र-सङ्घका सदस्य बना रहना समुचित नहीं प्रतीत होता। कारण, इससे राष्ट्र-सङ्घके सदस्योंमें यह धारणा उत्पन्न हुए बिना नहीं रह सकती कि साम्राज्यवादके अन्दर भारतकी जो स्थिति है उससे वह असन्तुष्ट नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिकी दृष्टिसे यदि विचार किया जाय तो उसमें भी राष्ट्र-सङ्घकी महत्ता क्रमशः क्षीण होती हुई दीख पड़ रही है। जिस उच्चादर्शको लेकर राष्ट्र-सङ्घकी स्थापना हुई थी वह आदर्श भी उसके द्वारा कार्यान्वित नहीं हो सका। क्यों? इसलिए कि जिन राष्ट्रोंका उसके ऊपर आधिपत्य है वे न्याय, नीति एवं अहिंसाके आदर्शमें विश्वासी नहीं हैं। वे सबके सब शक्तिकी महत्तामें विश्वास करनेवाले हैं। तभी तो राष्ट्र-सङ्घको विजयी मित्रराष्ट्रोंके हाथकी कठपुतली समझकर जर्मनीने उसका परित्याग कर दिया और मञ्चूरियापर अधिकार करनेकी नीतिमें राष्ट्र-सङ्घ द्वारा बाधा पहुंचती देखकर जापानने भी उससे अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया है। और अब इटली भी अबसीनियाके मामलेमें उसकी सदस्यतासे पृथक् हो जानेकी धमकी दे रहा है। इस प्रकार चाहे जिस दृष्टिसे विचार किया जाय, राष्ट्र-सङ्घका सदस्य बना रहना पराधीन भारतके लिए किसी प्रकार भी वाञ्छनीय नहीं है। इसके विपरीत यदि वह सदस्य-पदसे पृथक् हो जाय तो कमसे कम इतना लाभ तो अवश्य होगा कि प्रति वर्ष उसे जो ३ लाख रुपया देना पड़ता है वह बच जायगा और भारत जैसे गरीब देशके लिए यह रकम ही क्या कम है।

## गिलगिटमें सेना-शिविर

बहुत दिनोंसे यह अफवाह सुनी जाती थी कि भारत-सरकार भारतके सीमान्तकी रक्षाके लिए काश्मीर राज्यके अन्तर्गत सीमान्तके कई स्थानोंको अपने अधिकारमें करना चाहती है। इन स्थानोंमें गिलगिट मुख्य है। अब तक यह काश्मीर राज्यके अधीनस्थ था। किन्तु अब भारत सरकारने सामरिक प्रयोजनके लिए इस स्थानको ले लिया है और यहां एक सेना-शिविर बनाया गया है। गिलगिट स्थानका सामरिक महत्त्व कितना है, यह इसी बातसे अनुमान किया जा सकता है कि चीनी तुर्किस्तान या सिनकियाङ्ग प्रदेश भी गिलगिटके समीप ही अवस्थित है। और चीनी तुर्किस्तानकी राजनीतिक परिस्थिति इस समय डांवाडोल हो रही है। चीनी तुर्किस्तानके कम्यूनिस्टोंके साथ चीनके सेचुयान और केइचाउ प्रदेशोंके कम्यूनिस्टोंका सम्बन्ध-सूत्र स्थापित हो रहा है। बहिर्मङ्गोलिया इस समय एक प्रकारसे रूसका आश्रित राज्य है और वहां सोवियट शासन-पद्धति प्रचलित है। सिकियाङ्गके वर्तमान शासक भी बोलशेविकोंके आश्रित हैं और यह प्रदेश भी सम्पूर्ण रूपसे मास्कोके प्रभावमें है। इस प्रकार चीनके कुछ प्रदेशोंसे लेकर चीनी तुर्किस्तानके सीमान्त-स्थित काश्मीर राज्यके सीमान्त तक कम्यूनिस्टोंका प्रभाव जिस रूपमें बढ़ रहा है वह भारत-सरकारके लिए अवश्य ही चिन्ताका कारण हो रहा है। यद्यपि चीनी तुर्किस्तानमें इस समय तीन शक्तियों—इंगलैण्ड, रूस और चीन—की ओरसे राजनीतिक दांव-पेंच चले जा रहे हैं, किन्तु सर्वाधिक प्रभाव बोलशेविक रूसका ही विस्तृत हो रहा है। यही कारण है जिससे भारत-सरकारने गिलगिटमें सेना-शिविर स्थापित किया है।

---

'विश्वमित्र' प्रेस, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तासे पं० मातासेवक पाठक द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*जवाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । धान्तारीं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम् ॥*

मानवगण जबतक सूर्यनारायण को रक्तचन्दनादियुक्त

# "ज वा कु सु म"

द्वारा अर्घ्य प्रदान नहीं करते तबतक वे भगवत उपासनाके किसी भी कार्यके अधिकारी नहीं हो सकते। सूर्यदेव जिस प्रकार प्राणियोंके कल्याणकर्त्ता होते हैं **उसी प्रकार जवाकुसुमके पल्लव** रक्त परिष्कारक और व्याधिनाशक हैं। वर्तमान समयमें जवाकुसुम कहनेसे लोग जवाकुसुम तैलको ही समझते हैं। यह—**"जवाकुसुम-तैल"** भी जवाकुसुमकी तरह गुणसम्पन्न है। गर्मी के दिनोंमें सूर्य प्रिय जवाकुसुम अधिक खिलता है इसलिये आजकल जवाकुसुम तैल बड़ा ही लाभदायक होता है।

**सी० के० सेन एण्ड कम्पनी लिमिटेड—कलकत्ता।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080266

## खांसी से कष्ट क्यों भोग रहे हैं? सिरोलिन "रचि" का सेवन कर आराम हो जाइये।

कफ, सर्दी, ब्राङ्काइटीज़ इनफ्लुएञ्ज़ा और क्षय रोगकी आरम्भिक अवस्थाके लिये **सिरोलिन "रचि"** ही केवल विश्वसनीय और निरापद औषधि है।

### सुप्रसिद्ध चिकित्सकगण सिरोलिन "रचि" व्यवहार करनेको कहते हैं। प्रशंसापत्र :—

"कुछ समयसे फेफड़े और अन्तड़ियोंके पुरातन क्षयरोगमें मैं सिरोलिन अपने रोगियोंको व्यवहार करा रहा हूं। थियोकलमें सिरापमें द्रवीभूत होनेके कारण खानेमें सुस्वादु है। हमारी समझमें इसमें कार्यकरी शक्ति है और यह वीजाणुनाशक है। यह खानेमें सुस्वादु और बहुत दिनों तक व्यवहार करने पर पाकस्थलीकी सहनशक्ति ज्यों की त्यों रहती है।"—— एम० ए०, अन्सारी; एम० डी० एम० एस० दिल्ली, १२ मई १९३४

"——रोगके प्रारम्भमें या सन्देह स्थलमें सिरोलिन "रचि" का व्यवहार संसारके उत्तमोत्तम शैलावाससे भी अधिक फलप्रद है।"

—— सी० एम०-सी० एम० बी० डी० पी० एच, कलकत्ता, जनवरी १९३४

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri